न्य किल्ला स्वर्धः

जर्था ६

এতদেশস্থ সমস্ত কোষাশেষশান্ত্র সন্ধলিতাকারাদিবর্ণ ক্রমবিন্যন্ত শব্দ তল্লিঙ্গ নানার্থ পর্য্যায় প্রমাণ প্রযোগ ধাতু তদনুবন্ধাভিধেয সহিত তত্তচ্ছক প্রসঙ্গোথিত বেদ বেদাঙ্গ পুরাণেতিহান জ্যোতি স্তন্ত্রাখ্যান কাব্যালঙ্কার চ্ছকঃ প্রভৃতি নাম লক্ষণোদাহরণ জব্যগুণ রোগনিদানৌষধ স্বৃত্যুক্ত ব্যবস্থাদি সংযুক্ত সর্বদর্শন মতানুসারি সংস্কৃতাভিধানগ্রন্থঃ

তত্ত্

পঞ্চন কাণ্ডঃ

রাজশ্রীরাধাকান্তবাহাদুরেণ বিরচিতঃ

১৭৬৬ ষট্ষফ্যিধিক সপ্তদশশত শকাব্দে কলিকাতাখ্যনগরে শ্রীপ্রাণক্ষণনাগেন মডাঙ্কিতঃ

(त्रकः ! यथा। वर्गाएकात्र उकारती | রাদেফ:। ইতি কলাপ সংক্ষিপ্ত नात्रवाद्यवादा ॥ (त्रकाट कात्रका व्रकावः। इंडि পुकियार्कोमूरी ॥ न जु मश्रवि॰न इंबर्गः। उत्माहा त्रग इ। नः इका। इंडि मूथा वाषवा। করণ । াঞ্চা। তস্য স্বৰূপ যথা । রে-क्ष विकाशिक अधनी व्यापन বুত। রক্তবিদ্যুল্লতাকারণ পঞ্চদে-वाञ्चकः जना॥ भक्षभुगि नयः वर्गः ত্রিবিন্দু সহিত• সদা। ইতি কাম-থেনু ভজে ৬ পটল: ॥ৠ৷ ভস্যলে थन भू कारता यथा। एक उ: ज ७ नी রেথা বামাদক গতাপ্যথ:। পুন फंकगडा (इश उटा शक्षा गडा **हार्ष्डः ॥ ভবानी শ**ङ्का दङ्गि ন্তাসু তিপ্তন্তি নিত্যশঃ। অর্জনাত্রা বুন্ধৰণা মহাশক্তি: পুকীৰ্তিতা।। ইতি বর্ণোদ্ধারতন্ত্রণ।।

ন্ধ: পু: পাবক:।। তীক্ষ:। ইতি
নেদিনী।। কামবিহ্য:। ইতি শন্দ রুত্রাবলী।।

त्रः है। (वर्गः। इंडामग्रः॥ तक क बारि॥ व्यापता इंडि हिनि क्षण्य ॥ बारि। त्रामाभारानः॥ क त्राक्षिड (याहेकः वाह्यकः । क क्षण्याकः॥ तक की जसूम।। जाम्।। भाषी-नामनकः । ইতি मिहिनी ॥ পद्मकः ॥ त्रिनरूतः ॥ हिक्नूनः। ईिछ द्राबः নির্ঘণ্টঃ ॥ শরীরস্থ সপ্তধাত্বস্তর্গত थाजुविष्मयः। ७८ भर्यप्रायः। कवित्रः २ व्यम्क् ० (वाह्यि १८ व्यम् १८ क তঙ্গ ৬ শোণিত १। ইত্যনরঃ।। भनकातः ৮ রোহিত ১ রক্ত ১০ । इंडि नम्ब्रज्ञावनी ॥ कीनानः ১১ व्यक्ष १२ (द्राधिद्र १० यक १४) ইতি জটাবর:॥ ত্বগ্ন• ১৫ শোণ• ১৬ লোহ• ১৭ চর্মজ• ১৮। ইতি রাজ-निर्घण्टः ॥ # ॥ व्यथ त्रक्रम् । य्रक्रमः মাহ। যদা রসো যকৃষাতি তব রঞ্জ ক পিত্ততঃ। রাগণ পাকঞ্চ সংপ্রাগ্য न ভবেদুক न छकः ॥ त्रकः नर्द भवीवञ् कीवम्याधाव **উ**खमः । निया खक ठन सामू विषयः भिज বন্ডবেৎ ॥ জীবস্যাধার উত্তম ইতি । যত আহ। জীবে। বসতি সর্বমিন্ দেহে তাত্র বিশেষতঃ। বীর্য্যে রক্তে मला यभिन् भीता याजि भाषा भा-गाविजि॥ वीर्थ्य म्हा भाग ह भ-রীরারম্ভকে। বাশুটোক্ত পরিমাণ মিতে শুন্ধে কীবো বসতি নতু দুষ্টে **পু**रृष्ट्य त क्रमावला भारमा मा देवयर्थ। পুসকাৎ। পিত্তবভবেৎ। সমুণ

क्रिवित् अर्थः ।। सः ॥ व्यथं तक्त माउ ह्यान नारु। यक् ए श्ली हा हं तक्त माउ मूथः ह्यानः क्रियाः हिन् । व्यन्तानः का शि हि उवकाः तकानाः (शाय-कः क्रिय् ॥ हिन् क्यायुकानः ॥ सः॥ तक्क्रियावनान्यकोषयः यथा ॥ वृक्षपष्टि क्वाः शिष्ठेः वातिना क्रित् व्यन्त । क्वा घृष्ठेः तक (त्रायः शूननाऽ न मःन्यः॥ हिन् गाक्र क्रिके व्यक्षायः॥

রকঃ প্॰ লোহি তবর্ণ:। ইত্যনর:॥ সন্ম:॥ হিজ্জন:। ইতি রাজ-নিঘণ্ট:॥

ब्रजः वि व्यन्त्रजः ॥ नीक्राफितब्रिजः॥ व्याह्मिनः । इिंड द्यापिनः ॥ ।

प्राच्या व्याह्मिनः । इंड द्यापिनः । ।

प्राच्या व्याह्मिनः ।

प्राच्या व्याह्मिनः ।

प्राच्या व्याह्मिनः ।

प्राच्या व्याह्मिनः ।

शक्षरवो ॥ जामृष द्वारमा লকক প্লক্তচন্দ্ৰ । ত্ৰেভ তক্ষেত্র ধর্মা রৌদুরসাদযঃ ब्रक नील वाहकानि यथा। नीलो भुष्कत्र इति विक्रम व **त्र**द्वानि । जिन्मृत ভृषा। 🕒 ख्यास्त्राजिनी मनानि॥ 🗥 ষর পদ্মকাশযো:। হরি कर्याः। विक्रमः भूवान वि যো:। কনল পদ্ম পাণীশা क्काञ्च को ऋ छ मुनी नर म्हत् वृष्**। भिन्**ह्वालकात উৎপল মূৎকৃষ্ট মাণসেন धन अस्यान भार्थसाः। अ 🤏 দল পর্পত্র প্টক্রির্যা भिन्न भएएएमी नागिकिएन ারত্বাকর বর 🗐ক: সদার্গ ভিঃ ৷৷ ক্যলাবিপ পদে कृष्को। नागहिए गक्र की ह। काउः कमनीयः **७म**ाउका। मूर्याञ्: मूर्याः भण्ड ॥ मना भिन्द् र गुड्ड কনল শ্বিশ । यु ট শোক वंतार चामि नीविजिः।' ম্পার থ পুজঃ বিদূরমণি 🕏 श्वाच श्वलहायः क्ला 🗉 ह्विः॥ 🛪 ॥ तक (प्रक

শ্থা। রক্ত খেতৌ হরি শুচি পৃষ্কর শতপত্ৰ সূৰ্য্যকান্তাব্ৰ: নিবছ স ন म्। भद्रार्क (मारद्रा: क्यन कीना-त्न ॥ रुति कानु मूर्गुरयाः । **भू**िः त्ये **इ दिन्धानव्रयाः। शुक्रवः कल**ः श्रीताः। न उभवः रः नभ्याताः ्रिग्रकाष्टः मुहित्क म्यावटकारः छ । अद्भुः नद्भाषु करगाः । नवरु नः অবহংসে পুত্যগুস্যেচ। মহাপ-😗 শ্বেভনাগে পদ্মে চ। অর্ক: ः रेक नूर्य। स्मनः जनाषुज-ाः। कोनानः जनतकत्याः॥ मू ্রাদিভি ভানো রয়েনাগ্নে রদাণ े कः। জলেভ্যে জন্ম শোভাভি: স্বাদ সম্দার্ভি: ॥ ভানোঃ ाबार मूक्त्रुवारिणिः॥ 🗱॥ ि उ ब्रक्को यथा। त्रवि निबः हन्मः া বতুল্যশ্চন ভানুরল্ সূর্য্কান্তঃ েব পদারাগৌ চ। অগ্রিরত্ন• সূগ্র-ান্তো প্রাপদারালো চারদা ্ह• দন্তবন্তে অধ্র*চ। জলজ 🚭 পা ভা জলজা চামৌ শো ভা চেভি াক পদ্মকান্তি:। এবং সরোজা িশোভা সরোজস্পরিশোভা े स्क नदाकादि कन्मः। क्रम्सः। জিশোভা স্মূদিশ্যজিশোভাগ ः श्रम्राजि क्रांतिजाः। ইजि क

विकन्नण जाया॰ २ (भ्रष्टवरक छै-फिर्श्वर्थन॰ नाम > क्ष्मूम॰ ॥

तककः भू व्यानिवृक्षः॥ वक्ष्ववृक्षः
॥ तकवत्रः॥ वन्नाणी । हेजि
समिनी ॥ विरामिती। हेि मक् तक्षवि ॥ तक्ष्याः॥ तक्ष्यः॥ तक्ष्याः॥ तक्ष्यः॥ तक्ष्यः॥ । हेजि त्राक्षियः॥

রক্তকন্দ: পু॰ বিজ্ঞন:।ইতি ছেন-চন্দু:।। রাজপলাণ্ড:।। রক্তালু:। ইতি রাজনিঘন্ট:।।

त्रक्क न्मतः भू॰ भुवान । ইতি जि-का अम्परः॥

রক্ত কনলং ক্লা রক্তবর্ণেৎ পলং।
তৎপর্যায়ঃ। কো কনদং ২ রক্তাস্থোজং ৩ স্বকাকনলং ৪ শোণপদাং ৫ রক্তোৎ পলং ৬ অর্বিন্দং ৭
রবিপুষং ৮ রক্তবারিজং ৯। অস্ত্র গুণাঃ। কটুরং। ভিক্তব্বং। মধুর ব্বং।
পিত্ত কফ্বাত শান্নব্বং। সন্তর্পন কারণব্বং। বৃষ্যবৃঞ্চ। ইতি রাজন নিয়ন্টঃ।।

त्रक्ष कथण ही त्रक्तार भग-। यथा।

हन्त ना छक् कर्भ ते अक्षर्य क जूग
क्रिनिः। कर्नलः स्मितः भोजः

क्रोति त्रक्ष स्वाः॥ क्रिनं ध्रेभ त्रभूर्भिक्ष भाविन र्छ भिन्न-

তৈ:। অর্ঘেদ্বলি রাজান সম্রেণ দিল সত্তন:।। ইতি পাদ্মোত্তর খণ্ডে ১০ অধ্যায:।।

त्रक्तत्र वीत्रकः भुः लाहिज्यर्गकतः वीत्रभूष्मवृक्षः । जान्करम् ३७ हिन्तीज्ञाया । जद्भर्यग्रायः । त्रकः भुत्रयः २ गर्गमस्मृतः २ हश्वीस्रम् भः ८ कृतः ८ ज्ञुम् वी ५ त्रविश्वियः १। ज्ञाग्र ख्याः । कर्षेत्रः । जीक्षत्रः । विर्मायनदः । द्रायाय त्र्य कञ्जि स्व विष्ठत्रद्रशः ३७ त्रास्तिविषः

রক্তকাঞ্চন: পু॰ স্বনামখ্যাতপুস্প বৃক্ষবিশেষ:। তৎপর্য্যায:। বিদ-ল:২ চমরিক: ৩। ইতি শব্দরত্বা-বলী।। কাঞ্চনাল: ৪ তামুপুস্প: ৫ স্বদার:৬। ইতি জটাধ্র:।।

রক্তকাণ্ডা স্ত্রী রক্তপুনর্বা। ইতি রাজনির্ঘটঃ॥

রক্তকাপ্ত শ্রী পত্তক। ইতিরাজ-নির্ঘণ্টঃ।। লোহিতবর্ণদাক্ত চা।

রক্তসমূদ জ্লী রক্তকৈরব । ইতি জটাধরঃ।!

রক্তসমূন: শু॰ পারিভদুঃ॥ ধর্ন-বৃক্ষঃ। ইতি রাজনির্ঘটঃ॥

রক্তকেশর: পৃ• পারিভদু:। ইতি রাজনিঘণ্ট:॥ পুরাগত্ক:। ইতি রয়নালা॥ त्रक्रित्रव॰ ली त्रक्रम्पूपः। इंडि क्रिष्तः॥

রক্তকোকনদ প্রী রক্তোৎপদ। ইতি কটাধর:।।

त्रकथितः शृ तक्वर्गथितित्वृक्षः।
ज्रान्धाः। त्रक्रमातः २ जूमातः
च्रान्धाः। त्रक्रमातः २ जूमातः
च्रान्धाः। त्रक्रमातः १ यूशक्रमः ४
ज्राप्थितः ३ ज्रकः २०। ज्रमः
च्राः। क्रूवः। ज्रक्षः। क्वायपः।
ज्रुवः। ज्रक्षः। ज्यामवाजाम्
वाज्रुवः ज्रुवः। ज्रामवाजाम्
वाज्रुवः ज्रुवः। नामिष्कः। ইज्रि

রক্তগন্ধক লী বোল । ইতি রাজ-নির্ঘণ্টঃ ॥

त्रक्छन्यः भू जोगाः त्रक्ष्यस्यागः । जम्र निरानाहि छन्यन्यस् पृष्टेवरः ॥ जम्रोवधः यथा। विषय्धे कि-कंट्रेकः हुर्गः भीजः स्त्रहिव। जिन-कृत्यन मःयूकः त्रक्छन्यः खिया स्त्र ॥ देखि गाक्ष्य २०७ व्यथ्रायः ॥

রক্তম: পু॰ রোহিতকবৃক্ষ:।ইতি জটাধর:॥

अल्भी जी म्र्वाविष्णयः। गाँठिया-म्र्वा इंडि ভाषा। यथा। मर्क्षेय जे क गालामग्रा॰ अल्भी अल्भिल हा। इंडि क्य प्रिम्युका।। इक्टन्तन ली उक्तवर्गान्सन । उ পর্য্যায়ঃ ! তিলপণী ব পতাঙ্গ ৩ त्रञ्जन ८ व्हरन्तन १। इन्डामद्रशा ভানুসার ৬ ভানুবৃক্ষ: ৭ চন্দ্ৰ ৮ । ইতি রন্মালা ॥ লোহিত• ১ খোণিভচন্দন ১০ রক্তমার ১১ ভামুসারক ১২ ক্লু দুচননে ১৩ অ र्कंटन्ह्रंन ४८। ইতি द्राञ्जनियन्तः॥ ब्रङाङ्ग ३६ भुवानकन १५। इंडि ভাৰপুকাশঃ॥ অস্য গুণাঃ। অতি भी उनद्भा विक्रद्भा देक्शा ভাসুদোষ ভূক পিত্ত কফ কাস জুর ভাঙি জন্ত বমথু ত্যা নাশি ত্বঞ্চ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।; অপিচ **। त्र ङ॰ भी ङ॰ छक मा**मू ছ फ्रिं ভৃঞা-সু পিত্তহ্ৎ।পিত্তনেত্র হিত• বৃষ্য• জুর বুণ বিষাপহু॰ ॥ ইতি ভাব-পুকাশঃ।। জান্যন্ত। রক্তপিত্তহর• वनाः ठक्क्षाः तक्रान्ताः । इंडि त्रांबवल जः ॥

রক্তিক: পু॰ জুপবিশেষ:।রাক্তিতাইতি ভাষা।তৎপর্যায:।
কাল: ২ অত্যাল: ৩ কালমূল: ৪
অতিদীপ্য: ৫ মার্জার: ৬ অগ্নি: ৭
হক: ৮ পাবক: ৯ চিত্রাক্ষ: ১০
মান্ত্রক: ১ ক্রেড্রং । ক্রেড্রং ।

রক্তত্ত্তঃ পু॰ শুকপক্ষী। ইতি রাজ-নির্ঘণ্টঃ ।। লোহিতমুখ্যুক্তে ত্রি ।। রক্তত্ত্তকঃ পু॰ ভ্নাগঃ। ইতি রাজ্ নির্ঘণ্টঃ ॥

রক্তত্ণা জী গোমূত্রিকা। ইক্তি রাজনির্ঘণ্টঃ।।

রক্ত ত্রিবৃথ স্ত্রী রক্তবর্ণ ত্রিবৃতা। লাল্ড তেউড়ী ইতি ভাষা। তৎ পর্য্যায়ঃ । কালিন্দী ২ ত্রিপটা এতা মুপুল্লি-কাণ্ড সলবর্ণা ৫ মস্রী ৬ অমৃতা ৭ কাকনাসিকা ৮। অস্যা গুণাঃ। তিক্তত্ত্বং। কটুত্বং। উফত্বং। রেচং নত্বং। গুহণী মলবিষ্টম্রহারিত্বং। হিতকারিত্বঞ্চাইতি রাজনির্ঘটঃ।। রক্তদন্তিকা স্ত্রী, চণ্ডিকা। যথা। ভক্ষয়স্ত্যান্ত তানুগুন্ব বৈপুচিত্তান্ महामूत्रान् । त्रका पष्टा खिवर्डि माफिनी समूत्माशमाः ॥ उटा मा॰ (मवठाः सर्ग मर्ज्यातात् व मानवाः। स्रवर्षा व्यास्त्रिय्डिमः उठ॰ त्रक्रपष्टिका॰॥ ইতি मार्कर्ष्ट-यश्रात् (मवीमाश्च्राऽ॰ ॥ त्रक्रमा की निक्ता।। विविद्यिका ,1 ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।।

রক্ক পু স্ত্রী কপোতঃ।ইতি কে চিৎ।।রক্তবর্ণচক্ষুরিশিপ্টে ত্রি।।

রক্তধাতুঃ পৃ• গৈরিক•। ইতি ত্রি-কাওশেবঃ।। তামু•। ইতি রাজ-নির্ঘটঃ।। রক্তবর্ণধাত্যাত্রঞ্চ।।

রক্তনাল: প॰ জীবশাক:। ইতি রাজনির্ঘট:।।

রক্তনাসিকঃ পুণ পেচকঃ। ইতি শব রহাবলী।। লোহি সনাসাযুক্তে ত্রি

রক্তপঃ পুণ রাক্ষসঃ। ইতি মেদিনী॥ রক্তপানকর্ত্তরি তি।।

ন্তপ্রিকা স্ত্রী নাকুলী। রক্তপ্ন-ন্বা। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥লোহিত-প্রঞ্চা।

प्रक्रभरी खी क्रूष्ट्रक्रविष्णवः। गथा
। णभीशवादक्रशनी मभक्राञ्जलि
कादिका। इकि क्रीस्द्रः॥

त्रक्रभयः पुः ही त्रक्ष्यंक्रमनः। स्ट्रभयायः। त्रक्ष्यदाक्रः त्रख्नार भनः २। काकन्तः १।

हेज्यतः ॥ व्यम् भूमारः वृद्धाः
रेयमा ननिज काष्ठार्थाः । व्यक्षाः । व्य

तक्रमहादः श्रु व्यामाक्रकः । है विकास क्रिका । त्याहित्र । । त्याहित्र ।।

त्रक्रभाठा जी बलोका। ইতি अहा त्रुवनी ॥

রক্তপাদঃ পু॰ শুকপক্ষী।ইজি 🤫 চন্দুঃ॥ সোহিত্তচর ণযুক্তে 🖰 🕏

ब्रक्तभाती खी व्यक्तान्।। रूप्पारी । ইতি রাজনির্ঘটঃ।।

त्रक्रभाविनी खी जामीका। ই ि ज्ञाजनिर्वण्यः॥

वङ्गार्थी भू॰ इङ्गान्नीनः। हिन्स वङ्गारुवनः॥ क्रक्नावर की श्रिक्ष ता । इंडिश्वा । वनी ॥ को श्रिक्ष मूर्गा ।

हातियः जी स्वाभूञ्चः। ইতি भाषत्रदावनी॥

্রজিপি**ওক: পু• রক্তাল্:। ইতি** রাজনির্ঘণ্ট:॥

্রজাগন্ত• লী রোগবিশেষঃ৷ ভস্য नित्तानं यथा । धनुष्ठतिक्वाछ । अ-খ্যাতো রক্তপিত্তম্য নিদান পুব-হালাহ । ভূশেষে তিক কটুমু लवादि विमाहि छिः॥ (कामुरवा-্লেকৈ শ্চানৈয় স্তদুক্তৈ রতিসে<u>ং</u> নিটো:। স্বপিত পিত্তলৈ: পিত্ত• पुरः ब्रक्क्यमह्र्यि ॥ ७ निथ स्त ল্ড রপত্ব মাগম্য ব্যাপ্র বং স্তন্ত। ি ব্রক্তস্য বিক্তেঃ সিংসর্গাদ্দ্ **%ारिशा गञ्जर्गानुर्ख्यू ब्र**क्ट র াপ্রদিশ্যতে । পুভবত্যসূত্র স্ত*া* 🖂 প্লীহতে। যক্তক্চ তত্ ॥ িরে। গুকুত্ব মক্চিঃ শীতেছা মধু ে ः क्यः। इम्मि ज्यु इमि दिख्य 🦖 🤉 কাশঃ স্থাসো ভূমঃ ক্লমঃ৷৷লো ্িজা হলোহিতো মুৎস্যা মগ-্যান্যঞ্ব বিজ্বঃ। ব্লক্ত হারি দু হ-िङ वर्गडा नयना दिष् ॥ नील (ला-হি শ্পীতানা বঁণাৱানবিচেতন গা ্জু তদৰ্থ বৰ্মিई• ভবত্যমিন্ ভ

विवर्डि । উष्कु • नामाकि कर्नारेम्। र्प्याप् रामि खरेन तथः ॥ व्यनिजः (द्वामकृरेणक मगरेख ख< भुवर्त्त्र ।</p> উদ্ধৃ • সাধ্য• কফান্দ্রমাৎ ভদ্বির-চন সাধিত ।। বস্থৌবধঞ্চ পিত্তস্য विद्रादका हि वद्रोवधः। अनुवक्षी कः का यक उब उन्नामि मुक्षिक्ट ॥ कवायाः सारता यम् विमुक्त (भूगू लाहि जा: । कर्षे जिक कषाया वा रय निमर्गाए ककावहाः ॥ अरथा या-প্যঞ্চ নামুম্বাৎ তৎ পুবর্জন সা-थन । अल्लोयश्य शिखन । यमन ননু চৌষধ ।। অনুবন্ধি চ লোপস্য শান্ত পিত্ত নরস্য তত্। ক্ষাযাশ্চ हि जा उम्र मधूदा এव (कवलः॥ कक् माक् ज मःग्रुष्ठ ममाध्र म्थनायनः। त्रमञ् পुতिলোমত্বাদসাধ্যাদৌ-ব্বস্য চ।। নহি সংশোধন কিঞ্জি-मग्र ह शुक्तिवामन । भाषन পুতিলোনঞ্বজপত্তে বিনিজ্জিত• ॥ এব মেৰোপশমন সর্ব শোধন নিষ্যতে। সংস্প্রেश দোষেষু স-र्बथा एफ्न श्रिकः ॥ उत्र ।। उत्र ।। उत्र ।। গনন শোবান্ত ইব লফ্যতে। উপ-দুবাশ্চ বিক্ত• ফলত স্তেম্ চা**ধিক•** ।। ইতি গাৰুডে >৫০ অধ্যাय: ॥ # ॥ তসে
) বিধ বথা। ত্রিবৃতা ত্রিফলা

শ্যামা পিপুলী শর্করা মধু ৷৷ মোদ কঃ সন্নিপাতান্তো রক্তপিও জুরাপ হ: ॥ বাশাযা বিদ্যমানাযা মাশা থা জী বিভস্য চ। ব্লক্ত পিভী ক্ষ্মী কাশী কিমৰ্থ মবসীদভি॥ অটক্ষক মূদ্বীকাপথ্যা স্থাথ: সশর্কর:।ক্ষৌ দুচ্যে: কাশন খাস রক্তপিত্ত নিবর্হ-ृ **१:।। ইতি গাৰুডে ১**৭৪ অধ্যায়:।।**#।।** অপিচ। তত্র রক্তপিত্তস্য নিদানপূ-ं दिकाः मः शास्त्रि मारु। वर्ष वरायाम শোকাধ্ব ব্যবাধৈ রভিসেবিভৈ: । ভীক্ষেফ ক্ষার লবণৈ রাদ্র: কটুভি (त्रव ह।। भिख• विम्थः यखेश र्विन হত্যাশু শোণিত। তীক্ষ মরিচাদি । উষ্ণে গণ্নতাপাদি:। ক্ষারো যব कात्रापिः। विषयः पृषिछः। यख्रा यकातरेन छ रेन छीक्नामि ভि:। छरेन রিতি বহুত্বেন তীক্ষাম লবণ কট্ঞ वर्माप्तया शृशास्त्र । विष्ठ्ि पृषय-তি।। #।। রক্তপিত্তস্য সামান্যল-कृ । नार । ততः পুवर्त्त तक ग्-জ্ব বাধে। দ্বিধাপি বা। ব্লক্তমিত্যু-भनकृष• । **७९म-म**र्गि **भिख्यः** । অতএন রক্তঞ্চ পিত্তঞ্চ রক্তপিত্ত মিতি দ্বন্দ্ব ইতি সুশুতঃ। রক্তঞ্চ ভৎ পিত্তঞ্চি, রক্তপিত্ত রাগ পুণ্ডে পিত্ত মিতি কর্মাধার্য ইতি

চরক: ॥ মার্গানাহ। উদ্ধৃ - নাসা-कि कर्नारेम्य स्मिष्ट् यानि च्टेम त्रथः। প্রপাত রোমক্পৈশ্চ সমস্তৈ ভং পুবর্ত্তে ॥ স্পাতিত মতিস্পাতি ॥ 🗱 ॥ भृर्वतभग्राष्ट्र। जननः भी छ-काभिषः कथेध्मायनः विभः। (लाङ्-গন্ধিশ্চ নিশ্বাসো ভবত্যপান্ ভবি-याजि ॥ #॥ विनिष्ठे॰ क्रम मारु। नानु नभाषु मानु । भिह्निक क्कानिङ । अतिवाक्न अत्कन्क তনুৰক্ষঞ্চ বাতিক ।৷ রক্তপিত্ত ক্ৰায়াভ কৃষণ গোমূত্ৰ সন্ধিভ 1 মেচকাগার ধূমাভ মঞ্জনাভঞ্চ পৈ-बिकः ॥ मः मृष्टे विकः मः मर्गाब्रिः লিক্ত সামিপাতিক ৷ সপাঞ্জ ইবৎপাণ্ড। পিছিল মমুরপিছ ह-বিযুক্ত । কৃষণ কজ্জলাভ । মেচক । চিক্লণ কৃষ্ণবর্ণ। অঞ্জন শোতোঞ্জ-ন• তদাভ•॥ #॥ স•সর্গাবিশেষেণ মাৰ্গভেদ মাহ। উদ্ধৃ গণ কৃষ্ণ সংস্-ষ্ট মধোগ॰ মাক্তানুগ॰। দ্বিমার্গণ কফ বাভাভ্যা• উভাভ্যা• **ত**ৎ **প্**-वर्द्धाः अभिमृतानाः । (मोर्बन्ध শ্বাস কাস জ্বর বম্থু মদাঃ পাওতা मार गृही **जुल्क (यात्रा** विमार यु-ধৃতি রপি সদা হৃদ্য তুল্যা চ পীড়া । ভৃকা কোপ্তম্য ভেদঃ শির্মি চ

্বৰা প্ৰি নিষ্ঠীবনঞ্চ। ছেষোভুক্তে ্ঠিশাকা বিকৃতি গ্লপি ভবেদুক १ व वित्रमाः॥ छेभनमं छेभन्याः ा 🖽 🎁 र्मा॰म भूकालगाञ्चाहिः ॥ ॥ नायुद्धापिक भार । এक ा व्याना जादाः विकायः यापा ः 🤃 विष्याय **मनावाः नामः** 🔐 ঃভিবেশবৎ ॥ উদ্ধৃ - সাধ্য याना मनावृः यूगनमुखः । ্ল প্ৰতিঃ ক্লীণদেহ স্তুত্বস্থানশ্ৰ-ाक्षा मारा भारा वक 🤃 গৰতো নাতিবেগণ নচোণ্যি-🥳 🔞 ভক্তপিত্ত• সুখে কালে সাধ্য• 🤫 🖘 मृत्र ॥ जुत्य नात्म स्मि 🄏 🤏 (रयाः ॥ 🕸 ॥ व्यनाव्य भाष्ट्र। ালে পুক্ষালনাভ প্রথিত মিব চল 🐃 ন নিছে। নিভৰা নেদঃ পুষা-अः वक्षियं यमि वा शक्षक वा ्रमा छ । यद क्ष यह नी ल ज्म মান বিশপ• যত্র চোক্তা বিকারা স্ত জ্জা <mark>রক্তপিত্ত। সুরপতি ধনুবা</mark> খন্ত বৃশ্য বিভাতি॥ উক্তা বিকারা क्षी वन्।। स्यः। भूत्र शक्यि धनुषा ज्नाः নান বর্ণ ॥ যেন চোপছতো রক্ত तकि खिन गानवः । शामाप्रमारः विवहाने उहानाथ भनः मयः ॥ বেন র জিপাত্তেন উপছতে। মন্ধ্য: ||

দৃশ্যু ঘট পটাদিক বিষয় রক্ত প শ্যক্তি স নশ্যক্তি বিষ্চাপি অদৃশ্য মপীত্যর্থঃ॥#॥ অরিষ্ট নাছ। লো-হিত ছর্দযেদার বহুশো লোহিতে-কণ:। লোহিভোদ্গরদশী চ নিযত রক্তপিত্তকঃ ॥ লোছিতোদ্ধারদশী ব্যাধি মহিয়োদার মপি লোহিত পশ্যতি ইত্যর্থ:।। 🕸 ।। অথ রক্ত-পিত্তম্য চিকিৎসা। পিত্তাসূণ উদ্ভ (यमारि) भुवृत्व विलिन। २मछ: । इट्या भुर्गे दाग श्रीर ख्या खुवारिक्ट. ॥ मालि यश्चिक नीवात क्वात्रम्य भूगाधिकाः। न्यागाकान्त পুষ্ড্ৰু ভোজন বক্তপিভিনা ।। श्रियञ्चः कञ्चः ॥ समूत सुन्न ठनकाः जम क्षाज्भीकनाः। शुन्याः मृश যুষার্থে কল্পিডা রক্তপিতিনা।। দা-ডिभामनकः विवागमार्थं हालि हा-গযেৎ। পটোল নিয় বেত্রাণু প্লফ-বেত্তস পল্লবাঃ॥ শা চার্থে শাকসা-जारानाः ত धुनीयामत्या हिलाः । পারাবতান্ কপোভা শ্চ লাবানুক্তা-क वर्डकान्॥ भाभान् कशिक्षना-दिशान् इतिशान् काल शृहकान्। त्रङ**शिख इ**त्रान् विन्धानुमा॰ एउया॰ ॰ भुषाज्ञत्य ॥ देवस्त्रानन्त्राः क य्**ठ ज्हान् नरिमद्य**न् । ककान्रा

যুষ শাকে দদ্যান্বতানুগে রসং॥। পथ्यः ग जीन यृष्ये । मिजः नाज শক্তি:। ধান্যাক ধাত্রী বাসানাত मुक्का भर्भद्रेया र्स्निः॥ द्रक्रभितः জ্ব দাহ তৃষ্ণা শোষঞ্চ নাশ্বেৎ 1थान्याकारन र्हिनः।। 🕏 । द्वीरवत्र मूट-পল পান্য চন্দ্ৰ যপ্তিকামৃতা। উ यीत्रक वृष रेक्टमाः कृष्णः नम्भू म र्कत्र ।। भाषरयाञ्चन मान्। हि इक-পিত্ত প্ৰশাতি। রক্তপিত্ত জ্ব-जु। गु॰ ज्या॰ मार्॰ जुत्र॰ जथा।। क्षा भूदानः भीन मानीय क्या अमा कः ল দৃত । ভৰীলাধার বীল ত্বক্ निता न्नु भगावत्र ॥ ७७ खमा जूनां नीवा भारत्वत जना ख्रा । जिमिषीत १ कि लि 🗞 जू ये 🖫 ত: শীতদীক্তে ৷৷ তানি সম্মাণ্ড থগুনি পীড়বেদ্ট বাসমা। যত্নত **ख**न्जन• नोड्वा भूनः भाकाय थात्र-(ग्रा अया ७ मार्यम् चर्म ठामु পাত্রে তত্তঃ ক্ষিপেং। ক্ষিপ্তা ত্র ঘৃত পুস্থ কথাও তেন ভৰ্জাৰেৎ ॥ नथ्वनं उताःनाकः उद्धनः उव নিঃক্ষিপেএ। স্থিতাযাশ্চ তুলা তত্র किथुः उद्मिर्दे भारत ॥ मुभाक পিপ্লনী শৃতী জীরাণা ছে পলে প্ थ्क्। भृथक् भनार्छः दन्याक भेडि-

ना महिष्ठ पृष्ठ ।। हुर्ग (म्याः किर्मः खब घ्डार्कः कोषु मान्यस्ता वन **७८भव भिजः थारिम**्याणि द्वाः यथा ॥ थ७ ज्या ७१ सः ব্ৰক্তপিত্ত বিনাশ্যেত। পিতে গ্ৰ ত্বা॰ দাহণ পুদর ক্ষতা বিশ্ ।। স্বরভেদে সহদূোগ কাস ্বত का उ॰ का य॰। ना ना या उठ्ठा व्यास्त यः दृःहता दलदर्जनः ॥ 🔫 🤻 💎 न्याखावलहः॥आम् जार्कः ्य कन्नः कन्नाट क्षीतः ठजूर्थः । 🙌 🕆 তুৰ্গ্য ঘূত্ৰ পৰ্য সিত্যা কল্প যা।। ঘৃতশেষ পচেত্তভূ গ 🗽 লেহ্যেৎ সদা। রক্তপিভ **शित्रः क्यः धामक नाम**्यः শতবেরীপাকঃ। ইতি রক্ত 🕅 🐇 ধিকার:। ইতি ভাবপুকাশ: 👍 রক্তপিত্ত। জী রক্তমী। গাঁলি দ্রা ইতি ভাষা। ইতি শব্চন্দ্রিकা 🛭 ज्ञ अपूनर्ने वा खी ज्ञ वर्ण शूनर्नवाः 🔀 । **७८**१र्य) । कृत। २ म**७व१**-প্রিদ। ৩ রক্তকাণ্ড। ৪ বর্ষকেতু: ৫ লোহিতা ৬ রক্তপঞ্জিমা ৭ বৈশা-থী ৮ রক্তবর্ষাভূ: ১ শোক্ষ্মী ১০ রক্তপুশ্লিক। ১১ বিকম্বরা ১২ বিষ-म्रो २० शुर्विषा ४८ मादिनी २० वशाखवः ३५ भौगितवः ३१ छोनः

्रेप्ट भून उतः २० नदाः २०। श्राप्ट छ्वाः। जिङ्कद् । मात्र क्ष्यः। जिङ्कद् । मात्र क्ष्यः। जिङ्कद् । मात्र क्ष्यः । हिङ्क्याः। इङ्क्ष्यः। व्याप्ट व्याप्ट । हिङ्क्याः। व्याप्ट व्याप्ट । हिङ्क्याः। व्याप्ट क्ष्यः। व्याप्ट व्याप्ट । हिङ्क्याः। व्याप्ट क्ष्यः। व्याप्ट व्याप्ट । हिङ्क्यः। व्याप्ट व्याप्ट । हिङ्क्यः। व्याप्ट व्याप्ट । व्याप्ट व्याप्ट । व्याप्ट कृष्यः। व्याप्ट व्याप्ट । व्याप्ट कृष्यः। व्याप्ट व्याप्ट । व्याप्ट व्याप्ट । व्याप्ट व्याप्ट । व्याप्ट व्याप्ट । व्याप्ट कृष्यः। व्याप्ट व्याप्ट । व्याप्ट व्याप्ट व्याप्ट । व्याप्ट व्याप्ट व्याप्ट । व्याप्ट व्याप्ट व्याप्ट । व्याप्ट । व्याप्ट । व्याप्ट व्याप्ट । व्य

সভাপ্যক: পুণ পলাশবৃক্ষ:॥রৌ-হিন্তকবৃক্ষ:। ইতি জটাধর:॥ শ্রুটি:॥ শাল্মলিবৃক্ষ:। ইতি বিজ্ঞান্যতি:॥

র ু।নির্ঘণ্টঃ ॥

্লেশ্রা **জা শাল্মলিবৃক্ষঃ। ইতি** জ**ু রঃ।।**

াত । কাজী লজালু: । ইতি
আন নিমুকা॥ রক্তাপুননবা॥ ভূপািত্য ইতি রাজনির্ঘণ্ট: ॥

बक्रुबी खी भावे निवृक्षः। इंडि को १४वः ॥ कवा ॥ व्यावर्वनी न जा ॥ नागरमनी ॥ कक्षीवृक्षः ॥ उंडे का छी। इंडि ब्रांकनियंकः ॥

রক্তপ্রক॰ ক্লী বৃক্ষামূ•।ইতিরাজ নিঘটঃ॥

রজপুসবঃ পৃ• রক্তকরবীরঃ।।রকা-শ্লানঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।।

्राम् भूनर्ज्यः १२,नयः २० नयः २०। রক্তফলः পু॰ वर्षेत्कः। ইতি कर्रा-

রক্তফলা জ্রী বিদ্যিক্তা। ইত্যমর:।। স্বর্ণবল্লী। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।।

त्रक्रिक । पूर्युः २। इंडि इस्मिन्नुः॥

ब्रक्तवान् हः क्ली निन्म् वः । इंडि. स्वावनी ॥

রক্তমঞ্জর: পু॰ নিচ্লবৃক্ষ:।ইভি বিকাওশেষ:॥

प्रक्रमथ्माः भू तक्वर्णमथ्मादिएणवः। यथा। या त्रकात्मा नाजिमीर्घा नहात्मा नाजिम् एला तक्वमथ्माः मञ्कः। भीरा काः भूषिकृषीभारताःमा नाभ श्रां विश्वएतायवयमा। ইতি ताक्वनिर्घणेः॥

রক্তম্লকঃ পু॰ দেবসর্যপৃক্ষঃ। ইতিরাজনির্ঘটঃ॥

রক্রম্শ। স্ত্রী লজ্জালুবৃক্ষ:। ইতি রাজনির্ঘণ্ট:॥

त्रक्तिसः भू॰ भूतिस्तांभविष्मितः।

ठम् नक्षनः यथा। विमु गूकः मनः

वनः तक्षाः तक्तिस्तः। ग्रावः

ग्राविष्ठि (याजनीयः॥ ग्रावः

धः। यथा। हन्मृभूः वहा भूषा

ज्ञिस मूत्रमातवः। स्तिमाजिविषा

माबी लिश्रकी मूख हिबक ॥ ধান্যক ত্রিফলা চব্য বিভঙ্গ গ सिनिञ्जनी। त्रुवर्गभाकिक (व्यावः (हो कारतो नवगवयः ॥ अज्ञानि हेक भावानि मःगृशीयाद भृषक् পৃথক্। দ্বিষর্য হতলোহ স্যাচত্ क्षर्या मिठा ভবেए।। निकासपृष्ठ-कर्यः न्यामस्थी कर्माम्ह ख्युरलाः। ঁ বি**ধিনা** যো**জিতৈ** রেতৈঃ কর্ত্তব্যা গুটিকা শুভা ॥ চন্দুপুভেতি বি-थ्याञा नर्दाताग नुगामिनी । नि-इष्डि विः भिक्तिः (मङ्गिन् कृह् मुष्ठे বিখ তথা।। চত্তসু শ্চাশ্মরী স্ত-দ্বং মূত্রাঘাতা॰ ব্রযোদশ। অও वृक्षिः भा अतागः कामनाक इती-यकः ॥ कामः चामः তথা अध মগ্রিমান্দ্য মরোচক । বাত পিত্ত क्क वडाधीन् वन्डा व्यडा बनायनी ॥ সমারাধ্য শিব তমাৎ পুষত্নাৎ **७** िका भिनाः। शुष्टिवाः म्हन्तुनाः যমাৎ তথা हन्तु পুভা মৃত। ॥ ইডি ভাবপুকাশঃ॥

রক্তনোক্ষণ ল্লী শোণিত সুবি:।যথা
।বেদনোপশ্মার্থায় তথা পাক্তশালা মান চ। অচিরোৎপতিতে শোল থে ভোণিত সুবিশ্বশ্বের ।। চরেৎ কর্তাৎ । একতক্ক কিনাঃ সরা त्रक्ताक्षण (सक्छः । त्रक क्षि (वस्ताम्न छहिनाछि नहारि क्ष्य ॥ विवर्शकिति म्हात् वृत्य क्ष्य छ (वस्ता म विष्णत्य विष्णप्य कालोकािकः भरि त्रभि॥ हि ने-छ मावण्यत्रिक्डात्ननात्त्यः। द्राक्र छावभुकानः ॥

त्रक्यि खी मिक्षिष्ठा। ইक्टिक्टे ध्रतः॥

রক্তযন্তিক। স্থী মঞ্জিষ্ঠা। ইকি:

রক্তবাবনালঃ পু• তুবরযাবনালঃ ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥

রক্তরেণু: পু• সিন্দূর•।। প্রাঞ্জ কলিকা। ইতি মেদিনী।। পুঞ্জাঃ ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।।

द्वक्रात्रपूका ज्वी भनागकनिकः एउ. . भर्यायः । वैक्षात्रिका २ १ ३ मद्याना ॥

রক্তরৈবতক• শ্লী নহাপারে 🧀 🕏 ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥

तकनभूनः भू तक्वर्वम्निव का ख्रान्यायः। स्रश्तकन्तः २ का भीष्यभावकः ८ भृष्भाधः ६ भृज कन्तः ७ यदानष्टेः १। अभ्य ध्याः। मृद्यानभ्य स्रृद्धैः कर्षुकन्तः नाम ग्रन् भूष्यानभ्य सर्वृद्धैः कर्षुकन्तः नाम ग्रन् भूष्यानिम्हिः क्षायः। भाग महाः য মুশন্তি স তিক্তং সূর্যো লবণ। মন্থি বদন্তি॥ ইতি রাজনির্ঘটঃ॥

त्रङ्गा जी काकजूखी। ইতি রাজ-নির্ঘণ্টঃ।।

রক্তলোচন: পুশ্কপোত:। ইতি হেন্
মচন্দু।লোহিতলোচন্যুক্তে ত্রি।।
রক্তবটী: স্ত্রী ন্স্রিকা। ইতি ত্রিকা
গুশেষ: ।।

त्रकृवत्रही खी मन्त्रिका। इंडिक्हा-थ्रः॥

त्रक्डवर्गः श्रृ॰ पाडिमः॥ किःम्कः॥ नाका ॥ वस्क्रः॥ निमाष्ट्रयः॥ स्श्रुश्रश्रः॥ मिक्षिः॥ ইতি রাজ-নির্ঘণ্টः॥

রক্তবর্ণ: পু• ইন্দুগোপ:। ইতি রাজনির্ঘণ্ট:॥

त्रक्वकाः भुः श्वाबीकः । ইতি শব্দন্দিকা।।

রক্তবর্ষাভূ: স্ত্রী রক্তপুনর্ণবা। ইতি রাজনির্ঘণ্ট:।।

त्रक्तवननः भू॰ मःन्यानी। ইতি ছেম-চন্দু:।।

রক্তবাতঃ পু॰ রোগবিশেষ:। তা-স্যোবধং। যথা। নারিকেলস্য বৈ-মূলং ছাগ ক্ষীরেণ সংযুতং। পি-বেছ ত্রিবিধ স্তন্ধ্য রক্তবাকো বি-নশ্যতি ॥ ইতি গাক্তে ১৯০ व्यथ्यायः ॥

রক্তবালুকা জ্রী সিন্দুর•। ইতি শব্দ রত্নাবলী।।

तकविन्मः भूः त्रक्किगा। यथा। तकः विन्म् यंना ज्यो भठउऽमऽ मत्री-त्रजः। मग्रू भठि स्मिन्। स्र भूगाग समामृतः॥ ইভि मार्कास्य प्रियोगामान्त्राऽः॥

রক্তবীজঃ পুশ দাডিমঃ।ইভি রাজ-निर्घणेः ॥ यमुत्रविष्मयः । म ह শুক্ত নিশুদ্র সেনাগতিঃ। দেব্যা रुजः। यथा। भनायनः भन्नान् मृक्षे रिन्छ।न् माङ्गनार्षिङान्। याष् मन्त्रायायो कृष्का त्रकवीरका महा-**সূর: ।। রক্তবিন্দু র্যদা ভ্রেমী পত-**ত্যস্য শরীরতঃ । সমূৎপত্ততি भितिना उर भुभाग उनामूतः ।। যুযুপে স গদাপাণি বিন্দুশক্ত্যা ম-, হাসুর:। তত শৈচন্দ্রী মবজেুণ রক্ত: বীজ মতাডয়ৎ II **স্বলিশেনাহত**; স্যাশু ভস্য সুসাব শোণিত । সমূত্তত্ ততো যোখা ভদুপা ভৎ পরাক্রনা: 🛭 যাবস্থ: পতিভা স্তস্য শরীরাদুক্ত বিন্দবঃ। তাবস্তঃ পুৰ-या काठा खबीर्य वन दिक्रमाः॥ ভস্যা হতস্য বহুধা শক্তি শূলাদি-ভি ভুবি॥ পপাত যো বৈ রক্তৌ:

ত্ব তেনাসঞ্তশো **২সুরা:়**।। তৈ শ্চাসুরাস্ক্ সমূতৈ রস্রৈ: সক-ল জগৎ। ব্যাপ্ত নাসীত্ততো দে-दा ভर भाकपूर कडमा ।। जान् वि-वश्वान् जुज्ञान् मृष्ट्री हिंखका भार म-্ত্রা। উবাচ কালী চামুণ্ডে বি-छत्र रहन चक् ॥ महज्र भाउ সমুতানুক্ত বিন্দূন্ মহাসুরান্ । द्रक्वित्नाः भुजीह षः व्यकुगातन বেগিতা৷৷ ভক্ষযন্তী চর রণে ভদুৎ-श्रवान् महाभूद्रान्। এ३ (भव क्यः দৈত্য: ক্ষীণরক্তো গমিষ্যতি ।: ভক্ষ শাণা স্তুষা চোগু। নচোৎ পৎ-় ন্যান্তি চাপরে। ই হুক্ত্রো ভা• ভতো নেরী শুলেনাভিত্যান তথা মুখে। ল সাবী জগৃহে রক্তবীক্ষয় শো। **1951। उम्रा इर स्र (स्टाह** वर् ল্লুব শোণিত ৷৷ যত ভাচ ভাষ ক্ত্রেণ চান্তা সংপুতী हতি। ন্থে সমূদ্যতা যে ২স্যা রক্তপাতা মহা-সুরা:। তা॰ কথাদাথ চাগুঙা भाषी उन्र ह मानिउ ॥ (मनी শূলেন বজেণ বাণৈ রসিভি ঋষ্টি-ভিঃ। জঘান রক্তবীজ ড ড চামুগু পীত শোণিত।। স পপাত নহী शृष्टि णद्ध मःच अमार्ठः। नीत-क्रण बरीभाग तज्जवीरका वर्ग-

नूतः ॥ ज्ञ छ एवं सञ्च सवाभू जिन्मा स्म । छ्याः साञ्गता बाद्या ननर्कामृद्यसम्बद्धः ॥ ইडि (प्रवीसाञ्जाऽः ॥

রক্বীজকা জ্রী তর্দীবৃক্ষ:। ইতি রাজনির্ঘটঃ।।

রক্তব্যা স্ত্রী সেফালিকা। ইতি শব্চন্দ্রিকা॥

রক্তবৃষ্টি: স্ত্রী ক্ষির্ব্যণ । তত্তু উৎপাতবিশেষ: । তৎকল শব্রোন্মোগ: । যথা । ক্ গ্রিস্থানণী ।
রক্তে শব্রোন্মোগো না সান্থি বসাদিভি নরক: । ধান্য হিরণ্য বৃদ্
ফল হসুনাস্ত্র বর্ষিতে ভ্রণ বিদ্যাৎ । ইভি স্থোতিস্তভ্রণ ।।

द्रक्यानिः भृ द्रक्रदग्रान्ऽदिष्णदः
। उट्यर्गायः। जानुणानिः २ (णागणानिः २ (णागणानिः २ (णा२ क्राह्म । नवषः । निश्रपः ।
नवावष्ट्र । क्रिकाद्रिषः । भीभभदः । भण्डः । भिक्र माष्ट्रानिनाः
जुनाणिष्ठः । हेि प्राक्रनियं । ।।
द्रक्षणायनः क्री मिन्द्रः । हेि हाद्राः
वर्ना ।।

রক্তশিশুঃ প্রক্তশোভাঞ্জনস্কঃ। তৎপয্যাশঃ ১রক্তকঃ ২ মধুরঃ ৩ বহুলানেঃ ৪ সুগদ্ধঃ ৫ কেশ্রী ৬ निः इः १ मृगातिः ५। ज्यार् छ्याः । महावीर्यद्वः । मधुत्रद्वः । त्रभाय-नद्वः। (भाकाश्चान मगीतार्खि शि-ख (स्या नाभिदः। मात्रकद्वशः। इंडि ताजनियंकः॥

्त्रक्रभीर्यकः शृ गत्रनपुरः । ইভি রহ্মানা॥

त्रक्रमृक्षिकः क्ली विषः। ইতিরাজ নির্ঘণ্ট:।।

রক্রমণজ্ঞ ক্লী **স্ক্রণ।ইতি ত্রি**কা-ওশেষঃ॥

यक्रमन्त्रिका स्त्री क्रानोका। इंडि बाजनिर्घणे: ॥

সক্তসদ্ধারণ ন্নী রক্তকল্লারণ। তৎপর্য্যায়ঃ। হল্লকণ ২। ইত্যমরঃ।।
য়ক্তসরোক্ত্ণ ক্লী রক্তপদ্মণ। ইত্যা

রক্তমর্বপঃ পু• রাজিকা। ইতি রাজ-নির্ঘটঃ।।

রক্তন্য জী রক্তামান:। ইতিরাজ নির্ঘণটঃ।।

রক্তসার ক্রী রক্তচন্দ্র ।। পত্তক্ত । ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।।

রক্তসার: পু: অমুবেতস:॥রক্ত খদির:।ইতি রাজনির্ঘট:॥ রক্তনৌগলিক: গ্রী রক্তক্তার:।

রক্তানাগলিক স্নী, রক্তক্সারণ। ইতি উটাধ্র:॥

সিংহ: ৭ মৃগারি: ৮। অসংগুণা: । রক্তসাব: পু॰ বেতসামঃ। ইতি জটা-। মহাবীর্যার । মধরর । রসায- । ধর: ॥ রক্তপতনঞ্চ।।

> রক্তহ•সা জ্রী রাগিণীবিশেষ:। ্ইতি হলাযুধ:।।

> রক্তা জ্ঞী গুঞ্জা। লাক্ষা।। নঞ্জিচা ।। উপ্তকাণ্ডী। ইভি রাজনির্বন্টঃ ।। রক্তাকার: পু• পুবাল:। ইভি রাজ-নির্ঘন্টঃ ।।

> রক্তান্ত নী রক্ত দেন । ইতি জটা-ধর: ॥ শোণিত নিশিতে তি ॥ রক্তাক নী বিক্ষম: ॥ করুম । ইতি মেদিনী ॥

রক্তাক: প্ নক্লগুহ:।। কম্পিল: । ইতি নেদিনী ॥ পুবাল:।। নং-জণ:। ইতি রাজনির্ঘণ্ট:।। সঙ্ল । ইতি শধ্রত্বাবলী ॥

রক্তাঙ্গী জী জীবর্ডা।ইতিমেদিনী । মঞ্জিষ্ঠা।ইতিভাবপুকাশ:।।

রক্তাতিসার: প্রাণবিশেষ:।
তস্য সংপাতি নাহ। পিত্তকৃত্ত্
থদাত্যর্থণ দুব্য নদ্যাতি পৈতিকে।
তদোষাজ্বায়তে শীরুণ রক্তাতীসার উল্ণঃ।। তস্য চিলিৎসা।
বৎসক তক ত্বগাদা দাডিন কল
সম্ভবা ত্বক্। ত্বগ্যগলণ পলনানণ
বিপচেদপ্তাক্ সলিতে তোয়ে।।
তাইমভাগণ শেষণ কৃথে মধুনা

नित्य श्क्यः। त्रकािकात्र मू द्वा मिक्यिकः नाम्यिषियकः॥ स्वेष पार्षम द्वायः॥ ॥। गाप्यस्य नदनी एख मधूना गिठ्या मह। सी-एः त्रकािकात्र ज् शाहकः भद्र-मः महण्॥ नवनी ठावलहः॥ ॥। भीकः मधूमिका युक्कः हन्तनः छ्लू नाधूना। त्रकािकगात्र बिपुक्क भिख ज्ञ पाह (महन्ण्॥ हन्तन मब (थवः। हन्तनकन्नः। ইकि ভाव-भूकाभाः॥

রক্তাধার: পু• চর্ম। ইতি রাজ-নির্ঘণ্ট:।।

রক্তাপহ॰ ক্লী বোল•। ইতি রাজ-নিঘণ্টঃ !।

 জাহার বিভ্বিতা । ইতি ভজ-সার্থ্ত মুট্টিটাণ্ডালিনী ধ্যান ।। তদ্যুক্তে তি ।।

রক্তামু: পু॰ কোশামু:। ইতি রাজ-নির্ঘণ্ট:।।

ब्रकामानः भू ब्रक्डवर्णभू स्विष्णवः । ज्रथ्निर्यायः । ब्रक्जमङा २ ज्रमिन-स्नानः ० ब्रक्कामानकः ८ वागमुमवः ५ ब्रक्कपूमवः ७ व्यक्ष्यकः ७ वामा-निञ्चनकामः १ वय् मवभुमवः ৮ मूज्यः २ ज्यबानन्तः २० । ज्यमु ख्याः। कर्षू ज्ञा । देक्ष्यः । वाजामस् (भाक ज्वाधान मृन काम सामा-र्वि भूभमनद्यः । वर्ग्यकः । देकि ब्राक्षनिर्यकः ॥

রক্তার্য নী নেত্ররোগভেদ:। তস্য লক্ষণ যথা। পদ্মাভ মৃদ্রক্তার্য যথাস চীযতে সিতে। ইতি মাধ্য বকর:।।

त्रकाव् मः भू॰ तागिविष्णयः। यथा।
णाजाजभीय कर्णाविभावः। जलामत यक्ः श्लीरु ण्लादाण व्यानि ए
। यामाजीर्ग ज्ञत एकि ज्ञ स्मार्थ गलगुराः॥ तकाव् म विमर्शाम् । जिभाषाज्या गनाः। इठि गलमामज्ञु॰ ॥ अ। तकाव् ममारु
। त्यम्भूषे क्षित्र॰ णिताण्ट

সংক্ষাচ্য সংপীড্য ততত্ত্বপাক•া স মূৰেমুল্ল **হাতি মাংস্পিঙ্ং মাংসা**ু क्रुरेत ताव्छ मानु वृष्ति।। जुव्छाः जमु कवित्र भून्हे ममाधा (मः ভদ্ধিরাত্মকন্ত । রক্তক্ষ্ণোপদ্ব भी फिड दार भा ७ र्जर म द्र्र भी-ডিভশ্চ।। দোষোত্র পিক্ত কৃথির• সিরাশ্চ সঙ্কোচ্য সংগীড্য সংহ তী কৃত্য না॰সাস্জো: সর্বেম্বর্ দেব দুষ্যত্ব• রক্তজে তু বিশেষতো রক্তদৃষ্টি: এবং মাংসারু দে বিশেষ তে। মাণস দুষ্টি বৌদ্ধব্যা। ভতে। সাংসপিও মুনছাতি উন্তঃ করো-তি। অপাক ইষৎপাক यथा ज्यादिव भिक्ति किया विष्णवनः। जैयट भाक रेण्डकरम्थ भारकन । রক্তফযোপদুব পীডিতত্বাৎ রক্ত-क्षानन्ताः मृभुं (उत्नाळाः। रेउः भी फिउवाद अब् र भी फिउ:॥#॥ व्यथावू मना हिकिट्मा । भुद्राह् -দানা ন যতো বিশেষঃ পুদেশ হে-ত্বাকৃতি দোষ দূষ্যৈঃ। অত শ্চি-কিৎসেভিষগবুদানি বিধানবি-দ্গুন্থি চিকিৎাসতেন ৷৷ হরিদুা लायु প छत्र ग्रथ्म मनः निलाः। गधुन्गाछ। (नाला २गः (नामार् म रतः भतः।। ग्नकेम् क् छः क्वारता

द्रकार्भः क्ली अप्मीरतागिवरमयः। তস্য লক্ষণ মাহ। রক্তোল্ণা গুদে কীলাঃ পিভাকৃতি সমন্বিতাঃ ৷ বটপুরোহ সদৃশা ভঞ্জা বিজন সন্ধিভাঃ। তে হত্যর্থ দুপ্ত মুফঞ্চ গাঢ বিদ্ধি: পুপীডিতাঃ। সুবস্তি সহসা রক্ত তম্য চাতিপুর্ন্তি-ण्डा। (छकान्डः भीउग्रज मृत्ये**ः** भागित क्रय मञ्जूदेश । श्रीनवर्ग दला भारहा इलोकाः कजूरि न्तियः। विष्ट्रेमागवः कठिमः कःक মধো বায় न বৰ্তে।। তন্ চাৰুণ वर्नभ एक निज्ञका मृत्रकामा । कर्तृत्क खरम्बक्ष (मोर्बन्) यिन वाविकः ।। ত্রানুবস্কো বাতস্যংহত যদি চ ক্ষ্ণ। শিথিল পেত গীতক विहे तिकः एक भीउनः ॥ यम्। সাণ ধনঞ্চাস্ক্ ভন্তু সৎপাণ্ড পি-ছিল॰। গুদ• সপিছ॰ স্তিমিত• গুৰু निश्वक कात्रण ॥ (भूगान्यका वि **জ्यে ख**ब ब्रक्तार्भमा बूदिः । छार কীলা অশ্ঞিসি পিভাকৃতি সমৃদ্ তাঃ। পিতাশে। লক্ষণ যুক্তাঃ। আ-কারেণ চ বটপুরোহাদি সদৃশা:। मुःरियः (बारिगः। चुक् भाक्ष्राष्ट्र भी-**७ शु**ार्थनामिजिः कनूरविनुगः वऽा-वन मर्विन्त्रः। व्रक्षम्याति वा-তেলেণস্য লক্ষণ নাহ। তত্ৰ রক্তার্শ-नि अन्दत्तः উल्वनप्तः। क्कानः क्कानः যতীতি কক্ষণ কক্ষণ দুব্যং। পিত্তো-न्वामः नक्ष्यः ब्रक्तान्या अरह कीनाः পিভাকৃতি সমন্বিতা ইত্যাদিনৈ বোক্ত । রক্তপিত:याः সমান লিঞ্চ षृष्टा। अ॥ कःकाद्वान। नक्षन नार । मिशह भिहिला पूर्विवि उपापूर-क्षमाद्धिष्ठ निव।। जन्र हिक्दि-সা। রক্তার্শনা মূপেঞ্চেত রক্তনা-तो मुक्छिवक्। मुद्धाः (भूभि भृहीरक त्रुः मृत्रानाङ्ग्रिगानवाः । हन्तन কিরাততিক্তর ধন্ব যবাসাঃ সনাগ-রাঃ কৃথিতাঃ।রক্তশেনা॰ পুশমনা माही द्रांत्र निष्ठा वा। इन्तन मञ अक्कान्त्व । हम्द्रनारि कृष्टि । नवः

নীত তিলাভ্যাসাথ কেশব্ন নবনীত শর্করাভ্যাসাৎ। দধিসর মথিতা-ভাগाৎ छएका भागा छि ब्रक्तवहाः ।। দপ্র স্থারি যো ভাগো ঘনঃ সেছ यू उ: नदः। मथि उ नत त्र इंडिज । নির্জল বস্ত্রপূত দধি। স পদ্মকে শর (क्षीमु नवनीज नव लिहन्।। সিতা কেশর সাযুক্তণ রক্তার্শঃসু সুখী ख्द्य ॥ भग्नां मृट्डन दूरियः न-जीन मुनाएकी समृदागाः। ७रन म-म्डान्ट्रि मधुदि त्रीय मृग्दिक मा मः নঙ্গেৎপল মোচাস্ত্র তিরীট ভিল ठन्मरेनः। मिष्तः ছाभी श्राया पर्ता-**म्खर्राक (भा**षिजाञ्चाक ॥ अमञ् লজ্জাল:। নোচাস্থে। নোচরস:। তিরীটো লোধুঃ। চন্দন মত্র রক্তচ-नर्यः ॥ अभद्यापि पूषः ॥ ভাবিতः ब कर्ना हुर्न सु श्री की दिश भूनः भूनः । वक्षनार् मृतृष् मृत्र ছिन्छ्यमी ভগন্দর• 🗀 ারসূত্র•॥ নাসা নাভি সমূত্থেষু তথা মেট্রাদিজেয়পি। ক্রি-যা নশঃসু স্ধীতি তৃত্ৰ তৰ যথো-दि**ञाः ॥ एय हो वञ्च मः** ছिन्। पर्ट् कारतन हानिना। दिनादरबाद जी शृष्ठ यानानृ ८ कर्तृकाननः ॥ यथायः मिवनकान मर्नमः शतिवर्जाय ইতি ভাবপুৰ্যাশঃ॥

त्रकान्ः भुः त्रक्रवर्गान् विश्विषः । ।

भक्तकम् यान् इठि ভाषा। छ

भर्यायः । त्रक्रिशिलः २ तक्

शिश्रकः २ लाह्यः ४ तक्किम्सः

६ लाह्यान् ५। यम् छ्याः ।

भीउद्यः । य्याद्यः । यम शृष्टि

कातिदः । छक्द्यः । इठि ताक्षः

नियन्तः ॥

রক্তাক্ষঃ পু• মহিষঃ॥ পারাবতঃ॥
চক্ষেরঃ॥ ক্রঃ। ইতি মেনিনী॥
সারনঃ। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ॥ রক্ত বর্ণচক্ষ্যক্তি বি॥

রজৈরতাঃ পু• বৃক্ষবিশেষঃ। লাজ-ভেরতাইতি ভাষা। তৎপর্যায়ঃ । ব্যায়ঃ ২ হৃষ্টিকর্ণঃ ৩ ক্রুঃ ৪ उक्कृतः ६ नागवर्गः ५ ह्यूः १ उक्किन्थः ४ क्रम्पाः ३ माह-नः ३० निषः ३३ व्यायुङ्गः ३२ तक्कः ३० हिजवीर्यः ३८ ङ्खः-त्रखः ३६। सम् ख्याः। स्वय् भ-वन माडि त्रकार्खि भाष् ज्राहि स्थाम ङ्वादाहक नामिष् । स्यू प्रशाहि द्राह्मनिर्यः।।

त्रिक्वांकः भू हेन्द्राक्षी। हेकि त्राक्षनिर्यकः॥

রক্তোৎপল ক্লী রক্তপদা। তৎ পর্য্যায়:। রক্তসরোক্ত্ ২কোক। নদ ৩। ইত্যমর:।।

রক্তেৎেপ**ল: পু॰ শাল্মলি**ক্**ক**ः। ইতির্জনির্ঘট:॥

রক্তোৎপলাভ: পু॰ শোণবর্ণ, । ইতি জটাধর:। তদ্মকে বি।। রক্তোপল• ক্লী গৈরিক•। ইতি হারান বলী।।

র্থ ই সর্গণে। ইতি ক্বিকল্পদ্ম: ।। ইর্ম্বড়ে। ইতি দুর্গাদাস: ।।

त्रथ मर्भार। इंडिक्विक्झक्रमः॥ त्रथ्डि। इंडिम्गीमामः॥

রগ ন এ শক্ষে ইতি কবিকল্পদ্দ।
ন রগণতি। এ অরগীৎ। শক্ষঃ
শক্ষা। রগতি রোগী স্পথে ভিঃ
। ইতি দুর্গদোসঃ॥

র্গ ক স্থাদআপনে। ইতিকবি-কল্লজনঃ।। ক রাগ্যতি । ইতি দুর্গাদাসঃ।।

রগ ই গতৌ। ইতি কবিকল্লজন: ॥ ই রস্থাতে। ইতি দুর্গাদাস: ॥

র্ঘ ই ক ভাসি। ইতি কবিকল্পন: ।। ই ক রম্বৃতি। ভাসি দীণ্ডৌ। ইতিদুর্গদোস:।।

র্ঘ ই ড গমনে। ইতি কবিকল্পদ্ম:
।। ই রহ্ন্যতে। ড রহ্নতে। ইতি দুর্গাদাসঃ।।

त्रघूकातः भू• कालिनामः। ইতি विकाख्यम्यः॥

त्रधूनम्पनः भू• श्रितामः। ইতি শবः ॥

রহাবলী।। রঘুনাথঃ পু• শ্রীরানঃ। ইতি শহ-

तज्ञावनी ॥

রঘুপতি: পু॰ শ্রীরাম:। যথা। যদু৽ পতে: ক্ব গতা মথুরাপুরী রঘুপতে: ় ক্ব গতোত্তরকোশলা। ইতি বিচি-স্ত্য সক্ষ নন: স্থিরণ নস্দিদেশ জ্ব-পদিত্যবধার্য। ইতি ক্ব গণো-স্থানী।।

त्रव्यः भः भ् कालिरामक् उत्रय्ताः ।
वा व्या। त्रय्ना मन्यः वर्षाः उन् वाः
यथा। त्रय्ना मन्यः वर्षाः उन् वाः
यि अर्वा २ शि नन् । उन्छरः कर्षः
गागठः ठाशनाय भुञाति उः । ॥
३ जित्रय्यः भ स्वाकः त्यः । मर्गः। यथः
। ज्यञ्जत्रयः भः श्रितामः। यथः
। ज्यञ्जत्रयः भाजिनकः को मनः।
नित् वर्षाः नातामः। म्णवन्न निवः
नकाती नामत्रथः भुखतीकाकः।।
३ जि द्वामायः।।।

রঘ্বর: পৃ• শ্রীরাম:। যথা। রাম•
লক্ষণ পূর্বজ্ঞ রঘুবর• সীতাপতি•
সুন্দর• কাঙ্গৎ স্থ করুণানয• গুণনিধি• বিপুপুষ• ধান্মিক•। ইত্যাদি রামাবণ•।।

त्रगृषदः भ॰ धितामः। ইতি শদ-

तकः भ्र क्भगः॥ सन्तः। ইতি। भिन्नी॥

রস্থা: পু মৃগবিশেষ:। ইত্যমর:॥ সত্শবল প্ষ হরিণ:। ইতিরাজ-নির্ঘট:॥

'রক প্লী প্ ধাত্বিশেষ:। রাক इंडि डांबा। उट्भर्यागः। उनुः २ खनूष २ जान्य । ८ वक्र ६ मधूब ७ हिन १ ज्वा १ ५ शिह है । त পৃতি শন্ধ ১০। অস্য গুণাঃ। কটু বু॰ । ठिक्कद्र•। हिमद्र•। कषायद्र•। লবণরসত্ত্ব । মেহমুর । কৃমি পা-**७ नाञ्च न्यानञ्च । काञ्चित्रवञ्च ।** त्रभायनदृक्षा। जिल्लास्या यथा । स्थि**उ**॰ मृतू वर् बहु॰ निश्व मूक्षमङ्॰ হিম॰। সূত্র পত্রকর॰ কান্ত ত্রপু শেষ মুবাছত ।। ফারক মিশুক ঞাপি দ্বিবিধ বঙ্গ মুচ্যতে। উত্ত-ম' ক্ষুরক' তত্র নিশুক' ত্বহিত' মত।। ইতি রাজনির্ঘণ্ট:।। তস্যা-भूकि में। दिश्व मारु। दिश्व थन मुक्तिशीन खथा श्रमकुम कि वाम छल्यो। अक्षानि म्बर किव বাত শোথ পার্ভু, পুমেহঞ্চ ভগ-न्दब्धः ॥ विरयाभनः ब्रक्त विकात वृन्दः क्षायः क् हुन्ति कक जुत्रकः। (नश्मात्री विकथि मूथ्य द्वारामा-

গোপি অর্য্যাৎ কথিতান্ বিকারা-ন্ ॥ 🛊 ॥ তস্য শোধন মভিধীয়তে ा वक् नाली भुज्ञा ह गनि। **७) निर्यहराय. । जिथा जिया वि**-मुक्तिः मार्गपुरि पृत्किन ह विधा।। তৈল তক্ৰ কাঞ্জিক গোমূত্ৰ জল-অক্বাথেষু পুত্যেক ত্রিধা ত্রিধা । **उट्छा २**र्क पूर्व्य विधा ॥ # ॥ अध বহুস্য মারণ বিধিং ৷ মৃৎপাত্তে দাবিতে বঙ্গে চিঞ্চাশ্বত্ম বুচো রজঃ । किथु। वक ठजूर्थाः म गर्या पर्वता भुवानरार ॥ विका यमिनी ॥ त्रज महुन्। व्यायामत्री कत्रह्नी । ততো দ্বিয়ান নাবেণ বস্থ ভসা পুরাযতে। অথ ভদ্ম সমণ তাল किछा। यन विवर्षाय ॥ उठा १४-बन्दि भक्का भून द्रायन मर्मदर । তালেন দশমাংশেন যাম মেকং ততঃ পূর্টেৎ।। এব॰ দশপুটে: পঙ্গু॰ বঙ্গ ভবতি মারিত ৷৷ 🕸 I৷ এব° भाति उन्। वक्षमा खगाः । वक्ष লঘু সর কক ক ক কে মীন্। নিহস্তি পাণ্ড়ু: সম্বাস্ত্রে নেত্র্য भीषजु भिडल ॥ मि । शि । गाजी यस यथा निरुष्ठि छरेथव ब्राङ्गा २थिन ছেমবর্গণ। দেহস্য সৌখ্যণ পুরলে-निम्यद् नवमा शृष्टि विषया जि

म्न । हिंड छावशुक्तानः ।।

प्रकः श्रुष्ट तागः ॥ नृष्ठाः ॥ त्राक्षिः

रेडियिनिनी ॥ नाष्ठेष्टानः । देखि

रह्महन्द्रः ॥ वेद्यनः ॥ श्राम्तिनातः

देखि ताद्यनिवेतेः ॥

ज्ञक्काष्ठः क्ली शडकः। ইতি झाज निर्यक्तिः॥

इक्ष के निन्द्रः। ইতিরহ্নালা॥ इक्षीयकः शृः চিত্রকার:। ইতি শদরহাবলী॥ নাট্যকারশ্চ॥

ारान्छ। खी ऋषी। **३७ ताज** निर्विष्टः॥

ज्ञक्र शको जी नी नी वृकः। ই कि जा कर्निय केः।।

त्रक्षी खी नीणीवृकः। ইতিরাজ নির্ঘণ্টঃ॥

तक्ष्म खी काषागत्रभूर्विना। इंडिमस्तत्रावणी।।

तक्ष ज्ञा भल्ला भारत है जिल्ला है ज

हदम्बी भी वीगा. इंडि मदत्रा वशी॥ तक्षािकः की मानिकातकः। इंदिः ताकनिर्यन्तेः॥

রক্ষাতা জী ক্টনী।। লাকা। ইতিমেদিনী।।

রঙ্গনাত্কা জী লাক্ষা। ইতি ত্রিকা-ওশেষঃ !।

त्रक्षातिनी जी (मकानिका। ইঙি भद्रिन्द्रका॥

त्रक्षीजः क्ली क्लार्गः। ইতি नदत्रः।-वनी ॥

त्रक्षांना खी नाहे । गृह । नाह वत्र इंडि ভाषा। इंडि श्रद्धावनी ॥ त्रक्षांका खी सुडी। इंडि ताब-निर्वा ।

রঙ্গাজীব: পু' চিত্রকর:।ইত্যমর: ।। নট:।ইতিহেমচন্দ্র:।।

त्रकार जात हर भू त्रकार जाती।
ज्यभग्रीयः। नित्र २ जत जाती।
मर्वाद नी ८ जत जभू ज्ञ द था जीमर्वाद नी ८ जत जभू ज्ञ द था जीम् विः २ क्षायी २० नितासी २२।
इंजि इस हम्युः ॥ न्छ भी जहार म भी उर्वाद प्रित्र ज्ञात विद्य करा भुमही। इंजि भाषा निज्ञ ति दकः॥
निज्ञायन व्यक्ति ज त्रकार जत म जी दी। इंजि क्ष स्व क्षेत्र यथा। मल কুন্ধাত্রাণাঞ্চ ন ভূঞ্জীত কদানে।
। কেশ কীটাবপমঞ্চ পদাস্পৃষ্টঞ্চ
কামতঃ ।। ইত্যুপকন্য কর্মারস্য
নিবাদস্য রক্ষাবতারকস্য চ। সু
বর্ণ কর্ত্রের্ণস্য শক্ত বিক্রমিণ স্তথা
।। ইত্যাদ্যুক্ত্বা য এতে হন্যেরভান
জ্যামাঃ কনশঃ পরিকীর্বিতাঃ ।
তেষাত্ত্বগঙ্গি রোমাণি বদন্ত্যমণ
মনীবিণঃ।। ভূক্ত্বাতোহন্যজনস্যাম
মনত্যা ক্ষপণ ত্র্যহণ । মত্যা ভূক্
ক্রোচরেৎ কৃছ্ণ রেতো বিন্ম্ত মেন্
বচ।। ইতি মানবে ৪ অধ্যায়ঃ ।।
রক্ষাবতারী পুণ নটঃ । ইতি জটা
ধরঃ ।।

ब्रमातिः भुः क्त्रवीतः। ইতি রত্ন-মালা।।

র্কিণী জ্রী শতমূলী।ইতি জটা-ধর: ॥ কৈবর্ত্তিকা। ইতি রাজ-নির্দ্ধি: ॥রঙ্গবিশিপ্টে ত্রি॥

রহ্র ক্লী র·হঃ।বেগঃ। ইতি ভরত দ্বিরূপকোবঃ।।

রচ তক কৃড্যা । ইতি কবিকল্প জ্বনঃ ।। রচ্যতি । ইতি দুর্গাদাসঃ ।। লচন লী নির্মাণ । গুরুন । বথা । বাচঃ পল্লবযত্যুমাপতিধর: সন্দর্ভ শ্জি গিরা জানীতে জগদেব এব সরণঃ শ্লায্যো দুরাহ জ্বেঃ। শ্লা ा उत्त अः लुः जित्न त्रां हार्यप्र भावक्षनः म्यकी काशिन विभुन्तः भुजिश्द्राधारी कविः स्त्राशिकः ॥ इति क्यारवः ॥

त्रहा खी जमूगभुकातामः भवा-वलामिक त्रहमः। छट भर्यायः। भित्रणमः २। इंडामतः॥ भिति-मान्तः १। इंडि खत्रछः॥ यथां-क्रियशास्त्रमः। छट भर्यायः। नित्रभः २ इिडिः १। इंडि ह्म-हम्मः॥ निर्मिडिः। कृडिः। यथा। ख्रमाथात प्रमानम्य स्टिनि त्रह-ना हि निर्मिडिः। इंडिम् क्रिकेटिः। खर्छ १ विकास स्टिनियाः। मन्तर्छः। स्टिनियाः।

রচিত: তি ্ল ্খ্যত: ক্ষ্য
ণি ক পুত্যযেন নিয়ম: ॥ যথা ।
শির: পদ্ম শ্রেণী রচিত চরণাস্তোক্ল বলে: ছিরযোস্তু ক্ত ক্তিপুর
হর বিহু, জিঁত নিদ্য ইতি পুষ্ণদন্ত
কৃতন্ত ভিঃ ॥

तक बी जीअगून। इंडि नदत्राः वनी॥

तकः भ् भतागः॥ तिपः॥ छन-ভেদः॥ व्यार्डवः। ইতি कास्रदर्शः सम्बद्भावनी॥ ब्रजः ही जीगा भामि मामि यानि নি:সূতরক্ত•। তৎপর্য্যাय:। পুষ্ল २ जार्डव ०। ३७,४तः ॥ यजुः ८ হ্বস্ম ৫ রজ ৬। ইতি শব্রজ্ঞা वनी ।। পুক্তে গুণবিশেষ:। ততু রাগ দ্বোত্মক দু:খহেতু:। রজো श्रुः श्रु विष्या १ शि। यथा। त्र-জো হয় রজসা সার্দ্ধ স্ত্রীপুল্ল গুণ श्रृ विष् । ই ज्रामद्गन खः । ই जि ज्रा তঃ।;#া। মহাভারতনতে দুংখ্রন-क खनः। उत्र ४ धरः कामः (कायः লোভ: মান: দর্গশ্চ। ইতিমোক ধর্ম: ॥ তৃষ্ণ কোধোভিস রস্তো রাজসা তে গুণা: মৃতা:। অভি সংশ্বয়ো দ্বেশভিনিবেশ:। ইত্যা-খনেধিকপর্ব।। অপিচ। কান এব কোধ এব রজো গুণ সমুদ্ভব:। মহাশনো মহাপাপ্মা বিজ্ঞোন মিহ বৈরিণ ।। রজো রাগাত্মক। বি**দ্ধি তৃ**ঞ্চা সঙ্গ সমু ক্তব । তলি वक्षां जि को छियं कर्म मास्य परिः ন ।। ইতি জ্রীভগবদ্ধীতায়া ২। ১৪ ण्यभारयो ॥ अञ्च द्रज सम इंडि দৃশ্যন্তে পুৰুষে গুণাঃ। কালসঞ্চো-দিতা স্তেপি পরিবর্ত্ত আত্মনি॥ **अ**ञ्ज्ष यहा अञ्च भाग तृष्वीन्द्रिया-ণি চ। তদা ক্ তুশুগ• বিদ্যাদ্বাৰে ত

পनि राषु जिः ॥ यहा कर्यानु कार्यपु-যুশক্তির্যশসি দেহিনাণ তদাকে তা রজো বৃদ্ধি রিতি জানীহি শৌ-নক॥ यहा লোভস্তু সন্তোষো মানেঃ माञ्चा २० मए मतः। कर्मानाका नि কান্যানা দ্বাপর তদুল স্তন: 11 यहा अहा नृज जञ्जी निनु हि॰मा-দি সাধন । শোক মোহ ভব रिनाः म कनिस्र छरा मृजः॥ ইতি गाक्एउ२१ व्यक्षायः ॥ 🕸 ॥ भ-রাগঃ। ইতি মেদিনী ॥ রেণুঃ। অ-मा भर्यायः ध्विमायः पृष्ठेवाः ॥ निविकानिविका तरका यथा। व्यागूः কানো ন সেবেত তথা সন্মার্জনী त्रजः। তথাখ त्रथ शान्यानाः गवा-বিশ্বরজঃ শৃভ• ।। অশুভঞ্ বিজা-নীযাৎ থরে। প্রাক্তানিকেযুচ। গ্রাণ व्राज्ञा थान।व्रज्ञः भूधमाव्य ७व॰ রজঃ ॥ এতদুজো মহাশন্ত মহা-পাতক নাশন । অজারজ: থরর-(का यळू नचार्जनीत्रकः।। এउनुरका মহাপাপ মহাফিল্বিষ কারণ। ইতি গাৰুডে ১১৪ অধ্যাযঃ ॥ त्रजः भयः भू अङ्ग्रः। ইতি भदः गाना॥ त्रकः मात्र थिः भू वायुः। ३७ मदः ब्रज्ञावनी ॥

ব্লজনী জ্রী ব্লজনপত্নী। বনুধাতো: বক পুত্যবাস্তাদীপিক্তে সিদ্ধা। ইতিমুশ্ধবোধব্যাকরণ।।

त्रज्ञ की क्लार । इंडरमतः ॥ इंडी-एडः ॥ १४ जः ॥ स्मानिक ।। इतः ॥ कुरः। लिजः ॥ स्मानिक ।। इंडि ह्र-महन्तुः ॥ मृद्ध वर्गविलिष्ठि जि । इंडरमत्रहीकाया । ज्यानीना । जा-भार्डरादि यथा । स्मोन्न त्राज्ञ कार्यर त्रज्ञ आजादीना । जा-भार्डरादि यथा । स्मोन्न त्राज्ञ कार्य । त्रज्ञ कथा वालि हर्मन हान स्मय वा ।। त्राज्ञ के जांज्ञ न स्मन स्मय वा त्रज्ञ विह्ना । वार्यर मि मुक्स ।।

मख मक्षगारगाशकन्नारं ॥ यथा-र्घा शिख (ভाक्तारो शिक्ना॰ ता-क्षठः मठः । भिरानाकाक्तरः उमा-मखः उद्याक्कियु (स्वकार्य)यू विक्किं उः । ইতি মাৎসের ১৭ অধ্যায়ঃ ॥

त्रज्ञ पूर्णः शुः इन्मान्। ই जि मदत्र त्रावनी ॥

রজতপুস্থ: পু॰ কৈলাশপর্বত:। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষ:।।

त्रज्ञ जाठनः भुः (दोभाभर्वजः॥ তস্য পরিমাণ দান বিধিশ্চ যথা। রাজতো নবম তাদ্দেশ্য: শর্করা-**ठणः । दत्कः।** विद्यान (म्**टब्या**॰ वधावमनूशृहमः।। याउः भद्रः शुः वक्षामि जोशाञ्च समुहमः। म् जुनाराज्या या जिल्लास्यः ক দিলোভন ৷৷ দশভি: পলসাহ সুৈ ক্তমে। রজতাচল: । পঞ্জি र्याभुमः (भुक्ति छम्। र्यानायाः सृजः ॥ অশক্তো বি শতে ৰজ্ব • কার-(यट मिकिंड: मरा। विश्वस्त श-र्बं जा॰ खद्द जूतीया॰ भन कन्नरयू ॥ भृवंत्मुा अञान् अर्या ग्रन्स्वामीन् विधान ७: । भूर्वव ८ तज्ञावन व । कनार्थे ज नया॰ खब लाकिनान् ब्रहराष्ट्रयः ॥ तुन्त विकृतं वटकाः

ব্য্যো নিভষো হত্ত হিরগ্রয়:। রা: || **छ अराष्ट्रत्याः अर्थशिहरू** काक्षन ।। (भवक भूर्ववट कर्य)। रहाम बागद्रशाहिकः । भुष्माबु পুভাতে তৃ গুরুবে রৌপ্য পর্বত ॥ विषयु रेननान्वियुः भूनः वज्ञ विज्यतिः। इमः मञ्जः भठेन् मन्।-क्ष ज्ञानि विंग्र मद्राः ॥ निज्नाः यज्ञ **ड॰ यमा९ विष्का र्वा मक्द्रम**् চারজত পাহি ত্যায়: শোক স সার সাগরাৎ।। ইত্যা নিবেদ্য যো দদ্যাৎ রজতাচল মৃত্তম । গৰা নযুত দানস্য ফল পুংপাতি यानवः ॥ स्मानत्नातः मगन्नरेर्दः किनवाश्रवमाञ्चलः । भूजानाता वरमिषिति यविषाष्ट्र मिश्रव ॥ इंडि माध्यम् ११ वर्षायः ॥ ब्रज ठापुः भू रेक्लामभर्व ७:। इंडि (रू महन्मः ॥

রজন ল্লী রাগঃ। ই**ভি সিদ্ধান্ত** কৌমুদ্যামুণাদিবৃক্তিঃ॥

রজনিঃ জ্রী রাজিঃ। ইত্যমরটীকা।। রজনী জ্রী রাজিঃ॥ হরিদা।। ক্ষত্ কা। ইত্যমরঃ॥ নীলিনী। ইতি নেদিনী॥

द्रप्रभीत्वः शृ **ठन्दः। ইতি भय** द्रापदी ॥ त्रज्ञनीगन्ना जी सन्त्रमानाः । जन्म जिल्ला । जन्म जन्म । जन्म ।

त्रकरीशृज्ञः भ् भ् जिकत्रक्षः। ইতি त्राक्षिविष्टेः॥

রজনীমূথ ক্লী প্রদোয:। ইভ্যনর:।। রজনীহাসা জ্রী শেফালিকাপুল্ল । ইতি শদরত্বাবলী।।

রঙ্গসানু: পু॰ মেঘ:।। চিত্ত । ইত্যু-ণাদিকোষ:।।

त्रष्ठभनः भू भहिषः। ইতি गिमिनी ङ्यो রজোযুক্তা। তৎ-द्रजम्रन। भर्यप्रायः । द्वीयर्थिनी २ व्यवी ७ আত্রেয়ী ৪ মলিনী ৫ পয়বতী ৬ খাতুনতী ৭ উरक्रा ৮।। ই छान्द्रः ॥ मृतिः अशुझ्रामा ५०। इंडिमान्-ब्रङ्गावलो ॥ পুश्चित्रः ১১ व्यवीद्रा ১২ विक्नी २० निइनी २८॥ ३७ करे।-ধরঃ।। স্লানা ১৫ পাংশুল। ১৬।ইতি त्राङ्गनिघण्डः॥ #॥ जथ त्रङ्गस्या স্প্ৰপ্ৰিচন্ত । কাশ্যপঃ। রজ-यन। उ में म्यूडी नाक्षणा नाक्षणी ষ্দি। এ ণরাত্র নিরাহ্যে। পঞ্গ-ব্যেৰ শ্ৰাতি। বজৰলা তু সংস্থা

প্রের বুলোর ভূষা। বিরাবেশ े निशार नहाल्ला वंहनः यथा ्या १ प्राप्त अन्य विष्णुया द्वान ি প্রেঞ্র প্র**াহারা পঞ্** া প্ৰিয় ইঙালা তু সণ-ल्लुहा भृत्य दूषिनी विने । यञ्जादान विणुष्याञ्च वाञ्चभी कामठात्र उः ॥ व्यकात्र महाद्वरकं वाक्का मर्द्र का-তিষু। এতেন রজম্বায়া ব্রাহ্মণ্যাঃ সর্ণর্ভ্রব্র। স্পর্শে একরাত্রোপবা-স: পঞ্গব্য পান কাম ত:। অকা-गठ उपकार । नक्तुं उर । अमर्ग রজধলা স্পর্শে তিরাত পঞ্রাত ধ-पुरवाभवानाः। অকামত उपर्कः। এতঃতৃথাহানন্তর• কর্ত্তব্য•। চাণ্ডা-লেন শ্বপাকেন সংস্পৃষ্টা চেদুজন্বলা। অতিক্ষ্য তান্যহানিপুয়েশ্চিত্ত স মাচরেৎ।। ত্রিরার নুপ্রাদঃ স্ঞাৎ পঞ্চাব্যেন শ্ব্যতি। তা॰ নিশান্ত - ব্যতিক্রম্য স্বজাত্যুক্তন্ত করেযেৎ ॥ ইতি বচনান্তর দশনাৎ এতৎ কাম-তঃ। অত্র দিন ভেদে। হপি নাস্তি। অ দ্রানে বৃহস্প তি:। পতিভান্ত্যখ भारिकक मण्याडी खी बहबना । তান্যস্থানি ব্যক্তিক্রন্য পুর্যাশ্চিত্ত नगहातर ॥ भूयम रहा जित्राबः ् ष् वि अध्य इ। स्मान्द्र । अस्ति।

রাত্র ভূতীয়ে **২**হ্লি চতুর্থে নক্ত মা-চরেৎ।। চত্র্থে ৎহ্রীত শুদ্দি সা-नाष्ट्र भूर्व । वराष्ट्र । त्र क्षत्र ना यहा म्मृष्ठे। खंजमूक थोद्रः कृष्टि । निद्रा-হারা ভবেত্তাবৎ যাবৎ স্থানেন শু-ধ্যতি ॥ অত্রাপি বৃহস্পত্যক দিন ভেদব্যবন্থা। বৃদ্ধশাতাত্তপঃ। র-जमः ज ज् रा नार्यायत्नानाः स्थान-ত। यनि। नवार्ग शक्ष गवास वृक्षक्ई-মতঃ পর• ৷৷ পঞ্চগব্য পান• বৃত্তর্ক-প । তেনোপবাস: ॥ বৃক্ষকূর্চ নাছ জাবাল:। অহোরাভোষিতো ভূত্বা (भोर्गमामा विष्मषठः। शक्षगवाः शिवट भाउ तुं काकृई विधिः श्रृ जः ॥ তদশক্তৌ পুরাণৈক দাতব্য । ইতি श्रायन्त्रिक उद्गा क्षा व्यन्ति । भूषा **खर्जु ऋ**खर्था चिन्नु चन्नु दिन्द रेन-ज्याः। रेन्त्व कर्या िरेश्व व शक्ष-মে হহনি শুধ্যতি॥ ইতি শুদ্ধিতত্ত্ব• ॥ जम्राः भगतः भाभः यथा। भूषः म दिवास काञ्चा था हि गहिनुक-ষ্ণা । বুশ্বহুত্যা চত্থা 'শ' লভতে নাত্র সংশবঃ॥ সপুনালহি কর্মার্হে। रिनरवरे अरब ह कर्या न । अथनः म ह मर्खियाः निलित् कायमास्त्रः ॥ हि जीय दिवाम नाती था वुष्क इ-बद्याः। कान्यः भित्रभूर्गाक वृक्तः

श्रुत• ॥ शाकीवन•। नाधिकाती পिতृ विशु मूताईति॥ व्यमगुर्वे। १वनमः महानिव्हा-ব্দিরস ভাষিত ॥ তৃতীয় দিবসে काया॰ (या हि शहिमु जबना॰। न ম্টো বুকাহত্যঞ্চ লভতে নাত্ৰ সং भागः॥ भूईवर পতिछः সোপि न ठाइ: मर्वकर्ममू। अभट भूधा ठजु-র্থেছি ন গছেত্তা বিচক্ষণ: ॥ ইতি বুন্ধবৈবৰ্ত্তে 🗐 কৃষ্ণজন্ম খণ্ডে ৫৯ অ भ्यायः॥ #॥ यभि । यभूर्व अर् বে চলাও পিডর স্থল্য গা যেত্র 艾爾亞 医神经炎 计电路 四十二 我到班 西州山洋部1至3 यः । होत्रों भ उस म मुक्तास ना । मेट्रान पुरामान भिर् র্থ ভোগ ইষ্যতে। শতুকালাভি गाभी (या वुक्तहार्याय मग्र छः ॥ न গছতি চ যঃ কোধাং মোহাদ্বা পু ৰুষাধমঃ। ঋতৌ ঋতৌ ভ্ৰুণহত্যা। পাুপোতি পুৰুষ শ্চরন্।। ইতি বা-द्वार्ट उक्क कर्य वर्गनः नामाध्यायः॥ बिक्तः भू हन्द्रवः भीयवाक्तवित्नयः। यथा। भूकद्रवरमा (कार्ष्ठ भूव महायू র্নাম। । স রাহে। দু হিতর মুপ্রেম । उन्राः भक्षभ् धानूरभारमानाः

স। নত্য ক্ষত্র বৃদ্ধ রম্ভ রজি সংজ্ঞা: । রজে: পঞ্চপুত্র শতান্যত্ত্র্
লবীর্য্য সারাণ্যাসন্। ইতি বিষ্ণৃপুরাণে৪ অংশে ৮। ১ অধ্যানৌ ॥
রজোবলং ক্লী অন্ধকার:। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষ: ॥

त्राह्मा क्षेत्र व्यक्षकादः । इंडिंग् भद्रद्वावनी ॥

त्राकाह्यः भ् त्रक्रकः। ইতি भयः-

तब्दः खी तिगी। ইতি मिनिगी।

ब्रुनिगायनवस्त । मुद्धः ইতি ভाषा।

ब्रुनिगायनवस्त । मुद्धः २ वदाविकः २

ब्रुनिश्च खाः ६। ইত্যম दः ॥ मुद्धाः ५

ब्रुनिश्च ज उत्र्व द्वाकायः ॥ मुद्धः ५

ब्रुनिश्च मुद्धाः २ मुद्धो २० मुद्धाः २३

वद्याविः २२ ववाकदः २२ वविद्धाः २८
। ইতি विकासदः ॥

রঞ্জক জ্লী হিঙ্গুল । ইতি রাজ-নির্ঘণ্টঃ।।

রঞ্জকঃ পু• কম্পিলকঃ। ইতিরাজ-নির্ঘণ্ট: ॥ প্রীতিজনকঃ॥ বজ্রাদি-রাগকভাচ॥

त्रञ्जनः ली त्रक्रिन्तनः। ইতি মেদিনী
।। क्ष्रिलः। ইতি ताजनिर्यः।।
त्रञ्जनः भूः त्रांगजननः। ইতিমেদিনী
।। মুঞ্জত্ণः। ইতি রাজনির্যাটঃ।।

ब्रक्षनकः भू किह्कनः। ইতিরাজ-निर्घणः ॥

পু॰ অ हु ক বৃক্ষঃ। আ চ্ গাছ ইতি ভাষা।

ब्रञ्जनी ज्वी मुखाद्राहनिका।। नीनी ॥ मिछिष्ठा। इंडि मिनि ॥ শ হরিদা ।। পপুটী। ইতি রাজ-निर्घणः ॥

वाहि । इंडि कविक इक्ष्मः ॥ রট ভি। ইভি দুর্গাদাসঃ॥

রটিত। ত্রি কথিত। রটবাজোঃ কৰ্মণিক্ত পুভ্যবেন নিচুক্ত 🛚 কঞ্চ नभाव क्री॥

রঠ 👚 ভাষণে। ইতি ক**িঞ্চলভা**ই চ ভाষণ कथन । त्रठेडि । इंडि 💯 🕒 माजः ॥

র্ণ ম গভৌ। ইতি কবিকল্লছমঃ।। ম রণ্যতি। ইতি দুর্গাদাস:॥

রণ ক্তি। ইঙি ক্বিক্লুজ্ম: ॥ রণ্তি। কৃতি শব্দে। ইতি দুর্গা-मागः॥

রণ ক্লী পু• যুদ্ধ•। ইত্যুদর:॥ त्राः भू॰ मकः॥ काः। इंडि सिनिनी ॥ गिजिः। इंजि मेम्ब्रदावनी ॥ রণত্র্যু॰ লী गुष्तवाम्रु॰। তৎপর্য্যায়ঃ রণ্ডা জ্ঞা ম্বিকপণী । ইত্যমরঃ।ঃ । मःगुमिभिहें २ व ज्यक्षितः 🤈 📗

া ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ॥

त्र**ान्य** की उमीत्र । ইতি दाख-निर्घणेः॥

রণপূব: পু॰ শ্যেনপক্ষী।ইতি রাজ-निर्घण्डः ॥

রণমত্তঃ পু॰ হন্তী। ইতি শব্দনালা।। कालिका। इंडि मदहिन्द्रका ॥ अग्रिष्टिः पू॰ विवग्डिक्क्राः। इंडि त्राजनियकः॥

> রণরক্ষঃ পু॰ রণকাতরহন্তী। তৎ-পর্য্যায়ঃ। পুতিন: ২। ইতি হারা-वनी ॥

सुराहत ही जिल्लाम्य के कि किमान 2.44 m

বিপর্বঃ পু॰ নশ ম:ইতি জিকা ও-中門門為計

क्षांकः म् विकासिं इति 五種!!

त्रामक्षा क्षी जूगुना इंजामतः॥ त्रगानस्त्रगः भू विक्रभक्ती। इंडि वाजनिवंगः॥

র্ঞ: ত্রি অর্ক্তর্মাবছিলাব্যব: 18 थुर्वः । इंडि मः किल्नादाना हि-वृखिः॥

त्र अकः शृ अकल वृक्षः। हे जि भक्तः **हिन्दिका** ॥

বিধ্বা। রা"ড ইতি ভাষা। যুখা।

তিষ্ঠতে রপ্তা বিকর্মছেভ্যঃ স্বন্ধ্বদ-॥ রভনিধিঃ য ব্যবক্তীত্যর্থ:। ইতি সংক্ষিপ্ত সারে তিডন্তপাদ:॥

त्रश्रामुभी भ्रष्ट यष्टे ५ द्वाति । सद म-द्राभित्र ভार्य्याविश्वीनः । यथा **छ**-विष्र भूतानः। ठजातिः मष्ट् मताः ना॰ जाष्ट्रानाथः शदा यमि । जिया বিযুদ্ধতে কশ্চিৎ সতু রণ্ডাশুমী-নতঃ।। ইত্যুদ্বাহতত্ত্ব•।।

बङ क्वी रेमथुन । इंडाप्रकः॥ खश्र । ইতি মেদিনী॥ অনুরক্তে তি ॥

রতকীল: পু• স্কুর:।ইভি হেম-हन्तुः॥ मृत् उक्छेक्न ॥

न्न उक्षिउ॰ ही रेमथुनकानीनवाक्। ত । भगायः । निषठ । इंडि ं (२२५ ज्युः ॥

রতভক: পু॰ পতি:।ইভি জিকা-अःगयः ॥

রতজ্ব: পু· কাক:।ই**তি** ত্রি গাঞ্জ-শেষ: 11

त्र उंग नी न् क्षितः। इंडि ने पर-ग्वा ॥

ब्रञ्जानी खी **क्रो**नी। ইতি बिका-ওশেষ:॥

ब उनाबी हः शृ नाबी नामी एका बः विषया है जिल्ला है जिल्ल ।। ऋकृतः।। याः। इंडि (महिनी ॥ विज्ञः। ইতি नद्याना॥

बङ्गादकी । রভর্ম্বি 💀 🏂

अक्षित्व : इंडि (बार्ने ।।

त्र छतुषः 🔫 अञ्चरः । 🤏 🗀 🤻 ठन्मः

त्रज्याति म् सङ्ग्रहा निक्ति पर हन्मुः ॥

त्र उहि छक्ः পু• জ্রীচৌর:। ইতি जिकाश्रामयः ॥ लम्मिः । लाहर ইতি ভাষ।। তৎপর্য্যায:। বিয়: ২ ব্যলীক: ৩ পল্লব: ৪ দুবেক: ৫ जुजरः ७ ठूचकः १ वदः ৮ जुरः ৯ নারাভরঙ্গকঃ ১০ স্বস্তিকঃ ১১ র জনারীচ: ১২ বন্ধক: ১৩ রভজা-**लिः 78 क**रोत्रः ७৫ कामी २५ (थर्हे) २१ नागतः २४ मात्री श्रियः १३ **छ**् ७ भेिः २०। इंडि मप्नाना ॥

त्र अन्त्रः भू अकृतः। इंडि ए स-ठन्मः ॥

রতান্ধী জ্রী অজ্বটিঃ। ইতি ত্রিকাণ্ড-শেষ:।।

त्रजामणीः भू वक्ता। ইजि मद याना ॥

भावा ॥ द्राधनी की मिथूना जिला दिनी। केल इनायुक्ता

়ি প্রী কান্দেবপরী । রাগঃ ।।

- ০শাশুছাল উ্তিনে দিনী ॥ তস্যা

তীত পরিবান বার্যকাল কানপরীত্ব
-- বার্যকাল বার্যকাল কানপরীত্ব-

... १९७१। हिली। **अना**॰ ্্ ব 😽 🏸 পূর্থে ভবতঃ সদৃশী खेतः ॥ এषा उव महारउ**काः म** वंरा महजातेगो। ভবিষ্যতি यथा काम भगारक। यभविद्यो ॥ मार्कः থ্ডেম উবাচ। ইত্যুক্তা পুদদৌ দ-(का (रह (यर कलान्धवा॰।। क-न्तर्भागागुञ: क्षा नाम क्षा द छीडि जा ।। जा वीका महता রানা॰ রত্যাখ্যা॰ সুমনোছরা॰। আল্লেশ্গেন বিজ্ঞো হসৌ নুমো-হ রভিরঞ্জিত: ৷৷ ইতি কালিকা-পুরাণে৩ অপ্যায:।। 🕸 ।। রতিবন্ধা यथा । न ভবন্তি यहा नाग्र स्रष्टा বাদ্য রতে মতাঃ ৷ নানাবিধৈ ভথা বলৈ রম্বগ্যা: কামিভিঃ দ্রিয়: ॥ পদ্মাসনো নাগপাশো লভাবে (क्षे रखमि भूटे । अलिम मृज्दत ৈ চব তথা কেশর এব চ II হিলো-লো নর্সি ছোহপি বিপরীত তথা १ भतः। कृत्ता दि (धन्करेण्डव मू८· তিনাগে। বিদ্যাধরস্ত ধোড়শ: । ইতি স্বতিমঞ্জরী ॥ এতেশা• লক্ষ-ণানি ভত্ত**্ব শ**দ্ধে দুষ্টব্যানি ॥ ভিসহর• শ্লী যোনি:। ইতি ত্রিকা-

রভিন্দহর• ক্লী যোনি:। ইতি ত্রিকা-ওশেষ:।।

রতিকিয়া জ্রী মৈথুন । তৎপর্য্যায়:।
সম্মেশন ২। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষ:।।
রতিগৃহ জ্রী যোনি:। ইতি ত্রিকা

खरणयः ॥ त्रमनमन्तित्रथः ॥

त्रिन्धित्री। भृ (वाष्णवसास्तर्गक-भक्षम्भवसः। उम्र वक्षणः यथा। भीष्र्यम्क्यूर्ण्यन कामूकः कामि-नी यित । त्रिन्गणः ममाध्याकः कामिनीनाः मरनात्रमः।। ইতি त्र-जिमक्षत्री॥

विजिश्वः भ् कायस्यः। इंडाः

नवः॥ (पणविष्णवञ्जीनाः ञान

विष्णव जनाविजावा यथा ।

वाि श्रीमाथ्वीनाः कनक कनलप्तः

श्रावनीनाः कठात्क परस्र गोजा
क्रमानाः मृणविज क्रम्यः (ठाएकव (भ्यमीनाः । ठिनक्षीनाः निज्ञः मक्रवा (कणनाः । विज्ञानी (कणनाः विज्ञान विज

কণ্ঠস্ত ততঃপর ।। নি হাসনো র বিভেগাশক: 'পু বিভিবন্ধবিশেষ:।

यमि जुन्मत्री । त्रजिलानं: खणा थ्या उः काभिनीनाः जूथावरः॥ इंडि मद्रभी भिका॥

রভিপুষঃ পু কানদেবঃ। ইতি **नद**त्रद्वावनी ॥ সूत्रखिल्यक ॥ त्र**िमना क्षी व्यञ्जतमः।** यथा । ्रण्यानन्त्। द्रिज्यमाञ्जदनः नुभम्।-অজা। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।।

त्रिक्तिन्त्र की यानिः। ইতি करे। थतः । रेनथुनगृरः । यथा । मक्षारता इिल्लिक्स्यान्त्रि कथी कर्गाविध ব্যাস্ত্র ভেতাং করে কর্ वि भएत्या यादि (भूका प्र. श-भं, श्राद्वस्याकः । अग्नाना-शित्योक्ष्यक्षित्रार्वः अभवत्रातः 14. 海上海外上上的方面。11 ইতি রসমঞ্জরী।।

রতিনিত্র: পূ॰ রতিবন্ধবিশেষ:। তস্য লঞ্প যথা। পাত্যেদ্ক-युष्प ठ कामूक यनि कामूकी। ब्र-তিনিত্ৰ তথা খ্যাতঃ কামিনীনাণ সুথাবহঃ॥ ইতি রভিমঞ্জরী॥

রভিন্ননাঃ পু• काभरमयः । इंडि ত্রিকাওশেব: ॥

রতিলক্ষণ ক্রী निध्वनः। ইতি . इ.द्रावनी ॥

যথা। পীড়থেদ্কযুণ্মেন কামুকো। রতিসত্ত্রা স্ত্রী চিন্নজীবা। পিডি-ঙ্গাক ইতি ভাষা। ইতি শব-**ठि**भुका ॥

> রতিসুন্দর: পু• রতিবন্ধবিশেষ:। **७म्र लक्ष्म १ यथा । नाती भरष्र**यः কামী ধারবেদ্ধৃদবে বদি। পৃতকঠে। त्राम् का भी वक्षः ग्रामु जिनुनातः ॥ ইতি রতিমঞ্জরী স্মরদীপিকা চ ॥ की (प्रवन्धी ॥ अंड)वाक् । রত্: ইতি সিদ্ধান্তকৌমুদ্যামুণাদিবৃত্তিঃ কোকি**লঃ। ই**ক্তি র'তাদ্বহঃ **ମ** ° भव्यामा ॥

রত্ন লী অশ্রন্ধতিঃ।। মৃক্তাদি ।। ख्टशर्यायः। मिनिः २१ इकामदः॥ यङाजिए हुई: । इंजि (निमिनी ।। মাণিক্যু ।। বজু । ইতি রাজনির্ঘ-ण्टः।। 🗱 ॥ অথ রত্নেৎেপ ত্তি কার-ণ । যথা। স্ত উবাচ। বিঘ্ন পরী-ক্ষাণ রত্নানাণ বলো নামাসুরো ২ ভ वट । इन्मुक्ता निर्द्धिता खन नि-র্জেত তৈ ন' শক্যতে ৷৷ বরব্যাজেন পশুতা॰ যাচিতঃ স সুরৈ নথে। বলো দদৌ স্বপশুতা মতিসভো ম-থে হতঃ।।পশ্বৎ স বিশেৎ তয়ে স্বাক্যাশনি বক্তিতঃ।বলোলো-(अञ्चलाताम् लिलानाः श्विकामः) या।। जना कि विक्षित्र मूर्विण्

एक्त कर्मना। क्ष्यम्यायाः मार्व। ब्रङ्गवी**कव् माययूः हित्यांना मथ्य**-क्यानाः भिकानाः भवनानिनाः। রল্বী**জ নয় গু**। হ: সুনহানভব-उत्। ॥ 🕸 ॥ অथ उन्राक्त्रश्राना-নি যথা। তেবান্ত পততা বেগা-षिनात्न विश्यमा। यम् १ भरा-ত রত্নানা বীজ ক্চন কিঞ্চন ৷৷ মহোদধৌ সরিতি বা পরতে কা-ননে হলিবা। ভত্তদাকরতা যাত স্থান মাথেয় গৌরবাৎ ॥ তেযু अत्यः। विष व्यान व्याधियान्यवरः। নি চ। পুাদুভবন্তি রত্নানি তথৈব विख्नानि ।। वजु न्छान्य मनवः স পদারাগাঃ স নরকতাঃপ্রোক্তাঃ । अभि छन्द्रनी वमिन वद्र रेवम्या-শ্চ পুস্তরাগাশ্চ।। কর্কেতন নপু-লক ক্ষিয়াক সমন্তি তথা সু-छिदः। विक्रम मिशः यञ्जापृति छः मःगुरह उक्टिः ॥ 🗱 ॥ व्यक्तित बलो न्थम खनमायो उटकन পরीका ह । मृन्यक রব अन्ति बिट्छिय॰ नर्व भाद्याभा॰॥ व्यन-গ্রেশুপজানতে যানি চোপত্তে २२न । स्टिंग छानूभगूकारङ शेष्ट खप मण्या ॥ भवीका পরিশ্দানা রবানা প্ৰিবীভূ

কা। ধারণ সংগ্রহো বাপি কার্য্যঃ ল। শ্চাপি রহুভাঙ্গ: পরীক্ষকা:। তএব মূল্য মাত্রায়া বেত্তার: প-ব্লিকীৰ্ভিতা: ॥ ইতি পাৰুডে ১৮ অধ্যাযঃ ॥ বিশেষরত্নপত্নীক্ষা ত-ख्य माम पृष्ठेवता ॥ 🕸 ॥ ठजूर्नम महात्रज्ञानि यथा। क्षणात्का निष्ठ्य-রথ: তত্তনয: শশবিন্দু শচতুর্মশ মহারত্ন শ্চকবর্ত্তাভব । চতুর্দশ নহান্তি রত্নানি যস্য সং। রত্নানি তু ষ্বজাতিশেষ্টানি ধ্র্যসংহিতে।-ক্তানি।চক্রণ রথো মণিঃ খন্ন কর্মা রত্বঞ্চ পঞ্চমণ। কেত নিধিশ্চ স-ভৈব মপ্রাণানি পুচক্ষ্যতে॥ভার্যস পুরোহিউশ্চৈব সৌনানী রথক্চ यः । পত্তাপৌ কলভ শেতি প্রাণিনঃ मश्र की खिंगः ॥ ठठ्तं रेमञान রহানি সর্বেধাণ চক্রবভিনা মিডি ৷ ইতি বিশ্বপুরাণেও অংশে ১২ অ: धायः उड़ीका ह।।

त्रज्ञकन्तनः श्रु॰ भूदानः। ইতি मद-त्रज्ञावनी॥

রহুক্ট: भू- পর্যতিবিশেষ:।ইভি

রত্নগর্ভ্তঃ পুণ ক্ষেরঃ। ইতি ত্রিকাও-শেষঃ॥ সন্ধুদুঃ।ইতিরাজনিঘটঃ॥ রক্বগন্তা জী পৃথিবী। ইতি হেন-চন্দু:।। উপচারাৎ গুণ্বৎপুঞ্ বতী চ।।

রত্নদীপণ ল্লী রত্ননির্মিত্সানণ যথা। সি হস্ক দ্বাধিস ক্টো নানা वाकात ভ्विजा । ठजू जूँ का॰ भशा-(मवी॰ नागराउडा भवी जिनी॰ ॥ त्र-क्वब्रभवीधानाः वालाकं मम्नी जन् । नात्र नारेन्। स्य निगरेनः (म-বিতা॰ ভবসুন্দরী॰॥ ত্রিবলী বল-যোপেত নাভিনালমূণালিনী ার-ত্ত্বীপে মহাদ্বীপে সিংহাসনসম-বিতে।। পুফু র কমলাকচা ধ্যাযে ত্তা তবগেহিনী । ইতি তজ্তসার:॥ की नशानिवि**णयः**। *ज्ञ*ाध्युः यथा। मर्था हैवाह । जथा उः यः भ्रम्भागि महासान गर्जनः। রন্নধেনু রিভিখ্যত গোলোক ফ वरः न्याः ॥ भूग्रनित्न मथामान्र खूना भूक्य मानवट । त्नातिमा-वहरून कृषा उट्या (यन भूकन्मार ॥ ज्यो क्का जिन क्षा वन द्रान नःयुक्तः। (धनुः इङ्गस्योः ऋकारः नहन्नः विवि भूर्वकः ॥ ज्ञाभारय পদারাণাণা মেকাশীতি মুখে বৃংগে পুয়ুৱাগ **শত**ণ ভদ্দ দোলা याः शतिक्वत्य**्।। वना**रहे रहम

তিলক মুক্তাফর্ল **শত** দুশো:। ভুযুগে বিজন শত শুক্তী কৰ্ণৰুষে স্তে।। কাঞ্নানি ত্ শৃসাণি শিরো বজু শতাত্মক । গ্রীবাযা নেত্রপট-व शासिक जमन्उ ॥ इस्मीव न्न ७ भृष्ठि रेवर्ष्य नजभायको । माहिति कत्र कार्या (मोशिक् শতান্ হৃদি।। খুরা (হন ম্যা: का-र्याः शृहः भूकावनी भरः। भ्रं। काराम् कारा ह यान कभूत हन्त-रेनः ॥ अक्षमानि ह (द्वामानि (द्वीभारः राज्ञिक कात्राय**्। गा**क्ज्य **ज नउ**॰ **७**वरश्रीन भविकन्नस्य ॥ **७**था-न्यानि ह बङ्गानि ज्ञान्यर् नर्व नः क्षियु। व्ययंग्रहर्कत्रयः जिख्नाः शाम-यक एडाजाक ॥ (गाम्ब माकाक ত্তথা দধি দুখা খকপতঃ। পুছাগ্রে চানর দদ্যাৎ সমীপে তামু দোহ-मः ॥ अञ्चलानि ह रेश्यानि ज्यान नि চ শক্তিতঃ। काরযেদেব মেবস্ত চতুর্যাশশেন বৎসক ॥ তথান্যানি চ নৰ্বাণ পাদাং শ্চেক্ষ্ ম্যাণ স্তথা । নান। ফ্লানি সর্বাণি পঞ্চবর্ণ বি-ভানক।। এবং বিরচনং কৃত্বা ভদ্ব-एक बाधिवाननः । अङ्गिरात्रा **मक्कि**-ণা দৰু। ধেন নামন্ত্ৰ নেত্ৰ চঃ ॥ গুড-(अनु वनावाश इनस्कानाश्वक उः ।

ব্বংসর্বদেবগণ শাম যতঃ পঠন্তি ক দুন্দু বিষ্ণু কনলাসন বামদেবাঃ। সমস্ত ভবন ত্রয় হেতু যুক্তা দেবি ভবসাগর পীড্য-

স্ত্রনিধিঃ পু: খ্য়েনপক্ষী। ইভি ত্রিকাণ্ডশেষঃ॥

ন্তন্ত্রপারাযণ ব্লী সর্বরন্ত্রান । যথা। সম্দ্রোপভ্যকা হৈনী পর্ব-তাধিভ্যকাপুরী। রন্ত্রপারাযণ না-ন্না লঙ্কেতি নম নৈথিলি॥ ইভি ভটিঃ॥

রবুপুভা স্ত্রী জিনানা নরকবিশেষ: । যথা। রব্ব শর্কুরা বালকা পক্ষ তন শুভা:। মহাতমপুভাবে ं छऽ (था (था) नद्गक ज्नयः । इंडि (इमर्हेन्द्रः ॥

রত্নস্থ্য ক্লী হীরকণা ই**তি ছেম**। চন্দুঃ।।

রত্নরাট্^জ ক্লী মাণিক্যণ। ইতি রাজ-নির্ঘণ্টঃ।। রত্নশুষ্ঠক্ষা।

রত্নবতী জ্ঞী পৃথিবী। ইতি শব্দ -নালা।। রত্নযুক্তা চা।

त्रञ्चर्कः क्ली भूझक्तथः। ইভি
भद्यञ्चर्वातनी ॥ त्रञ्चर्यभनीतन वि॥
त्रञ्चर्यान्ः भूः मूर्यक्षत्रवं ३:। ইত্যभतः॥

त्रञ्जन् श्री भृषिवी। ইতি হেমচন্দুः॥ त्रञ्जाकतः भू मगुपुः। ইত্যমतः॥ त्रञ्जादभिखिञ्चान्धः॥

রহাঙ্ক: পু॰ বিষ্ণুরথ:। ইতি भेष-

वर्षे कल्डात १ जू विनारम् ॥ धाना পর্বতবৎ সর্ব মত্রাপি পরি কল্লবেৎ 1 अवना वास्तर क्या वृक्षान् (नवार **म्य काक्षनान् ॥ श्र्वायट श्रुञ्ज शा-**नीरियः भुजारक हाथ भूईवर । शृबंदम्खक भिद्युः कल भञ्जान्-. भीत्ररष्ट् ॥ यथा (भवगनाः अर्ह्य লর্ব রত্নেম্ববহ্নি সাঃ। ত্বঞ্চ রত্তনযো নিত্য মতঃ পাহি নহাচল ॥ব্যা দুত্র পুদানেন তৃষ্টি পুসকতে ছরি: । मरानन्त भूरायन उत्यामः भारि शर्बा ।। अंतिन विधिना यस महा-দুত্রণ মহাগিরিণ। স বাতি বৈফবণ লোক মনরেশর প্জিত:।। যাবৎ কল্প ড সাগু বসেছেহ নরাধিপ । ক্পারোগ্য গুণোপেতঃ সন্তরী পাধিপো ভবেৎ 🏿 বুদ্ধহত্যাদিক• কিঞ্চিদ্দিত্তামূত্র বা কৃত। তৎসর্ব• নাশ নাবাতি গিরি বঁজুহতো যথা ॥ ইতি মাৎস্যে ৭৭ অখ্যাयः ॥ द्रवाज्यतः क्री मित्रयानऋद्रतः। बंधा । ७ इंग्रिक । ७ त्र थात्रण खभाः। धनुः यममा मायु युः श्रीमद्यामनमूरनः। इर्याः काः न्य भाक्षम्यः ब्रङ्गा इत्र । धार्याः ॥ ইতি রাজবল তঃ।।

বিপুলো হচল: । পদ্মরাণ সমো রিব্রি: পুণ বন্ধমুটিইন্ত:। মুটুম্ছাত্ বিশিক্তরেণ তু বিন্যদেশ । ধান্য ইতি ভাষা। ইত্যমর: ॥ শ্রী পুণ-পর্বতবং সর্ব মত্রাপি পরিকল্লবেশ সুণো রল্পার্লী ইত্যন্যে । ইতি । তর্বদাবাহুন ক্রা বৃক্ষান্ দেবাণ ভরতঃ ॥

> রত্যস্থ গ্লা যোনি:। ইতি শব্রজাপ বলী।।

> त्रथः भूः काराः॥ हत्रभः॥ (र छ मः বৃক্ষ:। ইতি বিখ:।। তিনিস্ফ্ । ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ।। চক্রবিশিষ্ট-युक्तार्थयानः। उৎপर्यायः। भाउ।-वः २ गान्तनः ०। इंडामद्रः ॥ मान्द्रनमा वः। इंडाइवः॥ उदात्रा ভুষণ গুণা:। হস্ত; শ্ব রথ দোলাদৈর जुंनगः वाज्यकाभनः । स्त्रितीकत्रग भक्षानाः वन्तरः विदर्श्वनः ॥ इंडि রাজবল্ল ভঃ॥ 🕸॥ রথ বিশেষাণা॰ नामानि यथा। युकार्थि ठकविष्यात **मठाकः म**ुन्ह्र(ना त्रथः। **म**॰की-ডার্থ: প্র্রেখা দেবাথস্ত মকদুথঃ ११ (यारम्)। द्राया टेवनियको **१४द्र**ः থঃ পরিবাতিকঃ। কণীরথঃ পূহ-द्रपः एपनः द्रथगद्धमः ॥ व्य**नसः भ**-কটো হথ স্যাদ্মন্ত্রী কম্বলিবাস্থক• । यथ कादन वद्यान्। रिउ रेखः भ-রিবৃতে রথে॥ সপাও কম্বদী यः मार मरोकः माध्रवीनः। मजु दिला देवराष्ट्रक या न्छा बीन

চর্মণা।। ইতি হেমচন্দু:।। #।। গো-(लाकम) त्राथा यथा। भुम्खः विभु-পত্নীভি মিষ্ট নম সুধোপন। বাল-कान् (ভाकियिषा जू सगक वृज्ज বিভু: ৷৷ এত্রিমন্তরে তত্র শাত্র ম্ভ রথ॰ বর॰। দদর্শ বিপুপত্নী 🕶 পতন্ত গগনাদছো ৷৷ রত্নদর্শণ সং वुक्त बर्द्भाव श्रविद्दरः। ब्रञ्ज्ञस्य र्निवक्षक मपुत्र कलामाञ्जून ।। य ভচামর সংযুক্ত বহি শুদ্ধা শুকা-ন্বিত । পারিজাত পুস্নানা মা नाजान विदाक्षिउ ॥ भउठक म-भायुकः नतायायि मताश्व: । तः श्चिन भार्य देन भिर्म देवा र्बनमाला विভূষিতৈ: ॥ शीठवञ्च शत्रीशारेन ब्रञ्जानकात ভृषिटेजः । नवस्योवन जम्मिरनः भागभीनः जुगत्नाङ्किः॥ विज्रेक गुर्वनी श्रेष्ठ (गीनरवनश्रेत र्ब दिः। निथिপूह ७ अनाना वक्त विक्रिमह्डरेकः ॥ अवक्श त्रथा हुर्नः **७ जु**नम् इत्द्रः भर• । त्रथ मात्त्रा-रा कर्नु गृह् दु ऋग काभिनी: ॥ বিপুভার্য্যা হরি নত্ত্বা জগু র্গোলো-क मीक्षिञः। वज्य (गामिकाः मह ख्यक्वा भानूष विशुहान्।। इं**डि** वृक्षः रैवदार्ड बीक्कजमशाख ३৮ जव्रा-यः ॥ 🕸 ॥ (रव्या त्रथ्यां वा यथा । . वृश्वावाठ । ভ्य एउ मः भ्वक्रामि (विश्वासन मुखंस । यद कृदा म-র্বকামাণাণ ব্যাপ্তি শুপ্তি ভবিষ্যতি ।। पिछ पछ गरेय में टिछ (ईमवरिषः সুশোভনৈ:। বিচিত্র পদ্মরাগাদ্যৈ र्मिन क्षिणान्दिजः ॥ द्रथरिः कात्ररयप्प्रवताः मध ভৌম• मरनात्र-भः ॥ पूक्व वक्षमः इत्र मर्काटत्नु। भः শোভিত। ঘণ্টা কিন্ধিণি শহাঢ্যুণ চামরৈ: কটকান্বিত ।। পতাকা ধ্বন্ধ শোভাচ্য দর্প গৈ কপশোভিত। **७**॰ त्रथः भूजरयहक का जी अ मूम स-ল্লিকৈ:।। পারিজাতক পুল্লৈশ্চ যক্ষ-कर्पम हन्हरेतः। मूगञ्च धूलिरेजःकृत्रा দেবী তত্র নিবেশ্যে ।। পুতিমা (णाञ्चना॰ व<्म स्वामृत क्रयक्किती॰ </p> । भूजरयमुथविनाखाः मर्बनक्व मः क्ला॰ ॥ पूर्णा काउप्रायनी (पवी व-রদা বিশ্বাসনী। নিশ্স শুস্তম-थनी महिकाम्यवाजिनी ॥ भुनीपज् मरा (म २ ख यह (ना वा क्षित्र क्रिक् অনেন বলি পূর্বেণ নমস্কার যুতেন চ ।। পূজবিত্ব। ততো নেযা সমস্তাপ্সর गीठिकः। शक्षमी मक्षमी भूगी नव-ন্যেকাদশীযুচ ৷৷ তৃতীয়া শিব বিল্লে-শ দিবসেযুৎ সবেষু চ। মহানদী নদ সংজ্ঞ পর্বত সুৰণেযুচ।। তত্ত্র মণ্ডগ

निन्तान महसाविष्ठे निष्यं छ। १ भ ল·বা মৃশ্যব·বাপি কৃত্বা বাস্ত বি চারিত।। সর্ব লক্ষণ সম্পূর্ণ সর্ব শোভা সমন্বিত। পূর্বে চ কার্যে-ছক পশ্চাত্মাত্রা॰ পুচক্রিরে।। মহা-জনপদোপেতা মহান্ত্ৰীভি: স স क्ष्वा । नर्बाम भान रेनर्वरितः न भरेख द्रिश भूकाय्य ॥ एम्डाब्र**ल**॰ শক সর্ব॰ সর্বদিক্ষু সমন্ততঃ। ভূযো-বেতাল সংঘদ্য মজেণানেন সূব্ত য় রক্ষ মা॰ নিজ ভূতেভেগ বলি॰ शृहा महा शियः। भाउ भाउ र्वात रहित अईकामार्थमाधन ॥ व्यतन विनिशासन अर्बकामान् भुगह स्म। এব দত্ত্বা বলি শক্ত তথা দেব্যাৰ-जात्य ।। विनातम् जुनीतं जू म-ওলৈ ৰপশোভিতা । ভত্তহা পূলবেদেবী হৈম ক্ৰৈচ ভামুজৈ: १। कलरेमस महरमुग गरकाएक मून्-तिरैजः। मन्छ क्ममण्रैर्ग र्यक्रिय त्रथश्रञ्जरिः ॥ जालिएएएक भारतन तक्षा के देव में दिः। विम सक्ष भारक्त भारताहिक निश्चीनः ॥ विश् दीना गृहत्यम् घन्। किकिनि द्रावि-ণৈ: ৷ স্থাপথিত্বা ভতে৷ দেবী • নির্ম-(कुहर्नेकः भ्रेजः॥ शामयारि कृ टिक्स की का शी कावर्डित विस्माब्रिडः।

यखिक निम्तका विद्धः गरेश नी लाए. शानारभरेवः । येव भाव।ऋदा-क्टिम येवाहादि निमक्तरण्या भूरका क्ष परस्कृभः भुख्यकः कनरेमः ज्ञालर ॥ उथा कल्ब क्वाप्तन हन्त-द्भेनः **ब्ल्क्कु**रम् न ह । शास्त्राहना जस्म -**७न (**म्वी मानिन) भ्राय्य ॥ (क्-महिन कां जिल्ला भीता अपनारेना अ-रनकथा। वारमाजिः मूमरेन किरेजः भूनध्भः मम् कार्ष ।। जक्षा ज ख्या कन्या हिक्राजीनय मूःचिजान् ৷ ভক্য ভোজ্যান পানেন তত্ত্ সর্বা শ্চ পুলিবে ।। ভোজবিত্বা ক-भाषिक (मवी मि भीषक। मिकि । রথে কৃত্বা তথা দেবী পুন রেব গৃহ• न(य८ ।। मह्जा कन ज'रधन जमख বিভবাশ্বিতঃ। শান্ত রেণু পথ সর্ব॰ भूम पूर्वाकरिं के लिः ॥ भूकिनाः भारितः कन्याञ्चः जीञ्च संक्रण वा-मिकि:। **जिल्लिन यथा शाः**णुः ক্র। পঙ্কণ পুচকিরে ॥ পুরশোভাণ পথে শোভা দারশোভা গৃহে गृष्ट् । कावरी उंच्या भक नर्व वाधाः निवाद्रराटः । व्याहरा खद्रव स्विन् भागिहिःम। विवद्धः यू ॥ বন্ধনস্থ। বিমেক্তিব্যা বধ্যা: ক্রো-धारि भ्रवदः । जकान कोमूरी॰

ार्चरमरेवस्त्र **भक्षत्रारेम्धः পু**ভিষ্ঠি**ত।।** থেযাত্রা তদা শক্র সুরৈ: স্বর্গে সদা ্তা।। তথা কিমর গন্ধরৈ ভূ পা-ग्रन निवामिण्डिः । त्रथयाञा शु-**जा**रवन মোদন্তে দিবি দেবতা: ॥ সাদিত্যে রথ্যাত্রা কৃদু**থেন নভসঃ** कत्य । (मरवंश मिवं विमानञ् রথযাত্র। পূভাবতঃ ।। ক্রীডন্তে বি-বিধৈ ভোঁগৈঃ সর্বাতঙ্ক বিবর্জিতাঃ েতথা ত্বম্পি দেবেন্দু রথযাত্রাক-রো ভব।। শিবাধা: শিবদাধাস্ত পরমেণ সমাধিনা। অগন্ত্য উবাচ ! রথগাত্রা কৃত• পুণ্য• বুহ্মণো বা-भवमा जू। भूर्ब यद कथिक छाउ তত্তে সর্বণ ম্যা খিল।।। ব্যাপিত। ৰাত্ৰ সন্দেহো দেবীনাহাত্ম্য মুক্ত[্] भः। यः भारेट मृगुवाद्याभ जिल মান্পসত্তম।। স সুথ যশ: সৌ ভাগ্য॰ পুত্রপুাণ্ডি মথেপ্সিতা। লভতে নাত্র সন্দেহে ইত্যেব বুক্ষ ণো হবুবী ।। স্ববলেন কৃতে রাজ্যে পুর। শক্রম্য কীর্ত্তিতা। খনদস্য পু-রী পাপ্তি র্বৰুণস্যচ বাযুনা।। হৃতে স্থানে কৃতা তেন তথা শুদ্ধা চ নিৰ্থা (७: । जुळाळ भव्या म्ह्रा भ्वी র্ভোগবভী: শৃভা:१। ইতিদেবীপুরা

ক রথযাত্রান্ত কার্যেৎ।। সর্বদী 🏋 পরিথ্যাত্রা বিধি নাহাত্ম্য ৩৯ আ थ्रायः ११ क्षा नवगुराना व्या यथा। याजनाना॰ जरुनुानि ভान्तवम् ब्रन (थ। नव। क्रेमान्छ खरेषवामािष्टु-खा दिवमखगः ॥ मार्काकारि স্তথা সপ্ত নিযুতান্যবিকানি তু। যো-জনানান্ত তস্যাক্ষণ তত্ত্ৰ চক্ৰণ পুতি-ষ্ঠিত ।। ত্রিনাভিমতি পঞ্চারে যঞ্জে-भिनाक्षयाञ्चाति। मञ्च मद्रस् यटक् মু কালচক পুভিপ্তিত ॥ চত্ত্বারি -শৎসহসাণি দ্বিতীযোক্ষো বিবস্বতঃ । পঞ্চান্যানি তু সার্ভানি স্যাননেস্য দিজোত্তনা: ৷৷ অঞ্চ পুনাণ মৃভযো: शुगान उरशहाक्याः। ज्या**१कः** স্তত্ম্বাদের চ প্রবাধার রথস্য বৈ ॥ দ্বিতীযেক্ষে তু তচ্বক সংস্থিত না-नमाहत्व । इयाम्ह मश्रह्मराः नि **उज्ञामानि निर्दाक्छ ॥ गायबी ह** বৃহত্যুঞ্চিক্ জগতী প'ক্তি রেব চ। **जन्हुन बिह्ने विज्ञुका मुन्ता नि** इत्रया त्रावः ॥ । इं (कोर्प्य ৩৮ অখ্যায়ঃ।। রথ জ্রিচকঃ সো-মস্য হ্বন্দাভা স্তম্য বাজিন:। বাম দক্ষিণতো যুক্তা দশ তেন নিশাক-র:।। বীথ্যাশুযাণি চরতি নক্ষত্রা-शि द्विविर्था। २ । (माम भूधन) চাষ্টাভি বাজিভি বাযুবেণিভি:।।

বারিজৈঃ স্থানে। যুক্ত স্তেনালৌ যাতি সর্বতঃ । ৩। শুক্রস্ভ্নিজৈ **ब्रोक्षः मान्स्राम एम**ि वृ^रजः ॥ ८ ॥ অপ্তাভি শ্চাথ ভৌমস্য রথো হৈনঃ সুশোভন:।৫। বৃহস্পতে রথাষ্টা-श्रः मान्त्रतार्श्य विर्मिजः ॥ ७॥ तथ खरनाभरया ऋत्था मन्त्रमायम निर्मि ७:।१। वर्जाता जीकतात्र मह ज्या ষ্ট্ৰিহ্ যৈ বৃ্ভ:॥৮।৯॥ এতে মহ। गुरागा रेव ममार्थाजा तथा नव। সর্বে ধ্রুবে মহাভাগা নিবদ্ধা বাত त्रिमािं ।। गुरु क्रं जात्राधिक्षेत्रानि भुरत तकान्याभवकः। जुमछि जुन মং খ্য**ন সর্বাণ্যনিল রশ্মিভিঃ** ॥ इंडि क्लिफ्रें ४८० व्यथ्यायः ॥ 🗱 🗐 🌝 🗝 👑 বাল ম্য রথ: যাত্রাশবে দুষ্ট-😪 🐃 ছে,:ভির্ন্থিদাভরণেরথ ৰুজাক লোক নৈত্ৰ লঘু জিফুক ভেষু **ज्यान्त**ः थिन विधान मथाङः। (जन সদ্যুষ্ বশাস্থুতপকৈ: সাধুরাশিবতি সাধুভিরকে॥ #॥ অথর্থচক মাহ । उक्ष विक कन्नकीर्ग भूत्रकार प्र मृक वनयः वनयम्। भव्रञ्जाग निविञ ভুম মগাদাবিমধ্য মনসো নবভাগ ॥ অগ্রে ভবতি সংকলিরম্ব: ক্ব-রোডুনি জযোথ রথাঙ্গে। সন্ধিতের্থ ভূতি রন্তর সংদ্ধা ভীকি রিপ্ত ননসো

नेनू गर्छ।। 🗱।। ज्रष मुहूर्वगनभरछी রথ ক্ত্য: । পূর্বের পুনর্বস্ জ্যেষ্ঠা-नूत्राक्षा (त्रवजी बर्याः । भुवनाहि ত্রিভে হস্ত ত্রিত্যে রোহিণী মৃগে॥ मार्क भोग्र हित्न भोग्र विनक्ष त्रथ कम मर्। #। जाथ (क्रांजिः সাগরে রথচক। রথাকার। লিখে-इक जानुजाको विलाकस्य । त्र-থাগুে ত্রীণি রক্ষাণি সৃষ্টি মার্গে পু-माপययः ॥ मृष्ट्र मृज्रु बंद हरक मिकिरा भर् ख्या । तथार्ग् ह भ-हाटना उ मध्य रेठव म्थनुर ॥ ইত্যার্য্যে জ্যোতিরিবল ভরামেণ क् जाः मुङापिमाः॥ 🕸 ॥ व्यमहार्थः। व्यथानखद्गः भोदाः मान्त्नानाः द्रथाः না॰ অথিল সঞ্গর্ণ বিধান কার্য্য মাহুঃ কথবন্তি। কেষু লোল স• क्छानि बाजी भूनर्वम् मुर्गा धनिष्ठा শতভিষা এতানি। নৈত্ৰ সংজ্ঞানি মৃগশিরা রেবতী চিত্রা অনরাধা এতানি ৷ লঘুস জ্ঞানি হস্তা অশ্বিনী পুষ্যা অভিজিৎ এতানি। জিফু রি-ন্দু স্বন্ত জ্যেষ্ঠা কো বুন্ধা ভক্ত• রোহিণী এতেয় নক্ষেত্র । পুনঃ কেষু সেন সভূত্যু ইন: সূর্য্য: তেন नर वर्तात्वयु । न जाः मूज्यूशागः मृश्यू वाद्मयू। शनः कश्यिन् माधूदानिः

বতি শুভগুহ রাশিযুক্তে অর্কে লগ্নে नि । भूनः किः वनाञ्जी नथमः স্থান অমু চতুর্থ তপঃ নবন এত-क्टवनरेष्टः नाधुकिः मुजगुरेह दिछ ् ।। खथ त्रथहर्कि नक्कव ङ्राभनः । উফেতি। উঞ্চৃক্ফি: সূর্য্য স্তুস্য করৈ: कित्ररेगः कीर्नः व्याष्टः भूतः कका मखनीय बंजाग भुति में। येमा जह **जम्कक्षिजि जमार वर्षार मूर्य्या**-कान्न नक्ष बाद अनमः नक्रमा वन য শ্চক্র ত্স্যাগুৰে অগুভাগ মার ভ্য আবিমধ্য মধ্যভাগপর্য্যন্ত স্-भी कर्खवाः किञ्चलः अक्ष वद्ययः नः ৰভাগণ নবভি ভাগৈ: স্থিত মিভি যাবং। পুনঃ কি ভুড় সব্যভাগনি চিত ভু ৷ বামভাগেন ব্যাপ্ত ভুমণ भिठि ॥ व्यथाना कृतः। व्यनमः শক্টম্য অগুভে অগুগত বর্ত্তমানে **टन्द्रु नक्राब मक्रलिः** गूकः खर्जि। কুবরোড়নি যুগন্ধরণতে বর্ত্তবান ন ক্ষরে অন্তোমৃতিঃ মরণ ভবতি। র-খাঙ্গে চক্রযুগ্মে হযো ভবতি। সন্ধি-তে সন্ধিগত নক্ষত্রে অর্থহৃতি: দু ব্যহরণ ভবতি। অন্তরসদ্ধৌ মধ্য नकान गड नक्षरब नीडि र्स्या छ বতি। গর্ভে মধ্যভাগ গত নক্ষত্রে 🛚

निष्ठिः णुङ खवि । नन् निष्ठिङ भिर्जि। यनार मुगमः ॥ तथक्छा खी तथमम्हः। उर्भः र्यायः। तथ्वृकः २। इङामतः ॥ तथकतः भ् तथकातः। इङि मनः त्रावनी ॥

त्रथकातः भू तथिनर्गानकर्छ। छू-छात इंडि छाषा। मञ्कत्रनीनाः ई माहिष्ठाङ्का उ: । छ० भर्य्यायः । छक्का २ वर्ष्वकिः ० वृष्ठे। ८ काष्ठ उद्दे ६। इंड्यम्बः ॥ मृज्यक्षातः ७ वर्ष्वकी पत्रथकतः ৮ काष्ठ उक्षकः २। इंडि मक्तिज्ञावनी ॥

त्रथक्षर्भी भू॰ मात्रथिः। ই ग्रमदः॥ त्रथशर्ज्ञकः भू॰ कक्षवाद्यवानः। नद्र-त्रथः। ७९ भर्गायः। क्षीद्रथः २ श्रवह्रणः ० एत्रनः ८। ইতি হেন; हर्मुः॥

রথগুড়িঃ ত্রী পরপুত্রণাভিবাত-রক্ষার্থণ রথস্য সন্নাহ্বদাবরণকা; বিদ্বায় ॥ রথস্য গুড়িঃ কাণ্ডাদি; ভ্যোরক্ষার্থনাবরণ । তৎপর্য্যায়ঃ । বর্ষথাং ৷ ইত্যানর: ভরতক্ষ ॥ রথগোপন ক্লী রথগুড়িঃ । ইতি হলামুধা।।

রথচরণঃ পু॰ চক্রবাকপক্ষী। ইতি শব্দরহাবলী।। রথচক্র॰। যথা। রশ্বংক্ষোণী যন্তা শতগৃতি রগেন্দ্রে। ধন্রথো রথাঙ্গে চন্দ্রকৌরথচ-রণপাণিঃ শর ইতি।ইতি মহিদ্রঃ ডোত্রণ ।।

রথদ: পু• তিনিশব্দ:। ই ত্যার:॥ রথন্তর: ত্রি রথেনতরতি য়:। ইতি মুঞ্জবোধব্যাকরণ•॥

র্থপর্য্যায়: পু॰ বেডসবৃক্ষঃ।ইডি শব্চন্দুকা॥

त्रथभारः भू ठकः। ইভি ছেম-टन्दुः॥

द्रथः जी नतीतिः भगः। इंडिभन्

े क्री एक । इंडानतः॥ প্ চক राक्षणकी। इंडा

৺ ৯\$ এ খন ^{শাল} জলা প্ৰক্ষি**: । ইতি হল।**

৺ জৌ কামিঃ। ইতিরাজ-নেঘটঃ।।

त्रथाउतः शृ॰ कन्न जरः। इज्जितः शृत्र १९११

ज्ञथा जुः शुः (व उ म व्कः। ३ कि भ प्रज्ञादधी ॥

त्रथाज् नुझः भू॰ विज्ञाः। ইত্যমর
है;कारा॰ जत्रजः।।
द्राथादहारी भू॰ तथस्यूकार्जा।

केंडि (हग)न्मु; ॥

त्रिकः पृ त्रथी। इंडिएतः ॥ जि-निभव्कः। हेटि ताकनिर्घणः॥

त्रियनः भू त्रथी। इंडामतः॥

त्रथितः भ्ः त्रथा। इंडिमदत्रः।-

त्रथीं ग्रं त्रथमानीताका ि । उटशर्यायः । त्रथिकः २ त्रथिनः ० ।
इठामदः ॥ त्रथाता ही ८ त्रथीः ६
त्रथितः ७ । टि इम्मिन्यः ॥ त्रथयानी १ माताकः ৮ । इठि समत्रञ्ञावनी ॥ मान्यनात् । ३।
इठि कि विषदः ॥

त्रथाः भ् त्रथमात्वाहात्वाहेकः । इंडान्द्रः ॥ त्रथाःमः । इंडाह्मः । ह्या

द्रथा खी त्रयमगृहः। उट् लर्घायः। द्रथक प्रारं द्रध्युकः ।। श्र अद्रारं मार्गः। नाष्ट्र हिन्न खारा। उट्-लर्घायः। भूटानी र विश्विथा । १ इंडागदः॥ श्रावर्डनी । इंडि (मिनी ।। ल्हाः॥ ह्युकः। इंडि (स्वहन्दुः॥

র ে উৎখাতে। ইতি কবিকল্পজনঃ

।! বেফাদিঃ । উ খোত মুৎখনন

নিতি গোবিন্দ ভ ইনা রদতি ভূনি•
শুকরঃ । ইতি দুগানাসঃ ।।

(गिरिनी ॥ शूक्यम् उ नक्रा॰ यथा। विवर्षि र्यन्शिनाम्ह एष्टाः शिक्षा व नाः मुजाः । जीका मण्डेहः नगाः শেষা জিহ্বা রক্তা সনা শ্ভা।। क्षीयञ्चनम् । यथा। अन्त्भग्र म मा पडा जिया काकिनाममः । मार्किना युक्त नमठे रुगमक ज्थावक् ।। नामा जना जनकुठे। । শ্রীণান্ত কৃতির। শুভা। করাল বি ষমা দন্তা: কেশান চ ভয়াৰ চ।। त्रोवंग्राक्ष्टेगा नाम्ह नीय. जबू -শ্চ নৃত্যবে। ইতি শাৰুডে ৬৬ অ- 🖟 ब्रायः॥ऋ॥ पछन १ नऽ मु हि दु॰ यथा । रखनम् इत्यान् किञ्चा झरम २ मृहि র্ভবেৎ। ইতি কৌর্ঘে উপরিভাগে >२ व्यव्यायः ॥ 🗱 ॥ एखनः मनः शर्याः (नभः मत्तर् मह्रवः । न তত্র বহুশঃ স্বর্য্যান্মর্মুদ্ধরণে পুনঃ ॥ ভবেদশৌচ মত্যর্থ তৃণবেধাদ্র ণে কৃতে। ইতি পুায**ি**চ ভতভুধ্ত वहनः ॥

রদন্তন: পৃ• ওঠ:। ইতি হেনচন্দু:।। রদন: পৃ• দন্তঃ। ইত্যমর:।। উৎ-খননে ল্লী।।

প্রদন্ভদঃ পু• ওঃ।। অধরঃ। ইত্ত্য অরঃ।। তৃস্য শৃত্ত শেলুত লক্ষণ- যথা

स्रः भू॰ एषः ॥ विष्यं पर १ हिंड हिंद । सार्श्या प्रति ।। भूक्ष एष्ठ लक्ष्म । यथा । विद्याभि ते मान्त प्रता ।। विद्याभि ते मान्त ।। विद्याभि ते मान्त ।। विद्याभि ते मान्त प्रता ।। विद्याभि ते मान्त मान्त ।।। विद्याभि ते मान्त मान्त मान्त ।। विद्याभि ते मान्त मान्त ।। विद्याभि ते मान्त मान्त मान्त ।।। विद्याभि ते मान्त मान्त मान्त ।।। विद्याभि ते मान्त मान्त मान्त ।।। विद्याभि ते मान्त मान्त मान्त ।। विद्याभि ते मान्त मान्त मान्त मान्त ।।। विद्याभि ते मान्त मान्त मान्त मान्त ।।। विद्याभि ते मान्त मान्त मान्त ।।। विद्याभि ते मान्त मान्त मान्त मान्त मान्त ।।। विद्याभि ते मान्त मान्त मान्त मान्त ।।। विद्याभि ते मान्त म

রন্ধ ম ও ঞ) রাগে। ইতি ক রন্ধ মন ও ঞ) কল্পদমঃ । ে ে এ রন্ধ্যতি রন্ধ্যাল জনাই স্থান ম্গরমণাদন্য মন্ত্রনাই প্রাণাপন তা। ও রঙ্জা লোক রন্ধানি বিগোবর্ণন্তরোকে দেন লোক লি শ্চ। ইতি দুর্গানাসা।।

त्रिष्ठित्वः भू विष्ठुः॥ हन्द्रवःभीयः नृপভিভেদः। म उ मास्कृष्ठिभूधः। इंडि मिनी॥ सङ्ग्रः। ইंडि भः स्त्रद्वावनी ॥

त्रसः जी वर्जा। निर्ना इंजिस्मिनी।
त्रस्तनः ज्ञी भाकः। त्रध्वात्मा जात्व
श्निष्ठ भुज्याम निष्णसः। यथा द्रसः
नायसानी । इंजि मःक्षिष्ठमात
व्याक्रवाः॥

विदिनी।।

জালববূরক:। ইতি त्राजिभियंग्रः॥

त्रमुवज्ञः भू छेन्तूकः। ইতি তি हा ख শেশ: !!

রষ্কুব শঃ পু॰ ছিদুযুক্তব শঃ। ফে। क्वाँम इंडि ভाषा। उद्भर्यायः । पुक्नातः २ की ठका ख्राः ७ मञ्च तः ८ वारनीयः ৫ म्वितामाः ७। व्यम् खनाः। व स्मो ज्यम क्वार्यो চ किक्षिडिएको ह भी उलो। मूब ক্ ছু পুমেহার্শঃ পিতত দাহাসু না-मानी।। विल्माय। त्रकृवःमञ्च भीभः নো ২জীর্ণনাশকঃ। কচিক্ৎ পা हान। इत्रः भूलाया छन्यनाभनः ॥ ইতিরাজনিঘট: ॥

রপ বদে। ইতি কবিকল্পছন:।। রপতি। বদঃ কথন•। ইতি দুর্গা-मानः॥

রফ ই গভ্যা•।। বধে। ইভি কবি-বল্পদা ।। ই রয়তে। ইতি দুর্গা-मानः ॥

রফ পত্যা ।। ৰখে। ইতি কবিকল্প জন:।। রফতি। ইতিদুর্গাদাস:।। রব ই গত্যা। ইতি ক্ৰিকল্পছমঃ॥ ই রয়্যত। ইতিদুর্গানাদঃ॥

त्रकु॰ ज्ली प्रग॰।। हिपु॰। देखि। त्रव देख भाषा । देखि कविकन्नक्यः॥ রবঃ পু॰ শব্দ:। রবধাতো ভাৰে २ल् भुज्रायन निम्नमः ॥

রভ ঔড রাভদ্যে। ইতি কবিক্ল ষ্দঃ ॥ রাভস্য মুৎসু নিভাব: 🕽 নির্বিচারা পুকুক্তি রিভি গোবিনদ ভिष्रः॥ 'ঔ त्रक्षा। उत्रच्छ नाधूः भुत्ता । भाष भूति १वं भारतम् । শান্ত্র পঠিতু নার ভতে শিষ্য: 1 इंভि দুগাদাস:॥

রভ ইউ শবে।ইতিকবিকল্পদমঃ ॥ ই রম্ভাতে। ড রম্ভতে। ইতি <u> पूर्वामाञ्चः ॥</u>

রভসঃ পু॰ বেগঃ।। হর্বঃ। ইঙ্গি विषिनी ॥ (भी बी भर्य) विठातः । इंडाक्नः॥ उंटम्का मिंडि किन হং।। জ্রিখা মারভসাচ দৃশ্যতে। ইতি কৃষ্ণ: ॥ यहा তুর**ভস ও**ণ েযোগাৎ অর্শ আদিত্বাৎ অপুত্য-যে তদ্বতি বৰ্ত্ততে তদা বাচ্যলিঞ্ব-ত। महार । इंडि निकारिमःशुःस् ভরতঃ।। অভিধানবিশেষশ্চ।।

রুম উড জ ঔ ক্রীডে। ইতি কবি-कन्नक्रमः ॥ (त्रकािनः। উ त्रभिद्रा রাভা। ড রনতে। জ রান: রম:। **' अ असा। इंडि पूर्णामामः॥**

त्रमः भः काष्ठः।। त्रकारभाकवृकः॥

कामात्रवः । इंडि भिनिनी ॥ त्रम-१८ । त्रमधार्डा जीर्व १ निहे शुड्य निष्रमः ॥

রমক: পৃ॰ কান্ত:।ইত্যুণাদিকোষ:॥ রমঠ॰ লী হিন্ধু।ইত্যুণাদিকোষ:॥ রমঠধুনি: পু॰ হিন্ধু।ইতিশদ চন্দ্রিকা॥

इस्त शि शिक्षा स्वाप्त । इंडि सि किसी। कवन । इंडि एस्मिट्सुः ॥ कञ्चन । उद्भव्या । स्वृक्ष्व्या । क र गुम्मा प्र्याः ७ म् ब्र छ । ठ व्र ख । क र गुम्मा प्र्याः ७ म् ब्र छ । ठ व्र ख । क र गुम्मा । प्रियुवन । दिख्न । ५ ब्र जिः २ केमम् छ । २ व्य खिमानि छ । १ व्या गिम्मा प्रकार । क खिला । क । उन्न व्या प्रकार । विल्ला । क । क । विल्ला । क । क । विल्ला । विल्ला विल्ला । विला । विल्ला । विल्ला । विल्ला । विल्ला । विल्ला । विल्ला । विल्ला

রমণঃ পু॰ পভিঃ।। কামদেবঃ। ইভি মেদিনী।। গর্দভঃ। ইভি হেমচন্দুঃ ।। বৃষণঃ। ইভি শব্চন্দুিকা।। ম হারিষ্টঃ। ইভি রাজনিয়ন্টঃ।।

রুমণক ক্রী জানুষীপান্তগতবর্ষবি-শেষ: । স তুরমক্রম: । নথা । এবমেবোত্তরে জ্রীণি বর্ষাণি চ ত-পোধন । অকব্র্য সিন্ধুক্লাৎ শৃক্ষবানবধি: মৃত্য: ।। হিরম্মণ ত-তো বর্ষ খেতাবধি নিগদ্যতে । त्रमाक्ष उठा वर्षः नीण उमावः शिः मृद्धः ॥ अशिष्ठ । भिष उवाष्ठ । एक्षित्व चू श्वेष्ठमा निष्यत्माद्धः त्रम जू । वर्षः त्रमाकः नाम कारत्यः उत्र मानवाः ॥ मृङ्गाञ्जिन मन्नाः भाः मर्ख मृश्यिष्णनाः । एण वर्षः महमानि णजानि एणभक्ष ह ॥ कीविष्ठ एक महाञाग निजाः मृहि-ज मानमाः । इंडि भाष्म ञ्थाः २२४ । २२२ अथार्यो ॥

त्रभग खी त्रभगे। इंछ अत्र होका।।
त्रभगे खी भाती। इंछि अपिनी।।
उँ एक्ष्रेखी विष्णयः। या वल्नू र्छानलहाद्रम (जो खाला) न कालः त्रभयछि ना। इंछ अत्र खत्र छो।। वालाः ।
व्याप्त्रमः। यथा। वाला ह त्रभगे ।
त्रामा वक्षा कामकलाणि ह। इंछि
भक्ष हिन्दुका।।

রমণীয় ত্রি সুন্দরে। ইত্যমরটীকা।। রমণ্য ত্রি রমণীয় । ইতি সিদ্ধান্ত কৌমুদ্যামুণাদিকৃত্তি:।।

त्रमितः भू नायकः ॥ यर्गः। ইछि त्मिति ॥ काकः । ইछि मदत्रङ्गाः वनी ॥ कानः ॥ कामरम्यः । ইछि निकाष्ठकोत्रम् ग्रास्थामिन्छिः ॥ त्रमा खी नक्षीः । ইछि (समिनी ॥ मिन्दुकत्राक्षकन्या । साकद्धिरम्यन বিবাহিতা। যথা। ততঃ শ্লিপ্রো রাজা যুদ্ধানাভূয পুপ্রকান্। সুশা-স্তাযা মতি বৃধ্বা রমা প্রানাৎ স কল্পয়ে ।। ইতি কল্পিরাণে ২৫ অধ্যায়: ।। শোভা। ইতি রাজ-নির্ঘণ্টঃ ।।

त्रभाषतः भू शिक्षः। यथा। तः भाषतः भूषा। भाषतदार। इछा-वयवगुष्ट क्षणभीणः॥

রমানাথ: পু• একৃষ্ণ:। রমা লক্ষ্মী শুস্যানাথ: স্বামী। ইতি ষষ্ঠীতৎ-পুক্ষসমাস নিম্নন:।।

রমাপতিঃ পু॰ প্রীক্ষা: । যথা ।

মুসক্ষস্যাসিত মিদ মিদ॰ যাত ।

রমাপতেঃ । ভুক্ত মেতদনম্বস্থে

ভ্যুত্ব গোপ্যে! দিদৃক্ষবা: ।। ইতি
মুধ্যবোধব্যাকরণ ।।

त्रराशिय॰ क्ली शय॰। ইতিশব टिन्तुका॥

রমাবেষ্টঃ পু• গ্রীবাসঃ।ইতিরাজ-নির্ঘণ্টঃ॥

রমিতা তি রতিপ্যাপিতা। যথা।

দ্বিতগতি বুজিযুবতি স্তর্ণিসতাবিপিনগতা। মূল্রিগুণা রতিগুকণা পরিরমিতা পুনদ মিজা।।
ইতি চন্দোনজ্বী ॥ বুজুম্বতি
গোপবন্থ মূর্রিপুণা জ্বিন্ফেন।

পরিরমিতা সতী পুষদ হর্ষইতা গতা। কিন্তু চা। ত্বিতগতিঃ
ত্ববিতা শীঘু গতি র্যস্যাং সা তথা
। পুনং কিন্তুতা তরণিস্তা বিপিন
গতা যমুন। সম্বন্ধি বন মুপাগতা
। কিন্তুতেন রতিগুৰুণা রতে শ্কারে গুৰুণা উপাধ্যাযেন। অযমভিপায়ং। ম্বাণ রতি কশলো নাথিকাঞ্চ রতি মধ্যাপথতি। ইতি
ভটীকা।।

রনেশর: পূ॰ বিষ্ণু:। যথা। এরান রাঘৰ রমেশ্বর লাবণালে ভ্তেশ मचयतिरा श्रमथाधिनाथ। ठानू-রনর্দন ক্ষাকপতে প্সুরারে ত্যা-জ্যা ভটা য ইতি সন্তত নামনন্তি !। ইতি কাশীখণ্ডে হরিহরস্তোত্র• ॥ इसुः भुः (वगुः॥ वानविदणयः। ইতি মেদিনী !। মহিষাসুরপিতা । যথা। **ঞ্ৰাপ্তৰ উবাচ। আরাধিতো** मशास्त्रवा ब्राह्मिश मृत्रविद्यिश। हि-রে: ম চ মূপুীত স্তপসা **তন্য শ**÷ কর।। অথ ভপ্তে। নৃহাদেব: পুত্য-ক্ষণ রাদ্ধ **ব্রাজানি তে** নর রম্ভ বর্ষর যথেপ্পিত ॥ এব गुळः পुত्रामह तस उ हन्मू मिथः র । অপাত্র। হৃ মহাের যদি তে नवानुगुरः ॥ गम बस्यवार पूर्धा

'ভবান্ ভবত্ শঙ্কর। এব মুক্স্ত দৈত্যেন পুত্রবাচ বৃষধ্জ:॥ ভা ত্বেতদ্বাঞ্ছিত তে ভবিষ্যানি সূত **खद। ইত্**ৰুক্বা স মহাদেব ভব্ৰৈবা-স্তর্থীয়ত।। রস্তোপি যাতঃ স্বস্থা-ন হয়ে। ফুল বিলোচন:। পথি रुह्न मृत्राद्याथ मृत्म महिषी॰ मूजा ।। बिहायगी किवन्गा मु न्त्री॰ थाउ्भाविनी॰। ज जा॰ मृ ষ্ট্রাথ নহিষ্ঠা॰ রাম্রঃ কামেন মো हिउ: ॥ (मार्जा) श्रीवा व उना চকার সূরতোৎসব । তথো: পু বৃত্তে সুরতে সা তদা তস্যতেরগা ॥ দধার মহিষী গর্ভণ তদা ভ্রা-হিষাসুর:। ইতি কালিকাপুরাণে ৫৯ अध्यायः ॥

म की कम्ली। अञ्चादाविष्मयः
। इंड मिनी।। गोती। इंडि
भवताद्वी।। गाधुनिः। इंडि
स्वताद्वी।। गाधुनिः। इंडि
स्वत्राद्वी।। गाधुनिः। इंडि
स्वत्रमुः।। दिन्धा । इंडि सतिः॥
गुज्जीया खी तुज्विष्मयकानः।
यथा। तुष्मावात । तुष्मावात्ताः।
विद्या होना जाताः।
विद्या होनाः। जोती। मुज्जिमाः
विद्या स्वामानाः। कतासुमः। कम्मावाः। शितिमुङा। लीत् सस्पेरिक

र्याजय ॥ कभ्दानः क्नत्राना मिल কাদন্ত কান্ত ক্থ। মাঘে সুভদাু ক-ভ্লারৈ ঘ্'তাশো মণ্ডকপুদঃ॥ গীতী-भयः मञ्जाष्ठः कालुत्न लाम्जीः य-(जटा बरेन्सः क् इ। मछका है बीवा-भः मञ्जी शुरः॥ विभावाश्वी • मन-नरेक रेम्प्रत्व काणात्र मः भूमः। मधि-পুশো দন্তকাষ্ঠ তগর জীমুখী•• याज्य ॥ दिन्नारथ कर्निकादिन क **माकारमा वहेश्रुमः। रे**कारश्च नाता-येगी নার্চেই তপত্রৈশ্চ থণ্ডদঃ।। লব-কাশশ্চ ভদ্ধান আষাঢ়ে মাধ্বী• যজেৎ। ভিলাশো বিল্পত্রিশ্চ क्वीबाध वहेक शुरः ॥ अ पुषव ५-ন্ত কাষ্ঠ॰ তগয্যা: শ্বেণে শ্বি॰। দন্ত-काश्र॰ चर्न हामः क्षीतरहा कुछमा॰ गर्डा । भरेषा यर्डा जामुभरम म्प्रामाला जामिनः। ब्राज्ञभू-बीकायगुरक कराभूरिम्ग कीवक• ॥ श्रामयिमिण निर्वारितः कृणतिः कार्निक यहार ॥ जाठिश्रेद्धः भ-पाङाक शक्षभवागाणाता यहार ॥ ঘ্তোদনঞ্ বর্যান্তে সপত্নীকান্ দ্বি-जान् युद्धः । डिना महस्यतः स्रार्तः লবণে তৃ গুড়ে স্থিত ।। বস্ত্র ছত্র সুবর্ণালৈ রাভৌচ কৃত জাগর:। गीक वारिना मेरान्य भाव भवाना

मर्बनाश्रु याए।। इंडि गाक्राउ १२० व्यथ्यायः ॥ 🗱 ॥ व्यभिष्ठ । व्यथ ज्-তীযা। সা চতৃথী যুতা রম্ভাবৃতে-তর দৈবকর্মসূ গুাহা। রম্ভাখ্যাণ বৰ্জবিত্বা তু ত্তীযা মৃনি সত্তম। व्यात्रम् नर्वकार्याम् गरमूका शुम-माउ।। ३७ तुक्तरिवर्खा । ७७ শ্চ যুণ্মবাক্য• রম্ভাবুতপর• । ভ-বিষ্যোত্তরে। হৃক্স্ব ভদুে যত্নেন র सार्थाः वुष्ठ मूख्यः। हिन्द्रिः मूक्न-ज्ञीयाया॰ माजा नियम **उ**८भन्ने। ॥ রস্তাখ্য মিতি রস্ত্রথা কৃত মিতি রম্ভাবৃত•। ইতি তিথ্যাদিতত্ত্ব•॥ त्राखानः भी त्रास्त्र हैव उन यम्याः সা। ইতি ব্যাকরণ ॥ ্রম্য শ্লী পটোলম্ল। ইভিনে-**मिनी ।। পুধানধা**তুः । ইতি कটा-थवः ॥ त्रभाः भुः ठष्णक्यूकः। ইতি मिनिनी ॥ यकवृक्षः। ইতি भद्रान्तिका ॥ त्रगृः वि ग्लाकुः। इंडि श्रिनी ।। वनकतः। ३७ को। धतः।। त्रमात्रक क्षी वर्षविष्णयः। ইতি জট।-थ्वः ॥ এउम्। विवत्न १ यथा। म-ক্ষিণেন তু মেরোস্কপেওস্যচোত্ত; (त्र १ ह । दायवा द्र त्र प्रक नाम का-

বিনলা মরা দুর্গ বিবর্জিতাং। তত্রা-পি সুনহান্ বৃক্ষে। ন্যপ্রাধাে রো-**रिज: ख्ज:॥ ७८ क्ल भामना**प्तिय कीविख वर्च वामद्रः। इंडि बद्राष्ट् পুরাণে কৃদুগীতা নামাধ্যায়:॥ প:-' টোলমূল। ইতি ত্রিকাপ্তশেষ:।। त्रमाभुद्धः भ् भागानिगृकः। ইতি त्राक्रनिर्घण्डः ॥ त्रमार्कनः भू॰ कात्रक्षत्रवृक्षः। इंजि त्राजनिर्घणः॥ त्रमा जी जाविः। इंडि (मिनी।। ञ्चलभामिनी। इंजि द्राजनिर्मण्डः॥ রমুঃ পু॰ অৰুণবর্ণঃ।। শোভা। इंज्रुशाहित्कायः॥ র্য ড গভৌ। ইতি কবিকল্লড্মঃ।। ড রয়তে। ইতি দুর্গাদাসঃ ॥ রয়: পু॰ বেগঃ। ইত্যমরঃ॥ পুবা-इः। यथा। भुवाहः भुन (द्राघः म्रा-ছেণী ধারা রয় চ স:। ইতি হেম-**ठलाः** ॥ त्रवाधीं खी ननाहै:। ইতি भूत्रापः।। র্ল্লক: পু॰ কৰ্ল:।ইত্যমর:॥ পদ্ধ। ইতি সূত্তি:।। নৃগবিশেষ: । ইতি মুম্বটঃ ॥ त्रव हे वुष्क। है जिन्नविकन्नमनः॥

है ब्र्वाडा हैंडि मुगामानः॥

यस्त्र उञ सानवाः॥ स्डिभुषाना । तदः भुः भदः। ইত্যातः॥

ा क्रिकाः मा इंडि ह्महन्तुः । विक्रा क्रिकाः । विक्रा हिंद्र क्रिकाः । विक्रा हिंद्र क्रिकाः । विक्रा हिंद्र हिंद्र । विक्रा हिंद्र हिंद्र । विक्रा हिंद्र हिंद्र । विक्रा हिंद्र हिंद्र । विक्रा हिंद्र । विक्र । विक्रा हिंद्र । विक्र हिंद्र । विक्रा हिंद्र । विक्र हिंद्र ।

বণঃ পুণ কোকিলঃ।ইত্যাদি-

कायः॥

विः भुः भूर्यतः॥ अर्कवृक्तः। इंडा শরং 🔞 জন্য ভোগ্যুণ দিন্দ বার-क्रशः। यथा। ब्रत्वी वर्ळाः ठळः शकः भाग जल हर ज्या। इंजारि वाद्याना कथान मगयभूतीनः॥ ভা নিবিদ্ধানি गথা। মাষ মা-মিৰ না॰সঞ্ নসূর॰ নিঘুপত্রক। ভক্ষদেন্থে। রবে রারে সপ্তজন্ম-नार्श्वकः॥ चार्कः नधुन्दमान कक्ताव्या व्रव नित्न । मध्वम ভবেদে। भी जन्म जन्म सतिपुरः।।। निषः गाःमः ममृतकः वित्व काश्वि ह गापुकः। ज्ञासाया तस्य बादा नश्चममार्थकः॥ इति कर्माना-**চন• ॥ क्ष ॥ त्रविशृ**ष्ट्रम्। त्रङ्गाम भिष्णि उदर्गः। टाय॰ शूर्विनक् शूक्ष ক্ষতিগজাতি সভুগুণ কৃটুরস সি• स्त्रामि रुउ।नक्षक नध्यीजिथि

अंगु किक्रारमानाभिष्मि जिः कामा। भौरगाबः। दाएमाञ्चमतीद्रः । भग्न रुख्यः। भ्याननः । अधा-श्ववाञ्चः । श्विवाधिरेषवजः । वङ्ग পুত্যधिरियजण्ड । ইতি গুইयक्त-**ज**न्नाहरः ॥ १६ ॥ चन्रा तृर्द्रभिष्ठ र्यथा। अवजी भाः खरा लाकाः छः मार प्राः भित्रज्यार । अवित्राञ्ज পুকাশেত অবনাৎ স রবি: মৃতঃ।। रेंडि नाटरमा २०५ व्यक्तायः॥ 🗱 ॥ অস্য ভার্য্যাপভ্যানি যথা। মরীচেঃ কশ্যপো জন্তে তথা জনতে বিভা-বনু:। তদ্য ভার্য্যা ভবৎ সংজ্ঞা পুত্রী ষ্ট্রঃ পুরাপভ্যো ভ্রীণ্যপত্যা-নি রাজেন্দু সংভ্যাখাণ নহসাণ নিবিঃ । जासिरज्या बननामात्र कन्यारेश-का॰ जुरवाहना॰॥ देववषञ् सन्त्यू-ষ্ঠ খনক খনুনা তডঃ। নাভি তে-লো নয় জপা পোচু লালা বিবস্থ-खः ॥ भाषामगी • ७७ शाया गवर्गा • নিৰ্মনে খতঃ। সংজ্ঞোবাচ ভক্ত শ্যু-याः नवर्शं मृतु स्म वहः ॥ क्षकः यो-স্যানি সদন পিতু স্বৃ পুন রত্র মে ১ खरान वन कन्।। वि विर्वाणकः समा-क्छम।। ननूरत्रव मसारतको यद्यनः यम मः छाको । सामजा मृक्षेत्रा मुक्षेत्र মেতদালব্যত্যা ৷৷ ন ব্জব্য মিদ্

इन प्राथल्यो कराहन। इंडों क्रिंगथ मा दाष्ट्री एति छाया सगा-দ তাং ৷৷ আক্সেগ্ৰণামাহ নাশা लाइ कराठन। याथ्याम्यानि ठाउँ-ত্র•তে যাহি দেবি যথা সুখ•।। ই তি ছায়া• গৃহে স্থাপ্য স•জ্ঞাগাৎ পি-**छ রা**লय•। উবাচ পিতর দেবী কামাত্তা ন ক্ষমা।। তেজ: সোচু মহ॰ তাত কাশ্যপন্য মহাআনঃ। ভিন্নিখন্য চ্কোপাসৌ ভৎস্থানাস कन्रकाः॥ नश्रः भ्याः क्यः वाम्राः দিতি সা পরিচিন্ত্য চ। অগচ্ছ ডবা ভূত্ব। চরন্তী চোত্তরান্ স্কান্।। তপ স্তেপেচসা ভীবু• পতি নাধাৰতে তসি। মন্যুনানো হথ তাং সংজ্ঞাং সবণায়া: তথ: রবি: ॥ সাবর্ণি: জ नयः । । न वन्लुष्टः सही न्यतः। भरेव-শ্চাং দি লাক্ষ সূতাং ভূমুণ তৃতী मिल्यः॥ मन्नां खिल्लाहासु मान-ছাত জীৰ গাবতঃ। চকারাভ্যবি कः (मुरुः न उथा शूई(४:वृह्म ॥ **চির্নালো**ল্য তা॰ ভার্য্যা॰ উবাস সবিভাবচঃ। অধি ভাবিনি বাঘেষু লনেরপি হত ভুগা ॥ বিধীথতে **ংখিকঃ য়েফঃ সা**ৰ্ণ্যদি সুতান্ গ্ৰ **७**। नाहरूक उत्त नाथ *जाबाउ* भ दिल्हाउ॥ ७३: भग्राउ मधुः ।

होगा नर्बः भगः मरु। यथा वृद्धः তথা তথ্য তৃতোষ ভগবান্ রবিঃ ॥ নিরাগস॰ ন শশাপ জগান বৃষ্টু त्र छिक•। **दृष्टा १**४ इ.यथा न्याय• न्या-ख्यिदाय कामाभः। निर्ध्यकाम् কোপেন পুণছঃ মুনা ভদা ॥ ख्-ষ্টোবাচ। তবাতিতেজসো ভীতা भारा । वड्डा क्य नाष्ट्राय मः छ। हत्र जि भा दिल । দুপ্তা হি তা॰ ভবানদ্য স্ব ভার্য্যা॰ তাত নাক্ৰ:।। ল্বন্ভোগে স-বিতা গড়ে।তর সন্ধর্ম । স হরি ইর্কাপণ মুখেন সমভাত্য ।। ত্বরন এ: ১ ত বিজু: পরপ্রুয শঙ্ক-ষা। ল। ভ্রিরেলং শুক্র নাসিকা-ख्या॰ विव**ष्ट ॥ (म**वी ख्यान-कारयञा मिश्रिमी ভिषका वर्षी। हैं जिशामा बर्गचरछ ३३ वधा यः॥ রবিকান্তঃ পু• সুর্য্যকান্তমণিঃ। ইতি ब्राजनिर्घः॥

त्र विष्ठक के निर्दाकात मूर्यप्रक्रिक विष्ण यः । यथा । जिश्रास्त त्र विष्ठक ख जाराद्रा निर्दा महिन्छ । यश्चिम् स्कृ जाराद्रा निर्दा खुना ज्वा (निर्मेशक क् । जार वर्ष्क् श्रुमा ज्वा (निर्मेशक व्यक्त्या निर्दा के विष्ये । जो क्ष्य वाक्यू एम् जुला निर्देश एउए। ख्याः ॥

পুদাপযেশা আক্ষানেক দদেদ্পত্যে व्येकक जानूक न्यान ।! नक्ष वी-. ণি চ শেষাণি রবিপাদে নিযোজ (१८ । हत्र १ इन अक्षा अलागु , র্জার্যতে নরঃ।। বিদেশ গন্ন- জানৌ **७.इ.** १ इसाइयान् । नाजिङ् न न्नु न छं छि। इ ८ छ न न्या ग्राह्य র:।। পা এছেন ভবেছৌর: স্থান खुरक्षे। ভবেक्ता अक्षांक्रा **४न** পতি মৃথি মিষ্টান্ন নাগ্যাৎ॥ भउत्क शंडेवऋख नक्षवः म्याप्यिक হ্নিত্রণ। ইতি পাক্তেড০ অধ্যাদঃ॥ रिवेडः भू॰ भरिनम्हतः। यथा। छैत्र ग শতভিষাগুৰি খাতি গুলা তিপুৱা রবি রবি**ল স**কাছে ভূত্ৰতী নৰ-म्रा । इंड्रानि (क्राडिंव उद्धुः॥ [दिउनगः भुः सावर्शिकशनुः। यथा । স বভুব নহাভাগঃ সাবণিত্তন या त्रवः। इंडि प्रतीमाशाब्धः॥ रिववसञ्गनूः॥ मनिः॥ यगम्ह॥ 'विनन्तनः श्रु' मृश्वीवः। ই**ভি** ভি का अध्यायः ॥ मावित्रमुः ॥ देववस जमनुः॥ मनिः॥ यस्म ॥ विभाशः क्षी अमाः॥ विकृतक अः। ইতি শব্দিন্দ্কা ॥

রশ্মি

ছারবে পঞ্চ ঋক্ষাণি এক নাভৌ রিবিপত্ত পু॰ আদিত্যপত্রক্ষুপঃ। পুদাপযেশা আক্ষণেক দদেদ্শহে । ইতি রাজনির্বটঃ॥

> রবিপূিশ॰ ক্লী রক্তক্ষলং॥ তানুং। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥

> त्रविश्विः भू॰ आफिड/भवः॥ ब्रक्तः क्रविशेवः। ইडि त्राजनिर्वणेः॥ ण-क्रवः। ইडि भक्षाना॥

> त्रविद्रञ्चकः ल्ली मानिकाः। ইতি রাজ-

রবিলোহ॰ ক্লী তামু॰। ইতিরাজ-নির্ঘণ্টঃ।।

त्रवित्नाहनः भू विक्ः। यथा। त्रवि त्रिंद्धाहनः सूर्यः स्विञ् त्रवित्नाह-नः। ইতি ভস্য सहसूनामखाब ।। त्रविस छा कः त्रो जानु । ই हि सम् हिसुका ॥

রবিস্নৃ: পৃ॰ শনৈশ্চর: । दথা।
নীলাঞ্জন চণ পুরাঃ রবিস্মু । মহা ।
পুরু । ছাগাযা গান্ত্রন ভূত । বন্দে
ভক্তা শনৈশ্যর ।। ইতি নবপুন্ত ধ্যেত্র ।।

विनन्तनः शु॰ जूनीवः। ইতি ত্রি রশ খনে। ইতি ক্রিকল্লছনः॥

काञ्डाभाशः॥ जाविन्ननः॥ देवस हिन्द्रामाणः॥ को काञ्च। हिन्द्रामाणः॥ केणिकाणः॥ काञ्च। क

त्रकः। ইতি शिविभी ॥ क्षा पूर्वजारं॥ রশিন্না জলাদানদানে যথা : তে-**खान्डिः म**र्गलात्यस्त्रा छात्रस्ड त्रिचि छ्लि। नगुपुषायु न॰. যোগাদ্হত্রাসো গভর্য: 🖰 😎 **उन्न श्रमाः** काटन शतिवर्डन्ति ।।-কর:। নিয়ছভাপো নেঘেভাঃ শুরা-শুরৈত রশ্মিভিঃ ৷৷ ইতি মাৎস্যে ३०२ व्यवहायः॥ 🕸 ॥ ज्ञातिहा अव मिय महास्त्रा स्वाप्तः भिणा-মহ:। করোভি নিযত কাল কা नाचा रिश्चिती उनुः ॥ छम्। स्म बन्धाया विल्याः मर्वालाक शृतील-काः। তেषाः (मुक्षा भूगः मश्र ब्र-न्यरा। गुरुरयानयः ॥ मृत्रुरम्। इति কেশশ্চ বিশ্বকর্মা তথৈব চ। বিশ্ব-ব্যগাং পুন শহান্য: সম্পদ্সু রতঃ পর: !! অর্থিস্ রিঙি খ্যাতঃ ম্রা-७ । प्रकृति इं । प्रमुद्धः पूर्वातः শ্মিন্ত পুকাতি শিশিরমূরতি। ডি-र्यान्यु व्यवादा। १८मी मूनुमः भवि গীনতে ॥ হরিকেশস্ত যঃ প্রোক্তো अभिप्र नंक्रज्ञाभावकः । विश्वकर्या खगाबिना वृषि भूका**कि भर्वना ॥** विश्ववाद्यां स्वाद म्याः म्बन् भूकाः जि निजारा। मलाव्यु विजि था। उः भ श्कारि । विश्वः ॥ व्रुग्ण

जि॰ नुश्काञ तन्य तर्वाक् बरू शुर्जाः। मरिनम्हतः भूभूकाजि स ्गण यदादे उथा ॥ এवः সূर्य्य भुः বেন সর্বা নক্ষত্র ভারকাঃ হৈ বছলে বৰ্দ্ধিতা নিভ্যু নিভ্যু মাপ্যায়য়া ह ॥ स्वितानाः शाखिनानाः देने नार्कित सर्वभः। जारानामिक्रः দিত্য তেজসা তমসা॰ পুভুঃ॥ আ-म्ए न ज् नाजीना॰ न इरम्य गत-छ छ:। नारत्यारेकत भागगुन् कूर भारेफा मञ्जूका। अविदान अ-क्रमारेकव यह अवागतियः शयः। তস্য রশ্মি সহমূত্ত শীতংযোক নিসুবং ৷৷ তাসাং চতুঃ শতং নাড্যেঃ वर्षस्य छिञ नृर्खगः । ছन्द्रनारेण्ठद যাহ্যাষ্ট কোডণা ভূকণা তথা।। অমৃতা নানতঃ সরী রশ্মধাে বৃষ্টি नक्तंनाः। हित्माघश्यक **जान्ता**र রশান ব্রিশভ পুনঃ । বশ্যে মে-याक रेशवाक ज्ञानित्ना हिनम-दर्जनाः । हन्तु। छ। नाम ठः मर्नाः পীতাভাঃ সুর্গভ্রমঃ ॥ শুকাশ্চ কল্পভ শৈচন গাৰে। বিশ্বভূত স্তথা। শুকা স্তা নানতঃ সর্বা ত্রিবিধা ঘর্ম সজনাঃ ॥ সৰু বিভৰ্ত্তি তালিঃ স মন্ধ্য পিতৃ দেবতাঃ। মন্ধ্যা-बोषरदरम् संयुग ह लिज्नल ॥

অমৃতেন স্রান্ সর্বান্ তিসু জীণ छर्गयङ्गात्म । यमः श्रीयाक रेव শতৈ: সম্বর্গতি ত্রিভিঃ॥ শরদ্যপি চ বর্ষানু চতুর্ভি: সংপুরর্ষতি। হেম-उ मिनिरत रेहर हिम मूट्म्बिङ खिंडि:।। वक्षा भाषभारम ज् **भू**र्यंऽः পুষা তু ফাল্পনে। চৈত্রে মাসি ভ (वनीरंगा था छ। रिक्षाथ जाननः ॥ रिकार्रक्षम्हात ভবেদिनमु व्यायाहरू मः विजा इतिः। विवसान् भावतः भानि পৌ সপদ্যাণ ভগঃ মৃ তঃ ॥ পর্য্যণ্যো হপ্ৰুজি বৃষ্টা কাৰ্ত্তিক মাসি ভা করঃ। মার্গশীর্ষে ভবেন্মিরঃ পৌষে বিষ্ণু: সনাতন: ॥ পঞ্জাশিন সহ-সূতি বঞ্চস্যাক কম্প । ষ্ডি: সহरेमुः भूषा जु (१८४ मः मश्र छ खथा।। शा ठाष्ठे जिः महरे मुख नवः ভিস্ত শতক্ত:। বিব্যান্দশভি: পাতি পাত্যেকাদশভি র্ভগঃ॥ স-গুভি স্তপতে মিত্র স্তৃষ্টা চৈবাষ্টভি स्था वर्षा प्रमा प्रमाजः भावि পর্য্যণ্যো নবভি স্তপেৎ 🛭 ষড়ী রশ্মি महोमुस विकृ उपि विषक्त्। वमा किनाः मूर्याः। शीरमा काक्षन সপুভ: ।। খেতো বর্ষাসু বর্ণেন পা-ওরঃ শরদি পুভু:। ছেমন্তে তামু-বর্ণঃ ন্যাৎ শিশিরে লোহিতো রবিঃ ।। ওवधी यू वनः शख यश मिन निश्वय। मृर्यं। श्मत्र प्रमण्डवरः वियु नियहिंछ॥ यान्। हार्छो गुराः छ्वयाः मृर्यं। हाशिष्ठिछ। विकाः। हन्मुनाः स्मामभूवन्ह मूक रेन्ह्य वृहस्मिछिः॥ ভৌমো ভानू ख्या त्राञ्: क्ष्र्मानिन हाद्वेमः। मर्ख धुर्व निक्षा (य गुरा एउ वाज त-निम्निः॥ ভाम। माना यथा (यानः ভुमन्डानू निवाकतः। ইতি कोर्ग्यं। ৪० व्यथायः॥

রশ্মিপতিঃ পু• আদিত্যপত্রক্ষ্ণঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।।

রস শবে। ইতি কবিকল্পন:॥ রসভি। ইতি দুর্গাদাস:॥

त्रम ८ क षात्राप्त । (म्राट्ट । इंडि किविक् मुक्त । । प्राप्त । त्रम-यि मध् प्रित्रकः। इंडिपूर्गापा मः।। त्रमः की (वालः। इंडि ताक्ष निर्माणः।। त्रमः भूः त्रम्पतिमुग्गु। श्वयस्त । म ह काल महाय ज्ञि वियप निलान ल मः मर्गा भितिषामा खन विख्य प्राप्त । यह भुकात्रा ज्विडि । उत्र भृषिव । यह द्वा वाह्ल । प्राप्त । द्वा या विख्य वाह्ल । वाह

वाह्नाए जिङः ६ मृथिगुनिन ৰণ ৰাহুন্যাৎ কৰাৰ: ১। আপো রসানানাধার কারণ অত আপ্যো नाम । जानाः भृषिद्या मन् भूरदणाः পৃথিব্যপ্যাধারকারণ মেব ৷ তেব क्रन कि जी व्याल उत्तादात्र ज्या त সানা মভিব্যক্তৌ কারণে। অভি-ৰ্যকেশ্চ মধুরাদিক্য মন্তরেণাস-ञ्जवाद मधुदानि वित्मारवित्र जन क्षिञी कात्रण । जाग्राम्यस जाः बीत्रमञ्या मधूतामि विल्लास शु।-খান্যেন নিনিত্ত চারণ । তদ্ব্যতিরে कामारि त्रमा जाता । त्रमाजि-ব্যক্তেশ্চ খণ্যাদি ভূচ ত্রয় দলিধা-নং বিনানুপলাত্তা রভিয়ক্তাবিপি व्यक्तिसीमाः कात्रगद्भः। जनुकः हतः (क। तमनार्थ। तम उन्। न्। नानः कि जिथा। निर्वा जिल्ला ह शु अध्या: शाह्य खनः॥ अ ७ ३ तमाः भव्यात न रागाए मध भक्षाण छः ব স্তি। ইভিচক্র পাণিদত্ত কৃত দুর্যু-क्टरनाभित्र भिवसामीयहोका ॥ 🕸 ॥ ন্যায্যতে তু। রসস্ত রসনা গুছে। मधुदारि दरनकथा। भएकादी तभ क्षाया निज्ञानि ह भूबंत्र।। इंडि ভাষাপরিছেদঃ॥ রস ভ্তি। সহ काब्री िदा प्रनद्धात्न तभकात् । विर्

ত্যৰ্থ: । পূৰ্বদিতি জলপ त्रामा निष्ठाः व्यन्ताः त्राक्षीत्र उद्या **ৎনিভ্য ইভ্যথ:। ইভি সি**ছ कावनी ॥ 🗱 ॥ भावीत्रश्राक्षाक्षा यः। उर्भर्यायः । त्रमिका २ 🔆 🧺 মাতা ৩ বপুঃস্বঃ ৪ চর্মাস্ত্রঃ ৫ 🧓 . সার: ১রজ সার: ৭ অসুনাত্ । ইতি द्राजनिर्यक्तेः ॥ व्याङ्ग्तिमञ्जदः ৯ ভেন্নসূৰ: ১০ অগ্নিস্তৰ: ১১ य पुनामवः १२ जाजियः १० जमृहः-तः १८ पाजूरनः १९ मूनगराभतः १७ । ইতি ছেম্চ मुः॥ তম্য निक्किः। ষৎপার্থে। রসধাতু র্য স্ততে। ২ভব-**पर्यः त्रमः । मरित्य महन्यः (पर्** র্ম ঠি তির্ম: মৃত: ।। তুম্য অ্কুণ মাহ। সন্ত্ৰহুদ্যভুক্তন্য সারো নিগদিতে। রসঃ। সভু দুব: সিতঃ भोजः सामूः ग्रिक भारता ভবে ॥ সার:। যথা গুড় মধ্ছ পুষ্ল বললত্ব-थनतीब्हापि ख्यः मादा बरिदा । তদ্য স্থান মাহ। সর্দেহ চরস্যা-शि तनमः इत्यः इतः। ननान म-क् जा भूबः यत्यः ज्नत्य ध् जः॥ जम् कर्यानाह । वाक्श ध्रमी मंद्रा था-जून महा गर तमः। भूका जि छहनू र्यारेष वहाः शान्ति है उन् रेशः। खः रेनः भी ५ तिथ शीय हरेयुः ॥ सन्त

्रांन े तथा करूँ बीद्धा खरापूराः। मभक्षा श्वान् (द्वागान् विषक् छऽ। ।। ইতি ভাবপুকাশ: 🏗 🖟 ্রান্দিশবিবস্থাভাবঃ ্ল 🚈 🦈 যো ২প্টো রসশন্দ বা-ः 🐧 इ । 😮 याचान्। एउ इनाः ्रारम् ध्या उथान्। বিভাবৈ রনুভাবৈশ্চ ব্যক্তো বা ব্য ভিসারিভি:। আয়ান্যবাৎ পুধা ু নত্তাৎ স্থানীভাষো রসো ভবেদিতি ারতৃৎসাহ শোক বিমা হাস ७१ पृथ्या कार्याः क्याप्तरः मृ স্থাবিনঃ। যদুক্ত । ব্লতি ইসক্ষ শো कण कारवादमारही ७२ ७था। জুণ্ডপ্ন। বিষয় শেচতি স্থায়িভাবা: क्रमारभी ॥ नमरग यः नम् छ् उः आः **एड य म्हाविश्वित्र छ। जाव: छायी म** বিজেযো ব্যভিচারী ততো হম্যথা।। निर्त्वन प्लानि मञ्जान्ता व्यक्तिवा **ऐরিতা:। ইতি। স্থাযিন: কারণ**ণ विज्ञादः म চावनप्रामामीशनरवन ,ছিবিধঃ। ৰথ: রতে,রবলধন কারণ• चु·रन। यूवजी यूवज्यामह भूमान्। डे-फीयन काद्रपः मुक् हन्त्वास् । এवः নৰবোলেন । রতিপুনোদাঅকো ভागः महम्बिक्टभाति उः मृहाः वः। वरार्। भ्वः जियाः जियाः

भू नि म्याग भुटि या पश्हा। স শৃক্ষার ইতি খ্যাতো র তিক্রীডাদি কারণ নিতি। দান ধর্ম যন্ত্রেষু জীবা-न(भाष्कार्भाक्ताती त्रामा वीतः। শোকস্থাযিভাব: কৰুণ:। অসম্ভা বিতমর্ত্যান্তরীক্ষ গমনাদিজো হল্ড-जः। कोजूका छत्वा **शमः। क्**ष्र-े मुाक्त मापि जयबात्र। ज्यानकः। घृ-गाकत्र भ्ा तमाप्तिका वीভৎमः। সর্বাভিভাবিতারৌদু:।। যথা রাবণ চরিতাদি। শান্তো হপি রসো হন্তি। **म्**कात्रवीत् वीख्यात्रोषु शामा ख्या-নকাঃ।কৰণা ভূত শাস্তাশ্চ নব নট্যা রস। মৃতা:।। ইতি রব্কোষ:।। এব॰ বৎসলো হলি রসো হস্তি। শৃঙ্গা-র বীর ককণান্ডুত হাস্য ভণানকাঃ । বীভৎস রোট্রা বাৎসল্য শাস্ত শ্চেতি রসা দশ।। ইতি নামনিধান--॥वट्मनः भूबारि (मुश्ट बाद्रिङ **टिम् এব । শाउउँ लोकिक्यामाङ:** । ইতি মুসটঃ।। চ শবাৎ শান্ত বৎ-সলাবপি সংগৃহী গাবিতি কেচিৎ । इंडानब्रहीकायाः ७त्रडः ॥ 🗱 ॥ অপিচ। তত্র শৃস্থারাদি সর্রসক-म्य ग्रिं जंगवान् उखर जिशुायान्-সারেণ বভৌ ন সাকল্যেন সর্বেধা मिट्यार्। मलाना मिटि। मलानीः

ना॰ म्भाना॰ पृष्ट्ना॰ व्यमन्त्रापिक পেণ দশধা বিদিতঃ সন্ সাগুজো রক্ গতঃ ইত্যুব্দ:। মলাদিযু অভিব্যক্তা রসাঃ ক্রমেণ শ্লোকেন নিবধ্যন্তে। রৌদ্যে হন্ড তশ্চ শৃঙ্গা-রে। হাস্য বীরৌ দ্যা তথা। ভ্যা নকশ্চ বীভৎসঃ শান্তঃ স প্রেম-ভ कि हः ॥ व्यविनुषा विद्वाद् वि কল: অপর্য্যাপ্তে৷ হৃত ইতি যাবৎ । অনেন বী ভংগ উক্তঃ। বিকলত্ব-**१** इवज् मात्र भवीक्षाविज्याहिना বক্ষ্যতি। ইভি শ্রীমন্ডাগবতে ১০ স্বন্ধে ৪৩ অধ্যায়ে ১৫ শ্লোক টীকা-या॰ बीध्वत्रामी ॥ 🕸 ॥ विय॰ ॥ वीर्यप्रः ॥ खनः ॥ द्वागः ॥ मुतः । ইত্যমর:॥ গন্ধরস:॥ জল•॥ পা-द्ररः। ইতি (मिनी।।

त्रमकः भूरं निष्काथनाःमः। ইতি *(इन्हन्*युः॥

त्रमक्ष्रं क्री क्ष्रंत्रमः। तम काष्ट्रं इिंड डाया। यथा। उड भात्रम् मः क्षिष्ठः (माध्नः कर्ड द्याः। मृक्षम् उम्मः क्र्यंग्राट भूट्याः कः रेगित्रकः मृथीः। इष्टिकाः थि। द्या क च्याः च्याः जिक्षक्रम । द्यो क च्याः व्याः जाख्यक्रम मृज्याः। मृद्याः বাসসা চাপি শোধ্যেৎ ॥ খটি-का थड़ी। मु हिका किहेकती। मि-कुडम रेमक्षद । दल्मीक उद्धा मृट । वन्त्रीक वक्ष्येत्र । ऋगत्रमदनः । খারীলবণ। ভাণ্ডেরঞ্জকম্রিকা । काविममाधी । এভি कृत यूंड॰ मृडः यातव्यामः विनिर्मितः। उह्नं সহিত সত স্থালী মধ্যে পরিকি-পেৎ ৷৷ তস্যা: স্থাল্যা মুথে স্থালী नभनाः थात्रराष्ट्र मनाः। नवज्ञ छ-**ि उन्हा मृत्यमृज्या मृ्थः**॥ नः (भाष) जू मुखल्या ज्यः नः (भा-या मृ मृत्य । मना प्रामाया मृ मृ १० তा॰ इन्ना॰ ह्ना । विधाद्रस्य।। व्याः निवंशवः हन्। व्याविष्न ह्यु-ষ্ট্রণ। অস্থারোপরি তত্মস্ত রক্ষে-प्यज्ञान्द्रनिणः॥ गति क्षात्रयप्य अ মৃদ্ধৃ হালীগভার সং। কপুর বং-त्र्विननः गृशीयाम्खन वज्रतः॥ उ॰ (रवन्नम्न वन्तन कल्री नक्ट्री यू-ক্ত'। খাদন্ হরতি ফিরস্প' ব্যাধি त्नाभमुवः अभि ॥ विन्तृ वि वाङ् फीं छि शिक्षः वीर्याः वनः विश्वनः। রন্যতি রুম্ণা শতক রুমকপূরিস্য সেবকঃ সতত ৷৷ ইতি ভাবপুকাশঃ ॥ 🗱 ॥ व्यॅभिज । रेगद्रिक जुनदी थ-िका रेमज्ञंव गडक ब्रक अख्य ।

भुजितः मृष्ट्छा नावायारमाभ-রি শত স্থাপ্য: ॥ সভব মিভোথ **उ**नृष्कु • (नया इंडी उनाम्र) भाउ मुथी। अथ उट मक्त मूर्ना क्वा দ্ৰদ্ধাত্তাশনো জ্বাল্যঃ।। অর্থাণ यहिन भूदि उद्याक जित्र ना जि पूर्व न कृतिः। वार्षः क्राम्य प्रमाम्यक मर्गिक वर्जाना विनि**गः** ॥ जरन् ज তো যন্ত্রনরাদ্যক্ত্যা কপূর সন্ধিত• সূত্ত । जानाय काष्ट्रसम्बद्ध निश्राय न-বসাদর• দদ্যাত্যা সংস্কৃতি চাথ কা-ধৈ রন্ধার্মণ সংমিতিঃ পচেৎ যুসুং । চুল্লী ডমকক মধ্যু বিত্তন্তি চতুরা-कुनावकाभाग्र ॥ कर्खवाः कमम्हनः ७६४: शुद्धानारयस्थाः। मामा धवन মুপরিলগ্ন যুক্ত্যা সংগৃহ্য রক্ষযেত্র-ব্রাৎা৷ বল্লং বল্লার্জণ বা গুড়েন জীর্ণেন রোগিণে দদ্যাৎ। দুংক্ষাদনন্ত পথ্য দেয় তীম চ তাদুল ৷৷ হরতি সম ন্ত রোগ কপ্রাখ্যে রসো নুণা ॥ फिब्रक्षकतिक्षाती मक्वमधना वामला शिवनुन विमालकृ वृग-कगर्ड পृर्खिभुषः। সূবর্ণ সমবর্ণকৃৎ नवञ्जामाख्यस्यः अगखगम्ख-করে। রসপতিঃ স কপ্রকঃ॥ গু ভাষর । টক্ষণ মধু লাক্ষাথ উর্ণা রসজ্যেঃ পু নগুররসঃ। ইতি ७३३। यू१ वर्षे (१८ ज्यह क. ||

मुरिव कि रेनकः धानस्य र भूनः॥ ধ্যাতো ভষত্ব নাপ্নোতি শুদ্ধক-পূর সন্ধিতঃ ॥ নবসাদর পার-माहजूर्थाः**म भिक्ति म**रह्वः। १७-জ॰ সাম্ভরিলোন ভাষা। শেষ• ग्णाष्ट्रे । ইত্যাসূর্বেদপ্রকা**শ:** ॥ রসকেশর ুলী কপুরি । ইতি স্থারা-वनी ॥

রসগন্ধ• ল্লী বোল•। ইতি রাজ-निर्घणः ॥

त्रमण्यः भृ॰ गन्नत्रमः। यथा। त्रम-गत्त्रा गन्नद्रामा गान्नाद्र मिद्रक्त-ন। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ ॥

রসগদ্ধকঃ পু॰ গন্ধরসঃ। ইতি **শব**চ**ন্দ্রিক।।। গন্ধক:। ইতি** রাজ-निर्घण्डः ॥

तमगर्ड॰ क्ली बमाखन•। ইত্যমন্ত্র:॥ शिक्षण । इंजि রাজনির্ঘণ্টঃ।।

व्रमधः भू টঙ্গণ:। ইতি রাজ· निर्घण्डः॥

রসজ• ক্লী রক্ত•। ইভিশব্দন্দির।।

রসজঃ পু॰ ওড়ঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ मन्द्रकीटेः। इंडि (इन्टन्तुः ॥

त्रमञ्जा जी जिल्ला। इज्जनदः ॥ রসবেত্তরি ত্রি ॥

(रगहन्तुः॥ म्यात्रज्ञनण्ड॥

त्रगढकः ती तकः। ইडि एकः। हमतः॥

त्रमहानिका छी भूधुरकक्षुः। ইতি त्राजनिर्घन्छः॥

রসদুবে^ন পু• মধ্রজন্বীর:। ইতি । রাজনির্ঘ[•]ট:॥

রস্থাতু: পু: পারদ: ৷ ইতি রাজ:
. নির্ঘণ্ট: ॥

রসংখনু: জ্রী দানার্থেক্স্রসনির্মিত (रातु:। यथा। (हारजावाह। त्रमः ধেনু মহারাজ কথ্যানি সমাস **७:। जन् नार्थ गरी भ्रं४ क्षाजिन হ্ন**শান্তরে ॥ রসন্য তু ঘট• রাজন্ী मः भूग रेनक्रवमा ह। उद्य मःकः ল্ল:খৎপ্ৰাক্ত শ্চ ভূৰ্থাংশেন বৎসক• | ।। ইফুদও ন্যাঃ পাদা রজভক্ষুর-সংযুতা:। সুর্ণশৃক্ষাভরণা বস্ত্র नृहाः घृ उ उनीः ॥ भ्य कम्न नःय न्छाः **শ**र्कता मृथ जि[®]ञ्चकाः। म्डाः क्नग्या खन्याः शृष्ट जामुन्यी भू **जा।। পুষ্ণবো**মান্ত রাজেন্দু মুক। ফল কৃতেক্ষণা । সপ্তবীহি সমা युक्ताः ठञ्चलक् ठ मीलिकाः ॥ লরেপিকর সংযুক্তা সর্বগন্ধাদি বাসিতা ৷ চহারি তিল্পাতাণি हर्जुक्_ल निविष्यय ॥ तुक्ता दिनदिन्त (भावियाय हिजाप्रत्य)

পরাণভ্যে বিশেষেণ 💎 🤫 💸 🤈 ধীমতে।। তাদৃশায পুদাতব্যা র-मार्यमुः अर्ट्षिति । मर्व नक्ष्म युक्ता-य (माजियाय क्रिकेट 🚊 🚉 পুদাতব্যা সর্ব 🛼 🚊 🥱 দাতা স্বৰ্গ ন্বা 🤏 😘 🗩 🕟 🧀 विद्धि **इ: ॥ माठ**ः ५ ४५ , छ। ५, ८ এককাল নভোজন:। সোনপান ফল তস্য সর্বক্তৃফল লভেৎ॥ দী্যমানান্ত পশ্যন্তিতে যান্তিপর-ना गि । (यन्थः পূজবিদ্বাগ্রে গন্ধ धून मुगारि जि: ॥ भृत्वीरेक दाव मरेख ब ७७ छा भाष रयद मूबीः। भार्थना প्रकः ज्ङ्रा विजागुराय नित्वरत्र ।। मण्यूर्वान् श्राःरेण्डः व बाजान कि ह विम्म कः। भानः एए भद्रमः इति अर्गागावर्छ्ड পুন: ॥ এবা তে কথিত। রাজন্ त्रमर्थन् त्रनुख्या। पत्य চ सङ्गः রাজ পর স্থান মবাপ্রহি॥ य ই লে পঠাত নিত্য শ্ণ্যাদথ ভ ক্তি হ:। সর্বপাপ বিনিমুক্তো বি-युः नात्क महीयर ।। इंडामि वा-রাহপুরাণে খেতোপাখ্যানে রস-(धन् माहाजाऽ मनार्डः॥ ंत्रत्रनः क्री यापनः ॥ धुनिः । **३७** (मिनिनी ।।

भगन क्री क्री जिखा। ইতি मिरिनी ।। मा ह करणिन्य । यथा। निज् তাদি প্রথমবৎ কিন্তু দেহ মযো निज । इन्प्रिय त्रमन मिक् हिमा **मि** र्बियाया मठः॥ इंडि ভाषाপ রিছেদ: ৷৷ পূথম বদিতি পৃথিব্যা ইবেত্যৰ্থ:। তথাহি জল দ্বিবিধণ ্নিত্য মনিত্যঞ্ । পরনাণুকপণ निज्यः घ्रणुकाहिकः अव्यविज्यः। অব্যব সনবেভঞ্চানিত্য জলমপি जिविष् । শরীরেন্দ্রিय विषय (जः माट। किन्छ भृथिती ভোষ্যো यां विष्मय खनार किञ्जि । **अ**यगः निष्ठ (मृद्वे अर्थः । जनीयः भन्नीतः यादानिक वक्षणाक शुनिष बिछ। ইन्দ्रिय द्रमन छनीय । ত थाहि व्यनः बनीयः शक्कान्रवाञ्ज করেসতিরস ব্যঞ্জকরাৎ। শক্র माजिव।क्षरकामकवट्। त्रम्या म मिकर्स व्यक्तिहात्र वात्रभाय मुव्यक् **(इ**ट्डो (एय॰) विषय॰ एर्णय्डि मि ন্ধু হিনাদি রিতি। সিলু: সমুদু: হিন• তুষার:। আদিনা সরিৎকা সার করকাদি: সর্বোগ্রাছ:।ইতি भिकाष्ठमुङावनी ॥ রসনা ত্রী জিহ্বা। ইত্যমর:॥ তস্যা:

मुं जक्र पथा। जीका म्रेडाः

সনা: শুেষা জিল্বা রক্তা সমা শুভা । শুকু। দীর্ঘা চ বিজ্ঞেয়া তালু: খে-ভো ধনক্ষযে ॥ ইতি গাক্তে ৬৬ व्यथ्रायः ॥ न्ययम् इत्राम्त्रम् গ্রুছে। রসে। রসত্বাদি সহিতঃ। যথা। রসন্ত রসনা গ্রাছো মধ্রা-দি রনেক্ধা। সহকারী রসজ্ঞায়া निज्रजानि ह भूबंवर ॥ शुनमर् গোচরো পদ্ধো পদ্ধ বৃাদি রপি স্তঃ । তথা রসো রসজ্ঞ যা স্তথা শ-দেপি চ শু:ত:।। ইতি ভাষাপ-রিছেন:।। তথার দ ইতি র দত্বাদি সহিত ইত্যৰ্থ:। ইতি সিদ্ধান্তনুক্তা वनी॥ 🕸 🛘 द्वाञ्चः । इंडि त्विनी ॥ গন্ধ ভদু।। ইতি শব্দ লিদু কা।। কা-क्षी। ইতি एक मन्द्रः ॥ तय्जः । ইতি সংক্ষিপ্তসারোণাদিক্তি:।।

রসনাথঃ পু॰ পারদঃ। ইতি রাজ-নির্ঘটঃ॥

त्रमनायकः भू॰ सिवः। ইতি सम्-त्रञ्जवधी॥

রসনালিট্ পূ॰ স্কর:।ইতি হেম-চন্দু:।।রসনধালেহন কর্ত্তরি ত্রি।। রসনেত্রিকা স্ত্রী মন:শিলা। ইতি হেনচন্দু:।।

त्रनभाकतः भू॰ ७७:। ইতি রাজ-নির্ঘণীঃ।। •

त्रमकनः भ्• नाद्रिक्ववृक्कः। ইভि ॥ मयत्रावनी ॥ রসভব ক্লী রক্ত।ইভিরাজনির্ঘটনা त्रमम्बद्धी दी नायकनारिकार छ एक-शु इदि स्था । यथा । विश्व ब्हान माना **ভূঙ্গ রস ব্যাসজ (হওবে।** এষা পুকাশ্যতে শ্রীমন্ডানুনা রসমঞ্জরী

়া। ইতি ভস্যদ্বিতীয়ঃ শ্লোকঃ য় जनगर्मन क्री भावस्त्री क्रा यथा। इक्षिकाह्र्न ह्र्नांच्या भारमी त्रममूह्न ली भातस्म्यमूह्याकत्त्रनः। মর্দ্দ্যোরস শুতঃ। দপ্তা গুডেন সি-क्ष द्राजिक। गृष्ट्यूनरेकः ॥ जन्ह । जनातिका विवक त्रक्रमय लिः कृष्टिः कषारेय व्र्इडी विभिन्तिः । ফলত্রিকেণালি বিমর্দ্দিতো রসে। दिन्यय॰ **नर्ब भंदेन** विश्वहार ॥ ইতি ভাবপুকাশ:॥

बनगाबन की भावस्त्राज्ञाबन । यथ।। ধ্নসার রস ভোরি গন্ধ-वः नवनामतः। यातिकः नर्मतमः য়ে ভাগ কৃত্বা সন সম।। কাচ **জ**ণ্যা• বিনিঃক্ষিপ্যতাঞ্চমূদজ্জ মৃ-দুন। বিলিপ্য পরিতে। বক্তেমুদ্রা• पत्र दिस्मावतर ॥ जाशः महिम् शिष्टेरी गाया कृशी॰ नियमारा । शिटेती वाध्काश्रेत छ दा वाक्शि काशन ।। निर्वेणा ह्लार जर्रा

विक्षः अर्थाहरैनः गरिनः। जमाः मभाविक किकिए भावक ज्ञान-বেৎ ক্রমাৎ।। এবং দ্বাদশভি র্যা-মৈ মিু্ যতে রস উত্তনঃ। স্ফোটযেৎ ষাক্ষীত তম্দ্রগ গন্ধক ত্যু-(जर !। व्यवस्थ ग्उ॰ मृठ॰ गृही-যাৎ ভক্ত মাত্রযা। যথোচিতানু-পানেন সর্ব কর্ম নু বোর্ঘে ॥ ইতি ভাবপুকাশঃ॥

यथा। जूषिण जिक्ना वक्षाकरेन्तः कृषुष्वयान्ति छः । ठिज्ञकार्गः निमा-कात कन्याक कनक मुरेवः ॥ भृडः क्रञन ग्राया यात्राम् मधाजिम्ह-. (यट। इयः मःमृहिंगः मृज खाराडट সপ্তাপি বঞ্চান্।। ইতি ভাব-भुक् भः ॥

त्रनताकः भू॰ भात्र तः॥ त्रमाञ्जनः। के जिला जिल्हें ॥

त्रभव**ी खी महानमः। ই**ত্যमतः॥ রসবিশিপ্টে ত্রি।।

त्रगमयः वि त्रन्यक्षाः। त्रमाञ्चकः। तमान्य र गयहि भुज्यायन नियमशा রনবেহঃ পু॰ পার ে। ইতি রাজ-निधंकै: ॥

রয়শোবন ল্লা টক্ষণঃ। ইতি হেম-ठन्दुः । भावरभूकिः। यथा। **अ**मा-

निर्घण्डः ॥

রসসি

तिका विका तक मर्ग रिणः क्रिंडः। कवारिय प्राची विभिन्नि उः। कवारिय प्राची विभिन्नि उः। कवारिय विभिन्नि विभिन्नि उत्ता किम विभिन्नि उत्ता किम विभिन्नि उत्ता विभिन्नि उत्ता विभिन्नि विभिन्नि विभिन्नि विभिन्नि विभिन्नि विभाग विभिन्नि विभाग विभ

त्रमिन्त्र क्री ঔवधविष्णवः। তস্য নামান্তর• সিন্দুররসঃ। য**থা** । শুक्ष সূত্রা গৃহীয়া ভিষণ্ডাগ চ-তৃষ্টন । শুদ্ধগন্ধস্য ভাগৈক তা स्ट कृ जिम गक्त र ।। अथ वा भा-ब्रह्मप्रार्खः मुक्तगक्त मित्र वि। उ (या: कब्जिनि हा अर्या फिन्स्न क विवर्द्धाय ॥ मृखिका वाममा मार्कः इप्डेश्यहि यङ्ग । उरा ৰার ত্রয়ণ সন্যক্ কাচকূপীণ পু-लिপरिए॥ मृजिका भाषिया ज् क्ष्राः कर्ज्जनिकाः किर्प्रर । তा॰ कूनी॰ वान् भगत्व शानांव ত্বা রসং পচেৎ।। অগ্নিং নিরন্তরং एन्। बाविष्य ठ क्ष्रेय । शृक्षीया-पृष्वं मः वयः मिनम् द्रः महमा द्रमः॥ *प्* जगः।

ইতি ভাবপুকাশ: ॥

व्रमहान की हिस्र्व । ইতি भद
व्रमहान ॥ भन्नोत्र मान्न मान्य क्ष्य ।

जमा स्रो भृषिकी। ইতাম दः ॥ त्रमन

॥ भार्य ॥ भन्नकी॥ कष्यः । ইতি

क्षिती॥ मुक्ति॥ कारकानी। ইতি

भद्र ज्ञावनी ॥

রসাথন: পু॰ অরুট:।ইতি শব্দ-চন্দ্রিকা।। রসাগুল• লী রসাঞ্জন•।ইতিরাজ-

उना तमाञ्चनाथाः उत्तव्याः भ-तमः विठः ॥ तमाञ्चनः उन्तर्भः रेणवाः तमगर्ज्ञकः उन्तर्भः तमा-ञ्चनः कर्ते (प्रणा विष निव विकात-नूर्या उक्षः तमायनः जिङ्गः (एमनः तुन्तम् वर्षरः । ইতি ভাবপুকाणः॥ त्रमादाः भः व्यापाठकः। ইতি ताज-निर्यन्तः॥

त्रमाखन की भागन । इंडामतः । भागन विज्ञ हिन्द । यथा। यजन । विज्ञ विक्ष विज्ञ के जन्म जन । महाज्ञ के मुजन मध्यक त्रमा-जन । भाजान जिला मिछन भागन । मछः की खिंजा यभी। उज भाजा नियंकिक मिमाहमु (याजन ।। देखि भद्रमाना।।

वमानान॰ क्री स्नावनः। ইতি ছেন-চল্দুঃ।। ত্মিদানঞ্চ।।

द्रमाधादः भू मृष्धः। ইতি শব

রসাধিকঃ পু• টক্ষণঃ। ইতিরাজ নির্যন্টঃ॥ অধিকরসম্চ॥

तनादिका जी कात्कानीमुक्ता। है जि

রসভোসঃ পু॰ জানীচিত্যবিশিষ্ট রসঃ। ভাষ্য লাফণং যথা। অনৌ ডিভঃ পুণুত্ত হ সাভাষো রসভা

বয়েঃ ৷ অনৌচিত্যঞ্চ 💛 🚟 **ভরতাদি পুণীত লক্ষণানা** नान**्** রহিতত্বে সভেংকদেশ যোগিছে প লক্ষণ পর• বোধ্য•। ত চু বালব্যুৎ.-পত্তযে এফদেশতো দশ্য**ে।** উপ-নাযক সংস্থায়া নুনি ভক্পত্নী গতা-যাঞ্চ। বহুনাগক বিষযায়া• রতৌ ত থানু ভ্ৰম নিষ্ঠাযাণ পুতিনাযক নিষ্ঠত্ত্বে তদ্বদ্ধম পাত্র ভির্য্যগাদিগতে শৃঙ্গা-রে অনৌচিত্য । রৌদে গুর্বাদি গত কোপে। শান্তে চ হীননিটে। গুর্বাদ্যা विश्वति हास्त्र । वृक्षवशानुश्रकारह । অধম পাত্রগতে তথা বীরে। উত্তন্ পাত্র গতত্ত্বে ভযানকে জ্রেয় মেব ম-ন্যত্র । তত্র রতে ক্পনায্ক নিগ্তরে यथा भग। साभी मुक्ष ठाता वन धन मिर वालाइ (नकाकिनी क्लोनी ना-বৃণ্তে ভমাল মলিন ছায়৷ ভম: স ন্ত তিঃ ৷ তথ্যে সন্দর নৃঞ্চ কৃঞ্চ সহসা বর্জ্বোত গোপ্য গির: শুদ্ধা ভাণ প-রিসভ্যেত্রখা লাসাক্ত হরিঃপা-ত ২০০ক চেন্ট্রেলি**থ।কাস্তা** छक्ष २५ १५७० व्यक्तिस्याः কড়ে মুলাল ওলল কপোল:। ष्यचन । १ वर्ष मान्योगाद-(व सन्दर्भ) ै।यार । । शन्द्रायुख्य শিষ্ঠত্বেপি প্রথম মেকনিষ্ঠতের রতে

্ৰাসত্ত্ব মিতি শ্ৰীনল্লোচনকারাঃ :बाराङ्बगः यथा बङ्गावल्याः । गद्रिकाया जानग्रन, मर्मनाथ স্থাক্বৎ সরাজে রতিঃ। পুতিনাশ-क निश्च यथा स्यग्रीव वर्ष। स्य-গীবস্য জলক্রীডা বর্ণনে । অধন পাত্র গভত্বে যথা। জ্বন স্ল ন্র পত্র বল্লী গিরিমল্লী সমুনানি কা-পি ভিল্লী ৷ অ :চিত্য গিয়ৌ পুরো নিষয়। স্বক্চানুৎকচবাঞ্চার ভ প্রা । ভিঠ্যগ্রতত্ত্ব যথা। নল্লী নতল্লীযু বনান্তরেযু বল্ল্যন্তরে বল্ল-ভ মান্ত্ৰযন্ত্ৰী। পঞ্চদ্বিপঞ্চী কলনা-प ज़न्नी अन्नी अन्य अन्य ভূসী।। जा**रि भदाखाशमा**रयः ।রৌদুাভাসে। যথা। রক্তোৎফ্র विशान (नाजनयनः कष्णाखद्रा-ঙ্গে। মূহু মু কাকণ মপে তভী ধ্ ত ধনু র্বাণো হরে: পশ্যতঃ। আখ্যা-ভঃ কটুকোকিভিঃ স্বনসকৃদোরি क्रम॰ की जंगम॰ मा स्माप्त भर्षे गूँ वि रित नामी एक भूति हो एक नः॥ ত্যান হাভাচেমা যথা। অশাকুবন্ সোঢ়ু নধীর লোচনং সহসু রশ্মে तित यगा मणंद । श्रुविमा (इ गार्जि अहा पृष्ठालकः विनाय विल्ना ित्रानि कोशिनः ॥ जीनोह

বিষয় মের হি ভয় রস পুকৃতি:। এবসন্যত্র। ইতি সাহিত্যদর্গণে ৩ পরিছেদ:॥

রসাম ক্লী ক্লাম । ইতি রাজ-নির্ঘণীঃ॥চুক । ইতি ভাবপুকালঃ রসামঃ পু অমুবেতস:।ইতি রাজ: নির্ঘণীঃ॥

রসাযক: পু॰ তৃণবিশেষ:। ইতি শব্দনিদুকা।।

রসায়ন ক্লী কটি:। ইতি রাজ-निर्घ'ট: ॥ তক্র•। ইতি হেনচন্দু: ॥ विय॰ ॥ জর।वताशिनाभाकोयथ॰ । ইতিনেদিনী॥ ন সূতে ন বিনাকান্ত• নকান্তেন বিনারস:। সূতকান্ত সমা-যোগাৎ রসাধন মুদীরিত। ইতি व्राक्रनिर्घण्डः ॥ 🗱 ॥ ज्रथ व्रमायना-থিকার:। তত্র রুসায্বস্য লক্ষ্ণ মাহ। যজ্জরা ব্যাধি বিধৃণনি বয়স खञ्जक खया। ठस्कृष्ठ वृ क्न व्या (ভवज॰ **उ**षुत्रायन॰ ॥ त्रत्रायननऽ ফলসাহ। দীর্ঘনায়ঃ স্তী মেঁথা মা-রোগ্যণ ভরুণণ বয়: ৷ দেছেন্দ্রিয় ব-वा काञ्चि नः द्वा दिरनः नुगायना थ।। তদ্বিধনাহ। পূর্বে ব্যাস মধ্যে বা भन्यामा बनायन । **भृ**गृक्षीठ ভि-ষক্ পুজে; স্থিপ শুজ তনোঃ সদা ।। নাবিশুদ্ধ শরীরস্য যুক্তে। রসা- যনো বিধিঃ। ন ভাতি বাসসি भ्रिष्ठे द्रक्रांग इवाहिडः॥ जथ ত্দাহরণান। শীতোদক পথঃ ক্ষৌদু ঘৃত মেকৈকশো দ্বিশঃ। ত্রিশ: সমস্ত মথ বা পুাক্ পীত• ञ्चाभरवहरः॥ मञ्हभर्गाः स्रमः शु जारत शुर्वाका यश्रीमधूकमा ह्र्नं । इत्मा ७ पृष्ठास्त्र मम्न भन्नः कन्नः भुरगाकाः यन् भन्नभू ह्याः। वागुः शुरान्याययाणनानि वलाति वर्ग यद्रवर्षानानि ॥ (मध्यानि हिजानि । রসায়নানি মেধ্যা বিশেষেণ চ শন্ত্ৰ পুश्री। मध्कनारी वाकी। वत्र जी ইতি লোকে। তদলভে মঞ্জিধা-পি গুাহা। তদ্যা অপি রসায্ন-द्वार्।। माक्किरकन जुगाकीर्या नि প্লল্যা লবণেন চ ৷ ত্রিফলা সিত্যা वालि युका निष्तः त्रमायनः ॥ मि-ऋ्य मर्कता मूछो कगा मधु छरेडः । क्रनाट । वर्षा भित्र ज्या श्राम्य ॥ त्रमायन खरेगियगा। भूननंदम्यार्कः भन नवमा भिष्ठ भिरवषः भग সার্দ্ধনাস । মাস ত্র্যণ ত্রিগুণ जनाः वा जीर्लानि ज्यः म भून मंदः म्यार्थ।। य मानसकः खत्रमः नि विश्वि फिरन फिरन ज्राइडः नमूर्य । की वालिन एउ तन वीर्य यूकाः । दात्रविधंचेः॥

नमा भंड॰ कीदन मान्यू बाइं।। भ-তাবরী নুঞ্জিতিকা গুড়ুতী সহস্তি-कर्गा मञ्जालम्ली। এजान क्या সম ভাগ যুক্তান্যায্যেন কিমা ম-ध्नाविकार ॥ बदाक्का मृज् বিযুক্ত দেছে৷ ভবেন্নরে৷ বীর্য্য বলা-দি যুক্তঃ। বিভাতি দেবপুতিমঃ স নিত্য পুভামযো ভ্রি হৈবৃদ্ধ বৃদ্ধিঃ ॥ भीजायगक्का भगमार्क्क मामः घ्-**उन रेजलन म्था**युना वा। वीर्यात्र भूष्टि॰ वभूषा विषय वालमा म-नमः यथाष्ट् वृष्टिः ॥ व्ययः भल• গুগুলু রত্র যোজ্যঃ পলত্রয় বেগ্রাষ-भगानि भक्ष । भनानि हास्त्री जि-कना तक्ष कर्यः निरुन् याज्यन्तर-ष (भव।। लाइ खतुन्।। न (कदन॰ দীর্ঘমিহা পুরশুতে রসায়ন যো विविधः निष्यवा । शकिः म (मय-ৰ্ষি নিষেবিতা॰ শুভা॰ পুপদ্যতে বুন্দ ভথৈৰ চাক্ষ্য ।। ইভি রসায-নাধিবার:। ইতি ভাবপুকাশ:॥ त्रभागनः भु• गक्छः॥ विख्यः। इंडि मिस्सि ॥ तमायनकना जी रतीउकी। हेिंड ত্রিকাওশেষঃ॥ त्रमायनरमुष्ठः शुः भात्रमः। ইতি রসলা

तमायनी खी ७५० ।। कार्याने॥ नश्कात छः॥ यात्रक्षप्रधा। नारमहता इंजि त्राव्य निर्यक्षः॥ नारमहता इंजि त्राव्य निर्यक्षः॥
तमानः क्षी मिद्ध हः॥ यात्रः। इंजि
त्राह्मी॥
तमानः श्रूष्ट क्ष्युः॥ यात्रः। इंजि
भवाः। श्रूष्ट क्ष्युः। यात्रः॥ श्रूष्ट्र
क्षायक्ष्यः। इंजि त्राव्य निर्यक्षः॥
तमायक्ष्यः। इंजि त्राव्य निर्यक्षः॥
तमानमा खी नाष्ट्र। इंजि क्षयः
क्रिका॥

अभावा खो अभना॥ पूर्व।॥ दिनाती । इंडि (मिनि) ॥ मुक्ता। इंडि माम्बद्धावनी ॥ मिथ्तिनी । उद शर्यप्रायः। भार्डिजा २। ইত্যমরः॥ **७न्याः क**र्राभ्युकारत्। यथा। व्यास्ति মাহিষ মন্ন মন্থু রহিত দংগ্রাচ-क॰ मक्ता॰ मृजा॰ भुद्र यूरगाचि-তা শুটিপটে কিঞ্চি কিঞ্চিৎ किलिए। मूर्यनार्कं वतन मृध्य ॥ नवशानाः मृतः मुख्यासनावीः क नवक हन्तु भ बिरेह (यीरिगाम्ह उ দ্মোন্ধ্যেশ্য। ভীনেন প্রিয় ভোল নেন রচিতা নামা রসালা স্বর্ণ গ্রী ক্'ফন পুরা প্নঃ পুন রিমণ প্রীত্যা नगात्रात्जा। अया त्यन दमञ्जतः र्ष्डिंड स्टिन (त्रव्या श्रेत्र निडाम ||

खमा मारि विवीर्ग द्क्षि त्रनिष्णः मर्खिन्युगागाः वलः ॥ श्रीत्य उथा শরদি যে রবি শোষিভাঙ্গা যে চ পুনত্ত বনিতা সুরতাতিথিয়া:। य ठाभि भागं भित्रमर्भन भीन-পাত্রা ভেষা মিয়া বল্ধি পোষ্ণ इ। णु सर्गाए॥ त्रभाना णुकना-वन्तरा दाइनी वाउ भिन्न हिए। मीभनी वृष्ट्री शिक्षा नधुता लिह শির। সর। ॥ রক্ত পিত্ত ত্ধা • দা-रः পु जिमाग्यः विनामायः। इंडि রাজনির্ঘণ্টঃ।। অপিচ। দপ্নে! २५।-ए निमीयत्स मध्तः थखना हन्त्रु-(ठः পুস্ত को दूर भनक भक्ष इवि-यः णुथेत कठ्णायकान् । **वना** भाष उर्देश मित्रिष्ठ क्ष क्ष क् उथ। ध्या मूल्या मितः कद्र-**ত** द्याराष्ट्र विनु विद्यार । मृ छा-(७ मृगना ७ हन्सन व्रम मृश्डे २ छ-ৰাজ্পিতে কপূৰ্বেণ সুসন্ধিত তেং-थिन माला डा माञ्चा भाष्ट । य-স্যার্থে নথুরেপরেণ রক্ষ্রভা ছেয়া রসালা ব্য ভোক্তু মম্থ দীপনী সুখকরী কান্তের নিত্য প্রিয়া।। ইতি ভাবপুকাশ:॥

রসালিহা স্ত্রী শীণনালা। চাহ্নলিয়া ইতি ভাষা। ইতি শব্দেল্যা। त्रमानी जी मूळ्रककः। ইতি इरमाखमः भुः मृष्गः। ইতি द्राः क्रानिर्घणेः॥

द्रमाथाना जी भनाभीनजा। ইতি द्राप्तान्त्रव क्ली हिन्दून। ইতি द्राप्त-त्राजनिर्घणः॥

त्रमायाभी भू॰ जुनतः। ইতি णय- तरमानः भू॰ त्रमूनः। ইতি রাজ-भावा॥ तमात्राप्ति निष्ठे वि॥

त्रमान्तः भू अतलपुरः। इंडि तक् त्रानिकः भू तमुनः। उৎभर्य। यः याना ॥

রসিক: পু॰ সারসপক্ষী। ইতি त्राजनिर्घण्टः ॥ ज्रत्रः ॥ रुखी । ইতি সারস্বতঃ॥ সরসে ত্রি। ইতি (मिनि ॥

त्रिका छी त्रभावा॥ इक्कूत्रभः। इंडि मिनि ॥ काकी ॥ त्रजना । ইতি বিশ্ব:॥

त्रनिरहत्रदः भ् ञीकृषः। यथा। কুন্দাকৰ ভারে এন্যেরাসোৎসব স ूट्न हरा जा तमखन तथाकर मना नि র निक्यंत्र ॥ इंडि तुम्रियदर्ख गगण डिया ७ २ व्यक्षायः ॥

রনিত क्षा निवित्यायः। ইত্য-মর:।। ক ত ।। স্বর্ণাদিখটিতে তি। इंडि (मिनि ॥

इत्तः श्रु वत्तः। इंडि मक् हिन्द्रिका ॥

इरनमुः श्रु भावतः। ইতি রাজ नियज्ञेः ॥

निर्घणेः ॥ (मुध्रतमक ॥

নির্ঘণ্টঃ ।। রসজাতে ত্রি ॥

निर्देशः॥

। वन्नन्छ ब्रामानः महोन्गुगस्त्र। गर्शेषय । जात्रक्षा सह जन्म क श्वरताक्षे द्रामानकः ॥ उत्मार পত্তি यंथा। यनामृजः विनय्स्या জহার সরসভ্রমাৎ। তদা তত্তো ৎপতদ্বিন্দু: সুরসোনো ২ভবন্ডু-বি॥পঞ্জিদ রসৈ যুক্তো রসে-नात्मन विद्धिंठः । उथामुरमान हे-ত্যাক্তা দুব্যাণা গুণবেদিভি: ॥ ष्यम्याव्यवखनाः । करूकम्हानि ম্লেযু ভিক্তঃ পত্ৰেষু সংস্থিতঃ। नाल क्वाय डिफ्लिश नालात्य ल-বণঃ মৃতঃ ৷৷ বীজে তু নধ্রঃ প্রেক্তো রস তদ্ভণবেদিভি: ৷৷ অস্য ভক্ষ १ छन्।। ब्रह्मात्मा कृष्ट्रा वृष्य्रा লিংকাঞ্ পাচন: সর: । রসে शार्क न करि श्रीष्ट्र। मधुरू का म-उः ॥ जानवानक्ट कर्छा खकः সিত্ত (ব্রীনঃ) বল বর্ণকরে। (प्यान्टा (नःका जनायनः ॥

্ বৃহিত

ন্ত্ৰেগ জীণজুর অক্ষিশ্ল বিবন্ধ ভল্মাক্চি কাস শোকান্। দুৰ্ণাম জন্তানলসাদ ভন্ত স্থীরণ স্থাস কফাণ্ট হন্তি। মদ্যুণ মাণসণ ত থামুঞ্চ হিত্ত লশ্ন সেবিনাণ। ব্যা-যাম মাত্রপণ রোষ মন্তিনীর প বোভিডণ। রসোন মশুন্ প্রুষ্ স্ত্যুক্তেমির্ভরণ। ইতি ভাব-প্রাশং॥

রুমোপল ক্রী মোডিক । ইতি ত্রিকাণ্ডাশ্য: ।।

রমুণ ক্লী দুব্যণাইতি সিদ্ধান্ত:কৌ মুদ্যামুণাদিবৃত্তিঃ ।।

রস্য ক্লীরক্ত ইতি শব্দ নিদুরা।। রস্যা স্ত্রী রাম্বা।। পাঠা। ইতি রাজনির্ঘণ্ট:।।

রংহ ত ক গঠো। ইতি কবিকল্প জন: ।। রংহযতি রংহাপথতি । ইতিদুর্গাদাস: ।।

ब्रश्नं क्री (वर्गः। उर्प्शर्य) यः। उतः

र ब्राः २ मामः ४ यवः ६। ইতা मतः

।। व्राः ५ यवनः १। ইতি उद्घेकि।।

ब्रह्म ३ अजाः। ইতি क्रिक्स क्रमः

।। दे व्राः १ । ইতি क्रिक्स क्रमः।।

ब्रह्म ५ ज्याः भीनः। ইতি मूर्गा।

व्रह्म अयाः भीनः। ইতি मूर्गा।

मानः॥

রহ তক ত্যাগে। ইতি কবিকল্পফ্রমঃ '।। রহ্যতি শোক ধীরঃ ।
ইতি দুর্গাদাসঃ ।।

त्रहः की निर्द्धनः। उर्भगंशाः। विविजः २ विज्ञनः ३ हमः ८ निः-मनाकः ६ त्रहः ५ उभाःम् १ । हेड्यस्तः॥ उज्जः॥ त्रिः॥ उष्रः १ हेडि (मिनि)॥

রহঃ ব্য বিজন। ইত্যমরঃ ॥ র হো নিধ্বনে হপিস্যাদুহো গুছে নপু•সক॰॥ ইতি রভসম্চ॥

त्रक्तरः जि लाभनीयः। त्रक्तिः

छवः। ইতি নেদিনী অনর ।।

त्रक्तरात प्रणाणं निरमः वा यथा।

न সর্গ শক্তিঃ জীডেত স্থানি থানি

न সংস্থাশে । রোনাণি চ রহস্যা।

নি নাশিষ্টেন সদা বুজে ॥ ইতি

কৌর্মেণ্ডি অধ্যায়ঃ।।

রহস্যা জ্ঞা নদীভেদং। ইতি নেদিনী
। রাম্মা। পাঠা। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ
রহিত তি বজ্জিত । যথা। জাত
সূত্রক নাদৌ চ অন্তে চ নৃত সূত্রক
। গুরো সুনুহিত তক্ত্রা জপকর্ম সনাচরেত !৷ ইতি ভক্তসারঃ।। অপিচ। দিগ্রো হবো হিম্ম রহিতো
জন্মক্রাট্যো ভশেষিত:। ভ ভবেদক্ষ বেশে শুক্র যোগেপ্যেব বিচি-

ন্ত্রেশ্ব। ইতি সাতকপদ্ধতি:।। নাৎস্যের রফ ঞি পালনে। ইতি কবিকর রফ্যেন্ড ফ্রাং ।। ঞি রক্ষিতো হতি। ইতি নরং ।। দুগাদাস:।।

त्रकः की जाकनः। ইত্যনর:॥ **७** विष्णायः यथा। मृष्ट्वा ज् विक्यान् व्यक्तावनाथान्द्राभिन छ ।। ह्या न जागाउ गमा म त्रक हे जिस्स मिजः া ইভ্যাণেয়ে বনশৰ্মিলোপাখ্যান नामाथ्यायः॥ त्रक्षम् छेवश् यथा। यन्कवात। तरका मानि विषयानिया-নি ধার্য্যানি ভূভুজা। অগদানি স-মাচক্ষ তানি ধর্ম ভ্তামর।। নৎস্য উবাচ। পত্রিকা রোছিণী চৈব র-क्रमाना मरहोयती। जथामनक व-न्तात थाठ ठिज्ञ भरोगिका॥ का कानी कीत्रकाकानी भीनभगे **७**रेथव हा किनानी वृन्हिकानी ह महानामा म जावतो ॥ उथा शकः **ए**दिगा ह इता अगूरिनी उथा। **इत्तरहार शिवनी** या ह महाज्ञि-व उठिया। उत्राहिनी (मानदाजी সর্বরত্নানি পার্থিব। বিশেষাম্মর-কভান্যত্র কীট পক্ষ্য বিশেষতঃ 🛚। জীব জাতাক মৃণ্যঃ সর্বে ধার্য্যা विल्पव छः। तस्कान्। एठ वृष्ण न्।। एठ क्छा (वजान नामनाः ॥ इजि নাৎস্যে ১৯২ অধ্যান: ॥ রক্ষান্ত স্থা রক্ষান্তঃ। ইত্য-নর:॥

तकः कः वि तकाक्त्रा यथा। शा-तकः महत्तवक नद्या हय तकः कः। वित्राहि सद्युरायास्य नद्रापाः भाज्य कमः॥ ইতি পুরাণः॥

রক্ষণ ক্রী রক্ষা। যথা। ইতি পুণ্য বদ্ধাভি গোপীভি: কৃত রক্ষণ । পায্যবিদ্ধা স্তন্য নাতা নান্যবেশ যদান্মদ্ধ ।। ইতি শ্রীভাগ্যতে ১০ ক্ষমে ৬ অধ্যায়: ।।

तक्षनात्रकः भ् ग्डक्ह्रागः। इठिमपत्रज्ञावनी।। क्विट्रभूखरक तक्षनीत्रकाभिभाठेः॥

त्रकारिः जी वायमागाम्य । इंडि त्राक्षित्रचंग्रेः ॥

वका क्री कर्। बक्षा क्रमः हिंद मिति।। ज्या हिंद मद्दाद्वा-वनी।। यामाना क्ञा दक्षा यथा। बक्षाः विम्थित म्याक्षाम्यद्वा मनामिजिः। याम्यद्वा मानिव्वा भून याद्वज्ञा जंकः।। बक्षाः ह-हकः मक्डा हाः माय्य्युनामिजिः। यामाः मन्युके मिनिद्या याद्य कः द्वायाः भूथक् अन्युमाज्यनाम्यद्वाः माद्विन्यान मुक्दं । व्यद्याम्यद्वाः

ু বৃহ্ণা

২ড্ ব্রুমণিলা তব জামুথোর শক্তো २०७३: कि 'छे क्टूब रुगमाः। श्याकनात स्तुत प्रेम इन्छ कथे॰ विक् ज् जः मुथ मूक्कम ने पतः कः ॥ চক্র্যুতঃ সহগদে৷ হ র রস্ত পশ্চাৎ षुरभार्त्या धनुबभी मधुरा कनका কোনেষ শংখ উক্লায উপয্যপেন্দু স্তার্ক: ক্রি:জা হলবর: পুরুষ: সম खार्या इनिस्वानि स्वीतिमाः भाषान् নারাম্যাহবভূম্বে চরীপদ্যভ শিচ ত্ত। মনো বোগেশ্বরো হবতু ॥ পৃংশ্ गर्डत (त्र वृक्षि भावानि जगवान् श्रद्धाः की उड शाजूरमा विन्तः **न**यः नः भारत नायतः ॥ वृज्ञ च न गादिक्ष थानीन द्वाः जित्रानिः। जुक्कानः यख्ड पूक् পাত্ मईगृङ् ভगङ्तः ॥ छाक्तिम गाउभागण अगाधा व ৎত্ত গুর্য়ে। ভূত নাত্ পিশা সাক্ষ यक् ब्रह्मा विनायकाः ॥ कांग्रेश রেব হা ক্যেষ্ঠা পূত্র। মত্কাদ্যঃ। উন্মান যে গুপমার। দেহ প্রাণে ित्र करः॥ युप्र पृष्ठे महाएशाः বৃদ্ধ বাল গুহাত যে। সরে নশান্ত তে विष्णा नामगुरुगधीतवः ॥ इंडि শ্রী ভাগতে ১০ কান্ধ ৬ অব্যাশঃ। ৠ৷ वाश (क्षेत्राम्। सम्मा दक्षनः। बाधीवावा इंडि डाबा। लीनंगा-

न्। एउत तक। वक्तन दिशि भूर्व-क । तुँ ताड स्नातज्ञ (कि हि-ছন্তি সাধব:।। তত্র ভতুদি সদ্ভা-নে তা মতিক্রমৈয়ব স্বর্য্যাৎ। তথাচ म्। अत्राह्म । अपूर्णि । एवं न कर्न्त्र भारती कानुभी उथा। भारती मृतन তি হন্তি গুমান্ দহতি ফালুনীতি া৷ বিবিশ্চ ভবিষ্যোত্তরে। উপাক্-र्याति (भुग्क पृषीगोरिक्षत जर्भनः) ততো १পর। इस्मार्य तका (भाष्टे-बिका मुजा ॥ कात्रयमकरैजः শত্তৈঃ সিজাংখ হোভূষিভাণ বল্লৈ वि ेरे बः कालारेमः (कोरेन वी मुल-ব'জে হৈ:। বিচিত্র• গুথিত• সূত্র• क्षांभरक्षां इत्याभित । जैभव गृह নধ্যে দণ্ডসভৃষ্ণে ন্যমেচ্ভি পীঠা। ভবেপেৰিশেদালা সামাত্যঃ সপ্-রোহিত: সসৃত্ত ৷৷ তদনু পুরোধা নুপতে রফা॰ ব্পু'ত নজেণ। যেন वाक्षा वनी ब्राका मानवानम्। सङ्ग-বল: ৷ তেন ত্বাং পুতিবপ্রামি রক্ষে भावन भावन ॥ रैविनिकण्ठ। यस वश्र দাক্ষপণা হিত্যয়: শতানীকা নন-ষ্য মানা তর্গা ন্পানি শত শার-माया युग्नम् क्रव्रिनिष्टि र्यथा मः । वा-करिनः क्वाबिरेश देव रेगाः अति का-रिना क मानरेवः। कर्खरवा। ब्रम्मनाहकः

द्धां निजान् मन्द (नन विभिन्न) यस तकिका वस पाठ ति । न गर्ब (नाय त्रिष्ठः नूथः স•ব<ার• বসেদিতি ॥ গ্রা অথ। छिन्ति निर्वार्थ मुलाकमं दिन निर्व यः किएउ। यहारु मृठ्यात । छे-পাক্যাত সর্বিভিতে সাম আগ্যজু েরিলি । গুছ সংকাতি যুক্তেযু **হস্ত** भुवन পর্বলু।। তথাচ। সামবেদিনা। ভाদুস্য হস্তানক্ষত্র খণ্ডেদিনা শূব-११८ भूवन नक्ष व र यक्ष विकार भूवि गील्गिंसाभाकमं हालः । উপक्र किश की वंत्रक्रभ कर्य डेभा कर्य। অত্র করণাভাবে ভাদে শাবণেপি विद्याः । शृत्र द्वेशयथय **छियान् नारम** न क् उनिष्ठ हिंद । उस जानुनास ম। নি শুণেণেশি তদিষ্যতে ॥ ইতি न उपना निष्ठे वहमाटा मात्रावनभक्ष महा जा। उत्र गर्भः। यमि महा ্ৰান পৰ্যুহ স কান্তি দ্বিত। न्यात्राक्त्र । मूल शक्षाप्र भाव विकास विकास विकास विकास विकास পদ্ধ ইতি। অত্ত ভূত বিদ্ধা পূৰ্ণি मा । निनिष्ता । उथा ह का निका भु-রাণে ৷ চত্রণ্যা সনুৎপন্নাবসূরে भव्रेक्टिडो। (वनान् श्री अर्ब जः भ न्त्यान छो इन् न् नुः नुः निः। रुषा छ। ৰণ্যো দেব পাভালত**ল** বাৰিনৌ ৷৷

या हु । ज्ञाः चुले **अस्म मामे**ल **७क, २१०। म॰ भू। उत्तर्भ, ५**१० পরণ্টোর্ঘিকে পুন: ॥ ভুর যুক্তে ভনিলোপাকরণ ি তে ৷ অসের বহ্জাবৎ কাল 🗥 मार्त्रा मक्स्यि ॥ व्यातः 🤲 भुवत्वन ज्य क्यां छे बदावाः यू उ॰ । न॰व९ भव कृ: ७। २ : ख काराहित नमा जि ॥ धनिश युजः वर्गाङ्घवनः कर्म यख्यः । **७**८कर्म अकृतः विराष्ट्रभाह्यन সণজ্ঞ দ নিতি ॥ ইভি ্জী হরি ভ-कितिनारम () विनामः॥ রক্ষাপত্রঃ পু॰ ভ্রত্তকঃ। ইতি রাজ-निर्विष्टः। जुज इंटि की ॥ क्षी ब्रक्तायथा। ज्ञानन বিধিনা বস্তার কিকা বল্ল মাচরেৎ । य नर्व लाय त इंडः म्थ मन्दर সর ব্যেখ্য। ইতি ইরিভক্তিবি-षाःगद्भविषामः॥ । ত্রাত্র ২ ত্রাণ , ১ ত্রবিত ৪ গো-পায়িত ৫ গুণ্ড ৮। ইত্যমর: ॥ त्रिक्ष अ॰ त्रकाक डी। यथा। जा-यव्याव्यका (ना त्रका (मानार পত্তিবিশারদ:। কৃতাকৃতজ্ঞো ভূ-ण्डानाः छात्रः महारम्य ब्राक्तिला ।

े जिया (१४) १४० व्यथायः ॥ विव्यत्यः भूः त्राज्ञास्त्रक्षकगनः। ८८ शर्यतायः। व्यतीकस्टः २। इंडऽ स्तरः॥

ায়• ল্লী কাঞ্জিক•। ইতি ছেম-ত্রনু:।। হিন্ধু। ইতি রাজনিঘট:॥ ায়: পু• ভল্লাতকবৃক্ষ:।ইতি ি চাওঁশেষঃ।। খেতসর্বগঃ। ইতি ्राणा ॥ **त्रका**ष्ट्रम**्या यथा ।** ञात हारीकि**म उ**व भूकी खंग ज গৎ পুজ্য্যভানরজ্যতে চারক্ষাণ-সি ভীতানি দিশে: দুগন্তি সর্বে ন-মস্তিচ সিজ সংঘাঃ ॥ ইতি ভগवद्गीलादा• 🖒 व्यक्ष्मग्रद्धाः आस्त ্উত্যব্যয়• যুক্ত মিত্যর্থে। হে হ্যবী किम गार्विन्तु । भूवर्त्त व यञ्ज स्वान-বাত্যভান্তত পুভাবো ভক্তবৎস जन्म ७७ उर भूकी द्या भुक्ष्रेया কীর্ত্তা নিরতিশ্ব প্রাশস্ত্রস্য কী-ৰ্ত্তান শুবণেন চ ন কেবল মহমেৰ পুর্য্যানি কিন্তু সর্যেব জগচ্চে-তন নাত্র• রক্ষে। বিরোধি প্রষ্ঠ **ि পুक्षे क्रवें भाष्यां व कें** विषद তৎ স্থানে যুক্ত নিভ্যথঃ। তথা সর্ব জগৎ অনুৱজ্যতে চ ত্বিষ্ব্য মনুরাণ মুপৈতি ইতি চ যন্তদলি बुङ (भव। उथा त्रकाः मि जीजानि निश्चित्र । अन्यत्य विश्व विष

রক্ষোদ্ধী জ্রী বচা। ইতিরন্ননা।। রক্ষোজননী জ্রী রাজিঃ। ইতি ত্রি-কাণ্ডশেষঃ।। রাক্ষসমাতা চা। রক্ষোহা পু॰ গুলুঃ। ইতি রাজ-নির্ঘটঃ॥

त्रकः पु॰ जानग इंड्यत्रवः ॥

त्रा व मानगण्डला इंडिकिविकन्नक्रवः॥ व त्राडि। इंडिफूर्गामः॥

त्रा जी विज्ञः॥ मानग । इंडिय काक्रत्रकायः ॥ काक्ष्म । इंडिय पुम्रत्रवावनी ॥

ताः शृ धनः। सर्गः। इन्यानः।।

णपः। इन्धि नपत्र द्वावनी।।

ताका की नरीविष्णयः।। कहृद्रागः

।। नवज्ञा ब्रद्धां ।। मण्यूर्णिन्यूनिथिः। इन्धि गिषिनी।।

ताथ था स्था सम्बद्धां । इन्हि

রাথ अ শোষালনর্থটোঃ। ইঙ্কি কবিকল্পদনঃ।। শোষঃ স্নেহরহি- তীভাবঃ! অলমখো ভূলণ সাম থ্যু নিবার জে। খা অর্থাগ্য । ইতিদুগালাসঃ ।।

द्रागः भू मार्ययुः॥ (वाह्रिजा-ब्हिश (द्व गास्टिश अन्दामः ॥ गा-कादातिः॥ न्यः। इति स्वनिशा ठमः ॥ मृर्गः। ই **७ मद**त्रावनी शनाकारिः।। ब्रांक्ट्रपद्धि । ब्र**ा**वनः । ইতি नागाथद्रञ्जनावा ॥ भी ७:। गया। वीज्ञान जनकात्र हिंड धी पूर्वि कराउ। इंडि जगन्हीजा ল্লোচটা চাধা• শ্রীবর রামী॥ তস্য यक्त ग्या। म्य म् न्रिक् हिख म्थरङ्गरेनव ब्रज्ञात्छ । गञ्छ **পू**ष-(गारकर्यार म ताम इं कि कीर्जा-(७॥ इंज्जिन निमिन: ॥ 🕸 ॥ গানশান্ত্রীয় রাগা যথা। ভরত মতে হনু : মতে চ রাগ: य । বুধ: । **জেयाः** नामानि यथा। टेडब्रदः ১ क्लिंगकः २ हिल्मानः ० भीत्रकः ८ ब्रिजागः ৫ म्यः ७। रुन्न छ রত্যো নতে পুত্যেক নেষা পঞ্চ রাগিণ্য:। সোমে গর কলানাথ-एन। मंद्र भूरकाह त्राह्याः यहे রাগিণ্যঃ। এ:তধাণ পুত্রের মঞ্জৌ প্লা: একৈ পু মভায্যাচ।। ক লানাথ লোনেম্বর নতে ব্রাগা

যথা। প্রীরাগঃ ১ বদন্ত ২ পঞ্চাঃ **्टेब्र्यः ४ (१यः ७ महेनातायगः ५)।** ইতি নানাসংগীতশান্ত্ৰণা জ্ঞা অথ वागना दुष्ट्वि म था स्थान न । বৈন্ত চেতা সি রজ্ঞান্তে জগগ্রিতন বর্ত্তিনা**া তে রা**গা ইতি কথ্যম্ভ মুনিভি ভরভানিভি: ৷৷ গোপীভি शीं ज गाइका (गरेककः कृषः अधि-ধৌ। তেন জাতানি রাগাণা॰ সহ-সূর্ণি তুৰোডশ ৷৷ রাগেষু েষ ষ-ট্ভি-শ্বাগা জগতি বিশুকাঃ। কা-লক্ষেণ ভ্ৰাপি হাস এব ভূ দৃশ্যে ॥ (इहिष्ठ डि. इंग्लिस्टि अडी-विकिडः। (मरता क्डतः भूर्वः) शन्तिम मिक्तिए उथा।। अमु पुकर्त्त (य (मणा खबाबीया॰ भुहात्रवा । ७-থাচ। অঙ্গ বহু ক'লঙ্গ তেলফ ভূ লিঙ্গ হাবন্ধ সূরত্ব শূপলত্ব খেলাক্ সৌবীর কীর কাশ্মীর নাভীর নাহী-त्र भिक् ङालक्त भग <mark>भगध नियध</mark> राजा श्रीहर गका ख्रा नाजन कालन मक मक (ठाल डे॰ कल अखन निःश-ল হরিদেল কেরলকোষল মল্লিবা-ল মল্ল ভল্ল সৌবিদল্ল বাত কিঞ্জা-ত গুজুরাত গুজুর কালঞ্জর গৌড দুবিত ভড় মৃন্তবেদি কাঞ্চী পাঞ্চা-ल भोता है भारत लोशावत थमा

ফ্রীকশ বঁরূপ কামরূপ **হরিগর্ভ**ি 📙 हार्च ्यं हे वाहे की कहे (एरवळ्ट नहेंक् লনা ভৌট কবাট করহাট কর্ণাট জডিকাবন্তিক কনক অবু কান্য**স্**বু ভাগ কায়োজ ভোজ তথার বিহা-ল ন্দীহার বাজগে**হ বিদেহ বা**-🏥 🍇 ५१% श्रीक जिगर्ভानर्ভापि ८५-শের রাগাঃ পুচরন্তীতি॥ যস্য শু-রণ বাবেণ রঞ্জন্তে সকলা: পূজা: । সর্হায় রঞ্জনা**দ্ধেতো স্তেন রাগ ইতি** 🂯 🖫 ॥ अथ द्वागाः । जाती यक्षा जारमनु खला मझात्र मः জিল:। শ্রীরাগশ্চ তত্ত: পশ্চাদ্বস ख खरनखंत ।। शिल्लान काथ दर्गाः ট এতে রাগা: বডেব তু। ৬। ষট্ত্রি॰-শ্দুটোগণী তত্ৰ ক্ৰমশ: কথিতা ম্যা । धानमी नालभी हिन बामकीबी ह সিম্বডা। আশাবরী ভৈরবী চ মা-व्यवम् श्रिया हमाः ॥७॥ (व्यावनी ह পুরবী কানডা সাধবী তথা। কোডা কেদারিকা চাপি মল্লারদ্যিতা ই-সাঃ॥৬॥ গান্ধারী শুভগা চৈব গৌ त्री कोगातिका खथा। विकासात्री ह रेवबागी खिबागना भिया हैनाः ॥ ७॥ जुडी व शक्त्री देव निन्छ। পঠনজরী। গুজুরী-চ বিভাষাচ वमछम् श्रिया हेमाः ।। ७ ॥ भाष्त्री 🖟

দীপিনি চৈন নেশকারী চ পাহিতা । বরাডী নোরহাটা চ হিল্লোলস্য প্রিয়া ইমা: ॥৬॥ নাটিকা চাথ ভূপা-नी वामरकनी गए। उथा। कार्या-मा ठानि कन्यांनी कर्नाहेन्य श्रियः ≷ 🏭 🖰 १। ५ ।। ५ ।। ५ ।। ७ ।। ५ ।। ७ ।। ५ ।। ७ ।। ५ ।। নিয়ম:। বিভাষা লালতা চৈব কা-भारा পर्रमक्षती । ज्ञामकीती ताम-क्नि (ब्रायाती ह रुड्ड्री ॥ (ह-শকারী চ শৃভগা পঞ্মী চ গড়া-তুড়ী। ভৈরবী চাথ কৌমারী রাগি। ণ্যো দশপঞ্চ ।। এতাঃ পূর্বাহ काल जु भीगस्त्र भागतान्त्रीमः। ৰব্বাড়ী মাযূৱী কোড়৷ বৈৱাগী চাথ शानुषी ।। (वनावनी भात्रक्रांधी ज-প্তিতা রাগ যোষিতঃ। গেয়া মধ্যা-হ্লকালে তু যথা ভারত ভাষিত ।। गानात्री मी शिका हिन कलागी भूतः ৰী তথা। কানডা শারবী চৈব গৌরী কেদার পাহিডা ।। মাধ্রী মালসী नांगी ज्लानी मिक्रुण उथा। माया-হে তাশ্চ রাগিণ্য: পুগাযন্তি চতর্দশ ।। পুৰুষা বস্তু ভূষাত্যা রাগা ভে মা-व्याम्यः । शुक्ताय ठाभन्नाव्ह ठ রজন্যা॰ গান গোচরা: ॥ দলদণ্ডাৎ পর• রাতৌ সর্বেষা• গান নীরিভ• । নেধনলার রশগস্য গান বর্ষাসূ

जर्दमा । शिभक्षम्याः जमात्रे 🦭 या-বৎ জন্মোৎসব হরে: ৷ তাবদসন্ত রাগস্য গান মৃক্ত মনীবিভিঃ ॥ শক্তোত্থান সনারভ্য যাবদুর্গা ম হোৎ সবং। গীয়তে ভদুধৈ নিভ্যং भावभी भागताङ्का॥ मर्खिया बिरु ज्ञाशाशा ज्ञाशिशी बाक्ष मई मः। त्रक् ज्यो नृलाङ्खायाः कालपः स्या नः विम्राउ॥ ताशकानाशयमामि उ८ পত্ন্য স্তদনন্তর•। নান্যপত্নী পুগাত-या नृभाक्तायाः न मूयगः ॥ तागाः ষড়থ রাগিণ্যঃ ষট্ত্রিংশচাক বিগ্র-शः। जागडा तुक्त ममना८ तुक्तानः সমূপাসতে ॥ 🗱 ॥ অথ খ্যান । বি-তিধিনী চুম্বিত বক্তু পদ্ম: শক্ৰুগতিঃ क् ७ वरान् भूम छः। मकी छ भानी शुविभन् शुरिार्य मालाध्रता माल व द्राग द्राजः॥ ।।। नीला ८ भवः क्र् যুগে বহন্তী শ্যামা সুকেশী চ সুমধ্য ভोगा। देय नहामाचू ब द्रवादक् जा थानूवी भन्म जूठाक्र नवा ॥ ১॥ করে যুভা চাদুজ য্মা রম্যা ইত শুভ **শ্চাৰু বিলোক্যন্তী।কণ্ঠস্ক রন্মৌ**ক্তি-করহহারা সা মালসী সংক্তিতা বিচিত্রা।। ২।। পুতপ্ত চামীকর চাক ज्या कर्गाव**ज्ञानः कगलः व**ङ्खी । भूशः थन्ः शूझणरेत मंशाना हन्द्रानना

द्रामिकदी शुप्तिष्टा ॥ ०॥ मरहन्तु नी-লদুংতি রম্বুজাক্ষী পুরাদযন্তী কপি-লাশ যত্র। বিচিত্র রহাভরণা সু-কেশী সা সিদ্ধুড়া কান্ত সমীপ কং **इ।।।।।। जवा भुमूनमू/ि विश्व**क् जक्षु भग्न कद्रायो म्बाना । की মাংশুকাছাদিত গাত্র বস্তি রাশ্র वती त्रक् किला विम्था ॥ द ॥ अ-রোবরছা স্কৃটিকস্য মন্দিরে স্রো-क्रें भक्त गईयंडी। जान भूरयान পুতিরহ গীতৈ গৌরী তনু ভৈরবি-का मडीय ।। ७॥ 🚓 ।। जय महातः । বিহারশীলোভি সুকান্তদেহঃ কান্তা शिया शामिकः भीनगकः। कामा-ত্র: পিঙ্গল নেত্র যুগ্যো নল্লার রা गः भियक्ट जूरवणः ॥ ১॥ मरहन्डि তোৎফুল লতা নিস্ঞে ক্তজিভি: कास मग्रागमाय। (वलावली वन्नाक মৌলিনী স। বালা বিচিত্রাভরণা निक्का॥ ।। त्रश्मका श्रियमान পত্ৰ ব্ৰম্য বছন্তী হ্ৰচ হ্বস্তু যুগ্মে। म्बामनमाग्यायञ्: मकाभा भूता छ-तिः मा भूतवी निक्छा ॥ २ ॥ ज-শোক বৃক্ষস্য ভলে নিষয়া বিযোগি নী বাস্পকণাঞ্চিতাঙ্গী। বিভূষিতা-की क्षतिलाद वाला जा कानछ। (हम-লতেব তথা।। ৩।। সংগ্ৰায় সংগ্ৰায়

गाल प्रथाना भुमून माला प्रविष्ठन বালা। গৌরী স্বকান্তানন চূষিতান্যা मा मन्द्री भाषविका निञ्जाक्ष ॥ ८ ॥ ৰুক্ষী বাদ্যতি স্বভৰ্ত গানাৰ্থ भारता जिमग्रारथन। म रेसरे जाना-বিহিতাচ মাল। কোডা কলা তান-বহী ।তা সা।।৫।। সূত্রো সমূত্রীর্ণ বভী সুদেহাকেশ পুণিস্যানিতে বা রিবিন্দু:। নিষ্কীডযন্তী তিমিরা শু কাস্ত কেদারিকার ক্রপথোধর 🕮: ॥५॥ #॥ अथ ब्रिजानः। नीना-বতারেণ বনান্তরাণি চিন্নন্ পুসূনানি বধু সহায়:। বিলাস বেশো ছ তি দিব্য মূর্ত্তি: এরাগ এব পুথিত: প্-थिवडा ।। ३॥ मक्तडाम् काल गृहमध्ड (सत्म भुवास्यडी इ भिनाक यखाः। ধারাধরা ধাতু বিচিত্রিতাকী গান্ধা-রিকা গন্ধ সুজ নিধক্তে।। ১।। রসন যা সুবিচার কৌতৃক বিদপ্তী ক বিকোবিদ কৌতক। সুকবিতামৃত ভাবন তৎপর৷ ভগবতী স্ভগা স मुनाक् जा ॥ २॥ भुरह्मान्यात मार्क मानी क्लारेनः की उत्तर्व का कि वा काकनीयु। दामा भागाना मम्ख भानाव्य जीना शोबी शोबी शोबवा-लाक मिक्षे।। ।। अञ्जानिकायाः कृष्ट को यूरी जिः शुकालि जाया व ॥

कनी विश्वातः। यहात कार्डन अमः বসন্তী কৌমারিকা কামকলা বহন্তী ॥ ৪॥ গৌরীপাদান্তোজ মভ্যর্ছযন্তী গন্ধোজ্ত গন্ধমাল্য দ্ধানা। না-না রত্নোপায়নৈ ভক্তিভাবৈ বেঁলো: यात्री कथ्राउ वानिक्य ।। १।। উल्लामगन्नी धिमाल्ल द्रशः हान् भाग वकुना। नाल जो अमून मुखिरेबंद्रानी রাগিণী মৃতা॥ ৬॥ 🗱॥ অপ বসন্তঃ । চ্তाऋरद्रोगित क्छावजःसा, विष्र् মানাক্ণ নেত্রপদ্ম:। পীতামুর: का-ঞ্চন চাৰুদেছে৷ বসন্তরাগো যুবজী लियक।। ১॥ जून्डा मानां ज्नी-লযুক্তা মৃক্তালতা কল্পিত হারয়িঃ ।চ্তাস্কুর পাণিযুগে বহন্তী জবাৰ-ণান্ধী ভড়িকেরিভেশ-॥ ১॥ সণগী-ত গোষ্ঠাযু গরিষ্ঠ ভাবে সনাশ্রিতা गायन मिल्नुमारियः। अर्दिक्नि नृश्त भारभद्मा जा भक्ष्मी भक्ष्म (दह-বেত্রী ৷৷ ২ ৷৷ উরসি কেশচ্যস্য সু-সার विषय्त्री नगरनाध्यि ठाक-বেশ । বিলুলি তালক বলি ক্শা। স্বী ভাসুরা ল'লিতা কথিতা বুধৈ: ॥ ७ ॥ मधी कवारैभः भित्रहाम् ।-याना विरयाणिनी काछ विरयाण (द-रा। भीनखती हिव धवा भुजूक्षा भागमा मूरकशी भठेमखनीय । । ।।

क्तर्गारशमामश्चि । १ तु उ असे भ् ণোতি সামঞ্জুল ক্জিতানিং কান্তা-ष्ठिकः गरुमनाः भुष्टाप्य मा ७ ज्ज्जी বেশ কলোচিতানী ৷৷ ৫ ৷৷ অধ্যা-পযন্তী নিজশিষ্য বৃন্দে সঙ্গীত শা-জ্রাণি বিবেচনাভিঃ। মনোহর। হার লতাভিরামা সমস্ত ভাষা অশলা विष्मय।।।। 🗱 ।। व्यथ हिल्लानः । शमाजिलारमन পতन् পृथिव्याः উত্থাপিত खৎकन भाषिकृत्मः। উল্লোল সঙ্গীত রুসৈ বিদক্ষে। হি-ল্লোল রাগঃ কথিতো রসজৈঃ ॥ ১॥ মযুর কেকা শুবণোল্লসন্তী মযুব্রিকা न्डा ७ड॰ किंद्रश्री । मग्द्रकाशीव সিতি দধানা মাযুরিকা সংক্থিতা खनरेखः ॥ । ।। भुरमाय काल गृश সংশ্ৰিষ্টা পুদীপ হস্তাৰুণ গাত্ৰ ব-জ্ঞা। সীমন্ত সিন্দুর বিরাজনানা जूत क मान्। किन मीशिक्य ।। २॥ সার্দ্ধ সখীতি বিজনে বসম্ভী বিচিত্র বক্ষোজ নিতম্ব সঙ্গা। নির্বাক্ষ্যনাগা। नन पर्भाग या मा (एमकाही कथिला खनरिकः ॥ ७ ॥ ज्ङु मंधाना हत्रनात विन्तः निरम्बर्श्वी श्रद्धाः यानः। পুকান দাম্পত্য সুথে নিম্মা সাপা-হিডা **স**•কথিতা কণীল্ডে:।। ৪।। क विश्वाना गुत्रभुञ्च ग्या गुत्र पुत्

द्यां गतार्वाकी। स्महान्य চাৰু বিলোল নেত্ৰা ব্য়া**ক্**নেষ্ণ ক थिजा वजाती ॥ द ॥ उँ ८ श मन्हिक পুথমাপরাধে মান পুন: কর লবা-শ্চিরেণ। পাজ্ স্ব ভাবালিয়ত । ক্রম্প্রী ना (बाद्यहाँ) इठेकिल वश्री ॥ 🚉 🗱 II অথ কর্ণাটঃ I ক্সাণসাণি 👍 রগাধিকটো ম্যুর কণ্ঠাভিসুকণ 👊 ভিঃ। সুরৎসিত স্থিরসং পুশাভ कर्नारे द्वारमा इदि जानवर्नः ॥ চির• নটন্তী শুক্ত রঙ্গমধ্যে সংপ্রা যন্ত্রী নটিন• বসন্ত•। সুগীত তালে কৃতাবধানা নটীযু নাটা পরিধান (एड्)।। ५।। स्वायकः नुझवाजाधि-का। इमम्यो महमूर यह ही। सना-নি শশ্দিতনোতি মুধ্বা ভূপালিকা ना ज्ञवम्खद्रीया ॥२॥ व्यक्षाभयस्री শুকসার সারী: শ্রীরাম রামেতি সু-(वन नर्धीः। वामखनार्षः मनिजाः-শুকঞীঃ শ্রীরানকেলী কথিতা কবী-निषुः॥ ৩॥ বিশেষ বৈদধ্যবতী স-मञान कवाविवारमन वियाह्य छी। বৃহনিতমা পরিপুষ্টদেহা বডা পুল-য়স্তন ভারভব্যা ॥ ৪ ॥ ভর্ত্ত: সম• পাথসি সম্ভবন্তী পথো বিহারেণ সং রোকহাণি।বিচিন্নতী সৌরভ নোদ-माना कारनाम त्राणिणुर्मिन धनरेकः

া। ব্যাধ্তা নট নৃত্য পরিশুমেণ वाना नीमाजिः সুरठी क्ञारता। नहींनाः कन्यांनी कनयं व यंबश्खी ্ণ পুস্থান মুখরিতা কিন্ধিণী ক-আপ্র-॥৬॥ ৠ॥ অথ রাগ রাগি-প্রিক্ত ভাব নিরূপণ । নালব: 🕮 🕫 िः ज्ञात्ना भक्नात **उ**पनं बत् । गाय-ি গ্ৰায়কা ধীর সানন্দেন চত্তপ্তয় ॥ বমন্তো রাগঃ কর্ণাটো দ্বৌ বীরৌ ভব-**७:** जग । शानमी गानमी टिव ভৈরবী মাধবী তথা।। সূত্রগা পঞ্চ-भी नाधी (बरणायात्री व शब्दात्री। কামোনা চাপি কল্যাণী কোডা কে-मादिका जुजी ॥ कोमात्री माय्त्री हैठ व দেশকারী চ সিন্ধুডা। রামকেলী চ ভূপালী রাগিণ্য শ্চেতি বিশ্বভি:॥ আনন্দাংশা ইতি পোক্তা গীয়ন্তে পানকোবিদৈ:। পুরবী কানডা গৌ त्री त्रामकीती ह मीलिका। आभावत्री বিভাষা চ বডারী চ গডা তথা।। এতাশ্চ নবরাগিণ্যে বীরাংশে গান जुडम । (रवादनी ह शाकाती व-লিভা শঠমঞ্জরী।। বৈরাগিরাগিণী চাপি মোর হাটী চ পাহিডা। কৰ-गाःम। विकानीगर मरिश्रजा द्वागः ব্যাবিতঃ।। রাগেণ রসভাগেন ষট্ রেষু জ্ঞাপনার্থণ নতত্ত্বণ ॥ ইতি সংগীতদামোদরে শিবনারদসংশ বাদে ১। ৩ অধ্যায়ে ॥

त्रागर्नः पुः कामरावः ॥ थिनितः वृक्षः । ইতি मिनि ॥ कन्नुर्नः । ইতি भेदत्र ज्ञावनी ॥ नाक्षात्रमः । ইতি त्राजनिर्वणेः ॥

त्रागहमः शृ कामरत्यः । ইভি
भन्दञ्जावनी ॥ त्रारंगगाहम जि ॥
त्रागमः शृ टित्रगीक्तृभः । ইভি
त्राक्ष निर्घण्टः ॥ त्रागमाञ्जि जि ॥
त्रागमानाः शृ मम्तः। ইভি त्राक्षः
निर्घण्टः ॥

রাগপুল্লঃ পু॰ বন্ধকঃ।। রক্তাশানঃ
। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ।।

রাগপুল্লী জ্বী জবা। ইতি রাজ-নির্ঘটঃ॥

রাগপুসব: পু• বন্ধূক:।।রক্তামান: ।ইতিরাজনির্ঘণ্ট:।।

রাগযুক্^ন পু• নাণিক্য•। ইতিরাজ-নির্ঘণ্টঃ।। কমি•কিৎ পুস্তকে রা-গদৃক্ ইতি পাঠোপি বিদ্যতে।। রাগরজ্জুঃ পু• কামদেবঃ। ইতি শদ্রব্রাবলী।।

রাগণতা স্ত্রী কামদেবপদ্মী।ইতি কটাধ্য:॥

वि भूमा गिरीयू हा किक्रानन्त वी द्वागत्त्वः शू कामरत्वः । इन्छि

भद्रावा ॥

त्रागवाप्तः भू पाणिमपुष्कामुक मूम्यः। अम्य ख्नाः। कृष्ठिकातिष्ठः । लघुनाकिष्ठः। वाज निख कका विद्याधिष्ठकः। ইতি রাজবল্পভः।। ग्रागम् को जुलाम् अः।। भिष्ठम् अः। ইতি মেদিনী।। त्रागामी जी मिक्षिष्ठा। ইতি রাজ-রাগাদ্যা निर्धण्टः।। ग्रागाकः जि जानाः पञ्चापानितम्थः । यथा। जानाः वलवजीः पद्या या क्षि निम्माना ।। क्षि तागाक पुर्तापानुस्त पाञ्जि ।। ইতি नद्याला।।

রাগাপনিঃ পু॰ বুজঃ।ইভিত্রিকাও শেষঃ॥

वाणिनी क्री विस्कानाती। इंकि जात क्रिंदितः॥ स्मिकाया (क्रिष्ठंकन्ता। वि उ यथा। त्राणिनी नाम मण्डाजा (क्रिष्ठं) तालनः स्मिन मूणा मण्डाकी भन्नभानः। ताळनः वाक्षी नीन स्विष्ठं मूर्जं का॥ इंकि हात वामि मुताल ८৮ व्यवप्रदेश । क्रिंग् वामि वाक्षीः। इंकि भूतानः॥ व्यक्ष्य स्मिनात्री वाक्षीः। इंकि इलायुवः॥ व्यक्ष्य माज् इनुमन्नात् ज्य ज्यात्रं ए विक्ष्य स्पर्थं भूकात्रा। (मारम्यं त्रमत्व कः व्यक्ष्य वानाय्यत् हे यहितः सर्भात्रा।

वामाः विवत्ताः त्रागमस्य पृष्ठेवाः ।

त्रागी जि स्तृत् कः ।। काम्कः । ইতি

विश्वः ।। त्रहकः ।। ইতি स्तृति ।

स्वानुतिस्परः ।। स्वानुति ।

स्वानुतिस्परः ।।

রায পাড শক্তো। ইতি কবিকল্লজনঃ ।। শ্ব অররাঘণ্ড। ড রাঘতে। শক্তিঃ সাম্পর্যা ইতি দুর্গাদাসঃ।।

तायवः भ् तामहन्तः॥ महाम् मुः विष्मवः॥ मम् पः। ইতি मिनि॥ ताववायवः भ् तामायवः। यथा। माठ्याम भूतावानि ताववायव जात्रञः। ममाश्चि त्रिकातम् म-श्विजानि भूजानि (छ॥ ইड्याभू-ताववामन भूष्ण्जीवनामाद्यायः॥ ताक्षवः भू वृक्षक्षेतः। ইতি हात्रावनी॥

ब्राह्मव • कि गृगत्मायका उवस्राप्ति।
ज्यान ग्राह्म । गृगद्मायका उवस्राप्ति।
ज्यान ग्राह्म ग्राह्म । श्राह्म । ।

ভর্ত: 11

রাজ্য প্রবিশেষঃ। রঙ্গন্ ইতি ভাষা। অস্য গুণঃ। রক্তপিত্ত না-শত্ত্ব। ইতি দুব্যগুণঃ॥

রাজ খাঞান দীপ্তো।ইতি কবিকল্ল-্নাম: ।। খা অররাজে । ঞা রাজ-তি রাজতে। নরেজত্ঃ ররাজতুঃ। ইতি দুর্গাদাসঃ।।

রাজক লী নৃপসনূহ:।ইত্যমর:॥ রাজনি পু•॥ দীণ্ডিকান্তকে জি॥

ताजकत्यः भ् कत्यविष्णयः। यथा

। कार्त्र्याः भावृत्यामा नीत्मा भू

जी प्रत्यकः। कत्य भ्रियको ताजकत्य श्रुष्ठाः।। ইতি

की वित्राः।।

রাজকন্যা স্ত্রী কেবিকাপুস্থ । ইতি রাজনির্ঘণ্ট: ।। নৃপস্তা চ ॥ বাজকক্তি স্ত্রী চীনাকক্টী। ইতি

वाजक करी जी ठीना कर हो। इंडि वाजनियकः॥

রাজকশেকঃ भः ভদুম্সা। ইভি রাজনিঘটঃ॥

রা নকীয়ঃ ত্রি, রাজসম্বন্ধী। রাজ কন্যায়ণ ইত্যর্থে ণীয় পুত্যুয়েন সিদ্ধঃ।।

রাজস্মার: পু॰ রাজপঞ:। তত্র বর্ণনীবানি যথা। সমারে শস্ত্র শাস্ত্র শী কলা বঁল গুংলাচ্যা: वाष्ट्राची दूष्णी ताज्ञ किः मूज-शठाप्यः ॥ रुष्ठि कविक्सन जायाः ১ खदकः ॥

রাজক্মাণ্ডঃ পু• বার্ত্তাণী। ইতি কটাধরঃ॥

बाजितावाजि जी विश्वाकितिणयः
। विवाजाब है है जि हिन्ती जावा।
ज्र भर्यायः। हिं जर्मिकार भी जुः
भृद्धिका ० धामार्गवः ६ किन्तिजार भी जुः
भृद्धिका ० धामार्गवः ६ किन्तिजा । ज्यादा । नी उद्दर्श । ज्यादा है । क्या विवास । नी उद्दर्श । ज्यादा है । क्या विवास । नी उद्दर्श । ज्यादा है । क्या व्याप्त । नी ज्या व्याप्त । व्याप्त । व्याप्त व्याप्त व्याप्त । व्याप्त व्याप्त व्याप्त । व्याप्त व्याप्त व्याप्त । व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त । व्याप्त व्याप

वाकगामि जि वाकमस्या यथा।

प्रमुख्य मग्ट्कर्य वाजगानि ह

रेशम्पनः। छवान्हाणोक निर्वेषः

मगानि व्यह्णहण्या।। ইতি मानत्व

५० व्यशागः॥ वाष्ट्रनि वा छनाही
नाः भरवयाः नव्यक्ष स्वार्याः
। व्यक्ष्म मुख्ये।। ज्ञिष्म
। व्यक्षम् व्यक्षम् व्यक्षिः।। ज्ञिष्म
। व्यक्षम् व्यक्षम् व्यक्षम्

ভাবে নাতৃগামি কে ভাবে ক্তৃ পানি তদভাবে ভাতৃপুপ্রগানি ত-দভাবে সঙ্গল্যগানি তদভাবে বন্ধু গানি তদভাবে শিষ্যগানি তদ-ভাবে সহাধ্যাহিগানি তদভাবে ব্যান্ধণ ধনবৰ্জ্জণ রাজগানি ৷ ইতি দাযভাগগুন্থগুত্বিফুব্চন•॥

রাজগিরিঃ পু॰ শাকভেদ:। তৎ-পর্য্যায়:। রাজাদু: ২ রাজশাকিনী এরাজশাকনিকা ৪। অস্য গুণা:। কচ্যত্ব॰। পিত্তনাশিত্ব॰। শীতল স্থুণ। ফুলস্য তু অভিশীতলত্ব॰। অতিকচ্যত্বক্ষ। ইতি রাজনির্যন্টঃ।।

রাজগুবিঃ পু॰ মৎস্যবিশেষঃ। ফলুই ইতি ভাষা। যথা। ফলকীস্যাচি ভ্রফলী রাজগুীবো মদার্ঘদঃ। ইতি ভ্রিকাণ্ডশেষঃ।।

ब्राक्यः वि जीकः। ইতি विकाशः (শयः॥ রাজহন্তা। यथा। यनम्न দক্ষারি পুরানলোভক্লৈ নিজপুতা-দৈপ বলয় জ্বাজ্বः। পুদক্ষিণীক্ ত্য জ্বায় সৃষ্ট্রয়ার নীরাজন্যা স রাজঘঃ॥ ইতিনৈয়ধপুথ্যসর্গঃ॥ রাজচিহ্নক ক্লী উপস্থ:। ইতি শব-চন্দ্রিয়া। চিহ্নানা স্ত্রী পুং বিভা জ্বানা রাজা ইতি বৃহৎ পত্ত্যা-নিজ্য।। া এলদুঃ জী পিওথল্র ইতি মেদিনী॥ মহাজধুঃ। ইতি রাজ; নির্ঘটঃ॥

রাজজন্ম প্ ক্ষ্যরোগঃ। যক্ষ্যতে প্জ্যতে রোগরাজত্বাং নহা, যক কড় নহি অন্তহাদি ভাষুকি নিজি নন্চবর্গতৃতীয়াদি রিজ্যেক ভাষা জক্ষ ভক্ষ হসনযো রিভ্যাস নিজা রাজ্যক্ষ শদোপ্যত্র। ইভ্যানিক কায়াণ ভরতঃ।।

রাজত তি রজতনির্মিত। যথা । সৌবর্ণ রাজত তানু পিতৃণা পাত্র মৃচ্যতে। রজ ভস্য কথা বাপি দর্শন দান মেব বা।। ইতি মাৎ-স্যে ১৭ অধ্যায়ঃ।। রজতে ক্লী।।

রাজতকঃ পু• কণিকারবৃক্ষঃ॥ আ-রণ্নঃ। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ॥

त्राक्ष च को श्री श्री विष्यः। उट. शर्गायः। महामहा २ वर्गश्राः १ व्याजकः ६ मृश्राः १ व्याजकः ६ मृश्राः १ व्याजकः ६ मृश्राः। कषा- यदः। कका तिष्ः। कका तिषः। कका तिषः। कृष्यः। कृष्यः। कृष्यः। कृष्यः। कृष्यः। कृष्यः। मृश्री विष्यः। कृष्यः। कृष्यः। मृश्री विष्यः। कृष्यः। कृ

রাজত। প্রী রাজন্ব । রাজ্বে। ভাব ইত্যর্থের। জন্শবাৎ ত পুত্রেন শিদ্ধা।। রাজ**তাল: পু॰** গুবাকবৃক্ষ:। ইতি শব্রহাবদী।।

ताहिकिनियः श्रू॰ जूथाणः। ইতি श्रातावणी॥•

রাজতা। রাজ্ঞা ভাব ইন্যথে রাজন্পদাৎ ত্ব পুত্যবেন শিল্পা

ज्ञाजन ७: 'भू॰ द्राह्मभामन॰। यथा।
जैतेका मणवर्षमा भश्वर्या विकमा
ह। हाइ म्छकः मृज्ञ्चा भि भुगविष्टछ॰ विश्व कर्या। ততো न्रन्ठ तमा
मा नाभद्रारथा न भाठक॰। न हामा
द्राह्म । छि भुगविष्ट छ॰ न विष्ठा
द्राह्म । इछि भुगविष्ट छ छ थ छ। इस्

রাজদন্ত: পৃ॰ দন্তানাণরাজা। উপ-রিশ্রেনী হু নধ্যৰ ভি দন্তদ্বয়ণ। যথা । রাজদন্তৌ তু নধ্যস্থাবৃপরিশ্রেণি কৌ কৃচিৎ। ইভি হেমচন্দু:।।

রাজদেশীয় পু• রাজদেশ্য:।রা-জকল্প:। ইযদুনো রাজা ইত্যর্থে রাজন্ শব্দাদেশীযপুত্যযেন নি ভ্রমঃ।।

ज्ञाजवज्ज्ञकः भ् त्रक्षुष्ठ्रः। इति
किन्द्रिकाजिनिर्यन्तः॥ उत्राभर्यताः
यः ज्ञाजवस्रुव्रणस्य पृष्ठेताः॥
उज्ञाजवस्रुव्रणस्य पृष्ठेताः॥
उज्ञाजवस्यः भू वार्ज्ञाः कर्जनाः कर्जनाः

यथा । जाजवर्यान् भूवक्रांभि रथा বৃত্তো ভবেমৃপ:। সম্ভবক্ষ যথা **७म् निक्षिक भत्रमा** यथा॥ वृक्षि• शुाखिन मःकातः क्वविया यथा विवि। अर्बम्याम्य यथा न्यायः क-র্ভব্য পরিরক্ষণ ।। অরাজকে হি লোকেম্মিন্ সর্বতো বিজ্ঞতে ভয়াৎ । ब्रक्सार्थ मन्। मर्थमा ब्राकान म् मृबद भुजुः ॥ हेन्द्रानिव यभाका ना भारा के वर्षामा है। हन्तु विख्नारा ৈচ্ব মাত্রা নির্হাত্য শাখতী:।। যমাদেষা সুরেন্দ্রাণা মাত্রাভ্যো নির্মিতো নৃপঃ। তমাদভিভব-ত্যেষ **সর্ব** ভূতানি তেজসা॥ তপ-ত্যাদিত্যবলৈষ চক্ষুণ্যি চ মনাণসি চ। ন চৈন• ভুবি শক্ষোতি কশ্চিদ-প্যভিবীক্ষিতু ।। সে। হগ্ন ভ্ৰতি বাযুক্ত সো হক্ক:সোম: স ধর্মরাট্ । न क्यादाः न वक्षः न महिन्दः পুভাৰত:॥ বালোপি নাবমন্তব্যো মন্ব্য ইতি ভূমিপঃ। মহতী দেব-তা হেয়া নর্জপেণ তিইতি ॥ এ ক্ষেব দহত্যগ্নি নর দুক্সস্পিণ্ । সল দহতি রাজাগ্নি: সপশু-पुरा मक्षर ॥ कार्यं । स्वक्र **ण**क्छिथ मिण कालो ह उबुउः। स-ক্তে ধর্মনিদ্ধ্যর্থ বিশ্বরূপণ পুরঃ भूनः ॥ यम् अभूमारि भगा नी विंब-য*চ পরাক্রমে। নৃহ্যুক্চ বসতি কোধে সর্বতেজোনযো হি স:॥ ত॰ শ্বস্ত দ্বেপ্তি স'মোহাৎ স বিন**শ**্যত্য-সংশয়ণ তস্য হাশু বিনাশায় রাজা পুসক্তে নন: ৷৷ তমাজর্ম ব্নিষ্টেযু ञ व्यवस्त्राज्ञ वाश्विशः । व्यनिष्ठकाश्र निष्ठिष् उ॰ धर्मा॰ न विচालयए ॥ उ-স্যার্থে সর্বভূতানা গোপ্তার প্রম মাজ্রজ•। বুন্ধতেজোন্য• দণ্ড নস্-জৎ পূর্ব মীশবঃ।। তস্য সর্বাণি ভূতানি স্থাবরাণি চরাণি চ। ভ-যান্ডোগাব ৰল্পান্ত স্বধ্যান্নচ**লভি**চ ॥ उ॰ रम्भकाली भक्तिक विम्ता-क्षाविका उजुञ:। यथाई अ: अ: भुगत्यन्नद्रत्रन्तात् वर्खिष् ॥ **न द्रा**ना পুক্ষো দণ্ড; স নেতা শাসিতা ए मः । ठठ्नां साम्यानात्रक श्यमः পুতিভূ: ন্ত:।। দণ্ড: শান্তি পুলা: সর্বা দণ্ড এবাভিরক্তি । দণ্ড: जूरअयू जागर्ভि एखः धर्मः विष बू धाः ॥ अभीक्षर अवृत्रः अभरक् अर्बा द्रञ्जः रिंठि भुजाः। यमनीकः। भुगीउस दिवाभगकि मह जः॥ यमि न भुगरयः দাল। দণ্ডণ দণ্ডোগ্নতন্দ্রিঃ। শূলে। ग्दन्धानि वाशक्षान् पृत्रनान् वनव खहाः॥ अन्ताद काकः भूरवाखाः

শ্বাবলিহাদ্ধবি তথা। স্বাস্ত্রাক্ষ ম-স্যাৎ কমি শ্চিৎ পুবর্ত্তেতাধরো-ন্তর•॥ সর্বোদণ্ড জিতো লোকো দৃ-র্লভেং হি শুচি নরঃ৷ দণ্ডস্য হি ভ যাৎ সর্ব॰ জগড়োগায় কল্পতে 🛚 (पर पानव शक्तर्वा त्रकार्शन भाज-গোরগাঃ ভেপি ভোগায় কল্পিঙ্কে म् एक्टिन्य निभीष्ठिजाः ॥ मूर्यायुः नर्बदर्शाक्त जिल्हाबन् नर्वत्न उदः । সর্বলোকপুকোপশ্চ ভবেদ্ওস্য বিভুমাৎ ॥ যত্ৰ শ্যানো লোহিতা-কো দণ্ড করতি পাপহা। পুরা ন্তত্ৰ ন মৃহ্যন্তি নেতা চেৎ সাধু পশ্য-তি॥ তস্যাহু: স•পুণেতার• রাজ:-न गठावाहिन । गरीकाकादिन প্রাক্তঃ ধর্মকামার্থকোবিদ ।। তং वाजा भुगयन् सम्बक् जियरर्भगा-ভিবৰ্দ্ধতে। কামাত্মা বিষম: শুদ্রো मर्ख्येनव निष्ट्नार्ख ॥ मर्खा कि ज् মহ ভাষে। দুর্ধার শচাকৃতাত্মভিঃ : ধর্মাদিচলিত হস্তি নৃপামেব স वाञ्चव॰ ॥ ততো দৃর্গঞ্চ রাষ্ট্রঞ্ছ লো-রঞ্চ সচরাচর•। অন্তরীক্ষণতা•-रैक्टव मुनीन् (स्वा॰क शीखराय ॥ সে। **২সহাবেন ম্**টেন ল্ক্নোকৃত-বুদ্ধিনা। ন শক্তেগ ন্যামতো নেতৃ• जिल्लन दिवस्ययु ह ॥ मू हिना जिल्ल अक्तिन यथा भाजानूमातिगा। भुता-ভূ• শক্যতে দণ্ড: সুসহাযেন ধীন· তा।। खतार्थु न्यायवृद्धः न्या कृष्ण पः ७ म म व्या मूह्र यक्तिकः नित्ययु वाकारायुक्रमान्विजः॥ এव व्खन्र न्नां की वार्षः विखीर्यारञ यामा ब्लाक रेजनिवन्त्र রিবাস্ত্রলি ॥ অভস্ক বিপরীতস্য নৃপতে রজিতাআন:। স কিপ্যতে যশো লেয়কে ঘূ তবিন্দু রিবাস্ত্রসি॥ स्य (य रार्च निविद्वानाः अर्दिषा मनु भूर्वभः। वर्गानामाभूनागायः ताजा সৃষ্টো হভিরক্ষিতা ॥ 🗱 ॥ তেন যত্রং সভ্ত্যেন কর্ত্ত্রাণ রক্ষতা পু-কা:। ভত্তদ্বো २হ॰ পুৰক্ষ্যামি যথা-वरनूशृर्वभः॥ वाञ्चभान् श्रृश्री-नीज भुाउकः याग भार्थितः। देविति मः वृक्षान् विमुष खिरश्रखिषाध भाः সনে ॥ বৃদ্ধা • চ নিত্য • সেবেত বি-शुंगि (वन विषः भूठीन् । वृष्करभवी हि সভত রক্ষোভি রপিপ্জ্যতে ॥ (ठ:छा १विगष्ट्रिवनय॰ विनीछ। আপি নিত্যশা। বিনীতালা হি নূপতি ন বিনশ্যতি কৰ্ছিছে।। ব ক্ৰো হবিন্যান্ত । রাজান: সপরি-हनाः। वनञ्। अशि-द्राष्ठ्रानि विन या भूजिलासित । विला विनर्श

श्विनयामञ्घ टेन्व नार्थिवः। मु-मारमा यवन रेम्हव मृगुर्था निमि त्र-व ह ॥ भृथ् स विनया नुष्काः भाक्षवान् भनु (त्रव छ। अरवित्र म्ह धरेन वर्षाः त्।-व्यागुरेक्षव गाथिकः ॥ देविवित्राज्य खयी॰ विन्ताः म्खनीजिक्षः भाष्यजी॰ । আমিকিকীঞ্চাত্ম বিদ্যাণ বার্ত্তা র म्रा॰क लाकजः ॥ इन्त्रियागाः ब्राय् যোগণ সনা তিপ্তে দিবানিশা। জি-তেন্দিয়ে হি শক্ষেতি বলে স্থাপ-यिन् भूजाः ॥ मन काम ममूर्यानि उथाक्षे काष्डानि ह। युत्रनानि मुत्रष्ठानि भुयद्यन विवर्क्काय् ॥ का-माजियु भूमाला हि व्यामानियु मही। পতি:। বিযুজ্যতে হর্থ ধ্যাভ্যা• काथरबद्याद्यरेनव जु ॥ मृगयार**का क्तिवायशः भत्रीवारः जित्या भरः ।** ভৌর্য্যতিক বৃথাট্যা চ কানজো मणका गणः ॥ रिशमनाः नाइमः ष्माञ्च लेकाम्यार्थन्वन । वाप् अकः थ शाक्षा जाबा रिश गाना २% कः ॥ घरमा त्रामा उरमा स्मृतः यः अदर्व कवरया विषृ:। छः यद्भन क्रायाला ७ । ७ । जात्र जात्र जा गरी ।। शान मका खिय रैक्टव मृगरा ह यथा कम । এভৎ कष्टे उम विन्ता-চতুক কামজে গণে।। দণ্ডস্য পা-

ভনব্দিব বাক্সাক্ষ্যার্থদূষণে ৷ কো ধজে হলি গণে বিদ্যাৎ কষ্ট যে ভব্তিক সদা।। সপ্তক্ষ্যাস্য বর্গস্য जर्व विवान्यित्रः । शूर्वः शूर्वः खक् उतः विम्याद्यम् भाषावान् ॥ वाजनमा ह मृत्जाम वाजन करे মিচ্যুতে। ব্যসন্যধো হথো বুজতি স্ব-र्याञ्ज वामनी मृखः॥ भीनान् भाजः विषः भूतान् वाद्यावाकान् करवाप्त ভান্। সচিবান্সগু চাঙৌ বা পু-बद्यी ज नतीकिजान्।। जनि रू সুকর• কর্ম তদপ্যেকেন দুম্বর•। বি-শেষতো হসহাযেন কিন্তু রাজ্য ন (हारय•ारेजः नार्कः विचलविज्रः সামান্য সন্ধি বিগুহ । স্থান সমূ-म्यः ७७ वन भूगम्मान ह। তেষা বং সমভিপাৰ মুপক্ভা भृ थक् शृथक्। भमञानाकः कार्याष विमश्राकृष्ठ गाजानः ॥ সর্বোন্ত বিশিষ্টেন ব্ৰাহ্মণেন বিপশ্চিতা ৷ शक्रायथ भारतमः मञ्जः हाका बाज् গুণ্ড সংযুত ।। নিত্য তিমান সমা খন্ত: সর্বকার্য্যাণি নিঃক্ষিপেৎ। তে-ন স.দ্ধা বিনিশ্চিত্য ততঃ কর্ম স-बातरङ्था अन्तर्भाष भुकदी छ শ ीन शाखानदिश्वान। स्वार्थ जन हर्द्र नभा छ। न् जूभ ती कि छ। न्

।। निर्दार्खञाना यावस्ति द्विजि कर्ड ব্যতা নৃজি:। ভাৰতো হতান্তান্ मकान् भुक्रही उ विष्ठक्रगान् ॥ (उ-यामाथ नियुक्षी छ भूतान् मकान् क लाइजान्। मूठीनाकत्र कर्णाएउ जी क्तन्छ निर्वेणान ॥ मृज्येक नुष्रवीः ত সর্বশাস্ত্র বিশারদ । ইঞ্জিভাকা-त्र (ठक्षेड्ड॰ मृहि॰ एक्ड॰ व्यत्नामु ड॰ ॥ व्यनुत्रकः भूठि फ्रांकः शृजिभानं ए भ कालविद् । वनुषान् वीउकी बंग्पी দূতো রাজ্ঞ: পুশস্যতে ॥ অমাত্যে দণ্ড আয়ত্তো দণ্ডে বৈন্যিকী ক্রিয়া । নৃপতৌ কোষ রাষ্ট্রে দূতে সন্ধি विभर्य) रथे।। मृज এव शि मञ्जल छि-ংক্তের চ স•হতান্। দূত স্তৎ স্ক-**७** कर्या जिम्राष्ट (यन वा नवा ॥ ज-বিদ্যাদস্য কৃত্যেষু নিগ্ঢেক্ষিত চে-ষ্টিতঃ। আকার মিঞ্ছিত চেষ্টাণ ভ্তের্ চ চি भैষিত।। বৃদ্ধ। চ সর্ব॰ তত্ত্বেন পররাজ চিকীর্ষিত । তথা পুगङ्ग गाजिः ४ व्याजान नशीय-(यए॥ काञ्रवः चन्रभन्भः गार्यः-भाग मनादिल तमा मान्डमामसः चाजीवाः रम्भ यावरमः ॥ धनुनूर्गः महीमृग गणूर्गः वार्क्ष स्मव वा । নৃদুর্গ লিরিছুর্গ বা সমাশ্রিত্য ব-त्तर भूब· ॥ मार्द्दग जू भूषाहन

লিরিদূর্গণ সমাশ্রাহে ! এবাণ হি বহু গুণ্যেন গিরিদুর্গণ িশিষ্যতে।। ञीनप्रान्प्राम्यूङा ख्रियाः मृगगर्खा শ্যাপ্রবাঃ ৷ জীণ্যতরাণি কমশা প্রব - জন্মরামরাঃ।। যথা দুর্গান্ত্রিতানে-। তান্নোপ হি•সন্তি শত্রবঃ। তথারযো 'ন হি॰সভি নূপ॰ দ্র্গ **সমাশ্রিত**।।। একঃ শত যোধ্যতি পাকারছো খনুৰ্ব্য়:। শত দশ সহসাণি ত व्याज्ञर्गः विश्वीयत्त्र ॥ ७९ महामायुष मन्त्रातः धन शहरनात वाङ्गिः। वा करिः निन्नि चं देख र्यवरमामं-কেন চা ভাল্য মধ্যে সপর্য্য গু॰ কা-त्रराष्ट्रभाज्ञनः । ७४ अन्तर्ज्द मृजुः जन वृक्त अगिष्ठः ॥ 🗱 ॥ उपशास्त्राचारक्षार्यमः सर्वाः व ক্ষণাবিতা । দলে মহতি সমূতা **ভ্**দ্যাণ ৰূপ গুণান্বিতাণনাঞ্গুরোহি-उक अवीं उ वृश्वादित ह बिंबा। उ २ न। गृशानि क्यानि क्या दिनः তানিকানি চ।। যজেত রাজা কর্তু-ि विविध वाल मिक्ति। भर्मार्थः रिक्षव विरमुख्डा हम्।एकाभास्थना-नि ह।। मा॰वर महिक मोरिश्रफ हा-श्रीत्राञ् । त्राय्यविष् ॥ माहासामः भ-রে লোকে বর্ত্তেও পিতৃঁ হচ্যু । অধ্য कान् विविधान् अगीर उव उव

বিপশ্চিতঃ।তে ২স্য সর্বাণ্যবেক্ষের म्गा॰ कार्याणि अर्वे अ। ।। जावृद्धी-ना॰ अक्षम ना विशुगा॰ भृषका छ. (वट ।) नृशांगा सक्तरंग (श्व निश्व ব্ৰাক্ষা হভিধীয়তে।। ন ত স্তেনা নচামিত্রা হরডি নচ নশ্যতি। তথা-माञ्जा निशाज्या वाकारायकारा-নিখি:।। ন ক্ষনতে ন ব্যথতে ন বিন• শ্যতি কর্ষিচিৎ। বরিষ্ঠ মণ্নিছোত্তে-ख्डी वाक्राना मूर्थ इ**ड॰ ॥ नम म**-वाकारा मान विख्य वाकाव्यात । পুৰ্যবিতে শতসাহসু মনম্ভ বেদপাঁ; রগে ৷৷ পাত্রস্য হি বিশেবেণ শুল্ধ-ধান তথৈব চ। অল্প॰ বা বহু বা প্রেড্য দানস্যাবাপ্যতে ফল ।।।।। সমো-खनाधीम बाजा जारू छः भावयम् भू-जा: । न निवर्त्डंड मःगुमा८ काड॰ वर्षा भनुष्यतन् ॥ मःगुराभद्यनिवर्खि-षः भुजानारिकद भावनः। भूभुषाः वाञ्चणानाक बाड्याः (भूयकतः शर्तः ॥ আহবেষু নিথো হন্যোন্য জিঘা नत्त्रा भद्दीकि छः। यूर्यभानाः शत्र শক্ত্যা স্বর্গণ বাস্ত্যপরাল্যুথাং । ন-कृष्टि बाबुरेय ईन्याट युष्यामारना ब्राप तिश्न। न कर्निछ नाशि पिरेश नानि-জ্বিত তেজনৈ: !৷ নচ হন্যাৎ ছ-লাক্ত ন লীব ন কৃতাঞ্জি। ন

মুক্তকেশণ নাসীন ন তবাষ্ট্রীতি বা क्तिना। न मुखान विमन्नारा न नन्ना न नितायुष् । ना यूष्रभान शन्राष्ठः न পরেণ সমাগত।। নাযুধ ব্যসন शुाधः नार्वः नाजिभवीक्षउः। न ভীত ন পরাবৃত্ত সতা ধর্ম মন্ मात्रन्।। यस जीजः भातावृत्तः मः গ্রামে হন্যতে পরে:। ভর্ত্রদ্মৃত किक्षिड्ट मई गुिलम् १८७ ॥ य **ছাস্য সুক্ত• কিঞ্চিদ্যুত্তার্থ মুপা**-র্জিড় । ভর্ত্তা তৎ সর্ব মাদত্তে পরা বৃত্ত হতসঃতু॥#॥ রথাখ হন্তিন ছ ब १ थन शाना भागृन जियः। जर्ब দুব্যাণি **স্প**্ৰঞ্গ যে৷ যজ্জ্যতি তস্য তৎ।।রাক্তশ্চ দদু্যক্ষার মিত্যে व। दिक्की भू जि: । ब्राब्छ। ह मर्ब েযোধেভ্যো দাতব্য মপৃথ্য বিজ্ঞ ।। এবে। ২ন্পক্ত: প্রেক্তো যোধ ধর্ম: সনাতন:। অমাজের্মান চ্যবেত 🐃 जिया प्रम द्राप दिन्त्।। जनक्षिक निर्ञं न न व अस्क भूगज्ञ : 1 স্ত্রিক্ত বর্জায়েটের বৃত্তা পাত্রেষ্ निःकिरम् ॥ ७ इ वृ विषः विरा পুৰুষাৰ্থ পুযোজন । অস্য নিত্য यनुष्ठानः सम्बद्धः **स्**र्याप्रस्कित्वः ॥ व्यनक्ष निष्डुम् १ अने निकः तरक्रनत अक्ष्या। त्रिक उ॰ यक्षा वृत्ता वृत्तः

দানেন নিঃক্ষিপেৎ ॥#॥ নিত্য মুদ্য-তদণ্ড: স্যান্নিত্য বিবৃত পৌৰুষ: ৷ নিত্যু সংবৃত সংবার্য্যে নিভ্যু ছি-দানুসার্য্যরে:॥ নিত্য মৃদ্যত দণ্ডস্য কৃৎস্ন মুদ্বিজতে জগৎ। তমাৎ স ৰ্বাণি ভূতানি দণ্ডেনৈব প্ৰসাধণেৎ ॥ व्यगायरेवव वर्ल्ड उ न कथक्षन মায্যা। বুদ্ধে তারি পুর্ক্তাঞ্চ মা-যা॰ নিত্য স্বসংবৃত: ।। নাল্য ছিদু॰ भारता विकाधिका हिम् भेरता ज् । श्र्ट्र क्यां हैवाक्यानि त्राक्षिवत्र भाजानः ॥ वक विष्ठि समर्थान् जि --হ্বছ পরাক্ষেৎ। বৃক্বছাবলুম্পেত শশবচু বিনিয়তে ৷৷ এব বিজয়-মানস্য যে হস্য স্যু: পরিপন্থিন: । जानान(यद्य**णः अ**र्द्वान् 'जानामि छि-ৰুপজনৈ:।। যদি তে ত न তিপ্তেযু क्लारियः नुषरेम जिल्हिः। पर्छरेनन शुप्रदेश जाक्ष्मदेक वंग मानएए ।। मारारीना मुभायाना॰ ठउनामित्र পণ্ডিতাঃ। সামদণ্ডৌ পুশ•সন্তি নি-ত্যু রাষ্ট্রাভিবৃদ্ধযে ৷৷ যথোদ্ধরতি নিদ্দাতা কক্ষণ ধান্যঞ্চ রক্ষতি। ত প্রক্ষেম্পোরাষ্ট্ হন্যাচ পরিপ-ছिनः ॥ भारानुष्ठा खबाहे गः कः यंग्रज्जनत्वक्षा। त्मा श्रिताकुण्ड-তে ताङ्राञ्जीविदाह नदास्रदः ॥

ণিনা• যথা। তথা রাজ্ঞ। মপি পুাণা: क्षीयान ब्राष्ट्रेकर्यनाट् ॥ # ॥ ब्राष्ट्रेनऽ সংগ্ৰহে নিভ্য় বিধান মিদ মাচরেৎ _1 স্স•গৃহীত রাষ্ট্রো হি পার্থিব: সু-थ (नथ्ड ॥ इत्या ख्याना॰ शक्याना॰ मार्था छला मिर्विष्ठ । उथा गाम **ण** जानाक वर्गामुक्षिमा मःगुरु ॥ गुानम्याथिशकिः वर्गप्राप्तमगुग्न शः **তি**• তথাৎ বি•শ তীশ• শতেশঞ্চ স-হ্সুপতি মেবুচ।। গামে দোষ। ন্স मूट्भनान् गामिकः मन्दिः स्वः। भ त्मन्त्राभनत्भाय प्रतामा विः শঙীশিন ।। বি•শঙীশস্ত তৎসর্ব• न्याय नित्वराय । न रमम् गु। म শতেশন্ত সহসুপত্যে শ্বয়ণ।। যানি त्राक्षभुरियानि भुज्रहः गुर्मिवानिः **ভिঃ। अञ्चलातिक्रनातीन गुामिक** खान्। वाश्यार ॥ मभी अलकु छ ঞ্জীত বিংশী পঞ্চ জলানি চ। গ্রামণ গুনি শতাব্যক্ষঃ সহসাধিপতিঃ পু-इ।। (ত्याः गान्। नि कार्यानि भृष ক্ কার্যাণি চৈদ্ব হি। ব্লাক্তো ২ন্যঃ সচিবঃ স্থিম স্তানি পশ্যেদ্ত নির্তঃ ।। নগরে নগরে চৈক ফর্ন্যাৎ সর্বার্থ চিন্ত ः। উট্টিঃ ত্রান ধ্যোরক্পণ ন ক্ষত্রাণানিব পুহ• ৷৷ সতাননু পরি-

ক্রামেৎ সর্বানেব সদা শ্বয়ণ। তেষাণ वृक्तः भविनायः मम्रुगः क्षेत्र उहरेतः ।। রাজ্ঞো হি রক্ষাধিকৃতা: পরবা मायिनः मठाः। ভ্ত্যা ভবन्তि भा-(यन (उट्डा) द्राक्षिताः भुकाः ॥ य कार्यित्रका श्वीयः পাপচেতস:। তেবা॰ সর্বধ্যাদার্য वाजा वर्गा८ भुवामन ॥ वाजक्यं जू युकाना॰ खीना॰ (পुष्ठकनमा ह। भुउ। इ॰ कन्नरषष् जि॰ ञ्चान कर्यान्-क्षण ।। भाषा (मर्या १ वक्ष्ठेम) यपुरक्षेत्रा (वजनः । याभानिक खर्था हात्रा शाना (नागख मानिकः ।। # ।। কৰ বিক্ৰম মধ্বান• ভক্তঞ্চ স-भित्रवर्गः। (याग (क्रम् क मल्युंक्र) विभिन्न पार्थिय क्रान्।। यथा ফলেন যুজ্যেত রাজা কর্ত্তা চ কর্মা-गा । उथा (वक्त) न्रा त्राष्ट्रे कन्न · य् न ७७ कद्रान्।। यथान्नान्न मह-छ। पर वार्यातका वट्म यह्नाः। उथाझाला गृशेजरवत बाश्रामाञ्जा বিক: কর: ॥ পঞ্চাশভাগ আদে-যো রাজ্ঞা পশু হিরণ্যো: ।। ধান্যা-नाम छेत्ना जागः यक्षा हारण এव वा ॥ जामभी जाथ यहान क मा ज मध् मिर्नयाः । गत्कीयिध व्रमानाकः পুস্ত মূল ফলস্য চা৷ পত্রশাক ভূণা-

नाक रेवमणना ह हर्याना । मृश्याः নাঞ্চ ভাণ্ডানা॰ সর্বস্যাশ্মন্যস্ত ॥ बि्बबाला भागस्ती उ न ताकाल्या-वियाद क्रब्र । नव्यक्षाम् मामी रिट्हा विरया विषय वनन्।। भा यन्। রাজ্ঞন্ত বিষধে শ্রোত্রেখঃ সীদ্ভি ক্ষধা ভস্যাপি তৎ ক্ষুধা রাষ্ট্র মটি রেশৈব সীদতি॥ শুক্তবিক্তে বিদিত্বা-मा वृज्तिः धर्मााः भुकन्नायः । मःतः ক্ষেৎ সর্বত কৈন পিতা পুত্র মি-(वोक्रम• ॥ म•क्रंक्र)नात्मा क्राङ्या य• **जबाउ धर्म मनुइ॰। (उनायू दर्फाउ** त्रारका पुरिष॰ त्राङ्के स्मव ह ।। यट-किक्षिप्रशिवयंग्रा प्राप्तिये क्र ज्ञ ज्ञ-জ্ঞিত ৷ ব্যবহারেণ জীবন্ত রাজা बार्ष्ट्रे भृथश्चन ॥ काककान् भिन्निन रेष्ठव मृपुाः भ्हारज्ञाशकी विनः । ७-रिककः कात्रराष्ट्र कर्या मानि मानि म शिপि जिः ॥ (नाहिन्त्यानाज्ञाना मूनः श्राद्याकाि उठ्यमा। উहिन्सन् छ। অনো মূল মাজান তাণ্চ পীড (स्ट ॥ जीक् रेक्टव मृत्क महार का र्नः वीक्षा गरीशितः। जीक्ष टेक्टव মৃদু শৈহৰ রাজা ভৰতি সম্বতঃ॥ অ भाजा मुबा धर्मक शुक्क माउ कालाद्वाञ । ञाभायमामान उचिन् चिनः कार्याकारम्भाः॥ अवः नर्वः

विधारयम मिठि कर्डवर माजायः। यू-ক্ত শৈচবাপুমন্তশ্চ পরিরক্ষেদিমাঃ পূজाः ॥ विकामस्त्रा यम् ताष्ट्रा-खिनाय ममुजि: भुजा: । **मःभम**ुः তঃ সভ্ত্যস্য মৃতঃ স নতু জীবতি ।। क्वियम्। भारता थर्यः भुजानास्मव পালন । নিৰ্দিষ্টফলভোক্তা হি রাজা ধর্মেণ যুদ্ধতে ॥ উত্থায় প্র-किरम याम क् उल्लोठः जमाहिउः। হুতাগ্রিব্রান্ধণা ক্লার্চ্য পুরিশেৎ স শুভা॰ সভা॰॥ তক্র স্থিতঃ পুকাঃ नर्दाः भुडिनन्तः विमञ्जीयः । वि-সৃষ্য চ পুষা: সর্ব। মত্র যৎ সহ मञ्जिल्हिः।। ऋ।। शिविशृष्ठः जन्।कः হ্য প্রাসাদে বা রছোগতঃ। অরণ্যে নিঃশলাকে বা মজ্রযেদবি ভাবিতঃ!৷ যস্য মন্ত্র• ন জানন্তি সদাগন্য পৃথ-श्वनाः । जक्ष्याः भृषिवीः जुङ्क कायशेषाभि भार्थिवः ॥ कउ मृ-काञ्च विश्वताः डिर्यक्षानान् वरयागः তান্। ত্ৰী লেছ ব্যাধিত ব্যঙ্গান্ ম-खकारण रशमात्ररर ॥ जिन्तज्ञ व-মতা হাত্ৰ• তৈৰ্যন্তোনা স্তথৈৰ চ । জ্রিম শৈচৰ বিশেষেণ ভষ্মান্তরাদ্রতো **७**त्तर ॥ यश्चित्तः **१क**ताः वा विकारका विश्व तसः। विख्यक्रम काजाबान् भाषां देखतः वय वा ॥

পরস্পর বিৰুদ্ধানা তেষাঞ্চ সমূ भार्क्कन । कन्याना मन्त्रुहानक क् মারাণাঞ্চ রক্ষণ ॥ দূতসংপুষণ क्षित कार्य्याभाष তথিব চ। অস্তঃ-পুর পুচারঞ্চ পুণিধীনাঞ্চ চেপ্টিত।।। क्टम् ठाडेविश कर्म शक्वमं छ জুতঃ। অনুরাগাপরাগৌ চ পুচার॰ म ७ ल मं । । । म थ । म भ भ भू हा त्रक विक्रिगीयाण्ड (हश्चिष्ठः । উদাসीन পুচারঞ্চ শত্রো দৈচব পুযন্নত: ।৷ #৷৷ এতা: পুক্তযো মূল মণ্ডলস্য স মাসত: ৷ অস্টো চান্যা: সমাধ্যাতা দ্বাদলৈব তু তা: মৃতা: 11 অমাত্য রাষ্ট্র দুর্গার্থ দণ্ডাখ্যাঃ পঞ্চ চাপরাঃ । পুরেরক কথিতা হেতা: সংক্ষে পেণ দ্বিসপ্ততিঃ ।৷ # ৷৷ অনন্তর মরিণ বিদ্যাদরিসেবিন মেব চ। অরে রন-স্তরণ মিত্র মুদাসীন তথোঃ পরণ।। **जान् मर्वाविक्यनम्ब्राट् माना** मि ভি ৰূপক্ষিঃ। ব্যক্তৈ কৈব সমস্তৈ **क्ट (भोक्रवन नर्यन ह ।। अक्तिक्र** विगुरिक्षव यान भामन भाव ह। दि बी जातः मः भ्यक यए छनाः कि छ-व्यट मना ॥ व्यामनरिक्षय यानक मः ক্ষি বিগুছ মেব চ। কাৰ্য্য বীক্ষ্য পুরুজীত দৈখে সংশ্রুয় নেব চ।। निक्क हिवियः विम्यामुका विगुर

নেব চ। উভে ধানাসনে চৈব দ্বিবিধঃ जिं भुवः मृष्ठः ॥ जमान यान कर्मा ह বিপরীত ভথৈব চ। তদাদ্বায়তি সংযুক্ত: সন্ধি জ্রেয়ে দিলক্ষণ: ॥ ৰ্য কৃতক্ষ কাৰ্য্যাৰ্থ মকালে কাল এব বা। মিত্রস্য চৈবাপকৃতে দ্বিবি-থো বিগুহ: মৃত:।। একাকিন শ্চা-**उ**ष्टिक कार्या भुगान गृह्या। म. হতস্য চ মিত্রেণ দ্বিবিধ যান মু-हुएछ ॥ क्वीनमा रेहर क्रमा रेहर-वाद भूर्बक्छन वा । भिजमा हानू-রোপেন দ্বিবিশ্ব মৃত মাসন ।। ব नम् सामिन रेक्टव ज्ञिक्टिः कार्यप्रार्थ সিদ্ধয়ে। দ্বিবিধ কীর্ত্ত্যতে দ্বৈধ বা-एखना खनर्वातिकः॥ वर्ष मण्या-দ্ৰাৰ্থঞ্চ পীড্যমানস্য শত্ৰুভি: 1 সাধ্যু ব্যপদেশার্থ দ্বিবিধঃ সংশ্ৰঃ शृजः ॥ 🗱 ॥ यहादगहितायजा मा-ষিক্য পুর মাজ্মন:। তদাত্ত্বে চাল্লি-काः शीषाः उता मिकः मनाभूष्य ।। उताद्व उटकाला ।। यहा भुकृष्ठी মন্যেত সর্বাস্ত পুক্তী ভূ শং। य-ত্যুদ্ধিত তথাত্মান তদা দ্বী ত বিগুহ্ণ ৷৷ যদ৷ মন্যেত ভাবেন হাইণ পৃষ্ট বল স্বক। পরস্য বিপরী-**७**क जरा यागाम्त्रिं भुजि ॥ यमा जु महाद भित्रकीया वार्यन वर्णः

म छ। उत्तामीक भूदाइन भन्दिकः। সাভ্যমরীন্ । মন্তেরি খনারং का अर्वेषा वनविद्य । उमा हिदा বল ক্রা সাধ্যেৎ কার্য্য নাজ্মনঃ ।। यह। शत्रवणागायु गम्भीयङ्खा ভবেৎ। তদা তৃ সংশ্দেৎ क्षिशुः श्राचिं कः विनान मृश्रा निशुक् श्रुः কৃতীনাঞ্চ স্বর্যাদ্যো ইরিবলস্য চ । উপসেবেত ত॰ निত্য मर्दयोङ्ग र्छकः यथा॥ यमि उदाशि नः शामाः ত্রেষণ সংখ্য কারিত। সুযুদ্ধ स्व जवानि निविশक्षः मगाहादः ए ॥ नरद्दाभारेग खथा वर्षामी जिख्यः शृषिवीशिज्धः। गथामहाज्ञिषिका व স্তু নিভোদাসীন শত্রবঃ॥ আযতি• नर्वकार्यतानाः छमाज्ञकः विठातस्य । অভীভানাঞ্ সহেবাং গুণদোষে **ठ उन्नुष्ठः ॥ जामक्रा॰ रामसङ्** खराद्व विश्व निश्वः। घठीख कार्यक्षभाषकः भाविक नीविक्षर ।। गरेथनः नाजिमनाष्ठ्र गिर्वामा-সীন শত্রবঃ। তথা সর্বং সংবিদ भारत्य जागाजितका नयः ॥ यना ভু যান মাডিঙেদরিরাষ্ট্রণ পুতি পু **ज्ः। जमात्मन दिशातम यायामद्भि-**शूद्र भरेनः॥ यार्गभीत्यं भूट ज्यात्रि যাবাদ্যাত্রা **নহীপতি:। ফালুন**

বাথ চৈত্ৰ• বা মানৌ পুতি যথা বল• া অন্যেদ্বপি তু কালেযু যদা পশ্যে-खुन अय । उना वायाविशृहेक्त ব্যসনে চোল্মিতে বিপো: ॥ কৃত্য বিধান নূলে ত যাত্রিকঞ্চ হথা বিধি । উপগৃহ্যাম্পদক্ষিব চারান্ সম্য-গ্রিখাষ চ।। সংশোধ্য ত্রিবিখ নার্গণ विश्विष्ठ वलः चकः। जाम्लादायिक কল্পেন যাযাদরিপুরণ শনৈ: ॥ শত্রু সেবিনি নিত্তে চ গ্ঢে যুর্ক্তরে। ভ বেৎাগত পুত্যাগতে চৈব স হি কষ্ট তরে। রিপু:।। দণ্ডব্যুহেন তন্মার্গণ যায়াৰ শক্টেন বা। বরাহ মকরা-ভ্যা॰ বা সূত্যা বা গক্ডেন বা ॥ य-ভশ্চ ভয় মাশক্ষেত্ততো বিস্তার্থে-ঘল : । পদ্মেন চৈব ব্যুহেন নিবিশে ভ जना स्य ।। (ननाপতি वलाय)(क्री সর্বদিক্ষু নিবেশ্যেৎ। যতশ্চ ভষ-यानास्ट भाही जा कन्नायिना ৷৷ ভল্যা • শচ স্থাপেৰে দাপ্তান্কৃত স • • জ্ঞান্ সমন্ততঃ। স্থানে যুদ্ধে চ **জ**ে শ্লানভীক্নবিকারিণঃ ৷:#!৷ সাহ-जान् (याश्यमङ्गान् काम: विखातयः দ্বহূন। সূত্যা ৰাজুণ চৈ বৈতান ব্য-(इन तृष्ण् (गृवत्यर ॥ न्युन्त् गरेषः मत्न युर्व्याप्तन्ति स्मे विरेण उथा। दृक्क खन्या एउँ हारिय इति हर्या-

् ः इला। वक्ष्मा भागा क्षात्मः शक्षालान् मृत्रामन्जान् । 🖟 व लघुः रेक्ठव नद्रानगानीक्षय-्राय् ॥ शुरुष्यप्रम्म गृश्य जाः म् ज्याक् भर्तीकारयः। (हन्द्री रेक्टव ्रिश्चिगामत्रीन् (याथयङा निश्चा। িৰ ধ্যাৱি নাসীত রাষ্ট্রণচাস্যোপ-ি দুৰ্থ ৷ দুষ্যেচ্বাস্য শতত যব-ःः प्रत्विक्षने ॥ जिन्तु । रिष्ट्रव ७७।-💯 🗵 পাুকার পরিথা স্তথা। সম্ব कृत्वस्यहिन द्वाञी विवामस्यख्या 🔃 ীণজপ্যানুপজপেদ্বুধ্যেতৈব চ 🦠 📑 ত॰। যুক্তে চ দৈবে যুধ্ব্যেত জ-্েু সুরপেভভীঃ ৷৷ সাগ্রা দানেন ্রা । সমতৈ রথবা পৃথক্। বিজে-জ শুগতেতারীয় মুধ্যেন কদাচন ॥ 🥯 ং ৬)৷ বিজ্ঞাে যুক্সাদৃশ্যতে যু-ত । পরাজবদ্দ সংগ্রামে 🥕 अञ्चः दिवब्ह्ह्यर ॥ वयागामः া া ানা প্রোক্তানামসম্ভবে। 🐃 প্ৰাত সংযত্তে। বিজয়েত ব্লি-श्य व्याक्षा जिल्ला जम्मू करराप्य वान् ुं का ं कार शामिकान्। भूमन्। प्राक्ति व्या**क्ति ह** ^{!! अविशा}ख विभित्विया॰ मगारमन িজীপিত। স্থাপথেত্তৰ ভদ্মা क्ष ीह नगयकियाः। भूगानानि ह

बर्दी उ. उया धर्मान् याथा निजान् । तरेज्ञण भूबायापन भूषान भूकरेयः **সহ।। यातान मश्चित्रकतः नानशः** প্রিযকারক । অভীপ্লেভানা মর্থা-না কালে যুক্ত পুশস্যতে॥সর্ ক (र्याप्रमायख॰ विधात रेपव मानूष । তर्या रिप्रंव महिन्नाञ्च मानुरम् विम्राज ক্রিযা।। সহ বাপি বুরেদ্যক্ত: সদ্ধি•• কৃত্বা পুষত্নতঃ। নিত্রণ হিরণ্য ভূমি• বা সম্পশ্য জ্বিবিধ ফল ।। পার্ফি-গুহিঞ্চ সংপ্রেক্ষ্য তথাকনকে ম-গুলে। মিত্রাদ্থাপ্যমিত্রাদ্বা যাত্রা क्न भवाञ्च यार्।। आकन्तः शार्किः গ্রাহ্স্য নিযামকো রাজা ॥ হিরণ্ড ভূমি সম্পুনন্ত্যা পার্থিবো ন তথৈপ তে। যথা নিত্ৰ প্রব লক্ষা কৃশ ম-भागि किन ॥ 🗱 ॥ सम्बद्धि क्-তক্তঞ্চ তুষ্ঠ পুকৃতি মেব চ। অনুর ক্তি ছিরারম্ভ লঘু মিত্র পুশস্যতে ॥ शुक्तः ब्रवीनः भ्रथः मकः माठाः র মেব চ। কৃতক্তঃ ধৃতিমন্তব্ধ কষ্ট মাহ রবি॰ বুধা: ।। আর্য্যতা পুরুষ क्छान भोर्ग्य कक्ग (विकास्त्रो**न द्यक**्रक जठा गुराजीन ख्लार्यः॥ (ञ्रोननका वरु भूरद । (क्रम्पाः শস্পুদা॰ নিত্য॰ পশুবৃদ্ধিকরী ম-পি ৷ পরিত্যভেদ্পো ভূমি মাত্মার্থ

भविठात्रयन्।। शाभाष्यं भनः त्राकः मात्रान्तम्बदेन त्रि । व्याव्यानः न **७७॰ द्राक्रफारेंद्र द्रिल थरेन द्रिल ॥** সহ সর্বাঃ সমূৎপদ্মাঃ পুসমীক্ষ্যা-পদে। ভূশ। সংযুক্তাণচ বিযুক্তাণ भ अरदीभाषान् मृरबद्धः ॥ উপে-ভার মুপেষঞ্চ সর্বোপাষা শচ কৃৎ রুশঃ। এতভুষ সমাশ্রিত্য পুরতে-তার্থ সিদ্ধযে ॥ উপেতার• আত্মান• । উপেय॰ পুশপ্তব্য॰ ॥ #॥ এव॰ সর্ব মিদ বাজা সহ সমস্ত্র মক্তিভি:। ব্যাগাম্যাপ্লুত্য মধ্যাহ্নে ভোক্ত্মস্তঃ भूतः विष्यदेश ज्वायाज्य कान-জ্ঞৈ রহার্য্যে: পরিচারকৈ:। সুপরী-किञ्माम्। यम्। त्रात्रीख विवाशीशः ॥ विष्यु तगरेर काना नर्बर्वारि যোজবেৎ। বিষম্বানি চ রজানি নিয্ তো ধার্যেৎ সদা ॥ পরীক্ষ্ডা: खिय रेम्हन वृद्धतामक धूमरेनः। (व শাভরণ সংশুদ্ধাঃ স্প্শেয়ঃ সুসমা-হিতাঃ॥ এবং পুষত্ন সন্ধীত ধান भेग्रानवाम्य । ज्ञात भुगाध्य हिव সर्वानकात्राक्ष्यू हा। जुक्तवान् विश-রেটেব জ্রীভি রন্তঃপুরে সহ। বিহ্ন-ত্য ত্ যথা কাল পুন: কার্য্যাণি চি-खरार ।। जनसृजण मःशामाप्राप्

मेजान्याञ्चर्यानि ह ॥ मन्त्रार्र्शः-পাস্য শ্ণুযাদন্তর্বেশ্মনি শন্তভ্ে। त्ररुग्राथ्यायिनारेक्व शुनिधीनाक (ठिष्ठिष्ठः ॥ गङ्ग ककास्त्रः जुनारः সনন্জাপ্যত জন। পুৰিশে-ডোলনার্থক জীবৃতো ২ন্ত:পুরু পুন: ॥ তত্ৰ ভূক্তা পুন: কিঞ্চিত্ৰ্য্য विश्वः भुक्षिजः। मःविष्णकु वथा काल मृखिरिष्ट गज्जनः॥ अउदि-ধান মাভিছেদরোগ: পৃথিবীপভিঃ । অবহ: সর্বমেতত্ত্ব ভৃত্যেষু বিলি-याक्ररग्ट ॥ इंजि भानरव १ अथ्रा-यः ॥ # ॥ काली भूत्रात्मा ङ त्राज्य-र्यः ৮৫। ৮७ व्यव्यागरमा पृष्टिवाः ॥ महाजातालाल द्राजवर्मः भारि-भर्वि मुद्देवाः ॥ भग्नभूताः भाज ज्ञाह्मभूष्टः सर्गथए७ ১०৮ व्यक्तात्व मुक्टेवाः ॥

त्राज्ञथानकः क्री त्राजभूतः। हेडि

রাজধানী স্ত্রী রাজধানিকা। তৎ পর্য্যায়:।কোউ: ২ রাজধানক ৩। ইতি শব্রত্বাবলী।। ক্ষরাবার: ৪। ইতি হেসচন্দু:।।

त्राज्ञरान्धः क्षी भागमाकः । ইঙি त्राज्ञिर्दिण्टेः ॥

भीय र भून क्जिन । वारुनानि ह मर्बाणि । ताक्ष्युत्रकः 'भू वृश्कुल्रः। उद

পর্যাকঃ। রাজধুর্ত্তঃ ২ মাধ্যমঠঃ ১ ১ জিলেপুস্লকঃ ৪ ভাতঃ ৫ রাজবর্ণঃ ৬ টি তি রাজনির্ঘটঃ।। অস্য গুণাঃ ধুনুক্রশক্ষে দুস্টব্যাঃ।।

प्रकलियों भू॰ महीनः। ইতি इक्किर्विः॥

इ:क्रिकेडि: जी बाज्जाःनयः। यथा া ন না শাস্তোজ্ত বক্ষ্যে রাজ-की कि अगृहयः। সর্বীজ गिषः भाः 🚁 ানক্য সার সংগুহং॥ ইতি 🚈 চ্যপণ্ডিত কৃত পুথম: শ্লোক: ে 🖯 🗄 ই 🖂 থা। গদিত • ব**লি শুক্রাভ**্যা• 😘 ভাগবতো হসর:। পুাহ ধ গাঁছ সংযুক্তণ পুস্থাদো বাক্য মুক্ত ाः। यहाय**उऽाः क्रभः त्राक्रन्** य**क्रि** জ্ঞ জুবনস্যস্থ। অবিরোধেন প্র্যাস্থ व्यक्षाभाद्धनिष् यद् ॥ जदम ত্ত্বালনন কামবর্গ ফলঞ্চ য় । প ज्ञात्वर ह याह्यः भूध उद् कर्या चा-<u> ज्ञा । यथा ज्ञाचाः भुवाम् । यथाः</u> की खिं खंद खद । यथा ना भगरणा যোগ তথা স্কু মহামতে।। এত मधः भिगः मीधाः काङ्कास भूकाया ^{ः ः।} যেনৈতি হি গৃহে**ন্দাক**• নি-ৰব্ভি স্নির্তা:।। বৃদ্ধো জ্ঞাতি खी विश्वः की खिंक यमना नइ। उमान्यथा उ निवमे छ भू म त्राक्र

श्चिजाञ्च चानांखगामाः । उथा যভদ্বামল সত্ত্ব চেষ্ট্রবা যথা যশস্বী ভবিতাসি লোকে ॥ ভ্ল্যা সদা বান্ধণ ভূবিতাযা ক্ষেত্ৰাবিতাযা দৃঢ বাপি ভাষা । শৃশুষণাসক্ত স मुख्तायाः अकिः भुयान्ती र नताधिः পেন্দা: ৷৷ ত্যাদি, জাগুণ: শু.তি শাস্ত্রযুক্তা নরাধিগা তে পুতিয়া ৰুখন্তে।। দিবৈ; ৰ্যজন্ত কতুভি দ্বিৰে-न्द्रु। यञ्जाञ्च धूरमान नृপन् । नासिः ॥ তপো ২ধ্যয়ন সম্পন্না যালনাধ্যা-পনে রভা:। সম্ভ বিপু। বলে প্রুগ ন্তু:ভা eনুক্তা মবাপ্য হি ॥ স্বাধ্যায যক্ত নিরতা দাতার: শস্ত্রজীবিন: । ক্ষত্রিয়াঃ সম্ভ দৈত্যেন্দু পুরাপালন धर्मिनः ॥ यक्काष्ययनमञ्जाना माठा-র: ক্ষিকারিণ:। পাশুপাল্য পু-व्दर्ख रिका। विभिन्छी विनः ॥ तु। ऋग क्रविय विभाः मना भृभुष्य রতাঃ। শূদাঃ সন্তুসুরশেষ তবাজ্ঞা काजिनः जना ॥ यना वर्गाः स्वर्म्य हा ভবন্তি দিভিজেশ্বর। ধর্মানৃদ্ধি স্ত-मा महादि वर्णवृत्को नृत्यामयः॥ छ-ब्याहर्नाः श्रथ्यञ्चा खुगा कार्यताः नदा-বলে। তঘুদ্ধৌ ভৰতো বৃদ্ধি স্তদ্ধা-নৌ হানি ৰুচ্যতে ॥ ইত্থা বচঃ শুৰেত महामूद्धान्त्राविः महात्रा स वज्य

তৃকী । ততে। যদা জ্ঞান বাদে । (व) इत्थः विनः शाह वाहा महार्य॥ इंडि वांभरन १७ व्यवतायः ॥ 🗱 ॥ অপিচ। এবং দত্বা ততো রাজ্য म्कि हाम्।य धर्मावि । उवाह मधूत বাক্য পুঞ পুএবভা বর: ॥ রা-कारस्मानि उ न्य कर्वराः मृग् उ শ্বম।। যদীছেৎ পরমণ ধর্মণ পিতৃণাণ **जात्रग॰ उथा। मा** जरवता १ र्डि नंक र्खवा रुखवा शत्रमात्रिकाः ॥ वाणः **ধাতাক্ত হন্ত**ব্যা হন্তব্যা জীবিঘাত-কা:। মালো ভ পর দুব্যেষু অন্যাযো পাৰ্জিতেবু চ।। ন চিরণ ভিপ্ততে স্থাপি अर्ब भान्याः कराहन। ब्रक्ष्णीयण्डर् (एम: इल न्यायर्भार्क्किंड: ॥ नि-ভ্যোদ্মক্তেন স্থাতব্য মনাত্য বচন व्यक् । अभारका यहारा द्यार भू कार्य) विमर्भन ॥ व्यवणा भव कर्ड ব্য শরীর পরিরক্ষণ ৷ পূজা যেন **প্**भारिङ (यन ज्याङ व्यक्तिगः॥ এব তেপু এক ৰ্ভব্য মম প্ৰিয় হিতৈ বিণা। সপ্তব্যসন বজ্জ্যেত দোষো রাজ্ঞ তন্মহৎ ॥ যেষু রাজা বিন· শ্যেত সম্পন্নোপি নহাদু/তি:। ব क्रिंतिक मुद्राभान गृगवा दक्करिय अमा। वाकाः क्षाः न वक्तवाः वृथा याव् कराहन। त्राझ्छ श् न वक्कर्रः

भू अस्तर विराह्ण कर । वृद्ध विष-**जिभाक्द्रा॰ अमिष्टिक स**्वक्षायु॰ व्यर्यप्रतिष्ठ्य न कर्ववाः कराहन ॥ व्यमान्त्रः नानियः त्याव्यक्तिह्ना **কর্মণি। নাহ॰ নিবারণী**যক্তে গল্নাব্ পথেস্থি ড: 🛭 এতরে ক্রিয় 🌣 🌱 যু **ৰদীছসি নম প্ৰিয়• ৷ভত:** জিল্ড উল্লি শুকু রাজপুণ্ডে৷ যশস্থিনি 🗎 📆 🗟 पुराही मःगृश काक्ना कुर्वाहर চ ত ৷ ইত্যাদি শ্রীবরাহ দুরিলে ভ गवहात्य (मो न्त्रत्य जीवना सारक्षः) व्यारिकः वद्रभुरान मृगङ्काकाना र्थानः नामाथायः ॥ 🗢 ॥ अत्यहः মনুক্ৰাচ।রাজ্ঞে। १ভিবিভ নাজ শ্র কিন্তু কৃত্যতমণ ভবেৎ। এতৎ সর্ক্ नगाठक नगारवृद्धि यङ। उक्ता নৎস্যউবাচ। অভিবেক ু শিল্পা ताञ्जाताकीवरनाहन। महायावन्न কার্য্য তত্ত্র রাজ্য পুতি 🖼 🗓 যদ न्रान्नडद्र॰ कर्ष उर्राप्ताः मृखद्र॰ । প্ৰধেণাসহাযেন কিছু রাজ্ঞ **गर्भाः ।। ७ गार् जर**्यान् दत्र-(य प्रवीनाम् भ जि: स्र । भूतान् क्रवीनान् जाजीयान् ववयुक्तान् 📆-यादि जान् ॥ क्ष मञ्चलात्य जान् সন্মতান্কন্যা যুতান্। গ্ৰেশ ফ্ৰা न् न(राष्ट्रमाहान् धर्मकः 🔭 प्रिष

बरान । िकामानम काराक्रांस् धाक्ति कान् याम। १थिंनः। এवं বিধান সহাযাত্ত শুভকর্মসু থোজ-तर । **७१श्रीनानिश मरा** विद्धाय कृष्टि स्वयः। कर्मास्य नियुक्षीज হত্ত াগ্যেষু ভারত ॥ স্বানঃ क्षीवान निमा बर (वंदिक्शाबरः । ক্তিভিকিত্বশিক্ষাস্থশলঃ শুক্ ভাষ্ণ 🍴 নিমিত্তে স্বশলক্তানে বে-জ 🚴 ্চিকিৎ সিতে। কৃতজ্ঞ: ক-🍕 📧 । खथा (द्वषगर्हा अजुः ॥ ভূগেজা বিধানজ্ঞ: ফল্লুসার বিশে-ধ ি রাজ্ঞ। সেনাপতি: কার্য্যো ्राप्ताः कवित्या यथा ॥ शुः मृः कृष क्षा मक्ष श्रियवाही नहाक्ष छ: 🖅 াহক সর্বেবা॰ প্রতীহারে। विश्रीक है।। यथा कवारी मृजः न्या-দ্বেশ**াবাবিশারদ:। শক্ত: ক্লেশ**-সংহা াগ্মী **দেশকালবিভাষিত: ॥** বিজ্ঞা দেশ কালশ্চ দৃতঃ স্যাৎ ज नहे किंठ:। वकाशि यम्। यः काः লে স[্]তো ভূপতে ভবে**ৎ।। প্রা**•শ-থে। ব্যায**া: শূর। দূঢ ভক্তা নিরান্ধ**-णाः। রাজ্ঞা তুরক্ষিণ: কায্যা: সনা क्रिमानहा हिजाः॥ यनाहार्य्या नृमः সশ্চ দৃঢ়ভক্তিশ্চ পার্থিবে ॥ ভাষ্লা बाही उद्गाउँ नाही वीभाव उपख्ला । बाज्यना विविञ्जलका (मण्डाः বাবিশারদঃ ৷৷ সন্ধিবিশৃহিকঃ কা-य्यंत्रा जाञ्डा नयविणाजमः॥ व्यायवाय-জ্ঞোলোকজ্ঞোদেশোৎপত্তি বিশা-রদ: ৷৷ কৃ ভাকৃ ভজে৷ ভৃ ভগানা জেঃ-यः महारम्य दक्षिता। मुक्त खक्षः श्राभ्यं पृष्ट ङिङ: ब्याहिज: ॥ भूतः क्रिणमर रेक्टर थड़शाड़ी भुकी खिंड: । শ্রক্ত বলযুক্তক গজাপ রথকো-विनः ॥ श्रन्थाती ভविषाद्धः मर्द ক্লেপ সহঃ শু চিঃ। নিমিত্তশঙ্কন-ख्डान **र्यानकाविनादरः ॥ र्या** যুৰ্বেদ ভৰুজে। ভূবিভাগ বিশেব-বিৎ। ৰামিভক্তো মহোৎসাহ: স (र्बवाकः शि्यमनः ॥ वनावनाउछ। त्र**िक: ऋत्रिक: श्रियम्नरः । भ्**त्र**क** क्ठविष्ठ भात्रथिः भत्रिकीर्खिजः॥ व्यनाश्यंतः भूठि फंक भिठिक नि-তবিদায়तः । স্দশাস্তবিশেষজ্ঞঃ ज्राध्यकः भुषमाउ ॥ ज्रामाज-विधानछाः भन्नात्त्रमाः **याना**न् তাঃ। সর্বে মহানসে ধার্য্যা লুগুকে-শনথা জনাঃ॥ সনঃ শতৌ চ নিত্ৰে চ थर्माञ्चिविभाद्रमः। विश्वम्थाः य-नीन क वर्णा विक्राला ভदि ।। का-र्या उथाविषा उब विक्रयूयाः मजा-मरः। मर्दाष्माक्ष्वाञ्चिः मर्द

শাস্ত্রবিশারদঃ 🖟 লেখক: কৃথিতো ताञ्जः मर्वाविकालवु रेव। मीर्खा পেতান্ সুসম্পূর্ণান্ সমশ্বেণিগতান্ नमान्।। यक्षतान् रेव निरथट यस (नथकः म वदः मृ जः । डेशायवाकः क्रमनः मर्जभाञ्जिक्षभात्रमः॥ तञ्जर्थ বক্ত। চাল্লেন লেথকঃ স্যাদভূগ্ভন। ৰাক্যাভিপায়তভ্বজো দেশকাল বিভাগবিৎ॥ অনাহার্য্যে ন্পেভ क्ता (नथकः म्याष्ट्रग्बम । भूकः ৰাম্বতত্ত্তা: পা•শ্ব দ্যাপ্ৰেলাল্ পाः।। शर्यादिकद्रांग कार्यता जनास्ता न इता नदाः ॥ अविश्वश खणा कार्याः রাজ্ঞা দৌবারিকা জনা:॥ লোহ ব **जा**जिनानीना॰ ब्रङ्गानाकः विश्वानिवरः। বিজ্ঞাতা ফল্লুসারাণা মনাছার্য্য: শু िः जना।। निभूग काभूमज्क धना थाकः भुकीर्बिजः। व्यानदात्वयु म र्वियू थनाथाकः मगा नद्राः॥वायका त्रियू र उथा कर्चवा। भृषिवीकिछ।। পরস্পার গতো যঃ স্যাদ্ধাকে ভু िकिट मिर्छ॥ व्यनाश्यारं म रेवन् रः जाक्वर्याञ्चाह अलाज्ञ ३: । भागवाः র্য্য: স বিজ্ঞোয়ে বচন ভস্য ভূভুক্তঃ ।। त्राजन् ताञ्जा मना कार्याः यथा कार्याः भृथग्रहतः। इति निका विवान छा वनका विवास सः ॥

क्षण का उथा बाख्या गहामुक्कः পুশস্যাক্তা এতৈরেব গুণে যুক্তি 🐗 সনশ্চ বিশেষতঃ। গজারে। হোল (तम्मा नर्बक्यांनि सन्तर्छ।। इस শিক্ষাবিধানজ স্তদ্ধিক সিত প त्रगः। जाषाध्यक्ता मही छउः सामः নশ্চ পূশাস্তে॥ জনাহায্ট্ৰণ্ড শ্রুপড় उथा शाक्तः करनामुजः। स्थापन क् मृत्जा द्वाकः देवाकः गर् कर्णम् ॥ वास्त्रविष्ठाविशामाख्या सम् रेखा दि-उम्बः। नीर्यन्ती ह म्यक अलः তি: পরিকীর্ন্তিত:॥ यल्डव्ट नाः ণিশক্তে অমুক্তে যুক্তবারি 🗇 ৷ আহ্রো চাर्स्या निक्छितः **ज्ञा**न्यक विक्रि ষ্যতে।। বৃদ্ধঃ সংলান্তঃ স্কঃ পি: ত্পৈতামহ: শুতি:। রাজেগেড পু-রাধ্যকে। বিনীতক ভণেহ্যতে 🖟 **७७॰ मश्राधिकातियु भूक्याः मश्र ७** श्रात । शक्षभक्। धिकत्रवाः भक्षकः সপ্ত তে পরে ॥ অন্তঃপুর্ভরাঃ কার্য্য র।ত্তা সর্বেষ্ কর্মসু। ছাপেনাজাতি তভুপ্তঃ সতত পুতিজাগৃতা॥ রা-काः नामायुषागात एकः कर्यान्-চোল্যতঃ। কর্মাণ্যপরিমেলান রা-क्काः ভ्रम्पलाच्य ॥ ७५नावन मधानि वृक्षं कर्यानि পार्थिवः। छै-खरायमस्याम् भूकत्वयु निर्याकः

THE HOLD BY A THE WATER THE THE ্ৰপাৰ্ভ নাটোলা ও শৌভৰ काल मुक्त स्मीती प्राप्त समा है ভা_ন তালৰি ছিবাভয়া পুন্ধানা प्रातिक । भूजनाश्चर निजास ्यू , द्वा जित्रभूति । १०% के माजि ल्य कान द्राजा नज भूयक् भूयक् ৷ মজিশামপি নো স্ব্যামজি মজ শ্বা া কুচিৎ কস্যচিদ্বিশ্বাসো 😘 🔑 🦈 बना बृशार। নিশ্চযশ্চ সদা া । একন শূরিণা ॥ ভবে-ৰ ত্রতাথাঃ পরবৃদ্ধ্যনুজীব-🥶 🦈 ारेगान मही छर्छ छ्यः कार्या विनिम्हयः ॥ वाजनान् शय्रं-পাসীত ত্রণী নান সুনিশ্চিতা । নাত ছাজ্রবতো মৃচাণ তে হিলোকস্য কণ্টকা:।। বৃদ্ধাংশ্চ নিভ্যুণ সেবেভ বিপুান বেদবিদঃ শুচীন্। তেভ্যো হি শিক্ষেদ্বিয় বিনীতাত্মা হি निडामः॥ जनगुा वनगा अग्राट পৃথিবী নাত্র সংশযঃ। বহুবো হবি नयाकुडी ब्राजामः म भविष्ट्रमाः ॥ ৰনস্থাকৈৰ বাজ্যানি বিনয়াৎপুতি (अस्ति । विविद्यान्ति अधिकार म्खनी जिक्ष माय छी: ॥ जानि कि কীঞ্চাত্মবিদ্যা বার্দ্ধারম্ভা কে। कुछ । हेन्द्रिवाना॰ स्वयं (यात्र॰

गमासिक विनानिका । हिट्डिन्युः য়ে হি শক্ষেতি বশে স্থাপিযতু• পুলা: । শেৱত যাজ জাতুভি ৰ্ছভি-कालम्किराः ॥ घणार्थ रेक्षव वि-ल्याच्या सम्प्राच्चावान् **वनानि ह**ा जान्द्रभद्रिक मारिखक हा**ड़ानारा**-রবেঘলিশা। স্যালান্ডেবঃ **পরে লো**-কে বৰ্ত্তে পিত্ৰস্ত্। আবৃত্তানা• গুৰুত্বলাৎ ছিলানা পুলকো ভ-(त८ ॥ नृशानामक्तरा। एए व विधि বুৰ্ণ ক্ষ্যো বিধীণতে। ততঃ স্তেনা নচা-মিত্র। হরন্তি নচ নশ্যতি।। তমাদ্রা-द्ध। विधा उद्या वाका विष्का वि वि:। সমোভনাবনৈ রাজা স্থাত্য भानाय**् भू**जाः॥ न निरार्त्तं ५ मः গুলাৎ ক্ষত বুত মনুষ্যরন্। সংগ্রা-भियुनिवर्जियः भुकानाः भविभाज-ন ।। শুশুষ। ব্ৰহ্মণানাঞ্চরাজা নি:-শ্রেমণ পর । কৃপণানাঞ্চ বৃদ্ধানা মাত্রাণাঞ্চ রোগিণা।। যোগফ্ষে-मक वृज्जिक जरेषात भित्रिक्सारग्ट.। বর্ণাশুন ব্যবস্থান তথা কার্য্যুণ বিশেষত: ॥ স্বধ্যা পুচুঃতান রাজা चर्राम भानस्यख्या । व्यानुस्य ह यथा कार्या टेवा ভाङन ভाङन ॥ খব মেবানযেদু। ভা সংক্ত্যা-भावमानरष्ट। उभरम मर्वकार्याणि

बाह्य गांचान (नवह में वित्र प्रवर) भुगरङ्गा १५५७ हिन्न अन्यत् । Tes Charles to Grant মানবৈ:।। বক্রাণ জ্ঞাত্বা ন সেবেত **शु** जिवाशार्थ मागजा । नामा हि पुः भारत। विनाधः विनाहि पुः भन्न-मा ज् ॥ ग्र्ट्र क्र्यं हेवाक्वानि द्राक्ष-দ্বির মাত্মন:। ন বিখসেদবিখন্তে विश्वत्य नाडिविश्वरम् ॥ विश्वामा-च्छय मूर्भमः म्लान्धि निक्षिति । বিখাসযেচাপ্যপর• তত্ত্বভূতেনছে-ব । পরাক্ষেত। বৃক্বছাবলুস্পত भाभवह विनिञ्चराउट ॥ मृत्र भुशाती ह ভবেৎ তথা শুকরবয়্প:। চিত্রা-**কারশ্চ শিথি**বদূচভক্ত স্তথাশ্ব वट ॥ ज्या मधुद्रा जायी उथा का িলে বৃষ্পঃ। কাকশন্ধী ভবেন্নিত্য• নাজ্ঞাতবসতি বসেৎ ৷৷ নাপরী-ফিত পুরঞ্জোজন **শ**ান স্ত । वञ्च- भूम्र नलकातः यहान/मन्दा ত্তনাৰ গাহেজ্জল**সম্বাধ** ন চাজা-ভঙ্কাশ্য । অপরীক্ষিত প্রস্তি शृब्देष द्राध भादि जिः ॥ नारदारहरू হ্বপ্তার॰ ব্যাল । ন্ডাভূ তুরগ তথা। नाविक्तालक्षिय॰ गाहर रेग्व (म (दार्मात वरमर ॥ नातनमु नाजा।

रामभाः । स-75 न्त्रः श्जि-Wall Care श्थिवी (१)ल वहुन्छ । स्वायक्रका,य **जू छान् ब**ार कार्यन । विभागन धियंशन् धः वार्यस्य म् ग्राह्म কর্মসূ। নিং াজর কৃত্তি ছে বেছার স **७था भू**ठीन् विकास कार्य किंगु होत्र **जिन्नान् मार** सम्बद्ध उत्तर्भ ह কামে চ ভাগে একি নাম ৷ বাংখা यथाईक द्वर ्य अभिक्ष यानेक्ष्य । সমতীতোগৰ ্ভত ন্য ৰাই।জ্ব **डि दानवज्ञा**न । ताला समूच्या यञ्जा॰ सम्बद्धाः 💛 अवस्थाः 🙉 । 😋 🕸 गारीनि कर्या 👵 ६ काय 🖭 🐠 ৰ্গব।। সৰ্বথালে ক্লিন্ত স্থান্ত ক্লিন্ত कर्त्री क्रयः। १ १ १ १ १ १ १ १ ४ ४ ४ १ वि । यानि ब्राङ्काः । १ अस् १ अस् स्वर्धिः न क्रवंडि ७३ के, क्रिक्रिक्रिक्रि **নেষ্যতে পৃথি**ই শোসে জী সাক্তর্ **१ किया ॥ यश्चिल् १८%** १८८८ स्ट्रास्ट्र विल्लाखन ह को अब्बा असिन् क्यान **७• ताका भ**तीकः। विनिध्याक्रस्यः, ॥ **পিত্रৈপতা নহ** । हे गान अवंक्यामू राज्या विमान्याम लाउ। युना রীক্ষ্য বক্তামুলন্ । নিমুটাত ম-राजाग जम्र एक रिक्शांत्रियः ।

र्शिक् ।

到自己都有一个一切有一种一个 WASH BY MANAGERING STORY की म में बेर होता है। इस है है है है है अ व अवंतर व खुविका । विकि उ ্জ্যাজি ব্যৱস্ত ভ্ৰমণ্যুছ কাম্যয়া ११ एका ल्याखन शुख शृक्य भूका १०**०५ । यसाय (एम मःश्री**-😥 🛷 भागन চিন্তিত: ॥ তেবাঞ্চা-तिश्वक्ष विकास निकास निकास निकास ्रक्षिणः ५४७) **अ**र्यप्र**ः निर्श्वगना**-🐃 🕆 🗝 🚉 ই খিকা: সতত রাজ 🎮 🖂 🕾 জাতশীলান্ বিচক্ষা 🐃 🐇 অনাহাৰ্গান্ **রেশসহান্** ि हो न अन् हजान् । जनमहावि-भार म अधिमाः **उपाक्ताजान् भ**ः প্ৰশাৰ নিকে**৷ মন্তৰ্শলান্** नार्यमत्तिकियम्गान्। ७था शु-ুলিকান জাৰ্ভাৱা**ন্ রাজা নিযো**-करवर ॥ रेवलका ब्राह्म भूकवार চলভাৱতি হ ভাষিতে। দ্বাে: স বিভাষা জ্বলা শ্ৰু**জ্বগোন্বপতি স্তত:।।** গরগণরস্যানিদিতৌ যদি স্যাতাঞ্চ-द्वान्यको। **उभा**ष्ट्राजा भुगञ्जन छहा॰ कार्याच्याक्तर्य ॥ द्वाकामा भून क्षाञ्चावर या बाधः कात्रमृष्टिखा। **हाद्रा**गा अशि यद्भन द्राञ्चा कार्याः

श्राह्मक[े] । विश्वतंत्र संभा **(कन** रेल कुन क्या कि साम्या **गर** सक् स्वारक इन्न कार्य; अरोनिहुजा इ.स.५५११ व्यक्ति है इ.स.च राष्ट्र खनाखनान्। मर्बः द्राड्वाः हदायखः তেষু যন্নপরো ভবেৎ ॥ কর্মণা কেন মে লোকে জনঃ সর্বোনুরজ্যতে। বি-, রঙ্গতে কেন তথা বিজ্ঞেয় তম্ম্ क्रिजा। विद्राव बनक लाक वन क्रिनीय विष्णय छः ॥ जनान्त्राग भू-ভবা হি লক্ষ্মী রাজ্ঞা• মতা ভার্গব वं भारतम् । जन्मा भ्याद्वन नातनम् मूर्थाः कार्यान्द्राला ভ्वि मान्दर् ॥ ইতি মাৎস্যে ১৮৯ অধ্যাयः॥#॥ অপরঞ্।রাজোবাচ।বহবো ভূপ-তে ধৰ্মা স্তান্ বক্তণ নহি শক্যতে। ভমাৎ সমাসতো বিদ্য মহাভাগ निणामय।। भृषिवी देवस्वी भूग्रा সদা প্রিযতম। হরে:। নারাষণাদৃতে নান্যে বসুমত্যাঃ পতি র্ভবেৎ ॥ নারাযণা॰শজো রালা মনুষ্যো ন ক-माठन। अञ्च पूर्नय॰ ত্যক্ত্ব। সর্বা॰ भीजि॰ नगाहरत्य ॥ नीजिगुाही নৃপো মস্ত বিপত্তি নাস্তি ভস্য বৈ। চির• ভুনক্তি পৃথিবী• কণ্টকৈঃ প-त्रिवर्ड्जि **७: ॥ यरेया नः**द्राहरङ नीजि र्णानाय पूताञ्चात । जुर्रे भी तिः রেণৈর সাজকেশতে সংশ্রেম হ युर्वनः माला विकासिक विकास हुडा। मुख्यिक्ष श्रीहरण जाउन से है (याज्य: लब्देरक विकास सम्बद्धाः स **शिक्र के किस्तर के प्राप्त म ভाষা•** कर देशका भेड़ि इसर है। নহি ৷৷ ভতো নীভৌ বিপন্নাযাণ স হসা ধরণীপতে:। রাজিশ্রিয়া বিন-শাঙি সকোষ বল বাহনাঃ ॥ ব্ৰাজা गान् गनका रेक्टव रेवह आक्र वास्तवा॰ ख्या। नृभाः कल्यान निष्ट्रस्था न हि-বস্তি কদাচন ৷৷ গভাঞ্জী গণকছেষ্টা रैवर्प्रावष्टे।यूर्विर्क्तिंग् । ज्ञानिष-ষ্টা নিষ্কুল: স্যাৎ দ্বিজ্বস্থা থিলা-র্ত্তিতাক্ । রাজান: পিতর: পূো-ক্তাঃ পুত্ৰা জনপদা তথা। অতো ज्भाः भावयां अभाः भूधानितोः রসান্।। পৌরলোকবধুণ রাজা প (म)८ शू अवध् भिव । (भौतरणारक) তথা अर्ये। १ यथा (मुर्ह्म निकाजा জে।। পুজাপীডাকর। যে চ ভূপালা অভিপাগিনঃ। শিরস্থা বিপদ স্তে-याः विरुद्धमा भीर्वनर्णिनः ॥ विरव-किला दर्शिंगानाः भाषात्रि य्था পুৰাঃ। ভথা ভাৰপি দেবেশ: পা-লগত্যনিশ হরিঃ ॥ পুজানা পা-षानः सामः (द्वांश ब्राङ्डाः भू जावस्त्र ।

লভেল কে নাজ<mark>্জা তুপা তে দিছে</mark>-ल मुनलक्षा ३ । १ वे । ५ । नामने विन विवेशका भुविभावान । भुक्षाविष् মন্পামা কিলা সমতি ভাগতেও अध्यामभाष्ट्रिक विक् १५० रक्षप्रतिभवित्र । विदेशका ए ५ होत भाष्मा विभन्नाः न हि निस्तर् ॥ নৃপা: কল্যাণ মিছন্তো নিজরাজ্য শু ভাশুভ•। পশ্যন্তি নিভ্যুণ বিশ্লেন্দ্ৰ সত্ত্বা শ্চারচক্ষুধঃ ॥ পরচক্রভাশ যাব্ৎ নায়াতি চিন্তযেন্ড্ৰণ 🗆 গতে তু ভবেভূপ আচলেজি यथा ॥ उद्धारठी वाशि ह नि. व 🐴 পুত্রে বাপি চ মক্রিণি। হব্যামুখেন গান্ডীর্য্য মনসা পুন কেবল ॥ মজিণো জ্ঞাত্য: পুলা: পুলাক্ষ ভাতর তথা। গাম্রীর্য্যহীন ভূপা-ল নন্যন্ত ন হি ভূপবং ৷৷ তিগ্ৰস্তি পূথম॰ দ্রে বসন্তি পুরত তত্তা। লোকাঃশূিয়• যদিছন্তি ত্যক্তগান্তীর্য্য ভূপতে: ৷(একস্য মঙ্গ্রিণো রাজ্ঞা চি-র রাজত্ব মিছ্ ঠা। কর্ত্তব্যা: সকলে রাজ্যে বৃদ্ধযো নৈব ভূদুর ৷৷ অত্যন্ত লল্পনাণ ভ্ত্যানাণ সম্পদণ হ-রেং ৷ তদ্যা সম্পদি ভূপালো ख्ठा भना निर्याक्रय**् ॥ सू**र्वः জ্রীবিন্ধিতো রাদ্য গীত ধাদ্য রতঃ

ी॰ भव्रामिन्। याव क्षाकः पुष्कञ्चभः। भुजिभापः २थः বেষ্ণা ফল প্রাপ্নোতি চাক্ষৰ · গাভ্নিজযাকাডক্ষী হতো বা বুল বুধি। তদা গছেৎ পর॰ 🖂 ্ৰ ুক্ত: সৰ্বপাতকৈ: ॥ যুধি 🌝 ্যোরালা প্রাপ্রোক্তি পর্মণ **१५०। म माङ्म পु**। श्र मृजू। र्मिवीन्तु मन्भर• वाख्या ठाक्क नव्• ठाकः **শঙ্র॰ প**লায়নপরায়ণ । যোদ্ধার• यूबिया इन्। एन जूला या छ। था-গতি॰।। পলাখনপরো যুদ্ধে ভদ্ধন্ত। চ দিলোভন। তাবু ভাবণি তিঙে তা॰ নরকে হত্যন্তদু:সহে ॥ বুধি সাহসবান্যোদ্ধা তদ্ধন্তা চ মহী-जुद्र। ভিষ্ঠেতা॰ দাবলি স্বর্গে যাব-इन्द्र हिदाकतो॥ वद्यनाञ्च किमुक्तः न न राक्षभान्द्राञ् भया । भुजाः शालन क्षां का कराहि वावनी रि ॥ इेजि भाष्म कियायागमात्त्र२० । द्वाक्रभाषानः भू भाषानः। इेजि

Z. 35. वाजनाक की का विषमग्रः। ३७%

यदः ॥

সুরাজযুক্তদেশ:। ত্রি রাজবান্ इंडामतः ॥ পुकाभावनारिय्यर्गः পরাগণরাজযুক্তেদেশে রাজনান্ রাজা বিদ্যতে হস্যেতি মোজ্মঝ-পাদিতি পুসণশাষা বতুঃ। যদুক্ত • ভক্রান্তরে। ভূমি নিন্দা পুশ সাসু নিত্ত্য যোগে হতিশায়নে। সংস-ৰ্গে হস্তি বিৰক্ষায়াণ ভব্স্তি মতুবা-मग ই**ভি। স্বনতে অন্ত**্যৰ্থে ভ্ৰমান-যো হ্মী অর্থা অর্থাভুলভান্ত এব । নিপাতনামলোপাভাবঃ। নসৌ-রাজ্যে রাজ্যে নস্য লুঘ্মতাবিতি পরে। সুরাজ্ঞি ষ্বর্মপরত্বাৎ শো-ভনা রাজানো হত্তেতি নার্চাযাণ স্বতেরিতি অ নিষেধঃ। দেশোলো কোপলকণ সূরাজ্ঞিলোকেইড্য-র্থ:। ইতি ভটীকাষা ভরত:।।

वारामाधानी । स्वर्णने वा वार्यक्षी । वार्यक्षी | वार्

TO SERVED AND A TO SERVED AND A SERVED AND A

ब्राङ्ग्यास जी आउर स्ती: ५१७ - श्रादावनी ॥

রাজপথ: পু॰ রাজনার্গ: । তস্য লক্ষণ যথা । ধনু সি দশ বিস্তী র্গ: শ্রীনানাজপথ: ক্তঃ । ন্বাজি রথ নাগানা মসম্বাধ: সুসঞ্র: ॥ ইতি দেবীপুরাণ ।।

द्राङ्गभाग छी शुत्रादिशील छ।।
इंडि द्राङ्गिवरिंग्हेः॥

प्राक्तभवाखः भू तक्वर्गणवाखः।
वावलात है जि जाया। उर्थ याः। क्वर्रिष्ठः र नृभाक्षिः ठ प्राक्षः १ म्राम् वः र भीर्यलवः ठ ताकः १ म्राप्टः ४ म्राप्टकः ठ महाकन्तः २० मृश्रिपः २२ तक-कन्तः २२ ताल्छः २०। यमा छ्वाः । निन्तित्वः। शिखक्ष माणिदः। भीशमदः। वद्मिम् कत्रव्यः है जि प्राक्षियंदेः।।

द्राष्ठशील्: शृ॰ नहाशील्त्रः।

क्जिब्राजनिवणेः॥

वार्यान्त्रेः ॥ ्यान्यवार्याः १४ - वे लाजा ३**क्ष्मप्रसार** वर्ग To the same निया ७० में क्यों त्या । জ্ঞাতক। ইতি পুরাণ 🔧 😁 नन्तः। ७९भग्रायः 😗 ১ স্মারঃ২ ভত্তুদারকঃ ৩। ইত্য মর: য়া ভস্য রক্ষণ যালা 🐃 🕾 পুএম্য রক্ষা চ কর্ত্তব্য 🔫 🤼 किञा। बाहारियं काम। वस्त निक्र मूरेक्क क ब्रक्ष १ ।। ४५३ व्यापाः र्थ नाजानि भनुदर्बत्क निक्रायः। রথে > अक्षांत्र हे हन वर्षायान कात्र-एए जना ॥ निद्धानि निक्रायहिव नोरेख विवाशी भूषः वरहरा खनायान নশক্যন্ত যদ্য কর্তু• মভাবত:॥ বন্ধন তস্য কর্ত্তব্য গুণ্ডে দেশে সখাবিত । অবিনীত সনার হৈ হল মাশ বিশীর্যতে॥ অধিকারেষু नद्व विभी उ॰ हि निया अत्य । वाली सन्नुषु उट्चकाटकस्माथ মহুংবলি । মুন্যা পান মক্ষা •-ষ্ট ৰ জ্বংবং পৃথিধীপতিঃ। এতা॰ न्यारमानाच विनश्चाः श्विवी कि कर । बर्खा मुलनाम् ता एक । ना व त्रांत कि एक कि एक कर है । त्रांत कि एक कि एक कि एक एक है । ना कि एक कि एक कि एक एक ना कि कि कि एक कि एक कि एक कि एक कि एक कि कि एक कि एक कि एक कि एक कि

क्ष्यात्र विवेद्धाः १८० ভারত ভূক কৈব তথা চার্থেসু দু क्ष व अवाजनाय मग्रहम मूर्ना कीयो करा किया। अर्थानाः मूयगः 🐃 🥶 🛴 ুণীৰ্ণত্ব মেৰ চ ॥ অদেশ প্ৰবিষ্টান মপাত্ৰে দান মেবচ। অখ্যা কি প্রোক্ত মসৎকর্ম পু ৰভিন্ত বাহাত কোপত মদত মানত लाड॰ इर्व हरियत ह। (खंडत) म-तियः वर्गः भाषतः भृथिवीक्का ॥ এতেষা॰ বিজয় কৃত্বা কাৰ্য্য ভূত্য-क्य : ७ उः । क् इ। ज् ७ । ज्र व त्राजा बनभर बारा ॥ कृदा जु বিজয় তেষা শত্ন বাজা স্তভো हारए। दाशाम जिविशा एउए गा स्वागा । इति क्विमाः ॥ इति (स यथा भूर्ब॰ (उयू यञ्जभाता ভाবে । পিতৃ পৈতান্হ নিত্র সামস্ক তথা রিপো:।। কৃত্রিখঞ্চ মহাভাগ भिद्र विविध मुहुएक । छथानि ह छकः भ्वः ভবেতवाभि हाम्उः ॥

ब्रामामा(७)) क्या रता हुई रेगरा े १ का वास्त्राच्या १ वर्ष **प्रमा**न्छ आर अपन का नागरिक कर व स्थ का अपने पुना बार्च होते हैं। इस ा गु छहेन কন্য দ্রোহ মাচরতে হলুধীঃ ॥ বধ স্তব্য ভ্ৰত্তব্য: শীঘু নেব মহীক্ষি-**छा। न রा**ङ्ध। मृদুना ভाব্য॰ মৃদু र्हि পরিভূযতে ॥ ন ভাব্য দারুণে-নাপি ভীক্ষাদৃদ্ধিজতে জন:। কালে মৃদু র্যো ভবতি কালে ভবতি দাক-ণ:।। রাজা লোকদ্যাপেক্ষী তস্ত लाक वयः ভवट । ভृटेग्डः **मर** मरीभावः भित्रहामः विवर्द्धारा ॥ ভ্ত্যা: পরিভবম্বীহু নৃপ হর্ষ বশ পত ৷ ব্যসনানি চ সর্বাণি ভূ-পতि: পরিবজ্জ(य९ ॥ লোক স·-গুহণার্থায় কৃতক ব্যসনো ভবেৎ। শৌরিষ্য নরেদুষ্য নিত্য মৃদ্ভি (D उ भ: 11 जन। दिवाग गायां छि म-দা দুংসেব্য ভাবতঃ। মিত পূর্বাভি-ভाগी महा८ मर्ब रेमह्य महीপ्रजिः॥ নধ্যেত্বপি নহাভাগ ভূজটী নসনা-

চরেৎ। ভাব্য• ধ্যাভূ সা• শুেপ্ঠ ফুল-

मक्ति। जुड़्का।। जुडावकम्। दलगा

नर्श 😇 है । विभिन्ने हे वर्ष वर्ष वर्ष है । व बाहर स्वति स्वति व्यवस्था मुख्या बन्ध मृत्य १ १ । १ । १ । । ब्राक्त ६ ५० - १ स्ट्रिक्ट পেচক বিশ্বস্থা বিশ্বস্থা मीर्यम्बः 😘 प्रसादि 😘 र 🦠 মত্ত্রেণ 👑 🥹 📧

ত্স্যা সংভূত মন্ত্র্স্য জ্রেখা: সর্বা-পদে। ধুরা:। কৃত্যান্যের তুকর্মাণি আয়তে যুস্য ভূপতে: 11 নার্ক্নানি यहा जाग खन्य जात्र मुशा वरना । নতা ন্লা সাবারাজ্য তথা ৰাজ্য সু রফিত ।৷ কর্ত্তন্য পৃথিবীপালৈ র্মা खालिक्स वर्षा भाषा । मह्यविष् मान ধিজো নজ্ঞ: সংযতানাণ সুখাবছ:॥ म अहरलन वहरता विनष्ठाः भृषि वीकि उ:। व्याकारेत दिक्ति अंडा চেপ্রয়া ভাষিতেন চা। নেত্রবক্ত্রা-বিকারৈশ্চ গৃহতে হন্তর্গত মনঃ। न यन। अमारेन खम। वर्म मर्चा वमू-स्ता।। ভवडीर मरी छर्ः महा-भार्थियननत्न । रिनकञ्च मञ्जरमञ्जूष न রাজা दङ्जिः मह ॥ नाताह-षियना॰ नाव॰ नाभन्नी कि**छ ना**वि-কা'। যে চাদ্য ভূমিণ জনভো ভবেষুঃ পরিপন্থিন: ৷৷ তানানবেদ্ধশে স कीन् जामाति छि क्शक्रीमः। यथा।

and the second of the second of the second

SHENT COLL, A

মহাভাগ ভৃত্ত কর্ম হলে 🐃 🥷 : যোরাষ্ট্র মনুগৃহাতি রাশ ধা পরি ্র**ক্তি ৷৷ সংঘাত মুপ**ষ্টত দু^{ক্তি} জা ज ग गरू थन । १११ कि । ११ খান্যঞ্মহী রাজ্ঞা 🤭 🤭 😘 🐍 নিত্যু স্বেভ্যঃ পরেভ্যুক্ত বেটা লাভ্যু যথা পিতা। নিত্যু রাজ 👾 🐉 🕫 কৰ্যভ্যন্যস্য চেছ্যা ॥ গোপিতানি **जरा अर्थ**ार ज विजागी लियानि ह । অভসু মুপযোক্তব্য ফল তেভ্য खरेश्वत हा। धर्मा इत्यंत्रमायखः विधाः त्न रेमव मानुरव । जरवा रेर्मव महिन्तुः হি পৌৰুষে বিদ্যুতে ক্ৰিয়া।। এব मही॰ পালगতো २ म । ভর্তু লোকা नू-রাগঃ পরনো ভবেট। লোকানুরাগ পু চবা চ লক্ষ্মী লক্ষ্মীবঙ শৈচব পরা চ কীৰ্ভিঃ ॥ ইতি মাৎস্যে ১৯৪ অ-श्रायः ॥

রাজপুঞ্জিল ভারী শরাবিপক্ষী। শরালী ইভি ভাষা। यथा। শরারি

नात व्यक्तिक राज्यां भवान व । ब्राह्मका ८ राह्मांत (८ उन् भक्त १८ - ही अने १८वर का अध्याति । शिल्ब के **भवाग्याति । विहार अध्याप ।** 1997年 · 高、安、赤、竹、竹、木 - The supplier of the second

भना चलि। शास्त्रणे सन्तर्धाः बेंडे। थ्रः १। त्राज्ञकन्य ह ॥

রাজপুয়: খ্রু নাগকেশরপুয়বৃক্ষঃ । যখা ঠোম্পেবঃ কেশরো নাগকে-শর: কনকাস্থ্য: ৷ মহৌষধ রাজ-পृञ्जः ফলকः খুরুঘাতন:॥ ইতি भद्रिक्ता।।

রাজপুরী স্ত্রী কৰণীবৃক্ষ:। ইতি वाकविर्घकः॥

রাজপ্রিয়া জী কর্ণীর্ক:। ইতি রাজনির্ঘণ্ট: 11

त्राज्ञकि शुर नागत्रक्र्कः। इंडि नद्भावा ॥

রাজফল লী পটোল। ইতি জি কাওপেৰ: 11

बाद्धकना खी ज्यः। ইতি রাজ-निर्घणेः ॥

রাজবদর• ক্লী রক্তামলক•॥ লবণ• । ইতি (मिमनी ॥

রাজবদর: পু• উত্তমকো**লি: ৷ ত**ৎ शर्गायः। नृशरम् हः रं नृभवन्तः ०

प्रमाणिक मण्डुत्व । कि नि ्रम् अक्षा अभिन्न स्टार व्य · 经产品的 经收益的 (1) ा । १ । इ.चि.स. अ**मिर**ेशी

भागात र को साम्योगिकी। ষ্থা। গোভণ্ডীরঃ পক্ষ ীরো হা-পুত্ৰীরাজভত্তিকা। ইতি জটাপরঃ॥ त्राज्ञ जुकः भू विश्वः। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ৷৷ পারিভদুক ইতি भाधुभाठेः॥

त्राक्रज्य की त्राक्रज्**ायथा। न**्रा ष्कु का जूग व्याद्य व्याप्त मायूका भि মরকোষ দর্শনাৎ।।

রাজভোগ্য· ল্লী জাতীকোৰ• I श्रियालगृष्म भू॰। इंडि नद-ठिन्मुका ॥

রাজনপ্ত্র: পু॰ বৃহক্তেক:। বড-(वक् इंडि ভाषा। उৎপर्यशायः। মহাম্ভুকঃ ২ পীতাকঃ ৩ পীত-मञ्जूक: ८ वर्षाचाय: ৫ महात्रवः ७ । ইতি রাজনিঘণ্ট:।।

वाषमञ्चः श्रु जाञ्जा गर्मः। वाषावः भान् इंडि ভाषा । उৎপर्यायः । উৎসিক্ত: ২ উদ্ধত: ৩ । ইক্তি

বিস্তার্ণা দেশনার্গন্ত তৈঃ কৃতঃ ৷ विः भः धन् गा समार्गः भीमामार्गा मरेन व जू ।। धन् धि मन विखीर्नः 🗐 भागाङ्ग थः क् उः। न् वाङ्ग त्रथ नागाना ममयायः जूमक्षतः ॥ धन्ः यि टिव हजाति भाशात्रशास नि মি তা:। ত্রিকরা শ্চেপেরথ্যাস্ত দ্বি করাপুগুপরথ্যকা ।। জন্ত্রাপ**থ** 🖝 जूशाम जिलामण ग्राखतः। वृजी शान युक्तशानः शुग्रः भः शानकः মৃতঃ ॥ অব্করঃ পরিবার: পাদ-माजः ममञ्जः। ইতি দেবীপুরাণে (गानुत्रहात्रनक्तः नामाध्यायः ॥ वाक्षनायः भू वर्वहः। वववहीक-ডाই ইতি ভাষা। **उ**ৎপर्य्यायः। नीलगायः २ नृश्मायः ७ नृश्मािः তঃ ৪। অস্য গুণাঃ ॥ কফ পিত্ত হরত্ব। কচ্যত্ব। বাত কারিত্ব। वलमायकष्य । इंजि बाजनिर्धकः नात्रकद्ः। শুকামুপিত হরত্বः।

॥ # ॥ काणविरगय जैन्। उक्-षु यथा। नातनीय । निक्रावान् त्राज्ञनायाः क गरध (मर्स् जनार्म्सन া যে। ভক্ষয়তি রাজেন্দু চাণ্ডাল।-দধিকে। হি সঃ।। কাৰ্ত্তিকে তু বি-(मार्वेश द्वाज्यायाः क वर्ड्ज्रायः । निय्वादान् गनिनाम् व यादनार्ड নারকী।। ইতি তিথ্যাদিতত্ত্ব• ॥ রাজমুদ্ধ: পু॰ মুজপ্টক:।ইতি ছেম-हम्पुः ॥ त्राजयका^न भू• क्रयदागः। ইতি र्व्यहन्तुः ॥ जामा भर्याय निमा-(नोवशान्या यक्तमय् मुष्ठेव्याः ॥ নহাপাভকজচিহ্নপ্যয়ণ। যথা विकुः। অथ नद्रकान् ज् उ पुःथाना॰ তিৰ্য্যক্ৰ মৃত্তীৰ্ণানাং নানুষ্যে লং ক্ষণানি ভবন্তি। স্বস্থ্যতিপাতকী तुक्तरा यक्ती मृताशः नारावनस्रकः भूवर्गहात्री अवशी धक्र उन्नर्गा प्-ण्डर्या। इक्रां निक्यं भूता १९॥ कि-

সংক্রি**নার কু**লাক, সাক্ষান্ত্রীরেল ১৫০০ with the state of THE REPORT OF THE PROPERTY OF THE PARTY OF 饰物的 结构经验工作的 网络 医微管性 经基础证 医性病性阴炎 The state of the s क्रीकी क्यून्यतामा वात संस्थात व ইতি শুক্ষিতভু ।। 🗱।। তস্যেৎপত্তি ৰূপ ইনানি ব্থা। অথকোপবত স্তস্য প্ৰক্ষ্য সুনহাত্মনঃ। নিশ্চক।-ম তদা যক্ষা নাসি গাগুাদ্বিভীৰণ: 🛚 एक्षे कतालवहनः कृकाकात्र अम्भू 🍎 ভঃ। অতিদীর্ঘঃ স্বল্লকেশঃ কৃশো ধ মনি সন্ততঃ ৷৷ অধােমুখে৷ দওহন্তঃ काम दिभुगा महन । व्यक्ता নিম্ননেত্রশ্চ যোষ৷ সম্ভোগ লোলুপঃ 1) সচোবাচ **তদা দক্ষণ জ্ব স্থা**স্যা-माइ मृत्न । कि वा हाइ क्रिकामि **जित्र वर महामाउ॥ उठा एक छ**. **७**॰ शुार (माम॰ याजू कड॰ खवान्। সোম মত্তু ভবান্নিত্য সোমে দ্ব তিষ্ঠ ষেহ্যা।। মার্কণ্ডেয়উবাচ। ইতি ত न। वहः नुत्रा मक्तन। । वहात्रानः। শবৈ: শবৈ खङ: সোম নামসাদ স চ জত।।। আসাদ্য স ভদাসোম বল্মীক পদ্মগোষ্থা। পুৰিবেশেন্দু क्राय हिनुः भागान्यशामः॥ ७

निम् सुर्विष्ठे १८०० शास्त्र राज्य water with the wife of a · grate some Been some 明然 不敢保险的 黃星鄉國門鄉 生活物 1995年 1995年 1986年 - 東西 1987年 - 1987年 -大学 (1992年1日 - 1992年 1994年 199 Course to the second of the second क्रयान्त्रगामान्दिनः गुरिया भूका नरी यथा।। उथा हरम्य की गमारा निद्दी वध्रः क्य • गङ्गा। क्य • का जास्य य-बीवू न राखाः मः भूदर्वतं ।। राख्या छा-वाजु (मवाना मझ गर्ब क्रम गड । পর্য্যন্যান্চ ভতো নষ্টা স্তভো বৃষ্টি ৰ্ন চাভবৎ।। বৃষ্ট্যভাবে জু লোকামা মাহারো ক্ষীণভাক্তঃ। দুর্ভিক ব্য-সনোপেতে সর্বলোকে দ্বিজোন্তনাঃ ॥ मानध्यापिक किथिमलाकियु भुवर्छा । मजुरीनाः भुषाः नहीं लाख्याभश्खिन्त्र्याः ॥ भाभ स्वित उना हक् मध्यक्त्य ख्या । এতদৃষ্ট্ৰা তদা ভাব দিক্পালা: স भूत्रन्त्वाः ॥ ज्याः क्लांड॰ भन्न॰ দেবাঃ সাগরাশ্চ গুহা তথা। ভতো मृद्धा जगर मर्बर व्याभवा मम् भी-ডि उ॰ ॥ वुकान मगमान्त्राः मर्ब শক্র পুরোগনা:। উপসঙ্গর লো কেশ- সুষ্টার• জগতা• পতি• ॥ পু-

त्रम्भ रदारः तः मृत्यविष्टा स्टब्स् **भूताः । जान् ज्ञानवरनान् श्रीका**ः **भूता : त्वा**कशिकाबस्था कल्यः <u>क्रा</u> **ारबहेर**क इंड स्वियसके स्व । १८ ह शुरु मुख्यो १४१ ७६० जिल्ल १३१० **लब**ा। तुरकार्ताः । बागङ्गः ह मूब्रानाः अस्य वस् का का का थाशस्ख्र एका ग्रान् मना गर मक्ति । नित्राक्षकान् निद्राक्षकान् नृतान् नर्वा ख काममान् । क्वा य विवाय माञान् कथः शमानि मूजि-**छान्।। यहजूत पृत्र वीकः यूग्रान्** বা যস্ত বাধকে। তৎক্ৰ্যুভা মশে स्वतः, निष्ति° हा भा वषार्यं उष्टाः ॥ मा-কণ্ডেয উবাচ। ততো বৃদ্ধশুবা ভী तः कृष्यवा ह लाककृ । उराहाः ত্মভূবে তথ্যৈ সুরাণা॰ দুব্রকারণ॰ ॥ मृगु मर्ब बग८कर्ख छा । यन वन मा গতাঃ। যদমাক দুর্বীজ যভো শ্লান <u>िं। यो वर ॥ न कृष्टि अश्भुवर्ख्यस्र</u> यञ्जा (नाकिनिजाम् ॥ (मवाकिनुः। निजाबाजा निजाउकाः भुकाः नर्वाः क्रय॰ গতা:। नठ मानामि धर्माण न उभा भि किलो कृष्टि ॥ निव वर्षा भग्रानाः की गर्जाया छव कि जि:। की गाः मर्वा खलो वधाः म-न्ता (बाकाः गनाञ्जनाः ॥ म्यू छिः |

क्षेत्रिका क्षित्र राज्यामा प्राप्त के विकास का जाता है। विकास क्षेत्र के कि विकास का जाता है। विकास क्षेत्र के कि विकास का जाता है। विकास क्षेत्र के कि विकास का जाता है। विकास का जाता का जाता है। विकास

कीता ब्राट्याकीनक वर्डाक ॥ **घटे**नवान्धिरङ (हटेव म्हरन्यू) देनवा॰ भूतःभद्रः। कराहिर्मा (रवाभाः अ-भाषा वा ভविष्य ।। कमाहिष्माह-ণী ত্যক্তা নৈব ক্বচ ন গছতি। যদ্য-न्धः (काशि न ज्यव्यतः) हत्नु। वश् र्जवट्या मृष्युट्य न कवाशीनः कवा মাত্রাবশেষিতঃ। ইতি সর্বত্র লো-কেশ वृक्तः কর্মা বিপর্য্যয়: ।। ত॰ দৃষ্ট্য-कान्तिभौकास्त्र वयः द्याः भद्रगः ग-जाः। भाजाणाचा वम्याय कालक-अामरया २ जुद्धाः ॥ नात्रान् रलारकपू বাধন্তে ভাৰম: পাছি সাধুসাৎ । স্বয• পুবৰ্ত্ততে কমাজ্জগতা• বাব্যতি-ক্ৰম: ।৷ ন জানীমস্ত,তৎসৰ্বণ বিপ্লংক **ठाशि काद्रगः। मार्का्श्य उवाठ**। **७७९ मुद्रा**भा• वहन• दिवादमी शिजामणः। गु.दा कन मिल्याय निजगार मृद्यां उसान्।। वुष्कावाह । **म्**युष्ठ (मयुजाः मर्बा यमर्थः लाक

रीलुरः । लुव ई. ७ २ द्वा (यन 🛎 📳 স্তন্য ভবিষ্যতি ॥ সোমো দাকায ণী: কন্যা: সপ্তবি শক্তি সংখ্যযা। • ष्यभिनापा वर्त्रवस् डार्गार्थ **भ** রিণীতবান্ ॥ পরিণীয় স তাঃ সর্বা রোহিণ্যাণ সভত। বিধু:। পুরক্তে ভানুরাগেণ ন সর্বাস্ পুবর্তে ॥ ष्यिन्यान्यां छ उ: सर्वः (नीर्जाग्य ब् রগীডি হাঃ। য দ্বি:শতি বঁরারোহাঃ পিতর' পুঞ্জা: মক ৷৷ পুবর্তত নিশানাথো রোহিণ্যা রাগতো য থা। তথা ন তাস্ভন্ধতে তদকায न्रायमयन्।। चा जा मा मा महावृद्धिः गान्। मः ख्य विहेश जिः । वद्यमून् ज भाजाया भूञार्थ १न्क्राम उ॰ ॥ ष्यन्यस्व। यथा काम मत्क्रण मूमशा-द्मना। समः भुवर्खित् छात्र समयः কৃতবান্ বিধু:॥সন মঙ্গীকৃতে ভাব• তাসু কর্তু হিমা শুনা। স্ব জগাম ততঃ স্থান দক্ষোপি মুনিসত্ত্য:।। গতে দক্ষে মুনিশেঙে বৈষন্য তাসু म्मुनाः। करहो न ख्यवः जाः मण्य ব্দিতা: পিতর গতা:।। ততা-मकः भून कम् मन्क्षा मू जाउता । जमव्खिः भुजिभाव। वहन्यक्षम् मृत् বীৎ।। ন সম• বৰ্ত্তত চন্দ্ৰ সৰ্বাস্থাসূ ख्यान् यि। जरा मार्श्वा वर्षः ज्जाः

রাজ্য

ভন্মাং 🗳 ক সমঞ্জ সংখ্য ততো গতে भून फर्का न अभः वर्खाउ यहा। जाजू व्या उपा एकः भून भवायुवन् क्या া নতে বচঃ স জকতে নৈবামাসূপু-वर्खा वयः छशः क्रिवानः साः স্যামক্ষ ভ্ৰদন্তিকে ॥ ভাষা মিভি বচঃ শুনু জপিতস্য তদা মুনে: 1 क्याय हन्तुम्। यनः माभारयार्म् কতা গত।। শাপাধোদ্মক নৰ नः व्याचित्र महाज्ञनः । क्या নান মহারোগো নাসিকাগুাদ্বিনি र्गडः॥ (পुविडः न ह हन्माय प्रक्रिन মুনিনা ভতঃ। পুবিষ্টবাণ স্তস্য দেছে क्षविख (खन हन्तुभाः ॥ कीश हत्नु ক্ষণ থাতা ক্ষ্যোৎসা তস্যমহাস্ম-नः। की भागू मर्ब खारमानू महों-यक्षाः क्रयः गजाः ॥ ६वश्रजाना-ল্লোকে ২মিন্নযক্তঃ সংপুবন্ত ভ যক্তাভাবাদনাবৃষ্টি স্ততঃ সর্ব পুজা-क्वयः ॥ यञ्ज जारंगान्य जारंगन ही-নানাং ভবতাং তথা। দুৰ্বলত্বং সমূৎ-পদ বিকারক স্বগোচরে ॥ ইতি वः कथिङ সর্ब यथा ভুল্লোক বি-প্লবং। যেনোপায়েন তৎশান্তি স্তৎ শৃণধ্ব পুরে। তথা: ॥ ইতি কালিকা-भूबात्पर॰ अशायः ॥ श्वः। वुत्कावात । गहन्त जाः जूदगण मकना जनन

• 🛫 পুতি। ত পুর্ব :: भूर्ता खरव्यथा।। भूर्त हर्त्मु क्रमर-সর্ব পুক্তিস্থ ভবিষ্যতি। যুদ্মা-कक्ष ভবেৎ শान्ति রোষধীনাঞ্চ স• ভবঃ।। মার্কণ্ডেয উবাচ। ইতি বুন্ধ বচ: শুরা দেবাঃ শত্রুপুরোগমাঃ। भुषयु इ हिमनम खना नक निद्यमन া যথান্যায় মুপস্থায় সর্বে মুনিবর• সুরা:। পোচু: পুরুপতি एक। পুণম্য শ্লুষ্য গিরা ॥ দেবাউচু: 1 ्राजीन जीनजाः वुक्तमभाकः वर्षमुः थिना । উष्कत्रत्र महावृष्क बाहि नः শোকসাগরাৎ।। যদুপ• বুদ্ধস•জ্ঞ-ন্ত সৃষ্টিকৃৎ পরমাত্মন:। তদःশ युः পর• জ্যোতি বিশ্বৰূপ• নতোমি তে ॥ पक्रगाद সর্বরগতা॰ পুরাপালন কারণাৎ। দক্ষপুরাপতি শেচতি याणिण उद्युत्मा वयः ॥ मकाय अई क्षभञा॰ मकाय क्रमनाञ्चनाः। मकाः যাত্রহিতাযাশ নম স্বভ্যু মহাত্র নে ৷৷ সতত চিন্ত্যমানস্য যোগিভি র্নিযভাত্মভিঃ। সারস্য সারভূত ত্ত্বণ मकाय भन्नगाञ्चात ॥ यागविण्डि त्रनाषृष्ठेः পার গাণা পরাযণ:। আ দ্যন্তমৃক্তঃ সহসা ভষে নিত্যু নমো ননঃ ৷৷ ইতি তেষা বচ: শুকুা দক্ষো बद्ध हुना॰ जरा। शुष्ट् शुनमवरनः

শাস সাভাগে মুখ্য জাগ মকাইবার । বত: শক্র মহা ভাগ ভবতা। দুংধ মাগত। দুঃখহেত্ত বদ বিভে। শ্রো-ज्भिहाम।इंख जः॥ मनाखियि क-र्खवाः खवजाः मृःथहानस्य । उन्हरः যদি শক্রোমি করিব্যামি ছিভ সন ।। भार्कः ७ वर्षः । ७ ८ मुद्रा वहनः তস্যবুদ্ধসূনো মহর্ষিণ: i জগাদ গী-ব্লতিঃ শকে। বীতিহোত্তো ২থ ত॰ मुनिः॥ क्रयः याजा निभानाथ छ-श्चिन क्रील क्रय न जाः। সরৌ বংখ্যা षिष्ठामुक्ष उष्तानि यं छ शानिक् ॥ याञ्च विनाष्टे भक्लाः भुजाः क्रुप्तय काउदाः। वृष्ठि जावास्रमृश्यः शा-**প** । नश्चाण्ठ काण्ठन ॥ कृत्या **२**य॰ द्रा-ত্রিনাথস্য যন্তে কোপাৎ পুবর্ত্তে। স সর্ব জগতো বুন্দমভবার্থ মূপস্থি-তঃ।। নাধুনা তঞিভূবনে যক্ষকুক্কস্ত কিঞ্চন। বিপ্লব॰ যান্তি বিপ্লেন্দু সাগ-द्राः इ।वद्रा कद्राः॥ न यद्धाः मः श्-বৰ্ত্তেন তপস্যন্তি তাপসাঃ। আহা-त मःथाधिन्त्रीकाः नुजाः कीना ज्या-তুরা:॥ এব॰ পুরুত্তে বিপ্রেন্দ্র বিপ্ল-বে হুমান্রসাতলাৎ। দৈত্যা ন্যা-বদ্থায় বাধন্তে ভাবদুদ্ধর ॥ পুনীদ मक मञ्जू क भूता उत्भावना । পূর্ণে রক্ষেত্র জাৎ নৱ পুক্তিস্থ ভ-

1980mg 3000 195 তেষা বচঃ শু,্বা পুজাপতিসূত স্তব্য । उवाह जान् मृत्रभवान् इत्याह्ना मुक्तत्।। एक उेवाठ । यस्म वटा নিশানাথে পুরৃত্ত। শাপকারণ।। न क्नांशि निहातन मिथ्रा॰ कर्जु॰ ् छुरू अरह ।। किन्छ सम्रहन समारिन कारा में या ज्या राष्ट्रा हित्सु शि वर्ष তে যমাৎতমুপায় মপেক্ষতে ॥ ত ত্রাপ্যয় মুপাযোস্তি মাসার্ছে যাতু ठन्त्र्याः । ऋष• वृश्विषः सामार्खाः यग जार्गाम् वर्षजा ॥ जमा जब हनः भुद्रा ७ श्रुमार् भुजानिः। সর্বে সূরগণা স্তব্ধ গভা যজাস্তি চ-न्त्राः॥ এव मुक्त जू वहान मान्त्रा मूनिना विजाः। अथ हन्तुः नमानाय ভার্য্যাভি: সহিত তদা ॥ জশু স্তে **तुक्त जरनः मृहिलाः जूदञत्त्रभाः ।** ভৰ গড়া মহাভাগা যথা দক্ষেণ **ভाषिजः ॥ ७९ नर्बः कथ्यामाम्** व्कारा भवगाजात। वृक्षा कष्क वहः भुःदा (प्रवानाः जननः छना ॥ हन्तुः ভাগ মহাশৈল জগাম সহিত: गुरेतः ॥ তত্র গত্ব। সূরশেষ্ঠ: প্রজানা॰ হিতকান্যা। স্থাপৰ্নাস শুভাত শু বৃহল্লোছিত পুষরে॥ ভূত ভব্য ভবজ্জानः পূর্বনেব পিতানহः।

াচ্যকারাত্র সর: পূর্ণ জগৎ: পুভুঃ॥ তত্র স্থাতস্যলোকস্য নীরো-গত্ব• পূজায়তে। চিরাযু স্তৃঞ্চ সত্তত• বৃহল্লোহিতস জকে ॥ তত্র সা-७म् ठन्तुम् **भ**द्गीद्राख्यक्तः गरः। ता बयका निःममात পूर्वकाला यथाः দিত: ৷৷ নি: দৃত্য রাজ্যক্ষা তু বুক্ষা-नक कगर्भाउः। भूनमग्रहः किः कतिरम्। कृ गहामीजू। वाह स्।। स्रान॰ পত্নীঞ্চ লোকেশ কৃত্যু মম সদা-**७न• । निरम्भगानुक्तभ• य मुद्रा प्र•** জগতা॰ যতঃ ॥ মাকুণ্ডেষ উবাচ । ভতো বুহ্মাপি ত॰ পুষ্ট॰ নিরীক্ষ্যেন্দু শরীরগৈ:। অমৃতৈ স্তেনাতিভূক্তি: क्षीनकाशि निमाशिङ ॥ स्मिर्ভिः यग ७ गृशेषा गिरतो निश्चिष्र रेव मूटः। अम्ड॰ गानगमाम नदी-রাদাজবঙ্গণঃ।। অনৃতানি চ গালগা-म् उरभूउ॰ उरा कला कीता-দস্য চ চিক্ষেপ মধ্যে রহসি লো-कज्रा । उत्राप्भार्भजापितमाः क-लाः कीनाः भूताथ याः। जानाः ब-गाइ वन मह्र्यान कीतार नागतार ৷৷ কলামাত্রাবশেষস্য সংসর্গাদাজ-यक्षाः। कीताः कलाः शक्षमः याः পূর্ব মমৃতাত্মিকা: ॥ তা রাজযম্ম গৰ্ম। শূণী ভূতাস্ত পীড়যা। তে-

রো জ্যোৎসা কলা ভিল ্বিস্কান্ত কলাপতে:।। শরীর ত্তিধা ভ্ত গর্ভ্ত রাজযন্ধন:। জ্যোতি শূর্ণ ম-**ज्८ (ब**्रा८ मः नीना द्राज्ञाहि यञ्चित ॥ मुवीज्ञाः मुथाः मर्बः गर्छ द्वा म न्। ए जिल्ला । यहा निर्मालयाभाम मू ধা• বুক্ষা গদান্তরাৎ।। তদাজ্যোৎ-সা সুধাজ্যোতি: সর্ব তথাদহিগত । कीरताममागरत किछ छ८ मई। विधिना छमा॥ (मवान् निर्वते भिन्न **छ।ज। स्यः गद्धा क उ॰ उठ:। उ**ट्ठा ২ন্তানি পুক্ষাল্য কলাচুণানি বা-রিখে:।। জ্যোৎ স্বাঞ্চাপ্যাত্রগামাশু श्रीदा उथा॰ गिति॰। कीताना-দিরি মাগম্য চন্দুভাগ ভদা বিধি: ।। দেব মধ্যে কলাচূর্ণ সুধাণ জ্যোৎ-মা॰ ন্যবীবিশ্ । স স্থাপ্ত গ্ৰ वुका (प्वानाः भश्य छ छ ।। कगार वाजयस्थान उर्जानामि निष्णयन । व्यक्तावाह । मर्बरा या दिवा ब्राबी সন্ধ্যাবা বনিতারতঃ ৷৷ সেবতে সু त उ॰ उमिन् त्राजयस्यन् विमयाना প্রভিশ্যাণ খাস কাস যুক্তো যোগৈ থুন চরে । স তে পুবেশ্য: সতত শ্বেমণশ্চ তথা বিষ:।। কৃষ্ণাখ্যা মৃ जू १ जो या खरवः मम्भी खेतः। मा **७ ८% ভा**र्या मञ्जू छन्छ मनूया

नाजि॥ की जिल्ला खातः क्षा छक স্তু॰ বিষয়ে হৃক্ . হৃত গছ যথা কান• हान्यु दः विमूर्था छव ॥ मार्कर ७व উবাচ। এব॰ বিস্পৃষ্টা বিশ্বনা রাজ-**ৰক্ষা মহাগদ:। পশ্যতা** সৰ্বদে-वाना मछक्षान कगाम ह।। अछहिंछ মহারোগে বৃদ্ধ। লোকপিভামহ:। **ठन्यः गम्यामाम कलाभक्ष्रीण**ः षि उ॰ ॥ (छन कीद्राम्स्योर्छन मुक्षा भूरगन वाजाज्य मरब्राष्ट्रीय कवा-ष्ट्रेन: পूर्व वहाकरताहिथु ।। म वाफ-भक्ना भूर्नः भूईविषया यमा । ठन्तु छन्। **नर्व**त्त्वा मूम्नू छन्। हर्म नार ॥ वय हन्तु उरा भूर्गः भूरिशः ত্য পিতানহ। উবাচেদ সুরসদে। मध्रमा नाजिङ्घिजः ॥ साम्छेवाः চ। न इनि भूबंत्षुक्षन् माती द्व মন বৰ্ত্ততে। ন বীৰ্য্যণ বা তথোৎ সা হে। বিসীদন্ত্যক সন্ধয়:।। নেৎে স হে পূর্বছে টা॰ বিধাতু॰ সুভরামহ।। চেষ্টাহীন স্তৃন্দিন কর্ত্তেন কেন লো कर्ट ॥ वृत्यावार L गुष्ठमः यञ्चना (भाम यन ज्यक् मक्यः। भूवं विणी র্ণা ভবত স্তৎ পূর্ণ মভবর্ম হি।। অধু-না ভনতো দেই চূর্ণ নিঃসারিত। মথা। শরীরাৎ সামৃত জ্যোৎসা অজमा ताजग्याः ।। (३वाः भ्या-

লন ষিধৌ লবশো যৎ স্থিত জলে। জ্যেৎ নাথান্চ সুধায়ান্চ তেন হী त्ना क्वान्यज्ः।। उत्जा २व मक्तया রাজ ন্তব সীদন্তি সাম্পুত । অত্যো भाय दिवाम्याभि यथा नार्डि व-ভেন্দবান্ ৷৷ প্রাক্তাপত্যঃ পুরোডা भा इवनीयः भूरता १पृरत । अनु छ তোনু চাণ্নেয়: পুদেয়: সর্বতঃ ক্রতৌ ॥ ততোনু ভবতো ভাগঃ পুরোডা-শো নথা কৃতঃ। তেন ভাগেন ভুক্তেন निज्य यद्धन्त्व हि ॥ भूर्ववरत्न मग्रू मारः सान वीर्याः खिवराजि । या महाम् अक्ना (खार्य क्लीरवाद मा श्रिठा खर ॥ भादीत हुर्गः वायएख **ब्ह्यार कामि य क्याः। वृद्धिः** যান্যন্তি সতত ক্রীরসাগর মধ্য গাঃ॥ স্বারোচিষে হন্তরে প্রাপ্তে দি তীযে শঙ্করা শঙ্কঃ ৷ দুর্বাসা ভবিতা বিপু: পুচণ্ড শ্চণ্ড ভাম্বর: ॥ স ম-(रुन्पुन्र) विनया भाभ मञ्जा मुहा ৰণ । করিষ্যতি ত্রিভুবণ নি: 🖺 ক সসুরাসুর ।! শ্রিয়া হীনে ভতো লো-क ভবিতা লোকবিপ্লব:। यथा তব क्षया भाग शुक्रका लाकविश्लवः ॥ जमान्य भूभारान ज्जीरा ज् क्रि यूर्ण। ভবিষ্ঠতি স্থাস্থতি চ্যাব্দ্ গ চতুষ্ট্রণ ॥ তত শচতুর্থে সম্পাণ্ডে

मरु (मर्टेव: कृष्ठ यूर्ण) क्वीद्राप्त• नि-र्मा थियागः भाग्न विंध् द्रष्ट् ख्या ॥ মস্থান মানরে হৃত্বা সর্পরাজ ত-था मुक । यद्धकारमयू श्रीतयू पर-বালার্থণ ব্যণ ভতঃ ৷৷ মথিষ্যানঃ मयः (मरेवः कीरतामः मह मानरेवः। प्ट मतीताम् किम वट्डि उ की-त्रनागत्त्र । তৎ भूमण्ड गुरुषिरास्मा त्राभी ज्**ड• ७था क्रय•ा म**रहा यिथ्ऽ-खरत कृषा ष्ट भन्नीतः छना वयः । क्ष्युत्रामः मागत्रक्रत्म भन्नीत्रार्थः বিধোত্তব ৷৷ নির্মাথ্য সাগর• পশ্চাৎ अभूषार्य) यहाभूछ । उहा छव वशू ন্ত্রিমপূর্ব সম্ভবিষ্যতি ॥ ওজো वीर्याः मुक् कान्त भक्षात्र मुशाजा-ক•া দৃঢাঙ্গ সন্ধিক• চাৰু ভবিষ্য**তি** বপু স্তব ।। মার্ক্নণ্ডেয় উবাচ । সু-খাণ্ডাৰ মাভাৰ্য বুকা লোক পিতানহঃ। বিধোঃ ক্যায মাসা-र्षः वृष्याय यञ्जनामञ्दा यथा मानन गिन्छ॰ माजार्ष्वः या ज् हन्द्रमाः ॥ क्रय॰ वृक्षिक मानार्खं यदः उवा-করোদ্বিখিঃ।। যতঃ বোডশব। চন্দু• मूद्रान्त्राक्षा विভক्तवान् । विভক্त চ সুরান্ সর্ধান্ সমুবাচেদ মাভুত ॥ कनाः (याउन हन्द्रम् उदिका मञ्ज मूर्खाने । তিট্ডাদ্যাবধি পরা: क्य•े

शास क्रय विना। क्रयण यंति (दा-(गन मानार्खः एक वाक्र उः। क्रयाय পীড্যতে চন্দ্রে। নোপশান্তি: সদা ভবেৎ ॥ কিন্তুস্য যা কলা শন্তৌ জ্যোৎস্না গছন্ত তা॰ পুতি। চতুর্নশ কলা সংস্থাঃ পুতিমাসং সুরোত্তমাঃ য় চতুর্দ**শকলা স**ংস্থান্যমৃতানি পি-বস্ত বৈ। পুতিপত্তিথি মারভ্য ভবস্ত ख्वावजूर्नमी ।। (उक्ताजागाः म्यंऽ-বিষণ চতুৰ্দশভিথৌ ক্ৰমাৎ। পুবিশ ख क्रय (पुव क्षशक्त विरधा र्जद ।। याञ् भाषा कलाम् म इद्वि शाख পলাযিতা। তিগুতু পুথমে ভাগে তিথৌ ভস্যা• নিশাপতে: ৷৷ দ্বিতীযে দর্শভাগে ভুরোহিণ্যা যাতু মন্দির । ত্তীযে তু সরস্বত্যা॰ দ্বাত্বা সন্ধু-ক্ষিতে। বিধু: । চতুর্থে বল সংপূর্ণ স্তিথিভাগে বিভাবসো: ॥ মণ্ডল• याञ् हत्सुायः गविश्व त्रथ धार्वेकः । याद कालन हि कला भूथमा क्रय माञ्जूयाद्या এव निवः कृषः शाक हा-বৎস্থ। পুতিপৎ ভবেৎ। দ্বিতীয়। प्तो कृष्ण पाक वृष्ति वृश्वि ख्रा न खथा विशः ॥ তিথীনা॰ বৃদ্ধি হেতু क मुद्र कृष्क তথা ভবেং। उडः भूनः मृत्रभक्षा यावर भूवी करनामिछ। ॥ वृश्वि বৈতি ভবেত্তাব্ৎ পুতিপভিথি রা

দিত:। ততো ঘিতীয ভাগদ্য বা জ্যোৎসা হরমূর্দ্ধনি ॥ স্থিতাযা॰ বৈ কলাযান্ত গতা সা পুর্ব রেষ্যতি। যুখ্মাভিস্ত ভবেৎ পেয় মমৃত যদি-নে দিনে ৷৷ তদ্দি তীয়াদি তিথিভিঃ পূর্ণান্তাভিঃ সদৈব হি। স্বযমূৎপৎ-স্যতে চন্দ্রো জ্যোৎস্না যোগাৎ সু-রোত্তনাঃ ৷৷ যথা দিনে দিনে ভাগাঃ क्रयः याञ्चि ७था विष्याः । वृष्तिः गह्छ। नुस्ति • भृक्षभाक्ष २ ५ ३ • भृदाः ৷ তেজোভাগ: স্থ্য বিশ্বাৎ পুন রেব সমেষ্যতি । পুराস্যতি কৃঞ্পক্ষে যথা ভাগক্রন্তথা। জ্যেৎসা হ-त्रिकात्र भागार भुजार भून (त्रा তি। তেজোভাগঃ সুর্য্যবিদ্বাদমূত॰ বৎস্যতে শ্বर ॥ এব বৃদ্ধিঃ শুক্রপ-ক্ষে সুধাংশোঃ স•ভবিষ্যতি ৷ পক্ষ-(गाः मुक्त कृष्णवः हन्तृवृष्ति क्या छ-(वट्या याव्ट्कात्वन (या जागः क्यः বৃজ্ঞিঞ্ যাস্য**তি। তাবৎকাল মভি**-ব্যাপ্য তিথি: স্থাস্যতি সা পুন: II চিরেণ বৃদ্ধি যদি বা ক্ষ্যো বা জ্ঞেন ৃদ্ধি যদি বা ক্ষ্যোবা। জতাত্তিথী-ना ज्ञाना क्रयः महाहिताल वृच्चि স্থিতিয় পুরেশে ॥ **হ**ব্য: কব্যঞ্চ-ल्मुन विना न, म•छ विवऽ छि। उमाए **उत्याः भुव्कार्थः हन्तुः त्रक्वन्तुः (५व-**

काः ॥ काश्वामनीयः मुजुाः मृः कना শেষে। মুমাসত:। অমাবাস্যাপরা হেত্ নিত্রী রোহিণী গৃহে ॥ छरेम। वाद्यानार कवा वृद्धि या স্যুক্তি চানুহ• ৷ তেন কব্যে**ন পি**-ভর্ তৃপ্তি যাস্যতি বৈ পরা ।। 🕮 মার্কণ্ডেম উবাচ। ততঃ সুর্গণাঃ अर्ब यर्थाकः विविना उथा। ठक् र्लाक्डिजार्थान छन्नु इक्यवृक्तरा ামহালেলেলি চন্দার্জ স্বরূপ প द्रवाचानः । अगुन्ह परते विधिना শির্মভূচিকো ভূশণা ধরের: প-ब्रगः निष्ठा ग्रज यदाय : क्या ।। ख्य ब्रुक्षा मज्जूकलाः भाभउस क्रयः গভা: ৷৷ পুবিশস্তি যদা জ্যোতি রা-নন্দ নজর পর । যোগিনান্ত তদা তেষা॰ চিত্ত• তল্লীন মেষ্যতি ॥ ম-शास्य भितः मः एक नीत्म हिट्छ पृथाः নিধৌ। চন্দুদারাভবেমুক্তি রিত্যেব॰ বৈদিকী শু.ভিঃ।। এতজ্জ্ঞাত্বা নহা-**(वि: क्य**यवृ**क्ष्य) विनाक्**छ । हिडाय সরলোকানা জগুছে শিরসাবিধু ॥ ठलु (ब्राट्या नवारयागारतायर्था यां छ वृद्धाय । माद्वी यथीय वृद्धामू পুবর্ত্তে ত্তো হব্রঃ: ॥ অপ্রেষু পুर्द विष्यान् यान् जागा खानवजाः । भंतिगृह डि शिउत्र खथा कव्यानि

ভূরি চ'।। অমৃত বুন্ধণা মৃষ্ট যদে-বেভ্যঃ পুরাতন । তেন তৃপ্যস্তি হীনা যে হব্যভাগেন দৈৰতা: ॥ यरद्धनाभागियं उह द्वार माजि व्कि स्मि दि । यक्क क्ष्रारम्। विना ज्उ छह महाद कीन मन्त्रा ॥ वाला १म् उमा यक्तमा हन्तुमाः का-রণ॰ ব্বব॰। অতো ২স্য দক্ষশাপাত্তু त्रकारेंग उहिकीर्षिड ॥ अम्यानि क्षभाक्ति मुद्दा मः भीया मूदिः। তের: সূর্য্য যাতি শস্ত্রে৷ শ্চন্দুার্দ্ধণ জ্যোৎস্নিকা তথা।। পুনশ্চ শুক্লপ-क्षि जुल्पारापि किना उठ: 1 জ্যোৎ দ্ব। দ্বিতীযো ভাগস্ত তেজো ভাগো विजीयकः ॥ অনে गुर्गुनि-त्र कन्मु १ मूर्य। विश्वाष्यश क्रम । कः লাঃ যোডশ চন্দ্রস্য ভবৈকা শস্ত্র-শেখরে ।। সিতাসিতাবৃভৌ পক্ষৌ **भियागा मूम्यक्या । इ** विवः अर्बः মাখ্যাত বিভক্ত कन्मुमा यथा।। বৃ-হ্মণাপর্বত শুেষ্টে তথা তচন্দু ভাগতঃ । যজ্ঞভাগে স্থিতে যমাদেবার্থ ম-করোদ্বিধু । কব্যে হিতেপি পিত্রর্থ তিथि वृक्षि क्रायो यथा। इन शृग्र-ত্রাখ্যান য: শৃণোতি শক্ষর: ।৷ রাজযক্ষা ভস্য হলে ন কদাচিচ্ছ-বিষ্যতি। যক্ষণা পরিভূতো यः শ্- ণোতি বচন বিধে:। ন চিরাৎ য স্থান মুক্ত: স ভবেষরসভ্যা:। ইদ স্বস্থন পুণ্য গুছাৎ গুছাতর পর ।। য: শ্ণোত্যেকচিত্ত: সন্ স মহাপুণ্যভাগ্যবেৎ । ইতি কা-লিকাপুরাণে ২১ অধ্যায:॥

রাজযোগ্য: ত্রি রাজার্ছ:। নৃপোচিত:। যথা। ত্রিকোণ কণ্টকে সৌম্যে পাপে চোপচযস্থিতে। রাজযোগ্যা ভাবেয়ারী সুন্দরী ফলবজিনী॥ ইতি জাতকামৃত•॥

রাজরঙ্গ লী রজত। ইতি শব্দ-রত্নাবলী।।

রাজরাজ: পৃ• অবের:।ইত্যমর:॥ সার্বভৌম:॥ সুধাকর:। ইতি মেদিনী॥

त्राकतीिः जी शिखनिविष्यः।

ठ शर्यायः। शाक छुछी २ त्राजशूणी ० महत्र्यती ८ तुक्काणी ६ तुक्कात्रीिकः ७ कशिन। १ शिक्रना ৮।

द्रान्त छणाः। ठिळ द्रः। शीखनद्रः।
। नवणद्रः। ष्माथनद्रः। शाख्र वाळ
किमि श्लीक् शिख नाणिष्यः।

केठि ताक्रमिर्यकः।

রাজবিঃ পু॰ খতপর্ণাদিরাজঃ।ইতি জিকাণ্ডশেষঃ॥ তস্যমারণ কলি নাশনং। যথা। কর্কোটকস্যনাগস্য मभयखा नलमा है। का जिल्ला की जिल्ला कार्य: कीर्जन कि जिल्ला महाजात्रकः ॥

त्राजनस्याँ शृ• यूबिटिः। ইভি धनक्षयकायः॥

রাজলম্বী: স্ত্রী রাজশ্রী:। যথা।
নত্র পুভাব নিপুণ: পুমদা বিলান: শ্বেভাতপত্র নূপ পুজিত দেশ
লাভ:। হস্ত্যেলাভ ধনপূর্ণ মনোরথ: স্যাৎ শৌকীদশা ভবতি নিশ্বল রাজনম্বী:।। ইতি স্ক্যোতিষ্তত্ত্বুং।।

রাজবংশ্য ত্রি রাজবংশোন্ডবঃ। তৎপর্য্যায়ঃ। রাজবীজী ২। ইত্য-মরঃ॥

ताकवर्षा क्री ताक्षणथः। उर्श्वर्णाः
यः। वर्षाणथः र मःमत्राः ७ क्रीः
णथः ४ डेशनिङ्गाः ६ डेशनिङ्गः
७ महाणथः १। ইতি হেমচन्दः ॥
ताक्षवणा क्री जन्दणा। गक्षणाः
माणिया ইভি ভाषा। ইত্যমतः॥
ताक्षवल्लाः शुः ताक्षामनी॥ ताः
कामः॥ त्राक्षवम्तः। ইভি ताक्षः
निधाः। नात्रायगमामकवित्राक्ष
क्र मृद्युख्गृष्ट्रविष्ट्रसः
क्रिनात्रायगमामन क्रितारकन क्रिनात्रायगमामन

ক্ষা রাজবল্লভঃ।। ইতি তস্য দি তীবদ্যোকঃ।। নৃপপ্রিয়ে ত্রি॥ রাজবল্লী জ্রী তোষবল্লী। উচ্যা ইতি ভাষা। ইতি রল্পালা।। রাজবান্ ত্রি রাজ্যাত্রযুক্তদেশঃ। বর্থা। সুরাজ্জিদেশে রাজস্বান্ স্যা ভক্তা ২ন্যত্র রাজবান্। ইত্যমরঃ।। রাজবাহঃ পুণ ঘোটকঃ। ইতি শ্বন্

त्राज्ञवाणः श्रुः त्राज्ञवारुकरुती।
जर्भग्रायः। जेशवाशः २ । देनि
क्वित्रम्यः॥ त्रिज्ञयन्नक्षतः २ । देनि
जित्राक्षणयः॥ त्राज्ञवरुनीय वि॥
त्राज्ञविक्षणि वि त्राज्ञवरुनीय देने।
न्यतः॥

রাজন্ক: পু॰ আরগ্ধনৃক্ষ:।ইত্য-মর:।। শিশালনৃক্ষ:।ইতি মেদি-নী ।। লঙ্কাস্থানিক্ষ:। লঙ্কাসিজ্ ইতি ভাষা।ইতি শব্দেশ্কা॥ রাজশণ: পু॰ পউ:। পাট্ইতি ভাষা।ইতি শব্দালা॥

রাজশকর: পু• ইল্লিশমৎস্য:। ইতি হারাবলী।।

बाक्षणा खी बाज्ञः भयनीय । তৎ পर्यायः। महाभया २। इंडि ह्याहन्त्रः ॥ बाक्षणांकः पु॰ वाख्रः। ইভিद्रां निर्घण्डः ॥

রাজশুর: পৃণ পক্ষিবিশেষ:।রাণ জশুগা ইতি ছিন্দীভাষা। তৎ-পর্য্যায:। প্রাক্তঃ ২ শতপঞ্ ৩ নূপপুর:৪।ইতি রাজনির্ঘণ্ট:॥ রাজশৃষণ ক্লী রাজত্বণ। তৎপ-র্য্যায:। কনকদগুরুণ ২।ইতি ত্রি-কাপুশেষ:॥

রাজশৃক্ষঃ পু॰ মদ্গুরমৎস্য:। ইতি হেমচন্দু:।।

রাজসঃ ত্রি রজোগুণোন্ডবঃ। ত-ল্লকণ যথা। আরম্ভক্তিত। হথৈ-র্য্য মসৎকার্য্য পরিগুহঃ। বিষযো-পদেবা চাজসু• রাজস• গুণ লক্ষণ• ॥ ञातञ्जकिछा कवार्थ कर्या-नुधानणीनजा ॥ 🗱 ॥ म॰ व्यापन खन्नका॰ यथा। यिना त्रिन् कर्माना লোকে খ্যাতি নিছতি পৃষ্ণা। নচ শোচভ্যসম্পত্তৌ তদ্বিজ্ঞেয়স্ত वाक्रमः ॥ 🗱 ॥ उधानु जि र्यथा। (प्रवच् नाष्ट्रिका याखि मन्य) वृक्ष রাজসা: ৷ ভির্য্যক্ত্বণ তামসা নিত্য মিত্যেষা ত্রিবিধা গভি: ॥ 🗱 ॥ ভদ্গভিপুকারা যথা। ঝল্লা নল্লা निर्वे श्री निष्य वृद्धयः। म्। ज्ञानभू मञ्जाक ज्ञान। द्राज-नी गिंडः।। द्राजानः ऋविवादेश्य

রাক্তলৈব পরোহিতা:। বাদ মুদ্ধ **পু**शानाक संधुमा बाह्मीगंजिः॥ गञ्जर्बा एक का यक्ता विवृधान्ठवान्ठ বে। তথিবাপ্লরস: সর্বা রাজসীয্ ন্তনা গভিঃ।। ইতি মানবে ২২ অ-थ्यायः ॥ #॥ ताक्ष्माशाता यथा। क টুন্ন লবণাভূঞে তীক্ষ ৰূক্ষ বিদাহি नः। আহারা রাজসসে। छ। मृःथ यथा। यि जिनकाय जू कन • मञ्जार्थ মলি চৈব যং। ইন্ধ্যতে ভরতশেষ্ঠ ত বক্ত বিদ্ধি রাজসা । া#ারাজ সতপো यथा। সৎকার মান প্রা র্থণ তপে। দল্পেন চৈব যৎ। ক্রিয়-তে তদিহ পোক্ত রাজস চলম-धुतः॥ #॥ ताजननानः यथा। यखु পুত্রপকারার্থ কল মুদ্দিশ্য বা श्रुनः। मीयर ७ ह भद्रिक्षिष्ठेः उपरानः রাজসং স্তং॥ ইতি জ্রীভগবদ্নী **ভाষা: ১१ अव्याय: ॥ 🕸 ॥ जाङ्म** छ्याभा यथा। मृत्य विराज्य स्ट कर्म का विद्वाभ खरा ८ उ। ज कृद्धा द्वाज्ञमः जागः देनव जाग क ল লভেৎ দক্ষা রাজস জ্ঞান বথা । পৃথকেন তু যজ্জান নান। ভা वान् পृषियवान् । विजि मर्द्वयु छू-তেষু তজ্জ্ঞান বিদ্ধি রাজসং॥।।।।।

त्राजनकर्म यथा। यजु कारस प्रमुक्त কর্ম সাহস্কারেণ বা পুনরী ক্রিয়তে বহুলায়াস: তদুাজস বুদাল্ড 🙃 🗱 🛚 রাজস কর্ত্তা ক্থা 🔻 🦓 কর্ত্ত ফলপুেপ্সু লুন্ধাে হিং 🛶 🦠 २ण्डि:। इर्याणाकारि 🗀 कर्ला छा-क्रमः পরিকীর্ত্তি ५:॥ वृक्ति र्यथा। यया थर्म ः स्पंतः का-र्याकार्ये (यव ह । व्यरणायः পুজানাতি বৃদ্ধি: সা পার্থ রাজসী १। 🗱 ।। রাজসীধ্তি यंथा । गया जू ধর্মকানার্থান্ ধৃত্যা ধার্যতে হজু न। भुमाञ्चन कनाकाएकी धृष्ठिः मा भार्थ द्राङमी ॥ 🗱 ॥ द्राङम मूथ यथा । विषयिन्तिवमःया-গাৎ যত্তদগু ২মৃভোপম। প-तिगाम विषमिव ७९ मूथ[•] बाज-স• সৃত•।। ইতি প্রীভগন্নীতাযা• २४ व्यव्धायः ॥ # ॥ द्राजनश्रा-गानि यथा । नुका ७ वुका देवदर्छ॰ मार्काप्थमः ल्टेबर ह । ভবिষ্যः বा-মন ব্রাহ্ম রাজসানি নিবোধত ॥ * । রাজসমূতবো যথা। চ্যাব-नः या ऋवज्ञाञ्च ज्ञात्वाः माक्रास्य व **ह । का** छ्रायन रेवक्षवक्ष द्वाक्रमाः স্বৰ্গদা নতাঃ ॥ ইকি 'লাঘোত্তর-श्राध ६० ज्यायः ॥

क्षान्य विशेषः २ । इन्छापतः ॥ स्थान्यवः २ त्र्याप्यः ८ । इन्छि विशेष्याः ॥ उत्स्वतः यथा । विशेष्याः ॥ उत्स्वतः य्वत्याः । विशेष्यः ॥ १९ । विष्ट्रसः विशेष्यः ॥ १९ । विष्ट्रसः विशेष्यः ॥ १९ । विष्ट्रसः विशेष्यः ॥ १९ । विष्ट्रसः

রাজসভা জী রাজ্ঞ:সভা। নৃপতি-সনাজ:। ইত্যমর:॥

রাজসর্প: পু॰ সর্গবিশেষ:। তৎ-পর্য্যায:। ভূজস্বভোজী ২। ইতি হেনচন্দু:।।

রাজসর্যগং পূ সর্যপবিশেষ: 1
রাজসর্যা ইতি ভাষা। রাই ইতি
কেচিৎ। তৎপর্য্যায়:। কৃষ্ণিকা ২
রাজকা ৩ সূরী ৪ মুগ্তক: ৫। মুগ্তক
ইত্যর ব্যপ্তক ইতি বা পাঠ:। ইতি
রয়মালা।। ক্ষব: ৬। ফ্ তাভিজনন: ৭। ফ্ তাভিজনন ইত্যর ক্ষ্যাভিজনন ইতি যা পাঠ:। ইতি
হেমচন্দ্র:। কৃষ্ণা ৮ ভিক্ষিকলা ৯
রাজী ১০ কৃষ্ণসর্যপাথ্যা ১১। অস্য
ভণা:। তিজন্ব:। কটুন্ত:। উকত্তা।
বাত শ্লা ভন্ম ক্তু স্বাহ্ন বাশি
ত্র দাহ প্রস্থা ইতি

द्राक्रनिर्घणः॥

রাজসাযুক্ত্য ক্লী রাজত্ব। স্যাদ্রন্ধ ভ্যাত্রন্ধত্ব বুন্ধসাযুজ্য মিত্যাল। দেবভ্যাদিক তদ্দিত্যসর দর্শ-নাৎ ।।

রাজসারস: পু॰ ন্যুরঃ। ইতি শব-মালা॥

ब्राजनी खी मुर्गा। इंडि मेस्त्रज्ञा-वनी॥ ब्रह्माच्यमचिक्तनी ह॥

ताकम्यः भू ताककर्खवायछ्वि-(भयः। ७९ भर्यायः। नृभाध्वतः २ कञ्ताकः ० कञ्छमः ८। ইडि भद्रज्ञावनी।।

রাজস্বন্ধ: পু॰ ঘোটক:। ইতি ত্রি-কাণ্ডশেষ:।।

রাজম্ব পু॰ ক্লী রাজধন•। রাজ-কর:।ইভি লোকপুসিজ্ব ॥

রাজমর্ণঃ পূ॰ রাজধুসূরক:। ইভি রাজনির্ঘণ্ট:॥

রাজহ সঃ পু॰ চঞ্চরণলোহিত শ্বেত্বর্ণহ সং । ইত্যমরঃ ॥ কদস্বঃ ॥ কলহ সঃ ॥ নৃপোত্তমঃ । ইতি মেদিনী ॥

রাজছর্যণ ল্লী তগরপুল্ল । ইতি রাজনির্যুক্তঃ॥

রাজহন্ত্রী পু॰ রাজগল্ঞ:। তৎপ-য্যান্য:। মারীচঃ ২ যাজকগল্ঞ: ১ माराष्ट्रकाः १। ইতি हात्रावनी ॥

त्राज्ञहामकः भू॰ म्यून्याविष्यः।

उर्यागः। काउतः २ काउनः

उताकीवः १। ইতি শধ্রত্বাবলী॥

त्राज्ञक्वकः भू॰ मर्यशः। ইতি ক্লাজ্ঞ-

निचलैः॥ वाका भुः भुजुः॥ गृशिजः॥ ऋविगः ॥ हन्दुः ॥ यक्तः ॥ इन्दुः । इंडि त्य-मिनी ॥ उखत्रभाम हिन् (मुक्रार्थ) वाहकः ॥ व्ययं नृभाउः भवतायः। वादे २ भार्थिवः ७ ऋाज् ९ ९ न्शः ৫ ज्यः ७ म्होकि ६ १। ইত্যমর:।। নরপতি: ৮ পার্থ: ১ न्পिंडः २० ज्भावः २२ ज्जूर २२ मरीপिङ: ১० नाजि: ১८ नात्राहे २० ज्मीन्द्रः २७ नहत्तुः २१ नाय-কাধিপঃ ১৮। ইতি শব্রহাবলী পুজেশ্বরঃ ২৯ ভূমিশঃ ২০ ইনঃ २) मखब्रः २२ व्यवनीमिजः २० कनाः २८ ककः २० ज्जूक् २७ व्यर्थनिः २१ । इंडि क्रोध्यः ॥ 🕸 ॥ अमार्वा८भन्डि यंथा। म হতা রাজরাজ্যেন পৃথু বৈণ্যঃ পুতাপবান্। সোভিবিক্তো নহা **७**का विविवसर्याकावितः ॥ शि ত্রাপরঞ্জিতা ওস্য প্রজা ভেনানু রজিতা:। সন্রাগাভত স্থস্য

নাম রাজেত্যভাষত ।। ইতি বিঞু भुद्रात > व्याप्त : ३ वेशावः ॥ অপিচ। রাগী রাজসিণ্ড স্বর্গ্ড প্রকৃতি কর্ম রাগতঃঃ রাগাখাতে ब्राजनिका एउन ब्राजा भुकीर्खिङः া। ইতি বুন্ধবৈবর্ত্তে গণপতিখন্ডে oc व्यथायः ॥ क्रिक्टिम् अङ्गानि-ত্র यथा। महुर्योष्टे। मृत् वर्ज মহারাজ হে তাত ভবভঞ্জন।। ভ-ৰবাভাচ রাজাচ সর্বোণ পালক: भिजा ॥ <u>ज</u>ुडे 🎒 क मरहानु। १५४ द्वक प्रार्भ नृत्या २थुना। (या द्राष्ट्रा अ পিতা পাতা পুজানা নেষ নিক্ষয়ঃ ॥ ইতি বুন্ধবৈবর্ত্তে 🗐 কৃষ্ণজন্ম থণ্ডে ৫৯ व्यथायः ॥ 🗱 ॥ भृत्याद्मवात्नो রাজা ইতি সংজ্ঞাতাাসীৎ। যথা। দেবৈ বি পুৈ স্তথা সবৈ রভিবিক্তো गश्मनाः। त्राद्धारेकवाधिकात्त्र देव भृथ रेर्नगुः भुजाभवान्।। उरा भिजा भुकाः गर्बाः करारिनवानुत्रक्षिजाः। তেनानुत्रिक्षिणाः मर्ताः मूरिथ मू मू मि-রে তদা ॥ অনুরাগান্তস্য বীরস্য নাম রাজেত্যভাষত। ইতি পাংঘ্র-ज्था ३२ जवायः ॥ ३ ॥ व्यव রাজলক্ষণ । সো ২পক্ষে পটে दान मृक्षाकी दिव शीक्ष्र । नदिन्तु-লক্ষণোপেত্র- চিভামাপ নরেশ্বর:।।

त्रतात्र के किया किया **छ॰ मूक्त त्रमाऽ**। क्रम्यमः। बीचाः किनाः व्यक्ति। क अबा बीर्श खालिजाः॥ बाजीः त्रत्रवृग्यत्ये विकाले शूरे माव्उः । वक्का के कार्य के की बारमा नीर्य-প্রভূতির ৪ চত্রেশকেরে। **মাস্য** यत्रवर्तिकृषाः ।। भितानभारम পদ্রার: সূত্রত্ত ত্রিবলীধর: ॥ इंडि बार्क्ट मुद्रात इदिक्टल्ला-भरव्यानाय्यायः॥ ऋ॥ अन्यह । अ-(अमित्नो मृन् अत्रो कम् जामत्रम् म (छो । श्लिक्षाक्रजी ठाजुनस्थी भारा-व्स्को निद्धाञ्चित्वो ॥ कृत्यामञ्ज गृष्डको मूनाको न्नाउः गृरो ॥ म्पूरवामा समाङ्गा ७था कतिकतः भुं छ। । छेत्रदा जानव खन्। नृष-স্যোপচিতাঃ স্মৃতাঃ ৷৷ জোবগুচে नृषा मीर्दि जू रेग्नम् धनव क्रिंडः । সমাভ্যা ক্ষিতিপ: প্রোক্ত: প্রুল-(यन माठावरवान्।। मानद निः माद मृबाः मु। मंत्रिमान्छ मानवाः। এक बि ত্রি চতুঃ পঞ্চ বড্গারাদিভি রেবচ॥ দক্ষিণাবৰ্চলিত শ্ভাভিশ্চন্পাঃ শ্তাঃ। নৃপাঃ পুস্লগ্রিশুকা মধু शत्क प्रतः वल ॥ भाःभवश्चिक् भूशी মান দৈছিলত্ ভূপতিঃ মৃতঃ। ार्ट मिक्ट, हो बांका नियः क

পিকটি বর: ৷৷ নৃপা শেচামতককা: मु । क्किंका विषम कक्ककाः। विषम-খ্যগতা নাজি: শ্লধারাণ করোজি হি ॥ অধো গবাট্য পর্য্যান্ত নৃপত্ত भग्नकर्गिका । अनुष्करे**छ भ**हुदूरिक**भ**ह खविख मुखगा नद्राः। निर्द्धना विषय मी रेयः भीरजाभिष्ठिक न्भाः॥ नःनात्रज्ञ क्रय मकन्नाः माःनवः भृष् । नृभानामधमानाक श्रद्रालाम শিরালক ৷৷ কদুগুীনক নৃপতি र्वरकर्ता १७७३कनः। जाबानूब-बितो वाङ् वृत्छो भीतो नृत्भश्रत ॥ মণিবল্ধৈ মিগ্টেক সুশ্লিষ্ট শুভস-क्षि जि: । नृशा होतिः केत्रहित मण-रिष र्थनविर्द्धि जाः ॥ निम्रा क्रकनरैथ স্তদ্ধদ্বণিক পরতক্ষকা:। তামৈ ভূ-भा धनाए। क जब्हें के मगरेव खर्था ।। ঘনাঙ্গলিশ্চ সধন স্তিসো রেখাশ্চ यग्र देव । नृপতে: कत्रजनगा सनि-বন্ধে সন্থিতা: ॥ শ্রাতপত্র শি-विका गजभाष्माभमा नृत्य । ऋग्रा-স্কুশ পতাকাভা মৃণলোভা নিরী-श्रद्धा पात्राजाण ग्रवाह्यानाः य-ব্রিকাভা নৃপেশ্বরে। চক্রাসি তো**-**गत्र थनुः क्छाजा नृপতেः करत ११ মা সলৈক ধনোপেতা অবকৈ র-श्रेत्र न् भाः। विस्वाभरेगण मुहिटि রে। ধৈ কক্ষেক্ষ খণ্ডিত:।। বিবর্ণ। র্থনহীনাশ্চ দন্তা: গ্রিকা ঘনা: শুক্তা: । তীক্ষা দ•ষ্ট্ৰা: সমা: শ্ৰেষ্ঠা জিস্থা। রক্তা সমা শুভা।। শ্লুক্ষা দীর্ঘাচ বি জ্ঞেযা ভালু খেত ধনেখরে। কৃষা চ পৰ্ষা বক্তুণ সমণ সৌন্যঞ্চ সণ্বৃত্তণা ভূপানা মমল শুকু বিপরীতঞ্চ দু:-থিনা । শক্তুকর্ণা চরাজানে। রোম-कर्णाः मजायुषः॥कद्राः त्रिकावनरेषा-क व्यानरियां गरेन म् भाः। जीम् ত্যু শ্চিপিটনাস ঋদ্বী ভাগ্যবতা• ভবেৎ ।। অল্লছিদ্ৰা সুপুটা চ অবক। ठ नृश्यद्व । अ॰वृरेजण्ड ललारिङ्णः क्षा उद्योज न्थाः ॥ वनारहाश-मृठा खिरम्। (त्रथाः मृतः म उवि ণা । নৃপত্ব স্যা চতস্ভি রাযু: भक्ष न छ। था ছ बाकारे**द्र: भिद्रा**-ভিস্ত নৃপ। নিম্লিরা ধনী। বডুন্নত भव्यक्ति तकः मध्यस्मी नृशः॥ ইতি গাৰুড়ে नव खी लक्ष्य नाम ५५ ज्यागः ॥ #॥ ज्ञितः भार्थित माजू वक्षाम ভृजानारिक्व नक्षन । সর্বাণি যো মহীপাল: সম্যগ্রিভ্যু श्रदीकृष्य**ः।** ताक्रुः भाष्यरङ नि ভঃ সভ্যধর্মপরায়ণ: ॥ নির্জিভ্য भारति कि जि॰ श र्या भाष थ्र । भूम भूम विश्विमाम्बह-

मः न कार्रायः ॥ मालाक्ष्यं इवासः (१) न यथाकातकात्रकः। एकी कर রন্ত ভূঞ্জীত বিক্রেডারো 🔭 প্রক্রেট भत्रत्राष्ट्रे महीभात्नां कानवारा **क्ट मृष्ट्यट् । त्वाथिकुन्त्** १७७८ ०० বাঃ ক্ষীরাথী লভতে 🔩 🔒 🥯 রাষ্ট্র নযোগেন পীড্যমান বর্ণ 🕾 । ज्यार मर्ब भुषात्रन श्विती मन् পালযেৎ ৷৷ পালকস্য ভবেড্মি: कीर्खिद्रायू थें(भा वन । अ छ। छ। वि-ফু পর্মাত্রা গো বাঙ্গণ হিতে রত:॥ পুकाः भानियजुः भकः भार्थिता যো জিতে ন্দুয:। ঐশ্বর্য মধুর পূা-প্য রাজা ধর্মে মতিঞ্জেৎ ॥ ইতি গাৰুডে১১১অধ্যায়ঃ॥ঞ্চা বুদ্ধাভি-ষিক্ত রাজানো যথা। গ্রীপরাশর উবাচ। যদাভিষিক্ত: স পৃথু: পূর্ব• রাজ্যে মৃহ্বিভি:। ততঃ ক্রমেণ রাজ্যানি দদৌ লোকপিতামহ: ॥ नक्षव गुरु विशाना वीक्षा वाना শেষত:। সোম রাজ্যে দথাদুস্না যজ্ঞানা• তপসা মপি ॥ রাজ্ঞা• বৈশ্বণ রাজ্যে জলানা বৰণ ত থা। আদিত্যানা॰ পতি॰ বিষ্ণু॰ বসুনা মথ পাবক া৷ প্রজাপতিবাং म्कड वामवः सक्ता भक्षारेत ज्याबा॰ मानवा नाथ श्रुङ्गाम सर्विशः

্ব বিভূপা পর্মরাজান যম | हारका ५ छ। यहाय । विदाय छ॰ शहकतुः। माभवागाः शकिः माने ্ৰাণীয় গৰুড় দেবানা মপি राज्य जिल्हामुदम मश्रानाः वृषः 🔻 🖟 এরা হ**পি ॥ भেষন্ত নাগরাজা**-🗝 ੵ 😘 • সি•ছ মীশ্বর• । বনস্প জীনাং রাজানং প্লক্ষ মেবাভ্যবেচ-यद्भा अव विच्छा द्राक्यानि **निभा**॰ পালাননম্বর । পুজাপতিপতি বুঁস্কা ञ्चानयामान नर्वजः॥ **পूर्वम्याः हि**-শি রাজান বৈরাজস্য পুজাপতে:। मिनानान गुरदान नूथ देव (म। **९** छुर्यहर्यः ॥ मिक्किनम् ११ कि ख्या कर्त्रमा भुनाभरतः। भूधः শল্পদ• নান রাজান• সো হভ্যবে-**ठय** ।। भिन्ठियाया॰ मिन्नि उथा র্লস: পুল মচুডে ।কেতুমন্ত মহা-আন বাজান মভিষক্তবান্। তথা হিরণ্যরোমাণ পর্জন্যস্য পুজাপ-৫তঃ ৷ উদিচ্যা॰ দিশি দুর্জ্বণ রাজান मिडिविक्यान्।। टेउ ब्रियः পृथिवी नर्वः मधन्नीमा ममखना। यथा भू (मण गप्राणि धर्मा**ड: जु**जिभानार्ड 11 এতে সর্বে পুবৃত্তন্য ছিতৌ বিফো আঁং। আরু 🗥 । বিভূতিভূত। রাজানো एकिति ग्निमछम्।। एम ভिष्मुडि

যে ২৩]তাঃ সর্বভ্তেখরা দ্বিলা তে সর্বে সর্ব ভূতস্য বিষ্ণো রণ্শা দ্বি-জোত্তম।। ইতি শ্রীবিষ্ণুপুরাণেপুথমে **२ (म २२ व्यथ्यायः ॥ अ॥ मृ** उ उवाह । এব॰ সৃষ্টাসু সর্বাসু ছাবরাসু চর।-मू ह। युक्ता करमन बाज्यानि व्याप्तना मूभठकरम ॥ विदाना वीक शारेकव नक्षजानाः गुरेहः मह । यक्तानाः তপসাধ্ধৈর সোম্ রাজ্যে হভ্যবে-**চय** ।। वृष्ट्रश्रु जिक्ष मर्रावाः प्रपादः ব্দিরসামপি। ভূগুণা মাধিপত্ত্যে চ कावाः तारका २७:(यहर् ॥ ञा-দিত্যানা পুন বিঞ্ বস্নামথ পা-वकः । भुकाभञीनाः मक्क मक्ठा মথ বাসব•া। দৈত্যানা মথ রাজান• शुङ्कामः मिजिनन्मनः । नात्रायगञ्ज माध्यानाः कृताताः वृष्ठभूकः ॥ म्-গাণা মথ শাদ্লি গৰুড পততা वब्रः। गक्तर्वाभाः हिळ्तथः नागाना मथ वामुकिः॥ गक्तानाः मङ्ब्हेश्वत ভূতানাঞ্চ শরীরিণাং। সর্বেধাং দং-ষ্ট্রিণা• শেষ• সর্পাণাঞ্চৈর ভক্ষক•।। সাগরাণা॰ नरीनाक प्रधानाः वंचि-তস্য চ। আদিত্যানা ম্ন্যুত্ম প-ৰ্জ্জন্য মভিষিক্তবান্।। সর্বাপ্পরো-गगानाक कामस्वः उथा भुड्ः। य-ज्ना मधिमाणानाः प्रिवनानाः उरेथव

ह।। भक्तानाक क्रमानाक मूर्ड जि-থি পর্বাণ। কলা কাষ্টা প্রমাণানাণ গতে র্যন্যো তথা ॥ গণিতস্যাথ যোগসঃ চক্রে সংবৎসর পুভু। পুজাপতে বিরশ্বসঃ পূর্বস্যা মাভি (यहरान् ॥ भूधः नामा मुशामानः द्राकान का कार्यक्रय । यथा नुष्क শ রাজান দক্ষিণস্যা পুজাপ-(७: ।। कर्ममग्र मञ्जाभरः भूषः द्रा-জ্যে ২ভিবিক্তবান্ ৷ পশ্চিনস্যাণ **दिनि उथा तक्रमः भू** मूख्रा।। কেতুগন্ত মহান্সান রাজান ছ ज्रायहरू । जथा ह्रिनारह्यामानः পর্জ্যন্যস্য পুরাপতে: ৷৷ দিগুত্তরা-याः পুञ्ञ ब्राजान मञ्जायहर्यः। নানুষাণা মধিপতি চক্রে বৈবয়ত मन् ॥ তৈরেব পৃথিবী **সর্বা স**প্ত-षीभा मभडना। यथा भूरमण सम्। পি ধর্মেণ পরিগৃহতে ॥ স্বাৰম্ভবে স্তার পূর্ব বুদ্ধণা তেভিবেচিতা:। ইন্দানি লোকপালাস্ত পুন বৈবিশ্ব-তে হন্তরে ॥ রাজসূবে হভিষিক্তন্ত প্থ: পূর্ব মহর্ষিভি:। মনুভি রি খিনা ভদ্বৎ সো হধিনাক: পুতাপ वान्।। ইত্যাদ্যে विङ्गभूदाण वद्राष्ट् भानूकीवनामाध्यायः ॥ 🕸 ॥ द्राक क उत्रक्षां नियशा नमान्ताना

। বৎস রাজ্ঞাভিষিত্তে । প্রভা 🚁 खन मारिजः। कखरा मिलवारस्य **यवर्यक महीज्**ञा ॥ अ^५८द्रास्त्र **धर्मणाञ्चाविद्या**ल्य ॥ दश्यनाह পরিভ্যন্ত্য সপ্তয় স্বাদিরি । তা जा तिभुखाः मासामा पार लेख विनिर्शनार्था वाल वाल वाल्यान यहक न्थनर्गाय यात उपा दाङा-भागिन के विह मंज विनिर्गना । मुक्षा मुक्षा भाग हानीयाम्या जानितः **দোৰতঃ।চরৈ দ্**রা স্তথা **শ**ত্রো রন্ধে-ইব্যা: পুষত্নতঃ।। বিশ্বাসে। নতু কর্ত্ত-ব্যো রাজ্ঞা মিত্রাত্মবদ্ধু ৷ কার্য্য যোগাদনিত্রেষু বিশ্বসীত নরাধিপঃ ॥ भानवृष्किक्षयञ्जन वाष्ट्रशा वि-দিভাত্মনা । ভবিতব্য নরেন্দ্রেণ ন কামবশবর্ত্তিনা ৷৷ প্রাগাল্মা ম-ব্রিণ কৈব ততো ভৃত্যা মহীভৃতা । (जया भानउदः भोदा विक्षाउ ততো হরিভিঃ ॥ য স্তেতানবিজি-ভৈত্ৰ বৈরিণে বিজিগীষভে ৷ সো ২জিতার। জিভাসাত্য: শত্বর্গেণ वाधारा ॥ जमार कामानयः भूवं॰ জেবা: পুএ মহীভূতা । তজ্জবে হি জয়ো রাজে: 🐣 🧿 নশ্যক্তি रैंड र्जिंड: II कोनः । अक्क एका

শত্রণো ক্তে নাশায সমহীভূতা• ।। কামপুসক নাত্মান সূত্ম দণ্ড॰ নিপর্বার্ডাভ॰। নিবর্ত্তবেত্তথা ক্রোধাদ-নু হ্রাদ • হভাতার• ৷৷ হতমৈল• তথা लाञात्रमार्यन प्रिंख ईउ । माना-पन्। युवः भूज• इठ• इर्घाट भूत्र क्षय• ।। এভি জি তৈ জিত সর্ব মৰুত্তেন महाजाना । मृद्या विवर्क्कायुप्तान् यउपनामा क महीপ्राज्ञः ॥ काक কোঁকিল ভূঞ্বাণা বক ব্যাল শি খণ্ডিনা । হণ্সানা লোহস্টানা শিক্ষেত চরিত নৃগঃ ৷৷ কাকাৎ সর্বশক্ষিতা। কোকিলাৎ, মাধুর্ঘ্য•। ज्ञाद भुभीउग अर्थानान । व-কাৎ শত্নুস্হণে একানুতা । ব্যা-वार मुक्श निर्मिष् । नियंखिन कि-ত্রতা॰ সপ্গৃহণায মুক্তা॰ রাতা-বাজ্যগোপনঞ্। হ•সস্য সার্গাহি ত্ব•। লোহস্কউাৎ সন্ধান•।।কৌশি-কস্য ক্রিয়া• সর্য্যাদ্বিপক্ষে মৃনুজেশ্ব-तः। (ठष्टाः शिभी विकानाकः कात्व ভূপঃ পুদর্শবেৎ মা কৌশিকস্য উ-ল্কস্য শত্রে কাকাবস্বন্দন । পি-পীলিকানা পেনা বহুত্ব সর্পভক্ষ-१४४ ।। एक याशि विद्यु विकास वीक (छिडे। छ भानाल: । हेन्यू मूर्या म्रक-পদ্চ নীত্যর্থে পৃথিবী ক্ষিতা।। অ- गिविद्धु निकार पूर्वार मारुः। वीकाः ग्रह्मर्थनिद्वापनः। উक्काल हन्तुः मूथरायी भी उकारन न। वव मूर्यह भी उ मूथनायी उक्काल न। वन कानानुमादिश मुथ मृथ्य माङ्ख्र ॥ বংকাৎ পদ্ম সরভ শুলিন্যা গুরিণী खनाट । भुका न्रभग हारिया उथा **म्रथान्यायिजः** ॥ वर्षकार निर्म् ণব্ব । পদ্মাৎ কণ্টকগোপন স্মি তম্থতা চ। সরভাৎ হত্বাপি শর্ন্ (नार्मुक:। यथा जत्राखाञ्चालमः भ-রোমতি নসহতে। শূলিন্যা আর্ত্তি-জ্ঞাপন । গুর্ষিণ্যা ন্তনাৎ কালে र्थामान । ह खान यादि एमोनकी ছাগশিরো দর্শবিত্বা অন্যদ্বিক্রীণা-তি॥ শক্রার্ক যম সোনানা ত-षवार्या म्हीभूजिः। जभागि भक्ष व्यवीं अशिशालनकर्गान ॥ य-(थन्द्र क्ठबुद्धा मात्रान् वारग्रो (ध-ণৈব ভূতল•। আপ্যায়য়েত্তথা লো-कान् পরিচারৈ মহীপতি:।। প-विठारेत वर्षमानामि**डिः। ना**मान-ষ্টো যথা সূর্য্য স্তোয় হরতি রশ্মি-जिः । সুযৌগবা जुरुभारयन उथा **मू**-द्धारिना नृभः॥ यथा यमः श्रियस्त्र-ষ্টো প্রাণ্ডে কালে নিয়ছতি। তথা नियानिया ताला म्हाम्रह न्या **ख्रा ॥ श्रांनम् भाषाकः यथा** প্রতিমান্ জাযতে নর:। এব॰ যত্র পুজা: সর্বা নির্ভা ভছশিবৃত ॥ মাৰুতঃ সৰ্ব ভ্তেষ্ নিশ্চ শচরতে यथा। এर॰ हरतमृत महारतः ली রামাত্যারিবন্ধুযু ॥ न লোভার্থে र्न-काञार्थि नार्थारेथं यंत्रा माननः। श-मार्थिः कृष्ठाउ धर्मान् न ताला सर्ग मृह् जि ॥ (बाजा मि भूर्या करेनः उर अथगाहिता मृहान् अथमाहिन-তামরান্। য: করোভি নিজেখর্মে স রাজা ধর্গ মৃষ্ট্তি II উৎপথ্যাহিণঃ शालिकः। दर्शयम्। न श्रीपृष्टि युग्र রাষ্ট্রে তথাশুনা:। রাজ্ঞ স্তম্য সূখা ভাত পরত্রেহ চ শাশ্বত ।। এতদা-ক্তঃপর কৃত্যে তথৈ তদ্দি কারণ। च क्ष्यं क्षिन नूगा हाला छ न सर् দ্মিভিঃা পালনেনৈব ভৃত্যানা কৃত क्: छा महीপ जिः। सगुक् भावि-তা ভাগ• ধ্যাস্যাপ্নোতি বৈ যতঃ॥ এব মাচরতে রাজা চাতুর্বর্ণস্যরক্ষ-ণৈঃ। স সুখী বিহুরত্যের শক্রস্যেতি সলোকতা•॥ ইতিমার্কপ্রেয়পুরাণে मनावानाभाधामाधाय खडोका ह ।।#।রাজাভিষেক**স্য বিহিতনক্ষ**ত্রা-শি নথা। পুষ্যানরাখা জ্যেষ্ঠা চ রো-হিণী চোত্তরা ত্রব। হস্তাখিনী রেব

তী চ নৃপাভিষেগ্ৰাভ্না: র ইঙি · **জ্যোতি:সারস**পূত্র 🕕 জস্য বিব-রণ অভিষেকশার দুইবা ৷৷ শাঃ त्राष्ठि वर्गनीयाचि यथ।। मृत्य की वि পুতাপাজা দুষ্টশান্তি নিবেদিজাঃ। थर्म भुराग मःभाग अञ्चान्ताः मनग क्रमाः ॥ शुकातालात्रिमनादिवा-(मा १तिभूतम्नाजा। 'छेमार्गा रिश्रम्। गास्रीर्यं (मोरैयायर्यंत्राम् त्रामयः ॥ हेि किविकन्ननायाः > खबर्क > স্**স্ম• ৷৷ 🗱 ৷৷ রাজান্মভক্ষণে দো-**ৰো যথা। বারাহ উবাচ। শুদ্ধা ভা-পব্তা ভূত্বা মম কর্মা পরাবণা:। বে তু ভূঞ্জন্তি রাজান্ধ লোভেন চ ভ্যেন্চ ৷৷ আপদুতা হি ভ্ঞীত রা-জাগন্ত বসুন্ধরে । দশবর্ষ সহসাণি পচ্যন্তে নরকে নরাঃ ৷৷ ভগবদ্বচন শুত্রা কম্পিতা চ বসুদ্ধরা। দিনানি সপ্তদশ চ ভয় তীবু ব্যজায়ত।। **ততো रिनामना जूदा जा मही ज॰**-শিতব্তা। উবাচ মধুর বাক্য সর্ব-(लाक्नुथावरः ॥ ध्रत्रुवाह। भृत् **ज्यालुन (म (म व इन् म्या कि व) वश्चिल**ः ৷কোনুদোষে৷ হি রাজ্ঞান্ত তন্মে ত্ব• বকু মর্হসি।। ততো ভ্ন্যা বচঃ শুত্রা नर्वधर्माविष्ण् वद्रः। भारु नाद्रायला वाकाः वर्षा भागाः वर्षाताः ॥ केवाः

इंदाह । मृगू मुक्त बि उ खुन छ ए মেতদনিন্দিতে। রাজান্নন্ত ন ভো क्तवुर भूटिं डॉगवटिंड गरा ॥ यः দ্যপ্রেম সমত্ত্বেন রাজা লোকে পুর-र्खं छ। द्वाक्रम खान्ता वाशि वर्षन् क्र्य मूनाकन ।। यश वा गहिछ তেন রাজায়ন্ত বসৃদ্ধরে । ধর্ম সন্ধা-ব্লণার্থায় ন তু নে রোচতে ভূবি। ত-**তো २न्ऽः मः भू**वक्ष्यानि उह्नुष वसू শ্বরে।। যথা রাজ্ঞান্ত ভোদ্যু বৈ **जुरिक्र जीगरेउ: मूरिज:। शा**लिया जू मा॰ प्ति विशिष्ट्रिन कर्याना ॥ थन थानऽ পুরুদ্ধানি দত্বা ভাগঘতৈ রপি ৷ সিদ্ধা ভাগইতৈ শ্চারণ মন্ পূাপণশেষক ॥ ভূঞানস্ত বরারো ছে নস পাপেন লিপ্যতে। এব॰ বিষ্ণুবচ: শুক্লা ধরণী সংশিতবুতা।। বারাছ কপিণ দেব পুত্রবাচ বরা ননা।। #।। তদমভোজনপু।यन्छः खानि ग्था। धत्रशुवातः। त्राकामसु ততো ভুকু। শৃংদা ভাগবতঃ শুচি:। কৰ্মণা কেন শৃংগ্ধ্যেত ভন্মেনুহি জনা-र्षन ।। वाजार डेवाह । मृतू उरङ्ग নে দেবি যক্ষা॰ ত্ব॰ ভীৰু ভাষসে। क्षिकाः॥ अङ्ग ठान्मु। यूग क्र्या ठश्च-कृ हुक भूकन । अर्या माइनन

रिक्कः भीषु गूक्छ किल्वार ।।

ज्कु। वि द्वाख्वामानि हेम कर्म म
भाव छ । न जरेम आभा अव स्मर् न

रज्ञाक्त वि वर्षा मम ॥ अव स्मर न

रज्ञाक्त वे वर्षा मम ॥ अव स्मर न

रज्ञाक्त वे व्यामाय यमी हिए भद्रमाः

गिकः ॥ हेज । हेज । मि वादा हि द्वामा

क्षा जिम्ह । द्वामा । वि स्मर न ।

क्षा जिम्ह । द्वामा । वे व्याम ।

क्षा जिमह । द्वामा । वे व्याम ।

क्षा जिमह । द्वामा । वे व्याम ।

वि स्मर् । वे व्याम । वे व्याम ।

वि स्मर् । वे व्याम । वे व्याम ।

वि स्मर् । वे व्याम ।

वे वि स्मर वि स्मर ।

वे वि स्मर वि स्मर ।

वि स्मर वि स्म

त्राकाउनः भू॰ भियालवृक्षः। ইতি

भक्षालाः।

त्राक्षाहन क्री क्षी दिका॥ नियाणः
॥ कि मूकः। ইতি নে हिनी॥
त्राक्षानुकी वि त्राष्ट्राणकी वी।
ठम् कर्माणि यथा। मूट्यु के विष्टाः।
यथान् वर्षि उत्र भामाना त्राष्ट्राः।
यथान् वर्षि उत्र भामाना त्राष्ट्राः।
यथान् वर्षि उत्र भामाना त्राष्ट्राः।
क्षी विना। उथा एक कथ विष्ठां मि
नियाध गहरा मना। जा द्यां मवी चानि भा वहन समा विनम्हन
। जाकि भा वहन समा विनम्हन
था वहः॥ जनक् न श्रियसमा वक्रन
वा क्रान म मि। त्राक्षा गडमा

্বক্তব্য মপিুয়া যদ্ধিত ভবেৎ ৷৷ প্রার্থ মৃস্য বক্তব্য স্বস্থে চেত্রসি ভার্গব। স্বার্থ: সূজ্ৎ ডিঃ র্বক্তব্যো ন স্বদন্ত কদাহন ॥ কার্য্যাভিঘাত: সর্বেষ রিফিডব্যঃ পুষর্ভঃ । নচ হি স্য ধন কি ঞ্লিযুক্তন চ কৰ্মা ণি ৷৷ নোপেক্ষ্যু ভাষ্যমাণঞ্চ তথা वाकः लिया ভবে । वाकः न ख्या कार्यप्र (व**न** ज्यायिक क्रिक्टि ।। রাজলীলান কর্ত্তব্যা তদ্বিছিষ্ট বিব जांय । त्राद्धः मामा १ विषका वा ন কার্য্যো বেশো বিজ্ঞানতা ॥ দ্যুতা-रियु उरेथनामा को भानक भूमणीयर । भूरमा कोणनकामा जाजानक तिस्मवदय् ॥ अञ्चःभूत्र वनाध्रदेकः क्टब्रम्टें अन्यागरेजः । मन्मर्गः न नुरक्तमुक्त विना भार्थिव मामन ॥ নিঃশ্নেহতাঞ্চাবসান পুৰত্নেন চগো-भाराय । यह एकः जतमुख्का नः ज्ञा**क भुकाम**रिष्ट् ॥ नृत्रिश मा-বিত্ত যথস্যাদ্বাচ্যাবাচ্য নৃপোত্তম । न ७९ मः भावत्यत्वाक उत्ता द्वाछः ल्या ভবে**।। याञ्चालामात्न** हा-न्याय बुद्रान्तिः। अहः কি করবাণীতি বাচ্যো রাজা বি-जानजा॰ ॥ कार्यावङ्गः विज्ञाय काया भाव उथा खत्य । मजुज । कियमारा २ स्थिन् वाघवसः तुरब्धः প্রাং।। রাজ্ঞ: প্রিয়াণি বাক্যানি ন-চাত্যর্থ· পুন: পুন: । न शामाणील-শ্চ ভবেমচাপি ভৃষ্টীমুখ: ॥ ना-তিবকা ন নির্বক্তা নচ মংসেরিক তথা। আত্ম সম্ভাবিতকৈব ন ভ-বেক কথঞ্চন ॥ দৃষ্ট্তানি নরেন্দুস্য नजू म की खंा ८ कु हिए। विद्यः नदा मलकातः ब्राड्डा मखक भावत्य ॥ 'छेनार्याम न जल्ल्य मन्द्रिय ज्जि-भिष्ट्ञ। उद्देश्याभागन कार्यः हि-वाश्रशः न कात्रायः ॥ नानिर्फिष्टे তথা দ্বারে পুবিশেত কদাচন। নচ পশ্যেত রাজান মধোগ্যাস্ চ ভূসি-যু ॥ রাজ্ঞ হিফিণে পার্শ্বে বাসে-চোপবিশেত্তথা । পুরস্তারু তথা পশ্চাদাসমন্ত বিগর্হিত ॥ জৃষ্তা নিষ্ঠীবন কাস কোপ পর্য্যন্তিকা-भूग । ज्किती वास म्यात उट म नात्भ विवज्ञत्य ।। स्यस्य न सही उ य छ ११ थरा १ म छ ११ थरा थरा ११ -ति दिव भवत्य भूत्याकत्य<u>्।। इ</u>न्य॰ নিমাল কৃষা পরা ভক্তি মুপাশ্রি-তৈ:। অনুদ্ধীবিগণৈ ভাব্য• নিত্য• त्राञ्जा ग**ञ**न्मिरेङः॥ भाठेऽ लोल्ऽ-क रिममुन्य मां खिका क्रमुं जा उथा। চাপল্যঞ্পরিত্যাজ্য নিত্য রান্ত্রা- नृजीविना ॥ भु. उन विष्ठानिदेन्न । সংযোজ্যাত্মান মাত্মনা। রাজসেবাং **७**ङ: वर्गाफ्डं(य ভूडि वर्षिनी॰ ॥ नमकार्याः मना हामा भूभ व ল্লভ মৃজ্ঞিণঃ। সচিবৈ ক্ষাস্য বি-খাসো ন তু কার্য্যঃ কথঞ্চন ।। অপৃষ্ঠ काम। न तुया काम द्वाषाख्यान দি। হিত পথ্যঞ্বচন হিতঃ সহ সুনিশ্চিত।। চিত্তপৈবাস্য বি-ক্তেয় নিভ্য মেবোপদ্বীবিনা। ভ खंबातायन क्याट हिख्डा मा नवः गूथ ॥ द्रागानदारमो हेव्यामा বিজেশৌ ভূতি মিছতা ৷ ত্যকেদৃ বি• বিরক্তন্ত রক্তো বৃত্তিন্ত কারবেৎ।। বিরক্তঃ কার্যেনাশ বিপক্ষাভূচ্য ख्या। वानादर्जन हः कृदा कननाः **শ॰** করে।তি চ ।। অকোণোপি স-কোপান্ত: পুসদোপি চ নিয়ুল:। বা-कार ममन्तर वर्षे वृज्तिहर करवा-তি চ ॥ পুদেশিবাক্য মুদিতো ন স-ञ्चावगरा १न/था। व्यात्राधनामु म बीनू मुखवह विद्वश्चेत्त ॥ कथामू দোষ ক্ষিপতি বাক্য ভঙ্গ করো তি চ। লক্ষ্যতে বিমুখৈ কৈৰ গুণ সংকীর্ত্তন কৃতে॥ দৃষ্টি ক্ষিপত্যথা ন্যত্র ক্রিয়নাণে চ কর্মণি। বিব্লক্ত লফ্ন হেতৎ শ্নুরক্তিস্য লক্ষণ ॥

দৃষ্ট্য পুসমে। ভবতি বাক্যু গৃহাতি हार्द्राट्। अभवापि श्रिशुभी अ· পু্যছতি চাসন ।। বিরক্ত দর্শনে চা**স্যরহস্যে চনশ**ঙ্কতে। জাযতে হৃষ্টবদনঃ শুদ্ধা ভস্য তু তৎ কথা। ॥ অপ্রিযাণ্যপি বাক্যানি ভদুক্তা-न्। जिनन्तर । उभागनक भृङ्गाजि खाक मभामत्राख्या।। कथास्त्र-যু মারতি পুর্প্রদন তথা। ইতি রক্তস্য কর্ত্তব্যানের বার বিশ্বলোদ্ব-হ।। আপৎসু ন ত্যজ্ঞ পূর্ব वि. রক্ত মপি সেবিত ৷৷ মিত্র নচা-পৎসু তথা চ ভৃত্যু ভ্যন্ধন্তি যে নির্গুণ মপুমেয়ণা প্রভূণ বিশেষেণ চ ७ तुक्कि जुद्रनमुथामा मद्रवृन्त्यू-ষ্ট•।। ইতি মৎস্যপুরাণে রাভধর্যো অনুজীবিবৃত্তি নাম ১৯০ অধ্যাযঃ॥ ताकारनी जी वृक्षविष्णयः। क्री. রণী ইতি ভাষা। তৎপর্য্যায়ঃ। রাজফল: ২ क्रीतवृक्तः ७ गृशक्रमः ৪ নিম্বীজ: ৫ মধুফল: ৬ কপীপ্ত: **१ भाषरवार्ड्यः ৮ की जी २ ९ इक**. ল: ১০ ভূপেষ্ঠ: ১১ রাজবল্ল ডঃ ১২ শ্কিল: ১০ দ্চক্ষর: ১৪ ক্রিনুক্রঃ २६। जन्म रूगाः। मधुत्रद्भः। शिः खनानिष् । खक्षः। छर्भगद्गः। वृष्युवः । (ङ्रोज्यक्रवः । श्रुप्रदः ।

जूजिकद् । (महनाशिद्ध । हैि जाननिर्वा । स्वीतिकायाः कन व्या वना विद्य । स्वीतिकास्क । ज्या मूही मह जुङि क्य (मायवयामुहित ॥ हैि जानसुद्राणः॥

बाजामः क्ली अमुर्ग्स एवणानि-विष्णयः। छ शर्यश्रायः। नृशामः २ ब्राजारं ७ नीर्यम् कवः ८ थान्य स्थः त बाजधान्यः ७ बार्जारे १ नीर्य-कृतकः ४ । अम्य छ गाः। जिस्स्य स्थः। मृत्रिकाः। मध्य प्रः। मध्य प्रः। मध्य प्रः। मध्य प्रः। मध्य प्रः। मध्य प्रः। विष्ण विर्णे वृष्णि र प्रथः। दे । व्राज्या मिक छ कः । का निर्यक्तिः।। बाज सामिक छ कः । छ छ । जन्मित्य भूषाय कि छ बाजन् स्थः प्रकृति द्वाः।

 লারামুণ ত্বরণ স্বাদু বিষদণ শীত-লণ গুৰু ।। গুাহি কক্ষণ বিবন্ধাথ্য-বাতকৃৎ কফ পিক্তনুৎ । ইতি ভাবপুকাশ:।।

রাজাম: পু• অমুবেডস: ৷ ইডি রাজনিষ্ট: ৷৷

द्राजार्कः भू॰ स्थलार्क्कः। माना व्याकनत् इति जाय। उद्भर्गायः १ तम्कः २ व्यकः २ मनतादः ८ गग-क्रमकः ६ काष्ठीनः ७ मनाभूझः १। इति द्राजनिर्यणेः ॥ व्यन्तः ৮ भूजाभमः २। इति मनद्रद्रावनी॥ द्राजार्शः की व्यक्षः। द्राज्याणः वि। इति मनिनी।।

त्राकार्श की कष्ः। ইতি রাজ-

बाजानातः जी यान्ज्यी। मिठीनाउँ इंडि ভाषा। उৎপर्यायः।
महाज्यीर मध्यानात्नी २ भाकानात्रः ८ ज्यकः ८ ज्यानात्नी १ भाकानात्नी १ भिष्ठज्यी ५। ज्याः कन
ख्याः। त्याज्यः। कक शिख इत्रवः।
खक्षक्ष। इंडि महनवितामः॥

ताबाजूकः भू मशकन्तः। ইতি शतावनी।।

রাজাবর্ত্ত: 'পু• উপরত্নভেদ:। রে-উটা ইতি হিন্দীভাষা। তৎপ্র্য্যা- यः। नृभः वर्छः २ द्राक्षाण्डावर्छकः २ व्यावर्छमणः ८ व्यावर्छः ६। व्यमः । सृष्ट्रः। सृष्ट्रः। सृष्ट्रः। सिष्ट्रः। सिष्ट्रः। सिष्ट्रः। स्वाक्ष्रिकः। क्र्यण शुः व्याक्षिण्टरम् । क्र्यण शुः व्याक्षिण्टरम् । विद्राष्ट्रः। विद्राष्ट्रे द्राक्षिण्टर्गः। विद्राष्ट्रे द्राक्षिण्टर्गः। विद्राष्ट्रे द्राक्षिण्टर्गः। विद्राष्ट्रे द्राक्षिण्टर्गः। विद्राष्ट्रे द्राक्ष्रिकः। क्रियंगायः। विद्राष्ट्रे द्राक्ष्रिकः।

बाकाहिः शृ हिन्धनर्भः। उदशर्यायः। हिन्धादिः २ दिनादानी
। विषानुभः ८। ইতি मदत्र ज्ञावनी
।। अशित्रिः ৫। ইতি ভিকাও
শেষः।।

মাজি: জ্রী শূেণী।।রেখা।ইতি মেদিনী।।

शांकिका छी क्लातः ॥ त्राक्रमर्थः भः । (त्रथा। ইতি নেদিনी ॥ श्राक्तः । ইতি হেনচন্দুः ॥ कृष्यः निर्मा । कृष्यः । कृषः । व्यानु । विकान । विकास । कृष्यं । विकास । विकास । कृष्यं । कृष्यं । विकास । कृष्यं । विकास । कृष्यं । विकास । विकास । कृष्यं । कृष्यं । विकास । विकास

क्रवः २०। अम्या खनाः। कर्देवः। তিকত্ব•। উফত্ব•। বাত প্লীহার্ভি শূল ফক গুলা কৃমি বুণ নালিত্ব। मार भिख्युमख्य।। ठोखनधनाः । তীক্ষর। বাতাদিদোষ নাশির। । শিশিরত্ব•। যুক কণ্ড্রত্ব•। কে-भारतः। पुर्यायनाभिष्यकः।। उद পত खगाः। कर्षेषुः। উष्णपुः। कृति वाञ कक क्षानगरुत्रः। सामृत्रः । বহি দীপনকারিত্বঞ্চ। ইতি রাজ-নির্ঘণ্ট: ।। অপিচ। রাজী তুরা-জিক। তীক্ষণদ্ধা ক্ষুব্জনিকাসুরী। ক্ষব: ক্ষুতাভিজনক: কৃমিক: কৃষ্ সর্যপ: ৷৷ রাজিকা কফ পিত্তগ্নী তীক্ষোঞ্চা রক্তপিত্তকৃৎ। কিঞ্চি-पुकाशिना कञ्च अष्ठ (काठे क्षीन् হরেৎ।। অভিতীক্ষা বিশেষেণ ত षट क्षानि दाजिका। इंडि जातः अकार्यः ॥

রাজিকাফল: পু॰ গৌরসর্যপ:। ইতি রাজনির্ঘণ্ট:॥

त्राजिक्ना जी हीनाकर्कही। इंडि त्राजिक्षिण्डः॥

वाकिनः পू॰ जूञ्चनर्भः। ইত্যমর:॥ वाकी জी निष्ट्रिष्णङ्किः। ইতি শব্রহাবলী॥

गश्नका १ क्रवकः ৮ क्रूडकः ১ । द्राष्ट्रीकनः भू॰ भागिनः । ইতি

त्राक्रिविंग्हेः॥

त्राकीय॰ क्ली भग्न॰। ইত্যমর: ।।

त्राकीयः भू॰ হরিণভেদ: ॥ वृङ्भीनভেদ:। ইতি মেদিনী ॥ হস্তী।

ইতি ত্রিকাণ্ডশেষ: ॥ সারসপঞ্চী
। ইত্যমর: ॥ রাজোপজীবিনি ত্রি
। ইত্যক্ষয়: ॥

त्राह्मनुः भ् मश्रः स्वाह्म त्राह्मनुः श्रः स्वाह्म । यथा। हर्ज्या क्रमणयंष्ठ मिकातः न्मम् ह। या ताका
ज्रुष्ण क्रथः म्या मश्रः ह। या त्राह्म ज्रुष्ण क्रथः ॥
ज्ञाद्म गश्रः ।। इति तुक्ति वर्ष्ण है।
क्ष्म क्रथः ।। इति तुक्ति वर्ष्ण है।
क्ष्म क्रथः ।। इति तुक्ति वर्ष्ण है।
क्ष्म क्रथः ।। इति व्याह्म है।
क्षा हिन स्वाह्म क्रथः भू ज्ञाकू

मिवृक्षः। ইতি রাজনিঘণ্টः॥

রাজী জা রাজপত্নী। রাণী ইতি
ভাষা। সূত্যপত্নী। ইতি মেদিনী॥
কা॰সাঃ। ইতি হেমচন্দুঃ॥ নীলী।
ইতি রাজনিঘণ্টঃ॥ য়াজপত্না৽
বর্ণনীয়ানি যথা। দেব্যা৽ সৌভা
ত্যা লাবণ্য শীল শৃস্থার মন্মথাঃ।
ত্রপা চাতুর্য্য দাক্ষিণ্য প্রেম মান
ব্রাদ্যঃ॥ বেণী ধ্মিল্য সীনন্ত
ভাল শুব্দ নাসিকং। কপোলাধ্র
নেত্র ভু কটাক্ষ রদ কন্ধরাঃ॥ গণ্ড
বাহুকরোরোজ নাভীন্ধ্য বলিত্র

यः। (नामानि (भागि बर्ह्याक् नाम যুগা নথ কমাৎ।। ইতি কবিকল্প-ज्ञायाः > खवत्क > अभूनः ॥ # ॥ স্যাপর্যা: পুমাণান্তর यथा। স্ত **ऐवाठ । विवशान् कमार्भाट् भृर्ब**-মদিত্যা মভবৎ পুরা। তস্য পরী এয় তদ্ব সংজ্ঞা রাজী পুভা তথা।। রেবতস্য সুতা রাজ্ঞী রে-বস্ত সুযুবে সুত। পুভা পুভাব• সুষ্বে दाश्री म छा उथा मन् ॥ यमण्ड यमूना हिव यमल्लो जू वज्-বতুঃ। ইতি মাৎস্যে ১১ অখ্যায়ঃ॥ রাজ্য• ক্লী রাজ্ঞইদ•। তৎ পর্য্যা-यः। नीतृ ८२ म ७ लः ७ जनशरः ४ (मणः ৫ পुरमणः ५ विषयः १ तां हे॰ ৮ উপবর্ত্তন• ৯। ইতি শব্দরত্নাবলী ॥ व्यमत्रमण्ड नीवृङ्जनभागे व्यक् বঙ্গ কলিঙ্গ পঞ্চাল মগধ কোশ-লাদৌ মণ্ডলত্বেন খগ্ৰতে গুনমস-गृष्ट् । दिन्दियाभवर्षनार्व ह जनशास जनशहममुनारय । जन-भरिक्तराण मङ्गलनिङ्ग्यानमा-व्य ह। डेशाबिटंडएन एमाहि-ত্রিক ভিন্নার্থ। সামান্যের পুযো-न मर्भनाट । नीवृतामयः शरेकरेव কার্থাঃ। ইত্যপরে। এতহাযুক্ত•। ইতি ভরত:া। 🗱 🛭 তস্য লক্ষ্ণ

লারীজ লা ক্**ৰাজ্য মুচ্যতে।** প্রাত্ত 🥹 দুর্গাণি কোষ্যে দ-·७ ४ भि २४ **७७।: পुक्छर छ**-👬 🚋 । ক্দান্তা: । এতা: 🔫 💎 🧘 🖫 अक्षमः भृषिवी-লাভি 🔧 ব্ৰুত্তক রাজ্য মি-👵 🛠 🦿 (जि: । भोत्रामुनी ् मद्दक्तिः ॥ श्रा-🧼 ্কোষো রাষ্ট্রণ দুর্গণ ারশূেণী চ রাজ্যা-🦈 🤊 ভবেৎ দ্বয়া ইতি ि वस्ति विश्वासि-গাঁৎ সামাজ্য দ उर्वाक गर्नान ্চ্যতে ॥ ইতি বরদা

গষ্টরাজিকাদ ধিল-ा ्यानात्थाला द्रान ा 💝 💝 🐪 । यथा। जः हुर्ग्र निः िंग 🦠 🚊 🥫 छै॰ भी तक श्रिक्र् ह न-পাত্র উকান, সকলানপি মজ্জ-(१९) भक्त अब विद्यावन क्रानु।-চলোশুকঃ ি ক্ষক্ষিদাহী চশ্লে-্রি প্রন্ত ধং ॥ রাজ্যক্তয়তি-लाहिन्। वृत्रा जां ख जक्तरय । २७ छाप नुकारम क्ञामवर्गः ॥

 शाः भित्रिक था। भन्नेरिम्धरवाभ- । नाक्यां न्यं ने नाक्यां नाम्यः । তৎ भर्यायः। भुक्षिः २। उकुषा-ष्ट्रेतिष॰ यथा। स्राभी > व्यवाखाः २ সুহৃৎ ৩ কোষঃ ৪ রাষ্ট্রণ ৫ দুর্গণ ৬ वन १ भोत्रामार्भुगयक ৮। ইত্যমর:।। স্বাম্যাদ্য: সপ্ত পুরস্থ लाकर्ण्वयण द्राब्धाक्रभर भुक्-তিপদ বাচ্যা:। রাজ্য সপ্তাক্। কস্যচিন্মতে অস্তাঙ্গঞ্চেত্যুভয়নে-व पर्णिङः। यमुकः कामन्त्रकीरय। याम।माजाम बाहुक मूर्ग कार्या বল সূহত। পরস্পরোপকারীদ সপ্তাঙ্গণ রাজ্য মুচ্যতে !৷ পৌর-শ্রেণ্যা সহাপ্তাক মলি রাজ্য পু-कीर्न्डि मिडि । बाम्राप्यः मक्षः পরস্পরোপকারিত্বাৎ রাজ্যস্য व्यक्तानि উপायाः माधनानि त्राक्ता वानि भुक्षे अर्वे अर्वाकाः। भुक्-তথঃ কৃষো: ক ভাব ইত্যুক্তঃ **किः পुक्**जिः क्रियाः। या ौ ताजा । अभारा भाषा । जुङ्चाव । वर्गानि जा खागात कायः। ता है। जनभारवजीख्भि:। भर्द रापि एर्ग-भः भूतः पूर्भः। वलः रेमन्। (भोतः भागी गृहित जिल्ला भून शंह ते शुष्धा-न्रथाभनार्थः। इंडि छद्र छः ॥ 🕸 ॥ विशेष । साम्याख्या जनपरन

मूर्गः पश्च खेरेय ह। कार्या निज्ञ म्वा अवाक मुद्दा ।।
मश्चाक मानि वाका मुद्दा ।।
मश्चाक मानि वाका मान्य सामी
मुकी खिंडः। उद्यू मद्दा ख्या क्या का विकार मुद्दे ।। यदक व कार्या कर्वता खर्या क्या प्राप्त वा । कार्या कर्वता खर्या क्या प्राप्त वा । ह्या कर्वता व खर्या क्या प्राप्त वा । ह्या क्या प्राप्त विकार ।। व्य समा जू क ख्वाः मीमुस्य महीकिका। इंडि

রাটি: ত্রী যুদ্ধ । ইতি হেন্দদু: ॥ শরারিপকী। ইত্যনর: ॥

রাডি: ত্রী শরারিগক্ষী। ইড্য-মর:।।

রাতকঃ পুশ ঘনামখ্যাতদেশ:। যথা। পাচ্যাণ মাগধ শোণো চ বারেন্দ্রী গৌড রাতকা:। ইভি জ্যোতিষভত্ত্বণ।

রাটা জী সৃশ্বঃ।। শোভা।ইতি নেদিনী।। পুরীবিশেষঃ। যথা। গৌড॰
রাষ্ট্র মনুক্তম়ণ নিক্পমা ভত্তাপিরাচাপরীভ্রিশুেষ্ঠিক নাম ধাম প
রমণভত্তোক্তমোনঃ পিতা।ইত্যাদি প্রোধচন্দ্রোদ্যে দ্যুবাক্যে।।
রাচীয়ঃ ত্রি রাচদেশোক্তবঃ। যথা
। অযনাংশাল্লগুমানণ দুক্ত মিতি
নোচ্যতে। রাচীয় শ্রীনিবাসোক্তণ

তথান স্লভে ২ত জু ৷৷ ইজি নলমাসভত্ত্ব ৷৷

क्राबक क्षी ग्यासास है । ह

ब्राबकः भू• का नवंशकाः हा स्क्री । इंडियमिनी त

बाबिः जी रविश्वास्तर्भे होते होत न्यं। कित्रगानः हे । क्षाक ইতি ভাষা। াইবের বিভাগ সার্বা २ विषा ७ विशेषिने । विशेष **८ क्नारा ७ क्**ला । हिल्लाहर ह **७मिवनी ५** १ ती क्रांबा विकेश छमी २२ । 🕏 👉 🖂 स्थाना २० रवाजा 38 यालगा : राजा ५७ नक २१ (माना १३ वर्ग 🐯 े ३३ जमा २० अस्त २१ मा करिये दर ক্ষণিনী ২৩ নি শুখ্যা ২০ এইছেল **रिनी २० भा**रती २० ६ छ। २१ বাসুরা ২৮ নিবছরী ১৯ । ব্রিড **णयतञ्जावनी** ।। दशक्तिः ०० वागु-রোষা হঠ নিশীখঃ হং ি ংহ । ইতি জটাপর:॥ যান্ব গ্রী 🕫 आहा

৩৫ ভূষা ১৬ 🖎 ভিন্মতী ৩৭ ভার ि १ १ कार्र १) कवाशिनी 801 ক্ত হৈ ব্লাড নির্ঘণ্ট: যা**ঞ্চা। তস্যা: কার**-क यथा। भरा दिख् 5 **यहाम् भरता**-ভূগোটাটা এবাং ছাথা ভবেত্তদা व्यक्ति का हा अधितशास्त्रिक ॥ इंडि च ्लिश्वार । अनानामाध्यायः॥ জন জিল্ল । রাত্রি র্যথা। মা-েন ব বা প্ৰত্পাণ তদ্হনি ত্র বিভাগ প্রাক্তি নি প্রাক্ত শুক্লে ্বার্থ করে। বৎসরেণ নরা 🔻 🖖 🤼 🦠 বানিশ•। উত্তরা- এলিক্টালে ক্লি**জিদ দক্ষিণায়ণে** ৰ্কি কুল কৰে ই পুক্তিখণ্ডে ৫১ লন, । । অথ রাত্তিকৃত্যু । হিত কৰ্ম ন কৃত • াতেৰ পুহর যা-ार्थाक वट् ॥ मि-াণি পুমাদাৎ পতি-ल्या आ 🕜 👉 🌃 😘 পুথমে যামে তানি প্রা ভাল্কি ।। ইতি রত্নাকর:॥ ं अञ्चलक्षा किस्तानी । **উপाम्य भ**ः ा नकतः इ**षात्रीः छानुभाग्रः ह** 👝 🐪 েশরিব্**তো ভুক্তা নাতিত্**প্তো ६ 🖓 अ । তারি হোমোপা-্ৰ নাল্লগড়ে। **উপাস্যচতি চ** ारकः देवचरमगामिकं अमूहिताछ॥

। **সদ্বিশেৎ** স্বপেৎ। তথা চ বিষ্টু-भूत्रानः। भूनः भाक मूभाराय जाय-মপ্যবনীপতে । বৈশ্বদেব নিমিত্ত॰ বৈ পত্ন্যা সার্জ্বণ বলি । হরে ।। অ তিথিঞাগত তত্ত্ৰ স্বশক্ত্যা প্ৰযে-দ্বুধ: 1 দিবাভিথৌ তু বিমুখে গতে য়ৎ পাতক ভবেৎ। তদেবাপ্ত গুণ পু•সা• স্র্য্যাচে বিমুখে গতে॥ স্-র্য্যোচে অন্ত গতে স্র্য্য। তথা। কৃতপাদাদি শৌচস্ত ভুক্তা সাঁ্য उटा गृशी। गहितसु विटा॰ भेगा মপি দাৰ্ম্যী নৃপ ৷ ভোজনে সা যমিতি সার্চ্চপুহরপর পুণ্ডক্তাৎ ।। 🛊।। অথ রাত্রো শয়ন বিধিঃ। সভি স্ৰ্যেপুশ্ৰৱাচন পাতনীয়া সাচ সূ-र्याप्यार भूवं मृर जाननीया। उथा ह মৃতি:।ভাক্ষরাদৃষ্ট শ্যগ্রনি নিত্যা-नि निवानि ह। मूर्यप्रविवानि पी-পানি লক্ষ্য বেশ্যানি ভাজন ।।। वागः। भूको एए विविद्धः ह गाम्यानाभाकिभाउ । भाकिमक् श्चरान हिव अधिएगजु नमा वृषः ॥ मक्नाः भूर्गक्ष स्थानः स्थान वि-थाय हा रेविंगरेक जीक्टेंड नं टेंड রক্ষা॰ কৃত্বা স্বপেত্ত ।। গর্গ: । স্বৃত্ত পাক্লিরা: শেতে হাাযুষে দক্ষিণাশিরা:। পুত্যক্শিরা: পু-

वारम जू न कमाहिमुमक् निदाः ॥ भार्क (७४ भूताता भूक मितः भग त विन्। १ वन भागुम्ह मिक्ति। পশ্চিমে পুৰলা চিন্তা হানি মৃত্যু **ज्या**ब्द्र ॥ ज्या । नमक्**ज्रांत्र**यं विकु नगदिशः यशिक्षा । भार्तः (७गः। শূन्। नरा नरा भागात ह वक-বৃক্ষে চতুয়্রথে। মহাদেবগৃহে চাপি শক্রা লোপ্ত পাংশুষু।। ধান্য পো विशु (नवानां छक्गांक छ्राशित । ন চাপি ভগুশ্যনে নাশুচৌ নাশু-চিঃ স্বৰণা নাদু বাসা ন নগুড নো-ভয়াগরনন্তকঃ। নাকা**শে সর্ব শ্**নেচ চ नह हिन्छ। इत्न उथा ॥ अलि हिन्छ **म्यः ॥** #॥ अथ ब्राबी मात्राभगः भन विधिः। याञ्चवं द्वाः। (याष्ठभ-ৰ্ণিশাঃ জীণাং তাসু যুখাসু সমি म्बर । व्कारायांव भर्वनाम्। कड-<u>जुन्त वर्क्कायर ॥ जीवा॰ (वाउन</u> নিশা খাতু গর্ভাধান যোগ্য কালঃ। उत्ताङ विधिना गरह्य **उ**व यूग्पाम् র। ত্রিম্বাপি পর্বাণি বুন্ধচার্য্যেব ভবতি । তত্র বুডাদৌ গছতে। বুক্ষচর্য্য স্থলন (नार्य) नान्धि इं**छि भिजाकता** ॥ विक्भूतानः। यष्ठाष्ट्रभी समावाना मु उ भएक ठज्मं भी । देमथून (ना १ (अत्वर्ज द्वारमीक सम श्रिया।।।

रात्रीजः। 🖰 ५८० 🗧 🚊 🎮 छाद्याः यूग्रानु ह १ । १ । ५ ५ १ १ वृक्षं १-र्छ नमस्या 🛷 । 🤊 । ह्युश्रीः **त्रात्वो यहार्ड** तान नाग्या सम्प्रका निः • वृत्त्वी (वाक्षः सङ्ग्रह्मः सङ्ग्रह्मः नारनन जी इ ্যা ই জনসংস্কৃতিক कराकाषार का कार्यान বিহিত্ত কম 💎 🔆 😗 👍 জ্বের্ছ **क्ट उनुस्र द**ङ्क कर् বৃত্তীতরপর 💎 😘 🧸 মুখ প্ৰাৰ্থ 🚽 🚽 ব্যক্তি নরক মভ্যোগি ই ্রে ছালিড চুন্ত । भत्रसात्रत्रः । भूगः मञ्जारकः **जीजिसा। हे** । १ - १ - ४ - ४ - ४ - ४ - ४ - ४ -**मट्यू त्था**ः । अपनास्य स शित्यु मका 🕒 🗯 🗷 ॥ 🗺 है। निशः। जाष्ट्रेः १ १ १ १ १ १ १ १ (नमु छ भू। । । विकित्र वरन् न खिश्याः 🐠 💰 👸 🛷 স্যামি ততে: গ্ৰহণ গ্ৰামণ টুগৰ **जायाः भूभ**रकः अवः अपः प्रज **इनम्भाउगरेक का क्रिया वाद्या (है। दब्र॰ भूग**गहर खुरमः खुद्र 🕶 🗒 काना॰ ছिন्नलूत इन॰ खीना॰ मतं-कालम् मञ्जद । मञ्जदा दि । सः সম্ভোগ ইতি 🕝 মর্ক বে, খाতावन्राठी है। न जू श्रुणिनधा

পর্যাদৌ ৷ তথা চ গোড়মঃ ৷ খাতাব 🛚 পেযাৎ সর্বত চাপুতিষিদ্ধ বক্ত बिडि॥ मुष्टेकान सार (जाडिएर) জ্যেষ্ঠা মূলা মঘাল্লেষা রেবতী কৃতি কাশ্বিনী। উত্তরাত্রিভয় ত্যক্ত্বাপর্ব वड्डं वुरक्रम् ।। এदक वाटी নোপৈতি যো ভার্য্য মৃদ্ভৌ যক গছুতি। তৃল্য মাহু স্তবো দোষ ন 🗄 र्यात्ने यक्त जिक्क्जि॥ वोश्वरयनीय মনৃতৌ গমৰ দোষাভিধাৰ মকামা विषय । विकः। भद्यानात्त्राग्र वर्ड्स ম্ভাবগ্রন্ পত্নী তিরাত ম**প্**বসেন িভি ।। বৃদ্ধশাতাতপঃ। দ্রীণাণ সপ প্রক্ষণাৎ স্পর্মাৎ তাভি: সংকথ-नामि । तुज्जवर्थाः विश्वासाउ न माः त्रमृजु महनाए ॥ मर**भुक्र**गाए সংক্থনাদিত্যত্র সরাগত্ত্ব সংশ্বা-র্থঃ। শুক্ষানন্তরন্ত নিষেধ নাহতুঃ শ্রু বিশিক্তো শত রাতা তদহো एक जानेपादार मार्खर मिवा मिश्र भः भुरत्य विवासवीय । भार दिवा भुमू यस्त्र श्लायुम्य जनात्मञ्जिषवर्जायर । পুজাকানশ্চ পিতৃণা নোপহরে **७ ७३•** विहिन्त्यार भुग्राउ आहमा-ৰ যেনাপুভিষ্ঠো ভবতি ভক্ষাৎ পু-ভিষ্ঠাকান: পুদ্ধবা পুভিষ্ঠেভেভি। (नामाका नित्यत्य । उन्तरः मञ्जानः ।

অংচ্যায় অনিছেদায় সম্ভানস্যায়েন যুষ্ণাৎ অপুতি ৯: পুজানং গভ্যা অ-পাুান্ত পৃতিষ্ঠঃ সন্ পড়তি ভদ্মাৎ ভ-দুৎ পত্তার্থ যতিত্ব্য নিতি বল্প চৰঃ । এत्रक्ष माञ्चितित्व यह जिल्लाच र् গুক্ত যাজ্ঞহ্বা বানাদূকে নিভাক্ষ রাযা• ভদ্ধেয়•। বশিষ্ঠঃ। শূদুদ্মেন ত ভুক্তেন সৈথুন•যো হধি"ছতি। य-স্যায়• ভস্য ভে পত্রা অম্বর্গ্যাঃ শৃদু-ব্ ছিজাঃ।। পরাশরঃ। খতমাতা-ক্ষণো ভার্য্যা॰ সলিধৌনোপগছ্ভি। সগছেররক ঘোর বৃদ্ধহেতি তথো-চ্যতে ৷ সমিধাবিত্যভিধানাৎ অস-মিহিতস্য গ্রমনাভাবে ন দোৰ: !! পুগ্রোৎপত্তি পর্য্যন্ত মৃত্বভিগমন নি-বমমাহ। কুর্মপুরাণ। ঋত্কালা ভি-গানীস্যাৎ যাবৎ পুণ্ডো ন জায়ছে। यागानकर्यगार्थं हि मूक्षाना १ नाम-ন• পুতি।। যতিত্ব্য নিতি শেষঃ॥ আগন্তম:। ঋতৌ তু গর্ভশক্ষিত্বাৎ, সান নৈথুনিনঃ সৃত। অন্তো তু সদা কার্য্য শৌচামূত্র পুরীববদিকি ।। দ্বাবেতাবশুচী স্যাতাণ দম্পতী শ্যন॰ গতৌ। শ্যনাদুগ্থিতা নারী म् हिः न। प्रमुहिः भूगान् ॥ रेमथुकः माक्तः भाक भवम् वार्मारमः न क-য্যাৎ। তৈলাভ্যক্তে তথা বাত্তে শ্ৰ

भु वर्षा नियुत्व । म्बाहात यहा | স্ণ্যাদহোরাত্রেণ শুল্যতি । ইতি दहनाए। भधानूष्मां भातस्वतः । ना यहि गर्ड॰ नाम्बी छ निमिक्षिकाः याः त्थं उन्द्राया উপোষ্য পৃষ্যन-ক্ষত্রে মূলমূত্থাপ্য চতুর্থে ২হনি ন্নাতাযা• নিশাষা মুদকেন পিঞ্চা দ ক্ষিণস্যা নাসিকাযা মাসিঞ্চীতি । ইয়নোৰ্থী **জা**য্মাণা সহ্মানা স রস্বতী। অস্যা অহণ বৃহত্যাঃ পুঞঃ পিতুরিব নাম জন্যত্যভিত ইতি। সা পরিণীতা খাতৃ গালেপি ক্তাভিগ भना यमि गर्ड• न म्था जि जमा **উপো** ষ্য পুষ্যে নক্ষতে খেতকটকারিকা মূলম খাপ্য চতর্থে ২ছনি ঋতসাতা যা সভ্যা রাত্রাবুদকেন পিঞ্চা দক্ষিণ नामाभूषे भिजः इयस्यविधे दिख মন্ত্রেণ নস্য দদাতি দক্ষিণহস্তানা-নিকাক্ষাভ্যা গৃহীত্বা প্রাক্শির: সম্বিষ্টাথা ইতি গোভিল মরণাৎ। जागुर्द्धभीरय । **शिश्रनी॰ मृ**ञ्चरवत्रक মরীচ॰ নাগকেশর॰। আজ্যেন সহ ভূঞ্জীত অপি বন্ধ্যা পুস্যতে॥ যা कुदन्धः। এवः गह्न खिनः कामाः मधा गूनाक वर्डाय्ट। मंख इत्मी ज ्ट भू धः वक्षाः जनव्य भूनान् । काना माहात्रनाघवाधिना । अक् 🍴

দেকবার । অত্র সন্যগাধান ছেতু ত্যা উত্তান কর চরণামেব ক্র্রী ত ন তির্য্যগাহিতকর চরণা গ্রিয়ঞ্ अञ्चलिशमनानस्रतः मक्तिः 🤫 🤾 न স্বাপথেৎ। পুৰুষাথিতে 🐠 🖽। নুৎপত্তি রিভি বিশেষঃ 🗅 🐃 🖓 -**(मायशक्टिंग) याभी (व**म्यक असद **ভৌ नरयट। यामध्यः भर**ाव के वृद्धः **ज्याय कन्नटा ॥ ३७**५% व उडु॰ ॥ 🗱 ॥ অথ রাত্রিজাগর । ৃ 🖽 ণৌ। রাত্রো রাজরণ কাড়ে জিকা পুৰপন দিবা। অবক্ষ মন ভিত্যান্তি व्रभीनभूहनायिकः ॥ कण स्टब्स বিষার্ভানা• রাত্রৌ জাগঃ 🗥 🛙 ছত•া । मिता वा यमि वा त्राखो लिङ्ग सः ত্মীকৃতা তু থৈঃ। ন তেষা অগতাং দোষো জাগুতা॰ বা বিধীয়তে 🛚 ইজি त्राक्षरञ्ज**ः ॥ # ॥ त्रा**बो 🛒 शृक्षः यथा। যভু। রাতাবেব মহাগুজ। ব र्खवा वीववन्तिए । न िरः ः र्वशः कार्या भागनात्रम मुनुख्य । ३६.-প্ন: জলপূজাবিষয় । আরি ত্রাৎ পর• বচ্চ মুহূর্ত দ্বয় মেন চা সা মহারাত্রি কৃদিস্তা তদ্বত ন্যান্ত বৈ ॥ ইভি ভক্তসার: ॥ 🖅 অথ রাত্রৌ বিহিতনিধিজে । স্থানা পরিশিষ্ট । মূনিভি দিরশন প্রো

া বিপ্রাণাণ মর্ত্যবাসিমাণ নিত্যণ শ্হনি চ তথা তমশ্বিন্যাণ সাৰ্দ্ধ হর বামান্ত:।। জাবাল:। অহ: ভিষ্যঃ পুণ্যাঃ কর্মানুষ্ঠানতো দি-্নকাদিবুতযোগে ত রাজিযো া বি**শিষ্যতে। দেবলঃ। রাভ্দ**-ন শকান্ত বিবাহাত্যয় বৃদ্ধিযু क लागिकि अयु निभि काम्य তে দুলা। বুক্ষাওপুরাণ। ন রাতৌ ार क्वंतर याउँ द दाहिंगी 😤 🍃 তত্ৰ নিশ্যপি বৈ স্বৰ্য্যাদ্বৰ্জ-🗽 নহানিশা। ।। ইতি ভিথ্যাদি 🤊 🔧 📲 ৷৷ এ হভক্তেন নক্তেন তথৈ 😘 🗀 🖰 ভন চ । উপবাসেন দানেন 🚈 🕒 निका खदद ॥ ऋन्ह ्या । भूष्माय वराभिनी गुाञ्चा ় ১ % চবুতে সদা। দেবীপুরাণ•া ালি ভাজন সভ্য স্থান নাহা-ध्याय । **अञ्चिकार्या नथः भगाः** েন 😚 हो राष्ट्रहांबर ॥ ইত্যেকाদ-খী ুর । 🗱 । দেবলঃ। রাত্রৌ শুদ্ধে• · अहीं ा ब्राक्तमी कीर्डिंग हि मा महा क्रांचित्र मूर्या देन्ह्य मूर्या देहता িরেপিতে॥ইতি শাুদ্ধতভূ॰॥ৠ। বিশ্ব পুরা। ।। পুরত নিশি তথা সন্ধ্যা अद्याहर के**यू मध्य**त्रम् **नातायण म** वाःश्वांः नम्रः भागकीयः नद्रः।

রাত্রাবলি গঙ্গাযাণ স্থানাদৌ পুডি? পুসৰ মাহ। বুক্ষপুরাণ। দিবা রা-ত্রৌ চ সন্ধ্যাথা গঙ্গাযাঞ্চ পুসঙ্গতঃ न्ना द्वाचरमध्यः भूगाः ग्रह्भूष्क्ठ ভজ্জলৈ:। রাত্রিঞ্রাধিকারমূপক-ম্য আদিপর্বণি। অতো রাত্রৌ পুা-পু বতো জল• বুন্ধবিদো জনা:। গর্ছ-যি জিলান্ সরান্বনস্থান্নপতী নপি ॥ ভত্ৰাজু নস্যপুতি বচন । স-मूज् विमव शार्थ निगमनाक पू-র্যতে। রাত্রাবহুনি সন্ধ্যাযাণ কস্য ভপ্ত: পরিপূহ:॥ দেবল:। মহানি-শা তু বিজ্ঞেয়া মধ্যমণ পুহর দ্বয় । তস্যা• স্থান• ন স্বর্থী ত কাম্যনৈমি-নক্ত সা্যাদিতি বৌধাষন বচন রা-গপুাপ্ত সান বিষয় । এবঞ্চ গঙ্গাসা-নস্য দিবা ব্লাত্রি কর্ত্তব্যত্ত্বাবিশেষাৎ তত্তনিমিত্ত তিথি বিশেষস্যাপি **দিবারাত্রি সম্বন্ধিত্বেনাবিশেষঃ 1** ইতি পুাযশ্চিত্ততত্ত্ব• ॥ রাত্রিকর: পু॰ চন্দু:। ইতি ছেম-ठानु निणाकत भद मर्भनार ॥ রাত্রিচরঃ পু॰ রাক্ষসঃ। ইত্যন্রঃ॥ রাত্রোগমনকর্ত্রর তি॥ রাত্রিচরী **জী রাক্ষসী।**যথা। ত॰ বিপুদর্শণ কৃত্যাত যত্না যাতে বনে

রাত্যন্ধ

রাত্রিচরী ড্টোকে। জিঘা:সু বেদ• গুভভাসুরাজ্ঞ স্তা• ভাডকথ্যা: নি-জধান রান:॥ ইতি ভটিঃ॥

त्राजिबन॰ क्षी मङ्ग्रिका। ইঙি শদ্মালা॥

রাত্রিজাগর: পৃ॰ সক্র:। ইতিছে-মচন্দু:॥ রাভৌজাগরণকর্ত্তরিত্রি!।

त्राजिक्षागतमः शुः नमकः। ইতি ताकनिर्यणेः॥

রাজিঞ্বঃ পুজী রাজসঃ।ইত্য-নরঃ॥ রাঝৌ গমনকর্ত্তরি ত্রি॥

রাত্রিপয় লী উৎপল । ইতি রাজনির্যন্তঃ।।

রাত্রিনট: পু• রাক্ষস:।ইতি ত্রি-কণ্ডেশেষ:।। রাত্রোগমনকর্নরি ত্রি

রাতিমণি: পু॰ চন্দু:। ইতি হারা-বলী।

वाजिनामः क्षी जक्कावः। ই कि

मद्रभावा ॥ ताजो मयनकावीन

भद्रियवकः। यथा। वाष्कुम्र्रे छे थाय मूक्याभः ताजिनाम छ।

क्षा मित्रमि मञ्जूष्त कमवावश्चिः

छ। योज्यनं विज्ञः वताज्यकः

योज्यानानविभनः चण्कामकः

भव्यामश्चित्र तक्षाक्षाः मृभूकाः

भक्षया मञ्जूष छवः विज्ञातः

गानस्माभहाति त्रात्राद्य नम्पूर्याः

गानस्माभहाति त्रात्राद्य नम्पूर्याः

। ইতি তন্ত্রসার: ।। অপিচ। শয নঞ্চান্ধকারে চ রাত্রিবাসো দিনে তথা। সানাম্বরণ ক্ষবেশঞ্চ বর্জ্জ-যেৎ শৃষ্কভোজনণ ।। ইতি লক্ষ্মী-চরিত্রণ ।।

রাত্রিবিগন: भूः भूजाउः। ইতি শব্নাল।।।

রাত্রিবিশ্লেৰগামী পু• চক্রবাক: । ইতি রাজনিঘণ্ট: ।।

ब्राजित्वरः श्रु॰ ब्रह्मिः। इ**डि मद**ः ब्रह्मवन्ते॥

রাত্রিবেদী পু• জ্ফুটঃ। ইতি জি কাওশেষ:॥

র ত্রিহাসঃ প্ পেডোৎপল । ইতি শবঃ বাবলী॥

রাত্রিহিও हः পু॰ অন্তঃপুররক্ষকঃ। ইতি শধ্রত্বাবলী।।

রাত্রী ত্রী নিশা। ইত্যমরটীকাযা• ভরতঃ।৷

রাজ্যটঃ পুণ রাজসং ি ু ক্লেডেৎ ারাজৌপমনক এরি জি॥

রাত্র্যন্ধ: ত্রি রাত্রেন্ট্রন্থীনোনর: 1 রাতিকানা ইতি ভাষা। রাত্রে ষাভাবিকদৃষ্টিহীনপক্ষী। স তু কাকাদি: । যথা। দিবান্ধা: প্রাণি -নঃ কেচিনাত্রাবন্ধা স্থথা পরে। কে-চিদ্যিবাত্থা রাত্রৌ প্রাণিন স্তল্য

मृष्टेयः ॥ इंडि मार्काख्यभ्रतात पर-बीभाष्ट्राजाऽ।। उन्नामकोवधः यथा । (एवराताक रेव हुर्न अजाम् विग ভাব্যেৎ। একবি শতি বৈ বার मिक्नि (उन ठाञ्जाय ॥ त्रावात ্তা প্রটলতা নশ্যেদিতি বিনিশ্চযঃ । इंडि गाक्ए ४५२ व्यागः॥ পকু। সিদ্ধ। ইতি ত্রি র:দ্বা হেমচন্দ্ৰ: ত্ৰিকাপ্তশোষশ্চ॥ রাকান্তঃ প্ সিলান্তঃ।ইত্যমরং॥ ব্লৰ্থ ন ঔ য সিছৌ। ইতি কবি-কল্লজ য়ঃ।। রেফাদিঃ। ন রাপ্নোতি । य ताश्राक्त। 'छे चदाएमीए। সিদ্ধি রিছ যাদিপক্ষে নিফ্লাদনা। দিবাদি গক্ষে নিম্নতিঃ। অন্ন• রা প্লোভি বিপাণা য ইতি হলাযুধঃ। নিম্লাদযভীত্যর্থ:। সভত রাধ্যতি **ल्**रिय इंडि इलायुधः। निय्नतीम्। দি টার্থান সিদ্ধি রম্ভর্তঞার্থনা দুভয়তৈর নিষ্নাদনেতি গোবিন্দ-छिः। इंडि मुगामानः॥

त्रादः भु• दिक्षाथनामः। इंडऽ-भन्नः॥

রাখন জী সাধন ৷৷ প্রান্তি: ৷ ইতি নেদিনী ৷৷ তোষ: ৷ ইতি হেন-চন্দু: ৷৷ রাখনা জী ভাষণ ৷ ইতি মেদিনী ৷৷

जी धन्निगः हिज्य छ ए: ॥ রাধা (गानीवित्नयः ॥ विभाशानक्रजः ॥ আমলকী ॥ বিফুক্তান্তা ॥ বি-দুঙ্ । ইতি মেদিনী ॥ #॥ রাধায় উৎপত্তি র্যথা। পুরা বৃন্দাবনে ব্ন-(म) (गालाक द्रामम अल। भेड-मृक्षिकरम्हण ह मिल्लका माथवी-বনে।। রত্নসি•হাসনে রমের ভঙ্গৌ তত্র জগৎপতিঃ। স্বেচ্।মযশ্চ ভ পবান্ বভূব রমণোৎসুকঃ॥ রমণ॰ কর্মিছ্শ্চ তদভূব সুরেশ্বরী । ইছ্যা চ ভবেৎ সর্ব ওস্য স্বেছা-মথস্য চ ।। এতিমায়ন্তরে দুর্গে ছি-थाकाला वज्व मः। एकिनाक ए **জিক্ফো বামার্দ্ধান্ত রাধিকা।।** वज्व बन्धी बन्धा ब्राप्तनी बन्ध ণোৎসুকা। অমূল্যরত্বাভরণা র-ত্রসি•হাসনস্থিতা।। বহিশ্লাণ-শুকাধানা কোটিপূর্ণশিপ্ত।। তপ্তকাঞ্চনবর্ণাভা রাজিভা চ স্ব তেজসা।। সমিতা সুদতী শুদ্ধা শরৎপদ্মনিভাননা। বিভূতী ক वती त्रम्या भावजीमान्यप्रि-তা।। রত্নালাঞ্চ দ্ধতী গ্রীম্ম-म्र्ग्र मम् जारा मूजाशादि म्-ভূেণ গঙ্গা ধারা নিভেন চ ॥ সংযু-कः वर्जु ला बुक् मूर्मक गिन्नि मः

ল্লিভ•। **ক**ঠিন• সুন্দর• দৃশ্য• কন্ত্রী-প্রতিবিত্ত ৷৷ মাঙ্গল্য মঙ্গলা-র্হঞ্চ স্তমযুণ্মঞ্চ বিভুতী । নিতয় শ্রোণিভারার্তাণ নবযৌরনসংযুত্তাণ ॥ कामाजूता मिया जाक पर में त मिरकपदाः। मृष्ट्री काञ्चा॰ **स**गरकाः ন্তে। বভুব রমণোৎসুক: ॥ দৃষ্ট্ব। রি-त्र मृ का हक्ष मा म्थाव श्रः श्रुतः। রাসেশ ভূয গোলোকে সা দধার হরে: পুর:।। তেন রাধা সমাখ্যা-তা পুরাবিচ্ছি র্যহেশ্বরি । রাধা হ্ববতি ত্রীক্ষণ সচ তাঞ্চ পরস্পরণ ।। উ ज्याः मर्वमामा अभ नमा नार्व वर्षां छ । **ভवनः शादनः द्वारम** स्मृतः ত্যালিস্থন জপেৎ॥ তেন জন্নতি শকেতাদুষ্যা রাধা যদীশ্বর:। রা শ বাছারণাভক্তো রাতি মুক্তি সু मुर्वाञाः ॥ शा भाष्याहात्रभाष्यूर्भ शा-व्टार्व रहा भर । कृ व्यामा न म-ভ্রুতা রখো রানেখরী পুরা ॥ ভ भागाना कारा वज्रु पर्व যোষিতঃ। রা ইত্যাদানবচনো খা চ নিৰ্বাণ বাচকঃ ॥ যতো হ্বাপ্মোতি মুক্তিঞ্চ স। চ রাধা পুকীর্ত্তিতা। ব ভূব গোপী সংবশ্চ রাধাযা লোম কৃপতঃ॥ ত্রীকৃষ লোমক্পৈশ্চ বভ্ वूः मर्ब रह्मदाः । द्राश वानाःम

ভাগেন মহালক্ষী বভূব সা ৷৷ চতু-ज्**बमा मा भ**न्नी (मवी रेव**म**श्चेवामि-নী । তদ শা রাজলন্দ্রীশ্চ রাজস-म्बर्धावनी ॥ जनमा मर्जान জ্মীক গৃহিণাঞ্চ গৃহে গৃহে। শস্তা-विश्वाक्तिवी ह मा এव गृहत्तवजा !! चय॰ त्राया कृष्णश्री कृष्णवकः इन श्चि । भागिषिष्ठाक्रिती ह उरेमार भवनाञ्चनः ॥ तुक्कानि स्वयभर्य। सः সর্ব্ধ মিথ্যৈব পার্বতি ৷ ভজ সত্যু পর বুন্দা রাধেশ ত্রিগুণাৎ পর '!! **भद्र॰ भु**दान• भद्रन• भद्रनाजान भीः **"वतः। म**र्वान्तुः मर्वन्जा्रथः नित्रीः " পুক্তে: পর•।।ধেছাময• নিত্যৰূপ• দেবানা প্ৰাকৃত কপ মেব চ।। তস্য পুনাপিকা রাধা বহুসৌভাগ্য সংযু-তা। মহদিকো: পুসু: সাচ মূল পুকৃ-তि वी थवी ॥ भानिनी वाधिका नहः मता (मविष्ठि निज्यमः। मन्दा यू शरास्त्रास्त्रा वृक्षारीमाः सूर्वज्यः॥ স্বপ্নে রাধা পদাস্ত্রোক্ত নহি পশ্য-ন্তি বল্লবাঃ। স্বৰণ দেবী হরে: ক্রোডে ष्ट्राया द्वाराण काश्विनी ॥ त व घार-न शाभाना द्रायामः भद्रमः भिरम । ভী চ্ঞা শশ্চ ভগবান্ বিষ্ণু তুলাঃ পর।कनः॥ श्रीहाम भाषा ८ मा (एवी

গোলোকাদাগতা মহী । ইতি বুক্ষ रैववर्ड भुक्छिथर्छ द्वारवाभाय्याः न १८ अध्यायः ॥ 🗱 ॥ अभिह। गर्न देवाह। मृतू नन्त भुवस्काइ मि তিহাস• পুরাতন•। পুরা গোলোক বৃত্তান্ত শুক্ত শঙ্কর বজুত:।। এ দালো রাধ্যা সাক্ত বভূব কলছো नहान्। ङ्वीमाना मानारेफ्ड उन्ह গোপী রাধা চ গোন্সলে ॥ বৃষভানু সুঁভা সাচ নাতা যুস্যা: কলাবতী। कृष्णमार्धाक्रमञ्जूना नाथमा मृ भी जर्जा। शालाक वामिनी (नय মত্র কৃষণক্তলাধুনা। অংলানিসম্ভবা रिवी म्लभुक् ि श्री यशी ।। माज् প্রত্তি বাযুপূর্ণ কৃত্বাচ মাধ্যা সভী। वायू निः मात्रण कारन शृद्धा ह मिन् বিশৃহ• ।। আবিৰ্বভ্ব সা সদ্যঃ পৃ-থ্যা ক্লোপদেশতঃ। বদ্ধতে সা युरक दावा जुर्झ हम्मुकवा यथा ॥ প্রাক্ষতেজসোদ্ধেন সাচ স্ভিমতী সতী। একা মূর্ত্তি দ্বিধা ভূতা ভে দে। বেদে নিৰ্ধাপ্তিঃ।। ইয় স্ত্ৰী ন भूगान् किंचा मा वा कास्ता भूगानय॰ । দ্বে ৰূপে তেজসা তুলে। ক্লেণ চ তণেন চ।। পরাক্রণেণ বুদ্ধ্যা বা জ্ঞা-(नन मन्भारत है। भूदें जा गर्मान रैनव कि छ मा वयना विका ॥ भूगगुरु

তাময় শশ্বদিম সা মারতি প্রিয়ণ । রটিতা সাস্য প্রাণৈশ্চ তৎ প্রাণৈ म् र् र्डिमानय ॥ यम् । वाशानृजादान (गाञ्चलागमनः भद्रः। श्रीकाद्रः जार्थः ক কর্ত্র গোলোকে যৎ কৃত পুরা।। क न जी जिह्ला देव र ना ज्ञान न न হরে:। পুতিক্তা পালনার্থক ভবে-नामा ज्यः ऋजः॥ 🗱।। द्राक्षः नादमा वृष्टशिख यंथा। द्राक्षा नद्मा वृष्ट-পত্তি: সামবেদে নিক্সিতা ৷ নারা-যণ স্তামুবাচ বুন্ধাণ নাভিপঞ্জে ।। বুন্ধা তা॰ কথ্যাস।স বুন্ধলোকে ठ महत्र । भूता किलानिश्रत्न भागूनाठ मरहश्वतः ॥ (हवानाः पूर्ल-ভ नन्द निশাম্য বদামি তে। সূরা-जुत ग्नीन्ताना वा कुञा गूकिना পরা ।। রেফে। হি কোটি জন্মাব ক র্মভোগ॰ শুভাশুভ• । আকারে। गर्खवामक मृजुरक রোগमूरम्खर ॥ থকার মাযুষোহানি মাকারো ভব বন্ধন । শুবণ মারণোক্তিভ্যঃ পুণ-শ্যন্তিন সংশযঃ। রেফে। হি নিশ্চ-লা ভক্তি দাস্য ক্ঞপদামূজে। সর্বেপ্লিত সদানন্ত সর্বসিজৌঘ-শীশর•॥ ধকারঃ সহবাসঞ্তভুল্য कावास्य ह । महाजि मार्किः मा-बर्गाः खबुक्तानः रुप्तः ययः॥ वाः কার স্তেজসোরাশি দানশক্তি হ রৌ যথা। যোগশক্তি যোগম্ভি সর্কাল হরিষ্তি• ৷৷ শুভুঃক্তি ষা রণামোগামোহজালঞ্ কিল্বিব । রোগ শোক মৃত্যুন্যা বেপন্তে নাত্র **जः णयः ॥ इंडि तुक्तरे**वदर्ख श्रीकृष हज्रथाख ३० व्यव्यायः ॥ 🕸॥ जन्याः ষোডশ নামানিতেষা বৃংশেতিক যথা। নারদ উবাচ। কানি বোডশ नामानिद्राधिकाया जगमूद्धाः। जानि নে বদ শিষ্যায় শ্ৰোতৃ কৌত্হল भन ॥ भुकः नामाः अञ्जूक मामत्वर নিৰূপিত । তথাপি শো্ত্মিছানি ত্বতো নামানি যোডশ।। অভ্যন্তরা ণি তেষা• বা তদন্যান্যেব বা বিভো ৷ অহোপুণ্য স্বৰূপাণি ভক্তানা বা ঞ্তানি চ।। নামানি তেষা॰ বুত্ৎপ-ব্রিং সর্বেধাং দুর্লভানি চ। পাবনা-নি জগনাত্রগতা প্রেপিণী '। गत्रायग উवाह। त्राथा त्रारमध्री वामवामिनी विभिक्तियाती। कृष्य शागिषिका कृष्णिया कृष्णभक्तिनी ॥ क्ष्यानाः नप्तम् । भवनानन्तः क्रिगी। क्का वृन्सावनी वृनसा वृनसा-वनविःनामिना ॥ हन्द्राव छो हन्द्रुकाः छ। শতहक्ति जानना । नामात्नु-তাৰি যাৱাণি চেন্দ্ৰৱাণি চ

।। #।। ब्राप्टएक व्यक्त न निष्का द्वाका রো দানবাচকঃ । স্বর্যণ নির্বাণধাত্রী যা সা রাধা পরিকীর্ত্তিতা ॥ রা চ রাসে চ ভবনান্ধাএব ধারণাদহো। रुत রালিক্নাধারাত্তেন রাখা পু-কীর্ত্তিতা।। রাসেশ্বরস্য পত্নীয়• জে-ন রাসেশ্বরী মৃতা। রাসে-ছ বাসো यम्याण एक ज्ञामनिवामिनी ॥ मवांभा द्रिकानाथ (एवीनाभी-স্থরী পরা। পুরদন্তি পুর। সম্ভ তেন-তা॰ রসিকেশ্বরী॰।। প্রাণাধিকা প্রে-यभी मा कृषभा भत्रमाजानः। कृष পুণোধিকা সাচক্ষেন পরিকীর্ত্তি তা।। কৃঞ্দ্যাপি পূিয়া শান্তা কৃষ্ণে। वाम्याः भियः मना । नर्षे पर्वगरेन ককা তেন কৃষ্পপুষা মৃতা।। কৃষ্ণ ৰূপ· সংবিধাতৃ· যা শক্তা চাবলী-लया । अर्बारे**नः क्ष्मम्मी (उन** क्ष्यदिभिधी। वागाकां स्मिन कृषः-স্যা সমূতা পরা সতী। কৃঞ্বা-মাণ্শ সম্ভ হা ভেন কৃষ্ণেতি কীর্ত্তিতা ॥ পর ाननहत्रानिक खग मृर्जिः নতী মতী। শু.তিভিঃ কীর্ত্তিতা তেন भत्रमानन्त्वभिगी ॥ कृषि **(माकार्थ** বচনো ণ এবোৎকৃষ্ট বাচকঃ। আ-कारता पाञ्चहन एउन कृषा श्रुकी-खिजा॥ अखि वृन्तादनः युन्ता (खन

वृज्तावनी ख्रुका। वृज्तावनम्। धिरमः वी उन क्रम्या भुकी विंठा।। द्नरः সাঘ বচঃ সখু/রাকারোপ্যস্তি বাচ कः। मथि वृन्तासि यम्राम्य मा বৃন্দা পরিকীতিতা।। মৃদাচকো বি-नार*र मा युगुा अखि उ**ब र। (व**ः দা বৃদ্স্তি তা তেন বৃন্দাবন বিনো-पिनी॰ ॥ नथात्रनावनी वक हत्नु। खि यव मञ्जु। (जन हन्द्रावनी ना ह ক্ষেক কীত্তিতা পরা ৷৷ কান্তি রস্তি व्युक्ता नहा यम्ता तिवानिणः। ना हन्तु हाउ। इतिंग इतिना श्रीत-কীৰিতা।। শর্মনুপুভা যুদ্যা শ্চা-नत्रिष्ठ दिना नन्। ग्निना कीर्खि ভা তেন भारतम् श्रृ**ভानना ॥ इ**प॰ खाउन नामा क व्यव ग्राथान म॰-युक् । नाद्रायलन यम् छ व्याल नाडिशक्रका। तुक्षण ह भुवा एउ॰ थर्याय जनकाय भाग थरणंग क्राम ত্ত॰ মহ্ম মাদিত্য পর্বণি॥ পুষরে চ गराजीर्थ शुगार एत्रमः मित्र। রাধা পুভাবপুত্তাবে সূপুসনেন চেত সা।। ইদ প্রোত্র মহাপুণ্য তুভ্য मख॰ महामुत्न । निन्तकाशादिक्याः य न नामा मि महामुखा ।। यावक्कीव নিদ স্তোত্র তিসন্ধ্য শঃ পঠেমর: । রাখা মাধবযোঃ পাদপদ্ম ভক্তি।

र्ज्यिक्ष ॥ व्यान नाजन्यामाना শশ্ব সহচরো ভবে । অণিমাদি-ক সিদ্ধিঞ্চ সংপ্রাপ্য নিত্যবিগ্রহণ ॥ वुडमानाभवारेमक मर्रेस नियम পূর্বক ৷ চতুর্ণাঞ্চৈব বেদানা পাঠৈ: नर्वार्थ म ग्रेडः ॥ मर्विषा गञ्ज-जीर्थानाः कन्नरेग विशिरवाधिरैछः । शामिकाराम ज्यमक कृष्माया वव मक्ष्या ॥ भवनागं व्यक्तांगा मञ्जान छान मानजः । (म्वानाः देवकृवाः नाक पर्मातनाणि यटकला।। उत्पव खा**ब भाठेम्र क्ला॰ ना**ङ्खि वाफ-শী॰। স্তোত্তস্যাস্য প্ভাবেন জীব-মুক্তো ভবেমর:।। ইতি বুদ্গবৈব ত্রিক্ফজনখণ্ডে ১৭ সধ্যায়: ॥ # ॥ রাধানামোচারণানন্তর কৃষ্ণনামো हात्रन विश्वि र्यथा। नात्रम छेवाह । व्यादि त्रावाः मनूहार्यः भन्हा क्-यः विषु ब्र्वाः। निमिख मम्। मा॰ ভক্ত•বদ ভক্ত ধনপ্রিয়া খ্রীনারায়ণ উবাচ। निभिन्छ मभु जिविध॰ कथ-যামি নিশাম্য। জগন্মাতাচ পুকৃতিঃ প্ৰধশ্চ জগৎপিতা।। গ্রীয়সীতি জগতা॰ মাতা শতগুণৈ: পিতৃ:। রাধা ক্ষেতি গৌরীশেত্যেব শব্দঃ শুতৌ শুক্তঃ ৷৷ কৃষ্ণ রাধেশ গৌরী जि लाकि न ह करा गु.जः। भुनीर

द्यास्ति हन्द्र गृङ्गार्गार्ध्य मिनः मन॥ शृहाराधीं, नया मखः मः छता मह ভाক्ষর। পুনীर কমলাকান্ত গৃহাণ भन भूजन ॥ इंडि म्क्टे भागत्तर কৌথুমে মুনিসত্তন। রা শব্দোচার শাদেব স্থীতো ভবতি মাধবং ॥ श শ্বোলারতঃ পশ্চাদ্ধাবন্ড্যের স अञ्चः। आारी भूक्ष मृहार्य्य भः শ্চাৎ পুকৃতি ম্চবেৎ।। স ভবেন্না: তৃগাগী চবেদাতিক্রমণে মুনে। ইতি वुक्तरेववर्ख ञ्रीकृषक्रमथर्ख व्यव्यायः ॥ 🗱 ॥ उत्रा निन्हायाः (मार्या यथा। य वा विविध निम्हि পাপিনশ্চ হসত্তি চ। কৃষ্ণপুণাপি-का (त्व (त्वीक्ष वाधिका श्रवा।। বুদ্ধহত্য শত তেচ লভম্ভেনাত্র मःभगः। उद्भाःभन ह भहार छ छ-ষ্ট্রীপাকে চ ব্লৌরবে।। তগুতৈলে ম-হাঘোর থান্তে কীটে চ যন্ত্রকে। চতদশেলবৈছিল পিত্তিঃ সপ্ত ভি: সহ।। ত 5: পর ন্রণের জ रिम्रकः रकान रयानिजः। पित्रः वर्ष जङ्जुक विश्वाकी है। क भाग छः । शुःकतामाः सामिक्षेत्रे। खरूक मः वङ्काः। नवनीराण उत्रान वयक्ष भ्य ङक्काः ॥ (वरम ह कार् णाथाया सिज्याह कर्तवाक्तरः 📗

ইতি বুদ্ধবৈবর্ত্তে জ্রীক্ষ্ণদ্বখণ্ডে an विशायः ॥ 🕸 ॥ द्वादा स्रुक्त भः যথা। যশোদোবাচ। হরৌ চ निण्ठ-ল। ভক্তি স্তদাস্য বাঞ্চিত মম। তব নাম্ৰণ্চ ব্যুৎপত্তিণকাবা দ্বণ বন্তু: নর্হসি ॥ রাখিকোবাচ। ভবেন্ডক্তি निक्वा एउ इस माम्य मुर्वेख । वाज्य मद्याद्य गानि क्थ्याचि चिन्ति-য॰ ॥ পুরা নন্দেন দৃষ্টাঙ্হ• ভাণ্ডীরে-বটনুলকে। ম্যাচ কথিতো নন্দো নিবিদ্ধণ্চ বুজেধর: ৷৷ অহমেব স্বয়ণ द्वाथा ছाया दायान कामिनी। दायानः **জ্রিহরে রংশঃ পা**র্স্থান প্ররো নহা-न्।। রা नद्रक मङ्हिस्क। विश्वान यम् । বেখপু। বিশ্বপু। বিশেষু था थाञी गाञ्गाहकः ॥ धाञी गाञ। ए (माउवा॰ म्ल नुकृ जि की चड़ी। তেন রাধা সমাখ্যাতা হরিণা চ পুরা दृश्यः॥ অহ॰ জীদানশাপেন व्य जानुज्ञाधूना । भाउवर्यक विरह-দো ছরিণা সহ সাম্পু ত ॥ বৃষভানু-क क्षमा भाषम्भुवाद्या नहान्। **পিতৃ**वा गानशी कन्ता सम माजा कलावजी॥ भाषानिमञ्जवाह्यः सम নাতা চ ভারতে। পুন: সার্দ্ধ যু-মাতি যাস্যামি ভীহরে: পদ ॥ ইভিতে কথিও সর্বণ বুল বুল বুলে-

ইরি। বুজেখরেণ সহিতা স্থানিনা। ক্লানিন সভি॥ ইভি বুক্ষবৈবৰ্ত্তে শ্ৰিক্ষজন্মখণ্ডে ১:• অধ্যাদ:।।#॥ রাধা পার্ত্ত্যা রভেদো বথা। পা র্বভূগোত। কি॰ বা পুশ্ন॰ করিব্যামি ত্বা॰ রাধা॰ মঙ্গলালযা॰। গতা তে वित्र होता आहीतः नाभयाकरा ।। সতত ভন্ম यः পুণ। ত্বযের মবি-**ए**क उथा। बद्ध्य मायरगा (र्जरः **म**ु कि भूक्षरा यथा॥ य जा॰ निन्तिष्ठ মন্ডকা স্বন্ধক। শাসপি নামপি। कञ्चीभारक व भव्यात्र या यह न्यू कि वक्तित्रो ॥ द्वावामाध्वरया उन् रय **भ** इंडि न्द्राधमाः। वःশश्वानि र्र्धाव-ন্তস্য পচ্যন্তে নর ह॰ চির॰ । যান্তি শ্ ররণেনিঞ্ পি তভিঃ**শ** উকৈ: সহ । ষষ্টি বর্ষ সহস্যাণি বিভাষা ক্রম खया ॥ इंछि दुक्तरेववर ई औक्ष्णक्रम था७)२० व्यसायः।। 🗱।। (पालि) কে ভস্যা আশ্নো যথা। এতান चरनात्रमान् मृक्षा (छ (मनागमानाच्) थाः। जगाः भौषुः भिनम्तः स्नृणुः भ त्रः ७ इः॥ चाम् र ब्राविकायाः क ब्राप्तक्ष्याक महाम । प्रवासि (एवडा (गाभी ना॰ ववानः काक नि বিভিন্ন প্রাথিবি লাখাঃ কৃষ্ণন্য র स्वाप्त्रपुर मानाक्त्रभा म वीनिक्रवी

यक भिखरें उर्न निक् भि उ॰ ॥ मूहां क বর্লাকার ষড্গব্যতিপুমাণক । শতমনিরে সংযুক্তণ জ্বিতণ রয়তে-कमा॥ अम्लः तञ्जभाद्राभाः योद्र वि-রচিত॰ বরং। দুর্লহ্ব্যাত্তি গভীরাভিঃ পরিথাভি: সুশোভিত ॥ কল্লব্-কৈ: পরিবৃত পল্লোদ্যান শতান্তর । সুমূল্য রত্ন রচিত পুরাকারে: পরি-(वश्चिष्ठ• ॥ अरुद्गदिष्ठिष्युङ्ज• यूरेङ দ্বারেশ্চ সপ্তভিঃ। সংযুক্ত রত্নচিত্রৈ म विविध्य इं तुरेन मूरन ॥ भुषान দ্বার সপ্তভ্য: ক্রমশ: ক্রশো সুনে। সৰ্বতোপি তত স্তত্ৰ বোডশ দার न ग्रंड ।। (म्वा मृष्ट्री ह श्राकात म-इम् धन्क हु छ । भरूत तत् कलम সমূহৈ: সুমনোহর ।। দুদীপ্ত তে জস। রম্য পরম বিষ্ম্য যযু: 1 ততঃ পুদক্ষিণীকৃত্য কিষদূর যযু-मू मा ए इं जुक्त विवर्ध की क्ष क्य-খ্যেও হ অধ্যায়ঃ।। 🕸।। তদ্যা জন্ম-जिथि र्यथा। जापुमा क्षाभाक ज् एविजनाहिंगी यहा। जम्राः शर्व তু যা শুক্লা তস্যা জাতা হরিপ্রিযা ।। व्य जानू भूबी नामा मर्दत न्यशी मू-ভা। সুবৰ্ণ লণি মাণিক্য বিচিত্ৰ ভব-नाज्या। जानियानि मुरेथयर्गं ग-तिल्प स्वास्ता। विवष्क भडाका- कि विविज्ञा विज निर्मिजाता विमा-नन्त्रक्रा मः हिमानन्त्रुषायिनी। व्यानन्त कविषा नार्यम यज जिक्ठी अवना ॥ विष्ठिवदिभागकात्रा वि-**हिज्यनगच्छा।** गाना विशे विहि बाक् । भूदरासारमाधिनी।। नर्व वक्रिश्मभा ताथा नाम्। वित्नामिनी । क्षण जा॰ (माहिमी (नवी एक् एक्) ज्नित्री ॥ गृणाना सम्जादेक्द न कथ्र भूनिमख्य। नाव्र डेवाठ। পুণিপত্য মহাভাগ প্ছামি তব কি क्रतः। मानक्षीः कि मत्रवधू मंशान স্থীঃ সরস্বতী।। বিদ্যা কিমন্তর্জাথ বৈষ্ণবী পুকৃতিঃ কিমু। বেদকন্যা হে-वकन्त्रा गुनिकन्त्राथ्वा वरः ॥ जनानि ব উবচে।কোটি কোটি মহালম্মী र्लक्षीः का वा भद्रा वदा ॥ निन्तिजा যৎপদাস্ত্রোজে কথিতা নুনিসন্তন। অপর• কি• নিগদেহ মেক বক্ত্রেণ नात्रमः । बिताया क्ष नावगु खनाः मीन् वक्रक्रकाः। जन्द्रशामि साञा-ত্ম্যুণ লজ্জেহ মপি নারদ।। তৈলো ক্যেতু সমর্থো হিনমাতৃ বক্তমর্হ তি ৷ তদ্দেহ ৰূপ মাধুৰ্য্য জগন্মোহন মোহন•॥ यम् । नज्यू থোপিস্যা• ত দ্বজু• নাস্তিনে গতিঃ। লক্ষ**ণঃ** কন न। पराम्या यम्याः म। नाक्यकी मङा

। এব• শভসহসূপে নীখরী রা**ধি**-কা পরা। নারদ উবাচ্চা, গুভো 🏖 রাধিকা জন্মাহান্ত্য সর্বতঃ পর• । जरशः (भाज्निहानि मनसः छकः বংসল ।৷ কথ্যজা মে নহাভাগ বুতানাঞ্জু:ভাত্তন ৷ ধ্যান বা কী-मृभी भूका छाँ वाशि वस्य म।। তৎ সর্ব শোতৃসিহামি কথ্যতা মে সদাশিব। চ্য্যা॰ লুজা বিধানঞ্ বিশেষ মর্চন ভব ৷৷ যত্র মন্ত্র ख ि र्थ)। न॰ পূজ न॰ यञ्ज निर्चिउ॰। পূজনে কি॰ বিধানঞ্চ ভত্তৎ সেবা-इत्न दिखी ॥ श्वित्र डेवाह । गृष जानू-পুরীরাজা ব্যভান মহাশ্য: । ম-হাসলপুস্ভো হনৌ সহলাজ্রবিশা त्रमः ॥ सङ्गणया वनी जीनानिना-मार्**ष्ट रिवल्डः । रिवलाः समस्रः त्रानः** व्यनीनः कृष्णेषवजः॥ उम्र ভार्यरा নহাভাগা ভীমৎ 🗐 কী ভিনাস্থযা। ৰূপযৌবনসম্পনা মহাব্লাজকলোড বা।। মহালত্মীশ্বৰূপা সা ভব্যা-পর্মসুন্দরী। মহাপতিবৃতা কার্ফা সর্ববিদ্যান্ডণাব্বিতা ॥ তস্যা 🕮 রাধিকা জাতা এনিদ্বন্দাবনেশ্রী। ভাদে गानि निडाष्ट्रेग्राः मध्राद्ध <u> भुज्तायिकी । (वनागम भूतागानि</u> गीजा गाक्कदलाजा। जनाक्किश्वा

माध्ये जिल्लान्य(नायनी ॥ मृत्। মত্ত্রে মুক্তর মত্ত্রে স্কর ভঙ্কন তথা ! কর্তন্ত বদন্তান **রাধাজন্মন** श्हादभक्त ॥ समृष्ट्य मना द्राधाः क्षमञ्ज्ञभवादितः । ए**८ मगगुः भुः** वक्तानि व्यामानिक भनुकमा ।।। লর্বদা প্রিন্থারে খ্রিরাধা কৃষ্ণন ন্দিরে। গুল মুখুত্র কর**স পতাকা** (अञ्चलकि कि अभाग **मुगक्ल प्** বৈগ ৰ্যথা বিধি পুৰৰ্ভতে। সুবাসিত गञ्जभूदि व्रिक्ट वृभिष्ठ ग्रन्॥ নধ্যে পঞ্চবণচুলৈ মণ্ডপণ সসরো-ৰহং । সুষোডশদলাকার তত্ত্ নির্মাণ যজ্জঃ ৷৷ দিব্যাসনে পদাম-ব্যে পশ্চিমাভিমুখী ছিতা। 🕮 युपा मूर्जि मृलाम् धान लाम्।। दि ডিঃ ক্রনাৎ।। ভাক্ত; সহ সজাতী-থৈ: শক্যানুসার বস্তুভি:। ওড্ক: পূর্বেভক্ত্যা তাং সদাসংযতেন্দ্রিয়: ।।#॥ व्यथभानः। (इत्मन्तीयत्रकान्धि মঞ্জ তর শ্রীমজ্জগন্মোহন নিত্যা ভি ললি তাদিভি: পরিবৃত স্মীল পীতাম্বর । নানা ভূষণ ভূষণাঞ্ मधूत रिकल्पातकन गूग गासबी-জন মব্যয়ণ স্ললিভণ নিভ্যুণ শ্রণ্যুণ ভঙ্গে।। সুশ্ম মু'ৰ্ভি মিতি ধ্যাত্ব। শা-जगुरम १थ वा भूनः। भाकार रेम- नामि भूरबी वा मरनामग्राः नमई-যেত।। ভতো মণ্ডল প্রাঞ্চ তযোঃ **गग्थठः कमार् ॥ व**र्याछकः भुः यर्जन श्रान भाम्यानि 😎 जना ॥ वानिका अभिवास भूका। भीखवर्गर-লে ২পরা। চন্দ্রাবতী শুক্লবলে ত-द्यात्म भूकाराय मुवीः॥ वायत्वर मारा-भना । पिती व्यवन । स्व १ हर्ष ८ । उद्यास विवादिया था। मृह्य वर्ग एव ভঙ্গঃ ৷৷ উত্তরে শ্রীমতী ত্বর্চ্যা রক্তবর্ণ मल उथा। उदामभाष्यं हन्तु। थ्या॰ नीनवर्गम् । इन्तर्भ । इन्तर्भम् । প্যর্চ্যা ঈশানে এইরিপুযা। তস্যা वास भुक्रम्रा भृक्षा ग्रम्भुन्स्त्री।। भी उवर्ग एक श्रृ विभाश महरय-ভত:। প্রিয়াণ তস্যা বানপার্শ্বে শুক্ল-বর্ণদলে হর্চযেত। অগ্নিকোণে শ্যাম-वर्गा॰ मत्या मव्या॰ ममहरय ।। उद्याः म बीमधुन जी मुक्तवर्ग मल शहराय । পূজযেদকে ক্ষিণে পদ্মা॰ ব্লক্তবর্ণ দলে তথা।। শশিরেখাঞ্চ তদ্বামে नीलः वर्गमान शहरय । भूजायरिम अंटि छ-দা • রক্তবর্ণদলে ততঃ॥ রসপ্রিযাঞ্ खदारम शुक्रदर्गनत्म एईरर । 🕸 II শ্ৰীরাধা পুষসঞ্চিনী বিধ্যুখী কৃ ফপুষা পুষসী হেমাভা পরি-वारिनी॰ नूमधूत्रधाना॰ नूरवणास्त्रताः

। সদুদ্বা ভরণৈ মনোক্ত সূতনু নিত্যা खगत्माहिनी वत्म औननिजा अ वक्रनयनी॰ भी जायद्यभावृजाः ॥ ১॥ न्यामा नामभनायना वत्रजन् **हाभीकताञ्च्छो। मञ्जीदेत मध्**तश्व-नि॰ भित्रवमहम्मानना॰ मुख्रा॰। স্দুরাভরণা সরোজন্যনী শুল্লা -भुक्तनावृजाः युगाययः जीननिजा नथी॰ जूहिवृका॰ हन्मुविजी मुखमा॰ ।। ২।। কান্ত্যা কাঞ্চন সন্ধিভা• সূল-লিতা কৃষ্ণাম্বর বিভূতী নানা ভূ वन मञ्जूषाक महजी मार्चकिकी जुन्मती । ञीवृन्मः विशिद्यश्री । श्रु-यमथी॰ ভव्याः मामाक्षाननाः विगी চাৰ সুমল্লিকাসুত্ৰ মম্ নিত্য ভ-(ज मारामना ।। ०।। विक्षित्य व-ল্লভা শশিমুখী সম্ব ডক্ষান্বিতা শুৰাষণ শারীর কান্তি মতুলাণ শুক্লা-স্বরেণার্তা । স্বর্ণান্যাভরণা স-मा भूनकिनी॰ बीक्षकात्वन रेव गा যন্তী• মধুরশ্বরৈ রবিরত• শ্রীচিত্রলে-খা ভজে॥ ৪॥ কনক নিভ শরীরা বিভুতী রক্তবন্ত ললিত নলিন নে ত্রা॰ চাক ভূষাঙ্গ শোভা॰। সুনধুর পিকবাক্যা॰ চন্দুবক্তা॰ সুবেশা॰ ম-ধ্রিপু নিজ দাসী জীনতী তা হি व्यन्त ॥ ६ ॥ वृन्तावतम निकामवन

स्रोथ। मानी बन्धा मूनी वरमना সুরবাবযজ্ঞা। নানা বিভূষিত তনু मुत्ररष्टुकाकी॰ ठन्पुा॰ ভत्त नकन त्रागमत्नाञ्जगानाः ॥ ७ ॥ मूवर्गवर्गाः শুক্ধারিণী তা মুপাঙ্ক যন্তা मिन्यगाकी । इति श्रिया मञ्जून পদ্মনেত্রা• ভজে হহ মীড্যা• কনকা-क्रांचा ।। १।। त्रवाव कलवाहि नी॰ जकल द्वाग ज॰गायनी॰ जूहाक मिन अखना॰ भारतभूर्गहन्तु।नना॰ । সুরত্ন বরভূষণা কিচর শুভু পউায়-द्वाः ভঙ্গে सन्तमृन्त्त्रीः कनक वर्ग (महा॰ मुजा॰ ॥ ৮॥ मुजानक्का॰ গীতে ভুমর কলকণ্ঠী সূচতুরা জ शहन्त्राः (व्ह्नम्हिन नयना भिन्त्रः দনা । বিশাখা গৌরান্ধী কলিত মুরলী পীতবসনা ভজে শ্যামা সেব্যা সকলগুণপূর্ণা সুখন্যী ॥ ॥ मूठा भीकत्राज्यनाष्ट्राः मूर्यः भाग मूमःगी उविकाम्धीद्राः वादः ग्रा । जूव भी जुगाना जुरह्माव-শোভা• ভলে শ্ৰীপুথা• শূলুবন্তা• भ्रानाञ्जा ।। २० ॥ शाक्षदी निजरी-সিকা স্গদবাগ্যন্ত্র সদা বিভুতী নঞ্জৰণবিভ্ষিতাং বরতনুং পাথোক্স নেত্রা বরাশ। খ্যাযেৎ কৃষ্ণপদার বি-न्त्वपूत्रीः क्षाग्रद्धात्र्वाः नद्दीः

তে স্পুরস্বরা মবিরত সৈব্যা মনো ছারিণী: ॥ ১১ ॥ কচির মধ্নতী॰ তা তপ্তচামীকরাভা পিককলরব কঠী শুদ্লবন্ত্ৰ দাধানা । তিল**ন** সুন্সুনাসা চাকছেমাঙ্গভ্ৰা যুগ-লচরণসেবাতৎপরা মাভজে ২হ য় ১২ । বৃত্তালক্ষারদেহাণ জিত-क्रमुगक्री मक्ष्णावगुर्काल खंगुा॰ সৃষ্ঠীতবিদ্যা সুনিপুণ রসিকা তা ন নানাতি বিক্তা । শারস্বী যম্রগা নাং ক্ষক্ৰিভতনুং সৰ্ব্য কৃষ্ণ সে-ची वत्म श्रमा मृत्या भाग भाग श्रम पना॰ विजुजी॰ तक्षवद्ध॰॥ ১৩ ॥ मा-শিরেখাণ মৃদক্ষঞ্ বাদযন্তীণ মূভ্যু হুঃ। রসালাপ স্বৰূপাঞ্চরসপূনৈ-কসংযুক্তা ।। ১৪ ॥ ভব্যা • গ্রি**শশি**-রেথিকা সুখনকা বজাদি গানাম্ব রাণ বন্দে হহণ মধুরদ্বরাণ পর মিকাণ লাবণ্য সারা বিকাশ। নানা যজ্ঞ বি-শারদা বর তমু প উল্লেরেণাব্তা कुः ज्ञन्ती वदाला हन। मविद्र छ॰ ध्रा-व जगत्माहिनी।। ३०।। अयुक्रः चत्रमखनः कनत्रवः गात्म महा विजु তী ভীভদা মধ্রমরা স্ললিতা नमुङ्ग्वेखावृजाः । द्राष्ट्रश्वर्यक्रिः বিভ্ষণবরৈ ইকে: নদা পশাভিতা धारा श्रीगूगरमिकाः भन्नमिकाः

ङ्कारेनकम्याः जना ॥ ५७॥ त्राशाकृषः **शरात्रविन्त्**मधूशी॰ সভৃষ्णुन्या-থিনী নানাভূষণভ্ষিতাঙ্গকচিরা সনুক্রন্ত্রা॰ শূভা॰। ধ্যাযে সন্তত কৃষ্ণভাবললিতা কেযুর হেমাঞ্চ-मा॰ अर्गाकीक त्रमित्रा॰ मूथमधी॰ সর্বাঙ্গশোভাবিতা ।। ১৭ ॥ মধু यद्राः (काकिल ज्ञ्रगानाः সত्यद्री यञ्ज विशादिगीकः। वनिष्याः मृङ्ग সুচীনবন্তা ভলে হরিদুাক সমঞু শোভাণ।। ১৮।। এবং ধ্যাত্বা পূজ-যিত্বা ললিভাদ্যা যথা ক্রমাৎ। পা-म्यामिन्धिः (माभवादेव विधिवण्डिक তৎপরঃ।। সঙ্গিন্যো ললিতাদীনা॰ म्बाट शिक्तमाजा मुत्रा भुगवानि नभारञ्जन ज•श्रुमानभारम दि ॥ ७-खनामा जू मनूना शृञ्च गन्ना দि जि म्(न । ইতি পাদ্মে উত্তরখণ্ডে 🖺 রাধাল-মাষ্টনীবুতকথনমাহাত্ম্য নাম ১৬২ थ्यायः ॥ श्री श्री मना निव উवाह । भू-ত্যেকে ২ঠে পুজ্যেদ্বৈ ক্রমতস্ত দলে मान । मृग् नाम कथाउँ जामहाक्षी-वि नाधिक नं ज ॥ इन्तूम्थी द्रम-क्का ह म्बरा मूम्थी उथा। दल्ली **চ**न्मिका ठाक ठजुता ठ मूठक्ष्णा ॥ মধুরা হস্তকমলা তথা মধুরভাবিনী । विवासिनी तमवजी उथा थक्षन-

লোচনা ৷৷ সুথদা চম্পক্লিকা রস मा त्रमभक्षती। मना म्मक्षती मीला **ठन्दा** ठन्दुश्रृ डावडी ॥ वामडी मा-नठी बाठी हन्पुकाडी मूत्रहना। রম্ভা ভুনরগম্ভীরা সুশীলাচ সূবে-मिनी।। जाननकी जुधाकथी नि्वा ह প্রিরতিপ্রিয়া। শুকপ্রিয়া মধুকরী भूरव**ण। ठाम्राक्त क**वा ॥ मूत्रनीवल-ভা वृन्ता भाद्रिक्षाङ भि्या भू छ। । পঞ্ধরা রত্নালা মদিরা রাসবল্ল-वी।। भाउक्षभभनी जादावजी कः **७नपातिगी। (कमती मिखवृन्त।** ह नक्रगाहुउन्नानिका ॥ भावावजी किनिकी ह कामनाकी मुहन्स्नी। পীযুষভাষিণী সভ্যবতী চ লঞ্জ वानिनो ॥ क्ष्भाउमानिका (ना-পামুদ্র চ কিংশুকপ্রিয়া। দলাবতী बस्तुमा ह कमना ह महानमा॥ जि-लाखना ह माविजी वहना शियदा-मिनी। मुङावनी विजयत्रथा मूमिजा लामञ्चला॥ अक्षती विवर्ती **শ্রিরক্তা পদ্মগন্ধিনী। মেনকাক** निका द्रश्वकिको काममूईमी ॥ स मुम्लिया ह जानका ज्या मृड्यि-वामिनी। हिदावजी हादक्षी निः र्मश्रा ज्लाहना ॥ नन्तव्रा नम्त किलिका यूननरा नन्तराणिनी । अतः |

काकी ह मूल्पानी कि नहमा ला लिक वरा ॥ भागभादास्य भ्राप्तानवत क्छूती भागकिक्ती। विकेखवसनी রত্রমঞ্জীরা ২*ালিক*ী ॥ পিক यता ज्यागा उथा दामविदादिनी । जिक्ष पिकास भूजा। यहार हन्तु।-वनी जञः 🗅 शान शाल्पानि 😇 म-माक् श्कारद्वन ह एकं ा। त्रमा-**ा॰ मधुतम्रकाः रि**ष्यानीः शास्त्र**ह** বিদ্যারতা॰ নানাভূবণভূবিতাঙ্গ ন-थूताः काछी ज्यलीजुङः । वीषा যক্স সুবাদিনী বরতনু চিত্রাম্বরণ বিভূতী প্রাযে কৃষ্ণ পরাযণা সুচি-वुका॰ हन्मावनी॰ मञ्जूना॰ ॥ वद॰ त्राथा जन्म जिल्लो क्यां । न्या खन **अ्डन**॰ । कार्कानीन् रेनकवान् गर्वान् यञ्जः পরিপূজ্বেৎ।। এব রাধাকৃষ্ণ পূজা তথে। र्यं अल्लग्डन । भुजाय यञ्जः ञ्ची कारका द्वानगर्शरम्य ॥ ন্যুনাভিন্নিক্ত দেবর্যে ন কর্ত্ব্য ক-माहन। धीन एक्षिक जातनाव नाउ ८७८नव जर्बना ॥ नाष्ट्र्य**ट रेनव ना**-कातीन् द्राधाङग्गरश् नरव । भा-ষ্ভান্ প্তিতান্ কোলান্স্যুজায় নিমন্ত্রদেৎ ॥ বিনা ভাগবতাঁলো-কামত তত্ত্র পূবেশযেৎ। গন্ধপুত্রা-**দিভি মালৈ। "চন্দনৈ ভ**ন্নিবেদি<mark>তৈ</mark>ঃ

া নামাপরাধ ভীতস্ত ভক্তা তথা खब ठाई।यद्भ अखन्रश्भारिक ভক্ষ্য পেবাদিভি স্তথা। তত্তমণ্ডল न्जायाः कार्का नान्। क्लिंडाक्राय । বহিন্ থান্ একৃষ্ণস্য গান্ধর্বাভ क्रिड (शवः ॥ कार्का हीन् देव विवान् ভক্ত ভোজ্বেৎ পূজ্যেতথা। ত-रिश्वतिष्ठ शंक भूरिय मारिला में नयका ि जि:।। সঙ্গাতীয়ৈ র্ভক্তৃলৈ: সমণ তত্ৰ মহোৎসব । দিবা স্বৰ্য্যাৎ পু-যত্নের রাধাভক্তিপরায**া: ।। মহা**-পুসাদ জুঞ্জীত দিনান্তে চরণোদ क । भूजा कृषा भिरद कार्यिः সার্জ মানন্দিতৈ স্ততঃ ॥ রাত্রৌ জাগরণ সর্য্যাদাধাকৃষ্ণেতি বা ম-द्रन्। পূজ্যে सूर्खि भारदा भार क्रिश यर्गापि मःकृ अः ॥ व्यक्षाना कथाः नाभः भूदानामानुकीर्जनः । मुवनीः य भूषद्वि नाबी जि बाक्रेरिः मह।। ষঃ করোভি নরে। ভক্ত্যা রাধান্তব্যা-क्षेभी मुजा। यहिष्ठ विवृद्धाः अर्थ রাধাভক্তো ২স্তি ভূতলে ॥ পূহরে পুহরে রাধা গোষাষ্টম্যা দিবানি-णि । भूजियदा विधानन जीकृष সহিতা' তথা ॥ তদুসিকৈঃ সহা-লাপৈ রাধাক্ফ স্তি गুरु:। তত্ত ग्राह्म नव क्षा भन्नमानिक्र

ख्वन्।। मध्य र भुगिष्ठि अर्याप्रशेष বিধিবোধিতা । পুত্যদ মেব জৰা उ द्राथाकक्षमञ्हारण्य ।। यः भु-মানথ বা নারী রাধাভক্তিপরাযণা। ভূত্বা वृन्तावत् वामः श्रीवाधाक्क जिक्नी ॥ वुब्रवात्री ভবেৎ সোপি রাধাভক্তিপরায়ণ:। তস্যালাপ পু-যোগায় মুক্তবন্ধো নরো ভবেৎ ॥ রাধা রাধেতি যো ব্যাৎ মারণ জ-ৰতে নর:। সর্বতীর্থেযু সংস্কারাৎ সর্বদ্যাপুযত্নবান্।। রাধা রাখেতি वर्गाखु ताथा तार्थि शृक्रस्थ । রাধা রাখেতি যমিষ্ঠা রাখা রাখেতি জল্লতি ।। বৃন্দারণ্যে মহাভাগা রা-খাসহচরী ভবেৎ। জগতা পৃথিবী थन्त्रा छख वृन्हावन भूती ॥ छख थन्। **ग**ी द्राक्षा (थ)या या मूनिमख• रैमः। तुकारीनाः सहात्राध्याः मृत्रजः সেবতে সুর:॥ তা॰ রাধিকা॰ যো ভ জতে দেবর্ষে ত॰ জ্ঞানেহি। তদা-नाभः अक्रिय बभय गज्यम् खमः॥ অহ্নিশ মহাভাগ স্কু রাধেতি की बंग । तारथि की बंग अमंत्रार কৃষ্ণেন সহ যো জন: ৷৷ তন্মাহাত্ম্যুণ ন শক্যে ২ছ• বক্তু' শেষে৷ ২ত্ৰ নৈব চ। ন গঙ্গা ন গখা নি ভ্যা ন হিতা চ अब्रश्नी ॥ कराहिरेयव विम्था भर्द-

ভीর্থকলপুদ।। সর্বভীর্থমধী রাধা। मदिवंधर्यप्रयो भूनः ॥ कमाहिष्यम् थ। वाश्वी नं ভবেलु छमानवय । छम्।-वार्य वरमः कृष्क। त्राव्या मरु नात्रम ।। রাধাক্:ঞ্তি যস্যেষ্ট তদেতদ্বুত भुखन•। उत्तर्ह (**एक् भनरमाः** करा-চিম চলেন্ধরি:।। এতদেব বচ: শু.হা নারদো মুনিসভমঃ। পুণতঃ পু্ছ্য। भाम भाशिष्ठेग्रा॰ यत्यानि छ॰ ॥ ज चार्रेगी वुड कथा यः मृताजीह मा नवः। जीवाशायाः मुथी गानी धनी সর্বগুণান্বিত:।। জপেদৈ ভক্তি সং युकः भएतात यादगदः। धर्मार्थी ज उत्तर भग नर्थाची ज उ**त्र थन**।। कानायीं जडल सानः वाकार्यी लाक्त अञ्चल । मर्वतन्त्रभवनः कार्कामि टेट्कनः मुखी॥ विविही ह **७**१ विद्यार्ग यता ७ कि बालू राट्। ইতি পাত্রে উত্তরখণ্ডে জীসনাশিব यावर शयार श्रीवाधानवादेवी 🐠 थन बाहारचा ३५० बधायः ॥ ६॥ **थम्याः महमुनामानि यथा। भा**द्येजुः वाछ। प्रवास्य जनगाथ ज्लानुगुरु कातक। यहा छि मनिकाकनाः यहा खि नि (७ हरा।। यष्ट द्या भूत्रहिंखः ७८ नवः भ भू.५ भूरका। ७ मृत् ওহ্ন ভাষ বাৰু য**তে মনলি কাশতে**॥

प्यान गिर उ॰ यञ्जू यरिया करिया कराइ-न। जन्मा॰ कथर एएयन चह्नु॰ ना-মচোত্তম•।। শ্রিরাধায়া মহাদেব্যা গোপ্যা ভক্তিগুসাধন । বুদ্ধাও-कबी हबी मा क्या लगातिल भा-गंजा।। मःशास्त्र लेत्रतः । मृतद्रित विविज्ञार्थाः कथाः ला सङ्ज्ञाः भू ५।• । जिंड क्यानि क्यानि अम्या नून॰ गरुषति ॥ यमा इति कतिवानि व्यक्ट कार्यारगोत्रवाट । जमा विश्व-**७ क्रांपि इदिगामियागिया।** তদ্যা গোপীত্ব ভাবদ্য কারণ গ-रिड॰ भूदा। इमानी॰ मृतु (मरविभ नानाः हिव मश्त्रुकः।। दग्रया कथि-**७**॰ रेनद ज्ञाञ्चव्यक्ति कमाहन । ज्ञद (द्वराट भुवक्तामि ज्का धार्यः मू-নুক্ত ভিঃ।। মম প্রাণসমা বিদ্যা ভা वारा प पुरुर्निमः। शृगुत्र गितिस्ब निष्ठाः १८४ ह यथा मि ॥ यम्राः गुजानाट क्वेश्व (गालाकन: अ-अभुजूः। अन्या नाम नत्मुना अव-मं। प्रम व्यव हा। 🗱 ।। (म्वी वाथा भन्ना নোডা চতুৰ্গপুসাধিনী। জীৱাধা রাধিকা কৃষ্ণবল্লভা কৃষ্ণ সংযুতা ॥ वृन्तावतन्थती कृष्मश्रुवा भननामाः रिनी । भिनंजी क्षकाडा ह क्षा-ननत्भुतायिनी ॥ यणविनी याणाय-

गत गत्नामा क्लिक्स छ। मात्मापत निया लाखी लानलम्बनी उथा ॥ कुलांक्यामिन श्राप्त श्रिकाषा হরিপুশ। পুধান লোপিকা গো-शकन्य दिल्लां कार् सदी ॥ तृन्हां व-नविश्वी ह शिहु दिन अवशहरा शाश्क्रवानन्तको अञ्चलका माविने ॥ गठिलुमा भी उसब्धः चा-शमाशममिश्रा। विकृतिया विकृ काडा विष्यादक निवासिना ॥ यामा माननर भन्नी ह यामामाननर शिक्नी। कामात्रिकाञ्चा कारमणी कामणाणम বিশৃষ্ণ ॥ জয়পুদা জয়া জীবা জী-वानन्द्रभूमाधिनी। यट्यामानन्द्रभञ्जी ठ वृष्णानुजूषा भिवा ॥ जनायाका গৰাখ্যকা গৰা-গতি রণ্তনা। কা ঞ্নাভাহেনগাতী কাঞ্নাক্দ্রারি পী।। অশোকাশোকর হি ভা বিগো का ल्याकना लिनी । भावधी व्यवस्त তাচ বেদাভীতা বিদ্বত্তম্য চাইটে শান্ত্রিया नीखि गखि मंजि हैं। छैता। खत्तिभुवा खार्याकी टान्स्कर्म शुविकिमी ॥ (वस्यात्ता ६११ भारतीय তিব্রুমনগোজ্বা। তা ছেব্রু বু নিত্যা ভথৈরে।জ্বলগালিকা॥ न ष्प्रिया नम्भूजा बौदानम्भूरा गुडा। गुलाकी विमनाकी ह दिना

मिन्रभर्तां जिला। जननी जम्मन्त्रा চ জন্ম মৃত্যু জ্বরাপহ। । গতি গতি-न जा॰ थाजी थाजाननर शुप्ताविनी ॥ জগন্বাথিলিয়া শৈলবাসিনী হেমসু न्ती। विविज्ववानिनी विजवानिनी চিত্ৰৰূপিণী ৷৷ বিৰ্ত্তণা সুস্বানা চ निश्च त्रीना निदाञ्चला। लाञ्चलाञ्चतः (गर्ग ह (यागाननरकद्री उथा।। (दगू-বাদ্যা বেণুরতি বেণুবাদ্যপরাযণা। গোপালস্যপুষা দৌম্যা রম্যাসৌ-भाऋत्वा छवा ॥ व्यक्तिमाग्राजि-মোহাচ গতি রিপ্তা গতিপ্দা। গী-र्द्धानवन्त्रा शीद्याना शीद्यानगरमः বিভা।। ললিভা চ বিশোকা চ বি-भाय। विवयानिनी । फिल्टिन्स्या मुक्तमद्वा क्लीना क्लतीशिका॥ धीराश्रिया मीलमाबी विभन्ना विभ-त्तारका। काञाबवामिनी कृष्ण कृ-ष्ठानुः श्रिमा मिडिः॥ वान् छता मृःथ-**थ्जी मृःथकबी कलास्त्र्य। मि** বিশ্ব পিতি লজ্জা কান্তি:পৃত্তি: মৃতি: ध्या ॥ की द्वारणायिनी (स्वी (र-वातिकवानिकियो। देवक्षी ह सहा-वश्वीः जजन्जा अविश्वा ॥ **अःश**-बी नद रिड्डाना नाविजी विष-शाधिनी। (वहा शेला निहालका नि-द्राणक्रभविभुया।। निद्राणग्रहरेनः श्रू-

জ্যা নিরালোক। নিরাশুর্যা। একা की मर्बगा (मव्या विष्णाः भन्नी मद শ্বতী ৷৷ রাসপ্রিয়া রাসগম্যা রাসা विश्वाकृत्दवन । त्रिमका त्रिमकानः न्मा स्य॰ রাসেশরী পরা।। রাসম-ওলমধ্যস্থা রাসমগুলশোভিতা। রাসমণ্ডলসেব্যা চ রাসক্রীডামনো इता।। পুछत्रीकाक्कनिवया भूछती-काक्रणिहिनी । भूखदीकाक्रमिव्या চ পুগুরীকাক্ষবল্লভা ॥ সর্বজীবে[.] अत्री अर्बजीववन्त्रा श्रदारश्रदा । পুকৃতি: শম্ভকান্তাচ সদাশিবমনো-रुद्रा ॥ क्कूष्ट भिभाभा प्रया निष्ट्रा जुा-जिः भुष्तिः क्रमा क्ला। विधुक्तना গোপপত্নী ভারতী সিদ্ধযোগিনী॥ শত্ৰপা মিত্ৰপা নিত্যাকী নিত্য शिक्नी । ज्ञाननावी उथा शाबी भश्रावाची: स्रयंभुः ।। त्रिकृकन्ता ञ्चानमाञी षात्रकावाजिनी उथा । वृक्षिः श्रि छिः श्रानक्षेशा नर्दकात्रश কারণা।। ভক্তপ্রিয়া ভক্তগম্যা ভ काननरभुरायिनी । ভক্তवन्नक्रमा-ভীতা তথাতীতগুণা তথা।। মনে-विधान्ति । कृष्टभुनभन्नायना। नित्रामया भोग्रहाजी छथा महन-भारिनी।। এकानः मा मिवा (क्रमा मूर्गा मूर्गि जिसामिनी । देखे दी नर्व

বন্দ্যা চ গোপনীযা শুভ করী।। পালিনী সর্বভূতানা ক্থা কামাঙ্গ श्रादिशी । मार्नेडीम् क्रिप्रेशे रहती विष्मात्रा भद्राटभद्रशा हिमालय-সূতা সর্বা পার্বতী গিরিজা সভী। **एक्क क**न्या (एवं यां छ। यन्त व ब्ह्हा **इद्ध** खनुः ॥ तृन्दात्रग्रिष्ट्या वृन्दा वृन्दा-वन वनामिनी। विनामिनी विक्वी চ বুন্ধলোকপুতিষ্ঠিত।।। কৃদ্মিণী রেৰতী সভ্যভানা জাম্বতী তথা। जूनक्या भिविष्या कालिकी इङ्ग कम्यका ॥ भित्रभूना भूनं छत्रा छथा হৈমবতী গভি:। অপুৰ্বা বুন্ধৰূপ। **চ বৃক্ষা ওপ**রি সালিনী ॥ বৃক্ষা ও-ভাওনধ্যস্থ। বুদ্ধাওভাওক্পিণী। অওক্পাওমধ্যস্থা তথাওপরি-भानिनी ॥ अ**ख**राशाखमः**र**ङौ वुक्षानिवहिति भुगा। महाविक्षु भिगा कन्न वृक्कक्षा निज्ञञ्जता।। जाज्ञञ्-ভা ছিরা গৌরী গৌরাস্বী শশিশে থরা। খেডচস্পকবর্ণাভা শশিকো-টিসমপুভা।। মালতীমাল্যভূষাঢ্যা মালভীমাল্যধারিণী। কৃষ্ণস্থতা কৃ-ककान्ना वृन्तावनविनामिनी ॥ जुन-ग्राधिष्ठा ज्लानी अभ्यादार्गन भारता **जाद्रमा श्राद्रमा (गाश्रनन्मिनी अर्ब-**সিদ্ধিদা 🛭 অতীতগন্না গৌরী

ं हें हु हु हु दिनिय करणार्वित्र भूनी कर्मनार्व वर्षेत्रे विषयि वाष्य मरन्द्धार्विति, रञ्ज्यसञ्जा। अकः चावकरमुख एक्चेन सक्**नभूमा ॥** ি ূতা কি কৈ এখা খ্ৰীনিবাসা र पूर्वित् देवा न्यूपार्वा देव हत्रा जीहा िकाना धिवेशिशो ॥ जिनामा क्लारी व श्रीशास्त्रवहाना । জিনিভয়া **্রিগণেশা আছরপা শু** তা শুভিঃ ॥ খ্রিক্রিনাকপিণী শ্রীলা ি, এঞ্চতমনাশ্রিতা। ঞ্রিরাধা 🗐-मिक्ति रल्हा (म्हिन्स सा सु जिल्ला ॥ যোগেদা যোগনাতা চ যোগাভীতা युगिन्या । त्यामश्रिया त्यामश्रमाः यागिनी भविष्ठित ॥ खवायमुन सङ्गा पाडियोदस्याभगा। नी-बाचतवता बाही देवर्गक्रमा बता श्र ि:॥ রত্নশি शामगङ्ग ह त**्रश्र** ७ न ভূষিতা। ররালকারস•মুক্তা রর্মা-ল্যথরা পরা ৷৷ রত্নেন্দুসারহারাচ্যা **ब**्रभागाविज्यिक। इन्त्रनीगन्। ন্যস্তপাদপদ্মা শুভা শুচি: ॥ কা-र्खिकी शोर्भनामी ह अभावमा छ ষাপহা। গোবিনরেজগৃহিণী গো विनदबाजभूजिजा॥ शाबिनहार्भिः তচিত্ৰা চ গৌপীজনগণানিতা বৈষ্ঠ নাথগৃহিণী গোবিন্দপর্মান-

मा ॥ . १११विन्हरहवरहवाछ। छथ। रेवक्रथेकुम्स्त्री । भानमात्रा (दमवर्जी সীতা সাধী পতিবুতা ॥ অয়পূর্ণা महातन्त्वना किवन्त्रमुख्यती र रैकवनारायिनी (मुंधा (गानीनाय-मताह्या ॥ भाजीनात्यवदी हजी नायिका नयनान्विता नायका नायक-श्रीजा नायकाननः(क्रिशी॥ स्मिया-শেষবভী শেষকপা চৈব জগন্ময়ী । গোপালপালিকা মাগা नन्द्रजारा उथा शता।। अनाती (योवनानन्ती বুবতী গোপসুন্দরী। গোপমাতা जानकी व जनकानम्द्रकाति ।। रैक-बामवामिनी ब्रह्मा इब्राखायगंडर পরা। হরেশ্বরী রামরতা রামরামে-শরী র্মা॥ শ্যামলা চিত্রলেখা চ छथा ज्वनत्वाहिनी । जुरगान्तरा গোপবনিতা গোপরাজ্যপুদা শৃভা ॥ व्यानन्तर्शा गास्त्रभी गटनात्राङ्ग সূতা সতী। কৌনারী নারসি•হী চ वाताशी नवमूर्शिका ॥ ठक्षवाठकवा भाग नाती खरनजुन्तती । एक्य-उद्धरा नाकी नक्षकन्त्रा जुलाहना ॥ রতিক্পা রতিপ্রীতা রভিশ্রেষ্ঠা রতিপুদা। রতিলক্ষণগেহস্। বি-রজা ভুবনেশ্বরী ।৷ শঙ্কাম্পদ্: হরে-ৰ্জামাজ্ললৰ দিতা। বলবা

वज्जारगारभाविभी यमूना क्या ॥ বিজ্ঞা জন্পত্নী চ যমলাজ্জু নভঞ্জি-নী। বক্ৰেশ্বরী বক্রৰপা বক্রবীক্ষণ বীক্ষিতা ৷৷ অপরাব্ধিতা জগমাথা জগনাথেশরী মতিঃ ৷ থেচরী খেচর जुङा (था ५ त व भूमा यिनी ॥ विकृ व कः স্থলস্থা চ বিষ্ণু ভাবনতৎ পরা। চ-न्तुकाञ्चित्रभाज। ह हन्तुननमत्ना-হ্রা।৷ সর্বসেব্যা শিবা ক্ষেমা তথা क्रिनक्दरी वयुः। यान्यनमुवयुः रेन ৰ্যা শিবভক্তা শিবান্বিতা।। কেবলা নিষ্ক। সূক্ষা মহাভীমা ভয্পুদা। জীন্তর্পা জৈম্তী জিডা মিত্রপু-भारिनी।। (गानानवनिज। २नक्। क्रवार्कन्युनिवामिनी । जयली यम्ना-क्। চ যমুনাভোষকারিণী।। কলি-क्लाय छक्षा ह कलिक्लाय गणिनी। कलि स्यायक्तभा ह निज्याननरकत्री कृशा ॥ कृशावकी व्यववकी रेकः वामाञ्चवामिनी। यामरप्ती वाम ভাগ। গোবিন্দপু্যকারিণী ॥ न-(शन्तक्रम् । रयारभनी रयाशिनी रयान-क्लिनी। यागिमञ्जा मिष्कक्षा मि দ্ধিক্ষেত্রনিবাসিনী ॥ ক্ষেত্রাধিষ্ঠাতৃ-ৰূপাচফেত্ৰা গ্ৰীতা হলপুদা। কে मारानन्द्राबी ह किमावानन्द्रायि নী ৷ কেশবা কেশবপুলি তা কৈশোরী

কেশবপ্রিয়া। রামক্রীডাকরী রাস-वामिनी द्राममृन्दती ॥ (गाञ्चला) विज्ञाहर ह दिल्ल प्रमुख्य होरायिनी। वरङ्गानी नात्रकी नात्रक्रवाम ७-ना ।। এলালবঙ্গ क भू त्र मूथ गाम मू-थानिजा। मूथा मूथानुना मूथा-क्रा मूचार्युनायिनी ॥ नाक्रायेगी क्षा द्राश कबना कबनानशी। का-क्ना कक्नाक्नी (गाक्ना नागक-र्विश ॥ त्रिनी कोनिनी क्विज्ञा-जिनी ह जगन्मवी। किंदिना ऋदिना नीवा नीवाषद्वस्त्रा भूजा ॥ निज्ञि-নী ৰূপবতী যুবতী কৃঞ্পীবরী। বিভাবরী বেত্রবতী শ•কটা সটিলা-**ज**का ॥ भाजायनित्या रेणजा मृक्क्ती-পরিমোহিতা। দৃকপাতমোছিতা-भाउवाभीना नवनी जिका ॥ नवीन। নবনরে। চ নারস্ফলশোভিতা। रेश्मी (रुममूथी ठन्तुमूथी मानजू-শোভনা ॥ অর্জ্বসন্ধরা চন্দুবল্ল-ভা রোহিণী তিনিঃ। তিমিহিল-क्वात्माप म् नाज्यभाक्ष्मातिनी ॥ কারণী সর্বভূতানা কার্য্যাভীভা िल्लादिगी। किल्लाददल जा तक्ल-কারিকা কামকারিকা॥ কামেশ্বরী कामकना कानि मी अनिरीशका। किन्तर उनगा जी इया मिनी जी द्रारा

हिनी ।। कारम्रज्ञीभानभन्ना अनुमा (यादशादिगी। अगुरा अगुरानन्ता ক্লেশী কামবয়ভা।। তকারী বৈজ यञ्ची ह निष्णि छिषके भिनी। विद्युव् कृ भिया क्कांबता वित्वाभभ अभी।। विनाजिका विनवभू विन्वक्रिनिया সিনী। তুলদী ভোষিকা তৈব হৈ-**डिनां न्यकारिगी।। गर्डनुगानिनी** শ্যানলভানঙ্গলভা তথা। যোষিত্ শক্তি মূক্পাচ গোষিতা নন্দকারি गी।। (প्रमित्र्या (अयद्भारा भारत्या ननः তর ফিণা ৷ প্রেমহরা প্রেমনাত্রী পে-मण्डिमयी उथा ॥ कृष्ट्यम्बर्जी খন্যা কৃষ্ণপুর্মতর্মিণী। প্রেমার্থ দাবিনী সর্বথেতা নিত্যতরঙ্গিণী।। श्वाव ज्ञावादि जा (ब्रोम्) कपूरवन्त्र भू कानिनी। किनवा न्युना (कन शामनदक्षिनी वही ॥ वहीतवानि-नी श्या ध्यादमा कतामत्री। तुका-শুগোচরা বুল্বৰূপিণী ভবভাবিনী श मः माद्रमालिमी रेलदा रेलदामगर পুরাবিনী। শিশিরা ছেমরাগাট্য থেয়ক্পাতিসুন্দ্রী।। মনোর না বে-शवजी (वशाष्ट्र) (वस्वाहिमी । एवा दि ज एयाथात्रा एयाक्ता पूरमविनी िष्णाइ तक्क् निमा १ तो प्रकृति भा कवा। कवानिधिनाथवपुना कवा

নাথাখিরোহিণী ॥ বিরাগস্পলা হেমপিঙ্গলা হেনমণ্ডলা। ভাণ্ডীর-**जानवनगा रैक्वजी** भीवबी **म्**की ॥ भूकरम्वखनाजीज। भूकरम्बिनुया-मथी । विकला १ कियी को वा कोरयगापत्रभातिनी ॥ कायावती কোষৰূপা জগদুৎপত্তিকারিকা ! সৃষ্টিজিতিকরী সংহারিণী সংহার: कार्त्रिभे ॥ (कणरेणवाणयाजी ह চন্দুগাৰা সুকোমলা। পদ্মাক্রাগ भः द्रागा विक्राप्तिशदिवामिनी ॥ वि-क्षानग मात्रमशी मधी मःमात्र-রাগিণী। ভূতা ভবিষ্যা ভব্যা চ ভব্যগাত্ৰা ভৰাতিগা ৷৷ ভব্না-শান্তকারিণ্যাকাশক্পা সুবেশিনী । রভিরঙ্গপরিভ্যাগা রভিবেশা র-তিপু্যা।। তেজস্বিনী তেজৰূপা কৈ-বল্যপথদা শুভা। মুক্তিছেতু মুক্তি-(र जून द्विभी लक्षण कमा II विभानः निजा विभानी विभानश्रनमञ्जता। বিশালগৃহবাসা চ বিশালবদরী-রতি: ॥ ভক্তগ্রীতা ভক্তিগতি র্ভ-ক্তিশাৰ্যা ভ্ৰাকৃতিঃ । বামাঞ্ছা-রিণী বিষোঃ শিবভক্তিসুখান্তি-ভা ॥ বিধিকা ২বিধিকা মোদম্মা চ গণভোষিতা। হ্যাস্যা হেরম্বসু-ত। গণনাতা সুরেশ্বরী॥ দুঃখছজী

দু:খহরা সেবিতেপ্রিতসর্ব। স-भारानुविधावी ह अन्यक्षविना-मिनी ॥ चदका भाख्यम्यी मधी মধ্যবিলাসিনী ৷ গুৰেচগীতা পৰা গম্যা গল্যাতীভনিভঁর। । সর্বাঞ্চ जून्त्रज्ञी तशा शक्राजनमधी ख्या।। গলেনিভা প্তনাতা পবিত্রহল-দীণিড়া। পবিত্র গুণশীলাচ্যা প-विकारमहाविभी ॥ शविज्ञ ७ भी-মান্যা পবিত্রন্দলপাবিকা। গতি-रता भी उञ्चलना मन्द्रजन्मुनियातिनी ।। निरंन । बी निर्वांगी (स्जूगुङ्गा গণোভন। । পর্বতাধিনিবাসা চ नियानञ्चला उथा।। महागद्य क्यया सद्यारमक्वना मुखा। मंत्र-ष्टन्त्र्यी भागस्त्राता क्विनिवानि नी ॥ वसङ्क्रामा मृत्पुानी वसङ्क्रमना ক্ভি:। চত্ত্ৰা বড্ছুৱা চ দিভুৱা। ণৌর বৃশুক্রা সহস্থাস্যা বিহাস্যা ह मुनुभाग सुमुदायिनी । भागिभ्या भागवामा भागकिमगुभाव्छ। ॥ ক্নপুতি কৃষরতা কৃষতোষণতৎ-गद्या। कृष्णभूनवजी कृषण्डका छः ভদ্ৰপুদা ॥ কৃঞ্পুমপুন্ভভা: रुब्रिङ्किभुनाधिनी । टिञ्नुद्राशा তৈতন্যপূর।তৈত্ব্যক্ষপিণী।। উল্ ৰূপা শিব্দোড' বুক্জোডা ৰূপো-

मती। मरक्षिती मुक्षाम्भी हाछात्रक्र-नवामिनी ॥ हन्स्यानी हन्द्रस्मी চন্দুপুমতর বিশীন কর্ত্রেল পা **চ जगु पुजरा**निका भे दिस्सा**ल**-. त्रजा निमृत्य अस्ति अस्ति । मुर्वाम्लाभाग विच् ।। नालका न्य्रणकीयामा नगदानमर কালিণী। নাগরালিজ্নপর্রা নগ-ज्ञाक्षनमञ्ज्ञा ॥ উद्दर्गीता रेश्मवजी প্রিমাক্ণভরঞ্জি। প্রেমালিজ্ব-সিকান্থী সিদ্ধসাধ্যবিলাসিকা ॥ भक्ष्णा (साम्बन्धी (स्थ्मा स्माम्-थातिनी । दत्रमञ्जीद स्वाको उद्ग ত্যণভূষণা ৷৷ জহাল যা কিফা কৃষণ-शाना शानविधाहना । मञ्जूना **ग**ङ्ग्बर्ग जिंद तानम्बन्धि ॥ **छ**-গদ্মোনি জালীখা বিভিন্নমণিভূষ-गा। तथात्रवाकाषा । ह तादात्राधन-दिशिनी।। किलामदामिनी कृकशूर्य-जर्बद्यनारिनी । कृकाय अबनि**त्र ७।** क्क छ क क वार्थिनी ।। या ठका या ठ-कानन्दका दिनी याहरकाब्जुना ॥ रू-রিভ্ধণভ্বাচ্যা নন্দ্যুক্তা কৃপাপগা । रेन्रेस्डानवता रेथरेयनम मजिन भूषाभिनी ॥ (इस्मिन स्वाभा **ठ** ही श्रीवाक विकादमा कगरायनरक-ত্রি শাহ্রানন্দ্রিশার্দা।। পণ্ডিতা

পণ্ডিতত্তণা পণ্ডিতানন্দকারিণী।। পরিপালনক্রী চ তথা স্থিতিবি-तालिनी । उथा जेक्ष्रज्ञाक्षाकाछ। वि-षक्जनगतार्त्रा ॥ विष्याः भीजिजः ननी विद्व (श्रमविविद्यनी। नारम्यी नाम्क्रभा ह नामविनाविधात्रिभी ॥ मृ न्रञ्गनञ्जा मृन्यक्षे भारभवा-मिनी । कार्खिक्तुडकबी ह द्रभना-হারিণী খরা।। জ্বনা চাতলভলী निनाउननिवानिनी । क्रुपुकी हाक अभ्यर्गमञ्जादिनाभिनी ॥ का **ढिकन्मर्भवावग्रा कन्मर्भरका**ढिनुन्मः ती। कन्पर्भाकाष्टिजननी कामवीज-शुरादिनी ॥ कामभाजविद्यारा ह কামশান্তপুকাশিনী। কামপুকা-भिका कामिन।निमान।श्रेमिश्वना ॥ याभिनी याभिनीनाथ्यहना याभिनी-শরী। যোগেশরী হরযোগমুক্তি-माबी हित्रगुमा ॥ क्लानमानिनी (रवी जीमाश्रामयक्रभरा। कृशानिः তা ধণা গৌণ্যা ধণা ভীতা ফলপুদা ॥ अग्राअञ्जातजाननी मा-রদান্বিভা। সিতাসিতা চ সরসা नीना नावगुमक्ना ॥ विम्यार्थि-विम्याभाषा इ विम्याविम्यास्क्रिशी , यादिकिनी नेप्यूबन**ी नाडनि** धालकात्रिभी । भारतन्तुभी नाशमा

ভা ক্ৰীডাঁকৌত্কৰূপিণী। ছরিভা-বনশীলা চ হরিসেবনতৎপরা !! হরিপ্রাণা হরপ্রাণা শৈবপ্রাণা শি-वानिजा। नत्रकार्गवमः रखी नत्रकाः র্ণবনাশিনী ॥ নরেশ্বরী নরাডীভা नत्राचित्रा वदाक्या। यत्नामानिक्रः নীকীডা যশোদাকোডবার্গিনী।। यानामानस्नन्। यानामानस्ना-র্থদা। বৎসলা কোষলা কালা ক-क्गानंवक्षिनी।। स्रगंतकी ज्विन-श्री (में भरी भाखविभुया । उथा-জুৰসথী ভৌমী ভীমা ভৈমী ভ্ৰমা-নকা।। ত্রিজগন্মোহিনী ক্ষীণা প্রাণা-সক্তরা তথা। পানার্থিনী পান भाजा भानभानन्द्रशियो। मूक्षम-ञ्चनकर्याणा मधिमञ्चल १ भन्ना । म-विভাতাথিনী कृष्णकाधिनी नन्तना-क्रना।। घृउ विश्वा उक्र गूका यमूना-পারকৌতুকা। বিচিত্রকর্মকা কৃষ্ণ-হাস্যভাষণত্তপরা।। গোপাঞ্-নাবেপ্তিতা চ কৃষ্ণনঙ্গার্থিনী তথা। রাসশক্তা রাসরতি রাসবাসক্তবা-সনা ॥ হরিদুা হরিতার্পা হরাব-পিতচেত্রস।। নিশ্চৈতন্যা চ নি-শ্চেতা তথা দাক্ষ্রিদ্রিকা।। সূব-लम्भुसमा रेहव कृष्णज्ञाबाद्धिविश-नी । जीमामगुमधी माममाजिनी

Care of

कामधादिनी।। मलिकालां मिनीकः भी रुद्रिष्यद्रश्रादिशी। रुद्रिगामिश्रः माञी ह रुद्रिकोज्कमक्ता ॥ रुद्रि-शुरा रुतिशाना यमूनाकनवामिनी। ভপঃপুদা লিভার্থা চ চত্রা চাতৃরী-ভমী।। ভমিশা ভপৰপা চ রৌদুৰ-शा या**णार्थिनी । क्**रूकामा क्रू छ-का क्कानम्लभूमायिनी ॥ क्कार्थवा-मना क्कवाणिणी जाविनी जथा। কৃষার্থরহিতা ভক্তা ভক্তা ভক্তা ভক্তা ভক্তিদা॥ 🏝 কৃষ্ণরহিতা দীনা বির হিণী চ হরে:প্রিযা। মথুরা মধুরা-রাজপেহভাবনভারনা।। 🗐 কৃষভা-वनारमामा ज्यानामामिकायिनी । ক্ষার্থস্শলা ক্ষসারচর্মধরা শুভা ।। অলকেশ্বরপূজ্যা চ হৃবেরেশ্বরবল্ল-ভा। धनधान। विधाबी ह जया काया र्या र्यो ॥ भुगवा भुगवनी ह भुन-यार्थवक भिगी। तुका विकृ भिवा-ख. व्यक्ति विश्वास्त्र का ।। त्रक् जीना लिनी ভ্তপ্তেপুণ বিনা लिनी ৷ সকলেপ্লিভদাত্ৰী চ সভী সাধী অৰুদ্মতী ৷৷ পতিবুতা পতিপুণা প-जिनाक्रवितासिनी। जामयमाधिनी কল্পবাসিনী বল্লকপিণী ॥#॥ ইত্যে-ভৎ কথিজ দেবি রাধানাম সহসু कः। यः भारे भारे । भारे । यहा भि उन्

ि अभिकारण प्राप्त करण । जाना करण

। বুদ্ধহত্যা সুরাপান মিত্যাদীন্য-তিপাপত: ॥ সদ্যে মৃচ্যেত দেবে-শি সত্যু সত্যু ন সংশয:। রাধা-নাম সহসুস্য সমান নাস্তি ভ্তলে 🛚 স্বর্গে বাপ্যথ পা ভালে গিরৌ বা জ-লতোপি বা। নাতঃ পর• শু ভ• স্তো-ত্র• তীর্থ• নাড: পর• পর•॥ একাদ শ্যা॰ শুচি ভূ জ্বা যঃ পঠেৎ সুসমা-शिवः। उम्र अर्वार्थ मिष्तिः ग्राट् **ण्**ग्याह्या **ज्रामा** ज्ञाना हाम मार्गा (भी -र्गाम्याः वा ज्लमी मिल्ली नित्व। यः भारते भगगामाभि उत्रा खल **कनः** १८ अवस्य ६८ ३४६ मृदा दर **জপেষ•**ত মুঠেমে ও এল ৬ তত্ ষ্ৎ ফ্রাল সাজিপু ও ১৯৯ জন শন্তিকে ১.১ 🐪 🐪 পু যাং भारतेषा भूषाविभ । भए पूर्वात्रा **सः रे**वदार्देशे प्रभक्तिः सारहरः । ७०७४ বুক্ষভালে শিষ্পা ভাষাৰ ব্যুগা।

स्: रा भूगाति स्वापन या कि मिला पर " वसकु भव राजा भार विकास-क्तु अर १८ स्थित अस्ति । अस्ति । रिकार कुल असी। को ए दि सरी নি**ত্য: শ**ক্ত্যা ভক্ত্যা যথোচিত ।। মন পাণসন ছেত্ত তব ভক্ত্যা পু কাশিত । নাভক্তায পুনাতব্য भाष खाय कपाइन ॥ नाछिकाय वि त्राभाष ज्ञाभयकाय मुनहित्र । उथा দেয় মহান্তোত্র হরিভক্তায় শ-**क**ति ॥ दिकः यु यथामकिनाव भूग्रार्थणी नित्व । त्राधानामभूशावा-রি নন বকু, নহাখনিঃ।। উচ্চত ছ ज्या यञ्चाट भाजा अहिक्षवानुतीः। विणुक्तमदाय यथार्थवादित चिक স্য সেবানিরভায মজ্রিণে।। দাত্রে িফ মুভজিনান্স রাধাপ েলাৰ**প্রা**ধ শোলনা । **হরিপা** *्रवाच्यास*्ड् **मानस्य ॥** ा का भाग भाग भाग रिवक. ः १३१० स्ट्राभूगुः क्रमास्त्रः न िवे क्षण सुर्थिनः । मम भागि देखना जिल्हा प्रकार्थ भव

हि॥ भूषः नयो धार्यहेल हि नानुशा रिमबकात्रणः । इत्रिङ्कि घिषामार्थ मृल॰ म॰ धार्याउ सर्।।। मृतु त्वि य-থার্থ-মে গদিত ব্যিসুবুতে।ভক্তা-সিমে প্রিয়াসি ত্ব মত: স্লেহাৎ পুকা শিত।। কদাপি নোচ্যতে দেবি ন্যা নাম সহসুক। কি পর জা পুব-क्ष्यामि शुग्उलाः सम शिर्य।। खाः ब भाषा द्वाधिकाया यद्य केवह भाषा हि । इंडि नात्रम्भक्षताख ताथिका जर्मुनामजनात्था २९। यः ॥ 🕸 ॥ ত্বথ রাধা কবচ•। শ্রিপার্বত্যবাচ। কৈলাসবাসিন্ ভগবন্ ভক্তানুগুছ-कातक। त्राधिको कवठ॰ भूगाः कथय-স্ব ম্ম প্ভো।। যদ্যন্তি কৰ্ণা নাথ ত্রাহি মাণ দুংখতো ভ্যাৎ। ত্বমেব শরণ নাথ শূলপানে পিনাকধৃক্॥ **এমিহাদেব উবাচ। শৃণ্য গিরিজে** जुडा, कवर भृदंमृहिङ।। नर्दत्र-ক্ষাকর পুণ্য সম্বহত্যাহর পর । হরিভক্তিপুদ॰ সাক্ষাৎ ভুক্তি म्किभुमाधन ॥ विलाकताकर्यनः (मृति इतिमासिध्यकात्रगः। सर्वेज জ্বদ দেবি সর্বশত্রভ্যাপত্ ॥ সর্বেষাঞ্চৈব ভূতানা• মনোবৃত্তি ক-র॰ পর॰। চতুর্দ্ধা মৃক্তিজনক সদা-नन्तकतः भद्रः ॥ ताजम्यायस्य।

ना॰ यञ्जानाः कलरावकः । हेमः॥ কবচ মজাত্বা রাধামজ্ঞঞ্চ যো জ-পেৎ ৷৷ ল নাপ্নোতি ফল তস্য বি म उन्। भरपर्नात । अवि त्रमा भरा (मर्या २ नुष्ट्रे म्हन्तः भुकी खिंउ। ॥ রাখাস্য দেবতা প্রোক্তা রাণ বীজণ পরিকীর্ভিত। ধর্মার্থ কাম মোক্ষেযু বিনিযোগ: পুকীর্ত্তিত:।। এরাধানে শির: পাতৃ ললাট রাধিকা তথা । ব্ৰভানুসুতা দন্তান্ চিবুক গোপ-निम्ती ॥ हन्मु।वनी भानू गर्ड कि ञ्चाः क्षित्या उथा। क्थः भाजू श्रिभुगा श्रम्य विजया उथा।। वा-क्षी हन्पुवरना छेन्द्र॰ जूवनह्मा! কটি॰ যোগান্বিতা পাতৃ পাদৌ সৌ ভদুকা उथा।। नथान् हन्दु म्थी शा-जु खान्नो (गाना न न न न । मुथः विध्-म्थी পाजू (गाभी भरउन उथा।। मुख्युरा भाजू भृष्ठः प्रकी बीकाष्ठः ৰল্লভা। ওছদেশ জরা পাভু ছরিণী भाज् मर्बन्धः ॥ वाकाः वानी महा भा-जु बनागात धानभनी। भूबा दिना ক্ষরতা কৃষ্পুাণা চ পশ্চিমা । । উ-ন্তরা হরিতা পাতু দক্ষিণা ব্যভা-नुषा। एन्प्रावनी निमान्य हिवा (थ **ছि उरमथना ॥** स्त्रोजागुना मधु-पित मागाइ कामकिभी। वोषी

পাতঃপাতু মা•িছংগাপিনী রজনী-करम। (रुजुना महाद भाजू कान ना र पिवार्षक । लियालहा इन-মধে শমিতা সর্বসাল্গু । যোগিনী ভোগসমযে রত্তৌ রতিপুদা সক্ষা কামেশীকৌতুকে নিড্যাংগারম্বা वनी सम्।। अर्बना अर्काम्युर्ताधि-का कृषभानमा। इंट्युइट क्थिड॰ प्ति विवष्टः भव्रभा भूतः । अर्देवस्ताः কর । নাম মহারক্ষাকর পর । সর্বার্থসিদ্ধি শুস্য স্যাৎ य्यायन-সি বর্ত্ত।। রাজদারে সভাযাঞ্চ मःगुरम भज्म करहे। भुगार्थनाम-ममाय यः भारे ८ भूयाजा नद्रः ॥ उम्र गिक्षि ज्यापिति न जय॰ विन्तरक ক্চিৎ। আরাধিতা রাধিকাচ তেন মত্য ন সংশ্यः ॥ গঙ্গায়ানাৎ হ-त्त्र नीमगुर्गा य एकन नाउर। তৎ कन जमा जवि यः भारेए भुयकः मृष्टिः ॥ इतिमु । त्राष्ट्रना हन्तु-मिश्रिकः इतिहनत्नः। कृद्या विश्विष् ज्र्दर्क ह थात्रायट मलाक ज्राह्म।। कले वा प्रवरम्यान न रुद्रि नीज मःभयः । कवहमा भुमारिन वृक्ता मृष्टि । श्रि जि॰ इति ।। म हात्रकाह । निग्रङ ः जुड़ानि ज्वरङ छथ।। रैड क्षराय ह गुकान दिवागश्यकी बिर्न

१ स्राट्ट कवड मवार्य मनायां नामा বাগু বাং ক্রিড জ্রীনারদপঞ্জাতে ফোনান্ডফারে **পঞ্রাত্তে সর্বরফা**ন ^{কৃষ্} সহা । । ৠ। **অথরাধান্তোত্র**• । उत्तरक सम्बद्धान्यकः **भुभारेख**ः ि প্রকিং। বংশ। **রাসেখরী রম্যা** ্বন্ধ চ পরাত্মন: ৷৷ রাসোভবা क्ककासा क्कवकः इन इ ।। क्वः नुगाधिरम्वी ह महाविष्युन् त्रि া সর্বথা বিষ্ণুমায়া চ সত্যাসত্যা সনাতনী। বুক্ষম্বৰূপা প্রমা নির্লি-छ। निर्छ्गा भद्रा ॥ वृन्तावतन्मा वि-कया यमूना उदेवामिनी । शालाकः বাসিনী গোপী গোপীশা গোপনা-**ज्**का ॥ जानन्ता श्रद्भानन्ता नन्त-नन्दनकाभिनी। वृषञानुत्रुठा भाषा কান্তা পূৰ্ণতমস্য চ।। কাম্যা কলা-বভীকন্যা ভীর্থপ্তা সভীনিভা । अरुखि भेड़ नामानि (यरमाङानि भू-ভানি চ ।। সারভুতানি প্ণ্যানি স-र्बनायम् नात्रम् । येः भारतेर् मण्यकः শুষ্দে। বিফু ভক্তে। জিতেন্দ্রিয়ঃ।। ইছ-रेन निक्ता नहीं नहीं याजि रुद्रः अल्ब क्षेत्रकालि इल्ला**मानाः वड**-(इ.स.) क्या । जिल्ला **वक्रा** পেটিনৰ বেংকলিটান ভ**িনে প্ৰবং** । त्तात्र सत्त्वा का के **दम्मू रका ७८**१-। রাবাবে

त्राधाकान्तः श्रु॰ श्रीकृष्णः । यथा ।
गालाक्ष्य चित्रः कृष्णः द्राधाकासः मनाजनः । गाभाक्षनािक
पृक्ति विज्ञेष्ठ ग्रीभार्यो हैनः ॥
हेजि दुक्तिददर्खि दुक्तथः ७ २१ जधाराः ॥

রাধাতনয়: পৃ• কর্ণ:।ইতি হেনচন্দ্রে কর্ণপর্য্যায়ে রাধাসুভশদদর্শনাহু।।

রাধাভেদী পু॰ অজুনি:। ইতি ভূরিপুযোগ:।।

त्राधारवधी भू॰ जङ्ग्निः। यथा । त्राधारवधी कित्रीरिंऽन्तिः र्जिकः स्थ- ज्हार महा। वृहेमेला खंडातमः म्डएकः कित्रिकः ॥ वीज्यम् कर्नाकरम् कृतिकेशा नाखिव भूः। देखि (द्वारामः॥

ब्राधानुडः श्रु॰ कर्गः। यथा। विनि-ब्राधानुडा कर्ग महम्माधिला श्वद्राद्दि । द्राधानुद्रा श्रुकं उनयः काष्णशृष्ठ उक्षनुः॥ ইতি श्वर-हम्मुः॥

রাথেয়: পূ• কর্ণ:। ইতি ত্রিকাণ্ড-শেষ:।।

রাপ্য: ত্রি কথনীয়:। রপধাতো: কর্মণি ঘ্যণ্পুত্যযেন নিম্নন্ন:।।

রান° ক্লী বাস্ক•।। স্ঠ•। ইতি নেদিনী।। তনালপত্র•। ইতি রা-জনির্ঘণীঃ।।

প্রান: ত্রি ননোক্র:।। সিত:।। অ সিত:। ইতি মেদিনী।।

यमूवःभीयवनारस्वन्तः प्राण् गाएड क-मा अव्यवश्यवर्शनः ॥ व-**रु**गः॥ वार्षेकः॥ लगुरुः। ेवि (मिनि ॥ इ. ॥ विष्यु नामा मधः । অঘোর শ্চাণ বাণ্শ্র ন্ত্রিটারী পু দীর্ভিতৌ। ভাগানো রাঘনো গোপ জ্ঞবো রামা: পুকীর্ত্তিতা:।। ইতি ব হি পুরাণ ॥ ৠ॥ রানশব্দ্স্য বু ুৎে পত্তি र्यथा। द्वा मक्ति विचः वहरना बकाशीयद्भवाहकः। विधानाभीयः রো যো হি তেন রামঃ পুকীর্ত্তিভ: ॥ রমতে রম্যা সার্দ্ধ তেন রাম বিদু বু ধাঃ। রমাণা॰ রমণস্থান॰ রাম॰ রা-মবিদে। বিদুঃ। রা চেভি অজ্ঞীবচনো মশ্চাপীশ্বরবাচক: ॥ লক্ষীপতি• গভি॰ রাম॰ পুরদন্তি মনীবিণঃ। नानाः जरुम् पिर्वानाः खत्रा रं ফল॰ লভেৎ ॥ তৎ ফল॰ লভতে নুন রামোচারণ মাত্রত: । ইতি বুন্ধবৈবৰ্ত্তে 🗐 কৃষ্ণ লমখণ্ডে ১১০ অ · ध्रायः ॥ 🗱 ॥ जन्र भविभूर्व उम पुः यथा। मर्ख छा॰म कलाः भू॰मः क्-कञ्च ভगवान् चयः । পরিপূর্ণতমো शास्त्रा जुका है। से लिये है ইতি তত্ত্বৈব 🗅 🕾 💇 🗀 🕮 🗓 व्यथ विद्रीमः जाः । भारती अहत **जनः (जन्मू** पीकि अस्माप ्र सन्हरू

া কাৰ্ন কোৰ্নিষ্টো ভৰতা কাৰ্ भरहा भन्ता 🕸 ।। व्यम् अभूकाभुरवा-गः। श्रीजःक्तिप्राहि देवकरवाक्ति। ठेन्। त्र छ॰ क्यां निकार श्रामाना । न धर्नेप्रायः। भिन्नान खुतुक्राण अवरय नमः । ारः, भायबीहन्सरम नमः । ছদি, এ: গ্ৰামায় দেবতাবৈ নমঃ। ত-তঃ করাঙ্গন্যাসৌ। রাণ অঙ্গুগাভ্যা ননঃ। রী॰ তজ্জনীভ্যা॰ স্বাহা। ক॰ **मर्था अर्थः वयद् । देवः अना**निकाः ভ্যা হু । রৌ কনিষ্ঠাভ্যা বৌষট্ । त्रः कत्र उलभृष्ठाच्याः करे । এवः क्ष्यापिषु॥ उठा मञ्जन्या गः। तुक्त-রক্তে রা॰ ননঃ। ভ্রেমধ্যে রা নমঃ। क्षिया नयः॥ नाल्डो य नयः। लिक्ट न नमः। गामरया मं नमः ॥ ততো मृर्खि नाञ्जत्रामि विधि॰ विधाय मिव॰ ध्रा-থে । কালাস্তোধরকান্তি কান্ত ম निमा वीदामनाथामिन । मूमा জ্ঞানম্যী দধান নপর হস্তামুজ জান্নি॥ সীতা॰ পার্শ্বগতা॰ সরো-কহকরা॰ বিদ্যুদ্ধিভা॰ রাঘব॰। भणाउ॰ गुक्रहाक्रमामि विविधा क-শোসনাস্ত ভাৰে ॥ এবং ধ্যাত্ত্বা मार्गित का माइसामन इर-क्षेत्र । १३३ श्लीठेल्ड्स विशाय रेनकावाः व्यक्तिः भीवेनन्त्र

निश्का भार भी दा वास्तानि शक পুञाक्षणि भगांगुष्ट विशायावन् भूका माद्रक्ट । यथा (प्रव वाम-পার্শ্বে 🗐 সীভাগ্র ননঃ। অগ্রে **७ मार्काय नमः। एकिन वामशार्थ-**(याः ७ मात्राज्या नयः। ७ हाभाय নমঃ। তদ্বহিঃ কেশরেষু অগ্ন্যাদি-কোণেষু মধ্যে দিক্ষু চ রা• হৃদযায়ন-भः। ইত্যাদিনা यएक्शनि পুরয়েশ। ততো দলেষু পূর্বাদি দিক্ষু ওঁ হনুনতে নমঃ। ওঁ সুগুীবায নমঃ। ওঁ ভরতায नमः। अँविভीयाय नमः। अँवास्त्रः **ाय नमः। ७ व्यक्ताय नमः। ७** শত্রুহায নম:। ওজাসুবতে নম:।। म्बार्ग्य अंमृष्टाय नमः। अँ वयस्य नमः। अँ विक्रशाय नमः। अँ मूत्राक्षाय ननः। 'उँ ब्राष्ट्रेवर्ष्काग्य नमः। 'उँ अ-(काभाव नमः। ७ थर्मभानाय नमः। 'खें नूमकाय नमः ॥ उच्च विन्मामी-ন্ বজ্রাদী • শ্চ পৃজ্ঞ । ভভো ধুপা-कि विमर्द्धानाष्ठ**॰ कर्या मगाभा**दर ।। 🗱।। जामाऽ भूद्रम्बद्रगः यु ए वाकः हाः পঃ। তথা চ। পাতৃ লক্ষ- জপেন্ত্ৰ-मभा भ कमरेनः भूर छः । कुल्या-দচিতে বঞ্জো ব্ৰাহ্মণান্ভোজ্যে ভতঃ ।। 🗱।। অয় । মন্ত্রিখঃ। তথাচ ৷ স্কান শক্তি বাক্ লক্ষী ভারাদ্য:

न्मक् दर्गहा 💎 💎 🖂 पर ४१: न्यार চতুর্গরিকাশ্র সামাহনঃ শক্তি দীন াবি 😏 তে। অগ ख्याः 🚉 🎮 🔠 🍦 भूनरयाञ केः माहित्यः । त्राप्तीकारः वि-भागित्वानुः 🔻 🖰 इत्सागायबी স'জঞ্চ শ্রীরামশৈচবদেবতা।। ধ্যান भृज्ञा निकः मर्बः भृत्ववह मभाहात्र ।।। **७था। जानकी**वज्ञ ज॰ (**७**ष्ठ॰ दहरू र्जाया च्यानिक । मणाक्यता १य **गडः म्याहिन** श्रेस स्विति हो। **इन्त्**स्त्र (दवंडा द्वामः भीडाशानिः গরিগুহ:। আদ্য বীজ ছিঠ: শক্তি: কামেনাঙ্গক্রিপা মতা ৷৷ শিরো ল मार्टे जुमश्र जानुकरथेष् ऋराशि । नाज्यक जानू भारम्यू ममदर्गान् ना সেন্নাঃ॥ 🗱॥ ভতো ধ্যান॰। আ যোখ্যানগরে চিত্ররন্নসৌবর্ণমণ্ডপে। মন্দারপুষ্ণৈ রাবন্ধ বিতানে ভোর-ণাঞ্চিতে ৷৷ সিংহাসন সমাৰ্চিং পু-স্প্রকোপরি রাঘব•। রক্ষোভি ইরি-चि रेर्न रेव र्मिवायानगरे**नः भू**रेनः ॥ স॰ख्यमान• मूनि जि र्गक्ते द्वाः পরि-শোভিত । সীতালস্কৃতবামাস্ক वज्राधानाभाषाविष्यः ॥ मारामः भुमन्नवषन भर्ता ब्रत्गवृविष्ठः । भाग्राह्मयः कार्णमञ्जः वर्गनकः ननः

मादीः॥ यमार नर्बः भूबवर ॥ #॥ বিহ্নি নারায়ণেনাচে। জ্ঠরঃ কেব-ল এব চা দ্যুক্রো মন্ত্রাজো হ্যু नर्वाभीश्रेकंजभूतः॥ श्रीभाषा सर्व-थिकिक वीकाम्राष्ट्रगण्डा मनुः। চ-ভূর্বর্ণঃ সঞ্ব স্যাৎ ষড্বর্ণো বাঞ্চি তপুদঃ ৷৷ শ্বাহান্তো হুঁ ফড়স্তো বা ननार्छ। वा ভবেয়नृ:। তথা। ভার भाया त्रभानक वाक् स्वीटेक स यदिशः । ত্র্যক্ষরে। নন্তরালঃ স্যাৎ সর্বাভী-श्रेकवाश्रुपः ॥ ष्राक्षत्र कन्तु ভদু।स्था हिल्लाय हिज्बक्त देश तामाय क्त्रानुः প্রোক্তো মন্ত্র: পঞ্চাক্ষর: পর: ॥ পঞ্চাশনাতৃকাবর্ণ: পুত্যেকপূর্বকো मनुः। लक्षी वाक् मग्रथा निण्ठ जाता-राः माप्तराज्या ॥ एउन जः ताम । আ॰ রাম।ইত্যাদি ত্র্ক্রঃ॥ তথা लक्षी वाक् मन्यथानीनामनाउम ना-নেপি ত্র্যক্ষরঃ। তেন ত্রী• রাম। ঐ• রান।ক্লী•রাম ইভি॥ বহিছে• শয ন বিষে। রন্ধচন্দ্বিভ্বিত। একা-क्राद्रा गनुः (পुाक्ता मखद्राजः मृत-क्यः ॥ वुका मूनिः म्यामगायवीहः (नरा त्राम्ख (म्वजा॥ 🕸 ॥ वकाकात जू बादन जकहराः जुत्रक्ता । उ थाह । छानू वर्षः इत्याप्ता विधि वहनार अद्गाराः यस्त्रक्षा हो ।

TOTAL COLOR CONTRACTOR थिनः जग्रा विवृत्रम्रेन ज्रामि-, निरंत्रावाश्वरयं नद्धः । मूर्वारहास्मन मीयाय अंत्रका नितामयः ॥ त-তোংপল ভ্তামন্ত্ৰী ধন মাপ্নোতি বাঞ্চিত। নেধাকানেন হোতব্য পন্য শঙ্গ সুনুনে ন রৈঃ॥ তজ্জপ্ত মস্তঃ পুপিৰেৎ কবি ভবিত বৎসরাৎ। ভনিশ্রিল ভুঞ্জীত মহদারোগ্য वर्षान•॥ 🗱॥ जय 🗐 त्रानहन्तु (छा-बः। औश्न्भान्ताह । जित्रकामि त्रारक्**ञ मन**वाय॰ मभीयूषा॰। यथा The state of the s The time of the second of the श्रीतः । विज्ञातनातः इतसः य सन् भीव अने भारता अकार प्रकृति । े अवस्ति संस्थान क्षणाहरू है। खड़ कड़े। एन अश्विक न एका । विकास मुन्धिक सम्ब म्बाड स्वावाकणः। भुकामा उत्रतः। ट्या गुरा ्यक नग्नामुक्ता । य-

सामा ४० इ तम निर्मा मिलिन।

र इ का-मान्यद त्यादाना छ॰

यान पर्याम निर्मा निर्मा । १००० विकास विद्याम । १००० विकास । १०० विकास । १००० विकास । १००० विकास । १००० विकास । १००० विकास । १०० विकास । १००० विकास । १००० विकास । १००० विकास । १००० विकास । १०० विकास । १००० विकास । १००० विकास । १००० विकास । १००० विकास । १०० विकास । १००० विकास । १००० विकास । १००० विकास । १००० विकास । १०० विकास ।

रने भुक्ति म मूर्वे विकास विमासिक পাপানা• ভীষণ• ত• নমান্যহ•॥ পরস্য যোগ্যভাপেক্ষা রহিতো নি-**७, भक्षा। मनाउ**ज्य निक्कोनार्य्याः ष्प उ॰ जिनु॰ नगाम।इ॰ ॥ (या मृजू।॰ निजनामानाः मात्रयङ्ख्यालक्षेतः। তৰোদাস্ত্যো বস্বো মৃত্যু মৃত্যু॰ নমান্যহ- ।। যৎপাদপদ্ম পুণতো ভारम्खमপ्रयः । उभीमा गर्ब-(एवाना॰ नमनीय ननामाइ॰ ॥ जा-অভাব সমৃৎক্ষিপ্য দাস্যেনিব ্ 5° সহলন্ধণ ।। নিত্য॰ 🏖-अध्यक्तिम् किन्द्रशास्त्र विक्रा ু শিৰ্মব্যো দিশ তুষ্য সিদ্ধ্য ন্ত্ৰস্থ ্লিদা: ॥ ইদ হন্মতা পোক। म अ बाजाञाक खर। भारतेम्बिन 🕬 স রামে ভক্তিমান্ ভবেৎ ॥ ্ি নুম্ৎকল্পে মজ্ঞরাজাত্মক• श्रितामहन्तुरखातः ममार्थः । # ॥ শ্য প্রামচন্দুস্যপ্তোত্তরশতক

नाव । उत्स्वताम पिताह । मुन् मा व्या नामानि वापमानिकक्षणाः। नामाञ्चलकः गुणाः १ क म्यानकम् । বিশ্রুক । কাডা ১৯ ৩৯ ৩২ ৩২ জিলু 🖯 (THAT CANDITION E) ब्राम् । सा वा विकित्रिक ए कर्षा श्रुवाता कहा विद्यु माहाता । ५८८ । উপবিষ্ঠ স্ততো ভোজু পাৰ্বতী मऋदा श्रुवी८ ॥ भार्बरजाहि मरा সার্দ্ধ ভোকু ভুবনবন্দিতে। ত भार भार्वजी (मवी बश्वानाम मरू-जुकः ॥ ততো ভোক্ষ্যাম্যहः ५ द ভুজ্যতা॰ ভবতা পুছো। তত স্তা॰ भार्तजी॰ পाङ পुरुमन् भन्नत्मधनः ।। খন্যাসি কৃতপুণ্যাসি বিফুভক্তা-नि भार्वि । पूर्वि । देक्वी ७कि र्ভागरवय वित्यवि ॥ त्रकातामीनि নামানি শৃথতো ম্ম পার্বতি।মনঃ পুসন্নতা মেতি রাম নামাভিশঙ্ক যা।। ব্লস্তে যোগিনে। ২নন্তে নিত্যা-नत्म हिमाजानि। इंडि द्राम्भाम-নাসৌ পর্ুকাভিধীয়তে ॥ রাম রামেতি রানেতি মনে রামে মনো রমে। সহসুনামভি ভল্য গ্রাণ নাম বরাননে ॥ রানেত্যজ্ব নহাদেবি जूड्क **नार्छ॰ नगानुना ।** उट्छा द्वाः মেতি নামোজ্বা সহ ভূজ্বা চ পার্ব-

डी ॥ एका छुड़, ब्रश्सदी भड़िः না সহ সংস্থিতা। পপছ ব্রিমহাদে-तः श्री**जिल्दग भा**रमा।। मङ्भ्राप्तः नि कलार द्वाममाध प्रवाधिक । ल-ए अए जार्रा माना लिखाँड संस्थान ितः । कनाजाः भन (मार्यम् एक মে প্রীতিক্তন। প্রিশঙ্কর ওবাচ । भृग् नामानि वक्षामि ज्ञानहम् मा भार्वा । लोकिका रैविकाः भद्रा যে কেটিৎ সন্তি পাৰ্বতি ।। নামানি রামচন্দুস্য সহসু তেষু চাধিক 1 তেষুচাভ্যন্ত মুখ্যু ছি নাম্না মঞ্চোত্ত-व भंड ।। विष्ण (व्रक्ति नामानि नर्वायकाधिक कल । जानृष्नाम न হসেবু রাম নাম পর মত ।। জপ-ত: সর্বেদাশ্চ সর্বম্ব্রাশ্চ পার্বঃ তি। ভন্মাৎ কোটি গুণ পুণ্য রাম নানুব লভ্যতে॥ অস্য শ্রিরাম না-**মাঙ্গোত্তরশত**নাম জেলাস্থা উপাস থাবি রনুষ্টপছনর জীরমন্চল্যোধন ত। শ্ৰীরামচন্দ্র নী তার্পাণ জপো বিভি (यागः। धीतात्या वायवनमू क त्राम-**जुन्म नाथउः।** बाकीनस्याहरः, ही, भागाकान्या हरू द्वारा काललीव-लाजा किया किया विकास नाम नहा বিশ্বানিত্রপূষে প্রান্তঃ শর্প্য ত্রাণ **७८ भनः ॥ वानिश्वास्ता वान्यी**

भागातीक महा राज्या । अ अंतर्भाव गुजरुक्तः असा ख्रामसमा ॥ (को- न भ त्यः चप्रमुन्ति विद्राप्रत्मस्य वि सः। विभीतामात्रियासः साम्रा **िरावार्यः ॥ स**रकारानुगक अ 是就不得想到事代) 新国际共同 मर्भन्त्व खाउकाउकः ॥ (वनाउ-नात्रा १ त्या द्या छारे बहु 😇 । বজ:। দূৰণতিশিরোহতা তিম্র্তি ख्रि**थे** । ख्रिका ख्रिला हा-षाः भुग्रहादिकनीर्ननः। बिलाकी बक्ता वदी म् अकादगुन्गुक्ट ॥ অহল্যাপানিশ্চন পি ভূভক্তো ব त्रभृतः। बिट्डिन्स्या जिङ्काक्षा নিতলোভো নগদ্ ; ।। খাক वानज्ञ मः था जी विजक्षेत्रभा भूयः । कगरुजागवत्रमः সূমিত্রাপুত্রসেবি ७: ॥ मर्बरम्वाथिरम्वण्ड मृज्वान-बर्जीवनः । नायामात्रीहरू उह म-**रा**जारमा भराजुनः ॥ मर्दरिवसः ।: भोष्यत वृक्षांत्रा म्निमः खंडः। शायाणी मरहामात्रः मृगीरविश्व छः ाब्राप्तः ॥ **मर्बभू**ग्राधिककल छीर्थः विविधास्त्र न्त्राहिश्यान्य स्ट्रान श्नुत्वर: लङ्गः लक्ष अथा।। शूर्वहः भेरमा प्यामातः शुद्धानः शुक्राना ख कः। भिजवाकः। भिजनायी भूव

अहरी के डोधन्द '। **अनम्र**े 'द्वीन त्र। योत्राम। उधारा छवः । भाषा-भागपनातान। भगपनानिम्किः ए। १९४० जुल् जिन्नाही मः भव नेत्र, १ १ वेत्र अञ्चलका सुन न्यातः भूम । विकास । स्वृक्षंतः । नविवद्धाः वर्षाः यङ्काः कत्रागत्र १व-र्जिङ: । **नि**विषय भुविधा जामर्बाः ঘগণাব্জিত:।। পরসাত্মা পর--व्या महिरानम् विगुरः । शतः छ। তি: পর ধান পরাকাধাপরাৎ-भद्रः ॥ भर्त्रणः भाद्रभः भादः मर्व বেদাত্মক:শিব: ৷ ইত্যেতদামভদু-স্য নামা মস্টোত্তর•শত•।। গুছাদ্ধু-**হুতর• দেবি তব প্রীত্যা পু**কীর্ন্তিত• । यः भारेट भृग्याद्याभि ভক্তियु-क्ति एउमा ॥ म मर्सि मू छाउँ भारेभः कन्नरकारिममुख्हरेवः। बनाः নি স্থলতা বান্তি শত্রবো বান্তি মি-बजा॰ ॥ दाकारना मामजा॰ या**खि व**क्षा याखि भोष्ठां थानुकृत्रः ঞ্ভানি ছৈৰ্য্য যান্তি চলাঃ ক্সিযঃ ॥ অনুগৃহং গুহা যান্তি শান্তি মাথা-ন্ত্যপদুবা:। পঠতো ভক্তিভাবেন जनम् भितिमञ्जूष ॥ यः भारेष् পরবা ভক্তা তস্য বশ্যু হগপ্রব । যত্মৎ কাম্যতে চিত্তে ভত্তদাপ্নো-

The first that the second

हि के जिस्सार । १ मान्य प्रक्षेत्रका भाउत्तर प्रवास वर्ष शिक्रदोशान शलील अवेद । "对自然们对广东。" The state of the state of अभाष्ट्रम् मार्गात् वत 3 ७ उत्तिक्ति १ ७०० । भूगाका लियु मर्खिय भठेशाम मञाष्टेकः ॥ কল্লকোটি সহসাণি কল্লকোটি শ-ভানি চ। বৈদ্ধে বাস মাপ্মেতি म्मभ्देर्ब मंगाभद्धः ॥ त्रामः पूर्वाः मलनामः भगाकः भीउवाममः। স্তবন্তি নামভি দি বৈচুৰ্ন তে সাংসা রিণো নরা:।। রামাণ রামভদায রানচন্দায় বেখসে। রঘুনাথায় না-খাৰ সীতাৰা: পত্ৰে নম:॥ ইম• अख भर्मानि **क्र**शस्य पियानि-শ । সর্বপাপ বিনিমুক্তিঃ বিষ্ণুসা-যুদ্ধ মাপ্লু যাৎ ॥ ইত্যেতদাম ভদু म। माश्राजाऽ (वहमयाउः । कथि ত তবগাঙ্গেয় যত স্তু বৈঞ্বো ক্তম: ॥ वन्तामर्थं मर्ह्णानः इत्रकाम् ७ थखन । कानकीक्षरगनन्दरन्द রযুনন্দন• II ইতি পদ্মপুরাণে উম[্] মহেশ্বর সংবাদে এরামচন্দ্রাস্তোভ त्रणञ्जामस्यादः जनार्थः ॥ 🛊 ॥ व्यथ धितामकवष्ट । युगञ्जा नी

ក់តិក្នុស់សាសែក 👔 គឺស្រែកូរ 自然的 经销售条件 医水流 नामको अधिकानक कर्ना प्र त्रामठन्द्रक्रव्हमऽ वृक्षकोत्मिक्श्रवि र्गायबीहन्मः धितामहानु। (मय्छ। **জীরানচন্দু প্রীভ্যর্থ জপে বিনিযো-**গঃ। ওঁ শিরে। মে রাঘবঃ পাতু ভাল प्रभावपाद्याः। क्लिमलाया দৃশৌ পাতু বিশ্বানিত্রপূবঃ শুক্রী।। ঘুাণ পাতু নথতাতা মুখ সৌমিত্র व भवः। किञ्चाः विम्यानिधिः भाज् কণ্ঠ• ভরতবন্দিতঃ॥ ক্ষনৌ দিব্যা-যুধ: পাত্ ভুকৌ ভগ্নেশকার্ম ক:। করৌ সীতাপতিঃ পাতু হৃদয• জা-মদ্গু।বিং ।। বৃহচ্ পাত ক্রন্তি सन्त भौद्यान्यां एए । भा मां म् ्रम्भारितः च्याः । १५ मिन्द्रास्त्रस्य या १ एक सामा क्या वा**डि** जात्त्रमानुगः । ७३० कि विकृतः াতে প্রং পাঞ্জা, ১৫ । প্রা कृष्टिः भाउम्पत्यमी स्वयंद्रां धुकु । डेत बब्रुक्यः भागन् हास्यः क्रविनामकृष्ट, ॥ क्षाणी अकुक्ट

পাতু জন্ত্রে দশন্থান্তক:। পাদৌ विजीवनश्चिमः भाजू तामा श्थिनः বুপঃ ।। এতা॰ রামব্লোপেতা॰ র-का गः मृक् ने भरहे । म हिद्रायुः जुशी भूकी विज्यो विनयी ভবেৎ ॥ পাভাল ভূতল্ব্যোমচারিণ শুঘ্চা-রিণ: বিদুপ্ত মপি শক্তা তে রক্ষি ভ• রামনামভিঃ ॥ রামে**ভি রাম**-ভদুভি রামচন্দেতি বা শরন্। ন রোন লিপ্যতে পাপৈ ভ ক্তি মুক্তি-ঞ্চ বিন্দতি ॥ ভগভৈনীত্রকমন্ত্রেণ রামনামাভি রক্ষিত । यः করে খার-(राखन) कद्रष्टाः नर्वनिष्वरः॥ ভূ र्व्छभाउ दिया विष्ठा गन्न हन्तन **চ**ष्टिञा । क्षा रेव धात्रयम्बस्र स्मा श्कीक्षे कव नाश्च याद्या तात्र न भाग मृह्य भिज्यः जन्य बार्या छ-वে । काकवस्तुत ह या नाती मृखा-পত্যাচ যা ভবেৎ ৷৷ বস্থপত্যা জী-वबर्भा भा खर्वमाव मः भयः। वजुः পঞ্জর নামেদ থো রামক্চ প-हिंद्र ॥ व्यक्ताहर्डा छः: गर्बे व न ज्र कर भक्त । व्यापिष्टेवान् रथ। स्त्र রান রক্ষা নিনা॰ হরিঃ।। তথা লি-थिउवान् भाकः भुव्याः वृक्षको निकः । ধরিনৌ বন্ধ নিন্ত্রিংশৌ কাকপক্ষ-क्षत्रो मूट्डो।। वीद्रो मध्न भिष् त्रकः-

ভা ভাবুভৌ রাম লক্ষণী তৰণী क्रामणामा मुक्राह्मा महावानी ॥ भूखतीकविणावाक्ष्मे नीत्रक्था-जिनाषदो । कलगृलाणितो माखो ভাপসৌ বুক্ষচাব্লিণৌ ॥ পুঞৌ দশ-রথসৈ্তৌ ভাতরৌ রামলক্ষণৌ। শরণ্যে সর্বসত্বানা শ্রেষ্টো সর্বধন্-पाठा॰ ॥ त्रकःश्रनिश्हात्रो जा-যেতা নো রঘূতনৌ। আত্তসজ্য धनुषाविषु ग्रावक्षया गुगनिषक्त न-क्रिनो ॥ तक्रभाय मन तान वाळा-ণাবগুত: পথি সদৈব গছতা । সন ष्त्रः কবচী খন্নী চাপবাণখরে। যুবা ॥ यह्मातात्रथकामानुगिः भाज मन-স্থাং ।। অগুতন্ত নৃসিংহে। মে পৃষ্ঠ-তো গৰ্ডবৃদ্ধ:। পাশ্ববোস্ত ধনুমা-ত্তৌ স শরৌ রাম লক্ষণৌ ॥ রামো मानद्रथिः मृद्धा वञ्चपानुहद्धा वली । काञ्र इः श्रवः भूनः (कोगलाया त्रघृखभः॥ (वराष्ठ (वरहा) वः छन्। भूतागः भूक्षाखगः। जानकीयल्ल-ভ: প্রীমানপুনেযপরাক্রম: ॥ আ-পদামপছভার দাতার সর্বসম্প-দা॰। গুণাভিরাম॰ 🗐রামণ ভূষো ভূযো नमामा**रः**॥ मिक्करा नजाताः খবী বামতো জানকীশুভা পুরতো মাক্তি যঁস্য ত ন্মানি রঘ্ভমা।

বান

রামকরী জ্ঞী রামকলীরাগিণী। ইতি হলাযুধ:।। অস্যা বিবরণ রাগশবে দুপ্টব্য়ং।।

वनी ॥

রামণিরি: পু॰ পর্বতবিশেষ:।

চিত্রক্টপর্বত:। ইতি কন্চিৎ।।

যথা। কন্চিৎ কান্তাবিরহ গুরুণা

স্বাধিকারপ্রত্ত: শাপেনাস্তণনিত নহিমা বর্ষভোগ্যেন ভর্তু:।

যক্ষ শ্চকে জনকতন্য। সান পু
ণ্যোদকেষু শ্লিগ্রাণাতক্ষু বসতি॰ রামণির্য্যাশ্রনেষু ।। ইতি মেহদ্ত:।।

त्रामहत्तुः श्रु॰ श्रीत्रामः। ইতি मदः त्रद्वावनी ॥

द्रामहर्मनकः श्रु मननवृक्तः। ইভি
ভাবপুকাশः॥ इहिৎ পুস্তকে রা

याह्यनकः। ইভিচ পাঠः॥

द्रागजनभी खी वलाएवमाजा। यथा

। রোহিণী রামজননী রোহিণিশ্চ বলপুস্:। ইতি শব্দরত্বাবলী।। কৌশল্যা।। রেণুকা চ।।

त्रामठे की हिन्नू। इंडागतः॥ त्रामठेः भू व्यक्षार्रेष्कः। इंडि त्रज्ञमाना॥

त्रामठी खी नाडीहिकू। इंडि ताख-निर्घण्डः ॥

রামণ: পু॰ গিরিনিয়:।। তিন্দুক: । ইতিরাজনির্ঘণ্ট:।।

त्रामगीयक॰ जि त्रमगीय॰। इंडऽ-मत्रोका॥

রামতকণী স্ত্রী তকণীপুয়ু•।সে-উতী ইতি ভাষা।ইতি রাজ-নির্ঘণীঃ।।

त्रायम् अः शृ हम्यान्। इंडि मद-

রামদূতী স্ত্রী তুলসীবিশেষ:।তৎ পর্য্যায়:। পর্বপূস্পী ২ বিশল্যা ৩ নাগদন্তিকা৪ কাগুলী ৫ সূক্ষপণী ৬ ভরণ্যান্তা। ৭ ফণিজ্যুকা ৮। ইতি শন্দচন্দ্রকা।।

রামনবমী জী চৈত্রশূলনবমী। সাচ

শ্রোমচন্দুস্য জন্মতিথিং। যথা।
অগস্ত্যসংহিতাযাং। চৈত্রে মাসি
নবম্যান্ত জাতো রান্য স্বয়ং হরিং।
পুনর্ষ্ক সংযুক্তা সা তিথিঃ সম্ব

कानना ॥ भूनर्बष्कम रागाः बाला श्रा याति वा जाउउ । हेठव महानव-ম্যান্ত সা তিথি: সর্বকামদা।। 🕮 রামনব্যী প্রোক্তা কোটিস্র্য্যগুহা-ধিকা। ভফান্ দিনে মহাপুণ্যেরাম मुफ्लिंग, ভृक्तिउः ॥ यदकिः विद ক্রিধতে কর্ম ভক্তবঞ্চযকারক । উপোষণ জাগরণ পিত্নুদিশ্য তপণি ৷৷ ভিষান্দিনে ভু কর্ত্ব্য বুন্ধপুষ্টি নভীপ্স ভি:। চৈত্রপরং ठानुषत्रा (भवः भूषा मःभारि লগ্নে চ কর্ক টাস্থাযে। আবিরাসীৎ नक्वया को नव्यायाः श्रदः भूमान् ৷৷ অত্র মেষস্থ সূর্য্যে চান্দুচৈত্রসৈয়ব সংভবাৎ তিথিক্ত্যবাচ । তথা **छ**त्रिन् दित्न सङ्गिशुरा द्रासम् दिन्। ভক্তিতঃ। জপেদেকান্ত আসীনো याव अजिल्लामी किन ॥ उदैनव স্যাৎ পুরশ্চর্য্য দশম্যা ভোজধ্যে प्तिबान्। जक्तर (जारेकर ईर्रावेरिश ভক্তা দদ্যাচ দক্ষিণা ।। কৃতকু ত্যে ভবেত্তেন সদ্যোরাম: পুসী-मिछ । उथा हिन्न मुक्ता जू नवशी भू नर्बभृष्ठा यहि । स्मित सन्त्राङ्ग रथा-(गन महास्त्रज्ञा ७८८८॥ नव्नी চাষ্ট্রদী বিদ্ধা ত্যাজ্যা বিশূপরায়ণৈঃ উल्गायनः नवगाञ्च भणगा स्व

भावनः ॥ अञ्चली वय**ेकानमायः** বীযেপি । কিল মুখ্যসূঞ্জী ইভ্যব **गहाकलि श**ाठेः 🗀 पूषा 🤛 **भू**व-गाट जर्बब मुकायाम्बाह्य हार हिं-দ্ধাযা মিতি। অতএবাইমীবিদ্ধা নব্মী সনক্ষত্রাপি নোপোষ্যা। इं जि माथवाहार्याः । रेमव छाम्रमाऽ-व नजू विषक्षा। यहा जू शतकातिन একাদশ্যা দশ্মী পারণযোগ্যা তদা দশনীযুক্তা নব্যুপোষ্যা । বৈষ্ণবৈ বিষ্ণুপরায়ণৈ রিতি শুবণাৎ । অবৈফবৈস্ত অঙ্কমী विश्वित गु।शा । यहा ज् भ्वंहित अक्षेत्रीविका न-বনা পরত্র দশনীযুতা নবনী একা-म्मीपित्न ह न भारते (याग्राम्मनी छना नक्रज्ययागायारग रभाष्ट्रभी বিলৈব গ্ৰাহা। পরদিনে দশম্যা নেব পারণ মিতি নিয়মাৎ। তথাচ ज्ञानाईनहिन्द्रकायाः । मन्ननादियू वृष्तिः ७ ७ । जा विष्त्रव विकरितः ॥ তদন্যেষান্ত সর্বেষাণ বুত্ত ভত্তৈব निक्ठि । मन्या भव नायन म-भागी॰ रेनव वङ्गाराय ॥ निम्हिरेकाव॰ विष्ठात्त्रण नवशीवु अष्ठ भाष्टत्र । ইতি কারিকাভ্যা নগস্ত্যসংহিতা ব্যাখ্যান । বস্তুভস্ত দশনী পারণ-माज्य महिद्या विश्वासी विश्वासी विश्वासी विश्व

। বিষ্ণুপ্রায়ণৈ বিভি ভু বিষ্ণুপ-রাযণভ্রেশ ভবিতব্য মিত্যুপদেশ-পর॰ নতু কর্ভ্বিশেষণ॰। অগ **ख्यातिकवम्य विष्काभवामान्**भ (मणार । कर्नु (उप विधिष्वय कन्न नाभरतका । व्यक्तव साधवाहार्यात नामानाउ० वर विका निविका। अ গস্ত্যস•স্থিতায়া মস্য নিত্যত্ত্ব মাহ । প্রাপ্তে শ্রীরামনবনী দিনে মর্ত্যো বিমৃঢ়ধী: । উপোষণ ন **স**ক্তে স স্ত্রীপাকেবু পচ্যতে 🛭 যন্ত রামনব वनगञ्ज जूष्ट्र (माशाहिम् एधी: । मञ्जीभारक्य धारत्रयू भहारञ नाज সংশयः॥ অত্র মর্ত্য ইত্যুপাদানাৎ नद्रनाजनशाधिकातः। এवक अर्यश पुष्मनवम्या य উপোষণ मङ्ग्लिङः । गानु र्जर्ज भवारद्वान्ति रेनव द्वारमा **खर्त्य स्वरः ॥ ७ मार्थ महो**ज्ञना अर्ख कृरेष्वर नवभीवुङ । भूष्ठाःख भाउरिकः मर्दिर्गान्ति वृक्षभनाजनः॥ इंडि फनकीर्जन भारत मराग প্থকত্বন্যায়াৎ मिषाः ॥ অগন্ত अ·हिजाया•। **मान्याम मिना**याध जूनभीमणकञ्चिता। भूजा श्रीतामह ন্দুস্য কোটি কোটি গুণাধিকা ॥॥॥ ভত্রানৃধান নগস্ত্যস হিতাতঃ স ক্ষিপ্য লিখ্যতে । ক্তপুত:স্থানা- पि: । উপোষ্য नवशीखुम्। यास्य हे-সুরাষব। তেন প্রীতো ভব বৃণ ভো স-সারাপ্রাহি মা• হরে ॥ ইতি नियम्। (कामलाञ्चः विमालाञ्च भिनुतीलमम्भूछः। एकियाः ए ए-শরথ পুত্রাবেপ্টন তৎপর ।। পৃ-প্রতো লক্ষণ দেব সম্প্রণ কনক পুভ•। পার্শ্বে ভরত শত্র্য্নৌ তাল-वृष्ठकत्रावृर्ण्डो॥ व्यानु वर्षाः इन्मञ्जः त्रामानु गुरुकाद्भिषः। এवः ध्राज्वा 🗐 त्रामः भूबराष्ट्र। मान मञ्जल। हेरन्ता প্রিশ্চ যম শৈচব নৈর্থাতে। বৰুণো হনিল:। সবের ইংশা বুক্ষা হহি र्मिक्शाचाः ग्राभयस ७ ॥ অহি র-नतः। (कोनन्।। भृत्रायः। मञ्जरा त्रामम् अननी ठानि बामग्य मिष् कण्ट। चा उ खुा॰ भू कवियामि लाक-শরথাযেতি পুজ্ঞে পিতর তে:। ভতো হন্জ্ঞাপ্য দেবেশং পরিবা-त्रान् मगहरंगर ॥ भृतंषहरकागरका-(१ क्रवादीनि व कमार । क्रया-मीनि यथा ताः ऋत्याय नमः। ब्री॰ श्चित्रतम श्वारा। कः शिथारेन वसहै । द्रि॰ कवहाय छ॰। (द्रो॰ (नवान्छ)।॰ वीषर्। तः अञ्चाय करे।। उथा। रून्-নস্ত সন্পূবি ভরত সবিভীষণ।

লক্ষণাক্দ শত্মু জামবন্ত দলা-िष् ॥ ध्रु ं जयतः विजयः मूदाहुः রাষ্ট্রবর্জন । অকোপ পুমুপালাখ্য ज्यञ्च म्वमश्र ७:॥ म्वाश्र वाक-পালা শ্চ তদস্তাণি তদগুতঃ।লো कशाना इन्द्राप्तया प्रभा उपद्यानि বজু শক্তি দণ্ড খন্ন পাশাস্থশ গদা শ্ল পদাচকাণি। নধ্যাহে জন **ভা**ববেং ।। উहस्त्र ग्रुभक्षक मूत्र-खाँदी (मान्सी नवम्याः जिल्ली नाम कर्क हेरक भून बंभू दिन (नषः गर्ड প্रिन। निर्मेश्वर निश्चिलाः भलाम निम्पा मधामरयाधात्रः त्राविज् **७ भज्रभ्रविजयः** यथकिक्षिपकः মহ:।। পলাশা রাক্ষসাঃ। মরৈব॰ वानरयहान्यानर्धाः मन्याब्ह्यगर्भः उः । कल शृह्या मृभः भूनं गृशी द्वा भाइ गूखमः॥ वाष्माक ब्रञ्जन्रोग य् किः वृत्रभीरतिः। भव्यसः। रुणाः নন ব্ৰাথায় ধৰ্ম সংস্থাপনায় চ। দা-नवाना॰ विनामाय टेम्ड्राना॰ निध् নায চ।। পরিত্রাণায সাধ্না রামে। জাতঃ খ্ব॰ হরিঃ ॥ পৃহাণার্য্য ম্বা দত্ত ভাতৃভিঃ সহিতো মম।। পু-ब्राक्षिनः भुनर्भद्वा गाम गामबुजः न्त्रिः। भ्करयिषियक्किता मिवा-त्राजः नरदत्त्यः ॥ 🗱 ॥ उत्रः अः- (क्रिंश: । णुक्रायाः नक्कं व्युक्तायाः विवापाञ्चायः । विकायाः । विकायाः । वकाप्रणीपितः प्रणमी भाद्रम (याग्राः न हिट जमा नक्कं व्यागार्याराणि विकायाः । भाद्रगर्याग्राः हिट जमा विकायाः । भाद्रगर्याग्राः हिट जमा विकायाः । देवि जिन्थाः । देवि जिन्याः । विव जि

त्रामभूगः भू खराकविष्मयः । তৎপर्यऽायः। कामीनः २ मूनिभूगः ० मूद्रविष्टः ८ । ইতি ত্রিকাণ্ডः শেষः॥

রামভদু: পু॰ গ্রীরাম:।ইতিশদ-রত্নাবলী।।

त्रामनवनः ज्ञी नास्त्रित्तनवनः। ७८ भर्यायः। (त्रामकः २ भाष्मान्धाकः त्रमस्रवः २। ইতি রত্ত্বभाना।। त्रामवज्ञनः ज्ञी षुष्ठः। ইতি রাজः

নির্ঘণ্টঃ ॥ রামপুথে ত্রি ॥
রানবাণঃ পৃ॰ ঔষধবিশেষঃ। যথা
। রসেন্দুচিস্তামণৌ । পারদামৃত
লবন্ধ গন্ধক॰ ভাগযুগ্ম মরিচেন
মিশ্রিত । তত্র জাতিফল মর্জভাগিক তিত্তিলীফল রসেন মর্দিত ।
। বহি মানদাদশবক্ত্রনাশনো রামবাণ ইতি বিশুতো রসঃ। সংগ্রহগুহণীসম্ভকর্ণক নানবাতথর-

বানায

म्या ब्रियट ॥ मीया जु भाका न्या नवं अपनि । विकास कर्य भावा । विकास कर्य भावा । विकास कर्य भावा । विकास कर्य नाया विकास कर्य नाया । विकास क्रा । व

রামশর: পু॰ শরবৃক্ষভেদ:।তৎ পর্য্যায:।রামকাও:২রামবাণ:৩ রামেষু: ৪ অপর্রদণ্ড: ৫ দীর্ঘ:৬ নৃপপ্রিয়: १। তস্য মূল গুণা:। ইবদ্ধারুণ। কচিপুদরুণ। রসে অমুর্ণ ক্যায়ারুণ। পিত্তকারিত্বণ। ক্ষ বাত নাশির্ধা। ইতি রাজ-নির্ঘটা:।।

রামশীতলা জী স্বারামশীতলা। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।।

त्राप्तर्थः भू भूगीयः। ইতি भयः त्राप्ति॥

রামসেনকঃ পু॰ ভ্নিস্বঃ।। কট্ফলঃ
। ইভি রাজনির্ঘণ্টঃ।।

त्रामा जी उर्क्छे जी विष्ण वः ।
इंड प्रतः ॥ गी उक्का जी त्रमञ्ज त्रामा। इंडि जत उः ॥ याषा॥ इंक्ष्मा नती । इंडि यिष्मि ॥ इंक्ष्मा । इंडि मद्म त्र वावनी ॥ स्थि क्ष्मे वा ॥ गृष्टक न ऽ।॥ जा-त्राम्मी जना ॥ जामाकः ॥ या-त्राम्मी जना ॥ जामाकः ॥ या-त्राम्मी वा ॥ देखि त्रा क्षमिर्णेः ॥ वा ना ॥ रेग त्रिकः । इंडि मद्म-म्ब्रुका ॥

त्राभाषन• क्ली त्रारमनत्रादनद**धका**वऽ•। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।। তচ্চ শত-(कार्षिमःथ)कः। यथा । ऋात्मर পাতালথণ্ডে অ্যোধ্যা মাহাত্মের ভত্ৰত্য ভীৰ্থাশুম বৰ্ণন প্ৰভাবে । শাপোক্ত্যা হৃদি সম্বপ্ত প্রাচেতস नकनायः। (भावात वतनः वुका ভত্রাগত্যসুসং কৃতঃ ॥ न নিযাদ: न देव द्वारमा मृगयाक्षक् मागछः। **७मा म**॰वर्गानरेनव मुस्त्राका सु॰ ভবিষ্যসি ৷৷ ইত্যক্ত্বা ত জগামাশু বুন্ধলোক• সনাতনঃ। **ততঃ স•ব**-র্ণবামাস রাঘব॰ গুন্তকোটিভি:।। কোটিভি: শতকোটিভি:। চরিত র্ঘনাথস্য শতকোটি পুবিশুর মি ত্যন্যভোক্তে:॥ ভচ্চ সংপূর্ণ বুন্ধ-লোকে ইভৈঙ্তিছে । ই**হ তু লশ**

न्यागिषिष्ठा हेजूर्विभाउमार्भी छान । इंडि द्वामायगीकाया ना-(गाकी ड फें: II के II હેવા হি । <u>প</u>ાસ र्द्राज्यम् द्रामम् वाल्योक र्र्भवान् ঋষি: ৷ চকার চরিভ√কৃৎসু॰ বিচিত্র भम मर्थवर ।। हजूर्विः भर महमानि শ্লেকানা নৃঁক্তবান্ ক্ষবি:। তথা সর্গ শতান্পঞ্ষ ষট্কাণ্ডানি তথোভর• ।। ইতি রামাযণে বাল্মীকীযে বাল-্কাণ্ডে ৩ সর্গঃ।। #।। স•িক্ষ রাম-हंब्रिज थथा। ब्रामायन मरथा वरका শুত্ৰ পাপ বিনাশন। বিষ্ণুনাভ্য-ব্লুজো বুন্ধা মরীচি স্তৎসূত: মৃত: ॥ মরীচে: কশ্যপ স্তমাৎ পর স্তমাৎ মনুঃ সুতঃ। মনো রিক্ষান্ত বংশ্যো **२**ভূছ শে রাজা রঘু: স্তঃ।। রধোরজ স্ততো জাতো রাজা দশরথো বলী। তস্য পুথাস্ত চত্বারো মহাবল প রাক্রমাঃ।। কৌশলগ্রায়া মভূদুামো তরত: কেক্থীসূত:। সূতৌ লক্ষণ শবুংমী সুমিত্রাযাণ বভ্বভুঃ ॥ রা-নো ভক্তঃ পিতু মাতু বিশ্বামিত্রাদ বাণ্ডবান্ যেন্ত্ৰপুন্ন গভো যক্ষী• তাডকা॰ পুজ্যান হ।। কিখানিত্রস্য यरक जू, जुवाल नावधीष्वनी। जन-कम। कर्नुः गद्मा উপयেम २थ हा-नकी ।। উग्रिना नक्करना वीरहा

ভরতো-মাগুরীশ সূতাশ শত্রুয়ো বৈ কীৰ্ভিমতী স্বশপ্ত সূত্তে চ তে।। পিত্রাদিভি রযোধ্যাযা গত্মা রা-মাদ্য: স্থিতা:। যুধাজিত মাতুলঞ্ শবুঘু ভরতো গতো ॥ গত্যে। নূ প-বর্য্যেণ রাজ্য দাতৃ সমুদ্যত । রামায় জ্যেষ্ঠপুত্রায় কৈকেয্যা প্রা-থিত তদা ॥ চতুর্দশসমা বাসো বনে রামস্য বাঞ্ছি:। রাম: পিতৃ হিতার্থন্ত লক্ষণেন চ সীত্র।।। রাজ্যঞ্চ ত্ণবত্ত্যক্ত্বা শৃক্ষবেরপুর• গভঃ॥রথ ভ্যক্তা পুযাগঞ্চ চিত্র-কুট গিরি গত: ॥ রামস্য তু বি-যোগেন রাজা ষর্গ সনাশ্রিত:। স॰-ফ্ভ্য ভরত শাগাৎ রাম• মাতৃব-नान्जिः ॥ णायान्यास्य भगागन्य রাজ্য স্বক্ মহামতে। স নৈছ্ৎপা-দুকে দত্বা রাজ্যায ভরতায তু ॥ বি-সক্তিতো ২থ ভরতো রামরাজ্য মপালয় । ননিংগ্রামে স্থিতে। ভ ক্তো হুযোধ্যা॰ নাবিশঘুতী।। রা-মোপি চিত্রকূটাছ অত্রে রাশুম মা-ययो। नद्मा अञीक्ष॰ চाগन्छ। प्रश्चः কারণ্য মাগভঃ।। ভত্র সূপনিখা নাম্ वाक्रमीमार्क भागउ।। निकृत्र क-ণৌ নাসে চ রামেণাথ পরাহিতা।। ত্ৎ পূেরিতঃ খরকাগাদ্যণ ক্রি-

णित्रा उथा। हजूर्मणर्गेश्प्र्य तकः नाञ्ज वल्तन ह ॥ द्रारमानि (भुषया-माम वारेगर्यमभूत्रक जान्। ताक्रम्। পেরিতোইভ্যাগাৎ রাবণো হরণা य हि ॥ मृगक्षभः न मात्रीहः कृद्राश्र **২থ** ত্রিদণ্ডধৃক্। সীত্র্যা প্রেরিতো त्रास्मा भातीह भुक्षधान ह ॥ निष् মাণ: সচ পাছ হা সীতে লক্ষণে তি চ। সীতোক্তো লক্ষণো হথাগা-मान कानू रमर्भ छ।। উবাচ রাক সীমাযা নুন• সীতা হৃতেতি সা। वावला २ छत्र मामान् अ व्हनानाय कानकी ।। कठायुव विनिद्धिंठ। यायो नक्षा ७ ७७। वनी । आभाक वृक्षहायायाः त्रिका जा अधातयः ৷৷ আগত্য রাম: শূন্যঞ্চ পর্ণালাণ मनर्भ र । (भाकः कृषाथ जानका। भार्गन कृ ज्वान् शुष्टुः ॥ करि। युषक म॰कृত্য उदूरका मिक्रा॰ मिन्। গত্না সথ্য তত শ্চকে সূগীবেণ চরা-घवः॥ मधजानान् विनिर्ভित्र भारतः गानजभद्गा। वानिनक विनिर्छित्र किञ्चिक्षागा॰ इत्रीश्वतः ॥ जुग्नीवः क् ভবান্রানো খাষ্যমুকে শ্বৰ স্থিত: । जूगीयः (পुरुयामान वानद्रान् পर्द-ভোপনান্ ॥ সীভাষা নাৰ্গণ কৰুণ भ्दारिमाः सुमहावनान् । पुछी ही

মুত্তরাণ প্রাঠীণ দিশণ গড়া সমাগন তাঃ॥ দক্ষিণান্ত দিশ•যে চ মার্গয-**खा २थ कानकी । वनानि भर्त्र**ठान् षीभान् नहीता भू लिनानि ह ।। জানকী তে হ্পশ্যন্তো মরণে কৃত-নিশ্চযা:।। সম্পাতি বচনাৎ জ্ঞাত্মা रन्मान् कशिञ्जातः ॥ भाउरयाजन বিস্তীর্ণ পুপু বে নকরা লয়ণ অপশ্য-জ্জানকী তত্ৰ অশোকননিকা স্থি-ভাণ।। ভৎর্মিঙাণ রাক্ষসীভিশ্চ রা-বণেন চ রক্ষসা। ভবভার্য্যেভি বদ-ত। চিন্তमञ्जीक द्राघवः ॥ व्यक्नीयः किं पंजा भीजा को महा मन्वी ८ । রানস্য তস্য দ্তোহণ শোক। মা স্ব মৈথিলি॥ সভিজ্ঞানঞ্চ মে দে-হি যেন রাম: মরিষ্যতি। তৎ শু.ত্বা भुरको जीका (वरीतन्न: इन्माक II যথা রামে। নযেৎ শীঘু• তথা বাচ্য• দ্বা গতে। তথেত্যক্বা তু হন্মান্ वन किरा वेड्छ ७८ ॥ ह्याकः व्राक्षनाः महान्।न् वक्षनः ख्यमाग-उ: । मर्रेब विन्मु जिला वारेग म् क्षे ज्ञादन मृत्वी< ॥ ज्ञानमृत्जामि स्नु-गान् (मिश्र द्वानाय रेग थिनी । এउट শুরা পুরুপিতো দীপযানাস পুছ-कः ॥ किन ब्ह्व निजनाकृता नहा (गर्व गर्वावनः। प्रश्वा नकाः नमाः

যাতো রামপার্থ স ব্যবর: ॥ জথ্বা कन अध्वस्य मृष्टी जीखंडात्वस्य । श्री तज्ञक द्रांशाय द्रारमा लका॰ ययो भूबी ।। अमृगीयः महनूमान -माम्यः मनज्ञनः । विভीयानि मः भारतः महामा द्वाचितः भुष्टि ॥ वा-रिक्रपरगञ्ज्ञ छ। जिक्षमाभ छ॰ जावणा-नुबः। त्राया नलन (मजूक कृषाति চোচিতাযত গা সুবেলাব ছিত দৈব भुद्री॰ लक्षा॰ परम्भं र । अथ (उ वान-त्रा चित्रा नीलाक्षम नलाम्यः॥ भूम् ध् माक ध्रमन्ता काषव भ्रम्था छ मा। रेमनर बिविष मूर्या एउ भूबी॰ লক্ষা বভঞ্জিরে ॥ রাক্ষ্সাণ্ড ম-राकायान् कालाञ्जनहरवाशमान्। রাম: সলস্থানো ছত্বা সকলি: সর্ব व्राक्तमान्॥ विमुर्डिक्खिक श्र्माकः (प्रवाडक नुजाडको। मरहापत्र महा পার্শাবতিকারণ মহাবল।॥ ऋग्रु॰ निष्धः नडकः मक्त्राकः श्रकणनः । পुरुष्ठः वीत्र मृग्यत्वः अग्नुवर्गः महा वनः। बादनः नम्बन भिन्ना शकारेना রাঘবো বলী। নিকৃত্য বাহু বক্তাণি রাবণস্ত ব্যপাত্য় ে। সীতা• শুল্ধা• গৃহীত্বাথ বিনানে পুষ্লকে স্থিত:। नवानवः भगागाला श्याम्। भूवः बं भूत ।। उब ब्राबा हिकाबीय भू-

खवट भीवयन् भुकाः । मभाश्यन-ধানাছত্য গ্রাশিরসি পাতন ॥ পিণ্ডানা বিধিবৎ কৃত্বা দুত্বা দানা-नि द्रावतः। भूटी क्रमन्ति मृक्षा-ভৌ চ রাজ্যে २ভ্যবেচন ।। এক।-দশ সহসাণি রামো রাজ্য নকার-यट । भवुष्त्र। वनन इदा सिन्य खब्र इंडः ॥ अगस्तामीन ग्नीन् मुद्रा मुद्रार्श अखिक त्रक्र माः। त्रर्गः गाउ। करेन: मार्ख भाषाधाः रेवक्-তান্তক:।। ইতি গাৰুডে ১৪৮ খ-ष्णायः ॥ 🗱 ॥ এতদভিব্লিক্ত° বা-न्मोकिनुगीज॰ मक्षविःमजिमर्गयुकः **नर्गु**स्लाकाचाकः भीजाकवृर्क न-হসুকন্ধরাবণ বধ কাব্যক্রপান্ড্রো-ভরকাণ্ড মন্তি। তস্য প্রথমসগী-यामाका यथा । जनमाजीव्रनिवयः पार्विषाः उभमाः खकः। वहमाः भु-থন স্থান বাল্মীক মুনিপুস্ব ।। विनयावनरा ज्वा जात्रवारका म-शम्बिः। পপুছ সমত: শিষ্য: কৃ তাঞ্জলিপুটো বশী !৷ রামাযণ মিতি খ্যাত শতকোটিপুবিস্তর । পুণী-ত• ভবতায় বুন্ধলোকে পুতিপ্তিত• া শুষতে বুন্ধণা নিভ্য মৃষিভি: পি-তৃভি: সুরৈ:। পঞ্চবি:শতিসাহসু॰ ब्रामायन मिष्ट जूवि ॥ छहाकर्निङ

মুখ্যাভি: সাবশেষ মহামুনে। শ তকোটি পুবিস্তারে রামায়ণ মহা-র্ণবে।। কি॰ গীত মিহু যন্নান্তি তমে कथ्य मृ व् ७ । आकर्णानित्राः भृष्ठेः ভারদ্বাজস্য বৈ মুনি: 11 হস্তামলক वट मर्ब मन्नात्र गठकारिक । ७-মিত্যুক্ত্ব। মুনি: শিষ্য প্রোবাচ ব দতা বর: ॥ ভারদাল চির জীব সাধু স্মারিত মদ্য ন:। শতকোটি পুবিস্তারে রামায়ণ মহার্ণবে ।৷ রা-गम् চরিত সর্ব মাশ্র্য্য সম্যুগী-রিত। পঞ্বি শতিসাহসু নৃলো কে যৎপুতিষ্ঠিত।। নৃণা ছি সদৃশ রামচরিত বর্ণিত ম্বা। সীতামা-হাত্ম্যসার খং বিশেষাদত্র নোক্ত-বান্ ৷৷ শৃণুয়াব**হিতো বুন্ধন্ কাল**ে স্ত্রিড মহৎ । সীতাষা ম্**ল**ভূ जायाः भुक्छ **क्रिज्छ यट ॥ इ**. ত্যাদ্যার্যে রামায়ণে বাল্মীকীয়ে অ-ভুতোত্তরকাণ্ডে আ**দিকাব্যে পুথ** भजर्गः ॥ # ॥ व्यन्द्र तुकाखनू রাণীযোত্তরথগুান্তর্গ তৈকষপ্টতনা-श्रायाहिक इद्रशाईडीम वाहक्शा-थ्राञ्जदानाय**ा मस्ति। छव व्यथ्रा**ः ञ्जवानकाएं नर्गाः मरेधव मञ्जू নোদিল্ডাঃ বষ্ট্যন্তরতিশত শ্লোকাঃ भाक्तभुमा न्गा >। अध्याद्य द्रामः

চরিতে অর্থাধ্যকাণ্ডে নবানা স র্গাণা মন্তশভান শ্লোকাঃ পুণ্য-(भाक्षभूमाः २। काएँ १ द्राप्ति १ द्रा আথ্যে সশা দ্বিপঞ্চ পরিফিড়াঃ পঞ্জাতানির প্রোকাঃ পাপত্রভ भार्वजीत्माकाः ०। वीमन्धावा बागायल उमामस्थवं मःवास कि-ষিদ্ধাকাণ্ডে নবনঃ সর্গঃ পঞ্চশতানি শ্লোকা: দুরিতহরা পঞ্চ পঞ্চাশত্ 8। जून्द्रकात्य जर्गाः शरक्षराध्रा-গ্রিকশদিতে প্রেক্তা জ্রীণিশতানি শ্লোকা জিভুবনপাপহরা: ৫। কা-(ও यूकाञाल मर्गा नवम् शेनक-श्रीकाः मार्किकारणणञ्जाका म-নুসংখ্যাযুতাঃ পুণ্যা: ৬ ৷ অধ্যা-ব্যোভরকাণ্ডে সর্গা: গুহসংখ্যবা পুক্ষিপ্ত। শ্বতুশতসংখ্যশ্লোকাঃ १। भूत्रागमः था क भूत्रा इतिशाकाः । भाई रेज्य भद्राययदान गरिएज হুখ্যাত্মরামায়ণে কাণ্ডৈ: সগুভি রবিতে হতিশুভদে সগা শ্চতু:বঞ্চি-কাঃ। শ্লোকানান্ত শতদ্ববেন সহিতা যুক্তানি চত্ত্বারিসাহসাণ্ডের সমা-স্ত: শুভিশতে সূক্তানি তত্ত্বাৰ্থত: ॥ इंडाधाजाद्राभाष्। ॥ 🕸 ॥ ञ-পর রাম বশিষ্ঠন বাদর্কণ মো-ক্ষোপায়ক দেবহুতোক্ত বাশিষ্ঠ

লামক মহারামাণা লাও। তত্র পুথদার্জে অষ্টাবিংশ চুঞ্চরশত স ৰ্লাঃ। তস্য আন্তঃ শ্ৰেচকী বথা । क्षितामा ह कवाठ । तेलमाः भुक-রণাদনত্র মিদ॰ শূণ্য ভলিবাণ পু-क्रमा जां ज निर्वानकार यद् ॥ भ्य इम-मृत्यातिका विकि द्राम विनिध्याः। महीवरङ्गान भुवनाम् চ্যতে বুন্ধ ঋছতি।। ২।। উত্তরার্জে ধ্যা ডশোত্তর দ্বিশত সর্গা:। ত-मक्तराउँ सारको यथा। श्रीवाम उ वा । रेनम्रग्रांट कन्ननाज्यानाट ভনু: পত্তি রোহিত:। কথ্যেতদ-তো वुक्तन् अञ्चवङ्गाम् कीवडः ॥ ১॥ यৎ সর্ব• খদিদ• বুন্ধ তজ্জলা निकि ह सुदे । मुन्तार्ग्हारीर्गारक সামি তমৈ বুক্ষাতানে নমঃ।। ২।। व्यवासी देवतागानुकत्रगुष्टः । वि **छीरा। मूम्रक्र्युष्टः। ज्जीय उँ८ म**-ভিগুছঃ। চতুর্থঃ স্থিতিগুছঃ। পঞ্চনঃ जकत्वाशणसागुद्यः । यष्ठभुकद्राप निर्दारगुष्टः। शूर्वास्क महीकगुष्टमः-था। २०५००। উত্তরাজে महीकगुष्ट्-স-খ্যা ২০৯০০। ইতি জ্ञীমহারামা-যণে নিরাণপুকরণে বালকাণ্ডে নো কোপাৰে দেবস্তোক্তে দ্বাত্রি শৎ-সাহসুগা স হিতায়া বাশিতে বুকা

पर्णा देखता खिरा एक्षी खत हिर भ उठमः मर्गः ॥ तामा जिल्लाकामः भू त्रकामानः ॥ देखि ताका निघण्टः ॥ त्रामा तक्ष्य जामाः भू व्यक्ताकः ॥ देखि ताक निघण्टः ॥ त्रामिनः भू त्रमणः॥ कामः। देखि भिन्ती ॥ तामुः भू तुर्ख्य पृक्रा प्रभः ॥

রস্তো বেণু: তস্য বিকার:। ইভ্য-মর ভরতো॥ রাযণ শ্লী পীডা। ইতি কাচিৎ-

शाया का भाषा। इंडिकाहिंद-भद्रशायकी।। त्रायकारी की नहीत्रारकावित्भवः

भावकार। खा नमास्त्रारकावित्मवः
। वाश्व इंडि जाय। । यथा ।
भूद्रािः भावमकाद्रा द्रायकारी
मभास्र्य। ইंडि भद्दद्र्यविशे।

तानः भू नान्यक्रिनिर्यानः। धूना हें जाना। जर्भग्रीयः। मर्झ-प्रमः २ नानः ० कनकलाण्डनः ८ नानः ६ नानिर्यानः ७ (६८व है: १ भीजनः ৮ वङ्क्षाः ० नान्यनः ० मर्झिनिर्यानकः ०० मृत्रिकः १२ मृत्रथ्भः १० यक्षथ्भः १८ जान्यनः जः १६ कनः १७ कनन्नः ११। जम्र ख्याः। निनित्रवः। मिश्रवः । क्यायवः। जिङ्कवः। मःशुह्दः। वाउ निज स्मां के खू तृग. ना निज्
था। जामा ना न लग खर्ग। निनिज्ञ । भू द्राभय ना खिका जिल्
था। इंडि जा कि निर्मे छैं: ॥ जा निर्मे । विन ।
जा न जा निर्मा ख्या मर्जज मः
ग्राह्म मान निर्मा ख्या मर्जज मः
ग्राह्म मान निर्मा ख्या मर्जज मः।
प्राह्म स्मा ना ना । विर्मा ख्या विन ना हिसा श्रम ना निर्मा ख्या विन ना हिसा ।
भू ख्या ना मर्मा विम ज्ञ तुन विन ना हिसा ॥ भू ख्या निर्मा । ।

द्राणकार्याः भू भाषवृकः। ३७ द्राजनिर्घण्टः॥

রাব: পুণ শেষ:। ইতি শদরত্রা বলী।

त्रावनः भू ककाधिभििः। उर शर्यावः। भोन्छाः २ त्रकः २ न रक्षणः ६ दणकन्नतः ६। ইिछ रहम हन्दुः ॥ दणकर्थः ५ मिकवाञ्रकः १ त्राकरमन्दुः ৮ नर्द्धभः २ शङ्किश्वी-वः २० दणाननः २२ । ইिछ सद्द त्रञ्जावनी ॥ नद्धाभितः॥ उरमा-भावि नाष्मो यथा। मूठ देवाह । शानवमा नर्द्रवाङ व्यामीर भूष्मा दसः किनः । नदम समा दमा पान

छ्१विन्तु ब्रिडि गृड: ॥ उन्र कन्त्र ইডবিডা মপেণাপুতিমা ভূবি। भूलखाय न बाबवि खा॰ कन्या॰ পुरानामयर् ॥ अवि देवजित्ज यम्। विশ्वाः सम्भागाः । जम् পञ्र "एउमु" পूर्व। रेव स्ववर्शिनी ॥ छा। ४० रेवम्बन काउड व्यक्त (एववर्गिनी । जिलाम नुमङ्काय **ञ्**लणीर्यः गराहन् ॥ अष्ठेनः हुः হরি শাশু: শব্দুকর্ণ বিবোহিত 👊 **পिञ्रलः नाम जः**नृष्ट्री शिष्ठा ७नऽ-<u> व</u>ुवीख**ड: ॥ ष**८माया**ख घनत्वाय**॰ শরীরঞ্চেদ মুচ্যতে । জলরীরভ্রা-इ नाज्ञा एउन देव म ऋत्वेत्रकः ॥ अध्याः करवरता कनगत्रिमुजः नल-क्वत्र । त्रावण क्यु कर्ष कन्ता । म्भनिथी • उथा ॥ विजीवन • हजूर्यञ्च रेनकम् जनयः मूछः । मक्रुकर्ता मणगीयः भिक्राला त्रक्रमूर्वतः ॥ চতুয়াদ্বি শতিভূজো মহাকাৰো ম-श्वावनः । काज्यक्षन निष्ठा भर्म लाहिङ गीव अव ह ॥ निमर्गामा-ৰুণ: কুর: স রাবণ ইতি সৃত: । रिव्रग्रकिमिश्र स्वामी म बाह्य পূर्वजचनि ॥ हजूर्गानाः त्राका जू ज्यामभ न बाक्नः। जाः পঞ্কোট্যো বর্ষাণা সংখ্যাতাঃ

विश्वासिकः॥ निवृत्तानास्वरुषदिः नःश्वादि छ कनाइ इतः । निव्दे ।

द्वाद अल् छी जि॰ह्बालभङ्नरी-दित्भक्षः। यथा । जुङ উवाह । দিবাকর ওসং মহামহিলে৷ মহা-সুরস্যোত্তম রত্নবীজ। অসৃগ্ গৃহী-ত্বা চরিত পুতত্তে নিজিপনী-লেন নভন্তলেন।। জেতা সুরাণাণ সমরেম্বজসু বীর্য্যাবলেপোদ্ধত मानत्मन । ज्ञाधित्मनार्ष्वभथः সমেত্য স্বৰ্ভানুনেব প্ৰুসভ নিৰুদ্ধ ।। उৎ मिश्र्णी ठारुविउषदिष বিক্ষোভিতাগাধ মহাহুদাযা । भूगक्रनावक उठेवयायाः मुलाह मूर्ग्यः मित्रपुरुमायाः॥ छकः পুङ् **তি সা गञ्चा जून। भूग। करना प्रया।** नाम द्वावनगद्धि भुश्विमान मू-भागठा ॥ (य जू जावनगङ्गायाः काया अक्विन्त्काः। भग्नजाना यन ब्राग विञ्जानाः यम दे। हिंयः ॥

ইতি গাক্ড ৭০ অধ্যায়: ।।

রাবণারি: পু শ্রীরাম: । ইউ

কটাধ্র: ।।

রাবণি: পু॰ রাবণজ্যে পুল:। সচ ইন্দুজিত। যথা। রাবণি: শক্জি-ন্মেঘনাদো মন্দোদরী সুতঃ। ইতি হেমচন্দু:।।

त्राण या छ णाय । ইতি कविकन्नक्रमः ॥ मस्त्रास्त्रा १य मिछि गमनिःशः ॥ त्रामणः थतः । मूर्गमिःश्व इमः जानवग्रासः मद्रा उपामि
त्रुवः कृषा त्रिम्मिकः वृश्र्रभामिकः
वान् । या व्यवताण्य छ त्राण्यकः ।
हेिं मूर्गामानः ॥

त्राणिः शृ थान्या िमगृ हः। उदशर्यायः। भूकः २ उद्वेषः २ कृषे
१ । इञ्चादः ॥ मगृहयः ६ नमाइतः ५। इञ्जि कृष्टे प्राप्तः। यम् व्य
व्यात्त्राञ्ज इञ्जि क्राणिः। यम् व्य
व्यात्त्राञ्ज इञ्जा तिञ्जाद नात्तीः
जि इक निभाजना पुकाणमः ।
इञ्जि इत्र । स्मा व्याप्ति र्यथा।
यथ मृश्याः यन कृष्या हत्या नात्तिः
गृर्विष्ट । द्वान कृष्या हत्यः
मृर्या १एका खिलमाः निधः ॥
ननमः थः उत्या वायु वश्च वार्था।

धवा क्यार । खरेनकव्ष्त्रा भरेकव মহাভূতানি জজিরে II অগ্নী সো भो ভाস্করেন্দ্ তত खुन्नाরকাদয:। তেলো ভূঁ খাম্বাতেভ্য: কমশ: প-**क्ष** क जिल्ला । भून की माधा ज्ञान वि ভজেদু। শি সংজ্ঞক । নক্ষত্রক্পিণ ভ্য: সপ্তবিংশাত্মক বদী ॥ ইতি সूर्याञ्चारङ शालाक्षायः ॥ 🕸 ॥ তস্য সংস্থান বথা। বিষুবৎক্রান্তি-বৃত্তিক্যাৎ পূর্বভাগস্থিতাঃ স্থিরাঃ । (स्वार्त द्राणयः कान्त्रिवृद्धयः পূর্বদিক্ ক্রমাৎ।। ইতি মুনীশ্বরকৃত जार्बर्ভोमिजिकान्यः ॥ 🗱 ॥ व्यथ द्रा-भारा दिनिर्गयः। भिय वृष भिथुन कर्क ট সিংহাঃ কন্যা তুলাথ বৃশ্চিকভ॰ । ধনু রথ নকর: সম্ভো মীন ইভি চরাশ্য: কথিতা: ॥ রাশিকথন ॥ 🗱 ॥ अधिना मह ভद्रनी कृत्ति काशामक कीर्खिए। (मयः ।)। व्यञः कृष्टिकाष्मयः রোহিণ্যর্জঞ মৃগশিরসং॥২॥মৃগশিরসোর্জণ চা-् मु। भुनईरमा जिभारः मिथूनः। ७। भारः भूनर्बभा त्रस्तः भूरयशास्त्रया ह কৰ্ক্নটঃ ॥ ৪॥ সি হোথ মধা পূৰ্বফ-ह्युगी भार উखद्रायाः। ৫। তছেব॰ হন্ত। চিত্রার্চ্চঞ্চ কন্যকাখ্য: ॥ ৬॥ ভৌলিনি চিত্রাদ্ধ স্বাতী বিশাখা

याः श्रीहबर्यः १। ञ्रालिनि विभाशा পানে প্রথানর খোরিতা জ্যেষ্ঠা॥ ৮॥ মূল প্রিষ্টা পূথম কাপ্যভরা -শক্ষেপ্রী ে। মকর স্তৎ পরিশেষ• শ্বণ: हास्त यनिष्ठायाः ॥ २०॥ थनि-ষ্ঠাত্ত শত্তিষা পূর্বভাদুগদ পাদ-वयः बाह्यः। ३३। भूर्व जामुलप्रात्मयः স্তথোত্তর।রেবঙী মীন: ।। ১২ । ইতি द्रान्निनक्षवर्खहरूथनः॥ सः॥ द्रान्नि নামানি চ ক্ষেত্ৰ: ভম্কাং পুত্ৰাম্চ । भियारीनाक भर्ग्यायः 🖼 🚊 🕾 🛧 বিচিন্তযেৎ ৷৷ ইতি রাশিপর্য্যস্থা না-থন॰ ।। 🗱 ।। ক্রিয় ভাবুরি জিতুম হ্বলীর লেয় পাথেয় যুক্ত কৌর্পা-খ্যাঃ৷ ভৌক্ষিক আকোকেরো ছ-**(मुाग कान्ठाज्ञः (हव्यः ॥ (स्रवाही-**नाः विष्मवनामकथनः ॥ 🗱 ॥ ज्यक्त সিত হরিত পাটল পাণ্ডু বিচিতাঃ সিতেতর পিষকৌ। পিঙ্গল করুর वक मिना कृष्या यथा जःथाः ॥ (भवानीना॰ वर्गत्छम कथन॰ ॥ #॥ मरामा वर्षी नृमिथून नगम न-বীণ চাপী নরে৷ হুখজঘনো মকরে৷ মৃগাস্য: । ভৌলী সশস্দহনা পুৰ্গা চ কন্যা শেষাঃ স্থনামসদৃ-শাঃ স্বচরাশ্চ সর্বে।। অশ্বজ্বনো **ং**খাকারজ্বনো ন তু অখাক্তজ-

धनः । উত্তরত চতু । जनवं कथना । । द्राम्प्रविश्वाक्तरतकात थनः ॥ 🗱 ॥ कृताथ भोगः १५८ १ १ ना **চ अलाथ यूग्र॰** दिशासः जाप्**णः । চর ছির দ্যাত্মক** को इतिया स्वाम-(या श्मी कमनः मृष्टिकाः ॥ ब्रामी-नाः जूर 'मोमप्राप्त किलानः त **#**॥ रिषवङ्गलाञ्चत । जन्य 🕶 शूक्षत িশ্রুর জ্বাপ্রায়াখ্য স্তবৈষ্ঠ চ। শুক্রা বৃদ্ধান হাজহাত নিত্যু দ্বাদশ রাশ-स्ट १ पृथ्वानिदित्वकः॥ 🗱 ॥ मिथुन ুলা খট কন্যা দ্বিপদাখ্যা ক্ষাপপু-র্জাগশ্চ। মৃগ ধনু রাদ্যন্তার্চ্চে ব্বা-জসি হা শ্চতুশ্চরণা: ৷৷ দ্বিপদ চত্ ञ्चर द्वान्निकथन ।। क्षा कर्क हे वृन्हिक - মীনা মকরান্ত্যাৰ্দ্ধঞ্চ কীটস-জ্ঞাংসুগ্রং । বৃশ্চিক রাশি মুনিভি: শরীস্পত্ত্ব न निर्दिष्टः।। की है मदी मृश द्राणिकथ-न ।। 🗱।। दिशहवणगाः अर्द्ध ति रु विशय ठञ्जूमाः । जनिनिनया ভক্ষ্যা বশ্যাঃ সরীসৃপজাত্ত্যঃ ॥ মৃগপতিবশে তিখ্যস্তে বিহায সরীস্পান্ । অক্থিতগৃহেযুগ্ত• वणाः जनवावशात्रः ॥ अतीम्भ কাত্য ইতি বহু বচনাৎ ক্টিসাপি পরিগুহঃ রিশীনাং বশাসবশাসক थन ।। 🗱 ।। गुान्य मिथून ज्ला छी ॥

हाशांकि घंढाः निमामु वृ**व भार्यो ।** मकद्रापिभार्च मिंग्स् वत्रो पिवरम **९** ज व्यक्ति हा। जलको कर्क है भी-নৌ মকরাস্ত্যার্জঞ্চ শিবমতৈ জন্তঃ। गुम्माद्रग्र जलब द्रामि कथन ॥ स॥ হুৰ। স্তিনি গো ২বি ঘটা নিথুন ধনুঃ कर्कि मृगम्थाण जमाः । वृण्ठिक কন্যা মৃগপতি বণিজো দীর্ঘা: সমা-খ্যাতা: ৷৷ রাশীনা• হুম্ব দীর্ঘ কথন• ॥ 🕸 ॥ भागाति कञ्चा नाथा यथा जःथाः भुमक्षिणः। (भ्यामा द्राण-যো জ্ঞেয়া জ্বিরাবৃত্তি পরিভূমাৎ ॥ रिग**धिश** लग्न कथन• ।। # ।। ऋक *ुक ब्र्यन्मुकं भीत्र भूकावत्री ज्वार । जी-বার্কি ভানুজেজ্যানাং ক্ষেত্রাণিসুর র-कारयः॥ गुराताः क्विव कथनः॥ 🗱॥ অজো গোপতি যুণ্মঞ্চ কর্ষি ধৃদ্বি মৃ-গা তথা। নিশাস জা: মৃতা শৈতে (भवा कात्र) हिनाजाकाः ॥ निना न জ विभिथुनाः मृटाः श्रकाम्या खणा ॥ भिषाः भीर्याप्या श्राज মীন শ্চোভযসংক্তকঃ। নিশাদি স • उद्धा कथन ।। 🗱 ।। इति मी म • नि-नानाथः मभामित्रमहरः । भक् ত্রয়ণ ভূমিপুতো বুধো ২প্তাদশবাস-त्रान्।। वर्षामकः मुताहार्य। काञ्चादिः-**ग**रिन॰ ज्**थः। गनिः সार्ज्ञ**वन दर्य॰

वर्जानुः मार्छवटमझ ।। ववः भूमानाट সকলাঃ স্বরাশি॰ ভূঞ্জতে গুহাঃ॥ ইতি রাশিভোগকথন । ইতি জ্যো-তিস্তভু• १। 🕸 ॥ দাদশরাশ্যাত্মক निवक्ता यथा। भूनस्य उवाह। य क्रभ जिल्द्रम्भ विभिष्ठ कालक পিণঃ। অখিনী ভরণী চৈব কৃন্তি কাপুথমা শক ॥ মেষক হি বি कानीया८ अकात्कव मुराक्ष । वादानाःमा खरा तुक्षन् भाषाभः खाः करव गृ हः। भोमाध्वं वृषनाः (यम वनन शतिकी खिंउ। ॥ मृगार्क মাদা দিত্যাংশা জ্রয়ঃ সৌম্যগৃহং जिन । भिथून जूकाया उत्र गगन इत्र भूलिनः ॥ यानिकाभ्यक भाषा के वासूया भागिता गृह्। द्वा-भि: कर्क देका नाम भार्ष्य मथवि· नामिनः ॥ পित्रार्कः छगरित्वष्ठाः উত্তরা শশ্চ কেশরী। সূর্য্যক্ষেত্রণ विट्टा व्यान् इत्यः भविकी खिंठः॥ উত্তরাংশা জ্বয়ঃ পাণি শিচত্রাজ্ঞা কন্যকা ত্বিয়া সোমপুগ্রস্য সদ্মৈত দ্দিতীয় জঠর বিভো: ॥ চিত্রা শ দ্বিত্য যাতীবিশাখাযা শক্তব্য षि ठीयः भूक महनः जुला ना कि करा হ্তা ৷৷ বিশাখা**শ মন্রাথা ভে**/গা ভৌলণৃহ• ব্বিদ• ৷ দ্বিভীষ• বৃশ্চি-

কোরাশি নতু কাল্যকৃতিও ও म्बर भागी व्यवस्थान (प्रवाधार्य) स् र सम्हा जेक्यूनल भीतासा अस ब्रार्च प्रणीयत्यः ।, जेल्लबान्मा अल्ल श्रीरा मुक्त हर्जादा सुरवा श्रीहरी ही णित व जानी पत्रिनिर्छ ।। **थ**िष्ठावः गाउँ हिनाः शुरिशनः -শক ভ্ৰণ সৌর - শ্রাপর মিদণ ब्रास्त्रा बह्न ह विमुख्य । भूतिन **দ্য:শ মেকস্ত** ই ভর: প্রবর্তী তথা : দ্বিতীয়া জীব সদনা নিগন্ত চরানিল্ল **ভৌ।। #।। রাশীনা॰ লক্ষণ স্বর্**শ मि यथा। नातम खेवाह। तामयः द-থিতা বুক্ষন্ খ্বা দাদশ বৈ মন। তেবা বিশেষতো বুহি লক্ষণানি স্বৰূপত: ॥ পুলস্ত্য উবাচ। স্বৰূপ-ভত্র বক্ষ্যামি রাশীনা শৃণ নারদ। यामृना यव मक्षाता यश्चिन् ञ्रात वमित्र हि ॥ मक्षात्र इरान (मकम) ধান্য রত্নাকরাদিষু। নব সাদ্বল স॰-हाला वज्रायाक नर्वणः ॥ निज्रः চরতি ফুল্লেষু সরসা পুলিনেষু চা भिवः जनान मृर्जिक अजादिक ध-নাদিষ্ ৷৷ বৃষ: সদৃশক্পেষু চরতে গোসলাদিষু। তস্যাধিবাসভ্মিস্ত क्वीवनथद्राभुवा ॥ खी शूः मरवाः नन जु नय्यामन शतिशृहिः ।

बीनावाल कृष्ट विश्व नी है । ईक । শিল্পি: জিল জীড়াৰ্ণ্ড নৃত্যু विद्याता श्वाम १२ अ/१३ अ नाम বিখ্যান্ত রাশি ব লাছ এঃ সৃত: ॥ करित अपीति वालबंद मानि गरः थुः के विष्य (क्षण) वांधी श्रामन विः fam ক্ষিপ্তব্য : লিক্**ন্ত পর্বতা**-ক্র প্রাপ্ত করে ভূমিনু ! ব্**সতে ব্যাধ**-ত প্রিত্র প্রবিদ্ধ ওল স্বেচ । যা হি क्ष्यो (क्ष्म्य) तमा ध्रा **ठ कन्यको।** চরতে জ্রীরাতস্থানে বসতে ভদ্ধনে-ষুচ।। তুলাপাণিচ্ছ প্ৰযো বীথ্য পণবিচারক:। নগরাপুনি শালা-সু বসতে তথ্য নারদ ৷৷ স্বভু বল্মীক সঞ্চারী বৃশ্চিকো বৃশ্চিকাকৃতি:। व्यागाय की दि। १ इ भाषाना दिय नःश्चिः ॥ धन् स्त्रव्यक्षयाना मीन्। नाता थनुर्कातः। वाकिम्राता श्ख्रवि-घीतः शारी यूक वला विश्वा भृगात्मा गक्ता तुकान् वृषक्ता क्वाक्षः। নকরো হসৌ নদীচারী বসতে চ मरशामरवी ॥ दिक्कसुम्ह भूक्षः कक्षात्री बनाश्लुउः। पृज्ञानाः চরঃ সম্ভ ছাণী সৌণ্ডিক সন্মসু॥ নীনকগত্ত্ব মাসক্তো মীন স্তীর্থামুস ঞ্জঃ । বসতে পুণ্যদেশেষু দেব 'বান্দাণপ্রকঃ ॥ লক্ষণ গদিত॰

তুভ্য: মেষাদীনা: মহামুনে ৷ ন ক-म्राहिबुयास्थ्रयः खश्च मिडर भू-রাতনণা এতম্যা তে কথিত সু-त्रार्व यथा जित्नजः भूममाथ यरछ । পুণ্যু পুরাণ পরম পবিত্র স্-শৃণ্বতা॰ পাপহর• শিবঞ্চ ॥ ইতি **জীবামনপুরাণে পুলস্ত্য নারদ স•**-वारिह्रवानिजःभक्षमा२व्यागः॥ ब्रा**णिहक॰ क्षी भिषादणादा**-শ্যাদিযুক্তবৃত্ত•। তস্য নামান্তর•। ভচক্র° জ্যোতিষ5ক্ষ । যথা । সপ্তবি•শতিভৈ র্জ্যোতিশক্ত• স্তি নিত বাবুগণ। তদকাণশো ভবে-দ্রাশি র্নবর্ফচরণাঙ্কিত: ।। ইতি দীপিকা।।#।। তদ্বিবরণ যথা। ভ-চক্ৰ প্ৰবয়ে ৰন্ধ মাক্ষিণ্ড প্ৰহা-नितः। পर्याउउ। जमु उमका गुर কক্ষা যথা ক্রম•।। উপরিস্থস্যম-হতী কন্দাল্লাখঃস্থিতস্য চা মহ-ভ্যা কক্ষণা ভাগা মহাছো হল্লা স্তথাল্লग।। কালেনাল্লেন ভগণ॰ ভূড়কে ধল্লভুনণাশ্ভি:। গুহু: কা-লেন মহতা মণ্ডলে মহতি ভুমন্॥ यद्मरा जू वरून जुड़ाक जगनान् भीउरीधिजिः। मञ्जा कक्षगा-गह्न ७७: अङ्गः भरिन्छतः ॥ मः न्ताम्यः कामगुरु मञ्जूर्था मिवमा-

विभाः । वर्षाविभाष्ठ्य सम्बद्ध कृतीः याः পরিকীর্ত্তিতাः ॥ উদ্ধৃ ক্রমেণ শশিনো মাসানামধিপা: সৃতাঃ ॥ रहारत्रणाः जूर्यं छन्याम्रायाः ক্রমশ তথা। ভবেন্ডককা তীমাণ শো ভূমণ বঙ্কিতাডিত। সর্বোপ-রিষ্টাৎ ভুমতি বোজনৈ তৈ ভঁমণ্ডল• ।। তত্র কক্ষা ক্রমমাহ। বুক্ষাগুমধ্যে পরিধি ব্যোমকক্ষাভিধীয়তে। ত মধ্যে ভুমণ ভানা মধোধ: ক্রমশ खथा ॥ मन्तामात्रका जूनूय मूर्ग भूकिन्मूरकनम्यः। शतिजुमस्त्राक्षाः **ङाः निक्**विम्याथ्या घनाः ॥ ইতি স্र্যাসিদ্ধান্ত: ॥ 🕸 ॥ गुरुवय हम्पु-সংযোগে ফলবিশেষজনকং রাশি-ठकः यथा। রাশিচকः পুৰক্ষ্যামি ন্পাণা॰ হিতকাম্যা। রবি জীব ख्या भाग देखक हत्मु ममागत्छ॥ **ম**লপাতো ভবেৎ সত্য মিত্যুক্তণ विकृगाभाता। इति क्षीत खणा मुक ভৈশ্চ চন্দ্রে সমাগতে। বায়ুপাতো ভবেৎ সত্য মিত্যুক্ত বিষ্ণুযামলে ।। রবি জীব স্তথা ভৌন স্তৈশ্চ চন্দ্রে সমাগতে। অগ্নিপাতো ভবে**ং** স ত্য মিত্যুক্ত• বুক্ষ্যামলে ॥ রবি ভৌন তথা রাহু তৈক চন্দে সমা-গতে। লোহপাতো ভবেৎ সভ্য

भिज्रुकः क्षुगभल । अवी बारू खण (कड् रिक्ट हासु ममागरक। পাবাণপাতো হপি ভবেদিভ্যুক্ত-ভানুযামলে ॥ ইতি नद्रপতিজ্यह-র্য্যাযাণ ভুষুৰুচকে রাশিচকণ।। #11 জাতকরাশিচক্র• যথা। তদাদি ব্য-ষপর্য্যন্ত রাশিচকে ব্যবস্থিত। তম वृक्षान्त्रभष्ठरया कन्नयस्ति वृष्य वृष्या।। ইতি পঞ্চর।। 🗱।। মন্ত্রগৃহণোক্ত द्रानिहकः यथा। जागमकन्नकः। । রেখাদ্বাণ পূর্বপরাগতণ স্যাৎ তত-व्यथ्राञा यागः ज्ञातत्र (ज्ञार । একৈক মীশান নিশাচরে তু হুতাশ বায়ে। বিভিখেন্ততো ৎৰ্ণান্॥ বেদা-नि विक्र यूगन भ्वाकि माथान् পঞ্চেস্ বাণ শর পঞ্চতুষ্ট্যার্ণান্। भिवाहितः भुविनित्थर अकनाः स्त्र वर्गान् कन्यागञान् श्रुविविरथप्रथ শাদিবর্ণান্।। তথা। বাল গৌরণ খুর• শোণ• শনী শোভেতি রাশিযু । ক্র:মণভেদিতা বর্ণা: কন্যাষা: শা-দয: সৃতা:॥ তেন অ আ ই ই নেষ: । উ উ य त्यः। क्ष २३ मिथून । এ ঐ कर्क है: । ও 'डे मि' इ: । ज' ज: ना य ज व काः कन्।। कदर्श खना। १ हवर्ला वृन्हिकः । हैवर्ला बनुः । **७दर्शा नकद्रः । शदर्भः ऋग्रः । य-**

बर्णा भीनः। य ब्रामीना मन्क्ल॰ म-ख· ভজে<। उथाठ। श्र[®]ळात्र त्रानि काष्ठाना मनुक्तान् ज्यंत्रन्। इंडि वहनार ॥ द्राभीनाः मूख्नजा द्विया छ। तबर मञ्च मृठि॰ व। य त्राम र्ज्ञ बामाउँ गननीय विष्कृतिः । यना जू स द्वारण द्र छाने जना जा-थक नामान्यकत अविक्रन द्राणि॰ मृशीयाशिगराय । माधामामा कत ता-শাস্ত গণিণেৎ সাধকাক্ষরাৎ। ইতি त्राभाईनिव्स्का धृष्ठ ववनार । उथा অজ্ঞাতে রাশি-নক্ষতে নামাদ্যক্ষ-র রাশিত ইতি। তঞ্চরালে। তেন मञ्जार् । वास नाम नाम नाम निकास । गगरयम्बि यक्ष वानाइम । हातम-ম্ভ বা ॥ রিপু র্মজ্ঞাদ্যবর্ণ: স্যাৎতেন তস্যাহিত ভবে । এক পঞ্চ নব वाक्तवाः मृजाः। हो ह वर्षे ह मन-माण (भवकाः। विद्या त्रक्तु मूनयस्र পোষকা। দ্বাদশাষ্ট চতুরস্ত ঘাতকা: ॥ इंजि विकृ विषयः॥ त्रामाईन्हिन्तु-काध्उषार। मक्तारमे जू यक्ष व-र्ब्बनीय । उथाठ। यक्षाक्षेत्र हाम मानि वर्জ्जनीयानि यञ्जलः। इंजि व्हना८ ॥ व्यथ। नगः धनः ज्राक् वक् भूध भव कवाबकाः। नद्रभः धर्मा कर्माय वर्षा भारम রাশयः॥ नामाम्बन (मण्डः।

वाः भूजाभूख कनः नाउर।। ना সিদ্ধি স্তথা নিত্যু খনে খন সমৃদ্ধি-দঃ। ভ্রাতরি ভ্রাতৃবৃদ্ধিক শক্তো **म**जुविवर्षनः ॥ भूत्य भूयविवृषिः मार । वरको वाक्ववद श्रियः । কলত্রে মধ্যমাপ্রোক্তা মন্নণে মর-गः ভবেৎ ॥ शर्म्य शर्म्यविवृक्तिः म्। সিজিদ: কর্মস ছিত:। আথেচ ধনসম্পত্তি ব্যয়েচ সঞ্চিত करः ॥ रेक्ष्वज्ज जू नज्जात বন্ধুরিতি পাঠ:। ইতি ভব্রসার:॥ ताष्ट्रः भू क्री विषयः॥ उनमुदः। इंडाभद्रः ॥ विषया जनभरः । উ-পদুবো মরুকাদি:। ইতি ভরত:॥ ब्राष्ट्रेनियाभी भू॰ जानभरः। (एणवा-সী। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষ: ॥ রাষ্ট্রিকা জী কণ্টকারিকা। ইভ্য-यदः ॥

রাষ্ট্রিব: পু• নাট্যোক্তৌরাজশ্যাল:। ইত্যমর:॥

রাষ্ট্রীয়: পু॰ নাট্যোক্তৌরাজশ্য-ল:। ইতি হেমচন্দু:।। রাষ্ট্রসম্ব-ন্ধিনি ত্রি।।

রাস উ ঋ শদে। ইতি কবিকল্প-ফম: ॥ দন্ত্যান্তো হব মিতি গদ-সি:হ:। রাসভ: খর: দুর্গমি:হ-ন্ত্রিণ ভালব্যান্ত মত্বা উণাদৌ হুস্ব ক্ত্বা রশ্মি শব্দ বু/ৎপাদিত-বান্। স্ব অররাস্থ। ড রাসতে । ইতি দুর্গাদাস:॥

त्रामः भू (कालार्लः॥ क्षानः॥ ॥ ভाषा॥ भ्रानकः॥ (गाभानाः কীডাভেদ:। ইতি মেদিনী।। শেষ माविषि यंथा। कार्जिकी भूर्निमायाक কৃত্বা তু রাসমণ্ডল। গোপানা। শতক কৃত্বা গোপীনা শতকন্ত থা।। শিলাষা পুতিমাষা বা ত্রী কৃষণ রাধ্যা সহ। ভারতে পূজ-বেৎ কৃত্বা চোপহারাণি ষোডশ।। গোলোকে চ বসেৎ সোপি যাবদৈ বুন্ধণো বৰঃ। ভারত পুন রাগত্য হরিভক্তি• লভেদ্ধুব• ॥ কমেণ সুদ্দাণ ভক্তিণ লদ্ধা মন্ত্রণ হরে র-পি। দেই ত্যক্তা চ গোলোক পুন রেব পুযাতি চ।। তত্র কৃঞ্স্য माक्ना मंभागा भाषाम छ-বেৎ। পুন স্তৎ পতন নাস্তি জরা मृञ्रुश्राता मशान् ॥ इंडि तुक्तरेव वर्ख भुक्जिथर७ २৫ ज्यापायः ॥ বিতারস্ত এক্ফররখণ্ডে ২৮ আ धारय भिन छागवजीय ज्ञामशका-थ्रारम्बुर पुष्ठेवाः ॥ क्षः ॥ कमातिः মতে কল্প তক্যাত্রেশ । অস্য বিধি यंथा। कार्जिक भोर्नमागाञ्च ताम

याजा महानिभि नगाए ः भुकर्क वडा मङ्बिखन विश्वे । हेर्ला-कि मुक्त भाषाम्हा किंतु के ग्रहर । भूजा कार्याक्तिः स्थाः (भ-यः मरहाः संदाता गाटः नाम दिश्व वारिना (ब्रिजिंग) एक्स अपने जा र्वज्ञाञ्चना की हैं कि एक्साना के की र्स-देनः ॥ हन्स्नारः । । उद्यो क्षरः বিরাজিতৈ:। দিং াড় কিলুভ কং कार्ये अय मह्ना जन्दे ॥ भारत ष्नुनित्त द्रामा यक् 😁 नितन वरन । निमक्षमहरः क्ष्यः रगानीम उन मः खि**ङ** ॥ द्वाममखन यखमा (गा-विन्द्रः कर्निकाभञः । ছर्या र्घरग र्शाभिकरमा र्याथः मान्य मतकथा ॥ অপর• নটবেশেন মধ্যে ত• স্রলীধ-র॰। গোপীগণ মুখাস্তোজ নধুপান मध्युउ॰ ॥ जनानहक्रभुविम॰ मखः ল॰ পক্ষজাকিতে । দলাষ্ট শোভি-ত॰ कार्या॰ निहरकारिको ह निह्नियु॥ मस्या मस्या ह भाविन्तः भार्यस्या-রপ্তক্পক । মুজন ে মাধ্ব কৃষণ নট নাগর মেব চ।। হরি॰ দামোদ-র॰ বিষ্ণু॰ পূজদেৎ কামক্রিপণ•। তদ্বাহ্যে ভূপরে গোপ্য: শতশো २थ गर्नुमः।। পृजनीयाः भुयाजु-ন নৃত্যগীতপরাযণা: । অসংখ্যা

গোপি কান্তত্র মণ্ডলে ২ট্টো বরাঞ্চ-नाः।। महि्रा छाः ममाथ्राजाः म-मानक्रमृतित्जाः। एए ४००० । । । । नारमन कमन । एक अभी। ब्राधा বিশাখা বিনলা গুরিষা ললিতা **७**था। मून्स्त्री कमला त्रम्रा महि-द्वरा शही पुकी विजाः॥ जात्रात्राधा নিরাবাবা কৃষা ভেদ মুপাগতা:। जाना भारत बक्कामारिः भूकाकाः या शिनवडः ॥ উडीर्ल नायः ज्ञरूप भाष्ट्रा वृन्तावन श्यूः॥ রাসকীড়াণ তুস জ শক্তি চ **ब**गरीचंदः । स्थारमण प्रश्लीजाः চকু: পৌর্ণমাল্য ानिण ॥ न छा शक्किनिनामा । विल्लीनिनम खथा। गरानिमा ज् (ष घिरिक द्रा-व मंध्रम यागरयाः ॥ जन्मास्त्री ह कर्डवरः शोनंबामराः निमामूर्थ। **এব॰ রাসক্রীডা॰ যস্ত কার**যেদ্রবি नानवः ॥ मे महमूष्ट्र ७ ७ जुः निर्वागमुक्ति माञ्जूयार ॥ इंजूर-क्वकिविका।

রাসভঃ পু॰ গর্জভ:।ইত্যমর:॥ রাসভবনিদনী স্ত্রী মাল্লকা।ইতি শব্দচন্দ্রকা॥ রাসভী স্ত্রী।ইতিশ্দ

ब्रद्भावनी ॥

রাসমণ্ডল লী ত্রীকৃঞ্দ্যরাদ্জী-ডাস্ল । ভদ্বিরণ যথা। ভদ্মা-দুপরি গোলোক: পঞ্চাশৎকোটি रयास्त । वायूना वार्यप्रभाभक वि-চিত্র পরমাশুব: 11 অতীবরম্য নি-र्याणा निज्जन्ता महीह्या। मः जम्रक्त रेणालन भूगा वृमरावानन-D 11 मूत्रामम अलाना नि नम्। वि-ब्रष्ठावृजः। कार्षित्याजनविखीर्ग পুष्ट्रन विब्रह्मा वुज्ञ ॥ दिर्ह्मा उन्ह শতগুণা পরিত: পরমা শুভা ॥ व्यम्बाद्रज्ञनिकद्रा शीदा मानिका-या खथा॥ मनीना॰ को छञानी-না মস·খ্যানা মনোছরা। অ-ম্লারত্বনির্মাণ তত্রাপি পুতি-मन्तितः॥ मत्नाष्ट्रद्रकः भाकात म-দৃষ্ট বিশ্বকর্মণ। গোগীভি গো-পনিকরৈ র্বেষ্টিত কামধেনুভি: 11 कन्न्रिकः भातिकारिङ तमःरियाम्ह गदावदेतः । शुःखाम्यात्मः मृत्का-টীভি: সংবৃত রাসনগুল 🔢 বে-ष्ठिञ किश्विज लिलि मिन्हिंदः শ তকোটিভি:। রত্নসুদীপযুক্তি 🕫 शूब्र उन्नगमिति :।। जूर्शिक्र म्र-नात्नारेनः कखूती अक्षृमान्तिकः । ক্রীডোপযুকৈ ভৌগৈক তাদূলৈ বাসিতৈ জ লৈ: ।। धূপৈ: সুবভি

রাসের

त्रीमा भारता का त्राम निष्य । त्रक्रिक त्रक्रिल: मथुगुशानानी বিকোটিভি:।। অমূল্যমন্ত্রভির্ণৈ र्वीक्र मुका भिक त्रि । सक्त्र छ गरबन्द्रांगा॰ रिविष्टरेडण्ड वरेनः क-मार ॥ नवरयोवममन्त्रीय करेल नि क्लोभ द्रिश । द्रमाध्य वर्जुनाकातः ठम् विष॰ यथा <u>वृत्त ॥ व्यम्</u> ना त्र রচিত দশযোজন বিস্তৃত। কন্ত্রী वस्तुरेम तरिमाः मुगिक्त हन्त्रनाहि-रिजः ॥ व्यावृजः सक्तवार्दिः कल शनवम गुरिजः । मधिनारिकम्ह अ-বৈশ্চ দ্রিকদ্রাস্করৈ: ফ্লঃ ॥ बिहामकरमी खोस वनरे गाण म-নোহরৈ:। পউ ত্রনিবলৈচ স্থি-रिक कन्त्र शहारिकः ॥ हन्त्र ना**ज**क भारेन। क्वरेनक विज्विजः। ज-মূল্যরত্নরচিত শতশৃক মনোহর ॥ क्लिडिस्थाजनमृष्ट् १४ रेनर्घाः मणः গুণাভর । লৈলপুস্থ পরিমিত। পঞ্চাশংকোটিয়োজন ।। অভীবক मनीयक (तरह १ निर्वधनीयकः। भा-কার নিব ভস্যাপি গোলোকস্য মনোহর ।। পরিতো বেঞ্চিত রন্য হীরাহার সন্বিত। ডত্র বৃন্দাবন व्याः यकः हन्मनेशामरेशः ॥ कन्न वृत्किक तरिमाक मन्तरितः कामस

নুভি: শোভিত শোভনাচ্যঞ্পু-स्त्राम्।दिनम्(नाहरेतः।।कीषामत्त्रा-वरित्र त्ररेसपुः जूत्ररिष्ठ त्रजिमन्तिरतः। অতীবরম্যু রহুসি রাসযোগ্যন্থ-লান্বিত ।। রক্ষিত রক্ষকৈ রমৈ। রসংখ্যৈ র্গোপিকাগণৈঃ। পরিভো वर्जुनाकातः विनक्तरगाजनः वनः॥ ষট্পদধ্নি সংযুক্ত পুংক্ষোকিলক-**ভা**त्रिङ । **ভ**ञाक्ष्यवती ज्ञान्। ज्ञ-श्राप्त विष्ठ है । भर्न्याकः নোজ্ব চ পরিভণ্ট চতুর্ভন্ত। গো-शीनाः कल्लव्हेक्क मह महिदाका कल-शुरः ! कीलान्दिक बाव्डक ब्राधा-मात्री'वेषाक्रदेकः । विज्ञकाजीज्ञनाः ক্ৰীণা॰ যমুনা শীতলেন চ ॥ পুষ্লা-বিতেন নান্দ্যেন পবিত্রক্ষ সুগন্ধি ना। मात्रीगरेण ब्रम-रेथाण वृन्ता-বনবিনোদিনী।। তত্ৰ ক্ৰীডতি সা त्राथा यम श्रागाथिएत्ङा ॥ स्मर **জিদাম শাপেন ব্যভানুসূতা হধু** ना। तुकाि मिरिति कि निष्कित्मु मूर्नी रेन्द्रः नृक्षिछ। युष्र ॥ इंछि युक्तरिर বর্ত্তে ভগবন্নন্দেশ-বাদে একৃঞ্জ म्या ७ ४ अथा गः॥

রাসেরস: পু॰ গোগী। রাস:॥
শৃঙ্গার:॥ রসসিদ্ধি:॥ রসাবাস
।। ষণ্ঠীজাগরক:। ইতি মেদিনী।

याजा **উ८ गवः ।** ईंछि भेषत्रङ्गावली ॥ পরিহাস:। ইভি নটাধ্ব:॥ ब्रारमध्वी ञ्ची . ज्ञानग्रयथा। ब्राधा व्राम्थवी वानवानिनी व्रनिष्कथ-त्री। इंडि वुक्तरेवरार्ड शिक्षकम থণ্ডে ১৭ সন্যায়ঃ ॥ রায়। জী স্বন্মখ্যতলভাবিশে-यः । त प्रन है कि हिन्ती छाया। তৎপর্য্যায়:। নাজলী ২ সুরসা ৩ मृशक्षं ८ गएना ज्वी ६ नज्ञान्छ, ७ ভূতক कि । १ इंडा े ৮ मूरहा 21 रेटानतः ॥ नाज्यपादि शक्षकः त्राचारा : बद्धाविद्वादि ह**ुष्ठः म**ः ৰ্পাক্ষ্যা নিভাগান ইভি ভটীকা-याः खत्रजः॥ त्रम्म ३० (तृपभी ५) त्रमन। १२ तमा १० जून ज्ञाम्ला १८ বসাঢ্যা ১৫ অতিরস। ১৬। অস্যা গুণাঃ। একর্ণ। তিকর্ণ। উঞ্চর্ণ।

वनाणा १८ व्यावस्ता १७ विषयः। विकास । विकास ।

काका विनाणस्य । जिलि न्डा वृष्टिकाथ विष ज्य क्षि वृणान्। हैं जि जावभुकाणः।। व्राम्ना (णाया-भवाजमी। हैं जि जाजवल्लाः।। क्षा। अविविष्टिष्ट । काँ गियानक्ती हैं जि जाया। जिल्में गरः। वला-भगी २ मृवहा ३ युक्तमा ॥ वृक्तमा यमा यक्ति। जामा युक्तमा यमा यक्ति। जामा युक्तमा यमा मुक्तमा प्रमा । वला-भगी ह मुद्रमा मुम्निया (णुग्मी ज्या।। जामामभावनी जिल्ला छ-क्या कक वाज जिथा (णाय प्राम्न ममीद्राम् वाज ण्लाह्याभ्या।। काण ज्य विवाणी जि वाजिकाम्य हिथाह्य। हें जि जावभुकाणः।।

ब्राष्ट्रः भू॰ जागः। इंडि मः किछः
माद्रागि दिवृद्धिः ॥ गुरु दिश्वाः।
जल्भर्यायः। जमः २ स्र्जानः ०
रेमः हित्वयः ४ विश्वसः ६। इंडामद्रः॥ जम्भिणाः ५ गुरु करह्माः
नः १ रेमः हिकः ৮ छेभश्नदः २ भीयंकः २० छेभद्रागः २२ मिः हिकामृन् २२ । इंडि मद्मद्रावनी ॥
क्ष्यर्गः २२ व्हाः १८। इंडि किछाः
ध्राः॥ जलः २६ चम्द्रः २५। इंडि
क्रांडिखकुः ॥ जरमार भन्नाः र्था। मिःहिकाया मर्थार भन्ना

বিপুচিত্তে শতকুর্দশ। শবঃ শবল-। गावक राकः नान् खरेषर ह ॥ देल्एला नमू हिरेक्ट वाजाशी इम् পো ক্লিক:। হরকল্ল কলি নাভৌ ভৌমশ্চ নরক তথা।। রাহ্ র্জ্যেষ্ঠ-क (उधाः देव हन्मुमूर्य्यमुम्पनः । ইভ্যেতে সিংহিকাপুত্রা দেবৈ রপি দুরাসদা: ॥ দাঝণাভিজনা: কুরা: সর্বে বুক্ষদ্বিস্ত তে। দশান্যানি नर्त्राणि रेन श्रिकत्या गणः मृजः ॥ নিহতো যামদশ্যেন ভার্গবেণ ব नीयमा । बर्जातास भुजावन्ता পুলোণ্নস্ত শচীসূতা।। ইতি বহি: **পূর**ংণেপুজাপতিসর্গনামাধ্যায়:॥ # ॥ उत्र भित्राम् एकात्रनः यथा। वियोजिन शुक्रिकः स्टीन् (पैव भः मति । भुविष्टेः भाग मिन्द हन्तुकि। जा क्षेत्र मृहिष्ठः ॥ हाकन ফুরখারেণ জহার পিবত: শির:। হরি ত্তন্য কবন্ধন্ত সুধ্যাপ্লাবিতো ২পত ।। শির স্তুনরতা নীত नाजा गुरु महीकुश्र । यञ्च भर्वि চন্দ্রার্কাবভিধাবতি বৈরখী: ইতি জীভাগৰতে ৮ কন্ধে ৯ অ-ब्रायः ॥ मह म्लयशब्दाः । ण्पूर्वर्थः । घारणाञ्चलश्रिमायः । क्यवाः। क्यव्यः। जिः ह्वाहनः ॥

। ठज्जू बः। थन वत मूल हर्मशाती । मूर्यामाः । यमा अधिपविका कालः। পুত্যধিদেবভাসর্গ:। ইতি गुरुयञ्च छं बुर ॥ यम्। यक्श मिन-वट । স চ চণ্ডালজাতি: । সর্পা-क्जिः। अञ्चिमाभी तेर्वकिषा-मी ह। इंजि वृङ्ब्ला क्कानयः ॥ त्राङ्गारः भू वन्तु म्र्यप्रयाग् ईनः। যথা। রাহুগাহো র্কেনেগু হু উগ-রাণ উপপ্লবঃ। ইতি হেমচন্দুः।। ब्राह्म्क क्ली ब्रव्धानिमधवारब्यू অশ্বগত্যা বানাবর্ত্তেন বানার্ছে• शु । अङ्क्षि ब्राइश र्गमन । यथा । १४% हा विश्वी वङ्गी (ञी-ন্যা॰ জে বাথবে হুজে। রক্ষোদি-**मित्न ॥ त्राञ् जू निञ्ज यामार्काम्य-**গত্যা চ বামতঃ। দূয়তে যুদ্ধে বিবা-(म ठ याजाया॰ मन्नुथ॰ द्रिष्ठ॰ ॥ त्रान् विवर्कायव्यक्रात्यशीरह**् क**-মাণ: ফল । ইতি সংকৃত্যমুক্তাবা नी।। #!। द्राञ्कानाननहकः यथ-। তস্য চক্র• পুৰক্ষ্যানি রাহুর্কালা-নলাথ্যক । শলাকা সপ্তক চক देगामि कृखिकारिकाः ॥ माजि-জিৎকা লিখেত্তত্ৰ চাষ্টাবিংশতি ভারকা: ৷ যত্র খাক্ষে স্থিতো রাহু

वंदन छिनिर्फिल्ट ॥ मूथाट शकरण शक उत्तर शृह वर्ध इन्छ । अक्षानुमान थाना कायस यन किन्द्रः ॥ वहाश छन्नु कंगट मर्न महमार्कममित्रः ॥ -त्राल्लुकाण शकरण कीवशक न्यापण ॥ न्यापरिणय जाना नि मृज्यक शुकीन्य । मृज्य कायापण ॥ न्यापरिणय जाना नि मृज्यक शुकीन्य । मृज्य न्या। व्य मन्द्रा । मृज्य स्त्रभातिक प्रमान क्रिक्ट क्रियाम कारण मुखा याता । श्री छ ज् स्वानिष्ठा ॥ हे छिन्द्राप्य ॥ त्रकः-महित्र जि ॥

बाहरूक क्री आपूर्वः। ইতি बाज-

রাজ্যনী জী লাজ্যনামূবজালা চমুবা দর্শন নতি ব্যবং । বথা। চমুবা দর্শন রাজ্যে র্যন্তদ্ গুরুণ মু-চ্যতে। তত্র কর্মাণি স্বর্ধীত গণনা-মাত্রতো নতু ।। রাজ্দর্শন সংক্রান্তি বিবাহাত্যয় বৃদ্ধিষ্ । স্থানমাত্রস্ত কর্ব্যাণ দান শুদ্ধি বিব্যক্তিত । ইতি তিথ্যাদিত্ত্ব ।।

त्राञ्चनी भुः विकृ:। ইতি क्रोन

রান্তম্বভিৎ পু॰ বিষ্ণ:।ইতি বি-কাওপেব:।।

রাহ্রব্র॰ ল্লী গোমেদক:। ইতি রাজনির্ঘণ্ট:॥

बाङ्गम्: पू॰ तुकः। ইভি रूम॰

রাহস্পর্শঃ পু উপরাগঃ। ইতি

ब्राङ्श नुः विकुः । ইতি एका-

त्राङ्हिडेश जु॰ लण्नः। ইতি जि-काश्रमवः॥

बाङ्< मृक्षः भूः नम्बः। ইতি हावावनी॥

त्राक्तनः श्रु त्रक्छ। या ए त्रक्षः त्रक्षः व त्राक्तनः । उप्पर्यापः । क्रिन्ताः २ क्रिन्ताः २ क्रिन्ताः ५ क्रिन्ताः १ क्रिक्ताः १ क्रिक्

कीनानभाः २२ नद्रविदायः ७० । इंडि करें। इस प्रश्नित যথা গ ব্ৰজোমাত্ৰাত্মিকা মেব জ তোন্যা॰ জগ্হে ধনু॰। ভতঃ क्रूष्-ক্ষণো কাতা কভে কোপাশ্যাত-७:॥ कृष्काभावनशकाषाः कः হস্কত্রবাংতত:। বিক্সা: শ্ম-শুলা জাতা ত্তেভ্যধাবয় ত পুভূ ११रिमर्-८७। स्क्रिजा (मय रेज कर्ल-রাক্ষাৰ তে। ইতি বহি পুরাণ ।। 🗱 ।। व्यक्तिम न त्राक्षा गर्वः वैद् नार बनामान मधीकनरामं रेष्ट्रिगार বীনযুত্ত তেইাণ ভীমসেনদ্ধত ক্ষ্যণ ॥ ইতি মাৎস্যে আদিসর্গে কণ্য-भावस्ताम ७ वर्षायः॥क्षात्राक्रम (छाङ्कामानि यथा। क्रू कीरापूर भाभम्भ महाभाष्ट्रिशा दिन खरार । কেশাবপর সাধুত নাক্তখাসব-क्टान्ट ॥ अ जिः मःम्मृहे समक जाः (गा रेत ब्रक्समा ভবেৎ। उच्चाज्-छाड्। अमा विद्यानमात्न्रजानि বৰ্জয়েৎ ॥ রাক্ষসা নাম যে প্রোক্তা **एक कुक्ष**श्रद्धभीमृ**भः। इ**कि चामन भाजात्व ३२ व्यवप्रवः ११ क्षेत्र १ रक्ष्याः विकातः न्यं। वाकानवः । मथा। অন্তরীক্ষ চরা যে চ ভূত পেত পি नाठकाः । वर्ज्ञचिद्धा सम्बन्धाः (उ ठिउव हजि हि ॥ त्याक्षं विकः मण कि स्वयाः मञ्ज भाग्यनाः । ज ज कृं कि विरमुम् ब्राक्षमात्य कृरेजनमः ॥ छ ज मृग्राह्यः मर्ख विरुष्ठकुम् विक्रिशः । ইकि भाष्य मर्भभाष्य अक्ष्यशामः ॥ सः ॥ याष्ठे मुक्तात्र विवाराष्ठकं ज विवार्गविष्य-यः । यथा । जामूद्धा मृविगानाना-द्वाक्षदं मनगानिषः । ताक्रमा गुक्तरत्राष्ट्र रिण्याहः कन्रक्षहः जार ॥ हेजुद्धार्ञकुः ॥

ब्राक्तनी क्री क्रिक्स खिल गायर । इंडि स्मान्तुः ॥ हला॥ दिन ब्रायर । इंडि स्मान्तुः ॥ हला॥ दिन ब्रायन गाम प्र युक्ति गायर । इंडि सिन्नी ॥ भागाह कानाः। यथा। भागाः काताः भूट्डी जीन मक्त खासस्य जू। स्थाह जिन्द् इंक्स्स हिन्द् इंका एट जाकः जन न कान्न स्थान हिन्दी क्रिक्नी नाम मा तिवा गर्डिं न महंकर्म मा। इंडि जिथ्डा सिज्द ।।

রাক্ষসেন্দু: পু॰ রাবণঃ। ইতি ত্রিকাপ্রশেষ:।।

রাক্ষা স্ত্রী লাক্ষা। ইত্যমর: ।। রি শ গভৌ। ইতি কবিকল্পড়ম: ॥ রেফাদি: । শ রিয়তি । ইতি

রিক্তা पूर्णाम्। শ্ন্ত । বন । ইতি (मिनिनी ॥ विक॰ वि निर्थन। ইছি শন্ধর্ত্র।-वनी ॥ तिककः वि म्नाः। इज्यानः॥ রিকা জী ভিথিভেদঃ।স।তুচতুথী क्नार । इंडि डियामिडङ्ग ॥ ্লকুকুকুল্। ন বিক্ৰাঃ সর্বক্ষ্যসূ

नवनी ठजुर्जनी ह। यथा । सुन्हा ভुमा क्या तिका भूगी চ जिश्रयः कमामु जन्मा निष्यथ विशे यथा। नन्ता जुना कया विका भूगी ह नाज া ইতি জ্যোতি: সার: ম চল্দে চাক ্জুজাকি শুক্রবিযুতে মধ্যে ১৭ বা প্রাপ্নযো:। ত্যক্রাচ ব্যতিপাত বৈধৃতি দিন ৰিপ্তিঞ্ বিক্তা তিথি কুৰাছায়ন চৈত্ৰ পৌৰ বহিতে ল গ্না॰শকে কানুষে ॥ রিক্তাসু বিধ বা কন্যা দর্শেপি স্যাদ্বিবাহিতা। म्मरेनकद्रिति है है यहि द्विका जिथि र्ज्यर।। जिमान् विवाहिज। কন্যা পতি সন্তান বৰ্দ্ধিনী। ইতি मीलिका ।। यक्षे भागि निमाक्त्व শৃভকরে রিক্তেভরে বা ভিথৌ সৌ ন্যাদিত্য সিতেন্দু জীব দিবসে প ক্ষেত ক্ষেত্রে। ইতি ভুজবল

ভীন: মু দাদশী সগুণী নন্দা ৱিক্তা-म् लक्षणवंत्र्। वनमाय्यामा इन्। ८ শিশ্বাসমভক্ষণ ৷৷ ইতি, কৃত্যচি-स्मिनिः।। भूर्वभासक मर्भ मृजद्रहि-তেমুক্ষেম্বরিকে তিথে মাস जिएक्सू बीविषयम (ग। खर्क भी-त्माप्राय। मः नार्थ शक्षा वार्त चनु-मुख बनार्म्सन । यही मुजिनम्ब्य বর্জযিত্বা তথাইনী । রিক্তা পঞ্চ-भौरिक्षय द्वजीब ट्लोमिस्टिन एथा ॥ এবং ন্যুনিশ্চিতে কালে বিদ্যারস্তম্ভ का इस्ट। इंडि विकुथरर्गा छन्नः॥ भू-ৰাগ্নিযান্ত্ৰ্য ফণি চিত্ৰ শিবান্যভেষু রিক্তাইনী বিগত চন্দ্রতিখি বি-राय। बाक्यानि ला ममूनस्य विक्रजा কিবারে শক্তেন্দু যোগ করণেষু হ-ब्युवारः। ইতি दीलिका ॥ हन्ता-करिया जिंदिर भूनी महा जमा करा अतो। वृथ भारती ह ननतायाः भुरक রিক্তামৃতা তিথি: ॥ ইতি ভীম-श्रद्धांकमः ॥ अर्देव कार्यं। वृक्ष कीय শৃক্ষাঃ কেন্দু ত্রিকোণোপগতাঃ পু-শত্তা:। তৃতীয় লাভারিগতাক পাপা ভিথি বিব্রিক্তা শুভদস্য চা-रः ॥ इंजि मीलका ॥ ठेजूथी नव-মী চৈব বিক্তা চৈব চতুর্দ্দশী। শুক্তে নন্দা বুধে ভদা শনৌ রিক্তা জ্বজে

क्रया।। अप्रो भूगी ह ज युका जिकि यागाः भुकी विंठाः। वृष्यम्रगठा नमरा इराज जुना जया ब्राजी।। जुंखे রিক্তামৃত প্রোক্ত পূর্ণাচ রবি চন্দুযোঁ:।। ইতি জ্যোতি:সাগর-नातः ॥ यश्रश्रेमी घारणीयू नग हि अदिन स्वार्शिना भुष्ति भार र्भ त्रिकावमितिषु ह।। उथा यम षि जीयायाः याद्यायाः मत्रनेः खद्द । ইতি সৎক্ত। मुकावनी ॥ রিক্ল জ্লী ধন•।ইত্যমরা।। त्रिकुशती जि नायानः। धनकाती । यथा। यशास्त्रो नियुक्ता (मवज्ञाः দিঃ স্ব্যুপ্তা হপুত্রস্থ কেত্রে স্থ পরপুত্রার্থ পুরুত্তোয়ণ জনয়তি াৰ দিপিতৃকো দ্ব্যামুষ্যাযণো দ্বযো त्रिक्षहात्री निखनाजा ह। ইত্রি মিতাক্ষরাযাণ দাযভাগ:॥ त्रिकृति वि धनशाती।। धनी। त्रिकृ इ-রতিব:ইত্যর্থেইন্পুত্যুয়নিয়ৢয়:॥ রিথ ই সর্পাণ। ইতি কবিকল্লন্দমঃ ।।ই রিড্খ্যতে। ইতি দুর্গাদাস:।। রিগ ই গভৌ। ইতি কবিকল্পদ্ম:।। ই বিশ্ব্যতে। ইতি দুর্গাদাস:।। क्रिज्ञन क्री ज्ञनन । ইতি ह्महन्तुः॥ স্থলন । ইত্যমর:।। क्षि वर्णाम्। शिष्टाम् शुटिष्टायाः य- कीयविश्वानामन्त्रथालार् व हेल्र्यं। केठिल्या भिहिलारम् मुल्या । हेल्या मार्थः। श्रम्यविल्यानः विन्त्रमानाथः।। श्रम्यविल्यानः विन्त्रमानाथः।। श्रम्यविल्यानः विन्त्रमानाथः।। श्रम्यविल्यानः विश्वाने। शिहिलार्थः विल्यानः। शिहिलार्थः विल्याः। श्रम्याः विश्वानः। श्रम्याः विश्वानः। श्रम्याः विश्वानः। श्रम्याः विश्वानः। श्रम्याः विश्वानः। श्रम्याः विश्वानः विश्वानः। श्रम्याः विश्वानः। श्रम्याः विश्वानः। श्रम्याः विश्वानः। श्रम्याः विश्वानः। श्रम्याः। श्रम्यः। श्यम्यः। श्रम्यः। श

বিচ কি সম্প্রকরিয়া 'যো:। ইতি কলিক নি কি বিচ্ছান্ত বিচন তি। ি বুলিকান্তা ছনৈ ম-তি ক্লি বেচতি। বেচততি চ তমার্য্য ইতি হলাত্থ:। ইতি দুর্গাদাসা:।। বিচ ধ ইর ঞ ও বিরেকে। ইলি কবিকল্লজম:। নিরেক জৌনংলু নেয়ন প্রীষো সলা:। ইতি চতু-ভুজ:। ইর অবিচৎ অবৈক্লীৎ। ধ ঞ বিণক্তি বিদ্ধে অভিসারকী। ও বেক্তা। ইতি দুর্গাদাস:।। বিজ ড শ্বজ্যথে। ইতি কবিকল্লজম:

। अजार्थ जर्जान । उत्हर्ज । इजिनूर्गानामः ॥ तिथनः भ्रः कामः ॥ दमसः। इजि विथः॥ রিপু: পু: শত্র:। ইত্যমর:।। চো-व्रकनामगन्नमुवाः। इंडि वाजनिर्धः न्हः ॥ नगारभक्ष्या वश्रनगुः । ७८-भर्यायः। यह्रकातः २ त्रिभूमन्तितः ग्राथा। श्रीञ्चानः शक्षमः (क्वयः) राभिकः मध्यः म्डः। मुनः पृतः তথাস্তাখ্য বট্কোণ রিপুন কি রণ। অগিচ। নুর্বিত্রতে ইস্তগেপি-বা রিপো গৃহে স্থিতা গুহাঃ। বৃথা বিশ্ব পুর্ব ডি॰ সমস্তমেব স্রি-चिर्मा व्यनाष्ट्र । ्याञि तुनस्याः बर्ड १ १ दे १ मा है। वक्षामाः । व्ययम् श्राण गार्योगर् ब्रोट्ड्य **६७नः।।** ः २ जिलकु ॥ अ। भन्नीनञ्च মাতুৰ জাৰ । কাল কো**ৰ:** क एक एक एक व्यक्त स्थापन । ভগ এনি শত্রা, দুখ্যা প্রাণ্ড **স্ব্রি**ল क्षा है । अ यहें हैं ने निष्य-গণ মনসি পুসলে। ইত্যাদি ত জসারে ভূবনেশ্বরীস্তোত্র•॥ রপুঘাতিনী জ্রী লতাবিশেব:। ष्ठ्रे ই জি ভাষা। यथा। अहिका বহুবিন্তীর্ণা ক্ষিকা বিপুষাতিনী। ইতি শব্চন্দ্রিকা।। বৃদ্ধ পাশ বৰে। ইতি কবিকল্লফনঃ ।। নোপধঃ। পশ রিমুতি রিরিমু,।

দুর্গাদাস: ॥

রিপ্তা লী লগাপেক্ষযাদাদশরাশিঃ

। বথা। কর্মস্থানঞ্চ দশমাধা মেশ্রণ মাম্পদ । ছিদাধ্য মন্তা
স্থান রিপ্তাথ্য দদশ মৃত্য ॥

ভত্র চিন্তনীয় যথা। পাগুয়াযাবথ

চিন্তবেজ্বগৃহে রিপ্তেথ মজিব্য

যৌ সৌম্য স্থামিযুতীক্ষিতে ক্পা
চিত্তি শ্রেষা ক্ষতি শুন্যথা॥ ইতি

জ্যোভিস্তত্ত্ব ।। বিপু: ত্রি অধম:। ইতি সিদ্ধান্ত-কৌমুদ্যামুণাদিবৃত্তি:॥

तिक ज्यान। इंडि किविक्सक्रमः॥
स्रोजभाजूत्रयः। त्रिक्षः (त्रकः। इंडि मूर्गामामः॥

तिक भ व्यर्क। ইতি कविकन्नक्रनः
।। भ तिक्छि। व्यर्का मान भाषा
हि॰ मा निन्म। युकानि। ইতি मूर्गामानः॥

রিব ই গত্যা । ইতি কবিকল্পদ্ম: ।। ই রিষ্যুতে। ইতি দুর্গাদাস:।।

রিভ রবে। ইতি কবিকল্পজনঃ।। বিরিক্ষঃ। ইতি দুর্গাদাসঃ।।

রিমেদঃ পু• অরিমেদ:। ইতিরাজ-নির্ঘণ্ট:।।

।। নোপধ:। পশ রিয়তি রিরিয়। রিরী স্ত্রী পিত্তল:। ইতি হেমচন্দু:।।
শপ্তনম্বরাদির্থনিত্যন্যে । ইতি রিব ই বুজে। ইতি কবিকল্লফ্ম:।।

ই রিশ্ব্যতে । বুজো গতিঃ । ইতি দুর্গাদাসঃ ॥

রিশ শ ঔ হিংসে। ইতি কবিকল্প ফনঃ।। ঔ অরিক্ষ ে। শ রিশতি। রেক্ষ্যতি। ইতি দুর্গাদাসঃ।।

রিশ্য: পু['] মৃগঃ। ইতি ত্রিকাণ্ড-শেষ:।।

রিষ বধে। ইতি কবিকল্ল**ডনঃ।।** রেষতি। ইতি দুর্গাদাসঃ।।

तिविः शृ असिः। श्रविष्ठ छान जः नात्रायाः शातः गृहित श्रवयः। श्रवीम गठो नानीक किः। तिवि ङ्नापिन्छ। विष्ठा विषय भक्षा तिवयः श्रविष्ठाः। ইक्रि श्रुणाणार्थः। ।। जिया श्रवा ह। ইक्रिम्बिन्नाः याः छत्रकः॥

রিপ্ত' দ্লী ক্ষেমণ কল্যাণণা অশুভণ । সমস্বলা । অভাবঃ । নাশা ।। ইত্যমর ভরতো ।। সাশৃ ভস্যাভাবঃ । ইতি কেচিৎ । ইতি ভরতঃ ।। পাপণ। ইত্যম্যা ভদ্বতি কি ॥

রিষ্টঃ পু॰ খন্নঃ। ফেণিলঃ। স তু রক্তাশিশুঃ। ইতি মেদিনী।।

विष्ठेकः भू विक्रामण्यः। इंडिमकः ववावनी ॥

ति है: कु॰ अहः। इंडि सिमिनी !! विद्धिः की ज्ञानुका इंडि सिमिना।

भञ्जाबनः। ইতি भन्दत्रावनी ॥
विष्ठाः भू ग्राविष्णयः। यथा ।
व्यय व्यापा विष्ठ विष्ठा विष्ठा विष्ठा विष्ठा विष्ठा विष्ठा विष्ठा विष्ठ भन्दा

রিয়: ত্রি বধক: । ইতি সিল্লান্ত-কৌমুদ্যামুণাদিবৃত্তি:।।

ন্নিছ বাং। ইতি ক বিকল্পন: ॥ বেছতি। ইতি দুর্গাদান:॥

तिकः। हो निकार्यका। इंडिट

र्बः । ७ मृष्ठः । भक्ताः । १८ १ । तस्य १८ १ ७ बीयः । ७ महीसर्व्यास्य इति मुर्यासम्बद्धः ॥

রী ি ব্বে স বধে । পানী দ্রি ক্রিক্রজনঃ ।। তি তালাল ব্রিক্র নিশিঃ রবঃ শা তালালি বেশ্বপথের । রেশ্বপ বৃলপুনি রিতি রশনিথেঃ । রিণাতি রেশতে বৃলঃ । ইতি শন্দার্থে ভউ-

त्री खी गिजिः। ইতি समत्रकावनी
।। त्रवः ।। वषः । ইতি त्रीक्षापूर्यमर्सनार ।।

রীজ্যা জ্রী ফ্ণা। যথা। সোহোরী।
জ্যা জুভপ্ন। চ স্থীয়া স্থিয় মৃণে।
তি বাচস্পতিঃ। অযন্ত লজ্জায়া

शुनित्वः भुनानाट घ्नायाः भुगुक इंडि कॅनिकः । इंड्यान्रहीकायाः ভत्रजः ॥

ন্নীঠা জী নীঠাকরঞ্জ:। ইতি রাজ-নির্ঘণ্ট:।।

त्रीशंकत्रक्षः भू समामश्राज्यकः।
उट्मर्गायः। एहकः २ एहमूज्ञकः

तीशं ९ एहमनः ६ व्यक्तिः ५

भागवण् २० (क्रिनः २० भूकायः

क्रमण्याः। क्रिक्यः । उत्य

রীচকঃ পুং পৃষ্ঠবংশঃ। ইতি হোল চলাঃ।। বি ক্লা প্রস্তান ইত্যানর ।। বি বুজা নাগি। ফরিতে । ইত্যানর:।।

রীতি: ত্রী আরক্ট: ॥ পুচার: ॥
সান্দ: । ইত্যমর: ॥ লোহকিউ ।
ইতি মেদিনী ॥ দক্ষমণাদিমল ।
ইতি ধরণি: ॥ সীমা ॥ সুবণ ॥
গতি: ॥ স্বভাব: । শেষস্যপর্যায়ঃ
। ৰূপ থ লক্ষণ ৩ ভাব: ৪ আআ।
৫ পুক্তি: ৬ সহজ: ৭ ৰূপ ভত্তুণ ৮
ধর্ম: ১ সর্গ: ১০ নিস্গ: ১১ শীল

>२ गउँवृ॰ २० न॰निष्किः २८ । ইতি হেনচন্দু:॥ 🗱॥ কাব্যস্যাত্মা । ইতি वामनम्बः ॥ खगाज्यस्य छ-विजागमार । उतः भुमार माधु-र्य) ভণ ব্ৰিত্তৰ ভেদতঃ। গৌড বৈ-पर्छ। भाकाण तीउगः भातकीर्ख-णाः ॥ <u>भू</u>त्जारकरेनवा॰ लक्षगानि यथा। ७ अ: मनाम ज्यसु ना म-धः भरउम्रदः। वाकार्थभर मगा-ँ। भुनारः भद्रिकीर्खिङः ॥ भ-भार्थायास त्रमवद्यपुत्र भित्रकीर्ख-ত । नर्बलाकावगन्तर यम्गुानर তদভিধীযতে ॥ সুশাব্য মাপ গ-ञ्जीतः भुमन मूलनागद्गः। गुामाः यथा। कत्ना भरना १ १ माने भरना यञ् भर् विवाश्ययः । नाल्नन **७** भना वर्डाः जूनस्त्रक्षी नगागमः ।। উপনাগর• যথা । তদ্বি ত্বদধর• श्रामु नाविम इविषमा जनाः । वज्र्थान याः मूदा जावा स्वा सर्गः विवा नदः ॥ भक्रानक्त्र १ ७८ म्याप्यम्न शुन ভাষর । বর্ণাবৃত্তি রনুপাস: পাদে भारि विधीया ॥ भरावृज्जिस य्नक भागि भ्याष्ट्र भईगः। 🗱 ॥ क्रारंग दी जि व्यानामूमा इद्रानि । गरमा उस उत्रस नस् ३ व्ही कृष्टे। गु জাগুৎকণি যুজৎ ফুৎকৃতি ভীতি मञ्जि हमरकात्र मुत्रर्थं मञ्जूमा।।

याननराम् उदाशिकाः विषये है।

रख गित्रीम भुष्टा छाः भाषामव

मक्रमं छगवे ही मह्नावि भार्म
छो।। छवछा वित्र ह्वाधि मिन्ना
मा ममञ्जूमा। कामिनी यामिनीकाषः क्छाष्ठ मिद भमाऽि॥ इ
छानि मञाभनिवृद्ध हमाः किः

छान्य छ जन्नी कर्त्वाचि। উद्धाभ

धर्मा प्रतियः।। ইতি काव्य हिम्का।।

त्री जिकः क्षी भूमाञ्जनः। ইতি त्राक्ष
निर्यन्तः।।

तीिका जी अनुमाक्षन । ইতি भद्रिनुका॥ भिन्नक्षः॥

त्रीि ज्ञा क्ष्मा क्ष्मा क्ष्मा है जा भवः ॥

त्रीव श्रक्ष कीरव। ইতি कविकन्न-क्ष्मः ॥ श्र श्राद्यतीवट क्ष द्रीविक द्रीवरक। कीरवा गुरुष मःवद्रपर्याः। ইতি দুর্গাদাসः ॥

ৰু ল ধ্বনৌ। ইতি কৰিকল্পজন: ॥ ল রৌতি রবীতি পক্ষী। ইতি দুর্গাদান:॥

ক্ ড বধে।। গভ্যা•। ইভি কবি কল্লছন:।। ড রবতে। ইভি দুর্গা-দাস:।। कः भू॰ भमः। ইত্যেকাক্ষরকোষः॥
करुः जि वल्भुमः। ইতি भम्माना॥
कर् जी भाजा।। मूर्णः।। ইहा।
ইতি भम्बज्ञावनी॥
कर् जी जागः।। मीक्षः। ইত্যमद्रः॥

ৰুক্পুডিক্রিয়া জী িকিং ৪১ টি-ত্যমরঃ ।।

क्या॰ क्री काक्षम॰।। युष्ट्रयः। इति ।। भन्नः ।। (वाष्ट्॰। इति ।। विकित्ते ।। भागरकम्पत्रः। विकित्ताकनिर्धन्ते ।। क्याकात्रदः गु॰ अवकादः। इति। भन्नः ॥

ক্ষাক্ষ: পু॰ রাজনিশ্য: বছা
। অন্তি কলিদ্দিন্য ক্ষাণ্ডের
নামানরপতি চিন্তিত ক্রান্তি
মোগেত্য চন্দু রাশ্রিতি ব জন
মাবেসিতকটকো বর্জতে। ইত্যাদি
হিতোপদেশে ১ পরিছেদ: ।।

किमिनर्भः भू वनाप्तः। इंडि

क्तिमात्री भ् रनात्रः। ইতি তিকাগুশেষ:॥

क्निगी जी कृष्मश्रिवीतिरमयः। जर्भग्रायः। केः २ तमा ० मिक्कु जा क्षमागा ८ ठना ७ क्षेत्रा १ ठक्षना ৮ व्वाकशारी २ हशना २० हिन्द्रा २० वाक्याः २२ श्रमाव्या २० श्रमा २८ कमना २० ज्याः २५ हिन्द्रिया २० विश्व किराध्यः ॥ व्यम्प्रा विव-त्राण्या । विर्ण्डतात्वा धर्माव्या जीयात्वानाम धार्मिकः। वज्य खम्प्र भूभास नामा कन्म्राप्तयः मुजाः ॥ जिया मयत्रमा कन्म्राप्तयः मुजाः ॥ जिया मयत्रमा कन्म्राप्तयः मुजाः ॥ जिया मयत्रमा कन्म्राप्तयः मुजाः ॥ व्यविनित्री । कमनार्थम मस्नुजा मर्वनक्षणाण्डिण ॥ त्राध्यत्व २ ज्व २ भीज किम्मिती कृष्णवामि । माक्षाव्यक्ति ॥ इंडि श्रामान्त्रा-थाल ५१ व्यथ्यायः ॥ ॥ धर्मक्रीती । ইতি রাজনির্ঘটः ॥

কল্মিণীবৃত্ত লী বৃত্তবিশেশঃ। যথা
। সৃত্তবাচ। জামদগ্রঃ সমাকর্ণ্য
রমাণ তাণ পুল্ল গজিলীণ। কল্পেরভিনতং বুজ্জা কার্যজ্ঞানিীবৃত্তণা।
বুতেন ভেন চরমা পুলাচ্যা সুভ্গা
সতী। সর্বভোগেন সংযুক্তা বভ্ব
ছির্যৌবনা।। শৌনক উবাচ। বিধানা বুছি মে স্ত বৃত্তস্যাস্য চয়ৎ
ফলং। পুরা কেন কৃত্তং ধর্ম্যাণ ক্রিণীবৃত্ত সুত্তমণ। সৃত্ত উবাচ। শৃণু
বৃন্ধন রাজপুল্লী শর্মিষ্ঠা বার্মপর্বণী
। অবগাহ্য সরোনীরং সোনং হ্র

মপশ্যত ।। সা স্থীভি: পরিবৃতী দেব্যান্যা চ সংগভা। শস্ত্ৰীভ্যা नमूर्थाय भर्गपू र्वजन करुं।। उड শুক্রস্য কন্যায়া বন্তব্যভ্যাস মাং অ্ন:। সংলক্ষ্য জপিত। প্রাহ वजन जाब जिक्क् कि।। इंजि नानव कन्। जा मात्री जिः शत्रिवादिजा। ভা• ভস্যা বাসসা বজ্বা কূপে ক্ষি-थ्वा गठा गृरु ॥ ठा क्नमग्रा क **प्रकी॰ बनाधी वर्गाञ्जः। कात्र-**र्ण्णा ममुष्ठा शाह का वः वतान-নে ॥ সা শুক্রপুত্রী বসন পরিধায शिया ভिया। भर्मिश्रया क्उ॰ मर्द॰ भार बाबान भीकानी ॥ ययाजि **उर्ह्मिश्राय** कादानु वुक्र (भाजनाः া আখাস্য তা॰ যথৌ গেছ॰ তস্যাঃ পরিণযাদ্ত: i৷ সাগত্বা ভবন: শুক্রণ পুছে শর্মিগ্রমা কৃতে । ভদুত্বা স-निज विनु व्यनदीह माइयन्॥ **म्ख्यः भा॰ म्ख्य वि**छा (द्वार्या य-দ্যন্তি তে ম্য। শর্মিগ্রাণ বাপ্যপ-কৃতা॰ সৰু যন্মনসেপ্পিত ॥ রাজান भुगाउ भार भिज् म् द्वी क्या वृदी । (स्वयानी विषय कन्। नम मार्भा छ-বিবৃতি ৷৷ সমানীয় তদা রাজা দা-স্যে তা॰ বিনিযুজ্য স:। যযৌ নিজ-गृरः ज्वानी रितः भन्ननकः सन् ॥

ভতঃ শৃক্ৰ স্তমানীয় য্যাতি পুতি-(लाभकः। उरिम हरिने जाः विश्वितः (स्वयानी॰ खया अङ्॥ सङ्घा शुाङ्-नृशः विर्भारभानाः त्राक्षमुजाः यहि ा भगत नगरम जारहा बदा वा मूनः ভোক্যতি।। শুক্সৈয়তদ্বঃ শুরু। রাজা তা॰ বরবর্ণিনী৽ ৷ অদৃশ্যা৽ ञ्चाभयामात्र (एवयान)नूनाः जिया ॥ সা শর্মিষ্ঠা রাজপুত্রী দুংথ শোক ख्याक्षा। विकाः नामीमजाकीना দেবধানীন্তসেবতে।। একদা সা বন-গতা ৰুদ্ভী জাহ্ন বীতটে। বিশ্বা-মিত্রণ মুনিণ সা তণ দদৃশো জ্রীভি ব্লাবৃত ।। বুজিন পুণ্যগন্ধাভি: সুৰ भाजिः म्वामिङः। कात्रवहः वुङः मान्। धून मीरनानशाहरिकः ॥ नि-र्च्यागाञ्चेम्बा शम्म (दिस्कायाः जू-চিহ্নিত । রম্রাপোতৈ শত্ভিস্ত **ठ**जुरक्षाप॰ विद्राष्ट्रिङ । वाममा नि-মিতৃত্হ স্বৰ্পটৈ বিচিত্ৰিতে॥ নি-র্মিত প্রীবাসুদেব নানারত্ন বিষ-উত্ত। পৌৰুষেণ চ সুক্তেন নানা गत्कापरेकः भूरेजः ॥ श्रकाम्रेजः **न**क्षगति र्यथा मटेख विंद्धिति । नाभियदा जुनुभीति कर्निकायाः भु-পুত্ৰযন্ ৷৷ পঞ্জি দশভি হ'পি যো **एटेन क्नाइटिकः। नार्य मधुनुग-**

रतः भीउवः मुन्यार्वः॥ भन्नना-ननरवनकः गुराग शहरमायत । मूर्वः **ठनरनगञ्जाह्य सर्**युक्तः श्रदज्ञ ।।। गृरुष - नियमेकान्न । भारतः शुक्ता नानार्शिया 🚉 🛴 शक्ति कुरिन व्रवः ॥ शृह्युलाहन्नी य॰ ६ लिलिएम लिला नहा नाना **भ**र्व वक्षात्राः स्व श्रु**श्ट गृ**ड्याः বৃক্ষঃ লোভাকর চাক মাল্য ন্য जा चित्र । धुन्यानमञ्जानत् हि-**७**॰ वल्लन॰ ६ व । शृहागावद्यभः **শৃক্।** নিরাবরণ সপুষ। মজসূত্র নিদা গ্ৰেছুজাপতি পৈনিদি পা शृकार वीश्रावय द्वा संख्यिता ब्रम्या त्रहा। न.न.६., न.नशुक्तः होत् जा **रि एडिंड॰। लियग्। अङ् (मार्म्) १०** रात्रका भेग । १६६ सेन ८८ माणि ्च वह क च खलाव। गृहान क्रिगीनाथ जनायः क्रक माः शुखा ॥ क्लूबार्कगकाष्ठाः शबगानम्-मायकः। ध्राः श्राः वज्ञम देवमञ्जा পূিয্যা সহ। ভক্তানা পেহ সকা-नाः जःजात्रधासनामानः ॥ मीना মালোক্য বিভো জগদালোকনাদ-র। শ্যানসূনরে পদ্মাক্ষ পীতা ঘর চতু ज ॥ भूभम भाहि (मदान ক্সিণ্যা সহিতাচ্যুত। ইতি তাসাং

्रकः हुक्षे भूनिः नद्गा वृ**दृःथिजा ॥** भ गंत्रो विश्वेताना क्षाञ्जनि क्वा-চ ভাঃ। শক্তিগোৰাচ। **রাজপুত্রী**ণ নৱবজ্জিতা* াতাত ১৮৮৮ কেনেবের সুভনানেন ক্ষাফ্রালা ুট্রাল্ডা বছ স্বস্যাঃ কা-क्षात्रात कियत विकास व भागक विकास बना मङ्ग्रे काबराह्य हु बास्त्राच्या ॥ ुं के देश के मांचाडा लक्षा वालान भीषा मृत्र मुनाम म्हार । पुर्वि स्वर्षामा । ११ अवस्थाक ৰণিক্ষালৈ সর্ভাগ সহ। বৃত্ত हैं के कि स्वर्ग के शाम राष्ट्रम grand a propregation of grand के हैं। इस्टियुक, पुलामुक्ता सक्त बिद्रा नेत्रा ॥ उथा प्रमा मि the same of the sa 南阳相關於 一个不同事件的 人名马克曼马 ৷ পউস্ত্র করে বধ্বা ভোজাবধ্বা विजान वर्न। जुङ्ग रुविवा कीता कि न्मिष्टे यामिना नह ॥ तृज्रुक পৃথিবी मर्बा मभूर्बा मर्कोन वृं छ।। न। भूष्यो मृष्द नाधी भिष्मान বলাহকৌ ৷৷ দেবানা মূপকর্ত্তারৌ য-खनान जल्मानुर ो। मरहार माही

गरावीर्या मुख्लो किन्नमाखी॥

ु अवब गिंडि क् द्वा महमम्म र मम्

দ্ধা ভৰতি বিদিততত্ত্বা প্ৰিচা পূর্ণকামা। ছরিচরণসরোজদ্বন্দু ভক্তৈকতানা বুজতি গতি নপূর্বাণ वुक्तविख्छ तगम्याः ॥ **इ**ंड किन्नुः भुद्रात् क्षिगीयुज ०५ वर्गायः। किमा जिल् शृ॰ वलापवः । इंडि र्विम्पुः॥ क्यों पु॰ जीयक्राजः हा ४ मू थः। यथा। ब्राजामी खीबाका नाम वि-प्रजीविश्व र्यशन्। उत्र प्रश्वा-ख्यन् भूधाः करेनाका कृष्टिवानना ।। बन्द्राश्राका कन्द्राया कन्द्रावा छ-রন্তর:। ক্মুকেশো ক্মুমালী ক্লিণ্যেষা স্বসা সতী ॥ ইতি ত্রী ভাগবতে ১০ ক্ষদ্ধে ৫২ অধ্যায়:॥ কৃত্ৰদ্ম লী মল। ইতি কেচিৎ।।

তৎপर्यायः। जुनः २। ইত্যমतः॥ রোগী। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥ ড ৯ প্রীতিপুকাশযো:। ইতি ক্বিকল্লজন: ৷৷ প্রীতি রিহ অনুরা-গবিশেষ:। ভত্র ঘস্যানুরাগ স্তম্য मलुनानवः। ७ (द्राहर्ड यमः वृजु-क्षत्व। २ व्यक्ष्ट । इंडि मर्गामानः क्ठक की निर्धाकामात्र ।। जाया-**ভরণ ॥ भानारा । स्मोर्यह्न ॥** भाक्तापुर्वाः ॥ एंदक्रः । इंडि

क्यः वि রোগাদিনাস্টিলীকৃত:।

(मिहिनी ॥ श्राह्यत्रमः। ईिंड भद-त्रञ्जावली ॥ (त्राह्ना ॥ विष्कः । हेडि (हमहन्मुः ॥ लदगः । हेडि हात्रावंशी ॥

क्ठकः भू॰ वीक्रभूतः । निष्कः ॥
म्रष्ठः ॥ करभाजः । ইতি मिन्नी ॥
क्ठा जी मीश्विः ॥ म्याञा ॥ ইह।
॥ मात्रिकाम्कवाक् । ইতি मनत्रश्रवती ॥

किः जी अভित्रमः। अनुतागः
आमिक र्वा। ग्णृशा अভिनायः॥
गंजितः। कित्रगः। ইত্যমরভরতৌ
॥ শোভা। ইতি মেদিনী॥ तृजुका
। ইতি হেমচন্দুः॥ গোরোচনা।
ইতি রাম্মনির্ঘটঃ॥ আলিঙ্গনবিশেষঃ। তল্লক্ষণং যথা। নাযিকাযা
নাযকস্য সংমুখে জানে। ৰূপযুর্গগবিশ্য বক্ষসি বক্ষোদত্ত্বা যদবস্থানং। ইতি কামশাস্ত্রং।।

किः भ् भुकाभि वितिष्णयः। मह द्रोह । महिः भुकाभि वः भूर्यः विवाह । किः भुकाभि वः भूर्यः निर्मात्मा नित्र स्कृ विः। यज्ञास्त्र निर्मातः। भागे ह हहात भृषिती निर्माः।। स्मानः। विमुक्त मसः उ॰ मृक्षे। भाषः। स्विश्वता मूनिः।। भिन्न केंद्रः।

वर्म कमार द्या भूगा न क्रा मात्रमःगुरः। यर्गाभवर्गार्श्ववादस खिनानि**ण**॰ विना ॥ शृशी जनस (म-वानाः भिज्नाक उषाईनाः। अवीना मिंजियोनाक मर्बन् (लाकान्नामु (छ ।। স্বাহোরারণতো দেবান্ স্বংগারা-রণত: পিতৃন্। বিভর্মগদানেন ভ্ जाम्यान**जिथीनशि ॥ म जुः** एमवामृ-शाहकः वक्षभयमृशाम् नि । व्यवारश्नाः नि भनुषार्थिञ्खाञ्चाक पित पित ॥ अनु ८ भार । जुजान (एवान महर्भ) পিতৃ তথা। ভ্তাদী শ কথ মৌ-ঢ্যাৎ সুগতি•'গন্ত মিছসি॥ কচি-ৰুবাচ। পরিপুছো ২তিদু:খায পা-পাযাধোগতে তথা। ভবভ্যতো ম-या भूर्बः न क्ला मात्रमःगुरुः॥ नु-কাল্যতে প্নুদিবস যদাত্মা নিম্প-রিগুহৈ:। মমত্বপক্ষদিধোপি চিন্তা-स्त्रां विद्र कि उर ॥ इंड्रांमि ॥ পিতর উচু:। যুক্ত: পুক্ষালন: করু-भाजान। नियरङन्दिराः। किस्र ल-পায় মার্ফোয়ে যত্র ত্ব পুত্র বর্ভসে ।। इंज्यानि ॥ 🗱 ॥ मार्क(खय উवाह । স তেন পিতৃবাক্যেন ভূশমুদ্বিগ্ন भानमः। कन्याञ्जिलाञ्ची विशुर्विः পরিবভাম মেদিনী ।। কন্যা মলভ: माना १८मो शिज्वाकाशिशीशजः।

7.

के का निष्य के होते के निष्य **या** | विकार कि । असे दे ग्रहासि कथ . १६ - पुण्ला क्षि**ल्ला छाउट नि**-ं नम्हा अविवक्तः ॥ हेि ' ু' ুদ্য হ'জ কলে। নৃহ। মুনঃ वार्याः कान कान ा ा ६३ विष्युः वि**याः** ं १ विश्वास कः ः हि-कि कि अपनि है। 11 图制 2% 《理论》 1 158 MAL SAL 21 े ती केर केट अ**डा** कर**ो** ं - १५ किए सम्बंध में उ ি কিন্তু কৰিছিল কৰিছিল in म विष्ठा है। विश्वन প্ৰতি ক্ষ্মিয়া ভূমপতি প্ৰতি ক্ষিত্ৰ প্ৰতি ক্ষিত্ৰ প্ৰতি ক্ষ্মিয়া কৰিছে প্ৰতি ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ The state of the s ी विश्वास दिए महरू लाहा া ধান লাগতে া লাক স্তৃ े विश्वासम्बद्धाः विकास करा है। जिस्ता करा है। ि के अन्तर है। १ राष्ट्रकः ি কিন্তু প্ৰাণ্ড প্ৰাণ্ডাৰ ं ४ कि न महा भिज्ञान्तः । जार अम फेलाह । इन्हान बहन ं वृज्ञाता १वाक क्यानः , नरा।

`বিৰিক্তে পুলিনে চকার পিত্ তর্পণ• া৷ তুষ্টাৰ চাপিতৃন্ বিপুঃ তবৈ রেভি রঞাদ্ত:। একাগু: পুষতো ভূত্বা ভ-किनेगुाञ्चाका कि:।। शाक्षि क्छ - निक्रकाव श्या। किंकिया । नग-স্যেহ॰ পিতৃন্ ভক্ত্যা যে বসন্ত্যধি-ेरिनवज्ञ• । (मेरेव ब्रिश क् जर्भ)रङ र्ग भाष्त्रव ब्रह्माखद्रिः॥ नगरमाङ् পিতৃন্ধর্গেয়ে উপ্তে মহর্ষিভিঃ'। मारिक मरनामरिक जिंहता जुलि मुलि म जी श्रमुखिः ॥ नगरम् ११ । निज्न चार्ग निकाः मञ्जूषिष्ठ यान्। माएकतु पिरेवाः **अकरेण** क्षार्वा त्रनुखरेमः ११ नमस्माइन भिज़्न छक्ता (य १६)(छ **७ श्रोक सिवि। जग्रगायुन वाक्**छि র্মন্দি মাত্যন্তিকী পরাং।। নমসে হং পিতৃন মত্তৈ। রচ্যন্তে ভূবি যে সদা। भाष्त्र भूष्या छोडे लाकशृष्टिन माविनः ॥ नगरमाइ॰ निज्न विश्रि वर्षा ज्विष मना। वार्षि गरी है-वाष्ट्राय भाषाभञ्जभाषिनः॥ नग-স্যেহ• পিতৃন্ বিশ্রৈ রচ্চান্তে হরণ্য-वामि जि:। वरेनाः भारिक यंजाकारेत ·স্তপো নিজু তকল্মবৈ: II নমস্যেত্ৰ• পিতৃন্ বিশৈ নৈষ্ঠিকব্তধারিভিঃ। रि मःयङाञ्चि निंठाः मलर्गास সনাধিভি: ॥ নন্স্ত্ পিতৃন্

भाषा त्राजना उर्भविष्ठ यान्। करेवा त्रानीय विश्ववासाकष्वयक्षमभूमान्।। नगरमाञ्च निजृत् रेवरेमा तर्हा खु-वि (य मना। यक्षां जिन्ने र्ने जिन्ने পুস্লধূপানবারিভি: ৷৷ নমস্যেহ্ণপি-जून माष्त्र य म्राप्त त्रि ७ कि छः। সম্বৰ্গামে জগত্যিন্ নামা খ্যাতাঃ সুকালিন:।৷ নমসেগৃহ: পিতৃন্ শান্ধে भाजात्व (य भक्त भूदेतः । अञ्चर्भ प्रञ्ज यथाहात्रा छऽकत्सुभरेतः जना ॥ न নস্যেহ পিতৃন্ শুজি রর্চ্যন্ত যে র-সাতলে। ভোগৈ রশেকৈ বিবিধৈ न्दिनः कामानज्ञेञ्ज् जिः ॥ नगरम् रु लिउन मास्त्र महर्नः महर्नि जान সদা। তত্ত্বৈর বিবিধৈ মা জৈ র্ভোগ .मन्त्राच्याः ॥ शिजृत्तगरमऽ निवमित्र माकात्य (प्रताक १० মহীতলে বা। তথান্তরীক্ষে চ সুরা। रि প্র্যাত্তে সংপুতীছন্ত মবোপনী-ত া পুত্রমসের পরমাণুভূতা যে-বৈ বিমানে নিবসন্ত্যমূর্তাঃ। যজন্তি-যানস্তমলা মনোভি র্যোগীশ্বরাঃ দ্লেশবিমূক্তিহেতূন্।। পিতৃষমস্যে-तिवि (य ह मृडाः चथा चुकः काम्य क्नाजिमको। भूमानणकाः नक লেপ্লিভানা বিনুজিদা যে ২নভি-স•হিতেরু॥ তৃপ্যভূতে **ংমিন্ পিত**

न्नः गधल इहावजाः य भूरिभिष्ठि काराज्य गुद्रक्ष मिल्युङ्ग भारताशिकः वावबाजान जामवनाः गृहानि ॥ স্ব্যস্থ বে রশ্মিষ্ চন্দ্বিয়ে শুঙ্গে বিমানে চ সদা বসন্তি। তৃপ্যস্ত তে ৎমিন্ পিতরোমতেণ্য পদ্যাদিনা পৃষ্টিনতো বুজন্তু ৷৷ যেবা ভ্ৰে ংগৌ হৃবিষাচ তৃপ্তি যে ভুঞ্জতে বিপু শরীর সংস্থা:। যে পিওদানেন মু-দ পুষান্তি,তৃপ্যস্ত তে ৎমিন্ পিক্ত ता १मर्**ञारेगः ॥ रय श**नुमाण्यन जूरेत बड़ीरेक्ट: कृरेक खिल रेर्मजु মহোরগৈচ্চ। কালেন শাকেন श-क्षिवेर्याः मःश्रीनिका एक मूनमञ यास ॥ कव्यान्यस्थानि ह यान्य-ভীষ্টান্যতীব থেবা মমরার্ছিত।নাং। তেৰান্ত সামিখ্য মিহাৰ পুল্লগনা-रि ভোজ্যেषु भयाङ्ख्यु ॥ कित **दित ए भुठिगृहा** ७ १ ईं। भागा পূজ্যা ভূবি যেপ্টকাস্। যে বৎসরান্তে . २ ज्रानरम् व भूब्राः भुगास उ त्य পিতরো ২ত্র তুঞ্চি ।। প্রা্ড দিজা-ना॰ अपूरतन्तु ভাসে। य अर्ज वियागा-क्ष नवाकंवणाः । उथा विणाः (य कनकावराजा नीली निख्य मुज्यम-म् (य ह ।। एउ श्रीयन ममका नम পুত্ৰগন্ধ খুপান ভোষাদি নিবেদনেও

: कम्बार्ग्यका । तः वाख **ञ्छिः गरा** পৈতৃষ্ঠিঃ পুলাগমি (ভভাঃ ॥ य দেবপুর:৭৮^{শি ভা}কে**ভো রশ্ভি** ক্ষ্য নি শুল ১৪ ন। **তৃপ্তাক্ষ থে** ভূতি জ্বান্ধ্য প্ৰপান্ধ তে ংমিন্ পুর্বালনার ক্রুলের প্রা**লনার ভূতা** त ्या स्टब्स्ट्रियाच्या विवा**णवस्य स्ट** ि व्यक्ति । व न्याः मुकाना १ वर्षिका अधिक १ श्रिम् ्रवर्षकेत्र व भ्रम्भाग श**्रियां डा. र** हेत. ये प्रकार याप्ति**या स्था**। ৰুম্প্ৰাক্ষা প্ৰা<mark>ক্ষিক্ পিতর</mark> ভিত্ত কৰা কিন্তু **লিভ্** श्राह प्राप्ति । कहा ६५ वि**श्राः। उथा** ন্টির ১০০ চাল্ডাল্ডাল্ডার **পিতর:** किन्दुर अपिकारिका **उपपूर्वी** ें 🐪 🖂 ः 📆ः 🦫 🗷 युर्यःमा े । अप्रविध्या १न८८१**१) ४: ॥** ৪০০ জুৰু ছিল্পান্তন্ত জু**থৈবাসুর** रा ११ व व साविश्व द्वा गर ে প্ৰাণ কল্পেড় যে একি**খা বিশ্ব** ত তি এট প্ৰেটা কৰ্মত ব**নভনঃ।** ा भिन्द् कर सामा है । हुना स्व े व्या । क्या : द्वापः क्वां के बेल केमा उन्ना हुन है। है गाउ। हिन जू बनपः य उत्छाट्ड १११ मृडाः॥ यह। नत्तामा बहर सक्तिः भूष्टिर

ख्या । विश्वभाषा ज्या भाषा मध চৈতে গণা: মৃতা:।। মহান্ মহাত্মা महिटा महिमावान् महावतः । গণা:পঞ্চ তথৈবৈতে পিতৃণা পাপ नाणनाः ॥ मूर्थरम्। धनम्णातन् । धर्म-**(मात्रा) विज्ञिकः । मिल्राः क्षाः** তে চৈতত্ত্বথা গণচতুষ্ট্রান্যা এক ত্রিক্ मर भिज्गना रेग र्वाप्त मिथन स-গ্ৰ।ভেনে হত্ত ভ্ৰান্ত বাহন্ত চ नगी हिंउ।। इति नार्का खरन्त्रास्त রৌচ্যে মনুস্থরে পি ভূতব্যা 🌞 🛚 🕮 -নাৰ্কণ্ডেষ উবাচ। এবন্ত স্তবত স্তব্য (उक्रमा द्वानि कृहिथः । भार्ष्वज्य **সহস। গ**গনব্যা धिकात्रकः ॥ उपृष्ट्री मूगर्दिकः भगाहार् छि उ॰ जगर । জানুভ্যা নবনি গড়া ক্চি: স্থোত্র निम॰ जाणी ॥ अमूर्वानाक मूर्वाना॰ পিতृगा॰ मीथाउडमा॰ । ननमहानि সদা তেষা খ্যানিনা দিব্যচজ্যাণ ॥ इन्माभीनाथ (नजादा मक्रमाती-हर्या ख्या। मध्यों ना ख्यात्रियाः जाममन्त्रामि कामनान्।। मन्तरीना-क (नजातः भूग्रीहन्तुमस्मा खथा। তালমস্যাম্যহ সর্বান্ পিতৃনপ্রণ্-বেষু চা। নক্ষতাণা গুহাণাঞ্চ বাষ্ণ্ नङमाः उथा । म्यावाभृथित्वयाः তথা नममामि क्ञाञ्जलः॥ भुकाः

পতে: কল্যপায় সোমায় বৰুণায় চ । यारमध्रेत्रक्रिक उथा नमन्त्रानि ক্**তাঞ্জলি:।। নমে**। গণেভ্য: সপ্তভ্য ख्या लाक्त्रं मध्युं। स्यम्य नम-স্যামি বুদাণে যোগচকুষে।। সো भाषात्राः विञ्गनी खागम् विश्वा-হি তে। নমস্যামিভিত: সোম্ণ পি-তর জগতামহ ।। অগ্রিক্সা ওথৈ पानग्रेषयमग्रामि পिতृनश् । वारी সৌমম্য বিশ্ব যত এতদশেষতঃ ।। যে তুঁ ভিজসি যে বাযৌ সোম সূ र्याश्चिम् द्वाः । जगरम्बनिनरेक्त তথা বুক্ষম্ৰ্ৰ পিণ: ॥ তেভেটা ংখি লেভ্যো যোগিভ্যঃ পিতৃভ্যো যতমা नमः। नया नया नमत्त्र म भुजीह-স্ত ৰধা ভূজ: ॥ গ্ৰীমাৰ্কণ্ডেয উৰাচ। অব জ্বতা ভত ভেন ভেন্নসো মুনি সত্তমা:। নিশ্চক্রমু স্তে পিতরে। ভা-अयरता दिल्ला मना। निर्दिष्टिक्ड यस्त्रिन भूझगक्तानुर्त्तभनः। उक्तृवि-তানথ সতান্দদৃশে পুরতঃ স্থিতান্ ।। পুণিপত্য কচি ভঁক্ত্যা পুন রেব ক্ ভাঞ্জলি:। নমস্তভ্য নমস্ভভ্য মি **छ्याह भृषगाम्**जः ॥ ७७: भुनगाः প্রিতর অমূচ্মু নিসভন । বর বৃণী-ষ্বেতি স তানুবাচানতক্ষর: ৷৷ সা-**लुक नर्ग कर्ज् व ना** तिष्ठे वुक्तना मम

। সোহ পরী মভীপ্রামি ধন্যা দি व्याः भुकावनीः॥ भिउन्ने छेतुः। यः দ্যৈৰ সদ্যঃ পত্নী তে ভবিষ্যতি ম-নোরমা। তস্যাঞ্চ পুশ্রো ভবিতা ভবতো মুনিসভম ৷৷ মন্বরুরাধিপৌ बीमाम् प्रवादियार लिक्डः। क्रि রৌচ্য ইতি খ্যাতি পুযাস্যতি ল-গ্রথে ।। ভস্যাপি বহুবঃ পুঞা মহা-বলপরাক্রনাঃ। ভবিষ্যান্তি মহা-ज्यानः পृथिवी পরি পালকা: ॥ पुक् পুলাপতি ভূঁত্বা পুৰা: সৃষ্ট্বা চতুৰ্বি-খাঃ। ক্ষীণাধিকারে। ধর্মাক্ত স্তক্তঃ निषि भ्वाञ्चानि ॥ 🗱। (स्वाब्वनात्त्रन চ নরে৷ যোক্মাণস্তোষ্যতি ভক্তিত: ৷ তস্যতুষ্টা ব্য ভোগান্ দাস্যামো-ख्डाममू खग॰ ॥ **ण**तीवादा शः रिम-यर्ग्यः भूध भोकां मि मञ्जि । भू-माम्यास्या न मत्म्रहा यहान्यम् जि বাঞ্চিত।। তমাৎপুণ্য ফল লোকে বাঞ্জি: সভত गरेतः। পিতৃণাঞ্চা-क्रया[,] তৃপ্তি• স্তব্যা: স্তোত্ত্রেণ মান-; বৈঃ ॥ শাুন্দে চ য ইন• ভক্ত্যা অ-मर्भुठिकद्र• खव•। शक्तियाछि बिन् জাগুগণা ভূঞ্জতা পুরত: স্থিতা: ।। স্তোত্র শুবণ সংস্থা 💎 🗷 🕅 খানে পরে কৃতে। অমাভি নক্ ্রাদ্ধ তভবিষ্যত্যসংশ্য ॥ যুধ্যা

श्ला विवे जाकः यरागातर उ ভবেट । अनुस्ताना खित्र बनि বা কৃত মন্যথা।। অশুক্ষাহৈ ৰূপ-হতৈ ৰুপহারৈ তথা কৃত। অকা-विश्रापका (मुन विविद्यीन म्या-शिवा।। अनुषर्गिवा भूकरिव म् स भाः निका वा क्छ । अस्रोक भी अरव माकः ज्यालाउन्हिन्त्रनारः ॥ योजः তৎ পঠ্যতে भाषा खाव ममर म् থাবছ । অসাক জাগতে তৃপ্তি ওত্র बारणवार्थिकी ॥ (इगस्य प्राप्तणादाः নি তৃপ্তি নেতৎ পুষছতি। শিশিরে দ্বিভণাদানি তৃপ্তি স্তোত্র নিদ শু ७ ।। वमस्त्र (वाउनमा स्थाय पूर क्कर्पा । शुरिय ह खाउरेगरेव उर পঠিত ভৃগ্নিরক ॥ বিকালে চ ক্তে শুঞ্জে স্থোত্রেণানেন সাধিতে। वर्षामु ज्थि बचाक नक्ष्या जागर ज करा ॥ भद्र क्रांतिश भिष्ठ भा ष्वकारण भुगहेर्छि। यमाक भिउट भूकरेष ख्खि॰ शक्षमभाषिकी॰॥ य-**মিন্ গ্<u>ছে</u>পি লিখিত মেত**ভিঙতি নিত্যদা। সমিবান কৃতে শ্রান্ধে ভৰামাকৃ ভবিষ্যতি ৷৷ ভনাদেত-ভুষা শাুদ্ধে বিপাণা ভুঞ্জতা পুরঃ ্শাৰণীশ মহাভাগ অমাক তুষ্টি क्षिकः ॥ इंडि गार्काख्यभूदात॥

क्रोराऽ भ^{क्}रहात्र भिञ्**स्त ॥ #** ॥ भार्काख्य উवाह। उउ समामिनीम-ष्रार नमूखस्रो मतात्रमा । भूत्माना नाम उन्नी ७८ ममील वजा भूजाः ॥ সা চোবাচ নহাত্মান কচি সু-মধুরাক্ষরা । পুশুবাবনতা সূত্রঃ পুমোচা বৈ বরাপ্পরা: ॥ অতীবক-পিণী কন্যা মৎসূতা তপতাম্বর। জাতা বৰুণপু্শ্ৰেণ পুষ্ণরেণ মৃছা-ত্মনা।। তা॰ গৃহাণ ন্যা দ্তা॰ ভা॰ য্যার্থে বরবর্ণিনী। মনু র্মহামতি छ। স্যা সমূৎপৎস্যতিতে সূতঃ॥মা-র্কণ্ডেয উবাচ। তথেতি তেন চাপুড় क। उत्राखायावभूग्राञी । উक्क रात्र ७७: कन्। ना नानिनी नाम ना-मण्डा। नम्राम्ह भू नित्न जिल्लाम् ज मूनिम् निमलम । जगुार नानि वि-थिव**८ मना**नाया नहामूनीन् ॥ छ-স্যা ত্ৰ্য সুতো জক্তে মহাবীৰ্য্যো মহামতি:। রৌচ্যে १ ভবৎ পি ভু নামা খ্যাতো হত্ত বসুবাতলে।। ত मा भन्छदा (नवा खया मधर्ययम (य । उनयाम्ह न्नारेम्हव (उ मम्रक् कथिजा खरा। ४ मं वृक्ति खथारता गऽ ধনধান)সুতোভবঃ। নৃণাণ ভবত্য-निम्था निमान् गनुस्तत गु. एक ।। लि-তৃস্তব তথা শুদ্ধা পিতৃণাঞ্চ তথা

गगान्। मर्वान् कामानवाल्यां जि ७८ भुत्रानामत्त्रा मूत्।। इंडि मा-কভেষপুরাণে রৌচ্যমন্তর সমা-প্ত•॥#॥ গাৰুডে ৮৯। ৯০ অধ্যা-(य(भ) बम खि॥

ক্চিত বি নিইবস্ত। ইত্যুণাদি-(कायः॥

ক্চিফল ক্লী অমৃতাস্থ। ইতি त्राजनिर्घणेः॥

किति की भूनक ॥ अकूम ॥ नवक्रः। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।।

ক্চিরণ ত্রি সুন্দরণ। ইত্যমর: ॥ भिष्ठे । इंड्रिशाहित्कावः ॥

ক্চিরা জী গোরোচনা। ইভি त्राजनिर्घण्टः॥

ক্চিরাঞ্জন: পুং শোভাঞ্জন: ইভিরাজনিঘট:।।

ক্টিরাখ: পু• রাজবিশেষ:। সতু रिवालः चन्तः। यथा। मता जू পাল লো ফানা স্বস্তবে অক্ মে ব-পে ত্ব সমূদ্ধ ॥ ইতি কল্পিরাণে **>৮ व्यक्षायः ॥ जुन्त्व्रद्या**वेकक ॥

क्চিষ্য • ত্রি মিষ্টবস্তাইভূগাদি ক্রা**সহ: পু• ধ**র্নমূক, ইঞি কোষঃ ॥ অভিন্তেত । ইতি সং

किश्वमादाभारिवृत्तिः ॥

क्षी अपि कि । यथा। कक् कि । ॥

क्रमः गमाः। ইত্যেকाथम् गुरुः। **ब**हा की सिंदि न विक ताल निर्घण्डः ॥

क्ठाः भू कडकवृत्राः अपनि शानु । ইতি बाह्य निम्हित । अतिह । इंडि इंग्रहमु: ॥ जुन्हाद वि । ইত্যমর:॥

क्ठाकनरः भू भूतगः हिन्सह निर्घणः॥

ক্ষ ও ঔ শ ভক্ষে 🕸 চিল্টি-कन्नक्रमः ॥ ७ क्यः । भ कराहि রোগো হস্ত । ঔ রেক্টে । 🕏 🕏 मूर्गामात्रः ॥

ক্ত ক হিংসে। ইতি কৰিক ্তবং ॥ क রোজধভি। ইতি দুশাৰ ११%।

ৰজা ছ্ৰী রোগ:।। ভাষ্টা ধ্রি (मिनी।। (मेरी। इंि । इप्रहल्द्ः ॥ স্ব'ঃ । ইতি রাজনিম্পর

ৰু সাকর• প্লী কমুরিৰ <u>জনা ।</u> ইন্ডি अद्ग्रिका ॥

চঃ। ক্তিরাথ সূতাং শান্তাং দেবা- 🛚 ক্লাকরঃ 🛛 পু• ব্যাঞ্চি 🔻 খানাং ব্যাধি স্থাধী ৰুজাকর: 🥬 🧇 यहन्द्रः ॥

ब्राजनियंग्रेः॥

कृष्टे हे (खर्य। हेिंड कि कि क्रमण्ड ।। शक्षमञ्जी। इ कण्डाउ वनः 🕼 अक्षे हैं डि मूर्गामानः॥

🦈 🗿 কবি।। দ্যুতৌ। ইতি কবি-্রক্ষন:।। ক রোট্যতি । ইতি म पामः॥

🦈 🌣 দীপ্লিপুতিহত্যো:। ইতি ं 🍦 কল্পদর্ম:।। ১ অকটৎ। ড রো-ট । পুতিছতিঃ শোকাদিনা ं ने भूनईनन वा । इंडि पूर्गा-ু ।। কে: কোধ:। ইভ্যমর:॥

🥶 ঔপবাতে। ইতি কবিকল্পদম:॥ 😅 ভি লোক শোক:। ইভি कुमितानः॥

🦥 🖰 উ ু পুতীঘাতে। ইতি কবি-উল্লে:॥৯ অক্ঠৎ ড রোঠতে। 🌋 ীয়াডঃ শোকাদিনা পতন• পু हिन्द वा। इकि मूर्गानामः॥

💮 🕴 গত্যাল্স্যন্তেশখোটে। ইতি ं विषयः। शिक्षमध्यी। इक-ा वानमॅऽ॰ मन्ती ভावः। स्डि-া ীৰ্য্য•। খোটঃ খোডন•। ইতি ंशामः॥

🛒 ী কট্। ইতি ব্যাকরণ ॥ मियतः खी मृथमत्मराशालीः। ३ि गप्ठिन्मुका॥

্রঃ ু॰ কবন্ধঃ। ইতি জটাধরঃ॥ ा जी युक्त ज्ञिः॥ बाद्रिन

জিকা।। বিভ্তি:। ইতি শব্রলা-वली ॥

कड॰ क्री भग्भक्यामीना॰ नदः। তৎপर्यायः। वा**णिङ** २। इंड्र-মরঃ। বাসিত । ইতি শব্রত্না-वनी ॥

क्र व व इंब्र आहा इंडिक्वि-कन्नक्रभः॥ द्वारित। २ मु विस्माहन । ল ঘ রোদিতি লোক: শোকাৎ। हैत अकर आदानी । तारि-ব্যমাণ মাত্মান মিতি ভটৌ আ-स्त्रान विभिष्ठेरद्वापनकियाव्यान्। ত্বাৎ সকর্মকত্ব মিতি জ্বমঙ্গলা। ইভি দুর্গাদাস:॥

भू° व्यक्तदः। हेज्रुनाहिः কোৰ:।। ছাত্র-। ইতি সিদ্ধান্ত-(कोमूम्रामूनामिवृज्धिः॥

करिंडका) खी कृ पुक्क गिरिणवः) ७८ भर्यायः। मूराखाया २ मञ्जीवनी ७ अम् अमुवा ८ द्वामा-क्षिका ए महामा नी ७ हनभू भी १ म्याम्वी ৮। अम्या छनाः। कर्षेष् ক্মি বক্তপিত্ত কফ খাস মেহ-ना निष्-। त्रमायगद्यः। यम्। यकः প । যথা। চণপত্র সম পত্র ক্ষুপ ৈ তথাকৃতি:। শৈশিরে জল-

বিন্দ্না সুবন্ধীত কদন্তিকা। ইতি রাজনিঘণ্ট: ।। অস্য গুণা: । কদন্তী বিক্তিকৃদ্ধ্যা পিত্রী চরসাধনী। ইতি রাজবল্লভ: ।।

ক্ষিত প্রী কন্দন । ইত্যমর: ॥ তদ্বতি ত্রি ॥

ৰুদ্ধ ত্রি নদীপাকারাদিনাকৃত-বেষ্টন । তৎপর্যগ্রহা। বেষ্টিত ২ বল্যিত ৩ সংবীত ৪ আবৃত ৫। ইত্যমরঃ।।

ৰুদুঃ পু• আদিত্যপত্ৰবৃক্ষ:।ইতি त्राजनिर्घरिः॥ स्पितः॥ गगरित्र छ।-বিশেষঃ। ইত্যনরঃ।। অয় অগ্নিনূ र्जि:। यथा कृमाय अधिमूर्ज्य नगः। ইতি তিথ্যাদিতত্ত্বে শিবসূজাপন্ধ -তি:।। স চ বুন্ধণ: ক্রোথব্দপ: সৃষ্টি कारन ज्ञूमध्याद्धाउः । उट मृष्टः ভূত পুত পিশাচাদি:। অযমেবা-ছে সংহারকর্ত্তা। ইতি ভাগবতং ॥ श्रा व्यथकारणकृतानानि य-থা। অজ: ১ একপাৎ ২ অহিবুধঃ ৩ পিণাকী ৪ অপরাজিতঃ ৫ ব্য স্বক: ৬ নহেম্বর: ৭ বৃষাকপি: ৮ **मामुः २ रुद्रपः २० क्रेपदः २२ ।** इंडि नहा जात्र जिल्लामधर्यः ॥ ॥॥ অপিচ। অজৈকপাদহিবুরে। বি-क्लाकः मूरत्यतः। अयस्य वर ৰাপশ্চ ত্ৰায়কো হপাপরাজি জঃ ॥ বৈবন্ধতক্ষ সাবিত্রো হরে। ৰুদুা ইনে স্তা:। ইতি জটাধর:।। #।। স্বাচ । जो कक्षान हितुध सुष्टा कृष्ण वी-र्यायान् । जुड्डे काश्याजाकः भूता বিশ্বৰূপো মহাতপাঃী৷ হরণ্চ বহু-ৰ্পশ্চ ব্যস্থকশ্চাপর।জিতঃ। বৃষা-কপিশ্চ শস্তুশ্চ কপদ্দী বৈ্বত ভ-था ॥ अकारिमाञ कथिजा अपूर জিভুবনেশ্বরা:৷ ইতি গাকডে **৬ শ**া भगयः ॥ अग्निभूतात वृष्ट् शान कृ खिवामाः ॥ 🗱 ॥ जनत्रकः । जहिन কপাদহিবুগ্নে বিৰূপাক্ষো হথরৈ-বতঃ। হরশ্চ বহুরূপশ্চ ত্রাম্বকশ্চ সুরেশ্বর:।। সাবিত্র্যান্ত জয়ন্ত্রশ্র পি-ণাকী চাপরাজিত:। এতে ক্দা: সমাখ্যাতা একাদশ গণেশ্বরা: ॥ এতেযা॰ মানসানান্ত ত্রিশ্লবরধা-রিণা । কোটযশ্চন্তবাশীতি ভৎপু-প্রাশ্চাক্ষনা মতাঃ ॥ দিকু সর্বাস্ যে রক্ষা পুরুরন্তি গণেশ্বরা:। পুঞ পোলসূত:ত্তেসুরভীগন্তসম্ভবাঃ ॥ इंजि माट्राइ विश्वायः॥ #॥ **७**ग्र उर्शिख रंथा। भुकाः मुध्रुमना স্তেপে তপঃ পরনদুশ্চর । তবৈ)ব তপ্যনানস্য न किविष्ट সমবর্ত্তত্য। ততো দীর্ঘেণ কালেন দুঃখাৎ ক্রোধে

बामाय । (कायाविक्रेमा (नवा-**७**ऽ।॰(शुःभञम्,,विन्तवः ॥ ७७ ভেড্যো ২ শু,বিন্দ্ভো ভ্তা: প্রেডা क्राज्यन्। गर्बाः सानगुकान् मृद्धे। ব্ৰন্ধাত্মান মবিন্দত।। তদা প্ৰাণম-या कमः भागवामी भाषा मू था । यरमापिडाँमकामा यूगास रह-नाभगः ॥ क्रांक अम्ब (**धात**॰ (१२वरम्बरः चयः भिनः। ताम्यानः ভদী বুক্দা মারোদী রিভ্যভাষত।। রোদনাজ্যু ইত্ত্যে লোকে খ্যাত্তি गिभियामि । अन्यानि मधनामानि পরী: পুগ্রাণ্চ শাখতান্।। স্থানা-नि टिवामक्षाना॰ मरही त्याक शिका-মহ:। ভব: শর্ব তথেশান: পশ্না-স্পতি রেব চা। ভীম স্চোগ্রে মহা-रिव छानि नामानि मध वि। मूर्य्य। ছল মহী বহিং বাযুরাকাশ মেব চ ।। धीकाला वाका मन् इरकाला षाडेग्र्बंगः ॥ इप्तिषु छितु (य काः শ্যাযন্তি মনুজাবিপ। ভেষামইত-न् (र्रुता ममाञ्चि लद्मनः अमः ॥ जू-रहंना खरेथावामा विद्यामा ह निवा ल्ला। बाहा क्लिंह कीका हाता श्रिक्ति ह. शृत्यः ॥ मरिनम्हत्र ख्या ण्का (वाश्टिएक। म्याबरः । कुनाः गर्ला १० महाता वृष्टिक्याः

मूजाः म्बाः ॥ इंडि किर्धा প্রথ্যাখঃ॥ 🗱 ব) রিকু কুদুযো রভেদে। यथा। मरेदद रहरका छगवान् महा-हिर्म न मन्नयः। मन्तरः ए वनः ाचानि॰ विভिन्नः विक् मीश्रदा**र श** भारामस्वमनिष्ठामा एउ गाँछ नत्रक-नद्राः । त्वनान्वर्जिनः कमः (मयः नात्रायण ख्या ॥ अकी जारवन शम्बर-ন্তি মুক্তিভাক্সো ভবন্তি তে। ইতি চ **छरै**बर २२ व्यथ्रायः ॥ #॥ कन्नरजस् खरमाध्याद भाव नाम सान जारी होती. নি যথা। চুকোপ চ ভত্তো বুদ্ধা জুলমিব হুডাশনঃ। ভতঃ কোপ॰ क्शूंबिछाः क्ड मन्।। या निडाणि॥ विठार्य। भन्नियर्षं उन नियस मूभठक-(म। यञ्जातिषमः) मारनाशि म त्काशः शर्वाक्षितः ॥ क्याता स्वाप्राप्राचान छः बनात्या नीन लाहिउः। हा-ভमाबः ज्यादा १८मी क्दाम छ-गवान् छवः॥ बुरक्तावाठ कथः भू अ ब्राविचि च॰ मश्यम । उत्म कथ्य काम (इ जम्।: जन्माम्याम्)इ॰ ॥ क्षु উवाह। नानानि सक म वृक्षन् श्रानि ह कशम्लाता ॥ भन्नीन्ड (महि **जगवन् उ**छ: भाष्ठि जीवत्र)ः छि। बुक्तावाह। कानानि चाः प्रव (६व॰ भूर्ब॰ मधः वज्ञः सम ॥ मछ।

अर्जु खरान् बाउ छ रि गाई यहि-्थतः। बाजमात्वा तापिति ष् ७-তো क्षु इंडि म्ङः॥ नांभानानाः नि एक एवर विवारमा भूगू भूधक। ' अञ्चलका मन् मन्। अगुरत्रक। महान् निवः ॥ छवः काला महिनसा বামদেবো ধৃত্বুত: ৷ এতানি তব না মানিবে মরন্তি নরা ভূবি।। তেবা॰ সদৈৰ কল্যাণ করিব্যসি ম**হা** মতে। স্থানানি চ পুরক্যানি ভেবু वारमा विधीयकाः ॥ ইन्मियागुम् হুছোম বাযুরগ্নির্জল মহী। তপ-भव्यु भ जूर्याभ ञानात्राजानि छ ্ভব।। ধৃতি ধী রসিলোম। চ নিযুৎ अर्जि विवासिका। ইরাবতী स्था मीका (पाषिठ खव जूनस्त्री: ॥ जुह्नाः ज्ञ नहाजाग जगामखर भूभूत्र । इंड्यापिष्टः म जगवान् वृक्षणा नील लाहिनः ॥ मृष्टेवान् म भुका दश्री ভূত প্ৰেত পিশাচকান। সমাভান্ विक्ठाकाद्रान् एवद्यान् भीमनाहिनः ।। जान् मृक्षे। जू जमा तुक्का कगिबुमा-वकान् वङ्ग्। वात्रवामाम भू ध दः मानुष्भी त्रीपृभीः भुकाः ॥ उपना विकु भारताथा विरुद्ध यथाज्यः। ইভিতে কথিতো রাজন্ কদুসর্গঃ পু জাপতে: ৷৷ য় শুত্রাপি নর: সদ্যে कर्शाष्ट्रं वृठः ७४ः॥ हिल्लाक सर्गथां अमुमार्गा ৮ वाष्रागर ॥ ॥॥ পুকারান্তর যথা। কথিত ভ্রমস: नर्ला वुक्कः एउ २ व न महामूत । कृषुः नर्गः शुरक्तामि उत्त निगरः स्यू ॥ कन्नामावाजान छत्। मुख भुका-यञ खजः। भागुतानीय भुष्डा त्राक व्यभादा नीवाला हिन् ।। क्रम देव **गर्राः (भ) १५ प्**रः हिन सम्ब । कि॰ त्राप्तिवीचि उ॰ तुका कंः 🦈 भुजू।वाह देर ॥ नामरष्ट्ं अ जः स्मा **২থ পু**ত্যবাচ পুৱাপতি । ৰুদু ন্তৃ• (म्वनामामि मालामी रेर्थ्य) मान्नू-रि ॥ এरमूङ: भून: (मा २० मध क्र्वा क्रवार वि। छछान्तानि मसी তবৈ সপ্তনামানি প পুভূ:।। ছানানি চৈৰ। মঞ্চানা॰ পত্নীঃ পুঞা॰ চ বৈ প্ৰ-ভু:। ভব শর্ব সমেশান তথা প্-শুপতি• দ্বিজ্ঞ 🗀 ভীষ মুগু• মহাদেব মুবাচ স পিতান্হ:। চক্রে নামা-ন্যথৈতানি স্থানান্যেয়া চকার সঃ ।। সূर्य्या खलः भशे विह द्वीयू द्राका-শ মেব চ। দীক্ষিতো ব্ৰাহ্মণ: সোৰ इरिटाउ। उनवः क्रमायः ॥ मुवईना **७रेथ (वाका जूकिमी हाशक**िः। । बाहा मिण खया मीका ह्याहिन ह यथाकन ॥ जूर्यादीना नवार्युं

समारिका नामिकः नर । भाषा মৃত্ মহাভাগ তদপত্যানি মে न्तृ। (यवा॰ नृष्ठि नुन्र्कण इप-मान्तिष्ठ कगर्। भौनकत स्था भूका (वाश्चित्र) भरनाववः॥ ऋन्तः मर्लाषु मञ्जाना वृथ महान्-कमार मुजाः। এवः भुकःत काम्। ९रमो मञी ভार्या। मदिनर् ॥ ্রজালার তত্যার সা সভী **ব**ং 🔭 বরণ। হিনবদুহিতা সা ভূ (यनायाः विजयसम् ॥ छेन्रायस भून (काना मननंत्राः जनवान् छवः ो (तर्वो बाजा विधाजारको ज्रामाः थ। उ द्रम्य छ।। भि्यक्ष (म्यत्वम) পङ्गी नाङ्गायगम् या ॥ इंछि विक् भूदाति ३ व्यः मि ५ वाद्यायः ॥ 🕸 ॥ क्षृगीजा वदारुभूदात पृष्ठवता ॥ यमुकवह॰ ल्ली निवनाममम्हिनमर्वा-व्यवक्रकः। यथा। वक्षानि वपुक्वह मान्। भागमेर् बक्तनः। वाद्। द्रा-**ब॰ महारित त्रकार्थ (रित निर्मिंड•** ॥ ७ बामामा मगुडः भाजू भ्रेडः भाज् **मक्र**तः । कशमी स्कित् পাতৃ বামপার্শ্বে তথা হর: ॥ णियः चित्रा भ ह भाजू ननारहे बीब्द्रवाहिजः। त्वव्या खुध्कः - পাতৃ मूर्य भाजु मरस्यतः ॥ कर्न-

वा नीनिकाशक बिस्राया॰ मञ्जू রব্যয:। 🗐 কণ্ঠন্ত গলে পাতৃ বাস্থোঃ शाञ्जू शि**गाकधृक् ॥ वृ**त्य भ-**क्राप्तिय केश्वेत्रस्य अप्यापत्रः । नार्डो** मको किष्णात भाजू गर्ब॰ भुका÷ পতि: ॥ उक बान् महारमयः भारते পাতু মছেশ্বর:। সর্বণ রক্ষত্ ভ্তে-णः **नर्ब**गाजानि यञ्जः ॥ नत्रम् मूल थडे। ऋ॰ पिवाजि॰ ह्योमु स्मव है। नशकाताय (मर्त्ना वक्त भा कशनी-খর:।। রক্ষোভ্যে গৃহপীডাভ্যে রোগ শোকার্বেযু চ। পাপেভ্যে নরকেভ্যুষ্ট আহি মাণ ভক্তবৎ সল ।। जम मृज्रु जता वराधिः कामः কোৰ: শ্ৰে। দম:। লোভ মোহ মদা শ্চাপি ত্যন্তমন্ত ভুগনেশ্বর: ॥ ত্ব- গতি স্তু- মতি শৈচৰ ত্ব- বৃদ্ধি স্তু-পরায়ণ:। কায়েন মনসা বাচা ত্রি ভক্তি দূ ঢাস্ত মে॥ ইত্যেওজদুকবচ• श्वेजः शाश्रनाणन• । महारित **शु**∹ नारिन मूर्वामः भित्रकीर्खिङ ॥ न তদ্য পাগলেশো ৎস্তি ড্বণ তদ্য ন বিদ্যতে। প্রাপ্নোতি সুখ মারো-ग्रः भूग्र माजाभुवन्तनः ॥ भूजाबी লভতে পুত্ৰ• ধনাথী লভতে ধন• ৷ विम्याथी वाखरङ विम्याः साकाः थी (भाक मानु गर।। (मरह (हमः

कृषि नामा निवक्तः। उरवन्तः। बुह्या गर्वभाशास्त्र। कपुरवाकः न गहि ॥ इंडि कम्पन्ताल क्रु-কবচ• সমাপ্ত•। ইতি তত্ত্ৰসারঃ।। क्षृत्रानः भू भिवलार्यम्म्यूरः। থথা। অপরে ফুরুনাম:নো জটা-हम्यार्वमिष्डिं। (त्रावस्त्रम् मा निः र्यामि वर्डस्ड बिहिय जमा ॥ ाया॰ ज॰थ्रा है करका है एवं अर्थ ব্দার্ভরা: ৷ হর্মন্তি হি সদা দেবাং স্বল্য সভত গণাঃ !! বিশ্ববৃদ্ধি চ गालिकान् वर्षिकान् भाषायकि ह। অৰুগ্লু ভি সতত প্তগাশুগত-वुडान् ॥ विद्यान्य माइड॰ इडि यागिनाः भुषञाञ्चनाः । यहेकिः-भएकारेग्रेन्डव इत्रम् अकनाग-गाः ॥ प्रदाश्यानामार्थः हिडाय ক্ষণতা তথা : শঙ্কর ন্যাথ সেবা-रेव मनुद्भा इत्य गनाः ॥ इंखि कानिकानुदारा २३ व्यक्तामः॥ क्षुष्ठ औं क्षुयान का उत्री-गाराजा, । यथा। वामा हिल्ला वस्त्रविष्ठमः महाकृष्ट्रभितं बनुद्रेश-**इन्स** किवा (स्वका कृतुः शिक्राभ विनियाणः । उँ नम् कि शिक्षरिय । विभाषम उदाह। हा अभा क्राय नऽगऽ सद्रगः यः करत्राक्तः श्रि । जनह

ফল মাপ্নেতি দেবি চণ্ডী পুলাদতঃ ।। त्रतिवादा यमा हश्री शर्द्धमानम সমতা । নবাবৃত্তি ফল তস্য সা যভে নাত্ৰ সংশয়ঃ ৷৷ সোনবারে যদা **ठ** औ॰ भार्यस्य अभाहितः । अह-मुत्रिक भावेगा क्षा बानीहि मू নুজে ।। জনবারে দগদানি পঠে দানল সমস্য । শতাবৃত্তি কল॰ एम। बूख मक कन स्वर ॥ अद्भी यनि सहामात्य हाक गूग्म ফল প্রব । শুক্রে দেবি অগদ্ধারি চণ্ডীপাঠেন শঙ্করি।।ত্যেশ তুল্যক-वा पूर्ण यपि हुआ न्याहिकः। भा-নিবারে জগদাত্রিকোট্যাবৃত্তি কলং পুরণা অভএব জগজাঞী বৃশ্চ চণ্ডী ज्यक्रामः । म धनाम क्ञार्थम द्राक्रद्राज्ञाथिरमा खरद्राः व्याद्राग्रः विषय भी था। वज बङ्ग भुवानकः । পঠনাছ্বণাদৈৰ জায**তে** নাৰ **সংশ**: यः ॥ धनः वार्षः भूवानक वस तह বিভূবিত । চণ্ডী মারণ মাত্রেণ কু-र्याः गर्वः गर्द्यति॥ ७ वात्रवि यर्गम् । इ.स. व्याप्य विश्व । इ.स. वळ् । मरामाण मरारविज्विण ৷৷ চতুৰ্বজু ইত্যপি পাঠঃন! বক্তদভা वद्राद्वार्। यहाजूद्रविगर्षिनी । छा-तिनी यननी पूर्णा हिंखिका हु विकम् भूत

खर्हानी बगबाजी हजी ह यान-लाज्या। भागानवात्रिनी एवी छा-রচণ্ডী ভয়ানকা।। শিবা গোরা ক্রু চণ্ডী মহেশগণ কুমিতা। জাহ্নবী প-त्रमा कृष्ण महाजिलूतमून्सती ॥ वि-मा औ शत्रमाविमा हुओं ह रेवित्रमः किनी। पूर्व दुर्ग। **लिवा धाता ह७७२**-खी পুर ७को।। मरहणी वंगनारहवी ेर इत्ती हु उत्किमा । भूमरेथ इंबि-ा क्का हाम् आ म् अमिनी ॥ त्रन यन्छ। छश्यन्छ। द्वनदासयद्वभूषा । ্ তারিণী ভদুকালী চ শিবা ঘোরা ज्यानका ॥ विकृत्यि महानाया नन्दरगाभग्रहास्त्रवा। सङ्गा जन-नी हजी भशक्ता जगहती॥ विभ-ला रे **अ**त्रवी निष्णु काठिक्**शा म**ना रता। ज्या निमा कृषा माया मकि ্রূপ। মনোহর।।। উস্যৈ দেবৈর নম खरेगा मर्वकारा मः शिजा। भागिनु-या काडिमाया, निमुक्तिभा मरहभन्नी ॥ या দেবী সর্বভ্তেষু সর্বরূপেণ স•-श्चिता। नम खरेमा नम खरेमा नम ख⁻ সৈর নমো নমঃ।। এতা চণ্ডী জগ-षाजी वाकास मना भरहर। नाना स्त्र भार्रेका परिव भर्रेत वुक्तरा छ वि ॥ नात्रमः भाठेकरेम्हव रेकनारम ब्रिज्ज विष्ठ । देवस्थे वृक्षालादक ह

रिषद्राजभूति भिरव।। यः भृताि छ ধরাযাঞ্মুচ্যতে সর্বপাতকৈঃ। বুন্ধ-হত্যাচ গোহত্যা জীবধোদ্ভব পা-তক।।। তৎসর্ব পাতক দুর্গে মাতু: প্রন্থাতক । শ্বশ্বামন পাপঞ্ কন্যাগমন পাতক ৷৷ সুতন্ত্ৰীগমন-रिक्षव यथ यथ भाभः भुहायरा । পরদারকৃত পাপ তৎক্ষণাদেব নশ্যতি ॥ জন্মজন্মান্তরাৎ পাপাৎ **७**क्ष्रज्ञातिभाजकार । मूह्या मु-**ठाउँ ५वि ७क्भ**ज़ीयु मङ्गा८ ॥ মনসা বচসা পাপ বৎ পাপ বুকা-श्चिमान । मिथ्यायास्थित यद भाभः তৎ পাপ• নশ্যতি ক্ষণাৎ ।৷ শুবণ• **श**ठेनरेक्ष्व यः करताञ्चि भन्नाञ*्च*ा স ধন্যশ্চ কৃতার্থশ্চ রাজরাজাধি-**(भा ७**(द**८ ।। यः कद्रिय)**७,१वक्डाः रेव क्षुग्रामनाहिकाः। भारेभ द्व-তৈ: সমাযুক্তো রৌরবং নরক: বুজেৎ ।। অশুদ্ধা॰ যে পুসর্বন্তি তেচ পাত-কিনো নরাঃ। রৌরবণ রক্ত 🗃 ওঞ্চ কৃ भिष्य ७ मनमा दि।। भूकमा म ७ जी রক্ত• যান্তি তেপ্যচিরেণ বৈ। ভতঃ পিতৃগণৈ: সার্ক্ত বিষ্ঠাযাণ জাযতে क्निः॥ ण्नू (पित महामारा भारे **ठ ी : म्ला अशि। ग**यायारिकव य পুণ্য কাশ্যা বিষেশরাগুতঃ ।

भुयारम मूखनरेक्षव इतिहास इति গৃহে। তুল্য প্ণ্য ভবেদেবি সত্য দুর্গে শিবে রমে।। ত্রিগ্যাযাণ ত্রিকা-न्तरा देव यह भूगा न्तू निर्वा उह भूगाः जह भूगाः जह भूगाः न मः मयः n अवानी ह जवानी ह जवानी बुरहर-তে বুধৈ: ৷ ভকারস্ত ভকারস্ত ভকা-तः (क्रवः भिनः ॥ वानी हिन जन-দ্ধাত্রী বরারোহে ভকারক:। পুেড বদেবি বিশেশি ভকার:প্রেত্তবৎস-मा।। जाद्राग्रक वयः मू:धनाणनः ज्थवर्षनः। धनः भूषः क्याद्रागः क्षे गलिउनामक ॥ व्यक्ताक्रान গামুচ্যেত দক্ষরোগান্ধি পার্বতি। সভ্যুণ সভ্যুণ জগদ্ধাত্তি নহানাথে শিবেরমে ॥ চণ্ডে চণ্ডে মহাঘোরে क्रिक व्याधिनाणिनि । मत्नि पि (न मर्भानि विष्णवक्षमायिनी।। সরদু:থাৎ পুমুচ্যেত ভক্ত্যা চণ্ডী• म्लां व रा । त्राम्मला हि उकाही ह भारते विवडमानमः ॥ मञ्चल मञ्चल (छ्वर भक्ष्म क्षमक्ष । **ভ**रदिक পুত্র পৌত্রাদি কন্যাদাসাদিভি যু তঃ ॥ ভত্তুজ্ঞানক নিধনে কালে নি र्दाण मान्नुयार । महामात्नाच्डवः পুণ্য ভুনা হিরণ্যকে যথা ॥ চণ্ডী भुवनमाञ्जन भठेनाषु । सारा भि मः। নিৰ্বাণ মেতি দেবেশি মহামৃস্ত্যয়ন• हि उर्।। সर्वे विषय या जि भुवना म्गुरुपायजः। মৃচ্যতে সর্ব পাপে-ভ্যো রাজরাজাধিপো ভবেৎ ।। মহাচণ্ডী শিবা ঘোরা ভ্যানক বর -शुरा। काली ह क्यला विष्ठा यहरा-त्रगविमर्पिनी ॥ अञ्चन्छी (चात्रन्छी ठखी विलाक पूर्व छ। (प्रवाना॰ भूर्व डा ठ छो कपूरान मसुरा ।।। व्यभुकाना। सङ्गाप्त्वभिया त्रावन-মর্দিনী। মৎস্যপ্রিয়া মাংসরতা মৎস্যমাণস্বলিপ্রিয়া।।মদমত। স দা নিত্যা ভূত পুমথ সঙ্গতা। মধ্য **ভाগा महाद्रामा धान्यमा धनद्रद्रमा ॥** वज्रना गणिना ब्राज्यपुरा विषयव-किंका। मुक्तिना जर्बना ठ जी महा-विभएना निनी।। इसाक हखी॰ शर्छः তে মনুষ্যঃ শৃণোতি ভক্ত্যা পর্মাণ শিবস্য। চণ্ডী• ধ্রণ্যা মতিপুণ্য-युकः नार्वेह गाहक्त्रमित्रः मुख् ॥ यप्यस्पातवान मूर्ण करत्राञ्च ध्रती-তলে। ৰুদুচগুীপুসাদেন কি॰ ন সি-**थ्र**ि ज्ञान ॥ कृत्याग कृत्तना कृपानी कृपदञ्जा। कृपुञ्जा कृपु-ৰূপা কৃদুভূযাসমন্বিতা।। শিন্দণ্ডী মহারক্তা শিবপীতিগণানিতঃ रिञ्जवी भन्नना विन्ता महाविन्तीः

रवाउना।। ज्ञल्बी भवमा विष्ठा म श्विभूत्रमूनस्त्री । एश्काली जुनु कानी नहाकानविमर्पिनी ॥ कृष्ण क्ष्यक्षा ना जननी (नार्कारिनी । অতিতন্দু। মহালজ্জ। সর্বস্থল मायिनी ॥ (चात्रहञ्जी जीमक्रमा जी-भारती म्यां इता। वशना वशना जिक्तिरायिका जर्बरा निवा॥ मृजि क्रशा की दिंक्शा वृष्टिक्शा नामार-ता। विकृ शिया नक मूजा (यारगः ক্ষুৈ রুপি সেবি গ্রাম ভ্যানকা মহা-সুস্থা দেবী ভ্ৰবিনাশিনী।চণ্ডিকা " **ण**िङ्ख्य ह (कीयादी **गर्दकागरा।।** वादाशी व वदाइमा इन्तानी मकः পূজিত।। নাছেশ্বরী মহেশস্য ম হেশ গণ ভূষিতা।। চামুগু। নারসি॰-হী চন্সিত শহুনাশিনী। সর্ব णब्युणगनी मदारदाग्रभुनायिनी ॥ নৈব দুঃখা ভয়া কিঞ্চিৎ পঠনাৎ শুবণাজ্জন:। ইতি সভ্য সংহশানি ज्ञ अञ्चर वहामर्रह ॥ देवव (णाः कः देनव द्यागः देनव मूःथः खयस्रथा । সারোগ্য সঙ্গল নিত্য করোতি শুভ নক্লা।। নহেশানি বরারোহে जुर्वीमि ऋडा मूखमः । অভকাষ न राजवाः सम भागाधिकः मूछः॥ ্নম ভক্তায় শান্তায় শিববিষ্ণুপু

याय ह । एम्राथ् कमाहित्म्रविन সত্যু॰ সত্যু॰ न সংশ্यः ॥ व्यनस्र ফলমাপ্নোতি শিব চণ্ডী পুসাদতঃ । অথমেধ বাজপেথ রাজসূষ শ-তেন বৈ।। তৃগু:: मु:: भि अत्रो (एवा স্তথা চ সর্বদেবতাঃ। দুর্গে ত্বা॰ মৃন্ম-, यीखान कपुरामनभूखक ॥ मञ्ज নক্ষর সংজ্ঞান যঃ করোতি নরা-খনঃ। অতএব মহেশানি কি॰ ব-क्षित्र उव महिर्द्यो।। लस्याम्बादिक-म्हजीभठेगाह्रनार बनः। उडुन-সীতি বাক্যেন মুক্তি মাপ্নোতি দু-र्व जाशाइिज 🔊 कपूरामत्न इत्राने-त्रोम[ः]वारिक्षुयाम्बद्धीमनाश्चा।। পারদ:। ইতি রাজ: ৰুদুজ: निर्घणः॥

কদুপত্নী স্ত্রী অভসী। ইতি রত্ন भावा॥ पूर्ण। इज्रुनारिकावः॥ क्पृशिया जी रवीठकी। ইভि मद ब्रञ्जावनी ॥ भावजी ह ॥ क्षुष्: जी माणानः। इंडिकिटिशा क्षृति भा छः भू भ भ अवाि महि বৰ্ষান্তৰ্গতশেষবি॰শভিব্ৰাণি। তে या॰ नानानि कनानि ह यथा। जा मा जू विः मा जित्रा स्त्री विजीया देव-क्वी म्डा। ठ्डीया क्षु रिवड्डा শেষ मध्यायना ভरवर ॥ ज्नमा-ন্যানিপীড্যন্তেগুীম্মে বর্ষতি বাসবঃ । প্লবঙ্গে পীডিতা: সর্বা: পূজাম্চ मूत्रविन्ति ।। ३।। कायर मर्वम म्। मिक्शन्तः । भारति मुख्या । ন্যাদৃষ্টি ভৰেদ্যুজা কালিকে চ শ্ভ• বদেশ ॥ ২॥ সু**ভিক্ত কেন** সারো गाः मूथक निक्षपृत्। सोनामृहि र्जतमुम्बा भोष्य (मोथा भूकी र्जि ত ।। ।। তোব পূর্ণো ভবে ঝেয়ে। वृत्रं छ हित्न हित्न। निक्शमुवाः **म्ह** ब्राजानः **मर्बमा**धात्रत श्रित्य 118 11 वामत्वा वर्षक प्रवि पर्मा **ठाथ ७ म ७ (ल. १ व्यक्ट्रिक कान**्र-

कर्तु विद्राधी क्षिना नक् ।। ७॥

অভিভূত জগৎসর্গক্লেশ র্ভ্বি-

रिधः शिर्य। माक्टिः क्वनारेशकः

পরিবারিণি শোভনে ॥৬॥ নিম্ন জি: সর্বশন্যানা সুভিক্ষণ ভবতি लिए। भुनाधिन जलामात्री जल-मा भारा भूषा॥ १॥ निम्न खिः मर्बणम्यानाः महणम्य भहार्घछ।। घ् उ॰ टेउनमम॰ याज् जानस्त न-न्तिनो भुजा॥ ৮॥ कामुवाः भानि मृताक भोजाउ वत्रवर्गिन। महों-यथानि धानानि ताकारम निधुवाः भुकाः॥ २॥ मूर्ভिकः कायट धात्रः धारन्। यशि भूभी उन । यनता ह गमाथ्याजः नाव कार्य्या विहादशः॥ २०॥ (तमा जिल्हा २० दुर्जिक मना-नाट कथ्यानाइः। भिक्रान हातः পদ্মাহ্যি দূর্ভিক্ষ• নর্মধাতটে ॥ ১১॥ ला महिर्या विमणाडि य চामा निष्ठं नर्खकाः । वामावा वर्षां छ पिति শস্ঞ্ন হি জাযতে॥ তিল সর্ষপ্ মাধাদি কার্পাসানা মহার্ঘতা। গো মহিষ্য: সুবর্ণানি কাংস্য তা-माम्। भाषा ।। उৎ मर्बः (मित वि-कीय कर्न्डरिया शानाम्थ्यः। (उन ধান্যেন লোকোষ নিস্তরিষ্যতি দু-र्ष्यिन ॥ भार्थिव। यायका मीनाः कानग्रक भुभी ि छ। ।। ১২ ॥ তোষপূর্ণা: স্থৃতা নেবা বহুশস্যা চ मिनि । निश्रुताः भाषिता एवि .

निकार्थि ह वजानत ॥ २०॥ जन्न তোवा घनारेण्डव कीर्वकाः भुवनाः मृजाः। विक्**काः शा**र्थिवा (नवि त्रोेेेे र्मु वर्षि वदानत्व ॥ ४८ ॥ मूर्जिक म-খ্যন প্রোক্ত ব্যবহারো ন বর্ত্ত। ভবেষৈ মধ্যমা वृष्टि पूर्या**ो সমুপ** জ্বি !! ১৫ II সুভিক্ষণ জাযতে लाकः गर्बाभमुद्दक्तिं :। भाग না জাগতে হংষা দুনদুভৌ বরবর্ণি-नि ॥ ७७ ॥ महिषी लो हित्रणाहि जाम का नामा हा भव छ। उट **म**र्ब (मिव विकीयं कर्खव्या धानामक्यः ॥ রক্তে সম্বংসরে দেবি ক্রবুদ্ধি नंत्राधिभः । नानवाः क्वरक्षेणक न गाम न कर्या ७ (वर्ष ॥ ३१ ॥ मू जिक्कः अत्रवः (द्वारणा धारा) यथि নিপীডন ৷ পাপরোগো ভবেদেবি त्रकारथा १मयवनिहरू ॥ ১৮ ॥ রোগে এরণ দৃর্ভিক্ষণ বিবিধোপদুবা-জলা জেবে তু বিষমণ সর্মণ সমা খ্যাত হরপ্রিয়ে ॥ ১৯॥ মেদিনী চলতে দেবি সর্বভূত চরাচর । (मण छत्र क पूर्जिक कार्य म की-যতে পুজায়া সৌরাষ্ট্রে সালবে দেশে मिक्स्त काइत उथा। पूर्जिकः ক্রাযতে থোর ক্ষয়ে সম্প্রার প্রি ्य ॥ (कोमूनी हर्भनरहराण्ड यमूना

नर्याना उति । विक्याया रेमक्राव देव विमण्डिन मः भयः ॥ मिः इत्वा सक्रमण्ड कानञ्जर खेरेथव ह । क्राय क्रयंडि नर्वाि नान्या व्यव-র্ণিনি॥২০॥ইতি জ্যোতিস্তত্ত্ব•॥ कृतीना की बीनार्छमः। यथा। म्खः माञ्चूवीनाया मृद्धिकाम्भ निया छ। जुन दक्षा गुनि जिल म्वि-র• তস্য কীর্ত্তিত ৷৷ দণ্ডস্যোভয্-**তে।** (छत्र॰ का॰म) मञ्जदकत्रय॰ । পশ্চাৎ নম্বর্কঞাত্র ছত্রীকৃত শি-রো ভবেৎ ।৷ দণ্ডস্য বেষ্ট্র- সার্জ্ব পঞ্চাঙ্গুল মিবোদিত । তল্মিত। **मथ**त्री **उम**्राः कर्खव्या मुन्द्रताकृ-তি:।। কলভো কৃদ্বীণাযা ব্রিশি-রা: পরিকীর্ত্তিত:। উদ্ভে শির্ম माज्या (लाइमञी ममन्जा।। মূলভর্জা তদুপরি ভস্যা লৌহী ততঃ পর•। দক্ষিণে শিরসি ন্য-সেৎ শুভি তন্ত্ৰী দ্বগু ক্ৰনাৎ।। এ-বন্তু কহন্তে তত্ৰ বীণাদণ্ডে নিবেশ-(य८। घा अलाह मुक् मित्र। १३ है **गा**वछ भार्षक ॥ मधाङ्ग्लास्त **७ मा ख मू नक्ष** नित्र नित्र नित्र । जन ५° **তত শ্তত্ত্তিশেদসুলা**ন্তর মাঞ্চি-পেৎ।। অপ্তাদশাস্থ্লমুখ চক্র বৈ চাৰু গৰ্ভক । দণ্ড সমুন্নত কান্ত ;

वर्ञ्च ज्य यूग्रकः॥ श्रेषाष किशिः-নাধিক্য মলয়ক্ষ পুশস্যতে। **অৰ্চ্চ**। ফুলান্তরণ পশ্চাত্মরণ স্থাপথেদুধঃ া দণ্ডপৃষ্ঠে রক্ত্র্যেক স্থাপথেচ সম-स्ट :। तो हाक्ष्म स्ट कर्डवा वर्ष्ट्र वर्ष्ट्र পঙ্কজাকৃতি। তদ্ধন ওণ ভশ্নিন্ বেষ্ট বন্ধে নিবেশ্যেত্ ৷৷ এতত্ পরা-যা মোটিন্যা বেষ্টরকু জশ কি-পেৎ ৷ তলোটনী বৃত্তরন্ত্র সদৃশ• দণ্ড রন্ধুক ।। সুয়ন্ত্রিতে তু ভবৈব বল্নীয়ারাখ্য ভব্তিকা•। তাব্ছ ভ্রাম-यट भूर्वाः भाष्ट्रेनीक मातः मातः ।। ন্যাবদেতি **স্থান তত্ত্রী বস্ত্র** विभावतः। अम्या युडाममा श्राकाः भातिकाः भूर्वभूति छि: ॥ जामाः वृश्खदा यश्ची प्रमञ्जूषाः भूकीर्खि-তা:। এতাস্ত ভারবাদিন্য স্তিপ্তত্তি পদিকোপরি ৷৷ বিতন্তি মাত্র পদি-काक्र्ष्ठाहाभामा गर्जकः । जाव म्नाञ्च कर्न्दा यथा म्र इस्ता ভবেৎ।। মদনস্য চ সিক্লুস্য যোগে ंन সুষ্চীকৃতা। বৃহতীনাঞ্চ সারীণা• यन्ति। ए उन क्रमार ।। अ जास म-द्वीवयदेवः कथि अ अध्यूना वृदेशः । ञ्गला मखना जाः भ्रष्ट यथा द्वाग স্থার পুনঃ ৷৷ মদনস্য চ শিক্ষুস্য যো-ণেন সৃদ্চীকৃতাঃ। সর্বাসাং লোহ

কলিকা মন্তকেস্তঃ সুযন্তিতা:।। একাকুলোচাঃ ক্ষুদাঃ সু রিতি **मात्री विनिर्गयः। এবং विनिर्म्यिजा** क्ष्रवीना जन मताहता।। व्यम्रा॰ শিক্ষা তু কর্ত্তব্যা দাক্ষিণাত্যোপ-দেশত:। ইতি সন্থীতনারায়ণ:॥ कपुमर्गः भु कपुकर्क्कमृष्टिः। यथा । इरानी कपुमर्ग दः मृग् भार्थित जबग। मन्यर्व मह्मानि जनकी-र्दा महाबाल ॥ भुजितूरका यहा क्षु छना कावी निकानना । मृक्षा-শন্যবতী রম্যা মনুষ্য পাশুস্-হলা।। শুশাব চ তদা শবামৃত্বি-काः रक्रमद्मन। चानुत्म यिष्वमाः क्षांद्र यांगरेष्ट ब्रिजि कीर्जिञान् ॥ उठः भुज्ञा महारउद्याः मर्बद्धः भद्रासभद्रः। तुरकाभ मुज्म (६-(वा वाक्राक्षर मूवाह ह।। अह--**প্রস্ত ক**বিনা সৃষ্ট: সর্বাত্মনা বিভু: । পুজা: সৃজম্বৈতি তদা বাক্যমে-ভ ভথো জবান্।। ইদানী কেন তৎ कर्म क् उ॰ मृष्टेशिन वर्गन । 'ववमूक्। ज्नः (कालामनाम भन्नत्मधनः ॥ তস্য তা নদতো জালা: শ্ৰোত্তে-ভেগ নিৰ্যয় ভদা। তত্ৰ ভূতানি (वडावा উहुचाः (भुड भूउनाः ! लया अ या ज्याना क मर्ख भुज् · लिजाननाः। উত্তম্ কোটিশ उत्र नाना भुरुद्रभाव्जाः॥ ইতি वद्रारु भूद्राभः॥

क्षृपावर्णः भू बाम्सामन्ः। অমিনানম্বরে সুধানাথ্যো ংবতা-तः। या उपागा हेन्द्रः। इति जानत्या रिताः। उरभागूर्ब्यापयः मश्चर्ययः । দেববদুপদেবাদযো ননুপুত্রা ভবি-ষ্যন্তি। ইতি জ্ঞাগবতনত ।। অপিচ। দ্বাদশে ক্দপত্রস্য প্রাণ্ডে भवष्यं भारताः । भारतायायामा (य (नवा मूनयक पृत्य उत्। मूकचा-ৃণঃ সুমনসো হরিতো রৌহিত স্তথা । সুরাপাক্ষ সুরা স্তত্র পঞ্চিতে দশ-কা গণা: ৷৷ ত্রি: পুকারা ভবিষ্যন্তি একৈক জ্বি:শকো গণঃ। তেষা নি-**त्नु। हि विर**क्करया श्रेडशामा **महा** - वनः ॥ मरेर्ब द्रिन्पृ खरेन यू कः मरुः ৰী নিপি মে শৃণ্। দু তি তথৰী সুত্রপা স্তপোম্রি স্তপোনিধি:॥ তপোরতি স্তথৈবান্য: সপ্তমন্ত ত (भाष्ठिः । (दिवतान् वान(दिव) (एवर्ग्रुष्ठा विम्त्रथः॥ निजवात्रिज-म्उक ভाবिन ख८ मूजा मानाः। ইতি মার্কণ্ডেযপুরাণ।।।

कृपुम्ः जी अकारणभूशकननी। यथा। विवृम् र्मणभूशा महारहकाथि

কাত্ কদুস্ং। ইতি শব্রজাবলী । কদুাকীডঃ পু• শ্মশান•। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।।

কদাণী জ্ঞী দুর্গা। ইত্যমর: ॥ তস্যা বুড় পত্তি র্যথা। কনুস্যেন্ত কৃদ্যা-ণীরৌদু হন্তি করোতি যা। ইতি দেবীপুরাণে ৪৫ অধ্যায়: ॥ কৃদু-জটা। ইতি রাজনিঘণ্ট: ॥

ৰুদাবাস: পু• কাশী। ইতি কেচিৎ।।

ক্দারি: পু॰ কামদেব:। ইতি কেচিৎ।।

পু॰ স্বাম্থ্যাত্যুক্ষ: ৷ क्शुकः **७८ भ**र्यप्रायः । ज्नासकः २ व्यमतः ৩ পুস্লচামর: ৪। ইতি শব্রন্না-वली।। उन्र कलभर्गायः। भि-বাক্ষণ ১ স্পাক্ষণ ২ ভূতনাশন ৩ পাবন ৪ নীলকগাক্ষ ৫ হ্রা-ক্ষণ ৬ শিবপূশ । অস্য গুণাঃ। অমুদ্ব•। উঞ্চত্ব•। বাত কৃমি 🖣 রোর্ত্তি ভূতগুছ বিষ নাশি হ্ব॰। ৰু-চ্যত্র্ঞ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। শিব-পূकाया॰ অস্য মালাখারণ মাব-भारकः। यथा विक्शभुद्रारा। विना-**ভग्नविशृ**(ञुगविनाक्षु।क्रमालया। প্জিতোপি মহাদেবোন স্যান্তস্য कलभूरः॥ जरमहा८भि विश्वा।

সত্বৎসরপুদীপে। ত্রিপুরস্য বধেকা-**लिक्षुम्राक्षा२भठ**•स्या**ञ्या**राग বিনৰে ভেতু ব্যাক্ষা অভবন্তু বি॥ यम्। (भ) कामि छ उ जैन मुथ कृष्राक्षयु মজ্রফলবিশেষাঃ সন্তি তথাপি সু-লভত্বাৎ পঞ্চৰক্ষ্য ফল মন্তাৰ **ভि**वीखा**उ। यथा** कात्मा भक्षवङ्कः यग करुः कामान्नि नीम नाम छः। অগম্যাগমনালৈ অভক্ষ্য চ ভ ক্ষণাৎ ৷৷ মুচ্যুতে সর্বপাপেভ্য: প ধ্ববজুস্য ধারণাৎ । হৃ• নমঃ ইতি পুত্রেক নঠোত্তরশত জপ্বা শিবা ख्रमा भुकाना भादगीय । विना मः खिनया शब्द कृतुःकः जृति मानवः। न याञि नदक (चाद्र याविष्मु) ५५-जूर्मभा ইভি ভিথ্যদি जङ्गुः ॥ 🛊 ॥ **७**म/दाद्राय यादम/कृतः यथा। नः यटमत्रभूमील। यक्षुमाकश्रता ज्वा यष्पर कर्य ह रिविषक । काबा कि अभ शिगानि ७९ मर्बः नियुत्तः छत्द ॥ कात्म् । श्रानशाद्रभशीकानि क्-দাুক্র ধার্যেছখঃ। সর্বপাপ বিনি-নুক্তি: স যাতি পরমাণ গতি।। ই-ত্যেকাদশীতवुः।।#।। অথ कृमाकः माहाजार । ञीमहारत उवार । ইरानी (प्रवासतिका भावाना था-इतः गूंडः। क्रुंकिना ह माराबारः

वर म भव्रभयवि ॥ श्रीमवृत्वृत् । শিখাযা হস্তযোঃ কঠে কর্ণযোল্গ-পি যো নর:। কদাক্ষণ ধারফেডক্তা मिरलाक मनाश्रुयार ॥ नववजुङ ङ्मुक्कः धात्रश्यक्षाभवाञ्ना । एक বাহৌ তথা বৎস ধার্যেদ্মতমা-नमः ॥ मिथाया॰ ममन शार्या क-(छे ह भक्षवि मां डि॰। कर्नर्याः भक्ष-সংধ্রা হৃদি চাষ্টোব্তরণ শতং ॥ না-ভৌসপ্ত চ ৰুদাক্ষণ ধারণান্মোক্ষণ ভাগুবে । क्माक शातनात्म्व गरा (मवज्ञ माञ्जूयार ।। निथायाः माञ् দাক্রিশৎ পরিমিত ।। তথা। 🖅 **कः वात्रयिक्रिङ्यः जनुष्क्रकः मु**द्धाः वर्षः 👍 ক্ৰুক্ষ্ণ্য মহাবাহে৷ মাহাজা 📆 यइ 5: ॥ এहा कुः नियः नाका ८ বুক্ষহত্যা ব্যগোহতি। অবধ্যত্ত্ব• প্রিংপ্রালে বহিস্তম্ভ করোভি চ ॥ দ্বিবড়ে হরগৌরী স্যাৎ গোব**ধা**-দ্যবনাশক্থা ত্রিবজ্যে হগ্নি জ্রিজ-যোত্থপাগরাশি॰ পুণাশযেৎ।। তু-नातानि यथा विक्र जिम्रार कः ক্তে হর। ত্রিবক্তো ২পি চ কৃদ্যক ख्या परु ि किल्विष ॥ ठजूर्व कु ख ধাতা স্যাৎ নরহত্যা ব্যপোহ-তি। পঞ্চবকুস্ত কালাগ্নি রগম্যাভ का भाभनू ॥ वहाकु। या छरः

সাক্ষাৎ গর্ভহত্যা শবেদয় সপ্ত नाज्य इनड क वर्गख्यावन् . नमा॥ विनायेरका श्रिवकः महार नर्बान्ड विनामक्ट। टिअव्या नववकुः माट शिवनायुक्तारायकः ॥ प्रश्ववकः स्वरः বিষ্ণু ভূত প্রেত পিশাচহা। একা-मनागृत्था कामा नाना यक्ककनपुरः ।। দ্বাদশাস্যো ভবেদর্ক: সর্বতীর্থ-कलभूमः । जायामभागुर्थः कामः · जर्बकामकनशुरः ॥ ठजूर्म**ना**मऽः একঠো বংশোদ্ধারকর; স্তঃ। याकाड रिश क्षाक उपम्।-(क भुकेखिंड ॥ जमात्क ९भि সুরশেষ ভদ্ভণ পরিকীর্ভিত। ইতি যোগসারে ২ পরিছেদঃ॥ 🕸 🛚 । অণিচ। নিশ্বিশা সুপরাশ কः দ্রাক্ষা ধারণে স্তা:। পঞ্যমৃত भक्षभवा नामकारम भूरयाकरएट ॥ क्षाक्रमा পुणिष्ठायाः मखः रक्षाः ক্ষর॰ তথা। ত্রায়কাদিক মন্ত্রঞ্চ তথা তত্র পুযোজ্যে ।। ওঁত্রায়ক• যজামহে সুগন্ধি পৃষ্টিবছান। উ-र्वाक्क भिवं वस्त्रभाग्राख्या मू क्रीय-भाग्जार ॥ जथा उँ होँ व्यवादि হৌঁ ঘোরে ভূঁ ঘোর **ঘোরতরে** ওঁ হৈ হুঁ। এ এ সৰ্বতঃ সৰ্ব সৰ্বেভ্যে ननएउस कृतुक्तिरा ह्ँ ह्ँ। व्यानना-

नि ह मञ्जूष कृतक्रम् द्विकाङ्यः । भुिकाः विधियः अर्ये। ७ 😘 **९विक कनः नाज्य ॥ जाजा म**ा ৰমজেণ ধার্যেঠিক্তি সংযুত 📑 একাদি চতুর্দশবক্তাণা সংস্ক র পুত্যেক ক্রমেণ মজা বথা। 🖔 🕏 ज्यः नगः। 🔰 । 👸 । व । २। खँ ७ वमः । ७ । ७ छ छ ही नमः 181 ७ ह् नमः। ११ ७ ह् नमः । ७। ७ ७ इ इ नमः। १। र्खं नमः। ৮। ह्रॅं नमः। २। एँ ह नमः। ७०। ७ हीँ नमः। ১১। खंड्रीं नमः। ७२। खं कंग (कार्रें मभः। २०। ७ नामा नमः। २८। क्षांक (ररमाप्ट ज् अङ्काता मिु-যতে যদি ৷ সোপি ক্দুপদ[•] যাতি কি॰ পুন মানবা গুছ। সপ্তবি॰শতি क्षृाक भावया (तर मः स्या। यः করোতি নর: পুণ্য সর্ব কোটি-**७१**॰ ভবে**ए।। (या ममा**जि **दिजा**-তিত্যো কদাক ভূবি ব্যাথ ট তস্য প্রীতো ভবেজদু: মপদঞ্চ পু यहाँ ।। বিনা মজেণ যো খতে ক-দুাক্ষণ ভূবি মানব:। স যাতি নর-কান্ ঘোরান্ যাবদিন্দু। শতুর্দশে ॥ ইতিগদ্মপুরাণেক্দু।ক্ষমাহান্ম্য ॥ ইভি ভঙ্গার:॥

क्री जी वील्यंचनः। इंडि भन्न-प्रजावकी । अञ्चत विव**त्रशः समु**वी-भागाम होते ।

अध ७ य ७ व्याः व्यन्भूरद्वायः। ইতি কবিক্ঃ ক্রিটা ড সনুক্ধ্য - ४७ धन (लाकः। ४३ व्यन्द्राक्ता। ইতি দুর্গাদাস: II

क्ष इत्र १ छ कि क जात्ठो। ইতি কবিকল্পছম: ॥ ইর অৰুধ্ৎ व्यातीएनीए। थ या क्निक्त क्रांक्त া ঔ রোদ্ধা ঞি ক্ছোন্তি। ইতি पूर्णामात्रः ॥

কৃষির॰ ক্লী শরীরস্বসভবপাতৃঃ। खर्भारा। दक्र र अमु ० ज्यु ৪ কীলাল ৫ ক্ষতজ ৬ শোণিত ৭ লোহিত ৮ অসূক্র শোণ ১০ लाइ॰ ३३ हम्मंब॰ ३२। ইতি রাজ निर्घण्डः ॥ व्यक्त्युगः । ইত্যমরः ॥ ক্ষির: পু॰ নক্লগুহ:।ইতিমে

रिनी ॥

क्षित्राथाः क्ली मिलिङमः। यथा। इडजून भाराय रानवना यत्य ञ्जिञ । नर्माराया निविक्षिण कि ঞ্জিনাদি ভূতলে।। তত্তেন্দুগো-**প কলিত •** শুক ब জু वर्ग • স• ছ। न ठ: भुकरे भीनू समान माजः। नाना পুকার বিহিত ক্ষিরাখ্য রত্ন মু ৰুবুক

ष्क् छ। छम। थनू मई ममानस्मन ॥ মধ্যেন্দু পাওর মতীব বিশ্বরুর उत्हन्त्रनीवमम्मः भवेत् क्ष भार । रिमर्थर्ग खृजाबनन अ ত তদেব পকৃষ্ণ তৎ কিন্তা ভাবে সুরবজুবর্ণ ॥ ইতি গাফড়ে 🔩 व्यथ्रायः ॥

क्ष य इत विद्याद्ध। 🕏 🦠 **কল্পড়ম: ৷৷ বিমোহ আন**লীপ 🔆 **া য ৰুপ্যতি লোক লো**ক: ইর অৰুগৎ অরোগীৎ। অক্ষাং পু यानिवामिठा ७ ইত্যান 🕫 🥳 मृगीमाजः ॥

क्यो जी मूग्रीव अर्गा। विभिक्षः व्यवपाक्तः। इंडि (मिरिनी ।।

ৰুমু: পু॰ অৰুণ:। ইতি সি 🖘 🖫 क्रोमूम्यामूना पिवृज्धिः॥

क्कः भू भृगविष्णयः। इंडामहा ॥ व्यम् अाःम खनाः । मिक्षद्ः । अक्ष । मन्ताप्ति वनभूमद्रशः। ইতি রাজনির্ঘণ্ট: ॥ দৈত্যভেদঃ । इंडि (मिनि ॥

ৰুবু: পু• এরওবৃক্ষ:। ইতি রত্ন-भावा ॥ ब्रेक्ट्रियः । इंडि वामः निघणः॥

ক্রক: পু• এরওবৃক্ষ:। ইতি রহ্ন-माना ॥ ब्रेडिव अः। इंडि वाज

े ज्यानिक **।।**

্র্ এর গুর্**ক:। ইতি র**ন্ন

ক। কি ব্যোইতি কবিকল্পক্ষন:

। কি ক্ষিতো হস্তি। ক্রোষ।
ইতি কাদ্যান:।।

নত বৃত্তি ঞি ,কুধি। ইতি কবি কল্পন ।। য ক্ষাতি ভ্ত্যায ভূ পাল, । ইর অক্ষৎ আরোষীৎ। জালাৎ পুষাদিত্বামিত্য ড ইত্য ভে ি গ কষ্ট: ক্ষিতো হস্তি। ইতি দুৰ্ভাদাস: ।।

কৃষ ক্ জ্ধি। ইতি কবিকল্পজন: ॥ ক রোষবতি। ইতি দুর্গাদাস:॥

क्य। জी व्यवसः। তৎপर्यग्रयः। ক্রোপ ং মন্যঃ ৩ কুখা ৪ কুৎ ৫ ক্রোপ:৬ পুতিয়ং ৭ রোষঃ ৮ কট্ ১। ইতি হেনচন্দুঃ।।

क्षितः वि काष्युकः। यथा। उ॰ नागशामा र्वाचनन्त्रता वनी प्रष्ठ॰ स्रोमनाः क्षिरा ववस र । रुठि श्री जागवरा वागयास्त ४२ अक्षायः क्षेटः वि काष्युकः। यथा। निर्व

निम्नमः॥ क्टक• क्ली हिन्न•। हेठि भक्-हिन्दुका॥

ক্হা জী দূর্বা। ইত্যমর: ॥ মহা:
সমস্বা। ইতি রাজনির্ঘণী: ॥

কৃহিক্ছিকা জ্রী উৎকণ্ঠা। ইতি প্রাণা।

পুরাণ ।। কহা ন পু বৃক্ষঃ। ইতি সিদ্ধান্ত-কৌমুদ্যামুণাদিবৃত্তিঃ।।

ৰুক্ষ: বি অপেন। স্টিক্ন:। কৃহধাতো রৌণাদিক স পুত্যযেন নিয়ুক্ষ:। ইত্যুণাদিকোষ:।। ক্ত বি জাত।। পুসিদ্ধণ। ইতি

(मिनि)।।

পুক্তিপুত্যুগর্থ মনপে-्र माप्तराथ्जनकः मयः। यथा। न्त्थ्या. व किनिस्म भागः भागः भुतारही भवा त्रिक्श । त्योगितका त्या-गक्राण वाक्षाण वा मूचा वव मः॥ ইতি শাবিকাঃ।।ঞ্চ। অপিচ। ক ঢনা দক্ষৰতি বিভৱতে চ। ৰুঢ় मरङ् उवनाग रेमव मरख्डि की-ৰ্ত্ততে । নৈমিত্তিকী পারিভাষি ক্যোপাধিক্যপি ভক্তিনা।। यमान যাদৃশ্যথে সঙ্কেতিত নেব নতু থৌ-গিকন্দি ভদুচ । যোগৰুচন্ত প कड़ो निक॰ न ख्या क्रानायि ठ नःकाभारताज्ञिभारतः । नजू क्रांक्विट मञ्जाि नात्। १वा-ন্তরভেদঃ। যেন বিভাগ ব্যাঘাতঃ न्। म॰ क्रायाण वर्षा (जमाः নৈনিভিকী পারিভাষিকী ঔপা-षिकी छि । भावक भावेकान्यस न मःखाः माह्य म्नादाहि । বক্ষ্যতে ৷৷ যেতু ক্তম্য নাম্ম শচতু विवद्गाह खन्न मुशनामा ७ । का कि मुवा खन जिन्स से रियाः मरकः ত বভাগা জাতি শবাদি ভেদেন চাত্রবিখ্য পরে জন্তঃ ।৷ গো গ্র্যা -দীনা পোত্বাদি জাত্যা ৷ পখা-ह्याभीना॰ नाञ्च धनामि मुत्या ।

धना शिम्नामीनाः भूगा एका वि खरान । ठल ठललाहीनाक १५१-नाः कर्मागायहिमणकिमक्षाहाजुर्विश्र মেব কটোনা মিতি। যদুক্ত' দগুৱা-ष्टारिर्यः। भरेक द्भव भुजीयस्य काञ्चि मुवा ७१ कियाः । ठाजूर्विषाम्भी-ষান্ত শব্দ উক্ত শত্তুৰ্বিধ্ ইতি। उपि उद्ध मूर्यामीना मन्रम्न्रा-দীনাঞ্চ শহানা মপরিগুহাপত্ত্যা পরিত্যক্ত মুমাভিঃ॥ 🗱॥ নৈনি-ত্তিক সংজ্ঞা লক্ষ্যতি । জাত্যব-ছিমসঙ্কেতবভী নৈনিভিকী মতা। জাতি মাত্রে হি লঙ্কে তাদ্যক্তে ভান' मून्कत ।। यमान जाउ ।वहिन मारक उ द ना रेनिविकी म छ। यथा ला हिजािनः। मा शिलाषु हिजािन জাত্যবিছিন্ন মেব গৰাদিক মভিধক্তে ন জু গোড়াদি জাতি মাত্র। গো পদ গোৰে সঙ্কেতিত নিত্যাকা-রক গৃহান্নামান্যেত্যাদৌ গোত্বা-**दिना गवारि द्रन्यानुभगाखः এक** শক্তব্ গুহস্যান্যানুভাবকত্বে ২তি-भूतकार ॥ #॥ भावि जाविकी भी-পাধিকীঞ্চ সংজ্ঞাণ ক্রমেণ লক্ষ্যতি । উভযাবৃত্তিধর্মেণ সংজ্ঞা স্যাৎ পারিভাবিকী।ঔপাধিকীত্বনুগতো-পाधिना या भुवर्खा ।। উভयावृज्धि

थगादहिन मह्हा जरका जिल्हा ना ाहजाबिकी। यथाकाण ि शास्तिः ।। খাচানুগতোপাধ্যহিন সংস্ত वर्जी मः उद्धा माञ्ची भाषिकी । रथा ভূত দূজানি৷ না হি সচেত নিতি | - বি**শেষগুণবৃত্ত বার্ডাহারকত্বা**দ্যন্ত্র গভোপাধিপ্ৰুদ্ধারেণৈৰ পুৰ উক্তে 🍪 े भद्रमञ्जिलुकाशिका 🔢 पान्य की कमा। शुक्ति । া কুছুখাতো ভাবে জি প্ত্য-ानभन्न । क्रिम्म निष्ठमक्तिः। , ... লক্ষ্যব্মিদা সভীক্তি ভবে-ं, (प्यायाशकातिनी। यहातीमा **जून**ः 🖟 ভতে নালান যোগ বাধ্ত: ॥ ইতি স্বারভটকান্ত্রিকা॥ ৰূপ ভক ভংক্টো।ইভিক্ৰি कन्नम्भः॥ তৎ कृ जो क्र भकद्र १ । অক্ৰপৎ প্তিমাণ শিল্পী। পুতি नायः क्षणः करताञी अर्थः। नि शूः र्वः चक्रशकथान । जनुमान निक প্যত ইত্যন্নানথ ও । ইতি দুর্গা माजः॥

क्र कि श्र कारः ॥ त्मिन्हेर्य्यः ॥ नामकः ॥ श्रमः ॥ भदः ॥ श्रृष्टा-वृद्धिः ॥ नाटिकािकः ॥ व्याकातः ॥ व्याकः ॥ इति त्मिनी भद्मत्वा वनी वृत्रिशुर्यागाः ॥ श्रृहािकः ॥

राग्यक्षात गानलः । हेन्डि नापाः र्थबञ्चभाषा निषं ६, वजन्तु । ।। 🕸 🖫 ৰাণত ব্যে**ডশ** বিদশ্যন ব্যুক্ত also in Louis of Middle to a second त्र श्रीकारः करोला १५ विला १५ नुक् १० मिर्गाल्य के वर्ष १ भारत है जिस्सा है। अर्थ भूषाः ॥ 🕸 ॥ उत्रः। व्यक्तिः 🙉। १ জ্পানে গুলু বিভাবে প্ৰকৃতি ভূম ণাদিনা। যেন ভূষিতবজ্ঞান্তি ত-দুপ মিতি কথ্যতে ॥ ইত্যুচ্জ্বन-নীলনণি: ॥ 🗱 ॥ ন্যায্নতে তৎ ठक्षितिन्त्रशाश् । <u>प्</u>वापिश्ठाकः কারণ । চফু; সহকারি । শুক্লাদ্য-निक भुकातः। जनामि भवमागु क-প॰ নিত্যু॰ অন্যত্র অনিত্যু৽। যথা । চক্ষ্মাহি ভবেদুপ দুব্যাদে ক-পলস্ত চেক্ষ: সহকারিস্যা-ह्क्रांकि ग्रानक्षा । जनाकि भन्न-মাণৌ ভলিভ্য নন্ৎ সহেভুক। ইতি ভাষাপরিছেন:॥ 🗱 ॥ উত্ত-त्रभष्ट्कलाष्ट्रिका उन्नानवा-চকর্ণ। यथा। मुह्र क खत्र भरत भू थहः পুকার:পুতিমো নিভঃ। ভূত কপো পমাঃ কাশ: সন্ধি পু পুজিতঃ পরঃ ॥ ইভি হেমচন্দুः ॥ 🕸 ॥ অতি-

क्षत्रकः क्री नार्षकः ॥ मृर्खः ॥ का-व्यानक्षद्रभः। इंडि भिन्नी ॥ म्म-यम् ज्ञाकः यथा। क्षत्रकः क्षि-छ। त्राभाद विषय नित्रभङ्काय। छद्भत्रस्मित्र भाकः नित्रक्र मि-छि छ बिथा॥ यब कम् छिनात्रा-भः भत्रात्राभग कात्रगः। छद्द्रभाविकः भिन्ने मिने भत्रस्मित्र भिन्ने भिन्ने मिने क्षतः ॥ भूर्डि कि विश्वेशः। श्रिक्ता य-क्षित्राक्षम् अत्रगः माक्ष्रां विष्ट

ी भगवा (स दिया स्मिक्ट मादिवासि शाद्राभग्रना स्लयानाः भाः मान् भूषाम् म्बन् ।। यव स्मिति मार्थक्तकरम्मात् े हिन्द्रक् किर्वाम् । का तत् उरिक्र विस्ता न का किनदा संभाग्ध रहताई लायक । इस्या । इति आधिक। म क्रिक्रिक कि कि कि कि कि कि भा । यश्चिमभारात्मा १ । लाः ৰূপক• কথ্যতে সন্দি বল্ধারো-उमः यथा । ङ वि र्युग्राम्यशासाः जीनानक नधुत्उः। न कमा इत-তে চেত্রে। লসদ্শন কেশর।। অ স্ত্যনেক পুকারত্ব কাপকোপনবো রপি। সংক্ষেপেণোক্ত মন্যুত্র সুধী-ভি রবধীযতা ।। ইতি কাব্যচন্দ্রি-का॥ अ॥ मःथ्राविष्णयः। यथा। সঞ্চালী প্রোচ্যতে গুঞ্জা সা তিসো क्षभक खर्ट। क्षभके मंगिडः (পुाकः कवाक्षः नाम नामकः ॥ ইতি যুক্তিকল্পভন্য:॥

क्रिश्च की मीनः। यथा। मानः पूर्णः नक्षणः ভाव म्हाञ्च सूक्छ श्री उगः। महत्वा क्ष्ण उक्ष्णं धर्मा मानं विस्तर्गवट्। हेडि ह्महन्मुः॥ क्ष्णश्री जि तोम्हर्याविनिहेः। यथा। ज्ञा विकटेक्रिशा श्री

कत्यावार्षसावराः विकास दुन्ते । हर् करिया युक्ति कर्ताम ही च न्कार कामवानुष्टाः विकास सन् देशः अर्थे**शामकाश्**रतः । विवेश मानुद्धान है अ श्रीप्त अनेतिया है। आर्थ । विराम असे महत्वी उत्तर , मूल पुर्व केन प्रवास है नहार में हैं। ये प्रवास है है भिर्द्धम् **म**्याः क्ट १ इंट इंट इस करा करा के कारण · 大學一個 The growing of the transfer अवस्य हिंदू है अभिन्याय देश विभागी इंडियानमध्यात कर्माना । ৰূপনাশন: পৃ[°] পেচক:। ইভি **मक्**त्र्वावमी॥ ক্পবান্^ত ত্রি আকারবিশিষ্ঠ: ॥ ं भोनत्र्वायुकः। क्रमणकाम्खार्थ वजु न्जुरयनं निम्नता १य॰॥ ৰূপাজীবা জ্রী বেশ্যা। ইত্যনর:॥ ৰপাস: পু॰ কমেদেব:। ইতি ত্রিদাওশেষঃ ॥ ক্পিকা জ্রী খেতার্ক্কঃ।ইতি बन्भामा ॥ ক্পেশ্বরী জ্রী দেবীবিশেষঃ। সাত্ পুভবাদি ৰপ্তিবযান্তৰ্গ কৈ ক্ৰিন भवर्ष भृङ्या। यथा। क्रभन्द्रवी পुकर्जवरा व्षयुग्म वरविष्ठा। करे। मूत्रहे ভाরেन जिन्तात्र गज्यना ॥ মণি মৌক্তিক শোভাট্যা সিত

पर्वेश्वास वद्धार स्टब्स्ट ह भा । विस्तिः शुल्याः ॥ ार प्रमुखनात्राच्या पाइक कर र समाज अध्यादापुरियामा ह्या । । वि सिवाछिकवा छाडि इन सामा अन्यास क्रमाम माम्या माण्या । १०४० ि मार्टिक कर देन र र र र तिलयः। कृषा िति स्था। ७८-भर्यायः । भू नुः २ वमूरम् ४ ० व-ধির• ৪ চন্দুলোহক• ৫ খেতক• ৬ নহাশুভূ ৭ রজত ৮ তথদপক ৯ চন্দুভূতি ১০ সিত: ১১ ভার: ১২ कनष्ठ. १० इन्मुलाहक. १८ (३). भार १६ (थों उ॰ २५ (मोध॰ २१ इन्मू-হাস ১৮। ইতি রাজনির্ঘট:॥ খর্জ ৯৯ দর্বণ ২০ খেতি ২১ तक्रवीडा: २२ त्राङ्बद्धः २० ला**ङ्**-রাজক ২৪। ইতি শব্রস্থাবলী।। क्नार्थो छ॰ २०। ইতি क्रों। १३:॥ वामा खनाः। शिकातः। क्यागत्। ब्याद्वः। विशास्त्र मधुत्रज्ः। अत्रज्ः। বাত পিত্ত হরত্ব। কচ্যত্ব। বলী

পলিত নাশিত্বঞ্চ। ইতি রাজ-

নিঘণ্টঃ।াঞ্জা। অথ ক্প্যস্যোৎপত্তি

ভারমার নির্দেশ বুলার বিক্র र १०१ % मिक स्तिक मान हिन घनक्षर । सर्गान्तर हन्तुवर ষত্ব কপ্য নব গুণ শুভ ।। কঠিন কৃত্রিম কক্ষণ রক্তণ পীতণ দলণ লঘ্ । मारु (इन घरेन नंष्ट्रे॰ क्लार्रे॰ पृष्टे॰ भूकी खिंड ।। क्र भाः भी उ॰ क्या-याम् आपृष्ठाक दमः गदः। वगमः স্থাপন ব্লিক লেখন বাত গিত্ত জিৎ ৷৷ পুনেহাদিক রোগাণ্চ না-শন্ত্যচিরাৎ পুর• ৷ ভার• শরী-রস্য করোভি ভাপণ বিবৃণ্মনং यहाँ क्षेत्रभाषा । वीर्याः वणाः হন্তি ভলেন্চ পৃষ্টি মহাগদান্ (भाषग्ति स्मृतः ॥ 🕸 ॥ व्यथ मात्रवाच (यानाः दाना आहा एक िक्ष मृतु (४ उ मान् इहर यनक्षर) । दर्भाष्ट्रण प्राप्त १५५४ । इ.स. २०७४ ADM I THE HEMMEN HALL THE SALE कृतिमा स्वयुक्त एक भी द्वार में बा<mark>य</mark> ·福德·日本公司、西部公司 garana Bangaran sa 8 . 207 S.B. 8 87 1/2 1. 1 67 ित्रात्रम्बद्धाराज्यस्य । व वास्तुन्त्रन्तु 等的性 化银马属工车时 某事 দ্বন্ত করোভি তাগণ বিধ্বণসৰণ বীৰ্য্য वनक्षयक । (५२म) भृष्टिः इत्रः छ তনোতি রোগা স্ততঃ শোধন মস্য व्या १ ॥ अथ क्षा मा माइन বিধিঃ। ভাগৈকা তালকা মর্দ্যা যা ম ময়েন কেনচিৎ! তেন ভাগত্রমণ ভার পঞাণি পরিলেপথে ॥ গৃত্বা মূষা-भूरि क्षा भूरिए जिन्मप्रसाभरेनः । भगुष्व अ भूग खाल मञ्जा कष्त्रा भू-🍽 🗓 🕾 । एक । । अ ।। अन्य पुकातः । নু হীক্টারেণ সংপিষ্ট• মাক্ষিক• তে*-*ন লেপয়েছ। তাগদন্য পুকারেণ তারগ্রপাণি বৃদ্ধিদান্।। পুটে চতুর্দ্ধ-ल भूटि खाद्र । ज्या भुड़ाय (७ । क्षा

🖟 • মারিতস্য ৰূপ্যস্য ওণাঃ । ार भीड क्यागाम बादूशाक हर् अप्रः। वयमः ज्ञाननः त्रिषः ্থেখ বাত পিত্ত জিৎ। পুমেহা: ্ র রেংগাংশ্চ নাশ্যত্যচিরাৎ 🕾 । ইতি ভাবপুকাশ: ॥ 🛊 ॥ ा अभाका । अभाका अप ए अपूर्व करत्या नाकिक जन । का अष्ट खरवरम्ने भागः सूर्वक्रवनः स्नृ ত গাক্ডে ১৮৮ অধ্যাय: ॥ 📆 🎜 मुन्द्रः। इंडि मिहिनी॥ व व कि: भू रेनिक्कः। इंड 🧽 ॥ ৰূপ্য॰ ব্লহ্নত॰ তদেব নিঙ্ক শুরাহ ফিক: রজভাপ্যকো নৈষ্কি-🐗: । हेइक्शिक रेनिक इः ইত্যন্যে ্ৰেক্ত যাখাদি ৰূপণ গঠিতণ রজতণ 🛉 😗 जम्राध्यक्षा निक्रिक देखि ্র্রাং । ইতি ভরত:॥ 🗝 🕦 পু॰ এরওঃ। ইতি শব-

💠 😘 🌣 ব বিষ্কুরণে। ইতি কবি-क अपा ।। नीयों मुर्कात्मा भरा । ध्यक्षिय । इंडि पूर्गादानः ११

পু• বাসকঃ। ইতি জটা-कृष 😘 थ्याः ।। •

क्षिण वि ७७७। इन्यान ।। ব্লিণ্ডওকেনৈব মুক্ষিতে। ওডি বাজনির্ঘণী: ।।

क (करेंदे क्य क्रिम्। विश्व तर्ग कः। ইতি ভরতঃ ॥

ক্ষক ত ক পাৰুষ্যে। ইতি কবি-্ৰসুজনঃ॥ দীৰ্ঘা'। তথা চ। স পু-নাতু ফ্ৰে শৃক্ পোরজ:পাত্র-ক্ষিতৌ। শিশু ক্ছিদ্য যনজৌ নি-ব্লিপেষ ভক্কিভৌ ৷৷ ইভি কীচক यनकः ॥ भाक्ष्य अनिकी जातः। ৰক্ষয়তি ৰক্ষাপ্ৰয়তি কেশ: তৈ-লাভাবাদিভিশেষঃ। ইতি দুর্গা मानः।।

क्क वि वार्भ्या। विहरी । ইত্যমর: ॥

नकः पुः वृकः। ইতি (इमहन्तुः ।। বরকত্ণ । ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ।। क्क गन्नकः भू॰ एगुन्। ইতি রাজ निर्घणेः॥

क्क्रणाञ्चिका जी लक्काशानाः। ইতি রাজনির্ঘট:।।

क्कर्न्डः भू इद्विर्न्छः। ইखि त्राजनिर्घण्टः ॥

ৰক্ষপত্ৰ: পু॰ শাংখাটবৃক্ষ:। ইতি ब्राकनिर्घण्टः॥

ककिन्यः भू॰ अयः । इंडि त्राजनिर्घणः॥

क्कमार्कनः शृ धनुनव्कः। ইতি

Common to Manager a filter meller Common to the Manager ment of the meller

थ जित्रक्या छ त्रक्र शृक्य पः शाली। शानुर्जा शृक्षातिछि नः नगमात्राभगजीजायः । त्रित्र कि। ইতি पूर्गामानः ॥

दिकः शृ॰ मझा ॥ नीहः ॥ विद्रिः हनः। ইতি মেদিনी॥ ভেকः। ইঙি ভিকাতশেষः॥

রেকণঃ ক্লী স্বর্ণ । ইতি সিন্ধান্ত-কৌনুদ্যামুণাদিবৃত্তি:।।

त्रका खी ेमत्म्हः। इंडि ह्मि हन्दुः॥

तिथा की जन्नकः।। हम्।। जालागः।। উল্লেখ:। ইতি বিশ্ব:।। উলেখ স্তুত্র দুঙাকারলিপিবিশে

यः। দাঁড়ী ইতি কদী ইতি চ
ভাষা। যথা। যাবতী যাবতী রেখা
গুহাণা মন্তবর্গকে। তাবতীং বিশু
গিক্তা অন্তাভিঃ পরিশোধ্যেৎ
।। অস্টোপরি ভবেদুেখা অন্তাভ্য

ं इंड विन्तवः। यज तथा म विन्युक ভিৎ এক্স**পরিক** ভিতিশাইকি ভোট ভিতত্ত্ব II 🗱 । भाजीवस्थाया পুভা**প্ত লক্ষণ** পো। লভাটে যস্ত ্^তাল **তিলো** রেখা; মনা ছি তা: ो नुधा **পूधमग**ाग्कः अवष्टिः कीदः इञ नम्रः ॥ **ठषा**निः सह वर्षानि । हेरकः ा वर्णनामजः। विष्ण अयु व्यक् 🛞 च चाक्नां हाः च उारुयः ॥ व्याक्नां-স্তরিতারেখা ভিনুক্ত মুক্ত শতাগুষ্ । मधजा मृष्ट्रि (तथा जू गईताम सि-मृष्डि र्ভर्त्यः ॥ याकायोकाची ह्य-**থাতি বিংশত**,পড়ে রেব হি। চ-चाति नह वर्गान श्रीनात्रशक जी-বতি।। ভিন্নাভিক্তিব রেখাভি রপ मृजू र्नत्रमा हि। विमृतः भरिकाः वानि ननारि यनाः मृनारक॥ श्व शू**ञ मभायूकः** म कीरवट **भ**त्रमः শত। তর্জন্য মধ্যমাঙ্গুল্যা আ-यूर्त्रथा जू मध्यकः ॥ मण्याखा सा ভবেজ্রু স জীবেৎ শরদ: শত 🛭 स्वयानका तुन् । व्यक्षामनुदन रिकास मध्या । अब दिया णागू রেবা অভঃ প । কনিষ্ঠিকাণ স-गानुिं च्यूरद्रश्राः विकास অছিনা বা বিভক্তা বা 🦥 😘 भद्रतः भ**उः। यम्। भा**षिण्यः (वः स्टालिक सामा कर्ने कर्ने कर्ने का अधिक विश्व किया है। ২০১ কাল্য লগাশিত্য নহা ি কুল প্ৰতিপ্ৰতিশ্ৰেষ্ট সংগ্ৰহ ाना प्रशासना ॥ यष्टिः वराज्यः अवस्था । अस्ति । इति । ाक्टर के स्वतागः॥ 🛊॥ 🕫 🔅 १५२। इ. लि. १५ व खिरम् । इ. ম্স্টি 🗃 নাশ 🔯: করভলগ 🛷 🦠 ৰণ্যে সাল্ডিভা ।। যুগমীনা 🦮 🎉 क्राबा भारतय अध्य**पुरता नद्रश**ा हत्। कारक विन्तुः मू माज्युह्निष्ठाः মুৰে য শ্বাডেগৰ শিবিকা গজ भाषात्राविक । अञ्चाक्ष भः তাকাজ দৃশাল ভা নিরীখরে॥ মায়াভাশ্চগজান্যানা স্বস্তিকাভা ন্পেপরে ও জলাসি তোমর খনু: अप्र ६। स्थाउः करत् ॥ उन्थनाः ভ। যান্ত্রচ্যে বেদী**ভা শ্চাণ্রিছো**-বিশি বাধী দেবস্বাভাশ তি-कारा जाम्ह शर्थिक ॥ वाक्रुष्ठेम्-मा अर्थाः भूबाः मृत्राण कात्रि यह । भूपम्भिनीगला खना क निष्टाश्चगारियो।। एउन्यूत्रश्रः छ भएउ । इदया उदाङा **७**ए॰ । नि प्रसाधाः ना निष्या निष् ্শাঃ ।৷ ইতি গাৰুতে ১১ व्यथ्रायः॥

या आवंत १ , नामात्र ।। वक्त विकासिका कु श्रीकासिकास च किर्मान्द्रता^क भूषा गरिए के and the state of t स वस्त्राधिक विश्वास्त्र ट्रांच भक्तांत्रिक व अमा शिक्षः े कि अभा कृष्टि, अष्टर्गिक स्ट्री^० र 化高层中间设置有效。这个人对对数 জুন্দ : পূৰ্ব বিবৈত পাত্ৰ-যত্র কোণাববোধনাৎ । কেত্রেষ্ জায়তে সম্যক্ ব্যুৎপত্তি গণিতে তথা।। শিল্পশান্ত মিদ॰ পোক। বুহ্মণা বিশ্বকর্মণে। পারস্পর্য্য বশা-रम्डमागङ• ध्वनीडस्म ॥ **उ**ष्टृहि-त्र भशाताक करिन शक्तिया भूनः । পুকাশিত মধা সম্যক্ গণকান-ন্দহেতবে॥ 🗱।। অথরেখাগণিত। । অত্র গুল্পে পঞ্চদশাধ্যাযা: मस्डि । অষ্ট্র সপ্তোত্তর চতু:শভ• শকলা-नि मस्ति। তত্ত পুषमाध्याय अर्थ-চত্ত্বারি শहकनानि । उত্তাদৌ প-विভाষ।। यः भमार्थः मर्णन्यागाः विভागानई: न विन्तु वीष्ठाः । यः नमार्थः मीर्घः विखात्रत्रहिजः वि-जागाई: न (त्रथामदवाह्यः। वि-खात रिर्घारमा यं जिन्रा जजना-

রেখাভু

তল দেবক্ষেত্র । তদ্বিবিশ এক क्रनदर्जन विज्ञायः विवनः। जय ্রেখাপি দ্বিবিধা; একা বকা অ-न्। मन्ना। यथं मन्नाद्यः। ज-क्र १ व मा १ व म लाकिछाः मसः अकविन्तुनाहाम् । (उ मा मद्रला व्यनुशा व्यक्तिना । ध-রাওল মপি সম্ বিষম্ঞ জ্রেয় । नमः य वातृताजि।य८ (त्रथा हरः সম সমানাম্বর ন ভব্তি তস্য ুৰম্মিন্ পুদেশেবস্থম্ভর• ভবতি ত দিলে বর্দ্ধিতযোরেখাযোরভর মু-ভরোত্তর মধিক মেব ভবতি যতা ল্লমন্তর ভব্তি তদিশে বর্জিতযো রেখয়ে। রন্তর মুক্তরোত্তরমল্ল মেব ভবতি যাবদুেখা সংযোগ তদন स्वत मस्तर बिर्म्भ् खब्छि। यब কোণ শব্ব: তত্র সরলরেখা কৃত-এব কোণো জ্ঞেয:। যত্র রেখাশব: ভত্র সরলৈব রেখা ভেরেযা। যত্র ভূমিতলশ্ব: তত্ৰ জল সমীকৃত মেব ভূতল জেব । ইতি রেখা গণি তস্য পরিভাষা ॥

রেখাভ্নি: জ্রী লক্ষাসুমেকপর ভযোর্ধ্যস্ত্রগভদেশ: । যথা । যল্লক্ষোজ্জানী পুরোপরি কক ক্রোদি দেশান্স্শন্স্ত্র নেক

गड॰ दूरि निंगिष्ठि। मा भगात्रधा जूरः। जामी भारतम्ब द्याद्व বিষয়ে পশ্চাদ্ধি রেখ্যেদ্্র স্ত্রা-खमार कियां उम्हत्व्य व्यापे-ষুণ ৰ ফল।। ইতি কিছা ছাল। त्त्रामिशः ॥ 🗱 ॥ व्यन्ते हा (त्राल्या हा **मूर्य) जिल्लास्त्र । यथा दिल्लास**्युकः । द्राक्षनावय (मर्वोक: विवाद क्रि ধ্যসূত্রগাঃ। রৌহিতক মক্টি চ 🕬 **मन्निश्चि॰ শतः॥ यम**्राः । 🕬 সুনেকপর্বতয়ে র্ম্প্রা 🕖 🐠 রেখা সংক্রিতা:। তান্ চেশ্বাসকর রৌহিতকদেশো হবভীদেশ 🐠 **इंड॰ जुद्रः अक्ष्म्ब्यः १**८३ 👫 थायाः भूर्वरम् भ अत्रम् 🎮 🗀 🤻 👌 अ·थार मृर्याप्रस्य कालां< कार्राङ्खः পূর্বকালঞ্চ বারপুবৃত্তি: अञ्जिल র্থ:। এতেনৈতদুক্তণ ভব 🤨 🔫 🔻 সংজ্ঞক দেশস্থাকা খ্দা ভূষ্ট পশ্যন্তি তদৈব সর্বদেশে আরপ্র ত্তি রিভ্যর্থ:। তত্র রেখা প্র[্]্ निम्बिज्यानामी नूर्या ११ १५ हि **उन्नस्वकः (द्रथाञ्चाः । च**्का (द्रश्रा भूर्त्व मूर्य्यापयाट भन्न वानः। उद्या (त्रथारेञ्च: मूर्या) मृष्टे मिक श[े]ष्टारः রেখাপরছাঃ পশ্যন্তি অন্তোরেখা शत्रादरण मूर्यप्रादयाद कूर्व दाव

ইত্যর্থ: ৷ তত্র কাল পরিমাণ মাহ ারেখাতো যাবন্তি দেশান্তরযোজ-নান ভংস্থাতাতি বিবটাতিঃ भोतः भाषशीनाजिः हजूर्यजान श्रीनाकि वाद्र भुवृत्तिः महा दि छ। यं: 🔻 । দেশান্তরসাধনপুকারস্ত স্গ্র-পিছাতে উক্তঃ। অত্র তু সংক্ষেপে ণ কিকিৎ কথ্যতে। গৌডে পঞ্চদ भाषिक भाउरयाङनानि ३२৫। प ক্ষিণরাঢ়ে গঙ্গাভীরে দশ। বিক শ ্ত সে॰। ভৈৰ্বীতীয়ে বিংশতঃ विकणाउ॰ १२०। वत्य भ्यश्रातीः দৌ চত্ত্বারি শদনিকশত। ১৪০ । বারাণস্যামষ্টোত্তরশত• ১০৮ (দ-শান্তর ৷ এব মন্য্রাগ্যুহ্ণ । তম-ভম্ভ লোকমণগৃহীত মিভি কিম্ভ **স্**र्गः निष्याः । अर्थाता जात्व वादः পুবৃত্তি ক্তা। হথা। বারপুবৃত্তি: পাগ্নেশে ফুপার্জে ২ত্যবিকে ভ বেৎ ৷ তদ্বেশান্তরনাড়ীভিঃ প-काम्राव विनिर्मिष्य ॥ इंडि मी-निकाहीकायानव्यंकोमून्। ला विनहाननहः ॥

রেচক ল্লী কন্ধুইমৃত্তিকা। ইতি রাজনির্ঘণ্ট:॥

রেচকঃ পু• যবক্ষার:। ইভি ভিকাণ্ডশেব:।। জয়পালতৃক্ষ:।। তিলকবৃক্ষ: । ইতি রাজনির্ঘণী: ।।
কীডার্থজল সিক্ষেপ্য সং । পিচ্
কারী ইতি ভাষা । এখা । সিক্ষে
মানো হচ্চত স্থাতি মাইনিটিঃ
মারেচকৈ । প্রতিনিধন বিভিন্ন
ডে যক্ষী নিজ্ঞানীতি । ইতি
শ্রিভাগবত ।।

(त्रहन॰ क्री मनाज्यन । उৎ शर्या । ४-। शुक्र न्त्रन २ विद्रकः ७ विद्र-हन ९। इंजि द्रञ्जनाना ॥ (त्रकः ६ (त्रहन ७। इंजि नक्त द्रञ्जन ।।

(इहनकः भू॰ कस्भिल्नकः। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥

রেচনা জ্রী কাম্পিলঃ। ইতি শক্ রত্নাবলী॥

রেচনী জ্রী কাম্পিল:।ইতি শক্-ররাবলী।।কালাঞ্জনী।। দন্তীবৃক্ষঃ ।ইতি রাজনির্ঘট:।। শ্বেতত্ত্রিবৃতা।। ইতি মেদিনী।।

রেচী স্ত্রী কম্পিল্লকঃ।। অক্ষোঠঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।।

রেজ খড় দীপ্টো।ইতি কবিকল্প-জনঃ।। শ অরিরেজৎ । ড রেজতে রিরেজে। ইতি দুর্গাদাসঃ ।।

রেট ঋ ঞ যাচে ॥ বাচি । ইতি কবিকল্লজন: । ঋ অরিরেটৎ । ঞ রেটভি রেটভে । যাচে। যাচন । इंडि मूर्गामानः ॥

ানঃ শংজী েল ইত্যমর:॥ ্রেণ্ট পুশ বছাগে ৪ রেণ্কা।। भा भू । ई । या विकेश রেণ্ডা জা এরিড়াল্ডি **চুগদ্বিদ্**ব্য-विष्णाः । उदश्यायः । विका २ হল দুৱা কৌন্তী ৪ কলি**লা ৫ ভদ্ম-**निक्तिने ७। ३७, भद्रः ॥ कास्रा १ निम्नी ৮ महिला २ রাজপুর্রী ১० हिमा ३३ (त्रनू: ४२ भाष्ट्रभञी ३० হরেণুকা ১৪ সুপণী ১৫ লিশিরা १५ माञा ११ वृष्ठा १४ वृहिर भूख-কে বৃত্ত। ইতি চ পাঠঃ। ধর্মিণী ১৯ किंशिलामा २० रेहमवडी २७ भा **७** भन्नी २२। **चम**ा खनाः। कर्तृद्यः। भी उद्गः। थर्जू कर्थु उ ज्या माइ বিষ্যা শত্রণ। মুখীব্যুল্যকারিত্ব-প্রু । ইতি রাজনির্ঘটঃ ॥ অপিচ। व्या तत्का सर्वो जनम्मी । त्रमुका बाक्षभुधी ह निस्नी किशा विज्ञा । ভষাগন্ধা পাওপুত্রী ষ্তাকৌদ্বী ছরেণুকা ॥ রেণুকা কটুকা পাকে जिकान्का कर्षे व्याः। शिखना भीनना (नश्रा भावनी गर्खभाछ-নী ॥ বলাস বাত বৈল্লব্য ভূট্ क्ख विष माश्नूट। इंडि जावन कामाः॥ व्यन्ताह । (त्रुका कक वा ॥

उम्मी मीभनी भिल्ला नवा इंडि রাজবল্পভঃ।। 🗱।। 🖘 শর্ম সক্ষেত্র । उद्विवद्रभः यथा । भाग्ने 🖼 🤊 भार । অথ্কালে ব্য 🕽 🔭 🕞 🙉 🕾 **র্মহাভপা: । বি**দার্জ এইবং লুক্ত গ পুষরেন জিতা• ছৌল 🕟 ভাষালেছ প্তিজগুছে রেণুতা সালগাড়িক । ना उमार मुर्ह अलाह हिएसा বেদসমতান্ ॥ বাবাবা ব্যৱস্থ বিশ্বণ বিশ্বাবসূণ তাল 💛 🔞 📆 च्या काउड जगरान 🗀 १००० म कार्खवीयं।वद्यायाम् 💎 🤭 रेनः जूरेतः। या 🗇 🤊 🕬 🕬 **২ভূত্তেয়া• রামা** জ্ঞান । চ त्राव जात्रगार्थाय स्रोतः शिवण्यं नाह । अरुकः शत्रभू समा 🕫 कार्यान कराइ न।। व्यरं 🚶 🧖 🐬 🛷 📆 শ্চকভুক্তিবিপর্য্য 💎 🏸 🐃 🐃 প্রিধাচারো রানে প্রত কুর্জন ৰ্মাকৃৎ ।। স বেদাৰগিত ন্ জ্ঞান্ত্ৰ थ्नूर्वना क नहं हर । कलाखार कृ ক্লাভাগ প্ভূলেন বৈল্লবিশালাদঃ ্ভৰত লাগ্ৰহণ সুৰাৰ্থ প্লে-গুলা গাড়া । গজাগাল পালা পালা শ্যুমানা চিত্ররথা কেন্দ্র ও জন্যা ভি: সদৃশীভিশ্চ ান্দ্রীডারজ मूड । अभावितः 👉 अक् उत्रा ः नर्भिष्ठ ॥ তথাবিধ নৃপ ्क्षे म जाउमरना ज्म । तिपूका भृह्यानाम **उत्म त्रा**ड्ड ह रेमथ्न• ा म्पृङ्गयुजाया खनाउ न त्वसः সমজায়ত। বিচেতনা তথা ক্লিমা ত্ৰন্তা সা স্থাশুন- যথৌ ॥ অবোধি জ मृहार् छा॰ (तर्गुका॰ विक् छा॰ छथा। षिक् षिक् भाभद्र**ः अ**७७ निनिन्त इ मनवुकः ॥ ठकः चक्रनयान् शृश्हः **ठजूतः পुथम** सूनिः । क्यपृ**्भु**म्-थान् मुद्रीन् अरेककः क्रमाला विज्ञा ছিন্ধ্যেনাং পাপনিরভাং রেণুকাং ব্যভিচারিণ্: ! তে ভরচো নৈব চক্র মুদ। শহাসন্ হড। ইব ।। স্কলিতো ভানদল্লি জ্বান্ শাসাপোতি বিচেতনা-न्। जनवु ग्या न विद्या ह का त्या-বিদিগহিতা:।। অথাজগান চরনো कामन्द्यप्राजिबीर्यप्रवान्। उक्ष द्राम॰ পিতা পাছ পাপিষ্ঠাণ ছিন্ধি নাতরণ য় স ভ্রাকু:শ্চ **ডথা** ভ্তান্ দৃষ্টা জ্ঞান বিবজ্ঞিতান্। পিত্রা শপ্তান্মহ।-তেলাঃ পূস্ পরশ্নাছিন ।। রা-মেণ রেণুকা ছিলা দুষ্টা সাক্ষা सत्ता २ छवट । जनहिः भुजनः ज নিতি রাম মুবাচ হ।। প্রীভোষি পুত্র ভদু তে যত্ত্বা মঘচঃ কৃত । ञ्यापिष्ठवद्रान् कागान् पुः देव वद्रय

जान्त्रुं ।। ज जू ज्ञासा वज्ञान् वर्षु মাতু ৰুখান মাদিতঃ। বধ্দ্যাম-রণ তস্যা ভাতৃণা শাপমোচন ॥ भाष्ट्रजा वाशनय गुष्क मर्ब देव अय । आयुः कन्ना उभर्ग् । उन्ना कमारिष न्नज्ञ ॥ जर्मन् वद्गान् ज भूपरहो জনদশ্নি মহাতপা:। সুপ্তোত্থিতেব জননী রেণুকাপ্যভবত্তদা ॥ বধ॰ ন চাপি সমার সহজপুক্তি তথা । युष्त कष् विद्रायूष्ट्रे (लाज द्राम रुदेवव हि ॥ माठ्हजाताराभाषाय शिका ज॰ वाका मयुवी**ट । न शू**ध বরদানেন মাতৃহত্যাপগছতি ॥ जमातुः वुक्तस्थाय गह माजूक ज-ब्हाल। তত্র স্থানা মুক্তপাপো न हिदा भून (द्रय) जि ॥ जगिष्ठि उ।य পুত্ৰ বৃণ বুন্ধকণ্ড বুজ কড় । স তস্য वजनः भुन्ना जागः भजभूष्क् उपा ॥ উপদে**শাৎ পিতু** यां**তा नुमान** ७• व्रामानकः । उब मानः न विधिवए कृदा (धोजभत्रथशः ॥ भतीत्रामिः-मृ गा॰ भग्रक् माठ्र छ। । व। । वाक-य । जा उन : भु उ। यः (माथ जीर्थ गामान्। जः वतः॥ वीथिः भत्रम्ना क्षा वुक्तभू भवाश्य । वुक्तकः গুৎ সতঃ সো ২থ কাসারে লো. হিতাল্বথে ॥ কৈলাসোপত্যকাশা-

जरभ छोत्र भग् थाय बहादणः ॥ क्ठे (रवप विका भूकी मनयबुक्षणः সুত: 🖟 জ ে 🕈 শব্রালি গিরিণ হেন্দ্ৰ বিভিন্ন কামৰূপা-**खन ं हे भवतिय**्तु **रुतिः ।** ला , राम विदिक्ताः वा**ः लाहि**--भक्त ॥ व्योक्छित मद्रामा জাতো লৌহিত্যাথ্য স্ততো ২ভ-वट । म कामक्रम मधिन भीठे भाक्षावा वाद्रिण॥ (गाभवन् मर्बः ভীর্থানি দক্ষিণ যাতি সাগর । পুাগেব দিব্যযমুনাং সংভ্যক্তা ধুমা-ণঃ সূতঃ।। পুনঃ পত্তি জৌহিত্যে गज्या द्वारम याजन । रेट्य मानि **मिठाश्चेम्याः (या नद्या नियः अन्ति-**यः ॥ সাভি লৌহিভ্যতোষেযু স याञ्चि वुक्तनः भरः। हिज्य मकः **नः नामः जुिः भु**यख्यानमः ॥ লৌহিত্যভোষে য়: মুাতি স কৈ বল্য মবাপুষাৎ। ইতি তে क थिउ । রাজন্ यहर्थ । या उत भूता।। रु छि वी द्वां जा नहता । यथा ह। कृतः कर्माकृष् । इन्छ सङ्गाथान यः मृत्वां कित दिल ।। म भीषां गूः পুমুদিতো ধনবানভিজাযতে। ইতি कानिकाभुत्राति ৮ ६ व्यव्यायः॥

(देश स्त नाम उपुत्रानः गुडः। उन्नामि ॥ (त्रग्रान्तः । हि (इंग्रज्याः) রেণুক্তি ে কু কর্মজঃ টেইডি বিক্রেশিক মধুনি এই ডে ভি ম রেণুবালঃ পুণ ভুলসনা ইবি জি 1. 作物的 तिनुमारः स् मण्डा ३५५ छ। **香**科 製造 45。 社 तिगुमारकः ए कल्प्सा है उ ण्युद्धाः द्वी । तिकः ११ मुख्यः । १९४४ । १००० । GT FF TON METER POR STOR P 18 7 2 20 10 10 11 11 15 24 **夏**公子所以"展"的"一"即即"第2年"的 COLLAPS OF FIRE OF 30 mg (30 mg

दारक है। विकास के विक्र €

রেই চ To the

রেজ্য টু লিড়া ১৯৩০ৰটা - The man have

রেল শী রাজ প্রিট্য প্রাট वामः अवस्थाः । स्वर्तिनी । तिस के में भिन्दी लिए हैं दि कविवत्त्वात्रमः॥ ७ विषयः विषयः

থা তারিরেপৎ। ইতি দুর্গাদাস: ।। রেলঃ ত্রি নিন্দিত: ।। ক্রঃ ॥ কৃ-পণ:। ইতি মেদিনী ॥

(त्रकः शृ॰ त्रवर्गः॥ त्रागः। ইতি भक्त ज्ञावनी॥

तिकः वि अश्मिकः। ইত্যমরः॥ तिकः वि कृतः॥ अथनः॥ पृष्ठेः ॥ कृপः। ইতি শদরভাবলী॥

রেভ ত খা শব্দে। ইভি কবিকল্প-জাঃ ॥ ড রেভতে রিরেভে। খা অরিরেভং। ইভিদুর্গাদাসঃ॥

রেভণ জী গ্ৰাণ্যুনিঃ। ই**ভি ত্রি** কাওশেয়ঃ॥

রেরিহাণঃ পু॰ শিবঃ । অস্রঃ । ইভিনেনিনা চৌরঃ । ইভি**শব**-রত্বাবলী ॥

রেব খাড় প্রভৌ । বুরে । ইতি
কবিকর্জন: ।। প্ল তিঃ প্লবেন গনন• । খা অরিরেবৎ । ড রেবতে কপিঃ উৎপ্লভ্য গছভীভ্যর্থ: । ইতি
দুর্গাদাস: ।।

রেবট লী দক্ষিণাবর্ত্তশন্ত্র:। ইও্য-ভন্পাল:॥

রেবট: পূ॰ শ্রুর:।। বেণু:।। বা-ত্ল:।। বিববৈদ্য:। ইত্যন্ত্রয়-

রেবতঃ পু॰ জয়ীরঃ। ইতি জটা-

ধর: ।। আরশ্ধবৃক্ষ: ৷ ইতি শব্দ-রত্নাবলী ৷৷ রাজবিশেষ: ৷ স জু রেবভীপিতা বলরামখণুর্শ্চ ৷ ইতি মহাভারত ৷৷

রেবতক শ্লী পারেবত । ইভি রাজনির্ঘটঃ॥

রেবতি: জ্রী কাম্দেবপত্নী। ইভি ত্রিকাণ্ডশেষ:॥

द्रिवणी जी वलाह्यभन्नी।। नक्ष्य ভেদঃ ॥ মাতৃকাভেদঃ । ইতি মে-দিনী !৷ জ্রীগবী। ইভ্যঙ্কষ্পালঃ ।। मूर्गा। यथा। स्निवा जू नर्याना स्वी নদী বা রেবতী মন্তা। অভিখণ্ডন वक्षा वा लाक प्रवी भुकीर्खिंजा ॥ ইতি দেবীপুরাণে ৪৫ অধ্যাयः ॥ # ॥ রেবতীনক্ষত্রন্ত অখিন্যাদি-সপ্তবি শতিনক্ষ ত্রান্তর্গতশেষনক্ষ-ত্র•। তস্য ৰূপ• নৎস্যাকৃতি দ্বা-ত্রি-শত্তারাত্মক । তদ্যাবিধাত্-(रवंडा भूषाथाः मूर्याः। यथा । দন্তসংখ্যভবনে ঝলাকৃতাবন্তভে नमन्बस्मधारा । कामनास्रि मिथुतारयाट शिए काव भानव कनाः शिर्य १०जन्।। इंजि दा नि-দাসকৃত রাতিলম্নিক্পণ ॥ 🕸 ॥ তত্ৰ জাতফল যথা ৷ চাফ্লীল विভবে। क्रिटिन्तियः मध्यनः यः ভবনৈক মানস:। মানবো नन् ভবে-শ্মহীপ তী রেবতী ভবতি যস্য জন্ম-ভ ।। ইতি কোষীপুদীপ:।। 🟶 ॥ वालगृहिव (भव: 1 उड्डिहेम) हि-किट्ना यथा। वयंगद्वाजम्की ह भातिवाथ भूननेवा । महा विनाती হেতাসা জ্বাথেন পরিষেচন ৷৷ অ জশৃন্ধী মেঢাশৃন্ধী। সহ। সেবতী পুল্ল জাতি: ৷৷ তৈলম ভ্যঞ্জনে কার্য্য व्राप्त नर्जातस्य उथा। शनक्ष्यागाः नवार उथा भीतकरम्यक ॥ मर्जः त्रमः त्रामः। भणक्षया ख्युनुः। नणमः वामञ्जूक मृमीतवट भीज-ছবি। গৌরকদমতো হারিদুক:। হরদুআ নদম ইতি লোকে ৷৷ ধ্বাখ-কণ কলভ শল্পকী ভিন্দুকেবু চাকা कान्याको भव हालि निष्य मूर्लिः निर्विष्ट्रभुः॥ यथकर्षः नाः यू इंडि लाक । त्रवाशाः मञ्जूष्य भूपरः অখেদক্ষিক: ॥ গৃত্যুত্ক পুরীব।-शि यवान् यवकाला घृष्ठ । अका-(या क् इरया: कार्य) मिजनूष्म्भनः नित्नाः ॥ यवक्ता वःनाङ्ग्रः ॥ युकाः नूननत्र। लाजाः शयः भाः व्यापनः पवि । दवि निर्दरम् । ११ ভীর্থে রেবজ্যৈ পুষস্তাত্মনা।। গো-छीर्थ लार्छ। सन्भ श्वी स्वाप्ता-

ভ্যাণ সঙ্গমে কার্যেভিষক্॥ নানা भाजभागा (मधी विजयान्। मुल्लाभागाः। **ठन** अर्थनिनी भागमा (ब्रेवजी (ज পুসীদতু॥ উপাসতে যা• সভত• দেব্যো বিবিবভূষণাঃ ৷ লম্বা করা**লাঃ** বিনতা তথৈব বহুপুত্রিকা ৷৷ রেবতী শৃহনাসাচ ভ্ভাও দেবী পুর্শীদভু 🖟 ইতি ভাবপুকাশ:।। 🛠 🛭 বলদেব-পর্যাবিবরণ যথা। রেবস্য রৈব-**७: गुञ: कन्नपामान शा**यिक: । (मुक्तः लुधन उम्यामी उम्या शर्यप्रा॰ नृत्था २ छ व ८ । म कन्या महिछः <u> श्रायाद्वियत्वा दुक्ताः। २ छिकः ॥ न</u> জয়া ক্ৎ পিপাসা বান্ন্তু তব কৰিচিৎ। ঋতুচক্ৰঞ্চ ভবতি বুদ্ধ-লোকে দ্বিজোভনাঃ ॥ রৈবভদ্য गउम्याथ मा भूती ब्राक्षरेम ङ्ठा । তস্য পুত্র শতং যह ত্যক্ত্বা তা নগ-ম দিশে: ॥ তস্য বংশে তু যে ভত্ত बर्गाठा इंडि विनुजाः । क्रधिया श ज्वन् विश्वा निक् नवीत्र् शर्मिः কা: ৷৷ গতে বহুযুগে কালে আজ-गीमाथ दिव जः। मृहू ई (नकः मञ्जा-(नो मनमं यामरेत वृंजाः॥ कृजाः দারবভী নাম বহুদারা মনোরমা । (जान नृष्ण)क्षरेक खंखाः वामुद्दिय भूरत्वार्गत्यः ॥ शङ्घा जू देवव उः भग

युवा अपूर्ण (इवजी॰ । श्राप्तापुक्ज .द्वा॰ जान्न वनाम (वा क्लन वि ॥ न-माना॰ लगु जा॰ नीषा छेवार म शुरु র্যতঃ । দত্তা জগাম শিথর পদেরো खनि देववुडः ॥ द्वरम द्वारमानि ধর্মাত্রা রেবত্যা সন্থিতঃ স্থী 1 ুই 🕒 रङ्गि भंतान ॥ 🗱 ॥ देवयङ ম্নুমাতা। ভৱিবরণ যথা। মার্ক (७१ डेवाड। शक्रावाविश मनु वु का ন্রৈ বভা নাম কিংক । তদ্যোৎ পত্তি বিভাগে 🕬 🕬 ানিতে॥ ুশ্য রাস্থাত হাত ৠ ত্রাগিতি विमुज्या जम्मान्य मा भूत्या २ हूट ুরেন্ড্রডে নহাত্মনঃ 🖯 স তস্য বি ৰিবছকে জাতকআদিকা: ক্রিযা: । **उ**रथाश्वनयवामी • * ह **म**5ामी(जा . ভবন্মনে ॥ যতঃ পুভ্তি জাতো ्रामी उउ: পূज्जिमा शृश्यः। मीर्य ুরোগপরামশ মবাপ মুনিপৃজ্বঃ॥ ্বিমাতা চাদ্য পরা মার্ভি• ক্ষপ্রেরাগা-দি পীভিতা। জগাম স পিতাচাস্য িভয়ানাস দংখিত: ॥ কিনেতদি-তি দো ২গ্যস্য পুলো ২ভ্যম্ভনুদ্ चं डि:। जगुर ভाग्रा नन्तरा मूनि शूधना बनत्यः ॥ ততো विवासा सनना या उदानिक गुक्क वान्। जानु-ध्या नन्यापाः भ्याम न क्रमू- ञ्जा।। अभुष्या क्रयायाम॰ नर्बना অৰুতে পিতৃ:। মাতৃশ্চ স্বৰ্গ সংস্থাং শ্চ স্বপিতৃন্ পাত্যত্যথঃ ॥ সূজ্না• নোপকারায় পিতৃণা নাপি তৃথ্যে । পিত্রো দু :থায় ধিক্ জন্ম ভস্য চু-স্কৃতকর্মণঃ।। ধন্যা তে তন্যা যেষা• সর্বলোকাভিসন্মতা: । পরোপ-কারিণ: শাস্তা: সাধুকর্মণ্যনু বুতা: ॥ অনিবৃত্তি তথা মুর্থ পরলোক প-রাত্মখণা নরকায় ন সন্ধতিও জপু-धानिधि रचानः ॥ करताि जुक्माः দৈন্য **সহিতানা** তথা মুদ**া** অ-কালে চ জরাণ পিত্রো: স্পুণ্র: স্ব-क्ट हि रेव ॥ मार्क एउप डेवाह । এবং সো ২ত্যন্ত দৃষ্টন্য প্রাস্য চব্নি-रिङ मू निः। षर्यभानमस्मा रृखि वृ क्ष• গৰ্গ নপ্ছত।। ঋণিক্ৰাচ। সুবুতেন পুর: বেদা পৃহীতা বিধিবন্মশা। স-भाभा (वहान् विधिद् कृष्ठा मात्र-পরিগৃহঃ ॥ সদারেণ যথা কার্য্যঃ শৌতাঃ মার্ভা স্থথা ক্রিয়াঃ । নানু-ৰুনো: কৃতা: কাশ্চিত্মাবদদ্য মহা-मूर्त ॥ गर्डाशान विशासन न काम মনুক্ধ্যতা। পুলার্থ জনিত কান্ श्रुवाद्मा विच्छा गूरन ॥ त्मा २व॰ কিমাত্মদোষেণ মম দোষেণ বা মু-त्। व्ययमू: थवरहा काला (मीः भीन। विद्यालया करः ॥ गर्ग छेवा । রেবত্যন্তে মুনিশুেৡ জাতো ২য• তন य खर। (उन मू:थाय उठ काला मूर्छ যুমাদকাবত।। ন তে ২পচারো নৈ-বাস্য নাতু নাপি সলস্য তে। তন্য দৌঃশীল্যহেতুত্ব রেবভ্যন্ত নুপা গত।। খতবাগুবাচ। যমান্যমৈক-পুগ্রস্য রেবত্যস্তসমুক্তব । দৌঃ শীল্য মেতৎ সা ত্যাৎ পত্তা মাশুরেবতী।।মার্কণ্ডেয উবাচ।তে নৈব ব্যাহ্নতে শাপে রেবভূগকণ পপাত হা পশ্যতঃ সর্বোকস্য বিন্দ্রাবিষ্টচেত্র: ॥ রেবত্যক্ত পভিত अगूराएो সমন্তः। ভাস यानान जङ्गा वनकन्एत निर्वातान् ।। ল্মুদান্ত্রিষ্ট ডৎপাতাৎ খ্যাতো রৈবভকো হভব্ । অভীবরন্যঃ नर्जनाः भृषिवताः भृषिवीषवः ॥ তন্যক্ষস্য ভূণা কান্তি জান্তা পঞ্জি भी सह । उटा बट्डा उना कन्या क পেণা ঠীবশোভনা ॥ রেবতী কান্তি ল'ভূতা ভা দৃষ্টা পুন্তো নুনি:। তন্যা নাম চকারেত্রণ রেবতীতি हि जाख्य ॥ लावगामाम हिदैव-না॰ বাশুমাভ্যাস সম্ভবা॰। পুমুচঃ भ गर्मा अधिया व गर्मा विश्व ॥ তा उ योवनिनी म्ह्रा कन्यका क्रमः ।

भाविनी । म मूनि भिष्यामाम (कीः ২স্যা ভত্তা ভবেদিতি॥ এব॰ চিন্ত-যতঃ কালো জগান সুমহাজানঃ। ন চাসসাদ সদৃশা ব্রা তস্যা ন্থা-নুনিঃ।। তত ভদ্যা বরং পুটু নিরি স পুষ্চো মুনিঃ। বিবেশ বহিশা-ला॰ रेन शृष्टे ख॰ श्राह इवाकृक !! गहावत्वा महावीर्यः लियदाक् थ-र्यदर्मनः। पूर्यस्या नाम ভविতा ভর্জ হাস্যা মহীপতিঃ ৷৷ মার্কণ্ডেয উবাচ। অনভরঞ্ মৃগ্যাপুসংস্-নাগতো মুনে। তস্যাজ্বগদ ধীমা-न मूर्जनः ज नता थिशः ॥ श्रियत् छ।-न्यज्ञा बहावलभनाक्यः भू-(धा दिकग्मीनम् कानिन्हीं कठे-রোক্তব: ॥ স পুরিশ্যাশুমপদ তা॰ তদ্বী॰ জগভীপতিঃ। অ**পশ্য**-মান স্বয়বি প্রিয়েত্যামন্ত্র্য পৃষ্ট-বান্।। রাজোবাচ। কু গতো ভগবা-नमाराभुभाग्युनिश्क्रवः । ७ शुरा-ত্ নিহেছানি তব্বু পুরুহি শোভনে ॥ মার্কণ্ডেয় উবাচ। অগ্নিশালা• গতো বিপু স্তৎ শুত্রা ভস্য ভাষিত• ৷ প্রিযেভ্যামজ্রণঞ্চৈর নিশ্চক্রাম ত্ব-ब्राह्मिङः॥ म एएम् गङ्खानः बा-कान पूर्णग गृनिः । नित्तन्तुिङ् महिज भूग्यावनजः भूतः॥ जिलान् দৃষ্টে ততঃ শিষ্য নুবাচ সতু গোত-न । গোতমানীय তা भीवु मर्छ। হৃদ্য জগতা পতে:।। এব তাবদ্য ভুপ কিরকালাদুপাগতঃ। জামাতা চ বিশেষেণ থোগ্যোর্ঘো ২স্য মতং মম।। শ্রীমার্কণ্ডেষ উবাচ। ততঃ স চিভগ্লাস রাজা জামাতৃ কারণ। वित्वर नह जामोनी कग्रह र्घक उ नृशः ॥ ज्यामनगजः विभु गृशीजा য । নহানুনিঃ। পুস্ত পাহ রাজে ন্দু মপি তে জশল পুরে ।। কোষে শর। তথা সুনি মহাবাহো যত্র সর্বণ পুতিষ্ঠিত ॥ পত্নী চ তে স্বশলিনী यञ्जवाज जिहेि। भृहानात्रा ख তো নাহ' হশেলিন্যে १পরা স্তব।। वारकावाछ। वृष्णुमानाक लमन न ত্বচিন্মনি সক্তম। জাতকৌত্হলকা-স্মি মম ভার্য্যাত্র কা মূনে ॥ श्रविक-বাচ ৷ রেবঙী ত মহাভাগা তৈলো (क) माणि मुन्हिती । उव ভार्यता वद्राद्राहा मानत्वन्तु न त्व कि ।। রাজোবাচ। সূভদ্যু॰ শান্ত তন্যা॰ কাবেরীজনযা বিভো। শ্রাত্মজা সুজাতাঞ্চ কদম্বাঞ্চ বৰূথজা ।। বি-शाठाः नन्तिनीरेक्षव (विध्य ভार्य)। शृ হে হি যাঃ। ডিৡস্তি মে ন ভগবন্

রেবতী• বেদ্মি কা ত্বিয়•॥ ঋবি কবা-চ। প্রিয়েতি সাম্পুত যেয় ব্বয়েক্তা বরবর্ণনী। কি॰ বিষ্যৃত তে ভূপাল স্পাধ্যেয় গৃহিণী তব।। রাজোবাচ। সত্যমূক্ত মথা কিন্ত ভাবো দুষ্টো ন মে মূনে। নাত্র কোপণ ভবান্ কর্ত্তু মৃহত্যমাসু যাচিত:।। ঋবিক্বাচ। সভ্যা বুবীষি ভূপাল ন ভাব তাব দু-বিতঃ। ব্যাজহার ভবানেব॰ বহিনা नृপ (नाहिन्छः ॥ नया भृष्टि। छ उवहः কোস্যা ভর্ত্তেভি পার্থিব। ভবিতা তেৰ চাপুঃক্তো ভবানেবাদ্য চাগ-७: ।। ७५७१ छ छ। भया पछ। कन्।-ত্ভ্য নরাধিপ। প্রিযেত্যানব্রিতা চেষ বিচার ছক্ষে কথ।। 🗐 মাকণ্ডেয উবাচ। তত্ত চ সো হভব-মৌনী ভেনোক্তঃ পৃথিবীপতিঃ। প্ৰবি ত্তথোদ্যত: কৰ্ভু• ভদ্যা বৈবা-হিক বিধি।। সমুদ্য ভঞ্প পিতর বিবাহায মহামুনে। উবাচ কন্যাস। किथिए भुणुयावनजानना ॥ यमि स পুীতি মাণ স্তাত পুসাদণ করু মিছসি । ব্লেবভূয়ক্ষে বিবাহণ নে তৎ করে।ভূ পুসাদিত:।। ঋষিক্বাচ। ক্লেবত্য-कः न रेव छानु हन्तुरयारम निवि ছि-**७। जन्यानि महि क्षका**णि मूक्क रेव-বাহিকানি তে ।। কন্যোবাচ। তাত

তেন বিনা কালো বিকলঃ পুতিভা-তি নে । বিবাছে। বিকলে কালে ম षियायाः कथः ভবে ॥ अधिकवाह । খাতবাগিতি বিখ্যাত গুপস্বী রে-বতী পুতি। চকার কোপ কোথেন তেনক্ষণ ভন্নিপাভিতণা৷ ম্যা চামৈ পুতিজ্ঞাতা ভার্য্যেতি মদিরেক্ষণে। नह्हिम विवादः पुः मःकरेः नः मः नागउ ।। कत्नावाह । अञ्चाक् न মুনি স্তাত কিং মে ক স্তপ্তবাং স্তপঃ। न प्या ममञा (छन तुक्तविकाः मू-তামি কি ।। খবিকবাচ। বুক্ষবকোঃ जुञा न वुः वार्ल निवाज्यस्निः। मुजा व॰ मम रया रिवान् कर्जु मन्त्रान् সমূৎ महर ॥ करन्यावात । उभन्नी যদি মে তাত স্তৎ কিমৃক্ষ মিদ॰ দিবি ! সনারোপ্য বিবা**হে। মে না**-ত্রক্ষে ক্রিবতে পিতঃ ॥ ঋষিক্বাচ। এবং ভবতু ভদুং তে ভদুে প্রতিমতী ভব। আরোপযামीनमूबार्गः রেবভূ ক্ষ• কৃতে তব॥ औমার্কণ্ডেষ উবাচ । তত তথা: পুভাবেন রেবত্যক্ষণ भश्गमृतिः। यथा भूर्बः ख्या हत्क সোন যোগে দ্বিজোত্তম:।। বিবাহ-ধ্ণৈব দুহিতু বিধিবন্ম স্রধোগজ । निम्नाम् श्रीजिमान् ज्या बामाजद्र-अथाव्वी ।। अयिकवाह। छेवाहि-

कः (१८ कृताम क्याङाः किः नम्। मुक्तः। मृज्ञः। यशि मानतिव् स भाग अभाग क्षा । ब्रह्माद्राष्ट्र । बर्गः न।वासुनग्राष्ट्र शृद्रकः लस-क्षित्रात्। माह्या दशः भूवः मूट **भ**ार के संभाग के कि मुस्लिक का कि **छ**िस्थान)यात्रा संदेशसः यसु खेन्छ-निया निर्दित्। अकलाः (अक्कार्ड ভূমি•ধর্মবিচ্ন ভবিষ্যতি ৷৷ ঞ্রীমার্ক-প্তেয উবাচ। তামাদায ততো ভূপ স্তদৈব নগর॰ যথৌ। তস্যাঞ্চাল-য**ভ সুভো রেবভ্যা•** রৈবভো মনুঃ ।। मरमञः मकरेल धं रैम्स मानरेव ब्र-পরাজিতঃ। বিজ্ঞাতা থিল শাস্ত্রা-त्था (वर विष्ठार्थ भाजविद् ॥ हे**ि मार्क(७४भूद्रा**ग देवजनन-खद्र॰ मगारुः ॥

রেবভীভব: পু॰ শনৈশ্চর:। ইক্তি হেমচন্দ্র:॥

(রবতীরমন: পু॰ বলদেব:। ইভ্য-মর:॥

রেবতীশঃ পু॰ বলরামঃ। ইতি হেমচন্দু:।।

রেবন্তঃ পু॰ স্ব্যপুত্রবিশেষ:। স চ গুহ্মকাধিপতি:। তম্যোৎপত্তি ব্রথা। ততো ২নৌ যোগ মাস্থায স্থাণ ভার্য্যাণ বড্রবাণ রবি:। দদর্শ विषय्या सा संचवन संवादताए । रेनपुन (यानहकान म्यांतामो ह क्रमान्**डः । स्ट्डी (७म न**प्राया) अवभुरमा**ভिल**ङ्गा ॥ सःगुरुष जः मुधी (इ.ज. मध नामिक्या इत्तः १ (स्ट्वी य हा शुक्रांत्य हा मस्ट्रिनी ह-প্রভাগরে ।। নাঁসত্ত্রীদ্বো ত্তীযুক্ত রেবন্ডো ২খপুবাহক:। ইতি বহি:-পুরাণ ॥ 🕸 ॥ অপিচ। ততো ২খ-क्रिश्क् जानू क्खतानगम् स्कन्। দৃশে তত্ৰ সংজ্ঞান্ত বডবাৰূপধা-विगी ।। मा ह मृद्धा उनायाउ भव शृ'रमाভिশञ्चया । জগাম স'मृथ' ত্য্য পৃষ্ঠ রক্ষণ তৎপর। ।। ততক্ষ নাসিকা যোগে তথো স্তত্ত সমেত (याः। नामञ्ड मर्भो जनवावश्ववक्ताः দ্বিনির্গতৌ :৷ রেতসে৷ প্রেচ রেবম্ব: **थ**ङ्गी धर्दी उनुबध्क्। यश्वाक्**षः मगूर**् পলো বাণ ভূণ সমন্বিভ: ।। ভত: স্থ কপন্মলং দশ্যানাস ভানুমান্ । তলৈঃ সাচ সমালোকঃ স্বরূপ॰ गुर भारत ॥ सक्त भवादिनी व्यभा-मानिनाय निजाम्म । म जा जा র্য্যা• প্রীতিনতী• ভাস্করে৷ বারিত-काः ॥ उ.जः भ्वं म् । याम्याः সো হভূদ্বিবয়তো ননু:। দ্বিতীয় চ यनः भाषाक्यम् हि त्रज् मुजः॥

क्यर्या मा॰न मानाय शामल (स म-হীতল ৷ পতিষ্টীতি শাপান্ত ভদ্য চক্রে পিতা স্বৰণ ৷৷ ধ্র্মদৃষ্টির্য-ত শ্চাসৌ সমে। মিত্রে তথাহিতে। ভতো নিযোগ• ত• যামে চকার তি-মিরাপহ:॥ যমুনা চ নদী জন্তে ক-निन्ता खर्ते वार्डिनी । अश्विती (हत ভিষজৌ কৃতৌ পিত্রা মহাত্মনা।। গুহাকাধিপভিত্বে চ রেবস্তো বিনি-(याजिठ: । ইতি मार्क्छियभूत्राप रिववच्छभन्नस्थात् ॥ 🗱 ॥ मश्रुप्तिन क-র্ভব্যনীরাজনবিধৌ রেবস্তন্য রাজক-र्क् भूजाविषि र्यथा। मधाम हि जू (রবন্ত পূজ্যেন্ডোরণান্তরে। স্**র্য্যপূ**-এ মহাবাহ দিভুর কবচোজ্ব ।। জ্বলন্ত শ্লুবস্তেণ কেশান্ বিভত্য বাসসা। কশা॰ বামকরে বিভুদ্দ-ক্ষিণে ভূকরে পুন:। খ্রু ন্যস্য মহা গ্ৰীক্ষণ সিত্তৈ সম্বৰ সংস্থিত।। এবিঘ্নিষ্ট রেবন্ত পুতিমাযা ঘটে পিব।। স্র্যুপ্জা বিধানেন পূজ্যে-ত্তোরণান্তরে ॥ ইতি কালিকাপুরাণে नीत्राक्रनविधिः ৮७ व्यथ्रायः ॥ 🗱 ॥ কোজাগরপূর্ণিনারাত্রৌ দ্বারোপান্তে उन्र भूकाविधि यंथा। हारताभारत मूमीश्रस्र मःभूष्डा। इवावाहनः । যবাক্ষত ঘ্ডোপেতৈ ত পুলৈশ্চ সু- उनिरंश । मः न्हिउदाः न्र्निस् भगमा भागसम्बद्धाः म्हार्याः कृष्ण उथाननी यद्धा मृनिः ॥ भा मुखः मृत्रिकः भ्षा । हागदिक ह-ठामनः । उत्रञ्चिक र्वक्षा गडा-दिक्ष विनायकः ॥ भूकाः मारियण द्विवस्ता यथा विच्न विखेदाः ॥ ইতি তিথা। দিত द्वः॥

রেবন্তমনুস্: জ্রী সংজ্ঞা। ইতি ত্রিকাওশেব:।।

द्रिवा जी नर्यरानरी। इंडामदः॥ ञ्रमाः निविवासादमाड र्यथा। রেব্যাচকৃত পূর্ব তপঃ শিব সু-जृष्टिमः। सम पुरममः भूता ভূযানিতি বিধে। তথা ॥ অহ• কস্যাপি ন সুতঃ কিং করিষ্যানি **हिन्छयन्। (त्रवायान्त वात्रा (हय खुव-**मार म्गनाक्षम।। निन्हिर्जाव जना (भाकः भुगसनाध्याज्ञना। विक ক্পেণ ভে দেবি গলানন পুরস্তঃ ।। গৰ্ম্ভে তৰ বসিষ্যানি পুৰো ভূ ष्। শिविभुष्य । মম ष মপরামূর্জিः थाराजा जलमधी मिवा।। मिव भ-ক্তি বিভেদেন চাবামেকত্র সংস্থি-ভৌ ৷ এবং দত্তবরারেবা নৎ সামি-ধ্য মিহাগতা।। রেবাথও মিতি খ্যাত ততঃ পুভৃতি গোপতে। ইতি বারাহে সোনেখরা দিলিছনহিনাখ্যায়: ॥ # ॥ রতি: । मा

চ কামপত্নী ॥ নীলী বৃক্ষ: । ইতি
মেদিনী ॥ দুর্গা । যথা । রেবা তু
নর্মাদা দেবী নদী বা রেবতী মতা ।
অতিথপ্তন বন্ধা বা লোকে দেবী
পুকীর্ত্তিভা ॥ ইতি দেবী পূরাণে
৪৫ অধ্যায়: ॥

(त्रय अ ७ (क्यायाः। ই छ कि वि-कल्लक्षमः ॥ (क्या (घाष्टे कि कर् किः मदः। अ व्यातः त्रय ७ (त्रयः छ ति (त्रत्य २ थः। ই छ पूर्णामा भः॥ ति भाषा। ই छ कि विकल्लक्षमः॥ (त्रकामिः। त्रायि । ই छ पूर्णामा भामः॥

दिवजः शृ चर्गानुकः ॥ श्विन(जनः ॥ स्वान्यः । इजि ध्वतिः ॥
देवजानकः । इजि ध्वतिः ॥
वर्जनानकः । एकः । मनः । म
जु (वव्रजी गर्छ मूर्णन व्राह्मभू ॥
ज्ञान महन्नद्वा विक्राक्षा १ वजावः
। विज्ञ विन्यः। ज्ञानपा एवाः
। हिवगुरद्वामानयः मधर्यः। विन्व विक्राम्य सम्मुजाः । इजि ज्ञी
ज्ञागवजः ॥ जिन्वववनः यथा। भन्यः
स्थान स्वाः स्वाः व्या । सन् (माम(भी मूनिः ॥ हित्रगुरतामा मुखायः । व्याप्त मुखायः । व्याप्त मुखायः । व्याप्त मुख्यः निक्ष्य मुख्यः । व्याप्त । व्या

तिवजकः भुः तिवजभर्वजः। उद् भर्यभ्रायः। উद्ध्ययः २। इंजि एक्स-हन्मुः॥ जम्भ नामकात्रगः त्ववजी-मास्म मुश्चेवभः॥

রৈবতিকঃ ত্রি রেবভ্যাঅপভ্যত। ইতি মুশ্ধব্যেধব্যাকরণ•।।

রোক লী ছিদু । ইত্যমর: ॥ নৌকা।। চল ।। ইতি মেদিনী।।

রোক: পু॰ ক্যভেদ: ।। দীপ্তি:। ইতি মেদিনী।।

(द्रांगः भू॰ व्यक्षीययः। इंडि मि-मिनी ॥ (म्हज्यकाद्रकः। छ्र-

পর্য্যায়: িৰুক্ ২ ৰুদ্ধা ৩ উপতাপঃ 8 व्याधिः ६ गमः ७ व्यामयः १ । ইত্যমর: ॥ অপাটব: ৮ আম: ১ **बाउकः २० ७**गः २२ উপ্**या**जः २२ **ज्यः १० व्यक्तिः १८ उत्मा**विकातः २० ग्रामि: ३५ क्यः २१ व्यनाब्बंद^३ १ मृजूरज्जाः १३ । इंजि ताब-নির্ঘণ্ট:।। অম: ২০। ইতি জটাধর: ।। भान्ताः २५ व्याकन्नः २२। ইতি ছেম-हनुः ॥ 🗱 ॥ अम् । निरानारि र्यथा । थ्नु इतिक्वाह । अर्द्धाशिनिमान्ध বক্ষ্যে সুশুক্ত ভব্তঃ। আবেঘাদৈঃ मू निवरेत्र यंथाभूई मूनी दिखः ॥ दा-गः भाभ्या जुरदा व्याधि विकारहा पृष्ठे गामयः । यञ्चा**ङ्क**णनावाषाः नदाः भर्यप्रयानिनः ॥ निनानः भूईक्शानि क्लागुलभग ख्या । সংশাপ্তিশ্চেতি বিজ্ঞান রোগা-ণা॰ পঞ্ধ। মৃত ।। নিমিত্ত হেত্বা-यञ्च भुजारयान्यानकात्ररैनः । नि-मान मानः भर्यारेयः भागुन् यन नक्र ।। উৎপিৎসু রামযো रिगयविष्मायगानिक्षिष्ठि । निक् मवाक मन्नवाट वत्राधीना॰ उध्यथा उथ- ॥ उप्तव वाक्क जा- याज-ৰূপ মিত্যভিধীয়তে। সংস্থানং वाञ्जन विक विकार कि माक्जिः भ राज्य वराव मिर्गल दिस्योद्धाः । च निर्माण भूग २० ॥ विश्वाद्धाः । स्वाद्धाः भूग २० ॥ विश्वाद्धाः । स्वाद्धाः भूग २० ॥ विश्वाद्धाः । स्वाद्धाः । स्वाद्धाः सिन्धिः । स्वाद्धाः ।

या...ता मधुर्ता उद्योगिता गांधाता नःथा विकन्न भाषानः वन कान वि-শেষতঃ। স ভিদ্যতে যথাত্রৈব সং-খ্যন্তেছৌ জুরা ইতি ॥ দোষাণা• भगत्वजानाः विक्याःभाःभ क्यना । স্বাভজ্ঞ্য পারভজাভ্যা• ব্যাংখ: शादान्य मानित्य ॥ (इञ्जानि का-**ज्**त्रावयरेव वंकावजविश्मयन । ৰক্ত• দিবৰু ভুক্তা•ৈ ঠা ধিকালো यथा मनः ॥ इंडि (नुाङ्गा निमाना-र्थः म व्यारम्याभाष्ट्रकार्ड । महिंदा দেব রোগাণা নিদান জপিতা ম-বাঃ ৷৷ তথ পুকোপস্য 헣 প্রোক্ত৽ বিবিধাহিতসেবন । অহিত জ্রি-বিধো যোগ জ্বযাণা পুৰভদান্ত: ।৷ তিক্তোৰণ কৰাবাম কক্ষাপুনিত (ञाजरेनः। शायरनामीवग निमाजा श्रद्वा बुद्ध बायरेनः ॥ किया बिर्याश **जी (माक हिंछा व्यायाम रेमथूरेन: ।** পুীন্মাহোরাত্র ভূকান্তে পুস্পাতি

नशीदगः ॥ भिड• कर्रेत जीक्षांकः भारति एक व्यापिक क्षित्र । मत्वायता क् राष्ट्रक रिकारणायायुक्त मानावाद यक्ष विकास किया हिंदी है। भाषाप्रदेश स्थाजीर विशालक्ष Total Control of the State of t Miller and the William States उद्भागः समापि भरता । स খ্রীভাবাৎ সমস্তানাণ সন্নিপাত স্ত-था भूनः। मङ्गीर्गाञ्जीर्ग विषम विक-काश्रणनारिज्यः ॥ व्याशम सर् পানীয় শুষ্ক শাকাম মূলকৈ:। পি-ণ্যাক মৃত্যবসরা পুতি শুষ্ক ক্ষানি-रिवः॥ (मायज्यकरेत्र रिख रिख खणान-পরিবর্ত্তঃ। খতো দুস্টাৎ পুরো-वाजा विगुहारवनामिन्द्रा ॥ मुद्धामार अर्बज्ञानगुरेश अंग्रक भोजनार । मिथ्यारयागाइ विवि-थाट भाभानाक निषयनाट ॥ छी-णा• भुमवरेवयमप्राख्या मिर्यप्राभः চারতঃ। পুতিরোগ মিতি কুদ্ধা द्वागाविधानगानिनः ॥ त्रमायनीः अनिराम् (नाया (नरह विश्वर्ट**ः ।** ইতি গাক্তে সর্বরোগনিদান ১৫১ অধ্যায়ঃ ৷৷ রোগবিশেষাণা ঔষ-थानि गाक्ए ३४२। १२०। १२०।

३०५-२ १०० च्याराय द्वेता। स्वत्राय वृद्धेत्रात क्षण स्वत्राय राज्य व्यवद्वाराय वृद्धेत्रात क्षण स्वत्राय प्राथ राज्य व्यवद्वाराय वृद्धेत्राय स्वत्राय स्वत्य

(प्राथनः ॥ मन्तान् खम्र बन्ता মন্দায়ে জনকা জ্রয়ঃ। পিত্ত শ্লেম সমীরাক্চ প্রাণিনাও দুংখদাযকাঃ ॥ বাযুকঃ পিত্ৰ কৈব শ্লেম্মকশ্চ ত থৈব চ। জুরভেনান্চ ত্রিবিধা ন্চত্র-র্থক্য ত্রিলোষজঃ ॥ পাণ্ডকঃ কামলঃ অ ४: শোথ: প্লীহা চ শ্লক:। জ্বা-তিসার গৃহণা কাশ বুণ হলীমকাঃ ।। মৃত্রকৃত্বক ভল্মকরক্রদো**ষ বি**ং কারক:। আরিশো মেহজ: হ্রো ∢गारण गनग७कः ॥ जुमन्री निःन পাতশ্চ বিসূচী দাক্ণী সভি। এষা• ভেদপুভেদেন চতু:বঙি ক্ল: মৃ-जाः॥ मृज्जनग्रमुजारेम्हराज **ब**द्या-ত্স্যাশ্চ কন্যকা। জরা চ ভ্যাতৃভি: সার্জ শেখজুন্তি ভুতল ।। এতে চোপাযবেত্তার নগছন্তিচ সংযত্ত । भनावल्य ठ छ॰ मृक्षे। रेवनरखय रित्वाद्रभाः ॥ # ॥ ठक्कुर्वन्थः वृत्रः

कं ह्यूक कार्य पूर्ण करायात । कर्न-े **जदा** भे के 😂 तामक ॥ ३८% ु ः इरिनवा ্ৰা করেছি ১৯ া াট্ সেবতে কালে জর। ত॰ নোপণ ছবি।। **খাত** कीरकाश्चिलायी (शरू हन्सनपुर-। 🐔 প্রবাতি হয়ে 👉 🖟 ্র**বে প্রিল** स्कृतिहर्भ भूत्रुडाएँ । भाषी घन-ভোষ্ ন সেব্তে। সন্যে চ সমা-হারী জরা ত নোপগছতি।। শর-দৌদু ন গৃহাতি ভুমণ তত্ৰ বৰ্জ (यट। थाउनारी मनाहाती जता उ॰ নোপভিষতে॥ খাতসাযী চ হেমন্তে काल वङ्गि निषया । जुड्ङ न-वाम गुरुक जता उ तानगहिं ॥ শিশিরে ২•শুক বিজ্ঞি নবোকায়ঞ সেবতে। যএবাফোদক সাথী জরা **७• (नाभगहिं ॥ जारतामाः ज॰ न-**বায় 🕫 বালান্ত্রী ক্ষীরভোজন । ঘৃ-তঞ্চ সেবতে যো হি জরা ত নোপগ-इंडि ॥ जुडल्ड मनम मृथ्काल তৃক্ষায়া॰ পীয়তে জল॰। নিত্য ভু-ড্কে চ ভাদূল জরা ত নোপগছতি ।। पित रेहरक्वीनक नवनीज जथा শুভা ৷ নিত্যা ভূড়ক্তে সাব্মী যো জরা ত নৈব গছতি ॥ৠ॥ শুরুনা স जिया वृक्षा वानाकं उक्न पि।

সংসেবন্ত জর। যাতি পুক্টা ভাুত্ **िः मह् ॥ द्वार्खो ए मधि मिरास्** ्शू भाषी अब बबा । उमू शिष्ठ জর। ছপ্ত। ভাতৃভি: সহ সুন্দরি॥ त्रज्ञस्या ह व्यवहा हारीता कात्रमू जिका। मृम्याजकभन्नी या अञ्हीना চ যা সতি॥যোহি ভাসামনভোগী বুক্ষহত্যাণ লভেত্বু সং। তেন পাপে-ন সার্জ' সা জরা তমুপগছতি॥ পাপানা ব্যাধিভি: সার্দ্ধ মিত্রভা সন্ততঃ ধ্রবং। পাপং ব্যাধি জরাবী-জ বিম্বীজঞ্ নিশ্চিত।। পাপেন জায়তে ব্যাধিঃ পাপেন জায়তে জ त्रा। भाष्मन कायल दिनाः मूःथः শোক• ভয়॰ কলি: ॥ তম্মাৎ পাপ• भरुतितर (नायवीज भगन्नण 1 ভারতে সম্ভত• সম্ভো নাচরম্ভি ভ্যা-जुद्राः ॥ स्रभगितात्रयुक्तक मीकिउः स्विरमवकः। ७क (प्रवाजिशीनाकः ভক্ত সক্ত তপঃসূচ॥ বুভোপবাস युक्कक मना छीथनिः यदिन । शाना-<u> म</u>ुवि छ मृक्ष्वा देवन एवं विद्याद्वर्गाः ।। এতান্জরা **ন সেবেত ব্যাধি স**ণ-वन्ह मूर्जयः । সर्वः (वाष्ट्र समगर्य कारन नर्वं गुरीयाजि॥ क्षा जुत्रक সর্বরোগাণা জনক: কথিত: সতি। পিত্ত শ্লেম্ম সনীরাশ্চ জ্বস্য জনকা 📗

खरः ॥ ७७ यथा नक्द्रिस यक ৰাভি চ দেহিষু। তনেব বিবিধো-भायः जाधि मखा निमान्य ॥ क्रुंदि बाबुनानाया माहादाजाव এव ह। প্ৰাণিনাণ স্বায়তে পিত্তণ চক্ৰে চ ম-ণিপুরকে ॥ তাল বিল্বফল ভুক্তা **जनभानक उर्कानः।** जरनव जु छः (वर् भिन्तः जन्तः भागश्यः भन्नः॥ ভপ্তোদকঞ্চ শরদি ভাদ্রে তিক্তণ বি-**भिषठः ।** रिरवगुष्ठक या ভূঙ্কে পিত্ত তম্য পুরাযতে ॥ সশর্করঞ্চ थन्याकः भिष्ठः भीजामकादिञः । **ठनक॰ मर्ब** गवाक मि एक विविद्धि-७ ।। বিল্ব ভালফল । পক্ । সর্বসকার মেব চ। আদু কি মূদ্যুষঞ্ তিলপি-ষ্ঠ• সশর্কর•।। অক্ষারস্থানে ঐক্ষব মিভিচপাঠ:॥পিত্তক্ষযকর•সদ্যো-वलभृष्टिभूमः भन्नः। भिजनामधः ভদ্বীজ মুক্তমন্য নিবোধমে ৷৷ ভো-জনানন্তর• স্থান• জলপান• বিনা ভূ-या। जिलरेजन मिश्रीउन मिश्र भाभवकी मुव ॥ भगु विजाम छ-क्ष भवत्र आकनः मि । ছाराषु শর্করাভোষ কুন্নিশ্বস্থলসেবন ।। नाजिक्लानकः क्षम्यानः श्रार-বিত ভল। তক্মুঞা পক্ষল। जूनक कर्क होकनः ॥ थाजमानक

दर्भातु जूलके॰ स्नियाकात्रगः। तुका-त्रक्षा उद्भाग मध्बीर्ग विनामनः॥ वहिराबमः ভৃষ্টিভন্তः পক্ত जनः वि (मायकः । जुन्नाः मूझज्ककः मूझ भक् ह्रवी**उकी ।। शिखात्रक म**शक्ष রম্ভাফল মপুকুক•। বেশবার সি স্তুবার মনাহার মপানক ।। স**স্ত** রোচনাচ্র্ণ সঘ্ত শৃষ্ণকরে। मत्रीहः शिश्ननी भूसमाम् कः जीतः क॰ नवु ॥ पुराराणुङानि गन्नर्वि সদ্যঃ শ্লেমহরাণি চ।বল পৃষ্টি'দ-जाराध्य वायुवीकः निशानया। # 11 ভোজনানন্তর সদ্যোগন্ন খাবন ৽ তথা। ছেদন বহি তাপক শশ্ব-जुनग मिथुन ॥ कृषकोगननेष्यत মন:সন্তাপ এব চ। অতিৰক্ষ ম-नाहात गुष्त कलह (नव ह ॥ करू-वाकाः खरः (भाकः (करनः वागू কারণ । ঞ্চা আজ্ঞাখ্যচকে তজ্জন निमान्य ज्रावेष ॥ शक्त्रमाक्न-रिक्व अवीकः भकरतास्कः । नातिः (कृत्वापकरेक्व मन् । खक्र मृतिष्ठकः ॥ माहिय मिश्रिमि छे १३ (करवा वा ननकंतः । नम्यः भग्यं विजानक (मोवीतः भोजलानकः ॥ भक्रेजन বিশেষক ভিলভৈলঞ্চ কেবল।। नायनी जान थर्त गुर गामनकी

দুৰণা শীতলোঞ্চোদকস্নানণ সুস্থি **इन्त्रमृतः । शिक्षश**्चश्रञ्जनः सुः গ্নিপাৰ্যজনানিল: 11 এতত্ত্বে কথিত वर्षा जान्। वाङ्गुगान्यनः। 🗱 । বায়ব দ্রিঘিধাঃ পু॰সা॰ শ্লেশ সন্তাপ কামজা: ।। ব্যাধি সংঘশ্চ কথিত স্তজ্ঞাণি বিবিধানি চ। তানি ব্যাধি পুণাশায কৃতানি সন্ভিরেব চ।। ভক্রাণ্যেতানি সন্থাণি ব্যাধিক্ষযক-রাণিত। রসাযনাদ্যো ধেষু চো-পায়ক সুদুর্লভ: ॥ ন শক্তঃ কথিতু॰ माित्व याथार्थां वर्मात्र । ত-ষাঞ্চ সৰ্ব ভস্তাণাণ কৃতাৰ্থানাণ বি-हक्तरिः ॥ इंडि वुक्तरेवराई वुक्त-খেও ১৬ অধ্যাयः ॥ 🗱 ॥ जय व्याधिनक्रमः। उज वायुष्टेः। (द्रामः स्त्र (नायरेवयम्) (नायमाम्) मात्री-গতা। রোগা দু:খদ্য দাতারো জ্ব-পুভূতবো হি তে ৷৷ তেচ স্বাভাবি-কা: কেচিৎ কেচিদাগন্তব: সৃতা: 1 মানসাঃ কেচিদাখ্যাতাঃ কবিতাঃ কেপি কাযিকাঃ॥ ভত্ৰ স্বাভাবিকাঃ শরীরস্বভাবাদেবজাতা:। ক্রুৎপি-পাসা সুষ্পা জাগরা মৃত্যপুভ্তযঃ। তাথ বা স্বস্য ভাবাদুৎপত্তে জাভাঃ याভाविकाः महता इंडि यादः । (उ ह कमाकार्यः ॥ वागस्त्र

ęভিঘাতাদি জনিতা:। **অথবা জ**-ন্মোত্তর ভাবিন:।। মানসা: কাম কোষ্লোভ মোহ ভযাভিমান रिन्नर रिम्नार विवासियाम्या मार-भर्ये भुक्ठयः। अथवा **उन्नाता**भ-ब्यात गृही जुम जमः मधाम भुज्-তয:।। কাথিকা: পাণ্ডুরোগ পুভূ-उरः ॥ कर्मजाः कथिजाः (किटिप्रा-ষজাঃ সন্তি চাপরে। কর্ম দোষো-ভবা শ্চান্যে ব্যাথ্য জ্বিবিধা: মৃতা: ।। उब कर्मका व्याथयः। यद भाकः ল' ভোগ নাশ্য পাথকিন্তনাশ্য বা ততো জাতা: ন তু দুষ্টবাতাদি (मारवन कनिजाः। ख्या। यथा **भा**ः ক্সস্ত নিণী তা যথা ব্যাধি চিকিৎ-সিতা: ৷ ন শম• যান্তি যে রোগা তে उद्धिताः कर्माका वृश्यः ॥ स्नायकाः মিথ্যহার বিহার পুস্পিত বাত পিত্ত কফজা:॥ #॥ ননু নিথ্যা হার বিহারিণা মিপি পাক্তন সৃক্তেন নৈক্ষ্যুণ দৃশ্যুত এব ততো দোষ-**बिम्नुशि शुक्तिनरियंद काद्रगः उ**९ কথ নোষজা ইতি। উচ্যতে। দো-বজেম্বলি বস্তুত আদিকারণ দুর্ম্ম বর্ত্তত এব কিন্তু তত্র মিথ্যাহার বি-স্বার ভ্ৰিতা দোৰা হেতবো দৃশ্যন্ত

ইতি দোৰজা ইত্যুচ্যও ইতি শ্লাপি ॥ 🗱 ॥ कर्यात्मारवाष्ट्रवाः। ऋक्षास्य गद्रीयाःम (स एक्क्याः कर्मापः 🗀 । অত্র কারণ দুষ্কর্মপুবল যতে। দো-वान्नाष्ट्रिक वजास र्गतीयसु⁹ जर कर র্মক্ষযাদেব ক্ষীণ ভূবতি। দোষাস্ত बल्ला व्यशि निमान(ज्ञुत्नाका मृमाऽस এবেভি।দোষাণা• কারণন্ত মন্যত इंडि कर्यामाखान्त्रवाः ॥ कर्यकः यां कर्मकृष्ठा (मायजाः स त्र (७४-हैं । कर्यापाखा ख्वा यां कि कर्य (पायक्या क्य ।। (पायकाः य स ভেষজৈ ব্লিভি দোষজেম্বাদিকার-१ मुझर्य ७८ फ्रियकार्थ मुत्राक्रयाहि জনিত দুংথভোগেন কটু তিক্ত কষা-याम्। इत्र जक्षनामि कनिउ मूःथ-ভোগেন চ ক্ষয যাতি। শেষাদৃষ্ট হেডবো দোষা স্তে স্ব স্ব ভেষজৈঃ क्वयः याची छार्थः ॥ माध्रा याभ्रा অসাধ্যাক ব্যাথ্য স্ত্রিবিখাঃ মৃতাঃ । সুথসাধ্য: कष्टेमार्थ्या दिविधः সাধ্য উচ্যতে ৷৷ যাপ্য লক্ষণ মাহ । যাপনীযস্কু তেণ রিদ্যাৎ ক্রিয়াণ ধা-র্যতে হি ত । ক্রিযাযান্ত নিবৃত্তা-या॰ मरहा। यक विनमाऽ ।। भारा ক্রিয়া ধার্যতি সূথিন পাপ্ত মা-ভূর•। পুপতিষ্য দিবাগার• শুস্তো

विष्यः ॥ नाया याभाष 👯 🔻 📆 📆 📆 শ্চাসাধ্যতা তথা। ् ि शृशासमाय्यास नद्राणा मकि-যাবতা ।। অকিধাবতা চিকিৎসা রহিতানা•॥ ৠ আথোপদুব লক্ষ-ণ ৷ রোগারম্ভক দোষস্য পুকো-भाष्मभन्नागरजं। (या श्राम) विकातः ज तुरेष क्र भून्त इरहा दिज: ॥ 🗱 ॥ অথারিষ্টস্য লক্ষণ মাহ।রোগি-ণো মরণ যমাদবশ্যস্তাবি লক্ষ্য তে। ভল্লকণ মরিষ্ট স্যাদ্রিঞ্জা-পি ভদুচ্যতে ॥ 🕸 ॥ অথ রোগস্য **ठिकिट्ना लंकन गार्।** या किया व्याधिरुव्रशी मा हिकिएमा निगम्। তে। দোষ পাতু মলানা যা সাম্য-क्ट रेनव (द्रागड्ट ॥ कियाब कर्य । वाधि क्रिया श्वापि वाधिशः রণী। করণাধিকরণযোক্ষেতি সূত্রে-শাত্র করণার্থে ল্যুট্।। তথাচ। যাভি: কিয়াভি জাঁয়ম্ভে শরীরে ধাতব: ্ৰা চিকিৎসা বিকারাণাণ ान्तिमधः यकः । वाजूनीर्नः 🌯 ভিন্তা-গুলিং করোভিচ। না জিয়া ৰ তু যা ওচনা হরত্যন্য - चूर्रोग्टबर, । जिल्लास छकिरमा। তথাচামরসি হ:। আরস্তো নিষ্ তি: শিক্ষা পূজন সংপুধারণ । উ

भायः कर्ष (ठश्रे। ठ ठिकि८ मा ठ नवः ক্রিয়া ইতি।।।। অথ চিকিৎসাবি-ধ্যুপদেশঃ। জাত মাত্র শ্চিকিৎসঃ जाातालका २५ उरा १५:। दङ्ग শতু বিবৈ স্তল্য: স্বল্লো হপি বিকরো जारमे।। दागमामो भन्नीका ज-তো ९नउद्र भोषधः। उउः कर्म जि-यक् भक्षा कानभूर्व ममाहात्र ॥ অযমর্থ: ৷ ভিষক্ আদৌ রোগণ প-রীক্ষেত বিচারযেৎ। ততো ৎনম্ভর• 'छेषथ' विठात्राय**् । उठः श**ण्ठा রোগৌষধ বিচারানন্তর জ্ঞানপূর্ব। भावशाना न जु व्यवद्धशा कर्मा हि. কিৎসা নৌষধ দানাদিৰূপণ সমা-চরেদিভার্থ: ॥ 🗱 ॥ রোগাজ্ঞানে **हिकि** शाक्र ता प्राचिमा है। यस রোগ মবিজ্ঞায় কর্মাণ্যারভতে ভिषक्। অপৌषध विधानकः सम् निष्क यंन्ह्या ॥ यम्ह्या स्वित्रिज्या সিদ্ধি ভ্ৰবতি নাপি ভ্ৰতীত্যৰ্থ:।। অন্যচ় ৷ ঔষধ কেবল কভূ বিা-कानां नि न हाभय । रिवर् अर्थ न (हर व्यग्राह्य मर्श्ड द्राङ्ग : ॥ 🗱 ॥ द्रा-গক্তানে ভেষজাজ্ঞানে দোষনাহ। যস্ত কেবল রোগজ্ঞো ভেষজেম্ববি-ठक्कनः। ७ रेवर्ड शुक्राम्डद्वामी म्रा-ष्य्था (नो नीविकः विना।। नाविकः कर्नवातः विना यथा मोः जकारि श-**७७ ७था** द्वांभी गुर्थः ॥ यन्। ह যস্ত কেবল শান্তজ্ঞ: ক্রিয়ারসশ-লে। ভিষক্। পমুহাত্যাতুর পূ भा कीकः भाजीय ठारूवः ॥ 🕸 ॥ द्मारगोषध्या छ्यांत खनमाइ। यस রোগবিশেবজঃ नर्स रेडकंडारका বিদঃ। দেশকালবিভাগক্ত ভণ্য निक्ति नं जः भवः ॥ ज्यानावर्षः कृषाः জ্ঞানে পুষতেত চিকিৎসক:। ভে वजामा॰ विशास २थ ७७: क्याहि কিৎসিত।। চিকিৎসিত মিত্যুত্র ভাবে ক্ত: ৷৷ ইতি ভাবপুকাশে প্ र्वेथ ७: ॥ 🗱 ॥ व्यथं (यन द्वानाणाः क्छान महा हडना है। (इंजू सन् म॰ भासिः भ्रवंतगक लक्षनः। उरेथ-বোপশনঃ পঞ্জোগবিজ্ঞান ছেড-বঃ ॥ ভত্ৰ হেতো লক্ষণ নাহ। যত্ত্ব ন স্যাদ্বিনা যেন ভস্য তাব্ধেতু ক্চ্যতে । भारत में वाद्य हात्राय उर्भियाया-ন্ প্ৰক্সছে ৷৷ নিদান কারণ হেত্ निभिज्ञ भिवस्तर। मृष मायजन তত্ত্ পুত্যযোপি নিগদ্যতে॥ তত্র **ছেতৃ** ৰ্ব্যাধীনা[,] জ্ঞানায় **ছেতু** ৰ্যথা। वर्षा कक भुभ हिमानंभना िरेमथु-न (णाक जिन्हा ज्यानत्या वाज्यु-व्हानहरूव। वाउकान् वाशीन्

(वाश्यंति ॥ भत्रं कर्ष কোধ ত্যা ক্ষাভিগাতালয়ঃ পিভ পুকোপছে তবং পিত্তজান্ ব্যাধীন্ বোধ্যন্তি।। বসন্ত নপুর হিন্দ শী-छारयः कफ्रुकान्न (इंडवः क्क कान् वराधीन् वाधगिष्ठ ।। 🕸 ॥ व्यथ मःभारि जीका बार । यथा पृष्टिन দোৰেণ যথা চামুবিদর্শতা। উৎ-পত্তি যাম্যস্যাদৌ লংপ্রাপ্তি জাতি, রাগজিঃ।। যথা দুটেন দোষেণ যথা काब्रगत्ज्यम मुस्टेन लाखन। यथा চানুবিসর্গতা অনেক্থা দোষাণাং বিসর্গণ মৃদ্ধাধ ডিখ্যগাদিগতিভে-**(**हन। उथाठ वित्रर्भेड: जान्यम्) या উৎপত্তিঃ অসৌ ক্রপ্রেণ্ডিঃ। শান্তে यावहात्राम मंभारकः भगायावाह জাতি রাগতি রিতি॥ সংপাপ্তে রৌ-পাধিক ভেদানাহ। সংখ্যা বিকল্প পাধান্য বল কাল বিশেষতঃ। সা ভিদ্যতে যথা ত্রৈব বক্ষ্যন্তে ২প্টো জ্বরা हेकि । मध्याहिक्भा य विष्णवा কে বল্পানপুষ্ঠ ডিল্লেড কেন্ট্ ৰ্থী, কিমান ইভাগোঁশ এই শংখ্যাশ विवृत्गाञ्च । यथा दृत्तः , ५%दा अः ভীসার: যত্ত্বিধ ইত্যাদি। বিকল্প• বিৰূপোতি। নোধাণা• সমবেতানা• विकाला १ मा कलना। नमाव-

সকল সমূদিতানা দোষাণা অং लटक कर्ने कीन संधाधिक **(छरि** ভाগ क्लूना विक्लू: 11 % 11 **नाशान्य** বিবৃণোতি ৷ স্বাতজ্ঞ্য পার্ডস্রাভ্যা बहारयः भाषान् भारित्यः। वहारयः ভান্তজ্ঞেদ দুখি দুং পারতজ্ঞেদা भूतिकामार्क वर्त्तीकार्थः। यथा सः क्षास्त्रक उत्तरम् ्रशानुः जुन्नाथी-कानाः स्तानि, ः म्**श्राधान्ऽः ॥क॥** ষ্ট্ৰণ বিভূপে জি : **: হত্বাদি কাত্**-भुगवयरिक वेचार विश्वविषय । व्य-आसि पुरास्य वि**उर्गुवर्खस्य । एर**-জ্বাদেঃক্ষেত্ৰ প্ৰাণাণ কাত্ৰ্যে-न अरहरकाम १ का दश्रेतः अकरमानन ा गाल नेवावयाना विश्विता विश्व শেষ বোধান জন কাল বিবৃণোতি া লক্ত দিনত দুকা**ংশ ব্যাধিকা**-্লা থলা বল্লা ক্রান্ড মতাব্যয় রা-বিংগ্রাচ্জণ র জালাবার বিদ্যাল कार इसमें युगा सायगा भुरकाश िरकाय रमान्त्र सम्मावकम् वृहाः 'ধঃ কাল ইভার্ম **নক্তাদে রণশে**ষু া া ি ুবাল উক্তো বাগুটেন। ক্তে ্য কিবে পি গ্লাভ্যে রপ্নে ম-ষ্ট্ৰেণ্ডাঃ ব্যো প্ছো ব্ৰাত্তি जुकान अक स्वामिगाः कमामिजि াতে বাত পিত ককা:। খতুৰু বা

ভাদিকোপো যথা। বর্বাসু শিলিরে বাযু: পিত্ত• শরদি উন্মকে। বসস্তে जू ककः व्याप्राप्तया भुक्छि वार्खवी ॥ 🛊 ॥ जःशास्त्र वंशबीनाः कानाव হেতু যঁথা। মিথ্যাহার বিহার अ পিত বাতাদ্যামাশ্য গমন রসদ্বণ কোষ্ঠাণ্ন বৃহ্বিরসনক্ষণ জ্বোৎ-পত্তি পুকার• বোধ্যতি তথা ব্যা-ধীনা সংখ্যা দোষা শাংশ কল্পনা পুাধান্য বলকালা শ্চ বোধ্যতি ৷ তেষু জ্ঞানেষু চিকিৎসাবিশেষঃ न्। ।। ।। ज्य भूईक्शम् वक्ष মাহ।পূৰ্বৰূপন্ত তদ্মেন বিদ্যান্তা। विन गाग्य । जागानाक विणिष्ठक ছিবিধণ তদুদাজ্ত।। সামান্য তত্ত্ব रमायागाः विरमिरेय व्रविधिष्ठः । विणिश्वे भीषषाक्र नाट विरणरेषण সমন্বিত ।। দোষাণা विश्वियाः कुः ञ्चाञ्जिष (नवनाशाद्मी भान्त्राहरः । তত্ৰ পূৰ্বৰূপ ব্যাধীনা জ্ঞানায হেতু র্যথা। শুমাদযো ভাবিন জ্বর• (वाध्यस्ति । व्यथह ७ ७ व भुभानस्य **প্তিশ**যিত জ্স্তাযুক্তা ভাবিন• বা. ভজ্রণ নেত্র দাহযুক্তা ভাবিনণ পি-खबुद्र· दक्षिमान्त्र यूका ভाবिन· শ্লেদাজুর বোধ্যন্তি।। # ।। অথ नक्र नार । भूर्व तथः বিশিষ্ট যদ্ব্যক্তণ তল্লক্ষণ মৃত্য । সংস্থান লিফ্ চিয়ে চ ব্যঞ্জন ৰূপ भाक् जि: ॥ विभिष्ठे॰ भू बंक भ॰ देय-ৰ্যক্ত·ৰূপ·তদেব সম্যায়ক্ত· ল ক্ষণ মৃত । তত্র শাস্তে ব্যবহারায भर्यप्रायानाष्ट्र मः छान निजाित ॥ नक्रनः व्यास द्धानाय एक्तु यंथा। (बरावद्वाष: मञ्जाभ: मर्वाक्गुश्न-**ঞ্** যুগপদেতল্লকণ জ্বরণ বোধ্যতি ।। 🕸 ।। चार्था भन्यम्। ज्ञान मार्। 'ঔषभाष विश्वाता भूनारामः मू-थावरः। नृगामुभमयः विमार न হি সাজ্য মিতি মৃত:।। 🗱।। ডএ বাতস্যোপশ্য মাহ। মধুর লবণ मान जिल्ला निम्। एक कृष्टिकः র বস্তি বেদ সংমর্দনানি। দহন জল-म (मवा छ)य अस्ति। न भूयां भाउ श्ययमानः भाष्ट्रम् अनि **अ**गूर्यः॥ 🗱॥ অথ পিত্ত স্যোপশ্য মাহ। তিক यानू कवाय भीड शवन हाया निभा ৰীজন জ্যোৎস। ভূগৃহ যত্ৰবারি कलर छोगाजमः स्थानः । मर्शिः ক্ষীর বিরেক সেক ক্**ধির সাব পুদে** श्राप्तिक भागाशत विश्वत (अवज बिम भित्र भुगान्ति नर्यथा #॥ ष्यथ कफ:न्याभनम नाष्ट्र । क्ष क्कात्र क्याय जिक क्ट्रेक व्यायाम

निष्ठीदन॰ धूमाञ्कित्यः विस्तरः ব্যন্ত বেদোপ্রাধ্যাল্য ভ্রম্ম **जान् नियुक्त क**रणक कार को कालना **ञ्चितः शानाक्**ष विकास (क्रमुक निर° (क्षेत्रान हुई, १०० छ हो छ कनकोडा कथः वसः इतः । जनक । बनकोषा बर्जि रेगर सम्मारहरू **দেহোত্মা পক**নিও পদস্য বিয়োগ গুে। ভূত্বা কফ 👓 স্থান 👫 😘 मार्षिः ॥ 🗱 🗀 अध्यक्षिण 🧸 अध्य **জ্ঞানায় হেত্**া সংজ্ঞাল হৈ শুজ **विद्यः महीर्ग** ६१७०३ ३१% हुन **भगानुश्रमगाञ्**र । द्वारक प्रक्रिक **তথা চ সুশু,তে** : মালকে বিশ্ব হয় : देश विकादा। दास्त्रिकः अन्यः । श्रीहः ন্যেন্তৰ তু বিক্ৰোণ মন্তৰ্যাত্ৰাকৈ **म्यिकः ॥ मर**क्षा दाः रस्याक्ष निमान अभिका श्लाह । उद्या কোগস্য ভুপেুক্তে বিভিন্ন হিছেছে-वनः ॥ अर्द्धनाः । । । । । । । विमानः निक्षे कात्रपः । अस्टिकः अस्ट् मुद्राः । मुलाः राष्ट्र लि ३ क्का 💁 विज्ञान्यः। उथुः व वातुकः । स्वीमाः **এব হি সর্বেবা** রোগাণানেককারণ **নিতি। নত্বাগন্ত** ব্যাধিষু ব্য**তি**চ র: স্যাৎ। তদ ভ্রাপ্যংশত্যনন্ত রু বোষ পুকোপন্যাবৃশ্যু ভাবি

होता हिर्देशम मुर्विष्यू खनायांग-্রধ্যব । ইতি ভাবেপুকাশঃ ॥ 🕸 ॥ शाककाताचा यथा। **माजाउभीय** ক্রবিপাকে। সুগুঞ্জ রাজযুক্সা চ मुरहरहा भूक्ती छथा। मृषक् हान्म-ন্নী কাশা শতিশার ভগন্বৌ॥ ্টুবুণ গ্ৰেমালা পকাঘাতো হকি-রালার• ៖ ইত্যের মাদযো **রোগা ম**-र्वा अवस्थित मृजाः ॥ जलान्त्र बक्ध श्रीक मुकाबाग बुगानि ह। শ্বাহার্নিক্র ভূমি ভূম মো**হ গল**-्रक्ष प्रकार्त विनर्भाता **छे**-🤲 ४८५६ए३) 🐣 सः। म्खादञानक ि । 🖓 🐠 वित्रहिंकाः ॥ व-महिक् भूवतिकासा स्नामाः भाभः पश्चिम्हता । एथा वर्ण वास्ता नृगाः ররাশ অভিধালান্ডবন্তি হি॥ অ-**্রিত** বছণা রোগা **জায়ন্তে রোগস**-खबाः। উচ্চে हि निषानानि शाय-किखानि ५ कमार ॥ 🛊 ॥ मर्वताः ात**ा ह मान यथा। (इसाप्ति वृड** हान्याख इंगडमाकाः । जूवर्गनानः স্কেদ্রাণ কে 🧠 না শকারণ । क्षण अर्व पुरुष्य १ वर्षा कम-स्वार्क्त । इं**ड भवमामउद्ध**ः ॥ 🗱 ॥ ज्यादक्षाग्रज्ञानिकः। उब डियागा द्रहर ुमेखाः। रणभी ∥द्रागणिन। जी मनः णिना। ইভি

পুতिপधार्थकोता जायामणी शकः भीजिमा स्थाभाः। ভव नक्षवाणि া ৰাতী শুবণা ধনিষ্ঠা শতভিষা জ্যেষ্ঠা হন্তা পুৰ্ব্য পূৰ্বাবাটা পূৰ্ব-कल्लुनी भूर्बजामुन्थ मदा खत्रगी মৃগশিরা সি। তত্র বারা: ক্রা:। ভত্র বোগো ব্যতীপাত:। অশো-ভনশ্বনু:। লগ্নপেক্ষা কেন্দ্রের পাপগুহ:। ইভি জ্যোতিস্তব্তু ।। #।। অপিচ। চন্দ্রাশুদ্ধৌ ব্যতী-পাতে ভৌমার্ক শনি বাসরে। বুণ মৃক্তো ব্যাধি মুক্তঃ কৃশঃ স্নান স-माहत्वर ॥ भूबाजय मधात्म्य छ-রণী কৃত্তিকা তথা। আদাবাঞ্চ তি-থৌ রিক্তে চারোগ্যন্নান মাচরেৎ ॥ इंडि (ब्रांडि: मात्रमःगुरु: ॥ (त्रागम् क्री **अवधः। इंडिरेबर्ऽकः।।** রোগনাশকে তি ॥ রোগভূ: জ্রী শরীর । ইতি শব-व्हिन्द्रका ॥ রোগরাজ: পু॰ রাজযক্ষা। ইতি त्राजनिर्घणः॥ (द्रागनाक्रन क्री निषान । ইঙ্কি त्राजनिर्घणः॥ (वागमान्नकः **भू** रेवराः। ই**जि** नद्रिन्द्रा ॥

রাজনির্ঘণ্ট:
রোগশিলী পু• বৃক্ষবিশেষ:। শ রালু ইতি ভাষা। ইতি ফটাধর:॥ রোগশেষ্ঠ: পু• জ্ব:। ইতি রাজ নির্ঘণ্ট:॥

ह्मागरु॰ ज्ली 'छेषध॰। ইতি শব-চন্দ্ৰকা।।

त्रागञ्जपुराः ज्ञी द्रागनाभकवस्य । यथा । धनुष्ठति क्वाठ । मुव्राणि मधुद्रामीनि व्यक्ति द्रागह्रवागुरु। শালি ষপ্তিক গোধুম ক্ষীরঞ্বৈত-থা মধু ৷৷ মজ্জা শৃকাটক যব কশে-র্বাকক গোক্ষুর•। গম্ভারী পৌষ-क वीब मुका थर् ब्रक वना ॥ नातिरकरणकाष्य एका विनाती ह পিযালক । মধুক তাল স্মাও मूर्था २व॰ मधुरताननः ॥ मूई। मांक् भूममनः विकिन्त्य भूमापनः া কৃমিকৃৎ কফকৃৎ বৃষ্য একো-**जुर्थः निरविविद्धः ॥ श्वाम कामाम**ऽ भाषुर्य। सत्रघाडा व् मानि ह। गन গণ্ড শ্লীপদানি গুড়লেপাদি কার-🛾 (यट ॥ 🛊 ॥ माजिमामनकामुक क-निथ कद्रमर्तको । माजुनूकामा-ে তক্ত বদর তিত্তিরী ফল ।। দ-ধি ভক্র° কাঞ্জিকঞ্চ লঙ্গচ• চামু-ं (वञ्न-। चान्ना म्हण्येग्यूका हा- ||

त्रगः भावता त्रमः॥ (द्वर्ता वर्ष्ठ-क्ट व्रवा विषाश ठानुरलामनः। অম্লোত্যর্থ•সেব্যনান: স্বর্য্যাদ্রৈ দম্ভ-र्श्यक ।। नदीद्रम् ह लिथिन अद्र-**ष्ठिम कुर्फारवट ।** छिम्र किम तुनानी-নি পাচ্যত্যগ্নি ভাষতঃ।।#ন লবণা-**रि यदकातः म**र्ड्डाक्रीमिक्त वास्तरः শোধনঃ পাচনঃ ক্লেন্নি বিস্লেগ লপ गारिकृट ॥ मार्गतार्थी साम्यक्ट भः এক: পরিষেবিতঃ গোভকপূরে ठेल्गाक रेववर्ग्यः कन्यम् अः ॥ ब्रज्ज বাত রক্তপিত্ত পুলার্ডিনুয় ক্রজান দিক ।। জাব্যেষ লিগু মুগৰক দে-वराक् व क्रिकः । अद्गः अनुस्य क्रमः मुखा ख्रुल् लाक्यो। कृतिकाकीश-नः (णाधी कर्ष कर् कका खन्द ॥ **खोन्यानम्य कृ**भिष्यः मूलः भए। বিরোধন:। একা হতার্থ 🖼 माना जुन हाराहिक्खव्या #॥ क्डमानः कत्रीदानि रुदिरमुन्त्र्यवा ख्या। স্বাদু কণ্ট হ বেত্রাণি নৃহতী ছব শন্ধিনী ॥ গড়চী চ দুবন্ধী চ विवृत्राष्ट्रकशर्गा कादावल्लक वा-र्खाञ्च कत्रवीत्रक वागकाः ॥ वा-हिनी भड़भूज्ञी ह कर्काछ। विदयन স্তিকা। জাতী বৰুণক নিয়ে। জ্যো-ভিম্মতী পুনর্গবা ।। ডিজো রসং ल्डानः मंग्राष्ट्राहा

🐒। ত্রিফলা শল্পকী জগু আমুামুত

बहारिकः। जिन्तुकः वश्रवः भाकः নিয়াব মুদ্দ চিল্লিকা।। নিয়াবস্থানে

भानक्ष्या इंडि कृष्टि भाठेः॥ क्याया

গুছেকো রোপী স্তম্তন: ক্লেব শোষ-

ণঃ। একো ২ত্ত্যর্থ সেব্যুসামে। হৃদ-

याम्य शीएक्ट ।। मूथानाय जुत्रा-

. थान मन्।। अञ्चापिकात्रकः । 🦚 ।

হরিদ্রা জন্ত লবণ মেষশৃক্ষী বলাদ্বা

।। कहनी मलकी भाषा भूननेवा भ-

ভावती। यशिशस्त्रा दुक्तम् श्री सम्रेष्ट्रेः

द्व अरक ७था ॥ यव रकाल व्यलचारि क्वांनी म ममूबकः। পृथक् नमाखा

বাতান্তো বহুপিত্তহর তথা !৷ শ-

ভাবরী বিদারী চ বালকোশীর চ-

न्हन । मूर्वा वहेः शिश्नलो ह वस्त्री

मझकी उथा।। करनी (ठाए भनः

পদ্ম অভ্ৰব পটোলক। 🕸। অথ

শ্লেম্মহরো বগোঁ হরিদা গুড় সপ্তক•

॥ শতপুদ্ধী চ জাতী চ ব্যোষারগৃধ

नाष्वी। 🗱। मर्लि रेखन वमा मञ्जा

प्तरहर् भुवद्र घृष्ठ।। उथा श्री सृष्ठि

(भाषता जुंत क्कार्या ख्या । । तथाप्तिकाह्मिशः भन्। उच्छः। कि कामिडिट ।। दिश्व द्वर र्गड- वन रिशंखित मिर्न विविध नवगा-অ । १९०० म ह स्वितः। मन्। स्व नि उ॰।। (मय॰ वङ्करक वानि वि।। य

क्षिशकार्त्वि नितः म्ल तुराषिक्ट ॥ नित्र नमदिज्भागुष्ठी नाषी कमि । লাম্মাক্তরোগিষু॥#।তৈল॰ বাতাত্য ক্র কোগেষু দেহিযু। বাতাত। বিশ্ব বিভিন্ন বাতিব্যামান কৰি প্রেক্ষা কৰি বিভাগ কৰি কৰা হল ভূষা বিভাগ বিভাগ কৰি কৰা কৰি কৰা বিভাগ । बदन्तामा भनाष्ट्रिन मुश्कुरिय. প্ৰেষ্ চাাঞ্চা জলমুক গৃহতে দেয পৃথ-ক্তৈলে ন শস্যতে। শ্লেহে পীতে তু ভৃফাযা পিবেদুফোদক নর: ॥ বা-ভানুলোম দীপ্তাগ্নি বর্চা গ্রিপ্স সমণ মত । ৰক্ষস্য স্থেহন কাৰ্য্য মতি-শ্রিপাস্য কৃষ্ণণ ।। হা। শ্যামাক কো-রদ্যাম তক্র পিণ্যাক যঞ্জি: 1 বাত শ্লেম্মণি বাতে বা কফে বা মেদ इयाउ।। न स्वन्यम् उष्ट्रं क्ष पूर्वल गृह्छि।न्। ইত্যानि भ**रा**श्वा-(१ गाक्ष (यागमाद्र) ११ वर्षायः ॥ 🗱 ॥ भन्छ दिक्वा । घृ छ देखला कि वक्तामि मृत् मृतु ह्यागन् । मञ्ज भूब्री वहा भागा वाकी वृक्षम्वर्ध-লা।। অভ্যা শুড়ুচী চৈব অটক্ষক

वाभन्ति होन्य व

वान्नही। ब्राह्म व्यक्ति वान्नविष्ट । नाजायन भूषः विभाव्य ॥ कण्डकार्गा त्रमानः रेडवः विकृत्वाकः कणप्रनः পुषः कीवभुष ममनिकः। এङ्ग শ্বী যুক্ত নাম শুভি নেধাৰ্জ্জিৱী ।। अ।। जिक्ना हिज्य है। ह वृष्ट्-निय वानकाः। भूनर्लं च्रंड- यथा की ह मञावती जाल- जर्जा वाजः नर्शः विभएनः । सः। वः वा भुष्ठः । व्यु देजवाग्राक्षाप्रकः भएतः । वर्षः भूक मुख्या । वर्षः ুপল পদাকৈ:। স্ক্রেলা পিপ্ন नो क्ष पुरनना खरू (केन्द्रि: ॥ भ-क्षाच जीवनीरेयण की द्राहक मना-শ্রিত । এতম্ঘণনা পক স্থাপথে দুজতে শুভে॥ সর্বাভ বিকারা স্ত मर्वराज्डहानुगान् । टेंबन (मंडर. পूर्वन त्यववार्याः शक्वला छ।। ।। भ अवही इन भु**ञ्र भीत्र भुञ्र • ठरेव**-🌁 🕫 । लंडिश्रुवा (स्वसाक मान्त्री रिम्बस्यकः वना ॥ हनस्यः जगद्रः व्यक्षः माना हाः मुमजी जया। वरेजः कर्यमानः करेन् रेखन भुष्ट् विभा চरिट् ॥ ज्ह्न वामन शक्ना विश्व ব্যক্ত অভিনাং। বায়ুনা ভগ্ন গাত্রাণাং (य ह भीषि रेमणूरन ॥ जत्र। जर्छत गाञाणाः हाध्यान नृथरमाधिणाः। ত্বগ্গতা শ্চাপি যে বাতাঃ শিরা হ্লা-

॥ 🗱 ॥ भृषक् रेजनः घृजः कार्तारः गगरेख (द्रोवरिक्षः शृथक् । मञ्चावर्यत्र **च्छ्रहा वा हिबरेक द्वाहनायुष्डः ॥** निर्ख्खा वा भुजाइना कणकार्याः द्रभाषि :। वर्षा वानवया वालि বাসকেন ফলত্রিক:॥বাক্সালির-ওকেনাপি ভৃত্বরাজেন মুণ্ডিন া মূ यन्। प्रभग्राम थपिरत्र वहेरि **डि: ।। यिका मान्या वानि** हुर्न म्राट मर्दाद्वागनूर। घृत्वन प्रश्ना বাপি যুক্ত• খণ্ড ভডাদিভি: ॥ ধাৰ-ণৈঃ কটুকৈ যুক্তি যথা ভাগক রেন भन्<u>र । #। विव कर्काक विद्रुष्टा स</u> वम् इयभात्रकः॥ यथा व वाक्षः भ निका मध्रभर्ग मुवहिंकाः। জ্যোভি-শ্ৰতীঞ্চ সংভূজ্য তৈলং ধীরো বিপা हर्यर ॥ अञ्चिष्ठान्सनः रेजनः जुल एए एक क्यार शिक्ष के किन বৈচ্চ সম্বর্গকরণ পরণ র ডিয়েল মানতিক সম্ভেশেশভায়ন व स्टाहः मन्तिन्ता वर्षास्य শাল্যা । জারঘ্রা কেন্ট্রেড **म**हरला**जनः** । हेन्सवरः । । करोबा कर्दिनः महिन्ता मा १००

भारतक डिडिंड भारता थ ্ শ্ৰপজ তৈল নজামূৰৈক ा जल । मृषंशिना शहराज्य ্্কীরেণ সংযুত্ত ৷৷ অজমোদা-🚋 🤃 তৈল• গগুমালা• ব্যগোহ-😉 বিদগান্ত পচেৎ পকু পকুঞৈ ः विष्णाध्यक् ॥ (दाभगः मृत्रू छो-४ डिलागातन कात्रायट । ञ-ना फिक रेडन भशादी यं उक ্ছে ॥ ইতি গাৰুডে ১৭৮ ागः ॥ া রী পু॰ বৈদ্যঃ। ইত্যমরঃ॥ 🦿 নাশকে ত্রি।। कः পু॰ অশোকবৃক্ষ:। 🌯 রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ 😥 র 🗗 🎢 ঔষধ•। ইতি শাদ বিদ্যুক্ত ও রোগিপুষে তি॥ वाशी वि लागगुकः। उरमर्गाः ে: ব্যাধিতঃ ২ বিকৃতঃ ৩ গ্লা**নঃ ৪** ् । ६ मन्तः ७ वाज्यः १ अज्रा 一种 一种 不可以 不可以 一种。 第一人 轉換 饮食的农用。 ६ 🔌 💥 १६ वाची ५७ भ्राप्तु 🦠 । I writer stack to ा । व हमा उन् यह **(**8 A MARKET WINDS F ं রোলিণ'। আযুद्राप्ति मृणा स्थानी-

ছীতাদেঃ পুশতো **ং**গরণা **আ**য়ু-वारि। वारि नदाए माध्याना-थ्याद्वानि । मृभा मर्भातन । अब अ-म्भारामिखारम्ब खारव विभ्।म्भं-र्माट भीजापः। भीजाक मृमू क-ठिनदाहिना भरीक्षाक । भूगुङ: । উদর লাঘব গৌরব তৃষা বুভুক্ষা वनावनामिना। भिथ्यामृष्टी विकादा হিদুরাখ্যাতা তথৈব চ। তথা দুস্লরি-পৃষ্টান্চ মোহযেযু কিকিৎসকান্।। তত্ৰ দৰ্শন নেত্ৰ জিন্তা। মূত্ৰাদে: কৰ্ত্ত-ব্য় ৷৷ৠ৷ তত্র নেত্রপরীক্ষা যথা।নে-ब म्याट भवना पुक्क धूमुवर्ग उथा-ৰুণ'। কোটরান্তঃ পুবি**ষ্টঞ তথান্ত**ঞ্চ विट्याकन ।। रित्रमाश्यवर्गक त्रकः वा रुव्रिज ज्या। मीभाइवि जना-হঞ্চ নেত্র॰ স্যাৎ পিত্তকোপতঃ ॥ চফু ৰ্বলাশ ৰাহুল্যাৎ স্থিত স্যাৎ সলিলপ্লু ত॰। তথা ধ্বলবর্ণঞ্চ জ্যো-जिशे न•ेवनानि उ• ॥ निव• हि-(माय वाञ्नार महाराषायवय न-ক্ষণ । ত্রিদোষ লিঙ্গ সেবেত ত-ন্মার্যতি রোগিণ ৷৷ ত্রিদোষ দূষি-তণ্ নেত্র মন্তর্মগ্ন ভূশে ভবেৎ। ত্রি-लिक् निलम्। वि भारत्यामी लय-**७**ऽशि॥ श्रा व्यथ किल्वा श्रवीका। শাৰপত্ৰভা ৰকা মুটিতা মসনা- নিধাং ! রক্তা শ্যামা ভবেৎ পিত্তা-ল্লিপ্তাদু। ধবলা কফাৎ।। পরিদর্থা খরস্পর্শা ক্ষা দোষত্রযে হবিকে। रिमद (मायह्यशिक्ष) (माय हिउय লকণা।। #।। অথ মূত্রপরীক্ষা। বাতেন পা গুর মূত্র রক্ত নীলঞ্ পিত্তত:। রক্তমেব ভবেদুক্তাদাবল ফেনিল কফাৎ।। #।। অথ শরী-त्रमः উक्षदामि खानार्थः म्यम्निः कार्याः। उत्र नाडी भद्रीका भार । পুংসো দক্ষিণ হস্তস্য ব্রিয়ো বান-कत्रमा छ। अक्षु मूलगा नाफी अ-त्रीकाउ **ভিষ**্থेतः॥ অঙ্গুলীভিস্ত ভিস্ভি নাডী নবহিতঃ প্ৰেছ। छाइश्वेगा मूथ मूथ कानीगा क-भाला श्थिमः॥ ममः ग्राजमः म् धन्। ऋङ्काउभनी वनः। व्याया-লশান্ত দেহস্য সম্যক্ নাড়ী ন বুধ্য-তে।। বাতে প্ৰিকে ভবেষাডী পুৰ্য-का उर्द्धनी उत्त । शिख वाका म-भागाग अञीयाकृतिमा करक ॥ **ज्र्जिनी मधामा मध्या वाज निर्**ख श्विक मुद्री। अनानिकाया॰ उड्ड न्।। वाका वाज करक ज्याद ॥ মধ্যমানামিকা মধ্যে সূটা পিত্ত करक शिक्ता अञ्चल जिउराशि मार भुवाङा मिमाडिनः॥ वा

তাদ্বকগতি নাণী পিত্তাদৃৎপ্ল ভা गामिनी । ककाश्राम्तगां उद्धंग সন্নিপাতাদতিজ্ঞতা ৷৷ বক্রমুৎপু -ত্য চলতি খননী বাত পিত্তত:। वर्ष्ट्रकक्ष मनम्क वाज (मुग्रावि-কে ততঃ। উৎপ্লত্য মন্দে চলতি নাডী পিভ কফে হধিকে॥ का-बार काशर (दगवहा भीता চিন্তা ভ্যাপ্লভা। বিজ্ঞা বিদ্যা চলেন্দ্র। সা হতি স্থান্তি ওথা ।। অভিক্ষীণা চ সীতা চ শুণান্ হুস্তি ন সংশ্বঃ। জুর কোপেন ধ মনী সোক্ষা বেগবতী ভবেৎ ॥ मनताः कीवशालाक रेमव मन ব্দত্তরা মতা। চপলা ক্ষুধিতস্য স্যাৎ তৃপ্তস্য ভব্তি স্থিরা॥ সু থিনোপি স্থিরা জেয়া তথা বল-বতী মতা। ইতি ভাবপুকাশ:॥ রোগ্যে ত্রি অপথ্য । অহিত । इंछि भद्रिक्ति ॥ द्वागनव किनि ह।।

(ब्राहकः भ्रः क्षा। उर्भगं शः।

बुङ्का २ जमना ३ कियरमा ८

कृष्टिः ८। ইঙি (२ नहन्दुः ॥ कम्मी
। ইঙি শद्य द्वावनी ॥ त्राक्रमनाछः॥ ज्यवरः भः। ইঙি द्राक्षनिधंणेः
॥ गुष्टिभगं इतः। ভতিউর ইঙি

রোচনী

श्रीस्ट्रिंग थीं जिः। उट मर्गायः
विश्व विदः २ धन इतः २ कि उपः ८
गगरामकः ६। स्मा खगाः। मधुः
त्रदः। जिङ्खः। कर्षुषः। भाकः
कर्षुषः। ज्यूषः। जिङ्गपः। हर्गपः
। श्रिषः। ज्यूषः। जिङ्गपः। हर्गपः
। श्रिषः। ज्यूषः। जिङ्गपः। हर्गपः
। श्रिषः। ज्यूषः। क्ष्रिषः। हर्गपः
। श्रिषः। क्ष्रि कक्ष् ककानिन तः
का श्रिषः। स्रिषः। हिं छात्भुकानः
गुन नामिष्यः। हेि छात्भुकानः
।। क्षिकात्रक वि।।

রোচন: পুণ ক্টশাল্মলি:। ইউ্ড-মর: ॥ শেতশিগু:॥ পল্মণ্ড:॥ আরগ্ব:॥ করঞ্জ:॥ অক্ষোষ্ঠ:॥ দাডিম:। ইতি রাজনির্ঘণ্ট:॥ রো-চকে ত্রি। ইতি মেদিনী॥

রোচনকঃ পু॰ জমীর:। ইতি রাজ-নির্ঘণ্ট:।।

রোচনকলঃ পু॰ বীজপুরকঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।।

রোচনকলা খ্রী চিভিটা। ইভি রাজনির্ঘণ্ট: 11

রোচন। জ্রী রক্তকত্মার•॥ গো-পিত্ত•। গোরোচনা ইভি খ্যাত•॥ বর্মযোধিৎ। ইভিনেদিনী॥

রোচনিকা জী বংশরোচনা। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। শুগুরোচনী। ইতি রত্ননালা।।

त्राह्नी **क्वी जाननकी॥ (**गात्राः

निमा । इति ब्राजिनिक्तिः ।। सनः निमा । इति व्राजिनिक्तिः ।। सनः विव्ञा ॥ अप्राक्तान्नी विश्वान्त व-निक्षुवाः । जद्मर्थाः । काण्णि-हाः २ कर्दमः ७ नम्युः ८ ब्रक्तानः ६ । इजामदः ॥ क्ष्णिहाः ७ क्ष्णीनः १ क्ष्णिनः ৮ काष्णिकाः ७ क्ष्णीनः १ क्ष्णिनः ৮ काष्णिकाः ७ व्यन्नीनः ३०। इति जब्रजः ॥ भर्यायान्त्रः ॥ व्याण्य क्ष्णिहाक भाष्म पुष्टेवाः ॥ व्याण्य क्ष्णिहाक भाष्म पुष्टेवाः ॥ व्याण्य क्ष्णिहाक भाष्म पुष्टेवाः ॥ व्याण्यानः भूः व्यन्तीताक्ष्यामा-वर्जः। यथा। श्रीवृत्का क्ष्म्यावर्त्वाः व्याण्यानः ॥

(त्रािंकः ली भुजा। ইত্যমর: ॥ (त्रािंक्षः जि जनकात्रािंक्नािंकीः। उट्शर्यग्रायः। विज्राद्देर जुक्षिकः। उट्शर्यग्रयः॥ विज्राद्देर जुक्षिकः २॥ ইত্যমतः॥

রোচী স্ত্রী হিলমোচিকা। ইতি শন্তুরত্বাবলী॥

রোচী ত্রি রোচিষ্ট্:। ইতি হেম-চন্দু:।।

রোচ্য তি পুকাশ্য ॥ পুীতি-বিষয় । ক্চধাতোঃ কর্মণি য পু-তাযেন নিম্নানা হয় ॥

রোট্ তি হিংসু:। বধক:। রোষ-তীতি বিচি গুণ:। ইতি মুগ্ধবোধ-টীকাষাণ দুর্গাদাস:॥ রোটিকা গ্রী লিপ্তকলিশাসঃারোটী इंडिक्टी राउँ जावा। उरक्रन পুকারমাহ। শৃষ্কগোধ্মচ্র্নে কি-किट भूक्षेक (भाविकाः। उक्षक (बराय८ कृषा जूत्याकारति छा॰ भरहर ॥ निष्क्रिया द्वारिका (भू।-ক্তা ভণানস্যা: পুচক্ষহে। রোটি-का रलकृष्ठा वृष्ट्री थाजूवर्षनी । वाजनी कक क्षुन्दी मीथाग्रीना॰ পুপ্জিডা।। 🏶 ।। অথ विही। मून शाध्यह्र्गं माष्गाए विमर्पाय । विशाय विकाकात्र निश्रामा भरिनः भरहर ॥ अङ्गात्रकर्वही ख्या वृष्ट्नी भूकला लघुः। हीलः नी कक्षृष्वा भीनम धामकाम-जि< ।। 🗱 ।। व्यथ यवात्राधिका । यवका রোটিকা क्टा मधुता विव-म। लघुः। भल णुकानिनकत्री वन्तरा इंडि कंकागयान् ।! शीनम श्वाम कामा । भारता (यह भनामयाम् ॥ 🗱 ॥ व्यथं भाषात्राधिक।। हुर्न- य-इस মাবাণাণ চমসী সাভিধীয়তে। **ट्यमी ब्रह्मिका (ब्राह्मी क्यांटर वन** जिम्का।। क्रकाका वाजना वन्।। मीक्षाशीना॰ भुभू जिला। मारागा॰ দাল্য স্তোযে স্থাপিতা ভাকক-ঞ্কা:।। আতপে শোবিত। যজে।

রোদন / निष्टी खाधूमनी म्खाध्यक्षी प्रक्रि তা সৈব প্রোক্তা ঝর্ঝারিকা ্রাধ্য ঝর্মারিকা স্থানে ভুভূমিক 💸 🤼 গুর্তরিকা ইতি বা পাঠ: ।ব 🕬 💏 পিত্তন্নী কিঞ্চিঘাতকরী ফল ১৯৯০ অথ চণকরোটিকা। চাণক্ষর 🕮 টিকা ৰক্ষা শ্লেম্য পিত্তা ভূতি । বিষ্টস্থিনী ন চক্ষুব্যা ভালাল 🐬 লশমুলী।।ইভি ভাবপুকা 🐫 🖽 ताउ अ जनाम्ता इ क्युक्राः ॥ अ व्यक्रापः 📑 पूर्शामानः ॥ द्यारः क्री স্বৰ্গ: ॥ ভূচি (मिमिनी ॥ **द्धारन॰ क्री कन्स्**न•११ अ_ं विशेष মেদিনী ৷৷ ওস্য শুভাশুভাল खानम्, ज्ञिष क्षिड मही । न्गा । शुह्राम्, मीन क्म ত ন সুথাবহ ।। ইতি গ व्यथ्रायः ॥ 🗱 ॥ कशिनः 🐩 😳 নেত্রাস্থনা রত্নসমূহো জাতঃ 🕐 🦠 युष्क भूनि॰ मृठ॰ मृष्ट्वी करत्रः १ वट 🖰 লা মুহুঃ। ইত্যুপক্ষ্যা র্ডা 📑 🧗 না মর্ত্যে রত্নসংঘো বভূব 🖾 🕾 **त्राप्त्राणुश्वरतन मृडान**ः वर् यथा। उद्धानिता भाक्त एउ 🛪 द्राधीः भूध माणुउ । व्यक्त

ा हुए डनाम् जाना॰ नत्रक॰ धुत॰॥ 💨 ুন্ধবৈবৰ্ত্তে গণপতিখণ্ডে ২৭ আলাবঃ॥ #।। মৃত মুদ্দিশ্য রো-🖘 िरवासा यथा। (भूषामू, वासः ্ ্ক পুৰো ভূৰকে পৰে। ् 🐃। चाला न द्यापितवाः हि ा ार्गार्था विधानजः॥ ই जि म् 14 18 2 11

📖 । জী য্বাস:।ইতি রা-3 3 3 3: II

🕼 🖰 📆 দুরালভা।ইত্যমরঃ॥ ে । । জী স্বৰ্গঃ।। ভূমিঃ। ইত্য

🗯 🐬 वृष्ट सर्गः ॥ ভ्भिः। यथा णाम्माशृथित्वते द्वामरमते द्वा-্ 🖰 ভোদসীতি চ। ইতি ভরত-अलब् 🗱 🔢

ও নাটে জ্ঞা ভ্মিস্বগৌ । যথা। कुम्ब ाणि च्रुर्गावी द्वारम्त्री রে 🕮 🐴 চ তে। ইত্যমর: ॥ ভূ ভূ-ি ারাকাশ এতে সহিতে বি-পূজ্য চ রোদসী রোদঃ শব্দযো র্বাচ্চ্যের ইভি ভুদ্যাবৌপরাম্ব্যে ा अधन देवड माछ नद हरान 🐃 াজনাপে ভ্রদ্যাবৌ সমু ি উ ৈচ্যেতে। রোদশ্চ রোদসী 🦥 💆 विवि जूमो भ्यक् भ्यक् । 🏿

जर्भुरगरगभ्भरया 🕾 🕾 स्प्राप्त्री नि द्यापत्रीजि विकास समि **(तारमा** भागर र किछो । इंज्जियः ॥ (ब्रांपनी छऽ-वाय मना खि। यथा। महावान्थि-वित्रो द्यान्त्मत्री द्यान्नी द्यान्नी-ভিচেতি। ইতিভটীকাষা ভরত: রোধ: ু পু॰ নদীতীর । ইত্যমর-রোখঃ 🕽 ভরতৌ ॥ রোধন: बि রোধকর্ত্তা।। রোধে ক্লী

। ইতি ব্যাকরণণ।।

(दाध्वका जी नही। यथा। निम्नगा রোধবকাচ সুবন্তী সিন্ধু রাপগেতি निमर्गाय जास्तः। इकि ज রত: ॥

রোধোবক। জী नही। ইতি ত্রি-কাওশেষ:॥

রোখোবতী জী नही। ইতি রাজ-निर्घण्डः ॥

রোধু क्री অপরাধঃ।। পাপ । ইতিমেনিনী।।

রোধু: भू॰ लाधु:। ইতি মেদিনী त्राक्रनिर्घल्डे म्ह ॥

त्राधुभुन्नः भु• मध्कर्कः। ইতি द्राजनिर्घणः।

রোধুপ ব্লিণী জী ধাতকীবৃক্ষ:। इंजि ताजनिर्घणः॥

রোপঃ শাসা গানা গোলার গানার ।। বোপণ ফিডিসেনির াছদে লী । ইতি বেলা ্রাণ

(त्राभगहर्नः क्री नयनाञ्चनित्रण्यः।
नथा। अथ (त्राभगहर्नः। निनाधाः
त्रमकः भिष्ट्रा ममाना श्लादा दात्रिणा
। शृहीया उद्धनः मर्बः उद्वनः मर्बः
ग्राधा गठः॥ मृद्धः उद्व बनः मर्बः
श्रिती मिष्ठः ज्यदः। विह्नी
जात्यः ममाक जित्वाः जिक्नाः
त्रामा कर्त्रमा त्रक ज्या ममानः
रमन निक्रिश्यः। अञ्चरम्यनः

তেন সর্বাদোষোপ্তলান্তবে । সাক্ত নেত্র রোপন্ন• চূর্ণ মেত্রসংশবঃ ।। ইতি ভাবপুকাশঃ ।।

त्राभगीवर्जिः जी निबाक्षनर्जमः।
यथा। जाथ त्राभगीवर्जिः। जाभीकि
खिन भूज्ञानि यद्धिः भिश्ननि उक्षुः
नाः। जाजीभूज्ञानि भक्षामग्रितः
गानि ए (याएम।। गृष्यः भिश्वामृतः।
वर्जिः क्जा सम्मिकाज्ञिः। जिनितार्ज्ञन मूकानाः नामिनी माः मत्ः
किन्द्र।। এতम्या ज्ञान्तः (भूग्जाः
मावामार्क् रत्यम्या। सम्मिकाविष्टी
(प्राभगी। ইতি ভাবপুকामः।।

(त्राभ्राजित्ताभ्रःः भू वानः वि
त्मयः। जम्र ख्गाः। त्राभ्राजि
त्राभ्रा नघरः भीष्भाका ख्राज्ञ
त्राः। जमाहिरना (मायस्त्रा वन्रा)

मृज्विवर्षानाः॥ ইতি त्राजवल्लानः॥

त्रामः ली जन्। ইতি भद-

हिन्द्रका ॥

(ताम क्री मतीत्रकाठास्तृतः। (ताँ
वा इंडि ভाषा। उद्शुर्भ १ हर्म्यक्षः

(वाम २ व्यक्षकः २ पृतुः १ हर्म्यकः

(उन्क्रः ५। इंडि त्राव्यनिर्धकः॥

इानिविष्णाय उन्गुः मृज्ञामुज् यथा
। वाद्यामयुजा (मुक्षा इहा इंडि क
(त्राभमा। (त्रारिन्दिकः कूश्वक्न्युः)-

म्नानास महाज्ञनाः ॥ ए एव ज्ञात्म मिल्डानाः म्नाबियानास्य रेखव ह। ज्ञानव्यं मित्रमानाः ज्ञानी निर्याः मकानुकः ॥ इकि नास्य ७० व्यक्षायः ॥ क्षा त्र स्मारतात्मा रुम्माद्वः यथा। न मर्नम् मिलः की एउ सानि यानि न मःम्म् मिट । ज्ञामानि ह त्र स्मानि नामिरक्षेन महा बुद्धः ॥ इकि कोर्प्य केनित्र कारन १८ व्यक्षायः ॥

রোমকং প্লী পাংশুলবণ ॥ অয কারভেদঃ।ইতি রাজনির্বন্টঃ॥ রোন্কন্দঃ পু• পিণ্ডালুঃ।ইতি রাজনির্ঘন্টঃ॥

द्धामकशत्त्रकः क्षी प्रणिविष्णयः।

क्रम् इति शात्रमुखाया। यथा। व्यका अमस्य यमस्मिति त्रमुगः शुक् शिक्ति द्धामकश्वत्रकः। व्यय-खडः मिक्तभूतः मुस्नकः भोरमु १ यास्मि विख्यानवाकः।। अपृख शापायतिषानि जानि स्थानानि यः द्धावाविषा वप्रशि हैति मिक्कास-विद्धामस्यो शावाध्यायः।।

त्रामक्शः भू॰ लामविवतः। यथा

्रिक শতি काक्रमाणाः मस्ते तुः

्रिक मुक्ति। समस्य त्रामक्रमयुः

निक्ष मधीनित्याकतः॥ ইতি मार्क

তেবপুরাণে স্বীনাহাত্ম্য ।। রোমকেশর ' ক্লী চানর । ইভি ত্রিকাওশেব: ॥ '

রোমশুহণ) লী চামরণ। ইভি ছেম; রোমশুহকণ) চলুজটাপরো ॥ রোমশুং পুণ উনীর্যাচরণা। জাওর-কাটা ইভি ভাষা। ইভামর:॥ রোমভ্মিং জী চর্ম। ইভি রাজ-নির্ঘটাঃ॥

রোমন্বতা স্ত্রী লোমাবলি:।ইঙি হেমচন্দু:॥

त्राभवान् जि लाभविभिडे:। त्राभ नदाहस्य प्रश्वेवज्यु जुउ (यन निम्न मः।। त्राभविकादः भ्रः त्राभाकः। ইভি स्नायंकः॥

রোনশ: পু॰ মেষ:। ইতি ছেম-চন্দু:॥ পিণ্ডালু:॥ সম্ভী॥ শ্বর: । ইতি রাজনির্ঘন্ট:॥ অতিশয়-লোমবিশিষ্টে ত্রি॥

রোমশফল: পু॰ টিণ্ডিশবৃক্ষ: 1 ইভিরাজনির্ঘণ্ট: ।।

(द्रामणा की मधान्कः। ই ডি द्राजनिर्घणेः॥ (नामणा ह॥

রোমশুক প্লী স্থৌণেবক । ইতি ভাবপুকাশ:।।

त्रामहर्यः भू॰ त्रामाकः। ইতি ह्वायूयः॥ রোমহাণ লী রোহাঞ্চ ইন্ত্য-नदः ॥

রোমহর্মার পুর্ স্তঃ॥ বিভীতক-व्कः । इंडि (मिनी ॥ जाम्। मान तृऽ८भि विर्था। यम्। उ मईता-মাণি বচস। ছবিভানি বং । দ্বৈ-পাযনস্য ভগব স্ততো বৈ রোম-হর্ষণ:।। ভবস্ত মেব ভগবান্ব্যা-क्रहात यग शुजूः । ইতি कीर्प्य > ञथ्यायः॥

রোনাঞ্চ: পু॰ রোমহর্ষণ•। ইত্য-মর: ॥ পুলক কণ্টক রোমবিকি-খা রোমোদ্রম রোনহর্ষা শ্চাত্র। ইতি ভরত:।।

রোমাঞ্চিকা क्षी सम्बीर्कः। ় ইতি বাজনির্ঘণ্টঃ॥

রোমাঞ্চিতঃ ত্রি জাতপুলকঃ।রো-भाक्षविणिष्टेः। उट्भर्यप्रायः। इ ষ্টরোমা২। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষ: ॥

রোমালী জী वयःमिक्तः। ইতি मदनाया॥ (ब्रामावनी ह॥

পিণ্ডাল্:। ইতি রোমাল: त्राजनिर्यक्तः॥

त्रानान्विष्टिभी भू कश्चीत्कः। ইতি রাজনির্ঘণ্ট: ॥

द्रामावली की नाज्यक्ष लाम- द्रायः शू॰ काथः। ইउत्मद्रः । भूगी। ज< शर्यायः। (द्राम नजा २ | (द्रामणः

া ইতি হেনচন্দ্র।। রোমাধী ৩। **देखि भद्रभागा।। त्वा**मत्राजी ६ ४ য়থা। ভস্যাঃ প্ৰিষ্টা নতমাজ্যি। **রন্ত্র-ররাজ ভদ্নী ন**ব লোগরাজী : **নীবী মতিক্রন্য মি**তেতর্মার জ (स्थना स्था मत विवाहिः॥ ३७ **ब्याद्रमञ्जयः ॥ मा**ं रयोषसद्धाः ভবতি। অজ্ঞাতশৌব্য স্থা । **নীরাভীর মুপাগতা শু**রগলোঃ সী नि मुजामवानाः (मुख्य वात निहा কিমুংপল মিজি জ্ঞারু করা মান माजि।रेमवानास्त गङ्ग अभि भूथी त्रामावनी॰ (१११६) व भू। छ। मीडि मूहः नथी मा १६७ ः १९० ज्या भृहित।। ইতি तमनक्षती।। त्राभाभुगकना जी विश्विष्टी

ক্ষুপ:। ইতি ক্লাজনির 🕾 🗓

রোমোদ্র পু॰ রোলাঞ্ । क् क्लागुषः ॥

রোমোল্ডেদ: পু: রেচনক্ষ্য ইতি ত্রিকাণ্ডশেষ:।।

(द्वान: भ॰ भानीयाम्बङ्ध है कि भक्ठिम्कि ॥

'(द्रावधः प् जुमदः। २७७ विका ওশেষ:॥

भात्रमः॥ (३भइ४)

গোপল: । ইঙ্গি মেদিনী ॥ উষর ভূনি: ॥ জোধনে ত্রি । ইতি হেম চন্দু: ॥

त्रारुः भू॰ चस्त्रः। ইতি रूपः हन्दुः॥

রে: হক: পু• পুেততেদ:।।বোচরি ়িড । ইতি মেধিনী ।।

ক্রাজণ ক্লী শুক্রণ। ইতি রাজ-নর্ঘটাঃ। জন্ম।। প্রাদুর্ভাবাং। ইতি ভহধাতো ভাবে হনট্ প্রত্যযেন শ্রিয়ন্ত্রণ।

> ाः भु• भर्ब उतिरम्यः। उट् ांग्रायः। चिन्द्रापुः २। ইতি क्रोः ः।।

रः शू॰ वृक्षख्यः।ইज्रुशाकिः ।यः॥ वृक्षमाख•।ইजि म॰किः ः नाद्रागामिवृज्धिः॥

ে গ্রী লভাভেদ: ৷ ইভ্যুণা-ি কাষ: ৷৷ লভানাত্র• ৷ ইভি সং-ি প্রসারোণাদিবৃত্তি: ॥

াতি পু• বীজ•।। বৃক্ষ:। ইভুৎ-বিদিকোষ:।। ধান্মিক:। ইভি সি-ক্ষান্তকৌমুদ্যান্ণাদিবৃত্তি:।।

ं रंग॰ क्ली कागरखरः। इठाताः विकासः॥ मञ्जितमीय स्वसंस् रित्रा भूद्याः सुम्बनाः भीनकानः विकाससम्बद्धाः स्वास्त्रम् स्व मा भूनीविधिः । अकानिकेमाध्यमा भयानक 🦠 📑 द्रोहिनकामऽ नाभाष्ट्रनः। रथा। अब भूतीहर भाक मिल्याय (दोश्गिस न न इत्य-**दिउ**ऽভिधातिन भूर्वाञ्च मुक्तिम् म-क्वार भावा होहिन भर्या लोन नभूबीक्षकानः भुजीयरा । राजन त्रोहिन॰ भू**र्वाङ्ग मुक्तिम**ु (गोनकाः वार्ष्या ज्वाविशः व्यथना इन्। দ্দার প্রাবধি রিভাবগম্যতে। (दोहिनस पिरममा नवम मूर्डः । তস্য স্থ্যোতিযোক্ত রোহিণী দৈব-ভত্ত্বাৎ রৌহিণত্ব মিতি। ব্যাস: । আরভ্য অতপে শাল অর্য্যাদা-(क्रोङ्गि वृक्षः। विश्विष्ठा विश्विमा-স্থায় রৌহিণন্ত ন লম্ব্রুবেশ্য ইতি नाषउदः॥

রোহিণঃ পু॰ ভূতৃণ:।। বটবৃক্ষ:।।
রোহিতকবৃক্ষ:।ইতিরাজনির্ঘণ্ট:।।
রোহিণি: জী রোহিণীনক্ষত্র°।
ইতি শদর্বাবলী।।

রোহিণিকা স্ত্রী কোপাদিনারক্ত-বর্ণা স্ত্রী। ইতি জটাধর: ॥

রোহিণী জ্রী জ্রীগবী।ইভ্যমর:॥ ভড়িং ॥ কটুম্ভরা। সোমবল্ন:॥ লোহিতা।ইভি মেদিনী॥ জিনা-নাণ বিদ্যাদেবীবিশেষ: । ইভি

रण्यञ्चः । कान्पत्री । इदीडली॥ निक्षिष्ठा। इंडि द्राजनिर्यण्डः ॥ किन मवर्गा वर्जुणाकात्रा विविद्यातन शुभ-खा र्वी अवी । इंडि ब्राज्यहाः ॥ अ। वद्यस्वभाउ।। जा वमुत्रव रार्गा क्षाप्रभन्नी मूदख्रः मञ्जाखा । यथा। (स्वकी क्राइनी क्रांश वजू-(एउम्) बीनकः । (दाहिनी मुद्रकि र्पिवी चिमिन्ड र्पवकी छन्ए।। इन्डि **२**र्गভाর**তে হ**রিব॰**णः ॥ # ॥ সুর**-ভিক্ন্য। যথা। শ্রীমাক গুরু উবাচ १ एक्ना छन्या याज्य मुद्रास्त्र नीम নানভঃ। গৰা• মাভা মহাতাগা স-র্বলোকোপকারিণী।। তস্যান্ত ত-ন্যা জক্তে কদ্যপাভু পুদ্ধাপতে:। নাম্ৰা সা রোহিণী শুভু সর্বকান্দুষা न्गा ।। जम्रा काञ्च न्त्रतमा बत्मा রিভি তপো জ্লাৎ। কামধেনু রি-ভি খ্যাতা সর্বলক্ষণসংযুতা इंडि कालिकाभुजारम (भवाध्याय: ॥ 🗯 ॥ नववर्षी याकनाः। यथा। 🔊 -ঠবর্ষা ভবেদ্ধৌরী নববর্ষা ভূ রোহিণী । দশ্যে কন্যকা প্রোক্তা অত উদ্ধৃ ब्रज्ञहरा। ॥ इंज्रहा**रुख्दु॰ ॥ 🕬 ॥** ক্ষিণ্যাদি নাথবি শভি নক্ষৰাত্ত-र्भात प्रजूषी सद्भावा । जटमर्गापः । জ্বোহিণিঃ ২। ইতি শব্ধয়াবলী ॥

वाकी १। इंडि (इमहन्युः ॥ उन् শস্বাক্তি পঞ্চারীল্পকে। ত-न्याधिष्ठाजी (एवड) व्या । गगन मः ব্যে উদিতে সভি সিংহ লগুস্য অ-প্টব্রি**শৎপলা**ধিক দওবিভয়•গত• ভবতি ৷ যথা ৷ কছুকঠি শঙ্গলাকৃ-তৌ নভোমখ্যমাগভবভি পুদ্রাপ-তৌ। পঞ্চতে গত্ত হ পঞ্চ লিখিকা নিংস্তাঃ সুমুথি সিণ্ড লগ্নতঃ।। ইভি কালিদাসক্ওরাজিলগুনিক্; পণ ।। 🛊 ।। তত্ত্ৰ জাত কল যথা। म्याक्यकार्यः जननः जनीनः मू-**ठाक्राहरू विवाम** करनवद्र:। मान রাণ্মিনা হ্লভাখিলাশযো যো রো-ছিণীজঃ স ধ্রী স মানী ॥ ইতি কো-श्रेभूबीभः॥क्षा गणात्रागविष्ययः। য্থা।ব্ৰোহ্ণীনাম্ক গলবোগাণা नाभानि जःच्याकारः। द्यारिनी न-ঞ্ধাপোকা কওশাল্ক এব চ। অ-विकिञ्चक दकारा १थाम नारेमकव्-ন্দকঃ॥ ততো বৃন্দঃ **শত**ন্নী চ গি: नायुः कश्चिष्धः । गरनोयः भुषत्रः **फ भा•मजा**व खरेश्व **ह** ॥ विमारी क्शंपरम ज् द्वागा अक्षेपम म् अः । 🗱। তত্র পঞ্চানামপি রোহিণী 🙃 সামান্য সংশ্ৰান্তি মাহ। গলে १ वि ল: পিত্ত কফৌ চ মূৰ্ছিটো পুণ্

রোহণী মা-সঞ্চ তথৈৰ শোণিত । গলোপ-मर्त्राषक्रित ख्रशाख्दि निरुष्टा २ मृन्

व्याधि विष् हि (वाहिनी।। अनिनः মৃছিত: পূৰ্মা: কৃষ্ণ পিত্তো চ মুছি-**छो शिखे वा मृहिं उ॰ करका वा मृ** ছিতঃ। ননু ত্রযোপি মূছিতা: পৃথ (गृावङाया ज्विवक्रमानङ्ग्रा ।। *॥ ত স্যা বাত জায়া লক্ষণ নাহ। জিন্তা সমস্তাভূশ বেদনান্ত মাংসাক্ষরাঃ কণ্ঠ বিরোধনাঃ সূতঃ। সা রোহিণী বাতকৃতা পুদিষ্টা বাতাত্মকোপদুৰ গাঢ় যুষ্টা ॥ জিন্তা সমস্তাৎ জিন্তা। যাঃ সর্বভঃ। বা ভাত্মকোপদুবগাঢ युष्टे। उद्योभिन्छ ब्रिज्यायन यूङा

ক্ষিপু বিদাহ পাকা তীবুদ্বরা পিত্ত निविख्डा ।। 🗱 ॥ (ज्ञय्हानार । শ্রোতে নিরোধিন্যপি নন্দপাকা ভরী ছিরা সাকফসম্ভবা ভূ। যো়ে-

॥ 🗱। লিভুৱা মাহ। ফিপোরুমা

তো হত্ত কণ্ঠসোতঃ ॥ 🗱 ॥ সন্ধি পাতজা মাহ। গদ্রীর পাকিন্যনি-वार्य वीर्या जिएाव निका जिल्ला

তবেৎসা। #।। রক্তরামাহ।য়ো-ৈট শিতা পিত্ত সমান লিহ্ন। সাধ্যা

া দিপ্তা কবিরাত্মিকা তু। 🕸 । রক্ত-

্র হরাস'হারকত্বাবধিনাহ। সদ্য शिरावद्या रुष्ठि वाश्राद क्कमगू- ख्या । भकाषाः भित्राख्या नक्षार्: । राजानिका॥ ॥ वर्षः শালুকলাৰ।কোনাছিনাতঃ কফ-সম্ভবো যো গৃছি গলৈ কণ্টক শুকভূ-তঃ। থরঃ স্থিরঃ শস্ত্র নিপাত সাধ্য স্ত কণ্ঠশাল্ক মিতি বুবস্তি॥ বণ্টক-भूक ज्ङः कछकटष्ट्कवरष्टमगाडनकः ।। 🗱 ।। अधिजिल्लगार । जिल्लागुक-গঃ শ্বযু: কফা বু জিন্তোপ রিষ্টার-স্কৈবনিশান। ভেবো পৰিজিল্ব: খলু রোগ এষ বিবর্জবেদাগতপাক নেন ॥ অস্জা নিশ্বাদেবেত্যবুশঃ ॥ 🗱॥ वलयमारः। वलाभ वराय जनु-মতঞ্চ শোথ• করোভাগ্রগতি• নি-वार्य। ७ मई रिथवाशु जिवार्य वी-र्व्यः विवजनीयः वलयः वरु 🐯 ॥ 🗱 ॥ অলাসমাহ। গলে তু শোথ । अ कडः अरूषो सामानिको थानक-(काभशवः । नयहितः मुख्य त्तन মাত্ রলাম সংজ্ঞা ভিষজো বি-कातः॥ मर्गाष्ट्र रः इत्यमर्गात ए-(मरनव (वमनाजनकः ॥ 🕸 ॥ अक-व्नत्मारः। वृरखाग्याखाः मयथः म-मारः गकु अदा २ शाक अपूर् अंक का नार्यकवृन्तः পরিকীর্ত্তাত হসৌব্যা-ধি ব্লাশ: ক্ষতত পুস্ত: ॥ অভঃ गनम् । अभाकी देवरभाकी। व्यपृष्ट देश मुन्द्र १. छ ॥ वृत्त्वाह । **अगु६७**॰ युच अगुम्सम् २०१३ वृङ्कः वृन्त मूराइबिध । राजाल शिख क তত্ত্ব প্রকোপাঘিদ্যাৎ সতোদ প दनाजाक्छ ॥ # ॥ भेउन्नीमार । বর্ত্তির্ঘনা কঠ নিরোধিনী তু চিতাতি মাত্র পিশিতপুরোহৈ:। অনেক क्क् भागरती जिल्लामा एक गाम-তথ্নী সদৃশী শতখ্নী।। ঘনা কঠিনা। অনেকৰক্ বাত পিত্ত কফজতোদ मार कञ्जामि युका। मञ्ज्ञीमम्नी লোহকণ্টক সাছল। শতলী মহতী শিলা। ততুল্যা যতঃ পুাণছরী॥#॥ গিলাযুমাহ। গুড়ি গলৈ দ্বানলকা-স্থিমাত্র: স্থিরে৷ গ্লুকক্ স্যাথ क्क ब्रङ्मिखः। गःवक्रां मक নিবাশিওঞ্চ ন শস্ত্র সাধ্যস্ত গিলায়ু भ कः ॥ 🗱 ॥ भनविषुधिमाङ् । লর[•] গল• ব্যাপ্য সমু্ত্থিতো যঃ শোফো ক্লঃ সন্তিচ যত্ৰ সৰ্বাঃ। স সৰ্ব দোৰৈ গলবিদুধিস্ত তদ্যৈৰ তু-ण्यः थल् **म**र्वक्रम्य ॥ 🗱 ॥ गलीष नार्। भाषा महान् यस गलाव রোধী তীবুল্বনো বাযুগতে নিহস্তা। क्रक्त जाएं। क्षितादिएं गल গলৌব: পরিকীত্যতে ২সৌ ৷৷ বাযু গভেনিহ্ভা উদানবালু গভিরো-∥

थकः ॥ 🗱 ॥ खत्रमग्रह । य खाम्रहः মান: শ্বসিতি পুসক্ত ভিন্নর: শুষ্ক विमुक कर्थः । वरकाशमूरश्चेत्रनिनाः যনেষু জ্ঞেয়: স রোশঃ খসনাৎ স্বর-ম:।। তাস্যান: তম: পশ্রে। শ্র বিমৃক্তকণ্ঠ: শুষো বিমূক্তো হ্যাথীনঃ কঠো যস্য সঃ। অস্বাধীনতা ভুক্ত। निनिजुः ष्यमकादार्। ष्यनिनायः तियु वायु वर्जा मु । अमना बाजा ए।। #।। भा भारतामा । भुषानवान् यः य-যথু: সুকস্টো গলোপরোধ সকতে ক্রমেণ। স মাণ্যতানঃ কথিতোব-वाषी भागभूग्य गर्वकृत्वा विकाबः ॥ भुजानवान् विखातवान् । भुक्षः অভিশ্বিত কষ্ট যত্র সঃ॥ #॥ বিদারীমাহ ৷৷ সনাহতোদ প্রযথু সুভাগু নন্তৰ্গলে পুতি বিশীণ মাণসং । शिराडन विष्ठां प्रपत्न विष्वादी शन র্প্তে বিশেষাৎ স তু যেন শেতে॥ পার্শ্বে বিশেষাৎ স তু যেন শেতে স পুৰুষো যেন পাৰ্খেন বিশেষাঘাত্ত-ল্যেন শেতে তিষান্ পার্ম্বে সা বিদা-त्री **ভব**ক্তি ইউ/र्थः ॥ 🕸 ॥ অথ্ গল -রোগাণা• চিকিৎসা। রোহিণীন ত্র সাধ্যানা• হিত্ত• শোণিত মোক্ষণা ব্নৰ প্ৰপাৰ্ঞ প্ৰুষো ন্স্তল চ॥ বাজ্জान्त कृष्ण द्राक्त व्यविक्तः

भुडिनात्ररा**८ । नूर्थःकान् ए**न्स् গণ্যান্ ধারখেচাপ্তভীক্ষাঃ।। বিসাব্য শিক্তসণ্ভূতা দিতা ক্ষৌ-मु भिराक्षा । विसंया कराला मा ক্ষা পৰ্কবৈঃ কথিতো হিতঃ॥ আ গারধ্য কটুকৈ: কফলা পুতিসা व्रायण । जागावध्नः स्न इंडि लाक । कर्रुकानि मुधी शिश्रनी মরিচানি ॥ থেতা বিডম্ দন্তীযু **िउनः भिषाः मरेमन्नवः। नम्यकर्याः** ণি দাতব্য কবলঞ্চ কফোছ্যে॥ খেতা অপরাজিতা ॥ পিত্তবৎ সাধ্যেদৈয়ে রোহিণী রক্তসম্ভ वाः। विमात्र क्षेणाल्हः भाषः (राजि धिक ब्रिय ।। किकान ग বালঞ্চ ভুঞ্জীত স্নিগ্ৰনল্লশঃ। উ-পজিস্থাক বঢ়ালি সাধ্যেদ্ধিজি-স্থাক ॥ একবৃন্দন্ত বিস্থাব্য বিধি• भाधन माठातः । এ इतृन्त मित भुारमा वृन्द्रक्ष अगुलाहरत्य ॥ जि-লায়শ্চাপি যোব্যাধি শুঞ্চ শান্ত্রেণ सावराय । अमर्ग्यष्ट मुमःभक्षः চেল্যেল্ড বিদুধি ।। ইতি ভাব-明年1783日

भर्ग अन्तर्भावितः **शृः हन्तुः। इंडि** सम्बद्धाः

্তিশ্রনণঃ পু বৃষভঃ। ইতি

त्राजनियंग्डेः॥ वृमुद्दिक ॥ রোহিণীবল্লভঃ পু চন্দুঃ। ইতি रुनागूथः ॥ वमूप्तवण्ठ ॥ রোহিণীশঃ পু• চন্দু:।ইভিছেন-ठन्दुः ॥ वनुष्दवन्द्र ॥ রোহিণ্যপ্রনী জ্রী রোহিণীনক্ষত্র-युक्जामुक्कार्रेभी। यथा। क्कार्र-न्याक (दाहिन्या नर्फ्त्राख ६ ईन॰ হরে:। কার্য্য বিদ্ধাপি সগুম্যা হন্তি পাপ• ত্রিজন্মজ•।। উপো-ষিতো হৰ্চযেন্মস্কৈ স্তিথি ভাস্তে চ পারণ । যোগায সোগপত্যে যোগেশবাৰ যোগসম্ভবাৰ গোবি-न्त्राय नत्रा नमः। मानमञ्जः॥ य-জ্ঞায় যজ্ঞেশবায় যজ্ঞপ তথে যজ্ঞ-अञ्चवाय भाविन्हाय नत्या नगः । व्यर्हनम्।। विश्वाय दिष्यश्वताय वि-শপত্যে বিশ্বসম্ভবায়গোবিন্দায় न्या नमः॥ भयनम्। मर्वाय मर्ख-শরায় সর্বপত্তে সর্বসম্ভবায়গো-विन्हाय नत्मा नमः। भारतम्।॥ স্তু গুলে পূজ্বেদেব সচন্দা রো-हिनी ख्या। मद्भ त्जायः जनानाय **जभु**ञ्ज कल हन्तन•॥ जानुख्या म-वनी गद्या हन्त्रायार्ध्य निविषय । ফীরোদার্ণর সম্ভত অতিনেত্র गम्ख्य ॥ गृहानार्घाः मगारकः

রোহিণ্যা সহিতো भरा। सिर्य वमुर्दिवाय वलारिदाय नन्ताय यः त्मानारेय ॥ अनवः वाननः त्मोतिः दिम्छ । भुक्षाख्य । वामु एव व्यीतिन न्ति ए रिकाम्मन ॥ বরাহণ পুগুরীকাক্ষণ শ্রীকান্ত মজ ন্ব্যা । দানোদর পদ্মনাভ কে-শব পক্ডপ্বজ ॥ গোবিন্দ মচ্যুত দেব মনন্ত মপরাজিত। অধোক্ষজ ত্রগদ্বীজ সর্গ স্থিত্যন্তকারক।। অ-নাদি নিধন বিষ্ণু ত্রিলোকেশ তি-विक्रमः। नादायग क्षेत्रवीष्ट्रः भार हक গদাধর ।। পীতান্তরধর দিব্য বন-गानाविज्तितः। **ख्रीद**्मासः कः গদ্ধান শ্রিপতি• শ্রিধর• হরি•॥ য• **(मव॰ (**मवकी (मवी वगूरनवाम्बीब न् । ভৌনস্য বুদ্ধণো গুল্তিঃ উল্ম বুন্ধাত্মনে নমঃ। নামান্যেতানি স॰-कीर्जा भजार्थः भार्थायर भुनः ॥ ত্ৰাহি না• সৰ্বপাপন্ন দুখে শোকা-ৰ্বাৎ পুভো। দেবকীনন্ন আশ-হরে সংসারসাগরাৎ ॥ দুর্ভাণ खागतम विष्का (र मात्र निष्क मन् भ-ক্ং। সোহ• দেবাভিদুর্ভ জ্রাহি भा भाकभागदार ॥ भू दताक नि नारी २ए गर्ड। खानगागत। दा-हि माः (मदानादामा जा मृत्व शता)

न दक्षिण ॥ सहस्र वामूप्तवाय गावाक्षत रिडा है । जगिक्षणाय कृष्णय गाविक्षाय क्ष्मा नमः॥ गाडि दह भिर्देश्वत ध्रम क्षित्र । जि दाकाजाक्॥ इंजि गाक्षण २०२ व्यथायः॥

ন্নে:ছিৎ পু॰ সূর্ব্য:।ইতি মেদিনী ।। বর্ণভেদ: ।। মৎস্যভেদ:।ইতি সংক্ষিপ্তসারোণাদিবৃত্তি: ।।

রোছিৎ স্ত্রী মৃগী॥ লতাভেদ:। ইতি মেদিনী॥

রোহিত क्ली अङ्गः॥ রক্তः॥ খজশক্ষরাসন । ইতি মেদিনী ॥ রোহিত: भुः गीनविष्णयः॥ मृग-ভেদঃ ॥ রোহিতকবৃক্ষঃ । ইতি मिरिनी।। ब्रक्टवर्गः॥ ब्रक्टवर्गविणि-ষ্টে ত্রি। ইভ্যনরঃ ॥ 🕸 ॥ রোহি-खन्दमाजा बक्षनः खनाक स्था। क्षः मद्री (४७ व्यक्ति स म्टाम्)। যঃ শুেণ্ডা হসৌ লোহিতো বৃত্ত বজু:। কোঞ্চ বল্য রোহিতস্যা-পি নাত্ৰ- বাভ- ছন্তি স্থিপ নৃধাতি ৰীৰ্য্য ।। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ।। অপি-চ। রক্তোদরো রক্তমুখো রকা (क्वा त्रक्रभक्षिः। वृण्यभाक्षः 🗀 সম্প্রেষ্ঠা রোহিত: কথিতো 💥 🦠 ॥ রোহিতঃ সর্বগৎস্যানাং 🖓

মুখন কৰি কাভি শৈ । কৰাবানু মনঃ ধানু ৰাভাই, নাভিপিত্ত মু-। ভিন্দু প্ৰমূ গভান রোগান হন্যা-দোহি সমুগুক । ইতি ভাব-

(त्राहिउकः भ् त्कविष्णयः। ब्रारुडा इंडि ভाषा। उৎ शर्या यः। রোছी २ श्लीश्मवुः ७ माডि মপুষ্লকঃ ৪ । ইত্যমর: ॥ রো-হীতকঃ ৫ রোহিতঃ ৬ রোহিণঃ ৰ অশাল্মলি: ৮ দাডিনপয়: ১ महाशुम्बः ३० क्रीमान्य विः ३১ विद्याहनः ১२ मान्यानिकः ১० । चन्र खनाः। करेत्रः। त्रिक्षद्रः। क्यायद्व । भूमी उनद्व । कमि-দোষ বুণ প্লীহু রক্ত নেত্রামগাপহ-ত্বঞ্চ। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।। অপিচ। রোহিতো লোহিতো রোহী লো-হী দাডিনপুল্লক:। রোহীতক: প্লীহঘাতী কচ্যো রক্তপুসাদন: ॥ **ইতি ভাবপুকাশঃ।। অ**ন্যচ়।রো-शैउरका गकर श्लीह खल्मान्त्र इतः मृतः। इंडि ताजवल्ल डः ॥

রোহিতা জ্রী রাগাদিনার ক্রবর্ণ।

ক্রাহিনী রোহিনী রোহিতা রক্তা

ক্রোহনী লোহিতা চ না। ইতি

ক্রিবেরঃ।।

রোহিতাখ: পূ॰ অগ্রি:।ইত্যমর:॥ হরিশ্চন্দুরাজপুঞ:।ইতিমেদিনী॥ রোহিতিকা স্ত্রী রাগাদিনারক্তবর্ণা। ।ইতিজটাধর:॥

রোহিতেয়: পু॰ রোহিতকবৃক্ষ:।
থথা। প্রীহারী রোহিতেয়: স্যাদুক্তপুস্লন্চ রোহিত:। ইতি ভরতথ্ত রত্নকোয়:।।

রোহী পু॰ রোহিতকবৃক্ষ: ॥ অশ্বথাবৃক্ষ: ॥ বটবৃক্ষ: । ইতি মেদি ী॥

রোহীতক: পু॰ রোহিতকবৃক্ষঃ ৷ ইতি রাজনির্ঘণ্ট: ৷৷

(व्रोह्डाः भू मन्विरण्यः । यथा । व्योह्डाह्य ख्यात् । व्रक्ष मनवः मण्युकीर्विजाः । क्राः भुकाश्राजः भूकाश्राजः । क्राः भूकाश्राजः । क्राः व्याद्या । व्याद्या । क्राः व्याद्या । व्याद्य । व्याद्या । व्याद्या । व्याद्या । व्याद्या । व्याद्या । व्याद्या । व्याद्य । व

<u>त्त्रीमु</u>

वाय रेक्टव उद्धरमी निक्यमुकः।
निर्मादः मूजमा कारना निष्नुकन्नाक मध्यः॥ हिज्यम्यना विहिज्ज्यक मुक्कि व्या मृद्धः। मूलजः क्रजव्किक मूत्रज्यक्षा विद्या मृद्धः। मूलजः क्रजव्किक मूत्रज्यक्षा विद्या मुद्धेवा ।। व्यनाकि व्या किकि मार्कि प्रमुद्धेवा ।। व्यनाकि क्रिक्षः। उद्भाष्ट्रा ।। रिव्यः २
। ইजि (स्महन्तुः॥

श्त्रों वे नामरत । इंडि किविक त्र क्रमः ॥ हजूर्यभवती । श्र व्यक्रती-हेट । नामरता श्नामतः । त्रोहेडि धन्नः (लाकः । इंडि मूर्गामामः ॥ स्त्रोड श्र व्यनामरत । इंडि किविक त्र-क्रमः ॥ श्र व्यक्ति उट । इंडि मूर्गा-मामः ॥

त्रोपु॰ क्ली म्याताम् छेत्र नाष्ठर्गठ
एम तत्र नः। তৎ পर्य । ए छेतु॰ २।

हे ठ । यह का सम्याम् ए । किः

प्ता (म्या यम) (त्रोपु॰ । यम। हः

खता । म्याता विक् एम्यः न ।

खानः भूमणे म्याता विक् एम्यः न ।

दानः न । प्ता क्ष्मणे । क्ष्मणे ।

हे छि । यह का सम । म्या । उठ । छि । यह का सम ।

दान न । यह । छि । छि र नम
वान न न न । छि । विक । यह । यश।

गः।। मर्व। छि । विक । यह । यश।

রাজকরিভাদি।এমূবীভথক বিদ্রু द्वीत क्र माज्यार, चारा माजि ही-·ख्याकोष्ट्रो १६७ मु ि वार्ट ইক্যুক্তঃ।ইকি ভূরতঃ।।। 💎 🤫চ । व्यव ब्रोदुश ब्रोदुः त्काव 💎 🔠 বো রক্তো হন্তাহিদৈৰতঃ 🚉 🐠 न ति भू खब छहि हो भी भन न उना মুষ্টিপুছার পাতন বিকৃৎ ছেনাব-हांब्रेनिटेन्डव । अनुग्रम अञ्चनतिहा द्रामाप्रेषि र्जव शोहाः क्विन ভঙ্গেষ্ঠ নির্দ•শ বাছয়োটন ভর্জনাঃ । आज्ञावमानकथन भागुरवाद एकः পণানি চ। অনুভাবা স্তথা ক্ষেপ জু **त जन्दर्भनारयः॥ উগুতা** दिश ह्या भाक (सन (वनथावा मनः । (भाक्ः হর্ষাদ্যক্ষাত্র ভাবা: সুরু ব্যক্তিচা तिनः ॥ यथा । क्**उ मन्**मकः मृष्टे॰ वा যৈ রিদ গুৰুপাতক মনুদা পশু ভি निर्मर्य)रिष र्खविष्ठ करायूरिकः । मञ्जक রিপুণা সার্দ্ধণ তেষাণ সভীয় কি-बीढिनामय मङ्ममृष्यामः यार्रभः করো মিদিশা বলি ৷৷ অস্য যুজ বীরাভেদমাই। রক্তাস্য নেত্রভা চাত্র ভেদিনী যদ্ধবীরতঃ 😃 ই🗇 माह्जिप्रमर्गाए अतिरहमः॥ (तोषुः भू म्र्यार**्डा**। उद्भवीषा

वर्गः २। ইতিনেদিনী।। পুকাশাः

🖂 ৪ আভপঃ ৫ : ইত্যমর: ॥ 🛚 গ্যাত্যাত্ত ক্রিকাবক: 🗸 🚽 🕆 जुरारङ्शामा 🕻 देववर्ग्रजः म अञ्चल क्ष्या भागः । इंडि ं छः ।का अश्रानीम् यथा I ः भिन्नत्वा क्षीत्वा धातार्थाः কালস জিভ:। অনুনামা ছতো রেট্র সপ্তরৌদা: পুকীর্ভিতা: ॥ গ্রনাদ্রর সপ্তমো রৌদুঃ প্রাণদাহঃ । (जया क्वानि यथा। शिक्रांवा রৌদুনামা চ কালৰপ: পুতাক্ষय। শ্ৰম্পন বহুরোগঃ স্যাৎ সর্বজীব यश्च्यः ii ष्ठेत्रा तोपुरामा ह গোর বু মুখ্য কারণেতা বুণাদি পিত্ত अपना नानात्वर्गकरता नृगा॰ ॥ শক্তি শন্ত্রা যদা বর্ষে রৌদ্রো ভবতি লাল্যখা উত্তাপেন ক্ষিতি শুষ্েৎ এরণার রোগদে। ভবেৎ ॥ রৌদু ক্ষা এহারোদুে। যত্রাবে চ ভবে-জুৰে ৷ চিত্তোছেগ• বুণ• স্বৰ্য্যানানা বোগ সমন্বিত গাঘোরনামা মহা-प्रोत्ना वात्रध्मुक कात्रायः । छ-एत्या गरा रकः नानादान ज-बहिङ्॥ काननामा महारतीषु উ-उहारा भीउन गरा। नानाद्वाभ শন : বুণাদি কণ্ডুক ভবে**ৎ** ॥ ইভি ্যোতিব• ॥ 🗱 ॥ রসবিশে- 🏽 ख़िष्टी /

वः । ইতি মেদিনি ।। ভদিবরণ ক্লীবলিন্দ রৌদুশব্দে দুপ্তব্য ।। হে-মন্তথাতুঃ। ইতি হেমচন্দুঃ।। যমঃ। ইতি ধরণিঃ।।

রৌদু: ত্রি তীবু:।। ভীষণ:। ইতি মেদিনী।। কৃদুসম্বন্ধিনি চা।

রৌদী ল্রী চণ্ডী।ইতি মেদিনী।। क्पूजरी। इंडि द्राजनिर्घणेः॥ क् क्रिजाक्जभशाबीषीमाया महा-রৌদীনারীচামুগু। চ। यथा। এক-वव महारिएडा। कक खरशो महा-ञ्राथ । ज ह माया गहात्रोद्री • द्रोद्रवीः वि**नम**र्ब्ध **२**॥ ना नागा वृत्र जीमा अर्दाप्त भुमाहिनी। তথা তুমোহিতা দেবা: সদ্যো निमु १ जु (अ जिद्रा ।। (एवी व जि-**मि**त्थनात्को छ॰ रिन्छा॰ সমতা-उयर । जया जू उाडिंड जिम्र रिष्ठामा भूजलाहत् ॥ हर्षामु (७ উভে সম্যক্ পৃথক্ ভ্তে বভ্ৰতু: । करतास मानविनुमा वर्षमूर् क्रगाच्या ॥ जनकृत्र हरद्राप्त्री চামুণ্ডা তেন সাভবং। সর্বভূত भक्तातीषी या प्रती भन्नतमधनी ॥ সংহারিণী जु या रेচव कालরাতিঃ পুকীর্ত্তিতা।। ইতি বারাহে ত্রিশ; কিনাহান্য্য ॥

(क्रोन) की जिन्छ। ই कि क्राम्म
निर्मणेः।। एटक तमः यथा। मध्यानाः
च्छ जामुक करतमा माक्षिकः तमः।
थमनाहं ज्याहि। भाग मुन्
।। ই कि नाक्षि अन् ज्यान क्रामः।।
(क्रोन की नाम्चित्र न्यामः।।
(क्रोनकः की नाम्चित्र नयमः। उट्यामः।।
(क्रोनकः की नाम्चित्र नयमः। उट्यामः।।
व्यानामनि नयमकः २। ই ज्यामः॥
व्यानामनि नयमकः २। ই ज्यामः॥
व्यानामनि नयमकः २। ই ज्यामः।।
व्यानामनि नयमकः १। ই ज्यामः।।
व्यानामनि नयमकः। ই ज्यामः
ज्ञामां कार्याकः।।

রৌম্লবণ ক্লী শাস্তরিলবশং। ইতি রত্নমালা॥

(त्रोत्रवः श्रु॰ नत्रकविष्णयः॥ (यात्रः
। इंडि (त्रिनि)॥ यान्रम् विवत्रः।
यथा। (त्रोत्रवं क्रिमाक्की ख्यांडि
यक्तान्डी नत्रः। उम्र स्वक्षः वरः
डा (त्रोत्रवम्र निमामय॥ (याकः
नानाः महरम् (ह (त्रोत्रवा हि शुः
मान्डः। कानुमाव श्रुमान्छ छव
यञ् भूष्डतः॥ छवाङ्गात हर्या
(यन क्डः उप्तत्रिनी मनः। काङ्ग्णरः
छाडिडीद्रिन ठालिडास्त ख्विना
॥ उत्रास्तर लालक्यानः विमुक्षि
यमानुगाः। म रस्मान छीद्रान वः

शिना उन धार्यात ॥ शास शास ह शास्त्र अधि । अधि अधि श्राप्त श्रुमः । व्यक्त शास्त्र । अधि अधि । विश्वीर्ष भ शहित ॥ अधि अधि । विश्वीर्ष (अधि । शिक्ष । विश्व । विश्वीर्ष (अधि । शिक्ष । विश्व । विश्व भार्यः । भाष्य । ।

जीववः वि हक्षनः॥ धूर्डः॥ शिद्रः । ইঙি শব্রত্বাবলী॥ तोहिहें पूर तोहियम्गः। यथा। म এষ রৌছিষা• মধ্যে চরতীতি ভব-ভূতিঃ। ইত্যমরটীকাষা**ণ ভরতঃ।**। (वो क्निम)नवसमृङ्कः । यथा। जब भूबं दि मुक्त मिन धान द्रोक्तिस न महाद्रिकां छ-शानन श्रवंक्ष्यभाषमा अक्वार-পরো রৌহিণ পয্যন্ত গৌণ পূর্বাাহ্র-कानः भुजीयरु । एउन द्वोहिनः भूबीक्र माष्ट्रमा भीनकान एवता-ত্তরাবধি: অপরায় শুক্ষেস্য পু-স্বাবধি ব্লিভ্যবগন্যতে ভভক্চ প্-র্নদিনে সন্থবাৎ পর রৌহিণণ-र्याष्ठ॰ डिए। लीए भन्निति मूर्ज ত্রয়মাত্রে ভত্তিথিলাভে পূর্বদিনে শু। রৌহিণাভরপ ৌণপূরী-इ वाजार न भविष्त छथादा-ভाषा । উভय्हित मञ्जूकास्य

भविति भूतगाक विशि गृहि। ल इकि बहरार । बोस्पिह दिवगमा रवनपूर्ण का। क्षाकिश्वाक जारिपोरंपक्षा देवित्य वि कि। रेकि भूष्यक्षा

होहिनः **भृः ,** इन्ह्रेन्त्रमः । देखि

कोश्वित्य क्री मजकन्मिशः। इंडि

भ्रोक्तियः भू वनस्यः॥ तूषः भुष्टः। हें छानतः॥

্টার প্রয়ঃ ত্রি গোব**্সঃ। ইতি** মেদিনী ॥

्रोडियः क्षी कड़्गः। ইडियमिनी इ.सि.स. भूः मृगवित्ययः। ইउऽ कार्याद्याहिडम्द्रमाः। ইउऽवय-

ा । श्रेष्ट जी मृगी॥ मूर्ता। ইভি । শ্রেমারোণাদিবৃভি:॥

ক্রাণ ।।

ক্রেণ্ডা মহাস্থান পুকরণে দেবী

ক্রেণ্ডা মহাস্থান পুকরণে দেবী

ক্রেণ্ডা মহাস্থান পুকরণে দেবী

ক্রেণ্ডা মা

লকাজঃ গেড় ব্যাস্যত্তীয়ো वर्षा याजनमाजायाम् वर्णकः। কলেয়ালরেন জানে **দত:** েইডি जनसङ्ख्या ७५। एकशः स्था । नकारः ए यशेकान्य क् अमीवय ज•रूक । भी । विः । जानातः सर्वतम्भूषास्त्रः ॥ श्कारम्यस्य वर्षः शक्षभागमयः मना। विशक्ति সহিত বর্ণ ত্রিবিন্দু সহিত সদা ।। আত্মাদি তত্ত্ব সহিত হি ভা-वर भाईछि। इंडि कामरवनुउद्ध॰ ॥ 🗱 ॥ অস্য লেখনপুকারো যথা । अ ७ नी वर म गूका वामा फ क-গভা ত্বথ: । পুনৰ্জ্ব[']গভা রেথা ভাস্ নারায়ণঃ শিবঃ॥ বুক্সশক্তি-क मिडिर्ह्मान मन्। भूठकार्ड । ইতি বর্ণোদ্ধার তন্ত্র•॥ 🗱॥ তৎ-भर्याया यथा । व कन्मुः भ्उना পृथी माधवः শক্রবাচকः। वलानू-জঃ পিণাকীশো ব্যাপকো মাংস-न जिल्हा भूषी नाता १मृज (मवी লবণ বাক্ণীপতিঃ। শিখা বাণী ক্রিনা নাতা ভানিনী কামিনী প্রি-या।। जु। विनी (विश्वनी नारः भूहा-ন্ন: শোষণো ছরি:। বিশ্বাতা নভৌ বলী চেতো নেকু গিরিঃ কলার্যাঃ ॥ ইতি ভন্ত॰॥ 🗱॥ অন্য ধ্যানং

वशा हर विकास विका

लकाः भू वश्वर्कः। इंडि भंजः ब्रह्मवनी॥

महाः भू वृक्षविश्वाः। एक्या हेकि बामान हेकि कावा। उद-भर्गायः। विक्ठः २ भानः ० क वायी ८ मृण्याः ६ उत्तः ५ कार्माः १ कृतः ६ अनुकतः ६। अमा छनाः । किक्न मन् । क्यायदः। উक्षदः । व्यवः। विक्षायह्न दः। माहि-ए॰। गनमः गुरुमायकद्षः। हेकि नाक्षान्यकः।। श्राः विक्राः राष्ट्रभागा विक्राः। उत्र निक्रम् । अस्न शक्र मुक्ष एक विक्रम् কৃত্তপা। সাবুরক্ষ চথায়হাদেশিব তি ভাগ লেক্ছ । শুকালি । শানকাশি ক্ষাণালিক্ত প্তা। মুপার জন্ মারব নাল চানিল পিত্তক্ত । কা বিলয়ে কিছিল ভারপুকাশাং ।। ৠ ।। অন্যায় । শাস্তা গুল বিশ্বীয় সামি মানক পিত্তক। শ্রেমানারি সমী-মানু মুক্ষ শুকালিনাশন ।। ইতি বৈদ্যক।।।

वक्तः शः **अनक्तः।** ইতি শदः त्रज्ञावजी ॥ जीनवज्ञश्रखः। त्वक्ष इंडि ভाषा। उट्शर्यशयः। कर्न हैः २। ইত্যমরং॥ नक्रकः ७। ইঙি खत्र अ: ।। (त मिलन्या दिष्ट कीर्न বস্ত্রথণ্ডে নেকডা ইতি খ্যাতে । नक्तामार्डक यञ्जभाव देखि कि-हिट्या शही २ खी कर्न है: नाहै: সিচ্য প্রোত লক্তকা:। ইতি ব্ৰভসঃ ৷৷ লক্যতে হীনৈ ৱাস্বাদ্যতে व्यम् ज्याउ लकः तक लक क चार আপনে চুর্ভ্যোঞির্বেভি বিভাবি-ত বাৎ ন ঞি: কর্মণি ক্তঃ ততঃ স্বার্থেক: লক্তকে। হস্তস্থাদি:। অ-জ্যভেমা অক্ত॰ ব্যক্ত॰ আন্ধাঃ ক্তঃ ৰ অক্ত॰ ক॰ মুখ॰ যমাদিতি ত্ৰিপ-एदङ्बीरहो मनीयारिजा**ः** जङ्ग

इसि दिस्ति देशियामा अधिक । १८क्को अ॰ अलव्यालावुराव्यक्ति । 明明 清朝 []

44 59 18 0 MARG HELL सर्वि। मृतिः ११के । ११क हु।। W HS

ध्य है जुला है जिस्ति कर्ति अपनि ।। ই লম্ব্যতে। সূপি গডৌ। ইতি मुर्गामागः ॥

্বগ ই খঞ্জে।। গভৌ ইতিকবি-কলুদনঃ ।। ই লক্তে । খণ্ডো गिडिदिकनारः। इंडि पुर्गामामः॥

वाग म अ मान् । इंडि कविकन्नः कनः॥ म नगयाजि। व यनगीर। लगा व्यवस्थित । इंडि मूर्गाः मानः ॥

লুগ ক রকে। ইতি কবিকল্পদ্মঃ॥ क नागग्जि। द्राक स्वानारक्षाः। রকে ইতি রকক্ স্বাদ্পাপনে। ইত্যস্য ঞে রনিভ্যত্ত্বে ভাবে অলি क्ष । ইভি দুর্গাদাস: ॥

লণড ত্রি চাক। ইতি ত্রিকাগু 🕥 শেষ: ॥

ঘণিত বি সঙ্গুক্ত। লাগা ইতি ভाषः। ইতি नगवालाः दर्मान क्ट्युं्रिय गनिश्चमः॥

न्द्रियाल सक्त स्टर्गलक्ष्मानि । वर्ष्यः शृः मधः। वाठी देखि जाया। इंडानइ ।। यदान राम्याः 作。可 FM . 10.700 11 13 15 (करः । देकि शुक्रीकः । मध्य**ा** त्वात वृशी श्रेष्ठ बन्धवात्राव व्यक्तिन छ।त्या क्षेंब भौकार ॰५ तकः॥ जुरु ही झाणीसपुत्रस्था 📆 🕬

> রাতি ফল রাশি ভালব্যশকারঃ । অহোরাত্রমধ্যে দ্বাদশরাশ্য উ मयि । উদयः भृदीहल अर्पाभः । তেষা• ক্রমেণ উদযাচ**ল স**ংযো ला नम उन्ह्री वीष्ठ अनिदाम নিপাতনাজ্জম্য গঃ। ইতি ওড়ী-কাবা॰ ভরত: ॥ তেষা॰ শূন্যাय-नाः भन्न त्रिमानः यथा । द्रोत्मान (वरि ०। ८१ जनिष्कुरेभरेव ८। ১१ র্বাণো রুসৈ: ৫। ৬ পঞ্চ খ সাগরৈ-**क्ट (180) वानः अ**रवरेन (18) र्वि-ययाक्ष्युल्यः ७।२२ क्रांश्क-भात्मव जुनामि भानः॥ जथाहि । 11 681616 91013211 21817911 P1 @187 11 ादा जा 216180 11 81618011 30161 511 11(81919 11 66 18166 ७१७१२०॥ 11 P8 1 C 1 SC इंভि ही लिका॥ क्षा कमवाञ्चला विक्

118711

भव न्याप्त कविष्यां अभागता । वर्गाच्या । वर्गाच्या । वर्डा ११ अस्य भगवण रहातू १८ १० ४ असून १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ खरवरेम ६। ६६ चित्र इत्र नदरेनः १। २० (मा ६७) १ १ वर्गेन ६ १ ६० मध्या । ३२ मीनः । वातामुर रेम छ। ७८ र्गमन्य न्यीनः @ । २२ परेजिङ @ । ७५ महत्पुरवरेगः ৫।৪১। অক ক্ষাভি: ৫। ১৯ সমু ব্রে ংসু শুচিভি ৪। ৩৫ রনলোষ্টেষ্-ডি: ৩ ৷ ৫৮ সোগ বেদৈ ৩ ৷ ৪৭ মে-বাদেকোনবিংশে গণিত পরিগত• भान भवायनां १ ॥ ॥ छेरयन-গ্নান্ডলগ্নযে। র্দিন• পুতি রবিভোগ্য• যথা। লগু দণ্ড পল । দ্বিদ্ব তৎ স খ্যু ক্রমত: পল । বিপল্প রবে র্ভোগ্য মেব॰ কল্পন মস্তত্তে ॥ ইতি **(म**्राञ्चिर ॥ এ**डर्या वित्रद्र** व्या। **७व शा**हीननग्रमान ।

দিনভুক্ত• । মাসভুক্ত• व्याः পল । বিপল । দণ্ডঃ। পল গ যথা े (मयः 913811 018911 ২ বৃষঃ 1 b13811 116613 **७ गिथन** । 11 56 106 वा आ 8 कर्क है: 1 2215011 @18011 ৫ সি হ: । ३३। ४२ ॥ 116819 २०१ एम ।। ひずらり ७।२२॥ পু তুলা 1140106 ७। ५५ ।।

काविका प्रशासिकार । अस्ता अस्ता अस्ता अस ३३ म् अः 6100 !! 8139 II 41:311 01871 **ए**ः वृह्मभात्रु निक् लग्नमानः। द्या । रिल्कुङ । इंग्लंड পল থবিপল গদ গুণ পল যথা) (मयः । 11 56 14 81 511 ২ বৃষঃ गारदाद 1 \$18911 ० भिथुन । >016811 118911 8 कर्क है: । ३३ १२० ११ व १३० ११ **७ नि॰इः। २२। ७।** ७। ७३॥ ७ कन्या । 3010111 21203 11 26 166 १ जुना । C: 33! ৮ কৃশ্চিক:। 3312211 ৯ ধনুঃ 1 7010611 2, 23 **२० जरुतः ।** 213011 81571 ११ वयः । 916911 Callet II **१२ गीनः** । 910811 0189 व्यथ अञ्चलानीन नगुङ्ग्हम् छ कन । नश्न मूर्वं। २ किता ी माम নি বলযুতো ৰূপবান্ বিক্তান্ত*াটি*।* নে ব্যক্তঃ সুবাণ্মী শশধ্যভন্যে স র্বশান্তার্থবেতা। জীবে দাভাপবিত্রঃ সুহবি রথ গতে ভার্গবে মণ্ডলেশঃ লৌন্নৌ কণ্ডুতি গাত্ৰ স্তন্দিত নিৰ্বত

नामा है। बनाकी रहा में कि महार्थित । अपने कि महाराज के विकास के स्वाप के कि D. Dags maggy of the Biggs िराजा एइ। इतः स्थान्ती द्वावस्ति। ह याद्व १ है ७५। लगा लगा न व्यवस्था विकास त लाके मुं। का असा पृथ न छत्या । water from the graph with the ক্ৰাই 🛭 সিংহেচ বৃশ্চিকে ষট্চ সগু 📗 ब्ह्या जूल उथा। वजा नग्न भूगालन ্্িশাঃ পরিকীর্ত্তিতাঃ॥ শর পূরা-यक्षारायु तभाकीयुधिनाशताः । ल ए न्या हि है वस्तु वद्मा विवाहत्या ६५३ ॥ (पंयवादा ভবেদ্বন্ধ)। वृत्य া এ কামিনী। মিপুনে শ্ভগা কল্য বেশ্যা ভবতি কর্কটে॥ সিংহে ্ৰিন্ত্ৰপুপ্ৰাচ কন্যায়াণ কাপসং-युजा। जुलागाः क्रियार्थाः वृन्ति-क कर्जना ज्या । भी जागा ध-नुवि महाह भक्त नीहगाभिनी। अ-ख्य हिराञ्चमञ्चा न्याचीत्व देवद्वान्य সংযুক্তা ॥ তুলা কর্তটকো মেধো मकब्रेष्ठिय ब्राम्पयः । हब्रकार्यप्राणि वर्गाह श्रिवकार्गाण रेठव श्रि ॥ भक्षानता वृषः अख्या वृश्विकः मु शिक्षाणि हि। कन्। धनुम्ह नीनम्ह नि कर्माणि वर्गातम् विष्कृतः।

हा । अस्त भ्राष्ट्र क्षित्र के निर्माण के विकास देवता स्था हिन ्राज । ५५ जाराम् ॥ वृष्टि । भाषास् 被西南省

> 一群,为1. 数据联系可停止的。 िंह विस्तरभागि । १ १ १ १

> > ञ्चाञ कंहावतः ॥

नशः वि मकः॥ निष्कितः। इंडि (निमिनी।।

লগুকঃ পু॰ পুতিভূ:। ইত্যমর:।। দ্বে লাগা ইতি জানিন ইতিচ খ্যা-তে। তৎকার্য্যে লগ্নকঃ ওলস্ত্রী ব্রী-ডে ক্ত: স্বার্থে ক:। প্রভিনিধি র্ভব-তি পুতিভূ: দ্বিপ । ইতি ভটী-कायाः ভत्र उः ॥

লগ্নিকা জ্বী নগ্নিকা। ইত্যনর-होका ॥

লব ই ড অভুগ্গত্যো:। ইভি কবিকল্পদ্দম: ।। ই লহ্ন্তুতে। ড লহ্নু-তে। অভুক্ভোজনাভাব:। তথাচ । যে গুণা লম্বনে প্রোক্তা স্তে গুণা লঘুভোজনে। ইভি বৈদ্যক ।। ল-ষ্থ্রনে উপবাসে ইত্যর্থ:। ইতি দুর্গা-मानः॥

নিথ্ন দিয়ভাবত: ।। দিয়ভাবা- লঘ ই শোষে। ইতি কবিকল্পদনঃ ॥ वै वहुरछ। लाव वेश यदी-

षात् यु राष्ट्राहिन् तान्त्राना जयिः भू वायः। इज्रागितकायः॥ विषया भू॰ वयुष्। छब् मित्रग्रा-ৈ প্রথান্তর্গত ঐত্বর্য্যবিশেষ:। যথা । লখিনা বশিতেশিত্ব প্রাকান্য মহিনানিনা। যত্র কামাবসাধিত্ব। श्री धि दि शर्या मक्षेषा ॥ इंछि एम-एनुः ॥

विधिः वि अध्यानसा त्रवाचा अ ছিল। ৰ লঘ্:। ইত্যৰ্থে ইপ্ত পুত্য ওংমন্ নিয়নঃ। ইতি ব্যাকরণং॥ ज्यायान् वि व्ययनस्या (त्राया णि जिन्नायन नामुः इंडार्थ ने राजु **न**् ত্যযেন নিয়ম:। ইতি ব্যাকরণ ॥ वयु हो भीयुः। इज्यादः॥ कृका-**९**क् । इंजि सिहिनी ॥ जामकातः । देखि बाजनिर्धकः॥ नगुः ह्या श्कानाम छेषिः। इंडि

(यशिषी ॥ वदः जि अध्यः॥ नताङः॥ वयुगर्गः श्रु जिन्छेकन्दगः।

त के त र भागीतिका अपूर्ण क्रिन यथा। म ख्रिल्ड क्रिक्यूक नकात्रा जारिक्यः भून तारि लंघु র্যঃ। ক্লো গুৰুমধ্যে রো ব্যুমধ্যঃ সোহস্তভক:कथिত। হন্ত লঘু खः॥ গুক্র রেকো গকারস্ত লকারে। লঘু (ब्रक्क:। इंखि ছ्ल्मामञ्जवी।। লঘুকায়: পু॰ ছাগ:।ইভি ত্রিকা-अल्पयः ॥ क्रुनुनतीत्रन्छ ॥ लघूकानार्याः शुः कर्कलव्कः। इंजि ब्राजनिर्यणेः ॥ नय्यिदिका खी कृ मुथहे।। उ९-भर्गायः। वामनी २। ইতি श्रानी-वनी ॥ लगुगनः शृ अधिनी भुषा इस-

नक्जानि। यथा। उत्ः भ्वन्याङ-

কা ধুরগণ স্ত্রীণুয়ত্তরাণি স্বভূরাতা-

দিত্য ছায়িত্রব চরগণ: পুষ্যাখি

रुखा वयुः। ইতি दीशिका ॥

্ৰ বিকাৰে। সৰ্বিক্তি আৰু ভূগেৰ্ম । **ইতি** বিক্তিত ১১

द्रम् स्टब्स् ४ - स्टब्स्**न्। ३७** १४८१**७**१५२ स

লবুৰুকো জ্ঞী কাকলীদুকো। ইতিবাজনিঘটঃ॥

भद्रद्वावनी ॥

बहुनाम क्री अध्या **३७ मन**-हन्दिका॥

निव्यक्ष्मा हो सुपुत्रक्षम्नता-हन । उत्रु भानता र्भाभाषी वृक्षी विकास (गाक्ष्रमधुकः । दथा विकास (ज्ञेषात (गाक्ष्रमधुकः विकास वित

লবুপএক: পূ॰ রোচনী॥ শুণ্ডা-রোচনী ইভি খ্যাভঃ। ইভি শব্দ-চন্দ্রিকা॥

लयूপত্রী জী অখত্থীবৃ**দ্ধ:। ইতি** রাজনির্ঘট:॥

লঘুপিছিল: পূ॰ ভ্করুদারক: 1

वायू भू अ ज्ञिक हरा। इंडि ज्ञाक निर्यण्डा।

नय्यमतः भू कृपुकानिः। उट् शर्यायः। मृक्षकनः २ वल्कतः ० मृक्षभञः ८ मृत्यमः ८ मधुतः ५ मत-रातः १ मिथिश्रियः ৮। अम्र शक् कन छ्गाः। मधुतासदः। कक वाठ नाम्पदः। क्ठादः। निक्षदः। बद्ध-कात्रकदः। देव शिलार्जि मार्थ भाष्य दक्ष। इजिद्राजनिर्विः ॥ न्यदम्यो छो ज्यमती। इठिद्राजनि वयुगन्नः श्र कृतात्मगन्नः। ইতি রাজনির্ঘণীঃ॥

লযুনা স: পু • ডিব্রির পদী। ইতি। ব্রিকাণ্ডশেষ: ॥

वयुनाःनी खी गक्तनाःनी। ইতি त्राक्तिर्वण्टः॥

वध्वयः ही वीत्रगम्नः। इछऽ स्रः॥

ব্দুসদাফল। স্ত্রী লন্দ্পরিকা। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।।

'লঘুহন্ত: পু' শীঘুবেধী। ইতি হেমচন্দু:॥

लघूर्वभूषा जी लघुरू वृतिका। इंडि द्राजनिर्घण्टः॥

नगृन्दितका खी कृष्णुं पृत्तिका।

हार्छा पृत्र है जिया। एटः

भर्यायः। नयू भ श्रम् क्या र नय् हमः

हुन्दा अन्य महाकना है। न्यानु प्रम्म प्रम्म अनुमहाकना है। न्यानु प्रम्म प्रम्म प्रमालिक है। व्यानु प्रमालक है। न्यानु प्रमाल

वधी खी जायत्यका॥ मान्सनः পुष्टिनः। ইতি भिन्नि॥ প्रका। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥ লন ইতি নামু। ক্যাভা। জ্যোতিঃ শালমতে সচে সুথিবা মপ্তা-भिक्षिति ॥ नाजास्थार हत्यः ে ্য স্বাদ্ধে লগুপুণাণ ভৰতি । यथा । पद्मा च एएश यमकाहि ब्रम्हः लुक् भन्दिस (ब्रायक्लेख-নঞ। অধ স্ততঃ সিদ্ধারণ সুন্দের সৌম্যেথ যাম্যে বড়বা লাভ ॥ ক্রব্রপাদান্তরিভানি ভানি স্থা मानि सङ्गानविष्मा वण्डिः । श्रेष । यज्ञस्काष्ट्रगयनी भूरतामानि मान क्ष्मान् न्यू। 💛 🐃 🖼 क्गड• वूरेश निंगिरिङ 时 😘 😘 था ভূব:। जामी भूष्य समामञ्जू वियाग भारता कि (द्रायम महार प्रान ন্তমাৎ ক্রিয়তে তদন্তর ভূবং থেটে ষুণ স্ব॰ ফল ।। ইতি সিন্ধান্তশি-রোমণিঃ॥ 🗱॥ অথ লঙ্কাপুরী ব-র্ণন । বৃষ্টোবাচ । ত্রি:শদ্মোজন বিভীর্ণা॰ স্বর্ণপুকারভোরণা• ॥ দ ক্ষিণস্যোদধে ন্তীরে ত্রিকুটো না**ম** পর্বতঃ ৷ শিখরে তস্য শৈক্ষ্য মধ্যমপুষি সন্নিখৌ ॥ পত্রভিশ্চ मृग्नाभा॰ देक्षियाः ठञ्जिभः॥ শকার্থ নৎক্তা পূর্ব পুষর্ ২ বহু বৎসরৈঃ॥ বসম্ভ তত্র দুজ্বং 🕫

ज्थः श्राक्तमभूक्वाः। व्यनद्रावः न्धाः सम्बन्धाः इत मिरवोक **जः।) व**क्कानुर्गः नेमानाम्। भव्नाः भक्तम्ताः । दूराधर्या ভবिष्ठि बाक्तरेन र्बर्गा वृज्यः ॥ इं**छि** व क्लिश्वाल किश्विष्मंन नामाधायः ॥ भाषा।। भाकिनी ।। जनहा। ইতিমেদিনী।। धान/दिस्थयः। ७९ **श**र्यायः। कदानिबिश्वे। २ काखि-কা ৩ কক্ষণান্ত্রিকা ৪। অস্যা ख्याः। क्टाइः। हिम्दुः। शोलाः ত্ব । পিত্তনাশিত্ব । বাতকারিত্ব । ७क पुष्ट । इंडि त्राजनिर्घ छै: ॥ नकानाशी भू॰ इन्मान् । इंडि नक्तज्ञावनी ॥ **ল**ঙ্গাধিপতি:) পু' রাবণ:। ইতি জ লঙ্কাপত্তিঃ) টাধরভ্রিপুযোগৌ লকাপিকা ৃদ্রী প্রা। পিডিশাক बकायिका । ইতি ভাষা। ইতি শব-नस्रातिका विद्यावनी।। बकाशायी पूर वृक्कवित्मवः। लक्का-, निज इंडि ভाষा। यथा। नदाञ्च-ंখী,রাজনৃক্ষো ভদুনৃডো বিশাবকঃ। ইতিশব্চন্দ্রিকা।।লঙ্কাবাসিনিত্রি লক্ষেশঃ পু॰ রাবণঃ। ইতি ত্রিকা-अः भवः ॥

नारकातिका जी भूका। इंडि मदः

बज़ावनी।।

लाह्मायिका की क्रांडिंडिममबज़ावनी ।

लकः श्रू अस्ता िक्रांना इंडि

जावा। इंडि स्माननी ।।

लक्र्म की नाज्या। इंड्युगापि
कावा:॥

णड्डन॰ क्ली উপবাস:॥ कनग॰॥
প্রবন॰। ইতি নেদিনী॥ অত্তীযগতি:। যথা। প্লতন্ত লহ্ভন॰ প॰
ক্রিন্গগত্যনুহারক॰। ইতি ছেমচন্দু:॥ ৠ॥ অগ্নিলহ্বননিষেধাে যথা
।নচাগ্নিলহ্বযেজীমাামােপদধ্যাদধঃ ক্চিৎ। ন চৈন॰ পাদতঃ অর্য্যাৎ
মথেন ন ধনেঘ্রাঃ॥ ইতি কৌর্যো
উপরিভাগে ১৫ অধ্যায়ঃ॥

লছ লক্ষণি। ইতি কবিকল্পন্দমঃ।। লছতি বৃষণ চক্ৰেণ গোপাঃ। ইতি দুৰ্গাদাসঃ॥

লক ড ব্রীডে। ইঙি কবিকল্পজনঃ
।। ড লজভে। নিধাশা লগু ইভ্যান্য
। ইভি দুর্গাদাসঃ।।

লজ ই ভঙ্গে। ইতিকবিকল্পজ্ঞ। ।। লঙ্গতি । ই লঞ্জ্যতে । ইতি দুর্গাদাসঃ ।।

লজ ক অন্তঃদ্ধৌ। ইতি কবিকল্প:
কন: ।। অন্তৰ্জি রাছাদন । ক

लाहरिक हम्मु (नर्यः। ইकि पूर्वाः मानः॥

জন ইক ভাষটার্থে। ইতি কবি-কল্পজনঃ।। ইক লগুষতি। ভা দী-ডি: ষটার্থে নিকেতন হিংলা বল-দানানি। ইতি দুর্গাদাসঃ।।

लक ज्क जानाः ই उठि क्विक् न क्यः ॥ क लक्ष्यि । जानन• ही-श्चिः। ই उ पूर्णामागः॥

णककादिका जी वद्धानुवा । इंडिमक्राना॥

লজা জী অন্তঃকরণকৃত্তিবিশেনঃ।
ইতি নাগোজীভটঃ ॥ অকর্ত্রের্র কথানি গরক্তানভয়ণ । লাজ্ ইতি ভাষা। তৎপর্য্যায়ং । নন্দাক্ষণ ২ ভীঃ এ ত্রপাও ব্রীডা ৫। সা অন্যত-শেহৎ অপত্রপাঙা ইত্যনরঃ॥ ন-ন্দাস্যণ ৭ লজ্যা ৮ ব্রীডঃ ৯ ব্রীডনণ ১০। ইতি লামরত্বাবলী।। লজ্জালঃ । ইতি রাজনিহণটঃ ॥

ण्डाणः भूषी क्षितिणयः। एटश्वागः। त्रक्षशानी र मधीशवा ०
ल्काः ६ चित्रशिव हा ६ मस्मिति।
भी ७ चपली १ नम्याती ४ भूमातिपी ३ प्रथमनी २० यतिती ३३
श्वाणिका ३२ प्रकार १० विजती

ब्रक्तम्बा ३१ लागुम्बा ३५ एएछ। ১৯ অঞ্জলিকারিকা ২৯ । হাউ बाजनिर्घणेः ॥ 🚁 🔠 ७। २० व-**णिगी २२ मरहोस**्दर २० ! इंडि **मप्रमिका।** या १ स्वाः । क **টুর॰। भी**उद्गः। शिद्धां जिनाव শোক দাহ শুর্ব পাল গণ কর ककार्डि नामिच्छ ॥ 🕏 ॥ एएफ-रा यथा। यद्धान दिश्रीजाना अनुकृष वृश्वना । दिन जी छ। ह विकाल् शिक्शित शुर्याहर्यः ।। मञ्जान्रेर्वभद्गीजाङः करूँ दकः ककाभन्द । तस्य नियामकोक्ष्व নানা বিজ্ঞানকারক:॥ ইতি রাজ-निर्घणः ॥ जन्ता इ ननाभी भाष <u> भृष्ठेगा ॥ # ॥ व्यक्षित्र । नक्तियः</u> ग्रार्भभीপवा नगकाञ्जनिकाति-का: ब्रक्त शारी नगस्ताती नामा थरि-রকেত্যপা। লজ্জালু:শীতলাতি-তা ক্ষামা ক্কপিত্তি 📑 ্ড-পিত্ত মতীসার প্রেনিক্রের বিনাশ্যেৎ।। 🕸 ।। তাথ 🗷 জ্ঞান-(छनः। ञलस्या थ्याङ्क् ४ क्रे (सरिंगना न् जा। क्नम्या वासः सामुः कृषि পिख ककाणहा ॥ १७७ ভাবপুক। भाः॥ व्यन्। मृशिका भार् <u>पु</u>ञ्चेब्रा ॥

सम्मानीयः वि मञ्जाविभिष्ठः । विषेत्रं क्षी पृष्ट्। इंडि द्राज-अल्लगायः प्रशास**म्यः २।** के अन्य स्थापिक विकास रम्बन्धाः का

একিডঃ বি ক্রম্**ক:। তথ** গ্ৰাগ্ৰঃ শ্ৰীকঃ 🚉 🙃: ১। ইত্য

नाव्यकी की नव्यत्याः इंडिजाज निर्वणेः ॥

बन्धा ही प्रकारिक भपद्रश-्ु दनी॥

🙀 🗷 ত্ক ভাষনে। ইতিকবিষল্প े হৃদ: ॥ ক লঞ্জাতি লঞ্জাপবতি। . ভाনन भी खि:। ইতি দুর্গাদাসঃ॥ शुः अषः॥ कहः। इंछ (इ नहत्तुः॥ পृद्धः। ইতি कठारहः॥ निक्षिका जी (वन्ता। ইতি एकः **इन्द्रः** ॥

लहे वाल्यात्ल्याः । इंडि कवि क्लामाः॥ वाला १ छः: ७मा छ।-ব্ৰ গল্য: ব্যামোহ ইতি যাবং। अविश्वाकः निमुः महार । कि ক্রিদংভিবেভ্যর্থ:।ইতি দুর্গাদাস: ल्॰ भूपाप्तवहन्।। (पायः। 11 June 11

पार्वेकः भू॰ मूर्जनः । **इ**ज्रुगाहिन C 12 1 ला

निर्घणः॥

ला छः। भू॰ मूर्जनः। इंडि भारत्रः वनी ॥

लद्देः পू॰ जाञितिरणयः। (नहेवा ইতি ভাষা। রাগভেদ:।। তুরঙ্গন: ইতঃণাদিকোয:॥

लहे। खी क्ज़ब्बल्डमः॥ नाटेक्ज़िक्ष ইতি ভাষা। বাদ্যভেদঃ।। পঞ্চি-विष्मयः । गामहर्षेत्र इंडि थ्याङः । ইতি নেদিনী।। সস্ঞ্ৰণ। ইতি (रुमहन्तुः ॥ जुमत्रकः । जाउत्री ইতি খ্যাতঃ। ইত্যমরভরতৌ ॥ বিলাসে। ইতি কবিকল্পছনঃ।। লড়তি বালা। ইতি দুর্গাদাসঃ॥ উत्रञ्निक्याः। इंडि भ कविकन्नक्रमः॥ উत्रज्ञ- शीफिडी-ভাব:। উৎক্ষিণ্ডীভাবশ্চ। লড্ডি লতা বানুনা পীডিজা উৎক্ষিণ্ডা व। नहारि छ। थः ॥ जिल्ला छिष्वय-কিবা। লড়তি জিন্তা স্পন্দনবন্তী माति गुर्थः॥ न धरगित। बाउन-**তি द्**ठ गूजनग्ड/मृनिङि ञ्लिस्यः। भीजाञीजार्थः ॥ कवाहिमी मिनमः किंद्रभ वर्द्री मुझवयञ्जिन्द्रादिः । উৎক্ষিপভীত্যর্থ:। উভযত্র ডল-যে। রেকবাল इ॰ ॥ কেচিভ ছিন্তো;

শ্বছনে ইতি পঠিত্বা জিন্তায়া উন্ন স্থন• উৎক্ষেপন নিতি ব্যাখ্যায় লডতি জিন্তা• সর্প ইত্যেবাদা স্বাস্তিঃ ইতি দুর্গাদাসঃ।।

विष क उपामित। ইতি किति हाक्रमः ॥ उपामित हरू व्यञ्जान ना क वावाय प्रक्षित्र विष्ण व्यापि भू व्यापि व्याप्त व

ण क छ वीत्त्र । ইতি কবিকল্প क्यः ॥ क छ नाउपछ । ना छ এव ইত্যমে । বিশেষেণ আগুনিছা वीপ্লা। ইতি দুর্গাদাসঃ ॥

वाउँ है कि जायता। है कि कवि कल्लकाः ॥ है वाखारा कि वाखय कि वाखि । जायतः कथनः । जायः रिक्षिय मनारा । है जिपूर्गापामः॥ वाउँ अ है कि उपक्षिणता । है जि कि विक्लक्षमः॥ अ वाखिनः। जानुव क ववातिम्यायथातिम निष्ठा जनार नजः॥ जाया विष्ठा या निम् नमापि टारक । वा है जि । है वाखारा । कि वाखा जिल्ला जा छा । है वाखारा । का विष्ण जिल्ला जा जाने ।

লড ভক্ কেপে।ইতিকবিকল্প-

क्रमः॥ माउगित व्यवनाउट। इंडि पूर्गामामः॥

লডহঃ ত্রি মনোজঃ। ইতি বি: কাণ্ড:শযঃ॥

षडु वि मूर्जनः। **३७ भ**द्मत्रज्ञानु

नडू कः भू॰ भिक्षेकियाभयः। नाजू इंडि ভाषा। यथा। नडू का पू-इक्ति खकः। इंडि ब्राह्मवद्याः॥ जभिष्ठ। डिल्मि इंदिषा भङ्गः छ-य्वट पूर्वक नडू कः। इंडि भद्म-प्रितृका॥

লও• ক্লী বিধা। ল্যাডইভি ভাষা ।ইভিকেচিৎ।।

न्थुंबः जि न्थुंदिशकाउः। यथा
। পूर्वादाय नदश्यः यउशी िः शुकी विजाः। किद्रक्र ভाषया ७ ज्ञा
एउषाः मः नादना ८ जूवि॥ व्यक्तिः
भा मुख्यानाकः मः गुरानयभानाः
जिजाः। ই दिक्रा नव यहे भक्ष नथुंबा श्वाभि ভाविनः॥ इति (मक्उट्य २० भुकाशः॥ अः॥ न्थुंखः
ज्युना न्थुन् इति थुं। छः। ই दिनकानाः द्राह्यभानी ह ॥

লত হাতে। দৌত্রবাত্রয়ণ। ইতি কবিকল্লজম: ॥ লতা । ইতি দুর্গা-দাস: ॥ ॥

লভাফ

্লুতা ভ্ৰী লড়াঙ বেষ্ট্ৰতে যা। সা-`শাখাদিরহিতা গুডুচ্যাদিঃ। তৎ পর্য্যায়:। বল্লী ২ বুততি: ৩। ইত্য মর: ।। বল্লি: ৪ বেল্লি: ৫ পুত্তি: **৬। সা শাথাপত্রসমাযুক্তা চেৎ** भुजानिनी। है जि मस्त्र द्वावनी।। उट्मर्यायः। वीक्ट्र र खन्मिनी ० উলপ: ৪। ইত্যমর:।। 🗱।। অমাবা॰ वीक्षा॰ (ছरकर्जु निन्ता यथा। অপ্ল ভিমানছোরাত্রে পূর্ব বিশ-তি চন্দুয়া:। ততো বীল্ৎসু ব-সতি পুষাত্যক ততঃ ক্রমাৎ।। ष्ट्रिन डि वीकाश यज वीवट मन ছে নিশাকরে। প**ঞ বা পাত্র** (लाकः वुक्षश्ठाः म विनाति ॥ ইতি জীবিমুপুরাণে ২ অংশে ২ व्यवप्रायः॥ 🕸॥ वान्यम् त्राभनी-या मुख्या ल जानि र्यथा। अनाव भाषा अव्याखः भाषाष्ट्रभाषान्त्रभाष्ट मूकः। थड्जू ती ककरी ठालि मि-वित्र मञ्चलभूमा ॥ वाख्रः कात्र-उरझण वार्डाञ्च मूज्यूमा। व তাফলঞ্চ শুভদে সর্ব সর্বত্র নি শ্চিত।। ইতি বুন্ধবৈৰর্ভে একৃষ कम्पर्रं २०२ ज्याग्रायः ॥ 🕸 ॥ শोथा॥ श्रियञ्शा भृका॥ व्यमन भारी । इउपादः ॥ ज्याि प्राची ॥ ॥ व जाक्यः

नजाक खुत्रिका ॥ माध्यी ॥ দূর্বা । ইতি নেদিনী ॥ কৈবর্ত্তিকা ॥ সা-রিবা । ইতি রাজনিঘণ্টঃ ॥

वाजिक्युंतिका जी वाजिक्युंति।

उद्भाग्रीयः। कर्षुः २ मिक्कारमण
वा १ विष्णा १ विष्णुः १ विष्णुः ।

वापुः १ त्वपः १ विष्णुः । वाषुः १ विष्णुः । विष्णुः । व्यापः । वाष्णुः ।

व्या वर्ष्णात्रात्राण नाणिः । व्या व्या वर्ष्णात्रात्राण नाणिः । व्या विष्णुः ।

वे भिष्णात्राण्यात्राण नाणिः व्या ।

वे भिष्णात्राण्यात्राण नाणिः व्या ।

विज्ञाक्यात्राण्याः । वे जिल्लाक्याः ।।

वाजाक्षिः प्रभाग्यः। वे जिल्लाक्याः ।।

वाजाक्षिः प्रभाग्यः। वे जिल्लाक्याः ।।

লভাতকঃ পু• নারস্বৃক্ষঃ॥ তাল-বৃক্ষঃ। ইতি শব্দালা ॥ শাল-বৃক্ষঃ।ইতি ক্রিচাণ্ডশেবঃ॥ লভাজনঃ পু• লভাশালঃ। ডং.

লভাম

शर्गापः । जार्कः २ व्यथकर्गः ० व्यक्षिकः ८ वनाः ६ भीर्घः ७ । ইতি तनुमाना ॥

লভাপনসং পৃং ফললভাবিশেষ:। ভরমুর ইতি খ্যাত:। ভৎপর্য্যায়ঃ । হেলাল: ২ চিত্রফলঃ ৩ সুথাশঃ ৪ রাজভেনিষ: ৫ নাটামুঃ ৬ সেদুঃ ৭। ইতি ত্রিকাওশেষ:।।

লতাপূরা স্ত্রী সমুদান্তা।পিডিফ্র-শাফ ইতি ভাষা। ইতি শদরর। বলী।।

লতাপুড়ানিনী স্ত্রী শাখাপুচ্য বতীলতা। তথপর্য্যায়ঃ। বীকথ ২ গুল্মিনী ৩ উলগঃ ৪। ইত্যার ভরতৌ।। বীক্ষা ৫ বক্থ ৬। ইতি শক্ষণুবেদী।।

লতাফন ক্লী পটোল:। যথা।
বাস্ত্ৰক: কারবেল্ল চ বার্ভাঙ্ক চ চ্ছু
ভপুনা। লতাফলঞ্চ চ্ছু ভদ্ চ সর্ব
অবল নিশ্চিত।। ইতি বুন্ধাবৈবর্ত্তে
নিক্ষমন্ত্রগণ্ডে ১০২ অধ্যান:।।

मजाजना क्षी जुन्नानीवृष्णः। ইতি
मक्ताना॥

কভাষণি: পু॰ পুবাল:। ইভি
কিলাওশোৰ: রাজনির্ঘট দা।
লভাষক জী প্রা। ইভি শব

नडात ||नडामापनी जी माधनीनडा। है जि

मपत्रद्वावली ॥

वजापिः जी मिक्किश। इंडिमः क्याना॥

नग्रायावरः त्री श्रुवानः। इंडि

वाजात्रगनः श्रु नर्णः। ইতি हाता-

नठार्कः शृ॰ इतिर्भनाकः। उद भर्यायः। दूकपः २। ইত্যयतः॥ नठानकः शृ॰ इति। ইভি विका-क्षम्यः॥

न्डादिष्टः भू॰ वाज्यत्रिकाछगंडज्डीववकः। यथा। वाङ्डा॰
भारत्याङाः विदेविद्या द्धियः त्रप्राट्याङ्गाः विदेविद्या द्धियः त्रप्राट्याङ्गाः विदेविद्या द्धियः त्रप्राट्याः मूठारङ्गाः इिंड त्रिज्यछात्री । श्रः। प्रभविष्णयः। यथा।
भारत्याः निद्य क्षत्रा प्रतान् वराहिष्ठेवान् जरा। व्यञ्जाङ्गत्रकः मार्गश्च॰ वाञाः,
विदेश ज्या तित्रकरः गितिः। अर्जःवन्तः। इिंड इतियः मं वाप्युक्षः।।
नजाविद्येजरः जी ज्यानिन्त्राः ।
वा्या। हिंद्येकः भी जिङ्गरः नजाः
विदेशकः ज्या। इिंड मद्द्याः।।

পু• |শালবৃক্ষ:। ইতি मद्रवावनी॥

স্ত্রী লতা। ইতি লতা भदाट सार्थ कन् भुजारयन किक পুত্যযেন বা নিয়শ।।

সত্তিকা জ্রী গোধা। ইতি সিদ্ধান্ত-कोग्नाम्गाम्यापिवृज्धिः॥

জপ খা ভাষে। ইতিকবিকল্লদ্রমঃ ।। य जनीनभट अननाभट । ভাষः कथन । ইতি দুর্গাদাসঃ॥

'ভाষণ'। ইতি **লপধাত্বর্থনর্শনা**ৎ॥ লিভি ক্লী বচন ।। কথিভে ত্রি। ইত্যস্র: ॥

व्यक्तिका खी थान्।विष्णयः। वञ्जी ইতি খ্যাতা। যথা। সমিতা**॰ স**-र्भिषा लृष्टा॰ भकता॰ भयमि कि-পেৎ। তিষ্মিন্ ঘনীকৃতে ন্যস্থে व्यवक्ष भित्रहारिक ॥ भिरेष्वरा লপ্লিকা খ্যাতা গুণানস্যা বদাম্য-इ । विश्विका वृ इ भी व्या वना পিত্তানিলাপহা॥ গ্লিঞ্চা শ্লেখ্য-कती छवी (ताहनी छर्भनी भन्न। ইতি ভাবপুকাশ:॥

मत ३ ७ मुभाना। भाषा १ है जि कविकन्नक्रमः॥ इ लग्नाउ ए ल्य তে। সুংসন নিহাবলঘন নিভি লনকঃ পু বিলঃ। ইভি সিদ্ধান্ত-

গোবিনভেউ:।। ননাদ চরণাযুষ उरि भोन भाषप्रम । इंडि पूर्गाः . मानः॥

नक्षः वि शुार्थः। ইত্যমরः॥ वक्रवर्गः भुः भिष्ठः। ইভ্যনরः॥ नक्षा खी नायिकारज्ञः। यथा । থণ্ডিভোৎকণ্ঠিত। লদ্ধ। পো্বিতভত্কা। কলহাম্বরিতা বাসসজ্জা স্বাধীনভতৃ কা ॥ ইতি **अध्यक्षतः** ॥

লপন লী মূখা। ইত্যমরঃ॥। লভ ইড শদে। ইতি কবিকল্প-क्षाः ॥ ই नम्राउ। ७ जङ्गा कें कि मुर्गामानः ॥

লভ ডুওডিৰ পুছিটো।ইভি कविकन्नक्षमः ॥ ७ निक्षिमः । छ वक्षा । उ व बरु । व व ब । व ब -ন্তি পুন ৰুত্থান মিতি গণকৃতা নি-ত্যত্বাদিতি রমানাথঃ । বস্তুতস্ত লভতে লভঃ পচাদিহাদন্ ততো লভ ইবাচরতীতি হৌ সাব্য । इंजि मूर्गामानः ॥

लज्मः भू वाजिवस्तरहाः। है-जूरगानिकायः ॥ धनः ॥ याहकः। इंछि निषास्यकोम्मामूनानिवृखिः लेखाः वि न्यायाः। इकामतः॥ **नक्तराः। इंडि भिर्मि।।**

কৌমুদ্যামুণাদিষ্তিঃ।।

লপটি: পু॰ বিদ্ধঃ। ইতি লপাকশবার্থে মেদিনী।। আসক্তঃ।

যথা। যথৈহিকামুদ্মিক কামলং
পাটি: সুতেষু দারেষু খনেযু চিন্তখন
। শক্তে বিদ্যান ককলেবরাত্যখাদ্য স্তস্য যত্নঃ শুম এব কেবলং।।
ইতি প্রীভাগবতে ৫ স্করে ১৯
প্র্যাখঃ।।

লন্দাক: পু॰ লন্দটঃ॥ দেশভেদ: । ইতি মেদিনী॥

वास्त्राविष्टः शू॰ शहर्वाप्रः। ३७ राजाविष्टी।।

লয়: পু• প্লুডগতিঃ। লাফ ইতি ভাষা। ইতি লোকপুসিদ্ধঃ॥ উ লয়ন• পুলয়নঞ্চাত্র॥

वायः भुः नर्जकः॥ जाकः॥ काछः॥
इठि नःकिश्वमादानानिवृद्धिः॥
देशकः। वथा। भुःज्ञः छोकः
नः वादाशकाहः काणविकानिः
व । उभाहातः भुगनम्ता हादा।
गुःशावत जाभि॥ इठि ह्महन्तुः
॥ ज्ञक्षावत जाभि॥ इठि ह्महन्तुः
॥ ज्ञक्षावतः । यथा। हत वाष मना
रज्ञाः भाषेका १ काषिहावतः।
इठि णद्मावा॥ क्ष्रजार्गे वाषः
नानद्वथा मृजः वा। यथा। जिञ्
रम ज्ञादा र्याम खन्नस्त था।

ভুবাহতো দক্ষা। দিখা ভুকন युञा मिलावातास उत्याः जाजाः ॥ স্বাবাপা ভুজকৃত্যে। রম্বর মৃদেণ भुकायां वचः । वच्छनः ज्यार्कः স্পষ্ঠ• বিভূজে দল• ভৰতি !। উ मारुद्रभः। क्लिप्तं मरी मनूमिडा বিভুলে ভুজো তু খব ব্যোদশতি· थि भुगिरको हि यम्। एकावशय-ক্মথো কথ্যাব্বাথে ক্ষিপু• ওথা চ সমকোষ্ঠ মিতিং কলাখ্যাং ॥ न्यात्रः । ज्यः ७८ जूरको २०। ५० लाबा जावास द। ज नाहा निष्क >२ (क्बरूनक्ष ৮৪। ইटि नीना-वजी।। मीर्यः। वचा ইতি ভাষা। यथा। मूत्र जः स्मान्ड मूर्त्या हा र-শাট পটাবৃতঃ। তাব্চ শোভত্তে মূর্খো যাবৎ কিঞ্চিন্ন ভাষতে ॥ श श्काग्व छाड़

লয়কর্ণ: পু॰ অক্ষোঠবৃক্ষ:॥ ছাগ:
। ইতি মেদিনী॥ রাক্ষস:॥ হতী
। ইতি শদরত্বাবলী॥ শেচনপক্ষী
। ইতি রাজনির্বন্ট:॥ দীর্ঘাশুনে?
।। তন্মক্তে ত্রি॥

नयतमः भू विश्वतः। म छ विवा-स्काःन वाद्याभावमानार्थः मार्षः हिज्यवासावर्खविण्डास्थाम्थाः मार्थः। विश्ववासावर्खविण्डास्थाम्थाः मार्थः। देख्या **छ**(व**९ वृ**क्षा बोश्रक**ण**र्स्ट दिष्टेवः। | मिक्किगावर्ख्य वुका वामावर्ड्स বিষ্টর: ৷৷ ইতি সংফারতভূ• ৷৷ কে-শো হতাগু'। ইতি প্রাযশ্চিত্ততত্ত্ব গঙ্গামাহাঝ্যে পুতিনিহিতদর্ভ বটুসানপুকরণে লিখিত ॥ 🗱 ॥ দীর্ঘকশযুক্তে ত্রি॥

वयुरका जी रेमः रुवी मिश्रवी। ইতি द्राक्षियंग्रेः॥ वृष्ट्रम् अनिविभाष्टे वि वषन की नाजिविषठकिकामिः। **७८ भर्यायः। ननश्चिका २। इँउ**ऽ-सद्र: । वर्ष**्ठ व**त्रमः नम्राहिद्याः मनः। ইতি उजे शयाः ভরত:॥ नप्रभद्गार्थाकाव।।

क्षः। इंडि भन क्षत्र नः al. विमुला ॥

जध्यानः जि वयायगानवस्र । जवधाराः कर्डन मान भुजारयन निश्चन्न ॥

नववीका खी रेमः इनी भिन्ननी। ইভি রাজনির্ঘণ্ট: ॥

লয়। জী লন্ধী:॥গৌরী॥ভিক্ত-जुर्यो। ইতি মেদিনী ॥ मक्ककन्रा-दिल्लयः। यथा। व्यक्काञी वमु याभी वद्या जानु भक्ष्जी। नक्लाक मुङ्खीक नाय्याः विश्वाक

এতা দদৌ পুভুঃ। ইভি হরিবংশে অধিপতিস্থাপন•।।ছিনাল্যকন্য বিশেষ:। যথা। তত জ্ঞান্বচ: मुद्दा (पर्वी लक्षा मणातुवी ८। शहस वश्व भीयु व वाग मःतक्षा अय ।। ज्ञा (यागः जनावाय अपृण्डा हिमवर्गुडा । कृष्टिमाक्त्रा छ-पुन• ममग्र नार्यमागङा ॥ जा-ন্তর্জান মুপাগম্য ত্যক্ত্বা সা বাসসী পুনঃ। পরিত্রাণায় বাণস্য বিজ্ঞা-বিষ্ঠিত। ততঃ ॥ পুমুখে বাসুদেব-স্য দিখাসাঃকোউবী স্থিতা। ইতি নহাভারতে হরিবংশে বাণযুদ্ধ।। প্রী তাল্ভু স্মাজিহা। লম্বিকা তৎর্য্যায:। ঘণ্টিকা ২। ইতি রাজ-নির্ঘট: ।। সুধাসুবা ৩ গলশুভিকা ৪। ইতি হেমচন্দু:।। অলিজিন্তা ৫ অলিজিহ্বিকা ৬। ইতি শব-त्रज्ञादली ॥

লখিত: ত্রি সুংসিত:।। শক্তি:। ইতি লব ধাতো: কর্মণি ক্ত পুত্য-(यन निम्नमः।। लघ्यानमान्।। हिम्ह লখোদর: পু॰ গণেশ: ইভ্যমর:॥ ঔদরিকে ত্রি। ইতি (হমচন্দ্র:।। উट्टे:। इंडि ब्राज्ञ-वाया है: 91º निर्यणे: ॥ वश्वमात्नाक्ष्यु जि ॥ ভाরত ।। गनति हक्त नूथाय हक्त । लाक्षेष्ठः भू॰ ऐष्ट्रेः। ইতি किका ७० শেষ: ॥ দীষোণ্ঠবিশিপ্টে ত্রি ॥ লম্ভন ক্লী পুতিলম্ভ:। ইতি হেম চন্দু: ॥ ধৃনি:। লভি ড শব্দে ইত্য-আৎ ভাবে হনট্ পুত্যবেন নিম্নম নিত্তি॥

লম্ভঃ স্ত্রী বাটশ্রন।।ইতিহারাবলী লয় ড গত্যা•।ইতিকবিকল্লন্দমঃ।। ড লয়তে।ইতি দুর্গাদাসঃ।।

বিনাশ: 11 সংশ্লেষ: 11 व्यः প্র ভৌৰ্য্যত্ৰিক্স্য সাম্যু ৷ ইতি মে पिनी ॥ शुलयः । इंकि भदत्राः वनी । अ॥ शीखवार्षाम्नामा-না • ক্রিয়াকালযোঃ পরস্পার • সম-তা লাবঃ। লাখন্তে শ্লিষ্যতে ংনেনে-তিল্বন্তি বুজন্তি সাম্য গীতাদযো হরেতি বা লয়ঃ। লী ড য ও শ্লিষি লাগভ্যা॰ বা অল্। ইত্যমরটীকা-या अत्र गः॥ क्ष ॥ व । श्रानिवर्काः ন• গাধকষ্য চাতুদশানোধান্তৰ্গত (मायविश्माया यथा। लब्जिंड-ভীত মৃত্তেষ্ অব্যক্ত মনুনাসিক•। का कबतः भित्रःकस्मा वयश्रानि বজ্জিত।। বিশ্বর-বিরুণ্টঞ্চব বিশ্লি क्षे वियमाङ्ख्या याज्ञा**न्यः जान** द्वियः शाजू र्माषा कज्रने ।। शा অখনশা:। হৃদিছিভি: কণ্ঠস্থি-তি: কগালছিভি রিভি লগ্ এবং।

অপরে তু। দ্বিপদী স্যাদ্বলভিকা-ঝিলাকে। ছিমখণ্ডিকা। বামক্রব ন্তত শিুনা খণ্ডধাবা ফডক্লক:॥ **জ** ম্রিফিকা কলভিক: খণ্ডক: খুরিক ন্তথা। কথিত শতুরসূের্দ্ধে শতুর-**रमुाथ नर्खकः ॥ क्रामुः य**ष्ट्रे प्रनतानना-वक्ष्ठा मन्त्रही उप्रि। काम्य मह-র্বরী ঘউ। মিশোর্জবনিতা ততঃ।। অভিচিত্র: সময়ক বলিতোর্দ্ধদল তথা। আবিদ্ধন্ত টক্ষবক ন্তত্ৰ শিচ-ত্র বিচিত্রকৌ ॥ আন্ত্রী বিকৃত্রধা-বাচ মুহ্দলোথ বিলোলকঃ। রম-, भीय **खडरे*हद क**द्रक हेक **म**॰ख्डकः॥ ठ्याति भित्रि (भाका वया वय-विभावरेषः। वायम वामा जगवा-न् लाय लीरना जनार्प्रनः ॥ इंडि नःगीउदायादतः॥

वयभूषी खी नर्डकी। इंडि भय-बदावनी॥

विषात्मः भू नहेः। ইভি ত্রিকাও

वरावयः भू• नहेः। ইতি শद्रज्ञाः ववी ॥

লর্ম গঠো। লর্মটো ইভি সিদ্ধান্ত। কৌন্ধী।।

वन उक से भागा। इंडिकिंदि वन्नक्रनः॥ क उ नागर्छ। से भा

वनार

वालिहा। देखि मूर्गामानः॥ न . उ क देखा। इंडि कविकन्न-क्रेंगः ॥ द्रेञ्जा इंडि जानशाउाः जनस्कार क्रभः। भाष्ट्राम हेर्डा-कार्त्रण जक्षा श्री चल् कथः ন বাধ্যতে ইতি চেম জ্রীবিহিত প্রত্যথৈ: कृति मक्तिभाषि न वा-ংধ্যতে ইত্যস্য বাচ্যত্ত্বাৎ ভান্যথা কারণা কারণ নিত্যাদযোগি নসুতঃ । এব । वक्कामाण्यू नी ए वा छा है **ত্যাদ্রিসি বোধ্য:। লল্যাত খন**: (लीकः। इंडि मुर्गामानः॥ ननब्जियः भुः उक्षः॥ सक्राः॥ हिर्गु बि। इंडि मिनी ॥ दन्य তি বিলাসযুক্ত:॥উন্মন্ত্র-বিশিষ্ট: ॥ জিন্তাকিগাবিশিষ্ট: ॥ ক্ষেপবিশিষ্ট: ॥ বীপ্লাবিশিষ্ট: ॥ উপসেবাবিশিষ্ট: ৷৷ ভাষণবিশি-ष्टेः ॥ উৎক্ষেপবিশিষ্टः । ইতি লডধাতোঃ কর্ত্তির শত্ পুত্যযেন-ডস্য লকারাদেশেন চ নিয়ন।।। चनम्युः शुः निम्भाकः। ইতি জहे। ध्वः ॥

धानन क्षी (किनः। ইতি (इमहन्मुः ॥ চালন•। ইতি নাগোঞ্জীভটঃ॥ यथा। काली कदालवरना विनिद्याः ন্তাসিপাশিনী। বিচিত্ৰ খুটাল্ব-

थ्रा नत्रभावाविज्यना। ही शिवर्य-भद्रीधाना मुझ्गाःमाज्रिज्यवा ॥ অতিবিস্তার্বদনা জিস্থাললনভী-यगा। इंडि (प्रवीमाहाजाऽ ॥ वननः १९० वानः ॥ जानः ॥ शि-यानः। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥ ञ्जी कामिनी ॥ नान्नी एउनः ॥ जिख्।। इंडि (मिनि ॥ **जनगित्र्यः** क्री शुरिवद्गः। ইতি बाजिविर्यणेः ॥

ननगित्र्यः পু• कम्यः । ইতি त्राजनियण्डः ॥ काभिनीवल्ला ७ म ॥ ললন্তিকা জ্ঞী নাভিলম্বক্ঠিকাদি: । उ९ भर्यायः । जमन २ । इंड्र-मतः॥ (गाक्षा ३ डि मदमाना ॥ পু॰ নেহন । ইতি শব-वनाक: ठिनित्का ॥

ननारे की व्यवस्वित्भयः। क-পাল ইভি খ্যাত । তৎপর্যান:। অলিক ২ গোধি: ৩। ইত্যমুর: ॥ নহাশয়:৪ শয়:৫ ভাল: ৬ কপা-লক: ৭ অলীক ৮। ইতি শ্বর্ণ্না-वनी।। ननारेकः ৯। ইতি धनक्षयः ।। তস্য শুভাশভ লক্ষ্ণ যথা। উয় उ विशूरेनः भारत र्मनारे विन् यरेन खथा। मिकाना धनवष्टक व्य-(र्खन्तु गर्रेण नंत्राः ॥ जाहार्य्याः

শুক্তিবিশালৈ: শিরালৈ: পাপ-কারিণ:। উন্নতাভি: শিরাভিন্ত **ष** खिकां छि धरन थताः ॥ निरेत् न नाः हि वंशाईाः क्रक्यप्रवा खथा । नःवृरिष्ठक जनारिक क्लना छन তৈ न्भाः ॥ वनादानम्**ञा** सि সোরেখাস্তঃ শতব্যিণা। নৃপত্ত স্যাहতসৃতি রায়: পঞ্চনবভ্যথ।। অরেখেণায়ু র্বতি বিছিন্নভিক পু•শ্লাঃ। কেশান্তোপগতাভি क वामी अग्रं नंद्रा खदर ॥ পঞ্জি: সপ্তভি: ষড়ি: পঞ্চাশ-দ্বহুভি তথা। চত্বারি শন্ত বক্রাভি खिःमञ्जूवयगाभिजिः॥ विःमिजि র্থানবকাতি রায়ঃ ফুদুাভি রল্পক । न भृथु-दालनमृनि ७ ज्यादी हाथ नजारके ॥ भूजमार्खिन् अः द्यान भजुक्र महारताम्म । इंजि गाः बाउ ७६ वास्तायः॥

वनार्वक द्वी भुष्यत्वनारे । इंडि ष्यस्त्र प्रावनी ॥ वनारेभाव । इंडि थनक्षयः ॥

व्यवारेडभः भूः मृर्ग्रः। ইতি मि कास्टकोमुनी ॥

जनारिका खी सर्गाहित्रहिउनना-राज्यन । रिका है जि थ्याजा । एट्मर्य्यायः। भज्ञभाष्या २। हेन्य भद्रः ॥ ज्ञानिक्ष्त्न्त्रः । छ९. -भर्यप्रायः । मङ्ग्हि दि । ইजिङ्क्र-द्रञ्जवनी ॥

लनाम ती ननाम । यथा। नुसन पुत्र मृत्यु मृष्ट् वानिश्व न सम् ।
ज्वावाित मुजावम् ननाम मार्ट्

वनाम॰ ती हिझ्।। श्रुः।। मृङ्गः।। भुषानः।। ज्या।। त्याः।। वान-यिः।। शृषुः।। ज्यज्ञः।। भुज्ञायः।। हेठि मिहिनो।। अथन्याः। श्रुः यन्। वर्षहिझः।। गवाहीनाः नवाः। हिजः।। अथमाज्या। हेजः।। व्यक्ताः। क्षाः। हेजः। क्षाः। क्षाः। क्षाः। क्षाः। क्षाः।

ननामक सी भुरतामुखमाना । इंडामतः ॥ उप्तिमाना भूतः मःमूथ्डाण माउ नना भर्गा अ माग ज ननामक ननाम जिन-क मित इंडि इंदार्श कः। इंडि खतु छ:॥

वनानी खी कर्नड्यनित्मयः। उट भर्यायः। उट्याह्मिछिका २। हैं जि भक्तावा।। अ

ললিত॰ দ্লী শৃক্ষারভাবনকিয়া-বিশেষ:। ইত্যমর:॥ সুন্ধনার বিধানেন ভুনেত্রাদি কিয়াস্চিব কর চরণাক্ষ বিন্যাসে। ললিতে।

उथा है। मुस्रभादाक विन्तारम भम्-া লগৈতে ভবেৎ। যথা। সভ্ৰভ জ্·কর্কিশলযাবত্ত নৈ রাপত্তী न्। विष्णेष्ठी विविञ् विविञ् । विश् नगाञ्चनम । विमामाञ्जी हज्ञीक-মূলে লীলমা ধৈর্যাতে নিংশকা চ প্রথমবয়সা নত্তিতা পর জানী।। লুব্রাদি ক্রিণশালি সল্নার दिवासकः। इन्छ शामान विनाम াল্লাক্ত বিদ রিভ্যমের্যাপ _ন অন্_{সন}্তা পদিষ্ট ন্যাল্লালত व्राप्तिः च इंडान्। बन्धिः क्ष कांक् अध्यक्ष विवासि हैं छ। पार्शनेयारिद्वार उमा नदः या। হতি ভরত:।। অপিচ। বিন্যাস **अक्टित काला॰ पुरिवासम्प्राह्**ता : সুস্বারা ভবেঅ্**ত ললিত• ভদু-**ीदि**ङ।। इं**ङ्रङ्कुलनील तिः।। ্ৰালতঃ পু• রাগবিশেষঃ৷ ডস্য ्या १० वया। भुकुल्लमश्रहम्भानाः ারী যুবাতিগৌরো প্লস লোচন িঃ। বিনিঃসরন্ বাসগৃহাৎ পু ভাতে বিলাসিবেশো ললিত: পু-िष्टेः ॥ जगु भाषमप्रया यथा । ्राउर्लियास (समाला निनः ^{्टे}मञ्जती । विज्ञासः रेजन्ती रेहव कारमारत भाउ नियानि ॥ इंडि

मक्षी जनारमान तः ॥ विवादः वि मून्त दः ॥ विश्व जः । देखि समिनी ॥ हिल जः । देखि विश्व मक्षद्भावत्वा) ॥

ললিভকান্তা জ্রী মস্ত্রনটণ্ডিকা।
তস্যাধ্যান যথা। যৈ সাললি
তকান্তাখ্যা দেবী মস্ত্রলটণ্ডিকা
বরদাভবহুন্তা চ দ্বিভূগা গৌরদেহিকা। রত্নশ্রেষ্ণিয়েশবন্ত্রা চ মিতবক্রা শূভাননা নবযৌবনসম্পন্না
চার্নস্বী ললিভপুভা।। ইতি তিথ্যাদিভত্তু ॥

विजिश खी कछुडी।। नाती। इंकि ताकिन्दंग्हेः॥ ननीविष्णयः। यथा। निनिनानुस्त ताल्यंः भाभाष्ट्रकाः मुद्रः भुता विभाषा श्रमतीदाः स्व्य भाभाष्ट निनिन ख्या॥ छ-रवा वृद्धाश्राम्या निर्मात कामः कश्रका मस्ताग्राम्य छभास्य छन्। रिवम व्यक्ता। भुज्ञक छन्। रिवम व्यक्ति। श्रीका भीषा है भान् स्था व्यक्ति। नाम निन्नी व्यक्ता। निः-मृजा जब हाथा छ। विवास त्राम्य व्यक्ति। व्यक्ति। विश्वासम् জ্ঞানাৎ পূর্ব- ন্সানেবাবতারি তা। বৈশাথ গ্রুপক্ষস্য ত্তীযা-याः नबुक्त सः। व्याग्रादि विविका मा-न म मञ्जूमहन वुर्ह्म ॥ विनि-তাযাঃ পূৰতীয়ে ভগবান্বান পৰ তঃ। স্বয় বিষ্ণু লিম্ক্পী তত্রান্তে ভগবান্ ছরি: ॥ অলিভাষা नর: স্রাত্ত্ব। দ্বাদশ্যা• শুক্লপক্ষকে। ভগ-दछ जनाक्श (या राष्ट्र भक्ता-শ্বরণ ৷৷ স যাতি বিষ্ণুভ্তবন শরী-রেণ বিয়াজতা ॥ ইতি কালিকা-शुद्रात ५) ज्यद्यायः ॥ 🕸 ॥ ला-সীবিশেষঃ। যথা। অখিল রসা মৃত মৃত্তি: পুস্মর কচি কদ্ধ তা-রকা পালিঃ। কলিত শ্যামা ল লিভো রাধাপেুখান্ বিধ জঁঘতি।। ইতি ভক্তিরসাম্তসিদ্ধ:।। ললি-ত। न्यान्यारेनवा श्रमा जुनाक भुगत्छ। इंडि ७ छोकाया॰ कीव-(गायामी।। उन्तराः यक्षणः यथा। या पर्गा रेमव निन्छ। निन्छ। সৈব রাধিকা। এ**তাসা ন**ভর• नायि जडाः मडाः हि नात्रतः ॥ ইতি পাত্ম পাতালখণ্ডে রাস-লালাযা নারদ পুতি জীকৃষ্ণ-वान्ड ॥

লাল গখল সুক্রিলা।। সাণরা । ললিভাসগুলী প্রা । ७व वहः ्यः कृष्टि । १०० उ বিষ্যে। ভাগে প্রামি চিন্তে প্রাক্ষ अक्षम् । विद्यास्य र । विकार विद्यु **लिथियिद्धा** अक्षात है । अस्ति हा विन्द्राञ्च । इं १ १ व्यक्ति वृष्ट द्वार १८०० ত । ইতি কি । কি । কুবছৰ জ षिधिर्यथा। 🖫 💎 🦠 🦮 🥳 🔞 **ক সম্বল্ল :** ১ ১৮ ১৯ চাঞ্ ভাদুে মাসি 🐇 . (थो यावड्र्ज 🔻 💛 💮 👵 🤲 वा विमन् 🔑 🕟 🖖 🐠 মা পুতিবং गरामा दिए পাৰ্যতী প্ ধারণ ভবি **भ**्रवनक्षभ टः । । । । । । । कतिराधाः । 🐃 🎋 ind office. **जा**गान्यार्घ সংপ্রঃ ভ্ া ানিজ া **गुल्नाहिय**ा । अन्यस्ट्रिया एराजा **थ्यादा प्रभा**ंक सुदा न हु। भाव-সোপটারৈ: গণ্ড্য অঘ্য লং **ञ्गाभ अनुवराहिक अवस्थित ।** भिवण्काबितिक भिवः मुनाल्याः विधिना पूर्वास एका भस्तुतार विक

श्रेश वानवनाम् भूकायः। পতা ২৪ ছিযুক্তডোর দ দুর্পেন ্ দিক্ত শিবদুৰ্গাভ্যাণ অৰ্পযিত্বা ুল প্রারক্ষণ বামকরে বন্ধা ভোষ্য ्ः । जा कहा। स्वारा । अष्टकना-बिर १९। र जा मिक्ना॰ प्रपार । द । असम्बा। जिक्लीयाउ। েবাংশোভ, ং**নেবর্ষিমগুরা নাগতঃ** भूता, (म) १ रेका यम गरम (नव क्षा ५ १ । १५ हे किश्रः कथाः সুন্দ কৰা বিভাগ বিভাগ क्षवितिक १ १ व व (प्रजा: न्डिक ্রার জন্ম হলঃ পুলা জার। ছেলে প্ৰাধ নঃ মৃত্তব**্সা** দেব। ি 🗥 🗀 🧸 হাৰ দুৰ্বিতা 🛭 যথা গ্ৰন্থ কি বিভাবভূব নহধপ্ৰ। । ত্রতা জ ভেবনী ভদ্ পুঞ্চুংখেন দূর্বিজ দ প্রকাহার্তা সা তু बङ्बाक्षत्र प्रा**ा प्राप्त स्वकी** 🗚 🖰 😇 ि 🦮 न **मः लयः ॥ ८२**४-ु अछ । का सा प्र**न्तु**सूथी भीना वज्व ं बट्या प्राप्त कथः हीनंतुकः **गग**रक् ভেল্যাঃ সহভি**চারণ ॥ সপ**ন্নী म विकास (को जागारता गाउवर्कन । অবোধ্যায়াণ পুরা ी विञ्चा विञ्चा । उन्ह अविकार राज्यी नाहा हन्तुमूथी প্রিয়া ৷৷ পুরোহিত্রা তলৈ ব পরী भाना ह गाभिका। खर्या दानी प्रह-श्रीकिः म्पृहनीया शत्रकातः ॥ व्यथ-তেপি চ লি তিণ্টো স্থানার্থণ ভারগৃজ-লে। পাপ্তে প্রাপ্তান্ত ভবৈর বহুদো নগরাস্থনাঃ ।৷ স্থাতা ভা নওল চকু স্তথ্যে ব্যক্তৰূপিণ । লেখবিদ্বা শিব॰ শান্ত মুগ্যা সহ শঙ্কর॰।। গন্ধপুয়াক্ষতৈ ভক্ত্যা প্ৰযিত্বা যথা বিধি। পুণম্য শিরসা ভক্ত্যা দৃষ্টা ন্তাভ্যা॰ বরজ্ঞিয়ঃ ॥ কিনিদ॰ ক্রিম্-তে সাবুও কথ্যতা যদি রোচভে ৷ करा वा कियर किर वा कन गगाक् তদুচ্যতা ।। ব্রিষ উচুঃ। পূজিতো ২ম।ভি রেতমিন্ পার্বত্যা সহ শ হরঃ। বজ্বা সূত্র মিদং শৃভু শিব-अप्राज्या निरविष्ठः ॥ श्राद्रशीय भिष्रः তাবদাৰ পুাণস্য ধারণ ৷ তাসা-ন্ত ভদ্বচ: শুহা তে কৃত্বা মানসং তথা। কৃত্বা চ সন্মতি তত্ত্ব বজুা দোর্ভ্যা• সুডোরক• ॥ তত্ত তাঃ স্ব-গৃহ• জন্ম: সথীভি: পরিবারিতা:। কালেন নহতা তত্ৰ বিফাত ওছত ত न्भ ॥ भूमख्या हन्तुमूच्या विम् छक्ष সুডোরক। মৃতা কৈশ্চিদছোরাতৈঃ मा वज्व क्षतक्भी ॥ माना ह अर-कूषी जां वित्रत्रक् वृष्ठभावनाद।

তথৈবতে চ নিবিণ্যে জাতে জাতি-মরে ললে॥ সম্ভুগ ভূগ স্তব্রৈব পা श्रफ मन्यः भूनः। जिल्लान जिल्ला পাণ্ডে পুন: কালে চ তে মৃতে ॥ ভাদৈবনাতৃকে দেশে জাতে গোল লনজলে। রংজ্ঞো জাদা বভুষাথ भृष्यायमा भा भूनः ॥ देशनी নাম বিখ্যা হা সা তু রাজ্ঞো ২তি वल हा। यी बीन विक्रमाभी खा र्य्या ज्वानानिका ॥ भ्रता एउना কালেন সন্ধুটী বহুপুঞ্জিটি জাতি-माता हारे भूषा उचित हाम् अभूषा ॥ পুন নিরম্বরা গ্রীতি বভ্বাথ তায়ে র্বিজ। তত্রেপরী প্রমেক পুস্তা ख्य क्षां भिन्न ॥ नववर्ष जु **शक्**ष ম্পান্তর যুধিষ্ঠির । তর তা॰ ভূষণা দুই, নাজগানাতিদুংখিতা ৷৷ স্থি ভাবাদভিয়েহাদ্পপুত্র সমন্বিভা। অযুক্তাভরণা নিষ্ঠ্য স্বভাবেনৈব জু যি গা । তা॰ দৃষ্টা পুত্রিগি ভব্যা॰ भुज्ञज्ञात्नददी क्या । उटा गृशः প্রেব্যবিদ্ধা তাং স্থাং ভীরু নৎসরা ॥ विख्यानाम मा ब्राङ्की जम्माः গুলাৰ গ্ৰি। হতা হতাক গে প্ धाः भून जी विद्यानामगाः ॥ वह्रभूधा कीवदरमा शुक्ताकता दथ। শোভসে হাধ্ব তদ্ৰে ভডিৎ পৌ

मानिनी यथा ॥ ज्वलावाका जाल মাসি সিতেপকে স্থান্ত লেভা^ন नाय। शादा नियः विश्वविश्वास्त्र (प र महाधिकः॥ अः श्रष्ट्र विविद्रः পুলে রৈলোক্যে লা বিদ্যালয়ে ८ द शिलु**ङ भृत्रं** प्राप्त मह मन्नक् **७**९ । उन्नया हित्र ३९ ७ ५९) १५२। ह मुख्या मथि। उवा 🐃 😘 🤲 **माक् मर्भ थ्या ७ म**ही द्वारा १८ १४ वर ५ সন্ততি শ্বিলা রাজ্যে হাল ১০ি 🚓 থিতা। পুভাব এর % তেও বুর न्याम् । यथा मथि 🗘 प्रकः 😇 🖘 পুरাস্যানি তম্য 💖 🖰 🕾 ুতে 🖁 मश्रिजादाद भुजी। 🛊 🗷 🤊 🖽 🖰 বিচারণা ॥ সংপ্রা প্রাক্তি ১ জুব **করে বন্ধা সুডো**র্জণা সভাতীক ग्या जाद**् नि**यम्ब्रहात विस्तातकः ॥ इंट्युवः समयः १ ५ ७ ६ १ १ % তি ডোরক। ব্রণ্ডব্রেমে ক্রিছ করশাখাস্থারণ দশকরক্ষেত্র नाकः भोदर्भः द्वाद ३ एथा । छात् পাত্রে পুতিষ্ঠাপ্য ব্রাফালায়েপপা ५८१८॥ পायमः शिक्ष स्थित स्थान ভোজ্য পুরত্নতঃ। সংগাহান্ভোজ-বিহ্ব। তু স্বৰণ ভুৰ্জাতে ওৎপরণ।। মণ্ডল• সোমসভূশ• শ্বিস্যাত্ম নি-বেদিত । ইত্যেব প্রভিষ্যাত্ বৃত

হার ভগত ততঃ।। বভ্ব স্পুলা वाही वे ধরী ভুবনেশ্বরী। বুভস্যা अहल् अरवन जूल्या द्थ (मविकि॥ ভ ব্যাসি ত্রিলোকেশ পুপ্রঞ্জ জ-🐃 ানি । ইভ্যেৰ শাৰ্ষিত্বা চ ि ाम मूनि छना।। बगाम अभूतः নশাপ্যেব॰ তবোদিত । যাঃ 🔯 🖫 খাচরিষ্যন্তি বুত্তমেতদ্মুধি বিলা অক্টাখ্য প্লবস্থাখ্য দেব-্ডিটিড়ে শ্ভ•। তাসা• সম্ভতি 🔧 🦈 ন কদাচিন্ডবিষ্যক্তি॥ জ্রি-্ৰভাৱেষ্যন্তি বৃত্তমেত্ত সুখ-🧠 🏸 ঘিৰান্ লোকে সুখ• ভুক্ত্বা **ब**्ना विश्व निवयन्त्रिशायां ज्कूषी-द्र^{क्र}िन• क्षत्रगी माम**ङ• (**नव• विकास कृतरम 5 एक निशाम। ভ জন করোতি কলুষৌব বিঘাত ৰঞ্চ ৰাধ্বী সদা ভবতি শোভন জীলাতসা ॥ ইতি ভবিষ্যপুরাণে बाही पुरुष्या समाधा ॥ 🗱 ॥ दस्यक्षणणा द्राणिगी। यथा। वन ि अ नामनी लोडी नाष्टी (एव-ভথা। নেথ্রাগ**স**্রাগি-ोनाः मुगरानाः ॥ इंडि वारमामब्रः ॥ জাতীফল•। ইতি শব

🔠 🏿 ॥ नत्रः ॥ नानक्करः ॥ 🖟

विष्ट। इंजि ज्ञाजनिर्यणेः॥ (नभः ॥ दिनाभः ॥ ছেদন ।। রামপুগ্র:। ইতি নেদিনী ॥ অত্র বিনাশস্থানে বিলাসঃ। ইতিবিশ্ব:হেমচন্দুশ্চ॥ কালভেদঃ । যথা। অষ্টাদশনিমেষাস্ত কাণ্ডা काश्चाह्य वनः। इंजि (इमहन्मुः॥ वावानामाभक्ती। इंजिब्राजनिर्दिः वरङ ही सनामथ्याउदिक्षुवर-**ভদः। তৎপ**र्यप्रायः। দেবজসুস• ২ এসি জঃ ৩। ইত্যমরঃ।। এপুসূ-ন॰ ৪। ইতি ভাবপুকাশ: ॥ লব-व्यकः ৫। ইতি भरत्र ज्ञावनी ॥ न-বলকলিকা ৬ দিব্য পশেখর ৮ লব ১ এপুন্ন ১০ কচির ১১ বারিসম্ভব ১২ তীগুপুমু ১৩ ভূ-व्यात्र १८ गीर्वागव्यम् गः १६ वन्त्रन-भूझ॰ ১७। यम् ४७गाः। मीउन[्]व । তিক্তর । চক্ষুষ্যর । ভূকরোচন-ত্ব[ং]। বাত পিত্ত কফ নাশিত্ব[ং]। তীক্ষর। মূর্জক্ষাপহর্ক। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ আগ্রানানাহ শূল-इदः। नीभनदः। नघ्दश्य। ইতি রাজবল্লভ:।। অপিচ। লবঞ্• ক-টুক• তিক্ত• লঘু নেত্রহিত॰ ছিম•। দীপন্ পাচন ক্চ্য কফ পিতাস্ नामक्शाञ्काः इविं उपाधानः শূলনাশু বিনাশবেত। কাস• খা সঞ্চ হিক্তাঞ্চ হ্লন• ক্ষপৰতি প্ৰুব•॥ ইতি ভাবপুকাশ:॥

व्यवस्य कः ज्ञी व्यवसः। ইতি भद्रः इञ्चली॥

व्यवस्किविका खी व्यवस्था है जि ब्राजनियंकिः॥

লবস্লতা জ্রী পুত্রবিশেষঃ।যথা। ল লিও লবঙ্গ লভা পরিশীলন কো-गल भलयनभीरत । भयुक्त निकत **ক**রিখিত কোকিলকুজিত **দপ্তস**্ টারে ৷৷ বিহরতি হরি রিহ সরস বসস্তে। নৃত্যুতি বৃব্**তিজনেন সম**ণ সন্থি বিরহিজনস্য দুরন্তে ॥ ইতি जगरनवः॥ तायागाः नशी विष्णयण वावन॰ क्री भारतसम्बन्दाः। उनु श्रव्यविष्यः गर्था । (गोवर्ह्**षः) रेन**े द्धव र विष्टे ० छे जिन ६ मामू-हु १। उथाहि। मामृत् यबु वदन महीर विमन्नक उट् । रेमक्रावा र्ी भी ठ भाग गानिमञ्क मिन ন্ধ্যার মের কিন্তু কি পাক্য বি **एक क् अक वयः। (भी वर्ह्स २ इक** कः एक । इंड्रियतः ॥ (इ.स.) यथा 1 यादा २ जिलादा वदा । इंडि विषयः ॥

वननः पु॰ भिक्ष्उनः॥**त्राकन**ः॥

विष्णयः॥ त्रमः । विषयः। वेकियान **मिनी ॥ भृषिर** प्रश्नित इन्नि । स्निन गः । ইভি চক किस्डएक पुरा-खागिति भि सभीरावेका ॥ **७८ भर्यायः । १**६५८ । ७३४ ७०६ । नवर्गा कठिक् । श्रीकर्मी ल **ठनः चापुकत्रण्ठ**ः । अति । अति । তো নিতরা তা ালেক লিডি मानक मनाजि । 💮 १ है 🥳 রাজনিঘণ্ট:॥ ज 📑 🕬 🕾 🥦 **দন उक्षिः পাচ**ে नित्या किंकज्ञः হরে। লঘু:।। अः 主经长"《编法》 थरना क्ठाः भाग्न A SUPPLY भू खु वाउर्दाः कः 💛 🕬 🦮 তাকর: ৷৷ সো পাড়াৰু পিত্ত কে তালেক ব্য ইতি রাজবল্পভঃ। 💎 আন্দেশ্ব भा विवज्रमः यथा । 💸 स्व प्राप्त बाइन् रिट्यः भूम 💎 🤃 🕬 লাপুলো হভবছে 👉 গণ ৰাম महामुद्धः॥ म मध्याः क्रांति । र्था इ भूगगाहिक: 🗆 🖂 🕾 🧺 पुन एउ **उन्धा**र्जा ना स्थान म्वाहिनिष्ठ्या गर्गे भी महाश्री ७ । मामे यहाजा ह्या हा निर्मा रिष्ठ पूर्वाष्ठ क् ॥ याव । कुरें के वि

পৈশ্চ ন বিক্ধ্যে মহাসরঃ। তাব ह्रज्ञ 'उदर नगामनाथा नाम (भय)-তি॥ यक दा মভিষ্ঞ্জীত ব্দাধ विगउ इतः। ७ म्ला ज्यामार কৃত্ব। পুন রেষ্যতি তে কর ।।এব कः मु। इत • लक्। ज्य এव सहामतः। भु ণিপত্য মহাদেব বাক্য নেতদুবাচ হ ৷৷ ভগবন্মন বংশস্য শ্ল নেভব-্ভন্। ভবেত্ত সতত দেব সূরাণা-ीर्यादा श्रमि ॥ उ॰ तुनान मध् एवः अर्व बुडलिंडः शिवः । পु**ब**ुऽ-াচ শহাদেৰো নৈতদেব ভবিষ্য-मे ।। বাভুত্তে বিফলা বাণী মৎ-্সার ক্তা শৃভা। ভবতঃ পূপ্র নে-্স্ত শূল নেভন্ডবিষ্যভি ॥ যাবৎ ারস্থ: শ্লো ২ব ভবিষ্যতি সূত-্য তে । অবধ্য: সর্বভূতানা॰ শ্ল ্তো ভবিষ্যতি॥ এব• মধু র্বরু ्रक्षा (स्वार मूत्रइन्छ उ॰ । ভবन॰ ना २नूबरण्डः काब्रयामान मुभुडः ্ৰ ভন্যপত্নী মহাভাগা প্ৰিয়া সম্ভী-াীতি যা। বিশ্বাবসোর্গত্যু সা ानवाया॰ महाभुका ॥ उम्राः ्धा बहावीर्य्या लवरना नात्र माक्ः া বাল্যাৎ পুভৃত্তি দুষ্টাত্মা পা-न्तर ममाञ्जर ॥ उ॰ भूषः पू-গীতত দুই। কোষ সন্বিভঃ। নপু:

न (भाक मारभरि नरेहन किश्विम) त्वी< ।। न विशाय हैन• 1नाक• श्रुविष्टि। वक्गानयः। मृनः निर्वे भ व्यवस्य वद्गः उदिय न्यात्रस्य ।। त्र পুভাবেণ শ্লস্য দৌরাত্ম্যেনাত্মন তথা। সন্তাপয্তি লোকা জীন্ বিশেষেণ চ ভাপসান্।। আছারঃ সর্বসত্তানি বিশেষেণ চ ভাপসাঃ। আচারো রৌদুতা নিত্যু বাসো ম-ধুন্নে তথা।। হত্বা বহুসহস্থানি সি॰-र वराषु मृगा ७ जान्। मान्या रेक्टव ष्टक्ष निष्ठा भाषात्र भाष्ट्रिक ॥ ত চ্ৰুবা রাঘবো বাক্য মুবাচ স মহা-मुनीन्। घाउधिष्ठामि उपुरका वार्भ-গছত বো ভয় ।। পুতিজ্ঞায় ভদা (उयाः मूनीना मृशुरुक्तमाः। न जुा-তৃন্ সহিভান্ সর্বানুবাচ রঘুনন্দনঃ ॥ কো হন্তা লবণ বীরঃ কস্যা: শঃ স বিধীযতা । ভরতস্ঠমহাবাছো শত্মস্য চ ধীমতঃ ॥ রাঘবেশৈব মু-ক্তন্ত ভরতো বাক্য মবুবীৎ। অহ-(भन विषयाभि भभाक्षः म विधी-यञाः ॥ ভরতস্য वहः मुद्रा रिश्यं। लोग्रं ममन्द्रिः। नक्षगादद्रक उ-ছৌ হি হ্বা সৌবর্ণ নাসন ।। শত্রু-खुर्वीद्वाकाः भुगिभका नहाविभः । क् उक्ची महादाल मंध्रामा त्रधूननर-

न ॥ व्यार्यां हि भूता म्ना द्वारा ধ্যা পরিপালিতা। সম্ভাপণ হৃদ-যে ক্রা আর্য্স্যাগনন পুতি ॥ পেুষ্যে ম্যি স্থিতে রাজন্ন ভূযঃ ক্লেশ নাপু যাৎা তথা বুরতি শবুরে রাঘ-বঃ পুন রবুবী ।। এব ভবতু কাঙ্ব স্থ ক্রিযতা॰ মন শাসন । স স্ব হত্বা মধুসুত লব্ণ পাপনি চয়।।। ताकाः भूमावि धार्मा वाकाः स्म यमाः विकास । यहा ७ युक्त भाका द्भुन् यहि किन्दि ममास्रायर ॥ उमा भूनः গৃহীত্বা তু ভন্ম রক্ষঃ করোভি হি। ज जु॰ शृक्ष णार् व जगायुधविना-क् उ॰॥ अभुविष्ठे॰ भूत्र॰ भूर्ब॰ वात्रि-তিষ্ঠ ধ্তাযুখ:। অন্যথা ক্রিয়নাণে তু অবধ্য: স ভবিষ্যতি ॥ ততঃ পুভাতে বিমলে ভিমান্ কালে স त्राक्षमः। निर्गउस भुवादीता छ-ক্ষ্যাহার পুচোদিতঃ ॥ এওমিন-ন্ত'র বির উত্তীর্য্য যমুনাণ নদীণ। তীর্ন মধ্পুর জারি ধনুয়াণি রতি ষ্ঠত ॥ ততে। ६ জ দিবদে প্রাপ্তে क्वकर्मा न दाक्तनः। जागह्यस् সাহসু পু।ণিনা ভার মুদ্ধন্।। ত তে। দদশ শত্ম• স্তিত দারি ধ্তা-যুধ । তনুবাচ ততো রক্ষ: কিমনেন कत्रियामि ॥ उरिगायः ভाषनागगा

रमजण मृष्ट मृदः। मञ्जूषा वीर्या-मन्नात्मा द्रावामन्त्रवामृह्य ॥ छ-বাচ চ সুসংজ্জঃ শত্রঃ স নিশাচর॰ । (याक् निहाभि मूर्व् एक बन्द्रयुक्त॰ জ্যা সহ।। তছ্ত্বা ভাষিত তস্ত শতুষুস্য নহাত্মনঃ। ক্রোপ মাহার-আহ্তন্ত পুন তেন শত্যেন মহাত্ম: না। লবণঃ ক্রোধসংযুক্তো যুদ্ধায স-মৃপস্থিত:।। আকর্ণাৎ স বিক্ষ্যাথ ভদ্মনু ধরিনাং বর:। স মুগৈ চি মস্থা-বাণ লবণস্য মহোরসি ৷৷ উর স্তস্য विनार्याम् श्वितिम त्रमाछनः। भू-नदिवागमजुर्ग भिकाञ्चलन-स्तर।। শতুমু শর্মনির্ভিমো লবণঃ স নিশা-চর:। পপাত সহসা ভূমৌ বজাুহত वैवाहनः ॥ ७६ भूनः सर्हाद्याः হতে লবণ রাক্ষমে। পশ্যতাং সর্ব (प्वानाः कृपुत्र) वण सन्त्रशा ॥ ছতে তু লবণে দেবাঃ সেন্দাঃ সাগ্ন भूरत्रागमाः । উहुः मूमधूत्राः वानीः শত্রু শত্তাপন ৷৷ বরদান্ত নহা বাহে। সর্ব এব সমাগতা:। বিজযাঃ কান্ধ্ৰিণ স্তভ্য নমোষ• দৰ্শন• হি 🚻 দেবানা ভাষিত শুদ্ধা শ্রো নৃরি क्ञाञ्जलिः। পুज्रवाह महावाहः শতুম: পুৰতাভাৰান্॥ ইয় মঙুপুৱী

রম্যা মধ্রাদেব নির্মিতা। নিবেশ। शान्याहीय (भव भस वतः भतः॥ **७: रेम्वाः श्रीज्यन्तमा वार्व मिर्ल्य** রাঘব । ভবিষ্ঠি পুরী রম্যা শূর-সেনা ন সংশ্য:11তে তথোক্ত্বা মহা-जााता रिव भाक्षक् छन। भवुष्या-পি মহাতেজাঁ স্তা• দেনা• সমুপান-य ।। जा जिना भीषु मागहर भुना শত্মশাসন । নিবেশনঞ্ শত্ম: শাুবণেন সমারভং ৷৷ তাং শুরীং দিব্যসক্ষাশা নানা পণ্যোপশো-ভিতা া নিরীক্ষ্য পরমপুতিঃ পর• হর্ষমূপাগম্ ॥ তস্য বুদ্ধিঃ সমূৎ-भूम। निरवणा मधुद्राः भूती । द्वाम ा शास्त्री नित्नीरक्त्रप्र**च**्तर्य द्वापण जा-গতে।। ইতি শীয়ামাযনে উত্তরকাণ্ডে একষষ্ট্যাদিসগুত্যন্তাধ্যায়েভ্য:সক্ষ-विত⁹।। #।। ववनम् मुम्मा८शिख র্যথা। বিব্লজা সারজো যুক্তা ধ্রা বীর্য্য मस्माधकः। मर्मिऽ। वजूवं अविव धन्। গত্তবভী সভী।। তক্ষে ভত্ত সুখা-সীনা সার্ক্ত পুলৈদ্দ সপ্তভিঃ। এক मा इतिगा नाका वृन्तातरा मूनिर्झ নে ।। বিজহার পুন: সাধী শৃস্থারা-সক্ত নানস।। এতিষামন্তরে তত্ত মাতুঃ কোড জগাম হ।। কনিঃপুগ্ৰ স্তস্যাশ্চ ভ্ৰাত্ভি: পীডিতোভিযা।

ভীত স্বতন্য দৃষ্টা তত্যাল তাণ কৃপানিধি:।। কোডে চকার বাল• ना क्ष्मा द्वादागृरः ययो। भुरताद्य वान भा भाषी न पर भा खिरक शिय॰ ।। विननाश ভृणः তর শৃকারাতৃও মানসা। শশাপ স্বসূত্ত কোপাৎ **ध्याति । विका**ष्टि । कराशि তে জল कि एन था मिया हि जो वि-नः। मणाश मदान् वालाः मह याद्ध ন্ঢা নহীতল । গছপ্ব চ মহী ম্ঢা खयुषी**णः** मनाहतः । श्रिष्ठि निंदवः युगाक जिवा जि भूषक् भूषक् ॥ घीरा घीरा शिक्षि कृषा विश्व সূথিন: সূজা: । দ্বীপস্থাভি ন্দী-ভিশ্চ সহ ক্রীডম্ভ নির্জনে ৷৷ কনি-গ্রে মাতৃশাপার লবনোদো বজু ব হ। কনিষ্ঠ: কথয়ামাস মাতৃশা-পঞ্চ বালকান্।। আজ্ম দুংখিতাঃ সর্বে মাতৃস্থানঞ্চ বালকাঃ। শুহা বিবরণ সর্বে পুরুণ্ম ধরণীতলং ॥ পুণন্য মাত শ্চরণ ভক্তি ন্মাত্ম-কন্ধরাঃ। সপ্তরীপে সমুদাক্ষ সপ্ত-তহু বিভাগশ:।। কনিষ্ঠাদৃদ্পর্য্য-ख॰ विख्यः विख्यः मृत्यः। ज्वराम् मूद्रा मिर्भ पृथ हिलार्गकाः ॥ अरउवाक कवः भृश्राः भग्रार्थक ভবিষ্যতি। ব্যাপ্তা: সমু দা: সঞ্জিব

সপ্তদ্বীপা• বসুদ্ধরা•॥ ইতি বুক্ষ-বৈবর্ত্তে শ্রীকৃষ্ণ জন্মথণ্ডে ৩ অধ্যায়ঃ লবণরসযুক্তঃ। ইতি ত্রি (मिनि।। नावगुयुक्त ।। ন্ত্ৰী মহাজ্যোতি-व्यवगिकि मुका या जी। ইতি রাজনির্ঘণ্ট: ॥ লবণখানি: স্ত্রী সাম্ভরলবণোৎ-প खिद्रानः। उ९ পर्य्यायः। क्ना २। ইতি হেনচন্দু:।। লবণাকরমাতঞ্চ লবণতৃণ ক্লী ভূণবিংশয:। তৎ भर्यायः। जानज्नः २ ज्नायः ० পটুতৃণক ৪ অমুকাণ্ড ৫। অস্ত ख्याः। मक्कोत्रयुः। यम् दुः। कः यायदं । अखन्द्र । अधन्किकः র বৃঞ্চ। ইতি রাজনির্ঘণী:।। व्यवग्रवयः क्री रेमञ्चरः विखः क्रवक्ष । इंछि द्राजनिर्घण्टः॥ जी मानार्थनवगामिः **ल** ३११४नुः নিমিতিধনুঃ। তদ্বিরণ যথা। **(कारजावाज। नवगरवनुः वक्षानिः** তা • নিবোধ মহীপতে। অনুলিণ্ডে

गरीभृष्ठं कृष्णाजिन करणाखरत ॥

(भनुः ववामयीः क्द्रा (शाउनशङ्

সংযুতা। বৎসা চতুর্ভারাছেন্দু

इक्कुशाना क कात्र एट ॥ त्रोवर्ग

नुथ म्झानि थुद्रा (तोशप्रया खपा

। मूथ ७ ७ मय ७ म । पना एन ।

गया नृश । जिल्लाः मक्तिया ताजन् चुानः गन्नमय खया। निःव ब्रज्नसर्य श्रयंग्रंट कर्लो भग्ननस्त्रे उथा ॥ প্রিথণ্ড॰ শৃত্বকোটো চ নবনীত ন্যা: उना:। স্তপ্ছা॰ ভানুপ্ষা॰ पर्छात्राञ्ची॰ शयश्विनी॰ ॥ का॰श्वान পদোহাং রাজেন্দু ঘটাভরণ ভূষি-তा । म्यक्षभुञ्च ब्रिम्ह भूक्षियु। विधान उक्षा आहार । वज्र ग्राम वा-क्षाग नित्वपराए । गृहान वाथ স ক্রান্তো ব্যতীপাতে তথানযে ॥ নকত গৃহপীডাক্ত সর্কাল পুদা-भाष्ट्र। विज्ञाय नाथुत्छाय कली-नाग ह थीनरङ ॥ (वह (वहाक्ट्रवि- । मूर्य (माजिंगायाहि जान्य । छेष्-भाग भूनाजन्या ज्थाम ए निर्दिश मृ-প ৷৷ জপ্তব্যমেব মন্ত্রন্ত পৃষ্কদেশো-পবিশ্যচ। ছ একোপানছৌ দেথৌ মৃদুকা কর্ণপ্রকে ৷৷ আছাদ্য বস্ত্র-যুগ্মেন দক্ষিণা কনক দদেৎ 1 প্রোক্তেন বিধানেন স্বশক্ত্যা কন-কেন ত।। ইনা॰ গৃহাণ ভো বিপু क्रुक्रि नामा उ। त्रमञ्जा नर्व ভূতানা সরদেবনমফ্তা।। কান।, काममध् कामा कात्राया नामा হস্ত তে। দত্ত্বা বেনু• লবণেন একা-इ रेम्हर जिक्षेति ॥ चर्य विदाव'

वित्युष उरिषद न वर्गाणिना। महत्युष भाउनाथ स्रणक्या कनकिन ज्
।। पद्धिमाः यर्ग माल्याकि यक एरता द्यद्वकः। य इपः मृत्या क्रक्या
भावत्यक्षाणि मानवः ।। मृह्यक म्वात्यक्षाणि मानवः ।। मृह्यक म्वात्यक्षाणि मानवः ।। मृह्यक म्वात्यक्षाणि मानवः ।। मृह्यक म्वार्णिक्या क्ष्युलाकक गह्नि । इन्यापि वाताह्युताल (यटना भाग्यात नव्यत्यम् माहाब्याः।।। नव्यममः भूः (नागातकातः। हिन् त्राक्षनिर्यक्षः।।

লবণক্ষার: পু• লোণারক্ষার:। ইতি রাজনির্ঘণ্ট:।।

व्यत्ता क्षी निर्मालनः ॥ मीक्षः ॥
इंडियिनिनेन्य बद्दावर्त्ता ॥ महाक्ष्रां क्रियं छो । इंडि ब्रां कि निर्मे छे । ।
क्षर्वां क्ष्रां । व्या । व्यां । व्यां । व्यां ।
क्ष्र्यक्ष्रां मि व्यां । व्यां । व्यां ।
व्यां क्ष्रां में व्यां । व्यां ।
व्यां क्ष्रां में व्यां । व्यां के व्यां ।
व्यां के व्यां । के व्याः व्यां के व्यां ।
विव्रोता यथा क्ष्रां । मुन्ना ।
क्ष्रं के वादायः । हां था । व्यां के व्यां ।
विव्रोत् व्यां के व्यां । व्यां के व्यां ।
विव्रोत् के व्यां व्यां के व्यां ।
विव्रोत् के व्यां व्यां के व्यां ।
विव्रात् के व्यां । व्यां के व्यां ।

न्। किताकिशाना सिर्देशस्य ॥ अ-ताः नि कामरम्वाभी · उष्हाज नि-विषय । वर्षाञ्जागत मवानि দান মত্র নিবোধত ৷৷ সৌভাগ্য রসসম্ভাতা হতো ২ন্ লবণো রস:। তদাত্মকত্মেন চনাণ পাহি भाभावरगाख्य ॥ ययाप्यत्रभाः मर्खि (नाष्किष्ठ) वर्षः विना। श्रि-যঞ্চ শিবয়ে নি গ্রু তন্মাৎ শান্তি-भूररा ७व ॥ दिक्रुप्तरु मगु छ उ॰ যমাদারোগ্য বর্জন। তমাৎ প-ৰ্বতৰ্পেণ পাহি সংসার্সাগ-রাৎ॥ অনেন বিধিনা যস্ত দদ্যা-झव**ाश्वं उ॰ ।** উनालाक वाम কল্ল• ভতো যাতি পরা• গতি•॥ ইতি মাৎস্যে ৭৭ অধ্যায: ॥

लवनाक्षिः की नागू मुलवनः। ই िउ त्राजनिर्धणैः॥

লবণারত্ব॰ ন্নী লোণারক্ষার:। ইতি রাজনির্ঘণ্ট:।।

व्यवत्याख्यः क्ली रेमक्ववः। इंडि त्रज्ञभावा॥

व्यवतात्र्यः त्री व्यानात्रकातः। इंडि ताकनियंग्रेः॥

वरागाः श्रु वरात्रमृष्ः। ইত্য-

∥ नत्न• क्री (इन्न•। ইত্যমরः।।

वनि की कनवृक्षियः। जाना हेिं जाय। उद्भविष्यः। गु. युका २ अगिरा १। हेिं भद्दिन्तुका।। नवनी की कनवृक्ष्विष्मयः। नाः याजि हेिं जाया। उद्भविष्यः। जुगक्षव्या २ भन्यः १ (कामनवक्षणा ८। हेि जाक्षियं छेः।। जम्र कन द्याः। इत्रद्धः। मृगक्षिदः। कक बाजनानिद्धः। हेिं जाक्यक्षञः ।। नवनीकन मर्गुर्ष्मं याजनिज्ञः इत्रः नघ्। हेिं किंदिः।।

महाकः भू॰ (ছ्रिनपुर्वाः । ইख्रुगाः निकायः॥(ছ्रिनः । ইতিসংক্ষিপ্ত-সামোণাদিবৃতিঃ।।

লবাণক: পু• দাত্রাদি:। ইত্যুণা-দিকোষ:।।

লবিঃ ত্রি ছিদুরঃ। ইত্যুণাদি-কোষঃ॥

্লবিজ লী দাত্র । ইত্যমর: ।।

লশ ক শিল্পযোগে। ইতি কবিক

লুজম: ।। ক লাশযতি জ্লালো

নৃত্যে শিল্প যুনকীত্যর্থ: । ইতি
দুর্গাদাস: ।।

नम्न ती अनुनः। छर भर्यायः।
भरहोयधः २ गृञ्जनः ० व्यक्तिः ८
भहाकन्तः ६ अस्मानकः ७। ইত্যभन्नः ॥ अस्मानः १ सहकन्तः ৮

ভূতমঃ ৯ উগুগন্ধঃ ১০। অস্যগুণাঃ। व्यप्नत्रामन्डेनद्वः। श्वकृद्वः। स्रेकृद्वः া কফ বাত নাশিত্ব•। অশৃচিত্ব•। ক্রমি ভূদোগ শোকমুত্ব । রঙ্গা-यनपृष्धः। इंजि जाजनिर्घण्टः ॥ 🗱 ॥ ष्यभिष्ठ । वाणुनस्य द्राजानः जागपु-गुगत्का गरहोयसः। अतिरक्षे। (द्रेह-कन्त्र भवत्वाद्धा ब्रामानकः ॥ य-দামৃত বৈনতেযো জহার সুরস্থ खगाए। उमा उट्या २भ उक्षिन्तुः সুরসোনো १ পত জুবি।। পঞ্চ ভিষ্ট द्रोम युक्ता द्रामनासून विक्र**ः**। ভন্মাদুলোদ ইত্যুক্তো দুব্যাণা ও गरविनि ।। कर्क न्हा भि म्हा स्वायु (ভিক্ত: পঞ্জে সংস্থিতঃ। নালে ক-याय উদিস্টো नानास्त्र नवनः मृङ् াা বীজে ত মধুর: প্রোক্তো রস ভদ্-গুণবেদিভি:। রসোনো বৃণহণো বৃষ্ঠ্যে স্থিক্ষিকঃ পাচন: সর: !! রসে প্যকে চ কটুক স্তীক্ষ্ণো মধুর-কো মতঃ। ভগ্নসদ্ধানকৃৎ কণ্ঠ্যো **७कः भि**ङामु वृद्धिमः ॥ वलवर्ग-করো মেখা হিতো নেত্রো রসাযনঃ ।। इरमान कीर्ने इत क किन्यू व विवस खन्याक्ति काम (माकान्। मुनान क्षान्त्रभार जङ मगीद्रश यात्र क्का क इष्टि ॥ महा मान

্ৰ্যাযাম মাতপ্রোষ মতিনীরং नार्या ७७ ॥ त्रामान मन्न् भू-ৰুষ স্তঃজেদেত নিরন্তর । ইতি ভা वशुकानः ॥ अ॥ व्यन्तः । वाग्नः कात नथूतः कर्छा व्रया ७३: **भत्रः। ७**ग्नमकांनक्षल्या त्रक्रिन खनुष्यनः॥ ইতি রাজবল্লভः॥ जिम्मः भू जम्मः। इं जिम्दर्गाः वनी ॥

গুৰ ক শিল্পযোগে। ইতি কবিকল্প · ফমঃ ৷৷ ক লাষ্যতি **হুশলো** নৃত্যে ু শিল্ল যুনজীভার্থ:। ইতি দুর্গা-मानः॥

াব ৰ ঞ স্পৃহি। ইতি কবিকল্প ्क्यः ॥ य 🕾 नव्रिज् नव्रिज् इंडि पूर्गामामः ॥

য়্য ঞ স্পৃহি। ইতি কৰিকল্প-क्रमः ॥ य नवजि नवज । ইতি मुर्गामानः ॥

। स्वः भू॰ नर्खकः। हेन्। पिरकायः॥ ্য**ন ক শি**ল্লঘোগে। ইতি কবি-क्ल्रफ्मः ॥ क नामग्डि ज्ञाल्।-न्छ। भन्न गुनकी जायः। इंडि षूर्गामात्रः ॥

न सिवि।। कीएउ। ইতি कविकन्नः

ख्थान्नक हिन लगुनरमविना । लगा खी रुति मा ३ हिन हो बावली । । निका खी नाना। यथा। नाना या॰ शिह्ला थ्याङा लिनिका ला॰ সিকা তথা। ইতি শব্চন্দ্রিকা ॥ 🤇 लजीका की इक्तुमः॥ पृद्याःभ-मध्रगत्रमः । इंडि क्टिर् ॥ ল্মু ঈ ও ড ব্রীডে। ইতি কবি-कन्नफ्राः॥ दिनि मःयागापिता-(भ वक्। के ७ वर्:। ७ वड्डा ७। इंडि मूर्गामामः॥

> লন্তঃ ব্ৰি শ্লিষ্ট:॥ কীডিত:॥ শিল্প-যুক্তঃ। লসধাতো: ক্ত পুত্যযেক निव्रवः। इंडि वडकमस्यूर्रन ত্তৌ ভরতক ॥

> वर्खकः भू॰ **ध**न्रधान्धाः । ইত্যমর: 11

वस्की भुः धनुः। ই छि भवसामा।। लहितः) स्त्री महाउत्रकः । उৎ-वाह्ती 🕽 भर्य)।यः। উল্লোল: २ कः (ज्ञान: ၁। ই**তি (**ह्यान्सु: भद्र-त्रवादनी ह।।

लक्क कड मर्भान।। व्यक्त। ইতি কবিকল্পদমঃ ।। ক ড লক্ষ্যিত লক্ষয়তে ঘট লোক: পশ্যতি। চিহ্নযুক্ত করোভীভার্থো বা ৷ इंভि দুর্গাদাস:॥

क्रमः।। लम्नि । इंडि मूर्गाप्तामः ॥ । लक्कः न्नी व्यादाः ॥ भववाः । इंडि

विषिनी॥

जकः ली खी म्मायूडमार्था। लाक इंकि ভाষा। इंकि भिरिनी ॥ ष्ट्रक्रक॰ क्री लक्ष्वि रूट।यथा। लक्षक॰ नाम लक्ष्य छि। या मृण्याः র্থস্য সম্বন্ধবতি শক্তন্ত যভ্তবেৎ ৷ তত্ত তল্লক্ষক নাম তছজি বিধুরণ यि ॥ यापृभार्थ मञ्जूति यमा भ नारक्षि उ॰ छारत छाम्नार्थ লক্ষক যদি তাদৃশার্থে শক্তিশ্ नुः ভবে । रेमक्षवान्यस भदाः ्जूत्रेशांकि जसिक्षनि व्यवाहाविव यञ्च जीवानावमस्क्रिजाः । उट সম্বন্ধি নীরাদিশক্তত্বেন গৃহীতা এব ভীরাদ্যব্য বোধ্যম্ভি তত্র লক্ষকা এব।। অপিচ। তদেব॰ विविध जक्षभावज्ञाञ्चक्षक भागाः পি जर्भ्यार्थाहि छिहाहत्व विश्व নিত্যর্থ: স্যাদেতদ্দদি ভীরাদিল क्रहरुया गङ्गापिशनम् छानः তীরাদ্যনুভবে ভবেদ্বেতু স্তদোক্ত-ক্রমেণ লক্ষকানা বিভাগো নত্ত্বে छम्छि। जीबामान्य (वायः शुक्रि **जीतारिभक्दित्व भरकानम्** লাগ্ৰন হেতৃত্থা লক্ষকানা মদ-नु डावकद्रार एक्या नद्यो रेगडाः

म्भामिकारिम भरकान महना-দিনেব। গঙ্গাশা ধােষ ইত্যাদৌ লক্ষিতেন তীরাদিনা সার্দ্ধগৃহী-**ভাস•**সর্গক্ষৈত্র সপ্তম্যর্থাধেয়ত্ত্বা-র্যবোধ পুবিষ্টত্বানিতি চেম। পু-ক্ ভার্থাবছিন্ন সাব পুতাযার্থসা ধ-र्मा अदि २५ यवुष्क वुर् १ शह उपा छी-द्राप्रविष्मिष्ठिम् नृवर्थाक्ष्यञ्चा-त्र धांयामावन्य वाषावानाट्। **२० भ**क्टेमाव भरमा समाकाङ्कभ-দান্তরোপছাপ্যার্থান্তি স্বার্থ ধ-মিকান্বৰ বোধ পুতি ছেতুত্বাদন্বৰ बुष्को लक्षार्थमा अर्वनः। ऋडाः পুবিশণ্ডীত্যাদৌ লক্ষ্যস্য **হুম্ব** 🦠 वारि वन्य विभिष्यान्। नशरंखः। बनिः भणुविज्यानी वक्रार्थः (यः चिर्यान्यदावन्रान्यन् अदिकः ত্বার । তমাহক্তে রিব ভক্তে রপি জ্ঞান মনুভাবক• ভবভ্যেব কার্য্য-তাবছেদকস্য সংক্ষাচাচ ন ব্যক্তি-চার:। ইতিশ্দশক্তিপুকাশিকা॥ ली **हिङ्कः ॥ नाम । इंडि** भिनिशा मर्भन । इंडि वक्षशाद्ध-र्थरर्भनार ॥ नक्ष्या ज्वायर उ হনেনেতি লক্ষণ । তদ্বিবিধ । इंडबर्डनान्गाभक । व्यवहात भूरगाज्यक । इंजि न्यायन छ॰ ॥

ব্যাকরণমতে তু। কৃত্তজিত সনাসানা মভিধান নিযামক । লক্ষণস্ত্বভিজ্ঞানা তদভিজ্ঞানসূচক ।।
ইতি বোপদেব: ।।

ককণ: পু॰ সৌমিতি:।। সারস-भक्षी। ইতি **শ**द्य द्वावनी ॥ লক্ষণা জ্রী সারসী।ইতি নেদিনী ॥ इंशी। इंडि मिक्कान्डकोगूर्गः गुगाहिवृद्धिः॥ भक्षत्रत्रसः। यथा । जक्कना मकामयक खादभर्यानु ু পপত্তিত: । ইতি ভাষাপরিছেদ: া৷ গঙ্কাথা ঘোষ ইত্যাদৌ গঙ্গা-श्रमा माजार्थ भ्वाङ्क्राभ शा-यम्रान्यानुभभिक्त खाट्भर्यानूभ-পত্তি ৰ্বা যত্ৰ প্ৰতিসন্ধীয়তে তত্ত্ৰ ৰক্ষণযা ভীরস্য বোধ:। সা চ শ-कामग्रक्तिभा। उथाहि भुवाह्कभ শক্যার্থসমন্ধন্য তীরে গৃহীতত্ত্বা-ন্তীরস্য মরণ ততঃ শাক্ষরোধঃ॥ ইতি সিদ্ধান্তমূক্তাবলী।। 🗱।। অ-গিচ। জহৎ স্বাৰ্থাজহৎ স্বাৰ্থা নি क्राधुनिकाषिकाः। वक्रभा विवि-था खाञ्जि कंकिक• मात्रात्विशा। কা চিল্লফ্ণা শক্যাবৃত্তিৰূপেণবো-धम्बरा बहर्याथकुष्ठाउ । यथा जीत्र दामिन। गङ्गानिभम्म । কাচিছ্কা লক্ষোভ্যবৃত্তিনা শ- ক্যুক্তিনৈব বা কপেণানুভাবক: जामकश्ट्यार्था। यथा मृत्राजािन-ना नीलघढेवाहिना ह घडाहिल-দস্য। কাচিল্লফ্ ভাবছে কীভ্ত **ত खुर्भा भूर्व भूर्वः भु**ठ्यायक द्वा-भिक्छ। यथा जाइन्याम्भिकादान जनाम्य पुराग्जारकज्ञानकणानि शहना काहि भूई भूई जाप-(भारताभुज्यायकज्ञानाधुनिकी । यथा यहेदारिना भहे। दिश्वन्त्र । जा-দিনা শক্যসদৃশত্ব প্রকারেণ বো-পকতবা গৌণীত্যুপগৃহ্নতে। যথা व्या गानवक इंड्रामावश्ममृण-दारिना अग्नारिशरम्। इंडि नम्-শক্তিপুकार्শिका ॥ 🗱 ॥ व्यन्ताह । মুখ্যার্থবাধে ভত্মক্তৌ য্যান্যোর্থ: পুভীষতে। ৰুচে: পুষোলনাদাসৌ লক্ষণাশক্তি রপিতা।। ১।। কলিকঃ সাহসিকইত্যাদৌ কলিস্থাদিশবে। দেশবিশেষাদিৰূপে স্বাৰ্থে অসম্ভব-न् यथा भक्ता भक्ता चन गुकान् शुः क्वानीन् भुजाययाज । यया ह गर काया॰ (याय इंड्राप्ती शक्का दिन्ना-(द। कनगगार)र्थवाठकदाए भुकृत्ड २मञ्जदन् अमः। भाभीभागि मध्य সম্বন্ধিন ওটাদি বোধ্যতি। সা শ্বস্যার্গিডা স্বাভাবিকেতরা ঈশ: রানুজ্ঞাবিতা বা শক্তি লক্ষণানাম। পূর্বত হেত্ কটিঃ পুসিদ্ধি রেব ৷ উত্তরত্র গহাতটে ঘোষ ইতি পুতি-পাদনাদলভাস্য শীতত্ব পাবনত্বা-তিশ্যস্য বোধনৰূপ পুৰোজন। ক্তৃ বিনাপি য**ন**্য কস্যচিৎ সম্ব ন্ধিনো লক্ষণে হতিপুসক্ষ: স্যাদত উক্ত कार्यः भुरयाक्रनाष्ट्र ।। 🗱 🛭 **छ**न्छितास् । मूर्यप्रार्थाम् । जन्म भा वाक्यार्थः श्त्य निष्कारा। न्याः माजाता मुभानानाप्तरवामाना লক্ষণা ॥ ২ ॥ খেতো ধাবভি। পু-र्गाङ्गास यथा। इन्छाः भूविणिखि। ष्पनया हिं स्थलामिनिः क्लामि-ভি**ण्ड व्यक्टउन** ज्या (कवरेन थावन পুৰেশন কিববো: কভূভিযা হর্য महाजगारेन द्विष्ट मिक्स्य व्यावाः नम्बिता २ याम्यः शुक्याम्य ए व्याकिनाउउ। नूर्वव नुरयाकनाजा-বাদুটি:। উত্তরত সন্তাদীনা মতি-পহনত্ব পুযোজন । অত্র চ মুখ্যা-र्थम्। जाता २ शुर्भातानः । लक्ष्म वक्नायास भद्रोत्रारवाभवक्रम भि **छ**ऽनरग (र्छन:। ইय स्ववाजहरू द्वाः র্থেত্যচ্যতে॥ #॥ অর্পণ স্বস্য বা-क्रार्थि भन्नम् । निष्कार्य। जैभनः क्र (रज्दारिया नक्रानक्रा॥

 श कि प्राचाजनरा लंकन वाकना यथा। कलिञ्चः जारुभिकः गञ्जायाः याय इंजि ह। अन्या हिं भूक्ष **उ**ট्या वीक्यार्थ **२**न्यजिष्य के-লিঙ্গ গঞ্চা শব্দাবাত্মান মূর্পয়তঃ 1. যথা বা । উপকৃত• বহু তত্ৰ কিমু-চ্যতে সূজনতা পুথিতা ভবতা পর্ণ । বিদৰদীদৃ**শ মেব সদা সংখ সুখি-**ত মাম ততঃ শরদা শতে।। অত্যা नूशकाद्राभीना॰ वाक्यार्थ २न्यत्रनं ष्य উপক্তাদयः भदाः जाजान মর্গবন্তি। অবাপকারিণ পুতি উ-भकात्रापि भुजिभाषना यथार्थ वा-थः विश्वती अलक्षाः समृकः कलमः পকারাদ্যতিশয:। ইয় নেৰ ভছৎ-ষার্থেভূচ্চতে॥ 🛊॥ আরোপাধ্যব-সানাভ্যাণ পুডেব্ৰুণ তা অপি ছি-ধা। তা: পূর্বোক্তা কর্ভেদা লক্ষ-शाः । विषयम्यानिशीर्गम्यान्यज्ञामाः षाऽ পুভীভিকৃৎ । नाताभानता-विगीर्गम् मठा माध्यमानिका ॥ ৪।। ক্টাবৃপাদানলক্ষণা সারোপা যথ। অশ্ব: শ্বেভো শ্বাবতি অত্র হি খেতগুণবান্ অখে৷ হনিগীৰ্ণ স্বৰূপঃ ৰ্দনবেত খেত গুণতাদাল্ম্যেন পু-ভীয়তে। পুযোজনে যথা এতে জন্তা: পুবিশন্তি অত সর্বনামা স্বন্তথারি

भू विविद्यां नार्वाभाषः । करणे लक्ष नवक्ष १ यथा। क तकः भूकः ষো. যুধ্যতি। অত্ৰ পুক্ষ কলিস্থো। রাধার্য্যাধারতা সম্বন্ধ:। পুথোজনে যথা আযুষ্ ত । অত্রাযুষ্কারণ মপি মৃত• কাৰ্য্য কারণ ভাব সম্বন্ধ সমৃ-স্ক্যাযু স্তাদান্ম্যেন পুতীয়তে অন্য रेवजकरणुनावऽज्ञिहातिगायुद्धत्रगः भू-(याजन । यथा ह ताजकीय भूक्त গছতি রাজাসৌগছতি ইত্যত্র স্বস্থা-নি ভাব লক্ষণ সম্বন্ধঃ। যথা বা অগু-মাত্রে হ্বর্বে হ্ন্ডোর•। অতাব্যবা ব্যবিভাৰলকণ: সম্বন্ধ:। ব্যক্ষণেপি उकाभी वा जाएकर्या नक्षाः न-यक्षः। हेन्तुर्थाम् ङ्गाम् व्यभी हेन्तुः অত্র তাদর্থ্যরূপ:। এব সন্যত্রাপি। নিগীণন্যপুন বিব্যস্যান্য তাদাত্ম্য **প্**তীতিকৃৎ সাধ্যবসানা । অস্যা শ্চতৃষ্ ভেদেষ্ পুরোদাহরণান্যেব ।। 🕸 ।। नामृत्माऽङ्य नचकाः मुका-ন্তা: সকলা অপি। সাদৃশ্যান্ত্রতা পৌণ্য স্তেন ষোডশ ভেনিতাঃ ॥ ৫॥ ভাঃ পূর্বোক্তা অষ্ট ভেদা ল-ক্ষণা: সাদৃশ্যেতর সম্বন্ধা: কার্য্য কারণ ভাবাদযঃ। অত্র শুলাদা। भूर्खामाञ्ज्ञगारमध्य । क्राव्भामानः नक्षा मादाभा भोगी यथा। এ

ভানি ভৈলানি হেনন্তে সুখানি অত্র তৈল শব্দ গুল ভব মেছ্ৰপণ মু-थ्यार्थ मुलारारेयव नार्यलाहिस्त्र-হেষ্ বর্তে। পুযোজনে যথা রাজ-ञनात्रयु ७९ जम्मिमु ह गहरम् এতে রাজস্মারা গছন্তি। কঢাবুপা-मानज्ञा माध्यमाना लोगी यथा তৈলানি হেমন্তে সুথানি। পুষোজ-त यथा ताकक्रमाता ग्रहिष्ठ । काळी লক্ষণলক্ষণা সারোপা গৌণী যথা রাজা গৌডেন্দু: কণ্টক পোধযতি ৷ श्याज्ञत्वशीर्वाशीयः। क्रिंग नक्षा नक्रना माध्यमाना (गोनी यथा द्राञ्जा কণ্টক শোধ্যতি। প্ৰোজনে यথা शोर्जन्नि ।। 🗱 ।। वः अगः गृहागृह-वािष्विभागुः कननक्षाः । ७। भूयो-ह्या या अष्ट्रेराज्या विक्रण प्रशिक्ष अ भूरयाजनक्र वाक्षामा गृहागृह्छ्या পুত্ত্যক• দ্বিধা ভূত্বা ষোডশভেদাঃ । তত্র গূঢ়: বাক্যার্থ ভাবনা পরিপক্ বৃদ্ধি বিভব মাত্র বেদ্যঃ। যথা উ**প**-কৃত বহুতত্তেত্যাদি। অগ্টো ২তি-স্পাষ্টতযা সর্ব জন বেদ্যঃ। যথা উপ-**मि**श्चि कामिनीनाः सोवन नम्बद ললিতানি। অবোপদিশতীত্যনেন আবিষ্করোতীতি লক্ষ্যতে আবিষ্কান রাতিশয় শ্চাভিধেয়বৎ মুটণ প্রতী-

राज ।। 🗱 ।। धर्म्य धर्मा गठावृत कः লসৈতা অপি দ্বিধা। ৭। এতা অ-নন্তরোক্তা: বোডশ ভেদা লক্ষণাঃ ফলস্য ধর্মগতত্ত্বে ধর্মিগতত্ত্বেন চ পুত্যেক দ্বা ভ্রা দ্বাত্রিশ-ডেদা:। ক্রমেণোদাহরতি। স্থিপ শ্যামলকান্তি লিপ্তবিষতো বেল্ল-দ্বলাকা ঘনা বীতা: শীকরিণ: প (यार नुष्रा माननर (कका: कना: 1 काम॰ मञ्ज मृष्ण करोत्र कृमरया वारमा श्रम मर्ब मरह रेवरम्ही जु कथ॰ ভবিষ্যতি হ হা হা দেবি ধীরা ভব॥ অত্রাত্যন্ত দু:খসছি-ফুরূপে রানে ধর্মিণি লক্ষ্যে তদ্যৈ-वाजिन्यः कलः। शक्रायाः (घाष ইত্যত তটাদিযু লক্ষ্যে শীতত্ব भादनदारिक्भ धर्मग्राडिणयः क्न ॥ 🗱 ॥ उपियः नक्न ॥ (छ-मा महञ्जाञ्चः मञ्जा वृदेशः । क्षावः **ঙৌফলেদ্বাত্রি**শদিতিচত্ত্বারি**শ**া ह्मकृषा (जनाः ॥ 🕸 ॥ किथः। भन বাক্য গভত্বেন প্রত্যেক ভা অপি দ্বিধা। ৮। তা অনন্তরোক্তাঃ। অত পদগতত্বেন যথা গল্পাযা বোৰ: ৷ বাক্যগতত্ত্বেন যথা উপাকৃত• বহু-ভবেতি। এব নশীতি পুকারা লক্ষণা। ইতি সাহিত্যদৰ্পণ:॥

লকা স্ত্রী লক্ষণ দশাযুত্র পথ্য। ইতিমেদিনী।

লক্ষিতঃ ত্রি আলোচিতঃ । দৃষ্ঠঃ
। অক্ষিতঃ । ইতি লক্ষ্ণাতোঃ
কর্মণি ক পুত্রবেন নিয়ন ।। লক্ষণাশুষ্ক ।।

নিক্তলক্ষণা জী লক্ষিতেলক্ষণা
। যথা দ্বিরেফ পদেন বহু ব্রীহ্ন লক্ষণযোপস্থাপিতাদুক্ষরযযুক্ত তুনরপদাদভিধযৈব ভ্রোপস্থিতিঃ
। অত্র কচি রস্তি। পুক্তে তু কচি
পুযোরনাভাবাদেযার্থরঃ ইযমেব
লক্ষিতলক্ষণেত্যুচ্যতে । নচ লক্ষণাদ্ব্যাভাবাৎ কথ্যিয়ণ লক্ষিতলক্ষণেতি বাচ্যং। যত্র লক্ষিতাচুম্দর্থাভিধানং তবৈব লক্ষিতলক্ষণাযাঃ পরিভাবিতরাৎ।ইতি
সাহিত্যদর্পণ টীকাক্ৎ শ্রিরান্চং
রণতর্কবাগীশাঃ।।

লক্ষিতা জী পরকীযান্তর্গতনাথিকাভেদ: । অস্যা লক্ষণ । পুংশ্চন
লীভাবনিপুণা। উদাহরণ যথা।
যক্ত্ত ওড়ত যক্ত্যান্তর্গি বা
ভ্যাৎ। যভ্যতু ওড়বত বা বিফল স্তব গোপনোপায়: ॥ ইতি
রসমঞ্জরী ॥

निक की हिङ्गा भुधान । हे अन्तः॥

च স্থাণ শ্লী চিছ্ন । ইতি শদরত্ন।

বলী ।। নাম । ইত্যমরটীকাষাণ
ভরত: ॥ শ্রীবিশিষ্টে ত্রি । ইতি
মেদিনী ।।

লন্মণঃ পু॰ সারসঃ।ইভিছেম-চন্দু: ॥ এরানভাতা। ইভি মে-দিনী।। স চ ত্রেভাযুগে অযো-भागा मुभिजागार्छ मनात्रपाद्धाः তঃ।। ইন্দুজিদ্বধার্থ তস্য চতুদ্দশ বর্ষপর্য্যন্ত আহার নিদাদি রহি-**७ वृ॰ यथा।** এकना व्यवायक जी তথা লক্ষণেন চ ৷ সাডঃ সর স **७**बस्था द्रान्य शक्य हो जाहे ॥ উবাচ সীতা হেনন্তে জল সুষাদু নির্মল । তথামব্যঞ্জন রম্য সর্ব **दस्र मू**षी उल ।। कलक हरान हाक जीकारेय शुप्तामा भूतः। उटा पत्नी वन्त्रनाय शन्हाकुष्ट् वर भुवृः ।। লক্ষণস্থ গৃহীত্বা চ নৈব ভূঙ্কে कनः बनः। (भवनाम वदार्थक जी-ভোদ্ধারণ কারণাৎ ॥ निमा न যাতি ন ভুছক্তে বৰ্ষাণাঞ্চ চতুৰ্দশ । य এर भूकरम। रयाभी जन्नरम्। त्रावगाजाङः ॥ इंजि वृक्तरेववर्र्छ শ্ৰীকৃষ্ণজন্মথণ্ডে ১১৫ অধ্যাশঃ।। द्धी জাজাণপুস: সুনিবা। ইভি श्वत्रश्वावणी।।

क्षी (अञक्षेकात्री। इंडि লক্ষ্ণা त्राजनिर्घरोः॥ मात्रभी ॥ **अवि**श्रिकः দঃ৷ ইতি মেদিনী ৷৷ শেষস্ত লক্ষ্ম-ণাকন্দ ইতি নামু। খ্যাত: । ভস্যা: भर्यायः । भूजकन्ता २ भूजना ० নাগিনী ৪ নাগাস্থা ৫ নাগপঞ্চী ৬ ত्लिनी १ मञ्जिका ৮ अमुविन्तृह-मा २ भूहरा २०। जन्मा खनाः। मध्ययः। भीठयः। खीवकाय्यनाः भिष् । **त्रभा**यनकत्रष् । वन्यष् । ত্রিদোবশমনত্ত্ব । ইতি রাজ-निषंषः॥ অभिচ। भूञ हाकात्र तः कान्न विम्मु जि वी भू का जना। দম্মণা পুঞ্জননী বস্তুগন্ধাকৃতি र्ভदि ।। इंडि ভावनुकामः ॥ अ॥ मूर्यिऽ। भाजू 🗐 कृष्कभूर्य-ণ সায়েন বিবাহিতা। ইতি মহা-ভারতং ॥

नक्योः छो विक्षा । उट्गर्गायः
। अग्रान्या २ अग्रा २ कम्ना २ कम्ना २ कम्ना २ कम्ना १ क्या १ क

মস্রাঃ। বান্ত বহি সমাৰ্চ বাম। নেত্রেন্দু সংযুত । বীজ মেতৎ শ্রিয়ঃ (भुक्तिः मर्वकाम कन्नभुमः ॥ 🗱 ॥ অম্য পূরাপুযোগ: । পুাতঃক্ত্যা-िक्नीठेन्यामाष्ठः कर्या विश्वाय इ्<-</p> পদাস্য প্রাদি কেশরেষু মধ্যে চ भीठेणकीः भीठेमनुष नारमः । उँ বিভ্তৈ নম:। এব উন্নত্যৈ কান্ত্যে मृक्षित कीरिका ममरेका वृतिष्ठा उँ ६-कृष्ट्रिः, श्रीकः। ७७: 🍳 कमनामनाय नमः । ইত্যাসন विन्यम् श्वाहि-न्यानः वर्ष्याः निव्नान ज्ख्यायय नयः मुर्थ निवृष्ड्नारम नमः वृषि भूरियरमवजारेय नमः। एजः कन्नाङ्गः न्यात्मे वर्गाट । माः वर्ष्णान्याः নন:। 🕮 তজনীভ্যা স্বাহা। শু गध्रमाञ्जा॰ वष्ट्र। इन्डामि । এव॰ भा क्ष्मियाय नमः इंड्राहिना ह न्र-(मर्। उथा ह निवस्त्र । अञ्चानि भीर्घपुट्डिन त्रमावीट्डिन कन्नराए । ততো খ্যান•। কান্ত্যা কাঞ্চনসন্নি-ভা হিম্পিরিপুথ্যৈ শ্তভর্ভি গ্-জৈ হসেৎক্ষিপ্ত ধিরপ্রশামূত ঘটে त्राविष्ठातानाः निष्यः। विज्ञानाः वतः मतुग्ध मञ्च रहेनः कित्रीक्षाञ्ज লা কৌমাবদ্ধনিতয় বিষ ল'লিতা

মানসৈ: সংপ্জ্য শ্জু স্থাপন অ र्याए । उउ: भीठे भूजा क्सिग् কেশরেষ্ মধ্যেচ বিভ্ত্যাদি পীঠ-মল্বন্ত পূজা বিধায় পুন ৰ্ধ্যাত্বা বাহ-नारि भक्षभुद्राञ्जनि हान भर्ग्रङ विश्वाय कावद्रभ भूषा माद्राख्य । অগ্রাদি কেশরেষূ মধ্যে দিক্ষু চ শূ।• कृत्याय नमः। ইত্যाहिना मःभूक्र **मियालयु भूबीमि ७ वामूमिवाय नमः** । এव॰ महर्षनाय भूमृत्राय व्यनिक-काय। विभिग्नत्वर् ७ ममकाय ७ म-निनाय ७ँ एश्नुनाय ७ँ अकफेकाय। **ততো** দেব্যা দক্ষিণে ওঁ শহ্ব নিধ্যে नगः। अतः वम्बाबारिय। वास्य उ भग्न निधरा वज्ञ रेउ। भ्रार्ग्यू भू-बीहि खँ वलारेका नसः। এवः विनः लारेय कप्रनारेय वनमानिकारेय वि-जीविकारेय नाक्ररेयं। वसुमानिकारेय । তদ্বহি রিন্দানীন্ বজাদী • শ্চ পূজ-(य८। ততো ध्लामि विनर्जनाष्ठ॰ कर्म जनाशायट । जना शुतकद्राः দাদশলক্ষপ:। তথা চ। ভান্ল-ক্ষ• জপেমুদ্র• দীক্ষিতো বিলিতে-निपुगः। ७९ मर्मुक ज्लार कमः लि मंथू ताश्लेखः ॥ बनाए जूरुगाः भञ्जी जिरेन वी मधुबाल्लु रैजः। विदेशः ফলৈ ৰ্বা জুহ্বাথিভি ৰ্বা সাধকো:

खभः ॥ #॥ वायुवः बनिजा विस्का-র্মাণা নকরকেতন: । চত্বী জাতা কো নত্ত্ৰ প্ৰকলপুদঃ।। বাপ্তব॰ ঐ॰। বিষ্ণুবনিতা আँ। নাবা ত্রাঁ। নকরকেতনঃ ক্লী। অস্য প্জাদিক॰ भूईवाहाधाः। उथा ह। त्रभागाः किल्ला भीरि उदिशासन भूकरर । क्र्याट भूषागान् उवसा नानन সাধকোত্তম: ॥ নিধিভি: সেব্যুতে নিভ্যাণ মৃত্তিনক্তি ৰূপস্থিতঃ। খ্যা-নে ভ্ বিশেষঃ। মাণিক্য পুতিমপু-चा॰ हिमन्दि स्टब्स मज्जुर्जि गं कि র্হস্যাহিত রত্নসম্ভাসলিলৈ রাষি-हाभाना॰ जना। इखारें वृत्रनान ग॰ - স্থুন যুগাভীতী র্দধানা হয়ে: কান্তা• কাঞ্কিত পারিজাত লতিকাণ বন্দে महाजामना ।। यम। भूतकत्। षाम्म वक्षा १ । उथा ह । जान्न क् इतियाणी करभरत अताकः रिशः। जुङ्गानकरैगः भूरिञ्च ख मरु जु किट्निमुबः ॥ 🗱 ॥ मञ्जान्तर । नमः कमलारख वामिरेना ठे घर मि-তি প্রোক্তো দশাক্ষর:। তথা চ निवत्त्व । नीघा यानि विमन्धाः छ। वुका जान संमुक्तता । वास्त्रिनित्र लिया वाक्स मनुः ल्याका मनाक्षतः ॥ भीर्था नकातः । यानि र्मः। तुन्ता ক:। ভানু র্ম:।বসুকরা ল:। বাত্তে-मिरेन वामिरेन । विक्लिया बाहा ।। जम् भृहाभुरगागः । भूईदर পীঠমনুন্ত বিন্যস্য খ্ৰাদি ন্যাসং क्र्याटा भित्रिक म्क अयय नमः। मुर्थ विदादि इन्हरम नमः । इनि শূিবৈ দেবতাবৈ নমঃ। তথা চ **णात्रमाया । असि मंद्या वित्रा**हेह-न्ति। (पवडा ञीः भूकीर्विजा। उउः कद्राक्षनशास्त्रो। ७ (मरेव) नरमा १क्र् ष्टान्छा नगः। ७ भिन्तिना नग छर्छः নীভ্যা• স্বাহা। ওঁবিফুপট্রৈর নমো मध्याञ्जा॰ वयद् । खँवत्रकारेय न्या १नाभिकाच्याः छ। अँकमलक्षाः रिय नमः कनिश्वाच्याः करे। अतः ष्ट्रियानियु । उँ प्रितेर नत्ना कृत्याय नमः इंडाि ॥ उथा ह निवस्ता (परिवा ভূদয মাখ্যাতি পদ্মিন্য শির ঈরি-ত। বিষ্ণীয়ে শিখাপোক্তা বর-मारेग जन्हमः ॥ अञ्चः कनलक्षाः रेष नमाञ्चाः भूगवारिकाः । उठा थ्यान•। यात्रीना मद्रमीक्र्ह श्रिज-मुथी इस्रापूरिक विंकुठी मानः भग्न-युगा ज्य ह दभूषा (जोनामिनी न-মিভা। মুক্তাহার বিরাজনান পৃথু-लाबुक् स्टा**का**विनी भागात्रः क-मना कराक विভবৈ द्रानन्त्यकी

रुदि ।। এव स्तादा माने मः ण॰ भूका भाष्यशाभन कृता भूर्त्वाक भी-ঠশক্তি সহিত পীঠমন্বভাণ পূজাণ विश्य भून वंग्रजा वाह्नामि शक পুস্লাঞ্জলি দান পয্যন্ত বিধাযাবর-ণপ্রা মারভেৎ। অগ্ন্যাদি চতুষে िक्कृ ह 'अँ (२ देव) नत्म। कृत्याय नमः । ७ अधिरेन्। नयः लिज्ञरम सारु।। खें विक्निरेड़ा नमः निथायि वयर्। खँ वब्रमारेय नमः कवजाय छ । 'खँ कनवक्तभारेय नम। श्रुवाय करे। **७ 5: भू**र्वा मिन खार भूर्वन वना-क्रांकि भूकरर । उन्नहि विन्तु। शीन वज्ञानी मह भृष्ठाय । उठा ध्भानि विभक्षं नाष्ट्रः कर्षः मनाभाराष्ट्र। अगु পুরশ্বেণ দশলক্ষলপঃ। তথা চা দশলক্ষণ জপেন্মত্রণ মন্ত্রবিদ্ধি (ङन्प्यः। मणाः मः ज्**ट्यात्रा**खी म-धुदारिकः मद्भाक्षेषः ॥ 🗱 ॥ जाव बन्धी (खाञ् । देखब हैवाह । देव-লোক্য পুজিতে দেবি কমলে বিষ্ণু বল্লভে। যথা ত্ব• সুস্থির। কৃষ্ণে তথা ভব নথি ছিরা ।। ইশরী কমলা লক্ষী শ্চলা ভৃতি ইরিপুরা। পদ্মা গন্মালয়া সম্পৎ সৃ'ষ্ট: জ্রী: পদ্ম-थाविनी ॥ घारत्यज्ञान नामानि नक्षीः मःभूष्ट्रा यः भारेट । क्रिता

वन्त्री उरविष्ठमा भूध मात्रामितिः नर ॥ ইতি তক্সারঃ॥ विक्लूबा-ণোক্ত লক্ষ্মীন্তোত্রণ তত্ত্বৈর ১ অংশে ৯ অধ্যায়ে দুষ্টব্য় ।। 🟶 ।। অথ লক্ষ্মী প্জানিক্পণ। স্কন্দপুরাণে। পৌষে চৈত্রে তথা ভাদে পুলবেষুঃ জ্রিষঃ শিব । সি হে ধনুবি মীনে চ ছিত্তে नश्चर्तक्रम् ॥ भुज्रमः भूकरयहा-জ্বী শুন্লপক্ষে গুরো দিনে। নাপরা-হে ন রাভৌচ নাসিতে ন ত্র্যস্পৃ-नि ॥ दारम्यारेक्षव नन्तायाः विका যাঞ্চ নির•শকে। ত্রযোদশ্যা ত-थाष्ट्रेन्याः कमलाः देनव भूजारस्य ॥ न প্রুয়েৎ শনৌ ভৌমে न বুধে নৈব ভার্গবে। পূজ্যেভুগুরো বারে চাপা-ख द्रवि भागत्याः ॥ **७**६वादा हि পূর্ণাচ যত্নেন যদি লভ্যতে। ওত্র প্র্যা তু কমলা ধন পুঞ্জ বিবর্জিনী ।। न अर्यहार मुख्य मानि रेनव अर्यहाः षिमर्जन । न घणा वाहरयखब देनव विकी भूमाभरय ॥ (भीष ह म-मगी मंद्रा हिन्दांक शक्षभी उथा। নভদ্যে পূর্ণিনা জ্ঞেয়া গুৰুবারে বি-শেষতঃ ॥ আঢক ধান্য সম্পূর্ণ নানাভরণ ভ্ষিত । সুগন্ধি শুল্লপু-(ञ्चन चुक्रभाक भुभूकाय ।। (भी व जु शिक्षेकः मम्याद श्रवमाद्यक्ष हिन्दः

(क। भिष्ठेक भव्रभाष्य नस्ता ज् বিশেষত:।। গুক্বার সমাযুক্তা ন **ভर्मा भूगिमा मुखा। कमला॰ भू**ज-যেত্ত পুনর্জন্ম ন বিদ্যুতে।। একেন कनात्वरेगव कमणाः भृकारयप्यमि । ইহলোকে সূথ পুগপ্য পরত্র কেশ व बुद्धर ॥ भाग्रेश भूष्यक्षिशे शिक्तिगानन गः इन्छ। । शक्तश्र ध्नतीन विद्वन्तानुन्नात्रवः॥ ग-শ্বৰাবেতি মন্ত্ৰেণ গল্পেনাবাছযেদ-সৌ। শ্রিয়ে জাত ইতি দ্বাভ্যাণ প্রে त्रावाङ्खंख**ः ॥ ७७। ४**गान । হিরণ্যবর্ণা হরিণী সূবর্ণ রজতসূত্র । চন্দুা হিরণ্মথী বন্ধী জাতবেদ সমাবহাও।। গৌরবর্ণান্ত দিভুজাও সিতপদ্মাপরিস্থিতা। বিক্ষোর্ব कः इनशक्ष जगरहा छ। পुकानिनी॰ ॥ श्वात्वमान्ताः अमा (नवीः न्जाः কালে বিশেষত:॥ তত: পূজাদিক॰ खराद शि. बाखी नम इंज्राहा II लम्बीः भग्नावया भन्ना कमला 🕮 ধৃতি: ক্ষমা। তুষ্টি: পুষ্টি স্তথা কান্তি (मंथा विष्ठा त्रमा मुजिः।। इति श्रिया তথা বিষ্ণো: প্রিয়া নারায়ণস্য চ। এতাভি: मधरणां वंकीवीकारि नाईरय ॥ नन्त्री नातायगान्त्राक नस्माइन पुण्डाय । विष्कृष्य मः

(राद्रक भूकाराखननस्तः ॥ वासी-চরিত্রে ॥ ন ক্ষপক্ষে রিক্তাধাণ मभगी बामगीयु छ। भुवनामि छङ्-र्थाःक नम्मी भृष्ठां न कात्रायर ॥ इंडि कालहिन्द्रका ॥ 🗱 ॥ भी भा-বিতামাবস্যাযা॰ লক্ষ্মীপ্জাবিধি র্যথা। তুলারাশি গতে ভানৌ অ: भावाम्याः नदाधिनः। माञ्चा (म-বান্ পিতৃন্ ভক্ত্যা সংপ্রাগ্য পুণ-ন্য চা৷ কৃত্বা তু পার্রণশাক্ষা দবি कीत थडारिजि:। छाडा ९भन्नाङ् नगर्य वाष्र्यमगत्त्र नृभः॥ नक्षीः সংপ্র্যতা লোকাউল্লাভি ক্ষাভি-বেষ্ট্যতা । অমাবাস্যা যদা রাজৌ দিবাভাগে চতুর্দলী। পুননীযা ত-मा वन्त्री विष्ठिया সৃথরাত্রিকা॥ व्यगावान्याः यरा (पदाः कार्खिःक মাসি কেশবাৎ। জভয় প্রাগ্য मुखाक कीरतामार्वमानुषु ॥ यन्त्री रिन्ठ। छरासा का मुश्र मुक्षा पूरका नरद । চতুর্গসহসাভে বুকা যগিতি প-স্কজে।। অতোত্র বিধিবৎ কার্য্যা মনু-থ্যৈ: সুখসুগুকা। দিবা তত্ৰ নভো-ক্তব্য মৃতে বালাতুরাজ্জনাৎ ॥ পু-मार मनाय नक्षी नृक्षिष्ठा यथा क्रमः। मीशवृक्षा खथा कार्या ভरूता (मवग्रह्यनि ॥ ठलुञ्चय न्यमात्र्यू

নদী পর্বত সানুষু। বৃক্ষনূলেষু (গা-(क्षेत्र हज्दात्र ग्रह्यू ह।। वरिद्धः शुरे झः শোভিতব্যা: ক্রয় বিক্রয় ভ্রম্য: । मीन्याना निर्वाक्ष भूपाय उ मनवतः। वाक्षान् (जाक्षयिवादि) , বিভন্ধ চ বুভূক্ষিতান্॥ অলস্তেন ভোক্তব্য নৰবস্তোপশোভিনা৷ স্থি रिक्ष मूं रिक्ष विनरिक्षण वान्नरेव ज्ंज-কৈ: সহ ।। অত্ৰ লক্ষীপ্ৰাযা পূ ञ्चरानकात्वा नम एउ गर्द (रवाना॰ वंत्रनामि इतिश्रिय । या गिक रुष्ट भुभवानाः मा म ज्याज्यहर्ना ॥ लिखा नम इंडातन वात्रवयः भूष (यए। मृथवाज्याः भुरतायज् स्वतः র॰ প্রযম্ভিয়ে। ইতি কদুধরধ্তাৎ क्रावित्र मि श्रिष्ठि। धनपाय नमः স্তভ্য নিধি পদ্মাধিপায় চ। ভবন্ত ष्ट भुगानात्म वनवानग्रामि मन्नानः ॥ इंजि भठिद्रा ऋत्वद्राय नम् इंजि जि: शृक्षत्य । उरठा (मवग्राहियु भीभान् मन्। ८ । ७ व मञ्जः । व्यश्न জ্যোতी রবিজ্যোতি कन्द्रक्रांडि खरेषव ह। उन्हमः मईह्याञीनाः দীপো ২বং পুতিগৃহ্যতাং॥ ততো वाञ्चान वक्ष्ण (जाइय दा यगः ভুক্তা সুখা সুপ্তা পুত্যে ভবিষ্যো-क कर्ण अर्ग्या । यथा नूयद्राव

क्यःकारण भुरीरभाष्क्र विভागस्य । वक् इत्वक्ष्ण वाहा अभवनाई-(य ।। भुनीभ वन्तन कार्याः लक्षी মঙ্গল (হতবে। গোরোচনাক্ত-रिका परणपरसम् मर्बाः ॥ लक्षी-পূজামত্রঃ। বিশ্বক্পস্য ভার্য্যাসি পদ্ম পদ্মালযে শুভে। মহালক্ষি नमञ्ज्जुः मूथद्राजिः व्यक्ष्य म ॥ व-বাকালে মহাঘোরে যুম্যা দুফ্ত॰ কৃতণ। সুথরাত্রি পুভাতে ২দ্য তল্মে नक्षी र्वाशाह्य ॥ या ताबिः भर्व ज्ञाना॰ या **চ দে**বেম্ববিজ্ঞা। म-ष्ट्रतत्र श्रियायाहमा ममास्त मूनक्-লা।। মাতা ত্ব॰ সর্বভূতানা॰ দেবা-না॰ সৃষ্টি সম্ভবা। আখ্যাতা ভ্ত-লে দেবি সুখরাত্রি ননো ২স্ত তে।। लेख। नम इंडि बि: পূজरिए। इंडि তিথ্যাদিতত্ত্ব• ॥ # ॥ তস্যা উপা-थ्यान यथा । नाज्ञ ह उँवाह । 🗐 কৃষ্ণস্যাত্মন শৈচৰ নিৰ্গ্ৰণস্য নিরা-क्रा । मादिबी यममशाम नुष्ठ॰ ज्ञियन यमः॥ उन्ख्लारकी डंन॰ ज्ञा अञ्चानाक **अञ्चलः। अ**धुना শ্যেত্ৰিছানি লক্ষ্যপাথ্যান মেব চ ॥ কেনাদৌ পুজিতা সাপি কিন্তুতা किन वा भुद्रा । उम्खरगष्टकी उने व সত্য ° वह (वह विहासद्र ॥ श्रीनाद्रायण

উतुरं । मृष्टे द्वारो भूदा तुकान् क्षका भन्नभाजानः। (पवी वानाःम সম্ভূতা বভ্ৰ রাসমগুলে ॥ অতীব जूनरती द्रामा नार्गाधभित्रमखना। यथा धारणवर्षीया नयः मृश्चित (योवना ॥ (थड्ड ज्लाकवर्णा जा मूथ-ष्ट्रणा मतास्त्रा । न्यत्र शार्द्रग काहीन्त्रभू जाशूहा दिजानना ॥ म-রঅধ্যাহ্রপদ্মানা শোভা মোচন লোচনা। সাচ দেবী ঘিধা ভূতা जहरेमरवयात्रह्या॥ ममा क्रामन व র্ণেন তেজসা ব্যসা ত্বিবা। যশসা ৰাসসা স্ক্ত্যা ভ্ৰণেৰ গুণেৰ চ ॥ মিতেন বীক্ষিতেনৈব বচসা গমনে-न ह । नथुरत्र १ खरत्री व नरयनानुनरयः न ह ॥ उदा गाःना महालक्षी मंक्रिः गाःमा ह ब्राधिक।। ब्राधारनी व्यवा-মাস দ্বিভূত্তঞ্পরাৎপর্ণ। মহা লক্ষ্মীন্চ তৎপন্চাচকমে কমনীযকণ । কৃষ্ণ শুদ্ধৌরবেণৈব দ্বিধা ৰূপো বভূ व र ॥ रिक्कि ११ भ कि कुरका वामा শশ্চ চত্ত্ৰ: ৷ চত্তু জাব দিভুজো भश्वाक्षी परि भूता। नक्षाउ म् भारत दियः सिक मृष्टेरा ययानिभाग (रवीहाया ह भर्ठी भरालकी क ना মৃতা।। বিভূজোরাধিকাকান্তো লক্ষী-काउ कर्ड्डाः। मुक्त मञ्ज्यक्रा ह

গোপৈ গোপীভি রাবৃত্ত ৷৷ চতুরু-कक रेवक्थे॰ भुगरयो भन्नय। जङ् । সর্বাংশেন সমৌ দ্বৌ তৌ কৃষ্ণ নার। या भारती ॥ महालच्छी क रयारगन নানাৰূপা বভ্ব সা। বৈষ্ঠেচ মহা-লক্ষী: পরিপূর্ণতমা রমা।। শৃদ্ধ স-च बक्त ना ह मई(मो जाग्र म ग्रुठा। (भूया ना ह भूषाना ह नहीं मू द्रम-ণীযু চ।। স্বৰ্গেচ ম্বৰ্গলক্ষীশ্চ শক্ত স-স্পৎ স্বৰূপিণী। পাতালেযুচ মত্যে यु রাজলক্ষীण রাজসু॥ গৃহলক্ষী प्रश्वित भृहिभी **ठ कलाः नया ।** मण्ण< यक्षा गृहिगाः मर्बन्य*व-*भक्षा ॥ गवा॰ भुम्: मा मूब्रजी प-किना यञ्जकामिनी । क्षीताप्तिकु কন্যা সাঞ্জিকপা পদ্মিনীযু চা৷ শো-ভাষকপা চন্দ্রেচ স্র্য্যমণ্ডল মণ্ডি-তা। বিভূষণেষু রত্নেষু ফলেষু চ জ-लियु ह।। न्रियु न्रभा द्वीयु पिराजीयु গৃহেষু চ। সর্রশস্যেরু বন্ধেষ্ স্থা-নেষু স স্থতেষু চ।। পুতিমাসু চ দে-वानाः भञ्चलम् वर्षेषु ह। मानित्कुः ষু চ মুক্তাসু মালে। যু চ মনোহর। ॥ मनीत्मुषु ह शिद्रयु कीद्रयु हम्सन-यू छ। वृक्षणाथाम् त्रम्याम् नवस्यस् यू वस्तु ॥ विकाले भूकिन नामी रिवी नाजायलन ह। विजीय वुक्रना

ভক্ত্যা ভূতীযে শঙ্করেণ চা। বিষ্ণুনা প্রিতা সা চ ক্ষীরোদে ভারতে মুনে । श्रारञ्जूरवन मन्ना मानत्वरेन्तुक नर्ब छः ॥ अवीत्मुण्ठ गूर्वीत्मुण्ठ म-ডিক গৃহিভি ভবে। গন্ধৰ।দ্যৈক भागारित्रः भाजात्वयु र भूषिण ॥ শুক্লাষ্টন্যাণ ভাদুভদে ক্তা প্লা চ বুন্ধণা। ভক্তা চ পক্ষপর্যন্ত তিযু लाक्ष्य नाइर ॥ हिट्य भीर ह ভাদে চ भूरा। सङ्चवामस्त । वि শুনা নিৰ্মিতা পূজা ভিষু লোকেষু ভক্তিত: ৷৷ বর্ষান্তে পৌষসংক্রান্ত্যাণ स्वित्र मावाञ्च शुक्रित । मन् छाः পূজ্যামাস সা ভূতা ভ্ৰনত্ৰে ॥ द्रारक्ष्म् भृक्षि ना मङ्गलिनव नक्षा। (करास्त्रों नव नीत्वन नत्वन **म्वालन ह ॥ धुःवालाखानशाहन** শক্রেণ বলিনা তথা। কশ্যপেন চ मःकान कर्षामन विवस्ता। लिगवुः (जन स्टब्स्न अखदहरेशव वासूना । य-रमन विज्ञाना देवन नक्लिनन भूजिए। II এবং সর্বত্র সর্বৈশ্চ বন্দিতা প্রজি छ। जना। जरेबंश्वर्यतिसम्बी मा ज-ब्रम्यथ्यक्षियो ॥ # ॥ अभिह। नाद्गर छेवाह। नादारणिनुगा ना ह यदा विष्कुश्वाभिमी । विष्कुशिक्षा ज्रादी गरावयोः गराउनी ॥ कथः

বভূব সা দেবী পৃথিব্যাণ সিদ্ধুক্রম্য का। कि॰ उन्न्यानक खबन- त्रिबं॰ পূজা বিধি ক্রমণ।। পুরা কেন স্ততা-भी ना उद्याः व्याथ्यां जुनर्शन। 🗐 नातायण উवाठ । भूता मुद्रानमः माशार जुडे बीम्ह भूतन्त्रः। व-ভূব দেব সংঘশ্চ মর্ত্যলোকশ্চ নারদ ।। লক্ষ্মীঃ স্বৰ্গাদিক ত্যক্ত্ৰ। কণ্ঠা প-রম দুংখিত্য গরা লীনা চ বৈঙ্গঠে गर। लञ्जामह नाज्ञ ।। उत्तारमाकाः দ্বযু দেবা দৃঃখিতা বুন্ধণঃ সভা । বুঝাণঞ্ পুরক্ত্য ব্যু বৈজ্ঠ মেব চ ॥ देवन्रले भवगामना एका नावाय-ल পরে। অভীব দৈন্যযুক্তা क मृद्ध-কঠোষ্ঠ তালুকা:।। তদা দক্ষীশচ कलगा भुद्रा नाद्रायगाज्यया। दज्य সিদ্ধু হন্যা সা শক্ত সম্পৎ স্বৰূপিণী ॥ जथा मथिया की तार करा रेन-ত্যগণৈ: সহ ৷ সংপ্রাপুশ্চ বরং बच्चा मम्भू खाक उब दि।। जुतानि-**ভে**য়া বর• দক্তা বর্মা**লাঞ্** বিফাৰে। मरती शुगमवम्बा जुड़ी कीरवाम-नावित्त ॥ (१वा न्हान्य) नृद्रशुरुः রাজ্য পুশ্চ ভছরাৎ ৷ ভা স্পূজ্য চ সম্ভূব সর্বত্র চ নিরাপ-দ:।। ইতি বুদাবৈবৰ্ভ পুকৃতিখণ্ডে ०२ १ ०० व्यव्यात्ते ॥ ♦ ॥ वद्या

श्राम्य गृहानि यथा। य॰ य॰ इरही। श्व किं(बा माठा जाउक वास्तवः। षाडिथि: পিতৃলোকাশ্চ न यानि **७**म् बन्दित ॥ निथ्यावाही ह यः শ্যনান্তীতি বাচক: সদা। সত্ত্ হীৰক দুঃশীলো ৰগেছ তস্য যা-बाइरा मडाहोनः ज्ञानाहाती बि थ्यात्राकालुमायकः। विश्वानद्यः क् তল্লে গে ৰ হাৰি তস্য মন্দির যা চিম্বাগুয়ে ভাগুয়: শত্রপুষ্টো ২ জি-পাতকী। ঝণ্লুন্তে। হতিক্পণো न (गइ॰ यात्र भाभिनाः ॥ भीकाः श्रीनण्ड (मालार्खा मन्त्रवी: खीकि-छः जमा । मृष्णनीमिजिमूत्वी धो **छ**ङ्गङ् रेनव यामाङ् ॥ शू कनाम-क्षावीद्रात्र (या ভূড্কে কামত: সদ। । भू मुनवरकाकी जन्माकी जाहरू निव यानाइ ।। या मुद्राक् कन्हाविश्वः किलः मथन्यान्य । जीभुवाना-शृष्ट् यया न यामि उत्राधि मित्र ॥ যত্র নান্ত হরে: পূজা তদীয় গুণকী-र्खन । (नाट मूकण भूम भाषा न यानि उम्र भन्तितः । कन्यागरवन-বিক্রেতা নর্ঘাতী চ হি সকঃ। নর কাগার সদৃশ ন যানি তস্ত ন-निवि ॥ सम्खाः भहम् छाः वा वुकः वृक्षिः मूहमा ह। ए। इस्त्रास्थिः

नक न याभि जम् भन्दित ॥ यह क्यं पिक्रगाशीन मृहवीः अक्छ শर्छः। म भाभी भूगुश्चीनक न यात्रि **७मा मन्दिब ॥ माउत शिउद** ভার্য্যা গুরুপত্নী গুরুঞ্চ ত । আনা थाः ভिश्निः कन्ता मनन्त्राम्यवाञ्च-वान्।। कार्भगुरिष्या न भूकां जि नक्यः कक्ट नता। उपग्रामयः কাকারায় বানি তাল্যুনীখরাঃ ৷৷ মূ-बः भूतीय मूटम्बाय उट भणा उ यन्त्रवीः। यः (माउ ज़्रिकाराह्म न यामि उत्रा मनित्रः ॥ अर्थोज-পাদশায়ী বো না: শেতে হতিনি-पुंजः । त्रक्तामाधी पिवामाधी न যানি তস্য নন্দির ।। মূজ্রি তৈল भूरद्रा पञ्चा रया १न असम मूलल्या । দদাতি পশ্চাদ্নত্তেবা ন থানি ভস্য मिनितः ॥ मञ्जा रेजनः मृद्धिं गाख विश्व वः अमूटम्हाट । जुनाम-দাহুৱেৎ পুস্তু॰ ন যামি ভগ্য মন্দি-त• ।। ज्न• क्विनिख नथरेत नंशरेत विनिर्यम्भी । गाज भार भन यम्। न याचि उम्। मनिर्तः ॥ मण्यनः वननः यन्। नभणः कक्त भएकः। বিকৃতৌ গুমহানৌ চন বানি ভস্য मिन्द्र ॥ मख विक्राभभीवी ह थ्राम्याकी **विकिथ्यकः।** मूलकृष्य-

वनरेक्द न याभि छम्। मनिरद्रे ॥ विवारः धर्मा कार्याः वा त्या निरुष्टि ह (काल कः । दिवा रेमथूनकात्री (या न যামি তস্য মন্দির•॥ ইত্যাদি <u>ব</u>ন্ধ বৈবর্ত্তে গণেশখণ্ডে লক্ষীচরি ভন্নাম २० व्यक्तायः ॥ 🗱 ॥ व्यक्ति । व्यक्ति निन रष्ठमत्नाभधात्रिगः वञ्चानिनः নিষ্ঠুরবাক্যভাষিণ । সুর্য্যাদ্যে চা স্তম্যে চ শায়িন বিমুঞ্তি শ্রিরপি চক্ৰপাণিনং॥ নিভ্যং ছেদ স্ত্ণানাং ध्विशिष्यन शामरया ब्रह्मभाष्टि-र्मखानाभन्न(भोठ॰ दमनम्बिन्छ। क ক্ষতা মূৰ্দ্ধ জানা । দ্বে সন্ধ্যে চাপি নিদু বিবসনশ্যন গুলেহাসাতি (तकः सारक भीरते ह दान्रः निधन मृभनराष (कमतम्याभि वास्तीः ॥ **लित्रः** गूरक्षे उ॰ চরণৌ সুমার্জিতৌ वदाङ्गारमयन मङ्गरভाजनः। जनग्र िष्य भागयित्र यह ॥ यम् कम् ज् পুরুষ্য পাণ্ডরষ্য বিশেষতঃ। শি द्रना धार्ग्यभागना व्यवस्थीः भुष्टिश्-न्या मीलम्य शिक्तमाहाया हा-या भग्रामनम् ह। त्र क्रकम् डू यः ভীর্থ মলক্ষী স্তত্র তিগুতি।। ইত্যদি বিশেষে ভস্যাঃ ছিতি ফল যথা।

(रवा উচ्:। कथ्यत्र कगन्नाश (क्यू স্থানেম্বাস্থিতা। পুৰুষাণা ফুল কি॰ বা পুযছত্যথ নশ্যতি ॥ দ-ভাত্রেয উবাচ। নৃণা॰ পাদছিত। लक्षी निवरः मः भ्रवहित। मिक्नुनी अंश्रिका वज्रः बङ्गः नानाविश्वः वसु॥ কলত্রা ওহাস-ছা ক্রোডছাপত্য-দাযিনী। মনোরথান্ প্রয়তি পুরু-यागा रु दि इ उ। । लक्षी लक्षीव-**छा॰ (मुंध• क**र्श्रहा कर्श्रज्वन•। अजीहे वक्षुरादेवण उथारन्नवः भुवागिज्ञिः । मृष्टामः वाकावावना माञ्जामवि-**७**था इथा। मूथम•इ। कविद्वक यह-ত্যুদধিসম্ভবা ॥ শিরোগতা স•ভ্য-ক্ষতি ভঙো ধন্য যাতি সংশ্ৰুষ । সেয় পারোগতঃ দৈত্যান্ পরিত্য-क्र जिल्ला का जान का পুরাণে দ্ভাত্রেষ্চরিতাখ্যায়:॥#:॥ অথ লক্ষ্টিরিবং। প্রস্ত উবাচ। भिक्त्रभाषि मुचामीनाः नक्षीः भृहि কেশব: !কেনোপাযেন দেবি ত্বু নৃণাণ ভবসি निकला ॥ श्रीकवार। भुद्राः পারাবতা যত্র গৃহিণী যত্র চোজ্জ্বলা । অকলহা বসতি বঁত তত্তকৃষ্ণ বসা-माइः ॥ थानाः मुवर्गमम्मः उख्ना व्रक्षात्राभाः। व्यवस्थिताञ्चः यव তত্র কৃষ্ণ বসান্যহণ॥ यः সম্বিভাগী

श्रियवाक। जावी वृष्काशासवी श्रिय--म्रांतुका । अनुभूवाभी न ह नीर्यम्बी खिमिन् मनाश् भूक्रव वमामि ॥ या थर्माणीला विकारिनुग्रम विष्ठा-বিনীতো ন পরোপতাপী। অগর্বি (छ। यण बनानुद्राणी जिमन् मराइ॰ পুৰুষে বসামি'॥ চির• স্নাতি জত• ভুড্কে পুল্ল পুলা ন জিঘুতি। যো न् श्रीणा ८ जियः नद्याः नियजः म ह स्य ेशियः॥ ত্যাগः সত্যঞ্জ শৌচঞ্চ वय এতে মহাত্পা:। যঃ প্রাপ্নোতি গু-শানেতান্ শুদ্ধাবান্স চনে প্রিয়ং।। नर्व नक्ष माथ्य जू ज्राग এव वि-শিষ্যতে। কালে দেশে চ পাত্রে চ স চ ত্যাগঃ পুশস্যতে॥ নিত্যমাম-লকে লক্ষ্মী নিভ্যুণ বসভি গোমযে। নিত্যু শল্পেচ পান্ম চ নিত্যু 🗐: শুকুবাসসি ৷৷ বসামি পদ্মেৎপল শত্র মধ্যে বসামি চন্দে চ মছেশ্বরে ह। नात्रायण हिव वमुक्तत्रायाः व-সামি নিত্যোৎসবমন্দিরেষুণা বস্-ন্ধরায়া নিত্যত্র বসৌধরায়া নিতি বা পাঠ:।। যথোপদিষ্টা গুৰুভক্তি যুক্তা পত্যুৰ্চা নাক্ষতে চ নিত্যু । নিত্যঞ্চ ভুছ্কে পতিভুকশে-ব তস্যাঃ শরীরে নিযভ বসামি ।। जूडा व बोजा शियवाहिनी व

সৌভাগ্যুকা চ সুশোভনা চা नावगुरुका शियमर्गना या शिख-ব্ৰা যাচ বসামি ভাসু॥ শ্যামা म्गाकी क्ष्मभश्रजागा मुखं: मूरक-भी मूगिंड: मुभीवा। भंजीवनाजिः সমদন্তপঙ্ক্তি उস্যা: শরীরে নি-যত বসানি।। যাপাপরকা পিশুন-স্বভাবা স্বাধীনকান্ত পরিভূত্যে চ । अमर्यकामा क्रिविक्नीना जानः क्ना॰ (প্তমুখी॰ ত্যজামি॥ পুত্র॰ প্যু/বিত পৃতি শ্যন বহুভি: नर । **ज्यामन स्नातीक** मृत्रजः পরিবর্জযেৎ।। চিতাঙ্গারক মন্থীনি विङ् • ভम विबक्ष गा॰। न भारमन ^{म्ण्}ण्**ण**् शामः कार्गामाञ्च जूमः खकः ॥ नथः (कामामकरेक्षव नियुनः পর সন্ধ্যোঃ। বর্জযেয়গুশাযিত্ব সে-কাকী মিষ্টভোজন ।। শিবঃ সপ্সু॰ চরণৌ সুপ্রিতৌ নিজাঙ্গনাসেবন मन्नाडाबनः। व्यनग्रमायिषु मनर्ब মৈথুন চিরপুণষ্ঠা পূ্র মানযন্তি यहे।। मधार्जनीतः जावाजः निर्श्वभी लब्द हरुया । ब्राब्वो दिन् भनाभक्ष किशियः वर्जायम् वि ॥ स्रगाजामनः (या वीष्ट्रः व्यभूका मूर्क्तभाष्ट्याः । উहिन्द्रेन्त्रार्मन॰ मूर्बि त्रानाज्यक वर्जायः ॥ भयनकाञ्चकात्त्र ह दान्ति-

वारमा दिनं उथा। मानाञ्चत्र ऋरवे শক্ষ বৰ্জাহেৎ শৃষ্কভোষন ।। পারে-্ণোছ ঠিওঁ বক্ষ: স্বয়ণ মাল্যাপকর্ষণ ा ञानमा भवमाम्यः न ऋगी ह्या है। मर्पन ॥ मुक्वादि ह यखिन मिला পিষ্টঞ্ দশকে। স্থা বামেন স্থান शानिना रेनेवं में ^{क्रिक}्रिक्षेट्या छात्रकाः भुझदरहो ह नं निष्मारम्भूहिः भूमान्। নেক্ষেদ্রত পরস্কীণা নাস্ত বাস্ত क्तिवाकत्र ।। व्हर्यप्रामान्य थ्नाकाङ्का॰ . পরস্ত্রীণা• তথৈব চ।পরেষা• প্রি-কূলঞ্ উদিতাকে পুৰোধন ॥ নথ कणेक द्रोकिन्छ मृडिकाक्षाद्र वादि-जि:। वृथा विष्णश्वन जूमो न अर्यं। भ्रमकाङ्करा॥ स्रगः (नारुः स्रगः नानाऽः ্স্বাণ ঘৃষ্টঞ্চ চন্দ্রণ। নাপিতস্যগৃহে एकोत्र-भकामि शहर भिया। स्रा 'দোহ মিত্যত্রপুথি ঃঞ্চেতি বাপাঠঃ। निनमा गाक वित्यु भाषाया नं डन ख्या। भुजिक्षक्षद्ध श्रीगा जुक् ह म्डभावन ।। अगृ**उ**ः माःन **म्**रभक नग्रिक्य खिरस्या। जक्रगाम्स्निनाः চ্চিব শক্রাদপি হরেৎ শি্বণ।। মক্তি त्रयुक्तः भवनात्रस्ति व्याठात्रहीनः श्रद्धान्यक्ष । अक्षीर्वहाद्यी श्रद्धिवादः শীল স্ত নিগুর দন্তম্ব ত্যজামি।। भाषनका<u>र्म</u> भारिन द्राविदारमा हित्न

७था। ताखदीय मधः वर्षाट मुद्धः शास्त्र (ভाजनः ॥ अभूि हार्र्यक्री-थ पूर्णका ममुथावहाः। अ जूरोगा म-भूज्ञाक न अर्ग्रामाजान सन्।। कर्ल চ বদনে ঘাণে তথা করতলে হপিচ। भारि भ्रष्ठ उथा नित्व न अर्यप्रामनू-লেপন।। চক্ষু ল'্ম হত। শেুযো মু थलाः धनक्यः। मितिपुः कर्नलाः ह भार भ्रष्ठ उथागूषः ॥ गञ्जः भूभः ख्या ভाष॰ রহ্রঞ্চব নছোদ্ধি[,] । गृशी उ॰ भूषम॰ वज्र॰ वर्जस्यम कनाइन ।। यजतकः ध्तरक उथा गयाजनी-রজ:। জ্রীণা॰ পাদর্জো রাজন্ শ-कामिश रुद्धर शियः॥ अतिवान म-स्वान भ्याति । भश्रामारे विश्वताकाः ভাষিণ । সূর্য্যাদ্যে চান্তমিতে তু শায়িন বিমুক্ষতি শ্রী রপি চক্রপা-ণিন ৷৷ মহাশঠ মিত্যত্র বস্থাশিন নিতি বা পাঠঃ॥নিত্য ছেদ স্থৃণানা• ক্ষিতি নথ লিখন পাদযোরল্লীেচং **बकारक रेडल**हीन रमनम्बिनडा **ৎবন্ধন• মূর্জ্জানা•। দ্বে সদ্ধে**। চাপি নিদা বিবসনশ্যন গ্রাস হাসাতি-(तक: साव्य भीर्य प्रवाप: इत्रिंड ধ্নপতেঃ কেশবস্যাপি লক্ষীণা৷ অ-বন্ধন মিত্যত্ৰ ৰক্ষতা ইতি বা পাঠঃ ॥ এব॰ যঃ হ্বকৃতে নিত্যু মধ্যেক্তানি

ह किन्छ । उद्देश ज्यामि उम्राहर निक्वा यथा।। श्री ज्ञावि विक्रित स्थाय यः .३८ । उप्पृष्ट विभूवः त्रमुश विव्या याः .३८ । उप्पृष्ट विभूवः त्रमुश विव्या याः विज्ञः ज्या विव्या विद्या मूट्य विव्या मूट्य विश्वा विश्व विश्वा विश्व विश्वा विश्वा विश्वा विश्वा विश्वा विश्व व

खी पूर्ग। यथा। खिंडिः লক্ষীঃ বিদ্ধি রিতি খ্যাতা শি্যা সংশ্যণা-ह वा। जन्नी वी जनना वाशि क भाष्मा कान्ति क्राटा। इंडिएकी-- পুরাণে৪৫ অধ্যায়:॥ সম্পত্তি:॥ (माञा।। अ(क्त) यय ।। वृक्तिनातो -यर ।। किनी वृक्षः। इंडि भिनी । भीजा ।। वीत्रयाविद् । इंजि नदत्रवादनी।। इनभाषानी।। इ-तिष् ॥ भनी ॥ पुरा ॥ मूका। इंडि द्रावनियंग्डः॥ साक्ष्माश्वः। ইতি চণ্ডীটীকাষাণ নাগভউ:॥ **लक्षीकाष्ठः शुः नादायगः। यथा।** ननः कमलानजाय स्त्राय भत्रमा-ত্মনে। জগতঃ পাল্যিতে চ ল্ক্ষী काष्ठ नभास (५। इंडि बन्नार्डनी बुडकथा।।

लक्षीग्र॰ क्षे. अत्कार्भनः। इंडि
बिकाश्रामदः॥ लक्षीतम्म ह॥
लक्षीजनार्धनः भू॰ मानग्रामित(मदः। उम्र नक्षणः यथा। এकघात्र हज्म्हक नवीननीत्राम्भाः
। लक्षीजनार्धनः (द्ध्यः त्रह्छः
वनमानगा॥ इंडि वृक्षतेवत्रर्द्धं भूक्डिश्शुः॥

লক্ষীতালঃ পু॰ শ্রীতালবৃক্ষঃ।
ইতি রাজনির্ঘটঃ।। তৌর্য্যক্রিকস্য
পরিছেদবিশেষঃ। তস্য জত লম্বপু বিরাম ক্রমো যথা। দৌ লো পু
দৌ বিরামান্তৌ দলৌ পুদ বিরামকঃ। বিরামান্তৌ ফতৌ লম্ফ ফ্রেটী
লম্বিরামকঃ।। ইতি সঙ্গীতরত্না;
করে লক্ষীতালঃ।।

लक्षीनावायगः भू णालगुमिति
(भवः। उम्र लक्षणः यथा। এक
हात हज्क्ष्णः वनमालाविज्यिउः
। नवीननीवपाकावः लक्षीनावायगाजिशः।। ইতি वृक्षत्ववर्जभूवागः।।
लक्षीन्मिः इः भू णालगुमिति(भवः। उम्र लक्षणः यथा। हिहकः
विज्ञाम् वनमालाममिति ।
लक्षीन्मिः इः विरक्षयः गृहिगाकः
मृथभूषः।। ইতিবৃক্ষবৈবর্জপুরাণ।।
लक्षीभिजः भू वामूष्टवः।। नव-

পতি:। ইতি মেদিনী॥ লবস্বৃক্ষঃ।। পৃগঃ। ইতি বিখঃ।।

লক্ষীপুত্র: প॰ কামদেব: ॥ ঘো-টক: । ইতি মেদি ী ॥ স্বশ: ॥ লব: । ইতি শদ্রত্বাবলী ॥

লক্ষীগুল্প: পু• পদ্মরাগমণি:। ইতি হেমচনদু:।।

लश्चीकनः भू विनृत्कः। इंटि त्राक्षनिर्घण्टः॥

শক্ষীবান্পু পনস্ক:। ইতি
শক্ষালা। খেতরোহিতবৃক্:।
ইতি রাজনির্ঘটাঃ।

লক্ষীবান্ ত্রি প্রীযুক্ত:। ধনবান্। তৎপর্য্যায়:। লক্ষ্ম: ২ প্রীল: ৩ শ্রীমান্ ৪। ইত্যমর:।।

लक्षी (वष्टे: १ व्या विष्टे: १ देखि त्राजनिर्यणे: ॥

লক্ষ্মীশঃ পু॰ বিষ্ণু:। ইতি মুখা বোধব্যাকরণ।।

विक्रीमनाश्चरा खी मीजा। इंडि भद्रद्वावनी।।

वन्नी महहः भुः हन्द्रः। ইতি भदः त्रादवी॥

नक्तातामः भ्• वनः । ইতি नद्याना॥

बाक्तरः क्षी भवात्वश्रद्धानः। छ८-भर्यप्रायः। वाक्षः २ भवत्रर्यः २। इछरः মর: ।। পুতিকান: ৪ বেখ্য ৫ । ইতি জটাধর: ।। বেখ ৬ । ইতি শব্দরত্বাবলী।।

लक्ष्यः जि लक्ष्यात्वायाः। ই জি
जाहि अप्र र्श्याः। मणीयः। ই জি
लक्ष्याः व्यक्ष्याः

লা ল গুড়ে। ইতি কবিকল্পদম:॥ ল লাতি। গুছো গুছণ । ইতি দুর্গাদাস:॥

वा छी गुरुगः।। हानः। इंडि

লাথ অ শোষালমর্থযো:। ইতি কবিকল্লড্ম:।। অ অললাথ্ । ইতি দুর্গাদাস:॥

लाघ य ड माको। ই छ कि वि-कन्नफ्रः॥ य जननाघट । ड नाघरड। मकिः मानर्थाः। ই छि पूर्गामामः॥

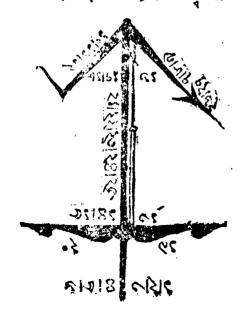
লাঘব লী আরোগ্য । ইতি রাজ-নির্ঘণী: ।। লঘুব । লঘো ভাব ইত্যর্থে ফ পুত্যযেন নিয়ম ।।

লাক্ষণ নী স্বনামখ্যাতভ্নিকর্যবিদ্ধা । তৎপ্য্যায়: । হল । ২
গোদারণ ৩ সীর:৪।ইত্যমর:॥
হল: ৫হাল ৬ হাল: ৭ শীর:৮
। ইতি ভরত: ॥ লিফ: । ইতি
বিকাণ্ডশেষ: ॥ পুম্বশেষ: ॥

खानवृक्षत्रं ॥ शृहराक । ইতি ॥ (सरिनी ॥

বাহিনগ্ৰহ: পু॰ কৃষক:। লাহ্ণলা গৃহাতি য ইভ্যথে অল্ পুভ্যয়েন নিয়ম:।।

वाक्ष्विष्ठक की क्विकर्गिष्ट्वा कात्र प्रकारित । यथा । व्यथ बाक्ष्व प्रकार या जा प्रवा । वाक्ष्य । मिलका यूग या जु प्रा नमिन्छ । मिलका प्र या जु प्रा नमिन्छ । मिलका प्र या जु प्रा निक्षा हिन्य । का छुला पिछ ।। मिलका हिन्य । या जुर्गा क जिक्षेश्य माया अका । गुरक चिक ।। मिलक ह न्या । विका व्या । गुरक चिक ।। मिलक ह न्या । विका व्या या । विका विका । व्या क्वा या जु मा । विका विका ।



लाक्ष्वरथः भुः लाक्ष्वप्रशुक्षः काष्ठः। नाक्ष्णव्रक्षेण ইতি ভाषा । তৎপর্য্যাयः। ইশা ২। ইত্যমরঃ ॥ क्षेषा ०। ইতি শব্দরত্বাবলী॥ गाक्ष्णभक्षिः জी लाक्ष्णव्यथा। मित्राल ইতি ভাগা। তৎপর্য্যাयः । শীতা ২। ইত্যমরঃ॥ সীতা ०। ইতি শব্দরত্বাবলী॥

লাঙ্গলিকঃ পূ• স্থানরবিশভেদঃ। ইতিহেমচন্দুঃ।।

लाइनिका की लाइनीवृक्तः। इंडिमस्त्रज्ञावली॥

नाक्ष्णिकी छो वृक्षविश्वावः। नाक्षणिया हेि विष्याक्षणिया हेि
ह जावा। उप्पर्यग्रयः। अग्निष्णथा २। हेज्यप्रयः।। अग्निष्णा २। हेिज्
वाक्षणिका ८ वाक्षणी ८। हिन्द्रमाना।।
वाक्षणिका ५०। हेिज अन्याना।।
वाक्षण १०। विष्ठ पृष्ठेतुननाणिष्यः।
हेिज आजवल्लाः।। आजनिर्वाणीक्षण १० वर्षणायाः किल्कानी भाषा
पृष्ठेवगाः॥

আন্ত্রা পু• বলরাম:। ইতি শহ-রহাবলী।। নারিকেল:। ইত্যারঃ ॥ तर्भः। ইতি শক্ हिन्द्रका ॥

वाञ्रली खी वाञ्रलाकात्र भुझा

खलक भाक विष्णयः । काँ हिछा ইতি

खाया । खण्मर्य प्रायः । भाति । २

खाय भिश्रली ० मक्स्लाम्नी ८ ।

देखान न महामान । किल्लाम्नी । िम्लामान । भागामनी ४ मण्यामान । भागामनी ४ मण्यामान । भागामनी ४ मण्यामान । । देखि कहा पद्मः ॥ किल्लामी । । । देखि कहा पद्मः ॥ किल्लामी । । । । देखि का निर्यक्तः ॥ किल्लामी । । । । । देखि ता किल्लामी । ।

वाक्वः द्वी शृहः। ইত্যমরটীকাः সাধসুন্দরী॥

वाकृष्विको जो भृतिभगी । है हि ताजि विश्व ।। वाकृषी भु॰ वानतः। इंडि नेक हिन्दुका।। श्रवं चनारनी वश्रः। है कि त्राजि विर्विष्टे ।।

नाष्ट्र विश्वति। ইতি कति केस्न स्वनः ॥ ই नाष्ट्राउ । नाष्ट्रि । ইতি দুর্গাদাসः ॥

नाक े जङ्ग रम ।। ज्यां । इंडि क नाम हे े विकल्लकमः ॥ यो यि जे न स्वारो । नाजि । हे नाक्ष्य हुः जङ्ग न वर्ष किन्द्र भर्य हुः र्या जर्जन । हे जि पूर्ण मामः ॥ नाज क्री जैसीय । हे जि समिसी

लाजः क्ली উरोतः। ইতি মেদিনী । लाजः পু॰ আদু उञ्जूनः। ই

नाजा खो जक्ष उः। ই कि सि सि विशेष नाजाः पूर्व पृष्टे था नाजाः विशेष हे कि व काष्ट्र । विशेष विष

खार्यन व्यामामभावनवृथ्व ॥ उन्। ्यम् खनाः। कामकश्रेमानुगन्दः। ৪৮টার সম্মানিদৌর্বল্য **স**ক্ষিরোগ াশিৰ্প ইি**তি রাজবল্ল ভঃ॥#॥** ্লিচা আত চবুহিখো ভৃষ্টা স্তে 💣 🖘। ইভি সণজ্ঞিতা: । যবাদ-य क त्य ज़्हा **रख, शानाः পরিকীর্ত্তি** जाः १ ए ज्ञाम्ह यवशानाम्ह जर्मः মাঃ জিল্লাপনাঃ। গোপুন যাব-अवस्थान किथिपूकाण मीननाः র জুজাজীকারশননো **ধাতুশাম**র क्का 🚧 । अन्स्।श्चि विषयोशीना॰ दान, द्वांच पाविजा ॥ (दयक मून असर १४०० व च्या**डम् ७: मूमः कृठ: ॥** क्षेत्र वा वान विशासा जमा ह्र्न ल्या १८८८ मा**डिन थर्ज्त मृहि-**वाक्ष व वच्चा । वाकर्ण मम्बा-জ্ঞ জন্ত মুদাহ্বত ।। লাজ-ি ুল্টেনি জলশক্রা মধ্যাজ্য िहिक उल्ला मूक मिछार्थः ॥ ाउन एक मार्क विश्व मार्क विश्व विश्व । नाका-🎶 শান্তবং কৌদু শিতাযুক্ত। বি-™ र 🎉 हर्ग्जीमात्र ज्छ् माश् वित्रभूते वृज्ञानशः॥ इज्ञकणः। ं के इस्ति स्मिवासी भुरमयः नाज 🤲 🥯 । जुताश्रीहः क्वत्रीम ্ৰি ক্ৰু শক্ৰণ।।ইতি ভাৰ

भुकाणः॥ लाक्ष्मः क्ली नाम॥ हिङ्काः है डि स्मिनी॥

লাঞ্ন: পৃ॰ রাগীধান্য । ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। ক্বচিৎপুস্তকে লাঞ্চ নীতি চ পাঠঃ।।

লাট: পু॰ দেশান্তর॰॥ বজ্ঞ।। ইতি মেদিনী ॥ জীর্ণভূষণাদি। ইতি শব্দরত্বাবলী॥

नाउ ८ क (कार्म। इंडि कविकन्न-क्रमः॥ नाउयंडि व्यननाउ८। इंडि मूर्गामामः॥

वानः भू कथनः ॥ वनशाखाः र्जाद घकः भुजादात्वि निष्ठमः ॥ वानाः वि कथनीयः। वनशाखाः कर्मात्वान भुजादात्वि निष्ठमः। हेलि मूक्षदाध्वाकद्राः॥

वाजः भुः म्लक्ष्माप्तिकः वानिरक्ष्याभार्षिकः वनः । उर्धापार्थाः ।
रुक्षः २ । ইত্যমর ভরতो ॥ लज्यः
उ वृष्धः १ । ইতি শব্द জাবলী ॥
भार्षिः। ইতি লভ্ধাবুর্থদর্শনাर ॥
लाज्यः क्षी लाजः। ইতি শব্द জাवली ॥

वामब्ह्यक॰ क्ली वीत्रनम्बः। इंडा-मतः॥ व्यमा भर्याय बनावृणीत नाम पृष्ठावारी॥ डेनीतवः भीजः हित ज्पितिलयः । उर्भर्गयः ।

जुनावः २ अभ्गानः ० नवः ४ नतु

द देश्विकामियः ४ क्षीयुः १ पीर्य

भूगः ४ क्षामियः ४। अम्र ख्याः

। हिमदः । जिङ्काः । मध्द्रदः ।

वाउ भिङ्क ज्रु पार भुम म्हार्ङ्कि

तङ क्ष क्षामियः दक्ष । देलि दाकः

निर्वारः ॥

नानन की अउ। अराइ कहन ।

(भून पूर्वक वानका तान । (माहान

हेिंड जावा। नफ कान रान । कान

राव हेह अउ। हुनानन । कान

राव हेह अउ। हुनान । हिंड किन

किन के जावा । क्या हुनान । हुने किन

के किन के जावान वहरवा (मावा हुने ।

किन के जावान हुने । क्या हुने कुने ।

किन के जावान । क्या हुने ।

किन के जावान । क्या हुने ।

किन के जावान । क्या हुने ।

किन के जावान ।

किन के जावान ।

किन के जावान ।

किन के किन के किन के किन के किन के किन के हुने ।

हिन्ड का किन ।।

बालना भू खी महािबानः। इंडिंग्नः॥ डेंट्रमुक्तः॥ याद्धा। इंडिंग्निशा त्राह्मः। यथा। माइनः पोर्ह्मः स्का वानना मूडिगानि जू। इंडि एसम्पुः॥

লোল:। ইতি নামার্থে সএব।। লালসীকং ল্লী পিছলং। ইতি শন্ম-রত্নাবলী।।

मुथञ्चकनः। नान इंडि ভाषा। उर् भर्यायः। मृनिका २ न्यान्तिमी ७। इंड्यानः ॥ मुर्गविद्यः ৪ দৃণীকা ৫। ইতি শদরত্বাবলী।। मुथम्।दः ७। ইতি রাজনির্ঘণ্ট:॥ वानादिकः बि भूजार्जानमभी।। কার্য্যাক্ষম:। ইত্যমর:॥ यः সেব-ক: কোৰ পুসাদ চিক্ল জোনায পু-ভো ললাট মেৰ পণ্যাতি ৷ যুখ্চ পুভো: কার্য্যে ২ফনো ২ণ ত ভৌ नानाहित्वी भूबंदर किकः। (क-**रिखु कार्याक्ष्म इंडि ভाषर**िंम এব বিশেষণ মুক্ত্বা এক্ষেব লালা-र्षिकगान् मंजु माबिजि। जावन-भी कि ह भार्रः पानाहिकः महा-লন্যে পুভূভাবনিদর্শিনি। ইত্য-জব:। ইতি তড়ীকাবা ভরত: ॥ আশ্লেষণবিশেষে পু• ৷ ইতি মে-**रिनी !। नना** हे जञ्ज क्षिनि जि । यद्भी: পু।প্রিম্ভ লালাটিকীভ্যাদি॥

লালানেহ: প্ পুমেহবিশেষ:।
যথা। লালাতন্তমূত নৃত্ৰ লাল।
মেহেন পিছিল। পুমেহ জীতিশোয:। অসেটাবধাং ওড়ুচ্যা: বরসঃ

ে বা মধ্না সর্বমেহজিৎ। হরিদা-

ल्य गरहा वा क्रांसा शाब्राः म्या-ক্ষিতঃ 🗓 অপিচ। চন্দুপুভা বচা अला वृतिष्ठः जूदमाक् छ। रुद्रिम्।-। उनिया नाबी भिश्ननीमृन **विवक** ॥ ज्युक्षी श्रधकक द्रांगना व॰म-লোচন। পুতে ক কৰ্মানাণি क्यं अस्मानि वृष्तिभान् ॥ शानाउकः নিফ্লা াব্য বিডক্স গজপিপুলী ব্যেব্র ক্ষক ব্যেব ছো ক্ষারৌ ল্বক্ত ॥ এতানি টক্ষমাতাণি श्राह्य । १९ मृथक् भृथक्। विकर्य र्जाना नाइजुः कर्या निजा छ-< । भागाजवृष्टेकर्यः मात्ररहो-कर्ण भः अप्रत्नाः। विधिना रशक्ति-रेख लिक्षेत्रः कर्खन्या श्रविका भूजा <u> ৪ চলু পু ছাতিবিখ্যাতা সৰ্বরোগ</u> প্রণাশিষ্ণ। নিহন্তি বিশ্বতি মে-रात् कृह मधे विष• जथा ॥ इजाित जावज्ञानाः॥ ল্ভাদিঃ। ইভি भागादियः প্র (रूपण्यः॥ ালাসুনেঃ পু• উর্ণনাভঃ। ইতি (एन) महः ॥ আলঃ পু॰ নহিষঃ।ইতি হেন-

DF4 !!

ाविः ही

विविज्ञाजावः ।

যথা। প্রীতিণ ভক্ত জনস্য যোজনযতে বিশ্বণ বিনিম্বন্ মৃত স্তণ বৃদ্ধারক বৃদ্ধ বিদ্যিত পদং নত্না মন্তস্থাননং । পাটীং সম্বণিতস্য বিশ্বি
চত্র প্রীতিপুদাং পুষ্টুটাং সংক্ষিপ্তাক্ষর কোমলামলপদৈ লালিত্য লীলাবতীং ।। ইতিলীলাবতী।।

লাব: পু• জ্ঞী পক্ষিবিশেব: ।

লাও্যা ইতি ভাষা। ইত্যনর ভরতৌ । অস্য মা•সওণা: । লঘুত্ব•
। কটুত্ব•। মলবদ্ধকারিত্ব•। স্বাদৃত্ব•
লীতত্ব•। ত্রিদোষ নাশিত্বঞ্চ। ইতি
রাজবল্পভ: ।।

नावकः भू॰ नावभकी। ए०-भर्यप्रायः। नघूकक्रनः २। ইতি कि-काश्रम्भयः।।

वादग॰ जि वदिष्ठ स्व । यथा।

मार्लिक पादिक मिर्न पिछा।

मे स्व कि क्यार । वदिष्णा के स्व कि कि स्व कि ।। कि स्व कि ।। कि नि मार्ग कि ।। कि नि नि स्व कि ।। कि नि नि स्व कि ।। कि नि नि स्व कि ।। विव नि मार्ग कि ।। विव नि स्व कि ।। नि स्व कि

লাবণিক তি লবণেনসংস্কৃত । ইতি হেমচন্দু: ।। লবণসম্বন্ধি চ । ! লবণবিক্রেন্ডরি পু॰ ॥ লবণপাত্রে। লী। ইভিকেচিৎ ॥

क्री ववगद्यः। ववगम्र व्यावगु॰ ভাব ইত্যর্থে ষ্ণ্য পুত্যুযেন নিষ্কন্ন १। (मोन्सर्य)विष्णयः। उम् जक्रनः यथा। मूकाकलम् हायाया खत्र व द মিবান্তর।। পুতিভাতি यদঙ্গেষু তল্লাবণ্য নিহোচ্যতে। ইব্যুজ্জ वनीवमितः ॥ उथा हि । नीजि ভূমিভুঙ্গা নতি র্গণবতা হী রঞ্ক নানা ধৃতি দিশত্যো: শিশবো গৃহস্য কবিতা বুদ্ধে: প্রসাদে। গি-রা । লাবণ্য বপুষ: মৃতিস্ত মন नाः भाउ विकन्ध क्या भक्ना দুবিণ• গৃহা**শুম**বতাঃ স্বাস্থ্য: সতাঃ মণ্ডনা ইতি নবরত্বান্তর্গতামর-সি°হ: ॥

नावनप्राक्षित् की विवाहकानीनश्रमुद्राच्या-मख-थन। यथा। भी छ्यामख्य यद्धि विषद श्रमु। वा श्रमुद्रन वा। भारवन्त निकः यद्धन्नावनप्रार्खि-छ गूष्ट्रात्छ।। इंडि विवाह विद्यानि थ्छ काछ्यायन ववनः।। नावनप्रः भीन तेन भूनप्रानि छथा व भारत्यनः छारेय भीनानि ने छित्र वा खिरेय श्रम्मुद्रानिना रखः छ्छीयः खीयन नि छार्थः। इंडि छद्याथ्यानः।। नावा जी भित्ति।
भर्यप्रायः। नावकः १ वः

8। व्यमप्रा भाष्म कर्यः। भर्पप्रः।
गृहित्। नघूत्कः। के कि ताल

वातुः) क्वी व्यवातुः । क्ष व्यव

नाजः भू न्डाया क्रीतः न्डार। इंडि मध्यत्याविक व्याद्ध इंडिमफ्रिन्स्य ॥

वामकः द्वी भिक्षा संत्र । ः ভाষा। ইতি হারকে हो।

লাসক: পু• লালকেন্। । লসক:। ইতি মেদিনী । । । ইতি ধরণি:।।

नामकी हैं जी नर्खने। इंक रहा नामका जी जारमाहिती। निका । इंड्रामहित्रीकामा मुक्रिक्ट ॥

লান্য শ্রী নৃত্য হিন্ত্যন হৈ তৌর্যকে । ইভিনেদিনী । বা বাশুন নৃত্য । তামলকাশুন হল ত্য । ইতি ভরতঃ । বালু হা । ভাণ্ডব পুন্ত: জিন্ত্য লাক। নুত্যতে । ইতি মধীতনামাধ্যে নার্দ্স হিতা ॥

वाकारि

ু গ্ৰহণ । ইতি শদ্দ ্ৰি

न्तामहरू है। **२७९१ हेडि भदः** भूगर हो।

नाभाः हो गर्ने**गे। इंडि भयः** स्वाननी॥

विकासि की जी अभावाम नाम कर्ति के का स्थान कर्ति क्षा क्षा क्षा का स्थान कर्ति क्षा क्षा कर्ति करिया कर्ति करिया कर्ति कर्ति कर्ति कर्ति कर्ति कर्ति कर्ति कर्ति करिया कर्ति करिया क

कृतिकः शः लक्षनयाभुिका-१८११ होते माहिजारर्भगः॥ व १८११ होते माहिजार्भगः॥ व १८११ होते स्थानस्य

জী রক্তবর্ণবৃক্ষনির্যাসবিবিং লোহা ইঙি ভাষা। তথা
বিং লোহা ইঙি ভাষা। তথা
বিং লোহা ইঙি ভাষা। তথা
বিং লোহা বিজ্ঞান জতু ০ বাবঃ ৪
বিং লি লি লোমনা: ৬। ইত্যমরঃ
বিষ্কৃত্য ৭ রক্তা ৮ রক্তমাতা
বিষ্কৃত্য ১০ ক্রমিহা ১১ ক্রম-

विश्वादिः १२ अन्छकः १० भनानी
१८ मूनि १० मीलः १५ जन्न । ११ भना ११ मुन्द्रमा
१० भिजादिः ११ । अगा छनाः ।
कर्ष्यः । जिङ्का । क्यायप् । (स्मा
भिजादिः । जिङ्का । क्यायप् । (स्मा
भिजादिः । जिङ्का । क्यायप् । (स्मा
भिजादिः । । इङ्गा विम्र द्वा विम्र व्या
मानद्वः । इङ्गा का निर्वः ।।
छा विमर्भ प्रताय ना निद्धः । विभा विमर्भ । विमर्भ विमर्भ क्या विमर्भ क्या विमर्भ क्या विमर्भ ।
प्रवा विमर्भ क्या व्या । व्या विमर्भ क्या क्या विमर्भ ।
प्रवा का मानद्वः । व्या विमर्भ क्या क्या विमर्भ ।
प्रवा का मानद्वः । व्या विद्या विमर्भ क्या विद्या विमर्भ क्या विद्या विद्या विद्या विद्या विद्या विमर्भ क्या विद्या वि

लाकाउकः भू भनामवृक्षः। ইতি
भक्षाना।।

नाकारिजन की भक्रिजनित्सवः।
नाकारिजन मिठि थ।। छ॰। छ॰
प्रितिथ॰ सन्न॰ तृरुष्ट । यथाकम॰
छ॰ भुकाद्र॰ छन्छ।कार । नाका
रिज॰। मन्छ। कर्त्न रिजन विभान
किछ॰। मन्छ। नाद्रनातन नार्र्स्न ।। वृष्ट्यथ।। नाकाद्रमाहर्त्स भुक्र॰ दिना। विभाविक्ष विभाविक्ष । मन्युष्ट मायुक्तः भिक्षाहाव मनावः

লাকাপুসাদ: পু॰ পড়িকালোধু:। ইতি রাজনিঘণ্ট:।।

नाका भुगारनः भु•े ब्रक्ड लाखः । তৎ भर्यप्रायः। कनुकः २ भिका ० भर्मे ३। ইত্যমतः॥

লাক্ষাবৃক্ষ: পু॰ কোশামু:। ইতি রাজনির্ঘট:॥ পলাশবৃক্ষ:। ইতি হারাবলী॥

লিস্ক লী চুক । ইতি রাজ নির্ঘণ্ট: ।।

निक्रः शुः नक्षः। इंडाप्रतः॥ निक्षा खी निक्षा। इंडिणद्यः॥ दनी॥

लिथ म (मथान । ইडि कित म क्रिंग । कर्षेका । कर्षेका । कर्षेका । क्रिंग । कर्षेका । मुख्य । क्रिंग । कर्षेका । मुख्य । क्रिंग । क्रिंग । मुख्य । क्रिंग । क्रंग । क्रिंग । क्रंग । क्रिंग । क्रंग । क्रिंग । क्रिंग

विथ है ज्ञि। ইতি কবিকর্জিন। ইভি
हे विश्वादि। ज्ञि गर्ले। ইভি
हुर्गामानः॥

লিখঃ পু॰ লেখন । ইতি লি

निथन की लिथन। विशिष्ट ।
इंड उनत ही कायाः नात्र मृत्य ही ।
विषि निभि तथ्छनीया यथा। रेपाः
यक्तिथनः भूतं यञ्ज काल निक्षिः
छः। उपन्य थिछ्डः तार्थ काला निक्षिः
नाइक का विषिः।। विषाज्य विश्वास्य विश्वा

লিখিত ক্লী লিপি:।ইত্যমর: । লেখন । ইতি ভরত:॥ লিখিত পত্রাদৌ তি। যথা। পুমাণ লিখি থিত ভুক্তি: সাক্ষিণ শেচতি ক্ষীৰ ভিত্ত । ইতি মিতাক্ষরাযাণ যাতে

शिक्ष

ত্র জিলা শেষে পৃণ। যথা।
প্রাপ্তির ব্যান শন্ধ লিখিতা দক্ষ
লোগ জিলা বি বি তাতপো বশিষ্ঠশচ
বৈশিক্ষা প্রবিশ্বাকাং॥ ইতি শুলিক্ষা

্ন গণবিশেষ:। যথা

ক্রিক বি ক্রেক বি ক্রিক বি ক

ইতি কবিকল্পজন:
ইতি দুর্গাদাস: ॥

। ইতি কবিকল্প
াক্ষতি শব্দ জী

কেঃ চিত্র করে।

গাদাস:॥

। ইতি সিদ্ধান্ত-

विश्व विश्व विश्व शिक्षां अवस्थित स्व शिक्षां विश्व शिक्षां शिक्षां विश्व शिक्षां विश्व शिक्षां विश्व शिक्षां विश्व शिक्षां शिक्षां विश्व शिक्षां शिक

थाञ्ना॰ विद्यः हे लेखे छाद्र ए অর্থ শৈচবাভিগেন্ড বিভাগ 🚉 বিগুছঃ॥ইতি 🕬 🗁 काजिका वृज्ञाच्य, त्याः त्रश्वरम्भ नः ५५८३ **অথ শেফার্থস**্বিস্থাস্থ্য পর্যন্ত 🗆 শিশঃ ২ মারক্তস্তঃ ১ উচ্চসংও ক্ मनाक्ष्णः एकन्त्रभ्यानः ७ (भाकः १ (मङ्गः ४ (मकः ৯ (मृदः)० ना ७: ১) धुकः ১२ जानन । ১১ वाञ्चः १८। इंडि भवतद्भावणी ॥ লাঙ্গুল ১৫ সাধন ১৬ সেফ: ১৭ कामाकुणः १४ । इंडि क्रिं। द्रवः ॥ 🗱 ॥ विक्रम् व्यापि वाच वर्षयुक याधिष्ठान नामक यङ्गल भन्म मिख । যথা। মূলাধারে ত্রিফোণাখ্যে ইছা জ্ঞান ক্রিযাত্মকে। মধ্যে স্বয়য় লিক্ষন্ত কোটিস্ব্য সমপুভ ।। ত-দ্বাহ্যে হেমবর্ণাভ ব স বর্ণ চতুর্বল । । তদুদ্ধের্ণী সমপুখ্য বহুল হীরক: शुक्र ।। वानि लाष्ठ याउर्णन युक्का-ধিষ্ঠান সংজ্ঞক। স্বশ্দেন পর जि-ঞ্• স্বাধিষ্ঠান• ততো বিদু: ॥ ইতি **७ऋ•॥ #॥ अ**न्याविश्वाज्दनवजा-দি ৰ্যথা। পুজন: সর্ব ভূতানা মুপস্থো ২ধ্যাত্ম মুচ্যতে। অধিভূত তথা শুক रेपवडक भुजाशिकः ॥ इंडि মহাভারতে আখ্নেধ্কপর।। #।।

ध्वमा न् अर्म् छ लक्ष्म यथा। यस्त्र िएक ह धनवान् नाइ भूमापि व एऊँ ७:। ज्विविष्का प्रतिपुः न्याप्यः-েক পৰ্নী ভবেৎ ॥ ইতি গাৰুডে ৬০ 🐃 াঃ॥ 🕸 ॥ অপিচ। মহডি ব্যু ছাক্ষাত হাল্লকো ধনী নরঃ া প্ৰাক্তি **ই ভাল্চ ব খুল লিছো ধ**-নোজুত: ।। মৃহন্ডি জানুভি রিতি শেষ: ৷৷ মেটেু বামনতে চৈব সুভান্ন রহিতো ভবে**৫। বক্তে হ**ন্যথা পূপ্র-वान् महा माति मुह विनर् वृथः ॥ ष्यास जु जनस्या निष्क भित्रात्न १थ जुथी नतः। ङ्व<u>ग</u>ुङ्गियुट्ड ब्लिङ्क छ-বেৎ পুত্ৰাদি সংযুত্ত: 11 ইতি গাৰু-ডে ৬৬ অব্যাयः।।#।। অন্য । नीर्घः जिञ्चन मातिमु । छल जिञ्चन निर्धनः । क्षानिःक्रन (मो जागाः) व्यनिःक्रन ভূপ জি:।। কর্ক লৈ: কঠিনৈ লি স্থৈ: श्वराबद्धः यहा । द्रग्टि जना मानी निर्यान छवछि धुत ॥ कृष লিঙ্গেন সূজ্মেণ রক্ত লিঙ্গেন ভূপতিঃ । পরজ্ঞী রন্তে নিত্য নারীণা ব झ्राञा ज्यद् ।। कृषिविष्ट्रम द्रास्क्रम লভতে চোভমাফ্না॰। রাজ্য॰ সুথ थ दिवाद्याः कन्यकायाः পতि छ (वर्।। इंडि मामु मुकः ॥ 🕸 ॥ निवः बार विक्रिक्षमा उमिर्वावरागुर्यपुर

স্যুচ কারণ যথা টেলীপ উবচে ৷ বেদ্মিশাহ দিয়াশেষ ব ু কিবাইই **छकः। कमाधिग**िष्ट कृष्य कृष्टनार সহ ভার্য্যয়।। যে 🕍 🚌 🚜 শভ্ कथः न्याट नूमह क्षा । लाउवाकु শচতুর্বাহু: শূলপাণি ক্রিনে:চন: ॥ কথ বিগহিত ক্ষাপ্রান্দিজ **शृक्त । अवः म**ध्याः वशालः विकाद-क्ननन्दन ।। श्रीविति १ १८६६ । अनुस् त्राजन् भूवक्या व व्यव क्रिक् গৌরবাৎ। স্বায়স্ত্রে 🔫 😁 🐴-ন্দরে পর্রতোক্তা 📑 🖫 🖫 🔻 ভি: সার্দ্ধণ দীর্ঘ 🐠 💮 🚟 🕾 **মিন্সনাগতা:** এন দেশগাল্ড <u>दुजाः ॥ व्यक्त्रष्टः 👙 👙 🕬 ।</u> **रशुाठू उरभाधनाः** , विकासाः (यह विद्वाः कः भूष्ट्र 🔑 😂 📑 🗎 इंडि उम्र वहः 📆 🖓 🐃 🚶 🤻 यः। ভৃত্ত তপোনিকি । তে তেজা शाक्षिणय छना।। व्यवग ক সংশয় ছেভু সং বুত। বুন্ধ বিষ্ণু মহেশ 🕟 বুজ সূবুত।। গত্বা জে ख्था मृष्ट्री **চ विशु**हात् 🐃 खग (खरा॰ यियन् अ॰ि ः ॥ স এব পূজ্যো বিপুশা । 😘 । करावत । जमार प् रि ः निः

िल्लानाः निर्दामनः॥ किशुः वक ্ৰশেষ্ঠ সৰিলোকহিত• প্ৰভো । এয় মুক্ত ভুত ভুৰণ **কৈলাশ∙ মুনিস**∙ चन् १६८ शाम वाम्पादवन यु**बार**ङ 🗆 🤆 ५ छः । गुरुधात गुणागम्। मक द्रशः प्रशासनाः **गृलहरूः मशासी**ः · कि वृद्धे (तुर्वी फ्रिकः । ज॰ ग्रा-ভোষে ভৃগু জিপু। **হর• দুষ্টু• সুরো**-७२ ेस किटरयंड मार नी घुर नह-জান ব্যাপ্র (জা **ভদ্য তদ্দন শুরু)** बार्ने महिमानसङ्गः ॥ উवात्र शक्यः ৰাজ্য মহাল শনিতৌ**লসা। অসা** ফিল্যঃ শুভে। স্থস্য **দেব্যা ক্রীড**ি भावतः ।। जिल्हां विवर्डं व याति की-িচ্ছি পিছালি এক নিরাকৃত তেন ভ্রাভিট্রহ ংগ**ঃ ॥ বহুনি দি**-क्षाराप्तरा पृत्वसा**त सूनीयतः ।** বজা কোণ্ড সম্মাবি**ষ্টো ভৃতঃ প্রো**-াৰ শাধ্রা ৮ বিনষ্ট স্তমসাৰ্চা गलदः। भाद्रीमञ्च-ামামবমন্যতে ॥ ্ৰ শং বৈ দ্বাপণ ভষা। 🦠 🦠 🐃 🥯 মাণ ন জানাতি ্যতঃ ॥ অবুধ্বণ্য-গ্ৰ্যা হসৌ দ্বিজন্ম গমনন্ত ত্যে দ্ভ ्दि खया ॥ । गवम्यामः डलिक्द

পত্ৰ পুত্ৰ ফলাদিক ৷৷ শিৰ্মাল্য ম-স্য চাগুছে ভবিষ্যতিন সংশ্যঃ ৷ এবং শপ্তা মহাতে**জা: শক্ষরু লো**-কপুজিত ৷৷ উবাচ গণ মভুগূ ন-मिर म्लक्ष नृश । क्षु ख्का क र्य লোকে ভন্মলিস্থাস্থিয়া ডে পাৰগুত্ব মাপনা বেদবাছা ভবন্ধি-বৈ। এবং শপ্তা মুনি স্তত্ত কৃদুং ত্রি-পুরহন্তক ॥ জগাম বুন্ধলোক রৈ সর্বলোক নমস্ত।।ইতিপাদ্মোত্ত-রথগুয়ি । ইসপ্ততিত্রমাধ্যায়াৎ স-স্কলিত ।। #।। শিবলি স্স্য পূজা-षात्रच यथा। भ्काञ्चानानि वक्तामि यियन् मामियाजाः वुर्छिटा विक्र्ञाः भूषायाप्ति । अधिन इति उत्थव ह।। পুত্তকন্তা নহাদেবী পাদুকে পুতি नामु ह। क्षा। जिल्लाम् माण्यमञ्जी भुकारेना यं भुविश्विष्ठः। कठारेना र्यं कृष्ठ जिञ्च वर्जनीयस माध्रकः ॥ অল্লংসীখ্যপুদ• প্রোক্ত॰ বেদম-জ্বৈ: পুতিষ্ঠিত[,]। সাবিকারন্ত **স**-ল্লিস্' ভুক্ত ভোগ' তথৈব চ॥ জ্ঞা-তব্য সাধকেন্দ্রেণ সিদ্ধিদঞ্চাপ্য-शिक्षिपः। (प्युरवाष्ट्र। भाविकात्रस्र यह्मिक् भञ्जशीन शुक्तिक । नि-ব্ৰভিত বিকারঞ্জ অয়যন্ত স্বযন্ত্র বা षर्वति ভক্তিবাৎ मन्। वाकानाः

ा अनावाकः। पूर्वित्छः। ीपः छानः ংয়াগিনা মৃপ্যগোলর দেনীর্ত্যের্জড-িনাল প্ৰজ কেল বিজ্ঞানতে বিভোগ अवस्य जासू महाराषि ४ १० १० ६५० यसुया क्वांकिः ए 🔠 अन्तेथन महामाणा ॥ मूर्तिः १ फि " अरद "हा लि कि जून मेनू करा ভি:। আধিষ্ঠ্য সাধক: ক্ষেত্ৰ' হৃদ্যা-ननत्कात्रकः ॥ इन्तियानाकः छेटमु-कु प्रमानि विक्रम्भानः। (अव्यानः তিতো লিস্ক্ নিত্য মানন্দ্দাযকং॥ সুষপ্রান্ পশ্যতে নিত্য বিমানস্থাণ বরাঙ্গনাং । ভৈরবং পশ্যতে নিভ্যু की उन्न भाकृम अला। जेमा मरहन्यः রঞ্চাপি স্থপ্নে পশ্যতি সাধকঃ॥ অ নিবর্ত্তিতাধিকার তল্লিম্ব ত্রিভূবনে খরি । আক্রমন্তি নহাবিল্লাঃ সদৈ-ত্যা রাক্ষসাদ্ধः ॥ শূন্যাগার । यथा দেবি আক্রনন্তি নরা: প্রিয়ে। অন-হিতন্ত ভুঞ্জন্তি তথা নিহুত্ত কল্পনা ॥ (পुত वथा मुद्राव्यक बाक्रमिड शिभाठकाः । मृत्यक व्यक्तिक्छ আশ্ৰন্তি তথা পূিবে !! ইত্যাদ্যে प्रवीलुद्राण नन्त्राञ्च अनुदन्नाव्याः रः !। अ ।। यथ चित्र नक्षा । उउ वागिक्रा विक्षा यथा। वाग লিক্ত তথা জ্বেব ভুক্তি মুক্তিপুদা

यक । उँ८ शहिल ये विश्वित्र वि १ भाषा मा । नगरी प्रित्र यान्द्र गङ्गा रम् १८१ छ तः । अर्थ भूगा नहीनाक का विकास रहा क ॥ हेन्युक्ति 🤊 🧸 ६०० १५५ हेर् বিহিতানি চ ট 🔻 বিহি 🦫 निवः नर्वार्थम् 💎 🖫 हेन्यु विद्या नि जानग्रहः रु 🔃 🙉 🕬 **।श्र व्यवादायि । १८०**३ व शिकुकी वाव भक्षम् भी व्यक्त । আগ্ৰেষ তৎ ৰ ্বি চি: ১৯১১ শক্তিলাঞ্ডি টি বলাঙ প্য তেজসাধিশতি 🗁 🔻 🎉 व्यथ यामऽविक 🕾 🔻 👵 র• ভবেদ্মান্য 💮 💛 🦠 🦠 यम्यमुक्क• भर्गोः विकास তে তদা ॥ নিবি 🚟 🤟 🦈 🦠 যতে স্থাপিতে ব্যক্ত 🕾 🖑 🕒 **লিঙ্গ লক্ষণ•।** বাংগ্ৰাক জ্ঞানধোগ ফল পুৰা বিভাগ বিভাগ विश्वत मधे मिन गुल ७०० । कनः निष्ठु छ वि 🐺 गार्र 🤻 न 🏋 शुन् ॥ 🗱 ॥ अन्य राजानीय न कृतः। बादनः बढ्वास्थः आनः क्ष॰ ठालियहँम॰ । वृष्टि भू थारमः শ্বহু॰ সংভোগ এড় নব্যগোটি व्यथ वागूनिक नक्षा । क्षा भू

य वासक्र क्रि**जालः धृतग्रवनः। गर्** াল জালিভি তস্য নূচন নূচন মিত हाइ ॥ क ॥ **व्यथ करवत्रविक व**ः ^{১৯৬} টেড ভার্পাস গ্রাকার• মধ্য १९५ (बेरलज्ञानम् अस्त्राः ॥ 🗱 ॥ अव्यव्यक्षिक अन्यक्षितः । क्रिनः वा-🍽 🌝 🕾 🥫 ত্রি• সম্পোণি রবিবর্চসং ্রার বিল্লাক্ষিত রৌদু হেম*স*্ **एक अन्य १ 🗱 ॥ अथ रेवस्ववीन** জাহাক্ষণা চতুৰ্বৰ্ণময়ণ বাপি বৈ-एक प्रकार श्रृजः। रेवकवः मञ्ज ভাঙ্কাঙ্ক গণবাদি বিভূষিত ॥ 🕮-াং ফ চে এভাঙ্কঞ্চ সর্ব সিংহাস-ाक्षिण । रेवनर्डय समान्त्र रा ार्वाब्यु करा**क्षिणः ॥ विक्वतः नाम** ७८. शुरक **मरिबंधर्यं। कलभुन• १** ভাগাপুনেটি সংস্তু শশাসং **এ** 'देवका मा **लग्नाऋ' श्रत्थिकारू' वा** আবং বাল । বিভূত্তযে । ইতি বীর-चित्रज्ञाम्य ध्**ठ कारणाखदः ॥ 🕸 ॥** ভারদ উবাহ । **অথ বক্ষ্যামি তে বি**-পু চিই" বেকাদশ পর । শুবণাত্ম-ল্য পাণানি **নাশ নাযান্তি তৎক্ষ**-াং । নগুপিঙ্গলবর্ণাভ কৃষ্ণ স্বপ্ত चिता तक। स्वरम् जिन्न माथ्याङ मर्बाभिक्ष विरविज्य ॥ नाना वर्ग - अक्तिनं की मून ममनिज । मृ-

जुङ्खयास्यः विक्रिक्ट नमः **ऋ उ॰।। मीया**कावः भारताः कृष्विः ন্দু সমন্বিত । নীলকণ্ঠ সমাথ্যাত निञ्च॰ भूका भूतामूदिः ॥ भूका छ॰ শুক্লকেশঞ্ নেত্রহয় সমস্থিত । ত্রি-লোচন মহাদেব সর্বপাপ পুণো-**५न॰ ।। ङ्गनिझिक्षः को। क्रिक्**षाखः ञ्चितिगुरु । कानाग्निकृ भाष्णा-ত गर्वमद्भि नियंविजः॥ मधुभिन्न-লবৰ্ণাভ পেত যজ্ঞোপৰীতিন । খেতপদ্মসমাসীন চন্দুরেথাবিভূ-विज ।। প্ৰাস্ত্ৰসমাযুক্ত ভিপু-রারি সমাস্থ্য ।। শুভাভ গিঙ্গল-জট মুপ্তমালাধ্র পর । ত্রিশৈ-लथत भीमान लिङ्ग मदीर्थमाधन ।। ত্রিশ্ল ডমকথর শুভু রক্তার্জ। ভাগত:। অর্জনারীম্বরাহ্বান সর্ব-(एरेव ब्रञ्डिज ।। देव <u>प</u>ुक्त मयः कास्रः **श्रृगः लिञ्चः नगु**ब्बृनः। <mark>गशकानः</mark> সনাখ্যাত• ধ্যাকামাৰ্থ নোক্ষ**দ**ং॥ এতৰ কথিত তুভ্য লিস্চিহ্য• মহেশিতুঃ। একেনৈব কৃতার্থ: স্যাৎ বহুভি: কিমু সুবুত।। ইতি হেমা-पृष्**उनकावा ।। ।।** উकाकः (मृयरम (याज) भी व मखे विवर्क्त-(यट । यमवर्षे यह्मिक् यमाक वा कम् ७ लूं ।। ५ ७। ऋ॰ मूब हिझ् • वा वुक्र

জ্ঞানাবিত মক। শশিবণ মহা काल' नन्तीन' शमातागवट ॥ शमा রাগ নিভ সর্ব মহাভ সিদ্ধাপু **জি 5°।** (मोक्तिका च॰ नी निमंच॰ क षु कि उंद शुभू बिंड ।। वमुरेनः (मः नानादर्भयः नीलः नानासम्बन भुङ' ।। ইতি বীরমিত্রোদযধৃতকা-লোভর:॥ ইতি বাণলিঙ্গ লক্ষণ ॥ 🗱 ॥ অথ তস্য পরীক্ষা। ইত্ত্য তল্লকণ পোক্ত পরীক্ষাতত্ত্বকো বিদৈ:। ত্রি: সগু পঞ্চ বার• বা তুলা সাম্য ন জাযতে। তদা বাণ সমা-খ্যাত শেষ পাৰাণ সম্ভব ॥ ইতি वीवनिर्धाप्यध्यः ॥ जूनाकव्रवस् ত গুলেন। অপর তুলাদিষ্ ত গুলা-যদ্যধিকা: সুগ্ৰদা ভল্লিক্সণ গৃহি-गाः भूका भवशार्याः निक्रास्थमधिकः **उ**ष्टामात्रीनशृङ्खाउषि विद्यमः हीति (इनाष्ट्रिक वक्षणकाखः ॥ সপ্তকৃত্ব স্তলাক্তে বৃদ্ধি মেতি ন হী যতে। বাণলিক নিতি খ্যাত শেষ नार्यम् मूह्या ॥ जि भक्ष वात्र य-বৈস্যুব তুলাসান্য ন জায়তে। তদা বাণ সমাখ্যাত শেষ পাৰাণ স ম্ভব•।। ইতি সূত্রস•ছিতা॥ নদ্যা• वा शुक्कार क्वाप्य हा उहु शव च

তে। বাণলিঞ্ছ ভাল 🏁 🤫 সুথ বিবৰ্জন•।। ইণ্ডি ই র কিল্লালয়ত **।। #।। বাণশন্** বুঙ্গেভি র'। ত **ত্রৈব। অথ বাণ সম্বা**শ্যাত সং বক্ষ্যে তথাদিতঃ যে ব্যক্ত কৰি ক দেবোবাণো বাণান্তরে হলিছ ৮ 🗸 यस्य कृष्ठः ख्याः वानिक गुन्त হৃত্য। সদা স্মৃতিঃ ভ্ৰাচিঃ সর্বার্থদায়ক: ॥ 🕫 গুড়িছি 🕾 🕾 স্থা বাণাখ্যেৰ শিল্পৰ চন গছাল ক্ৰ ফলাকার স্ত্রা সম্প্র ভুক্তি মুক্তি পুদাধার কে 🔠 🖰 **नाज्ञः॥ शक्रकस्**त्रः अव्यक्ति পর্বস্থ ফলাকারা অনুট্রান্ত ১৯৮ কৃতি। ইতি হেমাদুৰ্ভ লক্ষ্ণ ক (७ भार्रः ॥ 🗱 ॥ स्पर्दीः भूकि 🦮 ववाकाः । भूभाषः अधिकः विकार পদ্ধদ্ব ফলাকৃতি ৷ মধুবর্ণ তথা শুদ্ধ নীলা মরকতপুভাগা হালডি য়াকৃতি পুন: স্থানন্যাণ পূলাস্ততে । त्रयः मःमृदरः विद्यः विदिष्ठाः नर्यहाकत्व ॥ शुका वालामः त्राहर भार्थिता नर्मनात्ति । जाविज्ञानः গিরৌ ভত্র লিফল্পর্স প্রশার 🙃 বাণলিক্ষ নিপ জ্জগতীতলে। অন্য 👉 💥 क्रानाः भूडत्न यू कनः नाउट्।

ফলা লভা 5 মত্যো বাণলি-্ক প্রনাথ। তথা। তামী ्रिकी चार्ने भाषानी ब्राज्ञे থা ্বেদিকঃ চ পুকর্ত্ব্যা তত্র ংস্থাপ্য প্রায**্যা # 11 পুত্যই**° ্ৰেল্লিস্ক ন গাঁদ ভক্তিভাবত: ্ডিক কি চল তস্য মুক্তি ্ বিদ্ধৃ বিজ্ঞা। ইতি পুত্যহ বা-🔻 ্বেলাঃ ব লং। ইতি যাজ্ঞ ि । अः शा अः शा शा श्री সু প্ৰস্তাধা**ৎ ফল কোটি** १८८ । से से १**शाःस द्रमलिक्म**ऽ ८ ७ १ १ १ १ दी। निष्कर्या রবের 🔻 🔻 রবিল**দ্যা: সুসংস্থি**-ভাগ চ 🖟 । পুড়াশ হিভা ॥ 🛊 ॥ রম্পাশ্য ১৯১৭ থি**স্থানি কথিতা**-भारत । ११ देशाताद **প्डानि गर्ब**-আমধুনালি ও ।। এতেষ। মপি জার্মত কার্মান্ত্র• ছি বি**শিষ্যতে।** अवशोधाराज विश्वा**ह वानविञ्च** ियरहरू । यायशिकार भवः ना-ন্ত্ৰ পৰিত্ৰ বিলম্পাতে। ঐছিকা-[া] প্ৰাণ্ডালেকু: পুষ**হতি।।** ্ৰাভিল প্ৰদাৰা । ই**তি কে**-ा । 🕫 ॥ ीन्तुः निक्रभाष्ट् ৷ কর্মা বাণলিকে তুপুত্র

দারক্ষযো ভবেৎ। চিপিটে পূজিতে তিমান্ গৃহভক্ষো ভবেজুর ।। এক পার্শ্বভিতে ধেনু পু এ দার ধনক্ষয:। निव्रमि हु हिंए वाल व्यापि स्वत भिव ह ॥ हि मुलि व्य शहें उ वारा विरम्भगमन खरव । लिस् ह कर्निका॰ मृष्ट्री व्याविमान् जायख পুনাन्।। অভ্যন্তি विलागु जू गा-धनानाः क्राया ভবে । #॥ जीकार्गः वक्नीयंक जामूनिकः विवर्जायः । অতিস্ল ঞাতিকৃশ বল্প বাভ্ৰণা-निजः॥ गृशी विवर्क्तायलामृक् उषि মোক্ষার্থিনো হিত'। ইতি দুপ্তবাণ-विक् वक्षा ३ डिंड (ह्या प्रिः ॥ **#॥** मु ভिवक्तभार । व्यर्थन कि कि वि क् ध्या छ । त्याक्रकाङ्कितः । त्या वा किशव मूल गृशी रेनवाई रवट कुहिट ॥ পুজিতব্য গৃহস্থেন বর্ণেন ভুমরো। পম•। ভৎ সপীঠ মপীঠ• বা মন্ত্র স'ক্ষার বর্জিত।। সিদ্ধি মুক্তিপুদ্ লিঙ্গণ সর্বপাসাদ পীঠগণ।। ইতি मुভवार्गालक लक्षर । ইতি वीत्र भित्वाप्यः ॥ ॥ वागनित्रयावाइ-नामि न कर्खवाः यथा। वानिकानि রাজেন্দু স্থিতানি ভূবনত্রযে। ন পু-ভিষ্ঠান স'কার স্তেবা নাবাছন । ন চ ॥ ইতি ভবিষ্যপুরাণ ॥ #॥ ব্রাক্ষ্যে

মৃহ্রেচেশ্বিগ্য য: নরেদ্বাণলিক্ষ কং। সর্ব জয় মাপ্নোতি সত্যু সভ্যু ম-হেশ্বর।। ইতি যোগসারে ৫ পরিছে⁻ **मः।। क्षः।। अथ वानिक्ष्रानः। उँ** পুমত্ত শক্তি সংযুক্ত বাণাখ্যঞ্চ ন-হাপুভ । কামবাণাব্বিত দেব স नात्रमञ्बक्षमः ॥ भ्नातामि त्रामा-ল্লাস বাণাখ্য পরমেশর। এব খ্যাত্বা বাণলিক্ষণ যজেত্তণ পরমণ **निवः ॥ यनमा गञ्जभुञ्जादेन्तः मःशृ** कारामा मन् यातर । भागायामः ততঃ ক্ত্বা বাণলিক্স্তু তোষ্বেৎ।। ভদিষ্টদেবয়ে রৈক্যু বিভাব্য বাগুব• জপেৎ। ততো জপ॰ সনাপ্যাথ छ। (वनात्नन (जायर्थ । । । अथ खवः। বাণলিক মহাভাগ সংসারাগ্রাহি-মা পুভো। নম স্তে চোগুরুপায নম-**(७ २**व)क्यान्य ॥ मः मात्रकादित ভূভ্য নম স্থে সৃত্মক পধ্ক। পুনতা-य महरूनमुख कालक्षाय रेव नमः॥ দহনায় নম স্তভ্য নম স্তে যোগকা-রিণে। ভোগিনা ভোগকর্ত্তে চ মো-क्षमात्व नामा नगः॥ नगः कामाकः भाणाय नमः कन्मयशादिरा। नना ৰিশপুদাতে চ নমো বিশ্বৰ্কপিণে ।। বাণস্য বরদাত্তে চ রাবণস্য ক্ষ্যা-य ह। त्रामनान् गुराशीय त्राकाय

ভরতস্য চ ৷৷ মুনীনাং যোগদার হয় त्राक्रमानाः क्रयाय ह । नम् 🕫 छुट्ट নম স্তভ্যু নম স্তভ্যু নমো 🤫 🕆 🗱 ঐ' দাহিকাশক্তিযুক্তাৰ মহা 🥕 👙 প্রিযায চ। ভগপ্রিয়ায সর্বাহ 🦠 ণা নিগুহাৰ চ 🛭 পরিত্রাণাই 🥶 शिना॰ को**लिकाना॰ लि**याय 🗲 🦠 লাহ্মনানা ভক্তায় হলালার 🕾 🕾 D 🛚 **चन उ**काय (यागायं नायः 🧀 बायगाय ह। नधभान<u>श</u>्रेम ख्र (गमाय नमा नमः । म्बन्धिः । ণাশায কৌলিকানা সুখায नयागाय निष्ठाय मुकाय भारत **न्या भद्रभाषा यक्ष भाष विक्र**ावाः কায চ। সর্বেখরায সর্বায় 🚜 🤊 निर्छनाय है ॥ 🕸 ॥ इत्छु उद् গুহাত বাণলিঞ্স্য শক্ষর। য সাধকশেুষ্ঠো গাণপত্যং লভে 🔻 🖾 : खवमहामह भुमारिन यागी (মাপুষা । রাজ্যার্থিনাণ ভালা ভোগিনা ভোগএবচ॥ সাংা **थन• (हद को निकाना• अन** 🕾 🖹 । য' য• কামযতে মন্ত্রী ত• ত 🧢 **जि जीनगा। वागनिक्र** वि সর্বমাপ্মোতি সত্তর । वि 🚁 কথগানীহু সর্ব্ধ বেৎসি আল ॥ भशाज्य अमूर्भाम अविदा

ললেখর।দেশান্তর ভবে প্রাপ্তে দস্য कोतानि मङ्ग्ल ॥ भठेना **उ**व রাজস্য ন ভয় লভতে কুচিৎ ৷ বাণ-লিঙ্গ্স্য মাহাত্ম্য সংক্ষেপাৎ ক थिङ भया ॥ उन्ध नुदन मार्खन नत्त्रात्माक्र भवाश्रुवार। वानिक्र॰ अराद्राष्ट्रः र्यार्गनाः र्यागमाथ्रन ॥ ্ক্রেলিকানা স্বলাচারে পশ্না भावनिगुरह । (वमञ्जानाः (वमभारते রোপিপা্ রোগনাশনে ॥ या या नारेष्वायोगन मर्बः उधिक्षण छ-(वट । इंडि जीरयागमाद मर्बागः মোভ্রমে পার্মতী শিবসংবাদে বাণ-লিফ্ স্থোত্র সমাপ্ত ॥ #॥ অথ तोनु विक वक्क १० । निर्म अमुख्य १ ह्योपु मत्नानामा विषयंगाय। नही-বেগাৎ সম দ্রিক স জাত রৌ দু মচ্যতে ৷৷ ইতি বীর্মিজোদ্যঃ 💥 সরিৎ পুরাছ সংস্থান বার্শীক সনাকৃতি। তদন্যদ্পি বোদ্ধব্য ध्वीपृतिकः पृथावकः ॥ विशेषात्रः নমানাযা বাণলিফ্ সমাকৃতি। ত-मन्द्रमिश (वाष्त्रवृष्ट्र निक्र विभूष् ভবিষ্যতি ৷৷ রৌদুলিস্কু• তথাখ্যা-ত বাণলিক সমাকৃতি। শ্বেত রক্ত তথা পীত কৃষণ বিপুদি প্জিত ॥ य जावाद क्षवर्गं वा मर्वजािख्

मिषितः। नर्यता मञ्जवः होषुः वानः **निक् विशेषिकः ॥ इंडि होर्नुनिक्** वक्रन'। ইতি वक्रन अमृह्रयानि ।। 🗱।। অথ শিবনাভি লিঙ্গ লক্ষণ। উত্তম মধ্যমধ্ম ত্রিবিধ লিফ্ मीविजः। চতুরস্থুল মৃৎসেধে রম্য বেদিক মৃত্তমণ।। উত্তমণ লিঙ্ক মা-খ্যাত' মুনিভি: শাস্ত্রকোবিদৈ:। **उनक्षं मधानः (शाक्तः उनक्षं मधनः** স্ত ।। তস্য মহিমা। শিবনাভি ময় লিক্ষ পুতিপ্জ্য মহর্ষিভি:। শ্রেষ্ঠঞ্চ সর্বলিক্ষেভ্য শুসাৎ পূজ্যণ বিশেষত: ৷৷ ইতি শিবনাভি লিজ্ লক্ষণ। ইতি বীরমিত্রোদযধূত শি-दनाजन अभ्वामः॥ अभा अथ टेन्द-निक् नक्ष-। निकास्या कत्र मः भूषे मः न्यां म्वा पे स्व मृ ভূষিত । রেখাকোটর সংযুক্ত নি-শ্লোমত সমন্বিত ॥ দীর্ঘাকারঞ্চ य-ল্লিক্ বুন্দ ভাগাদি বর্জিত। লিক্ক গোল নিভি প্রোক্ত• গোলক• প্রো-চ্যতে হধুনা ॥ সমাওস্য ফলা-কার• নাগরঙ্গ ফলোপম•। কাক-ডিম্ব ফলাকার পোললিক্স মিতী-রিত ।। ইতি গোললিক্লফণ ॥ 🗱 ॥ जाथार्यालङ्ग लक्ष्म ॰ उरें बर । নানা কৌল ফলাকার বুক্ষসূত্র বিব- র্ত্তন । মূলে ভূলক্ষ যলিক। কপিথ ফল সল্লিভ ।। নালস্য বা ফলা-कात्र अरथ् इनक यन्तर्थ । मर्थः क्ष्व वद्भ विक म्विवान मूनाइंड ।। इंड्राविविक् विकागः।। 🕸 ।। व्यथ लिक् नक्षि । लिक् कि विविध অকৃত্রিন কৃত্রিনঞ্চ। তল্লিঞ্চ দি-বিধ ভেরুষ নচলঞ্চ চলম্বথা। প্র-ত্যেক ত্রিবিধ জ্রেশ লিক্ষ তদু লিঙ্গ মচল • তहिলাদিজ । স্থাপি-ত সচল গেহে ছির লিফ ন যোজিতে ॥ পঞ্ষা তৎ স্থিত। निक्र बग्यु रिन्द्रभाजक । आर्यक মানসং লিছে তেখা লক্ষণ মুচ্যতে ॥ ইতি সিকারশেথর: ॥ আচার্য্য भनाग रिवदः स्वासुरका नरस्पदः। ग्ब रेडव खन् दाङ्क निष्ट्रमस्त सगः स्र उट् ॥ धमनी यम् मः मः मांट **मञ्जि किन् (सव ज ।। ই**जि यहें क्य ही शिका ॥ # ॥ नाना हि मु मू-मःयुक्तः नानावर्ग मनविकः। अपष्ठ মূল বল্লিস্থ কর্লণ ভূবি দৃশ্যতে।। ভল্লিস্ত স্বন্যুত ন্পরং লক্ষণচ্যু ত। স্বয়মু বিশ্ব মিত্যুক্ত তচ নান। विदः गउः॥ मङ्गाडगउकः विदः रेदक्षवः उद्दराञ्च । भद्माञ्ययकः

<u>বান্ধ্য ছবাভ শাক মৃচ্যতে ॥</u> শিরোযুণ্ম তদাণ্মেয় ত্রিপদ যাম্য भीतिजः ॥ यनाजः रेनर्श्वजः विकः वक्न क्लमाक् छ ॥ वायवर धृ न-বল্লিক' কৌবেরন্ত গদান্বিতং ৷ ঈ- 🗸 শানস্য ত্রিশ্লাভ লোকপালাদি-नि:मृ**उ**॰ ॥ स्यस्त्रविक मार्थाउ॰ সরশান্তবিশারদৈ:। ইতি সম্ভ্র লিক্ লগণ। ইতি সিদ্ধান্তশেশরঃ ।। 🗱 ।। मृष्ट्री विक्' सहस्मार सहस्र তস্য পার্বতি। সর্বপাপ ্রিনির্ভূ জঃ পরে বৃন্ধণি লীযতে ॥ এ:ত্রষা পূজা ফলা ভবৈব । বিশেষাট্র-লঙ্গ ভূক্তি। ভক্তযে চানুষস্ত:। পার্থিক ভুক্তবে শস্ত মুক্তবে চা-न्यक्ष जः ॥ अव' देव मास्का (छायः চিহ্ন লিজ্ তথা भूनः। স্থির লক্ষ্মী-भूमः (छ्यः रेश्मः बाक्राभुम् छर ।। পুঞ্ছিকর ভারু রাজ নাযু: পুবর্জন । ইতি মৎ সাস্ক্রনহাত-জ্র'॥ ৠ॥ পারদঞ্চ নহাভূতৈর সৌ-ভাগ্যায চ मोक्किकः। हम्मुकासः मृত্যজিৎ স্যাদ্ধাটক সর্বকামদ ॥ ইতি পদাপুরাণ ।।ঞ্চা। সরফলপুদা ভূনি মণ্য শুদ্ধৰে হি ৷ অনস্থাদ্যাঃ याञा शक्षी मनर्या विमुश्रुकः वाः॥ दाबी भुकामकाः नर्व विदाम्।

धाउकाद्रिनः । नानावनाञ्च विरद्धया ज्ञोत गोक्षण क्लाडः ॥ वृक्षान्ताः शुः हिकारा क खडाशारि विनिर्शि ७ । সর্বকামপুর পু সা জিহ্ব ় ভাৎকালিক মত ॥ ইতি বীরমি-বোদ্য ধৃত কালোতর:॥#॥ गान्न॰ সৌভাগ্যদ লকে পৌল্ল মকি शुप्तायकः। नाना भूत्नाच्छवः विद्रः नाना काम भूरायक ।। रिमक छ छ •দ : লিস্থ সৌভাগ্যায় চ লাবণ । উট্টাটনে তৃ পাশাগু- নৌল শত্ৰ क्षणावरः॥ जाटकालिकः मित्रम्फ कृ द्वा ভক্ত। সমর্চনে । ইতি লক্ষ্ণ अगृहयः।। अः। अथ गञ्च निञ्चरः। शक्ः ডপুরাণে। কন্ত্রিকাথা দ্বৌ ভাগৌ ठञ्जात भन्दिनगुष्ठ । ऋख्नना जय-শৈচৰ শশিনা চ চতুঃ সমণা৷ এতীয় গন্ধলিহন্ত কৃত্বা সংপ্রা ভক্তিত:। শিবসাযুজ্য মাপ্নোতি বন্ধভিঃ স হিতো নর:।।ৠ।। পুয়মযলিক্সণ যথা। । कार्याः भूम्मयः निष्ठः स्यगन्न मनः ব্বিত। নবথপ্তা॰ ধরা। ভুক্তা গণে (मा ९विभि डि डिंदर ॥ क्ष ॥ अथ রজোন্য লিস্থ । রজ্যে ভি নি মিঠিত। লিঞ্• যঃ পূজ্যতি ভক্তিতঃ৷ বিদ্যা थत्रभर भाभा भगाहितमा छ-(वर ॥ अ॥ अय (गाणक् न्निक्।

প্রীকানোগোশকৃল্লিস্প কৃত্বা ভক্ত্যা शुभुक्षाय । यहन कानित्वतेन গোমযেন পুকল্পয়েৎ।। यहिन ভূমি-পতন রহিতেন। শূন্যোজ্তেনেতি-यावट ॥ 🕸 ॥ व्ययं यव (गाव्य শালিজলিস্থ । কার্য্য যপ্তি ক্রমণ লিঙ্গু যব গোধুম শালিজ । গ্রী कामः शृष्टिकानण्ड शृधकान छन्ह-(य८ ॥ 🗱 । व्यथ जि डाथ अन्य विञ् । সিতাথওন্য লিক্ত কার্য্য মা-(द्राग) वर्ष्वन । वर्षे । व्यवन क विश्व তাল ত্রিকট্রকান্বিত• ॥ ভাল• হরি-তাল । ত্রিকটুক শগ্রী পিপ্ললী ম-র্চ নিভি পুসিদ্ধ ।। গব্যঘূতম্ব विद्यः मःभूषा वृक्षिद्धनः। उथा। লবণেন চ সৌভাগ্য পার্থিব সর্ব-কানদ । কামদ তিল পিষ্টোত্ম ভূষোত্মণ মারণে মৃত ।। ভ্রোত্ম **मदक्वार॰ रू**षान्थ॰ श्रीजिवर्ष्कन• । গন্ধোত্থ গুণদ ভূরি শর্করোত্থ সুখপুদ ।। ব শাস্কুরোথ । ব শকর । গোন্য সর্রোগদ । কেশান্তি স-स्त्रवः निष्ठः अर्द्धमञ् विनामनः ॥ কোভনে মারণে পিষ্ট সম্ভব' লিঙ্ক मुख्यः। मातिपुन• क्यान्छ जः शिक्षः भात्रसञ्जूर॰।। एविष्ट्रका रूवः नि-क् वीर्ख नर्का मूर्यपुरः। धानाः

मः शानाजः वित्रः कलात्यः कलमः ভবেৎ ॥ পুষ্নোত্ম দিব্য ভোগাযু मू रेक्ना धानीकलाष्ड्य । नवनी তোল্ডব লিঙ্গ কীর্ত্তি সৌভাগ্য বৰ্জন ।। দূৰ্বাকাণ্ড সমৃজ্ত মপমৃত্যু निवाद्रगः। केश्र्व मञ्जवः निकः हना বৈ ভুক্তি মু ক্তিদা:॥ অযক্ষান্ত চত্ত্-र्था जु एक वर नामान। निष्कियू ॥ #॥ সর্বণ নব ভবণ শুেষ্ঠণ তত্র বজু মরি-ছিদি। যমলিঙ্গণ মহাভূত্যৈ সৌ-ভাগ্যায চ মৌক্তিক। পুষ্টিমূল মহানীল জ্যোতি ন্তীর সমুদ্ভব ।।। व्यार्भक अलमभरेका रेज्जम मूर्या-কান্তরণ। চন্দ্রাপীড় মৃত্যুজিত স্থা-विकः अर्वकागरः ॥ हन्तु। भी ७ हन्तुः কান্ত মিত্যৰ্থ: ॥ শ্লাখ্য মণিজ॰ শত্রক্ষযার্থ মৌক্তিক তথা ৷ যৎ-সলিধানাৎ শ্লরোগনাশ: স শ্ল মণি:। আপুণ্র• হীরক• জ্ঞেব•রো-गङ्गाकिकान्त्र । मृडक्ट भूकः नः जीर्थ रिवर्म्याः मञ्चन्र्रह्य ॥ नीन नन्त्री भूर एक्ट य मार्टिक म-র্বকানদ ৷ ইতি সারস গুহেবিশেষ: ॥ 🗱 ॥ মহাভুক্তিপুদ• হৈম• রাজত॰ ভূতিবৰ্দ্ধন'। আরক্ট' তথা কা'স্য' **मृ**ण् जामाना मुक्तिपः ॥ व्यादक्षेः शिख्न'॥ जिलू भी भाषत्र निक्'। শত্ণা° নাশনে হিত'। কীর্তিদণ্ काःग्रुबः निक्रः द्राबठः भृष्टिवर्षः-नः॥ रेभखनः जुक्ति मुक्तार्थः भिन्न-कः नर्वनिष्करः। निभुक मश्रेथाजु-**নির্ফাত•। ইতি কালোত্তরঃ।!,⇔॥**. পিত্ণা মুক্তযে লিঙ্গুণ প্রাণ রম্ভত-मसुवः। रिश्व**डः** मठात्वाकमा **भा**न थ्राय भूकाय भुमान्।। भूकाय खा-মুজ লিঙ্গ পৃষ্টিকামো হি মানব:। ইতি শিবনারদ সংবাদ: ॥ 🚓॥ जागामिलिक्श्बन्छ कली उर्श्वा । ভানুলিঙ্গ• কলৌ নার্ছেৎ রৈভ্যস্য भौभकना है। इक्तिन्त निक्क শহ্ৰ কা স্যায়স তথা ৷৷ ভুষ্টিকাম-स मञ्ज विद्य भिद्य मस्य । कीर्डिकामा यहामिजाः निकः काः-म्य ममुख्य ।। শञ्माद्रग कामस्य विञ् वोह्मय अहा। जहा भी-नमयः लिक नागुक्षात्मा १ ईरिय নর: ৷৷ ইতি মৎস্যসূক্ত মহাতস্ত্রণ াা#া স্থিরলক্ষীপুদ• হৈন• রাজত• চৈব রাজ্যদে । পূজাবৃদ্ধিকর রাঙ্বণ তামু भागृः भ्वर्षान ।। विष्वयकात-ণ কাংস্য রীভিজ শত্রনাশন ৷ রোগঘু শৈশক লিক্ষ নায্স শতুনাশন ।। অপ্তলৌহন্য লিঙ্গ वश्रद्रागक्षयावरः। जिलोर मस्रवः

লিঙ্গ বিজ্ঞান পুতি সিদ্ধিদ ॥ ইতি লক্ষণসময়য: ॥ 🗱 ॥ 🔊 পু मः वजुषः लिक् भिलाकः अवनि क्तिरः। थाठुकः थनरः সाक्षामराककः ভোগসিদ্ধিদ ৷৷ ইতি লিঙ্গপুরাণ ।।#।। গন্ধপুস্পম্য । লঙ্গে তথা মাদি विनिर्मिठः। कसूत्री मञ्जवः निकः थनाकाङ्की भुभूक्षयण ॥ निक् • भा-(द्राव्याण्यक क्ष्रकान्य भ्राप्य । ক্যন্তিকামস্ত সতত লিঙ্গ স্কুম সম্ভব•়।। খেতাগুক সমুক্তৃত ন-**श**ातृषि विवर्षान । शात्रगामाज्जिन विञ् • क्का ७ क्र मगु छ व • ॥ यक्र कर्म-মসমূত•॥ইতি কালোত্র:॥⊯॥ পার্থিবে শিব প্রাযাণ সর্বসিত্মি गुडा खद्द । भाषात भिवभूका-याः दिख्नः कन्नशीत्रजः॥ सर्नावास् চ পূজাবা॰ শত্বা॰ নাশন মত।। সর্বসিদ্ধীশ্বরো রৌপ্যে ফল তলা हर्था ।। जास् भूष्टि विकानीया का राष्ट्र ह ध्रम् क्रयः। शङ्गायाक लक्ष खग॰ लाकाया॰ त्रागदान् छ-বৈৎ ৷৷ খুঃটিকে সম্বসিদ্ধিঃ স্যাত্ত-थ। भद्रकछ शिर्य । लोइनिस् तिराभा नामा कामर जमानक्क ॥ বাল্কাধা কান্যসিদ্ধি গোম্যে রি शृहिःमनः। नर्दलिक्षमः श्राहाजाः।

ধর্ম কামার্থ মোক্ষদ•॥ ইতি মাতৃ-কাভেদতত্ত্বে ১২ পটল:॥ৠ॥ বুন্ধা সংপ্রযেমিত্য লিক্ শৈলম্য শুভ । তস্য সংপূজনাত্তেন প্ৰাপ্ত <u> युक्त पु युक्त ।। इन्त</u>्री जनश विक् विष्युः मनर्हरय मना। विष्युष्यः शाः গুৰান্ তেন সো ২ভ্ডুতৈ কপাল-কঃ।। স্থাটিক নির্মল লিক্স বক্ণো २७। हरिय मा। एव उद्यक्त पुर হি পাপ্ত তেজো বলান্বিত ॥ ইতি यह्कर्मभी शिका शृंख निवधर्मः ॥ #॥ পূজ্যেৎ পাথিবে লিঙ্গে পাষাণ লিহ্নকে হথবা। স্বৰ্ণলৈহ্নে হথ বা দেবি রৌপ্যে ভামেু চ কা॰ স্যকে ॥ **भातरम् वाथ भक्षायाः ज्याहित्क मत्र-**करा ६ शिया। कार्यप्राख्या (नोइ-লিঙ্গে ভমনিমিতিলিক্সকে॥ বা-লুকানিমিতে লিঙ্গে গোম্যে বাথ भूकारम् । मः कारत्र विना पि वि भाः ষাণাদৌ ন পুজয়েৎ।।ইতি মাতৃকা-ভেদভল্রে ৭ পটল:॥ ইভি শিব-विक्रियां १ मुव्यां १ । । । । । । শিবলিহ্ন সাক্ষারঃ। সাক্ষারঞ্জ পুর-ক্ষ্যানি বিশেষ ইছ যন্তবেৎ। রৌ-প্যঞ্জ মূর্ণলিক্ষ্প স্থৰ্ণপাত্তে নিধায় চ-।। তमामुखाना उल्लियः मूथमाया **रिन्ज्यः । ज**ुञ्चरकन न्नाशिष् काल

क्ष्र भूभृद्धाय ॥ (वाज्यानाना हारत्व (वर्गाञ्च भार्वजीः यरहरू। ভষাদুভোল্য তল্লিস্থ গঙ্গাতোযে **मिनज्य• । जर्जा (वरमाक्क विदिना** म कात्र माठाद्र मुधीः ॥ भूरबीक वहरेन: ফলবিশেষকামন্যা নানা বিধ্বিত্ৰপ্ৰোক্তা সাচ প্ৰা ॥ निष्ठः मनक्राः अर्यप्राख्याक्रिक् मलका । रेनर्घाशीत ভविद्यावि রধিকে শত্র বর্জন•॥ মানহীনে বি-নাশ: স্যাদধিকে চ শিশুক্ষয়: । বিস্তারে চাধিকে হীনে রাইনাশো **ভবেজুর• ॥ भीठेशीत जू मा**र्तिनुउ• **नि**द्याशीत अवकार:। तुक्कम्ब दि-शैल চ द्राङ्धाः द्राष्ट्रेशः नम्प्राङ्घ ॥ खना गर्व भुराद्वन निप्तः सर्वतार जुनका । इउप्राप्ति সূলক্ষণ विञ्रोगात कनराज्य गुळ॰ । ইতি মাত্কাভেদভম্রে ৭ পটলঃ ॥ 🗱 ॥ (मब्रुवाठ । इन्म्रिय ब्रह्रिडा प्तयः भूनाक्षशः महानियः । आकाः রো নান্তি দেবস্য কিং তস্য পূজনে ফল ।। শিব উবাচ। প্রেতে পুলা মহেশানি কদাচিয়ান্তি পার্বতি। ক্দুস্য পর্মেশানি রৌদী শক্তি রি-जीविजा ॥ वोषी ज भवतमानि ध्याम्या व्यवनी ভবেए। वज्रञ

পরনেশানি বুজ বিফু শিবাত্মিকা।। मार्फाजियवागाकारितः मियः (यष्टे) সদা স্থিতা। শক্তিণ বিনা মহেশানি প্রেত্তত্ব ভস্য নিশ্চিত ॥ শক্তি ञ्च॰रयाग्याख्य कच्चंकर्छा जनात्मितः । অতএব মহেশানি পৃষ্ধবেছিবলি-ক্লকে।। ইতি সশক্তিক শিবলিঙ্গ-পূজন ফল•। ইতি লিস্বার্চনতত্ত্রে २ भनेनः ॥ 🕸 ॥ (एगू)वारु । विक् भूगान (ततन कथाय गरि भूखा। পার্থিবে চ শিলাদৌ চ বিশেষো য-ত্র যো ভবেৎ, ॥ ইঃশিব উবাচ। মৃ-ব্ৰি চাতোলক গ্ৰাহ্য নথবা ভোক-घग॰। এত্তদন্যমন্ত্রী ত কদাচিদ্রপ পারতি॥ ইতি মাতৃকাতেদ তব্রে १ भटेनः ॥ 🕸 ॥ यभि । गृजिना তোলক পুাছ নথ বা ভোলক দ্বৰ । ত্রিস্ত্রস্য পুনাণেন ঘটন কার্যে-ছ্ধ:।। স্বাঙ্গুপর্মাণন্ত কৃত্বা লিঙ্কু शुभूकत्वर । म्रानिविक्यदित भु-মাণ পরিকীর্ভিত।। ফলম্ভ মবা-প্লোভি অন্যথা চেত্তৰন্যথা। ইতি ষ্ট্ৰুম্বীপিকা ধৃত বিশ্বসারতক্র ॥ 🗱 ॥ निष्म (वम्रा॰ उथा भीर्छ সমসূত্রনিপাতনা**ে। সম**ঞ্চিব বি कानीवाधिन्जीकद्ग द्विषः॥ इति कालाखतः॥ 🗱 ॥ मृखिकारज्ञात्र

बाक्षनामीनाः भूबाकलम्। भूमेखद्यः येथा। ठजूरी भार्थिवः निकः मृष्त्रा ভেদেন পার্রতি। শূন্ন রক্ত• তথা **भीड• कृष्ण्य भद्रासम्बद्ध ॥ मृ**ङ्गस्र ্বান্ধণে শস্ত ক্ষত্রিয়ে রক্ত মীষ্যতে । भीउस रिमाज़ार हो महाद क्यः भूषु भुकीर्खिङ ॥ उथा । भूम हि भार्थिवः नियः निर्याय यस भूकदर् া সএব পরমেশানি ত্রিবর্গ ফলভা-युद्द ॥ ऋजियस वद्राद्वार वज्रः নির্মাণ পার্থিব । প্রবেৎ সতত दस्र विवर्ग कननाश्याट ॥ इति उ॰ शार्थिद (दिव निर्माग यस भू अरहरू। म ह रेताना । महिनानि विदर्शकन ভাগ্যবেৎ ॥ ফৃঞ ছি পার্থিব নিঙ্গ निर्माय यन्त श्वायट । म मृषुः भन्न-মেশানি ত্রিবর্গ ফলভাগুবেৎ ॥ ইতি निङ्गार्धन उट्य ७ भ देनः। 🗯 । निना-लो ह भारमानि श्रुवाक कवारायकः । यञ्च धनान (परविन यहा इसादि मानकः ॥ कत्मन (प्रवापति कनः বহুবিষ লভেৎ। স্থলাৎ স্থলতর• লিস্ ব্দুাফ পরনেখর ॥ প্জ-নাদ্ধারণাদেনি ফল বহুবিধ স্ত । স্থলাৎ স্থল মিডি পার্থিব লিকে-ত্রপর'। মৃতিকা ভোলক মিতি विल्मबवद्यार ॥ मिला माहिक

মরকভাদীনা॰ পঞ্সুত্রীকরণ মুক্ত• यथा। निविनिक्ता रसान उसान मक मन्द्रारशः।(यान्द्र<u>ग</u> निल रचान् তদধোপি তথা ভবেৎ॥ ইতি লিফ্-**পুরাণ** ॥ 🕸 ॥ लिक्ष्म । या पृथिखातः পরিণাহো ২পি তাদৃশ:। লিঙ্গ্স্য দ্বিগুণা বেদী যোনি স্তদৰ্দ্ধ সম্মিতা॥ সন্বী তাঙ্গু প্ৰতো হুম্ব ন কদাচিদ্পি कृष्टि । ब्रङ्गानि निवनिर्माण मान মিছাবশান্ডবেৎ ॥ ইতি ভব্ৰান্তর• ॥ 🕸। লিক্ষুবুঙ্গ জি র্যথা। লাকা 🗝 लिय गिठाएः भृषिवी उगा भी-ठिका। जालयः मर्दारकानाः लयना-ল্লিন্থ মুচ্যতে ॥ ইতি স্বন্দপুরাণ ।। 🗱 ।। विक् महिना यथा । भिव উবাচ । न जुष्यान्यहिं (जा २ ही या॰ भुञ्ज यूभ निरविधिनः। जिल्ह २ हिर्छ তথাত্যর্থ পর তুষ্যানি পার্বতি॥ এষ দেবি পুরা কৃত্যে জীনো হহ॰ गर्ब रेमवरेजः । निक्य पालिक नि তু। क भारतामृत किमरेतः ॥ भुष-हामि पिव॰ पिति या मिल्लाईत-রত:। ত্যক্তা সর্বাণি পাপানি নি-र्जाहा प्रकल्ययः ॥ मध्यमा मध्य-ক্ষারো মানেব পুতিপদ্যতে । ইতি বীরমিত্তোদযধৃত ফন্দেপুরাণ ॥ৠ। मुवाविभाषा भूकामि कन दथा।

বস্ত্রগুতজলৈ লিঙ্গুণ সুপিত্রা মম মা নবা:। লক্ষাণাঞ্চাত্মবেধানা ফল মাপ্মোতি সত্তমঃ॥ সৃগন্ধি চন্দ্ৰে র-সৈ লিঙ্ক মালিপ্য ভক্তিত:। আ-লিপ্যতে সুরস্ত্রীভি: সুগদ্ধৈ র্যক্ষকর্দ নৈঃ ৷৷ ইতি ভবৈৰ ৷৷ঞ্চা৷ লিঙ্গপুত্ৰা-कद्रारमाय उट भूकाक्वक यथा। विना निकाईन यम् काला गहु उ নিত্যশ:। মহা হানি ভবেত্তস্য দুর্গ তস্য দুরাত্মন: ৷৷ একতঃ সর্বদানানি ব্ৰতানি বিবিধানি চ। তীৰ্থানি নিয-भा युद्धा लिङ्गाताथन (मुक्ठ: ॥ न লিন্ধারাধনাদন্যৎ পুরা বেদে চতু-র্ম্মপি। বিদ্যুতে সর্বশাদ্রাণা মেষ এব স্নিশ্চিত:॥ ভুক্তি মুক্তিপুদ॰ লিঙ্গ বিবিধাপ নিবারণ। পূজ্যি-ত্বা নরে৷ নিত্য শিবসাযুজ্য মাপ্ন-ৰাৎ।। সৰ্ব মন্যৎ পরি ভাজ্য ক্রিয়া জাল মশেষত:। ভক্ত্যা পরম্যা विषान् विक भिकः भुभू ज्ञाय ॥ **३**ि ऋन्त्भृद्वानः ॥#॥ अत्रत्मश् म হসু। বিজপেয় শতানি চ। নছে-भाईन भूगामा कला॰ नाईछि (याउ-শী ।। ইতি নৎস্যস্ক্তে ১৬ পটলঃ।। বহুনাৰ কি মজেন চরাচর মিদ জ গ্ৰা শিবলিফ্ণ সমভ্যৰ্চ্য স্থিত মত্ৰ न जः नयः ॥ ইতি जिक्क्यूबागः ॥ 🛊 ॥ 📗

শিবস্য প্রনাদেবি চতুর্বাধিপো ভবেৎ। অষ্টেশ্বর্য্যে নর্ত্য: শস্ত্র-नाथमा भूकनार ॥ चयः नाजायनः পুোকো যদি শন্তঃ পুপূজ্বেং। স্বর্গে মর্ভ্যেচ পাতালে ধে দেবাঃ স-স্থি-তাঃ সদা ॥ তেষা পূজা ভবেদেবি मञ्जाथमा भूजनार । ইতি लिह्न-भूद्रागः॥ ऋ॥ यमाद्र थेल् मःमाद्र সারনেত হতু প্রথা। কাশ্যাণ বাসঃ न**ाः** मञ्जा गङ्गासुः **म**सुभूषनः ॥ इंडि यऍकमरीभिकाष्ठ्र कालाख-রে নারদবাক্য়ণ ॥ 🗱 ॥ অগ্নিছোত্রা ব্রিবেদাশ্চ যক্তাশ্চ বহু দক্ষিণাঃ। निविद्याहंनरेत्रुए काहेर्रामः নাপি তে সমা: ॥ ছিন্বা ভিত্ত্বা চ ভূতানি হিত্ব। সর্ব নিদ জগৎ। यरकाप्त्र दिक्शाकः न म भारभन লিপ্যতে ৷৷ অনেক জন্মাহসু• ভাূা-ন্যনাণ চ যোনিষ। ক: সমাপ্নোতি रेव मुक्ति॰ विनालि शाईन॰ नद्रः ॥ ইতি কন্দপুরাণ ॥।।।। ব্রাহ্মণ: व्यः जिया विना । न्या वाना न्याना । প্লযেৎ সভত বিস্ব তত্ত্বাজেণ সাদর• ॥ ভত্তনাস্ত্রণেতি যথাযো-গ্য়• বৈদিক তান্ত্ৰিক নাম মন্ত্ৰেণে ত্যর্থ: ॥ ইতি বীরমিত্তোদযধৃত ক न्त्रभूद्रानः ॥ # ॥ मूल तुक्ता उथा

मर्चा विकृ जिज्वतम्बद्धः । कर्मा--अति महारत्यः भुगवार्थाः अमानि-वः ॥ लिक्राविभी गरापियी लिक्षः माकाचार्यंतः। उत्याः भुभूकना-ি মিত্যুণ দেবী দেবশ্চ পুজিতৌ।। ইতি **लिङ्ग भूतागः ॥ # ॥ व्यथ भातमः শि**विषक् **भाक्षाञ्चारः ।** क्ष्यािकर्मयः महानिक् रेकनाम नगत शिए। ত্সৈয়ব যোডশাংশৈকঃ কাশ্যাণ বিশ্বেশ্বর: ক্সিড: ॥ পূর্ণলিক্ষণ মহে-नानि निववीकः न हान्या। निना भाष्य यथा ठकः नक्षी नादायगः भः র ।। পারদস্য শতাংশৈকো লদ্ধী নারাযণো ন হি।পকার বিফুরপঞ্চ আকারণ কালিকা স্বৰণ ৷৷ ব্লেফণ শিব• দকারঞ্চ বুক্ষরূপ ন চান্যথা। পারদ• পরমেশানি বুল্ধ বিষ্ণু শিবা-जाक ।। या या बार भातन विकः नवर नेसु त्रवादः । चाङ्यमस्य या पिति वक्षा यनि भूक्रपट् ॥ সএব ধন্যে দেবেশি স ক্তানী সচ उद्भवि । म वुक्तत्व म भनी म ्रवाका ভূবি প্রগতে ॥ অণিমাদি विज्जीना भीचदः माध्यकाज्यः । #। अय भारतमिकिन्सिर्माण विवि:। भावार निविन्यांत नाना বিষ্ণ যতঃ পূথে। অত এব সহে नानि मान्ति चलुरवन हात्र ।। मान রদ শেববীজ হৈ ভাডন হি ন: कात्रस्य । जाउनाम्नि उनामः न्या-खाउनाषिखशीनञा ॥ ठाउनाप्नाग युक्जवः जाप्रनात्रवः ज्यदः । इजि মাতৃকাভেদ ভস্তে ৮ পটল:।। #॥ অথ শিবলিফ্লেৎ পত্তি:। বুক্ষোবাচ । भुत्रा दाः हक्ष्णः ब्हाद्वा दुम्पूनः পুকাশিত। ইদানী যোগিন জ্ঞা-दा कथ्यानि न সংশयः॥ অভিভগ্ন-মতিগুহা মতিগুহা ন সংশ্য: ৷গো-পিতব্য গোপিতব্য গোপিতব্য ত্ববাপি চ।। শস্ত্রনা গোপিত তত্ত্বে তজ্ঞান্তরে পুকাশিত । শৃণু তৎ कथ्याम् । भावधानावधातय ॥ भ-नाराते विविधाः मना स्या मृष्टा हि नावन । एनव नानव रिन्छ्याण्ड शक्तर्व वक ब्राक्तमाः ॥ मर्खि खीवमगाः (मुंधा रेमणूनाड्डायाज भुडा। (कव-न हि निवः मग्रु मात्रगुरु कर्मान ।। কদাপি ন মন फेक्क पृष्ट्वी চিন্তাপ-রাঃ সুরা:। নামেক শরণ জগ্ম: সে-न्। (त्वाज्ञापयः ॥ भुनिभाज्य स्व-তি॰ কৃত্বা উপতস্থু: সমাহিতা:। (शाहुः शाक्षवयः मार्च ख्याम्गन्नम मानमाः ॥ (प्रवाप्ता छेतू:। छेबा-হিতা ব্যুণ সর্বে ভ্রানপি জনাদনঃ।

क्विन हि स्ट्राप्तिता (स्वरम्राया জগৎপতিঃ ৷৷ বিবাহে নমন ক্ষকে ক্ষা বা মোহুতে শিব:। উপায় **हिन्छयं** विरक्षा मनात्रः कथभीश्वतः ॥ যেন স্যাজ্জগতা নাথ স্তৎস্ক্য मयानित्य । इंडि इद्वा वह खिवा॰ ততো বুদ্ধা পুজাপতি:।। সহ তৈ र्गक्डाक्र जगाम कमलामनः। छ-বাচ ড॰ জগলাথ• বিষ্ণু কমললো-**চन॰ ॥ दुष्कावाह। मृक्षा भया मृद्र**-শ্রেষ্ঠ নানুষা মৈথুনোভবা:। সর্বে-किंगा विना मञ्जुः यदकर्खवाः यनव म ॥ श्री छगवानू वाह । अ छः नश् **महावारहा** शहाम खु मङ्• ब्लिव• 1 কর্ত্র্ব্য স্চিত তেন অনুজ্ঞাতৈ র্যথা বিধি॥ কিন্তু তত্মোগ্য নারীন্ত বি-बारार्थं भुकन्नव। बुक्तावाह। एकः গছানহে সর্বে অনুক্রাপ্য ত হরে। व्याम्। मिकि॰ महाभाषा॰ भुमान्यः তু বৈ বযু ॥ কন্যা ভূত্বা নহাশন্ত•ু নোহ্যিষ্যতি শঙ্কর । এব মৃক্ত্বা ত্ ৈ: সাৰ্দ্ধ হ্বগ্মত বিধি কেশবৌ॥ ৰত্ৰ দক্ষো মহাতে**লা: প্ৰো**চতু: কা-ৰ্য্যমাত্মন: । উবাচ দক্ষণ তদ্মুক্তণ তগভগু॰ পুদ্রাগতিঃ।। বুদ্ধা विष् **শ্চ নৰ্ব্বে ভেপসা** ভোনবেছিবা•। व्याविबज्य मार्फ्यो कानिका बन्ती

খন্নী॥ প্রান্থ মাণবঃ কিমর্থন্ত সমূৎ কণ্ঠা: সুরাসরা:। দেব্যবাচ। শীঘু• ৰূপ• যথা কাম• ভবভা• গ্ৰাথনে क्ल । अठिद्राट उट भुमानानि সভ্যু সভ্যু ন সংশ্ব: ৷৷ দেবাদ্যা উচু:। ভূषा जू मक्तकन्ता षः भक्त-র• পরিমোহ্য। অমাক বাঞ্ড-रिक्षड ८ इन्ह मिष्कि गमा नित्व ॥ **७**ड९ भुद्दा वह (इवा॰ निदीक्त) কমলাসন । উবাচ বিভাষাবিষ্ঠা कालिका जगरी खड़ी ॥ सिवृद्धि । শন্ত রদ্যতনো বালঃ কি: মা: খ-ভোষ্যিৰ্যুতি। মন যোগ্যু পুনাং**স**-ন্ত অন্য বৈ পরিকল্পন। বুক্ষোবাচ। **শস্তঃ সর্ব**গুক্ত দেবো হুষ্মাক পর-নেশব:। মহাসন্তে মহাতেজা: স তে তোষ• করিষ্যতি ॥ শান্ত্রভুল্যঃ भूगाबाङ कराहिराल **द**बहिट । ইত্ত্ৰো বুন্ধণা দেবী বাঢ় মিত্যাহ (5 अंशी । एकाय एका प्रवा उवाठ উচ্যতা• বরঃ। দক্ষোপি দৃষ্ট্ব। ভা• (मर्वी· था कर्ज्धता भद्राः ॥ थर्दाः **ज्यापत्री॰ व**राष्ट्रक्यावृज्किष्ठिनी॰ । নীলোৎপল কপালাত্য কর্যুণ্মাণ वद्रभुषा ॥ कृष्ठकृष्ठ मिवाज्ञान **प्राप्त मकः भुका भितः। मक्क** उदार । यहि स्म बद्रमानि जुः रहवानामि

बाक्ष्ठिः। भनीय जनया ज्वा मह्नद्रः কিল মোহয়।। তথেত্যুক্ত্বাজগদ্ধাত্রী व्यष्ठकानः भंडा छन्। (एवंडाम्ह ভতো নত্বা যত্র তেপে তপো হর:॥ সম্ভীকা পরমাত্মান উপতস্থু জগৎ-পতি । পুণেমু স্বষ্কুব ভক্ত্যা প্রাহ-र्गप्तपञाधिनः ॥ (एवान्त्रा छेहः । जगवन् (पवरपरवण लाकना । महा-**भ**य। वयः नार्त्व जू मञ्जीकाः मृष्टेप्रर्थः পরমেশর॥ অত ত্ত্ব স্ব ক্ চোদ্বাহ্ব সৃधित्रका यथा खत्र ॥ मकारगार गराकानी मायि अदिकीर्सिज।। কাভাতে প্রীত্তয়ে শড্ভোসা তে যো-ग्रा न मःभगः।। द्वेश्व डेवाह। छ-বতা: গ্রীভণে সম্যক্ করিবের নাত্র স'শ্য:। উল্মোগঃ ক্রিয়তা ক্লিপু বিবাহায মনৈব ছি ॥ ইত্যক্তান্ত नूबाः मर्ख केथाद्वन महावाना। क्छः কৃত্যা গভাঃ দৰ্বে ভবনং সৰ্বসূদ্রে ।। मकाय कथवानामः नक्षात्रामः দিত্ত বচ:। ততো বিবাহণ নিৰ্ম্বৰ্ত্য কৃ তক্ত্যা যথা গতাঃ।। গতাঃ সর্বে নহেশোপি সত্যা সহ ভাগা গৃহ•। জগান রেমে সভ্যা চ চির॰ নিভর गानमः॥ ध्यथ काला कनाविखु म-ভ্যা সহ মছে খবঃ , রেমে ন শেকে ত तिः ह् भठी भाषा खवखना ॥ खेवाठ ।

मीनया वाठा (मवरमव कशम्खक । ভগবন্নহি শক্নোনি তব ভার• সৃদুঃ-नर॰ 11 कमम मा॰ महारित् क्ला॰ व्यक् सग्रह्माउ। निम्मन्। বচন ও-न्। जगवान् व्यज्युकः ॥ निर्देतः इनग॰ ठःक गाउ॰ निर्वय मानमः। কৃত্বা সম্পূর্ণ রনণ সভী চ ভ্যক্ত-रिनथ्ना। উত্থানান मन महत्क छेज-या एउड উडम । भभाउ ध्रमी-পৃষ্টেতৈ ৰ্য্যাপ্ত মথিল জগৎ।। পা-**ভা**त्व ভূত**ा य**र्ग **मि**वनिका सना ভবন্।তেন ভূতা ভবিব্যা**শ্চ শি**ব-लिकाः भाषानयः॥ यञ लिकः उज र्यानि र्यंब रयानि सञः । छै-खर्या रेम्घव (अरकाखि: मिवनित्र• ব্যজাষত।। ইতি শিবলিঙ্গোৎপব্তি কথন মিতি নারদপঞ্জাত্রান্তর্গক ভূতীযরাত্রে পুথমাধ্যায়ে নারদ বুক্ষ न वारः॥ #॥ निवित्रभूकायाः সর্বেষা মধিকারো হথা। শাক্তো বা বৈষ্ণৰো বাপি সৌরো বা গাণপো ९थदा । निवाईन विश्वीनम् क्उः निष्कि र्ल्यट शिर्य ॥ यनात्राध्य ह भा॰ (मिव (या **२**ई(याप्त्वडान्डव़॰ । न गृङ्गाञ महारहित भाभः मङ्ग वुष्त्रः भूतः ॥ भवं श्राग्नामः (एवि निश्वामि करना हि। कनानि वर्षः

লিঙ্গু

ধান্যের পুস্তাণ্যের যথা বিধি ॥ সু নেক সদৃশ চাম নানাবিধ নছে শ্বরি ৷ স্পাদিক মহেশানি যদি न्तरार नागदाशमः॥ यम् छः शूम्र বৈবেদ্য সর্ব বিধাসম ভবেৎ। निवाईन विश्रीता यः भू अत्याप्त्व-ভান্তর• ৷৷ বিশেষত: কলিযুগে স নর: পাপভাগুবেৎ। ইতি উৎপ-ত্তিতন্তে ৬৪ পটলঃ॥#॥ সর্বপূজা ज् (राविन निञ्चभूका अवः अरः । লিস্প্রাণ বিনা দেবি অন্যপ্রাণ करत्राञि यः ॥ विकला उन्। भूका স্যাদন্তে নরক মাপু যাৎ। তমালি-क् गर्मानि भुष्न भित्रभूकार्य ।। যদুাজ্য লিফ্পজাযা রহিত। সভত পিৰে। ভদাজ্য পভিত মনেঃ বিশ্বাভূমিসন শ্তে ॥ বুন্ধ विष्ठे क्विञ्चरया (पित यपि जिक्नः न भूकायः । उएकारा भद्रामानि ত্রয় শহওালত। মিযুং।। শুদুশ্চ পর-भिणानि जना म्कत्रवक्तरर। मि वाईनल एरदिण यश्चिन (गर्ह विंव-র্জি ত॰ ॥ বিষ্ঠাগর্ত্তসম॰ দেবি তদ্গৃহ॰ বিদ্ধি পার্বতি। অন্ন বিধা পয়ে। মুত্র ভিমিন্ বেশ্মনি পার্ভি।। भारका वा रेवकरवा वालि रेमरवा वा शत्रामधितः वास्ति विकः भूभूक्राः

श विन्न शिव र्वज्ञानत्।। श्रम्हाप्तं। सह्मानि निक्रः शुर्थाः भुगृब्धाः । जनाथा मृजय मर्वः भिवभूबाः विना शि्रा।। ইতি निक्रार्धने उद्धाः । श्रेनः॥

निक्रकः भु॰ किशिय्वकः। इंडि मद्रिम्का॥

निक्रविकः भू॰ किशियंत्कः। ই छि
भप्रानित्रका ।। निम्नुवृक्षिकद्रगः।
छानोषदः यथा। कर्षे छनः छझाउकः नृङ्जीकन मार्फिमः। वस्नरैनः मार्थिजः निश्चः जिनः
विवर्षात्र ।। यशिष्ठ । क्षष्ठ मार्य
महीद्यात्र ।। यशिष्ठ । क्षष्ठ मार्य
महीद्यात्र ।। यशिष्ठ । क्षष्ठ मार्य
महीद्यात्र ।। यशिष्ठ । विक्र विक्
भागिरकाद्य र्वनः मृङ्। निक् वाङ्
छनानाक्ष कर्नर्या सिक्ष कृष्ट्रविष्ट ।।
इंजि गाक्रार २৮० यथु।यः।।

विक्रविक्षिती छी व्यशामार्गः। ইতি
भद्रविष्युका।।

লিক্বৃত্তি: পু॰ জীবিকার্থজটাদি
চিক্সধারী। তৎপয্যাম:। ধর্ম ধৃজী ২। ইত্যমর:।। জীবিকাদি
নিমিত্তক্ত যোবিভর্ত্তি জটাদিক।।
ধ্যাধৃজী লিক্ব্তির্দ্ধি তত্র নিগ;
দ্যতে।। ইতি শদ্যক্সাবলী।। . मित्रानिका जी कु पूर्विकः। उৎ পर्यतायः। भीना २। ইতি शातावनी লিহিনী জী লতাবিশেষঃ। পঞ্ গুরিয়া ইতি হিন্দী ভাষা। তৎ-পর্য্যায়ঃ। বহুপত্রী ২ ঈখরী ৩ শি-ববল্লিকা ৪ খ্যম্ভঃ ৫ লিঙ্গসম্ভূতা ७ रिन भी १ हिज्यन। ५ हा खानी २ লৈঙ্গজা ১০ দেবী ১১ চণ্ডা ১২ আ शब ख़नी >> लियजा >8 लियजी ১৫। অস্য গুণাঃ। কটবুণ। উফবুণ । पूर्वकृष्यः। ब्रह्मायनव्यः। अर्विशिषा क्रब्रु॰। क्रियुद्ध॰। वन्त्रुद्ध॰। ब्रञ নিযাননত্বঞ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। বিঙ্গী প• হস্তী। ইতি জটা বরঃ॥ धगपुत्री। यथा। जानिकी निक्-বেশেন যো লিহ্ন মুপজীবভি। ञ विक्रिमा॰ इद्धारम डिर्मराग्रामी চ গছভি॥ ইভি কৌয়ে উপরি-ভাগে ১৫ অখ্যায়ঃ ॥

লিপ ঞি ঔ শ প ঞ লেপে। ইতি কবিকল্পদনঃ।। ঞি লিখো ২স্তি। ঔ লেখা। শ প ঞ লিম্পতি লি-ম্পতে চন্দনেন গাত্র• সুখী। ইতি দুর্গাদাসঃ।।

লিপঃ পু॰ লেপনকর্তা। ইতি লি॰ প্রাতোঃ কর্ত্তরি ক পুত্রগ্রেন নি-মুন্ন•।।

निशः छो निथिउवर्गः। छएशर्यायः। निथिउः २ अक्तर्रमः इ।नः ० निविः ८। ইত্যমतः।। निथनः ६ निथनः ७ अक्तर्रिन्यामः १
निशी ৮ निवी २। ইতি जहादतः॥
जक्तर्रन। २०। ইতি जहादतः॥
निशिका २२। ইতি अप्तर्द्वावनी
॥ निथिउभ्द्यकानि। ইতি কেहिनिত ভরতः॥

লিপিকর: পূ॰ লেখক:। ইত্য-নরটীকা॥

লিপিকা জী লিপি:। ইতি শব্দ রত্মবলী।।

লিপিকার: পু° লেখক:। ইত্য

লিপী স্ত্রী লিপিঃ। ইতি শন্দ-রহাবলী।।

লিপ্ত তি ভক্ষিত । কৃতলেপন ।
তৎ পর্য্যায়: । দিক্ষা ২ । ইত্যামর:
।। বিলিন্দািত ৩ । ইতি শক্ষা
রত্তাবলী ।। চর্চিত ৪ । ইতি জটাধর: ।। নিলিত । ইতি সিদ্ধান্ত ।
কৌমুদ্যামুণা দিক্তি: ।। বিষদিকা
। ইতি মেদিনী ।।

লিপ্তকঃ ত্রি বিষাক্তবাণঃ। ইত্য: মর:॥

विशिका जि मुख्या रवा दिवस्मा

हजुर्था **२ भ: ज्**वनारमे लिखिका लिवी खी हजुक अब्हिट। ইতি मटक्छा वज्ञावली। मुकावली।।

निञ्जा जी ইहा। ইত্যমর:॥
निञ्जः वि नक्षिहः। उৎ পর্য্যাतः
। গৃধ্ন: ২ গদ্ধন: ১ তৃঞ্জ ৪ লুক:
৫ অভিনাসুক: ৬ লোলপ: ৭ লোল্ড: ৮। ইতি হেমচন্দু:॥

लिम्मः भू लिभनकर्ता । इति लिम्मधाखाः कर्त्वति म भुज्य नि ञ्चमः । ইতি मूक्षवाधवराकत्र गः ॥ लिम्मिः भू मिन्नः । ইতি हात्राः विली ॥

লিম্পাক নী নিষ্কবিশেষ:।
পাতিলের ইতি ভাষা। তস্য গুণা:
। সূর ভিত্ব । স্বাদৃত্ব । নাত্য প্রত্ব ।
ভক্তরেচনত্ব । বাত শ্রেমাহরত্ব ।
হৃদ্যত্ব । ছিদিন্নত্ব । নাতিপিত্ত কৃত্বঞ্চ। ইতি রাজবল্লভ:।।

लिप्पाकः शृ॰ क्षषीतः॥ थ्राः। इंडिभयत्र द्वावनी॥

লৈবি: জ্রী লিপি:। ইত্যমর:॥ লৈবিকর: পু॰ লিপিকর:। লিপি॰ করোতি ইত্যথে সৃষ্ঠ ইত্যনেন কর্ত্তরিট পুত্যযেন নিম্নম:॥

विविक्रतः भू विभिकातः। इंडा-भत्रहोकायाः जानुनीक्षिजः॥ নিবী জ্রী লিপি:। ইতি শব্ . রম্বাবলী।।

निण ७ ग छे छोह्य। ইडि किनकन्नक्रमः॥ छोह्यभन्नीकावः। ७ य निण्याद्यभर्मः कलो। छ निष्टां। ইडि एगाए। मः॥

निण ण छे गडाः। इंडिकवि-कन्नक्रः॥ निण्डि। छे शनिक्रः लिक्षे। ইভি দুর্গাদাসः॥

লিম্বঃ পু॰ নর্ত্তকঃ। লমধাতোঃ
কর্ত্তরি কৃত্ পুত্যুয়েন নিপাচনাৎ
সিদ্ধাঃ। উপধাষা ইত্তনপি। ইতি
সিদ্ধান্তকৌনুদ্যামুণাদিকৃতিঃ।।

निरु न क छ सार। इंडि किंद-कन्नक्रमः॥ न क लिंह भुग्नानि बहे-भरः। नीरहा छ चनिक्रट। इंडि पूर्गारामः॥

निका ली यूका छ॰। इठा प्रतः प्र निकि इठि ভाषा। इठा प्रवानतः ठो ॥ उट भग्रायः । निका २ नोका २ नीका ४ निक्का ६। इठि भद्रवातनी ॥ भवित्रापिः भ्षाः। यथा। काना उत्र गढि छा-तो यहा पूर्णा छ द्रवः। ठे फ-छुर्जि ज्वि स्वानिका विका विका प्रकार कर्गिव छो यहा निका विका प्रकार कर्गिव छो यहा निका विका जी . ए य छ श्रिव । इंडि किविकन्न- नी ना क्याः ॥ ए य नी य छ हन्मुः मृर्यं । मृष्ट छ नी नः । इंडि पूर्णा हा ।। श्रिव । इंडि किविकन्न क्याः ।। त्या नि नि विवादि वाना नाव ग र भू। त्या जी छ छ । कर्मा विवक्षा या छ । विवादि का ला थे। ने नः नी निः। अयः अष्ठ इंडी या हिः। इंडि पूर्णा हो । विवादि का विवादि हिं। विवादि का विवादि हो निः। विवादि का विवादि हो निः। विवादि विवादि ह

ो कि पुष्ति। ইতি कविकल्लक्ष्मः

।। पुष्ति पुष्ति क्रविकल्लक्षमः

।। पुष्ति । पुष्ति क्रविकल्लक्षमः

विश्वार । प्रिक्षण विश्वादि विश्वाभय
जिल्ला । क्रविक्षण क्रविक्र करना घ्रव्य क्रवि । विश्वादि करना घ्रव्य क्रवि । विश्वादि । विश

ঢ়ি: ত্রি আয়াদিত:।ইতি লিহ থাতো: কর্মণিক্ত পুত্যুয়েন নিয়মণ নিঃ ত্রি লয়পুঞ্জঃ । শ্লিষ্টঃ। লীথাতো: ক্ত পুত্যুয়েন নিয়মঃ। ইতি ব্যাকরণণা অপি চ। দি-বাকরাদুক্ষতি যো গুহাস লীনণ দিবা ভীত নিবান্ধকারণ। ক্ষুদ্ধে পি ন্নণশরণ পুপন্নে মমত্ব মৃট্য়ে: শিরুসা মতীব ।। ইতি স্নার-সম্ভবঃ।।

ন্ত্ৰী किनः ॥ दिनांत्रः ॥ শৃঙ্গারভাবচেষ্টা। ইতি মেদিনী। খেলা।ইতি বিশ্বঃ।।

প্লাক্ষর বিশ্বঃ।।

প্রাক্ষর বিশ্বঃ।। সমাগম্যা স্বচিত্তবিনোদনার্থণ প্রি-বস্য যা বেশ গতি দৃষ্টি হুসিত ভ-ণিতৈ ৱনুকৃতি: ক্রিয়তে সা লীলা । তথা চ। অপাপ্ত বল্লভ সমা-াম নাযিকায়াঃ স্থ্যাঃ পুরো হত্ত निक्षिविदिनाम्यूक्ता । व्यानाभ (वन गांज हाम। वित्नाकनारिमः शुारायद्रानुकृष्ठि ना कथयसि ली-नाभिजि ॥ श्रियान् कद्र १ गोना । যথা তেনোদিত• বদত্তি যাতি তথা उथामाविज्यानीज्यान्यानि । नी उ य ७ न्निषि नानीं जि लक् लीला। ইত্যমরচীকাযা• ভরত: ॥ 🕸 ॥ স। পুকটাপুকটভেদেন দ্বিবিধা। यथा। भुकराभुकरा (ठिंड नीना সেয় দ্বিধাচ্যতে। ইতি পদ্মপু-द्रागः ॥ उथा हि । महानरिष्ठः भु-কাশৈ: ৰৈ লী লাভিশ্চ স দীব্যতি । তত্রৈকেন পুকাশেন কদাচিজ্জগ-দন্তরে।। সহৈব স্বপরীবারৈ জন্মা-দি সক্তে হরি:। কৃঞ্ভাবান্সা-द्भिग नीनाथ्या में कि द्भित जा ।। তেষা পরিকরাণাঞ্চ ত ড ভাব• বিভাববেৎ। পুপঞ্গোচরত্বেন

जा नीना भुकरी सृ जा।। व्यन ग्रंखु-भुक्टी ভान्डि जान्ना उपात्र-वाः। তত্র পুকট लीलाया (भव म्रा) **छा॰ गमाग**क्षी ॥ गाञ्चल मधूः রাযাঞ্চ দারকাযাঞ্চ শার্ক্নি:। যা ন্তৰ ভ্ৰাপ্কটা স্তত্ত ভবৈ সন্তি তা: ।। ইতি গ্রী ভাগবতামৃত• ॥ नीनाव जी जी किन्युका॥ विना সবতী।। শৃঙ্কারভাবচেষ্টান্বিভা ॥ (थनाविणिश्वे। इंडि नीनाणदार्थ मर्भनायाक्षा जाकतावार्यामा भन्नी ॥ उ क् जाक गुज्ः। यथा। (गाना-वद्गी शेव निवामित्ना सङ्गवाष्ट्राप-শোন্তবন্য ঐ ভাক্তরাচার্য্যন্য গু ञ्कर्लः मृश्या नीनावर्जी वित्रश বিফ্রিণ হৃদ্যম্য তা॰ পদৈ লী লা-वजा नीनावजी निव। इंजि नी-नावजीगृज्म। महानाहत्र १ (ज्ञानम) টীকাষা• ভবেশঃ॥ৠ॥ বেশ্যাবি-শেব:। যথা। অভিক্পেণ সম্প मान् घउँ यिञ्चा विनाष्ट्र ७१। धर्मका-ৰ্য্য নিতি জ্ঞাত্বান গৃহ্যাতি কথঞ্চন ।। যো হসৌ সুবর্ণকারত দরিদ্রো ৎপ্যথ সত্তান। ন মূল্য নাদাছে-भारा अञार्य अधि मःयुक्तः ॥ সগুরীপপতি জাত: স্ব্যাযুত সম-भु जः। इं जि म८ मा भु द्वारा नी ना-

বতীবেশ্যায়া লবণাচলদানেক্ষে उक् यहेकमा उथा विश्कल पर्मनार । ইতি তিথ্যাদিতজু• ।। 🕸 ॥ न्याय-পুন্থবিশেষঃ। ভস্যদ্বিভীযশ্লোকো व्या। मुव्राः भाक्ष्य मुक्कुत्वा छन दनः कर्याधिक भाषात का जि विश्व जि मागजा नह भूनः भाष्य। विश्निष স্থিতিঃ। সমৃক্ষ: সহজো গুণাদিভি त्रगः यबाख मर श्री उर्य मानीका नय (वन्यकर्य जनना श्रीनावनी-লাবতী॥ ইতি মণ্ডনমিশু:॥ नी(नार्)ानः ली (स्वर्नः। इंडि ত্রিকাণ্ডশেষ:॥ नीका खी निका। ইভি नद्रद्राः वली ॥ जुक् श्रु॰ जा**भः। यथा।** नागाः जूर्क। क्रीदाट भवत्याः महत्मा न्र्क् न्यार । इंडि म्यताथव्याक्त्रणः ॥ লুক্লাযিত: ক্রি অন্তর্হিত:। যথা। অন্তর্ধান লুক্লায়ন মিভি যাবং । যথা গুরো রন্তদ্ধন্তে শিশু: নিলীয **ठि भनायछ नुकायछ नुक्**ष्यछी-তি विकायनयरमिल वुक् वृक् कागः শরীর• যস্য স লক্ষায়: তভ: স ইব আচরতীতি দ্বৌ সাধ্য । ইতি ^{কা} त्रकठीकायाः पूर्णामात्रः ॥ कथानि क

भुज्रायन निम्नामायः॥

नुत्र्यः भू होनदः। ইতিরক ं নালা॥

नून है क ভाष छै। र्थ । है जि कित-कन्नक्रभः ॥ है क जू अपि । जा मीखि:। य छै। र्था निर्वे छन हि मा वंद्य मानानि। है जि मूर्गामा मः॥

লুঞ্চ অপন্যনে। ইতি কবিকল্পদ্দনঃ া।সো হল্ঞীৎকর্ণনাসিক । ইতি দুর্গাদাসঃ।।

न्ते २ ६ मी शिशु जिश् राजाः। ই जि कि विक्त क्रमः॥ २ व्यन् हेट्या ६ व्या-हेर्ज । शु जिश् जिः माका मिना श जनः शुनर्शनः या। ই जि मुर्गा-मामः॥

नूषे ३ इरडो। इंडिकविक्सक्यः॥ ३ नुष्टेरङ। ङ्गुंडि स्फोर्य्यः। इंडि मूर्गामामः॥

লুট ক ভাসে। ইতি কবিকল্পদ্রম:
।। ক লোট্যতি। ভাসো দীপ্তি:।
ইতি দুর্গাদাস:।।

वहि ३ श्री य विलाहिविलाफनवाः वृठे क । इठि कविकल्लक्षमः ॥ ३ जान्हिट ॥ क । श्री अन्नहिट अनुत्नाहिट । य नहिं । विलाहिः अवक्षीकावः । छञ्ज नृहे । विलाहिः अवक्षीकावः । छञ्ज नृहे । विलाहि । विलाहित । मायान । इठि क हैं ।। विलाहित । सूठि ३ ।

চ লোটতি। ইতি হলাযুধ:। ইতি দুর্গাদাস:॥

লুট বিলোটবিলোডনযো:। ইভি কবিকল্পদ্রম:।। লোটভি। ইভি দুর্গাদাস:।।

न्ठे इ गडानमा खय थारि।
इंडि कविकन्नक्यः ॥ इ न्छेऽउ।
वानमा भन्ती जावः । खयः होर्याः । खादेः थाउनः । इंडि पूर्गाः,
मामः ॥

न्ठे ৯ ७ शुं शिवाल । ই जिक्दि : कन्नफ्यः ॥ ৯ चन्ठे ८ । ७ (नाठे उ । ই जिमुर्गामा ॥

লুঠ উপথাতে। ইতি কবিকল্লফমঃ।। লুঠতি। ইতি দুর্গাদাসঃ।।

লুঠ শি লোটে। ইভিকবিকল্পজনঃ

।। শি লুঠন্তি অলুঠীৎ লুলোঠ ।
লোটঃ সম্বন্ধীভাবঃ । হারো ২বং
হরিণাক্ষীণা লুঠন্তি স্তন মণ্ডলে।
ইতি দুর্গাদাসঃ ।।

लूठे कः होर्य्य। ইতি कविक स्क्रमः
।। क लाठेयि । ইতি पूर्णामामः ॥
लूठेयः ली अथग्रञ्लोनुनः गृनः
गृद्धान्य स्वतः। लाहे। ইতি गर्षाः
गिर्फ ইতি ह ভाषा। उद्भर्यप्रायः ।
विल्लानः २। ইতি विकाश्राण्यः ॥
लूठि इः वि मूङ् विभन्नावृद्धः ।

লুপ

भुगभाष्ठार्थः भूनः भून जूर्योम् ठिखा १यः । उट्भर्यायः । उभावृत्तः २ । ইত্যমর ভরতৌ ॥ বেল্লিড: ৩ । ইঙি শব্দর হাবলী ॥ অপাবৃত্তঃ ৪ পরাবৃত্তঃ ৫। ইঙি ছেমচন্দুঃ ॥ লুড মঙ্বে । ইঙি কবিকল্লজনঃ ॥ লোডঙি । মড়ো বিলোডন । ইঙি ছুর্গাদাসঃ ॥

मुफ मि मःवृत्ते॥ (भ्राय । ইতি
किविक्तकाः॥ मि मुफ्ठि चानु
फी॰ न्वाफ। ইতি पूर्णापामः॥
मुफे कि जाउकाहोर्या । ইতি
किविक्तकाः॥ पश्चाकात्रभक्ठिः
देखानाम्प्रांशः। उन जानिशक्ष यगामो जल्लाश न्वेष्ठ ইত্যानि । कि न्वेष्ठ न्वेष्ठ । ইতি
पूर्णापामः॥

लु है के श्रेष्ट भा कि विष्णवः। निष्ठेत है कि काषा। उट्च भर्ष्ठायः। नामवः २। हे कि भद्र जिलुका।। नाहा की लोगा। है कि काहिए।

नुष्। जी लुठेन । ইতি काहिए भदत्र ज्ञावनी ॥

লুণ্টাক: পু[,] চৌর:। লুট্ধাতো: বাক পুত্রযেন নিয়ম:॥

লুণ্টাকী জী চৌরাজী। ইতি মূখা-বোধব্যাকরণ ।।

नुश्रेकः वि उद्यात्रकः। नुर्हेत्रा

ইতি ভাষা। যথা। যে চৌরা বহিংনা দুষ্টা গরদা গুামলুঠকাঃ। সার:
মেযাদনে তে বৈ পাত্যপ্তে পাতকান্বিতাঃ।। ইতি পাদ্যে পাতালথগুং।।

नुष्ठेन' क्ली नर्ठन'। ইতি काहिए भद्र-अञ्चावनी ॥

नूशे स्त्री नृश्नेन । इंडि काहिए मदः त्रञ्जावनी ॥

লুগাক: পূ• কাক:।ইভি ত্রিকাণ্ড-শেষ:॥

नुश्री खी नुर्रमः। इंडिकाहिए भद-त्रज्ञावनी॥

লুগু ক চৌর্য্যে। ইতি কবিকল্প-ফন:।। ক লুগুণতি । ইতি দুর্গা-দাস:।।

नृ ७का खी न्यायनादिनी। इंडि हादावनी॥

नु थी छो नगरमात्रिगी। इंछि जि-काश्रमयः ॥

লুথ ই সন্থে।ইতি কবিকল্লজন:।। ই লন্ত্যতে। স্বন্ধে। বধ ক্লেশৌ। ইতি দুর্গাদাস:।।

लून आ मान २ व्य छे हिए। इंडि किंदिक ल्लाभ्य: ॥ श्रा ञल्लून्य ञा-ल्लाभ्य: ॥ मान व्य लूम्मिडि लू-म्माउ। २ ञलून्य: । छे लाछा। मुजा ह

इंडि मूर्गामानः॥

লুপ ই র য যুপি। ইতি কবিকল্প ফন:।। ই র অলপৎ অলোপীৎ। অমাৎ পুষাদিত্বানিত্রা ও ইত্য ন্যে। য যুপ্যতি। যুপি আহলী-ভাবে। পাতৃ যুপ্যতি লাবণ্য নেত্রাঞ্জলিপুটে র্বঃ। ইতি হলা-যুধ:। ইতি মুর্গাদাস:।।

गुल् भ्॰ (लाभः। यथा। व्यक्ता ভगा श्वार्डिश श्व लूभ्। इंडि मुक्षवाषवशकत्रः॥

लाउ॰ ही किर्यं अने । लाउ इंडि क्ष्माउ॰। इंडि भव्यत्र द्वावली।। ला-পাउंडि वि। यथा। हक्क्यानिडि लु-धाक्क॰ हाखाल॰ व्याक्त तिडि ह। भु-ने भा निम्तन॰ ध्वाष्ट शक्यां स्व विभिष्ठ (उ॥ इंडि चिथ्रापि छन्नुः।। जूव कि इं अर्फान। इंडि हिवक्त क्रमः। ॥ कि न्यां वि लुखाडि। इंडि क्यां मा सः।। लुद्धः भु॰ व्याधः।। नम्मिः। इंडि मक्त द्वावनी।।

वृद्धः वि आकाक्षी। इंडि प्रिक्ति ।। उट्भर्ग्रायः। गृथ्गुः २ मह्मनः ० अञ्चलायकः ८ ज्यक्ट १ हेड्रा-सदः ॥

लुक्क रू॰ वराधः। इज्रामनः॥

नुव

লম্পট:।ইতিল্কশ্মার্থনশনাথা।
লুভ শ বিমোহনে।ইতি কবিকল্পফ্ম:।। শ লুভত্যাত্মনি কামে চ।
ইতি হলাযুধ:। লোভিতা লোকা।
। ইতি দুর্গাদাস:।।

नु ज य देव भार्थित। भार्थित भारता है। य नु जिति धनः नु सः। देव जान जिल्ला विकास वित

লুভিত: ত্রি বিমোহিত:। বিমো-হনার্থ লুভধাতো: ক্ত পুত্যুয়েন নিয়ম:।।

लूल विभर्मत्। ইতি কবিকল্প জনঃ।।

सोजधाजु त्रयः। लुलाशः। ইতি

দুর্গাদাসঃ।।

লুলাপ: পু• মহিষ:।ইজ্যমর:॥

খুলাপকদ্য: পু• মহিষকদ্য:।

ইতি রাজনির্ঘণ্ট:॥

नुनाशकाना जी महिषी। इंडि जाजनियफें:॥

লুলিত: ব্রি আন্দোলিত:। যথা। প্রেক্ষোলিত স্তর্নিতো লুলিতা-ন্দোলিতাবপি। ইতি ভ্রিপু-যোগ:॥

লুয থেষে। ইতি কবিকল্পদ্ম: ॥ লোষতি। ইতি দুর্গাদাস: ॥ লুষ হি•সনে। ইতি কবিকল্পদ্রম: ।।
সৌত্রধাত্রয়•। লুক্ষ:। ইতি দুর্গাদাস: ॥

कृषजः भ् भड्रही। हेजू। पि-काषः॥

লুহ ঔ গার্ধ্যে। ইতি কবিকল্লজন:

। ঔ অলুক্ত । গার্ধ্য: লকুনিছা।
লোহতি ধন: লোক:। ইতি দুর্গাদাস:।।

লু ঞ গি ছিদি। ইতি কবিকল্লজন:

। ঞ গি ল্নাতি ল্নীতে ল্ন:
ল্নি:। ইতি দুর্গাদাস:।।

वृष्ण जी की वित्रामयः। माक्यमा है जि जाया। उट्यमर्थायः। उन्ध-वायः २ जिन्ना छः २ मक् विकः ४। है उप्प्रतः॥ मक् विः ६ व् जिका ५ जिन्ना छः १ मनकः ४ उन्ध्रवायः २ मनकः ४ उन्ध्रवायः २ । है जि मदत्र द्वावनी ॥ मिनी विका ॥ त्वागिवित्मयः। है जि त्व-पिनी ॥ त्मयम् भ्रयं प्रयाः। मर्याद्राः २ दृश्ण २। है जि वाजनिर्वितः॥ उ-त्वा १। है जि वाजनिर्वितः॥ उ-त्वा १। विन्ता । प्रयाञ्चन भ्राधा मुत्नः भ्राद्वा । यमाञ्चन १ प्रयाञ्चन भ्राधा मुत्नः भ्राद्वा विन्तवः। (उत्जा जाजा स्टला व् जा है जि था जास (वाजमा । व् मुनुः। विश्वानित्वा मृत्राः। विश्वानित्वा मृत्राः। विश्वानित्वा मृत्राः। विश्वानित्वा मृत्राः।

वदः कराहिष्वि जलगः। विनिष्ठः कालयामाञ गद्मानुमनमः किला।। হুপিত্স্য মুনে শুস্য ললাটে ষেদ্ विनहवः। अभाउन् मर्भनारमव श्रथ-স্তাভীবুবর্চসঃ।। লূতে ভূণে মহর্বেস্ত ধেন্বর্থে সংভ্তেপি চ। ততো জাতা खिना धाता नागाक्ता नहाविताः ॥ তাসামঙৌ কইসাধ্যা বর্জ্যা ভাব-ত্য এব হি। তত্র তৃণ মণ্ডলা পুভৃত-(याष्ठे कन्द्रेमाध्याः। (मोवर्गिका भुक्-ত্যোষ্টাবসাধ্যা:। তাসা সামা-न्राउ। म॰न लक्ष्ण भार । उाङि র্দপ্তে দংশকোপ্যপূর্ত্তঃ ক্ষতজন্য চ। জুরো দাহে। ৎতিসারক্ত গদাঃ স্যুক্ত ত্রিদোষজা:।। পিডিকা বি-विधाकाद्रा यथनानि यशास्त्रिह। শোথা মহান্তো মৃদবো রক্তা: শ্যা-वा कवा खथा॥ जागाना जर्वन् তানা মেতদ্ শস্য লক্ষণ । দ শ-কোপ্যদ শমধ্যে প্তিভাব:। দশ শমধ্যে তৃ যৎকৃষণ শা্যাবণ বা জা-লকাবৃত্ত ।। দঞ্জাকৃতি ভূশ পাক क्लिप (माथ जुनानिः छ । पृषीविषाः ভিলুঁতাভি স্তদ্প মিতি নিৰ্দিশেৎ ॥ (मोवर्गिकानस्याञ्चावनाष्ठ्र शुगनः হরা ভাসা । লক্ষণনাহ। শোথঃ খেতাসিতা রক্তা পীতা চ পিডিকা

জুর:। পুাণান্তিকো ভবেদ্দাহ: · श्वारमा हिका **निर्द्रागुरुः ॥ # ॥** उत्मार्थि गया। तकनीयुग्र भज क् मिक्षिष्ठा नागरकमितः । भीजा-মুপিষ্টৈ রালেপ: সদ্যে ল্তা• বি নাশ্যেত।। অপিচ। অভ্যা॰ রো-চনা স্ব সর্কপন্ন তথে। পেল। नवारवजनम्बानि गद्रवाः जुद्रजाः তথা ৷৷ স কলিস্থ সমঞ্জিষ্ঠা মন-ন্তাঞ্চ শতাবরী । শৃঙ্গাটক সম-ক্রাঞ্চ পদাক্ষেশর নিত্যপি।। কল্পী-কৃত্য পচেৎ সর্পিঃ পয়ো দদ্যান্ত ख्या । भारत् भार्व १वजीर्ग ह শীতে ভিমিন্ বিনি:ফিপেৎ।। সর্পিন্থল্য ভিষক্ ফৌদু কৃতর-कः नियाभारयः। विवाणि इंडि मू-গাণি গরদোষকৃতানি চ ॥ স্পা শান্ততি বিষণ সর্বণ গরৈ ক্পছ-তা' ভ্ৰহা'। যোগজন্তমক কণ্ড' गा नगार विशक्का ।। नामय-ভ্যঞ্জনাভ্যন্ত পানবস্তিষ্ যোজি-ত । সর্গ কীটাখু ল্তাদি দ্পানা ্ৰিবভূৎপর ৷৷ মৃত্যুপাশছেদি-ঘ্ডাইতি ভাবপুকাশ:॥ ज्ञातिः पू॰ मूक्षकिनीकृ**णः। ই**ভি রাজনির্ঘণ্ট: ॥ ज्ञका जी नर्कष्ठाः।**ই** जिल्द

द्रज्ञायली ॥ ल्नः वि ছिन्नः। ইত্যুন্র:।। **ल्नकः भू॰ (छिरिउ:।। भगुः। ই**ডি (निमिनी।। ल्निः खी ছেদः। ইতি মুধ্ববোধ-व्याक्त्रणः ॥ न्भ क्षी नाक्ना इंडामतः॥ **ल्निवियः भू॰ वृश्विकामिः। ই**তি (रुव्हन्मः॥ ল্য ক বধে॥ জেযে। ইভি কবি-কল্পদম:।। ক ল্যুখতি। ইতি দুর্গা-मानः॥ লেখ: পু॰ দেব:। ইত্যনর:।। (नथाः। इंजि सिमिनी।। লেখা: পু লেখনকর্তা। তৎ-পर्यायः। विभिक्तः २ जक्षत्रहनः ৩ অফ্রচ্ঞ: ৪ । ইত্যনর: ॥ বোল ফ: ৫ করক: ৬ মসীপণ্য: ৭ করপুণী: ৮। ইতি শবররাবলী ॥ वर्गो 🔊 । इंछि क्रोध्यः ॥ 🕸 ॥ **७**मऽ जक्रगानि यथा। मर्दारणा-ক্ষরাভিত্ত: সর্বশাস্ত্রবিশারদ: । लिथकः कथिला ब्राङ्कः नदीक्षि-করণেষু বৈ ॥ শীর্ষোপেতান্ সু-সংপূর্ণান্ সমশ্রেণিগতান্ সমান্ । यक्तत्रान् रेव नित्थव्यस्त (न गर्कः

স বরঃ মৃতঃ ৷৷ উপায় বাক্য দশ-

লঃ সর্বশান্তবিশারদঃ। বল্বর্থবক্তা চাল্পেন লেথক: স্যাক্তৃগ্ত্তম।। বা-क्रािं भाग उन्हां आ (मनका निवि-ভাগবিৎ। অনাহার্য্যোন্পেভক্তো लिथकः महाक्रुग्खम ॥ इंडि माट-স্যে ১৮৯ অধ্যায়: ॥ৠ॥ অপিচ। **ज**क्रुक गृशे जार्था वघु इस्या कि जाक्तरः। मत्रभाज मगालाकी भू কৃষ্টো নাম লেথক:। ইতি চাণক্য সংগ্ৰহঃ।। ৠ।। রাজলেথক লক্ষণ॰ যথা।বাহ্মণো মন্ত্রণাভিক্তোরাজ-নীতিবিশারদ:। নানালিপিজ্ঞো (मधावी नानाजायाजनविजः মন্ত্রাধীমান্ নীতিশাস্তা-র্থকোবিদ:। সন্ধি বিশৃহ ভেদভ্রে। वाह्यकार्य्यदिष्ठक्षनः ॥ मना वाहा-হিতান্বেধী রাজসন্নিধি সংস্থিত:। कार्य।कार्य।विहात छः अन्।वाही बिटिन्म्यः॥ यदः भवाभी भुष्का ज्ञा **®रिन युक्तः म এ**व झाजलव्यकः ॥ **ন্পান্বত্তী সতত** ন্পবিশ্বাসর ক্ষক: । নূপতে হিঁতকান্বেধী স এব वाज्ञालथकः॥ इंडि भ अत्कोमुनी ॥ 🗱 ॥ व्यथ्यक्यं कागरञ्चन कर्खवर्रः । यथा। (विथकानिश कावङ्गन् (वः थ्यक्रिं विष्ठक्षान्। वर्गापि वि

শেষ: ৷ ইতি পরাশর সংহিতায়াণ ১০ অধ্যায়: ৷৷

नथन॰ क्री हर्फन॰।। ज्र्जंप्क्।।

श्रक्ताविन्। नः। ইতি নেদিনী

। ३। ज्रमो लिथन निरम्पा वणा
। न ज्रमो विलिथिन ॰ मञ्जः न शुः

छक॰ लिथि । ইতি यागिनी॰

जर्ज ज्ञीयजाग १ भर्षेनः।। लि॰
थनाञ्जन॰। यथा। म्का छन्क् नि॰
ला कार्ष मङ्ग हन्सन मिक्र खिः। ह्रि॰
रेज प्रक्षन॰ (शुंकि॰ शुङ्गार्मा मिन

क्ष्रन॰।। म्कः स्कृतेः जम्रा छन्।

प्रक्। निना ननः निना। ইতি
ভাবপুকা नः।।

লেখন: পু• কাশ:। ইতি রাজ-নির্ঘণ্ট:॥

लिथनिकः भु लिथशात्रकः॥ भत्र श्रुत्रत्विथकः॥ स्रश्रुत्रत्विथकः । ইতি মেদিনী॥

लिथनी खी लिथा (उर्श्नेगा। लिथ-नमाधनवस्त । उट् भर्या गरः । दर्ग् लिका २ । इंडि हा दावली ।। दर्ग-जूबी ३ कलमः ४ व्यक्त द्विका ६ । इंडि ब्रोधितः ॥ कत्राण्यः ५ हि-बकः १। इंडि चद्त द्वावली ॥ #॥ लिथनीक द्वाण्याणुं ७ यथा। दः-चमूहा लिथि ह्वर्ग- उना इनि र्ज-

खात्र उ**्का**या खात्र ॥ नहाः লক্ষ্মী ভবেন্নিত্য সুবর্ণস্য শলা-क्या। वृष्ट्यनमा मृह्या दि मिड-वृक्तिः भुद्धायटा ॥ उथा व्याप्तरीय দেবি পুত্র পৌত্রধনাগনঃ। অগ্নি-भीय न्हिजकाश्चनीयः । दिवाज्यान বিপুলা লক্ষ্মী: কাণস্যেন মরণ ভ (वट ॥ अक्षेत्रुवयुगालन मणी-জুলন বাথবা। চত্রস্লস্চ্যা वा (यः वित्थर भग्रकः म्इ ॥ তত্তকের সংখ্যে তু বল্লাযু যাতি रेव क्ति ॥ यथा देवरं अप्रने अपि বচনে এ ইব্রুব বিবি নিষেধী ত-थाजाभाक्षाक्षा मनाक्ष्माया विधिः নিষেধ শচতুরঙ্গুলে। ইতি যোগিনী তত্ত্রে তৃতীযভাগে ৭ পটল: ॥ लिथनीयः जि लिथाः। लिथिउदाः । ইতি লিখবাতোঃ কর্মণ্যনীয়পু-ত্যযেন নিম্লম॰ ॥ **ल्यवं : भू• इन्तुः। इ**न्तुः॥ ে লেথহার:) পু প প বাহকঃ।লেখা লেথহারকঃ) হরতি ইত্যর্থে অণ্ পু छ। एयन कन् भुजारयन ह निम्नमः। ইতি সিদ্ধান্তকৌমুদী॥ লেথা জ্রী লিপি:।। পদ্ধি:। ইতি (निमिनी।।

विक्रः । ठामुम्हा ठ् विकर्वा (नथाश: भू बिजान्व्कः। इंडि ভবেম তৎ क्राया ভবেৎ ॥ नहा जाकिर्मा क्रिका ज्वाकिर्मा क्रिका ज्वाकिर्मा क्रिका मना विक्रा क्रिका क्र

> লেখ্য° ত্রি লেখিতব্য•।লেখনীয• । ইতি निथशाजाः कर्यान य भुजुः (यन निम्नम ।। 🗱 ।। व्यवहात्राक्क-कियाभाषाक्ः। यथा। यात्रामि-কেপি সম্যে ভ্ৰান্তি: সংজায়তে য্-७:। शाजाक्षत्राणि मृष्टानि भ धा-क्रान्य : भूता॥ (लथ्य हि विष् পোক সংস্থান্য ভথা। অ-न।क्षिक भाक्षिमह निष्ति (रंग-স্থিতে স্থায়।। মৃতাস্ত সাক্ষিণো যত্র ধনিকর্ণিক লেথকা:। তদপ্য-পার্থ করণ মৃতে ত্বাধে: স্থিরাশু-যাৎ॥ দৰ্শিত পুতিকালঞ্চ পঠি-**७**॰ मुाविज्रक्ष य**र**। (नथ) ^१ भिष्ठा-তি সর্বত্র মৃতেম্বপি চ সাক্ষিষু।। ইতি ৰ্যবহারতত্ত্বে বৃহস্পতি: ॥ 🗱 ॥ অপিচ। সাম্পুত্ত লেখ্যু নিৰূপ্যতে। তত্ৰ লেখ্য দিবিখা। **णामन जानशर**क्षि । णामन নিক্পিত'। জানপদমভিধীয়তে। ভট্ট বিবিধণ। মহন্তকৃত মন্যকৃত-ঞ্তি। তত্ৰ স্বহত্ত নুসাক্ষিকণু

। वानाकृष्ठः नामाकिकः। वानसाः। क (क्लाहाजानुमाद्मण भागागा। यहारु नात्रमः। (लथ्रा हिविधः জ্ঞেশ• শ্বহস্তান্যকৃত তথা। অসা-किग्ट माकिमह मिक्ति पंगिद्धिः তে স্তথা রিভি। তত্রান্যক্রমাছ । यः কশ্চিদর্থে। নিঞ্চাত: ম্বক্ত্যা তু পরস্পর•। লেখ্যন্ত সাক্ষিমৎকা-र्य्य उच्चिन् धनिक भूर्वकः ॥ धनिकाः **थम**र्नरण र्या शर्था ह्रिनगुनिः भ রস্পর• স্বর্ক্যা ইয়তা কালেনৈ-তাবদ্বেয় মিতীয়তী চ পুতিমাসং বৃদ্ধি রিতি নিঞ্চাতো ব্যবস্থিত স্ত-সিমর্থে কালান্তরে বিপুতিপত্তৌ वञ्च जब्द निर्गयार्थः (तथाः। माक्तिः भपूक लक्ष्म नाकिनुकः । धनिकः পূরো যমিন ভদ্ধনিকপূর্বক 1 ধনিক নাম লেখন পূর্বক মিতি यावट कार्या कर्त्वा । উक नक्षाः नाकिए। वा कर्डव्याः। कर्जा ज्यर क् उ॰ कार्या॰ निष्कार्थ समा माक्निनः । भुवर्डां उविवासिय चक्ठ॰ वाश्र লেখ্যক নিতি মারণাৎ।। অপিচ। नगा गान उनकां र नाग जाठि यागावरिः । मनुक्तात्रिकाचीय পিতৃমানাদি চিহ্নিত ॥ সমা স-श्रू अतः। गाग (भ्वां कि उपकाः

পক্ষ: শুক্ল: কৃষ্ণো বা । অহ স্তিখি: शुजिलनारिः । नाम धनिकाधमर्व-(या: । ज्ञां जि वां ऋगानि: ।। ऋगा-ত্র• বাশিষ্ঠাদিগোত্র মেতৈ: সমা-দিভি শ্চিহ্নিত। তথা স্বুস্কচা-রিক বস্তাদিশাথাপুযুক্ত খণ नाम वख्राः कठे इंजि। व्याचीय नि-ত্নাম ধনিকর্ণিক পিতৃনাম। আদি-গুহণাদুব্য জাতি সংখ্যাচারাদে গুহিণ । এতৈ শিচহ্নিত লেখ্য কার্য্য মিতি গতেন সম্বন্ধ:। কিঞ্চ। সমাণ্ডে হর্থে ঋণীনাম স্বহন্তেন নি-বেশবেৎ। মতং মে ২মুকপুগ্রস্য यम्दाभित्र (निथिउ ।। धनिकाथ-नर्गरा र्या २र्थः चक्रा वर्वञ्चिः তিমান্নর্থে সমাপ্তে লিখিতে ঋণী অ-ध्रमार्गा नागाजीय अञ्खनामिल्ल-খ্যে যদুপরি লেখিত তল্মামুক-পুল্রস্য মত মভিপ্রেত মিতি নিবে-माराष्ट्र भाषा विनिर्थिष् । उथा । সাক্ষিণশ্চ বহুস্তেন পিতৃনামক পূ-र्बकः। অত্রাহ্ ননুকঃ সাক্ষী লিথেযু রিতিতে সনা:॥ তিমান কেখে। যে সাক্ষিণো লিখিতা স্তেপ্যার্জায় পি-ত্নাম লেখন পূৰ্ক মিলানথে অহ-ममुका (দবদত্তঃ সাফীতি স্বহৃষ্টে रेनरेककरना निर्थयू (छ ह ननाः नः-

श्वारका खनकरू कर्डवाः । यहापः .মূৰ্ণ: সাক্ষী বা লিপিজ্ঞো ন ভৰতি छन। १४मर्गात्मान माकी ह माकाः स्राप्त मर्वमाकिमित्रि स्म उ॰ वि-थारा । यथारु नात्रमः। यनित्रिः क अभी यः म्राष्ट्र सम्बद्ध म लिथ (यए। जाकी वा जाकिगातान नई সাক্ষী সনীপত ইতি॥ অপিচ। উভযাভার্থ্যতে নৈতন্মযাহানুক সূন্-না। লিখি হ॰ ছমুকেনেতি লেখকে। श्र उठा निष्य ॥ उठा निर्थ-কো ধনিকাধমর্ণিকাভ্যা মুভাভ্যা• প্রার্থিতেন ম্যামুকেন দেবদত্তেন বিষ্মিত স্নুনা এজল্লখ্য লিখি ত मिठाउ वित्थर ॥ 🛊 ॥ माण्युउ স্ব কৃতলেখ্যমাহ। বিনাপি সাক্ষি-**ञि र्लिथ्यः सरु** खिथि उन्ह य**९** । তৎ পুমান স্ত লেখ্য বলোপ ধি-क्ञाम्रा ॥ यह्मथाः स्रवासन नि থিত অধমর্ণেন তৎ সাক্ষিভি বি नाशि भुनागः मृत्रः अद्वानि जिः। ৰলোপথি চূতাদূতে ৷ বলেন বলাৎ-কারেণ। উপধিনা ছল লোভ কোধ ভয় নদাদি লক্ষণেন ষ্থ কৃত্ত তথা-দিনা। নারদোপ্যাহ। নত্তাভিযুক্ত खी वान वनाएकात क्उक रए।

কৃতত্তথেতি ॥ তচ্চৈতৎ শ্বহন্ত কৃত• পরহন্ত কৃতঞ্চ যল্লেখ্যু দেশাচা-त्रानुजादिश अवक्षक व्यवहादि वक्षक ব্যবহারযুক্ত মর্থ ক্রমাপরিলো-পেন লিগ্যক্ষরাপরিলোপেন চ লেখ্য নিভ্যেতাবন্ন পুন: সাধুশদৈ রেব প্রাতিষিক দেশভাষ্যাপি লে-थनीयः। यथाङ् नात्रमः। (मनाहा-त्राविक्षः यद्याकाथि विधि वक्षाः। তৎ পুমাণ ফৃত লেখ্য মবিলুপ্তক সাক্ষর মিতি।। বিধান বিধি রাধে र्विषि द्राधीकद्रगन्तमः नक्षनः । (गा-প্যাধি ভোগ্যাধি কালকৃত মিত্যা-দি তদ্ব্যক্ত• বিস্পাষ্ট• যদ্মি• স্তদ্ব্যক্তা-थि विधि लक्ष्ण । अविल्ध क्रमाकः র স্থানাক্রম: ক্রমঞ্চাক্ষরাণি চ ক্রমাক্রাণি অবিলুপ্তানি ক্রমাক্ষ-রাণি যিশ' স্তদ্বিলুগু ক্রমাক্ষর'। তদেব ভূত লিখিত পুমাণ । রা-जनात्रनदम् नाध्नक्तियस्म। **१८०**-ত্যভিপা্য:। লেখ্য পুসঙ্গেন **লে**-খ্যাৰ্ক্ত মপ্য়ণ ত্ৰিভিরেব দেয় মি-ज्याह । अगः विश्व क्ठ क्रियः **श्**-ক্ষৈ দ্রিভি রেব ভূ। যথা সাক্ষ্যা-দি কৃত মৃণজ্রিভি রেব দেয় তথা लिथाक्ठ मना। इव्नू नूय उरम्रीय জ্রিভি রেব দেয়। ন চতুর্থানিভি ति कि नियम्प्राउ । नम् भू**ध (भो**दिय র্থাণদেয় মিত্যবিশেষেণ্ণ মাত্র জি ভি রেব দেয় মিভি নিয়ত মেব। বাঢ भरेम्रातारमर्गम् भथाक्रान् वियय স্ত্যন্তর পুভবা নপবাদশক্ষা নপ-নেতু মিদয়চন মারক্ক। তথাহি। भ न नक्त न जिथाय का ग्रायतनाः ভিহ্তি । এবং কাল মতিকান্ত পিতৃণান্দাপ্যতে ঋণ মিতি। ইঅ' প্ৰাৰ্চ মতিকান্ত কাল মপি পি-তৃণা মপি পিতৃণা সম্বন্ধি দাপ্যতে । অত্র পিত্ণা মিতি বহুবচন নির্দে-শাৎ কালনভিকান্ত মিভি বচনা-हर्ज्थामि मानाउ इंडि नुडीयाउ। তথা हाद्री (उनानि । (वर्थ) यग्र ভবেদ্ধন্তে লাভন্তস্য বিনিদ্দিশেদি তি। অত্রাপি যৃস্য হুন্তে প্রমৃত্তি তস্যূৰ্ণলাভ ইতি সামান্যেন চতৃথা-**दिल्ला २ मृत्रवाला २ छोडि भू**-তীয়তে। অত কৈতদাশস্কা নিকৃ ত্যৰ্থণ এতদ্বচন নিতি যুক্তণা বচন ঘ্যন্ত যোগীশ্বর বচনানুসারেণ যো-कनीय ।। #।। अम्राभवाम्साह। আধিস্ত ভূদ্যতে তাবদাবত্তম পু-দীয়তে। সবন্ধকেপি প্রশাক্তে ঋণে ত্রিভিরেব দেয় মিতি নিয়মাদৃণাপ-क्रवानिष्काद्वनाष्ठारुद्रतः २१४न- থিকার প্রাণ্ডাবিদমুচ্যতে। যাবছতু-র্থেন পঞ্চমেন বা ঋণ ন দীয়তে তা-বদেবাধি ভুঁজ্যত ইতি বদতা সবন্ধ-কর্ণাপাকরণে চতুর্থাদে রপ্যাধকা-রো দর্শিত: ৷৷ নন্বেডদপ্যযুক্ত মেৰ ফলভোগ্যে। ন নশ্যতীতি সভ্যং। তদপ্যেতিমিন্ন সত্যাপবাদ বচনে প্-क्ष वय विषयमिव न्यामिक नर्वे यनवर्षः ।। 🕸 ।। श्रामिक् क॰ श्रिम्या-প্য পুক্ত মেবানুসরভি। দেশান্ত-রস্থে দুলেখ্যে নষ্টোক্সন্থে হৃতে তথা । ভিয়ে দধ্বেথবা ছিঙ্গেলেখ্য মন্যভু কারবেং। ব্যবহারাক্ষনে পণ্রে প-প্রান্তর স্বয়াদিতি বিধীয়তে। ব্য-বহারাক্ষমত্বঞ্চাত্যন্ত ব্যবহিত দে-भाउतस्य भव्य मूर्वात्याः मुष्टानि अ निर्श्नानानि व्यवाहकानि वा लि-খ্যানি লিপ্যফ্রাণি পদানি বা य-ब्यि · खप्पार्वाथा अधिनमुर्वारथा नाष्ट्रे कालवरणन उच्चर अभी की इंग्डान নিন। মৃদিতে লিপ্যক্ষরে হৃতে তক্ষ-রাদিভি ভিমে বিদলিতে দক্ষে অগ্নি-নাছিমে দ্বিধা ভূতে সতি দ্বি ভবিতি । এত हार्थि পুত্র থিনো:। পরস্পরা-নুনতৌ সভ্যা• বিমভ্যান্ত ব্যবহারা-भारत्रो (मनाचत्रञ्च भञानयनाष्ठ्रा-পেক্ষ্যা কালো দাতব্যঃ দুর্দ্দেশাব:

স্থিতেনষ্টেবা পণ্রেসাক্ষিভিরেবব্য-वृक्षात्र निर्गयः कार्यः। यथाक् नात्ररः । (न(थ) (मनाञ्चत्र)(स नीर्ल पृर्वि থিতে হৃতে। সত उৎ কাল করণ মসতো দৃষ্ট দর্শন মিভি ॥ সতো विषंज्ञानभाष्ट्रमा (प्रभा खत्र स्मान-यनाय कालकब्रन कालाविध मीजः ব্য: ৷ অসতঃ পুন রবিদ্যনানস্য প-धमा भूबं रा पृष्टोतः माकिन रेउ मं-শ্নি ব্যবহার পরিসমাপন কার্য্য । যদা তু সাক্ষিণো ন সন্তি তদা দি-त्तर्भ निर्भयः कार्यः। खल्बश जा-क्कित्क देखी वाउवशांत्र विनिर्फि.न দিতি মারণা**ে। এ**ত চু জানপদ । ব্যবস্থাপশ্ৰ । রাজকীয় মপি ব্যব-স্থাপএ মীদৃশ নেব ভবতি। ইযা•স্ত दिरणयः। ताञ्जः स्टल मःगूङ स-गु मु। চিহ্লिত उथा। त्राककीय म्यूड॰ लिथाः अतिप्रार्थायु **माक्किमिरि**ज ॥ 🗱 ॥ उथान ४ दिल ब्राजकीय व्य-পত্র বৃদ্ধবশিষ্টেনোক্ত। যথোপ-ন্যন্ত সাধ্যার্থ সংযুক্ত সোত্তর ক্রিয়ণ । जावधातनकरेक्षव क्रवशाचक भिष्ठ তে। পাङ्गिकाकि इसाक्ष गृष्टि उ ब्राजमू मुया। शिष्क १एवं वाहित्व मन्।। इत्राय्क विति ॥ তথা। সভাসদোপি মত । দে १ মুক

পূ এস্যেতি স্বহন্ত দদু<u>ঃ। সভাসদ-</u> শ্চ যে ভত্ত মৃতিশান্ত্রবিদঃ ক্সিতাঃ। यथा (जथ) विरक्षे उहर बश्यः ह. দু রেবত ইতি মনু সারণাৎ ॥ সভা-সদাঞ্ পরস্পরানুনতি ব্যতিরেকেণ व्यवहारता निःमाल्या ভवि । यः থাহ নারদ:। যত্র সভ্যো জান: সর্বঃ সাধ্যেতদিতি মন্যতে।স নিঃশল্যো বিবাদঃ স্যাৎ সশল্য স্তৃন্যথা ভবে-দিতি।।এতচতুম্লাদ্যবহার এব। **সা**-ধবেৎ সাধ্য মর্থ যচ্ছভ্লাদান্বিতঞ্ र८। त्राक्षमु मुक्तिञ्क्षित करभग्रक নিষ্যত ইতি মারণাৎ॥ যত্র ত হীন-তा यथा। अन्यवामी कियाष्ट्रियी (नाः পস্তাতা নিক্তর:। আহ্তপুপলা-থী চ হীন: পঞ্ৰিধ: মৃত ইতি।। তত্ৰ ন জ্বপণ্ড নতি অপিত ভীনপণ্ড **भिव उह कालान्दर मख शास्त्र** क्षवभयः जू भाष्नाग विधि निषार्थ মিতি বিশেব:। লেখ্য সন্দেহে নিৰ্ণয় নিমিন্তান্যাহ। সন্দিঞ্চলেখ্য শুদ্ধি: স্যাৎ স্বহন্ত বিথি তাদিভি:। যুক্তি পাুপ্তি কিয়া চিহ্ন সম্বন্ধাগম-হেতুভি:।। শুদ্ধ মশুদ্ধঞ্চেত সন্দি-क्षम् (वर्गम् मृषिः ब्रह्छ विथि-তাদিভি: স্যাৎ। স্বহুষ্টেন লিখিত• यस्त्रथ्राञ्जतस्त्रन मुक्तिः । यमि नम्-

শান্যকরাণি ভবত্তি তদা শৃদ্ধিঃ ज्यादिउर्थः। यादि मदा जाकि লেথক স্বহন্ত লিখিতান্তর সম্বাদা-ছ্দি রিতি। যুক্ত্যা প্রাপ্তি যুক্তি পা-थि:। (मन कान भूकषानाः मुत्रान সহ সমৃद्धः । অমিনেশে व्यिम् काल व्यनः भूक्षरामः मुवा घढें इंडि युक्तिः। शाक्षिः ক্রিয়া তৎ সাক্ষ্যুপন্যাস:। চিহ্ন षर्थि भुजार्थिताः भूर्वमि भवन्त्रत विश्वारमन मान गुरुशमि मद्यक्षः। আগনো হসৈ্যভাবতো হর্থস্য সম্ভা-বিতঃ প্রাপ্ত্যপায়: ৷ এত এব হেতবঃ ।এভি র্হেতুভি: সন্দিশ্ব লেখ্য শৃদ্ধি: न्यामिकान्यः। यमा जू (लाथा नः ন্দেহ নিৰ্ণবোৰ জায়তে তদা সাক্ষি-ভি নির্ণয়: কার্য্য:। যথাক কাত্যা-যনঃ। দূবিতে পএকে বাদী তদাক্ত **ा॰ स निर्माण कि। जाकि गञ्ज**य विषय बिम्बहन । भाक्ष्यभञ्जवविष-यस शात्रीज वहनः। न भरेनज्य कृजः প্রপ্রণ কৃট নেতেন কারিত ৷ অধ্য त्रीक्छा उर्भय मथ मिर्वाम निर्ग য ইতি ॥ 🕸 ॥ এবং শোধিতে পণ্ডে श्राण ह नाउरवा भारत यहा कृष्मान-वर्गन्ता ज् गनमर्थ खना कि कर्डवर

মিত্যত আহ। বেখ্যস্য পৃষ্টে হডি-লিখেদ্দজ্বা দত্ত্বৰ্ণিকো ধন•া ধনী চো-প গত• দদ্যাৎ স্বহন্ত পরিচিহ্নিত• ।। यहाध्यतिकः সকল মৃণ দাভূম-সমর্থ স্তদা শক্ত্যনুসারেণ দত্ত্বা দত্ত্বা পূর্বকৃতস্য লেখ্যস্য পৃষ্ঠে হভিলি-খেদেতাবন্মযাদণ্ডমিতি।উত্তমর্ণো বা উপগত পুাপ্ত ধনন্তলৈ চব লেখ্য-**म्र भृष्ठि मह्याहि जिल्ला यह जान गर्गा** লব্ধ মিতি। কথ স্বহন্ত পরিচিহি-७ । यह उ विथि जा क्र विद्धि ७ । । যদ্বোপগত পুবেশপশ শ্বহন্ত লি-থিত চিহ্নিত মধ্মণাযোত্তমৰ্ণো দ-म्तार ॥#:। या ठ क्राय माख जि খ্য কি কর্ত্তব্যমিত্যত আহ। দত্ত্র্ণ भारियस्त्रथाः भूष्को ठानाजु कात-(य९। क्रांभन मक्रिय वा क्रम म्न न्त्वा भूर्बः क्उः (वर्थः म्नार्रेशः । যদা তু দুর্গদেশাবস্থিত লেখ্য ন-क्षे वा जना भूटिका अधन गंत्र निवृज्य মন্যলেখ্য কার্যেদুত্তমণ মধ্বর্ণ: পূর্বোক্ত ক্রমেণোত্তমর্ণো বিশুদ্ধিপ-धः व्यथनवीय मन्त्रामिकार्थः ॥ #॥ সসাক্ষিকে খণে কৃৎ স্নে দাভব্যে কি• कर्डवा भिषा चार । नाकि मह ভবেঅ্দ্বা তদ।তব্য সসাক্ষিক ৷ यञ्ज ननाकिक मृगष्ठ भूर्वनाकि

সমক্ষমের দদ্যাৎ । ইতি লেখ্য লেপন শ্লী পুকরণ । ইতি মিতাক্ষরাযা ভাষা। যথা ব্যবহারাথায়: ॥ পক্ষে ভূতী

(लच्छा हिन्सा खी ज्लिका। ইडिंग् मदत्र ज्ञादली ॥

লেখ্যপত্র: পু॰ তালবৃক্ষ:। ইতি
ভাবপুকাশ:। লেখনীযপত্রে ক্রী।।
লেখ্যস্থান• ক্রী লিখ্যতেষত্র ।
আফিস ইতি দপ্তরখানা ইতি চ
ক্রেছভাষা। তৎপর্য্যায:। গুস্তৃস্টী

লেও জী গৃথ । ন্যাড ইতি ভাষা । যথ।। উৎসসজ বৃহল্লেও মৃত্রঞ্চ ভয় মাপ হ। ইতি বুক্ষবৈবত্তে শ্রী কৃষ্ণ লয় যাও ধেন্কা সূর্বধে ২২ . অধ্যায়:।।

२। इंडि भपत्र द्वावनी ॥

লেপ ঋড গমনে। ইতি কবিকল্প ক্রম:।। ঋ অলিলেপৎ। ড লেপতে লিলেপে। ইতি দুর্গাদাস:।।

লেপ: পু॰ লেপন ।। ভোজন । উতি মেদিনী ॥ সুধা । চুন ইতি ভাষা। ইতি বিশ্ব: ॥

লেপক: পুণ জাতিবিশেষ:। রাজ ইতি থৈকর ইতি চ ভাষা। তৎ-পর্য্যায:। পলগণ্ড: ২। ইত্যমর:॥ লেপী ৩। ইতি শদ্রত্বাবলী॥ লেণ্যক্ৎ ৪। ইতি হেনচন্দু:॥

লেপ:। লেপা ইতি ভাষা। যথা ৷ বৈশাখন্য নিতে-পক্ষে ভূতীযাক্ষয় সংজ্ঞিতা ৷ তত্র মা• লেপযেদ্বন্ধ লেপনৈ রতি-শোভিত ৷৷ ইতি তিথ্যাদিতত্ত্ব• ।। 🗱 ।। বিষ্ণুগৃহলেপন ফল । যথা। वादाङ् উवार्छ। मृन् छत्क्वन म परि विभागानमा यटकवः। अर्बः उ কথবিষ্যানি যথা প্রাপ্নোতি মা-नवः ॥ भागयः गृश दि जूम मन বেশ্মোপলেপযেৎ। ন্যন্তানি তত্ত্ৰ যাবন্তি পদানি চ বিলিম্পত: ॥ ভাবদ্বৰ সহস্থাণি দিব্যানি দিবি साम् । यि चान नव्यानि नि প্যতে মম কর্মানু।। জাযতে বিপূ-ल मुष्क धन थाना मगाञ्चल । দিবৈত ন্যক্তো দেবি **স্প**দ্বীপায গছতি ৷ জশদ্বীপ মন্পুৰিগ্ সহসুণ জীবতে দশা। নন্দক্ত শৈচৰ জাথেত गङ्गा अनवान् मुहिः ॥ अभिदी-পাৎ পরিভুঙ্টো নম কর্ম পরাযণঃ । রাজাবৈ জাগতে সূক্র সর্ব ধর্মেষ্ নিষ্ঠিত: II **লেপ**নস্য প্রভাবেণ মম কর্ম পরায়ণঃ। ভক্ত্যা ব্যবস্থিত শ্চাপি সর্বশাস্ত্রাণি গছতে ॥ দেবি কারয়তে সর্ব মন চাবতনানি চ। কার্যিত্বা যথা ন্যায়ণ মম লোকায়

পছ্তি।। গোন্যস্ত ত্বক্যামি **७ह्** नुष्ठ व मुक्त दि । गामग्र मन जान्। यादाल्लाकानुगह्छि॥ ज মীপে যদি বা দুরে গত্মানযতি গো· भग । याविष्ठ उद्भारानामा जा-বন্ধৰ্য সহসূত্ৰ ৷৷ গোম্বান্যিতা रिচव त्रर्गालाक मुहीय । একা-দশ সহসাণি একাদশ শতানি চ য়। ততঃ স শাল্মলে দ্বীপে রমতে **চ মুरायुज:। भान्यवाख् পরিভ্**ষ্টো রাজা ভবতি ধার্মিক:॥ মন্ডক্ত-ৈশ্চৰ জাযেত সৰ্ব ধর্মবিদাম্বর:। व्यथ द्वाप्मवर्षाण महिन्छः मूप्र-বুত:।। বহুতে গোম্য সূক্র ম্ম-लाकाय गहुछि। ইछि वदा**र**भू द्राप॰ ॥ 🗱 ॥ (म्वीगृहत्वभनक्व • यथा। (नवडा गृश्ख यः मुक त्रा-भयनभू (लभर्व । जिया वा यनि या भूभ्यः यथायञ्च निव्रञ्जरः ॥ य वर्ष्टिशिष्टान् कामान् एत्रा লোকঞ্ গছতি। ইতিদেবীপূরাণে ८२ अश्रायः ॥

লেপনঃ পু• ভুক্ষনামগন্ধ দুব্য•। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥

लिभी भू॰ लिशकः। रेथकत्र ইভি
ভাষা। ইভি শদর ব্লাবলী॥ লেপকর্ত্তরি লেপবিশিষ্টে চ ত্রি॥

লেপ্য ত্রি লেপনীয় । লেপ্তব্য । লিপধাতোঃ কর্মণি য প্রভাষেন নিয়ন্ত্র ।।

(वन)क्ट भू॰ (वनकः। ইতি (रुमहन्मुः॥

लिना। उर्भर्यायः। অঞ্জিক।दिकार। ইতি হেনচন্দুः॥

लिशकी की मुगक्त पुराविशकी।
इंडि मस्त्र पार्वी॥

লেষ: পু• সি[,]হরা**শ:। ইতি** জ্যোতিস্তত্ত্ব• ॥

লেলিহান: পু॰ শিব:।ইতি শব-রত্নবেলী।। সর্প:।ইতি হেমচন্দু: ।। পুন: পুনর্লেহনকর্ত্তরি ত্রি।।

विश्वाना की मूम्विष्मयः ।
यथा। वकुः विद्याद्विकः कृषानाः
यथा। वकुः विद्याद्विकः कृषानाः
यथा। विद्याद्विकः विद्याद्विकः कृष्टि विद्याद्विकः
यथा विद्याद्विकः विद्याद्विकः
यथा विद्याद्विकः विद्याद्विकः
विद्याद्विकः विद्याद्विकः विद्याद्विकः
विद्याद्विकः विद्याद्विकः विद्याद्विकः
विद्याद्विकः विद्याद्याद्विकः विद्याद्विकः विद्याद्विकः विद्याद्विकः विद्याद्व

ं नात्र भूकी विंठा। ইতি उस्तराहः लणः भू क्या। ইতান हः ॥ लिक्षे: भू लाक्षे । ইতান हः ॥ लिक्षेत्रः भू लिक्षे (जिल्हा । देखि भवत्र वावनी ॥

(मश्रू जिस्तः भू ं (माश्रेज्य गायन-मून्तः। गरु इंडि थ्याजः। इंडि (कहिट्। इंडि जत्र जः॥ जट्मर्य्या-यः। (काहिमः २। इंड्याप्तः॥ (काहिमः २। इंडि तन्न (काहिमः १। (त्रश्र्वः ४ (मश्रू जिसे ६ ह्न रिखः ४) । ইंडि महत्र ज्ञावनी॥

रनिकः भ् इख्यादाहकः। उद भर्त्याः। किंद्रिशहकः २। हेडि णद्याना॥

(नशः श्रु॰ आहातः। ভक्षनः। इति (हनहन्तुः। ७९ शर्यागः। स्राप्तनः २ त्रमनः ७ सप्तः ४ सप्तिः ৫ । ইতি রাজনির্ঘণ্টः॥

লেহন ক্লী জিস্থ্যারসগৃহণ ।
চাটন ইতি ভাষা। তৎপর্য্যায়:।
জিস্থায়াদ:২। ইতি হেমচন্দু:।।
লেহিন: পৃ টক্ষন । ইতি হেমচন্দু:।।

(लश् क्री अमृडः। ইडि णप माला।। (लश्नीय जि॥ लिक्शु क्री लिक्शुवाणः। यथा।

सार मां किया है उपा लिया है किया है जा कर के किया है कि किया है क

केंडि पूर्गापामः ॥

लाकः भू॰ जूवन॰ ॥ जनः। हेड्डामद्रः ॥ मश्रलाक नामानि यथा ॥
जू जू वः म र्म रेण्ड जनण्ड जभ
वव ह । मड्डालाकण्ड मरिश्र जलाकास्त्र भित्रकी र्दिडाः ॥ हेड्डानभूतागः॥ स्रामह । ज्रली रका जुदः
मर्लाक खिलाका भिष्ठ मुह्हाउ ।
मह जन स्रभः मड्डाः मश्रलाकाः
भूकी र्दिडाः ॥ ज्रली कः भार्थिता ने
रम्ह्रं यथा क्रमः॥ ज्रुमा विभाष्ठ

শ্চাৎ ত॰ করোতীতি ঞৌ সাধ্য[়]।

ছব্ন জতে। ভ্তপতিস্ত স:। বাযু ম্পতি: ॥ ভাব্যস্য সূর্য্যাধিপতি रखन मृश्या पिवण्णि**ः।** गज्ञज्ञाञ्च রস শ্চৈব গুছকা: সহ রাক্ষ্রি:॥ ज्र्लाक वामिनः मर्ख जन्नीक ह ब्रान् भृग् । सक्छः मधिः करेन्त कृमा खरेषव ठामित्नो।। चानिज्रा वमवः नार्व ७रेथव ह गवाञ्चनाः। চতুর্থে তু মহর্লোকে ভিষ্ণান্ত কল্প বাসিন: ৷৷ পু্জানা পতিভি: সর্বি: সেব্যতে পঞ্মো মহান্। মনুঃ স-न द्यावाम्। विवाहम् मूजा खगः য়। ষঠে তু সংস্থিতা ছেতে দেবা দেব-বিরোধকাঃ। সভ্যস্ত সপ্তনো লো-(का श्रभ्नर्ज्ववानिनाः ॥ वृक्तत्वा-ক: সমাখণতো হাসুতীঘাত লক্ষ-गः। महोजनार महनुष्म **उ**ठ উक्षु • मियाकब्रः ॥ मम जानि शुःवः याविष्युख्या विख्नाख्या । मन्यया জন কোট্যস্ত মেক্ কদ্ধ • প্রব: সৃতঃ॥ ত্রযোবি**·শতি লক্ষাণি তৈলো**ক্যে-শৈক উচ্যতে । দ্বিগুণেযু সহসেুযু যোজনানা শতেষু চ।। লোকান্তর मर्थितक धुनामृक् विशेषा । (म्द्रमान्द्रशक्तर्व यक्क द्राक्षन श्रम गाः ॥ जूड विन्याध्या रेक्टव व्यक्षी

७ (एवर्यानयः । ७ वुक्ताक्षम् म-ধ্যস্থা: পরত ভননাবৃত ।। ততে। **২**ণ্নি বাযু রাকা**শ**• ততো ভূতাদি কচ্যতে। ততো নহান্ পুধান 🗫 **পু**क्**তिः** शुक्ष ख**उः ॥ शु**क्षाहीश्व-রো জ্রেযো यग्र मङ्गावृত क्रशः । শিবোমা ভানু দেবানা পরাপর তরা নতা:।। ইতি দেবীপুরাণে ত্রৈ-लाक्राजुरिय गुरुगि नामाध्रा-यः ॥ 🗱 ॥ पिक्भावानाः (वाक। যথা। পুলাপতিত্ব ভগবান্ গুণতঃ পুক্ষ্য দেবতা। আধিপত্যেরু শু-ল্লেষু ন্যযোজয়ত যোগবিৎ ॥ ত্রগা-ণামপি লোকানা দেবভানা দি-জোভমা:। চকার শক্ত রাজান• रिस्ड्राचाः मिडि शृर्वकः ॥ शूर्वग्राः को निका রাজা দক্ষিণ ম্যা॰ যুনো **मिनि । वक्षः भन्तिमायाञ्च উखद्र-**স্যা॰ সদা ধনী ॥ # ॥ পুণ্যবতা॰ লোকা যথা। এবং বিভন্ত রাজ্যানি পুরা প্রোক্তানি যানি চ। লোকা শ্চ विनरव निवान मनावथ शृथक् शृथक् ॥ कम्राहिष्ट भूर्यामञ्चामान् कम्रान् विश्वश्चिम्यामान्। कम्यविष्वस्थात-**(म्राजान् कम्र)** हिष्टु निर्याचान् ॥ নানাবৰ্ণান্কামন্যাননেক শত যো-জনান্। সভান্ সূক্তিসাং লোকান

পাবনায চ সংস্থিতান্।। ভান্দ্বে যে তপস্যন্তি সৌন্যা স্তারাগণাঃ সদা। এতে সুকৃতিনা লোকা যে শান্তা: পুণ্যকর্মজি: ॥ যে যজন্তি भरेथः शूरेगुः ममाछ दत मिनिः 1 স্বদার নির্ভা দান্তা ক্ষত্ঃ স **छ।वाहिनः ॥** हीनान्गुहक्खांदा ব্ৰহ্মণ্যা লোকপুজিভা:। যোগযু-ক্তা মহাআানো যাত্তি **তত্ৰ তপো**-ब्बुधाः ॥ गर्भगशः क्रमाय्काः কোপিতা যে ভনোজিতাঃ। এবং नियाका उनयान् त्रयः लाकिनः তানছ:।। পৌষর বুক্ষমদন মা করোহ পুজাপতিঃ। সর্বে ধ্যয় मरल्यू भावत्मयु मिरवोकमः। (त्रिमि-রে খেব লোকেয়ু মহেন্দুেণাভিপা-লিভাঃ।। ইতি বহি পুরাণে বারা-रुशामुजीवनासाधागः॥

লোককান্তা প্রী প্রজিনামৌবধা। ইতিরাজনিয়টঃ॥

लाकाकः भु• म्यहः। इठि मफ् याना॥ जनमहत्वातनकः॥

लाकिहर भुः दृष्तः। ইত্যনরः॥ लाककृषातः भुः कभ्तः। ইতি রাজনির্ঘটা।।

লোকনাথ: পু॰ বৃদ্ধ:।ইতি ত্রিকা ওলোধ:।। বৃদ্ধা।ইতি শন্ধরুল वनी।। विकृ:। ইতি তস্য সহসুনাম ভোত্ৰ'।। শিব:। यथा। ध्यकिঞ্চন: সন্পুত্ৰ: ম সম্পদাং স
লোকনাথ: পিতৃসদ্মগোচর: ।
স ভীনকপ: শিব ইত্যদীর্য্যতে ন
সন্তি যাথার্য্যবিদ: পিণাকিন:।।
ইতি সমারসম্ভব:।।

लाकशानः भू द्वाजा। ই छ हनागुषः ॥ पिक्शानः । यथा । हेत्नु।
विद्रः शिक्शिक निर्श्वि विकाश श्वितः। धनमः मक्षद्वरेण्ठव लाकशानाः भूद्वाजनाः ॥ हेकि विद्रःभूद्वागः॥

(मार्क्याञ्चयः शु॰ जूर्याः। ইভি करी-धरः॥

(लाकमाठा छी लन्दीः। ইত্যমরः॥ (लाकलाऽनः भू॰ স্র্য্য:। ইতি শব্দরত্বাবলী॥

লোকবাছ: পু• সর্বাচারব**র্জিত:।** বথা। লোকবাহুস্ত যো বাজি গ-বাশ্যাচারবর্জিত:। ইতি জটা-ধর:॥

लाकविनायकः शुः गुरुविष्णयः।
यथा। कन्तग्राप्तया य व व्यार्गः
क बामकाप्यः। कोमाता एउ ज्
वि (छ्वरा य व ला कविनायकाः॥
महनु गढ मःथा अ मर्जालाक

বিচারিণ:। ইতি বহিপুরাণ।। লোকবিশুভি: স্থ্রী জনশুভি:। কিম্বদন্তী। ইতি কেচিৎ।। লোকাযত প্লী তর্কভেদ:।। চার্বাক-শাস্ত্রণ। ইত্যমরভরতৌ।। লোকাযতিক: পুণু চার্বাক:। ইতি হেম্চন্দু:।।

লোকালোক: পু• স্থনামখ্যাত্ত-**भर्व ७:। ७**९ भर्य । इक् वाउ: २ । ইত্যমরঃ । ছে সাজিদ্বীপা• মহী মাবেষ্ট্য প্রাকারবৎ স্থিতে গিরৌ লোকালোক ইতি স্বনান্থ্যাতে। অন্তর্লোক্যতে স্ন্যুর্ন্মিভিঃ স্পৃ भागानवार इंडि लाकः। उथा বহি: সূর্যকরণাম্পর্শাৎ ন লো-कुट इंडि चालाकः। लाक्-कीक कर्यान वक लाककारमो অলোকশ্চেতি লোকালোক:। চ ক্রুণ নহীচক্রণ বণ্ডতে বেষ্ট্রযতি চক্র-বাড:। বডি ড বেষ্টে চ যণ জ্ঞাপক সিদ্ধস্যানিত্যত্ত্বাৎ ন নুণ্। ইতি ভরত: 🛚 ।

লোকেশ: পু• বুহ্মা। ইত্যনর:॥ বুহ্মভেদ:। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষ:॥ পারদ:। ইতিরাজনির্ঘট:॥

लाकि खद्रः शुः वृष्ट्या छनः। ই 5 विकाल लायः॥ जूदनानाः जनाः नाकन्ड्रण ॥

লোকেশ্বরাত্মজা দ্রী বুদ্ধশক্তিভেদঃ । ভৎপর্য্যায়:।ভারা ২ মহাশ্রি: ১ ওক্ষারা ৪ স্বাহা ৫ 🕮: ৬ মনোর-মাণ তারিণী ৮ জায়া ৯ অনন্তা ७ लिवा ३३ श्रृत्ववामिनी ३२ **जुना २० रिना**रा '२८ नीनमत्रम्ञी ১৫ শগ্রিনী ১৬ মহাতারা ১৭ বসু-थात्रा ३৮ थ्यन्त्रा ३৯ जिल्लाङ्ग ২০ লোচনা ২১। ই তি ছেমচন্দু:॥ লোচ ঋক ভাসি।ইভিকবিকল্ল-काः॥ य जन्माहर। जिमि ही-छो। किन्छ भू हरवा छन भारताह-वो ভाव ३७ मूर्जन्य क्लाव भन्न বচনার্থ নাহতঃ। ইতি দুর্গাদাসঃ॥ লোচ খাড ইক্ষোইভিদুর্গাদাস: ।। देकः भर्गाताहनः भूतिवान भिक्ति यावट । य व्यनुतनाइट । ড লোচতে কার্য্য সুধী:। ইতি **मूर्गामामः** ॥

लाहर क्री अमु। इंडि बहासतः॥ लाहकः श्रु भाष्मिश्रिशा श्रीकः श्रातका॥ कब्जनशा खीना नना हेडियाशा करनी॥ नीनवद्धशा निर्किः॥ कनभूतः॥ भूषी ॥ जुन्नथहर्मा इंडि भिद्दावनी॥ नि- स्नाज्न• क्री ठक्ः। **इ**ज्जनद्वः॥ उन्र भू **डाम् डलक्ष**ण यथा । वक्तरिः পত্মপত্রাভৈ র্লোচনৈ: সুখভাগিন: । भार्जाद्रलाहरेनः भारमा महाज्या भव्षिक्रेणः॥ क्रुताः (कक्त्रान्छ।-**क्र इति गाकाः नक**नायाः। क्रिस् শ্চ লোচনৈ: কূরা: সেনানেগ গল-লোচনা:।। গম্ভীরাক্ষা ইম্পরা: त्रु। में खनः ज्वात्रक्षः। नीत्वाद-পলাক্ষা বিদ্বাংস: সৌভাগ্য: শ্যা-वहस्कवा ।। ना क्ष्यातका कारा मङ्गा मुर्शाहेन किला मः **७वाकाक शाशाः मु**। विःसाः मु। भी घंटणाठनाः ॥ मृक्त्रिका विभू-, লা ভোগে অল্লায় জ্ঞাতি চোমতা । বিশালোমতা সূথিনি দরিদা বিষমক্রব: ॥ ইতি গাৰুডে ৬৬ व्यथायः॥

लाउनहिठा खी ज्याक्षम । इंडि ब्राबनिश्टे:॥

লোচনা স্ত্রী বৃদ্ধাশক্তিভেদঃ৷ অস্যাঃ
পুনাণ পর্য্যাযাল্চ লোকেখরাভাজা শব্দে দুষ্টব্যাঃ ৷৷

লেটিনান্য: পু॰ চফ্রোগবিশেষ: । তৎপর্যায়:। অভিনম্থ: ২। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষ:।।

व्याहनी जी महाभावितका। हेकि

त्राजिक्यं है: ॥

লোচনকটিঃ পু॰ লোচমস্তক:।ইত্য-নরটীকাবা॰ স্বামী ॥

लाहमखकः भू मण्डामाथीययः।
कृष्किते हेडि थ्याडः। क्षाड्यमानिक्डि किहिट्। उट्भर्यायः।
थ्राथा २ काज्ञवी २ नीभ्यः ६ मण्डः
१ हेडि खंडः॥ लाहमक्तिः ५।
हेडि खंडः॥

ला है या उमारि। इंडिक विकन्न-क्रमः ॥ या यानुरत्ना हेट् । त्ना हेडि त्नाकः उमारि डी डिर्शः । इंडि पूर्णामामः ॥

লোট্ল: পু অভিলোটক:।ইতি সংক্ষিপ্তসারোণাদিবৃক্তি:।।

लाफ य छैत्राप्त। इंडिकविकन्न-क्षमः ॥ य व्यन्ताफ्ट । इंडि पूर्गानामः॥

লোণতৃণ ল্লী লবণতৃণ । ইতি রাজ-নিঘণ্টঃ।।

লোণা স্ত্রী ক্ষুদুন্দ্রিকা। ইতিরাজ-নির্ঘটঃ॥

लागातः क्ली कात्र विश्वासः। उ९-পर्येऽ। यः। नवत्यात्यः २ नव्याकतः दः २ नव्याप्रसः ८ जनकः ६ नव्य-कातः ५ नव्यः १। अम्र ख्याः। अञ्ग्रस्यः। शिक्षयः। भिख्युषिः कातिष् । कात्रष् । त्रेयझवनष् । । वाड छन्याहि म्ननामिष्क । ইडि त्राझनिर्यन्टेः ॥

লোণামা জী ক্ষুদুামিকা। ইতি রাজনির্ঘণ্ট:॥

लाउ॰ क्री एउयथनः। उट् शर्यप्रायः
। लाथुः २ । ইতি क्रोधितः ॥
लाथुः २ । विक क्रोधितः ॥
लाथुः २ । विक क्रिथतः ॥
मान्तवावनी ॥

লোত: পু ক্লী নেত্রাম্ব। ইতি ত্রি-কাগুশেষ:।। চিহ্ন । ইতি সিদ্ধাম্ব-কৌমূদ্যামূণাদিবৃদ্ধি:।। লবণ ।। অশুপাত:। ইতি সংক্ষিপ্তসারো-ণাদিবৃদ্ধি:।।

লোত্র• ব্লী লোত্র•। ইতি শব্দ-রত্নাবলী॥ নেত্রজল•। ইতি স•-ক্ষিপ্তসারোণাদিবৃত্তিঃ॥

लायः भुः खनामथा। उत्कः। व्रक्तां क्रिका क्र

য়ঃ ৷ গালবঃ ২ শাবরঃ ১ তিরীট: ৪ ভিত্ব: ৫ মার্জন: ৬। ইভ্যমর: ম ষট্ লোপুমাত্রে লোপ ইতি খ্যা-তে। यह त्यं उत्नाधु इंछि मुङ्जिः। चारा भारः भिउत्वास् म्या त करनाय है **5 याभी ॥ उन्। প-**यंत्रपाचत्रः यथा। द्वाधुः १ जिल्ल-ভৰ:৮ ভিল্ক:১ কাণ্ডকীলক:১০ लाधुकवृक्तः ১১ भग्नतः ১२ इस्डि-রোপ্রকঃ ১৩ ভিলকঃ ১৪ কাণ্ডনীল-ক: ১৫ ছেমপুয়ক: ১৬ ভিল্লী ১৭ শাবরক: ১৮। অস্য গুণা:। क्या-যত্ত্ব শীভত্ত বাত কফাসুনাশি-षु । हरू बाजु । विषर् खु । छ ब বিশিষ্টো বল্লোপ্রকঃ। ইতি রাজ-निर्घण्टः ॥ जाभिष्ठ । व्याध्य खिन् खि-রীটক্ষ শাবরো গালৰ তথা। দ্বি-**ीयः প** डिकाला पुः क्यूकः शृन दक्षः ॥ जीनंभाया वृ**र्रभयः** भड़ी वाकाभुमातनः । त्वार्या गुशि वयः भीज म्ह्यूयः क्य পিত্তন ।। ক্ষাবো রক্তপিতানৃ-গ্রাভাতীসার শোথভূথ। ইতি णा काषाः ॥

खुः। हस्युर्व दिः। लाथिक वृः। मतः लाधः। मृतः शुः लाखः। हेि द्राजः प्राप्तः। हिन्दे ।। विद्रशे ।। विद्रशे ।। विद्रशे ।। विद्रशे । विद्रशे ।।

লোপামু

म्भिशा र्वा विष्यु भुजायन निम्नरमा रुपः ॥ त्याकद्रण मास्त्र दर्गः नामः । उथाहि । नाम विषि र्यथा । लाला श्रम्या मार्डा द्रिज्याि ॥ स्राप्ति । मकल्लास्त्रा विषिस्यः म्याप्ति लाभविष स्था । लाभ स्वार्ष्मर्यास्त्र स्वार्ष्म् । विषिन्द्री ॥ इति पूर्णापामः ॥

লোপা দ্রী অগস্ত্যমূনিপরী।ইতি কটাধর:।।

লোপাক: পু॰ শ্গাল:। ইতি ত্রি-কাওশেষ:।।

(नाभाभकः भृ भृगानः। ইঙি भद्रभाना॥

लालालिका हो म्गानी। इंडि मदमाना॥

(नाशाज्य जी जगलाज्य निर्धार्थ।
। इंडावरः॥ (नाश्यां या विद्यां विद्यां

লোপাশ

निथाउः। अगर्छार्घामानस्र स्त्रीः (त्रन जि॰ इतारमा विश्वाना । यथा বু**দ্ধবৈবর্ত্তে। অপু**ণপ্তে ভাস্করে ক न्ताः (भवस्रें जिन्नि मिरेनः । অর্ব্য দদুর রপস্তরায় গৌজদেশ নি-বাসিন: ৷৷ নারসিংহে ৷ শঙ্খে তোয়ং বিনিক্ষিণ্য সিত্রগল্পতৈ যু ত । মত্রেণানেন বৈ দদ্যাদ্দিক্যাশা-মুথস্থিত: ॥ কাশপুম্ন পুতীকাশ वार्यमञ्जमञ्जव। भिजावकगरगाः भूध बञ्जायात नामा **२**ख एउ ॥ পুর্থনন্ত। আতাপি ভক্ষিতো যে ন বাতাপিশ্চ মহাসূর:। সমুদুঃ শোষিতো যেন স মে ২গস্ত্যঃ পু-भीरजु॥गञ्चारिक्छ वगर्छ।।य नम ইত্যনেন দেয় বিশেষানুদেশে সা यानाजः शास्त्रारा मकिनामाय् স্থিত ইতি গন্ধাদাবলি পুযোগাঞ্চ-कर्वभाषामिछि ब्रज्ञाकब्रः॥ #॥ তংপত্ন)র্য্যদান মক্সস্ত। লোপামু-দু মহভোগে রাজপ্তি পতিবুক্তে । गृहानाघा भया पछ रेमजावक्षि-वल्ला । ইতি भनभा मञ्जूः ॥

লোপামু দুাপতিঃ পু॰ অগন্ত্যমূনিঃ। ইতি পুরাণ ।।

(लाभामकः भू॰ म्गानः। ইঙি हात्रावणी॥ লোপাশিকা স্ত্রী শ্গালী। ইতি হারাবলী।।

লোপ্ত: ক্লী স্বেধন । লোভ । ইত্যনর:।।

(नाधी जी (नाधुः। ইতি भय-त्रञ्जावनी॥

बाडः शृ चाकाद्धा भन्नपुरत्राङ वावः । उৎপर्गायः । ज्का २ विञ्जा **२ वणः ४** ग्ण्हा ৫ काङ्का ७ भाषा १ गर्कः ৮ वाका २ इहा ११ **ज़**हे २२ मरनात्रथः २० कामः ४८ षिन यः १६। इंडि (इम्हन्सः ॥ 🗱 ॥ ७मा वक्षा १ थवा । शव-विखामिक मृष्ट्री (नज् रा वृदि ् खाः । चिन्नार्या मिन्स्मित्रं म **ला**ङ: भद्रिकीर्खिङ:॥ इंडि भाः भ्य किरायाः **मात्र** ३५ व्यवतयः ः * । त ह तुक्तरमा २ शताब्द्धा उः र प्राचित्र में बेरे किर्मा পে। ভ শ্চাধ্য সন্তু । ইতি নাৎ। (म) मृत्थः १ पश्चिमाम ३ जवागः li # 11 म उ नाम काव्रवः यथा। (नाज भूगार विश्वारेमः भूक्रावा মশ্যতে গ্রিভি:। তথালোভো ন कर्डनाः भुनाता न न नियाम् ॥ ্ ইভি গাৰুডে নীভিসারে ১৯৫ অ-

স্যেদ স্থার নাশন নাজান: । কানঃ ক্রোধ স্তথা লোভ স্তমাদেভ প্রবং ত্যজেশ ।। ইতি শ্রীভগবন্নীতাযা। ১৬ অধ্যায়: ।।

(ता डी वि ला ड युक्तः । खरशर्यप्रायः। गृथ्नः २ गर्खनः ० लुकः ॥
श्वानाशृकः ६ ङ्क मः ७ ला नूशः
१ ला न् डः ৮ । ই डिक डि प्रदः ॥
निश्नः २। ই डि (हम हम्मुः ॥

লোভ্য: পু॰ মৃদ্ধ:। ইতি ছেমচন্দু:
।। লোভনীযে ত্রি।।

ताम॰ क्ली लाक्लः। ইতি करी-धरः॥

लाम की निशीत हर्तिनः। उटभर्यशयः। उन्कृष्टः २ (ताम १)।
इंडिश्वः॥ उन्कृष्टः ८ उन्कृष्टे ६।
इंडिश्वः॥ उन्कृष्टः ८ उन्कृष्टे ६।
इंडिश्वः विशेषा । उज्जृण्डं इत्तरु
यक्षमानि उपिता । इंडिश्वथायायः
।। अभिष्ठ। यक्ष मानि ह नाती ।।
देवित्क नाधिका जिजा। उत्तर्हत्तरु
वालारु नथं लाम भूवलनाट ।
इंडिश्वाः॥

वानकारी खी नाः महना। इंडि वाजनिर्यण्डः॥

कर्डन्तरः भुमारमा न न निषात्र ।। लामकर्नः भु भाषाः। ইতি एम इंडि गाक्षा नी जिनात २७० व्य-धाराः॥ व्यथित। विविधः नद्रक्ष लामयः द्वी हेन्द्रनुष्ठकः। होक ইंडि ্ ভাষা। ইতি ভ্রিপুষোগ:।৷ লো-ম্যাভকে ত্রি।৷

खामशामः भृ अङ्गरिकाञ्च विष्णयः। मञ् अर्ग्यम् स्मृतियम् दः । ইতি द्वासायगः॥

(लामिशाम्भः छी भुतीविष्मयः। अधुनाजागलभूत हे जियाजा। उट्गर्यायः। हम्सा २ मालिना ० दर्भभः ८। हे जिल्हा हम्मुः॥

লোমফল গ্লী ভব্য । ইতি রাজ নির্ঘণ্ট:।।

লোমবিষ: পু॰ ব্যাহ্রাদি:। ইতি ছেনচন্দু:।।

लाममः श्रम्मितिलायः॥ (मयः ॥ व्यक्तियाः ।। व्यक्तियाः विश्व कि । इकि भा कि ।। क्षािक्ष उद्या मूर्यः क्षािक्ष व्याप्ति मा । इकि मा मू पूकः॥

লোমশকাণ্ডা জ্রী কর্কটী। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।।

লোমশপণিনী জ্ঞী মাষপণী। ইতিশহচন্দ্রকা।।

লোদশপুয়কঃ পু॰ শিরীববৃক্ষঃ। ইতিরাজনিঘণ্টঃ॥

(नामणगाञ्जातः भुः मार्जाद्रियाण यः। गद्मगञ्जन। ইতি ভাষা। ७८-शर्य्यायः। প্রিকः २ माद्रजाङ्कः 2 मृशकी 8 मूजलाउतः ৫ भक्तभा-ब्र्झातकः ७। इंडि ताबिन्धंणैः ॥ जम् मृह्यभाः। शक्षमार्ब्झातवीर्युः ख वीर्युक्ट कक वाज्ञ् । क्षुः (काष्ठ्रवः (मज्राः मृशक्षः (यरशक्षमृट् । इंडि ভावनुकाणः॥

লোনশা জী কাকজ্ম।। মাংসী।।
বচা ॥ শূকশিবি: ॥ মহামেদা ॥
কাসীসং ॥ শাকিনীভেদ: । ইতি
নেদিনী ॥ অতিবলা। ইতি বিশ্ব:
।। শণপদ্ধী ॥ এর্বাক্:॥ গন্ধনাংসী
।ইতি রাজনির্ঘণ্ট: ॥

लानमाठन॰ क्ली लामभाउन॰ ।

ठामीववानि यथा । इति ठाल॰

महार्नि॰ कम्मीम्बङ्मना । এउम्तिन हावर्डिं लाममाठन मुखन॰
।। वनन॰ इति ठालक उख्मान्ह
कवानि ह । बाक्कातम ममायुङ्क॰
लाममाठन मुखन॰ ।। मुवा ह इतिठालक महिक्त हानम्खन । रेमप्रतिन महिक्त हानम्खन (भवत्यर्था उरक्रा एकि नाक्ति । स्व

লোনহর্বণ লী রোদাঞ্চ:। ইত্য-মর:॥

भर्गायः। भूजिकः २ मात्रकाउकः | लामहर्यनः भू॰ मूजः। यथा।

भुतानमः हिंछा । हां भूतानार्थितः भात्रमः । भूथा । छ। वा निष्या । भ्र्या वा निष्या । भ्र्या निष्या । भ्र्या निष्या । भ्र्या निष्या । भ्र्या निष्या । हिंछ विकृभुतात ० ज्ञान ने व्या । हिंछ विकृभुतात । व्या । ज्ञान हिंदा । व्या । हिंदा विकृभुतात २ । हिंदा कि कि मूत्रात २ ने ज्ञान । हिंदा कि कि मूत्रात २ ने ज्ञान । ।

লোনহৃৎ পূ•্ হরিতাল•। ইতি হেনচন্দু:॥

(नामानिका जी मृगानिका।यथा
। (नामानिका नीश्रक्तिञ्च। किथि
कन्नान्थी ह ना। इंडि विकासः
(नयः॥

লোল: ত্রি চঞ্চল:।। সাকার:। ইত্যার:॥

लाना की जिल्ला। नक्ती:। इंडि (मिनी।। हक्ष्मान्ती है।।

নোলার্ক: পু॰ স্থ্য:। যথা। পুলস্ত উবাচ। তত্ত: সুকেশি বচনাৎ সর্ব এব নিশাচরা:। তেনোদিতন্ত তে ধর্মণ চক্র মু দিতমানসা:॥ তত্ত: পুর্দ্ধিণ সুতরা মগছন্ত নিশাচরা: । পুগ্রপৌগ্রার্থ সংযুক্তা: সদাচার

সমর্বিতাং॥ ভক্জ্যোতি স্তেম্পাতে-বা॰ রাক্ষানা॰ মহাত্মনা॰। গন্ত: নাশকুবন্ স্ৰ্য্যা নক্ষত্ৰাণি চ চন্দু-নাঃ॥ তত স্ত্রিভূবন বুক্ষন্ নিশাচর भूता २७व८ । पिवा সূর্য্যস্য সদৃশঃ ক্ষণদাযাঞ্চ চন্দুবৎ ॥ তত্ত: ক্রোধা-ভিভূতেন ভানুনা বিপুভেদিভি: 1 ভানুত্রী রাক্ষস পুর• তদৃষ্টঞ্চ যথে-ह्या ॥ उन्हान्ना जना कृष्टे काथा-প্মাতেন চক্ষষা। নিপপাতামুরাদ্দৃ-ষ্ট: ক্ষীণপ্ণ্য ইব গুহু: 11 পত্ৰমান न्यात्वाकः भूतः नावकरेकरेः। নমো ভবায সর্বায় ইদমুদ্রৈ রধীয়ত ।। ভেষা॰ কন্দিত মাকর্ণ্য চারণা गगापहताः । सार्ड्युष्टुकुणुः अर्द्व হর ভক্ত: পতত্যসৌ।। তদ্বারণ বচ: শর্ব: শুভবান্ সর্বতো ২ব্যব: ৷ শুল্লা न চিন্তবানান কেনানো পাত্যতে जुवि॥ क्छाउवान् (मवशक्तिना जह-সুক্রিরণেন তৎ। পাতিত রাক্ষস পুর° ততঃ জুন্ধ জিলোচনঃ ॥ কুন্ধ-ৰ ভগবান্ দৃগ্নি ভানুমন্ত সপশ্যত। দৃষ্টমাত্র স্থিনেত্রেণ নিপপাত ততো ৎমরাৎ ॥ ততো বুদ্ধা সুরপতিঃ जूरितः गार्कः जनन्त्रगर । त्रमाः মহেশ্বরাবাস মন্দর রবি কার-गार ॥ गद्मा मृक्षा ह (मरवान नक्तर)

भ्वभाविन । भुमार जाकता-र्थाय वाद्रागम्या मुनानयः ॥ **ততো দিবাকর• ভ্**यः পাণিনাদায শঙ্কর:। কৃত্বা নামাস্য লোলেভি त्रंथ भारताभय भनः ॥ व्यादा-পিতে দিনকয়ে বুন্ধাভ্যেত্য সুকে-निनः। नवाक्षवः ननगतः शून द्रा-রোপযদিবি॥ ইতি প্রীবামনপু-রাণে সুকেশি চরিতে লোলার্ক জ-नन नाम ७० व्यथायः॥ লোলিকা ञ्ची हास्त्रती। यथा। कु मु। म्डमठायुष्ठा ठाव्यती व्या লিকাচ সা। ইতি জটাবর:॥ लानिजः वि मूथः। (याना हेर्डि ভাষা। লুল বিনর্দে অমান্ডাবে ধ ঞি লোল: সো २ म। बाउ: इंड। র্থে ইত পুত্যযেন নিম্নন: ।। **ाে লাল্প: ত্রি অ**ভিলুদ্ধ:। ইত্যমর:।। লোলভ: ত্রি লোলুপ:। ইত্যমর:॥ লে। ই ড সংহতৌ। ইতি কবিকর জন:।। উ লোপ্ততে ধান্য লোক:। इंভि দুर्गाहामः॥ लाक्षे क्षा लोश्यल। इंडिव्राज निर्चित्रः॥ (लक्ष्टः। ইত্যমরः॥ লোষ্ট: পু' ক্লী মৃত্তিকাথও'।ডেলা इंडि ভाषा। उद्भर्यायः। (लर्डुः

२। इंडि नम्बद्भावनी व्यवद्रक्त ॥ ॥

लाष्ट्रेः ७ मिनः ४ । ইভি ह्रिमः हम्मुः ॥ लाष्ट्रेयः भूण लिक्षेष्टमनः । ইভ

लाक्षेत्रः भू लक्ष्रे छम्नः। इत्रः भव्रह्मेकायाः छद्रजः॥ लाक्ष्रे छम्नः भू लाक्षे छक्ष्रमायनः

लाश्चरकरनः मूर् लाश्चन्यगापनः
मृत्रद्रः ॥ महे हेकि थ्यारक हेकि
किहिए। जर्रायः। लाश्चरकरनः २ लाश्चरः २ लाश्चरः १ काहिमाः ६ काहिनाः ५। हेन्यद्रहिना।
लाश्चः भूर लाश्चः। हेकि एमहन्मुः॥

लारु· क्री जलका इंडामदः ।। लारः भ् ती लोरः॥ खाक्कः ॥ अब रेडबम॰। ইতি भिनिनी॥ क्षित्र । इंडि ताक्रनियंणेः ॥ # ॥ व्यथ मुखलाइम्। भयायः। मूख॰ २ मृखायमः o म्यटमात्रः 8 निः লাজ্মজ ৫ অশাজ ৬ ক্ষিলোহ ৭ আরে ৮ কৃষ্ণায়স ১ ॥ **অথ** তীক্ষলোহস্য পর্য্যায়:। তীক্ষ ২ শস্ত্রাযস• ৩ শস্ত্র• ৪ পিণ্ড॰ ৫ পিণ্ডায়স ৬ শঠ ৭ আয়স ৮ নিশিক ৯ তীবু ১০ থট্ট ১১ मखब १२ व्ययः ३० विजायमः १८ চীনজ ১৫। অস্য গুণা:। কক্ত্ । উষ্ণত্ব । তিক্তব্ব । বাত পিত্ত कक नुत्मर भाषु ण्व नाणवः।

ভীক্ষত্ব ৷ মুখ্যাধিকগুণত্বৰ ৷ ইতি व्राक्षनिर्यक्तेः ॥ 🗱 ॥ व्यथ लाहः (স্যাৎপত্তি নাম লক্ষণ গুণা: 1 भूता (वाभिन रिष्ठ)। ना निर्छा-नाः मृदि यूर्वि। उँ८ भन्नानि भन्नी-রেভ্যে লোহানি বিৰিধানি চ।। লোহো হক্স শন্ত্রক ত্রিকু পিণ্ড कानायमायभी। धक्रा मृष्टा १ (त्रर कफ राष्ट्रगा कार्त्रिजा॥ **य**ः भारहायः সৃদূর্গন্ধে। দোৰাঃ সপ্তাय-সস্য তৃ ৷ লোহ• ভিক্ত রস• শীত• सबुद्धः ज्वद्धः छक् ॥ क्षः वयन्। চক্ষুৰ্য লেখন বাতল ভ্ৰেথ । কফ পিত্ত গর শ্ল শেখাশা **श्लीरु भा**खुजाः॥ स्वरता स्वरू कृः মীন হান্ত তৎ কিউ তদ্বদেব ছি । ষণ্ডত্ব জ্ঞাম্য মৃত্যুদ ভবেৎ ংদু। স শ্লৌ**জ**কতে **ং**শ্যরীঞ্। न्य दिवाकाणि उथा भुकालः কণেতি হৃল।স নশ্ব লোহ ॥ জীবহারি মদকারি চাযসং চেদ-শুল্মিদস ক্তে ধুব । পাটব ন তনুতে শরীরকে দাকণা ভূদি क्षाक रहिता । । ।। उत्र मात्र-(लाइन) लक्षण खगाक । क्रमाः ভূছিখরাকার।গ্যস্থান্যমেন লেপি-তে ॥ লোহে সূত্র বঁজ স্ক্রাণি তৎ

সার মভিধীয়তে। লোহণ সা-त्राश्चयः **र्ना**र्गुर्गे याजिमात्रकः ।। अर्फ नर्वाक्ष वाउ भूनक পরিণামজ। ছদিঞ্চ পীনসং পি ख॰ याम माणू व्यत्भाक्ति॥ 🛊 ॥ অথ কান্তলোহস্য লক্ষণ গুণান্চ। যৎপাত্তে ন পুসরতি জলে তৈলবি-ন্: পুতথে হিমু গন্ধ ভাষতি চ নিজ তিক্ততা নিয়কন:। তপ্ত দৃশ্ব ভবতি শিশ্বরাকারক নৈতি ভূমি ক্ঞাস: স্যাৎ সজল চণক: काउलारु जमुङ ॥ छल्यान्द्रार्भः **भ्वाम मामवाङ छ**शन्रद्वर काम-वा (माथ ब्रश्नान क्रय काष्ठ मरग জবেৎ।। প্লীহান নম্লপিত্তঞ্চ বক্চা-**পি শি**রোঞ্জ । সর্বানোগান্ বিজ-यर का उत्नारः न मः भयः ॥ वनः বীর্য্য বপু:পুষ্টি জরুতে হগ্নি विवर्षाट्ट ॥ # ॥ व्यथ किछी। থাবনাৰস্য লোহস্য মল ৰাজ্য भ्ठारछ। लाङ् जि॰ हानिका कि छै। निः शारक निगम्यात्र ॥ यह्माहः যদ্ভাণ প্রোক্তণ তৎ কিউ নপি ত-म्खाः ॥ क्षा व्यव (वार्मा नुक्म) (काष बाक्। यश्च क्षांत्र मृज्धः কারি হৃদ্যেগ শ্লো অক্তে ২শ্ম-व्रीक । नाना कजानाक उथा भूकाः

न क्रीह रूजान नम्बलार ॥ 🛊 ॥ व्यथ (लाह्म) (माय नाख्य (भाषन मिंचिशीयर । भारतीक्उ भवानि (वाहमााती भुजाभाय । নিষিঞ্চেত্তপ্ত তপ্তানি তৈলে তক্তে চ কাঞ্জিকে॥ গোমূত্রে চ বলখানা॰ কষাযে চ ভ্ৰিষা ত্ৰিবা। এবং লোহ-স্য প্রাণাণ বিশুদ্ধি: সণ্পুরাষতে ।। #।। অথ লোহস্য মারণ বিবি:। भुषालाह खर हुर्न भाठालगक्डी ब्रोतः। मर्पायदा भूरदेषद्रो पर्श-(रवः भूष्ठिष्यः॥ भूष्ठेवयः स्वार्याणः अश्रातिहिक्षिकातरेनः । शृष्टे वर्षेकः **छा अम्हारमय॰ जीका मृ** छ र् (वट् ॥ अ॥ व्यन्ताः किलिकाम मार्ग्यन एवर जीक हुर्ग उ: । मर्फ (यर कन)कामादि याम यूग्र उउ: भूरहेर ।। এব· সপ্তপূচি মৃ ভূs· লোছ हुर्न मवाश्व या । माउडा श्नूज्ञा (यागीतमः करमा १८न)। लाइमा-রণে। কথ্যতে রামরাজেন কৌত্-रुव विवानूना ॥ मूउकाष्ट्रिखनः न क्षं मन्। सर्वशाह कब्बनी । सर्वाः नमः लोइह्र्नः मर्प्तरः कन्रकामु दैवः ॥ यामयूगाः जजः भिष्यः कृद्। छ। मुन् । भावत्क । धार्म ध्वा क्वूक-न, शेव दाहाम्यक्षाः॥ यान्वयाः

ডবেদুক্ত ধান্য রাশৌ ন্যােরভঃ। म्रख्नां श्रीत महावक विम्नास्य मगू-षात्र ।। भिष्ठे। ह भानायवज्ञापन বারিতর॰ ভবেৎ। দাডিনস্য দল॰ भिक्षे। **उह जूर्खन वादिना।। उन्त्रना**-यमम्प्रं मशीयाट श्लावत्यम् । जा-**उला भाष**यिखह भूदिएव भूनः भू-नः ॥ এ विश्नि छिवारेत छन् भिराज नाज मः नयः। अवः मर्वाणि (लाहा-नि अर्गानीनानि मात्राय ॥ # ॥ এব॰ মারিত লোহস্য গুণা:। লো-ছ- তিক্ত- সর- শীত- কৰাৰ- নধুর-एक। ककः वयगः। हक्षुषः। (लथनः বাতল জয়েছ। কফ পিত্ত গর म्ब माकार्मः श्रीह भाषु जाः। मिरि। (नक् कृतीन् ऋष्ठः खट कियेः **उद्यान विशा क्रा क्रा क्रा भका॰ म**-মারভ্য যাবৎস্যু নব রক্তিকা: । **डा**वल्लारु ममनीया प्रशासाना-ननः नद्रः ॥ बर्गाञ्चः जिन्देउनकः नायामः রাজিকান্তথা। মদ্য নলু র-नरेक्द वर्जायालाश्यवकः ॥ इंडि ভাবপুকাশ: ॥#॥ লোহগাত্তে ভ-क्रन निरविधा यथा। यहा जू जागरा পাত্রে পত্ন মশাতি বৈ দিজ:। স পাপিঙো পপি ভুড়ক্তে ধন্ম রৌর-বে পরিগচ্যতে ॥ ইতি নৎস্যসূক

তক্রণ।। অপিচ। অব: পাত্রে পব: পান গব্য সিদ্ধান্ন নেব চ। ভৃষ্ঠা **रिक॰** मथ ७७॰ नाबिक्टलाहक ख्या ॥ कल भूनक यट्किकिन ভक्ता मुनि ब बुवीट । ইতি बुक्करेवः वर्ख जीकृष्डमथु ।।

ब्बाह्कफेक: श्रुः भएनवृक्ष:। ইতি नद्रिका॥ लोह्मयक्छेक्फ ॥ लारकास्ट॰ क्री व्ययकासः। ইতি त्राजनिर्घण्टः॥

लाहकातः भू (लोहकात्रकः । इेंजि इनागुष: ॥

লোহকারক: পু• বর্ণসংকরজাতি-वित्मयः। कामात्र इंडि ভाषा। **७८ भ**र्यप्रायः । (व्याकादः २ । इंड्र-মর:।। লোহকার: ৩ অযক্ষার: ৪ कर्मकातः ৫ कर्मातः ७। ইতি ভ-রত রভসৌ ॥ তস্যেৎপত্তি র্যথা া গোপালাভন্তবায্যা• বৈ কর্ম-কারো **২প**্ত্ৎ সূতঃ। ইতি পরা শরপদ্ধতি:।।

एलाइकि की **लाइमल**। उट-भर्यायः। किष्ठे २ त्वाइह्र्नं ० व्यागन । ४ (ना इब । ८ क्क हुर्न ५ लाष्ट्रे १ लार्यन ४। अम्रखनाः ा मधुत्रद्भः। कर्तृद्भः। উक्षद्भः। कृमि-वाउ गिकिण्य भरहून (भर छन्। । तार्गात्रकः श्र भानिक्षमाकः।

माफ नानिव्य । इंडि द्राक निर्चिष्टः ॥ चिनिष्ठ । श्रायमानम् লোহসঃ মল মণ্ডুর মুচ্যতে। लाइमि शनिका किछी मि श-क्य निगम् । उद्याह वम् खन (भाक उदक्षि मिश उद्धाः। ইতি ভাবপুকাশ: ॥

लारुहुर्न क्ली लारुकि छै। इंडि त्राजनिर्यण्टः॥

लारुष भ्री लार्कि छै। इंडि त्राकिनर्घंग्रः॥ का॰मा॰। ইতি (इ-यहन्तः॥

লোহ দাবা পু॰ টক্ষণ:। ইতি রাজ-निघंषः॥

लाङ्नालः शुः नात्राहः। इंडि ত্রিকাণ্ডশেষ:॥

(लाइशृक्ष: भू॰ कञ्चभक्ती। इंडा-মর: ।। লৌহন্যপৃষ্ঠ্যুক্তে ত্রি।। लाइनुजिमा जी लोइमगीनुजि-মা। তৎপর্য্যায়:। সূমী 2 ভূণা ৩ । इंडामद्रः॥ मृयो ८ मृर्याः ৫ मृर्यः ৬। ইতি ভরত: ॥ শুর্মিকা १। इंडि नद्रवावनी ॥

(वाइमय॰ वि (वाइाज्रकः। (वा-इनिर्मित्रं अपार्वा विष्यु निर्मित्रं भयरे भुज्रायन निम्नमः ॥

इंडि बिकाश्राणय द्राजनिर्वाणी ।।

(नार्नः भूः मृद्धनाठार्ग्यः। इंडि

(मिनी ।।

(नार्नः बि ज्याउन्याक्। इंडिऽ
सदः॥ (नार्गुार्कण्ठ।।

্লোহবর• প্লী স্বর্ণ•। ইতি ত্রিকাণ্ড-শেব:।।

लाह्यायाः भू हिन्नाः। इंडिस्म हन्मः॥

লোহসদ্ধর জী বর্ত্তলোহ।ইতি রাজনির্বট: ॥ মিশ্রিততৈজসঞ্চ ॥ লোহাখ্য জী অগুক। ইতিরত্ব মালা॥

लाशाजिमातः श्रु लाशाजिहातः । ইত্যমরটীকাষা ভরত: ॥

ভিসার ইতি পঠস্তান্যে তত্র লোহ' শব্ৰ অভিসাৰ্য্যতে পুহাপ্যতে श्वि धिक्वाह्नायुक्षाप निःत्न-(ये वाजन यं मा नीवाजना नीव-স্যু শান্তু দক্ষ্য অজন কেপো যত্ৰ जा नीवाजना वा। ইতি ভরত: ॥ পু• ভীর্থবিশেষঃ। লোহার্গল: यथा। वजार देवाह। मृगु प्रवि ह उर्जुव श्वा॰ जु॰ शति शृहिन । धश् मन्द्रह वक्तामि नइ उ: कर्याण ग-ভি:।। ভঙ্গ: সিধাবটে গড়া ত্রি**॰শ**-অোজন দ্রতঃ। শ্লেছ মধ্যে বরা-রোহে হিমবন্ত সনাশ্রিত।। তব लाङार्गनः नाम निवामः य विधी-যতে। গুছা পঞ্চশা যক্ৰ সম-सार भक्षाबाजन ॥ मून ज भूग যুক্তানা মম কর্মানুসারিণা। ওর विश्वामाह जाम उनीही निम्मा-স্থিতঃ ।। তত্ৰ বুন্ধা চ ক্ৰুণ্ট স্ক (नरम्पुक प्रकन्नशाः । আहि**छ। व**र् সবো ৰুদু৷ অথিনৌ চ নহৌজসঃ ।। সোমো বৃহস্পতিকৈব যে চা (ब) **ह दि**(वोक्ताः । (ज्वारिक्षवार्ग-व प्रका ठक गृश महोकन ॥ **उट्डा मि नामगाः मर्खि कमस्डा** লোকসুত্তম•। মথা চৈবান্তরণ কৃত্বা क्षा भागाक रिक्की ।। भाउरकारि

সহসাণি শীষ্মেৰ নিপাভিত। **এব॰ লোহার্গলে** ভ্যাসীলাম । । ত চুকারিত ।। একধারা পত্ত চ্যত্র ইন্দুগোপক সমিভা। য ভত্ত स ক্তে মান সপ্তরাত্রোবিতো নর: ॥ वुक्तलाकः अमामानः वुक्तभा त्रह (भार छ। अथाव गुका छ शाः गानश्कात्र विवर्किंडः ॥ वुक्रत्वा-ক' পরিভ্যন্ত্য মম লোক' পুণ-দ্যতে। গুছাখ্যানে মহাভাগে ক্ষেত্রে লোহার্গলে মম।। সিদ্ধি কামেন মর্ত্যেন গম্ভব্যু নাত্র সংশ-যঃ। এতত্তে কথিত ভদু লোহা-র্গল নিবাসিন:।। মাহাত্ম্যু পদ্ম-প্রাক্ষি ওছা পঞ্চ মহৌজস। মঙ্গল্যঞ্চ পবিত্রঞ্চ মম ভক্ত সুখা-বহু ।। ইত্যাদি বরাহপুরাণে লো-र्शार्वनगराजाऽ वर्गन॰ नामाधारायः ॥ 🗱 ॥ (लोइकी लाक क्री क्री ह ॥ লোহি ত্লী খেডটঙ্কণ । ইতি কশ্চি मुाजनिर्घणेः ॥

লোহিয়া স্ত্রী লৌহপাত্র•। তৎ-পর্য্যায়:। থরসোন্দঃ ২ থরপাত্র• ৩।ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।।

বোহিত ক্লী রক্তগোশীর্ষণা জ স্কুমণা রক্তচন্দন । ইতি মেদিনী য়া পাত্তস্থা হবিচন্দেশ ॥ ত্থ

शक्रम । विधितः । ইতি রাজविधितः ॥ युक्तः । ইতি হেমচন্দুः ॥
लाহিতঃ প্ নদবিশেবः ॥ ভৌমঃ
॥ রক্তবর্ণঃ । ইতি মেদিনী ॥ রোহিতমৎ স্যঃ ॥ মৃগবিশেবঃ । ইতি
শক্ষরতাবলী ॥ মর্পঃ ॥ সুরান্তরঃ ॥
ইতি ধরণিঃ ॥ মুদুরঃ । ইতি শক্ষ
চিন্দুকা ॥ রক্তালুঃ ॥ রক্তশালিঃ
। ইতি রাজনিঘটঃ ॥ বলভেদঃ ।
ইতি হেমচন্দুঃ ॥

लाहिजः जि तकवर्गयूकः। इंडा-मतः॥

লোহিতক ক্লী রীতি:। ইতি রাজ-নির্ঘণ্ট:॥

लाहिङकः पृ॰ मक्षगुरः। ইঙি मद्याना॥ भद्यद्वागमनिः। ইঙি (हमहन्मुः॥

त्वाश्डिम्सन क्षी जस्त्र । इंडऽः यदः ॥ द्रक्रम्सन्छ ॥

লোহিতপুশ্লক: পু॰ দাডিমবৃক্ষ:। ইতি ভাবপুকাশ:॥

(वाश्डिम्खिका खो रेगदिकः ।

हेडित्रञ्जाना॥ त्रक्डवर्णम् खिका ह॥

त्नाश्डि छो स्त्रः॥ वृत्राह्यका छ।। हेडि

न्य हिन्दुका ॥ त्रक्रभू नर्नदा । हेडि

त्राक्षनिष्यः॥

(नांदिठाद: भ् मङ्गार: १ इंड आक मद: ॥ कम्मिझक: १ इंड ब्राज

লোহিতাননঃ প্ নস্তা:। ইতি রাজনির্ঘট:।। রক্তবর্ণমুখে ভি।।

লোহিতাৰ: ন্নী তামু•ী ইতি জি কাণ্ডশেব:॥

লোহিতায়স॰ লী রক্তবর্ণলোহ-কাভি:। ইতি মুধ্ববোধব্যাকর্শণ।।

(नाहिडाकः भू विकः। इंडि भन्नभाषा॥ (काकिषः। इंडि भन् इन्द्रिका॥ ब्रक्तवर्गठक्रुव् कि वि॥

লোহিনী স্ত্রী রক্তবর্ণান্তী। যথা। রোহিণীরোহিতা রক্তা লোহিনী লোহিতা চসা। ইতি ক্টাধরঃ।।

লোছোত্তন ক্লী স্বৰ্ণ। ইতি ছেন চন্দুঃ।।

লোকাৰভিকঃ পু• তার্কিকভেদং॥
চার্কিশাস্থবেতা। লোকাষত•
বেত্তি ইভ্যথে ফিকপুত্যুয়েন নিয়মে ২য•॥

লৌকিক: ত্রি লোকব্যবহার সিদ্ধা:
। যথা। বৈদিকা লৌকিকজৈণ্ট
যে থথাকা তথৈব তে। নিণী তাথাস্ত বিজেষা শাস্ত্রাক্তরণ সন্ধা:
গুহঃ॥ইতি কলাপব্যাকরণে সন্ধি:
গুডৌ পুথমপুকরণ ॥ লোকায়

হিত ইত্যথে চ ফিক পুড্যয় নিক্স³

য়: । ইতি মুখবোধব্যাকরণ ।।
লোকিকভা জী লোকব্যবহারসিদ্ধন্ব । শিস্তাচারে হস্য শন্স্য
ভ্রিপুযোগ: ।।

লৌকিকারি: পু• অস•স্তারি:। যথা। ন পৈত্র্য যক্তিয়ো হোমো লৌকিকাগ্নোবিধীয়তে।ইতি শুদ্ধ-ভত্ত্বা।

लोउं स उँगारि। ইতিকবিকল্ল-क्रमः ॥ ठडुर्मस्त्री । स चलुलो-ए८ । ইতি দুর্গাদাসः ॥

लोइ: शृ (लोइ:। इउ, प्रतिकाः या । खत्र उ:।। ज ह भक्षित्र । यथा । कि । कि । कि । विषः १ विषः १

कृत्खनः कार्तिष् । मात्रकष् । स्कष्मा (माधिजम्याम्य खर्गे। मर्वद्राग नामिष् । मर्तानामि-पुष्ठ ॥ अमुक्तम्य जम्य ख्नाः । नार्तायाग्यप् । चायुर्नामकष् । द्राग ह् शीषा ज्ञा कप् । कार्याम्यः ॥ ॥। विष्ठ । ইजि द्रज्ञावन्याप्यः ॥ ॥।। चन्य (नार्माप्य पृष्ठेव्यः ॥

লৌহচারক: পু॰ নরকভেদ:। যত্র নিগডৈ র্বধ্যন্তে। ইতি পুরাণ•।।

লোহজ লী মণ্ড্র । ইতি রত্ন-নালা॥

লোহভাত্তঃ পৃ• অশ্মভাল•। হাম-ন্দিন্তা ইতি ভাষা। ইতি শব-চন্দ্রকা। লোহনির্মিতভাতে শ্লী।

लोश्नुः जी कठिनी। मान् लोश् भाजविष्मयः। यथा। लोश्नाजा-ठार्गा लोश्ना लोश्नुः कठिनीन्ऽ-भि। ইতি भद्यतिनुका॥

(नोह्यन॰ क्री (नाह्यन॰ । ইঙি রাজনির্ঘটঃ॥

লৌহশস্কু: পু॰ নরকবিশেষ:। যত্র সূচীভি ভিন্যতে। ইতি পুরাণে।। লৌহনির্মিতকীলকক্ষ।।

लोश की लोश्जः। इंडि मम हिन्द्रका॥ लोशजा जी लोश्जूः। इंडिममः চন্দ্রন।।
লোহিত: পৃণ লোহিত:। ইতি
লোহিত শবাৎ বার্থেক পুত্যবেন
নিয়মণ। লোহিতসমৃদ্ধিনি তি।।
লোহিতীক: তি লোহিতবর্ণতুল্য:
। ইতি লোহিতশবাৎ ইবার্থে
ইক্ক পুত্যবেন নিয়মণ। ইতি
সিদ্ধান্তকৌমুদী।।

लोश्डिं क्री लाश्डिष् । इंडि भिन्नी ॥

(वोश्वित: भू॰ नम्बनः। ज ह বুন্ধপুগ্র:। ইভি মেদিনী॥ সাগর: । इं जिल्लामा ।। उन्र नम्यि (नवम) উৎপত্তি र्यथा। मगद्र উবাচ। অনোঘাযা**• কণ• ক**ক্তে लोहिएडा वुद्धाः जूउः । कथः শান্তনুভার্য্যা**যা॰ রতঃ স কমলা**-সন: ।। পারক্তৈণেয় পুরো বা কথ बाछ भिजामहार । उर अंर्ब॰ শ্ৰেত্নিছামি কথ্যস্ব দিজোত্তম।। खिंब डिवाठ । मृण्यः न्शमाम् ल কথ্যামি মহত্তর । আখ্যান বু-হ্মপুপ্রস্য লৌহি ভ্রাস্য মহাত্মনঃ ॥ इतिवर्ष महावर्ष भाउन नाम नागउ:। मूनि तामो महाভागा জ্ঞানবান্ সূতপোধন: ॥ ওস্য ভাৰ্য্যা মহাভাগা অনোঘাখ্যা

স্বহাসতী। হিরণ্যগর্ভস্য মূনে ন্তৃণ 'क्म्तानुभाष्ट्रवा ॥ ७वा नार्बः न रिक्नामभर्ग्यामाभर्वाक २वम८ । লোহিত্যাধ্যস্য সর্স তীরে বৈ 'गञ्जभादान ॥ এकहा म उत्पानि-र्ष्टा निजनुत्राम्रिशान्तः जगाम-वननभुष्ठ हिन्न वङ्कलानि ह ॥ 'छिमावमस्त्र वुका मर्दालाक नि-তাসহ:। ভবাজগাম বক্রান্তি আ-**भाषा मा**ष्टर्भाः शिया ॥ তा॰ पृष्ट्री (प्रवगद्धां छा॰ यूवजी अखिम्प्तती॰। माशिका भगतिनाम् उथा ज्यवि তেন্দ্রিयः ॥ উদীরিতেন্দ্রিয়ে ভূত্ব किवृक् छा॰ মহাসতी॰। অ**वा**धावे खना वृक्ता मन्मूर्था मननार्षिजः ॥ খাবসান বিখাতাক দৃষ্ট্য নোগা মহাসভাঃ মৈৰণদৈৰ মিভি প্ৰোজ্ঞা भर्गनानाः वालीयज्ञ ॥ इत्रक्षावाहः প্রাতার মমোখা ক্ষপিতা ভদা। পর্ণ नाजा उर्ज का बाद मार्क। उर क शार्धा अकारा नगरा कार्या गृति भद्गा विगर्डिङ । वलाब सुम्राबर টাই তত্ত্বা ত্বাক শপান্যই ॥ ध्याया हिव मुक्त विशानुक उ म। न्न। (त्र ७ कक्षन ह उरेमवानुत्र শান্তনো মূ নে:। চ্যুতে রেভসি খা छात्रि र्'मयान मनाश्विः। नक्त

বাতিপরীভাত্মা হুড়ে বৈ খাশুমণ यर्वो ॥ गएउ (वष्त्रि मान्तु निक्र मा-**जुम माग**जः। जागङ्य पृष्ट्री रःजा-नाः भरकाजः उदा जृति। (उत्तर পতিত ভূমৌ বিধাতু জ্'লনোপন্ত ॥ অমোঘা• পরিপপুত্ব পর্ণলালান্তর হিতা। বিমেত্তর শুভগে পুরুত্ত॰ म्माउ ज् वट ॥ शकिनाक शम-क्षां उ एकं एकं की मृण । मा তস্য বচন শুদ্ধা শান্তনু মুনি সন্তঃ भः ॥ व्यम्बिएवर् न्याप्रसाक्ता दि-কলাননা। হ॰ স যুক্ত স্যান্দ্রেন কো-প্যাগভ্য চভূমু থ:।। কমওলুকরো ভীৰ রক্তি মাণ সমযাচত। ভাতো। **म**या **ভ**िন্ন उन्हें উচিक्षान्तवः नीनया ॥ পুচ্যাৰ্য তেজ্ঞ সংখাতো মধা শাপ ভ্যাৰ্দি :। দ্বক্ত তত্ত্ব প্ৰতীকাৰণ यपि मह्मात्रि माखरमा॥ में कि मार्थ ধর্ষণা সোঢ় কন্টিৎ শক্ষেতি জী-वज्दा म जम्मा वहन गुन्ना सक বুক্ষা সমাগভঃ॥ ইতি নিশ্চিত্য স ৰসা ভত্ত ধ্যানপরে। হভবৎ। দিব্য क्षावन उब्द्वादा (एयकार्य) मून-ভিত্তা। তীথাবভারণঞাপি হিতা**ৰ** कगजाः मुनिः। ध्याद्यापर्वः विकः थिका अखार्या। भिन्न भवुवीय ॥ इने তেলো বুন্ধণ কুল পিৰামোধে মুমা;

্জ্ঞযা। হিভাষ্ সর্বলগতা॰ দেব। कार्य्यार्थ निष्धाय ॥ ভবভ্যা निकरे॰ বুদ্ধা স্বযমেব সমাগতঃ। ত্বা মপু। মত ্মহাক্তা নাবধো: স সন্প্র চ ॥ গতো নিজাম্পদ তত্ত্ব কর্তু মহসি **७**इंडः। ७९ भुद्धा भाष्टाना दीकः। ,মমোঘাতীব লজ্জিতা।। শাস্ত্রুযন্তীব ও পাহ পতি নত্বা মহাসতী। , নান্যস্য তেজো খাস্যামি ন চেত্তে दिमनऋडा ॥ व्यवनातः यहि कर्खवतः পীত্বাত্ব মথিচোৎসূত্র। তত স্তস্যা .वहः भुद्धा युक्कः उष्रकः भाष्टन्ः॥ स्य भीषा हे उद्धन सम्। गर्छ व्यारमहरयः। मःकाभिरेजः मास्नूना <७८काভि বু ऋगः সতী ॥ गर्छ• फः খ্যনানোঘাখ্যা হিতায জগতা• ড-ভ:। তস্যা কালে তু সংগ্রাপ্ত স:-कार्डा बनमक्यः॥ उत्रास्तर उन-य कालि नीलवाजाः कित्रीवेश्क्। **র**রুমালাসমাযুক্তো রক্তগৌরশ্চ बुक्तवर ॥ ठजुज्बः भग्नविन्ताधन निक्दत उथा । निम्मात्रनितः इ क जूनाकारम करना ८ करेत्रः ॥ ७० জাতঞ্ তথা ভূত শান্তনুর্লোক শা-सनुः । हजूर्गाः भद्यजानाकः मध्यास-**(म** न)(व्यथ्याः किलान (काखर द शार्ष्य पिक्षा गन्नभारनः। काक्षिः

পশ্চিমে শৈলঃ পূর্বে সম্বর্তকান্তব্ধ াতেষা নধ্যে স্বা কণ্ডা পর্বানার্শ विरयः मुठः। क्दां ठिववृर्थं निक्रुः শরদীব নিশাকর: 11 ত ভোষ ম-श्रापः भृध्य नामाना कहिनः स्रयः । ক্রনত ভদ্য সংস্কারানকরোদ্দেহ শুৰুষে।। অথ কালে বহুভিথে ব্য-তীতে বুন্ধণ: সূত্র:। ভোষরাশি सक्ता वव्राथ शक्षायाङ नान् ॥ **उ**-यान (एवा: भभ: नम् विठीय इव नागात । भी जाभनकाल ऋष्रात्र-दि दाया जामन्याः **প্**काशवान् । চক্রে মাতৃবধং ঘোর মত্যুশু• পিতৃ-क्राञ्चरा ॥ उम्र भाषम् । भाकार ৰ্ণিতু (কাপদেশভঃ। স কগাৰ बराज ७ वृकाथा मार्ज महरा॥ তত্ত্ৰ সুত্ত্বে চ পীত্বা চ মাতৃহত্যাণ यानान्द्र। वीशी भज्ञाना कृता ভঞ্জামবভারয় ।। ইতি কালি-কাপুরাণে জামদগ্র্যোপাখ্যানে ৮৪ অধ্যায়:।। 🕸 ।। অপিচ। জাত স•-পুত্যয়: সো হথ তীর্থ মাসাদ্য ত বর । বীথী পরশুনা কৃত্রা বুন্ধপুঞ मवाहरदा वुक्तम् छाट मुठः (मा **e**থ কাসারেলোহি তান্ত্রে।কৈলা-সোপত্যকাষান্ত ন্যপত্দক্ষণ: সূতঃ

াভিন্যাপি সরস স্তীর• সমূত্থায बहावनः। बठादान मिन भूदीः ,মনযদ্বা: সু ড ।। ভভো ৎপরতা-পি গিরি॰ ছেনশৃক্ত বিভিদ্য চ। कामक्रभाष्ट्रतः भीठेनवार्यममुः र-রি: ৷৷ ভস্য নাম বিধি শ্চকে স্বৰণ লোহিতগঙ্গক টলোহিত্যাৎ স - द्वारमा बाउं। (कोश्डिंग्राय) खंडा **হ ভবং।। স কামৰূপ মথিল পীঠ** बाल्लावर वाजिना। भागवन् मर्बे शे-র্থানি দক্ষিণ যাতি সাগর ॥ লাগেৰ দিব্য যম্মাণ সংভ্যক্তা বু হ্মণ: সুতঃ। পৃন: প্ততি লৌহি-् (७) गड्डा हारमरगाबनः ॥ रिहरक ম্যামি সিভাষ্টম্যা যো নরে৷ নিয-' ভেব্ৰিব: । স্থাভি লৌহিভ্যজে-(ययु म या जि वुक्तनः भरः ॥ हिज्जु जरुल भाग भूकि: भूर**उ**भानमः । (नोहिड) (डाय यः ग्रांडि न ্কৈবল্য মবাপু যাৎ।। ইতি কা-निकानुताल ৮ दे अक्षायः॥

श्री नि श्रिव। ইতি কবিকল্পদ্ম: ।।

७४। वर्गात्मश्रान्थः । श्लिनाि श्लीनः

श्लीनः। অন্ত ছান্দ্যোপ্য ইতি রমান্থা।। লাগা। লাগাত। ইতি কবিকল্প

দ্ম: ।। বকারোপ্য: গ শ্লীনাতি

हीजः हीजिः। गि हिनाजि हीनः होनिः। गिरेनव क्यामिष् मिर्को ग क्रत्र शिम्ब विक्लार्थः। इंडि मूर्गामानः॥

यकातः। मह व्रक्षनम् अनिबः न वर्गः । यवर्गम् । ठठथंदर्गम् । व्य-**अ**। इति एक । इति । इति । इति । व्याक्त्र ११ क्षा यव द्रवीयव का द्रम् প ক ব ভ ম বা ইত্যেক পদোক্ত্যা উৎপত্তিস্থান নোষ্ঠ মুক্ত্বা দস্ত্য कार्यार्थं मसामासानि उथ म स ন ল সা ব ইতি ভিন্নপদে পঠিত-वान्। गथा मःवृष्वं उ इंडारि वकात्रमा अक्षादार केत्र मञ्जूषार অনুস্বারস্য মকারো ন স্যাৎ ॥ বৈদিকাম্ব অস্যোৎপত্তিস্থান• দম্ভ এবেত্যাহু:। অতএব ভদ্ধি: रकाः भव्रमः भरः इंड्यामी उरेष-বোদ্বারয়ন্তি। ইতি মুক্ষবোধটা-कारा॰ मूर्गामात्रः ॥ 🟶 ॥ उत्र পৰ্য্যায়ঃ। বো বাণো বাৰণী সূক্ষা বৰুণো দেবস জক:। ভোষ লা-স্তুক্ত বামা শ:। ইতি বীজবর্ণাভি-थान ।। 🕸 ।। व्यशिष्ठ । वकाद्मा द-क्ला वानः (समः थङ्गीश्रद्धा कवः। ইতি কৃদুবামলে মন্ত্ৰকোৰ:।। #া। **७गा बक्शः वथा। वकात्रः हथः**-

₹: नाशाक् म्थनो (भाक् म्दापः। পঞ্চ প্রাণময়ণ বর্ণ ত্রিশক্তি স হিত সদা।। তিবিন্দু সহিত বর্ণ भाजाि अञ्चर्या । भक्षाप्त भयः वर्गः भी छविषु । झा अयः ॥ हजूर्वर्गमुमः दर्गः अर्वनिष्व भूमाः ্যক। ত্রিশক্তি সহিত দেবি ত্রি-ৰিন্দু সহিত• সদা॥ ইতি কাম-ধেনুভজ্ঞা 🗱 🛭 কোণত্রয় যুক্তা-রেখা বৃদ্ধ বিষ্ণু শিবান্মিকা। সাবা শক্তি: পরা নিত্যা ধ্যান মস্য পু চক্ষ্যত ।। ইতি বর্ণোদ্ধারতন্ত্র॰ ।। 🗱।। व्याप्यानः। वन्त्वृञ्जनुः (१वी॰ विज्ञा॰ शख्राजकगा॰। मूङ्ग भान्यास्त्रस्याः ब्रङ्गराब्ज्नाः পরা । সাধকাভীইদা সিদ্ধা সিদ্ধিদা সিদ্ধসেবিতা ৷ এব

পে<।। ইতি বর্ণোদ্ধার তক্ত ।। ব ব্য ইবার্থ:। ইতি মেদিনী।। ব' ল্লী পুচেন্ডা:। ইতি মেদিনী।। ব্যাণবীজং। ইতি তক্ত ।।

খ্যাত্বা বকারন্ত তন্মত্রণ দশখা জ-

वः भूः अञ्चितः॥ वाण्ः॥ वदाः॥ इकि ध्विति॥ वालः॥ वद्धाः॥ क्ष्णाणः॥ वद्यान्॥ वत्रिः॥ वद्यावयः॥ इकि सद्यव्यवते॥ सार्वः॥ वद्धाः॥ सान्वः॥ वस् मः। देखि नारिनकाक्यकायः ॥
वः वि युगाम्॥ युग्नजाः॥ युग्नाकः

। युग्नम् भयः मा विजीवा हजूबी कः

ही वहवहना हक्ताः स्वः। इिंड
वाक्याः॥।

वणः प्र पृथानीबाहिः। ७८-পर्य)ायः । **म**ङ्जिः २ (गा**वः ० ब**ः नन ६ व्यल ६ व्यक्तिनः ५ व्यक्तः 🤊 অনুবায়: ৮ সন্তান: ১। ইত্যমর্র: ।। निवन >० काजि: >>। ইजि ब-টাধর:।। কলঞ্চ বিদ্যুষা জন্মনা বা পুৰণিনা মেকলকণ: সম্ভানো বংশ इंडि ज्यापिछाः । ध्रानन विष्णया বা খ্যাভস্যাপত্যধারা বংশ ইডি मुख्: । वमिं छिन्नवि भ्रम् ক্ষান্ ক'শ: নান্নীতি শ:। ইত্য मत्रहीकाया॰ **ভ**त्रजः ॥ 🛊 ॥ जृगः জাতিবিশেষ:। বাঁশ ইতি ভাষা। **७८** भर्यायः । जुक्मातः २ कर्यातः ৩ বৃচিনার: ৪ ত্ণধুল: ৫ শতপর্বা ७ यबकवाः १ (वगुः ৮ सऋतः ১ ভেজন: ১০। ইত্যমর:।। কিছুপর্বা ১১। ইভি क्रीवितः॥ वसुः १२। **ই**তি **শ**দরহাবলী II ভৃণকেতৃক: २० करोकुः २८ करोकी २० महा-वबः १५ मृष्युष्टिः ११ मृष्याः १४ वनुक नः १२ थानुवाः २० म्एका छः

२५ विमा ख्याः। व्याद्वः । व्या ় যত্ত্ব•। কিঞ্চিত্তি ক্রত্ত্ব•। শীতলত্ত্ব•। মুত্রকূ ছু পুমেহার্শঃ পিত্ত দাহাসু नामिज्य। इंडि द्राजनियंगः॥॥। व्यिभित्र। यः भः भारतः हिमः सापुः ক্ষাযো বস্তিশোধন: ছেদন: ক্ফ शिख्यः क्षामृत्वामाथिष्टाः তৎ कद्रीद्रः कहुः भारक द्राम ब्रह्मा खकः मदः। कषायः कफक्ट सामू বিদাহী বাত পিছল:॥ 🗱॥ ত-ष्प्रवाख मद्रा क्काः क्यायाः करू পাকিন:। বাত পিত্তকরা উঞ্চা বদ্ধসূত্রা: কফাপ হা:॥ ইতি ভাব **भुकाणः ॥ अ॥ भृ**ष्ठावयवः । शि-ঠেরদাঁডা ইভি ভাষা॥বর্গ:॥ইভি मिनिने ॥ बान्य जान्य विष्य । বাঁশী ইতি ভাষা। ইতি ধর্নিঃ॥ ই कः: ॥ मानवृकः: । ইতি রাজ-निघंगे: ॥

विः भकः भृ भए महितानाः। वान भागमात इति जाया। इति भारमाता।। इक्षुवित्मयः। वानाइ हिति स्मामणा इति जाया।। इति बद्गमाता।। जामा खनाः। वःभक्ष स्वाभित्रान्ती ताषु पर्वाप्तव याभकः। इति बाह्यस्य हित् हादाः। वःभकः स्वी जास्कः। इति हादाः वनी॥

বংশকফ লী আকালোদ্ধীয়নান সূত্র । যথা। বৃদ্ধসূত্রক নিত্যাস্থ রিন্দুত্রণ মনীবিণঃ। গ্রীমহাসণ বংশকফ বাজ ত্রা মকদ্ধুজা। ইতি হারাবলী।।

বংশকপ্ররোচনা জ্ঞী বংশরোচনা। ইভি রাজনির্ঘটঃ॥

ৰ**ংশজঃ পু**্ৰেণুয়বঃ। ইতি রাজ-নিঘটঃ।।

বংশর: বি সদ্বংশরাত:। ভৎ-পর্য্যায:। বীজ্য:২ বংশ্য: ৩। ইস্তি হেমচন্দু:।।

यः जडा छी यः गादाहना। ইকি गदत्रद्वावनी।।

বংশভঙুলঃ পু্ বেণ্যবঃ। ই**ভি** রাজনিষ্টঃ।।

বংশধান্য শ্লী বেণুয্ব: । ইভি রাজনিঘণ্ট:॥

विश्वानिका खी विश्वी। **३७** व्यक्तिकावनी॥

শদমালা।। ইফুবিশেষঃ। বাঁশাই বিশ্বনেত্র ক্লী ইফুনুল । ইভি ইতি সোমশাড়া ইভিচ ভাবা। রাজনির্ঘণ্টঃ।।

> यः मश्राः श्रुः नवः। ইতি द्राह्यः निर्धः हैः॥ यः मगुष्टव द्री॥

> বংশপগ্রহণ স্নী হরিতা**ল**া ইতি হেম্চন্দু:।।

ब्रांशियकः भू कृषेन्य मादित्सयः
। वाष्मभागामा ३ इति ज्ञाचा ।
इति षद्माना॥ ननः॥ त्यत्वकृः
। ইতি द्राजनिर्यक्तः॥

বংশপল্পতিত লী সপ্তদশাক্ষর
পাদছদেনাবিশেষ:। যথা। দিল্লা
নি বংশপল্পতিত ভ র ন ভ ন
ল গৈ: ।। নৃতন বংশপল্পতিত
রন্ধনি জললবং পশ্য ম্পুন্ন মৌ
কিক মিবোভ্রম মরক্তগং। এষ
চ তং চকোরনিকর: পুপিবতি
মাদতো বান্ত মবেত্য চন্দুকিরণৈ
রুত্তকণ্মিব।। বংশপল্যচরিতেতি
কেচিৎ। বংশদল মিতি শাস্তো।
ইতি ছন্দোমপ্ররী।।

युःणभञी खी नाफीरिकुः॥ ठ्नवित्नवः। ठ० भर्यप्रायः। वःणस्ना
२ की द्रिका ० की नंभि विका ८। जाम्यो
खनाः। मूमधूद्रद्वः। निर्मिद्रद्वः।
भिन्न द्रकलाय नानिद्वः। क्रप्रद्वः।
भम्याः मूक्षरायिद्वकः। ই ठ द्राक्तविर्वेग्देः॥

বংশপীত: পুং কণভগ্নল:। ইতি রাজনির্ঘণ্ট:॥

व॰मभुद्रा छी সহদেবীলতা। ইতি রাজনির্ঘশ্টঃ॥

वंभाग्तक की इक्र्म्ब । इंडि

जाजनिर्यन्छैः॥

वंभारताहना की बनामथा। उवंभाः পর্বছিতখেতবণৌ বধবিশেষঃ । ব শলোচন ইতি ভাষা। ওৎ. भर्यप्रायः । पुक्कीका । इन्यानः ॥ ব শলোচনা ৩। ইতি ভরত:।। ज्गाक्कीवी 8 गुडा ৫ वाःमी ७ य नहा १। इंडि ब्रङ्गाना ॥ की: রিকা ৮। ইতি শব্রত্বাবলী ॥ · जुगा a चुक्की दी २० मुज़ा >> बः मकोबी ३२ देनवी ३० एक्नाबा ১৪ ম্মরী ১৫ থেকা ১৬ বংশকপু'-ররোচনা ১৭ তৃষ্। ১৮ রোচনিকা ১৯ পিঙ্গা ২০ বংশশর্করা ২১। व्यन्। ७१:। क्कृद्र। क्यायद्वर। মধ্রত্ব । হিমত্ব । রক্তশুদ্ধিকা-রিত্ব'। তাপ পিত্তোদেকহরত্বঞ্চ। ইতি রাজনির্ঘট:॥ অপিচ। ব•শ-का दृःश्नी द्वरा बन्ता बाबी ह শীতলা। তৃষ্ণা কাস জ্ব স্থাস ক্ষয পিত্তাসু কামলা: ॥ হরেৎ कि है जुन शाक्ष कवामा वाउ कृ हु-দ্বিৎ। ইতি ভাবপুকাশ:॥

वःभाषातमा श्री वःभारतातमा ।
इंडि रहमतमुः ॥ जाना छनाः ।
कवाय मधुता क्का वाठद्वी वःभव्यातमा जूनाक्रीती क्वय धारा

কাসন্নী নধুরা হিমা॥ ইতিরাজ বল্লভ:॥

ক্ষশক্রা দ্রী বংশকোচনা। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।।

बःणणवाका जी वीनाम्लः। ইতি
(रमण्याका जी वीनाम्लः। ইতি
बःणछनिजः) ही । द्यापणाकामा बःणछनिजः) हिन्दाविष्णयः। यथा। वर्षा वःणछविनः कर्णो करतो। विलाम वःणछविनः कर्णो करतो। विलाम वःणछविनः मुशानिदेनः शुभूर्यं) यः शक्षमञ्जाण मुद्रित्रन्। वु कामनाना मिन गान्नालिमाः करात्र भानः म रुतिः भुनाज् वः॥ वःणछनिज मिन द्वानि । ইতি हर्ण्यामञ्जी॥

वःभक्रीती खी वःभद्रावना। ইতি त्राक्षनिघः।।

वःणागुः क्ली बःणाक्ष्यः। ইভি রাজনির্ঘটঃ॥

यः नान् हिन्छ । ते विष्ण हिन्दि वर्गन । जन्न भूता । भक्ष लक्ष्ण । जर्भ हिन्दि । यथा । जर्भ हे भू । विष्ण विष्ण । वर्ग हिन्दि । वर्गा वर्ग हिन्दि । वर्गा वर्ग हिन्दि । वर

বংশাজ্র: পূ' বংশস্যাজ্র:। বাঁ-শেরকোঁড়া ইতি ভাষা। তৎ- भर्यायः । कतीतः २ वः नागुः २ यवकनास्त्रः ४ । यम् छः । । कृष्ट्रेषः । छिक्छः । यम् दः । क्या-यदः । नय्दः । नीजनदः । भिला-मुनार कृष्ट्रमुदः । कृष्टिकातिषः । छ० भर्द्रा। निलंग्युकः । हेलि द्राज-निर्यं है । ।

বংশিক জী অগুক। ইত্যমর: !। বংশিকা জী অগুক। ইত্যমর-টীকাযা ভরত: !। বংশী। ইতি শব্রত্বাবলী।।

वंशी की मूत्रनी। वांशी हें जि ভाষা। ইতি मदत्रङ्गावली ॥ कर्य-চতুইग । ইতি রাজনির্ঘট: ॥ वंशीवाह्यभूविवद्रभः। यथा। जा-লেন রাজতে গীত• তালো বাদিত্র সম্ভব:। গরীয স্তেন বাদিত্র• তচ্ব-ত্রিধ মৃচ্যতে ॥ তত শ্বির মা-নদ্ধ ঘন নিত্থ চতুর্বিখণ তত্ত ভত্তী গভং বাদ্যং বংশাদ্যং শূৰি-র• তথা ৷৷ চর্মাবনজ্ব নানজ্ব• ঘৰ• তালাদিক মত। শুষির যথা। व । भाष भारी मधुरी जिखिती भा कारलाः। তোডरी भूतली वुक्षा मृक्षिका खत्रनाख्यः ॥ मृक्षः काशानिक वंभ कर्यवंभ उदा পরঃ। এতে শূষির ভেদান্ত কবিং

তাঃ পূর স্রিভি:।। বভ ল: সরল-শৈচৰ পৰ্বদোষ বিব্ৰজিত: ৷ বৈণব: খাদিরো বাপি রক্তচন্দ্রজো হথবা ।। ত্রীথণ্ডরো হথ সৌবর্ণো দম্ভিদস্ত ম্যো প্লিবা।রাজত ভানুজোবাপি (नोर्ड: माहित्वा २ थवा ॥ कनिष्ठा-ফুলি তুলে।ন গর্ভরদ্ধেণ শোভিত:। मिल्लिविराभुवीशन वंभः कार्या मानाइतः॥वण्यतिव माजा श्लीजि নতল্ম নিনোদিত । ততে। ২নে/-পি ভদাকারা বংশাএব পুকীর্ত্তিতাঃ া ভত্রভ্যক্তা লিরোদেশাদধাে দ্বি-মিত মঙ্গণ। ফৃংকাররন্ত্র স্বরীত बि**उ बङ्**णिशर्दगा।। शक्षास्त्रनानि व्यर्गाख्यान।इङ्गानि मधमःयानि कोमनार ॥ यमबीवीक जनग्रिन र्बञ्चन॰ कार्याः स्वारिना नीन (रूउ:व া সিক্লুকেন কলা দেখা তেন সুম্বরতা खार । भक्षामुखा २१ वंभाः अार्स्टिककाञ्चलिवृष्टिजः ॥ यज-भूजानि नामा नग्राट यावम्क्षानमा-জ্লা ফংকার ভাররনুস্য যাব। मक्ष् व बन्द्रशा जरम्य नाम यः नाम वाः भिर्तेकः भिर्तिके छ। अकाञ्च (ना इष्ट्रन क उष्ट्रन कड्डर्नः ।

অতিতারতরত্ত্বেন বা॰শিকৈ: সমূপে; কিত:৷ ত্রযোদশাসুলো বংশো**ংপ**-রঃ। নিন্দিতো ব•শ তত্ত্বক্তৈ তথা मधरणाञ्चः। यश्वमत् ख्या नाम्। विकारेग २थ कर खथा।। हजात छै-ত্তমা বংশা মতঙ্গমূনি সম্যতা:। मणाञ्चला महानला नन्त अकार-भाक्ष्यः ॥ दारभाक्ष्यमानस्य विक यः পরিকীর্ভিত:। চত্র্দশাঙ্গুলমি-ভো লব ইত্যভিধীয়ত।। বুন্ধা ৰুদ্ৰে। রবি বিঞ্: ক্রমাদক্র ব্যবস্থিতা: ॥ নৈবিড্যা প্রৌচত। চাপি সুম্বরত্বঞ্চ শীঘুতা।। মাধুর্য্য মিতি পঞ্চামী ফুৎকৃতেষু গুণা: মৃতা:। শীৎকার বহুল: স্তন্ধো বিশ্বর: সুটিতো লঘু: ।। व्ययक्षत्रक विख्छियाः वर्षावाः कृ ८कृ । वृथा नुराग বাহুল্য মল্লভা গীতবাদনে ৷৷ এতি र्फारेष गुर्जा १७१व निन्मरजा व॰-শিকো নতঃ৷ স্থানকাদিনযাভিজ্ঞো गगकाष्ट्रः युष्टाकतः ॥ भी युर्यः কলাভিজ্ঞো বাংশিকো রক্ত উচ্য-७ । भुगकि इक्षमुकिक युक्तिक. ত্যস্লে গুণাঃ ॥ সূস্যনত্ব স্থরত্ব व्यञ्जी मात्रग किया। मनखगनक জ্ঞান রাগরা শাঙ্গবেদিতা ॥ কিশা ভাষা বি ভাষা সূদক্ষতা গীত বাদনে

া হহানে চাপি দৃঃছানে নাদনির্মা-गरकोणनः ॥ गाजूनाः ज्ञानमाज्यः . ভদ্মোষাহ্বাদন তথা। বাংশিকস্য গুণা ব্রতে নথা সংক্ষিপ্য দর্শিকাঃ ।। इंडि मःगीडनायानदः ॥ जि **मदःगजाउः। उ**९-वं भारः भर्यत्रयः। ज्लाः २ वीकाः ०। ইভि जिका अप्नयः ॥ . यक इंड (कोहिला।। गर्छ। इंडि কবিকল্পজন: ॥ কৌটিলা মিছ क्रिनी ভावः अधिनी कद्राकः। ह বঙ্কাতে ড বঙ্কাতে কাপ্ত- জটিলা म्यारिजार्थः। वद्यत्य काश्चः व्यक्तिः ল করোভীত্যর্থ:। ইতিদুর্গাদাসঃ वकः शुः बनामथ्याज्यक्रिविष्णयः । ७८ भर्ये । व खः २ । इ छ । व द ।। ঘারবলিভূক্ ৩ কক্ষেক: ৪ শুক্ল ৰায়স: ৫ দীঘজত্ব: ৬ বকোট: ৭ गृर्विणियः ৮। ইতি नद्रञाः वनी।। निरेष उ: ৯ लिथी २० हन्तुः বিহুস্ম: ১১।ইতি ত্রিকাণ্ডশেব: ॥ তাঁথসেবা ১২ তাপস: ১৩ মী-नवाजी 38 न्यायायी 30 निण-লান্থ: ১৬ দান্তিক: ১৭। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ অস্য সাংসস্য গুণা:। শরারি বক কাকাশ্চ দা-जूः शः भवनाभशः । देखि द्रज्ञाः वनी । विभिन्न । इंग्ज नावन की हाक वक कोक नताकिकाः। नन्ती-मुथी जकाम्य। वनाकाम्याः श्रवाः मृजाः ॥ श्रवस्य मिलाल गमार এতে তথাৎ প্লবাঃ মৃতাঃ। জলে-চরাঃ প্রবাশ্চাপি কোশস্থাঃ পাশ দিন তথা।। মৎস্যা এতে সনা-थाजाः नक्षान्नजाउयः । व्या-न्त्रा मधुद्राः शिका खद्रादा विश्-जारमाः ॥ (लूरानाः भिह्ना काः शि माः नभूष्टिभुता ज्मा । उथाजि-यानितन एउ हि भारता भथाजनाः মৃতা:। ইতি ভাবপুরাশ:।। # ॥ बनामथाजभञ्जत्कः। उरभर्गा-यः। निववल्ली २ शामुभाउः ७ এ-काश्रीनः ८ वमुः ६ । ইত্যনর: ॥ क्का छोना ७ वूकः १ वम्कः ৮ वम् कः २ । इंडि उड़ी हा ॥ वक्शू झः > भिवमली >>। ইতি भद्रञ्जा-वनो ॥ काकणीर्यः ১२ ज्ञृलभूञ्जः ১৩ निविश्वः ३८ काकनामा ३৫ वम-হউ: ১৬ ৰণ্রক: ১৭ রক্তপুশ্ল: ১৮ মুনিতক: ১৯ অগস্তি: ২০ বঙ্গদে-নক: ২১। ইতি রত্নমালা।। অগস্ত্যঃ २२ भोष्भुझः २० मृतिकमः २८ दुर्गा-রি: ২৫ দীর্ঘফলক: ২৬ বক্রপুল্ল: ২৭ जूद्र नियः २४ । जिंड भी उ भी व (जा:

हिउ अमुम्राज्याहज्तिश्वा ३गिडः। মধুর শিশির দোষ শুন কাস বি-নাশনক ভ্তম:।৷ তথাচ ৷ অগস্তি শিশির গৌল্য তিদোব্যু শুমা-পহ । বলাস কাস বৈবর্ণ্য ভূতমুঞ্ .বলাবহণ।। ইতি রাজনির্ঘণ্ট:।। অ-পিচ। অগন্তি সমুম শীত চাতুর্থ কনিবারক। নক্তান্ধ্যনাশন ভিক্ত। क्षाय क्ष्रेभाकि हा। भीनम (भूग्र পিত্রণ বাত্রণ মুনিভি র্মতণ। ইতি ভाবপুकामः ॥ यन्।इ। वामकम्। ह **भू**ञ्च। शि वक्रस्मनम् हेव हि । कर्षे-পাকানি ভিক্তানি কাসক্ষযকরাণি ह। इंडि ब्राबदल छ: ॥ दक: शाणू-शङ्कित निवाशीएक भृत्तः। वम्कण मिवाकण मिविष्टेः कमन्-क्षकः ॥ निवनिद्धाः निवाङ्गानः ना ম্ভবো রবিসংমিতঃ। বকোতিশি भित्र खिल्का मधुःता मधुगक्षकः॥ পিও দাহ কফ খাস শুমহারী চ मी भनः। ইতি চ রাজনিঘণ্ট:।। শ 🗍 यमली भाषुभा এकाशीला यूका वमू:। वृरका ९नुकः कर्तृ खिकः कक পিত্ত বিষাপহ:॥ যোনিশুল ভৃষ। দাহ জ ৯ শোখা গুনাশনঃ। ইত্যপি ভাবপুকাশ:।।।।। তালব্যশ হার:। মুথা। শো বান্তো বপরে। বক:। ইতি

वीजवर्गाजिधानः ॥ 🗱 ॥ व्यवद्रः ॥ व्रक्षाविष्यतः। म ह जीवनक्रः । ইতি মেদিনী।। অত্র কোষে পব-গী য ব্কারাদৌ পঠিতো হয় শব্দঃ কিন্তু অনুর্যাকাথা ভরতেন অন্ত্য-স্থকারাদি বচ বক ধাত্ত্যা ক্র-(भग च পुं छ। (यन व्यन् भुं छ। (य न ह जाविजः॥ 🗱 ॥ यंद्यविष्णवः। यथा । জল কছপ পাতাল দোলা ভ্ধর वालुकाः । वकान्ता यख्य (छन्।ः मु। बंजुाक्षाम्। क मृतिकाः ॥ ইতি **भ**द्रिक्ता ॥ चन्र विवद्रभ यथा । भीर्घकछ काठक्रा भिन्तायर म-ল্লভাগুক । ভীৰ্য্যক্ কৃত্বা পচেৎ চুল্যা॰ বক্যন্ত মিতি মৃত ।। ইতি रेवरऽकः॥ 🕸 ॥ अनुद्रविष्मयः। न ह শ্রিকৃষ্ণেন হত:। যথা। স্ব·ম্ব• বৎস-इतः गर्द्ध भाषिषाञ्च এकमा। भद्रा कवा भया छ। तर भाग यिदा भभु र्ज-লং।। তে তত্ৰ দগৃশু বালা মহাসত্ত্ব মবস্থিত । তত্ত্রসূ বজু নির্ভিন্ন গিরে: क्ट भिव हूं उ॰ ॥ म देव बदका नाम नहानमुद्रा वक्क्षभृक्। जागज्य ভরসা কৃষণ তীক্ষত্ভো প্রসদ্ধী া৷ कृष्म भहावकगुष्ठ मृष्ट्री द्रामानत्या र्डकाः । वज्रु क्रिन्द्रियागीव विना পুণি বিচেত্স: ॥ ত তালুমুল

अप्रवेश मित्र शिला मृत् भिरुतः अपर्वाः। हहकं महा। शिल्यः वाक्ष्यः वक्ष्यः वक्ष्यः भून त्रः ज्ञान्यः ज्ञान्यः। ज्ञाः गित्रः। ज्ञाः वित्रः। ज्ञाः व्याः।

दकिष्णिक। जी मह्त्राविष्णयः। छर्प्रायः। वकाठी २। इंडि हाजावनी॥

ৰকজিৎ পৃ• ভীমসেন:। ইতি ত্রি-কাওশেষ:।। শ্রীকৃঞ্চ ।।

বক্ধ্পঃ পু• বৃক্ধ্পঃ। ইত্যমন্ন-টীকা॥

ৰকনিস্দন: পূ॰ ভীমসেন:। ইতি হেনচন্দু:।। ত্ৰীকৃষণ্চ।।

বকপুয়ঃ পু॰ বকবৃক্ষ:।ইতি শব-রত্নবেলী॥ অগন্তিস্সুনে ক্লী॥

क्कृब्िः शृ॰ वक्कृष्ठावर्डनविणिष्ठः
। यथा। शाविश्विता विकर्ष्यञ्चान्
देवजान् वृद्धिकान् श्राटेन् । देवजुन्
कान् वकृत्छी॰ का वाद्यार्विशालि
नाहरण्य ॥ इंजि विक्षृश्रद्वार्थ २
व्या। व्यव्यागृहि तेक्जिकः मार्थ

সাধনতৎ পর: । भार्ता मिथाविनीजण वकवृद्ध क्षाण्डः ॥
इति उपोकायाः श्रीधतमानी ॥
व्यालित । व्यापाण्डे रेस्कृष्ठिकः मार्थमायनज्द भदः। मार्तः मिल्ली मिनीजण वकवृद्धि क्षाण्डः॥ इति
भाष्नाखद्रथए ७७६ व्ययायः॥
वकरवती भ् जीमरमनः। इति
कतिषदः॥ श्रीकृषण्डः॥

वक्वु ने शृश्विशाविनी छः। वक-वृद्धिः। इति ब्रोधितः॥ छम्ऽ लक्ष्णः यथा। अर्थामृष्टि निक्षिकः सार्थमाधन उर्भतः। मार्था मि-थ्याविनी जम्म वक्वु ज्ञाबिकः॥ इति मानमाभातं मनुः॥

বৰাচী জ্রী বকচিঞ্চিকান্ৎস্য: । ইতিহারাবলী।।

বকারি: পু প্রাক্ষণ:। যথা। তদা
বকারিণ সুরলোকবাসিন: সমাকিরমন্দন মল্লিকাদিভি:। সমীডিরে চানক শার সংস্তবৈ স্তবীক্ষ্য
গোপালস্তা বিসিমিরে ॥ ইতি
প্রভাগবতে ১০ ক্ষমে ১১ অখ্যায়:
বলল: পু মনানখ্যাতপুয়বৃক্ষঃ।
তৎপর্য্যায়:। কেসর:২। ইত্যমর:
।। কেশর: ৩। ইতি ভরত: ॥
বুক্ল: ৪ সিংহ্কেসর: ৫ ব্রলক্ষঃ

७ भी थु गन्नः १ मुक्षः ৮ मूखनः ३। इंडि मफ्तद्वावनी ॥ खीम्थमधू २० (मारुनः २२ मधुभुद्धः २२ मूत्र-**ভি: ১৩ ভুমরানদ্য: ১৪ স্থিরসমূম: ३८ भात्रिकः ३५ कत्रकः ३१ मी** সংজ্ঞ: ১৮ বিশারদ: ১৯ গ্ঢপুষ্ণ-कः २० ध्वी २३ अम्बः २२ अम्। মোদ: ২৩ চিরপুল্প: ২৪। অস্যপ্ত गाः। भी उनद्गाङ्गपुग विवासाय-नामिष्। मधुत्रष्। कवायष्। महा-ए। इर्थरायकवृष्य ॥ उटक्रमू-मल्याः। क्ठाद्वः । कीताराद्वः । **সূরভির্ণ। শীতলর্ণ। মধ্রর্ণ।** निष्वः। कवायवः। भवामः गुरुः কারকত্বঞ্চ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥ অপিচ। বন্ধলো মুধ্যন্ধশ্চ সিংহ **क्मित्रक खथा। वञ्चल ख**वरत्रा २न्-कः कट्टः भाकि द्राप्त छकः॥ कक পিত্ত বিষ খিত্ৰ কৃমি দম্ভ গদাপ-**रः।** इंडि ভावनुकामः ॥ ७८. कनस्याः। वज्रमः नधुद्रः गुहि म्डेट्रियंप्र**कतः भ**तः॥ ७८ भूम्न-ভগাং। পদাং কৰাৰ মধুরং শীতং शिखककामृत्र। उद्य यज्ञन भू-मान कङ्गादाएभन भारेनः। इंडि রাজবল্লভঃ॥ ঋ॥ সংদ্যাৎপত্তি र्यथा। विष्त्रष्ठः उपा ज्या मह्मः ॥

मनुमागुषः । व्यादार ज्ञिषाकुरुः। भरी महाभविषु गुरुषः॥ उठ खनगुरा मृष्ट्री काधाधा हुनाः र्तः। यत्र भाष्ताकरायाम णिथा-গাঁচরণান্তিক।। আলোকিত স্ত্রি-**(नर्जन सहरमा** मुर्गिकमान्नि । ना-मञ्ज उमा तुकान् भागामात्र ७। कक्तावर ॥ शुंरश्याती हत्राती मृद्धारती अनुनागुनः । उँ८ ननर्व थ्यु:(णुष्ठ• उद्धगामाथ **१५४।**।। यहानीच्डिवक उक्कान्त्र अहा-পুভ । স চল্পকতৰু জাতঃ সুগ্গ-ন্ধাঢ়ের গুণাকৃতি: ॥ नारहान॰ **ज्ञाकाद्र॰ यहाजीबजुज्विज•। ७**-জ্জাত কেশবারণ্য বন্দল নাম-তো নগৈ:॥ या চ কোটী শুভা ছা-नी दिन्द्रनी विवृधि छ। जाउ। ना পাটলা রম্যা ভৃস্রাজিবিরাজি-তা॥ নাহোপরি তথা মুষ্টো স্থান• চন্দ্ৰণিপূত । পঞ্জন্মাভবজ্ঞা-তী শশাস্ক কিরণোজ্জ্বা॥ উদ্ধৃ• मुद्रेश अधः काष्ट्राः ञ्चानः विक्रम ভ্ৰিত । তমাদ্হপূটা মল্লী স॰-জাতা বিবিধঃ মুনে ॥ ইতি জীবা-ননপুরাণে ৬ অধ্যায: ॥ वञ्चा जी কটুকা। ইতি রাজ⁻

निर्यकः ॥

यमनी जी काकानी। इंडि नक् हिम्का॥

বৈক্লঃ পু॰ বঙ্গলবৃক্ষঃ। ইতি শব্দ-রত্নাবলী॥

বকেককা স্ত্রী বলাকা।। বাতাব- জ্রিভশাথা। ইতি মেদিনী।।
বকোট: পু• বৃকঃ। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষ:।।

বক্ন ড গভৌ। ইতি কবিকল্পজন: ॥ ড বক্কতে। ইতি দুর্গাদাস: ॥

वक्रदाः वि स्टिम्डः॥ श्रीनः॥ वहनाई:। इंडि स्मिनी ॥ वहस्यक्षी ৰক্তা वি খোবকু দানাতি স:। ইতি ভরত:॥ ঔচিত্যাৎ বহু विभिष्टे वर्षा ३ इंड मूक्टेश **७८ भ**र्यायः । वहः २ वहावहः ०। इंडामदः ॥ वनानाः ८ वश्रा ७। ইতি জটাধর:।। সূত্র্বক্তা। ইতি ভরত:।। বহুভাষী । ইত্যেকে॥ **७८ भ**र्ग्राषः । वाकायु किन्रहेः २ ৰাশ্মী ত বাবদূকঃ ৪। ইত্যমর: ॥ বচন্ন: ৫ স্বচা: ৬ প্ৰাক্ ৭। ইতি क्रोधतः॥ পণ্ডिजः। ইতি মেদিনী वंकु न्नी गुथः। इंडामदः॥ उगद्र-মূল'। ইতি শব্দঘালা।। বন্ধজেদঃ । ইতি मिरिनी।। हामराविष्णवः। इंडि (इम्हन्द्रः॥ उम्र नक्तािन यथा। खवजुष्ममन वकुः विषम्भः क्रमाहन। अया प्रत्यो क्रभाख श्वः हम्म खम्भूद्वाहुद्ध ॥ वकुः युगुर्गा मागो महाखा महाद्यां गृष्टे खहान खम्भूद्वा महाद्वाद हा स्माकः भूव- यिजवहः ॥ वकु। खन्नः महाद्वाद एक्षः । वक्षवी- नाः मृताद्वाद एक्ष्यः । वक्षवी- नाः मृताद्वाद एक्षः । वक्षवी- नाः मृताद्वाद एक्षः । विक्षवी- नाः मृताद्वाद एक्षः । विक्षवी- विक्षयः । विक्षवी- विक्षयः । विक्षवी- विक्षयः । विक्षवी- विक्षयः । विक्षय

বজুজ: পূণ বৃাহ্মণ:। ইতি ত্রিকাণ্ড: শেব:।। মুখজাতে ত্রি।।

বক্তু ভাল প্রান্ধ নাম্থ বাদ্য । ইতি কেচিৎ ॥ ত্রিকাণ্ডলেষে মুখবাদ্য বক্ষনাল মিভিলিখিভ ॥

বক্তুপউ: পু॰ অস্বান্নভোজনপার•। তোবডা ইতি ভাষা। তৎপর্য্যায়ঃ । তলিকা ২ তলসারক• ৩। ইতি হেমচলকঃ।।

বজুভেদী পু॰ ভিক্তরস:। ইভি হেমচন্দুং॥ মুখভেদকে ভি॥

वक्रवामः भू नात्रमः। ইতি द्राज-निर्घणः॥ मुथगक्षणः॥

বজুশোধন লী ভব্যং। ইতিরাজ-নির্ঘণীঃ॥ মুথশুদ্ধিকরণক।। বজুশোধী পু॰ ক্ষীরঃ। ইতি কটাধর: ॥ মূথশোধকে ত্রি ॥ বজুগেব: পু॰ অধরমধু। ইভি ত্রিকাওশেব: ॥

বক্রং ক্লী নদীবন্ধ:। তৎপর্য্যায:।
প্টভেদ: ২। ইত্যসর:॥ বন্ধ: ১।
ইতি ভরত:॥

বক্র: পু॰ শনৈশ্বর:। ইতি মেদিনী ॥ अक्षण्यः । ইতি एमहन्तुः ॥ क्षुः ॥ बिभूबामुबः । ইতি ध्विनः ॥ পर्न है: । इंडि द्राक्रनिवंक्तेः ॥ ্বক্রগভিবিশিষ্টগুহ:। স তু যস্য গুহুসণশ্রিভাৎ রব্যধিষ্ঠিতরাশী-য ত্রি॰শ। শান্তর্গতাদ শাৎ পঞ্চন यक्षाण्य द्रवि चिष्ठे छ । यथा। व ক্রা: সু্য: পঞ্চ ষষ্টে হকে ত্বতি বক্রা नगाञ्चरण । नदस्य मन्यस्य जाती ভাষতে সহজা গতি: ॥ দ্বাদ**ৈশ**া কাদশে সংয্য ল ভন্তে শীঘ্ভাণপুন: র বাস্থ চ্যান্সকিলেন্সাবধেঃ সং-ধা ত্রে কম্প্যতে ॥ ন তুরাশ্যন্তর-म्मर्माट विजीगारि निक्षणगः। ताङ् **ভাফ**ो। ইভিজ্যোতিত্তন্

কেন্দ্ৰ সদা বক্তো শাঘুগো চন্দ্ৰ ভাক রা।ইভিজ্যোতিস্তভ্ন। বক্ত: ত্রি অনুজু:। বাঁকা ইভি ভাষা ভেশের্যায়:। অরাজ ২ বৃদ্ধিন ও জিল্লা ৪ উর্মিন্ত হেল্পিড ৬ ধ্রত ৭ সাবিদ্ধ ৮ স্কৃতিল ১ ভুলু २० (विद्यान १०) इन्यान ।। वस्तान १० (वद्यान १०) विन्न १० हिन्सान १० । इन्यान १० व्यान १० । इन्यान १० व्यान १० । इन्यान १० व्यान १० व्यान

वक्कणः श् वम्त्रवृक्षः। ই जि त्राखनिर्वणेः॥ ऋषिणकणेकणः॥ वक्षकणे सः श्र शमित्रवृक्षः। ই जि त्राजनिर्वणेः॥

रकथङ्गः भ्॰ कद्रवालः। ইভি द्राज-निर्यक्षः।।

বক্রপুবিঃ পু॰ উষ্ট্র:।ইতি ত্রিকাপ্ত-শেষ:॥

বক্রজঃ পৃ॰ শুক্পকী। ইতি শব্দ-রয়াবলী।।

বক্ষ ভাল প্রান্ধ বাদ্যবিশেষ:। তৎপর্য্যায়:। মুখ্রাদ্য ২। বক্ষ নাল
নিতিব। পাঠ:। ইতি বিকাও-

(क) मः ।।

दक्क जानी खी मूस्याम्य । इंडि ं मद्यद्वायनी ॥

বক্ত পু শুক্পকী। ইতি শ্বর্যবলা।।

রক্রদ: ষ্ট্র: পুণ শৃকর:। ইভিকেচিৎ।। ব্রুনক: পুণ পিশুন:। শুকপক্ষী। ইভিনেদিনা।।

বক্রনাল জী ন্থবাদ্য । ইতি নুদুক্তিত ক্রিকাওশেষ:।।

वक्रनानिकः श्रु (প5कः। ইতি জি काश्रुष्णयः॥ ऋषिनभागायुक्ति॥

ৰকপৃছ: পু•স্ত্ৰী সন্ধান:। ইতি ক্ৰিকাণ্ডদেশ:॥ সলোমজটিল লাসুলঞ্চ॥

यक्र शृङ्गः । ইতি শব্ রহাবদী ।। পলংশবৃদ্ধঃ । ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ।।

वकवान चिः शुः अक्तः। ইঙি रूपहन्तुः॥ अदिन शृहण्डः॥

ধক্রভণিত ক্লী ছটিলবাক্য । তৎ পয্যায়:।ছেকোজি: ২। ইভি বিকাওশেষ:॥

बक्तः श्रु शक्षायनः। इकि भक् बङ्गावनी ॥

वकनाक्नः भु वक्षः। ইতি त्राकनिर्घणः॥ व्यक्तिभूषः क्षी॥ वकवकुः भू॰ म्कतः। इकि मच-त्रञ्जावनी॥अदिनम्थविनिष्टे वि॥ वक्रमन्ता जी अद्वेषिनीक्ष्भः। इकि त्राक्रनिर्यक्तेः॥

वक्रांत्रः क्री कवादेवक्राकः। इंडि ब्रह्माना॥ सदिनागुजागम्ह॥

वकानः भू॰ इःमः। ইতি ह्म-हन्मुः॥ अदिवादयत्य त्री ॥

ৰকি: তি গিখ্যাবাদী। বক্ধাডো: ক্রিন্পুত্যেন নিম্নম: ॥

वकी शु॰ तृषाः। ইতি मस्त्रज्ञायणी ॥ वकविनिष्टे जि । यथा।
नाःग्रामा यपि वकी महार शु॰मः
कार्यह्य वक्र का। नाःग्राम १ छ॰ गতে মতেঁ। দুःथापि वहासिमःयूरुः।
ইতি জ্যোতিস্ভত্তु॰॥

वाकाकिः खी काकृकिः। यथा।
कानस्मन्द्रज्ञ उक्षभु उक्षभु द्रापः।
क्षभ वृद्ध वृद्धार्थार्थ माञा वकाकि जिः भोमः। वृष्णभानाः
यर किष्णिर माणार मृश्वेष्ठ निज्ञान।
करकि माणार मृश्वेष्ठ निज्ञान।
करकि माणार मृश्वेष्ठ निज्ञान।
करकि माणार में करकि क्षिर । क्रिज्ञ मुः
माणवाः कर्नित क्षिर क्षिर । क्रिज्ञ मुः
मीलाला विश्वेष मुक्ति ज्ञान । क्षि। माणार । विश्वेष । विश्

বিশ্বৈব বিদ্যাণ ষ্টা: প্রিষ্ট: সভাণ জন্মল্পমতি: মাযাৎ পটু বটু জুভ-ক্র ব্রোক্তিভি:। হ্রীত: সমুপহাস মেতি গণকো গোলানভিজ্ঞ স্তথা জ্যোতির্বিৎ সদসি পুগল্ল গণক: পুশুপুপঞ্চোক্তিভি:॥ ইতি সিদ্ধা-স্থানিরামণৌ গোলাধ্যায:॥

ব্রে জিকা জ্ঞা অদ্পরদহাস্য । ই বিজ্ঞাস্য । তেৎ পর্য্যাম: । মিত হ ৷ ই তি হেমচন্দু: ।।

বথ ই সৃগি।ইতিকবিকল্লফন:॥ ই বহুয়তে। সৃপি গতৌ। ইতি দুর্গাদাস:॥

বথ স্পি। ইতি কবিকল্পজন: ॥

ৰখতি। স্পি গতো। ইতি দুর্গাদাস:॥

বগ ই খঞ্জে। ইতি কবিকল্পদ্দম: ॥ ই বঙ্গুডে। ইতি দুর্গাদাস: ॥

বগাহ: পু: অবগাহ:। ইতি মুধ্ব-বোধব্যাকরণ: ভরভশ্চ।।

বগু: পু: বক্তা। ইতি নিদ্ধান্ত-কৌমুদ্যামুণাদিবৃত্তি: ॥ বাবদ্ক: । ইতিসংক্ষিপ্তসারোণাদিবৃত্তি: ॥

विष के ज गांज निन्ता ब्रह्म करव्यू ।
इंजि कविकन्नकमः ॥ इ व श्वारं छ
व श्वारं । कार्य अव कि श्विरं भागे ।
। इंजि पूर्णातामः ॥

वित्यव विष्या॰ शृष्टेः श्रविष्टेः मजा॰ । विकः श्र॰ निर्मयकः। ইতঃমরটীकाः कन्नमन्नमंत्रिः स्वयाथ शर्षे वर्षे जुर्ज- । या॰ जत्रजः ॥

> वक्षा क्षी वक्षागुं जागः। छ । शर्याः। यः। शर्वाः यः। श्रेष्ठ विकाश्वः (भरः॥

> বঙ্কিলঃ পু• কণ্টকঃ। ইতি ত্রিকাণ্ড: শেষ:॥

> বঙ্ক্য: ত্রি বক্তা। যথা। বঙ্ক্যা কান্ত্রণ । ইতি মুখ্যবোধব্যাকরণণ।।

> विद्ध् द्वी भार्त्वाञ्च। उट्भर्यावः । भार्युकः २। इंडि (इन्हन्सुः ॥

विद्धः भू ही वार्ग्डनः। इंड्र-गारिकायः॥ गृहराक् ॥ भार्था-व्हि। इंडि जिक्कान्डकोगुर्गामुगा-रिवृज्ञिः॥

वकः की थाउँ विष्णयः। ताः इंडि

छाषा। उट् भर्यायः। वभः र प्रष्

छः १ नाग की वनः ८ मृष्ठकः ६ त्रकः

५ छक् भयः १ भिष्ठ छेः ५ ठक्र मः छः

३ उनतः १० नाग छः १२ कछीतः

१२ व्याणीनकः १० मिः इतः १८ नागः

१४ व्याणीनकः १० मिः इतः । स्वृत्रद्धः।

छिन्दः। भाखदः। किकिदः

नानिदः। (लथ नदः। किकिदः

भित्र का तिव्या । है छ ताक्र व क्रिकः

।। जनअपुक्रमास्य पृष्टेदाः ॥ 🗱 ॥ সীসক।। দেশবিশেষে পু॰ ভূদ্ম। इंडि भिरिनी ॥ त जू शुहीरमणा-डर्गडरम्भविष्मयः । यथा । व्यक् बङ्गा भएखत्रका अञ्चर्तिति विर्वित **द्राः। ३**जुऽभक्तगुरा माला माण्य (गानफी: भाहता कनभारा: मृखाः ।।ইত্যন্ত সৎস্যুদ্রাণ বচন ।। ম **७। उत्र॰ यथः। आ**द्मिग्रा मञ्च वर्ष्ट्राः পবস্থ ভিপ্রকোবলাঃ৷ কালস্থৌ-ट्राक्ष् किश्वित्रा विवर्ज नवज्ञानगः। ইতি জ্যোতিত্তভূপত ক্মচক্ৰবচন ॥ उन्। नीमा यथा। ज्ञाकतः न মারভ্য বৃন্ধপু প্রাম্ভগ লিবে। বঙ্গ-(राष्णा भवा (भू। छः नर्दनि क भूः দর্শক:।। ইতি শক্তিসঙ্গনতন্তে १ भद्रवः ॥

बक्: भूं हम्पूरं भीषर निवासभ्यः।
यथा। विनः मृजभामा सारक व्यक् बक् किन्द्रकाः। मक्त भी शुग्क वालगा व्यनभान ख्यांक्रः। हेन्डि गाक्राफ >८८ व्यक्तागः॥ ॥ वा-खांक्रः॥ कार्भामः। हेन्डित्यक्ति॥। वक्षः क्री मिन्द्रवः। हेन्डित्यक्ति॥। वक्षः भू वार्धामः। वश्न हेन्डि खावा॥ वक्षक्षण्यात्व वि॥ वक्षाः भू वार्धामः। वश्न हेन्डि खावा। हेन्डि मद्द्रद्वावनी॥ वक्षेत्रकः ही काःम्यः। इंडि ह्याः हन्द्रः॥

বঙ্গনেন: > পূ॰ বকবৃক্ষ:। যথা।
বঙ্গনেনক: > বঙ্গনেন স্তৃগন্তিক্ত: শুক্
নাশো মূনিক্ষম:। অনলি: জনলী
তি ত্রিকাণ্ডশেষ:।। অপিচ। রকপ্রো মুনিতক রগতি র্বস্নেনক:। ইতি রত্নমালা।। অস্য
পুল্ল গুণা:। বাসকস্য চ পুল্লাণি
বঙ্গনেস্য হৈব হি। কণুপাকানি তিক্তানি কাসক্ষ্যকরাণি চ।
ইতি রাজবল্লভ:।।

वक्रवा खी जागिगीविष्णयः। इंडि ह्वायूषः॥ वक्रावी छ ह नामाञ्जरः वक्रावः भू॰ टें छत्रवज्ञागमान् थः। यथा। वक्रावः भक्षमः षर्धा मधु-रता हर्षक छथा। एषणारथा माथवः मिन्नु टें छत्रवण्याः भुकीर्डिजाः।। व्यमा धानः। कक्षामिरविष्णकक्रन-खवत्र छभवी छात्र धिम्मानिष्मा नि-विख्यक्षकिष्माला। वक्षाव है-ए जिल्ल छवाक्षाला। वक्षाव है-ए जिल्ल छवाक्षाला। वक्षाव है-रा अक्षाव। गृहाःण नाम मधु-मः। अक्षाव विनियाक्षवाः श्वारका १वः मूनिन। श्वाः।। हेि म्हीज-त्र वृत्तिन। श्वाः।। हेि महीज- ৰজারি: পুণ্ হরিভাল । ইতি হেমচন্দু:।।

यक्षानी खी रेज्यवागमह्यागिनी।
यथा।रेज्यनी किन्निकी रिव ज्ञाया
रवणावनी जथा। वक्षानी रिकि
द्वागिराही रेज्यवेमह्य वक्षानाः॥
इकि मक्षीजनास्माद्यः॥ यमहा
मूकः नयाना ध्वतीध्वक्षाः। शुः मुकः नयाना ध्वतीध्वक्षाः। शुः मुहः
क्रमादी कमनीयम् विवक्षानिक्यः
मूकि माक्रगीजा ॥ हेकि मक्षीजः
ब्रज्ञाकद्रः॥ वक्षानी अज्ञवा रक्ष्या
गृहाः मनहाम चएक्रजाक् । य ध्र
होना विरक्षिया मूहना शुंथमा मजा
॥ हेकि मक्षीजनर्भाः॥

बङ्कुगः পু॰ উক্সিদ্ধি:। ঈঁচ্কী ইতি ভাষা। ইত্যময়: ।।

विष्णुः क्री गक्राम्गालाविष्णवः। यथा। उत्राः भ्याउति नीजा ह विष्णुः उपा ह कीर्त्विजा। ইতি णक्षावा।। नाहरूक्मानवर्षका गक्षा। यथा। ववः मानाविष्ट्यता-विद्याउठी उठ उपत उत्या रिक् मानमञ्जि विष्णुः भूजीह्याः विश्वि मानमञ्जि विष्णुः भूजीह्याः विश्वि मानविष्णु भूविष्ण् । हेठि श्री-ভागवराद्ध स्वस्तुः ११ व्यथायः।। सह के वाहि॥ मानस्या। हेठि कितक्षक्रमः ॥ ७ तका। ज्याः तम् इंटिंग्रंक। न वह्छाश्रियः वहः। इंटिंग्रंक। न वह्छाश्रियः वहः। इंटिंग्रंका। इंटिंग्रंकामः॥ वहः क जल्ला । इंटिंग्रंकामः। क वाह्यछाश्रिकाः निश्चि मिडिं इक्षाय्थः। इंटिंग्रंकामाः॥ वहः न छ वाहि। इंटिंग्रंकामः॥ वहः विञ्चित्रं श्रुत्याका। इंटिंग्रंकामः॥ वहः श्रु कीत्रभक्ती। इंटिंग्रंकिनी॥ वहः श्रु कीत्रभक्ती। इंटिंग्रवः॥ वहः श्रु वाकाः। इंटिंग्रवः॥ वहः श्रु वाकाः। इंटिंग्रवः॥

वहः क्ली वाकाः। ইতামর:॥
वहकः भूः वाकाः। ইতি মেদিনী॥
वहकः जि वावष्कः। ইতি মেদিনী॥
वहको जी भातिका॥ वर्षिः॥
भाषां जिल्हः। ইতি भारतकावनी॥
स्मिनाः वहला ইতি वद्गला ইতি
ह भारेः॥

वहन की मुशी। इंडि मक् हिन्द्र का शा वाका । उट भर्य प्रायः । इंडा महत्र की वाकी जावा वानी है महत्र वाकी जावना । नित्रा भी कि नित्र । नित्र भी कि नित्र । वाक्ष विकासी मा वाद्य वी वर्ग ना क्वा । वहन जाविङ हा कि वं प्राक्ष । वहन जाविङ वहा । वाद्य वी वहन । वहन वहा । वाद्य वी वहना वहना ।

त्त्रयं भर्यग्रयः भित्रकीर्डिजः। यथा স্থান বথা বোগ্য ভেদ উছো भनीवि ।। इंडि भद्रवादनी ।। 🛊 ॥ ভৰু ত্ৰিবিধ । যথা। ব শিষ্ঠ উবাচ। বচন ত্রিবিখ শৈল লৌ किक विक्रिक उथा। मर्बः काना जि শান্ত্ৰজো নিৰ্মলজ্ঞান চক্ষ্যা।। অসত্য মহিত পশ্চাৎ সাস্পৃত मुं ७ मूनरद्र । मुत्रि भंजू र्वरि নহি তেষা কদাচন !। আপদঃ পুীতিজনক পরিণাম সুখাবহণ। प्रशानु र्श्वर्यभीनक (वाष्यरक्र)व वाम्नवः ॥ मुजियाबार मुधावृत्राः नदकाल मूथावरः। मठाः माद्रः হিতকর বচসা শুেষ্ঠ মীপ্পিড ।। এবং স ত্রিবিধং শৈল নীতিসায় নিক্পিত । কথ্যতা ভিষমধ্যে कि वमानि वाका मीश्रिक ॥ इंकि युक्तरिवरार्ड श्रीकृष्णज्ञन्नश्राप् ४) অধ্যায:॥ #।। বিভক্তি:। সা **ं जू म**र्राष्ट्र खर्राष्ट्र । यथा : क्ल त কৈক বচন ক্ৰমাৎ কৃষ্ ব্ সংজ্ঞ ्रजार । इंडि मूक्षताधवाकत्राकत्राः॥ বচনগাছী ত্রি বচনেছিত:। ইত্য-्र भूत्रहीकायाः त्रभानायः ॥ ब्रुव्नीयः जि कथनीयः। इंजि वहः क्षाराः कर्या यनीय भुजारयन

निज्ञम ।। खी (नाकाभवारः 1 বচনীয়তা यथा। जनभूवामः (कोनीन विभान বচনীযতা। ইতি হেমচন্দু:॥ বচনেস্থিতঃ ত্রি বচনে তিপ্ততি য:। वहन इ: । उट्भर्य । या विद्याः २ विनयगाशी ७ चाम्वः ४ । इंड्र নর: ।। বশ্য: ৫ পুণেয: ৬ । ইতি কেচিদিভি ভরভ:।। বচনোপক্রন: পু॰ বাক্যারস্ত:। ইতি ভরত শব্দরত্বাবদ্যৌ ॥ তৎ-भर्यप्रायः। उभन्यामः ३ वाद्यश्रः २। इंड्रामद्रः ॥ वह्राः भुः अक्टाः॥ मर्ठः। इंडि (मिषिनी ॥ वहन्: श्रु भवः। यथा। श्रुः मि मस्डः क्कू भग्रु क वहन् कंगन् ख्या। जत-্যুক্ত শর্ণ্যঃ স্যাদমিত্রে সৃণি ব্লি-ভাগি। ইতি শহ্মালা॥ ব্চসাংপতিঃ পুং বৃহস্পতিঃ।যথা । जीरवा शक्तिताः जूतछक ब्रह्माः-भजीको। इंडि मीशका॥ বচক্ষর: ত্রি বচনেস্থিত:। ইতি किंदि॥ বচা জ্রী ঔষধ্বিশেব:। বচ্ ইতি ভাষা। তৎ পর্য্যায়ঃ। উগুগন্ধ। ২

বড্গুছা ৩গোলোমী ৪ শতপরি;

का ৫। ই.ভামর:।। जीक्षा ७ प्रिति। १ मक्ना ৮ विक्या २ डेगा २० রকোদ্বী ১১। ইতি রত্নমালা ॥ বচ্যা ১২ লোমশা ১৩। ইতি জটা थदः ॥ जुना ७८। यम् । खनाः। व्यञ्जिक्ष । कर्ष्ट्र । देख्य । কফামগুন্থি শোফ বাত জ্বাতি-সার সাদ ভুত নাশিব্। বাস্তি কারিত্বশ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।।#॥ অপিচ। বচোগুণস্ধা বডগুস্থা গো-लाभी भउनिर्विका। क्रुपुनवी ह यक्ना बिंदिनागा ह त्वाममा ॥ বচোগুগন্ধা কটুকা তিক্তোঞ্চাবান্তি विक्रिक्ट । विवक्षाध्यान मृनद्री শক্রুত বিশোধিনী।। অপমার करकाचार ज्उ जञ्जनिनान् रात्र । ज्यथ श्रामानी वहा। शात्रभीकः वहा मूझा (भारका रेश्मव जी जिमा। हिमयञ्जिषिठा उद्यय मूमः इष्ठि विष्मयकः॥ व्यथ महा अवीवना। যস্যা লোকে স্বলীজন ইতি নামা-छत्र । मुगसान्।गुगसा ह विष्न-बाद कक कामनृद्या मुख्य दक्ती क्छ। इट के मथरणाधनी। य-পরা সুং দ্বা স্বাণু হ বস্যা লোকে अश्वा है जिनान । ज्लग्रिः मूगक्षान्।। उट्डा शैन ७१। य्डा ॥ অথ চোপটানীতি লোকে পুরিষা । उन्तरा खनाः । हो भाषत्र दहा दही-তিক্তোফা বহিনীপ্তিকৃ**ৎ। বিবন্ধা**: धान ण्नश्ची मक्त्र्व विष्णाधिनी ॥ বাত ব্যাধীনপমার মুন্মাদ• ড-नुत्वम्नाः। व्याशाङ्खि वित्नारम् ফিরস্থান্য নালিনী।। ইতি ভাব-शुकाणः॥ आ अभवन्। वहायुक्षाः বাত কফ তৃঞায়ী স্ভিবদ্ধিনী। इंजि द्राजयहानः ॥ 🗱 ॥ व्यन्। इ অন্তি ৰ্বা প্ৰসাজ্যেন মাস মেকস্ক সেবিতা। বচা স্ব্যান্তর পাক্ত मुजिशाइन अभ्युज ॥ हन्तु भूर्यं। गुरू भीजः भलामकः भाषानिजः । वहाया खः कनः सर्गाग्रहानु-জ্ঞান্বি ড॰ নরণ।। ইতি গাৰুডে১৯৮ व्यथ्यायः ॥

वरहागुरुः भू• कर्गः। ইতি রা**জ**-निर्यक्तेः॥

ৰজ গতৌ। ইতি কবিকল্লদ্ম: ॥ বজতি। ইতি দুৰ্গাদাস:॥

বন ক সংস্কৃতী। গতৌ। ইতি
কবিকল্পজন: । অয়ং মার্গণসংস্কান রে ইতি পুঞ্জ: । মার্গণস্য শরস্য পক্ষাদিনা সংস্কারে। মার্গণসং-স্কার: । ক বাজ্যতি পক্ষৈ বাণং কাপ্তকার: । ইতি রমানাথঃ । নার্গণ সংস্কারযো রিতি কন্দিৎ। ় ইতি দুর্গাদাস:॥

वजुः भुः क्ली इन्मुम्याज्ञविष्मवः । वाक् इंडि ভाषा। उৎপर्यायः। शुक्ति २ विलम ० जिनूब 8 পবি:৫শতকোটি: ৬ স্বৰু: ৭ শম্ব: ৮ राष्ट्रानि: ৯ यणनि: ১०। ३७४-भद्रः ॥ व्यवीमः ১১ ভिनिद्रः ১২ ভিদু: ১০ **म** क्रम् ১৪ मग्नः ১৫ मन्दः ১৬ অশনী ১৭ বজাশনি: ১৮। ইতি ভট্টাকা॥ জম্ভারি: ১৯ ত্রি-म्भाग्थ २० भ**ञ्**भाद २३ भञाद । २२ व्याप्ताबः २० यक्कवः २८ । ইতি পুৰুষোত্তমঃ॥ গিরিকটকঃ २৫ (गी: २५ वर्जुाच ११ (भवज् তি: ২৮ গিরিজ্**র: ২৯। ইতি শব্দ** बङ्गावनी ॥ **का**च्चिः ०० मञ्जः ०) । इंजि बढ़ीषदः ॥ जिनुः ७२ व्यष्टुकः ၁၁। ইভি बि हा ७: मयः ॥ ॥ य-স্যোৎপত্তি র্যথা। তথেত্যক্ত: স রবিণা ভ্নৌ কৃত্বা দিবাকর । পৃথ **ক্চকার তত্তেল শ্চক্রণ বিষ্ণো রক-**न्नार ।। जिन्नक्शि कपुत्र। वजु भिनमुभा ठाधिक । देवजा मानव স হত্র: সহসুকিরণাত্মক ।। ৰূপ-क भुजिमकाक दुई। भाषामृत्ज म-र्थानमगाकाथ उपुष्ट्रे भारक्षाः

त्र(वः भूनः ॥ **অर्हात्र**भि.उ**डः भा**र्दी न किन्द काद्रायट कुहिट । यः कः রোতি স পাপিষ্ঠা গতি নাপ্নোতি निन्ति जा ।। अक्षेत्रांग न्यार्श्वां छ लाकिमान् पूर्थं मध्युजः। उमान ধৰ্ম কানাথী চিত্ৰেয়াযতনেষু চ।। न कृष्टि कात्रायट भारते रहवरहवन्त्र ধীমতঃ। ইতিমাৎস্যে ১১ অধ্যাযঃ ॥ 🗱। व्यालिङ । शुविषा अठेत • भूरका रिन्छ। माज्ः भूतनत्त्रः। पप्ताः । ह्याः মূথ বাল কটিন্যন্ত কর মহৎ।। **उरेम।वाः ४ १५ मम् (भर्मी**॰ মা সম্য বাসবং। শৃদ্ধ মুটিক সং-कामाः कत्राजाः बग्रह्य जाः॥ ততঃ কোপ সমাধ্যাতো মা•সপে-শী॰ শ তক্রতুঃ। করাভ্যা মর্দবামাস **७ ७: म। क**ठिना ज्वर ॥ छिष्कु ना-र्षाक वर्ष प्राची २ वर्ष वर्ष उथा। শতপর্বাচ ফলিশ: সংজ্ঞাতো মাণ-সপেশিতঃ ।: ইতি বামনে ৬৮ অ-श्रामः ॥ 🗱 ॥ वृजामृत्रवशर्थः मधी-विमूत त्रञ्जा हेन्तु। छ्वा विश्वकर्मान नि'मं उदबुम्। भूनानः यथा । এवः क्उवादिका मध्यम् । यद्ग सन् । পরে ভগবতি বুন্ধণ্যাত্মান সন্মধন্ करहो।। यठाकाम् मत्ना वृक्षि छत् मृक् थुखरक्षनः । व्याह्य अत्रमः

বোগ ন দেহ বুবলে গভা । অথে-ल्ला वज्रम्राग्रानिर्गि उ विश्व कर्माणा। মুনে: সিক্তিভি ক্ৎসিক্তো ভগবন্তে-क्रमा नृष्ठः ॥ वृष्ठा (प्रवर्गातः नरिर्व ৰ্গৱেন্দু। পৰ্য্যশোভত। স্থ্যমানোমূ-निग्रेन द्विरणाकुः स्वर्गाव ॥ इंडि প্রিভাগবছে ৬ ক্ষন্ধে ১০ অধ্যাব: ।। 🗱 । ভন্নির্যোববারকবিধি র্যথা। পু-চগুপবনাঘাতে মেঘেষু স্তনিভেষুয়ঃ। **बि:** गठिरेक्किमिनीरगिष्मिन्। ज्ञास्यायाः প্রেখ:॥ তস্য মাভ্ভয় থার बिम् । जीरवा २वनीम जि ॥ इंड्राझि-क उन्दर् उ युक्त भूता ११ ।। मृत्यः कल १-१ भिज्ञा देजभित काशि की खेना । विमुहित्र खर नान्डि भिटे: उ ह शृंद्धान्त ॥ विथि ७ ठ गृह्यान्त । इंडिव भाठे:॥देशिविकिक म्यस्यक रिवमन्त्रागन এत है। भूवछाः भूवाः হুশ্চৈৰ পঞ্চৈতে বজ্বারকা: ॥ ইতি भूतामः॥#.#॥ तत्र विस्मयः। होता के जिला अर्था गः। इन्त्रायुष् २ श्रीतः ७ जिर्ताः ८ श्र लणः ৫ श्रीतः ७ वर छर्। १ अस्पितः ४ तङ्गः २ मृतः > ভार्गवकः >) बहुत्कानः > र वस्र. ধারণ ১৩ শতকোটি: ১৪ ৷ অস্প্রণাঃ 1 বড়ুলোপেতত্ব। সর্বরোগাপছা-क्षकवुः। महायणमनवुः। (मोथ्रवुः

। (मरुमार्ड)क्त्रज्ञ 🕆 । ज्ञायनज्ञ्य ॥ **७** विष्णाया यथा। बह॰ विष्णुर-् পুত निका मोन्स्यी वर्षायन । বভার স্তীক্ষ্বারঞ্চ সুশাম্যার শ্রু-यः मिर्ण्यः ॥ # ॥ जम् इनक्षा যথ।। ভষাভ॰ কাকপাদঞ্চ রেখা-काष्ठम वर्ष ल॰ । आधात्रमणिन॰ विन्तू ज्ञांत्र सुवित उथा।। नी-লাভ চিপিট কক্ষ তৰ্বজু দোৰ-ल • जारबर ॥ # ॥ वज्रमा ठजुर्वर्ग লক্ষণ যথা। খেত লোহিত পীত মেচকত্রা ছারা শত্রু: ক্রমান্ধি-প্রাদিত্ব নিহাস্য যৎসুমনস: শংস-डि मडा॰ उडः। क्वीडा॰ कीर्खि मनू-ভনা পূ্য মিদ দত্তে বথা সংখৃ-**७॰ म**र्ज्याना मयथायथ जु क्र**लिण** পথ্য হিত জাত্যত: ॥ 🗱 ॥ তস্য भद्रीका यथा। यथ भाषागउल নি হাশ নিকরে নোদ্ঘ্য্যতে নিষ্ঠুরে। যहाনে।।পল লোহমূরর মুখৈ লেখ। भयाज्याह्न ॥ यहान्य निवनीन-বৈব দলবেদ্বজুেণ বা ভিদ্যতে ভজ্জা-७) अनिमः व्रस्थि अमनाः भाष्रः महार्घक उट । 🗱 ।। उन्र वर्गंड-लो यथा। विश्रः (मानि द्रमायत्वृ वलवानद्वाक्तिक्तिभूत्वा जासन्धर नृगा॰ वनी शनि उक्रिस्ट्रा॰ करवर

क्षिमा। मुवारकर्षण मिक्किएस मुख्दा॰ रिवल्मा २थ मृत्मु। ज्वर अर्वेगाविः হর ভদেষ কথিতো বজ্স্য বর্ণো खनः ॥ इंजि ब्राजनियंगः ॥ # ॥ অপিচ ৷ অথ বজুস্য নান লক্ষণ ে গুণা:। হীরক: পু•সি বজুে। হন্ত্রী চন্দ্রে। মণিবরশ্চ, স: । স তু খেতঃ ্মৃতো বিপো লোহিত: ক্ষরিযো मञः ॥ शीरका रेवरम् । १ मिजः भृ मृ **শ্চ** সুর্বণাত্মকণ্ড স:।রসাযনে মতো विशः गर्वा मं क्ष्मायकः ॥ कवि যো ব্যাধিবিধু'সী জরা মৃত্যুহর: **ग**द्रः। रेवत्मता यनमुद्रः (भाकु खशा (म्हम्। मार्ड)कृष्ट् ॥ भूत्मा नामयि व्याधीन् वयञ्चञ्चः कर्साञ्च ह । भूः क्की नम्भकारेफाउ वक्कीयानि व-कराः । मृठ्डाः कलमः भूगं। खिला যুক্ত। বৃহত্তরা:। পুক্ষা তে সমা-. খ্যাতা রেখা বিন্দু বি**বর্জিতা: ॥ রে**-श्वाविन्यूमनाय्काः वरुमा एउ जियः म् जाः । यउन्।ः यहेकानाः । बिकाः गान्ह मूनीर्यान्ह (७ विरद्धया नन्: मः काः॥ (ज निमुः भूक्षाः (मुक्षः प्रम मक्तन कादिगः। जियः अर्वेडि कायमऽ काञ्चि ज्ञीनाः मृथम्पाः॥ नम्मकाः खुवीर्यताः मूत द्रकानाः मज्बर्वहर्ज्जाः । जिय की कां भुमा उद्याः जीवः जीव भुर्याद्धराशामार्बछाः मर्बरा रियाः शुक्रा वीर्यप्रक्ताः। जामुकः अक-তে বজু জন্ত পার্শ্ব্যথা তথা ॥ পাণ্ডা॰ পকুরত্বঞ্জ ভস্মাৎ সংশো-ধ্যমারবেৎ।। #।। মারিভস্যবজু-मा खाः। जायः मृष्टिः वलः वीयंरः বর্ণ সৌখ্য করে।ভিচ। সেবিত সর্রোগম্ব মৃত ব্রু ন সংশ্বঃ।। ইতি ভাবপুকাশ: ॥ 🗱 ॥ অন্যন্ত । অথ বজুগণনা। বিঞ্ধমোত্তরে। वजुः भन्नकङ्क्षिव भग्नानागक भी-किकः। इन्मुनीलः महानीलः रेवम्-र्याः गक्षमः ब्ह्नकः ॥ हम्मुकान्तः मूर्याः কান্ত স্মাটিক বলক তথা। কর্কে-ভর• পুস্লরাগ• তথা জ্যোতীরসং-षिज ॥ माहिक दा**ब**वर्डक उथा ब्राबमञ म्डः। (मोगिक्षिकः उथा गक्षः भड्ड युक्तमयः ख्या ।। (गारममः ৰুধিরাখ্যঞ্চ তথা ভল্লাভক॰ দিজ। ধুলীমরকতক্ষৈব তুত্থক সীস মে-व ह ॥ भी लू॰ भुवालक स्थिव गित्रि-यज्ञक जार्गर । ज्ज्ञक्रमामशिक्रद তথা বজুমণি: শুভ: ॥ তিত্তিতঞ ख्या भीखः जामब्रक्ष ख्यारभ**नः।** ৰজাণ্যভানি সৰাণি ধাৰ্য্যাণ্যেৰ ম-शिज्ञा। मुदर्ग नुजिवकानि करा-রোগ্য সম্বাদে॥ ইতি যুক্তিকল্ল:

ख्यः ॥ # ji ज्या १ शिक्ष भद्रीका ম্ল্যাদি যথা। বিঘা পরীক্ষাণ রবা-नाः वरमा नामामुद्रा १७व८। इन्तुः म्। निर्द्धि जा खन निर्द्धिंजू रेज न **শ**ক্যতে।। ইত্যুপক্ষম্য । মহাপুভা व॰ विवृदेध रमाष्ट्र मुनाक्ट । वड्र প্রা পরীক্ষেয় ডভো ৎমাভি: পু-कीर्न्जुर**७ ॥ ত**স্যাস্থিলেশে। নিপ भाज (ययु जुवः भुरित्मियु कथ किरित । वज्राणि वज्रायुष निर्जिगीरमा र्जवस्त्रि নানাকৃতিনন্তি তেযু ॥ হৈম মাতঞ্ मोत्राष्ट्राः भो अकानिक का यनाः। বেশ্বাভটাঃ সসৌবীরা বজুস্যাষ্টাবি-হাকরা: ॥#॥ আভানু। হিনশৈল-জাক শশিভা বেগ্লাতটীয়া: মৃতা: নৌবীরে তুষিতারু মেঘ সদৃশা স্তা-মাশ্চ সৌরাষ্ট্রকা:। কালিকা: কন-কাবদাওফ্চিরা: পীতপ্ভা: কো-ৰলে শ্যামাঃ পুণ্ডুভবা নতক্ৰবিষ य नाजाङ्गीजम्जाः ॥ वाजार्थः लयु वर्गडण्ड खनवर भारत्यंषु सम्राक् नमः (तथा विनम् कनक काकशमक আসাদিভি বহিজ তে। লোকেমিন্ পরমাণ্ মাত্র মপি যৎ ব্রুণ ক্ষতি-দৃশ্যতে ভিমন্দেব সমাশ্যো ছা-विज्ञ खीक्षागुषातः यमि ॥ वाङ्य বণযুক্ত্যা দেবান, মপি পরিগৃহ:

পোক:। বর্ণেভ্যক্ষ বিভাগ: কার্য্যে বর্ণাশুবাদেব ॥ হরিত সিত পীত্ পিঙ্গ শ্যামাতামা: স্বভাৰতো ক্-চিরা:। হরি বক্ণ শক্র হুতব্ছ পিতৃপতি মৰুতা স্বকাৰণা: ॥ विश्रमा भाग्न समूर सुविकावराजः স্যাৎ ক্ষতিয়স্য লশ বজ বিলোচ-नाजः । दिन्तामा काञ्च करनीरम् সন্নিকাশঃ শৃদুস্য ধৌত করবাল नमाननीशिः॥ हो वज् वर्गे भृषि-বীপতীনা• সন্ডি: পুডিংগ্টোন তু সা-र्वज्ञत्तरो। यः म्याङ्ख्या विक्रम चन्न শোণো যো বা হরিদারস সন্ধিকাশঃ ॥ क्रेनदार महंदर्शनाः ७१वर मार्ब বর্ণিক । কামতো ধার্যেদাজা নজ্ব त्नानार कथक्षन ॥ **अथाता** बत्न वृ-ख्राहि यामृक् म्यादर्गम्बदः। ७७: কষ্টভরো বজ়ী বর্ণানাও সন্ধরো মতঃ ॥ নচ মার্গ বিভাগ মাত্র বৃত্ত্যা বি-দুষা বজ্রপরিগুছে৷ বিধেয়: 1 গুণ বদ্গুণসম্পদা বিভূতি বিপরীতো ব্যসনোদ্যস্য হেতু: ৷৷ এক মপি য-স্য শৃস্ক বিদলিত ম্বলোক্যতে বি-শীৰ্ণ বা ৷ গুণবদপি ভন্নধাৰ্য্য বস্তুণ শে্যোথিভি ভবনে ॥ ক্লুটিতাগ্ন বি-भीर्ग मृक्षरमण भवतिर्गः भ्वेष अ-পেত ন্ধ্যণা নহি বজু ভূতোপি বছু

शानु निय भन्। नुय वार्वभी॰ न ज्-र्याए।। योग्रकारणः क्षाउडाउडा-সো যদা ভবেলোহিত বণচিত্র• । न उत्त अर्थ। बित्यमान मान्य यह नर म् ভ্যোরপি জীবিভাম্ভ[।]।কোট্য: পা-ৰ্শ্বানি ধারাণ্চ বড়প্টো দ্বাদশেভি চ। উত্তৰ সমতীক্ষাপু বজুস্যাকরজা ख्याः ॥ यहेकाहि णुक्तं समनः सुहै-जीक्षवातः वर्गान्छः वयु मुनार्थ मे-(भाउ (मार्यः । इत्याग्याम् विमृ वि দ্বিভান্তরীক্ষ মেবধিব ভুবি ভবেৎ সুগভ । বজু ।। তীক্ষাপু বিমল মপেত সৰ্বদোষ খবে য: পুৰততনু: मरिष्व वर्षुः। वृष्ति खः भुजिपिन स्म-তি यावमायः 🗐 जम्मर मुख्यन थाना (गा भन्ना ।। वतान विद्य विव वतानु **७**ऋज्ञाषु ज्यानि ह। मृताखम् निवः र्खंख कर्याग्राथर्रगानि है।। यहि वज् মপেত সৰ্বদোৰ বিভ্যান্তপুল বি• णिक अक्राच्या मिला खरिरमा चन छि उम्र विख्यः क्षक विक्य नग्रुः ম্ল্যুণ। ত্রিভাগহীনার্জ ওদর্শশেষণ व्धयाममः विभागतार्था जाताः। অমীতি ভাগোথ শতা-শভাগ: जर्मु जारगाल मनान (यागः ॥ य-उछ्रेण चारणिः क्उना रजुना म्नाः श्रथमः भूमिष्टेः। बाजाः क-

গান্ধানি মুপাগতস্য ত্বেকবিসানস্য विनिम्हरया १य॰।। न हालि उखेल রেব বজাণা• খারণ ক্রম:। অষ্টাভিঃ गर्य रेग (गोर्देत खखन भित्रसन्न-(यट ।। यद् अर्ब खरेन यू कि वर्ज़ उ-রতি বারিণি। রত্ত্বর্গে সমন্তেপি ভস্য ধারণ মিষ্যুতে।। অনেনাপি-हि (मार्यम वाक्रामाकार्ग मृति उ॰ । স্ম্ল্যাৎ দশন ভাগ বজু লভতি मानवः॥ भुक्षातिक (भाषम्) बह्नम् মহতো ৎপিবা । স্মূল্যাছতশো ভাগো বজুস্য न विधीयां । स्मृष्टे (मार्च मलकाद वजुः यह अनि मृन)-ए । ब्रज्ञाना॰ भग्निकर्मार्थ॰ मृनाऽ॰ তস্য ভবেল্লযু ॥ পুথম॰ গুণ সম্পদা जुर्राभाउः मुखिरकाः मभूर्गि । यह দোব। খালনা ভরণেন ভদ্য রাজ্যে। গুণহীনোপি মণি ন ভ্ৰণায।। নাৰ্য্যা व्कु नथार्याः सनवप्रि म्डम्म्डि मिहन्।। अनुव नीर्यितिशिवे दुवा-म्खेरि विमुकाह ।। **अयमा मृ**ञ्जतारग-१ उथा (गामिक्क ह। विमूर्य) सुर्वि-कान्त्राक कारेह कानि भृथिविषः॥ পুতিকপাণি সর্বন্ধি বজুস্য স্পলা-জনা:। পরীক্ষা তেযু কর্ত্ব্যা বিশ্ব-**फि: बनवीक्रोक: ।। क्यादारहाधन** नानां उदाः कार्यः भदीकृषः।

भृश्वित्राः यानि ब्रङ्गानि य চान्। लार्थाउवः॥ मर्दानि विलिथ-ছব্ৰু তচু তৈ ব বিলিখ্যতে। গুৰু-তা সর্বরত্নানা গৌরবাধারকারণ বজ্রতারেপরীত্যেন সূর্যঃ পরি-চক্ষতে॥ জাতি রক্সতি॰ বিলিখ छि वज्ञ अकविन्ताः। बरेजु वंजुः বিলিখতি নান্যেন লিখ্যতে বজু ।। বজাণি মূক্তা ৰণযোগে চ কেচন কাতথ:। ন তেষাণ পুতিবদ্ধানাণ **ভा ভবত্যন্ব** गामिनी ॥ তির্য, ক্ क्षडवाट (कवाक्षिट कथकिमिनि **দृশ্যতে।** তির্য্যগালিখ্যমানানাং न। भाषिवृति इन्। उ। यम्।भ বিশার্ণ কোটি: সনিন্দুরেখান্বিতো विवर्णा वा। जनिल धन धाना शु-প্রান্ করোতি সেন্দু।যুখো বজু:।। সৌদামিনী বিশ্ব বি ভাভিরান রা-का यरथाक क्लिम म्यानः। श-রাক্রাকান্ত পরপুতাপ: সমস্ত সামন্ত ভুব• ভুনক্তি॥ ইতি গাক ए ७৮ व्यव्यायः ॥

ब्रुः क्री वानकः ॥ शाबी । ইতি

(मिनी ॥ काञ्जिकः । ইতি ध्रतिः

॥ वजुश्रः । ইতি भद्रत्र शवनी ॥

(नोह्विभिषः । म ह वह्विश्वा

यथा। नीन्शिषः । स्वन्या ।

নোরক ৩ নাগকেশর ৪ ভিক্তি वाकः ए चर्ववजुः ७ त्मिवानवजुः १ শোণবজ্র ৮ রোহিণী ৯ কাকো-ल॰ >० गुष्टियजुक॰ >> महनाथाः ३२ इंड्राहि। (उदाः नामानुक्तः চিহ্ন । ইতি পুরাণ ॥ অভুবিশে यः। उत्मार्भन्तामि यथा। भू রা বধায বৃত্তস্য বজুিণা বজু মুজ্ত । বিষ্ণু লিঙ্গা স্তত স্তস্য গগণে পরি সর্পি ভাঃ।। তে নিপেত্ র্বনধ্বানা-ছিখরেষু মহীভূতা । তেভা এব সমৎপন্ন তত্ত্ত্বিষ্ চাত্ত্ক।।। ত হজু বজুজাত বাদত্ত মভু রবো-क्तार । गगनार मृतिक यमार গগনঞ্চ ততো মত।। পিনাক দ দুরি নাগ বজুঞ্তে চত্রবিধ । ব জুম্ভ বজুবভিঞ্ছে ভদ্মাণ্নৌ বিকৃতিণ वुरक्र ॥ मर्बाख्युय् वत्र विक् वािष বাৰ্দ্ধক্য মৃত্যুহ্ৎ । ইতি ভাব: लुकामः॥

रजुः भू काकिलाक वृक्षः॥ (यउ स्नाः। ইতি রাজনির্ঘটः॥ দেহ শুবৃক্ষ:। ইতি ভাবপুকাশः॥ শিক্ষপুপোগ্র:। यथा। অনিক দ্বাৎ সূভদাযা বজে। নাম নৃপো হতবং। পুতিবাহু বজুসুত কাক শুসুসুতো হতবং॥ইতি গাক্ত

388 व्यथायः ॥ व्यक्ति । अपूर्य আসীৎ পুথম: পিতৃবক্ষশ্মিণীসূ-তঃ। স ক্লিণো দুহিতর মুপ্যেম মহারথ:।। ভস্যা॰ ভতো १ নিক্-চাপি ক্ৰিন: পৌত্ৰী দৌছিত্ৰো জগৃহে ততঃ ৷৷ বজু শুস্যা মভ্তান্ত भोषनाप्रयागिकः । भुविवाङ् রভ্তমাৎ সুবাহু স্তম্য চাতা জঃ।। ইতি শ্রিভাগরতে >০ স্বন্ধে ১০ व्यथायः।। 🗱।। विश्वसादि मध्दिः-শতি যোগান্তর্গত পঞ্চশযোগঃ। उम्डाम्डनवम् ७। वर्क्कनीया यथा । **छ। जा**मि शक विष्ठ सु मेश मृत्व ह नाषिकाः। ग७ वराघा उत्याः यहे ठ নৰ হয়ণ বজুযোঃ।। বৈগতি ব্যক্তি भारते ह नगरही भदिवर्द्धार्य । শেষ। यथार्थ नामारना रयागाः का-র্য্যেষু শোভনা: ॥ ইতি জ্যোতি-স্তভু ॥ অত্ৰ জাত ফল যথা। खगी खगद्धा वनवान् महोबाः मनुत्र बङ्घापि भन्नीक्रकः महार । वङ्गा जिथान यहि हिंद भुगूरा व ्जानमः माप्तिन् कामिनीनाः ॥ ইতিকোষ্ঠীপুদীপ:।। ব্রুক লী ব্রুক্ষার । ইতি রাজ-निर्यणे: ॥ नर्दाजाङ्गुध्काङ्गंज॥ স্ব্যভোগ্য নক্ষত্রাৎ, ত্রযোবিংশ
নক্ষত্রাত্মক উপগৃহ: । যথা । স্থ্যভাৎ পঞ্চন ধিষ্ট্য জ্রেষ বিদ্যুন্যুথাভিধ । শ্ন্যঞ্চ ষ্ট্রনগ প্রেজ
নারপাত চতুর্দশ । । কেতুমষ্টাদশ প্রেজ মুল্লাস্যাদেক বিংশতিঃ
। দ্বাবিংশতিতম কম্প ত্রোবিংশঞ্চ বজু ক ।। নির্ঘাতঞ্চ চতুর্বিংশ মুক্তা অষ্টাবুপগৃহা: ॥ ইতি জ্যোন্
তিস্তত্ত্ব ।।

वज्रुकक्षिः शुः इन्मान्। ইঙি (इमहन्मुः॥

বজুকণ্টক: পু॰ সুহীবৃক্ষ:। ইঙি জটাধর:।। কোকিলাক্ষবৃক্ষ:। ইতি রাজনির্ঘণ্ট:।।

বজুকন: পুণ বজুকর্ণ:। সকরকন্দ আলু ইতি ভাষা। ইতি রত্ননালা বজুকপার্লা পুণ বুদ্ধবিশেষ:। তৎ পর্য্যায:। হেরয়: ২ হেক্ক: ১ চক্র-সম্বর: ৪ দেব: ৫ নিশুম্ভাশ: ৬ শশিশেথর: ৭ বজুটীক: ৮। ইতি হেমচন্দু:।।

वज्रुकालिका खी भागापियी। ইবি (इमहन्तुः॥

বজুকেতৃ: প্• নরকরাজ:। যথা। গতে বশিঙে নরক: শীঘু• বিষয় সু যুতঃ।ইত্যুপক্ষ্যাইতি যাসী- म् उक्ष शुंहित्यार य छ वानमा न छर भर्यायः भ् ग्रंक शुंहित्यार य छ वानमा न छर भर्यायः। इः ग्रंक शुंहित्यार विकासूत्रातः ॥ १ वजुं किन्छ ७৮ व्यक्षायः॥

बङ्ग्डर्भा मु॰ थन्नी। गएकः। ইতি রাজনির্ঘটঃ॥

বজু জিৎ পৃ• গৰুড:। ইতি হেন-চন্দু:॥

বজুজালা জী বজুানি:। ইতি হলা-যুধ:।।

ৰজুটীর: পু• বজুকপালীনামক: বুদ্ধ:।ইতি ত্রিকাণ্ডশেব:।।

ৰজু হৃণ্ড: পু• গৰুড: ॥ গণেশ: । ইতি ত্ৰিকাণ্ডলেখ: ॥ গৃধু:॥ নশা ক:। ইতি রাজনির্ঘণ্ট: ॥

वज्रहः भू॰ भ्कतः॥ ग्विकः। ইভিশন্নালা॥

वृङ्ग्भनः भू भृषिकः। ইতি ছেম-চন্দুः॥

यज्ञः भ् मुशिव्यः। ইভাगतः॥ यज्ञक्यः भ् मुशिव्यः। ইভি শব্রহাবলী॥

বজুবর: পু॰ ইন্দু:।ইতি হলাযুধ: ।। জিনবিশেষ:।ইতি ত্রিকাণ্ড-শেষ:।।

द्रजुनिर्धायः श्र॰ व्रजुजनिउभयः। इ.जिङ्गायूषः॥

वक्रनिर्घावः । खर्मायः। मुर्ख्यः २। ইত্যमतः ।। দ্বে বজুজনিতশব্দে। অন্যোন্য সংঘটনাৎ ভগ্ন সাগ্নি মেবথওং ব্জুমিৰ ব্জু ভস্য সাটোপধুনৌ দ্বয় মিতি কেচিৎ।। ট্রোস্ক জী বর্জু नियात्व। नियात्वः अध्यक्षिः। ञ-শন্যাহাত ইত্যেকে। নিস্নেৰ শূৰ্ণন॰ সাটোপধুনিশ্চ ইহত ধুনিরভিপ্রে-जः। मुद्धा विक्क अंशू भुश्राः निमादः পরিদেবিনীতি ভঙ্টি:। ট্রিতো হথু রিভি অথু: নিপাতনাৎ দীর্ঘ: । मु । क्षेत्र श्रृ विकि मीर्घार्थः नव्रम्वः। (किठिजु नीर्घ (महिष्ठ। (किठिष्ठिज)-यथा नीर्य भिइस्टि। वजुमा निस्त्राया वजुनिरञ्जयः (थो शिष > ह्र्ग्त च वा। নিয়েষো দ্বিস্পান্য:।ইতি ভরত:॥ ব্জুপাণি: পু• ইন্দু:। ইতি বিকাও-(শ্ব: 11

ব্জুপুর লী ভিলপুর । ইত্যমর:॥ ব্জুপুরা জী শতপুরা।ইতিরাজ নির্ঘণ্ট:॥

বজুমূলী জী মাষপণী । ইতি রাজ: নির্ঘটঃ।।

वङ्क्ष्यः भू कवियः। ইতি भूदागः॥ वङ्क्ष्यः भू मृकदः। ইতি विकाशः (मयः॥ वङ्क्ष्युक्ष्युत्रुक्ष्यः॥ বুজুবল্লী স্ত্রী অন্থিসংহারলতা। ইতি হারাবলী।

बजुवाताशे की भागापती। उटशर्यायः। भातीशे २ जिमुशा ०
जिजुकानिका ८ विकरे। ६ भोती ५
भाजित्रथा १। इंडि जिका छम्मयः॥
बजुवीजकः भू॰ ने ठाकत्रक्षः। इंडि

रज्याजनः भू• चलाकत्रक्षः। इति त्राजनियंग्रेः॥

ব্জুবৃক্ষ: পু॰ সেহুগুবৃক্ষ:। ইতি রাজনির্ঘণ্ট:॥

বজুশল্য: পূ॰ শল্যকনামাজন্ত:। ইতি রাজনির্ঘণ্ট:।।

বজুশ্গ্রনা জ্বী বিদ্যাদেবী। ইতি হেমচন্দু:।।

বজুসূর্য্য: পৃ• বুদ্ধবিশেষ:। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষ:॥

वज्रुकातः क्री कातिविश्वः। उर शर्यायः। वज्रुकः २ कात्रश्वः ७ विमात्रकः ८ जातः ६ ठन्म् नमातः ७ भूनात्यः १ सूनज्ञास्टकः ৮। स्मान् ख्नाः। स्रज्ञुक्तः। जीक्षदः। क्रा-त्रद्वः। (त्रज्ञदः। ख्ल्यान्त्रार्द्धिवि देशु स्म श्रुष्मननदः। सत्रद्वः। देजि त्राजनिद्धः॥

बज़ा खी त्रू शिक्षः॥ ७ प्री। इंडि मिनो॥ मूगा। यथा। बज़ाक्रूण-कती पिनी बज़ा जिताशगीयज।

है जि (पर्वी भूदार १६८ ज्या गा ।।
विज्ञान: भु नर्भः । है जि द्वा ज्ञानविर्विष्ठेः ॥ वकान है जि दा भा थेः ॥
विज्ञुज्ना । स्यूख्य वि ॥

বজান্ধী দ্রী গবেধুকা। ইতি শব-চন্দ্রিকা ॥ অস্থিস:হারী। ইতি ভাবপুকাশ:॥

বজাভ: পুণ দুগ্মপাষাগ:। ইতি রাজ-নির্ঘণ্ট:॥ হীরকতুল্যদীপ্রিমতি ত্রি বজ্ঞাশনি: পুণ বজুণ। ইতি ত্রিকা-গুশেষ:॥

বজু।স্থিশৃগ্র্লা স্ত্রী কোকিলাক্ষর্-ক্ষ:।ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥ বজ্রী পু॰ ইন্দু:।ইত্যসরঃ॥বৃদ্ধঃ।

इंडि भिष्नी॥

বজ্রী জ্রী সুহীভেদ:। ইতি মেদিনী বঞ্চ : পু' শৃগাল:। ইত্যনর:॥ গৃহবজ:। ইতি মেদিনী॥

दक्षकः जि श्रमः ॥ धूर्वः । इंडि भिनि ॥

বঞ্থ: পু• ধূর্ত্ত:। ইত্যুণাদিকোষ:
। বঞ্চনা।। কোকিল:। ইতি স•ক্রিন্তসারোণাদিবৃত্তি:।।

ৰঞ্চন জ্লী পুতারণ। ইতি হেম-চন্দু: ।। তস্য গোপনীযত্ত্বং মথা। বঞ্চন ঞাবমানক মতিমান্ন পুকা-শ্যেত্ব। ইতি চাণক্যসংগুহঃ।। वक्षना खी भुजाइना। काष्ठ दन, धाला जीव वन भुजाइना। काष्ठ दन, धाला जीव विश्व काष्ठ सुन्या विश्व काष्ठ सुन्या किताः (भुक्का रेश्मवल भवः । भूगिलिमिस मुक्ल वक्षना मिव स्मिनिद्ध ॥ है जिस्माइम्स्य ५ मर्गः ॥

ৰঞ্চিতঃ ত্ৰি বঞ্চনাবি শিষ্টঃ। পু-তারিতঃ। তৎপর্য্যায়ঃ। বিপুলন্ধঃ ২। ইতি হেমচন্দুঃ।।

दक्षकः जि भुजात्रगणीणः। छ८-शर्यप्रायः। धूर्वः २ दक्षकः ०। इंडि णक्तप्रावणी॥

বঞ্চ ক্রি গননীয়া ইতি গত্যর্থ বনুধাতো: কর্মণি ঘ্যা পুত্যযেন নিয়ন। ইতি মুধ্ববোধব্যাকরণ।।

বঞ্জঃ পু তি নশবৃক্ষঃ।। অশো-কবৃক্ষঃ। ইত্যমরঃ।। বেত্সবৃক্ষঃ। ইতি মেদিনী।। স্থলপদাবৃক্ষঃ। ইতি শদ্রহাবলী।। পক্ষিবিশেষঃ। ইতি স্লাযুধঃ।।

वञ्जाकनः पृ वाणाकवृष्णः। ইতি রাজনির্ঘটঃ॥

विञ्जूनिभुगः भुः (वजमवृक्तः। यथा

1 विष्टुला (वजमः भोजा वानीता।

वञ्जूनिभुगः। ইতি রজনালা।।

वञ्जूना जी वङ्गूकाणोः। ইতি

ह्महन्मुः ॥

বট ত ক বেষ্টো। ভাগে। ইতি কবিকল্পদ্ধমঃ ॥ বট্যতি । ইতি দুর্গাদাসঃ॥

वर्षे (वर्ष्ठ। इंकि किविक सक्त मः ॥ वृष्टे-कि वृक्षः लाजा। इंकि पूर्णा पात्रः ॥ वर्षे हे कि वर्षे (ना इंकि किविक सन् क्याः ॥ वर्षे नः विकागः। हे वर्षे प्रंक कि वर्षे ये कि वर्षे कि। वर्षे छि हार्षे-कः यत्राष्ट्र भूगि विभाः भत्राभातः । इंकि इनायुषः ॥ व्ययः हुताप्तिः रैकिक स्व भेठे (का इंकि पूर्ण निः हा-प्यः। इंकि पूर्ण (पात्रः ॥

বট ম উক্তো। ইতি কবিকল্পদাঃ

।। ম বট্যতি। ইতি দুর্গাদাসঃ।।
বট ই স্তেঘে। সৌত্রয়ণ। ইতি
কবিকল্পদাঃ।। ই বণ্টকঃ। ইতি
দুর্গাদাসঃ।।

विधः शुः वृक्कविष्मयः। वर्षात् इठि ভाषा। उर्पर्यग्रयः। नाः लुष्यः २ वर्षार् १। इठामदः॥ वृक्षनाथः ४ यम्भियः ६। इठि भद्रद्वावनी।। त्रक्कवः ५ भृत्री १ कर्यकः ৮ धुतः २ क्षीत्री १० विभ्वतावामः २२ ভाश्चीदः २२। इठि इठाष्ट्राः॥ इठानः २० द्वा-हिनः २८ व्यवद्वाही २६ विहेशी

१५ ऋम्बर्गः २१ मखनी १५ महाहायः ১৯ ভূঙ্গী ২০ यक्षावाः नः २) यक्क ७ वः २२ शाम् द्वाङ्गः २० नीलः २८ **भि**काक्**रः** २৫ वङ् পাদ: ২৬ বনস্পতি: ২৭। অস্য खनाः। कवायद्यः। मधुत्रद्यः। नि-শিরত্ব। কফ পিত্ত জ্ব দাহ ত্ব। মোহ বুণ শোফ নাশিত্বঞ্। ইতি व्राक्रिविंग्हेः ॥ अभिष्ठ । वर्षेः भी-তো ভৰু গুৰি কফ পিত্ত বুণাপ-रः। वर्त्या वित्रर्भ नाइष्टः क्यारग যোনিদোব ছূ । ইতি ভাবপুকাশ: ॥ 🗱 ॥ त्र ह क्षृत्रक्त्रः। यथा। श्ववय छेतुः। कथः ज्याश्वय वाही গোরাক্ষণ সমৌক্ভৌ। সর্বেভ্যো-नि उक्**डा** छो कथ भूकाउसी ক্তৌ।। স্ভ টবাচ। অশ্বত্থ ৰূপো खगवान् विकुरत्रव न मः गयः। कृषुः क्रा वह उद्द भनारमा वृक्कक भश्क्।। पर्भन मार्भ (भवामु (उदि भागर्ताः म् जाः। मूःथाभष्ठावि मृष्टानाः विनामकात्रिः धुवः ॥ ইতি পান্মোত্তরখণ্ডে ১৬০ অধ্যা-यः ॥ यमार भवान भारत मुडे व्यः॥ 🗱 ॥ वुष्टम ७ ना 😇 प्रस्ती ग व-টস জ্বক ষোডশ বনানি যথা। व्यथिषाः यह्नाक्ष्यनाना मञ्जास्यत ॥

मह्हिज वर्षे । यनुवाया अञ्जूत-শীতি কোশ মর্য্যাদান্তরে দক্ষি-भाखन उद्याः साउभावनानि । পাদ্মে। সঙ্কেত বটমাদৌ তু ভা; श्रीत्राथाः वर्षे वयः। यावकाशाः ज्ञीयक यो मृक्तात मः छकः ॥ ज्र्गु र निवरे (मुंध शक्षम बी वर्षेक बरे। मधमक जरीज्रे का-माथाउठ मञ्जमः ॥ मत्मार्थवहेकः নাম নবসং পরিকীর্ত্তিত। আশা-वर्षे भशार्मुष्ठ मन्भ मुख्नायकः ॥ यानाकाथाः वर्षे (मुक्त सकाम-শ मुमाञ्च ७ । नामकि विवर्षे र्भुष्ठ । षामण शतिकी खिंछ।। नाम वुका-विदेशव वियाममान मः कारा । नाम क्पूवरे (मुक्ष ठठ्मम सूमाज्य ।। শ্বিরাখ্য বট খ্যাত পঞ্দশন गीविजः। नाविजाशुः वर्षेः (मुक्तः সংখ্যা বোড়শ নির্মিত ৷৷ ইতি বুজনগুলান্তরে যোডশবটানি ৷ ইতি নারায়ণভউক্ত বুজভজি-विलाभः ॥ # ॥ कशर्षः । कि ইঙি ভাষা। ইতি মেদিনী। গো-लः ॥ ७कः । वजा इति ভाषा॥ সাম্য'। ইতি হেমচন্দু: ॥ বট: ত্রি গুণ:।বেটে ইতি ভাষা।

इंडि (मिनी।।

બું পিষ্ট গভদ: । বড়া। ইতি খ্যাতঃ। ইত্যমর ভরতৌ।। काब्रिव्यः । ইতি রাজবল্লভঃ ॥ অপিচ। মাধাণাণ পিষ্টিকাণ যুক্তাণ व्यवनाम् क शिक्कु जिः। क्या विषया। ष्ठिका॰ खा॰ खिलियु भहिहरेनः ॥ विमुद्धा वहेका वन्तरा वृःह्गा वीर्यर বর্দ্ধনাঃ। বাভাম্যহর। ক্চ্যা বি-শেষাদর্দিতাপহা: ।। বিবন্ধ ভে· দিন: শ্লেমকারিণো ২ত্যগ্রিপুদ্ধি-তাঃ।। সুচ্ণ্য নিক্ষিপেভকে ভৃষ্ট• জীরক হিঙ্গু চ।। লবণ তত্র বট-कान मकनानि मञ्जारा । मुक् न उब वहेत्का वनकृष्माहत्ना छकः ॥ विवक्षकृषिराशी हर्भगानः भव-নাপহঃ। রাজ্যক্তযাতি রোচিন্যা भावना जा^{*}ख जक्षर्थ ॥ #॥ অথান্লিকাবটক:। অন্লিকা• স্বেদ-यिद्वा जुङ्गलन मरु मर्पायः । जः शीरत क्उ मःकारत वर्षकान् सङ्ख-(यड्जनः ॥ यद्मिका वर्षेका एउ जू क्छा विश्वभूमीभनाः । वर्षेकम् खरेनः भरेर्द (द्वरंड १ भिष्ठ ममन्द्रि डाः ।। 🗱 ।। व्यथ ज्ञानिकः। नम्मानाः विका खळ मिष्डि ३। वधारा हि-भाः । मःकात्रक्षाञ्चादन विद्याप

जगना हिजा: ॥ 🗱 ॥ जाथ नांचदः हेकः । भाषानाः भिष्ठिका हिन्सू লবণাদুকি সংস্কৃতা:। তথা বির-চিতা বস্তে বটিকা: সাধ্যশাষি-তাঃ ৷৷ তালিতা বস্তুতৈলেতা ক্র_ থবা সুপুলেহিতা:। বটকস্য ভণৈ যুঁকা জ্ঞাতব্যা কচিদা ভূশ•॥#॥ व्यथ क्या ७विः। क्या ७कवि (क्छ्या भूर्खाङ्गविका**रमा** । वि-শেষাং পিত্তরকদ্মী লদ্বী চকথি-তা तुरिष: ॥ 🗱 ॥ व्यथ मृद्धविका । মদ্বানা বটিকা তদ্বদূবিতা সাধি-তা তথা। পথ্যা ৰুচ্যা ভতো লঘ্নী মুদ্দগগুণা মৃতা ॥ ইতি ভাব-পুকাশ: ॥ 🕸 ॥ অন্তমাষকপরি-मानः। यथा । मण्डकास मारः न्तर माला नाय हजुहैयः। (दी-শাণৌ বটক: কোণ স্তোলকো দু-খ্ৰণণ্ড সং॥ ইতি শব্দালা॥ ব্টপ্র: প্ সিতার্জ : 1 ইতি ब्राजनिद्धः॥ यदेशया छी जिल्द्रमाली शूब्र कृष्ट । ইভিরত্নবালা।। ব্টপত্ৰী স্ত্ৰী পাষাণভেদীবিশেষ:1 **७**८ भर्यायः । इनानी २ अत्रावजी ৩ গোধাৰতী ৪ ইরাবতী ৫ শ্যানা ७ थ्डेक्नानिका १। जम्रा खगाः।

हिनवः। गोनावः। भर कृह् विनामित्रः। वलमाञ्द्रः। तुगरुष्ठः ছু•। কিঞ্ছিপিনকারিত্বঞ্চ। ইতি রাজনির্থটঃ॥ অপিচ। বটপ্রপ্রী ভূ कथिका (मास्तिमातावनी वृतेषः। विष्ये क्यायाका सानि मूब-গদাপহা॥ ইক্তিভাবপুকাশ:॥ **ब्ह्रेंड्रः लु॰ व्यक्कुहैः॥ (ब्रष्टेः॥ ऋ**ठेः॥ চৌর: ।! চঞ্জ:। ইতি শব্রত্না-वली ॥ वहेदानी शुः जी यकः। इंडि एम-ठलुः॥ वहेर्क्कवानकर्खात्र वि॥ যটাকর: পু॰ রজ্জা। ইত্যমরটী काया॰ बाबाणुनः ॥ স্ত্রী রজ্ব। দড়ি ইভি **ৰটারকা** বেটে ইভিচ ভাষা।ইতিপুরাণা। शुः छोद्रविष्मवः। यथा रहावीक: । नागकीत्रा वजावीकः मसिक्तात-स हाब्रकः। ইिंड म प्राना ॥ উপজিল্লি হা। यथा। सो উপজিজ্বিকোৎপাদিকা চ বটি-कष्मिकिका पिवी। ইতিহারাবলী॥ বটিকা জী বটী। বড়ী ইতিভাষা 1 उ भर्यायः । निष्ठमी २ । इंडि अपनित्वा॥ अथ दिवेकाविधिः। বটকা অথ কথ্যন্তে ভন্নামা বটি-কা বটা। নোদকো গুটিকা পিঞ্জী

एए। दर्जि खर्थाह्य**छ।।** जिरुद**्** नाष्ठां वरङ्गो छ। वा नर्कत्राथवा । গুগুলু বা ক্ষিপেত্তত্ৰ চূৰ্ণ ভলিমি-छ। वही ॥ छञ वङ्गि मिएन छछ। (दो । अर्थ्यापविद्यिमाञ्चन क्षत्रिः खुनुना बधी । मुख्य मधुन वाशि अधिका কারযেদ্ধ: ৷৷ সিতা চত্তণা দেখা বটীযু দ্বিশুণো শুড়া। চূর্ণে চূর্ণসমঃ कारगंत्रा खन्नुनुर्मयू उৎमन ॥ उ९-नमः हूर्गममः ॥ मुबद्ध हिन्दगः (मयः तानत्कव् जिषश्रेतः। पुव हज्लंग মিতি বা পাঠঃ ॥ দূব• দূবরূপ• দূব্য• ।। कर्यम्याना उद्याखा दल मृष्ट्री भुगू-জাত। বল নিতি কালাদে রপু।প-অক্ষণ । ইতি ভাবপুকাশ: ॥ 🛊 ॥ ব্যঞ্জনোপযোগিদ্ব্য । অস্যাপি ৰ-ড়ী ইতি ভাষ।। যথা। মাষাণা• পি-ঠিকা হিন্ধু লবণাৰু কি সংস্কৃতা। তথা ৰিরটিভা ৰঙ্গে বটিকা: সাধু শোষি-তাঃ৷৷ তালিতা স্তপ্ততৈলেতা অথবা সুলুলেহিতা:। বটকস্য গুণৈ যুঁক্তা द्धाञ्चरा क्रिमा ज्**न**्॥ **क्र**चा ७३**द-**টী জ্বেষা পূৰ্বোক্ত বটিকা গুণা। বি-শেষাৎ পিত্রক্তমী লম্বী চ কথিতা বুৰৈ:।। মুদানা পটিকাতদদ্চিতা সা-ধিতা তথা ৷৷ পথ্যা ক্চ্যা ততো লঘী নুদ্দুপগুণা স্তা।। ইতিভাবপুকাশ: वि तब्जः। इज्रामतः॥ वर्तुः भू भागवकः। यथा। वर्तुः भून র্মাণবকো ভিক্ষা স্যাগুলসমাত্রক । ইতি হেমচন্দু:।। বুক্ষদারী। যথা। वर्षे वंगी वृक्षाता । इंडि मदब्रा-वनी ॥ अधिम विकास यथा। मधू-क्रमर्नः (महानाकः मुक्तामः ऋहे-बिहः। अक्षा वहुं भी वृंखा भीर्व-বৃস্তক ইত্যপি ॥ ইতিচ শব্রতা-वजो ॥ वाजकः। यथा । वाजका भानता वालः किल्मात्रा वर्रे द्वि छ। शि। इंडािश नद्रज्ञावनी ॥ ষ্টুক: পু॰ বালক:। ইতি শব-त्रज्ञावणी ॥ टेंड्यवविष्**गयः। अ**त्रु मञ्जापि यंथा। উদ্ধরে ছটুক । एउ माभनुषात्रभः ७था। स्क्वयः भून (इंश्वर विहेन्य ममुक्ताद्य ।। এकः विः मञ्ज्ञाञ्चा माक्तिक्ष्या म-

रामनः॥ 🕸 ॥ अत्रा भूबा । भूजः-क्ठाारि भागायामान विशाय भी-ठेनात्र अर्गाट । यथा । वर्षाि चरिनश्रव्याञ्च (पर्ह विनामा अवता-**मिन्रामः अर्य्याट् । यथा नित्रमि उँ** বৃহদারণ্যক খাষ্যে নম:। মুর্থে गागबीहन्स्य नमः। कृषि वर्षेक-ভৈরবায় দেবতায়ৈ নম:। তত্তা म्र्डिन्यानः । (द्याः (वाः केनानाय नत्मा २ क्षुष्ठरयाः । ट्यु॰ दि॰ उट-न्क्षाय नम खर्जानाः। हुः त् ञ-वादाय नत्मा मध्यमत्याः । ड्रि॰ वि॰ वामप्तवाय नामा २नामिकत्याः। इ वः मर्गाजाञाय नमः कनिश्ररयाः। भून खखरङ्गली छिः मित्रा वहन ङ् पुष्य भारिष् उडवी का रिका खडग्र डी न्। ज्याक्षु भागक्षिणा দীচ্যপশ্চিমেষু মৃথেষু চ তান্ন্য-সেৎ। তথা চ নিবল্ধে। অঙ্গলী দে हराकुष् मूडी नं। सम्बर्ध भूता। सः ত্যাদি পঞ্চ হয়াট্য শক্তিবীজ পুরঃ সর । বকার পঞ্চুদ্বাচ্য নীশানা-रियु (वाजावट । **७ ३: क**द्राञ्च न्यास्त्री । তব্ধা। ওঁ হা। বা। অঙ্গাভ্যা नम इंड्राहि। उँ ड्रा॰ वा॰ इहियार नम इंड्रानि ह। यङ्रीर्घ वीक्षष्यन क्र्यां । जथा व निवक्त । कड्नीर्य

শ্ক্রণ শক্ত্যা বকারেণাপি ওদ্বতা ় অস্থানি জাতিযুক্তানি পুণবাদ্যেন कन्नरायः ॥ #॥ ज्ञा भागः। ज्ञा **ঁথ্যান' ত্রিধা প্রোক্ত**ণ সাত্তিকাদি পু **८७५७:। मादिकः यथा। वत्म वानः** -স্কৃটিক সদৃশ জগুলোভাষি বক্তু रिवा करेल नंवम शिमरेषः कि कि ने शुद्रादेनुः। मीछाकाद्रः वियम वननः **मूभुमम** बित्नब श्लाद्वान्त्रा वर्षेक **अनिणः म्ल**श्रः छो प्रशानः ॥ ३ ॥ এব ধ্যাত্বা।। রাজস যথা। উদ্য দ্যান্ধর সন্মিভ ত্রিন্য্ন প্রক্রাঞ্ রাগসূত্র স্বেরাস্য বরদ কপাল अভयः भूवः मधानः करेतः। भीवा গুীব মুদার ভ্ষণশত শীতা শু छ्ডा**ङ्क्ष्मः वस्काक्**गवासमः ख्य क्त्र (ह्व अहा जावर्य ॥ २ ॥ **जानमः यथा । श्रायमीवा**ष्ट्रिकासः শাশিসকলধর মুখ্যাল মহেশ দিয়ন্ত্ৰ পিঙ্গকেশ ডমৰ মথ শৃণি चन्न म्लाख्यानि। नागः घणाः कः পাল করসরসিক্ছৈ বিভূত ভীম দ্ষ্ট্রে সপাকল্প ত্রিনেত্র মণিম্য বি दामट किव्हिभी न्श्रुवाएउ ॥ ०॥ मा-ত্বিক ধ্যান মাখ্যাত নগমৃত্যু বিনা-শন-৷ আযুরারো ্যজনন মপবগফ न भूम । ।।। ता जन । थान ना था ७ । थर्गकामार्थनिक्तिरः। दाजामण भवू-শ্মন ক্ত্যা ভূতগদাপহ গাতগ এব ধ্যাত্বা মানসৈ: সংপ্তঃ শল্পাপন व्यर्गा । । । वन्र भूजायखः। ययांवियां मि जिः कुछ भी छ भक्क শোভিতে। বট্টোণাস্ত জ্রিকোণক্তে ব্যোম পদ্ধজ সংযুতে॥ ততো নূলেন मूर्जि महन्ना भूबवट श्राज्ञावाइ-मार्किक अर्गा८। उब क्रमः। मृत्वन সদ্যোজাত্মস্ত্রেণাবাহন । মূলাদি বানদেবেন স্থাপন । মূলেন সান্নি-**४८ । अधादान मित्राधन । ७८-**शूक्रविश्वानिम् पु। शुप्तभंनः। देभाः নেন বন্দন মিতি বিশেষ: 11 ততঃ कर्गिकायाः रिक्कु (कार्ययू देशाना ही-ন্ যজেৎ ৷ ততোব্যোন পক্ষজদলেষু णित्र अन्तर्भाव राज्य । अन সিতাকে৷ কৰু শুণ্ড: কোধোন্মত্তৌ ह रेडद्रावी। कभाषी डीयन रेम्हद अ शाहारही ह जित्रवाः ॥ और ब्रह्म रिভद्गरेव দ্বিতীযাব**রণ । ততঃ ষ**ট্কো-(ण्यू शा॰ वा॰ कृत्याय नम इंड्रान्य भूकारार ॥ उठ: भूर्वामि छाकिनी वाकिंगी चाकिंगी काकिंगी माकिंगी हाकिनी भानिनी भूजान् (परीभ्यान् উমাপ্তান क्षुन्यान् माठ्काभू-आन् मिक्का यहिता । अष्ट्रं अ**ष्**रं

मुयीनु आन् अर्था १र्थामुथीनू आन्। তদ্বহি রপ্তপাপ্র লোকেশান্ বটক-क्षान् भृङ्ग्रि । उद्दिः भ्रि उ वुकारीभूधाय नमः। এव भीणात भार्श्यतीभू भाग। উखात रेवक्षती পুগ্রায়। অনিলে কৌনারীপুগ্রায়। প किया इन्मागी नू भाषा । रेन श्रंति মহালক্ষীপুঞায। যান্যে বারাহী-পুতায । অনলে চামুগুাপতায । তথা চ নিবন্ধে ৷ বুক্ষাণীপুএক 🖟 भूर्व बार्ह्मीभू अ रेनच्यत । रेन्छवी भू धकः भोरम्। को मात्री भू धनामिः ल।। इन्द्रानीभू धकः ज्यः शक्तिम **প্**জযে छ छ: । महान सी मुख भ-काम्त्कामिण जनहरंय ।। वादा-शिन्यकः यारा। हाम्खानु य नान-ला। उद्दर्श्निमिया ह। (इजुक॰ বিপুরাস্তরু বেতাল° বহিজিফ্র° করাল কালান্তক একপাদ ভীম-ধাপ অচল চাটকেশ্বর প্রয়েখ্যা ভতোযোগিনীসহিত দিব্যযোগীশা-य नगः। এব॰ याभिनी मञ्जान्त्रीः क तानी भाग ननः। এव॰ तानिनी-সহিত ভূমিপ্রযোগীশার নমঃ। ই भागाति निर्थालियु भृहरस्य ।। # ॥ অস্য পুরশ্চরণ নেকবি শতি লক্ষ-জগঃ। বূর্ণ লফ্ষ্ জপেমুজ্রণ হবি- য্যাশী জিতেন্দ্যি:। তক্ষাণশ প্জুত্বাভিলৈ মধুরসংগুড়ৈ।। 🛪 📭 ज्यथं विविधान । भूति विद्यः पूर्णाः जनाताथा विन पर्गाटा भागात्र পলল সর্পি আজচ্গানি শক্রা: 🛭 **७**७ भिक्कतमा भूभि संबुक्तिः भति भिनिरेडः। क्रा क्रवनगात्राष्ट्रास-ব॰ পুৰেক্তবৰ্ত্মনা।। ব্লক্তচন্দ্ৰ পু-म्रहित्र निंगि उरेम व'नः श्रवः । यद्या। অনুনোক মজ হয়। রাজসং शुाखभी विज । येशि शुप्तान मन्तर जिल्ला॰ मर्ब रेमनुकः ॥ निर्वत्यः ष्ट्रनिद्धनः वर्षेकाय विभिष्टेवीः । वि-দর্ভবেছত্রনারা বলিমত্র তথা সুধীঃ ৷৷ শত্পক্ষা ক্ৰিরণ পিশিত্ঞ मित्न मित्न। **उक्त**यम् गरेनः नार्चः जात्रस्य जनविजः ॥ विव मञ्जा १य माथ्याञः मर्ख्याः विक्रयभूरः । অনেন বলিনা হৃষ্টো বটুকঃ পর-সৈন্যকে ।। সর্ব্ব: গণেভ্যো বিভৱে-চামিষণ জুদ্ধনানস:। এবং কৃতে পরবল কীনতে নাত্র সংশয:॥ ইতি ভন্সার: ॥ 🕸 ॥ অথ বটুক্-रेज्यव (उद्भः) किलाम मध्यामीः नः (त्वरत्वः क्रमन्ध्वः । मक्तः পরিণপুছ পার্বতী পরমেখর ।। श्चिभाई कुर्वाछ । जगवन् मर्बदर्भ अ

मर्वभाञ्चागमानिषु । जानमूकाद्र १ मञ्ज नर्वनिष्मिश्रुष नृगा ॥ नर्द 'ৰাঞ্চৈৰ ভূতানা• হিতাৰ্থ• বাঞ্চি• মযা। বিশেষতস্ত রাজ্ঞা• বৈ শান্তি -भूडिभुगाधनः॥ अक्नाम कद्रन्धाः म वीबन्याम मम्बिष्ठ । वक्रन्हिम (१८वण मम इयंविवर्क्षन् ॥ 🗐 छ्य-वानुवाह। मृत् (हिव महाश्रख मान-पृकात्रश्चिकः । **नर्व**त्यः शुन्तमनः नर्वभञ्जनिवर्देन ॥ जनमाद्रापि । গাণা• জ্বনদীনা• বিশেষতঃ। নাল-ন মৃতিমাত্রেণ মজ্ররাজ নিম পুথে ॥ গুহরার ভ্যানাঞ্চ নাশন সুখ বন্ধন । স্বেহাদ্বক্যানি তে মক্ত **न**बनात भिन• शिर्य ।। नर्बकामा-র্থদ মত্র রাজ্যভোগপুদ নৃণাণা अनव श्र महाया (नवी भुगव मुका-রেৎ ॥ বটুকাযেতি বৈ পশ্চানাপ मुकाরगाय छ। **अ**ङ्खयः ७७: भण्डा-षपूकाय भूनः किल्ला ॥ (मवी भू ণৰ মুৰ্ত্য মন্ত্ৰরাজ নিন্য প্রিয়ে। मञ्जाकात भिभे परिव देवलाका नाति पूर्वछ ॥ अभुकामा विभः মন্ত্র• সর্বশক্তি সমন্তি। মারণা দেব মন্ত্রস্য ভূত পুেত পিশাচকাঃ৷৷ विदुविष्ठ ভगार्खा देव कालकुनाहित शुकाः। भारतेष। भारतिषाभि भूक-

যেদ্বালি পৃত্তক।।। নাগ্ন চৌর ভয় वालि गुरुवाक्जयस्या। न ह मात्रीः ভয॰ তস্য সর্বত্র সুথবান্ ভবেৎ॥ चागू द्वारतागा रेमचर्गाः भूवालीः আদি সম্পদ:। ভবন্তি সতত তস্য **পু**खकम्यां भिष्ठनाट् ॥ श्रीभार्द-ত্যুবাচ। য এষ ভৈরবো নাম আপ मूकाव्रका **मजः।** चुया চ कथिएडा দেব ভৈরবঃ কল্প উত্তমঃ।। তস্য নাম সহসাণি অযুতান্যরু দানি চ। সার মুদ্ধৃত্য ভেষা বৈ নামাপ্তশতক বদ ।। 🗱।। খ্রীভগবানুবাচ। যস্ত সংকী-र्खराप्त उट मर्बपुष्ठ निवर्शनः । मर्वान् কামানবাপ্মেতি সাধক: সিদ্ধি মে-ব চ ॥ শৃণু দেবি পুৰক্ষ্যানি ভৈরব-मः भराञ्चनः। याश्रम्कात्रकरमः ह-নামাঙশত মুভ্রম ॥ সর্থপাপহর পুণ্য সন্থাপদ্বিবারক। সর্বকা-নার্থিণ দেবি সাধকানাণ সুথাবহণ ॥ (पराक्षनप्रामनरिक्षय भूवं अर्यप्राय সনাহিতঃ। ভৈরবং মৃদ্মি বিন্যস্য ननारि जीभरर्भनः ॥ অংক्षा ज् उ।-शुव नामा वहत्व जीक हर्भन । (का-ৰূপ· কৰ্ণযো ৰ্মাধ্য ক্ষেত্ৰপাল ভৃদি-न्याम् ॥ (क्वाथा नाजिएएम ह किराः मर्बाघनामनः। जित्नज मूर्त्वा विंगुमा बद्धाया त्रक्रभाविक ॥ भाः

मत्या (मंदरम्दिन् अर्बाःक वर्देकः न्या न्या न्या निर्मा कृष्या उत्तर নন্তর মৃত্তম• II নামা**ষ্টশ ভক্স্যাপি**-ছान्ता १नृष्ठेवुमाङ्खाव्हमात्रगारका নাম খবিক্ষ পরিকীর্ত্তিতঃ।। দেবতা কথিতা চেহ সন্জি ব টুক**ৈরব:। ধ** र्यार्थ काम भाक्षय विनियागः भु **कीर्जिटः ॥ॐ॥ ७ँ छित्र**रवा ভ্**ত**ना-থাচ ভূতাল্মা ভূতভাবন:। ক্ষেত্রদ: ক্ষেত্ৰপালক ক্ষেত্ৰক্তঃ ক্ষতিযো বি द्वारे॥ भाषानवात्री ना जाली थर्ल ब्राभी मथान्रकृट । ब्रक्त भुगिणः নিদ্ধ: निদ্ধিদ: निদ্ধসেবিত: ।। ক রাল: কালশমন: কলা কাষ্ঠাতনু: कविः। जित्ता वह्तज्ञ ७९१ পিক্ললোচন: ॥ শ্লপাণি: খন্ন भागिः ऋकानी ध्रमुः नाहनः। य **छीक रे**र्डब्रादा जीक जूं जाना त्या-निनीপि :।। धनरना धनहाती ह ধনপ: পুতিভাববান্। নাগহারো নাগকেশো ব্যোমকেশ: কপালভূৎ ।। कालः क्षानमानी ह कमनीयः क्लानिषि: । बिलाइनाङ्ग्लासब ব্রিশিখী চ ত্রিলোকপাৎ।। ত্রিবৃত্ত নগনে। ডিস্তঃ শান্তঃ শান্তজনপ্রিশঃ। वर्ट्टेका वर्ट्टेकमण्ड थहात्रवत्रशातकः **৷ ভুতাখ্যক: পশুপতি ভিফ্রক:**

পরিচারক:। খুর্জ্তো দিগম্বর: শৌগ্নি र्श्तिगः भाषुरनाहनः ॥ भुगानः मा-हिनः मुद्धः मक्दत्रश्चियवाक्षवः। अ-ष्टेग्र्डि निथीणण खानठक खाना-भयः ॥ अष्टोषातः कलाषातः मर्श्यु-जः मनीनिथः। ভূধরো ভূধরাধী-শে। ভূপতি ভূধরাত্মক: ॥ কন্ধাল-ধারী মুণ্ডী চ ব্যালযক্তোপবীতবা-ন্। জ্ম্ভনো মোহন: স্তম্ভী মারণ: क्षाचन खयः।। भूक नीवाक्षनमुः थ। (रहा मुख्रिज्यिजः। द नजूक् বলি ভূতাত্মা কামী কামপরাক্রমঃ ।। সর্বাপভারকো দুর্গো দুইভূত্রনি-(विविज्ञः। कामी कलानिश्चः कान्यः কামিনীবশক্ষশী ৷৷ সৱসিজিপু-(रा रेवर्)ः भुजविष्ः भुजाववान्। **२०৮। य**ष्टाखद्रगंड• नाग रेज्द्रः বস্যমহাত্মন: ৷৷ মযা তে কথিত দেবি রহস্য সর্বামিক ৷ যইদ পঠতি স্তোত্ৰ নামাষ্ট্ৰশত মুক্তম ।৷ ন ভস্য দুরিত কিঞ্চিন্ন রোগেভ্যো ভয় তথা। ন শতুভ্যে ভয় কি ঞ্চিত্র পুর্পেন্তি মানব: কুটিত ॥ পাতকানা• ভয়• নৈব পঠেৎ স্তোৰ **मनन**ऽदीः । भादीच्य द्राज्ञच्य उथा চৌরা শু:জ ভবে ॥ ঔৎপাতিকে नहारवात उथा मुः अल मर्भात ।

বন্ধনে চ তথা ঘোরে পঠেৎ স্তোত্র• সমাহিত: ॥ সর্বে পুশম্ন যান্তি . ভगोरेन्द्रव कीर्खनाथ । এकामण সহসূত্ত পুরশ্চরণ মুচ্যতে ৷৷ ত্রিস-ন্ধ্য বঃ পঠেদেবি সম্বংসর মত न्त्रिः। म मिषिः भारत्यापिष्ठाः **मू**र्जञामि मानुषः ॥ यथामान् जू भिकामस म सन्धा माज्य महो । রাজা শত্ বিনাশায জপেমাসাষ্ট ক পুন: ৷৷ রাত্রো বারত্রযথে ব নাশ-যত্যেব শাত্রবান্। জপেন্মাসত্রয द्वाद्वी द्वाङ्गानः वन्त्रभानस्य ।। धना-थीं ह मू डाथीं ह नाताथीं यस मान-वः। भारतेवाद्रवयः यद्या वाद्र स्मकः তথা নিশি॥ ধন' পুগ্রা• তথা দারা-ন্পাপু যাঘাত্র সংশযঃ।রোগীরো-গাৎ পুম্চে उ বছে। মুচে उ वक्तनार II ভীতো ভবাৎ পুমুচ্যেত দেবি স ७ अन्तर्भयः। यान् यान् मनी **र**७ কামাণ স্তাণ স্তানাপ্নোতি নিশ্চিত ॥ অপুকাশ্য মিদ গুহু ন দেব যস্য कम्राहिट । मट ऋजीनाय माष्ट्राय খাজবে দম্ভবৰ্জিতে।। দদ্যাৎ স্তোত্ৰ भिनः भूगाः मर्वकामकवाभूमः। शाः ন॰ বক্ষ্যামি দেবস্য যথা ধ্যাত্বা প ঠেনর: ।।। ওঁ শুদ্ধ সুটিক সঙ্কাশ• **मर्मापिठ। यह मः। यह वाहः** जि

ন্যন চতুৰ্বাহণ দিবাহু ইণ। ভু জঙ্ মেখল দেব মগ্লিবর্ণ শিরোক্ছ।। रिगम्बद्धः **अ**मादी**णः** दहूकाथाः मः হাবল ।। খট্টাঙ্গ মসি পাশঞ্ म्निक्व उथा भूनः। उमक्छ क-शालक वत्रमः जुडमञ्ज्या ॥ मीलङी-**गृ** उनकान भीनाञ्जनहर्भुखः । म है। कत्रानवरनः न्भूताक्रमञ्चिउः ॥ আত্মবর্ণসমোপেত সার্নেয স-मिति छ। श्रादा कल्पर मूम क्षे: नर्वान् कामानवान्नुयाए ॥ এउह्तु **उट्टा (**रवी नामाश्रेमक मुख्य[े]। रैज्यवाय शुक्षा जूट खयरेक्षव म-হেশ্বরী।। ইতি বিশ্বসারোদ্ধারত। **(ड** जानमूकात्रकल्ल रेज्यवयया-कः ममाश्वः ॥ 🗱 ॥ व्यथ वर्षे करे 🗷 इव কবচ । এতি বরব উবাচ। দেবেশি দেহ রক্ষার্থ কারণ কথ্যতা প্রুরণ । এ্যিন্তে সাধকা যেন বিনা শ্মশান ভূমিষু ৷৷ রণেষু চাতিখোরেষু মহা-वायु जलवु छ। मृक्षि भकत वर्जुयु ज्ञानिवाधिवशिष्। औरन्त्रवाह। कथरानि मृग् भुाख वरिष्य कविष् শুভ । গোপনীয পুষত্রেন মাতৃজা-রোপন্ যথা ৷৷ তস্য ধ্যান ত্রিবা প্রেক্তি সান্তিকাদি প্রভেদতঃ। সা-ত্ত্বিক রাজসঞ্চৈব তামস দেব ভঙ্

मृ् ॥ वर्न्त वान सृष्ठिकमम्भ॰ विश्वान्त्रानि वक् दिवाकरेन्न न्वमित्रियः किन्दिनी न्भुतारितः। मीछाकातः वियम्तरनः **जुलुमन्नः** जि-নেত্র• হস্তাব্লাভ্যা• বটুক মনিশ **म्न** थङ्गो स्थानः ॥ ३॥ উरु छ।-স্করসন্নিভ° ত্রিন্যন• রক্তাস্ক্ রাগ-সূত্র মেরাস্য বরদ কপাল মভ্ব म्ल॰ प्रधान॰ करेत्रः। नीलगीव मू-**मात्र जूराण ७: भी ठा: मु**ह्र छङ्ग्व: বন্ধুকাৰণবাসস ভগহর দেব नरा ভारत्य ॥ २ ॥ श्रात्यमीना दि-काष्ठः मनिमक्लपद्रः मुख्यानः गर्न कियुद्ध शिक्षा उनक নথ শ্ণি॰ খ্র শ্লাভ্যানি। নাগ॰ यणे। क्रान क्रमत्रिक्टि र्वि-**जु इ॰ जीनर॰ड्रे॰ मर्लाकन्न॰ वित्नव॰** भिगय विनम् किलिगो न्भुताहा ॥ २॥ 🗱 ॥ व्यम् । वृक्टे बद्रवक्व । नहाकान अवि द्रपृष्ट्रे भएनरः श्रीवर्षेक ভৈরবো দেবতা বংবীজং ভ্রীং শক্তি রাপদুদ্ধারণাযেতি কীলক মম স র্বাভীষ্টসিদ্ধ্যর্থে বিনিযোগঃ । ওঁশি-রো নে ভৈরবঃ পাতৃ ললাট• ভীষণ স্তথা। নেত্রে চ ভূতহ্ননঃ সার্মে-यानूर्णा ज्यवो ॥ ভূতনাথক মে क भो कलावी (भुजवारनः। नामा-

भूषी उत्थाक्षी ह जमात्रः मर्बज्र-ণঃ।। ভীৰণাস্যো মমাস্যঞ্চ শক্তি-হস্তে। গল• মম। ক্ষমৌ দৈত্যবিপুঃ পাতু বাহ্ অত্ৰবিক্ৰম: ৷৷ পাণী क्शानी म शात्रु मुखमानाधाद्रा क्र·। वक्रः इतः उथा भाउः काम-চারী खनः মন।। উদরঞ্চ স মে তৃষ্ট: ক্ষেত্রেশঃ পার্যত স্তথা। ক্ষেত্রপা-**ল:** পৃষ্ঠদেশ ক্ষেত্রাখ্যোনাভিড স্ত-था ॥ कठी॰ भारभोधनामण बहुत्का निक्रारमकः। ७२ व्यक्ताकतः भाष्ट्र উক রক্ষাকর: সদা।। জানূচ ঘ্রুর। রাবো জল্পে রক্ষতু রক্তপঃ। গুল্পেচ शानुका निकः शानशृष्ठः मुद्रयदः ।। व्याभार भयकरेक्षव व्याभनुष्काद्रभ ख्या । महभादा महाभएम कभ्त धवाला छकः ॥ भाजू मा॰ वहूँ का (मरवारेज्यवः मर्वकर्यम्। भूर्वभा म-সিতাকোনে দিশি রক্ষত্ সর্ধা।। चारायाध कवः भाजू मिक्त छ छ ভৈরব:। নৈখাভ্যাণ ক্রোধন: পাত্ মানুব্যব্তম্ত পশ্চিমে॥ বাযব্যা । নে-কপালী চ নিত্য পাষাৎ সুরেশরঃ । ভীষণো ভৈরব: পাত্তরম্যা• দি-শি সর্বনা।। সংহারভৈরব: পাতু पिरेम)मान्।• सङ्ख्दः। উদ্দ্वि′भा-তু বিশাতা বৈ পাতালে নন্দিকো

বিভু:॥ সদ্যোজাতস্ত মাণ পাৰাৎ नर्वत्न (नवरमविजः। वागरमत्वा ি হবত প্রীতো রণে ঘোরে তথাবতু ।। জলে তৎপুক্ষ: পাত্ স্থলে পাতু ७कः मता। ডाकिनीপू এकः भाजु हाता छ , **वा**किनी मूजः ॥ পাতু সাকলকো ভাতৃন শিय॰ নে সতত গির:। লাকিনীপুএক: পাতু পশ্নখানজা ভথা ৷৷ মহা-काला १वज एया रेमना रेव का-वर जतदः। जाकाः जाकाम्परः शाः याद रेजब्रावा जीजिङ्गाबकः ॥ ब काशीनख यद सान वर्षिक कद চেন চ। তৎ সর্বণ রক্ষ নে দেব স্বুণ यं मर्वत्रक्षः ॥ ७७८ कर्व মীশান তব ত্রেস্থ পুকাশিত । নাথ্যেশ নরলোকেষু সারভূতঞ্ जूजिय ।। यदिय करेम न माउवा कवरहमाः जुल्लं छः। न (एयः भत লিব্যেভ্য: কৃপণেভ্যুম্চ **লহ্বর** ॥ या प्रवाजि निविष्क्षच्यः म वि जुः छ। ভবেজুব॰। অনেন কবচেশেন রকাণ ক্রা দিজোতনঃ ।। বিচরন্ যত্ৰ স্বাপি বিলোগৈ: পুাপ্যতে ন সঃ। মজেণ মুিবতে খোগী কবচ॰ য়ল রিফিড: 11 তমাৎ সর্ব পুরত্ত্বেন पूर्व 🔊 भाभार छुना । जूर्ब द्र**स**् पुर वानि निथिन्न विविव भु-(छ। ॥ श्रात्राय भाग्रेयमानि म-, म्मार्टमानि निछामः । मन्मुग्रिना-छि भुडाव विकास । मन्मुग्रिना-छि भुडाव विकास । मन्ने ख्राय मात्र छ्ञाय वि नमः । नम खिलाका माथाय ना-थनाथाय कि नमः ॥ ইछि विश्व-मात्राक्तात्र छत्य जानमुकातकान्न विज्ञव छित्रवीम वात्र वहुक्टेड त्रव-कव् मार्थ ॥

বর্ট্করণ ল্লী উপন্যন । ইতি ত্রিকাগুশেষ:।।

বঠ ই ড একচরে।ইতি কবিকল্পজন: ।। এক কতৃ কি চরণ । ই
বঠ্যতে । ড বঠতে চৌর শ্চোরযিত্ একশ্চরতীত্যর্থ: । ইতি
দুর্গাদাস: ।।

यर्थ (स्रोत्ना । इंडिक्विक्क्क्स्मः ॥ स्रोन्ड भिष्ट भागर्थाः । वर्धेड माउ। माउः भगर्थः म्यानिडार्थः । इंडि मुर्गामामः ॥

वर्ठद्रः मूर्ण मूर्थः। ইज्रुगिष्टिकायः॥ व्यवकः। ইতি एश्मिष्टन्तुः॥ मद-काद्रः॥ वकः। ইতি माक्षिश्रमाः द्रागिष्टिवृद्धिः॥

वर्ठेद्रः वि मर्ठः ॥ मन्तः । ३७ जिकाश्रममः॥ ব্য ই ক বিভাগে। ইতি কবি-। কলুদ্দমঃ।। ই ক বগুযতি। অয়ণ কৈ-শ্চিন্ন পঠ্যতে। ইতি দুগাদাস:॥

বড ই ড বেষ্টে॥ বিভাগে। ইতি कविकन्नक्रमः ॥ ३ वख्राउ । उ বণ্ডতে। ইতি দুর্গাদাসঃ॥

वड बादाइए। (मोबवाजूदयः। ইতি কবিকন্দমঃ।। বড় ভী। বড়ি **म**। ইতি দুর্গাদাসঃ॥

विष्ठी जी गृरुह्छ। गूरिन। इंडि ভাষা। ইত্যমর: ॥ তৎপর্যায: । গোপানসী ২। ইতি ভটী গ সা-त्रमुल्दर्श ॥ हन्द्रमानिका ७ क्छा-গার' ৪। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষ: ॥ চন্দুশালা চ বডভী স্যাতা পুা-नाम्म्यान । इंडि डी ध्रः ॥ ध्यः वाया व प्राची हुए।। इंडि क्नुः॥ वड्डी हनुभावि शुन्नाना চ মণ্ডপে। ইতি কোবান্তর ।। শু-काउ वड़ जी इन्मणाल (मोधा-জু , শ্বনি । ইতি রভস: ॥ হুরা-**छ।.ल द**ेडि:। **छा॰ कम्याक्षि-**জ্ঞুন বড্ডাবি**তি মেঘদ্ত:** ॥ বডভি: বডভী বন্দভি: ব্লভী চেতি চাত্রপ্য নিতি বৃদ্ধা:। ইতি ভরভ: ॥

वा जारेन र्कः यखाकुनः भिष्ठः। शिक हुर्न वेढी वजा। इंडि शक्-ठिन्त्रिका ॥

বডিশ ক্লী মৎস্যধরণার্থ বক্র-लोश्कण्ठकविरमयः। वँएमी इंडि ভাষা। उৎপর্য্যাयः। মৎস্যবেধ-य २। ইত্যমর: ।। द**লিশ** • ০ বড়ি-শা ৪ বডিশা ৫। ইতি ভরতঃ ॥ रिवामी ७ मूटमारविधनी १ । इंडि ভট্টীকান্তর ।। ৰলিসী ৮ বলিস ১ বরিশা >০ বলিশি: ১১। ইতি व्यक्तव्रवावनी ॥ मूट्युट्टरनः ३२। ইতি জটাধরঃ ॥

বডিদা স্ত্রী বড়িশ।ইতি শম্ব-ब्रङ्गावनी ॥

वपुः जि वृह्द। हेळामत्रः ॥ जमा ভাষা বড়॥

বণ ৠ শব্দে। ইতি কবিকল্পদন: !! मूर्गामा ॥

বণ্ট ভ ক ভাগে। ইভি কবিকয়: ক্রমঃ ॥ বন্টন্তি বন্টাপ্যতি । ইতি দুগাদাস: ॥

वन्धः भू॰ जागः॥ माजगृहिः॥ इंडि (रुगठन्तुः ॥ व्यक्ष्ठाद्यारः। इंडि म्द्राना॥

एपा जी वर्षेकः। यथा। कम्लनाथ विषेकः भुः जानः। इंडामदः॥

ब्रेड: पू॰ व्यक् उपारः॥ श्रवः॥
व्रिक्षपृथः। हेि (मिनी।।
व्रेत्रः भू॰ अगिकात्रङ्यः।। व्यक्षुः
त्रमप्रवागां कतीत्रकायः॥ जान्
वाम् वागां कतीत्रकायः॥ जान्
वाम् वागां विव्यक्षित्र । हेि
(मिनी।। उत् अश्रवकात्रापि। गान्
पिठाय॰। किन्छ विष्ठ व्यक्टत्र
हेि अमार व्यत्र भुजायम निज्ञमः
वार मन्जावकात्रापि। विश्विजः॥
वश्रामः भू॰ भृतपृष्ठि।। दोका।। श्राम् विविश् । हिज पिनिभी एस्म न्यू म्हा।।
वश्रामः। मुक्तिया २ हिः ग्रहः ७ मिन

वङ वा (थरः ॥ अनुकष्णा ॥ म-स्वायः ॥ विस्रयः ॥ आसञ्चतः ॥ इङ्ग्रनदः ॥

বত সঃ পূ॰ কর্ণপুর:। কর্ণভূষণ ।। শেখর:। শিরোভূষণ । ইতি মে-দিনী ।।

राज्यः शुः मूनिराजनः। हेजूलानि

(कावः॥

वर्ष्ट्रः शृ (स्वनि ॥ मङ्ग्वाह् ॥ श्राः ॥ व्यक्तियाः ॥ इडि मःकिश्रमाद्रागानिवृद्धिः ॥ वर्षाका खी व्यव्याका। इडिम्रद्र-होकायाः चत्र छः ॥ वर्षाः क्षी वक्षः। इडिमद्रः ॥ वर्षाः शृ वर्षः॥ (गाणिण्यः। वाङ्द इडि ভाषा। उर्ध्यार्थाण्याः। णक्र-कदिः २ उर्पकः ७। इडि विण्युद्धां नागार्थि हामद्रः॥ भूष्पादिः। वाङ्ग इडि ভाषा। इडि मिनि ॥ वर्षाक्ष निर्वेष्टः॥

বৎসকঃ পু॰ কটজঃ। ইত্যমরঃ।।
ইন্দুযবঃ। ইতি রাজনির্ঘটঃ।।
বৎসকবীজ॰ ল্লী ইন্দুযবঃ। ইতি
রাজনির্ঘটঃ।।

বংশকানা স্ত্রী বংশাভিলাসিনী-গৌ:। তংপর্য্যায়:। বংশলা ২। ইতি রাজনির্ঘণ্ট:॥ পুঞাদিকামা-স্ত্রী চ।।

वर्ष मजदः भ् भाक्षम्मनकानगदः।

माभारत वाजूद इंडि ভाषा। उर्
भर्यक्रायः। ममक्षः २ । इंडिज्ञादः॥

मूर्नात्रः २ गिषः ४ । इंडिज्ञाह
निष्णः॥

वर्माञ्जी की व्रवार्मार्गव्यभाषी ত্বেন কল্পিডা তিহায়ণী গৌঃ। যথা काउप्रायनमृज्या भगिष्यिन्। भूषा যুখে চ ৰূপবান্ স্যাৎ ভমলস্কৃত্য यूथ मुथा कठामा वरमञ्या छाः শ্চালস্কৃত্য এন যুবান পতি বো मनानि (उन की उन्नी मन्त्रथ शिर्यण মানঃ সাগুরন্ধা সূভগা রাহস্পো-(यन मिया मानम इंट्याउदियव খাচোৎস্জেরমিতি। স্বাগর্থন্ত হে वर्भ जर्र्या (वा युग्माकः अनः युवानः পতিং স্বামিনং দদানীভ্যক্ত পুা র্থবানি তেন কৃষেণ সহ ক্রীডম্ভী: খেলন্ত্য শ্চরথ ভুনথ ছে বৎসত যে। যুয মপি মান: নাম্মৎ স্বত্ব বি-যয়। ভবিষ্যথ কিন্তু ম্যা ত্যক্তব্যা: াব্যা বৃষ্ণ্য বৎসভর্গাঞ্চ ভ্যা-গেন রাফক্রোবেণ খন সমূজ্যা সা গুলনুষা সপ্তজ্ঞব্যাপকেন ইয়া अस्त्र ह मयाहर क्षेत्र छ्वायः मु-ज्या (वाकम्) शिया इंडि मग्राम-म इंडि ভविष्य मानी १९४ वर्ड गान इंडि भागिनियद्गभाज्यविष् मर्त्य वर्डमानः ॥ # ॥ वट्मख्री ৰিশেষ্যতি মৃতি: । অগতে। লোহিতা পত্নী পার্খাভ্যা• নীল-পাওরে। পৃষ্ঠতন্ত ভবেৎ কৃষ্ণ।

ব্ৰভস্য তু মোক্ষণে ॥ ভাসাং वयः भूमानः यथा। जिहायनी जिन র্ধন্যাভি: সুরূপাভি: সুশোভিত: । সর্বোপকরণোপেতঃ সর্বশস্য-চরো মহান্।। উৎসৃষ্টব্যো বিধা-নেন শুভি মৃতি নিদর্শনাৎ। ইতি শুদ্ধি তত্ত্বে ব্যেৎসেগবিচার:।। वर्मना छः भू॰ विषय्क्वविष्मयः। ইত্যমর:॥ সতু স্থাবরবিষভেদ:। शुर्य। वर्गान् नज्यां इनिष्ठ বৎসনাভ: ৭ভ্য গ হিণ্মে ঢাৎ ষ্মিতি যন্।। বৎসম্য নাভিরিব বৎসনাভ: ঞ: অনিত শ্চেতি ন বৃ দ্ধিঃ অয় সিফুবারপ্রসদৃশপ্রঃ। ইতি ভরতঃ।।ৠ। তৎপর্য্যায়ঃ।অ-মৃত २ विष o উगु ८ मस्त्रीयक्ष c গরল ৬ নারণ ৭ নাগ: ৮ন্ডৌক্ক ৯ পাণহারক' ১০ স্থাবরাদি ১১। व्यम् खनाः। व्यक्तियुत्रपुः । উ-ফত্ন• বোত কফ কণ্ঠক্**সমিপাত** নাশিদ্র। পিত যন্তাপকারকত্বঞ্চ। ইতিরাজনিঘণ্টঃ॥ৠ। অস্যস্থলপ निक्षभग यथा । भिक्षुवात्र भृक् পণ্রো বৎ সনাভ্যাকৃতি শুথা। যৎ भार्त्यन उत्ताव् कि ई ८ मना छः म-ভঃবিতঃ॥তস্য সামান্য গুণা যথা । विषः शानहत्रः श्लाङः वावावि

इ विकामि ह। आएएय वाङ कक इत्यागवाहि महावरः ॥ वऽवायि मकलकायवऽ। भनभू वंक भाकगम-नणीलः । विकामि ७ जः ल्णायन भूर्वकः मित्र विक्ष णिथिलीक तनः भीलः । आएएयः अधिकाग्रः भाः यागवाहि मः मर्ग्छन्गु। हकः । मः हावरः छत्ना छना थित्र वृद्धितिः धुः मकः ॥ छत्त्व युक्तियुक्तः जू भू।-नहायि त्रमायनः । यागवाहि किः दिल्लाधना । छमा हिषः भुर्या-रिष्य स्थिद्। भुर्या क्रायः शुर्या-रिष्य (भाधिद्। भुर्या क्रायः ॥। हेि ভावभूकाणः॥

वर मनानः न् किक्षः॥ वनः

प्रवः। यथा। वृन्तावनः गावः

क्षनः यमूनानु निनानि ह। वीक्षः।

मीमूडमा नीजी ज्ञाम माधवरयाः

मृना। এवः वृद्धोकमाः नीजिः यः

हर्षे वान हिश्चितः। कनवादिनः

सकारन वर्षमनालो वज्वजः।

हेि किनानवर्षः १० स्वर्धः १३

स्वरायः॥

व्यादः भू वारमभाभाजाककानः । व्ययनद्याञ्चकण । उ९ भर्यायः । मञ्द्रमद्रः २ व्यक्तः २ हायनः ८ শরৎ ৫ সমা ৬। ইত্যঙ্গর:।। শ-ब्रहा १ वर्ष ৮ विविष २ अञ्चल ३० । ইতি শবরজাবলী।। #।। বুতবন্ধ বিবাহে চ বৎসর পরিকল্পন মাহ वाहार्याः। वाधानभूवं (मतक भुमू-তিপ্র্রণ সদান্যে তু ॥ সৌর সাব-न नाक्ष्य ठान्मु (छर्पन ठ्यू विश्वा वट्मद्रः। यथा । ह्टाभनयनामि यू ৰষ্ণানা সাবনেন শ্ভাশ্ভগণনত্ত সৌরেণেতি সিদ্ধ•। সাবন সম্বৎ-সরেণ একদিনাধিক বৎসরো না-क्रात्वा ভবভীত্যনযো র্ভেদ: ॥ সৌরস্ত **পঞ্**ষষ্ট্য**ধি**কত্রি**শত**দিনৈ र्ভवि । यथा । (भवानीना भइतृ-नरः याः मलाई हन्मुकः । ७४ १। ज्वाहीन। महे मध हम्मुक्छ वि-(थक्जः ॥ ১१৮॥ हान्त्वर महा-१ति बारमगारेम खंदछ। मलमा-স পাতে তু অযোদশমাসৈ ভ্ৰতি । তথা চ শুক্তি:। দ্বাদশমাসা: স ब्र्नितः कृष्टिव्यगम्भगानाः नः ষৎসর ইতি। ত্রযোদশেত্যধিমা-(म। मृजिः। यश्वित्रत्य हार्येणकण यव। ইতি। यद्या माम ইতি। यद्र

भागाः यत्यकः मद्दमत इंडिलंडः नाथ मुद्धा यवा ऋत्यक नद्दरा यान বর্ষ পর্য্যায়ভোক্তা। ইতি নলনাস-ख्दु ।। # ।। यथ विष्टे **म**ग्नू नत्र পাণনা। শকেন্দুকাল: পৃথগাকৃতি २२ मः ननाक्त नन्ताचियूरेगः ४२৯১ সমেত:। भद्रापि विचन्तु ১৮१৫ श **७: मलकः रहे**शविनिष्टाः शुख्वा मरयादाः ॥ वर्षवर्ञस्य यह्यः जूर्येऽः সংপ্র্য্য থোর্মিভি: । ১০। হত ব্যুৎ-ক্রনতঃ খাগ্নিছতে ংশে মাসকাদয়ঃ ।। अम्यार्थः । भरकन्तुकालः भकदाः काप कानः। शृथक् वाकृष्ठिः २२ षाविः मञ्जा भूदिछः। ममास नन्ता-বিষযুগৈ রেকনবত্যধিক শতদ্বগধিক ठजुः महरेमुः मस्याजा २ इतः । भद्रा-িদু বিষন্দৃ**হত: পঞ্**সপ্তত্য**ধিকাঠা**-ममारें यावर मन्थाः इत्रुं म-ক্লোভি ভাবতা হত: কর্ত্তর:। সলব্ধ: शूर्वमकादः भारतकादिना लक्कमः श्वाया युजः कार्याः। यक्षेत्राक्षत्मत्य भ-क्षांदिया १कः भूर्वयः यद्याञ्च লব্ধ স্থাবশিষ্টে পুভবাদযঃ। একাব-শোবে পুভবঃ দ্যাদ্যবশিষ্টে বিভ-वाहिः। वर्षवर्ज्ञस्र यह्म वर्षाजित्रि-कः भर्तापिवसिन्दृज्ञावनिश्वे छर ब्रिंग्र द्वारणिः मः भ्रां (थार्थिजः

ষষ্ট্যা হ্ৰতে ব্যুৎক্ৰনত ইত্যনেন ষষ্ট্ৰি হ্নতাবশিষ্ট। অঙ্কা দণ্ডা: ষষ্টি হত্ত লন্ধা শকে থাগ্নিছতে ত্রি শতা হুতে হ্বশিষ্টা অংশকা লক্ষা মাসা: স্যু রিভি। পুভবাদি বর্বাণ্যুপক্রম্য । जारा ज्विः नि जु की वि जीया दिकवी मृजा । ज्ञीया क्पुरेपवज्या **(जुडा मंध्राधमा छत्यः।।।।। । । । ।** भूबारगारे छद्रव छेवाह। यष्ट्रीय॰ कथ-যান্যত্র ক্রা: সৌম্যাশ্চ যে প্রিযে। अ व अद्भव कन मूर्था भुखवादी व রাননে ৷৷ বহুভোষা স্তথা মেঘা বহুশস্যা চ মেদিনী । বহুক্ষীরা खथा गारवा व्याधि स्त्रान विविद्धिंजाः ॥ भुमाष्टाः भार्थिवारेण्य भुख्र পরিকীর্ভিতা:। ১। সুভিক্ষণকেম-मादाग्र॰ मर्स् व्याधि विवर्किजाः॥ भुभाषा मानवा खब वद्यमारा वम्-ऋता। इहे। बहे। जनाः मर्स्व विভবে ह ব্রাননে ॥ ২ ॥ ব্যোগা বহুবিধাণ্টের अनुष्रा वाजि क्छादाः। मर्व এर পুণশ্যন্তি শুক্তে বর্ষে বরাননে॥ ৩॥ उग्रें इक क्रांट्र मर्बर थन थाना नर्भाः व्यवः। निष्ठितार्भवः भुजावृद्धिः भुः भार बागर भूर ॥ ।। नीत्रा गाक नित्रावाधा मानवा विगठिष्ठवः । वल्कीना खणा गावः श्लाकामाज

वज्ञानत्न ॥ १ ॥ निज्ञाउद्यः कश्य-**भर्बः धन योदन गर्विडः । ज्यक्टिइ**नि প্ৰুৱাঃ সৰ্বা নিভ্যোৎসাহা ব্রাননে ১। সুভিক্ক কেম মারোগ্য বর্ষা कालः जुल्गाञ्जः । भग्रावृक्षिः वि-জানীযাৎ এীমুখে সুরবন্দিতে ॥ १॥ वङ्कीदा ख्या नात्वा थानाः वन-বত্তর•। জাঘটে সর্ব**শস**্যানি ভাবে বর্ষে বরাননে ।। ৮ ॥ মহার্য জাযতে সর্ব ঘৃত তৈল রসাদিক। পুজানা-ঞ্জ ভবেদ্বৃদ্ধি গূনি সমূৎসারে শুভে ॥ ৯॥ निग्नज्ञिः नर्दणन्यानाः मध्या খাতরি কীর্ত্তিতা। ইক্ষু ক্ষীর গুডা-मीना॰ भुवनञ्च॰ वद्रानम ॥ ७० ॥ স্ভিক্ষ (ক্ষেম মারোগ্যে কার্পাসস্য मरार्घछ।। नवनः मधुगवाकः द्रेयदा मूर्व ड॰ शिर्य ॥ ४)॥ मु जिक्क॰ क्किन भारताग्रः भुषासाः भार्थिवाः भिरव । ভক্ষরোপহত বিক্ত বহুধানের वज्ञानरन ॥ ১२ ॥ ज्ञाञ्चक्र क पूर्जि-ক্ষ- ভক্ষরৈ শ্চোপপীডন-। জানীযা विशुरु वाद्र भुगाथिन वदानन া। ১০।। জায়ন্তে সর্বশস্যানি মেদি-नी निक्नपुरा। नवन मधु गव्यक महार्च विकास श्रिय ॥ २८ ॥ का पुराः भावि मृहाम् भक् भाषा ख रिभव ह। महार्चः कायरङ नर्बः वृरम ह जूदविनरञ् ॥ २० ॥ ठगका मृद्ग मार्चाः **क व्यन्धः विष्यः निर्धः । सङ्गर्धः** कायरा मर्ब किञ्जानी वदानत ॥ ७७ ॥ मिङ्किः (क्य गादानाः विश्वक निक्ने भूदः। व्यवशादा ज-বেৎ হাষ্ট্ৰ: ম্বর্জানৌ দেবপুজিতে ॥ ১৭ ॥ অভিবৃষ্টিশ জাযেত খান্য-স্যাথ পুপীড়ন ৷ শস্য ভবতি সা-मान्धः माक्त मुद्रवन्ति ।। ১৮ ॥ वछ्णम्यानि कायस्य मर्वरराण मु-व्याहरन । (भोद्रार्ष्ट्रे नाहेरम्स्म ह পার্থিবে নাত্র সংশযঃ ॥ ১৯॥ দুর্ভি-ক্ষ- জাষতে ঘোর- সর্বোপদূব স--যুত । অনাবৃষ্টি: সমাথ্যাতা ব্যযে मञ्च भारत शिख ॥ २०॥ উদ্যক্তো বর্ষণে মেঘো জল• নৈবোপজাযতে। মহার্ঘণ সর্বজিদ্ধে সর্বমেব বরাননে ॥২১॥ কোদুবা: শালি মুদ্দাল্চ কঞ্ भाषा खरेंथव ह । मूल छ । कायर छ **जुङ्• कगरेष जर्बशाविनि ॥ २२ ॥** व्यनशिभुवना लाका शान्तेषि भु-भी उन । काय छ मानू (य कर्ड वि-রোধিনি न সংশयः ॥ २० ॥ जर्दाः भुबाः भुभीष्णास वराधिः भाकक কাযতে। শিরো বক্ষো প্রকরোগা; ক পাপাজি বিকৃতে জনা:।। ২৪।। উপদত सगर गर्व उन्होत म् वि: रिकः थरेगः। भी फिजाम भुजाः नर्वा। रम्भ ज्याः थात्र शिर्य ॥ २० ॥ जू ভিক্ষণ ক্ষেম মারোগ্যণ শস্যণ ভব-তি শোভন•। বহুক্ষীরা স্তথা গাবো बन्दवः बन्द्रतः श्रियः ॥२५॥ अन्न-ভোষা তথা মেঘা বর্ষন্তি খণ্ডমণ্ড-ल। नभ्रष्ठि সर्दभम्रानि विखय नाव मः भयः ॥२१॥ कवियाक उथा रिक्नाः मृमुक्त नहें नर्डकाः । शी-ডিতা স্তে বরারোহে জয়ে সর্বে ন[্] जःगयः ॥ २৮॥ जत्रागक्ष ७०। দেবি দার্হ জ্বসমন্বিত। অভিভূত• জগৎসর্ব• মন্মথে সুরবন্দিতে ।। ২১ ॥ जूर थान। क्या प्रति नहमन। মহার্ঘ রা। ব্যবহারাক্ষ নশ্যন্তি দুম্-थ पूर्य थाः भूजाः॥ ००॥ भीष्ऽरष्ठ সর্বশস্যানি দেশে দেশে শুচিমি- (७। (इमलाय भुकाः मर्वाः कीगाउ बाब मः भयः ॥ ७३ ॥ ७ ऋदिः भा-ৰ্থি বৈ শৈচৰ অভিভূত মিদ জগৎ । यार्था ভरिज मानात्मा। विनास जू खय भर्ट ॥ ७२ ॥ विवम् इ विश् সর্ব বিরোধে ভয় সংপ্লব । বিকারী সর্বতো ৎপাযোমম বাক্যন্ত নান্যথা ११०० ।। कृष्टिष्वर्वित शब्ह्यंत्रिं। (माम अ हिमम ७ वः । पूर्जिकः भर्वती वार्य बावहाता विभर्गायः॥ ३८॥ मूर्जि

कः जायल गर्वा भिन्ने मुद्या 🥱 প্রিয়ে। প্লবে প্লবন্তি তোগানি পীড়ি छ। भानवा जुवि ॥ ०२ ॥ भूवर्ग क्रश्र ধান্যানি জগৎসর্ব সুশোভন ৷ वाका विषय अक्षाः मुख्यक मुख्य क्८ शिर्य ॥ ७५ ॥ मू जिक्रः किमः भारतागाः ज्ञा (गा वाक्षनाः निष्य। সুস্থিতা: শোভনে বর্ষে পুরা: সর্বাঃ जुलाहरन ॥ ७१ ॥ विषमञ् • **क**गर **गर्दः** व्याञ्चलः अमूनाञ्**छः। ब**नानाः জাযতে ভদু কোখে কোধ: পরস্প র॰ ॥ ১৮ ॥ সর্বত জাগতে ক্ষেম্॰ नर्वभगः भशार्वजा। विद्यावस्मे व-वाद्यास् कार्नामम् भशार्यजा ॥ ৩৯॥ পार्थि देव न् भ रेमदेनाक नम-रिष्ठः थखनखला। भुभीष्ठाष्ठ बनाः সর্বে ভয়ছীতাঃ পরাভবে ॥ ৪০ ॥ न्वभानानि भीषास गुरिया वर्षि वानवः । श्लवत्र भीषिजाः मर्जाः भूजाम्ह मूद्रवनिहर्त्छ ॥ ४३ ॥ कायरष्ठ সর্বশস্যানি সুভিক্ষণ নিৰুপদুবং । সৌম্যদৃষ্টি ভবেদাুুুুুানা কালিকে চ সূত वार ॥ ८२ ॥ সুভিক **क** भारतागाः मूथक निक्नमुवः। (मोम)-मृष्टि ভবেদু।का সৌন্যে সৌখ্য পু: कीर्निज ।। ८० ।। खायभूर्ता ज्व ক্মেছে। বর্ষতে চ দিনে দিনে। নিৰুপ:

দুৰাক্চ রাজান: সর্বসাধারণে প্রিষ ী। ৪৪ ।। বাসবো বর্ষতে দেবি দেশে **हाथ ७ म ७ ल । यह इत्व कान्य** बद्ध विद्याधी क्षिनामक्र ॥ ८०॥ অভিভ্ত জগৎসরণ ক্লৌশ র্ভবি-रिशः शिर्य। मार्क्टिंग्ड कन्नराह्ण्ड পরিবারিণি শোভনে ৷৷ ৪৬ ৷৷ নিম্ল-ত্তি: সর্কশস্যানাং সুভিক্ষণ ভবক্তি श्रिय। भुभाषिनि कलाएमाकी क-वारा भाराउ भुका ॥ ८१ ॥ निष्न खिः সর্বশস্যানা॰ সর্বশস্য নহা-ৰ্ষতা। ঘৃত তৈলসম বাতি আ-नत्म नन्दि शुका॥ १४৮॥ (का-দুবাঃ শালি মুদ্বাশ্চ পীডান্তে বক্স वर्णिन । मह्यो वक्षानि क्षान्यानि क्रा-करम निष्ठुताः शुकाः ॥ ८०॥ मूर्जिकः बायर यात्र शान्ते यस भूभी उनः । यनल ह मनाथाउ॰ नाव कार्या विठाद्रवा ॥ ७०॥ (रमञ्जू: जूर्ज् कः नगामार कथ्यामाङ्ग । निक् वि ठाक्शचाकि पूर्जिक नमरा-७ हि ॥ ६५ ॥ (भामश्चित्र) विन**ण**्र ष्ठि य हात्ना नहें नर्खकाः । वामावा বৰ্ষতে দেবি শস্যঞ্চ ন হি জায়তে॥ जिल अर्थभ भाषाहि कार्भाभागः महार्वजा। शा सहियाः भूवर्गानि का ना जामानामियः ॥ उर-

नर्र पिति विकीय कर्डरवा। धानाय-क्षयः। एउन क्षात्तरन त्वारक। १४० निखदिया जि पूर्विन ।। भार्थिवा (मा-वका नीनाः कानगुरक भुनीिष्ठाः ।। ৫২।। ভোষপূর্ণা: 'সৃতা সেঘা ৰহু-**म**न्। ह (मिन्नी । निश्रू द्वाः भार्थिदा पिति निकार्थ **ह त्रान्त ॥ ७० ॥** व्यञ्जाया वनारेक्टव कीवेकाः भुव-नाः मृजाः। विक्षाः भाषिवा प्रिव द्रोर्पु मन्वर्मद्र निर्य ।: ৫८ ॥ দূর্ভিক্ষণ মধ্যমণ প্রোক্তণ ব্যবহারে। न वर्डाङ । ভবেদৈ মধ্যম। वृश्चिः मू-র্মতৌ সমুপস্থিতে !। ৫৫ ।। সুভিক• জাযতে লোক: সর্বোপদুৰ বর্জিতঃ । পুानिना॰ कान्छ इर्सा मूनमूर्डी বরবর্ণিনি॥ ৫৬॥ মহিষী গো হির-ग्रामि जामु का॰म्राम्राम्यजः। जर नर्बः (पवि विकीय कर्जवा) शानामः क्यः॥ রক্তে সংবৎসরে দেবি ক্র-वृष्ति नंदाधिनः । भानवाः क्वरह-क्षेत्रक मः गुरास न सरवा जरवर ।। ८१ ॥ दूर्जिकः भवनः वार्गा भात्। ষধি পূপীডন । পাপরোগো ভবে-(मृति ब्रङ्गाकः १मव्यक्तिएउ।। ৫৮॥ রোগো মরণ দুর্ভিক্ষণ বিরো-থো বহুস দল:। ক্রোধে তু বিষম नर्बः नमाथााउः स्वित्य॥ ८०॥

भिरिनी हलाउ (पवि मर्बर्ड के हरी) **ठतः । (मण अक्र क मूर्जिकः क्**य अभीगा भूका ॥ भोता है नान (व (नत्म निकाल (काइएन उथा। भू जिंक • जायर छ दात • करय अ•व<-जांत्र भिरव । को गुनी वर्गनरहा क यगूना नर्माना उत्ति । विक्तारा रिन-ক্সবে চালি বিনশ্যতি ন সংশ্य:।। সি হল মধ্যদেশক কালঞ্জর ত रिथव ह। क्कारय क्काय अर्जान नानऽ-था वद्रविभि ॥ ७० ॥ 🟶 ॥ कार्डि कानि चाम्भवर्याणि यथा । वद्राष्ट्-ज हि जाया । नक्क ख्वा जा हा नय **भरु** वा राव वाजि मुद्रद्राज्ञमञ्जी। **ড**ৎস•ক্ত• বক্তব্য• বর্ষ[,] মাস ক্রমে-रैनव ॥ वर्षानि कार्डिकामीनि आः 🕆 याम् उषयानुरयागीन । कमन खि **७क भक्त मन्त्र मुभान्यक विद्या** ।। नक्षात्वण चक्चूक्रभाननकात्वण । আগ্নেয় কৃ ভিকা। পঞ্চন কাল্লন वर्षः। व्यष्टा भाषिनः। উপास्तरः छा-पुः ॥ ચલ્હાના**લ્કો** હિલ્હો લ્હાલો কাল্লুনম্চ ত্রিভো মতঃ। শেষা মাসা षि जा छियाः कृत्तिकारि वावश्रमा।। ष प विवादि जात्राभाः भूमं भर्दनमु अञ्चल । भाजा टेक्टबाहरण (द्धरा) দ্ধিকৈ: বঙান্ত্য সন্তমাঃ॥ ইতি স

क्षर्यनकाश्राष्ट्र ॥ भूनेभार्यनम् अक्षर পৌর্ণমাসীযুতে দ্বে ছে তারে তদেক-दाका उरा भूर्वे वहरन शोर्गना भीना-ভ:। यथा मानानाः (भोनेमान्याः कृष्ठिकारिमयक्षां कार्डिकारिष् ভথা বর্ষাণামপি গুরো: কৃত্তিকা-मावरत्रामय सम्रक्षां कार्जिकामिष्ठ তেন কৃত্তিকা রোছিণ্যো রেকতর-श्चिन् श्दरा द्वाप्तरय १नाउद्रमाए कार्खि इ॰ वर्षः। এव॰ मार्गणीयापि। व्यव वयवय घटेकरया नंकवाया (त-কতরমিনস্ত গড়ো গুরু রন্যতরমি-মুদেতি ভৰ কা গতি বিতি চেৎ का खिंका खत्र भागमी र्यः छछ: (भी-ৰ মিত্যাদি ক্ৰমাদ্গতি রিতি ॥ ফলানি চ। শক্টানলোপদ্মীবিক গোপীড়া ব্যাধিশোকক্ষ। বৃদ্ধিস্ত वक्ति। अनुमानाः कार्खिक वर्ष ॥ १ ॥ भोरमे १ १ ६ १ मार्व है मृ গাথু শলভাওজৈক শস্যাশ:। ব্যাধিভব নিৰৈ রপি ভূপানা জায়তে বৈরং ॥ ২ ॥ শুভকৃচ্চাতঃ পৌষে। নিবৃত্তবৈরা: পরস্পার• ভ্ भाः। वि विख्या वान्यार्यः भी ষ্টিক কর্মা পুলিজিক্ত ।। ৩ ।। পিত্ भूजा भितृष्य भाष कार्यक मर्ब ज्ञानाः। ज्यादाग्र वृश्वि धान्।। व

जम्मादि विखना ७ क ॥ ४ ॥ का द्वारन वार्ष विष्ठार कृष्टिर कृष्टिर क्वम . बृष्टेत्राहि चन्त्रानि। सोर्ভागुः भूम-मानाः भुवना (क्ठोता नृशाक्ताशुः ॥ ७॥ रेठाक मन्ता वृष्टिः निष्यममः ক্ষেম মবনিপা মৃদব: । বৃদ্ধিশ্চ কোৰ খান্যস্য ভবতি পীডাচ ৰূপবতা ।। ৬।। বৈশাথে ধর্মপরা বিগতভযাঃ পুনুদিতা: পুরা: সন্পা:। यकः কিযাপুত্তি নিম্নতি: সর্বশস্যানাণ ।। १।। रेकारिक उद्याजि अन्तर्यासुनी শুেষা নৃপা: সর্ব্যক্তা:। পীডান্তে श्वान्यानि ह हिञ्जा कङ्गानीकानि ॥ ৮॥ व्यायास कायत्व भागानि क् চিঘৃষ্টি রন্যত্র। যোগ কেন্দ্র মধ্যু শস্যব্যুণা ভবন্ধি ভূপা: ॥ ৯ ॥ শুবেণে বর্ষে ক্ষেমণ কামণ শস্যানি পাক মুপবান্তি। ফ্লুদুা বে পার্থি বা তে পীডাতে যে চ ওড়কা: ॥ ১০ श ভाদুপদে वल्लीकः निञ्जलिः गांजि পূর্ণস্থ । ন ভবত্যপর শস্য कृष्टि मुख्कि कि इतिह मुख्कि ।। ১১ शं चार्ययुर्विनाबुन् न उठि बनः शुज्बिः शुकाः कमः। शुग्वियः প্রাণভূতা সর্বেধামথ বাহুল্য ।। ১২ ।। ইতি জ্যোতিস্তত্ত্বুণ ।। 🗱 ।। সমা-

काट लक्ष जिः (णवाट गमान्) निष् वट नदाः। मण्यदीना नृश्वाण छ-व्याना श्वंका मजाः॥ मदट मदानि कन्म कु विक्ष्यं मां खद्र । मदट-मदा छथा नान जिनमा छ् महा-कन । लिक्षा ज्ञाः॥ हेना ल्वं श्व-वज्ञानाः थाना ।। हेना ल्वं श्व-वज्ञानाः थाना ।। हेना ल्वं श्व-कन ।। क्या जिविन खिक्य मद्याः म् ज्या निष्यं मान अञ्चल । छेन् म् ज्या निष्यं मान अञ्चल । छेन् स्वट ममान । क्या जिविन खिक्य मद्या ।। हेन अस्पाट । ख्या प्राचन ।।।

বৎসরান্তক: পু॰ ফাল্লুনমাস: । ইতি রাজনিঘণ্ট: ।।

वर्भनः जि (तुरुगुरुः । उर-भर्यायः । तुथः २ । इन्यायः ॥

विष्णवः भुः मृत्रात्राहिष्णत्रमास्रगंजत्रमिविष्णयः । उर्टशर्यप्रायः ।
वार्ट्यमार्थः २। इंडि क्रिय्तः ॥
वर्यमा स्री वर्ष्यमार्थाः । इंडि
रह्महन्मुः ॥

बर्गारनः भुः तृकः। ইতি রাজ-

स्राप्ति भक्षवर्भवा यथा । भका । वर्षापनी जी ७५ ही। इंड अवः॥

বংসাক্ষী স্থা ইতি জটাধর:॥

বদ ই ড নুত্যভিবাদযো:। ইতি कविकन्नफमः ॥ অভিবাদো नमः ভক্ত লোকঃ। নমস্করোভি ভৌতি বা ইত্যৰ্থঃশ ইতি দুৰ্গাদাস:।। বদ ঐ বাচি। ইতি কবিকল্পজন:।। थे উদ্যাৎ। ইতি দুগাদাস:॥ বাক্সনেদেশযো:। ইতি ব্দ ক कविकन्नक्रमः ॥ क वाष्ट्रयञ्जि। अ-(म्हाभा वहनविष्मयः॥ अयमाञ्चः নেপদীত্যেকে। ইতি দুগাদাস:।। वर अ ७ वाक्मान्स्मायाः। इंडि कविक्ल्रकमः ॥ यः वर्षा । उ वर-ভে। অথমা ব্যনেপদীত্যন্যে। ইভি ইতি দুর্গাদাসঃ৷৷

वनः जि वका। इठानतः॥
वननः जी मूथः। इठानतः॥
वननामवः शुः अध्यतम्। इठि
ज्तिभूरगणः॥
वन्तिः) जी कथा। इठि मिकान्यः
वन्तिः) जी कथा। विमर्णम्नाः वन्तिः
भनः कियाभनः जवि॥
वननाः जि वनानाः। इठामद्रिने
का मात्रमुन्ति॥।
वन्नाः जि वस्भुनः॥ वृत्वाक्।

ইত্যমর:॥

विषामः क्ली कलिति स्थाः। वाषाम् इंडि ভाषा। उर्ध्यागाः। मृक्ताः। देव्युः। मृक्तिः। वाड्युः। क्षियुः। कृष्युः। वाड्युः। उर्व्युः। कृष्युः। कृष्युः। कृष्युः। वाड्युः। उर्व्युः। कृष्युः। वाड्युः। वाङ्युः। विङ्युः। वाङ्युः। विङ्युः। वाङ्युः। विङ्युः। वाङ्युः। विङ्युः। वाङ्युः। विङ्युः। वाङ्युः। विङ्युः। विङ्युः। वाङ्युः। विङ्युः। वाङ्युः। विङ्युः। वाङ्युः। विङ्युः। विङ्युः।

वमानः भु मर्ग्यविष्मवः। वा
श्रानि इंडि जाया। उर्प्सर्यप्रायः।
भाग्नेनः २। इंडि जिकाश्रम्भवः॥

श्रव्यक्रवप्रया स्रम्याभायानिष् यः

था। भाग्नेन द्याह्डावादम्यो नि

युक्ति ह्रव्यक्रवप्रयाः। इंडि मनुः॥

वमानकः भु भाग्नेनम्रमुः।

इंडि जूत्रिभुर्यागः॥

বদাবদ: ত্রি বক্তা। ইত্যমর: ।।
বধু: স্ত্রী পৃক্ষা।। নারী।। সুষা।
ইত্যমর:।। শারিবৌষধি:।। শটী।।
নবোঢ়া।। ভার্য্যা। ইতি নেদিনী।।
ভরতন্দ্লিকেন অন্যকোষ্টীকাষাং

পবণী বিকারাদি ব্রহ্মাতুনা নিস্থাদিতো হয় শব্দ: । মেদিনীকোষকারেণ তু অন্ত্যন্থ বকারাদি
শব্দমধ্যে পরিগণিতঃ ।। প্র ।।
পিতৃগৃহভোজনানন্তর' স্থানিগৃহ
ভোজনে অস্যা দোষো যথা ।
ভিত্ত্বা পিতৃগৃহে কন্যা ভুউক্তে
স্থানিগৃহে যদি। দৌভাগ্যু জায়তে তস্যা: শপন্তি স্বলনাযিকাঃ।
ইতি কথালোচন' ।। নববপ্বাগনন
দিন পবগী বিবকারাদিবপৃশব্দে
দুপ্তব্যু ।।

বধুজনঃ পু যোষিৎ। ইতি ভিকাও শেষ:।।

ব্ৰুট্শানন লী গবাক্ষ:। যথা। বাতামন গৃহাক্ষ: স্যাদ্ৰুট্শানন স্থা। ইতি ত্ৰিকাণ্ডশেষ:॥

वश्री खी त्या। ইতি बिकाक म्बरः ॥ भूवाभिनी । ইতি হেম-চন্দুং ॥ অল্লাবপ্য: ইতি হারাবলী यन সম্ভাজশব্যোং । ইতি কবি-কল্লজনং ॥ বন্তি । সংভক্তিঃ সে-বনং । ইতি দুর্গাদাসং ॥

ৰন উন ব্যাপ্তৌ। ইতি কবি-কল্লফমঃ॥ উবনিত্বাবত্বা।ম পুবন যতি। মিত্বেপিঅস্যঞৌজ্বভালে ভ্যাদিনা কেবলস্য ভুম্ব বিকল্পনাৎ সোপসর্গ সৈত্র নিত্র ভুষ: । বনষতি বানষতি । ব্যাপৃতি ব্যা-পার:। অষম্ভ কণ্মেবৎ ক্রিযানাত্র ইত্যনেত। ইতি দুর্গাদাস:।। ন দ উ ড যাচে। ইতি ক্রিকল্প-

বন দউড যাচে।ইতি কবিকল্প-জনঃ॥ দঙ বনুতে। উৰনিত্বা বত্বা ।ইভি দুগাদাসঃ॥

বন কি উপকৃতিশুদ্ধাঘাত শব্দো-পতাপেষ্। ইতি কবিকল্লজম: ॥ কি বানযতি বনযতি। অয় কি কি মনন্তে। ইতি দুর্গাদাস:॥

ही खी বহুকুক্ষুক্তহান । তৎপর্য্যায়:। অট্রী ২ অরণ্য ৩ বিপিন' ৪ গছন ৫ কানন ৬। ইত্যমরভরতৌ।। দাবঃ ৭ দবঃ ৮ व्यद्विः 🕽 जीसकः 🔑 वादिः 🔀 छिन > २ । इंडि मदत्रावनी ॥ শত্র ১০ সমজ ১৪ পুান্তর ১৫ বিক্ত॰ ১৬। ইতি জটাধর: ॥ का-ন্তার• ১৭। ইতি রাজনির্ঘণ্ট: । ঞা। গৃহসমীপকর্ত্তব্যবন যথা। শিবি-রাভ্যন্তরে ভূদা স্থাপিতা ভূলসী नृगाः। धन शुध्रभुमाबी ह शुग्रमा হরিভক্তিদা ॥ পুভাতে তুলসী॰ मृष्ट्री सर्गमानकन नाउट। नाजडी যুথিকা স্থান্ত মাধ্বী কেতকী তথা ॥ নাগেশ্বর স্লিকা চ কাঞ্ন

বহুদে: শুক্ত•। অংগরাজিতা চ শু 🛚 ভদা তেষা মূৰ্যান গ্ৰিপ্তিত ।। পূৰে ह एक्टिश हेरव भुड़म भाद्य भारः । इंडि वृक्तरेदराई औक्ष्यद्रश्रद्ध ३०२ अद्यायः ॥ 🗱 ॥ स्युदायाः ष्ट्राममा वनानि रथा। ब्रम्रः सभुवनः नाम विक्षृष्टान मन् उष्ट । उन्हें। बगुरका स्वि नई।न्कारान्वाशुः याए ॥ वनः जानवनरेक्षव विजीनः दन गुड़न । ভव माद्दा नहा । पि कृ वक्रा हि जायर ॥ ज्रीन॰ क्युन नाम वन हित्याखन उथा। ভত্র গত্তা নরে। দেবি ক্ ভকৃতেয়া ছি द्यायाज ॥ अज्ञानमी कृष्मभाष्म माः নি ভাদুপদে হি যা। তত্র ব্লাভোন-द्धाः (रुवि क्षुर्लात्क स्हीय्राङ । । b-खर्थः काम (कवनः दनानाः यनमृ छन्। ভঙ্গ গত্বা নরে। দেবি মন লোকে ম-্হীয়তে।। বিন্লুস্চ হ্বণ্ডে তু সংৰ্হ: भारेभः शुन्दार्छ । यस भुनूकर इ পুণান্মন লোক সগছভি॥পঞ্ ম॰ বত্ল বন॰ বনস্থান মনুন্তন । তর পত্বা নরো দেবি অপ্নস্থান সাছতি ॥ यमूनायाः शरद्र शास्त्र (स्वानान-लि मूर्ज डः। च उि चतुत्रमः नाम यक्षः दम मनुखमः॥ उत्र गक्षा छ तमृत्य मुख्दका मूट्भन्नायतः। उद्यनम् भू

ভাবেণ নাগলোক স গছভি ৷৷ স धग उ वन जृःम थामित्र लाकवि-শ্যুক্ত ভিত্ৰ পত্না নরে৷ ভিন্তু মন লো-ক ল গছতি ॥ মহাব্দ চাইমন্ত नरेमव जू मम श्रियः। ভित्रिन् ग्राञ्चा ज् गम्रा हेन्द्र्रालाक महीयर**७**॥ लारकः धवलः नाम लार्कार्यन ब्रिक्कि उ॰। नतम् इ तन (पति म्रहा-পা এক নাশন ।। বনং বিল্বন নাম্ দশন দেবপ্জিত। তত্ত্ৰ গৰা জু মনুজো নুন্ধলোকে মহীনতে। একা-দশন্ত ভার্ভারে গোগিনা প্রিয়ন্ত্র-स॰। क्रमा मर्भन सारवन नाता शर्हा॰ ন গছতি ॥ ভার্ভার সমনুপাগ্য বনানাং বনমন্তনং বাসুদেবং ভতোং ष्ट्रेश भूनर्जन्म न विम्राउ ॥ वृन्तावनः ভাদেশন বৃদদ্ধা পরিরক্ষিত । নদ-চৈব প্ৰিয়ণ ভূনে ন্হাপাতক নাশন ॥ वृत्तत्वम् रागविन्तः रा भन्दि বস্দ্ধরে নেতেযনপুর বান্তি বৈস্ঠ পুলপু বু নরা:।। ইতি বারাহে মথু-ब्राजीर्थयमदानभक्तरानः नामाद्यायः 1: # 1: वनविष्णाय मद्रग कवा यथा 1 यरमयः कथिकः भुगुः समा तुकासूर्याः চ্যতং। তৎ সমগুং ভবেওস্য অর (१)य्यद्रम् । । व्यत्रभानि श्वक्रा-गि उथा देशवायद्वाणि ह। रेमझवः

ः मुख्यकात्रगुः निभिषः अकृषाकृषाः 🖟 वन्नकि 🛱 : 🖼 वन्नवस्त्री । उर् . ॥ উপলাবৃত মারণ্য জন্মাগো **ংথ পুষর•। হিমবাস ত্ত**ো হরণ্য উভন: পরিকীভিত: ৷৷ নবয়েতে-युत्रतार्य् यञ्च जानान् भित्रकारहर । ব্ৰুলোকাতিথি ভূঁত্বা স যাভি পরন্ পদ ৷ ইতি দেবীপুরাণে ভারণ্যেবরপুসংশা।। 🕸।। অরণ্ডে वर्वनीयानि यथा। अद्राप्त १ इ व तारक्रजग्थ नि॰क्षान्या क्रवाः । শুক্ কাঞ্চ কপোভাদ্যা ভিল্ল ভল্ল मवात्यः ॥ छेन्तारम वननीयानि यथा। उन्हारन महनिः मद कन 🕶 লতা জনাঃ। পিকালি কেকি হ্ সাদ্যা: ক্রীড়া বাপ্যধ্বগস্থিতি: ॥ इंठि कविक्त्रचायाः ३ खद्रक ० अभूगः॥

वन क्री कन।। निवामः॥ व्यानवः । इंडि (मिनी।। भुगुनगः। इंडि (इन्डम्मुः॥

दनकम्ली जी काष्ठकम्ली। इंडि রাজনিঘণ্ট: ॥

बनकन्तः शु वनम्बनः॥ ध्राभी-कन्तः। इंजि ब्राजनिर्यन्तः॥

वनकालांभी जी वरनाच्छवकालांमः। ত भग्रायः। विज्ञान जात्रवाजी o राना ख्वा ८। ই**बि बङ्गाना** ॥

भर्यायः। कर्लामका २ फनकर्दमा ৩। ইভি কোষান্তর•॥

বনগোচর: পু॰ ব্যাখ: 1 ইতি (किंटि ॥

वनलीः श्री ग्रायः। इंडि ब्राज-निर्घण्डः ॥

वनव्यतः ल्ली अध्यादिकारा ইতি বিশ্বঃ।।

বনচন্দ্রিকা ब्रो মি জিকা। ইতি द्राक्षनिर्घण्डः॥

বনহন্দাকঃ পু॰ বনজচম্পাকপুশ্ল-वृक्षः । ख्रार्यायः । वनशिशः २ (ह्नाञ्चः ७ मृत्रमातः ४। यम्। ख्गाः। कर्नृद्धः। उष्णद्धः। वाञ कषा नाणिञ्च । वर्ग्यञ्च । ठक्क्ष्य । दुनः রোপণত্ব• । বযস্তম্ভ চারিত্বঞ্চ । ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।।

वनहागः भुः अत्रग्रहगनः। उटः भर्यायः। वेडकः २ मिण्याङ्कः ३ । ইতি তি ছাওশেষ:।। শ্রুর: । इंडि मद्मावा॥

वनक॰ क्ली व्यष्ट्रकः। ইতি মেদিনী॥ वमकः भ् मृष्ठकः। ইতিমেদিনী।। शकः । इंडि विश्वः ॥ वनम्द्रगः । इंडि बाजनियंगः॥

वनका ज्ञी मूनभर्गी। इंडि सिरिनी

श व्यवपुर्वाभी श वर्त्राशिष्टकी ॥ व्यवप्रका ॥ वक्त भया ॥ वि
त्वा ॥ वेन्तु । इंडि ब्राक्त निर्यं पेः ॥
वनकी ब्रः भु वर्ग क्त विज्ञ की व्रक्त ।
वर्ष्ट भर्या । वृह्द भानी २ मृक्षभयः ० व्यवपुर्की ब्रः ८ क्षाः ८ ।
व्यवपुर्वाः । कृत्यः । मी उपः ।
व्यवगामि वृष्ट । हेंडि ब्राक्त निर्यं पेः ॥
वनकिङः भु ह्वी उकी । हेंडि

मद्याना ॥

বনতিক্তা স্ত্রী বনতিক্তিকা। ইতি রন্নমালা॥

বনতিক্তিকা স্ত্রী পাঠ!। ইত্যমর:।। বনদঃ পু॰ মেঘ:। ইতি শব্দমালা ।। বনদাতরি ত্রি।।

वनम्मनः भूः अत्रग्रम्मनः। ইতি द्राञ्जनिर्घणः॥

বনদীপ: পু॰ বনচম্পক:। ইতি রাজনির্হণ্ট:।।

বনধেনু: পু॰ গ্ৰেমী। ইতি রাজ-নির্ঘণ্টঃ।।

বনপল্লবঃ পূ॰ শোভাঞ্জনবৃক্ষ:।
ইতি জটাবর:।। অরণ্যজপএক।।
বনপা•সূদঃ পু॰ ব্যাধ:। ইতি
শব্রহাবলী।।

वनिश्वनी जी বনোভবপিপ্ললী। তৎপর্য্যায়ঃ। সৃশ্বপিপ্ললী ২ ফু দুপিপ্লনী ১ বনকণা ৪ । অস্যা গুণা: । কটুরু । উঞ্চর । । তীক্ষর । কচ্যর । দীপনত্ব । সা আমা গুণাট্যা । শুষ্কা স্বল্লগুণা । ইতি রাজনির্ঘণ্ট: ॥

বনগুয়া জ্রী শতপুয়া। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥

বনপূরক: পু॰ বনবীজপূরক:। ইঙি রাজনির্ঘণ্ট:॥

বনপুষ ল্লী ভ্চ । ইভি রাজ-নির্ঘণ্টঃ।।

বনপ্রি: পু কোকিল:। ইত্য-মর:।। অরণ পুসমাত্রে ত্রি।।

বনভদিকা দ্রী ভদুবলা। ইতি কেটিৎ।।

बनजूक् भू॰ श्रायर । इति भक्तिनुका॥

वनमङ्गी जी वत्नास्त्रवमिका। इंडिमचत्रद्वावली॥

वनगक्तिका जी मः मः। ইত্যনর:॥ वनगाना जी श्रीकृष्णमा माना। তৎ यक्तभः यथा। আজাन्न विनी भाना महत्र्वभाषाङ्गः। मरशुः ज्वकत्रभाषा वनगानि कीर्तिः जा है कि मदमाना॥

वनगालिमी खी बातकाश्वी। इंडि बिकाश्रममः ॥ वादाशी। इंडि

(मिनिनी।। वनंगानी भू अक्षः। इंडामदः॥ বন্মুক্ পু॰ মেঘঃ। ইতি শবর্ত্তা-बनी।।

दलगूमः পू॰ मुक्छकः। ইভামরः॥ তৎ পর্য্যায়: । বরক: ২ নিগ্রুক: ৩ স্লীনক: ৪ খণ্ডা ৫। ইতি ছেম-ं हन्मुः ॥ अन्य अन्यभग्रीय छानी मुऋडे मञ्छेक भक्ति। म् छेत्वती ॥ বনমুদা জী নুদ্মপা। ইতি রাজ-निरुग्नेः॥

ৰনমূত: পু॰ মেঘ:। বন॰ জল॰ মূত॰ वक्क व्यान । यन भूकि इं उ वा मनीयापिः। इंडामत्रीकायः 🖘 जार ।।

भाग हो। औ 3:5640°C: 11

न्याम्बर्गाः । काश्करनी हैं। वाङ्गिवरी.।

ात्रकः । १९९१ - विस्ति होत्र **स**हस्र विलगाकायः॥

मार्थ्य । स्थापन्तर ।

वयद्याः श्री काशीः रेशियाज-तियंके ॥

वनवर्वतः शुः क्षाबंकः। ইতি ताब-

निर्श्यः ॥

वनवर्वत्रिका खी जद्रगुबदर्दती। বনবাবুই ইতি ভাষা। তৎপর্য্যায়ঃ । मूगिक्तः २ मूनुममकः ० माया-क्लिमी 8 विषयः ६ मूम्थः ७ मृत्र পএক: ৭ নিদুলে: ৮ শোফহারী ৯ সুবজু: ১০। অস্য গুণা:। উষ্ণত্ত্ব । সুগদ্ধির। পিশাচ বান্তি ভূতমু-वः। यागमञ्जर्भगद्यकः। इति जाजः निघंषेः॥

বনবল্লরী প্রী নিঃশ্রেণিকাতৃণ । इंडि ब्राइनिर्दरिः॥

पनविश्वः शू॰ मावानजः। इति

व अकृत के मुख्यान है। या कि क्या विकास है। या व व व व व व व

अर्व विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व है। अर्थ स्वासी स्वर है · 然后要一个最近的意义。 र्गे । स्थापित्रकार १ 1 14 H

> पार्वीकर्षः १ रे रे र अस्तिरहे भवती प्रभूता । भुः व्यवसङ्गाङ्गीन

ार्तः : उद्भवंत्रायः । वनजः **२** वनवीक्षकः ७ वनवीकः ८ व्यक्ता द গন্ধান্না ৬ বনোন্ডবা ৭ পেন্তী ৮

পীতা ১ দেবদানী ২০ দেবেষ্টা ১১
মাতলঙ্গিকা ১২ পতনী ১০ মহা
ফলা ১৪। অন্য গুণাঃ। অনুত্বং ।
কটুবুং । উক্তবং । কচিপুদত্বং ।
বাভানদোৰ ক্মি কফ খান না
শিল্পা ইতি রাজনিঘটঃ।।
বনবৃদ্ধানী জী বৃহতী।ইতি রাজনিঘটঃ।।

বনবীহি: পু॰ নীবার:।ইতি ছেন-চন্দু:॥

वनम् न्त्री जी किश्विहः। ই जि त्राजिन्धं हैं।। जात्र गुरु त्रा ही है।। वनम् त्राः भू॰ वत्र ख्वो हाः। वन-छन है जि जात्रा। उद्भर्गायः। मि ज मृत्राः २ वन्धः ० वनकन्तः ॥ प्रताः १ वन्धः ० वनकन्तः ॥ प्रताः १ वनक्ष्यः । ज्ञाः। । व्यव्याः । कि जुः । ज्ञाः। क्षाः। धन्य म्नामित्नाय प्रतारतात्रक ना-मि जुक्षः। है जि त्राजिन्दं हैः।।

বনশৃস্থাটিঃ পু॰ গোন্যুর্কঃ। ইত্য-নরঃ।।

বনশ্সাটক: পু॰ গোক্সুক:। ইভি রাজনিঘণ্ট:।।

হনশোভন ল্লী পদ্ম•।ইতি শব্দ চন্দ্রিকা॥বনস্যশোভাকর্ত্তরি ত্রি বনস্বা পুণ গন্ধমার্জারঃ॥বঞ্চফঃ॥

वराष्ट्रः। ইতি गिषिनी ॥ वनत्रकृष्टेः शू॰ समृतः। ইতি শশ্द-চন্দ্রিকা॥

यनमग्रः श्रु जात्रगुत्रः हिः। उट्शर्यशयः। तनश्र २। इंछ्यतः॥ तानश्र १। इंछि नापत्रज्ञावली॥ कलमग्रुका।

বনসরোজিনী স্ত্রী বনকার্পাসী। ইতি শব্দরত্বাবলী॥

वनशः श्रुः भृषः । इति गपः हिम्मुका ॥ वनवात्रिनि जि॥

বনস্থা জ্ঞী অখত্থীবৃক্ষ:। ইতি রাজনির্ঘণ্ট:॥

वनश्राञ्चः श्रुः विनाभुग्नः किल्हिन्।

। वृक्तनाञ्चः । इन्जि दाकिनी।

इन्नीवृक्षः। इन्जि दाकिन्यं ।

वनहित्रकृ जी ज्यत्रगुक्षहित्रकृ ।

उर्भगागः। (भानी २ (भानिका

उत्नादिशे ६ । ज्या छनाः।

कर्षुद्रः। (गोन्युः। इन्जि दाक्र
कर्षुद्रः। रोभनवृक्षः। इन्जि दाक्र
नियन्तः॥

বনহানঃ পু॰ কাশত্ণা ইতি ত্রিকাগুশেষ: ।। স্বন্দের্ক্ষ: । ইতি রাজনির্ঘট: ।।

वनशामकः लू॰ काम्पङ्गः। हैि मदद्रशावनी।। वनाथुः পু॰ শশকः। ইতি ত্রিকা- ॥ · अः•ायः ॥

্বনাখুক: পু॰ নৃদ্ধঃ। ইতি ত্রিকাও (मयः॥

द्वाकः भू वनहातः। उद्भवंशयः । इंफिक्कः २ मिल्याहकः ० शृष्ठ-म्बद्धः ८। इंडि (इग्रन्द्रः॥

वनाहुः भु वर्षभा भी नमिक्तिका। इै जि मद उनिप्रका।।

বনামল: পু॰ কৃঞ্পাকফল:। इंडि, मद्याना॥

বনাগু: পু: কোশানু:।ইতি রাজ-निर्घण्डे: ॥

वनायः भ् पमिविष्णयः। यथा। गरा गगण्ड वानायु वंभायु र्यमुणाञ्च-७ । ই ि मद्र द्वावनी ।।

वनागृहः शु वनाग्रासमा छवरया-**हेकः। অস্য क्**लान्द्रश्चानायुकः। इं**डि म**क्तज्ञावनी ॥

वनातिक्षा खी वनहित्रम्। ইতি রাজনির্ঘণ্ট:।।

वनाहकः श्रृ शृञ्जजीवी। नाला-কার:। ইতি জটাবর:॥

वनाम्का खी वन छवा मूक्ता इंडि ताजनियणेः ॥ अमृताः भर्गाष् छ लो अनु माप मुहेरवती ॥ वनानिका जी इतिमुखी। यथा।

বজুবল্ল্যন্থিন হারে৷ হন্তিশুগুী ব-नानिका। इंडि श्रावनी॥ वनाभुषः शु (मुगकाकः। इंडि

जेग्यदः ॥

বনাহিরঃ পু॰ শ্করঃ। ইতি ত্রি-কাওশেষঃ।।

বনিঃ পু॰ অগ্নিঃ। খনি কৃষি স্বাজি-অসি বসি বনি সনি ধ্বনি গুছি ব-লিভ্যশ্চ। ইভ্যনেন বনধাতো পূর্বা-न्त्ड हे भुडारयन निम्नमः। इंडि मिकाष्ट्रकीयूप्रायूनापिवृज्धिः॥

বনিতঃ ত্রি যাচিতঃ॥ সেবিতঃ। इंडि (मिनी।।

ব্নিতা জ্রী জাতরাগল্পী ৷৷ জ্রীসা-मानः। इंडि तिनिनी॥

ন্ত্রী বন । ইত্যমরটীকাবা वनी ভরত: 11

वती शुः वानभुष्टः। यथा। गृहः নেধী শরদ্বসম্ভবো ব্রীহি ম্বাভ্যা• याक वनी वयानू भागारिक द्रा-भएकत्त्र श्रेनाः भूत्राख्येन दी। इंडि माक्षिष्ठामानी हात्रीजः॥

वनीकः जि याहकः। इञ्जानत्रहीका-भावभूमाबी ॥

বনীযক: ত্রি মাচক:। ইত্যমর:।। व्यत्तिहत्रः शृ॰ व्यत्नगुहात्री। यथा। व्यन्हज्ञानाः विन्छा मथानाः मजी গৃহোৎসক্ষ নিষক্তভাস: । ভবন্তি যত্রৌষধয়ে। রজন্যা মতৈলপ্রা: জুরত পুদীপা: ॥ ইতি জনারস মুবে সর্গ: ॥

व्यत्काः भ् व्यत्रमानः। ই ि त्राजनिर्धणः॥

वत्तमर्द्धः भू व्यमनवृक्षः। ३७ तत्रमाणा ॥

বনেক্ষুদ্রা স্ত্রী করপ্ত:। ইতিরত্ত্ব মালা।।

व्यान्त्रवा जी वनकार्भानी। इंडि

वत्तेकाः शृ वानदः। ইত্যादः॥ वन्तका खी वन्ता। यथा। वन्ताका (मथदी (नव्या वन्ता ह वन्तत्कव्यः) (छ। ইতি ভরতপ্তহদ্ধः॥

বন্দথঃ পৃ• স্তোতা ॥ **স্বত্যঃ ॥** বন্দিধাতো রথ পুত্যযেন নিয়নঃ । ইতি সিদ্ধান্তকৌনদী ॥

हिन्दुका ॥ भुगामः । न न स्वाप्तः हिन्दुका ॥ भुगामः । न न स्वाप्तः भवा चळा द्वर्शन किति स्वारः । गथा । भाष्त्राचत्रथ्यः भित भा-वेषी मः वाष्त्र। आष्ठाः न देवस्वः (भुकः भद्ग हका स्वनः स्वतः । धा-त्रगः (हाष्त्रं भूष्ट्रागः स्वर्धानाः भित्रगुरः ॥ स्वर्धन स्वार्णा स्वानः

उद्याममाद्रग• उथा। कीर्जन• मुदे गरेक्षव वन्तन भारत्मवन ॥ उट्-পাদোদকসেুৱা চ ভন্নিবেদিত ভো-कन । छत्रीयानाकः ज राजवा हा मणी বুতনিষ্ঠতা।। তুলসীরোপণ বিক্ষো দেবদেবস্য শার্স্পি:। ভক্তি: যো-ডশধা প্লোক্তা ভববন্ধবিমুক্তযে ॥ ইতি হরিভক্তিবিলাসে ১১ বিলাসঃ যোডশোপচারপুজান্তগতশে-ষোপচার:। যথা। আসন স্থাগত। পাদ্য মর্য্য মাচমনীবক মধুপর্কা-চনন সুনে বসনাভরণানি চ। গক্ত-भूश्च धूमिशाभी नित्रमा वन्तन তথা।। ইত্যাহ্নিকতত্ত্বে আচারচি-खामिनः ।। 🗱 ।। व्यथ वन्तनः । भून-(मन्थ माष्ट्राञ्च उत्तुमुक्ष भूमर्भः (यट । भटिट भुजिभुगामक भुनीम ভগবন্ধিত।। তদুক্ত মেকাদশে এ ভগৰতা। স্তবৈ ক্চাব্চৈঃ স্তোৱৈ: পৌরাণৈ: প্রাকৃতৈ রপি। স্তত্তা পু-সীদ ভগব্মিতি বন্দেত দণ্ডৰ ।। অথ পুণাম বিধি:৷ কালিকাপুরাণে । বঃ শ্বৰণ গদ্য পদ্যাভ্যাণ ঘটিতা-ভ্যা॰ নমস্কৃতি'। শিরো মৎ পার-যোঃ কৃষা বাহু ভ্যাঞ্চ পরস্পার ।।। পুপন্ন পাহি মামীশ ভীত মৃত্যু गर्गावाद । किथागाम । (मार्च)।

शक्ताक बानुङ्या मूत्रमा नित्रमा-দূশা। মনসা বচসা চেতি পুণামো **২প্তাঙ্গ ঈরিত: ॥ জানুভ্যাঞ্চৈব বা**-হুভ্যা॰ শিরসা বচসা ধিযা। পঞ্চা-क्रकः भुगामः न्यार भूकाम् भुवद्रा विभाविजि॥ शक्ष मिक्ष कृषा क्र्यां खर भृष्ठाः वृथः । व्यवनाध्यः পুণানাণ্ড্রীন্ শক্তশ্চেদধিকাধিকা-न्।। उथा ह नात्रम्भक्षत्राखा मः क्षि॰ वीका इति॰ ठामा एकन इ শুক্ত মেব চ। দ্বি চতুর্বি॰ শদপ বা চ-जूर्दि न उरक्षक ।। नरम उर क मध्या . जनका अर्था मान्या। विकृषस्याः ख्रत्र। (एवाई) एमनाएव भूग्रस्यः थुमूरन । স্থানাপেক্ষা न कर्खवडा है-डे। हा विकास स्था । १ (एवाही पृष्ठे भूड॰ शि मूहि मर्बः भुकी खिंठ। ।। 🕸 ।। অথ নমস্কার নাহাত্ম্য । নারসি॰. ह् । नमकादः मृत्जा यद्धः नदय-জ্যেবু চোক্তম: ৷ নমস্কারেণ চৈকেন नद्रः भूता इद्रिः वुरब्धः ॥ स्रात्मः । দণ্ডপুণাম ককতে বিঞ্বে ভক্তি-ভাবিত:। রেণুস:খ্য বসেৎ স্বর্গে **শত**भन्षत्र नतः ॥ তত্ত্বের **এ**কৃষ্ণ नात्रमञ्चारम। शुगमा म अवज्रुत्मी न-मकारत्रन (या एईरए८॥ म यां॰ नि মবাপোতি ন তাং ক্রতুশতৈ দলি

। নমকারেণ চৈকেন নরঃ প্তো ছ রি॰ বুঙ্কেৎ।। ভবৈৰ শিবোমাসংবা-দে। ভূমি মাপীড্য জানুভ্যাণ শির আরোপ্যবৈ ভূবি। পুণমেৎ যো হি দেবেশ সো ংখমেধ ফল লভেৎ ॥ তবৈবান্যত্র। তীর্থকোটি সহসা-ণি ভীর্থকোটি শতানি চ। নারায়ণ भगामम् कवाः नाईति (याउनीः ॥ भारि) नाशि नमस्रातः सर्वजः भार्त्र-ধবিনে। শতজন্মাৰ্জ্জিত পাপণ তৎক্ষণাদেব নশ্যতি ॥ রেণুগুঠিত পাত্রস্য কণা দেহে ভবন্তি যে। ভাব-দ্বৰ্থ সহস্থানি বিষ্ণুলোকে মহীয়তে ।। বিষ্পুয়োত্তরে। অভিবাদ্য জগ-লাথ॰ কৃতার্থশ্চ তথা ভবেৎ। नमः, স্বার ক্রিয়া তস্য সর্বপাপ পুণাশি-নী।। জানুভ্যা॰ চৈব পাণিভ্যা॰ শি-त्रमा ह विहक्तनः। कृषा भुगामः (प्रवम् **मर्वान् कामानवाशु**यार ॥ <u> जुक्राश्वारण । ज्यनामिनियनः स्वर</u>् দৈত্য দানৰ দাব্ৰণ। যে নমন্তি নরা নিভ্যা ন হি পশ্যন্তি তে বনং ॥ যে জনা জগতাং নাথং নিভ্যং নারাঘণ্ দ্বিজা:। নমন্তি ন হি তে বিকো: হ। नारनाजगामिनः ॥ नात्ररीय । क काशि क्कमा मक्ट भुगामा मन नायस्यवावज्रेज नं ज्वाः। मनायः

নেধী পুন রেভি জন্ম কৃষ্ণপুণানী ন **न्**तर्ज्वाये ॥ ७किमृत्थाम् स्य । वि কো দ্ওপুণামার্থ ডক্তেন পওড়া ভূবি। পাতিত পাতক কৃৎসু নোত্তিগতি পুন: সহ॥ অপি পাপ॰ मुताहातः नतः ष्ट्रां १७० श्रा নেক্ষন্তে কিন্ধরা যাম্যা উল্কা তপ-नः यथा।। ञीविकु भुद्राति। ञीयमम् নিজভটানুশাসনে । হরি ম্যরগ-ণার্চিতান্ত্রি পদা• পুণমভি যঃ পরমা-র্থতো হি মর্ত্য:। তমপণত সমস্ত পাপবন্ধ• বুজ পরিছ্ত্য যথাগ্রিমা-क्राञिकः ॥ वृक्तरेववर्त्त । भद्रभागञ ब्रक्साराउ रिव्रमीम भूगमि (य ৰরা:। ন পতন্তি ভবামুধৌ সূ ট॰ প তিতানুদ্ধরতি য তানসো।। অপ্তম-ক্ষকে চ বলিবাক্যে। অহে। পুণামা-ৰ ক্তঃ সমুদ্যমঃ পুপন্ন ভক্তার্থ विर्वा नमारिजः। यह्माकभारेन खुमन् गुर्श १भरेत तलक भूवी भगरम **হসুরে হর্পিড:।। অভ**এব নারাযণ-বু্।হন্তবে। অহে। ভাগ্য মহে। ভাগ্য भरहा जागाः नृगाभिषः। (ययाः इ-রিপদারাগ্রে শিরো ন্যন্ত যথা তথা 21 किक नाइनि एह श्रीयामा हो। ওস্যবৈ নারসিংহস্য বিক্ষো রমিত (ভরস:। পুণাম• যে পুসর্বভি তেব।

मिन निया नमः॥ ভবিষেপ্रভিत्र 🗷 জলংখনুপুসলে। বিক্ষোর্দেব জগদা-जु र्जनाम्पर्ने जगरभाजः ॥ भुगामः यে পুসর্বন্তি তেখা মপি নমো নম: 1 देखाहि॥ 🗱॥ जय भुगामनिछाः छ।। वृष्टमात्रमीय कु वृत्काभार्थ्याः नात्रस्य । यक्षा म नामप्रस् विकार শর্মকারিণে। শবোপন্ বিভানী: याट कमारिमिश नालाशटा। किए পান্মে। বৈশাখমাহাত্ম্যে যম বা-**স্থান সং**বাদে । পশ্যস্তো ভগবদ্যার नामज्ञभितिहरः। अक्षा ७८ भू-পানাদি যান্তি তে নরকৌকস:।। 🕸 🛚 । ष्यथ नमञ्जाद्रनिधिष्कानि । विकृत्रा-ভৌ। জন্ম পুভৃতি যৎ কিঞ্চিৎ পুমা-म् देव थणं माहात्र । मर्ब ७ छिन्नः वः याजि এकस्टाভिवादनार ॥ वादारह। वज्जभाव्छ (महन्छ (या नद्रः পুণমেত মাণ। শ্বিত্রী স জাযতে মূর্থ: সপ্তজন্মনি ভামিনি ॥ কিঞ্চান্যত্র। অণ্ডে বামভাগে সমীপে গর্ভ-মন্দিরে। জপ হোম নমস্কার।ন্ न-वर्ग्धाः (कणवान्य ॥ जनिह। न ক্জুনৌ নিপতিতো ন শক্ত: পুণমে-মূহ:। উত্থাযোত্থায কর্ত্তব্য দও বং পুণিপাতন ৷৷ ততঃ পুদক্ষিণা व्यग्राट जक्ता खगवाजा इतः।

माष्ट्राक् वन्त्रनाः ॥ ইতি হরিভ किविवारम ৮ विवामः ॥ श्रा थ-नार्वियकात्रणाय भूगायणाय ह मुईबर ॥

বন্দনমালা স্ত্রী তোরণ । ইতি रुवायुषः॥ त्रञ्जायञ्चहजुष्टेयविष्टे-छामुभ ध्रविष्ठभाना । यथा। व ग्राहन्तनमानाः (या त्रञ्जाखरेञ्जः जूरमा बरेनः । চ্তব্যক্ষা करेतः न ত্রৈ জাগরে চক্রপাণিন: ।। যুগানি পত্র সখ্যানা স্বর্গে তস্যোৎ-সবো ভবেৎ। পুজ্যতে বাসবাদ্যৈ শ্চ ক্রীডতে চাপ্সরোবৃতঃ।। ইতি र्द्रिङ्किविनारम ১৩ विनामः॥ दन्तनभानिका खी वश्चिं।त्राभित्र **भू जनामाना। यथा। (जात्र**(पार्ष्कु) जू मक्नाः माम वन्तनमानिका। ইতি হেমচন্দু:॥

वन्तना जो स्रजिः। उर्भर्यायः। সমীচী ২। ইভি ত্রিকাণ্ডশেষ:।। হোমভন্মনাভিলক। যথা। ঐ-শান্যা মাহরেন্ডেম শুচা বাথ শু (वंश वा।वन्तनाः काब्रायाखन निः র: কণ্ঠা শকেবু চ।। কল্যপ্রভার মজেণ যথানুকনযোগত:। ইতি বিথ্যাদিতত্ত্বে বশিষ্ঠবচন ।।

नामानि कीर्ज्यन् भएको छाक । वन्हिनी क्वी निष्टः ।। कीराजुः ।। वर्षे ॥ याव्नकर्ण ॥ इंजि मिननी ॥ कृष्टिः भूखरक वही ज्ञान कहीं याहनकर्म ज्ञान माहलकर्म देखि ह भाठेः॥ उत्र जूभवनी य वकाना हो লিখিতো হয় শব্য। কিন্তু বদিউ नुउऽज्विराहरण द्विज्ञमा८ व्यनहे পুত্যুয় নিয়য়ত্বাৎ অম্ব্যুস্থ বকা-त्राप्ते विथिउः॥

> वन्त्रीयः वि खवनीयः। वन्तुः। বন্দিতব্যঃ ৷ বদধাতো রণীয় পু-ভ্যযেন নিম্পন্ন: ॥

> वन्मनीयः भू॰ भीठवृक्ताकः। ইতি রাজনির্ঘণ্ট:॥

ন্ত্রী গোরোচনা। ইতি वन्त्र भी या ত্রিকাওশেষঃ॥

বন। জ্ঞী বৃক্ষোপরিবৃক্ষ:। বাঁদু ইতি পরগাছ। ইতি চ ভাষা। ७८ मर्यायः। वृक्षामनी २ वृक्षक्श **७ की**विश्वका ८। इंक प्रमद्रः ॥ वन्त्रा-का ৫ (मध्द्री ७ (मव्या १ वनरका 🕨 । ইতি ভরতধৃতহয়:।। वन्तकः 🔊 नीनवल्ली > । ইতি রত্নমালা ॥ वन्हाकी ১১ পরবাসিকা ১২। ইছি मद्रद्वावली ॥ विमिनी ३० भूछि-भी ७८ वनरा। ३৫ भन्नभूछे। ३७ भन ब्रानुग ७१। ইভি नद्विनुका॥

(मिषिनी ॥ व्यम्धाः भर्ग्यायाच्यः खनाक बन्हाकनाद मुडेवाः॥ পু॰ ব্কোপরিবৃক্ষ: 1 वन्साकः वाँमा इंकि हिन्ती जाया । उ९भ-र्य्यायः। भाष्मक्रा २ मिथ्द्री ० ভকরোহিণী ৪ বৃক্ষাদনী ৫ বৃক্ষ ক্ছা ৬ কামবৃক্ষ: ৭ শৈখ্রী ৮ (क्नक्रा > उक्क्रा > उक्रा ১১ शक्षमामनी २२ कामिनी २० खक बुक् 78 महामा २० उनिमी १५ । অস্য গুণাঃ। তিক্তত্বণ। শিশি-রত্ব। কফ পিত্ত শুমাপহত্ব। वभागितिकिक्द्र । व्याप्तः। कः স্বাযত্ত্ব । রসায়নত্ত্ব। ইতি রাজ-निघण्टः ॥ व्यक्ति । वन्ताकः न्रा क्तिम खिकः क्याग मधुत्रा द्राम । अक्लाः कक वाजानु ब्राका वुन বিষাপহ:॥ ইতি ভাবপুকাশ:॥ **द्धो वन्ता। ই**তি ভরতः **বন্দ**াকা ध्उरुः ॥ वन्ता। इंडि मद-वन्हाकी खी

बन्ताका का पन्ता राजनास ब्रह्मदली॥ बन्ताकः बि वन्तनभीनः। उर-

बन्ताकः । ज वन्तनभानः । उर-পर्यायः । অভিবাদকः २ । ইত্য-स्रदः ॥ অভিবাদবিতা ১ । ইতি শব্দসমাবলী ॥

माजीविष्णवः ॥ जिक्कृती । इंजि विन्तः श्री व्याकृष्ठेमन्यागवादिः । क्यां । व्याप्ताः भर्गायाद्यः क्यां इंजि जाया। जर्मायः । ज्यां विन्ताकण्यस् मुद्धेवाः ॥ ज्यां इंजि ज्यां । जर्मा ३ जिल्ला विश्व । विन्ताकण्यः । विन्ताकण्याः ।

विन्तिगुङ्गः भू . जाग्रायुश्यस्व जाभाव जिल्हः । यथा । विन्ति गुण्हाः
छथा वाक्षि म्र छवानाक्ष हाविनः ।
जग्र हा जिल्हे म्यानादवानरम वा नित्र गुण्हा हीन् वलाकदेखान हा ज्वाः क नदान् म्यानादा भाव । ज्वाक्ष वश्रमुका विस्त्ररम भाव । जाग्रा गावा गुणा गाव ।
रम विज्ञा । जाग्रा गावा गुणा गाव ।
रम विज्ञा । जाग्रा गावा गुणा गाव ।
रम विज्ञा । जाग्रा गाव । हिं जिल्हा मुणा विश्व । ।
रेजि मनुष्य वर्गा । हिं जिल्हा मुणा विवा वर्गा विवा वर्गा वर्णा वर्गा वर्गा

विन्तिकोतः भू विन्तिग्राष्टः। उटभर्यतायः। भाष्टनः २। ইতি हात्रावनी ॥ वन्तीकातः २। ইতি जिकाअत्मयः॥

विक्तिभाग्नेः भू स्नुडिगुष्टः। उट-भग्रायः। (ভागावनी २। ইडि विकाश्रममः॥

वन्ती जी वन्तिः। इंडामब्रोकाः याः ७वडः॥ वर्मा भु त्राखादियां जाति विद्या , दिञ्जिकाद्रकः। उৎ পर्य्यायः। ञ्च-ভিপাঠক: ২। ইত্যন্তর: ॥ মাগধ: ৩ মগধ: ৪। ইত্যব্যে। ইন্ডি ভটী-কাষাণ ভরত:।। অস্যোৎপত্তি र्यथा। क्षिवाहि भुकन्यायाः मूर्डा खविष् बाजियः। विष्णासागर ेरियम्हो ब्राज विश्वाक्तामृत्जो ॥ ं इंडि मानत्व 🕽 व्यव्यायः ॥ 🛊 ॥ শুন্ধোত্তরমধ্যৈ শক্তিতো দানস্যা-कद्राण निन्ता यथा। बन्ति छ्रोक्ष्य मर्थि। १ मार्थि । १ समर्थि ।। যদি তত্ৰ ন দদ্যাত্ৰ বিফলা শক্তি-তো ভবে**ং। বন্দি**নো বীর্য্য**ন্তাতা** র:। অর্থিত: সন্যারি এভ্যো १व॰ ন मन्त्राट्याञ्च विक्वः ভবেদিতাर्थः ৷৷ সূতা: পৌরাণিকা: প্রোক্তা মা-ग्रधा यः भणः मकाः। यन्ति न समलः পুক্তাঃ পুজাবসদূশোক্তয: ॥ ই-जुरकः । इत्यक मुख्या छद्रमान নিবেধাৎ শালে বলিপুভৃতিভে मानाकद्राण निन्ता मुखनाह मुख्या भृदः उपर्थः (जाक्यां क्रिकः उट-मृह्य । इंडि माञ्च उतुः ॥ ৰন্দিগ্ৰাছ: बर्माकात्रः भिंदिन नामा है जिल्लामा । एट भ र्यायः। माठनः २ नुमञ्हातेतः ०

চিল্লাভ: ৪। ইতি বিকাওশেব: ॥ जी वन्ता। इंडि नद-बन्द्रा চন্দ্রিকা।। গোরোচনা। ইতি ভার-श्रकाणः॥ बन्पु॰ क्ली कन्यानः। ইতি निषास-क्रीमूम्रामूनामिवृज्धिः ॥ **न्बकः । ই**ज्रुगाहि-(काव: ॥ বন্য ল্লী বৃচণাইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥ वन्तरः जि वरनाक्त्यः। इंडि स्मिनी वन्धः भू वनभ्याः॥वादाशीकमरः ॥ (परननः। ইভি क्राकन्धिंगः॥ क्वी वनमम्रः। इंडामद्रः। 'कवम' इंडि: । इंडि सिमिनी ॥ मुद्रभगे ।। (गाभानक के ही।। एका ॥ भिष्णिया ॥ जम्मूखा ॥ गम्भभया । ইভি রাজনিঘট:।। ब्रालाहकी जी वजाविष्यः। वन भूँ हे हे जि जाया। उद्भगं ग्रायः । यनका २ यनमाञ्चया ७। जम्मा গুণা:। ভিক্তত্ত্ব॰। কটুত্ব॰। উষণ্ডব॰। (बाहनपुषः। इंडि बाबनिर्द्धः।। অ'শী। ভাগী। ইতি निषां अको मूर्गमूर्गा दिवृद्धिः ॥ वन 'डे क पू जे मुखंड हवी है।-প্রেয়া:। ইভি কবিকল্মন:॥ ঔ

বগু। ঞ বপতি বপতে। ডু উপ্ৰি-

ম॰। মুণ্ডো মুণ্ডিতকরণ॰। বপতি 🏿 বপ্তা মন্তক নালিত:।বপতি তন্ত্ৰ ত-স্রবায়:। যদি বপতি কৃষাণ:ক্ষেত্র भागाम्। वीजः। ইতি मूर्गामामः॥ বৃপঃ পু॰ কেশমুগুন•া। বীজবপন• । ইতি বপধাতো ভাবে হল্ পুত্য থেন নিষ্ক্রয়॰ ॥ वशन क्री किनमुखन ॥ वीकादा-न । इंडि (मिनी।। वभनी जी नाभिज्ञाना। इंडि (रुमग्नु: 11 বপা জী ছিদু•॥মেদঃ। ইত্য-गतः॥ বলিল: পু॰ পিতা। ইত্যাদি-কোষ: 11 क्ष्युः क्षा भवीतः। **३७,४वः**॥ শুশভাভূতিঃ। ইতি মেদিনী॥ र १ १८३३ । इन् भिर्वादेखन्त्रभाजुः । ाः ब्राह्मान्यकः ॥ ৰপুনঃ পু॰ দেবজা। ইতি শন্দ-इदादनी ॥ खी হবুৰা। ইতি ভাব⁻ ं भुकानः॥ वनुष्टेमा जी नमहादिगी। ইভি - किंगिवदः॥ वर्षा भ् दनकः। इंडि सिरिनी।।

्कितिः। ইতি को। ध्राः॥

जि वालकः। ইতিমেদিনী। F वन् क्री नृः पूर्गनगरत्रभित्रशाया-উদ্ভৃত্যু ক্তি কান্তুপরক্ষে যদুপরি প্রা-কারে। নিবেশ্যতে তৎ। তথা চার্থ-শাত্র•। থাতাদুজ্ত মৃদা বপু• কা-রযেৎ ভস্যোগরি পাকার মিতি। उर्भर्गायः । ७यः २ । इज्रमत्र-ভরতৌ ॥ মৃত্তিকান্ত্প: ৩। ইতি अपन्रज्ञावनी ॥ यहावर्त्रा यथा । मरहाम्यानाः महाव्याः उडाग শতশোভিতা॰। প্রাকার গৃহ স-স্বাধা মিন্দুস্যেবামরাবভী ।। ম-হান্ বপ্রো যস্যাঃ। প্রাকারাধার ভূতা ক্তিমোছিতা ভূমি ৰ্পুস•-ক্তা।ইতি বিষ্ণুপুরাণে ৫ অংশে ২৩ व्यथ्रायः ॥ 🖈 ॥ वश्व विदेशस्य । क्षि इंडि ভाষा। उৎপर्यायः। (करातः २ क्किंजः ० । इंडाम्बर-ভরতৌ ৷৷ নিষ্কৃটি: ৪ বনজ ৫ বা জিকা ৬ পাটার: १। ইতি জটা-थतः ॥ तिनुः ॥ उठेः । इंडि मिनिः नीकद्र (रुमहत्नु) ॥ क्षी मीमकः। इंडि (इमः

इन्द्रः॥

वनुः नु जाउः। ইতি सिरिनी॥

পুকার:। ইতি বিশ্ব:।। পুজাপতি:

। इंडि म किथमात्रागामिव्बिः॥

मिक्षिश । ইতি द्राव-निर्घणेः ॥

विनुः भू क्वा विभाषाताः किन् भुज्रायन निष्नमः। ইতি সিদ্ধান্ত कोमून्यामूनानिवृक्तिः ॥ पूर्विः ॥ अगृषुः। ইতি সःकिश्वनाद्माणाि -বৃত্তি: 11

वशी जी वन्त्रीकः। इंडि इनायुषः॥ ववः नः काम्मक्रवाष्ठर्गञ्जूथम করণ। ভস্যাধিপতিরিন্দু:। তত্র বিহিতানি যথা। পৌষ্টিক স্থির শুভানি ব্বাথ্যে। ইতি জ্যোতি-স্তত্ত্বু'॥ অত্র জাত ফল । ববাভি খানে জনন হি যস্য শ্রো হতি-ধীরো মনুদ্ধ: কৃতী স্যাৎ। পদ্মা-न्या जनिन्य निवामः करताजि निजाः मृतिहक्षनः महार ॥ इंडि काष्टीन्त्रीनः ॥ नाक्तिनाज्यमञ् चम् भदम् भूषम्यकातः भवः গী য: শেষবকারো হন্ত্যস্থ: ॥

গত্যা । ইতি কবিকল্পছম:॥ E বকারাদি: ওষ্ঠ্যবর্গ চতুর্থোপথ:। বভুতি। ইতি দুর্গাদাস:॥

वम १ जू हे हि दि । इं कि किव-কল্লন্দমঃ ॥ বকারাদিঃ। ণবেমতুঃ ववमञ्रः। चाना ज् अउट कार्याः

ত্তে বেমু**ণ্ট** কেচিজ্ঞধিরমিত্যাদি সা-थनाय ७९-मृत्व मच्छ वकात्रामिवर्ज-নস্যানিত্যতা স্বীঙ্গর্মন্ত ৷ কেচিৎ भून वंग्रवकात्रामि धाव्यस मभार-স্তি ইতি পুলপন্তি। জ বান: বম:। উ বনিত্বা বাস্থা। টু বনপ্:। উদ্ধি-রি বান্তৌ।বমতি অন্ন মজীর্ণবান্। व्यमश्रद्धि । को इन श्र्व हेन्।-िमा (कवलमा) <u>ज</u>ुस विकन्ननाट সোপসর্গস্য নিত্যু হুম্ব:। বমযতি वामयि পुवमयि । इंडि पूर्गा-मानः॥

वमः भ् जी वगनः। इंडि वमः থাতো রচ্ পুত্যযেন নিম্নন । ইতি निकाष्टकोमून्यामूनानिवृक्तिः॥

वमथुः भुः विभः॥ इखिणुखनिर्भः **७ जनका। ७९ भर्य्यायः। कत्रणी**-कब्रः २। ইত্যমর: ॥

বমন শ্লী ছৰ্দ্দন ।। অৰ্দ্দন । ইঙ্কি মেদিনী।। আহুতি:। ইতি বিশ্ব:॥ শণ:। ইতি রাজ-वभनः निर्चणः ॥

बलोका। इंडि ताबः वमनी जी निर्घणः॥

वमनीया जी मिक्का। ইতি রাজ-निर्घणेः॥ वसनर्यारगः जि ॥ বিধাযক সূত্রে ফণাদৌচেম-নপঠ-। বিম: জ্রী পুছদিক।। ইত্যমর:।।

णथ एमं। धिकातः। एव एमि वि-नुक्षे मिक्षे निमान भूर्वक्षाः সংগাপ্তি कार । অভিদুবৈ রভিন্নি-रिक ब्रङ्रेम्। व्यवरिग ब्रिम । व्यकारन চাতিনাবৈশ্ব তথা সাব্যৈ কে ভো-क्रोनः ॥ व्यामाख्याख्याद्यगान-कीर्नाट कृतिरहाय छः। नार्या का शब भद्राया ख्याजिङ्क रमुखः ॥ पूरिश्रे (मीरि: भृथक् गरेंबे वी खरुगाला: कर्नादिनि:। वीष्ठ्रेष्ट (४०७७४)-रेन्। जुंक म्रह्मणाउ वनार ॥ আমাৎ অসম্যক্ পরাদুসাৎ। অ-कीर्नाट यथा क्षिठा फुकाट। आभ-भगवायाः भाष्ठ गर्खायाः। व्यानः वी जरोम विक्रि (ईज्जि: मृग কারিভি: অনিষ্ট শুবণ স্পার্শন দর্শন कक्ता मारित कर द्विनाह उक्कं नी-षा नृथाविश्कियाज।। शा भूवंक्ष মাহ। ভ্লাসোদ্বাররোধী চ পুনে-का नवगामाञा। (वर्षा १ मनाद D ज्ला वशीनाः भ्रत्नकाः ॥ 🗱 ॥ इर्प्ट: जामान्यक्रम भारा हारय-मानन (वरेग द्वर्षयमञ्ज्ञातः । নিৰুচ্যতে ছৰ্দ্দি ব্লিতি দোষো বজু भुवाविजः॥ छान्यम् भूत्रयम् व्यक्षः 😘 🗀 अक्र (७) रिः अन्यन् अक्र नि भीष्यन्। वकुः भुशाविकः वकुः

भुजियाविजः (मायः इर्ष्मि निक्र)रख ॥ 🗱 ॥ वाउडाया नक्त भारू । इट्लार्थ भी जा मुथ्याच भीर्य नाः ভ্যব্তিকাস মরভেদ তোদৈ:। উ-ज्ञात भद भुवल अरकन विद्वि कृषः उन्कः कवारः॥ क्टाइन हा-ল্ল মহতা চ কেগেনার্ভো ৎনিলা-हर्फ्यञीव मू: थ॰। कवाय॰ कवायद्र-সং। দুঃখং দুঃখনিব ছর্দ্যতি।। 🛊 ॥ পিত্রা মাই। মূর্ছা পিপাসা মৃথ-শোৰ মৃদ্ধ তাল্ফি সন্তাপ তমে। जुमार्जः। भीजः ज्लाकः रुविउकः তিক্ত ধুমুঞ্চ পিত্তেন বনেৎ সদাহণু ॥ 🗱 ॥ कफबामार । जन्तु। माभाषु-र्यं दक्षुरायदः मालाम निम्। १क्रि शोदवार्खः। त्रिकः धनः साम् ककाः कि भूतः मलामरार्या शत्रकाः व-মেত্র।। সন্তোষ সৃধিঃ।। 🛊 ॥ बिদো: ৰজামাছ। **শ্লাবিপাকাক্চি দাহ** তৃফা খাস পুনোহ পুবলা পুশক্ত• । एप्ति खिरना या छ व ना मान ल्मुाक ब्रङ वम्छा नृगा न्राट ॥ 🕸 ॥ वागस्रकानारः। यमाबाजा চ কৃনিজামজা চ বীভৎসভা দৌছ্-দজা চ যা হি। সা পঞ্চমী তাঞ্চ বি ভাব্যেষ্ট দোষোট্থেনৈব যথোক नारि ॥ अठाः शकागत्रज्ञाद्वन

সাম্যাদেকৈব অতএব সা আগন্তৱা शक्ती विভावत्य जनुवन्नत्य ॥ 🛊 🛮 উপদুবাৰাহ। কাস: স্বাসোজ্ব ख्का हिक्का रेविष्ठि । स्वाप्ति खमकरेम्घव द्धिया मृत्य क्रम् वाः ॥ বৈচিত্য বিক্তচিত্তত্ব। তমকো হত তমঃ॥ খাসপদেনৈব তমকা-খ্যস্যাপি খাসম্যোক্তা।। 🛊 ॥ অ नाथाः नाथाकारः। कीवनाः या ছদি রতিপুশকা সোপদুরা শো-বিতর্গযুক্ত।। সচন্দ্রিকাং ভা॰ भुवरमनगाया नाया हिक्टि **भ्यः निक्रभ**पुराक्षः ॥ मङन्पुका मः यूत्र शिष्ट्र हिन्तु का शु जायुका ॥ # ॥ ष्यथ् इप्दि निर्देश्या। यानान-स्वादक्षण खवा हि महा भूक्षी म-ভাল প্ৰন মেৰ ভ্ৰমাৎ । বিধীণতে মাৰুভজা বিনা তু সংশোধন বা क्क लिख हाति ॥ व्यव हफी लक्ः ॥ ।॥ इन्। ६ कीद्राहकः भीउः ह फिं भवनमञ्जवाः । गुन्नागलकस्ता वा अमर्शिकः भरेमक्षवः।। कीद्रापकः नाष्ट्रिका की बन्ध जैनक ॥२॥ 🥸 ज्ही विक्ना निष् भारतिनः कृषिजः ৰূল । পিবেন্মধুণ্ড তেন ছদি । ৰ্শ্যতি পিত্তনা।। ৩॥ হন্নীভঞ্চীনা॰ চুर्ने ख विशासाकिक में गुउ । वाशाः

भागी कृष्ड प्लार इ. कि: भीषु नि: বৰ্ত্তে॥ ৪॥ বিডক্ ত্ৰিফলা বিশ্বা हुर्नः सक्षुयुज्जः निरवरः । विषकः भ्रव কৈবত্তী মৃন্ত । গুডতন্ত্ৰী ইতি লো-क ॥ १॥ निष्ट्राथाकी कलः नामान् শর্করাণ চ পলোমিতাণ। দত্তা সধু **भवकाभि ऋ**उव• भविवम् । हा। दा-সসাগালিত পীত হৰি ছৰ্দি জি দোৰজা ।।৬॥ গুড়চ্যা রচিত হন্তি हिमः मधुनमनिकः। पूर्निवादा मिन इिफ् • जिस्माय अनिजा वसार्था। १॥ এলা লবস্থ গজকেশর কোলমজ্জন लाज शियक घन ठनत्व शिश्नवीवा॰ । চুণানি মাক্ষিক সিতা সহিতানি-লীঢ়া ছদে । নিহন্তি কফ মাৰুত शिखबाउा॰ ॥ वनारिहर्न॰ ॥ ৮॥ অখথ বল্পল শুষ্ক দঞ্চ নিৰ্বাসিত জলে। তজ্জল পানমাত্রেণ ছ দি • জ্বতি দুর্জ্বাণ।। ৯ ॥ পথ্যা ত্রিক্টু धानतक जीवकानाः ब्रह्मा निरुन्। अधून। नान्यरयह्मि अक्ठिक जिल्हा-क्जा।। १०।। विन्यव्हा ७५६। वर् কাথ: ক্ষোদেণ সংযুতঃ। ছদিছ' ত্রি-स्विका॰ इंडि **नश्चित्रः निड्डा॰** उथा ॥ ১১ ॥ व्यामाहि विविनग्रः भीजः समध्मक्तः। निश्ना८ हर्षः

छीगातः रेंवणानत देवाङ्खिः॥ नि-य्र द्वापः॥ १२॥ इसान् शलत म्ड॰ লাছর্জঃ সংযুত্ত শীত্ত। শম্যতি মধুন। যুক্তা বনি নতিসার তৃষার্ভি बुषु । । । । । वी डूट मजा : इहा छूर । दिरेष्ट (मेरिक्स्डा॰ करेनः । नहींन রামজা• ছদ্দি জয়েৎ সাব্যৈর भाबारका ।। 2811 क्ञि क्षु 194क-ন্যাৎ বৃষি কৃষি সমুদ্ভবাং। ভত্ত **७** व्यथा (मायः कियाः स्र्यां) ८ हिकिट मकः॥ २०॥ इंडि इर्म् धि-কার:। ইতি ভাবপুকাশ:।। বনিঃ পু॰ অগ্নিঃ।ইতি মেদিনী॥ धर्डः। इंडि भद्रत्वादबी॥ विनिज्ञः वि वाष्ट्रः। वमनक् उवस्र। इं जि मुक्त दाववाक प्राक्र पर ।। বন্তু: পু॰ বংশঃ। ই**তি শদ্**রবা-दबी।। বগুড়িঃ পু॰ বলাকি:। ইতি হেন-हन्दः ॥ র্য ত গত্যা। ইতি কবিকল্লুফ্ম:॥ **छ वयर ७। ইछि पूर्गानामः ॥**

র্বণ ত্রি অমদাদি:। আমর। ইতি

' সি ক্**পো ২**য°। ইতি ব্যাক**র**ণ°।।

वयः क्री शकी॥ वानग्रामः। इंड्र

. भवः ॥ (योवन॰ । इंजि (मिनि)

ভাষা। অনচ্দ্স্ ব্যাদেশে জ-

॥ 🗱 । । वर्षाविष्णस्य कर्डवग्रानियथा। লৈশবে হভ্যস্ত বিদ্যানা থৌবনে विषरियिषा । वार्ष्ट मृनिवृजी-না থোগেনান্তে তনুত্যজা।। ইতি अध्वास्य > मर्गः ॥ क्ष ॥ जिनि । **পুথমে ना**र्ड्डिंडा विष्ठा षिडीय नार्क्किंड॰ ४न॰। जृजीय नार्क्किंड॰ পুণ্য চতর্থে কি॰ করিষ্যতি।। इंडि हानका ।। इर्यादिरमञा-गा नियमा यथा। को मात्र भक्ष-नादाउ॰ लोगखा॰ मणनावधि। किल्लात मानकम्माट योवनक ততঃপর• ॥ ইতি পুাদশ্চিত্তউত্তু-প্তবচন ।। #।। অপিচ। আবো-ডশা ভবেদ্বাল স্তৰণ স্তত উচ্যতে । वृक्षः महा८ मक्षा कक्षः दरी খান্ নবতেঃ পর॰।। ইতি ভরত-धृ जाम् जि: 11 क्ष 11 व्यन् प्र 1 वाल प्र বৃদ্ধি বঁথো ৰূপ• চফু স্তৃক্ শ্ৰোত্তরে-তসী। দশকেন নিবর্ত্ততে মনঃ সর্বে न्मियानिह॥ इंडि महा छात्र उ॰ ॥ वयः इः वि युवा। इंडि (इमहन्पुः॥ वयञ्चः जि युवा। इन्छानद्रः॥ वयः সি গৌবনে তিষ্ঠতি ইতি ব্যস্থ: ডঃ নিপাতাদ্বিসগ্দ্য বা লুক্ ব্যংস্থ महा। दयः शिक्विनि वालामि वर्ग योयनभाज्ञकः। इंकि विषः। इंकि

ভরত: ١١

वग्रा की जाननकी।। रत्रीउकी
।। रत्रानवलती। रेउप्रतः।। ७५०ी
।। त्र्रेक्षना।। कार्कानी।। जानी।
हेजि स्मिन्नी।। नानानिः। हेजि
स्मिन्नुः॥ कीत्रकारकानी। हेजि
जावनुकानः ।। जाउप्लभी ।।
मर्नेप्रकी।। गुवजी। हेजि त्राकः
निर्विष्टः॥

वयम् । जुः मगानवययः। ज्-भर्गायः। नि्षः २ मवयाः २ । इज्-रद्रः ॥

ষযস্যা দ্রী স্থা। ইত্যনর: ।।
ব্যুন• ল্লী জ্ঞান•। যথা। হস্তাগাহ্যে
রচ্যতি বিধি• পীঠকোদ্খলাদৈ
শ্বুদ্• শুর্রনিহিত্বযুন: শ্বিক্যভাণ্ডেষু ভদ্বিৎ। ইতি শ্রীভাগব১০ ফল্লে ৮ অধ্যায: ।। শিক্যভাণ্ডেষ্ অন্তর্নিহিত্বধ্যাদে। ব্যুন• জ্ঞান• যস্য স:। ইতি ভট্টাকাষা• শ্রীধরস্বামী।।

ব্যুনঃ পু॰ দেবতাগার॰। ইত্যু-ণাদিকোৰ:॥

बरगायाः भू गूरा। इंजुर्गाहि-कारा।

वर्षातकः की जीमकः। ইভিরাজ-নির্ঘণ্টঃ॥

বর ও ক ইংগ্রে। ইতি কবিনল্প-ব্দম: ।। রেফোপখ: বর্যতি। ইতি দুর্গাদাস: ।।

वत्रः क्ली अस्तृ मः ॥ मनाक् शियः ॥
इंग्रिमतः ॥ उथा । वतः शुगाख्रास्त्रा न व लिल्विनात्मञ्चितजि वंत्रः स्मोनः कार्यः न व व व व ममुज्ञः यहन् उः । वतः क्लीवः खावाः न व शत्र क्लां खिश्मनः वत्रः खिल्लाः शिष्यः न व शत्र श्लीवः खावाः ॥ इंजि वामनश्रुतातः ८५ व्यथा। ममा-वित्रः वा मनाक् श्रियः। यथा। ममा-शिर्छे वत्रः क्लीवः (कि वि मान् खन्वाः)ः यः। ইजि स्मिनी ॥

वतः शृ वद्गा । उद्भग्रायः ।
वृज्ञः २। इज्जितः ।। (स (वर्ष्ट्रान् ।
ज्यार्थनाविष्णस्य इज्जात् । इजि
ज्वजः ॥ (प्रवाष्ट्रः । (प्रवन्नकाणाद्याविष्ठः । উक्कः । जलाजित्रवाद्य यस्त (प्रविज्ञः म वद्गाः
भजः। इजि ज्वजः॥ काभाजा ॥
विज्ञः । इजि (भिष्नी ॥ ध्युक्तः ।
इजि भक्तज्ञावनी ॥ भिजः। इजि
(इभवन्तः ॥

বরঃ ত্রি শুেষ্ঠ:।ইত্যমর:॥ বরক ল্লী পোতাছাদন । ইভি হারাবলী॥ ধৌতাধৌত সাধারণ वजः। ই जिल्द प्रशावनी ॥
वत्रकः श्रुः वनगूनः। ই जिल्महन्मुः॥ श्रश्न दिः। ই जित्रा जनिर्वणेः
॥ ज्गशाना (ज्यः। हिना ই जिज्ञाना
। ज्यशाना (ज्यः। ह्वक्रञ्चः २ क्कः
० ह्विनुषञ्चः ८। व्यमा ख्या । मान् धृत्रपः। क्क्रपः। क्वायपः। वाज्ञ शिक्ष मात्रिष्ण। ই जित्रा जनिर्वणेः॥ वत्रक्रजः श्रुः हेन्मुः। ই जिल्हा

वत्रवन्तनः ही कानीवः॥ (मवनाकः । इंडि (मिमी॥

व्यक्ति क्षेत्र भूष्त्र । **३७ मद** ब्रज्ञावनी ॥

वत्र है: शृ॰ इ॰मः। इंडि (मिनी।।
की हिविष्णयः। (वानडा इंडि डाय।
। उट भर्य)। यः। मह्मानी २ वत्र है। ०
। इंडि मम्त्र क्षावनी।। वत्र नी ७।
इंडि मम्त्र क्षावनी।। वत्र नी ७।
इंडि महिवदा।। इंडि जाकनिर्यण्डः।।
वत्र है। की इ॰मी।। वत्र ना। इंडि जावः।
वत्र ।। क्रमुखवीकः। इंडि डावः
भूकाणः॥

वत्रहीं जी रंगी।हेंडि मिनि।। गाक्कानी।हेंडि जिकाश्रामयः॥ वत्रिका जी ममूख्यीकः। ७८भर्य) यः। यद्र हो २ । ज्या । खनाः । स्वयं प्रः। त्रिक्ष प्रः। द्रक्र शिख क्र काश रुष्यः। क्रमायप्रः। जीवनाश्रः। स्वयं । ज्यव्याप्रः। जिन्नाश्रः प्रकृ। रुठि ভावशुकामः॥

वंत्रगः नी कन्याहिवद्रगः॥ (वृष्टेनः। इंडि मिनि ॥ भूजनामि । इंडि **न**द्रद्रावली ।। 😻 ।। अथ वद्रगवि-शि: । (**७**या भाषार्य) भीना श्राम मास्य कर्यान रहामात्रसाट भूर्व **यान्डार्थः यक्ष्मात्म स्यः वद्र**ाः कार्ये । पान वाठनानात्रञ्ज वत्रग বুত পুনাণেষু যজমান পুতীযাৎ ৷ ইতি হরিশর্ঘণ্ড কাত্যায়নসূত্রাৎ । ভত্ত বুক্ষবরণ পুথমতঃ। জ্যো-ভিষ্টোমে । বুদ্দোদ্গাতৃ হোত্র-ध्यार्जामि क्यमम्बनानाजाः काङ्क्षा पृष्ठेभद्रिकस्त्रनाया न्याया-ত্বাৎ। সুগতি সোপান পুভূতবো ११९४० ॥ वद्रवस्त । गन्नामि मान बाबा श्रीि गृं शाम्य कर्यक्रमाय পেরণ। ভত্ত চ। সর্বত প্রাল্পথো माञा गुरीजा ह छेनडूयः। इंडि वहनाट यद्मभानमा नाष्ट्रायदः वा हार्यादीना मूद्याथवः नुडीयछ॥ वद्गगविधिमाह काउप्रायनः। व्या **मन माहार्य) याह माध्**डवानारा महंगिष्ठासा ভवत निछि। जामन माहार्यानीय मंद्रालग्राह मातृ ज्वानाला निछि। मायृह मास्म हेि প्रिविद्यान ॥ जहिंगिष्ठासा ভवत निछि भूनकाल जहिंग हेि श्रिकामण्डार । हेि हिंदि मामण्डार हिंदि मामण्डार । हिंदि हिंदि मामण्डार हिंद हिंदि मामण्डार हिंदि मामण्डार हिंदि मामण्डार हिंदि हिंदि मामण्डार हिंदि हिंदि

বরণঃ পু• পুাকার:।। বক্ণবৃদ্ধ:। ইত্যমর:।। উট্:। ইতি হারাবদী ।। সংক্রম:। সাঁকো ইতি ভাষা। ইতি হলাযুধ:।।

वत्रपत्री छी वाद्रापत्री। ইতি चत्रत्रज्ञावनी॥

নর ওঃ পু অন্তরাবেদি: ॥ সমূহঃ

। মুখরোগ: । স ভু নুণ ইতি ব্যসকোতা ইতি চ ভাষা। ইতি নেদিনা ।। তন্মতে প্রকারিকারাদি র্য কিন্ত অন্ত্যন্তর্কারাদি ব্
ক্রমাতো রৌণাদিক অন্তন্প্রত্য নিয়মত্বাদক লিখিত: ॥

वज्रमा

हिल्मु न वृंक भाज निम्न महा ८ जन्न ।।

ज्व न जा हिला न ।।

ज्व न है जिला न ।। ज्य मण्ड ।।

ज्व न है जिला न ।। ज्य मण्ड ।।

क्व न जी जी न हिला ।। विर्न ।।

क्व न न जिला है ।।

क्व न न जिला है ।।

क्व न न जिला है ।।

क्व न न जी न ।।

क्व न न जी जी न ।।

क्व न न जी जी ।

क्व न न जी जी ।

क्व न न जी जी ।।

रत्रवा छी रुखिकक्षद्रक्कः। कार् मधी रुखि था। छ शर्यायः। ह्यार कक्षाण कक्षा । हर्म्यद्रक्कः । उ श्यांगः। मक्षीर वर्ष्क्षी वर्ष्क्षी ८ वाक्षी १। रुखामत्र ज्वारको ॥ वत्रवृष्टः शृ निम्नवृक्षः। रुखि त्रव्

भाना।। (मुश्रवहरक हो।।

घत्रमः जि श्राचित्रका । उट
शर्यप्रायः। समर्खकः २। ইত্যমतः।।

समर्खः २ वाञ्चित्रार्थमः ८। ইতি

शद्यत्रावनी ॥ भूसमः । ইতি

मिद्रानी ॥

द्वाना जी कन्या। ইতি मिद्रिनी॥

আদিত্যভকা। ইতি রাজনির্ঘণ্ট: ।। অস্বগন্ধা। ইতি ভাবপুকাশ: ।।
বরদানী চ।।

यत्र ना ठ जुशी श्री ना च मृद्ध ठ जुशी ।

उत्र प्राच त्र भाष मृद्ध भाषा । जित
र प्राच त्र भाष मृद्ध भाषा ने मिल्ल ।

इ जुशी व्यव । भाषा जन्मा । भाषी ने मृश्किला । भी ना गण्य मल्ला ।

र्या ८ भक्ष म्या ने जी विभ मृष्य ॥

ह जि जिथा नि जुः ॥

यतराजः भ् नृक्षितिम्बः। ज्हे-मह इकि हिन्त्। ज्या। ज्यभ्याः यः। ज्योगहः २ द्यात्रमाजः ० थ-त्रह्मः ८। ज्या ७ थ्यो। मिनित्रद्यः। त्रक्षित्रभूमारमङ्क्ष। इकि जाव-भुकाणः॥

वत्र भर्गाथाः भू क्वित्र कक्षू वी वृक्षः । इंडि तज्ञनाना ॥

বরপুদা জ্ঞী লোপামূদা। ইঙি হেমচন্দুঃ॥ বরদাতরি ত্রি॥

ब्रक्षः श्रु॰ नातिक्ववृक्षः। ইঙি भद्रिनुका॥ उৎकल (भुष्ठकल हक्षी॥

वत्रम्थी खी (त्पृकानामगत्रपुरा।
इंडि भक्तिन्युका॥
वत्रम् वा स्वर्शिष्यः । इंडि
स्वरिनी॥

न्त्री हज्भगी। हान निया ব্রয়রা ্ইতি ভাষা।ইতি শব্চন্দ্রকা॥ চন্দঃ ॥ বরণকার্যতা চ॥ व्यक्तिः शुः कविविष्णयः। उद-পর্য্যায়:। পুনর্বসু: ২। ইতি ত্রিকা-গুশেষঃ॥ স চ.বিক্রমাদিতারাজ-্স ভাস্থ নবরত্বান্তর্গত রত্নবিশেষঃ। যথা। ধর্ম্বরিঃ ক্ষপণকামর সিংহ শক্ষুবেতালভট ঘটকর্পর কালি-দাসা:। খ্যাতৌ বরাহ মিছিরৌ নূপতে: সভাষা রত্নানি বৈ বরফ চির্নব বিক্রমস্য।। ইতি নবরত্ন•।। क्तनः भुः जी वद्रहेः। वानजा ইতি ভাষা। যথা। বিষসৃক্ষী ভূম-রোলো বরল खुगवऐश्रमः। ইতি नक्याला॥

वहनतः शुः हम्मक्वृकः। इंडि विकाखाम्यः॥ वत्र भाष्ठि वि ॥ बत्रमा जी रुः भी। इंडि (नि भी)॥ তত্ৰ প্ৰণী য বকারাদৌ পঠিতো-যা। यत्रहो ह॥ वत्रमी जी वत्रहो। ইতি জটাধ্যः॥

বরণা জা বরটা হাত জটাধর:॥
বরবৎসলা জ্রী শ্বশুরভায্যা।
ইতিশন্দ্যালা॥

ৰ্রবর্ণিনী স্ত্রী অত্যুত্তমান্ত্রী। ভৎ পর্য্যায়: । বর্গুরোহা ২ মন্তকাসি- नी ७ উख्मा ८। इंछ्याः ॥ मर्खः काणिनी ৫। इंछि छत्र छः ॥ लाका ॥ इतिषा ॥ त्वाहना ॥ क्विनी ॥ जाधीखी । इंछि मिरनी ॥ लोती ॥ मत्रस्वी ॥ लक्षीः । इंछि नदः तञ्चावनी ॥

বরবাল্লীক• ল্লী স্বন্ধ্ন•। ইত্যমন্ধ্র টীকা।।

বর্তৃক্ষ: পু• শিব:।ইতি ত্রিকাও; শেষ:॥

वता खी कन जिकः। इंडि मिस्नी

॥ (त्र पृक्षा । अपूर्व । विड ने स्न हिन्दु का ॥ अपूर्व ॥ स्म । । व्यक्ती ॥ विड कः ॥ नार्वा ॥ क्ति मु । । इंडि ताक विष्ठ ।। (मुक्षा ह ॥

বরাক: পু॰ শিব:। ইভি নেদিনী ।। যুদ্ধ•। ইভি হেমচন্দু:।।

বরাক: ত্রি শোচনীয়:। ইতি মেদিনী।। অবর:। ইতি শদ্দালা।।
বরাক্ত লী সম্ভক।। গুহুণ। ইত্যনর:।। গুডুত্বক্।। যোনি:। ইতি
ত্রিকাগুশেষ:।। শুেধ্বাব্যবে দ্লী।
তন্তে ত্রি।।

वब्राञ्चः भू॰ इडी। ইडि जिकाछ-भाषः॥ विक्ः। यथा। সুবর্ণবর্ণো হেনাকো বরাঙ্গ শুন্দনাঙ্গদী। ইতি তস্য সহসুনামন্তোত্র•॥ বরাঙ্গক॰ জ্লী গুডত্বজ্।ইত্যমর:॥ শুেষাব্যবযুক্তে তি।।

वज्ञान्ता की जिल्लाखान्यकाः की। यथा। निज्ञः मन्तः हत्यो मून्किलो वज्ञान्तारमवन मह्मानाः कनः। जनग्रनाविद् मन्तरं तिथुनः हिन्नभूगक्षाः निष्य मानयि वहे॥ हेकि नक्षीहित्वनः॥

বরাঙ্গরেপাপেত: ত্রি শুেষ্টর্নপযুক্ত:
। সুন্দর ইত্যর্থ:। তৎপর্য্যায়:।
সিংহসংহনন:২।ইত্যমর:।।

বরাজী জ্ঞা হরিদা। ইতিরাজ-নির্ঘটঃ।।

बद्राक्षी शृः व्यस्ति अभः। वद्राक्षः। कास्ति अभः इंडि वा भारेः। इंडि द्रियाना॥ (भुक्षेत्रस्तु कि ॥

বরার পুণ কপদক:। ইতি রাজ নিঘট:।। রজ্জ:। যথা। রজ্জ্ শুলা বরাটো না। ইতি জীকাণ্ডে রত্ন কোয:। ইত্যনরটাকানাণ ভরত:॥

वज्ञाहेकः भु॰ जी कशर्मकः। किंछ हेि जावा। हेंग्रानजः॥ उन्रह नःथा (ज्ञारन न॰ ज्ञारजना यथा। वज्ञाहेकानाः मन्मकद्यः यथा ना का-किनी जान्म भग म्हज्यः। (ज्ञासा-उन्ह नुमह हेवावग्रामा मुरेनह स्था। (वार्षमाजन्म निद्यः॥ हेिंज जीना-

বতী।:ৠ।।অপিচ। তাম্রিক: কার্ষি कः भगः। इंडि याद्धवन्नावहत्वन छन প্রা: গঞ্চাদ্যমাবক স্তে বোডশা-ক্ষঃ কর্ষো হক্তী। ইত্যমর্মিংছো-ক্তেন চ অশীতিরভিকাপরিমিত-তামুে পণশব্ধ: সঙ্কেতিত: সচ তা-বৎস·খ্যকবন্নাটকৈ ৰ্লভ্যতে ইতি বরাটকেম্বুপি তথা ব্যবহার: ০ उम्मक॰ खिवरा भएमा उखार র্বচন যথা। অশীতিভি র্রাটকৈ: পণ ইত্যভিধীয়তে। তৈ: যোড-**লৈ: পু**রাণ স্যাদুজত সগুভি স্ত জৈঃ॥ ইভি পুৰেশ্চিভতভুণ।। 🗱।। (७० मिक्स्पार्थः विवीयात्र । यथा । হত নশোতিয় দান হতো যজ্ঞ স্তু কিণ:। তত্মাৎ পণ কাৰিণী বা ফল• পুদ্র নথাপি বা॥ পুদ-म्राट मिक्का गढ्छ उसा म भकः লো ভবেৎ। ইতি শুদ্ধিতকুণ।।

বরাটক: পু॰ রজ্জু:॥পদ্মবীজ । ইতিনেদ্রিী॥

বর।টকরজাঃ পু॰ নাগকেশরবৃক্ষঃ ।ইতিশদনালা॥

বরাটিক। স্ত্রী কগর্দক: । ইত্য-নরটীকাষা ভরত:রাজনির্ঘটক।। ত্তুবাচিকাচ। যথা। প্রাণে ম্-ক্যকে যেন তেন গঙ্গা বরাটিকা। हेजूऽकि ।। वत्रागः भू॰ हेन्दुः। ইতি विकाखः स्मयः ॥ वक्गवृक्षः । ইতি सप-त्रजावनी ॥

वज्ञाननी की कामी। यथा। कामी वज्ञाननी वाज्ञाननी मिवनुत्री ह ना । ইতি ছেমहन्मुः॥

वदापन॰ क्ली द्वाजापन॰। ইতি শক্ত চন্দ্ৰিকা॥

वज्ञान्त्रिः । १ चन्नात्र जनः। ই जि जाक्रानिर्घण्टः॥ १ जुष्ठनामा ह ॥

वत्रामुः भू कत्रमर्पः। कत्राम हेखि वा भावः। हेखि तत्रभाना ॥

वज्ञाजक जी श्रीज रू। ইভি হেন-हन्मुः॥

वद्राद्धाः : भू• इख्राद्धाः॥ व्यः वद्याः। इजि वियः॥

বরারোহ। স্ত্রী উত্তমান্ত্রী। ইত্য মর:॥ কটি:। ইতি হেমচন্দু:॥

वदानिका जी पूर्ग। ইতি विकासः (भवः॥

वज्ञानिः शृ ङ्ववङ् । (मार्छ)-काशफ् इंडि ভाषा । उपश्यार्थः । ङ्वणार्धेकः २ । इंडिअबः ॥ वज्ञा-निः ० ङ्वणार्धेकः ८ । ङ्वणार्थि-का ৫ । इंडि उक्षोकाषाः जन्न छः ॥ ङ्वशक्षाकः ७। इंडि णद्यन्नावनी

॥ तत्रामि १। क्लीविनिकि करिषदः॥ वत्रामनः क्ली खडुलूजः। ইकि मसः भावा॥ উত্তমাসनकः॥

বরাসন: পু॰ বিজঃ॥ ধারপাল:। ইভি বিখঃ॥

বরাসি: পূ•িসূলশাটক:।। খন্তব্রঃ । ইতিধরণি:।।

वद्राभी खी ज्ञानवामः। इंडि भदः-नावा॥

वतारः भू भम्विष्मयः। वता इंडि ভाষা। उद्भिर्गायः। मूकद्रः ২ ঘৃষ্টি: ৩ কোল: ৪ পোত্রী ৫ কিরি: ৬ কিটি: ৭ দাষ্ট্রী ৮ ঘোণী ৯ স্তন্ধ্রামা ১০ কোড: ১১ ভুদার: २२। ইত্যমর: II কিরঃ ১০ মু**खारः** ১৪ মূখলাঙ্গল: ১৫। ইতি জটাবরঃ ॥ ज्लनामिकः १७ मजायूषः ११ वकवकुः ১৮ मीर्घछतः ১৯ व्याथ-निकः २० ज्बिट २७ वङ्ग्ः २२ । इंडि नद्रवादनी ॥ **च**न्रभा•नः স্য গুণা: । বৃষ্যবু॰। বাতমুবু॰ । वलवर्षनद्भा ३७ ब्राबवल्लाः॥ বন্ধমূত্রত্ব। বিক্রকণত্বক । ইতি **छ**रेबर शाठास्त्र ।। जन्रद **म्कद्र**-শব্দে দুপ্টব্যণ ॥ 🗱 ॥ তথ্যাণসং বি-, क्षत् न (पर्वः । यथा । नाजकाः रैन(वर्गार्थ ज्लाभूत्रका महियी

भीकः वर्जात्यः। अक्षन्य मर्मा वः রাহ মাণসানি চেতি। ইত্যাহিক তত্ত্ব বিকুস্ত ।। #।। বরাছমা ।-स॰ जुद्धा विक्श्र्बाि निष्या यथा 1 वादांश উवाह । जुद्धः। वादाश्या• সম্ভ যো ৰৈ মামুপদর্পতি। পতন॰ उन्। वक्षामि यथा जवि जुनस्ति ॥ বারাছো দশবর্ষাণি ভ্রা তু চর-তে वरन। वशासा जुद्दा महाजारग সমা: সপ্ত চ সপ্ত চি:।। ক্মি ভূ ত্বা অথোটো ম্বিকো ভ্রা বর্ষাণাঞ্ **ठजूफ्ण ।** 'अ:कानविःण दशानि गाजू श्वानक बायरछ। मलक कार्डवर्गान কাগতে ভবনে বহু ॥ ব্যায় জি:শ-্তি ব্যাণি জায়তে পিশিভাশনঃ। এব সংসারিতাংগড়া বারাহামিয়-ভক্ষক:।। জাযতে বিপুলে সিংজ अल्ल ভाগবত उथा। ज्वीत्वनव-हः भुद्धा नर्बनम्पूर्वनकृषः ॥ नित्रः সা চাঞ্জলি ক্রা বাক্পেদ মুবাচ হ। এতমে পরম ওহা তব ভক্ত मृथावरः ॥ वादारुभाःमञ्कास े रयन मूठ्राञ्च किल्विषा । वात्रार উবাচ। ভরন্তি মানবা যেন ভির্য্যক্ अभाव भागवार। शामस्य दिनः नक् क्वाहाद्वव मध दे।। भानीयक

ততো ভ্ৰুণ তিঙেৎ সপ্তদিন ওড:। অক্ষার লবণং সপ্ত সজ্ভি**শ্চ ওথা**: बगः॥ जिल ज्ञा पिनान् मध मध পাষাণভক্ষক:। পথো ভূজ্বা দিন• मश्र कान्नरयहिष्क भाजानः ॥ भान्न माड भवाः क्षा व्यक्ताविवर्कि-जाः । पिनात्मात्कानमकामहाद्वउ ক্তনিক্য: ৷৷ পুমুক্ত: সর্বপাপে-ভ্যঃ সসংজ্ঞে। বিগতল্বঃ। কৃত্বা জু मम कर्याणि मम लाकाय गहुछि॥ ইতিবারাহ্মাণস ভক্ষণাপরাধ পুা-यन्ठितः। ইতি বারাহ প্রাণ ॥ #॥ वन।वदारु भा•म• मुाम्बामी विश्वि७• া যথা অশুভীত্যনুক্তৌ হান্নীত: 1 महाद्वग्रवामिन क वद्राहाः खर्षि । এবঞ্চ বিবদন্তে অণাম্য শ্করাপ শ্চেতি বশিংগ্রাক্ত খেতাখেত্রয়া ৰ্যবস্থিত । কল্পতৰম্ব । শাুছে নিযু-ক্তানি যুক্তভাষতি। বিষ্পাসকস্য जर्वण निरवधः। यथा वाद्रारक् जन वद्याकाः। ज्ङ्गा वद्राष्ट्रमाः मञ्ज यञ्च মামুপসর্গতি ৷ বরাছেদশবর্ষাণি खूदा देव **हद्राउ वरन** । इंड्राकान-र्माउद्धुः॥ 🗱 ॥ याद्धवस्तः। इति-ब्राह्मन देव मान भाषामन ह वदा সর । মাৎস্য হারিণকৌরভু শাস नि हाग भावं रिजः ॥ अगं स्तोत्रव

ৰারাহ শলৈ র্যাণ্টের র্যথাক্রমণ। মা-স্বৃদ্ধ্যভিতৃপ্যম্ভি দর্ভেনেহ পি-**छान्न्याः ॥ इंडि भाष्त्रखु॰ ॥ #॥** ্বিফোরবতারবিশেষঃ। যথা। স্বায-ন্তুবউবাচ। মত্ত্ৰ পূজা: স্থাস্যন্তি প্ थिवो जावर भूवयार्गत्व मग्ना जम्मा উদ্ধরণে যত্ন• জব্দ। ইতি শুদ্ধা বুন্ধা क्गवन् भाजवान्। शायक खना मामाविवद्रार व्यक्षिभुमार्गा वद्रा-হপোতো নিরগাৎ। সচ আকা-শস্: সন্ ক্ৰণমাত্ৰেণ পৰ্বতোপমো ৰভূব। ত॰ বিষ্ণু॰ মন্ত্ৰা বুন্ধা ভুষ্টাব। त्रष्ठ (उन स्रुड: शुल्यानंवज्ञलमस्यु अविमा प्रशाश्रा भृथी मूख्छ निक খারণশক্ত্যা সংস্থাপ্য অন্তর্হিতো রভ্ব। ততঃ পৃথিব্যাণরাজা স্বাযম্ভব মনু ব্লাসীৎ। ইতি খ্রীভাগবতমত া। 🛊 ॥ ভদবভারকর্ত হিরণ্যাক্ষ বংখা যথা। ব্রাহপর্তা নান यः পুরা হরিনির্মিত:। স এব ভূতো ভগবানাজগানাসুরাণ্ডিক ।৷ তত্ত-क्तम भुजीकाण मगृङ्गाह्य मुखमः। महम्बद्धः उड फकः मूर्य्य विक् मन-भु छ ।। (या दिव्यक्षे: मूरतन्मुनना मन-্ৰে। ভোগিনা মপি। বিষ্ণুর্থো যোগ-निमुषाः (या यङ्का यञ्जकमानाः ॥ वित्य यमा भुजादिन मवनशा दिवी-

কস:। আজ্যুণ নহৰিভি দৰ নশুৰ-ष्ठि मुधाञ्छ ।। उट्या रेम्ड पुरक्रे भुत्रानः भाइ मूखमः। वरकुन मध्यो (वरंगन विकिशन रेम्ड)कीविज ॥ **७७: मःत्र**क्तनगता हित्रगुराक्का मः হাসুর: ৷ কোযন্ত্রিত বদন্ রোষা-बादाये मुरेदक्छ।। वादाङ्क्शिक (दि । क्रिक भूकवितृ र । भन्न ठव्कान् । ज्वानाम दिनानन ।। ররাজ শহু চক্রভ্যাে ভাভ্যা भमूबम्हनः । भ्र्याहन्तुनस्मा र्मारशु পৌর্ণনাস্যা মিবাদ্বুদ: ॥ ততাে হি-; व्रणाक्रमुथाण मर्बे मनापुरन् रि: छात्रशाः मूर्यमः। निरुखकामाः **म** रुना বরাহ॰ গৃ**হীত শ**ক্তা বল र्ণ-मर्भाः ॥ कि वंदामाःनािक्यस्यन भक्ति रिन्छ। मूरित मीनवश्वकरिवणः । नामो চहालामूबद्नस्था देव (मरिषः **সু**वृष्ठेऽ। ইব मन्द्र । द्विः॥देवज् खटा **ৎসৌ নৃবরাছ মাছবে নিপাত্যানা**; न क्या ज्वाडी । मकि । यथा विषु **७ गाणु इरक्ष भु**वर्षमाताशि गिति• मूत्वदः ॥ व इन्याता गर्याभुः (भयः (भावाह रिष्ठ) न्वतारम् र्विः। পুজাপতে:সেত্ মিম নিহত্য বুজে-ह क बिख यथा मूद्रन्मुः ॥ वन मना-नाम् भीत ब्राज्यः विनामिष्याः

भार भार भारती। दिन्छा । सुरा ना-क माडा हि (हवान इडिश्व की यान् भू-ন্যোপপ্রান্।। সংস্থাপ্রিব্যামি ন अभारा १व रिएड)म् रर्भः कृत् य সমীপে II এব• ব্ৰুবন্তি বাক্যন্ত বি-কো বৃক্ষস্পাত্য । স বাহুশত-भूरामा अर्थे प्रदेश द्राप्ता पानवा-স্চাপি সমরে ময তারপুরোগমা:। উদ্যতাযুধ নিক্সিংশাঃ সর্বে ড॰ সমূ भामुवन् ॥ म जाउ।मानाजिवतैन रिर्म रेजाः मनायूर्याम् रेजः। न हहान বরাহ্য মৈনাক ইব পর্বত: ৷৷ কো-বস-রক্তন্যনঃ শত্র চক্রধরে। ছরি:। वार्षं उम (वर्गन वार्भ वन् मर्वर्जा रिणः॥ **उ**॰ जगनामृद्यन्त्राः वर्ष भानः न छला । ययगः भर गक्तर्वि स्ट हुव् बंध्रम्पनः ॥ नीलाधिनमृणः रवादः क्रमंनीय जुक्मंनः । जूदर्ग (द्रपु भर्यप्रसः वज्जनानः जयावरः॥ (मरा **২স্থি ম**জ্জা কৃথিকৈ: সিক্ত•দানব স-ন্তবি:।। অদ্বিতীয• পুহারৈস্ত ফুর-भर्गप्त मखन । मुग्नम माना विज-ত কামগ কাম্ৰপিণ।। চক্ৰমুদ্য-ছিঃ সমরে বারাহঃ যেন তেজসা। চিছেদ বাস্থূ ক্ষক্রেণ স্থিরণ্যাক্ষস্য क ख्या ॥ म हिम्याल विभिन्ना न भाकना ज मानवः । कवक्षवर शिवः

সংখ্য বিশাখ ইব পাদপ:॥ ভর্তঃ ছিত্রৈ বে শির স্তম্য ভূমাবপাত্ত-য<। হিরন্মণ কন্মচিত্র মেরো: শৃক্ষবোভন•।। হিরণ্যাকে হতে দৈত্যা যে শেষ। শৈচব দানবাঃ। সর্বে তস্য ভযাবুস্তা জন্ম রার্ত্তা দিশো দ-🕶 ॥ इंडि वङ्गि भूदानः ॥ 🗱 ॥ व्यय বরাহাবতাপ্রকারণ সরভক্ষি ম-शास्त्रकर्ज्कउहत्रीत्रनाभः । रेख-लाका मिथल प्रशः यता काला-গ্নিনা তদা। অনন্তঃ পৃথিবীণ ত্যক্ত্বা বিষ্ণোরন্তিক মাগতঃ॥ তেন ভ্যক্তা जू भृषिवी ऋगमाञानरभाग**ा। ज**-তো বরাহৰপেণ নিম্মাণ পৃথিবীণ कला। भग्ना॰ अभूष्यात्राण् नाया ख८ সলিলোপরি।বরাহোপি ম্ব্য গর্বা লোকালোকাছ্যয• গিরি•॥ বারা-হ্যা সহ রেমে স পৃথিব্যা চাৰুৰূপ-যা।স তথা রমমাণস্ত সূচির° পর্ব-তোত্তমে ॥ নাবাপ তোষ লোকে শ: পোত্রী পরমকামুক:। পৃথিব্যাঃ পোত্রি ৰূপায়া রম্যন্ত্যা স্ততঃ সূতাঃ ॥ बर्या काउः विक्रामुधा (खयाः नाः भानि रेव मृणु। पूर्व खः क्गरका खादः भर्ववव महावलाः ॥ भ छिः भूरिनः পরিবৃত্তো বারাহোঁ ভার্য্যা স্থা। व्रन्नान खरा काय्डाम देनवाननः

ধ্বিনা। ইত ও চন্চ **নিশ্**ভি: ক্রীড-্ভি: পোত্রিভি স্তদা। জগন্তি তত্র ७ ग़ानि नरीः कन्न उक्ष खथा॥ उट्डा দেবগণাঃ সর্বে সহিতা দেবযোনি-ভিঃ শক্তেণ সহিতা মন্ত্ৰণ চক্তঃ সম্বক্জগ'জ্ঞ'।। ততো নিশ্চিত্য তে সর্বে শক্রাদ্যা মুনিভি: সহ । भारतगु॰ भारतग कण्म नीतायग सक॰ विजु ॥ ज मभामाम्। भाविन्स वामृत्रव बगट्मिंड । भूगम् म-र्बि जिनमा स्रश्रेव र्गक्उध्कः॥ रहवा উচুঃ। ৰম স্তে দেব দেবে**শ জ**গৎ কারণহারণ। কালধ্রুপিন্ ভূপবন্ পুধানপুক্ষাত্মক ৷৷ ইতি স্তুতো দেবদেবো ভূত ভাবনভাবন:। সে रिन्दू (मंदगरेन क्रांठ जान मर्जान (मध-निचनः ॥ औञ्चानुवाह । यन्थं मान গভা যূয় যদ্ধে। ভব মূপস্থিত । যত্ৰ ৰদ্বা মধা কাৰ্য্য তদেবা ভূৰ্ণ মুচ্যতা॰ া দেবাউচুঃ। শীর্য্যতে বসুধা নিত্যু ক্রীড্যা যক্ত পোত্রিণ:। লোকাশ্চ সর্বে সংক্ষরা নাপুবস্ত্রপশান্তিতা II ইতি তেষা• নিগদতা• শুদ্ধা বাক্য° कनार्भनः। উবাচ শক্ষর॰ দেব॰ বুক্ষা-শঞ্চ বিশেষতঃ ৷৷ যৎকৃতে দেবতাঃ সর্বা: পুরুষ্টে সকলা ইনা:। পুণপু-ৰন্তি মহদুংখা শীৰ্য্যতে সকলা জ

গৎ।। বারাহণ তদহণ রাষণ ত্যক্তু-भिद्दाभि मञ्जद्र। निरम्म मक्त• उर् ত্যক্ত ষেম্বয়া নহি শক্যতে ॥ ত্ব• ত্যাব্রথম্ব তৎকাশ যত্রাত্মা শঙ্করা-ধুনা। ত্বমাপ্যায়স্ব তেজোভি বুলিন্ স্মরহর মূহ:।। সাপ্যাযন্ত তদা দেবা: শহুরো হ্ন্তু পোত্রিণ । রজ-वनायाः मःमर्गाट विभागाः मात्र-ণাত্তথা।। কাব: পাপকরো ভূত স্ত॰ ভ্যক্তু• মুহ্মতে ধুনা । পুষশ্চিত্তৈ ৰূপেতৈ ৰ্য: প্ৰায়ণ্টিভ মহণ ভতঃ।। চরিষ্যামি ভদর্থ মে ভনুর্যন্থে**ন পা**-ড্যতা। পুজাপাল্যা মম সদা যা হি সীদতি বিভাশ: ।। মৎকৃতে পুভা হ' ভষাৎ ভ্যক্তিয় কায' পুলাকৃত্তে । শ্ৰীমাৰ্কণ্ডেষ উবাচ। ইত্যক্তৌ বা-मूर्पादन उपा ह तुक्त गहादी। त्या यथाक उट कार्य। भिक्ति भाविनत মূচতুং ।৷ বাস্দেবো ২পি তান্ সর্বা-न् विস्काऽ बिम्णाः उपा। वादा**रः** ভেদ্দা হতু'• ম্বয়• ধ্যানপরো ভ-वट्या भरिनः भरिन र्यमा (उक्र आर्त्र-ত্যেব নাধব:। তদা দেহন্ত বারাহণ সভুহীন ব্যজাযত ।। বুদ্ধাদ্যা স্থি-प्रभाः সর্বে মহাদেব মুমাপতি[•]। অনুজ্গুম স্তথা তেজ আধাতু সমর नामान ॥ ७७: मर्बि देवगरेनः सः

ৰ তেজে। বৃষধ্জে। আদংধ তেন বলবান সোভীব সমলায়ত ৷৷ ততঃ সরভক্পী স তৎক্ষণাদ্বিশো হভ **ব**ৎ। উদ্ধাধাে ভাবত *চাষ্টপাদ-युकः भूरे अववः ॥ दिवाकारगाकताः हायः माक्षनीक्षकविञ्जः । উक्ष् वद्राह्कावस वक्षरयाजन विस्वः॥ লক্ষান্ত বিস্তৃ হঃ পাশ্বে বন্ধমান স্তদা-ভবং। ভুমাগান্ত ভ্রে। দৃষ্টা কো-शाकावष्ठ मक्षत्रा ॥ त्रुवृत्तः कनका যোর আসেদৃ: ক্রোধ্মূর্हিতা:। উ हिक्किश् छ॰ हूगभर (भाववारें भेशावनाः ॥ ७७ स्र अनुशादान সরভ: কণ্ঠ মধ্যত:। ভিত্বা বপু বঁরাহ্স্য পাত্যামাস তব্জলে॥ ত পাত বিবাপুথম সুবৃত্ত কনক তথা। ধোরঞ্ কণ্ঠদেশেষ্ ভিত্বা ভিত্বা জঘান হ।। ত্যক্তপুণাস্ত তে সর্বে পেত্ স্তোয়ে মহার্ণবে। জলশন্ত বিভ্যানাঃ কালানলস महिंगः॥ পভিতেयु वदार्हिष् वृक्ता विकुरंद उथा। मृष्टेऽर्थः विषयानामुः পুনরেব সনাগতা:॥ ইতি কালি-কাপুরাণীযাষ্টাবিংশত্,নত্রিংশা-भागाए म इनि उः॥

नत्राष्टः পু॰ विकुः॥ सानः छनः॥ পর্বতভেদः॥ মুস্তা। ইতি নেদিনী ।। निभ्नातः ।। वाताशीकनः ।

हेि ताक्षित्रं ।। अक्षेष्टणदीभारण कृष्वीभिविष्णवः। यथा।
गक्तर्वावकनः भोष्मा वताशः ककः
वव ह। अभूषण करमकण नामा

ज्षातक उथा॥ हत्नु न्यू भण्याः भद्व

यवाक्षक गञ्छिमान् । जामाञ्रणः
कनातो ह जब दीभाष्णाक्षेजिः ॥

हेि णक्माणा॥

वज्ञाहकन्तः भू॰ वाज्ञाही। ইঙি ज्ञाबनियण्डः॥

বরাহ লভা জী বারাহীকৃ**ক: ।** ইতি শক্রয়াবলী।।

वज्ञारु शली न्यू भूर्यप्रतिभुष्ठ वृक्तः । उध्यप्रायः । भूयप्रावर्खः २ । इंडि हाज्ञावली ॥

वद्राह्काछ। छी क्षृत्रविश्वादः ।
इंडि भद्रभाना।। छ शर्यप्रायः ।
नक्षानः २ मगन्ना ० नक्षाद्रिका
८ वद्राह्नामा ६ वहद्रा ७ मृक्द्री १
डिक्तगिक्षका ৮ नमकाद्री २ गछकाना ।। नक्षानका २२ स्वक्षनिः
भाना ॥ नक्षानका २२ स्वक्षनिः
कादिका २० क्षाक्षनिः २८ गछकाद्री २६ मगिह्ररा २५। ইडि गृष्टाखद्रः ॥ वाद्राही । हामाद्रान् इंडि
थ्राटा ইडि गृष्ट्ः । ইडामद्रः

টীকাৰা ভরত: ॥ ব্রাহনানা পু• বারাহীকন্দ: । ইতি শহমালা॥

বরাহিকা জ্রী কপিকছু:। ইতি রাজনির্ঘণ্ট:।।

वताशे जी जृत्रुष्ठा॥ भ्रवत्रकन्तः । ইতি রাজনিঘট:॥

বরিবসিত: ত্রি উপা**সিত:।ইত্য** নব:॥

বরিবদ্যা জ্ঞী শুশুষা।ইত্যমর:॥

বরিবস্যিতঃ ত্রি উপা**সিতঃ** ইত্যমরঃ॥

বন্ধিশী স্ত্রী বডিশী। ইতি শব-রত্নবেলী।।

वृतिष॰ ज्ञी व प्रतः। ই जि म प-त्रज्ञावली ।

বরিষা: জীভূম বর্ষা:। ইতিভরত দ্বিক্পকোষ:॥

दित्रवाशियः भृ চाउक्शकी। इंडिमफ्द्रज्ञावली॥

বরিষ্ঠ• ক্লী ভাসু•। ইত্যমর:॥
নরিচ•। ইতি মেদিনী॥

বরিষ্ঠ: ত্রি অ্যমন্যোরতিশ্যেন-উক্:। ইতি ব্যাকরণ ।। বর্তম: । উক্তম:। ইতি মেদিনী ।। বন্ধ: । ইত্যজম:।।

বরিষ্ঠ: পু: তিভিরিপক্ষী।ইভি

মেদিনী।। নারক্বৃক্ষ:। ইঙি রাজ-নিঘ্ট:।। জিল্লা ক্ষা ক্ষাজিক ক্ষেত্র । ইজি

वित्रिष्ठा खी चारिठाङ्का। ইङि त्राजनिर्यण्टः॥

বরী জ্রী শতাবরী। ইত্যনর: ।।
সুর্য্যপদ্ধী। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষ: ।।
বরীযান ত্রি শুেষ্ঠ: ।। বরিষ্ঠ: ।।
অতিযুবা। ইতি মেদিনী।।

वत्रीयान् श्रृ विश्व म्वाहिमछ विः भजिर्या नाष्ठर्ग जो हो हिम खारा गः । उज् का उक्त । हा जा हिमालुः मुख्दाः मूर्यभः म्यूक्यंक खी मधुद्र स्र जावः । नद्रा वलीयान् यनवान् कनार्छ। रयागा वद्रीयान् यहि क स्र काला।। इजि का ही भूनी भः॥

वतीवर्षः शुः वनीवर्षः। ইত্যমর-होकायाः त्रभानाथः॥

वित्रोयुः भु॰ कामः। ইতি विकाखः भाषः॥

বক্ট: পু॰ সেইজাভিবিশেষ: ।
যথা। পুলিন্দা নাহলা নিষ্ট্যা:
শবরা বক্টা ভটা:। মালা ভিল্লা:
কিরাভাশ্চ সর্বেপি সেইজাভয: ॥
ইতি হেমচন্দু:।।

বক্ত: পু॰ অন্তঃজ্ঞজাতিবিশেষ:।
যথা। রজক শ্চর্মকারশ্চ নটো বক্ত এব চ। কৈবর্ত্তনেদ ভিল্লাশ্চ

मेखिए हाडाडा: मृडा: ॥ वदाः ।। वदाः ।।

ब्रक्नः भुः स्विकावित्भवः। म ह কশ্যপস্য অদিভিনা শ্নিপত্ন্যাণ চা-**ভ:। ভস**্য চর্ষণ্যা পর্যা ভৃগু বাল্মীকী পুণ্ৰৌ কাভৌ । ইতি শ্রীভাগবতমত ।। স চ জলাধি-পতি: পশ্চিম্দিক্পাল্ট ৷ তৎ भर्यायः। भूरहजाः २ भागी ७ যাদসাংপতি:৪ জগ্নতি:৫। ইত্য-মর:।। যাদ:পতি: ৬ অপা পতি: ৭। ইতি ভটীকাষা ভরত: ॥ জঘুক: ৮ নেঘনাদ: ১ জলেখর: ১০ भक्रद्धयः ১১ रेन्छ (रनवः ১२ कीवना-वात्रः २० नन्द्रभाषः २८। ইতি শद-ब्रज्ञावनी ॥ वादिरानामः २० ऋखनी १५ द्रामः ११ मुथामः १४ । इंडि क्रोध्वः ॥ ॥ जनामार्गा नर्गा पो अग्र भ्**डाविधि यंथा। इय**न শীর্ষপঞ্চরাত্রে। অথ বাপ্যামতঃ अर्या भूत्र ब्रद्धानि निर्मितः। वि ভুৱা হ সপৃষ্ঠস্থ দক্ষিণেনাভ্য-भूमः ॥ वायन नागभाभन्त भातः যম্ভ সুভোগিন ৷ সলিল বাম মা-ভোগণ কারযেন্দ্রাদসাংগতিং ॥ वार्य जु का द्रायमृ द्धिः म किए। शृहदः শভ•। नारिंग नंशीख र्याप्ताजिः স মৃদু: পরিবারিত।। কৃত্রৈবণ বৰুণণ (मव- भुजिक्षाविधिनाई(यट । भुक्कतः **७८ भूधः। ७८७। ४**५१नः भूमन्नदहनः भोगाः हिमञ्चलन्तु मन्नि छः । ज-ৰ্বাভরণ সংযুক্ত সৰ্বলক্ষণ লক্ষিত ।। किंद्रोंगः भी टेलः (भोरेन)ः श्रीन-যন্ত মবস্থিত। লাবণ্যামৃতধারাতি ন্তর্পযন্ত মিব পুরুষ:।। রাজহণস সং माक्र भाषावाशुकतः मुख् । शुक्र-द्वारिका में रेगः मर्रहाः ममछाट भद्रि-বারিত ৷৷ গৌর্য্য কান্ত্যা চানুগত : निश्चः भित्रवादिष्ठः। नारेग र्याः দোগণৈ যুক্তি• বুক্ষাণ মিব চা**পর**ণ। সৃষ্টি সংহারকর্তার নারাযণ মিবা-পর । ইতি ধ্যাত্মা প্রযেৎ ॥ বন্ণ মক্রোদ্ধারস্ত তত্ত্বৈব। হু স্টাবি শান্ত বীজেন চতুদ্দশন্বরেণ চ। আর্জেন্দু-विमृश्किन शुगदा हो शिख न ह।

তেনওঁবৌঁইতি মজঃ॥ পুতিমাবা॰ ছিতি॰ কৃত্বা পুণবেন নিবোধবেৎ। न्जरगत्रक न् झारेन्द्रः माधिवाः नामा নু দুযা।। স্থিতি॰ পুতিষ্ঠা॰।।নিবোধ-বেৎ অন্তৰ্গতাঙ্গুণ্ঠ মুঞ্চিভ্যাণ নিৰো-थ मु मुा॰ मर्भारार ।। नमकात्रमञ्जन । वरूरा। ध्वरणा जिक्षुः भूकरमा निम्न-गाविभः। भागश्खा भश्वायाञ् छ-থৈ নিত্যু নমে। নমঃ॥ ইতি জলা-गर्याट्मर्गं उद्धुः ॥ श्री वृष्टेऽर्थः व्यम् क्रभनीयमञ्जा यथा । शुक्रवाय खंटेक र्भ रेवः श्लावयस्य वजुक्तवाः । विमूर মুক্তি তসলবং তোযাত্মান নমাম্য-रु ।। यम् । (काम्यू कीम्राजा नहाः भर्बाक् मित्रु । क्राक्को मभू पा क-ত্বার ঔষে ভোষাত্মনে নম:।। ইভি थ्राज्ञा मानरेन क्ष्महारेन ईक्ष मा-वाया म्लामञाः बालारः। भुकालांख श्री स्ट्रेन्हान्ता वकाता (एवडा वं जावपार्श्वे मिलवारा मृत्रेश्वरं छ-গে বিনিযোগ:। মৃত্তন্ত ভৰুমূখাৎ (छन:। **म यथा। ७** वृष्टितिकानावाः ষ্টব্রথা মক্তাস্পূশতীংগছবশাপণ্নি ्र मृद्या निव॰ गहु छ। তবে। वृश्चिमावङ् । ইতি মন্ত্রস্য সহসুদ্ধপানন্তর• সূত্ ষ্টিমতী বসুমতী ভবতি। অত্র সন্দে-रहा न कार्याः ॥ श्रा मञ्जाखद्रः । कूईः

লন্ধীণ তথা নাযাণ তেন ই জী ছীণ ইতি ব্যক্ষরমন্ত্রণ নাভিমা**বজল**-নধ্যে পুবিশ্য যদি অপতি তদা অনাবৃষ্টি হরতি মহাবৃষ্টি র্ভবতি। অপ্টসহসূদ্রপঃ সংখ্যা চতুর্গুণা তে: ৰ দ্বাত্ৰি শৎ সহসূত্ৰপ:। দিৰ-ত্রবানম্ভর॰ চতুদিনে **ভপসমা**প্তি: ॥ নাভিমাত্র জিলা জপেম্বেণ্ शुममधीः । वमुमरुम् कारमञ्जः ত্রিদিন• ব্যাপ্য হত্নত:।। অথবা। ষট্ সহসু জপেলিত্য তদা বৃদ্ধি র্ভবেৎ थुनः। इंजि यहेकच्चं मीलिका ॥ 🛊 ॥ পুস্তকান্তরে ব• ইভি একাক্ষর মস্ত্রো-পি জপ্যত্ত্বেন লিখিত: ॥ 🗱 ॥ মহা-भाउकिता मख्यन गृशेद्वा **द्राद्धाः** वक्गाव भुजिभान्त्य । यथा। नामः দীত নৃপঃ সাধু মহাপাতকিনো ধ-**ন•া আ**দদানন্ত তল্লোভাত্তেন (দা-বেণ লিপ্যভে ৷৷ অপ্সু পুবেশ্য ভং म् अ वक्षायाम्याम्याद्य । मुख ব্ত্তোপপমে বা ব্ৰাহ্মণে প্ৰ**তিপাদ**ি যেত।। ইংশা দণ্ডস্য বৰুণো রাজ্ঞা॰ দশুধরে। হি সঃ। ইশঃ সর্বস্য জগ-তো ব্ৰাহ্মণো বেদপারগ: ॥ ইভি मानत्व २ जवायः ॥ 🕸 ॥ खनाम-थ्राउव्कः । उर्भर्यायः । वज्रनः ২সেতু: ৩ তিব্ৰুশাক: ৪ সমায়ক: ৫।

ই ভামর:।। অশ্যরীয়: ৬ সেতু চঃ প বরাণ: ৮ শিখিমণ্ডন: ১। ইতি **ः मद्भव**ावली ॥ १४ उत्कः ३० १४-ভেজ্য: ১১ সাধুবৃক্ষ: ১২ তমালঃ ১৩ মাক্তাপহ: ১৪। অস্য গুণাঃ । কটুন্ত্রণ। উষ্ণন্ত্রণ। রক্তদোৰ শীত वा उर्व दुः। त्रिक दुः। मीभनदुः। বিদুধিরোগজিভুঞ্চ। ইতি রাজ নির্ঘণ্টঃ।। অপিচ। বরুণঃ পিত্র ৰো ভেণী শ্লেম ক্ছুদ্ম মাৰ-ভান্। নিহন্তি ওলা বাতাসু ক্রিনী॰ < क्लांका ग्रिकी श्रमः ॥ कवार्या मञ् র স্তিক্ত: কটুকো কক্ষকো লঘু:। ইতি ভাবপুকাশঃ॥ অন্যচ। বৰু-ণো হনিল শ্লঘো ভেদী চোকো-रूगातीरुतः। भूझः वक्गकः गुाहि পিন্দন্ আসবাভজিৎ।। ইতি রা জনস্পতঃ।। **ঋ॥ জল•। ইতি মে**-্দিনী।। সুৰ্য্য:। ইতি বিশ্ব:॥ ৰফ্ণাত্মজা জ্রী মদ্য । ইত্যমর:॥ ৰ নানী জ্ৰী বৰণপত্নী। ইতি क्रिवाश्वः ॥

বকর ক্রী উত্তরীয়বন্ত্রণ। বৃধাতো কর পুত্যুয়েন নিয়ন। ইতি সি-জান্তকৌমুদ্যানুণাদিবৃত্তিঃ।। ক্রক: পুণু সংভক:। ইতি সং-ক্রিপ্তসারোণাদিবৃত্তি:।। বৰূপ ক্লী তনুত্ৰাণ । ইভি হেমচন্দু: ।। চৰ্ম ।। ইভি মেদিনী ।।
তত্ৰ প্ৰগী থবকাৱাদৌ গণিতো

হুয় শক্ষ: ।।

यक्षः भू भद्रभहत्रगा जिवा उ त्रकार्थः त्रथमा मन्ना ह्या प्रविद्या काषि पृदाः छट्। छट्भार्या गः । त्रथछिः २। ইতা गत्र जत्रा ।। त्रथमः वृद्धिः ०। ইতি क्रि श्वः ॥ वक्षिनो ज्ञो स्मना। ইতা गतः॥ विद्या क्षे ज्ञा क्ष्याः। ইতি त्राजः विद्या ।।

বরেণ্য: ত্রি পুধান:। ইত্যমর:॥ বরেন্দ্রী জ্রী গৌডদেশ:। ইতি জিকাগুণোব:॥

বরেশর: পু॰ শিব:। ইতি শদ্-রত্নাবলী।।

व्यारि क्री भक्षकभूषः। इंडि

বরোল: পু জী বরট: ৷ ইঙি ক্রিকাগুলেখ: ৷৷

বর্কর: পূ॰ যুবপশু:। ইত্যমর:॥
নেষশাবক:। ইতি ভটীকাষা
ভরত:॥ পরিহাস:॥ ছাগ:।
ইতিমেদিনী॥

वर्कत्राष्टेः भू कष्टाक्षः॥ उक्गारि-जुरत्राष्टिः ॥ नात्री भरवाष्ट्राः

व्य চান্তদত্তনথকতঃ।ইতিমেদিনী। ्दर्भः 🛫 बजाञीयमग्रः। ममान ধ্যিতি: পাণিভিরপাণিভিকপল क्ति ५ वृन्तः। यथा कवगः। अब कप थद्या दिक जीयद्वि श्रानताः ম্যু নৃত্তি। ইত্যুমর ভরতৌ ॥গস্থপ-ति:हरः। यथा। मर्गा वर्ग भतिहः দোদ্বাভাষ্যাযাক্ষ সংশ্ৰহা: উদ্বাস: পরিবর্ত্ত পটল: কাগু মজিযা।।। স্থান পুকরণ পরাহিকঞ্গুস্ক यः॥ ইতি তি का अः नयः॥ नमानाः ক্ষন্ত্র স্রণাতৎ পর্য্যায়ঃ। কৃতিঃ ২। যথা। সমদ্বিঘাত: কৃতি ৰুচ্যতে হুথ স্থাপ্যোন্ত্যবর্গো ছিগু:শন নিমু: । ব্যোপরিষ্টান্ত তথাপরেস্কা স্ত্যু-कुान्तर म्थार्यः भूनक द्रामिः॥ থণ্ডর্যস্যাভিহতি দিনিয়ী তৎ খণ্ডবগৈক্যযুতা কৃতি বা ৷ ইটো-नयू गु। नि वशः कृ जिः ना पिष्ठे ना वर्लान ममन्दिल। वा ॥ উদाহর १०। সথে নবানাঞ্চ তুর্দশানা বৃহি বিহীনস্য শতব্যস্য। পঞ্চোত্তর-স্যাপ্যযুত্তস্য বলং জানাসি চেদ্বর্গ विधाननार्गः॥ इंजि नीनावजी॥ বর্গোত্তমঃ পূণ চরানা অর্থাৎ মেষ কর্কট তুলা মকর রাশীনা॰ मुथाना २ नः । हिन्नागः अर्थाए

ঘূষ সিংহ বৃশ্চিক সম্ভবাশীনাং পঞ্মো १ শ:। দ্যাত্মকানা অ-थां भिथ्न कन्या धन् मीन द्राणीन नाः नद्या १ • मा । यथा। हद्रानाः পূথ্যে চাংশ স্থিরাণা পঞ্মে তথা। নবমে দ্ব্যাত্মকানাঞ্চ বর্গো-ত্তম ইতি ষ্ত:।। অপিচ। রাশী-ना च कीयनवा भाः। यथा। इन বা শস্ত রাশীনা বর্গোত্তন ইতি मृड:। ইडि জ্যোভিस्कु॰।। বৰ্চ ড দীণ্ডৌ। ইতি কবিকল্পজনঃ।। <u>ए</u> वर्हाउ। ইতি कविकद्मक्यः॥ रहः क्री क्रभ ॥ विश्वा । (उन्नः । ইতি মেদিনী।। वहंकः भुं क्री विश्व। इंडामद्रः॥ वह बी भू हमुः। वथा। রোহিণ্য अ अवहा वह बी यन हन्तुमाः । ইতি বিছি পুরাণ ॥ वहा भू॰ हन्मुभूथः। इंडि सिमिनी ॥ व्यनाह । द्वाहिनामञ्चव वर्षः व-इंबी (यन हन्मुभाः। इंड्राप्ट्रविइ-न्द्राण नर्गान् शेर्खान नर्शापर: **छ्रागनाभाष्रायः ॥** रक्कन की हि॰मा।। जानः। ইडि (मिनि ॥ मात्र १ । इंडि (इमहस्पुः विक्तिं : वि ७।कः। वृष्ववार्णाः क

भुजार्यन निष्क्रमः। यथा। **अ**वज्जाः

७क्विष्ठः नात्रायः विभागान्वि उः । **গুরো রপি নভো**ক্তব্য ম**ন্ন• স**ৎ-কার বজ্জি ত ॥ ইতি কৌর্যে উ-পরিভাগে ১৬ অধ্যাব: ॥ বৰ্জনীয়ণ ত্রি বজ্জনিয়োগ্যণাত্যক্ত वुः। वर्जनीयामः यथा। ब्राकामः नः র্কামঞ্ তক্ষে ২ন ঞ্চকারিণ:। গণান্ন• গণিকান্নঞ্ ষণ্ডান্ত্রেক্ব ব ব্জবৈশ্য চক্রোপদীবিরজক তক্ষ-त्र वृक्षिनाष्ठथा। गाञ्चई लाङ्कात्रा म म् ज्वाम विवर्द्धाय ।। अनान চিত্রকর্মান্ন বাদ্ধবে: পভিত্স্য চ াপৌনভবহাত্রি কয়ো রভিশন্তস্য रिहव हि ॥ मुदर्ग हात्र रेम ल्य व्याधि ভদ্যাভুরস্য চ। চিকিৎসক্ষ্য চৈ-বান্ন পুশ্চল্যা দাণ্ডিকস্য চাান্তে-ন নাস্তিক্ষো রন্ন দেবভানিনকেস্য চ।সোমবিক্রবিনশ্চায় খলাকস্য विष्मवजः॥ ভार्याकि उम्र देवी-म यन। हाभभा कि ग्रह । उदम् क्षेत्रा कर्रयात्रा अरेथावाहिक्टाजा-জিন: 11 অপাড়ায়ঞ্চ সংযার শ-ञ्चाकीवम्य हैवर्ग हि। क्लीवम्यान्त्राः সিন শ্চাম মন্তোর ত্তম্য চৈব হি॥ ভীতস্য ক্দিডস্যান মবজুষ্ট প-विकिउ। वृक्षियः भाभक्तः भा काषः मृजकम् ।। वृथाभाकमः रिवामः भावामः अनुत्रम् ह। खः शुकानास नात्रीभाः कृष्णम् उद्दर्भः व्यापः विकायन स्वापः विकायन स्वापः विकायन स्वापः विकायन स्वापः विकायन स्वापः विकायन स्वापः विकायन विवायन विवायन

वर्ड्याः वि वर्ड्यभीयः। यथा। जङःश्रवः भृतृष्ठ दः वर्ड्यावर्ड्यः श्रु जिकियाः। (ভाक्य ममः श्रु प्रिकः प्रदाः।
कः विद्रमः श्रिकः।। ज्याप्रदाः भागः
त्याध्म यव त्याद्रमविकियाः। भागः
भकः कह्त्या त्याथा त्यथा मदःत्या २० भहानः॥ ज्याया श्रिकः
मा वर्ड्या त्याथा ज्याया स्वर्धः।
निज् त्वानित्मयक भाष्क व्याप्ताः
काम्यया॥ त्याक्रिक व्योप्यथावकः
भाग्नमाः मः न त्याय ज्याकः। ইতি
भाकत्थ्यभूद्रात् महावाद्यायः॥

বর্ণ ত ক স্বতিবিস্তারশূলান্যঅ্জি े দীপনে। ইতি কবিকল্লফমঃ ।। বর্ণ- 🖟 🕆 যতি বর্ণাপয়তি কবি:স্টোতীত্যথ: । বর্ণযতি ভন্ত • বিস্তারযতীভ্যর্থ: । বর্ণযতি পুতিমা• শুক্রাদিবর্গা• করো-তীত্যর্থ:। বর্ণযতি উদ্মুদ্ধেদীপ্যতে বেত্যর্থ:। শুক্লাদ্যত্যক্তি দীপনে ইত্যপি পাঠ:। ইতি দুর্গদোস:॥ বর্ণ ক বর্ণে। ইতি কবিকল্পভদ:॥ क वर्ष्या अय॰ किन्नमनप्रज। বর্ণ: শুক্লাদিক্রিয়া। ইতি দুর্গাদাস: बर्गः क्री बस्हूमः। ইতি एक्निम्सुः॥ श् काजिः। ना ह वान्त्रनः कविरगरिवणाः मृमुकः। अवामू -शाहि यंथा। यहा जगवान् शुक्ष ৰূপেণ সৃষ্টি• কৃতবান্ তদাস্য শ-ब्रीद्राष्ट्र हजादा वर्ग उँ श्रमाः। মুথতো ব্ৰাহ্মণাঃ বাহুতঃ ক্ষবিযাঃ উক্তো বৈশ্যা: পাদতঃ শূদু৷ জা-जाः। এতেষा वर्गाना धर्माः ना-ল্পেষ্ নিকপিতাঃ সম্ভি। তত্র বুা-ऋग्थर्मा উচ্যন্তে। অथ्ययन यजन मानत्कि । कीविकाञ्चयः व्यथ्रा-পন যান্ধন পুতিগুহংশ্চতি।১। क्वियम् व्या धर्माः। व्यश्रयनः यजन नानक। भुजाना दक्कन कीविका। २। विनात्रमा बरगायमाः

। व्यथायनः यजनः नानकः । हल्लु জীবিকাঃ ৷ কৃষিঃ গোব্লহ্ণণ বাণি-बाः क्योप्रक्षि । १। मृमुमा जू বুকা ক্ষত্ৰ বিশাং শূশ্যা ধৰ্মো জীবি-का हा । बा का ना वा नुम ह कु है य वस्त्रा ভবঙি। বুক্ষচারী গৃহস্থ: বানপুস্থ: मन्यामी ह। उक उभनयनानस्त्रः नियम क्या था ख्याः मिष्यी-স্থিত্ব। সাস্থ্যেদাধ্যয়ন করোতি স ব্রন্ধচারীভাচান্তে। **১। সাঙ্গবেদা-**ধ্যবন সমাপ্য যো দারপরিগুহ্ণ कृद्वा स्थर्माहद्रा करता जि न गृह्ह উচ্যতে ৷ ২ ৷ পুঞ মৃৎপাদ্য যো বন वाम॰ कृषा अक्ष्ठेभाठा कनामि छ-ক্ষ্যিত্বা ঈশ্বরাক্সাধ্ন করোভি স্ব-वानभुष्ट फेठारछ। १। यः नर्बः मृ-**স্থাদিক ভাজ্জা মুণ্ডিভমুণ্ডো গৈরি-**करकोशीनाहारनः एखः कमखनुष् বিভূৎ ভিক্ষাবৃত্তি নিৰ্জনে তীৰ্থে বা ष्टिया (करन भीश्रवादाधन करना-তি স সন্যাসীত্যচ্যতে। ৪। ক্ষত্রিए বৈশ্যযোস্ত পূথমাশুনত্রয় বিহিত্ত । শু দুসৈ বে ব গৃহা শুমঃ। ঈশরা। वाधनन्त मर्द्धचाः वर्गानामामुमागाक नावाद्राता वर्गः। उत्राव्यः यञ्च विक्-পাসক: স বৈষ্ণৰ উচ্যতে । শিবো-भाजकः रेणवः। पूर्गादि मञ्जूशानकः

नाकः। मूर्यभाषामकः भोदः। ११-ণেশোপাসকো গণেগত্য উচ্যতে। इंडि भुवावार्यभुकाणः॥ स॥ व्य लिह । द्राकाताह । मर्गामिक्षातिः শৈচৰ পূজ্য: স্বায় ভূৰাদিভিঃ। বি-পুটেদ্য: স্বেন ধ্যোণ তদ্ধর্মণ ব্যাস বৈ **भृ**त्॥ यज्ञनः याजनः सानः दुक्तितनः। नु जिन्दः। अधाननः हादागनः यह কথাণি ছিজোভ্রে।। দান মধ্যযন॰ श्का थर्यः क्विय रिन्धारगः। म्ख खथा क्वियम्। कृषि रिवंगामा भामा- श्रृत्यव विका जीनाः मृत्। गाः थर्मनाधनः। काक्कमं खथाजीवः পাকगত्তा १भि धर्म ५:॥ ভিকাচ-র্য্যাথ শুশ্বা ভারা: স্বাধ্যায় এব চ 1 अञ्चलकर्वाणिकार्याक शर्मा इयः तुक्राहिनः ।। मर्खिना मान्यानास বৈধবিধ্যন্ত চতৰিবং। বুক্ষচাযুৰ্গ পঞ্জ-র্বাণো নৈষ্ঠিকো বুক্ষতৎপর: ॥ (या १थीज) विधिवस्त्रमान् गृहञ्चा-শুর মারুজেৎ। উপস্থাণকো জ্ঞে-या देविष्ठिका भद्रभाष्ट्रिकः ॥ व्ययुर्या €তিথিশুশ্বা যজ্জে। দান॰ সুরার্চন• ৷ গৃহস্ত্র্য সমাসেন ধর্মো ২য় ছি-क्रमख्याः ॥ উनामीनः माधकण गृ হঙ্গে। দ্বিবিধো ভবেৎ । হুটুয়ভরণে भूकः जाक्षका ९रमो गृशी जत्द ॥

ঋণানিত্রীণুগোক্ত্য ত্যক্তা ভার্য্য धनाहिकः। े बकाकी यस विচরেৎ উ-माजीनः न भोक्षिकः ॥ ज्यो नृत ফলাশিত্ব• স্বাধ্যায় ত্তপ এব চ। স-ষ্থি ভাগে। যথান্যায় প্রেমা **হ্য** বন-বাদিন: ॥ তপ স্তপ্যতি যো হরণ্যে यজেक्तिवाग् जुस्मि ह । साय्रारा চৈব নিরতো বনস্থ স্তাপ**সো মত:**॥ তপদা ক্ষিতো হত্যৰ্থ যন্ত ধ্যাৰ-भारता ভবে । भन्याभी ह भ विरक्तः যো বানপুস্থাশুনে স্থিতঃ ॥ যোগা-ভ্যাসরভো নিত্য মাক্কক্ষু জিতে न्मियः। ज्ञानाय दन्त जिष्णः (भू। চ্যতে পারমেণ্ডিক: 🗓 যস্ত্রাত্মরতি রেব স্যান্নিত্যভূপ্তো মহামূনি:। সন্ত্চ দনসশান: স যোগী ভিকু क्ठाउ॥ टिच्यः गुउद्ध स्मोनितः তপোখ্যানে বিশেষত:। সম্যক্চ জ্ঞান বৈরাগ্যণ ধর্মো হয়ণ ভিক্ষুকে: মত: ৷৷ জ্ঞানসন্যাসিন: কেচিৎ (दनमग्रामिता **१भाता धर्मम**ग्री-সিনঃ কেচিত্রিবিশ্ব: পারমেষ্টিকঃ॥ যোগী চ ত্রিবিধো জ্রেয়ে ভৌতি কে। নেকে এব চ। তৃতীযোভ্যালু-भी (পाङ्गा (यागमृर्खिमभाष्युः ॥ भूथरा ভाবना भूर्व (मारक दक्षर ভাবনা। তৃতীযে চান্তিনা প্রোক্তা

ভাবন। পারনেশ্বরী ।। ধর্মাৎ **স**॰- | ৈ জায়তে নোক্ষো অর্থাৎ কামোভি-জাযতে। পুরুত্তঞ্চ নির্ভঞ্জ দ্বিধা कथा रेवितकः ॥ ज्ञान भृत्रीः निवृज्ञः ज्यार भुवृद्धका शिद्धवक्र । क्रमा र সো ব্যাদান মলোভো ২ভ্যাদ এ ष्ठ ॥ आर्डाद कांनम्या **ह छी**थानुमः রণ তথা। সত্য সন্তোষ **আন্তিক্য** ख्या (जिल्लूयिनगुरः ॥ (प्रवजान्ड) ईन भूबा वुक्तिभाना वित्मवछः। ष्यश्चिमा जियवासि इ मरेशश्चा मन क्क डा।। এड आणु नका धर्मा का-ভূৰণ বুৰীমভে:। পুলোপতা বু হ্মণানা মৃত হান ক্রিয়াবভা ।। कान रेवजु क विशाला मन्यास-স্থপলাযিনা । বৈশ্যানা নাক্ত ष्टान यवर्ष मनुव दुना ॥ भाक्तर्रः শ্দুজাতীনা পরিচারে চ বর্ত্তা । ইভি গাৰুডে ६৯ অধ্যায়:।। 🕸 🛚 ।। ় অন্যান্ধ। ব্ৰাহ্মণস্য ত্ বক্ষ্যানি শৃণ্ कर्प वनुष्ठाद्र। यानि कर्यानि अहीं-ত মন ভক্তিপরাবণ: ॥ বট্কর্মনি-রতে। ভূত্বা অহঙ্কারবিবর্জিতঃ। লা ভালাভ পরিত্যজ্য ভিকাহারো किछि-नित्यः ॥ यस कप समायुकः পৈশুব্যন বিবর্জি হ:। শাস্তানুসারী মধ্যক্ষে। ন বৃদ্ধঃ শিশুচেতনঃ।। এত-

ছৈ ব্ৰাহ্মণ: কৰ্ম একচিত্তে। জিতেন্দ্ৰি-यः। ইष्टाभूडंक अक्ट म मामिड वमुक्त ॥ कवियानाः भुवक्तामि मम कर्यम् निष्ठ छ। यानि कचानि व्यर्वेडि क्विया गथ्यत्र श्विः॥ मानमूबक कर्नाखा यख्य **बननः** मुहिः। नम कर्ममू (नदावी अरुक्षात्र विवर्षि**ड:** ॥ ज्लु नाषी छनछ म নিত্যু ভাগবভপুৰ:। গুৰু বিদ্যান স্যাত্ম। গুহাকমেন্ত্র ভিন্দুতঃ ।। অ-चुाथानामि जनकः रिममुत्नान विव-ছিত:। এতৈ ও ণৈ: সমাযুক্তা ৰো-না বুজতি ক্ষ্তিয় ।। ভজতে ম্ম-र्षा निष्ठाः सम लाकाय गहुछि । दिनाग्रानास भ्वतक्यानि सम कर्ममू निष्ठ जा॰ ॥ यानि कर्यानि व्यक्ट वर्य ভক্তিপথে ছিড:। এতৈ গুণৈঃ ऋथार्या ना जाना जिवत कंठ: ॥ পতুকালাভিগানী চ শাস্তাত্মা মো-रुविज :। भूठि पंत्का निदारादा। नन कर्यात्र अना ॥ खक्म भूक्षति। নিত্যু যুক্তো ভক্ত্যানুবৎসলঃ। বৈ-भारञ्ज्वस मन्यूट्या रया नू कर्यानि-कातरय ।। जमार न मुनमानि স চ নে ন পুণশ্যতি। অথ শৃদুস্য वक्राभि कर्यानि मृनु माधवि ॥ यानि कर्मानि क्या ज् मूट्रा मशः

ব্যবস্থিত: i দম্পতী মম ভক্তৌ যৌ भभ कर्मा भवागानी ॥ ऐरछी जान-বতো ভক্তো মৎপরে ক্যানিখিতো । (मणकाली ह जानां इ इ जमा ভমসোজ্মিত: ।। নিরহঙ্কারযুক্তা-ज्या व्याजित्थरमा विनीजवान् । भुन দ্বানোতিপুতাত্মা লোভ মোছ विवर्জिङः ॥ नमस्रात्रशिर्या निङ्राः भग विद्याबादिक्त । भृ मुक्यांति म पिति य अव अ अभाग्रहार ॥ ভ্যক্তা ঋষিসহসাণি শ্দুনেব ভজা-भारु । इंडि वाद्वार्ट् विविकरणीए-शिखनाबाद्यायः ॥ 🗱 ॥ व्यश्वरक्ष । সুকেশি क्वाह । विश्रुाणाः हा-তুরাশুন্য বিস্তরামে তপোধনা:। আচক্ষধ্বন মে তৃণ্ডিঃ শৃণ্বতঃ পুতি-বিদ্যতে ॥ ঋষষ উচু:। কৃতোপনয नः मनाक् तुक्काहात्री खाद्री वमन्।। **७** वस्या १ म । य खक्ष कथानानः निनाबर। साद्यात्यार्था २ प्रशृक्ष्या স্থান ভিক্ষাটন তথা ॥ গুরৌ নিবে-प्र उहाप्र मनु**खार** न निडाणः। भयार्थ काम माकाना नग्रक् भु-जुज्ञभादन ॥ जिनाष्ट्र भरटेरेइव **ভৎ**পরীভূষ নিত্যশ:। অবাপ্য স कलान् (वहान् भाद्धः भाषा छात्रा मु थार ॥ उटा वद्राम्मना नन्। न्छ রবে দক্ষিণান্ততঃ। গার্হস্যাশুমকা-भञ्ज गार्व्याणुममाणुरयः ॥ वान-भुष्ठाम्यकामि ठजुर्थः (यहगा वरम**्** । তথৈৰ চ গুৱো ৰ্গেছে দ্বিজো নিণ্ডা भवाञ्चार ॥ खात्रा त्रजात उद-शू**धः उद्यप्ति निरंबराय** । **७दः** জয়তি মৃত্যু স দ্বিজঃ শালকটকট ॥ উপাবৃত্ত ভত ভঘাৎ গৃহস্থাপু-मकाम्या । अप्रमानअनाः कन्रा মুদ্বছেত নিশাচর ৷৷ স্বকর্মণা ধন वकु। পি कृप्रवाजिथीनशि । সম্যক্ म-श्रीभयक्तक्ता महाहात्रव्राठा हि-बः ॥ गार्ड्यु वृक्षहर्याक वाननुष्रः क्यामुनाः। क्वबियम्। नि गरिखा य व्याठात्रा विक्रम्य हि ॥ देवथानत्र-ত্বং গাৰ্হস্য মাশ্বদ্বিত্যং বিশ: 1 गाईस्। मूखमः (दकः मृमुमः) कनः দাচর।। স্থানি বর্ণাশুমোক্তানি ধ-ৰ্মাণীহ ৰ হাপবেং। বো হাপবতি তস্যাসৌ পরিষপ্যতি ভাস্কর:॥ ইতি বামনপুরাণে ১৪ অধ্যায়ঃ ৷৷ # ॥ भूनण्ड। 🕮 उद्य उवाह। वाञ्चन क्र जिय विणाः भूमागाकः यथा क्रमः । द्वामकागुनना जुड़ा मृगू पर्यान् मः र्यानिजान् ॥ मानः मम्प्राप्याजः (पर्वान् यरेकः स्वाध्यायज्यभद्रः। निर्ভापकी ভবেषिणः वर्गाहावि

भेतिगुर्•॥ वृख्यं• पाजयहानग्रान--न्यानय्याभरयञ्ज्या । अर्व्याटः भुजि-शुरुमान मृङ्गः श्रीम्यायाजा विकः ॥ भूज्ञार्थार भृद्धः भ्राह्मः न्रायाशार्किः ভো হর্থে। যস্য ভ্রমাৎ। ইভি ভট্টী का॥ नर्वाकिक्डं व्यामाहिखः कन्। हिष्युद्धः । रेमजी नमस्राद् यु वाक्रालम्याख्य वन ।। भावि द्राञ् **চ পারক্যে সমবৃদ্ধি** র্ভবেৎ ছিল: । শতাবভিগম: পল্যা: শস্তে চাস্য शार्थिक ॥ ५॥ मध्यानि मम्ब्रामिहाः তে। दिखन्तः कविरगानि हि । य-क्ष्य विविधि ये टेब्ब ब्रधीकी उ ह शा-र्थित ॥ मजाजीत्वा गर्शतका श्व-রা তস্য জীবিকা। তস্যাসি পুথমে কল্পে পৃথিবীপরিপালন ।। ধরিত্রী পালনেনৈর কৃতক্তের নরাধিপঃ। ভবম্ভি নৃপত্তে রংশা বতো যজ্ঞাদি কৰ্মণা॰॥ দৃষ্টানা॰ শাসনাদৃাজা শি-होना॰ পরিপালনাৎ। প্রাপ্রোজ্য-ভিনতাল্লোকান্ বর্ণ**স**ংস্কারকে। नृ-भः॥ २॥ भाष्मभाषाः वानिकाक क्विक मन्रावधत । दैवनागय जीव-ৰাণ বুদ্ধা দদৌ লোকপিতামহ: ॥ **७म्याभ्ययम् याङ्या मानश्याम्ह** मनाउ । निजा निमित्रिकारीना मन्षानक कर्याणा ॥ ०॥ विकालि-

সংশ্ৰুব কৰ্ম ভাদৰ্থ্য ভেন পোৰণ । क्य विक्य रें ब्रिशि श्रेनः कास-ख्य वा ॥ मानक मम्या मृत्मानि भाक्यरे छ यं अप्ति। भिजानिक्य সর্ব• বৈ শূদু: স্বী ত তেন চ।।।।।। ভৃত্যাদিভরণার্থায় সর্বেষঞ্চ প-রিগুহ:। ঋতুকালাভিগমন স্বদা-রেষু মহীপতে।। দ্যা সমস্তভ্তেষু ভিতিক্ষা নাভিনানিতা । সভ্যুণ भाष्ट्रमनायात्मा सङ्गल**े शिववासि**-তা।। মৈত্ৰ্যাপৃহা তথা তদ্দকার্প-ণ্যণ নরেশ্বর । অনসুশা চ সামান্য বণানা কখিতা গুণা:।। আশুমা-ণাঞ্চ সর্বেবা মেতে সামান্যলক্ষণাঃ ा खगा खथान क्यां क विनामी ना-মিমান্ শৃণ ।। ক্ষাত্র॰ কর্মা দ্বিজসে ۴ क रेक्माकेसं उथाभि । त्राजनाः मा ह रेवाना कि लोत् कर्म ने हेड-যোঃ৷ সামর্থ্যে সতি তন্ত্যাজ্যমূভা-ज्या मिन भाषित्। उपरवाभि क-র্ত্তব্য ন স্বর্য্যাৎ কর্মসঙ্করণ।। ইত্যেশ তে কথিতা রাজন্ বর্ণ ধর্মা মযা তব । ধর্মবাশ্লিণাং সমাগ্রুরভো যে निभागव।।#।। 🗐 देवं देवाह।वानः কৃতোপনধনো বেদাহরণ তৎপরং ! खक्राशङ् वरमञ्जूभ वृष्महात्री मभाः হিতঃ।। শৌচাচারবতা তত্র কার্য্য "পূশ্বণ থরো:। বুতানি চরতা গ্রা ছা বেদাক কৃত্ৰবুদ্ধিনা ॥ উভে স ক্ষ্যে রবি ভূপ তথৈবাগ্নি সমাছি-**७:** । উপতিষ্ঠেত্তথা **স**র্য্যাদ্গুরো রপ্যভিবাদন ।। স্থিতে তিপ্তেদ্ধ দ্মাতিনীচৈরাদীত চাসতি। শিষ্যো শুরৌ নৃপশেষ পুতিক্ল ন সংভ **(छ**८॥ (७रेन(वाक: भर्छ: घर • नान्)-চিত্ত: পুরস্থিত:। অনুজ্ঞাতঞ্চ ভি कात भूषीयाम् ध्वना उठ: ॥ व्यव-गार्ह्स्भः भ्रविगाहार्याभावगाहि-णाः। नगिक्जनारिकः हान्। कन्। কল্য মুপানযেৎ ॥ গৃহীতগুৰুবে मण्ड उर डा १ नुक्डा मवा भारते । गाई-क्रा भावरम् श्राद्धा निम्नम्थक् नि-স্কৃতি: ।। ১।। বিধিনা চাগুদারস্ত ধন প্রাপ্য স্ব কর্মণা। পৃহস্কার্য্য থিল• क्र्याकुभाव मकिउ: ॥ निर्दालिग निज्नाई र्ये छ (प्रवाः खण डिथी ন্। অনৈ মূ[′]নী•শ্চ স্বাধ্যায়ৈ **রপ**তেऽ-ন পুদাপতি•া।বলিকর্মণাচ ভ্তানি वार माला ना थिन व बगर । भारता-তি লোকান্ পুক্ষে। নিজকর্মসম-क्तिं अन्।। जिक्का जुक्र ए (किट् भित्रवारे वृक्षाति । (जभारेवर পুতিষ্ঠন্তে গাৰ্হস্ত্যু তেন বৈ পরু 1। (वराष्ट्रवनकार्य्यन जीर्यद्वानाय ह

পুভো। অটন্তি বস্বাণ বিপা: পৃথি: বীদর্শনায চ।। অনিকেভা হানাহা-রা যত্র সাবং গৃহাস্ত যে । তেবাং गृहञ्चः সর্বো॰ পুতিষ্ঠাযোনিরেবচ ।। তেবা॰ স্বাগতদানাদি বক্তব্য ম-পুর বচ:। গৃহাগতানা দদ্যার भागः নাসন ভোজন ।। অভিথি যস্য ভগ্নাশো গৃহাৎ পুতি নিবৰ্ত্তে। न हज्ञा मुक्क ७० उदेया भूगाप्रभागाय गः ছতি।। অবজ্ঞান মহক্ষারো দস্তু: ৈচব গৃছে সতঃ। পরিতাপোপষা তৌচ পাক্ষ্যঞ্চন শস্তে॥ যস্ত সম্যক্ করোভ্যেব গৃহস্থ: শর্মণ विधि । সর্বস্কবিনিম্ ক্তো লোকা নাপ্লেত্যনুত্তমান্ ॥ বযঃপরিণভৌ রাজন কৃ ১কৃতেয়া গৃহাশুনী। পুণ্রেয় ভाष्या निक्षिभा वन गहिए जरेह-ব বা ।।২।। পর্ণ ফলাহার: কেশ শাশু লটাধর: ৷ ভূমিশায়ী ভবেত্তর मूनः महाजिथि नृभ ॥ हम्यं काम क्रिणः क्र्यां भित्रभात्मा खत्रीयक। তদ্বগ্রিষ্বণ স্থান শস্তন্স্য নরেশ্র IKদবতাভাৰ্চন' হোম: সর্বাভাগত श्खन । जिका विष्युरानक गर नम्। नदायद्व ॥ वन्।स्यस्न गार्जाः ণা মন্ত্যক্ষ কাষ্য শ্বস্তা তপ্স্য **७** जार्जनम् भी जाका दिशहर

্ফু হা ৷৷ যথ্বে হা॰ নিবতক্ষর্য্যা• বান-পুস্থ করেমুনিঃ। স দহত্যগ্রিবদে।-. यान् जायासाका॰ मा येजान् ॥ ०॥ চতুর্থ শ্চাশুনো ডিক্ষো: প্রোচ্যতে (या भनीविভि:। उन्र बक्र न गह-তো মম শ্রোকু নৃপার্হসি ॥ পুএ দুব্য কলভেষু ত্যক্তস্নেহে। নরাধিপ। हजूर्य नामुभक्षानः गरहित्रध् ज मर-**गतः।। देववर्गिका॰ ख्राद्यः गर्दामा-**রম্ভানবনীপতে। মিত্রাদিযু সমো **নৈত্র: সম**ন্তেল্বেব **ভন্তব্** ॥ জরাযুজা-ওজাদীনা বাখান: কমভি: কুচিৎ। युकः सदी उन क्षाइ अर्दमझा क वर्द्धाय ।। এ ह्या बिहा हि गा भ পঞ্চরাত্রস্থিতি: পুরে। তথা তিপ্তে-ष्यथा शुिक (प्रंत्या वा नाम) काय (७ ॥ পुगगयाजानिमिड्क व्यक्ताद्व ज्जवज्ज्ञत । काल भुगखवर्गानाः जिकार्थ भर्यप्रहिम्गृहान् ॥ कामः কোধ তথা দৰ্প মোহ লোভাদ্য-শ্চ যে। তাংস্ত দোষান্ পরিত্যজ্য পরিবাট্ নির্মনো ভবেৎ ॥ অভয॰ সর্বসত্ত্বেভ্যে দত্ত্বা য শ্চরতে মুনি:। ন তস্য সর্ব ভ্তেভ্যো ভয় মূৎ পদ্যতে ক্রিছে।। ক্রাণ্লিছোত্র সশরীর সং-স্থ শারীর মগ্রিঞ্চ মূথে জুছোতি। বিপ্সু ভৈক্ষোপগতৈ হবিভি শিতা

গ্নিনা° স বুজতিয়া লোকান্।। চিভা-শ্লীনা॰ অগ্নিচিতা মিত্যর্থ: 1 চিতা-গ্নিনা ইতি বা পাঠ:। ইতি ভট্টাকা॥ নোকাশুন•য শ্চরতে যথোক্তা শুচিঃ সুসঙ্গল্পিত বুদ্ধিযুক্তি:। অনিয়ন জ্যোতি রিব পুশাস্ত স বুন্ধলোক শুবতি দ্বিজাতি:।। ৪।। ইতি বিফুপু-রাণেও অংশে ৮। ৯ অধ্যাযৌ।।\$।। **भुकाद्राष्ट्रदेश (उया भारिमृद्धि र्यथा** । তত ভেলোময়ণ দিব্যুণ পদ্মণ সৃষ্ট্রণ ষ্যমুবা। তথাৎ পদ্মাৎ সমভব-घुका (यम्भाया विधि: ॥ भुकाविम-র্গ বিবিধ মানসো মনসা ২সূরৎ। व्यम् कष्टाञ्चलात्वय भूबं युका भुकाः প্ৰি: ৷৷ আলুতেছোভিনিবৃভান্ ভাক্রাণ্নি সমপুভান্। তত: সত্যঞ্চ ধর্মঞ্ তপো বুন্ধ চ শাখত।। আ-ठात्ररेक्षव भाइक मर्गाय विषय विज्ः । (हव हानव गन्नर्स) दिन्छ। भूत मन হোরগা: ৷ যক্ষ রাক্ষ নাগাল্ট পিশাচা মনুজা তথা।। ব্ৰাহ্মণাঃ হৃ-विया रिक्णाः भूमाक न्शनखम। বে চান্য ভ্তসংঘানাং বর্ণা স্তাংশ্চ বিনিম্মান ৷৷ ব্ৰাহ্মণানা সিভাে বৰ্ণঃ ক্ষতিযাণাঞ্চ লোহিত:। বৈশ্যস্য পীতকো বর্ণ: শূদাণা মসিত তথা।। মান্ধাভোবাচ। চাতুর্বণস্য বর্ণেন यि अर्पा विভक्ताता। मर्खियाः थल् वर्गानाः मृभारं वर्गमक्षतः।। कानः কোখো ভ্ৰণ লোভ: শোক শিষ্ডা ক্ষা শুমঃ। সরেষা ন পুতবতি ক্ষাদ্বর্গা বিভঙ্গতে ॥ স্বেদ মূত্র পুরীষাণি শ্লেখ্যা পিত্তণ সশোণিতণ ৷ তনুং ক্ষরতি সর্বেষাণ কমাদর্শো বিভক্ত ে । জল্মানা মসংখ্যেশঃ স্থাৰরাণাঞ্চ জাত্য:। তেষা বিবিধ বৰ্ণানা জভো বৰ্ণবিনিশ্চয় ৷৷ না-त्रम् उवाह । न विल्लाखाञ्च वर्गानाः नर्ब वुकाभय कगर। वृक्षण भूर्वम् ষ্ট হি কৰ্মভি ৰ্বৰ্ণতা গত।। কাম ভোগ পূিয়া স্ত্ৰিকাঃ কোধনাঃ পূিয় সাহসাঃ। ত্যক্তব্ধ্যা রক্তাকান্তে ঘিলা: ক্ষণ্ডভা॰ গভা:॥ গোছেন वृश्चि ननाञ्चाय भीजाः क्षानुकी বিনঃ ৷ ধ্বর্যালানুভিষ্ঠন্তি ভে ছিজা रिनग्रडा॰ गडाः ॥ हि॰मान्डिन् या कुद्धाः मर्बकर्त्याभजीदिनः। कृ-কাঃ লৌচপরিভুষ্টা স্তে দিলা: শ্ পুতাং গতাং॥ ইত্যেতিঃ কর্মভি ৰ্ব্যস্তা দ্বিলা বৰ্ণান্তর• গতাঃ ৷ ইত্যে তে চজুরো বর্ণা যেষাণ ব্রাক্ষী সর ষ্ঠী 🛭 বিহিতা বুক্ষণা পূর্ব লো- 🛭 ভাদজ্ঞানতা: গতা: ৷ ব্ৰাহ্মণা ধৰ্ম ভদ্রস্থা স্তত স্তেষা । न न न ।।।।।

বুন্ধধারযভাণ নিভ্যণ বুভানি নিধঃ मा॰ खथा। वुका है हव भन्न॰ मृष्टे॰ यम কানন্তি ভদ্বিদঃ ॥ ঋষিভি: (ৰন তপসা সৃজ্ঞান্তে চাপরে পরৈ: 1 আ; **फिर्फिरममुख्**ठा तुकाम्बाकरा कु-याः ॥ त्रा कृष्टि यानशी नाम धर्म-उज्जनदायनाः। 🛊 ॥ माञ्चारकावार्ष া ব্ৰাহ্মণঃ কেন ভবতি ক্ষত্ৰিয়ে৷ বা विद्यालय । विष्णुः भूमुण्ड (प्रवर्ष **उद्माह वर भावत्र ॥ नांत्रम छेवाछ ।** का उक्यों हिंखि येखे अंश्वारेतः अं-क्छ: भूठि:। (यहाध्यवमम्भमः वर्षे-मुकर्मवर्क्षिङः ॥ (भौठाठात्रभात्रा নিত্য বিষমাশী গুৰুপিয়া। নিত্য-বুতী সভ্যরত: সবৈ ব্রাহ্মণ উচ্যতে ।। সত্য দান মথো ংদোহ আন্শ॰ স্যু কৃপা ঘূণা। তপশ্চ দৃশ্যতে যব স ব্রাহ্মণ ইতি মৃতঃ ৷৷ ক্ষণ্রন্ধ সেব-< कर्या (वहाध्यवनमे युष्ठः । हानाः দান বহি যস্ত স বৈ ক্ষত্রিয উচ্যতে ॥ বিশভ্যাশু পশ্ভ্যক ক্ষ্যাদান कि: मुि:। (वहाध्यानमञ्जाब: न বৈশ্য ইতি সংজ্ঞিতঃ।। সর্বভক্ষ্য-রতি নিত্যু সর্বকর্মকরে। হৃশুচিঃ । **छ। करवम खुना जातः म रेव म् म् इंडि** भ्जः ॥ म्रान् रेव्य ज्यालकः विष रेहद न विमन्न छ। न देव भूर्या छरवष्ट्री

্বাহ্মণো ন চ ব্ৰাহ্মণঃ ॥ মান্ধাতো 'বাচ। কে ধর্মা: সর্বর্ণানা চাত্ত্ র্ণস্য কে পৃথক্। চাত্র্ণ্যাশুমা-ণাঞ্চ রাজধর্মান্ড কে মতা:।। নারদ উবাচ। অক্রোধ: সভ্যবচন সন্ধি-ভागः कना उथा। भुकनः (वयु मा-त्रियु (नोड मापुर्व अव ह ॥ व्यार्क व• ভ্**ত্যভরণ॰ ন বৈতে সার্বর্ণি**কাঃ । ব্রাহ্মণস্য তুষো ধর্ম छ॰ তে বক্ষ্যা-भि (करणः ॥ ममस्मत महात्राक ध र्मानाः भूताजनः। साध्यायाज्यनः नर्कित उन कर्य जमानारङ॥ उन क्टिष्डि मुनागरहष्ट्यान यदर्गा। व्यव्यक्षीत विक्याति मुख्य भुद्धान তর্পিত ।। স্বর্গ ভোপেত্য সন্তান मथ रम्राष्ट्राक उठ। मःविভन्तानि ভোক্তব্য খন সন্ডি ব্লিভীষ্যভে॥ পরিনিষ্ঠিতকার্য্যস্ত স্বাধ্যাদেনৈর वाञ्चनः । कर्ग्यापन्यम् वा कर्ग्यारेच-ত্রে। ব্রাহ্মণ উচ্যতে ।। # ॥ ফ্রিয म्याभि (वा धर्म सः उ वक्कामि পার্থিব। দদ্যাদালা ন যাচেত যজে। छ न ह या ब्रायट्या नाथ्या भारवस्वी-यीज भुकाम्म भित्रभावारयः । नि ত্যোদ্যক্তো দসুগবধে রণে अर्याः পরাকম•।৷ যে তুকতুভি রীজানাঃ मुज्वस्य भाषियाः। य ज् मूष्

বিজেতার তে তু লোক'জতো নৃপাঃ ॥ অবিক্ষত শরীরে। হি সংগরাব্যো निवर्ङ्ख । क्वबिरम्य जू उर्कर्म (नाख्यव यणः भुषः ॥ कवियाणाः - ময় ধর্মো নিণী তো মূনিভি: পর:। भागा क्ञा जमः कि किन्। ज्ञा मनू।-विनिगु इ। । । । नान मध्यन यखंडा রাজ্ঞা ক্লেমো হভিধীয়তে। তমা-দুজ্ঞ। মহারাজ যোজবাত ধ্যাশী-লিনা ॥ পুজা: স্বেষ্চ থর্মেষ্ জ্বাপ-যেত মহীপতি:। খর্ম্যাণ্যেব হি ক-মাণি কার্যেৎ সতত পুরা: ।। প-त्रमाः मिक्ति भारत्राजि नृश्विः श-विभाजनारः। वर्षेशाननामना वर्षेशाः रिम्नाका द्राजन अवहरू ।। # ।। देव-माजा ह नुबक्धामि या श्रामी (वश-সম্মত:। দান মধ্যয়ন পৌচ যজ্ঞ-**म्ह ध्रमक्ष्यः ॥ शानायह शम्**न् दिनाः পिত्वकार्य मङ्ख्यम् । विकर्षा **७ फ्टरव्हनार. क्या यट म मनाहाद्वट.** মরক্ষম স হি তেষা বৈ নহৎসূথ মবাপু যাৎ। প্জাপতি হি বৈশ্যায সৃষ্ট্র। পরিদদে পুরা:।। ব্রাহ্মণেভঞ্চ क्राच्छ र नर्बाः शतिम्हम शुकाः ! ভস্য বৃক্তি পুৰক্ষ্যামি যা ভাস্যো-পদ্ধীবন ।। ব্ৰামেকাণ পিবেদ্ধেন্• भाउाइ मिथून जातर। वकाइ म

स्वरः ভাগः তথা गृष्टिकवस्तुत्र ॥ नम्यानाः मर्ववीकानि এया मात्रूर-সরী ভৃতি:। ন চ বৈশ্যস্য কাম: न्यामग्रद्धियः शर्भ्यक्ति ॥ दिस्सा क्रमाजि नारनान विकासनाः क्रमान 1#॥ भू पुत्रशाशिक् रवा धर्म सः उ বক্যামি ভূপতে। পুরাপতি হিন-র্ণারা॰ দাস॰ শুদু মবল্লখং ॥ ভয়া-हु मुजा वर्गाना अतिकर्या विशेषका उचा भूभवगर्याय गरूर मूथ मता-श्री वाट। मृषु क्ञान् भन्नि हात्रद्वीन् ্ৰণানৰূপুৰ্শ: ৷ সঞ্যাণ্ড ন সন্ধীতি ङाज मृतुः कथकन ॥ भाभीयान् हि ्धन• वाक्। बरण **अ**र्यग्रामनीयमः । ह्ना-क्का वा नमनुक्काउः कामः कर्वा उ वाधिकः॥ उम्र वृद्धिः भुवक्तानि यह उरम्याभद्यीयनः। व्यवन्यः स्त्र गीरया कि दर्शानाः भृमु छेठ्रस्त ॥ ছ धः (वश्वेन भोनीत मूलानका खना-नि ह । याज्यानानि (नयानि न्मूप्य शिक्रिष्ठाद्रिरा ॥ व्यथार्यप्राणि विभीनी-নি বসনানি দ্বিজাতিভি:। শৃদুটোধব भूरप्यानि उत्रा धर्मध्यः क् उट् ॥ ৰ্ল্চ কল্চিদ্ধিৱাতীনা শুদুঃ শুদ্ ষু রাবুছে । বল্লান্ত ২স্য ত্ তেনাভ্ वृं जि॰ धर्माविष्म। जनाः ॥ (पराः नि-(७) ९नभजाग कर्वावा) वृक्ष पूर्वः

লৌ৷ শৃদ্েণ চন হাজব্যে ভর্জাক স্যাঞ্চিদাপদি॥ অভিরেকেণ ভর্ত্ত-ব্যো ভর্ত্তা দুব্যপদ্মিক্ষয়ে ৷ নাছিন্দ্র-মন্তি শুদুস্য ভত্ত্ হার্য্যমো ছি: দঃ াাউক জ্বলগাণ বৰ্ণালাণ বক্তান্তল্য **ङ लार्थित । याहाकाम त्य**हेकात्री মজঃ শূদু म বিদ্যুত।। ভন্মান্তুদুঃ भाकरोक्ड वांकार्यक म ह ख्य[े]। न्र्राणावमयी माहः नाक्यछन्। अक्षिमा॰ ॥ 🗱 ॥ श्रीनात्रम उवाह । क्षानी जान जानाक वर्ध कक्षान ज्ञिन । वुक्तवर्गाम् नः जानरः मृत् मर्वा थिया मन ॥ गल्वा छक् गृष्ट् रीम-ব্যোনমক্ত্য গুৰু শুচি: ৷ বুবাদ-(१९५५) भाषाजः लिल्वा १३० छव মাজিय। তত ভল্যাজ্ঞণ মিত্য बरशुखवार नदास्थि ।। जमा विठासः শাস্ত্রস্য ভক্পানাভিয়ানন । ত-माञ्जानानमकाशि स्वान-रेमपञ **ভাবনা ॥ वाट्डिन एउन व्हनाशि** जुद्धिः मच्छिः नगागमः। नमाधः ब्रिस्त्रा ऋत्रवः सिक्काः भुक्तिभारः চ।। 🕸।। গৃহিশ্বে॰ ততো গছেদ্ও ल्या ब्राड्डाः मसिनुष्ठन्। उम्रहरू**र र** लका॰ कम्पा॰ मृशीला॰ अर्थाठातिभी° ॥ व्यनश् वामिनीः (त्रोम्याः जूवर्षः वाः नियम्पाः । गृहिणाः सुवामा

্ধর্মো হ ডিঞ্জিলুজৈর পার্থিব ৷৷ আ পুলের পূজা মতিথি যস্য গেহারি-্ বর্ত্তভোল বাজিনরক বোর প্রা **छोत्रा भूमाय छ ॥ भूषम॰ बागळ॰** ्रशह्साञ्जलकाति मः तिस्मर । भा-मास मसुभक्तक ममार भुगिक भूर्व कः ॥ महात्रकः जियानामः वर्गाः ভেন সহায়ত: া ভোজনক ব্যাপ कि काद्रस्यम्बिधः नृभ ॥ स्मयान्छ পি ভরশ্চাপি শুীয়ন্তে প্তিমিপ্জনে া আতিপ্যসদৃশ কর্ম গৃহস্থানা ন বিদ্যতে ৷৷ যুদ্য নিড্যু ছি ভি ভাঁতি সো ংতিথি: পরিকীর্ভিত: ৷ সর্বা मुन गानिका मुक्तामुन उनाक्छः ॥ यम्यान्डस्मिन् समाप्तासि (किकार्थ) मानुमा जयः। भिक्षत्वाहंन कार्याः গৃহিণা সূথ নিছ্তা।। 🗱।। বানপু शामुमः वक्का ज्जीयः जगकीनाः ज 1 जानभूष्राभून ग्रह्य क्वक्छा। गृहामुनार ॥ छतात्रगुकणाकानि यम्योज्य न यगविट । উक् द्राजाः পুরুকিলা শহত্যক্ষরসালাতা मूट जार्यता भितिगामा वन शहर अटिश्व वा। माछः मुकाश्वतान्ता ह 'সর্বভ্রেক্তরতঃ।। চরিত্রুদ্ধচ ম্যান্য ব্ৰাহ্মণন্য বিশান্ত কৰ্ত্ত नातीर बार्खन्त कथाउ म्मिश्रह्म-

विः ॥ किक्र प्रयंशस्थीकातः भूभय हेर माकिनः। यबाउनिरुणभी-म्यामित्री त्रमिष्क्जनः ॥ यश्याभनः सकीवीन। ज्ञान मासा किल्लियः। निद्रामीः महार मर्त्रमध्या निर्धारमा निर्दिकात्रवान्।। विख्की धनभूभारि विज्यः करूपः मरा। मःमात्रः बश्न-ः वदीक्।काउ: गङ्केमानतः ॥ পত म्य कनाराजी बनामी वायुर डाज-নঃ। নিরাহারো হথবা শুদ্ধে। ২হ-र्निमः उन चाहरहर ॥ এवः अर्वन् মহাভাগ ব্ৰাহ্মণঃ নিজি মাপুযাৎ । 🗱 ॥ ठजुर्थ नाम्यनः वत्कार मुक्ति সোপান মেব ছি। গুরো: পুরোধ मानाम्य जिन्हः जःन्यान्यर्थाद्य ॥ বিচরেৎ সকলাং পৃথীং লক্ষাশী শাং ন্ত উৎসূক:। যোগাভ্যাসরতো নি-**७**९॰ वर्ममक्ष्य **७९ भन्नः** ॥ वर्मा वर्म বিহীনো বা ভিক্ষঃ সিদ্ধিনাপু ্যাৎ । ইতি পাদ্মে স্বৰ্গথণ্ডে ২৫ । २७।२१ वर्षायाः॥ शा वन् १८ नात्रः সি হপুরাণে ৫৯ অখ্যাযে মার্কণ্ডেয-পুরাণে মদাললোপাথ্যানে ক্র্যা; नुबारार। ३ वाद्यारा ह मुद्देव १ ।। वर्गः भू॰ गजि विकस्ताः। राष्ट्रितः न्यून् इंडि छाया । उर्পर्गायः । প্রেণী ২ আন্তরণ ১ পরিভোনঃ

৪ স্থ: ৫ স্থা ৬। ইত্যমর: ॥ । भुरविशः १ अतिरहामः ৮ क्यः ३। ইতি ভরত:।। শুক্রাদি:। রঙ্গ इंडिथ्याउः। म ह वह्रवित्थायथा। পীত: ৫ হরিত: ৬ রক্ত: ৭ শোণ: ৮ অকণ: ৯ भाष्टेलः २० महारः ১১ ध्मु: ১২ शिक्षा: ১৩ कब्री: ১৪। ইতি চামর: ॥ গর্ভছ্বালকস্য ৰঙে মাসি বৰ্ণো ভৰতি। ইতি সুখবোধ:।। যশ:।। ভণ:।। ৰুতি: । इंडि (मिनी ॥ वर्गः ॥ वृडः॥ क्रिना व्यक्त्रना (छनः॥ भीछ-ক্রম: ।। চিত্র: ।। তালবিশেব: ৷৷ অঙ্গরাগঃ। ইতি হেমচন্দুঃ॥ दर्शः भू क्री (छरः॥ तभः॥ व्यः क्षत्र ।। विल्लभन ।। इंडि सिरिनी ।। *।। वर्णक विविधः। धुन्। जाका অক্ষরাত্মক্ষ । অস্যোৎপত্তি भुकातः रथा। व्यविषर्गाम् थ (माः जगर्गम्याविषराक्षद्रः । यभ्यः ব্যক্ত• পুলপতি যদা সা সওলী তদা॥ ম্লাধারে বিশ্বণতি সুস-ম্না॰ বেষ্টতে মৃহঃ। ইতি পুপঞ্চনা-तः॥ अम्यार्थः। मृथानुष्वभागंम्याः रिववन्त्रार् व्यानग्रन्तारकार्यना जा जलनी व्यविकालप्र व्यविज्ञ ह

भक्त श्वावहरू धृती उ॰ भूत-পতি অর্থাৎ কলভাষণাদিক क-রোতি তদা মূলাধারে বিশ্বণতি শ-साया मृत्नाक मृहार्बद्वेष्ठ । इंडि उड़ोका ॥ 🗱 ॥ चामा अञ्चलीयकः পর্॰ যথা । সওলীভ্তসর্গাণা मक्लिय मूर्श्यूषी। विशामकनमी पियी नम् वृक्षस्क्रिनी ॥ विष्ठाः तिः **म**द्यगाञ्चा अक्षामदर्गक् रागी । গুণিতা সর্বগাত্রেণ স্পুলী পরদে-বতা ।। বিখাত্মনাপবুদ্ধা সা সূতে মন্ত্ৰময় জগ্ৰ। একধা গুণিতা শ किः সর্ববিষপুবর্ত্তিনী ॥ ত্রিপুম্ম चत्रान् (हवी वृक्तारीनाः वयः वयः। **इं**जि नात्रनाठिलकः ॥ चन्रार्थः। विधामि हिन्तुम्य्तिक्षा । कि षातिः भविष्ठि ज्ञिनिश मखमयी। भक्षामिहि माठ्कामयी **अर्थः** । সর্বগাত্তেণ সর্ববর্ণন গুণিতা পর-স্পর মিলিতা সভী মৃত্রম্য জগৎ স্তে পুকাশবতি ইত্যर्थ: । মূলা· शास मर्भवर मखनी ज्ञा नाडी वर्ख्य उन्नव्यक्षाविद्यापियः अख्वी । मर्वविष्यज्ञाङ्गाभाषानार ण দাথ ৰূপোভয়পুতিপাদিকেতি স্-চিত্ত । ত্রিপুষর মিতি জ্যেষ্ঠ মধ্য भ कनिश्राप्त जीर्थज्यः। स्त्रानिजि

'छिनाखानुमाख मगाशाबान्। हेिंड . ভটীকা॥#॥অপিচ। দ্বিচত্ত্বারিশ তামূলেগুণিতা বিশ্বনায়িকা। সাপু স্তে স্ওলিনী শব্বুক্ষম্বী বিভূ:॥ শক্তি তভো ধুনি স্তমানাদ স্তমা নিবোধিকা। তভো হর্ছেন্দু স্ততো বিন্দু স্তন্মাদাসীৎপরা ততঃ ৷৷ ইতি नात्रमाया माठायंत्राः ॥ मूल मूलाः ধারে দ্বিচত্ত্বারি শতা গুণতা বিশ্ব-नारिका अखिनी व्यत्न क्रान्य वा कात्राप्ति नकात्राञ्चाः विष्टदात्रिः न-দাআ্কাণ ভূতলিপি মস্তাআ্কাণ বর্ণমালিকা• সূতে ইভ্যন্নয়: ॥ ক্রম-गार गिक मिकि मा क्षिनी শক্তি সূতে তত্তঃ শক্তে ধুনি রা-नी पिकि यो बना । उट्टा धुरन ब्रि-**छ्यानि (छायः । व्ययक्ष** क्रमः **मर्ब**ः-় ক্ষরোৎপভৌ জ্ঞেয়: ৷ তত্র সভু পু विशे हिहक्तिनद्वाह्या भून द्वाका **मञ्चा रेमव मञ्जू**विश्वा त्राकामृवि-দ্ধা সভী ধৃনিশদ্বাচ্যা অক্ষরাবস্থ। रेमव उत्भा श्नुविका नाम्भक्ताहा व्यवाद्धावत्र। रेमव उमः भार्व्याधिः (वाधिकाणस्वाह्या रेमव छमू छय-शाह्यंत्रामः (कंन्यू ने क्वाह्या । उक्क शरार्थाम्स्य । ইहा**श**क्तियलाम् घ ष्ट्री ज्ञानमञ्जिलुमीनकः भुःक्रि

ণী চ সা শক্তিঃ ক্রিয়াখ্যা স্জঙি পু हु:। अभारवद दिन्तुः शानावद्गग-ত: পরাদ্যাথ্যো ভবতি । পশ্যন্তী मध्यमा वाही विश्वती मक्तव्यक्ः। ভত্ত পরা মূলে পশ্যন্তী স্বাধিচানে मध्या क्रार्य विश्वी मृत्य । उनुक्रः भरार्थाराम्। मृक्षा अखिनी गए। জ্যোতি মাত্রাৰক্পিণী। অশ্যেত্র विषया जन्मानुग्रह्णु। खंशामिनी ।। ख्यः भुकामा भणाडी जुनुबाबाह्य-তাভবেং।সৈব হুৎপক্ষত্ৰণ প্ৰাণ্য मधुमा नाम्किं भिनी।। उत्तः मण्डल्ल-মাত্রাস্যাদবিভক্তোদ্ধু গানিনী।লৈ-বোর: কণ্ঠ ভালুস্থা শিরে৷ ঘাণ রদ-স্থিতা।। জিল্পামূলৌ । নিধ্তি সর্বর্ণ পরিগৃহ।। শব্পপঞ্জননী (শু। ত্র-गुगक्। ज्रियती ॥ देहा कान किया-ত্মাসৌ ভেজোকপা গুণাজ্মিকা। ক্র-भारतन मृक्ठि अधनी वर्गमानि-কাণা অকারাদিসকারান্তা দ্বিচত্ত্বা-রি শদাজিকা । পঞ্চাশদারগুণি তা পঞ্চাশদ্বৰ্নালিকাশা সূতে ভদ্ব-र्गाउ। जिमाः कना कृपारिकान् क-मार। ইতিভটীকা॥ অপ্টো স্থানানি বর্ণানা মুর: কণ্ঠ: শির তথা। জিহ্বা-भूलक पराम्ह नामिकोरिको ह जानूका ।। ইতি শিক্ষাসূত্র।। 🛊।। কিঞ্চ। यथा

ख्वस्रि (म्हास त्री) शक्षाममक्रताः ৷ ভেদা যেন পুকারেণ তথা বক্ষ্যানি তত্ত্ব ।। সমীরিতা: সমীরেণ সুসূ भावम् निर्माताः । वाङिः भुगासि व म्या क्रिक्शनयाज्ञिः ॥ देहिः ক্মাৰ্গণো বাযু ক্দাত্ত স্কল্ড স্ব-तः। नीरें र्गाउ। श्नुनाखक यदिङः (ভিৰ্য্যগাগত: ।। অন্তিক দ্বি ত্ৰি সণ-খ্যাভি মাত্রাভি লিপিয় ক্রমাৎ। সব্যঞ্জন হৃষ দীর্ঘ প্ল ত স**ং**জ্ঞা ভব ্ত্তি তা:॥ অকারে কারযোর্যোগাদে कारत्र। वर्ष इवारत्र । जरेनावाकात्र रयारमन जारिक। ब्राक्षव ज्था ॥ **উकाद्ररगणा खेटमात महारमाकाद्रा**-ख्यः बतः। उरेम लोकात्रत्यारमन भागारीकवाखाः एतः ॥ भक्ताकः লংখুংশ্চভাৱে, মন্ত্রাঃ সর্বার্থ সা ध भाग १ २ १ वर्षा वं कि में देव यगार् भूरम्ए७॥ विन्तु मर्गाञ्च (न। र्व) कि ननत्मा त्रव्यभा वरहर । কঠান্তু নি:সরন্ সর্গ: প্রাযোৎচাত্ম कडः भतः॥ नथतः मर्ग এव महार (माह्यमः भागकस्य इः। म मर्गः (भू-विज: कार्थ वागूना काहि नीद्राय ।। दर्गणार्भन माखित कः स्त्रम्णार्भनावु थ'। (खाक गञ्जोत्र मःम्मर्भाट ग ষৌ ভ ঞ বহিগ তে।। বিসর্গ ভালুগঃ সোখ্যা শ॰ চবর্গঞ্চ য॰ তথা ৷ य हु (त्रक नकात्रक मूक्ष्म्रींगा म्लग खथा॥ ৯ उवर्ग नगात्नाक्षानून्न-ध्यान मञ्जूकान्। म्होशान्त्राः वः थ जल १ इनिर्मा १ मान् सभी तर्य । इंडि नुशक्षशाद ७ भऐनः ॥ সংগ। বিসর্গ এব নশ্বরে। বিকৃতঃ (नाहृ। मः मकाब्रक्त नः উहृ।(म। २८: अरवननानी वागुः भारति अनुगः। এবং পাণকো বহি নিৰ্মননশালী বাষু ই: স্যাৎ সএব উদ্থাস: সোদ্ধাস:। পুণেশ্চামৌ কো বাযুশ্চেতি প্রাণ-कः। इंडि उँग्रेका ॥ श्रा व्यवनं कवर्न र विमर्क्कनीयाः कथेताः। ১। इवर्ग চবर्ग यामा छ। वाद्याः । २ । वादर्ग हे-दर्ग इया सूर्क्तगाः। ०। २वर्ग उदर्ग ल मा मन्डाः। ८। উदर्न भवत्र्माभ-ध्यानीया ७४७: । ६ । त्यान त्यो है: । ১। এ ঐ কগ্য ভালবেরী। ৭। ও ঔ কঠোগো।। ইতিশিক্ষাসূত্র।।।।।। অপিচ। যদ্গুছা সর্ব্যক্তেষ্ বর্ণো-চার বিধি শিবে। ভব স্নেহামছে: শানি তদদ্য কথ্যামি তে।। পঞ্চা-শন্মাত্কাবর্ণোচ্যারণ গুরুতো ২-छ।त्रर। य व ह हूं जू भू यू मू याडी वर्गाः भुकीखिंगः॥ य व राः कर्रे-(डा (छ्वा) खानु उ क्ष्यणाः म्डाः

। २। थ हूँ ब मास मूर्खन्ताः ० मस्ता 🕽 ্তুলসা মভা:। ৪।। উপব শ্চাষ্ঠ ম॰ভূ ছাঃ ৫ স্থানানি ক্পিতানি তে। बिल्मयः कथयाम्। त्रुहार्याः कः श्रेत्रः यताः।। अवग जिल्ला मृष्ट्रा भे ध्य किञ्च प्रक । मृथ्यानाकता वाह्याः क्वांत्रः कश्चां उद्याः ॥ व्य क्षिनदग्राराण ভবেৎ পূর্বশ্বরো গুকঃ।পদান্তাদিম ব্যস্ত সংযোগে यु मु के मीणाः॥ व्यनसाम्राहि मः খেলে লে রন্ত্র তথেব্যতে। যোঃ শুভিন্ত ভিগোভূগ ধরবৎ শুভিতা বুরে । শ্রি বীরে শকারস্য ছশু-जि: शवस्यवि । हनुः जिल्ह तानि ভূগৌ उथापिष्ट ज् ठमु जिः॥ **मह्**मु इंड्राप्ती नन खरेमा बाजा इंड्राप्ती **छ। (**त्रकानिक जनएउ वा इकार्त्र भगवाष्ट्रा । वर्षः द्रुष देखारमी । किन्छ रिवजाला यान्तिला सुरे॰ नावाः স্য বাচ্যতা॥ চু তুর্য্যধুনি মাপ্মোতি যাদিন্তে পরমেশ্বর। বাছা ইত্যা-<भी। भू ठजूर्थ ध्विन• याजि वानिए**इ** তু বিশেষতঃ॥ আহ্বান মিত্যাদৌ । नामित्रभाष नामित्र रेवजाकाः बन्नवाह्य । भुङ्गान बङ्गाय हे-**७**ऽ। स्नो । सामिष्ट (छ ह सम्रामि नामिकाम्बवाह्यजा॥ छ ड १ न मा

বিন্দু নাসিকাম্লজা: খৃডা:। যকা-व्र क् ञ्ञीयदः भनाभी मर्बरा दुः (कट् ।। (कग्**द्रा**हादिश उथा व्यन्ध्रव क्षेत्राज्यः । नारिक् मन्यामुद् चत्रागाष्ठवर्गत्क ॥ भुनः मान है-छ्यासी। वर्णाख्यत्रमु छ एएम ईक बिञ्चामिवाहाजा । रेवबाजा मिन ভবান্তি গুরোরেব সমভ্যসেৎ ॥ আদিরেফস্ত সংপ্রোক্তো দৃশে রন্যো বুজেদ্ ভা• ৷ এব• জ্ঞাত্বা মহে শানি পঠেৎ স্তোত্ৰ জপেরানু ।। কবচঞ্চ महिमानि नानाथा कननाशु गार । ইভি পুপঞ্সারে ৩ পটল:।।।। অ-লিচ। হুস্ব:ম্বরেষু পূর্বোক্ত: পরোদীর্ঘ: ক্রমাদিমে। শিবশক্তিম্বা স্তে স্যু-र्विन्तृ मर्गावमानकाः ॥ विन्तुः भूमान् রবি: প্রোক্ত: সগঃশক্তি নিশাকর: ৷ ষরাণা॰ মধ্যগং যজ্ত ভচতুষ্ক নপু৽-नकः ॥ विना यदेवस्य नात्न्रवाः कायः তে ব্যক্তি রঞ্জা। শিবশক্তিম্যান্ शुक् खमाद्यान् भनी विगः ॥ कात्र-ণাৎ পঞ্ভুতানা মুক্তৃতা মাতৃকা য-, তঃ। ততো ভ্তাত্মকা বর্ণা: পঞ্ পঞ্বিভাগত:।৷ বায়ুগ্নি ভূ হলাকা-শা: পঞ্চাশল্লিপয়: ক্রমাৎ। পঞ্চ-ट्रुबाः भक्षरीर्घा विमृत्राः मिक् मञ्ज वाः ॥ भक्षमः कार्यः व क ल मः

হান্তা: সমীরিতা:। ইতি সারদা॥ 🗱 🛚 🖚 अन्त्र भृष्टिकात्रण यथा। याचा-সিকেপি সন্যে ভ্রান্তি: সাজাযতে খড: ! ধাত্রাক্ষরাণি সৃষ্টানি পতাকা চান্যতঃ পুরা॥ ইতি জ্যোতিস্তন্ত্রে বৃহস্পতি: ॥ বর্ণলেখনপুকারস্ত ত खहार्न मुश्रेवाः ॥ शाः वर्गनामानि यथा 1 ত**ন্ত্রসংক্ষত** বোধার্থ মাজ্ভ্য ত**ন্ত্র**-শান্ত্ৰত:। বৰ্ণনামানি কভিডিৎ ব क्काशि विषुषा भुरत ॥ उँकारता বর্ত্ত ল ভারো বামশ্চ হণ্স কারণ। भव्याम्यः भुगवः मञ्यः विन्यूमिक खिरिवजः ॥ সর্বজীবোৎপাদকক नक्राप्तिया धुन जिकः। माविजी जि শিখো বৃক্ষ ত্রিগুণো গুণজীবক: ॥ আদিবীজ বেদসালো বেদবীজ মতঃ পর । পঞ্রমি জিক্টে চ ত্রিভবে ভবনাশন:।। গাযতী বীজ পঞ্চাংশৌ सञ्जविन्त्राभुम्: भुजुः। अक्षत्रः मा-ত্ शत्रू महानामि ब्रह्मिछ (साक्षरि)॥ प्तन् ॥ थाः **बीक्शः** मुख्य**मणः वा** धाउँ एक माजिकः। भूगि मत्री मृष्टि (मर्थो मात्रयु: श्रियद्यमः ॥ महाः वाकी वामुष्टिया थ्यानः कण्या **२**म्ड॰। की खिं निवृक्ति बागी मा नद्ग-काति र्रा मक्ट ॥ वुका वामान् ला दुवः कत्रम्ः शुगवाम् । तुन्ना

ণী কানৰূপণ্ড কানেশী বাশিনী বিষ্ ৷৷ বিশ্বেশ: শ্রীবিষ্ণুকঠৌ পুতিপত্তিথি রংশিনী। অর্কমণ্ডল वर्गाम् । वाक्षाः कामकर्षिनी ॥ जः ।। व्याकात्रा विक्यानस्था भीचहारम विनायकः। क्लेत्रामधिः शरगप्रण भाष्मा मीर्घामा वृख्यो ॥ भूहख **करका कर्**षा नाजायग हेर्ভिश्वतः । পুতিষ্ঠা মানদা কান্তো বিশ্বান্তক গ-ক্রিয়া কান্তিশ্চ সম্ভব:। দ্বিতীয়া মা-नरा काणी विश्वताजः स्टा विरू ।। বরান্তকশ্চ হৃদ্য মঙ্গুটো ভগমা-लिनी।। या।। है: मृत्रा मान्यनी विर्ा हन्दः श्या पृथश्यः। मूनिजः जुन्मत्त्रा वीतः कार्वेतः कार्वेतः नगः ॥ जुगरधा माधव छडि मंक्कत्ववक নাসিকা। শান্ত: কান্ত: কানিনী চ कारमा विद्वविनायकः ॥ तिशाला ভরণী কদে৷ নিত্যা ব্লিয়া চ পাবকঃ ।। है: ।। वे जिम्बि मंशामारा ला लाकी वामलाहन । शाविनसः শেথর: পৃষ্টি: সূভদা রত্ম জ্ঞ ।। विकू लंकीः भुश्यमण वाण्म्बः भद्राभद्रः। कत्नाखदीया (ভक्खा রভিচ্চ পৌণ্ডুবর্জন:।। শিবোভনঃ निवा जूडि फजूथी विन्मूमा लगे।

रिवक्षवी रेवम्हरी िख्या कामकना मः नारका ॥ भारकः (कार्टेतः कीर्खि र्माह्नी कानकात्रिका। अष्ठधन्तृ॰ उ-र्क्जनी ह नाशि जिनूत्र मून्स्त्री।। देशा छेः **म**ऋत्रः वर्बु नामी ज्राक्तानः वाहकः। व्यनदारमा एककर्नः वर् बच्छा साहरः विवः॥ डेगुः পुভূ ধৃতি বিকৃ বিশ্বকর্মা মহেশর:। শ-— বুষু শেচটিকা পৃষ্টি: পঞ্চমী বহি বা সিনী ॥ চেটিকাস্থানে চেক্ষিকাইঙি वा भाठेः ॥ काममः कामना हिल्माः भाकिनी विश्वक्षकी। उठेमः कि ना ल्यांबः भावचीत्या वृत्यः इतः॥ उठेमू इंडि अबहिष्मार्वः ॥ हैः ॥ উ: কণ্ঠকো রভি: শাস্তি: কোখনো মধুস্দন: ৷ কামরাজ: অজেশশ্চ महरणा वामक्रकः ॥ क्लेक्झाल কণ্টক ইভি বা পাঠ:।। অধী শো रे छद्रवः मृत्या हीर्घः वाना मद्रम् शे । বিলাসিনী বিমুকর্ত্তা লক্ষণে: ৰূপক-र्यिनी।। महाविष्मु अन्नी यक्षा वृष्टा जूः कानाअबुकः। डिः॥ यः भू ही र्घमूथी ৰুদ্ৰে। দেবমাত। ত্ৰিবিক্ৰম:। ভাব-ভূতি: ক্রিয়া ক্রা রেচিকা নাসিকা ध्**डः ॥ এक्পारमित्रा भाषा म**ख-ला मास्त्रिनी कल । कर्नः कमल जा নেখে। নিবৃত্তি গণনাযক:॥ রোহিণী

निवर्जी ह नूर्वनिविक्त मधनी । নেখ: স্থানে মেষ ইতি চ পাঠ: ৷ খাঃ ।। श्रः ক্রোধো হতিথিশো বাণী বা-मता १८गा १थ 🗐 १ कि:। উष्कु मूर्यी निमानाथः भद्ममाना विनष्ठेशेः ॥ শশিনী মোচিকা শ্রেষ্ঠা দৈত্যমাভা পুর্তিষ্ঠিতা। একদন্তাস্থাযো মাতা रुत्रिजा निथुरनाष्या ॥ नाजा ज्ञातं भारा इंडि दा भार्टः ॥ कामनः শ্যামলা মেধী পুতিষ্ঠা পতি রষ্টমী। বুন্ধণ্য মিব কীলালে পাবকো গন্ধ-কৰিণী।। নিবস্থানে মবেভি বা পা-ঠ:।। শ্ব:।। ৯: স্থাণু: গ্রীধর: শুক্ষো मिथा थ्या वरका वियए। पनवरशानि र्मकगए। वर्णः कोन्न कमुको।। वर्ण ज्ञात वार्ग इंडि वा नाठेः ॥ विश्वयाद्या नीर्याक्ष्या मरहानुष लाङ्गलिः भद्रा । हिन्दुका भार्थिता थ्रुम्। विषय: कामवक्षनः ॥ मृहित्रि-তা চ নবমী কান্ডি রাবাতকেশ্বর: 1 চিত্তাকবিণী কাশক তৃতীযঙ্গলসূ ন্দরী।। চিন্তাকবিণী স্থানে চিম্ভাক-র্ষিণী ইতি বা পাঠঃ ॥ ৯: ॥ ३কারঃ कमना इर्या ऋषीरकरणा मधु बुजः । স্ক্ষা কান্তি বামগণ্ডো ৰুদুঃ কামো: দরী সুরা। শান্তিকৃৎ স্বল্তিকা শক্রো मायावी (नाक्रमा विष्टा। समभी

লুছিয়ো মাতা নীল পীতো গলানমঃ ৷ কামিনী বিশ্বধা কালো নিভ্যাশৃদ্ধ: শুচি: কৃতী।। বিশ্বষাস্থানে বিম্বযা इं विवाशार्थः ॥ मूर्या रेष्याक्यं ने ह **अकाकी मनुज**शुगृः। हः ॥ अकादा বাস্তব: শক্তি ঝিণ্টীশোধৌ ভগণ भक्ट । मृद्या ज्उा १६ (कमी ह (क्रार्या मुका भुमर्पनः ॥ **ज्**ड-স্থানে শৃত ইতি বা পাঠ:।। ভব॰ क्छान क्या थीता कड्डा मर्सममूख्यः । विश् विष् र्जगवजी मखनी मा-हिनी वमः ॥ (यश्यिमाश्राद्रणकिण ব্রিকোণা ঈশস•জ্ঞক:।। সন্ধি রে-कारमी उम्राभग्रनाजः स्वाह्यः। এ:॥ ঐ লক্ষাভৌতিক: কান্তা বায वी (माहिनी विजू:। मका मारमाप-র: পুজে। ২ধরে। বিকৃতমুখ্যপি ॥ ক্ষমাত্রকো জগদ্মোনি: পর: পর-নিবোধকৃৎ। জ্ঞানামূতা কপদ্বি 🕮: পীঠেশা ২গ্নি: সনাতৃক: ॥ ভিপুরা লোহিতা রাজ্ঞী বাণুবো ভৌতিকাসনঃ। মহেশ্বরো দ্বাদশী ह विमनक महत्र जी।। कामरकारि। यामकान् त्रः भूमान् विकया करे।। थैः য় ওকার: সভ্য পীযুষৌ পশ্চিমা-ন্য: শুতি: স্থির।। সদ্যোজাতো वामूप्रता गायकी मीवन हुकः ॥

व्यान्तरायनी हाष्ट्र परना लक्षी वीनी मुथी विकः । উদ্দেশ্যদর্শক স্তীবৃং रिकवारमा वजुशाक्तद्रशा श्रुगवारमा বুন্ধসূত্র মজেশ: সর্বনঙ্গলা। ত্রবো-দশী দীর্ঘনাসা রতিনাথো দিগম্বরা ॥ विलाक/विजया भुका भीजि बी का निकर्षिनी । ७: ॥ ॐकात्र: भ-ক্তিকো নাদ স্তেজসো বামজন্বক:। मन्यक गुर्मिक मक्तदर्गः नमानि-वः ॥ व्यथान्छक् कछोछो मक्रवंगः সরস্থা আজ্ঞা চেছে মুখী শাস্তো व्यानिनी भुक्छः भगः॥ व्यनसा ज्ञा-লিনী বেয়ন। চতু∉শী রভিপুর: 1 নেত্র মাত্মাক্ষিণী চ জ্বালামালিনি-কা ভৃতঃ। বেগমা স্থানে রোমা ইত্তি वा भाठे:॥ 'छै:॥ यक्षात्र फक्कृत्वा-मस्ति विद्या भगखक्यः । अपूर्यः জ্নিখী পীতি বীজিযোন ব্ৰধ্নঃ ।। দন্ত স্থানে দন্ত ইতি বা পাঠ:।। ৷৷ পর : শশী পুমাণীশ: সোমবিন্দু: কলানিধি:। অজূর শেতনা নাদ भूना मू: थहतः भिवः ॥ भितः भग्न नंद्रिणक मुथपुःथ पुरुखंकः। भूर्विमा রেবতী শুদ্ধা কন্যা চর বিষ্টুবি:।। অমৃতা কধিণী শ্ন্য বিচিত্রা ব্যোসং ৰূপিণী। কেদারো রাত্রিনাশ চ अ-तिकारेहव तुष्टुमः ॥ अ॰ ॥ आः करेरकी

प्रशासनः कथा পূর্ণামৃতা হরি:। हेहा जुना गराम क व्रिड विम्यागूथी সুথা। দ্বিবিন্দু রসনা সোমো পনি। क्षा पू:थम्हकः। दिक्किन्दाः क्ख-**लः वकुः मर्गः मकि निमाकतः** ॥ जून्स्त्री ज्यणानसा गननात्या महरू খর:। অ:॥#॥ ক: ক্রেধীশো মহা-कानी कामरत्यः भुकाणकः। कशानी **७क्रमः भा**खि वीमूप्रयो क्रया १न यः ॥ ठकी भुडाभिडः मृष्टि भंकक ক্ষো বিশাম্পতি:। অনন্ত: পার্থবো বিন্দু স্তাপিনী পরমাত্ম হ:॥৮ক্ষক-क्ष इरात एक कक्को इंडि वा भाठेः॥ यर्गान्यक मुथी वृक्ता नथात्न्याद्धः শিবো জল•। মাছেশ্বরী তলা পুস্লা মঙ্গল শ্চরণ কর: ৷৷ নিত্যা কামে-श्वदी मूर्याः कामक्रा गाजनमुकः। গ্রিপুর রমণো রক্ষ: স্বসুনা পরমা-ज्रकः।। कः।। थः भुष्ठः कामक्त्री युष्टि र्दक्षिः मत्रस्त्री । प्याकाम बिन्दियः पूर्गा ठखीण खालिनी खरः ।। লিখণ্ডা দম্ভলাতীশঃ কফোণির্গ-क्छा यहि। भूगुः कभानो कन्। ी जूर्लकर्ला रजदामदः ॥ मुजाुरायग চগুলিঙ্গো জনাব্যাঙ্গার খন্নকৌ ।। यः।। (म) (मोद्रो (मोद्रादा गङ्गा গণেশে। গোজলেশ্বর:। শাস্বী

भक्षां छ का गांथा गन्नर्वः अर्वभः म् তি:।। সর্বিদ্ধি: পুভা ধ্মু। দ্বিজা-थ्यः निवहर्मनः । विश्वाद्या लीः भृथगुभा वालवक जिल्लाहमः ॥ शी-**७**॰ সরম্বতী বিদ্যা ভোগিনী नम्स्-নো ধরা। ভোগবতী চ হৃদয• জ্ঞান• कानसदा नवः॥ नव सान नन ইতি বা পাঠ: ॥ গ: ॥ ঘ: খরী ঘু-ষুরে। ঘণ্টা ঘণ্টাশ জ্রিপুরান্তক:। বাযু: শিবোন্তন: সত্যা কিন্ধিণী বোর নাযক:।। মরীচি র্বক্ণো মেধা कालक्षी ह माश्चिकः । लाखाम्ब्रा জ্বালমূল ননেশো হনন ধ্বনি:।৷ खिलाकाविरा। **म**ः इंडा कामाथाः यनशामयः । यः ॥ ७: भाष्टी रेज्यव महाखा विनम् खंभः मिण्लियः। এकः कानु। एकनथः थर्भाता विषयम्भृहा।। কান্তি: খে তান্ত্রো ধীরে৷ দ্বিজাত্মা-জ্বালিনী বিষ**ে। মন্ত্রশক্তিক্ট মদ**-নো বিশ্বেশী চাজানাযক: ॥একনেত্রো महानत्ता पूर्वत कम्पूना यजिः। **ब्बित्याचा नीवक्छे: कार्यमी हम-**याः भूरको ॥ उः ॥ ठः श्रृह्मद्रा रुनी বাণী চাত্মশক্তিঃ সুদর্শনঃ ৷ চর্মমুণ্ড-ধরে। ভূষা মহিষাচারসম্বিণী ॥ ভূৱা স্থানে ভৌন ইতি চ পাঠ: ॥ একৰপো ৰুচি: কূৰ্ম কামুণ্ডা ধীৰ্য- ৰালুক:। বামবাহু মূলমাযা চতুম্-खित्रक्रिशी ॥ मियउक्त पित्रवक्त वश्वी अञ्चलाहनः। हन्तनः हन्तुः भा (६व (भ्रञ्जान) वृक्तिका वृक्षः ॥ (पवी किवृत्यहाजा को नाती भूर्ब-कल्लुनी। अनक् (मथना वायू (संदिनी **ठ** भूवावजी ॥ इः ॥ ছ शृनस्तः जूबु মা চ পশু: পশুপতি মূ তি:। নির্মল॰ **७**त्रन विक्र ज्ञां वा विनामिनी ॥ **अक्टनजण्ड व्यमी विभिन्न**, वामञ् र्णतः। (गाक्ना वाक्नी वैभिकाम-मख। जनानिवः ॥ भाजा निमाहतः भागू विक्र**ः** श्रिजिमदकः। हः॥ জ: শবো বানর: শুলী ভোগদা বি करा हिदा। नन्दित्व कर्या क्वा थाउको সুমুখी विजुः॥ नायानती মৃতি: শাখা সুপুভা কর্তৃকা ধরা। भीर्यवाङ् कि इंश्ता नन्ती (**उद्या:** সুরাধিপ: 11 জবনোবেগিতো বামে। भानवाकः मराज्यकः। इत्राक्रः খরে। বেগী চানোদা নদবিস্থল: ॥ कः ॥ त्या वन्द्रात्री एट्श व्यक्षातायु अठाः यजूना । चाकामा माविभी नारः भाभी किञ्चा कवः ऋजिः॥ विद्राह्मा अनुरुष्ठः ककामा नाम-कः अजः। भीर्यवाच् वरना क्र भाकः न्ति उ: मूहक्व: ॥ मूर्था न्हे वा

जा वान् विकरी अहम खनः। कनहरः 🗸 मिश्रा वामा अक्रुवीमध्यवंकः ॥ मक्षशायेशामक भाषाच्या वर्रः क्षनः यतः। वः।। अकाता (वाधनी विषा कखनी मथामा विष्टा लिन भाती नाग विकानी मव्याकृतनथ-রো বক:।। কণ্ডলী স্থানে সপ্তলী মথদ স্থানে সুখদ ইতি বা পাঠ: 11 সর্বেশ চ্ণিতা বৃদ্ধি: মর্গাত্মা বর্ঘর-धृनिः। धौर्याकशामी मुगूर्थी दिवजा **ठन्मत्यत्री।। वृक्षि ञ्रात्न निक्षिः यर्ग** ञ्चात्न जग इंजि वा भाठेः ॥ गायनः পুস্লখনা চ রাগাত্মা চ বরাক্ষিণী ! कः॥ हे श्रेकातः क्लानो ह त्रामवाः (थ्रहत्री ध्वनिः। मूक्त्रान्ता विनमा शृथी रिक्कवी वाक्गी नवः॥(मामवा इात्न সোমেশ ইতি কৃচিৎপাঠ: :। দক্ষা-क्रकार्फ्त हन्तु क ब्रा ভ् जिः शूनर्ख्यः । वृङ्ग्णि धनु किं बा भुरमाना विभवा কটি:। রাজা গিরি মহাধনু মানাজা। जुम्(था मक्राहिः॥ हैः म्राम् मञ्जः त्री वीडः भागिनी लाक् ली क्या। वन-জো নন্দনো জিন্থা সুনঞ্জ ঘূর্ণকঃ সুধা ॥ বর্ত্ত হ গুলো বহি রম্ত চন্দু म ७वाः। मक्ष ज्ञान्य जायक (मयजः क्ष्मा वृष्टम्ध् निः॥ এकशास्। विज् जिक्क नवाहे अर्व भिवकः॥ व्वत्य

निनी विकु मरहामा ग्रामनीः मनी াঠ:॥ 🗱॥ ডঃ স্মৃতি দাৰুকো নন্দি-क्लिनी (यानिनी नियः। कोबाबी - শক্তর জ্ঞাশ জ্ঞিবকো নদকো ধুনি: ।। मुक्टा करिनो जीमा विकिखः পৃথিবী সভী। কোরগিরি: ক্ষমা কা-डि नाजिः साठी ह त्वाहनः ॥ बहिः **की ज्ञान कविन देखि कास्त्र ज्ञान** শান্তি রিভি বা পাঠ: ॥ ড: ॥ # ॥ ए। एका निर्गवः भूरत्रे। यरक्तमामनरमः भन्नः। व्यक्तिनित्रश्व (खाय मी भन्नी जिभिथी नवः॥ यद्धमा पनसम्धर ইত্যত্র যজেশো ধনদেশ্বর ইত্যপি भाठेः ॥ एकः भाराज्यः प्रवा मि ক্ষিৰণ্ডো বিনাযক:। পুহাসা ত্ৰিকে-द्वा अकि निर्श्वता निर्दान धुनिः ॥ कु হাসা স্থানে পুহাস ইতি বা পাঠঃ ।। विरम्भः भाषिनी जुक धार्तिभी का उन्हकः। अनानुद्रः प्रशाचा ह विणाया श्री माना त्र जिः॥ जक् स्थान দ্বক্চ ইতি বা পাঠ:।। ঢ:।।#।। গো নির্গণ রতি জ্রান জম্ভন: পক্ষিবা-হনঃ। জ্যা শন্তো নরক্জিৎ নিষ্ক-ना (गार्शिनी श्रियः।। विमुश् (कारे वी (मुाज नम्बि (वीधनी मजा। विति वानुषी (व)। न किनाना-लूल मूं थरा। माधवः म इनी वीदा।

नातायगण्ड निर्गयः। मूच ज्ञान नव इंडि वा भाठे: ॥ गः॥ 🗱॥ उः भ्डम হ্রি: শৃক্ষি: শক্তী শক্তি জটী ধৃজা । বামস্ক্রক্বামকট্টোচ কানিনী মূ-क्षुकर्वकः ॥ इति ज्ञान इतिः ইति ৰা পাঠ: ॥ আষাটী তণ্ড তন্নুষ্ঠ কা-भिका शृष्ठशृष्ट्रकः। রত্ত্রকण न्याम-मूथी वादाशी मकरता २क्ना ॥ व्यान याणी ७७ जुन्न क हात वावाह ঢান্ত ক্ষুদুশ্চ ইতি রত্নকশ্চ স্থানে রত্নকণ্ঠ ইতি বা পাঠ: ॥ সুগত্যে **९क्षम्था वक्ष बानुम्छ** कि। छ शृह कः। नक्ता विश्वा नकह्य कानुतादा ह भोत्रकः ॥ वृष्त झात वृष्त इंडि भी ব্ৰক স্থানে দৈবিক ইতি বা পাঠ: ॥ खयसि भूषाका जासि बनक महना। जुद्रा। उ: ॥ 🗱 ॥ थ: हिदामी महाः পুছি পুঁছিপাছে। ভ্যানক:। শিলী শিরসিজো দণ্ডী ভদুকালী শিলোং हयः॥ क्रका वृद्धि विकर्मा ह मक्र नामाधिला श्मद्रः। दद्रमा (जागन्त्र (करना वामजान् व्रत्मा २ननः ॥ क्ष्मा वृष्टि विकर्मा ज्ञान क्षाव दि विका इंडि वा भाग्रे: ॥ त्वारनोजः क्किंगिनी खशः भत्रहत्नु। विनातकः। लालो हेउ। पि ज्ञान लाला ब्ल-विनी भू खंश नवह नमु दिवाक दि दे वा भाठेः॥ थः ॥ ऋ॥ ता २ मी भा भाउकि थांजा माजा मल कलबक। भीन ज्ञानक मानक ভक्तिताह्यनी श्रता ॥ माजाम्ल श्रात मानामन् ইতি বা পাঠ: ॥ সমুশা যোগিনী স ष्ठाः ऋखाला वामखन्नुकः। काञ्जायनी श्विता पूर्व। **वाय**ना नाजि कछ ही ॥ **ज**िष्य **इात्म म**िष्य क्षे के द्वारन কণ্টকী ইতি বা পাঠ:।। স্বন্তিক: স টিল। ৰূপ: কৃষ্ণ শ্চোমা জিভেন্দ্রি यः। धर्माज्ञवामस्यक्त जुना वछ जु **ठक्षना।। ४र्थक् इ इरान ४र्थकृ** वक् ञ्चारन यह इंडि वा भाठे:॥ हिंद्र पु भूत नाबी ह एकभागि खित्रथकः। मः ॥ 🗱 ॥ (था यनार्था कृष्टि ञ्रापुः भाखाङ (याणिनी शियः। मीरनभः ষ্ণাত্মি ভাষণ নাগেশে। বিশ্বপাব-की ॥ धनार्थ ज्ञारन धनार्थ। इंडि वा भाठे: ॥ विषया ध्रमा हिन्ना निब যুণ্ম পূথে। নতিঃ। পীতবাদা তি यनी ह शांका ध्या श्राव्यक्षा ध्राप ঠিন্তা স্থানে ধরণী চিত্রা ইভি বা भारे: ॥ जन्दर्भा त्याह्ता वद्धा বজুতৃভা ধর• ধরা। বানপাদ। সুলে মুলি জ্যেষ্ঠা সূরপুর ভব: ॥ স্পর্শা ज्या मीर्घकड्डा व स्तरमा सनम्खरः १ थः ॥ 🗱 ॥ त्ना गुर्व्हिनी क्वमा त्नी 🗐 वीक्नी विश्वशावनी। भ তা নেত্র• দন্তরে। নারদে: २००७ । বাৰণী স্থানে বৰুণা ইতি মালাটান উদ্বৃতিমী দ্বিপ্তশ্চ বামপাদাঙ্গুলে मुं थः । देवनरङ्य चुडि वंज्ञं छत्रनि र्वाल जागमः ॥ वामत्मा कृालिनी দীর্ঘো নিরীহ: সূপতি বিশৎ। শ-काञ्चा नीयर्थाना ह इसिमानु द स्न-हरको ॥ शिद्धिनायक नीरलो ह शिर्द् नामि संशानिः। नः ॥ 🗱 ॥ 🔊 পুর প্রিণতা তীক্ষা লোছিত: প भा तना । **ख**श्च वर्ता निर्धः 🐃 কালরাত্রি: সুবাহিতা॥ তপনঃ পা-জন: পাড়া পদ্মরেণু নিরঞ্জ:। সাবিদ্রী পাতিনী পানে বীর ভরে। ধন্ধর:।। পালন ছানে গাবন ইভি ভৰু স্থানে ভন্ত ইতি বা পাঠঃ॥ मक्कभाश्यक (समानी स्तीकिः भवनः मानि:। टेक्नेम॰ जगनी आ स्ना **२नम॰** (द्रथ ह (गाइकः ॥ अञ्च छात्न की-ন্তা ইতিরেখা স্থানে রেষা ইতি বা नार्टः।। मृत्तः वि शेष मिन्तुभी लान काको रन जाजानः। जाजानः हाति वायाक इंडि दा भाठे: ॥ भः॥ 🗱। कः मथी पूर्वानी शुन्ना वानवार्ष जगफ्रिश जग भारः मिथा (ब्रो मूं. क्टकावः भाशिनी लियः ॥ उना

#11 (वा वंती ज़्यद्रा मार्गा **य**-ালোচন প্রিঃ। পুচেতাঃ কলসঃ शकी इनगण्डः कलर्पिनी।। পृष्ठवः-শো ভযা মাতু: শিথিবাহো যুগ-श्वतः। मृथविन्तृ रंत्री घन्टा (याधाः जिल्लाइनिल्लुगः ॥ मूथविनमु इहात मूर्थावन्यू विकि वा भागः। क्रिसिनी ত।পিতা ভ্মি সুপনিন্দু ব লিপ্যি:। সুরভি মু থিবিফুল্চ সংস্থারো বস্ধা-থিপঃ॥ সুপনিন্দু স্থানে সুগন্ধিকে তি বা পাঠ:।। यष्ठी প্রক্ষ পেটা চ मारका गगमः भुछि। भृद्यायाण यथ्रिवाको निनः जञ्ज ज्जीयको ॥ ব:। #।। ভ: ক্লিমা ভূনরো ভীনো বি-খুমুর্ভি নিশাতব । দ্বিরণ্ডো ভূষণো মূল যজ্ঞসূত্রস্য বাচক: !! নিশা-छव द्यारन निमाज्य॰ इंजि वा मार्ठः ।। নক্ষত্র ভুমণা দীন্তি বঁথো ভূমি: পথোন जः। नाजि जुरु महादाङ् विश्रम् विं विं अथकः ॥ वगः इतान

ভ্য ইতি বিতাওক স্থানে বিমূৰ্ভক ইতি বা পাঠ: ॥ প্রাণাত্মা তাপিনী বজা বিশ্বক্পী চ চন্দ্রিকা। ভীমসে-नः जुवारमनः मूर्था मायाभूतः इतः ॥ वज्रु ज्ञान कृषा इंडि मूथ ज्ञान मुथ इंडि वा शार्टः॥ ७: ॥ 🕸 ॥ भः काली (क्रिनिजः काला भशाका-ला महाइकः। रेक्यली वमुवा हम्तु त्रविः भूक्यवाजकः ॥ वमुरा ञ्रान वस्तरा है जि वा भारता के ल हिए। कया (मधा विश्वता मीखन छा हः। कठेद्रक जुनानान वजीनाटागुव-क्षतो ॥ भीछ छात्र मी भू है जि वा পাঠ: ॥ বিষা শিবো মহাবীর: শ শিপুভা জনেশ্বর:। পুমত্তঃ প্রিযু कृतः नदाः का वर्ज्ञ मखनः॥ माज-क् मालिनी विन्मुः भुवना ज त्राथा वि-ষ্ । রথ জ্বানে নথ ইতি বা পাঠ: ।। २३ ॥ १॥ या वानी वमुवा वामू र्वि-कृष्टिः भूक्रावाङमः। यूगान्तः स्वमनः ष्ट्री शृ मुर्हिः পুरिश्विकरः॥ यूगाः ম্ভ স্থানে যুগাভ ইতি বা পাঠ:॥ শন্ত্রা ভুমো ভটী লোলা বাযুবেগী য-नक्ती। महर्यनः क्रभा वाला हर-য- কপিলা পুভা।। আগ্রে:বা ব্যাপ-का छारांग हासा यान भुमा मूर्थ । हलः महिन्द्री थ्न महामुला मूमू- থেশ্বরী।। পুনা স্থানে পুভাইতি বা পাঠ: ৷৷ ত্বগাত্মা মলযো মাতা হ•-সিনী ভূলিনাযক:। তেনম: শোষ-का भीत। धनिश्वानकरवृष्टिनी ॥ जुः গাত্মা স্থানে বিগাত্মা ইতি তেনম স্থানে যেমন ইতি বা পাঠ: ॥ মেষ্ট: ক্তক:। মেষ্ঠ স্থানে সেষ্ট ইভি বা भार्टः ॥ यः ॥ 🗱॥ द्रा द्र ङः काधिनी রেফ:পাবক ফুোজসো মত:। পুকা শা দৰ্শনো দীপো রতকৃষ্ণা পর वनी ॥ खुाबन ज्ञात खबन इंडि র ভক্ষা স্থানে রক্তকৃষ্ণ ইতি বা भार्तः ॥ जूकस्मामा मजिः मूर्या। ধাত্রক্ত: পুকাশক:। ব্যাপকো রে-বতী দাস অক্স্যুশো বহিমণ্ডল ।। দাস স্থানে দান নিতি স্ক্ল্যুণ্ স্থানে দক্ষা•শ ইতি বা পাঠ:॥ উ-गुः तथा जनराखा (वरक्छे भना भू-ता। পুকৃতি: সুগলো বুকা**শদ**ক गायका थन ।। (वहकछं भा ना ञ्चात বেদকশপলা ইতি বা পাঠঃ ৷৷ 🗐 क्षे उपा इत्य म शी विश्वमृन्त्री । निवन्तू (र्गानिको ज्वाना शिनाना বিশ্বভোমুখী ৷ জিশৈল স্থানে এ-(णान इंडि वा भाठे: ॥ द्रः ॥ 🕸 ॥ व क्तमुः भूजना भृथी माधवः मकवा চক: ৷ বলানুজ: পিনা কীশো ব্যাপ- 🕢 का भा भन छकः ॥ भाषव शाम মাধ্বী ইতি বা পাঠ:॥ খন্নী নাদে মৃত দেবী লবণ বাৰুণী পতি:। শিখা বাণী ক্রিয়া মাতা ভামিনী काशिनी शिया॥ मृउ ज्ञान मृष মিতি লবণ স্থানে মরণনিতি বা शार्ठः ॥ ज्ञानिनी (विभिनी नारः भुमु। इ: भाषा इति:। विश्वाञ्च मख्यो वनी (চতে। भिक् गितिः कना রস:॥ মজ স্থানে মন্দু ইতি কণা ञ्चात्व क्या इंडि वा शार्टः ॥ वः ॥ 🕸 ॥ বো বালো বাৰুণী সূক্ষা বৰুণো মে-**एम** छकः। श्रीला खालिनी वहः कलमधुनि वाठकः।। वक्ष छ। । तक्ष इे ि कनमधुनि ज्ञान कनमण्द्रवि ইভি বা পাঠ: ৷৷ উৎকারীশস্ত না বীতো বজু। দ্বিক্ সাগর: শুচি:। ত্রিধাতু: শঙ্কর: শুেষ্টো বিশেষো য-भगारनः ॥ वः ॥ श्रा भाः भवऽण्ठ का-মৰূপী কামৰূপে। মহামতি:। সৌ-थानामा बनाता हि बिकाशे वृत-কেতন: ৷৷ বৃষয়: শ্যন শাস্তা সুভগা विद्भुविक्ति। मृजुर (मंदा महाव-न्त्री मंहिन्तुः वनकोनिनी ॥ वाङ् रंपा वियम् कु रुपनका कुनः थनः । বামোক: পুগুরীকাত্র। কাজিঃ

कन्यान वाहकः ॥ इन्त्र ज्ञान हिन् ना इंडि वा भार्तः॥ भः ॥ 🗱 ॥ यः খেতো বাসুদেৰক্ষ পীতা পুক্তা বি-नायकः। भद्रासभी वासवादः (मुक्ती গর্ভবিমোচন:॥ পীতা স্থানে প্রীতা ইতি পুক্তা স্থানে শুদ্ধা ইতি বা भार्तः॥ वाद्यानात्रा यानीत्वनः का-মধুক্ কামধ্ন চ:। সুত্রী কথা। বৃষো लजुः सक्छकः श्रियः निवः॥ का মধ্নক স্থানে কালধ্মক ইতি বা भावेः॥ मृन्धाचा क्वाः कार्या मला वक्का विकातियो। कन करका मध्य ভिञ्च। वृक्षाञ्चा भवाणुः मिवः ॥ यः ॥ ।।।।।। रा रुपा वृत्रणा विष्टु ज्यीण **म्हिन्** न : ख्रुकः । बगद्दी द्वः माञ्चिना-मा (मारु (वणवजी ज्खः ॥ मृयणा স্থানে সূজন ইতি মোহ স্থানে সো হ' ইতি বা পাঠঃ ৷৷ পুকৃতি রীশ্বরঃ শুকো পুভা খেতা সলোজ্জন:। দ-क्रभारताम् छ वाक्ती भवना या। भः (द्वा २कदः ॥ मूक्षण ह ख्लाणा भीः कनकछो वृक्तामत्री। भागाम्। क भुद्रादि विश्वीः (मामा हित्र) भू:॥ मृर्गा **डा** ति शिक्या हाड्डी ता म् बिर्माना इतः। पूर्णा खाति विज्ञात দূর্গো ভারিণী ইতি সন্মোহাৎ স্থানে সমে। হা ইতি মনোহর স্থানে ম- নোযৰ ইতি বা প ।ঠ: ।। স:।। #।। হ: শিবোগগন হ সো নাগলোকে! প্ৰিকাপতি:। নহলীশে। জগৎ-পুাণ: পাণেশ: কপিলা মল: ।। মল স্থানে মত ইতি বা পাঠ:।। পরমা-আ্যাআলো জীবো যবাক: শান্তিদে **२क्नः। म्**रणा ज्या क्ना छानुः कूढे क्षिविद्यादगः॥ यवाक द्यान वदाक ইতি হন্দন স্থানে হসুল ইতি জুট-ক্পবিরাবণ স্থানে ক্টকো পরিবা-রণ ইতি বা পাঠঃ ।৷ লক্ষ্মী মবিহুরঃ শস্তঃ পুণশন্ধি র্যলাটন্ধ:। স্বকোপ वाद्रभः म्ली रिष्ठनाः भारभूवभः ॥ মবিহর স্থানে হরিহর ইতি স্বলো-প স্থানে সকোপ ইতি বা পাঠঃ !! মহালক্ষ্মী: পর নাদো মেঘনাদে। इति यं छः। विन्तृ मूर्गा श्रिया (पवी भ्यान् ॥ म्यान् ॥ म्यान् ॥ **एः जनाण्युः णा**त्याहेः त्यामन-**७वः ॥ ३:॥ 🗱 ॥ वः भृथी विभवाः** म्बा १नत्वा इवावहा मिछा। वता-পিনী শিবদা কেতু জগৎ সারভরণ श्वेः॥ (क्षो मृं जानी ह (वनार्थः भा-(दा नादायगः स्यः। कठेदा नक् लिक्ष পীতা শিবেশে। হ্নক্ষালিনী ॥ वः॥ 🗱।। 🖚: (काश खबुकः कारवाः क्कः मधर्डकः भद्रः। नृनिः ए। विः

स्र मुक स्राप्त स्र एक है कि कि स्राप्त ব্যক্ষনিতি পর স্থানে প্র ইতি বা পাঠ: ॥ পরাত্মা ক্রোথ সংহা- 📜 (तो व्यास्था (मक्वाहक:। भ्रव्याक: जागद्रः कामः मःयागान्तु जिन्द्रः कः ॥ वलाउ ञ्रात नलाउ इंडि मर्वाक्र ज्ञान मर्वाग इंडि दा भाठे: ॥ (क्वाभाष्ट्रा नहाका-ভোমাত্ গান্তানলক্ষা:। মূথ ক व्यवहानना कालकिन्त्रा गरायदः॥ ছায়া পুঞ্চ সংঘাতো মলশঃ 🗐 व्यवाहिक: । ऋः । सः ॥ है जि नन्द्र न खिषातामा विद्याल वर्गा**डियान** मध्यक्ष ॥

প্রিং ল্লী স্বিভালং ইভি রত্ন-ম্পালা চাপালে নুলেপন্যোগ্য পি श्रे पृष्ठे हा मार्गिनुवा । इंडामद्रः १। जन्दर**ा हेलि सफ्तदावनी ॥** वर्ग है शु की वित्तरमन ॥ हन्सन । इंडि (मिनी।। नर्नकः भू भ्री हिक्ष्म रिवि उान কাচ নীলাকাদি:। ইত্যমর ভরতৌ ় ধূৰ্ণকঃ পু•্ চারণ:।ইতি মেদিনী।। मखन । ইতি भदत्र द्वावनी ॥ वर्गकविः भू॰ व्यवद्रभ्यः। ইতি ৰিকাণ্ডশেব:॥

দুতো মাধা মহাতে জা যুগান্তক:।। ।। বর্ণক্পিকা জী মস্যাধার:।। খথা । मजीयानी मजिमित (मंद्याक्तु वंर्न-কূপিকা। ইতি ত্রিকাণ্ডশেব:।। বর্ণচারক: वि চিত্রকার:। ইডি मक्रामा॥ বৰ্ণজ্যেষ্ঠঃ পু॰ ব্ৰাহ্মণঃ। ইডি জি-কাও্যশ্ব: 11 বৰ্ণজ্যেষ্ঠ: ত্রি স্ববর্ণাপেক্ষোক্তমবর্ণ: 1 পারিভাবিক হীনবর্ণকর্তৃক প্রা-ति **ভাবিক্বর্ণজ্যে**। इक्रम्यादिवार् जि-(यए। यथा। भीन कर्कं वृण्डिक तिशाः ति इ जुन। धनुः कविष উক্তঃ। স্বস্তু নরম্বয় মেষ বিশ: স্১ र्याङ्य वय जी कथिता श्ववज्ञाि । বৰ্ণজ্যেষ্ঠ: চ যা নারী বর্ণহীনক্ষ-यः भूगान्। उता विवाद मृजुः न्। य्यानाचाव नःगयः ॥ ইতি জ্যোতিস্তত্ত্বেশকোটন• ॥ বর্ণত্লিঃ জ্রী লেখনী। ইতি শদ্ ब्रज्ञावनी ॥ वर्गज्विका खो ल्यभी। इंडि श्वावनी ॥ বৰ্ণতূলী জ্ৰী লেখনী। ইতি ত্ৰিক ও:শ্य:॥ বর্ণনে ল্লী কালীযক। ইতি ৯টা-ধর:।। বর্ণনাতরি তি ॥

বর্ণদাত্রী ছরিছা। ইতি রাজ

निर्घन्छै: ॥ दर्गनाञ्जि वि॥ वर्षकृतः भू विभिः। उर्भर्यायः 🚅 । লেথ: २ বাচিকছারক: ৩ স্বস্তি মুথ: ৪। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষ: ॥ दर्गधर्मः भू क्ली वाक्षण क्रविय विमा " कर्डवा कर्या छत्रया। याजन मान वाक्राना नु ি ুহঃ। অধ্যাপন চাধ্যয়ন ষট্-ৰ্যাণি দ্বিজ্ঞাক্ত ।। দান মধ্য-नः बङ्धाः भूषाः कृष्टि विनारयाः । पर्ला युक्तः क्विगन। क् व रिवंभी। न्। भगाउ। भागतिव विकाली नाः मृष्ानाः वर्गमाधनः। काक कर्म उथा जीवः भाकयञ्जा १ नि श्चिं ७:।। क्षमा म्या म्या मान म-(बाज खार्ग वर ह। बार्क्डवः চানস্যা চ जीर्थानुসরণ তথা ॥ সভ্যাপ আন্তিক্য শুদ্ধা চে-नित्यनिगुरः। (एवठा छ। इन • भूबा ব্ৰাহ্মণানা বিশেষতঃ ॥ অহি সা शियवाहिष मरिम्मा मकन्छ।। সমাসিক নিম্ব ধ্যা চাত্রণে श्रुवीयुनिः ॥ भाजाभाजा वृाका ণানা স্ত স্থান কিবাবতা। कान रेनमुः कवियागाः मःग्रासः युभवाधिनाः ॥ देवम्। । ना भाक्छः ञ्चान अवर्थ मन्दर्खाः। नाम्नर्दः

म्षुषाञीनाः भित्रहात्त ज् वर्डाः ॥ इंडि कोर्प्य २ व्यक्तायः ॥ # ॥ অপিচ। মার্কণ্ডেয উবাচ। স্থারীত ন্তানুবাচাথ তৈরেব॰ চোদিতো মু-निः। मृश्व जूनयः मार्व धर्मान् द-क्कामि माथ जान्।। वर्गाना माणु-মাণাঞ্চ যোগশান্তঞ্চ সত্তমা:। य-জ্জাত্বা মুনথো নিভ্যুণ মুচ্যুতে জ্ব-चवन्ननार ॥ वाकागा वाकारिनव উৎপল্পো ব্ৰাহ্মণঃ মৃত:। তস্য ধর্মণ भुवक्रामि उ॰ (यागाः (मण मिव চ।। কৃষ্পারে। মূগো যত্র স্বভাবা-खु शुवर्डां । जिमन् (माम वमन् **ध**र्यः ज्ञक्ख वृक्तिभाउमः ॥ **य**-ধ্যাপন চাধ্য্যন যজন যাজন ख्या। मानः भुष्ठिगु इरेक्टव कर्म्य वर्षेः ক মিহোচ্যতে ॥ অধ্যাপনঞ্চ ত্রি-विष धर्मार्थ हाज्यकात्र । भूभ्या কারণঞ্চেতি ত্রিবিধণ পরিকীর্ত্তিত ॥ নৈষা মন্যতলো বাপি দৃশ্যতে যত্ৰ মানবে। তত্ৰ বিদ্যা ন দাতব্যা পুৰু-বেণ হিতৈৰিণা॥ বোগ্যানধ্যাপথে-हियान् बद्धानि ह (याक्रायर । विक्जिन शुजिगुकानि हिम्गृहधर्म-পুলিদ্ধযে।। বেদ মেবাভ্যসেমিভ্যু मूही (माम मनाहिनः। याब्रव्यक्तः यथागङ्या पर्वाधिखानु नावजः ॥

निजाः सिमिखिकः धर्मः कर्मा नर्गाए भुवञ्च छः। ७ व मृत्य विषय यथान्।-য মন্তব্দি হ:॥ সায় প্রাত ক্পাসী-ভ বিধিনাগ্নি দিজোত্তন:। কৃতস্না-नः भुऋदी उ विश्वस्य पित पित ।। অতিথিঞাগত ভক্ত্যা পূল্যেছজি-**ভো गृ**शी। अन्यानग्यागञान् विशु-न् शृक्षयपि विद्याथ छः ॥ स्राज्ञ नित्र তে। নিভ্যুণ পরদার বিব্ছিট্রত:। मञ्जानी बिउकाक्षः स्थ्यानित्रः (उ) ज्वर ॥ व्यक्यं ि ह मःशाः छ भुगारम रेनव द्याहरयर । भिया । हि-ভা॰ বদেদ্বাচণ পরলোকাবিরোধি-बी ा এव धर्मः ममुद्धिः वृक्तिभा मनाम जः । धर्मात्मवस्त्र यः सर्याऽ স याञ्जिकाः भमः ॥ 🗱 ॥ हात्री 🤊 উবাচ। क्षजारीनाः প्रक्रामि यथा वषनुभ्दभः। (यन (यन भूवर्डस्ड विधिन। क्वियास्यः॥ द्वाका ह क्व जियरेक्टव भुका ध्रामंग भानास्य । क्रयं। १९४४मः मन्।क् युगयुरका य-थाविधि॥ मन्त्राक्शन॰ चिकार्शुरङ्ग ধ্মগুদ্ধি সমধিতঃ। দেব ব্ৰাহ্মণ ভ क्रण भिज्ञार्याभद्र खथा ॥ श्रामान रिव व्यवाकाङ्की व्यवयामा विवज्ञत्य ८। উত্তনা পতি মাপ্নোতি ক্ষ্তিয়ো **एव भारत्रम् ॥ क्षा भा भा भा क्ष**

वानिकाः अर्यप्रोदिस्मा यथाविधिः দান ধ্যা যথা শক্তা দিজশুশু-ষণ তথা।। লোভ দম্ভ বিনিমূক্তিঃ... সভ্যবাগনস্থক: । খদার্নিরভো मान्यः भवमात्रविविद्धितः ॥ धरेन विश्वान् समञ्जूष्ठ यञ्जकारण प्रया-চিতঃ। অপুনতঃ স্বধর্মেষু বর্ত্তেত (पर्गाउनार ॥ यद्धायाम मा-নানি স্বৰ্য্যায়িত্য মতন্দ্ৰিত:। পিতৃ-कार्या अरकारण नात्र मि शहन उथा ॥ এउदिमात्रा कर्त्याकः स्थ-र्य मनुष्ठिष्ठ इः। এ इत्रास्त्र त्रामञ्ज मुकः मामाज मः भयः ॥ 🛊 ॥ दर्गः विषम्। भृत्याः सर्गाः भृषः अ्राष्ट्रः ण्डः। मामवर वृाक्षगानास्त्र विरम्परवन ननाहरत्य ॥ व्ययाहितः भूमाला স্যাৎ কৃষি বৃত্ত্যৰ্থ মাশুৰেৎ। পাক যজ্ঞ বিধানেন যজেদ্দেবানতন্দ্রিতঃ ॥ भूनुागाः मामिकः कार्याः वश्नः न्याय वर्खिनाः । शात्रनः कीर्ववज्ञार विश्राहिष्ठे छ। जन । चनाद्र वृ রতিশ্চৈব পরদার বিধক্তিতঃ॥ পু-রাণ্শুবণ বিপালার মি হস্য প্জ न॰। তথা বিশুন্নফার আ সত্র• षिति पिति ॥ अञ्च कत्रायनः हेव्य द्राग (हर तिवड्र्जन । ३४**॰ ऋर्व॰** ख्या मृत्यु भागायाक कायकर्विश्वी

ঁ স্থান নৈন্দু মবাপ্নোতি ত্যক্তপাপ: नुभूग्रक्ट । इंडि नाव्रिग्रह ७०। ৫৪ व्यव्याती ॥ अ॥ व्यन्ता भना-लामावाह। मान मध्यम याखा कञ्खांखि धर्म खन्याभन विना।। বাজনাধ্যয়নে যজ্ঞ স্তথা পুত্ৰ পুতি-गुरु:। ७७८ मभाक् मभावााउ॰ ত্রিভ্য চাস্য জীবিকা॥ দান ন্ধ্য-यन यक्तः क्वियम्। भारत विधा থৰ্ম: পোক্ত: ক্ষিতে রক্ষা শস্তাজী-वक्ठ की विका॥ मान मध्यन यख्डा বৈশ্যস্যাপি ত্রিধৈব স: ৷ বাণিজ্যু भाभूभावाध्य कृषि रेक्तवामा कीति-का।। नान यङ्ग १थ मृत्येषा वि জাতীনা ত্রিধা ন্যা। ব্যাখ্যাতঃ म् मुद्राया १ शि जीविक। का कर्का जा ৷৷ তদ্বদ্ধিলা তিশুশুবা বোষণ ক্ৰম विकरेगः। वर्गदर्मा ख्रिप्स (भाकाः শুংতা মাশুমা জ্বয়: ॥ ইতি মার্ক-**७ अपूजारा महालमान्यामनाया** यः ॥ 🗱 ॥ अभिव्यथः। नाक्षणा नुकाः (यानिञ्च। (य च कर्प्यग्रदाञ्च ङाः । (उ न गुखन बी (वयुः वर्कमानि यथाकः भः ॥ ज्याभन भयायन यकन या-লন তথা। দান পুতিগৃহ কৈব यहेरनागुनुक्यनः॥ याञ कर्मनाः

मना जीनि कर्यानि जीविका। याज-नाष।। भरन हिच विशूक्षाह शुर्विशृश्ः । অবা ধর্মা নিবত্তত্তে ব্রাহ্মণাৎ क वियः भुजि। अधाभन याजन् ज्-তীয়ক পুতিগুহ: 🖫 বৈশ্য পুতি ও থৈবৈতে নিবত্তের মিতি স্থিতিঃ। ন তৌ পুতি হি তান্ ংর্মান্ মনুরাহ পুরাগতি: ॥ শহাস্তভূত্ব ক্রস্য বণিক পশু কৃষি বিশঃ। আজীবনার্থ॰ थर्माञ्च नान गयुग्न र किः ॥ तना-ভ্যামো বার্ক্ণন্য ক্ষ্ত্রিখন্য চরক্ষ-णः। वार्डा करेगंव विमात्रात्र विमिष्ठा-नि सक्यम् ॥ अजीव स यायाकिन ব্ৰাহ্মণ: স্বেন কৰ্মণা। জীবেৎ ক্ষত্ৰিয ধ্যেণ স হান্য প্ত্যুনন্তরঃ ॥ উভা-ভ্যা নপ্যজীব•স্ত কথ• স্যাদিতি চে-ভবেৎ।কৃষি গোরক্ষ মাস্থা জীবে-**ৰৈশ্যস্য জীবিকা**ণ ৷৷ বৈশ্যনৃত্ত্যাপি कीव ख वृक्षियः कवियानि वा शिना भागा भन्नाचीना क्षि य-द्भि वज्रद**् ॥** क्षि माधि क मन् ত্তে স। বৃত্তি: সদিগহিতা। ভূমি ভূমিশ্যাণ শৈচৰ হন্তি কান্ত মধো-मुयः ॥ इन्छ वृज्तिवनगा उर জভো থৰ্ম নৈপুণ। বিট্পণ্য মুজ্-তোদ্ধার বিক্রেব বিত্তবর্চ্চন ॥ স-ৰ্বানুসানপোছেত কৃতামঞ্জ তিলৈঃ अरु । অশ্যানো জবণকৈব পদাবো। থে চ মানুষা:।। সর্বঞ্চ ভান্তবং রক্ত॰ भागको शाविकानि ह। अभि हि স্যু ররকানি ফল মূলে তথৌষধীঃ ll অপ: শব্ৰ বিষ মা'স সোম शक्षाः मह अवनः। क्वीतः (क्वीपुः परि श्वः रेवनः मध् छउः समान्।। व्याद्रग्राः क शम्न मदान प्रशिक्ष वया कि ह। भर्ड नी लक्ष वाकाक जर्दा रेक्ककका ख्या ॥ कामगूर-शान्। कृष्याञ्च स्यामय कृषीवनः। বিকীণীত ভিলান্ শুদ্ধান্ ধ্যাথি ম্চিরস্থিতান্॥ ভোজনাভ্যঞ্জনা-मानाम्बरगुट ब्रक्छ जिलाः। कृ মিভূত: শ্বিধায়া পিত্ভি: সহ নজ্জতি।। সদ্যঃ পত্তি মাংদেন ল'ক্ষা লবণেন চ। ত্র্যেহণ শূ ছী-ভবতি বান্ধণ: क्षीরবিক্ষাৎ।। ই ट्रावास भगागः विक्याम्ह-কামতঃ । বুল্কাণঃ সপ্তরাত্তেণ বৈশ্য ভাব॰ निष्इं ।। त्रना द्रोन निमा-एवडा नरव्य व्यवन ब्रोमः। कृष्ठा मक्षा-কৃতল্পেন ভিলা খান্যেন ভৎ সমা:॥ कीरवरम्टिन द्राजन्यः मर्खिणाभाग्य-व्य जः। नरवृत ब्रागमीः वृद्धि मि भ्रत्ते उठ कहिं हि< ।। (या ला जामध-भा बाउत बी (वनु ८ क्रेक्यां जि: ।

ভ রাজা নির্দ্ধন কৃত্বা কিপু মেব भुवामरवट् ॥ वद्गः स्वयस्या विख्ला ন পারক্যঃ স্বন্ধিতঃ। পর্ধ্যেণ জী-বন্হি সদ্য: পত্তি জাতিতঃ ৷৷ বৈ-**(म**डा **१**कीवन् स्थार्या म् नुवृज्जानि वर्ज्य । अनाहत्रमकार्याति निव-র্ভেড দক্তিমান্।। দ্বেশকুবংক श्राम्याः स्मृ: कञ्जूं विक्रवानाः। भूध मात्राज्य शास्त्रो जीत्रज कार के-र्षा 🖫 ।। रेक्या 😑: भूठ वितेष्टः भू-শুষ্যন্তে দ্বিজাত্য: ৷ তানি কাফ্কক র্মাণি শিল্পানি বিবিধানি চ।।বৈশ্য-বৃত্তি মনাতিষ্ঠন ব্ৰাহ্মণ: বেপথি ছি-**७:।** ञर् खिक्षिज: नीम विमः धर्याः अभाष्ट्रदर ॥ अर्ब छः भूष्टिगृङ्गीया-ঘ্রাহ্মণ স্তুনযঙ্গ ডঃ। পবিত্র দ্ব্য ী-ভে**্তৰ ধূৰ্মতো নোপপদ্যতে** ॥ নাধ্যাপনাআজন:দ্বা গহিতা দ্বা: পুতিগুহাৎ । দোষো ভবতি বি भागा ज्वाम् मना हि छ ॥ जी-বিভাভ্যযমাপনো যোনমক্তি যত ন্ততঃ। আকাশ মিব পক্ষেন ন স পাপেন লিপ্যতে ॥ অজীগৰ্ত্ত: সূত্ৰ• হস্ত মৃপাসপ্র ভূক্ষিত: । ন চালি-প্যত পাপেন ফুৎপুঠীকার মাচরন্ ।। अगा॰म भिह्नाखा २ खु॰ धर्मा ६ म विष्ठक्रा शुभागानाः अदित्रक्रार्थः

ं वामरमरवा न लिश्ववान्।। ভরদ্বালः क्षृतार्वञ्च म भूष्या विज्ञान वरन। वः च्यी गाः भु डिक गु। इ वृ (था खाक्ता महा-छनाः ॥ कृपार्ड का उपनागाषि-याभिवः यंजावनी । हुं । हुं । वह मानाय वर्षावर्ष विष्ठकानः॥ अ जिन् राज्याक्रमाखा उरेथराव्यापनामि । পুতিগুহ: পুত্যবর: পুত্র বিপুস্য গহিঁত:।।যাজনাধ্যাপনে নিত্যু কি-যেতে স ক্ ভাতামা। পুতিপুহস্ত কি यट म् मृाम् भारता हा स्यानः ॥ जभ (र्। বৈ রপৈত্যেনো যাজনাধ্যাপনৈ: কৃ ত । পুতিগুহনিমিত্ত ত্যাগেন ত भौभव हा। निर्वाक्षिम भागमिन वि (भू। जीवन् गठ छठ:॥ भू जिनुहाहि ল: শ্বো স্ততো পুঞ্চ: পুশস্তে॥ भी निष्डिः अन्। विहिष्डि भनः वा न्ः थिवीभिजः। याग्रः म्राट माउति र्वि रेनु इहिट्म खाग गईि ॥ य क्उक क्ठार क्वाङ्गी ब्रजाविक रंभव ह। श्रितगुः श्रान्य भग्नश्च भूर्वः भूबं भए। घरटा। मस्र वेखागमा ४ मात्रा दारा। वाजः करश जगः। शुरशाः গ: কম্যোগত সৎপ্তিগৃহ এব চা৷ ৰিদ্যা শিল্প ভৃতিঃ সেবা গোরক্ষণ বিপণি: কৃষি:। ধৃতি ভৈক্ষণ স্পী **५७ ५ण की**वन(इ.ठव: ॥ <u>य</u>ाकान:

ক্ষত্রিয়ো বাপি বৃদ্ধি নৈব পুযোজ-(यट। कामछ थन धर्मार्थ प्राट भाभीयरम २ ज्ञिकाः ॥ ठखर्थ भारः দানোপি ক্ষতিযো ভাগ মাপদি। পুজারক্ষন্ পরং শক্ত্যা কিবিষাৎ পুতিম্চ্যতে ॥ স্বধ্যা বিজয় স্তস্য नाइरव महार भन्नाश्रयः । भाजन বৈশ্যানুক্ষিত্বা থঘাঁয় মাহার্যেদ্বলি• ।। খান্যে হপ্তম॰ বিশা॰ শ্লু॰ বি॰শ॰ कार्याभगावतः। कत्याभकत्रभाः भू-**लाः का**त्रदः मिन्निय खणा ॥ मृमुख वृज्जि भाका क्रम् क्रम्ब भादा (राष्ट्रापि । धनिनः वाभुष्भातासः देवनाः भूरम्।-জিল্লীবিশেৎ ।। স্বৰ্গাৰ্থ মূভ্যাৰ্থয়। विलानाद्वाथरयञ् मः। जाञ्जाञ्चा भद्मा सार्मा कृठक्ठाठा ॥ विभूतियेव म्मूना विनिष्ठे कर्य की खंडि । यम् छ। २ न । विश्वक्रिक् তন্তবভ্যস্য নিম্নলং ॥ প্রুল্পা ভস্য रिङ वृर्भिः अभिष्यान्यश्वः । **म**ः किकार्यका मामाक ज्ञानाक পরিগৃহ-॥ উদ্বিধ নন্ধ দাতব্য জী-नानि वसनानि छ। भूमाकारेम्हव थाः न्याना॰ जीना रेम्हत शतिह्नाः ॥ न म्पू भाउक किक्टि न ह मः सात मञ्जि। नामग्राधिकादम थरमाछि न ध्यार भुजित्मधन ॥ ध्यां भ्रव स

ধ্মজ্ঞা: সভা॰ বৃত্তি মনুধিভাঃ । । अञ्चवकं व दूरा छि शुण मा शुर्श्यु -বন্তি চা৷ যথা তথাহি সদৃত্ত মা ভিপ্তত্যনসূদক:। তথা তথেনঞা মৃঞ্চ লোক- প্রাপ্নোত্যনিনিডে:॥ শক্তেনাপি হি শ্দেণ ন কার্য্যো थनमध्यः। मृत्मु हि धन नामानः ব্ৰাহ্মণানেৰ বাধতে।। এতে চতুণাঁণ वर्गना नामक्षयाः भुकीर्डिजाः । যান্ সম্যগনুভিষ্টন্তো বুজন্তি পর-भा॰ गिंजि॰।। এष धर्मविषिः क्ट्य শ্চাতুর্বর্ণ্যস্য কীর্ত্তিতঃ। অতঃপর• পুৰক্যামি পুৰাৰশ্চিত্তবিধি শুভ ॥ इंडि मानत्व धर्मणाख्य ভ्रष्टलाः कायाः मःश्रिजायाः मनामा १४।। यः ॥ अना वर्गमाय मुष्ठेता ॥ क्षी खबन ॥ विख्रतन ॥ শ্রাদিবর্ণযোজন।। দীপন। ইতি হর্ণবাভো ভাবে ২নট্ পুত্যবেন निव्यवः ॥

বর্ণনা জী গুণকথন । ভংপার্যান: । ইড়া২ স্তবঃ ৩ স্তোত্র ৪ স্তৃতিঃ ৫ নুতিঃ ৬ শ্লাবা ৭ পুশাসা ৮ অর্থ-বাদঃ ৯ ইভি হেনচন্দুঃ ।।

वर्गनीय॰ जि वर्ग्यः। वर्गिउवप्रः। ইতি वर्गवात्जाः कर्मांग व्यनीय भुज्यस्यन निष्ठमः॥ इत्यानिभाषानि यथा । यथ वर्गानि कथार जानि यानि कवी यहाः। सहाकावा भुङ् ियु भु-वृद्धाहि ज्ञ स्नाद्धा साझा द्वा अवस् भूद्धाहि ज्ञ स्नाद्धा साझा आक्षवस् भाः एम गान भूती भद्धा १ क्व महि द्वा भूषा स्वार्था स्वार्था । साखा मृज द्वा भूषा स्वार्था स्वार्था विद्धा स्वार्था स्वार्था विद्धा विद्धा स्वार्था भूद्धा भूद्धा भूद्धा स्वार्था विद्धा स्वार्था स्वार्था । स्वार्था विद्धा स्वार्था । स्वार्था विद्धा स्वार्था । स्वार्था विद्धा स्वार्था । स्वार्था । स्वार्था वर्णा । स्वार्था वर्णा । स्वार्था वर्णा । स्वार्था । स्वार

বর্ণপুষ্ণ প্ রাজতক্ণীপুষ্ণ-বৃক্ষ:।ইতি রাজনিঘট:॥ বর্ণপুষ্ণী জ্ঞী উষ্টুকাণ্ডীপুষ্ণবৃক্ষ:। ইতি রাজনির্ঘট:॥

का। इंडि मद्याला ॥

वर्ণপুষাদন ক্লী অভক। ইতি রাজ-নির্ঘণ্টঃ ॥

বর্ণমাতা জ্রী লেখনী। ইতি হারা-বলী।।

वर्गमाञ्का श्री मत्रश्री। **३७** मपद्रश्रवणी॥

বর্ণমালা জ্রী জাতিনালা।। অকর-শুণী। তত্র সংস্কৃতবর্ণাঃ ৫০ জপ-নালাযাং৫১.ইন্স্রেগাযুবর্ণাঃ২৬।

कत्रामीयाः २०। श्विक व्यर्थाए इन्भीयाः २२। जात्रवीयाः २৮ । भावभीयाः ७)। जूबक्कीयाः ७०। क्नीयाः ४)। गुक् अर्थाट इंसू नानीयाः २८। वाहिन्एभीयाः २२ । उर् वर्था८ अनन्ता बीयाः २७। न्यान्एमीयाः २१। इत्हिल्ममी-याः २०। जाजात्रीयाः २०२। वृक्त (मणीयाः १२। हीना भीयवर्गाः म-माञ्रकाः उह्दयाथाः ৮००० ॥ 🗱 ॥ व्यकादा निक्क काद्राख्यर्ग क्रिक्शकाणज्जभगाना। यथा। সন্প্রমারস ভ্তাযা **मा**८क्रम**ाँउ** माला माञ्कारेर्गः करमक्रिः। त्रविन्धृरैकः नाष्ट्रेवरेशं व्रष्ठर्वजनकर्य ने ।। जामि कु ह हे जु भू यु मरवा रक्षी वर्गाः भुकी खंडाः । अकाजाि वर्गान् निविन्तृन भुः ভেত্তক কৃত্বা শত স**ৰ্জ**পত অকা-बादीना॰ कवगादीनाक वर्गाना॰ **य**जिमवर्गः मानुश्राद्रः कृष्। भृत्रं न्हार्य) मखक्रभः कार्याः। यानन পুকারেণাষ্টোত্তরশালেশ্যা জ পো ভবভি। অন্তৰ্গন্ধন মিভাগ वक्ति ।। अविनाः वर्ग महायं। श-শ্চারান্ত্রণ জগেৎ সৃধীঃ। আহারা-रिक्षकात्राञ्च° विन्मू यूक• विভावऽ ∦

চ।। বর্ণমালা সনাখ্যাতা অনু-लाग विलाभिका। क्षकात्र (य-ক নেবাত্র ভত্ত মন্ত্রণ জপেনহি।। ইতি নারদীযবচনাৎ ॥ পুকারান্ত-तः विणुष्कश्वतः। **अनु**लाभविलाः स्मिन वर्गाष्ट्रकविराखनखः । मा**ख**-ণান্তরি তান্ বর্ণান্ বর্ণেনান্তরি তান্ मन्न्।। अर्यप्राह्मनियीः भाषाः अर्द তন্ত্রপুকাশিনী । চরমার্ণ মেৰু-क्रभः लहुन• रेनवकात्रयर ॥ इंडि उत्रमातः ॥ यशिष्ठ । यनुलाम विरनासन कुछरा दर्गनान्या। व्यापि नाष्ठ नापि गाष्ठ करम् পরমেশ্বরি।। ক্ষকার । মেক্রপঞ্ नहुरम कराठन। ইতি मुखनानः-ভত্ত•॥

বৰ্ণপ্লেখা) জী কঠিনী। ইতি ত্ৰিকাও-বৰ্ণলেখা পেৰ: 11

वर्गानिथका जी कठिनी। ইভি রয়-याला ॥

दर्भव की क्षिमा। इंकि करा-भवः ॥ दर्गविभाष्टे बि ॥

वर्गविरनाउकः भू॰ स्नाकरखनः ॥ मित्राठोत्रः। ইতি মেদিনী।।

পু• মিশ্রিভজাভি: 1 বর্ণসক্ষর: **उद्यित्रग• यथा । व ज्**त् व्या बङ्गारना वाक्याकाउयः। दुक्या

বাহুদেশাচ জাতা ক্ষপ্ৰিয়জাত্য: !! केक्रमाह विनागण भाषकः मृष् জাত্য:। তাসা[•] সঙ্কর জাতেন ব ভুবু রুণসঙ্করা: ৷৷ গোপ নাপিত লীলাক্ষ তথা মোদক মূলবৌ। তা স্লি পর্ণকারে চ তথা বণিকলা ७यः ॥ नीनाङ्गात जाना इंडि মূলবস্থানে ক্বর ইতি চ পাঠ: ॥ ইত্যেব মাদ্যা বিপেন্দু সংশ্দাः **পরিকীর্ত্তি**া:। শ্দুবিশোস্ত ক क्राला रम्भा रिक्ना विकासनाः ॥ विषकर्या ह मृ मु।या॰ वीय्याथान ह-কার স:।। ততো বভ্র: পুঞাশ্চ नरेत्र जिल्ला मित्र दिनः ॥ नामादादः कर्या कादः भाइकादः अविम्हकः। अ স্তুকার: ক**'সকার: যডেতে শিল্পি** না॰ বরা:॥ সূত্রধার শিচত্রকর: স্ব র্ণকার স্তথৈব চ। পতিতা স্তে वुक्रणानाम्बाज्या वर्गमङ्गाः অজ্ঞান্ত্য অধ্যন্ত্য ইভ্যপি भाठे: ॥ **यर्गकाद्रः य**र्गहोर्ग्राट <u>न</u>ाञ्च गानाः दिखालम । वज्व जन् পতিতোবুক্ষশাপেন কর্মণা ৷৷ সূত্র-**थाद्रा विकाजीना॰ मालिन প**তि-তো ভূবি। শীযুঞ্ যক্তকাইঞ্চন দ দৌ তেন হেত্না ॥ ব্যতিক্রমেণ চি बागाः मर्। किव्क्रव ख्या । পতि- তো বৃক্ষশাপেন ব্ৰাহ্মণানাঞ্চ কো-পতঃ ৷৷ কশ্চিদ্বণিক্বিশেষশ্চ সং-नर्गाट वर्ग हार्त्रिनः । वर्गःोर्गानि দোৰেণ পতিতো বুক্ষশাপত: ॥ व्यवदेशयाः भूमायाः विज्ञकात्रमः वीर्याजः । वज्वाजानिकाकातः भः **তিতো का**त्ररमायंजः ॥ ञ्रेषानिकाः कात वीर्याए असुकात्रभारवाविजि 1 বভুব কোটিক: সদ্য: প**তিতো** গৃ-क्काइकः॥ अस्तु काइम्य वीर्याप्र न-म्रः क्रांडिक यायिछि । वर्षे रेख-ল দার চ স্কটিল: পভিতো ভূবি ॥ निष्ठाः क्षा विष्वीर्यात ताक्र वामा গোষিতি। বনুব ভীবর শৈচব পতি-(डा बादामाय उ:।। जीवतमा जू नी-যেঁগে তৈলকারস্য যোষিতি। বভূব পতিতো দস্য র্লেটস্চ পরিকীর্ক্তি **७: ॥ (ल**ंहे खीवब्रकन्त्राया॰ कनगा-**नाम** यद्भान्। नाला भला नाज्यकः **७** ७ का विश्व कन्त दे ।। कन्त द्र ज्ञान কলন্দর ইতি বা পাঠ: ॥ ব্রাহ্মণ্যা শুদুবীযেঁ,ণ পভিতো জারদোষভঃ1 नरिं। वज्न ठाखालः नर्बमार्थः भा २ मु र्टः ॥ ॐ वरव्रे गव ठा खान्। र या कारता वस्कृत ए । इस्रोकार्यप्राक्ष b1· ণ্ডালাৎ মাংসভি বভূব হ ॥ মাণ-महिन्द्राः जीवदः काठण भनिकी

र्खिंग:। (काँ विषय कि रखांद का खाद्रः পद्मिकीर्डिज्ञः॥ महा फाखान कन्याया ' व्यव्येवीर्याप (भीनक । वः ज्रजू खो क्षो भूयो इक्ति मोखि को उथा॥ इंडिक मोखिकाविडऽ ৰ দুষ্টো হন্ধি ডমৌ ইভ্যাপ পাঠ:॥ क्त्यन रुष्टिकन्यानाः जन्य न्हाञ्जा स्वीर्याजः। वज्**तः भक्षभू**धाण जुडे। বনচরাশ্চ ভেমলেটান্তীবরকন্যাযা৽ গঙ্গাভীরে চ শৌনক। বভূব সদ্যো (गा वाला गक्राभूयः भुकीर्खिउः॥ शक्राभुधना कन्यायाः वीर्याप वन्न-ধারিণ:। বভ্ব বেশধারী চ পুগ্রো যুক্ষী পুকীর্তিতঃ ৷৷ বৈশ্যান্তীবরক-न्यायाः मरः म्खी वज्व र । मूखी (या विकि देवना व लो कुकन भूकी र्डिजः॥ क्ष्मचाट कद्रगकन्।।याः द्राः জপুলোবভূব হ। রাজপুল্যান্ত কর-नारागवीं भूकी बिजः ॥ क्रमवी र्ग्या रिक्यायाः रेकवडः পরিকীর্ত্তি **७:। कलो जीवद्रमः मगाक्षीवद्रम्ठ** পুকীৰ্ভিড:॥পুকীৰ্ভিড ইড্যত্ৰ পতি-ভো ভূবি ইতি বা পাঠ: ॥ ভীবর্য্যাণ शीवबार भूत्या वज्व ब्रज्जः म्रजः। ম্মন্ত্রা ভীবরাচ্বাপি কোদালী চ বভূব হ ।। নাপিতাল্লেপকন্যাযাণ সর্বী তম্য গোবিত। ক্ষপ্রান্ত

व वश्रथण वनवान् गृगहि मकः ॥ তীবরাৎ শুগুীকন্যাযাণ বভুবুং সপ্ত; भुधकाः। (उ कलो इद्वि जन्मर्गा-ष्व वृद्ध में मार्व मा ।। तु । ऋगा भ्य-বীর্য্যেণ খতো: পুথনবাসরে। হৃৎ-সিত শ্চোদরে জাত: কুদর স্তেন কী-র্ত্তি:।। তদশোচ বিপুত্ল্য প. ভিতো পাত্দোষত:। সদ্য:কোটিক न नर्गार्थिय। बगजी उला ॥ क्रम বীর্ব্যেণ বৈশ্যাবা মৃত্যো: পুথমবা সরে । जाउः পুত্रा মহाদमु। ईनवा मह ধনুদরি:।। চকার বাগতী তঞ্চ ক্ষপ্রি-যো বারিত স্তথা। তেন জাত্যা **স** পুএफ बाग छी छ: भुकी खिंछ: ॥ क्र ध वीर्यात्र म् मुखा मृज्रातासन भाभ-ত:।বলবতেরা দুরস্তাশ্চ বভূবু স্লেছি। জাত্য:।। অবিজ্ঞানণা: কুরা চ नि-र्ख्या जनमुर्क्तयाः । (मोठाठाजविशी-नाण्ठ पुर्वार्थ। धर्मविक्जि जाः ॥ स्महा८ व्यविन्यकन्यायाः (कालाकां छ ई छू-व इ। काला अविनरकन्याया॰ **णद्राकः भद्रिकीर्खिङः ॥ वर्गमङ्ज्**र দোষেণ বস্থ্যক শঠজাত্য:। তা-সাং নামানি সংখ্যাত কো বা বকুণ षिक क्रमः ॥ रेवरहा श्चिनीक्रमा-রেণ জাভক্ষ বিপুযোষিতি। বৈদ্য वीर्यान म् मुखा वज्यू ईश्वा जनाः

॥ (उ हं गुप्तारखनकाम्ह मत्स्रोविध | পরায়ণাঃ : তেভ্যক জাতা: শুদুা-ষা॰ তে ব্যালগুাহিশো ভূবি। ইতি वुऋरेववर्खं वुऋथए७ २० व्यवतायः 11,#11 अभि । अय॰ श्रिक हिं वि षिः नमुश्रामा विगर्हिनः । सनु-ষ্যাণা মপি প্রোক্তো বেণে রাজ্যু পুশাসভি।৷ সমহী নথিলা ভুঞ্জন্ त्राक्षविभूवतः भूता। वर्गानाः मङ्गतः চকে कामा भरू उठिता ।। उठः পুভৃতি যোনোহাৎ পুনী তপতিকা• স্তিয• । নিয়েজ্বভ্যপভ্যার্থ• ভ• विगर्डि नाध्वः॥ 🗱॥ वाक्षाः क-विष्या रिका अस्य वर्ग विकाखयः। চতুর্থ একজাতিস্ত শৃদ্যে নান্তি তু প-क्षमः ॥ मर्बवर्ध्य ज्वाम् भन्नी ब्रक्कः তংশনিষ্ ি আনুলোন্যেন সম্ভূতা का जा एक गाँउ भन जा। की बनस्त का जानू विके कर्भा कि जान् मुजान् । जम्लानिव जानान् माज्रमायिन পহিচান্।। অনন্তরাসূজাতানা বি-বিরেষ সনাতনঃ। দ্বেরকান্তরাসু জা-छानाः धर्माः विष्णापम् विवि ॥ वाक्तनाट रिक्याकनामा मग्रही ना-न कायरा नियानः ग्रम्कम्यायाः यः পারশব উচ্যতে॥ ফ্রপ্রিবাচ্টু ক न्।। ज्याहात्रिहात्रान्। क्ष्म

म्प्रभू जंब काणा नाम भूकाय ।। বিপুষ্য ভিষু বর্ণেষু নৃপতে বর্ণযো র্ঘ-(या: । दिन्तुन् वर्त रेहक स्मिन् वरफ তে ९প সদা: সৃতা:।। 🗱 ।। ক্ প্রিয়া দ্বিপুকন্যায়া স্ভো ভবতি জাতি **७:। विभागमागध्रेयमार्शे द्राह्मवि-**भाक्तामुली। मृमुमारागावः कः खा हखाल महायस्या नृगाः। विमान ब्राजनः विभागु खायस्य दर्गमक्षद्राः ॥ এकान्दव चान्त्वाम्याक्ष्रकार्ग्रो यथा माञो। कड़ रितपश्को उद्य **পু। जिल्लारम्। अन्यानि ॥ अ।। भू**-আযে ধনন্তরন্ত্রীকা: কনেণোক্তা দিই **ब**न्नाः। जाननष्ठत्रनाम् स माज्रहा-यार भूठका । याका गम् भूकन्।-যা মাৰ্তো নাম হায্তে । আভী-রো २म्र% कन्याया मारयाभव्यास वि-খুণ:।। আযোগবল্চ ক্ষত্তা চ তথা-ल म्हाक्षया नृगाः। शुाजित्लात्मानः कागर म्पारभनना खगः॥ वि-भागागागव रेवामरहो क्षाधियाद म्उ এব ভ। পু গীপ মেতে জায়ন্তে প: রেপ্যপদ্য প্রয়ঃ।।জাতো নিবাদা-हु नागा॰ জাভ্যা ভবতি পুক্ষ**নঃ ।** मृनुष्कारका निवान्।। स ने विषः कुरेकः मृ उ:।। कबू की उ खाणा-या यभाक इंडि बी छं छ। विषः

িহুকেন ত্ত্বস্থ্যা গৃৎপ্ৰায়ো বেণ উচ্যতে ॥ দ্বিজাতবঃ সংগাস্জনগভারুতা॰ স্ব যান্। তান্ সাবিতীপরিভুষ্টান্ वाडा। इंडि विनिष्टिंगः ॥ वाडाः बु बाया विश्वार भाभाजा जुर्क कर्रकः। चावस्त्रवाहिशास्त्री ह भूम्रशः শৈখ এব চা। বালে। মল্লান্ড রাজ-न्। व्याक्ताविहिति (त्रव ह । निष्क করণ শৈহৰ খশো দুবিড এব চা। विनाता कु कायर व्याजार म्थनाठा-र्या अव हो काक्षणक विक्रमा ह रेगळ: সাত্মত এব চা। ব্যক্তিগারেণ বর্ণানা गरवन्त्रारवन्तन ह। यकर्यशाः ज्रा-গেন জাग**स्ड दर्नमङ्क**दाः॥≉॥ मङ्गीर्न थान्याप जू भुजिलामान्लामबाः । यानाना वाजियकाण जान् भुव-क्याम्याम्बद्धः ॥ मृत्वा दिरमञ्क रैक्टव हजानक नदाधमः। नागधः क्षञ्जाजिक उथारगागव अव ह ॥ এতে বট্সদৃশান্ বর্ণান্ জনগতি স্ব-गেनियु। মাতৃ রাত্যা পুরুষতে পুর त्राम् ह (यानियु॥ यथा खयानाः वर्गानाः ৰয়ে রাত্মাস্যজাযতে। আনন্তর্য্যাৎ यत्यानाञ्च उथा वार्श्य विश क्रमाट ॥ उ हामि वाशान् मुवश् खाडा-শ্যবিক দ্বি ভান্। পরস্থারস্য দারে-व जनगरिष्ठ विगर्हिजान्।। 🗱।। यरेथव শদ্যে বাহ্মণ্যা বাহাত জন্ত পুস্যতে ৷ তথাবাহ্যতর বাহ্য "চাতুবণে পু সূত্ত।। পুতিক্ল বর্ত্তমানা বাহা। वाश्उद्रान् भूनः । शीना शीनान् भुम्यस्य वर्गान् शक्षर्भाव जु ॥ भुन माय्ताशहात्रञ्ज भनामः नामकीव-नः। रेमजिक्कुः वाख्यावृद्धिः मूर्छ मः मु। রযোগবে।। মৈত্রেয়কস্ত বৈদেহো মাধ্ক সংপুস্যতে। নূন্ পুশ সত্য जमुः या यःहाजाए। २क्लाम्य ॥ नियारमा भागंव मूट माम नोकर्ष की विनः। किवर्ड नििंछ यः शुक्त द्वाः र्यावर्खनिवामिनः ॥ मृखवञ्जज्दमु নারীযুগর্হিতালাশনাসূচ। ভবন্ত্যা॰ ষোগবীষ্বেভে জাতিহীনাঃ পৃথক্ত-यः॥ कातावात्रा नियामाञ् ठर्माकात्रः भुभूयरछ। रेवरमञ्जामञ्जुरमरमो वहिः গুৰ্ম পুতিশ্যৌ। চণ্ডালাৎ পাণ্ডু-সোপাক স্তৃক্সারব্যবছারবান্। আ-शिखका निवासन रेवस्का भव জাগতে॥ চণ্ডালেন তু সোপাকো मूल वामन वृज्जिमान्। भूक्षमाः डा-याउ भाभः महा मङ्जनगर्हि उः॥ नियामची जू हखालाट भ्यमडाः বসাযিন । শ্মশানগোচর স্তে বাহ্যানামপি গহিত ।। সম্বরে জা-ত্ব স্ত্রো: পিত্ মাত্ পুদর্শিতাঃ **পुइमा वा পुकामा वा व्यक्ति** उत्तर य्कर्णाज्याः ॥ यजाजिकानस्त्रकाः ষট্সুতা দ্বিজধ্যিন:। শূদুগান্ত স ধ্যাণ: সর্বেপধু সজা: মৃতা: ॥ ত পোৰীন্ধপুভাবৈস্ত তে গছন্তি যুগে यूर्ण। উৎকর্মঞাপকর্ম্প মনুষেঃ-श्विर अभा उ: ॥ भगेरे उद्घ कियाला-शाहिमाः क्षञ्चिमकाउयः। वृषणवः গভা লোকে বাহ্মণাদর্শনেন চ ॥ পৌপুনা ক্ষোড় দুবিডাঃ কায়োজা कत्याः भकाः। भावताः भक्रवा की नाः किताजा रत्रनाः थणाः॥ मूथ বাহৃৰ পজ্জানা যালোকে জাতযো-विशः। (सहवाह कार्य)वाहः मर्स (७ ष्मादः मृजाः॥ (य विकाना मशनः দা যে চাপধৃ সল্ধা: মৃতা: ৷ তে নি-निरे व वंश्यू विकान भिव कथा छिः 🛾 🗱 🔰 ज्ञानो सचनात्रवा सम्रा नाः विकट्निङ। विष्कृतानाः जीः 🍅 বিগ্ৰাণ বিশিক্ পথঃ॥ মৎ न्यादा निवाहाना • उद्घे खुारगान-वम् । तिनाक हुक मन्ग्ना भावना भण्हि भन ।। क्यू गृ शृक्ताना छ-विलोकावधवन्ननः। धियनानाः हः र्यकार्यः (देशानाः जाञ्जवाहनः ॥ **रे**हे ७ इक्ष्मभाभारते यु रेभारते यु भवरत न्ह। वरम्यू (द्वाउ विकास वर्ख । स्ट

ষকর্মভিঃ।। 🚓।। চণ্ডালম্বপচানান্ত বহি শা মাৎ পুতিশুব:। অপপাত্রা-क्ट कर्खवा। धन मियाः च गर्मे छः ॥ বাসাংসি মৃত চেলানি ভিন্নভাণ্ডেষু (ভाइन । कार्कायम मलकातः भः রিবুজ্যা চ নিত্যশ: ॥ নতৈ: সম্ব मनि हर भूकरमा भगमा हत्रन्। वार्व-शासा भिष (खवाः विवाशः मृर्णः जर ।। अम (स्वाः भन्नाधीनः (एयः म्याज्जिमञाब्दन । त्राखो न विष्ठ-त्र्य (उ भारमयू नगत्रयु 5 ॥ दिवा চরেষু: কার্য্যার্থ চিহ্নিতা রাজশা-जरेनः। व्यवास्तवः भवरिकव निर्श्तवयू রিতি ছিতি:॥ বধ্যা শচ হন্য: স-**७७॰ यथानाञ्च॰** नृशाञ्चया। वश्र वानाःनि गृशीयुः भय्यान्हा छत्रगानि চ।। বর্ণাপেত নবিজ্ঞাত নর ক ल्ययानिक । आर्य्क्र मियाना र्या कर्या छः स्य विভागत्य ।। व्यनाः র্য্যতা নিষ্ঠরতা কুরতা নিষ্কি্যাত্মতা: । भूक्ष वा वा अधिष्ठी ह ला कि कनू व যোনির'॥ পিত্র্য বা ভক্তে শীৰণ भा जु (वी जयस्मव वा। न कथक्षन रू र्यापिः भुक्षि या निगहिष्ण॥ ললে মুখ্যেপি জাতস্য যস্য ^{স্তা} ঝোনিসঙ্কর:। সংশ্যত্যের তছীল নরো হল্ল মিপি বা বহু।। যত্র ব্রেড

६ शविश्वः मा कायस्य वर्गम्यकाः। द्रा हितः मह उम्राष्ट्रे किनु (भव विन-मां जि ॥ वाक्षनार्थं गवार्थं वा तक्र ত্যাগে। হনুপক্তঃ। স্ত্রীবালাভূগে পত্তী চ বাহ্যানা পিদ্ধি কারণ ॥ व्यहि मा मडा माख्य (मो विन्तुय নিগৃহ: ৷ এত সামাসিক ধর্ম চা-जूर्राणं १ वी बानूः ॥ शा म् मायाः वा-ष्मगङ्काउः (मुयमा (ह८ भूकायउ । অশ্বোন শ্বেসী का তি গছত্যা अक्षेत्राच्यार ॥ भृष्य वात्रायाः মেতি ব্ৰাহ্মণ কৈতি শুদুতা। ফাগ্ৰি-याद्धाउ म्यद्ध विम्रादिष्म्राखरेथव **ह ॥ अनार्यरायाः मम्८ शामा वान्यः** गांख यमृह्या । वाक्षां मन्द्रानार्वाः खु (नुष सु॰ (कुछ (ठफावर ॥ का-তো नार्या मनार्याया मार्यामार्या ख्रवन्खराः । बाजानार्गानार्गा ना र्याया भनार्य) इंडि निष्ठयः॥ डातु-ভাবপ্যসংস্কার্য্যা বিতি ধর্মো ব্যব-श्चिः। रिवधाराक्तसमः भूर्व उखदः भुजित्नामञः॥ मूबी ब्रोक्षय मृत्काञ काउ॰ সম্পদ্যতে यथा। उथार्यं।-ब्जा **७ व्यार्थ)। याः मर्दः मः ऋाद्र म**ः হতি।। বীজমেকে পুশংসন্তি ক্ষেত্ৰ मत्नर मनीविषः । वीक्षरकृत्व जरेथ বান্যে ভৰেষ্ট্ৰ ব্যবস্থিতি:।। আক্

वर्ग जी व्याहकी। इंडि व्यवन्तुः॥ वर्गाक्षा जी त्वथनी। इंडि वय-त्रञ्जावनी॥

वर्गाहेः भू॰ गायनः ॥ हिज्ञकतः ॥
जीकृञ्जीवनः । ইতি मिहनी ॥
वर्गाञ्चा भू॰ भदः । ইতি कहाश्वतः॥
वर्गार्झः भू॰ मृष्गः । ইতি त्राक्षनिर्यण्टः॥
वर्गि क्री वर्गः । ইতি দিজাস্তकोमुनी ॥

বর্ণিক: পু॰ লেখক:। যথা। লেথকে ২ফরপূর্বা: সু১ শ্চণ জীবকচঞ্চব:। বর্ণিকো লিপিকর শ্চাফরন্যাসে লিপি লিবি:।। ইতি
হেমচন্দু:।।

वर्तिका हो कि कि ने। यथा। लिथ-न्याः कर्तिकाणि न्याः किन्याः भि वर्तिका। इठि हाजावली।।

निजः। ইठि जिकाश्रम्भः।।

काक्ष्मम् उद्युक्तः। यथा। वर्तकाः

काक्ष्मम् उद्युक्तः। यथा। वर्तकाः

कार्य काक्ष्मम् उत्युक्तः। व्यूक्तः। व्यूक्तः।

वर्षिकः जि स्रुक्तिः। व्यूक्तः। व्यूक्तः।

वर्षिकः। व्यूक्तः। व्यूक्तः। व्यूक्तः।

वर्षिकः। व्यूक्तः। व्यूक्तः।

वर्षिकः। व्यूक्तः। व्यूक्तः।

वर्षिकः। व्यूक्तः। व्यूक्तः।

वर्षिकः। व्यूक्तः।

वर्षिकः। व्यूक्तः।

वर्षिकः। व्यूक्तः।

वर्षिकः।

वर

हन्मुः ॥

वर्गी शुः (लथकः ॥ हिजकतः ॥

वृक्षहात्री । यथा । वर्गी नाष्ट्र (लः

थरक हिज्ञकत्त्र शि वुक्षहात्रिण ।

देशि (मिनी ॥ वर्गमप्तक्षिति जि ॥

दर्गः शुः नहविष्णयः । इज्रागिनि
रकायः ॥ आफिजाः । इजि मःकि
श्रमारत्रागि हिवृज्ञिः ॥

ৰৰ্ভ ক শ্লী বৰ্ত্ত:লাহণ। বিদ্রি ইতি ভাষা। ইতি হেনচন্দু:।।

বর্ত্তক: পু॰ পক্ষিবিশেষ:।ভারই ইতি ভাষা।। অশ্বস্যক্ষুর:।ইত্য-মর:॥

বর্ত্তক পদী। ইত্যমর-

हीकायाः द्रायमुऋदेः ॥ वर्डक्रमा व्युः (मधः। ইडि मद्र-माना॥

वर्खन क्षी कृष्टिः । इंडाप्नद्रः ॥
जाक्षाद्रगवर्ख्नु न । इंडि नद्रद्रक्षाविषी ॥

वर्खन॰ क्री खी ठ्ंमनामा।। उर्कृ-भीठैः।। कीवन॰। ইতি মেদিনी।। वर्खनः भु॰ वामनः। ইতি মেদিনী ।। वर्खिको जि। ইত্যমরः॥

বৰ্ত্তনিঃ পু• পূৰ্বদেশ:। ইতি ত্ৰি-কাণ্ডদেষ:॥

वर्जनी जी (भवतः॥ भइाः। ইতি भक्तज्ञावनी॥

। इंट् स्मादाः की एडि उपानी उन की उना जारव शिंश शृबंकी छाना। वूष्को वर्डभानदार। পर्वठा छिष्ठ-छि निज्रभुवृक्षदार । किक भर्व তানাণ ছিত্তত্বে বর্ত্তমানদ্বেপি ভ্ত ভবিষ্যৎকালাভ্যা• সমন্ধবিবক্ষ-যা পর্বতা ভঙ্: স্থাস্যন্তি ইভ্যপি महार । माभीरमहा दिविषः । ज्उ-माभीत्रा, यथा। करा गागरजानि इंडि भुग्न व्यथ्यकार बंबंगान द्वार अया २३ मागहामि इंडि আগতোপি বদতি। ভবিষ্যৎ সা भीला वथा। करा यशिकामि इंडि পুশ্ৰেএষাংহ•গছানি ইতি গমন-ক্রিয়মাণোদ্যমোহপি বদতি। ইতি मुक्तताथहीकायाः मूर्गामामः॥ वर्खक इः श्रु॰ नहीर छनः॥ काकनी उः ।। कवावहैः। इंडि (मिनी।। बात-भानः। यथा। मञ्जी गुहिरदा श्वात्जा हाः श्वित्ञ (ववशावकः । (नी: नाशिका वर्डक्रका गर्वाछ। দগুবাসিনি॥ ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ॥ वर्डालाङ् न्नी लोश्विरभयः। विদ् রি ইতি ভাষা। ইতিকেটিৎ। তৎ পर्यत्रायः । बर्डजीकः २ वर्डकः ० लाङ्गङ्कत् । ८ नीलकः ৫ नील-लार ७ नीलक १ वर्डालाहकः

৮। অস্য গুণা:। কটু র্ণ। তিক্ত র্ণ। শিশিরত্বণ। কফ দাছ পিত্তনা। শিত্বণ। মধুরত্বণ। পিত্ত দাছ শমন-ত্বঞ্চ। ইতি রাজনির্ঘটঃ।।

वर्जिः जी ভেষজনির্মাণ ।। নযনা-

জনা। লেখঃ ॥ গাজানুলেপনী॥ मीलम्या ॥ मीलः। इंडि यमिनी ।।।।। বর্ত্তিবিশেষে। যথা। কতকস্য ফল॰ শহ্ন: সৈদ্ধব॰ ত্ৰ্যুষণ বচা। क्ति। त्रमाञ्जनः क्षीपुः विस्त्र।-नि भनः मिला।। এया वर्खि इंडि কাসণ ভিমিরণ পটলণ তথা । **इंजि गाक्ए १२४ व्यव्यायः ॥** वर्डिकः भु• भिक्कविष्मवः। वर्षे द इंजि हिन्ती जाका। उद्भग्रीयः। वार्डिक: २ वर्डी ० गाञ्जिकागः ८। व्यम् भाग्मस्याः। उषद्व वार्डकः मान्त्र निर्माय वीर्या शुष्टिम । उद्य जिल्लियय । इंजि बाजः निर्घणः॥

বর্ত্তি ছা বর্ত্তিপক্ষী। ইত্যানর:

11 বর্ত্তানি বর্ত্ত ইত্যাচ্ বর্ত্তঃ ।

মার্থে কঃ বর্ত্তকঃ । ভার ইতি
থ্যাতঃ । বৃতি লতিভ্যাণ তিকঃ
বর্তিকা জীলিকা। বাট্ভার ইতি
থ্যাতা । নামন্ব্য নিদ মিত্যানরদীপিকা। বর্ত্তিকেতি জিহা নীত্র

পুতিবেধার্থণ দ্বযোক্পাদান মিতি भाषवी। क्र लाज्य भूममंनार्थ मिडि রাযমুষ্ট:। ইতি ভট্টীকা সারসু न्मती।। मा ह वर्षित्रमक्की इंडि नाः না থ্যাতা। অস্যা না'স গুণা:। বর্ত্তি মধুরা কক্ষা কফ মাক্ত নাশিনী। ইতি রাজবল্লভঃ ॥ অ-बन्की। इंजि द्राजनिर्घणः॥ वर्जिः । বাতি ইতি শলিতা ইতি পলি-তা ইভিচ ভাষা। ইত্যুণাদিকো-यः॥ 🗱 ॥ त्रा भक्षविधा। यथा। পদাস্যভবা দর্গরভবাথবা ाणाणका वामत्री वालि क्लाकाः যোন্ডবাথবা। বত্তি **চা দীপকৃত্যে**। य त्रमा भक्षविषा म्या।। इंडि ानिकानुद्रात्य ७৮ **व्यव**्रायः ॥ वर्खन**मीनः। ७८**-

षर्खिष्टः जि वर्जनभीनः। ७८-भर्यायः। वर्जनः। ইত্যনরः॥ वर्जी। ইতি হেনচন্দুः॥

বর্ত্তিব্যমাণ: ত্রি ভবিষ্যৎকালাদি:
।। বর্ত্তনপুগশভাবাশুখ:।ইতি রাজনির্ঘণ্ট:।।

বর্ত্ত। ক্রী বর্ত্তি:।ইত্যমরটীকা।। বর্ত্তী ত্রি বর্ত্তিগু:।ইতি হেন-চন্দু:।।

वर्जुन जि शानवस्र। उर्भर्गायः । निरुन २ वृत्त ७। ইত্যमद्गुः॥

वर्बुं च॰ क्वी मृक्षन । ইতি রাজ-নির্ঘণ্টঃ।।

वर्जुनः भु• कनायितः । वार्षु-न।। ইতি ভाषा। यथा। कनायमऽ ज्याया (जना ज्ञिभुरो। वर्जुनाक्षेते । ইতি শব্দাना।।

বর্জা জ্রী তর্কুপাঠী। টেকোর-বাঁটুল ইতি ভাষা। ইতি হারা-বলা।।

वर्त्त हो शक्तिश्रमी। इंडि ब्राइनियंग्रे:॥

्री वर्षा की अहाः। इठामदः॥ त्वः

ছদ:। ইতি মেদিনী।। दर्जान: জী পন্থা:। ইত্যুণাদি-কোষ:॥

वर्ष क मूर्खिहिताः। ইতি कवि कञ्चक्रमः॥ क वर्षाठि। व्यक्तिश विडारेखव भूखिहिताक भाठानि हे निषावमा भाठेक्ष्रानिर्छा। एक प्रनिडाडा॰ वाष्यिछ। एउन कना हिट एक ब्रभारको गगानो व्यक ইত্যमा व्यारक ইত্যानि ष्यमा जु वर्षा एक हेज्यानिर्छनः। ইতি मूर्गान्नामः॥

वर्षः ती भीमकः। इंडि एक्सहम्पृः॥ वर्षः भू वृष्ण्यशिका। इंडि क्रोधितः॥ भूर्खिः॥ (ছरः। इंडि वर्ष्णवर्षमभाष्ट्र॥

वर्षकः भू॰ वृष्क्षिणयिका। इंडासद्धाः भूष प्रशाहेडामदः॥
वर्षकी भू॰ प्रशाहेडामदः॥
वर्षकी भू॰ वर्णमहत्रकािविष्णयः
। वहहें इंडि हिन्ती जाया। छ्टाभर्गायः। पृष्ठी २ वर्षकः ० उक्षा
८ मूजदादः ६ द्रथकादः ७ द्रथकदः
न काष्ठ्र ৮ काष्ठ्रक्कः २। इंडि
भद्दद्वावनी॥

रर्षन की (इनन ॥ वृक्तिः। ইতি
सिनि ॥

ত্রি বর্দ্ধিফু:। ইত্যমর:॥ खी यही। इंडि सिमिनी॥ সংমাৰ্জনী। ইতি হেমচন্দু: ॥ मनालभाजविष्मयः। यम्ना इंडि ভाষ। । यथा । आलुः जी कर्कत्री পারী বর্জনী চ ললম্ভিকা। ইতি জ-টাধর: ॥#॥ পুভিষ্ঠাদিকর্মণি ভৎ পুষোজন यथा। পুভিষ্ঠা यम्र (দব-স্য তদাখ্য কলস ন্যমেৎ। ঐ-नान्धाः भूकत्यम्यात्मः वाद्वतेनव ह वर्षनी ।। कलमः वर्षनी विश्व गुरु।न् ৰান্তোম্পতি তথা। আসনে তানি मर्वाणि भुगवाथाः कारभम्ख्यः ॥ স্ত্রগুবি রম্নর্জ বস্ত্রযুগ্মেন বেপ্টি-छ । मह्यो विधी गक्क विश्व न् क्र विश् कनम॰ ७कः॥ (५वड कनरम भूष) वर्षान्ता वद्य मूखमः। वर्षान्ता जू नमायुकः कलमः ज्ञानस्यमन् ॥ दर्जनी॰ थात्रया जिक्षमगुरा थात्र-(यखनः। षाडाई। वर्षानी षाञ्चः ञ्रः গুলে দেব মন্বয়েখ ॥ ইতি গাক-(उ ८৮ जव्यायः॥

 व्यक्ठा उनन्तनः । इंडि एक् प्रहन्तुः । धनिनाः गृहित (क्षयः । यथा । स्रिटिका वर्षानान्छ नन्तावर्जानः । यथा । स्रिटिका वर्षानान्छ ह्वायुधः ॥ सन्नामधा उत्तन्ताः । यथा । स्राह्याः नामधा उत्तन्ताः । यथा । स्राह्याः नामधा वर्षाना ह वाद्यन्त्री भोष्ठ द्वाविद्याः । वर्षाना उत्तमिन्न स्राह्याः । वर्षाना उत्तमिन्न स्राह्याः । वर्षानान उत्तमिन्न स्राह्याः । वर्षानान स्राह्याः । वर्षान स्राह्याः । वर

বর্জনান: পু॰ শরাব:। ইতি ধরণি: বর্জনানক: ত্রি বৃদ্ধিবিশিষ্ট:। শ-রাব:। ইত্যমর:।। স্বার্থে কপুত্যযে এর গুবৃক্ষশ্চ।।

विद्यो व्यादिक्यः। विशे हेडि

ভাষা। उৎপर्य्यायः । निक्की २ वतः वा ०। ইত্যমরः ॥ विक्की ८ । ইতি ভরত: ॥

বর্প: में क्री क्रभः। ইত্যুণাদিকোর:।।
বর্ফ গভ্যাং।। বথে। ইতি ক্রিকল্পজন:।। বর্ফ ভি। ইতি দুর্গাদাস:।।
বর্ম নী ভনুত্রং। ইত্যুমর:।।
বর্মকন্টক: পুং পর্লট:। ইতি রাজনির্ঘণটাঃ।।

वर्ष्यक्या जी मधना। हामात्रक्या ইতি ভাষা। ইতি শব্যত্নাবলী।। वर्गा न भू किवयमाशक्तिः। यथा । नर्यातः वाक्षानामा वाक्षातः कः-बियम्। চ। ७७ मामा इक नाम भुभख· देवणं। भू मृत्याः ॥ इंडि শাদ্ধতত্ত্বত শাভাতপৰচন ॥ विर्मा: भू मट्म्रिविष्मयः। वानि ইতি ভাষা। অস্য **মা•স** গুণাঃ **। चक्ष्र। वृष्रद्वः। क्षायद्वः। द्वञ्ज**ः পিত্ত নাশিত্বঞ্। ইতি রাজবল্লভঃ বর্মিত: ত্রি ব্মাযুক্ত:।ক্তসগ্লাহ:। **७८** পर्यायः । मम्बः २ मन्जः ० দ শিত: ৪ বূ ঢকন্ধ ট. ৫। ইত্যমরঃ ॥ উচক্ষট: ৬। ইতি সূভ্তি: ॥ वर्म्यः भुः भू भूरमाविष्मयः। वा মিৰ্ব ই ভি ভাষা। অস্য মা•স:

ख्याः । वाजनात्रिञ् । त्रिवादः ।

गुरुत्यव नामिष्कः। ইতি রাজ-বল্লভ:॥

वर्ग्ऽ॰ खि **अधान• । इंड**ऽमद्रः ॥ (मुक्ट । इंजि मुक्षरकायवताकद्रग ॥ वर्याः भु कामरमवः। इजित्मिमि।। वर्गा जी পতিप्रता। ইত্যমর:॥ কন্যা। ইতি মুগ্ধবোধব্যাকরণ ।। जी नीलमिकिका। इंड्र-वर्दगा मद्रः।। नीलाकाद्रवर्गा मिक्का वर्द्यगा । ভণভণিয়া ইতি খ্যাতা। মল্লিকা-খ্যাযা• ইভ্যেকে। বরিভি বণতি বর্ষণা ব্রুণ বণ ভণ শদে পচাদিত্বা-দন্ আপ্। কিয়া ব্ণীতে পৃতিদুব্যু ভন্ধতে ইতি বৃঙো বিচি বর ৷ বণ তে রণি বণা ভত: কর্মধার্থে বর্ষণা । ইতি उड़ीकायाः ভत्रजः॥ वर्बत्र क्री हिन्नृत्तः॥ भी उहन्एनः॥ বোল। ইতি রাজনির্ঘণ্ট:।। वबतः शुः भागतः। मह नीहडा छिः । কেশ:। বাবরী ইতি ভাষা।। চক্রল:।। দেশবিশেষ:।। ফঞ্জিক। । इंडि भिनि ॥ वृक्ष्विष्णयः।

कानवातूरे देखि ভाषा । ७८-

भर्यप्रायः । सुनुषः २ शत्रः **३ क्ष**

वर्दत्रकः ८ मूकनरङाः ৫ गन्नभवः ७

প্তगत्तः १ जूदाहकः ৮। अज्र

স্থাা:। কটুত্ব-। উষ্ণত্ব-। সুগন্ধিত্ব- 🍴

। বারি বিলগ বিষ রুগোষ নাশি-ত্বপা ইতি রাজনিঘণ্টঃ ॥

वर्षक्रकः क्ली हन्त्नरङमः । उटशर्यप्रायः। वर्षद्रान्थः २ स्थ उवर्षक्रकः
० मी ङ ४ मृगिक्तः ६ शिखादिः ५
मूक्रिः १। अम्प्रख्याः। मी उनदः
। ठिकृदः। कर्ष मास् छ शिख अश्र कर्ष्ट्र वृष नामिदः । विस्मवा मुक्करमायि क्रिक्षः। ই छ द्राजनिर्यण्टः।।
वर्षक्रा खी शृङ्गर्डमः। माकर्डमः
। ই छ स्मिनी।। मिक्क्रार्डमः।
ই छ मस्द्रद्वावनी।।

वर्षता / खी क्यू पृत्रक्वित्मयः। वातूरे वर्षती / हें जि जाया। जर्मणायः। क्वती) ज्रूमी 8 श्रमभुद्धा ६ ज्यक्व-गितिका ७। ज्यक्षगक्का १ क्वता ५-श्रमभुद्धिका २। हें ज्ञानत म्पत्रद्धा-वर्षती । जम्माः भुकाता छ्णाम्छ । वर्षती क्वती ज्रुमी श्रमभुक्षाक्कग-क्षिका। भणाम ख्रव कृष्य ज् कठि-ख्रत क्रिंग्राको ॥ कालमात्रः क्ता-व्याप्त क्रिंग्राको ॥ कालमात्रः क्ता-व्याप्त क्रिंग्राको । ज्ञ्रम् (स १ व्याप्त क्रिंग्राका वर्षेभव ख्राच्या १ भतः॥ वर्षती वि उपः क्ष्यः मी-७० कर्षे विमाह्य हा । जीकः क्रिंग् क्रिंग्राका क्ष्याकि ह ॥ भित्रता क्ष्य वाजाम् म्य क्रिंग्र विषाण इः। ইতি ভাবপুকाणः॥
दर्वतीकः श्रु तुष्म गयश्विकात्कः॥
क्रांतिक्र छनः। ইত্রাদিকোষः॥
ख्र छात्राक्षिका। वात् ইত্র मिन ইতি
ভাষা। ইতি শব্দ जिनुका॥ महाकानः। ইতি হেম চন্দুঃ॥ তর
প্রণী যবকারাদৌ পঠিতো হ্যু
ফ্রের্থাঃ॥

বর্রা স্ত্রী বর্রী।ইতি শব্দ নিদুকা।।
বর্রি: পু॰ ঘমর:।ইত্যাদিকোব:।।
বর্রঃ পু॰ বৃক্ষবিশেব:।বাবলা
ইতি ভাষা। তৎ পর্য্যায:। যুগলাফঃ ২ কণ্টালুঃ ০ তিক্ষুকণ্টক: ৪
গোশ্র: ৫ পণক্তি গীলঃ ৬ দীর্ঘ
বর্ণী: ৭। ক্ষান্তক: ৮ দ্ট্রীলঃ ৯
শ্রেন্তক্ষ: ১০। অস্যুগুণা:। ক্ষাযুহুণ উক্ষরুণ।কফ কাসান রক্তাতিসার পিত্ত দাহাশো: নাশির্থ
।ইতিরাজনির্ঘণী:।।

वर्षः भुः क्षी वृष्टिः ॥ जम्भुवीभाः मः ॥
दर्भद्रः ॥ देश्वाभाः ॥ द्रम्बीभः ॥
देशि प्रिति ॥ प्रयः ॥ देशि एक्षाः ।
द्रम्यः ॥ सः ॥ व्ययं मश्रवीभानाः वर्षः वन्नः ॥ व्यवं विकास । विकास ।

ক্রেঞ্চ শাক পুষর সংজ্ঞাঃ। তে-वा॰ পরিমাণ পূর্বমাৎ প্রমানু ক্তরোক্তরো যথাস:খ্যু দ্বিগুণনা-নেন বহি: সমন্তত উপক্লা:। ফারোদেক্রসোদ সুরোদ ঘৃতোদ क्षीतान नवित्र एकान मूक्षानाः अ-छ जनस्य:। मछत्रोभभतिथ। ইगा-**७**ऽष्ठत्रद्वीश्रमभागा अरेकक स्मार्ग य-थानुन्दं मछ अभि वश्ति (भजु भ्-থক্পরিত উপক্লিভা: । তেষ্ भून जीवा विष् विद्यानिश कि बन न्वडामाञा जामानी (ध्रुवा केख यक्क বাহু হিরণ্যেতো ঘৃতপৃষ্ঠ মেধা-िथि वं: डिरहाज मः छान् यथाः **म**्थ्रीनेदेवकियानक स्वक (प्रवा-बिम कि विराध । उग्र इ वा अ.उ (माजा: ॥ श्रिग वृ उक् उ॰ कर्म का **হনুদ্র**র্গান্তিনেশ্বর•। যো নেনিনির **द्रकत्त्राहाया॰ धून् मछ श**ाहियीन् । ছाया॰ वन् उत्या निवनान्।। ज् न'॰ স্থান ক্রদ্যেন সরিদ্ধির বনারি **डि:। मीमा ह जूड निज्रेड** पील দ্বাপে বিভাগশ: ॥ এবং পিডরি अः भुवृत्त उत्तृभामान दर्जभान **जाग्रीर्था क**र्योभी क्यः भुका छैत-माखर्गातकाः भर्गुरमाभारः । जन्भवा जा जगवाना मिशूद यः मिर লি গায়ন্তী পূর্বিতি বামাপ্ররম মতিয়াপ্যামাস । তস্যা মুহ্বা-জালান স রাজবর্ধ্য আগ্রীপ্রো নাভি किः शृह्य इति शर्यनावृ अगाक হির্থায় হাড় ভাগুখ কেত্যাল সং-क्छान् नवभूधानजनगर्। आग्नीयु-**जु**जा (ख माजु ब्रम्गुङ्गामीट श खिरक নৈৰ সংস্থানবলোপেডাঃ পিতা বি-**ভका णाजा**उनानानि रथा वि-ভाग॰ अधुद्दीभवयाभि दुलुङ्गः । य-विश्वत्रवं ि नदरशास्त्र महस्यामानाः नि गर्छे जि मां।। तार्गाविज्ञिः ग्रिन ভক্তানি ভবন্তি। এফা নধ্যে ইলা वुड॰ नामा छ। छत्रव्य॰ यम। नास्त्री-मविख् कः नर्व कः भोदर्भः स्वागि द-द्वारका (नक् वी भाषाम **मगुवार**ः कः र्निका कृष्ठः अवन्य कन नम् भूर्क न দ্বাত্রিংশৎ সহস্যোজন বিভতো মৃ-লে যোডশসাহৃদুণ তাবতান্তর্-ন্যা॰ পুবিষ্টঃ। উত্তরোভারণেলা। वृक्त नीलः (४७: म्यवान् इकि कत्या तमाक हिंदग्राम अक्षाः वर्षाः नाः मर्गामानित्रः भूषायदा छेछः श्च: क्वादानादश्या विमङ्गुरगाः क्षन नृथव এकि इनः नृसंमाट नृर्व না, ভরোতরে দশা শাধিকা শো-न देवर्धा अवाक्त्य हि । अवः मिक्ता

নেলাবৃত• নিৰখো ছেনকুটো ছিনা-वय इंडि भागायका यथानीवार-यः। अयु अया अता १ ति दर्ष কি পুক্ষ ভারতানা যথান খ্য । उरेथरवलाव् उ मनरत्न न्र्रिंग ह राण विषयापना वार्वी विनिययाय छी দ্বিসহসু পপুথত: কেন্নাল ভদা-শ্বযোঃ সীমান বিদ্যাতে । ভা-व्राउभागिन् वार्य मित्रिह्नाः मः ष्ठि व इवः। भनाया भन्न न भूष्ट्रा रेन-নাক স্ত্রিকৃট পাষভ: ক্টক: কোগ্ন: সংখ্যা দেবগিরি র্থব্যম্ক: এ শৈলো বেহুটো মহেন্দুে৷ বারিধারে৷ বিস্ক্যঃ শুক্তিমানুক্ষণিরি: পারিপাত্রো গ্রে- किळकूछी (भारकाना दिवस्कः) कन्नः जा नीत्वा (शाकामृथ हेन्स् की वः কামগিরি রিতি চান্যে শতসহসু শঃশৈলা ভেষাং নিভমপুভবা নদা নদ্যুক্ত সন্ত্যুদ্ধ্যাতাঃ ৷ এতাসা ন পো ভারত্যঃ পুজা নামভি রেব পুন ন্তীনা মাত্মনা চোপ সৃশন্তি। চন্দুব-শা ভারুণণি অবটোদা ক্তমালা रेवशयंत्री कारवंद्री ख्या शयस्त्री শর্করাবর্জা তমভদা কৃক্ষবেশ্না ভীন-त्रशी (नामायत्री निश्चित्र)। नामायी जाली दिवा मुद्रमा नर्गना हर्द्य जै व्यक्षः (नावन्छ नहा महाननी वनः

ম্তি খবিজল্যা ত্রিমামা কৌশিকী नन्ताकिनी यसूना अवस्त्री मृश्वजी গোমতী সরযুরোঘবতী ষষ্ঠবতী স প্তরতী সুযোমা শতক শচন্দুভাগা মৰ্দ্ধা বিভস্তা অসিকী বিখেতি भशानमः । अभिवासय वार्य भूकरिय ল্কিঃ মভিঃ শুত্র লোহিত কৃষ্ণবর্ণেন चात्रस्तन कर्मां पित्र मानूच नात्रकः গতবে৷ বস্ত্য আত্মন আনুপূর্বেণ नर्वारक्षय नर्रायाः विधीयस्त्र। यथा বণবিখান মপবর্গশ্চ ভবভি ৷৷১৷৷#৷৷ व्य उ: शद्र श्रकामीना श्रमान नक-ণ সংস্থানতো বর্ষবিভাগ উপব-ণ তে। প্লফো জম্বু পুনাণো দ্বীপা-খ্যাভিদরে৷ হির্মাণ উল্পিতাে য-ত্রাণ্নি কপান্তে সপ্তক্রিস্থ:। তস্যা-ধিপতি: পুিষ্বুভাগাল ইধানিস্থ তং षीलः मध्यर्यानि विভन्ना मध्यर्य নানভ্য আত্মজেভ্য আকল্ব্য স্বৰ্ মাজ্যযোগেনোপররাম।অশিব বয-সং সুভদুং শান্ত কেন নম্ভ মভয নিভি বর্ষাপি। তেষু গির্থো নদ্যক সপ্তৈবাভিজ্ঞাতা:। মণিক্টো বজু-कृष्ठे इन्तुरमत्ना (का) जियान् मुवर्ला হিরণ্ডীবো নেঘনাল ইতি সেতু-रिम्लाः। অरुग न्यग याक्रीवर्भी সাবিত্রী সূভাতা ঋচন্তরা সত্যন্তরে

তি মহানদ্যঃ।।২।।ঞ্চা প্লক্ষ সমা-नित्रकुत्राप्तिनावृत्ता यथा उथा দ্বীপোপি শাল্মলো দ্বিগুণবিশালঃ সমানেন সুরোদেনাবৃত: প রিবৃঞ্জে। यव हरेव नानानी श्रक्षायामा। उ দ্বীপাধিপতি: প্রিযুব্তাত্মজো যক্ত-वारः चमूर्विष्ठाः मधन् उनामानि সপ্তবর্ষাণি ব্যক্তরু সুরোচন সৌ-मनमाः त्रमाकः एरववर्रः भाविज्य মাপ্যায়ন মভিজ্ঞাত মিতি। তেযু वर्षामुखा नम्य मेरिश्वा जिख्छा-जाः। मुत्रमः भठम् (क्। वामाप्तवः बन्तः अगूनः भूब्रवयः मङ्गुणुः उ রিতি। অনুমতী সিনীবালী সর-ষতী সভূর জনী নন্দা রাকেতি।। ৩ ।। # ।। এব॰ সুরোদাদ্বহি স্তদ্দিগুণঃ नगातनावृत्जा घृत्जारमन यथा भूईः क्रमहीत्मा यश्चिन् क्रमछत्या (५४-क्उ उद्गीभाश्याभया वृत्व इदा-भन्नः मृ**ण**ञ्चरत्राहिषा पिरणा विज्ञान-ষতি। তদ্বীপপতিঃ পুৈয়বুতো রা-জন্ হিরণ্যরেতা নাম শ্ব॰ দ্বীপ॰ সপ্ত-ভ্য: স্বপুণ্রেভ্যো যথাভাগ বিভ-জ্য স্বৰণ তপ আতি ছং । বসু বসু-দান দৃঢক্চি নাভিত্ত সভাবুত বিপুনান দেবনানভ্য তেখা বর্ষেযু भीमाभित्राया नर्यका छक्का जाः

े मेथिय। यज क्युःम्बःकशिव कि वक्षी (प्रवानीक छक्ष (द्वामा पृतिन इंडि। तमञ्जा मधुष्रना मिब-বিন্দা শু,ভবিন্দা দেবগর্ভা ঘৃডচ্যুতা মত্রমালেতি॥ ৪॥ 🛊 ॥ তথা বহি: क्रीकहीत्भा विखाः সমানে की রোদেন পরিত উপকৃপ্ত:। কৃতো यथा जमहीला घृष्टापन। यश्चिन् ক্রেঞ্চনামা পর্বতরাজো দ্বীপনাম-নিৰ্বৰ্ভক আন্তে। ত মিদ্দপি পৈুযুবুতো। য্তপ্ঙো ৰামাধিপতি: যে দ্বীপে ব-ৰ্যাণি সপ্ত বিভক্ত ভেষ্ পূত্ৰনামসূ मध्यकुषिन वर्षभान् नित्मा भगः **खगवान्** खगव्छः भद्रमकन्त्रांभ य-শস আত্রভূতস্য হরে শরণারবি-न मुश्कगाम। याजा मध्काहा भिष्ठ: मुक्षामा ज़ाबिक्षा लाहि-তানে৷ বনস্পতি বিতি ঘৃতপৃষ্ঠসূতা: ा (७वा॰ वर्षागद्रयः अरेश्वर नम्यणा-ভিখাতা: ৷ শৃল্লে বৰ্জনানে ভোজন উপবর্হণো নন্দো নন্দন: সর্রভোভদু इंडि। अस्या अमृत्वीया आर्याका ত'ৰ্থবতী ৰূপবতী পৰিত্ৰবতী শুক্লে जि ॥ ६॥ #॥ अव॰ भत्रखाट की রোদাৎ পরিত উপবেশিত: শা-কদ্বীপো দ্বাত্রিশল্লক্ষ্যোজনাযামঃ नभारनन परिमाखारहन अजी छः।

যিমিন্ হি শাকে৷ নান লছীকৃছ: স্বক্ষেত্র ব্য**পদেশকঃ**। যস্য হি মহা-সূরভিগন্ধ স্তদ্দীপ মনুবাসংভি । ভস্যাপি পৈুযুবুত এবাধিপতি নাম্না মেধাতিথি:। সোপি বিভক্ত সপ্ত-বৰ্ষাণি পুএনামানি তেযু স্বাত্মজান্ পুরোজব মনোজব বেপমান পুন্যু-নীক চিত্ররেফ বহুরূপ বিশ্বাধার সংজ্ঞান্ নিধাপ্যাধিপতীৰ স্বয় জ গ্ৰত্যনন্ত আবেশিতমতি স্তপোৰ-नः भुविदर्भ। अउँ वाः वर्षभर्याः ।-नित्रया बर्डा मध मरिखव। देना-ন উক্লৃকো বলভদু: শতকেশর: সহস্সোতা দেবপালে৷ মহানস ইতি। অনহা আযুদ্। উভ্ৰম্পৃপ্তি ব্ল-পরাজিতা পঞ্পদী সহস্শু,তি নিজ-ধৃতি ব্লিভি।। ৬।।।।।। এব भেব দধি-মণ্ডোদাৎ পরতঃ পৃষ্করদ্বীপ স্তত্যে-দ্বিভাগ্যাম: সমস্তত উপক্প: সংগ্ৰ নেন স্বাদ্দকেন সমুদ্েণ বহি রাবৃতঃ । उद्योभगर्थाः भागरमान्त्रनारेमकः এবারাচীন পরাচীন বর্ষয়ো মর্য্যামা চলো হযু তথোজনো ছাযামামঃ। যত্ৰ **ज् ह** उन्यु दिक्क् हजा दि शुवानि त्याः क्रभानानाः। यमुश्रदिश्वार मूर्यप्रवाश-স্য মেকৃ পরিকামত: সম্বৎসরা-ত্মক চক দেবাহোরাভাগ পরি

ज्याज । जज्ञीभनगाधिभाजिः रेभुग-বুতো বীভিহোৰো নাম ভদ্যাত্ম-জৌ রমণক ধাতক নামানৌ বর্গতী नियुष्ठ। सगः भूई ब्रव छ गव ८ कर्मणी-व चारता उद्यर्भ क्षा जगवन वु-कार्काभग अक्षां कन क्याना द्वाध्य हि ॥१॥ इंडि ञ्री जागत्र उ ६ ऋ (क्ष)। २। १५। १३। २० ज्यव्यायाः ॥ 🛊 ॥ व्यभिष्ठ।करन्य दि हम भूवाक मुम्राहे ষক্ষিক তে উত্তে।তে সর্বে ভ্রাতর: ण्दाः भुकाभि मना मना ॥ अपीष ण्ठानिवाहण्डस्था (मथा जिथि वंशू:। (क्रां ियान् म्रिजियान् इत्रः मत्या নিত্র এব বা ॥ নেবাগ্লবাহু নিপ্রাস্ত बर्या रयामभद्रायमाः। काल्यिदा महाजागा न बाजाग्य मत्ना प्रवृः॥ পুিযবুতো হভাবিকভান্ সপ্ত সপ্তসু णार्थिवान्। ह्याः (अवू ७ वृ श्वरणि १ हो भा • 'ভা°**শ্চ নিবোধনে ।। জ**ধুদ্বীপে তথা-গ্লীপু॰ রাজান• কৃতবান্ পিতা। প্লক-দ্বীপেশ্বর শ্চাপি তেন মেধাতিথি: ख्डः ॥ भानात ज् वभूगान (का **ि उन्न ४ म**ाश्चाय । कोक्कीरभ मु, जिमस १वाः भाकाख्य मूजः॥ भूमदाधिभारिक्षय भवन क्डवान् जुङ । महावीखा शाक्**किक जू**-ধরাধিপতে: সূতৌ।। দিখা ক্রাত-

তো वर्षः भूष्ठःत्र न नाद्यभगरः। इ-ব্যস্যপুত্রা: সপ্তাসন্ত্রামত ক্তানিবো- / थ भाषाकारण क्यात्रण मुख्यादा ग्गीवकः। व्यनान्तः १ ५ साना-की मलपञ्च महाक्रमः। उत्रामाकानि वर्वाण भाकषीत्म हकात्र मः। 🕸 । তথা দুঃভিমত: সপ্তপুত্রা স্চাপি নি-(वाय (म। इमाला मानानुग (महाकः शुथान काक्षकात्रकः । मूनिक पूनमू ভিশ্বৈ সপ্তমস্ত তথাবর: ৷৷ তেবা[•] स्नामारक्यानि क्लोंक्कीरण उथा-ভবন্। 🗱 । জেগাভিম্মতঃ হশেষী। (म भूधगगाह्मिङानिदेव॥ उदानि ্ও বলি ভেষা• নামানি মে **স্গু**। कि जिल्ला (अन्ने हिन दिवज्ञ थ॰ वाय (सन् ह ।। ४ जिल्हा श्रामद्रिक्त काशिन-कालि म्छय । ३०। वश्याङ: जुङाः मध नान्यत्वलग्रावा खरन्।। (थरा শ হরিভগৈৰ জীম্তো রোহিত ख्या। रेवमु ५ छ। भानम रेम्हव सहीधुः সূপুত তথা।। তথৈব শাল্মলে তে-याः बनामानि ज् मध रि। 🛊। मध भिषाजित्यः भूषाः श्रक्षकीरमयत्र म्य (व।। (७वा॰ नामा क्रिटेंज हो´ रैन॰ उषर्व मर्खा व्या भूदं भाष्ठ य दर्क निनित्र जुर्थापय ॥ व्याननाकः निर्वेक्षय (क्रमयकः उपा

कुरा श्रक्षीभारियुक्तिय् भाक्षी-ना खिरकवू है।। (छवरः नक्षमू शर्मा क वर्गाणुम विভागकः। 🛊 । यानि क्षिशुक्षारानि वर्जायपा हिमाखः यः ॥ जुथ भायुक्त कशक वनः वर्मक নিউলে:। পঞ্জেতেষ্ বর্ষের সর্বং नाषाद्रमः मृजः ॥ 🚓 ॥ जाशीश्राय शिञा नूर्बः अषुक्रीशः मत्मी विज्ञ । তস্য পুপ্রা বভুবু হি পুরাপতি সম। ৰব।।জ্যেষ্ঠো নাভি রিভি খাণত ভস্য াকি পুৰুষো হনজ:। ছবিবৰ স্ত্তী यस ठजुरकी २ज्भिनातृ जः ॥ त्रमान ্পক্ষঃ পুত্রো ছিরণ্যঃ ষষ্ঠ উচ্যক্তে। " **স**ৰুস্ত সপ্তম তেবাং ভুদাখ শচাষ্টম: ञ्यू छः ।। নবসং কে জুনাল শচ ভলামা वर्षमः ছिভि:। अ। यानि किः शु-क्वान्त्रानि वर्जयद्याः हिमास्रयः ॥ ্রেবাণ স্বভাবতঃ সিদ্ধি: সূথ পুষা-ছাপত্নতঃ। বিপর্য্যযোগ ব তেম্বতি कता मृजूर खयः न ह ॥ धर्माधरमी न र उद्योखाः भारत्यास्य संस्थाः। न रेत हरू वृंभाव इ। ना मुनाः क उरवान ह । क्षा यात्रीयु म्ता ना एक क क्षरा ९ ভূৎ সুতো দিজ। খাষভান্ডরতো লক্তে বীর: পূএশভাদ্য:।। সোভি-বিচাৰ্ছ: পুল মহাপুৰুদ্ধা মাছি-ত: ৷ তপ তেপে মহাভাগ: পুৰহা- भुगमः भुगः ॥ 🗱 ॥ शिमाञ्चः मिक्किनः বর্ষ• ভরতায় দদৌ পিতা। তমাচ ভারত বর্ষ তস্য নামা মহাজ্মন:।। ভরতস্যাপ্যভূৎপুত্র: সুমতি নান थार्चिकः। ७ मिन् द्राज्ञाः नमार्वेणा ভরতোপি বন যযৌ ॥ঞ্চা এতেযা• পুত্র পৌরৈক সপ্তদ্বীপা বসুদ্ধরা। পুিথবুত্তস্য পুত্রৈস্ত ভক্তা স্বাযম্ভাবে **২ন্তরে।। এব স্বা**ধ্য্র ব: সগ: ক**থিত**-**उ धि:बाख्य । भूर्व**यद्वरद्वसम् क्मिनार कथ्यामि एउ।। इंडि मार्क-**ওে**য়পুরাণে বায়মূবে মন্বরে ভূবন-(कायः॥ 🗱॥ अन्। न् उउँवाह। কেত্মালে নরা: কালা: সর্বে পনস-ভোজনা:। जियामार भवभवाम कीविष्ठि ह वयायुक्त ॥ 🕸 ॥ जुनात्य भूक्षाः मृद्धाः खिय कन्तुः मृत्रधि-ডা:। দশবর সহস্যুণি জীবন্তি বাযু-ভোজনা:॥ #॥ त्रम्राक भूक्या ना-या। त्रमञ्जातक उनु जाः । मन्यवर्ष সহসাণি শতানি দশপঞ্চ ।। জী-, বন্তি ভক্ত সভ্তৃহ। ন্যগ্ৰেষফলভো-স্বনা:। 🗱। ছির্ণাবে ছিরণ্যাভাঃ अर्ब ह बक्दाणनाः ॥ এकारण अ-হসুণি শতানি দশগঞ্চ। #1 कीविष्ठ क्रक्वर्य कु न्यामाकाः कीव-ভোত্ৰা: ॥ সৰে নিথ্নজাতাক

निउ९ नूथनिष्विनः । हन्तुषील মহাদেব যজন্তি শতত শিব ।।#॥ তথা কিংপুৰুষে বিপ্ৰা মানবা ছেম-निम जाः। मणवर्य मञ्जाति जीवि পুক্তোজনাঃ ॥ যজন্ত সতত দে-वः ठ उम् र्खिः ठ ठूमू थः। धारन मनः সমাধাৰ সদা বা ভব্তিসংযুতা: ॥ 🕸 ॥ ७था ह इद्रिवर्ष ६ १७ मही-রজত সলিভাঃ। দশবর্ষসহস্যুণি জীবন্তীক্ষুরসাশিন: ৷৷ তত্র নারাহণ **(एव॰ विश्वर्यानि॰ जनाउन॰ । উপा-**সতে সদা বিষ্ণু• নানবা বিষ্ণুভাবি• তাঃ ৷৷ তত্ৰ চন্দুপুত শুভু শুদ্ধয়-ढिकनिर्यन । विभान वामु (**एवम**) भाजिकाञ्चनाि एउ ॥ ठञ्डां र मः নৌপন্য: চতুন্তোরণ সংযুত্ত I প্রা-কারে দশভি যুঁক্তি সুগন্ধঞ্চ সমুদ্দন ।। ग्राहिरेक मंखरेश यू जिल्दा प्रवान ग्राम्भन । चर्तसम्बद्धमहरम्भ मर्ब **७: ममलक्** उ॰ ॥ (रुम्साभान ज॰ যুক্ত॰ নানারহ্নোপশোভিত॰। দি-ৰ্যসি-হাসনোপেত সৰ্বশোভা স্ मन्दि उ॰ ॥ मह्याज्ञिः स्वापूर्णागीरेय र्न দীভি শ্চোপশোভিত । নারায্ণ शरितः मुरेक (र्वमाध्यय उद्शरितः॥ (यागि जिक्क नमाकी र्गः श्राय फि: भू ৰুব হরি। স্তব্ভি: সতত্নত্তি র্নস্যাজিক মাধ্ব ।। তত্র দেবাদি-দেবস্য বিষ্ণো রমিভতেজস:। রা-कानः সর্বকালন্ত মহিমান পুসর্ব-তে।। গায়ন্তি হৈব নৃত্যন্তি বিলাসি-त्नित्रा मत्नाव्रमाः । जित्या त्योवनना-লিন্য: সদা মণ্ডন্তৎপরা: ।। 🕸 ।। ইলাবৃত্তে পদাবর্ণা জমুফলরসাশি-नः। बर्याम् नर्मानि वर्यानाः देव-श्रितायुवः ॥ 🗫 ॥ ভারতে তু দ্রিयः भूरमानाना वर्गाः भुकी खिंछाः। नाना (रवाईत युका नाना कर्माणि क्रईत्उ ৷৷ পরমাযু মতি তেবা শত বর্ষাণি जू बुजाः । नवरवाकन जाइजुः वर्ष (मंड**९ भुकी खिंड**॰ ॥ कर्ष्य वृभि द्विष বিপা নরাণা মাধিকারিণাণ ৷ মহে-ल्यु। भवरः भशः भूकिमान्क भः র্বতঃ॥ বিদ্ধান পারিপাত্রক সপ্তাত্র ললপর্বভাঃ। ইন্দুদ্বীপ: কশেক্ষমাণ-खामुवर्णा गडिखनान् ॥ नागदीन ख्या (मोरम्या गन्नर्व ख्य वाक्यः । অ্যন্ত নবম শুেষা দ্বীপশ্চ সাগরা-वृज्यः ।। याजनानाः महमुख दीला **२**य॰ मिक्कालाखनः। भूर्य किनाजा স্তস্যান্তে পশ্চিমে যবনা তত্থা।। বু! क्राः क्विंग दिन्। म्स खरेषव ह। इक्तागुध विषक्ता छि बेर्ब-यस्त्रज भानवाः॥ जुवस्य भावनानहः

পর্বতেভ্যে বিনি:সূতা:। শতক कन्तु जाना ह मत्रयू यंगुना उथा ॥ ইরাবতী বিভন্তা চ বিপাশা দেবি-का बरुः। गामजी ध्उभाभा ह বাহুদা চ দৃশদ্ভী।।কৌশিকী লো-হিতা চৈব হিম্বৎপাদনি:সূতা:। বেদমৃতি রেদমতী বুডগ্নী ত্রিবিদা · **७५**।।। भर्गामा वस्त्रा हिव महानीत्रा मताद्रभा। वर्षां की जथानृभा विनि-শা বেত্রবভ্যলি ॥ শিশুঃ শশিন্যপি उथा भारिभावामुग उथा। नर्यमा ज्वजा भाना प्रभाग ह महान्धी।। भन्ताकिमी हिन्नक्छ। जाममा ह नि माहिका। हिखार भवा विशामा ह बाक्षना वाङ्वाङ्नी ॥ हिमव८ शाः দলা নদ্য: সর্বপাপছর। নৃণা । তা शी भारवाकी निर्विक्ता भीरचाहा ह सङ्गनही ॥ (वन्नः देवछन्नभी देवब वना का ह अग्रही। (डाया हित महा-গৌরী দুর্গা চান্তঃশিলা তথা।। বিন্ধ্য शार भू मृ जास नराः भू गाइलाः भू ভাঃ। ঋষিহ্বল্যা বিসামা চ মন্দ্-गा मन्द्रगामिनी ॥ क्रा भानामिनी हित अधिका वः मकाद्रिगी। मुक्तिः মংপাদসভাতাঃ সর্বপাপছরা নৃ গাং ৷৷ আসাং নদুঃপনদ্যশ্চ শতলো षिजनुक्याः। नर्वाः भागश्याः भू-

ग्राः द्वानमानामि कम्मम् १। जात्रित् व्यक्षां स्थारम्भारया अनाः । भूर इं रिणारिकारेण्डव कामक्त भ-निवानिनः॥ छेषुाः कनिक मणश माकिगाजाक मर्बनः। उथा नता-खाः मोत्राष्ट्राः मृमुाजीता खथाव नाः ॥ मानका मानवारेण्डव भाविभाञ निवानिनः। (भोवीताः रेमक्षवा क्राः नालाः कन्।निवानिनः ॥ गुन् वागा उथायधाः भावमीका खरेथव ह । আসা পিবন্তি সলিল বসতি স রিতা॰ সদা।। চত্বারি ভারতে কর্ষে युगानि कवरण १ वृतन् । कृष्ठः (अष्ठा দাপরশ্চ কলিশ্চান্যত্র নক্চিৎ।। যা-नि किः भुक्षान्त्रानि वर्षान्त्राक्षी सह-ৰ্যঃ। ন ভেষু শোকো নাযাসোনো-ष्विगः कष्फुवबठ ॥ मुद्धाः भुका निता-ভক্ষাঃ সর্বু:খবিবর্জিভা:। রমস্তে विविदेश जीदेः महाक श्रिवरोद-না: 🛚 ইতি কূর্যপুরাণে ৪৪ অধ্যায়ঃ H अभद्र· वामनभूद्रारा २० अव्या-(य मुष्ठेवा ॥ 🗱 ॥ शु छवानि विक्रिः বয়াণি বৎসরশব্দে দুষ্টব্যানি। তত্ত্ব विश्वित भूजा (मर्दा) यथा। सञ्जू :-जब भुवारान (६व): कृषा भूरता হি তা:। ষষ্ট্রপা বিধিনা তাত স-बंगान भूनिकिताः॥ महाज्य कि

নাশায মহারিপু বধায চ। মহাভুগ **मयकागाय ग्रहाजिक्किकवाय ह** ॥ भृत्वरयखप्यः वाप्त्र वी॰ यद्विशा भन्नाम-अद्गी । अज्ञाभ क् जा भीषा यक ब्रक्ष गुर्शाख्या ॥ मञ्चरमद्र महा-(राव बद्यकं मूनमप्ना। (कज्ना শনি রাহ্তো ভৌষার্ক সিত ভান্ काः॥ भगरयन्य क्रमानम् (एवी (रू। भद्र उत्र प्राप्त विश्वास्त म-श्राना जिल्हारिनः ॥ हन्तु मञ्जूष भू व्यक्तं कन त्रज्ञा जिन्द्रातिः। सक्ता মহল ধৰে বিধিন। প্জিতা মুনে।। উৎপাতকোভ নিৰ্ঘাত বিকৃতানা শমাৰ চ। কথবানি মহাপুাক্ত শৃণু श्चिक मना वृना।। श्वा सङ्खा विषया छः मा लिवा लाडि ष् जिः क्रमा। यांक वृष्क मिकि स्रिष्ठे: शृष्टि: शिया উना।। दीखिः काडिः यं.णा वन्त्री र्जाचन्नोजि भुकीर्जिञा । विःभजाः (काखमा (स्वाः अञ्चाववावश्चिः णाः ॥ भूषमः मःश्रिज। व**८म मर्ब** निषि भुराविकाः। २०। बुाक्ती छ-যাবতী শাক্রী অন্ধিতা চাপরান্ধি **छा ॥ क**यडी मानमी मावा किजिः स्थि विद्यास्त्री। भवन्ता कोणि-की भोती विश्वा विवासिता।। व्यक्त हो किया पूर्वा द्राजमा देखि বাযুনা। **মধ্যভা**পে ছিতা দেব্যো यूगाना मण्डानहाः ॥ २०॥ काः नी होषी क्लानी ह चर्छ।कर्ण मः যুরিকা। বহুরপা সূর্বপাচ ত্রিবে-তা রিপুছায়িকা।। মাহেখরী ছ-भात्री ह रिक्शवी मूत्रभू जिला:। रेव-বৰতী তথা বোরা করালী বিক-টাদিভিঃ॥ চর্ছিনা তেতি খাতুসা (एव) देवलाका विम् जाः। न्विक-वत मूनिर्मुष्ठ महामानुमाधिकाः ॥ २० ॥ बिरमान्त्र गक्ष र यक द्राकागी। नुंजा: । ভारकाना। भुषाः कार्य) नुवा क्रम क्मभुषाः॥ পুত্যে কশ: সমস্তা বা কর্ত্র্যামূলি-महन। व्यथन युग्रास्टरिन भक्ष नक नुन्किजाः ॥ इंडि प्रवी-भुदारा अवस्पद्रस्वका वि**.म**. जिविधि नामाधागः॥

वर्षकत्री स्त्री विक्षिक्ष। ই डि (इन-)

वर्षक्डः पृ॰ ब्रङ्गभूनर्गि । इंडि ब्राह्मनिर्यक्षेः ॥

वयरकायः भृ रित्वछः । ইতি
भद्रद्वावनी ॥ भागः। ইতি भदभाना ॥

व्यंतः वि वृद्धिकाउः॥ वट्मतः काउः॥ कष्विभकाउः॥ बीभाःभः काउ॰॥ (नवकाउ॰। ই ि वर्षणप भूर्वकनशास्त्रा र्छ भू उऽ (यन निञ्चक्रणा) यर्थन॰ क्री वृष्टिः। ই ि जम्म प्रजावणी वर्षनिः खी वर्खन॰॥ कृ िः। ই वृऽ-गाहिरकायः॥ क वृः॥ वर्षन॰। ই ि म॰ किश्रमाद्राभाहिवृद्धिः॥

वर्षभवं अः भू वर्ष विভाजक शितिः
। यथा। क्षित्रवान् (क्ष्मक्ष्टे कि विश्वास्त्रक्षाः) क्षित्रवान् (क्ष्मक्ष्टे कि विश्वास्त्रक्षाः) क्षित्रवान् । देखः क्षी विष्णुक्षी व मेरिश्रं अवर्षभवं अः। इंडिं क्षित्रवान्।।

वर्षभाकी भुः बागुः कः। इंडि

र्यभूष्ठा की नश्रम्वीण छ। ইতি রাজনির্ঘট:॥

ব্যপ্রিয়: পু চাতকপক্ষী। ইতি ত্রিকাওশেষ:।।

বর্ষবর: পু॰ বण:।থোজা ইভি ভাষা।ইভাগর:॥

वर्षवृद्धः खी कप्राठिषिः। ইঙি

गार्डवर्गाथरा मननार । अथ कसठिषि क् छ र । उद्यानमारम न कर्ड
वर्रः वानुमानीयर्द्धन मावकानए। । नव जमर मोत्रमानीयद्धः
छथार्द्ध जद्यारम जिल्लाः कमा
विम्नुगाली जद्यर्थ जर्क्छ । ला
गानाः । नहिन्देशनिकः भुजिन-

ञ्दनत्रष्ठविधानाट । यथा वृक्षानू-त्रान गर्गक । जर्दिक जम्मित्र স্থাতৈ মৃদ্রপাণিভিঃ। গুরুদেবাগ্রি विशाण भूजनीयाः भूयज्ञ ३: ॥ व নক্ষত্ৰঞ্চ পিতরৌ তথা দেবপুজাপ-**डि:। পুडिमय**्मद्रोक्षव कर्ख्वारक मरहा८ जवः ॥ त्रारे छिनत्रारेजः । পুলাপতি বুঁকা।। তথাচ ভত্তিথিম-थिक् डा जिला ब बी जिला मारी जि-व्याप्तामी जिव्यम् । जिव्यस् जि**-**न राभी ह बहे जिनी नाव भी बिज ॥ মঙ্গলপাণিভি: অভিপ্তার্থসিদ্ধি र्म**र्गः** जस्म ठुउया (गारताहनाहि-कमिन मञ्चल (उन श्वरः गृन्। वि পাণিভি রিভ্যর্থ:। তথাচ ক্ভ্যচি-श्वामतो। एए दूष जिनाबन्धा छन्म-अप्रमा वस्तान । खशुलू विस् निका-र्थः मूर्वा शास्त्राह्मायुज्या अः भूका **छान् विधालो मक्यिः शुर्थरयिकः** । वित्र क्षीवी यथा जुः (छ। छविष्राभि ख्या मृत्न ।। क्रमवान् विख्वाः रेम्हव निवायुक्क नर्नता मार्क ७ वन হাভাগ সপ্তকল্লান্তজীবন ॥ আযু-तिष्ठे।र्थ निकार्थ समाक वतारा **ख्ये** াা স্বনক্ষত্র পেতি স্বনক্ষত্র অখিন্যা-দ্যন্তৰ্গত জন্মকালীন নক্ষত্ৰ । নাম-कद्रात ख्या हर्णनाट वक्कामान वुक्र-

श्रुवाशाङ श्रुववाहि नस्मा**रखन मा**-মুৰ প্লাবিধানায়। তমজ্ঞানে স্বন-क्षवाय नम इनुहल्लयाः।।।। भूषाया মর্ঘ্যানম্ভর পাদ্যমাহ মৎস্যপুরা-१ । अर्घाः भाराहिक छ अञ्चलकः भूरयाज्ञरय । भारतानखद्र मर्घामा-इ नद्रिनः इ भूद्राणः । भार्त्रश्चर छ्-**छीयया हजूर्थ्यार्थ्यः भुमाभरदर । ज्-छीयमा भूक्षम्कीय ज्ञीयमा अहा** । উভযক্রমদর্শনাদিছাবিকল্পঃ। ইতি শিকতঃ॥ #॥ শ্রীপতিব্যব**হারনি** র্ণযে। নবাম্বরধরো ভূত্বা প্রযেষ্ট চি-রাযুষ । তথা। দ্বিভূক কটিল সৌ भार मृत्कः हित्रकीविनः। भाकर्थयः न(द्रा ७क्त्रा भूकरयर भूयं उथा ॥ ভঙ্গে দীর্ঘায়ুব ব্যাস রাম দ্বোণি क्र १ विनः। भुद्राम्यः इन्मन् विन ভাষণ নথাত্বতে।। রামোত্র পক্ষ बानः। विबन्नी विमान्वयारः। पुरि त्रयःथाना। स्था उथा। यनकवः ड.स-ভিঞ্- প্রাপ্ত সম্পূর্থেরর:। বঙ্ঠীঞ্ দ্ধিভক্তেন বর্ষে বর্ষে পু:: পুন:।।যো णि याञ्चवन्नः। **श्रा**दिमात्रायणः नि**७**ऽ॰ স্থানাদিষ্চ ক্মাসু। ওদিক্ষো রিভি बरखन प्रायामण्यू भूनः भूनः॥ भाष-की रेक्कवी (इस) सिक्षाः मः मजनाः य देव। भारायः मात्रः। महम्खः।

তদ্বিষ্ণোঃ পরমং পদং সদা পশ্যন্তি সুরয়: দিবীব চঞ্চুরাততম্ ॥ বামন भुद्रागः। अर्दमक्लं मक्लारः वरद्रगरः বরদং শুভং। নারাধণং নমজ্ত্যু সং र्बर्ग्णानि काद्राय् ॥ 🛊 ॥ जक्षना-कद्राप निन्दाभाष्ट्र खिवाजुद्रापः। नकाल्लन विना माजम् यटकिकिट প্রকতে নর:। ফলঞ্চাল্লাল্লক তস্য वर्षमार्क करा ज्या । वुक्तभुद्राः १। भूगवानि जमायुक्क वनकात्राङ कीर्खिङ । यनाम मर्बमङ्गानाः मञ्ज **इँ उ**ऽज्ञिषीयरङ॥ चारनरेनव विद्यासनः गन्नभूष्म निर्वपर्यः । এकैकम्। পুস্বীত যথোদিষ্টে ক্রমেন তু।। गन्नभूत्रभावः भाष्मभहान्नाम् अ বে ৷৷ নক্সাহতত্ত্বণ প্রোক্তণ ভক্ত্যা **লক্ষণ্ড:**ণাত্তর•। ভক্তি মত্ত্র সমেত্র-ন্ত কোটি কোটি গুণোব্তরণ।। সর্বত্র कःगांशिरमणक मक्किगामिछि बई-(य८ । उत्थाभामश्चात्रमभि भूकत्यह **७**(७) ७४॰। न भूबार्ड ७४ यंव নরৈ স্তত্রাফলা ক্রিয়া ॥ ইতি মৎ-স্যপুরাণবচনাৎ ॥ # ॥ ততঃ কর্মা: नखद्र जिलाहान ख পृक्षि उपरवजा-नानिः काग्धः। এकৈकाः (एवडाः द्राम मम् फ्रमा यथा विश्व । ह खूर्याः रा विकास की का की किया किया किया शि

हाम मुवा मरेशरेककः भाउमाधाः (हामय्यः । इंडि विक्षरमांखद्र मर्णः নাৎ। এব হোমে স্বাহান্ততা চম व्यम् । सारा वमात्न जुरुगर श्रायः न् रेव बञ्जाप्तवजाः । ইতি श्रृाजः । অশক্তো তু দেবীপুরাণ । হোমো ্গুহাদি পূজাযাণ শতমষ্টোত্তরণ ভ (तर । अञ्चादिः माजि द्वाष्ट्री वा यथा मकि विधीय(७॥ 🗱। कात्म्। थ७न॰ নথকেশানা মৈথুনাধ্বান মেব চ। व्याभिषः कलइः हिः माः वर्षवृष्को विवर्द्धायर ॥ अथान अधुगमन । কলছ মিত্যত্র সঙ্গর মিতি কৃচিৎ, भाठेः। मङ्ग्रं युक्तः। वर्षवृष्को जन्मः क्ति। #1। वृक्षभनुः। मृत्ज জन्मनि **স**॰-कारहो भाष हमित्र उथा। यन्भ् माज्यार्भात रेव न मायामुक्य वातिना॥ জন্মনি পুগ্ৰন্ধমনি। জ্যোতিষে। স্থা-्वा अन्त्रिस्ति जियः পরিছরন্ প্রা-প্রেভ্যেভীষ্টা শ্রিষ মৎস্যান্মোচষ (७) विकास एक्टिंग इन्त्रायु किंद्र वर्षा । मक्न थारिक यक उन्ह রিপবো নাশ পুযান্তি ধুরণ। ভুষ্কে যম্ভ নিরামিষ স হি ভবেজ্জনান্তরে প ७७: ॥#॥ ही शिकाराः। जब्दर्कः युका यकि इन्नामात्र यम्। धुतः इन्न-তিথি ভবেছ। ভবন্তি তদ্বৎসরমেব

যাবলৈক্জ্য সমান স্থানি ভস্য।। क् जाड अजरा बादा यमा जम्जि-थि र्ज्दर । अन्करगागमः नुष्धी বিন্ন স্তস্য পদে পদে ॥ কৃতান্ত জ कारयाः भनिमक्वारयाः ॥ उम्र ज-बि यदि मान गुरु विभु जूबाईन । গুহানুদিশ্য হোমো বা গুহাণা॰ পুীতিমিছত। ।। সৌরার্থো র্দিকে मुका (परा) नृत्क जुकाक्षन ।। मुन्ना-भा भी वहा इकि रेमालय द्रवनी हर । मही हम्लक मूखक महिनिधिशनः ম্ত: ৷৷ রজনীঘ্য হরিবু দাক্হরি -দেতি। এতেষা॰ পত্রাদীনা॰ গুহ্ণ•। কৰাবাব্যব গুছণে মৎ স্যুপুরাণ বি-ফুখর্মোভেরযো স্তথা দর্শনাত। তদ্ম-থা। এবা॰ পত্রাণি সার।ণি মূলানি अनुमानि ह। এव मानीनि हान्।।नि कवायात्थ्या गगः मृजः ।। वागुर्खाता-ক। পরিভাষা। অফ্প্যেনুকে বি-হিতন্ত মূল ভাগেপ্যনূক্তে সমতা विश्वया ॥#॥ ত**बक्रमः। जिल्ला**घर्छः नः। ভिলयक अल्वन ज्ञानः। नववज्र **পরীধান•। গুগুল্ নিম্ব সিদ্ধার্থ দুর্বা** গোরোচনাতাক জনগুন্থি দক্ষিণে भारतिवद्गीयादां खळ (एवा ग्रिविशाण পূজনীयाः। স্বন্ধত পূলনীयः। আত্র চ। হন্তা স্বাতী শুৰণা অল্লীৰে। মূশ-

শিরে। নপু 'সি স্যাৎ। পু 'সি চ পু न र्बमु भूररहो। म्ल पुत्री जिया । भ বা:। ইত্যনেন লিঙ্গনির্ণয়:।। # ।। জন্মনক্ষতাদীনা গোপন মাছ বিষ্ণু খর্মোত্তরে।গোপথেচ্ছন্মনক্ষত্র খ-नमात्र गृह्म मनः। भुष्टा तभः भगानक जम्र मृण्ठित उक्ष यट ॥ ४-নসার ধনশেষ্ঠ। মল ছিদু ॥ পি-ভরৌ পুজাপতি: সূর্য্যো গণপতি মাৰ্ক: ওয়ক্ত পূজনীয়: । তত্ৰ পাৰ্থন মকো। চিরজীবী যথা বৃণ ভো ভ-विवतिम उथा मूर्त । क्षायान् वि खवारेक्टव निवायकक मर्बना। मा-र्कः ७ व महा जाग मधकन्ना छजी वन। षागु विश्वेष निष्कुर्थ ममाक वतः দে। ভব। ততো ব্যাস পক্শুরামা-च याम क्न विन जुड़ाम रम्म विजी वगाः প्जनीयाः। वक्षात्र প्जनीया । বৈলোক্যে যানি ভ্তানি ছাবর। नि ह्वानि ह।। वुका विक् मिरवः मार्कः রক্ষা হর্ত্ত তানি মে। ইতি নৎ न्। भुद्रागीय दक्कार्थ भरहेट ॥ #॥ निज् गाज् भाष्युरुष क्रमस्र विस् नुत्रागामूष्मयः। यथा। कृष्मानि वमू (५वम) भारते बगुर मजुदः। (५-वक्राण भश्चावाञ् वंदाप्तवमश्यय यान्।। ७११। महमुख शिठु मीठा

গৌরবেণাভিরিচ্যভে।ইতি মনুবচ-নে পিতু রপেক্ষযা যৎ সহসু মাতু গৌরব মুক্ত' তৎ পোষণ রক্ষার্থণ ৷ অতএব মনু:। মৃতে ভর্তরি পুরস্ত वाह्या गाजु ब्रब्धिं जा इंजि। या-(55) गरंगीय:॥ 🕸 ॥ ७७ मूप जिल পানে তু মন্ত্র:। সতিল গুড়সংমি-. শু মঞ্জল জমিত পথ: ৷ মার্কণ্ডেষ वद्गः वाक्षा निवामग्रायूष्रहरूख ॥ অত্র বৈদিকেতর মন্ত্রপাঠে শুদাদে-ब्रभ्रिकातः। जन्नि जिल्लाः भाषक वुक्रभुद्रानीयद्वाट (भोनंगामाख मा-नारतः ॥ 🗱 ॥ बचा जिः (४ व ७ ४ दिननाट छ् (स्वीभुद्रागः । यूगा-म्। वर्षकृष्टिक मक्षमी नाईजीनुगा া ব্ৰবে কৃদ্য মীক্ষ্যন্তে ন তত্ৰ তিথি-यूग्रजा ॥ समुद्राय क्याजिथि यं ि म्राट भूबरा उना बग्रञ्ञभःयुरैज्य। অসক্তা ভেন দিনদ্বেপি প্র্যা পরা যা ভবতীহ বত্নাৎ।। ভ॰ নক্ষ-वः। भववहनः वृष्ट्राह्यमार्डएशि। न्र्राष्ट्र डिबि नक्क वाङ এ:वर॰ লক্ষ্যতে। নক্ষত্রে থ গুতে যেন পুা-थः कालज कर्याः। नक्कब कर्याग्ऽ কৈব ভিশিক্ষা ঔথেব চ ।। ইভি বৃ-হস্পতিবচনাৎ। খণ্ডিতে খণ্ডদ্ব যুক্তে যেন নক্ষরখণ্ডেন বিহিতকা-

বাঃ পুণপ্ত:। নক্ষত্র দৈখে ত বৌধায ন নার্কণ্ডেযৌ। ভলক্ষত্র নহোরা-ত্র' যমিন্ত' গভো রবি:। যমিন্তু-দেতি সবিতা ভলক্ষত্র' দিন' মৃত' । ইতি তিথ্যাদিতত্ত্ব'।

বৰ্বা: জীভূমি খ্ৰামখ্যাতপত্:। ् ७८ भर्य) यः। भावृह्रे २ । इंडामद्रः ।। घनकानः ७ कनार्गवः ८ शुक्रे ६ (मदागमः ७ घनाकतः १ । ইতি भदत्रङ्गवनी ।। शुग्वा ৮ । ই**ভि** बिका अल्परः ॥ म ह श्रवृः (मोत्र-भावगञाम्मामाद्याञ्चकः। या-वाष्टां दिमान ठ छ या ज्यक का जा-म्राज्ञ भूमानः। यथा। उन छन-(म) रेममित्रावृज्यः मध्य भाषवः শ্চ বাসন্তিকাবৃত্তঃ। শূকশ্চ শুচিশ্চ रिगुमाव्जुः । अर्थिजमूनगयनः (म-यानाः दिनः। नजाः नजन्य ে বার্ষিকাবৃত্যু:।ইবশ্চ উর্জ্জন্চ শার-माव्जू: । जहाण जहमाण दिश-ষ্টিকাবৃত্:। অথৈতদ্দিশাযন দে-বানা রাত্রি:। ইতি মলনাসতত্ত্ব-ষ্তাশু,ভি:।। শেষস্য পুমাণ ভত্ত ठाजूर्मामऽवृजनियमः यथा। वाः রাহে। আষাত শুক্লঘদশ্যা পৌ ণ্মাস্যা মথাপি বা। চাতুর্ঘাস্য वु जात्र सुर्गाष्ट कर्क हे माकत्व ॥

অভাবে তৃ ত্লাকেপি নম্রেণ নি-यम॰ वुजी। कार्जि:क मृह्यारम्।।• विधिवज्ञ ममाभाष ॥ हर्ज्का-পি ছি ভট্টার্ণ চাতুর্মাস্য বুত্ত নরঃ । कर्खिकााः मूझभाकः ज् घारमााः ७८ जमाभरयर ॥ 🕸 ॥ मार्गि । ठजूदा वार्विकान् भागान् (एवरम्)।-व्याननाविष्। मधुबद्धा ভदिविछा नरत्रा ७७ विवद्धनार ॥ टेउनम् वर र्द्धनात्तव मुन्दवादः भुकायत्व ॥ কটুভৈলপরিভ্যাগাৎ শত্রনাশ: পুরাণতে ॥ লভতে সম্ভতি দীঘাণ श्वीभाक मञ्करन्। अमा मुनिः महा (यागी मधूमाः मम् वर्ष्क्वनार ॥ नित्राधि नी क्लाकत्री विकृ छक्फ জাযতে। একান্তরোপবাসেন বিষ্ণু-लाक मवान्यूयार ॥ धात्रगामथ लानाक गकानान फिल फिल ।। তামূলবৰ্জনান্ডোণী রক্তবগ্রন্থ জাযতে । ঘৃতভ্যাগাৎ সুলাবণ্য भर्बः निष्धः यभू र्जायः ॥ कनज्राः গাৰু মতিমান্ বহুপুঞ্চ জাযতে। নমো নারায্ণাযেতি জপ্তানশনজ क्व ॥ भाषाज्यिनस्नाहित्का र्व-(अमानानकः कलः॥ अवनानि वुरेडः भार्थ जुडिमायाजि किम्नदः ॥ 🛊 ॥ जन८ ब्यात्रः । हेर॰ दुंखः

वनी ॥

ब्रज्ञावनी ॥

वर्षाकी जी भूनर्नवा। इंडि मक्

বর্ষাভবঃ পু॰ রক্তপুনর্বা। ইক্তি

व्राजनियंग्रेः॥ दर्वाकार् वि ॥

বর্ষাভ্: পু॰ ভ়েক:। ইত্যমর:॥

ভূলতা। ইতি মেদিনী।।

इन्द्र्रगाणः। इंजि त्राव्यविर्यणः ॥

वर्षाण्: जी भूननेवा। इंडि सिमिनी

गया (एव गृशीउ॰ भूत्र**७ ख**व । ∥ নির্বিঘাণ সিন্ধি মাপ্মোতৃ পুসংম ত্বি কেশব।। গৃহীভেম্মিন্ বুভে (भव यम्। भूर्ग जुरु भिर्य । उत्म ভবত मञ्जूर्ग दृ भुमानाञ्जना-र्मन।। #।। जगारक्षी ह। इन वुड মযা দেব কৃত পুতিত তব পুভো। ন্যন সম্পূৰ্ণতা যাত ত্বংপুসা माब्ह्रनार्पन ॥ # ॥ चरेवर रिंड মধিক্ত্য কাঠফগৃহ্য । একরাত্র বসেদ্গামে নগরে পঞ্রাত্রক । বর্ষাভ্যোন্ডর বর্ষাসূ মাসাণ্ড চ-তরো বসেৎ।। এতদশক্ত বিষয়ণ। উদ্বৃ•ি বার্ষিকাভ্যা• মাসাভ্যা• নৈকস্থানবাসী ইতি শল্পোক্তে:। ইতি ভিষ্যাদিত বৃং॥ #॥ বর্ষত্তৌ वर्गनीयानि यथा। वर्षामू घन निथि या र नगमाः भक्त कम्(लार्फ দৌ। জাতী কদম্ব কেতক বঞ্জানি-ल नित्रगा हिन्त्रीिक: ॥ इंडि কবিকল্পৰভাষা ১ স্তবকে ৩ জ-अगः ॥

वर्षाः नः नुः भागः। ইভি ত্রিকাও-শেব: 11

वयाधायः भ् मशमध्कः। ইতি वाक्रिवर्षः ॥ वर्रात्रः शु॰ भातः। ইতি हाताः । वर्षाणकार वर्षणकाह श्रात्रा

॥ ভেকী। ইতি ভরতপৃতক্পরত্না-कद्रः॥ वर्षाভरव कि॥ जी (जर्की। इंजानतः॥ পুনর্নবা।ইত্যমরমালাভাওরিক वर्षात्रमः পু॰ মৃगृद्धः। ইতিকেচিৎ॥ ববাস্ত:পারণবৃত: পু চাতকগক্ষী । ইতি কেচিৎ।। वर्षाद्वातः भ् वर्षाकानीनकाविः। इंजि भ् विक् म गुरु दे विवास छ-রত: ॥ ব্যাহি: প্• মঙ্গলগুহ: । ইতি नदत्रज्ञावनी ॥ वर्षानकारिका जी भूका। इंडा মরটাকাষা ভরত:॥

वर्षावमानः नुः भद्गरकानः। ইতি

वर्षिक जि वर्षामञ्जूषि ।। वर्षमञ्जूषि

व्राजनिर्घणः॥

ষ্টিক পুত্যদেন নিয়ন।। वर्षिष्ठः जि अजिमयवृष्कः। अयमः নযো রতিশযেন বৃদ্ধঃ ইত্যর্থে বৃদ্ধ क्रान वर्षापाल केष्ठं भुजारवन नि ञ्जयः ॥

वरी यान् वि व्यविवृद्धः। उदः नयंग्रयः । दनमी २ जग्रयान् ० । इंजामब्रः ॥

वयुकः जि वर्षनकर्जा। वृष्पार्जा र्क् क भुजारयन निष्ठमः ॥

वर्ष् कादः भू वर्षभणीनस्यः। **डे** डिकंगिष्तः ॥

वर्षिकः जि वर्षाकानकानः॥वट-**मत्रका**जः। मध्याष्ट्र वर्षमद्भूर्वकः बनधाजा र्ज भुजारयन निश्चमः ॥ वर्खाननः भूः (मघ ७व निना। করকা। ইভ্যমর:।।

वर्षा की भन्नीत्रः॥ भुमानः। इंडाः মর: ॥ পুমাণ মত্রোম্বতি রিভি স্বামী। ইয়তা ইতি ভব্নত: ।। অ ভিসুন্দরাকৃতি:। ইতি মেদিনী।। ৰৰ্মণ ক্লী শরীরণ। ইতি দ্বিক্প-

কোষ: 11

वर्ष क वर्ष।। मीखो । इंडि कवि कल्लकमः॥ (त्राकाभशः। क वर्श्वाउ । इंडि पूर्णामानः ॥

वर्ष ७ रेगु(४)। ইতি কবিকল্পফনঃ 🛮 विर्क्त्यः 🏗 गुन्नि भर्गः। ইত্যানঃ।।

।। ७ वर्श्ड धनी (मुक्ट म्यापि-**હાર્ય: 11**

वर्रः क्री भगूत्रलिष्ट्[ः]। ইতামतः। गुष्ट्रिनर्गः। इंडि ভরত: ॥ नधः॥ इंजि नयत्रज्ञावनी ॥

वर्ष्ण क्री भया है जि भव बड़ा-वनी ॥

বৰ্হি: পুণ অগ্নি:। ইতি মেদিনী।। **দী**প্তি:। **ই**ত্যুগাদিকোৰ:॥ যক্ত:। ইতি হেমচন্দু:।। চিত্রক । ইত্য-यतः ॥

विहः भृ क्षे स्नाः। ইতি मिनि ॥ वर्शिः क्री गुष्टिभर्गः। ইতি मद-ब्रज्ञावनी ॥

वर्श्वः न त्री गुड्मिर्गः। इंडा-भद्रधीकायाः ভद्रउः ॥

वर्शिः चुपा थुः। इउप्रजः॥ वर्श्विष्ठ क्री वर्श्विष्ठ भूतिवन्न । इंड्य মরভরতৌ।।

বর্হিন্দসুমণ ল্লী গুছিপর্ণ। ইতি नक्रिक्का॥

वर्हिनः भू भग्दाः। इछामदाः॥ वर्शिवाहनः भू कार्जिकयः। इंडि रुवायूष: 11

বৰ্ছিখুজা জ্ৰী চণ্ডী। ইতি ত্ৰিকাণ্ড; (শব: 11

वर्शिक्षंग्रिः (रुयम्पः ॥ वर्सिम्थः भू॰ (एवडा। इंडाप्रद्रः।। বর্হিণ ব্যা পু বহি:।ইত্যমর:॥ वर्धिषः भ्ः शिक्गगिवासाः। यथा। व्ययज्ञानम् यज्ञानः नि उत्रा वुक्तनः मुजाः। अश्ववादा विश्वता षिषा (उषा॰ वाविष्ट्रिः ॥ ইতি (कोर्प्य 🔀 व्यक्षायः ॥ व्यनिह। অপসব্যু ভতঃ কৃষা সব্যু জানু চ **ভূ उत्तर य**ीशाखाः खयासीम्यान् क्विगान खरणानाभाग्।। मुकालि (ना व'श्यम चाज्राभा॰ खर्भागख-তঃ। ভর্ণেছ পিতৃন্ ভক্ত্যা সতি-त्नापकठनहरेनः ॥ पर्छभाभिस्र दि বিশ হস্তাভ্যাণ তর্পবেক্ততঃ: অৰ কেচিৎ পিতৃধ্যাতিদেশাৎ पितः शिकु भागि अञ्जलि बगमा-नः। उत्रयः ॥ कव्यवानः ननः সৌম্য যম মর্য্যমণ তথা। অগ্নি ষাত্তা: সোমপাশ্চ বহিবদ: সক্ৎ भक्र ॥ इंडि इत्सागमिति मिर्छन विनिदेशकाञ्जनिविधानार। इंड्रा क्रिकडवुः॥

বহিংক্ক। পু॰ অগ্ন:। ইতি শোচিক্কেশশবদর্শনাৎ।। বহিঃ ক্লা ক্লীবেরণ। ইত্যমর:।।

विद्रः। ইতি विषा भि छ সম্বরণে। ইতি কবি:

कञ्च प्रभाः।। भि वनगठि वानगिति।

छ वनতে धनः (नाकः সংবৃণোতী
छ उत्राहि पूर्गामानः॥

कग्नविक्षासः। वनः की देमना है कार्याही कार्यः

वन क्ली रेमनाः। इज्जाबहीकायाः बायमृक्षिः॥

वनि । जी वं छ । इं जि मद-वन । विद्यादनी। यम ब्रोका ह ॥ वन यः भृ की स्र्रांति ब्रिटि अदि। शास्त्रागः। वाना है जि स्वा। उट्ट भग्रागः। यावाभ कः २ भित्र हार्युः ० कर्षे कः १ । इं अप्तर्याः। भावि हार् र्युः ६ मः थ कः ५ । हे जि मद्वा हार् वनी ॥ कष्रः १ मुखनः ৮ । हे जि कर्षे । विद्या

वलयः भू श्रीत्मगलातागास्तरं छगलातागावामयः। यथा। वलाः म এবাय ७ मूम ७ व्हा (नायः कर्त्रारः भन्नगिकः निवार्ये । ए मर्ब रेथवाः भू छिवार्ये विर्ये । विवस्त्वनीयः वलः यः वहि । १ । अथ गलातागानाः हिकिर मा। कक्षेत्राम्यम् एमारेक् छोद्भ नेम । किथा जान्यम् एमारेक् छोद्भ नेम । किथा मान्या मान्या प्र मान्यत्र । कृथिः महाह मान्या प्र निम्न छाक्यं किला महा। ह्री किया ा कर्ट्रकाठिविया माक भाशे मूखा कि लिखकाः।। गाम्ब कृषिजाः भी जाः कशेषागिवनाणनाः। मृष्टी-का कर्ट्रका विश्वामा मान्नी ज्वक विकल्णा सनः।। भाशे त्र माञ्जनः पूर्वा उठ कार्व्याठ महर्ति उ॰ । क्लोपुण्कः विश्वाज्याः गलावार्ग मरहो वर्षः।। यागा एउ उत्रः (भाजा वाज कि ककाभहाः।। खवागृषः उठ खव जीः मनाश्चाः। क्लोपुण् कर्णाः। क्लोपुण् कर्णाः। क्लोपुण् कर्णाः। क्लोपुण् कर्णाः। क्लोपुण् कर्णाः। क्लोपुण् कर्णाः। क्लोपुण कर्णाः।। क्लोपुण कर्णाः।। क्लोपुण कर्णाः।। क्लोपुण कर्णाः।। क्लोपुण निवास्यवा ।। विश्वा ।। क्लापुण । हिंज क्लोपुण ।। हिंज क्लोपुण ।। हिंज क्लोपुण ।।

वलियङ जि (विश्वेष्ठः। ইड, प्रदः॥ वला जी सनामशादी वस्वित्स्यः। वाला ইडिवाफियाला ইडिट छावा । उट शर्यायः। वाहेशलकः २ वाहेश भूत्री २ मना भा १८ विलल ६ २ छाः एयं उवलाः। यय १९ मुळा २ व्यक्ति लाः २ भी उभूत्री २ महावला ८ थ छाः भी उवलाः। ইडि तङ्गाला ॥ व्यक्ता छनाः। द्विषद् । वाय् भिड नाः सद्ध । द्वि त्रा विल् विल् मत्र्रत

६६ वना । वनमम्याः माध्यस्या-ন্ত্রিত্র বা । ইতি রাণমুম্বটকৃত वु ८ भ जिन्नरयन भवणी यवेका दी-नि त्रस्राञ्चवकात्रानिएक्यः ॥ 🗱 ॥ विष्णाविष्णवः। यथा। मख्य ग्रामः गृ-হাণ বৃ॰ বলা মতিবলা॰ তথা। ন শ্মোন জ্বোবাতেন ৰূপস্য বি-भग्रयः॥ न ह मुख भुमख वा वर्ष-विष्ठितियाँ छाः। न वास्त्राः मृह्णा वीर्या भूषिवा मसि कक्ता विषु-लात्कवू वा ब्राम न ज्वाद मम्म खत। बला मिंजबनारिक्षत भठे उछा-ত রাঘব ৷৷ ন সৌভাগ্যে ন দাক্ষিণে न জ्वात्न वृक्षिनिक्षरय। ताखदा शु-ভিৰক্তব্যে সমো লোকে ভবানঘ।। এত विन्ताबाय लाह्य न ভाবে मन ष्ण खर । यना हाछिरना रेहर **अ**-र्बद्धानमा माउद्गो। कृट निना-সেনতে রাম ভবিষ্যেতে নরোত্তম । वना मिंजवनारिक्ष भठे छ। उ त्राचव ॥ विन्ताष्वय स्थीयात यन-শ্চাথ ভবেন্দ্বি। পিতামহসুতে-ছেতে বিদ্যে ভেন্ধ:সম্বিতে ॥ পুদাত্ তব কাজংছ সদৃশ ত্তু ছি भाषिव । काम॰ वर्छिंगाः मार्ब प्र-যেয়তে ৰাত্ৰ সংশযঃ ॥ তপসা স॰ ভূতে চৈতে বহুৰূপে ভবিষ্যতঃ।

खर्जा द्वारमा कल म्ल्डिश श्रुम वर्षः नः मूहिः ॥ शृजिकशुष्ट राज्ञ विराधि महर्षा जीविजाञ्चनः । विराधिमम् रिर्जा द्वामः मृत्य जीमविक्रमः ॥ इजि द्वामायल वान्मीकीस्य वान्य कारखर्र मर्गः ॥

वनाकः भू) वककाछिः । ইভি वनाका जी 🕽 ভत्रजः ॥ क्र्मूवकः कािः। इंडि नात्र मून्पत्री ॥ ए८-भर्यऽायः । विमक्षिका २ । इन्डा-मदः ॥ विमक्शे ७ वनाकी ८ । ইতি শব্রত্বাবলী ।। কারাথি-का ७ विक्विका ७। ই 5 बही-ধর: ।৷ বলেন শক্ত্যা দ্র মূর্জমকতি । वन वल्ल मञ्जरण वनाकान्यरण्ठ-**७**ऽ।कन् वनाका। ইভি রাযমূস্ট क् उ वृष्ट् প खिद्रायन भवगी यवका-व्राप्ति ब्रस्तुवकावाष्टि कायः अन्दः ॥ #॥ অস্য মা সভ্গা:। বাযুনা-मिव्। त्रिक्षव्। मृष्टेमलव्। व्य ত্ব॰।রক্তপিত্তহরত্ব॰। হিমত্বঞ্চ। ইতি রাজবল্লভঃ॥

वनाहकः शृ॰ (मधः॥ मुखकः।
इंड्रमदः॥ भईडः॥ दिख्रितिलयः॥ नागविल्यः। इंडि (मिनी॥
श्रीकृष्णमऽ (घाटेकविल्यः। यथा।
स्रान्तनस्र मंडानन्तः मात्रिथणामऽ

पाककः । जूबकाः रेणवऽ मृशीकः भिवशुद्ध विषास्काः ॥ देखि जिका-७८णयः ॥

विनातः जि (ककाः। ইউ)माः॥ विनाभः क्ली विष्णः। ইजि मास्त्रज्ञाः विना

বলিশি: ১ জ্রী বিডিশ । ইভি শক্ বলিশী ১রহাবলী।।

वनीक॰ ক্লী পু॰ লম্বিত্ণোৎকর:। ছাঁইচ্ইতি ভাষা। ইত্যমর কটা-ধরৌ।। অস্যপর্য্যায়: পটলপুাস্ক শব্দে দুপ্তব্যঃ।।

वल्कः क्री भण्यम्नः ॥ भक्षिविष्यः
वि भूः । ইতি निषाप्रकोम्हाः
मूगाहिवृज्ञिः । উगाहित्कावण्यः ॥
वल्लः जि वलवान् । वलण्याः
गाठ्राञ्जाहिना উल्भुज्ययन निः
क्षमः । ইতি মুঞ্বোধ্ব্যাকরণः ॥
অস্য প্ৰগাঁয বকারাহিত্বেপি জ

বল্প ক ভাষণে। ইতি কবিকল্পজন:

।। ক বল্পতি। ভাষণ কথন ।

ইতি দুৰ্গাদাস: ।।

बानिथि उष्प्रकिष्यन ।।

বল্ল° ক্লী বল্লা।। শল্প:। ইতি যেদিনী শব্দক্ষাবলা)।। থপ্ত°। ইতি বিখাঃ।।

वदः भुः भक्तिकात्मायः। ইতি

क्राह्मियं है: ॥

बङ्ग ७ বৃং পৃগ্ৰু **কং। ইতি রাজ-**নির্ঘট: ।।

ৰক্ষসং। পুশ্ৰ ভূৰ্জ্জবৃষ্ণ:। ইভি রাজ নির্ঘণ্ট:।।

বন্ধন ল্লী বৃচণা ডালচিনি ইভি ভাষা।ইভিরাজনির্ঘট:।।

वन्नः श्रे क्री वृक्षपुक्। वाकन हेडि छाता। उट्शर्यप्रायः। पुक् २ वन्नः ०। हेड्यप्रयः॥ पुठा ६ पुठः ६ (ठाठः ५ (ठानकः १ मन्नः ४ छ्ला कः २ छ्लाः २० छ्ला २२ (ठाएकः २२। हेडि मन्द्रद्वावनी॥

वन्नमा जी मिनावन्।। इंडि त्राजः निर्घणः।।

क्तूलाथुः পৃ• পটি কালোথু: । ইতিরাজনির্ঘণ্ট: ।

स्तुराम् भू॰ मूट्माः। ইতি विका-् अत्मयः॥ यत्नुगुक्क विः॥

रिक्षणः भू कर्षकः। ইতি महर त्रवादनी॥

रङ्गुठ• क्ली वङ्गबः। ইতি **मध**-हन्मिका॥

্ন গভৌ। ইভি কবিকল্পদ্ম: ।। বল্লভি। অয় প্ল ভগভাবিভি ভউ। মল্ল:। ইভি দুর্গাদাস: ।।

वत्तनः क्री श्रुजगमनः॥ वस्र नावनः॥

रलूनि

বল্লধাজে ভাবে ২নট্ পুভ্যায়ন নিয়ম•।।

वता जी मञ्जानिका। नागाम् इंडि ভाषा। उर्देशियः। व्यवस्क्रिंशी २ द्रिन्यः ७ समा ४। इंडि (इस् हन्तुः॥

কল্লত ক্লী অখস্যবিদ্যেষণমন । তত্ত্ব বেশেন বিক্ষিণ্ডোপরিচরণ । ইত্যমরভরতৌ ॥ গমন ।। বহুব ভাষণঞ্চ।।

वलुः भू हागः॥ मूनस्य बि। इंडि भिनि।।

বলুক ক্লী চন্দ্ৰণ ।। বিপিনণ ।। পণণা কচিয়ে ত্রি । ইত্যন্তবঃ ॥ ত্রপবগী যবকারাদৌ লিখিডো-হ্যণ শবঃ । অমাভিস্ত ভ্রালি-থিতবাদক লিখিতঃ ।।

বল্লুপণ্র: পু॰ বনমুদ্য:। ইতি শব-চন্দিকা।।

বলুলা ত্রী বাঙ্গচী।। পক্ষিবিশেষঃ
। শেষস্যপর্য্যায়ঃ। চক্রবিষ্ঠা ২ দিবান্ধা ৩ নিশাচরী ৪ বৈরিণী ৫
দিবাস্থাপা ৬ মাংসেষ্টা ৭ মাত্রা
হিণী ৮। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।।

বল্লুলিকা স্ত্রী উত্তলপায়িকা। যথা । বল্লুলিকা মুখবিদ্যা পরোক্ষী জৈ-লপায়িকা। ইতি হেমচন্দুঃ॥ বস্তু উক্ষণে। ইতি কবিকল্পসঃ
।। বন্তুতে অন্ন লোক:। ইতি দুর্গাদাস:।।

बन्न ही खक्र १ । इंडि एक महम्मुः॥ बन्मिकः भ् ही वन्मीकः। इंडि भक्त बन्नी॥

ৰশ্মিকি: পু॰ ক্লী বশ্মীক:। ইত্য-মরটীকাষা• ভরত:।।

বন্মীক: পু ব্লী উধীকাক্তমৃত্তি-काख्नः। ७८ भर्यतायः । वामन्तः २ नाष्ट्रः ७। ইত্যমর: ॥ বৃশ্মিক: ८ বাল্মীক: ৫ বাল্মীকি: ৬ বাল্মিকি: **৭। ইতি ভটীকাবা**ণ ভরত:॥ পু-গলক: ৮ শক্রমুর্জা ৯ কৃমিশৈলক: १०। इं**डि मद**ब्रुवावनी ॥ 🖘 । टश्न् ত্তিকথা শৌচনিখেখে। যথা। বিষ্ণু-প্রাণ । বল্মীক মুধিকোৎ থাতা। भ्रम्मस्रक्षंनाः उथा। (नोहार्नाः **डाः (गहाइ नाम्म्याद्मशमस्याः** ॥ অञ्चः भाग्यभन्नाकः श्राट-থাতা॰ ন কর্দমা॰। ইত্যাহ্নিকা-ठात्रञ्जुः ॥ **क्ष** ॥ (५व**न्**जिष्ठायाः न्नानार भूबं भिन्निष्मावमास्त्रर्थं खमृ खिक्या कालन यथा। वन्त्री-ক মৃত্তিকাভিন্ত গোমবেন সুভযা-ना। कालरयर निन्निमः नामं हा-नागामुनामास्याक्षावन्त्रीकम्रा-

दिश्चात मखिवित्मवामुनादानाट् मखानादित्म गायबी जिम्लानाति लिखिजाट गायबी जिख्यम्न खन वा श्वानः कात्रियज्याः। ज्या श्वानः यथा। श्वानाद्यः भूथमः दिवः जारेयः भक्षविष त्रिनः। भक्षाम्-रैजः भक्षगरितंः भक्षम्टिनिखरेक त्रिनः। मृखिका कित्रप्तमा भर्व-जायथ्तमा । । ज्ञान व्याकि मञ्जू-जः मृट्भक्षक मुद्दीतिजः।। इजि (प्रवभुविष्ठाज्यः।।

वन्त्रीकः भू वान्त्रीकिमुनिः॥ द्वा-গবিশেষ: । ইতি বিশ্ব: ॥ অথ বল্মীকরোগস্য লক্ষণ । গ্রীবাণ-न कका क्रत भारति। भारती गता वा बिভिরেব দোবৈ:। शुन्तिः न বল্মীকবদক্ষিযাণা• জাত: ক্রমে-रैनव गडभुवृष्तः ॥ मूरेथ त्रानरेक ম্বৃতি ভোদবজ্ঞি বিসর্পবৎসর্পতি চোমতাপু:।ৰশ্মীক মাহু ভিৰন্ধো বিকারণ নিষ্কুত্যনীকণ চিরজণ বি-(मरा८ ॥ गीवा क्कारिका। चानः क्षतः। कका वाल्म्ल । शनः कर्शः। वन्त्रीकविष्ठिश्यन भुष्ठ्वनिथव्यवस् ছত্ত্ব মবগাঢ়মূল বৃঞ্চ সূচ্যতে। নিয়ুত্য नीकः উপচারাযোগ্যः॥ 🗱॥ व्यव जुन्न हिकिर्मा। भाष्ट्रागरक्^{जु}

वल्मीकः कात्राधि छाः भुनाषस्ट । विधारननाबुरभारकन भाष्यिदा **ह** (द्वायराष्ट्र ।। वन्नीकञ्च खरवन्द्र-স্যুনাভিবৃদ্ধ মন্মৰ্জ ৷ ভব্ৰ সং-শোধন কৃত্বাশোণিত মোক্লে ড্চ্যা লবণেন চা আরেবভস্য মূ रैनफ पड़ी मरेन खरेबर ह ॥ ना।-भाग्रेलः जनलीलः चक्तिरेणुः भूतिभाष्ट । भूभिष्यक मृत्यारिकः क जिरक् ज मूनवाइरयए।। भन्नः उदा विद्यानीयाङ्गजीः সর্বা रूपा কমণ। অভিজ্ঞায গঙী শিহ্বা পু **मिशामाजिमान्** ভिषक्।। ज॰। थ। पृष्टे भाः मानि कार्त्रण शुक्तिमाः द्राय । तुगः विशृष्तः विक्ताय রোপযেঘাতিমান্ ভিষক্।। মনঃ শিলাল ভল্লাভ স্ক্রেলাভক চ-न्हरेन:। बाजी शक्षव उरेक क निय े जिनः विभावस्य ॥ वन्त्रीकः नाः শবেক্তজি বহুছি দু বহু বুণ ৷ পা-ণিপাদোপরিষ্ঠাত্ত্ ছিদুৈ বঁহুভি-त्रावृष्ठः ॥ वन्त्रीकः यद् अत्माकः न्याष्ट्रकार जिल्लानजा। मनः **निवार्धः रेजनः । इंजि जा**वः शुकाणः॥ ৰশ্মীকিঃ পূ॰ বল্মীকঃ। ইভি শন্ধ-

মালা॥ दम्त्रीकभीर्यः ही (मुख्लारक्षनः। ইতি রাজনির্ঘণ্ট:।। वन्मीक्षे श्री बन्भीकः। इंडि (इन-**ठन्मः** ॥ वम्राम् ७ क म्निश्राः। इंडि वण्डल कितिक सक्त ।। वल्डल विक व्यवबन्धनर। इंडि पूर्गामामः॥ বল্ল ড সংবরণে। ইতি কবিকল্প-ফমঃ।। ড বল্লভে খন লোকঃ স॰-वृत्राजीजार्थः। इजि मुर्गामामः ॥ বল্ল জ্রিশুঞাে ধরণক্ষ তে হঙ্গৌ। इंडि नीनावजे ॥ विच्छा। इंडि रिवर्ऽक्लव्रिङायः।।। जार्ष्यञ्जाः। यथा। (गाध्यक्षि अरया मि ज क थिउ। खक्षा उया मार्खया राष्ट्रा বল্লচভ্ষ্টবেন ভিৰুদ্ধাণ মাধাে মত खहजू विजाि वाजनिर्यणेः॥ जी वीगा। इंडामद्रः॥ **ब**ञ्चकी সল্ল भी वृक्तः। ইতি द्राव्यनिर्घणेः॥ वल्लाङः भू॰ पिष्ठः॥ व्यर्भ्यकः॥ मझक्र जुत्रक्रः। ইতি मिरिनी।। वज्ञानः जि नियः॥ व्यथः ३-ত্যমর:।। অধ্যক্ষো হত্ত গবাধ্যক্ষঃ । ইতি স্বামী॥ ব্লভপালক: ত্রি অপরক্ষকঃ।

ইতি ভূরিপুযোগ:॥

বল্লভা স্ত্রী প্রিয়া। যথা। প্রেয়সী
দ্বিতাকান্তা প্রাণেশা বল্লভা প্রিয়া
। হৃদ্যেশা প্রাণসমা প্রেষ্ঠা প্রব্যনী
চ সা॥ ইতি হেমচন্দু: ॥

वल्लद्गः क्षी कृष्ण ७कः। ই जिद्राज-निर्घण्डः ॥ मञ्जदिः। ই जिल्लद्भद्भः। वली ॥ गहन ॥ मञ्ज । ই जि ध्द्रिः॥

বল্লর: । জী মঞ্জরী। ইত্যমরভর-বল্লরী ∫ভৌ॥ মেথিকা॥ চিত্রমূলণ । ইতিরাজনির্ঘণ্ট:॥

বল্লবঃ পু॰ গোপঃ। ইত্যমরঃ॥ ভীমসেনঃ। ইতি মেদিনী।।

বল্লবঃ ত্রি স্পকার:।ইত্যমর:॥ বল্লবী জ্ঞী বল্লবজাতিজ্ঞী॥ বল্লব-পত্নী। তৎপয্যায:। আভীরী ২ গোপিকা ৩ গোপী ৪ মহাশ্দী ৫ গোপালিকা ৬।ইতি শদ্রত্না-বলী॥

বল্লি: দ্রী লভা। ইত্যমরটীকাযাণ ভরক:।। পৃথিবী। ইতি শব্দালা

ৰল্লিকণ্টকারিকা স্ত্রী অণ্নিদমনী ক্ষুপ:। ইতি রাজনির্ঘণ্ট:।।

विल्रम्बं। की मानाम्बं। इंडि त्राजनियंणेः॥

विल्लाकरेलां जिका जी मूनलां जी

। ইতি রাজনির্ঘণ্ট:॥

বলিস্রণঃ পু॰ অত্যন্নপণী ইক্তি। রাজনিহণ্টঃ।।

বল্লী জী লতা। ইত্যমর: ।। সাচ
ভূনিপুসারা বর্ষনাত্রস্থায়নী জ্বখ্যাপ্তাদ্যা ।। অজমোদা। ইতি
মেদিনী ॥ কৈব্র্তিকা ।। চক্ত ।
ইতি রাজনিঘণ্ট: ।।

वल्लीगणः भू गरमः विष्मयः ।

(जाना इंडि वानिकण इंडि ह

जाया। यामः खनाः। नमूदः।

कक्षदः। याजिकः निष्दः। मर्कः।

केव्रदः। यर्गःदः। कक्ष नामनद्कः।

हेंडि वाक्षवल्लाकः।।

বল্লীজ লী মরীচ । ইতি রাজ-নির্ঘণ্ট শন্দচন্দিকে।।

বল্লীবদরী জ্বা ভ্বদরী। ইতিরাজ-নির্যন্টঃ।।

বলিনম: পু॰ মৃদ্ধেক:। ইভিরাজ: নির্ঘণ্ট:।।

वल्लीवृक्तः भ् नानवृक्तः। इंडि ब्राजनिर्धिः॥

বল্পুরণ ল্লী সঞ্জণ। মঞ্জন্মী। ক্ষেত্রণ ।। নির্জন্ম লা শাহলং। ইঙি হেমচন্দুং ॥ গহনণ। ইঙি মেদিনী ।। বিশ্ব ধরণি শব্দর ব্লাবলিমু বল্লার মিঙি পাঠঃ।। बल्ला बि जा उपाहिना क्ष्मा भागा । इंडिंग्स । क्ष्म स्था । इंडिंग्स । वाइन ।। वाइन ।। वाइन ।। क्ष्म क्ष्मा । इंडिंग्स क्ष्मा ।। वाइन ।। क्ष्म क्ष्मा । इंडिंग्स क्ष्मा । इंडिंग्स क्ष्मा । इंडिंग्स हाता । विद्या । इंडिंग्स हाता । विद्या । इंडिंग्स हाता ।

বল্বন্ধ: পৃণ উলপ:। ইতি হেনচন্দু:।। বাব ইতি থ্যাতত্ত্বণ।
ইত্যমর:।। বলতে ভুবং বেপ্টবতি
বিশাদিত্বাৎ ব পৃত্যযে বল্বঃ পর্বতঃ তত্র জাতা বল্বজাঃ ইত্যন্যে।
স্বভাবাৎ বহুত্বে বল্বজাঃ। একো
বল্বজ ইতি ভাষ্যকারবচনাদেকত্ব
মপি অতএব সুমনো হপ্পরো বল্বজাদের্বেতি পাক্ষিকবহুত্বার্থণ
ক্রনদীশ্বরস্ত্রণ। ইতি ভটীকাষাণ
ভরত:।।

वृज्ञा जी ज्वितिष्णयः। मादि वा-रा हेि हिन्ती जाया। उट भर्या-यः। मृत्वि श्वी र ज्विकः । ज्वित्वः-जा ४ सोक्षी भया ६ मृत्ज्वा ५ भागीयामा १ मृत्का द्वा ५। जम्या ख्वाः। नधूत्रवः। माञ्चः। भिज्ञः माह ज्याभहतः। वाञ्जुरकाभ-नदः। क्वाज्ञः। कश्चेम् स्विकातिष्कः । हेि त्राज्ञ निर्वेषः।। है क विवि। है जिक्विक सुक्काः।। क बहुगि । जिसि भी छो। इंडि मूर्गामामः॥

বল্ল ড শৈুষ্ঠে। ইতি কবিকল্পক্ষমঃ॥ ড বলুতে ধনী শেুষ্ঠঃ স্যাদিত্যৰ্থঃ। ইতি দুৰ্গাদাসঃ॥

বশ লু স্পৃহি। ইতি কবিকল্পজনঃ
।। লু বপ্তি ধন লোকঃ। ইতি দুর্গা দাসঃ॥

वन• क्री इहा॥ शुक्रुद्वः॥ व्यायः खना। इ**डिन**यस्त्रद्वावनी॥

বশঃ ত্রি আযত্তঃ। ইতি শব্রত্থা-বলী।।

বশ: পু• ইছা। ইতি স•কীর্ণবর্গেঅনর:॥ বেশ্যাগৃহ• ॥ আযন্ততা
॥ পুভূত্ব•। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষ:॥
জন্ম। ইতি হেমচন্দু:॥

বশকা জ্ঞী বশ্যানারী।ইতি শব্দ-রত্নাবলী॥

বশকিষা স্ত্রী বলীকরণ । তৎপর্য্যায়: । সংবদন হ । ইত্যমর: ॥
মণিনস্ত্রৌষধৈর্নশীকরণ সংবদন
সংপ্রো বদি র্নশীকরণে ভাবে
২নট্। সংবদনা চ ইতি কেচিৎ।
করণে ২নটি বশক্রিযাসাধনে
মণিমস্তাদাবলি। জন্মিয়া সংবদন
দন যত স্তদিতি রঘ্যা সংচলন
ইতি পাঠান্তরণ ইতি ভটীকাষা

ভরত: 11

বশগা জী বশীভ্তা। ইতিশদ রহাবলী।।

বশম্ব : ত্রি বশংবদন্তি য:। আয়-ত্ত হরবাক্যবক্তা। ইতি মুখ্ববোধ-ব্যাকরণ ।।

বৃশা জ্রী বন্ধ্যা। সূতা। যোবা।।
জ্রীপবী। করিণী। ইতি মেদিনী।।
বন্ধ্যাগবী। ইত্যমরং॥

वनाष्ट्रकः भूः निनृभादः। ইতি
निद्रञ्जावनी ॥

বশাপাধী^ন পূ• স্বক্লুর:। ইতি শন্দ নালা।।

বিশি লী বিশিত্ব । ইতি শব মালা॥

বশিক: ত্রি শ্ন্ডাইত্যমর:॥ বশিকা জ্রী অগুক:।ইতিশ্ব চন্দ্রি।॥

ৰশিত। জ্রী বশিত্ব । ইতিহেম চন্দু:।।

विभिन्नः क्ली व्यायद्वतः। भिन्नाः। रक्षेत्रयंग्राहनं रेज्ययंग्रेतिः भवः।। यथा
। व्यानमा व्यविमा नाखिः नाकामाः
महिमा जथा। दे भिन्नः विभिन्नः
जथा कामावनायिजा।। विभिन्नः
व्याजव्याः यन यज्व भविष्ठः।
देजामस्रोकायाः जस्रः।।

বশিনী জী শুমীকৃক্ষঃ।। বন্ধা। ইতি শুদ্দন্দ্রিকা।।

বিশির স্থা সামূদুলবণ । ইত্য-মর: ।।

বিশির: পু॰ গ্রুপিপ্পলী। ইড্য মর:॥ চব্য°। ইভি রাজনির্ঘণ্ট:॥ অপানাগ:। ইভি নেদিনী॥ বচা। ইভি শন্তিন্দুকা॥

ৰশিষ্ঠঃ পু॰ ৰনামখ্যাতমূনি।তৎ পर्यायः। अक्क जीक्षानिः २। ইতি হেনচন্দু: ।। অৰুদ্ধতীনাথ: ৩ বা-निष्ठः ४। ইতি नद्यत्र्वावली ॥ न তু বুন্ধণ: পুাণাজ্জাত:। তস্যভার্য। কদমকন্যা অকন্ধতী। পুপ্ৰা:সপ্তর্য থ:। ইতি 🗐 ভাগৰতমত ।। অ-नि ह। विनिष्ठण उत्पाद्धीयाः नथः भू भानकी बन्द । कन्याक भू खर्री-কাকা॰ সৰ্বশোভা সমন্বিতা॰ ॥ **ব্রজোগাভোজ্বাহু**শ্চ নবন শ্চানব ख्या। जुड्याः मुक्र इत्डार्ड मध भूया गरहोजनः॥ मर्ख उभिनः পোকা: সর্বে যজেষু ভাগিন:। অযজ্বানশ্চ যজ্বান: পিতরো বুক্ষণ: , সূতা: ॥ ইতি কৌর্মে ১২ অখ্যায ॥ 🗱 ॥ भिजावक्षराशः भूषः । यथा । ইতি পৃষ্টা নরেন্দ্রেণ কথ্যতা নিতি ভূপতে। বশিষ্ঠ চোদ্যামাসু: স

सला एक जिल्लाक्ताः ॥ सृतिनिः
त्युतिनः (माणि स्थावष्य न्याननः। (याण साष्ट्राय मृतिनः रेसजावक्ति त्राज्यवान्॥ व्यन्प्रहा सिजावक्तिया रेक्ट क्रिल्टिना (य श्रितकुनाः । क्रार्विया खरेथवात्न । व्यन्ति। व्यक्ति। व्यक्ति। यह श्रक्ताः । व्यक्ति। यह श्रक्ताः । व्यक्ति। यह श्रक्ताः । व्यक्ति। यह श्रक्ताः । व्यक्ति। यह स्वार्वित स्वारा मान्याः मुजाः ॥ इक्ति वङ्गित्रातः युज्ञत्वित्रि वात्राष्ट्रश्राप्त्वित्रात्यो ॥

विभोकता की भिना खोर्य श्वाय खोकता । इंडि छत्र ड करे । । विमान प्राची श्वाय श्वय श्वाय श्वाय श्वाय श्वाय श्वय श्वाय श्वाय श्वाय श्वाय श्वाय श्वय

जूरिकव नीत्नार भन **ममन्**डः। छ-ডেন ধুপযিত্বা তুরাজদ্বারে প্রিযো ভবে< ॥ ৪ ॥ খেতাপরাজিতামূল পিষ্ট রোচনযা যু ত। য পশ্চের नक्दिनव वनीवयाम्नानस्य।। १।। কাৰজিন্থা বচা স্বপ্ত নিম্বপত্ৰ সঙ্গ-ক্ষুম•। আত্মব্রক্ত• সভাবেয়•বশী-ভবতি মানব: ॥৬॥ ওঁ নম: সর্ব-সর্ভ্রেড্যা নম:। সিদ্ধি স্কৃ স্কৃ ষাহা। সপ্তভি মজিত কৃত্বা করবী-त्रमः भुञ्जकः। जीनामश्र जामस्य क्क गारेष्ठ मा वना ভरवट ॥ १॥ वुका-দণ্ডী বচা পঞ্ মধুনা সহ পেৰ্যেৎ । यहालभाइ विनेषा नानाः चर्छात মিছতি ॥ ৮ ॥ মূল জ্বন্তা বকুছ • व्यवहारत क्यभूमः। ३। ज्वताकनः ম্লন্ত পিষ্ঠ শুকেণ সংয়ত। আকি-ণী চাঞ্জবিত্বা ভূ বশী ক্র্য্যান্নর কে-ने ॥ २०॥ व्यथना ज्ञिला व्यक्ता व्यक्ता बीला८भन ममन्जाः। जानूलन भुमानाह वनीकत्रण मूखमः॥ ३३॥ ठलु:यश्चिवनाः (शुक्ताः कामणाञ्च वर्भोकताः। व्यालिक्साम्यान् द्वीभाः क्रमार्यप्राप्त बंशीक्ताः॥ ३२॥ ह्याठ-ना नागनञ्जाणि वित्तृभूत्रः शुरक्तः । इन्ह्रमः हन्द्रनरिक्षव जिल्दिन इन-षरम् ॥ २०॥ मूत्रानाचा वहा सर्छः

অস্ব্যঞ্জ শতাবরী। তিলভৈলেন। সংযুক্ত যোদিলেগাৎ বশো । র:॥ ১৪ ।। নিম্বকান্ত্রন্য থ্পেন প্পযিত্বা ভগ স্তিয়: ৷ সুভগা স্যাৎ সাচ কদু পতি मीत्मा छविषा्रिषा २०॥ मा-हिषः नवनीउक अध्य अध्यक्षिका। সৌভাগ্যু ভগলেপাৎ স্যাৎপত্তি দাসো ভবেত্তদা।। ১৬।। পঞ্চ ব্ল-ক্তানি পল্লাণি পৃথগ্নাত্যা সমাহ-রে**। সন্ধ্**নেন স্নাযুক্ত মাত্মর ক্তসমন্বিত ।। পুয়েণ তুস পিঞ্চা চ (ताहनायाः मानकजः। ह्या भूमा क्छ। कृषु जिलाका २य वणीकद्रः॥ ১৭॥ বুশ্ধদণ্ডী ভু পুয়োণ যানে পানে वन्गीकद्रः॥ ১৮॥ ७ वः भगभउरय ষাহেতি। অয় গণপতে মন্ত্রো ধন विष्ठा भूषायकः । इम मक्षे मह्रुक জপ্বা বদ্ধা শিখা তত:।। ব্যবহারে कयः माइ भंड काभा मृगाः शियः ॥ ১৯॥ তিলানাস্ত ঘৃতাক্তানা• কৃ काना॰ कृषु (हामस्यर । अक्षां बद्ग-नर्नु ब्राजा वन्। ज्रिजि हि रेनः ॥ २०॥ ड्रीँकात्रः मितमर्गक्ष भुगउः স্र्यामममुर्छि । खीगाः ननारि वि-ন্যস্য বশ্যতা ন্যতি ধুর ।।২১॥ यस जूङ्गारयु उ॰ म्र्हिः भ्रयञ्जानमः । मृष्टिमात्व महा उम्र वसमायान्ति

याषिठः ॥ २२॥ मनः निना भयः কঞ্চ সগোরোচন স্বস্তুন । এভিঃ ক্তেচ ভিলকে সদা জীবশভা মি-याए ॥ २०॥ मञ्जला ज्यवाङः সিতাপরাজিতা বচা। তেনৈব তি-লক ক্রা তৈলোক্য বশতা নিযাৎ ॥ २८ ॥ গোরোচনা মীনপিত্ত মা-ভ্যাঞ্চ কৃতবৰ্ত্তিকা। यः পুনাণ स्टि-नक अर्गाषामरुखकनिष्ठया ॥ म-করোতি বশ সর্থ তৈলোক্য নত্র সংশ্যঃ ৷ ২৫ ৷ গোরোচনা মহাদেব খাতুশোণিতভাবিতা। ততঃ কৃতাচ ভিলকান্মানব য নিরীক্ষতে। ত-क गर्बः वणः ऋर्वामाञ कार्या। वि-**ठाद्रगा।। २५ ।। नारमध्द्रकः रेमारलय•** चुक् भवक इत्रीडका । हन्तन का श्र সুস্থেলা রক্তশা লিসমন্বিতা।। এতৈ ধ্পো বশকর: মরবাণ ইবেশ্বর ॥ ২৭॥ রতিকালে মহাদেব পার্বতী शियमञ्जत । निजम्कः गृशीदा जू वामहरखन मः भूगान्।। कामिनीह-রণ বাম বিস্পেৎ স স্যাৎ দ্রিযাঃ श्रियः। २৮ ॥ रेमक्कवक सङ्गाप्तव शाः রাবতমল মধু। এভি লিপ্তস্ত লি: वः रिव कार्ति नीव मक् फुरवर ॥ २०॥ পুয়াণি পঞ্রক্রানি গৃহীত্বা যানি कानि ह। उ धुनक श्रिमञ्जूक (भवर्य)

(मकर्यागठः।। जानन निश्रनिक्रमऽ कामिनी वणा भियाए। १०। ইजि गाक्र १४०। १४७। १४৯ व्यव्यायाः ॥ # ॥ व्यथानादः मः-भुवक्रामि वशीकत्रग मुख्यः। यम বিজ্ঞানমাত্রেণ মন্ত্রা: সিদ্ধ্যন্তি তৎ ক্ষণাৎ ॥ পুতিনা॰ কারযেদেবি পলেন রজভস্য চ। পলার্জেন মহেশানি সাধ্যস্য পুতিমাণ শিৰে ॥ হরিতাল॰ পলার্চ্চঞ্ হরিদুা-**চূ**र्नक उथा। गर्ड क्द्रा मार्ख-হস্ত তত্র নি:ক্ষিপ্য সুন্দরি ॥ র-জাপন ভত্র দত্তা বিশেওমত্রমা নস:। চত্দিক্ষ্ মছেশানি পভাকা विनिद्यायर ॥ त्रकामत कामः विनार भ्वारमा जभमातर छ । भूः काया नियम (पित कानीहि नगन ন্দিনি।। তিলপূর্ণ ঘট তত্ত স্থাপথে-ভত্ত দেশিক:। প্রাণপুতিষ্ঠামন্ত্রেণ भागान् मः इगिशराष्ट्रयः ॥ अथः कृ दा भ्वियदा भ्वालमालगा कामर । मनगारमुकारभन भुरगागार्हा छ বেৰত: ॥ পুণব প্ৰমুচাৰ্য্য মাযা। वीक विजीयक । का दु वृज्ञाकिनी युक्न वामकर्लन्तु ज्विउ ॥ उउा ब्रक्कभर॰ द्वाराम् (७ ७ एन स्वतः । नाश्रमाम जला मात्रा वन्ममामयः

उर्भद्रः ॥ वङ्किषायावेषि अंख्या क्रालिक्ष्मगर्मुकः। एणाःभाषिनु-भारान रहामानी क ममाहरद्र ।। भा जः यादा इविवामी मुहि ख्षा जिञ्जिन्त्यः । शुा छः कावः ममातः ভ্য জপেন্মব্যু দিনাব্ধি॥ জপে স-गार्थ (एरविन इस्विप्रिक प्रिक भूट । জাতীপুশ্লস্য হোমেন বশ্যেমাত্র সংশযঃ॥ কপ্র মিশ্রিত স্তোরৈ স্ত-र्भाराष्ट्रभवतात्र विष्यु । भूविः भूगव मुद्ध-ত্য চামুগুা• পুবদেক্ত হ:॥ ভর্ণবাম্য-शिकायां उ॰ मञ्ज॰ कानी हि मुन्दित । च्यत्वरेनव विशासन म॰ टर्ना भद्राप्तय-তা া দিদ্ধি: পুযোগাদেবেশি জায-তে নাত্ৰ সংশ্য:। অভিষেক• ততঃ व्यर्गाट मक्ति भागवल्ला ।। भुगवः ঞ্চ মহেশানি চামুগুণ তদনন্তরণ অ-ভিষিঞ্চামি তৎপশ্চাৎ জ্বন্তেনা-जिविकारार्थ।। उपराभागामन (मरदिना বান্ধণান ভোজ্যে ভদা। এবং কৃতে मह्मानि वभीकद्रश मुख्यः ॥ जा-যতে নাত্রসন্দেহ: সভ্যু সভ্যু ন সংশয:। কামতুল্যক ন রীণাণ রি-পূণা• শমনোপম: ৷৷ যাবজ্জীবিত-পর্য্যন্ত মরবাণ ইবেশ্বরি। জাযতে নাত্র সন্দেহ: সভ্যুণ সুর্গণার্চিতে ।। 🛊 ॥ খেতাপরাজিতাম্ল (প্র-

বেদ্ৰোচনাযুত•া **লতেনামজিত•**∥ ক্ত্বা ভিলক কার্যেত্ততঃ।। বৃশ-যেয়াত্র সন্দেহ: সত্যু সত্যু ম-(रुश्रति। हन्तुभूर्य) यि वृथा उना নিয়ুলভাগুবেৎ।।রক্তবক্তেণ চামূ-ণ্ডা॰ ভোষযেদ্বত্যত্নতঃ। সুবর্ণ দ-किना (एया विजानुमात्रजः शिर्य ॥ जाम्रास मर्जी न्वा प्रां। खन्या वद्रानत् । शक्षान्न भूर्यात्मः ণ রাজান বশ মান্যেৎ ॥ ভব-भीरें ग्रापित कथिउ॰ जूबि मूर्न ज॰ । ই**তি বৃহ**দীল **জ**॰ ॥

বশীভূত: ত্রি বশ্যতা পুাপ্ত:। অ-বশো বশো ভবতি ইত্যৰ্থে দ্বিপু-ত্যযেन निश्चमः॥

ঘশীর: গৰপিপ্ললী। ইভি किंगियदः ॥

ৰশ্য ক্লী লবঙ্ব । ইতি শব্द-हिन्द्रिका ॥

রশ্য: ত্রি আয়ত্ততা গত:। তৎ-भर्यप्रायः । भूरायः २ । इंख्रमद्रः ॥ वनः १। ইতি नद्रद्वावनी ॥

বৃশ্যকা জী বৃশগালী।ইভিশন্ধ-ब्रञ्जावनी ॥

বশ্যকা ৪। ইতি শব্দরত্বাবলী।।

বধে। ইতি কবিকল্পদ্ম: গ্ৰ वयाज। इंजि मूर्गामामः॥

वयष्टे वऽ (हरवारम्हम् । क्रव्यान गमञः। इंडामदः॥ बाहा (भीवरे (वोयऐ वयऐ अथा এতে नक्षमदा (मवहविर्मात विक्रिम्थल्छ) वर्ख खि। (नवाय इतिरवामान**॰ (नवरू**-विनान छव (नवा इन्मुन्यः। अब পিতরো দেবতা ইতি মৃতে স্তেপি ধ্ববা: । হবিদান ইত্যনেন এতে মস্ত্রা ইতি সূচিত । ইতি ভরত:॥ वयदेकातः भू परवात्मभ्रक्यागः । তৎপর্য্যায়:। দেবযক্তঃ ২ আহৃ. তি: ৩ ছোম: ৪ ছোত্র ৫। ইতি रश्यम्यः॥

.বৰট্ক্ত॰ ত্ৰি হুত•। ইতামর:॥ व्यापी इउस रक्षत्र उट म्याधियु व्यह्कृ छ । इंछि नद्य ज्ञावनी ह।। বয় ড গভৌ। ইতি কবিবল্লভম:॥ क्लि वहे। ७ वद्गाक। इंकि मूर्गा-माभः॥

বৃদ্ধ্যঃ পু• একহাঘনোবৎসঃ [ইত্যনর টীকাষা রাষ্মুসট ধ্ত भाकि। यनः॥

রশ্যা জ্ঞা বশীভূভানারী। তৎ- বিশ্বয়ণী ু জ্ঞা চিরপুস্তাগোঃ। ই-পর্য্যায: । বশগা ২ বশাস্যা ৩ ব্যুষিণী 🖯 ত্যুমর:।। ব্যুতে পরিক্রা-भि वयस्य भिष्ठत्रकानीनवर्भः यकना ইতি था। उस ए गाउँ। वस ए गाउँ। नामी कि व्ययः वस्य एउँ क्षायाना वर्म हें कि क्षायः वस्य एउँ क्षायाना वर्म हें कि क्षायः क्षायान वर्म हिंदी देवा का कि नार्व कि नार्व कि नार्व कि नार्व कि वस्य कि नार्व कि वस्य कि

वम क स्मन्न हिस्ताण्ड । ইতি कवि कन्नक्रमः ॥ स्मन्न इन् श्रीजिः । क वामयि वस्तुः । हकात्राध्य वस्त ह । ইতি मुर्गामामः ॥

ৰ্স ঐ ঔ নিবাসে। ইতি কবি কল্লজন: ॥ ঐ উস্যাৎ। ঔ অবাৎ সীৎ। ইতি দুর্গাদাস: ॥

ৰস ল ড স্ত্তী। ইতিকবিকল জনঃ ।। স্ত্তিরিহ আছাদনপূর্বক ধারণং। ল ড বস্তে লোক: বস্ত্রং। ইতি দুর্গাদাস: ।। वन ९क वारम। ইতি कविक्षण्यक्रमः
।। वनगठि। ইতি দুর্গাদাসः।।
वनठिः े की वानः।। गामिनी।।
वनठो ∫ निक्छन•। ইতি মেদিনी।।
वनन• क्षी वक्ष•। ইত্যমরः।।
ছাদন•। ইতি মেদিনী।। निवामः।। জীকটী ভূষণ•। ইতি শদ•
রয়াবলী।।

বসনা জ্রী জ্রীকটীভূষণ । যথা।
সারসন সারশন বসনা বশনা
. তথা। বসন বল্লনঞ্জি জ্রীকটীভূষণে ভবেৎ।। ইতি শব্রন্নাবল্লী।।

वमशः भृ श्राह्मभावः। ই शिक्षम् ब्रह्मविनी ।। श्राह्मण्यः। म ह रिखरिक्षार्थ मामद्याद्यकः। यथा । मध्रूष्ट माध्यण्य वामश्चिकावृद्धः। ই জি मलमामङ्ख्युः । गृङ्धः।। उ ल्यांगः। भू समम् । र मूब्रिः। व श्रावनी।। माध्यः । र लूः ।। ই জি करोध्यः।। श्रुवाकः । भू समामः । भिकानमः । कश्चाः। भ लूसमामः मिकानमः । मध्रुवः। क्ष्युः। क्ष्युः। स्थायदः। मध्रुवः। क्ष्युः। स्थायदः। ह जिवाकि विष्टः।। । श्राह्म। यम्।। ह जिवाकि विष्टः।। । श्राह्म। यम्।। वहनाष्ट्रद्राञ्च । किन्न त्रावि-ন্মহান্ত্রণ নে ততঃ কাস্তাণ ভবান্ সূত্র ।। নয়া সংমোহিতে শম্ভৌ যয়া ত-अधनुत्माइन । कार्या शताह्माः कामा उनिप्त नग लाकज्य ॥ छ। মহ• নহি পশ্যামি ব্যাত্স্যানুমো-হন। কর্ত্তন্য মধুনা ধাত স্তব্যেপা-यः उठः भक्।। मार्क्छय উवाह। **७३॰ वास्ति कम्रल्ल शाङा लाक**-পিতামহ:। ক্যা সংমোহনীযে। হ্য নিতি চিন্তা॰ জগাম হ ॥ চিন্তা-বিষ্টস্য তস্যাথ নি:শ্বানো যো বি-নি:সূত:। তুমাদ্বসম্ভ: সংক্রাত: পু-স্কুরাত বিভূষিত:।। চ্তাক্ষরা তৎ কলিকাণ বিভুজুমরসংহতি। কিং-শুকান্ সারসা রেজে পুফুল ইব भारभः ॥ (भाग ब्राजीव महाभः कुज्ञ जामद्रामकनः । मक्त्रां दिखाः খঙশশি পুতিমাস্য: সুনাসিক: ॥ मञ्जरहूरगावर्जः माग्रमस १३ अ मूर्विः । मक्रांभ्यानि मन्भः मुखनवर মণ্ডিত: ৷৷ পুমন্তবারণগতি বিস্তীর্ণ क्रय्डनः । शीनङ्जायङङ्कः क होतकत्रयुप्रकः ॥ मृत्रखाक कही कड्डः कष्रुगीवामञाः नकः। गृष्ठव् भीनवकः मःभूगः मईवक्षिगः॥ छा- म्राम २० मगुर शास मम्पूर्ण **ल**म् भाकरत । वरवो वायुः अभूत्र ভिः शाह-পা অপি পুষ্পিতা:॥ পিকাশ্চ নেদু: **সততः ११७मः मधुत्रवताः । शुक्**छ भगा अভवन् **म**त्रमाः यह भुष्कताः ।। ইতি কালিকাপুরাণে ৪ অধ্যাযঃ ॥ 🗱 ॥ इत्राह्नकाल अन्ध्र कर्या-नियथा। भव्षक अकाउ कर्य यहाउ -मः वियाहत्। उ८मृग्व महाजाग निउड अरमहाहिछ भूनः॥ हम्भकान् কেশরানামূান্ ককণান্ পাটলাং স্ত-থা। নাগকেশর পুলাগান্ কি শুকান্ (कडकान् वकान्।। भाषवी मिल्लिका भर्गमात्रान् अक्वकाः खथा। উৎ कृ-ল্লয়তি তত্রমায়ত্র তিইতি বৈ হর:॥ नद्राः मू ८ क्ल्लभगानि वी बयन् म-व्यानितः। भूगिक्ष कृउदान् यञ्जाद व्यञीव भक्षताभूमः ॥ वजाः नर्बाः সুমনসো নৃতনাङ्ग्र मक्षयाः। वृकानु, চিব্নভাবেণ বেষ্ট্রযন্তিম তত্র চা। তান্ वृक्षाः काकभूश्लीषाः रिषः मूगिकः मभीवरैनः । मृष्ट्रे। कामवर्णः याउ। न তত্র মুনি রপুতে।। তদ্নণা অপি লো-क्ष्म नानाजारियः मूर्याज्येनः। त्रभः एक्य मुद्राः निष्का (य एव हा**नि उ**न পোধনা:।।ন তস্য পুনরস্মাভি দৃষ্টি (नाइमा कार्यः। जादः न अक्छ

काम॰ कार्याच्य मिन नक्दाः ॥ इंडि कालिकाभद्रारा १ व्यथायः ।। 🗱 ।। वमः 🗷 वर्गनीयानि यथा । जूतः ভৌ দোলা কোকিল মাৰুত সূৰ্য্যণ **डि उक् म्लाफिताः। बाडीउद**े भूब्रहयाम्मञ्जूबी जुमत्रवाद्वाः॥ ইতি কবিকল্পলভাষা পুথম স্তবকঃ ॥ 🗱 ॥ यदुागाञ्चर्ग अविजीयवागः । যথা। রাগা: ষডের তু প্রোক্তারা গিণ্য ক্রি**-শ**দেব তু। ভৈরবোথ ব ञल्ड वर्षे वाद्रायम ख्याब्रामि ॥ **७मा भक्ष्रा**भित्रा यथा । व्यान्ति। विका ह (स्माय्या व्यावा भूयम মঞ্জরী। মন্দারী চেতি রাগিণ্যে वनस्त्राः ॥ व्यम् ध्रानः यथा। निथि ७ । (र्राष्ट्र यव क्ष रूपः श्रुक न् भिकः ह् उन डाक्ड्रिश । जुगन् सूरी বামমনো জ্ঞমূর্ত্তি মতক্ষমত্তঃ স বস खद्राभः ॥ व्यम् भानमः (या य्थाः **ि, পঞ্চন্যाः স**মারভ্য याবৎ স্যাह-যন হরে:। তাব্দসন্তরাগন্য পান মুক্ত মনীবিভি: ॥ ইতি সমীত भारमारतः ॥ कनानाथमण्ड जामः युष्ट्रागित्या यथा। जाञ्चनी > गमर्कः ২ পঠনজ্ঞরী ৩ গৌডকর্রা ৪ ধানক লী ৫ দেবশাখ ৬ ॥ হন্মন্ত হি (लानद्रागनूधनानात्वः २म्।।हो

পুগ্রা:। কিন্তু তেষাণ মধ্যৈ বিভা-সস্থানে হিন্দোল ইতি লিখিত• ।। সোমেশ্বরনতে তস্য ষড়াগিণ্যে यथा। (मणी) (मविगत्री २ रेवत्राही ৩ টোডি ছা ৪ ল লভা ৫ হিনে।-नी ७॥ उन्नरं चमा द्वागमा রাগিণীসহিত্স্য বসম্ভর্গানসং चरः। ই**তি স**ঞ্চীতশাস্ত্র॰ ।! # ।। ভালবিশেষঃ। यथा। क्रयमञ्जल श-सर्व भक्तन्त विভक्षभाः । त्रिङ **जाला तमञ्जू जगङ्गाला २०** পাৰুণি রিভ্যাদি ॥ ব্যস্তভালে কর্ভব্যো নগণো মগণ স্তথা। জগ-ज्ञुत्ल खक्रेन्ट्राका विज्ञाना उक्ष थ-ष्य ।। ইতি मङ्गी उंदासाददः।।

वमञ्जः भू॰ (म्यानाकभू(छरः। इंजि ब्राजनियंग्टेः ॥

वमञ्जन्भः भुः वृक्कंविरमयः। यथा । বসন্তরসুম: (সলু: শবিতো দ্বিজ-क्रिंग है। इंडि मद्रभाषा।।।

पण्डमपूर्वाकतः भू श्रेषधदिरमयः । यथा। भूवान तम स्मेकि मास्त्र নিদ চতু ভাগভাক্ পৃথক্ পৃথগ-থ মৃতে রজত হেম তো স্ব্যংশকে। অণে৷ ভূজগ রহ্বক ত্রিলবক বি-মদ্যাথিলং শুভেহনি বিভাব্যেৎ **ভিব্**गिषः विया मक्षणः ॥ मुरेव वृत नित्मकृ किः कमन मान जी भू ।

ग्रोकः भयः कमनि कमर के मंनयरेजनमञ्जू करियः । वमस्त्र मूमाकरेजनमञ्जू कि विवास । विमान भारेनस्वाम स्वाम के विकास मान भारेनग्राम स्वाम के विकास मान स्वाम स

বসন্তজা স্ত্রী বাসন্তীলতা। ইতি রাজনিঘণ্ট: ॥

बमञ्जिक क्षी ठजूर्ममाक्षर्रशा-महत्नावित्मयः॥ भ्यवित्मयः । যথা। জ্রেয় বসন্তভিলক ভ জা জ গৌ গঃ। ফুল্ল বসন্ততিলক তিলক বনাল্যা লীলাপর পিক-হ্বল কলমত্র রৌতি। বাত্যেষ পু-স্প্রস্কৃতি মল্যাদ্বিত্যতো যাতো হ রি: স নথুরা বিধিনা হতা: यः॥ इंडि इल्लामञ्जूबी ॥ 🗱 ॥ ঔषवि-(শयः। यथा। अकाद्रलु महन रेनः ন্ধব বিশ্ব শক চূর্ণ করন্তাসহিত্ত मिथ्छिन भीजः। रेनवः भुद्राङ्ख পুन र्छम्बः ऋष्ट्रा उत्म वम्र তিলকৈ রপি কল্পকল্ল•।। ইতি বৃত্ত-রত্ববেশ্যা গুদজরোগতি কিৎসা ॥ বসন্তঃ পু॰ আনুনৃক্ষ: 11 কো-

কিল: ॥ পঞ্মরাগঃ। ইতি বিশ্ব

(मिरिन्ते)।।

বসন্তদূতী স্ত্রী পাটলীকৃক্ষ:।। নাধ বীলভা। ইতি নেদিনী।। গণিকারী ।। পিকী। ইতি রাজনির্ঘণ্ট:।।

वमन्नः भृ वागुत्कः। ३७ णप्भावा॥

वमस्रमथः भु• 'कामरादः । इंडि इनायुषः॥

বস। ত্রী মাংসপুভবধাতৃবিশেষ:
। ইত্যার: ॥ মাংসরোহিণী ।
ইতিরাজনির্ঘণ্ট:॥ অস্যা বিবরণ
নেদ: শব্দে দুষ্টব্য: ॥

বসাচ্য: পু শিশুনার: । ইতি বিকাওশেষ: ।।

বসি: পূ•্ বসন•। ইভাগাদি-কোষ:।।

বিসর জী সামুদুলবণ ।। গজপিপ্ললী। ইতি ধরণ্যমরটাকে।।
বিসিষ্ঠঃ পু• বশিষ্ঠনুনি:। ইতি
দ্বিক্পকোষ:।।

वम् क्री ब्रङ्गा थनः। ইত্যमद्रः॥
नृष्कोषथः॥ माग्रामः। ইতি मिरिनी
॥ हार्वेकः। ইতি विश्वः॥ क्रवः।
ইতিসিজান্তকৌমুদ্যামুণাদিবৃত্তিঃ॥
वमुः श्रु वक्रवृक्षः॥ व्यन्वः॥
विशाः॥ गगरिव जाविस्मयः। ইত্যা

ध्रता धुरण्ड स्मामण्ड विकृ रेण्डवा-नित्वा १नवः। পुज्। यक् भू जामक বসবো ২প্তৌ ক্রনাৎ সৃতা:।। ইতি ভরত: ৷৷ দক্ষে৷ দ্বিতীয়জন্মনি ষষ্ঠ মন্বন্তরে অসিকু্যা• পত্ন্যা• **ব**স্তি ক-ন্যাজন্যামাস।তাঃপুজাপতিভ্যো मखवान्। धर्माय मना। जानाः ना भानि। ভानु लंबा कक्षम् यानि विश्वा সাধ্যা নৰুত্বতী বস্মু হূৰ্ত্তা সঙ্কল্পা । जामा नत्था वत्मा ब्रह्मी वमवः भू या यथा। (मानः भानः शुनः व्यर्कः অগ্নি:দোষ: বাস্তঃ বিভাবস বিতি ।। দ্রোণস্য অভিমত্যাং পত্ন্যাং হর্ষ (भाक ख्यास्यः भूषाः।)। भूग न। উर्জ्य गाः (हो भू(वो नर्मागः भूरताकवण्ड । २ । धुतना धातनाः भूतः भूषः। १। व्यक्तम् वामनायाः ভর্ষাদ্যঃ পুঞাঃ। ৪। অগ্নে বসো र्थाद्रायाः मुविनकाम्यः भूषाः। ७। দোৰস্য শর্ব্যা শিশ্মারো হরে त्र·भः। ७। वात्या त्रीव्हत्रम्याः विश्वकर्या। विश्वकर्यनः भू अ नहा सूर-ৰো মনু ব্লভূৎ। বিশ্বে সাধ্যা মনোঃ সুতা: । १ । বিভাবসো ক্ষাযাণ बयः भूधाः वृष्टे द्राहिषाउभ ना মান:। ৮। ইতি শ্রীভাগবতমত ।। 🗫 ।। মতান্তরে অষ্টো বসবো যথা

। धरः १ धरः २ (मामः ७ माविबः ৪ অনিল: ৫ অনল: ৬ পুকুলে: ৭ পুভাস: ৮। ইতি মহাভারতে मानवर्गः॥ व्यक्ति। व्यक्ति। शुनुक्त (माम क ध्रत रेक्ठवानित्ला १नलः। পুত্যক পুভাসত বনবো হটো পুकीर्खिजाः॥ व्यानमा भूष्या दि-**७७** मुगः मृाखा धृनि खथा। बुन वम्। भूत्या जगवान् काला लाक-भुकालनः ॥ (मामम् । जगवान् वर्ता বৰ্চ্নী থেন জায়তে। ধ্রস্য পুলো দুবিণো হুতে। হব্যবহ স্তথা।। ম-(नाङ्द्राया: भिद्रप्त: भूगाला १थ त्रगण उथा। অনিলস্য শিবা ভা-र्या जनाः भूषः भूरताबवाः॥ অবিজ্ঞাতগতিশ্চৈব দ্বৌপুণ্রাব-निवन। ज्। यशिष्यः स्वादस শরস্তম্বে ব্যজায়ত ॥ তদ্যা শাথো विनाथकारेनगरमयक भृष्ठेकाः। পুত্रयम् विदूः भूधः वावि नाम ह (एवन ।। (हो भू(ध) (एवनम्)।भि क्रमावरहो मनीवित्ती। तृहस्त्राउण ভগিনী বরস্ত্রী বুক্ষচারিণী ॥ পুভা-সস্য তু সা ভাৰ্য্য বস্নামইমস্য চ । विश्वकर्या। सहा जाग उन्। कि জ্ঞে পুজাপ ভি:।। ইতি বহি পুরা-ति कन्रभीय भुकामग नामायायः

৮ শিবশেখর: ৯। অস্যশুণা: । কটুত্ব । ভিক্তত্ব । উষ্ণত্ব । পাকে শীতত্ব । দীপনত্ব । অজীর্ণ বাত-

বসুদে

खन्मनानिष् । (थं उत्र) द्रतायनष्-कः। ইতি द्राजनिर्घणेः।।

वमुकी है: भु॰ याहकः। ইতি हात्रा-वनी ॥ '

वम् हिन्। क्षी महास्मिनाव्यः। ইঙি রল্পাল। রাজনির্ঘণ্টক।।

वजूमः भू॰ अरवदः। ইতি धनम्भदः मर्मनारः।। धननाजदि जि॥

वमुर्हितः शृः श्रीक्ष्वन हः। ७९शर्यायः। यान क पृन्तृ जिः २। इंडामद्राः। स्वः ० क्ष्मिश्रा ८। इंडिः
सद्राः वनी।। यामा विवद्र १० यथा।
नाद्राय पे उत्राहित क्षां प्राप्त विवद्र १० यथा।
नाद्राय पे उत्राहित क्षां प्राप्त विवद्र १० युः विवद्र विवद्र

(ह्यहन्द्रः॥

(कीर्म्म १८ व्यक्त ११ क्षा ११ व्यक्त १ व्यक्त ११ व्यक्त १ व्य

बगुः जी मीछिः॥ वृष्कोवयः। इंडि मस्त्रज्ञावनी॥

वम् वि मधूद्रः॥ मुझः। ইতি ছেম-চন্দুः॥

বসুক শ্লী সাম্ভবিলবণ । ইত্য মর: ॥ পাংশবং ॥ বাস্ক । ইতি রাজনির্ঘট: ॥

वमुकः भुः खर्कवृक्षः। ইত্যমतः॥ निवमल्ली। ইতি মেদিনী॥ भूत्र-विष्मयः। म जुष्यं ज ज ज्ञाप्तन हिविषः। छ भर्यप्रायः। वमुः २ रेभवः ० वकः ६ भिवमल्लिका ६ भागुभछः ७ भिवमछः १ मृह्यद्वेः वजूरहवर्ः शुः शिक्षः। ইতি (रुमहन्मुः॥

दम्धा जी পृषिवी। ইত্যমর: ॥ वमुधाथङ्क्रिका जी ভ্থङ्क्रिका । ইতিরাজনির্ঘণ্ট:॥

বসুধারা জ্রী জিনৃশক্তিবিশেষ: 1 **उ**ट्मर्ग्राय:। जात्रा २ महाञ्ची: ० ওঙ্গারা ৪ স্বাহা ৫ জ্রী: ৬ মনোর-মা ৭ ভারিণী ৮ জ্যা ৯ অবস্থা ১০ শিবা ১১ লোকেশ্বরা ১২ আত্মজা ১० थमूबवाजिनी ४८ ভদু। ১৫ विचा २१ नीलमत्रयञी २१ भ इनी २৮ মহাতার। ১৯ খন দদা ২০ ত্রিলো-हना २७ व्यक्ताइना २२। ইতি ह्य-**इन्द्रः ॥ अ**ख्बन्द्रश्री । इंडि **म**क् भावा।। वृष्तिभाषा भूई कर्डवा (ह-দিরাজবস্দেশ্যক অভ্যলগ্ন ঘৃত-बात्र।। यथा । इत्नागनिति निष्टि কাত্যায়ন:। হড়েলগ্না॰ বসে। ধা-बा॰ मछवाबान् घ्रां जन् जु। काब्राय भक्षवाद्रान् वा नाडिनीहाः न हा हिं अ। वायुगानि विश्वास्त्रि হপ্তা তত্ত্ৰ সমাহিত:। যট্টা: পি ज्जा अरन् भाषान गुभकत्म**्** ।। বসো শেচদিরাজস্য বসে। ধার। নিভি ব:সাথারাধিপাভেনেভ্যাদি मर्भनाद अनुक् मनारमरेनव पुरया-

গ: কর্ত্তরে:। ইতি শুদ্ধিতলু:।। 🕸 🛚 । मामगानाः ७८भाउन मख्दा यथा। যদ্বৰ্ছো হিরণ্যস্য যদ্বা বছো গৰামূত । সত্যস্যুক্ষণো বর্চন্তেন মাসং সৃ-कामिम ॥ #॥ यजुवा॰ यथा। वरनाः পবিত্র মসি শতধার বসোঃ পবি-ত্র মসি সহসুধারণ দেবস্তা সবিতা পুনাত্ বসোঃ পবিত্তেণ শভধারেণ সুত্রা কামপ্রস্থ। ইতি শালপুযোগ-**७ वृः॥** श्रा श्रायमिनाः यथा। व्यनम-শ্বর আগছতী ভ্রি থারে, প্রস্থতী ঘৃঙপুষাতে সুক্তে শ্চিবুতে। রাজন্ত यम् यम् ज्वनम् द्वारमी व्यास रिव्र ज निक्षि छ॰ यद्म नुक् छ॰। ১। व्यन 🛚 १ **ই**ব বন্*ৰ*নে **ত**বাসুঞ্জনা অভিচাক-সীনি। ধৰ সোন: শুষ্তে ধৰ যক্তো भर्रात घ्रमा भाषा मधुमश्लू वश्रस् । २। घृ ठव ठी जूवना नाम जिल्लायाः, दी निथी मधुम्ध मूलममा मावा-পৃথিবী বক্ষণস্য ধর্মণা বিষ্কৃতিতে অন্বরে ভূরি রেওসা। ৩। শতধার মুৎসমীক্ষ্যমাণ বিপশ্চিত পি-তর কক্থানা অভিমন্ত পিত্রো ৰূপস্তেও রোদসী পিপৃত সভ্য-वाडः । ८। भा उथातः वायू सर्वयः हिंग नृष्ठकृषाय २ ভिष्का ३ र्विः । (व ह भूविंड भूवहिंड मञ्चामि

मुमूर् मध्याद्गः। १। वरमाः भवि-ত্রমসি শতধার বসো: পবিত্রমসি नश्रुवादः (रवद्या निवजा भूगाजू। বসো: পরিত্রেণ শতখারেণ সূত্রা কা-भष्य । ७ । भृष्तीनन्मित्वात्रिकः भृ-**थि**वेश दिश्वानंत्र मृङ आकाउम्बन ক্বি স্মাজ মতিথি জনানা মাস মা: পাত্ৰ জনযন্ত দেবা: স্বাহ্যা ৭। ইত্যেতৈ মঁ জৈ সপ্তঘ্তধারা দ म्राट । इंडि कालिनः ॥ 🛊 ॥ विः (मयवज्रुशाता यथा। नृःना यः वङ्ख ধারা মানাৎ সর্লি ন সা শুভা। নাধিকা শস্যতে বিপু দুর্ভিক্ষ কলি-কারিক।।। তুট্যতে বছনানা য, শন-८३ ह छ जामन । नन्नं (इनद्नं। ह ধার। রাজ্যবিবৃদ্ধায় ।। সম্ভতা প-ততে যা ত্তনোতীৰ চ পাৰক। ভলোভি नृপরাইঞ্চ বদোধারা न न भरः ॥ भ्रक्ति यह विमन कृति कीं विविद्धिंत । भन्। ति ह व দোধ রা যা সলি গ্ব্য প্জিতা।। षा जावार गालाक वा (हाउव)-ন্ত সংশাভন । যু চ ফৌ দু প্যো-थाता नर्बभीषा निवातिभी ॥ वन-দুব্যু মৃতনাজ্য মসৃত হবি কানি-कः। जम्र शात्रा गना (नगा वरमा र्धात्रा हि ना नजा ॥ वमुना वर्गका

মেণ দক্ষেণ চ নহাত্মনা। ন্যাচ বিষ্ণুনা শক্ত ৰুদুেণ চ সংহাম্যা।। णाञ्चानक चकालन भाजागास भू-नाषिङ । (रवी नाविष्य मागाङ। मर्वकामभुनाविका ॥ ७ आङ्ग मि त्राह्मन्तु वरमार्थात्रा॰ भुभाउय । নাতঃ পরতর পুণ্য বিদ্যতে নৃপ: সত্তন।। বসোর্ধারাপুদানস্য একা-र मिन यच्हातर। न्त्रागुरका-(भग भूञ द्वाङा किगीयूगा।। (नया ধার। সদা বৎস রিপুনাশায বৃদ্ধি-নন্। দুব্যাভাবে ঘৃতাভাবে নৃপ ভদ্ধরের ভেখে।। যদি নো বৃহত্তে भातः उरा छ्रिनुः न विम्राख। महा আশিন মাসে ত অষ্টমী নবমীষু চ ।। কার্ত্তিক্যা॰ মাঘ চৈত্রে তু চিত্রা। যা রোহিণীব্চ। বৈশাখ্যান্ত পুদাতব্যা জৈঙ্গো• জ্যেষ্ঠস্য সত্ত-म।। वाबाद द्वारमी (हान वर्रेमी পূর্ণিমা নভে। নভস্যে রোহিণী वट्म ठठ्थं। द्वारमीनित्व ॥ जः কান্তিযু চ সর্বাসু গুঞ্ শৌরিভবা-नू है। हम् मूर्य)। পরাগেষু পুতিষ্ঠা यञ्च भ्यानि॥ माकाह्य भूपाउद्य ब्स भुद्धा जिल्हा । मार्ग दुज-নিবান্ধ ভূ শ্ভে বাক্যে তু দৰ্শনে ॥ शुहरू छ। भनार्भमु धात्रा (हव)।

শুভাবহা:। এব পো বাছয়েজা-द्वाः नाजम्छेन कर्मा ॥ उन्र छः সিজ্ব্যতে সর্বা সনাগা সহসাগরা । ইতি দেবীপুরাণে বসোধারানান ०६ व्यथ्रायः ॥

বসুন্ধরা জ্ঞা পৃথিবী।ইত্যনর:॥ ব্যুপাণ: পু॰ অগ্নিঃ। ইতি শদ-ब्रङ्गवनी।।

वमूमजी ुञ्जी नृषिती। ইত্যমর:॥ वमुरेकािः क्री युद्धः। वरमाक्राः म जायानि डारान इम् भुडारयन नियम । इं जि मिषा खरको मूर्छ। मूर्गापितृ खः ॥

বসুল: পু: দেবতা। ইতি ত্রিকাও: (শय:॥

বসুশেষ্ঠ লী ক্প্য । ইতি রাজ-निर्घण्डः॥

বসুসেন: পু॰ কর্ণরাজ:। ইতি ত্রি কাণ্ডশেষঃ ॥

वमूख्नी जी मत्वमभूती। इंडि नद्राणा॥

পু॰ বকবৃক্ষঃ। ইভি রত্ন-गामा॥

वमुर्छकः भू वकवृष्णः। ইভि नद्रभावा॥

वम्कः ज्ञो मास्रिज्ञववन•। ইভি ∥ बखगक्षा ज्ञी व्यवगक्ता ইভি द्राज्ञ• (स्मिन्तुः ॥ वक्शूब्रः । इंडि ||

দ্বিকাপকোষ:।।

বস্ক ড গভৌ। ইতি কবিকল্পদ্ম:॥ मस्यामया ইতি पूर्गमि हः॥ विलि-वक्। मूर्जन्य मधा ইত্যেকে। विशि বট্। ড বন্ধতে। ইতি দুর্গাদাস:॥ বক্ষ: প॰ অব্যবসাম:। ইতি ভূরি-भ्यागः ॥

शृ अञ्चायत्नावध्यः। ইত্যমরটীকাষা রাব্যুস্কট: ॥

वक्षमी जी वित्रभून् जातीः ইত্যমরটাকাষা॰ রামমূপট:॥ অ-म्। मृथाख्याः। वऋविन्। ख्रिप्ता-वमः उर्भागः दलक्ट भगः । ইতি ভাবপুকাশ: ॥

वक्षत्राहिक। सी वृण्किकः। ইडि श्रवावनी।।

বস্ত উক বংখ। ইতি কবিকল্পভ্নঃ ॥ ক ড বন্তগভে। গতি হি॰ সা যা-हरनिश्चि त्रमानाथः। इंडि मूर्गा-मानः॥

পু॰ ছাগ:। ইত্যমর:॥ বস্তক ল্লী ক্তিমলবণ । ইতি (इमहन्मु: 11

ৰন্তকৰ্ণ: পৃ॰ শালব্ক:। ইতি व्राजनियकः॥

निर्घकः॥

वस्तामा क्षी व्यवस्थामा। इंडि ब्राव्यविद्धाः ॥

वख्यः भू की वज्जग्रहणाः। यथाः
। जियाः वङ्ख् वज्जग्रहणाः मूर्
र्वस्या हरयाः । ইত্যময়ः ।।

वस्ता की हिंग्लाकी क्रू शः। एट शर्या गः। व्यगक्षा था। २ (स्याकी ० व्यशिका ८ व्यकाकी ६ (दाक-छी ५। व्यमा खगाः। कर्षेत्र मृद्धः। काम (हाय दिना निष्धः। वीक हा छ् पुः। गर्छ जनक द्वशः। ই छित्रा क्र-निर्धणेः॥

विष्ठः भू छो ना (अत्र श्वा अत्र श्वा । विष्ठ म्या । वे अत्र श्वा । विष्ठ मृद्या । विष्ठ मृद्या । विष्ठ मृद्या । विष्ठ मित्र । व्यथ विष्ठ विष्ठः । विष्ठ मित्र । व्यथ विष्ठ विष्ठः । विष्ठ मित्र । व्यथ मित्र । विष्ठ मित्र । व्यथ मित्र । विष्ठ मित्र । विष्

भाजा विख स्तीद्रिजः ॥ शलश्र्यः তস্য মাত্রা তমাদর্জাপি বা ভবেৎ। व्यन्वामाञ्च क्षः माजीकाविः (क-वलानिकी ॥ नानुवामाञ्च अधीमा।-(मरी ज्व खर्णाम्त्री। नाज्रान्त्री-नान्वाम्।: मूर इकीर्लाचार ज्र यू-छाः ॥ भाष मूई। १कि ७ यथान काम क्षयाजूदाः। (नवः कार्यः) भूदः र्नापि थाजुङि ब्र्कार्यगुङिः ॥ नरेन में रिष्ठ विवागारेग्र भीगि विवीयाख । (नवः नाडी । उथाह विश्व शुकारण । নেত্ৰ॰ পথি ভণে বক্সে তৰ্ণমূলে বি-লোচনে। নেত্ৰ বন্ধে চ নাড্যাঞ্চ নে-ত্রো নেতরি ভেদ্যবদিতি॥ এক্বর্যা-ভু ষত্বৰ্য বাবন্মান ষডক্ষুল। ভতো षाम्भकः यावद्यानः म्याप्रेप्तः ত।।। ७७: भन्नः चारण्डि न्नःहेल र्विकीर्घेश । मृत्र हि पु॰ कवायां ड॰ हिर्दुः (काला हि द्रञ्जूकः ॥ यथा मः খ্যা ভেংমেত্র শুক্ষা গোপুছ সমি ভ॰।। মূলে সূল।। ততঃ ক্রমাৎ कृषः। गृप्तहिमानि श्रमानः (नवः कः मन वर्षाय द्वार भववाय छर्ड् वर्षाय (छवर । चाजुद्राकृष्ठमात्वन ग्रल इन विश्वीयाउ । कनिष्ठिम भद्गीभाइ मागु 5 ६ दिकामूथः ॥ भः दिगारहा ९व (होना.। उनान

कर्निक एव ह कार्य। जागाह उर्थकार । कर्निका भवामि वर्नदर । कर्निका ছ্রাকারা গুদাবিকান্তঃপুবেশরো-ধিনী কর্ণিকেতি । কর্ণিকাকারত্বাৎ कर्निकिं कथाएं । (गहर खंब विख्यः वस्त्रच्य विद्यान :।। मृगाङ শুকর গবাং মহিষদ্যাপি বা ভ বেৎ। বস্তি রিভিশেষ:। মূত্রকো ষস্য বস্তিস্ত ভদলাভে ভুন্মান: ॥ कषाय ब्रङ्गः मञ्दू विश्वित्रक्षा मृह्याः হিতঃ। বুণবস্তেন্ত নেত্রণ স্বাৎ শ্লুক महाकृत्वाचिष्ठः॥ मृत्रहिषुः गृथुशक নালিকা পরিণাহিচ। শরীরোপ-हरा वर्ग वर्ग भारताग्र भारत्या अ-ক্তে পরিবৃদ্ধিঞ্ বস্তি: সম্যুক্তপা-নিতঃ। দিবা শীতে বসন্তেচ স্নেহ-विश्वः भूमीयाज्या भूषेया वर्षा भद्रश काल ब्राट्यो मुग्रामन्यामनः। नवा-. তিরিধা **নশন**° ভোজযিত্বানুবাস एट ॥ मन मूहीक जनएट विका एन्ट् भूरगिक्षिजः। विवा जाहरन বস্তৌ চ। ৰূক্ষণ ভুক্তৰতো ২ত্যন্ত वनः वर्गक शामायः।। युक्तान्य (ठ) बद्ध॰ (ভाजगिज्ञानुवामस्य । যুক্ত সুহ্ যথোচিত সেহ ভোজ্য ভোদ্ধবিদ্বা ইতার্থ:। शैनमाजातू-विश्वी नाजिकार्ग्यकात्री मालो।।

অতিমাত্রৌ তথানাহ স্লুণাতিসার काव्रको । উভৌबस्ते अनुदासन निक्शायो। उन्ना मार भीवः ব 🖫 মধ্যমা স্যাৎ পলৈ জ্রিভি:।। भवद्यम शीमा महामूका माजानू-वामत्न। # । अथ (मृह्वितः । **म** ङाखा रेमद्रवाल्याः ह (५२॰ स्न्रह् চ চূৰ্ণক । उन्नाखाल्य मध्राष्ट्राः यहे छजु वय भाषतिः ॥ विद्रह-নাৎ সপ্তরাত্তে গতে জাত্যলায় চ । जूकाश्वागानुवामणाय वन्ति (र्परा) **ध्नुवामनः ॥ अथान्वाम्यः मञ्ज** মুক্ষাম্ব্ৰদিত শনৈ:। ভোজযিত্বা যথা শাস্ত্র কৃত চ ক্রমণ ততঃ ॥ उँ एम्ड्रोिन विमृत्रः (याहराष्ट्र (मृ-हर्वखना। উक्षाप्रु (मिष्ठ) हेकापूना ন্নাপিত । সুগুস্য বামপার্শ্বেন বা-মজ্বাপুসারিণ:। স্বঞ্চতাপরভন্ন-म् । (नज्र मिथा छाप न)(म् ॥ उ জ্বৃ বিস্তিমূখ মূকৈ স্থানহন্তেন খা-त्रायः । शीउरयम्बिरारेनव मध्र (वरणन धीतधीः ॥ क्छा काम क्वा-मी· क विकार**ण न कात्र**य**ः।** बि•. শন্মাত্রামিত: কাল: প্রোক্তো ব-ন্তে স্ত পীড়মে।। ততঃ পুণিহিতে স্নেছে উত্তানো বাক্ শত ভবেৎ। सकानूनः कत्रावर्खः सर्यग्राह्मिकश

যুক্ত ৷৷ এষা নাত্ৰা ভবেদেকা সৰ্ব विदेव निक्रयः। निम्पारवास्त्रयगः পু•সা মঙ্গুল্যা ছোটিকাথ বা ॥ **७ वं क** द्वाहोत्र १ वा वा न्या (वयः स् ত। दूरिः । शुत्राद्रिरेजः नर्बगारिक र्यथा वीर्यं पुत्रमंडि ॥ अप्रदीर्यं ः (प्रश्नि । जाउरयन्त्रवारा (द्रनः जीः क्वीन् वाद्रान् मरेनः मरेनः। श्रिः छा-टैक्टव उथा (मानी भग्रा रिक:वार ক্ষিপেত্তত:।। ক্লিচো শৈচন স্বপা-र्किन्ताः न्द्रवाउरवष्ट्रशः। नयाक পাদত স্তম্য ত্রীন্ বারানুৎক্ষিপে-ন্ত ড: ।। জাতে বিধানে ত্ ভত: ছাৰ্য্য। बि मुा॰ यथा সूर्थण। मानिलः मनुद्री ৰশ্চ স্লেহ: পুত্রেতি যস্য তু ৷৷ উপ-দুবং বিনা শাঘু স সম্যুগনুবাসিত: । উপদূবস্থানে উব চোষাবিতি সু-भुरं भारे: ॥ कीर्नाम मथ मामाद्रा (मुह्ह भु छा । ए**छ भूनः।** व्यक्तः (छा-कारट कार मीश्राधिष्ठ मतायनि॥ অনুবাসিতায় দেয় মিতরে ২হি: সূ (थानकः। थान। मुधी क्वायः वा স্নেছ ব্যাপত্তি নাশন ।। সুখোদক भूष्णाहकः। व्यामिख व्याधिः। स्वान न विधिना यु वा मुख वास्त्री नदानि वा। विरथ्या वंखय एखया मरङ हिव निक्रा ।। पख्य श्रुप्राम। विष्टः स्मर

যেদ্বন্তি বঙ্কণৌ। সম্যাধন্তো দিঙী-यस मृष्कुं इ मनिन कराए।। वन বর্ণঞ্চ জনযেৎ তৃতীযস্ত পুষোজিতঃ । চতুর্থ পঞ্নৌ দত্তৌ স্নেহ্যেতা। বসাসূত্রী ॥ ষঙো মাণসং স্লেহ্যতি मधरमा (सप वर् ह। अष्ट्रेरमा नर्मः न्हां नि निक्कानक यथाकन ॥ यथा-ক্রম মিতি বচনারস্টনো হস্তি স্লেছ-यर । ७४ भुक्र गठान् सायान् वि-खनः माधु माध्यरा विखनः चष्टी-मणित्रमाविका विख्ः। यष्टामणाः श्वीमणकान् वखीनाः त्या नित्यव्छ। न ऋक्षव वरण। ९४न। द्राय छल। হমরপুভ: ॥ ক্লায বহুবাতায त्त्रहविष्ठः मित्न मित्न। मम्प्रोदेषर् खबारनः यः मगुगवाय खवाधाः सा त्युर्हः श्लुगाद्या क्यागाः मीर्घकाः का ग्नङ्गाः । व्यन् ड्राया १वाष्कः । তথা নিজ্হ: শ্লিঞ্জানা প্রলমাত্র: পু শ্ব্যাত । অথ বা যস্য তৎকা**ল**° স্মেহে। নিৰ্মাতি কেবল:॥ তস্যান্যে। হল ভারো দেখো নহি স্নিফ্ ভি ভিষ্ঠ-তি। শ্ৰিহাতি সিংশ ভিপ্তি দৰ ্ৰেহ ইতি শেষ:।৷ অশুদ্ধস্য মলো-चिश्वः (मृह्यः निकियमा भूनः। उमान বেদনাগ্মানে শ্লা খাসখ্চ জায়তে ॥ भक्षामाय धक्षुक छा प्रमामि

कर्ग । जीक् जीक् विकारिय गूका कलवर्डि र्इंडाथ वा ॥ यथानुरलाम-গো বাযু ৰ্মল প্ৰেহ চ জাগতে। তথা विद्राहन प्राट् जीक नगा ह न-म्राउ॥ यम्र नाममुब वर्षाए । यह বস্তি বিনি:মৃত:। সর্বো ২ল্লো বা বৃতো রৌক্ষ্যাদুপেক্ষ্য: স বিজ্ঞানতা ॥ অনাযাত ত্বহোরাতে স্নেহ সং **भाष्टिन** र्हात्र । (मुरुवस्तावनायार उ नालः (त्रह्म विश्वीयत्त्र ॥ अपूर्वाद्रश्य পূতীক ভাগী বৃষ্যাক রৌহিষ।। **ण** जावती महत्त्र- काकनामाः शः (वाश्विजाः ॥ यवनायाजनी काण बनथार भुम्राजिवार । हजू দ্রোণে ২স্ত্র স: পজ্বা দ্রোণশেষেণতে-न ह ॥ भहिरेखनाएक भरिष्ठ की व नीरेयः পলোমিতৈ:। অনবাসন মে **७ क्षि मर्बवाज विकाबन्य ॥ भृ**जि-. कः कब्रधः। (ब्रोहियः (ब्राहिय ইতি সুগন্ধতৃণবিশেষ:। কাকনাসা कोयार्काठी । भुम् उ॰ भनवयः ॥ यहेमछा वाभाष बाग्र विख कर्मानः। म्विजा न्यूमार्यन का नि हिट्ना स मुजाटा। ममुनारम व নুচিত নেত্রাদি সাম্পুর। পানাছ। র বিহারাক্চ বস্তিক্যণি ক্ৎসুশ:। त्रिश्यान मगाः कार्या नाज कार्या।

विठात्रभा ॥ 🕸 ॥ अथ निक्र्विष्ट বিধিঃ। নিক্ত্ৰস্তি ইত্থা ভিদ্যুত কারণান্তরৈ:। তৈরেব তস্য নানানি क् जानि भूनि भूक्रियः ॥ का द्रभा छरेतः সম্বাধিকারণভেদৈ:। निब्ह् म् । পর নাম প্রোক্ত মাস্থাপন বৃধৈ:। **ৰহ**ানস্থাপনাদোষ ধাত্না• স্থাপ नः न जः ॥ निक्रम् भुगाव्य भुद्रः शासाखद्गः भद्रः । सद्यमः भूष्ट्रम्-फिक्टे शेनक करा खरः॥ भन्न (भू-क्षे । অভিসিধো ९क्षिट्रेप्सायः क्र-তোরক্ষ; কৃষ্ণ তথা। অক্লিষ্টদোবঃ व्यन् क्षिष्ठे (मार्यः। व्यन्ति खारक्षान ইতি गावर। ফ্রােরয়: উর:ফ্রত बान्। व्याध्यान हिन् हिक्कार्णः (माय শ্বাস পুপীডিত:। গুদশোক।তিসা-রান্তো বিস্চী স্বষ্ঠ সংযুত:।। গর্ভি नी मध्रम्ही ह नाञ्चानग्राण्ड जला। দরী। বাতব্যাখাবুদাবর্ছে বাতাস্-विषमञ्जात ॥ मूही ज्यभाषत्रानार भ्वक्षुमात्रीषु छ। वृष्कम्द्रिभन्दारी প্राम्हियू निक्र रंग ।। भूति श्रमिरख क्रापुराण (याकायिविषयषुष: । उद-সৃষ্টানিলবিম্ব স্থি ষিন্ন মভো-बिङ ॥ भर्गाङ्ग गृहमत्या ह यथा (यागाः निक्र्राट्। निक् यं अकुकः । बिद्यः উकाष्ट्रज्ञाभिङः । (ज्ञर्वाङ

বিধানেন বৃধ: অর্য্যায়িজহণ । জা-তে নিৰাহে চ ভতো ভবেদুৎকটকা সন: ৷৷ ভিঙেমুহ্রনাত্ত নিক্ছা-গমনেছ্যা। অত্ৰ নৃভূৰ্বনাতশন্দে रैन उपि (वार्षि उ॰। निक् इ भु छ।। गमनकारमा मृत्र्डमाजः। यनागाउ॰ मूर्बाजु निक्रः (माधीन ईत्रर । নিক্টে রেব মতিমান্ ক্ষার মূত্রাল্ল रिमन्नरेवः ॥ यम्। ক্রমেণ গছন্তি বিট্ পিত্ত কফ বাযব:। লাঘবঞ্চোপজা-বেত সুনিক্তে তনাদিশেৎ।। বিবি-ক্ততা মনস্বস্থি: স্থিপতা ব্যাধিনিগু হ:। আস্থাপন সেহবস্তেগঃ সম্য-ম্বানে তুলক্ষণ ।। বিবিক্তা দৰৌ-यथिन: मद्रभः। व्यत्नन विधिना यूक्षाः। न्निक्र विख्नानिष्ट । विजीय वा ভূতীয় বা চতুর্থ বা যথোচিত ॥ সম্বেহ এক: প্ৰনে পিত্তে দ্বৌ প্ৰয সা সহ। কৰাৰ কটুকা মূত্ৰা ককে তৃফা ব্রযো হিতা: ৷৷ পিত্ত শ্লেখ্যা-निलाविष्टे की द्र युष द्रोमः क्रमार। নিক্রহ•ভোজযিত্বা চ তত স্ত মনুবা-भरर ।। मुस्रभातम्। वृक्षम्। वालम्। **ठ** नृषू र्हि उ: । विखि खीक्षा **नु**युका हि उवा॰ इन्राह्मनायूकी । प्रमाहूर-क्रिमन भूर्व भर्ष। (दावहत छड:। भन्हा**८ जः न**गनीय**क** रम्याविष्टः

विष्कृतः॥ अत्रखवील मधूकः निभू-नी रेमक्रद॰ वहा। इभूषा कनकम्नूण्ड বস্তি ক্ৎক্লেশন: মৃতঃ ৷৷ ইত্ঃৎক্লে-শন বস্তি:।। 🗱 ।। শতাস্থা মধুক• বিল্ব কৌটজ ফলমেব চ। সকাঞ্জি ক: সংগাম্ভো বস্তিদোষ্কর: মৃত: ॥ इंजि (मायहत्रवे खि: ॥ 🐐॥ श्रिषः ञ्च मंदूकः मुखा তথিব চ র সাঞ্জন। সক্ষীর: শস্যতে বস্তি র্দোষাণা• শ-মন: স্তঃ।। ইতি শমনবস্তিঃ।। 🚓॥ ত্রিফলাকাথ গোম্ত্র ক্ষেদু ক্ষার সং भागृजाः। উषकारि পुजीवाया वल-যো লেখনা: মৃতা:।। উষকাদি পুতीवायाः ঊषकामिशनविष्णवहूर्व পুকেপা:। ইতি লেখনবস্তয:। 🚓॥ व् इ १ मृव। निः दारिषः करेन् र्यक्षत्रेक यू जाः। निर्भि भी न त्रामार्भजा वसः शा वृष्ट्रभाः मृजाः ॥ इन्डि वृष्ट्रभवन खगः ॥ 🗱 ॥ वन्देर्ग्रद्राव शे म्लू भाग्यनीभूञ्चकाक्ताः । अतावञी नात्राकी। (मन्: वल्यातः। कीत সিজা কৌদুযুক্তা নামা পি ছিল সং জ্ঞিতা: ॥ অজোরভূণ ক্ধিরৈ যুঁকা (एया विष्कारेगः। याक्रम्। गः। उत्र-ভূে। মবঃ। এণঃ কৃষ্ণমূগঃ। মাত্রা পি: हिन वछीनाः भरेन द्वारणान्य मंग्री।।। ইতি পিছিল।वखयः।। #॥ पद्गामी

रिमक्तरमाइकः नथूनः भुमृ छिष्वयः । বিনির্মথ্য ভতো দদ্যাৎ স্নেহ্ন্য পুস্তির্যণা একীভূতে ভভ: স্নেহে कन्त्रमा भुमृष्ठिः क्रिश्मरा मः मृहिंख কষাযন্ত চতু:পুস্ভিসম্মিত ॥ গৃ-হ্লীষাম্ভ ভদাবাপ মন্তে দ্বিপুস্তো-बियउ । किथा विमया मनाइ िक হ• সশলো ভিষক্।। এব• পুকল্পি তো विख बीममनुम्राखा खावर । বাতে চত্যু:পল ক্ষৌদু দদ্যাৎ স্থে रुम् बर्भवः ॥ भिख हजुःभवः कोरु (नुइ रहार नव्या व (क जू वर्रभवा को पूर किरभर रा হ• চত্ৰপেল।। ইতি নিক্ষমাত্রা।। **ऋ॥ अत्र ७ कृश्य ज्लागः मा॰ सञ्च रेजनः** नवाष्ट्रकः। मञ्जूष्मा नवार्ष्कन रेमः দ্ধবাৰ্দ্ধন সংযুত । মধতৈলিক সং-(छ। १य॰ विस्त मीक्विलाजिङः ॥ ंभरता खन्म कृभि श्लीह भरवानावर्ख नामनः । वलवर्गकद्रीमध्य वृत्यता ही-भन वृष्ट्यः ॥ मधरेङ निकवितः ॥ #॥ (क्षीमाङ) क्षीत रेखनानाः भुम् उ· भुम् ड· ভरवृष्। रुश्वा रेमक्रवाः कारमा वितः म्याद्याभनः भन्नः ॥ याभनः नात्रकः। याभनवस्तिः॥॥॥ **अव्यक्त निद्धार्था मधुरिं उत्तः म्रोम** क्रवः । এव युक्तद्र(थाविष्ठः मव्हा

शिश्रुनीफनः ॥ युक्तत्र थवस्तिः ॥ # ॥ **शक्षम्बम्। निष्कृाथ रिखनः मागिसका** भव। সসদৈব: স্বস্থ্যাহ্ব: সিদ্ধবস্তি রিভি মৃত: ।। সিদ্ধবস্তি: ।। 🗱 ।। मान माकारिकः अर्थापितात्रश्च मः জীৰ্ণতা॰। বৰ্জযেদপর॰ সৰ্ব মাচ-রেৎ সুহ্বন্তিবৎ 🛭 🎋 🗓 অন্ধোত্তর-বস্তি বিধি:। অত:পর॰ পুরক্ষ্যামি বস্তিমূত্তর সংজ্ঞিত। নির্হাদুত্ত-রো यमाजमाम्ख्य मः छकः॥ धा-দশাস্থলক (নত্ত মধ্যে চ কৃত ক-র্ণিক। মালতীপুষ্কৃত্তাভ ছিদুং जर्यभिनर्गमः ॥ शक्षविः माजिवसाना মধোমাত্রা দ্বিকার্যিকা। তদ্দ্র্ব প-व्यभावा ह (सुरुप्तप्राक्ता ভिष्यदेत: া৷ অথ স্থাপনশ্লাস্য তৃপ্তস্য স্থান ভোজনৈ: ৷ স্থিত স্থ জানুমাত্রেণ शीर्छ १ विष्ठ भनाक्या ॥ त्रिक्या म प्रमार्गेष जाजात्मव निर्याक्रयं । শনৈ: শনৈ: ঘৃ তা ভ্যক্তে মে ঢুরক্ষে **२**ऋवानि यहे।। ততো १वशीप्रय-ष्ठिः **भ**रेन र्त्नवः विनिर्श्तरः। **७७:** পুত্যাগতে স্নেহে সুহ্বন্তিক্রমো-হিতঃ ॥ জীণা॰ কনিষ্ঠিকাস্থল। त्व अर्याप्ताक्षा । गूलः भूत-**णः (राज्यक्ष राज्य क्रजूतक्षणः ॥** ष्ठश्रुवा भूवभार्ग ह मृत्रावक विरमः कारार। म्बक् ह्विकात्रयू वालानाः (जुक्मजुन ।। नति विद्युम्। मार्थिः সৃশ্ব । বত কবৈ:। মাল তীপুস্ব বৃষ্ডাভ নেত্র মিত্রজন্বাৎ পুন: স্ক্র **শ**দাভিধানে বালানা• ভডোপিনে-खम्ब्रम्ब्रङा (वादनार्थः । (गानिमा-র্গেবু নারীণা স্বেহ নাতাছিপালিকা ৷৷ মূত্রমার্গে পলোমানা বালানাঞ্চ विकार्षि । উडानारेग जिरेग म-म्राट अक्षु कारेन विष्क्रमः॥ अनु ভ্যাগছতি ভিষক্ বস্তাবৃত্তরসংজ্ঞি-তে। ভূষো বস্তি বিদধ্যা সম্ভূ स्माधिन र्खे रेगः ॥ कनव खि॰ विनश्राः हा लानियालं मृतः जिसक्। भूटें বিনিমিতা সুধা শোধনদুব্যসা रङाः ॥ एक भारत उथा रखो एए। षांख॰ विश्वादरः । कीतिनृक्कवयाः (यन अयमा भी उत्तन वा॥ पश्नात वरछो यिमन् ङ्यान विख ईख छिमन् **मञ्**नात्न। विखः मुक्ककः भूभाः ন্ত্রীণ নার্বকা কর:। হন্যাদুত্র विख्य (नाहित्या (महिना कृष्टि ॥ সন্যুত্তস্য লিস্থানি ব্যাপদক্রন এব চ। বত্তে ক্ ভর্ম•জ্ঞস্য সভানঃ (नुह्रविद्या।। 🗱 ॥ व्यथ क नविर्धि বিধি:। যৃতাভ্যক্তে তদে ক্ষিপ্তা भूका बाबूक्षमम् । भवनुवर्तिनी वर्तिः कनवर्तिक ना मृजा॥ ইতি ভাবপুকাশ:॥

विकर्षाष्ट्रः शृ व्यक्तिश्चेवृक्तः । ज्विशे इंडिश्वाडः। यथा । व्यक्तिः (क्षे। विकर्षाष्ट्रा (विगेदः (क्वि-वः क्षृतः। इंडि मद्द्रिका ॥ विश्वनः त्री म्वः। इंडि (इम-हन्दुः॥

वस्त ही पुराः। यथा। वृद्धपुराः (स्रोभिकः मार्थः मञ्जः पुराधः वस्र ह । इति ॥ भवार्थः । यथा। जातः भवार्था धर्यः मार्थः मञ्जः छन्न्धः वस्र ह। इति ह जिकाश्रास्त्रः॥ क्रमति वस्रव्यः जाता रजावणः। इति नाग्राष्ट्रास्त्रादः।। सः वृक्ष। इति विवास्त्रादः॥

বস্তক ক্লী বাস্তক। ইতি শব্রজ্ঞান বলী রাজনিঘটাত।। বস্তুনী জ্লী খেডচিল্লীশাক:। ইতি রাজনির্ঘটা:॥

वस्तुः क्री गृष्ट् । इन्तुमद्रः ॥
वस्तुः क्री भदिषानाम् । भयुक्तकार्भाः
नामिनिर्माजवस्तुः । काश्रापः इनि
काषा। उर्देशयाः । वाहामनः
र दात्रः २ (हनः ८ दमनः ६ व्यः ।
भूकः ५। इन्तुमद्रः ॥ निह्यः १
(भूष्टः ৮ नक्तः २ कर्शकः)

भार्षेकः ३३ किमिनुः ३२ । ইভि क्रोधदः ॥ वामनः १० विष्यः १८ ल्यांज १० हाम १५ वाम ११। ইতি শহরত্বাবলী ॥ 🕸 ॥ অব্য भित्रिशान विधि यंथा। जृखः। विक-(का २न् खर्त्रीयण्ड न्य ण्डावळ এव ह। াশ্ৰেত আৰ্ত্ত তথা কৰ্ম ন নগ কি-ष्ट्रायम् ।। विक्रकः भर्तीधानानः **मृ** ७ वहः । ७ था ह । भद्रीशानाष्ट्रः কক্ষা নিবন্ধা স্থাসুরী ভবেৎ। স্থৃতি: ৷ বামে পৃষ্ঠে তথা নাভৌ কক্ষত্রয मृगक् छ । এভি: क्रेक: भद्रीश्ख (या विशु: न म्हि: मृठ: ॥ वोशाय-नः। नाञी श्रुक्ष यवज्ञ भाहामग्रि कानुनी। अध्यीयः भूभखः छमहिम गुर्ভाया खायाः ॥ **शुरुजाः । मना**-ना हो भुषाक्षरय श्रा खिः। न महार कर्मान कक्षृकीि । উखदीयशाद्र गः (চাপবীতব**ং । यथा या**ज्जानः वी उक्ष धार्याएक চ दिका खरेगः। ख्था **अ**कार्यप्रख यञ्जाम्ख्याहामनः শুভ ।। ইতি মৃতে:। অত্ৰ যথা দ্বি জোন্তমৈ: সব্যাপসব্যত্ত্বাদিনা উপ-বীত পার্য্যতে তথা উত্তরাদ্বাদন ম शि बिका खरेन ब्रिजि भूममनमावः । প্ৰাণ্ডক্ত ভূতবচনেন সৰেষা বিবস্ত তা পুতীতে: ৷ পারস্কর: ৷একঞ্চেদ্বা

সো ভবতি তস্য উত্তরার্ছেন প্রচা-দ্যতীতি। ইত্যাহ্নিকত্তনু ॥ 🛊 ॥ व्यम् दाव्यक्षाः। यथा। काम्रुः य-भन्। भागुष्य भवाक्षीशः भुरुर्वनः । **শ্রিমৎপারিষদ• শস্ত**ণ নির্মালাম্বর-খারণ'॥ ইতি রাজবল্লভঃ ॥ 🗱 ॥ অপিচ। স্থাভস্যানম্ভর• সম্যুদ্ধেণ তন্মার্জন । কান্তিপুদ শরীরস্য कञ्या (मायना ननः ॥ को (ययः हि-ত্রবন্ত্রপ রক্তবন্ত্রণ তথৈব চ। বাত শ্লেম্ছর ডব্র শীতকালে বিধার-থেৎ।। কৌষেয়ণ পউল্লেরণ ভসর-বঙ্কঞ্চ।। মেধ্যং সূশীতং পিত্তম্ন ক-बायः वज मूह्य । उद्यादायमूकः কালে ভদাপি লঘু শস্যভে॥ কৰা-য কোৰুচী ইতিলোকে। কৰাবরাগ রক্ত বা। শুত্রম্ভ শূভদণ বস্ত্রণ শীতা-**७**भ निवाद्रभः। नहाकः नत्र वा भी-७° जबु वर्वामू श्रात्रायः ॥ य**नम्यः** काम। माय्याः जीमहानन्तवर्षनः । खुठा वन्नीकद्र क्ठा नव निर्यंत भ्दर ।। काम्य कारमामी भकः। कराशि न बरेनः সক্তি शार्याः मनिन মম্বরণ। তত্ত্ত কণ্ড্ কৃমিকরণ মান্য-লক্ষীকরণ পরণ। অলক্ষী রশোভা দারিদু বা। ইতি ভাবপুকাশঃ॥#॥ व्यथ् नववज्जभन्नीथान दिनः ॥ वुकाः

নুরাধ বসু ভিষ্য বিশাথ হস্ত চিত্তো-ভরাণ্নপবনাদিতিরেবতীয়। জন্ম-क्कं जीव व्य भुक रितार नवासी খার্য্য- নবং বসন মীশ্বর দেবতৃষ্টো ॥ ইতি জ্যোতিস্তব্ব• ।। 🕸 ।। অপিচ। न्र्यं। ठाल्लवनः वृगः मनिदित द्वामः সদা ভূমিজে । বজ্ঞাণা॰ বহুতা বুধে जूबखदो विष्ठागमः जम्लानः। नाना **ভোগयुजः भुत्मामभयन** मिव्याञ्च-না ভার্গবে শৌরে সুর: খলু রোগ শোক কলহা বন্তে ধৃতে নৃতনে। ইতি कर्माताहनः॥ 🗱 ॥ व्यमः। कात्रमः-याग निविक्षितिनानि यथा। मनत् भक्त वहीतु हाम्माराः मुाक्षवामात्र ৷ বস্ত্রাণাণ ক্ষারসংযোগো দহত্যা-সপ্তমণ লগা। ইত্যাহ্নিকাচারতত্ত্বণ ॥ 🗱 ॥ उप्तानकन॰ यथा। वात्माप-শ্চন্দু সালোক্য মন্থিসালোক্য মুখ-দ:। ইতি শুদ্ধিতত্ত্ব॰।। 🕸।। অপিচ । দিজানা । যে ত্সতত শুভবন্তপু-मा नद्राः । ব**ज्र**गन्नयुठः भञ्चा (खरा॰ मूक्त मीउनः॥ इंड्राप्त्र वङ्गिन् রাণে স্বাশ মিলো পাখ্যান নামাধ্যা-यः॥ #॥ (उन विकुभूका विधि र्यथा । पृक्ष भाषे को त्या वासु का भी म কাদিভি:। বাসোভি: পুরুষেদ্বিষ্ণ্ সুশৃতৈ রাত্মনঃ প্রিবৈঃ॥ইতি ভবৈব

कियायागनामाध्यायम् ॥ **७**म्गुइन विधि र्यथा। विकृषस्मा खद्र• । वज्रः मणाउ मा मम्राट भद्रिशाय তথা প্ন:। আক্ছোপানছৌ যান माक्टिय ह भाष्ट्रक ॥ # ॥ जन्डा-বিপতি র্যথা। ভবৈব। বার্হস্পত্য মৃত বাস: সৌম্যানি রজভানি ह। পক্ষিণশ্চ তথা সর্বে বাযব্যা: পরি-कीर्डिंगः॥ उर्भुिंग्रम्यामान ख॰ यथा। श्रादीजः। মৃণি বাসো গবাদীনা পুতিগুছে সাবিত্র্যপ্তস-रुम् जाल । अष्ठमरुम् अक्षाउ-রসহসুণ। ইতি শুদ্ধিত दुः॥ #॥ व्यभिष्ठ। श्री अभवान् वाष्ट्र। कार्भामः काञ्चल वालू को बङ वज्र भिष्ठा छ । ७८ भूर्वः भूजविदेव मरेख (म्वाय চোৎসূত্ৰেৎ॥ নিৰ্শাণ মলিন জীৰ্ণ ष्ट्रियः गाजाविविञ्च । गत्रकीयः वाथू पष्टे • मृहि विष्क • उर्था विज ।। উপ্তকেশ বিধৌতঞ্চ শ্লেশ্ম মূত্রাদি मूचिजः। भूमात्न (पवजान्तरण देपत्व रिमाबा ह कर्मानि॥ वड्डांटर मान-যোগেন যজ্ঞাদাবুপযোজনে। শাপ-যোগেন ইত্যত্ৰ স্বোপযোগেন ইতি कृष्टि भूखत्क भाठेः॥ উত্তরীযো-ख्रामत्त्रो निकारमा क्षामकम् ॥ পরিধানক পল্পৈতান্যসূত্রানি

अ्राकारय् । भागवज्ञः नीभावकः। **७रेथवाउभवाद्रगः** ॥ कृति**८ भू**खरक শাণবস্ত্র মিত্যত্র মণিবস্ত্রমি'ত পা-र्ट:। हञ्जाङकः उथा मृष्णाः शक्ष मृ जानामुद्रैरय। भजाका धुक मखासी म्। ज॰ वञ्च॰ भूरयाकरयर ।। जन। जा वंबनारनो ह छिन्ना मखरजानि ह। রক্ত॰ কৌবেশবন্তঞ্চ মহাদেবৈর প্র-मजाउ ॥ भीजः उरेशव कोरयवः বাসুদেবায চোৎসূজেৎ। ব্লক্তন্ত কম্ব-न· १९४९ निवाय भद्रभाजात्न । विः हिब अर्बरम्याख्या मित्रीख्या श्रमु निर्वप्रदर्भ कार्लामः मर्बर्खाङ्मः मन्त्रायः मर्खिङ्य अव जू ॥ रेनकान्त-ब्रक्कः परशाबु वाम्र्रास्वाय हिन्तकः। उथा निकास्त्रक्क भावाय विनि विषय ।। नीनीविक्क यहकः उर भर्वज विविद्धिं ७ । रिएव रिशर त्याभाषाण वर्द्धाय उद्धि क्रक्राः ॥ नीलीबकः भुभानाख त्या मन्त्राहि-क्षत वृक्षः । निद्यमा छम्। छर् भूका তদা ভবতি ভৈরব।। বিচিত্রে বাস-ति भून लंग भीनी वित्र क्षि छ । वक्क मन्। बार्गारिया नानारिया जू कनाठ-न। विभागः द्राञ्चला यवट (मः বানা বাসবো যথা। তথা ভ্ৰণ ৰগেষু ৰজ্ব মূত্তম মুচ্যতে ৷৷ ৰজেণ ত্রাগতে লব্দাণ বস্ত্রেণ ত্রাগতে ত্বণ ৷ বস্ত্রংৎ স্যাৎ সর্বতঃ সিশ্র কর্বর भुग्क उर्गा इंडि कानि वान्सपन ७৮ व्यवतायः ॥ 🗱 ॥ जाञ्जा २.रा বক্সাছাদিত শরীর॰ কর্ত্ব্যু॰। যথা। नर्वना मञ्जल द्रञ्चः वाद्रायः मङ् मूर्वगा। **अ**वजाहामिङ भाङ न वि-(भुज): भुम्माराए ॥ इंकि छोजव ৮৯ अप्रायः ॥ 🗱॥ नीलवञ्चः পরি-वाय विकृश्जनित्यत्वा यथा । वा-রাহ উবাচ। ভূবিতো নীলবক্তে**ণ** (या हि मा मूलमलि । वर्षानाक শত পঞ্চ কৃমি ভূঁরা স তিগতি॥ তস্য বক্ষ্যানি স্শোণি অপরাধ विष्णाधनः। भागाकछः विभावा-কি যেন মুচ্যেত কিল্বিষাৎ ॥ বুত॰ ठानुग्या क्दा विधिष्ष्ट्रेन कर्मा । মুচ্যতে কিল্বিবাৎ ভূমে এব মেত্ত-अ**नः** भयः ॥ इंडि वाद्रार्थ नीलव-ज्ञभतीथानभागिक खनामाथायः ॥ # ॥ विकृ ग् ज्ञान त्र क वज्र भत्री थान-निरम्(धा यथा। वात्राङ् उवाह। त्रक বস্ত্রেণ সংযুক্তাযো হিমা মুপসর্গতি । ভস্যাপি শ্ণু সুশোুণি কর্ম সংসার (भाक्कन ।। द्रबद्यनाम् नादीयु द्रावा यख८ भुवर्ख्य । (जनारमी व्रजमा-र्शृष्टि। कर्मारायगकानजः॥ वर्षानि

एण भरेंक्ष्य यमाञ उब निष्ठयः। রজো ভূবা মহাভাগে রক্তবন্ত্রপ द्रायणः ॥ शुर्यक्रवान তস্য কাষ্বিশোধন। যেন শুধ্যন্তি रिव ज्रम शुक्राः नाजविद्धिंजाः ॥ একাহার ততঃ কৃত্বা দিনানি দশ अक्ष ह। वायु इस्का दिनजीति दिन-মেক জলাশন: ৷৷ এব সম্চ্যতে ভূমে মন বিপ্রিফররক:। প্রাযশ্চি-ভ ততঃ কৃত্বা মমাসৌ রোচতে সহ।। এছত্তে কথিত ভূনে রক্ত-বস্ত্রবিভূবিভ । প্রায়শ্চিত্ত মহা-ভাগে সর্বসংসারনোক্ষণ ৷৷ ইতি তবৈর রক্তবন্ত্রপরীধানপাযশিচক্ত• া। #।। পরিধত কৃষ্ণবন্ত্রস্য বিষ্ণৃপা ननित्यत्य। यथा। यः भूनः कृष्वतः न मम क्यांभद्रादनः। (राव क्यांनि জ্বীত ভসংবৈ পতন শৃণ্।। যুণা रिव शक्षवर्षाणि काश्रुडक्षण जाग्रु। भणक जीनि दर्यानि कह जीनि ह अ-.ঞ্চ।। নস গছতি সংসার মন কর্ম। পরায্ণঃ। পারাবতক জায়েত নব ব্র্যাণি পঞ্চ।। জাতো মনাপরাথে ন সিতঃ পারাবতো ভূবি। তিগ্রত मम भार्षिषु रेखिवारः भु ७ हिनः॥ পূাযশ্চিত্ত পুরক্ষ্যানি তস্য সংসার মোক্ষণ । যেনাসৌ লভতে সিদ্ধি

কৃষ্ণবন্ত্ৰাপরাপত:॥ সপ্তাহ্ যাবক ভুক্। বিরাত্রণ শক্তুপিণ্ডিকাণ। বীণি পিণ্ডান্ ত্রিরাত্রন্ত এবং মুচ্চেত কি-न्त्रियाद्याः य अरङन विश्वादनन (पवि-कर्याणि कात्रायः । मुक्ति जीगवाज। ভূহা মম মার্গানুসারক:।।ন স : इতি म नात भन लाकाय गहु छ । इंडि ত্ত্ৰৈৰ কৃষণস্ত্ৰপৱীধানপুাৰশিক্ত ॥ 🗱 ॥ भ बिवृजास्यो खब्जन र विक्-কর্মারণনিষেধো যথা । বারাহ উবাচ। বাসসা ন চ ধৌতেন যো নে কর্মাণি কারযেৎ। শুচি র্ভাগবড়ো ज्या मन माणानुमातकः ॥ जम्र मायः भुवक्तामि अभवाधः वनुकः রে। পত্তি যেন সংসার**ং ব**াসসো-ছিষ্টকারিণ:।। দেবি ভূত্বা গজোন্মন্ত ভিপ্তেরক নরে। ভবি। উপ্টেশ্চক ভবেজ্জ্ম হন্ম চৈক খর স্তথা।।গো भागु (तक बचारित कचा हिक र हर छ। থা। সারক শৈচকজন্ম। বৈ মৃগো ভ ব্রতি চৈকত: ৷৷ সপ্ত হুলান্তর পশ্চা ন্ততো ভবতি মানুষ:। মন্তক্ত . खन द्व क म्या कर्या श्रदाय गः ॥ निद्रा-পরাথে। দক্ষণ্ড অহ্দারবিবজ্জি णः। धर्त्रगुरवाह । भुः अवटः श्रवः (वृत यनुवा **স**त्रमाङ्कः। সংসার• वामलाहिष्टे॰ (यन गहिन्न भानवाः॥

পুাষ কি জঞ্চ মে বুহি সর্বকর্ম সুখা वरु । कि निवार (यन मूक्ष छ उद कर्य भवायनः ॥ वाबाह উवाह । भृगू छ-ख़िन भारति कथामान **मयान**या। পুষেশ্চিত্ত পুৰক্ষ্যামি মম ভক্তিপ द्रायणः ॥ यायरकन दिन जीति शि ণ্যাকেন পুন জ্বয়। কণভক্ষো দিন ত্রীণি পায়সেন দিনত্রয়ণ।। এবং কৃত্বা মহাভাগে বাসসোট্ ইকারিণ:। অ-পরাপ ন বিদ্যেত সংসারঞ্চ ন গছতি ॥ ইতি ভবৈৰ অধৌভবাস: পরিধা न भागिक खनामा था। १।। १।। व्य পরিহিতপরকীয়বস্ত্রস্য বিষ্ণুপুজাদি করণে প্রাথশ্চিত্ত । বারাস্থ উবাচ। **খ: পার**ক্যেণ বস্ত্রেণ নাবধ্**তেন মাধ**্ वि। পু। विच्छी भूमा मूर्था मम कर्म-भद्रायनः॥ करत्राजि समे कर्मानि न्भू-ষ্ট্বাতে মাণ্ডমঃ স্থিতঃ। মৃগো বৈ জা-যভেদেবি বর্ষাণি ত্রীণি সপ্ত চ।। হীন-পাদেন জাষেত চৈক্জন্ম বসৃন্ধরে। मूर्थक (काधनरेक्टर मख्करेक व যতে ॥ তস্য বক্ষ্যামি সুশ্রোণি পুা-যশ্চিত্ত মহৌজসং। যেন গছতি সং সারণ নম ভক্তো ব্যবস্থিতঃ। অষ্ট ভক্ত ভতঃ কৃত্বা মম কর্মপরায়ণঃ। भावरेमाद ज् भाममा कुङ्गभक्षमा षाम्भी ॥ जिष्ठिञ्जनाभाग ७ व

कारता पारता किर्जिन्यः। अनन्ऽ-মানসো ভ্তা মন চিন্তাগরাংণ: ॥ পুভাতাযান্ত শর্ব্যাণ উদিতে চ দিবাকরে। পঞ্গব্য ততঃ পীত্রা শীঘু• মৃচ্যেত কি ল্বাৎ ॥ য এতেন विधांतन शुाविष्ठिखः ममाहाद्र । সর্বপাপবিনিমুক্তো ম্ম লোকাষ্ গছতি॥ ইতি বারাহে পরকীন্বস্ত্র-পরীধানপুাযশ্চিত্তনামাধ্যায়:॥#॥ কাঞ্চননির্মিতবক্তপুমাণ যথা। যা-वट काक्षनवञ्चागाः वाष्ट्रिका लाभ-কন্যকা:। কাশ্চিভতাবযু: শীঘু বত্ত **इन्मावली मुमा ॥ इंडि वुक्तरिवर्र्ड এ**ক্ফ জন্মথণ্ডে২৮ অধ্যায:॥ #॥ व्यामनः वमनः भागा जावाभाउऽः কমগুলু:। আত্মন: শুচি রেভানি ন পরেষা কদাচন॥ ৠ। ঈষদ্ধৌতাদি-বস্ত্রস্য পশ্চিমাগাদিপুসারিভবস্ত্র-मा ह व्यापीउद्गः नथा । देवाकोउः ব্ৰিয়া থৌত বন্ধৌত রজকস্য তু। व्यायोजः उदिकानीयाम् ना मिक्न পশ্চিমে।। ইতি কর্মলোচন ।। #11 मङ्ख्याः । भागगुमूपगगुमा (धो-उच्च नुमात्रायः । निष्मात्रः मिक्किगागुः भूनः भुक्कालनार म्हि॥ অত্রগ্রে দশা বৃক্ষবৎ।।#।। পুচেডাঃ । सग (वी उन कं ईव्या किया धर्म्या

বিপশ্চিতা। ন চ রাজকধৌতেন नारशोरजन ज्यार कृष्टि ॥ भूध মিত্র কলত্রেণ স্বজাতি বান্ধবেন চ। দাসবৰ্গেণ যদ্ধৌত তৎ পবিত্ৰ মি-তি ছিভি:।। #।। স্নানোত্তর• উ-कीय वज्रमा शायापुर यथा। उकीय थाव्रा निवाबनाभन्यनाय। (उन তদনন্তর নধার্য্য। তথা মহাভার-ত । আপ্লু ভ: সাধিবাসেন জলেন চ সুগিরিন। রাজহংসনিভ পুলির উकीयः निषिवानिंउः॥ कनक्ष्य নিমিত্ত॰ বৈ বেপ্তবানাস মূর্জনি। निथिनार्निष्ठः यगाप्यकः॥ #॥ নিবিদ্ধবন্তাণি যথা। ভারতে। ন স্যুতেন ন দৰ্থেন পারক্যেণ বিশেষ-छः। म्विकारकीर्ग जीर्गन कर्म स यंग्राधिककाः ॥ नात्रिजः ह। न त्रक मून्त वारमा न नीनक भुभमः (उ। भनाक्क मणाशीनः वर्द्धायमञ्जूष বুৰ:।। উন্থণ• উৎকট ব্লক্তবিশেষ•। व्याठात्रव्रः उत्रना । मनाशीतन বস্ত্রেণ স্বর্য্যাৎ কর্ম্মাণ্যভাবত: । विक्ष्यां जात । वज्रः नान्ध्रुजः शार्याः न त्रकः भिन् छथा। कीर्न ম্বাপদশক্ষিব শেত পার্য্য পুরত্নতঃ ll উপানহ॰ नान्रष्ठ• व्यान्वक्षशः व्राय् । न कीर्गमन्त्रवामा ভावह

বিভবে সতি।। 🗱। গোপিযাক্তবল্লঃ । সু ব্বৈব বাসসী ধৌতে অক্লিন্ধে প विधाय छ। शुक्रात्वताक मृत्रिक रखो भुकान(यड्ड: ॥ ञ्रजाद (थो उवज्रागाः नाग क्लोमाविकानि চ। স্বতপো যোগপউয়া দ্বিনা যেন বা ভবেৎ।। অধৌতেন চ বস্ত্রেণ निज्य रेनिमिखिकी॰ किया॰। अर्दन् ফল• ন চাপ্নোতি দত্ত• ভবতি নিয়ু-ল॰ ৷৷ স্ব ভ্ৰপে৷ নেপাল কম্বল: ৷৷ ঞ্চা৷ **७**१११८ भूर्ब॰ ग्रानवज्जनिङ्गीछन-निरुषा यथा। निम्नी उगिक यः भूर्व॰ সুনেবন্ত্রন্ত ভর্পণাৎ। নিরাশা শুস্ত गहुन्ति দেবাঃ পিতৃগণৈ: সহ।। #॥ यावानिः। त्रानः कृदामु वात्रास्त वि-ग्व अक्ष यि । भागायाभवयः कृषा भूनः मातन भूषाठि ॥ #॥ नामु (मकक वजन शतिमध्यार कथ्र **क**न। हात्री उ:। जापूर्क मधवाडाः হত মপি শুদ্ধ মিতি।।#।। মদনপা-त्रिकारङ भाद्रस्तद्र:। **এ**क्स्क्ष्वारम ভবতি ভস্যোত্তরার্ছেন পুছাদযতী-তি। ইত্যাহ্নিকভন্ত্ব। #॥ সংক্রা; স্ত্যাদৌ বন্ত্ৰনিস্লীডন নিষেধো যথা। বট্ত্রি শন্মত্রনিগমৌ। সংক্রান্ত্যাণ शक्षम्माक बार्म्याः मुक्तामत । वज्रः न भीउरयञ्जब न ह कारत्रग

যোজ্যে । ইতি তিথ্যাদিত ভ্ৰণ। বস্ত্ৰস্তিমণ ল্লী ছপ্ৰণ। ইতি ত্ৰি-কাণ্ডশেষ:।। বস্ত্ৰগৃহঞ্চ।।

বস্ত্ৰগৃহ প্লী বস্ত্ৰনিৰ্মিতশালা।
তাঁবৃ ইতি ভাষা। তৎপৰ্য্যায়:।
পটবাপ: ২ পটন্য ৩ দৃষ্য ৪
স্থল ৫।ইতি ত্ৰিকাণ্ডশেষ:।

বস্ত্রগুন্থি: পু॰ পরিধানবস্ত্রস্যগুন্থ। নং। তৎপর্য্যায়:। উচ্চয়:২ নীবী ৩ । ইতি ত্রিকাগুশেষ:।।

বস্ত্রপঞ্জল: পু• কোলকন্দ:।ইতি রাজনির্ঘণ্ট:।।

ৰস্ত্ৰপুত্ৰকা স্ত্ৰী বস্ত্ৰনিৰ্মাতপুত্ৰ-লিকা।ইতি শব্দনালা॥

खिज्यगः भू भाकक अव्कः। हेि दाक्ष विर्यण्टः॥

াত্র ভূষণা জী **নজি** ঠা। **ইতি রাজ**-নির্ঘণ্টঃ ।।

ব্রেযোনি: স্ত্রী বসনোৎপত্তিকারণণ। যথা। ত্বক্ফল ক্রমি রোমাণি বস্ত্রযোনি দশ ত্রিষু। ইত্যমরঃ॥
ব্রিপ্তন: পুণ অসুস্তঃ। ইতি রাজনিঘণ্টঃ॥

^{বস্তু} ক্লী বেতৰ•॥ মূল্য•॥ বসন• । দুব্য•। ইতি বিশ্বঃ॥ ধন•॥ মৃতিঃ । ইতি হেমচন্দুঃ॥ ত্বক্। ইত্য নরটীকাযা• রামাশুমঃ॥ वमः भू• मृनाः। इकामतः॥ वम्रन• क्षी को नृष्णः। इकि नमः तज्ञावनी॥

वज्ञमा ज्वी ज्ञायः। ইত্যमतः।। वाद्योकमात्रा ज्वी हेन्तुनुत्री।। हेन्तु-नि।। व्यवत्रभूत्री ॥ व्यवत्रनि।। ইতি ছেমচन्দुः॥

বছ ই ক বিষি। ইভি কৰিকল্প-জন: ॥ ই ক ব•হযতি। বিষি দীপ্তৌ। ইভিদুর্গাদাস: ॥

वेक छे भाशागा इंडि কবিকল্পজনঃ।। প্রাপণ মিহ্ ঞ্যন্ত-म् क्र क्र । अ उच्चार । क वर्ड বহতে ভার• গাুম• জন: পাুপ্য-**डी** डार्थः। 'ঔ जवाकी ८। जर्था छ-(द्र व्यक्मांका १व॰। यथा। जन्दः न-तिष्ठि भीमनि क्षूक्शी**छि निय-**ধে। মনদে মক্দ্বহাত গৰ্ভ্জতি বা-রিবাহ:। ইতি মহানাটকে। ববা-হ রক্ত পুক্ষা স্ততো জাতা: সহ-সুশ:। ইত্যাদি সিদ্ধার্থ নোধ্যা मिथ वहथाजु मानाउ वर्णम **भद्र**भरति । वञ्च उञ्च वञ्चाम् । म या । द्वारमरवा छानि त्रस्तिमार भिक्न-ত: ৷ ববাহ ইতি চণ্ডীপুযোগসংসু বাহ ড ষত্নে ইত্যমাৎ গণকৃতা-निज्ञादा भद्रीयभनिष्दः। य-

নেকার্থদ্বাৎ সুস্থাব ইত্যর্থ:। অথ বা বব ইত্যাহ ইত্যেব ব্যাখ্যান । ইতি দুর্গাদাস:॥

বহং পু॰ বৃষক্ষপুদেশ:। ইত্যনর:।। যোটক:।। বাযু:। ইতি
নেদিনী।। পন্থা:। ইতি ত্রি হাপ্তশেষ:। নদ:। ইতি হেমচন্দু:।।

বছত: পু॰ বৃষ:॥ পাস্থ:। ইত্যু:

• গাদিকোৰ: ।।

বছজি: পু॰ বাযু:। ইত্যুণাদি-কোষ:। গৌ:॥ সচিব:। ইতি মেদিনী॥

বহতী ন্ত্রী নদী। ইতি কেচিৎ।। বহতঃ পু• পথিকঃ।। বৃষভঃ। ইতি মেদিনী॥

वहन की (हाउ:। हडी हेडि डावा । यथा। उत्रापा (डलाक वादित्राथा तो खितिक: श्रवः। (हाउ खदाकू वंहन वहिंदा वार्वि: भूमान्।। हेडि विका खानवः।।

বহন্ত: পু॰ বাযু:। ইতি সিদ্ধান্ত কৌমুদ্যামুণাদিবৃত্তি:।। বালে ত্রি। ইত্যুণাদিকোষ:।।

বহল: প্ পোত:। ইতি হারা-বলী॥ দ্ঢে ত্রি॥ ইতি হেনচন্দু:॥ বহলগন্ধ ক্লী শন্বচন্দ্ৰ-। ইতি রাজনির্ঘট:॥ वहणहळू: श्रुः (सवम्श्री। इंडि तञ्जाणा॥ शृष्ठकाष्ठ(त्र। नन्ती-वृष्का (सवमृश्री खणा (सविभी-लिका। हक्कृष्ट्रं हलः हळ्लुण्ड (स्टु-मृश्री गृहक्षमाः॥ इंडिशि शाठेः॥ वहलज्ञः श्रुः (चंडिलापुः। इंडि त्राक्षिवर्षः॥

বহলা ন্ত্রী শতপুয়া। ইতি রাজ-নির্ঘণ্টঃ।। স্থূলৈলা। ইতি ভাব-পুকাশঃ।।

বহা জ্রী নদী। ইতি হেমচন্দু:॥ বহি: ব্য বাহা । ইত্যনর:॥ বহি:স্টীচর: পু স্পার:। ইতি ত্রিকাও:শ্য:॥

বহিত: ত্রি অবহিত:। ইতি দ্বিক পকোষ:।।

বহিত্র লী পোতঃ। তৎপর্য্যায়ঃ।
বার্বটঃ ২। ইতি ত্রিকাগুশেষঃ ॥
বহিত্রক লী জল্যান । যথা।
সাংগত্রিকঃ পোত্রণিক্ যানপা
ত্র বহিত্রক । বোহিত্য বহন
পোতঃ পোত্রাহো নিযামকঃ।
ইতি হেন্চন্দুঃ ॥

বহিদ্বার ক্লী ভোরণ । ইত্যার:॥ বহিদ্বার পুকোষ্ঠ কলী গৃহদ্য দ্বা রাদ্বহি: পুকোষ্ঠ । তৎ প্র্যায়:। পুরাণ: ২ পুরণা ৩ লিদ্বা ৪। ইত্যমর:॥

বহিত্ত: ত্রি বহির্গত:। বহি: শব্দ পূর্বক পাপ্তর্থে ত্যাতো: কর্ত্ররি জ পুত্যযেন নিম্নন্ধ:। যথা। পক্ষ বিষ্থিতা বহিত্তি সাধ্যবিষ্থিতা ঘটিত ধর্মাবছিন্ন পুতিবধ্যতাশা-লি সংশ্য: পক্ষ্তা। ইতি জগ দীশ:।।

বহিমুখ: ত্রি বিমুখ: । যথা ।
নরসিংহাচার্য্যপ্ত ইশানসংহিভাষা । শৈবো বা বৈষ্ণবে বাপি
যো বা স্যাদন্যপূক্ষক: । সরং প্জাফল হন্তি শিবরাত্রিবহিমুখ:
।। ইতি ভিথ্যাদিতত্ত্ব ।।

विष्क्ष्यः भूः कर्किः। इंडि ह्य-

वर्ड कः भू विजी उक्कः। इंडि त्राक्ष निर्घण्डः ॥

विद्यः भू विवकः॥ जलाउकः॥
निष्कः। ইতি রাজনির্ঘটः॥ রেফः।
ইতি তন্ত্র•॥ অগ্নি:। ইত্যমরঃ॥ ॥।
তম্য নামানি যথা। তে জাতবেদ
সংসর্বে কল্মায়ং সমন স্তথা। দ
হন: শোষণশৈচর তর্পণশ্চ মহারলাঃ॥ পিটরং পত্যাং মর্ণ স্ত্যাধো
ভূজি এর চ। অন্যত্র তুনামান্তরাগুলোন যথা। জ্যুকোদ্বীপক-

ৈশ্ব বিভূম ভূম শোভনাঃ। অব-नथ्राञ्चनीरवो मिक्कगान खरेबद ह ॥ व्यवाशार्या। गार्शना इत्नात मण वर्षः॥ व्यत्नि त्रनार्थाकानि यथा। ভाजका तक्ष हरेन्द्रव द्वरकः स्ट ह ख्या। शात्रका वन्नकरेण्डव দাবকাখ্যক সপ্তধা।। ব্যাপক: পা-বকলৈব শ্লেম্যকো দশমঃ মৃতঃ ॥ # ॥ भन्नीत्रञ्दाः ज्ञानानि यथा। बङ्गाया (कायमृत्य) यू ज॰ की ना मण (नश्निः। (नायमृत्य)। यथा। বাত পিত্ত কফা দোষা দ্য্যা: স্যু: मध्याउदः । ইতি मात्रपाठिलकः ।। 🗱 ।। उब निविकार्स्मानि यथा। নাশুজো ংগ্নি পরিচরেৎ ন দেবান্ कीर्खरगृषीन्। नहान्निः वङ्गरश्की-मान् (नाभरक्याहदः कृष्टि ॥ न চৈন পাদভ: **স্**ৰ্য্যাৎমুখেন ন ধমে-দ্বুধ:। অণ্নৌন নি:ক্ষিপেদগ্নিণ নাডিঃ भुभमरयख्या ॥ न वृद्धिः मूथनिधाः रिम क्वं लायका म्हि वूं थः। सम्ताः निव হত্তেন ম্পৃশেয়াপ্সু চিরণ বসেৎ।। नामिक्तिरात्ताभधान न मूर्लि ह পাণিনা। মথেনাগ্নি সমিন্নীত মুখা-দগ্নিরজায়ত।। ইতি কৌর্মে উপরি-ভাগে ১৫ অধ্যাম: ॥ 🛊 ॥ অসে ্য 🧠 পত্তি যথা। শৌনক উবাচ। সর্বণ **শুক্ত মহাভাগ পরিপূর্ণ মনোমম** 🏻 । অধুনা শোুত মিছামি বছে বং-পত্তি মীপ্লিডা ॥ সৃত উবাচ। একদা সৃষ্টিকালে চ বুক্ষানভমহেশ-ताः । **'य**ञ्चीभ' यगुः मर्ख मुष्टुः विकुः जगरभिजः॥ भद्रस्भद्रकः मः ভাষা কৃত্ব। সি হাসনেষু চ। উষু: সর্বে সভামধ্যে সূরম্যে পুরতো ह्राः ॥ विक्गात्वाक्त्वा खब का-भिन्धः कमवाकवाः । তত্ত नृष्ठ्यः ि गायि विक्गा**थाण मृ**त्रव ॥ তাসাঞ্চ কঠিনা শ্ৰোণি কঠিন স্ত-नम्खनः। मिम् छः मूथ्भम्मकः पृष्ट्री वुका नकामुकः ॥ मत्ना निवाद्रगः কৰু • ন শশাক পিতামহঃ। বীৰ্য্য• পপাত চहार वड्डिया वाममा विजुः ॥ ভদ্বীৰ্য্যু॰ বজ্বসন্থিত পুতপ্ত কা-यजाभिजः। क्षीत्रारि (भुत्रयामान मङ्गीरा विद्राप्त विज्ञा। बनामुन्याय পুৰুষ: পুজ্লন্ বুন্ধতে জসা। উবাস বুন্ধণ: ক্রোডে লজ্জিতস্য চ সংসদি ॥ এত बिमस्रात्र कार्डा सनामृत्याय ज-ष्वः। भूगम् वक्षा (प्वान् वानः तिज्• ममूरुजः ॥ वात्वा रथात्र वुक्ताः गः वाञ्च्याक खराक्षरन्। किकि-(सावाठ कगञा॰ विदाञा व्यञ्ज्या-क्षि। वालकम् क्रि थ्वा हकात्राः কৰ্ষণ ক্ষা। বৰুণক সভানধ্যে ত॰ विक्लि**न नुकानिः ॥ न**नाउ प्र-তো দেবে। वक्रा मुईल ख्या। मूई।• मः शाम मृजव (काममृष्ठेत वित्य-রছে।।। চেতন কার্যামাসামূত-पृष्ठेऽ। **ठ मक्**द्रः। म॰ भाभ। (ठउन॰ তত্র ভুমুবাচ জলেশব:॥ বরুণউবাচ । বালে। হলে সমুভূতো মম পুলো য-भीक्षितः। अरु गृशेषः वानानि वुका भा• जाउरवर कथः ॥ वुक्ताः वाह । वाल हः भारताभासः भिष् विस्था मरहश्वत्र । कथः मान्यामि ভীতঞ্চ ক্দন্ত শর্ণাগত ৷৷ শর্ণা-গত দীনার্ভ' যো ন রক্ষেদপণ্ডিত: I পচ্যতে নির্যে ভাবৎ যাবচ্নু দি-বাকরৌ ॥ উভযো র্বচন শুত্রা পুহ-म। भ्रभूरनः। উवाह मर्बङ्खः সর্বেশ ক যথোচিত।। ভগবানুবাচ । দৃষ্টা সুকামিনী শ্রোণিং বীর্য্যং ধাতুঃ পপাত তথ। वद्धिया (পুর্যামাস ক্ষীরোদে নির্মাল জলে॥ততো বভূ-ব বালশ্চ ধর্মতো বিধিপু এক: ।কে-ব্ৰজ্ঞ সুত: শাস্ত্ৰে বৰুণস্যাপি গৌ-**गजः**।। महारमव উवाह। (या विम्रा-যোনিসমৃদ্ধে। বেদেষু চ নিৰ্কাপিত:। শিষ্যে পুত্রে চ সমতা চেতি বেশ-विरमा विमूः ॥ मखः ममाजू वर्गा।

বিদ্যাঞ্চ বালকায় চ।পুণ্ৰো বিধাভূ र्बाक्रिक निवाक वक्षमा है।। विकु र्मराज् वालाय माहिकाः मक्ति मुन्न-गा । नर्वस्था ङ्डामण निर्वाण वक्रान ह ॥ विकृष्ट माहिकाः न-ক্তি॰ দদৌ তথৈ শিবাজ্ঞবা। মস্ত্ৰ॰ विम्याक वक्ता त्रञ्जाला मताह-রাণ।। ক্রোডে কৃত্বা চ তণ বালণ চুচুম্ব भाषया मुद्रः। इंडि तुक्तरेवार्ड शिक्षे-কন্মথণ্ডে বহ্ন্যুৎপত্তিৰ্নান ১০০ অ-धायः ॥ 🛊 ॥ छम्। इनिवादितीय श्रामि यथा। जाग् पुरेजञ्चव यवा वि-मुप्रपक्षा ह मृखिका । उयानुविश्वः ষদ্বেশ্ম নাগ্নিনা দহুতে নৃপ ॥ ইভি भाट्रा बाक्ष्या बाह्यक्रानाम ১৯০ व्यक्षायः ॥ 🗭॥ व्यक्तिक्छाः তৎশান্তিক যথা। অনগ্নি দী প্যতে ষত্ৰ রাষ্ট্রে যস্য নিরিন্ধনঃ। ন দীপ্যতে किञ्चनवान् न ब्राड्डः भीउप्रक नृरेनः ॥ भुज्ञः जनभु मामः वा उथार्श्वकाः পি কিঞ্চন। প্রাসাদ ভোরণদ্বার নৃ পবেশ্ম সূরালয় ।। এতানি যতা দ হান্তে তত্র রাজভয়ণ ভবেৎ। বিদ্যু-তাবা পুণ হান্তে ভ্ৰাপি নৃপতে ভ্ৰ ॥ ধূন কানগ্নিজে। যত্র তক্র বিদ্যান্ম-रुख्यः। विनाविः विद्यु विकाशः पृः শ্যান্ত যুত্ত প্ৰচিৎ ॥ ত্ৰিরাভোপো

বিত শাত্র পুরোধা: স্সমাহিত: 1 निमिक्तः कीत्रवृक्तानाः नर्वे लिख य्टिन है।। मह्यार मृत्र्य उथा विक् **ভा। गाटिक वजानि उथा** जुन्छ। এবং কৃতে পাপ মগৈতি নাশং যদ শ্লিবৈক্ভ্যভ্ৰব দিক্ষেন্দু ॥ ইতি ত-বৈৰাজ্ডশান্তিরশ্বিক্ত্য নাম २०৫ व्यव्यायः ॥ 🗱 ॥ मुर्थ्याग्रस्या যথা। গার্হপত্যো দক্ষিণাগ্নি স্তথৈ-वाह्वनीयकः। এতে १ १ वज्रास्या मू-খ্যা:শেৰাশ্চোপসদ স্ত্ৰয়ঃ॥ইতি ব क्रि भुद्रात् भगरक्षमाभाष्यायः॥। वङ्गिविभूसभागमननिष्यस्य यथा । দ্বৌ বিপৌ বহি বিপৌ চ দলভা র্গুকৃশিব্যযো:। হলাগ্রেচ ন গন্তব্যু ব্ৰহ্মহত্যা পদে পদে।। ইতি কর্ম-लाहनः ॥ # ॥ चिश्विह । नावि-ব্ৰাহ্মণযো রম্ভরা ব্যঙ্গেযাৎ নাগ্ৰেয়া ন नुष्मानया नं खक्षियाया प्रमुख्या ক্ত্ ব্যপেষাৎ । ইভি তিথ্যাদিতত্ত্ব-ध्उवहनः ॥ 🗱 ॥ व्यथ वङ्गिख्युनः । মানুষস্য বসাং গৃহ্য জলৌকাং তক্ত পেৰ্যেৎ। হস্তৌ তু লেপ্যেন্তেন অ-प्रिड्युन मूजमः ॥ नान्यनीव्रम वाः माय श्रद्भाष्ट्र निषाय छ॰ । श्रामा-গারে ক্ষিপেত্তেন অগ্নিস্তস্ত্রন মৃত্তম্ ॥ वायनी উদর॰ পূঞ্ মণ্ডুকবস্বা সহ। শুডিকা কার্যেত্রেন ডারো প্রাণ প্রিক্ষেপের্যানী । এর নেত্র-পুযোগেণ অগ্নিউস্তন মূলন । মু ভীতক বচাচুক্ত মরীচ নাগর তথা। চরিত্বা চ ইন সদ্যো জি স্থাযা জ্লানো লিহেৎ ॥ গোরো চনা ভূল্রাজ চুর্ণ কৃত্বা ঘৃত সম । দিব্যস্তস্ত্রশ্চ পীত্বা স্যাম্মন্দ্রেণা নেন বৈ তথা। ওঁ সগ্রস্তাসন ক্ল । ইতি গাকডে ২৮৬ অধ্যায়: ॥ ইকরী জী ধাত্রীশ্রী। ধাই-

ৰহ্লিকরী জী ধাত্রীখরী।ধাই-ফুল ইতি ভাষা। ইতি শব্দ চন্দ্রি।।

বহিজান্ত ক্লী দাহাওক:। ইভি রাজনির্ঘণী:।।

विक्षिणकः श्रु यक्षप्रः। ইতি

भरहित्वा।

বিহিন্ত: পু॰ বংশ:। ইতি শব-চলিক।।।

বহিশর্ভা জী শ্মীবৃদ্ধ:। ইতি শ্বচন্দুগা।

বহিকো গ্রী ক**লকারীবৃক্ষ:।** ইতিভাবপুরা**শ:**।।

বিছিত্বলা ত্রী ধাতকীবৃক্ষ:।ইতি রাজনির্ঘট:॥

बङ्किरमनी जी अग्निरमनीक्रूणः। इंडिब्राकिम्हिंदेः॥ विश्वितिश्वः भुः व्यमुगुः। हैनि
भव्यव्यावनी ॥
विश्वितिश्वा जी व्यक्तभाषा। हैनि
वाद्याविश्वाः॥
विश्वित्याः

বিহিনানী পু• চিত্রক: ॥ ভল্লা-ভক:। ইতি রত্ননালা॥

विज्ञिनी ज्वी 'क्रोगा'नी। ইঙি রত্নশালা॥

বহি পুয়ী জী ধাতকী। ইভি রাজনির্ঘট:।।

বিহ্নাভোগ্য° ক্লী ঘৃত । ইতি শব-চন্দ্রিকা।।

বিহ্নিমন্থ: পু॰ গণিকারিকাবৃক্ষ:। ইতি জটাধর:॥ অগ্নিমন্থ:। ইতি রাজনির্ঘণ্ট:॥

वङ्गियात्रकः क्ली कलः। ইভি **मद**-চন্দ্ৰা।।

वङ्गितः भू वायुः। ইতি भयः চলিদুকা।।

वङ्कित्रजाः भू भिवः। इजिरुवाः यूथः॥

वहिर्ताहक क्री का न्तर । इंडि ब्राबनियंग्रः॥

विद्यिष्: खी साहा। ইতি **भर** ब्रङ्गावनी॥

वङ्गियर्गः क्ली ब्रस्काट्शनः। ইडि अक्टिन्दिका॥ विष्ट्राञ्च छः भू॰ मर्ब्बत्रमः। ইতি । विष्ट्रमथः भू॰ कीत्रकः। ইতি त्राञ्च-ত্রিকাওশেষ:॥

विद्ववीकः ली ब्रःवीकः। इंडि उत्तर ॥ नियुक । ইতি রাজনির্ঘণ্ট: ॥ ৰৰ্ণ। ইতি হেন্চন্দু:।। তদ্যোৎ-পত্তি यंथा। এ हमा मर्ब (म्वाक সম্বः सर्ग मः সদि। তত্ত্ कृष्वा চ নৃত্ঞ গায়ভ্যপ্রর সাংগণা: ॥ বি (नाक) त्रसाः मूर्णानीः मकामा বহি রেব চ। পপাত বীর্য্য চ-हार वद्धा वाममा उथा।। উत्त-(क्र) मर्गमुखण्ड वञ्चः क्रिक्षा ज्वार-भुजः। कर्णन वक्तवानाम म मूरम्क র্বভূব হ ।। হিরণ্যরেওসং বহিং পুৰদম্ভি মনীবিণ:। ইতি তে কথি-ত সর্ব কি ভ্যঃশ্রেত্মিছসি॥ इंडि वुकारिवार्ड शिक्षक्षस्था হিরণ্যেৎপত্তির্নাম ১৩০ অখ্যায়ঃ

विङ्गिथः क्षी ष्रमुखः।इछामदः॥ वस्याः। इति ताकनिर्धणैः॥

বহিন্দিথর: পু॰ লেচেমন্তক: 1 इंडि नद्रदाव्ली॥

বিহুশিথা জ্রী ফলিনী। ইতি ধর-भिः ॥ क**ि मात्री ॥ शाउकी । इं**डि ब्राजनिद्धः॥

বিস্বাজ্ঞ হঃ পুণ চিত্রক:। ইত্য नवः ॥

নির্ঘণ্ট: ।। বাযু: । ইতি বঞ্জিনত্র-मदम्भंगार ॥

वशः क्षी वाहनः। इंडि (हमहन्तुः ॥ नकिष्। इजुर्गादित्कावः॥ মুনিপত্নী। ইত্যুণাদি-জী (कारा: ॥

বন্ধ রোবস হত্যো:। ইভি কবি-কল্পদমঃ। বক্ষতি। ইতি দুর্গাদাসঃ वकः क्षी अक्वित्ययः। मञ्क्रः याभिति कथान्या जागः। वृक् इंडि ভाষা। उৎপय्यायः। (काउ र जुङ्गास्त्रः ७ উत्रः ८ वट्मः ৫। ইত্যমর:।। অঙ্ক: ৬ উৎসঙ্গ: १। ইতি জটাধর: 🛭 বক্ষণ• ৮ গণপীঠ-कः ৯। ইতি भद्रु न्यु का॥ अभिह। व्यथ वक्षक वर्म मामुद्री वक्षः ऋल खग । ইতি **भज्**कत्रावनी ॥ छम्। मुजाम् जनक्षाः यथा। जाम-वान्मनवकाः महार शीरेन ईकाः ভি क्छिं उ:। विकाशि विवरे ৰিয়: শঙ্কেণ নিধন ভথা।। ইতি गाक्ष ५५ वशानः॥

वक्रग· क्ली वक्षः। इंडि **मद**-हिन्द्रिका ॥

राक्षाङ हो खनः। ইङि**भद**-ब्रज्ञावनी ॥

बक्ताक्षः भु॰ खनः। ইভি बिकाः अन्यः॥

বা ক স্থাপ্তিগতিসেবাসু। ইতি কবিকল্লফন: ।। ক বাপ্যতি। ইতি দুর্গাদাস: ।।

वा न गमनहिः गर्याः। ই छि कवि-कन्नक्रमः ॥ अध्यापित्रभ्यम् एउ क्रि। गमन भिष्ट् वायुक्क् कं भिष्ठ । न वाक्षि वायुः। हिः मनः मूहन भिष्ठि हे छुक् बः। ই छि मुर्गारामः ॥

वा वा विकन्नः॥ उभमा॥ विकर्तः
॥ भारभ्राः॥ जमहरः॥ इंडि
स्मिनी॥ अवार्थः॥ इंडि विषः॥
वाः क्री कनः। इंडिप्रमाः॥
वाःणः कि वःणमस्क्री। वःणमाः
य मिडार्थं कशुडारयन निम्नमः॥
वाःणिकः भू वःणीवारकः। इंडि
करोष्यः॥

वांश्मी खी वंश्माद्राहना। इंडि द्राह्मनिर्घण्डः॥

বা:কিটি: পু॰ শিশুমার:। বারো-জলস্য কিটি: শ্কর:। ইতি কেচিৎ বা:সদন॰ ল্লী জলাধার:। ইতি ত্রিকাণ্ডশেব:।।

ৰাক ত্ৰি বৰসম্বন্ধি। বৰসে দে ইত্যৰ্থেক পুত্যবেন নিম্নন্ধ ।। বাক্জী বাক্যা। সমস্তী। ইত্য-

नवः ॥

वास्ती स्त्री अवस्ति स्मयः। हास्तर हेिं जावा। छर भर्यायः।
स्नामवासी २ स्नामवस्त्री ७ मूर्यस्निका ४ मिडा ६ मिडावबी ७ मूर्यस्निका ४ मिडा ६ मिडावबी ७ म्यूस्नि १० कात्यासी १० म्यूरची १० कात्यासी १० म्यू१ मिश्री १० कात्यासी १० कासस्नि १० व्याद्धार १० कम्यूस्नि भववस्त्राय १० कम्यूस्नि भववस्त्राय १० क्यूस्नि भववस्त्राय १० क्यूस्नि क्युस्नि क्युस

वाष्ट्रणः । वाष्ट्रणः अधूतः गुर्गाट् पत्रः दश्यीकाः भाषाः । देखाः द्वाषः वद्याः ॥

बाक्कीतः भू॰ भागान कः। ইতি भदः त्रजावनी ॥

वाक्ष्ण की बाक्रवग्रकः। यथा।
वहन विघाउ। २थं विकासामनः
ख्रा हलः। उधिविधः। वाक्ष्णः
। नामानग्रहलः। उनहाब्रहलः।
व्यविणवाजिष्ट्रिज ११थं वक्षिः
भूष्यापर्थास्त्रकस्तनः वाक्ष्णः।
३। नस्रवस्था २थंनग्राजिनामानः

যোগাৎ অসমূতার্থ কলুনা সামা न हलः ॥ २॥ ध्याविक न्निर्माण व्यर्थमण्डावनित्वध उनात्रहुलः ॥ ।। ইতি গোতমসূত্র।। শক্তৈ कार्य नामरवाष जार शर्याक नामः मा मका वर्षास्त्र जाद भग्रकत्रः কল্লনথা দুৰণাভিধান বাকছল वक्राः। यथा (नशावामाश्राः) यः নবকম্বলবন্ত্রাৎ। ইত্যুক্তে স্পত্তো **९म**ऽ नवम॰थऽकाः कष्रणाः ॥ ১॥ नामान।विभिष्ठे मञ्जवमर्थाण्जिन्। स्यन উक्तम्य मामान्यानाममञ्ज वर्षकन्ननया मूचगाजिशानः नामा-नाइलः। यथा। वाकालायः विमान **ठत्र**गमणित इंड्राङ व्याक्तगाञ्चन विष्ठाहद्रगमम्भदः माध्यि इंडि কল্মিত্বা পরো বদতি হতে। ব্রা-ক্ষণত্বেন বিদ্যাচরণসম্পৎ ব্রাত্যে ব্যভিচারাৎ ॥ ২॥ শক্তি ল क्राया (व्रक्डवर्खा यः भूडि-(यथः म डेमहाब्रह्णः । यथा । মঞ্চাঃ ক্রোশন্তি ইত্যত্র মঞ্চয়া এ ৰ কোশ স্তি নতু মঞ্চাঃ। এবং অহং নি ত্য ইতি শক্ত্যা পুযুক্তে অমুকা-দুৎ পদ্ম স্তু॰ কথ॰ নিত্য ইতি প্ৰতি व्यथा २ भू। भहा ब्रह्म । ७। इंडि **७** डोका ॥ #॥ अभित। मह्यस्थित-

वारित् वाक्ष्रां नावंत्रीपि । श-ण जी जूम्। गापा भारत्रां गाप्यां-महीयर ।। इंडि व। वहात उद्धुः ।। वाक्षिः शुः वृश्याः । इंडि णस्तक्षावनी ।।

वाक्পि डि: जि उपामवहनः। ইতি बायम्बर्धः ॥ व्यनवरम्याम्यानानि পটুবচন:। ইতি ভরত:॥ স্বনুদ্ধ্য वाकाब्रहकः। ইंভि भावभूनहवी॥ भहूवहनः। इंडि भरार्थकोत्रुसी॥ राज्याक्षनः। इंडि नी वक्षेः॥ उৎ भर्गायः। वागीनः २। इंडा-मदः ॥ व्यनवान्त्रान्यवहाः ७ । ইতি জটাধর: ॥ বাশ্মী বাশ্মি র্বা-वम्रका वारहाय्किभर्हे खबा । वा গীশো বাক্পতিশ্চেত্তি ষড়েক্তে সুষ্টুবক্তরি॥ ইতি শব্রত্নাবলী॥ वाक्षाक्ष्युः ही व्यश्चिवात्क्रा-চারণ । তত্ত্ব সপ্তবাব্যসনান্তর্গত-व। अभविष्णयः । यथा । भृगयाकाः স্ত্রিয়ঃ পান বাক্পাক্ষ্যার্থদুষণে। দপ্তপাৰুষ্য মিত্যেতজ্জ্ঞেয় ব্যস্-नमधकः। इंडि (इमहन्दुः।। 🗱।। उ-ল্লকণ নারদেনোক্ত। দেশ জাতি व्यामीना भारकाम नाक्रमःगुजः। যন্তঃ পুতিকুলার্থ বাক্পাক্ষ্য• उन्हाउ ॥ (मणाशीनाः चार्काण

नाक्ष्मभ्यूं छ । छहि जीवन मार्काः भः नऽङ्ग भवरऽ छर् खर्ययुक्तः यट-প্রিক্লার্থ উদ্বেগজননার্থ বা ক্যু ভদ্বাক্পাৰুষ্য কথ্যত।।#॥ ভস্য চ দণ্ড হারভম্যার্থণ নিষ্টুরাদি ভেদেন তৈবিধ্য মভিধায ভল্লক্ষ্ ग· (उरेनरवाकु॰ । निश्रुबाम्नील जी-ব্ৰুত্বান্তদপি ত্ৰিবিধ• মৃত•। গৌর-বানুক্ত মাত্রস্য দণ্ডোপি স্যাৎ ক্রমাদ্ভক:।। সাক্ষেপণ নিধুরণ জেব মশ্লীল ন্যন্থসংযুক্ত ৷ পক্ত नीरेय क्लाकारेन छोत् मास् मंनी-বিণ ইভি ॥ া ভত্র নিষ্ঠরাকোশে স্বৰণ বিষয়ে দগুমাহ। সভ্যাস-**छ्यान्य । एक्टिक न्यं नारक न्यु**य রোগিণা । কেপঙ্করোতি চেদ্দ ७ ।: भगावस्व त्याम्म ॥ कान्का প্যথবা থপ্ত মন্যম্বাপি তথা বিধ্। ख्याना व दुवन् माला। मख का ষাপণাবরমিতি যমনুবচন তদতি मूर्व वर्ग विषयः। यहा भूनः भूधा मर्या भाजाभीन् भनिष्ठ जमा भाजः म ७ नीया इंडि *(* ड्रॉनरवाक • । मा ड-র পতর জাযা ভা তর সুহাদ खक् । आकात्रयन् म उ नामाः भ ञ्चानकाष्ट्रपद्धा दिख्य । वटह मानदार्षयू भावानियु एक्यू भित्र-

भावाधायां कायायाः मुद्रेवरः॥कार षञ्जीलाकाल मखगार। অভিগ-স্তান্মি ভগিনী•মাতর স্বাতবেতি স্ া শপন্ তদ্বাপযে দুক্তা পঞ্বি --**म** जिकः ममः॥ मेख भूगयनः कार्यप्रः वर्ग बाज्रु उद्राधितः । शुजिला-ম্যাপবাদেষ্ দ্বিশুণ ত্রিশুণা দমা: 11 वर्गाना मानुरलास्मान उमानकार्क হানিত: 🍁 মনু:৷ শত বুল্কণমা-ক্রশ্যক্ষতিযোদও মর্হতি।বৈশ্যো-श्राष्ट्रण उ॰ एवं व। मृ मुख्य वध मर्दछ ॥ शकाम द्वाकरण म्खाः क्व विषम्। ভিশ সবে। বৈশ্যে স্যাদ**র্দ্ধ পঞ্**।-आहर्र घारणका प्रः ॥ वाङ् পুৰি নেত্ৰ সক্ত্ৰি বিনাশে বাচিকে एगः। শভ্য उदिर्धिकः পाদে। ना-ना कर्न कद्रापियु ॥ अनक्क उप-(सद मखनीय: भगान् मणा। **७था** শক্ত: পুতিভূব দাপ্য: (ক্ষমার ভুস্য ভুম পতনীযকৃতে কেপে দণ্ডো মধ্যম সাহস:। উপপাতক যুক্তে তৃ দাপ্য: পুথমসাহস: ॥ विविधान्त्रस्यानाः (क्रथ छेखन সাহস:। মধ্যো জাতিপ্গানা भुषामा गुम (मनायाः ॥ इंडि নিতাক্ষর। ॥ 🗱 ॥ বাকপাক্ষে व्यक्तियागमनिखीर्यः भुजाबियाः

कत भुजिनुमता यथा। सर्गार भुजिजित्यागक कवाह माहतम् हा वाक्नाक्ष्यः मञ्जानिनुहातम् ह यथा भूवंगहनाक्षः म ज्ञान हजः हेज्यनाथाजावाय भु जिज्ञान सर्गार । हेजि व्यव-हात्रज्वः ॥

न्नी भएममूरायः । ইতি ব্যাকরণ ॥ ভিডন্তচয: ॥ সূবস্তচ্য: ॥ কারকাবিতাকিযা। ইত্যমর:॥ इंह गुडिलाकरमा जिविष निक-ক্ত• বাক্যমূক্ত•। তিড সুবন্তবোক্ত यः अभूमायः कात्रकान्छ। किया ह वाकाः। তিড् শব্दেन তিবাদীনি সাশীতি শতসংখ্যকানি বচনানি উচ্যন্ত। এব॰ সুপ্শব্দেন স্যাদী-(न)कवि**ःभ**ि क्हार । हम्मार भद्रः यः भुगाउ वाज्य रामो भु ভ্যেক অভিসম্বন্ধ মিত্যন্তশহ উভফো ব্লি সম্বগ্যতে। অত্ৰ জি-উন্ত সমূহো যথা। পচ্তি ভব্তি भार मा खरांख इंडार्थः। এउहाम्स-नामव । नृव उनमृत्रा यथा । भुक्-তিসিজ মিদ ছে মহাত্মনা । ধা ত্বর্থ: ক্রিলা কারকৈ: কর্তাদিভির-ব্বিতা সম্বন্ধার্থা কারকাবিতা অ-दिउद्ध किया काइकागाः व्याका-

হ্মাযোগ্যভা সন্নিধি বশাৎ ক্ষেধ্ ভিড্ সুবস্থচযাত্মকে ৎপি সম্বন্ধা-র্থতা বোধ্যা অসম্বন্ধার্থস্যাপুগো-গাৎ অভএব পরম্পরাভিসম্বন্ধ: পদসমূহো বাক্য নিভি বৃদ্ধা: । कात्रका नुजा किया यथा । (एदए-ৰো গান• গছতি। ইতি ভটাকা-याः ভরত: ॥ # ॥ वाक्रध्रक्ष भार । वाक्यः म्याट (याग्यजाकाः দ্ধাসত্তিযুক্ত: পদোষ্টয:। বাক্যো-हर्या भश्वाक्र भिन्यं वाक्रः हि-ষা মত।। উক্তঞ্চ। স্বার্থবোধ সমা-श्वाना मकाकि इ व्याशक्या। वा-ক্যানা মেকবাক্যত্ত্বণ পুন: সংভূ্য জাযতে ইভি॥ অত্ৰ বাক্য যথা। শুন্য বাসগৃহ মিত্যারি। মহা-বাক্য যথা। ব্লানাযণ মহাভারত त्रघूवः भाषिः । ইতি সাহিত্যদর্শ-(१ र भित्रहरः॥ ॥ चिनुवरा-का जायन निर्वाश यथा। न हि॰ স্যাৎ সর্বভূতানি নান্তঞ্বদেৎ কুচিৎ। নাহিত নাপুৰ বাক্ত ন সেনঃ স্যাৎ কদাচন।।।।। পাব-खानि डिंगि निरम्सा यथा। পাৰভিনো বিক্মস্থান্ বামাচা-द्रा॰ उरेथव ह। शक्षद्राजान् शाम्-পতান্ বাজ্যাত্রেণাপি নার্থেৎ।।

ইভিকৌর্মে উপব্লিভাগে ১৬ অধ্যা यः।। 📽।। শুভাশ্ভ বাক্যানি যথা। নৈব রাজ্যেন নহতা ন বৈ বার্থস্য রাশিভিঃ। পাপ্যতে জ্ঞানকথন পরলোকসূভাবিত ।। बर्गाभवर्ग निष्कुर्थ ভाविङ यर मृत्माजनः। বাক্য ননিবরৈ: শান্তৈ তাদ্বিজ্ঞেয়ণ সুভাষিত ॥ রাগ দ্বেষান্ত কোধ काम ज्कानुमानि यए। वाकाः निः র্য হেত্ত্বাৎ তদভাবিত মৃচ্যতে ॥ সংস্তেনাপি কি॰ তেন মৃদুনা ললিভেন বা। অবিদ্যা ব্লাগবাক্যে ন সংসার ক্লেশছেত্না 🔢 যৎ मुद्रा जाराज भूगाः द्रागाहीनाक गःक्यः। निक्षः मिश उदाकाः বিজ্ঞেয় মভিশোভন ॥ ইভি विज्ञात देकवश्य मृष्ट्रिक नामाध्यायः ॥

নাগর: वाद्रकः ॥ भागः॥ निर्गयः ॥ वाखवः॥ वृकः ॥ मूम्रकः ॥ পণ্ডিত: ॥ পরিত্যক্তভ্য: । इेंडि (इमहन्मु: ॥

वागाकः वि व्याणारुष्ठा। यथा। আন্দা• বলবতী• দত্বা যো হন্তি পিশুনো জনঃ। স জীবাসোপি বা-गाक क (गा मानू समा अबि।। इंडि अद्यामा ॥

বাগাশনি: পু• বুদ্ধ:। ইতি শব্দ ब्रङ्गावनी ॥ বাগীশঃ পু॰ বৃহস্পতিঃ। ইঙ্কি नदत्रञ्चावली ॥ বাগীশ: ত্রি বাক্পতি:। সূষ্ট্রকা ইতি যাবৎ। ইত্যমর:॥ जी. महस्री। यथा। वागीना वागीना यम्। वरान वन्त्री यंम्। ह वक्ति। यमााख क्रांस मिर ত নৃসিণ্হ মহণ ভৱে ৷৷ ইতি খ্রী-मज्जागवज्जीकायाः श्रीशतसामी ॥ वागीयतः भृ मञ्ज्यायः। इंडि ত্রিকাণ্ডশেষ:।। বাচামীশরে তি। यथा। कृतामल कृत्रित समू रिजन नमन् उ॰। कश्वा मान॰ युवा नाह नत्रा वाशीयत्रा ভবেৎ ॥ इंडि गाक्ए ३३५ यथायः ॥ বাগীখরী জ্রী সরম্বতী। ইভি

ত্রিকাওশেব:।।

বাগুলী জ্রী সোমরাজী। ইত্য यदः ॥

বাৰণ: পু॰ কর্মব্নস্থ:। ইতি শব-माना ॥

वाख्द्रा जी मृगवन्तनार्थकालविष्णः **यः। ইত**्रमद्रः ॥

वाछित्रकः शृ वाषः। वाछत्रग म्गानीन् वशाि यः। ইভामदः॥

बाशुहः भू॰ शक्कितिस्मयः। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষः॥ এত্তমোনিকারণ॰ यथा। কৌষেয়া উদ্দুরঃ। কার্পা-সভান্তবং ক্রৌঞোগোধা গাং বা-গুদো গুড়া। ইতি সান্বে ১২ অধ্যায়া।

ৰাগ্লল: পুণ ভাদূলী। রাজ্ঞাণ ভাদুলদাতা। ইভি শব্দালা।। যাগুলিক: পুণ ভাদূলদ:। ইভি ত্রিকাগুশেষ:।।

बाग्रुबिन्: बि भिडडायी। उट्-পर्ग्राय:। वाग्रुः २। ইडि मद-भाना॥

ৰাণ্যন• ক্লী ওধাধরৌ। ইতি ত্রিকা-ওশেষঃ।।

बाग्मूड: भु• वाजा:। ইजिकते। श्रः॥

বাগদুষ্ট: ত্রি বাচাদোষযুক্তঃ। যথা
। বাণ্ডাব দুষ্টান্চ তথা দুষ্টে ন্চোপ
হতা স্তথা। বাসসা চাবধুতানি
বৰ্জ্যানি শাজকর্মণি।। ইতি শাজ
তত্ত্বং।। #।। তদম ভক্ষণপুগাশন্তিতং
। তত্র শাঃ:। বাগদুষ্টং ভাবদুষ্টক
ভাজনে ভাবদ্ধিতে। ভ্রুলমং বাক্ষণঃ পশ্চাৎ ত্রিরাত্তত্ত্বতী ভবেৎ।। এতদভ্যাসে বুতী বাবকেন

छा बाम्भभा (म्याः । हैंडि भागिक खिरियकः ॥

বাণেবতা জ্রী সরম্ব নী বথা। পখ্যাশল্লিপিভি বিভক্ত মুখদো: পমব্য বক্ষস্থলাং ভাষম্মৌলি নিবক্ষ চন্দুসকলা মাপীনতৃত্বস্তনীং ।
মুদ্রা মক্ষণ্ডণং সুধাচ্যকলসং বিদ্যাঞ্চ স্থাস্থল বিভূগোং বিশদ্ধ পুভাং ভিন্যনাং বাণেবতা মাশুযে
।। ইতি তন্ত্রসার: ।।

বাণ্ণেনী জ্রী সরম্বতী। **ইতি জি**-কাণ্ডদেশ:॥

বাণ্মী ত্রি বক্তা। ইত্যনর:॥ পটু: । ইতিমেদিনী॥

वार्ग्याः शृ भूताहार्यः । ३७ स्मिनि ॥

वाग्रः कि वाग्रिषः। ইতি णपः
गाणा।। निर्दिनः॥ कण्रः। ইত্যक्यः॥

বাগ্নতঃ ত্রি বাক্যসংযতঃ। যথা।
পুত্যেক নিযত কাল মাজনো বু
ত মাদিশেৎ। পা্যশ্চিত্ত মুপাসী
না বাগ্নত ব্রিসবন স্পৃশেৎ।।
ইতি পুাযশ্চিত্ততত্ত্বপূত শন্ধলিথি
ত বচন ।।

বাথাম: ত্রি অশক্ত্যাদিনা বাচ॰ বছুতি য:।ইতি সিদ্ধান্তকৌমূদী।। वाकः श्रु भगुषुः। ই छ जिका छ (भवः॥

বাজায়ণ ত্রি বাক্যাত্মক। যথা। भ। द ख क ज़रेग मारिष्ठ दि छ मं मि जि त्रक्षरेत्रः । मनखः वाष्ट्रायः वशाखः ৰৈলোক্য মিব বিষ্ণুনা।। অপিচ। भर्ड गर्ड मिंडि शुं र्बाष्ट्रायः षिविष वृषाः । शुा ७ क लक्षण भर्ड गर्ड मंभुंडि गर्डाड II भर्ड यथा। भर्ड ठजुन्न उष्ट বৃত্ত' জাতি রিতি দিখা। বৃত্ত সক্ষর সংখ্যাত• জাতি মাত্রা কৃতা ভ (वट् ।। तम मर्कममः वृत्तः विषः মঞ্চেতি ভগ্রিধা। সম সমচতু-ग्रामः ভবত্যक्षंत्रमः भूनः वारि उजीयविष्या भार स्र्यं। ধি **এযবং । ভিন্ন চিহ্ন চতু**ল্লাদ বিষন পরিকীর্ত্তিত।। গদ্য যথা । অপাদ: পদসন্তানো গদ্য তবু बिधा भउ। ह्र्ग्रां । ह्र्ग्रां । क्लिका भाग वृञ्जगिक्त भुष्डमञ्: ॥ व्यक्रिते। वाक्तवः बन्नमभामः हूर्नकः विदूः। उक्ति रेवर्स्छ्री जिञ्चः भर्गः इत्र खत्र॰ खरवर ॥ खवजुर्दकाम् काः नाय नगमाहा मृहाक्षत्र वृद्धि करमण मम्बावृद्धगन्ति भूनः सृदः ॥ इंडि इल्लामञ्जनी ॥ 🗱 । वाद्मयः

भाभानि यथा। भाक्षा गन् उरिक्त रिनम्नाकानि मईनः। यमग्रकः **পুলপেশ্চ वाद्मयः म**्राह्य विश्व ॥ छथा भक्ष वहन मभवापः रिभम् न। मन्छ॰ वृथालाला निष्ठुत वहन॰ इंजिवाद्ययानि वर्षे। शास्त्रवा (मण জাতি পল বিদ্যা শিল্পপ ব্তা-ठा**त्र श**तिहर भातीत कर्मकी दिना॰ शुक्राकरमायवहनः शक्यः। यहाः ন্যৎ কোধ সন্তাপ ত্রাস স'জন-न वह:। शक्ष उह विरद्धार य-हान। ह उथाविषः ॥ ठक्कु ग्रानिजि লুপ্তাক্ষণ চাণ্ডাল। ব্যাহ্মণেতি চ। शुनामानिन्दन (हवार शक्याम বিশিষ্যতে ॥ তেষা মেব পক্ষ-বচনানা পরোক্ষ মুদাহরণ অ পবাদ:। গুৰু নৃপতি বন্ধু ভাতৃ নিত্র সকাশে অথোপযাতার্থনে ষোপাথ্যান পৈশ্ব্য । অন্ত দ্বিবিং অসত্য মসম্বাদক্ষেতি। रम्भ ताष्ट्रे भूमकाह भन्नार्थ भन्निक-द्भनार । नर्य शत भुत्रकाह ভार-শ॰ ব্যর্থভাষণ ॥ ভক্তাকা মেধ্য मःक्कानाः ভाষণः निश्रुतः विषुः। यहना वाहा नीहजी भूरमा भि থুনাশুয় ।। ইত্যেব বিদ্বিল্লন্য দূ ष्ट्रेवाकात्रा जावनार । इंस् ठामूब ह

क्त्र मनर्थः भुडिभम्। छ।। भुनः **भ**या निनरनः शुगःभानिनरनः। अब हजूर्बिष विविधारा प्रतिरामः । স मक्षानमकष् (जनानारद्भण भा-क्रवाभवाषया देवकार निध्वमा **প**क्षान्त जीवाह। अनयक्षुलाश वार्थं ज्ञावनायाः भर्यायज्ञानार्थासः র•। ইতি তিথ্যাদিতকু•।। वाष्ट्राञी जी नरीवित्मयः। यथा। হিমাদে ৰক্ষণিখরাৎ প্রোদ্ভতা বাম্মতী নদী। ভাগীরথ্যা: শত-গুণ পৰিব তজ্জল মৃত।। তব त्राज्ञ हात्र र्लाकानूशम्भ्राम्य पितः ম্পতে:। ত্যক্তা দেহ : র। যান্তি **मम (लाकः न जःभ**यः ॥ ইভি বা-রাহে গোর্ণনাহাঝ্যে জলেখর-

বাদ্যথী জ্রী সরস্বতী। ইতি কেচিৎ।।

भारञ्जादर्गननामाध्यायः॥

বালুখি জী উপন্যাস:। ইত্যমর:।। বাচ: পু মৎস্যবিশেষ:। বাচা ইতি ভাষা। অস্যগুণা:। ষাদুর্ণ। গুরুত্বণ। স্থিত্বণ। স্নেম্লর্ণ। বাত পিত্ত নাশির্ঞ। ইতি রাজ বল্লভঃ।।

বাচ যনঃ পু॰ নুনি:। ইত্যমর:।। নৌনুবু ী। ইতি কেচিদিতি ভরভঃ

वाहकः शुः भयः। यथा। भारत শব্স বাচক:। ইত্যমর:।। দ্বে বা-চকে। পুকৃতি পুত্যয দ্বারেণার্থস্য বাচকো গ্রাদিক্প: শাক্তে ব্যাক-রণে ভর্কাদৌ চ শব্দ উচ্যতে। লো-কে তু সংস্থাে ৎসংস্ত: শব্ উ-চ্যতে। বকীতি বাচক: ৭ক:। ইতি खत्र जः ॥ ज< भर्य)। यः । यथा । **भ**ः माভिनालो पुडिश ভिशान वा-চকো ধুনি:। হাস: अহরিতঞ্জে बिका खरमयः॥ 🕬 व व कः। शुद्रा-शाहिकाठे हः । यथा । वाक्षा वाह-कः विमानाना वर्णन माम्बारा मुः ज्ञान। वर्गकाम्। कन् वाहका बद्रकः वु-(बर II उथा (पवाई। मगु उ: क्षा বাহ্মণানা বিশেষতঃ। গুছিঞ্ শি-थिल क्रयंत्राचाहकः क्रक्नम्तन ।। भून बंधी उ उৎ मुक् न मुक् धात्र-বেৎ কৃচিৎ। হিরণ্য রজত গাল্চ उथा काष्माशराह्नाः॥ पदा তু বাচকাথেছ শুক্তস্যাপ্মাতি তৎ ফল । কা 'সে । পদে। হনা: কা 'স ক্রোডা: । বাচক: পুজিতো যেন পুসন্না স্তস্য দেবভা: ৷৷ তথা জ্ঞা-वा भवं मगाधिक भूबयबाठक॰ वुषः। आजान मि विकीय य हेरहर मकन कजून। उथा विम्यान डे नक्छ॰ लाङ॰ व्यक्टीकृत भर॰ छथा। कलम्य मनायूकि तम छाव मनिक ॥ वृश्यानः महा छुर्थ॰ पृष्टार्थ॰ क्ट म्राला न्या वृश्यानाहि-मू मर्विष् शृष्टार्थ॰ हार्भरम्य ॥ य এव॰ वाहरयषुम्पन् म विर्मा वृशम छिछ्डि । छथा। मश्चम मनायुक्क॰ मार्ल खाद्य कि सम्बद्ध क्रमायुक्क॰ मार्ल खाद्य कि सम्बद्ध क्रमायुक्क॰ कार्ल खाद्य कि सम्बद्ध क्रमायुक्क॰ कार्ल खाद्य कि सम्बद्ध क्रमायुक्क॰ कार्ल खाद्य कि सम्बद्ध क्रमायुक्क॰

শুদ্ধনার হার্ন বন্ধ বাচন । ই তি বার্ন ভঙ্ক ।। তথা। দান বাচনার বঙ্ বরণ বুত পুমাণেষু যজমান পুতী-যাৎ। ইতি কাত্যাযনসূত্র ।। বাচনক ল্লী পুছেলিকা। ইতি

ৰাচসাম্পতিঃ পু॰ বৃ**হস্প**তিঃ । ইতি শব্ৰহ্লাবলী॥

राजावनी ॥

বাচন্পতি: পূ॰ বৃহন্পতি:।ইত্য মর:॥

বাচা স্ত্রী বাক্। ইতি ত্রিকাণ্ড-শেষঃ।।

বাচাট: ব্রি বাচাল:।ইত্যমর:॥ বাচাল: ব্রি বহস্পশ্রেভাষী। ख्रभर्गातः। जन्नाकः २ वाहाहैः १ । इज्रमतः ॥ मृवल्लाविग्रिंश क्षाकाम्य खर्या वर्ल्ड वाहाहि। वाहाला जन्नाकः मृवल्लावीम्याम् हाला जन्नाकः मृवल्लावीम्याम् जिल्लाकार्क्ष शर्यप्राय वाशालिङः । निक्र भूगन् वाहाला मृश्वितिः महस्रो। इजि मृहादि दिल्ड क्षोकाराः लह्नाः॥

ু হ' 'চিক**•** बि বাচাকৃত। যথা। भत्रीवरेज: कर्याकारेव यां जि ज्ञाब-রকা॰ নর: । বাচিকৈ: প**ক্ষি মূগ**-েক্ষাত্র, বস্থারি**তা**শা ই**রি** ুলেভ্যন্ত প্ৰাম্বিচাকাৰিক ा विकास साम्यान सह पुत्र तर । ब ाकाकार्त सर्**मर्थः मृतम्**रित सम ुः । ५**७ मात्र**नद्वाल मृत्रिङ वं ॥ अन्तर । काधिक यानर ননস্বার হিত্বা আচার্য্যেণ কর্ণ वाहित्वा नमस्ताद्रः कृष्ठः । इंडि मुख्रताविष्ठीकायाः मूर्गामानः ॥ बाहिकः भू॰ वाका। त्रुष्ठः। यथा। আলাপশ্চ বিলাপশ্চ সংলাপশ্চ **পुलाशकः।** ञन्नारभा २भनाशः क मत्मम का जिल्लाकः ॥ यः भरमाभरमाभ ह निर्दरमा वर-**शरमगः।** कीर्बिंश वन्नावस्यः मृारभाभी भनीविज्ञिः।। इज्जूष

নীলমণি:।। বাচিকপঞ ক্লী লিপি:।। স'বাদ-পঞা ইতি কেচিৎ।।

বাচিকহারক: পু• লেখন•। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষ:॥

ৰাচোয্কি: তি বাশ্মী। ইত্যমর-টীকাষা• রামাশুন:।।

বাচোয্জিপটু: ত্রি বাশ্মী।ইত্য-মর:।।

वाह्य जि व्यथ्निष्ठः ॥ श्रीनः॥ वहनार्रः । इंडि (मिरनी ॥ भक्रः । यथा। न ठाल्ल इ वल्डा छा भ्राया-গাণা বিশিষ্যতে। বাচ্য বাচক ভাবে। १य मक्ष भागामि भयव ।। विजेउक श्लाक भाषा यहाला-ল্লৈ: পুষ্জ্যতে । তথাপি বাচক ন্ত ন্যুক্তায়তে শকটাঙ্গবৎ ॥ ইতি মলনাসভত্ত ধৃত ভউবাত্তিক বচন ॥ गिन । व्यर्था वाठाम्ह नक्काम्ह ব্যস্থ্যশ্চেতি ত্রিপানতঃ। এবাণ স্ব-क्रि भार । वाह्या १८था छित्रा (वार्थ्या वास्कृत वाक्क नया भड़ः। वारका वाञ्चनया जाः मूर खिनुः मद्मा मञ्चाः ॥ ইতি সাহিত্য-मर्भागर भित्राह्मः॥

^{হাচ্}য় ক্লী পুতিপাদন ।। দূৰণ । ইতি ধ্রণিঃ।। वाह है कारम। ইতি कविकन्नक्रमः ॥ ই वाक्ष्उ। ইতি पूर्णाप्तानः
वाद्यः न्नी घ्उ॰॥ युद्धः॥ व्यवः॥
वाद्रि। ইতি মেদিনী॥

বাজ: পু॰ শরপক্ষ:। ইত্যমর:॥ নিষন:॥ পক্ষ:॥ বেগ:। ইতি মেদিনী॥ মুনি:। ইতি বিখ:॥

বাজপেয় লী পু যাগবিশেষ: ।
ইত্যমরভরতৌ ॥ সত্শুৌত সগু
সংস্থান্তর্গত পঞ্চমযাগ: । যথা।
অগ্নিষ্টোমো হত্যগ্নিষ্টোন উক্থ্য:
বোডশী বাহপেয়ক্ষ । ইত্যাশ্ব
লায়নসূত্র ।। এন: পৌগুরীকক্চেতি সপ্তগাগা: ।।

বাজভোজী পু॰ বাজপেয্যাগঃ। ইতি শব্রত্বাবলী।।

ৰাজসনেযঃ পু॰ জনমেজযক্তবেদার্থগুন্থঃ। সভূবৈশস্পায়ন শাপাদুদ্ধঃ। ইতি নৎস্যপ্রাণং ॥

वाक्र मत्यों भू यक् (वें ने । यथा । वार्यक्र स्मा मर्जा वाक्र मन् वाक्र मन् वाक्र मत्या वाक्र मत्या वाक्र मत्या विवास । इंडि महास्म भित्र गृही उ वहना थ यक्ष विविद्य विविद्य विवास विवास विविद्य विविद्य विवास विविद्य विविद विविद

वाकिंगका जी व्यथनका। है जि ब्रह्माना॥

वाकित्यः भू वानकः। इंडि

ब्रञ्जाना ॥

वाकिम्छकः भुः वांमकः। ইত্যমরः॥ वाजिन• क्ली जामिकामसा हाना-ब्रबन ३७ ভाषा। **३७ (१**४० मु-ত্রিকাণ্ডশেষৌ।।

वाकिनी जी अथगन्ना।। यादेकी।। শেষস্য পর্য্যায:। বডবা ২ বামী ১ भुम्का ८ गार्डवी ८। यम्याः कीत खनाः। अधाक्षीत्रस्र क्ष्मामः वर १ भी भन• व्यष्ट्रा (प्रक्रियं) कत्न• বল্য গৌরব কান্তিকৃৎ পর ।। #॥ **उप्दिश्चिगाः। अर्था मिथ म्याम्यपूतः** क्याय क्या खिं मृहामयशात्र क ক্ষ•। বাতাল্লং দীপনকারি নেত্র-দোযাপল্ ভৎক্থিত পৃথিব্যা ॥ 🗯 ॥ अमरनीज खनाः । जायस नवनीजः नाष कषानः कक काम-**डि**८ । हक्वुर क्रूक्ष्शक भीय-দ্বাতাপহারকণাঞ্চাতদ্যুত গুণা: । अथा मिलं स करूं क॰ मधुइ ध कवाः यकः। वेषान्ती भनहः नृही शाति वा **जाद्मर• ७क्।। इंडि व्राक्तिर्यः।।** भाजिति । अध्याकाकः वस्ताकीः तः वनाः भाषानिनाभरः। **य**ग्नः कृष्टे वयु आपू नव निकन्यकः उथा ॥ इंडि जार्भुकामः॥ वाजिल्धः लूः ज्ञानगृजः। इंडि

भफ्डिंगुका ॥ বাজিভক: পু॰ চণক:। ইতি রাজ-

निर्घणः ॥ বাজিভোজন: পু॰ মুদ্র:। ইতি রাজ-

निर्घणः ॥

वाबिमान् भू शिषाः। इंजि त्रः याना॥

वािकनाना जी वािहकगृरः। आ-खवन् इंडि जात्रवी जावा। उर-পर्यायः। ममुद्रा २। ইত্যमद्रः ॥ वाकी भू॰ (घाठकः ॥ वानः ॥ পক্ষী। ইত্যমর: ॥ বাসকঃ। ইতি मदवञ्जावनी ॥

वाजीकत्रन क्री वीर्यातृष्टिकतः। ইতি রাজনিঘণ্ট: ॥ বাজীকরণদুব্য-म। लक्ष्ण भारु। यमुवाः भूक्षः वर्गा८ वाजिव८ जूत उक्त सः। जः দাজীকর মাখ্যাত মুনিভি ভিষ काः दितः।। 🗱 । অত পুসকাৎ क्रि वामा वक्षा माथा निमानकार। ক্লীব: স্যাৎ সুরতাশক্ত স্তদ্ভাব: ক্লৈব্যসূচ্যতে। তচ্নপ্তবিধংপ্যোক্ত निमान• उम्र कथ्रा**७**॥ टिन रेस छी। वि ब्रक्रिस ख ब्रिवश्मा स्वीम क्षा । ধ্বল: পভভাতো নুণা ক্লৈব্য সমূ পজাবতে॥ দ্বেষ্যন্ত্রীসংশুযোগাই रिक्षवाः जन्मानमः मृजः । रेज रेउ

ৰ্ভাবৈ ৰ্ভয শোক ক্ৰোধাদি ভি:। অ क्रिन इनगिहिताः मू: अन्दार । ক্ষতে পীড়িতে অশ্বন্থীকৃত ইতি যা-বং । ধৃল: শিশু:। পত্তি ভূমম্তি । मः भुर्यारमा रेमथून । ।।। कर्का শ্লোঞ্চ লবণৈ ব্লভিমাত্তোপদেবিভৈ:। **भिडा**हुकक्षाया मृष्टेः देववा उत्मार **পুषायरं ॥** कंट्रेकारिनार्डिमार्डिन পুবৃদ্ধন পিত্তেন শুক্রস্য দপাত্বাৎ ক্লৈব্য• ভবতি। পিত্তন্ত মেতদ্বিতীৰ• ॥२॥ অভিব্যবাयमीला (या नह বাজীকিযারত:। ধ্রজভঙ্গ নবাপ্নো-তি স শুক্রফ্য হেতৃক ।। শুক্রফ্যজ ভূতীয় মতা মহতামে দুরোগেণ চ-जूषी द्वीवजा ভবে ।।।।। वीर्यप्रवाहिः শিরাছেদান্মহনানুষতি ভবেৎ। ৫।। विनः कुक्तभनत्मा निःदाशाषुक्रठ-र्याजः । यश्रीक्षवाः स्व ७ छत् मुक-স্তম্ভ নিমিত্তক ।। বলিন: পৃষ্টস্য পু-क्वम् क्क्रम्भः कामार मक्वि-তস্য। ননস: বুক্ষচর্য্যতো নিরোধাৎ ক্লৈব্যুণ ভবতি। ৬॥ জন্ম পুভৃতি যৎ-ক্লৈগ্ৰু সহজ্ব ভদ্ধি সপ্তন্যা ৭ 🖂 व्यमाशुः द्वित्रभारः। व्यमाशुः मः रकः दिना भग्राह्मा यक्तात् । मर्माहमार वीर्याया इमित्राहमार । #।। वय हेन्त्रामा विकट्मायाः

। বাজীকরণ বিধিমাহ। নরো বাজী-कद्रान्(यागान् मम)क् शृष्क्रो निदाम-यः। मक्षजासः भुन्नही ज वर्षाम्कृ स (याउँ भार ॥ नह रेव (याउँ भार दीक् সপ্তত্যা: পরতোন চ। আযুদ্ধামো नद्रः ज्ञीन्धः मःरयागः कर्नुगर्शन्।। क्रय वृष्का अरु भारा (वाता का जी-व मूर्जगः। व्यकालमञ्जनक म्या ज्ज ত জ্ञिय मन्रथा।। विलामिना मर्थव-তা॰ ৰূপ যৌবনশালিনা॰। নরাণা॰ বহু ভার্য্যাণা বিধি বাজীকরে৷ হিতঃ ॥ इविद्रानाः दिद्रः मूनाः खीनाः वा लाज्य भिष्ठ्जाः। याविर भुमद्रार क्कोगानाः क्लोवाना मन्नद्रवज्ञाः ॥ হিতা বাদ্ধীকরা যোগা: প্রীত্যপত্য বলপুদা: ৷ এতেপি পুষ্টদেহানা• (भव्राः कालार् (शक्या ॥ 🗱 ॥ वा-बीकद्राग्रार्। (ভाजनानि विविज्ञा-ণি পানানি বিবিধানি চ। বাচঃ শ্রো-ত্রাভিরামাশ্চ ত্ত্বঃস্পর্শ সুখাবহাঃ। याभिनो (मन्द्रु ७ व क। काभिनी नव-যৌবনা। গীত শুোত্র খনোহারি তা-च्ल मित्रा मुकः ॥ गक्का मत्नास्त्रा ৰপাণি চিত্ৰাণ্যপ্ৰনানি চ। মনস-न्हा भु जीवार जा वाकी क्र बंखि मानव॰ ॥ भाकीक थाज मधु भातर (लाइ-চ্नं পথ্যা निवाषञ् विषय घ्ठानि

विष्य्ं। এकाशु विःभि ि ि मिनानि গদাৰ্দ্দিভোগি সো ২শীভি কোগি त्रमाय भूमना युद्यत ॥ भवाः विक्ष বৎসানা সিদ্ধ পথসি পায্স । গোধ্যচ্ৰ্ঞ তথা সিতা মধ্যুতাবি-७।। जुङ्ग श्वां जीर्गाशि मण-मादान् वृष्कज्रिः 🗱। व्यथ प्रजाना। मधार्षातक भीवनम् भध्रः थखना **इन्द्र**्राङ: भूष्ट क्लिपू भनक भक क्वियः मुक्रेत मञ्जूर्भायकान्। अवा মাষ চত্ঔদ মরিচতঃ কর্ষণ লবস্বং ভথা ধুরা শুক্লপটে শনৈঃ করতলে (नाम्रथ) विमावराट ॥ मृष्डात्अ म्गना जि हन्तन द्रम म्मृष्ट १ एक खू-পিতে কণ্রেণ স্গন্ধিক তদখিল जःलाउ। जः इंग्लियर । सम्रार्थ মথ্রেখরেণ রচিতা ছেবা রসালা स्रग () कु र्मस्य दी भनी मूथकदी কান্তেব নিত্যু• প্রিয়া ॥#॥ গোক্ষরে क्कृत्रवीकानि वाविशका मञावती। मुक्ती वानदीवीक यही नागवला-वया।। এवा॰ हूर्न॰ मुक्षित्रक्ष॰ गर्वाः-नाष्ट्रात छिंड। त्रिउश स्माहकः क्ञा ज्ञकाः वाजीकवः भवः॥ हूर्गाः म् क्षेत्र कीतः घ्उ ह्र्न मनः भ्रउ। সর্বতো দ্বিভাণ খণ্ড: খাদেদগ্নিবলং यथा।। वाजीकवानि ज्वीनि मःगृश्च

व्रिट्टा य**डः। छमाब**ङ्यू (गारित् (यारमा २म॰ भुवाता मजः ॥ त्रिः वर्ष्कता भारकः ॥ 🗱॥ शिश्रनी वर-ণোপেতে বস্তাণ্ডে যৃতসাধিতে। ক इलगडाथ वा थाप्तख्यु वाजीकात्र ज्भः ॥ अ॥ शूगः मक्किगरमञ्ज দশপলোমান ভূশ কর্ত্তার্ভিছি-म॰ बनयागाउ। मृतुउतः मःस्ट्रे **ट्रीक्ड॰। उर्न्॰ शर्टे लाबिड॰ वमू**-खा (गामुक मृत्य भावर गवा)-ब्राञ्जल न ग्रंडिनिविष्ठ मन्। বুলার্দাণ সিতাণ।। পঞ্চ ওজ্জুল-नार्शकिष्ठिः भुजिनार् उम्मिन् भूनः পুক্ষিপেৎদদ্যান্তন্তদ্দাহরামি বহু-ना मृष्ट्रीमद्राष्ट्र मः (इठा:। এना ना-ग्रवा वना महभना जा श्रेकनानि-বিকা জাভীপত্ৰ সূপত্ৰ চিত্ৰক যুত্ত ভছ ত্বহা সংযুক্ত।। বিস্বাধীরণবারি वाजिए वजा वाःमी वजी वानजी मामा সেক্ষ্র গোক্ষ্রাথ নহতী। **থজু রি**· का की दिका। शानात अवरमक्क সনগুৰু **শৃ**স্বাটা জীবক পৃথी काथ यवा निका वद्गिका मा भी नि সি মেথিকা।। কন্দেশ্বত বিদা**রিকা**-थ गुरनी गज़र्व गन्ना उथा कब्र করিকেশর সমরিচ ঞারস্য বীজ नवः।वीकः भान्य न अञ्चवः कत्रिकः।

वीकक द्राकीवक । १४७ वन्तन मज রক্ত মপি চ 🗐 স জ্ঞপুষ্মি: সম ।।। সর্বঞ্জেতি পৃথক্ পৃথক্ পলমিত मःह्र्न्। छब किश्नि म्ड वक खु सक् लाह गगन जयादिङ (सह-या। कख्दी घनमात्र हुर्ग मिल ह शु-क्ष वदा भुक्तिलय भक्ताममा जू भारकान् विव्रव्यविवृश्वभागान्य ॥ ভান্ ভোকাতি সদা যথানলবল ভূঞ্জীত নামু• রস• পূর্ষমিমশিতে গ-তে পরিণতি প্রায়োজনাডক্ষ্যেৎ । নিভ্যুণ প্রীরভিবল্লভাখ্যক মিমণ वः भूगभाकः खरबर म माधीर्याः বিবৃদ্ধি বৃদ্ধ মদনো বাজীব শক্তো র-(छो।। मीथा प्रवासन वनी वित्रः हिला इंडे: न शूडे: नमा वृष्का या-नि यूरवव (मानि कि विदः न्र्निम्वर जुनरतः। रज्ञाता यहेला। यक्षात वर्षभवाव । जुनार्खाः भक्षाभरः পলমিতা। সংহিতা: সুশুতাদ্যা:। नागवना अत्रमकती अत्रथ औ इंडि চ লোকে। বলা বহু লিযার ভস্যা म्बद्क्। हभवा भिश्नवी। काठीः পত্ৰক লাইপত্ৰী। বিশ্বা শুগ্ৰী। বী-রণ এভস্য মূল উদ্দীর প্রাক্ত । वाति मूगक्रवाला। वात्रिषः मूखकः। वद्रा बिक्ना। वाःभी वःभव्दाहना । वत्री भंजावत्री । वानत्री कलिकहू ত্তস্যা বীজ গুৰাছ । ইক্ষুর: কোকি-লাক্ষ: তস্য বীজণ। গোক্ষুরস্যাপি বীজা। নহতীথজুরিকা ছোহারা। ক্ষীরিকাক্ষীরী। পৃথীকা কারবী স্প-रिवणा ইতি লোকে। বরটিকা বররৈ ইতি লোকে। শালুক নেবা• কদ্দ: न्याषीकरकारवा वद्राधिका। माःत्री কটামা সী।মিসি: সৌফ:। গন্ধর্বগ হ্বা অখগদ্ধা তস্যা মূল। 🕮 সংজ্ঞ व्यवक्राधनमातः कर्न्तः। विव्रभूमाः गान् भवभुभागान् । त्रिवद्य डाच्ड-প্গপাক:।। 🛊 ।। এত্রমিনুতিবল্লভে यि भूनः मम्ब्र भूद्राणानिका शब्-রস্য ভূবীজমর্ক করভা বাসো ংখি-শোব তথা। সন্মাজ্ফ গক তথা ধ-সকলত্বক্বাপি নি:ক্ষিপ্যতে চ্লিৰ্ছা বিজ্ঞবা ভদাস হি ভবেৎ কামেশ্বরঃ স জ্বা।। महाकारमध्यः ॥ 🗫॥ त्र-ক্রপিত্তাধিকারোক: খণ্ড লমাণ্ড-কো মহান্। রক্তপিভাদিরোগয়ে। महावाजीकत्रः मृष्ठः।। 🗱।। शक्। मुन्रः রসে দ্বোণে সিতা মাঢকসংমিতাং । ঘৃতপুস্মিদ॰ দদ্যালাগরস্য প[্] লাষ্টক ৷৷ মরিচ অভবোন্মান পি श्रुणी विभावाश्विष्ठः। मञ्जिलम्। एक पद्म नर्ब (मकब काइएय् ॥

भरहज्ज्ञारा भाव माक्रबंश भुहानास्य । हूर्नात्युवाः किश्वड ঘনীভূতেবভারিতে ॥ ধান্যক জী-त्रकः भवः हिबकः मृखकः वृहः। বৃহজ্ঞীরক মপ্যত্র গুস্থিত নাগকে भद्रशा अनावीक जवक्ष भूशक् बाडीकन भन्। त्रिषः भीर शु ष्राह अथनः ऋफवषय ।। ज्राय **ट्छाबनारबीक् भन्नमाव मिरः नद्रः** । অথবা নিযতা নাত্র মাত্রা খাদে-ष्य्थानलः ॥ मानवः (मवनामम् वा-कीत मद्राउ ভবে । ममर्था वन वान् भाष्ट्री इरहे। निड्रा निद्राप्यः।। शृङ्गी नामारयण्य क्या भाग म বেচক। অমুপিত্রঞ্চ পিত্রঞ্চ রক্ত लिखक लाखका । वृहक्की द्रकः ना भावतिता । यागुलाकः ॥ **४** ॥ **ण**ः नग् ि रंगा क्रुहिन्। हं गिक्की रहन मा বিত সন্ধু। ভুক্ত ক্ষপণতি সাজ यब्जनिष्ठ॰ ऋभुर्याराग ॥ मुत्रानि हत्त्वापिन्न हन्त्व **त्रङ्गानः। श** खक्र नथ कानीया एक कृष्मा एक नि ह l! দেবজন: স**সরল: পদ্মক** তৃণি-কো ংপি চ। কপুরে। মৃগনাভিশ্চ व हा उउ दिकाशि हा। मिङ्गदः **स**र्खु-भः व्युः कार्डीक्षक् म्ब ह। कार्डी भवः जनभ्यः मृह्याना नङ्जी ह म।

৷৷ ককোলফলক বুক্চ প্ৰক নাগ-কেশর । বালকঞ্চ তথোশীর মাণ্ नी पाक निजानि वा॥ मुद्रा कन् द्वः क म्हानि निल्वा जुमुम्खक । (त्र-७का ह निगङ्ग क म्रीवारमा खग्नुन ख्या।। जाकः नशक दानक शाउ ही জসুম তথা। গুদ্ধি পর্ণঞ্চ মঞ্জিষ্ঠা ত্ত-गद्ग भिक्षक उथा ॥ এ**डा**नि मान भागानि कहीक्छ। भरेनः भरहर । रेडनः भुइभिङ मग्रक् এउ८ भा ত্রে শুভে ক্ষিপেৎ।। অনেনাভ্যক্ত-गावस वृष्का नीजि मसाशि यः। শুভূো ভবতি শুকাঢ্যঃ স্ত্রীণামত্যম দুর্গ 🖭 বন্ধ্যাসি লভতে গর্ভ ব-ণ্ডোপি তৰুণাযতে। অপুত্র: পুত্র মাপ্রেতি জীবেচ শরদা শত ।।চ नानि महारेजन द्रक्रिन उ क्रयः कुत्र । नाष्ट्र भुष्ट्र र (नोर्गक्ष) विश কণ্ড্' বিনাশ্যেৎ।। পত্তক্সণ বৰুম্ इंडि लाक्त । कानीयः कनम् ইতি লোকে। লভাকস্তুরিকা মুষ্ক माना इंडि (लाक्त । क्क्लांवरूव স্যাভাবে জাতীপুল্প গু:ছে । তে । लाजिन वाक्ः ग्राञ्। माक्तिः **छ। माक्**ठिनी। रेमलाय॰ ছत्र इंडि লোকে। জিবাস: গুণুরী ইতিলো (क। गुझिलर्गः गठिवन् इंडि लाक

। यभी जिम्मः यभी जिवार्षिकः । **इन्स्नाहिरेडन ।। # ।। वीका**नि কীশকদ্বাঃ স্বডব মিতানি স্বেদযে-इनकि:। शास्त्र (गास्त्रवृत्य पृथाः यायम् अयम्गाषः ॥ जुगु वि जानि ह কৃত্ব। স্ক্স সংপ্ৰেষভোন। পি क्षिक्या समूविका कृदा गर्वा भ-চেদাজ্যে। দ্বিগুণিত শর্কর্যা বা ব্টিকা: সংপত্ত্বা লেপ্যা: । ব্রটি-का माक्किक मास्य मञ्जन यारगर थिलाः ज्ञान्याः॥ भक्षदेक भिजा-खाख माय भावक जक्राय । व्यत्न मीयु मानी त्या यक मार পতিতধ্ব: ॥ সোপি প্রাথ্যোতি সুরতে সামর্থ্য মিতি বাজিবং। नातन मृष्ण किथिए मुवा वाकी क्द्र• भद्र•॥ वानदीविका ॥ 🗱 ॥ व्याकात्रकत्रज्ञा मुठी व्यवगः व्यक्त्रनः কণা। জাতীফল**• জাতিপু**ল্প• চন্দ नः कार्विकः भृथक् ॥ हुर्नरयम्हः ফেণন্ত তত্ৰ দদ্যাৎ পলোমিত। नर्दामकीक्ष्ठ भाषमावः कौर्पुन **७क्स्यर ॥ मुक्**खस्रकद्र॰ भू॰मा-भिष्मानन्त्कात्रकः । नात्रीगाः श्रीः তিজনক সেবেত নিশি কামুক:।। ইতি ভাবপুকাশ: ॥

माठ बिर्विश यथा । উপायितवयिनी कल विषयिनी वा। कल ज्र्थः
पू:था जावण्ठ । उन कल हाः भु उन्
कल उद्धानः कावनः । उभारवहाः
भु उन्हें के मिका उम्मू कावली ॥ उदभग्रायः। ইहा २ काङ्का ० न्यू हा ८ विश्वा १ मरनाव्यः ५
कामः २ व्यक्तियाः १० उर्थः १० ।
हें उपवार १० विश्वा १ मरनाव्यः ५
कामः २ व्यक्तियः १० व्यक्तिः १० व्यक्तिः ।। व्यक्तिः १० व्यक्तिः १० व्यक्तिः ।। व्यक्तिः १० व

বাঞ্চি তি অভিলয়িত। যথা।
অবিছেদ পঠেন্ধীমান ধ্যাত্বা দে বী সরস্বতী । শুক্লাম্বরধরা দেবী শুক্লাভরণভ্ষিতা ।। বাঞ্চি ফ লমাপ্নোতি সলোকে নাত্র সংশ্যঃ । ইতি বুক্লা স্বয় পুাহ্ সরস্বত্যাঃ স্তবং শৃভা ।। ইতি ভক্তসার: ।।

वाकिनो छो वाकिनोयानाती। उट भग्रायः। विक्षिकार कवज्विहा १० । इंडि बिकाश्यमयः॥ वाकिनीयः भाष्ट्रि बि

वाक्ष क्री आञावृद्धिस्वित्मयः। वाष्टः भू भार्गः॥ वृद्धिः विष्

মেদিনী ।। অপিচ। মুখ নি:সরণে বাটে পাচীনাবেষ্টকৌ বৃতি:। ইতি হেমচন্দু:।।

बार्टम्डना जी भथताथकम्डना। ख्रान्यायः। नञ्जा २। इंडि स्रातावनी॥

ৰাটিকা জী বাস্ত ।। বাট্যালক: । ইতি শদ্যত্বাবলী ।। হিন্দুপত্ৰী । ইতি শদ্*চ*ন্দুকা ।।

बाढी जी बाढेगानकः। इंडि मन-ब्रङ्गावनी ॥ व्यते ॥ वास । इंडि (मिनि ।। (भवनार्भर्य)। वासु-बो(वन्प्र ज्वांहो वाहिका गृश्लाः **७कः। ই**ভি भद्रशावनी ॥ #॥ **७**म् । विभागिक यंथा । विभागिक ক্ৰাচ। কে তে বৃক্ষা: পুশতা । নিবিদ্ধাশ্চাপি কেচন। ভূদা ভূদু-भुना कालि छान् वन्य कश्हरता। কেবামন্ত নিযুক্তঞ্চ লিবিরঞ্চ শুভা मू छ ।। दिनि **स**ब बन छुपू भ मु इक वर <u>भ</u>ुखा। द्वाद्वागक ग्-हाराक श्रीकाद्राराः भ्रमारकः ॥ छनुनुषण का व्यका पिण अब भुवर्त्ता कि भुभाग गृहागाक शुक्तानाः कगम्स्ता ॥ मक्तः भगुत्नाम्यानः दिश्यि स्व उत्ता छ-था। भा शब्र कि भुमानक निब

थानाः मूद्राचेत्र ॥ बात्रानाक गृहा-गाक जाकात्रांगाः जुमागकः। कम्र কস্য তরো: কাপ্ত পুশস্ত শিবিরে-পুভো ৷৷ অমকল বা কেষা বা সর্বণ माः वकुमर्शम ॥ 🕸॥ 🕮 ভगवानुवाः ह। आभुत्म नाजित्वन म शृहिनोक थन भूपः। भिविद्र मा यही भारत भूर्व भू**अभूर खकः ॥ मर्द्र मक्**नार्रक उक्ताला मानाइतः। त्रमान्यः भूविमिन् नृगाः मण्यर भुष ख्या। मू ख्रुरण नर्बंड मूत्रकारता निणामन । विच्रण भनमरेण्य बन्नीरता वस्त्री उथा।। भुवाभुरण भूर्वश्यन् एकिए। धनम् ख्या। मण्यर भूमण्य मर्बे वन তো হি বৰ্জতে গৃহী।। জন্তুক্ক শচ দা-ডिम्नः करवार्गाञ्चक खर्था। वस्नुशुर-क भूर्वियन् मिक्त मिजम ख्या।। नर्वत मुजरिक्त धनम्य म्जन्रः। र्श्वभूति ख्वाकण पक्ति शिक्त छथा ॥ क्षेणात मूथरोकत मर्वः रिजय॰ निष्णागय । जर्बज हष्णकः म्बा ज्वि जुनुम ख्या ॥ वनाः व्काणि बद्याश्वः मायाष्ट्रक जूकाः मुकः। थर्ज्द्री कक्कं ही हानि निविद्र भक्लभूनाः ॥ वाख्कः कात्रविष्ठक वार्तामण मूज्युमाः । नजाकन्य শু ভদ॰ সর্ব: সর্বত্ত নিশ্চিত।। পুশ

ন্ত কথিত কারে। নিষিদ্ধঞ্চ নিশা-भय। # । वन्रवृदक्ता निविक्तक लि-विद्र नगद्बिण ह ॥ व्हो निविष्तः শিবিরে নিত্যু চৌরভয়ণ ততঃ। ন-गात्रयू मुशिषाण मर्मानाट भूगाम छ থা।। হেকারো ভিন্তিডী বৃক্ষো य-चान भित्रवर्ष । भारत भनश्रानः न्तरार भुकाशानि र्जदर युन्।। नि-বিরেহতি নিষিক্ষণ্ট নগরে কিঞ্চি-দেব চ। ন নিবিজ: পুসিদ্ধ শ্চ নগরেষু **७था भूद्र ॥ वाहेग मिकिमिक्स**क भाक ख॰ भित्रवर्जाय । थर्ज्तक **फ्लॅम्बर निविद्धः मिविरद्र उथा ॥** ন নিবিদ্ধঃ পুসিদ্ধক গামের নগরে-বুচ। বৃক্ষত চণকাদীনা॰ খান্যঞ্ मक्न भूमः॥ भारमय् नगात हानि শিবিরে চ তথৈব চ । ইক্ষৃক্ষণ मुखरः मछङ मङ्ग ख्या ॥ य শোকণ শিরীবণ্চ কদযুণ্চ শুভ शुनः । कही इतिरा मुख्या मृख्य "हार्ष खरा। इत्रीजिकी ह भूजना गुारमषु नगरतम् छ। न वाहेशा छन्ना निज्यः उथा हामलकी ध्रुवः । 🗱 ॥ গল্পানা মস্থি শ্ভদ মখানাঞ্ত रिथव ह। कन्तरान गूरेहः भुवनाः वास्छो शाभनका द्विगाः ।। न मुख्नु म मत्नु-या मृह्मकात्रगः शतः । वानत्रागाः

নরাণাঞ্চ গদভানা গবামিপা ॥ অফুরাণা স্গালানা নার্জারাণা ম-ভদুক । ভেটকানা শ্করাণা স (विषाकाणुङ्भुष् ॥ अ॥ विणात চাপি পূর্বমিন্ পশ্চিমে চ তথোত্ত-রে। শিবিরস্য জল ভদু মন্যত্তাশু ভ মেব চ।।।।। नीर्घ भुष्ड नमानक न अर्येशाचानिततः वृथः। ठजूताम् गृह कारता गृक्ति। धननामन ।। मीर्घ পুস্থ: পরিমিতো নেত্রান্ধেনাপি সং-হত । শ্নোন রহিত ভদু শ্না न्त्र भूषः नृगाः ॥ शस्त्र इस्यगार **পূर्वः দী**ঘে হস্তর্যः তথা। গৃহিণা भू अर॰ बात्र॰ शाकातमा गृहमा **ठ** ॥ न मध्रापरमा कर्खवर् किक्छिन्।ना-ধিকে শুভ । চত্রসু চন্দুবেধ শি-वितः भक्षाभुमः॥ व्यञ्कुमः भ्यं। (वक्षः मिवितः सक्षाशुम्। जानम्मः मृर्यः (तथः भाष्ठाक्रनः ७रेथव ह ॥॥॥ শিবিরাভান্তরে ভদাু স্থাপিতা তুল-भी नृगा । धन भू अ भू माजी ह भूगाः দ। হরিভজিদা ॥ পুভাতে তলসী• मृष्टुः वर्गनाग्यन लाउट। मान्छी य्थिका अनर माध्वी किउकी उथा ॥ নাগেশ্বর॰ মল্লিকা চ কাঞ্চন॰ বন্ধল• শুভ'। অপরাজিতা চ শুভদা ভেষা मून्यान भी श्रु उ॰ ॥ भू (इ ह निकार)

'চেব শুভন• নাত্ৰ সংশবঃ। 🛊। উদ্বু **रवाउन्न इ**रखरङ्या रेनव॰ ऋर्यप्राप्तगृह॰ গৃহী।। উদ্ধ বিশ্বতিহয়েভাঃ পা कातः न मूज्शुनः। 🕸। স্ত্রধারः তৈ वकात्र वर्गकात्रक श्रीत्रक ॥ वाही भूल गुामभाषा न कर्ग्या आश्री वूषः। तुष्मा भ किया दिना अर-म्मू गाक मुख्।। ७४ रेवम्। পুষ্লকার স্থাপথেৎ শিবিরান্তিকে । 🛪। পুস্থে চ পরিথামান শতহ-ন্ত পুশন্তক ।। পরিত: শিবিরাণা-ঞ্চ গদ্রীর দশহস্তক। সঙ্কেতপূর্ব-কক্ষৈব পরিখাদার মীপ্লিত ৷৷ শ-তো রগন্য মিত্রস্য গম্য মেব সুখেন চ। #। শাল্মলীনা তিন্তিডীনা श्चिलाना॰ उरेथव ह ॥ निम्नाना॰ সিন্ধুবারাণা• উড়্বরাণা মভদুক•। প্রস্তুরাণা॰ বটানাঞ্চাপ্যের ভানা ম-বাঞ্চিত ৷৷ এতেষা মতিরিক্তানা শিবিরে কাপ্ত মীপ্পিত । বৃক্ষঞ্চ বজু-२७क मृत्राजा वर्द्धाराष्ट्रयः ॥ भूव দার ধন হন্যাৎ ইত্যাহ কমলো-দ্ভব:। কথিত লোকশিক্ষার্থ অক কাপ্ত বিনা পূরী া শুভক্ষণ চাপ্ত थुना शह वटम यथाम्थ । इंडि वुक्तरेक्टाई श्रीकृषण्यथा ३०२ व्यथ्यायः ॥

বাড বাটী ত্রি বেপ্টিতস্থলভাগঃ। ইত্য-मद्रः ॥ यद्धवार्वे मूलमृठ्य इंडि রামভদোকি:। বাট: পন্থা ইতি वहवः। वाष्ट्री वृष्टि ति छ मधुः। বাট বাট চ। ইতি ভরত:।। वाही भीर्यः भुः हे ८ कहे वृक्तः। इंडि ब्रञ्गाना ॥ বাউক ল্লী ভৃষ্টবব:। ইতি **শদ टिम्मुका** ॥ বাট্যপুত্ৰী ত্ৰী বাট্যালক:। ইতি ब्रञ्जाला ॥ वाष्ट्रेत ज्ञी वाष्ट्रेतालकः । इंजि ब्रङ्ग-माना॥ वाह्यानः भू वाह्यानकः। इंडि भद्रज्ञावनी ॥

वार्षितानाः मु क्षृभविष्मयः । वार्षियाना इति ভाषा। उर्प्यान्यः। भी उभाकी २ वार्षेत्रा ० ज्यानि मनी ६ वना ६ वार्षे ७ विनया १ वार्षेत्रानी ৮ वार्षिका ৯ । इति भक्त ज्ञावनी ॥ व्यम्पर्यत्रायास्तरः स्थान्ह वना भारत पृष्ठेवताः॥

वाष्ट्रेजानी खी वाष्ट्रेजनकः। इंडि

বাড ঋ ড আপ্লাবে। ইতি কবি বল্ল ছনঃ। ঋ অববাড থাড বাড তে লোকঃ। আপ্লাবঃ ম্লান•। উমজ্জ ন•। ইত্যেকে। ইতি দুর্গাদাস:॥। বাড: পু• বেষ্টন•। ইতি শব্দ-মালা॥

বাঢ় ল্লী অভিশয়: ।। পুতিজ্ঞা।
ইত্যমর: ।। বাঢ় মিত্যব্যমপীতি বৃদ্ধা: । ইতি ভ্রেরত: ।। বাঢ়ত্রিষু দ্টে ল্লীব মনুম্ত্যা মথত্রিষু।
ইতি নানার্থরত্নমালা।।

वानः भू णदः। इठामदः। (मा-छनः।। रिष्ठा (छनः।। (कवनः।। इठि (मिनि)।। व्यक्तिः। इठि छि-का अप्लयः।। का आवर्यतः। इठि विषः॥ छनुमूक्षः। इठि द्राष्ठ-विषंटः।। कविवदः। इठि धद्रनिः॥ व्यन्धः भू वाभन्छः। छट-भर्यायः। (दमा २। इठि (इम-हन्तुः॥

वानभूतः क्ली वानताकभूतः। उद्-भग्रयः। प्रवीत्काहेः २ क्वाहीवर्षः २ উषावनः ८ म्पानिउभूतः ६। ইতি ত্রিকাওশেষः॥ আশ্নেষः ৬ উমাবনः १ কোউরীপুরং ৮। ইতি শক্রজাবলী॥

^{বাণপুত্র।} জ্ঞী শরপুত্র।।ইতিরাজ নির্ঘণ্টঃ॥

गण्डेषः भू॰ गुष्टकात्रविष्णवः।

यथा। ननु मक्ष कथ किया छ मक्नाषिष्ठपुरमः विष्ठपुरमार शा-রিপ্দিত সিদ্ধি রিতি চেম। বাণ-ভউাদে মঞ্লে সভ্যপি গুন্থসমা-গুড়ভাবাৎ মাঘাদৌ মঙ্গলাভাবে-**शि मगा** छ मर्मनाट । इंडि मुक्सः (वाष्ठीकाया॰ पूर्नामानः।। বাণবার: পু॰ ভটাদেশ্চোলাক্তি नमारः। ७८ भर्यप्रायः। वात्रवानः २ वाद्रगः ७। ইতি भरवङ्गावली ॥ চোলক: ৪। ইতি হারাবলী।। বাণসুতা স্ত্রী উষা। ইতি শব্দ-त्रज्ञावनी ॥ বাণহা পু॰ বিষ্ণু:। ইতি ছেম-हन्मः ॥ বাণা দ্রী পূ॰ নীলঝিণ্টী। ইত্য-गद्रः ॥ বাণা জ্রী বাণমূল। ইতি মেদিনী॥ বাণারি: পু॰ বিষ্ণু:। ইতি কেচিৎ।। পু• ধনু:। ইতি হলা-বাণাশ্য: युवः ॥ ত্ৰী ধনুঃ। ইতি হলা-ৰাণাসন• युषः ॥ ন্ত্রী বপন•। ইত্যমর:॥ বাণি:

বাপদণ্ড:। ইতি হেমচন্দু:॥

मख्जी। ইতি (रुभहन्तुः॥

বাণিনী জ্ৰী নত্তকী ॥ ছেকঃ ॥

বাণী জ্রী সরস্বতী। ইত্যমর: ।। বচন• ।। বপন• । ইতি শব্রব্রা-বলী ।।

वाङ ठ्क गिडिस्मिवराः मूर्थ।
इडिकिविक्सक्तः ॥ व्यवाड्ट।
ख्राश्थाः । द्रमानाथञ्च गिडिमूथ
स्मिवरा द्रिडि मद्रा गर्डो मूथः
गिडिमूथः । वाड्यिड भाइः वाडः
गहरः मूथ्यडीडार्थः । ইडाह ।
मूथस्मवनस्या द्रिडिकोमद्राः। ইडि
मूर्गामानः ॥

वाठः भू भक्ष गृहा त्र गंउह जूर्य नृतः। বাতাস ইতি ভাষা। তৎপর্য্যায:। গন্ধবহ: ২ বাযু: ৩ প্ৰমান: ৪ ম হাবল: ৫ পৰন: ৬ স্পৰ্শন: ৭ গন্ধ-বাহ: ৮ মৰ্ৎ ১ আশুগ: ১০ খ-जनः ১১ माउतिथा ১२ नज्यान् **२० माक्**डः २८ ञनिलः २८ मनी-রণ: ১৬ জগৎপুণণ: ১৭ সমীর: ১৮ महाग्राज: ১৯ জीवन: २० शृषहर्यः २) उत्रची २२ भुज्छनः २० भुषा-वनः २८ जनवङ्गनः २৫ धृननः २७ মোটন: ২৭ খগ: ২৮। অস্য গুণা: । विद्रवः। लघ्दः। भी ७दः। क कद् । मृक्षद् । मःक्कानकद् । স্তোককারি বৃষ্ণ।। তস্য কোপকা द्रगः यथा । नाषुर्यावक्षचनः ।

नाजुकानः। जनदाङ्कानः। गु ज्रवकालः। अन्नजीर्गमयणः। ইভি রাজনির্ঘণ্ট: ॥ 🗱 ॥ রোগবিশেষ:। यथा। व्यथ वाउवताश्वत्रकाद्रः । তত্ৰ বাতব্যাধীনাং সামান্যতো বি-अुकृष्ठे निमानान्यात्र । कथाय कर्षे তিক্তক পুমিত কক্ষ লম্মত:। পুর: প্রনজাগর পুতরণাভিঘাত भुरेमः॥ शिमापनणनाख्या निषुवः नाह शाजुक्षयाय भनामि त्रभवाते-गाद महन त्माक हिन्ना चरेगः। व्यक्ति क्रज्जाभाक्षार गरक्जाजियाः जक्रवार जीव वसनाभृगा स्विविद्धः **ठनामामञ: ॥ भारताम्मनारम मिन** क्र १ एवं अधियाः व्या क्रिया स्थ्या स्या स्थ्या स्या स्थ्या स्या स्थ्या গতে প্লিভে লিলিরস-জ্ঞকালে ৎপি চ। দেহে সোতা সি বিকানি পুর্যিত্বা নিলে। বলী। করোভি বি विवान (द्रागान् अर्दादिक्काक् मः न যান্।। পুমিতঞ্চাত্র বৈপরীতের পুে। পদর্গ তেন অপরিনিত মিত্যর্থ:। পুৰ্যেণ মিত মত্যল্ল বা লঘ্ন আ जिभूबागः भान्। कि कि कि मिला নি নবান্যপি বাতলানি। যত আহ । खन्तत्रवालायाः । नीवात्र ज्ञिलूहेः সতীন চণক শ্যামাক মৃদাঢকী নি ञ्जावाण नज्यक्षेकण व्यवे। नवणः

ক: কোদুব: ॥ এতে বাতকরা ইতি। (भवः। नीवादः शुप्राधिका छीनी इंडि लाक । जिश्वेः यनात्री । मः ভীন: কলাখ:। নিস্নাবো রাজমাখ:। বোডা ইভি লোকে। মম্বইক: মোচ इंडि लाकि। व्यप्तै। व्यप्तिका वय-दि इंडि लाक्षा सङ्ग्रकः समूत्री इंडि (बारक। भूत्रः भवनः भूष्याङः । जामञः जामिन मार्गावद्रगार । ষত উক্ত•। বাধোর্জাতুক্ষবাৎ কো-(भा भार्गम्यावद्रायनात्र्वः । भारवा-मनमाय वर्षामु । कक्का मिलगाउ ৎশিতে ভুক্তে २ গীবন্ধীৰ্ণতাঙ্গতে। (रह (मुखां मी ग्राहिना मंभुाधि क्छा। क्यायानि जिल्लंजु जि वर्षानी সমৰে হেতৃভ্তে বলী অনিলঃ পু ब्राचा वायुः काद्राजि विविधान (द्रा-গান্। তে রোগা: কথ্যম্ভে। 🕸। শি-রোগুছো হল্লকেশত্ব• জ্ঞাত্যর্থ• হ-नृगुरः। बिखा उस्ता गमगमदः वि মিনত্বঞ্চ মূকতা।। বাচালতা পুলা। পশ্চ রসানা মনভিজ্ঞতা। বাধির্য্য कर्गनाम्क म्यार्भे छात्रुः छथा प्रिंउः ॥ মন্যান্তস্তোত্র গণিতো বাহুশোষো-পৰাভ্ক: ৷ চৰিতা চৈৰ বিশ্বাচী 🕸 ষ্বাত উদীরিত:।। আধ্যানঞ প্রত্যাধ্যান বাত্যুষ্ঠালা প্রত্যুষ্ঠালা।

ত্ণী চ প্ৰিত্ণী চ বহি বৈষম্যমেৰ **ह** ॥ आहि। शार्श्वगृत्यक जिक्म् नः उरेथव ह। मुङ्ग्ह मूबनः मूब-निगुरहा मनगाएँ । भूतीयम्। भू-ব্জিম্চ গৃধুসী চ ভতঃ পরঃ।। কলা-পথঞ্জতা চাপি খঞ্জতা পঙ্গুতা छथा। (कार्र्श्मीर्यक शामा) ह वा उ-কণ্টক এব চ।। পাদহর্ষো পাদদাহঃ আক্ষেপা দওকাভিধঃ। বাত পি ত্ত ক্তাকেপ তথা দ্ভাপতানক: ৷৷ অভিঘাতকৃতাকেপ আযামো দি-ৰিব: শৃত:। আন্তরক তথা বাছো **धन्वां उक्त स्तुकः ॥ अभ**जत्त्वाभः ভানশ্চ পক্ষাঘাভো হথিলাক্ক:। कम्भ खासु। वृष्यः (अरहा (अहम्फ সূরণ তথা।। রৌক্ষণ কার্শ্যঞ্চ কা-कं कि रेमडा॰ लान्। क रुर्यनः। ज-क्रमार्फा २क्षविज्ञानः भित्रानाकाठ এব চ। অঙ্গশোষশ্চ ভীৰুত্বু মোহ भ्रम्भविष्ठि ।। निम्नानाणः (स्रम्नाः (मा वलशानि खरेथव ह। मुकक्राया রজোনাশো গর্ভনাশ: পরিশুম:॥ এত এবাশীতি সংখ্যা রোগা যো-গেন কৃতিতঃ। বাতব্যাধীতি নামা-নো মুনিভি: পরিকীর্ভিতা: ॥ # ॥ এভত্রব শিরোগুহাদয এব। যোগেন বাতেন। বাভাদা ব্যাধি বাঁতব্যাধি রিতি নিৰুক্ত্যা তদা বাতজ্বাদিশ্ব-পি পুসস্ব:স্যাদত আহ ক্টিতঃপু-निक्षितः॥ निर्त्ताशुक्रामस्य श्नी-তি রেব বাতব্যাধিসংজ্ঞা পুসিদ্ধা न जू वाउक्दबामयः ॥ # ॥ **चथ वा**-ভব্যাধীনা সামান্য চিকিৎসামা হ। মধুর লবণ সামু স্থিমনস্যোঞ্চ নিদা ভক রবিকর বস্তি মেদ সম্ভ र्भगानि । पर्न बन्द (मकान्ध्रक् সংমদনানি পুস্পিত প্ৰমান শা-স্ত নে তানি **স্**যুৰ্ত:। ইতি ভাবপুকা-শ:।। #।। অপিচ। বল পূষ্টিকরা-ণ্যের বাসুবীজ নিশাম্য। ভোজ-नानच्दर महिं। गनन श्वान ख्या ॥ (इन्न विङ्कानम मथक्त्रन रिमथून । वृक्तञ्जीगमनरिक्त मनः म-স্তাপ এব চ ॥ অভিক্রন্ধ মনাহার॰ যুদ্ধ কলছ নেব চ। কটুবাক্য ভব **(मार्कः (कदवा वायुकाद्गाः ॥ ज्या-**জ্ঞাখ্য চক্তে ভজ্জন্ম নিশাম্য ভ (भोषधः। #। शङ्जुञ्जा कनरेक्षत गवीब भर्करत्राप्तक ॥ नात्रिरकरणा-मकरेकव मम्बद्धकः मृशिष्ठकः। ना श्यिनाधि भिष्ठेष (करने वा भाक ब्र·॥ अम्राः भगुर्धय ामक स्त्रीी-तः भी अलामकः। भवते अविश्मा वक्ष जिन्देजनक (क्वनः।। नाक्नी **ভाल थ**ड्ड्র मख मामलकी पृत्र । শীতলোঞ্চোদকস্মান সুস্মিগ্ধ চন্দন-দুব ।। স্থিপদাপত্রভল্ল সূসৃদ্ধ ব্যজনানিল। এতত্তে কথিত বং-त्म जात्रा वाज्युगाननः ॥ वायव-জ্বিবিধা: পু•সা• ক্লেশ সম্ভাপ কাম-काः ॥ इंडि ञी वृक्तरेवराई वृक्तथर७ ७७ व्यथायः ॥ 🗱 ॥ व्यन्तरह । विवृश्ति-নস্থ শ্যোনাক পাটলা পারিভদুকা । পুসারণুগুগন্ধা চ বৃহতী কণ্টকা-রিকা॥ বলা চাতিবলা রামা খদ•-क्षे ह भूनर्गा। अब्र ७ माबिया भगी खड्ठी किनिकहतः ॥ এवा॰ मणन-विकान् ভागान् दाथरय अवितव হ্মলে। তেন পাদাবশেষেণ ভিলা भाव विभावत्य ॥ जान वा यि বা গৰ্যু ক্ষীর দত্ত্বা চত্ত্র্বণ। শ **ভাবরী রসঞ্চিব তৈলতুল্য॰ পু**দা পথেৎ ॥ 🛊 ॥ দুব্যাণি যানি পেষ্যাণি তানি বক্ষ্যানি ভচ্ন ॥ শতপুয়া (एवराक भागभा भागे वहा छकः ॥ अ भा॰भी रेमऋवक्ष भवासकः भुनर्गवा । भारत नरमा उथा बारक रेउनानः उर भूपाभारत ॥ क्रह्न भार्थः म्लक्ष मख्यालाक नामारट। यः পন্মারণ বাভরত মানুন্মাংশ্চ পুনাং न् ७८१८ ॥ शर्ख मध्यवदी विनर्गाट

कि॰ भून मान्यी निव। अधाना॰

वाजज्ञानाः व्यक्षत्रागाः नृगाः

ख्या ॥ जिन भिष्ट भूमाख्याः

अर्दवा छविकादिगा । भूनण्ड । भनष्य रेमक्षवक मुश्री विवक भ-ककः। नक्षभुद्रः दात्रनालः रेडलः পুস্ত পচেত্তত: ॥ পুহৃগৃহ্য প্লব श्लीर मर्बवाउविकाब्रन्ट । इंडि गाक्ष अभ वाष्रायः॥ বাতকঃ পু॰ অশনপণী । ইত্য-द्यः ॥ वाउकर्ग की मक्टकिया। भर्मनः। यथा। वाद्राष्ट्र উवाह। ज्लुन्यमा तिन भ ज्भ वाजकर्म भुमूक्छ। **এব॰ हि পু**क्रा युक्ता वाउनी **ডিত মানসং॥ मिक्का शक्ष**वर्ष। नि बीनिवर्षानि भूषकः । श्वा रेठव बीगि वर्षाणि क्रमा देव कायर नव ॥ এষু বৈ তাপন দেবি নেহন মম শংসতি। যো বৈ শান্ত্র বি-জানাতি মম কর্মপরায়ণ:।। শুদ্ধা বাক্য ভগবতো পুত্যুবাচ বসৃন্ধ-त्रा। **क्ष। ध्र**पुर्वाह। व्यञ्ख॰ वज তে পাপ তব কর্মপরায়ণ:। ভস্য प्ति मुथार्थाय विमुक्ति वक्तूमईनि ॥ वाजाङ् উवाहः। मृगु कारुः सुर्व भ (मित कथ्रमानः मयान्य। य

পরাধ মিমণ কৃত্বা সম্ভরেদ্যেন ক-ৰ্ম্মণা।। যাবকেন দিন ত্ৰীণি নক্তেন **ठ भून ख्रयः। कर्य रे**ठवः छङ: कृड्वा স চ মে নাপরাধ্যতি ৷৷ সর্বশঙ্কাণ পরিত্যন্ত্র মম লোকায় গছতি। এভতে কথিত ভদে মৰুৎকর্মা-भद्राधिनः ॥ (नाषरिकृत खेनरिकृत খৰুখা পরিপৃছিত । ইতি বরাহ भूबात मक्रकर्मभूगयिक छ।। বাভকা ত্রি বাভরোগযুক:। তৎ পর্য্যায:। বাভরোগী২। ইত্যমর:॥ । ইতি হেমচন্দু:।। বাতকেতুঃ পু॰ ধূলি।ইতি ত্রিকা-अल्यः॥ বাতকেলি: পু• কলালাপ:॥ বি-एगम्डक्र उ:। इंडि (मिनी।। বাতগানী পু• পক্ষী।ইতি কেটিৎ॥ वाउद्धनाः शू वाज्नः।यथा। वाजूला वाजछन्त्रः माहाववाग् र्निनाघडाः । याञ्चानितः भाग्विष्डा বাসন্তো মল্যানিল: ৷৷ ইতি ত্রি-কাগুশেষ: ৷৷ রোগবিশেষ: ৷ ভস্য निनानानि र्थनाभाय पुष्टेवाः॥ वाउमी जी भावभगे।। अध-গন্ধা।। শিম্ডীকুপ:। ইতি রাজ-निर्घणः॥

वाउठ्नः जी व्याकारभाष्ट्रीयमान-मृदः । दूषित्रमृता देखि जावा । ख्र भर्यागः । तृकमृद्धः २ हेन्द्र-ज्नः ० श्रीयाद्यामः ८ वःभक्षः ८ नक्षतः ७। देखि हात्रावनी ॥ वाउध्वः भूः (भधः । देखि भद-भाना ॥

वाउनिडम्म्न क्री म्मातागितः ' म्पाः। उत्र अवशः यथा। माजुः मूक्त निर्यातः छजांकान त्रमः विङः। वाउनिडम्मानि इडि विभागाः। ইতি গাক্তে ১৮৮ অধ্যাবः॥

বাতপুত্র: পু॰ মহাধ্র্ত্ত: ॥ ভীম-সেন: ॥ হনুনান্। ইতি মেদিনী ॥ বাতপোথ: পু॰ পলাশক্ষ: । ইত্যমর: ॥

বাতপুনী: পুণ জী বাতম্গ:। বাওট্ইরিণ ইতি ভাষা। ইত্য মর:॥ নদল:॥ অখ:। ইতি সংক্ষিপ্তসারোণাদিবৃত্তি:॥

वाउक् झाख॰ ही भूक्षू मः। ইতি ভ্রিপুযোগঃ॥

वाजनबः भुः वाजम्गः। ইতি कोषतः॥

वाञ्मखनी जी वाज्य। ইভি जि-काखरमयः॥ বাতমৃগঃ পু• বাতপুমী:। ইত্য: নর:॥

वाउद्रक क्री द्वागविष्णयः। उत्रु विशुक्षे निमान माह। नवनाम कर्षे कात त्रिष्भाकाकोर्ग्रजाकरेनः। क्रिम मुक्राचुकान्त्र भाष्म निग्राक मूल-रैकः ॥ जनय माम निञ्जात जा-कारि भनामकु छि:। रथ्। प्रमान न সৌবীর শুক্ত তক্ত সুরাসবৈঃ।। বিৰুদ্ধাৰ্যশন কোৰ দিবাৰপাতি জাগরৈ:। প্রায়শ: সুজ্মারাণা বি থ্যাহার বিহারিণা।। সূলানা সু থিনা চাপি পুষপ্যেদ্বাতশোণি **७** । इस्रायाहि ग्राइ काम्उक বিদাহ্যর সংবিদাহাশনস্য। 🕬। कारता यवकात्रापिः। जडीर्गछाः **क्रोनः अ**कीर्नाय (ভाइरेनः। अउ भाज (डाक्ररेन ब्रिड)र्थः। क्रिवामीनि মা-সম্য বিশেষণানি। ক্লিম্ব শটি-তণাশুষ মাতপেশোবিত। অমুঞ মৎস্যাদিমাংসং। আনুপং গৌ डामि भूर्वत्मक गाः मः। भिग्राः ক তিলখলি:। মূলক পুসিদ্ধনে ব। নিম্নাব: বোডাশাক । শাক প্রশাক ৷ আদিশক্ষেন বৃষ্ঠা कारीनि कलणाकानि गृश्ड । भननः महिञ्जाहि (हायब्रहिञ

মপি মাংসং ব্যক্ত শোণিত পুকো-भाष्ट । भग्निजानि जू माध्यः वि শেষতো বাভশোণিত পুকোপ (१८। चात्रगण मक्षान छनः। णुक अक्षान (छमः। (भोवीतः मः क्षानरचन:। ७कः ठवूर्थाः**न ब**-वाग्कः वञ्जभूकः पश्चि। भूदा मञ्चानः ভেদ:। আসব: সন্ধানভেদ:। বি क्षः कीत्र मर्माहि। अध्यानः। ष्मकीर्त ज्कारा यनु जनपामनमूहा-তে। অভিজাগরে। নিশি। পুায-भः व . ङ्ला । मूक्रमा द्वागाः व्यन्न-ভরকাযব্যাপারাণা ৷ অথবা ৷ মি-থ্যাহারবিহারিণা । অযথাহার विश्वाजाण कृषाना॰ मृथिनाव ब्रक्षा। इस्रायारिष्ट्रे ग्रहाः य (3) वागू विविष्ठ (3) कि विविश्वारिया ग-हि । इस्राप्य उभनक्षानि। भ-ড্যামপ্যতিচলত:। অশ্ব: বিদা-श्रम । विषादि निय्नावं क्लाथ नर्यश माकारि। न॰विराहामनम् । मःविनारः १ भनः यमः जुरक বিদম্বে ভদুপরি ভুঞ্জানস্যেত্যর্থ:। অধ্যশন মুক্ত্বাপ্যেতদ্বচন বিদ্ধা জীৰ্ণভোজনস্য বিশেষতো হেতুত্বা-र्थः। भण्डार वाज्यमानितः पुत्रः পে এদি ত্যনে না নুখ:। এতে ষা । কার-

ণানা মধ্যে কেনচিদ্বায়: কেনচিদু ভयमिल भुक्रा १८ ।। का मा मन्त्राधि भार । क्टम अक विषर्गाम् **७६ मृष्टे॰ সুग्र॰ शामरया म्हीयर** जू। खर मःशृकः वायूना मृविराजन खर्-भावनाम्हाउ वाउतकः॥ भ्राची-कि र्ह्जुिः क्रमः ममसः वकः বিদহতি অত্ত দহধাতু রবিবক্ষিত কর্মক:। তেন বিদহতি বিদশ্ব ভব-তীত্যর্থ:।তচ্চ দৃষ্ট রক্ত । সুস্ত অ-বোগত। পাদযো শ্চীযতে সঞ্চিত্ত ভবতি। ভদ্ৰধির• দুখিতেন স্বংহত্যা-যুনা সংপৃক্তং মিলিভং বাতরক্তং উ-চ্যতে। ননু চৈত্স্য সংপাণ্ডি ক্ক্ত। সূশুতেন। শীঘু॰ রক্ত॰ দৃষ্টি মাযাতি ভই বায়ে। মার্গণ সংক্রণজ্ঞাশ বাভঃ। कुष्का २७७० भागंत्राधार न वायु त्रजुर्िक म्यरमूक माम्॥ वज পূথন বক্তম্য দষ্টি রতো রক্তবাত-মিতি ব্যপদেষ্ট্র মুচিত ভবভাত আহ। তৎপাবল্যানিতি। তস্য বাতস্য দোষত্বেন প্রাধান্যাদ্বাতর-ক্ত মিতি ব্যপদিশ্যতে ॥॥। পূৰ্বন-পনাহ। দ্বেদো হত্যর্থণ নবা কার্শ্যণ স্পাজ্তত্ব ক্ষতে হতিক্ক্। সন্ধি লৈথিল্য মালস্যু সদন পিডকো-प्राम: II कान् बर्द्धाक करे। म इस

भाराक्त्रक्षियु । निष्डारः सुद्रशः ভেদে। গুৰুত্ব সৃপ্তি রেব চ ।। কণ্ড্: সন্ধিষু ৰুক্ দাহো ভূত্বা নশ্যতি ठामक्ट। रेववर्ग्यः मखलाटमिङ र्वाञामृक् भूवं वक्षा ।। 🗱 ।। 🖼 থাধিকৃতবাতস্য বাতরক্তস্য লক্ষণ মাহ। বাতেথিকে হধিক তত্ত্ৰ শ্ল সুরণ ভোদন । শোপস্য রৌক क्षवः भागवजा वृद्धि शानयः॥ धन-नाकृ लि मसीना॰ मह्माहा १क्गुरहा **९** जिंकक्। भी जाब या नू गणायो खग्र বেপথু সুপ্তয়: ॥ তত্র পাদযোঃ শু-লানিক মধিক । যত আছ সুশুত: । म्यानी द्विद्यो (जाम्ब्जम् नुरमारको স্থাপোপেতৌ বাতরক্তেন পাদাবি-তি। অত্র সৃপ্তি: স্পর্ণাক্তরা॥ 🗱 ॥ খবি হরক বাহরক মাহ। রক্তে ান্ডিনাং**তে। গ্ৰি**গ কলৈ: সাক दैनिত কণ্ড্ৎক্লেर সমস্বিতঃ॥ 🗱। 🗷 विक शिख जनाए। शिख विनारः न भारा इ: (बर्या मृहा मन छ्या। न्त्र-मांगरदः कपारः मायभाको जृ **ल्याक्छ। ॥ विराह्क श्राहा** (दव বোদ্ধব্য:। যত আহ সৃশুত:। পি-खाम्युत म्युहारही छव्जा मङ्र र्थाको बङ्गायो मृतू ।। भा

माविजिभ्मयः॥ 🗱 ॥ यदिकककः जनाष्ट्र। करिक रिखमिका खक्रका मु. প্তি স্থিত্ব শীততা। গুক্তাদ্য: পাদযো রেব। যত আছ সৃশুত:। কণ্ডুৰন্তৌ মেৰুশীতৌ সশোথৌ পী-नस्तो (न्यामु 🗱 जू द्राकः ॥ 🗱 ॥ অতিক্রিয়মাণ বাতরক্তস্য উপদ-বানাহ। অধ্বপ্নারোচক স্থাস মা•স-কোথ শিরোগুহা: ৷ মৃর্টা চ মনকেফ্ তৃফা জ্ব মো**হ পু**কোপকা: ॥ হি-ক্লাযাক্ষম বীসর্প পাক তোদ ভুম क्रमाः। अञ्जीवकठा एकारे पार মর্মগুহারু দা: ।। মা•সকোথে। মা•-नगनन ॥ 🗱 ॥ व्यनाशुद्धारिक নাহ। এতৈ কপদুবৈ ৰ্বৰ্জ্য মোছে-निक्ति वाशि यथ । अकृष्याशिषुवः याभाः नाक्षः नाक्षकभूवः ॥ **अश्रमायानुगः भाष्यः नवः याष्यः** दिरायक । जिल्लायक गुनाया म्याप्यम् ह म्यु कशम्याः॥ #॥ অথবাত বক্তম্য চিকিৎসা মাহ! বাত্ত শোণিতিনো রক্ত• স্থিকার ব ल्ला रख्ट। यन्नान त्रम अविष् यथा (माय॰ यथावन॰ ॥ उगा क मार खाएम कलोका छ विं निरुद्धि । भृष जुरेव किनिधिन। क श्लाद्यम् ना दि छ॰ ॥ श्रुहि सन णित्रा-

कि वी पिणापिणास्त्र वुस् । च-কে স্লানে ন তৎ সাব্য কক্ষে বাতো-ন্তরঞ্চ য়ৎ।। গস্তার• শ্বপথু• স্তস্ত কম্প গ্লানি শিরাম্যাৎ। রোগান-ন্যা ক বাতোত্থান্ সর্য্যাদ্বায়ু রর-किछ: ॥ विविधान् वा अताशान् वा মৃত্যু বাত্যবশেষিত। রক্ত পর্য্যা-ত্ততঃ স্থিপাত্তৎ পুমাণেন নির্হরেৎ।। वित्रहरयकु भिकारने स्मृहणूकि वि (ब्रहति: । वाक् भारतभा छात्र भः तिरवरकाशना**र्रेनः ॥ वि**रत्नकाञ्चा-পনা স্নেহপানৈ গম্ভীর মাচরেৎ। দিবাৰপুঞ্চ কোপঞ্চ ব্যাযাম• নৈথ্-न उथा ॥ कर्ष्यः अर्बाख्यानिर ल वनात्मी ह वड्डिंस्ट। भूदाना यव .গোধুন শালয়: বস্তিকা তথা।। ভো बनार्थ द्रभार्थ जू विद्यताः नुज् দা হিতাঃ। আঢকা শুগকা মুদ্ধা ম-সূরাঃ সহলেথকাঃ। যূষার্থে বহুস-পিন্ধাঃ পুশন্তা বাতশোণিতে ৷৷ সু নিষাক বেত্রাগু॰ কাকমাচী শতাব-রী। বাত্তোপোদিকাশাক॰ শাক• भीवईनः उथा॥ घृउ भाग द्रोत पृष्टे॰ **माक म**रम्या ह माभायर । शिखा गाथूम ह्रेनेन्ह ছागक्की व य् **उ**श्रुरेड: ॥ (नभरुष्ठिन। ज्हेा: शिष्टोः भश्नि निव्'ाः । क्षीविशः ॥

क्षेत्रज्ञी अर्थ वर्ष मान करेन ज्ञान ॥ पूर्विविद्धेः भूरविशः महाविष्ठः भः বনশোণিতে॥ 🗱॥ গুড়ুচীশ্বাপ ক ল্লাভ্যা॰ সপযক্ষণ ঘন• সৃত•। বাত-त्रकः निरुष्ठाण् अष्ठः रुत्रकि मुखद्रः ॥ ७ ज्वीय्ड॰ ॥ 🗱 ॥ जुना॰ ने हि॰ দ্ওড্চ্যান্ত জলদ্বোণ চত্&যে। পা-म्लायः क्यायस लामूकः प्नानक ख्या ।। जिन्देन्नाहक• जान्ता• **न**-**टिम् प्रिना ভिषक्। वक्ष्यभारेन छ-**তा मुरेवाः ममाक्रक्षीक्रैं अः भार ।। मिक्किश मधुकः अष्ठः जीवनीयगन खथा। এलाध्य ह मृघीका मा जी वाषुनत्था नथी ॥ इत्त्रपः भावती (व) विश्व श्रिता जानको उथा। मृ-की শ্যামা শতাহ্যা চ বিফুকান্তা চ পত্রক ।। নাগকেশর বাল ত্বক্ পদ্মকে। প্ৰভাৱ কৰ্ **प्रवज्**नि कथिजानीश (काविरेमः ॥ পানে শভ্যক্ষে শনুবাসে চ ভৈল নে-**७** विषयिदि । वा उत्र क • ७ मृ प्रृ-(जाभन्वामान् नान्तर्थ ॥ धन्। পু•সবন•জীণা• গর্ভদ• বাত পিত্ত-নৃৎ। যেদ কণ্ডু ক্জালান শির: ক-म्मार्ष्मि जानयान् ॥ इन्। ष्विक् जान् দোষান্ গুড়গী তৈল মুভ্ৰম॰। ইতি গুড়ু চীতৈল। ইভি ভাবপুকাশ:॥

मूडा इंडि ভाषा । इंडि नद- । किन्द्रका॥ वाय्काद्रक वि॥ विम्का॥

বাতরকারি: পু॰ পিভারীলভা। ठिन्त्रिका ॥

বাতরকঃ পু॰ অখথং।ইতি শদ ब्रङ्गावनी ॥

বাভরথ: পু॰ মেঘ:। ইভি ত্রিকা-ওংশব:।।

वाजब्रायगः भुः উद्यत्तः॥ निष्ठुः যোজনপ্ৰথ: ॥ কাণ্ড॰ ॥ কর-পাত्रः॥ भव्रभः क्यः। हेडि (मिनि ।। সরলজন:। ইতি শব-ब्रङ्गावनी ॥

बाउबवः भू॰ वाज्वः॥ উৎকোচः ॥ শক্ৰবনু:। ইতি মেদিনী॥

বাভরোগ: পু॰ বাযুব্যাধি:।তৎ-भर्य)ायः। वाजव्याधिः २ व्याजकः अनिवामयः३। ইতি রাজ निर्घणः।।

বাভরোগী বি বাভরোগযুক্ত:৷ यतः ॥

र्भिजनायः। **उ**९नर्गायः। काष्ठः विषः। ইতি रेवस्वकः॥

वाजब्रक्यः भुः बक्वव्यः। अभवः। वाजनः भूः हनकः। इति भन् वाउनमखनी की वाउगा। इंडि ज्ति शुरयागः॥

धनक इंडि ভाषा । इंडि भक् | वाठवान् वि वायूय्कः। वार्डाः বিদ্যাত হস্য ইভ্যার্থ বতুপুভ্যাক न निष्ठमः॥

वाञ्देवत्री मु वाजानः । इंडि बाक्रनिर्घण्डः॥ वाय्नात्वो जि ॥ বাতব্যাধি: পু বাতরোগ:। ইতি

त्राजनिर्घकः॥ वाउभीयं क्री विखः। इंडिवाकः नियंग्डेः॥

বাতশোণিত ল্লী বাতরকরোগ:। ইতি ভাবপুকাশ:॥

वाजमशः बि चा अष्ठवाय्युकः। यथा। वाजामः हा वाजमः हा वा-ब्रङ्गावनी ॥

বাতসারথি: পু॰ অগ্ন:। ইতি CAFER 11

বা ওফন্ধ: পু• আকাশস্য ভাগ-उर्भियाः। वाउकी २। इंछ। विस्मयः। यज वायूई इंछ। इंछ (किंहिर ॥

বাত জি: পু॰ কাপ্তলৌহোভযনি- বাতহা ত্রি বাতম:। বাসুনাশকৌ-

लोही २। इं ७ बिका ७१ मदः॥ वाजाहः भू ज्राप्यः। इं

বাভাব

विकाखाणवः ॥ वाजमृगः । देखि **मद्यञ्जावनी** ॥

बाजायः पु॰ मुक्रबागविष्मयः। छम्। लक्कनं यथो । वृष्ती पूष्य-ছাযু: প্লেম্মণা যস্য সংবৃতঃ। তস্য মুদ্ধ শলভ্যেকো রোগো বাভাও-न ज्डकः ॥ इंडि म विवक्तः ॥

ৱাতাদঃ পু॰ ফলবৃক্ষবি**শেষঃ।** वानाम इंडि थ्या उः। उৎ পर्यायः । বাতবৈরী ২ নেরোপমফল: ৩ বাতামু:৪। অস্য গুণা:। উঞ্জু:। সুরিশ্বর্ণ। বাতমুর্ণ। শুক্র চারিত্বণ । ७क दुक्ष ॥ यम् । मह्त छ ११:। मध्-त्रवः। वृष्ऽदः। निङानिलानस्वः । त्रियद्यः। उक्षद्यः। कक्षभाविद्यः। রক্ত গিত্তবিকারিণাণ শ্রেষ্ঠত্বঞ । ইতি ভাবপুকাশ:॥

বাতাপিঃ পু॰ অসুরবিশেব:।সচ द्रापमा ध्रमानी भन्ना बाउः। यग-স্ত্যেনভ**ক্ষিত:। ইতি প্রী**ভাগবত-**गठः ॥ कन्नाम्डात्र जू विश्रुहित्सः** সি হিকাযা জাতঃ। যথা। সি-श्काया मार्थार भन्ना विभूति छ फजुर्न । मं वः भवलगाजक वाः कः भाष् खरेषव ह ॥ इतृत्वा नमू চি শৈচৰ ৰাতাপী হস্পো জিক:। क खथा।। त्राञ् (क्रिक्षेण्ड (खंवा॰ दि **हन्तु** म्र्यान्यमंतः । ইত্যেতে निः-হিকাপুত্রা দেবৈ রপি দুরাসদা:।। ইতি বহিলুরাণে কাশ্যপীযবংশঃ ।। অন্যন্ত । বিপুচিত্তিঃ সৈ•হিকে-यान् ति श्विकाया मधी बन । हि-त्रगुकिणाला (यं रेव ভागित्वरा अवाष्णा। वर्नः भन्। क द्राह्म-ন্দ্রে। তমে। বাতাপি রেব চ। ইল্ব-ला नमू हिरेन्हव थ म्मः न्हा छन ख्या।। नत्रकः काल गाउँ क मत्रनाग खरेषव ह । कन्नवीर्यप्रक विच्यारङा मनूवः भविवर्षानः ॥ इंजि माध्रमा ७ अथ्रायः ॥

বাতাপিদ্বিট্য পুণ অগন্ত্যমূৰি: 1 ইতি হেমচন্দু:।।

वाजानिम्हनः । भू व्यवस्थाः । इंडि বাভাপিহা । विकाश्यमयः।। वाजासामा जी कल्बी। इंजि भद्यामा ॥

वाजायन क्ली गवाकः। इंजानद्रः ।। (उन भद्रवाधानित्यत्था यथा। भद्रवा**था॰ न अ**दी उ कल वाजाय-नारि ভि: । कात्र यिद्या क् कर्या नि काकः भक्तार न वक्षायर ॥ इंडि কৌর্ম্মে উপব্লিভাগে ১৫ অখ্যায়: ।। रविष्यः कालनात्वा (बोमण्ड नवः वाजायनः पूर वाष्टिकः। ইতি बि কাণ্ডাশ্ব:॥

বাতাযু: পু॰ হরিণ:।ইত্যমর:॥
বাতারি: পু॰ এর গুরুজ:।ইতি
শব্রহাবলী॥ শতমূলী। ইতি
শব্দিকা॥ পুলালী॥ শেকালিকা॥ যবানী॥ ভাগী॥।
সুহী॥ বিডঙ্গ:॥ শ্রণ:॥ ভল্লাভক:॥ জত্রা। ইতি রাজ

वाञानी जी वाज्य। इंजि बिका 'अप्नवः ॥

वाजायः भू॰ बनीनायः। छरभर्यायः। इर्याङ्गः २ बाजाः २
ज्ञान्यः ८। ইতি क्रिका छर्णयः।।
वाजामशः बि वाज्यः। ইতি मदः
तञ्जावनी।।

वाकिः भ् वाष्ट्रः। यथा। वाकिः व्याग्नेक वाकः भननः भवत्ना १ नि वाः । केल्यान विशेषायाः ज्व उश्व नाक्षाकः ॥ न्यंः ॥ हन्तः। यथा । वाकि वाहिक्य (मान्याः । केकि वजनः ॥

বাতিক: প্ বায়জব্যাধিঃ। যথা।
বাভিকো বাতজো ব্যাধিঃ গৈত্তি
কঃ গিতুস মুকঃ। শ্লেখ্যকঃ শ্লেখ্যসংভ্তঃ সন্তঃ সামিপাতিকঃ।।
ইতি রাজনির্ঘণীঃ॥

বাতিগঃ পু• ভণ্টাকী ।। ধাত্বা-দিনি ত্রি। ইতি মেদিনী ।।

वाडिगमः भू वार्डादः। ইडि শহরত্বাবলী।।

বাতিক্সন: পু॰ বার্ত্তাঙ্গ:। ইডি বিকাণ্ডশেষ:॥

वाजीय॰ क्लो काञ्जिकः। इंडि मदः हिन्दुका॥

বাতৃলঃ পু• বাভ্যা। ইভ্যনর-টীকাযা• ভরভ: ॥

বাত্ল: ত্রি বাতবিকারাসহ:॥
উন্সত্ত:।ইত্যমরটীকাণা-ভরত:॥
বাত্লি: জ্রী তক্ত্লিকা।বাদুড
ইতি ভাষা।ইতি হারাবলী।।

বাত্ল: পু॰ বাত্যা।। বাতাসহ ত্রি। ইত্যমর:।। বাত্যা বাতসম্ হ: অত্র জনথলাদি গোরথ বাতা-দিতি উল: । বাতাসহো বাত-বিদারাসহ:। বাইযা ইতি থ্যাতঃ । অত্র গোত্ণেত্যাদিনা উল: বা-তুল:। বাতে নান্নীতি তুলে হুধো-কার্যান্পি বাত্ল:। বাত্লো বা-তু:লাপি স্যাদিতি দ্বিন্পকোষ:।। উন্তেপি বাত্ল:। ইত্যমরটী-কাযাণ ভরত:।।

বাতোনা ত্রী গোরিস্থাক্স:।ইতি রাজনিঘট:।। বাযুহানে ত্রি। বাত্যা জ্রী বাত্সমূহ:। যথা। আস্ক্রিনী চ বাতালী স্যাৎ বা-ত্যা বাত্মগুলী। ইতি ত্রিকাগু-শেষ:।।

वा८मक क्री व८ममग्रः। ३७५-भन्नः॥

वारमणः भुः ज्ञमविष्मयः। यथा । वार्मना भारते जुद्रामी मृक्षा-রঃকৌশিক: মৃতঃ। ইতি ত্রিকা । भाष्ट बुक्ति वर महाद शुख मानः भूभी डिंगः। (भूयनि मुरः मथार्या हि यानामा वट्मल मृ তা ৷৷ মধুরে রাধি হাজ্ঞেয়া হাস্যে म्यामध्यक्तः। मथीय्र्था १ फुर জ্ঞেযে। বীরে চারণ গোব্ষা:।। क्कान वर्त्रवृक्षानि कंटिनाम्।। स রৌদুকে। গোবদ্ধনো হভিমন্তুক ख्यानक উদাহতो।। তপश्चन्। দযো श्व वी ७८ (म भ दिकी विंठा: । বুজস্থা নিযতা জেবা আলম্বন বিভাবকা: ॥ ইত্যুজ্জ্লনীলনণি: ॥ 🗱 ॥ वद्मनमुखात्व क्षी ॥

বাৎসীপুত্র: পু॰ নাপিত:। ইতি ত্রিকাওশেষ:॥

বাৎস্য: পু• মুনিবিশেষ:।যথা। বাৎস্য সাব্দি গোত্রযোরৌর্ব্ চ্য- वन र्जार्गव याममग्नान्न वट शुवद्राः । ইত্যদাহতত্ত্ব ॥

বাৎস্যায়নঃ পু॰ মুনিবিশেষঃ। তৎপর্য্যায়ঃ। নন্দ্রাগঃ ২ পক্ষি-লঃ ৩ স্বামী ৪। ইতি ত্রিকাণ্ড-শেষঃ॥

যথার্থবোধেছোর্বাক্য । যথা। বিজিগাযো: কথা জল্পে বা-দ স্তত্ত্ববৈদিয়ো:। ইতি ভটাখর: ।। अत्र वक्षनः यथा। भूमान उकं সাধ্নোপালমু: সিদ্ধান্তাবিক্দ্ধ: পঞ্চাবযবোপপন্নঃ পক্ষপুতিপক্ষ পরিগুছে। বাদ: । ইতি গোতম-সূত্রণ। 🗱।। অপিচ। সর্গাণা মাদি त्र उन्ह मध्रारेक्षवा इ मङ्जून। व्यथ्रा-অবিদ্যা বিদ্যানা বাদ: পুৰদ্তা-মহে ।। ইতি ভগবদ্দীতাথা ১০ व्यव्यायः ॥ भुवन्छाः वानिनाः ज-ম্বন্ধিন্যোবাদ জল্প বিত্তাখ্যা স্তি-मु: कथा: भुमिका खामा गर्या वा দোহ। যত্ৰ দ্বাভ্যামপি পুমাণত रुकं ३ क मुनकः स्नान्। उन्न नक শুলজাতি নিগুহস্থানৈ দুবিগতে স-জল্পে। নাম। যত্র (ব্রকঃ স্বপক্ষণ স্থা-পণতি অন্যস্ত ছল জাতি নিগৃহ স্থানৈ স্তৎপক্ষণ দূষতি ন তু স্থপ-ক্ষাপ্ৰতি সাবিত্তানামক্থা । उन कन्न विज्ञ विकिशीयमागरण वीहित्याः मेकि भन्नीका मान करण । वाहस्य वीन्ननागरणः मियानार्ग्य-रवा ब्रन्यवा र्वा जन्न निक्शनकणः । व्याजा श्रमो (मुश्रेषामहिन्जि विन्युर्थः। ইতি ভটोकाणः श्री-ध्रमानी।।

বাদক: বি বাদ্যকর: ॥ বক্তা ॥ বদধাতো: কর্ত্তরি ণক পুত্যুবেন নিস্কন্ম: ॥

বাদন ক্লী বাদ্য । গ্রুম্ভবদ্থাতো ভাবে ২নট্ প্ত্যুয়েন নিম্নম ।। বাদর জি কার্পাসনিম্যিত বস্তাদি। বাদরাযা: কার্পাস্যা জাত ইত্য র্থেফ পুত্যুয়েন নিম্নম ।।

वानत्रत्रः भूः व्ययव्यव्कः। ইতি जिकाश्रमवः॥

বাদর। জ্রী কার্পাসী। ইতি শব-রত্নাবলী।।

वाम्त्रायणः) भू वशात्रास्यः। ইতি वाम्त्रायणः भिक्तज्ञावली ॥

বাদরিকঃ ত্রি বদরচযনকর্তা। ব-দর• চিনোতীত্যর্থে ফিকপুত্যযেন নিয়ম: ।।

वान्त्र क्षी मधूरिकेश। ইতি णप हिन्दुका॥ वान्त्रान्त्र शु॰ बिन्छिनः। उट्ट भर्यायः। चार्रङ: २। ইङि (रूम. हम्मुः॥

বাদামণ ল্লী ৰনামখ্যাতফলণ। ভস্য গুণাঃ। উক্তত্ত্বণ । সুন্নিপত্ত্বণ। বাতস্ত্ত্বণ । বল শুক্রকারিত্বঞ্চ। ইতি রাজবল্লভঃ।।

বাদান্য: ত্রি বদান্য:। বহুপুদ:। ইতি ভরতদ্বিকাপকোব:।।

वाहानः भ् भ८ म्राउनः। (वाः यानि इंडि ভाषा। उट भर्यतावः। सहस्रुरः ध्रेः २। इंडि (इस हन्द्रः॥ वाहिः जि विद्यान्। इंड्रांशहिः (काषः॥

বাদিত্র ক্লী বাদ্য । ইত্যমর: ॥ বাদির ক্লী বদরীসদৃশস্ক্ষফল-বৃক্ষ: ইতি শব্দ জাবলী ॥ বাদিরাট্ পু মঞ্ঘোব: । ইতি ত্রিকাগুশেষ: ॥

वाहिनः बि नाध्वाही। इंडि नद्याना॥

वाही जि वका॥ अशी। विवाह कर्छा। कर्छा। कर्षियाही इंडि भाइमान ভाषा। यथा। मजाभाउ: कर्छ्वा भाइ काउन्नायन:। अथ हिट भु-जिज् नीखि वाहरयागास वाहिनः । महिकाला हिनमाह हहा। जुन् उन्नाय (वजनः॥ वाहिरना जायोन

वाहिनः উত্তরবাहिनक।।।।। श्रयः বিবাদাশকৌ পতিনিধি মাহ না-त्रहः। व्यर्थिना मःनिगुक्का वा भुज् থিপুছিভোপি বা। যো যস্যার্থ বিবদতে তথো র্জ্যপরাজ্যৌ ॥ **उ**रया दीनि शुं जिवानिताः ॥ का-**छ्यायनः। भन्यप्रभाद्रश्य (खर्य शद**् मात्राज्यियंत । व्यवकावकात रेवव कन्याञ्ज्ञ भूषा ॥ भाकाष्य क्रेकद्राण नृপापुराङ् खरेषव ह । পুতিবাদী ন দাতব্য: কর্ত্তা তু বি वर्षे स्वयं ॥ 🗱 ॥ जाजानी जत्रम **नक्छि उत्र**। मखनीयद्व मारु ना-রদ:। যো न জ্রাতা পিতা বাপি। ন পূণো ন নিযোজিতঃ। পরার্থ वामी मुख्यः मुग्राट व्यवहाद्मयु विकृतन्।। नात्रमः। भूर्ववामः भतिः ত্যজ্ববোন্য নালম্বতে পুনঃ৷ বাদ-म कमगा क् एक रिया भी न वि नद्रः। #॥ शुक्राची यिन किन्छि का-ল পুৰ্থেতে সলভতে। অথী ত কাল পুৰ্থেন অথিবুনেৰ হন্যাদি তি তেন কালো ন প্রার্থনীয়ঃ। ত দাহ। পুত্যথী লভতে কাল ব্য र मधार भव ह। अथी जु भार्य यन्कानः उৎक्षनात्रव शेयत्व ॥ विष्टि शुजार्थी कानः न न जाता ।

याञ्चवद्युः। সारुम (खग भाक्ष्यु গোভিশাপাভ্যযে দ্রিযাণ। বি-যা সৃত:।। 🕸 🛭 অথ ভাষাণাদ:। তত্ৰ ভাষা স্বৰূপ মাহতুঃ কা-**छ** । भुष्ठिक्कारमध निমুক্ত• সাধ্য• সৎকারণাশ্বিত• । নিশ্চিত লোক সিজ্বঞ্চ পক্ষণ গ-क्कविष्मा विषुः ॥ यद्माक्षतः भुङ्-তাर्था निःमन्दिषा निदाञ्चनः। বিরোধিকারণৈ মুক্তা বিরোধি পুতিরোধকঃ ॥ यता ত্রেবয়িধঃ গ-कः कल्लिङः भूवतातिना । मन्।-ख्रभक्ष मध्यः भुजिवाधी उपा-खत्र ॥ नादरम्नाशि । भादस्य वऽ-বহারাণা• পুতিক্তা সমুদাঙ্গতা। ভদ্ধানৌ হীয়তে বাদী ভব্ন• স্তা মূ-खाता जात्रा ॥ 🗱 ॥ जाहायनमार वृहस्पिजिः। नृताधिकः भूर्वभक्तः जावद्यां वित्नाय्य । न पन्डा-मृख्द्र॰ याव**८ भू** अथी म अप्राप्त (बी।। इंडि व्यवशाय कर्षा

वान्तरः क्ली वादगन्धि व्यवस्थि यद्। वाज्ञा इति ভाषा। उद्धार्यप्रामः। वाद्यिः २ वार्त्ञात्तरः २। उद्घ वृ विदः यथा। उत्वः वीपादिकः वाद्र भानकः मृत्र्ज्ञादिकः। वः भाग्रादिकन्छ শুশির কা স্তালাদিক ঘন ॥ ইত্যমর:।। ইদ ততাদি চত্র্বিধ **ठ**ञ्: नुकातः वान्। किमस्वयं वाः চ্যা ইদ চতুর্বিধ বাদ্য বাদিত্রা **क्ति विनामकः। वार्त्र मि** ज्ञानमञ्ज পুথমান্ত বিশেষ্যপদ ইতি কলি-काष्यः। क्नाला न विष्णवाः। ইতি ७ छोकाया• ভরত:।। #।। व्यथ वा-দ্যানি। ভালেন রাজতে গীত। তালো বাদিত্র সম্ভবঃ। গরীয় স্তেন বাদিত্র ভারত্রিধ মুচ্যতে ॥ তত मुमित्र मानकः घन मिथाः ठजू विशा ভত্ত ভক্তীগত বাদ্য বংশাদ্য शुलितः उथा ॥ हयावनक मानकः धन जाना रिक न उ ।। 🗱 ॥ जब उ ७ दथा। व्यवादनी वृक्षवीना किम्री वपुक्तिमती। विश्वकी वल्लकी (कार्का | **ठिवा (ब्रायवंडी ब्रया ॥ इंडिक, अ** द्विका क्यो नातकी भतिवापिनी। विश्ववी भा उठन्त्री ह नज्रत्नोही ह ए॰-नवी ॥ छेउबती शिनाकी ह निव सः मुक्षन ख्या। भनावाद १ इउ म्ह कपु। २थ भवग ७ वः। कशिवासा बयुमानती (वाराजामि जंड जंस्ट् ॥ 😩 ॥ खनादशे यथा। कलिष्ठिका शिविधिक्तं स्वाहित्तृत मन्युकः। एकः पश्चिमित्वा रख. शामित्वा देवन्त्या

২থ বা ।। অধ: কর ভবান্দ্রে ছত্রা-वन्तराज्यिभाज्जिः । नवाङ्गारथः শিংদ্যেপরি চন্দু।জনিভাণ।। নি বেশ্য চুদ্দিকা ভদ্যলাবুখণ্ড কি विणायः । द्वानभाञ्चल विखातः काः পক্ মনোহরণ তুষিকা বেধ মধ্যে-न म ७ हिएनु जु निर्मि अ॰ ॥ व्यवावू মধ্যগা ডৌবী কৃত্বা স্বল্লান্ত কাঙি কা•। তথা স•বেষ্ট্য তথ্যধ্যে কাঞ্চি-কা• ভান্যেত্ততঃ ৷৷ ব্থা স্যান্নি চ-লালাব্রিক্স করভোপরি।প-कार्नाम् न छ। छ। छ। छ। व व व व वक्षयण्या (कणान्तिर्मिन शरेन-ষী সূত্র হৃতাথ বা। সমাঃ সূজা দ্চা তত্র ভব্র দেয়া বিচক্ষণৈ:।। এই लक्षन मः (याग्रान्त्रावादनी श्रुकीः র্ভিডা। বিন্দুনা ন সমুপেত তু^ছ निःक्षिभः वक्षि ॥ संयुभानामि का छा १४ वास्ता सिक्क न भागिना॥ ভারে নরেচ ঘোষে চ ত্রিস্থানে বি-न्मू तिष्ठाः ।। जुबीमृनः नमू८ १७। বানাঙ্গুধেন ধারণেৎ। তত ভাভিত্ত স্বাভি: শ্বরব্যক্তি বিধীষতে॥ জি बला रिक । शांति वान उब हुः चतः। यगावन्याः स्टि**ठा** ५५६माः र्गभा जारम छरत्थ मा न्यार एक उ

1 অ**•শ** ন্যাস বিভেদান্ত তথাত্রাপি বিধীতে ৷৷ ইয় মলাবণীপোক্তা মনঃ मुद्र ब्रञ्जनी। भुज्यका नाब्रमा (म्दी বীণাৰূপেণ সংস্থিতা ৷৷ ইত্যলাবণী ॥ व्यान्याः नक्षाः विखन्न ख्यासाः क्रिशा क्रशामुनित्र यथा। वर्षा १५ পারী মধুরী ভিত্তিরী শহ্ন কাহলা:। তোডशे मुद्रनी वृक्षा मृक्षिका सद्रना खरः॥ मृद्धः काशानिकः वःभ कः ম্বিংশ স্তথাপর:। এতে শুশির ভেদাস্ত কথিতা: পূর্ণদ্রিভি: ॥ वर्जुन: मत्रन रिफक्श वंदिश विव-क्किंडः । देशवः चामिरद्रा वानि **त्र**क्ठन्रन्रका २०वा ॥ श्रीथ ७८का **२**थ भोवर्ण मिडम्डगर्या १भिवा । রাজত স্তামুজো বাপি লৌহজ স্কা-টিকো হথ বা।। কনিষ্ঠাঙ্গুলিত্ল্যেন গর্ভরজ্বে শোধিতঃ। শিল্পবিদ্যা भ्वीतन वः नः कार्या। गता इतः॥ বংশেনৈৰ মতোপীতি মতক্ষমুনি-নোদিত । ততাে হন্যেপি ভদাকা-রা বংশা এব পুকীর্ন্তিতা: ॥ ভত্র ভ্য-ন্ধা শিরোদেশাদথো দ্বিমিত মঙ্গু-णः। क्रकाववकुः कहीं छ मिछ-नक्षिभर्तना ॥ भक्षामुलानि जः ত্যন্ত তাব্দুস্থাণি কার্যেৎ। স र्याज्यानात्रमानि मधमःयानि की-

ममा८ ॥ वरत्रीवीखनुन्यानि ज•ः **छ। जार्जार्का क्र मञ्जून । शोरुर्या र्वज्ञ**-न कार्याः खदारित नीन एक त्रा निक्राकन कला (एया (छन नुसद्गठ)। **७(वट् । शक्षात्रु**(लायः वः**मः न**ऽा-प्रिकामु निवृद्धि उ: ॥ य उस्न नानि नामान्यावम्डाम्णाक्षः। कृ কার তাররজুস্য যাবদক্ষল নন্তর ।। **उत्तर नाम वः भग**्र वाः भिरेकः श-त्रिकीर्लाउ। अकाक्ष्मा घाक्षण ব্যঙ্গুল শতুরঙ্গুল:।। অতিভার ত রত্বেন বাংশিকৈ: সমুপে ক্ষিতঃ। ত্র-यामनाकृत्वा वीगानदः। निनित्रा वःশञ्जूङ उथा मधन्माक्नः ॥ महानम् ख्यानत्मः। विकारा १थ ক্রয় তথা। চত্ত্বার উত্তমা বংশা ম-**उक्**यूनि मगाजाः ॥ मनाक्रा ग-श्वातस्त नम् अगरणाञ्चः। छा-म्माक्नगानस विषयः भतिकीर्छः ভঃ॥ চত্ৰ্দাঙ্গুলমিতো জয ইত্য ভिशीयत्र । तुका कापा व्रवि विकृः क्रनाम्ब व्यवस्थिताः ॥ रेनविष्णः পোততা চাপি সুষরত্ব শীঘুতা। माधुर्य। भिछि भक्षाभी कूटक्उयू ఆণা: ম্তা:॥ শীৎকার বহুল: स्ट-ন্ধো বিশ্বর: সু টতো লঘু:। অমধুরা-क विद्धाः विष्तियाः कूटक्ष कमार ॥ वृथा भुरागवाङ्का मझ-ত। গীত বাদনে। এভি দৌৰৈ যুঁতে। **হ**তীব নিন্দিতো বংশিকো মতঃ॥ ञ्चानकारि नयाजिख्डा गमकाष्ट्रः यु, टेक्क्रद्रः । भी पृश्यः कला ভिष्ट्या वां निका ब्रक्ड डेठ्राउ ॥ भुमूक्डि বৰ্মুক্তিশ্চ যুক্তি শেষ্ড্যঙ্গুলে ৰ্থণাঃ। मृशानवः मुख्यवः वाक्नी नावन ক্রিযা।। সমস্ত গমকজ্ঞান• রাগ রা-গাঙ্গ বেদিতা। ক্রিয়া ভাষা বিভা-यामू मक्क जा गीज वामता। यहात চাপি দু:স্থানে নাদ নিৰ্মাণ কৌশল । গাতৃণা॰ স্থান দাতৃত্ব॰ তদ্বোষা-ছাদন তথা।। বাংশিকস্য গুণা এতে भया जिल्ला पर्मिजाः ॥ ইতি रंभः॥ #॥ कारुना जी नियतः। ভোডरी मुत्रनी वृक्षा ইভেত্ত ह ক্রিযাণ সপ্তমরাণাণ নাভি রিব বর-नाजिः ज्ञियाः वर्ज्छ । इञ्ज्रियाः विखत्रज्याक्षाकः ॥ 🗱 ॥ व्यानवः यथा। जानस्क नर्मनः (मुगान् है-ত্যক্ত ভরতাদিভি:। অপি চ। মুর-জ পট্ছ ঢক্না বিশ্বকোদর্গবাদ্য প্র-**गव वन मङ्क्षः लावकाश्च जिवलाः।** कबरे कमरे (जबी महार अपका रुपु-का यानम मूजनी सक्षी पूक्रमी (मेरिज **णाना ॥** उगृक् हेमूकि महुः अखनी

खक्नामा वन मिंचि वार्षः मून्यु-की ह ब्रम्भा विहिशी पूर्की महारे দদুরি চাপ্যপাক পুকটিত মনব-क्षः वाम्यभिष्यः सगज्याः ॥ जिनुत মথন কৰ্ত্ত ভাগুবে তৎ পুৰাণে তভ मथ मूमित्र कान्क मिथ्य घनक। 🛊। मर्गः थापितः (मुर्छा होनः न्रा-मन् पाक्षः। त्रक्ठनत्नाका वारम्। गडीत्रक्रिक कहरेकः ॥ मार्क्ष इस पुः भागस रेमर्घ। भना। विश्वीयरः । जर्याः দশাসূল বাম নথবা দ্বাদশাস্ত্র• ॥ मिक्किनक उत्तर्कीन (मिक्कार्काकः (लन वा। कत्रगानक वहरना मरश्रीहर्व भृषु र्ज्य**८ ॥ यद्माजी**या **ज**यर भेख उहर्य कद्रग भेखा। मृखिका निर्मिठरेक्टव मृत्यः পরिकी खि उः॥ পাত্তেৎ খরলি বাদ্য মাদনার্থ-ঞ্চ মর্দলে। বিভৃতি গৈরিক ভক্ত । কেন্দ্ৰেন চ সংমত।। यद्या চিপাট ক দেয় জীবনী সভু নিশ্বিত। স র্ব মেকত্র পিষ্টন্তল্লেপ: খরলি ক্চ্য-তে॥ বামাদ্যে পুরিকাণ ক্লালেপণ एक् प्राष्ट्र किल्ला । এव॰ सम्बं नकः (शा-कः मर्दवात्म्याख्या वजः॥ वन्ध अःरयाग बानाम्। अर्बः वाम्। १६ (नाः ख्छ। এ**उ**न्द्व वीजकार ह म्लमर्का-ঙ্গুল বিদু:।। #।। তধিধোতে মিতি (छ्वरा: भाष्ट्रवर्गा मृहक्ष्का: । (था॰ | र ए । विकृते खको **डाक** म र (था ग॰ विश्वि।। थर्का विश् न॰ गरे॰ म॰ था क्रे भारी गठा यभी। उथि॰ থো চে তকু ধী দো দ দ দ ধিগণা **७** ७ ७ वि ॥ ७ क ज़ • श शिरमा • ७ वि পাঢ় খণ্ডে ত্ব্য॰ ক্রমঃ। 🗱 । তথা চ যতি নানে পাঢ়থগুঃ। দুগতথেজা দুগভথেজা• ধো ধো ধিক ভাধিকা থোজা থোজা তক ততা ধিকা থোতা দুগত তাখি ধি ধিধিকততা কডনা থোধিক থোজা পোতা দুগ-ভঙা দুগভঙা দুগভঙা ধি। ইভি যুতিমানপাঢ়থণ্ডঃ ॥ 🗱 ॥ যুতি রোঢা পারছেদে। গলরো ক্পক। थुन । गलभः मादिरगानी ह नार-শ্চ কথিত। তথা।। পুহরণ। বৃন্দ-नक्ष भुवसा घारण मृजाः। यथा। দ পাত ইত্যেকতাল্যা যতি: ॥ 🗱 ॥ अउदान्तरः यथा । नाः ज्रां **उधिक उधिक म॰ था म॰ था (थाधि** থোধি তত্ত তত্ত থবি থবি দিশ্যা• **मिणा॰ विवेनिक विवेनिक उपविश्व** ওদটন্ধ থ্ৰটন্ধ খ্ৰটন্ধ ভগিনগি जिल्लिका मार मार मर मर मीर मीर मर **छ। ७**था । इंट्याउनाम्र ॥ #॥ व्यवहित वान्तरः वया । मः थाउः

দ॰ थाउ: विकि विकि मिग्न म॰ थाउ: । इंड्रव्रह्म्बान्रः ॥ 🕸 ॥ शक्तव्र-वार्षः यथा। (थाकरि क तिक रि. ডে গথো গথোস্ক টেল্ক থোগতকি থিক্তকি থিক টেক্স থি থি কটতক (थाक उषि करें उक्त कडाया गडकी॰ । ইত্যেকতাল্যা॰ গৰুর: ।। 🗱 ।। क्र भक्रवाह्य थ्या। उक्र थिक उक् ধিক থবিভকি থবিভক্নি ধিক্ন দে थाउः। ইতি क्পक्वाम्रः॥ #॥ প্রুবকবাদ্য যথা। তক্ন ভক্ট ধিক্ন **थिक्रेट । इंडि निमाक् जाल धुनकः** ।। #।। गलाभा यथा। उधिकि धिक-তক তধিগল গণ থা থা দেশ তথা টেশন। ইভ্যেক ভাল্যা॰ গলপ: ॥ 🛊 ॥ मात्रिणानी यथा। (थाक् টেঞ তক্ন বিহ্ন তকাধক তকথো হ-টঙ্গন হটঙ্গন থোগককথো:। ইতি **পূথমথও:॥#**॥ টেঞ্ছথা: विथा हः र्हिक रिक एक उगरक शिक उनि-দকুদ গদ গথো গখোক ভক ভক ষিকত ষিকত খোঢ়েঞ খোটেঞ খ-টেগলখোগ গল খোগ খোহট গে' টগে খোহটঞ ইত্যস্য ছন্দন । ইভি সারিগেণী।। 🗱 ।। নাদে। যথা । मा॰ कात्र वि उयः भृतं मा॰ विणि-**डि उड अयः। माःमाः विक वयः यव** ইতি নাদ: শচীপুয:।। ইতি নাদ: ।। 🗢 ।। क्ष उ॰ मानम मात्रक्ष॰ मृष्क॰ कृष्ठे विनिर्मितः। मधय अनयः वाः দ্যু করিভ তদিছোচ্যতে।। ফু ত मानकार भ्जिजाल यथा। जड्ड ভত্তত কৰু ভকু দিদ প্ৰগন্থা शिशनत्था शिकू शिक शिकू शिकु शिक নিগ নগমি থো থো ধি ধি ধি: দাণ দা পিকুথো থোথো হথোছ নঞি-থো নঞিথো থোহ থোহ ডেটিডেটি থোহ থোহ ভটি ভটি ভটু হ গী॰ গী প্ৰি প্ৰি ডাড ডাপ্ব ডাপ্ব ডাড তুগি ডীঞ্ডী থোগ থোগ থো• শোগ গথো গথো ভব্তাতা। ইতি स्थलमान्।। **क्षिडः वाम्।** ণ্ডি সা:। পুতিভালেন ভালেন পা-म्या मया मञः॥ शक्ष वंश जिना श्रव मुर्वभी लागा नर्डान। मुक्यांत्रक्ष नार्थक कत्रिञ भुक्षी कृट ।। 🕸 ।। পুছরণ যথা। থেগেক। ভদ্ধিকাথা গকটগ গো॰ দ॰ থোগ দিক্ষিক বিকু विकरिक। इटिंड क डाल्या॰ भुइत्री॰ १। 🟶 ।। वार्षः विभूष्ट्राट उत्यम् छन्तनः छ-মিগদ্যতে। যথা। ভদ্ধিথো দিঞ টে ঞ उम्रः। ইতি हन्दनशाक्षा कलात्मा विक्षामण है। क्वी हार्ख है। क्वी। बानाडे। कनिका रेडव लागु मी

खथा ॥ जनावू जवाम्। स्हिताम् । भर्मनः खर्यामे नाञ्चन वामगूरथा द्वामण जूल मक्किनगुरा। मुद्रज उष्टामणाञ्चल वाम मूथः मक्षः मणाकृष मिक्तिनेयुथः। समेल सूत्र-खर्या द्रशः (छरः ॥ 🗱 ॥ घनः यथा । অনুরক্ত বিরক্তঞ্চ দিবিধা ঘন বাদ্যক । গীতানুগ ননুরক্ত বি রক্ত• তালসংশ্য•॥ কর্তাল: কা•-मा वर्षा जयघाषे । कुल्किका । कु बिका भरिवार । अ भिष्ठा । उत्तर वर्षः त• ॥ यशा जानक मछोत्र कर्खगुर क्षत इंडािश। हार्राम्ट मूनीत्मुन कथि जा चन म॰ छाकाः॥ जारामा-व्यवशासी শুদ্ধকা স্বাবিনিমাতৌ। मध्रम्थो खनाकादो उत्राध्य तः क्त उ मुः ।। भागमी भागप्रामी क्रवा च्याः ब्रह्म् यि उठो। क्रव्र ठावाः वू जो वारम्। भारते यनहरेक द्विज।। यहा जःयामभयववतामः वक्रमवीः রি তে । যবপঞ্চ গম্ভীর মধ্যে চ যবসপ্তক।। বিমৃত বভুল। নিমুণ যবত্রথনিত ততঃ। পৃষ্ঠতো মধ্য (मर्ग 5 निविवासम्माकृष्ठि ॥ **अ** उम्मे रिमेश निर्मेश मुक्तका ना विनि মিত । সংরক্তাঙ্গুলি স্মিথ সু^{রীর্ঘ} मध्रध्विः॥ यना निमा विमः ब्रकः

कृतः भूषः सत्ताङ्ब**ा काण्यीदा**कि সম্ভূতি তাল মাহু ম্নীধিণঃ।। मुनार पिक्षिण जान जाजा शीनक वामकः। अदी उ उप्पृयः कार्याः उ क्ट्रीन)कुष्ठरया र्गडः ॥ वामहस्रस्र छ। वना मध्या न चना किन्। जियं। শুক্ষিণ ভালস্য পরিব্যংশেন ভাল-(य८ ॥ जानाको वाम्रविहर প्लज भीय नव् करेंडः । इंडि कंद्रडान विष्णयः। क उँदी धनविष्णयः। छैक् রশ্চ ঘনবিশেষে৷ প্দস্তরেফান্ত পু•-लिङ्गः। व्यानप्रवाः लक्काः विस्तुत ভरामाङः॥ 🗱॥ क्बिन्धाः अड्ड ভाषायाः कानिन्ती भिवितन्त्याः । बायवज्या नायां जिज्या लक्ष्मना ভদ-(या त्रिंग ॥ क्षम्याष्ट्रेमहिसीना॰ পুরোদ্বাহ নহোৎসবে। তত্ত শুলি-**त्र भान कः धनकः युगश**ब्द्धनाः ॥ व्यः वारयद्यमण्थाज भिक्ति भोता निकी শুভিঃ। তত্ত বাদ্যন্ত দেবানা গন্ধ र्वाणाक (भौवित्र।। जानका त्राक मानास्त्र किमन्नाभाः चनः विषुः। नि-बावजात (गाविन्तः मर्बरमवानव ক্ষিতৌ।। যাবন্তি বাদ্যভাণ্ডানি ব্লাম बावनरमा मुंबि । जावरज्या नाज्यन् (भनाः क्रका ७व मक्रा ॥ #॥ কিঞ্চ। লিলিন্স হৃৎকন্সান তোম |

द्रिग द्राप जुद्राद्र र्यथनाट जुद्रग । ष्य ब्रुड अरिन्द्रव्रि भिः इनारेनः ना शक्षमदीि कगार वारः ॥ यूष्ट्र সি•হনাদঃ। ততাদিভি রেভি শ্চ-जुर्जि वीरित भग्ना निःहनारिम्ह भक्षणकी वाहा मञ्ट । मिः इनाः (एन जरु वार्) शक्षविश ভवडी-**७**७थं: ॥ इंडि जःगीउनासाम्ब्रः ॥ # ॥ विकृग्रह वाम्यकद्रन कन यथा। याना भरादि विविध प्रंड-कीवाजित्यहरेनः। गीउवारिक न्-**ज्यारेन्य (खाव**गबाहुं। ज॰ नृ**श । भूग**र রাত্রিযু গোবিনদে গীত নৃত্য রবো-क्कृरेनः।। ভূপ जागद्रोग जंक्या जाय. যাচুগ্ৰ মব্যয়ণ। যেষাণ নবিক্তা হৈ 🖰 ভক্তो মার্জনাদ্যুপলেপনৈ: ॥ তো-বিতো ভগবান্ বিফু দিবাভ্যভিমত• ফল•। বেব কর্মণি সক্তানা•ভেষা• সংশৃতি সংস্তবৈ: ॥ তোষিতোভি-भञान् कामान् शुगह् ि जनार्नः।। ইতি বহ্নিপুরাণে ক্রিযাযোগনামা-श्रायः ॥ 🗱 ॥ (स्व भुविश्वायाः वाम्र বিধি র্যথা। ততঃ প্রাসাদে স্থাপ্যা-इ॰ गीउवारिक मञ्चरेतः। সর্ব गका॰ खा १ इसे अस्य मुनाहात्र ॥ इंडि वाद्रारह रेम लाई। आश्रनाय्राः

বানপু

यः॥क्षा(एवडाविष्मवगृष्ट् वाप्त)
विष्मव निरवर्षा यथा। यागिनी
छ छ । निवागात यक्षकक मूर्य)।
गात ह मञ्जक। पूर्णागात वःमीवाप्तुः भाषुत्रीक न वाप्त्यर्।। यः
स्नकः काःमुनिर्माठकत्र छानः।
यर्मुतारा। गीड वाप्ति निर्यायः (प्रवम्तार्ग् ह कात्र्यर्।
वितिरक्षक गृष्ट् एकाः घर्छाः नस्नीगृष्ट् छ ।। घर्छ। छ दिष्ठाः
मर्ववाप्तुमयी यङः। ই छ छ छ।
पिछ छ।।

বাদ্যভাগু॰ ক্লী বাদনীয়পাগ্রণ।
মুর্জাদি। যথা। পুষ্করণ করিছস্তাপ্রে বাদ্যভাগু মুথে জলে। ইত্যমর শ্লোক টীকাযাণ ভরতঃ।।
অপিচ। বাদ্যভাগু মিদ্ণ দেবি
নানাম্বসমন্তিণ। ভেরী পটছ্
সংযুক্তণ মযা ভক্ত্যা নিবেদিতণ।।
ইতি বৃহম্বন্দিকেশ্বরপুরাণোক্ত দুর্গোৎসবপদ্ধতিঃ।।

বাধ খ ড বিহতৌ। ইতি কবি-কল্লজন: ॥ খ অববাধৎ । ড বাধ-তে। ইতি দুর্গাদাস:॥

वाधन॰ क्री वाधा। ইতি भक्तज्ञा-वनी॥

वाषा जी भीषा। इंडामतः॥ नि

বেধঃ। ইতি ছেন্স্ন ।। বাধুক্য নী বিবাহঃ। ইতি ত্রিকা; গুশেষঃ।।

वाधः भुः विश्वः। **३७ भए**ः बङ्गावनी ॥

বাধীনসঃ পু•় বাদ্ধী । ইতি হলাযুধঃ।।

বান ত্রি শুক্ষল। ইত্যমর:॥ শুষ্ণ। ইতিমেদিনী।।

বান ক্লী স্গতিকর্ম।। কট: ॥ গতি:
। ইতি মেদিনী ।। জলসংপ্রুত্তবা
তোমি: ।। সুকঙ্গা ।। সৌরভ: ।
ইতি ছেনচন্দু: ।। গোক্ষীরক্ত তব
ক্ষীরণ। ইতি রাজনির্ঘট: ॥ বন-সম্বন্ধিনি ত্রি।।

वान शृष्टः शृ नश्क वृष्टः ॥ शः नाण वृष्टः ॥ ज्ञीया णुमः । इछि विश्व सित्ता ॥ ॥ श्रु मूर्या । इछि वनवा मः कृषा व्यक् द्वे शह्य क्वा हिः चक्र विषा स्था त्र प्रता छिः यः म वान शृष्टः । म ह दिविशः । व्या स्र छः हर्षा ह्थ निक म्ह । इछि श्रिजा गवज म छ। । जम्य धर्मा यथा । ज्यो मृन कना भिष्ठः साध्या यथा । ज्यो मृन कना भिष्ठः साध्या यथा स्था वव ह। मिस्र जारा। यथा न । उश स्था १ १ १ वनवा निनः ॥ छश स्था १ १ १ १ वनवा निनः ॥ छश

জ্বাহাতি চ। ৰাধ্যায়ে চৈব নিরতো বন্হ ভাপসো মত: ৷৷ তপসা ক-र्विखा उर्थ • यस भ्रानभात्रा ভবে८। সম্যাসীহ স বিজেযো বানপুছাশু-মে ছিডঃ॥ ইভি গাৰুডে ৪৯ অধ্যা यः॥ 🗱 ॥ व्यनिष्ठ । याद्धवन्तुः উবाष्ट । वानशृक्षामुमः वरका छ८ मृश्व भक्षेगः । भूष्यव् ভार्य्याः निःक्रिश्र वन गहर अरेहर वा॥ वानभुष्ट्रा বুক্ষচারী সাণ্নি: সোপাসন: ক্ষমী। व्यकानक्रहेनाग्नी म्ह भिज्रहताजि थी॰ खबा।। ज्उा अ उर्नाय न्यूनु किटात्वामञ्जाज्ञान्। नाउः जियः वनज्ञायो निवृद्धण्ठ भुिं जुरु। ॥ मा-श्रायवान् श्रानणीवः नर्बज्जहि-তে রতঃ। অহে। নাসস্য ব্যাণবা क्र्याचामभित्रगुरु ॥ क्ञा जात माथयूष्ट नायथ काल वुलामिना । পক্ষে মাসে তু বাশ্বীযাদ্ভোল্থ-निका ভবে ॥ ठानुग्रागी यशिष् भो कर्ष अगार कना दिना। शीएम **१का**श्मिश्रहा वर्षाम् इ शिल नैवः ॥ चापूर्वामास हमास या-गान्त्रामान्दिन नरहरू। इंडि गा-क्ष ७०२ व्यथायः ॥ 🟶 ॥ भून-ইপি। কটিত্ব মগ্রিছোত্রিত্ব• ভূশয্যান जिनभाद्रगः। दत्न दानः भरमा मूलः

নীবার ফলবৃত্তিতা।। পুতিসিদ্ধানি বৃত্তিশ্চ ত্রিমান তুত্থারিতা। দেব-তাতিথিপ্জা চ ধর্মো হয় বনবা-निनः ॥ इंजि गाक्ए २५६ वाद्यायः ॥ 🗱 ॥ व्यन्ताह । वान भुझ । नुन॰ धर्मा॰ তে বক্ষ্যামোৰধাৰ্য্যভা॰। অপভ্য नहिं पृष्ट्वी भारता (पर्म) हाय-তি॰ ॥ বানপুস্।শুন॰ গছেদাআনঃ শুক্ষিকারণ । ভত্রারণ্যোপভোগেন তপোভি শাত্ম দর্শন।। ভ্রেম শয্যা বুন্দচৰ্য্য পিতৃ দেবাতিথি ক্রিষা। **ट्याम जियवगन्नान॰ क**रीव मूलशात्रग॰ ॥ वन्राप्त्रहित्विषः वानभुञ्च वि-**बि** खुरा । **इं**जि वामत्म ७८ ज्यशायः ॥ 🕸 ॥ व्यश्वत्र 🗣 । द्याम উदाह । এব গৃহাশুমে ছিত্বা দ্বিতীয় ভাগ भागुयः। वानभुष्ठानुमः शह्द ज-मात्रः माशिदाव ह ॥ निःक्तिभा छा-য্যা॰ পুত্ৰেষু গছেম্বন মথাপি বা। দৃষ্টাপত্যস্য চাপত্যং জর্জ্রীকৃত্ত-विग्रः॥ मूझभक्तमा भूबीहर भुष ख हाखद्रायरम । भद्राभाद्रमानियः মাণ্ডপ: স্বর্যাৎ সমাহিত:।। ফল মূলানি প্রাণি নিত্য মাহার মাহ-त्र । यमाशात्रा खत्र खन भूकाय शिक्रहरवजाः ॥ भूकायहिष्यः नि-छाः त्राद्या हाजाईदर् मूबान्। ग्रा- बारानीय वान्तीयाराडी ग्रामान् मः भाक्तिः ॥ क्षाण विज्यामिन्। नथ (द्रामानि ना उप्रक्र । बाध्याः य॰ जर्बना सर्येश विराह्या मन् **७: ।। अर्ग्नाहा बहु बहुरा८ १११**-यकः नमाहाद्र । मून्रीय विविष (या रेष्ठाः नाकमून कलन जु ॥ ही ब বাসা ভবেমিত্য স্নাযাৎ ত্রিষবণ भूिः। मर्बन्जानुकम्भी महा८ नु-जिगुरु विविद्धिंड: II मर्ग्मन (भोर्ग-भारान राष्ट्र नियउ॰ विकाः পক্ষেষ্ট্র্যা শাবণে তৈব চাতুর্মাস্যা-নি চাহরেৎ।। উত্তরায়ণঞ্চ ক্রনশো मक्कमतायन स्वव ह। वाजस भावरित त्यं रेश्य मून्यतेष सगराश्तर ॥ भू-त्राजा**ण**े स्व.रेण्डव विधिवश्चित-(लट भृथक्। (रवजा जा ज ज दा বন্য নেধ্যতর ছবি: ॥ শেব সন্পভ্জাত লবণঞ্ধৰণ কৃত।। वर्द्धारमध् मा नारि (जीमानि कः त्रगानि ह।। ज्ख्ग मिगुकरेक्द (न শ্যাভকফলানি চ। ন ফালকৃষ্ট ন-শ্বীয়াৎ উৎসৃষ্ট মলি কেন্চিৎ ॥ ন পাুনজাতান্যার্ভো বা পুল্লাণি চ क्लानि ह । भावता देहत दिविना व क्रि॰ পরিচরেৎ সদা।। न জ্ছেৎ **मर्इ** ज्ञानि निर्वत्मु। निर्वर्श ७८४८ 🛚

। न नकः किश्विष्णीयार द्वारको श्रा. নপরে। ভবেৎ।। জিভেন্দুযো জিভ-काष खज्जानविविषयः। तुन्नः চারী ভবেলিভ্যান পত্নী মপি সংশ্র एट ॥ यस भन्ना वनः गन्ना रेम**श्**नः কামত শংরেৎ। তদুত তস্য ল্পের **७ পार्यक्ति** खार्य विज्ञः ॥ **७**व যো জাযতে গৰ্ভ্তো ন সংস্পৃশ্বেরা ছি-জাতিভি:। ন হি বেদাধিকারোস্য ভৰু নপ্যের মেব হি ৷৷ অধ্য শ্বীত मञ्ज मार्विजी जगउर भरः । भर-ণ্য: সর্বভূজনা সন্মিভাগপর: স-हा ॥ भद्रिवारः मृयावारः निमुल (मानि वर्द्धारार । এ माना व नत्काः म्राट (पुक्ति डा॰ जूरि शाक्षायर॥ মৃগৈ: সহ চরেলাস তৈ: সহৈব চা न वरनः । जिनायाः भकंतायाद्य भगी उ मूममाञ्चिः॥ मर्गः **्रभा**ः लाका वा नहार भाममक्षितिकाः शि वा। बन्नामनिहर्या व। महाद भीषाय पिवा वाङ्डा मास्त्र : । ठजुःकालिकिका वा मा९ माहा^र चर्रेनकालिकः ॥ ठान्मायन विवारिनः वं। भूक्ष कृत्क ह वद्धायर । शकः भाक ममनीगाट यवारः कृषिजाः उथा।। भुझ मूल करेल वाशिकवरेल

इंबंग्टनमा । याजाविकः यगः भीर्ति रेवंशानमगर इन्डः॥ ज्रानी बा পরিবর্ত্তে তিষ্ঠেছ। পুপরৈ দিনি । ज्ञानाननाज्याः विरुद्धिः न क्ष्टिः रिक्यं। मूट मृह्हिट ॥ ग्रीरम् । नक्ष उभा-ক্ষ স্যান্ব্যায়ভাবকাশিক:। আর্-বাসাস্ত হেমন্তে ক্রমলো বর্ত্তাণ তথঃ ।। উপস্পৃশ্য ত্রিষ্বণ পিতৃদেবা॰ ण्ड जर्भाय्य । এक्ष्माप्तन जिःश्रेज मही हो वं। निरवर महा।। नकाशि धून পো বাস্যাদ্যাপ: সোমপো ২৭ বা। भगः भिरवे भूक्रभाक्ष कृष्णभाक्ष जु लाभय ।। भीर्न भनामाना वा महाद क्रिह् वी वर्खांगर मना । त्याणान्ताः সরতো বা স্যাক্রাধ্যাথী ভবেৎস-হা।। অথর্বশিরসোপেতো বেদান্তা-ভাগে তৎপর্য় য্যান্ সেবেত সং **७ उ**॰ नियमा॰ का का उन्तियुक्तः ॥ क् काबिनी (माखदीयः मूक्न यख्डामः वी उवान् । व्यथवायीन् जनारवान्। चाजूनि ब्यानज्यभद्रः ॥ व्यनश्च द्रः নিকেত্ত: স্যামুনি মেনিক্ষপরে৷ ভ-(त्रः । ভाপদেশ্বেব वित्तुव् वाजिकः रेजकमारुद्रि ॥ गृरुमिथयू हात्मुयू बिब्बर् वनवानियु। गुामानाङ्क उताः भीवारक्षेत्रामान् वतन वमन् ॥ भूजिः गृश मूरहेरैनव भागिना मकत्वन वा।

বিবিধা শ্চোপনিষধ আত্ম সংসি-कर्य काल ।। विम्रा विष्णवान् गाविजी॰ क्रमुाधाय॰ छरेलव हो यहा शुङ्का विक्था रही हा हा प्राप्त न भ-नड्या।। अञ्जलूदन मन्द्रहा वकान র্পণবিধে ছিত:। যে তু সম্যগি-म माण्यः जिव माण्यस्त्राभावश्रुक নাশন । তে বিশন্তি পদীমশ্বরণ भद्र॰ याखि हित बगाउामा म•ऋ-তিণা ইতি ক্র্পুরাণে উপরিভাগে २७ व्यवतामः ॥ #॥ व्यन्तरः विकृ न्द्रात्व अर्भ > अव्यार्य मुद्रेवाः॥ वान्त्रः भू छी यनाम्था उभगूः। वानत इंडि ভाषा। उद्भर्यग्रायः। কপি: ২ প্লবঙ্ক: ৩ প্লবগ: ৪ শা-थामृगः ৫ वलीमूथः ७ मकं हैः १ কাশ: ৮ বনৌ কা: ১। ইত্যমর: ॥ मर्कः २० क्षवः २२ भुवनः २२ भूवगः ১० প्रवक्षमः ১८ भूवक्षमः ১৫ গোলাঙ্গল: ১৬ কপিত্থাস্যঃ ১৭ দ্ধিশোণ: ১৮ হরি: ১৯ ভক্-मृगः २० नगाउनः २७ सन्ती २२ বিস্পাক: ২০ কলিপ্রিয়: ২৪। ইতি **मद्र**ञ्जावनी ॥ किथिः २५ माना-वृकः २१। इंडि कराषद्रः॥ वानव्रिष्यः भू॰ की विव्कः। इंडि बद्राभाषा ॥

বানরাঘাডঃ পু॰ লোধুব্কঃ।ইতি ॥ भप्ठिम्कि।।

चानद्राकः भू वनहागः। ইতি वानीद्रकः भू श्रावणी॥

वानती जी नर्कि ।। म्क्निश्ची। हैि नम्द्रवावनी ॥

वानरत्रन्तुः भू॰ जूगीयः। ইভি भद-त्रज्ञावनी ॥

वानवः भू वावयः। क्कवावुरे इंडि थ्याङः। इंडि मदहिन्द्रका॥

বানস্পত্যঃ পু॰ পুস্পজাতফলবৃক্ষঃ । मञ् यामुक्याि । इज्रमदः॥

বানা ন্ত্ৰী বৰ্ত্তিকাপক্ষী। ইভি कराथतः ॥

वानायूः पुः (मभविष्मयः। म जु ভারতবর্ষস্য উত্তরপশ্চিমে বর্ততে । ইতি नम्बद्भावनी ॥

वानायुकः भू वनायुर्म्भारभार ঘোটক:। ইত্যমর:॥

বানীর: পু• বেতস্কঃ। ইত্য मद्रः॥ वाञ्जनू इंडि थ्रां उव्कम्ह। ७८१र्य्यायः। वृज्जभूञ्गः २ भाशानः o कलावजनः ८ व्याधिषाजः ৫ शतिवराधः ७ नारम्यः १ अन्यस्यः বঃ ৮। অস্য গুণা:। ভিক্তবু॰। শিশিরত্ব। রক্ষোম্ব। বুণশোধ-नष्। शिखात्रु कर्क (दाव नानिष्-

। मःगाहित्। कवागद्म थ । इंडि त्राजनिर्घणः॥

मुञ्जज्गः । इंडि वाजनिर्घणः॥

वानीव्रज्ञः ली स्रंधः। ইতি वादः निर्घणः ॥

वात्वर ही किवर्सिमुखकः। इंड्राः यतः ॥

बाडः जि वमिंडिवस्त्र । वमद्यार्डाः কর্মণি জ পুত্যবেন নিম্নম:॥

অক্বুর:। ইতি ত্রিকা-ওপেব: 11

বান্তি: জ্রী বমন । বাঁতি ইতি ভাষা।यथा। वाश्वि क्ष्म्थन रहिर्म র্বমন ব্মথু র্বমি:। ইতিরত্নমালা॥ বান্তিহ্ন পু॰ লৌহকটকবৃক্ষ:। মযনা ইতি ভাষা। ইতি শব-**ठिन्मुका** ॥

वाश्विमा जी करूँकीवृक्तः। हैिं भय्ठिमुका ॥

वान्या जी वनमम्रः। ইতি भयः ब्रङ्गावनी ॥

বাপ: পু॰ বপন•।বপধাতো ৰ্ঘঞ পুত্যথেন নিম্নম: ॥

বাপক: ত্রি বপনকার্যবিভা।ঞ্য वभवाराः कर्त्वते नक भुजारवन निष्ठमः ॥

हाभरखः भु वभनार्थम् छः। वियु इिंड जाया। ज्रू भर्यप्रायः। विमार इेडप्रमदः॥ विम ० विमः ८। नाय-मुखः १। इेडि ज्वजः॥ शिमः जी वाभी। इेडि ज्वज-विक्रमकायः॥

াপিত বি বীজাক্ত ॥ মৃতিত।
ইতি মেদিনী ॥ খান্যবিশেষে ব্লী ।
বাপ্তবাধান ইতি ভাষা । তস্য
গণঃ। বাপিত গুড় তজান্য কিফিজীন ম্বাপিত । ইতি রাজবল্ল ছঃ ॥

त्रान्।मरद्भ वाशी । इंडि बनाय-(यार्मर्गडकुः ॥ 🗱 ॥ उर धनन ফল যথা৷ যো বাপী নথবা কূপণ **प्तरम वाद्रिविवर्किए । थानएर ज दिव॰ याजि वित्निते वित्निते अंड॰** नगाः ॥ इंकि कन्न उछो कायुनुद्रानः ॥ 🛊 ॥ उद्धल खगः। वाभः सक् কটু ক্ষারণ পিত্তলণ কফ বাভিডিৎ। इंडि ब्राइवझङः॥ #॥ उ९ थन्त দিল্লিষেধা যথ।।বাপী কুপ ভডাগ॰ का भागार वा निक्छन । न सर्य। वृञ्जि नाम**स** व्यनवानिन रेन्थ्रं छ ॥ আল্লেখ্যা•মনস স্তাপে৷ নৈৰ্থতে ক্র-कर्मकृट । वायव्याः वलविखक्ष भीयः भारन बाल शिरव।। ज्ञानमा भावरक ভাগে বাপী কুপ ভডাগক। অগ্নি-नारः मरा वर्गायमानुव ठजुञ्जनाः ।। रेनर्थां अगियमान खाजाना पू:-থিতো ভবেৎ। কন্যাপি उद्धतः পীত্বা পতিণ গৃহাতি কামত:॥ ইতি प्रवीभूबात् ननतात्र ७ भूत्वभाषा-यः ॥ 🕸 ॥ ७८ कत्र ग कनः यथा । मर्थिन উवाह। उडारगारक वाशी-ना॰ कृष्ठाना निरु य८ कलः। विष्ण ষেণ পিতৃশেষ বকু মর্হস্যশেষতঃ।। यन উवाह । धर्मन् । धर्मन् । धर्मन् । यमनम विद्यालन । उडागः नुगुः

ज्ञाचु भन्नभागजन भृष्ठ ॥ (५व-তা: भि उद्या नागा गन्न वी यक दा-क्रमाः। भगु भक्ति मनुष्राक्त मः भुः যন্তি জলাশ্ব॰।। কৃৎসু॰ তার্যতে ব॰শ॰ পশ্য খাতে জলাশযে। গাবঃ পिविश्व भानीयः मनुष्राः भन्य ख्या ॥ भत्रम् छो उद्यागियू मिनन यम्। ভিষ্ঠতি। অগ্নিষ্টোম ফল তদ্য পুৰ-দন্তি মনীবিণ:।। যেবাং শিলিরকা-লে ভূপানীয় পুতিতিষ্ঠতি। বাজ-পেয়াতিসত্ৰাভ্যা•ফল•বিন্দ্স্তিন্ नवाः॥ रमख रेऽव ग्रीय्य जु मिनन यमः ভিষ্ঠতি। রাজদ্যাখনেধাভা ল ফ*ল•* সমুপাশুতে ৷৷ তড়াগ' স-অন জানা জাবনন্ত দিবানিশা । ত ন্যাৎ সর্বাস্থ্যনা বৎস ওভাগ **মিহ**া कादाय ॥ कृथम् । इ जाद्रायम् । भ क्षम। न मः भयः। भाव छीतः क्**डः** क्।: नञ्च इंड बन ख्या।। यम्। যাৰুজল ক্.প পিৰ্ত্তি সতত জনাঃ । স নরে। বিরজো লোকে দেববদিং-वि व्यान्त ।। भीटेन्द्रवक्तन कीनः দ্বি ন্ধ্ সুরাসব । তাব্ৎ পিপাসা भः लि । यावानायः न भीया ।। की विश्व हा महिल्ला दिवसानि वर् ন্যুলি ৷ ভূষিত স্তোয়র হিতো দিং नामक न जीविज ॥ उथालताजि

যো নিভ্যু পানীয় প্রাণিনা নিছ। স দদাতি নর: প্রাণান্ মাভ্তেছত্ত अ॰ मयः ॥ भागनाना भन्न नाम নান্যদ্বান হি বিদ্যুতে। তথাদ্বা-পীশ্চ কুপা•শ্চ ভডাগানি চ কার-(यट ।। अवृक्षां नि इ विशुर्व यही हि८ (मुयनाजानः । मुझ श्रातिः পানন্ত য: কার্যতি শক্তিত:।। স'তার্যতি ভ্যোপি দ্বিগুণ তস্য বৈ ফল'। ইতি বহিং পুরাণে তডাগ वृक्ष भूतः भा नामाध्यायः ॥ वाभीरः भू ठाउकभक्षी। इंडि ত্রিকাওশেষ:॥ वानार क्री म्हिष्य । इंजानद्रः॥ वननीय वानी ज्य ह बि॥ বাম ক্লী খন ৷ ইতি মেদিনী !! वाङ्कः। इंडि बहायदः॥ वामः जि वृद्धः॥ भूजीभः॥ भवा इंड्रमद्ग स्मिनिकारते ॥ ज्यसः। इंडि निक्षाञ्चकोनून्यामृगादिङ्खः ॥ 🗱 ॥ वामश्खन हल्लान (जांज-ননিষেধো যথা। ছারীতঃ। ন পি-বেন্ন চ ভূঞ্জীত দ্বিন্ধ: সব্যেন পা-गिना। रेनकश्खन ह क**न॰** भएनाः विद्धि उ शिवट ॥ इंडि वादि क उ खु॰ ॥ जिलि । न वाम र उ নোজ্ড্য পিৰেছক্ত্ৰেণ বা জল भ्यां अप्रायः ॥ इंडि को स्मि १८ व्य-भूय् मृद्धि ॥ इंडि को स्मि १८ व्य-भूग्यः ॥ #॥ वामः कार्या वृक्ष-भागः मन्त्रापि जुक्य्य । कृष्डा भया स्मार्थनाय हार्बाकापि भूवर्ज्वः ॥ इंडि का निका भूद्रापः ११ व्यथ्रायः ॥

वामः भू इतः ॥ कामएवः ॥
भाषापतः। ইতি मिएनी ॥
वामपृक् खी नात्री। ইতি त्राजनिर्घरिः॥

বামদেবঃ পু॰ শিব:।ইত্যমর:॥ वामनः भू मिक्किनियञ्जः॥ दुवः। इंड्रानद्रः॥ चारकाठेवृक्षः॥ इदिः। ইতি মেদিনী।। বিকো: পঞ্মাব-**जातः। उम्र भा**नू जीवा यथा । **बित्रमानिव उवाह। शुशुम्त्रा** जु তো যজ্ঞে বিরোচন ইতীরিত: । তস্য পুথো মহাবাহু বলি ৰৈখা-নরপুভ: ॥ সতু ধর্মবিদাণ শুষ্ঠ: ज**ाम** जी बिट्टियुगः । हाद्रः লিুযতমে। ভক্তো নিত্যু পর্মারত: भूिः॥ न जिदा नकवान् (परान् (मन्दुः क मनक्ष्मभान्। जिल्लाकान् ৰবলে স্থাপ্রাজ্যুণ চক্রে নহাব-वः ॥ इन्मारि जिन्ना छम् किह-রা: সম্পঙ্কি তাঃ। ভুষ্টরাজ্য সুর-

পতि॰ दृष्ट्री उम्र भिजामिनः ॥ কশ্যপো ভার্য্যা সার্দ্ধ• তপ স্তে-পে হরি॰ পুতি। অদিত্যা সহ थर्माञा शरगायु उनमन्त्र उ: ॥ व्यर्ह-यामाम (एरवणः भग्ननाजः बनार्षः-ন । ততো বর্ষ সহস্থানি তেন সং-भूक्षिতा इति: ॥ **अरेथ**वावित्रज्ञः म् (ह्वा मह मनाउनः। ७ मृह्वे। জগতামীশ॰ হ্রনিভ্রচেতস। ॥ পত্ন্যা সহ নমফ্ত্য তুষ্টাব চ দ্বিজো-खभः। कन्त्रभ उवाह। नत्या नम्रत्य **लक्षीण नर्बछः** जगरीयत्र। नर्वाञान् नर्वरहरदम मृष्टि मः हात्र कात्रक ॥ इंड्रानि स्रुडिङि: मग्रक् स्यमात्ना महर्षिना। त्राङ् गञ्जीत्रया वाहा भद्रिः তুঙো জনার্দন:।। সন্তুষ্টোমি দ্বিজ-শুেष्ठ च्या ভক্তा मनई उ:। दद्र• व्-ণীয় ভদু•তে করোনি তব বাঞ্ছিভ•॥ **७ ३: शु** १ क् बी रक्ष भ • खार्या गर कण्रभः। भूधद्वः यम (परवण मःभू।-भ) जिन्माः हिङः॥ स्कृष् विना (एव देवालाकाः निष्क्विंतः वलार । इन्पुत्रशवद्राका ज्वा ऐरममु इंडि নামতঃ ৷৷ যেন কেনাল্মমার্গেণ বলি• निष्डिं ठ भाषया। देवलाका भन পুগ্রায দেহি শকায শাখত।।। ই-ত্যুক্ত স্তেন বিপ্ৰেণ তথেত্যাই জনা-

र्मनः । अञ्च्यमान जिन्ते अटेब वास्त्रधीयञ ॥ এञ्चिषद्वातः काल কশ্যপস্য মহাত্মনঃ ৷ অদিত্যা পর্ত্তমাপেদে ভগবান্ ভ্তভাবন: 🛭 ইতি পাদ্মোত্তরথণ্ডে ৪৮ অব্যায়: ।। #।। এশিব উবাচ। অথ বর্ষস-**इ**मुाड मर्दालाकमारु थेत्र । यिन-তি ৰ্জন্যামাস বামন বিষ্ণু নচ্যুত্থা গ্রিবৎস কৌশ্বভোরস্কণ পূর্ণেনদু স मृभम्। जि॰ । मृनदत्रः भूखत्रीकाक्षः षा जिथा र्वे जन इति ।। वर्षे दिष्मा स्तरः (६द॰ मर्बादकान्नरगाहतः। (मथमा-जिनम् थानि हिस्स्नाहिन नी येव ।।। ত• দৃষ্টা দেৰতাঃ সর্বে শতকত্বপু-রোগনা:। खद्या महर्यिन्डः नार्षः নমক্তকু মহৌদ্দা: 11 ততঃ পুসয়ো ভগবান (भावाठ भूद्रभखमान्। किं कर्डवाः भया वारा छह्नुवी उ जूदाः खगाः॥ ७७: शुक्के। जिन्मा खग्हः १ द्राय ४ द्र । यश्यिन् काला वला र्यक्तः বৰ্তে মধুসুদন॥ পুথম দানকালো ९४॰ छम्। रेस्डाभरतः भूरजा। या-টিস্থা ত্রিদিব লোক ভত স্তু দাতু-मर्शम।। इज्रुक जिन्ताः मर्बिद्रा-क गान विल श्रद्धिः। यागामान मना-जीन मृदि जिः मार्ख मकरेयः ॥ जन ভ्যाग उ॰ वर्षु॰ मृक्षे। महामान्याय रेन-

ভারাট্। অভ্যাগত• শ্বয• বিফু॰ ম-श्रवं जमित्रः।। পूज्यामाज विदिः ना निर्वेण क्रमुमाम्नान शुनिभेज नमञ्ज्र भार गर्गर्या गित्रा ॥ वः ন্যোমি কৃতক্ত্যে ৃংমি সফল• कीविजः मम। खामहियेखा विर्भुनु কি॰ করোমি তব ভূিয়॰॥ আগতো: नि यमर्थः वः भागुष्टिणः। विकाखमः। उद भुषहानि ८७ भीषु बुहि (वरवि-দাং বর ॥ ততঃ পুজ্ঠ মনসা ভমুবা-D मही भिक्ति। भृग् द्वारकमु वक्ता कि मनागमन काद्रवः॥ चात्रक्षका मृन থিবী দেহি দৈত্যপতে মম। মস ত্রিবিক্রমণ পাদং মহীণ সংদাত্ ম र्शन ।। मर्खिषा स्मय मानाना जून मान मन् बम । (या ममाजि म भी । त्राजन् विभागाकिकनाय वि॥ अञ्ह माङ नथका म ভবেৎ পৃথিবীপতিः । न ज्ञिकान जम्म॰ পবিক নিर विराउ ॥ उनार्ख्यः भशेभाव भुगह रेबभर भम । अडरद्मभरी माञ् गा वि**ण**क्ष मञ्जाला हा बन्धा भुगानस्य नग ज्भ जविषाजि। उउः পুরুষ্টবদন স্থেত্যাহ মহীপতি: il তলৈ মহীপুদানন্ত কর্তু মেনে विधानजः। उ॰ मृक्षे दिनजोत्राज्ञान॰ उना उन्। भूरवाश्यः ॥ उनन।

व्यव्वीक्षाकाः भा बाजन् मीयञाः भ-। शी। এव विष्टुः भारतामा या परिवः मः नार्थिता न्म।। वक्षिया महीः नर्बाः उउः नाुषु भिश्गाः। उ-मामारी न माउरेश उरिम बाबन् महाज्ञात।। वात्रमर्थः भुगहस वहना-অম ভ্পতে। তত্তঃ পুহস্য রাজা-भो उर एक शाह देवर्ग्यः॥ श्रीउः य वाम्राहरमा भूगाः मर्बः क्षः भवा । चर् ध्रायाङ् विकः स्याम्याः गर्डा यरि ॥ जम्रार्भगमि दाखुः हि की विज्ञ महत्रम। जमारीय भुषहामि जीन् लाकानि भाविद्रः ॥ ইত্যক্রা ভ্পতি স্তম্য পাদৌ পু-काना ভक्ति :। वाक्ति : भूपति ভ্মি॰ বারিপ্র॰ বিধানতঃ॥পরি-गीय ननक् अ पद्मा देव पक्तिना वम् । खेवाह **७**॰ वर्षु॰ विशु॰ शुरुरवनास्त्रता-অনা।। ধন্যোষ্যনুগৃহীতোমি তব मञ् । मशे । विज्ञ । यर्थ हे । जब विर्मु न्मु उर्ग्राग बरीमिमाः।। नकाम८ काि विखीर्गाः भकानन सञ्चित्राः । जनागद्राक महीलाः महत्वामूद्र-मानुषा ।। शारितकन भूकरका वि क्रमा मधुमूमनः । উवाह छः रेमछा-রাজ কি করোমীতি শাখত।।। **ए**बरिबिकमः क्ष भी यत्रमा माही-

बनः। नयाजू मिन (प्रवाना म्वीः ণাঞ্চ মহাত্মনা।।। ন বক্তু মলি শক্য न्। ८ वृक्षाः भक्षत्रन्। ७८ भर् পৃথিবী॰ সর্বা মাক্রম্য গিরিজে শুভে ॥ অञ्जिब्रकः ममञ्दर भग्जरयाजः न मायछ । दिवा हक्कू मंदि छोम रिन्डाद्राख्ड मनाउनः ॥ ठरेम স•-**ए**र्भग्रामात्र स्रकः क्रमः क्रमार्पनः । **उद्यिक्त १ (१ व म) मृद्धे। रेमर ७**५० -খরো বলি: ৷৷ পৃহর্ষ মতুল লেভে जाननराष्ट्रभित्रश्लु ७: । मृष्ट्री (५व॰ नः মস্ত্র স্তব্বা স্ততিভি রেব চ।। পুা-रु गम्गम्या वाहा পुरुर्यनाच्याजाना । খন্যোমি কৃত কৃত্যোমি দ্বা• দৃষ্ট্ব। भन्नत्मद्रनः । । (लाक्जवः म्रोभरेव**७**८) ग्रान मधुम्रन। व्यथ मर्वियात्रा विकृ विं श्रीयः भनमवाराः ॥ উष्कृ পুসারযামাস বুন্ধলোকান্ত মচ্যুতঃ । नमक्क शुरहारभउ नईरिव न भाव्छ ।। भारिमाभित्रभूर्गा २ ज् र-ছুঙে: স শ্ভাননে । ততঃ পিতা-गरश मृक्षे ठक भग्नामि विङ्कि उ॰ ॥ ञ्रिभामः (मरामराम) स्थंगःज्ञ-চেতস।। খনেগ্রমীতি বদন্ বুক্ষা गृहीद्वा यः कम धन्।।। जन्। भुः ক্ষাল্যামাস ভত্র সংস্থিত বারিণা। অক্ষ্যমভবভোষ তম্য বিফোঃ

পুভাবতঃ ॥ ভত্তীর্থ গেকশিখরে भाभ उद्यम् व दान । सगठः भाव-नार्थाय हजु मिं क्यू भुवा हिज ॥ जी-**छ।** हाल करन्ता ह वहकू र्स्नायथाक-मारा भुमवादिक माथाउ गवा-জন্ম হানুত্তম•।। ভড়োনারাযণ: 🕮 মান্ বলে দিত্যপতে: পুতৃং। রসা **उन** म् ड॰ (नाक॰ शुक्ति) ভক্তবৎ जनः॥ अर्द्धवाः मानवानाकः नागाः नाः वारुभाः भएउः। त्राकानकः वः লিঞ্জে যাবদাহত সংপ্লব ।৷ পুতি-গৃহ্য বলে লোকান্ বটুবেশন দৈত্য-**रा। मरहन्मुाय मरही भी उ**रा कामार পি র্বিফু রব্যয়:॥ ততো দেবা: স गञ्जर्दाः वाषयण्ड स्ट्लिजनः । जूक्षेतः स्त जिल्लि कि देवाः भूजायाम् बहुर्छ। ৷৷ সংক্ষিপ্য তর্মহ ুপণ (ত্যাণ স-न्तर्भनाय देव। अः भूड प्रमान जिन्देश ब्रुष्टर्शान यथी हति: ॥ इंडि भारम्याः खत्रथा ७६३ व्यव्यायः ॥ 🗱 ॥ उत्तर-**তারপু**কারাছর• यथा। नाরদ উবा-ह। माञ्जु उ॰ जगवान् विकु दिखाः ক্যাক্রণ বপু:। করিষ্যতি জগৎ याभी वरन वंक्षन भीश्वतः॥ उৎकथः পূৰ্বকালেপি বিভুৱাগীৎ ত্ৰিবিক্ৰন: । कन्य वा वद्यनः विकुः कृखवा छह (म वर ॥ भूवछा छेवाह । भूयजाः

কথ্যিষ্যামি যোষ প্রোক্ত জ্রিবি-कनः। यश्चिन् काला मञ्जूद रक्ष व क्षिउवानमो ॥ व्यामीट धुक् ब्रिडि খ্যাতঃ কশ্যপদ্যৌরসঃ সূতঃ। पन्गर्छ সমৃদ্তো মহাবল পরা**ক** भः ॥ म मनावाश्य ववसः वृक्षाणः खननामूतः। व्यवशृद्धः मूरेतः मर्दिः পুথেয়ৎ স তু নারদ।। তছরং ওস্য **ह** भागा उनमा भक्ताण्यः। পরিত্ষ: স চ বলী নির্জ্জগাম ত্রিপি-ष्ठेभः ॥ ठड्थंम् कत्न द्राप्ते किन्न (रवान् नवानवान् । धृक्तः भक्ष মকরে। হিরণ্যকশিপৌ সতি॥ छिम्बन् काःल **म** वलदान् श्रिवगुक-मिन् छनः। हहात्र मन्द्रविद्री रिन्छाः धुक्तुः मगान्द्रिजः॥ ज्ञा १म् রা যথকোন বিষ্রন্তি ত্রিপিষ্টপে। বুন্ধলোকে চ ত্রিদশাঃ সংস্থিতা দুঃ থ: স যুভা: ॥ ততো ২মরান্ বুর্গা जरता निवामिनः भुदा ह श्रुष्ठ निर्धिः कानु गठ र। गद्दान देन छ। वयमगुक म। यहा विद्वाल विक्यान् मणकान् ।। তে ধুসুবাক্যক্ত নিশন্য দৈত্যাঃ (भाष्ट्र में भाषिपाडि लाकभाव। गः তি यंगा यान भिजानशास्त्र मूण् র্গনো হয় পরতো হি নার্গ:।। ইতঃ नश्रम् र्वल्याजनारेथ्य ह्याका म-

ছ্নান নহযি যুষ্ট:। যেয়া॰ ছি নাসা-भवत्ना पिछन प्रशासिक दिन्छ। । सङ् (मक्किट्डन।। (उषाः वहन मार्क्ः) धुकः (भावाह नानवान्। गन्डकामः म जनन वुकारा किन् भी अज्ञान्।। कथः स्र कर्माना (कन नम्राट मानवर्ष जाः। कथ ७व मर्याकः मःश्राधः मर रिनवरिष्ठः ॥ ए शुक्तुना मानविन्तुाः श् क्षाः (नातृ वंका २ विभः। कर्य उम व य विद्याः मुक छाइ डामानगा ।। दिन **छ।।ना॰ वठने॰ भुःद्वा श्रुक्कु रेर्म छ। शुरहा**। हिउ॰। পण्ड मुक कि॰ कर्म कृद्वा বুল্দসদে৷ পতি:॥ ততোফো কথ্যা-भाग रेर ड्याठार्यतः किलालुयः। भ-ক্রন্য চরিত জীমান্ পুরা বৃত্তরি পো: কিল।। শক্র: শতন্ত পুণ্যানা कज्ना महार भुता। रिन्छाम् वा-हिमिथानाः (उन वृक्षमामां गजः॥ ভদ্বাক্য দানবপতি: শুদ্ধা শক্ষ্য বীর্যবান্। যষ্ট্র ভ্রগমেখানা চ কার মতি মুন্তমা।।। আমন্তর্গাছা (भावाह यक्त्रहर रेडिइ ब्रच्य दिशः म मिकिटेनः ॥ जाङ्ग्डाव्य निथ्य महा-काभाषाक छश्काः। भ्वात्मा (द-विका यब गना भागीन वाहिनी॥ नाहि भूगा मात्र एमुक्ष महिसिक्- करी निवा। जलः भागिन मानाम्। वाजित्मधान् यजानत्र ॥ इव्यः मुद्रा-विवहन निमन्त्रामूब्रयासकः । वाह निउर्वेशेष्टिं। निषयः नः निष्म मः ॥ ७८७। धुन्नु (र्मविकायाः भाहीत्व পাপনাশনে। ভার্গবেন্দেণ শুকেণ दाजित्मथाय नीकि जः ॥ उत्जा २१३ ध्यम गर्ग जरेनचा व्याखा मिनः থ বিদিশক পূর্ণা:।তেনোগুগদ্ধেন **ष्टिक्श्लन मक्**ष्ट्राते तुक्कालाक म-श्रवं।। उ॰ गन्न माघुाय मूबा विवश कान्छ थुजू॰ स्यामधरी कि उ॰। ७७: শরণ্য শরণ জনার্ফন জগু: अल-কা লগত: পরাযণ ৷৷ পুণম্য বরদ • एवं भग्ना छ बनाएन । (भुष्टुः সর্বে স্রগণা ভ্যগদ্গদ্য। গিরা !! खगवन् (मव्राप्तवम् इत्राज्व**शत्रा**य् । বিজ্ঞাপ্তি: শুগতা॰ বিষ্ণো সুরাণা-নাত্তি নাশন ॥ ধুফু নামা সূরপতি বলবান্ বলবৃংহিত: ৷ শুক্রস্যমত-भाष्ट्राय (माथ्यभाष मीक्किज: ॥ শত কর্না হিষ্ণাসৌ বুন্ধলোক मशामूबः । आखार् मिह्छ वली विष्ठजू जिम्मानिभा एमामकान-হীনস্ত চিন্তবৰ জগদ্গুরো। উপাব• मथ्विधृशम ভवारमा (यन निवृं छाः ॥ मुद्रा मुद्रागाः वहनः छगवास्रस्- ज्रवः। रद्याख्यः महावादः(भुवयाः মাস সোথ ভান্॥ বিস্কাঃ দেবতাঃ नर्बा ज्वापा (बज् महानूब । वक-नाय मिक्किक मधुरक्षा त्रवृत्रमारेव।। ভতঃ স ক্ৰা ভগবান্ বামৰ ৰপ মীশব:। দেহ• কৃত্বা নিরালয়• কাষ্ঠ• वाप्त्विकाह्माला ।। क्रशाचा ब्हा॰ खारथा-श्रद्धन्युक्तरमा यमृह्या । मृह्याथ হৈত্যপতিনা হৈত্যৈ চ্চান্যে: সুর্বর্ষ-ভি: ॥ ভত: কর্ম পরিত্যন্ত্য বজি: यः वाक्षााख्याः । ममूबाद्रयिजुः विशु यमुवस मयाक्वाः॥ मरम्या यवमानाण अधिकण मरहोकमः। निमब्बमान मृष्यवृ 'मर्ख उ वामन विकः ॥ नम्बार्यः इनस ए नन्हः गर्द এर हि। किमर्थः পভিতোসীহ (कन किएछानि वा वह ॥ (उदा भा-कर्ण वहनः कल्लानात्ना मूह मूंहः। পাহ ধুরুপুরোগা ভান্ শ্র্যতা মত্র कात्रगः ॥ कुञ्चला खनवान् चानी পুভাস ইতি বিশুত:। তস্য পুত **दयः बाउः मन्तृत्रु**क्कः मून्न्ःथिठः॥ **७**ना (कार्ष्टा सम जाूजा कनीयान-পর ভৃহণ। নেত্রভাল ইতি খ্যাভো ক্যেপ্টো ভূাতা ততো হসুরা: ৷৷ মম নাম পিতা চক্ৰে ইতি ভাসো ২তি-को उकार । ७ ३: कालन भरू ७।

আববো: স পিতামৃত: ॥ ডস্টোর্ক (रहिक क्षा गृहमावा ममागछो। ভতো মধোক্ত: স ভ্ৰাতা বিভন্নামা গৃহ• বয়• ॥ তেনোক্তো নৈব ভবডো বিদ্যতে ভাগ ইত্যহণ। স্বন্ন বামন थक्षाना॰ क्लीवाना॰ चिविगामिश ॥ উমত্তানা ভথাদ্ধানা ধনভাগে। ন विष्ठाउ । এव मुक्ता मया त्मा १४ किमर्थ रिभञ्काम्गृहार ॥ बनार्ध-ভाগ महाभि नाइ॰ न्यात्वन त्कन दि া ইত্যক্তৰতি বাক্যে হসৌ ভ্ৰাভা মে কোপ সংযুতঃ।। সমূৎক্ষিপ্যা: ক্ষিপদ্দ্যা মস্যাংশামিতি কারণাৎ । समाम्याः नित्रगायास सर्द्या ह भू-व्राउ। गठः॥ कानः नम्रू नवार्धास যুখ্যাভি রিহ চোজ্ড:। কে ভবস্তম मः भाषाः मान्या वाक्षवा हैव ॥ (उ वामन वहः मुद्दा ভार्गवा विक नड भाः। (नाष्ट्र रिनंड)পতি॰ সর্বে বাম-नार्थ कब्न वहः॥ इंडि विज्ञानाः वहः नः मुद्धा रिष्ठाशिक ईहः। शुर हि क प्रामीजियाविष्ट्रित देव थनः॥ **जबाकाः नानवशर्जः मृद्या मि**दा ६थ वामनः । পारामूबनाजिः धूर्मः यार्थनिक्किक्र वहः ॥ स्नाप्रत्राः পি হি ভাত্রা হ্রিখতে যস্য সম্পদঃ। **७**न्याक्त्रम् युद्धः किम्पान्य न

স্থারিষ্যতি ॥ মম পুনাণ মালোক্য भागकक कमजयः। मः भुगह्य रेन-(छान्तु नाश्विष्ट द्रिक्षिष्ठ् क्रमः ॥ **ইত্যেব মৃ**.ক্ত বচনে মহাল্মা বিহুস্য रिड्याधिशिडः सथि द्विक्। शामा-फिर्डन्माय शरवष् उना यना न ना-नाः कग्रह ह किश्वन ॥ कमखरा (७१-य भरवक्तर एखः सङ्ग्रिप्दरम्पुन वि-जू यंगवी। চকে তভো नह्मिक् बिलाकी बिविकम क्ष मन्डण-ক্তি:।। কৃত্বা তু ৰূপণ দিভিজাণ্চ रदा भुगमा हवीन् भुषमकत्मग। गही॰ गहीर्युः महिजा॰ महानंदा॰ মহার রত্নাকর পত্তনৈ যুবিং॥ ভুবং जनाक जिरमाधिवाम लागार्क थे-কৈ রভিমণ্ডিত নভ:। দেবো षि जी रयन जगान रवगार करनग रन-বল্রিয়লোক মীশ্বর:। ক্রমণ তৃতী-য ন যদাস্য পুরিত তদাতিকো-भाष्यम्भूक्षतम्। भभाज भ्रि छ-গবাণ স্ত্রিবিক্রমো মেকপুমাণেন তু विगुर्ह्य।। शंज्जा वामुर्द्रायन मान-বোপরি নারদ। ত্রি-শঁঘ্যোজনসা-হ্বী ভূনি ভূ ভা ঘটীক্ ভা।। ভতে। रिन्डाः मगूरभाडा उमाः भुक्तिभा বেগত:। বর্ষশিকাভিবৃষ্ট্যা তা॰ গর্ভভূনি মপুর্যৎ ॥ ওতঃ স্বর্গণ

महमुक्ति वामस्वनुमारः ।
मूबाण मर्ख विलाकः भवानु र्निक्रमपुवाः ॥ जगवानि रिस्टानुः
भूक्तिमा निक्नार्गः
क्रम माद्याय जखिवाद्यस्थितः ॥
हिज वामस्य जखिवाद्यस्थायः ॥

वामनः वि चि जिन्नुः। उट्भर्या-यः। नाष्ट्र नीहः ३ थर्दः ४ दुषः ८ । ইতাमतः॥ जनूहः ७ चनायठः १ । ইতি জটাধतः॥

वामानजः क्री नीर्घ क्रेंकातः। यथा। क्रेंट्सा देवयानत्र इः मामध्य दिव्यमः द्यामानत्र इः मामध्य दिव्यमः द्यामानत्र व्यामानत्र द्यामानत्र द्यामानत्र द्यामानत्र द्यामानत्र द्यामान्य द्यामान

বামবেধশুদ্ধি: স্ত্রী স্বরাশ্যপেক্ষযা দাদশ চত্থ নবম গৃহস্থা বিক্ষোপি চন্দু: যদি শুক্র শনি স্বজ্ন
জীবার্ক যুক্ত গৃহাৎ সপ্তন গৃহে
তিপ্ততি তদা নরাণা অভিলমিত
ফলনাতা ভবতি। যদি তু সিত
শনি স্বজ্ঞ জীবার্ক যুক্ত গৃহাৎ দশন পঞ্নাইন গৃহে তিপ্ততি তদা

নরাণা স্বরাশ্যগেক্ষয়া যথা সং था अक्षेम मक्षम विजीय गृहागा-পি চন্দু: পুচুর ফলদাতা ভবতি। যথা। সিত শনি হল জীবার্কান্ত इन्द्र नंद्राणाः वाय मुथ नवमस्त्राः পীষ্টদাতাথ তেষা॰। থ সূত নিধ नग (क्यां कु) भूधार्थरगानि भुहुत **णु** कन ने ने जा बाग ति स्व में कि: ॥ বামবেধন্বঞ্দ দ্যুনন্ধন্মেতি এবমত্রে-তি বক্ষ্যমাণ বচনাভ্যামেকার্থবা षाध्यः॥ । अथ मक्किगत्व वानः বেধ কথনা লাভ বিক্রম থ শতুষু श्चित: (मा ज्या निगमित) हिवा করঃ। থেচরৈ: সুত তপো জলা-ন্ত্যুগৈ ৰ্য্যাৰ্কিভি ৰ্যা**দ ন বিধ্যুতে ত** দা।। দূৰে জন্ম রিপু লাভ খ তিগ कन्तुनाः मुख कल्पुर खरा। या-ত্মজান্ত্য বৃদ্ধ বুৰ্ম গৈ বিধ্যতে न विवृश्व यं कि गुरेशः ॥ विक्रमाय विश्नः मुजः वजः महाखराष्ठह ञू इ धर्म रेग: थरेग: । एम विष इनम्न व्रभारमो किछ धर्मध्निना न বিব্যতে ৷৷ স্বাদু শত্ৰু মৃতি থাবগঃ मुं । ज उसा न थलु विश्राउ यहा। आजाज जि नवकार। रेनधन नुष्ठारेग विविध्व नंजमरेतः ॥ त्राय थर्य उनय मूर्ग श्रिटा नाक- नावकभूदा हिन्छः मृङः। तिशः त्रक्षु थ कल जिरेग यंना विष्ठात गगन-ठाति जि निह् ॥ व्याम् जान्ने जरमा व्यागरमा विक व्यामु किन्द्रमा ज-नः मृन्छः। निष्नास जन् कर्म प्रम्म थी लाज विति महक्ष (थहदाः॥ हेन्डि क्यां जिस्तुः।।

खी नागानााजी। इंडामद्रः ।। पूर्गा। यथा। वामः विकक्षकशस्त्र বিপরী তম্ভ গীয়তে। বামেন সুখদা দেবী বামা তেন সভা বুধৈ:॥ ইভি रिवी भूद्रात ८० व्यथायः ॥ 🗱 ॥ অপিচ। বালান্ত বাল্য দাক্ষিণ্য ভাবাভ্যা নিপি প্রযেৎ। শাসান ভৈরবীণ দেবী মগুতারাণ তথৈব চা। উট্টিষ্টভৈরবী চণ্ডী ভারা ত্রি-পুরভৈরবী । এতাস্ত বামভাবেন যজেগ্রিপুরভৈরবীং ॥ সর্বত্ত পিতৃ (पवादनी यमाज्जवि पिक्ननः। (मवी ह मिक्सिंग) यमा खमा ए मा-किना मुहार्ख ॥ या भूनः भूषामा-ना जु (मवामीनाञ्च भूईजः। यक्छ-ভাগ• শ্ব্য• ধত্তে সা বামা ত্রু कीर्बिंग।। इंडि कानिकाभूताण ११ अश्रायः ॥

वामाठातः भुः जाठात्रविष्णयः। यथा। भक्षञ्चः थभूञ्चकः भूक्ष्य

इन्हर्वाविजः। वाभागादा ভবে-ন্তৰ বামা ভূষা যজেৎ পরা।। ই-ত্যাচারভেদতত্ত্র•॥ 🛊 ॥ তদাচার-वजा॰ नद्रकगमन॰ यथा । चवर्म द्रशिष्ठा विश्वा (वहान)(अविनः अहा । ভুষ্টাচারাশ্চ বামাশ্চ তে যান্তি नद्रकः धुतः ॥ इंडिं तुर्कारेववर्खं अ कृष्डिथ(७ २८ व्यष्राय:॥ ₩॥ ७८ भुनःमा यथा। हजादा प्रवि वनाः দ্যা: পশুভাবে পুতিষ্ঠিতা:। বামা-म्रा खय व्यानात्रा मिरवर वीरत शु-তিপ্তিতাঃ॥ ইতি নিত্যাতস্ত্র॰॥ 🗱॥ मर्खि डा (फाउमा (वहा (वरहर छा) रिवक्षव महरा रिक्वामूखन रेमव रेশवाफक्षिव मुखम ॥ मिकवामूख-मः वामः वामार जिष्काच मुखमः। निषाष्टापृत्तमः कोनः कोना भः রতর• নহি॥ ইতি ব্লাণ্বজন্ত ২ খণ্ড।। 🛊 ॥ তদাচারযুক্তস্য নিবি-क्षकर्यानियथा। न पन्तर वाकारा महाः सङ्गाहिता कथक्षन। वासकाः মো বাজাণো হি মদ্য মাংসং ন **७क्तरयर ॥ ऋ॥ उ**पन्कल्वा यथा । ष्ट्रामणी । यवामव मवणास বান্ধণন্ত বিশেষতঃ। তত্ত্ৰ গুডাদু-। क परा जाय वा विम्र क मधू॥ দেব্যাস্ত দক্ষিণে ভাগে চক্রপার্শ্বে

निविषयि । এउपुराह म्मूना नात्मुबाख कराहन ॥ रेवम्युत्र्यं मा-ক্ষিক শুদ্ধ ক্ষত্রিয়স্য তু সাজ্যক । ব্ৰাহ্মণস্য গৰা॰ ক্ষীর• তামেু বা विम्राज्याधु ।। नाद्रिक्टलाम्कः काः-म् अर्दियाः पुरुश्माधनः । 🗱 ॥ क्विय रेक्नार्यास भोजी बाधी ह দাভব্যা ভত্র তথাে রধিকারাৎ তদ ভাবে অনুকল্প বিধান। তথা চ।গো-क्लीव वाकारा प्रमाट प्रा भाका थ वाङ्कः। दिष्णुण्ड माक्तिकः प्रारु म् मुः रेभर्डा मिकः भूनः॥ (छन म् मु-ग्र नानुकन्नः ॥ क्षा व्यवार्गत्व। क्वन कीत : घ्उ : छामु मधु रेमात्रय रेमक-ব ৷ পৌয়া ভক্তব খান্যসম্ভব **७**क निर्यिज• ॥ महकात्रचर• दिन विविषः वर्राखनकः। भानकः धर्म नः खराषद्धं। भागीय मूलाहत ॥ জ্ঞানেন সংস্তুত তত্ত্ব মহাপাতক नामनः। उद्यादा भाउका जादा हि. व्यञ्जाव विवयस्या ॥ 🗱 ॥ न्याकनत्कनः ন্ধ রম্য দুব্য সেব্য দ্বাভিভি:। व्यभारकद्वाष्ट्र(दिन विक्वतः (मर्)-তে दूरिशः॥ এতেन कवियाहि इ-মাদক দুব্য পেব্য মাদকস্য পাপ (रुजुकद्दमुकः। रेजतवज्यः। मन्रः भाग्नं विना वट्म यट्किक्ष्ट् अ

न माथन । मोर्क्का मद्या छठः (भवः श्वत्य अभियमस्य ॥ अम्बद्धाः म् क्तिं क्वा (भव माज्यिन शांकरर । उन क्र वियामीनाः मूथ्याता व्यथिः कातः। न भारत। यनु भीषा भीषा भूनः भीषा भिज्या है महीजला। উত্থাষ চ পুন: পীত্ব। পুনর্জন্ম न বিদ্যতে ॥ তত্ত্ চতুর্থাশ্রমি পর ।। 🛊 ॥ ভদুব্যকরণে জাভিচিন্তা• न জ-र्याए। मिन्द्रायाः रेमथूरन ह का छि-চিন্তা॰ ন কার্যেৎ। এতেষা• শোধ-नम्।वण्यकृष् । उथाह । मः। भ्रम् मनाहर्यं जीयू मरहायू जावकः। या-हार्य्य निष्किशानिः नार कुषा छ विकि मुन्दरी। मरम् यु मूर्थानुकद्भवू ॥ ॥ उथा अन्भूका या मन्। विमादकः ष्। उथार। मधु भाः मः विना पिति ञ्चाश्वाः नमाठात्र । क्यास्त সহসুম্য সূক্ত তম্য নশ্যতি ॥#॥ ज्ञथना नाहि (भावन । मा नह ত্রিবিধ জ্ঞেন জল থেচর ভূচর।। मा॰नल जिविषः (भाकः (६वठाः श्रीजिकादकः॥ मर्माक विविधः (मिव डेडनायन मयामः। डेडमः ত্রিবিধণ নৎস্যুগ শাল পাঠীন রো-हिज ॥ भूवीय क्लेरिक ही वि रेज वाकः वह्रीव यूं उः। (रवाः श्रीजि-

कद्रस्थित मथामः ७ हज् विषः ॥ कः मुानि जानि जर्बानि व्यथमानि विमु व्शाः॥ 🗱 ॥ ভূচর मा असः। ला भिवाय जुनात्भात्य (गाथात्काष्ट्रे मृ. গোল্ডব॰। মহামা॰সাষ্টক॰ প্রোক্ত। দেবতা প্রীতিকারক ।। 🛊 ॥ মাণ সাভাবে অনুকল্প:। সম্বাচারে। वरगाम्क निगाक डिवा गाध्म मायकः। लाम्नकः महापिति मा म পুভিনিধি: শৃত: ।। 🗱 ।। सूपू ज् षिविश। स्नार्गतः। क्षत्रः मखनाः कात्र॰ हन्तुः भग्नानिङ॰ मूङ॰। हाक शक्ष मत्नाहाति भक्तिरोप्ताक भृति-ত'।। প্ৰাকালে দেবতায়া মুদুষা **প** त्रिकी खिंडा। **कामला।** खुरेषान्ताः **रिक**॰ यावट हर्बनीय॰ भूक्त्रायट । তেবা॰ স॰জ্ঞা ক্তা মুদ্রা মহামোদ भुमायिनी ॥ अ ॥ उत्राः भाषमञ्ज ষতজ্ঞ ভজে। ওঁ পুতদ্বিশু বিভ্যাদি মা সং। ত্রায়ক যিত্যাদি শীন। **उ** विस्था तिल्जानि मुनु । । । । । । व्य শক্তিশোধন । তত্ৰ ভাৰচ্ডামণী । चरीकि उसनामकार निष्क्रा-निः भुकायाज । उरकथा मुद्रनः हर न्। ७ उन्न गनन यि ॥ म द्वीः नः कथः (पवि भृज्ञराट भन्नामध्री । 🗐 ক:ম। সংশোধন ননাচর্য্যেতি।

কৌলিক ভত্তে। অভিষেকান্ডবেছ-**জি** মন্ত্রস্যোচার বিন্দুভি:। বলা-ছা যত্নতোবালি অভিবেক সনাচ (त्रः।। श्रा ञ ভিষেক্য জন্ত। স্থাদৌ वानी॰ नमूहार्य। जिन्द्रारेय नमुष ति । नमः **भयः म**मूहार्यः ইमाः শক্তি ভতো বদে ।। পবিত্রী **দ**ক मदाखि मम मिषि कर शिय। विश्वायाः नगृहार्यः मुक्तिमञ्जः मु রেশ্বরি।। তস্যাঃ কর্ণে হভেদবৃদ্ধ্য মাধাবীজ্ঞ সমৃদ্ধরেৎ।ইতিশকি (माधन ।। 🖝 ।। उठः (माधिउ पुरा) মর্ঘ্যে ক্লিপে**। এ**ক্রমে অর্ধ্য বি ধৌ। পূর্বশোধিত দুব্যন্ত শুপ্তনৈব চ সংক্ষিপেৎ। স্বতন্ত্ৰতন্ত্ৰে। আ म्। मृत्र भर्ता भारत निः किथा भूयः छः সুধीः। ऋष गात्नाच्छवः मृबाः बरम् क्रमून उथ। ॥ व्यर्ग पदा ग्रह्मानि महिमकी यदा ७१व८ । সুর্যা চার্য্য দানেন যোগিনীনা खर्वे शिषः ॥ महार्याणी खर्वः प्पि व भीत्रेभुकानिए ब्ह्रे लि: । ভৈরবভজ্ঞে। পঞ্চমাৎ ভূ পর• নান্তি শাক্তানা॰ স্থ মোক্ষ্যো:। क्वरेलः भक्षेम् बाभि मिष्का ভবতি সাধক: ৷৷ তেন পঞ্চ ম-कारत्र भूषा कर्वगा। इंडि ७ ऋ- | वारमाकः छी नात्रीविरमयः। वा-

जावः ॥ वामाशीएनः शु शीलूर्कः। इंडि भद्रामुका ॥

वागाकि क्री वागठकाः ॥ मीर्घ-विकातः। यथा। कन्त्रः मध्य मास्य স্বরপরিরহিত সেন্দু বামাক্ষি যু ক্ত• বীজন্তে মাতরে তপ্রিপুরহর ৰধু ত্ৰি:কৃত্ত যে জপন্তি। ইত্যাদি-কপ্রাখ্যন্তাত্র ॥

वाभाकी जी वामलाहन।। हेिंड (इम्बन्धः॥

বামিকা **চ** खिका। यथा। बी বস্থ্যস্ত চণ্ডিকা দেব্যা বামিকা মৃ-र्ख्यः **य्डाः। न**न्द्राञ्च वाभिका मूर्जि क्का एरन रेख्रवी ॥ नानि-मारु भूत्रगाम मनिरात्रयु वात्रा छ। ল । অপ্জিতা মহালকী (দহ-न्याः जास भूकारायः ॥ वारेषु दवी नत्रवज्ञा वाभिका मुर्खि दीत्रिजा । ভদ্যা মন্ত্রণ পুরা প্রোক্তণ শৃল্লবর্ণা তু স। মৃতা ॥ ইতি কালিকাপুরা-(१ ११ व्यथ्रायः॥

वाभिनः खि मास्त्रिकः ॥ वामः। ইতি মেদিনী।।

वाभी जी मृगानी॥ दखवा॥ द्रा-সভী ॥ করভী। ইতি মেদিনী ॥

भो ज्नादा उक यजाः। इंडि मुष्कत्वाषवताकत्रगः॥ वायकः भू ममूरः। ইতি भपः ठिन्तिका॥ वायम्खः भू• বাপদণ্ড:। ইতি ভরতদ্বিক্পকোৰ: 11 বাঘন ক্লী পিষ্টকবিশেষ: ৷ তৎ-भर्यप्रायः । वुरजाभायनः २ भुरहनः ক । ইতি ত্রিকাওশেষ: ॥ खी উভরপশ্চিম্দিক্। वायवी इंडि क्रि। ध्रा वायवा जि वायू मदिकि दिशाहि। যথা। বিল্বযুণ্মমুপক্ষম্য গৰাক্ষত-त्य। वायवाञ्च· रेनर्श्व उञ्च॰ न गृङ्गी या८ कमाठन। ইতি ভিष्णानिख्लुः বাযসঃ পু॰ অগুক্ৰৃক্ষঃ।। গ্ৰীবাসঃ। কাকঃ।ইতিনেদিনী।শেষস্যেৎ-कां जि गंथा। अक्नम् जार्या। स्मानी বীর্য্যবন্তৌ নহাবলৌ। সম্পাতিক কটাযুষ্ট পুভূতৌ পক্ষিসভ্রমৌ ॥ जम्लां ७ र्जनयन् शृधान् काकाः भू या बढ़ी गूय:। इंडि वङ्गिभू द्वारा বারাহপুাদুর্ভাব: ॥ 🗱 ॥ অস্যএ-काकि नामग्र कात्रगः यथा। मार्क ণ্ডেষ উবাচ।গতে তু ভরতে তিমান্ द्वानः कमललाहनः। लख्रान मह ভাৰা ভাৰ্য্য বীত্ৰা সহ॥ শাক

मून कलाहाता विववात गरावत । একদা লক্ষণ মৃতে রামদেব: পু-তাপবান্।। চিত্রকুটে বনে দেখে বৈদেহা সঙ্গনাশ্রিত:। সুধাপ সু: मूर्ख्क ७७: कारका मुताजावान् ॥ সীতাভিমুখ মভ্যেত্যবিদদার স্ত ना खत्र । विनार्यं वृक्त माक्श हि-তো १८भो वायमाध्यः ॥ **७७:** পु-বুন্ধো রামো ২সৌ দৃষ্টা রক্তণ স্তনা-ন্তর•। শোকা বিষ্টান্ত সীতা• তা-मूवाठ कमलक्काः ॥ किमिषः खः নান্তরে ভদুে তব রক্তস্য কারণ । ইত্যুক্তা সাচ ত পুাহ ভর্তার বি-ন্যান্বিতা।। পশ্য রাজেন্দু বৃক্ষাগ্রে वायन मृष्टे (ह श्विज । (रिनज ह क् ত কর্ম সুপ্তে বৃধি নহানতে॥ রা-নোপি দৃষ্টাত কাক তমিন্কোধ मथाकरतार। ঐविकाञ्च मनानाय বুন্ধাস্ত্রেণাভিমন্ত্রিত ॥ কাক মু দিশ্য চিক্ষেপ সো হভাগাবত यानि जः। मिष्तुमुम् मुखा ताहन् इन्मुलाक विवि इ। ब्रामाञ्च भुज्वन मीखे जम्यान् भ्वितिम ति। विषि जार्थक (मरवत्नु। (मरेव: मरेबी जगन्जः ॥ निद्यानयह उ॰ पृष्ठै॰ রাববস্যাপকারিণ । ভতোসৌ नर्दरिवस (प्रतामाकाष्ट्रिस्टः॥

भूनः (माल्डाज्ड) त्रामक त्राकानः भूताः गलः। वाहि त्राम महावाह् । व्यक्तानामभकातिनः ।। हेि
दुत्रन्धः म भूग्ह त्रामः कमणलाहनः
। व्यत्माचाय ममाज्ञाय व्यक्तिः मकः
भूयह (म ।। उट्या कीविम मूद्यावान्
(मभतार्था महान् कृतः। हेजुऽङ्या(मो सकः (नव (मक मज्जाय मन्तः)। व्यक्तः (नव (मकन्तः)। व्यक्तः (नव (मकन्तः)। व्यक्तः (मकन्तः)। व्यक्तः (मकन्तः)। व्यक्तः (मकन्तः)।।
हक्षूरेव्यक्तं भण्डि (हजूनातनः भार्थिव। हेि नत्रिमः हणुत्रातः १० व्यक्षः।।

াযসারাতিঃ পু• পেচক:। ইত্য-মর:॥

বাষসাদনী স্ত্রী নহাজ্যোতিয়াতী ॥ কাকতৃণ্ডী।ইতি রাজনির্ঘণ্ট:॥ বাষসাস্থা স্ত্রী কাকনামা॥ কাক-নাচী।ইতি রাজনির্ঘণ্ট:॥

বাযসী স্ত্রী কাকোডুম্বরিকা ॥ কাকমাচী। ইতি মেদিনী॥ মহা-স্ব্যোতিমাতী॥ কাকনানা॥ কাক-তুণ্ডী। ইতি রাজনিঘণ্ট: ॥

বাষসেক্ষ্: পু॰ কাশ:। ইতি রাজ-নির্ঘণ্ট:।।

वायरमानिका खी कारकानी। इंडि

भिष्तवावनी।। वायभानी जी काकानी। इंडऽ-भवः॥

উত্তরপশ্চিমকোণাধি-वायुः भू পতি:।। বাতি য:। বাতাস ইতি ভाষা। उৎপर्यतायः। भ्रमनः २ স্পর্মন: ৩ মাতরিখা ৪ সদাগতিঃ ৫ প্यन्थः ७ गञ्जवरः १ गञ्जवारः ৮ অনিলঃ ৯ আশুগঃ ১০ সমীরঃ १) माक्डः १२ नक्ट १० क्रांट-পাণ: ১৪ সমীরণ: ১৫ নভমান্ ১৬ वाजः ११ भवनः १४ भवमानः १२ পুভঞ্জন: ২০। ইত্যমর:।। অজগৎ-भूगः २७ थयामः २२ वाहः २० ধূলিধ্বন: ২৪ ফণিপ্রিয়: ২৫ বাতি: ২৬ নভ:প্রাণ: ২৭ ভোগিকান্ত: ২৮ यकम्भनः २२ जक्कि ७० कम्भन-ন্ধা ৩১ শসীনি: ২৩ আবক: ৩৩ হরি: ০৪। ইতি শদরত্নাবলী ॥ वामः ၁৫ मूथामः ၁५ मृगवाहनः ०१ मात्रः ०४ हक्षवः ०२ विरुगः ४० পুरुष्पनः ४) न जः यदः ४२ निषा-नकः ६० खन्नः ६६ পৃষ্তা পতिः ৪৫। ইতি জটাধর:।। 🗱।। সচ সৃষ্টি काल वाकामाञ्जाउ:। यथा। তমাঘা এতমাদাত্মন আকাশঃ স•ভূত আকাশাদ্বাযু:। ইত্যাদি তৈভিরীয শুকি:॥#॥ উণপঞ্চাশ-षायू त्रिक्टिः भूजाः। তে সর্বে অ-পुकाः। ইন্দেণ দেবত্ব॰ পু। পিতাः। भद्रीद्राञ्चर्याञ्च (ज्राप्तन मण्या। यथा । পাণ: ১। ভস্য কর্ম বহির্গনন । অপান: ২ ৷ তস্য কর্ম অংধাগমন । वर्शनः २। उन्र क्यं व्याक्कन পুসারণাদি। সমান: ৪। ওস্য कर्ष व्यानिज भीजारीनाः मन न यनः। উদাनः ৫। তम् कर्म छक्द् नयन । উদ্লারেনাগ ৬ আখ্যাত: क्र्म १ डेबीना म् उः । क्कनः ৮ क्कु८करत्रा (ख्डारा (नवनरखा 🛪 विक् ञ्चत्। न बहाठि मृज्कालि नर्बः ব্যাপী ধনঞ্জয়: ১০। ইতি ভাগ-व उठीकाया॰ विश्वत्रदामी ॥ # ॥ व्यन्धः । षिञीयः भाकाता ज्वः पुगर्याञ्चक विभुजा । न्यृहेरा भविज्उक विमुख्डाबिरेनवज् ॥ हेि नहां जात्र जात्रसिक्शः र्व ॥ 🗱 ॥ ७ मु छनाः । यथा । वारम ब्रनियमन्त्रामा वाष्ट्रभन म-তন্ত্র । বল শৈর্ঞ মোক্ষণ कर्म (हष्ट्रीजा जा जरः ॥ इंजि महा-ভারতে মোক্ষধর্ম: ॥ 🕸 ॥ অনিযম-र्णानः। यन्कानी उर्णानः १। वाहः श्रानः। वाशिन्द्रियालकानि २।

च उद्य । १ भगारी १ । वन १ । रिम्युः ६। साकः मृवारिः ५। कर्म। उट्याक्रमनामि १। (हड्डी भाम भू-শ্বাসাদি ৮ ৷ আত্মতা প্রাণক্ষণেণ विषाधिष् २। **७वः। बन्ध** मत्रण >• । इंडि डचेकि ॥ 🛊 ॥ न्रायमस्ड षमा खगारि यंथा। षमाकनानुका मनवात्नरञ्जरः न्यानीहि विक्तः॥ পূর্ববিষভ্যতাদ্যক্ত দেহব্যাপি ত্ निन्त्रिं। भागातिस महावायू नर्यः ন্ত বিষধো মত:॥ ইতি ভাষাপরি-(इन: 11 #11 वायु • निक्त भय ि च भा³ कन्न इंडि। अनुकामी उग्मर्ममा भ् থিব্যামপি সত্ত্বাৎ অপাকল ইতি। व्यभाकक्ष्णार्भमा कलामाविभ गः ত্বাৎ উক্তমনৃষ্ণাশীত ইতি। এতেন वार्या विज्ञाञीय म्लामा मर्लिंडः। ভজ্জনকভাবছেদক বাযুত্তমিতি ভা वः। এव वायुः ग्यामीकि विक्कः। वागु हिं म्लामं मद धु कि करेमा बन् নীযতে। বিজাতীয় স্পার্শেন বিলক্ষণ मद्मन ज्वामीनाः ध्जा माथामीनाः কম্পনেন চ বাধোরনুমানা এ পাচ वागू न भुडाक खवार्ग वकारड। বাযু নিত্যে **২নিভ্যে বা পর**মাণ্ क्ला निकु खरान्या ९निकुः नगः

বেডক। সোপি ত্রিবিখ: । শরীয়ে-न्तिय विषय (छमार । अब मत्रीत्र-ম্যোনিজ পিশাচাদীনা ।দেহ্ব্যা পীতি। শরীরব্যাপক স্পর্শ গ্রাহ-क मिन्तिय वृक्। उह वायवीय क्रशाहियु मरक्षा ग्लामं रेमाव वाञ्ककः चार । अञ्चन मर्गि मिन लिउ ব্যঞ্জক ব্যজন বাতবৎ। বিবয়ণ দর্শ ষতি পুাণাদি বিভি। যদ্যপ্যনিভ্যো বায় শচত ৰিখং তস্য চাত্ বিধ্যা প্ৰা-गामिना इंजुङ नाकरत् । उंधानि সংক্ষেপাৎ অত্র তৈবিধ্য মৃক্তণ পাণ खुक अर क्वारि नाना ज्ञान र्नाट मुथनिर्गमाप्ति नाना कियावणाह ना-ना मः छाः व ७७ ३ ३ ५ थः। ३ ७ সিদ্ধান্তমূকাবলী ॥ ৠ ॥ তদ্যোৎ-পত্তি यंथा। भूनछ। উবাচ। भुविमा। कठेत मृत्का रिच्छ माजः भूतन्ततः । प्रमाणि मृथः वानः किनासः क्रत्र' महर् ॥ (उदैनद शर्द्ध' दि जिङ्ग' বিজেন শতপর্বণা। চিছেদ সপ্তথা ব্নান্স করোদ সুবিষর ।। শকো-शि नाइ मा मृष् करस्य कि मधर्म तरा ইত্যেব মুক্ত্বা চৈকৈক• ভ্য শ্চিছেদ সপ্তথা।। তে জাভা নক্তো নাম দে-বা দিত্যা: শতক্রভো:। মাত রেবা পচারেণবল বীর্য্য পুরস্কৃতা: ॥ ইতি वानत ७৮ व्यथायः ॥ # ॥ यम्भी ভবতা প্রোক্তা মকতো দিতি সম্ভ-वाः। ७८ किन भूई मामन् वि मयः मार्गिन कथाजाः॥ भूनखा छेवाह । শ্ৰুষতা পূৰ্ব মৰুতা মুৎপত্তি কথ-যানি তে। শাষ্ট্রব সনারভ্য যা-वद्मनुख्र- ष्विष-॥ सार्ध्धवम्। भूत्था **२ ভূমনো র্নাম পুিযবুত:। ত**স্যাসীৎ भवत्ना नाम भूध क्रिलाक्रभ्षि-ত:।। থ মৃৎপপাতাথ স কাম্চারী সম॰ মহিষ্যা বসুমান পঞ্চা। র-রাম ভন্গ সহ কাম্চারী ভতো-श्यद्राट शुह्यद काम्य मुक्क ॥ भक्ति ভি: সমনুজ্ঞাতা: পপু: পুষর সং-श्चि । ७ मुकः भार्थितनमुग्र म-नामाना खराम् छ ॥ भी जमात्वन শুক্রেণ পার্থিবেন্দোন্ডবেন চ। বুন্ধ-তেলো বিহীনা স্তা জাতাঃ পল্যু স্ত-পৰিনাণ ৷৷ সুষ্বু: সপ্ত তন্যাণ স্তে ক্-परका **२थ रे**ज्ज्ञव•। उत्रया• क्षिठ শদেন সর্ব নাপ্রিত জগৎ।। অ-था बनाम जगवान् वृक्षालाका भि जामशः । जनाज्यजात्वीदानान् माक्पपुः गरादलाः ॥ नक्ता नाम गूग रेव खविषाधु वियहनाः। इत्जा ৰ মুক্ত্বা দেবেশো বুন্ধা লোকপিতা-महः॥ जानाराय विवहाती माक्जाः

নাদিদেশ হ। তে চাসন্ নক্ত চ্চা म्। भरनाः चारस्वाख्या ॥ 🗱 ॥ স্বারোচিষে তু মক্তো বক্ষ্যামি শৃণু नात्रम। बाद्याहिषम्। भूधक श्रीमाः नाजी८ कजुधुबः ॥ छत्र। भूवाख्वन् मधमक्षाहिः नुजिमा मूत्। उत्भार्षः তে গতাঃ শৈল মহামেক নভচ্চ त्राः ॥ व्यादाध्यरष्ठा तुक्तानः भर सि-न्तु মথেপ্লব:। ততো বিপশ্চিমামাথ जरुत्राका ख्याजुतः॥ প্**उ**ना मञ्ज রোম্থ্যাণ পাহ নারদ বাক্যবিৎ। যথা হি ভগসে৷ বিশ্ব ভেষা ভব্তি সুনরে॥ তথা ছক্ত্র মা তেষা সিদ্ধি র্ভবতুবৈ যথা। ইত্যেব মুক্তা শক্তেণ প্তনা ক্পশালিনী ॥ জ-ৰালগান ত্বিতা যত্ৰ তপ্যস্তি তে ७भः। चामुमन्त्राविष्ट्र जुनती-मत्मापवादिनी ॥ उम्राः न्नाजुः সমাযাতা: সর্বএব সহোদরা:। मा ज् माजू॰ मुहाईकी प्रविश्वाम शनरी ।। रम्णू त्य न्नाः माज् তত শ্কুজুভিরে মুনে। তেষাঞ্চ প্রা **ह्यत्य मूकः उट्मलो कनहा**तिनी ।। मधिनी गुष्टमुच्यामा महामञ्जमा বল্লভা। তে বৈ বিনষ্ট তপদো জগ্ম রাজ্যন্ত পৈতৃক ।। অছে। বহুভিথে काल मा गुरो मञ्जूकिनी। ममू

জ্তা মহাজালৈ ম্**ৰু**স্য বন্ধেন মা-নিনী।। স তা॰ দৃষ্টা মহাশহী॰ ছ-; **लङा॰ म८न**/कीवनः । निर्वत्याः माम उमा क नृथुष मूर्छयू वि ॥ उपाः ভেঙ্ড্য মহাত্মানো যোগিনো যোগ-थात्रिनः। नीषा समित्तरः मर्स्त भूत्रः ৰাপ্যা॰ সমুৎ সূত্ৰন্।। ততঃ ক্ৰমান্ত্ द्विनी मा मूय्रव मध रेव लिण्न। बाउ সাত্রের পুণ্রের মোকভাব মগার সা ॥ অমাতৃ পিত্কা বালা জলমধ্য বিচারিণ:। স্তন্যার্থিনো বৈ ক্কদু-त्रथा ७ । गाय-দধ্ব মিতি প্ৰাহ মাৰুতো নাম পুঞ काः। यृषः (एवा छविष्ठश्वः वायरवाः **ৎম্বরচারিণঃ ॥ ইত্যেব মৃক্ত্বাথাদা**য नर्दा॰ छान् रेपवजान् भुजि। निर्याः का ह स्यार्थ रेवद्राक्ष छवन গত: 11 এব নাসংশ্চ মৃক্ডো भरनाः चारत्राविषास्रस्त । 🚓 । ঔৰমে মকতো যে চ তান্ শৃণ্য **ज्ला**धन ॥ श्वेखमन्त्राम्वाय ह द्वा-काजीवियथाथियः। यन्यानिष् বিখ্যাতো বপুষা ভাস্করোপমঃ॥ তস্য পুথো গণশুষ্ঠো জ্যোতিমান্ शर्मिका २७वट । म भूधार्थी उन खिल मही॰ मनहाकिमी मन्।। उन्। ভार्या ह मूल्पानी प्रवाहार्या मूजा

বায়ু

শুভা। তপশ্রণ যুক্তস্য বভূব পরি-**চারিকা ॥ তেজো**য্কা সুচার্বলী দৃষ্টা সপ্তবিভি র্বনে । তা॰ তথা চাক नर्वाकी मृश्वाच उभना कृषाः ॥ পণুচ্ তুপসো হেতু ভ্রম্য ভড্ড-कुं (त्रव है। मा वृबी खनगार्थाय व्या-বাভ্যাণ ৰৈ ভপ: ক্ৰিয়া ৷৷তে চাসৈ वत्रमा वुष्त्रण् बाजाः मध महर्ययः। বুল্লপুণ তন্যাঃ সপ্ত ভবিষ্যম্ভি ন সণ-শয:।। যুৰ্যো ৰ্গ্ৰসংযুক্তা মছৰী গাং भुगारजः । ইত্যেব মুক্তা कग्म (ख नर्द এব মহর্ষयः॥ সোপি রাজ্যি त्रगम् जार्या नगतः निष्कः । ভতে। বহুতিথে কালে সা রাজ্যে। महिरी भिरा॥ व्यवान गर्द्ध उन् की তমান্পতিসভ্যাৎ। গুরিণ্যা भथ ভार्य्याया॰ सभावारनी नव्यक्षि-প:।। সা চাপ্যারোদু মিছম্ভী ভর্তার॰ বৈ পতিবুতা। নিবারিত। তদামা-ভৈয় ৰ্ন ভথাপি ব্যভিষ্ঠত ॥ ভস্যা मालिक्र छर्खाद्र ि काया माक्ह সা। ভতোগ্নি মধ্যাৎ সলিলে মাণ-সংগশ্যপতন্মুনে ৷৷ সাম্ভসা সুখণী তেন সংসিক্তা সপ্তথা ভবৎ। তে-कार्डाथ मक्ड ঔडमम्राड्स मः (नाः ॥ 🗱 ॥ जामननाष्ट्राद्य (य ह नक्ला १९४ ज्वन् भूबा। जानकः कीर्विषगामि भीज न्छा कंलिनिय ।। जामनम् भागः भूध अउध्व इंडि मुङ:। म मुधार्थी ब्हाबादी यभाष्मः कथित्रः छथा।। अञ्चीनित्राः ন কেশা॰ দ বাযু মজ্জ। যকৃ ধূণ॰। শুক্রণ চ বিজ্ঞাের রাজা সূতাথী চে **ि नः गु.उ॰ ॥ मधा**र्हि र्मधाह **७**-তঃ শুক্রপাতাদনন্তর । মা মে ক্ষি-পরে ভাসরৎ শব: সোপি নৃপো मृजः ॥ ७७ समाध् उवराट मध **उ**ख्डामाभगाः । निन्दः नम्बा-যন্ত কেদন্তম্চ তন্মুনে ॥ তেবাস্ক ध्नि मार्क्ग जगवान् भग्रमसुदः । সনাগম্য নিবার্য্যাথ স চক্রে মঞ্ড: সূতান্।৷ তে ত্বাসন্মকতো বুন্ধ• স্তা-मान (हर्वजाननाः । 🛊 । य छर-रेनुवाउ जा॰ण मृगुष द॰ जाभावन।। दावजनामवात्य ज् बाकामी पिशू-ৱিছলী। রিপুজিলাম স খ্যাতো ন তস্যাসীৎ সূতঃ কিল।। স সমারা-ধ্য ভগসা ভাক্ষরণ তেজসাণ নির্ধিণ । অবাপ কন্যাণ সুরতিণ তাণ পুগৃহ্ গৃহ॰ ষধৌ।। তস্যা॰ পিতৃগৃহে বুদ্ধ-ম্ বসত্যাঞ্ লিতা মৃতঃ। সাপি দুঃ थ्भत्री जाकी साः छन्ः छ। जुन्मुम। जा ॥ ७७ छा॰ वाद्रगामामु अवियः मध-মানসা:। ভদ্যা নাসকচিভাষ

ञर्ब अंद जलाधनाः ॥ जनावरही তদু: থ॰ পুজ্জা ন্যাণ্নি॰ বিবেশ হ। ভেচাপশ্যন্ত শ্ব্য ত হিত্তা ভাবিতা खथा॥ जा॰ मृजा॰ श्वरया मृष्ट्री कर्रे॰ करहेि वाहिनः। भुक्तगू ब्ह्न ननाः চাপি সপ্তাক্সায়স্ত দারকা:॥তে চ মাত্রা বিনা ভ্রা ক্কদু স্তান্ পিতা मशः। निवाद्ययिष् क् उवान् लाक-नात्था नक्ष्मगान्।। (व्यवज्ञाशस्त्र জাতা ম্ক্তো হ্মী তপোধ্ন। 🛊 । मृग्य की खींयवाभि ठाक्यमा छात মনো: ॥ আসীন্মান্ধীতি বিখ্যাতো **उ**भरी मञ्जाक मृहिः। मधमाद्र-বিম্নার্থণ তস্য তপসো দেবা: সংপ্রে-ব্যন্ধু। সা চাভ্যেত্য নদীভীর• কোভযামাস ভাবিনী ॥ তভো ২স্য পাচ্যবদ্ক সপ্ত সারস্বতে জ-লে। তা॰ চৈবাপ্যশপমূচা॰ মূনির্মা। क्र निका वश्रा । गहानाब्कि जि मूर्छ षः भाभमामामा कलः महर। विषुः-স্থিব্যতি হ্থো ভবতী• যক্ত সংস-पि ॥ এব॰ मधु। अवि: **श्री**नान् जगा-মাথ ৰমাশুন•। সরম্বতীভ্যঃ সপ্ত-ভ্য: मध रि नकरडा ভবन्। এতে ভবোকা মক্ত: পুরা যথা জাতা বিশ্ব্যাপ্তি করা মৃহর্ষে। বেষাণ শুতে জন্মনি পাপ হানি ভবেচ ধর্মাভূদেয়ে নহানৈ।। ইতি বামনে মক্তোৎস্থি র্নাম ৬৯ অধ্যাযঃ॥ৠ। অন্যচ্ছ। অতঃ **পর• প্রক্যামি মক্তোগ্রীন্ পিতৃন্** পুহান্। প্ৰাবাহো নিবহকৈব উদ্বস্থ: **जःवरु खथा ।। विवरुः शुवरु टैक्टव** পরিবাছ खरेंपंत हा অন্তরীক্ষে ह वारश्उ भृषद्गार्गविठाद्विनः মহেন্দু পুৰিভকাৰা নৰ্ভ: সপ্ত कीर्खिजाः । # । স্र्याशिक मृहि र्नामा रेवपूर्डः भावकः मृडः॥ नि र्माथा भव्याता श्री खरः (भाका ইমে ११४:। व्यानाः भूव भोवाक চত্ত্বারি শন্নবৈব ভু। মক্তামিপ স র্বেষা বিজ্ঞেষা: সপ্ত সপ্তকা:।।ইতি (मवी भूबारा काल व्यवस्। नामाधाः यः ॥ 🗱 ॥ ঊनপঞ্চাশদ্বাযু नामानि যথা। একজ্যোতিক দির্জ্যোতি দ্রি জ্যোতি র্জ্যোতি রেব চ। একশকো দ্বিশক্ত তিশক্ত গহাবল:॥ই मुक गडाम्माक उडः शडिमः কৃৎপর:। নিভঙ্গ সংমিত কৈব जूगिउन्ह महावलः ॥ अउहिट मः ত্যজিছৈব সুষেণঃ সেনজিত্তথা। অন্তিনিতো হননিত্রণ্চ পুক্ষিতো ৎপরাজিত:।। খাভশ্চ খাতবাহশ্চ श्रञ्। ह थ्करना धुवः। विवाद्यरा नाम

ख्या (स्वास्त्वा भ्रहादनः ॥ हेर्कः **চ্চাপ্যদৃক্ষক এতে দল মিতালিন:** । दु जिनः भुम्कण मख्रण महा यणाः ॥ धाञा पूर्णा दिकि **औ** य सु ভিযুক্ত ত্বপাৎ সহ:। যুতি র্ঘপু রনা-(यता १थ वामः कारमा करना विकार ৷৷ ইত্যেকোনাশ্চ পঞ্চাশমক্তঃ প্ र्बन छवाः। इं ि वङ्गि भूतात गर्न (जिस् नामाध्यायः ॥ **॥ वा**र्याः विकातस्कु यंथा। व्यावामामन् र्भार भुभवना छकार क्या छा। गद्राध्य (वंशानाक विवादगापिक-भूतः रेणज्यारिज्वामञः। क्ष ক্ষার ক্ষায ভিক্ত কটুকৈ রেভি: পু-(काभ वुरक्ष वायू बीबियदागरम भ-রিণতে চামে হুপরাক্সেপি চা। #11 **७म) वक्षणः। श्राधान समु (दोक्र)** মুটন বিমথন ক্ষোভ কম্প পুতোদাঃ कथ्रुश्मावनात्भी भुमक विल्लानः मुन्म भूव भूरजताः। भाक्ष्य कर्न-नारना विषय পরিণতি जुःम मृष्टि भुरमाक्। विल्यान्त्राञ्च जेनानि अनन মনশন তাড়ন পীড়নঞ্চ ।। নামো-भाष्मी विवादि। जुन भित्र मन न जुनु ণ রোমহর্ষা বিক্ষেপাক্ষেপ শোষ शुरुष मृषिद्र छ। (हर्न (वर्ष्ट्रेन १ ৰণঃ শ্যাৰো ংৰুণো বা ভূডপি চ ন হতী স্বাপ বিশ্লেষ সন্থা বিদ্যাৎ কর্মাণ্যমূনি পুস্পিত পবন: স্যাৎ कवारया व्रमण्डा। क्षा व्यन्ताह । वहन-বিরসতা স্যাধর্চস: কর্মপত্ব ভবতি वशूषि कार्मां द्राजि निमानिवृज्तिः। ष्ठि ह शक्षका मार माह रेवब-ম্য মণ্নে রিভি পবন বিকারে লক্ষণ পোক্ত মতৎ ॥ 🛊 ॥ তস্য পুশম-ভা কারণ । যথা। ৰুক্ক: দীভো লঘু: সূজ্ম কলো १४ বিশদ: খর:। বি-পরীতগুণৈ দু'বৈগ মাক্তঃ সংপু-শান্যতি॥ সিংখাফ ছির ব্ব্যুবল্য लर्ग याष्ट्र रेजनाउन त्राना छ। छान विख साम्म सिद्रा मञ्जाहरनाम्पर्य-নৈঃ ৷ শ্ৰিঞ্চ স্বেদ নিক্ছণোপশ্মনঃ त्रिष्टाभनाहारिकः भानाहात्र वि-হার ভেবন্ধ মিদ॰ বাত পুশান্ত नरय ।। 🗱 ।। था जुर छ एन विश्वान দিনা চ ভস্য চয পুকোপ পুশমানি यथा। गुरिया मकीयाउ वायुः भावृद् কালে পুলপ্যতি। প্রাযেণোপশম॰ याजि चयरमय जमीत्रनः ॥ णत्र-কালে বসন্তে চ পিত্ত পাুুুুুুক্তী ककः। हय कान नमात्मताया विद्या-द्राष्ट्राद्र (मर्वेत:॥ मम्।रेनर्यास्त्रकात्न नि विभन्नीरैं ड विभर्यप्रः॥ #॥ ज ह भागाहिर छात्र भक्षदियः । यथा ।

निख॰ भक्षः कर्षः भक्षः भक्षाः মলধাতব:। বাযুনা যত্র নীযন্তে তত্ত্র वर्षि (भवव८ ॥ वायू त्रायू ईन वायू ৰ্বাযু ধাতা শরীরিণা । বাযু রিখ-भिनः भर्तः भुजू द्वायूः भुकी खिंउः॥ বাহ্য মণ্ডল চক্রেষু যথা রাজা পুশা-স্যতে। তথা শরীর মধ্যে ৎপি বাযু त्रकः भाषा विज्ः॥ वायुः भागानि ভেদেন সচ পঞ্চবিধঃ স্তঃ। হৃদি পুাণো **গুদে হপান: সমানো না**ভি **मध्याः॥ উদাनः क्थेरम्म ज्वानः** नर्दभद्रीद्रगः । या १निला द्रकः रक्षाती न भाषा नाम परस्क्।। स्मा १म भुरव**णगळाखः** भागा रेक-বাৰ্ণয় ত। স্বপিত: স্কৃতে রো-यः न् हिक्काश्वाना हिकान शि ॥ छेहा নো নাম য স্তুদ্ধ নিপতি প্রনোত্ত ম:। তেন ভাবিত গীতাদি বিশে-वानि भुवर्ड्ड ॥ উष्ट्रं बज् गठान् রোগান্ করোতি স্পিতক্ষ স:। আম পশ্বাশ্যচর: সমানো প্র नश्यवान्।। अद्यः भठि उद्याः म्ह विकादान् विविनक्ति गः। खन्मान माराजीमात्रान् क्लिडक करता-**তि नः॥ भङ्गामयस्या १भानस्य का-**লে কর্ষতি চাপ্যধ:। বাত মূত্র পুরী-ষাণি শুক্র গর্ত্তার্ত্তবানি চ ॥ ক্রুদ্ধক 🖟

সক্তে রোগান্ ঘোরান্ বস্তি ওদা-भुगान्। अर्दाएक्टाद्रा वृशाना द्रम नश्राह्याम् ५७:॥ (बमामृक् मृावनः শ্চাপি পঞ্চধা বেষ্টযত্যপি। ক্রুদ্ধশ্চ व्यक्ष द्वागान् भागनः नर्द्राहरू-গান্।। শুক্রদোরা: পুনেহাক ব্যা-নাপান পুকোপজা:। যুগপৎ ছ-भिजा भगभी (मरु रुन्) तमः भयः ।।#।। তৎ পুক্তিকস্য লক্ষণ যথা। वाद्यादम्भः कृष्मा क्ष्मा वाहान क्षम भानमः। आकाभवाती स्रश्नेषु वाजः পুকৃতিকো নর:।। #।। প্রাণাদি প-क्षवाय्ना यथा क्रम म खा खत्रमाह। প্রাণো হপান: সমান শ্চোদান ব্যা-तो **व वायवः। नागः क्र्यम्** क्वत्रा रिवर्षा धनक्षयः ॥ 🗱 ॥ शुगिन्ह **পु**थाता वायू नंत्रागामिश्वभः भुज्ः। निङ्य भाषाभारय महीन् भाषिन मूद्रिन श्वि:॥ निः यात्राह्यात्रः ৈত্ব প্রাণো জীব• সমাশ্রিতঃ। প্র-नात्रान्छात्वा वागुः भुकारणा शात्रग ।। भागरवृतिम्वः सर्गा८ श्राणिनाः श्राणकात्रकः। श्राणनः अ ৰতে যমাৎ ভন্নাৎ পাণ: পুৰীৰ্ণি उः॥ शाला हि जगवान् देनः शुं ণো বিফু: পিতামছ:। প্রাণেন ধার্য্য-ত लाकः गर्बः शागमयः सगर्।।

इन्त्रिगानि भुवर्खस्य गावट भागानि-ल इपि। नाष्ट्रेन मृण्या अर्थः छ-मार भागत तकायर ॥ तब्ब्राका যথা শ্যেনা গভো ২প্যাক্ষ্যতে शूनः । खनवन्न खथा क्रीवः शुगा-**भारिन क्ष्राञ्छ।। यभानगः खबा** रातः भनुकानाः यटा १४मः। भुक মূত্র বুজে বাযু রপান স্তেন কীর্ত্তিতঃ ॥ ।।।। পীত ভক্ষিত মাঘাত রক পিত্ত কফানিলান্। সমণ নয়তি গা-ত্রেযু সমানো নাম মাক্তঃ।৷ সনানো **ৎগ্ন সমীপছ:** কোঙে চ বাতি সর্ব ত:৷ অন্ন গৃহাতি পচতি বিরেচ্যতি मुक्षि ॥ 🕸 ॥ स्मान्त्य ७ । १४ वर्जुः নেত্ৰগাত্ৰ পুকোপণ:। উদ্বেশ্বযতি মর্মাণি উদানো নাম মাক্ত:॥ৠ॥ व्याता विनामयञ्ज्यः व्याता व्याधि পুকোপণঃ। প্রীতে রিনাশকক্ষায়ণ वार्क्तकाटभारक उथा ॥ # ॥ वा-যুনা স্থানানি। শিরসো নাসিকা-शुं । जूमान स्थान मूठ्या । नाज्यः शारउनः यावरशानम् भुकीर्विङः ॥ भद्रीद्रवराभरका वरानः भागः नकन नारकः। উদ্ভাৱে नाग इंजु ক্ত: কুমান্চোমীলনে স্থিত: ৷৷ ক্কর: ফুধিতে চৈব দেবদন্তে। বিজ্ঞিতে। ধনজ্ঞযন্তিতে। মেঢ়ে মৃতস্যাপি न 🛚

মুঞ্জি ॥ ভ্তাবাধি তত তস্য बायर जिनुय (गाठदार । 🕸 ॥ उर-সাহোহাস নি:খাস চেষ্টা খাতৃগ-তি: সমা:। সমো মোক্ষে গতিম-जाः वारगाः कर्माविकात्रज्ञः ॥ **इ**जि **সূথবোধ: ॥ श्रा अथ हि**गुववायूखनाः । পুর্যোতো মধুর: काরো বহিমানের करता खबः । रेवत्र मा भोत्रातीक्षानि करत्राज्यभ्रवायवीयु हा। ज्यादिश-ष्टे का जारमा सू तान संयथ् मा इक्ट। সন্ধিপাতত্ত্ব খাস ব্দ্যেষার্শে বি-ষ ক্রমীন্।। কোপযেদানবাতঞ্ ঘন-স'ঘাত কারণ'।। #।। দাক্ষিণো মা-क्ला वन्र कक्ष्यः भग्रघाउवः। भध्र काम नाशी ह कथायानुत्रामा लः ঘু:।। রক্তপিত্ত পুশমনোন চ মাক্ত काशनः। গণ্সদাদি की है। ना॰ ऊन-ক: প্রাণকারক:॥ ৠ। পাশ্চিমোগ্রি वशू वर्ग वलाद्माग्र विवर्ष्टनः। कवा-यः (नाषनः ऋर्य्या द्वाहत्ना विनामा वधः॥ जनाः वधुद्ध रिमम्। रेमज् रियमगुकात्रकः। मर्बमुरवृष्युष्यज्ज भुं जाव तम वीर्याक्ट ॥ वुनमः ता-পণ স্তুচ্যে দাহ শোপ ত্যাপহ: ॥ #॥ छेडाद्रा माक उः नित्या म्-षू गांत्र अर ह। कवायान्त्रमः **णी**जः नर्दातावनुष्काशनः ॥ क्षीत क्रज

বিষার্ভানা হিতো দাহ ত্যাপহ:। শীতাধিক: সনীহার: সবিদ্যুৎ স্তন यिनु मान्।। #।। विषयायु ब्रनायुवाः भुगिना रेनकरमाष्ट्र । नर्बेर्जु নিন্দকো হন্তা ক্ত্যোৎপাত পুর:-नतः ॥ # ॥ वाक्रनवायुख्याः । म् হাঁ দাহ ত্ৰা খেদ শুমলো ব্যৱ-नानिनः। **जान**वृष्ठन्या वाज जि-माय भगता वधः॥ वःभवाजन-কো বাতো ককোফো বাতপিত্তদ: । वालवाङ्गन (भाक्षमाः मिक्का-দীন্ ব্যপোহতি ।। মাযুরা বস্ত্রজা বৈত্ৰা বাতা দোষত্ৰযাপছাঃ। ইতি রাজবল্লভ: ।। #।। অপচি। তত্র वारयाः चक्र भार्। प्रायथाञ् भ লাদীনা পেভা শীঘু: সমীরণ: । র-জোগুণনয়: সুন্ধো ৰূক্ষ শীডো লঘু भृषः॥ (नञा স্থানান্তরে প্রাপবিতা मीयुः व्याम्कात्री॥व्यन्ताहः। उँ८माः হোলাস নিঃখাস চেষ্টা বেগ পুবর্ত্ত নৈ:৷ সম্যক্গত্যা চ খাতৃনা মিন্দ্রি: यानाक भारेरिकः॥ जनूगृङ्काज्यविकृ-(७। क्षरविनुष हिन्द्रथ्क्। द्राक्षा ७१ ম্বঃ স্ক্ষো ৰূক্ষ: শীতো লঘু ক্ষলঃ ।। ऋद्रा मृषु र्यागवाश अःयागाषू-ভगार्थक्ट । माइङ्ख्यमा युकः नी उक्ट (मानमः मुगार ॥ विভागः

कद्रशांषायः भुशानः (माय मःगुरेहः। পক্লাশয কটা শাল্লি শোত্রান্তি স্পা-र्गातन्तियः ॥ ज्ञानः वाउना छवा-পি পঞ্চাধান বিশেষতঃ। একৌ বা युः भिखवनाद्याम ञ्चान कर्पाखरिः পঞ্বিশ: ॥ ৪৯়॥ তেবাণ বাষ্নাণ नामान्यारः । छेषान खष्नुशुागः मः মানো হপান এব চ। ব্যানশৈচতানি নামানি বাথো: স্থানপুভেদত: ॥ ॥ অংथातात्राक्षीनाः ञ्चानानश्रहः। কণ্ঠে হৃদি তথাধস্তাৎ কোঠ বাহ र्यजान्य । जकलि नदीत श्री ক্রনেণ প্রনো বসেৎ ॥ 🛊॥ অথবে वा कर्या १ राह । उताता नाम यस्ष् মুপৈতি প্ৰনোক্তম:। তেন ভাষিত गीजािं भृवृंखिः स्रि अस मः ॥ উদ্ভূ'ক তু পভান্ রোগান্ বিদ্থাতি বিশেষতঃ। যো বাযুঃ প্রাণনামামৌ সূথ গছতি দেহধৃক্।। সো १ई शुरवणवजादः भागाः कानावन्यः তে। প্রাযশঃ স্বক্তে দুষ্টো হিয়া यामारिकान् गरान् ॥ आमनशः শ্যচর: সমানো বহি সংগতঃ। সো **ৼয়৽ পচতি ভজ্জা॰**চ বিশেবান্ বিবিনক্তি হি ॥ ভব্জানিত্যাই অ मकान्। तम मल मृजानीन् প्यक्कः द्याञी जार्थः ॥ म मुर्क्षा विद्यमानित्री

তিসার ওদ্মান্ করোতি হি। প-द्वामयानाया श्लानः काल कर्यकि চাপ । गभी द्रशः भक्त्र ब भूक गर्डार्खवानायः। कृषस्य जन्राज রোগান্ ঘোরান্ বস্তি ওদাশুযান্ ॥ मुकरमाय भुरम्हा म्ह यहानाभा-हात्रा वृशाना त्रम मः महाना यखः॥ (बराम्क् भावनकानि शक्षा (5%) যত্যপি। গত্যপক্ষেপণোৎক্ষেপ निरम्पात्मयगारिकाः॥ श्रायः म-र्दाः किया स्थान् भुजिवकाः भर्ती-तिगाः। भुमानस्यः हाष्ट्रयः भूतः ণঞ্চ বিব্লেচন•।। ধারণঞ্চেত্তি পর্টঞ্চ-ভা শেষ্টা পুোক্তা নভৰত:। কুদ্ধ: न बक्छ द्वागान् भागनः नर्व-দেহগান্।। যুগপৎ স্বপিতা এত (मरु जिन्तु) द्रमः नगः। (मरुः जिम अयु । स्याद्रस्य द्रिजार्थः। ইতি ভাবপুকাশ:॥

ागूरकजुः खी ध्निः। ইতি श्राता-वनी ॥

াযুগণ্ডঃ পু॰ অন্ধীর্ণঃ। ইতি ত্রি-কাণ্ডশেষঃ।।

^{।। यू छन}ः भू च स्र मा ज्यः। ইতি विका श्राम्यः ॥

। । । ইভি ত্রি-

কাণ্ডশেষ: ॥

वायुभूधः भु॰ जीमः। ইতি धनछायः॥ हन्मान्। यथा। हन्मानछानामून् बायुभूधा महावनः।
हेि जम्र हाहणनामस्यादः॥
वायुक्तः क्षी भक्षनुः॥ क्ष्रका।
हेि स्मिन्ति॥

বায়ুভক্ষ্য: পু॰ সর্প:।ইভিরার; নির্ঘণ্ট:।।বাতভক্ষকে ত্রি।। বাযুরোষা জী রাত্রি:।ইভিজ্ঞান ধর:।।

वायूर्वज्ञा भ्• व्याकाणः। इंडि भव्दिन्तुका॥

वायूवारः पू॰ ध्रः। ইতি ह्मः हन्दः॥

বাযুবাহিনী জ্রী বাযুসঞ্চারিণী। শিরা। ইতি বৈদ্যক।।।

वायुवः भू॰ मर्म्यविष्मवः। काल-वायुवरभाना है जि जावा। जम्र खगाः। वायुरवा व्•क्रा व्रव्याः म-धूरता थाज्वक्रनः। हे जि त्राजवञ्च ज्ञः। वायुम्रथः भू॰ ज्ञाः। हे जि ज्वजः॥ वायुम्रथा भू॰ ज्ञाः। हे ज्ञितः।। वायुम्रथा भू॰ ज्ञाः। हे ज्ञितः।। वायुम्रथः क्षी ज्ञाकामः। हे जि ध्रमञ्ज्यः॥

বার ল্লী জল । ইত্যমর:।। বার ল্লী মদিরাপাত । ইতি (इन्डन्द्रः॥

नु अग्रः ॥ **अ**वनद्रः । इंडामतः ॥ म्यंति मिवा मतः॥ सातः ॥ इतः॥ अतुर्कः॥ क्षाः। इि (मिनि ॥ 🗱 ॥ व्यथ वाद्राणाः नः-क्का । हदः स्त्रीरम्। एकः किल्मा मृद्ः भूका इवि धुंवः। भनिक मा-ৰুণোক্তেযো ভৌন উগু: শশীসমঃ ॥ हत्र किरिनुः न्याउवाः नुरवद्वेवाः मृषु शुरेवः। माक्रारीगुम्ह याष्त्रवाः क्रियि खंगकाङ्कि ।। नृभाजि বেকো পগ্নিকার্য,ক সূর্য্যবারে পুল-স্যতে ৷ সোমে তু লেপ যানক সং-र्यतोष्ट्रव गृहाणिकः ॥ रेमनाभाउऽः শৌ গুৰুদ্ধ শস্ত্ৰাভ্যাসঃ ক্ষে তথা া সিদ্ধি কাৰ্য্যঞ্চ মন্ত্ৰঞ্চ যাত্ৰা চৈব বুবে ঘ্ডা।। পঠন দেবপ্তা চ वद्याम्।। जन्न १ १ १६३ । कन्।। मान গজারোহ: শুক্তে স্যাৎ সম্যঃ ব্রিযা।। স্থাপ্য গৃহ পুরেশশ্চ গ-স্কবন্ধ: শনৌ শূভ:।। ইতি গাৰুডে ७२ व्यव्यायः ॥ 🗱 ॥ नावनिन्तरः षात भुवृज्धिः সূर्याप्रगाविष तत्र । **जू**र्य्याभिकारि । ज्ञकारि श्रीताहः मा दिन मानायणा खबा। मध्य গুহভুক্তিক সাবনেন পুকীর্ত্তিতা ॥ अब दिनाविशमा द्रवादि र्छा

ग्रु॰ दिन॰ वाज्ञक्रभ॰ नावनगगरना-ক্ত• ব্যবহারোপি তাদ্গেব। তিথি বিবেকেপি। ভবতু বার যোগে ব্যস্ত जि**ष्थ गू** इन॰ छम्। हिनद्वाय १मसुः वाहिजुङि । भावनिष्न भाष्ट भूर्यः त्रिकान्तः । উन्याद्मान्यः जाता (छ) भ नावन वानवाः ॥ (छोरमिड) পিত্রাদি দিনব্যাবৃত্ত্যর্থ'। যত্ত্র রেখা भूबीभव्राया विज्ञानिया ज्वाजित्य বারপবৃত্তি ককা অজ্যোতি:শা-জ্রোক্ত কাল হোরাদি জ্ঞাপনার্থ মিতি ক্যোতিস্তত্বে বহুধা বিবৃত। বৈবান্তমন মর্কস্যনোদ্যঃ সর্বদাস-७:। উদযান্তম্নাখ্য হি দর্শনাদ र्मन द्रावः ॥ रेग यं व मृम्पार जायान् न (उषा गृषय: मृठ: ।। ইতি विकृत्ः द्वानार ज्यंत्रभन यागा कालात्व वात्रघरेक कर्गम् मु अवव कानः। इंडि জ্যোতিস্তরু ।। # ॥ অথ শোভন বারা:। রবি: সোনো মক্লম্চ বুংগ জ বঃ সিতঃ শ্বি:। এ ত্ৰাণ নাম তো বারা: বিখ্যাতা: সর্বকর্মসু।। সিতেনদু বুধ জীবানা॰ বারাঃ সর্ব (भा छनाः । छान् छ्म्ड नन्तना॰ मुडकर्ममू (क्युनि ॥ इंडि ज्याडिः সাগর: ॥ #॥ অথ বারবেলা। কৃত মুনি যম শর মকল রামজুষ্

ভाञ्रदािरगमार्षि । পুভবতি হি वाद्र(वंदा) न णुडाणुड कार्य) कद गाय।। वाद्र(वना ॥ कालम् (वला वित्र : मताकि कालानलागामूधः या गरबन्त्। पित्न निभाया मृजु दिर निक नर्गयू द्वामा विश्वपश्चिरनी **। कानायना । इंडि क्यांडि** खबु॰ ॥ 🗱 ॥ उर्या वर्डा पु॰ यथा । ब्रावी वर्काः ठलुः लक्ष भारत नश्च घर जथा। यक यक्ष घरका व तुर्व ৰাণ ভূ গীয়ক ।। ভরৌ সপ্তাষ্টক চৈব ত্রিচত্মারি চ ভার্গবে ॥ শনা वान् । अरु यहक (भावक भारत वर्क्तायर ॥ 🗱 ॥ त्रायो यक्ष विषयो त्वन क बवाद्य विजीयकः। वूष्य मध ख्रा পঞ্চ ভৃগুবারে তৃতীযক'।। শনা-वाहा उथा हाडा द्राखो कान विवर्ध्हारा । इंडि नावनः गुरुः ॥ 🗱 ॥ व्यथ ज्वीनाः भूषमञ्जूष नाया॰ वाद्रकन॰। व्यान्तिका वि-ধ্বানারী সোমে চৈব পতিবুতা । বেশ্যা নঙ্গলবারে চ বুধে সৌ-ভাগ্য মেব চ।। বৃহস্পতৌ পতি: শ্ৰীমান্ শ্কে পুএবতী ভবেৎ। ষ্যা তু বিজেষা পুথমন্ত্ৰী র৯ ল। ॥ ইতি মথুরেশ কৃত नावनःगुरुः॥

वात्रकः क्षी कथ्रेष्ट्रानः। ইতি হার। वनी ॥ शेरवतः। ইতি হেমচন্দুः॥ वात्रकः भुः অখবিশেষः। ইতি विখः॥ অখগতিঃ॥ নিবেধকে ত্রি । ইতি মেদিনী॥

वात्रकी भू॰ भजूः॥ हिजायः। भगंकीवी ॥ भाषादिः । इंडि मिरिनी ॥

বারকীর: পু: শগ্রালক:। ইভি
ত্রিকাণ্ডশেষ:॥ বারপাহী॥ বাডব:॥ যুকা॥ বেণিবেধিনী॥ নীরাভিতহয:। ইভি মেদিনী॥

বারস্ক: পু• পক্ষী।ইতি ত্রিকাও•় শেষ:॥

বারক: পু• খড়াদিমুঞ্চি:। মুট্ ইতি বাঁট্ ইতি চ ভাষা। ইতি সিদ্ধান্ত: কৌমুদ্যামুণাদিক্তি:।।

বারটি ক্লী ক্ষেত্রণ। ইতি ত্রিকাঞ্জ-শেষ:।। ক্ষেত্রসন্হ:। ইতি শন্দ-রত্নাবলী।।

वात्रिं। श्री श्री। इंडि एक महन्तुः॥ वात्र १ की भुडिरवधः। इंडि त्रः किनी।। इस्त्र वात्र १। इंडि कंटी वतः ।। क्षा का का वात्र श्री करिष्य व्या । न क्ष्य क्ष्य विभागः की यमानस्त्र वात्र स्था । न हास्त्रानः भुन्य स्मान्य भन्न निम्हाक वर्ष्य द्या इंडि कोः

र्प्य उनिविভागि १५ वर्षायः॥ বারণ: পু॰ হন্তী। ইত্যমর: ॥ বা-गवातः। ইতি मदत्रवावली ॥ বারণবৃষা জ্রী কদলী। ইত্যমরঃ॥ वाद्रगवल्लां जी करनीवृक्तः। इंडि ত্রিকাওশেষ: ॥ वाद्रात्री जी वाद्रापत्री। काणी। ইতি হেমচন্দ্র:॥ বারত্রণ ক্লী চর্ম্মবন্ধনী। ইতিকেচিৎ।। वात्रवृषा जी करनी। इंडि भद्रः ब्रङ्गावनी ॥ वात्रव्या जी करली। इंडि भंदः ब्रज्ञावनी।। वाद्रमूथ्या जी करिःम्टक्छा বেশ্যা। ইত্যমর: ॥ বারম্বারণ ব্য পৌন:পুন্য । যথা । বারস্বার মূহ: শখদিতি শক্ ब्रञ्जावनी ॥ वात्रणा जी वत्रहा ॥ इंगी। इंडि (रुगठन्मुः॥ वात्रनीकः भुः वन्ना। वावृहे हेि थ्याजः। इंडि मदद्रवादनी।। বার্যিতা পু পতি:।ইতি হলা यूषः ॥ बाब्रविष्: खी वाब्रमूथता । ইতি

(इमहन्मुः॥

वात्रवानः शू ही दक्षाः। इंडा

नद्रः ॥ বারবাণিঃ পু॰ ব॰শীবাদকঃ। ইতি ত্রিকাওশেষ: ॥ উত্তমগাৰক:। इंडि नद्रवादनी ॥ श्यांशुकः॥ সমূৎসর:। ইত্যজ্যপাল:।। এত মতে প্ৰগী বাদিঃ॥ वाबवाणिः जी (वन्ता। देखि वि-काश्रामवः॥ वादवाणी जी वादम्बा। इंडि भद्रवृत्वी ॥ वात्रविवात्रिनी जी विष्णा। इंडि भदत्र द्वावली ॥ वात्रमृन्दती जी दिन्छ। इंडि हाबावनी ॥ জী বেশ্যানা কনঃ॥ বারসেবা जामाःगनः। ইতি बहायतः॥ বারন্ত্রী স্ত্রী বেশ্যা। ইত্যমরঃ॥ পু॰ সমুদুঃ। ইতি वाद्गाः निषिः नद्रश्वावली॥ वाद्रापत्री जी भाक्तमानुद्रीवित्तर यः। दनात्रम् इंडि हिन्ती ভाषा । उर्भिग्रायः। वद्गानभी र काणी ৩ শিবপুরী ৪। ইতি হেমচন্দুঃ ।। बिव्री ६ उनज्ली ५ वर्ष-गमी १ जीर्थद्राकी ৮ कार्लिका al ইতি শব্রত্নাবলী ॥ তস্যামা श्वा १ वर्षा। देश्वत देवाह। भन्नः

গুহাতম ক্ষেত্র মম বারাণসী পুরী । সর্বেষা মেব ভ্রানা সস্বার্ণব ভারিণী।। তত্র ভক্তা মহাদেবি ম-দীয় বুত মাশিতা:। নিবসন্তি ম-হাত্মান: পর• নিষ্ম মাস্থিতা: ॥ উত্তম• সর্ব গীর্থানা• স্থানানা মৃত্ত-मक यट । उद्धानाना मुखन उद्धान অবিমৃক্ত পুর• মম ।। স্থানান্তর• প বিত্রাণি ভীর্থ।ব্যায়তনানি চ। শ্ম-শান সংস্থিতান্যের দিব্য ভূমিগতা-नि ह ।। ज्रानीक रेनव मःनग्र मखद्री-क ममाना । अमुका उत्तरभाष्ठि মুক্তাঃ পশ্যন্তি চেতসা ॥ শ্মলান মেতদ্বিখ্যাত নবিমৃক্ত মিতিশুত্ত। काला ज्ञा बगिष्रः मः इत्राम्य मुन्दि ॥ (दिवीदः नर्बछ्यानाः छ।-न भि्य उद्ग भन । मफ्ला सब গছন্তি মামেব পুবিশন্তি তে ॥ দত্ত• **ब**र्छ : ऌ**ड॰ (८३॰ ७** शरुछ • कृडक रूट। न्। न मन्।यन छान मई छवाक्य ज्या अत्राष्ट्र महामुष्ट्र यर भा गः भू बंगकि उ । चित्रकः भू विष्टे · गा उरमर्व युक्ति क्या ॥ याक्ताः कविया दिनाताः मृमु (य वर्गनक्ताः । खिर्या सिहाक रंग हात्नु जिल्ही नीः शाभायानयः ॥ कीषाः भिभीनि-क। रेम्हव (व हारन्। मृग शक्षितः।

কালেন নিধন প্রাপ্তাঃ স্ববিমুক্তে वद्रागत्न।। हन्तु। र्काभी नय अक्षा म-হাব্যভ বাহনা:। শিবে মম পুরে **(एवि जायस्य ७७ मानवाः ॥ नावि-**মুক্তে মৃতঃ কশ্চিমরক থাতি কি-त्विती। देखनानूगृशीजा कि मार्ख या-खि **नदा॰ गिंउ॰ ॥ भाकः मृ**रूर्स्न ड॰ মত্বা সংসারঞ্চাতিভীষণ । অশ্মনা **हत्रानी रुज्।** वाज्ञानम् ।। দুর্ল্লভা তপসা চাপি প্তস্য পর-মেশ্বরি ৷ যত্র তত্র বিপন্নস্য গতিঃ अभात (याक्रेगी ॥ शुत्रामाञ्जाय उ **(क्**उन्नम रेनलनम् निन्ति। जन्-वुका न भगाऽ भग भागा वित्याहि-ভাঃ।। অবিনুক্ত ন পশ্যন্তি মূঢ়। যে তমসাবৃতা:। বিন্তু রেতসাণ মধ্যে **उदा' वाजः शुनः शूनः ॥ इन्।** নোপি या विद्यान् वस्त्रिह्मणेटि-রপি। স্বাতি পর্মণ স্থানণ যত্র গত্বা ন শোচতি।। জন্ম মৃত্যু জরা: যুক্ত পর যান্তি শিবালয । অপুন র্মরণানা হি সা গতি র্মোক্ষকাদ্ধি-भा ॥ याः भाभा क्उ क्ठाः माहिः তি মন্যন্তি পণ্ডিতা:। ন দানৈ নঁ ত-পোভিশ্চ न यटेक्क नांशि विष्या।। পুাপ্যতে মতি ৰুৎকৃষ্টা যাবিমূক্তে जू वज्रा । नाना वर्गा विवर्गाण्ड চাণ্ডালাদ্যা जुल्क्ष्रिजाः॥ किन्तियः পূৰ্ণদেহা যে বিশিষ্টে: পাতকৈ তথা ৷ ভেষজ পরম তেষা মবিমুক্ত । विमु वृशाः ॥ णविमुकः भन्नः छान মবিমুক্ত পর পদ । অবিমুক্ত পর তত্ত্ব মবিমুক্ত পর শিব।।। क्षा रेव रेनिष्ठ भी भी भी भविम् ज বসন্তি যে। তেষা তৎ পরম জ্ঞা नः म्हानारङ लद्गः अमः ॥ भुगागः নৈনিষণ পুণ্য জ্রীশেলো ২থ হিমা वयः। (क्रांत्रः छम् कर्षः गया भू-**इत्र (भव ह ॥ अक्ःक्व क्रुका**ढि र्वर्गरा नाउरकथतः। भानगुरम् জ্বানু কোকান্থ মনুত্তম।। পুভা-यः विषयणानः शाक्नं छम्दर्नकः । এতানি পুণ্যস্থানানি বৈলোকের বিশুক্তানি ভু ॥ ন যাস্যন্তি পরা মো 🆚 বারাণস্যা তথা মূ ভা:। বারা-ণস্যা• বিশেষেণ গঙ্গা ত্রিপথগানি-नी ॥ भुविश्वा नामरगर भाभः जन्माः ন্তরশকৈ: কৃত । অন্ত শুভগা গঙ্গা শুাদ্ধ দান তপো জপ: ॥ বুতানি সর্ব মেবৈত্ত বারাণস্যাণ मुपूर्व छ॰। रहिछ जुल्याबिछ।॰ प-माञ्डरिंग्ड १नदान् ॥ वायु ७कः म সতত বারাণস্যা ছিতে। নর: । यिन भारता यिन भरते। यनि वा धाः

র্মিকো নর: ৷৷ বারাণসী• সমাসাদ্য পুনাতি সকল নর:। বারাণস্যা। महारति रहर्वि खर्जि देव।। मई পাপ বিনিমূকি৷ স্তে বিজ্ঞেয়৷ গণে শ্বরা: । অন্যত্র যোগ জ্ঞানাভ্যাণ नम्रामाम्य नान्रजः ॥ नाम्राह **७८ भद्र॰ ज्ञान॰ मह**्मुरे गव कन्मनः। (य ज्का (हराहरवन वाद्रानमा বসন্তি বৈ॥ তে বিন্দন্তি পর নাক **भित्र के अध्या । यव याग** खण छान गृक्ति (त्रक्त कत्रना॥ **অ**विगुक्त• उरामान्। नानामाहलः পোবন । জ্ঞানাক্তানাভিনিষ্ঠানা পরমানন্দ নিছতা ।। যা গতি বি হিতা সুক্র সাবিমুক্তে মৃতস্য তৃ। য়ানি চৈবাবিন্তুস্য দেহে ভুক্তানি क् मुभः ॥ भूत्री वातागनी (उडाः স্থানেভাগ হাধিকা শুভা। যত্ৰ माकात्रशास्त्रा (पर्वास्त्र स्वाभी र র:।। ব্যাচপ্টে ভারক• বুক্ষ ভবৈ হ বিনুক্তে। যত্তং পরতর তবু ন বিদ্ৰুক্ত মিতি শুক্ত।। একেন ধ্ৰমনা प्रिव वाद्रापन्। जनान्त्राए । ज्ञ्रनाल्य नाल्यात्य ह इत्राय हिन्द म्किनि॥ यथाविमुक मानिएउ। वी-ज्ञानमार वार्वाञ्च । वार्वाः 1 ख्या ठाम्या नध्यः वाद्रागमी भूदी ॥

ভবৈৰ সংস্থিত ভদু নিত্যমেবা विभुक्कः । वाज्ञातम्याः भन्नः ऋानः न ज्ड॰ न जिविष्ठि॥ यज नाताय-(१) (५८व) सङ्गाप्तवाधित्रीश्वतः । **७**व (स्वा: সगन्नर्दा: স यक्षात्रग রাক্ষসা: ॥ উপাসতে মাণ সভত। (एवएवः शिञामरः। महाशाज-কিনো যে চ যে চ বৈ পা পক্ ভ্রমাঃ॥ বারাণসী সনাসাদ্যতে যান্তি প त्रभाः गिष्ठिः। उत्याग्रमुक् विवाला वरमें व महागा छिकः। वाद्रां भागाः म-शापियाज्ञान वक्षा विमुह्य ॥ কিন্ত বিহা ভবিষ্যন্তি পাপৌষ হত-চেতস:। যথা নারাযণ: শ্রেটো দে-বানাং পুৰুষোত্তনঃ ॥ যথেশ্বরাণাং গিরিশ: স্থাননো॰ বৈ তদুত্তন । रियः সমারাধিতো কৃদু: পূর্বসি লব হম্ব।। তে বিন্তি পর ক্রেএ भविगुक्तः भिवानयः। (य भविष्ठ সদা কালং বদন্তি চ পুরী মিমাং॥ তেষা বিনশ্যতি ক্ষিপু মিহাম্ত্র চ পাতক ৷ আচক্ষধ মিন স্থান সে विड॰ (माक्कका हिना॰ ॥ मृजानाथ भूनर्जन्म न ज्रा जवनागरत । उ মাৎ সর্বপুষত্বেন বারাণস্যাণ বসে-मतः ॥ रयागी वानाऽय वारयागी পাপী বা পুণ্যকৃত্তমঃ। ইতি কৌর্মে

२৮ व्यथ्रायः ॥ 🕸 ॥ व्यन्ताहः । वाद्यान ণসী নাম পুরী গঙ্গাতীরে মনোহরে । वद्रभाषा खथा वारम संर्थः हाभा-कृष्टिः भगा ॥ स्रगः वृषध् ज छ ब নিত্য বসভি যোগিনা । সদা প্রীতিকরো যোগী শ্বয়ণ চাপ্যাত্ম-চিন্তক:।। विष< হ। সা পুরী নিত্যণ **ভर्गर्याग वनाक्**डा । दिवा कान দদাত্যেষ তত্ৰ যো গ্ৰিয়তে জনঃ ।। उरेब स्रगः महाप्तरः मः नात्र गृहि মুক্তবে। স ভ্রা পরমো গোগী मृं खब ख्वास्रत ॥ मृल खिन्द নির্বাণ মাপ্মোতি মার্ছা সমঃ। যো-গযুক্তো নহাদেব: পাৰ্বত্যা সহি-**७:**ेमरा ॥ (रव शक्क व्यक्कांगाः মানুষাণাঞ্চ নিত্যশ:। জ্রেয়ো হরঃ পুকাশক্ষেত্র' তচ্ন পুকাশিত।।। न उठ कामारा (पर्या न विदाह পুসীদতি। আরাধিত শিরণ ভক্ত্যা निर्द्वागाय भुजीवि ॥ भोर्यानिव-জ্জিতাসাতু পুরী তত্ত্র ন গছতি। যোগ স্থান নহাক্ষেত্র কদাচিদপি भाक्षती।। आगः गुवरगः क्वा নিদ॰ বারাণসী তু য় । কথি -নাতিদূরে চ বর্ত্তে ২মরসভ্যো।। ইতি কালিকাপুর:ণে ৫০ অধ্যায়ঃ ॥ 🗱 ॥ 🗱 ॥ व्यथ काणीयाजाविधिः ।

বাযু

সূত উবাচ। যাত্রা পরিক্রমণ বুহি कनानाः शिकामप्रा । यथाव সিদ্ধি কামানা সভ্যবভ্যা: সুভো मम ॥ वशम উवाह । निभामय गहाभाक लागहर्यन विद्या (छ । যথা পুথমভো যাত্রা কর্ত্তব্যা যাত্রি-कि मुंदि ॥ जहन भादी जन्त्राय ठक शुक्क त्रिगी करन । महर्भे । एवान् जिल्न वाकागाः उनियः ॥ णानिष्ठाः प्रोभनी विक्षु मखनानि मः स्थेतः। नमक्ष्ण ७८७। गाह्य मुक्षे पृत्धिवनायकः ॥ ज्जानवाशी मूभम्भा निस्किष् उउ। १ई থেৎ। তারকেশ সমভ্রষ্ট্য মহা-কালেশ্বর ওত:।। ওত: পুন দণ্ডি-भागि मिट्यामा भक्षजीर्थिका। रेहन-ন্দিনী বিধাতব্যা মহাফলমভীপ্-मुভि:॥ 🗱॥ उछा दिस्यभेत्री याजा कार्या मर्बार्थ मिक्षरय। द्विमक्षायज-नानाक कार्यता याजा नुयङ्गञः॥ ক্ফা পুতিপদ পুাপ্য ভূতাবধি যথাবিধি। অথবা পুতিভ্তঞ্ কে-ত্র সিদ্ধিনভীপ্সুভি: ৷৷ তত্ততীর্থ কৃত সান স্তভলিন্ধ কৃতাৰ্চন: । মৌ-त्न याजाः वर्षानः कनः भारताि याजिकः ॥ खँकात्र॰ भूषम॰ भाग्रः न ८ रम्यापर्यताः कृष्डाप्तकः। विशि-

क्षेण महारियः छ। व कृ खिवानः नः ॥ द्राञ्चलकार्याः हिन्तुः कराद्रश **उटा वुर्ह्म । शर्मायत्रक्ष वीर्द्रम्**। গছেৎ কামেশ্বর তত: ।। বিশ্বকর্মে-খরকাথ মণিকণী খর তভঃ। অ বিমুক্তেশ্বর• দৃষ্ট্বা ততো বিশ্বেশ ম हर्षर ॥ এया याजा भुयाञ्चन कर्बन्ता ক্ষেত্রবাসিভি:। যস্ত ক্ষেত্র মুবিত্বা-পি নৈতা যাত্রা সমাচরে ।৷ বিগ্না স্তুম্যোপজায়ন্তে ক্ষেত্রোচাটন স্চুচ काः।#॥ अष्टायञ्च याञान्।। कर्क ব্যা বিম্নশান্তযে ॥ দক্ষেশঃ পার্বতী-**শ**শ্চ তথা পশুপতীশ্বর:। গঙ্গেশা নর্মদেশক গভন্তীশঃ সভীখর:॥ অপ্তম স্তারকেশন্চ প্রত্যপ্তমি বিশে वजः। मृ**ण**्रात्युजानि विक्रानि म राभाभाभाष्ट्रय ॥ 🕸॥ व्यभद्राभि শুভা যাত্রা যোগক্ষেমকরী সদা ! সর্বিয়োপহন্তা চ কর্ত্ব্যা ক্ষেত্র-বাসিভি: ॥ শৈলেশ পুথম বীক্ষ্য वद्रभात्रानभूर्वकः । त्रान्छ नक्त क्षा मुष्टेवाः मक्स्मभातः ॥ समी न-তীর্থে সুস্নাতঃ পশ্যেৎ স্বনী ল মী-श्वतः। ग्राज्या मन्ताकिनीजीर्थ <u>पृष्ठ</u>ः विश मध्यम्यदः ॥ शाम्यक्षित्रग গৰ্ত্তাখ্যু ভৰ ভীৰ্থকৃতোদক:। প क्षर्ड्दि माद्या (बार्ड्सान छाडा

शहरमर II हजः ममु मु क्रम जू माषा (सव ७७) ५ईए.८। (स्वन्धार्यु जू যা বাপী ভৱোপস্পর্শনে কৃষ্টে ॥ শ্কেশ্ব॰ ততঃ পশ্যেত্তৎক্পবি-হিতোদক:। দণ্ডখাতে নর: স্নাত্ম ব্যাঘুল প্রযেক্ত ঠঃ।। শৌনকেশ্বর क्रां जु नान क्दा जा १ हर्षि । কছুকেশ॰ মহালিক। কৃত্বা বাত্রা भिभा॰ नतः ॥ कृतिम काया ज्रुवः সংসারে দু:থসাগরে ৷ সমারভ্য भुविभवः यावट कृष्णः **हर्जूर्यनीः**॥ **७** उर करमन कर्डव्यात्म्य जना-निरेव। हेमा' याजाः नद्रः कृषा न ভূযে। প্যভিজাযতে ॥ 🛊 ॥ অন্যা যা-का भुकर्ख रिवाकाममायञ्जाकरा । व्यश्रीतं अल भूगाजः भाषाप्रशिव भी यतः ॥ উर्वेषीणः व्हागहित्रवस्त्र नवनी यतः। जायाती मः उत्ता पृष्ट्री **ভा**वज्राज्यद्वः ७७: ॥ नाम्नीम मणालाका उउस विश्वासक । **ख्ला मनः भुकारमणः भुै** डिरकण भाषा वुर्वा ।। भनावामध्य उमार তিলপর্ণেশ্বরণ ততঃ ৷ যাবৈকাদশ निकाना (भवा कार्य)। भुयञ्जः॥ ह-मा गामा अबदाता कमुव भाश गामतः। कः। व्यजः भन्नः भुवकः।भनि भोत्रीयाजा वन्डमा॰ ॥ मूल्लभक

তৃতীযাযা॰ যা যাত্ৰা বিশ্ববৃ**দ্ধিকা।** गालुका और्थ मुनाय मुधनिर्भाः निकाः व्राह्म ॥ (क्रिश्रवान्त्राः नद्रः माषा (काष्ठाः (गोत्रीः नमहर्रायः । সৌভাগ্যগোরী সংপ্রা্য জ্ঞানবা-ग्राः क्रापिकः ॥ उउ: मृजात-(गोत्रीक ठरें बर ह क्रा कर । त्राष् विभालगकायाः विभालाकीः छ-তো বুলে ।। সুসাতো ললিভাভীর্থে ननि जामहर्यस्यः। त्राष् । ख्वानी **डीर्थ उ खरानी॰ भित्रभूबर्य ॥** मक्ना हे उउा १ छाई। विन्तृ और्थ-क् (जारिकः । ज्ञा गहिम्राम् निकीः श्रिवन्त्रीमम्बत्य ॥ इमाः यााः নর: কৃত্বা ক্ষেত্রে ৎস্মিন্যুক্তির মনি। न पू:रेथ इंভिज्राउ ইशमूबानि अब्रिट II # II अर्थ्याट मुजि-চত্থী হ পূজা বিছেপিত: সহা। वाकाराङा उपूष्यणाष्ट्रया देव भा-पका मुला। ভৌনে ভৈরব যাত্রা চ কার্য্যা পাতকহারি । রবিবারে द्रात र्याखाः वक्षाः वा द्रविमःयुक्ति॥ ভথৈব রবিসগুম্যা• সর্ববিয়োপশা• स्राय। नवम्या मथ वा वक्ष्याः हशीयाः वा मृ ভावश।।#॥ **घ**ष्ण्**रम**) यावा रिव कर्जवा। भुजिबर मद्रः । भुाजः ञ्चान विशाघारही नज्य शक्य विनाय-

कान्।। नमकृषाथ विष्यं भ श्रिष्ठा নিৰ্বাণ মণ্ডপে। অন্তৰ্হস্য যাত্ৰা॰ हि कदिरया श्वीवनाख्य ॥ गृही ত্বা নিয়নঞ্চেতি গত্বাথ মণিকর্ণিকাণ । त्राज्वा स्थातन हागछ। स्थिक्शी न महं(य८।। कघ्रनाय अत्रो नारगी वाम्कीण भूगमा ह। अर्वाउणः **उ**डा मृष्ट्री गङ्गातम्बर मन्।। **७७**ख निनाः मृष्ट्री **ब**द्रामस्त्रपद्रः ততঃ। ততো বৈ সোমনাথঞ্চ বরা-হঞ্চ ভতো বুছেৎ ।। বুজেশ্র • ভতো নত্ত্বা নত্ত্বাগস্ত্রীশ্বরণ ডভ: । কশ্য-পেশ নমফ্ত্য হরিকেশবন স্তৃথ।। বৈদ্যনাথ ভতো গড়া প্রুবেশ নথ বীক্ষ্য চ। গোকর্ণেশ• ভতো ২ভ্য-हं। হাটকেশ মথো বুরেৎ।। অস্থি-(क्रभ उउ:रा थ मृष्ट्री रेव कीकरमय-র•। ভাবভূত• ততো নত্বা চিত্র-শুগুর ততঃ।। চিত্রঘণ্টা পুণ-ন্যাথ ততঃ পশুপর্ভাধর । পিতা-নহেশর• গড়া ভতন্ত কলসেশ্বর•॥ हत्मुना चुय वीद्राला विद्याला श्री শএর চ। নাগেখার। ছরিশ্চন্দু শ্চি-स्थानिविनायकः ॥ (मनाविनायक महाथ मुक्केग्राः मर्बदिहरू । विभिन्न वाम(एरवी ह मूर्जिक्शवबार्ट्डी ॥ प्रहेरिको यञ्जः काम्याः भश्चाविध

विनामाती । जीनाविनायकः नाथः কৰণেশ ততো বুজে ॥ ত্রিসদ্ধ্যে (मा विमालाकी श्रर्यःमा विश्ववा-হক। আশাবিনাযক ক্ষাথ বৃদ্ধা-**क्टिंग खंडः भूनः ॥ हर्ड्यकुषद्रः** লিস্ণ বুদ্ধেশস্ত ততঃপর•। ততো यनः भुकारणण देगारमण खजःभाव ॥ চণ্ডী চণ্ডীশ্বরৌ দৃশ্যেরী ভবানী শ ক্ষরৌ ভতঃ। ঢুণ্ডিণ পুণম্য চ ভতো त्राजताज नमहत्य ।। लाक्ली**न** खा १ चार्ह्य खठ ख नवनी अतः। পরার্ণে মথো নত্ত্বা পরদুব্যেখরণ ততঃ।। পুতিগুহেশ্বরঞাপি নিম্বল-ক্ষেশ মেব চ ৷ মার্কণ্ডেষেশ মভ্যন্ত্র্য তত অপ্নরসেশ্বর ।। গঙ্গেশোর্চ্য ন্তকো জ্ঞানবাপ্যা' স্থান• সমাচরেৎ । बन्हित्कणः जात्रत्वणः सहाकाः লেশ্বরণ ততঃ ৷৷ দগুপাণি মহেশঞ্চ (नात्कणः भूगानखाः। वीत्र जारूः শ্বর॰ নত্ত্ব। অবিমুক্তেশ্বর॰ ততঃ॥ विनागका अउ: शक विश्वनाथ उ তো বুৰেৎ। ততো নৌন বিস্ল্যা-थ नजरान नृशीदार ।। अनु १ इम् याद्वरः यथावम्यक्षाक् जा। न्रनाः তিরি জনা শন্তঃ প্রীয়ভা মন্যাবি छः॥ इंडि इख मग्हाया क्रन देन मूक्ति न अला। विশान। यावास्वन॰

িল্লাপ: পুণ্যবাষর: ॥#॥ সংপাপ্য वामद्र विस्था विंक् ञीर्थियु मर्वजः। কাৰ্য্যা যাত্ৰা পুৰত্নেন নহাপুণ্য সং मृष्करय ।। नवम् । । शक्रमण ।। क्ष अवा उद्धः नगह (य८। मू:थ कमुशिमाठः (व न ख़्रारम) भूकनार ॥ मुद्रा भूर्व भिभा याजाः कर्डवता खीर्थवानि जिः। পর্বয়পি বিশেষেণ কার্য্যা যাত্রাশ্চ मर्ब उ: ॥ न वक्कार मिवम क्यार বিনা বাত্রাণ কুচিৎ ক্তী। বাত্রাদ্বৰণ পুষত্নেন কর্ত্তব্য পুতিবাদর । আ-দৌ স্বৰ্গতরক্ষিণ্যা স্ততো বিশ্বেশিতু ভূ'ব॰। যস্য বন্ধ্য॰ দিন• জাত• কা-ন্যা॰ নিবসতঃ সতঃ॥ নিরাশাঃ পি-তর স্তম্য তিমানেব দিনে হভবন্। ज रष्टेः कालमर्लिंग न रहि। मृजुःनाः न् है।। স মুষ্ট শুত্র দিবসে বিশ্বেশো यव (निक्क डः। मर्बडी (र्थवु माम) म अर्देगाजाः रादार मह।। मनिकर्गान्छ য: স্নাতো যো বিশ্বেশ নিরৈক্ষত। সভ্যুণ সভ্যুণ পুনঃ সভ্যুণ সভ্যুণ স छा भूनः भूनः ॥ म्रा विष्ये यसा निडाः माडवा। मिक्रिक्। वाम উবাচ। সৃত ক্ষান্দ্রিম• শুরা কাশী। भाराजा। मुख्य । नाता न नित्रयः শাভি ক্রপ্রেসহসু ।। ইতি क्षाचाया ३०० व्यवग्रायः॥

বারাণদেয: ত্রি বারাণসীজাত:। বারাণসী শব্দাৎ ফেয় পুত্যবেন নিম্লম:॥

বারাসন ক্লী জলাধার:। তৎ-পর্য্যাশ:। বা:সদন ২। ইতি ত্রিকাগুশেশ:॥

বারাহ: পু॰ মহাপিণ্ডীতকবৃক্ষ:। ইতি রাজনিঘণ্ট:॥ বরাহ এব বা-রাহ:॥ তৎসম্বন্ধিনি ত্রি॥

वादारुकगीं जी अभगन्ना। इंडि द्राजनिर्घण्टेः॥

বারাহপণ্রী জী অশ্বগন্ধ। ইতি রাজনির্ঘণ্ট:।।

বারাহাক্স জ্রী দন্তীবৃক্ষ:। ইতি ভাবপুকাশ:॥

वात्राशे को तुकान्याम् छेगा ज्काछर्ग जगा ज्का विष्मयः। यथा। वताः
स्क्र भवाती ह वत्रा ह्या भ में हिंद्र छ।
वात्रा इक्त नी हाथ वात्राशे वत्र वास्वा ॥ दें हिंदि भी भूत्रा । (पि नि नि विकाय)। यथा। पूर्णा ह एक्य बी हिंदी
वात्रा ही कार्तिकी छथा। इत्र मिक्षा
छथा काली हेन्द्र । विष्ये वे छथा।
छ प्रकाली विणालाको दे छत्र वे कासक्तिनी। अञाः महीण्ड (छ।। छीर्थ
(न्या छ स्रोदेश मान्य छ छ।। छीर्थ

विष्णयः। यथा। वाद्राशी यम्ना গঙ্গা করভোগা সরস্বতী কাবেরী চন্দুভাগাচ সিন্ধু ভৈরব সাগরা: পশুসাৰ বিধানায় সালিখ্য মিছ-क्ष्मय ॥ ইতি वृष्मिन्तिक्षप्रमृत्रा-ণোক্ত দুর্গাপুরা পদ্ধতি: ॥ 🛊 ॥ वदारुप्तवम् मकिः। यथा। यञ्ज বারাহ মতুল কপ যা বিভুতো रुवः। শক্তি: जानग्राययो ভव বারাহী • বিভুতী তনু ।। ইতি চণ্ডী য়া অপিচ। বারাহ ৰূপিণী দেবী। म्पर्धुाष्ट्उ वमूक्षत्राः। मूखमाः मुः भुजाः मृजाः वात्राहीः जाः नमाः भारु।। ইতি वृश्यमितकथत्र भू-রাণোক্ত দুর্গাপ্তাপদ্ধতি:॥ 🗱॥ বরাহকান্তা। চামালু ইতি খ্যাতঃ । उट्मर्यायः। विश्वक्रमनित्रा २ ঘৃষ্টি: ১ বদরা ৪ । ইত্যমর:॥ গৃপ্টি: ৫। ইতি ভরত: ॥ শুকরী ৬ ক্রোডকন্যা 🤊 বিশ্বক্ষেনকান্তা ৮ বরাহী ৯ কৌমারী ১০ ত্রিনেত্রা ১১ वुऋभूञी ३२ (काफी ३० कन्।। ४८ गृष्टिका ३৫ गाष्ट्रवर्ष्ट्रा ३५ णूक्त्रक-न्तः ११ काउः १४ वनवात्री १३ क्षर्याणनः २० वन्तरः २७ अनृजः २२ महावीर्याः २० माहोवषः २६ भश्चत्रकम्तः २० वदाष्ट्रकम्तः २७ ॥ वातिः खी वाक्॥ मदविशा गङः

वीतः २१ वाक्षीकमः २৮ भूकम्तः २२ वृद्धिपः २० वृश्विष्ट्या १)। व्यम् । विकष् । कर्षेष्। বিব পিত কক ল'ঠ নেহ জিম नामिष्-। वृष्युष्-। वन्युष्-। ब्रमाः यनपुष्ध । इंजि द्वाकनिर्विष्टः ॥ ष्र-नाह। वात्राष्ट्रीकम्त अवारेना कर्षः কারালুকো মতঃ। অনুপে স ভবে फ्ल वादाह हैव लाभवान्।। ইতি ভাবপুকাশ:॥ 🛊 ॥ শ্যামা शकी। इंजि द्रावनिर्घणैः ॥ (स्-**मिनीमएज भवगी व बकातामि द्रश** नदः॥

वाति क्री कलः। इंडामतः॥ श्री বের•। ইতি ছেমচন্দ্র: ।। দিখিশে (व उन्र) निरवधविधी यथा । ^{हेर} শানে চালি প্রয়িন্ পশ্চিমে চ তথোত্তরে। শিবিরস্য জনা ভ্রু মন্ত্ৰাশুভ মেব চ।। ইভি বুক रिवर्स श्रीकृषकमाथाख ३०२ जः थ्यायः ॥ 🗱 ॥ कन्नक्री खायाः वर्गनीः যানি যথা। জলকেলৌ সর: কো-ভ চক্ৰ হংসাপসর্গণ। পদ্মানি भरवाविनम् मृगुगा ভ्वनहृ। ।। ইতি কৰিকল্পলভাষা• ১ তথকে ৩ स्भूभः ॥

ी। इत्यक्तनज्ञः॥ वनिरः अनी जिजाया। इति प्राप्ति। अक्ष्महत्नुते॥

াকটকঃ পু• শৃঙ্গাটক:।ইতি ীব্র: ত্রিকাগুশেষক।। ক্রিকা জ্রী থমুলী। পানা

ें अधि। इंडि भद्रद्वावणी॥

ः नवश्रीकः **शू॰ हैक्सिनग्रन्तः।** चिक्तिका**खानगः॥**

ं उन्नद्ध **न्ः म्हार्वेकः । ই**ভি अवद्यावनी ॥

्रिक्तुकः **भू॰ मृत्राविकः। देखि** विका**शमयः**॥

ারিক্রমিঃ পু॰ জলৌকা। ইভি ভিকা**ওপেম**ঃ॥

্রিচত্র**: পু॰ স**দ্ভিকা। ইতি াক্য**ওশেষ:।**।

> ः পু• মৎস্য:। ইতি ধন-া। অবচয়নন্তমাত্র• চ।।

্র• ক্লী শৈবা**ল:। ইতি** ংগুশেষ:॥

ন্ধী দ্বোণীলবণ ॥ গৌর-।। পদ্ম ॥ লবক্ষ । ইতি নির্ঘণ্ট:॥

शुः भद्धः। ইতি हम-ः॥ भद्रः। ইতি भद्दमाणा॥ स्वः भूः भ्यः। ইতি भद्द- भावा ॥ ज्र्यः। यथा। यक्त भशितः नी॰ हिमा नानिनान निकाणुन॰ । निः जाः जार्थाः जो जिमजी॰ जा- करता वात्रि करतः ॥ देखि मार्कः । । देखि मार्कः । । विकाणुनः ।।

বারিত্রা জী ছগ্র•। ইতি ত্রিকাও-শেব:।।

वाबिषः क्षी वाणा। इंडि अम्बर्जाः वणी ॥

वातिमः भू भिषः॥ मूखकः। ३७४-भन्नः॥

वात्रिषिः भृ अमृपुः। ইতি मदः त्रञ्जावनी ॥

বারিনাথ: পু॰ বকণ:॥ সমুদু:॥ মেঘ:।ইতিকেচিৎ।।

वाजिनिधः श्रु जगूमः। ইতি माः व्यवज्ञावनी।।

বারিপথিক: ত্রি জলপথগানী। বারিপথ গছতীত্যথে ফিক পু-ত্যবেন নিয়ম:।।

বারিপণী জী স্বস্তিকা। ইত্যনর:

। অস্যা গুণা: । বারিপণী হিমা
তিক্তা লঘী ষাদ্বী সরা পটুং। দোযত্র্যকরী ক্ষানোণিতজ্বংশাধকৃৎ।। ইতি রাজবল্লভ: ।।

वात्रिभाणिका जी थम्बिका। ইতি

मस्माना॥

वाद्रिव

वाब्रिभुवाष्टः भूः निर्वादः। इंडि | मद्याना ॥

বারিপুশ্নী জী বারিপণী। ইভি भद्रशाला।।

वादिवरदा जी शुहिनामणकः। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষ:॥

वात्रिवानकः ज्ञी शुीत्वत्रः। ইতি राज्ञावनी ॥

বারিভব॰ ক্লী শুেতোঞ্জন•।ইতি ब्राकनिर्दण्डः॥

বারিমসি: পু॰ মেঘ:।ইতি ত্রিকা-

अत्मवः ॥ वाद्रिमुक् भू॰ (भयः । ইতি नमः त्रज्ञावनी ॥

वातिम्नी जी वातिभागी। ইতি वातिमञ्जवः भू भावनामा मदत्र ज्ञावनी ॥

वाबिब्रथः भू॰ ভেলকः। ইতি वाबी जी शबदक्षिनी।। किल्हिः जिक्राश्रः भयः।। ইতি ধ্রণিঃ।।

বারিরাশি: পু॰ সমুদু:। ইতি ত্রিকাওশেষ:॥

वादिक्र की कमन । इंडि द्राष्ट वादीनः भू अमृहः। इंडि निर्धिः ॥ बनजाउ जि ॥

वातिरनामा भू वक्षाः। इं कि कि। वाकः भू विक्रमञ्जयः ध्रतः ॥

वाबिवहन॰ की भाषीनामणकः। वाक्ठेः भू॰ चिः। अउ ইভি ভূরিপুযোগ: ॥ ইভি ক্রিকাগুশে यः ॥

वाति वतः की कत्रमर्भाः। इं जि वासाः की वनः। इंडि

বাৰণ

किंग्या

বারিবল্পভা জী বিরারী।

ब्राजनिर्घिः॥

वाद्रिवामः भू॰ (मोधिकः। 💖

८२महन्दुः ॥

वाद्विवारः भू । भनः । मूलाः

ইভ্যমর: ॥

वाद्रिवाहनः भू स्मयः। इति न

मत्रवादणी ॥

वादिणः भू विष्ः। ३७ जिकः

শেষ: 11

वातिमञ्जर ही व्यवस्था রাঞ্জন•।। উশীর । ইতি 🕬

विर्घणेः॥

इंडि द्राविवर्गः।।

वाबीं : भू स्ती। देखि । याना॥

ठमुः ॥

श्वावधी॥

ः॥ वक्नमपश्चिति वि । यथा हरमं भूत्रमस्य वाक्नक शुः उत्त । উख्रम जू ज्ञ्ञाहिः (मी मूख्रमः ख्रावरः ॥ উख्रम वारमध्याकरः भिश्रमः मूखः क्राम्मख्राखा प्रत्या विभन्नीः विभावरा ॥ ইভি मार्थमध्य

ार्मा ही डनाणयथननारि। ं । भू डाभू छ वाला मि यथा। य हेराह। मुसिद्धं भू छनकाख हन्यु ता वरेल यूर्डा जम्जू स जाव-🛶 🛊 কালে ভিমান্ বিধি: মৃতঃ।। प्रमुखी जु कृष्ड कर्जु: मंभूर्ग छ अत्याद्रयः । कर्कार्ठे भू अना छ स भोषाः ज् मकात्र ভारत्य ॥ भीत শার্থ লাভস্ত পস্তে চ সুবহুদকণ ব্বে চ মিপুনে বৃদ্ধি বৃশ্চিকে किंग ज्यर ॥ भिज्ज्धिस ন্যাযাণ ত্লাযাণ সত্য সক্তি:। में एक (भरव चन नाम कनम्) रक्ट बिक्र ॥ उथा हिट बु मार्म् । बिग कर्य (नामिल्य । इंडि व-हिन्द्राण वाक्नाताम नुष्ठिश विषया विषय

ि **चगर्डामूनिः । ইভি** विक्रा का ॥

वाकगी की जूबा।। পশ্চিमिष्क्। ইত্যমর: ।। শতভিবানক্ষত্র । इेंडि (इमहम्मु: ॥ गखमूर्वा । ইভি (मिनी ॥ इन्द्रवाक्षी ॥ पूर्वा । इंडि द्रावनिर्धिः ॥ भउंचितान-क्रवयुक्टिवक्कवरयाम्भी। यथा। कम्रभूद्रात । वाक्तन ममायूका मधी क्षा ज्यामनी। गनायाः यि वास्त्र ज्यंश्यूहणोतः जमा ॥ বাৰুণ শতভিষা। শনিবার नभागुका ना भहावाक्नी मृजा ! গৰাযা খদি লভ্যেত কোটিসুৰ্য্য-शुरेरः नमा।। भू अरयाग नमायुका শনৌ শভভিবা যদি। মহা মহে-ভি বিখ্যাতা ত্রিকোটি স্বলমুদ্ধ-রেৎ।। অত্র সংজ্ঞাবিধে: সার্থক-ত্বায নিমিত্তত্ত্বেন মাস পক্ষ ভিথ্যু-लिथानस्तर महावाक्गी महामहा· वाक्ग्रावृह्मथनीय । एव हिट्य মাসি কৃষ্ণেপক্ষে ত্রযোদশ্যাণ তি-(थो महावाक्णाः महामहावाकः ग्रा॰ यथा यथ॰ भूरयाखाँ । न ठाउ । न्नान अर्वेष्ठिया नार्ये फरन्तु भड-ভিষা• গতে। সপ্তজন্ম ভবেষু স্তা দুর্ভগা বিশ্ববা প্রবং।। ইতি। ত্রযোদ-म्याः ज्ञीयायाः मन्यमाक्ष विष्ण-यजः। भूमु विष् क्वियाः श्वान॰

नाहरत्रयुः कथकन ॥ इंडि भुरहर्जा कावानि का नाजा की वार भू मा-দীনাঞ্চ স্থান নিষেপ ইতি বাচ্যু ৷ ভোগাৰ ক্ৰিৰতে ৰক্ত স্নান বা-मृहिक॰ नोतः। **अभिविक्तः मण**-म्यारहो निष्ठा निमिखित्क न जू॥ इंडि ह्मापि ध्य वहरान बाग भाष गान अर निरंग्धार नक्तावः পি তথা কল্পনাৎ। ভাৰ এযোদ-मार्गः भूगायाः भूबारङ्ग छद्रकारन नक्र अपिमाञ्च भव्यक्ति भूबीहरू जिथि नक्षव नाजिश भ्वंहिन এব মান । রাত্রাবৃপি বাক্ণ্যাদিযু शकायाः ज्ञानः। पिवा द्राखो ह जक्तायाः गकायाकः भुजक्तः। माजाधामधन भूगाः ग्रम्भूष्ठ **७क्कोल: ॥ ই** ि वृक्षा ७ भूतारा সামান্যতঃ পুতিপুসবাৎ । ইতি তিথ্যাদিতত্ত্ব ॥ 🛊 ॥ বৰুণ প্ৰেরি-**७ वृन्तावनञ्च कमञ्च अक्तावेद्रनिः** मृज यनात्व भी छ वाक्षी । यथा । পরাশর উবাচ। বনে বিচরত खम्। मह (गा**लि** महाज्ञनः। मा-न्यहम्मक्षभा (भवना ध्रापेष् ত:।। নিল্লাদিতোককার্য্যস্য কা-র্য্যেণোদ্বী বিচারিণঃ। উপভোগা-र्थ मङ्रर्थं वकंगः शाह वाकंगे । वाद्मः हो जी (मणविष्णयः ।

वारमञ्जी

॥ अञ्जीक्षेत्र अर्थना यम् अस्ति 🍦 मरहोजनः। व्यनक्षामा य उन्। शह जूष मुख्य ११ है বাৰণী তেন সঞ্চিবান ক (ब्राट् । वृन्तावन वागटणम মুত্রু কোটরে॥ বিচরন্ । বোপি মনিরাগন্ধ গুরুষণা 🤻 शुर मित्राउर्व गवानाथ भुद्रः नः॥ उठः कर्याः अहमा अह श्राद्रा॰ न नाक्नी। शङ्की 🖓 🦠 रिमाज्य भुक्ता भूतमाः भूतः भाभी ह भाग भागी जिः महा (अ मूमादिनः। উপगीयमासः **विड॰ गीउ वार्**ड विश्वादरिः इंडि विक्नुत्राण ए व्यास व्यथुग्रयः ॥ न् इस्नः

বাৰণীবলভঃ मद्याना॥

वाक्खः भू॰ क्षिना हाजा। 🥂 নেদিনী ॥ ভন্মতে প্রণীয়া কিন্তু বৃধাতো: উপ্ত পুক্ত্যুৰ বি चार वहासामि विश्वः वाककः भू ही जोरमकना । (नवम्ब•॥ कर्म्यव• , इंडिस् ने ন্ত্ৰী দারপিণ্ডা ! 🧦 বাৰুণ্ডী (मिनिनी ॥

भदरद्वावणी। यथा। भाराः माः गथ (मार्गि ह वाद्यन्तुं। रगेछ दाः हमः । वर्ष्यान ज्यानिश्च भाः श्लाजित्वाम्यापुयः ॥ इजि क्याः जिल्लुः॥ व्यथनः दाष्ठभाशी नामः क (मरेनकरमणः ॥

বার্ণিক: **ত্রি লেখক:। ইতি শদ**্

বার্চ: পু॰ হ॰স:। বারি চরতী ভ্যথেড পুভ্যবেন নিল্লম:। ইতি মুধ্ববোধব্যাকরণ।।

ার্ভ ক্লী অসার ।। আরোগ্য । ইত্যমর: ॥

ার্ভ: ত্রি নিরাম্য:। ইত্যমর:॥ বৃত্তিশালী।ইত্যন্ত্রয়পাল:॥

ার্ত্তরঃ পৃ• পক্ষিবিশেষ:। বটের ইতি ভাষা । যথা । বার্ত্তাকো বার্ত্তক শিত্র স্ততো প্ন্যা বর্ত্তকা মৃত্যা। বর্ত্তকোশ্মিকর: শীতো জ্বর দোষত্রযাপহ: ॥ সুক্চ্য: শুক্র-দো বল্যো বর্ত্তকাল্লগুণা ততঃ । ইতি ভাবপুকাশ:॥

ार्खा जी मूर्गा। यथा। शयाम शामनाष्ट्रिको क्षिकर्मान्न काद्रगाट । वर्खनान्नाद्रगान्ना शिवार्जा सा अव शीयाज ॥ इजि प्तिवी शूद्राण १० व्यथायः ॥ वृज्ञः ॥ जनमुज्ञः ।

বাৰ্ত্তা**ল** ইত্যমর:।। উদন্ত:।। বাতিস্প:।। क्वािम । इंडि मिमि ॥ বার্তাক: পু॰ বার্তাঙ্গ:। ইতি ত্রি-কাণ্ডশেষ: ॥ বার্ত্তকপক্ষী। ইতি ভাবপুকाশ:॥ वार्खाकी भू वार्खामः। ইত্যমর-টীকাথা• ভরত: ॥ वार्जाकी खो वृश्जी। इंडि जाद-পুকাশ:॥ বার্ত্তাস:। ইত্যমর:॥ বাৰ্ভাস: ন্ত্ৰী স্থনামখ্যাত ফল-বৃক্ষ:। বাশুন ইতি ভাষা। তৎ-भर्यायः। हिक्नुवी २ भि•ही ० छ-को की ८ मुञ्जूषिंगी ए वार्जाकी ७ বাৰ্ত্তা ৭ বাডিঙ্গণ: ৮ বাৰ্ত্তাক: ১ শাকবিলঃ ১০ রাজস্মাওঃ ১১। ইভি কটাধর:॥ বার্ত্তিক: ১২ বা-ভিগম: ১৩ वृज्ञाक: ১৪ वञ्चन: ১৫ षद्भाः १५। इंडि भपद्भावनी ॥ क्छे वृद्धाकी २१ क्छे। लू: २४ क्छे-

পত্রিকা ১৯ নিদালু: ১০ মাণসক-

कवा २३ वृष्ठाकी २२ नरहा विकार०

চিত্রফলা ২৪ কণ্টকিনী ২৫ মহতী

२५ कर्कना २१ भिणुवर्गकना २৮

नीनकना २२ त्रक्रकना २० माक-

(मुधा ७) वृखकला ७२ नृशिश्यकना

००। व्यम्पा ख्याः। कर्षेषुः। बः-

ह्यञ्च । मध्रयः । भिखनाणियः ।

বলপুষ্টিকারিত্ব। হৃদ্যত্ব। শুক্ षुः। বাতেষু निनिरु उप्तथः। ইতি त्राक्रिविष्टेः। चिनिष्ठ। यशिनुषा মাৰ্ভনাশিনী চ শুক্রপুদা শো-ণিতবৰ্জিনী চ। জ্লাস কাসাক্চি नामिनी ह वार्डाइ (त्रवा खनमध-যুক্তা।। সা বালা কফবা দ্বী পঞ্চা नकावनिखना। मराकृषा विद्या वद्मी तक शिख भुगामनी।। यशाव পका वार्नात्रः किष्मिः शिखकत्री भुजा। क्क (मर्हा १ निवाह्या भुवा লঘ্তরা পরা 🛚 ইতি রাজবল্লভ: ।। অন্যায় । বৃষ্ঠাক স্বাদ্ তীল্লোঞ কটুপাক মপিত্ত গণ জুব বাত বলা। ज्ञाः भीभनः मुक्जाः लघु॥ उदालः ক্ষ পিত্র দ্ধা পিত্র চর । গুরু। व्याकः भिष्ठनः किकिन्द्रात्राभ-রিপাচিত।।। কফ মেদে। গ্নিলা নন্নত্যন্ত লঘু দীপন। ভদেব হি खक् प्रिक्षः महिन् वन् वन् विन् ।। অপর খেতবৃত্তাক অকুটাওস-ম॰ ভবেৎ। ভদর্শ:সু বিশেষেণ हिंड शिनक भूर्व ड: 11 इंडि डाव-श्रुकाणः ॥

वार्डाद्यः भू यार्डाकी। इंडि वि

পर्यतायः। (इतिकः २ ग्रम्ब्यः 5 পুণিধি: ৪ যথার্ছবর্ণ: ৫ অবসর্গ: ৬ নজবিৎ ৭ চর: ৮ স্পাশ: ৯ চার: >। इंडि (इम्ह्मु: ॥

वार्खावशः भू थान्। अञ्चारमर्थाः र्खा वर्डि यः। भमात्री ইভি ভাষা । ७८ भर्यायः। देवदिषकः २। १७८ মর ভরতো ॥

भू भुवृखिकः। हतः। বার্ত্তিকঃ ইতি ত্রিকাণ্ডলেষ: ।। বৈশ্য:॥ वर्खिकशकी । इंडि ब्राजनिर्दण्रेः॥ वार्खाकी। इंडि भद्रावावी॥ वाबिक क्षी উकान्कमृक्कार्थ-वाजीकात्रकगुष्टः। यथा। উकान् ক্তবুৰুক্তাৰ্থ চিন্তাকারি তু বার্তিক

। इंडि (इनहन्तुः ॥ বার্ত্তিম জী পক্ষিবিশেষ:।বটের इंडि ভवा। उट्भर्यायः । विक् निकीर। इंडि हादावनी॥

বার্ম: পু॰ অজ্ন:। ইতি জি काखः भवः ॥ जरसः ॥ वृद्धमधः ন্ধিনি ত্রি॥

वार्षत्र की कृष्णनावीखा।। पिक ণাবর্ত্তশন্ত্র:।। কাকিচ ঞ্চা ।। ভারতী । ইতি নেদিনী ॥ ক্নিজ• ॥ ^{জল}• ।। আমুৰীজ । ইভি বিশ্ব: ॥

भवस्कः । ७९- विपर्यः क्री पूर्णिनः। इंडि पिरिनी

शाउद्याक भवनी यापिः ॥ भवानिका भू भार्याकाः भू भार्यानिका भार्यानिका । स्वानिका । स्वानिका । स्वानिका स्वानिका

दार्कि विक् क्ली पुरानी व्यवनः । इंडि इर्राहिस्किः॥

दाष्ट्रिंशः भू वृष्ट्राक्षीयः। इंड्रान्यः दाष्ट्रिंग्यः भू वृष्ट्रिजीयो। लङ्ग्र ख्रुव्ह् । वाष्ट्रिश्चाय हेडि मृह्याय हेडि ह्राया । व्यक्ताक्षीयः । व्यक्ताक्षाय महार्षः यः भु यहि । म देव वाष्ट्रिक्षा नाम ह्रायः व्यक्ता व्यक्ता व्यक्ता । व्यक्ता व्यक्ता व्यक्ता व्यक्ता । व्यक्ता व्यक्त

বাজীন

হশীতিভাগ বি-শতি: পাণা: ।
দ্বিক পুরাণদ্বব । এবিদ্বব নিষম
মতিক্রম্য অনাপদি ব্য মন্যদ্বারা বা স্বাচ্লেন্যেন যো ব্যবহরতি
ভাষ্যেব পুরেশ্চিত্ত । আপনি তু
ব্যাণ করণে নিষমাতিক্রমে চ ন
দোষ: । ইতি পুরেশ্চিত্ত বিবেদ: ।
ইত্যাহ্নিকতত্ত্ব ।।

वार्ष्वर क्षी पुगिनवरा ३७ क्ष

वार्ष्कु : क्ली खी हर्णतब्जः । इंडऽ-मत्रहीकायाः त्रायमुक्रहेः ॥

বান্ধী নদঃ পু• গওক:। গণ্ডার ইতি ভাষা। যথা। বান্ধী নদ স্তেক চরো গণোৎ সাহশ্চ গণ্ডক:। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষ:।।

वाक्री निमः भू भण्विष्मयः। यथा
। जिश्रवः विन्मियक्षीनः प्यञः वक्षमकाभिकः। वाध्री निमः (भाव)उ श्मो इत्य कत्य व मरक् वः
।। भक्षिविष्मयः। यथा। नीवग्रीता ज्ञक्षीर्यः क्ष्मभारः मिछहरः। वाक्रो निमः मग्रर भक्षोणाः
भम विष्मा ज्ञितियः॥ उत्राः
विष्मान क्षाः। यथा। जाहि-

वाइ॰ जि वक्ष मचिक्ष वज्राशास्त्री नाहि । ইত্যমর: ॥

वान्न वि वन्न निर्मिष् उ । वन्न न-স্যেদ ইত্যৰ্থে শু পুত্যবেন নিম্নন वानुनी जी मित्र।। ইতি ত্রিকাণ্ড (শেষ: II

বাল্মিকি: পু॰ বাল্মীকমুনি:। ইতি षिक्शकायः॥

वान्मीकः शृ ज्ञामायनकर्वा मूनिः। ७८ भर्यायः । भारत्वनः २ वान्ती-কি: ৩ কবিজ্যেষ্ঠ: ৪ সশীবশ: ৬ বল্মীক: ৭। ইভি ত্রিকাণ্ডশেষ: ॥ कविः ৮ ज्याम्यकविः ৯। ইতি क्रिषद्रः ॥

वान्त्रीकिः भू ज्खवःभीयमुनि বিশেষ:। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষ:। যথা। রাবণা उকরো রাজা রঘূণা॰ यः नदर्जनः। वान्योकि र्यम् চরিত। চকে ভার্গবসত্তম: 11 ইতি মাৎ-(म) >२ अध्यायः॥

বাবদূক: ত্রি অভিশ্যবচনশীল:। ७८ भर्यायः । वाहायुक्तिभट्टः २ वाणी ० वका ८। इंडामतः ॥ বচন্নঃ৫ সুবচা: ৬ পুবাক্ ৭। ইতি किंदाश्वः ॥

वावृहे हेि जाया। हेि नमः ∥

विमुका ॥ ৰাইট: विवा। इंडिनद् ब्रङ्गावनी ॥ वाव् य उ उ म जल्ली।। वाल।

इंडि कविक्ल्रफ्रमः ॥ य छ वाज्रिः ८५। ५ वावर्डिया वावृद्धा । केन्छ्र किः (मवनः। इंडि मूर्गामामः॥

বাবৃত্তঃ ত্রি কৃতবরণ: ৷ ইভ্যমা: !! ভতো বাবৃত্তমানা সাবিতি ভ্ৰিঃ वाण या उय भारत। इंडि कीव-কলুক্মঃ।। শব্দ ইহ ভিরক্ষাবে। তিরশ্চা বাশিত কত মিঠ্ম तार। य ए वाम्पुरङ भक्की। ययः ববাশে । উদ্বাশ্যমান: পিতা न রাম নিভি ভটৌ। অনেকার্থা माञ्चानार्थः। वा**निजः সু**ब्र और् । ज्ञानमात्व थगातात् वानिउ বস্ত্রবেপ্টিতে। ইতি বিশ্বপুকাশিদ स्त्राखायमशीज। ইতিদুगानीमः॥ वानकः। इंड नम खी

বাশা बङ्गावनी ॥

व्याः । इंज्यादिः বাশি: (कावः॥

वाणिका छी वामकः। ইতি भंदः ब्रद्भावनी ॥

वानि उ॰ क्री शमूशक्राहीना मदी । ३७, नदः॥

বাশিতঃ ত্রি সুরভীক্তঃ।ইত্যারকা জী মর টীকাষাং স্বামী।। পর্য্যায়ঃ। ক

বাশিতা জ্রী জ্রীমাত্রণা করিণী। ইত্যমর: ॥

বাশিষ্ঠ: ত্রি বশিষ্ঠসমৃদ্ধী। বশিষ্ঠ-স্যেদ• ইত্যর্থে ফ পুত্যুযেননিম্নন্ন: বাশিষ্ঠা জ্ঞা গোমতীনদী। ইতি

(इमहन्मुः॥

বাশুরা জ্রী রাত্রি:। ইত্যুণাদি-কোষ:॥

वाणुः क्ली मनिस्त्रः॥ हजू अथः। ইতি (मिनि)॥

वाणुः श्रुः पिरमः। ইতি गिषिनी ॥ वाञ्चः श्रुः উग्ना॥ लाशः। ইতি भिष्नो॥ अणुः। ইত্যমরः॥

वाञ्चकः नृ भाविषः। निवाणाक
इंडि ভाषा। यथा। भाविषा वाग्राका भार्यः (पर्याडा त्रक्रक म मृडः
। भाविषा भधूतः भीरा विश्वेष्ठी
भिखन्त्रकः।। वाड (मुग्रकता।
ग्रक्तिम्ह्रकः।। वाड म्ह्रकः।
ग्राह्मिन्नाः। कर्ष्कः। भारक म्ह्रकः।। (मुग्रवः) कर्ष्कः।। हेडि ভावग्रुकाणः।।

বাল্লক। ত্রী হিঙ্গুপঞ্জী।ইতি শব-রন্থাবলী।। ায়িকা জী হিন্দুপত্রী। তৎপর্য্যায়: 1 কারবী ২ পৃথী ৩ কবরী ৪ পৃথা: ৫। ইত্যমরঃ ॥ ত্বক্পত্রী ৬ বাফ্লীকা ৭ কর্মরী ৮। ইতি
ভউীকা॥

বায়ী স্ত্রী বাগ্লিকা। ইতি শদ্? রত্নাবলী।।

বাস্থ্যীকা স্ত্রী হিন্তুপত্রী। ইঙি রাজনির্ঘট:।। রাঁধুনী ইডি থ্যাত্ত-শ্চ। অস্য গুণা:। কটুত্ব•। তীক্ষ্ত্ব• । উষ্ণত্ব•। কৃনি শ্লেম নাশিত্বগু। ইতি রাজবল্লভ:।।

বাস ত ক উপসেবাযা । ইতি কবিকল্লফন: ।। উপসেবা তু গুণা-ন্তরাধান । অববাসধন্ত চন্দ্ন: । ইতি দুর্গাদাস: ।।

वामः भू॰ गृष्ट् । इंडाप्रद्रः ॥ वज्रः । इंडि डिंडी का ॥ व्यक्षानः । इंडि निद्रः ॥ वामकः । इंडि निद्रः । वामकः । इंडि निद्रः द्रव्यवि ॥ मूर्गिकः । इंडि वामक्षाः प्रवि वामकः । व्यक्षित्राथा । प्रवि वामकः । व्यक्षित्राथा । प्रवि व्यान् । विष्टां ।

প্তেষ্ বালো মম ন রোচতে ॥ পুংযো গে নাভিনন্দন্তি বৃত্তেনা-ভিজনেন চ। ন তেষ্চ বসেৎ शुद्धः (भुगाधी शाभवृष्कियू ॥ বে দ্বেব মভিজানন্তি বৃত্তেনাপি জনেন চা তেষু সাধুষু বন্তব্য স বাস: শ্রেষ উচ্যতে ॥ ইতি নাৎ-(म) २৮ व्यक्षायः ॥ ৠ॥ व्यक्षित्र। ধার্মি কৈ রাবৃতে গ্রামে ন ব্যাধি वल्ल ज्ना । न म्मुद्राङ्य निवः সেৎ ন পাষ গুজনৈ বৃত্তে॥ হিন-ব্দ্বিদ্ধ্যযোশ্ব্য পূর্ব পশ্চিম্বোঃ मुङ । मुङ्गा मनु मुरया (मंभ नान) व निवरम् विषः॥ वर्षाकाणामभी কূল বর্জনিত্বা দিজো ভ্রমঃ। নান্যত্র নিবসেৎ পুণ্য নান্ত্যজ্গামসমি (वो ।। न अभ्यतमह পতिरें र्न ह-शिल ने शृङ्गतिः। न मृर्थि नी य निरिष्ठ भारित्र माञ्जावमायि-ভিঃ।। ইতি কৌর্ম্মে উপরিভাগে ce ज्यामः ॥

বাস: ব্রী বস্ত্রণ ইত্যনর:॥ পঞ্জ । ইতিরাজনিঘণ্ট:॥

বাসক: পু কৃক্ষ বিশেষ:। বাকস ইতি ভাষা। তৎপর্য্যায:। বৈদ্য-নাতা ২ সিংছী ৩ বাসিকা ৪ ব্য: ৫ খটক্ষ: ৬ সিংহাস্য: ৭ বাজি-

দ্ভক: ৮। ইত্যমর: ॥ বাশা ১ वाणिका २० वृणः २२ अधेक्यः १२ বাশক: ১০। ইতি ভট্টীকা॥ वाना ३८ वानः ३৫ वाकी ३५ हि मार्गिः ही २१ मार्ज्ञः ही २४। ইতি শব্রত্বাবলী ।। বাসকা ৯ সি হপণী (২০। ইতি জটাধর:। नि हिका २) ভिषष्माञा २२ क् नामनी २० निः इमुयी २८ करी **র**বী ২৫ শিতকণী ২৬ বাজিদন্তী ২৭ নাসা ২৮ পঞ্চূত্থী ২৯ সি হ-পথী ၁० म्रान्तुर्गी २८ । व्यम खगाः । जिङ्काचः । क्षृेचः । मीः তর্। কাশ রক্তপিত্র কামলা कफ रेनकना जुन्न भाम क्य ना শির্ঞ।। তৎ পুরুগুণাঃ। কটুপা किन्। डिकन्। काम क्यहर ত্বঞ্চ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।৷ অপিগ বাসকো বাসিকা বাসা ভিষ্ড্যা-তা চ সি•হিকা। সি•হাল্যোবা• क्षित्र चः न्यानारेक्या १ रेज्यकः॥ व्यावेकाला वृत्या नाना नि इशर्गक न म् जः। वानका वानकृ व र्याः কফ পিত্তাসু নাশনঃ॥ তিক্ত स वद्राका इत्ता वयुः भीउ स्डि इर । यान कान जुत्र हर्षि भार বঙক্ষ্যাপহঃ॥ইতিভাবপুকাশঃ

श कि ।। गांनाक्रविष्णयः । यथा ।
स्नान्द्रा १थ कन्दर्भ म्हाक् नन्दन व्य ह । हज्वाद्रा वाजकाः (भूकाः मक्षद्रभ स्य भूता ।। क्याक्षित्र व नामान्त्र भूषक् । विनाद्रा व्यक्तिक्य नन्दः स्यूष्ट व्यह । हज्वाद्रा वाजकाः (भूका गीठ
वाह्र विभावदेषः ।। ইতি जक्वीठ

वामकमञ्जा। वामका वामनः।

वामा एक श्री माना त्रथ मथी भनि
हान मूजी भूग मान गुवियान मार्ग
विलाद नाम यः।। मूका वामकम
जा यथा। हान खरु जि जानका कि

विन्न गुथा जि काकी लगाः मीभः

नाम छि किछ जब वल्लः (मूहः न

मिन भूनः। जानीना मिजि वाम
प्रमुशी न विष्ण मून्यी मू
प्रमुशी न विष्ण मुन्यी मू-

রোতি সত্কাৎ কল্লার হার সূত্রণ চিত্র প্রেক্ষণ কৈতবেন কিন্দি দ্বা রং সম্বীক্ষাতে। গৃহ্লাত্যাভরণণ নবং সহচরী ভ্যাজিগীয়া মিয়া-দিখে পদ্মদৃশঃ পুতীত্য চরিত্তং মোরাননো হভ্ মারঃ ॥ পৌঢ়া বাসকসজ্জা হথা। কৃত্তং বপৃষি ভ্যাণ চিন্দ্রধারণী ধূপিতা কৃত্যা ভাষনস্থানে ক্রমক্রী দিকা সামু-কনক কে-দুর্দিনং ॥ মং । আবয়ো রস্থা

वित्रह भक्षरः। जिह्नतित्रह भक्षरः। जिह्नतित्रहानः न मार्गित्रानः
वीक्षणः॥ भत्रकीया वामकमञ्ज्ञा
यथा। यणः साभियजुः हलनह जित्रायख भूतीभाक्ष्रतान् थखः
तोधकरभाज भाज निनरिः माएक्ष्रिकः हिश्चिः। मथ्य भार्थः
विविद्धित्रम् विकिः लावि कभावप्रिकः विकिः लावि कभावप्रिकः विकिः नाम्रिकः
भित्रविया जन्नास्तिकः नामारिकः ।।
हेजित्रममञ्जती॥

বাসকা জ্রী বাসকবৃক্ষ:। ইতি জটাধর:॥

था। णिन्नः पर्णियुः कः वामगृरः क्षी गर्छागातः। इछ्र-

नतः ॥ एव ग्रमध्राखाण भवन ग्रह छ। ग्राख्यंहर देख्या निर्दाखदा । गर्द्ध देवागात्रः गर्द्धाः गातः। वामाय ग्रहः वामग्रहः। वा मर्दिमाहि हाज। देखि खत्रजः॥ वामजः भूः गर्द्ध । देखि भद तज्ञावनी॥ वामख्यी जी त्राजिः। देखि जि कार्थांमयः॥

वामन की धूमन। वादिषानी।
वञ्च । इंडि भिनी। वामः। इंडि
मद्देशविनी। ज्ञान । इंडि धरनिः ।। निष्मभाषातः। यथा ।
याज्ञवक्षः। आधिमीमामनिष्मभ कप वान धरेन विना। उप्याभनिधि त्राक्षत्री (माञ्जियामा धरेन
विह् ॥ ईंभिनिष्मभञ्च वामनञ्च
मनाथाय मनू मृ यिषियि ।
इंडि नाद्रामानः।। वामन निष्मभाषात्र ज्ञ मञ्जूषि। निष्क मनू मृ
गुञ्चा पितृ उ । इंडि वाव वात्र ज्ञुः।। वमनमञ्जूषिनिष्ठ ।।

বাসনা স্ত্রী পুত্যাশা।। জ্ঞানণ।
ইতি নেদিনী।। স্থৃতিহেতু:। তথপর্যায়:। সংস্থার:২ ভাবনা ৩।
ইতি জটাধ্র:।। দেহা স্থৃদ্ধিজন্য নিথ্যা সংস্থার:। ইতি ন্যায়শান্ত্রণ

॥ पूर्वा। यथा । वनज् 🔆 🤏 ভূতেম্বস্থ ছিতাৰ চ। খাল্ 💨 বাসেতি বাসনা তেন সংখ্য ইতি দেবীপুরাণে ৪৫ জন্ম वामन् पु॰ उष्टः। इति 🚈 💛 কোকিল:। ইতি রাা नन्यवायुः ॥ मूमः। हे 🥕 🦠 (गरः॥ कक्षमृतः। हैं। ॥ सम्बर्कः। इंडि অবহিতে ত্রি। ইতি 🙉 🐇 বাসন্তক• ত্রি বসন্তস स्राम् भिन्तार्थं व निश्चम ॥ ত্রি বিদু 🤄 বাসন্তিক: বাদস্থিক: কেলিকি কো বিদূষকঃ ৷ ইতি ে वामन्त्री जी माध्यी। (मिनि ॥ भाष्टिना 🖫 कारशष्मवः। एए🕫 🔠 जावनी २ मध्रमदः क न्त काबर इः एकर्षनी ५ 🗧 🦠 **अःगयः॥ ग**िकाती 🗆 🔧 विष्णवः। उৎপर्यत्रायः 🗟 २ वमञ्जा ७ गायवी ६ 🗟 🖂 ৫ मी उनहा ७ मधू वह 🕾 🖰 मृजी **৮। जाम्या खनाः।** क्राइ॰। मूत्र ভिद्द॰। मुल्हिः

📉 📉 भाषिषु । यन्त्रात्राचापन-। इंडि द्वाजनिर्घण्डः ॥ नव-🐃 👵 , নেবারি ইতি হিন্দীভাষা 🖽 👙 পালী কথিতা তল্ভৈ: স 🌝 - शालिका। तामडी मी उना 📑 े का দোষ बगा সু জিৎ।। ইতি ाणः।:#॥ अथ वात्रङी पूर्गा 🄫 🕟 াাণ । তত্র ভ'ব্ব্যুপুরাণ । াস্থিতে সুর্য্যে শূন্লপক্ষে ন-ः अक्षमी • ममभी ॰ यावट भू কা॰ সদা॥ ভবিষ্যোত্তরে। সি সিতে পক্ষে সপ্তম্যাদি । भ्रायिषिविष्रुगाः मन-मर्ज्राय ।। काल (कीमुम्ह्रा) া চৈত্রে মাসি সিতে পক্ষে रं मिनजरम। भूकरमिविदिश विक्कमृति खणा ॥ नानाः া বলিভি র্মেঘাতৈ দোষৰ-🕆। বিভিত্রাভরণৈ: পার্থ প-ভি ততথা।। এব• য**: স**ক্তে ুষ বর্ষে বিধানত:। ইপ্লি ৪ন সন্ত কামান্পুগ্ৰ পৌগ্ৰা-ি বাং ।। ইতি। অত্র ভবিষ্যপু-🖅 🦠 क्शशन मामसद महन्द াৰগুপুরাণ বচনে মীনরাশি ि 🐡 🕫 भीनष्ट ब्रव्याबद्ध ठान्पु-्र^{ाव ।} **श्विभद्र• । (भो**त्रवरात्रक्ष

ত্বে কদাচিৎ সপ্তন্যাদিভিথিত্রনা-লাভাৎ তদ্বৰ্ষ তৎক্ত্য লোপ: স্যাৎ। নচেষ্টাপত্তি:। ভবিষ্যপুরা-त जनाभरनाभानां कावानि বচনে বর্ষে বর্ষে ইত্যুপাদানাচ নি-ত্যত্ব• । এতদ্বিত্ত• কালবিবেকে । এব॰ জাবালি:শ্যব্চন পরার্জে পু-আদিৰূপ ফলশুবণাৎ কাম্যঞ্চ । ভতশ্চ কাম্যভ্যা পূজনে কৃতে পু-সঙ্গামিত্যসিদ্ধি:।। সিতাপ্টম্যান্ত रिठ्यमः भूषि खल्कानमञ्जूरियः । षाभारिक प्रति यः सर्वश्राय माखना-নেন পুজন ।। ন তস্য জাযতে শো-কো রোগো বাপ্যথ দুর্গতি:। ইতি কালিকাপুরাণ বচনাৎ কেবলাপ্টনী कल छेकः। हिज्यमात्र मधिक्छ। नवन्। भू बाराप्त्वी न महियामुद्र-यर्षिनी । ज्ञास्य क्यू दे धूला म थुक छर्न रेगः ॥ दर्भन मुद्रमेखण्ड বিজযাথ্য পদ লভেৎ ॥ ইভ্যানন क्तिवन नवभी कन्न উक्तः। वाब्यः। जु भातिरीयभूजाभुकत्रभाका गुाश्। । विष्णय खुब (वाधन शुक्तिया ना खि বোধিতায়া বোধনাসম্ভবাৎ। ইতি भाक्विवृत्रः। (श्रामानिकक भूर्व-वङ्ख्य मिठि निक्। इंडि मूर्गाए-भविदिवकः॥ # ॥ व्यक्षितः। ञी

नादायग छेवाह। भूता खाँ जा ना ला-लाक कृष्णन भद्रभाषाना। मः-भूखा मध्यातम ह भी उन तामम-खला। मध्रेक हें ज्या यू (क विजी-य विकृता भूता। छों जव काल मा मूर्गः वृक्षना भूग मक्ष है।। इंडि वृक्षेविवर्ख भूक् विश्वर्थ ५० व्य-श्रायः॥

वामयागः भू ह्र्नं। इंड्रमद्रः॥ प्रियोदि इंडि थ्राउ। भटेत्रमा क्षादि इंडि थ्राउ। भटेत्रमा क्षाद इंड्रान्र। ह्र्न्रिष्ठ रभूर्यंष्ठ ह्र्न्ि। ह्र्न् रभूत्रा व्यव्। वास्म मूत्रजीकत्रा युष्ठाष्ठ उभयूष्ठाष्ठ देवि वामयागः। इंडि उज्जीकायाः ज्यवः॥ उर्भ्यंत्रायः। गत्रह्र्नं २ भटेवामः ३ ह्र्नं दः ॥। इंडि भद्रव्यावनी॥

वामतः भू की पिवमः। इंडामतः
॥ नागभुष्डप भू । इंडि मिपिनी॥
वामवः भू इन्द्रः। इंडामतः॥
वामवी खी वाममाछा। यथा।
वाममाधा मडावडी वामवी गस्काणिका। (यासनगन्ना पामियी
स्मीण कायनन्नीवम्ः॥ इंडि एसमहन्द्रः॥

বাসসজ্জা স্ত্রী নাধিকাভেদ:। ব্যা। থ:গু:তাৎকগ্রিতা লব্বা ত था (भाषि उच्छ का । कल शास-त्रिका वाममञ्जा साधीन उर्ज् का ॥ व्यक्तिमातिका भारक्षे का वस्तक्रा॰ भा• मूला गठी ॥ देखि कहा वृद्धः ॥ व्यम् ।: विवत्र १० वामक मञ्जा भाष्म पृष्ठेव ४० ॥

वाना ज्वी वानकः ॥ **इंडिनद**-तञ्जावनी ॥

বাসাগার ক্লী বাসগৃহ । ডৎপর্য্যায়:।ভোগগৃহ ২ কন্যাট: ৩
পত্ন্যাট: ৪ নিষুট: ৫। ইতি ত্রিকাগুংশব: ॥

বাসি: পু॰ ছঠারভেদ:। বাইস ইতি ভাষা। ইত্যুগাদিকোব:।। বাসিকা ন্ত্রী বাসক:। ইতি শদ; রত্নবলী।।

বাসিত ক্লী কতণ ইতিমেদিনী। জ্ঞাননাত্রণ ইতি হেমচন্দু:॥
খগরব:। ইতি বিখ:॥

বাসিত: ত্রি সুরভীক্ত:।তৎপর্য্যায়:।ভাবিত:২।ইত্যমর:॥
দ্বেস্গদ্ধিপুয়াদিবাসিতদ্ব্যোভাব্যতে প্রাপ্যতে ভাবিত: ভুক্ত
প্রাণ্ডৌ কর্মণি ক্ত:।
ভ করোতি ইতি ঞ্জা কর্মণি
কে বাসিত:।ইতি উটাকাল
ভরত:॥জলাদৌবালিত: ইতি

भदत्रज्ञावनी ॥ थ्याजः ॥ वज्र-বেষ্টিত:। ইতি ধরণি:॥ বাসিতা জ্রী জীমাত্রণ। করিণী। ইত্যমর:॥

শুন্ধবিদী ৷ ইতি वाभिनी जी भद्रहिमुका।।

ৰুধির । ই**তি হেম** वानिष्ठे॰ क्ली ठनाः ॥

বাসিষ্ঠ ত্রি বসিষ্ঠকৃতযোগশাস্তা-मि। विभिक्षिन कृष्ठ भिष्णामार्थिक পুত্যবেন নিয়ন।। বসিষ্ঠসম্বন্ধি চ ন্ত্ৰী তক্ষণী। বাইস ইতি খ্যাভাত্রণ। ইতি ত্রিকাওশেষ: ॥ বাদু: পু নারায়ণ:1ইতি ত্রিকাও শেষ: ৷৷ জ্রীনিবাসো হপ্যজো বা-जूः। ইতি জটাধ্র**শ্চ** ॥ বিশ্বরূপঃ ।। भूनर्बगृः। इजुर्गानिकायः ॥ বাসুকিঃ পু• অহিপতিঃ ৷ তৎ-পर्य्यायः। मर्भवाजः २। ইত্যমরः ।। वामूक्यः ७ । इंडि मदद्वा-वनी ॥ जरमहा० भिक्त यंथा। मुद्र-সা জক্তিরে সর্পাণ স্তেষাণ রাজা তু **७ककः।** वामूकि रेण्ठव नागानाः গণা: ক্রোধতনোধিক:। ইতি ব-क्रि भूद्राण कामा भी व व मः॥ বাসুফেখঃ वामुकिः। इंडि

मनद्रावनी ॥

औं मनमारहवी।

বাসুকেযস্ত্ৰসা ইত্যমর: 11

वामुर्दिः भु॰ 🔊 कृष्मः। इंडाप्रज्ञः॥ ७८ भर्यायः । वनूत्वज्ः २। इंडि (रुभवन्तुः ॥ भवतः ० भूजृतः ८ वाम् जुनुः ৫ वजक हिट ७ वज्विन्तुः ৭ পুশ্নিশৃষ্ণ: ৮ পুশ্নিভূদু: ১ গদা-गुन्नः >० मार्जः >> वजुः >२ लाहि-তাক্ষ: ১৩ পরনাগৃস্ক: ১৪। ইতি मद्याला॥ व्यन्ध्कृष्णस्य मुष्ठे-व्यः॥ श्रीकृष्णतीत्रम्य निভाद्यः যথা। গ্রীসন্ৎঙ্গনার উবাচ। ভদু বো মুনয়: শুশ্বন্তপসা ফলমীপ্লি- ' ত। কৃষ্ণস্য সশলপুশু শিববী অ স্য নিয়ল ।। সাম্পু ত সশল বস্চ দর্শন পরমাত্মন:। ভক্তানুরোধা দ্দেখস্য পরস্য পুকৃতে রপি॥ নি-র্গুণস্য নিরীহ্স্য সর্ববী**ত্র**স্য তে-জস:। ভারাবতারণাথৈব চাবিভূ-তস্য সাস্থত।। ঐকৃষ্ণ উবাচ। শরীরধারিণ শ্চাপি জশলপুশ্ন মীপ্লিত। তৎ কথা জশল পুশ্ৰ ম্বি বিপুন বিদ্যুতে॥ সনংজ্যার উবাচ। শরীরে প্রাকৃতে নাথ সম্ভ-তঞ্চ শুভাশুভ•। নিত্যদেছে ক্ষেম বীজে শিবপুশ্ব মনর্থকণা শ্রীভগবা-নুবাচ। যো যো বিগুহ্পারী চ স চ

পুাকৃতিক: মৃত: । দেছো ন বিদ্য তে বিপু তা॰ নিভ্যাণ পুকৃতি৽ বিনা 1। जन्दञ्जनात उवाह। तक्कविन्त्-ভবা দেহা স্তেচ প্রাকৃতিকা: মৃ **छाः। कथ॰ भु**क्छिनाथम्। वीक-म् भाकृष्ठः वश्वः ॥ मर्ववीकम् नर्वापि र्वाः क रूगवान् स्यः। अर्दिश नवजाद्राभा भुशान वीक **भवऽयः ॥** कृद्धा यम् छ (वमाक निष्ठ)ः নিভ্যা সনাতন। জ্যোতিঃ স্বৰূপণ श्रवत् श्रवमाञान भी खब्र ॥ भाषया ज्ञरूनरेक्षव भारयण निर्राण भन्न । ञ्जूः प्रस्ति ह (वनाक्षा खणा (वनविनः প্রুভেন। 🗟 কৃষ্ণ উবাচ। সাম্পুত• वाम्राम् वाम्राम् अक्ववीर्याम् उ॰ वशुः া কৰা ন প্ৰাকৃতো বিপু শিবপুশ্ব মভাপ্সিত।। সনৎজনার উবাচ। বাস: সত্তনিবাসশ্চ বিশ্বানি যুস্য লোমসু। তস্য দেব: পর বুন্ধ वामुप्तव इंजीबिजः ॥ वामुप्तप्विज ভন্নান বেদেষু চ চতৃষ্ চ। পুরাণে স্থিতিহাসেরু যাত্রাদিযু চ দৃশ্যতে।। ব্লক্তবীৰ্ণ্যা**শিতো দেহ: কৃতে বেদে** নিক্পিত: ৷ সাক্ষিণো মূন্য শ্চাত্র क्षर्यः नर्बे व व हि ॥ नाकिता नग (वनाफ द्रवि हत्नु) ह मान्युं छ । इं उद्भरेववर्ड अकृष्णज्ञ यथा ।

৮१ वधायः॥ श्रा उत्रानाम हार-পखि:। महाबामो ममस्य दः हा-ত্রেতি বৈষতঃ। ততঃ স বাসুদেবে-তি বিদ্বন্দি: পরিপদ্যতে ॥ ইতি विकृ भूदारा > अशम २ अक्षायः॥ অপি চ। সর্বাণি তত্র ভূতানি বস-ঙি পরমাত্মনি। ভ্তত্বপি চ সর্বা-লা বাসুদেব স্ততঃ মৃতঃ ॥ খাঙি-ক্যজনকায়াহ পৃষ্ঠঃ কেশিপুজ: পুরা । नामव्यार्थाः समञ्जा वामू (६वजा তভ্ভঃ॥ ভ্তেষু বসতে সোভ **র্বস**-স্তাত্র চ তানি য়ং । ধাতা বিধাতা জগতা৷ বাসুদেব ন্ততঃ পুভু: ॥ ইতি ভবৈৰ ৬ সংশে ৫ সধ্যায়ঃ 🛚 🗱 🗎 व्यम् वक् भुज्जक मञ्जा यथा। दी-बद्ध वामुप्रवम्। भूरेवव भुजिभाषिः उः। उपक् भञाः त्राह्म प्राप्ताः ক্ষর মূচ্যতে ॥ ওঁ ননো ভগবতে বা-मुर्दिवाय देव श्रदः। यक्त मञ्जः जैयः তস্য বাসুদেবস্য কীৰ্ভিত ॥ অশ্য পু गुष्ट क्ष शत् पियाभन मञ्जूकः। ভস্য নম্ভ নরাশুগু শস্ত্রনা ভাষিত मृत्।। उँ नमा विकाद भूबे भरे তभा भूकीर्खिङ। भरस गूर्व भड़-যে চতুর্থ্যস্ত মহাবন ।। স্বাহান্ত श्रामन भुजाय रिक्य भडा। मखन्यस्य (या (यम यीकः भुकास गः

खक ॥ न भूष (एवकायस न न ভূযো ইভিকাতে। সর্বন্তর ত खाकः करमाणाशः भून् बरमा विष् নত্ত্ৰেষু চ বুধো বিশেষ শূণু ভূপতে । क्षत्र वीक्रमञ्जनाः भूष्याः मृग् जू भारत ॥ भूनिहानु भारतः मुद्धः भारतः রাজোপরিস্থিত: 1 চত্ত্র: পীত विश्व खिंछि: मःवीजाम्हर्ट्य ॥ मः ক্ষিণোজ্বে গদা• খত্তে তদধো বিক-চাষুজ বানোদ্ধে চক্র মত্যুগু পত্তে **९**वः मश्च (सर्व ह ।। श्चिव स्मवकाः সতত (ोञ्च ङ হৃদি চাব্দুত।। খত্তে কংক্ষে হ্যাধো বানে ত্ণীর বাণ পুরিতে ৷৷ দক্ষিণে কোষগা খয় ন न्त्रकः जनवाननः। भीर्य किवीरिः जरहाउ॰ कर्नर्याः ज्ञ **अनद्यगः।।** जा-কানুলখিনী চিত্রা স্বর্ণনালা গল श्रिजाः। प्रथानः प्रक्षिरा (प्रयीः শি্যণ পার্শ্বে তু বিভূত।। সরস্বতী। वानभाष्यं **ठिड्यह्यह्य २ १ हि** । মন্ত্রস্য বীজন্বপন্ত কথিত তব পা-र्थित ॥ द्वारमाक्त्रमञ्जम् क्रम म-न्। मृश्य भा नीत्वार भवम्ब শ্যাম• তথৈৰচ চতুভ জং॥ দক্ষিণো-জ্বে ত পন্ম গৰাঞ্চাধঃ পুচোদ বে**ং । বানেধ শচক মত্ল ম্ছে**ৰু भाइक विज्ञ ।। हिन्न एवद किन् ।

नर्व नन्धाः भृवंदरः। ज्ञाहानमाक्तवः म्यामा भुजासमा ह विखब्रा मृश् রাজনবহিতো দারিদ্যু ভয় ভঞ্জন । भूर्तनम् अपृष्ठः काशः ष्र्वत्रञ्जः नि-विख्यय ॥ करत्र विविद्धायद्यास भी-य्वान्द्रिकः घरेः। एव। सथ्यनःयुः ক্তি দক্ষিণে স্বৰ্ণভাজন ।। পদ্যাসন গত॰ দেব॰ চন্দুন ওলমধ্যগ॰। শূল্ল-वद्यवतः (६व॰ भुभागाम्वामनः नहा ।। देवकात्रमभागूङ॰ जिलाकिण॰ ত্রিবিক্রমণ। চিত্তযেদ্বরদণ দেব। স ৰ্ৰকানফলপুদ• ॥ ইতি কালিকা-भूतात ৮२ व्यथ्यायः।क्शा उत्म्यारः পত্তি यंथा। उउस मन्या भागि विश्वो वृक्तकं मञ्चल । अष्टेन्या मर्ख-রাত্রো চ ভস্যা• জাভো জনার্দ্দন:॥ ইন্দীবরদল শ্যাম: পদ্মপত্রাযতে-कनः। हेजूर्ज् बः मुन्तवास्मा रिवता-ভরণভূষিত: ৷৷ শ্রীবৎস কৌশ্বভো-त्राखः वनमाना विज्**षिजः। वम्**रम्ब-मा जारा श्रमी वामुद्रादः मनाजनः াাইতি পাদ্মোত্তরথণ্ডে৬০ অধ্যায়ঃ ॥ 🗱 ॥ তস্য চত্র্বা মূর্ত্তি র্যথা। এ-কাংশেন জগৎ কৃৎসুং ব্যাপ্য নারা-यनः स्थितः। हजुर्बावस्थिता वराभी সন্থানে নিৰ্গুণো ধলিবা ॥ একা ভগ-वर्जा मूर्जि क्वानिक्या मिवामना।

বাসুদেবাভিধানা সা গুণাতীতা স্নিম্বলা।। बिञीया कालमः छ।-ন্যা তামসী শেষস জ্ঞিতা। নিহ ভি সকলা শান্তে বৈক্ষবী পরমা তনু: ৷৷ সভ্যেদুক্তা তৃতীযান্যা পুদুর্ম্মতি চ সংজ্ঞিতা। জগৎ স্থাপয়তে সর্ব সা বিষ্ণুপুক্তি ধ্রুবা ॥ চতুর্থা বাসুদেবস্য মূর্ত্তি वां की भूम छिउ। बाज भी हो निक्षाथा शानुती मृष्टिकातिका ।। য: ৰপিত্যথিল হত্বা পুদুদ্মন **मरु পু**जुः । नात्रायगारथऽ। वुक्ता-(मो भुकामर्गकाता कि मः॥ या ञा नादायगउनूः शुपूर्याथ्या नूनी -श्रदाः। उरा मः माइएकियः म-(म्वामूत्रभानूय॰ ॥ रेमव नर्ब ज-গৎসূতি: পুকৃতি: পরিকীর্ত্তিতা । বাসুদেবো হানন্তাত্মা কেবলো নির্গুণা হরিঃ॥ পুধান পুক্ষঃ काल खब्ध ग्रनुख्यः। वामूप्रवी-ত্মক নিভ্য নেতৎ বিজ্ঞান মূচ্য-তে।। একবেদ॰ চত্য্নাদ॰ চতুর্দ্ধ। श्रुन त्रह्युडः। विट्डिप वामूपप्रावी रामो পुष्याः इति त्रवायः॥ इंडि কুর্যপুরাণে ৪৮ অব্যায: ॥ वामुः पविभूषक्षती खी मञावती। इंडि बाजनिर्धणेः ॥ ञिक्षिश्रियः । दाखरवाया

कादिनी ह।। বাসূপ্জ্যঃ পু॰ জিনবিশেষঃ।ইতি (र्यम्युः॥ বাসুভদুঃ পু॰ ত্রিক্ষ:।ইতি শব-गण।। বাসুরা জ্রী জ্রীমাত্রণা কারিণী ॥ রাবি:।। ভূমি:। ইতি হেমচন্দু:।। वामः जी नार्ह्याकोवाना। इंड्र यदः ॥ वारमोकः क्ली वामगृरः। यथा। গর্ত্তাগারে হপবরকো বাদৌকঃ भवनात्रामः। इंडि (इमहन्तुः॥ वाउद॰ क्ली यथार्थज्ञ । यथा । ধর্ম: প্রোজ্মিত কৈতবো হত্র পর-নো নির্মৎসরাণা সভা বেদ্য বাস্তব মত্র বস্তু শিবদ• তাপত্রযো মুলন । ইত্যাদি খ্রীভাগবতে পু थ्यक्षाक > अक्षायः !। वाख्यः शः রমার্থভূত• বস্ত। যদ্বা বাস্তব শ-(यन वस्राना २ (मा कीवः वस्रनः শক্তि गांया চ वस्त्रनः कार्यप्र जगह তৎ সর্ব॰ বস্তেব ন ততঃ পৃথক্। ইতি ভট্টীকাযা• শ্রীধরম্বানী॥ বাস্তবিক তি পরমার্থ ভূত বস্তা। বাস্তব নেৰ ইত্যৰ্থে বাস্তব শব্দাৎ ফিক পুত্যবেন নিম্নম॰।। রাত্রি:। ইতি ञ्जी

ত্রি মাওঁশেষ: ।। কিন্তু বাস্তবা উষ।
ইতি নামদ্বা নিতি সাধুপাঠ: ।।
বাস্তব্য: ত্রি বাসকর্তা। যথা।
বসে স্তব্যৎ কর্ত্তরি ণিচ্চ। বসতীতি
বাস্তব্য: । ইতি সিদ্ধান্তকৌমুণী ॥
বাসযোগ্যক্ষ ।। বসতৌ পুণ ।।
বাস্ত্র ক্লী বাস্ত্রশাকণ। ইতি রাজনির্ঘণী: ।।

বাস্ত পূ• ক্লী গৃহকরণযোগ্যভ্মি: । তৎপর্য্যাশ:। বেশ্ম ভূ: ২। ইত্য মর: ॥ পোত: ৩ বাটী ৪। ইতি किरापतः ॥ वार्तिका ७ गृह्रशाउकः ७। ইতি শদররাবলী ॥ वाञ्च कद्रग भुनागाति यथा। श्री इदिकः वाह। वास्त न'क्लिशाखा वाक्तु श्-शासी विद्यनाणनः। स्रेणान का-ণাদারভ্য হেকাশীভিপদে যজেৎ ॥ देनात ह नित्रः भारते ते-ৰ্খতে ২গুনেলে করৌ। আবাস वामावन्याको भूत्र गुाम वनिक् शाखा। भागानात्राम मूर्णयू (मवा-लय मार्टेष् ह। हा जि॰ मञ्जू मूत्रान् वा-**ए उपसम्बद्धारम्य ।। देख रेम्ह**-वाथ भर्जान्या जयसः स्विमायूथः। স্র্য্য: সভ্যো ভূশ শৈচৰ আকালো वायु (ब्रव हा। भूषा ह विजयरेन्हव ग्राक्त यमावृत्नी। गन्नार्बा ज्य-

व्राजम्ह मृगः भिज्गन खया॥ हो-वाद्रिका २० जूगीवः भूग्नरछा-গণাধিপঃ। অসুরঃ শেষ পাপৌ চ রোগো হহি মৃথ্য এব চা। ভল্লাটঃ माम मलों व्यक्तिक दिन्छ স্তথা। বহি ৰ্বাত্রি-শদেতে তু ত-म्ख मञ्जूबः मृत् ॥ केमानामि वजू-ষোণ সংস্থিতান্ পূরবেদ্ধঃ। আ-প শৈবাথ সাবিত্রো জয়ো কৃদু স্ত-থৈব চ।। মধ্যে নবপদে। বুন্ধা ত-न्। (ह्वा ह न्यीभगान्। (ह्वा (न्द्राः) खद्रात्नजान् भ्वारि नामजः मृगु॥ व्यर्गमा निवजा दिव विवसान् विव्-ধাধিপঃ। মিত্রোথ রাজযক্ষা চ তথা পৃথীধর:ক্রমাৎ॥ অপ্তন ক্ষাপবৎ-স•চ পরিভো বুক্সণ: মৃতা: । ঈ-भानकाशामात्रच्य मूरक्कर्या वःभ উচ্যতে ॥ আগ্নেয়কোণাদারভ্য ব'-শো ভবতি দুর্দ্ধরঃ। অদিতি° ছিম-वस्थ क्षयस्थ इतः वयः ॥ नातिका कात्रिका नाम नकामृक्षर्वणा भूनः । वास्टरिवान् भूकियिद्या गृरुभुानार-कृद्धरवर ॥ महत्र छ। भूत्र छ। कार्य। দিশ্যাগ্ৰেগ্য মহানস । ৰূপ নি-গ্মণে যেন পূৰ্বতঃ সত্ৰমণ্ডপং॥ गन्नभूञ्चग्रहः कार्य्य रेममान्याः **न**ः উপ-যুত। ভাগু।গারঞ্চ কৌবের্য্যাণ

(गांधागात्रक वागत्व ॥ उपगाणु-॥ যঞ্চ বাৰুণ্যা॰ বাভায়ন সমন্ত্ৰি । त्रिश् कामक्षतञ्चान सायूक्षानाक নৈৰ্থতে ॥ অভ্যাগতাল্য॰ রম্য॰ শ্য্যাসন সপাদুক' ৷ ভোষাগ্রি দীপ সভূতৈঃ যুক্তি দক্ষিণতো ভ (यट ॥ गृशाख्रानि সर्वानि সङ्गोतः कम्लीगृहिः। शक्षवर्शिक अमूरिनः (माভिতানি পুকল্লয়েৎ।। প্রাকার॰ उद्दि पंन्राट शक्ष्वर भुगागणः 1 এবং বিষ্ণাশুন• স্বর্য্যাদ্বনৈ শ্চোপ-वरिन यु उ॰ ॥ ठजू:वश्चिमामा वासः भुत्रानामी मुभ्किजः। मर्थः हज् मुर्ता वुका विश्वना खुर्ग्यभाषयः ॥ कर्ल रेहदाथ शक्ताम्। खथा प्रवाः भूकी विंठाः । (उप्छा भू । छ्य সান্ধা অন্যেপি দ্বিপদা: সূরা: 11 চত্,ষষ্টিপদে দেবা ইত্যেব পরি की खिंठा: 1 हबकी ह विषाबी ह भू-उना भाभवाक्त्री।। देनानाम्। স্তথা বাহ্যে দেবাদ্যা হেতুকাদ্য:। হেত্ক স্ত্রিপুরাস্ত**ক্ত অগ্নি বেঁতাল**-কো যন:।। অগ্নিজিন্ত্র: কালকন্ত ক-রালে।ছেকপাদকঃ।ইশান্যাণ ভী-मक्পन्त भाजात्व (পुजनायकः ॥ আকাশে গন্ধনালী স্যাৎ ক্ষেত্ৰপা ला॰ खथा यरक्टा विखात्राज्यिकः

দীর্ঘ• রাশিদারন্ত কার্যেশ্য বস্ভি र्ভागमुष्किष्ठ (मयाक्षामाय शाहि-(मर् । भून छिनि महा जि भीक ভাগস্ত ভাজ্যেৎ ৷৷ যছেষ তন্তবে मृक्षः ভारिंग क्रिंग रायः ভारिट । পাক্ষণ চতুর্গুণ কৃত্বা নবভি ভাগ হা-রিত ।। শেষ ন শে বিজ্ঞানীযাৎ দে-বলস্য মত্ত• যথা। সপ্তাভি গুণিত• পিও বৃষ্টিভি ভাগ হারিত ॥ य-ছেষস্ত ভবেজনি মরণ ভূত হা-ব্লিভ'। বান্তকোডে গৃহণ স্বৰ্যাৎ न श्रुष्ठ मानवः जना।। वामशार्यन यः পিতি নাত্র কার্য্যা বিচারণা। কি হ कन्ता जुनायाक हातः मुख्यम् । खत ॥ ववक वृत्तिकाको ना পূর দক্ষিণ পশ্চিমণ। দ্বারণ দীর্ঘার্জ বিস্তার দারাণ্যপ্তী স্তানি চ॥ সু-তाল रेनुयानी हतुः स्यानः स्व ज्व-प॰। भूधशीन (द्वीर्पुप वीर्याष्ट्र- पः कित उथा।। यक्षा २ वस महा मुर्विः भू धना ७ मुञ्छि १ । धनमः नृभणीः **ডार मर्थम् ' (ज्ञागर' काल ।। न्भ**जी: তি মৃতাপত্তা অনপত্যঞ্ বৈরিদে । অর্থদ॰ বার্থহান্যেব দোষদ॰ পুঞ মৃত্যুদ• ॥ দ্বারাণ্যভর সংজ্ঞানি শ্র দ্বারাণি বন্ন্যহ•। সাণ্নভীতি বঁহ-কন্যা ধন সন্মান কোপদ ।। রাজ্ম

কোপদ• পূর্বে ফলতো দ্বার মীরিত• । क्रेमानामी ज्वर भूर्त्व आराया-(हो उ हिक्काल ।। रेनर्थ उपारमे शक्तिः म नहार वायवहारो जू हा खरत । অইভাগে কৃতে ভাগে দারাণাঞ্চ क्षाक्ष ।। जयय श्रक नार्गायाः भूर्वाक्षो महादूष्यद्रशा गृहमह माछ-नः (भाक सेनारन हिर मान्यविः॥ न्बिर्डा विष्कृति म्राट भागात्म्र গৃহস্য চ। ইত্যাদি গাৰুডে বাস্ত भान वक्षण ८५ व्यागरः ॥ शा-भार वक्रगन्ड भागारणस्य पृष्टेवाः ।। 🗱।। অभिह। ययग উहु:। भारा म खबनातीना॰ निरवणः विखदाष्ट् श। ज्रग्राट (कन विशानन कण वास क्राइड: ॥ সুত উবাচ। ভ্ও রতি र्ज्ञाण के कि दिश्वकर्मा यम ख्या । नाजः (मा नग्रकिट्रिय विशालाकः भूत-न्द्रः॥ वृक्ता क्रमाद्रा नन्दीनः (नो नरका गर्भ এव छ। वाजूरमरवा श्निक দ্ধান্দ তথা শুক্র বৃহস্পতী ৷৷ অষ্টাদ-শৈতে বিখ্যাতা বাস্ত্রশাস্ত্রোপদে-শকाः। जःक्लिशाभिष्ठिः यग्रनः व मर माक्षिणा।। उपिकानी भूव क्यांगि वास्त्रभाख मन्खमः। भुद्रा স্ক্রকবে হোরে হোরক্পস্য শ্লি नः ॥ वनारे स्वरमनिन मण उ कु वि

ভীৰণ• ৷ করালবদন• তমাৎ সমূ-फुंड॰ अमृन्वन ॥ गुत्रमान निवाका-শ॰ সগুদ্বীপা॰ বসুদ্ধরা॰। ততো **২ন্ধকানা• ক্ষির নপিবৎ পতিত•** ক্ষিতৌ।। তেন তৎসমরে সর্বণ প-**তিত॰ यग्र**शीउला। उथानि जृशि मगम खर्फ् उ॰ न उना यना ॥ उना শিবস্য পুরত তথা শক্তে সুদাৰণণ । ক্ষুধাবিষ্ঠন্ত তভূত মাহর্ণ জগ-তা॰ वंग•।। उठ: कालन ने ने संक्षे ৈভরব শুস্য চাদরাৎ। বর বৃণীয় ভদু• তে যদভীষ্ঠ• তবানঘ।। তমু-বাচ ভতো ভ্ত বৈলোক্য গুমন क्रमः। ভवामि (एवएएवण उत्थ-ত্যুক্তঞ্চ শূলিনা।। তত স্তৎ ত্রিদিব• সর্ব ভূমগুল মশেষতঃ। মদেছেনা-ন্তরীযঞ্চ বন্ধান পাপতভূবি॥ ভী-ত ভাতৈ স্ততো দেবৈ বুলিণা বাথ **म्**लिन।। मानवाजूत त्रःक्वाञ्च त्रवः 🕏 क्ष॰ সমন্তত:। েু্্থন ফ্রেব চাক্রান্ত॰ म তবৈবাভবৎ भूनः। निवामाৎ সর্বদেবানা• বাস্ত ব্লিড)ভিথীয়তে।। व्यवश्रद्धान (उनानि विक्कुक्षाः मर्व-(एवजा: । भुनीपथुः गुताः गार्व युगा जि निकली कृटः। ज्ञानानि किः यहारात नवहेन मत्यामुथः । एछा वृक्षािरिक्तिः (शुक्तिः वास्त

मस्य ज्रावा विनः ॥ जाङ्गादा दि-খদেবান্তে নূন মিমান্ ভবিষ্যতি। বাজ্পশমনে। যক্ত স্তবাহারো ভ-বিষ্যতি।। এব মুক্ত ন্ততো হৃষ্ট: স वाञ्च त्रज्वद्वरा । वाञ्च यद्धः सृज স্তমাৎ তত: পুভৃতি শান্তবে ॥ ইতি মাৎস্যে বাস্তভুতোল্ডবো নাম २२५ व्यथायः ॥ 🛊 ॥ ज्ञ छेवाह । व्यथा ७: मः भुवक्तामि गृहकाल विनिर्भ । यथा काल भू छ । खादा जरा ভवन मात्राज्य ॥ हेटाक वर्गिष মবাপ্রোতি যো গৃহ• কার্যেলরঃ। বৈশাথে ধন রজানি জৈঠে মৃত্যু ত থৈব চা৷ আষাঢ়ে ভূত্য রত্নানি পশু-वर्क्ट भवाशुबाद । मुवदा ज्उाना-**७**क रानि जा मुनर उथा॥ नदी नात्म। २४ गूष्क विन्त्राट कार्लिक ধন ধান্যক। মার্গলীর্ষে তথা ভক্ত। পুষ্যে ভক্ষরতো ভ্য়ণ ॥ লাভঞ্চ बङ्गा विन्ह्याहिः भाष्य विनिर्फिः শেৎ। ফাল্লুন কীঞ্চন পুণানিতি कानवन मृडः॥ यशिनी त्राहिः गी गून गुडदावय रेगन्त्व । **या**डी इंडानुत्राक्षा ह गृशांत्रस्त भूमें माउ ।। वादिका (जीम वर्क्ड व मर्स्व वादाः শুভাবছা:। বজু ব্যাঘাত শ্লেষু ব্যতীপাতাতিগওযো: ॥ বিষ্ট্র

ग७ भित्र वर्द्धः यागिषु कात्रायर । त्यु त्या मार्क्तम् गाम्सर्व श्लिकिषु।शिषा ॥ उथा रेवद्राज भावित्व मूर्ख गृष्ट् माद्राज्य । **इन्मा**रिकादल क्षा लग्न मुख नि রীক্ষিত ।। শুম্মোদ্বাযাদি কর্ত্তব্যম-नाज भित्रवर्द्धायः। भागापायुर নেব স্যাৎ কূপ বাপীষু চৈব হি॥ পূৰ্ব ভূমি পরীক্ষেত পশ্চাদ্বাস্ত পুকল্লযে । শেতা রক্তা তথা পীতা क्षा ठिवानू भूर्वनः ॥ विश्वारतः म-স্যতে ভূমি রত: কার্য্য পরীক্ষণ। বিপ্রাণা মধুরা স্বাদা কবাযা ক্ষত্রি-यम् ।। कवाय कर्तृका उद्दरिका म् দেষু শদ্যতে। রত্নি মাত্রে তু বৈ গর্ভে त्रुनुलिश्व ज् नर्बजः ॥ घृज भाग শরাবছ কৃত্বা বর্ত্তি চত্ প্রয়ণ। জ্বাল-(यट ज्नित्रीकार्थ न्र्वं उटनर्व मिह्यथ॰ ॥ मीछा॰ भूर्वामि गृङ्गीयाः ह्याना भन्नूर्बणः। वास्तः भाग्रिः का नाम **ही**भार**ं ग**र्वज्ञ यः ॥ मु छ एः अर्ब वर्गानाः शुमारम्यू ग्रह्यू চ। রত্মিমাত্র মধো গর্ভ পরীক্ষ্য খাভপ্রণে ॥ অধিকে শ্রেষ মাপ্রো-তি ন্যুনে হানিঃ সনে সম•। হলক্ষ্টে २० वा (मर्ग्ग अर्द्धवी**द्धानि वान**स्ट ।। ত্রি পঞ্চ সন্ত রাত্তেণ যত্র রোহন্তি

ভান্যলি। জ্যেষ্ঠান্ত্রমা কনিষ্ঠা ভূর্ব-र्द्धनीय उत्रा गङा ॥ शक्ष्मत्त्रावि क्रेलः भद्रीकिया ह महत्य । वः কাশীতিপদ কৃত্বা রেখাভি: কন-কেনভু॥পশ্চাৎপিষ্টেনচালিপ্যেৎ **ज्**राक्षालाए। नर्बाः। मण श्रवीः यञा द्रिया मण हिंदवा खद्रायणाः ॥ সর্ব। বাস্তবিভাগেযু বিজ্ঞেয়া নব का नव । এकामी उभिन् क्इा वास्त्रविष् अर्द्धवास्त्रम् ॥ शम्भान् भूबत्याप्त्वा डिं न् भक्तिनव जू । দ্বাকি শ্বাহতঃ প্র্যা: প্র্যা काष खरगारम ॥ नाम उ छान् शु-वक्तांभि ञ्चानानि চ निर्वाक्त । केनानकागारिषु छान् भूबरयकाः विषा नदः ॥ निथी हे हवाय शर्जाना क्षयतः अनिभागूथः । স্ব্য সত্যো ज्न रेन्हर जाकात्मा रायू (इर ह।। পূষা চ বিতথ শৈচৰ গৃহক্ষত যনা-वु । गन्न(र्व) ज्यवाजम् गृगः পিতৃগণ শুখা।। দৌবারিকো ২থ সুগুविः পুञ्चरस्य बनाधिनः। अमु র:শেষ পাপৌ চরোগো হহি মুঁখ্য এব চ।। ভল্লাটঃসোম সপৌ চ অ দিতিশ্চ দিতি স্তথা। বহি.দ্বাত্রি॰শ-(राउ ज् उंतर कजूत: मृग् ॥ केमा नारि एज्रहार में श्रिजान् भूकरयः

দ্যথা। আগ কৈবাথ সাবিত্রো জ-र्या छम् खरेषव ह ॥ मस्या नवशामा বুক্ষা ভস্যাপ্টোচ সমীপগান্। সাধ্যা रैनकाञ्जनान् विक्षार भूबी प्रान् नाम-७: मृतू ॥ व्यर्गमा मविञा रेहत विव-স্বান্ বিবৃধাধিপ:। মিত্রো ২থ রাজ-যন্ত্রা চ তথা পৃথীধর: মৃত: ॥ অ-ষ্টম স্থাপবৎসস্ত পরিতো বুন্ধণঃ মৃতাঃ৷ আগ কৈবাপবৎসক্ষ পর্জ্য त्या **२**प्रि मिंडि खथा।। পरिकानाक বর্গোষ মেব॰ কোনেম্বলেটভঃ। ত-ন্মধ্যেতু বহি বি॰শৎ দ্বিপদা স্তেতু সর্বত: ৷৷ অর্য্যনা চ বিবৃদ্ধাণ্ট মিত্র: পृथीधत खथा। तुक्तनः भति । विक् ত্রিপদা স্তে তু সর্বতঃ।।#॥বःশানি-मानी वक्षामि अजूनि भ्षक् भ्ष-ক্।বাযু•যাবত্তথারোগাৎ পিতৃভ্যঃ णिथिन॰ भूनः।। मूथ्याक्ष्ण माथा-শেষাৎ বিতথ যাবদেব তু। সুগ্রী-বাদশিতি যাবৎ ভ্গো: পর্জন্য মে ব চ ৷৷ এতে বংশাঃসমাখ্যাতাঃ কৃচি-**७: भर• गर्भः म**मञ्जः॥ मर्गा हि-ভৎ সমাখ্যাত ত্রিশ্ল কোণগঞ্চ य । उग्रन्याम जू वर्ज्यान जूना विधिय मर्बना ॥ की लाहि। छाभया-णानि वर्ष्कारमञ्ज्ञा नदः। नर्वत्

वास निर्मिष्ठः निज्रिवर्षानद्रायजः॥ মুর্জন্যগ্রি: সমাবিষ্টো মুথে চাপ: স भाष्ट्रिः । मृथीश्रता २ग्रमा हिव **उ**रया खावनिविश्विष्ठो ॥ वक्क: इरन চাপবৎস: পृजनीय: जना दूरिशः । भित्रका मिन्डि शब्दि को स्मार्ख शिर-তি জয়ন্তকৌ।। সর্পেন্দু। বংশ সংস্থে। ह भूजनीयो भूयव्वः। नु । नु । वा । দ্য তদ্বাস্থো: পঞ্চ পঞ্চ চা৷ क्नू " इता कर स्था ह वा महत्य मना-স্থিতী ঠুসাবিত্র: সবিতা ভদ্বস্তুত্ত मिक्नि मानिएो ॥ विवसानथ नि-ত্রণচ কঠরে সংব্যবস্থিতী। পুষা চ পাপ रक्षा চ হস্তবো মণিবন্ধনে ॥ **उ**थ्वामूब भामि ह वामभार्थ সমাস্থিতী। পার্শ্বেত দক্ষিণে ত विविज्यः नगृहक्षात्रः ॥ प्रेर्सा १र्यंऽ-मापूरणी (ऋषी जारमा र्गन्नई भून्न को। इह्या ज्थ मृगीको सिक्छो भिवादिका मृगः॥ कर भक्ती उथा (मिट्टू भारत्याः भिउत्र खवा। मत्यु नवभारत वुका क्राय न जु भृकाउ ॥ ह्य्विश्वाचा सः भागाप नुक्रा মৃতঃ। বুন্ধা চত্ম্পদ শুত্র কোণেয়র্জ পদা স্ততঃ ৷৷ বহিয়োণে ভু চাঞ্চৌ ভু সার্চ্চা শ্রেড সংস্থিতা: । বিংশ ৃতি দ্বিপদা শৈচ্যাণ চতুঃৰপ্তিপদে

म्डाः।।।। गृहात्रास जूकक्रः साः ম্যক্ষে যত্ৰ জায়তে। শল্যস্থপন্ধে ज शुन्तार ७वत २भि वा II 🐃 ল্যা ভয়দ ওমাদশল্য শুভদাবক । शैनाविकाक् जाता ख मर्चवा ज विवर्क्कारय ।। नगत गुम (परमये मर्द रेवद॰ भुक्न्नरयर । ठजुःनातः विमालक विमाल किक्मालक ॥ নামত স্তানি বক্ষ্যানি স্বৰূপেণ দ্বি রোত্তনা:। ইতি মাহুস্যে একাশী-जिनम्वास निर्णा नामः २१ व्यक्षाः यः ॥ # ॥ भूड डेवाह । ह्यः नाव॰ পুৰক্ষ্যামি ধক্পানামত তথা। চত্:-भानः हर हादि द्रनिन्तः अर्दछाम्-थः ॥ नामा ७८ मर्बाडाडमुः मुडः (एव न्भानाय। भक्तिमधात्रश्निख नन्त्रावर्खः भूष्क्रारा । प्रकिनवातः शीन उर्ष्ट्रमान मूराश्उ । श्री षात्रविश्रीनष्ट चिक्तिः नाम विग्नुः ७ ।। क्ठक (ठा खत्र बात्र विशेत[•] उर भुक्काउ। भोग्रमाना वि हीनस जिमाल धनातंश उर ॥ क्तिमृक्षिकद्र नृगा वस्त्रुध कला शुक्रा मालगा श्वगा हीन गुःकव नि कि विद्वार ।। धना यम मा नाग् ব্য শোক নোহ বিনাশন । চুল্লী ज्यामाया श्रीन विभावः भावयाज्

८८ ! छानक्षकत्र नृताः महितासि / खगावरः । श्रीनः शिक्तमगा य*बु* शक्त नाम ७८ भूनः॥ भिव रहू मुडान् इहि ख्या नर्ल ख्यावहः যাম্যা পরাভ্যা॰ শালাভ্যা॰ ধন थान। कनभूमः॥ क्ष्म वृक्षिकत्रः नूगा॰ उथा भू अकर्तभू र॰ । यम॰ जूर्या**क विट्डिय न निरमा खत नाल** कः॥ द्राजान्नि ज्यमः नूनाः अलक्य-कत्रक उट । উरक् भूदि जु भारत ছে দণ্ডাথ্যে যত্র ভদ্ভবেৎ।। অকা-লমৃত্যুভযদ পরচক্রভযাবহ। ধ-न्राथाः याम भूवी छाः भावा छाः यिष्ट्रमानकः ॥ ७हञ्जख्यमः नूगाः পরাভব ভযাবহং। চূল্লী পূর্বাপ-রাভ্যান্ত সা ভবেৎ মৃত্যুস্চনী।। বধ বন্ধায় শস্ত্রাণা মনেকভয়কারক । कार मुखद्रयाम्यान्याः भावान्याः ख्यम॰ नृगा॰ ॥ मिकार्थ वड्डा s व-र्क्यानि विनानानि मना दूरियः॥ #॥ व्यथाणः मः भुवक्तामि ভवनः भृषिः वीপाडः। निक्षनुकाद्गः छए (भाक **मूखमामि विख्य छ: ।। आक्षे । खा** श्खनं विखात (काल्या) मजः। চতুম্বন্যে বিস্তারে৷ হীযতে চাষ্ট **ভि: करेत्र?।। ठउणां भाषिक रे**नर्घाः भक्षभि निगम्राउ। युवदाकम्।

या ।। भक्षावा उत्तर्भ वड्डी॰ গেনাধিক ভবে**। #। নজি**ণা ম**ধ** বক্ষ্যামি তথা ভবন পঞ্চ ৷৷ চতু क्ट जुर्जि ही न महार कद्र यहिः भूति-खात्र । अक्षाः भागा विकः रिर्मितः भ-क्षव्भि निगम् १८७ ॥ #॥ जाम्हामा-ত্য লোকানা॰ বক্ষে । ভবন পঞ্চক । हवादिः मंडवाशी ह हवुर्डिशे याउ क्रमार ॥ ठजुर्थाः नाधिकः देनर्घाः नः ঞ্ষেতেষু শস্তে। # 1 শিল্পা• क्कूकीनाक रिवम्यानाः गृष्ट् शक्कदः॥ অপ্তাবি শৎ করাণান্ত দিহীনা বি-खात्रन उ८ । विखन रेमर्घा (मार्वाकः **मध्यात्ववस्य जू॥#॥ म्जकर्याञ्चिः** কাদীনা বক্ষ্যে ভবন পঞ্চ হণ চত্ত্ৰ-र्थाः नाविकः रेनर्घाः विखाता चार-শৈব তু ॥ অধ্যৰ্জ করহানি: স্যাৎ বিস্তারাৎ পঞ্চসু ক্রনাৎ।#।দৈবজ্ঞ छक्रियम्।।नाः मञाखाद्र भूद्रायमाः ॥ তেষা মপি পুৰক্ষ্যামি সদা ভবন भक्षकः । हवादिः मह विखादाहजूः

र्ভि ही यां क्यार ॥ भक्षाबाउयू रिनर्घ)क दञ्चारमनाधिकः ভবে । 🗱 । চতুর্বর্ণস্য বক্ষ্যামি সামান্য গৃহপ-ঞ্ক ।। দ্বাত্রি শক করাণাম্ভ চতু ভি হী যতে ক্রমাৎ। আষোডশা-দিতি পর নুন মন্ত্যাবসাধিনা ॥ मणाः भनाष्ठे जारान विजारागाथ भाषिकः। अधिकः रिमर्छ। भिजाङ ব্রান্দণাদেঃ পুশীস্যতে॥ সেনাপতে म् भन्याभि गृहरेम्यदाखाद्वर जु । ন্পবাস্গৃহ• কার্য্য ভাগাগার ন্তথৈৰ চ।। সেনাপতে গৃহিন্যাপি চাতুর্বর্ণস্য চান্তর । বাসকোষ গৃহ কার্য্য রাজপ্জ্যেষ্ সর্বন।। অন্তর পুভ্রাণাঞ্চ স্বলিতু দুরি মিষ্যতে। ख्या इस **म**जाम्बीक् गहिल वन বাসিনা ।। সেনাপতে ন্পস্যাপি সগুত্যা সহিতেবিতে। চতুর্দশ হ-তে ব্যাসে শালা ন্যাস: পুকীত্তিত: ।। পঞ্জি॰শজ্তে তফিন্ অনিনঃ সমুদাহতঃ। তথা ষট্তি শদ্ধতাভু সন্তাঙ্গুল সমন্বিতঃ॥ বিপুস্য মহতী माला न रिनर्घा भवाजा जावर । मणायुनाधिका ७६८ कवियम्। বিধীয়তে ॥ পঞ্জি-শৎ করা বৈ শ্যে ধ্সুলানি ত্রযোদশ। তাবৎ क्रिज म्मून्त्रा युठा शक्षरमाञ्ज्रीतः

া শালাযাৰ বিভাগেণ যস্যাগ্ৰ वीथिका खर्द । (माक्षीण नाम তদ্বাস্ত পশ্চাহাযোচ্য স্তুবেশা গা र्याया वी विका यव मावश्चेस सम्हर তে। সমস্তাদীথিকা যত্ৰ সুস্থিত। **उ**िरहाठाउ ॥ णुडिन गर्ब भिउ८ न्यार हाजूर्वर्गं क्षजूर्विषः । विख् রাৎ ষোডশো ভাগ তথা হন্ত চং তুষ্ঠয• ॥ পূথমে। ভূমিকোছায উপ-तिष्ठां भूशिया । वाममारमन সর্বাসু ভূমিকাসু তথোছুय: ॥ প ক্বেপ্তকে ভবেন্ডিবিঃ ষোডশাংশের विखद्राए। मानरवन विकन्नः मार **७था मृत्रार ভি**खिक्।। গर्छभानिव মানন্ত সৰ্ব বাস্তযু শস্যতে। গৃহবা **न**म् अकामरक्षेत्रणि त्रकृतिः॥ সংযুতো দার নিষ্ণয়ে। দ্বিগুণশ্চো हुरया ভবেৎ। घात्रभाथाम् वाङ्वा मुह्राय॰ कत्रमियाँ ।। व्यक्तिः नर्व वाख्ना-भृष्युः भगाउ वृश्धः। উদুয়রোভরাঙ্গে চ তদজার্জ পুরি-खरेतः॥ इंजिमा ९ तम् अविष्ठाम् शृङ् नान् निर्णय नाम २२৮ व्यव्यायः ।। 🗱।। मृं छे वाह । जथा उः मः भ्य क्ष्णामि उग्रमान विनिर्गयः। कृष् । ভবনে। हु। य॰ मरा मध्या॰ दृशः॥ बाबाकाञ्च. संबंदिः ग्राम्यां नवः

ন্ত্রী । বৃহ। ক্তক শতবুরসু: স্যাদ-ষ্টা শো বজু উচ্যতে ॥ দ্বিবজুঃ যো-ডলাসুস্ত দাদশাসুঃ পুলীনকঃ। মধ্য भुरिएण यः साम्रा वृरता वृत्व इति भृउः॥ এতে পঞ্ महास्राः भू भेखाः मर्बरासयू । भग्नवली वजा-कार्य। भण्यस्मिन किभिजा ॥ खस्रम् নবমাংশেন পদ্মসম্ভোত্তরাণি চ। স্তম্ভ হুল্যা তুলা প্রোক্তা হীনা শেচা-পতুলা তত:।। বিভাগেণেহ সর্বব **ठ**ञ्जाराग वा भूनः । श्रीनः श्रीनः তুর্থা•শাত্তথা সর্বাসু ভূমিষু।। বাস-(गरुवि मर्खियाः भुरदाः मिक्सान তু। #। দ্বারাণি ত্ পুবক্ষ্যামি পুশ-खानी इ जानि जू॥ भूर्विशन्तुः वयस ঞ্ দ্বার• সর্বত্র শস্যতে। যাম্যঞ্ বি-उषरिक्षत मिकारान विषु वूर्त्याः ॥ भ-न्हिरम भूत्र रष्ठक वाकनक भूममाः তে ৷ উত্তরেণ তু ভল্লাটি সৌম্যঞ্ **मुजर• छ**रवर ॥ उथा वास्तु मर्स्ज (ववः घात्रमः) वब्द्धं (यटः । घातः जु व्रथाया विक्त ज्वर् मर्बम्यक्यः॥ खक्षा (नाय वाङ्म) (माकः शास्त ন কাযতে। অপন্যারো ভবেন্ন क्षरवापन मर्बना ।। वाथा भुमुना न नार कीलनाविज्य खादर। विनालाः (पवज्ञाविष्य साम्रुन जी-

হতো ভবেৎ ॥ গৃহভৰু বিনাশঃ স্যাৎ গৃহেণ চ গৃহে কৃতে। আম-ধ্যা বন্ধরৈ র্নিন্ধে গৃহিণী বন্ধনম্ভবেৎ ।। তথা শস্ত্ৰভব বিদ্যাদন্ত্যক্ষস্য ग्र्न जु । উद्दाय दिखना ज्ञि ত্যক্তা বেধোন বিদ্যুত।। ৰখ সূদ্ৰা-िए बाद्ध उचारमा गृह्रमिथनाः। अरक शिहिट विना। ए ज्वानान विष्कृ १: ॥ भाना शिक द्राज ७ य॰ नी-চে তক্ষরতো ভব । দ্বারোপরি চ य-দ্বার• তদন্তক মুখ• মৃত•।। আধ্বান• নধ্যদেশে তু অধিকো বস্য বিস্তর: । रजुष भक्षे मस्या माना छत् विनामनः॥ उथान्।भी उउ हाद्रः व-छ्रावकत स्रावर । मूमहातः छथा-ন্যস্ত নাধিক শোভন ম্ভবেৎ ॥ সম্ভ শ্ৰিপৰ্ণি বল্লীভি মূলদারস্ত শোভ-বেং। পুৰুষেচাপি তলিভ্যা বলিনা वाकारा दियः॥ 🗱 ॥ खदनम् । विः পূর্বে দিখাগে সার্বকালিক:।উডুমুর স্তথা যামে। বাৰুণে পিপ্লন: শুভ:॥ প্লক্ষ শ্চোত্তরতো খন্যে বিপরীত खुनिषाय। कफेकी क्षीत्रवृक्षण वा। मशः मक्ता क्यः॥ ७गः श्वि भुकाश्विः अर्वेष्ठि क्रमणः जना। न हिन्ताप्यिक जाननानस्त शाम-(यर मूजान्।। भूमानात्माक दजन

भनी डिलक व्याकान्। माजिमी পিপ্লনী দুাক্ষা তথা সমূম মঙ্গে।। হয়ীর প্গপনস জনকেতকীভি র্জা⁻ তী সরোজ শতপত্রিক মল্লিকাভিঃ । यमाबिकन करनीरन भारेना छि যুকি ভদত ভবন শূ্য নাতনোতি ।। ইতি মাৎস্যে বাস্তবিদ্যাসুবেধ্প विवर्क्क (ना नाम २२२ व्यथ्रायः॥ 🗱॥ সূত উবাচ। উদগাদিপ্লব· বাস্ত স-मानिश्वम ख्या। भन्नीका भू बंद व्यर्गाट उपमाहायः विष्टकाः॥ न-দেন খুর্ত্ত সচেব চত্ত্রাণা সমীপত: ৷ কার্যেন্ডব্ন প্রাক্তো দুংথ শোক ভয় যতঃ ৷৷ তস্য পুৰেশা শ্চত্বার खरम्यारमञ्जार गुजः मुजः। পृष्ठजः পৃष्ठভक्ष मव्यावर्डः भूगम्याउ ॥ व्यनगरवा विभागाय मिक्श भीर्वक ख्या। नर्वकाम कःल। नृगाः नम्भूर्गाः নান বামত:।। এবং পুবেশ মালো। ক্য যত্নেন গৃহ নারভেৎ। 🕸। অথ সম্প্র পূর্ণ মূহ্রে শুভ লক্ষণে।। রক্ষোপরি শিলা কৃত্বা সর্ববীজস-নবিভাণ। চতুৰ্ভি ব্ৰান্ধিণৈ স্তয়ে ব द्यान हात्र भूषिछ ।। भुन्ना प्रतथ्रः শিল্পী সহিতো বেদপারগৈঃ। স্থা शि उ॰ विनारम् **उद्द** माद्वी यदि नम्बि उः ॥ नानाक्ष् छ क्लाश्त्र छः

বজ্ঞভাৰুল সংযুক্ত। বুন্ধ ঘোষেণ वारम्यन गीज सक्त निश्रवः॥ भाः यमः ভোজयिष्टिभान् (कामस अधु-সর্পিষা। বাস্তোম্পতে পুতিনানীছি মস্ত্রেণানেন সর্বদা।। সূত্রপাতে তথা कार्य। भवः खासार्य भूनः। द्वात विकाह्त उद्दर्भ न्याय उथा ।। বাস্ত্রপশমনে তদ্বৎ বাস্তু বজুস্ত नक्षा। देगान मृज्ञानः महामा-্রেষে স্তম্ভারোপণ।। পুদক্ষিণঞ্চ स बी उ वाखाः भमिष्यव्यवः । उ ब्ह्रिनी मध्यमा टेव्य ख्या क्षु श्रेस प्रक्रि-(१।। भुवान इन्न कनक कन निष्ठे কৃতোদক ৷ সর্বাস্ত বিভাগেষ্ শস্ত স্পদ্বিলেখনে ৷৷ ন ভষাহ্বার কাষ্টেন ন শস্ত্ৰ নথ চমভিঃ। ন চ সা-श्चिकभारतम कृष्टिमास भुरत्यशाय ॥ এভি विं(मिथिड॰ सर्वेऽ१८ मृःथ ल्गाकामयानिकः। यसा शृहलुरवनः म्याहिन्नी ज्ञाभात्रथार्थः ॥ उस স্ত্রাদিকে তদ্বৎ শুভাশুভ ফলোদ-य । 🗱 वारिज्या जिमूश दो जि में ञ्नः शक्षः यपि ॥ जुनाकानः ग्री-(महत्रः गृष्ट छुरः मनाज्ञनः। वासु-त्र उविकानीयामत्रण**न**ा जयभूर॰ ॥ শঙ্কনানন্তর॰ যত্র হন্ত্যখ স্থাপদ-द्याद्र । उरम् मञ्जदः विर्गाष्टव

मन्। विव्यानः॥ भुगार्यामान मृत्व তু খগোনাযু বিশদ্ধিত। তত্ৰ শল্য॰ विजानीयाद श्रद्रभाक्त ह रेखद्राव ॥ যদীশান্তে হথ দিখাগেমধুর র রৌতি वायमः । धन छज विकानीयाम् दक् वा স্বান্যবিধিতে ॥ সূত্রছেদে ভবেমৃত্যু र्वाधिः कील द्राधार्म् था। अकात-ষু তথেলাদে কপালেষ্চ সম্ভূমণ ।। कष्ट्रमाला ह कानीयार मुन्कना क्षीय वास्ति । गृश्जु ग्रारम्। পি বিনাশঃ শিল্পি সম্ভূমে ॥ স্তম্ভ স্থানে চুয়ত ব্যয়ে শিরেমরাগ বি-निर्फिल्ट । अञ्चागशात मर्तमा ष्ट्रनभाति कर्या ज्या । मृजुः **ञ्चानहुराञ्च ऋरस्य जाः वक्तः विष्ट्-**बूबाः । कद्रमाथा। विनाम जू नाण गृहभाउ विंमुः॥ वी छोषि বিহীনে তু ভূতেভোগ ভব মাদিশেৎ । शुःग्रीकालन विनामा खास हवा বিবেশবেৎ।। ততঃ পুদক্ষিণেনান্য ग्राप्तर उन्नः विष्टकः। ययापुर-কর॰ নৃণা॰ গোজিতান্যপুদক্ষিণ।।। व्रकाः दवि ज यद्यन उत्साशमृत নাশিনা । তথা ফলব্তী শাখা उत्यानित नित्नायर ॥ भागमक् প্লান কাৰ্য্য দ্বিম**খন্ত ন কার্**ছে । उग्जय। ভবनदाणि घात्रय। यगृश् खथा।। निष्या द्वा वना भः महां २ नह अश्वर्षायम्गृष्ट् । यमि अश्वर्षायामुक् সর্বদিক্ষু বিবর্জযে ।। পূর্বেণ বর্জিত वास वर्गादितानि रेव जना। एकि ণে বৰ্দ্ধিত• বাস্ত মৃত্যবে স্যান্নসংশা; यः ॥ পশ্চাদৃদ্ধন্ত यद्यास उपर्थक्रय কারক। বন্ধাযিত তথা সৌমের বহুসন্তাপকারক ।। আগ্রেষে যত্র वृक्तिः महाउन्ति खरम अत्य । व-র্জিত রাক্ষ্যে কোণে শিশুক্ষ্যকর• ভবেৎ ৷৷ বৰ্জাপিতন্ত বাযব্যে বাত-वराधि भुकाभक्ट। देगान जु भु-काङ्गानि वास्त्रो मद्रक्तिरं जनगासा ঈশানে দেবভাগার• তথা শান্তি-गृरु ज्वर। नहानमः उथायय তৎ পার্শ্বে চোত্তর • জল ।। গৃহস্যো • পকর সর্ব নৈশতে স্থাপয়েদুধ: । বন্ধস্থান বহি: স্ব্যাৎ সান মণ্ডপ (भव ह ॥ धन धान) १३ वायरवा कर्य-শালা ততো বহিঃ । এবমান্ত নি-(वणः अज्ञान्गृश्चर्जुः मुजावशः॥ इंडि माध्रमः वास्तिवनः। गृहनि-र्गाया नाम २०० व्यथायः ॥ 🗱 ॥ সূত উবাচ। অথাতঃ সংপ্ৰক্ষ্যা-মি দারাহরণ মুভম॰। ধনিগ্রাপ-ঞ্চক ত্যক্তা বিষ্ট্যাদিক নত: পর• ॥ ততঃ সাধ্বসরোদ্ধে দিনে যা-

বাস্ত

याबंन॰ तुषः। भुष्यनः विन भ्काछ व्यर्गाट वृक्षाय गर्बमा॥ भूरबी खाउँग **ग** डिंड॰ शृष्ट् माक शुक्षमहर्छ। न्या न मूङ विर्याष्ट्रायाभाविन भाउरन ॥ क्षीत्रवृत्काख्य गांक न शृष्ट् विनिविभाष्ट् । क् जाधिवानः विरुरेग द्रनिवानन शीफिडः॥ गजाः বভগ্ৰন্ধ তথা বিদ্যুদ্মৰ্যাত পীডিত• । व्यक्षम् इ॰ उथा माक जग्नम् इ॰ उ-रिथव ह ॥ हिन्छ। (एवानरयार भन्न॰ नशीमक्रमक ख्या। न्यामान क्यः निनय उडागारि मम्बद्धा वर्ड (यट नर्बण माक यमीहि दिन्नाः निय॰। उथा कछेकिरना वृक्षामी भ निम्न विजीउकान्॥ (सम्माउकान्यः वाउवान् वर्द्धारा गृष्ट् कर्मानि । वाणनः णाक मधुक मर्छ णानाः मू जावहाः ॥ हन्त्वः भनमः धनाः **जूबराक रुबि हुका।** वाज्यात्मकन বা স্থ্যাৎ ত্রিভি র্বা ভবন শৃভণ। वङ्जिः काविजः ययाम्याकः खयमः ख्रवर । ओककः मिन्मभा धन्।। **এপণি ভিন্দুকী তথা ।। এতা না** नामनागुका कनाहिहु छकात्रिकाः। मान्त्रः भनम उष्य मंत्रवाह्य्न भ-ঘকা: ।। এ: उ नान, ननाय्का वा-उभार्यः मुज्युषाः । उक् हत्व म-

हानीएउ (गाधाः विमाधिक ।। माखिष्ठ वर्त (इकः म्राष्ट्र ने मर्ल विनिर्मित्यः । यकान मे विम्डाट मूळाट मूकमामित्यर। কপিলে ম্যিকা॰ বিদ্যাৎ থগাভে ল্ল वमारिष्णः । এविषयः मगर्सं हु व र्द्धायवास्त्रकर्याणा। भृतं छि यस गृशीः याट निभित्तः मह्यतः मुख्ः। #। व्यास्मन छिनाउ रिमार्घ १ छे जि रेवं इरड उथा।। यहिष भाष छ॰ विमान छे (छन॰ বদানি বঃ। ঘুজো ধুম চ নি হ চ খা व्यः थद्र এव ह ॥ इडी श्वाह्म ह न्दी-म्राः क्रिल्मिया ख्वस्रामी । धुकः मर्ब-मूर्थ। धन्रः भुज्रग्बाद्यः विरम्यजः ॥ উम्बार्था ভবেৎ मिन्हः भाषा ব্ৰভো ভবেং। দক্ষিণাভিম্থো হতी मथि : म উहा क्उः ॥ এकिन ধ্বন উদ্দিষ্ট ব্ৰিভি: সি'ছ উদাহ্নতঃ ৷ পঞ্চি ব্ৰভ: প্ৰোক্তো বিকো गराः स दब्बिराट् ॥ उत्मवाद्वेष्टाः कृषा विमामाना विष्कृतः। मध विः निर्कृत् ভागে श्राः विगाविः চক্ষণ: ।। অষ্টভি ভাঙিতে পক্ষে ষ্ট্ৰে॰ স ব্যুয়ো মতঃ। ব্যুয়াধিক॰ न अही ज राजा (मायकत खर्वर ॥ আয়াধিকে ভবেছান্তি রিভ্যাই ভ गवान् इतिः। क्रागुर्छ। विषवती

नथ भृतंत्रञ्च॰ मधाक्रजानुमन भूञ ফলোপশোভা । দত্ব। হিরণ্য বস নানি তথা দ্বিজেভ্যো মাহল্য শা-স্তি নিল্যায গৃহ• বিশেষ্ট ॥ গৃহ্যোক্ত रहामविधिना विवक्यं अर्थे। ८ श्रा-नाम वास भगत ह विधि यें डेकः। সন্তর্গবেৎ দ্বিজবরানথ ভক্ষ্য ভো-জ্যৈ: শুক্লাম্বরক্চ ভবনং পুরিশেৎ मध्र•॥ इंडि मार्थि वास वि म्यान्कीर्जन नमाधः २०) व्यथायः ।। 🕸 ॥ यन। है। ज्ञथ वास्त्र गुक्तिः । তত্ত জান-িৰ্বাঃ। নদী শ্মশান रेणजाना॰ वन्या निकारे उथा। न वाक्ष क्यां कर्द लिब दन्तु नगद्राष्ट्ररशः ॥ 🗱 ॥ ७७ विष्यापः। त्राक्तनानिवा वङ्गीनाः यमभा मिलि (वन्यमः। ना-ब्रसु कार्यमाजा जी क्र्मार क यभुमः ॥ उथाहि । ভোগः कीर्खि र्थन (द्राग: हिंद्रठा ह ख्य: क्य: 1 माञ् ইरब्ध्य क्षिजा मिनि वास्त ফলোন্ডব:।। ভোজে চ। যল্লগ্নেজা-যতে রাজা তস্য লগুস্য যঃ পতিঃ। या पिक् छन्। नृश सम्रा॰ वास्तुः ब्रह्य• (मयनात् जाउम् जूनाउः। अजाः বিপতি কাৰা দক্ষিণস্যা মপি বাস্ত र्नत्याञीजि॥ शजामात्रस्य। रमामा- জনিতো রাজা বাস্তু স্তম্ভস্ত ভদিংশি । এতেৰ স্ব্যাদি জনিতস্য নৃপতেঃ भूबीपि पिक्कृ वास्त कद्राः । ट्विन **मुक म्माया- बाउम्याद्यया मिन** मूय्रि ।। 🗱।। व्यथं नक्तनः। वास अ-र्य्याचा श्रीना ना मान मुनिष मृखिकः । शुाल्डमक् क्षवन ब्रमा ब्रमा व्यान-भाषाञ्चिल ।। वाक्षी फीइ: क्रारा-ভীতি র্ঘননাশো হভ্যশূন্যতা। স-ম্পদৃদ্ধি রিতি প্রোক্ত• পূর্বাদিকস্ব-ভा॰ कल॰ ॥ उथाहि প্লবন মন্য । জন্মলগ্নেন দিক্ পশ্চাৎ রাজ্ঞা• বা-স্তপ্লবো মত:। এতেন স্ব্যাধিপতি ज्लालाय काउमा नृभाजः म्यान विপতে: পূর্ব্যা: পশাৎ পশ্চম প্লবোপি ন দৃষ্যতি॥ অন্যেতু। यদः শান্ধনিতো রাজা ভদিশোগু প্লবো মত:। এতেন গুৰু দশালাতস্য নৃ-পতে: দক্ষিণ প্লবোপি ন দুব্যতি।। ञनाब जु। तुका का बिय विदे मृ पुः न्दाि मिग्यूरा कमार। वास श्ल-বন মিছস্তি নিজ সম্পত্তি হেতবে ।। नीजिणाख ह। वास कर्य नृश: ब-र्या। इल वरे इतिरा कि मि । की वा চত্রসু৷ বা বাস্তভ্নি শহীক্ষিতা• ।। এ उर्गा लंकन उष्ट क्लक नगात्र यथा। का जय मान । ज्ञानकार ७-

याचन वृषः। भूषन वित भ्काछ। वर्गार वृक्षाय अर्बना॥ भूरबाखरद्वन পতিত গৃহে দাৰ পুশম্যতে। অ-न्या न म् छ॰ विर्याष्याम्याभव्यति-भाउत्न ॥ क्षीतव्यकान्त्रवः माक न গৃহে বিনিবেশ্যেৎ ৷ কৃতাধিবাসং विरुरेग द्रनिनानन शीफिड ।। शबा-वज्यक उपा विम्रुमिर्घाउ भी डिउ॰ । व्यक्षमुद्र• उथा माक जग्नमुद्र• उ-रिथव ह ॥ हिन्छ। स्वानस्यादशमः नरीमक्रमण ख्या। न्यामान क्रन (य८ मर्बर्श माक यमी हि विभूनाः नियः। उथा कलेकिन। वृक्षामीश নিম্ব বিভীতকান্।। স্লেখ্যাতকান্এ ण उक्त वर्द्धार गृश् कर्या । व्यमनः माक मधुक मर्क्क मानाः मुजावहाः ॥ ठन्त्न शनमः धनाः मूबनाक इबिमुका। वाज्यात्मकन् वा ऋर्य्याट जिल्लि ई। ज्वन मूज ॥ वङ्जिः काब्रिजः ययाम्यान् खरमः ख्रात्र । ओककः मिन्मभा धन्। জিপন ভিন্দুকী তথা।। এতা না नामनायुका कनाहिहु छकात्रिकाः। म्रान्त्रः भनम उद्यर अत्रवार्क्त्न भन নাকা: ।। এতে নান্য সনায্ক। বা-लकार्या मुज्युनाः । उक हरन ग-

হাপীতে গোধা বিদ্যাদ্বিচক্ষণঃ ।। माञ्जिष्ठ वर्त (छकः म्यार नीत्न नर्भ विनिर्फिएण्टा व्यक्षा नद्रहे॰ বিদ্যাৎ মুক্তাভে শুক্তমাদিশেৎ॥ কপিলে ম্যিকা • বিদ্যাৎ খন্নাভে জ-व्यभाषित्मर। এवश्विष् मगर्छञ्च वन् ब्ह्रीयमास्रकर्मानि॥ भृतः क्रियसगृहीः याट निमित्र महतिः मुक्तिः। 🕸। व्यारमन खिगाउ रिमर्छ १ छे जि रेवं इरड उथा।। यरह्य मायउ विनाम है जिन বদামি বঃ।ধুজো ধুম=চ সি:হ*চ খা व्यः अत्र এव ह ॥ इडी शुक्त क न्द्रीः म्राः कतित्मता खवस्राभी । धुकः मई-মুথে। ধন্য: পুভ্যগ্দারে। বিশেষভ: ।। উদ্মুখো ভবেৎ সিন্দ: পুামুখো বৃষভো ভবেং ৷ দক্ষিণাভিম্থো **হন্তी স**গুভি: স উদাক্ত: II একেন ধ্বন্ধ উদিষ্টে ব্রিভি: সি·হ উদাহতঃ । পঞ্চভি বৃষভ: প্রোক্তো বিকো ণহা• स বজ্জ যেৎ।। ডমেবাইভণ• कृद्म विमामानिः विष्कृतः। मध विभान्क्रा जारा अकः विमार्षि চক্ষণ: ॥ अष्टें जिंद्रिष्ठ व्यक्ष याह्य म वार्या मणः। वार्याधिक न अही ७ यका (मायकत छाव्या। আযাধিকে ভবেদ্বান্তি রিভ্যাহ্ ভ গবান্ হরি:। ক্রাগুতো ছিলবরা

नथ পূर्वञ्च । मध्यक्र जाजुम्ब भूञ्च ফলোপশোভা দত্বা হিরণ্য বস নানি তথা দিজেভ্যো মাহল্য শা-স্তি নিল্যায গৃহ• বিশেষ্ট।। গৃহ্যোক্ত रहामविधिना विवक्षं अर्थे। ८ शु-जार वास भगत ह विधि यं डेकः। সন্তর্গবেৎ দ্বিজবরানথ ভক্ষ্য ভো-জ্যৈ: শুক্লাম্বরক্ষ ভবন পুরিশেৎ मध्र• ॥ इंडि मार्मि वास वि म्रान्कीर्डन ममाध २०) व्यथायः ॥ 🕸 ॥ অন্য ় । অথ বাস্ত দৃক্তি: । **७७ ज्ञानिर्दाः । नहीं न्यानान** रेणजाना॰ कुन्छ निक्रिं उथा। न वास्त्र कर्णा कर्वे लिव दन्तु वगवास्ररगः ११ 🗱 ११ ७ छ। विष्युविष्यः । ज्ञाक्यमानिक বহ্নীৰা খনস্য দিশি কেশ্মনঃ। না-त्रसु॰ कात्ररयमुग्डा की क्रग्**मार** क यमुम ।। उथाहि । ভোগः कीर्खि र्थन (दाग: हिंद्रठा ह ख्य: क्य: 1 माञ् इराउ।व कथिरा किमा वास ফলোন্ডব: ৷৷ ভোজে চ ৷ যল্লগ্নে জা-যতে রাজা তস্য লগ্নস্য যঃ পতিঃ। या पिक् छन। नृश खना। वाखात्र छ॰ नमाहद्रद्या अद्या महाविभित्रिक भिष्वाः बाउम्। जूनरतः। स्का বিপতি কাৰাণ দক্ষিণস্যা মপি বাস্ত নঁৰুষ্যতীতি।। পরাশরস্তা হদ্শা-

জনিতো রাজা বাস্তু স্তম্ভস্ত ভদিশি । এতেন স্ব্যাদি জনিত্স্য নূপতেঃ भूबी कि किक्कू वास्त कद्रा । (उन मुक ममाया बाउम्याद्यया मिन मूय/ि ।। 🗱।। वाथ नक्तनः। वास अ-र्याग्रहीगालः नमः मृत्रिक मृखिकः । शुार्थमक् क्षवन ब्रमा ब्रमा व्रका-शामाञ्जिल ।। वाक्षी फीइ: क्राया-ভীতি র্ধননাশো হভ্যশ্ন্যতা। স-ম্পদৃদ্ধি রিতি প্রোক্ত পূর্বাদিকস্ব-ভा॰ कल॰ ॥ उथाहि প্লবন মন্য । জন্মলণ্নেন দিক্ পশ্চাৎ রাজ্ঞাণ বা -স্তপ্লবে। মতঃ। এতেন স্র্য্যাধিপতি ज्लालाय काउमा नृभाजः म्या-विপতে: পূर्वम्याः भन्धाः भन्धिम প্লবোপি ন দৃষ্যতি॥ অন্যে জু। यদः-শাজনিতো রাজা তদিশোগু প্লবে৷ মত:। এতেন গুক্ দশালাতস্য নৃ-পতে: দক্ষিণ প্লবোপি ন দুব্যতি।। वानाब जु। तुका का विष विष् मृ मुाः नूर्वाि मिन्यूर्ग क्यार। वास श्ल-বন মিছন্তি নিজ সম্পত্তি হেডবে ।। নীতিশান্তে চ। বাস্ত কর্ম নৃগঃ জ-र्य)। इल बोह जिल्ला कि मि । की थी वा চত্রসূ বা বাস্তভ্নি শহীক্ষিতা॰ ।। এ उर्गा र्वक्र १ उद्द क्लक नगात्र यथा। का अथ नान । त्राह्मकात्यः

न गृপि विखातसः नगाहादः । कारा जद्रः मृथ मृथ भीठि जी **তি শ্চ**য: স্থির: ॥ ইত্যপ্তৌ বাস্ত না মানি রাজকাণ্ডৈ রনুক্রমাৎ। অ नाव जू। बन्नवाः गरी छ व र्पा थरमा রম্ভ এর হি। রাজকাণ্ডিস্ত ভাবন্ডি वीस वर्षाग्रही शिक्तः ॥ जूनमी-ছন্দ সংখ্যেন রাজ পটেন ভূপতে: । वास कर्म अमात्रास्त्र। धन धाना क्यभूरः ॥ এउरम র প প্রবিদ্যা-थ्यानः। রাজ্জ্পে স্তাপি বাস্ত পত্তন নিষ্যকে। ভস্যাপি পূর্বব্যা-ন নিতি ভাগুরি ভাবিত ৷৷#৷৷ অথ साम खः।। भन्ननिभि ३ वास्तर्हा ন ভিঙ্তি চির্ণ নূপ:। ন সুখায ন ধর্মাণ তত্ত্বস্য ভূবি জাযতে ॥ অন্য-वानि। द्राज्ञानावीर्या भुगामी भन्न বান্তকৃঙছিভি:। ন সূখায ভবে ब्ना॰ यथा भद्रग्रह गुरुः ॥ यः अ-নিৰ্মিত বাস্তছো নিজলগাদি সং-यु इ: । विठाति उभूता ताका म हित्र॰ ল্থম্প্রতে॥ অন্তরাপি । রাজা श्वनाङ्वीर्यप्रात्प्रः निक निर्मिख वास्र ভাক্।স চিরা তনুতে সৌখ্যা ৰগৃছ-ए। गुःहा रथा।। क्षा वथ कानः। বর্যান্ত ২ল্ডানিতে শক্তে কেন্দে সূর ख्दो मूर् । या छ । या मना त छ ।

শুক্র চন্দু।র্ক ভূমিজে।। গুহুযুক্তী যঃ সমयः कर्खवा छञ रिव भूष्ट । वास्ता-রন্ত্র: কার্য্য: শুভ সম্পত্তি কামিনা রাজ্ঞা।।ইতি বাস্তু যুক্তৌ বাস্তুদ্দে**শঃ** ॥ 🗱 ॥ व्यत्मुवाः यथा। यनाङ् वाखुः व खन्या । बाभि शेख फर्जू जिं: न्या-ष्य खरेनव माभाष्य। क्षामा छ-যম্বরো ভব্য: শোককৃষিজ্য: শুচি: ॥ वंभक्ट भाभकाती ह विकाती (माजन: मियः। जनभः काम्पा श्रु। (योग्न्या श्वक्त छथः ॥ धनहः सूयक्षिति वार्षेति १ है। न भी छ-जाः। जम्मथा। आयाग भारः । हा-ভ্যা যো হস্কলিণ্ডে: হভিদ্যনতে ৷ উনবি শতি হৃতে ভাগে শেযেণৈতা यथा क्रम ॥ क्ष्मिम महार्थ मः निष् র্ভবকারী ভবহার:। ভব্যো ভোগ• পুসকতে শোককৃষ্দু নাশন: ৷৷ বি-জনঃ অক্তে বৃদ্ধি শুচি: সর্মথ বহেৎ। বংশকৃৎ স্কতে বংশ भाभकाती जनाभशः॥ विवाती অকতে দুঃখা শেভনঃ শুভমাব (इट। भिनः मर्वार्थ भिष्का माट व्याभः महनाभनः ।। काराता २ जे 🕏 वाङ मार श्या प्रति नवनः । वोत्मा वर्गमिकः त्नोथाः पुःशः वः नहात ज्या ॥ धनात धनवाजः

গ্যাৎ সৃথায়ৎ, সুথকারক:। ইতি প্ৰোক্তো ২তিসংক্ষেপাদ্বাস্ত লক্ষণ সংগ্ৰহ: ।। ভোজস্ত। দণ্ডমান ত-रिष्व किंड युक्ति तन्।। अन्नापः ভো দ্বিগুণৈ জৈ: শুভাবহ শত্রসু এব নৰবান্ধ শিষ্যতে। কিন্ লগ্ন দণ্ড নিত দণ্ড সম্মিছ: পুকরোণ্ড वास्त्र द्रिक्तिक्षु मन्त्रतः ॥ छिष-রা বালু হা নিয়া ভ্রম মেওদ্বি নির্দে छ। बि: भाग नर्जुमा मीर्चा यव मस्य दृष्टकार्थः ॥ छथः उपक् स्वनः শ্চমণাকার প্রথেব চ। ছিমে: जि-(मा गर्थ) जिल्ला याजनाछ ष्ठद्याथः । जिलाय जनामानी ह वृक्तानाची ভথা পরঃ। গজল্ঞাভূতি কৈবো পদুগঃ প'রকীর্ভিতাঃ॥ বাস্ত খণ্ডে व्यापादा (स्या ख्याबिवक्रीय: । চতুরসুঃ শৃতো দীঘ তল্য: প্রান্ত: স मां मुख: ॥ (मारेष विशेष) विरक्त যো বাস্তু খণ্ড: সুখাবছ:। ইতি यु किकन्न ब्रह्मी बाजुगु जिः॥ 🗱 ।' उज कानिर्वाः। विमास भावनाया गार्ग काजून कार्जिकाः। मुनुभुखा गृशायस्य भज्ञी भुध मम् द्वाराः ॥ म् ন্ত্ৰপঞ্চ ভবেৎ সৌথ্য কৃষ্ণে চ ভব (४ ७१९। आफिडा (जीम दर्जिन्न गर्व वाजाः मृञावशाः ॥ उथानाव । প्रिंगाम्। क्षेमी वावट भ्रवामं। वर्द्धारम्गृहः। উত্তরাস্যান मही उ नवनप्राप्ति ठजूफंमी॰ ॥ व्यनावानप्रा-द्वेभी यावट शिक्सामा विवर्क (यट । नवमहािक छथा यामहः यावट শূল চতদশী ।। বজু ব্যাঘাত শ্লে চ ব্যতীপাতাতিগণ্ডযো:। বিষ্কস্ত গপুংগা শৈচৰ গৃহারস্ত্রা ন কারষেৎ ।। আদিত্যদ্ব রোহিণী মৃগশিরে। ক্ষ্যেষ্ঠা ধনিষ্ঠোত্তরা রেবত্যাথ ম-ঘানুরাধ হরিভি: শুজি: শভাবাদি-ভিঃ। সৌন্যানা দিবসে হথ পাপ-র হ**তে যোগে** বিহিক্তে ভি**থৌ বি-**छि छ। छ दिन वह छि सूनर्या (व भ्या-पि कार्याः **मूजः॥ म**ूनाश्रुवाराश्र । हन्मुरिका दल॰ लक्षा लग्न॰ मृड नित्रीकिष्ठः। उत्साहु।यामि कर्जन्र नग्रव जू विरब्हिं एए ॥ अश्विनी রোহিণী মূল মূত্তরাত্রয় निमहरः। याि ईसानुतावा চ वास्कर्माि শস্তে ।। তথাচ । ত্রিভি ব্রিভি বেশ্মনি কৃত্তিকাদৈয়ে রশেষ পুঞাপ্তি ধনানি শোকাঃ। শত্রো ভ্রণ রাজ ভয়ঞ্চ মৃত্যু: মৃথ পুরাসক্ষ নব পু-(जनाः ॥ नामानमान्त्र मकत्रानि জলীর লগ্নে নেষে ধটে ধনুবি কর্মান मू ही घमूब । कन्। वास विश्नतक

भुतंमर्थ नाजा ज्याजिर्दिनः कनम निः इ वृरवषु वृष्तिः ॥ नाः १ दर्क वजु সম্পাতঃ কোষহানিক শীতগৌ। মৃত্যু রসুন্ধরাপুত্রে চন্দুজে শুভ স म्मरः ॥ जीत्व धर्मार्थ कामाण मृ ভোৎপত্তিস্ত ভার্গবে শনৈক্ষরে তু-मात्रिमु : ताहावज्ञः भुवर्ख्उ ॥ # ॥ व्यथ भुरवणकानः । मुक्ति र्वारण क्निनुरेग बिंधनरैगः भारेभ जिवशा-यरैगः र्या कन्तु गाउ २ थ वा मुत्र खहो रिएउर প्राः १ शि वा। नदादसु ফল পুসিদ্ধি কদ্যেরাশৌচ ভরু: শুভে মুগাম্য ছিরতোদ্যে চ ভ-वन कार्याः भुरवरमानि वा ॥ भो-ষ্ণে ধনিষ্ঠা অথ বাকণেৰু স্বাৰম্ভ বৰ্জে विषु (ठाखदायु । जकी गठतमु भू छ বাসরে চ তথা বিরিক্তে চ গৃহপুবে-শঃ॥ ভিথি র্বার্ক লগ্নাদি সমা-द्रास्य यथा दिन । भुरतामि गृह म्रात् उथा (क्रांठिदिस्। बनाः ।। #।। व्यथ हात्रः। देनकहात्रः वास्त খ গুণন চতুর্দার মারভেৎ। একদ্বার দুংশারণ চত্রারণ দ্রাবরণ।। তিদ্বার লেব নৃপতে ব্ৰাস্ত ক্ৰা পুলস্যতে। দ্বে মূথ্যে ভত্ত চান্যৎ স্যাদমুখ্য মি-তি নিৰ্ণশঃ ৷৷ রাজদারস্ত ভবৈকে৷ য-ন্দার তথা পর:। অপদার তথা-

न् अादि । वात्र निर्वरः वुका का जिय रिष्णानाः भा छनक् भः क्टिंगः क्यार । मूथ्यावाद मिक ণস্য পর তস্যাপি দক্ষিণে॥ বল বদৈ বৈরিম্থ্য দার মিত্যয় সম্ ত । রাজ্বারে ২ন্য ভূপানা । শি ष्ट्रीनाषा भूरवन्तरय् ॥ याजा नुमार পर्वाणि রাজভারেষ্ কার্যেৎ। यम-घात्र ছिनाकर्य विचलाक भूरामन ॥ निः नाद्रभः मृजानाक् म्क्टे नाक्षि वक्तनः। शश्चारत श्वाताध्या गम् নাগমন কিয়া।।রাজে বিলাস যাত্রা ठ मर्ग ऋनः अत्वानन । अः। यथः পুচি,রনির্ণা:। গরৈ রভেন্যা ন্নু-हित्र बन्द्राः शुक्ति व थला म्यह **खंदिसा बाजम धाम जाः मर्खि शु**ष्टीः द्राः পृथिवी जूरः । दिः मा छ । ए ज् नकारम् नार्यायाः शक नक ह॥ न न्हार भक्ष ह विष्क्रियाः शुहिबाः পৃথিবীভূজ: ৷৷ সর্বপুত্তে ত্বাব্রণো নান পাগীর উচ্যতে ।। পুতিপুকার স'স্থান দ্বার নাভিনুথস্থিত । তত্র জ্যাখ্যস্য দীর্ঘস্য বাসুখ্রস্য निर्गरः। उদ्यथा। त्राकह्मास्त्र गध রাজঘারে মহীপতে:। রাজদণ্ড ত্থে সাৰ্দ্ধ জমদারে পুতিষ্ঠিতা:॥ অদ্ব त्र त्राजम् अप्ति भूगिताः भृषिपी

পতে:। এবং ব্যবস্থিতে স্থানে নধ্য মে ভদ্ধি ভিষ্ঠতি ॥ রাজছুপ্র দ্বন जार्क भाषात्म अववाखनि। भद्रिगा-হে পঞ্চ রাজদণ্ডা ডি ছত্তি মধ্যত:॥ রাজপউাভিধানেন স্থান মেভ্রমি-গদ্যতে। অমিন্ গৃহ॰ নৃপঃ কৃর। जूित ज्थमभू उ ॥ जङ्गान ८ पञ्चा द्वां का यो २नाव गृह न'त ভেৎ। সো চিরাৎ মৃত্যু মাণ্যা-তি রোগ শোক ভয় তথা ॥ খন मत्थामयमत्थे त्वनाश्व क्राध्रवः । (य চানে) वास्त (नायाः मुाः ছ নে দোষাশ্চ যে পুন: ॥ ন স্পৃশ্যতে त्राक्रभ छे रिष्ठः गरेर्भ र्गक्रा यथा। षिखनामि द्राउ। रिश महार जना-क्ष्यामि वास्तु ॥ ब्राबह्य मिछ (भावः भागीत छन भाषको। 🕸। व्यथ जगायात्रा ह छुत्र मुना वास्रथ छ निर्गयः ॥ त्राजवादा विश्वाकातं त्रा-कह्ञाड्य नजाः। यमवाय नार्क द्राजह्ञास्त्रह (य नृशाः ॥ व्यक्तात्र রাজদণ্ড জিভা আরম্ভিভাঃপুন:। व्यक्षात ज्लाउ खमा त्राक्षकरा-স্তার।। এব॰ ব্যবস্থিতে স্থানে মধ্য-भ उर शुक्रणाउ । यायाव द्राक ह्ञानि চত্ত্বারি পরিণাহ उ:। রাজ-इत्यक नातन ब्राह्म ७ उत्तर्हः।

व्यरक मधामा जागा वाखा र्जव-**डि म्याजनः ॥ अस्मिन् गृहः नृशः** কৃত্বা স্চির॰ পাতি মেদিনী। অ-श्चिन विवय वृक्षिक (भीचारक गमवा-পু गए ॥ या द्राङ्गा म् सुर्छा १नाव विन्याद्रञ्चः मनाहरद्र । य উব्জा व्राजनत्थायः जरमामः सान भक्षकः ॥ গজো ব্যাঘুক্ত সিংহক্ত মৃগো ভ্-(क्) दथा कम्। मिः ह मिः श्रमनः श्रानः वर्राष्ट्र महाद मनितः व्र ॥ गांक याजानयः अर्याए मृत्य किनि निक्छन । जुमात्र २ छः भूत्र ষर্যাৎ ক্রমণ পৃথিবীপতেঃ।। তেন मधास्य मिः शामन भीर्यमा हजूः রসুকৈ:। তত্র ভবিষ্যোভরে। মে: यापि हान्तु काउम्। नृशाखः मु। इन् क्रमार । हामरेगव गृहान् दक्कि खिवा॰ वक्का मगुङ: ॥ जुनन्तः जः र्बर्जान्यु। न्या नान्तीमूथ खवा । वितारण विवासण विकरण वि-भन उथा।। त्रकः (किन जीरा वीता षाम्देगाउ श्रीबिंगः : क्षा अरिष्याः वक्षानि। यष्ट्रेव्हराष्ट्रां मान॰ **७म**ऽ (७रेनव वन्नना । द्राङ्कः श्रह्छः मिक्छ भीर्ष मर्बंब निःक्षिरण्य।। व्यागात्मन मृन्तवः महार व्राहरिख **म्ह शक्**डिः। পরিণাহে চতুর্ভি**म्ह**

वाब रेखः भुजिधितः॥ व्यम्याधि দেবতা ভৌনো রক্ষতীদ বসুন্ধরা ৷ দ্বারাণি বিংশতি শ্চাস্য ত্রক্ত চিত্রাবৃতানি চ ॥ রক্তপ্টাবৃতো গেহ: সকলার্থ পুসাধক:। অত্র श्चिषा नहीलानः সুচির॰ পাতি (मिनिने।। मीर्ध ८) भुद्ध ४० इंडि जुन्दतः ॥ 🗱 ॥ (द्यो त्राक्रस्याया-याम भित्रभाष्ट्र उरिषद ह। इंडाउर-नर्बाजमुः भुक् भागाविषयका ॥ मानवा ब्रक्किकारैकव भूकता एउ ठाज यञ्जः। ठजुर्चनाम् । हात्रानि কৃষ্ণ চিত্রাবৃত্তানি চ।। পীতপ্ট। বৃতো ছেৰ সর্বানিষ্টবিনাশনঃ। অ ত্ৰ ছিত্বা মহীপাল: সৰ্বান্ শত্ন্ निक्षि । भीर्यः २३। शुक्र-२०। ইতি সর্বতোভদু:॥#॥ অপ্তকোণো ভবেন্ডব্য: কোণো হস্ত চতুষ্টব:। ब्राक्ष एउ। वार्थ । तुष्मा मा । शि (एवडा।। दक्षका यमवन्धामः) भू-क्या एउड भुगद्भ उ:। जाक्षी घात्राणि চাস্য স্থা: পীত চিত্রাবৃত্তানি চ।। পীতপ্টাবৃতোহেষ সর্বানিষ্টবি-নাশন:। অত্র স্থাতা ক্ষিতিগতি ন রিষ্টেরবমৃদ্যতে।। রাজদণ্ডো ভবে-फीर्चः भुनात त्राजरुखकः। त्राज হত্তে রাজহত্তে পুকোধান্ তত্র কার- 🛭

(यट ॥ अयः मान्सीमुख्या नाम हन्तु काम्याधिरहरका । नक्कवरणाकः প্জ্যো হত্ত স যুমাদস্য রক্ষক:॥ দ্বাবি•শতিস্তদ্বারাণিদীর্ঘেদশ তথা स्रात । व्यन् व नीर्घ वकः नार शुः সরে এক নেব চ।। দীর্ঘ দ্বিত্তযে দৃশ দ্বারাণি পুসর দ্বিত্যে এক কৃত্বা দ্বিত্তমণ এবং ২২ দ্বারাণি ॥ শূক্ল চি ত্রেণ সহিত: শূল্লপটেন শোভিত:। गर्बार्थ जाशका द्राङ्धाः नम्त्री विक्रः यवर्षानः ॥ भीर्धः ১১ भुष्टः २०। इंडि नान्तीमुथः ॥ 🗱 ॥ भीर्घ ज्या द्वाज হস্তা: পুসরে দ্বৌ পুতি ছিতৌ। বি-নোদ এম দারাণি ত্রিশংকো ধদ্ব ভবেৎ।। রক্তচিত্রেণ চিত্রাঙ্গো রক্ত বস্ত্রেপেগৃহিত:। অত্র স্থাতা নর-পতি ভৰে কীৰ্ত্তি পুভাপবান্॥ भूबी। शिरुव उभा हामा **द्रक्षकाः ग**कः व गुराः॥ नीर्यः ७७ भुद्रः २०॥ 🗱॥ मीर्खन ब्राह्मर खार्क भुमाब ब्राह्म **হত্ত**কী। বিলাস এষ দ্বারাণি চত্ত্বী-जिः मन्त्र विष्टुः ॥ शक्तर्व। क्रक्रकाः শ্চাষ্য পুকোষ্ঠত্রিত্য• ভবেৎ I চিত্রণঘোন শান্ত্রন চিত্রবস্ত্রেণ শো-ভिजः॥ দর্ভিক্ষাননো হোষ শস্য সম্পত্তিকারক:। তত্র স্থিত্বা নর-পজি পুচ্র সুথমশুতে ॥ দীর্ঘ

৫> পুস্থ ২০। ইতি বিলাসগৃহণ ॥ 🕬 । बांदणह्लाः भुगत्र दीर्घ (ह्री রাজহন্তকৌ কথিতৌ। বিশ্বয়ে দ্বাদ-ण ভবन द्वाद्राणि मुर्ह्वर भुद्रानावा। সূর্য্যোধিদেবভা চাস্য রক্ষভীন• বি-रुद्रवाद्। व्यक्गास्त्राज विवाद्या অৰুণাম্ব ভূষিত: ॥ তত্ৰ স্থিত। নরপতি: কৃৎসা॰ শান্তি বসুন্ধরা॰। रीर्घ २) भुइ १२॥ 🕸॥ व्यावात्म बाबम्(छो ह्यो नुमत्व बाबम्छकः। শতদ্বারোপসহিতঃ পুকোষ্টে র্দশ-ভি যু ত: !! দিক্পালা রক্ষকাশ্চাস্য क्ष काम्याविष्ट्रवा । नानावर्णन চিত্রেণ বসনেন বিভূষিতঃ।। অত্র স্থি-ত্বা নরপতিঃ সুচির সুথ মশুতে। যমিনুজেঃ প্তিষ্ঠেত বিমলো গৃহ गउमः ॥ पूर्जिकः नाव कार्यञ (न-ख्या वह विश्वतः। न द्यारगा नाशि **भाकक रे**नवाट्या ७ ७ ए ४ थ।।। ইত্যাদি গুণ বাহুল্য মন্যত্র কথিত • बुरिशः। भीर्यः २०० जुङ् २००॥ #॥ আ্যান পরিস্থানভ্যাণ রাজ্ঞ: বো-ডশ হস্তকঃ। দ্বানি ষোডশৈবাস্য **७**क् त्रम्याधित्मवङा ॥ त्रीक्षका (मः বতা চাস্য শুদ্ধুইত্রে বিভূষণ । অত্র স্থিত। নর গতিঃ সর্বার্থান্ ভুবি সা ष्यद्या पीर्च : १ गुइ : १५ । इंडि

त्रकः ॥ 🕏 ॥ व्यायास्य त्राव्यम् ७: न्। भूभाव ए उनक्रकः। एम भु-কোষ্ঠা দারাণি শনি রস্যাবিদেবতা ॥ शिणाठा द्रक्षका भ्हामा नीवावञ्चाः দিভ্ষণ। নানায়ণ কেলি রাখ্যাতো ভব রোগ বিনাশন: 11 অত্র স্থিত্বা নরপতি: সুথ বিজয়তে রিপুন্। मीर्घ >०० भुष्ठ ६० ॥ 🕸 ॥ त्राज-क्रिन (कान: महास्व किन क जुर्मन । ठजुर्म रेगव बाद्रानि द्वाङ् त्रम्याधिरम्यञा ॥ नक्तक्षत्रा त्रक्षका-स्त नानावर्णाम्रवाहिकः। व्ययः कयः পুক্টিত: সর্ব তৈব জ্পপুদ:।। আ-यात्व द्राडहरुः ज्याद भद्रिगाह-ष्ट्रे रुखकः । नाना क्लः घटी क्ला वीतानाम जयभुमः।। वृक्ष्णि वितन् ভাস্য রক্ষকা শ্চাস্য থেচরা:। বি-চিত্ৰব্যনোপেতঃ সৰ্বকামাৰ্থ দায্-कः ॥ नीर्घः ১) भुष्टः ৮। ইতি वीतः ।। 🗱 ।। (य। यम् । गिर्डा वर्ग ख्या भाइमिद्राभिष्ठ। द्रावश्या खर्द भः क ठामद्राः मुर्ग्यशिज्काः॥ ठल्माः পি দর্পণে হস্ত উপরি ক্রমতো ন্য-সেৎ।পতাকা খুজ যুক্তা চ গৃহ রক্ষ-করক্ষা।।। ছ এযুক্ত। গৃহ। রাজ্ঞা। विष्क्षिगः চক्रवर्खिनोः । अधाः निय-भः भन्नवर । इंडि धारणिहरानि

গৃহাণা কথিতানি বৈ। বিন্বৈগ্তা नि न्পि ग्रावसु मनाहाद्र ॥ ইতি সি॰হাসন স্থান মিতি রাষ্ট্রস্য মস্তক। ইতোন্যে চিত্তহর্ষার্থা: প্রা-जाराः পृथिवीजूङः ॥ जनग**ञा**रः (या (यत्न) (ज्याः नास्ति विनिम्हयः। স্বজন গেহ সংস্থো যো নৃপতি: শুভ চেত্র: ৷৷ স চির পৃথিবী শাস্তি नदार्थान् नाध्यज्ञान । या वा उट পর গেহস্তো দুর্মোহাৎ ধরণীপ-তি:।। ন চির• পাতি বসুধা• ঘোর• রোগঞ্ বিন্দতি। খলগুপতি মি-बन्ध गृह्वादा न पूर्व जि ॥ 🗱 ॥ পর্ঞ। হীরকস্য বিশুদ্ধস্য বুক্ষ काउ र्यशान्। अर्योक् न्यर्भः भावित वमर्जा मीखिमहिथाः॥ गृ-হাণ্ডে ধার্যেদ্রাজা ভদ্বজু বজু বা-त्रगः। वाध्माखा गृह्यू मणि विनागामा विष्ठाया नव मध्य । विणुक्तशिवकन्यास्या विषयः अर नाभित्र ॥ (उन मर्वाणि न**म**)श्वि অরিষ্টানি মহী ভূজাং। ভোজোপি। वाऋथः । श्रुक्तः मार यथारेथं नामि छि: यरिकः। यम बादार मना-ব্লভ্য যাবদদার মিষ্যতে॥ তন্ম্থা । মৃত্যু র্ভথঃ স্থির শ্চপ্তে। ধনা বিভব এব চ। दी द खालक इंडाइंडी वास

ভাগা यथाक्रम ।। यम देनसंख ভোষে: म वायु यत्कम मक्रद्राः। ईत्नु । वङ्गि রিতি পোক্তা বিভাগানা মধী শরাঃ ।। म्राज्यो कात्रालयः अर्थ्या । खरङ्ग নেচ পত্তথ:। স্থিরে সহচরান্র-क्ष्ट हा वाकि श्रकाम्यः॥ श्रा थान। दिक दिक्द विख्य कार्य রক্ষণ । রাজপটে ভবেদ্বীরো তা পে कन्धिमदालयः ॥ भुाष्टीद्र भुष्टि ভাগান্তে ইতি ভোজন্য সমত ৷ ইতি যুক্তিকল্পতরৌ রাজগৃহযুক্তি: ॥ 🗱 ॥ वास्त्र भारतन नियरना गृह भारतन निर्णयः। छज वास्त श्रव नः क्रगः॥ भ्रद्वित्रावा वृष्किकात्रा धनम-শ্চোত্তর প্লবঃ। দক্ষিণো মৃত্যুদো वास्त्र र्षान्श शन्त्रमञ्जयः॥ त्वात রেথাছ্য কৃত্বা নধ্যে রেথাছ্য তথা। ঐশান কোণতো রেখা ह-किगोरि पुंका ख्या।। नाजामात्रा নামণিত নাপতাকাপি নাগৃতঃ। না ऋञ्चामि नाविज्ञाताना हिट्या नाजि-**हिब्रुक्।। नाजु**हहा नाजिनीहा वा ना भुकीर्ग भुकीर्गकः। ना शाजू नी गवाक्ष क नेटिकात्नक बात जाक्॥ निगमास महीन्त्राभाः महंगलिख द्डात । इंडि ब्राइग्इवृक्तिः ।। # II चारन)वाख रथा वाख मारनन नियमः

া৷ ধুজো খুম তথা সিংহ: খা ব্ৰো গৰ্দভো গঙ্কঃ।কা ফ ইত্যেষ গদিভো वास सानमा निर्णाः ॥ जागुणा मूथ मम्मेखि यूग्नक विभागमारः। এव মন্ত্ৰাপি ৷৷ খুলে বিভূতি বিপদ্স ध्य जि॰ इ विद्यागः मूनि जर्बनाः भः। বৃষে সুথ॰ গৰ্দ ভডো বিনাশো গজে ধন• কাকপদে চ মৃত্যুঃ ৷৷কোণ-রেখা কোণশুচি: সুথ সম্পত্তি না-**मिनी। পূर्ब পশ্চিমতো দণ্ড উদ্যা** খ্যঃ সুথাবছঃ ॥ দক্ষিণোত্তরতো দ (७) वं महा यमन ७कः। गृहानि शाः उरयक्षीमारनयाः मञ्जर्याञ्चरत्र॥सः॥ क्रा (इम्ब्रिंग नाना (वह मिन् পশ্চিমে। তিসু শ্চেৎ পূর্বতো হীনা क जुः नालः मुथावश्या भक्तिमानाः ধ্রে বেশ্ম সিংহে তুর্মুখ শুভ। भूबीलयः वृत्र स्थात मिक्या जिसूयः गाज।। भरावाउः भद्रिथावाउः भथा षाउ खरेश्व ह। खनाराया वृक्षामा-(वा (नावा इंटिं)व मान्यः॥ शहुं छा॰ भरजालमा भूवन यहि विनामि। পদাঘাতো নাম দোষঃ পুত্ৰ পৌত্ৰ थनागरः ॥ भित्रिथाम अया चाउ बाह्यताः भुजिष्विन्यताः । भित्रिधा यात्जा नाम (नायः अन नीर्य) वनानः रः॥ পথাঘাতো नान (नाव जाघा- তো বাস্তনঃ পথ:। স হন্তি ভোগ• यः मथः जमः (छम भजः मृत्।। এकः भार्गः मुथः अर्गाट हिनयः अन-वर्षानः। जिलयः ज्ञानाभाय मर्जना-न म्हजूञ्चत्य ॥ यवाष्ट्रा॰ भव्रवाष्ट्रा-र य खिष्ठि जनामयः। उप्पारमा बन्दायः न्याद्य इति भन्नभारः ।। अबि मान जूरिय वर्ग्य मृजूरक्षण छ-यागयाः। এতে कवानाय पायाः शूर्वापि पिक्ष्**ठ क्यार ॥ श्रा य**वा स वृक्षाञा (दायः स्व मण्या नामनः । वर्द्धायट भूईए। १ यथ १ क्ष দক্ষিণত স্তথা।।ঐশান্যা• রক্তপুস্ন-क व्याद्मया की त्रिन ख्या। यञ ভত্র স্থিতা বৃক্ষা বিল্ব দাডিন কেশ-ताः ॥ शनमा नात्रिकना ग्रह मू छ । स-र्वां अनिष्ठयः। निष्णा नीली अलाष्य শ্চ চিঞ্চাখে তাপরাজিতা ৷৷ কোবি-मात्रफ नर्बज नर्बः निष्ठि मञ्जलः । 🗱। গৃহপাতন নিম্নন্তি নাগস্য यगत क्या । भ्रापिष् भित्रः কৃত্বা নাগঃ শেতে বিভি জ্রিভিঃ॥ ভাদাদৈ ধানপাৰ্খন ভস্য ক্লোডে गृरु मुख् । उब भुगाग । चामि ছন্ত পুমাণেন জ্যেষ্ঠপত্নীকরেণ বা। **गृहा** अञ्चत्र अप्यानः नाभायम् जिखा नवः ॥ 🕸 ॥ ७७ मामान्। नक्षः ।

গৃহ ভূমি সমাহত পিওপদ বসু-लाहने तकु गरेक र्खनिङ । त्रवि ভ্ধর ত্রিংশথ যোগ হৃত ভবনায ব্যয় স্থিতি স্বাহ্মপদ• ॥ একাশীতি গুণে হস্তে দ্বিবাণৈক হতে চ তে। ষডিন্দুগ্র্ম সম্ভক্তে পিণ্ড: স্যাৎ স র্বেশ্মন:।। তত্ম্থা। ধূজাদি গেহ न छात गृहगान गूजावरु मीर्च जानूः भन्नीगारक् मछ रिवा-कृ निषय ।। ইम॰ পূ এ ফল॰ (गइ॰ व्यञ्चात भू। शिक्ष । मीर्घ यह পুসরে পঞ্চতসো হঙ্গুলযো হপি চ ॥ ইদ॰ পুত্র ফল• গেহ॰ গজস্থা-त भूकी खिंड। मीर्घ वर्यामण ज् काञ्चयरेकक विष्मिजिः ॥ शुप्रात ক্ষৌ সুধ ফল• গজস্থানে গৃহ• বি-দুঃ। ইতি বাংশক প্রোক্তণ গৃহা-ণা সর্স নত ।।এব গৃহ সমাচর্য गृरुष्ट: मुं ज भिह्न जि । 🕸 । (जा बस्र । আয়ান পরিণাহাভ্যা থো ২ক্ষ-পিণ্ডো বিজায়তে। যেন কেনাপি চात्क्रन (भाधनीयः म इवाउ ॥ এক দ্বি পঞ্চ সপ্তানি শুভান্যন্যানি চান্যথা। আয়ান পরিণাহাভ্যা॰ मार्ख द्वारण इउकः॥ এउनु गङ्गः নাম গৃহ পুথ বিবর্জন । আঘান পরিণাহাভ্যা॰ সার্দ্ধ হন্ত চতুর্দশ

।। ইদ কনলক নাম গৃহ সম্পত্তি: কারক। আযাম পরিণাহাভ্যা। गार्ष रखास (वाउमा। हेम रहि मः र्दाडाडमु॰ सामिनः সুথकात्रकः। আ্যাম পরিণাহাভ্যা• সার্দ্ধাষ্টাদ• **म २७क॰ ॥ कण्यान नाम (वर्ण्याह॰** धन धाना मूर्यभुद्र । आयाम भद्रि-ণাহাভ্যা॰ সার্চ্চবি:শতি হস্তক।।। ইদ ছে সুখদ নাম ভর্: সূখ বিব-र्कान । मया यहिन मूक्ति है गृह भ-ঞ্জ মজ্ত ।। ন তেয়ু স্থান নিয়নঃ मर्खिष्युजीनि कात्ररष्ट् । স্থानः मा-नक (नाषाक (य (भाकास नया ক্রমাৎ।। তদ্বিচার্য্যগৃহ• কৃত্বা গৃহস্থ: সুথ মশুতে। অজ্ঞানাদ্থ মোহায়। (यान्यया गृष्ट् भावत्त्र ॥ न विवीदः তি নশ্যেত তস্যকীর্ত্তি: হল বল ' ॥ 🗱॥ भाजीवागाः न नियसा गृहः ञ्चानाक विम्राउ।यथा वास यथा मिकि भाषीद्रानुहरयम्गृशी ॥ गृशः त्रात्था यथा न महार छथा भाषीत কল্পনা। ইতি যুক্তিকল্লভরৌ গৃহ-यूकिः ॥ 🗱 ॥ 🗱 ॥ व्यथ वास्त्रगण भूगानः। लिक् । ठज्ःविष्ठे भरः বাস্ত সৰ্বদেব গৃহ• পুতি।একাশীতি भर· वास भान्य· भुठि मिषिर· ।। অগুতঃ শোৰ্যেছান্তভ্নি॰ যুস্

भूरद्वापिडाः । हजूईछः विश्खः वा কলান্ত বাপি শোধ্য চ।। সুসমঞ छना क्वा जनाईन छाउ। ভবে<u>। भू</u>-রোদিতা• ব্রাহ্মণাদি ভেদেন পুশস্ত ব্বেনাপপাদিতা•॥ৠ।তথাচনৎ-স্যপুরাণ । জরত্নি মাত্রে গর্ভে বৈ অনুলিপ্তেচ সর্ল: । ঘৃত্যামশরা-वञ् क्वा वर्खि ठ वृष्टेय ।। क्वामाय ब् भवीकार्थ भूबं छट मर्ब मिणाय । मीखा भूबां नि गृङ्गीयार वाख्ना म-नुभूई मः ॥ वास्तः ममृष्टिका नाम मीभाराज नर्बराजा कि यः। म् जरः नर्ब वर्गानाः भागापिषु गृत्वषु ।। वास्त কৰু ররত্নি মাত্রে গর্ত্তে তত্তৈব হ। পিতে আম শরাবে পূর্বাদি ক্রমেণ वर्खि ठज्डेय॰ क्वा गवाघ्राजनाभूया वर्षि हजुडेय॰ भुड़ान(यर। एव भुा-চ্যা• দীপ শিখাযা উজ্জ্বলত্বে ভদ্বা-স্ত ব্ৰাহ্মণস্য পূশন্ত । এব দক্ষিণা দি দিশি শিখাযা তথাত্বে ক্ষত্রিযা (रः। সর্বশিখা সমত্বে সর্বর্ণানা স বাস্তদেশ: পুশস্ত:। জলান্ত মিতি তু মৎস্যপুরাণ পরিভাষিত পুা जार भवः॥ #॥ ज्या ह माट्रा পু ক্ষাধঃ স্থিত শল্য ন গৃহে দো-यह • जत्र भागाम (मायह • मन्)• ভবেদ্যাবজ্ঞলান্তিক ॥ প্রাসাদ ভ

वनापीनाः निरवंभः विख्वाहरः। य-र्याए किन विशासन कण वार्ख सना ङ् उ: ॥ इंडाअकमा वानाभीनामः जिधानामानि अमा ८ क्लाम्या गृश् (छ। भागापिश्वात्व (भव ना। क्ष বাপীষু চৈব হি। ইত্যভিধানা ক্-পাদাবপি।।ঞা।বাস্তপুক্ষক।কশ্য পস্য গৃহিণী ভু সি·হিকারাহু বাস্ত उन्या वजीडनट। भूबं जा र त्र निक् खक्त्रादा रेमवरेख द्रदहाका नि**পा**खि-তঃ॥ৠতথা। চৈত্রে ব্যাধি মবাপ্নোः তি যো গৃহ• কার্যেনর:। বৈশাথে धन तज्ञानि किर्छ मृज्र मवा श्रू या ८।। আষাঢে ভূত্যরত্নানি পশুবর্জ্জ মবা-পুযাৎ। শাুবণে মিত্রলাভস্ত হানি र्जानृश्राम उथा।। चाश्रित भन्नीनाणः স্যাৎ কাৰ্ত্তিকে ধনধান্যক । মার্গ-শীর্ষে তথা ভক্ত পৌষে তক্ষরতো ভয়ণ ৷৷ মাঘে চাগ্নি ভয় বিদ্যাৎ কা-क्षनः कालुतं मु जान्। मुद्रभाकः छ-বেৎ সৌখ্য কৃষ্ণে তক্ষরতো ভ্রমণ।। অশ্বিনী রোহিণী মূল নুত্তরাত্রয নৈ-नत्व । या जी इसान् वाथा ह गृशात-য়ে পুশস্যতে॥ আদিত্য ভৌন ব-ब्ह्यं छ मर्बि वाजाः मु डावहाः। वजुः ব্যাঘাত শলে চ ব্যতীপাতাতিগণ্ড-যো:।। বিষয় গণ্ডপরিষ বজ্জ'• সর্ব

যোগেষু কারযেৎ। খেত মৈত্রেয গা ऋर्विवं जिल्हे हिंग १ न ।। उथा বিষয় সাবিত্তে মুহুর্তে গৃহনারভেৎ । हन्मु। दिउ। वनः मग्नः उथा मुङ নিরীক্ষিত ॥ প্রাসাদে প্যেব মেব স্যাৎ কুপ বাপী যু চৈব হি। ঐন্দৰ॰ भृगिनदः॥ ॥ भृश्र्डं मध्र्छः। (द्रोष्टः त्थं उक्त रेभावय खवा मानकरे: मृजः । जाविज्ञक जयसक गाम्नर्वः स्ट ज खथा।। (दोहिनक विदिक्षिक विज-(या निर्श्व खर्था। मार्क्टन्तु बरूप-ৈচৰ বট: পঞ্চশ সূতা:।। তেন দ্বি গীয তৃতীৰ সপ্তৰাষ্ট্ৰন নৰ্বনৈকা-मम পঞ্চনাৰ্যতম মৃহূর্ত্তে খেতাদৌ वाञ्च कर्ण कर्गाट । हिजाहि कन्छ নরগৃহে দেবগৃহে তু পুতিষ্ঠাকাল ব-শাৎতৎকাল পরিগুহ:॥ৠ। তথা **ठ क्लउद्यो (एवी भूत्रांगः) यम्। (एव-**স্য য: কাল: পুতিষ্ঠা ধৃত্র রোপণে । गर्डाभूत्रणिवान्यासम्बद्धम् उम्र भूकिउ: ॥ यम्र (म्यम्र भुकिश्व) धृक রোপণে यः कालः गुভर उम्र गर्छा-भ्द्रभिवानप्रास्य गृश्वाद्यस्य य कावः প্ৰিড ইভি॥ #॥ পুভিষ্ঠা কালক भाषात्रा हिटा वा कालूब वाणि किर्राप्त वा भाषाय उथा। भाषा वा अर्दादवानाः शुं छिश मू छन। छत्यः।। পুগপ্য পক্ষণ শুভণ শুল্ল নতীতে চো-ত্তরাযণে। পঞ্চনী চ দ্বিতীযা চ তৃ-তীবা সপ্তমী তথা।। দশন্মী গৌর্ণ-नामी ह उथा (मुक्षा जत्मारणी। व्यामू भुजिश्वा विविवद क्ञा वञ् ফলা ভবেৎ ॥ পুতিষ্ঠাসমূহযে। মাঘে বা ফাল্লুনে বাপি চৈত্ৰ বৈশা-थाया द्रिणारेकाश्चायाकृत्या द्वालि পুতিষ্ঠা শুভদা ভবেৎ ॥ कन्न उद्गी দেবী পুরাণ। মহিষাসুর হন্ত্র্যাণ্ড প্রভিষ্ঠা দক্ষিণাযনে।#। জ্যোভিষে । গুরো ভূগো রস্ত বাল্যে বার্দ্ধকে मि॰इरम खरहो। छर्दा मिर्छ। मणा-ছে ত্বক্রি জীবাষ্টবিংশকে॥ পূর্ব রাশাবনাযাভাতিচারি গুরু বৎস-রে। পাগু।শিগন্ত জীবস্য চাভিচারে ব্রিপক্ষকে॥ কম্পাদ্যভূত মপ্তাহে नीहरञ्जा भिल्म हि। (श्रीवाधिक চতুর্ঘাসে চরণাঙ্কিতবর্ষণে ॥ একে-नाङ्गा रेष्ठकित्व विजीयन विनद्धरा। ত্তীযেন তু সপ্তাহে মাঙ্গল্যানি বি-वर्ब्बायरा। वृजात्र अ नु विषष्ठ गृही-রম্ভ পুবেশনে। পুতিষ্ঠারম্ভণে দেব क्षारिः भत्रिवर्द्धस्य।। अ।। सृजि-সাগরে। উল্লাপাতে চ ভ্রুম্পে অ-कालवर्ष गिष्किं छ। वजुरकजून न भारत गुरुत हन्तु म्यंत्राः॥ भूराः

ণয় ভ্যাহ্রেৎ শ্দু: সপ্তরাত্র মতঃপর । वाकनः कविरग रिका खास कर्म विद्राजक ॥ भू मु स जुन दिक द्राबः उठः कर्य नगाऽद्रः । भद्रा-**भतः। शु**षाण मध्यावस वित्रावः বুতবন্ধনে । এলবারণ পরিত্যদ্ধ্য व्यग्रीट भागिगृहः गुरह ॥ #॥ न भारतीया । नवगुर नथः क्षा **७७: कर्य म**नाहाद्वर । यनाथा कन-मः भू जा न काना जाया कि कि ।। নব্যবর্জনান ধৃত ব্চন । পিতৃভ্যো वृष्कारय वृक्षिणाष्त्रः मञ्जा अम्बिनः। ক্র ভূত বলি ঞেব সংপ্রা বাস্ত प्तवजाः ॥ अक्षित्न वास्त्रगान कृ হোৎসর্গথো: করণে সক্দেব বৃদ্ধি मुाष्त्रः क्रव्रीयः। ग्रन्नः कियमारा ज्ञाक्छाः পूषा मक्र। मक्रमव ज्य मान्त मामि न श्थगानियु॥ इिंड इल्लागभित्रभिष्ठाट ॥ 🗱 ॥ নাৎস্যে। উহাপোহার্থ তত্ত্বজ্ঞো वाज्यभाग्रम्। भावभः। भागर्यप्रक ভবেষিত্য সর্বদা দোষ বর্জ্জিত:॥ प्रवीन्त्राणः। भागापः **ए एक्:यश्चितः** কাদ্মীতি পদ গৃহে। চতুর শীকৃতে ক্ষেত্রে চাপ্টধা নবধা ক্তে॥ কোণে রেখা স্ততো দত্ত্বা নব ভাগান্ পুক-ন্নং । ঈশ: কোণাৰ্দ্ধতো জেব:

পর্জন্য: পদ সংস্থিত:॥ দ্বিপদস্থো জ্বস্তুশ্চ শক্রঃ স্যাদেককোষ্ঠগঃ ৷ ভাক্তরশ্চ পদো জ্রেখো দ্বিপদঃ স-ত্য উচ্যতে॥ ভূশ: পদস্থে। জ্ঞাত-ব্যো ব্যোম চৈব পদাৰ্চ্চক। হুতা-শনঃ পদার্জে তু প্যাচ পদ সংস্থি-তঃ।। বিতথো দ্বিপদো জ্বেয়: পদৈ-क्रि गृहक्षठ:। दिवस्त अरिहक-(इ) गक्त(व) विभविष्ठः ॥ ज्ञः टैक्टकशासा उद्धाया मृगकार्क्कशह-श्चिः। भिउद्गा २र्ष्ट्भार एक्याः शरि भोवातिक खथा।। मुगुरिवा हि পয়সা পতি রেকস্থো হসুরো দ্বি-अर अध्यक्तः ।। (भाष**े** किक्शस्य **ब्ब्बिंगः भाष्मा १र्ख्यम उ**ष्टाउ । রোগ कार्ष्वां शासा (छारा। नाग-क्हानि अपि इंडः॥ विभाग विभाग कर्मा जू छझार्रः शनमः ख्रिः। यटक्वथनः शासा (छार्या नागना छ দ্বিপদস্থিতঃ॥ পাদস্থা 🕮 মহাদে-বী দিতি শ্চাৰ্জগদস্থিতা। আপান্ত शान मः इः म्यानाभवर्मः भन्छि-**७:॥ छञ्ज्ञमस्य। विस्क्रय कार्ग्यमा** यशु भूर्बगः। माविञ्च भारा (छः-यः माविजी भन्म श्विजा ॥ ट्रा विवदान विष्ठाय के ज्या में मार्ग में-

স্থিত:।ইন্দু শ্চেন্দু। আর শ্চো**ভা**বে-কৈক পদ স•স্থিতৌ।। নিত্র শ্চতুয়দ ৈ কিব পশ্চিমে চ ব্যবস্থিত:। ৰুদু কৈকপদে৷ জ্ঞেয়ে বাজয়ন্ত্ৰা পদ-স্থিতঃ॥**ধরাধর**শ্চ বিজ্ঞেয় উত্তরে চ ठजूञ्चार । ठजुञ्चर कठ्ईएस। मार्था জ्यः भुकाপिकः ॥ (प्रवजान् ह्रा) বাছে সর্বে চান্ত তথা সুরা: ৷ এব• পুগৃহ্য কোষ্ঠানি রজসাপ্র্য্য দেশি-कः ॥ এডেষা मिव स्वानाः विनः मम्राज् कानिकः। রজসেতি পঞ্চরণ त्र**ङा**ज्धिः । उथा ह भात्रनागाः । উক্তানা মলি দেবানা পদান্যাপ্র্য্য পঞ্চভিঃ। द्रद्या जि रेष्ठ र्याथा एक जेऽः भागमारिय विनि श्दार ॥ उथा। भी ত হরিল চ্পিস্যাৎ সিত তণ্ডল अञ्चरः। अभूगु हूर्ग गक्षः प्रकार প্ৰাকদ্ধ । বিল্বাদি প্ৰদ্ৰং শ্যাম মিত্যক্ত বর্ণপঞ্চক। স্যাৎ পুলা-ক ভ্রন্থান্যে ইত্যমরোক্তে: তৃহ্ণ অ-পক্ষे।। পুজ্যা মণ্ডল বাছে তু পূৰ্বা-श्चिम्यानिक क्रमार । ऋन्म रेम्ठव वि-माती ह व्यर्गाना भूखना ख्या ॥ इसु-কাপাপরাক্ষদ্যৌ পিলিপিঞ্জ ক वकुलि। न उन कव्यामान (थे) मा-লগুনে সমীপে সর্বে প্র্যা: ॥ শा-লগাম শিলারপী হত্র ভিপ্ততি কে

भवः। छञ (एवा मूहा यक्षा छ्रनानि চতুর্দশ।। ইতি পদ্মপুরাণ বচনাৎ। ভত্রাবাহন বিসর্জ্জনে নন্ত:। শাল-গ্রামে স্থাবরে চ নাবান্থন বিসর্জ্জনে । ইতি বচনাৎ। তদসম্ভবে ঘটাদি জলে। পুতিনাস্থানেম্প্সূ আবা-হন বিসজ্জ ন বজ্জ • 1 ইতি বৌধা-यन वहना ।।।।।।। এया। विष्य विन र्मरमार्भुतान (प्रवीभूत्रानाना। मू-कालीमानी छीन न व्यवस्थिए । ইতি ন লিখিতঃ। কিন্তু নৎস্যপূ-রাণোক্ত পাষ্স বলি দী খতে। ত था ह। भायमः वाभि माउवाः स्नाना नर्बठः कगाए। नगकात्वरा माखर পুণবাদ্যেন সর্বতঃ॥ অতএব পুণ্ড ক্ত শারদা বাক্যে পায়স মাত্র নৃ-ক্ত তেন এষ পায়স বলিঃ ওঁ ঈশা-নায নম:। ইত্যাদিনা পুযোগ:। ন চ বাচস্পতি মিশোক্ত মমুক দেব-তारिय এষ পায়স বলি ন্ম ইত্যাদি। शुनवारि नमकाताल चनाग क्ष मञ मस्यादियास्य (भूरविभागायुक्तद्वारः। उथा চ বুক্ষপুরাণ। ওঁ কারাদি সনাযুক্ত• नगकाताल की खिंछ। यनाम गर्द नः जुःनाः मख इंड्राज्यीयरः।। (पवी পুরাণ । এব ভ্তগণানান্ত বলি (র্দ. यस कानिकः। এ जान् श्रुभ् कर्यप्पः

বান্ কশপুয়াক্তৈ বুধ: ॥ এবং **भुश्**षिजा (हवा: भाष्ठि भूष्टिभुहा নৃণা । অপুজিতা বিনিম্বন্তি কারক। ञ्चाभक उथा ॥ এ जान् भुभू काय-(प्त्रवान् अभ भूञ्चाक्रोठ खथा । অত্র পুপূজায়া নিত্যত্ত্বাৎ বক্ষ্যমাণ মৎস্যুরাণ বচনে হোমানন্তর ব-निमानाह वरनः कानाजार भूषा হোগান্তর বলিদানাচার: ৷ তথা **5। तुक्क छात्न उथा अर्ग्यामामृद्य**न अ। भूडन । श्विया मह भूडन अर्य। बाजुरावग्नमा ह ॥ नक्सार्थ भूस বৈবেদ্য ধূপালৈয়: সুরসভ্য । ততঃ সাপ্ৰয়েশ তিমান সৰ্বলোক ধরতে मही।। मुक्त गाः भुमता क्षाः पिवताः **ভ**রণ ভৃষিতা । ধ্যাত্বা তাম ईবে দ্বেণি পরিভৃষ্টা মিভাননা ॥ ভতঃ स्रनाम माखिन मर्दाप्त मयः इति । श्वादा मन्ह्र्यखंद यह्निष्ठ नतः পর•॥ বুদ্ধ স্থানে ততো বিদ্বান্ স য্যাদাধার মক্ষতে:। ত্রিন্স-ञ्चाभायट अग्रु॰ वर्षान्ता मरु भूति-ত।। হৈন বা রাজত পাল মূন্ময वा मृष्ट मुल्छ । नईवी कोषधीयुक्त । সুর্ণরজতান্বিত ।। বুদ্মস্থানে ততো भञ्जी कवामः ज्ञाभा भूक्रायः । उ बि क जुर्म थ पद शुरक्षा मञ विगुरु।। गरेकः भूरियम्ठ ध्रेनम्ठ रेन-(वरिन्धः भूगताष्ट्रेत । एटा मखन বাহে ভু পুতীচ্যা• প্রান্থয় স্থিতঃ ॥ व्याठार्यंश शृष्ट मञ्जाद्र वुकानी॰ उर्भायः मूद्रान्। भाषामः जर्भायः দিদান আহুতীনা শতেন চ।। ইত-রান্ দশভি দেঁবানাহুতিভিঃ পুত-र्भाय । उठ: भुगम् विकाश क् षारेव यिखवाइन ॥ भुगृश कर्क्ती॰ সন্ভাগুলান্তঃ পুদক্ষিণ । সূত্র মা-র্গেণ দেবেন তোয় খারেণ কার্যেৎ ।। পূর্বত তেন নার্গেণ সম্ববীলানি বাগযেৎ। আরম্ভ তেন নার্গেণ **७मा थाउमा काद्राय** ॥ **७एउ।** গর্ভ খনেমধ্যে হস্তমান পুমাণতঃ । চত্রস্থল মাত্রণ তদথ: খন্যাৎ সুनिबाङ ॥ গোম্যেন পুলিপ্যাথ इन्हरनन विरव्णिष्ठ । न्या प्रु পুল্লাণি শ্ক্লান্যক্ষত মেব চ ॥ আ-हार्य्यः शुाद्धात्था ज्ञा श्वारमाप्तवः চত্রসূথি। তুর্য্য মঞ্ল যোষেণ বুন্ধ-याय द्राव हा। अर्घाः नन्। मृत-শেষ সম্ভাতাযেন মজবিৎ। পুগৃহা ককরী ভান্ত তৎ খাত প্রফেজ-रैलः॥ **স**र्वतन्न समायूरिक विंगरेल 🕫-সুগন্ধিভিঃ। তিমান পুল্লাণি শুক্লানি পুঞ্চিপেদোমিতি মরন্।। তদাবর্ত্ত•

পরীক্ষেত দধি ভক্তান্বিত ক্ষিণেৎ । मुङ अप्राप्तिकिगावर्ख श्रमुङ वा भ ভবেত্ততঃ॥ वीरिकः मानि यवा भीना गर्ख छ भ्रायख्डः। (क ত্রজাভি: পবিত্রাভি মৃ জি গ্রু পু भूद्ररय ।। এव निञ्चाम् विश्वना वा च्याम॰ मूरबाउम । मूदर्ग॰ भाक्ष वद्यक व्याजार्ग्राय निर्वत्रस्थ ॥ इ एतानीमाधीन (शानस अपवाधि স্বাহান্ত ভৱগানভিঃ। তথা চ বিফু थर्प्याख्रत। अरेकका॰ प्रवेखा॰ त्राम ममुफ्तिमा यथाविथि । ठजूर्याउउन পর্যক্তো নামা চ পুণবাদিনা॥ হোম-দুব্য মথৈকৈক শত সম্ভ্ৰ ছোম-বেং। শতদন্ত্য মিতি পূর্বোক্ত বচ-নানুসারেণ বাস্ত্রযাগেতরপর ॥ ज्िः। बाहादमान जूहरा८ थ्रा-यन् रेव मञ्जलवञाः। एकाम स्किन ना मन्त्रुदान नाइ इत्तरामभितिणः 🕏 । वुकारा निका । रिया यब या शः तिकीर्छिता कर्यास्त्र श्नूहानानाराः भूर्वभावादिका ভरद्र ॥ विषय्। (फीड बन) (फफ्किगार्बह्दा छ-दि । सग (क्षृत्रुक्ष । अर्थ) प्रमारेगा भुडिभानस्य ।। यस्त्रा यक्तभाविकः गः। डेडग• तुक्तकर्म (राज्कर्ग **छ**। উপন হারে বাস্ত যাগ মিতি শ্রুতেঃ

সঙ্গন্ন বাক্যে ভেনৈবোল্লেখ মাচর-ন্তি। অত্র নিলিতানিলিত দক্ষিণা-मानाट कन जात्र जगुः।। 🚓 ।। नाट रमु । ७७: महो यथि न्नान यक्तमानम् काद्रराष्ट्र। (नवीभूद्रागः। कालक्क सः পতी भूष्क्री विक्रबान् मिक्टिं। १ई. (४८। द्रान्तनान् ভোজियदा जु न्उ। गीजानि काइरहट्॥ भाजानः कात्र-(य बिबान् गृह • वालि मत्नाह्र व । কাৰ্য্যন্ত পঞ্চতি ধি লৈ বিল্বীজৈ त्रथाभि दा ॥ (हानार उक्तर जा-रिकार्ण वास्त्र यारम विन श्राव । ইতি নৎস্যপুরাণে হোমান্তে বলি-विवानार अडाशि (हाम॰ कृषा व-न्तरानि भाखिरिक मर्बाष्यं कद्मशाहादः ।।ৠ। অত্র পুলাপতি নামাগ্রিঃ। পু-তিষ্ঠাযা• লোহিতশ্চ বাস্ত যাগে পু-ত্তাপতি:। জলাশ্য পুতিষ্ঠাযা বক णः मनुपाक्षः ॥ ३७ मरः मामूकः वहनाए। এकामी जिल्ला खरात মৎস্যপুরাণ । ভূম্যধিকারে। পঞ্ গবেটोयविक्रोंणः भर्तीकिद्। जू त्म-চযেৎ। একাশীতি পদ• কৃত্বা রে: খাভি: কনকেন তু॥ পশাল্লেপ্যে ন চালিপ্য স্বেণালোড্য সর্ব**ঃ ৷** हमा भूर्वायका द्रिशा हमा हित्वा खत्रा-যতাঃ !৷ মৰ্থান্ত বিভাগে ভু বিজে-

যা নবধা নব। পঞ্গব্য মন্ত্ৰমাহ শর:। গাযত্রাদায গোমূত্র গন্ধ-দ্বারেভি গোম্য । আপ্যায়ম্বেভি চ क्षीत • मिश्रकाद्मि देव मिश्रि । टिल्डा-मीं वि य्उरिक्षव (स्वमाज्ञा कामान-कः। अष्यी द्राष्ट्र काठ्यायनः। वृश्च यः भानत्या मृज्ञा (माध्याः अर्थभा-खिलाः । यदा (कोषध्यः मध दिश-(मा प्रति वार्तिजाः ॥ व्रीक्ः णत्र शक्यानु विश्वकाथाः। भावाय। देश-মন্তিকা:। দশেতি বাস্ত মণ্ডল বায ব্যে উপবিশ্য প্রাভিম্থে৷ গুক: উত্তরস্যা মারভ্য দশরেখা: পুাছ্ম र्था यंथानिकान अर्याट । ७३ रेन-খ্ত্যা মুপবিশ্য পশ্চিমতঃ পূর্বাপ-त्रगा मत्ना खत्रायजा (त्रथाः व्यंगार কৰক শলাকাদিনা। ক্ৰুয়ানলে তা সাং নানানি। শাস্তা যশোবতী কাস্তা विणाला भुगिवाहिनी। भंही जुमन मा नन्ता मू छम्। मूत्रथा उथा।। हे छ।। मा मणात्रथाः । श्रितगा मूत्रा वन्त्री विञ्जि विभवा शिया। जया কলা বিশোকা চ ইডা স•জ্ঞা দ-**म्मा**खद्राः ॥ इंड्र**ड** म्माद्रशः ॥ **এकामी** जि भर क्दा वास क्ट नर्स वास्त्रम् । शरकान् शृह्णत्याप्तरान् কি**শৎ পঞ্চলৈ**ব তু॥ দ্বাকি।

দাহত: প্ৰ্যা: প্ৰ্যা শান্ত স্ৰযো-দশ। নামত স্তানি বক্ষ্যামি স্থা-নানি চ নিবোধ মে।। ইশানকোণা-**मियु जान् भूक्ष (यह विधान जः। निथी** रिवाय भक्कत्वा अवसः अविमा युवः॥ স्र्यः मट्डा ज्न रेक्टव जा-কাশো বায়ু রেব চ। প্ষা চ বিতথ-ৈচৰ গৃহক্ষত যনাবুভৌ ॥ গন্ধৰো ভ্লবালম্চ মৃগঃ পিতৃগণ তথা। भोवाद्गिका २० मू ग्रीवः भृञ्जमस्य জলাধিপঃ ৷৷ অসুরঃ শোষ পাপৌ চরোগোহি মু খ্য এব চ। ভলাটঃ (मान मली' ह व्यक्तिक निज खथा ॥ वहि बंदिः भारत उठ उनस শ্চত্র: শৃণু। ইশাাদি চতুদ্ধোণ ज•िङ्जान् भूकरयष्ट्रदः । या १ रेण्ड-वाथ मावित्वता कर्या कृषु खरैथव ह। মধ্যে নবপদে বৃক্ষা তস্যাঞ্ছী চ সমী-भगाः ॥ मर्दाप्नकान्त्रान् विम्राष्ट **পূর্বাদ্যায়ামত: শ্**ণ্। অর্য্যা সবি-তारेहव विवसान् विवृक्षािशनः॥ भि-खा २० द्राजयक्या ठ उथा भृशीयदः ক্রমাৎ। অপ্টম ক্ষাপবৎ সক্ষ পরি-ভো বুন্ধণ: ম্ ভা: ॥ আপ কৈবাপ-वर्त्रक शब्बंत्यान्नि पिंछि खशाः পাদিকানাঞ্চ বর্গো হ্য নেবং কোণে-ষ্ শেষতঃ॥ তন্মধ্যে তু বহি বি শ-

ष्णिभरा एउ ज् नर्बडः। यर्ग्या ह विवदाः कृथीधत्र खथा॥ বুন্ধণ: পরিতো দিক্ষু ত্রিপদা স্তে ভু সর্বতঃ। এব মিতি যথা ইশানকো-ণে কোণ্ড চতুষ্টবে অন্তল্পিটেককোণ্ঠ সহিতে দেবতা পঞ্চক মেব মাণ্নেযা-**दिकालियुशी अर्थः । िक्कु शूर्वा**हि रिक्यू। \$1 वंशानिसानी वक्ताम वर्नि भृथक् भृथक्। वायु गावट তথা রোগাৎ পিতৃভ্য: শিখিন ल्नः।। म्थ्राच्च मत्था (भाषादि-**७**थ॰ यावरम्य जू । मू गुरिवाम मि जि॰ यार छुन्ना ब्बर । भर ह ।। भर ह द॰. । এতেষা তৈব সম্পাতঃ পদম্পের त्रन उथा।। मर्च हि उर ननाच्या उ॰ ব্রিশ্ল কোণগ চ হ । হ দ্র ন্যা-त्यय् वर्ड्डानि जुलाविधियु मर्बना॥ की लाहि हो भघा जानि वर्द्धाय य-ञ्चा नदः। मर्बे वास्त्र निर्द्धिः পিত্বৈশ্বানরাযত:॥ নুর্জন্য নি: স মাবিষ্টো মুখে চাপঃ সমাশিতঃ। शृथीयदा २र्ग्यमा हित खनरमा खातः विधित्तो ॥ वक्ष इत्त हा भवर मः श्रुजनीय खया वृत्यः। (नव्या पिंडि भड़्जंत्न्यो (मुाव्य मिठि क्रवन्नको ॥ गर्लामु। वंशा गरङो ह भूकनीरही

भुगङ्ग । (मान न्यं)। हय खन्नाः স্থে: পঞ্চ পঞ্চ ॥ ক্দুশ্চ রাজ-যক্ষা চ বামহস্ত সমাশ্রিতৌ। সা-বিত্র: সবিতা তদ্বন্ধস্ত দক্ষিণ মাশি-তৌ ।। বিবয়ানথ মিত্রশ্চ জঠরে স॰ ব্যবস্থিতো ৷ প্ৰাচ পাপ যক্ষাচ হস্তবোর্যনিবন্ধকে।। তথৈবাসুর শে ষৌচবামপার্শ্বে সমাশ্রিতৌ। পার্শ্বে ज्र **कि**रा उन्न विजयः मग्रह्म जः॥ উর্বে, র্যমান্থপৌ ক্রেণৌ জান্বোর্গন্ধর পুয়কৌ। জয়্যো ভূ ऋ সূ গ্রীবৌ ক ট্যা॰ फोनात्रिका मृगः॥ करः मक खपा (प्रक्तुभाष्ट्याः **भिउ**त्र खपा। मत्था नवना तुका क्रमा म जू भ्कारा ।। চরकीक विषातीक প্ত-नाः भाभवाक्नभीः। देभारायाहि কোণেৰু মণ্ডলাদ্বাহ্যতো যছেৎ ॥ পিতৃভ্য ইতি পিত্গণাদারভ্য ব **इि॰** यादट (या व॰**णः** श्रुमाति उ सह-मायाजा वाच्चभूक्यः। अषुरभा वकः पः। भुद्रकः भुद्राहरुः। ङ्यो। भूर-ক্ষিণন্ত স্বীতি বাস্তোঃ পদবিলে-খন । কোষ্ঠানা লিখন পুদক্ষিণ कार्याः। उथा। उद्धिनी मधामा रेहव তথাঙ্গুষ্ঠ দক্ষিণঃ। পুৰাল রত্ন কনক ফল পুস্নাক্তোদক ॥ স-র্ঞ বানভাগেযু শন্ত পদবিলে-

-খনে। # । তথা। বাস্তৌ পরীক্ষিতে | त्रमार्ग् वास्तरह विष्टक्षाः। वास् भभनन क्र्याट्मिक्ड ईलिक्यंग ॥ बीर्लाष्ट्रादा उत्पान्तात उथा गृ-হ্নিবেশনে । দ্বারাভিবর্দ্ধনে তদ্বৎ भागारिय् ग्रह्यू ह ॥ वाख्नामन• क्षर्या श्रद्धाय विष्ठक्षनः । এका শীতি পদ লেখ্য লেখকৈ বাস্ত পিষ্টকৈ: ৷৷ হোম জ্রিমেখলে কার্য্য: হ্নণ্ডে হন্ত পুমাণকে। #। বিশ্বকর্মা । थाजाधिक जत्दपुरानी शित (धनू ধনক্ষঃ। বক্রস্তে তু সম্বাপো ন-রণ ছিমমেখলে। মেখল। রহিতে শোকে। হাধিকে বিত্তসংক্ষয:। ভা-র্য্যাবিনাশক সপত প্রাক্ত যোন্যা বিনাকৃত ৷৷ অপত্যধু সন প্রোক্ত क्ष य कि विक्रं उ । विभिन्न স'হিতাযা'। তমাৎ সন্যক্পরী-.रैकाव कर्नवाः मूख्यकिक । व्यव বিধ স্বভাষম্ভবে ক্রিযাসারঃ। স্বপ্ত भिविषय नम्यार अधिन वा मना-म्। यट । यट मा भूत्रानः। यरेवः कृषः **िटेन उद्दर मिक्टि: क्यीदिम स्टि**र । भानारमः थानितः द्राभागाः । एम्बर मञ्जेतः ॥ जन पृत्री मरेगर्नाः পি মধু সর্গি: সমন্বিত:। কার্য্যস্ত शक्छि वि दि विन्वीरेक प्रवाशिवा ॥ হোমান্তে ভক্ষ্য ভোৱৈগ্ৰু বাস্ত-দেশে বলি॰ হরেৎ। অত্র হোগে **मञानार** विक्षाणां खतः । वारखा-ञ्चराजन मराज्ञ । यह गृहर विजा বাস্তোম্পতেন বাস্তোম্লতিদৈবতেন शक्षमाञ्चल । विलिम्बाक शायमः প্রাগেব লিখিত।।#।। বুশ্বস্থানে ত-**७: ल**र्य)ाद्यामुएरवम् भू अन मिछ।-कि। जूवर्न गां वज यूग बाहायं। य নিবেদযেশ। ইত্যন্ত মত্রাপি বোধ্য° ।। কল্নতরৌ মৎস্যপুরাণ । ততঃ मादी विविद्यान यक्तमानमा कात्र-বেং। দ্বিলাশ্চ প্রযেক্তক্ত্যা যে-চান্যে গৃহমাগতাঃ ।। এতদান্ত্পশ मन क्वा कर्य मभाव्यत । शुमान ভৰনোদ্যান প্ৰারম্ভে পরিবর্ত্তনে॥ भूत्रत्या भूत्राणम् भर्तामाभन्-ত্তথে । ইতি বাস্তুপশনন ক্রা मूखि (वश्वेरायः ॥ इंडि मर्माः পুরাণে উপক্রমোপস হারযো র্বা-স্তুপশননত্বেনাভিধানাৎ বাস্ত্পশ-মন কর্মণো নামধেয় ইতি তেনৈ-(वाल्लथ: সর্বদোষাপন্ত্রে ইতি भुः उक्त वास्त्र मर्द्रामाशास्त्रकः कन म करन्न ज् उपूरल्यः कार्मः। এতত্ত্ব পুরে ম্র পুরেশান্যতর মিন্ন-यमारः कर्खवरः। यावनारकत्व भूमानः नाट्य भारताटाङः । इटि श्रेष्ट्रानम्बन ভউ।চাर्य्यविद्रिटिङ वास्त्रयाग्रञ्जू भूगार्थः ॥

বাস্তক• ক্লী বাস্কশাক•। ইত্য-মরটীকাগা•ভরত:॥

বাস্ত্রকী জী চিল্লীশাক । ইতি রাজনির্ঘণ্ট:॥

वाखूक• क्री भाकविष्मयः। विजुवा **ইতি ভাষা। তৎপ**ৰ্য্যায়:। বাস্ত ২ वाञ्चक । २ वनुक । ८ वज् रु । ৫ हिन মেচিকা ৬ শাকরাজ: १ রাজশা-ক: ৮ চক্ৰান্তী ৯। অস্য গুণা:। भवूत्रद्भः। जुली उलद्भः। कात्रद्भः। भारनद् । बिर्मायञ्जिल् । (द्राष्ट्र-नद्भाः खुद्रहद्भद्भा भशार्भागः नाः **भन्दः। यस गृ**व मूक्षिकात्रिद्यकः। ইতিরাজনির্ঘণ্টঃ।। অপিচ। বাস্তু ह• বাস্তক্ত স্যাৎ ক্ষারপপ্রঞ্চ শা-कद्राहे। उत्तव जु वृष्ट्रभ धः द्रक्रः म्याद्गीष्ठवाञ्चकः ॥ भागामा यव মধ্যে স্যাৎ থাবৎ শাক মতঃ স্মৃত l বাসুক দ্বি**ত্য•** স্বাদু ক্ষারণ পাকে कर्नि उ॰ ॥ मीभन॰ भाठन॰ क्ठा वत् गुक वनशुरः । मदः श्लीश्राम् পিত্তাসু ক্রমি দোব্রযাপহ ॥ ইতি ভাবপুকাশ:॥

बारखय॰ जि विखमसिक्त ॥ वख

जशका। वस्त्रमञ्जा । वास्त्रमञ्जी । वस्ति वस्त्र वस्त्र वास्त्र मद्दा स्थाप भुठ∫रवन निष्नम•॥

বান্তোল্লভি: পূ॰ ইন্দু:। ইত্যমর:॥ বাস্ত্র: ত্রি বস্তাব্তরথ:। ইত্যমর: ॥ বস্ত্রসম্বন্ধী চ॥

वाञ्चः जि वाद्रि जिक्षे छियः। वाद्र् भद्रशृर्व ज्ञाथात्वा छ भुजारयम निष्रमः॥

বাস্ণা: পু• উন্মা।। লোহ•। ইতি
কেচিৎ।। মূর্দ্ধণ্যমধ্য ইতি সাধুপাঠ:।।

वात्त्रागः भू॰ नागरकभातः। ইঙি রত্নমালা॥

वाङ् अ ७ याङ्ग । इंकि किविन्द्यक्रमः ॥ य व्यवाङ्ट । ७ वाङ्ख
। ववाङ् ब्रळ्॰ भूक्षा छा ङाङाः
मङ्गुणः इंडालि मिष्कार्थ (माक्राणिक वङ्षाजू॰ मानाराज वर्गानक्राणिक वङ्षाजू॰ मानाराज वर्गानक्राणिक वङ्गाजू॰ मानाराज वर्गानक्राण्या । वस्र इंडामाट गनक्रा निजाङ्गाट भद्रोमान मिष्कः
व्याकार्थङ्गाट मुमारवङ्ग्यः। व्यथ्य व्यव इंडाङ इंडाव व्यायान ।
इंडि पूर्गारामः ॥

ঘোটক: 11 পরিমাণ-বাহ: विष्णवः। इंडामतः॥ यथाङः। **भनः भृत्रक्षकः मृष्टिः ऋ**उव छङ् তুষ্টা। চত্ত্বার: সডবা: পুস্থ শত্ত্ भुष्रमथाएक।। अक्षेपएका खर्व पुग्ता विद्यानः जूर्न छेठाउ । मार्क मूर्ला ভবেৎ याती (द्यथार्य) গোণ্যদাহ ভা॥ ভামেব ভার• জা-नीयाए वार्श जात हज्हेव । इंजि ভর হ: ॥ চতুর্দ্ম ভেদাৎ সংখ্যা ন্যথান্ত্রণ তথা চ। চতুরাঢকো क्षाणः वाजनकाता थात्री। वि-শ ডিদোণঃ সম্ভ: দশসম্ভে। বাহ: १६७ सभी॥ 🕸॥ जुनः ॥ वृषः॥ ॥ वागुः। इति भक्तव्रज्ञावनी ॥ वः इन हर्ख दि ॥

वाहकः जि वहनकर्त्ता। वहित्र यः।
हेन्जार्थ गरू भू जार्यन निम्न मः।।
वाहित्र में भू गिर्मः। हेन्जा प्रदाः।।
वाहन की हलाय तथ (माना पिः।
जिल्ला में श्री प्रदा प्रमाः। प्रदाः।
हित्र प्रिंग हिन्जा प्रमाः। प्रदाः।
हित्र प्रिंग का कामारी। निक्र प्रमाः। प्रदाः।
प्राप्ता महारिता प्रमा लाहिकः
भक्षाः।। हित्र हित्र स्व विख्लाता।
वाहनानि महोजाः। सम्बं। वान

হনত্বন্ত তেষা॰ যন্মান যুক্তাতে II **ত**-यात्र्बं छत्र क्या वारु न पुः गठा-खयः । यद्यन् यात्रकाशामाया श्री-ণাতি সভত শিবা।। ভেন তেনৈব ৰূপেণ আসনান্যভবন্ ত্ৰয়:। ইতি কালিকাপুরাণে ৫৭ অধ্যায়ঃ ॥ 🛊 ॥ (एव एानवानाः वाइनानि यथा । शुलखा डेवाह । मृनुष कथि-यागि गर्दिया मिल नात्रकः। वा-इनावि जगारमन अरेककम्यानुशू-र्बणः ॥ कमूरुखराना १ भनः भराः काय भरागक । (यक्ठ वर्ग भरा-वीर्यं (प्रवज्ञाक्षभ) दाइन ॥ (ज्ञो-पुोजः गञ्जवः जीमः क्ष्यवं मता-अव १ । (भो कुक नाम महिष धर्म ब्राह्मा नाब्रम् ॥ क्षुमानम मञ्जू ७• मारामः जनिष मः ऋकः। मिन्यो।-तः पिराशिकः बाङ्बः राङ्गशा **।।** রৌদু শক্টচক্রাক্ষণ শৈলাকার नताखन । अविकामारमञ्जूङ वाहन धनरमा जु॥ अकारणा-না॰ ৰুদুাণা৽ বাহনানি নহামুনে । गञ्जवान महावीर्या जुन्नरान्ताः সুনাকণা: ॥ খেতানি সৌরভে-यानि व्यानुश्नुकवानि ह। त्रथः ठ-न्तुभन कार्छ जरुम र भवारन ॥ र्याप तथ वाराम वािष्ठा

মুনিসভ্ম। জ্ঞার্জান্চ বস্বো বক্ষাশ্চ নরবাহনা: ।। কিমরা ভূ बगाकण इयाकणी उथाविती। শারস্থাধি ভিতা বুক্ষন্ মক্তো ঘো-ब्रमनाः ॥ भूकाक्षाम कररा গন্ধর্বাশ্চ পদাতিন:। আকৃহ বাছনান্যেক স্থানি স্থান্যয়েজে মা: ।। সন্ত্ৰ নিৰ্যু ছ প্তি। যুদ্ধায मूगरहोकमः। #। नावम उेवाठ । गरिजानि म्यारीना॰ वाह्नानि महागूत । रिन्ज्यानाः वाह्नात्य व रथावहकू गर्शन ॥ भून उ उ वाह। मृत्य मानवामीनाः वाहना নি শ্বিজোভন। কথ্যিয্যানি ত-ख्न यथावर (माजु मर्शन ॥ **ज**-স্ক্র রথো যুক্ত: শুেষ্ঠ; পর ব বা-জিভি:। কৃঞ্বর্ণ: সহ্নার জ্রিন্দ্র পরিমাণবান্।। পুসুদস্য রথো **मिवाः (य उर्दर्श**र्सवाहितः। डेज् भाग उषाद्वाजिः (च उक्च प्राप्तः **णु ७: ।। विद्धा**त्रनम् । जू गजः स्हाः मा जु ज्बन्मः। बगुमा जु ब्रायाः-मिरवर्ग हरेनः काक्ष्मनांबरे छः ॥ **म** ह् ध्वेत्र इंद्राण इंग्लीवमः **ञ**् छतः। রথো ন্যন্য বিখ্যাতো म्यत्क महार्वशः ॥ नवनम् विद्यास्य २ ज्यासः महारा र्या विनः । इंडि श्रीवाननभूद्राण ३ अथ्यायः॥

वारुष्धः भु॰ व्यथः। हे जित्राजः निर्वण्डः॥

वाहमः भु॰ खडागद्रः। ইত্যমद्रः
।। वाद्रिनिर्याः। সুনিষঃ कः। ইতি
(निमि।।

वाहा छी वाहः। ইउ, जग्नाल चिक्र भरकारयो।।

বাহাবাহবি ব্যাং বাল্যুদ্ধ । হাতা । হাতি ইতি ভাষা। ইতি নৃধ্ববোধ; ব্যাকরণ ।।

বাহিক: পুণ্ ঢক্না।। গোবাহ:।
শকটাদি। ইতি ধরণি:॥ ভারবাহঃশ্চ।।

वाहियं' क्ली गजनसुन्नार्थाजागः । इज्जनतः ॥

वाहिनी खी स्मना। निमास्मनी। स्मनी। स

बद्धादधी ॥

वाशिकः भू॰ (एणएडपः। छ८পर्यश्रायः। अष्ठकः २। ইতি ह्माहन्पः॥ জर्जिकािछः। कार्षे ইতি
ভाষা। यथा। उज तृष्तः भूतातृजाः
कथाः किष्णृ (काि खमः। वाशिकः
एमण मृष्णा महिष्णु (काि खमः। वाशिकः
एमण मृष्णा महिष्णु (काि खमः। वाशिकः
प्रमा मृष्णा महिष्णु (काि खमः। जान् भन्नाः। य श्वतािणु जाः। जान् भन्नाः। य श्वतािण् वाशिका माम्
वाशिका (स्वाः वृज्ञः मृतिन्दिः।।
देवि महा जात्राङ कर्नभर्वि। २०० ज्वशायः॥

दाङ: भू॰ ककात्याक्ष्ण गुमर्ग्छ।

तयतः। यथा। ভ्रज्ञ ताङ: भूत्वर्छ।

एना जिल्ला जाः ।। तहल्यान ताङः

नार्मा लि छेन। हिन्य ताहा १ पछः।

ताहा १ व ज्रुक्तराः भूमान्। हिन्

मामान्तः। ज्ञिया॰ वाहा ह।

ताहा वाहा ज्ञुक्ता वाङ् मिराषा

एनावा ह एनाः भूमान्। हिन् काः

याद्य वाहा हिन् ज्ञिकाया॰ ज्ञुकः

।। क्ष्र सम्ग्राक्ष जाता वाङ् छ
ग्रात्या जानः भूताङः। यथा। मूथ॰

वाङ् भूताङ् ह मनः मर्खिन्यानि ह
। प्रका इत्राहि ज्ञ्चरं छत् नाद्रायना

२व । १ ३ छि विक् भ् द्राल **८ ज॰ भा** ৫ অখ্যায:।। বাহু পুবাহু চ হুর্পর-স্যোদ্ধা পো ভাগৌ। ইতি ভটীকা ॥ अना भवशीं य वकातापि वाल् भारत पृष्ठेवाः ॥ सः ॥ यात्रा म् जाण्ड बक्न । यथा। निर्मारमो टेव ज्याद्वी শ্লিষ্টোচ বিপুলো ভুজো। আজান विश्वितो वार्वेखो भीतो नृत्भवात ॥ निःचानाः द्वामत्मो इत्यो त्मुत्धी করিকরপুভৌ। হস্তাঙ্গুলয এব স্ত त्रायुर्त। निजाः मुजाः ॥ त्यशावि-नाक मृश्वाः मुर ज्जाना हिलिहाः म् जाः। अ्वाक्वीं जिस्ताः जु নঁতাঃ সুগু বঁহি রন্তদা।। কলি তুল্য-कता निःश्वा वराष्ट्र जूनरकरेत र्थन । মণিবলৈ নিগ্তৈক সুশ্লিপ্ত শুভ স-क्षि ।। नृशा शीतः कताहमः मणः ছৈ ধনবজ্জিভা:। পিতৃবিভবিহী-নাশ্চ নিমাৎ করতলামরা:।। সং वृद्धि रेक्टव निरंत्रक धनिनः शतिकी-র্ত্তিঙ্গা:। প্রোক্তা নরকরাতারো বি-यरेम विषमा नदाः ॥ करेद्रः कत्र उत्त रेम्घव नाक्षारेञ ब्रीयब्रा खेलः । পরদাররতা: পীতৈ ক্রিফ নি:वा নর। মৃতাঃ।। তুগ তল্য নুখাঃ শ্লীবাঃ व्यक्तिं मु, हिटें डे बंबीः। बिस्सा क्क-नरेथ उद्दिदर्भः शत्र अर्काः ॥

छारेन ज्ना धनाएग्राम्ड वाक्रिक्षः। नगरेव खया। व्यञ् ४ म्लरेकः (भुवा) न्यामीर्याङ्गि शर्वकः ॥ भीर्घायुः मुज्य रेक्टब निर्धता विव्रवाङ्ग्रीतः । धनाञ्च्लिम्ह मधन खिरमा (द्रथाम्ह যস্ব।। নৃপতে: করতলগাম্পি वाक्ष ममुल्यिजाः। यूगभीनाव्हिज करता ভবেৎ সত্রপুদো নর: ॥ व জুকোরাশ্চ ধনিনা মৎস্য পুছনি ভা বুধে। শহাতপত্র শিবিকা गजभाषाभा न्भा ॥ ऋगुाङ्कः শপতাকাভা নৃণালাভা নিরীশ্বরে । দামা ভাশ্ত গ্রাচ্যানা স্বস্তিকা-ভা নৃপেখরে ॥ ত্রাসি ভোমর-धनुः जञाजा नृপতে: करत्। छेपू-খলাভা যজ্ঞাচ্যেবেদীভা শ্চাগ্নি-ছোহিণি॥ বাপী দেব স্বলাভাশ্চ ত্রিকোণাভাষ্ট ধার্মিকে। অঙ্গুপ্ত म्नगा (त्रथाः भृञाः मृक्षाण्य मा विकाः ॥ भूपरिनिगीगङा विशाक নিষ্ঠামূলগামিনী। শতাযুষ্ঞ জ-ক্তে ছিম্বা ভক্তো ভ্য়ণ।। নি:-चाक वल्द्रथाः म्र निर्मु व्या कि युरेवः क्रेमः। इंडि गाक्रा ५५ व्यद्भायः ॥

বাহন্**ল॰ নী** ভুজদ্বস্থাদ্যভাগঃ। । শাক্ইতি ব্যল্ইতি চ ভাবা।

७८भर्यायः। ककः २ । इंछानतः ।। ভুজকোটর: ৩ দোমূ ল ৪ থ গ্রি-ক: ৫ কক্ষা ৬। ইতি হেমচন্দু:।। वाल्वः भु• कार्बिकमामः। इंड्र-নর:।। শাক্যমুনিসূত:। ইতি ছেন **म्मुः ॥ अ । अथ कार्जिक मार्चा**ः ত্ম্য•। নারদ উবাচ। কার্ভি⊅স্য তু गाशवाऽ भागमऽ वक् भर्वम । भूबं कार्बिक माहाजा। यथादर वक् भर्गम। वुष्कावाह। माधुल् है॰ ত্ব্যা পুত্র লোকোদ্ধারণ ছেতবে। कथगामि न जन्मह सुर जाना ना-স্তি বৈক্ষব:।। একত: সর্বতীর্থানি गर्वि यङ्याः गरक्षिभाः। कार्न्तिकम्य চ মাসস্য কোট্য:শং নাপি বিভ্ৰ তি॥এফত: পুষরে বাস: স্ক্লে-(ज श्मिष्टल। ०कठः कार्लिः) বন্ধ সর্বপুণ্যাধিকো মতঃ।। স্বর্ণানি নেক্তুল্যানি সর্বদানানি চৈক্তঃ৷ এ ह**ं** कार्डिको द**्म म**र्झेरा कि শবপুৰঃ।৷ কৃত্বা কোটি সহসাণি পাপানি সুবহুন্যপি। নিমেষাজন गर्राणि विषय• यान्ति कार्न्टिक ॥ रएकिकिट इत्या भुगुः दिशः मूमिना कार्डिक। उनक्रम^{ा छ} বেৎ সর্বণ সভ্যোক্তণ তর নারদ।। তস্য ক্ষ্য ন পশ্যাদি সভামুক

ভবানঘ । সোপান ভ্ত ষর্গন্য। मानुष्र श्राभा मूर्झ ड॰ ॥ उथा जा-न जमान्या यया न जानिजः न्नः । मुझान्यः भान्य मान्याः कार्जिकाञ्ज॰ हात्रम यः ॥ धर्मा धर्म-ভূতা শুেষ্ঠ স মাতৃ পিত্ ঘাতক:। कार्ভिङ थलु रेव मामः महमारमयू हाखर ॥ भूगाना भत्रम भूगा পাবনানাঞ্ পাবন। অञ्चिन् মাসে वरिद्धाः भाष्य वाः भिन्न श्रीक्षाः অত্র স্থানানি দানানি ভোক্ষনানি বুতানি চ। তিলখেনু হিরণ্যানা॰ রজত ভূনি বাসসা।। গোপুদানা-नि व्यवं छि नर्ब अत्यन नात्र । वाक्य-गानाथ (य कन्तार माम्यांच विधि व মরা:।। দানানা ফল মেতেযা। পু।-श्रुग् एष विधानकः। जानि मानानि गृङ्गान पि विधिव स्त्रुताः॥ यद किक्षिट कार्डिक मन्तर उभरेक्टर उथा क्छ । उनक्ष कन (भा-कः विकृता लाककर्नुना ।। वृषानाः भाक्षण हित कार्जिक मात्रि रेयः क् उ॰। जायरमशानिक॰ भ्नाः टेउम्ह পুান্ত ন সংশ্ব: ॥ তৃষ্যাত্মত্ত্বের বি (भुन्द्र कार्जिक मात्रि मीगरछ। यूर-किधि ८ कार्डिक मंख विकृ मृत्मि भा मान्देवः ॥ एउ॰ मख्य विष्युन्द्र छः ॥ श रेफर उथा क् उ । उरक्षय ने ज ন্তে তে শস্যদান বিশেষত: ॥ যথা नतीना विर्भुन्तुं रेमनानारिकत नात्र-म। উদধीनाक विभूषि क्वारा निवा-পপদ্যতে।। তদ্বৎ का विषयाम जू य किकिकीय क मूर्त। न उन्नारिङ कारगाविभु भाभः गांच महमुक्षा।। ভন্নাৎ সর্ব পুষত্বেন কর্মণা মনসা-गित्रा। भाभ• मञाहरद्वरैचव कार्छि-কে বিষ্ণু তৎপর:॥ জ্ঞানাদ্বা यदि वा खानाषू इंड॰ (यन रूष क्ड॰। তত্ত্ৰস্য নশ্যতি ক্ষিপু• বাযুনা পাঁণ-नारवा यथा ॥ मःभाधः कार्डिकः मृष्टे। भन्नान यस वर्ष्कादर । पित দিনে স ক্ছুস্য ফল প্রাপ্রোভ্যস: শय ।। পুर्वानाञ्च ভक्षाभा का-র্ত্তিকে নিষ্পে কৃতে। অবশ্যু বিষ্ণু রপত্ব পাপতে মুক্তিন শুভ ।। न कार्डिक्नामा भाष्मा न कृष्टन সন্যুগণান বেদ সদৃশণ শাস্ত্রণ न डीर्थः ध्या नमः ॥ न ठाःसन मन् मान न मूथ जार्याया मन । न कृष्यस्र मगः विखः न माजः मुद्रजी जनः ॥ न **टला १नणरेन ऋ**णाः न म्भाष् भद्रामा करः। न ह श्राणी प-যাত্ত্বো। ন জ্যোতি শুফুষা সমণ।। ন ভ্ণী রসনা ভ্ল্যান গ্লীভিন্ত সূত্ विना । न कार्जिक गमा मामा विन् क्याना॰ लियः जना ॥ व्यव्याजन कारभव्य यामः मार्याम्ब्रियः। **ভि**र्गाशानि गवार्शाङि गर्वस्य वहिष्ट् अः ॥ मृल जि॰ देवस्व व उद्यान मूर्झ डा रिवक्षवी कथा। मूर्ल डा रेवकः वी नीका पूर्ज (जा कागत खया ॥ पू-र्झ छ कि शना मान मूर्झ छ का श्-वीजन । मूझ (छ। दिक्षदा वित्यू। मूल ७ नीनरमाक्षा ।। पूल ७ पू-স্করে দান দুল্ল'ভা: কার্ভিকে তিলা: । দূর্ল্ল ভা জাগরো বিফো: পক্ষণো ক্তব্যেরপি॥ দুল্ল ভা কার্ত্তিকে বি शु घारणी इदिरवादिनी । मुझ छ। মালতী পূজাদুল্লভা ত্লদী মুনে।। দূলভি কার্ত্তিকে স্থান দূলভি পাধ वन्तरः भानगाम भिनाल्डामूछं जा गुनिभूत्व।। समृद्रुगा नरी यब हुछि ভा मान भाविताः। **जन भीव**रठी कन्। पूर्ज छ। मम्ल धी न्वाः॥ पूर्वाः ভা জননী লোকে পি ভা চৈব বিশে-यठ:। पूर्झ ७ गाय्मगान पूर्झ (छ। **श्रामिकः मुटः ॥ पृक्ष** टिलकामणीः लाःक म्मभी मञ्चिष्ठिं । भक्ष দ্ব্য বুত্ত বংস অখনে দক্ষিণোত্তরে ॥ मृद्ध ७ रे देक्टव मान भाष मुझ्य निर्माहत्व । हिन्द्रशिवाह जू भागीय |

भिक्तनः भोष भाष्याः । वाक्ताः मूल्ल ७ विशु मृल्ल ७ छीर्थरमवन ॥ ন্যাযেনোপাচ্ছিত বিত্ত দুল্লভি क्लवर्ष्वनः। मृत्नि छ॰ वट्न मुव्यागाः পাত্রে যৎ পুতিগাদিত।। পাত্রা ণান্সি তৎপাত্র সদাচার্ক্রিয়া-निड•। मःश्राभ्य कार्खिक• मामः বিমুখা যে জনাৰ্দ্দনে ৷৷ তেবা• যম-পুরে বাস: পিতৃভি: সহ নারদ। ইতি শ্রীপান্মোন্তরগণ্ডে কার্ত্তিক गश्राक्ष ३३३ व्यव्यामः ॥ 🕸 ॥ वुष्कावाठ । कार्डिक्ना जु माहा-चा १॰ भून (इव मृतृष्ठ (म) यट भुष्ठा मू-निणापृ व नदीन् कानानशङ्गान॥ বুতানা মিহ সর্বেষা মেক জন্মানুগণ ফল । কর্ত্তবিফু বু ভদ্যোক্ত শঙ दब्रानग॰ कन॰॥ व्याधिनम्। मिट পক্ষে একাদশ্যাণ ঘিজোত্তম। বৈ-करेव रेकियः धर्मः नाबाद्या २मा বিধীষতে ॥ যাবৎ কার্ত্তিক শৃদ্ধা (भोर्गभो डिचि डंदर । डाव-দস্যুত্তস্যোক্ত সম্যুগাচরণ বুধিঃ ।। यनाथा ज्क्उ विभू तु उ मिट्ट भृष्त्व 😇 । कार्ग्यः भिष्टः भूषः ३न কাত্তি: শুত্র বিশেষ তঃ ॥ ত্রি: শাদি নানি প্ণ্যানি বিপুপীতিকরাণি বৈ । कार्डिक्सा युज् विशु विविध्

পুতি কারণ ।। ওদর্ঘণ ভীত্মস্য वुक गूर्न जुष्टिकद भद्र । भूगा शक्षिन (পुङ म्ड ऐम ह विकृता॥ नः वा वा यहि वा नादी छ-क्छ दिक्षत जुङ । मित मित ২ সন্ত্রা ফল• ভবে ত্রসৈরে কার্ত্তিকে। णा खु विश्विदः भूध विक्वत व् মুত্তম। শ্রীদামোর তৃষ্ট্যথ পুলক য় সমাহিত: ॥ উজ্জে মাসি মুনিশেষ্ঠ श्राज्यकाल उपामल । शाञ्च (पिशि काल मान यर्गप भागिना মিপি।। ইতি পাছে। উত্তরখণ্ড ১৯৫ व्ययागः॥ ६। वृद्धायात्र । जुतान শ্विभ यव अवंखि विधम छन्। (5-**ষা**করস্থিতা যুক্তি বিদ্যু**ত নাত্র** मःभवः॥ सर्जिक समि (या छक्त)। বর্বাদ্রাদ্রণভোক। প্রভাহ। বিষ্ণু ज्छारथः म याजि ভवन• **इरद्रः** ॥ कार्डिक गामि यः वर्षाए जिन **े उलान भी लक । अरहा** द्वाजान् मू নিশুেষ্ঠ স যাতি পরমণ পদ• ॥ কা र्ভिक गामि त्या प्रमाट शाम्बान ছিড অনে। দদ্যাৰস্তান্তিত বৎস যন নৈব স পশ্যতি।। যজ্ঞোপ वीछ था प्रमाट ज्ञि देव दाक ণায তু। সংগতি বুক্সদন পুন त्रावृद्धि विद्धिं ३•॥ **जाम्लरिक्**य या ॥

पर्गा अभूगः विधिविद्यां। गन्न-इंट्याक माश्या छ जुङ्गा ज्या गन्न-मतात्रमान् ।। कि हम्मनक्ष त्या प्र-प्राथ (प्रत्मुषार्थ माम्त्राथ । विः भूग्य (प्रतिपृत्य भूतम्तत्रभृतः तुः जिथा नातित्कलक्ष्यः वर्षः मतः खक्षः म पश्चितः। त्या प्रप्राव्यपः दिपृत्य म मन्यथ भू ध्वान् ज्ययः ।। ইতি পাদ্য উত্তর্থতে ১১৬ অধ্যাयः।।

वाछ्नाऽ क्री वङ्द्रश्च वङ्गगाऽ जाव इञ्डार्थिकाऽ भुजायन निष्मग्रः ॥ वाङ्वाद्रः भू॰ (भूषा छक्वृक्षः ॥ इङ् द्राज्ञ निर्धिः ॥ अनऽ भव-नीय वकादानि छह्त्य मुक्षेवऽ ॥ वाञ्च क्री यान । यथा। यान यूगाऽ नाञ्च वाञ्च वर्छ वाइन (क्षाद्रत्य। इङ् ह्रिक्ष प्रमुख्यः ॥

বাহা: ত্রি বহনীয়: ॥ বহি: । বাহির ইতি ভাষা। যথা। অপবিত্র: প বিত্রোবা সর্ধাবস্থা: গতোপি বা। য: ন্নরেৎ পুগুরীকাক্ষণ স বাহা। ভাষ্তর: শুচি: ॥ ইতি মৃতি: ॥

বাছে নিদ্য: পু• বহিরি নিদ্য:। তথ্যা। চফ্ট্টা জিল্লা। নাসিকা। ত্বভ্যশ্যেত্র•। এতদেকৈক গুণা:। যথা। এতে তু দ্বীন্দ্যি গ্রাহ্যা অথ न्यानां स मद्याः। वार्शिक्रकिन्त् । विः भूः जी भक्ती। इंड्रामद्रः॥ ইতি ভাষাপরিংছদ:॥

বাল্লিকঃ পু॰ বাল্লীৰদেশঃ। ইত্য- বিশ্লকঃ ত্রি বিশ্লভিঃ। ইভি সিং भव़ हो का यां • खब्र छः ॥

वाङ्गिष) ज्ञी बङ्ग्य ।। शिक्षु। वाङ्मीक १इउ।मद्रामिका ।। वाञ्चोकः भुः एम्मा ७ मः। यन्थ ইতি আরবী ভাষা॥ তদ্দেশজাত-। (घाठेकः। इ डामद्रामिनीकात्रो ॥ পন্ধরবিশেষ:। ইতি শব্রত্না-वनी ॥

वाक है कार्हा है कि कविकन्नक्रमः॥ इ बाह्म जि । नम्या भारते स्वर्ष निष्को हेमनुवाक्षा (वामयुहाद्गाराज-मार्थः। इंडि उड़ीकाशाः मूर्गामामः वि व निशुरः ॥ नियाशः ॥ পদপূরণ ।। নিশ্চয়: ।। অসহন ।। (इड: ॥ व्यव्यक्तिः ॥ विनित्यागः । द्रेयम्थः॥ श्रद्धि च्यः॥ श्रुत्तः॥ व्य-বলন্ন-।। বিজ্ঞান-। ইতি মেদি-नी।। वित्मवः॥ गिजः॥ जानग्रः । পालनः। इंडि भन्दद्वावनी ॥ উপসর্গবিশেষঃ। অস্যার্থাঃ। বি-विस्मय दिक्षा नक्ष्यं गठि मा विष्य । इंडि मृथ(वाष्ट्रीकायाः मुर्गाः) म्। भः।।

य गुश्या अत्रपृष्टे जावना ॥ विःमः वि विःमछः भूत्रमः। इछ निकालमुकोरी॥

काउकोग्रही ॥

विष्णि छो मध्यप्रविष्णयः। বিশ ইতি হৃডি ইতিচ ভাষা। यथा । विःশञ्जान्ताः मरिकरञ् गर्दाः मःथार्य मःथार्याः । मः খ্যার্থে দ্বিবহুত্বে স্ত স্তাস্ চানবতেঃ ব্রিয়: ॥ ইত্যমর: ॥ ভদাচকানি। द्वादगदान् : >। अञ्चल: २। इंडि কবিকলুলতা।। নখ° ৩। ইতি সং-ক্ত্যমূক্তাবলী।।

বি॰শতিক: ত্রি বি•শতিযোগ্রঃ! यथा। मःथ्यायाकक् म्यानाही त्य হর্থে। বিংশতি ত্রিংশন্ত্রণ কণ্ भ छाया । जा छा कन् महार व्यमः ज्ञागाञ्च ज्न महार । विः भ-কঃ। সংজ্ঞাযান্ত বি**ংশতিকঃ**। ইতি সিদ্ধান্তকৌমুদী॥

বি শভিতমঃ ত্রি বি শ:। ইতি मिषाष्ट्रकोयूकी ॥

বিংশী পৃণ বিংশতিঃ। ইতি সিদ্ধা उक्षेग्री ॥

विक॰ क्री मन्द्रः भुमृ खाया । कोतः । यथा। क्षित्रः अन्त्रः भूज् जायाः

পেग्यः शालनः विकः। ইতি भद्र-চন্দ্রিকা॥

विक्छिटिः भू॰ शाक्त्रः। ইতি শক্ষালা॥

विकञ्च : भू॰ वृक्ष (७४:। वँई ह इंजि ভाषा। उद्भर्गागः। बापू-कर्षे इः २ जुनावृक्षः २ शु द्रिलः 8 व्यायमार १। इंड्रामद्रः ॥ गुनाकः ७ मध्यती १। इंडि तङ्गाला ॥ কণ্টপাদঃ ৮ বহুফল ৯ গোপ-विक्ति ३० मुनाकतः ३३ स्तूकतः ३२ एउ हा ४: २० य छ्डी यतुः का मन भः ७९ भि अतः १६ स्मिकः १५ প্ जः ११ दिखिनी १४। यमाखनाः । অসুনব্র হ্র॰। পাকে ২তিমধর-ष्-। वध्य-। मीभनष्-। कामना-मु श्लीरु नाणिवः । भावनद्वः । ইতি রাজনির্ঘণ্ট:।। অপিচ। সূত্রব यञ्चवृक्षण कछकी वराष्ट्रभावित। विकक्ष अकृतः भवः स्युवः गर्वामाः ৰ জিৎ।। ইতি ভাবপুকাশ:॥

বিক্সতা জী অভিবল। ইতি রাজনৈর্ঘন্ট:।।

विकाः भ् क्षणाः।। (कज्ः। इंडि (मिरिनी ॥

বিক্ষ: ত্রি বিক্সিত:। ইত্যমর:॥ কেশশ্ন্য:। ইতি মেদিনী॥ विक्षा जी मश्रामाविका। इंडि ब्राजनिर्घणेः॥

বিকছ: ত্রি কছরহিত:। নুক্তকছ: । ইতি ষ্ভি:॥

বিকট: পু॰ বিষ্ণোটক:। ইতি শব্দ-রহাবলী ॥ সাসক্তঃক:। ইতি রাজনির্ঘণ্ট:॥

विकितः जि विकाशः॥ विकाशः
। इंडि मिनि ॥ जुन्ततः । इंडि
विश्वः ॥ नस्ताः । इंडि ध्रानिः ॥
विक्रः। इंडि जिलाश्रम्पः ॥
विकृतः। इंडि जिलाश्रम्पः ॥
विकृतः। क्षे जायाप्ति । नाह वोश्वाप्ति । ज्यापा । व्याप्ति । नाह वोश्वाप्ति । ज्यापा । व्याप्ति । नाह वोश्वाप्ति । ज्यापा । व्याप्ति । नाह विश्वापा । व्याप्ति ।

विक्षेकः भू॰ यवामः। ইতি छ। । विक्षेतः। वृक्ष्विष्णयः। उट् भर्यायः। मृक्ष्वः २ गृष्टिनः २ यापूक्षेत्रः १ वाक्षेत्रः ६ काक्ष्वामः ५ वाः ५ व

ইতি রাজনিঘণ্ট:॥

विकथन क्री मिथ्राभाषा। यथा। न्नाधा भुन मार्थवारः माजू निष्ठाः विकथन। इंडि (इमहन्मुः॥

বিকন্সিতঃ ত্রি বিশেষেণকস্পবি-मिष्ठेः। विश्वंक कम्भिशाखाः क পুভাবেন विश्वमः॥

বিকর: পু॰ রোগ:।ইতি শব্দ-ठिन्तिका॥

বিকরাল: ত্রি ভ্যানক:। ইতি विकरेणकार्थ (दिस्नी।।

विकर्नः शु पूर्यभाषनभक्तीरमृतः। यथा। जञ्चन्यामा विकर्भक स्नोम-ए जि ज्यम्यः। अत्। ह वहवः भ्रा মদর্থে ত্যক্তজীবিতা: ॥ ইতি ভগ वद्गी जाया > व्यव्यायः॥

दिकर्निकः भू॰ नात्रश्रातमाः। इंडि (इनहमुः ॥

विकर्डनः भू॰ न्यंतः॥ व्यर्क्षः। ইত্যমর:॥

यथा। न माक्षी नृপ जिः कार्य्या न काक्क द्रभीनाती। न (भाविषा न लि ऋर्छः न गरऋर्छ्या दिनिर्गछः विकर्णक्रान वृष्या न शिष्टुर्निका नारिता न विकासित्यः ॥ इति विवासः भूः ज्राष्टिः॥कन्ननः। इति

मानत्व ৮ अवशाय ७७ (क्लाकः ॥ विकर्यकृष्ट निविष्ठकर्यकात्री। इंडि व्हाक छ छै:॥

विकर्याष्ट्रः जि निविध्वतृ १ यथा। शाय खिला विकर्मा हान् विकाल-यु जिकान् मधान् । (र जुकान् वक-वृङी • क वाद्मारजगानि नाहरिय ॥ ইতি বিষ্ণুপুরাণে ৩ অংশ ১৮ व्यद्यायः ॥

বিকর্ষ: পু॰ বাণ:। ইতি ত্রিকাণ্ড-(শ্ব: 11

विकर्यन ली आकर्यन विश्वक्य-था जा दनहे शु छ। यन निश्चन ॥ বিকলঃ ত্রি বিস্থল:। ইতি জটা-ध्यः।। य जावशीनः। ইতি ভরত:।। বিকলপাণিকঃ পু॰ স্বভাবক্রিপা भियुकः। यथा। वन विकन्मानिः कः। ইতি হল।गुत्रः॥

विकला खी शजुशीना। इंजि मद-ब्रङ्गावनी ॥

विकलायः वि च नावरजान्।नायः । उट्भर्गायः । जाभाग ७: २ । ইত্যমর:॥ পোগওঃ ৩ অঙ্গহীন-कः । इंडि मक्द्रनादनी ॥ ।। नाध्यशैरना न वक्तरद्या न एमूर्र ने विकली खी वाहुई। ना । ইकि नेपर

ब्रदावनी॥

ध्यक्ति]।। विविधक्यः। अ ह षितिथः। व्यवस्थि उः । ঐहिकक्षा সোপ্যাকাঙ্কা বিরহে যুক্ত:। তথাচ ভবিষ্যে৷ ফৃতিশাস্ত্রে বিকল্পস্ত আ কড়্রাপ্রণে সতি ॥ ইছাবিকল্পে क्षेत्रायाः। यथा। भूगानवानुमा-ণত্ব পরিভ্যাগ পুরুদ্ধনা। পুরুধ ब्जीवन हानिजा। পুত্যেক मर्ड पाय डा ॥ वीहिं थर्**क उ**यरेव র্যজেত ইতি শুষতে। তত্ত্র বুীহি श्रुराश भूजी उपवश्रामाना भ রিত্যাগঃ। অপুতীত য্বাপুদা गु भित्रकन्नन । इन्छ भूर्वयाए शृथक वाका अनाथा समुह्रायि यागिमिक्तिः म्याट । व्यञ्चे वि-क्ल्न न डेड्यः भाजार्थ इंड्राङ् । পুযোগান্তরে যবে উপাদীয়মানে পরিত্যক্ত যব প্রামাণ্যোজ্জীবন• चीक् उ यवा शामाना शानि दि छि চত্বারো দোষা:। এবং ব্রীহাবপি চত্বার:। ইভ্যপ্তৌ দোষা ইছাবিক-ল্পে। তথাচোক্ত•। এব মেবাষ্ট দো-(वानि यर्जु) हि यव वाकारयाः। वि-কল্প আশ্রিভ স্তত্র গতি রন্যান বি-দ্যাত ইতি । একার্থত্যা বিবিধ• কল্পতে ইভি বিকল্প:। ভষাদ-ইদোষভিয়া উপোষ্য দ্বে তিথী ই-

ত্যত্র ন ইছাবিকল্প: কিন্তু ব্যবস্থি-তবিৰল্প:। ইত্যেকাদশীভত্তু•॥ বিকখর: ত্রি বিকাসী। ইত্যমর-**होकाया॰ खब्र** उः ॥ द्धी मिक्षिष्ठा। ইত্যমর-বিক্ষা ष्ठीकाया**॰ जायमूक्य है: ।। मा॰म**द्धाः হিণী। ইতি রাজনির্ঘণ্ট:॥ টীকালা ভরত:॥ চন্দুঃ। ইতি ত্রিকাশু-বিক্সঃ 7 रणयः॥ বিক্স। ত্রী মঞ্জিধা।ইত্যমর:॥ बि म्लानाभरन्यान्यवि-বিক্ষিত্ত• শ্লেষ:। তৎ পর্য্যায:। উজ্জন্তিত• ২ উক্তৃম্ভ ৩ মিত ৪ উন্মিষিত ৫ विनिष् ७ डेबिष् १ ७ जेबी लि उ ৮ বিজ্ঞিত ৯ উদ্ধুদ্ধ ১০ উচ্ছিদুর • ১১ ভিন্ন: ১২ উদ্ভিন্ন: ১৩ হসিত: ১৪ বিকম্বর• ১৫ বিকচ• ১৬ ব্যাকো-यः २१ क् झ॰ २४ म॰ क् झ॰ २२ मु है॰ २० উদিত २७ मिन जे २२ मीर्ने २० मू हि उ २० उ रुख अ ল্ল•২৬। ইতি রাজনির্ঘণ্ট:॥ বিকশ্বর: তি বিকাসশীল: ৷ তৎ-भर्यप्राय:। विकामी २। इंडप्रमदः ॥ বিকসতি কসজ্গতৌ দন্ত্যান্ত: যা-যায ভাস কসেতি বরে বিকশ্বর:। বিকাস: মুটনে ব্যক্তাবিতি দন্ত্যা স্থে ধরণি: । লশেশথৈরত্র জলাশ যোষিতা মুদা রমস্তে কলভা বিক মরৈ: ৷ পুগীযতে লিজগণৈশ্চ যো-ষিত্রা মুদা রমস্তে কলভা বিকমরৈ: ৷৷ ইতি মাঘ্যমকেশি দন্ত্যবন্তৃণ ৷৷ কষবধে মূর্জন্যান্ত ইত্যস্য রূপ মিতি কেচিৎ ৷৷ কশ শব্দে ইত্যস্য ভালব্যান্তস্য রূপমিতি কেচিৎ ৷ ইতি ভট্টাকাযাণ ভরত: ৷৷

বিকন্বরা স্ত্রী রক্তপুনর্বা। ইতি রাজনির্ঘটঃ॥

প।ইতি ত্রিকাগুলেশ:।)
বিকালক: পু• বিকাল:। ইতি
ত্রিকাগুলেশ:॥
বিকালিকা জী মানবলা। কানী

বিকাশিকা জ্রী মানরজু। ভারী। তাঁবী ইতি ভাষা। ইতি ত্রিকাও-শেষঃ।।

বিকাশ: পু॰ রহ:॥ পুকাশ:। ই॰ ত্যমরটীকাযা• ভরত:॥ বিকাশো বিজনে ক্টে। ইত্যজ্য:॥

বিকাশন ক্লী বিকাশ: । বিপূর্ব কাশৃছ দীটো ইত্যমাৎ অনট্ পু-ত্যযেন নিয়ন্ত্রণ।।

বিকাশী তি বিকাসশীল:। ইত্য-মর্টীকাষা রায্যুক্ট:।। বিকাষী তি বিকাসশীল:। ইত্য-

মরটীকাঘা ভরত:।।

বিকাসী তি বিক্ষর:।ইত্যমর:॥
বিকির: পু॰ পক্ষী।ইত্যমর:॥
কূপ:।ইতি ত্রিকাগুশেষ:॥ পূজাকালীন বিশ্বোৎসারণার্থ ক্ষেপণীযতগুলাদি:। যথা। কডিতি সপ্ত
ভগুন বিকিরানাদায়। অপসপ্ত
তে ভূতা যে ভূতা ভ্বি সংস্থিতা:।
যে ভূতা বিশ্ব কর্ত্তার স্তে নশ্যন্ত শিবাজ্ঞবা।।ইতি বিকিরেৎ। যথা।
লাজ চলনে সিদ্ধার্থ ভলা দ্র্বা স্পা
শাক্ষতা:। বিকিরা ইতি সন্দিপ্তা:

লৰ্ব বিয়োবনাশকা: ॥ ইতি তন্ত্ৰ-नातः॥ यश्वित्यानीनाः शिखनानः । যথা। অস ফ্ত পুনীতানা থো গিনা॰ সলযোষিতা । উচ্ছি ভাগবেশ স্যাদর্ত্তের বিকিরশ্চ যঃ ॥ অণি । পিগুনির্বাপরহিত। যতু শান্ধ বিধীয়তে। স্বধাবাচন লোপেত্র বিকিরস্ত ন লু**প্যতে** ॥ इंडिम्ब उद्धुः॥

্রিব্রণ 👸 বিক্ষেপণ।। বিহিৎ গৰ । বিজ্ঞান । ইতি কুধান্বৰ্থ 京門南汉、11

भू· अर्क्ष्यः। ३३_५ विक बनः स्त्रः ॥

বিকীর্ণঃ ত্রি বিফিপ্তঃ। ছডান ইতি ভाষা। यथा। अथ मा भूनदार वि-श्रुण। दग्धाणिश्रन धृमद्रस्ती। বিল্লাপ বিকীণ্যুৰ্জ্ঞা সমদু:খা মিব সর্বতী হুলী।।। ইতি সমার-সমূবে ৪ সগঃ॥

বি নির্ণরোম^ন ক্লী স্থোণেয় । ইতি त्राक्षिवर्षिः॥

विकीनंग छ नी खोलय । इंडि ब्रामिधिकः॥

ত্রি হ্র্যাণঃ। ইত্য-विन्न बीनः नवः !!

वित्र भुः वृत्रः। इंज्रुशामिः ∥विक्ञी खी द्रागः॥ उत्रः॥ वि-

(कायः॥

বিস্কাষ্ট পু ইফ্বাস্বালপুতা यथा। देववञ्च अत्ना द्वानी विद्या-**ब्रः পृथिवीপতিঃ। उत्र**) পুঞ 🛎 🤊 कामीविक्षक (क्षेत्र है है) है ।। সো হযোধ্যাধিপতি বীরি শুস্য পঞ্চশ মৃতা:। ইতি বহি পুরাণে नागदाभायान नामाधायः ॥ खी नामिका। हैंडि বিকৃণিকা (र्भव्यः॥

বিকৃত বি বীভৎসা। রোগিত ॥ व्यमःकृष्ठ•। ইতি मिन्ती ॥ विक्ठ॰ क्ली विकातः। ७ म। लक्ष्ण॰

। यथा। श्री मात्मर्यापि छि यं बता-চ্যতে স্বংবিবিক্ষিত । ব্যঙ্গ্যতে চে-ষ্টবৈবেদ বিকৃত ভদিনু ব্বাঃ ॥ इंड्राड्य ननी वमिशः ॥ भू ज्यामिय-ষ্টি সাবৎসরাত্র্যতি চতুর্রি শব্র্যণ । यथा। ভবিষ্যপুরাণে ভৈরব উবা-ह। नदीः भुजाः भुभी ७/१८ वर्गा विः শোক চ ভাষতে। শিরো বক্ষো **হজ্মি রোগাশ্চ পাপাদ্ধি বিকৃতে** জনা: ॥ ইতি জ্যোতিস্তভু• ॥

विकृष्टिः खी विकातः। इंडामतः ॥ বিকৃতি ডিস্ত রোগযো বিতি বিশ্ব: 11

कातः ॥ मन्त्रानिः । ইতি एम-हन्तुः ॥

विक्ष्ठेः बि विष्णस्य कविष्ठः। व्या-क्ष्ठेः। विभूई क्षशाः क भू-जार्यन निञ्जमः॥

विक्ली खी लहेवर्सिः ॥ क्लान-क्किंडा। ইडि ध्रुतिः ॥ महोक्तल-मिवमा लड़ी। यथा। मृर्या कलः मही विह्य वांगु ब्राकाण भाव ह। मीकिंडा व्याक्ताः माम देखाडा खनवः क्रमार्था। मृवर्द्द ना उरेष वा-या विक्ली हालदा निवा। माहा-मिण ख्या भीका द्वाहिनी ह यथा-क्रमः ॥ मूर्याभीना मिमाः लाङ्गा क्रमः ॥ मूर्याभीना मिमाः लाङ्गा क्रमः ॥ मूर्याभीना मिमाः लाङ्गा क्रम्होस्त नामिडः मह। ইडि मार्क ख्यल्वान क्रम्मर्गः॥

विकाकः भू व्कामुद्रभूधः। म ह कल्लिए (दन इडः। यथा। कल्लिका क विकाका छा। गमा भागि यू था। भिजः। गूग्रं विमान विकु व्लिका ना। कनयन छय।। व्कामुत्रमा भूष्ट्री दो नशादी मझत इंदिः। एर्याः कल्लिः मग्युर्थ नशुरेक छछ। र्यार्थ्या।। उर्या गमा भूका द्वा ह् निज्ञासमा छ्मा है। क्वाहार्डा स्भञ्ज द्वी मृष्ट्री ह् विज्ञ रहा छनाः।। उडः भूनः क्वा विष् रह्वी क्लिक्ष र्यशङ्कः । नन्तरकन नित समु विकाकमाहिन्य भुङ्ः ॥ ইडि किल्लभूताराया स्थायः ॥ विकायः जि कायत्र हिडः । नि: स्वायः । ইडि भूतानः ॥ विक्रः भूः किल्लावकः । ইडि जिकाखानयः॥

বিক্রম: পু॰ বিজ্ঞাযথা ই খরো विक्रमी भन्ने (मभावी विक्रमः क्रमः 1 इंडि विक्षूत्रहत्रुनाम एउ। वन् ॥ **भागांजिम्यः ।** एट्शर्यन्यः অতিশক্তিভা ২। ইভা্মরভরটো া ক্রান্তিমাত্র । ইতি মেদিনী।। বিক্রমাদিত্যরাজা। যথা। ধন্তরি **ফপণকানরসিংহ শ**স্কুবেভাল জ উ ঘটকর্পর কালিদাসাঃ। খ্যাতী বরাহ মিহিল্লৌ নূপতে: সভাষা द्भागि रेव वद्गक्ति नेव विक्रमभा ॥ ইতি নবরত্বশ্লোকঃ ॥ চরণঃ ॥ भक्तिः। ইতি রাজনির্ঘণ্ট: ॥ পুভ-বাদিষ্ঠিদাবৎসরাভর্গত চতুর্দশ द्य । रथा । काराउ जर्दणगानि स्मिनी निद्भाष्ट्या । जवन मध् गवः व महायः विक्रम द्रिय।। ইভি জ্যোভিন্তভু• ॥

विक्रगामिकाः भू श्रनायथाकाः त्राह्म। मह উज्जयनीतमादिशः ভি: সৰ্থকর্তা চ। তথপর্য্যায়: ।
সাহসাক্ষ: ২ শকারি: ৩। ইতি
কটাপর: ॥ অস্য বিবরণ দ্বাত্রিণ
শথ পুত্তলিকা কথাযাণ দুষ্টব্যণ ॥
বিক্রমার্ক: পুণ বিক্রমানিত্য: ।
ইতি কেচিৎ ॥

বিক্ষী পুণ সিংহ:। ইতি রাজনির্ঘণ্ট:॥ বিফ্ট:। যথা। ঈশ্বরো
বিক্ষমী ধন্বী নেধাবী বিক্রম: ক্রম:
। ইতি মহাভারতে শান্তিপর্বণি
তস্য সহসুনামন্তোত্রণ। অতিশক্রিবিশিষ্টে ত্রি।।

विकयः भू॰ विकयनिकया। विहा
हेल जाया। जर्मशंगः। विभागः
२ । हेज भ्रतः॥ विभागः ० भागः । ।
३ ज्ञ भ्रतः॥ विभागः ० भागः ।
३ ज्ञ भ्रतः। विभागः । व्यवहातः ।
१ विक्र विक्र विक्र विक्र ।। ज्या
१ क्या विक्र विक्र विक्र मुण्याः। ।
१ विक्र विक्र विक्र वाजाः क्र विक्र विक्र विक्र वाजाः क्र विक्र वाजाः वाज

বুজেৎ। শতু হ্র দে গ্রাপরিষ্ঠার্থ ভদ্ধ-न वृक्षिपाञ्च यार ॥ या छ এ व व्हम्य-जि:। गृश्कावारिक· कीवा उ्णा ग्नाफ्रवानिङः। भद्यः कावराङ যৰু ক্ৰালেখ্য তদুচ্যতে ॥ ক্ৰ বিক্রথে সম্য বিশেষাভ্যন্তরে পণ্ **क्तां डाभारिक कि: । यथ। यनु: 1** की द्वा विकीय वा कि व्हि॰ या गृहा-নুশ্যো ভবেৎ। সোন্তদ্শাহে ত-**प्**नाः हराहिवाररी**७ वाः ७**७व्या-ख्वतः इति **उद्गादः । यथा याद्ध**-বল্পঃ। দশৈক পঞ্চ সন্তাহ নাস ত্র্যু शर्किमानिकः। वीकार्या वाश्र द्रव ज्ञी (नाश भू भा भदीक्य ।। अब বৃহস্পতি:।। অতোর্গক্ পণ্য দো-यञ्च यि म बाया क्रिट । विकाउ: **जु** जित्रवं एक जा मूला भवा पूर् यारा। वा उ उ जुवा भन्नी का नार । কাভ্যায়ন:। অবিজ্ঞাতম্ভ য়ৎ কী-ত দুষ্ট পশ্চাদ্বিভাবিত। ক্রীত তर बागित (मयः भगः) काला হন্যথান ভূ॥ কালে প্রান্তক্ত পরী-ফা কালাভ্যন্তরে। পরীক্ষতে তু বৃহস্পতি:। পরীক্ষেত স্বয়ণ পণ্য चात्रवाक भूममं यट । भन्नीकिउ॰ वल्म उ॰ गृही दा न भून खार छ। অত্র বিশেষধতি নারদ:। ক্রীত্ম ম্ল্যের যো দুব্যু দুঞ্জীত মন্যতে | क्यी । विष्कृतः शुक्तिमय छ **७ श**िष्ठवाङ्ग्राविक्वणः ॥ विश्वीरय eছি দদং কেতা মূল্যাগ্ৰিশা° न मारदार। विचन उठीयहर পরত: ক্রেতু রেব তৎ ॥ আহরেৎ मन्त्राथ विकारत इंडि म्बरः। विख ণ ত্রি শা শস্যা যাক্তবল্পঃ। রাজ रिहरवाभवाउन भाग दिनाव छेभा গতে। হানি বিক্রেভুরেবাসৌ যাচি खन्राभुषह्जः ॥ नातमः । उन्ह-ন্যেত বা পণ্য দছে তাপহিষেত বা । বিক্রেতু রেব সো १ নর্থো বিক্রীযা-স•পুষছত: ॥ भीयमानः न গৃহাতি की उ॰ भगुष्ठ यः क्यी। मुक्यामु ভবেদ্বোষো বিক্রেতুর্যো ২পুষছতঃ । इंडि भागिकडडडुं ॥ # ॥ অপিচ। ন্যাসং কৃত্বা পরতাধিং কৃত্বা বাধি করোতি চ। বিক্রয বা ক্রিয়া তত্র পশ্চিনা বলবত্তরা ॥ ন্যান কৃষা আধি করোতি আ-ধি কৃদ্ধা বা বিক্রণ করোতি। বি क्रामरः प्रवृध्नाकार मानः नः क्तर्रा ७ ७ व शरा किया निष्का छ। दे । अप्यापि का प्रतास्था मंत्रपालिया 🖟 वाध्यकात्र विकयसार ७८ कर्जु ज्या वर्ष इनगर गर पर एक्ट्

পুতিগৃহীত্ভ্যা মাধ্যদ্ধার: কার্য্য:। ইতি। তত্র চ। ন চ স্থাবরস্য সন্ **उम्र গোত্র সাধারণন্য চ**া নৈকঃ সর্ব্যাৎ ক্রমণ দান পরস্পার মতঃ বিনা ৷৷ বিভক্তা অবিভক্তা বা সপি-अः इत्यतं नगः। अका श्वीणः সর্বত্র দানাধ্যন বিক্রয়ে ॥ ইতি ব্যাসবচনভ্যোমেকস্য দান বন্ধক-বিক্রয়াধিকার: ইতি বাচ্যু যথেষ্ট विनिर्धागाई इक्लामा अनुमा म्वा-खत्र इवाजाभावत्मवार वहनक सः নিত্বেন দুর্ভি পুরুষ গোচর ভিক্র-याहिन। ऋषुेत्र विद्यादाहथर्मछाल-নাৰ্থ নিষেধ্ৰূপ নতু বিক্ৰযাদ্য নি-ল্ল ভার্থ মিতি দায়ভাগঃ ॥ৠ। এ:ঞ্ ञ्चावरत विकरमा नाडि अर्य)। नाधि भनुष्क्रया । इंडि ङ्वातत्रमः (कदन विक्रव भुडिरयदार এवः ভূনি यः পুভিগৃহ ভৌভ্যাদি বচনে দান পু॰ **म**•म। मर्मनाष्ट्र विक्रायि कर्खव्य সহিরণ্য মূদক দল্গ দানকপেণ স্থাবর বিক্রয় ইতি বিজ্ঞানেশ্বর: । বস্তুতন্ত স্থাবর বিক্রম নিষেধে অ-বিভক্ত জ্বাবর বিষয়:1 তত্তাপি যদি বিক্ৰা:• বিনা অবস্থিতি ন ভবতি ত-मा विकाः कर्डवाः। श्वं भूक्षा छितं उ নষ্টোদ্ধারে বিশেষণ্ডি নিভাক্ষরা-

याः। इतितः विश्वतिकृतं यम्। शि स्रा मर्ब्छि ५ । अमञ्जय गुङान् मर्वान् न দান নচ বিক্রয় ইত্যাদি। অস্যাপ-वार मार । একোপি सारदा सर्गाः দ্যানাধ্যন বিক্রয় । আপৎকালে व्यक्तिशार्थ भर्मार्थ ह विश्वपं ।। ইতি দাযতজুণ ৷৷ঞ্চা দুব্যবিশেষ বি क्य निरमक्षा यथा। मृजिः। विकी गन् মধ্য না'সানি হাভক্ষস্য চ ভক্ষণ । अर्वमगन्गागननः भृषुः পত्ত उएकगए॥ किनाकी व भारतन वाक्रणी भगतन ह। (वनाक्रव वि हारत्र मानु महाखानजाः व्राक्षः ॥ কালিকাগুৱাণ। বিক্ৰণ সৰ্ব ব-खूनाः कर्वन् भूषु। न प्रायञ्जक्। मधु वर्ष मुदा॰ लाक्षा॰ ভ্যক্তা মা॰ जक भक्षम ।। मनुः। महुः भुज-**डि** वोट्यन वाक्या बवलन ह। ब्राह्म भूमी ভवि वाक्षमः क्षीत বিক্ষাৎ।। অশক্তো ভেষ্ডস্যার্থে यक्डारूटा खरेबन ह। यर्ऽन्मां ख विक्या खिला शास्त्रन छ र नगाः॥ ইত্যাহ্নিকভন্তু।। গবা• বিক্রয়কারী চ गविलामानि यानि ह। जावधर्व-সহস্থানি গবাং গোষ্টে ক্রমি র্ভবেৎ ।। इंडि यगवहनः॥ (भावरथा श्याक्तर न गाबा भात्र नार्या जाविक गाः। उ

ডাগারাম দারাণা মপত্যস্য চ বি-क्यः॥ ভ্डाहाष्यस्मामान स्थानाः नाक विक्रयः। इंड्रांकि मानत्व 🖒 অধ্যায়ে উপপাতকমধ্যেগণিত থা विक्रयण क्ली विक्रयः।यथा।यमाः হি শকালি হুতাশ প্রা নেষ্ঠাঃ ক্রয়ে বিক্রয়ণে পুশস্তাঃ। পৌষণান্ন চিত্রা শত বিন্দু বাতা: ক্রমে হিতা विक्या निविष्ताः ॥ इंडि क्या তিঃসারসংগুহ:॥ विक्रियकः বিক্রেভা। ইভ্য-मतः ॥ विक्यी जि दिक्रगकर्डा । इंडि नदद्वावनी ॥ বিক্রান্ত॰ ক্লী বৈক্রান্তমণি:।ইতি ब्राजनिर्घक्तः॥ পু॰ শ্র:। ইত্যনর:॥ সি হ:। ইতি রাজনির্ঘণীঃ॥ ত্রী অখগতি:। তৎ-বিকান্তি: পर्यायः। भूषायिङ २। इंडि ত্রিকাওশেব:॥ বিক্রমশ্চ॥ বিকাষিক: বিকেতা। ইতি **જ!** (इग्रहन्तुः ॥ বিক্রিयা জী বিকার:।ইত্যের:। ত্রি क्डविक्यः। यथा। বিক্ৰীত: वृक्ष्णि । नाश्चिक रेक्टव अक्ट **७५न**• क्रांडिङिः चक्•। यम्ख

বিখ্যাতি

ত্যক্ত বিক্রীত ক্রাম দভতে ধনী॥ ইতি পাুৰশ্চিত্ততত্ত্ব ॥ ত্রি নিধুর । ইতি হেম-ठन्द्रः॥ विक्रिजः वि विक्रयक्रजी। ७९-পর্য্যায়:। বিক্রযিক: ২। ইভ্যমর: ॥ विक्यी ७। इंडि भक्त्रद्वावली ॥ বিক্রাযিক: ৪। ইতি হেমচন্দু: ॥ ত্রি বিক্রথযোগ্<u>য</u>াব্য । **७**८ भर्य)ायः। श्रानिखवाः २ ग्रानाः ० । इंड्रान्द्रः ॥ विक्यायाग्रात्याः ग्रानि यथा। इंरस्ड वृक्ति रेवकवाराः ন্ত্যহতে। ধর্ম নৈপ্ন । বিট্পন্য নজ্জোজার বিকেষ বিভবর্জন ৷৷ সর্বুেসানপোষ্ঠে কৃতামঞ্ তিলৈ: गহ। অশ্মনো লবণঞৈব भगता त ह नान्याः॥ नद्ध তান্তবংরক্ত• শাণ ফৌনাবিকানি छ। चांभ (६८ मु) इत्र कानि कव ज्ञान ७ (थोवधीः ।। यशः भञ्जः বিষ মা স সোন গলা শল স र्बणः। क्रीतः (कानुः पवि य्उः **रे**जनः मधु ७७: द्यमान् ॥ यात्रः ণ্যা॰ চ পশ্ন সর্বান্ দে ছিণ চ वयाः मि ह। मन्तरः नी विक पाः का-क नर्वार्टककणकाः स्था।।

काम मुर्शाम् क्रां इस्तिव

क्वीवनः। विकीशी उ जिलान भ দ্মান্ ধর্মার্থ মচির জিতান্।। ইতি भानत्व ३० ञक्षायः ॥ विद्भवः जि विख्याः। इंडाप्रद्रः॥ विक्रियः जि जत्रमाङ्गीर्गः॥ भीर्गः॥ वार्षः। इंडि (मिनी।। বিখঃ বি গতনাসিক:।ইভিভর্ তদ্বিক্পকোষ:।। विथनाः भू व्या।यथा।न थन् গোপিকানন্দ্ৰো ভবানখিল দে-হিনা নন্তরাঅত্ক্। বিথনসাথি-(ठा विष्रष्टध्य मथ উদেशिवान् সাবুসা' কলে॥ ইতি শ্রীভাগব (७)॰ ॐ(क् ०) व्यव्यायः ॥ বিখঃ ত্রি গতনাসিক:। ইতি ভ র তদ্বিক পকোব:।। বিখুর: পু॰ রাক্ষস:।ইতি ত্রিফা-ওশেষ:।। ৌর:। ইতি সংক্রিপ্ত: भारतानामिन् खिः॥ গতনাসিক:। ইতি বিখ্যঃ ত্রি किंदि ॥ विथागाः वि थाजाभाः।

विश्वं थ्याथाजाः क भुज्यम

विध्याजिः जी श्रीमिषः। मृथ्याः

ভি:। বিশ্বখ্যাধাতো: কি পুডা:

निह्नमः ॥

(ग्न निय्नना।।

বিখ্যাপন স্নী ব্যাখ্যান । বিপূর্ব

ঞ্যন্ত খ্যা খাতো রনট্ পুভ্যবেন
নিম্নন ।।

বিথা:) ত্রি অবাসিক:। ইতি হেম-বিথা:) চন্দু:॥ ছিমনাসিক:। ইতি শব্রসাবলী॥

বিগণন ক্লী খাণমুক্তি:। ইতি ত্রি-কাওখোব:।।

विगवः जि भुजाविष्ठः। उद् शर्यापः। निशुजः २ व्यद्भावः ०। है गुभदः। वीजः ८। हे जि कृतुः॥ विश्वाद्यविष्ठः। हे जि स्मिन्नुः॥ विगव्यकः जि भित्रहिष्ठः। विशवा श्री र्यमा हे जि वस्त्रीरंशे क भुजा-यम निश्चमः॥

विगडार्खवा खी शक्षशकाणपरपः

छ छेक् ' निमृत्तव्यक्षका । छ ।

शर्मायः । निक्षनी २ निक्षणा ० निक्षः

नी ४ निक्षना ६ विक्षणी ५ विक्षणा १
। ই ७ मप्यक्षावणी ॥

विश्वनः भू नामः। यथा। এकप्र खि ना विश्विष्ठ यपुणाधानविष्ठ माना वुकारा विश्वक ला जाप्रणाणा-विविश्व विवेच विश्व खिनस् स्थानन्त्रय भाषाना की वासा-ना वासा भाकः। की वासा भावाना अव भाकाना बल्ला की स्थापिक स्था य विभिष्ठेम्। जाता बीयक्शउंगा उत्माभाषिकः भन्नमाजात्वनः । ইতি ভেদকোপাধি বিগম এব জी-বস্য পর্মাজানি লয়ः । यथा यहा-काममा घটবিগম এব শুদ্ধ আ-কাশে ভন্য লয়ः । লিক্শানীরাব-ছিমসৈয়বাজানো জীবভাব ইতি লিক্শারীর নাশ এন পর্য্যবসিতো মোক্ষ: । ইতি মুক্তিবাদং ।।

विगन्नकः भुः इङ्ग्रहीवृक्तः। ইতি রাজনির্ঘণ্ট:॥

বিগন্ধিক। স্ত্ৰী হপুৰা। ইতি **রাজ**-নির্ঘণী:।।

विगर्श) ही निम्तन । जङ्ग न । विगर्श) इंजि विभू र्व क्ष्यां अर्था -जा तन हे भुजारयन चन् भुजारय-न ह निश्च म ।।

বিগর্হিতঃ ত্রি নিন্দিতঃ।। নিষিদ্ধঃ
। ইতি বিপূর্ব গর্হবাতোঃ ক্ত পুত্যযেন নিয়মঃ।।

বিগলিত: তি স্থালিত:। যথা।
বিগলিত বসন পরিজ্তরসন ঘাট্য জঘন মপিধান । কিশলিয়শাযান ঘালি পালি ভর্ম বিধান ভর্ম নিধান ॥ ইতি গীতগোরিশে ৫ সর্গা:।।

মাজনে। রভেদেনি উপাধিবিশে- | বিগাঢ: জি স্নাত:। অবগাহিত:।

विभूषे गाष्ट्र थालाः क भुजायन । निम्नमः ॥

বিগান জ্লী নিন্দা। ইতি হেন-চন্দু:।।

विगारमानः जि विलाउनकर्छा॥ व्यवगारमकर्छा। विপ्रविगारुधा-তো: শान পুত্যযেন निश्चनः॥

विखनः मु॰ खनरविभन्नी छ। विभिन्नेः।
यथा। यथा माना ममा हर्छ नय॰
माजा उथा मम। विख्या मिन्ने
(ध्रम माजा विख्या जावर ॥
इंजि मार्का खरम्बार विवस्त मन्
नुस्रावायः॥

विशृष्टः जि शर्रि ३: ॥ ७४: । इंडि (मिनि ॥

विगुः जि गठनात्रिकः। ইত্যমরः॥
विगुः शृ भवीतः॥ युषः॥
विखादः। ইত্যমরः॥ विভागः।
ইতি মেদিনী॥ বাক্যভেদः। সত্
সমাসবাক্যং। তৎ পর্য্যাযः। বিশু
রঃ ২। ইত্যমরः॥ দেববিগুহকরগাদিপুমাণ শ্রীম্রিশদে দুষ্টব্যং॥
বিগুহং পু লী যুদ্ধ। ইত্যমরং॥
বিগুহাবর লী পৃষ্ঠ। ইতি শদ্দি

निर्घण्डेः ॥

বিঘটিত তি বিশেষেণ চালিত। বিপ্রবিট থাতো: জ পুত্রবেন নিয়মণ।।

বিষস• ল্লী শিক্ষুক•। ইতি রাজ-নির্ঘণ্ট:।।

বিঘসঃ পু॰ ভোজনশেষ: । ইভ্য নর: ॥ দেবপিত্রভিথিগুর্বাদি ভুক্তস্য শেষ• । ইভি ভরত:॥ আহার:।ইভি শব্রত্নাবলী॥

বিঘাত: পু॰ ক্লী ব্যাঘাত:। আঘাত:। যথা। বৃষ্টি বৃষ্ঠ তদ্বিঘাতে

হবগাহাবগুহো সন্দো। ইত্যমর:॥
বিঘাতা ত্রি নিবারক:॥ ঘাতক:।
বিঘাত শন্দাদিন্ পুত্যযেন বিপূর্ব
হনধাতোগু হাদি ত্রামিন্পুত্যযেন
বা নিয়য়:॥

विद्यः भू व्याघा छः। उर्ध्यायः । अञ्चर्यायः २ भूज्र्यः ०। इज्या मदः॥ क्षशाक्षणा। इजि मदः ठिम्पृका॥ मिषार्थ जमद अविद्य इजि भाठेः॥

বিশ্বকার। ত্রি ঘোরদর্শনঃ।। বিঘা-তী। ইতি মেদিনী।।

विद्यनायकः भुः गलमः। ইতি
भद्रद्वावनी।।

विव्नगणकः) भूः गानमः। इंडि विव्नगणनः) भद्यव्वादनी॥ 'বিমুরাজ: পূ• গণেশ:।ইত্যমর:॥ বিমুরিনাযক: পু• গণেশ:।ইতি কাশীখণ্ড:॥

বিমুহারী পু॰ গণেশ:। ইতি ত্রি-কাগুশেষ:।। বিমুনাশকে ত্রি।। বিমুত্তঃ ত্রি জাতবিমু:। বিমুম্স্য জাত• ইত্যর্থে বিমুশ্বাদিত পু-ত্যযেন নিমুম:।।

বিশ্বেশঃ পু॰ গণেশঃ। ইতি শব-রব্বাবলী।।

विष्मनाइनः शुः महाम्यकः। इति ब्राजिन्धिः॥

বিয়েশানকাতা জ্ঞী খেতদ্রা। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।।

বিদ্ধঃ পূ॰ অশ্বগুর:। ইতি ত্রিকাও-শেষঃ॥

विष्ठ हेन्न लि श छ क शृथक द्वा ।

हें कि कि कि केन हैं का विष्ठ ।

। जोतकी है । जि क विष्ठ कि विक्र कि गृथी है शिखा के विष्ठ के गृथी है । विक्र हें कि का छ। यः ज्ञ कि हों है । विक्र हें कि का छ। यः ज्ञ कि कि विक्र केन कि विक्र कि विक्र केन कि विक्र केन कि विक्र कि विक्र

ইতি দুর্গাদাস:॥ विठिकवः भू मलीभुष्डमः॥ म-দনকवृष्णः। ইতি মেদিনী।। विष्ठयन क्ली भागंग । इंडाप्रतः॥ বিচাৰ্চকা ন্ত্রী রোগবিশেষ:। বি-क इंडि जाया। उर्भग्रायः। কছ: ২ পাম ২ পামা ৪ ৷ ইত্যমর: ॥ व्यनिष्ठ। वहः कहः भान भाना भारताल विवर्षिको । ইতি भद्र-त्रज्ञावली।।#II **७**८मो यथः यथा। कत्र-বীর ভৃষরাল বেণ স্ব ৪ কর্ক টি । চতুর্গুণেন মূত্রেণ পচেক্তিল হরে; ख उ: । भागाः विष्ठिर्विकाः अर्ध मः ভ । इराषि वृगानि वि।। इंडि गाकरड २৮१वर्गायः॥श्रा व्यन्धः। स्त्रीहः ত্রিবৃত অষ্ঠ হরিতাল মন:শিলা । (मवनाक इदिए (ष दर्ध मा भी ह **इन्प्रन• ॥ विभाजः क**त्रवीत्रक अर्क भीतः मक्र भनः। এयाक कार्यः কো ভাগো বিষস্যার্চ্চ পল ভবেৎ ॥ भुष्टः कृति उनमा भाग्व २४ গুণে পচে । মৃৎ পাত্রে লৌহ পা-ত্রে বাশনৈ মৃদ্ধিনা পচেৎ॥ পানা विठिष्ठिका रेठव एक विरक्षां है का नि ह । অভ্যক্ষেন পুণশ্যন্তি কোমলবৃঞ্চ জাযতে ॥ পুস্তান্যপি খিত্রাণি रेडलनातन मुक्तिय । हित्राथि

ত মপি শ্বিত্র বিবর্ণ তৎক্ষণান্ত বেৎ॥ইতি গাক্ডে ১৯৮ অধ্যায়ঃ ।क्षा अनुक्षितिष्णयः। यथा। এकः অষ্ঠ মৃত পূর্ণ গ্রচ্ম ততঃ মৃত াতত ক্রম্বল পোক্ত তত ক্যাপি विष्ठिं का ॥ विशापिका जिथा रेमव পামা কছস্তত:পর। ৷ ততো দক চ বিষ্ফোট: কিটিমঞ্চ ততঃপর•॥ ত তশ্চালনক পোক্ত শতাক্ষ ত ড:পর•। ক্রু স্ঠানি চৈতানি ক থিতানি ভিষ্ণুরৈ: ॥ সক্ত: পি-**एका भाग्रवा वर्द्यावा विठर्हिका।** পিডকা কুদুপিডকা। দাব্যতে ত্বক খরা রুক্ষা জান্বে। র্জ্রেয়া বিচ-ৰ্চিক্ৰা ম পাদে বিপাদিকা জ্ৰেয়া ञ्चान (ভদাদ্বিচর্চিকা। দাল্যতে বিশার্গতে । কেচিছিচচিকাতো विপानिका' जिम्माए: । इंडि ভাবপ্কাশঃ॥

विष्ठनः वि यश्तः। विशृर्व हन बाउ। तन् शुड्यायन निञ्चनः ॥ विष्ठनिडः वि ज्ञनिडः। পভিতः। विश्र्व हनशाङाः क शुड्यायन

নিল্ল ।।

নির্ঘণী: ।।
বিচফ্নু: ত্রি বিমনা: । ইতি ত্রিকাণ্ডশেষ: ।। বিগতচক্ষু বি ত্রি ।।
বিচার: পুণ তত্ত্বর্নিণয়: । ইতি
ব্যবহারতত্ত্বণা সন্দিঞ্চে বস্তুনি পু-

विठातः पूर उन्नानगरः । इन्ड वादकात्रजन्नः॥ मन्दिख वस्ति पुर मारान जन्न भत्रोका। ইजि गारी-कन्दः॥ भूभारेग तर्थ भत्रोक्षणः विम-स्मान मिनि किहिए। ইनि जन्न छः ॥ उए सर्यायः । जर्कः २ निर्गयः ० खक्षा ८ कहारो हिनि जिका छर्मयः ॥ मन्या ५ विठात्रणा १। हेज्यस्यः॥ हर्ष्ट्रने भन्यानः २० विज्रकः २० वृद्धः २२ वृद्धः २० डेकः २८ विज्रक्णः २८ । हिनि स्पत्रज्ञावनी ॥ भूणियानः २५ ममायानः २० । हिनि जन्ने हिन्दः॥ विठात्रणः क्री विठातः। हिनि स्मानः त्रज्ञावनी ॥

বিচারণা স্ত্রী বিচার:।ইত্যার:॥
নীমাংসাশান্ত্রং।ইতি হেমচন্দু:॥
বিচারণীয়া ক্রি বিচার্য্যা বিপূর্ব
ক্রান্ত চরখাতো রমীয়া পুত্যায়েন
নির্মাণা শান্ত্রণ।ইতি হেমচন্দু:॥
বিচারিত: ক্রি ক্রবিচার:।তথ্য
পর্যায়:।বিল্ল:২বিক্ত: ৩।ইত্যান্তর:।
মর:॥

নীয়•। বিপূৰ্ব চর ধাতো ক্রান্তাৎ। য পুত্যবেন নিয়য়•॥

বিচাল° বি অভ্যন্তর•। অন্তরাল• । ইতি হেনচন্দু:॥

বিচিঃ পু॰ জ্রী বীচা। তর**ক:।**ইত্যমন দীকাষা• ভরত:॥

विकिष्टिया **जी मत्म्हः। इंड**ऽ-लवः॥

विधिषः त्री कब्र्वित्यः। ই जि भवः त्र त्र विधा जवि विधा जाण्डर्यः । यथा। विधिव नित्र भाशाः जः जः गवन् जवजा मम। (प्रवाः भवित्र माहाजाः त्र क्रवी क्रवशान्तिः ॥ हे जि (प्रवीमाहाजाः।।

বিচিত্রক: পু॰ ভূর্জ্বক:। ইতি রাজনির্ঘণ্ট:॥

विविज्ञात्वः भू भाषः। इछि मक् विन्तृका ॥ व्याम्वर्ग्यमञ्जीतः नाना-वर्गत्तरः वृक्षि ॥

विध्विवीर्याः शृ हन्मुवःभीयद्वाञ्च-विष्णयः। म ह भाष्ट्रता म् शमकन्त्रा-याः जाउः। उम्र (क्वां व्याव्याः) ख्वा व्यात्मा श्वद्वाष्ट्रः शाख्यः ज-नगमाम। ইতি প্রভাগবত্রসত।।

विध्विवीर्ग्रम्: खी **मठावर्छी ।** इंडिमदत्रवावनी ॥

বিচিত্র। জ্ঞা মৃগের্বাক:। ইতি

त्राकिनिर्यक्तः॥

विविवादः भू भग्रः। ই छ भदः त्रञ्जावनी ॥ व्याप्यः । ই छ भदः विन्युका॥ जाण्वर्यः भन्नीरत्र वि॥ विवि जी छत्रदः। ই छ हिक्शः । (काषः॥

বিচেতা: ত্রি বিগতচিত্ত: । তৎপর্য্যায়: । দুর্মনা: ২ । অন্তর্মণা: ০
বিমনা: ৪ । ইভি হেমচন্দু: ।।

विरुद्धिः जि विशवः॥ के हिनः। इंडि (मिनि)। रुद्धिः मदार्थ मः र्मनारः॥

विद्व क विवि। ইতি কবিকল্প क्रमः॥ क विद्वयि। विवि नी छो। ইতি मूर्गामामः॥

বিছ শ গভৌ। ইতি কবিকল্পকমঃ

।। বিছাযতি নিছাযতে আযন্তত্ত্বাদুভযমিতি বোপদেব:।। পক্ষে বিছতি। শ বিছতী বিছন্তী। ইতি দুর্গাদাস:।।

विहन्तकः भृ वेश्वत्रमम्भूष्टिनः।
इंडामतः॥ विणिष्ठे मृत्ति। १७भाषा १७ विहन्तकः। किन्ना विणिष्ठेहा निर्मिष्ठा विहन्तकः एषकामिडि कः। এवः नक्ष्म मूभनाउउः
नाश्चिन यथा। উপयुर्भित यह्नरुः
छिहन्तक मः छह्न । ইতিভরতঃ॥

विहम्मकः भू विहन्तकः। देउ।यत्र-**होकाया॰ द्राध्युक्रहेः ॥**

বিহ্বাৰ ল্লী পক্ষিণা हाय। ইত্য মর: 11 সমাসে বঙ্গভাৎপরাছাযা क्रीत महारा मा हर वर्गा मन क्षिनी ना८। यय मुनारुवि । वीनाः निक्ताः हाया विहायः। ইত্যমরটীকাষা ভরত: ॥ ছাযা ব্বহিতে ত্রি॥

পু• মণিঃ। ইতি যাম্বর্গে हारा भद्र हीकारा ज्वजः॥

विहि खि: जी व्यक्तागः॥ विरह्मः ॥ हात्राज्यः। इंडि मिनि ॥ ছেদ: ॥ বিনাশ:। ইতি ত্রিকাও-भिषः ॥ अव्हात्रः ॥ श्राविधि। ইতি হেনচন্দু:।। আকল্লকল্লনাল্লা-लि विहि खि: काडिलायक्ट । **इ**-जुङ्ख्यन्नेनगि**गाः**॥

विह्निः जि नगणकः॥ विভकः। इंडि (मिरिनी ॥ व्यक्तिः। देंडि (इन्हन्मः॥

বিছেদ: পু॰ বিযোগ:। বিরহ:। (छनः। यथा। कानः करत्रा**छि** कः वानः म ह (७५॰ क्राइंडि ह। मर्ब॰ कालकृष्ठः भाष (र्डमः मःगीलनः नृगा ।। इंडि तुक्तरेवदा अक्ष कम्रथा ७ २०० व्यक्षामः॥ व्यक्ति। विकाः विकासः। उर्भियापः।

काष्ट्रायाः काञ्चितिहासा मज्ञामि जि-রিচ্যতে । ইতি বুদ্ধবৈধর্ভে গণ-পতিখণ্ডঃ !!

বিচ্,তঃ ত্রি বিগতঃ॥ বিপুর্ব চ্যু ধাতো: জ প্তুচনে নিয়ম: ॥ বিক্রিত: । বিপ্র চ্ত ধাতোঃ ক পুত্যযেন নিষ্ণ ।।

বিচ্যুতি: खो वियागः। यथा। সোপি বৈশ্য স্ততো জ্ঞান বরে নির্বিদ্ধ মানস:। মমেত্যহ মিতি পাজ: সংক্ বিচ্যুতি কারক ॥ इंडि भार्क(७४नुद्राल (एवीमा-श्वाः॥

বিজ ইর লি ঞ ঔ বেকে। ইভি কবিকল্পজ্ম: ।। বেক ইতি বিচি-र्वि (धो अ भृथक्: व इंड)मा प्रि क्रभः। इत अविद्यूष्ट अविकीए। লি ঞ বেবে জি বেবিক্তে মূখাৎপ-প্রিতঃ পৃথক্ স্যাদিত্যর্থ:। ঔবে-का। ইতি দুর্গাদাস: ॥

বিল ঈ ধ ও ভীকস্পে। ইঙি कविकन्नकमः॥ वे अविम। श विनः ক্তি। ইতি দুর্গাদাস:॥

उद्रेग ७ जिल्ला ३ छ কবিকল্লছম:।। উ শ বিজতে। ই ও विशा वादायों। इंडि पूर्णामानः॥

বিবিকঃ ২ গুলঃ ৩ নিংশলাক: ৪ রহ: ৫ উপা•শু ৬। ইভ্যমর:॥ विष्ननन क्री शुभवः। ইতি एस्महन्तुः विजिभिन की भक्षः। यथा। भि ह्ल मा विषित्र न भक्षः ना (मा नियम्बः। ই ि इलायुषः॥ विषया वि कात्रकः। विक्क्षकमः বিশিষ্ট:। ইতি লোকপুসিদ্ধ:।। বিজয়: कयः । ইত্যমরः ॥ 21. ष्यञ्ज्नः। इंडि मिरिनी ॥ वृज्ञाः इंट्रिजा॥ जिनवन्यत्वः॥ विमा-नः। ইতি (इन्हन्तुः॥ यमः। ইতি णद्रहित्का ॥ किल्लुधः। यथा। ওত: কল্পিচ পদ্মায়া জয়ে৷ বিজয় এবচ। দ্বोপুপ্রৌ জনন্যানাস লো-कथाएं। महावानी ॥ इंडि 🗐 किल्नुद्रारा ১० चन्यामः ॥ रेज्द्र-ववः भी १क स्रवाह्म श्रद्धः । म कामी -माजः था ७ १ वनकर्न ह। यथा। मुम्रा इं इंबर क्याः मुजः मञ्जा **ডিণ্ডিম: । विक्**षम्गा ভवन्गावि র্গাধে মিরো হভবৎ সুতঃ॥ তেষা কল্পে। হভবদান্ত। কল্পান্ত বিজযো **২**ভবৎাযো বিধিত্যক্ষিতি সহাণ পার্থিবান্ ভূরিতেজসা॥ শক্রস্যা-নূমতে চক্রে খাওব শত্যোজন। य मवामाठी श्रहर माणुमू यः भुजाभवान् ॥ व्यावहन् भवनाः भुजाभागः । इति भीजिः ज्ञानमा महावानः । इति कालिकाभूवाण रेजववरः भान्कीः र्वनः २० व्यवप्रायः ॥ विकृत्वविः भागः । विकृत्वविः भागः । विकृत्ववा क्ष भुज्ञ । विक्रा विक्र विक्रा विक्र विक्रा विक्र विक्रा विक्रा विक्रा विक्रा विक्रा विक्रा विक्र विक्रा विक्र

বিজ্ঞান্ত পু• রাজ্বাহ্ হন্তী। ইতি ত্রিকাপ্তশেষ:।।

বিজযहन्मः পু॰ পঞ্চতমৌক্তিক-হার:। ইতি হেমচন্দু:।।

विजयनस्तः भू॰ हेक्गव्यः व्यवज्ञाङाः विष्मयः । ७९ भर्यग्रयः । ज्ञयः २ । हेडि (इम्हन्दुः ॥

विजयमर्पनः भू॰ एका। करणक हेि जाया। हैि जिकाश्रम्यः॥ विजया जी जिथिविष्मयः। मा विजयम्भी जिथाजा। उटक्डऽ॰ पूर्वाम्पमी जिथाजा। उटक्डऽ॰ पूर्वाम्पमी जिथाजा। उटक्डऽ॰ पूर्वाम्पमी जिथाजा। उटक्डऽ॰ पूर्वाम्पमी जिथाजा। उटक्डऽ॰ प्राम्पमी जिथाजा। उटक्डऽ॰ प्राम्पमी जिथाजमकन्या। यथा। । जा मागजा॰ मठी पृष्ठे। जया प्राम्पन का मूवा ह । किमर्थ॰ विजया ना-ना मूवा जिवाह भव्रामये।। गठा निमित्रिजाः मर्वा मध्य माजा-महम्य जाः॥ मम॰ भिन्ना क्षिज प्राम्पन माना हान्य मुवायया। हेिंड

বামনপুরাণে ৪ অধ্যায়: II কালি 🔠 কাপুরাণে ১৭ অধ্যাযেপ্যেব ।। 🕸 ।। বিশানিভোপানিতবিদ্যাবিশেব: 1 यथा। विन्ता मरेथन विक्रया अयास রকোগণ কিপু মবিক্ষতাতা। । **অ**ধ্যাপিপৎ গাধিসুতো यथावधि-घा उथियान् यृषि या जूबानान् ॥ इंजि ভिष्टिः ॥ 🗱 ॥ मूर्गा। इंडि इम्प्ट-न्मुः॥ उथाह। विजित्र अधानामानः रिन्छ। दाङा भक्षावन । विजया (उन ना प्रती (बारक हिवाभद्राविज।।। ইতি দেবীপুরাণে ৪৫ অধ্যায়ঃ॥ৠ॥ या जाया।। एबी उनी। दें बिहा भवता वहा। इंजि व नुमाला ॥ अवसी ॥ टाक्छनिका॥ मिक्किश ॥ भिभी-ভেনঃ ॥ অগ্রিছ: । ইতি রাজ-নিঘণ্টা।। মাদক্রুব্যবিশেষ:। ভাঙ্ ইতি দিল্লি ইতি চ ভাষা। তৎ-भर्यायः। विःलाक्यविक्रया २ छङ्गा ০ ইন্দু।শন ৪ জয়া ৫। ইতি শব্ **চ**न्मिका ॥ वीत्रभवः ७ गञ्जा १ ह-भना ৮ अजगा २ जाननरा २० इ-यिनी १२। व्यम्प्राखनाः। कर्तृषुः। क्यायद्वः। उक्षद्वः। ठिक्कद्वः। वाज কফাপহর্৽,সংগ্রাহিরণবাক্পুদর্গ । वनाजुः। स्मिशकातिजुः। (मुक्ष्तीः পনত্বকা ইতি রাজনির্ঘট: ।। অ

পিচ। ভঙ্গা গঞ্জা নাতুলানী মাদিনী বিষয়ে। জয়া। ভঙ্গ। কফছরী ভিক্তা গু।হিণী পাচনী লযু:॥ তীন্দ্রোকা-शिखना (भार नम वायुक्ति विद्विनी । इंडि ভावभुकामः ॥ वानाह । শকাশন তু তীক্ষোঞ্চ মোহক্ৎ **স্**ষ্টনাশন । বল নেধাগ্রিকৃৎ শ্লেম্ (पायश्त्रि त्रमायन ॥ काउ। म-म्पत्र मञ्चनाङ्कननिः थी शीगृयक्तशा পুরা ত্রৈলোক্যে বিজযপুদেতি বি-द्या बिरन्वब्राजिल्या । व्याकाः না হিতকাম্যা ক্ষিভিতলে প্রা-প্তা -রৈ: কলেদা সর্বাভক্ষবিনাশ रुवंजननी रैयः (अविज) नर्दना ॥ ইতি রাজবল্লভ:।। 🗱 🛭 অ🞖 🖘 🖯 द्यानमाउत्रगं उद्यानमी विश्मवः । रथा । जथ विज्ञशातुष्ठ । तुक्त लुद्राण । यरा जु मूझ बारमान नक्क मुन्त ভংব । **उरा मा जू गहा भू**ग्रा हार-শী বিজয়া মৃতা।। তস্যা॰ স্নাতঃ मर्वजीर्ध माठा ভविष्ठ मानवः। मः भूका वर्ष भूकायाः भक्षः कष নশু তে ।৷ এক জপ্যাৎ সহসুস্য জপ্ত স্যাপ্নোতি সৎফল। দান সহসু গুণিত তথা বৈ বিপুভোজন ॥ (हान खाबाभवाम क मह्मू छान-তো ভবেং। 🕸। অথ বুভবিধি:। चारिते ७कः नगकृत्र ठउः महन নাচরেৎ ম শরশার্জধর দেব পৌ वर्गः ब्रहरयखद्राः। महन्नमञ्जः। घा-দশ্যাহ নিরাহার: স্থিত্বাহ নপরে **୧**ছনি।ভোক্ষের ত্রিবিক্রমানস্ত শর-ণ মে ভ্রাচ্যুত ॥ সোপবীতম্ভ ক **लमः भू**र्दद शामरामु जी। भावः **छ**म्भित्रि नारमाजात्रः रेवनव स्मव वा য়া ভ্রোপবেশ্য সংস্থাপ্য দেব[•] বি-भर हन्तरेनः । जानिश्य भृजु व-अन रम्। इ अक भाग्रक ॥ वाम् দেবাষেতি শিব্ধ: গ্রীধরাষেতি বৈ-मुथ । क्कारमञ्ज ह कन्ने रेव वकः প্রিপত্তথে ইতি ॥ শঙ্কান্তধারিণে वाङ् क क ठ व । जनी-भारयाम्ब्र (यपुः देवलाकः) क्रनना-य हा। जयन हार्ट्यिषदान् अर्वादिः পত্তযে ইতি। সর্বাত্মনে ইতিপদা-विव सक्षानि भूकाय ।। भन्न हक গদা পদা শাফ শার বিভ্ষিত। गृहानार्घ, नया मड नार्जनात न भास (उ॥ इंडार्घाः भू वदः क्षा धून मीलो मनन्। ह। घ्डनक मु-थानानि रेनर्यम्यानि निर्वमस्य ॥ **७। घ्वा**भीनि पद्माथ कृद्मा कागद्रगः নিশি। পাত:ল্বাছবিত্বেশ পুলা-क्षिनि नथाईत्र ।। नम् एउ ९ छ

शादिन्स वृंध मुद्द गं छा छ । आहात्र विक्स वृंध मुद्द गं छा व स्त्री था भूदा
छ । इंडि भूषी छ छः नर्स प्रदा
व्य । इंडि भूषी छ छः नर्स प्रदा
वार्षा भूखा है। मंका दिभूम (छा हि यि गूर्थ भा ते ना
व्य ।। छा प्रमानि वृक्ष गाहि यि गाहि है। छा नर्स
व्य गाहि है। मंका विक् भूम (छा हि ये गामि वृक्ष गाहि यि गाहि है। छा है। छा है। छहा नर्से
व्य (छ छा। है छि छो हि दि छा दि लास
रे विला गः।।

विजयामधनी खी রবিবারেশুন্ন-भक्कीयामध्यी।यथा। मुङ्गभक्कम् मधम्। मूर्यादा यमा ভरवर । সপ্তমী বিজ্ঞানাম তত্ৰ দক্ত মহা-ফল·। ইতি তিথ্যাদিতকু·॥ # .1 व्यथ विकारगाट्य विविश्त । तथ मा-রোপ্য দেবেশ সর্বালক্ষার শো-ভিত্ত । সাসি ত্ণ ধনু র্রাণ পাণি নক্তঞ্রান্তক ।। স্বলীলধা জগএ।তু মাবিভ্তি রঘ্দহ। রাজোপচা-ব্রৈ: গ্রামণ শমীবৃক্ষতলণ নযেৎ ।। সীতাকান্ত সমীযুক্ত ভক্তা ना मञ्चक्द्र । अहं विद्या मनी वृक् महर्षिष माश्ररा। उव मखः। मभी मन्या अशाभः मभी लाहि उ कण्ठेका। ध्रिब्रेड्युक् न वागानाः द्राः नम् भिष्वामिनी ॥ कदिष्यभाग

या यां वा यथा काल गूथ भया। তত্ৰ নিৰিত্ন কত্ৰী বৃণ ভব শীরাম প্রিভা।। গৃহীব। সাক্ষতা মাদু। • भनी जूनगडाः ज्रमः। गी उ वारिज নির্ঘোষৈ স্ততো দেব গৃহ নথেৎ ॥ কৈশ্চিদৃকৈ শুত্র ভাব্য কৈশ্চি-न्हावाक वानरेतः। किन्हिनाञ्ज ग्-रिथ जीवाः कामलनमुत्रा वृष्टेरय ।। निर्किं । त्राक्तमा रेन्ड्या रेवव्रिला জগভীতলে। রাম্রাজ্যু রাম্রা-জ্যু রামরাজ্য মিতি নুরন্।। আ-নীয স্থাপযেদ্দেব নিজ সি হাসনে मूथ । उठा भी बाक्य (परवण भू-ग्राम् ७ वर्ष्ठवि॥ महाभुमार व-ज्ञानि थात्रायदिकरेतः मर । इंडि **ন্থিবিষ্ণুধর্মোকানুসারেণ ব্যলেখ্য** य ।। विषि: 🕮 ताम विकारगा स्मर-স্যোৎসবকৃৎ সতা। সীতা দৃষ্টে তি হনুমদ্বাক্য শুদ্ধা করোৎপুভু: ॥ विकयः वानरेवः मार्कः वामरव **হিমান্ শামীতলা**ে। ইতি শ্রীহরি: ভক্তিবিলাসে ১৫ বিলাস: 11 বিজ্যিন ত্রি বিজ্ঞিল। ইত্যমর **होकाराः दारमञ्ज्रहेः॥**

विकर्भ कि जरमूकः। यथा। वकुः

পঞ্জ नारमर । या ज्ञामक्वठ । भ-

टेट्। म हित्रागुः मुथी भूभी विनधी

বিজয়ী ভবেৎ।। ইতি ভজ্ঞসার:।।
বিজর: ত্রি জরারহিত:। বিগতা জরা
যস্যেতি বহু বীহিসমাস নিয়য়:।।
বিজল: ত্রি বিজিল । ইতি হেমচন্দু:।। নির্জলঞ্চ।।
বিজল: পং বাক্যবিশেষ:। যথা।

विकन्नः भ् वाक्रविष्मवः। यथा। व्रक्तवाम्यया ग्र मान मृ पाछन्ना-नगा। अधिष्ठि करोएकाकि विद्य-एन। विष्याः मञः॥ इज्रुक्त्ननी-नमिः॥

বিজাত: ত্রি বিজয়া। ইতি লোক পুসিদ্ধ:।।

বিজাতা স্ত্রী জাতাপত্যা। যথা। বিজাতা চ পুজাতা চ জাতাপত্যা-পুস্তিকা। ইতি হেমচন্দু:।।

विकाशीयः जि विकित्रभूगाकान्तः।
यथा। পायणिखाषिकाशीयानाः
पृक् भाभ विनाणनः। ইতি भागः
णिखउद्धः। विध्यवकाशिविश्यः
देः। यथा। भुवारहानािकात्त्रम्
न विकार्ष्ण्यक णिक्यान्। जर्वः
यञ्चका ভावत्रभन्य वर्राह्याकर्याः
।। এव कार्यत्रकात्रम् भुवारहा नािकः
यञ्चका ভावत्रभन्य वर्राह्याकर्याः
।। এव कार्यत्रकात्रम् भुवारहा नािकः
यञ्चका ভावत्रभन्य वर्षाः
।। এव कार्यत्रकात्रम् भुवारहा नािकः
यञ्चकािक्यान् न भुवारहः।
विव्यवत्रविद्यकर्या छर्द्य नियद्यः
निय्जाष् निर्वार्त्यः यञ्चवका ভावतः

यदः कर्त्रायः दिकान् भिन्नि जातः । विद्या नामानाः शुन्नि विकानीः । विद्या नामानाः शुन्नि विकानीः । विकानीयक्षम्भाक्षिनिते ।। विकानीयः जि कार्यहः । देनि निकानिते ।। काल्यकोमूनी ॥

বিজিগীষা জী ষোদরপূরণাশক্তি নিমিত্তকনিন্দাত্যাগেছা । ইত্য মরটীকাষা রমানাথ:।। ব্যবহার: ।। কন্চিৎ পুকর্ষ:। ইতি তত্ত্বৈব ভরত:।। বিজ্ঞবেছ। চ।।

विक्रिगीयाविविक्किंडः बि किवल मुम्त्राधीनः। তৎ পर्णायः। जाम् नः २ छ नित्रकः २। ই छ प्रतः।। विक्रिगीया व प्रवहातः किष्ट भु कर्यावा एक विविक्षिता विक्रीता एक विविक्षिता व प्रवहात व क्षिता व व क्षित्र व क्षत्र व क्षित्र व क्षत्र व क्षित्र व क्षत्र व क्षत

বিজ্ঞিগীয়: তি জগেছাশীলঃ। যথা
। ভেত্ মেযণশীলক বিজিগীয়

রিতি স্তঃ। ইতি শব্নালা॥

বিজিতঃ ত্রি পরাজিতঃ। যথা।
পথ্যাশিনা শীলবতা নরাণা
সদ্ভিভাজা বিজিতেন্দ্রাণা
এব বিধানা মিদমাযু রত্র চিস্ত্য
সদা বৃদ্ধনুনিপুরাদ:।। ইতি মলানাসভূত্ত্ব।।

বিজিতা পু॰ পৃথক।। ভীতঃ।। কস্পিতঃ।ইতি বিজ ধাত্বৰ্থদর্শনাং।।
বিজিতিঃ স্ত্রী বিজ্ঞাঃ। যথা।
ক্ষিতি বিজিতি স্থিতি বিহিতি
বৃতরত্যঃ পর্শতয়ঃ। উক কক্ষু
ত্কি দুধবু যুগি স্করবঃ স্থ মরিস্পলাইতি দণ্ডী।।

বিজিন ত্রি বিজিল । ইত্যমর । টাকাযা রাযমূসট:।।

विक्रिनः वि देवर मत्रमवाञ्चनापि
। उर्भिग्रायः। भिह्निः २। इंडाः
मतः ॥ विक्रियनः ० विक्रिनः ८
विक्रिनः ६ উक्किनः ५ नानमीकः १
। इंडि वाहम्माउः। विक्रियनः ৮
विक्रमः २। इंडि इ्महन्तः॥ भाकः
क्षत्रमामाञ्च वाञ्चातः छ खादर व्यः। वेज्नभाक मुमःकाःत श्रुयञ्च मूभमःक्षा । भिह्निः नानभी-कक्ष विक्रिनः विक्रिनक्ष उर् । इंडि भदत्रवावनी ॥

বিজিবিল वि বিজিল। ইতি

বিজ্ঞান

হেমচন্দু:।। বিজিহ্ম: ত্রি বক্র:। স্বটিল:। ইতি কেচিৎ ॥

বিজ্ল: পু॰ শাল্মলীকন্য:।ইতি রাজনিহণ্ট:॥

বিজ্ঞাণ ক্লী জ্ঞাণ।। বিক্সৰণ। ইতি কেচিৎ।।

বিজ্য্তি 5° ব্লী চেষ্টা।ইডিমেদিনী বিজ্য়িত: ত্রি বিক্ষর:।ইডি নেদিনী। জ্যাযুক্ত চা।

विञ्जन जि विजिन । ইত্যমর । টীকালা রাণমুক্ট ॥

विज्ञनः ही वानः। यथा। शब वारम् विकर्षा १थ जीतः विज्ञन कारकः। स्मान्नानम् नातानः भूगाः का प्रमानतः ॥ इजि जिन् का ७ विकास विज्ञिनः। देजि स्मान्

विक्किन क्षी विकिन। ইडि मद बद्वावनी॥

विज्ज्ञा की ज्ञा । इंडि ब्राजः । विर्यंगः॥

বিজ্জান দা দ্রী জত্কা। ইতিরাজ-নির্ঘট:॥

विक्तः वि भूतीनः। इंड्रानदः॥ जन्नभर्गताः निभूनमस्म म्थेताः। ॥ १० ७ ३:। इंडि ताकनियकः॥

विक्रवृक्षिः जी करोगांगी। इंडि

বিজ্ঞাত: তি খ্যাত:।ইত্যমর:॥ বিজ্ঞান স্লী জ্ঞান।। কর্ম। ইভি মেদিনী।। কার্মাণ । ইতি হেন-**ठन्द्रः ॥ (माध्य भी र्ज्जान मन**)ब বিজ্ঞান শিল্পশান্ত্রযোঃ। ইত্য-यद्यः ॥ विष्णायन नामान्यान ठावः वारवा व्याःका मुक्तिः मिन्नः हि॰ वाति भाषः न्याकद्यशन्। स्थादक শিল্প শাল্লেচ যাধা: সাজ্ঞান বিজ্ঞানক্ষেত্ৰতে এবং বিশেষ পু-तृ उहा अव, या हि शहे तो या बीः मानि ज्वान िक्वान्यकान्यतः। এষ। সামান্য পুরু ভি:। নোঞ্ थी ज्ञान विज्ञानक यथा। ज्ञाना ম ক্তি রিভি: সা বাচিতাচ বিজ্ঞান उठी पश्चि भुः ह जि देखि। यन्।व यथा। छान निष्ठ मनसम्र अस्त বিষয় গোচরে ইতি। ঘটার পুকা রকজ্ঞান মিতি। যে কেচিৎ প্রাণি ता (नात मर्ख विज्ञानिता में ইভি। বুক্ষণো নিভ্য বিজ্ঞানানন্দ বাপদ্বাৎ ইভি। এব চিত্ৰজ্ঞান• वा। म्यपद्धानः घटेशहेदिद्धान नि-ত্যাদিক পুৰুজ্যত এব। ভিনিগ-न गक्बामारि मक्वर गक्बर

শবে। হি গৰুডে পক্ষিমাত্তে চব-ৰ্ভতে। দোক্ষ ইতি নিমিত্ত সপ্তমী নোক্ষ নিমিত্ত শিল্পশান্ত্রযো ধী ৰ্জ্ঞান মুহতে । ভল্লিমিল্ডতো ২ন্য निगिखः या अत्याधी : मा विकान নিতিকেচিৎ।োক্ষ বিষয়া মো क क ना थी छानि अना थी विजा ন•। ক্বান্যত্র ইত্যাহ্য শিল্পান্ত্রেয়া রিতি কেটিখ। অববোধ ই ভাষ্যা-इंडिंड द्याक विनत्य श्वतात्वा थी क्डांन॰ ग्राज्य प्रेष्ठी पि विक्डान॰ শিল্পশান্ত বিষয়ে বিজ্ঞান মিতি কেচিৎ। জানাতে রনট্ জ্ঞান বি विष विक भ वा ज्ञान विज्ञान। ইত্যমর টাকাশা• ভরত: ॥ 🗱 ॥ यथो। क्वना प्रयाह विज्ञानः अक्ट रिक्ष्य प्रमः भयः। ययात्रा निकामा জ্ঞান মেভদ্বাহ্মণ অক্ষণ ॥ জ্ঞান विक्तानयाः लंकनः यथा। ठ७ प्रं माः-ना विन्धाना शाजन हि यथार्थ ত:। বিজ্ঞান মিতর বিদ্যাত্মেন श्वर्याः विवर्षारङ ॥ यात्री छ। विश्वितः घिरा। नर्थ रिक्षतालन **न**ु **र्**ग कार्गामि । उ एप्य उपिकान बि-बुद्धायमा न (स्ता खनदान् বিদ্যতে যত্র বিদ্যতে। সাক্ষাদেব 🏿 বিট 💍 আক্রোশে॥ হনে। ইতি কবি-

गराएव उज्जान मिठि कीर्बिङ ॥ ইতি কৌর্মে উপব্লিভাগে ১৪ व्यथायः॥ विकानभामः भू• (वनव्यामः । ইতি কেচিৎ॥ বিজ্ঞানম্যকোষ: পু• জ্ঞানেন্দ্রি-থৈ:সহিতাবুদ্ধা। ইতি বেদান্ত-मात्रः॥ বিজ্ঞানমাত্ম: পু বুদ্ধ:। ইতি (र्गञ्गुः ॥ विद्धानि हः ত্রি জ্ঞানবিশিষ্ট: 1 বিজ্ঞ:। ইতি বৈজ্ঞানিক শদ-টীকাষা ভরত: ॥ क्री বিজ্ঞাপন• (वाध्रनः। जानान ইতি ভাষা। বিপূর্ব ঞ্যন্ত জ্ঞাধা-(जा तनहें श्रु जारयन निम्नन ॥ विछाधिः स्त्री विज्ञाभनः। विभूर्त ঞাম জ্ঞা ধাতোঃ ক্তি পুত্যুৰেন निश्चमा ॥ বিজেষ • তি বিজ্ঞাতব্য । বিজ্ঞা-नीय । विन्दं क्वाबारा यं: भुजु-যেন নিয়ম।। विकाभन ती हक्ष्मुत्सकव । इंडि किंहिए ॥ বিজ্ঞোলী জ্রী পড্জিঃ। ইতি जिमा अल्य ।।

यमुक्रनः ॥ (वहेडि । আকোশः किष्णिम १ हेऽ। चनः षदः। ইडि पूर्णापातः॥

विहे: श्रृ॰ विज्ञः। इंडाग्रदः॥ काम्कान्ठदः॥ श्रृदः। इंडि छद्रछः॥
काम् उद्धकलाकाविषः । इंडि
त्रमसक्षती॥ भर्बद्धविष्मयः॥ लवग्रह्मः। यिन्द्रविष्मयः॥ मृविकः। इंडि भिष्माणा॥

বিটন্ধ: পৃণ ক্লী কপোতপালিকা।
পাযরারথোপ ইতি ভাষা। ইত্যনর:॥ দ্বে সৌধাদির পুান্তে কাপ্তাদিরচিতে গৃহপক্ষিস্থানে। কপোভান পাল্যভীতি কপোতপালী
ঢাৎ ষণ্ ইতি বণ সার্থে কঃ কপোত
ইত্যুপলক্ষণ পক্ষিমাত্র পালিকৈতিবোধ্যণ বীন্পক্ষিণ প্রক্ষয়তি
বপ্লাতি বিটন্ধণ টকিক্ বন্ধেষণ্ বিশেষেণ টল্কয়ত্যতেতি বা অল্
ষঞ্জবা। ইতি ভরতঃ।।

विष्ठेश्वकः शृ॰ क्षी विष्ठेशः। ইতি শব্দরবাবলী॥

विष्ठेशः शुः ही माथाभद्धवसम्पागः । उ९ भर्यायः । विखातः २ । इंडऽ-नतः ॥ उत्रः । इंडि मिन्नी ॥ माथा ॥ भद्धवः । इंडि मेम्ब्रः। विष्ठी । मुक्कक्रुभाष्ठतः। यथा । विष्ठे-পদ্ত महावीक्षा मुक्कक्रिभः । हेजि (हमहन्तुः ॥

विदेशः भू॰ विदेशिशः। भात्रमा-त्रिक्ष्णुष्ठः। ইতি भिम्नी ॥ जा-मिजुश्वः। ইতি त्राक्षनिर्घण्टः॥ विदेशी भु॰ ं वृक्षः। ইত্যমतः॥ विदेश ইতি त्राक्षनिर्घण्टः॥

विष्ठेलियः भू॰ मूम्बर्कः। ইতি वाकनिर्धण्डः॥

विदेशिक्षिकः भुः शाकुवित्मयः। उट्भर्यत्रायः। जाभादः २ नहीसः ० काभादिः ८ जाद्राद्रिः ৫ । ইতি एक्स्वनुः॥

বিটলবণ ক্লী বিড্লবণ । ইতি কেচিৎ ॥

বিটিঃ দ্রী পীতচন্দ্র-।ইতি শব্দ মালা॥

বিট্^ম পুং বৈশ্য:।। মনুৱা:। ইত্য-মর:।। পুবেশ:। ইতি বিখা:।। বিট্ জ্রী বিধা। ইত্যমর:।। কন্যা। ইতি বিট্পতি শব্দ দর্শনাৎ।।

विदेकातिका खी शक्किवित्मयः।
তৎপर्यशयः। जनभी २ (गात्राही ०
गाकितादिका ८। ইতি ज्तिभुत्यागः॥ विदेभातिका ৫। ইতি
হারাবলী॥

विदेशित इः , शृ विशेष पूर्ण कथि । अगावावना इठि ভाषा । जट भर्यायः। अतिराम ः २। इठा- भतः॥ इतिराम ः ० अनिराम ः ८। इठि भक्त ज्ञावनी ॥ मितिराम ः ८ कान ककः ७ अतिराम कः १। अमा छगाः। कषायज् । उक्ष ज् । मूर्थ में खगाः। का निर्मा कि छाव- शुका भः॥ ता जिन्दि । इठि छाव- र्यायो अतिराम भर्म मुद्रेरवा। ॥ विहेठतः शृ गुमा अभ्वतः। इठा भतः॥

বিট্পতি: পু॰ জানাতা। ইতি জটাবর:॥

বিট্সারিক। স্ত্রী পক্ষিবিশেষ:। গুণাসালিক্ ইতি ভাষা। ইতি জটাধর:।।

বিঠর: পু• বাগ্মী। ইতি স•ক্ষিপ্ত-সারোণাদিবৃত্তি:।।

বিড আক্রোশে। ইতি কবিকল্পদ্দম:
।। বেডতি শত্রু বলী। ইতি দুর্গাদাস:।।

বিড॰ ক্লী লবণবিশেষ:। বিট্লুণ ইঙি ভাবা। যথা। পাক্য॰ বিডঞ্চ কৃতকে ঘ্য॰। ইত্যমর:।। দ্বে স মুদুভীরাসমভ্যা॰ লবণমৃত্তিকা। পাচবিত্বা নিষ্নাদিতে লৰণে। বিট্-वया। इंडि किहिट । क्डाक क्-ত্রিমে। পাক্য বিড্লবণযো ভেঁদে ৎপি কৃতকত্বাৎ ঐক্য মিতি স্বামী । পচ্যতে ইতি পাক্য•। ডু পচ ঞ-ষৌ পাকে হস্যাসো ব্লিভি ঘ্যণ্ চ कार्घिजीजि कः भारकन निञ्जािक ज মিতি ঞ্চ্যো বা। বেডতি ভিনত্তি বিড বিডাক্শি ইজুডবাৎক:। ইতি ভরত: ।। তৎপর্য্যায়: । বিড্গন্ধ ২ काननवग ७ विख्नवग ४। इंडि কৃতক প ক্ষার ৮ আসুর ১ সুপা-काः २० थखनवनः २२ धृर्ङ २२ কৃত্রিমক ১৩। অস্য গুণা:। উঞ্জু । मीभनषुः । क्ठापुः । दाञाकीर्ग শ্ল গুলা মেহ নাশিব্ধ । ইতি ব্লাজনির্ঘণ্টঃ ॥ অপিচ । বিড' স-ক্ষার মৃদ্ধৃ বি: কফ বাতানুলোমন । উक्षु • कक मत्यावाउ• मक्षाद्राय-দিত্যর্থ: ৷ দীপন লঘু তীক্ষোঞ্চ क्क क्र क्र व्यवायि ह। विवक्तानाह विश्वेञ्चक्रणोत्रव म्नापूर ॥ इंडि ভাবপুকাশ: ৷৷ অন্যচ্চ ৷ বিড॰ লব-नमू एक्रिक वाक्स वंस विवर्धनः। मन-वाजाम विश्वेष्ठ म्लारिश विवक्त-नू ।। ইতি द्राबवल्लाः॥

বিডাল

विष्ठं शुः क्ली बनामश्राकोषधः। তৎপর্য্যায়:। বেল্ল ২ অনোঘা ৩ চিত্ৰভুণা ৪ ভুণুল: ৫ ক্ৰিমিম্ন: ৬ । ইত্যমর:।। রসায়ন: ৭ পাবক: ৮ ভম্মক ১। ইতি জটাধ্র: ॥ रिवनुः २० साघा २२ उखुनुः २२ । इंडि भद्रज्ञावनी ॥ बस्रः ১० চিত্ৰতণ্ডল ১৪ ক্রিমিম্ন ১৫ কি-भिणवु: रे७ गर्पछ• २१ किवनः ১৮। ইতি রত্নশালা ॥ विख्या ১৯ কৃষিহা ২০ চিত্রা ২১ তণ্ডলা २२ ७ ७ नीयका २० वाठाब्रिज-खुन। २८ जन्जी २० मृगगामिनी २५ रेक्द्रानी २१ गख्रद्वा २৮ कामा नी २२ वद्रामुः २० हिन्द्यीका २४ बरुकी २२। यम्। छनाः। करुषः । उक्षद्व । वषुद्व । वा उ कका छ। भिमान्म।। कृष्टि जुनि कृमिरमाय বিনাশিত্বঞ্। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ।। ঈষভিক্তত্বণ। ক্রিমি বিষনাশির্ঞ । ইতি রাজবল্লভ: ॥ বিডঙ্গণ কটু তীক্ষোঞ্চ কক্ষ বহিকর লঘু। শ্লাথ্যানোদর শ্লেখ্য ক্রিমি বাত বিবন্ধনুং ৷৷ ইতি ভাবপুকাশ: ৷৷ विउदः बि षिङ्कः । इंडि (मिनि ॥ दिउयन क्री खी अनुकर्त्रगः।यथा।

विष्ठालः स् (नजिल्छः। ই जिप्तिः नी। (नर्जायश्विरण्यः। ই जिज्ञानः।। यनामध्याजश्रम्ः। विल्ली हे जिल्ली ज्ञानः।। यनामध्याजश्रम्ः। विल्ली हे जिल्ली ज्ञानः। ज्ञानः। विज्ञानः। अञ्चल १। ই जिज्ञानः।। विज्ञानः ।। विज्ञ

বিডাল

ইতি রাজনির্ঘণ্ট:।।

বিডালক ল্লী হরিতাল । ইতি হেমচন্দু:।।

বিডালক: প্ বিডাল: ৷৷ নেত্ররো-गम् अवस्वित्यः । यथा । जय বিডালকবিধি:। বিডালকো বহি-র্লেপোনেত্রে পক্ষ বিবর্জিতে। তস্য মাত্রা পরিজ্ঞেয়ো মুখালেপ বিধা নবৎ ॥ মুখালেপে। যথা। অঙ্গুল-স্যু চতুর্থাংশা ম্থলেপঃ কনিষ্ঠি-ক:। মধ্যমস্ত ত্রিভাগ: স্যাদুত্রমো হর্দ্ধাঙ্গুলো ভবেৎ॥ স্থিতিকালো **शि उरम**्रास्का यावट करहा न म् ষ্যতি। তেনাপি গুণহীন: স্যান্ত-था प्रविधि इंहर्।। म यथा। यही গৈরিক সিন্ধূত্ম দারী তাক্ষ্যে: স মা শকৈ:। জলপিষ্টৈ বহি র্লেপ: সর্বনেত্রাম্যাপহ:।। তার্ক্যু॰ রসা-ঞ্জন•। রসাঞ্জনেন বালেযঃ পথ্যা বিল্বদলৈ রপি। বচা হরি দু। বিশ্বৈ র্বা তথা নাগর গৈরিকৈ:।। ইতি ভাবপুকাশ: ॥

विजानभरः श्र् जानक व्यभिति-भागः। यथा। তোলो ह्यो भिहू त-कः के सूर्व के जित्युहः। विजानभर कर्यो व भागी जन सूज्यतः॥ इजि मस्माना॥ सार्कात व्यतः क्षी॥ বিড্ল বিডালপদক ল্লী কর্মপরিমাণ। ইতিবৈদ্যকপরিভাষা।।

বিডালী স্ত্রী বিদারী। ইতি রাজ-নির্ঘণ্টঃ॥

বিডীন ক্লী খগগতিবিশেষ:।
যথা। ডীন পুডীন মৃত্তীন সড়ীন সড়ীন
পরিডীনক । বিডীন মবড়ীনক নি
ডীন ডীনডীনক ।। গতাগত পু
গতিত সম্পতাদ্যান্চ পক্ষিণা ।
তিগভেদা: পক্ষিগৃহ ক্লাথো
নীড মক্সিয়া ।। ইতি জটাধর:।।
বিডুল: পু
ংবতসবৃক্ষ:। ইতি
হেনচন্দু:।।

विष्णिकाः भू इन्द्रः। ইত্যমরः॥ विष्णिकाः भू इन्द्रः। ইতি ভর-, ভীযদিকপকোষः॥

বিউ পু• বৈশ্য:। যথা বিট্ বিড্ বিশৌ বিশঃ। ইতি নুঞ্ধবোধব্যা; ক্রণ•।।

विष् छी विश्व। ইতি विष्गक्वा हि-मद हर्मनार ॥

বিড্গন্ধ লী বিড্লবণ । ইতি রন্ত্রমালা।।

বিড্ন: ত্রি বিপ্তাজাত: । বিষ্শন্দ পূর্বক জন থাতো র্ড পুত্যযেন নিয়ম: ।।

विष्ववन क्री विष्। विदेवून् इंडि

ভাষা। ইতি রত্নমালা।।

विष्वत्राष्टः भूः गुामार्म्कतः। इंडि

বিত্ত স: পূ বীত স:। মৃগপক্ষি । গা বন্ধনোপকরণ । ইত্যমরটী -কাষা ভরত:।।

বিতপ্তা দ্রী স্থপক্ষস্থাপনা পর-পক্ষব্যদাস:। ইত্যমর ভরতৌ।। কদ্বীশাক:॥ শিলাস্থয:॥ করবী-রী।ইতি মেদিনী॥ দল্পী। ইতি হারাবলী॥

विज्ञ जि विज्ञ ।। वीना दिवाह ।
। इज्याद ज्ञण्य पार्य दर्णनाट ।।
विज्ञ ज्ञि विखाद । विभू वं जन
था जाः कि भुज्य पन निम्न ॥।
विज्ञ कि विष्य ।। इज्याद ।।
विज्ञ कि विष्य ।। इज्याद ।।
विज्ञ कि विष्य । विज्ञ ।।
विज्ञ कि विष्य । विज्ञ ।
विज्ञ कि विष्य ।

विভन्न की मान । ইडामद्रः ॥ विভन्न पुर छेशः ॥ मः मयः । ইতি भामि ॥ छानमूहकः । ইতি मयः त्रज्ञावनी ॥ # ॥ আह्या উভাগে किनु छ कि किनु উভ এতে यह वि-

विञ्कर्ग॰ क्ली वि<mark>ञ्कः। ইভি শদ</mark>-ब्रङ्गाव**गी**॥

বিভদ্মি স্ত্রী বেদিকা। ইতি **শর্দ** রত্নাবলী!।

বিভর্দ্ধি: স্ত্রী বেদিকা। ইত্যমর:॥ বিভর্দ্ধিকা স্ত্রী বেদিকা। ইতি শব্দরত্বাবলী॥

বিভদ্ধী স্ত্রী বেদিকা। ইত্যমর: টাকাধা ভরত:।।

বিতল জী পাতালভেদ:। যথা। অতল নিতলঞ্চৈব বিতলঞ্চ গভ; স্তিন । তল সূত্ৰল পাতালে পাতালা হি তু সপ্ত বৈ ॥ ইভি শক্ষরত্বাবলী॥

विङ्खिः भू छो विङ्डमकिशिन क्रूष्ठः। विगट इेडि ভाषा। उटन भर्गायः। हाम्माक्र्वः २। इंडि नद्रः॥

कन्न वि उर्कार्थ। यथा आगु द्वारका विजान की वृज्जिविरणवः। इंजि

भिष्ति॥ व्यन्तः। इंडि विषः॥॥ विजानः शुः ही कर्ः॥ दिखादः॥ উল্লোচ: । চাঁদোয়া ইতি ভাষা। इंडरातः॥ यम्र भर्याय कन्तुः जनमाद मुष्टेवाः ॥

विञानः बि जुहः॥ मन्तः। ইउ নর:।। শ্ন্য:। ইতি ধরণী।। বিতানকঃ পুংক্লী চন্দ্রাতপঃ।ইতি नद्रांना॥

বিতানকঃ পু• মাড্যৃক্ষ: ৷ ইতি রাজনিঘটঃ॥

বিভানমূলক ল্লী উশীরণ। ইতি ब्राङ्गिर्स्फः॥

विভ্य: ब्री मृनिया है। **ই**ভামরঃ ॥ रेणदाल हु। इंडि स्मिनी ॥

विज्य हर की धानाकरा। ज्या इंख्या सः ॥

भू॰ जानव ी। रेडः বিভুন্ন 🤃 गतः॥

विज्ञा) खी ज्यागन ही। इंडि বিভূম গাঁলাজনিঘট: গা

বিভ্ৰত্ত ভ্যাগৈ। ইভি কৰি: কলুজনঃ :! বিভাগতি। বিভাপয়তি । इंভि दर्शानामः॥

विख की धन । इंडामदः॥

বিতঃ ত্রি বিচারিত:॥বিজ্ঞাত:। বিদ ও কঞ্চ চেতনাখ্যান বাস-

যা রামাশুম:॥

विखमः बि धनमाजा। विख्यम्मा তি य ইত্যৰ্থে ড পুত্যযেন নিম্নন:॥ विजि: जी विठातः॥ वा छः॥ मः ञ्चावना। इंडि (मिहनी ॥ ख्वानः । ইতি হেমচন্দ:॥

বিত্তে**শ: পু· জ**বের: । যথা । ত্বু° বুন্ধা স্বরিষ্র সংক্রিত স্থৃনিন্দ্রে। বিত্তেশ: পিতৃপতি রম্বুপ: সমীর: । সোমো হগ্নি গ্রগণ মহীধরাদি-क्ष कि खब्र मकन उत्र अक्ष খান্ন: ॥ ইতি মার্কপ্রেয়পুরাণে অ-দিভিকৃত সূর্য্যস্তবঃ॥

বিত্রতঃ ত্রি ত্রাসযুক্তঃ। বিপূর্ব ত্রস-ষাতো: ক পুত্যযেন নিয়ম: ॥

বিত্রাসঃ পু॰ ভয়°। বিপূর্ব ত্রস: ধাতো ভাবে ঘঞ পুত্যযেন নিয়নঃ विष्मनः भू॰ वृष छः। ইতি শক्र-हिम्दि।।

বিথ পাড যাচে। ইতি কবিকল্প-क्षमः॥ (वथ्र । ইতি मूर्गामा मः॥ विथ्दः पु॰ होदः॥ दाक्रमः। ইভূগাদিকোষ: ॥

বিখ্যা স্ত্রী গোজিস্থা। ইতি শব্দ-**इन्द्रिका** ॥

ই স্থানর:।। ল'বা:। ইতি ভউকি। 📗 বাদে। ইতি কবিকল্পদ্ম:।।চেওনা

क्छानः। वारः टिश्यं । क ७ विर-ষ্তে শাস্ত্র• ধীর: জানাভীভ্যর্থ: । (वनगर७ प्रार्थ (नाक: व्याथ)। जी-ত । थरि । यदमा जी थि नापूर्व म जी ত্যর্থ:। বেদযতে বৃক্ষ: ছির: স্যা-**दिखार्थः । क (वन्यंजि (वन्यंजि ।** কেচিন্ত বাদ । পঠন্তি। চেতনা স্থানে বেদনেতি পঠিত্বা বেদযতে वृद्धः वाष्ट्र इडार्थः। इज्रामार-त्रि । ययाह भत्रेयभर गमन्। নানা জিতাং স যত্নেন নিবেদ্যিষ্য-ত ইতি নিবেদন করোতীভ্যর্থে ्को मनाम्थर । ইতি দুর্গাদাস:।। বির ৯ শ পঞৌ লাভে।ইতি कविक्लुक्यः॥ २ व्यविष्टा भ म अ বিন্দতি বিন্দতে। ঔ বেত্তা। ইতি मृर्गामामः ॥

বিদ ড ধৌ মীমাণসে। ইতি কবি-কল্পছনঃ ॥ মীমাণসো বিচারণণ। ড ধ বিষ্তে শাস্ত্রণ ধীরঃ। ঔ বেল্ডা। ইতি দুর্গাদাসঃ॥

বিদ ল মতৌ। ইতি কবিকল্পদ্ম: ।। ল বেভি। ইতি দুর্গাদাস:।। विष्यः जि नागतः। ইতি जिकालः भाषः ॥ निभूगः । ইতি ताजः निर्घणेः ॥ পণ্ডिতः। 'ইতি भदः त्रञ्जावनी॥

विष्यु । विष्यु । विष्यु । ভাব ইত্যৰ্থে তা পুত্যুযেন নিম্ননা।। विष्या भी भन्नकीयान्तर्भजनायिकाः (जनः। यथा। खन्ना विषया विका তা সলটা অনুশ্বানা মুদিতা পু-**ভূ ीना॰ পর** की याया मिवा छ जाँदः । অস্যা লক্ষণং। বাক্কৌশলযক্ত-प्। मा ह विविधा वाश्विका किया विष्का छ। भूषना यथा। निवि-**ए उम्र उमान भ**न्नि वन्नी विष्ठकिन রাজি বিরাজিভোপকণ্ঠে ! পথিক সমুচিত তথান্য তীবে সবিতরি তত্র সরিভটে নিবাস: ।। দ্বিতীযা यथा। नामाय ज्वननात्थ वन्त्री मभराजु नारि**मिछि। (इन**एउ ह-तिगाकी शयमि कठात विनिक्ति পতি।। ইতি রসমঞ্জরী।।

বিদ: পু॰ পশুত:। বিদ্ধাতো:
কর্ত্তরি ক পুত্যযেন নিয়য়:॥
বিদ শে: পু॰, অবদ শ:। ইতি
রাজনির্ঘণ্ট:॥

विषयः भू॰ (यागी॥ क् छी। इंडि (यिषिमी॥ विष्ठ बि शिख्यः। विष्यादा भक् शुक्रायन निम्नमः॥ विषय की विश्वमात्तकः। क्षणीयन मा इिंड जाया। ইजिन्द्रिन्तुका॥ विषयः शुः विषयः। क्षावेन इिंड रहत्र विष्ठ ह जाया। उट्शर्यशायः। मुदेनः २ जिना २। ইज्यादः॥ मात्र १ ६ विषात्र १ दे। इिंड निष् तञ्जावनी॥

विष्रर्छः भुः छो अञ्चित्रनगद्गः। इेडि (२२० मु:॥ म जु वक्र (र म म) দক্ষিণপশ্চিমে বর্ত্তত অধুনা বড নাগপুর ইতি খ্যাত: ॥ #॥ অথ ভীম সূতাবলোকনৈ: সফল কর্ত্ব মহ ত্তদেব স:। ক্ষিতি মণ্ডল মণ্ড· নাবিত নগর জ্ভিন মণ্ডজো য-यो।। इंडि भूर्व नियव्य र मर्गः॥ বিদর্ভনা স্ত্রী অগন্ত্যপত্নী।তৎ-পৰ্য্যায়:। কৌশীতকী ২ লোপামু-দা ৩। ইতি বিকাণ্ডশেষ:॥ দম-यञ्जी। यथा। ध्उ नाक्त (गामया-ঞ্চল বিধু মালেপন পাওর বিধি: । ভুম্যভূচিত বিদর্ভজানন নীরা-खन वर्क्षमानकः ॥ इंडि भू वं रेनवर्ष ২ সর্গ:॥ কৃত্মিণী চ॥ विषर्ভेद्राजः **शुः विमर्ज्यम**ाधिः

প্রি:। তুস্যুনামান্তর্যু ভীমরাজ:

। यथा। ऋदा भग्न छा भि ज्ञा भगा हुछ ।

शृज् विष्ठुं द्राह । उन्न हा भगा हुछ ।

उन्न हु भगा ह भानिता वद ।

उन्न हु भगा ह भानिता वद ।

इि भू वे ति यथ > मर्गः ॥ म ह्य ।

इि भू वे ति यथ > मर्गः ॥ म ह्य ।

उन्न हु भाग मार्थ की क्य नामा किल जी मज्भ हिं । य भवा १८ विष्ठ ज्ञा ।

विष्ठ मुं हे न प्रामित मक छ्य ।

विष्ठ मुं दे ति यथ २ मर्गः ॥

विष्ठ मुं हे ति यथ २ मर्गः ॥

विष्ठ मुं हे ति यथ २ मर्गः ॥

विष्ठ मुं हे ते यथ २ मर्गः ॥

विष्ठ मुं हे विष्ठ मिल्य मर्गः ॥

विष्ठ मुं हे विष्ठ मिल्य मर्गः ॥

हिष्य प्राम्ह मुं स्रिन मर्गः ॥

भूवं तिया पि भूगं ।।

विष्ठा विभिन्तिः भूगं अखिन भिन्तिः।

म ह जी यक ता कः कि कि भी भिन्ता ह

। यथा। जगर विष्ठा विभिन्निः म
गर्ज उड़ा जिवा मा ह। निर्देश वा निर्देश वा निर्देश वा निर्देश विभिन्निः मा मूमा कि जीवा मा मिन्ति वा निर्देश वा निर

।। দাডিমকল্বঃ।। বংশাদিক্তপাত্র বিশেষঃ । ইতি ক্লীবলিক্ষসংগুহে অমর ভরতৌ ॥

विष्णः भू॰ त्रक्तकाक्षनः। ইতি
भद्रद्वावणी ॥ भिष्ठेकः । ইতি
भद्रहित्का॥

विरना खी जित् । इंडि द्रांज-निर्धण्डः॥ शब्रण्ना । यथा। विणीनं-विरना कुद्या वका कुना विथाक्छ।। कृशिरक्षा ह मीर्घा ह मिश्यां रेनव काद्रय्थ।। इंडि उख्रः॥

विना जी ज्ञान ॥ वृक्तिः ॥ इंडि सिनिनी ॥

विषायः भू गननानुमिनः। यथा।

क्रमः वा हल्लक्तनः गह वा निष्ठ

नुम्हि। क्रमः गृहक्ष याम्यामि वि
निष्ठः कार्यः मिछ मा। विषायः

हि मःश्रीन्या क्रमः माः भूमः

वल्लः । ই द्रिक्षिवर्द्ध ब्रम्मथाकः

विवादाः भू द्रिक्षिवाकः।।।

विनातः भू अलाहामः॥ विना त्राः। इडि (निनि)॥ गुक्रः। इडि इडि (इनहम्मुः॥

विमात है। विक्रमात । ইতি वाकि विर्धिः ॥

विरात्रकः भु॰ कन्नमश्राञ्च उउकः। भिनाहिः। उৎभर्यग्रायः। कृभकः २ । ইউ, भद्रः ।। अलवक्षकः। ই डि म पत्र ज्ञावली ।। म्इनम्। । । । व् वञ्चानार्थः गर्जः । ই डि मर्बध्दः ॥ অভ এव क्षा ই व क्षकाः। अर्थः मिठाम् क्षा ই डि वा। विमाद्रयः छी डि विमाद्रकाः। ज्ञानाञ्चाकि विः माद्रकाः क्षकाः। ই डि माक्षः। वङ्द्रभ उद्धः। ই डि ज्व डः ॥

বিদারণ ক্লী বিডম্ব:।। ভেদ:। ইতিমেদিনী।। নারণ।ইভিশন্দ রত্নাবলী।।

विमात्राः शृ जी यूषा ३७ (मिनी।।

विनातनः भू कर्निकात्रवृक्षः। ইতি
भद्रान्त्रका॥

विनादिका जी भानभी । इंडि भद्रद्वावनी।।

বিদারিণী ত্রী কাশ্মরী। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।।

विनाती खी भाजभगे। इठि

भिति । ज्यिष्टणा ७: । उट
भर्यायः। क्षीत्र मृङ्गः २ इक्षु मक्षा ७

काष्ट्री ४। इठा मतः ॥ विनातिका

क्षेत्र सम्द्रन्ता ५ मिठा १ भूङ्गा ५

मृगा निका २ व्या कन्ता २० विज्ञा नी

२) व्या विद्याका २२ ज्ञा भाजी २०

স্বাদুলতা ১৪ গজেষ্টা ১৫ বারিব-ল্লভা ১৬ গন্ধকলা ১৭। অস্যা खगाः। मधुद्रद्यः। भी उद्यः। खक्दः । त्रिक्षद्वः। अमु शिखनानिद्वः। कक कादिष् । भूष्टि वन वीर्य। वि-वर्षानवृक्षः । इंडि ब्राजनिर्घणः ॥ বিদারী বাত পিত্তমী বৃষ্যা বল্যা রসায়নী। ইতি রাজবল্লভঃ ॥ #॥ ष्यष्टारम भुकात कश्रेद्राभाष्टर्भ उ (द्रागिविष्मयः। यथा। यथ विमात्री নাহ। সদাহ ভোদ স্বয়পু সূতামু-मदर्गत्व भूजि वीमीर्गाःमः। शिः **ख्विन विष्ठाधनस्य विनात्री॰ शार्थ॰** বিশেষাৎ সত্ যেন শেতে ৷৷ পা-র্খ বিশেষাৎ স তু যেন শেতে। न भक्षा एन भार्त्यन विश्नवा-দ্বাহুল্যেন শেতে ত্রমিন্ পার্শ্বে সা বিদারী ভবতি ইত্যর্থ: , ইতি ভা-वनुकामः॥ यम्। किक्टमानि রোহিণীশদে দুষ্টব্য ॥

বিদারী ত্রি বিদারণকর্তা। বি পূর্ব দূ ধাতোঃ কর্ত্তরি ণিন্ প্রত্যযেন নিম্লন্ধঃ ।।

বিদারীগন্ধা স্ত্রী শালপূণী । ইত্য

विराकः भ् कक्ष्मारः। क्क नामः। ইতি হারাবলী॥

বিদাহি ক্লী দাহজনকদুব্যং। অস্য গুণৌ। পিত্ত মৃত্যুকারিছে। ইভি রাজবল্লভঃ।।

বিদিক্ স্ত্রী দিশোর্মধ্য । অগ্নি নিশ্বতি বায় ঈশানকোণ চতুষ্ট্রয । তৎপর্য্যায়: । অপদিশ ২ । ইত্য নর: ॥ পুদিক্ত। ইতি জটাধ্র: ॥ বিদিশ ৪ । ইতি শাদ্ব লু । । কোণঃ ৫ । ইতি রাজনির্ঘটে: ॥

विषिक्ष्यः भ् इब्रिपुष्यभक्षी। इिज्यामहिन्द्रका॥

বিদি হ॰ ত্রি অবগত। ইত্যমরঃ।। অর্থি হ॰।ইভি মেদিনী। উপগন্ধঃ । ইভি শব্দর হাবলী।।

विषिजः भू कविः। ইভি জটी-धतः॥

विभिषः भु॰ भिष्ठिः॥ यागी।
इठिभक्तद्वावनी एउ।कत्रप्राननो ह॥ मृष्ठा इडिभान्। (हमहान्द्र हिन्य इडिभार्टः॥

विभीनी वि क्उविमाद्रना । (हद्रा इंडि ভाषा । यथा । शिउद्ग छेट्रा । भाषानि ना १ विद्य के श्रुप छ॰ उन्हें के पंजानि जीर्थ प्रमाय श्रुशि-विवासू। उत्मात्रद्रास्थ विभीने वशास्त्र साई द्वीस नाम न्हद्रास ९थिन पर्माणात्यु ॥ इंडि सिस्फा- गदा १ का का प्रवागः॥ व्यक्ति । व्यक्ति । व्यक्ति । क्षिण विष्ण विष्ण निष्ण विष्ण वि

বিদ্: পু: গজসম্মন্থসাগ:। ইত্যনর:॥ জানন্তি। ইঙি ক্রিয়া: পদ?॥

विमुणः भू विजनः॥ यमुविजनः । ইত্যমরः॥ गन्नद्रमः। ইতি রত্ন भाषा॥

বিদুষী স্ত্রী পণ্ডি জান্ত্রী। ইতি নুশ্ব-বোধব্যাকরণণ।।

বিদুমাতী ত্রি পণ্ডিতবতী। যথা। দ্যৌ র্বাচম্পতিনেব পন্নগপুরীশো-ষাহিনেবাভবদ্যেনৈকেন বিদুমাতী

বস্মতী মুখ্যেন সংখ্যাবতা । ইতি বোপদেবপুসংশা'॥ বিদ্যু পুণ বিদুঃ। গজন্ম যোর্যধ্যা ইত্যমরটীকা॥

विमूतः जि अञिमूत्र इरहणाहि।
यथा। नामानाको जव जनस्तादकर्षया मुद्रकर्षः मात्र स्था स्रो यूग
मञ्जाव वर्षानिनाया जिक् हु। ।
आखाः जावन्नव जनक्या जाजनदः
विमृत्त वर्षात्र सुर्थन मनस्य हाकर्ष्या वज्रुभाजः ॥ ইতি চাতকাहेनः॥

বিদ্রগঃ ত্রি অতিদ্রগন্তা। বিদ্রে
গছতীত্যথেত পত্তে নিয়মঃ॥
বিদূরজ॰ ক্লী বিদ্রদেশজরত্ন বিদ্র্যাসণিঃ। অতিদ্রজাতে ত্রি॥
ইতিকেচিৎ॥

विन्त्रथः श्रुः द्राक्षवित्ययः। यथा।

स्तास्त एक्ष्ण्यन्य घाएणमावाः

कान् णृत्। (एववानुभएएवण्ड एरः
विष्युक्षा विन्त्रथः॥ भिज्यान् निजएवण्ड गिज्विनरण वीर्य्यान् ।
भिज्वाः गवहाण एक्ष्ण्य मः
(नाः न्जाः ॥ ইजि गाक्ष ५१

व्यथायः॥

বিদ্রভূমি: জ্রী বিদ্রদেশ:। যত্র বৈদ্র্য্যন্ণি কৎপদ্যতে। যথা। ত্যা দৃহিত্রা সূত্রা সবিত্রী স্কুরৎ পুভানগুল্যা চকাসে। বিদ্রভূমি নবমেঘ শদাদুভিন্নযা রত্নশলকে যেব॥ ইতি শমারসম্ভব:॥ বিদ্রাদিঃ পু• বিদ্রদেশস্থপর্বতঃ। ইতি জটাবর:॥

विদূষক: ত্রি কামুক:। তৎপর্য্যায়ঃ । विज्ञः २ वानीकः ७ वर्षुकः ८ कामरकिनः ৫ भीठेरकिनः ५ भीठे भक्तः १ ভविनः ৮ ছिमूत्रः ৯ विष्टेः ১০ : ইভি ত্রিকাণ্ডশেষ: ॥ চাটু-বট্টঃ ১১ বাসম্ভিকঃ ১২ কেলিকিলঃ **>** विशामिकः २८ शुशामी २० পুর্তিদ: ১৬। ইতি হেনচন্দু:॥ भव्रनिन्हाकवः। इंडि यिहिनी॥ তৎপর্য্যাयः। খল: ২ রঞ্জক: ৩ অ জীক: ৪ জুরঃ ৫ সূচক: ৬ কটে-কঃ ৭ নাগঃ ৮ নলিনাস্য: ১ পর-(विषी २०। ই**তি म**क्याना॥ ठजुः র্থানায়কান্তর্গত নায়কবিশেষ:। ত न। लक्षन यथा। अञ्चाहि रेवक्रिड। र्शम्यकात्री विमृषकः। यात्रापानाः द्रगः यथा। आभीय नीत्रजभूशीः म-যনোপকণ্ঠ নুৎকণ্ঠিতোল্মি জ্ঞ ক-ঞুক মোচনায়। অত্যন্তরে নত্রকা-রি বিদ্ধকেণ পুণ ভত্তন স্তক্ত স্কু-हे क्षेनारः॥ इंडि त्रमनक्षती ॥

বিদ্যণ ক্লী বিশেষেণদ্যণ:। বি
পূর্ব ঞান্ত দূষধাতো রনট্ পত্যযেন নিস্কন্ন:।।

विरम्भः भू॰ भद्राम्भः। रम्भाछ
द्राः। यथा। অশ्मीठकाना ज्राष्ठद्र
विरम्भञ्चार्मोठमुवर्ग स्मिर्ग्रहः।
मुक्तिः। ইতি मुक्तिज्ञः।। यन्।इ।
काजिजाद्रः मनर्थानाः किः मृद्रः
व्यवमायिनाः। का विरम्भः मिन्
म्रानाः कः भद्रः भि्यवामिनाः।
ইতি চাণकाः॥ यनाद्रः रम्भाष्ठद्रः
भारम मुद्रेवाः।।

विष्ट शुः सनका न्य च्रिन शः॥
काय म्या दि । इंडि स्मिनी ॥ #॥
विनि तासना विष्ट का ताः।
यथा। यम मार्थ उटा यक्त विनः
ह महा गम प्रियः। उ॰ मृह्ये स्मि उः
श्रुष्ट भुडा था दि । ।
यमा उमा दि प्रश्रे विष्ट श्रुष्ट । ।
स्मा उमा दि विष्ट श्रुष्ट विष्ट श्रुष्ट विष्ट श्रुष्ट । ।

विष्य जी भिश्या। इंडि इस. हन्मः॥

বিদ্ধ: ত্রি ছি দুত:। ইত্যমর:॥
কিপ্ত:। সদৃশ:।। বাধিত:। ইতি
নেদিনী।। তাডিতঃ। ইত্যক্ষ;
পাল:॥

বিদ্দাকর্ণ: পু॰ বিদ্দারণী । ইতি । ভরতদ্বিদ্দাকোষ: ॥ কিন্তুর্কা স্থী বিদ্দাদ্ধী । ইতি

বিদ্ধান্ত্রী বিদ্ধান্ত্রী । ইতি ভরতদ্বিরূপকোষ:।।

বিদ্ধকর্ণিকা জ্রী বিদ্ধকণী। ইতি শক্রত্রাবলী।।

विकारि शि वृक्षिति स्थः। वा किना दि इंडि जाया। ज्य भर्यायः। भार्यः २ व्ययं १ ० इ। भनी ६ (भ्य नी ६ द्रमा ५ वहा होना १ भाषा ह-नी ५ भूगो ने ना विकारि । विकारि

विन्यानः जि वर्डमानः। ইতি সংশদ্দীকাষা ভরত:॥

विन्ता खी पूर्ण। इंडि मप्त द्वी-वनी ॥ गिनि गतिका । इंडि मप्न हिन्दुका ॥ छान । उन्न भाष्म शुक् इंडि बहा थद्वः ॥ भद्रमान्य भुक् यार्थ मायनी चुना विन्ता वुक्क छान द्वा भाषि । जान विन्ता वुक्क छान यथा। माद्रमाया । जान विव्य मन यन (प्रांडा) गिर्मिन देव्य । यहा-क्ती मनाथा । विन्ता महियन र्फिनी ।। विश्वनारत । भूगवाम्या दः পেদ্বিদ্যাণ মাযাদ্যাণ বা জপেৎ সূ-থী:। মহিষমর্দিনীমজ্র:।। দশাক্ষ-রী সমাখ্যাতা বিদ্যা ত্রিভূবনেশ্বরী । भुगवक उथा भाषा ভবেছिन्। भून ৰ্দশ ।। কাম• পুণব মিত্যুক্ত• ভবে-विन्ता भून पर्म । मूर्गामञ्जः ॥ वादी-काम्या यमा विम्या वागी नव् श्रुमा विनी । कानाम्या ह यमा विम्या म र्बकाम भुरायिनी ॥ जात्र मायाहि কা বিদ্যা ভোগ মোক্ষৈকদাযিনী। यही जाम्या ভবে दिम्या छद्दी दिनाङ् কল্পনা।। অন্নপূর্ণামস্তঃ। ইতি छ ত্রসার: ॥ ঋ॥ শার•। ততু স্থা मणविश्वायथा। शिका) कन्नः र ব্যাকরণ' ৩ নিক্তকু ৪ জ্যোভিষ ৫ हनरः ७ वायुनः १ यजुर्खनः ৮ माः মবেদ: ১ অথর্ববেদ: ১০ মীমাণসা ১১ न्यायः ३२ धर्म**लाञ्च॰ ३० न्**र्वापः ১৪ আগুর্বেদ: ১৫ ধনুর্বেদ: ১৬ ^{গা-} क्षर्वरदरः ३१ जर्थमाञ्च॰ ১৮ । यथा दिक्षुभूद्रागः। अञ्चानि (वर्षीः **म्हजाता नीमा॰मा न्याय विख्तः।** ধর্মশান্ত্র• পুরাণঞ্চ বিদ্যাহ্যেতা শ্চ-जूर्यम ॥ जागूर्वित्म धनुर्वित्म गा-ন্ধর্যে তি তে ত্রমঃ। অর্থশাস্ত্র° চ-তূर्यक विम्यां श्रेष्ठाभरेमाव जाः॥इंडि

भु।यन्ठिखछखु॰ ॥ # ॥ नीठाम-भू उत्तरा विष्ठा शुक्ता यथा। भुष्त थानः मुखाः विन्ता माननी जावत्रा-मि । व्यउपामि श्रवः धर्मः खी-**बद्धः पृ**ष्ध्वापि ॥ इेजि मानत् २ व्यक्षायः॥ 🗱 ॥ विष्ठा शुभः मा यथा । य वान जादाम भर्ते छि विम्राः य যৌবনস্থা অধনা অদায়া। তে भावनीया इंश बीद लाक मनुष्र ক্পেণ মৃগা শ্চরন্তি 🛭 ভোজনে ভোজন চিত্ত न ऋग्रीहाखरमवकः । সুদুর মলি বিদ্যার্থে বুস্লেৎ গৰুড दिगवान्।। (य वाल जावान भठेडि विष्णाः कामाजुद्रा योवन नष्टे हेखाः । তে বৃদ্ধ দালে পরিভূষদানাঃ স-न्त्श्रामाः व्यक्तित्व यथाद्धाः ॥ गाउ। विदी शिकाणव दीला (यन ৰ পাঠিজঃ। সভা মধ্যে ৰ শোভন্তে रुन भारत्य वृद्धा यथा ॥ विष्ठा नाम প্রকণ রূপ মধিক গুরুষ নভর্জন বিদ্যা সাপু জনপ্রিয়া শুচিকরী বিদ্যা ध्वना थकः । विन्ता वज्ञनार्खि नामनकती विन्ता भद्र (५वडा বিদ্যা ভোগ্য যশ: সংলামতিকরী বিদ্যা বিহীন: পশ্যা গৃহে চাভ্যন্ত-রে দুব্যু লগ্ন চৈব জু দৃশ্যতে। অ: **म्मर॰ रहिना कि विकास कि विकास**

भरेतः ॥ इंडि गाक्ए ১:० १ ১:৫ व्यक्षारयो ॥ 🕸 ॥ व्यथ विष्ठाः नान-कल । यस (पवा) गृष्ट् निष्ठा वि-म्रामान भुवर्खस्य । म ज्या म-সর্বলোকানা প্রাঃ প্রাপদ বু-**(इ.८. ।। विन्तानानः भूवक्षत्रामि (यन** जूरांडि भाजतः। विभारं हीयर्ज যেন বিধিনা ত॰ শৃণুম্ব ন: ॥ সিদ্ধান্ত মোক্ষাজ্ঞাণি বেদান্ স্বৰ্গাদি সাখ-কান্। ত প্রানীতি হাসানি দেখা थर्ण विवृद्धारा ॥ शाक्**उ** वान्य उप ज्ड उद्यागि रेज्यव । माञ्जानि शर्ठ-नाष्ट्रानाथ भाउत्रः कलमा नृशाः ॥ জ্যোভিষ• বৈদ্যশাস্ত্রাণি কলা কা-व्यः अञाग्रजः। मानामाद्याग्र मा-প্মোতি গন্ধর্বণ লভতে পদ ।। বি-দ্যাভ্যো বৰ্ত্তে লোকো ধর্মাধর্মঞ্ वृद्धरय। जन्माद्विरा गमा (मया मृक्षी-मृष्ठे क नाथि जि: 11 **मही ना**नक (गा-দান হৈন বস্ত্র ভিলাজল ৷ ধান্য भीशामनानक **नरा**नानि नानम् ॥ इञ्ज कीया मान भी भागन न-রাধিপ। বিদ্যা বৃদ্ধি মবাপ্নোতি দী यमानाभि निज्यः।। একোहाরেप ভূদান দত্ত ভবতি ভূমিপ। নহি-তদ্বিদ্যতে ভূপ দেহ পাতাদনন্তর ।। विन्तानानः न उद्दर्भ अन्या मण्या

ভরেৎ।। শতধাকোটিধা গছেদিহা-মূত্র চ পার্গ। রাজ্ঞা তফর দা-यारेना र्जन विद्य महीमृरिभः। मर्बराः নানি স্থীয়ন্তে বিদ্যা কেনাপি ছ্ৰীয়তে ।। বিদ্যা দানাৎ পর• দান• ন ভূত• ন ভবিষ্যতি। বিদ্যা দানেন দানানি নহি তুল্যানি বুজিমন্।। বিদ্যা এব **পর॰ ম্বে**। যত্ত**ে পদ ম্নাম্য**। म्पृत्र अम्राउ छकि छक्रा एक মুপাদতে॥ স চ বিদ্যাগমান্ বক্তি विष्ठा भूछान्छा न्म । विष्ठा वित्व-ক বোধেন শুভাশুভ বিচারিণা।।। विन्तुरङ সর্বকানাপ্তি ख्यादिन्ता भवा मंजा ॥ विर्धानाना भवः मा ন' ন ভূত' ন ভবিষ্যতি । যেন দৰে: ন চাপ্নোতি শিব পরন কারণ ।। বিদ্যা বিচারতভুক্তা রাজ্ঞ: সন্মার্গ গামিনঃ। ভুঞ্জতে ২পি হিভোগামি গছুত্তি পর্মাণ গতিং 🛭 অন্ত্যুকা অ शि या भाषा की उत्त गुरु ब्राक्त**मः** 1 সা বিদ্যা কেন **নীযেত যস্যা:কো**-न्धः अस्माभिन्।। कृत्त्व अञ्चर रुष्टि শর্ষপেণ তুরস্বন ৷ মক্ষিকাপদমা-ত্রস্য বিষম্য বিষমা গতিঃ ৷৷ এবং বিধ্য বিধিণ বংস বিদ্যা মন্ত্র পুভা-বতঃ। দ্বীৰ্য্যতে ভক্ষিত পু'ভি ভনাছিদ্যা পরাৎপরা।। न হি বি

म्रा ञल जां कि क्ल (भोक्**र भा**ः ত্ৰ হাণ। বশতে সৰ্বলোকানাণ পঠি-তাউপকারিকা॥ ভূতৈ গৃহীতা বি-धुष्ठा मधा वा मङ् भन्नरेगः। विम्रा উত্থাপয়েৎ বৎস অন্ত্যজন্যাপি ক্ৎস্থিতা।। সর্বেষা মেব বৃদ্ধানা विरुगवाक्षा हि मानुजा। वायावृ-(का क् मृमुागा॰ विभाना॰ धनवान् यडः ॥ ऋ दियानासु वीर्याप विश्रा ণা॰ শাত্রপারগ: । বিত্ত॰ বন্ধু বঁফ **ৈ**চ্চব তপো বিদ্যা যথোত্তর গা প্-জনীয়ানি সর্বেষা বিদ্যা তেয়া গ तीयनी। ७क मृभ्यया विर्धा शृह्रान-न थरनन वा ।। विष्ठुया ल छ्राउँ विष्ठा চতুর্থে। নোপলভঃতে। যঃ ক্ৎুমান্ত मही • पर्शाट(नक् रून)क काकन ॥ न यहन्।। यजः भृष्ट्य उत्माशिकि (भए कुरिए। भाग विरक्षा दश ভাগ বিদ্যায়া ক্রপবর্ণিতঃ ॥ সংক্ষ পান্ন চ বিস্তারা ত্ত্রস্যা দান ফল শূণ্ ।। #।। ত্রীতা দীপত্রজে সঞ্চে সমে পত্র সুসঞ্চিতে। বিচিত্রক বিপার্শ্বে চ চৰ্ম্মণাণ সবটী কৃত্তে ॥ রক্তেন অথ क्रिक्न गूर्का नाविर्काउन ह। पृष्ठ मूब मूराञ्चन ७व॰ दिथ क्राउन ह। यस দ্বাদশ সাহসূী সংহিতা মুপলেথ-বেং । দদাতি চাভিযুক্তায় স্বাতি

পরমাণ গাড়- .. শে সর্ববাধা বিবজ্জিতে। গোন্যেন भू (७ रेनव क्रयं) ात्र ७ लक र वृथः ॥ हजू র্হন্ত পুনাণেন শুভঞ্চ চত্রসূক তস্য মধ্যে লিখেৎ পদ্ম সিত রক্ত রজা-पि जि: ॥ मर्बर्डकमरियः भूरे मुर्व-(य८ नर्बाडा मिण । विजान मान যেমুদ্ধি শভচিত্র বিচিত্রিত ৷৷ পা-র্শ্বতঃ সিত্রবৈদ্ধে স্তু সম্যক্ শোভা• शुक्तायर । कमारेक ब्रह्म हरेन्तु क पर र्न रेन म्हामदेत खथा।। वन्हे। किक्किनिः শবৈশ্চ সর্বত্র উপকল্পথে । তস্য মধ্যে ন্যসেদক্ত নাগদন্ত ম্য শ্ভ ॥ অব: কশ্চিনিবদ্ধন্ত পাশ্বতো হ-রি দন্তিভি:। শোভিত দূঢবন্ধেন वकः मृत्वन वृक्षिमान्॥ ज्ञात्कृ विन्यास्याः भुष्ठकः विधिकः শু ভ । অলেখ। মপি তত্ত্বে প্রযে দ্বিধিনা ত ড:।। নিৰুদকৈ শুথা পৃষ্ণৈ: क्रिम की है विवर्षि रेजः। हन्स्राम म-मा उब जना हाक ध्नरग्राध्नक ख्युल् (रयः जुद्रक्षांख्य मिल्विं छ।। मीश्रमालाः उथा हारगुरेन(वर्षः) वि বিধ পুন: ॥ খাদ্য পেয়ান্তি (मश् (हाय) काशि नित्वहर्द । প্রযেদিশিপালা স্ত লোকপা नान्यथा कमः॥ कन्याः जियस मः ्र्ः । । अत्रः क्ल्लर्यह जाः। भुस्रः कः (स्व (स्वी क विश्वानाः सिक्कनाः ख्या ॥ समक्रा हिव माउवता नृभः भोता क भूकारय । उथा म भूक (यह ८ म (न थ क । भर्म जा भक ।। इन्त লক্ষণ ভৰুক্ত সৎকবি মধুরস্বর । পুণষ্ট মারতে গুন্থ শুন্ত পুত্তক লেথক ।। নাতিসন্তত বিছিলৈ নঁ শু-रेक्न नं ठ कर्क रेणः। निस्तागद्ररेक र्व रेर्न व्हंथरय हिव भुष्ठकः ॥ भुाद्रस्छ পঞ্লোকানি পুন: শান্তিন্ত কার-(एट। द्राञी जागद्रनः व्हर्यप्राट नः र्वालकः भुक्त्राय ।। नहे हात्रगन-र्गान्ह (प्रवा: कथन मञ्जूरेव:। भुज्र-(य भूकाराह्माका छ छ: नर्ब विन-ৰ্জ্জায়েশ। একান্তে সুমনক্ষেন বিশুদ্ধে न फिल्म फिल्म। निञ्चाका विधिनातन সক্ষেচ শৃভবাসরে॥ ততঃ প্রোক্ত विधिना भूनः भूकाः भुकन्नरार । তথা বিদ্যা বিমানস্ত সপ্ত পঞ্চ ত্রি-ভূমিক ।। বিচিত্র বস্ত্র শোভাচ্য मुङ लक्ष्म लक्षिष्ठ । कात्राय সর্বতোভদু• কিঙ্কিণী বরকান্বিতং॥ मर्भ रेन ब्रर्व्वहरेन्द्रुक्ट चन्छ। हामब्र म-खिउ॰ । **ভिमिन्न् मगृ** मगृ श्विम भा मू गन्न• हन्द्रनाष्ट्रयः ॥ जूत्रयः खशुनु• বৎস শর্করা মধুমিশ্রিত । পূর্ববৎ

भृजायद मर्वान् कन्या क्षी विज्ञालीतः বান্। তথা ত পুত্তক বস্ত্রে বিন্য-সেদিধি পুজিত। এবং কৃত্বা তথা চিন্ত্রা মাতর: প্রীযতা মন ॥ য-নৈয়ৰ শুল্প ভছাত্ৰণ পুত্তে পুরি বি कन्नरार । उथा उभिद्यनः न्छाः नर्व भाजार्थभात्रगाः॥ भिव्यु छ। त्रा मुथ्रा विक्**र्मान**त्रायनाः। सङ् **७। ब**न मः एवन द्रथञ्चः वाम् । वाहरेनः ।। भुषारेन बीशि उत्तय यमा (प्रवम्) অ শঙ্গ। সামান্য শিবতীর্থেষু মা-তরো ভবনেষু চ।। তিমান্ পুজা ত था क् द्वा (एव (एविन भू निना।। मन र्भाषट भुगामा मा अवः भीयजाः भन। मराध्यम युक्ताय विर्वासान-রতায় চ।। বিদ্যা সংগুহ যুক্তায় সর্ব-भाज क् डापुरन ॥ ट्विन वर्डट यस्त छन्। जः विनिद्यम् । सगिक्ष जाः यदि नाडिः मक्तायाः वाहरयङ्गा। তেন তোথেন দাতার মৃক্রি সম-ভিবিঞ্যেৎ। বরলেতু ভতঃ শব মুহার্য) জগত তথা ॥ এবং কৃতে মহাপাতি দেশস্য নগরস্চ। অ-নেন বিধিয়া বস্তু সর্বাধাঃ শমন্তিচ ॥ व्यत्म विविना यस विकासन शु-रहुछि। म ভবেৎ সর্বলোকানা॰ দ শ্বাদ্দ্ৰাশ্ব: ।! নৃতো পি গছতে ||

ञ्चान तुम विष्यू नमक् उ। मछल् र्वाः উদ্ধৃত্য পাপ কলিলাদ্বিফ্লোকে মহীয়তে। যাবন্তৎ পত্ৰ সংখ্যা-न মক্ষরাণি বিধীয়তে ।। ভারৎ স विकृत्वात्कषु की ७८७ विविषः मू-रिथः। उपा क्षिजिः সমাবাতো দেব্যা **जिक्दरका जर्दर ।। ममस्य रजा**ग-সম্পন্নে বিদ্বান্ সংজায়তে কলে। বি म्यामान शुजादन याग माञ्च म्रामः দ্যদি ॥ আতা বিভানুৰূপেণ য: পু यह जि भानवः। अनार्वेश एक मा-প্লোতি সভ্যং সভ্যং ন সংশ্বঃ॥ ব্রি-या वात्न विधिना विम्ता मान कल॰ लाज्य। जलुंबानुख्या मखः विश्वा वा उमू फिल्मन्।। 🏶।। विकार्शियः नका দেয়ণ বস্ত্ৰ মভ্যঙ্গ ভোঙনণ ৷ ছ ত্ৰিকা উদক দীপ ফ্রান্তেন বিনা নহি।। লেখনী ঘটন তীকু মসি পত্ৰস্ত লে-थनी । मञ्जा जून जरा दरमा दिमा मान यनुखन ॥ भूखकाखन मध् ७८ भुमानः मुल्लाखनः। विम्यानाः स्वार्थाञ স্তবন্ধ तुष्किमान् ॥ পত্ৰকামাসনঞ্চিব দণ্ডাসন মথাপি: वा। विन्राक्षात्र भीनाय रखः खवः তি রাজ্যদে।। অঞ্জন নেত্র পাদানা मंड विम्याभन्नायल। ज्भि गृर्ख

(कड्छ बर्गबाक) क्ल भूता।। यम् ज्नाः शिला निजा विमानामः अ वर्त्ता । जनगिष ज्वास सर्गः उट भुजायागदाधिषा। जजार मुर्व भु-यरज्ञन विष्ठा (स्या भना नर्द्रा: । इक् কীৰ্ত্তি মবাপ্নোতি মৃতো যাতি পরা• পতি ।। ইতি দেবীপুরাণে বিদ্যা-मान महाजागा क्वायायः ॥ । অপিত। দশবাপী সমা কন্যা ভূমি-मानकः ७८ मनः । ज्ञिमानाम्मः खनः विश्वानानः विभिष्ठाः यथा भूजानाः गर्खिमाः ब्रामम् श्रवस्थ बर्धा करिया अर्बरामाना॰ दिएता मान्छ कि ज़िना ।। ब्राजिम्य सङ्गुत्र । मगुमिक्षे १३ १८ कन । एट कन यज्ञा विस्त्रा विष्ठातावन शून्।-दान्।। नर्बनमा भरार्गाः जदंबः ত্নোপশোভিতা। বিপায় বেদবি-भूरव गड़ी। मन्ना धालिशुरह ॥ य कनः बाञ्ड दिल्या दिलासादन ७९ कृतः । क्लिनानाः नर्धुत मग्रश्नाखन यथ कन्ना ॥ उथ कना भगवारशाजि भ्रुकमा भूमानजः। যাব্য পাত্ত হ' তেন কৃত জন্মশতৈ-व्रिशा उरमर्बः नामयङ्गाम् विদ्या-मारान (छ। विका धर्मा शरमण यः निर्धार लाजः ज्ञाजा जूरेवकरव ॥

ক্ৎসাণ ধরিত্রী যো দন্যাৎ উভযো ख् मन कन। विम्यानाना श्र র॰ দান॰ ন ভূত্ত॰ ন ভবিষ্যতি ॥ খেন দত্তেন চাপ্নোতি শিব• পরন কার-ण । विम्रा **ह भूगरक लात्क** अर्व थर्य भुनाविका॥ उद्यादिन्। जना **प्तरा প**श्चिर धीर्मि के वि कि: 1 আত্মবিদ্যা প্রদাতারো যে ভবস্তি जमा मूल।। न भून एउलि निव्रयः भुः विभाष्टि जूनिक्यः। विश्वाय शृह्यकः पद्मा धर्माञ्चन। ठ दिल ॥ नुत्रानन। ठ (या एए। एक एत्व स्वान् या । माज हुडे। जगट गर्बर मुमुज्य मुर जागुड ।। जमार माञ भ्राद्म एर्गाविषाय कार्खिक । (वन्रविन्ता-क्ष (या एए) ए चर्ला कन्नवय॰ राज्य ॥ व्याजाविन्तराध्य स्या मन्तराट उत्रर मङ्गान विराजा जीनि उनार्युरा-नानि बोणि जुनाकलानि हा। भाजः काममुघा (दमुः भृथियी देव भाष औ । यथकिष्टि कार्जिक मंज विक् मुफ्लि। मान्देवः ॥ उत्करक ज छ-🧿 जुनराना विस्मय ५: ॥ ইहरनारक বহুন্ভোগান্ভুজ্ব যাতি শিবলে-য• ॥ ইতি পান্মোভরখণ্ডে ১১৭ व्यवतायः ॥ 🕸 ॥ व्यथः विनतादञ्ज-मिनामि । विष्पुर्याण्डात्र । मनुपाछ

भक्षा वर्ष अभुगुत्ध जनार्मत्। य-ही· **প্**তিপদক্ষৈব বৰ্জিয়িত্ব। তথা है: भी। विका॰ शकरणीकिव भोति ভৌম দিন তথা। এব সুনিশিতে काल विष्ठात्रञ्जल कात्रविष्य ॥ भू-खियिद्वा इति । लक्षी । पिवीकाशि म-त्रभञी । भविन्ता मूबकात्राः मह श्राक विन्धाः विश्वयञ् ॥ नगरः वङ्क-পায বিঞ্বে পরনাত্মনে। স্বাহ্েত্য-(नन रुद्रि॰ बि: भूक्षरयर। जुनुकारेन। नत्मा निज्रः मद्रम्हेल्या नत्मः। (वह (वहाड (वहाइ विहा इहारन ভ্য এব চ।। স্বাহেতি বুন্ধপুরাণীযে न চত্রি: পূরুষেৎ।। 🗱।। निथन বি विभाइ निक्त भूद्राण । मुख् नक्क अ নিবলে শুভে বারে দিনগুছে। লেখ (उट भूका (नर्यभान कर युक्त कना र्फनान्।। भ्वंदियस्या छुदा विश्वि-(छ। (बर्थ:का छम:। निरत्रार्था ए उ বাল্বোশ্চ নদীপত্রাবধারণে ।৷ মৎ-ग्रभद्रागकः। मौर्यात्भञान् मुमञ्जू ণান্ সমশ্রেণীগতান্ সমান্। আ-ক্ষরান্ বিলিখেন্স লেখক: সপর: मृ उ: ॥ नावीयी (७७) नृतृत्लो मनुः। ক্ধিরে চ সুতে গাত্রাৎ শত্রেণ চ পরীক্ষতে ৷ ক্ধিরসুব বিনাশত্রেণ क् उ नाविला। भीलिकागाः। वशु

চর শিব ম্লাধোমুথ ত্বস্থু পৌষ্য 🔫 শিষু চ ছরিবোধে শৃক্র জীবার্কবা-রে। উদিতবতি চ জীবে কেন্দুকো-ণেযু সেমৈর রপঠনদিন বর্জ্জণ পাঠ-(र८ भक्षाप्त ।। यहन भाविकार । विन्तांत्रस्य ७कः (मुक्तां मध्यां) ভৃগু ভাস্ক:রो। মরণ শনি ভৌমা: न्ध्रामविन्ता वूथ(मामयाः ॥ विन्ताः রম্র: সুর শুক্ সিত জেম্ব গীষ্টার্থ मायी कर्नु कर्म कित्रमिक करता छा भूगान् मध्यमा १व। निहाताः भौ ভবতি জড়তা পঞ্চা ভূমিপুণ্ডে हायामूनाविन ह स्नयः कीर्जयरहात मान्ताः॥ द्रात छादा ज्रान नी ज्याद्य शर्तः २भीनम् वृष्ट्वा । धर्व-(र्कन्षु यूको विष्ठा द्राष्ट्रः भूभगः তে। 🗱। বৃহস্পতি:। পুাদ্মথো গুৰু রামীনো বক্ষণাভিমুখ• শিশুণ। অ-भागतम् भूषमः विज्ञामीर्जः भुभू क्तिञ्।।#॥ अर्थाभुद्रापः। याश्रायमऽ ত্রবোভেদা বাটেকোপাণ্শু নাননাঃ 1 🕸 । मिनपत्मं । मः ऋटिः भाक्रि র্বাক্রৈয় শিষ্যমনুরপতঃ দেশভা-यामुरभारियम्ह (वास्त्यत म छनः म्-जः॥ वाहिः गुष्ट् कद्रशाहिः। अ। न नित्रभुद्रागः। भूभाष्ठ मास् नःयारम क्रग्राष्ट्रिविद्रामनः। विद्रामनः उः

क्तिनभाठे मगाछि ॥ 🗱 ॥ मगाछ वाहका छीडे॰ अर्ग्यादिव विहक्षनः। সৃশুত সুবুত ভ্যাদন্ত ব্যাখ্যা ত্ निजाना ॥ (नाकः भुवर्खेङा॰ भार्य त्राज्ञा ठाख नरा जगी। धर्मायान् धन-जम्मामा ७क का ख नित्रागयः ॥ #॥ ইতি পোচ্য যথায়াত গন্তব্যঞ্চ বি-ভাবিতৈ:। শিষ্যে: পরস্পর• শাস্ত্র• विष्ठनीय विवक्तरिः ॥ कथा वस्त **श्**-माक्त नानावश्राथशानमञ्जूतिः। युक्ति-जिक सारत्रम्यार्थाः हिर्दे कालि **चगः कृरेजः॥ अवः नित्न नित्न व**ताः थाः भृग्यामिवाजा नद्रः। अ। विक्यु-পুরাণ । পুত্রৈ রধ্যাপিতা যে চ তে পতত্তি শভোজনে। 🗱। সূত্রউবাচ। भागनुष्टीनम् नद्रम् विष्णा भञ्ज॰ যথা কাপুক্ষম্য হন্তে। ন তৃন্তি-মুৎপাদযতে শরীরে অন্ধস্য দারা इव पर्मनीयाः ॥ 🗱 ॥ निक्शुद्रापः । যো ওক প্রযেষিত্য তস্য বিদ্যা পুসীদত্তি। তৎপুসাদেন যন্মাৎ স भाषा एक मर्बमम्बरः। 🗱। पर्वामाः। সন্ধ্যায়া গজ্জিতে নেবে শান্ত্রচিন্তা ব্যরোতি যঃ। চত্ত্বারি তস্য নশ্যন্তি চायु विन्ता रामा वनः॥ अ॥ अधीः তস্যার্থিনে দান মাবশ্যক তথা চ नुः जिः । याथी छार्थि (छा) विम्राः न भुराहर न कार्या ना नार (भुरामा म्बात्र भावृगुया८ इंजि। 🗱। जमानक व्यथाभारतन व्याथाया विविधार्भ-ণেন চ সম্ভবভীভ্যতো ধীমন্ডি র্নি-বন্ধ: ক্রিয়তে।। 🗱।। তথা চ বিষ্ণু পু-রাণ । প্রাণিনা মুপকারায যদেবেছ পরত্র চ। কর্মাণা মনসা বাচা তদেব মতিমান্ ভঙ্গেৎ ॥ বৃহস্পতি রপি । অজ্ঞানতিমিরোপেতান্ সন্দেহ-পটলাব্ভান্। নিরাম্যান্যঃ **স**্ক-**८७ मा**खाञ्जन **मना**क्या ॥ **३२** की-র্ত্তি: রাজপুজা• লভতে সন্নতিঞ্চ সঃ৷ যানাসিকে তু সন্যে ভ্ৰান্তি: সংকা-যভে যভ: ॥ খাত্রাক্ষরাণি সৃষ্টানি পত्राक्छान्य भूदा। উপদেश्चान्-নম্ভাচ লোকে তুল্যফলৌ স্ভৌ।। वरका वक्वात्रनान्याम् शिष्ट्रीन ণাচার্য্যে গুৰু: কৃত: অত্যেগুছক-र्खु: मूजद्रा॰ एकद्र॰। यथा महा-ভারতে। অরণ্য মনুসংপ্রাপ্য কৃত্বা पुगि भशीमय । **ভ**श्चिमाहार्यं वृद्धि-ঞ্পরমা নাস্থিত স্তদা।। ইম্বস্তে যো-গমাভস্থে পরু নিশ্চয় মাগতঃ। #1 শত্ৰ লিখিতৌ।ন বেদ মনধীভানা° বিদ্যান্ধীয়ীভান্যত্র বেদাক্ষ স্মৃতি-ভ্যঃ। অঙ্গানিচ। শিক্ষা কল্পে। ব্যা-क्रन इल्हा (क्राठिय भव ह । **নিক্তজ্ঞতি চাঙ্গানিবেদানা** গদি 🎼 ভানি ষট্ ৷ ফৃতিস্ত ধর্মসংহিতেত্য মরং।। 🚓 ।। শিষ্যব্য গুরুষু গণিত্ব মাহ লঘ্ হারীত:। এফনপ্যকর॰ यस्र ७कः निःषऽ नित्वनस्य । शृथिः व्या॰ नाखि उम्बा राम्या भारम्-भी खरवट ।। 🕸 ।। बन्दिशू द्वापः । यण्ड শুরান্যতঃ শান্ত্রণ সাক্ষরেণ প্রাপ্যবৈ मृत्रः। यमाना जनायः कीर्खिः खाताः স বুকাহ। ভবেখা। বিষয়ের তথা নোচ্যান্মোপি শাস্ত্র মনুত্রমং। স বাতি নরক বোরনফ্য ভীমদর্শ-भुन ब्रथायन नारु वाभाउदः। नया विष्ठाया न विद्याद्यञ्ज शून द्वाठार्य्य মুপেত্য সাধ্যেদি ভি॥ৠ। বিফুঃ। य-শ্চ বিদ্যা মাসাদ্য তথা জীবেৎ ন চ সা তন্য পরলোক্ষলপুদা ভবতি यक विक्रया श्रद्धियाः यः वा इडी जि **१%। (**२व**ण:** । ३४) २७ म**शीङ य**धि-मभाउन् शिर्टनारा हारा नृत्माहमा-ভ্যাঞ্চ ভগুডেলো বিভিদ্যুত্তে।। ভ-माहापाकृष्ठ लगुर वृथा न शतिकी-खंतर। यन् ने छन्। क्षयनः। सावा शुभा गा। जनुभावतः धनवऽद्यम भ-শ্যাভাপ: ৮ ভঃতেজ: ফ্লজন্ম শ-किशीनः। वृथा ब्रक्शित्रियाहनः

বিনা ।। #।। বৈশ্বান্তে ভবিষদ পুরাণ । উপাধ্যায়স্য যো বৃত্তি দত্ত্বাধ্যাপয়তি দ্বিজ্ঞান্ । কিম্বদত্ত ভবেত্তেন ধর্ম কামার্থ মিছভা।। ইতি জ্যোতিস্তত্ত্ব ।।

विम्राहनः) वि विम्रयाथाडः। विम्राह्युः) इंडिब्राक्वगः॥ विम्राम्नः भूः जूर्कवृक्षः। ইडि अस्मान्या॥

विष्णामाना जि विष्णामाना छ ।

यथा। जनमाना न्याना न जो नही

नान स्थित है। विष्णामाना न जो

मान भरेक्ट भिन्नामाना नगा।

देनि तुन्नरेववर्त्त तुन्नथर्त्त २० न न विष्णामाना विष्णामाना विष्णामाना विष्णामाना विष्णामाना विष्णामाना भ्रामा अभिन्न ।। देनि तुन्नरेववर्त्त भ्रामाना नान मान्यः।। देनि तुन्नरेववर्त्त भ्रामाः।। देनि तुन्नरेववर्त्त भ्रामाः।। देनि तुन्नरेववर्त्त भ्रामाः।।

विन्तामानः क्री व्यद्यामानः॥ पूर खकरानः। यथा। विनिष्ठ उपाठ । विन्तामानः श्रुवक्यामि याथाउः ध्याखदाषूना। उथा प्रयः कनः यह उहुपुत्र नृश्याखमा। शृश्यक्षिः गूञ नक्षत्व मञ्जलः गुञ विनिकः। ठञ्ज द्रश्रु विज्ञानः वा कृद्धा उत्वालानः श्रुष्ट ॥ शामाय्ताशनिष्ठं ञ्रु

পুত্মপুাকর শোভিতে। তত্র ন্যস্যা-जन• मिवा मिवा गन्नामि वाजि**७** ॥ भः ञाभा भुष्ठकः उत्र धर्मभाञ्जमा ধীমতা। ব্ৰাহ্মণান্ বেদ সংস্থান **ছ्नि। लक्ष्म भाद्रगान् ॥ (लथ्यि**-ष्। जू यद्भन उर अभकः मुजाकः-रितः । ठन्मू সূর্য্যোপরাগে বা সংকা-स्रायन वामाद ।। भूरमाङ्गि उट मू সংপ্তঃ বন্ত্রালঙ্কার ভূষণৈ:। ঘৃত থেন্ব। যুক্ত• রুল্লৈ র্দদ্যাৎ গুণবতে ত-ত:।। শাস্ত্র সন্ভাব বিদ্বে বাচকে-**डिश्विय॰ वर्षिट् । उहाञ्च॰ म्वृडा॰** নিত্য° জনানা॰ নাশ্যস্ত্যথ ।। দাতু স্তমান্ডবভ্যেব ফল ভছণু ভূপতে । यद भूगा भर्त जीयांना विधिवन्य-জতা॰ তথা।। তৎপুণ্য॰ সমবাপ্সো-তি বিধিবছাস্ত্ৰদ: পুমান্। কপিলা नाः अरुरम् अभाग्राखन यट कनः ॥ তদুৰ্বাজন্ সকল পেভে ধর্ম শাস্ত্র-পুদাযক:। পুরাণ ভারত বাপি त्रामायन मथानि वा ॥ मद्रा य क्ल माल्यां न उट महेर्ब मंशाम-रिथः। (हवाना मान्य निकाः धर्म भाजाि यः भुमान् ॥ অध्याभयि ধর্মাত্রা ভস্য দান ফল শৃণু। ধন ভূমি হিরণ্যানা দানেন যদবাপ্য তে ৷৷ ফল ত ত সকল রাজন্

নিত্য° কারাপকস্য চ। যো প্রী-তে ধর্মশাস্ত্রাণি দেবানা পুরতো **২নিশ•।। দ্বিজো বীণ্ণু রথার্থানা** भिव भिवाईि धुन्। शुाउकःथाय (या (वरः (वराञ्चः भाज (भव वा।। शृथिवीनान जूजार ना। कनः जना न्लाखम। मारेन र्या**लि** वि-**ভ**र्त्त्रिजाननीञ्ज र्थर्य उৎপन्न: ॥ षिखनः भृषिवीमानाद कलः उम्र ভবেম্প। (या ভৃত পटेमानानाः करताजानुहिन॰ नृश ॥ म यक्कक्ल-मारख मानाहामन (जाहरिन:। वि (वरका कीविज मीर्च भर्म कामार्च अम्भरः ॥ **भर्बः (उन ভ**विष्यः শাস্ত্রাণা পোষণে কৃতে। বাজ-(भग महमुम् मम्रागिष्टम् रूट ফল ।। তৎ ফল সম্বাপ্নোতি विन्।। नाममः भयः । जमाप्त्वा-ল্যে নিত্যু ধর্মশাস্ত্রস্য বা শুতে: ॥ भठेन कात्रयमाजन् यनी हिष्कर्य নাত্মন:। গো ভু হিরণ্ড বাসা॰ সি শ্যনান্যাসনানি চ ॥ পুত্যহুণ তেন দত্তানি ভবন্তি নৃপসত্তম । ধ-ৰ্যাধৰ্মণ ন জানাতি লোকোয়ণ বিদ্য-या विना ॥ उमार मरिव धर्माज्यम् বিদ্যাদানরতো ভব। ইতি বহি:-भूत्रात विद्यादाननामाध्यायः ॥

বিদ্যাদেবী স্ত্রী জিনবোডশদেব্য-ন্তর্গভদেবীবিশেষ: ৷ ইতি হেম-চন্দু: ৷৷ সরস্বতী চ ৷৷

दिए प्राथन की विष्णाय कि उधन । रथा। विम्यायन मारु काउप्रायनः া উপন্যন্তে তু যল্লন্ধ বিদ্যয়া পণ भूर्वकः । विम्याधनः छिष्मग्रा विভागि न निर्याद्यस्य। भिष्राः मार्जिकाजः भुगाए जनिस्थाभुग निर्वरा । यकानमः नगापानाः लकः भाषायमा उर्।। विमाप নন্ত তৎ পা্ত বিভাগে ন পুযোজ यट। मिल्लियुनि हि शर्या २य॰ ম্ল্যান্ড্রাবিক ভবেৎ ॥ পর निव्रमा यझका विमाया मूछ भूव कः। विराधनञ्च छिष्रार न वि ভাজ্য বৃহস্পতি: 11 খদি ভবান্ ভবু নূপন্যস্যতি ভগা ভবত এব सर्व उपम्य मिठि भगिष्ठ॰ यखा পন্যাস• নিস্তীৰ্গ্য লভতে ভন্ন বি-ভাজ্য॰ ॥ नियामधानिजा व्याद्धिकाउः यद्यमानाम्बिक्षण्या लकः धनः न भुडिगुश्लकः (यउन क्रम इन्। उथा यदकिकि वि म्। शुर्म निखीर्ल १भिष्ठ यमि কশ্চিৎ পরিভোষাদ্দাতি। ত থা যো হৃষ্মিন্ শাস্ত্রার্থে অমাক 📗

সংশ্য মপন্যতি তাম্ম ধন মিদ্ দ্ माभीजु। পश्चित्र भः मण्य नभनीय यक्षकः। उथा वाहिता द्वाहमत्त्रह न्याय कन्नार्थ माग्राह्मः नम्य इति-क्रिंगन यहाता यक्षाः माहिक। তথা শাস্ত্রাদি পুকৃষ্ট জ্ঞান সম্ভাব্য य পु जि गुरुं किना विद्या । एथा শাস্ত্রজ্ঞান বিবাদে অন্যত্রাপি যুত্র अबिहासी अबिहास विवास नि-र्ड्डिड) यझक । **उरेशक मिन् (म्**रा বহুনা নুপপ্লবে বেন পুস্প্তাৎ হল্লব্ধ । उथा भिन्नानि विन्ध्या विज्ञात म् दर्गकादापि ভি यंस्तकः। তথা দূতে-নাগি পর নিজ্জিত্য যল্লজ্ব ৫ৎ সর্ব নবিভাজ্য নিভরৈ:: তৃষ্মাদ্যা क्याहिए विमाया वाक मर्ड्डाकरेमाव তল্লেতরেষ। নিতি । পুদশনার্থন্ড কাত্যায়নেন বিস্তারিত নিতি দায়-ভागः ॥ नात्रमः । करूचः विভ्याः चुाजु यो विन्ता मिश्रह जः। ভागः বিদ্যাধনাত্তমাৎ স লভেডালুতো **१** मिन्।। विভ्यादि छ । के वहन नि र्प्पनाम वह्वः। यमि विष्ठा मञ्ज স্যতো ভাতৃ: স্টুর নপরো ভাতা चवनत्र्य भद्गीतायाजाच्याः सद्धः यि उना उधिमाङ्गिष्या उना विकातः। जानाः । न्यः। वन्नवस

भिजाक्त द्रा पीनकित कान् काजाः यनः ॥ পরভক্তোপযোগেন বিদ্যা **भाक्षान/उन्छ या। उया वहा॰ धन॰** যন্ত বিদ্যালন্ধ তদুচ্যতে ॥ অন্যত: পিতৃ মাতৃ হল ব্যতিরিক্তাৎ। অত্র विष्णययिक ज्ञबा । नाविन्त्रानाञ्च रैवरम्यन (स्य॰ विम्याथन॰ कृष्टि । भगविष्ठाविकानाञ्च (प्रय॰ रेवर्ष्य)न তদ্ধন• ॥ ভত্রোম্বরিত বিদ্যাপদমূ-ভাভ্যা॰ সম্বঃতে। তেন সম্বি-म्याधिकविम्याना जारगा न जुन् निविन्धाविन्धाः। रेवरम् न विनुषा । প্ৰ বিশেষয়তি। স্বাল বিনীত বিদ্যানা ভ্ৰাহুণা পিত্তো হপি বা। শৌগ্য পুাপ্তত্ত यश्वितः विजा-**छाः उ**ष्ट्रणि :।। अत्व स्रम्त পিতামছ পিত্ব্যাদিভ্য: পিত্ত এব বা শিক্ষিত বিদ্যানা ভুাতৃ गा॰ यिवन्ता (मोर्य) भाखे थन छ-দ্বিভঙ্গনীয় মিতি কল্পতক রত্নাক-রৌ। ইতি দাযতভু•॥

विष्णाधतः भुः (प्रवेशानिविष्णयः।
इठामतः॥ विष्णाः मञ्जापिकः धः
त्राठ भगिषिद्यापः । भूग्नप्रजापिः
कानक्षी (थग्रतः। इठि ভत्रठः॥
छामाष्ट्रभञ्जापि र्यथा। रिनेटेक र्य
भगिरा र्याछः जिल्लाका मञ्जादा

गरैनः । उदा नृष्भाविज्ञातनानाः মহাগন্ধর্ব নাযকাঃ॥ উৎপাদিতাঃ भून रेख (यं विकाषा युक्त पृर्वापा: । বিদ্যাধরেশরা স্তে তু থেচরা: কান্-চারিণ: ॥ হিরণ্যরোমা কপিলঃ मुलामा माध्व उथा। ইन्मृक्**र**ू शिक्राव्या नाम टेम्डव सङ्गवनः ॥ गंग ईर्ड्य माहिन्छ (ह हार्त्य) रेव मूलाहरन। शिवा ह मुमरा रेम्हव তাভ্যানিপ চ বিশুবাঃ॥ পুৰক্ষোৎ शास्यायात्र विष्ठा (जीमननः शनः। এতৈ ব্যাপ্তে। হৃষ লোকো বিদ্যা-ধরণণৈ জ্রিভি:।। এভ্যো ধনেকানি-জাতানি হ্যবরান্তর চারিণাণ লো-কেম্মিন্ গণশ স্তানি মন্ত্রবিদ্যা বিচা-विना। विन्ताध्या ख्यात्माल वि म्रावन ममन्जाः। इठि वङ्गिलू-द्वारा कामाऽभीय वंभाः॥ क्र ॥ वाः ডশরভিবন্ধান্তর্গত চরমবন্ধ:। ত-म् जक्रन यथा। नार्या उक्र्यून ध्वा कताच्याः खाउरयर भून: I कामरपधि डंबर कामी वस्ता दिए। ধরে। মত:।। ইতি রতিনঞ্জরী।। বিদ্যাবান্ जि विनावि**लि**ष्टेः। বিদ্যাশদাৎ বতু পুত্যযেন নিয়মঃ विनुष्क्षाया जी कलि मतीवृक्षः। ইডিরাজনির্ঘট:॥তডিৎপুভাচ॥ বিদ্যুক্তিষ্ঠা: পু॰ রাক্ষসবিশেষ: ।

যথা। অগ্রিকেতৃশ্চ দুর্জর্ফা রশ্মিকেতৃশ্চ বীর্য্যান্। বিদ্যুক্তিস্থো
দ্বিজিস্থান্ন স্থ্যশাত্রশ্চ রাক্ষস: ।।
ইতি রামায়ণে উত্তরকাণ্ডে ১০
সর্গ: ।।

विमुख् जी अक्षा। ইভিমেদিনী॥ विष्णां उट्चर्या । उट्चर्यायः । भन्ना २ भड़्मा ७ ड्रामिनी ८ ঐরাবতী ৫ ক্ষণপুভা ৫ তডিৎ ৭ (जोरामिनी ৮ हक्षना र हनना रे । ইত্যমর:॥ বীপা ১১ সৌদাশ্রী ১২ िवभीविका २० मर्ड्न्: २८ **अ**वित्रः भुजा २६ भोमामनी २५ वश्चित्रा ১৭ মেযপুভা ১৮ অশনিঃ ১৯। इंडि भक्रवाननी ॥ ठढूना २० व्यि हित्रद्राहिः २) द्राधा २२ नीना-জনা ২০। ইতি জটাধর: ।। সা ठञ्डिया। यथा। अत्रिष्टरामिभञ्जी-ना मश्रजानीह (वाउन। वह्रशू ध স্য বিদুধ শচতসেু৷ বিদ্যুত: স্থৃতা: ॥ इंडि विकृश्रात > चाम १६ ष्यव्यायः॥ हउत्रु। विद्रुउन्छ। वा-**छा** व किला विमुत्रना उभाग हि लाहि । भी अवग्य विटक्किया मृर्ভिकायामिठा ভरद्र ॥ इंडि জ্যোতি:শান্তে পুদিদ্ধা:। ইতি

खड़ीका।।
विमुद्ध जि निञ्जुनः। ই जि सिनिशे विमुद्ध जि निञ्जुनः। ই जि सिनिशे विमुद्ध कमाः भू जाक्रम विष्णवः। यथा। म कालनिशे किना किना कर्माः। जिना वह म्हा स्वा स्व स्व सहासिन्। जिना कर्माः। जा स्व स्व सहासिन्। जिना कर्माः। जन्म भू अवः। ज्ञा स्व स्व जाः भू अवः। ज्ञा स्व भू अवः। क्षि भू अवः। क्षि क्ष्य क्ष्य

বিদৃৎ পূিষ• ক্লী কা'স্য । ইতি হেমচন্দু:।।

विमृत्कान वि विमृत्विभिश्वः। विमृत् हकार वेळ भूऊ (यन निम्नमः ॥ विमृत्माना जी अक्षेक्त मान हत्नाः विश्वाना। वेशा (या) (या) (या) विमृत्माना। वेशा विल्ला विमृत्माः ना वर्ष्णुंगी भक कामः। यिम्नाः ना वर्ष्णुंगी भक कामः। यिम्नाः खाः ठारमाहिर्द्धि (या) मशुद्धः कृः कारमाः॥ इठि हत्नामक्षत्री॥ जिम्हा महादि वर्ग द्वीया यम्। विः भूगाः महादि (व दिः। विष्वृत्तिः वी गावाणि वहायहानाः॥

विष्ठुज्ञानी ने भू॰ त्राक्षमविष्णयः। यथा। विष्ठुज्ञानी नाम किन्द्राकः त्रानाष्ट्रथतः उत्म क्षुन्तिवर्णः विभानः एखः उठा १कंग्र शृष्ठः ठा जुनन् विभान भीछा तादिः विलाभिडवान् । उठा १कंश निज उड़ना मार्ययदा उद्यानः भाडिङ उड़ना म्निएक कप् छः यामकः भर्तापुतः उठा कन्ग्र क्रायाम्छा एक्स्छ्यानः भटन् वा-ताग्म्याः भिड्ठा लालाकं नामः। विथ्याकः । ইতি জ্ञिভाग्यङ > खतीय १ व्ययायहीकायाः खिवतः खानी ॥ जिल्ठा व्याम्यः भूधा व-ल्यान म्या हेडि विणुङः। म वि पूज्यालिना मार्जः व्ययुष्ठ महा-किशः॥ ইতি त्रानायण यूक्त मार्खः किशः॥ ইতি त्रानायण यूक्त मारखः

कारमानाषुनामाथा विमुख र्जिमार्थः। याजा तुन्तमात्थ (मायानामान्य म-মাশ্য নিযমো নান্তি। ঘোর বুণ-भाषामाक्त•। **आयउ• मीर्य• ॥** ষত্বিবন্ধ বিবৃণোতি। পৃথাদাবৈ: স-रिखण काल्यामाम्बा ख्या। ব্যামপি হি তেষাস্ত লক্ষণ সংপূচ-ক্ষ্যতে।। 🕸।। তত্র বাতিকস্য লক্ষণ भारः । कृष्मः। १क्षाः वा विषया ভূশ মত্যৰ্থ বেদনঃ। টিলোপ্থান পুপাকট বিদুধি র্বাত মন্তব: ॥ विषया ज्ना क्षा महा का महान् ।চিজেপান পুপাতঃ। টিছৌ নানা-विश्वो উদ্ধন পুপার্কৌ यम् अः।।। পৈত্তিকমাহ। পঞ্চেত্রর সংগা-भः भागत्वा वा जुत्र मारुवान्। कि-প্রোত্থান পুপাক চ বিদুধি: পি-ভগন্তব:॥ 🗱 ॥ শ্লৈমিকমাছ । শরাব সদৃশঃ পাঞ্জা শীত দ্রিধোল্ল-বেংন:। চিরোত্থান পুপা हण्ड বि-দ্বি: শ্লেশ্ম সম্ভব:।। তনুপীত সি-তारैक्वा मामावाः क्रमाना मजाः । 🗱 । সালিপাতিক মাছ । নানাবৰ্ণ क्का नु। (या घाछे। (वा विषयः। भरा-न्। विषयः अठाउँ वानि विषुधिः সান্নিপাতিক:।। নানা অনেকবিধা। বর্ণাঃ কৃষ্ণ রক্ত পাণ্ড্ৰপা:। ৰুবঃ

তোক দাহ क शामिक्याः। ग्रावाः " তনু পীত সিতা যস্য। ঘাটালঃ ঘা-है। क्षाहिकामासि इंडियाहानः। অভুট্ছিতাগু ইত্যথ:। বিবন: নি নোমত: । বিৰমণ পচ্যতে চাপি চিরাচির পভীরোত্তানোজ্বাজভে-रान विषयः यथामहाउथा भारहा ॥ 🛪 ॥ অভিবাতজন্যাগস্তো: স•-भुाछि পृत्रं क॰ नक्त नार्। তৈ देउ ভাবৈ রভিহিতে ফ্রান্ডে বা হপথ্য কারিণঃ। ফ্রেন্মো বাযু বিসূ**তঃ** সরক পিত্ত শীরবেখা। জুর স্তাচ माइक जायर जना (महिनः। या-গন্তবি দুখি ছেব পিত্ত বিদুধি লক্ষণঃ ।। रेड रेड डांरिक कांक्र वाहि शा-ষাণাদিভি হতে যথা রক্তসাবোন ভবতি তথাভিহতে ক্ষেত্ৰ কৃতে বা । অথবা খন্ন শূলাদিভি: ক্ষতে যথা ব্লক্ত্রাবো ভবতি তথা ক্ষতে কৃত্তে ক্ষােয়া অত্ত ফ্ত শ্দেন হত মাত্র নুচ্যতে। তেনাভিহত ফ্ত-ता ब्रभुग्य वागु वितृ छः। श्र छिङ्-(उ) या जिवा जार का ज व क्या ए क्रिएडन वायुना भूमृत्रः सेवायण **क्षाश्राय ।। अ।।** ब्रह्मान्य । कृष (मुजिन्छ: नात्र खोन् सार् क्या ज्ञः। भिड्रिष्**विभृत्व त्र**ङ्गिः ¦

मुनि क्राउ ॥ इ॥ अधिक्षानित्र ষেণ লিন্ধ বিশেষবোধ যিত্ মাভ্যন্ত-द्वान् ति प्रवीनाइ । व्याच्यक्षद्वानच-खुबु विपुरीन् शबिठकाछ। धर्वमा-তা বিক্লান শৃষ্ক শাকার ভোজনাৎ ॥ याजिन्छाय् वरायाम (वर्गावाज विलालिङिः। भृथक् मञ्जय वा एतः वाः अभि डा छन्यक्षित्र ।। वन्योक-वर्ममुसक गडः अव उ वि मृशिश छ-(म विजाय नाजा। अहको व क्व-(या उथा ॥ वृक्षस्याः श्लीक्ति यकृति হু দি বা ল্লে: দ্বি বাপ্যথা যেষা চি-क्रानि जानी गए वाक्य विमुधि लक्क-रिनः।। मञ्च वा भिलिद्वा वा मगू मञ्जा তৰুন্ন ত । 🗱। স্থান বিশেষেণ ৰূপ-वित्मव नाइ। खार वाज नित्रावस वरको कृ हाल्लग्बना भाजा हिका ভথাটোপ: স্বন্ধে মাত্ত কোপ-न ।। कही भूष्ठ गुरु खीत्वा व काला-(य छ विष्यो। वृक्त्याः भार्त्वं मः काठः श्लीकः याम निरत्नाथनः॥नः রাফ পুগৃহ ভীবে৷ হৃদি কাসণ্ট জা যভে। স্বাদো বকৃতি ছিক্লাচ ক্লেম্বি (अर्था १८७ भगः ॥ क्ष ॥ जावमार्थ-নাহ। নাভে কপরিজাঃ পরা বাস্ত্য জ্ব নিতরে ব্ধঃ। অবঃ সুতেষ জীবে ह मुख्युष्ट्व • न जीविज्ञा ना छ र

পরিজাবুক্তাদি জাতা:। যান্তি সুবন্তি উদ্ধৃ মুখাৎ। ইতরে বস্ত্যাদিলাঃ । ष्यथः अनार । नाजिक युजान्ताः মার্গাভ্যা•। তথাচ হারীত:। উদ্ধ্ পুভিমেষু মৃথামরাণা পুরর্তে २ সূক্ সহিতে। হি প্য:। অধ: পুভি নেযু তু পায়ু মার্গাদ্বাভ্যাণ পুর্ত্তি खिङ् ना ভि**ष्क्रयु ॥ # ॥ नाय्यदा** किक মাহ। অধ: সুতেষু জীবেল সুতে যুদ্ধ • ন জীবতি। হৃদাভি বস্তি পর্য্যা रि उयु जिसम् वाक् उ: ॥ कीरव कराहिए भूक्षा (न उत्तय कराइन। क्ता 🖲 विष्ठ भर्यात्य श्लीश क्लामा-रिकार्डियु: वाक् ड: भेख विरु व्या-পারেণ ভি: इयू भूक्यः कराहिए की (तर । इं अत्य क्या कि विख्रा क्यू **७था जिसम् न जीत्य । ज्नानीना**॰ মর্মহাৎ। অভএব ভোজ:। অসা-(प्रा भर्माका (छत्यः भरतः १भक्षक বিদুৰি:। সলিপাতোথিতোপ্যেব• পদ্ধ এব হি বস্তিজঃ।। হুজ্জোনাভে র ধোজ চ সাধ্যা মর্মা সর্মাপতঃ। অ-পক্ষতিক পক্ষত সাধ্যোনোপরি না ভিড:।। আখ্যান বন্ধ নিয়ন্দ ছ দি रिक्ष ত्यानि उ॰। क्ञा चाम मगा-युक्क वि पुषि नामारयम्बद्ध ॥ इ ॥ द।-श्वि दुर्वानाः माष्णमाष्णु नाइ।

माध्रा वि पृथगः भक्ष विदङ्कारः माः নিপাতিকঃ। আমণপত্ন বিদ্যান্ত্ৰণ (उया॰ भाष्यकािम्स्मिट् । भाष-वर वकामान वृत्रामाध्यर ॥ 🕸 ॥ অথ বি দুধে শ্চিকিৎসা। জলৌ চা भा उनः भुष्ठः अर्द्धियानि विमुर्धो। মৃদু বিরেকো লঘুলংবেদ: পিতোত্ত-तः विना ॥ अभव विदुक्षि गुळाराष्ट्रग **(माथ**य(मोयय•। वाञ्च भ्वकरेत्र दी वमः टेडल घ्डान्दिडः ॥ मुखात्का वह्ला (नभः भुयाक्ति। वाउविषु-(थो । यव लाय्य मृद्यक्त निर्देशः রাজ্যেন লেপযে ।। বিলাযতে ক্ষণে-নৈব হাবিপক্স বিদুধি:। পৈত্তিক• विमुवि रेवन्तः श्रुनि शाट मर्भिवायु-**िः॥ भगरमग्राभीत्र मधुक उन्तरिन** मूं क (शिविटेंड:। श्रभगात मर्थे दृष् অত্র ক্ষীরকাকোলী গুণাধিক্যাৎ। তস্যাঅলাভে অখগদ্ধাগুাহা। পঞ্ বল্ন কলেন ঘৃত মিশেণ লেপযে । পিবেদ্বা থিফলাক্বাথ তিবৃৎ কল্পা-ক্ষ সংযুত্ত ॥ ইপ্তিকা সিকতা লে।হ-, ক্টিউ গোসক্ তা সহ। মূত্রৈ: সুংখা-रिक व्यंत्भन स्वत्रयण क्षिमा वि पुषि ॥ मनगूनी कनारयण मामुरहन घृत्छ-न हारणायः दुन वा कारकन मण्त॰ शति (यह एय ८ ।। शिष्ठ विमुधिव र म- र्वाः किया नित्रवानय छः। विषु (थो न भनः ऋर्यप्रापु काञ्चल निभिख्याः ॥ ब्रक्डन्त्र म अक्षेत्र निमा नव्करेग-ब्रिटेकः । कीर्वन विमुखी स्माली রকাস্ত্র নিনিত্তক।। কৃঞাজাজী বিশাল৷ চ ধামাগ্ৰফল তথা ৷ পীত হেতে নিহন্ত্যাশু বিদুধি কো क्षेत्र भ्रुतान् ॥ श्रामार्गत कृषः (कावा ত ফীফল•া। শ্বেতবৰ্বাভ্বো নূল। মূল বৰণ ফস্য চ। জলেন কৃথিত। পীত মন্তর্বিনুধিস্ত্পরণা গায়ত্রী विकला निच करूका सधूक अम । ত্রিগৃথ পটোল মূলাভ্যা• চহ্বারো• **माः প्**यक् পृथक् ॥ सम्द्राधि खयान् मर्गाट अव दाया घृजाब्ह्याट । विनुधी धन्म वीमर्भ मार भार जुड़ा-পহঃ।। ভ্রুল্ল ছ দি হুদ্বোগ পিতা-भृत्यं के कामनाः। वाष्ट्रीए। निगुः ग्न अत्व (धोड भिष्ठे न्या गा-লতং। ভদুৰ নধুৰা পীত্বা হন্ত্যন্ত विष्या नदः॥ ल्या जाञाञ्जनक नियू (ए। **१** % रेमक्तर मायु**ड: । एछ।छ**-तिरुद्धिः जालाः भाजः भाज निध्य-नि उः ॥ निगृं कः कृथिः। इंडि वि पू-ধ্যবিকারঃ। ইতি ভাবপুকাশঃ॥ विपुधिनाभनः शुः (भाजाञ्जनर्कः । ইতি বিকাওশেষ:॥

वि मृतः शुः भनायनः। इंडामद्रः॥ वुिक्षः । इंडि मिर्मि ॥ निन्ता। रें जि भाषत्र द्वाव**ली ॥ क्रव्र**गः । इंडि (कहिए॥ विमावः भू विमुवः। विभूतं कथा ভো র্ঘঞ পুত্যযেন নিষ্ণম: ।। विमाविज जि भनायिज।यथा।वि দু।বিতে ভূতগণে জ্বন্ত ত্রিশিরাভ্য যাং।ইতি শ্ৰীভাগবতেবাণ্যুদ্ধণা विक्र उ: बि शाक्षत्वी जावगृ शातिः। उर्भर्गायः। विनीनः २ क्उः ३। ইত্যমর:॥ পলাবিত চ।। श् भुवानः ॥ तत्रवृक्षः। इंडि यिनिनी ॥ किनन्यः । इंडा जगभामः॥ विक्रयल्ला खी नलीनामणकपूर्यः। इेंड्यानदः ॥ বিজনলভিকা জ্রী নলিকা। ইভি वाजनिर्धेः॥ विष्वरक्तः जि वेशम्राविषान्। ইতি নুজবোধব্যাকরণ ॥ বিঘ্ৰম: ত্ৰি অ্যমেৰামতিশ্যেন विद्यान। इंजि वराक्रवणः ॥ বিদ্বত্তরঃ ত্রি অণ্মনযোর ডিশ্যেন বিদ্বান্। ইতি ব্যাকরণ ॥ विषयम्भीयः जि विषय्कः। इंडि

त्रशक्रमः ॥

विष्ठात्मां । बि विष्ठ कन्नः। हेलि मुक्षुत्वाद गा हम्र १ ।। विष्ठा ने बि ब्याचा विष्ठा ।। शुक्तः ॥ शिख्यः। हेलि (मिनी ॥ विष्ठियः शु॰ स्वः॥ विष्ठ वि । विश्व के ष्ठियदालाः क शुक्रायन

विष्युषः भू रेतव्रजा। छ८ भर्यश्रायः।
रेतवः २ विद्याधः ०। इज्यावः॥
जानुभयः ६ द्वयः ६ मन् ह्यः ७
रेववदः १. इजि क्रोतवः॥ द्वयः
৮। ইতি শব্যবাংলী॥

निष्ठभः॥

বিষেষক: ত্রি বিষেষ্টা। দ্বেষকর্তা
। বিরোধক: । বৈরী । বিদেষ্টীতি
বিপূর্ব ভ্রিবধাতো গ্রু পুত্যুবেন
নিয়ন: ॥

विष्वपः । विश्व विषयः । विष्य विषयः । विश्व विषयः । विश्व विषयः । व

ভানু যুক্তা বিদ্বেষকর্মণি॥ বৃশ্যু• श्रविद्य मध्याद्य विष्ययाष्ट्राहेन॰ তथा। भाष्टि भृष्टी रिनग्रास्त म-क्याकात्व ह भाजन ॥ व्यर्गाह खस्रन कार्या र्यं क वृन्धिकाम्य । (षरवाहा है। फिक कर्म क्ली द्र वा-ত্লোদয়ে॥ 🗱॥ ভূতোদ্য নিয়ন गार्। जलः भाडितिसो भन्नः वर्षा विश् करीविजः। उम्रत পृथिवी **ण**छ। विष्वाय (वृश्य की विंक १ । 🕸 ।। मिश्चियमभाइ। शास्त्र द्रक्षमि वि-ष्विर भाष्ठि वाक्ग वाय्त्। 🕸 । নক্ষত্র নিয়ন মাহ। বিছে:বাছাটন॰ विक् वायुरयारम ह कान्नरयथा #!। व्यथ विष्वया विष्कृ नित्था विष्वयः ণ রিপো:। করণীয় মহেশানি य-দুক্ত• নালিনী সতে॥ অন্যোন্য যুদ্ধ সংরম্ভ ক্ষিতৌ সমরে যভৌ। ত-मीय नथात्राहीन धूलि नाहान माध-कः। धुनिन। (उन विष्वय छाउना-দভিজাযতে !। 🗱 ।। পরতার 🕻 রি-পো বৈর নিত্রেণ সহ নিশ্চিত। নহিষাথ প্রীষাভ্যা গোন্তেণ जनानित्थ्य ॥ यज्ञ नाम उत्याः भी यु दिष्ट्रयक शत्रणात । तर्कन মহিষাখেন শ্মশান বস্ত্ৰকে লি থেখ।। বস্য নাম ভবেত্তন্য কাক- भाक्षण (निधिष्ठः । (वष्टेरायः विज्ञ ।। शिला (कर्षण (तक्रवेत खडः ॥ शिल्कानन मन्धावन्त भिल्कानन मन्धावन्त भिल्का । व्यवतान क्ष्राच्छान महारेज्य मण्डकः ॥ मञ्ज्ञान भाविन महारेज्य मण्डकः । अञ्ज्ञान महारेज्य मण्डकः । अञ्ज्ञान महारेज्य मण्डकः । अञ्ज्ञान महारेज्य मण्डकः । अञ्ज्ञान महारेज्य नाम क्ष्राम विन्ष्य मण्डकः महारेज्य मण्डकः । विन्ष्य मण्डकः महारेज्य मण्डकः । विन्ष्य मण्डकः । विष्य मण्डकः । विन्ष्य मण्डकः । विष्य मण्डकः ।

विष्वयो छो छोविष्मयः। यथा।
विष्वयो ज्या कन्रा ज्ञा कि हिवानना। ज्ञा प्राहो जन्या वाखानयकात शुकामको॥ इजि नार्कछयश्राण ए: मह्य भाष्य शिक्षः। विद्री
विष्वयो जि विष्वयविभिष्ठः। विद्री
विष्वयो प्राह्म भाषा स्टर्श इन् शुकुः
यन निश्च सः॥

विश्व न विश्वी। इंडिक विकल्लक्ष्मः
।। विश्वि विश्वानः। न विश्वि विश्वानः। न विश्वि विश्वानः
कार। व्यवकार्यञ्चार क्रिनुक्तरा
१ अग्रयः। विश्वि क्रिनुष्डो विष्क्षः
। इंडिग्नः।। वर्गविः। इंडि पूर्णानाः।।
विश्वः शुः विभानः॥ इंडिग्नः।।

পুকার: ।। বেধন ।। খদ্ধি: । ইতি ভরতবৃত রভসাজযো ।। বিধবন লী কম্পন । বিপূর্ব ধু ধাতো ভাবে অনট্ পুত্যযেন নিয়ম ।।

खी .मृडडर्जा। उट-विथवा পর্য্যায়:। বিশ্বস্তা ২। ইত্যমর:॥ कालिका ० ब्रखा ८ यंजिनी ৫ यंजिः ७। इंडि नद्रवादनी ॥ उत्राः कर्डवराकर्डवरानि यथा। विक्ः । म् उ ভर्छ दे दुक्क हर्य। उन्दादा ह-१ वा इंडि। वुक्तवर्याः रेमथुन वर्जनः **जासूनामि वर्জनका यथा भू**रहजाः । তাহ্লাভ্যঞ্জন• চৈব কাণস্য-পাতে চ ভোজন ৷ যতিশ্চ বুক্ম **हाब्री ह** विश्वा ह विवर्द्धारा ॥ षा ५:४३ व वाग्रवंत्राकः भावि-ভাষিক ।। মৃতি: । একাহার: স मा कार्या न विजीयः कनाइन। भर्य्यक्षणायिनी नात्री विश्वा भाः ত্যেৎ পতি•॥ গন্ধদুব্যস্য সংস্তা। ल्या रेनव कार्य) खया भुनः। जर्भनः भु उ । इ॰ कार्यं। खर्डु: सम जिला। मरिकः ॥ এउछ उभन भूध (भी-প্রাদ্যভাব ইতি মদন পারিজাতঃ ॥ বৈশাথে কার্ভিকে মাঘে বিশেষ नियमक्षदार । ज्ञान मान जीर्थः

যাত্রা॰ বিফো নামগুহ॰ মুহু:।।ইতি मुक्ति उद्धुः ॥ श्रः ॥ अभित । द्वाक्ती পতিহীন৷ যা ভবেন্নিয়ানিণী সদা । এফভক্তা দিনান্তে সা হবিষ্যায় রতা সহা।। ন থক্তে দিব্য বস্ত্রঞ गम्पुरा भूरे ज्वकः। मुक्क ह नर्नरेष्ठव नहीं जिनमूत्र ভূषণ ॥ ত্যক্তা মলিনবস্ত্রা স্যামিভ্যু না-द्रायण व्याद्र । नाद्रायणम् (भवा-🏘 সক্তে নিত্যমেব চ ॥ তমামো-हात्रपः मथ्य अक्छ १नना छ-क्जि:। भू अञ्चा १ भूकष गुका भाग भागाजि धर्मा जः ॥ भिष्ठामः न ह একাদশ্যা নভো ক্ব্য কৃষ্ণজন্মা-श्रेमी किरा ॥ श्रीवाममा नवमाध **শি**न्द्राध्वी श्रव्या। याचाद्राया-क (भु जानाः जन्तु मूर्गता भवागरमाः ॥ जुरेरुवाः भित्र गाजाः जुजार **भ**त्रस्य ह । जाष्ट्रनः विश्ववाञ्चीभाः यञीना॰ तुक्तहात्रिना॰ ॥ मन्। मि নাঞ্চ গেনো সং সুরত্ন্যে শুতৌ मु.उ.। तक भाकः मम्ब्रक कषीतः भर्ग (मव ह ॥ याना वृत्वं ज्ञाकात्रा वर्क्डवीया **ह रेड द्रिश । श**र्यक्र मा বিনী নারী বিধ্যা পাত্তযেৎ পতিং ॥ यान मारता इन क्वा विष्या नत

कः वृश्वः । न अर्ग्ऽा (कः म मःकाः विश्वः गाव मःकाः (भव ह।। (कः गावं)। विश्वः व

विधा खी विधिः॥ श्रुकातः। इंडा-भतः॥ अबिः॥ श्रकातः॥ विजनः। इंडि भिनिते भक्तत्वात्ताते ॥ कर्म। इंडि इंग्डन्दुः॥ विधनः। इंडि विकाखण्णयः॥

म्विक्त ह नाड्डांद्र मध्किन जू कश्म• ।। এव॰ जानान जनक॰ छः ক্ষেণিব চ ভক্ষক । বিহ্না চ জল নষ্ঠ বহিং শুষ্ক ত্ণেন চ।। পীতাঃ সপ্ত সমুদ্রাক্ষ দ্বিজেনৈকেন জহ্না। খাতু গভি বিচিত্রা চ দু-র্জেগা ভুবনত্রথে ॥ ইতি বুন্ধবৈব-র্বে ত্রীকৃষ্ণ সম্পত্তে ৭ অধ্যাব:।। 🗱 ॥ अभिष्ठ। ভলদ্দন উবাচ। नयका हि विविवामा नाम जात्या বুলাবিপ। পুলাপতি যোগকর্ত্ত। জন্মদাতাহ নেব্চাাকা কস্য পরী कन्या वा वद्रः का वा ममाधनः ॥ कर्यानुक्ष कमरः मर्दिषाः काद्रनः বিধি:। ভবিত্রব্য ক্ত কর্ম ভদ भाष्य मुः हो मुङ् ॥ यन् १था निष्क व अर्ब भनी नामा प्राप्ता यथा। ব্যভানু প্রিয়া খাত্রা লিখিতা চেৎ मुठा सम्।। भूद्रा ज्रेडव का वाहः (इनारन)न निदार्य) । इ**ि** वुका-বৈৰতে শ্ৰীকৃষ্ণভাগৰতে ১৭ সৰ্গা-यः ॥ 🕸 ॥ ञन्रह । ज्यारा (मायः কায়ুকীনা॰ শাপভাক্ পাপভাক্ शृशी। दुका जगिव वा जानि न वितः कः कलदवान्॥ जुराशास्त्राय उ ক্রাচিন্নামাক ত্যক্ত যোগিতা ।। क्षः। यभव्यः। साउप्नुः त्यन पूः

थार्खि। या श्यः मगि निन्छः।
छ॰ मानः थिछ दू॰ मंद्रिः। न विधाः
छ। बनः शुन् ।। ই छ दुक्ति वर्षाः
छिक्षक्रस्य ए ७० स्रशायः ।। ।।।।
स्रा क्रिका ह तिथा ।। ।।।
स्रा ह तिथा ह लो हार्षो किः
लाक्तिन प्रसंदिष्यों भुकी खिंदो
।। ই छ वङ्गि भुद्राण नगर हमनाः
साध्रायः।।

विवाञ्ज्ः श्र॰ नात्रममूनिः। ইঙি ভিকাঞশেষः॥

विधावायुः शृ म्र्यंश्लाडा। यथा।
त्माराना विधावायु फिर्वावरद्वा
फिराकद्वः । इडि मफ्डिन्त्वा॥
त्कारावयः । उत्यथा। इउक्नसन्धरेत त्कार वकः फिनः डविडा
उत्याप्तान्तिकः इन्न क्विःमटः
करन्न त्कार व्यक्ता मात्मा डविडा
विष्ठाम्रीम बांफ्नमात्म त्काः मः
द्वा काम्रीम बांफ्नमात्म त्काः मः
द्वा नात्मा उविडा । ववः वर्षमङः
तुक्ता व्यक्ता । ववः वर्षमङः
तुक्ता व्यक्ता । ववः वर्षमङः
तुक्ता व्यक्ता । ववः वर्षमङः
तुक्ता व्यव्वा । ववः वर्षमञः

বিধাতী ত্রী পিপ্নলী।ইতিশবচল্ট্রিকা ।। বিধানকত্রী । বথা ।
গভাস্না বাহু পুকর কৃত কাঞ্চী
পরিলসমিত্রা দিগুল্লা ত্রিভূবন বিধাত্রী ত্রিন্যনা । শ্রাণানহে ওল্লে শবহৃদি নহাকাল সরত্র পুযুক্তা ত্বা ধ্যাসন জননি জড়চেতা অপি কবিঃ ।। ইতি তন্ত্রসারে
কপ্রাখ্যাল্লাত্র ।।

विधान की विधि:। ই कि काँगे पदः
।। कद्रगः। ই कि नागर्थ विधि मदः
गोकायाः ভद्रजः॥ कदिकवनः।
ই कि हादावनी ।।

বিধানক ক্লী ব্যথা। ইতি শব্দ রহাবলী।। বিধানবেভার ত্রি।। বিধানগঃ প্ পণ্ডিত:। ইতি শব্দ রহাবলী।।

বিধাৰক: ত্রি বিধানকর্তা। বিধি-জ্ঞাপক:। বিপূর্ব ধাঞ ধাতো র্ণক পুড্যুয়েন নিয়ম:।।

विधानी वि विधानकर्छा। विश्वक धाम धाराणिन् भुजारयनिम्मनः॥ विधावा को कम्मनः। विश्वं ध् धारा धार्भ्भुजारयन निम्ननः॥

विश्वः भ् वृक्षा॥ ভागाः॥ कमः ॥ विश्वानः। ইত্যমরः॥ कानः। ইতি मिनी॥ विश्वाकाः॥

পুकातः ॥ निर्यागः । ইতি ह्म-**ज्मुः ॥ विकुः । इंडि** इनायूषः ॥ কর্ম। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষ:।। গজা-म॰ । ইতি कोराध्यः ।। विन्रः। ইতি त्राजनिर्यण्डः ॥ यारगानातम्मकगुरुः । ইতি ভরতধ্তকোষ:॥ বৃদ্ধিসূত্র वक्ताउर्गडवक्षाविष्मयः। यथा । স•জ্ঞাচ পরিভাষ। চ বিধি নিঁথম এব চ। অতিদেশো १४४कात्र क यिष्व भ्वनक्षाः ॥ अभाष्ठभाभः কে। বিধি:। স তু দ্বিবিধ:। বর্ণোৎ-**शामनकाशा २ जावका मह। वार्ला** পাদনকপো যথা সহর্ণেঘ ইত্যাদিঃ । অভাবৰূপো দ্বিবিধঃ। নাশো নি-(यथक्रभण्ड। नामविधि यंथा। (ला-পো হস্যো মাডো রিভ্যাদি। নি-(यथविधि यंथा। नाष्ट्रा २३ इंडा-पि । जामान्य भाष्ठम्य विश्ववाद-थात्र । नियमविधिः। यथा। द्राष्टा-বিঃ সুপি ইত্যদি। অন্যধ্যাস্যান্য-ত্রারোপণ নতিদেশবিধিঃ। যথা। इन्निक् इंड्यानि । भूवंन्बङ्कि পদস্য পরন্তেযুপস্থিতি রধিকার-বিধিঃ। স তু ত্রি বিধঃ। সিংহারলো-কিতাখ্যশ্চ মণ্ড্কপ্লুতি রেব চ। গঙ্গাশ্যেত ইতি খ্যাতে৷ অধিকারা স্রবো মতাঃ॥ সি হাবলোকিতো

रथा। वावरगार्फाएउ ईंड)मार पाउ ইতি পদস্য ঋক্যগিত্যন্তেম্পস্থি-তি:। মণ্ড্কপ্লুতি র্যথা। টাভিসঙে ডসীত্যমাৎ অত ইতি পদস্য আ-ক্তিম ভবি ইত্যরোপস্থিতি:। গ क्रार्मारा यथा। लः मि छ जन् ইত্যমাৎ লে ব্লিভি পদস্য ত দ্ধিত পর্যন্তেম্পস্থিতি রিতি। এব था कायी कार्या निमिज्य विजि: পুত্ৰ মুদাছত। কদাচিৎ কাৰ্য্যিক। र्य्यान्याः कृति कार्यः निमिखनः॥ যস্য নিৰ্দ্দিশ্যতে কাৰ্য্য স কাৰ্য্য গ निर्डा वृश्य:। क्रियं **य**बू **उ**८का-र्य) भारतम भुज्रगागमः ॥ यमार পর• পরে যদািন্ ভলিমিত্ত• দ্বিধা-भठः। व्याकाःकायान्त मर्द्याभन्-वृत्तिः भात्र ভारवर् ॥ ইতি । এ १४० विञ्जिक विधिच्यः म्यामस्त्रक वि-वि ईनी। भुज्यानिक कार्याञ्च বহিরস্থ নুদান্ত ।। পুক্তগালীত कार्याः नामिखद्रक् निजि धुवः । भुक्राः भृदं भृदं भागम्खत्र वा ख्या।। नावकानविविच्यः नगावनी नित्रवकाणकः। कन्याविष्ण्यं कार्याः मा **পূথ্যে প**রত তথা।। সম্ভবেদ্বি ব্যে। য্স্য স ভবেৎ সাবকাশক:। व्याप्तो हि दिवस्या युत्रा श्रद्राञा न হি স'ভবে**ং।। স প** গুঠগুলি কক্টো विधि नित्रवकाणकः। उथा मामानु कार्यंत्रें छा विष्णेषकविधि बंगी ॥ वहरवा विषर्या यम्। म मामान्यविध र्छ्दर । बन्नः गुराहियस्या यम् ज विष्णयविधि र्भजः ॥ व्यागमारिष-या र्याष्ट्र वनीयानागरमा विधिः। পুকৃতি পুতায়ঞাপি যোন হন্তি স वागमः ॥ वारमः উপवाजी यः পुक्राः भुग्रमा वा। मकला-ভ্যো विधिच्यः म्याम्ननी ताशिवः वि खया ॥ लाभ महारिणयाञ्च ষরাদেশে। বিধি বঁলী। ইতি মুগ্ধ-वायनप्राकद्रग हीकाया॰ मुर्गामात्रः॥ #।। অথ বিধিভেদা:। তত্ৰ কশ্চিৎ পুধानविधिः। म जू यजः कन (इ जु-ক্রিয়া বোধকঃ। যথা। যঙ্কেত স্বর্গ कान इंड्रामि। कन्डिम्स्विधिः। न जू य उ: कन रहजू कि गाया • कप बिड्याकण्ड्यायाः विश्वायकः। य**था**। इेर्फा यज्जि इंड्रामि ॥ किन्ध भुरवागविधिः। म ज् यावस्य गुक कियाताथकः। यथा। यावनव युक्र॰ যজেত বিলক্ষণ স্বৰ্গকাম ইত্যাদি॥ किम्छिन्छन कलविधिः। म जू जा-काङ्का निवृद्धो अधिक कनाय शुर्छ क्यांनि खनविधिः। यथा । (भारतीः, हिनानः भुवायर भणुकाम इंड्रा ि:। **शु**क्षान विश्विक विविदः। उँ९-পত্তি নিযোগক্ষেতি । তত্তাৎপ-विञ्ज कर्मम्क्रश्रवा**धकः** । यथा-व्याप्याञ्चाकभारता व्यमायाभ्यायाः পৌর্ণমাস্যা ঞ্চাচ্যুতো ভবতি ইত্যা-नि। निर्यागण यर्गकानान्। सिका व्रि (वाश्वक: । यथा। त्रर्गकात्मायक्व**ः** इंड्रानि। शक्वविधिस काल ५ म কর্ত্রাদি বোধকত্যা অনিয়ত এব। भुवानाऋविष्या वित्वयाभाषि भा-প্তিভ্যা॰ তৈবিধ্যণ। তত্ৰ অপুাধি তো দৈবিধ্যণ। তত্ৰাপ্যভ্যন্তাপাণ্ডৌ व्यभूर्वविधिः । भक्कात्वा २ भुगस्त्रो নিযমবিধি:। বিধেয় তৎ পুতিপ क्रायाः शुर्छो भित्रमञ्जाविधिः । অতএবোক্ত•। বিধিরত্যন্ত মপুাণ্ডৌ নিয়ন: পাঞ্চিকে সতি। তত্র চান্যত্র চ প্রাপ্তৌ পরিসম্ভ্রা বিধীয়তে॥ তত্ত্র भुशानम् विधिज्हा यथा। अह-त्रशः मक्ता गुभाभी ७ इंड्रां दि त्रभूर्व विश्वि: । व्यव विश्वयम् मक्राप्तः শাস্ত্রতো রাগতো ন্যায়তো বা ক্বচি-मभार्भाष्टः। उथा याजी ভार्याः-मूलियार इंड्रांकि नियमविधिः । विरक्षमभ जार्यता जिल्लामनभ द्राल-তঃ পাপ্তাবিপি রাগাভাবাৎ পক্ষ-

(डा रिभारिक्षः । उर्था । (भाकिष्ठ॰ মাণসণ ভুঞ্জীত ইত্যাদিঃ পরিস্ফ্রা বিধিঃ। বিবেয়স্য প্রোক্ষিত মাণস-ভক্ষণস্য তৎ পুতিগক্ষস্যাপ্রো-ক্ষিত মাণসভক্ষণস্য চ রাগত: পা-(थः ॥ अङ्गा विश्विष्डामा यथा। भावतीयभूकाया मध्या ग्रुभवत्त्र ইত্যাদি রপ্রবিধিঃ। অত্র বিধেষ-স্যোপবাসস্য এভদন্য শাস্ত্রতো ,রাগতো ন্যাযতো বা ক্বচিদপুর্যে: । তথা শাুদ্ধে ভূঞ্জীত পিত্নেবিক भिजानि नियमविधिः। विषयमा শাুদ্ধশেষ ভোজনস্য রাগত: প্রাপ্তা বলি রাগাভাবাৎ পক্ষতো ২পুা-थि:। जथा। वृद्धिगुाष्क शुाउद्रामः ক্রিভান্ বিপান্ ইত্যাদি: পরিসংখ্ল্যা বিধি:। অত্র বিধেয়স্য প্রাত নিম্ত্র-**गम्र उर्भुडिशक्षम्र भूर्व** दिन मायः নিমস্ত্রণস্য চ পার্রণবন্ধ্যায্তঃ প্রাপ্তে রিতি মৃতে ৰুদাহরণ । ইতি ধর্ম-দীপিকা।।*।। ন্যাযমতে বিধি র্যথা। পুবৃত্তি: কৃতি রেবাত্র সা চেছাতো য়তক্ষ সা। তজ্জ্ঞান বিষয় স্তস্য বিধি স্তজ্জাপকোথ বা ৷৷ বিধিজন্য জ্ঞানাৎ পুবৃত্তি দৃশ্যতে সাইছাতঃ हिकीबांजः हिकीबा ह कृ ि नाष्ठः (वृष्टेमाथनवृद्धाना८ ७ ड्डानम्)

विषयः कार्याद्व इष्टेमाथनद्वक विधि | রিতি পাচীনমত।।। মমত মাহ ভজ্জ্ঞাপকো ২থ বেতি ইপ্টসাধ-নহানুমাপক আপ্তাভিপা্যো বি-वि भुज्रयार्थः। ইতি इतिमानीय बनुमाञ्जनः ॥ 🗱 ॥ जनिह। আশুবৰ সম্বন্ধেন পুত্যযোগস্থা-পিতেষ্টসাধনত্বান্বিত স্বার্থ পর্পদ ষ্টিত বাক্যত্ব• বিধিত্ব• । নীনা•-সকমতে ইষ্ট সাধনত্ব কৃতিসা খ্যত্বঞ্চ পৃথক্ বিধ্যর্থ:। ইতি গদা-ধর ভউাচার্য্যকৃত বিধিম্বরূপ:॥ विविषमी ने भुः अपग्राः। इंड्राइः॥ ेशुः मरमाः। इंडि विशिष्टमकः मद्रज्ञादली ॥

विषिदः वर्ष यथाविष्ठ। विष्ठानुमाद्रिन। यथा। छात्रद्रंद मञ्ज छावर्षाः विविदः भानिनी फिजाः।
इंकि कानिका भुद्रारा १२ व्यक्षायः
। ३ ॥ व्यनिष्ठ। मक्षा मनामा
विषिदः विन्न भवा मूर्भा इर्जरंदः।
इंकि निद्रा वित्रु इकथा।। ११। व्यनाष्ट्रः। भूकरा ज्ञु व्य विष्ठु कर्क वृष्ट्रः
वश्रा वर्षः निवः। वुर्जाभनारेन
विविदः भूष्ट्रया । द्रिनामाराः
इंकि नः माभुद्रारा (यागमाराः
व्याः १२ व्यक्षया । ११। व्यन वर्षः।।
इंकि नः माभुद्रारा (यागमाराः)
व्याः १२ व्यक्षायः।। ११। व्यन वर्षः।

। ইতি नक्षत्र भुक्ष ग्राभाषा वि. श्विट्यगः। गर्जान् कामानवात्याः তি विकृत्मात्क मधीयात्र । ইঙি উত্তিব ৫১ অধ্যাম: ॥

विदः श् ठन्मः॥ विष्यः॥ कश्वः । इंडि सिमिनी ॥ तुक्ता । इंडि भक्त द्वावली ॥ त्राक्षमः। इंडि वियः ॥ वायूषः ॥ वायूः । इंडि न किथगादानामिवृज्धिः ॥ 🛊 ॥ ठम्भा घामभावञ् । उरक्वापि-म गथा। हन्द्रमः बारमगञ्चा छ-বন্তি শৃণু তা অপি। ত্রিষু ত্রিষু চ थाक्षम् अधिनादि वनामाइः॥ भ्वामञ् • भून नंष्ठे• मृ ठावञ् • हाया-वरु । हाम्यावष्ट्र व अवस्र की ডাবস্থ• জ্বস্থিত•।। কম্পাবস্থ• जुङ्गावञ्च । द्वानभावञ्चन । जल्द । পুবাসো হানি মৃত্যুক্ষ যশো হা-সো রতি: সুথ•।। শোকো ভোগো জুর: কম্প: সুস্থাবস্থা ক্রমাৎ কল । জন্ম স্থ: স্কুতে তৃপ্তি দ্বিতীযে নাস্তি নিবৃতিঃ।। তৃতীযে রাজ-স্মান চতুৰ্থে কল্ছ।গন । ধন ধান্যাগন: ষষ্ঠে রক্তি: পুজা চ সপ্ত-भा अञ्चल भागमान्त्रः नवस क्रिममध्ययः । मन्यस्य काम्यान्त्रः ভি পুৰ মেকাদশে সাংগ্ৰাদশেন

শশান্ধেন মৃত্ রেব ন সংশয: । इंडि गाक्ए ५३ व्यव्यायः॥ 🗱॥ **ठन्तुन। क्य** वृद्धि काइन॰ रथा। व्रकावाह । द्राका हानून ही देहव विविधा भूर्निया मञा। मिनीवानी वर् रेक्टर अगावाम्या हिरिष्व जू॥ व्यमा नाग द्राव द्रान्य महन्द्रलाक পুতিষ্ঠিতা। যুখাৎ সোনো বসত্য-স্যা ম্মাবাদী ভভ: ফ্ ভা ।। পুরো-निष्ठ कनाष्ट्रिय (मार्ग गम्या निमा করে। পূর্ণিমানুষতী জ্যোপশ্চা **खिन जाकरत्र ॥ यत्राखा मनू**न-ন্যন্তে দেবতাঃ পিত্তিঃ সহ। ত आरग्नजी नाप भूगिया भूथमा म्-खा ॥ येना हाखिलाङ म्रापु भूर्वहन्तुः স্য চেল্লেঃ যুলপৎসেত্রের রাগ-खरानूनिक भूगिता ।। ब्राकाला मन् মন্যন্তে দেবতাঃ পিত্তিঃ সহ। ब्रक्षनाहित हन्त्रुमा ब्राट्मिक कवत्या १तुतन् ॥ मिनीवानी भुवावस कीव (मर्या निमाकद्रः। अभावामा वि-শ হ্যক পিনীবালী তভঃ ফ্ভা 🛚 জ হেতি কেকিলেনোক্তো য়: কালস্ত সমাপ্যতে। তৎকাল সংজ্ঞা ত্বেয়া रिव अभावामा। अङ्: सृ छ। ।। अनुन-छ्यागवाः कार्या मिनीवान्याः अर्-विना। এ जानाः विद्रवः कावः क्रमाः

ত্রেতি সহু: সৃতা।। কলা: ষোড়শ সোমস্য শুক্লে বর্জ্বতে রবি:। অমৃ-তেनामृज॰ कृष्य भीयाज रेमवरेज: ক্রমাৎ।। পুথমা• পিবতে বহিছ দি **ीया॰ পবন: कला॰। विस्थानवा** छ्-তীযান্ত চতুথী ন্ত পুজাপতি:॥পঞ্চ-মী· বৰুণশ্চাপি ষণ্ঠা· পিবতি বাস· वः। मध्यी म्यर्या पिवता वनरवारश्ची उथा क्षेमी ।। नवभी कृष्मभक्षमऽ शिव**ोन्मुः कवागशि। मण**शो• नक-**७ म्हाशि क्षु। क्षाप्तभी क्वा ।।।** घानभी छ कना॰ विकु र्यनम्भ जरग-म्मी । চতুर्पमी भ्यमुभाउः कना । পিবতি নিত্যশ: ॥ ততঃ পঞ্দশী-ঞৈব পিবন্তি পিতর: কলা । কলা-विनाष्ट्री निम्नीजः अदिष्टेः स्र्ग्रियः ল•।। অমাযা• বিশতে রশ্মৌ অমা-वामी उड: म्डा। भ्वाः इ विभाउ চার্ক নধ্যাহ্রে তু বনস্পতি ॥ অ পরাহে বিশত্যপ্র মধোনি বারি-मञ्जदः । जाभः भूविष्टेः (मामम्) (मयया कनरेयकया।। ज्न छन्म नजा वृक्षामिय्राप्तयाज कापयीः । जन्म-ষ্ধিণ্ডিত গাব শ্চরন্ত্যাপঃ পিব-ন্তি চা। তদক্ষানুগতং গোভাঃ ফী রত্ব নুপগছতি। তৎক্ষীর মমৃত॰ ভূষা মন্ত্ৰভত দিলাত্য: ॥ স্বা- काकात वषठेकारेत क्ंड्रिक्ट एक्ट्रिक ক্রমাথ। ভ্র মান্নির দেবায় পুন: (भामः विवर्षास्य ॥ अवः मःक्रीय-তে সেনে: ফীণ শ্চাপ্যায়তে পুনঃ। एगाए नृर्य: भभाक्षमा क्या वृक्षी বিধে বিভূ: ॥ ইতি দেবীপুরাণে চ-स् क्य वृष्तिः ॥ 🗱 ॥ वुष्कावात्र । यत्यः यत्रद्ध जात्क। वानिश्वज्ञः च-रामरा । उरश् मः श्वामधानि वसु नृरग्राथदा िक ॥ यनि मञ्जूप्यः গুন্ত ভেজোরাশি বিকার: । তৎ कथः (नारद्रष्ट्रन द्राः ए नं खण्मा कुड: ॥ अथका बाह्गाइना नपु-वाजुः भूखिनाजः। छ८ कथः मन्तरेन স্ত ক্রৈঃ শ তথা ন বি থপ্তি হঃ ॥ বিমু-कुण्ड भून पेष्टे खरेथवाथ अन् अनः। न চাল্যতভ্ত তেজা ন স্থানাৰপ-সারি 🤃 ।। যদি বা হোষ নিম্নীতঃ ক-থ দীপুডরো ২ ভবং। তথার তে-कना॰ बाभी ब्राव्हा र्वकु॰ गनियाठि ॥ ७ क्रार्थः नवस्त्वानाः सानः मृ **छै: स**यग्रुदा । **उ**ब्छ मग् उक्शिल म-खु ७॰ गूर्ग (७ जमा ।) भिवस्तुत्रुपर • দেবা: পিভরম্চ ম্বানৃত । অবঞ্ **बिमाउरे**क्षद बदिख्न म छरेशद हा। ब যশ্চ ত্রিবহুসুশ্চ দেবা: সোন পি-বন্ধি বে। রাহে। রপ্যনৃত ভাগ্য

পুরা মৃষ্ট ৰ হয়। ॥ তথাত্ত্রাভ রাগত্য পাতৃ নিহতি পর্যু। উদ্বৃত্য भार्धिवी हाया गमुकादा उपान: য:। পাত্নিছন্ তত শ্চেল্ নাছা-मयिक ছायगा। भुद्धि ह हन्त् वर छु-তি কৃ:ফ পর্বণি ভাকর•॥ সূর্য্যনওস मः इन्छ हन्पूर्यंत्र जिद्याः मृ ि । छः चार भिव्छि छ ब्राह छन् मन्। विनाणयन्।। ञविहि॰मन् यथा शहा॰ शिवि ड जुमाता भव्। हनत् इ नम् उ॰ जबर जगानु। इ ब्रन्त र ज । हस्त्र की-ए मिन र्गन करिन कात्र का कारा ए। क्षत्रति न शियक (क्रिमा निर मुन्रात्त ।। यथा मूरेर्ग्राणीः मृर्ग्राष्ट्र-পাট্য পাবক শুভা। ন ভ্ৰত্যস্থ ही (नानि (ङ्बामा रेन्य मृह्राङ !! **७व॰ हन्तु॰** भूर्तंऽण्ड छा दिखाविश রাহণা। শতেজনা ন মুচে তে নার্ होलो वज्यज्ञः॥ शब्यश ह हलाना मानिका कवानाक्जिः। स्माला पिः বত সংযোগাৎ ছাশা যোগাছ পা-थिवार ॥ जारहान्छ वत वासरिष पु क्रावरम्ड॰ मणी। यासार कार्य अंधुराख रूटमं मृह्या ह लो र्या ॥ सामातिक कत्तर कीतः उर्धनतः ফরতে ২মৃ ১ । লিতেব সূর্য্যে দে-वाना॰ (बारमा नार्डव वक्षार्ड॥

विधुन

रथा माज्ः छन भीवा जीवत्य नर्व | जन्दा: शीदामृजः ज्या तामार **ज्नाः गर्वः वजाः ॥ म**स्जः नर्व याशियु ज्यामः क्वरं मनी।। उ ক্ষরন্ত যথাভাগ নুগজীবভি দেন-**তাঃ॥ ভিনান্কালে স**মভ্যেতি রাহ্ त्रभावकर्या मर्व ग्रेंडी जागक शादिः शादार्वात्वा वा वा वा वा वा थिं वी ছावा यावजी इनम् मध्या । শৃ হ: স ভাগে: রাহে: স্ত দেব ভাগা-स्र (भव माः।। कृष्ठः विवाय (हवानाः 🕴 द्याः श्वारंग प्राप्त । हत्नुः न क्न-य मापाञ्च (जनमा रेमव मूह्य छ।। जिथि जानाक गावलः भूनला दर्कः পুষাণতঃ । सर्वज्ञायाध्जः कान স্তানাৰেৰ পুন্ধীৰ্ত্তি হয়। স্বভো ব্লাহ্ন-ভ कः स्मायः स्मायापृष्तिः दिवाकतः । পর্বকালে স্থিতি ন্ত্রেণ বিপরীতাঃ श्रनः श्रनः॥ य ज म्हारय (जवान तजु-বছশি ভাষয়ৌ রাহুরভুক্ত সংস্থা-ন: সোন নাছান্য ভিপ্ততি॥ উদ্ধৃত্য भाषिवी • ছाया • धूमरीघ इ:वा-**थिउ:। हन्तुम**) यहवस्रक्षः ज्ञाङ्ग ভाষরস্য ह।। नामावथ (७५) उम्र रिक्वनारः वागनीक् इः। कन्नत्मन यः থা বস্ত্র-শন্ত্রপূপ্রন্যতে॥ একো-फिल्मथ मर्बर्गा द्वारंग हन्मुना खथा

1 शुक्रानिकः उत्तर्यस् शुनः मुक् छत्रः खत्यः ॥ त्राच्गुकः खत्यख्यः विर्णाः हसुम्छनः । त्राच्गु क् निश्वा विश्वा च्वा शुन त्राश्वाः भगिष कः । जाः म शृत्य मृत्यः ॥ म्यापा छव गृज्य ॥ च्युता छः म्यापा छव गृज्य ॥ च्युता छः म्यापाः ॥ इच्छात्मः त्रिक्षेत्रातः शृह्य विष्णः ॥ क्ष्या । विद्या त्रिव-शिकारम्बाद्यक् कानिकाभूत्रात्यरुवः । ख्राव्या पृथ्विषः ॥

বিধুত: ত্রি ভ্যক্ত:। ইত্যের:॥ কলিগ এক ॥

বিগুভিঃ জী কম্পন । বিপূর্ব ধু ধাতোঃ তি পুত্যযেন নিয়ন্তা।। বিধ্নন লী কম্পন । ইতি জটা-ধরঃ!!

विवुखरः श्रु बाहः। इंडानगः॥ विवुश्यावः श्रु थहः। इंडिणयः गाना॥

विष्णिया जी हन्तुशती। यथा। नाकायरात्रा विष्णुगा। १ क काः याज्ञः॥

| विदुवः ही भुविष्त्रयः। २ छ। महः।।

रेत्कलाः। ইতি ত্রিका গুশেষः॥
विश्वतः ত্রি বিকলः। ইতি নেদিনী॥
विश्वतः ত্রী বসালা। ইতি নেদিনী
বিশ্বনং ত্রী কম্পনং। ইভানরং॥
বিশ্বতং ত্রি কম্পিতং॥ তাজেং।
ইতি হেনচন্দুঃ॥
বিশ্বিতঃ স্ত্রী কম্পনং। বিপর্ব প্র

विश् िः खी कम्मनः। विभू व ध् शाः जि भू छ। यन निम्न । ॥ विश् ननः क्षी कम्मनः। छ ८ भर्य। यः । विश् दनः २। ই छ। नदः॥ विश् दनः ०। ই जि मद्म द्वा ।। विश् निज्ञः जि कम्मि छः। विभू वं काष्ट्र य (छ। छ भू छ। यन निम्न । विश् कः क्षी विष्मारमः शृ छः। यथा। श्रावक्ष। विम् व । वा ध्रुका छ छः गाहिना। উ हस्र वा ना। উ जि: छ मृ छ।

विरस्तः वि विश्वा जः भकाः। वाकाः

इ:। उ था ग्राः। विनयगाः । विव्या ग्राः । विव्या ग्राः । विव्या ग्राः । विश्व जा ग्राः । विश्व जा व्या। वा ग्राः । विश्व जा ज्ञाः ज्ञाः विरस्त ग्राः । विश्व ज्ञाः ज्ञाः विरस्त ग्राः । विश्व ज्ञाः ज्ञाः विरस्त ग्राः । व्या ज्ञाः व्याः । व्याः । व्याः व्याः व्याः व्याः व्याः व्याः । व्याः व्याः । व्याः । व्याः व्याः । व्याः ।

विधृत्रत्वर्यः ॥ ইত্যাङ्गिक जब्दुः ॥

उत्र कर्मन उत्रक्षित दिन्त शिन्त कर्मन कि विद्या कर्मन कि विनः कर्मा विकादार ज्यानिक विद्यान कि विद्यानिक विद्यानिक

বিষেয়ত। স্ত্রী বিষেয়ত্বং। বিবিজন্য বোধবিষয়ত্বং। যথা। যথা বুক্সবং থাদিয় পাপস্য নিষিক্ষত্তযোপয়ুক্ ক বাক্ষণাদি জ্ঞানে দৈগুণ্যুক্তথা গঙ্গাস্থানাদিয়ু পুণ্যুস্য বিধ্যোতা-বছেদক গঙ্গাদি জ্ঞানে দৈগুণ্যুং। ইতি পুায়শ্চিত্তভত্ত্বং।।

বিধ্ব'স: পু॰ বিনাশ:। যথা। ছ॰ রিতে রোগো হনুভাপ: শস্যান র্ন ভিভিশ্চ বিধ্ব'স:। কপিলে শী-সুগসত্ব শ্লেছপুণসো ২থ দুর্ভিক্ষ'॥ ইতি ভিথ্যাদিতত্ত্বণ।।

विनकः वि भूगकः॥ कृषः॥ निक्षिकः। इंकि मिनी ॥
विनका जी गक्षमाका॥ निष्टेकाष्ट्रमः। इंकि मिनी ॥
विनकाम्नः भूः व्यक्षाः। इंकि हिन्महन्द्रः॥ गक्षकः॥

বিনদঃ পূ॰ বিন্যাকবৃক্ষঃ। ছাতি-যান্ ইতি খ্যাতঃ। ইতি শব-চন্দ্রকা॥ বিন্যুক জী তগরপ্য় । ইতি । রাজনির্ঘণ্টঃ।।

विनय॰ बि विनक् ॥ किश्वः ॥ नि-ভূত: ॥ विक्रिष्ठिन्द्रियः । ইত্যজय-भाषः ॥

বিনয়: পুণ শিক্ষা ॥ পুণতি: 1 इंडि (मिरिनी।। 🗱 ।। व्यथ दिनय পুস শা। বৃদ্ধা ফ নিত্য সেবেত विशान् (वहविषः मृहीन्। (उच्छा হি শিক্ষেৎ বিনয়[•] বিনীভাত্ম। ছি নিত্যশ: ।। সমগুা[,] বশগা[়] व्यग्राट्यशिवीवाज मः नयः । यः श्रवा श्रविनयाऋहै। ब्राज्ञानः म পরিছদা: ॥ वनञ्चा रेक्टव द्राज्या নি বিনযাৎ পুভিপেদিরে । ইভি भए मा भुवारा २५२ व्यवशायः ॥ 🕏 ॥ म्खः। यथा। यखः। পূর্বনাক্ষার্যে-দ্মস্ত নিয়ত সগ্ৰহ স দোষভাক্। পদ্যাম: সোপ্যসৎকারী পূর্বে তু विनरमा छकः॥ इंडि नात्रम्यहनः। **७**९ भूबी(भक्ष्या भव्रम्याश्वक वा-কপাক্ষ্যোৎপাদকস্যাপি म् विशायकः। यूगम् मः भुवर्खः न अधिक म्खाञांव मारु मञ्च । পাক্ষ্যে সাহসে চৈব যগপৎ সং-পুৰত্তযোঃ। বিশেষ শেচন লভ্যেত विनयः म्याद् नव खलाः॥ विनया

দণ্ড:। ইতি ব্যবহারতন্ত্ব ।। বিনয্পাহী ^ন ত্রি বচনেস্থিত:। ইত্য-মর:॥

विनयसः जि वाकाकात्री। उटः भर्यप्रायः। वित्थयः २ वामुदः ७ वहत्वस्ति सः ८ वन्ताः ६ भूरायः ५। देख रहमहन्तुः॥

विनया खी वाष्ट्रानकः । इंडि (मिनित्री।।

বিনশন॰ ল্লী সককেত্রণ। তচ হস্তি-নায়। উত্তরপশ্চিমে বর্ত্তত। ইতি ত্রিকাওশেষঃ॥ বিনাশশ্চ॥

विनक्षः जि नामाम्यः। धुःमविणिष्ठेः।
यथा। णिथी विनक्षः भुक्रमा न नष्ठः
। इंजि विष्मयगुर्गाछ होकायाः
मथुत्रानाथः ॥ পতিতঃ । यथा
नात्रमः। विनक्षे वाभुमत्राम भिः
छ्युर्भत्रज्ल्याः। विनक्षे भिः
। ইতি দাবভাগः॥

বিনন্তি: ত্রী বিনাশ:। ইতি বিপূর্ব নশ ধাতো ভাবে ক্রি পুত্রান্দ নিয়্নয়া। ইতি সিদ্ধান্তকৌনুদী॥ বিনস: ত্রি গতনাসিক:। তথ-পর্য্যায়:। বিগ্র: ২ বিখ্য: ৩ বিনা-সক:৪। ইতি জটাখ্র:॥

বিনা ব্য বজ্জন । তৎ পর্য্যায়: ।
পৃথক্ ২ সাম্বরেণ ৩ প্রতে ৪ হিক্ক্

৫ নানা ৬। ইত্যমর: ॥ বিনাক্ত• ত্রি ড্যক্ত• । ইতি ত্রি-কাওশেষ: ॥

বুজ:।। গনেশ:। বিনাযক: इंडामद्रः ॥ गरुउः ॥ विषः ॥ खकः 1 इंडि (मितनी।।#।। विनायकगला यथा। गास्ट्राया विकारिकव हो বিজেয়ে বিনাষকৌ। ইতি বহিং श्रुवाल गण्डम नामाथ्यायः॥ 🕸॥ विनाग मागाए शिख येथा। शुकाः পাল উনাত। কথা গণপতে র্জন্ম মৃত্রিকৃষ্ণ সভ্য। এতথ্যে সাল-য় ছিল্ল ধৃতি ষ্ট ব্যবস্থিত।। মহাতপ: উবাচ। পূর্ব দেবগণাঃ ञः ई अवगण्ड उर्लादनाः। कार्या-রন্তে যথা প্রাপ্তাঃ নিদ্ধি তেচন সংশयः ॥ नवार्गाविष्ट्रयु यथा সিধ্যন্তে বিমুক্ত ক্রিয়া:। অসং-कातिषु मर्खिषु उद्यस्य मिन्यु उः॥ **ভতো** দেবা: স[্]পতর শিচন্ত্রামা-मु (ब्राजमा। यमः कार्य) य विद्यार्थ সর্ব এবাভ্যমন্ত্র এত তেখা• তদা মত্ৰণ সৰকাণ ত্ৰিদিবৌ ক্যাণ । বভুব বৃদ্ধির্গননে কৃদুণ পুতি নছা। मरा ॥ (३ उब क्यू माग प्र) कि **लाम विलाग एकः। 35ू. मनिनयः** गर्ख भूगिशा उ भूद्रः नद्रः ॥ एवाः

উচু:। দেব দেব মহাদেব শূল-शारा जिल्लाहन। विद्यार्थ भविभिन ष्ट्रानाः উৎপाদयिजु गर्हाम ॥ वतः मुक्त खना (मरिव र्डवः श्रवभया मुना । উमाः निजीक्यामाम हक्ष्यानिः মিষেণ হ।। দেবানা॰ সমিধৌ তস্য পশ্যতো মা॰ নহাত্মন:। চিম্বাভূ ष्ट्राम् मूर्जिल्डा मृ**ण्डा** कन एः তুনা।। পৃথিব্যা বিদ্যুতে মূর্ভি রপা। নূৰ্ত্তিভথৈৰ চ।তেজসঃশ্বসনস্যাপি মৃত্তি রেযা তুদ্শ্যতে॥ আকাশস্য কথ নেতি নত্ত্বা দেখে। জহাস চ। জ্ঞানশক্তি: পরান্ দৃষ্টা যদৃষ্ট• ব্যো-রি শান্ত্রনা। যদ্যোক্ত বুক্ষণা পূর্ব শ-র্রারন্ত শরীরিণা। যচাপি হসিতা टिन (नर्यन श्रद्धमिशन) ॥ এउ८ কার্য্য চতুদ্দেণ পৃথিন্যাদি চতুর্র্নপ। ग्र्डिंगानि एउडी रुगठः भद्रान-हिनः ॥ श्रुमीखात्म्या सङ्गिधः ष নারে। ভাস্যন্দিশ । পর্মে⁸ छीन युक्तः माकाकमु हैवानबः॥ উৎপন্ন নাতো দেবানা যোষিতঃ मःशुरमाह्यम्। कान्त्रा भीत्रा उषा मूर्छा कालगह महाजावान्॥ उन्ह्थ्री পর্ম কপি জ্নার্স্য ন্থাতান: I উনানিনিব নেজাভ্যা• ভমগশ্যত ভাষিণী ॥ ত॰ দৃষ্ট্ৰা স্বপিতো দেব ভীবুকোপ সমন্বিতঃ। মত্বা সমার ৰূপস্ত শোভন· মোহন· দৃশা· ॥ ততঃ শশাপ ত দেবো গণেশ পর-(मचदः। समात गजवकु युः भूषयः क्रेत्र ख्या ॥ ভবিষ্যতি ভ্या मर्रेन ৰুপবীতগতি পূৰ্বে ।। এব শশাপ শরীর মুখাণ ডতো দেবো ক্বালি **७:**॥ यथा यथारमो ज भदीद्र मान्। ধুনোতি দেব দ্রি শিখাস্ত্র পাণি:৷ তথা তথা চাফ্ ক্হাটকাম জল কিতৌ **गःन्रशञः** खथात्मु ॥ विनाधका तः क्यूथा गजाम्या खनान नीनाञ्जन निकाणाः। উত্তर् करि विविधाञ्ज হন্তা ন্ততন্ত্ৰ দেবা মনসাঙ্গলেন।। किरमञ्जल्जा क्यं कान्नी (श्रक: कात्राज्यभुकिमः मरह। कार्याः मू রাণা কৃত মেত্রদিষ্ট ভবেত্তথৈত পরিত হত তথে !! দিবৌ ক্সা চি-खगडा॰ जथा ज् विनायरिकः स्त्रा ऋ ভিতা বভুৰ। চত্ত্ৰ পশাপুতিনো বিনান মাক্ছা খে বাক্য নিদ ভগা-**म ॥ धन**ाञ्च (मदा मद्रनायका बि-লোচনেনাদ্ত কপিণা চ।। অনুগ্ হীতা: পরনেখরেণ সুরদ্বিষাণ বিষ ক্তা নভৌচ। ইত্যেব মূজ্য পুপি তানহ স্তানুবাচদেব জ্রিশিথা ত্রপা

ণিণা য স্তে বিভো বক্তু সমৃদ্ভব: পুভূ विनागका नाम वमञ्जित्म २मृगाः । ভবন্তৃথাস্যাত্মবরেণ চামরে জুয়া চ-তুইস্ত শরীরচারী।। আফাশ নেত-ঘহুৰা ব্যবস্থিত ত্ব্যা চৈকো বদতা• তে পুষাতা:। পুতু ভবন্বপুতিনা-ख्रभागिन। इसान् हि हारिख सूदद्रा॰ मह দেহি॥ ইত্যেব নুক্ত্বাধিগতে পিতা-মছে ত্রিলোচন শ্চাত্মভব জগাদ। বিনাযকো বিশ্বকরো গজাস্যো গণে-मनामा जु जवमा भूषः ॥ এতে চ नर्सि वृभगास ভৃত্যा विनायकाः क्त्र-मृणः পुष्ठाः। উह्य नानानि विवृ**ष** (रशः कार्यायु निष्धः भुजिभाषय-ন্তঃ ॥ ভবাংশ্চ বেদেষু তথা মথেষু कार्याषु हात्मायु सहानु जादार। यः গ্ৰেষ্ প্জা॰ লভতেন্যথা চ বিনাশ-रियात्राथ कार्या मिष्ति। ইত্যেत गु-ক্তো পরনেখরেণ সুরৈ: সন্ কাঞ্চন षस्य भरेष्टः ॥ करेण खपा नाविः বিক্ত গাতো রবাজ রাজেন্দু বিনায-কানা• দৃষ্ট্বাভিষিচ্যমান•ভুদেবা **ত•** णगनायकः ॥ छु<u>ड</u>ेत्: जुय**ाः गर्दा वि**-শূলাজ্ঞস্য সমিধৌ।। #।। (দবা উচু: 1 নম তে গজনজায় নমতে গণনায়ক। বিনায়ক নম তেন্তু নম তে চণ্ডবিক-म।। नम। १ छ । उ विश्व वर्ष नम । उ

मर्भागयन । नम एउ कपूरक्लाच शु-जब कठेत्राणिक। मर्वरहर नमस्ताता-मविष् क्रक गर्रमा॥ এव खंड खना **দেবৈ র্মহাত্রা গণনাযক:। অভি**-ষিক্ত ন্ত ক্দেণ সোমস্যাপত্যতা গভঃ ৷৷ এভচ্চতর্য্যা৽ সম্পন্ন• গণা-ধ্যক্ষস্য পার্থিব। যত স্ততোয় গছ-**છી હિથીના• બ**রમાહિથિ:॥ এङ স্যাণ্য স্তিলান্ ভক্ত্যা ভুক্তা গণ-পতি নৃপ। আরাধ্যতি তদ্যাশ তুষ্যতে নাত্ৰ সংশয়: ॥ যদৈত্ত भटेट खाब श**म्** उट मृत्याख्या 1 जम्र विद्या न काराउ न भाभः मई था नृश ॥ इंड्रानि वाद्वारक विनाय हार्षि नीमाध्यायः ॥ 🗱 । दिना-यकमा नानाश्वकत्त्राजः यथा । 🗐-विकुक्वाठ। गानम भिकर इक (इ. त्रयः विश्वनायकः। वास्यामत्रः मूर्भकर्गः गत्रदकुः छश्गुद्धः ॥ नानाष्ट्रहार्थः भू भग भग गर्छ। इद्रिश्य । एउ।-ত্রাণা সারভূতঞ্চ সর্বিমুহ্রণ भद्रः ॥ ज्वानार्थवाहत्का गण्ड १७६ নির্বাণবাচক:। তথোরীশ পর वुक्त गतमः भूगमामारः। १। এक **भदः** शुदानार्थः मञ्च वनदाहकः। वनः भ्रवानः गर्वयारहकमञ्च नमा-गःइः॥ २॥ शीनार्थदाहत्का (रुफ

त्रयः शालनवाहकः । शतिशालकः उ॰ मीनाना॰ (एवस् भूगमाम्।इ॰।। 🗢 ॥ विभि खिवाहरका विष्ट्रा नायक: খণ্ডনার্থক:। বিপৎখণ্ডনকারন্ত ন: नानि विद्यनायक ॥ ८॥ विकृति छन् क देनदरिका र्यमा लाखानतः भूता। शिका मरेखम्म विविधि वर्तम् लाया-मत्रक उ ।। ए।। मूर्लाकात्री ह उ कर्गा विद्ववाद्वनकाद्वरने। मम्मनः मानकाली ह मूर्नकर् ननामाइ।॥ ७॥ विक्नुनाम भुझक वज् क्रिन्नि **४ ७ १ । ७ ५ (जन्मु ४ कु युक्क । १ ५ ४ कु** । नमामार्शः ॥ १॥ ७२मार्गु ह हाः তো १य साविक्छि। इत्रग्रह । वत्त ख्हागुक (पव अर्दः पवागुश्किछ। ॥ ৮॥ এउद्यानाष्ट्रकः पूर्ण नामार्थ निःयु उ॰ भद्र॰। भू धन्। भन्। (दर्प ह **उहा (काभ॰ वृथा अक्।। এउमामार्ड-**क (छात्र नामार्थ म गूउ मूड। ত্রিসন্ধ্য যঃ পঠেনিত্য স সূথী ন ব্বতো জধী।। ততো বিহা: পলাবস্তে বৈনভেষা অথোর গাঃ। গণেশ্বর পু-नारम्ब नहाड्यानी खरवष्ट्रतः॥ श्र আধী লভতে পুত্ৰ ভাৰ্য্যাথী বি-भूवाः खियः। महाङ्यः कवीन्तुः বিদ্যাবা • চ ভবেজ ব ।। ইতি বুশ-रिदर्स्ड गनमजिथाए ८८ व्यथायः॥

🗱 ॥ जामा कवष्टः यथा। नात्र र डेवाष । ज॰मात (स्राहनमहामह कवहमह भू-द्याभिजः। अधि मृनसम् वृष्ट् जी (मर्दा ल्यान्तः स्वः॥ ध्यार्थ काम मा क्षिय विनियागः भुकीर्खिष्ठः। मर्ख-ষাং কবচানাঞ্সারভ্ত নিদং মুনে ।! ওঁগোঁ গৈঁ আঁ গ'নশায স্বাহা মে পাতু মন্তর । দ্বাত্রি শদক্ষরে। ম ভো ললাট মে সদাবতু ॥ ওঁ হুঁ। ল্লী শ্রী গাঁমতি চ সতত পাত্লো চন ৷ তারকা পাত্র বিয়েশ: সত **ড॰** ধরণী জলে ॥ ওঁ হ্রাঁ জী দি তি সভত পাত নাসিকা। ওঁগৌ গ' সূপকিণাৰ স্বাহা পাত্বর মম ॥ দম্ভা শচ তালুকা জিল্লা পাতু নে (बाएभाक्त्रः। ७ छी। लाखा रहा (य-**তि सा**हा गथः जरावज् ॥ ७ मा गः পজাননাথেতি স্বাহ। ক্তন্ধ সদাবতু ॥ শ্ৰী• ক্লী• স্ত্ৰী মিতি কঙ্কাল• পাত্ वकः इनक ग॰। भारते भारते गरा भाजु महीकः विष्न नेष्नकृ ॥ भूषात्राः वासामत्रः भावू व्यापायाः विश्वनायकः। मिक्काल भाजू विश्व श्वा तेन्थ्रं अाञ्च भकाननः ॥ शिक्त्म পার্ব তীপুণ্রো বাষব্যা• শঙ্করাতাজঃ । ক্ণস্যাংশ শ্চোররে তু পরিপূর্ণ **७४मा ह ॥ विभाना (मक्रहण्ड**

হেরম্ব: পাতু চোদ্ধৃ ত:। গণাধিপো २१/४: পाতु मर्वभूकाम्ह मर्वछ:॥ স্বপ্নে জাগরণে চৈব পাতু নে যোগি-নাণ গুৰু:। ইতি তে কথিত বংশ मर्बमस्योच विगुष्ट् ॥ मः मात्र साः হন নাম কবচ পরমান্ডত। খ্রী कृष्मन भूता एखः (गालाक त्रामन-ও:ল।। বৃন্দাবনে বিনীভায নহু• **रिनकद्राञ्चछ । मरा एउए ज्**डाक यरेया करेया न मामार्गि ॥ भद्र॰ दद्र॰ नद्देश्काः नद्दं मःक्षि ठात्राः। एक गञ्जाहा विषिवंद कवंठ भारत्यञ्ज यः ॥ क्छे वा मिक्रैंग वास्त्रे मानि विकृ र्न मः मयः। अध्यतिष महमानि রাজস্য শতানি চ ॥ গুছেন্দু কবচ-ন্যাস্য কলা নাইন্তি ষোডশী । ইদ কবচ মজ্ঞাত্বা যো ভক্তেছক্ষরা-ত্মজ ।। শতলক্ষ পুজপ্তোপি ন মন্তঃ मिश्विमायकः। ইতি मुक्करिवदर्खं गन-পতিখণ্ডে গণেশকব্দ নাম ১৩ অ-थ्रायः ॥ 🛊 ॥ व्यथ् विनायक भास्रिः । যা জ্ঞবল্পঃ উবাচ। বিনায়কোপস্-ষ্টদ্য লক্ষণানি নিবোধত। স্বংপুৰ-গাছতে ২ভার্য্, জল, মুণ্ডা, ম-শৃ 🔊 ।। বিমনা বিফলারম্ভ: স সী-म्डानिस्डिडः। द्राजा द्राजाः व्या ब्री ह भिंडिः मूलक धर्विभी ।। नालु-

यार अभवष्ठमा न्लांकि विधि भू र्च ः । भोदमर्भ कातुः भाकः **नाट्मा**द्विचम् । मास्ये परिषद् गरेज विजिल्लाभित्रभस्था। जन्नाभागी ल विदेश परिवास विकास माजार ॥ गृष्टि भ॰ ८४। सः गर्नाम ७गृत् हाञ्ज् निक्लिया या व्याक्तारा योग के जुड़ि: कवरिम दूरिनाट ॥ छा ब्रानुष्ट्रं ब्राज आधार स्ट्रागनः । ख्या। **मर्**षुक्षः म उदातः प्रविज्ञिः পারণ কৃত্য। ভেন দ্বা মতি বিধান নি পাৰ্যান্ত পুনস্থ তে। ভগত ব**্** क्ल ताडा उनः नैर्द्रा दृह्स्यि । **७**ग शिन्तुम्ह वात्म्ह स्तर न्युरंतः ननुः। यद्ध काय मुन्ती छागाः भी मा पर मूर्वि । यमा के कर्ता রল্লে, রাপ স্তৎমুদ্র ভে দদা , মাত দ্য भार्षभ•रेजमः भूताः । उत्तरमा ज् ॥ कुल्यान्यनि ज्लान् सन्धन श्रीतः পৃহাত ॥ বিভেদ্ম সংনিত শৈচর ख्या भाषकोत्रहेत**। स**णाणा इ। द्वभादा (१७७) । उ राह्। नगर्न िङः ॥ मन्। उद्याप मूर्ल स्माः बार्चार्क गर्भा। वृष्टाकृष्टाः छ उ আংশ্চ প্রধান নের চা। 📲রং 🖟 िवः मुनिक्षि ग्रावः दिविदानाः। श्चिक भूबिल भूषा जेपरे बं 🧐 📗

काः भुष्या पवि भाषम् भवक ७५ लिक्षे जातिकः। এভান ग्रहानुना-ख्डा लूजे कृदा खडः भिन्नः॥ य-विका मृग स्टिश्ह पर्माः यी क्वां अ जिल्हा स्व नम्रहान्ह भूष्यास'ङ दउ है।। कृष्ठ च छुपानः हिन भार्थस-দৰিকা॰ স**াঁ। । বাপ॰** দেহি যগো-पिर् चन उग्रेडिटिस् स्मा भुधान्ति हि । सा । नद्राधाः ण तिहित्स । दुः १००० राजानगर भागवाद्य मुद्ध । द्वायराज्य भी यह कृषः सद्धाः पीतानाम भूवः दुष्ट তথা ৷ শ্ৰেল সৰ্যা কৃষণ বিদ্যায় ार्ग की **बल्ह रहता ॥ ३७ मा**राउ ्रे व्यक्तारः । इत्या प्रथ भागरा सञ्चाः। वद्भाष्ठ व वां**णवतः** वीकः পণপতে জিলা পদান্তকো গৰার। । सहस्य असम्बन्धिः । या व श्रुवन्ध्यतः हल्बाक्बनः । अ। यर महाभवनाक्ष्यः। निवस्ता ६, भन जिन्दा ज्विद्वाषानिशुव्या व्याद ८ छडा राजभारिक भागहार यह रहा उत् ए॰ अरु ॥ के जू। मर्वजन वा शब राम द्वाराम हेम्बरा मञ्जाविन्न जायर त्वामः पाताम्या मनुतीविष्टः॥ च् रीज्याक। मृज्यि मा मामी विर्दे गाउर क्षीयमाधियः। स्थि शकातः।

भाष्मः वकात्रः।।क्या वना वतारः। नः " वज्ञ नय बीभ मात्र किक्य मानुस्ती । उद्दीि (क्षेठ शर्य) उ॰ ध्यानाक्छ সেবিভ॰ ॥ মৃন্দার পারিআতাদি বলুক্ক অভালন। উভ্তত রহুহা-याञ्जित्रकृष्ठ ज्वन । छेराजिः **नक्ष्त्रमुं छ। मूं छा**ित सिंग्ड्य स **७मा मस्या भा**दिकान नवः हम्या बादार। या कु जि: (म विक य उ हा न भार भी विदर्धन्।। उन्नावश्रायशान भीटि इंडिंड मान्क्यान । दरे **মেণান্ত ব্রিমেণজ্• নহাগণপতি•** याबद्धाः १७, पुन्न विन्तृष्ट् नक्ष हाप जिल्ला बमाया शिक्षे जिल्ला भवप्यत्राता चाक्ष्या नडाञ । वी आश्व भना थन खिमिधनुष्ठकानः द्रशास्त्राद्रशाद्रशास्त्र वृद्धिवानगञ्ज दगनान् रिंख इंएड॰ अवस्था गख भागि भवादान भूदनायन नानसान **া দ্বিকে**মান্ কণ্ডালা ভাগে ৰাল্ডাড गुरु मुर्द्धः ॥ वद्यापद्वापिकारः खुरकु विकित्स का । तम् देश, जेल र्ज नार्क कर विद्या साम हा बुबदीत्याचः स्तरभाग स्वयः । भना लड्डा १० ५ प्रतिकाल १३३ । ष्यित्रांच त्रत्त्रांभवः देशः वन सामाना ज कर । १८८ वृति वर्ष

প্রেভো মজোয় দানশাক্র: ॥ धमा शानः। मङ्गाभीयः सम्भयः गुथ हन्तु हुङ विस्तव र खिः वीरेय র্ধবত মরবিন্দ্রান্তশো রত্ননাত্র-। তা-মহানা: সমসিতকচে ভদ্জালন্ধি-भाग (भंबा) (यानी विभिक्ष दन्न॰ इङ্गोवि॰ ভঙানি। অস্য পুরক্তর-गः वाक्षणशास्त्र। महाख्यः। मिक एख॰ निष्ठ॰ शिख॰ रम्भवान्य टेप्ट्य॰। एवलना मह्नाथा। अस्ताना स्थान पाना इक्षा। ध्या धतनः। इति हिंड मिन् ७ खली नामाछूमी शक्त स्टिक्ष्यस्यस्य स्वस सिंहे प्रामु त्याम्यमान्याविः ष्टाता अन्यनः म्याद्याः जना রক্ত[•] ত্তি ৃথা ফালনি মঙ্ভ• জো-वाखिलादः दिन्।। यभा नुसम्ह-अपः धान्य रङ्भः। काः। यथ (एऽप बदा। न ए छे हात याना गकातः भविषाः भूष्यापि गयाच कपुः सः ज्या निवस्ता **भवगर**का विस्तृत्वन वान विश्विद्धिका रामाविद्धाना-**धारः** एत्यप्रसम् ती बेका ॥ कञ्चली-दार मह्ना १ एवं मं प्रम्या पाउ धानः। मृक्ता कादम भीव सन्त्य-गृत छोटेन दिलबा देश मानोरेन। र्विवार्यः मियतः (एत्य गर्वेतु-

ভ । দৃপ্ত দান মভী ভি মোদক র मान् देखः नित्राकाञ्चि हाः सालाः মুদ্ধর মন্ত্রশণ ত্রিশিথক দোর্ভি र्प्यान छोता। यगा भुत्र हत्र १ ত্রিলক্ষ স'খ্যক্রপঃ॥ #॥ নত্র।-खतः। गः किन् भूजारनाय इ । তথাচ निवस्त्र। সম্বর্ত্তকো নেত্র-गुडः পार्षा वङ्गामत छिडः। शुनारनाय क्चायः यवीकारगा र-भाक्षतः॥ जमा वागः। भाभाक्षुः भी कन्नजा॰ विषाग॰ मध्य समू ণ্ডাহিত বীলপ্র: ॥ রক্ত জ্রিনেত্র खक्तनमु भोनि कात्राङ्काला **र** त्राः वक्षक्राः ॥ 🗱 !। व्यथ रुद्धि-मागराण गजः। পঞ্চান্তকো ধ্রা न'एए। विन्तु ज्विड मखकः। এका-ক্ষরে৷ মহামন্ত: সর্কান্ ফরপু-मः॥ थ्रान्छ। इतिना छ॰ ठठ्वा छ॰ राबिनुवमनः विच् । भाषास्त्रण थवः (नवः स्मानकः मञ्जास **ह**ी। অস্য পুরক্রণ চতুর্ক্রপ: 1 ইতি ভজ্র সার:॥

विनायिका खी गङ्डभङ्गी **इंडि** णद्माना॥

निनाक्श खी जिल्लिका। इंडि इ.जिन्धिंगे: ॥ विनामः भु विनष्ठः। ७८ भर्यायः
। ध्वन्नं । २ । इ छ प्रतः ।। इ छ है ७
। यथा। এषा घात्र छ भा मक्यात्माक
इ के कि विल्ला। इ छ ज्ञिजान
व उ ।। इ कु फि छ उ उ र विनाम्म
व ई छ जि ज्ञिषत्र सानी।।
विनामकः जि विनामक छा। वि
भू ते क नम्याद्या निक भू छ उ र र विनामक विल्ला विनामक छा। वि

বিনাশী ত্রি বিনাশকরণশীল:।

 বি পূর্ব নশ খাভো নিন্পুভাষেন
 নিয়ম:।।

বিনাশোমুখ ত্রি পদ্ব'। ইত্যমরঃ ।। নাশোদ্যতভা।

विनामकः वि गउनामिकः। ইঙি इहायद्रः॥

বিনাহ: পু॰ কুপাননপিধানক: । ইতি শব্দরত্বাবলী।।

विनिष्: बि उन्नो लिउः। ই डि भद्रभावा ॥ निष्नु द्रश्चिण्डः।

विनिष्टुष क्षी भुरवाषः। ইতি हम-हन्मुः॥ निष्टात्र हि उपक्षा

विनिभागः भू निभागः॥देवताः दिवामनः। इति (यदिनी ॥ व्यदः

भानः। इंडि (इमहन्तुः॥ विनिमयः भू॰ भविरानः। भूडिः

मान । इंडि माम ह्रा वली ॥ वक्षकः

न्तां विनिभेरेष मंत्रा (नामाः मधार-क । वु ड॰ ठान्त्यिंग वर्ष्याव्य मा-काष्रधी खरद ॥ इंडि भागकिख-জন্তুধুত শোভিলবচন ॥ विनियागः भू॰ कल्बबर्भनः। इंडि (रमहन्तः ॥ वि नशाजनः। यथा । व्यत्तत्वज्ञ कर्खन्तुः विनित्यागः शु-कीर्बिज:। इंजािक्स कन्नुः॥ বীনিযোজিতঃ ত্রি বিনিযুক্তঃ। বিনি পূৰ্ব ঞান্ত যুজ পাতো: ক পুতায়েন िञ्जमः ॥ विविध् उ: जि मुद्रवङ्बाधलिङ:। যথা। ততো দেবা বিনিপ্তা ভুই-রাজ্যা: পরাজিতায় ছ্তাধিকারা बिन्मा खा छा। गर्व विवाक्षाः ॥इंडि मार्ज्यस्यामवीयादावाः॥ वैनिर्ज्यः कुः भाष्यप्रागिदरणानः। যথা। মনো মন্তা তথা শানো নরো। गानण वीर्यायान्। विनिर्धया नय रिक्टव इ॰ स्ता नाजायागा वृषः॥ शुः ভূম্চেভি সমাথ্যাতা: সাধ্যা: হা-দশ পৌর্বিকা:। ইতি বহিপুরাণে काना। भीगवः भाः ॥ खगद्रश्चिकः ॥ वैनिवृंखः जि ममाधः। निष्नन्नः। বি নির্প্রক বৃত্থাতোঃ ক পু-**ज्रायन निम्नमः ॥**

। ইতি শব্দালা।। यथा। तिकरेव- 🖟 विनिवृत्तः । 🗇 निवृत्ति विश्व है: । कायः। निव्रखः। वि नि मूर्वक वृज থাভো: ক্ত পুত্যবেন নিয়ম: ॥ विनिञ्जः जि विनष्ठः। वि नि श्र्वक হনধাতো: ক্ত পুত্যবেন নিয়ন:।। বিনিকিন্তঃ ত্রি বিনিকেপাশ্য:। পরিত্যক্ত:। বি নি পূর্বক ক্ষিপখা-ভোঃ ক্ত পুত্যযেন নিয়ম: ॥ विनीजः बि विनयान्निजः। विनयः শাস্তভ: म'कात्रः ইन्দिय्यस्य। वा। তৎ भर्गायः। निष्ठः २ भुन्उः ७ । ইত্যনরভরতৌ ॥ জিতেন্দ্রিং।। অপনীতঃ। হৃতঃ॥ বিভৃতঃ। ইতি भिनिकात्र (इमहत्मुने।। किथः। इेड) **बयुनाय: ॥ क्**डरु**ए: ।** इेडि मृजि: ॥ বিনীভঃ পু॰ সুবহাম্বঃ।তৎপর্য্যা-यः। नायुगाशी २ । ইত্যনর: ।। जुष्टेबाइनभी नकः । ইতি भद-इञ्जावकी ॥ विश्वक्। इंडि स्मिनि ॥ দমনক ৃফঃ ॥ শিক্ষিত বৃষভা-पि:। ইতি রাজনির্ঘণ্ট: II বিনীভক পু ক্লী বৈনীভক। পর-म्माद्रावाइन । इकामत होकायाः

त्रायमुक्छेः ॥

विनीयः प्रः कन्नः। इंडि मुक्षदाय-

ব্যাকরণ।। পাপ। ইতি সিজান্ত-

विन्द्र

ं (क्रीमुरी ॥ वित्तर्जा लू॰ (म्लकः ॥ त्राज्ञा ॥ इंडि (मिमिनी ॥

बि (नडवरः। वि প्रदेशे थाञा यं: পুত্যযেন निम्ननः ॥ পু• কৌত্হল•।ইতি **रुलाग्यः ॥ की**छा । ইडि ज्ति भुर्यागः ॥ जानिक्नविर्भयः । **छ**ज्ञकृतः यथा। नायका नाविकाः य। मिक्निलारः वान्नास्य। स मध्रादाल सर्विग्शादः नारका नायिका नवारतमा निदाय दक्षि वकः ७:४ ७४ मद्भा यहाः শ্লিষভি ভৎ। ইভি কামশান্ত্রণ।। द्राजगृहितान्यः। यथा। मीर्घ बरग রান্ন হস্তা: পুসরে ছৌ পুতিষ্ঠিতৌ। বিনোদএই দ্বারাণি ত্রিংশংকাপ্ত-দ্বণ ভবেং।। ইভি যুক্তিকল্পভক্: ॥ वादिनाउ गृश्वान् याक्षा (उयाः वक्त वर्ष ३:। त्रम्तः मर्बाउग्रं (प्। ভবেগ नान्तीमृथ खया ।। वि (नाए क विनामक बिकारा। विभन ख्या। ब्रङ्गः किन्नि र्जामा वीरवा দ্বানশৈতে পুকীর্ত্তিগা:॥ ইতি ভ-বিষ্যোত্তর পুরাণ ॥

विन्तः श्रु॰ कनक्षा। उट्शर्मायः

इंडामदः॥ भ्वाडि ६ विस्तृहि। ইতি ভটীকা॥ দন্তক্ষতবি:শব:॥ क्यार्गपाः ॥ क्रमकार्थभूकृष्टिः । इंजि (मिनि।। क्कानमीनः। इंजि मपत्रञ्चावनी।। अनुमातः। यथा। विन्त्र हिरम् गाञी वली क्याम वी मः एको उ:। इंडि मूथा दाव दाः করণ ।। অপিচ। শিবো বহি সমা যুক্তে। বাৰাক্ষি বিনদ্ ভূষিতঃ । এ कामध्या नशानवः श्रीमूर्ग्रमा शु की बिंउ:॥ इंडि म्यंऽक्वरः॥॥॥ वित्र्यां उपवा । जहिनागा विভवाद महलाद भव्रतमध्वाद। वानीह कि छाउ. नात्मानामाधिन **मगुख्य:।। ইভি माর** रा**ि**घरके रे **भारेनः।। अभिष्ठ। यात्री** विस्तु उ তো নালে নাদাস্কৃতিঃ সম 🗇 🔃 गरिक्त गायर्षानी हिंदु मानी कवा।। नामारेहर जन्द भाना अर्थः विन्तू मं हिचाँत । जाक्ष विश्वारि न्मृ (छा जुड्यो मन म उनी॥इंडि यद्विकाउराज > भहेनः ॥ विनर् ৰ্নাদো বীজ মিভি ভদ্য ভেদা: স মীরিতাঃ। বিনদ্ধ: শিবাতাকো वी क णिक नीप खर्गा मिथः॥ भर्याः यः मगाथा छः गर्नागम विकारितः । ইঙি नात्रनाडिवकः॥ अस्ट । বিন্দুংশিবাছা ই প্তর বীজ শক্ত্যা। আক' ফ্ডং। ংখা র্যোগে ভবেদাদ স্তাভ্যো জাতা জিশক্তবঃ।। ইভি কিযাসারঃ।।

विन्तः जिः ज्ञाञा। ইত্যমরः॥
माजा। ইত্যজাপালः ॥ বেদিতব্যः
। ইতি শব্দর্শি।।

विन्तृिविकः भू मृत्राज्यः। ইতি
भाषावादावी॥

विन्तुकाल क्षी इ उन् अप दि विविवविन्तुनगृहः । ই ভি इसे व्या

विन्तू बाल हः क्री गजना मुथाहि-एक्षा विन्तु ममूद्यः । उद्भग्ने । । भग्नकः २ । इंडा मद्रः ॥ भृत्यः । ष्य ७ वर्ष भृत्यो हस्री छि ज्व जः ॥

विन्तु उद्धः शृ॰ श्रद्धः। ইতি হারা-विन्तु । जूतकः। यथा । विन्तु । जद्धः भूभान् भाजिकन्तक ह जूत-क्रक्त । ইতি প্রগশ্বিবাদৌ সে-দিনী।।

विन्मुभयः भू जूर्जवृक्षः। ইতি রত্নগালা॥

विन्हृद्वथकः भ् भक्षिर्ভिषः। इंडिम्प्रहिन्द्वि।।

विन्तु गतः क्रा गतावत्रविष्णवः। यथा। व्य बृहतःत्रव देवनामः णियः माबी विधि गिति । गोत्र भई (मुक्टे॰ इदिजानमय• भुक्ति॥ हि-त्रग्र मृक्ः मुम्हान् मिर्द्योविध्य-থে। গিরি:। তস্য পাদে মহদ্বিয়ং नदः काक्षनमि छ ।। द्रमा विनमू-সরো নাম যত্র রাজা ভগীরথ:।গ-कार्थिन ठ बाजिर्विक्वाम वङ्काः ननाः॥ दिवाः यानाः । पृर्व গঙ্গাতোয় পরিপ্লুভা:। ভত্ত ত্রি-পথগা দেবী পুথমন্ত পুভিপ্তিতা।। (माग्भानार भुग्ठा मा मध्या পুতিভজ্যতে। যুগা মণিম্যা স্তত্র চিত্রশত হিরপ্রয়া:।। তত্তেপ্র। ক-তুভি: সিদ্ধ: শক্র: সুরগণৈ: সহ: । मिराश्वाराभय छब नक्षवागा छ মণ্ডল• ॥ দৃশ্যতে ভারর। রাতৌ দেবী ত্রিপথগা তু সা। অন্তরীক্ষ• দিবক্ষৈৰ ভাৰবিত্ব। ভূব• গতাঃ॥ ভবন্য যাঙ্কে পতিতা সংক্ৰা (याग नायया। जन्ता (य विन्त्वः কেচিৎ কুৰাযা: গভিতা ভূবি ॥ क् उस रेड विंन्तू मद्र खरडा विन्तू-**नद्र:** मृड•। इंडि भाष्ट्रा ३०० व्यथ्रागः ॥

বিদ্ধপত্রী জ্বী জ্বাগছা। বেলা শুটা ইতি ভাষা। ইতি শব্দ চিন্দ্রিকা॥ বিশ্বসঃ. পু॰ চন্দুঃ।ইতি ত্রিকাও । শেষঃ॥

বিশ্ব্য: পু॰ পর্বতবিশেষ:। ইত্য-नदः।। वतापः। ইতি মেদিনी।।ॐः। বিন্ধ্যপরতস্য নিন্নশৃষ্কারণ য থা। নারদ উবাচ। কিমর্থ মৃদুণ ভগবানগন্ত্য স্ত নিনুশ্স্ কৃত বান্ নহৰি:। ক্ষা কৃতে কেন চ कात्रान न उष्दरश्राथिन मङ्ट्रा ।। भूलस्य डेवाह । भूता हि विस्तान দিবাকরস্য গতি লিক্ছা গগনেচ-রস্যারবি শুতঃ সম্ভবণ সমেত্য (श्वावनात वहन व जार ॥ न भागरजार्क विकर्य ज पा । ज्य-य नयु। इत्रा म्नीन्त्। पत्य पानः মম যন্ত্রনীষিত চরানি যেন ত্রি-हिर्द जूनिवृ**ं ७: ॥ इ**न्थ॰ हिराकब्र वहा उपमञ्चाम भूता छन। कलनाका वहनः वजाव । मानः দ্দানি ভব যন্মনসাত্ত্বভীষ্ট• নাথী 🗇 भुगां विवृत्था यम किन्हरत्व ॥ শ্রুষা বচো মৃত্রময় কলনোন্ডবস্য नार भुनः कत्रम्हे भुनियाय मृक्षि । अयारा भ जितिनदः भूकनिक स्वर्गः विकाम् नित्तकद्वार जगवान् एडम् ॥ इंजि ब्रविवरमामुवार **ञ**् ন্তুরন্না সূত্র নিতি তদ্ধি মধা হি

নীচ শৃক্ত। তব কিরণ জিতো ভ-বিষ্যতীতি মহীয়ে। মম ছি শরণ ननागउना का वाषा (छ ।। ইত্যেব मृङ्गा कवामाष्ठ्रवस मृर्यप्रक मे स्व বিনম্য ভক্তা। জগান সংভ্য**জ্য হি** দ ওক হৈ বিজ্ঞাচল বৃদ্ধবপু রহ-यि:।। गत्रा वर्ः श्राष्ट्र मूनि मंश्रीधः यारना महाजीर्थवत्र मुनुगा । तृ-জোপ্যশক্তশ্চ ত্রবাধিরোঢ় ওদা-फ्नान् नीठ ब्रह्मा खुमरा: 11 ইতে ja-मुक्ति। मुनिमाउदान म नीव्रमृक् खुः खदन् मही अ: । अनाक महा भि **म**-र्वित्थाः (लाल्याः दिकाः **विज जारु रेमन॰।। यावस जूया निक गा** বুজামি মহাশুম ধৌতবপৃ: সূঠী र्थाए। जुरा न जावितुर वार्ककरा न (हर मिनिय) इ भव छत्या (छ।। ইত্যের মৃত্ত্ব। ভগবান্ জগান দিশ। त्र यात्री॰ त्रक्तास्त्रीकः । व्याक्त्राः उर्छो म हि डा॰ उनामा॰ काला दु॰ कागाव वरा स्वीन्त् ॥ छवान्यः রম্যতর হি কৃত্বা সংশ্বন জাম্নদ ভোরণাত্ত। ভত্রাথ নিঃক্ষিপ্য বিদ र्छ भूषी॰ सगामुन॰ भोगा मृभाजः গাম।। খাতাবৃত্তৌ কার্য্যপরে। ছাগ-স্ত্যে নিত্যু তদা স্বাশ্ন মাবস্থসঃ । (भारक काल म हि एउक्ड उन

শ্চচারানিত কাভিনাখনি:।। বি-ক্ষ্যোপি দৃষ্ট্ৰাগগনে নহাশ্ন- বৃদ্ধি ন যাত্যের ভ্যান্মহর্ষে:।। নাসৌ স্থিতো নীচতরাগুশৃস্থ:। এব॰ ত্বগ (ख)न गराहलानुः म नीहम्रस् हि क् ा गहार्य।। उत्न ।। खु म् व মুনি সংস্তুতা সা দুর্গা স্থিতা দানব শাসনার্থে। দেবাক সিদ্ধাক ম-ছোরগাল্চ বিদ্যাধরা ভ্তগণাল্চ अर्दि॥ मर्दाञ्जरदाजिः महिजा हि-বানিশ• কাত্যায়নী• ভস্থ রপেত-শোকা:। ইতি বামনপুরাণেদেবী-মাহাত্ম্যে ১৮ অধ্যায়:॥ 🗱॥ আ-र्य्यावर्डः भूगुर्ज्भ ग्रंष्र विका হि भागायाः । इंडामजः ॥ विकामा পশ্চিমে ভাগে মৎস্যভূক্ পতি-তো ভবেৎ। ইতি পাচীনা:॥ विमार्क्षः भू व्यगस्त्रम् निः। इंडि ত্রিকাওশেষ:।। विकारवामी भू वाडिमूनिः। इंडि (इमहन्मुः॥

বিন্ধ্যবাসিনী স্ত্রী দুর্গা। যথা। সহসুক্ষোপি তাংগৃহ্য বিদ্ধ্যং বেগাহলগান হ। তত্ত্ব গত্ত্বা তথোবাত তিপ্তবাত্ত্ব নহাবনে ॥ পৃশ্বানানা পুরৈ নাম্ম। থ্যাতা ত্বং বিন্ধ্যবাসি- नी। छत्र शाना रुद्रि (पंती॰ पद्मा नि॰ एक वारन।। ज्वामद्राद्रिस्की-जि रुक्ता सर्ग मवास् यार । इंजि वामत्न ७० ज्वायाः॥ #॥ जनाह । विरक्ता २वजीर्या (प्रवार्थ॰ रुखा वाद्मा महा जि:। जनानि छत्र नावामा (जन मा विकावामिनी ।। इंजि (प्वीनुद्रात्न ८० ज्वायाः॥ विकारः भू वादिम् निः। इंजि कोषद्रः॥

বিশ্ব্যা স্ত্রী লবলীবৃক্ষ:।ইতিমে-দিনী।। তুটিঃ। এলাচি ইতি ভাষা । ইতিহেমচন্দু:।।

বিন্ধ্যাবলী জ্রী বাণরাজমাতা। ইতি পুরাণ।।

বিদ্ধ্যাবলীপুত্র: পু॰ বাণরান্তঃ। ইতি ত্রিকাওশেষ:॥

বিদ্ধ্যাবলীসূত: পু• বাণরাজ:। ইতি জটাধর:॥

বিদ্ধ: 📭 বিচারিত:।। প্রাপ্ত:। ইত্যমর:।। জ্ঞাত:।। স্থিত:। ইতি বিশ্ব:।।

বিন্যন্ত: ত্রি কৃতবিন্যাস:। যথা।
সদুব্যা গুণগুদ্ধিতা সুকৃতিনা
সংকর্মণা জ্ঞাপিকা সংসামান্য
বিশেষ নিত্য মিলিতা ভাব পুকর্ষোজ্জ্বলা! বিষ্ণোর্যক্ষণি বিশ্বনাথ

ক্তিনা সিদ্ধান্তমুক্তাবলী বিষ্যস্তা | মনসোম্দ বিত্রুতা স্মাক্তিরে ষা চির•॥ইভিসিদ্ধান্তমূক্তাবলী॥ यान् इंखि ভाषा । इंखि भाष-छिन्तुका ॥

विन्यामः भू ज्ञाभनः ॥ ब्रह्मः। यथा। ज्ञानानीत्व। रेवकृत्व ज। व्हेककवर्ण भूजायी मूलायात्राहित्रा হুছক। ন্যোষ্ঠ বিভি বিন্যাস ্বাছর: পরি মীর্ত্তিত:।। অপিচ। प्रतिहास समारका दा निवित्तः हिला बर्लिक । अकाशवर्ग विन्त्रा ा पा ू जामना विजि: ॥ विजि ুট, । ২টি ভজ্রগার: ॥ অন্য । शृह्य स्वितिमास्या दिख्यः या न ए मधद । विभूक है तक न्त्रान दिख्यः मम्समिल् शि। ८७-न गर्वा पनमार्डि अविश्वामिम्ही-**ভূদা•। ३** डियुक्ति मन्न उत्तर ।। िक । उया कविजया किया उपाव नेज या ह कि॰। शहित्रामनार्खा यया নাগল্ড । মন:।। ইত্যুদ্ভটি:।।

দ্দেপে। ইতি কবিকল্প-জম: ।। ক বেপাতি । ইতি দুর্গা-मांभः॥

विशक्षिका जी वीगा। इंडि गम

त्रज्ञावनी ॥ বিপঞ্চী ত্রী বীণা। ইত্যমর:।। क्विः। इंडि (मिमनी।। বিন্যাক: পু॰ বিদ্ধবৃদ্ধ:। ছাতি বিপণ: পু॰ বিক্ৰয়:। ইত্যমন:॥ বিগণি: পু ত্রী পণ্যবিক্রধশালা। ইতি হলাযুৎ:।। হট:। ইভ্যান্যে। विक्यार्थ भूगादिक नानामुब्रायाः বণিশ্নীখ্যা বাণিমাবিধী ইতি বা নার ইভিচ খ্যাতাশা িভি কে हिट्या इचित्रख्यः। इंडि (कृष्टि ॥ र्डेम्याश्राम्यार्विक्रयवीषी ই ত কেটিছে। ইতি ভব্নতঃ ॥ তৎ-भर्यायः। भगवीथिका २। इंड-मतः ॥ व्याभनः ७ भन्। नीथी 8 পণ্য ৫। ইতি র ভদঃ॥ নিষদ্যা ৬ ব্ৰিক্পথ ৭ । ইত্যমন্তৰ:।। বিগণ ৮ বিনী ৯। ইতি কোৰা। भिवत्या दिश्रानिः श्राभविषिका द्वा-शिव ख्या । शिवुविक्यणां सामाः ভবেদেও চত প্রথ ।। ইভি শ্রদ हज़ावती ॥ विभागः भग्रवीयाय ভবেনাশণ গণ্যাকা ৷ ইতি মে-किनी।। विभर्गी भू॰ विविद् । इंडि करें।-

थ्यः ॥

विश्रा की इंछै:। इंछ षिक्श.

विभिन्तिः खी वाभटाविभटा ইত্যমর: ।। যাতনা। ইতি মেদিনী ।। যথা। ভৃত্তক্বাচ। শুক্ত সর্বণ সূর-**শু** भारतानी र्वजन मृग्। न का छ-রোহি নীভিজ্ঞো বিপত্তৌ চ কদা-**চন:॥ मञ्जि र्वादिপ**िं र्वा नथ-त्रा अञ्चलिभी । भूतंत्रकर्यायना চ ষয় কর্ত্তা তথাে ব্লপি।।ইতি বুক্ষ বৈবর্ত্তে পুকৃতিখণ্ডে ৩৪ অধ্যায়ঃ ॥ विनामः। यथा। यिवानामिगाउ **जामी विপक्तिः या** मानवाः । তেষা • ভবৈৰ কৰিব্যা পি গুৰানো-मक किया॥ इंडि भन्याय उद्धुः॥ বৈপথঃ পু॰ নিন্দিতপ্য:।তৎ-**প**र्य**ायः।** राषुः २ प्त्रषुः ७ करवा ८ কাপথ: ৫ ৷ ইত্যারঃ ৷৷ জপথ: ৬ चमर्भथः १ दर्मि उदर्ज ৮। इंडि नदत्रवादली॥ বিগৎ } দ্রী বিপত্তি:। ইভামর:॥ বিপদা জ্রী বি**প**ে।ইত্যমরটীকা याः बायमुक्दिः॥ रेशमः वि বিপদাক্রাম্ব:। ইতি

पितिनी ॥ नष्टः । इंकि मप्तद्रः

ाभवः भू जर्भः। इंडिसिनिवी॥

পিরীতঃ ত্রি বিপর্য্যয়:। উল্টা

दली॥

इंडि ভाषा। उर्भिगायः। भुडि-मर्याः २ भुजिक्नः ७ अभन्याः ৪ অপষ্ট: ৫ বিলোমক: ৬। ইতি किंगिषतः ॥ भूमवाः १ भन्नाहीनः ৮ পুতীপ ১। ইতি শব্রহা-वनी ॥ वाउचवक्षानं उ म्मम-वकः। यथा। भारत्यक मृद्री কৃষা দিতীয় কটিম স্তিত । নারীযু রনতে কানী বিপরীতস্ত वक्षकः ॥ ইতি রতিমঞ্জরী ॥ অ-পিত। পাদমেক মুরৌকৃত্বা দ্বিতী-य ऋक्षम श्रिलः। कामिन्याः काम-(य८ काभी वहाः म्याहिमदी उकः॥ ইতি মরদীপিকা॥ বিশরীতা জ্রী কামুকী।ইভিধন-अगः ॥ বিপর্ণক: প্ পলাশবৃক্ষ:। ইতি नद्रिक्ता।।

विश्वर्याः श्रुप्ताः विश्वर्याः श्रुप्ताः व्याप्ताः विश्वर्याः विश्वर्यः विश्वर्याः विश्वर्यः विश्वर्याः विश्वर्ये विश्वर्याः विश्वर्ये विश्वये विश्वये विश्वर्ये विश्वये विश्वये विश्वये विष्यये विष्यये विष्यये विष्यये विष्यये विष्यये विष्यये विष्यये वि

বিপর্য্যায়: পু বিপরীতম্বন । অন্যস্যান্যজ্বপুরুণ । ইতি ভর-তঃ ।। বিপর্য্যায়ে জল নান্তি ন জল রও পিত্তযোঃ। ইতি জলা-চার্য্যকারিকা।।

বিপাশা

বিপর্য্যাস: পু বিপরীত্যাসন । বিপর্য্যা: । ইত্যার: ।। বিপর্যা তি শোধনীয । বি পূর্ব প্রাভো য পুত্যুয়েন নিয়ন ।।। বিপর্মা প্ বুদ্ধভেদ: । ইতি হেম-চন্দু: ।।

বিপশ্চিৎ ত্রি পণ্ডিতঃ। ইত্যমরঃ॥ বিপক্ষ: পু॰ শ র্:। ইত্যনর:॥ विशाकः भुः भवनशास्त्रसाकर्य ণো বিসদৃক্ফল। ইতি মেদিনী ॥ পরিণাম:॥ দুর্গতি:॥ बाদু:। ইতি (रुम्इन्मु:॥ बाजि:॥ वायु:॥ (छा-गः। इंडि अनुमाञ्जिषः॥ 🗱 ॥ काटेरत्रभादिना खागाट यमूरहि রসন্তের । র সানা পরিণামান্তে স বিপাক ইতি মৃত: ॥ ইতি সশুত: ।। चलिह। निष्ठेः कर्नुन्ह नधुत्र मह्मा **২**মু• পচ্যতে রসঃ। কটু তিক্ত ক্ষা-दानाः भाकः महार भागमः कर्षेः॥ তথাচ বায়ুটা। ত্রিষা রসানা পা-कः मार माब्यु कर् माञ्चकः। शुः-यः शारन वीशिः चान् इस्विभाकः ॥ भिवा कषाया नधूभाका। मुठी ষটুক মধুর পাকেত্যাদি:॥ #॥ थ्य दिशाकाना[,] खगाः। (सूय-क्सक्तः भारमा वाज भिख रुदा নত:। সমুদ্র সকতে পিত্ত বাত

শ্লেম্মগদাপছ: ।। কটু: করোন্তি
পচন কফ পিত্তঞ্চ নাশ্বেৎ।
বিশেষ এষ রসতো বিপাকানা
নিদ্ধিত:।। ইতি ভাবপুকাশ:॥
বিপাই জী বিপাশান্বী। ইত্যানর:॥

विलाठे: शृं वागः। ইতি विकाल-भ्याः॥

विभाविका खी भाषामुद्धि। इंडा मद्रः ॥ পুर्ल्ला । इति भद् माना॥ #1 देवशाहिकः शानिशाल স্থ টন তী বুবেদন। কণ্ডুমজ্জিংস রালেক গভৈ রলসক চিভ•াবি পানিতা বাতপ্লেয়োন্ডবা। ইতি भाषवक्तः॥ व्ययः क्षेत्रागः॥ विशाला जी नीविरलयः। इंडा मतः॥ প্রশোকাদেব গলে পাশः विष्तु। भविष्ठे विभिष्ठे भागाहराद বিপাশি হব জা বিমুক্তপাশ ক্ষ বতীতি বিপাশ। ঞি: কল্যাদে রি-তি পাশ' বিমোচ্যতি ইত্যর্থেঞি: পচাদিত্বাদন আপাএবং কিপি বি-পাট্।ইতিভটাকাযা•ভরভঃ॥॥॥ তস্যা জলগুণা। শতকে। বিপাশা युकः मिक्रुनिहाः मूनीउ वध् वर्ष न दी भगन्। जल निर्माल भी भने भावनक अरख वन वृद्धि (मधी-

বিপুক্

যুৰকা। ইতির জিনিঘটিঃ।। পাণা-। বিজিতে জি। ইতি ধরণিঃ।। বিপিন জী বনং। ইত্যনরঃ॥ বিপুলঃ জি বৃহ্ছ। ইত্যনরঃ॥ অসাধং। ইতি নেমিনী।।

विश्व शुः (य त्रशिक्त क्षत्रः। **३७** (य रिनी ॥ मृद्यकः॥ हिनाः

हनः। ३७ अत्र निः॥

विश्वत्रमः म् इकः। इंडिकिटि।।
विश्वा छी मृथिती।। यार्गाहमः
उनः। इंडि ह्र गण्यः।। यमा
वक्तानि र्यथाः भथः। विश्वा हः
भवा मथः भवः। अथः। विश्वा हः।
भीजः भवा ज्ञा अवः। अथः। विश्वा ह।
भीजः भवा ज्ञा । व्या अवः। अथः। भारत्य मादिमः म वतः। प्रिया र्वविड भानः।
विश्वा छाः भिन्न गनामा विश्वा
विश्व मनाथः। जिल्ला व्या प्रा किन
काववा वर्षा विश्वा मृथ्य हर्ष्यः
मार्थः। विश्वा वृथ्य हर्ष्यः
मार्थः। विश्वा वृथ्यः।

विभुवामुवा जी गृहकन्या। हेिंड बाडनिर्धकेशा

वि म्यः भः मुद्धः। ই छि मुक्षः वावः वता वत्र १। १था। वना नाः वद्धः व भूष्व विभूषः कृष्ठस्य वाः। काः মা নঞ্জন পিণ্ডাভা দিণ্ডিরী মঞ্জি-নান্তরাণ। ইতি ভড়িঃ ॥

विश्वकाद्रः भू॰ धाशकाद्रः। ७८-शर्यप्रायः। निकाद्रः २ हिङ्क्षद्रः॥ थनीकादः। हेङि खजी॥ ভिद्र-स्थादः। हेङि हिम्हन्तः॥

বিপুকান্ত লী ত্যান্তঃ। ইতি রাজনির্ঘণটঃ॥

विशुक्कः जि ७३६०:। ८९-शर्यायः। निक्ठः २। ইতি ह्याः हसुः॥

বিপুক্তি: জ্রী বিপুকার:। বি পুপুর্বক ফ্ ধাতো: জি পুত্রেন নিয়য়া॥

भूष्य विश्रीयः क् उपनथना । का विशुक्षेः जि मृदः। इं जि स्वायुषः॥

िश्व

विश्कृष्ठेक जि एत । इंडापदः ॥ विश्वितिः शूः प्रमुखायथा। শে খ্যাতা মহান্রাঃ। বিপুচি-ত্তি পুরানা তে শতং তীবুপরা ক্রমাঃ॥ ইতি বহি পুরাণে কাশ্য-शीयवः भाः ॥

বিপুতিপতিঃ জী বিরোধঃ। যথা। পরশার ন্নব্যাণা স্বাথবিপুতি-পভিষু ৷ বাক্যাম্যাযাদ্যবস্থান • ব্যবহার উনাহ্নতঃ।। ভাষোত্তর ক্রিয়া সাধ্য সিদ্ধিতি: ক্রম্থি ভিঃ। আফিপ্ত চতর শস্ত চত্যা দভিবীমতে ॥ ইতি নিভাক্ द्वावा॰ वाद्यवाद्याव्या ॥ 🗱 ॥ विक् जि:। यथा भूधमाष्ठारय का-ড্যায়নসূত্র । শব্দে ২বিপুতিপত্তি রিতি। পুতিনিছিত দুরে। শুভল मः প्याजाः। भुजम्वा वृष्का। भुः जिनियाभामाना मका खत भूता-रम पुराइव वृधि भूमद्वार। इ **्ट्रिकाम्मी** छत्नुः ॥

বিপুতিষয়ে: পু• বিপুতীমার:। ইতনেরটাকালা রাগন্সট:॥ বিপুভিষিত্ব তি নিষিত্ব।ইতি गाँउः॥ বিপুর্ভাষারঃ পুং অনুভাপঃ। ইত্য

नदः ॥ ८ ो २ छ) ।। श्रानुभयः ॥ **द्धायः। ३७ि (महिनी ॥** गूडिवाह। या जवसन् मुला कर वं विलु वहः थू॰ कन गूना निभूष पूर्वः । इंडि मच अंन्युका॥ तिशृश्यः भुः भवामवृकः। इंडि কেচিৎ।। ব্ৰাহ্মণবল্লভে ত্ৰি। যথা

। द्वाभः जञ्जन शत्रकः त्रयूवतः भी-ভাপতি সুন্দর'। কাঙ্গৎস্ত क ৰুণান্য ভানেধি বিশুপ্ৰিণ ধা-भिंक ॥ इंजिद्वानायन ॥

विश्वाप ही शनायन । इंडि (75c 11

বিপুষ্ক: তি বিলিষ্ট:। বিভিন্ন:। इंडि (किं ए ॥

विभूषामः भू विभुवासः। इंडा मतः॥ विद्यास्य दिनःवादमः वा। इंडि बाबी ॥ ब्रागिला विहिनः। ইভি সুদ্ভি:॥

বিপুলন্ধ: ত্রি বঞ্চিতঃ। ইতি হেন-ठन्मुः ॥

विभूवका जी श्रीगामिनायिकारज्यः । তদ্যা লক্ষণ যথা। সন্ধেত নি-(क उद्य शिगमनदानाक) मगाञ्चल श्चा विश्वन्ता। अभ्यास्टिशे नि (दंर िय म मथीजानामानास ज्य ग्हा विखानाभाजामयः ॥ 🕬॥ गूषा विभ्वजाययः। जानी जिः मन्येय

विश्वा

त्रभिक्रणाष्ट्रीय किना व किनामी।

व्रत्यक कन्नदिः नःखानत्रः नीज्या শ্ব্যুণ ভত্ত নিরীক্ষ্য বিক্ষৃভিত্যা ন পুঞ্জিত ন স্থিত। ন্যন্তাঃ কিন্তু ন বোচ नीव्रबर्गा मध्या नकछ क्षा ভाষ্য छत्र कर्य उत्रत हमटकात ण्या पृष्टेयः।'श्राः भवता विभूवद्या যথা। সংস্কৃত কেলি গৃছ নেতঃ নিরীক্ষা শ্না মেণীদ্শো নিভ্ত নিশ্বনিভাবরাযাঃ। অর্জাক্তর ব-চন মৰ্চ্চ বিকাশি নেত্ৰ ভাত্ৰ মৰ্দ্ क्वनीकृ ३ (भव ज्ञाञ्ची ॥ 🗱 ॥ भू-शन्। विभूत्वा यथ।। म्नाः व्रक्षः গৃহ• নির্নাক্ষ্য স্কটিল• বিজ্ঞাত ह्मा अपन पूर्वी नामि निव्यक्ति সহচরী পৃষ্টাপি নো বা তথা। শ-सि। भक्त ठम् भथत रत्र धीक्छे শু লন্ শিব ত্রায়য়েতি পরস্ত পঞ্চ জদুশা ভর্গস্য চক্রে স্তৃতি: 🎼 পি-त भिया विभूवका यथा। पदा रेश्यंऽ ভূরক মৃদ্ধি চরণাবুলন্ধ বজা निशे मङ्गीक्छ। धनाक्षकाद्र भरेल॰ **७न्। न म्ष्टेः शि्यः। महाभाष**ण या उपा ह निर्दि उ: नात्याक्षत ग-জ্ঞতি কোধাকান্ত কৃতান্ত মন্ত্ৰম हिय जारता मृत्मी याजिए ॥ #॥ जानाना विभुवका यथा। कन्छे-ব্চনভাজাকেনচিদ্বার্যোধা সকল

के कि कति कि कि क्या हिमानाकः क्या क्या कि विका क्या हिमानाकः विकाश ।। विकाश ।।

 প: যঞ। বিরোধে উক্তি বঁচন।
বিরোধোক্তি:। ইতি ভরত:॥
অনর্থকবাক্যা। ইতি হেনচন্দু:॥
বিপুলোভী পুণ কিংকিরাতবৃক্ষ:।
ইতি রাডনির্ঘটে:॥

বিপশ্মিকা জ্রী দৈবজ্ঞা। ইত্যমরঃ॥ বিপ্রি: পু তাপরাধঃ। তৎপর্যা-यः। मस्डः २ वानीकः ७ चागः ८। ইতি হেমচন্দু:।। অপিয়ে তি ॥ विभुद्धे जी विन्तुः। ইতাসরং॥ বেদপাঠে বিপ্রুষো মুখনির্গত জল विन्तरवा वुक्तविन्तय छेठारस्य । ट्व-শুकाः। यथा। मिकिका विशुव शुः-या (गी अथः मूर्य) तन्त्रयः । अ८६। ज्वीयू ब्रश्निक म्लाम्म (मध्यानि निः দিশে। ইতি শ্বিতত্ত্বেনন্বচন ।। 🕸 ।। আह्मनकारण गृथनिर्णका বিপ্রযোন উত্তিপ্তলনিকা:। যথা। (माहिडे: ऋर्वां अगुथ्त विभुषाञ्चः नयि याः। पष्टरम् उत्राप्तृ किलाः प्यामं श्रमृति छत्यः॥ इंडि कोर्या উপরিভাগে ১০ অধ্যাব: ॥

িপ্রোনিতঃ তি পুরাসিতঃ। বি পু পূর্বক বসবাতোঃ ক্ত পুত্যযে নিয়মঃ॥

विপ্লবঃ পু॰ পরচকাদিভব॰।ইতি ভরতঃ ॥ রাষ্ট্রাদ্যুপদুবঃ । ইতি সারসূন্দরী।। তৎপর্যাব:। ডিম্ব: ২ ডমর: ৩। ইত্যমর:॥ অস্ত্রকল-হ:। ইতি স্বামী॥

বিপ্লাবঃ পু• অশ্বস্পুত্গতিঃ। বি পূর্ব প্লাগো র্ঘণ পুত্যযেন িয়নঃ॥

विश्व है जी विश्व है। विन्तुः। इंडर-

विश्लु ः जि वाजनार्जः। उर्वश्राः यः। ११११ ज्युः २ वाजनी ०। इंडि एक्स क्युः॥

विकल कि नित्तर्थकः। उट्शर्यायः
। मार्यः २ वृथः ०। इंडिक्रिंगिषतः॥
दिकला जो क्लिले। इंडिक्रांकः
निर्वक्तः॥

विवधः श्रु॰ शर्याङ्गातः॥ रार्गः॥
इजानतः॥ शनि ज जाङ्कि छ्ह्याः । रार्गः
शर्याङ्गादाः थानाः छुलाः । राः
र्गः शलाः छो विवस्यो वीवस्यो ह।
विग्रहा वस्या श्रमानि विवस्यः।
वस्या इननः गनन मान्नि ह विवस्यः।
वस्या इननः गनन मान्नि ह विवस्यः।
विश्वाङ्गातः शर्मा व्याः।
विवस्य । इजि जत्र ।। जावः।
इजि विश्वास्ति।।।

বিবন্ধ: পু• আনাহরোগ:।ইত্য-নর:।। অথ তস্য চিকিৎসা। ত্ল্য কারণ কার্য্যত্বাৎ উদাবর্ত্ত্রনী•

विविदः जि नाना भुकातः। रथा।
भ अक्षा दनः गदा क्दा ह विविधाः
न अम्ना भाः भ जातः दक्ष (गरुः
स विषः गछ मूम्र छः॥ इंडि मिवः
साधित् कथा॥

विवृक्षः भू (हवः। ইত্যমরः॥ পণ্ডিতः। ইতি নেদিনী॥ চন্দুः। ইতি ছলাযুধः॥

विवृथानः भू• जाहार्यतः॥ श्रिकः ॥ (हतः। ইতি अःकिशुमात्रांगाः हिवृज्धिः॥

বিৰোধ: পু॰ অনবধানতা। ইতি কেটিং ॥ পুৰোধ চ।।

ক্রিনা । আনাহে ধ্পিন ন্রিতি বিবোধন ক্লী পুরোধন । মথা ।
বিশেষ শ্চাভির্নারে । তিন্ধ ভূষ্টার যোগনিদা ভানেকাগু হৃদকৃষণা হর্রাভক্রো দি সভূন পঞ্চ ভালিকা হরল বিবোধনার্থায় হরে ইন্
পিকাং। গুডেন ভ্রন্যা বটিকা হরল বিবেনক্তালযা ।। ইভি দেবীল স্থানাহ মূলুণ । বর্ডি খ্রিকটু লৈ-

> বিভক্ত: ত্রি পাুগুবিভাগ:। বিভি मः। পृথक्। यथा। तृङ्ग्नाजिः। পিত্রা সহ বিভক্তা যে সাপত্ন্যা বা नर्शिकाः। वधन/काण्ठ (य उचा॰ পিতৃভাগহর। ख তে॥ অনীশ: প্ৰজ: পিৰেঃ ভ্ৰাতৃভাগে বিভক্ত-জঃ। বিভক্তজো বিভাগানম্বর**ংগ**-र्ভाधातन बाङः ॥ कः ॥ व्यक्ति । ব্যাম:।ভূাতৃণা• জীবভো: পিৰোঃ সহবাসে। বিধীয়তে । তদভাৰে বিভক্তানা ধর্ম স্তেষা বিবছতে॥ বিভক্তানা• স্বনাত্রধনে বৈদিকক-র্মান্তরণাত্তমাত্র পর্মান্তেন ভদ্বন্দি রিত্যর্থঃ।। বিভক্তা অবিভক্তা বা निशः द्यावस नगः। এकाः হ্নীশঃ সর্বত্র দানাধ্যন বিজ্ঞ ॥ অপিচ। দান গুহণ পখন গৃহ-ক্ষেত্র পরিপুহা:। বিভক্তানা পৃ-পুক্ভেবা: পাকধর্মাগমব্যবা:॥ সান্ধিত্ব• প্রাতিভাব্যঞ্চ দান• গ্র-হণ মেব চ। বিভক্তা ভ্রাতর**: অ**-যুর্গ নাবিভক্তাঃ পরশার ।। (যব)

भिजाः किया लाक भूवस्य स्था कुछः। विভক্তानवगह्ययु (र्लथ्ड म-পান্তরেণ তান্॥ ইতি নারদ বচ-नानि। #॥ उथा। जुाठूना नथ म्मा-ত্যো: পিতু: পূত্রস্য হৈব হি। পুণতি ভাব্যমৃণ সাক্ষ্য মবিভক্তে ন তৎ मृ उ॰ ॥ ইতি याञ्चवन्नः।। 🗱 ॥ তথা।বিভক্তো য়: পুন: পিত্ৰা ভাুত্ৰা চৈকত্ৰ সংস্থিত:। পিত্ব্যেণাথ বা পুৰিন্য স ত্ সংসৃষ্ট উচ্যতে॥ ইতি বৃহস্পতিবচনে যেষা মেব ছি পিতৃ ভ্ৰাতৃ পিতৃব্যাদীনা পিতৃ পিতান-(श्रामार्क्किं उ मृत्यागावि ज्क द मृद-পত্তিতঃ সম্ভাবতি ভএব বিভক্তাঃ नन्धः भवस्भव भीउ। भूबंक् उ वि-ভाগ धुःराम यखत्रमः उत्रामसमः যন্মনধন ভদ্তবালি ইভ্যেকমিন্ কার্য্যে একগৃহিরূপভ্যা স্থিতা: नः मृष्टीः । नद्भानयः क्षानाः धन সংস্থা মাজে। নাপি বিভক্তালাং भी जिल्बंका जिनकान विना ॥ 🗱॥ তথা। বন্ধূনা নবিভক্তানাণ ভোগণ रिनव भूमाभारय । इंडि काउग्रायन বচন । তথা । ভাতৃণা মবিভক্তা-ना (मरका धर्म: भुवर्ड्छ । विভাগে সতি ধর্মোপি ভবেত্তেষাণ পৃথক্ পৃথক্।। তথা। জ্রাতৃণা নবিভ

জানা যদ্যুখান ভবে**ং সহ**ান ভত্ৰ ভাগ বিষম পিতা দদ্যাৎ কথঞ্চন।।ইতি মনুবচন॰।।ঞ্চ।। তথা। কাত্যায়ন:। অবিভক্তে মৃতে পুৰে **७८ সূত अक्थ**ङागिन । ऋदी उ कीवन· एवन नक्ष• रेनव निजामहार ॥ লভেতা॰শ॰ স পিত্র্য চ পিতৃ-ব্যাৎ ভস্য বা সুতাৎ । তথা । বিষ্:। পিত্বিভক্তা বিভাগানম্ভ রোৎপর্ম্য বিভাগ দদুয়:॥ 🗱॥ অপিচ। অবিভক্ত বিভক্তানা স্ব-ল্যানা বসতা সহ। ভ্যোদাযবি-ভাগ: म्यानाठजूर्थानिकि ञ्रिजि:॥ ইতি কাত্যায়ন বচন•॥ অবিভক্তা-নাণ সহবসতাং সংস্থানাং বা পুন বিভাগো ভাতৃ তৎ সুত তৎ সূত প ্যন্ত মেৰ তৎসূতাচতুৰ্থা মৰ্জ তে। ইতি। তথা। অবিভক্ত স্থা বর হৎ সর্বেষা মেব ভজ্ঞবেৎ। বি ভक्तः शादत्रः लाखः नात्नापर्येगः कराइन ॥ इंडि यमवहन । এडानि वहनाभीनि मायङबु ध्ङानि ॥ 🕸 ॥ অপিচ। অবিভক্তা বিভক্তা বা ष्ट्रगुरः भुष्क सरेपविकः। स्वाम् ह তথান্যৰ নাধিকার: পৃথক্ বিনা ॥ **३७ मुष्कि उ**लु । । । जन है। वहरः मुऽर्यरा भूधाः भिज् दिकव वासिनः

। সংর্ধান্ত মত॰ কৃত্বা জ্যোষ্ঠনৈব তৃথৎ কৃতঃ।। দুব্যেণ চাবিভক্তেন সর্বি রেব কৃতঃ ভবেৎ । ইতি শুদ্ধিতবৃং।।

বিভক্ত র: প্ বিভাগানস্তরণ পদ্র্যাধানেন লাত:। যথা। বৃহস্পদ্রা:। লিতা সহ বিভক্তা যে সাদ্রা:। লঘন্তলাল বে সেনা পিতৃ ভাগহরাস্ত তে ।। অনিশা: প্রস্তঃ পিত্রেও ভাতৃ ভাগে বিভক্ত ঃ। যথা খনে তথাল পি মুকুল শৌচোদক কিয়া:।। ইতি দায় ভক্ত ।।

विङ्किः छी विङ्गागः॥ महानिः
छहिन्दः। यथा। मःथहाद्वहाभह्रमानिहः मक्तिमान् भुङ्हिष स्
यः। मा विङ्कि विश्वा (भुङ्कि। मून्
छिए हिडि भुङ्हिस मक्तिमान् यः
भुङ्हिशः मा विङ्किः। मृन् छिष्
इिड (ङ्हिक्कि।। ইिड मदमक्तिभुकामिका॥

दिख्डनीय॰ जि विखाडाऽ॰। विखाः
गर्यागाऽ॰। यथा। यन्त्रमाऽ भुर्याः
जनार्छः भुष्ठकापि उज्जर्थापिखिः
मह भिष्ठकापिखि न विख्डानीय॰।
हैजि पायउखुः॥ ভ्रह्नाञ्चरं । वि

পূর্ব ভদ্ধাতে। রনীয় পুত্যুয়েন নিম্লমণ।।

विख्यः शृ॰ धनः॥ (माकः॥ खे॰
धर्याः। इति मिनि ॥ शुख्यानि
पश्चिमः वर्षम् महास्त्रं हिंडीयवर्षः।
यथा। खिवराश्चराणा । खित्रव छै॰
वाह। मुख्किः क्षम माद्रागाः
मत्वं वाधि विवर्षिताः। शुनासा
मानवा स्व वस्नमा वम्बद्धाः॥
स्रो स्रो सनाः मर्द विख्य ह

বিভা জ্রী কিরণ:। ইতি হেমচন্দু: ।। প্রাশ:।। শোভা। ইতি রাজ-নির্ঘট:।।

বিভাকর: পু॰ স্ঠ্য:॥ অর্কবৃক্ষ:॥ চিত্রকবৃক্ষ:। ইত্যমর:॥ অগ্নি:। ইতিমেদিনী॥

भिज्ञामा भूरेझ यंज भूंकन्नाराउ मायः ভাগ ইতি শ্ৰেক্ত তিঘ্ৰাৰপদ वूरेशः ॥ इंछि नात्रप्रदहनः ॥ भूर्व याभियादाभव्राभ मञ्जूति । সম্জিনা॰ সর্ধন পুণ্তস্য স্বল্প্য छड़िकालाजामिना नु।एमिक सञ्च ব্যবহাপন বিভাগ:।।ৠ। অপিচ। কাত্যায়ন:। জীবদ্বিভাগে ত্ পিতা নৈক পুত্র বিশেষয়েৎ। নির্ভাল (यट नहिर्वक मकन्याट काव्रपः विना ॥ 🗱 ॥ উক্তকারণশ্বের ত্নারদঃ। ব্যাধিতঃ জ্পিট্রৈচব বিষ্ণাস্ত চেত্রন:। অযথা শাত্রকারী চ ন বিভাগে পিতা পুড়: ॥ #॥ নিবৃত্ত রজ্ঞায়া মেব মাভরি পিভাম্ছ ধন বিভাগ নাহ বৃহস্পতি:। পি ত্রো রভাবে ভাভুণা• বিভাগ: **ন**• भुमिश्वः। भाउ निरुख त्रक्रिन की বভোরপি শৃস্যভে॥ৠ। অন্যচ। যা-ख्यन्तुः। विভाগশ্চেৎ **পিতা স**র্য্যা-मिह्या विভক্তে नुजान्। कार्ष्ठः वा (मुंह जारान मर्स वा नु: मना मि-নঃ।।ঞ্চ। অপিচ দেবলঃ। অবিভক্ত विভक्तानाः चनानाः दगडाः मह । ভ্रया नायविভागः महानाष्ट्रज्था-দিতি স্থিতি:।। বিশু:। পিতৃবিভ-का विज्ञागानस्तारभागा विज्ञा-

গ দদ্য রিতি। গোত্র ভাগ বিভা-गार्थ मल्मरः ममुमञ्ज्ञा । (गाः এজৈ শ্চাপরিজ্ঞাতে সল সাঞ্চিত্র मर्जि॥ ইजि मञ्चवहनः॥ ইजि माय তত্ত্ব ॥ 🗱 ॥ मामान्य धर्मावहिन्ना-না নেব বতুনা পরস্পার বিক্ছা ড-घाषा धर्म शुकादा शुक्रिशाहन হি বিভাগ:। ইতি শুদ্ধেবিবেক धिकामा · बिक्ष उर्कानकातः ॥ न्।। যনতে চতুর্বি:শক্তি গুণান্তর্গত গুণ विष्णयः। म जिविषः। यथा। भदा ছেতু দ্বি গীয়: ম্যাৎ বিভাগো প্ৰি ত্রিধা ভনেৎ। এফকর্মোন্ডব ভা দ্যো হা কর্মোন্ডব: পর:।। বিভা-शक छुडीयः महाकृष्ठीरमानि विश ভবেং। (रुड्गांब विजारमाण (रुष হেতু বিভাগজ:॥ ইভি ভাগগেরি ছেদ:॥ৠ। বিভক্ত পুত্য ারণ বিভাগণ নিক্পয়তি বিভাা ইডি এনকর্মেতি। উদাহরণন্ত লোগ रेगल विजागारिकः भूर्वदः (दायः) তৃতীয়ে৷ বিভাগজঃ কারণনাত্র বি ভাগজন্য: কারণাকারণবিভাগজ ন্যম্চেতি আদ্য স্তাবৎ যত্ৰ কপাণ ক্মা ড ত: কপাল্ছ গবিভাগ স্ত-ভো ঘটার**ন্ত**ক্ষণযোগনাশ ভড়ো ঘটনাশঃ তত ত্তেন এক কপাল

বিভাগেন সকর্মণ: কপালস্য দে-শান্তর বিভাগো জন্যতে তত উত্তর দেশ সংযোগ: ততঃ কর্মনাশ ইতি । নচ তেন কর্ম গৈব কথা দেশান্তর বিভাগো ন জন্যতে ইতি বাচ্য প্ৰ कन्य कर्मन जाद्र सुद्ध मार्गाम शु ডিছন্দি বিভাগজনকত্বস্যানারম্ভ ক সংযোগপুতিবল্পিবিভাগজনকল্প विद्यादार अनुशा विकनर कनन अध्रेत जन्न भूमस्ट उमाप्तीरः অনারম্ভকসংযোগপুভিদ্বনিদ্বিভা-गः इनस्यख्रा आद्रश्चक मःस्याग लुखिविश्वि विভागः न बनरगर । नह कात्रगविज्ञारगरेनव मुवानामार म् র্বণ অতো দেশান্তরবিভাগো ন জ-ন্যতে ইভি বাচ্য প্রারম্ভ চ সংযো গ পুতিবন্ধি বিভাগরভো অব্যব্দ্য সতি দুব্যে দেশান্তরবিভাগাসন্ত-वाष्ट्र यञ इस कियमा इस उक वि ভাগঃ ভতঃ শরীরেণিবিভক্তপু ত্যথো ভবতি ভত্র চ শরীর ভব্ন বি ভাগে হস্ত ক্রিয়া ন কারণণ ব্যধিক-अगदार, भागो**त्र ज्**किया नास्ति चः वयविक्रमां शावनवयवकर्म निय-তত্বাৎ। অত স্তত্র কারণাকারণ বি-ভাগেন काग्राकार्य्यविভागा बन्ध তে ইতি অত এব বিভাগে। গুণাম্বরণ

অন্যথা শরীরে বিভক্তাবিভক্ত পুত্যুয়ো ন স্যাৎ অতঃ সংযোগ নাশেন বিভাগো নান্যথাসিদ্ধো ভৰতি। ইতি সিদ্ধান্তমুক্তাবলী।। বিভাজ্য ত্রি বিভরনীয়া বিভা-गार्श। यथा। ऋत्व विनीख विह्या-নাণ ভ্ৰাতৃণাণ পিত্তো হপি বা। শৌর্যপোগুত্ত যদিত্ত বিভাজ্যণ ভদূহস্পতিঃ৷৷ শিল্পেম্বলি হি ধর্মো २गः मृन्याष्ट्राधिकः छादर । ल-ब्र• निव्नम्। यहाञ्चः विष्णुगा पृत्र भू-र्वकः। विष्णाष्यस्य তिविष्णामवि-ভার্য वृहम्भिजिः॥ उथा। (मोर्ग्र ভার্যাধনে চোভে रह दिम्। धनः ভবেৎ। ত্রীশ্যেতান্যবিভাল্যানি **পুসা**দো यक रेপङ्कः ॥ ইভি দা-যতন্ত্ৰ ॥

বিভাগুক: পু॰ মুনিবিশেষ:। ম জু
শ্বাশৃক্পিতা। ইতি রামাযণ ।।
বিভাগু প্রী আবর্ত্তনীলতা। ইতি
রাজনির্ধণ্ট:।।

বিভাত॰ শ্লী পুত্যেঃ। ইতি শদ্দের রন্নাবলী।।

বিভাব: পু॰ পরিচয়:॥রসস্যোদ দীপনাদি:। ইতি মেদিনী।। ত নেক্ষণাদি র্যথা। বিভাবেনানুভাবে-ন ব্যক্ত: সঞ্চারিণা তথা। রসতা; মেভি র**ভ্যাদি:** স্থায়ী ভাব: স চে **তসা॰।। বিভাবাদ**যো বক্ষ্যন্তে । विভावानी ना॰ यथा नःथा कात्रन কাৰ্য্য সহকারিত্বে কথ ভ্রষাণা ম-পি রসোদ্বোধে কারণত্ব নিত্যচ্যভে । কারণ কার্য্য সঞ্চারি ক্রপা অপি হি লোকত:। রসোদ্বোধে বিভা-বাদ্যা: কারণান্যের তে নতা: ॥ সভাবাশ্চ বিভাবাৰে ৰ্দ্বযো **রেক**-मा वा ভবেৎ। वाहिनाना मना-ক্লেপে ভদা দোষো ন বিদ্যুতে॥ বিভাবাদিপরামর্শ বিষয়ত্বাৎ স रहजना । भद्रानन्त्य खून अस्त्र-দ্যত্বাদপি সূট ।। ৠ। অথ কে তে বিভাবানুভাব ব্যভিচারিণ ইত্য-**পেক্ষাযা**ণ বিভাব মাহ। র**ভ**্যাদু :-দ্বোধকা লোকে বিভাবা: কাব্য नांग्रेरयाः। (य हि लात्क ब्रामानि गञ्जि जिल्लामा ही ना॰ उत्हादकाजः शानि जीजारय छवत कार्या ना-ট্যেচ নিবেশিতা: মন্তো বিভাব্য ए बाद्यानास्त्र भाषुर्जावरयाग्याः ক্রি স্থে সামাজিক রত্যাদিভাবা এতি রিতি বিভাবা উচ্যান্ত: সা-वयसाकी भनारको अन्। एका-वृष्टी मृत्ये । इंडि माहि ग क्रिंगः ॥

विভावन॰ क्ली विज्ञालन विष्णयः ।
विভावना क्ली कि विनाकात्रनः के
अनिवक्षमात्माणि कार्य । मनक्लः
। यथा। विভावना दिनार्ट्यु॰ कार्यार्थि विह्यार्था। विज्ञानुक निम्न विश्वार्था। विज्ञानुक निम्न व्यार्था। विश्वार्था। विज्ञानुक निम्न व्यार्था। व्यार्था।

विভावती जी द्राजिः। ইত্যমরः॥
इतिमा। अपेनी ॥ वक्रयाविष्ण।
विवापवज्ञमूखी। ইতি भिष्नी ॥
सोथर्य्यानित्रज्जी। ইতি भपन्न द्रान्
वनी।। स्माव्कः। ইতির ব্নালা।।
विভावमः शु मूर्य्यः॥ অক্কः॥
व्याः॥ विज्ञकत्कः। ই ज्यातः॥
कन्मः॥ कात्रस्तः। ইতি হেমकन्मः॥

বিভাবিত: ত্রি বিচিষ্টিত:।। বিশে-বেণ উৎপাদিত:।। বিশেষেণ পুা-পিত:।। বিমিশুযিত:। ইতি ঞ্ট ভূপাতো: ক্ত পুত্যযেন নিত্নম:॥ বিভাষা ত্রী বিবল্প:। যথা। দ্বো विভायरण गांखा विश्व विजाः ।
इंकि मुक्दवाववाक्रवणः ॥
विভिन्नः जि. विज्ञः ॥ विषीर्नः ।
यथा। गमा भवन् श्रीकृष्ठ ठक छ।
मत्र भायरेकः। विভिन्न विमना या
हि कथ्या मालि निष्क्रिका॥ इंकि

বিভীতকঃ ত্রি বৃক্ষবিশেষঃ। বছে-ডা ইতি ভাষা। ভৎপর্য্যায়:। অক্ষ: ২ তব: ১ কর্যক্স: ৪ ভূত-বাস: ৫ কলিজন: ৬। ইত্যুনর:॥ কল্লুকঃ ৭ সমূর্: ৮। ইতি রয়-মালা॥ তৈলফল: ৯ ভূতাবাস:১০ नम्बर्कः ३३ वामष्टः ३२ कनिवृक्तः ১০ বহেডকঃ ১৪ হার্য্য: ১৫ বিষয়ঃ ১৬ অনিলয়: ১৭ কাসয়: ১৮। অস্য গুণা: । কটুত্বু• । ভিক্তত্বু• । ক্ষাযত্ত্ব। উফত্ত্ব। ক্ফাপছত্ত্ব। । हक्षाद्वः । शलिख्युद्वः । वि-পাকে মধ্র হুঞ।। তম্ম জ্ঞা:। ভৃষা ছদ্মিকফ বাতহরত্ব। বযু ত্ব॰। নধুরত্ব॰। মদকারি রঞ্চা। ত-दिवल्थाः। यामूत्रः। हिमपुः। কেশ্যন্ত্র• ৷ গুকুত্ব• ৷ পিক্তানিলা-र्डिना निव्दथ । इंडि ब्राक्षनियंकः ॥ # ॥ व्यभिष्ठ । व्यथ विजीउक নামানি গুণাক্ষা বিভীতক স্ত্রি-

निकः नगरकः कर्यकन स्यः। कः লিজনো ভূতবাস ওবা কলিব্পাল-यः॥ विजीउकः श्वापूलाकः कवायः क्य भिखनुद्र ! प्रेक्षवीर्यं । क्रिमणार्जः **ভেদন कामवाणन** ॥ जक्क व्यव-**चिडः (कण)** क्मिरेव हरी नामनः। বিভীতমজ্জা তৃট্ ছর্দ্দি কল বাভ-ছরে। লঘু: ॥ ক্যাথো মদকৃত্বাথ ধাত্রী মজ্জাপি ভুদুণা:। ইতি ভাব-পুকাশ:॥ # ॥ অন্যচ্ন। বিভীত্ত ভেদি তীক্ষোঞ্চ বৈষ্বৰ্য্য ক্ৰিমিনা-শন । চক্ষ্য সাদুপাকঞ্ক্ষায় ক্ফ পিতন্থ।। ইতি রাজবল্লভ: ॥ 🗱 ॥ व्यम् किन्यवृकाद्रगः যথা। পুলস্ত্য উবাচ। ভতে। গতেষু দেবেষু বুদ্দলোক পুতি দ্বিজ। তৈ-(वाक्र)° भावरामाम विव र्थ्यान्नि-**७: मरा।। किन उरा धर्मयुउ**॰ जग-দৃষ্ট্বা কৃতে যথা। বুক্ষাণ শরণ ভেজে স্বভাবস্য নিষেধনাৎ ৷৷ পু-ণিপত্য তমাহাথ ডিষ্যো বুক্ষাণ শীশ্বর । মম শ্বভাবো বলিনা না-শিতো দেবসত্তম।। ত পুাছ ভগ-বান্ যোগী ৰভাবো জগভোগি হি। ন কেবল• ছি ভৰতো হৃত স্তেন ব लीयमा ॥ शमात्राम् । जिया (नर्यन्तुः বক্ণঞ্চ সমাগত। ভাষরোপি হি मीनवः भुयाका हि वलाहालः ॥ इंटिंग्व नूक्ता प्रतिन वुक्तना किन व्रवायः । मीनान् मृक्षे। ह नकामीन् विजीडकवनः गठः ॥ इंडि वाम्याः २१ अथायः ॥

विजीवनः मृ द्वावनज्ञाता। ইতি
द्वामायनः ॥ ननज्नः । ইতি রাজনির্ঘট:॥ ভ্যানকে ক্রি॥
विजीवना ज्ञी ভ্যপুদর্শনः। यथा
। কৃষা শক্ত विजीवकाः किञ्च
প্য সানেষ্ দীনাঃ পুজাঃ মণ্ডারা।
वিজ্ञজ্ঞাত কপহুতাঃ ক্ষোণীভ্রন্তে থিলাঃ। বিদ্যাংশা হলি বয়ং
পরং ত্রিজগতাং স্যান্ত ব্যাগা
দামীশস্ত পরিচর্য্যান গণ্ডারা
বৈ রেষ নারাবনঃ॥ ইতি শান্ত
শতকং॥

विद्धः भू॰ भूदः॥ मर्बगठः॥ म इदः॥ वृकाः। ইठि त्म क्नी ॥ इठः। ইठि विकाल्यकः॥ विकुः। इठि मक्तावाः॥ व्याभकः ॥ विठ्यः। यहंन्। इठि व्याहन्तः ॥ पृष्ठः। इठ्यक्षणावः॥

विष्टुः वि सर्वस्वभः हाणी। भद्रम नश्कुरान्। स त् मालाः निः । यथा। बाल्यान्द्रियान्। विष्ठां के द्रमः हिः सम्बद्धाः विष्ठु त्वाहि खन्यान् तृ बिस बिविधा में ।।। है डि डि थि।।
भित्र हिनः ।। विज् विडि विज् दः
भित्र में में स्विधि विज् देः
भित्र में में स्विधि विज विष्य के । है डि जिक्का स्विधि के । विज विज विष्य कि ।।
भित्र भित्र में से दिल है । है डि डि डि शिक्का से ।।

विज्िः जी जनिमाणिकमर्रेशा **७९ भर्य) यः। ভৃতি: २ ঐ श्र्यं)** १ १ ইত্যনর: ৷৷ শিবধৃতভমা ৷৷ অস্য शिवमा अनिमापि अञ्चे भूका**दः** दैव-ভব বিভ্ত্যাদি পদত্ত্ব বাচ্য কেচিত্র বিভৃতি ভূতি রিতি দ্বণ भा सुर्व जयनि यनिमान् । श्रेत्र जु विधर्म भिजाइः । विज्यज्यनमा বিভূতি: জি: ভবঙে: জি: ভূতি: विगृह्त बान्धानमर्ग निद्रामार्थः ই পর গুণ ঐ বর্য্য ভাবে ফ্যঃ অনি-भारि विधिनारि। उथा ह। अनिनी-विविभा भाष्ठिः भाकामाः महिमा उथा । के निवन्ध व निवस्थ उथा কানাবশাযিত। ইতি। অনুত্র মনি-না যেন স্ক্ষো ভূষা বিচর**তি। ল**ং घुन्न लिध्या (यन वागू तिव लघ्उ-রো ভবতি। পাুঙি র চাঞ্জত প্রা-পণ প্রাকাম্য মিছানবিঘাতঃ। ম ছিম। মহ ৰু যেন চতুর্দশভ্রনান্য স্যোদরে বর্ত্তমে।। ই শিল্প পুত্রতা यन স্বার জক্মাদি ভ্তান।। एः শকারীণি ভবন্তি। বন্দির্ণ বাত-ত্র্যু॰ যেন খ্রুড্র শরেন্ডি। কালেন इहरा जरमान्जिः जाज् मीन मन् कामावनायी नी कि शुहारि-হাণ্নি তন্য ভাবঃ নাগাবশাযি-छ। । मर्वारन्तव कारामर्वदाः खाठ्नाः चृष्टि बिह् ि ४७७६। चननायी प्रसा वथा है आहा। ইতি ভরতঃ॥৩॥ সলিচ। খ্রী-ভগবাৰৰাত।পরংগেরভর তভু भवः बुदेखक सद्धाः। विकासमार অনুণ জ্যোতি ব্ৰাণ ভ্ৰমনঃ প্রণ ॥ ঐথর্ল্ড ভদ্য যারভ্যু বিভূতি। विकि भीषा । ऐकि भोर्म > ष्यवश्रवः।।

विक्विष्टाः भी जी तुक्कियानः ।

यथा । विद्यान्यं विष्ण व व्यक्ति । भूव

नातत राष्ट्राः विष्ण व व्यक्तिः

तः विक्विष्टाः भी गात मर्वनायः

विक्रित्यं कालुका । आषा ह दा

क्यात्रात स्वाताः व्यक्तिः ।

क्या भाषत्रवाः नद्याः व्यक्तिः ।

विक्रा युवा वकात्रभागं विद्याः

वा नवाक्रिं जवार्यं । धानस्ताः

वा नवाक्रिं जवार्यं । धानस्ताः

विवित्रं युक्तः कित्याः (काव्याः

বিভো। তদবিম্নেন নে যাতু সাফ-ল্য নধুস্বন।। ভতঃ পুভাতে চো-থাৰ কৃতবাৰজপ: শ্চি:। প্র-(यर भुखत्रीकाकः मुजनान्। नृतन श्रोतः ॥ विভ् उमाय नगः श्रामाव-**माकाय** छ जानुनी । नमः निवास णुक र विश्वमूर्डस बनः करि॰॥ बन नतर्शीय नरमा सम् बादिकतम नगः **प्तराय ह छन्त्री। सायदास्य**ि ह्यु स्पृष्ट यक्षेत्र विष्ठ समः॥ शिवतान मृत्रः क्षित्। त्रवादा जिल्लावर १ कृष्टेर लाजवराध्यां ज्ञाली व वगहरव भ बन्दा भन्न एकभि मन्। भन्नभुन शाध्यः। जर्दाञ्चान भितानुगम् नम् हेळाजिन्द्रस्य ॥ म्**रम्** नृद्रमम् লংখক• হৈনে দ্বা ভু লাজিতঃ **!** जेत्बद्धमगाएक वृगुक्त इप्रथान ৰিভো: ॥ ওড়পাল ভিলৈ ব্তি বিভংজাভিধেপ্তিত। রাজৌ জানা an प्रवेशिविष्णमक्षाविषा ॥ পভাতায়াঞ্পরিগ্রিণ মুদ্দান হা-ेर्निय**न । जलाक्त्या**रभाषा (स्रा **ारबद्धः** नियम्बर्दरमा यथा न प्-চুদে নিকোঃ সহা সর্ব বিভৃতিভিঃ । उषा मा मुख्यालयपूर्यगःनाब-जामवार ॥ हमाव्डाहक्तां

শুভিনাস ক্রমান্ন। দ্ভাত্রেষ বিভ্রণ স্ত্রী আভরণ।ইত্যমরঃ॥ ডতো ব্যাস মূৎপলেন সমন্বিত । বিভ্যা ত্রী শোভা।'ইতি হেন্-मन्त्राद्यकः स्था यावट सायछानः ভিৰক্তাৰে ॥ সমা**প্**যৰ যথ। थाकत वाम्य वाम्यो नदः। नः ব্দসরান্তে লাণপর্যতেন সমল্লি হমরসংযুতা । গুমঞ্চ শক্তিমনে ममा९ (क्व मा इर गा व उ.। एकः संभूका विवय वद्याण हात्रज्यरेनः ্মন্যানপি ব্থাশক্যা ভোৱাবত্বা विका उपान्। उभरयह उ भारारेन द्रमाञ्च द्रमम्भारः । ञन्नदिखा य থাশ জ্যা স্তোক সেবাক বেং া য়ংচাতিনিয়ং প্ক্ষো ভক্তিনান্ মাধ্বং প্তি। প্রাচনবিধানেন স क् उ:वर्भद्रष्य । अत्न विधिनाः यस दिख् उनामणी वुड ॥ अर्गार ল পাপ নিঘ্ ক্তঃ পি চুণভারফেছ ত॰। জন্ম । শতমাহসু ন শোক क्न जागुरद्ध ॥ न ५ द्यापि स्विन्त-का न मातिमु १ न वक्तनः । देवस्थ्या वाष्ट्रेमरवा दा छः तक्क् सनि अस्नि ৷ যাৰ্ছাণ সহ্যাণাং শতনষ্টোত্ত व्र ७ (वर । जावर यहर्ग वरमपुक्तन् ल्लाडण्ड पून छात्रा ॥ है। जगार-(मा) ४२ म्या १३ ॥

छलुः॥ व्याख्यतन्यः॥ বিভূবিতঃ ত্রি অলস্ক্ उ:। यथा।

বিশ্বরত্নাংশু বিভূষি তার্জা শিলা खल (इनम्ल मुज्ञाम)। मूल्याभ-विष्टे॰ सम्बाक्ताणन॰ जगान वा-ক্য গিরিরাজপুঞী॥ ইতি স্থা (मः नील म्रशेष्ट्राञ् ॥

विज्डः जि थ्डः॥ भुष्टः। वि भ्ई ভূষাতো: জ পুভ্যুষেন নিয়ন:॥ विज् वि विजिधियः। शाहराशाः ষণকর্তা। যথা। চতুর্মশা নারসিণ इ॰ विভূদৈত্যেन्तु गृष्टिं छ॰। ममाद क्रतेक क्रवारवत्रका॰ क्रिक्ष्यथा ।। ইতি শ্ৰীভাগৰতে ১ ফল্পে ৩ খ ধ্যাব:।। অপিচ। তক্ণ সকল্বি-ন্দে। বিভূতী শু দুকান্তি:। ইত্যাধি **एखगा**ख गत्र श्रीकान ॥

বিভুন: পু হাবভেদ:।সতৃত্তীগাণ শৃঙ্গার ভাবজক্রিয়াবিশেষ:। ইত্য নর:॥ নের রাগ হর্ষ জনিত বিপা र्य्यामा विज्ञाः। यथा जन्यनिविज মানসাদুখাবান্যত্র গ্রনণ পিয়া-त्रक्तरथा माक्तिला नथा नहा नभन मुहि ईगिउ कार्यो भूझा-मीना॰ राह्य महरेमव छट्णातः

ভগ্নগঃ। বজ্রা ভরণ মালগ্রানা মক। व्रग्छः थञ्चनः नाननकः। यम् छः। কোষ: যিতেঞ্জ স্ন্যাভরণারি याहु। তवर्जनक मश्रेमव विवक्ष नक्ष। याकिष्ठा कान्न वहन ल-পন পথীতি নিহারণোথি তগত वर विज्ञा एए॥ इति। विज्ञ ত্তানব হান- শ্রারাছিভূনে। ভবে-**दिन्तु** हु। उथाना । विज् न सुत्रया कात्व ज्या सानविश्यं।-यः। यथा। শুলুগোত বহিঃ বাস্ত মসমাপিত ভ্ৰযা। ভালে ९জন• দুশোলাক্ষা কপোলে তিলক: কৃত: ।। ইক্তি। যোগিতা ভৌবনজে। বি-কারো বিভূম:। ইত্যেকে।: বিভূা-ত্তি বিভূম: ধঞা । ইতি ভরত:।। অপিচ। বল্ল ভ পুাগুবেলাযাণ ম-मनायम नः जुना । विज्ञा हात्र बान्।। ज्याञ्चविभयं।। ইত্যুক্তৃत्रभावम्तिः ॥ ৠ॥ ज्राहिः । ইতি নেনিনা ॥ শোভা ॥ **সংশ**-यः। ইতিছেনहन्तुः।। ভুনণ। ইতি अफ्रब्रज्ञावनी ॥

বিভূমা স্ত্রী বাদ্ধক্যণ। ইতি শব্দ-রহানলী।। বিভূটি তা অলম্ভারাদিনাদীপ্ত

विज्ञाहें । जि. यनकात्रापिनाभीशः । विज्ञाह् । निवास जिल्लामा । जुल्ला

हिकः २ (वां िकः २ । ই उप्रदाः ॥ विज्ञान्तः वि विज्ञान्तः । वि भूर्व ज्ञान्याः जः भुज्यसम्बद्धाः ॥ विज्ञान्तः जी विज्ञाः । हिजिबिक्काः भक्षीकायाः ज्वनः ॥

বিনত: ত্রি বিক্লানতিবিশিপ্তঃ। বি প্র্মন থাতোঃ ক্ত প্ত্যথেন নিয়মঃ॥

বিদনকঃ ত্রি বিদনাঃ। বিনিগৃহী-ত সনো হস্যেতি বহু বুী হৃথে ক পুতুরবেদ নিয়য়ঃ।।

विभनाः वि िष्ठामिवाञ्चलिष्ठः। जद्भगीयः। मुर्मानाः २ व्यष्ठमनाः ७। ইতামরः॥ मृश्यिजमाननः ६। ইতিশদরত্বাবলী॥

विभयः भू विभिन्धः। ইতি (इम-

विसर्पः भूः कालक्ष उत्कः। कालः काम्निया ३७ जावा। इंडि इद्र-साला ॥ विसर्प्तनः। इंडि णद्र-ब्रद्रावनी॥

विमण्यकः मृ ठकमण्रः। इंडि द्राजनिर्यण्यः॥

विनम्बनः ज्ञी व्यक्तभाषिनम्बनः। ७९ शर्यप्रायः। श्रिन्न वः २१३ छप्रजः॥ विनम्बः ७। ३७ मक्तक्रावनी॥ विष्णायश्चमक्षनः॥ विसामा थिः शुः सम् नाञ्जाउम् गद्यापिः। यथा। अथ गद्य गद्धि गद्धि। यथा। यथ गद्धि गद्धि। मृत्र गावी मद्भाष्ट्यी गद्धा यद्धा । मृत्र गावी मद्भाष्ट्यी गद्धा यद्धा । । विमर्थाः बी भद्धा व्यव्यवि ॥ विमर्थाः बी भद्धा व्यव्यवः भद्धाः। यथा। विकर्वः म्यान्व्यवः भद्धाः स्था । विकर्वः म्यान्वयवः भद्धाः स्था । विकर्वः म्यान्वयवः भद्धाः स्था । विकर्वः म्यान्वयवः ।। हिन्दिः। रहमहन्तुः॥

विमर्थः श्रु॰ विहात्रगा। ইতি क्रिशे-धत्रः॥

विनव की जात्रस्मिष्क हैं।
जब्भन विस्मयः। उर्देश में प्राप्त विस्मयः। उर्देश में प्राप्त के के कि कि विद्या के कि विद्या के कि विद्या के कि विद्या कि विद्या

विगवः পू॰ यर्तन्। इंडि ४**२**नः हन्दुः॥

विभवः जि निर्मानः। उट्मर्गागः। वीतः २। ইত্যमतः॥ भुमतः ०। ইতি भम्बद्रादधी॥ ठाकः। ইতি ভবৈ।॥

रिमलरामः श्ली निक्रोनिविक्तिः नगमासामः॥स्यार्कानमार्थसामकः । यथा। निज्यः निमिखिकः काम्यः विनवाः मान भी विजः । जहन्यः नियद किकिमीयर्ज रुन् का जिल् । अनुम्मिश्या क्वः जद म्याद नामा-गाय ज् निज्यः।। यख्न भारभागः-भारेश्य क मीयर्ज विज्ञाः करतः। विनिज्ञः जमुम्मिक्षः मानः मण्डि-वर्षेण्यः।। यभज्य विजित्याः। सभार्थः यद भूमीयर्ज । मानः जः काम्य माथ्याज मृषिण प्रस्म हिल् देकः।। (ज्ञमा नज्यर्जन मानः जः विभागः स्मृष्टः।। ইতি गाकर्ष्णः क्ष्मायः।।

विम्बानिः श्रु स्टिकः। हैि द्राजनिर्यक्तः॥

विगमा खी महना। जा पाइकरा

रेडि छाय। इंडाइनः । ज्याहर मः। इंडि प्यानिना। प्रिवी (जमः।
यथा। गृथाका विगमा कार्या मृप्य
सावन्त् वहुगा। गुजाकम् द्वादी
क कमलुन्द्रशा वद्या।। गुनामम् नात्का (प्रज्ञानाहा कर्नु नम् करिंद्रा। मिल्लक्क (सावन ब्राह्मी)
गृन् विक्वित । देडि (क्किल्बाण मद्द्रभद्रामना दिनिक्षण्डाण मद्द्रभद्रामन दिनिक्षण्डाण मद्द्रभद्रामन विजित्ताल कर्निकामस्य वामूप्तवस्य नायकः ।
विमना नायिका जम्य वामू प्रवम्य
कीर्विज्ञा ॥ इन्छ कानिकामुद्राप
५२ व्यथ्यायः ॥ इन्या व्यभद्रक्ष ।
छै० कानिकामुद्राप
छै० कानिकामुद्राप
छै० कानिकामुद्राप
छै० कानिकामुद्राप
छै० कानिकाम्य
विमना माम्रहाप्तवो इन्याम्य
गमाथस्य जित्रद्याः ॥ इन्छ जन्नह्रान्य
मानो ६२ भीर्विनर्गः ॥

विभवाञ्चकः) जि निर्मातः। इंडापद विभवार्थकः) होकायाः द्वायम् कृष्टः ॥ विभवाद्धिः भूः भञ्ज्ञयभर्वजः। इंडि (इमहन्द्रः॥

विमानः शुः अनुक्रमान्तः। उन्नु अङ्गुर्वाहिमान्तः। इन्नि किटि ॥ विमाना जी मान्त्रभन्नी। मट्मा इन्नि निवा मा क्रियमार्शि नम्न मा। यथा मृन्धिः। मानुः शिनुः क्रियान्त्रः न नम्बर्धाः यद्यमाधिकः। नमस्पूर्वाट खर्ताः भन्नीः जान्जान्ताः। याः विमान्जवः॥ मृन्ध्यभाराः। जिल्याः याः। यन्तः शन्धः विमान् विद्याः वृक्षा च नः किशि चिश्व नमम्पाः। इन्नि मन्नामञ्जुः॥ क्षाः। विमान् प्रका मन्जावशि शिनाम् धनः विनाश कर्न्वग्रदः। यथा वृङ्गानिः। विनाश कर्न्वग्रदः। यथा वृङ्गानिः। । शिल्व। त्रजाद जानुनाः विजाशः। मः भूपि शिशा ना ज् निवृत्त व क्रिमि को वर् । व्रिक्त मि मि मा । व्रिक्त स्वा मा ज् । व्रिक्त स्वा मा ज् । व्रिक्त मा ज् मा । व्रिक्त मा ज्या । व्रिक्त । व्

तिमाञ्बः भू भाज्मभङ्गोभूधः। जन्मग्रायः। देवमाद्ययः २। इ-ज्यमदः॥ देवमादः ०। इजि कर्षा-४दः॥

विमानः भू क्ली प्रविद्यशः। उद्-भर्यप्रायः। (वर्षामयानः २। इंडप्रमदः ॥ मार्बक्जीमण्डः॥ (वार्षकः॥ याः नमाजः। ইভি मिरिनी ॥

विमार्गः श्रु मयाङ्क्ती ॥ अर्थः
। विभूर्व मृज्यारका र्यक शुक्रायन
निज्ञमः॥

বিমক্তঃ ত্রি বিশেষেণ মৃক্তঃ। যথা। যে খনে ১ ধরবিন্দাক্ষ বিমৃক্তনানিন স্তাঃস্তভাবাদবিশুদ্ধ বৃদ্ধয়। আ-কৃত্যুণ পরণ পদে ততঃ পত স্ত্যংগা নাদৃত যুদ্দদদ্ধ যা ইতি।
জ্ঞাগবতে ১০ক্ষমে ১৪ অধ্যায়।।
ত্যক্ত:। বি পূর্ব মুচ্ধাতো: ক প্রত্যযেন নিম্নমঃ ।।

विम्किः जी विस्ताहनः॥ साकः
। यथा। शिज्यसम् । पिवि य ह
मूर्जाः स्वाज्यः काम्यक्ताज्यि
(को। भूनामकाः मकलिश्रुठा
मा विम्किनाय श्निक्ताः स्वा

वित्र्थः वि विह्मृथः। वित्र उः।
यथा। त्रागरेभः कल्लिं उ छु॰ इ बः
नान् मित्र थान् इकः। भाषः (गाः
भाष (यन माऽ म्डि त्रावा खद्राः
खद्रा।। ইতি পাল্মো खद्रथः अ भिः
व भू कि विकृ वा काः।।

বিমুদু: ত্রি পুফুল:।ইতি হেম-চন্দু:।। মুদুরেহি ভ্রম্চ।।

विस्माहन की मूबी क्वा १ । विमृद्धिः । वि भूव गृह्दात्वा बन्हे भुज्यत्यन निज्ञमः॥

दिरमाइन क्ली देविष्डिकित ११। दि शूर्व मूरुषाट्या द्वनिष्ठे शुरुरवन निक्षयः॥

বিমোছিত: ত্রি নোহযুক্ত:। নৃধা:
। যথা। ভাবপ্যতিবলোলভৌ মহানাযাবিমোহিতৌ। উক্তবস্তৌ

বরোশভো বি্যতা মিতি কেশব। ॥ ইতিদেবীমাহাত্ম্য।

विस्माक्रमः क्ली विस्माहनः। शक्ति-ण्डाक्रमः। यथा। यः धर्मकामार्थ विः मुक्ति कामा ज्वत्र हेश्वाः गठि मा-भू विश्व। किक्षानिषा ब्राज्जिन ए ध्रमव्ययः करताज्ञ स्म २ स्जून्स्या विस्माक्रमः ॥ ইতি জ्ञीजागवर्ड ৮) व्यद्यायः॥

दियः क्ली नुिविषः ॥ कमखन्ः। इंडि मः किछमात्रागानिवृद्धिः ॥ বিধিকাফল । তেলাজ্চা ইতি ভाषा। इंडि (मिनी।। (भयम) भर्गप्रायः। ত্তিকেরী ২ রক্তফলা ৩ বিধিকা ৪ পীল্পণী ৫ । ইঠ্য-, भद्रः ॥ ७ हो ७ विषी १। इंडि त्रज्ञगाना ॥ विचा ৮ विषक a বিশ্বজা ১০। ইতি শব্রহ্নাবলী।। অস্য গুণ:। পিত্ত কফ ছ र्फ् रूप ক্লাস স্ধনাশিত্ব । ইতি রাজ বল্ল ভঃ॥ অপিচ। বিশ্বী রক্ত ফলা ভূমী ভৃণ্ডিকেরী চ বিশ্বিকা।ওঠো পন্ফলা পোক্তা পীলুপণী চ ক-थार आविषीक मः सामू नी उ॰ एक পিত্তাসু বাতজিৎ। স্তম্ভন লেখ-न क्रा विवक्षायानकात्रकः॥ ইতি ভাবপুকাশ:॥

वियः भू की म्र्यान्स्मिखन । वियमः भू मार्यमः। इंडामद्रः॥ ইত্যমর: ৷৷

विषः भ् क्कनामः। इंडि सिनिनी विश्वक॰ क्ली हन्मुन्यं।मधन ॥ वि षिकाकलः। इंडि मदत्रञ्जावली ॥ विषका जी বিধিকা। ইতি শব্দ-ब्रङ्गावनी ॥

विष्ठिः भू॰ সর্ধ:। ইতি শদ **हिन्मुका**॥

বিষা জ্রী বিষিকা। ইতি শব্দ-ब्रङ्गावनी ॥

বিশ্বিকা জী বিশ্বণ। ইত্যমর:॥ চন্দ্র স্ঠ্যসপ্তল । ইতি শব্রহাবলী।। বিষী জ্রী বিশ্বিকা। ইতি শব্দর্য়। वनी॥

ं दिश्वः স্ত্ৰী গুবাক:। ইতি কেচিৎ।। বিষোষ্ঠ: > ত্রি বিদ্যাবিবগুষ্ঠৌ যস্য। विश्विष्ठः ∫ इंडि मूक्षवाषवाकद्रन•॥ বিষ্টারী পু• চিল্ল:। ইতি শব্দ মালা॥ আকাশগামিনি ত্রি॥ বিষ্ৎ দ্লী আকাশ। ইত্যমর:॥ বিষদ্গঙ্গা ञ्जी सर्गगका। ইক্য गतः ॥

বিযদ্ভতিঃ স্ত্রী অন্ধকার:। ইতি ত্রিকাওশেষ:।।

পু॰ সূর্য্য:। ইতি হারা वियम्मि निः वनी।।

मू:थ॰। ইতি স্বামী।।

वियाजः जि निर्लङ्कः। ইउन्नद्रः॥ वियामः भू॰ ज॰यमः। ইত্যমরः॥ বিযুক্ত: ত্রি বিষোগবিশিষ্ট: 1 বি পूर्व युक्त थाटाः क भुजायन निञ्जगः॥

विरयागः भुः विरह्मः। उर्भर्गा-য:। বিপুলম্ভ: ২ বিপুষোগ: ৩ বিরহ: ৪। ইভি হেমচন্দু:।। विरयागं जि विरह्मयुकः।

यथ।। विरयाग जारकालि न्लम्रल-माज उपनव माकामम्जाःम् माः নন । পিকেন রোষাকণচক্ষ্যা মূত: षर्क जार्य छ हम् रेवित्र गी।। इंडि रेनषदः ॥

বিযোগী পু॰ চক্ৰবাক:। ইতি শব-**हिन्द्रका ।। विरयागयूर्क जि ।।** বিযোজিত: ত্রি বিযোগপ্রাপিত:। दि পूर्व काष्ठ युव शालाः क भुजा-যেন নিস্ত্রন্ধঃ ॥

বিব্বক্ত: ত্রি বিব্বাগযুক্ত: ॥ অননু⁻ রক্ত:। যথা। জ্ঞাননিষ্ঠো বিরক্তো বা মন্ডকো বানপেক্ষক:। স্বলি-व्यानाभुया॰ खाञ्जा हरत्रपविधिरगा-চর: ৷৷ ইতি শ্রভাগবতে ১১ কল্কে ३८ व्यवग्रयः॥

বিরক্তা জী দুর্লগাইতি ত্রিকাগুল বিরজাংশ জী
শেষং । অননুকূলা । যথা । যাণ জটাধরং ॥
চিত্তথানি সততং নযি সা বিরক্তা বিরজা জী ক
লা চান্য মিছুতি জনং সজনোন্য রহুমালা॥ দ্
সক্তঃ।ইত্যাদ্যুক্তটঃ ॥
যথাতিমাতা

বিরক্তি: ত্রী বিরাগ:। যথা।
দেহো শুকু র্মন বিরক্তি বিবেক ছেতুর্বিভূৎ স্ম সন্তু নিধন সভতা ভূর্যদর্কণ। ভত্তান্যনেন বিমৃষানি যথা
তথাপি পারক্য মিভ্যবশিতো
বিচরাম্যসঙ্গ।। ইতি শ্রিভাগবতে
১১ ক্ষরে ৯ অধ্যায়:।।

বিরস্থ লী কন্তুষ্ট । ইতি রাজ-নির্ঘণট:।।

वित्र िछ: जि विश्वारण त्र िछ:।

किर्मिण:। यथा। अव श्री नह न्मणः।

वित्र िष्ठ श्री ममाशाना देक वीत्र

श्री गुण्या महन्मु हित्र छ अपुण्या हिन्दे ।

वित्र कर्ष्याः। इण्डा कि महाना देक ।।

वित्र कर्ष्याः। विश्वारण महाना देक ।।

वित्र कर्ष्याः। विश्वारण क्ष्या विश्वारण विश्वारण विश्वारण क्ष्या ।

क्ष्या स्वार्ण त्र क्ष्य स्वार्ण क्ष्या ।

क्ष्या स्वार्ण क्ष्या हिन्दु क्ष्या ।

क्षिः माक्षा । विश्व क्ष्य क्ष्या ।

क्षिः माक्षा ।

क्षिः माक्षा ।

क्षिः माक्षा ।

क्षिः क्ष्य विक्र क्ष्य क्ष्या ।

क्ष्या क्ष्य विक्र क्ष्य क्ष्या ।

क्ष्या क्ष्य विक्र क्ष्य क्ष्य क्ष्य ।

वित्रजाः जी विगठार्खवा। इंडि किंग्यतः॥

ন্ত্ৰী কপিখানীবৃক্ষ:।ইতি বিরজা রত্রমালা॥ দূর্বা। ইতি হারাবলী यगाजिमाजा। यथा। उँ८ भनाः পিতৃকন্যায়া বিরজায়া নহাব-लाः। यि ययाजिः स्र्याजि द्वा-याजिः शक्ता लुकः ॥ (उवा य-যাতি: পঞ্চানা মহাবল পরাক্র-मः । इंडि कोर्स्स २० **अ**श्रायः ।। 🗱 ।। 🕮 कृष्णमधी । मा द्रावाजः যাত্যক্রপুণা সভী সরিদুপাভ-वट । उन्धाः मध्यूञाः मध्रमम् मु अ अवन्। यथा। अकना রाधि-का नार्छः (गालात दी इतिः यगः । বিজহার মহারণ্ডে নির্জনে রাস-ন্তা মদৃষ্টা বিহায চ। গোপিকা॰ বিরজা মন্যা শৃক্ষারার্থ জগাম হ ।। मृक्षे। ठ बीहित खुर्गः विज्ञहात তথা সহ। তথাসক্ত শ্রীহরিঞ রত্নতাপ সংস্থিত । দৃষ্ট্রাচ রাবিং কান্যাশ্চ চক্র্ স্তাঞ্চ নিবেদন । **জ**-গান সহসা দেবী ত॰ রত্নওপ॰ मु(न।। हाद्र नियुक्त परमं हाद्रभी-नः भरना इतः। ७ मृताह क्या (एवी व्रक्तभक्षकात्माहनः ॥ मूत्रः शह शह

म्ब अञ्चलको कियत। कीप्मी ज्दनज्ञाः काहाः पुक्कानि छ८ शुः (जा बहु ॥ चुना (कानाइन मन् গেলিকানা ভ্রি: यग । জ্ঞাত্বা চ हाि छा॰ बाधा मन्तर्धान हकात्र इ ॥ वित्रज्ञा त्राविकाशकाय अञ्चर्धानः इस्त द्रिशा मृद्धे। द्राक्षाञ्चार्ज। जा छारो भागाण्ड (यागजः ॥ सन्) सञ मित्रु भः उहतीतः बच्व र ॥ व्याक्षक वर्नु नाकातः ख्या शाला-क स्मव ह । क्लिंहिरयाजन विखीर्न भाष्ट्र जिनियु भाव ह ।। दिस्स प्रमाखन॰ চাক नानावत्रकतः भवः। प्राथा वाजि शृह्र शङ्घा न एएणं इजि भूषा। विज्ञ-জাঞ্চ সরি দুপা• দৃষ্টু গেহ• জগাম সা । ञ्रिक्त्का विव्रकाः मृष्ट्रे। गति मुनाः लिया• मञी•॥ উहि करताम वित्रका-कीं क्रिनेविवासाइ हा । व्या विना-रः नुज्या कथः जीवानि मुन्दि ॥ नराविधाज्यस्वी ष् ज्व मूर्जिनजी সতি। পুরাতন শরীরণতে সরি-पुन ग ज्रमिक ॥ क्षान्याय हानः ছ বিধাৰ তনু ন্তন। আজগান হ-व तुगुः माकाम्। (वव मून्स्वी ॥ श भाउ॰ भागनाथ्य शमाजी वक्राम् या। जाक क्षायकी॰ मृष्ट्री (भूरा) ষ্ট্রেগ জগৎপতিঃ।। চকারালিঞ্

न जुर्ग ठह्य ह मृङ् मृङ्। नाना भुकात मृज्यात विभन्नी जारिक शृज् ॥ त्रश्मि (भूयनी॰ भाग्र हकात ह **णूनः भूनः। विज्ञजा मा द्रा**कामृक्ता **ध्व। वीर्य) मरमाधकः ॥ मरम्**रा वज्व **७रेबर धन्या गर्डवडी म**डी। उरशो তত্ৰ সুখানীনা সাৰ্ছণ প্ৰৈণ্ড সপ্ত-ভি:।। একদা হরিণা সার্ভ বৃন্দার-(१) जूनिर्जात। विज्ञहात्र मुनः भाष्त्री শৃক্যরাসক্ত মানসা।। এত্যম্বিভরে ত্র নাতঃ কোডে জগাম হ। अ-নিষ্ঠ পূত্ৰ স্তম্যান্চ ভ্ৰাতৃতি: পীডি-তো ভিষা॥ ভীত যতনয• দৃষ্টা ত-ত্যাজ তা॰ কৃপানিধি:। ক্রোতে চ-कात्र वाल॰ जा क्रका बाधागृह॰ रायो ॥ পুरवाध्य वालः ना नावी न म्दर्भाष्ठिकः शि्राः। दिननाश ज्नाः তত্র শৃক্ষারাতৃগুমানসা ॥ শশাপ ষ্বূত কোপাৎ লবণোদো ভবিব্য-ত। मामाभ महीन् वाजा क या छ মুচা রসাভলং ॥ শুন্ধা বিবয়ণং দর্বে পুজ্य धंत्ररीखनः । मधबील नम्-দ্যুক্ত সন্ত ভন্তু বিভাগসাং॥ ক্ৰিষ্ঠা-मृष्य गर्गाञ्च । विश्वन । विश्वन मूर्त । वर ণেক্ষু সুরা সর্গি দিখি দুক জলার্গা।। व्याख्याक कल भृष्यु । भग्रार्थक ভবিষ্যতি। ইতি ব্ৰন্ধবৈৰৰ্ভে শ্ৰীৰ্ফ

বিরহি

वित्रकः) वित्रकिः)

दिव्रग॰ क्री दीव्रगङ्ग॰। ইভি শব-व्रञ्जावली।।

विद्र उ: जि निवृद्धः। यथा। चाछ वित्र । ज्ञान क्षां जा जु जां जां निष्ठ चंवा । विद्रां जा २ स्टिंटा मुक्षेरहाकामुरम्य वाद्रि उ: ॥ देखि मुक्षवाषवताकद्वयः॥

वित्र जि: जी निवृक्तिः। उट्भर्या-यः। जाद्र जि: २ व्यवद्र जि: ० डेभ-त्रानः ८। ইত্যানরः।। উপর্নঃ ৫ विद्रानः ७। ইতি ভরতः॥

विद्रण क्षी मधि। ইতি द्राज-निघंषेः॥

वित्रनः जि व्यवकानः। कारु इंडि | ভाষা। उৎপर्यशयः। (१९ वरः २ | তনুঃ ৩। ইত্যমর:॥

वित्रविद्यान्तः वि वक्त मृविभिष्टेः। ७९ भर्गायः। भुक्तः २ भुक्तः ०। इंडि एक्स हम्मुः॥

वित्रधानुवा श्वी नूक्ष्यवाधः। यथा। यवाध कृष्णिका भागा मित जूक्छ-निकृता। वित्वभी छत्रवा ह मा। मा नूक्षा वित्रवा पुरा ॥ इंछि इहे।-थतः॥

वित्र इ: भू विरह्नः। उर्भग्रायः। विभूत्राष्ठः २ विभूत्यागः ३ वित्यागः ४। ইতি হেনচন্দুः ॥ इ।। वित्र ह वर्गनीयानि यथा। जाभः। निन्यागः । विद्या। सीनः। क्षाक्र जा। वर् भत्र ज्ला ताजि रिर्घाः। जागद्रगः। स्नी उल जिक्ठा ज्ञानः। ইতি क विकल्ल नजा॥

वित्रहिनी जी ङ्िः। ই ७ मदभाना। विरह्नविणिक्षे नाती। यथा
। त्रिङ: भु॰रमा वित्रहिनी निवः श्री
वित्रही हित्र॰। ह्या ह्या ह्या म्ह म॰भूग्छी कि॰ वज्व ह्याः मृथ॰॥
हि वुक्तविवर्त्व श्रीकृष्णक्षम्रथए७
८५ श्रवागः॥

ধিরছিত: ত্রি ত্যক্ত:। বিহীন:। যথা। অভিভূতকাবনত ত্যক্ত স্ত ন্যাৎ সমুজ্বিত । হীন বির্হিত कहा ध्रा

विज्ञश्ची शुः विज्ञश्चविमिष्ठेः। विष्या-গী। यथा। বিহরতি হরি রিহু স রসবসন্তে। ন্ত্যতি যুবতিজনেন সম॰ সথি বিবৃহি জনস্য দুরন্তে।। इेंडि जयरहरः ॥

বিরাগ: शुः व्यनमुद्रागः। द्रागम् न्धः। यथा । विषय्येष्ठजिनः द्रारमा মানসো মল উচ্যতে। তেম্বেব হি विद्रार्गा हि रैनर्गवार ममुमाइन उ॰ ॥ इंडि भागिन्छ उद्धुः॥

विद्रागार्हः जि विद्रागत्याग्रः। **७८ १**र्य्यायः । रेत्रक्षिकः २ । इंडि (रुमठन्तुः ॥

विज्ञाकः भुः विज्ञाहे। यथा। इन्मुभी वर्ताबुछ्यः भनत्वा भनमञ्ज्याः 1 अवस्त्रा दानमञ्जूषा विवाह सुः नभारत ७ ॥ ३७ वामरन ৮० ज्यायः॥

ত্রি দীপ্তিবিশিষ্ট: বিরাজমান: यथा। कठा कठारु मञ्जूमज्यकि निमानियांत्री विष्णानदी हिवल्लती विद्राक्रमानमूक्ति। भगक्तगक्तगः জ্বলন্ত্রণাটপউপাৰকে কিশোর-চন্দু:শথরে রতিঃ পুতি ক্ষণ মম।। है। 5 कामी थए अगदन क्उर छाबना

ধ্ত মুৎস্প্ট বিধ্তে অপি।। ইতি। বিরাজিতঃ তি লোভিতঃ। দীপ্তঃ। यथा। ञाञीव निर्मातः नातः नूर्यप्र ভাস विनिन्तकः। शतिकृउक मा-ণিকৈঃ হীরকেণ বিরাজিত। 11 ইতি বুক্ষবৈৰৰ্ত্তে গণপতিখণ্ডে ১০ অধ্যায়: 11

> विद्याहें भू• ক্ষ বিশ:। ইত্যনর:॥ স্লশরীর সমধ্যুপহিত চৈতন্যং। ইতি বেদান্তসার:।। 🕏 ॥ মহা-धित्राज्यभि र्यथा । भीनात्रायप উবাচ। অথ ডি:ম্ব। জলে ভি ৪ন্ यावरित्र दुक्ताला वयः। उठः न का-লে সহসা দ্বিধা ভূতো বভ্ব হ।। ভন্নধ্যে শিশু রেকশ্চ শাতকোটি त्रविशुं : । क्रनः (त्राक्यगानक छ कः भीष्ठि**ः** कृषा ॥ भिकृ নাতৃ পরিভ্যক্তো জলমধ্যে নিরা-न्यः। दक्षा ७ मः घनात्था (या मनः (मांक् भनायदः ॥ ज्वार ज्वा তমः (मालि नामा (मर्ता महावि-ब्राहे। भद्रमान् र्यथा मृख्याट भद्रः সূলাত্তথাপ্যমৌ ॥ তেজনা ধা ডশাংশো য: কৃষ্ণ স্পর্নাতান:। व्यादार्त्रा ९मः थ। विश्वानाः महाम् বিষ্ণু পু।কৃতঃ ॥ পুতে কে। লো-मक्षियु विश्वानि निश्विणानि छ। তস্যাপি তেখা সংখ্যাঞ্চ কৃষ্ণো

वक्त न हि कनः ॥ मृथ्या हिनुकमा शिख विश्वानाः न कराहन । वृशा विकृ निवारीमा उथा मःच्या न বিদ্যতে॥ পৃতিবিশ্বেযু সম্ভোবং বুকা विक् भिवास्यः। शाजावाष्ट्रस्तवाः कान्य नुकान्य भित्रकी विंउ।। या उ উদ্ভে'চ বৈঙ্গণ্ডো যুক্ষাণ্ডাদ্বহি রেব চাসচসত্য স্কুলম্চ শ্রমারায-(१) यथा।। यउ উদ্ধৃ क शामकः श्रकाणटाका दिया जनार । निजुः न जार्यक्रण के यथा कृष्य ख्याभार्य . ॥ मछबील मिठा लृथी मछनागत गःगुजा। উन्मकाणपूत्रवीलामःथाः रेमनमन्द्रिजा ॥ উन्दूर् वर्णाः मध লোকা বুদ্ধলোকসমন্বিতা:। পা-**जानानि ह मधाव रेक्टव**ं नुकाख त्नव हा। जेक्वं धवाया ज्यांका ভুবর্লোক ন্ততঃ পরঃ। ততঃ প त्र^{*} वर्लाका जानालाक **उ**ठ: পর: 🛮 ভত: পর স্তপোলোক: সভ্য লোক ভভঃ পরঃ। ভভঃ পরে। तुक्ताक उधकाक्षम निर्मितः ॥ এव• मर्ब• कृञिम**छ धन्ना छ। उन्न** मिव-**চ। उ**धिनात्म विनामण्ड नार्वशाः स्मय नाइन ॥ जनदुष्कर नर्बः विश्व मध्य मनिजाकः। निर्जी दैवः क्य (भारमारको मर्ड)। साथम्क्-

विभो ॥ পुতिलामक्ष्र वृक्षाकः পুত্যেক মস্য নিশ্চিত ৷ এযা স্-খ্যান জানাতি কৃষ্ণে হন্যস্যাপি কা কথা।। পুত্যেক পুতিবৃদ্ধাণ্ডে বৃদ্ধ विक् निवारमः। छिमुः त्काष्ट्राः मू-द्यागक्ष मःथाः मर्बेड गुज ह। पि-গীশাশৈহৰ দিক্পালা নজভাণিগু-क्षाहरा:। जूबि दर्गाफ हज्जात्र। १९९७ ধো নাগা শ্চরাচরা: ॥ অথ কালে চ म विज्ञाहे छिक्व • मृक्षा भूनः भूनः । ডিহ্বা**ন্তর 🕫 শূ**ন্যঞ্চন দ্বিতীযঞ্চ কঞ্চ-न ॥ विष्ठा सदान कुन्युक्ता क्रातार চ পুনঃ প্ৰঃ। জ্ঞাৰণ প্ৰাপায় তদ। म्(वं) कृषः भद्राभूश्यः ॥ छ। मनर्ग छरेवन बुध्वरक्याछिः सनाउनः । नदीनकवरणागः विजुषः शीठः वाजन•॥ **मध्य उ**॰ मुद्रनी**रु**उ॰ **७**॰ ত্তানু গুহকারক । জহাস বাল-क साक्षा मृष्ट्रा जनक मी धन्न ॥ वन उत्य मानी उत्था वाज्ञणः समायाहि-छ। मरमा छानगूकण क्रूर निभागापिरविकं**डः ॥ वृ**काशामः थ्यानिनाया छा दएम नयाविध । निकारमा निर्छय रेम्ध्य अर्खियाः वदः দো বরঃ ।। জরা মৃত্যু রোগ শোক भी छामिव छिन्छ। ज्व । इंड्राङ्का ह पक्करण गरामञ्ज[े] युष्कृत ।। विः ত্রুক্ত পুজনাল বেদাগন বর পরে। । गुनवानिहजूर्याङ कृष इंडाक्रतः ছয় ।। বহিজাবাত নিউক্ত সর্বিম্ন-रुत्र शत्र । मञ मञ् । उनारात কল্বামাস স পুভু:॥ শুগতা সন্বচঃ শুত্রা নিবোথ কথ্যানি তে । পুতি-विष्येषु यक्षित्वरा प्रमाजि विकथ्त-জনঃ ৷৷ তৎ বেডেশাংশ বিষ্থিণো नित्याः शक्षम्णम् देव । निर्श्वनम् । इन रेक्टर भित्र भूगं उमम् ह।। रेनरव-(न)न ह क्षण निष् कि कि क्ष भूरणा कनः। यत्यत् कता कि रेनत्वरः। यस्य सर्वात साजनः ॥ **म** ह थाम**ि ७**९ गर्बः बाच्ची मृष्टेत जून र्जदर । उक मख्य वत्र प्रता र म्याह श्र विख्या वत गनाः किभिडेख उत्म तु हि एका-मि ह। कृष्मा। वहनः भुद्धा उ म्वाह महाविद्राहे॥ अम्रत्या वालक छव বচন সন্থোচিত। খ্রীমন্থাবিরাত্ বাচ। বর মে বৃৎপদান্তেরে ভক্তি ভ্ৰত্ নিশ্চলা। সম্ভত যাব नागू (पर्य ऋषः वा जू हिद्रः हि वा॥ द्य-ভক্তিযুক্তো যো বালে। ত্রীবভুক্তশ্চ गष्ठकः। दक्तिक्शिता भूथंक जी-বন্দপি মৃ:ত। হি স:॥ কিন্তজ্জপেন **७भग।** यङ्कन भू**द्धानन ह ।** कृषः ভিক্তিবিহীনস্য মুখস্য জীবন বৃথা

॥ যেনাজ্বন। জীবিতশ্চ তমেব নঞ্চি मन्राउ । यावनाजा भावीत्व । शिष्ट তাবৎস শক্তিসংযুত: ৷৷ পদ্যান্মা-প্তি গতে তিমান্ ন ম্বতক্তাক্ত শক্তনঃ । সচ ত্বাঞ্ মহাভাগ সর্বাত্মা পুক্-তে: পর: ॥ ষেদ্বাম্যক্ষ সর্বেভ্যো ৰুক্ষজ্যোতি: সনাতন:। ইত্যুক্ত্বা বা-लक खब विद्रताम ह नाद्रम ॥ डेवाइ क्षः भुजु।कि॰ मधुत्रा॰ णुजि मून्त-রী•। ঐক্ফ উবাচ। সুচির• সুস্থির॰ তিষ্ঠ যথাহ• ত্ব• তথা ভব। বুক্দ-ণো হস খ্যুগাতে চ পাত স্তে ন ভ-বিষ্যতি ॥ অ'শেন পুতিবুদ্ধাণ্ডে ত্বঞ্চ ফু দু বিরাড্ভব। তমাভিপদ্মে বুকা। চ বিশ্বসূপ্টা ভবিব্যতি ॥ **ললা**-, ढि तुक्त गरेक्टव करू। रेक्टका मरेका वृश লিবাণলেন ভবিষ্যন্তি সৃষ্টিসঞ্চার-ণাব বৈ ॥ কালাগ্রিফদু শুম্বেকে। বি-শ্বসংসার কারক:। পাতা বিঞ্চ বিৰ্যী ক্ষুদাংশন ভবিষ্যতি ৷৷ ম-ভক্তিযুক্ত: **নতত**• ভবিষ্য**নি** বরেণ মে । ধ্যানেন কমনীয়া মাণ নিভ্যা দুক্ষ্যসি নিশ্চিত ।। মাতর কমনী-याकः मन वकः इन इ जाः। यानि লোক তিম্ব বংসেত্যক্ত্বা সো ২ন্ত-त्रधीय**छ ॥ भद्दा** ऋलाक गुकापः नस्यः न উवाह र। मुक्षायः मुद्रेभीः

भाक मःइवाद्रक उटक्रनः॥ छीक्ष উবাত। সৃষ্টি সৃষ্টু গছ বৎস নাভি পদ্মান্ডবো ভব। মহাবিরাল্লোম-क्ल कुम्मा ह विष भृग्।। गह द८म भशाप्तव तुक्क जालाच्छावाः **ख्व। व्याप्ति व महाजात स्रक्** স্চির॰ তপ:।। ইত্যুক্তা লগতা। না था वित्रद्राम विधि उठ:। क्षणाम বুহ্মা ত॰ নত্বা শিবশ্চ শিবদাযকঃ॥ মহাবিরাল্লোমক্পে ব্রহ্মাণ্ডে গো-लाक खाल । वज्र व विद्रारे कापुर विद्राउ । महासा यू-বা পীতবাসাঃ শ্যানো জলতল্পকে। देवकानाः भुमनारमा विश्ववाभी জনার্দ্দন:।। ভন্নাভি কমলে বুক্ষা ব **ज्वकमत्नाज्यः। म•ज्यभ**ाम ७ बज्ञाम यूगनक्षक ।। नाउ॰ जगाम দণ্ডস্যপদ্মনা ভস্য পদ্মক:। নাভি-জন্য চ পদ্মস্য চিন্তা মাপ পিতা **७**व ॥ बङ्गात भुन द्वागञ्ज म्रास्त्री क्षे: भराष्ट्रकः। उत्ता परणं क् मुन्ड॰ कारणन मिव्यक्ष्म्या ॥ भयान॰ হলতল্লে চ বুন্ধাণ্ডে গোলকাবৃতে ॥ यह्माभक्ष्य वृक्षा ७ ७ ७ ७ ० পরমেশ্বর•। ত্রীকৃষ্ণ ঞ্চালি গোলো ক গোপ গোপী সমন্বিত।। ত সংস্থা বর পুণাপ ততঃ সৃষ্টি ঞ্কা-

র সং। বভ্রু বুজিণঃ পুতা মানসাঃ সনকাদয:।। ততো ক্দুা: কপালা-ष्ट मिवारेमकारम मृजाः। वज्र भाजा विकृष्ठ कु पुत्र। वामभार्थ उः li চত্ ভু জ শচ ভ গবান খে তদ্বীপ নি বাসক্থ। ফুদুস্য নাভিপদ্মে চ বুক্ষা বিষ্ণু সমজ্জ চা। মর্গ্য মর্ত্যঞ্চ পাতাল বিলোক সচরাচর ৷ এব नर्बः (लामक्रम विषः भुष्ड)क म-व ह ।। भुजि वित्थं क्यू मुविद्रारे वुका বিফু শিবাদয:। ইত্যেব কথিত वट्म बिक्ष की खंन भन्न।। मूथर নোক্ষদ সার কি ভ্য শ্রেভ্ মি-इमि ॥ इंडि वुक्तरेववर्र्ख भुक्डि-थएं ७ व्यव्यायः ॥ 🗱 ॥ सायस्युवननुः । যথা। গভেষু ভেষু সৃষ্ট্যর্থণ পুণামা-বনতা নিমা । উপথেমে স বিখা আঃ শতক্পা ননিনিতো ।। সমূত্ৰ ত্যাসাৰ্দ্ধ মতিকামাতুরো বিভূ:। नवङ्जा • ठकान (त्व: क्यावारत्रने · निहरत्र ॥ यावहद् भक् हिवाः यथाः नाः भाक्षा बनः। उउः कालन মহতা ততঃ পুণ্ৰো ভবন্মনুঃ॥ স্বাৰ মূৰ ইতি খ্যাত: স বিব্লাডিতি ন: म् उ॰। उपूर्ण ७० जामान्। विश्रु ক্ষ উচ্যতে।। বৈরাজা যত্র তেজা-তা বহব: শ'সিতবুতা:। স্বায়ন্ত্ৰা

गहां जागाः मध मध जवा भारत्।। बाद्राहिवार्गः गर्ख ७ वृक्ष जु न्ताः यक्षियः। ঔভिমপুমুখা खद्याचा॰ दः मक्षामा १४मा ॥ इंडि मार्मि ७ व्यक्तायः॥ विद्रारिः भू (मनवित्नयः। ইতি भद्रज्ञावली ॥ उप्प्रभीयद्राजा। यथा। অब म्रा महिशामा जीमा-क्कू न मन। यूवि। गृग्धारना विद्रारिक জপদশ্চ মহারথ:।। ইতি 🕮 ভগ-वनगीजायाः) व्यश्रायः ॥ **णुः** दाबगरेः। ইভি বিরাটক: र्मिट्युः॥ विवारिकः भू विवारितमीयशेवकः । उ< পर्यायः । द्वाक्र भर्छः २। द्वाः জাবর্ত্ত: ৩। ইতি হেমচন্দু:॥ বি রাটরাজজাতে ত্রি॥ विद्राभी नु रखी। इंडि मद्माना वित्राथः भू॰ ताक्रमञ्जरः।यथा। লক্ষণস্য ভু ভদ্বাক্য শুন্ধা রামণ ততো বুবীৎ। পিতা মে ভূৎ সূপ ৰ্জন্যে মাতামে চ শতক্ষতা॥ বি वाध इंडि मा माइ পृथिवता मर्व बाक्नाः। उटम्बा भूमना स्मनाः भनारवजाः भनाष्ट्राची ॥ **उह**्या রান মাহেদ লক্ষণঃ কি পুতীক. সে ৷ ইত্যুক্ত্বা লক্ষণো বীর আনম্য

সুনহন্ধনু:।। উৎসমর্জ শর• ধোর• कालम्खार्थमः उउः। उह्दीद्रः गराकाय छिद्रा भाजान मावि-**শ**ে।। পপাতাশু গতপুণে: সফে-ন ক্ষিক ব্যন্তিতো হসৌ রাম मार्कर भाक्षि विनयानिजः॥ जुनुक नीम गन्नर्दः भुविश्वा त्राक-भी जन्। অভिশাপাদহ (धात नारका देवनुवरान देव ॥ भुजान्यमान नः न भवा भावहन्माः भूनः भूनः । यहा हामद्रथी द्वारमा ভবিব্যক্তি **गहादलः ॥ भाभमाऽास्त्रा ভ**िद्यहरू ত্তে তেন রামেণ সংযুগে। পুসাদা-खर मूरकारु गमियामि समाव-यः ॥ इंडि वङ्गिन्द्रात मूर्गनथा कर्गनामिकाटकर्जन नामाधायः॥ বিরাধন লী পীড়া। ইতি শদ-ब्रद्भावनी ॥ বিরাধান ক্লী পীডা। ইতি শন্দ-রত্নাবলী।। বিবাধানমিভিচপাঠ:॥ विदासः भः भिरः। निवृज्धिः। वित्रि । उट्भर्यायः। व्यवमानः ২ সাতি: ৩। ইতি জটাধর:॥ মধ্য• ৪। ইতি ত্রিকাগুশেষ:।। পরবর্ণা-ভাব:। ইতি ব্যাকরণণ।। বিরাল: পু• বিডাল:। ইভামর: **ोका** ॥

বিরাবঃ পৃং শবং। ইত্যানরং॥ বিরাধী ত্রি বিরাববিশিপ্তঃ। বি রাবো বিদ্যাত হল্যেতি ইন্পুত্য-যেন নিম্নমঃ॥

বিরিক্ত: ত্রি ক্তবিরেক:। যথা।
দুর্বিরিক্তস্য নাভেন্ত শুরাতা ক্রকিশ্লক্ক্। পুরীষ বাতসঙ্গদ কণ্ডন্তল গৌরবং॥ ইতি ভাব-পুকাশ:॥

विदिकः भ्रं तुका॥ विक्यः॥ णिदः
। ইতি শবর হাবলী॥

विदिश्वनः भू॰ तुक्ता। ইভি হেন-চন্দু:॥

वित्रिष्टः भू॰ मियः॥ विकः॥ वि थाजा। ইতি मदत्रदावनी॥

বিরিক্ষ: পু॰ স্বর:। ইতি নৃক্বোধ-ব্যাকরণ ॥

विक्षः जि विद्राधिविणिष्ठः। यथा।
विक्षः वर्षम्यवारम् ज्यमाः नाटः
नवर्षा हृषः। ইতি জৈনিনিস্তাং।।
विक्षः छक् वाक्रमा यहज ज्ञिनिठः नया। তথ क्षण्यताः वृदेव द्वव
मृजि ज्ञुवृद्धः नया।। मृजिउद्धः
शुनाहाहयिक्षः वर्ष्णाविणः।
छगरामान्तारम् ज्ञाहिष्णाहिज्यः।।
हिक्षः जि जङ्गद्वाः।। जाउः।

इंडि (मिरिनी ॥ व्याः ताङ्गिविणिकः । यथा। मञ्जा हिं डिम्गाः भूता मिरि विश्व कि विष्य कि विश्व कि विश्व

विक्षः क्री शिश्वनीम्नः। इंडि ब्राइनियंन्डः॥

विक्षभः जिं घटिता । सक्षभः।
यथा। विक्षभागा जिल्ला विकास । स्विन्धा नाम स्टना भूर्वकः हि यट । भूर्वभः मान
भाषा जा भनू भूरु जैमारु ।।
इंजि द्वाम उर्कवा भी भाः॥ सार्थिक
विक्षभक भाः।

বিৰূপ: পু॰ সুননোরাজপুএ:। যথা
। জাতা: সুননস: পুত্রা স্ত্র্য: শূরা
নহাবলা: । সুনতিশ্চ বিরূপশ্চ
সত্য: শাস্ত্রার্থ পারগা: ॥ ইতি
কালিকাপুরাণে ৯০ অধ্যায:॥
বিৰূপা স্ত্রী দুরালভা॥ অভিবিধা
। ইতিরাজনির্ঘণ্ট:॥

विक्रभाकः भू भिवः। ইত্যমরः॥

कृष्टिनः। ইতি জ্ঞ । । তুস্য

भूती जुत्मद्रा निर्श्वादकार वर्ड्द ।

ग्रेशा । उथा हजूर्थ निर्शाण निर्श्वा ।

जाविभटिः मुजा। नामा क्षावणी

नाम विक्रभाक्तम्य धीमजः॥ ইতি

बादार कृष्णीजा॥

विक्रिका छी अक्षा। यथा। नाग्नयः भिन्नदिन्दश्चिन यड्डा न छ-भा•िन छ। न छ मुख्ति• क्रिक्षित्र। या छ कन्ता विक्रिका।। इंज्युवाइ-छजु•॥

ভৰু•॥ বিৰাপী জাহকজন্তঃ। ইতি त्राजनिर्देषः॥ क्रुनिरिश्रे जि॥ বিরেক: of• मनाज्यः । उट-পर्य)।यः। (ब्रह्म॰ २ (ब्रुक्ः ७ (ब्रह्मा ৪ বিরেচন ৫। ইতি শবরত্বাবলী ॥ भुकन्तन ७। ইতি রত্নমালা ॥ বিরেচকঃ वि রেচক:। বিরেক-कात्रकः। जात्रकः। भन्यत्वरकः। জোলান ইতি আরবী ভাষা। বি পূর্বক রিচ্ থাকে৷ বুন্ পুত্যয়েন नियमः। इंडि विरादः।।

निरंत्रहन की विरंत्रकः। इंडि मद्मत्रद्वावली ॥ उद्यात्रकोषधः यथा।
हत्रीठकी सम्बद्धा मध्या सह (शः
विजा। विरंत्रहनकत्री कृष्ट खरेडी कि
न सः मगः॥ जिकला हिज्रकः हिज्रः
विश कृष्ट्रेकर्त्वाहिनी । क्रेक्ड सहः
रत्ना एए य के खम्छ विरंत्रहनः॥ व्यशिष्ट । जिकला वस्तः नुष्का शिश्यः
ली ह विरंत्रहक्द । हत्रीठकी साः
क्षिनीत्रा लाग् क्ष विरंत्रहक्द । इंडि
गाक्र क्रिक्ट । भ्रीजिकी शाः

जन। हा जथ विद्याहनविद्यः। शिक्षः बिशाय वाङाय मन्त्राट मन्त्रियातः हनः। অवास्तर द्वः मुखा गुर्नी॰ छाष्य कराः ॥ मनतान श्रीवर वर्गाङ्जनयमा भुवाहिकाः। जय বা পাচনৈ রাম বলাস পরিপা-हरवर ॥ व्यन्तानान्त्रविक कार्य्य শোধন শীলবেছুব:। আভ্যধিকে भागम करहे ॥ भिख विद्रहम् युक्षानात्माम्ल्ट गत्म उथा। छेन-রে চ তথাপ্মানে কোপ্তশুদ্ধৌ বিশে-यकः ॥ रावाः कनाहिर अभाजि जि**ं न**हुन भारतिः । भाषतिः শোধিতা যে ভূন তেষাণ পুন কক্ত ব: ৷৷ বালো বৃদ্ধো ভূশ স্থা ক্ষ ভ कीला ভगानिजः । भाउ उपार्वः ज्वफ गर्डिनी ह नवज्ञी।। অংখাগ রক্তপিভী চ ন বিরেচ্যা বিজ্ঞানত।। নবপুস্তা নারী চ মন্রাগ্রিশ্চ নদা-ত্যথী।। শল্যাদিওক্ষ ৰূক্ষক ন বি: রেচ্যা বিজানতা। জীণজুরী গর-ব্যাপ্তো বাতরক্তী ভগন্দগ্রী॥ অর্শঃ পাণ্ড্দর পুছি হুদ্যোগাক্চিপীডি-তা:। यानिद्राग পুরে হার্ভ ওন্ম প্লীহ বুণাৰ্দ্দিতাঃ।। বিজ্ঞাধি ছদি বি-स्माप्ते विज्ही अह जःयुखाः। कर्न ना-সা শিরো বক্ত খদ নেট্রান্থাবিতাঃ

। প্লীহ শোথাফিরোগার্তা: ক্মি काव्राननार्षि जाः। म्निता मूबः ঘাতার্ভা বিরেকার্হা নরা মতা: ॥ বহুপিত্তো মৃদু: পোক্তো বহুপো-মাচ মধ্যম:। বহুবাত: ক্রুর কোঙো দুর্বিরেচ্যঃ স কথ্যতে ।। মৃদ্রী মাত্রা ম্দৌকোঙে ম্ব্যকোঙে চ ম্ব্যমা। ক্রে তীক্ষা মতা দুবৈ মৃ দু মধ্যা ম-जीक्दिकः॥ मृनु मुर्गका भग म्ह्यू टेड-লৈ রণি বিরিচ্যতে।মধ্যম ব্রিবৃতা-ভিক্তারাজগৃকৈ বিবিচ্যতে।। কুর: **जुक् भगमा (इमकी दी पडी कना दि-ভि:।** हक्षुरेजन भित्र छरेजन । त्राजः वृक्षः धनवरहद्रा। (इसकीद्री हाकः । म्डीकृनः वृष्य डीकृनः स्यभान ইতি পুসিদ্ধ।। মাছোত্তমা বিরেক-স্য ত্রি:শদ্বেগৈ: কফাত্মিকা। বেগৈ র্বি:শতিভি র্যধ্যা হীনোক্তা দশ বে-গিকা।। দ্বিপল শুেষ্ঠ মাথ্যাত ম-थ्यम् भव • ज्राव । भनार्कक क-यायाना कनीयस विव्यवन ॥ कन्न (मारक हूर्नानाः कर्य मध्याजाऽ (वह उ:। कर्षषर भल वाभि व्यादागान्। পেক্ষযা ।। পিত্তেন্তেরে ত্রিবৃহূর্ণ দু।-ক্ষাক্বাথাদিভি: পিবেৎ। ত্রিফলা ক্বাথ গোম্বৈ: পিবেৎব্যেষ ক্কা र्षि उ:॥ जितृ ८ रमक्षव मुधीना पूर्व

नरेमः शिर्वमद्रः। वाजार्ष्मिरजातित्रः काय काञ्चलानाः द्राप्तम वा।। अद्रशुः তৈল' ত্রিফলাকাথেন দ্বিশুণেন বা। যুক্ত পীত প্ৰোভিৰ্বান চিন্নেণ বিরিচ্যতে ॥ শী ঘুমেব বিরিচ্যত ইত্যৰ্থ:। ত্ৰিবৃতা কোটল বীল পি-श्रुनी विश्व(ভरजः । সমৃদ্বीकात्रमः क्षोपु॰ वर्षाकाल विरव्छन ॥ जिन् पूर्वाणाञा गुळ नकर्रवाहीहा हन्हः ন॰। দুক্ষামূনা সপ্য়াস্থ॰ শীত **ल** र घना ७, त्या । ऐ ही हु । वाना । चनाज्यस्य भवस्य। शिश्रनी नागवः সিকু**শ্যামা** ত্রিবৃত্যা সহ।। লিহাৎ ক্ষৌদ্রেণ শিশিরে বসন্তে চ বিরেচনণ শ্যামা কৃষ্পা উ। ত্রিবৃতা শর্করা হু वा। श्रीयकारन विद्यहन ॥ अভया মরিচ শৃতী বিডঙ্গামলকানিচ।পি अनी निश्ननीम्न पुरुषण म्यु सम् চ।। এতানি সমভাগানি দম্ভী তু দি **গুণা ভবেৎ। ত্রিবৃত্তাষ্টগুণা** জ্ঞেশা **ষ ए** छना वाज मक्त्रा॥ मधुना सामकान् क् द्वा कर्यनाजान् भुमानजः। वरिककः **ভक्ষ (यथ भू। जः भी** उक्षान् भिविद्धः ল।। ভাবদ্বিরচ্যতে জন্ত র্যাবদুক। ন সেবতে। পানাছার বিছারেষ্ ভবে विर्यञ्जनः गरा ॥ विवसङ्ग मः न्ताविभाञ्चकाम जगन्तवान्। मुनान

क्ष रक्षार्मा गल गर्शाम्त्र जुनान्।। বিদাহ প্লীহ মেহাণচ যক্ষাণ নয-नामयान्। वाज्यदानाः ख्याध्यानः म्बक् हानि **ठामात्री ।। श्र** शार्खाः क् ज्वन जाड्डा एत्रक्ष कारय । अ-**७७॰ भीननारिया॰ शनिजानि शु** ণাশ্যেৎ। অভ্যানোদকাছেতে র সায়ন বরা: মৃতা:। অ ভ্যামোদ-काর সায়ন:।। 🕸 ।। श्रीजा विद्रहन॰ भी उकरेलः म-मिह्य हक्ष्मे । मूर्गिक किक्षिमाञ्चाय जाचून• भीनरयम्बद्र॰॥ নির্বাভক্তে। ন বেগা॰ চ্চ ধার্যেল শ-যীত চ। শীতামু নস্শেৎ কৃপি-काक्षनीतः भिरवग्रृहः॥ वनारमी-यथ भिजानि वायु वी एउ यथा वुरक्र । রেকাত্তথা মল পিত্ত ভেষজ চ करका वुरब्र ॥ मृर्वित्रिक्न मा नार्ज्य उद्धा । स्वाक्ष भ्वक्ष । भूतीय वाज সঙ্গদ কণ্ড্ মণ্ডল গৌরবং।। বিদা-হো হকচি রাধ্যান• ভুম শুর্দিশ্চ জা-যতে। ত॰ পুনঃ পাচনৈ: সেইছে: পজ্ স স রহা রেচারে ॥ তেনাসেরাপদু-বা যান্তি দীগুাণ্নি লঁঘুতা ভবে**ৎ**। বি **प्रकम्रा**जित्यात्मन मृही जुन्तमा खः प्तर ह ॥ भून क्कां ख्या गः न्या-মা•স ধারণ সন্তিভং। মেদোনিভ• জলাভাদ॰ ব্লক্তঞালি বিবিচ্যতে ॥

তস্য শীতাষুঁভি: সিজ্বা শরীর• ত ख्नापू ভि:। नषु भिर्मु खवा मीठि: काরবেঘমন মৃদু ॥ সহকার বৃচঃ कल्ला मधा भोवीद्राक्त वा। शिक्षा নাভি পুলেপেন হন্ত ভীসারম্ল্ণণ।। भोवीत्रख यरेव द्वार्यः भरेकु दी विख्वी कृ उ॰। भोवी द्र॰ मञ्जान। आकः की-त्र· त्रमकाि रिविष्क्रत्र· हाद्रिग· उथा।। শালিভি: ষপ্তিকৈ স্তল্য নস্রৈ র্বা-পি ভোজ্যে । বর্ত্তিকা লাব বিকির কপিঞ্জলক ভিত্তিরা: ৷৷ চকোর ক্র-कत्राम्याक विश्विताः मगूमाञ्जाः। কপিঞ্জল ইতিখ্যাতো লোকে ক-পিশভিভির: ॥ ক্রকর: কএর ইতি लाक । इति खामुवर्गमाः । भी-रेज: সংগাহিভি দু´ रेग्डा: कर्ग्डाट् **স**॰ गुइन जियक्। लायत मनमञ्जी-বনুলোম॰ গতে ২নিলে॥ সুবিরিক্ত॰ नद्र • ज्जादा भावन भाष्यविभि । इन्त्याना वन वृत्तः भुनाता व-क्रिनीधा। भाज्रेष्ट्यं। वयर एयं। ভবেদ্রেদ সেবনাৎ। পুবাত দেবা॰ শীতামু স্নেহাভাঙ্গ মজীৰ্ণতা ।। ব্য-वाय॰ रेमथून॰ हिव न स्मावं विदन **63:1 मालि यशिक मून्गारेए। येवा**-গ্ ভোজ্যেৎকৃতা ।। জহ্বল বিষ্কি-त्रोगाः वा द्रोताः भारत्यामनः श्रिजः।

ভ্রিণৈন স্বরস্ব্যবাভাবুম্গ নাত্ কা: ॥ রাজীব: প্রত শৈহব জন্ধালা সরভাদয: । ইতি ভাবপুকাশ: ॥ বিরেচন: পুং পীল্কুফ: । ইতি রাজনির্ঘট:॥

वित्रकः भू नम्माञ् । ইতি धनः छगः॥ (त्रकन्नुगण्यः॥

বিরেভিত: ত্রি শব্দিত:। বি পূ র্ক্ত রেভ ধাতো: ক্ত পুত্র্যেন নিয়ম:॥

বিরোক লী ছিদু । ইতি ত্রিকাও শেষ: ॥ সূর্য্যকিরণে পু । ইতি হলাযুধ:॥

বিরোচন: পু॰ স্থ্য:॥ অর্কর্জ:।
ইত্যনর:॥ পুত্লাদতনয:॥ অগ্ন:॥
চল্য:।ইতি নেদিনী ॥ রোহ্ তক:
বৃক্ষ:॥ শ্যোনাকপুতেদ:॥ ঘৃতকরঞ্জ:।ইতি রাজনির্ঘণ্ট:॥

বিরোচনসূত: পু॰ বলিরাজা।
ইতি তি চা গুশেষ:।।

तिखायः शुः मनुना उद्भग्रायः
। तिखः २ विष्वयः २ । इज्यादः ॥
व्वयः ६ (वगगः ६ । इज्यादः ॥
वनी ॥ सनुन्यः ५ मनुन्यः १ ।
इजि क्रिष्वः ॥ भग्रव्या ५ विः
वावनः २ । इजि मःकीर्ववर्णं सम्बद्धः
॥ न्यायम् उ मासुव्याभका स्वयः

তিযোগিত্ব। ইতি চিন্তামণিঃ॥ সাধ্যাসমানাধিকরণ্য । ইতি দী-विजि: ॥ 🛪 ॥ विद्याश्वत्राण (मार्वा यथा। व्यथ भूधः (त्रगुका ना कृता স্নেহাৎ স্ব বক্ষসি। উবাচ কিঞ্চি দ্বচনং **পরিণাম সুথাবহং ॥ অ**বি-(द्रार्था ज्वारक्षी ह मर्बमक्व मक्-ण । विद्याद्या नाणवी ज्ञ भार्ता-भपुर कात्रण ॥ अकर्ज्यम विद्या-थण नाक्तिः क्वबिराः **मह।** भु-**ভिজ্ঞा हिया कर्ज्या मधीय वहन** मृत् ॥ इंछि वुक्तिवदर्खं गनभिकः থণ্ডে ২৯ অধ্যাথঃ।। 🕸 ।। অপিচ । न ऋर्गाप्रङ्जिः मार्जः विद्यार्थः वः क्षु उथा। याजानः भु उक्तानि পরেষা ন সনাচরেৎ।। ইতিকৌ र्प्य डेशिव ভাগে ১৫ অখ্যা यः॥**#**॥ পু ভবাদি বস্তি সংবৎ সরাস্তর্গত এয-क्चि भवर्ष । यथा ভবिষ্যপুরাণে । रिज्यव डेवाह। वियम इ॰ जगर मर्ब॰ विद्यार्थ ভयम' श्रवः। विकाबी म-र्बा १ भारा मन वाका नामा থা। ইতি জ্যোতিস্তন্ত্রণ। #॥ খ रेनल्डः। विभन्नी जार्थः। यथा। भाजि মৃতি বিরোধে তৃ শুতি রেব গরীয় भी। अविद्याद्य भना कार्यप्र[•] आर्ख• বৈদিকবৎ সতা।। ইতি সূতি:।।

विव विद्यायन की विद्याय: 1 इंड्रागत: 11 विन: বিরোধিনী .জী বিরোধকারিকা। যথা। বিরোধ । । ককতে চান্যা দম্প (छा: शीयमानरवा: । वत्राः मूक् माः शिखाः ग्रैंबः मात्र्रारिकण गा ॥ विद्राधिनी मा उनुकाः कही उ वनिकर्मना। इंडि मार्क्ए यमुद्रात দু:সহবংশোৎপত্তিঃ।। বিরোধী পু॰ শত্রঃ।ইতি হলা युवः॥ शु छवानि वश्चि म॰वट मद्रा-ন্তৰ্গতত্ৰযোৱি শ্বৰ্ব। যথা ভবিষ্য পুরাণে। ভৈরব উবাচ। ক্ষমণ্ডিপু वना (ना का बात्न) यथी शुक्री छन्। कायछ पानुख कड़े॰ विद्यादिनि नः मन्यसः ॥ इंडि (ब्राइडिसब्रू)॥

বিরোখনিশিষ্টে ত্রি॥ বিরোখ্যেক্তিঃ জ্রী পরবচনবিরোধি वहनः। उद्भवीषः। विभूवाभः २ विद्यापवाक् o कार्याकिः s भू-वाशः ६। ইতি नदत्वावनी ॥

বিল শ ত্রো। ইতি কবি হল্প-क्यः॥ छ्छि दिह आहारनः। न বিলভি বস্ত্রণ লোক: পরিদ্রাভি रेजार्थः। (विन्जा। व्ययः देकाण्डसः गन्। इंडि पूर्गामानः॥

ियः ही हिम्। ইত্যमदः॥ छन्। । इंडि (मिनिशा

উहि: मुवाइय: । इंडि নেদিনী।। বেডসঃ। ইতি শব্দ-ठिनिका ॥

विश्वकात्री भू॰ ग्यकः। इंडि त्राङ-िर्घन्छैः॥ गर्खकात्राक वि॥

ही नधः। यथा। मस्त्रा १वनगुः विनगुः मधासा १० कृषः कि:। इंडि (इमहन्मु:।। क्रम्रवः। । यथा। लाहात वा विवाद वा त्य शुरा विधिन्हकाः। शृहत्यदाम् शु-যত্নে প্রিভাঃ মঃ শুভাবহাঃ॥ (गाउदा स्वाम्प्रशक्ता प्राव-मानि। विज्ञाः कमनः । इंडि ग'कात्रजनुः ॥ स्मराहिनद्गराजः। यथा। मुजुर्कार्कवाद्य छ सृमू कि-शुद्ध (व यू छ । णू छ ब्रामि दिना ११ छ শু ভ শান্তিক গৌণ্ডিক।। ইতি দী-পিকা।। সংলগে ত্রি। যথা। বিলগ্ন• न खिया॰ मध्या विषु माञ्जानावः (क। इंडि (मिनी।।

विवद्धः वि वद्धात्रिष्ठः। नि र्लब्हाः। यथा। जनय गज हित्ताण-শৈশবে সৌথ্যভাগী ন ভবতি कज्ञागी योवत व्याधियुकः। बनयां मंड दाकः निर्वयः नागानिः षा চপলगे ७ विगक्तः क्वकर्मा ষচেল:।। ইতি জ্যোতিষে পঞ্ম- স্থানস্থ রবিফল ।।

বিলপন ক্লী বিলাপ:। ভাষণ । বিপূর্ব লপ খাতো: অনট্ পুত্য-যেন নিয়ন ॥

विनम्भः प्रवास्ति। व्यकारम नाम्य वा प्रिवीम्द्रारा । व्यकारम नाम्य वा कारम जीर्थमान्नः ज्या नरेतः । भूरिश द्रव महा कार्यः कर्डवः निज्जनंगः॥ निश्वहानः ज्व मा-स्वः निज्गाक्षाजिद्र्र्स् जः। विन्द्राः रेनव कर्ज्दा न न विद्यः मनान्द्रस्थाः ॥ इंजि भूषिण्ड ज्वः॥

 ना॰ लयाना॰ उज्जाहिकाः मञ्जाः।
हैि मधुः॥ माध्या । क्र जा मधुयान
वृज्जि॰ भूरयागार्थ ज्ञथाना। निः
यागा मुभरताधार्थ विलक्षिजा॰ मन्
माठर्द्र ॥ हैि विल्प निः । निः
भीजारो ह भूरजाक मदमद्र (वाधार्थः कर्ष मताहर्द्र । हैि विल्प नाट । विल्पः
एक क्र हद्र गाहर्द्र । विल्पः
एक क्र हद्र गाहर्द्र । विल्पः
कि व्याधारत कः। जारव कः
हैि मूक्षः। हैि ज्व द्र ।। विल्पः
भावान भूगः। हित्र । विल्पः
भावान भूगः। हित्र ।
भावान भूगः। हित्र ।

विनर्श जि विनय्विभिष्ठः। इंडि
विनयमपापिन् পुङ्ययन निव्वयः॥
विनयः भुः अङिपानः। उर्देश्याः
यः। अङिमञ्जनः २। इङ्यमद्रः॥
विनयः भुः भुनयः। इङ्मितः।
विनयः भुः भुनयः। इङ्मितः।
विनयः जो भ्यञ्चना। इङ्मितः
भाना॥
विनयामः भुः जाहक इद्धः। इङ्

त्राक्षित्रचंग्देः ॥ विन्यामी न नुग नर्गः । ইতি निक् त्रज्ञावनी ॥ विनगरः शुः नर्भः। ই जिमसः वज्ञावनी।।

विनम्भ जि विनामयुकः। यथा।
तुक्रमुभुवा विनम कनाः। जञ् दम्भिया सूद्रविद्रिगः। इंडि इल्ला-मक्षद्री॥

বিলক্ষ: ত্রি বিন্মধানিত:।ইত্যমর:
বিলক্ষণ ক্লী হেতৃশ্ন্যাস্থা। নি
্লুধোজনস্থিতি:। যথা। বিলক্ষণণ
নত স্থান যভবেলিলুধোজন ।
ইতি ভাগুরি:।।ইত্যমর ভরতৌ
।। ভিগে ত্রি। ইতি কটাপর:।।
বিশেষলক্ষণযুক্তঞ্চ।।

विवक्षना जी सम्ग्राविष्मवः। यथा
। मदम्मभूताता। जालोहालाक्ष्मछीरयङ्ग स्पयाः मम्माह्म कक्षमः।
काक्षमः भुक्षमः उद्यद कव भुञ्ज
ममञ्जः॥ मःभूक्षम्म विक्रमान्न ठाः
मानाञ्जन ज्यतः। व्रवाद मर्गम्ह
कर्ज्रत्याः (म्या ह किन्नाः मूञा ॥
विक्रमन्त्रीः भूक्षयद्या काक्षमः
(भुज भुजिक्जिक्षभः भूक्षयः कव
वज्जमुजः स्पर्याया माद्राभ्य ज्विक
विक्रमन्त्रीः। स्पर्याः मम्माः मम्माः।
हेजि मुक्षिञ्जुः॥

विनामः भू॰ जनूरभाहरमाकिः। তৎপर्यायः। शिक्षरम्वन॰ २। इंडऽ-

मदः॥ व्यक्षितः। जन्मनारमे विवा-প: স্যাৎ পরিদেবন নিত্যাপ । ইতি শব্দরত্নাবলী।। বিলাপো দুং-থজ বচ:। ইত্যজ্জ্ল দনীলমণি:।। বিলালঃ পু• যন্ত্র•। ইতি শন্চন্দ্রি-কা।। বিভাল: । ইত্যমরটীকা।। বিলাস: नुः हावरछमः। ইত্য-मद्रः ॥ लीला । इंडि (निम्नी ॥ ञ्जीनाः विवासास्यः मृज्ञात्रजाव-জা: ক্রিয়া হাবশবেনোচ্যন্তে। नियमभी श गम्या यः ज्ञानामन श-মন বিলোকনেযু বিকারো হকসাচ ক্রোধ মিত চমৎকার মুথ বিক্ন ন স বিলাস:। তথা চ। যো दल-ভা• চানুগভো বিকারো গভ্যাসন স্থান বিলোকনেষু। তথা সমৃত• কোধ চমৎকৃতী চ বিক্ননঞ্চাস্য গত॰ বিলাস:।। তথান্যত্র। তাৎ-कालिका विश्वषञ्ज विलामा १ क् ক্রিয়াদিষু। তাৎকালিকো দ্বিভা লোকনাদি ভব:। ইতি ভরত:॥ #।। অপিচ। গতিস্থানাসনাদীনা মুখনেত্রাদি কর্মণা । তাৎকালি-कल रेविनिष्ठेऽ विनामः नियमञ् कः। इठ्डब्ब्लनीलम्पाः॥ 🗱॥ य-ন্য । যদুপ তদভেদেন স্বৰূপেণ বিরাজতে।আকৃত্যাদিভি রন্যাদৃক্

विनामकाननः ही की जाउनः। विनामविभिनः। दथा। यदीय इनः (छा विद्याकः) विभवः कनिन्द छ-नया खलाष्ट्र छगितः। विनामः विभिनः विद्यान महमा कद्माकु अन्ननः इनो म खगठाः॥ ইडि ছल्मानक्षती॥

ইভিকেচিৎ।। নিলাসবিভবানশঃ ত্রি লুক্তঃ।ইতি

की जागृश्।

विवामगन्तियः ही

विवागविভवानगः वि वृक्तः। ইতি इते १४ वः॥

विवासिनी जी नात्री। इंडि द्राज्ञ । निर्धिते । (देण्या हिडि दन्छियः ॥ । दिन्दामी श्रु॰ (काणी ॥ व्याष्टः ॥ । दृष्टः ॥ व्याप्टः ॥ क्याः । हेडि भिष्ति ॥ यातः ॥ इतः। ইভि

विनीनः जि भूषिपूरी ज्यावपूरातिः
। उৎभर्गायः। विक्व इः २ क्व छः १
। इग्रायः॥ विक्वि द्वेः। विष्णायः।
नीनः। यथा। क्वापमा ज्यो नव् निथ्विभिष्णा जिल्लाः। विश्वीनाः
यः स्वारं निष्ण किल्लाः। विश्वीनाः
यः स्वारं निष्ण किल्लाः। विश्वीनाः
यः स्वारं निष्ण किल्लाः। विश्विनाः
वाः। इजि जमाद्राभान् विश्विनः
ज्ञानाभ जनिज्ञानः। विश्वपरः
वा जगपवज्ञ भादक्षं नव्याः। दे । इ

ष्ययः ॥

विला भी छीं यवाण्या गुरवणाडी । ३ जि मिनी ॥

दिल्ली जी ववाण्ः। इंडाप्रबः॥ ण्यः १११७ए। नार्षः विज्ञिनी ह চতুর্গুনে। নশু শচতুর্নশগুনে যবাগৃ: यउखरा शत्रु मि ॥ ইভि रेनहारका ক্তো ভেদ ইহ নাদৃতঃ। ইতি ভটী ठावाः जन्न ।। जम् थ्याः। विलाकी उन्नी लघी गाहिनी क्रु ভূষাপহা। ইতি রাজবলভঃ॥ বিলেপী ত্রি নেসমক্রা। বিলে भविक यः २७ १७ विन् शुक्रायन निद्वामः ॥

विलित्राः भू वनाग्ः। इंडि मस् त्रज्ञावजी ॥ निष्णमंभीता वि ॥ विष्यवाभी जू॰ मर्जः। ই**डि म**य-बद्रावणी ॥

विलागमः भुः मर्भः। ইত্যমরং॥ म्यिकः। ইতি जहायतः॥ भाषा॥ राषः ॥ महाती । यथा । रमाधा मम जुराकाश मालकारता दिला শगः। विल्लामना वाजस्त्रा नथुता ননপাকযো:॥ বৃ•ছণা বল্পবিল্তা বীর্য্যোক্ষা অপি কীর্ত্তিতাঃ। ইতি ज्यान्वामः॥

वि भूर्व (लाक् पाटा तनहे भुजु-एन नियम ।।

বিলোকিত ত্রি আলোকিত।বি भूर्व (नाक धार्डा: क भूड) एन নিয়ন ॥

বিলোচন• ল্লী চলু:। ইতি জটা। धद्रः ॥ मञ्जीनधः ॥

विवाष्ट्रिकः भू नगभीनः। वालि-यामाष्ट् इंडि ভाषा। इंडि अम्-. ठिष्मुता।।

विलाउन की महन । जाला-उन्। यथा। রাধিকা দধিবিলো-**उन इंडा** क्करवृ निवरेत व्राथा-षा छ।। यागून ७० निम् अ महामा ना जनान निवास् जिह्ना ।। इंडि इन्तानक्षरी।।

বিলোভিত ল্লী ভক্ষণাইভিরাজ-•ির্বণ্ট: ॥ আলোডিতে জি ॥

विलाभः पूर विस्थित वाभः। वि প्रबं जूनशाला र्याः भुजारयन िज्ञनः ॥

विद्याञ्यः शुः विद्याञ्यः।विद्याः यााञ:। वि भूईक जू उ थाला র্ঘঞ্ পুত্যযেন নিয়ম:॥

বিলোমণ ক্লী অরঘউন:। ইতি भिषिनी ॥

विष्णाक्त क्षे भी जारमाक्त । विष्णाम कि विभन्ने छ । उ

भर्यायः। भु जिक्ला २ अभमवाः विल्लम् खी भु मू जिल्ला गया। ৩ অপপূর ৪ বান ৫ পুসৰ্য ৬ পুতীপ ৭ পুতিলোম ৮ অপচু ১ । इंडि (इसहन्मुः ॥ नवाः २० विः (लामक :))। इंडि क्रों ।। विलामः भ्॰ भुजीभः॥ गर्भः॥ वक्षाः ॥ इतुः । इति स्मिनी ॥ विरनामकः भू विभन्नोजः। इंडि किंगिथद्रः ॥ পু• হস্তী।ইতি বিলোমজিল: ত্রিকাওশেষ:॥ विलाभवर्गः भुः वर्गमञ्ज्जजािः। ইতি মৃতি: ।। विरवामी जी वामवकी इंजिसिंकी विलानः जि ठक्षनः। यथा। काशि विनाम विलाल विलाहन (थलन জনিত মনোজ । ধ্যাযতি মুগ্ধবধ্ त्रिकः ग्रुम्नवन्नमञ्जाद्यः ॥ इंडि ञ्रीगी उरगावित्म > मर्गः ॥ विल्ल क्ली व्यानदान । यथा। व्यव-घडावाही जूलारी उल्ला विल्ला उन क उर। विक भुभाववान गार কেদার: পাণশুমর্মন:। ইতি ত্রি-

का अस्मयः॥ हिन्दुः। ইতি भप-

विल्लग्ना खी वादाशिकनः। इंडि

हिन्द्रिका ॥

मद्रिक्तिका ॥

नल नु अनु मुखायाः नेल मृः मुख्यकः वा। विज्ञभू पंभभू धाम। एक विका ज् कृष्मुः ॥ इंजि भपदा द्वादणी ॥ विन् ही विनृवृक्तमा क्न । इंडि (यिपिनि: ।। भलभित्रमागः । इंडि भक्रावा॥

विनः भू कलव्कविष्णयः।(वन्गाह ইতি ভাষা। তৎপর্য্যায়ঃ। শাণ্ডি· न्यः २ रेमन्यः ७ मान्तः ४ निकः बः ৫। ইত্যমরः॥ महाक्रिणः । (गारुव्री उकी १ পृতिवाउ: ৮ य जिमक्नाः २ गराफनः २०। ইउ त्रवाना॥ भन्तः >> क्रान्तः >> भाषाष्ट्रः २० कङ्ग होखः २८ रेमन-পणः २६ निर्देष्टः २५ शब्दार्षः २१ ত্রিপত্র: ১৮ গদ্ধপত্র: ১৯ লগ্নীক वः २० गक्तकवः २) मृताकरः ^{२२} ত্রিশাথপত্র: ২৩ ত্রিশিথ:২৪ শি-বজম: ২৫ সদাফল: ২৬ সভ্যফল: ২৭সূভ্তিক:২৮ সমীরসার:^{২৯।} वानायन खनाः। सप्तद्र। हराद् । करागद्गः। ७३५ वः। भिङ क्य জুরাতিসার নাশিত্ব । ক্চিকারি वः। भी भनव्या विभाग्य म्बल्याः। बिरमायग्रद्भः। नथुद्रद्भः। वगुद्धः। বাত্তিনাশিত্বগু। অস্য কোনলফল

छनाः। द्विषद्•। ७कद्व•। म•्गु।-श्विः। रीभनवृक्षः। व्यम्। भक्कन खगाः। मध्यद्गः। छक्दः। कप्रुवः। **তিक इ॰। क**वायवु॰। উक्ष इ॰। স॰ गु।श्चित्र । जिस्तायनामिष्यकः। इंडि त्राजनिर्घण्टः॥ 🗱 ॥ व्यनिष्ठ । 🗐 क्न স্তবর স্তিক্তে। গ্রাহী কক্ষে। হগ্নি পি-खक्र। वानः (भूग्रह्रा वरना। नगु ৰুঞ্চ পাচন:॥ ইতি ভাবপুরাশ: ।। १६।। किथा विल् वाल के वार्यायः পাচন বিহ্নিবীপন। সংগাহি তি ক্ত কটু ह॰ তীক্ষ্ণ বাত ক্লাপহ।॥ পङ्गः मुगिक्ति मध्राः मुर्ज्ज्ञाः गु।हि (माः यगः। कः नमु भित्रभाष्ट्रम् (या खनः नग्राह्यः॥ विचारनाव न ज्लारा विव् मामः खाला बद्रः। कक वा जाम পিত্ত মু। গু।হিণী বিল্পেষিকা।। ইতি রাজবল্ল ভঃ॥ অন্যন্ত। কাঞ্জি क म श्रिज विल् मण्निमनी शनः **भवः। इंडि रेवम् ४कः ॥**<a>॥ वित्तृष्टः- शब्धानि यंथा। विद्यानि भावन छ-र्यार मुंड खरा नन्या। शिव्का न् (द्राभागर भक्ष यिन मर्गामक् याज ॥ ভূগো लक्षीण या (धन् र्गाक्शा স। গতা মহी। তদ্যোম্যভবেঃ বিলঃ 🗐 🕶 ভসাদজায়ত।। নি রাক্তি পতি দৃষ্টা কোবেন নহতা

७ ७:। मंधा ना উत्रया (नवी नर्ब ভোগ্যা ভবাধনে।। তত্তঃ সংপুণতা ভाना मारिमवः ভवज् शिर्य । शिय-दः गर्वत्वात्किम मूतामृत नमक् जा ॥ भाउ। पुः भई लाकाना भवनानाः বিশেষত:। এব মাত্মবশা। কৃত্ম नाथ (याक नयाहक॥ वद्र मरहो ह न। कामः भाग (माक्रभुमः नृशः। की द्वारको दु॰ म्गारक्ष्ण मह लाजि র্ধ:নন চ।। বসম্ব নথনে যাবৎ ততে। বিক্ মবাপ্লাসি। পতি ত্ব সর্ব लिकाना॰ भूबा (मुंहे॰ नहावण॰।। তम्। वकः श्रिजा ভाष्ट्र मुक्की प्र विष्ठ-রিষ্যসি। লোকভোগ্যা চ ভ্তি বানস্তাজেষ্ নৃপেষ্চ।। ন জাতি জ-প भौर्यापि न (वन्य न मु छ। मिडिः। ভবিষ্যতি যদা চেছ চঞ্চলা জলবি-न्म्वर् ॥ विन् रृकः भिषः भएम। छतः (यानि ভবিষ্যতি। সর্বপুয়োত্তম শ্রেঙা দেবাহারো মনোরমঃ।। # ।। व्याहराः नर्वावाकानाः (एकानाणः मना न्पाः। य ह भाभा मूबाहादाः শ্ৰীত্তরে। শ্বেকারিণ:।।তে ত্বীচ্যা-দি নরকে পাত্যন্তে বৃহ্ণণো দিন । मुर्:थिठा ভবिষ্যন্তি नद्रा मुझ्लिनः সর।।। তত্র দেশে ভণ্ণ নিত্যু চিরু• রাজান জীবভি। নচ দুব্যপতি:কশ্চি-

विवृक्तना (इनकः ॥ किया दव 🍴 বিছেনঃ সগুল্ল ফলিন গুলোঃ। অনা-गृधि ভय धाद छित्रम् (माण भुजा-ग्रा इंडि विश्वितात वामन्त्राः पूर्णय नामायायः ॥ 🖘 ॥ महास्रत ওস্যোৎপত্তি যথা। শিবউবাচ। गाउ: गगुपुक्तरा सामा कि कि छन পরণ ৰ তে ছিম্ম তনো ব্যামা জা-च छा॰ शून (हाइ मः।। छहा छ। (उ भन সা ভক্তিঃ পূর্ণভেদ মনোর্থঃ। বশ্চ হিন্ন ডনো দৰো মলিকোপনি তে শৃতে॥সো হয় বৃক্ষঃ ক্ষিভৌ পুণ্যো नहा शिकन हैळाउँ। मूर्डिमा खब रेव ভिक्त वृक्तः खिवन नामकः॥ एट की इंटर किछ। वासा गायहन्तु पिदाकत्त्रो । म ठङ् यंन देव विश्व भागः मृी्राया छाददः ॥ उद्दशाः ेरिया (प्राज्या छविस्त्रांक न हामप्रथा। इर्न बुङ। धुवाबाकि भूज्ञाभुन्यानि ह बुग्गा क्रियगहर लिएमा क्ला॰ मार्चिष्ठ कारिकाः। यथा व श्रीकन उद वंधा भन्ना अवः पत्र ॥ उथा भि र उपः विश्व विश्व श्रीकनहरः। ই शुक्तः न उपनुष्का नरहा**नाउ**-र्याय यथि ॥ कथामस्माननक्करव एकः शिक्नकार्श्विष्टः । ইতি प्रकृषं भुजारम ३० व्यवगावः ॥ १८ ॥

দেনুবোর। বৈলাখ শুল্লপক্ষস্য ত্ তীনাৰা সথি দ্বৰ। জাতো বৈ 🗐 ফন ডক লাহাল্ব্যু• তদ্য কথ্যতে॥ জাতে তু 🗟 ফল ভয়ৌ দেবা: সর্ম্বেন वाजवाः। वृका नामायग काशि (दव পর্য় समागठाः ॥ मृत्युः शिक्विहे-भः जिलदि मृ मूरेन यु उर्। भी नामा-ন॰ তেজনৈৰ নিৰক্ষপণ শিবপুদ• ॥ পুरागः जिवित् उत वानकः मुधाः ব্বিতা:। তদুক্ষণায় ভগৰানুবাচ বি-रपुत्रवायः॥ विकृ क्वात्र। अयं नात्र। विन् इंडि नाच्यः अकन उथा। माधिना भगविभाग्यः भितः भुगाः शिविष्यः ॥ स्वानाम छीर्थमनः शाश्यः (कामनहरः॥ काया विषय नामा ह विकु ज्ञिनयता वत्रः॥ प् गु-कः मुद्धवर्गक जन्यभी मुक्काप्तवकः। ইত্যেক विःশ ভি॰ नामा॰ দ্**शा**ष्ट्रय छ-वाउभः॥ अ। अनुः भाउकाम। म्वादः थकागु छीर्थ मुह्य । जादा ज्य खथा छीर्थ मठ छीर्थ अयः मिथा। উজ্পত্ৰ হলো জ্বেবঃ পত্ৰ বাম विधिः चयः। अष्ट्॰ मिष्णि भवण ভিগত দল নিভ্যত।। অন্য ছাযাঞ भवक वहारम भरा ज्यान । स्त्र (उ वहुनामायुः शमा न्यामीट जिय॰ राइट ॥ भागम् अ नर्मुगः कल

পত্র সমালি চ। দর্শনে পুণভৌ नामं द्यान नपाद्धांत उथा ॥ भू खान हरान पारन क्याच्याव्यीत्र-(यट । विवृत्क भहाजा । नर्हणनः) नमा शियः ॥ नियम्भंगक लाग्राजः भुनीमा विष्ठाउन । नत अस्टन म-ত্রে। পুত্রাফ: পুগে গুড়।। পুগ-(मा)८ मा भिवः शामा ८ भूगाम खर-नउत्र°। ७ नत्या विल् छत्रत्व सना भः इदक्तिरा। भक्षानि भभाक्षानि इक्ष भिवर्गर। मञ्जिपात्न भा-न्त्र मधीयः भुगम् क्ञी ॥ म বৈশংৰো মতো ভক্তঃ লমে পূি্যভন্নঃ भवः। सिवभूकतः भाज्य जित्रामा मराख्या।। न्यानि दाः मराशाश नक्षतान् सं भुगामवः सिवव्कवत्र (पुरु स्वागः स्वागः । क्वी उन्हान गठा विवृथा मार्ड्सा उर गुमीन (न । मध्यभावन दियुगा एणश्ख्याः म् १६८ ॥ मानामयहिनः भूषः म गता म जु रिस्मवः। ওँ क्रवाच 🕮 कनाम नत्मा एणि ब्रक्तेतः ॥ स-ত্রেণ প্রযেদ্বিল্ জপেছ্তি ক্যাত্ত था। भूगात्क महा छान मान्त 🕮 क्न পुरजा।। नर्म भू जनार्थाय उट. পতानि চিনোग्रह्। मञ्जनातन চিন্যাদ্বিল্পত্রাণি ভক্তিত: ॥ প क्यांच घारको नायः नयहाङ्ग् डिज-काल जः। भाषा अस्य व कार्नत्त्र रेनवारबारइंडचा उक्।। यद्य साक्-स् हिन्याम भाषा छक्षनः कृष्टि । थिखिन कितः श्वाः श्वाः नि रेन, 🏲 थिंडि: ॥ वचामान 🖫 ब्र विन्मान भगु विड॰ खरदः। भू-क्या अरडन देवे (रवा: मूर्व) नावान -तो विना ॥ विद्युव्यवन भज ना जू वात्रागनी भूती ॥ भक्षविच्छमा यक **७व ७**८४८ यय रितः। সপ্ত दियुः জনা যত্র ভত্র দুর্গাযুক্তো হয়:। একে। विवृज्य यंत्र ७७ भाग्न गाँगा मह ॥ विनुवृक्ता यख मना छत्र भाग्न मं रेपः সহ। এজান্যক্তানি ভীর্থানি দেবাঃ गर्ख मक्त्ररैनः॥ यख वाद्याः गृरुखः-म् । (कान केमाननामरक । जापरक শ্রিফলতক ন ভত্র বিপদ: ম্বচিৎ ॥ शृर्वगताः सूथाः स सताम्हिकाः य-নভীতিহা। পশ্চিমে চ পুলাদাশী वृह्मा विन्न जिलाक् छः ॥ न्यानात् ह विश्वीत शुक्रत वा वना छता। वि-बृर्क उल (शुक्तिः भिष्तभी ठेष्टलः मुदीः॥ न बध्रभुष्ट्रत वृक्षः छ।भ-(यट ञ्रिक्वाधाकः । रेप्रवाह्यपि नुबारयञ्च छन। मिवयन हर्य ।। हिन ত্রাদি চতুরো সাসাম্শস্তবে পরনা-

ত্মনে। দত্ত স্যাদ্বিল্পগ্রৈক লক্ষ-(धनु ममः मुदाः॥ मध्रा इ काल (य मर्छ। वितः क्यूरः भुमिक्न । छिः <u> ज</u>्याक गित्रिवतः क्**ड** এव शुरिक्षिणः।। ন ছিন্দ্যাৎ এফল ভক্ত ন দহেৎকাৰ্ছ নেব চ। বিনা বাক্ষণযজ্ঞার্থণ পতি-তো বিল্ববিজ্ঞী।।পশ্ববিল্ব সমুদ্ঘৃষ্ঠ या १८७ मृष्ट्रिमानवः। यमाधिकाः রো নাত্র স্যাৎ হৃতঃ পাপোপপা-**७रेक:।।** दिन्नभश्चः कनः वीद्यः ভूष्मो প্রিত মীশ্র:। স্ব্যু গৃহাতি শি त्रना रेवयर्थ्य जय मिक्षिजः॥ रेहजानि চত্রো মাসান্ সিঞ্ছেল্বতক ক্তী া যথা সিংগো ভবেদৃক্ষ তথা তং পিভরে। থপি চ ॥ চৈত্রাদি চভুরে। भामान् मना जुमा महा महारा नवीन বিদ্বপথাথী ভুক্তি নুক্তিপুদাবক: 11 इतिमानगान यक रेवन । नार्था नार् यदः। उजाक्या विवृक्षः सर्गः বৃক্ষ উদাজ্ত:।। কামৰূপে কামত-कः कामा। गुङ उथानिमः। काकी भूति भूतः (भाकः धिकता १कव भुगामः॥ তেभि डीर्थविष्मवाः मूर खीर्थियुणि गमाज्ञाः। (मतुऽदाह । এতসামের কালে তুশ মূরাগত্যবৈ-निथ्। तुक्का दिकुना भेट्यः भूकिङः ত্রিকলৈ ব্লভূৎ ॥ ততঃ সর্বে যথা-

ञान क्या क्राजारगारयः। क्रिका २ग भगा मत्था दिस्रृक छक जमः॥ ष्यं वा माल्याकः णिवस्क कथा भूगा निहरः गविबः (भा उदाः भुवन-ब्रमशीयः थज् मङाः। नित्व विको खिराशङ्ग्रण উদার: সুমনসা॰ সু-(मवा: मःभार्राः भुडवि विवमा-পি নিকট:।। ইতি চ বৃহজ্যাপ্রাণে विनृव्कः भाषाजा १० ३३ व्यथ्यायः॥॥॥ তন্ত্রমতে তদ্যোৎ পত্তি র্যথা। দে-वूरवाह । कथः ना विकानिका विन् ব্কোবভ্ৰ হ।জ্যেতীৰূপণ নদ-भ॰ शुर्थिका वृक्षामित्रिः भना॥ **७ व (व १ नृ गृ इ**। हा भी गर्स वा • भिर তা॰ গতা। বিক্ষো রতিপুিয়া নিত্য সা ভূৎ সরস্বভী সদা॥ তাদৃক্ প্রী তি ৰ্ন লক্ষ্যাঞ্ ছায**েতকেশ**বস্য চ। ইতি চিত্তাপর। লক্ষ্মী র্যযৌ শ্রীশৈদ मन्तित्र ॥ भाभा मिलिक भागा । **उभ (उ**भ ६ डिमाक्न । उथा गि यि देनवाज्य क्ला (म लद्गायादा॥ उना मा वृक्षकारभग जिला निय-निया में । भोधः भूद्रिः करिनः बीरिवः প्रवामाम मस्उः॥ (काषि वर्यः सङ्गापिति जाउ। (म १मुगुर्ह) ९ छद । (छरेनवानुगुङ्रेशव विक्या वंकः (इंडाडन्ट्या नरिष्वं भद्रामः

मानि विभुवनात जरेरव हि । व्यउस । কারণাদেধি ভদুপেণ হরিপ্রিয়া। সদৈব প্রয়েয়া সা মন্তকা সাভু লা শিৰে। অত ন্তঃ বৃক্ষাশিুত্য ভিষ্ঠামি চ দিবানিশ ।। সর্বভীর্থ मर्गा (पवि जर्दरम्वम्यः गरा ॥ 🗐-বৃক্ষঃ পরমেশানি অভএব ন সংশ यः। 🗱।। उटकरेन उट भूम्रेन र्वा उट भरें था मं भू कराय । उर का के हना रैन बंगील न मि उक्तः न मि लुयः ॥ ত काश्व हन्तन जादा या श्रव्यक्ति मञ्जूबाट। उड्रम् भिवदृष्क्ता मा न (मप्पिवी मुमान्चिजा ॥ अञ सहन्मन॰ দেবি ন ধার্যন্তি কশ্চন। তৎ পঞ্ তৎ পুসূন বা কদাপি ধার্যেয় হি। বিল্বনুলে মহেশানি প্রাণা স্তাজতি-(या नतः। कृष्तिरः। खत्र अठाः পাপকোটিযুভোপি সন্ ৷৷ ইতি (यागिभी उट्ड भूर्वश्रेष ६ भो नः ।। 🕸।। অপিচ। বিশ্ববৃক্ষণ তথা দেৰি **७ गदान् मञ्जदः ययः । विल्**दृक्त-তলে স্থিত্ব। यদি প্রাণাণ স্ত্যাজেৎ সু ধীঃ॥তৎক্ষণান্মোক্ষ মাপ্নোতি কি-ন্তস্য তীর্থকোটিভি:। যত্র বুন্ধাদযো দেবা স্তিষ্ঠন্তি শক্তিছেতবে ॥ বিল্ব वृष्ण ज्ला ञ्रान यमि विश्वामिश्रा ত•। তদেব শাস্কর• ক্ষেত্র॰ সর্বভীর্থ- ম্য সদা।৷ সৰ্বপীঠম্য ভব্তু সৰ্ব-(मदमय॰ जना। न उत्रहाद भाक्रत्र॰ क्षिव न व गञ्चा । छ। इन् भूष ॥ नभी । न ह हाई कि विन्तृत्का यि প্রিয়ে। কাশীপুরসমণ তত্ত্ব তত্ত্ব পুাণ ভ্যন্তেদ্দদি।। কিন্তুস্য কোটি-**डोर्थिन काणीयारमन कि॰ शि्रय।** ইতি পুরক্তরণরসোল্লামে ১০ পট-वः॥ अ।। उम्रानदिधि यंथा। भ मः वा यि वा भुञ्जः कलः (नष्ट माधामु थः। य्राचित्रमः उथा (इयः विस् मधानाः-ধোমুখণামাভৃকাতত্ত্বে ৫৫ পটল:॥ ঞীশিবউবাচ। শৃণু দেবি পুৰক্ষ্যামি রহস্য ভিডটোতাক। পঞ্ বুক্ষময় (क्षि अन्तृष्ठ॰ दद्गवर्गिन ॥ ड्यि**लन** শিখরেজাত: এফলঃ শ্রীনকেতনঃ । বিষ্ণুপুরিকর্মশ্চৈরমন পুরীভিকর: निषा ।। तुका विष् मिवाः भए व वृहक শক্তিৰূপিণী। বৃস্তমূলে তু বজু স্যাৎ পত্রে বুক্ষপদ পূিষে ॥ ত্রিজটাপএ-किकन इतः वा इति नई(य८। किः বল্যা তস্য তেনৈব শক্তিপূদ্ধা বি-শেষভ: ॥ পঞ পুশ্ল ফল ভোষ रेनरवन्तर धून मीनकः। स्वा यम्प ফল পুপ্তি ভ্রমাৎ কোটিগুণ ভ-(त् ॥ मरेबं ब्रह्माका प्रति विकरे। सिक मर्लन । रिक्वलास्ता इति रेक्टव

मार्ग्याहर ज्ञार यत्र लंडार ।। ज्ञाय दिक्वनामः उडानः धर्म कामार्थनः शिए। वजुहोन मिनः स्विश्रा-পু যাহান্তি হ ফল ।। সংজ্রে নিব তে নু:ন॰ বজুাঘাতেন পার্যতি। 🖟 ভমান্ন সাধকেন্দ্রেণ ব্যুহীন পু-माश्रद्य ॥ 🕸 ॥ विन्नश्रद्धमुग ঘাণ গৃহীত্বা যো গছেৎ সর্বাদ षि भवाश्रुयार । डेब्व • भूमर्गन• विवत्न• क्री छिनु• । इंडापदाः ॥ ब्रक्तिरयः भागुभ उ ख्या॥ भूरता । রিণী। দক্ষপার্ল্ডেচ গ্রীনাথো বা थ्: जो इ भ महर भारती करत्री मना विका अल्पयः ॥ া। ইতি জ্ঞানতৈর বতক্তে শিবপা। বিবর্ণ: ত্রি र्व 🌖 म दारि ५ भ हेन: ॥

विदाशिविदा छी भुष्कविद्वथं ७ । विवर्त्तः भुः जनुनायः॥ जाभवर्तनः নেমশুঁঠাইতি ভাষা। गথা। কফ 📗 ॥ নৃত্যু । ইতি বিশ্ব: ॥ का। इंडि ब्राइनियंदेः॥

দিবা জী ছিলুপঞা।ইতিরাজ-नियंतिः॥

दिवरमानः जि दिवानकर्छ। वि পূর্ব বনধাতো: শান পুত্যযেন निद्रग्रः ॥

निददः लू॰ भर्गाङ्गातः। गङ्धाना

७७जापिः ॥ यार्गः । भन्नाः । इ. छामत्र जत्रा ॥ वीश् ज्नातः পর্য্যাহরণ । ইতি স্বামী ॥ উপরি-ভোৰজ শিক্য স্বন্ধ বাছকাষ্ট । কাৰ ইভি খ্যাত। ইভি ভানুদী ক্ষিত:।। ভার:। ইতি মুস্টধৃত विश्वः ॥

श्रुभानस्त गमनकन । यथा । विविधकः श्रु विविधकः। इंडामन) होका नाव्रमुन्स्**बी** ॥

দোৰ:। ইঙি নেদিনী॥

नारम्यती त्राक्षः ग्रंह व मून दा- विवत्रण क्री व्याच्या। इंकि इना-यूषः ॥

निषार्त्व भूजाशिकः ॥ हन्तु मृत्यं) विवद्रनानिक। जी (दगू: । इंडि

नीहः । इंछ्यनदः॥ भनिन का।

वाडाभन्वती गुष्टिनी विवृत्भिषिः। विव छन क्री भार्राञ्चन वि भूर्वक वृज्वारजा बनहे जुजुरयन निम्नमः॥ বিবৃশঃ ত্রি অবশ্যাত্মা॥ অরিষ্ট-मुश्चेवीः। ইভিনেদিনী॥দে **আস**ন নরণ স্চিত লফণেন দূষিত বুজৌ । विक्षा विश्विषः यण् यानम गत्। थ्याभकः लिझ गति छै। एउन पृष्ठे। क्षे वंग्र म ख्या । इंड्रमप्रः টীকাষা ভরত: ।। বিবশ্বতী ন্ত্রী স্ব্যুনগরী। ইতি মেদিনী।।

विवसान भू मूर्याः ॥ ध्वर्कम्मः ॥ इज्यादः ॥ १५वजः ॥ इजि व्यक्ति । व्यक्तः ॥ इजि मद्मद्भावनी ॥ विवस्तान् ॥ इज्याद्भान् ॥ इज्याद्भान् ॥ इज्याद्भान् ॥ इज्याद्भान् ॥

বিবক্ষা জী বজু নিছা। সনস্ত বচ
ধাতোর পুত্যথেন নিম্ননা। যথা।
বিবক্ষা বশাংকারকাণি ভবস্তি।
ইতি ব্যাকরণটাকা ॥ শক্তিঃ।
যথা। পুক্ত্যথোপি খাল্বতদুদ্দিশ্যন্য বিশেষণা। সংখ্যয়া তুল্য
নীতিত্বাদ্বিবক্ষাণ পুপদ্যতে॥ ইন্
ত্যেকাদশীতত্ত্বা।

विविक्षितः जि वङ्गिष्ठः॥ मनस्र वहशालाः क भुजारयन मिन्नमः॥ भकार्थः। यथा। উপাদেयगजा-याः मःथाया दिविक्षिण्डः युक्तः । অनुभाम्यगजा मःथान विव-क्षिजा। इंकि माभवाहार्यः। ইত্যো-कामभी जनुः॥

বিবাক: ত্রি বিবেচনকর্তা। যথা। অথিপুত্যথিনো ব্যান্ত বিক্লাবি-কল্প সভৈয়: সহ বিবিনক্তি বি বেচয়তি বা বিবাক:। ইতি নিতা-ফরা।। विवीमः भुः विकाला वारमा विवामः । मह धन विভागानि वियय न्याया-দি:। ইতি ভরত:॥ তৎপর্য্যায:। व्यवस्थातः २। इज्यानः॥ अभाषि-न्राय: २। ইতি क्रिविदः॥ यागादि-माय कलार भारता ईन्डे तमा वा । বিবাদে৷ ব্যবহার শ্চ দ্ব্যমে ভদিগ-म्राउ॥ इंडि मद्द्रवादनी ॥ अ॥ माजामिना विवासनित्यत्था यथा । আচরেৎ সর্বর্যা তদ্বিক্ষম্ভ ন-চাচরেৎ। মাতা পিত্রতিথীত্রী विवादः नाइरत्र गृशी॥ इंजि गाः काउ ৯५ व्यव्यायः ॥ 📽 ॥ व्यष्टी-म्म विवानञ्चानानि यथा । **उ**या মাদ্য মৃণাদান নিংক্ষেপো হয়ানি विकयः। मञ्जूष চ ममूर्थानः पख-স্যানপকর্ম চ il বেতনসৈত্র চাদা-নং সংবিদশ্চ ব্যক্তিক্রমঃ। ক্রঘ বি-ক্রযানৃশ্যো বিবাদ: স্বামিপাল-(याः ॥ भीगाविवामधर्यः भाकः (य) एखवाहित्क। खिय्क मार्म-ক্ষৈব ভ্রীসণগুহণ মেব চ॥ জ্রী পুণ-धार्या विভागण मृज माश्रय प्रव ह। भनानाक्षानरेणजानि वावसात्र श्चित्र विषु: ॥ इति मनु: ॥ व्य-न्यार्थः । यथनम्यान्यान्यमर्भावतः পো নিক্ষেগঃ। অৰামিনা চ

ना॰ कियानुष्ठाय॰ । मखना धन স্যাপাত্র বুস্ক্যা ক্রোধাদিনা বা शुरुगः। कर्यकातमः ज्टि त्रहानः। क्ठ व्यवशाञ्जिमः। कर्य विकल्य চ কৃতে পশ্চাৎ যা বিপুতিগভিঃ । श्रामि भगुभान्या विवासः। গ্রামাদি সীমা বিপুতিপত্তি: । वाक्षाक्ष्युः আकामनापि मधनाक्षपु॰ जाउनामि । *(*खय॰ निक्ररवन धन गुरुगः। जारुनः भू-गश् धनहर्गा नि खिया क नत्रनु-क्ष नलकः। द्वीमहिजमः नुः (ना धर्मवावस्या। रेभक्कापिधनमा विভागः। मृष्ठः यकानिकीषा। আহ্য পণব্যবস্থাপূর্বকং পঞ্চি भिवासि भागि (यात्रनः। इंडि इन ॥ :ईस्क्ब

विवामानुगडः जि विवामकर्छ। यथा। विवासानगडः भृष्ट्री गज्ञ । ख भूगद्वाः। विहात्रयात्र (यना-भी भादिवाक यडः ग्राः॥इंडि भिजाकता ॥

विवाभी वि विवासकर्छ। यथा। व्यनु जावी ह यः किन्छट सर्गाट नाक्षा विवासिना । इंडि दाव्हा-वउदुः॥

क्ंडा विकयः। मञ्जयविभाषी- | विवादः भू मात्रभित्रशृहः। उर-भर्यप्रायः । डिभयनः २ भतिन्यः ७ উद्यारः 8 ज्ञेशयामः ৫ लागिनी ज न ७। ইত্যার:॥ দারকর্ম ৭ কর-গ্रहः ৮। ইতি मप्रयुवादनी ॥ भः ণিগুহণ স নিবেশ: ১০ পাণিকরণ ১১। ইতি হুটাধর:॥ স চাষ্টবিধ:। यथा। वुल्क्या विवास चार्ग शिय-তে শক্ত/লফ্ডা। ভজ্জ: পুনাকু: ভ यजः शृङ्यात्मकविः भाजिः॥ यजः श्रायद्धिक रेएव मानायार्वे उत्तर যুগ। চত্তদশ পূথ্যজঃ পুনাত্য ত্তরজাদ ষট্।। ইত্যুক্তা চরতা। थर्गः मह या मीया १ विश्वा म कारः भारत्वञ्जः सङ्ग्लाः अ गराञ्चना ॥ जामूद्रा मुदिनामाः नार गाञ्चर्यः गमयाचिषः। ब्राक्षः **रमा गुक्त इत्रभाट रेभमाह:** कबाका-हनार ॥ इंकि राक्तन्ति।। ॥॥ वाभित । गृही उदिम्। अद्दा म्या ठ छक्षिणाः। गाईश्र निष्ट्रे ज्भाव कर्गाप्ताव भरित्र है।। व বৈ রেকত্ণা ভার্য্য মুদ্রছে এণে: त्रपः। नाजित्कमा नत्कमाः वा नाजि कृष्टा॰ न शिक्षणाः॥ निगः र्गाउ। ९षिकाची॰ वान्।नारी मणि (नाष्ट्र १ जिवि मुद्याः नात्राणाः योः

इलका॰ वाजिरदाभिभी॰।। न मुद्री॰ पृष्ठ वाठाठी वाक्निनी लिख् माज् তঃ। ন শ্মশু ব্যঞ্জনবতীং ন চৈব পু क्षाक् जि॰ ॥ न घर्ष तस्त्रा॰ क्षामदाः क्रा॰ काकश्रदा॰ नह। नानिवरक्षकः ণা॰ তদ্বদূত্তাক্ষী । নাম্বহেদ্ধ: ॥ य স্যাশ্চ রোমশে জন্মে গুল্পে চৈব ত-থোমতৌ। কূপৌ যস্যা হসন্ত্যাঞ্চ গওযো তাঞ্চ নোছহেৎ।। নাতিক क्रहृष्- भाष्ट्रकद्रका स्क्राक्ष्णाः। व्याभीन श्रु भानाक न कन्। भृदः (रुषु थ: ।। न वामना नाजि मीर्घाः নোদ্বহেৎ সংহতক্রবং। ন চাতিছি मुरम्ना न कतालम्थी नतः॥ नकः না পাতৃপকার পিতৃপকার সপ্ত-भी । शृहञ्च ("ठा घरहर कन्या • न्यारवः न विधिना नृशा। वृात्का देमव छरेष বাষঃ প্রাজ্ঞাপত্য তথাসূর:। গান্ধর্য वाक्ता वात्नी रेभणाह कार्डामा **९५न: ।। এতেষা॰ যস্য যো ধর্মো।** বৰ্ণস্যোক্তো মনীষভি:। সন্থীত मात्राञ्त्र^१ (छनान) भदिवर्जाग्या। न वर्धातिनी भाभा गाईका निर् ত তথা। সমূদ্ধহেন্দ্রনাত্যেতৎসম্য गृष्ट भशक्ल ॥ इंडि विकृत्तात ৩ অংশ ১০ অধ্যায়: 11 # 11 অন্য । याङ्कदस् उचेवाछ । स्वन्छ मुनरवा

पर्यान् गृष्ट्यम् यञ्जूञाः । रुद्राव **চ थनः एका जाका 5 उ**पनुक्तिया ॥ स विश्व (जा दुक्त हर्यो) विकाशा विव मुष्ठार्थः । व्यनग्रश्रिकाः कासा म-निष्णा धवीवनी ॥ व्यातानिनी ভুাত্মতী নসনানার্গোত্র জাণ। প-करार मधमानृष्यं नावृतः भिवृ-उ उथा ॥ घिनक नव विथाउ। **ल्याजियागा॰ गहात्रवा** । जदर्गः <u>भाबिया दिषान् वद्रमायान्तिः</u> न ह।। यमुहारङ विकाजीना॰ म्मूनारा-রোপসংগ্রহ: । ন ভন্মন মতং হন্মা-ত্ত ভাষ জাষতে ম্ব ।। ভিসে। বর্ণা-नुभूर्द्धन (च ७रेथका यथाक्रम । दुा-ন্ধণ ফ্রিণ বিশাণভার্য্যাণবাশূ দুল-चनः ॥ दुात्क्या विवाष्ट्र वार्य भीयः **उ ण**कानस्**डा।** ७छ्जः भूनाजूऽ ভगত: পুक्ষानिकविः भाउः ॥ य-क्छ इगरिष्ठ कि देश सामायार्स ला यूगः। ठलुर्फान भूषमङः श्वाकु। जद তশ্চ ষট্।। ইভ্যুক্তা চরতা ধর্ম। जरु या भीषाउ १ थिंत। ज कायः পাব্যেত্তক্ৰ: বস্থ শ্যানাত্মনা সহ ॥ व्यामुद्रा मुविभामानाथ शाचार्वः गन-याभिषः। त्राक्ता गृक्ष रतगा रिशमाहः कन्याह्नार ॥ हजादा वाकानगामा खया पासर्व वाकानी

। त्रा छ खथा मृत्र। विष्णा मृत्नुहा छ। ন্তু গহিঁত: ।। পাণিগ্ৰাহ্য: সবৰ্ণাসূ गृङ्गी अक्षा नातः। रिवन्ता भू जार भारत्याखरान ठाणुक्यानः॥ পিতা পিতামহো ভাূাতা সকল্যো कननी उथा। कन्रानुनः প्रनारण পুকৃভিস্থ: পর: পর: ।। অপুমন্তন্ সমাপ্রোভি ভুণহত্যা মৃতাবৃতৌ। वयाम जारव मार्गा कन्। क्यंग्र चय' वद्र'।। मक्ट भुनीया कन्। হর॰ ন্ডা॰ চৌরদণ্ডভাক্। অনুষ্ঠা॰ हि उऽक्षन् म्खाः मृतूशे हि नवि ठाः জেৎ।। ইতি গাৰুডে ৯৫ অধ্যায়: ॥ #॥ यश्रव्या यम् डेवाह। कन्ताः (य जू भूयइंडि यथा माल्या सनक् जा॰ । वुक्तःस्याः विकाःमुळे वुक्तालाकः वुष्ठि (ठ ॥ कन्तारान्**ड मर्ह्या** দানান। মুভ্রণ সূত্র। মহান্ত্রপি সমৃদ্ধানি গে। ২জাবিক ধ্নান্যত: ।। ञ्जीभयः क पर्णगानि व्यवानि शति-वर्ज्जस्य । श्रीन छाडिषु भाष् মুদে উদ্বেগকারিণা ছিল্মা**ন্য সদা**-वात्र विविक्षि स्वानि ह। यम्। স্তু ন ভবেভূতে নচ বিজ্ঞাৰতে পি-ত।।। ঝেপবাছ ত তা প্রাক্তঃ পুত্রি कः वर्ष लक्ष्या। इङ्गं मिल दर्गानाः (পুভ) (हरू विठाय ह।। यहाविना-

न् ममारमन जी विवाशामिरवायछ। वाष्क्रा रिव खथा ठावं: भाकाभड़ खयाज्रदः ॥ गाम्नद्यां त्राक्रम रेक्टव र्लिमाठ काष्ट्रसा २४मः । भूमान्। ठाई विद्वा ह मुङ्गीलवर उपग्रा ए. म् प्राट्कन्याः स्थान्यायः व्याटक्या धर्मः भूकीर्खिं **३:।)। युट्डा** जू विज्ञः म-न । गृद्धिक कर्य अर्दे ।। यनक्रु । उथा मान रेमरवा धर्मः भूगमाउउ। २। এक शा भिथुन एवं वा वद्रापा-माय धर्मा छः ॥ कन्यामानस्र विधिव-मार्खा धर्म: न উচ্যতে । ১। नाहा-ভৌচরতা ধর্ম নিতি চৈবালুভাষ্য जु ॥ कन्त्रा भुरान मञ्जूई। भुल्यं गः ভো বিধি: মৃত: । ৪। জ্ঞাভিভো मुविगः मञ्जा कन्यारेय हिव माक्ति हः। कन्राभुनानः बाह्न्त्रानानुत्रा वर्ष **উ**ऽरुट । ६ । इह्यात्नरानर अध्या-गारकन्या गान्ह वत्र महह्या गाजवंः म जू विष्क्रिय। निथ्नाः कानमक्तः । ৬। হরা জিরা চ ভিত্রা চ পুসহ ক্রতী গৃহাৎ।। হরণ কিংতে ব্র রাক্ষসো বিধি কত্যতে। ৭। সুগু मडा द्रशः कन्। एचाना नीगाउ ज्या ॥ म भाभित्ध विवादानाः रेभमाः हः পुथिতा २ छ मः। ৮। পঞ্চानाक वःया श्रमा दावद्या दिलाउम ॥ रिशमाह महामृत रेन्हव न कर्न्डविहे । कराठन। ठाउँ भी मिल वर्गाना (ग्रम पर्याः नना उनः॥ পृथगा यहि वा निम्। क-र्खन्ता नाज सामाः । कन्ताः (ए जू भुषह्डि यथागङ्गा यणस्ठाः ॥ विवाहकाल गंभाछ यथाक म-দৃশে বরে। ক্রনাৎ ক্রমণ ক্রত্ শত मनुशृद्धः व अष्ठ (छ ॥ भूतः। कन्त्रा পুদানত গিতর: পুপিতানহা: । বিমুক্তাঃ সর্বগণেভেগ্র নুদ্ধোর-বুদ্ধন্তি জে। বুংলোগে তু বিবাহেন यस तमाः भूषह् जि । तुषालाकः पुरव्हीयु वृक्षारेष्ठाः शृक्षिकः सुरिवः ৷৷ বিন্যেৰ ড্ বিবাছেৰ যান্ত কৰগো शुपह्ि। जिद्रा पात्रख म्यामा वर्ष भाक्ष गह**ि॥ गा**इत्वंग विवा-(इन यस कन्ताः शुष्ड्र । भक्क **लाह मामान्ड कीउटक एरयरहित**े ॥ मृङ्गा पञ्चा (द। कन्ताः छाः श्र काट गगुमहादट । म विनोद्यक गरारेवः की उट्ड काब मक्ष्य ॥ नः मनुः काद्राय उत्पाः भूख्यान् गठः ७ गृत्क । गुजारत श विस्तरिय गुम्म (बाइत सता चदि ॥ क्यापाः वुमालदाधा सञ्खन् मूथरम् एउ। খণ ভুঞ্জতি যে৷ নোহা ছুক্ত্বা সা ন नर-दुरहर्शका। चलुहायाय कन्त्र

या॰ न जुळींयाट कमाठन। सोहि-बना गुथः पृक्षा किनर्थ मनुष्माठनि ॥ मरामज् ममाकीर्गानाछि एउ न-রকান্ডা । ভীর্ণ স্তু॰ সর্বদৃংখেভ্যঃ श्रव वर्ग नवाञ्चामा। ইত্যাদ্যवहिः পুরাণে তডাগট্ফ পুস-শানানাধ্যা यः ॥ 🗫 ॥ विवाङ्काल विष्युगवहः त (माया जारवा दथा। मिर्गिक्षावाह । ন নৰ্যযুক্ত বচন ছিন্তি ন ভীযু बाजन् न विवाक्काला। शुागाकात्य नदंषनागहात्र शक्षानृजानग्रह तः পाउकानि ॥ ইতি মাৎস্যে ৩১ ष्यश्रयः ॥ 🕸 ॥ विवारह वर्गनीयानि यथा। विवाहरू द्वान मुङ्का क्रावाद् লু এথী রবাঃ। দেবী সংগীত ভারে-का जात्र मञ्ज वर्जनः॥ इंजि कदिः द ज्ञनावार > उपराज > ज्ञानशाका। অথ বিবাহোক দিনানি। তত্তা-कापि मुखि यंथा। शुम्छ प्रवान छः मुखि विवासका मध्य क्रमाथ। विवास ए (याविजा हम्मुहर्कन) मुनि न्-যে।বিতো:॥ म ভত্ক ক্রিশারস্তে ভত্ত গোচর শুদ্ধিত:। যাত্রোদ্বাহে পত্তক্ত্যে স্বশ্ব্যাপ্নোতি তৎক্স ।। পুরেভ্য জন্ম সম্যাৎ যুরতে বি-वाङ्गाकाक्तकयू ग्नयः म् ज नाहि-শন্তি। আধাৰত: পুভৃতিত: সম-

वर्शात्रष् (भाक खर्या न भूकरच विलागवर्ष। 🗱।। अयुराप मुर्छगा नाः রী যুগ্মে চ বিধবা ভবেৎ।ভদান্নভা-ন্বিতে যুগ্মে বিবাহে সা পভিবুতা॥ भागवराह्यं भर्गावर्य यूगा ह भागवर स्व गावर। विवाह मुक्ति भुवमन्ति नः र्व वाध्याप्तर्या (क्रा-जिवि इनामाना ।। मृण्याकाकमुग् বভেরপি জন্মাসাথ নাম্বাণ বি वहरन शर्म स स्विः। शाल् समय মৃ-যে: বিবনে ভুব্যে মাধ্রগালুপ রিত: খলু জন্মণাধাৎ।। 🕸। রাজ मार्ड ७ माञ्चल य विवाद युक्त १ न वत्राव ह। मन या माः शून वहाउ रैंडब (भोत दिव्हिंडा: ॥ कम्रा সংবরণে হজেদেক বিধৌ। দাপাড্যো চি নবাপ্ত রাশি রহিতে দারানুক্লে त्रायो छात्रु हार्क अज्ञार्कि मुक विशु তে নধ্যে ২থবা পাপযোঃ। ত্যক্ত্ব। চ व्यक्तिभा इरेवयुक्ति निन विश्विक ति का जिथि क्ता शाया हिज (मोष व्रहिट्ड लग्नाः भारक मान्य ॥ शासाः गविष्णास (मायविष्णयानाक् अञ् भावायाः। ऋत्वारहरता व्यञीभारत পরিয়ে স্থানিয়াভিনী।বৈধ্তৌ বি श्वानात्री विषमास्मा ५ ग ७ कि ।। वत्रवाट वत्रविमःघाकः लाकाद्व

इर्वा उथा। ग्ला ह तुन म्ल मार গণ্ডেরোগ ভব• তথা ॥ विষদ্ধে হ্ প্য-**ছिर'णः म्याट वज्राक मत्राप जावर** । এ: उरेव माक्याः मर्स्य मण (यानाः পুकी डिंकाः ॥ ऋ॥ व्यापनायनः । उरगयान जान्यंत्राल **नायः क्ला**। ণে নক্ষতে চৌড ক্ৰোপন্যন গো-मान विवाहाः। विवाहः नार्बकालि-ক ইত্যেকে ইতি। আষাঢে ধনধান্য ভোগ রহিতা নষ্টপুদা শাুবণে বে-ল্যা ভাল্পদে ইবে চমরণ রোগা-विडा कार्जिक। **(भोरय (भु**डव**ी** विद्याः गत्रज्ञा हिट्य **मत्नाद्यानिनी** আন্তেম্ম া আ**হিতা পতিরতা না**-র: নগ্রা ১৮০ - **হলৌচ সুপ্তে নচ** क्िन्धरम् । १०५० । इस्क भनि-निक्वन गरक। सः भूष्य उदा ग्रा निज्नाः श्रागमः मध्य वाङ्गुण ह या कन्या नान्स्तर পूर्विक्राउ॥ विजिल्ली है। है या कन्। इस्त धर्म विद्याविनी। व्यतिणुकाि न। पि ग्। हन्द्रवश्चरत्वन जुं॥ व्यवसम्। खब्मारि गक्ब गाँछ जायबः। वाधिः कर्ति हैकः भाषा अकाउ पः ক্ষিণাশস ॥ ইতি বিষ্ণুপুরাণোক্ত-न। एषासायानमा शतिशृहः। वि नगानामि (वास्थ जु निकाडाम्यन

পরিগৃহ: 11 # !! সার্সকালিক ইড্য म। विषय मार छत्रवन जीम। शुरु मूकि मदम्पि मूकि भागायनवु **मिवनानाः। अर्वाक् मणवर्षि** (छ)। मूनयः कथयन्ति कन्यकानाः॥ এउट भद्रख विद्कुष मिक्दिता वहन॰ यथा । कालाज्या व कन्यांचाः काल-(मार्या न विष्ठाउ ॥ मनमानाषि कालानाः विवाशास्तर भुगन्न छः। भ्भः भुजि जना (नाया नर्व रिव हिरब्हाजा।। क्षाक्जाविद्यारणी। বাপী কৃপ তড়াগ যাগ গহন ক্ষৌর शुिकशिवुङ विम्यामितन कर्गविश न महाशानः वनः (भवनः। जीर्थः য়ান বিবাহ দেবভবন মজাদি (मरवक्षनः । प्रवित्व किक्षीविषः श-রিহরেদন্ত গতে ভাগবে ॥ 🗱 ॥ বৃ-र्माक्रमार्ज:७॥ मर्वाण मूज क ৰ্যাণি স্বৰ্য্যাদস্ত গতে সিতে। বিবা-र (नथनावक या वाक भविवर्क (यथा। माबाक्षिकि हकारता वहना-ভনেতে পু।ভিন্নিক নিবিদ্মকর্মান্ত बः गम् इत्वा**छि ॥ वालि मु**क्कर्ष्य भुक्ति नाष्ट्रे मुक्ति खीरवनाष्ट्रे। वारव कीरव वृष्ण कीरव मि शामिरा छ। ৰ্বাদিত্যে।। তথা মলিনুচে মাসি नूबाठार्य, अठावरम । वानी कून

ভডাগাদি ক্রিধা: প্রাণ্ডদিভা স্ত্য-জেৎ ॥ অভীচার গতে জীবে বক্তে रेठव वृष्टम्णाओ । कामिनी विषवा পোকা ভষাত্তৌ পরিবর্জ্জরেৎ ॥ षा अठावर गर्डा की यः भृषं छ रेनव গছতি। সমচারেপি কর্মাণি নৈব ত ত্রৈব সংস্থিতে ।।ঞ্চা। দেবলঃ। বালে वृत्का खरेथवात्य प्रकाउ रेम छ। न-ত্ৰিনি। উদ্বাহিতাযা কন্যাযা দ-ম্পত্যো রেব নাশন ৷৷ প্রান্তদ্গতঃ শিশুরহ দ্রিত্য সিতঃ স্যাৎ প্র-শ্চাদশোহ মিতি পঞ্দিনানি বৃদ্ধঃ । পাক্ পক্ষ गেব ক্থিতোত্র বশিষ্ঠ গগৈ জী বন্তু পক্ষ মপি বৃদ্ধ শিশু द्विवर्क्ताः ॥ 🗱 ॥ वाज्यज्ञामान्त्रो द्वाः জনার্ভপ্ত:। বালে বৃদ্ধে চ সন্ধ্যাশে চতু: পঞ্তি বাসরান্। জীবে চ ভार्गत रेठव विवाशां वियु वर्ड्डा ८८ া বক্তে চৈবাভিচারে তিদশপতি खाती (नव भूरका ह मृत्ध खबाहि-ত্যে হধিমানে দিবসকর বিগৌ বা क्तरा है हिन्द श्लीरम । विश्वेता कि-ত্রনে বা শরদি সুরগুরৌ সিংহ স-ছে মনোড্যে বর্ষাদাগ্যোভি চো ए। जूनियं अद्रयः (एदकन्याणि छः र्जः॥ 🗱॥ शुरु मधिक्टा ब्राजः गार्ड ७। वाल ह मूर्ज्या नाही वृष्त নষ্টপুজা ভবেৎয়ানস্থে চ মৃত্যু মাপ্নো 📙 তি সর্ব গেতদ্খরাবপি।। সিংহে ও রৌ পরিণীতাপতি দাত্মান মাতাজা-ন্হডি।ক্রমণ জিযু পিত্রাদিযু বশি ष्ठ ननात्यः भाष्टः॥ ख्रहो इति ए न विवाह माह राष्ट्री छ गर्ग शुमुया मूनी न्तुः। यरा न मावी मयगःग्रा महा-खरा ज् करम्प्राद्यस्य वरिष्ठ ॥ ॥॥ ष्यदिव मा ७ छः। मधा यकः शति-खाका यहा मि'एए एक डंबर । ज-मास्य कन्। का छा । न् छ गा नू जिया ভবেং ॥ 🛊 ॥ হারী জঃ। অভীচার• গতে জীবে বৃষে বৃশ্চিক সম্ভাষা:। যক্তোহাছাদক স্বৰ্যাৎ ভত্ৰ কা-**ला**न जुलाङ्गाङ्गा क्ञाविद्यावली। অভীচার• গডেজীবে বৃবে বৃশ্চিক স্থ-মুযোঃ। তত্ৰ চোৰাহিতা কন্যা न॰ भूषीमार स्वह्म ॥ मुन्धाः छीप्भवाद्भयः। यमाछिहाः तः मुख्याकमञ्जी दलाजि भा मग्रथ নীনসংখ্যান বাজি চেত্রদাপে পূর্ব ब्रालि॰ म् जाय शानिगुइन॰ विशिष्ठः া লভীচার পতে দীবে জ্রিরাশৌ চ্যালিতে: ভত্রন লুপ্যতে কালো बर (अ) व शता मदः ।। वाशी कृश ए डागापि निरिष्ठा निः इरग थरतो । नदहरू ह उदकार्यः नस्तायः काल

लाशकः ॥ यखु। कन्ता वृन्धिक (य-(वयू नद्मार्थ ह क्रिय तृत्य। ञाजिहा-तिशि कर्डगु॰ विवाशामि वृ**रेधः म**म । इराउउपम्मन दिवासिम्। इन ।। 🕸 ।। भी পি काया । ত্রিকোণ জায়। ধনলাভ রাশৌ বক্র।তিচারেণ গুকু: भुगा उ:। यंना उना भार मुं छ विन ্মে হি ভাষ পাণিগুছণ বশিষ্টা 🗱 । (एवी भ्रामः । सक्द्रस्थ। यमः कीता वर्ड्डाय शक्ष्मा भकः। (भरत्र प्रि চ ভাগেযু বিবাহ: শোভলে মত: 11 🕸 11 (छाजदाज: 1 (या अस्पारम फुतकर्मगाञाः कर्नम् (यदः स्कृत চ মোহাৎ। নুন স রোগ ধন পুঞ নাশ• প্রাপ্নোতি মুঢ়ো বধ বন্ধনানি ।। जाउ दिन मृया छ विष्रि कारही **চ गर्ला** जयना मणाइ॰ । जन्माथाः মান কিন ভাগুরিশ ৌডে বিবা ए एव कर्वत्वत्य ॥ छ ॥ धीन् छ-चमुष्ट्य । यानः मानः उल्ला हानः **म**वसम्बा दर्खन•। উदाङ्क स्पाः बीगा॰ दबा गरम भूषमार्ड ॥ अ॥ क् अहिन्यामधी । दश्यासम ह शू वाहत वनाहत ह व्याहरण। जनाज ৰুমুরাশৌ চ'কন্যা হি পুর সম্ভতিঃ ॥ 🗱 ॥ भर्गः । रेक्स्टि मानि उथा माला धोत्रः गितिग्यः तुउः। (काष्ठः

পুপ্র দুহিত্যোক্ষ যত্নতঃ পরিবজ্জ'-य्था वाब कार्रव मानि गर्ख का व षुः॥ उथाऽ। जग्रामि न ह जग्राञ उथा रेनव बग्रामिवाम श्री काद्राय ৷ আদ্য গৰ্ভ্ত ভব পুত্ৰ কন্যাে জৈ (৪ মাসি ন চ জাতু নক্ল ।। অত जन्मगामारि भ्यमावमा निरम्धः दिश्रभात्म जु (क्राप्टभूधामाजि वि শেষ: ॥ কৃত্তিকাস্থ রবি ভাজ্য क्षित्रं क्षेत्रं कांद्रस्ट । उँट्न विष् ठ अर्खिषु दिनानि मण वर्ड्स्यर ॥ 🗱 ॥ রেবত্যত্তর রোহিণী নৃগশি-রে। মূলানুরাধা মবা হস্তা স্বাভিযু छोलि यक्ष निथ्तिय् राष्ट्र भाषिगुइः **।স**গুষ্টোন্ত্যবহিঃ শুকৈ কড়পতাৰে-कामन वि जिल्म क्रूरे अग्रय य उद्देश नं जु ज़्रिंगो यर्ष्ठ व्या काष्ठरम् ॥ 🗱 ॥ জ্যোতি রিহিতনক্ষতাদ্ধিক চিত্রা শুবণা ধনিষ্ঠা অধিনী নক্ষত্ৰ পার-अःद्राक्तः यथा। द्यमार्याः भाषिः भृ शोगाथ विष विवृत्वद्रापिषु॥ उवद कन्छन्यारिज्याञ्जनायाणारिज्या-ख्य जानुभना निज्ञाययु नवम् नकाज য়ি ত্যর্থ:।। 🛊 ।। ভীমপরা ক্ষে। প্ बाबरम विभाशायाः भिवारम् छ इ-जुहेरम। उँहा हामा खरद कन्ता वि-विवाद्या विविद्ध विष्ट्र ॥ विक्रु जाता

ত্রিকে চিত্রে জ্যেষ্ঠাযাণ জ্বলনে যমে ৷ এভি র্বিবাহিতা কন্যা ভবত্যেক সৃদু:খিতা ॥ এবঞ্চ পারকরোক্ত• यजूर्खिनि विषय मानिष्वय या वा-थाः ॥ 🕸 ॥ व्याप्तः मधा हजुर्जाता নৈর্থাতস্যাদ্য এব চ। ব্লেবত্যন্ত চতু-र्ভारण विवारः शापनाणकः ॥ 🕸 ॥ कर्नादरभ विवारक् ह तुर् शृश्वतान তথা। প্রাশনে চাদ্য চূডাযাণ বিদ্ধ मृक्षः विवद्धं (ए९ ॥ विषक्षं छ । ভिष्र ७ व क् ७ विषेष ८ क ३ म**्या ३**० निविश्म १२ रेंड २१ कारमा १४ श्रीमम २४ विष्म २० जिथाः। रेष्ट्रापुना म्र्ग्यूखापुना ह रवानाह-म् (कप्रमाशाशक्यः ॥ दर्यकानी-न नक्क न्र्राज्काभान नक्कवरा र्भिवात यमि शक्षम्माम् । नाउम् ग॰-খ্যা ভৰতি তদা ন কৰ্মধোগ্য মি-ত্যর্থ:। সগুরি শাধিকত্বে সপ্তরি -শতি নপহায় শেষাৎ ফল অন্য-विक **স**ংখ্যानूशश्राखः॥ 🕸॥ व्यश-বাদস্ত। আদ্যপাদে স্থিতে স্থ্যে তু ब्रीयाः मः भूम्याजि । विजीयस् ज्-তীযন্ত বিপরীত মতো হন্যথা :#il वाङ्गार यात्राम्य । यान्। भन চত্থা শ চত্থা শেন চাদিন ! দিতীযেন ভূতীযন্ত ভূতীযেন দিতী- रंति। 🗱 ॥ व्यक्ति शक्त्र्वावशः । তথাচ রত্নবালা। একা মুদ্ধ্ গভা॰ ব্যাদশ তথা তির্যাগ্গতাঃ স্থাপ-যেৎ রেখা শ্চক্র মিদ বুবৈ রভি-হিত্ত খাজু বিক ভত্ত ত। ব্যা-दा जानि जु मृिख् जिन्न कविक छ-तिक द्वराष्ट्रयाः मूर्यत हल्न গো মিথো নিগদিতা দ্কপাত এ কাৰ্গলঃ ৷৷ ব্যাঘাতাদীতি ব্যাঘাত যোগ সংখ্যান্ধ স্ত্রযোদশান্ধ• ! তথা চ হস্তাদীনি নক্ষ্তানি দেযানীত্য-र्थः ॥ अ॥ यथ मध्यनाकारविषः। मीलिकायाः। क्खिकामि চতःमश्र রেখা রাশৌ শরি ভুমনা গুছং সংদক (तथाएए)(नध्। मधन ताककः।। नथ करा निवाशय भुरविषका हि (एक्ट्र भ्रथ कृतिगाषिकः । (संश्रापम् छ জিডা ল ট্রেড তৈক রেখন খনেন विद्युष्ठ ॥ # ॥ रे नित्रम् हजूर्यातम मुन्तासी विश्विम हज्हा । चिन िखाङ (थहरत विरक्तया त्राहिशी (वेक् ।। विधिका प्रशः॥ शा यम्।। मनी मश्रमनाकिनाः भारिभ प्र-भारेभ द्वश्वा विवादः । ब्रङाःभारक নৈৰ ভু রোদমানা শনশান ভূনি॰ नुमना नुगाजि॥ अ॥ अम्यानवा-(मा गथा ब्राह्मगार्ट छ। विष भूमित्य-

ন হতস্য পত্রিণা নৃগস্য মাণসং 💥 **७**म• क्र**डा**म्ए । यथा उथावा भूः जुनाम वर नुष्यिका श्तराजुनमं मुजावरुः॥ 🗱 ॥ जय अक्षमणाक চক•াউদ্ধৃ রেখাছিতা: পঞ্চ ডিযা ক্ পঞ্চ তথৈব চ। ছে ছে চ কোণযো রেথে সাভিজিৎ কৃত্তিকাদিক ॥ শস্ত্রকোণে দ্বি গ্রীয়ে তু লেখবেৎ স इंक्स न। जूबि र्डिंच मेखा स्मेरिया ৰ্ক্তৰ পরিবজ্জবৈশ্য । নত্বা পাতে চ (य (नाच (ग ह मध्रणनाक (क। (उ भार्व পু छवष्ठाञ नामः शक्षणवाकत ॥ श्रथ हकानुत्य कन्हिर भाष्त्वर ই(र्ग/छ ॥ **# ॥** छम्ज द्रद्भानाः याः। रिक्ष्किस्डाशीयग्रंड शापादव इति। इति भक्षाना का कि।। ।।। द्रज्ञालायाः। च ः वामन मूख्यः भिन्न बारी तु स्वातः छएः वक्षः **ठाष्ट्रेग महंब**न्त भूतरा शंख गुरे॰ नद्या । भन्छार नछन भिन्तु इंख নবন॰ রাহ: সিত: পঞ্ম॰। দ্বাবি॰ শ• পরিপূর্ণ মূর্ত্তি কড্প: সভাড্যে-ষেত্র**ে॥ নত্ত্বাপাতো ২য•॥** #॥ পাপাৎ সপ্তন্গঃ শশী যদি ভবেৎ পাপেন যুক্তে। ২থ বা। যহাত্ত প विवन्धिरिष्ट मुनिमाजा (मार्या एवं कथारङ । याकायाः विभाग ग्रह

जुठ वक्ः क्लोद्मयु द्रारमा खरवा भूऽ-चारह विश्वो वुट्ड ह भवन भ्रास्थ भुःऋर्यानि॥ १६॥ त्रवि सन्तर छ्छ। কাৰ মৃগাদ্ধাৎ সপ্তম ডাৱেং। विवाह याजा ठ्उान् ग्रहम्यं भुव-শ্ৰে ।। যামিত্ৰবেধঃ।। 🕸 ॥ মূল ত্রিকোণ নিজমন্দিরগোথ পূর্ণো মি-बर्क भोग्रगृहागाथ उनीक्करण বা যোনিজবেখ বিজ্ঞানপল্ড্য माधान् क्षाया हदः भु उत्रक्तिव ধ্ বিশ্বভো । হা। ভোজরাজ:। ত্রি रप्रतेनकारमामा प्रितनः जुजार्थ स्ति जागः भुजनुमः न्यारः विश्वा मा अष्टिमद्राणिकः इः (णारवस् कन् पूः খ শুচ: করোতি ৷ রবিশুদ্ধি ৷৷ 🕸 ৷৷ कन्। नक्व मुखी म्। विवादः मुख-क्श्गा । भणा खर् विभूक्षा वृ या वा भुद्धार्भवाष्यः॥ # ॥ दिन्त्राध्दीः বিলাসে। পুণ্সা মর্ক: মৃতো যোনি যোষিতা মন্তদু,তি:। অতঃ পু॰ যোষিতো: শস্ত বল মর্ক শশাক্ষরণ ॥ গোচর শুদ্ধাবিনদ্ কন্যাযা হত্ন э: শুভ বীক্তা ভীত্মকিরণঞ পুত্র: (भरिष ब्रवरेण ब्रिश विवारः ॥ 🕸 ॥ দিতীয় পথাক্ষগতঃ পুভাবরঃ ত্র (गारमाहार भव्रजः मृज्भुरः। न জন্ম সপ্ত ব্যয় রন্ত্রগ তথা করোতি

भुः भा भिन छाम्भः कलः ॥ खवा व्यानभाष्ट्रा भद्र ३: ॥ 🕸 ॥ व्या-ममिनिनान्यारकी मम यह ध्रतीमृडः॥ मार्खः दिनक्ष भीजाः मू मामस्मका-म्म • जगः। भोतिः भामाधिक • वर्ष • याभागकी वृहम्माखिः॥ खरनार्खः ত्छः (मीरम्)। चातुनामाम् डाः क-वः ॥ 🗱 ॥ क्षेटः दु जानिएक नमूर् न उथा (नियं जागगाः ॥ 🕸 ॥ नाः **७८ ११ १५ ज्**र्यं) नवरम म्माम छः था। एक ज् छ द्वी (नायद्वी दिवाइ বজতে শৃভ•।। অয মেব সুতহিবুক যোগ: ॥ 🗱 ॥ গোধুলি • ত্রিবিশা• यम् अ मुनरमा नर्त्र विवासामितक-स्य **भिभित्र भु**यां । गृम्जा॰ পিগুক্তে ভাহ্মরে। গ্রীম্মে ২র্জা-खिमा वमसम्माय जानोगा मृ শ্যতা॰ সূর্য্যে চাস্ত মুপাগতে চ নি-यउ॰ भावृद् भद्रदकानायाः ॥ 🕸 ॥ वायः यहा नाखि विभूख मन्यासाय्वि-কা॰ তত্ৰ শুভা॰ বদন্তি। লগ্নে বিশু॰ ष्ट्र गिवर्वेग्युक भाष्ट्रिका रेनव क्ल विषय ॥ 🕸 ॥ नामिन् गृहा न जिथाया न ह विश्वि वाद्रा आकानि रेनव जनयन्डि कमाणि विष्-। अव।। হত:সতত মেব বিবাহকালে যাত্রা-সু চাষ মুদিতো ভৃগুজেন যোগঃ॥

॥ 🗱 মার্গে গোধ্ লথোগে পু ভবতি 🖔 विषया माधमारम उरेथव भूषायूर्वन যৌবনেন সহিতা সম্মে স্থিতে ভা-ऋद्भारिकार्थ मूथरा भुका धनवजी हिन्नार्ष्ठ भाउ स्थानमा आवारा धन था-न। পूध वहना भागिगुरह कन।का 11 🗱 ।। विवाह भहेत्व । वृह्या धनु वि ह वनित उर भ्वां कि में जिल्ला में ब्रथः॥ 🗱॥ (ब्राजि:नात्रमःगुरह्। বিবাহে তু দিবা ভাগে কন্যা স্যাৎ शुध्यक्तिं छ। विवा**रा**ननस्था गा नियं चार्मिया जिनी ॥ 🕸 ॥ महा-ভারতে। রাভৌ দান ন শ সন্তি विना ठाउयम्बिनाः। विम्राः कः न्। विकाम्धा भीश समः भुजिम्यः ।।#।। ব্যাসঃ। রিক্তাসু বিধ্বা কন্যা मर्ल्स २ ि महिदाहि । मरेन-**क्का** इतिराम हे हिन्दु स्था कि कि कि कि বেং। ভিন্মন বিবাহিতা কন্যা পতি সন্তান ব্জিতি। ॥ 🕸।। সৃতিঃ। খর্মা:-र्थ कान (नाकाना मात्राः म नाहि (इडत: । भद्रीकार्रंड भूरत्वन भूर्व (नव कत्रगुरार।। अ॥ मनुः। व्यवता-क्षाक्री॰ भोनानी॰ इ॰न वाद्रग গানিনীণ। ভনু লোন কেশ দশনাণ म्बक्षी मुद्रहर द्वियः॥ #॥ माजा-ख्यः । इ·मधनाः (न्धवर्गाः मधुः।

পিস্বল লোচনাং। ভাদৃশীং বরবেৎ कन्याः गृहञ्चः मूथ (मक्षा 🕸 🛭 🕸 💵 ভবিষ্যে। পুতিश्चिতनाः मगुक রক্তান্তোজ সমত্বিষঃ। তাদৃশা শ্চর-ণা ধন্যা বোষিতা ভোগবর্দ্ধনা:॥ পুতি হিতো ভূমৌ লগ্ন: সম खला ংধাভাগে। যেযা॰ তে তথা।। #।। मन्:। ताष्ट्र किल ना॰ कन्।। नाषि हाञ्ची न द्यागिनी । नात्नामि-কা বাতি লোমী ন বাচালা ন পি व्यनाः ॥ नकः वृक्त नरी नामीः नामु পর্বতনানিকাং। ন পক্ষ্যহি পুষ্য नात्री॰ न ह ভीषी नामिका॰।। 🕸 ।। প্তিপুসব নাহ নৎস্যুক্ত। গৰা ह रगूना हिव लामजी ह अब्रच्छी। निर्मायानाः नाम वृष्कं नान्जी जूनः সী অপি ॥ বেবতী চাশ্বিনীভেষু রোহিণী শুভদা ভবেৎ॥ 🗱॥ कृष्ठाः চিন্তামণী। নেত্রে যস্যাঃ কেকরে शिक्रांव वा महामृश्मीवा भहाव वा-लिक्न ह। क्ला यम्। गखर्याः স্মিতাথা নি:সন্ধিধাণ বন্ধকীণ তাণ वम् छि ॥ 🗱 ॥ निम्तिक्यं त्र शृद्राण । मग्रामा मुरकणी उनुरवामत्राभी मु ब्दः मूनीना मूगिः मुम्छा। (वर्षो বিনধ্যা যদি পক্ষজাক্ষী হলেন হী नालि विवाइनीया॥ धृष्ठी अरखी

यरि भिज्ञवाकी लाग ममाकीर्ग मनाव्या छै: । साक्षा छ शृष्टी यहि রাজ কন্যা হলেপি যোগ্যা ন বিবা-इनीया।। क्षाः शाही उः। उत्राट क ल नक्ष विद्धारनाभगमा वत्राय् । নক্ষরোপপরাং নাডীংক্ষরহীনাং ॥ 🗱 ॥ नाजी नक्व माह च्याहरण। অ্থিন্যাদি লিখেচুক্র সপাকারণ বিনাডিক । তব বেধব শাজ্জেয । विवाशामि मुजामूड ॥ विनाडी तिथ नक्ष मधिनामू यूगा छता । श्खन्तु मूल वाक्नाः भूवं छाद्रभमा खया ॥ याग्रः भोष्ग्रा धक् व्यनि শ্চিতা মিত্ৰ জলাল্ব্যণ ৷ ধনিষ্ঠা চো-खद्राञ्मा संधानाकी वावक्षिकाः ॥ 🗱 ॥ कृष्टिका রোशिगी भागी मधा ষাতী বিশাথকে। উত্তরা শুবণা পৌঞ্ পৃষ্ঠ নভৌ ব্যবস্থিতা: ॥ 🗱 ॥ व्यथानि नाडी (वदार्क्ष वर्षः वि छीयकः क्रमार । यामग्रापि ज्या ज्यं प्रक क् उ का नि विष है कक ।। এव॰ नित्रीकरगरवश कन्त्रा माख मूल ত্রো। পণ্য শ্রী স্বামি নিত্রেষু নেশে पुष्प भूष भूष भूष ॥ अक्काफी इ पिक्षानि यपि कुर बंब कन्यायाः। छम। विष विज्ञानीगाए छर्बा मियू उरेथव ह ॥ भूकि पना बसर्यः जना बसर्यः ॥

(डा यामः। भूगष्टे॰ बच्च छ यमा जमा नाभर्काञा वाष्ट्र॥ द्वा वा क्व अरवा (वंदा घरमा नीम ভरमा खथा। नाम बन्नकर्या तिथा न कर्डवाः कनाःन ॥ একনাড়ী স্থিতা চেৎ স্যাৎ ভত্ত্ৰ नाभाग ठाञ्चना। खन्नानाडी व्यक्षा वीत्कारी विवारह मु छ निह्छा ॥ 🗱 ॥ প্রাড্নাড্যা বেধতো ভর্তা মধ্যনা-एडा ज्य॰ ज्वा। मृष्टनाछी व्यास क-न्। ग्रियाञ नाज गः गयः ॥ এकनाडी স্থিত। যত্ৰ গুৰু মূজিক দেবতা:। ওত্ৰ ৰেষ' কল' মৃত্যু জনেণ ফল মাদি-শেং ॥ পুভু: পণ্যাস্থনা নিত্র দে-(मा गुाम: भूब· गृष्ट् । এकनाडी गः তা ভব্যা অভব্যা বেধ বজ্জিতা: ।। 🕸 ।। পুতি णुगव भार (ब्राजिय। এङ्रहाम्।। दि याण जू नाजी प्ता-(का न विलाउं। म यथा। अक्रवारणी ह मन्त्राख्याः चूं छ॰ न्यार मगमध्य । ठज्र्य मणाय देवत ज्जीरेयकापरण ख्या ॥ 🗱 ॥ **मनगु**रुगाधियम मछ-কে দোব:। তথাচ। বোটকে সপ্তকে भियं जुला यूग्र रहते उथा। मिन्ह घछी मना वरकार्र मृडि॰ उजार्वी: ছিব: ॥ 🗱 ॥ 🗐 পতিব্যবহার নির্ণ-रिय ॥ मूझरनकाविन द्यार्ग जाद्रा दल वन्। वार्मी वा। अभि नाउ।-

দি বেধে ভবভি বিবাহো ছিতার্থায় " ।। 🕸 ।। द्राज्ञनार्खाल । न जाजस्मार्श পূথ্বৈরিভাচ ন ভারশুদ্দি ন গণত্র य नगर। न नाजीसाया न ह दर्ग पृष्टि गंगान्य एउ सुनर्या यन छि। का। র্ভেযোগন্ত এমরাশ্যাদি যোগ এব **छोबर नाउग्रानि भुठिणुजना** । औ পতিরত্নবালাযা ।। অধে ভাজ क्तिवरक त्रजुहारवानमूक ग्विक काथुः भोजनम खाजानि महियी व्यागः भूनः भोत्र छी। व्याग्युर्गि म्ग সন্ত্রী কলি রথোরভু ঘ্রণ বানর: সিংছো হথো মূলরাট্ পশুশ্চ কর-টী োনিশ্চ ভাৰা মিয়ং।।গো ব্যাঘুং शक भिन्द गर्य गहिया दियाप वजु द्रगः देवज्ञः वागत भाषकक गुमहाउ-ছিছিডালোন্দুক্। লোকানা ব্যব-श्वादरकानामिक छान्। भूरजा-क्तिर पर्लाख्या वृशि ভৃত্যा **র**शि नमा दर्जाः मुख्नाधि छि: ॥ मदत मध्य छ॰ निश्रन कन्। कन्ना म्रान-न्तु भी भी है। वृष्ठ जुल रुलि भी (यो कर्क है धनुषी ह भिज विष्धे॥ वः **उद्वेकाविडिल्ग्यः ॥३४॥ यद्रियउ**द्वेक नार। मकद्रः कति जल विश्वा कन्ता **(मराया मरू** वाय खनाया। कर्त्वि घरही े व्य धनुषी वृश्विक विद्यास छात्रिविधी

॥ अः ॥ यनि कन्राष्ट्रत् छर्छ। छर्छः यरष्ठ ए कन्रका । रुएक्टेक॰ विजा-नीयाषिर्द्धिंड विमरिण त्रिणा ॥ 🗱 ॥ भुःमा गृहाट मुख गृष्ह मुख्हा ह কন্যা ধর্মো ছিভা সুত্তবভী পতিব-লভাচ। বি ঘাদশে ধনগৃহে ধনহা চ কন্যা খাস্ক স্থিতা ধনবতী পতি বল্ল ভাচ।। ধ্ব।। ষডপ্টকাদৌ ভারা-नियम भार जीनशबाकमः॥ भी क्षारा बुख्या घरिया त्रिश उरमारिह কাৰিপত্ত্যে দিবা তারা ষষ্ঠ স্মিত্র নিত্র দহন ক্ষেমার্থ সম্প্রক। হট-কাপ্তে নব পঞ্চনে ব্যয় খনে যোগেচ भुः (याविरञाः भी अायूः मूथ वृधि পुश्चिमकः कार्य्या विवाश छम।। 🗱 ।। नर्भः । न्या 🗢 जाता दिखाए গুহু রিপুভাবে চিরেণ। রোগাদি नव्रनार्य्याः चर्काञ्चरक रेवत् मद्रण्यः ज्यमाण्॥ #॥ व्यातः। रेमवारि शाशिन यउडेकामी जावा विनट भुगुति रेनथनाथाः। वस्कृत विवी হে পুক্ষোড়ুভো হি পুীভি: পরা ভন্মস্তারকাসু॥ নক্ষত্র মেক খদি ভিন্নরাশি ন দম্পতী তত্ত্র সূথ ল ভেতা । বিভিন্ন মূক্ষণ যদি চৈক ब्राणि उपाविवाहः मुख् भौथापारी ॥ अकक्तं ह यहा कन्। ब्राम्म को ह

गरा ভবেত। धन गुजर श नाती ना धी जर्ज् भिया मना ॥ यउ हेरक भा मिश्रुन शुरस्य का मा जन्मा নব গঞ্কে তৃ। দ্বি দ্বাদশাথ্যে জন काश जागुः विशाहनः (इम व नाडी. (ए११व !। 🗫 ।। भद्रभः भाऊ। द्वारम क-**ारु: य**े्रेकाष्ट्रेरक विश्वखि र्दा । स्पन গভ্যতা ত্ৰিকোণে দ্বিদ্বাদশে চদা-हिपुर कि। क् अ हिन्तामानी । इन्हा च। जि. नि. ग्रामितः भूषः रेमवासि ভানি পৌঞ্চিত্তি জন্ত রিছ বুধা रित मञ्जानि ভानि । পূর্বান্তিসু: শিবভ ভরণী রোহিণী চোক্তরাক্ষ भुार मंड्राख्य मूज्यम न्न मिडः गूगीन्युः॥ **ठि**खात्स्या निर्शां शि-তৃ তে বাসব বাসবর্ক শক্রাগ্ন্যো उं वक्न पष्ट्रनाक ठ द्राक्नागानागः ॥ 🗱 ॥ ফলমাহ গ্রীপতিঃ। স্বসলে हाख्या श्रीं ७ र्मश्रमा (मव मानुष्य। (मवानुदा कनिष्ठा b म्जू) मीनुय ज्ञा-क्ला ॥ अ ॥ ब्राक्तभी व यहा कन्।। मानुषक्ष वादा जातरा । जना मृजु र्न मृत्रस्था निधनषु म्याशिवा॥ 🕸 ॥ রাজমার্ভণ্ড। যদি স্যাদাক্ষসো ভ र्जा कन्यका मानूषी ज्यद् । विवाह मुथमारशां रिवनबी छाः विवर्क पट ॥ 🗱 ॥ युक्त क्र पार्गरव । (मना विविका क्री मूर्जना। इंकि किका छ-

खरिष्ठ गूष्कन मर्ज्या नाय गः भरः। बक्ष**माः मानुषा**ताक जन्मात्व वि-**"हरा मृजिः॥ क्षा क**ि भी नालत्या विशाः कथाः निः र जुन। रुगाः। रेक्ना। युधान बद्धालाः म्न वृष मृगाः ।।।। गर् । भतिन-धिष्ति भुः का बिरमा नद जान् सद्द । यजामुरमा जलिहमा जिमूः मृत्यू পুकीर्ভिजाः ॥ 🕸 ॥ दर्भाष्ट्रीष्ठा ह या नात्री शीनवर्गण यः श्रुमान्। नश-ভ্যপি হলে জাতা নামৌ ভর্তনি রজ্যতে॥ ইতি ছেগাভিস্তত্ত্ব ॥ 🛊 ॥ ष्पन्ऽ८ उहारुभस्य पुष्टेवऽ॰॥ বিবাহিত: পু' জ্রী কৃতবিবাছ:। यथा। भरिन क्रम भित्न रेष्ठव यमि ज्ञि-का डिपि ज्वर। ज्यान् विवाहिः তা কন্যা পতি সন্তান বৰ্দ্ধিতা।। অপিচ। বিষ্ণু ভাদে। ত্রিকে চিত্তে ন্যেষ্ঠায়া॰ জ্লনে যনে। এতি विवाहिला कन्। निका स्व मृन्ः-থিতা।। ইতি জ্যোতিস্তত্ত্ব• ॥ বিবাহা: পু॰ জামাতা।ইতি কে: हिए॥ विवाह्यामा जि॥ বিবিক্ত• ত্রি পবিত্র•।। বিজন•। ইত্যনর:।। অসম্পৃক্ত:।। বিবেকী। ইতি মেদিনী॥

শেষ:।। মু দুাঙ্কি তপ্তকে বিব্লিক।
। ইতি পাঠ:।।

विविध जि नाना शुका त । इंज् ।

विवी उ: शृ ज्ञिति। भवः। यथा।

स्मा (नयाः विवी छिण थाद्राष्ट्रे

निरुषी समः। विवी छ: शुष्ट्र हुनकाष्ट्री तक्तमानः शित्र गृह्र हुनकाष्ट्री तक्तमानः शित्र गृह्र हुनकाष्ट्री तक्तमानः शित्र गृह्र हुनकाष्ट्री तक्तमानः शित्र गृह्र हुन्।

साम छन् भवाः महिष्ठा निनाः विसाम । इकि निजाक्त तायाः सामशास्ति विवादि सुक्र दुनः।।

विवीजज्जी भू॰ विवीजज्यामी। इति निजाकता।।

विज्ञा जी पूर्णगा है छ जूबि भूरगगः॥

िवृङ जि दिस् छ । इंडि (मिनि ॥ विवृङ। ज्ञी स्पूष्ट्याः । इंडि (मिनि ॥

विवृज्यकः शू॰ ब्रङ्गः। इंडि हिमः हन्द्रः॥

दिवृद्धिः स्त्री द्रान्ता। वि भूवं वृ शाखाः कि भुद्धायन निष्ठमा।। दिवद्रपः। यथा। मिक्किपुरुः द्राकदः पाभनान कायाध वाक्ताम्यवर्गः त्रष्टकः। वाक्रमा स्थार दिवृद्धः वेप्रज मानिद्युद्धः निष्ठाभक्ता वृ

षाः।। ইতি মলমাসভভু॰।। विवृद्धः जि हिलाउः। १९११ विवृद्धः পার্শ্ব ক্রিরাস্থাবা সমুদ্রহ্যাক नि उपत्रभाषा आभन्त् भञ्जत्व विकास তাল গোপাফ্নান্ত্য ঘনদ্যত্ত ॥ ইতি ভঞ্জि: ॥ বিবৃত্ত ভিৰ্যাক্-চলিত পার্শ্ব যত্র।ইভি ভটী না¹ ন্ত্ৰী क मुक्रपुरः। यथा। বিবৃত্তা অণ বিবৃত্তামাহ। বিবৃত্তাম্যা ক रातारः भाषापुष्वत्रनिक्षाः । वि বৃক্তা মিতি তাং বিদ্যাৎ পিট্রোং প্রাপ্রাপ্তলা। পরিতঃ শোখ-বভাণ।। অথ তদ্যা শ্চিকিৎসা। বিবৃত্তা নিশু হৃত্তাঞ্প গৰ্মতী আল-गर्पड । शिखिकमा विमर्शना ক্রিংয়। সাধ্বেৎ ভিষক্ 🕽 পাকে **छ् भ्षयायशास्त्र शोक् मंध्रता** वन জৈ:। ইতি ভাবপুকা**শ:**।।

বিবৃত্তি: ত্রী চক্রবজ্জনণ। ঘূর্ণনণ। বি পূর্ব বৃত ধাতো: ক্তি পুত্যবেন নিয়য়। ।।

विदिनः शुः भद्गणप्रविश्वानः
सम्बद्धाः निम्हयः। भूकृष्ठि भृद्धयाः
दिज्ञागन द्धानः ইखानः। ইতি
ভद्रजः॥ उद्भर्गागः। भृष्णाद्यः
छ। २। ইত্যমরः॥ विदिहनः ०।
ইতি শদ্দব্বাবলী॥ পৃष्णुादः ।।

इंडि ध्रविः ॥ वित्वत्का दस्ताः (छमः भुक्छः भूक्षम् वा । इंडि क्रिथ्रः ॥ कलापुः । । विहारः । । इंडि (मिमी ॥

বিবেকিতা জী বিবেকিন্তু । বিবে-কিনো ভাব: । যথা। যৌবন থনস স্পত্তি: পুতুত্ব নবিবেকিতা। একৈ ক নপ্যনথায় কিন্মু ভত্ত চতুষ্ট্রয় ।। ইতি হিতোপদেশ: ॥

विदर्का नुः (एवरमनद्राक्तभूयः।
यथा। (एवरमत्ना १ श्रि किन्निताः)
क्रम्यामाम भूयकान्। मछ मण्ड
छान गूः नाम डः कीर्डिङाः छथा
॥ ममना वसूनान क सङ्पूर्य यवनः
कृति। नीरमा विद्वकीर्डाङ वि
नहमाद्रविभावनाः॥ ইडि काणिकाणुवार्य रेडव्रववःभान्तीर्ड्यन
२० ज्यागः॥ विष्ठावक्षार्थ एर्मनाः
॥ विद्वकविभावे छ।।

বিবেচ ক: পূ॰ বিবেচনকর্তা। বি বেচযতি য ইত্যর্থেনক পুত্যবেন নিম্ননঃ।।

বিবেচন• ক্লী বিবেকঃ। ইতি শব্দ রহাবলী।।

বিবেচনীয়: ত্রি বিবেচ্য: 1 বিবেচি

তব্য: 1 ইতি বি পূর্ব বিচ্যাতো

त्रनीय भुजं त्रम निम्नमः ॥
विवृतन् जि विकक्षयका। यथा।
या न जाठा भिठा वाभि न भूट्या
न नियाजिङः। भन्नार्थवाभी मे खुः
न गिर्थाजिङः। स्रार्थवाभी मे खुः
न विकक्षः तुनन्। इंडि वृत्वस्थानः
छक्षः॥

বিবোটা[®] পু॰ বর:। পভি:। ইতি হেমচন্দু:॥

বিৰোকঃ পু• জ্ঞীণা শৃক্ষারভাব-জা ক্রিয়া। ইত্যনর:।। অভিনত-বন্ত প্রাণ্ডাবিপি গর্মাদনাদর: সা-পরাধন্য চ সংযমন ভাতনঞ্চ বিহোক:। যদুক্ত•। গর্ৱাভিমানা-দিষ্টেপি বিল্লোকো হ্নানরক্রিয়া। তথা। অভিনত বন্তুপজ্ভাবিপ **९**क्शर्वास्माम्ब्र खनुशः । ज्ञुलिङ श्रियमा इत्य मःयम खाउनमयस বিধ্বোক: ।। ইতি ভরত: ।। বি-ব্লেকে স্তৃতিগর্বেণ যস্ত নিত্যেপ্য-नारद्रः। न जुदा इस रागाप्त पीय-তা গমনাদিযু ॥ ইতি সারসুন্দরী ॥ इर्डिनि गर्च मानाज्या वि-(स्वा तः म्यापनापदः । देज् । ङ्क् वः ने व्यम्पाः ॥

বিদা ঔ দা পুরেশে। ইতি কবি-বহুজমঃ॥ দা বিশতি। ঔ অবি

निर्घणैः॥

फ़र. । विख्**म कन्डि**ड्य छ পোৰন । বি পরা জি পরি ব্যব জী নিবিশে ভ্যাদিশা অনেপদ বিধানে পি ভত্ত রক্ষে নিবিশতী ভ্যাদি-তি রঘৌ কেবলাৎ শতু পুতায় বিধায় পশ্চাদ্পস্গ যোগাদিতি मुघ रेवृत्तिः । निमास हेरु छैलम्य । প্তিৰূপকো বা ৷৷ যুমাদিখ নিদ্ সর্ তস্ত্র শক্রানহাল্নঃ। তম।-েবোচ্যতে বিফ্ বিশ্বাতোঃ পু বেশনানিতি পুরাণে বিষ্ণ শব্-ব্যুৎপারনাৎ মৃদ্ধন্যান্তোয় মিতি किट विद्वार । **उ**न्ति वालिक । न वं नग उदार। ইতি पूर्गानामः॥ বিশ লী মৃণাল । ইত্যমরটীকা-याः ब्रायमञ्जूषेः ॥ विশक्शे नु॰ वनाका। ইতিরাজ निर्घः ॥ বিশল্পঃ ত্রি শল্পারহিতঃ। বিগ ত। नका यम्। वर्र् वीहिः॥ বিশন্ধটঃ বিশাল:। ইত্য বি नंत्रः॥ বিশদ: পু॰ খেতবর্ণ:।ইত্যমর:॥

दिममः जि विभवः। इं एक्म-

শ्रुखगगुकः। ই अ। महः॥

हन्तुः॥ व्यक्तः। इंडि मिनि।।

বিশ্যঃ भु भःभयः। दथः विषया विभाग रेम्हत भूर्बभक्ष खरणा खत्र। নিৰ্ণৰ শ্চেতি পঞ্চাঙ্গুণ শাস্ত্ৰে হবি-कद्रग॰ भृष्ठ• ॥ विषया विष्ठाताई वाकार विभाषा इनाग मर्था न বা ইতি সংশয:। ইতি তিথ্যাদি-ভত্ত।। আশুয:। ইতি কেচিৎ।। विणयी वि जः गयी। ইভি विणय-मदार्थमभंगर॥ **न्** वधः। ইত্যময়ः॥ বিশরণ লী নারণ। ইতি হেম-5 PH: 11 বিশল্য: ত্রি শল্যরহিত:।যথা। সশল্য: স সম্ঘূষে লক্ষ্ণ: পর-वीत्रशा विचारना। विकन्नः भीतृ मुम् जिक्षन् मही उनार ॥ इंडि জ্বানাগণে যুদ্ধকাণ্ডে ১০২ সর্গঃ॥ विशानात्कद्रभी छो 'छेवधिविरमयः। यथा। भृदं उक्षि जा (गा शती বীর স্কামবতা তব। দক্ষিণে শিথ-त्र जा जा॰ महोय वि भिशानय !! विलव्यक्रवर्भः नामा भादर्गक्रवर्भः **७था। म॰**कोवकव्रभीः वीव सक्षानीः क महोययाः ॥ इति द्रामाद्रा वान्त्रीकृत्य पुष्तकात्छ २०२ भर्गः ॥ विषाली भाग विभाइता जी शली। इंडि ब्राज- विभानाक्ष

किछत्राद्भागापितृ जिः॥

विशाक्षत्रः श्रू॰ जुमू हुएः। लक्षात्रिक्

इंडि जाया। इंडि न्य हिन्मुका॥

तिनाथः श्रू॰ का जिःकयः। इंडऽ

मतः॥ धृतिना॰ विज्ञ छु उद्भागापिकः।

ने स्थाने । इंडि जुजः॥ याहकः।

ইতি মেদিনীকর (হুমচনেদ্রী।। প্রনর্বা।ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।।
বিশাথকঃ পু॰ নারকঃ।ইতি শব্দচন্দ্রকা॥ বিশাথকাতে ত্রি।।
বিশাথল॰ ক্লী যুদ্ধকালে মধ্যে বিন্যত্তপাদদ্বগায়থা। বিশাখল৽ ।
বিন্যত্তে পাদ্যুণ্ম বিশাথল৽ ।
ইতি শব্দালা।।

বিশাখ। স্ত্রী কঠিল্ল ফ:। ইতি মে-रिनो ॥ अधिनाहि मधिन्या নক্ষত্ৰান্তৰ্গত যোড়শ নক্ষত্ৰ ৷ তৎ পर्यत्रायः । द्वाक्षा २ । इक्ताप्रदः ॥ বিশাথে দ্বে। পত্ন্যোর্মধ্যগত স্তত্র সূত্রীব: প্লবগেশ্বর:। বিশাখ্যো র্ম-ধ্যগতঃ সংপূর্ণ ইব চন্দুমাঃ। ইতি রামাযণ ॥ অভএব দ্বি মুচিত॰ কিন্ত এক তারাপেক্ষযা এক বচন মিছোক্ত•। ইতি ভরত:।। তস্যা ৰূপ ভোরণাকার চতুস্তারাম্য• । ইতি নৃহ্রতিস্তামণি: ।। ভোরণা-কৃতিনি পঞ্চ ভারকে তারকেশ ব-দনে বিশাখভে। তদ্বি যান্তি বিবু-ধাধ্মধ্যণে সম্ভতো রস ভুজাঃ কলাঃ প্রিয়ে॥ দ•। ০। ২৬। ইতি কালীদাস কৃত রাত্রি লমনিকপ: कगुरः॥ अभा अधिदाव भ-কামী। ইয় • নিশুগণান্তর্গতা। ইতি

বিশালা

ভাগতিভন্ত। ক্ষাতি জনত জাততল । লকান্যকে। বিবিধ ক্রিয়ায়া সুন্বর্ণকারে রপি সথ্য মেতি। যস্য পুন্তৌ চ ভবেৎ বিশাখা সথা ন কস্যাপি ভবেৎ পুস্ত:।। ইতি চোষ্টাপুদীপ:।।

विणायः भू॰ भूइब्रिकारीना॰ क त्मि भाषनः। यथा। उभणाया वि-णायकः भर्यऽ।य णयनार्थाको । इडामदः॥

বিশারণ ক্লী মারণ•।ইতি হেম[্] চন্দুং॥

विभावनः जि विवान्।। প्रश्लः। इज्जियतः।। পুলিদ্ধः। ইज्जियशालः।। वली ।। (मृष्टः। ইज्जियशालः।। वन्नत्व भु• ইजि वाद्यनिर्यणेः।। विभावना जी कृमुन्द्राल्जा। ইजि वाक्यनिर्योः।।

विभागः वि वृष्ट । इञ्जातः ॥
विभागः शुः सृगाल्यः ॥ शकः
जिमागः शुः सृगाल्यः ॥ शकः
जात्र इति प्राप्ति ॥ नृशाल्यः ॥
विभागः वो शार्थितवातः ॥ व स्वात्र इति शालः । उट्यां स्वात्र ॥
विभागः । इति शालः । उट्यां स्वात्र ॥
स्विताः । इति शालः । उट्यां । सामानः ।
विभागः । इति स्वत्र द्वावणी ॥
विभागोद्वार्णाः शुः श्वाह्यादेशः ॥

। ইতি রাজনিঘণ্টঃ ।। বিশালত্বক্ পু• সগুপ্ফ: ইত্যমরঃ ॥

বিশালপতা: পু॰ কাসালু:॥ ত্রী-তাল:। ইতি রাজনির্ঘণ্ট:॥ বিশালফলিকা জ্রী নিয়াবী। ইতি রাজনির্ঘণ্ট:॥

विणान। द्वी इन्पुवाक्गी। इंख्युभवः॥ विणाना कक वाख्यी (मक् क्ष्रेक्ता मता। इंख्याक्तवस्म छः॥ উজ्ज्यनी। इंख्याक्गी। इंख्याक्त मकी॥ मर्हन्द्र शक्ती। इंख्याक निर्वेष्टः॥ छं श्वित्मियः। यथा। ग् धन (क्षाणवा मण्ड सर्वे छीर्थय्यः विविः। वर्ज्यात्र श्वाः शक्ताः विः णानाः वित्रसाः छथा॥ इंख्याः भानाः वित्रसाः छथा॥ इंख्याः भानाः वित्रसाः छथा॥ इंख्याः भानात्रमाः छान् मछोः विणानाः वाङ्गा नथा मक्षः श्वामास्मारम्य हरुप्ताः १तिक्षेत्निम्बाः। इंख्याः

বিশালাকঃ পু॰ হর:॥ গৰড:॥
স্বেত্রে ত্রি।ইতি নেদিনী॥বিষ্ণ:।
ইতি কেচিৎ॥

विশानाकी जी वहस्री। ইंडि विश्वः॥ नामन्त्री। ইंडि द्राक्षिर्दिः ॥ भार्वजी। यथा व्याप्तिकान । ना

ঈশ্বর উবাচ। প্রুব মাদ্য সমৃজ্ত্য || भागावी**ज" अगुष्तद्र । विमा**ला-क्की भर (एउ र क्रयः मञ्जाबाद ॥ अक्षेत्रकृती सङ्घाविष्ठा अक्षेत्र-দ্বিপুদা শিবে। পুসক্ষাৎ কথিতা विष्ठा दिवानाका पूर्ल का शिर्य ॥ यायि त्रम्या गरङ्गानि महागिता মহাপুড়:। প'ক্তিশ্চ ছন্দ: কথি-ত বিশালাকী চ দেবতা।। শক্তিঃ পুণৰ মিত্যক্ত লক্ষাৰীজঞ্চ ৰীজ-कः। धर्मार्थ काम साक्ष्य विनि यागः भूके खिंठ: ॥ **अञ्चाम क** ब्रन्धारमो गथावन जिस्तर । यप् দীঘভাজা ব্যজেন পুণবাদ্যেন কল্প (यट ॥ मृत्वन नाशक के नामा द्या लिप्स्वी॰ श्रेत्राः । स्वत्राः । श्रेत्रायः (प्रवी विभाव। भी उधकार्यम পুভা॰।। দ্বিভুগা মহিকাণ চণ্ডীণ थर थर्भव्रशाविगी । नानामहाव সুভগা•রক্তায়রধ্রা• শুভা•॥ সদা (याउम रवी या॰ भूममाम्याः वि লোচনাং। মুগুমালাবঙীং রস্যাং भीतामञ्भरयाद्याः॥ निर्दान वि महारहती॰ कहा मुझड़े म[्]खडा॰ । শতুক্ষণকর্ম। দেবী সাধকা তী-क्षेत्रायिकाः ॥ मर्द्रभो नागाजन्मीः नेहाराण्यः भूमाः साद्रः । अयः | विनिधः भूः मत्रवृक्तः। ইতিরাজः

थादा नशास्त्री गूनहारितः भूनृ-कारदः ॥ भूत्र कार्यनकारम छ दर्न लक्ष• करभ< मरी: । रखन्त्रा সমাবাহ্য পুতিষ্ঠা কার: ভিত:।। ত্রিকোণ ঞ্চাপ্তপ এঞ্চ ততো বৃত্ত স-মালিথেৎ। চতুরসু চত্রার মে-ব॰ মণ্ডল মালিখেৎ ॥ তত্তাবাহ্য यक्षाप्तवी॰ गर्वामो ভागा मृन्स्त्री॰ । বিশালাক্ষী । বিশালাস্যা । যথা-विधि भूभृ करार ॥ विश्वागां स्र शास्त्री॰ मः भूका माठतः कमा । शक्र जाकी विक्र भाकी द्र जाकी চণ্ডলোচনা॥ একনেতা দিনেতা চ কোটরাক্ষী ত্রিলোচনা। এতাঃ প্র্যা নছেশানি পত্রাগুর্ইযো-लिनीः॥ शिक्षमानि क्यारेग्व अ ষ্টসিজিমকপিণীঃ। চত্রসূম-शासिक (वाकणानान् समहार्९ ।। उन्नि रेक्टर बङ्गान्।।न् भूडरय-**ज्याग्राह्उत्य । उत्था दशान**िक कथु। भूर्ववह ननाहत्वर ॥ इंडि ভজসার: ॥ #॥ চতু:यश्चियागि-ন্যন্তর্গতযোগিনীবিশেশ: । ইতি मुर्गाहीभज्ञिः॥ विणानी जी अहस्माना देखि

ब्राजनिर्घण्टेः॥

निर्धिः ।। वागः। इंड्रिमद्रः ॥ (छाः। भद्रः । इंडि मिनि ॥ निथाः द्रहिष्ठ वि। यथा। विनिथा १नू भवीडी हक्ड कर्षा न टटक्ड । इंडि सृष्टिः ॥

विणिथा जी थनिजी।। त्रथा।। ना निका। इंडि (मिनि)।। विणिभ॰ जी मनित्तर। इंड्रागिन

কোষ: ॥

विणिष्ठैः जि युकः। यथा। इछ।
नक्षत्र गङ्गाक्षण खन्षय विणिष्ठे प
भागी विषय यित्राप्त्र स्व जङ्गा ज छ ब
ज्ञान•। इं जि जिथा। पिर्णादन
भिक्षेणः।।

विणिष्ठैः प् विकः। वथा। विणि है: भिडेह् भू हि: । इंडि उन्। न-इनुनामस्त्राज्या

विनिश्चोषि उर्वाभी जि भुक् जिभूकया विं अदिन भिन्न उर्वा छ या

वृद्ध द्वारी। उन्न भुक् उर्वा ।

भूत्य उर्वि जिक्का भुक् जिः किछ्

छयभि उर्वे वृद्ध उनक बिरन्न वर्षः ।

देशः वृद्धाः वकदः वावि छ ।

दिशः वृद्धाः मा वे जि भाषव छ ।

या दिशः वृद्धाः मा । ই जि भाषव छ ।

या दिशः वृद्धाः मा । ই जि भाषव छ ।

या दिशः वृद्धाः मा । विं भाषव छ ।

। युक्तिय मडा॰ भुडाका दिनिष्कः विष्यः वुक्ति वाद्या भिडः। यथा ब्रद्धः ब्रद्ध्यवभाष्ट्यानार मर्भवर भुडि डाडि। उथा युक्त्यवभाष्ट्याः नार विष्यः वस्त्रवर भुडि डाडि। भुक्ति क्रीय म्हाभि भर्यायमात् वुः क्रिय युक्तानार महस्र नास्ति। खब भूमापः मात्री विक्रम् बमा महना-हार्या क्रिड डाया उस्ति व स्व इक् ভाषा ब्रद्ध भुडा दि स

विणीर्गः वि णुक्तः। यथा विणीर्ग विरत्ना कृता वका कृता विश्वा कृताः । कृति पुर्क्षे क दीर्घाण अभिषा देनव कात्रय्यः ॥ इति उक्षमातः॥ विणीर्गशाः भू निष्कृतः । इति त्राक्षनिर्घकः ॥

विण्यः जि विष्णायगण्यः। उट.

गर्यायः। উद्ध्यः २ विभवः ७
विण्यः ८ विभवः ७
विण्यः ८ विभवः ७
व्याविवः १ ण्रिः ৮। ইछ हमः
हम्यः॥ निष्ठः॥ मण्डः। ইछः
ह्यभावः॥ ॥ योऽ काष्ठगं । भण्डः
ह्यभावः॥ ॥ योऽ काष्ठगं । भण्डः
ह्यभावः॥ ॥ योऽ काष्ठगं । भण्डः
ह्यभावः॥ ॥ योऽ काष्ठगं । योऽण्यः
ह्यभावः। उत्यायः । व्याप्तः।
ह्याप्तः। उत्यायः । व्याप्तः।
ह्याप्तः। यथा। उत्वि ह्यं विण्याः
विश्वः । यथा। उत्वि ह्यं विण्याः

तार्डिण यूकि श्रूवर्ति मंद्र श्रुकः
।। विण्वा गमा माथ्यां माकाणाः
थाः मह छ इः। इठि छ छः।। चः
गछः मः हिजायाः। चकात्रानि त्याः
एण उत्तान् मित्मून् (वार्डणम्न कमान क्षेत्रा न तिर्म् व त्यार्डणम्या युगाः च यत्र ज्याः।
इठि छ छ मातः।।

বিশৃদ্ধি: ত্রী সম:॥শোধনণ।
ইতি বিখঃ॥ সর্বক্ষণু পারেযা
বিশৃদ্ধি শুন্দু তার্যো:। ইতি
জ্যোতিষণা।

বিশ্ত্বল: ত্রি দ্যাল।রহিত:। অ-বদ্ধ:। বিগতা শৃত্বলাখস্যেতি বহু ব্রীহি নিয়ন:।।

विष्णयः भु भु छिनः । भुकातः ।

इंडि कि । या । या जिः । इंडि

ह्मिन्दुः ॥ डिनकः । इंडि हातावनी ॥ मध्यमाथा छर्गंड मार्थावनः । यथा । पूर्वाः खना ख्या
कर्मा मानानाः मित्राः खना खना
वाय ख्या जातः मार्थाः मध्य कीविंदाः ॥ इंडि जावा मित्राह्मः ॥
विष्णयः विद्यान्त्र विंदाः ॥ विद्याः ॥ विद्याः ॥ विद्याः । वि

घढे भद्रोतीना॰ ष्ठानुकभर्य, खाना॰ ভত্তদব্যব ভেদাৎপরস্পারভেদ: ৷ পরমাণ্না ভেদকো বিশেষ এব স তু স্ব ছএব ব্যাবৃত্তঃ। তেন ভত্ৰ বিশেষাম্বরাপেক্ষা নাম্ভি ইত্যর্থ: ৷ ইতি সিদ্ধান্তমূকাবলি:॥ 🗱 ॥ व्यनकात्र भू (७४:। यथा। वित्नमः भाज गायात्र विना नाग्राध्य दर्ग-नः। गाउ मूर्यः नि दी भन्ना सम भिन्मिं उ< क्राः॥ **।।।** विल्मवः (मालि यार्)कः वस्तुत्वक्व वर्गाउ । यह र्वहः भूतः भणाए मई दि-**ण्यां अर्थ (म. १) रिक्षिताः** রম্ভাতা হলকা বস্তুম্বর কৃতিশ্চ **मः। द्वाः भर्मा** जा स्या नद्वाः कन्न-वृक्क नित्रीक्रण ॥ ७॥ इंडि हन्द्राः (वाकः॥

विश्विकः शृ क्ली व्यवादिक् छिन् व्यकः। इंडाप्रदः॥ जिल्लाक् मृश् । इंडि द्राक्षनिर्धिः॥ विश्विष्ठिः ভद्रि जि। इंडि स्मिनी॥

विश्विक हिन्द्र क्री हु हु विश्विक वा-स्वर्ग अवश्विक वा। इं जिल्ल व ज्ञाः ॥ जा जू जिला क्रिय नाना विष्ट्र त हु-ना। इं जिला क्रिय क्रिय श्वाप्त विश्वाप्त विश्वाप्त विश्वाप्त विश्वाप्त ॥

यहरणक्या विष्याया ना छी छ। विष्यवश्वाः शुः वृष्या विषये विष्य

क्रशांकि उद्वेषः ॥ (त्र्षः ॥ वाजा- । वित्मविष्ठः जि जिन्। वावहिनः। विक्षुवद्धः ॥ व्यष्टः ॥ जावना ॥ मदः। ইতি ভাষাপরিছেদः॥ विः भवविधिः भू अन्नविषयकविधिः । यथा। उथा मामान्य कार्यप्राच्या विष्णयक विधिवं नी । वहरवा वि-**ય(યા यम) म माभान) વિધિ ર્ভા**বৎ ॥ ज्ञन्नः म्राह्मिया यम्र म दित्यः ষ্বিধি ম্ভ:। ইতি দুগাদাস:॥ नामना दिल्लियरमा मंस्या दिल्लिय-विधि वंत्रवान्। इंडि मृडिः॥

विश्निष्यः। ज वृ छना दिः। यथा। नी लाट भन नि-ভ্যাদি ৷৷ বিশিষ্যতে সম্বুধ্যতে অ-त्न। हात्या हाय मनुष्की ि তি।ভেদযতি অন্যপদার্থ পৃথক্ করোভি ইভি ভেদক । নাম।-শিবঃ গোত্রেণ গার্গ্য: ৷ বিশেষণ দৃষ্ট নেব ভেদযতি।ভেদকন্ত অদৃষ্ট भिव (छम्य्डि । इंडि विश्नय्त (जनकरमा (जनः। ই**जि मू**क्रावाष-**होकायाः पूर्णानामः ॥**

विल्ववराधिः जी वाशिष्डमः। ভল্লকণ বথা। প্তিযোগি ব্য विक्रा य मनानाविक्रागा । ভাৰাপুতিযোগিত্ব। ইতি চিন্তা निशः॥

इंजि किंगियूद्र: ॥ বিশেষোক্তি: স্ত্রী অলঙ্কারভেদ:। उल्लक्षामार्वा गया। कार्याकः নি বিশেষে জি: সতি পুষল কার-(१। इपि (मुह क्या नाडूट स्रात्र-भील ज्ञाजान ॥ इंडि हन्मू।-লোক: ॥

বিশেষ্য: ত্রি ধর্মিসদার্থ:। স চ দুব্যাদিঃ। বিশিষ্যতে যঃ। ঘট প-हो हि: ॥ जान नान देव निष्ठेशनू रया-গী। অস্তলক্ষণ যথা। ভাসং नानरेविन्द्रिशन्यागिष् चिष्ठ ह यहें केंछि छ्वात बहाती उर उन हि जामभानरेविमञ्जा घर घरेनु (या: मञ्चन्न उपनुरगागिज्मा घटी-भी मङ्गर। अनुरगागिषु मिश च-ক্পসম্বর্দেষঃ পুতিযোগিত্ব ननुरवागिद्काछिद्रिक भरार्थ है-**७**ऽপ्रिक्ष्मनः। इंडि क्वामः॥ विल्माकः भु॰ जल्माकवृक्षः। इंडि রাজনির্ঘট:।। শোকরহিতে তি ॥ म्डीवृक्तः। ইउि विष्णाधनी जी द्राजनिर्घणः॥ खी नागम्छी। इंडि বিশোধিনী ब्राजनिर्घणः॥ ख्यभागः। विष्णाधिनीवीषः ली

विद्भाव

इंडि किहिट्॥

विशः शृ॰ की छि:। विद्व की छो है छ।

गाँ न ए शृ छ एमन विश्व मा है छि

मिका छ को न ती ।। शिष्ठः । दे छि

गु म वा विषे का या ॰ कुर्ग । मा ।।
विश्व वन की का या ॰ । दे छि सम्म महा

िमुक्तः वि अनुक्तरेः॥ **मा**खः॥ विष इ: ॥ ज अधि:। इंडि इन-हनुः॥ गाउः। इति समिनी ॥ विশुजनवाछ। जी मुक्षानवाछ। (छनः। यथा। श्रीमा किविथा गुकाः गर्या भूगमा है। उथा अङ्क्रिक व्योवना मुक्षा। जा ह ड्वा अव्योवना ष्यञ्जाङ्गोदना ह । रेमद कन्मा षड़। ভग পরাধীনরতি নবোচা । নৈব ক্ৰশো জাতপুশুযা বিশুজ-নবোচ। অস্যা শেচ 🐉। কেয়া মনে। रुत्र। (का: भ मार्त्वः न विज्यान गर्गाहा है। विणुक्त रताहा यथा। रत्य भविक (नक भागि नीवी निय নিত বাহ্তৃতোক্যুণ্মবল্বং। কর-ক্লিত স্বচ্ছল নবোটা স্থপিতি न्तिम मूलका कमा मूमः ॥ इंडि बनभक्षाती ॥

िण्यः श्रु॰ िणुगमः। ইতি ভরত धिन्नशत्कायः॥

विभुद्धः भू• विधामः। इंजामद्राः। েলি চলহ: ॥ পুণয:। ইতি মে: দিনী।। বণ:। ইতি বিশ্বঃ।। तिम्। १न॰ ही नान । इंडाबर ॥ िंगु छः वि गुः छिगुकः। वि भूर्वक শু । বাতো জে পু ত্যবেন নিয়মঃ ॥ जी दिणायः। वि भ्रव বিশাভি: শুন ধাজোঃ ডি পুভ্যযেন নিম্ননা ॥ उं. थ.ीरन्यः । यथा। त्राकृत উবাচ। भूब्री डिब्ब्यनी नाम जम्मा• বাদো হি মে সদা। ক্ষমি শ্চিদ্থ कालन गठाइ॰ विकृतनिहत्र॰ ॥ তস্যাগ্ৰে ভিষ্ঠতে বিল্যে বাচকো বেদপারশ:। বিশান্তি ভীর্থমাছা-जाः भावश्य म मिरन मिरन ॥ যদ্য শ্বণ মাজেণ মম ভক্তি হৃদি স্থিতা ৷ সা সংজ্ঞা চ শু, গা তত্ৰ বি-भुगाखक मणानय । वामुलाबा म-रावाक् जंग्ध्यामी जनाप्रनः। বিশাস ক্লান ডত্র ভেন বিশান্তি সাজ্জিকা॥ ২০৫ বার্যান্ড বিশান্তি भाराजा। नामाधारः ॥

বিশান: পু॰ বিরাদ ইভি তর হ দিলপকোষ:।। অস্প্রগান বিশ্বা-মো বলক্ত ধেদ শ্বুডিং মাত্য-দ: শুভ:। ইভি রাজবল্ল ভ:।। নিশ্বাব: পু॰ অভিপুসিদ্ধি:। ইঙ্কী- बद: ॥

বিশ্রি: পু॰ মৃত্য:। ইতি সংক্ষিপ্ত-সাংবালাগিবৃতি:।।

বিশু, ক: ত্রি খ্যাকঃ। ইত্যারঃ।।
ভ্রাকঃ। সভাপ্তঃ। ইতি বিশ্বঃ।।
ত্রিক্তঃ ত্রি বিখ্যাভিঃ। বি পূর্ব
শ্রোভোঃ কি পুত্যবেন নিয়না।।
বিশ্লোকঃ প্ বিধ্রঃ।। অযোগঃ।
ইতিনেদিনী।

विश्व॰ क्ली क्षत्र । इंडि स्मिति ॥ ल्ही । वालः। इंडि ब्राफ्नियः ।।

तिनः গণদেব ভাবিশেষ: 91. ३७। ततः । तत्रु मत्त्री कवु मत्की कान कारमी वृज्ञिः ऋकः। शुक्रवरा भानवाक वित्यापवाः भुकी बिजाः ।। ইতি ভরত:।। 🕸 ।। ইপ্রিশুদ্ধে क उनकः भाउ। गान्तीगृत्य वमुः िनिनिखिक काल कास्मी कास्मर **চ धृत्रि (लाहर्रि॥ भुक्तिया मा**मु-বাক পার্বণে সমূলজ্ভৌ। ইভি मृजि: ॥ उ जू धर्माट मक्क कन्।।-যাণ বিখানা জাতা:। ইতি নাৎ-मि: ७ व्यक्षायः। **३।। नाशदः।** ইভি विषः ॥ ज्वाभद्रीतवः छे ,शश्चिते छ-खन्यः। इंडि (यमास्त्रात्रकातः॥#॥ भ हिनाविरम्पः। यथा। ख्याः यः ব্ভিরোলা দশন্ন তন্তবেৎ পল•

विश्वा विश्वाल श्राक किया कारिका कारिका कि उट्या रेमव कारिका कि उट्या रेमव कारिका का व्या कारिका का व्या का विश्वा का मिना कि का विश्वा का विश्व का

इंडाबदः ॥ उद्भग्रामः । पृष्टा र বিশ্বকৃৎ ৩ দেববর্দ্ধাকি: ৪। ইতি (रुबहन्तु: ॥ मृनिट्छन: । ইতি मि-रिनी ॥ म भू जावमा वरमाः भू धाः। यथा। विश्वकर्मा भुजावमा भूः শিল্প পূজাপতি:।প্রাসাদ ভবনো-দ্যান পুতিমা ভূষণাদিল্যা ভড়াং গারান কৃপেয় মৃত: মো ংনর-वर्क्कातः। इंडि गाटामा ৫ व्या यः।। अ।। अन्। भू जूषमा विष्ः পুত্ৰ মৃষি নামা তু দেবল । বিশ-कर्मा भुजाममा विथा। अव र्म्नातः॥ इंडि भाक्छ ५ वर्षागः ।। 🗱।। অপিচ। বৃহস্প:তস্ত ভগি-नी वब्रजी दुक्कार्तिगी। यागिमिका জগৎকৃৎশু মসক। বিচরত্যুত।।

লৱান্য ভু ভাৰ্য্য **সা বস্না ম**া প্রকার জু। বিশ্ব**কর্মা নহাভাগ** ৪০। জন্তে মহামতি: ॥ কর্ত্ত। ে ্সহ্ শূাণা তিদশানাঞ্চ বৰ্জ 🖖 🚁 ज्यगानाक्ष मर्स्वयाः कर्जा 🖖 ुत्रखाः वतः ॥ यः मर्खिषाः वि-না-ানি দেবতানাও চকার হ। ন্ৰুৱা শেচাপালীবভি যুস্য শিল্প• गशाबानः ॥ इंडि विक्षुत्राण > जारण १८ यम्।यः ॥ अन्। इ। (हो ल्याटडने विष[्]रणील**े भय खुळा ह** ব্যেশবিশ্য ছৌ ধাতাচ বিধাতাচ লৌরালী অগঙ্ক পতী॥ ইতি ব ক্লিপুরাণে গণভেদে। নামাধ্যায়:॥ द्धी गञ्चाहिन्नी। यथा। পঞ্চা চিন্নী ভূ দেবর্ডী বিশ্বকা জল अन्ति। **३** ि शत्रावनी ॥ विश्वकृष्ट भु विश्वकर्या। इंडि (इम्हम् ॥ বিশ্বকেতু: পু॰ অনিকল্ধ:। ইত্য-नदः ॥ विश्वक् वर्ष गर्बजः। इज्जाबद्धीका॥ विषक्षमाः पुर दिखः। इंडामन টী গ্রাণ ভরত:॥ ত্রোদশমনু:। 🎚 বিশ্বগোপ্ত। यथा। सन् ज्रिः न् उ अद्दर्शः ভ্যোনান তাব্যাভি। তভৰানেক मावर्ग वृक्ष ह्व र्याः ख्ठः ॥ अजूक

খাতুধানা চ বিশ্বক্শেনো মনু স্তথা । अञीजानागचा रेक्टल मनदः পরিকীর্ত্তিতা: । ইতি মাৎস্যে ৯ অধ্যায়ঃ ।। জ ।। বিষ্ণো নির্মা-न्याती (एवडा । यथा । निर्मान्य-ধারী বিফোস্ত বিশ্বক্শেন শত্র-जुं जः। मञ्ज ठक गरा भागि री र्घ भाम, कं हे। यतः।। तक शिक्व वर्शस সিতপদ্মোপরিষ্ঠিত:। প তৃঠী-য স্বরান্তেন সংযুক্তো বিন্দুনেন্দুনা।৷ कीर्खिङ सम्बाद । एन उ প ব্লপ্জযেৎ। বিসজ্জন তথা বি-एकः द्रिणान्धाः भद्रिक्षस्य ।। इंडि কালিকপুরাণে ৮২ অখ্যায়:।। विचक्रमना जी श्रियञ्च्यकः। इंडि কেচিৎ 11 বিশ্বগঃ পুণ বুলা। ইতি হেমচন্দুঃ॥ বিশ্বগন্ধ লী বোল। ইতি রাজ-विर्घणैः॥ विশ्वभक्तः भू॰ भवाष्ट्रः। ইতি द्राज-निर्घ है: ॥ विश्वभक्ता छी भृषिवी। इंडि भक्र विमुका॥ दिषृः ॥ इन्तुः । इंडि किटि ॥ ্বিখুপুছি: জ্ঞী হ'দগদী।ইঙি द्राजि-र्चिन्छेः॥

विष्यापृः शुः सर्वांगामिश्वनः। व्यमा छनाः । विश्ववायु तमाय्याः शानिमा रेनकामायम् । नर्वे छ লিক্কো হন্তা ক্ত্যোৎপাত পুর: সর:।। ইতি রাজবল্লভ:।। বিশ্বড় তি সর্বগানী। বিশ-অঞ্জি ইভ্যথে ক্বিপ্ পুভ্যংখন नियुत्रः ॥ বিশ্বস্কর: পু॰ চফ্য:।ইভিকেচিৎ।। विश्वहक क्री नशानामिवास्यः। বথা। নৎস্য টবাচ। অপাতঃ স• **जु**दक्षप्रभि सञ्चित् सन् बन । বিশ্বচক নিভিখাত সর্বপাত্র नामन ॥ जभनीयम्। मूख्मा विकास कात्रदर। (मुक्ते भन **न**हरभुग उसर्खाः जू संदेशनः ॥ ज স্যাছেন কনিষ্ঠ স্যাদ্বিখচক মু-माञ्ज्रा यश्चि मद्भवामृष्कुं न-णाजानि निवरस्य ॥ याउँगा র• তভ শ্কে ভূমিনে 🖰 🕏 মাৰ্ড : নাভিপদো স্থিত বিষ্ণু পোগা ক্তা চত্ত্রি ॥ শাস্ত্র চক্রস্পার্শে छ (पर्दार्ध र जसार्**छ। विकी**या-ব্যাণে তাহে গুৰ্বজ্যে ভলপানিন ।। অত্তি ভূতি বিশিৱত ুজা কাশ্য भ এव ह। न ८ म ४: क् गां। वहारु णह

नद्रशिष्ट्रा २थ वासनः। प्राप्ता 🛚

রামশ্চ রামশ্চ বৃদ্ধাং বল্পীচ তে দশ্ ॥ তৃতীযাবরণে গৌরী সাতৃভি 🚓 ভি যুঁভা। চতুর্থে দ্বাদশাদ াবে দা শহরর এব চ।। পঞ্চায় পঞ্চ अभि कृता रेम्डकामरेम्मय छ (कान्द्र) शाब हेक• वार्थ मिन्याङका **खरे**वर ह ॥ नश्चान प्यापि मर्बान मङ्ग-व्यापि ह कात्रप्र । वाप्तबाहत्राजा प्रवान् विन (राष्ट्रें म भूनः । ज्लाः পুক্ষবৎ শেষ সলভাৎ পরিকল্প रर । यदिङ्ग अन मः ভाর जूरणः ছাৰনাদিক ।। বিশ্বচ্জ ভতঃ ফ য্যাৎ কৃষ্ণাজিন তিলোপরি। ড-वाष्ट्रीम्म वान्तानि त्रभाम् व्यवपान मयः ॥ भूनंत्रञ्जाष्ट्रे रिक्षत वङ्गानि বিবিধানি চ। নালে। ফু ফল রবা-बि विजान हानि कन्नाय ॥ उत्हा मल्**ल मरद्भ माछ: गृहाय**तः पृशी । शिमादिवामनास्त्र जु ग्रीज कः जून। छानिः।। देश मृष्टा त्रस्य अ विः कृषा जु शुरु विष्या । नामा विष्या विकि दिश्वकृषान्। म नमः॥ भवः भानमस्की प्रशास्त्र न. १००० में गार । त्वरणमण विक यमण्य मन मा अभा हि त्या (१०) १ ज्वि वि खगाञी**उ॰** विश्वतिक सामारा । वागुणाय रिप्किक । प्रानिक ।

माध्व ॥ जान्यान्यादाङ्कारणः अगमानि शि**डा**विश् । दिश्वहात মিৰ যকাৎ মৰ্ব পাপত্র পর ॥ व्यायुष काश्वितामक जनामुक्तव मा गिजः। 🗱। ইত্যামন্ত্রাচ যোদ-দ্যাৎ বিশ্বচক্র মনৎ হর: ॥ বিমু कः गर्जनाला जा विकृत्नातः मः कीयत्छ। रेनक्केटलाक भागानः छ-তুৰ্বাহঃ স্বাতনঃ॥ সেন্যতে ঃ প্ল ब्रमाः म रेव जित्हेर काम १ वरः। भुगामकाथ यः स्वीति विच क-ন্দিনে দিনে।। ভল্যায়ু ইজতে নি 🖙 লক্ষ্মীশ্চ বিপুল। ভবেৎ : ই ও ন क्न अगर मूताधिवामः विख्ति । य उभनीय (वाउणातः। ए तिस्वन মৃপাগত: স সিজৈ শির মহিগম্য नम्भारा स्थाति ।। यमुर्गन ভা॰ পুযাভি শত্রে৷ র্মনন্দুদর্লন-**डाक्ष कामिनीनाः। ममुदर्शन क्र** শवान्क्षण कनक गुरर्भन मान मः ফ্পাপ: ॥ কৃত্তক দুরিতারি ধোডণার পুবিভরণ পুনরাকৃতি মুরারে:। অভিভাতি ভবোদ্ভবা নি ভিত্ত্ব ভব নভিডো ভবনে ভ বানি ভূন: ॥ 🗟 🔊 মাৎদ্যে মহা मासन् विज्ञान विश्व का शुक्तानि (का नात २०) या गायाः ॥

विष्ठकाणां शृ विक् । रथा ।
नाम विष्य मंगारमा विव् विष्ठकाणात्न
नाम । श्रवमानमा क्षि द शाहि
नः शाशकर्ममार ॥ इंडि मारमा
२०० व्यक्षायः ॥

विश्व हिंद शुः यख्य छ । इंडि को विश्वः ॥ न्या य विष्य विश्व । देशा । रक्ष क नामु छ विश्व प्र विद्य क्ष्या । विश्व विष्य विश्व विष्य विष्य विश्व विश्व विष्य विष्य विष्य विष

বিশত: ব্য লর্শতঃ। ইভামর-টীকা॥

विश्वस्वः श् नगरस्य अदिल्यः
। इञ्जाद्र जो ।। विश्वस्य विश्व क्यं
मध्ये महाविष्टियु विश्व को । नि
कुः नान्ती मुथना एक वमुमाको छ रेलक्क ॥ नवा बा ना ग्रास्त । स्विष्टे काम कालो मरेत्व हि । स्विष्टे काम कालो मरेत्व हि । स्विष्टे विश्व स्वर्थे ।। भूब ब्वा महानुवा मह विश्व स्वर्थे ।। भूब ब्वा महानुवा मह

विचारत्वा जी ड्रवगायम्का। शा-

द्रक्राञ्चलिया इति छाषा। इति।
स्रोधवः ॥ नागवना॥ यनगण्याः
प्रश्राद्धार्थाः। इति तद्भालः॥
विस्पृष्ठ कि नर्ववश्रमकार्छ।।
विद्युष्ठ कि नर्ववश्रमकार्छ।।
विद्युष्ठ कि नर्ववश्रमकार्छ।।
विद्युष्ठ कर्ववश्रमकार्छ।
विद्युष्ठ कर्ववश्रमकार्छ।
विद्युष्ठ कर्ववश्रमकी मुर्चन्त्रमः
प्रशः जानवः। स्थानी स्वान्त्रमः
प्रशः जानवः। स्थानी स्वान्त्रमः

दिखशदिश जी मृथियो । इंडि जिल्ला

विष्यमाथः भूः मिवः। ই जिम्माः द्रञ्जवनी ॥

विषय्या है ज्यामनी। है जि वाक्षियं है। ॥

ियं पाः भुः विद्यशाणनकर्ता । मञ् शद्रश्यतः। ই जिम्द्रदादः नगद्रभः॥

दियञ्जी श्रु णश्च. । हन्तुः। इंडि द्यात्रस्तुः । (स्वः ॥ विश्व धर्मः। । इंडि नः क्षिश्चनारद्वाणानिवृद्धिः ॥ नूर्ग्यः। इंडि नयद्वज्ञानी ॥

বিশ্ববাধ: পু• বৃদ্ধ:।ইতি জিলা-ভাশম:।।

विष्कः भुः दूक्षाज्यः। ইতিহেন हम्बः॥

विष्ठवकः क्री मुखी। इंडामहः॥ विष्टां । मृ नर्वपूर्। विष्

भवा गृर्व व ज्ह्रवाट्या छोताहिक ज्ञानि भवत्यत्र विश्व है।। विश्वत्या ची जिल्ला । यथा। कालो ज्ञाली व स्टाजन व न् व्याहिक विश्व ह सूत्रवं।। मुलि दिसी विश्व न हिंगा १८३। मेरिश ज्ञालाः कथिन मूर्निसुः॥ ইति

दिश्यमुतः श्रु दिक्ः।। हेन्तुः। हेडि स्मिनी ॥

भेत्राणा।

विश्व हुन ही भृषिनी। इंड्रान्डः॥

अन्। तूष्ट भिंड विषा। विश्व हुन

क्षित्राहान हा क्षितः। कृषिने

क्षित्र हा विश्व हुन

क्षित्र हुन विश्व है अक्टियाः ।

क्षित्र हुन विश्व है अक्टियाः ।

क्षित्र हुन विश्व है अक्टियाः ।

विष्युः भू वागुः। ইতি কে दि। विष्युत्तभः भू दिश्रुः। ইতি (१०) रमुः॥

विध्वत्भकः ही क्कारकः हैं जि ताजिरकः ॥

विश्वत्वज्ञः मु॰ जुका। ३७० हनः हन्दुः॥

বিশ্বরোচনঃ পু॰ ন ড্রিচ্ছাকঃ।
যথা। কেচুক পেচুলী পেচুনাতী
চো বিশ্বরোচনঃ। ইতি ত্রিকাও
শোষঃ।।

िक्षावराः शु॰ गर्दछः। विष्यः | विषयः। दी विषवा। ইতানরः॥ धारण वस् शुक्रतन निव्ववः। यथा | । यसिन देशमा गृह्यभुमाः द्विसः शृष। विधिवसाः युक्ति प्राज्यासा **२**िष्ठेतिनिः चडि द्या गृज्या । उ খাতু। ইতি বজুৰেদি অভিবাচন-TE: 11

दियंत्रका छी यश्चित्राविष्णयः। হথা। হেতি: শিখা চ সন্তাগ্ৰে িবা ভা এৰ কীভিতা:। কালী করালী কুজ্জা গুলুবর্ণা মণোজবা ॥ मुलिविभी विक्रम् मध्या ন্তানা মলজভাঃ। ইতি ভটাবরঃ॥ दिश्वगाद्र॰ ही उद्धदिष्णयः। इंडि প্ৰিত্বা 11

বিশ্বসারক ্লী বিদর্ভুক্তঃ ফ্লি হন্যা ইতি ভাষা। ইতি শক্ हिन्त्र ।।

वियमितः वि विषयः। ইति नूषः (बाधवत्व व्यव व्या

विषम्क् भ् तुका। 🖰 छ। दृशः ॥ বিশ্বতং তি আওলিখানঃ। ইতি किसिनी ॥ न विश्वकरियाख विश्व नाडिविश्व मर । विश्वा भाक्ता गुर्भम ग्लाप्ति विक्ष वि। इंडि भारत्य ५७३ मध्यमः॥

ां उ देशार्थ विराधिम भूर्व विश्व | विश्व मा स्त्री । माञावत्री। देखिताकः बिर्देशः ॥

> বিষা জী অতিধিয়া। ইত্যুদর:॥ শভাবরী : ইভিরাজনিঘ্টলা পি शुनी। इंडि मफ्टिंगुका॥

বিষ্টো ত্রী অপ্নরাবিশেষ: 1 यथा। डेबंबी (यनका द्वाहा विश्व-(सणी इनचुरा। विश्वाधी व मृजाही ह शक्ष्म डिलाखना ॥ छानून-छ।वद्या वर्हा चारमाञ्चवमः मृजाः । इंडि दहि भुजारा भग छम नामा-भग्नयः ॥

विशाला न मु॰ विकुः। रथा। इस ক্ষাচ বিশ্বাত্মন্ত্রপাত্রকর বাতানঃ । डिग,इ न्रिय यामान् उन्छ। িডম্বৰণ ॥ ইভি জ্বিভাগৰতে ১ काश ৮ वय् । यः ॥

नियावादाः शुः (नवछा। इंडि शिकाउदनेमूनी॥

विधानिकः भुः वक्तर्यदिश्वयः। **७८ म**र्यायः । का देखे २। इंजि विकाल्यभवः॥ विमल्याकी ७ গাংধ: ৪ ঐেলিক: ৫। ইতি হেমচলুঃ॥গাধিক ১:ইভিশ্ম-इत्रापना ॥ जरनग्रथनित यथा। क्षात युक्त होता मुद्देत सूचन

স্বক ভূভঃ। অথাজগান মতিমান্ 🖟 न वा मृद्धा नगर है। मना जे छ লার্স নং ভূড়ং দেবগণায়িত্রং। পুত্ৰিত্বা স্বাসীন ভছতু টো क्राइनी ॥ उटा इट: न्याः भीया नृती व हैत मनुती । रद्रा ৰ্ণীয় দাস্যানি বাঞ্চি বরবণিনি ॥ অদেয় দুছর বাগি যত্র ভেব-ৰ্ত্তে স্পৃহা। ততঃ সভ্যবভীপুত্ৰ ৰীর মতুল প্ঞ বর ম্যাচ্ভ। স रैठव निष्ठ्रिष्ठे उन्हों प्रानेशब खहा।: दिश्व मावर्ख्य मनमा रङ्गा यानः नगळ्नः। उनः नियान বাতাভু নিঃসূত্ৰ বৈ চকদ্বণ ॥ ত रिमाउट विख्या मङ्गा ज्थ छ। मि म मत्वीद । हक्षयः शृष्टात द्वः प्रः रि मङ्ग्रिक स्वरः॥ मान्ना यादी কভৌ মাভা তদা বৃঞ্চ করিষ্যথ:। আলিহ্যাপ্থার্ফ তে মাতা পু-नदमाय देव ॥ छक् माजककः छन्। मा (ভाक्त) वि गूब रहत। दूरको हु-एततृक्ष जनाधिका मिछ हकः॥ ভোফালে,তেমপ্রতে ভবিষ্যাত সনাতনঃ । এর মৃত্যু ভ্রু র্যাডো यत्थह्न नाणि यन्त्रतः ॥ व्यक्तान মাত্র। সহিতা ভুর্না পিতা সূভানা।

िी। जय ज्ञानिहरन रचन्य सा-निक्षात्रक्रकः हकः॥ अम्राट म-ভ্যবভী তস্যা মাতা কল্লু• সিত্ত চক্-। পরিবর্ত্তর ড॰ খ্যাত্বা দিব্য-**थ्यात्मा ज्छ ग्'निः॥ अथागठ**४ म्-ষা তান্ত বচন ঞ্চেদ মধুবী । বিপ-र्याय स्था जापु द्कालिक्न कर्याणा। তথা চক্ প্রাশনে চ তত্ত্বেদন্তে ভবি-याजि । योक्तनः क्वियानात्र खर প্রয়ো ভবিষ্যতি ॥ ক্ষরিয়োরাক্ষ্-ণাচারে। মাত শুে ভবিতা সৃতঃ! ইভুক্তো ভূগণা মাধীতদা সভ্যবতী कृष्ण । भूगः भूनास्यामान (भौट्या নেজ্ঞি তাদৃশঃ। এব মন্তিউ (श्वक् न ठरेवबाइब्रंब क्छ।। व्ययं कारन माउ॰ मीख॰ यममध्य गाधिका। मृमुख बननी जम्मा वि-স্থানিত্ৰ° ভগোনিধি• II যমন্ত্ৰি ন্ততো বেদান্ চতুর: প্রাপ মার্চিরণ । পुष्तुवामक्षनुरस्तः स्वरः उद्यन् म-হাল্লনা বিশ্বামিলোপি সংলান্ विमानि उथाहिता । भन्दर्वर তথা কৃৎসু• বিপু •চাভূত্তপোধনঃ ।। काञ्चनामान (उक्कि) यमनी र्य ছাতপা:। বেদৈ তলোভি: সমূনী नडाकामह मूर्यादर।। इंडि का विकी भूबारा ৮**८ गद्यायः ॥**

विश्वानिजिल्नः श्रु नादिकनः। इजिभक्दः इतिही॥

বিশ্বারাট্^র পু॰ বিশ্বেষুরাজতে য: ।। বিশ্বেষা• রাট্রাজা ইতি বা । ইতি মৃধ্ববোধব্যাকরণ• ।।

विश्वावमः श्रु गक्क इंट्या निर्मि छी । इंडि प्लिमी ॥ अञ्चाद्धाः इंडि व झाडी मूर्ग्यकः ख्या कृषः । इन्छः मूरुटः सर्थिः व मूर्खदाः म्ह म-हामनाः ॥ विश्वावमः क्लान्म म कर्षिकामः भागः ॥ इन्डि वङ्ग्नि

विश्वामः भः भुजागः। खर्भः र्यु। य: । विभुद्धः २ । ३७ : व : ।। আখান: ৩ আশুন: ৪। ইভি मद्रवावनी॥ 🗱॥ (लाङ भुगान বিশ্বাসৈ: পুৰুষো নশ্যতে ব্ৰিভি: । তথ্যাল্লোভো ন কর্ত্তব্য: প্রমাদো नन दिश्वाम् ॥ मा 🗐 या न भरः वर्गाट न नुथी ज्करवाङ्गिउ:। ত্মিত্র যস্য বিশ্বাস: পুক্ষ: স किछिन्त्यः॥ इंडि शाक्ष नी जि नात्त्र ७७६ व्यथायः ॥ यम् दाः বাণ্চ বিশ্বাস স্তস্য সিদ্ধিশ্চ তা-বতী। এতাবানিতি কৃঞ্স্য পু ভাব: পরিমীযতে॥ ইতি তত্রৈব २०३ व्यथायः ॥ न विश्वरमप्रविश्व- एउ विश्वास्त नाकिविश्वास्त । विश्वासाख्य मूट्या न्वास्त्रि निः क्षित ॥ इकित गाक्ष ५ ७३ या या ।। इकित गाक्ष प्रति ।। इकित गाक्ष निर्माण महीनाक्ष मृत्रिनाः मञ्जयानिनाः। विश्वासा निव कर्षत्रः जीयु ब्राह्म क्षित्रः निव कर्षत्रः जीयु ब्राह्म क्षित्रः निव क्षित्रः जीयु ब्राह्म क्षित्रः निव क्षित्रः विश्वास्त्रः निव क्षित्रः ।। विश्वास्त्रः निव क्षित्रः । कराहिट क्षित्रः ।। विश्वास्त्रः ।। इकित हानकृतः ।।

বিশ্বানবাতক: ত্রি বিশ্বাস-ছন্তিয:। বিশ্বস্তুনাশক:। যথা। ন ভারা: পর্বতা ভারা ন ভারা: সপ্ত
সাগরা:। নিন্দকা হি মহাভারা
ভারা বিশ্বাসঘাতকা:।। ইতি
কর্মলোচন•।।

विश्वपत्वाः शृ व्याः॥ भुष्वप्तवः
। इठि मः किछ मारद्राणापि वृद्धिः॥

क्रा कृ पंक्षा वम् : मठाः कामः काम

स्था धृनिः। (द्राप्तक कापुना किव ख्था धृनिः। (द्राप्तक कापुना किव ख्था गाना भुक्तवाः। विश्वपत्वः ख्वाद्याख प्रका मर्बेष भृक्षितः॥ इठि वङ्गित्रःण श्राख्यमाम पृष्ठेवाः॥ विश्वपः। स्थाप्तिसम्बर्धमाम पृष्ठेवाः॥ विश्वपः। स्थाप्तिसम्बर्धमाम पृष्ठेवाः॥ विश्वपः। स्थाप्तिसम्बर्धाः। विश्वपः। विश्वपः। स्थापः। स्विधिस्

मिकिनीम यः मुस्टा हा विषय-শ • িল্লেফ্ড।। মত্য সত্য পনঃ 🖟 নত্যু॰ সভ্যু॰ প্ৰ: পুনঃ । দুশ্যো শ্লিখে ধরে। নিত্যু স্থাভব্যা गिन गिका॥ इंडिकामी थ छ ॥ दिस्थीयद॰ ली मुठी। इंडि ब्राज-निर्घणेः ।!

दिष इत्र नि 🕾 🗟 इ वतारही। ইতি কৰিবলুজনঃ।। ইর অবিষৎ व्यविदार। विकार त्विधि (विकिधे। 'छ (देश । ए (विविद्धे ! जे बन्धारी) ড্যন্যে সকলবং কন্তরি আতাদ পरार्था एकायः। ইতি पूर्वाकानः।। दिय ग छ दिशुरवारम । इंडि 🖟 कविकन्नष्टरः।। गदिक्षा ७ ज्ञानी প্রপ্রিভ্যা বিযুক্তঃ স্যাৎ ইত্য र्थः। डे यविक्र । मन्त्रारम् भि डि दिक्षु९ शाली मृज्जिः। इंडि मृशीरामः॥

विष 🕏 (महान। इंडि कविकन्न क्मः ॥ उ (विश्वा विश्वा । ইতি मुर्गामायः॥

दिया क्री अवाश हेउ। महाः भागः কেশর । ইভি ভটাকালা মুস্কট: ॥ (वाल•॥ द०मना छः ॥ माना न्। विष्ः। ३ जि जा जिन्धिः॥

সাদৌ স মর্ব গারা বাধাৎস চ। বিশঃ পু॰ দ্রী বিশ। তৎপর্যাদঃ। ক্ষেড: ২ গরল ৩। ইভ্যের: ॥ আহেন ও অ্মত ৫ গ্রেদ ৬ काल हुँ। १ कालाकुल ৮ হाति-पु॰ क बङ्ग देशक॰ ३० बीज॰ ३३ गद्रः १२ (मृत्तिः १० काकाक्वः १४ रगार्वा १३ मृत्री १४ ज्यद ११ । ইতি রাজনির্ভি:।। আফ্লং ১৮ জীল্লণ ১৯ রম: ২০ রমায়নণ ২১ गतः २२ । ইভি क्रोप्यः ॥ कज्-न २० जाङ्न २८ । हे ७ मह-इत्रावनी ॥ स्वार्यानः २० वदः मना चः २७ जू ी शनः २१ (मोर्ड्डि ্ডেমঃ ২৮ বুজাপ্রা ২৯ । ইঞি रहाका॥ उत्हरा स्था। श्रीत व्वेता ह कारकान कान हुँ हना-रुवाः। भोद्राष्ट्रि हः भो निकास तुल्ल्यः भूतीलयः ॥ हाडसा वर्गनाज्य विषयां वर्ग वर्ग नव । ইতি পাডালবর্গে অনর:॥ #॥ অপিচ। বিষ: ক্রেডোরস স্তীর शवाना २० इनाइनः। वर्म नाजः कालकृति दुक्तश्रयः शुरीः भनः ॥ भोताष्ट्रिकः भोज्ञिक्यः কাকোলো দারদোপি চ। অহি-हाला (मयमृद्ध बाट वाल्य नमः नाः ॥ देक्द्रावेत्का स्थ्यदका मः

र्ह्ना कत्रवीद्रकः। सर्वरणा मृज्यका গৌরার্কঃ সভূচ কর্মনৌ।। অক্টো 🖟 हामादः काणिजः मृज्ञिका सपुत्रि-तुकः। हेल्यु। बाञ्च विका विद्या विक् भिस्म ो खमाः ॥ मुख्का नामव শ্চেভি হাৰেরা বিষয়াত্য:। ইতি (इस) न्। अ।। अथ वियम्। मान बक्त ध्वाः। विषः ज् श्रद्धाः स्वुष छ**ङः छनान्नारुदि । यथ्न**ना छः जहां दिए: नक म्ह मुहीशन: ॥ भोबाद्विषः भूक्षकक कानक्रे स रियर ह। शालाहरना युक्त शुट्यः निय (छरा अशी नव ॥ 🗱 ॥ छत्र द८ नना-ভস্য बक्ष विक्षान । मिज्यात-সদৃক্ পংগ্রা বংখনাত্যাকৃতি তথা । यद्यार्था व उत्रा वृध्वि स्ट्यमाः ভঃ স ভাষি 5:॥ গ্লা হারিকু न। यस्त्रभा रुति हु। जून। मूला নে হারিদু: স উদাস্তঃ। 🕸। স্থ जज़ का **ब**दाल ॥ यम्पुटिः न ক্তেবৈৰ পূৰ্ণনধ্যঃ স সক্তকঃ॥ ः॥ ष्यथ भूभीभनम्। सक्षमः । भूगीभ लाहिएका यः महासी छिमान् महन পুछः। महाराष्ट्रकतः भृदेशः कवि-७: न भुनेभनः ॥ इ।। अय भी ब्राह्मिका स्वाध । मुहार्थ दिवास यः गाए ग लोबाहुक छिप्राङ

॥ अ ॥ व्यथ मृद्धाः स्कृतः । यिन् (गाभ्यस्क वस्त्र मुक्षः छ-विक लाहिङ। म मृङ्क ইভि (भारका मुबाङङ्बिशाइरेमः ॥ क्ष**॥** णय कालकृति। चत्रभः। (प्रवानुब-व्राप्त परिव एंडणः भृथावाणिनः। टेन-ভান্য ক্ষিরাজ্জাত স্তক্ রখ্য স-घिछ: ॥ निर्धामः कालकुष्टी श्मा मुनिडिः পরিকীর্ভিত:। সোহিছ্গে भृज्यदाद काकत मनाम ভार् ॥ ऋ॥ अथ श्वाश्वम् स्क्रभ । भाउराङ्काला एह खालभाय हर ख्या। (ভ্রনাশ্বন) দহাত্তে সনীপ-ए। कराइनः ॥ यतो हानाइन। एखगः किष्ठिकानाः श्रिमानःय । मिन्गाञ्चि छाडे (माम काकरानि ह बागरङ । अ।। जध वृक्त भू भग। सङ्ग-প্ৰণাবৰ্ণতঃ কপিলো য়ঃ স্যাৎ তথা ভয়তি সারন:। বুদ্দপুত্র: স বিজ্ঞে-या जायर इन ।। इति।। क्षा ।। वाकः ণঃ পাওর ভেষু ক্ষ্ত্রিয়ে লোহিত্ত-लुकः। रेग्माः भीका श्विकः मृत्य বিষ উক্ত শতুৰিবঃ।।রসাধনে বিষ• बिशु॰ क्वविष॰ म्हिश्हेश । रेवणाउ॰ स्वेविराणाय णुपुः प्रयाप्तवाच रि ॥ 🕸 ॥ व्यव विषम् छन्। विष• शुंगिहरा (भुष्छ वेऽवापि ह विकानि

চ। वार्ष्य वाउ कक्त ऋष्यागवाहि मंत्रावर् ॥ 🕸 ॥ व्यवायि मकव काय खनदालन भूदंक भाकागमन শীলা বিকাসি ওজা শোষণ পু র্ব হং সন্ধি বন্ধ শিথিলীকরণশীলং। আগ্রেय॰ অধি হাম্য मा। यागवाहि সংসগ গুণ্ডাহক । মদাবহ তমো গুণাধিক্যেন বৃদ্ধিবিধ্ব সকণা তদে-ব যুক্তিযুক্তণ ভু পুণদায়ি রসায়ন।। যোগবাহি পর বাত শ্লেম্বাজিৎ সনিপাতহৃৎ ॥ যোগবাহি ত্রিদো यः वृष्ट्रगः दीर्यहर्षनः। त्य पूर्वना বিবে হশুদ্ধে তে সুগছী না বিশোধ-নাৎ ৷৷ ভষাছিষ পুযোগেষ শোধ यिद्वा भूयाक्रस्ट ॥ अ ॥ ज्राष्ट्राभ विषाणाः निक्रभा । यर्ककी द्रः मृशी क्षीत्र • टोथव किनशात्रिका। क्रत বারো হথ বুত্র: পঞ্চোপবিষাঃ সৃত্যা: ॥ উপবিষা গৌণবিষা: । এ যা গুণা স্তৰ তৰ দুষ্টব্যা:।। অপিচ। णर्क की ब्रा यु शे की ब्रा वाक्वी क द्रवीतकः। ७अ१ हिएएना ४ ख्राः ग গ্ৰেপ্ৰিৰ্জাত্য: ৷৷ এতেয়াংশাৰ न • हिन्नु • । ७१। छब पुष्टेवाः ॥ 🗱 ॥ তাথ বিষাণা শোধন বিধিঃ। গো-মূত্রে ত্রিদিন স্থাপ্য বিষণতেন বি-भूकाजि। ब्रक्तमर्यभ टिनाकः उथा

धार्यक्ष दानि।। य २७११ गद्राव (পুक्ता एउ मूर शीना विस्मायनार। उनाहिषः भ्रागाणम् (माध्यिष् भू-যোজ্যে ।। ইতি ভাবপুকাশে পূর্ব-খণ্ড:।। 🗱। তাথ বিষাধিকার:। ভত্র विषम्। दिविषा मार्। स्वतः अस्मः ঞৈব দ্বিষণ বিষ মৃচ্যতে। দশাধি-ষ্ঠান মাদ্যন্ত দ্বিভীয় ব্যাডশাশুয় ॥ 🗱 ॥ ज्ञावत्रविषमा मणाण्यानाव् । ग्ल॰ পधः कलः পুग्नः खक् कीवः नाद्र (म्व ह। निर्यात्ना धाउव ऋगः ञ्चावत्र महा भूगा ६ मा ।। उप्तथा । ग्-लविषः क्ववीदानि >। भवविषः दियश्रधिकामि २। कलदियः कः র্ক্লোটকাদি ৩। পুয়বিষ বেত্রাদি 81 जुक् मात्र निर्याम विवाशि कत्र-ञ्चाणीन का । १ । की दिवर ज् शामि ৮। भाज्वियः इत्रिजानामि ৯। কন্দবিষ বৎসনাভ সক্তৃকাদি 1 > ।। #।। कन्मवियम्। वाउमाः खुयानाइ। पृष्टि नियान मधुाक नथ মূত্র মলানি চ। শুক্রণ লালা মূথ ग्यामाः अन्दर्भ कावग्रापिं उः॥ धराः शिलिख म्कानिम्मयदेखस्या मुयाः ॥ उद्यथा। मृष्टि निषाम विषा दि-त्याः नर्गाः २। म[्]ट्टीविषाः (ভीमाः नर्गाः राष्ट्रश्चानथवियावग्रधापयः ।

ज्ञन्त्रीयदिया शृहत । विकास्यः छ । | अज्ञिवा मृष्कार्यः । जः नानिया हे हरेक्षास्यः ७। माना स्पर्ण गुज भूते पार्ख्य मुक्त ग्रंथ जन्दरण मध्या म्याबायमान्छ छन भूबीयदिया भिष्य भी, बाह्यः १। याखि दियाः मर्भाहयः ४। भिछितिया नम्नण स्टन्धान्यः ३। भ्कविषा ज्वजान्यः ऽ०॥ छ ॥ श्ववदियागाः मामानग्रनाः का-গ্যাণ্যাহ। ভাবরস্ত ভুরা হিল্লাণ দত্ত र्वं गनशुरु। (कम इहिन्छि चास म्हाक् ज्वाक विष्या । क्षा जानुष (छरत्व विशिष्ठीया॰ विघाणा॰ काः काशास्त्र । उत्र मनविषम्। कार्यमा-इ। উएडिय गूनविरेन मां इः भूग भन चट्टा छ। अधियमा कार्य মাহ : জন্তুণ বেপন শ্বানো নৃণা भद्मि छाउट । 🗱 । कनदिवन। कार्य भार । गम्हानाथः कृत्रविष मार्क्स (इपक (डाल्सन। इस न्यूस वियम् कार्यभाद् । ভবেৎ পল্পবি-रि मुक्ति वाध्यानः मृहंनः छथा। 🕸। पुक् नात्र निर्याम दिवालाः कार्यशः णाह ॥ पुक्रमात्र निर्याम विरेष कः भगूरिक उवित्र हि। सामा (भोर्भका) পাক্ষ্য শিরে:ফক্ কফল•সুবা: ॥ अ॥ कोत्रविव कार्य नाह । (कः

नाशमः भीवादिय विज्ञान एएजिन स्डा । छ । बाड्दिय कार्य नाह । क्ट भी उन[्] था ज्विरेय मृशी साक्ष्ण ভালনি। প্রায়েণ কাল্য।ভীনি বি-यार्ग्यकानि निर्मिष्ण ।। वजानि म्मानी व विषाणि वव काणवारी वि कानांख्य सहामान । क्रा कन्त-विषम्। कार्यभास्। कन्तकान्ध्रीः र्याति यानाङानि ज्यास्य । न-र्जाए। जानि जानि । उन्हेंगानि मण-छि छीता।। इतिहा अन्न का न कुंजिस काशि रुविषः। गरिता निष्-ষ্টি ত**ু স**র্হণ তলৈ ক্ষেত্ম শভি যুক্তি ॥ अ।। जान् रणखनानाइ । क्य-मकः তथा जीकः मृख्य गाण वहवापि छ। विकाम विभागरेहत ज्ञाना कि छ **उ हमा अ:** डिर्छ रेन विषम्। कार्यः নাহ। তদৌকাৎ কোপয়ে ছাবু ৌ কাৎ পিত্ত সংশাণিত। তৈত্ব্যাম-ভি নোহ্যতি মুম্বজা শ্লুনভি ছি ।। भन्नोन्नायग्वान् स्मान्त्राट् भुदित्न-বি মরোতি চ। আশুদ্ধাদাশ ভদ্ধতি र्वाधार मुक्जि स्ट्रर ॥ विद्याः লিত্বাৎ ক্ষপথতি দোষান্ ধাতৃদ্ बनायालि। चिकित्रहाउ रिम्मा-पूर्णिविटमाक्ष नाचरार॥ मुर्द्धाः ब्र हारिमाकियाखबाट ज्लियर

চ্রি॰।। 🗱।। বিব্রাপ্ত শব্রহ্তস্য লক্ষণ মাহ। সদ্য: পাক যাতি यम्। क्र छ॰ छ॰ मृत्वमृक् भागाः চাপ্যভীক্ষণ। কৃষ্ণীভূত ক্লিন্ন মত্যর্থ-পূতি ক্ষতান্ মাংসং শীৰ্য্যতে যস্য ठालि॥ ज्या जाली नारु गूर्ह ठ यमा निका विक्षः छः मनुषाः वाव (मृद्र) विकासिकातित्व कर्गाह-থিতৈ দত্তঃ ক্ষেডাবা বুণে যস্য চা পি। পচ্যতে চাণ্যভীক্ষণ পুনঃ পুন: পাক নেতি। তাপো বহিত্ত-ध जा। मारक्। **९** छ। छ रत्न । स्वर्गानि-ভ্যন্ত ক্ষত কর্পর বোদ্ধন্য । शुार्यम द्राजाशीना स्वारको मजरवा दिव मन्छि॥ # ॥ (७वा उत्रा াণ লক্ষ মাহ। ইদিডভো ম मर्गाभा॰ याकरहरी मृथरेवल्टेंडः । हानेगिष्दरगञात (गाँछ वि*देश*ः **क** तुष्क्रियान्।। न परा कुछितः शृक्षि। विवक्त सीह मिडि ह। यशार्थः वह भ र्कान' ভाষতে চাপি ग्रव ॥ चामुनीः (मुजितमुची विवास्थः পুহ্মেদপি। বেগঘু শ্চান্য ভন্তি <u>ज्य रेम्हरेक श्रीकृष्ट ॥ विवर्गव</u> ক্রো ধ্যামশ্চ নথৈঃ কিধিছিনত্তি চ। আলভেড मञ्जूनः करा ह **लि**द्धा कुरुति ॥ निधियामु त्रशहादित

वी ऋछ ह भूनः भूनः। वर्खे दि-পরীতঞ্চ বিষদাতা রিচেতন:।। ই-क्टि मञ्जिपाय मृष्ठक व्याकावः। म्थरिक्छि॰ मृथरेववर्गािषः । এভि र्जि देशः वक्तमारैनः। न ममाञ्रुखद्वः भृष्टे: श्रीयात्र कर्यक्रनि वास्मि-हार। मन्दीनं बद्ध है। खरहवायू-कनिक भई व्यायाभरनामायासुनीः त्यार्वेष्ट । भुक्ताट व्याक्शानः পি। খ্যাম: দক্ষনমানবর্ণ:। আ-न(७८ व्याम् । दिस्ती ७ दर्भ महात्त्व राज्य ॥ इ.॥ इ.५४ वि वागाः भागानामाः कार्यः भार । विश्व छ तु। द्वार नाइ॰ मःशाकः লোমহয়ণ । শোহিঞ্বাতিসার্গ **ञ**्च कञ्च म• दिव• ॥ 🚓 । अङ्गा यु তীম্ ভরত্বেন দর্শালাছ। বাত গিভ ক্লাত্মানো ভোগি মণ্ডলি রাজি লা:। যথা ক্রম• সমাখ্যাতা ছ छ রা দুন্দুক্পিণ:॥ ভোগিন: ফ্ণিন: । एक विः भक्तिः। मञ्जल विश्विः न्छिजाः পृथर्वा मन्त्रगामिनः। ४०० म छिलाता (छाया ज्लाना कं गना वि-रेवः ॥ शिका विविध वर्गां छियी गृष्कृ क ताजि जि:। विकिना देव व ভান্তি রাজিলা তে হি তে হুগি ষ্ট্ ॥ এতে যথা ক্রম• বাভ পিত্ত ফকা-

জানঃ। দায়রাঃ দে অন্তেরে ভেদৌ বেব। তে ঘাৰুরা:। যথা ভোগিনো मञ्जिल्याः बाजाः ইल्याहि ॥ 🕸 ॥ ভোগি পুভৃতি ক্ সদ শ লক্ষণ ভেদ মাহ। দংশো ভোগিকৃত: কৃষ: সর্ব বাত বিহ্নার নুৎ। পীতে। মণ্ড-विनः भाष्या मृतः शिखं विकान्नदान् ायम् निहिनः। भाषः निर्देश ्र उटान्तु।मृक् भर्व (क्षयाविकाद्य-ः । १३ ॥ एमिविष्मस्य कः निन-💛 🖰 🦁 ब्रहेन्यानायात् भार् । ७ ए एकायङ्ग न्यामान रन्योक সঞ্চালু চতমহেয়ু। বাম্যে সগিত্তে भाविदार्जनीया शाक्त गद्रा मर्बन् (य ह म्हेरः ॥ यास्य एद्रश्रः । शिख्रः गपायाः। हा ते क्यापाः विष माणू क्ति भद्रांति हाएक दिख्नी ख्विड । छित्यः डेप् न त्याता । 🗱 । हार्ची -क्रब यक्त भारा त्रथार वाक्रब ছ্র স্বন্তিকান্ত্রশ ধারিণ:। ভেষা मार्ची कड़ाः मनाः किनः भाष्मा निनः॥ ॥ जनद्रिष् एष् विय ना শু মারকং ভবতি জানাহ। অজীর্ণ ণিন্তা ভপ পীড়িতেয় বালেয় বৃদ্ধে ষু বৃত্তিকতেষ। ক্ষাণে ক্ষতে চেহি নি সংখ্যুপ্তে কঞ্চে বলে গর্ভবভীষু 🍴

ঢাপি ॥ শত্তক্তে যস্যন ব্লক্ত মস্তি রাজ্যে লতাভিশ্চন সংভবন্তি। শীতাভি রন্ডিশ্চ ন রোমহর্ষো বি-वाि ख्उ॰ भद्रिवर्द्धारख॰॥ किस्। নুথ যস্য চ কেল্মান্তো নাসাব नामण गक्षेड्यः। कृष्ण तकः य्यथूक मः। इत्ताः श्रित्रवृक्ष म বৰ্জনীয়ঃ॥ কেশশাতঃ আকৰ্ষণাৎ । নালাবসাদঃ নালাযা নতত্ত্ব। কঠ ख्यः ग्रीवाषात्रगामकिः । श्रामाः **ञ्जित्रः स्नूष्ट**सः॥आ। वाभावका वर्डि यंनी रम्। निःत्र कि वङ्गामुकः अ्तिमृक् यथक यमा। ए हु। विभा-তा॰ म्हजुरू शामाज्यनाति वि-रिन्धः भद्रिवर्जनीयः ॥ वर्खिः क्षित्रङ्• । बङ् अत्वनृष्णुं ग्रम् रसा यमाह নাসা মুথ লিফ্ গুদানিভ্যো রক্ত• সুবেৎ।। উম্মন্ত মত্যৰ্থ মুপক্ষত বা হীনম্বরু বাপ্যথ হা বিবর্ণ। সারিট্র মভাৰ্থ মৰেগিনক জন্মানর ভস্য ৰ কৰ্ম স্বৰ্ধ্যাৎয়। অত্যৰ্থ মুপজ্জ বা জুরাভিদারাদিভি রভিশ্যেনাপ-क्छ । सीनयंत्र वर्ज्यक्मा विवर्न क्रक्षा जाविष्ट नामाञ्चारिय-ক্ত°। অবেগিন• বেগে। বিষ্বেগঃ শ-रुद्रि इंखि (नारक उपुरिडः । 🕸 । क्रावंत्र कश्मा विषयाव धीर्वाहि-

जिः हाइरेग व्यविषय जा॰ **ल**ज- [छो। जराह । जीती विषयी रविष् বিতে বা দাবালি বাতাত গণে ধ-ভন্না ৰ গ্ৰহেল বা গুণ নিশুছীন বিষণ হি দুৰী বিষতা মুলৈতি॥ খীৰ্ণণ অভিপুরাণ । বিষয়ৌষ্টাত্যিত। বিষয়ভি রোষ্থী ভি বি িছান কু ত । স্বভাবতো বা গুণ বিপুছীন च्चावारस्य एणालाः छनानाः सर्यः। विब्राति ७१ श्रीमा। 🕸 । मृषीति यम् कार्यकार् । वियोग्न जावाम निभाउरयख्य ककान्तिक दर्यस्थान्-বন্ধি। ভেনালিতো ভিন্ন পুরী বরণোঁ तिगन्न देवत्रम्य छः शिशामी ॥ म् हां • जून गन्न वाय निश् विष्ठ छ-मात्ना १ब्रिकि मान्नुयाद्या न विन्ना-ভয়েৎ ন মার্যভি। কফা স্বিতং ক रफन बन्तीकृटोकाम्खा । वर्ष खनानुविक्व करकभाश्च मान्त्रामीयट পা লাছির নাজাবি। ভিলপুরীষবর্ণ: ভিন্নপুরীবে। জতমল: ভিন্নবর্ণস্চ। विष्ट छे गामा विक्काः (ठ छा: **ज**र्वन् মূৰ্ম্বানি ব্যাধীন লভতে॥ 🕸 🛭 হ্লা-न विष्मयञ्ज्ञ मृषीविष्य निञ्चवि-(भिष माइ। यामाणग् एक् कक वाउ রোগী পরাশ্যস্তে হনিল পিত্রো-र्गी। ज्दर मगूष्ट मिद्राङ्ग क्रिका

विज्न शक्ताण्ड रचा विद्युः। प्रजू षा अभितासकः (जनाः च हक्रि-ह ज़िला विस्नामः। ७७५ मि छि इर॰ शहासगढ्य पृतीवित्य वाखवाः ৷৷ ভ্রিং রবাদিয়থ ভদ্থোভান্ করোতি ধাত পুভবান্ বিকারান্। एए म्वीदियं । यथानाम् मूणुक वराथि नमुल्प्रकीरगाङ्गम्। 🕸। म्बी-विवम्। लुएहाल मन्य नाइ। का-পন্ত শীতানিল দ্দিনেষু জাত্যাশু পূর্ব শৃণ্ ভস্য রূপ । ও । স্পি ভন্য ভন্য দুষীবিষদ্য পূর্বরূপ मार। निन् ७ : द्व विद् ख कि (ज्ञून इर्ष।वधना क्रम्मं: । विराज्ञ वः गा-**बोग**रिवा, । इर्यः (द्रागः खः। #। क्रभगार्। उड: क्राबाबावमनादि-भाका वादाहकः मधन कार्वेश्च । না সক্ষাপাণি পদাক্ষি শোপ ন্ हीं उथा हर्षि मथा उनातः ॥ म्ी-दिव अन्य ज्यो जुदा क जर्भः भृत्षिः उठेद्रम् । । वास्मरः অ্নে ভুক্তে পুগ ফলেনেব মদঃ আ विलाकः। 🗱। जानम्। म्योविष्ट छ-(मन विकायस्थम मास्। उत्रात मः नः कारा उथान। माना मना मना क প্রেচ্ছ শুক্র । গান্ধर্য মন্যজ্জন (यह श्रष्ठः छा॰ छान् विकाद्राः मह दह

भुकाद्रान्। यन/८ पृषीदियः। जाः खान् विकादान् विमर्ल विष्मु। हामीन् । #। দ्वी वियमः। निक्कि माङ्। मृषि छ॰ (नम्भ कावानः मिवास्रीश द ভিক্লশা:। যমাৎ সংদ্যযেদ্বাতৃং তমাৎ দুধীবিষ মৃ হ ।। দেশ: অ न्णापिः। काला पूर्विनापिः। ज्ञाः व्रवाय जिल भन्दानि । बाजुन्य कदाण्यीदियः ॥ अ ॥ प्यीदियमः সাধ্যত্ত্বাদিক মাস্থ। সাধ্য মাজাব-**७:** मर्त्या याष्ट्राः मञ्चलायिउः। मृयीविक समाधाः मार कीनमाः হিত সেবিনঃ।। 🗱 ।। কৃতিম॰ বিষ॰ हिविधः। এकः मविषः म्यीविष স•জ্ঞ•। জ্পর মবিষ• ভদেব পর স'ল্ডে ৷ তথা চ কাশ্যপস'হিতা या। मः सागज्ञक हिदिश हिजीयः विष गूर्टाउ । मूपीविषक्त नविष निवमः गत उँठाए ॥ जःयागकः কৃত্রিশ বিষণ। দ্বিতীয় স্বাভাবিকাৎ । उह क्षिविषः। 🗱 । उब पृशेविषः मिल्याय गन्न मर्निविक् मारु। मो ভাগ্যার্থ ব্রিয়: স্কেদ রজো না नाञ्चान् नलान्। णवुनुयुकाः ण गतान् भ्यष्ट्रभा मिल्जिन् ॥ 🕸 ॥ गतकार्यामार । रेजः महार भाजू क्षालाल क्वंत्र कारमाथकार छ

। गर्मभूषगरांधानः इखःदाः लाः थ अवः ॥ कटेब्र॰ गुरुनी (ब्रामा रक्षा ७०५: क्षारा जुद्र:। ७४ विद्रमु **ठान्। व्याद्य लिङ्गक्ष डाग्रह**ा। তৈ গ রৈ:। স্বেদ রজ: পুভৃতিভি:। জুর: শ্চাস্যোপজায়ত ইতি অপা-काट । मर्जभूषममः मर्मवायाः। ऋरया ধাতৃক্য:।। #।। লু চানা ভন্তবিংশ-याना मूटल खि॰ मः च्याका ह। ममा-ल्न ज्न शुर्धा मृतः शुर्यम दिन्त-ব: ৷ তেভেগ়া কাভা হতো ল্ভা ইতি খ্যাতাস্ত বোডশ:।। ভত্র সৃশুত:। বিখানিতো নৃপবর: কদাচিদ্যি স-ভ্য•। বশিষ্ঠ• কোপযামাস গত্না-मुम्भर किल ॥ क्रिजित्र। मून **खम्र वना**षेष् (सम्विनस्यः व्यमञ्दर्भनात्मव श्रदशानीव्वर्रमः । ল্নে তৃণে নহর্ষে স্ত ধেন্বর্থে সম্ভূ-ভেপি চ॥ ভভো জাতা খ্রিমে ঘে:-র। নানা ক্লা মহাবিষা:। তানা-मध्ये बहेमाध्या वर्ज्ञा खावखा वव হি।। তত্ৰ ত্ৰমণ্ডলা পুভূতবাে ই कश्चेमाब्याः। भौवर्गिका शुक्रुख्याः ঠাবসাধ্যা: ॥ 🗱॥ ভাসাং সাধা-न्याना॰ मण्य लक्ष्मभाष्ट्र। लाखि मंडि ए॰माकालाः भुरुखिः क्षञ्जन। ५। क्रता नारश्यक्तिमात्र गनाः मूरण

ত্রিদোমজা:।। পিড্র কা বিবিধাকার। মণ্ডলানি মহাভিচ।শোথা মহাভো म्हरवा द्रकाः नागवा न्हणा ख्या। সামান্য সর্বাভানানেওদ্ শেষ্য ল ক্ষণ । দ শকোপ্য: দ শন্ধ্যে প্তি ভावः। मः नगरवा ज् यटक्षः ना ব বা জালনা বৃত্ত।। দকা কৃতি ভূশ। পাক ক্লেদ শোথ জ্বাব্রিত। দুবী বিষাভি ল্ভাভি স্ত দই মিভি নি-फ्लिं । । भा भो वर्तिकापया २ हो . वनाधाः भाष्ट्रका खानाः लक्ष्म मा হ।শোথ: শ্বেতা সিতা রক্তা গীতা বা পিডকা জ্বঃ। প্রাণান্তিকো ভবে-मारुः यात्र हिता मिलागुरुः ॥ 🗱 .। व्याथुर्घीविष लक्षण भार । जार-माहानिउ॰ भाषु मखनानि जुदरा रकि:। (वामर्यं फ नार्काभ्या-श्रृन्यीदियाफिंट्ड ॥ 🗱 ॥ भागज्ज म्वक विषकार्यं। माहः। मृद्धिः । स्व বৈবর্ণ্য ক্লের শব্দ শুতি ভ্রা:। শি রোগুৰ द्वः वालाम्क हिर्मि कामाध्र भ्वकार ॥ अञ्चलारवाज भ्वका-কারোবোদ্ধব্য ইতি ভক্সাম্বার ॥।।।।।। क्कलामम्हेम। लक्कन बाहा (ना-थम् कार्य नथ वा नाना दर्गद्व (सब চ। নোহোথ বর্গো ভেদে। দপ্তস্য क् हवा भरेकः ॥ 🗱 ॥ दृष्टिकवियम् ।

वक्षन बाहा मन्का प्रविवासी ह ভিনত্তীবোদ্ধু নাশু চা বৃশ্চিকস্য বিষণ যাতি পশ্চাৎ দংশোবতি ঠ-তে।। अ।। অসাধ্য वृশ্ठिक पश्चेमा ल-क्रग भार । पर्छ। २ गारेष: स क्र्यान রুশনোপছতো নর:। মাংসৈ: পত-ডি রত্যর্থ বেদনার্ভো জহাত।সূন্॥ व्यमारिया वृश्मिरेक खिया स्मवानुतृ-(बः। इराषियुगर एः श्वारि कार्य রহিতো ভবতি। অত্যর্থ বেদনার্ভ ३ ७/वृगः ॥ ₩ ॥ क्ष छ प्रेप् । विक्ष মাহ। বিসর্গ: শ্বথু: শূলা জুর: ह मित्रथानि छ। नक्षा करोड मंहि मः मरेन्द्रवायमीर्य (छ॥ कः छः कीरे िष्मियः। 🕸॥ छिहितेस् ५३ म। वक्ष नाइ। क्कःबारमाहि हेर्क्न खत्ति (क्षा ज्णार्जिंगन् । पष्टेः भीरतापः কেনেব সিক্তান্যস্থানি মন্যাত । কৃষ্ণরোমা অধিকতরকৃষ্ণরোমা 1 উष्टिक् भ्होतिक्वितिष्णवः॥ #॥ भिविष बख्क पष्टेमा लक्षण बाह। এक्ष हो प्रिंडः मृतः नक्षः भीउ कः अञ्हे। जिन्दु चूर्विमान् पर्छी गर्भिकः भरिष स्वर । এकम् हु। फ्लिंड: यं जादारमकरेगव में द्वेषा में প্রে ভবতি।। 🕸।। নৎস্য বিষদ্য कार्य। गर्नाञ्च निवाः

ब्रवः मिरः भाषः ज्जः उषः। 🛪 । रालीकाविषकार्य। मार । दशु শোপ জুর মূর্ব সবিধান্ত জলৌ-कनः। व्यमु दिख्यियः ॥ छ ॥ मृ-इलाधिका विषकार्य ज्ञाकन माइ। বিদাহ শংখু তোদ পুষেদ গৃহ-গোধিকা:। জ্বর্য ব্রিভি শেষ:॥ #11 माउभनी विष्कार्य) मारु 1 ए॰-(म (सर क्ष क नाइ दर्गाट भ उ भरी विषः। भाउभरी गिका है है जि लाक।। #॥ मणक विषकार्य) माक् । कञ्चान् मन्दि इतिहायः महा-ज्ञान्तरत्रमनः। 🗱 । ज्ञानाराप्रमाक वक्तन माइ। जमाराकी है जन्म म नायाः नमा वक् उः। यानाया कं हे भृम• थमारियः के हि ज् आिडः कृष्ठः १९ क्षत्रः छएमः १ (४४मः 1 \$। मिक्का प्रभाता वाका मार। जन्द्रः ज॰नु। दिनीः न्याता नाष्ट्र मृह्। জুরারি ভা। পিড চা নাঞ্চকা দংশে-তাসান্ত স্থাকাশ্ল্থ ॥ তাসা-মিত্যাদি। তাসাং স্শুতোক্তানাং ব্যা॰ মঞ্চিকাণ্ড মধ্যে স্থাকা-नाभी मी घु॰ लाग॰ इत्र डी डार्थः।।कः।। व्यायुक्ति विवागाः कार्यः मारु । চতুল্লান্ডি দ্বিপান্ডি স্থা নথৈ দি হৈ শ্চ যৎ ক্ষত। স্যতে পচ্যতে তত্ত্

मुद्र इ जुद्र प छ। ११ एड्झा फि र्व्। शुमि :। विशास्ति वंगगानयामिः ভি:। স্থতে সূন• ভবঙি ॥ 🕸 ॥ বি-(वा ज्ञिजमा काक्षा नाहा भुमन्नाना-यः भुक् जिञ्च चा जु न मा जिकामः मम ग्य विदेक । भुनन वर्षानुष हिन् एडे॰ देवरम्। वगाहमविषः सन्याः ॥ পুসন্নদোষ পুকৃতিস্থদোষ শেষ जुगन ।। 🗱 ।। 🗱 ।। ञथ विद्याना চিকিৎসা। ভত্ত স্থাবরবিষস্য চি किट्ना। ज्ञानात्रन विरंत्रनार्खनत्र• **एड्नि बागएए । वगरान जनः ना-**ত্তি যত শুস্য চিকিৎসিত।। বিষ নত্যৰ্মকঞ্চ তীকুঞ্চ কথিত যতঃ । जाउ: गर्विष्य गूकः श्रीद्रायक्स नीउनः ॥ 'छेक्गारिङक्गाहिरमायन বিষা পিত্ত পুকোপদেশ। বামিতঃ (महरगञ्जभाष्ट्री उत्तन कत्न ह ॥ পায়দেল্পু সর্পি ভ্যা । বিষয় ভেষ-জ জত । ভোকু নমু রস দিয়াৎ চর্যেম্রেচানি চ II यन। यन। ठ নোষ্ণ্য পশ্যেলিকানি ভূরিশঃ 1 তন্য ত্রস্যেষ্ট্র ত্র্য্যাদ্বিপরীত **्रेगः** किया ।। मानयः मधिका टिन्छ-व (कात्रम्याः श्रियस्यः। ভোজনার্থে विवार्जामा श्रिजाः श्रुव रेगस्व ॥ नियम् वस्। म्य इक्षण श्रुवानि

বীজক্ষেতি শিরীবতঃ। গবাং মূত্রেণ সংপিষ্ঠ লেপাদ্বিষ্ব্রণ ভবেৎ ॥ म्वीविषार्छ नुमिन्न गृष्ट्व । ठाधण्ड লোধিত। পাগ্যেদগদ মুখ্য মি-म॰ म्यीविषाश्रञ्॥ शिश्रजी ध्रा-यक या भी लायु (यला भुवहिंका। मब्रिज् वालक रेज्ञा उथा कनक रिगतिकः ॥ क्योन्युकः क्याया হ্য দূষীবিষ মপোহতি , ধ্যামক রোহিব• । তদলাভে উপার দে-য়-। কন্ত্রগিব্লিক সোণাগের ইতি लाक । यज्ञान्त्रमात्रकः ॥ 🗱 ॥ थ्य कक्तिविषम् । विकट्ना । य-ভगा॰ द्वाठना॰ अर्थ मर्कभूझ॰ छ-(था८भवः। नव (वउन म्वानि গরল॰ সুরসাণ তথা।। সকলিঙ্গণ जनिक्षिष्ठा मनस्रक्ष भाउ।वद्री । म् क्राहेक ममकाक भग्नादमात्र मि **छात्रि ॥ बन्नीक्डा शहर मर्लिः** शाया मन्त्राष्ट्रवृर्थनः। सम्राक् शाक् বতীৰ্ণে চ শীতে ত্ৰিন্ বিনি:কি (भए ।। मर्शिञ्चलाः जियक् (को-पुः क् उत्रकः निवाभाषः । निवागि হন্তি দুগাণি গরদোয কৃতানি চা। न्त्रानाष्ट्रि विषः मर्दः गरेत्र क्षाः হিতা বুদা। যোগজ ন্তনক কণ্ডু नाः जनामः दिजः छङ्यः ॥ नाम्प

ত্যঞ্জনাভক্ষে পান বন্তিযু যোজিত । मर्ग की हाथ ज्ञामि म्रामा विव-হ্ৎপরণা মৃত্যুপাশছে দিঘ্তণাঞ্চা খভুরস্য শিকা পেয়া ক্লীরেণ প্ রিপেষ্ভা। অফোঠ বংশদা চাপি व्यविष्या भूषक्ष छः।। अ।। त्र अनी यूष्य भः ভঙ্গ মঞ্জিঠা নাগকেশরৈঃ। শীতাৰু शिष्टि द्वालिशः गए। ल् अ दिना नापर ॥ 🚁॥ जीवकमा कृतः ऋहा ঘৃত সৈত্কৰ সংযুতঃ। সুখোঞা মনু না **লেপো** বৃশ্চিকন্য বিবং স্থার্থা। नक्षनाघाव मूनिछ न्यीवर्जभनग তু। বৃশ্চিকেন নরে। বিদ্ধা: ক্ষণান্ডব-তি নির্বি:।। ইতি বিষাধিকার:। ইতি ভাবপুকাশ:।। #।। #।। পা-ब्रिভायिकविया यथा। न वियः वि-य भिত্যাহু বুলিৰ বিব মুচ্যতে। **(** स्वय्थानि याच्चन मना भविहातः ত্ততঃ।। ইতি কৌর্ঘে উপরিভাগে २७ व्यथायः ॥ 🗱 ॥ व्यभिष्ठ । हुत्र-थीं जा विष विष्ण अकीर्ग (जाक-न॰ विष॰ । विष॰ (गाष्ठी मित्रमुम्) वृष्त्रमः उक्नी विषः॥ विषः वःकः मन द्राखो विया द्राष्ट्रा **२**नुक्ला छ। विष॰ ज्ञिरयाः **१**९९७न। इस्त বিষ॰ ব্যাপি রবীক্ষিত: ॥ ইতি गान्।

विषक्षेकिमी जी वद्याक्रकिकि। इंडिब्राकि परिः॥

(यहनरः श्रु॰ शीणकन्तः। ইতি ब्राक्टियणेः॥

विषवा ही ९ जुने। इंडि मद हिन्दुका॥

विषयां के श्रुष्ट किशीय हुन्छ । ইতি क्या ना ।। दिवन भट्ट बि ।।

বিষয়: প্র শিলীমবৃদ্য । ইতি सफडिस्का । स्वामः॥ विजे जका। इंडि इस्य चर्छे।।। हम्ल ह वृक्षा हे ५ अमेन्द्र । वियव मान কে জি চন্ধ্ৰ চন্দ্ৰ প্ৰতিষ্ঠাৰ কৰে হয় হ म्मुक्पान । ता । विविद्या र शांन शार्यता । एए । अगरवाज नवाहक् अधि वार प्राप्त वर् **স্য উবার । ব**ার বার ব্যবস্থার• भाष्ट्रेया चल्ला भाषा । 🚉 धर्भी শর হাযুক্তা নিয়াপ্য প্রেক্ণণ পরে ।। সবিধা প্রোক্ষিতা তেন সা त्या खर्वां विश्वन । ३। यवस्य युन शालीय वज अवग्रामानाएन ॥ ক্ৰচাভ্রণ ছাল্ল বাল্লব্যুম বে শ্ৰী। শেলুঃ পাটল্যভিবিষ लाशी जांगी लूबर्गवा।। जमका-द्रुविद्वाह्किनियद्यः नानिछः। नेरे प्रचमठे उत्तर (माम्पा विव

नासनगारः नाका शिक्षप्रशि नग (वि) इति का। भरके। भव्म যুক্তা বজলিছেন করিল।। নিখ-নেদ্রোবিষাণত্ত সপ্তরাত্র মহীতলে । ভতঃ ক্রামণি (হয়। বজা হতেন थाद्रहरू ॥ म^{्रम्}ष्टे॰ महिष (छन म-দ্যো ভবতি নির্বিশ। ৩, মনো জল भिन्नः पुर्वार्यः देश्य कर्षकः ॥ কপিশ্বে অষ্ট মঞ্জিষ্ঠাঃ শিক্তেন শুদ্ধ রু ্রিডাঃ। শুনো গোঃ কপিনানা-क ओग्राप्याया रभादा रगमः॥ विविधिः शद्भाः कार्यः स्वित्रपृक्ष প্র ८। ম্থিকা উত্রা বা পি হ্যে यकः विमानसात्र ।। स्वत् मानी भ छिड़ी बङ्नी स्थूरा स्थू। अप्र पुरु मुद्रमः जाकान्शिङः भूबद-ন্তবি।। বাদিত্রাণি পতাকাশ্চ পি-ষ্টেরেভৈ: পুলেপিতাঃ। শুদা দৃষ্টায চাহাৰ মদ্যে ভব্তি নি বিবঃ॥ ৫॥ ভাষণ প্রকারণ মন্তিটা রভানি-दर । ग्रेदाया जिवृका भवः विस्कृ भिन्तवाराणी ॥ भवुकः (१७नः स्कृ <u>দু</u>॰ গোবিবাণে দিখাপানে । তল*্*-ফাগুনা মাত্রা প্রাপ্তক্তণ লোক্ত তথা ॥ বিৰণভূত আর্থতি নির্বিস ন দেখবৃৎ । ৬। সজু সভার সা-**(भ**उ॰ भर्षेत्रा अभदाज्दिः ॥ भूवर्ग

তক্ষর ভরো: সমূধৈ রক্জ্ নস্য ভু। ঘ্পো বাসগৃছে হস্তি বিষণ স্থাবর कक्रमा न उब की हाः मविया न प-पूर्व मदीम्थाः। न क्छा कर्मण खब খ্পো হ্য যত্র দহতে।। १।। কল্লি-रिजण ज्न की इन नाम क्रम बहरेनः । দুর্বৈলবাল সুরসা নাকুলী ভণ্ডলী-यकिः ॥ कृषिः मत्वी मकार्ययं का कमा शियु छ वृ जः। ৮। রোচনা भ म (नभावा इक्त्रेंग खिवाका हुरू ।। दिरेष मं नाश्राट महाइ नव्र नाही নৃপপ্রিয়: ১৯ । চূর্বৈ হরি দ্রা মাঞ্জেষ্টা किरिई। कर निर्देश । किश्वर निर्दि ষ্টা নেতি গাত্ৰ সৰ্ব বিষাদ্দিত 📗 1 >०। भित्रीयमः कलः भधः भ्यः বৃত্ত নূল মেব চ।। গোনুত্র ঘৃষ্টে! श्गतः महक्रांकद्रः ख्रुः। ১०। १ 🗱। এकवीब सस्येषवाः मृग् ठाउः পর দিক। বেষ্যাককোট দী রাজন্ विकुकान्ना उत्थादकी। भाउन्नी भाउानकी वना भाग भागिका ।। সোনা পিও নিশা চৈব তথা দ জক্হাচ বা। স্তলেক্মলিনী যাচ বিশালী শহুগুলিকা ৷৷ চণ্ডালী হ-স্তিচণ্ডালী গোচণ্ডালী চ গন্ধিকা। ब्रङ्गा देव महाब्रङ्गा उथा वहिंगि या ह या॥ (काराङ्की नल्याना

नियाना मुख नक्ता। वाद्रगा ह मगक्षा ह उथा दि गक्कनाव्यनी॥ केयदी ह जिले हिंदी ह त्मामनी वः শ তালিকা। জতু কালী মহাখে-তা स्वठा ह मधूमिका ॥ वर्जिहेः भाति जुन्छ उथा रेव मिस्नुवादिकः । जीवाननः। वसुमञी नर्ख ना तत्र कः चेकी ॥ खानडा जान भाडान তথা চ বটপত্রিকা। কার্ড্মনীরী बरानीकी क्**উंद्र॰ रु॰मशा**क्कि॥ নপ্তুকপণী বারাছী ঘে তথা তঙ্ नीयक। मनाकी नवना दुन्की वि खक्ता मुथह द्री ।। द्रहाशहः वृद्धि করী তথা শন্যপহা চ যা। পঞি का त्राहिनी दिव ब्रज्जमाना गरही यथी । उभागलक बन्ताकः या ह िता शहि। विका। काकानी की ब कारकाबी भी जूभनी उरेश्व हा। कि শিনী বৃশ্চিকালী চ মহানাগা শ **उ**विदेशी। उथा गक्छाविशा ह अल जगुमिनी उथा॥ इल्लाहार मिनिशै যাচ মহাভূমি লভাচ যা। উন্মাদি নী সোমরাজী সর্বরত্নানি পার্থিব॥ বিশেষামন্ত্ৰকভান্যত্ৰ কীটপক্ষ বি শেষত:। জীবজাতাক মণ্য: সার্থ धार्येश विरम्ब ७:॥ #॥ त्राका मा ম্শৰ্যাক কৃত্যা বেভাল নাশনা

विश्निवामन नागान्छ (गा थाता है সমুদ্ভবাঃ॥ সর্প তিত্তিরি গোমাযু বক্ত মণ্ডুকলাম্চ যে। সি•ছ ব্যাঘু-ৰ্ক্ষ মাৰ্ক্ডার দ্বীপি বানর সম্ভবা:॥ কপিঞ্জলাজ গোখাছি মহিষেষু ভবাশ্চ যে। ইভ্যেব মেতৈঃ সক-বৈ ৰূপেতৈ দু' বৈচণ্চ সৰ্বৈঃ স্বপু-র॰ সুরক্ষিত। রাজাবদেত্ত গৃহঞ্ मूजु छ्वान्जिः लक्ष्व मः भुयुक्तः॥ ইতি মাৎস্যে ১৯২ অধ্যাयः॥ वियम्नी खी हिल्याहिका। इंडि विकाखस्मयः ॥ हेन्द्रवाक्षी ॥ वनवर्द्धका ॥ यद्मकृषा ॥ ভূম্যা- 🛚 भना ॥ ब्रञ्जभूनर्यन ॥ इति हु। ॥ वृक्तिकाली ॥ महाक्ब्रञ्जः। हेि রাজনিঘট: 11

বিষজিস্থ: পু॰ দেবতাডবৃক্ষ:।ইতি রত্নলা।।

विषञ्जाः न् मह्यः। ইতি णप इञ्चिति॥ विषञ्जात्रकः॥ विषयः क्री मृगानः। ইতি णपः इञ्चिति॥

विषयः जि विषात्रभाक्षः। यथा।
इंडि विभियमाकर्गाः गार्माः । विषयः। उपमद्याः
विनर्ज्ञाय उः। विषयः। उपमद्याः
विष्ठः मान् पूर्वजायाः।। इंडि जी
जानवर्ड २० करक २२ अवश्यः॥

विषः अति । सङ्गारिया। साङ्राङ् स्रोर्थेऽ विवास्ति १वनामः नास्ति विषः जा। इंडि (इनहन्तुः॥

বিষতিনদু: পু• কারস্করবৃক্ষ:। ইতি রাজনির্ঘটি:।। জপীলু:। ইঙি ভাবপুকাশ:।।

বিষদ শ্লী পুল্লকাসীসং। ইতি ব্লাজনির্ঘন্টঃ॥ শুলুবর্ণে পূং। ইত্য; মরটীকা॥

বিষদ•ধ্রু। স্ত্রী সর্পকল্পালী। ইতি রত্নমালা॥

विषमञ्चकः भू गर्लः। ইजि मद्-চন্দ্কा॥

विषदणंनमृज्यकः नृ हात्कात्रभक्ती । इजि हिनहन्तुः॥

रियक्तमः भू॰ काद्रक्षद्रवृक्तः। ইতি द्राजनिर्धिः॥

বিষধর: পু॰ সর্প:।ইত্যমর:॥ বিষধর্মা ত্রী হলক্ষ্যা। আল-হুশা ইভি ভাষা। ইভি শন্ধ-চন্দ্রিকা।।

বিষধাত্রী স্ত্রী জরৎককেম্নিপর্নী। ইতি শহমালা॥

विषनाणनः शृ णित्रीपर्कः।

इंडिशांत्रावणी॥विषनाणकि ॥
विषनाणनी जी नर्शक्साणी।

इंडिणफ्ठिलुका॥

वियन थु॰ (मान्नाइव्कः। ইতি
भंपठिम्त्रका।।

दिवश्यः ती नीनगणः। ইতি
भगाणा।। दिवयुक्तशृत्रका।

दिवश्यः थु॰ इननव्कः। भन्यन

हेि छ।य।। हेि त्रञ्जाणा।।

दिवश्यकः शु॰ भननव्कः। हैि

छ।वश्यकः शु॰ भननव्कः। हैि

छ।वश्यकः शु॰ भननव्कः। हैि

छ।वश्यकः शु॰ भननव्कः। हैि

छ।वश्यकः शु॰ भननव्कः। हैि

दिवश्यकः शु॰ भननव्कः। हैि

दिवश्यकः शु॰ विवदिष्ठः। हैि

বিষভুজন: পু॰ বিষত্তনপাঁ। বিষম: পু॰ অনুগারা শি:। সত্ ইতিকেচিৎ।। দেখ: মিঘন: সিংহ: তলা ধন: স

(रुम्ठन्मः ॥

विषमः वि जनमानः। यथा मनुः।

छात्। मविज्ञानः यमुःथामः

छावः महः म जब जागः दिवः

लिजा महाः कथक्षमः। ইতি

मारजवः॥

विषयः क्षी भन्तामा किवियम्खाङगडवृद्धविष्यः। यथा। भनाः हजुद्धती उह्न वृद्धः काळि दिछि दिथा
। वृद्धमक्षत्र मः थहाङ काळि दिछि दिथा
वृद्धमक्षत्र मः थहाङ काळि याद्या
वृद्धाः वृद्धः भन्न सर्जममः वृद्धः
दिख्दक्षि उद्धिया। मनः मन
हज्द्यातः ख्व उद्धित्रमः शृनः ॥
व्याति वृज्ञीयवयमह भान जुर्थे।
विजीतन्यः । जिम्हिङ्क हज्द्यानः

विषयः পश्चि खिंडः ॥ इंडि इ
त्मामक्षर्याः প्रथमखवकः ॥ ऋ॥

वर्णम्लाक डेक् द्रिया। यथा। छाकु। छा। विषया ८ कृ छि। विद्या प्रया। व्या। छाकु। छा। विषया ८ कृ छा। व्या कृ छि।

छमाम् विषया छा। महांक हा छमाम् विषया छा।

त्म । भहंका। भहांक हा छमाम् विषया छा।

भहंका। छिन्द्रिया । व्या हिन्द्रिया ।

भहंका। छिन्द्रिया ।

भहंका। छिन्द्रिया ।

भहंका। छान्द्रिया ।

भहंका। छान्द्रिया ।

भहंका। छिन्द्रिया ।

भहंका। छान्द्रिया ।

भागा ।

यमः शुः व्यागाता निः। म ठ् एवः भियुनः निःहः छ्वः दः छः छण्या रथा। क्वा १थ भिष्ठः श्वास १व्या छ छ्वा १ व ज्याः दिवमः व्याण्य । एत खित घ्राः वाक नामस्या (भ्वामस्या १भी क्वाणः श्रुपिष्ठाः॥ इति (क्यांकिः छङ्गा ॥ जानिस्णियः। यथा। इक्षेत्रं भित्रत्व्यः छानः कद्याः नामकः। शृगः थुः ममरेण्य विः यमरेण्य कथ्याः । न ठ्यूकः गर्गाः शृगं शृशं विन्तुष्व ए छ्वः। यभ्युक्तः गरम एउत् उत्तरा विषय छ्वः।। इति मद्रा उत्तरा विषय छ्वः।।

विषगद्दरः श्रु॰ मधह्दन्यः। इंडा

विषयज्ञाः भू ज्ञातागविष्णयः। छम, निमान म्थनभू विकाः मस्युः थि मारा (कारका श्ला श्लि असु তো জুরোৎসৃষ্টস্য বা পুনঃ। ধ্রত্ মন্যভ্রমণ প্রাপ্য করোজি বিষন खुबः ॥ अवसर्थः । खुरहारमृष्टमः জ্রেণ ভ্রেন্য। সহাকৃষ্ট লক্ষণ भाश्। (रामः यज्ञः जुन्न मुक्ता भ রোপি। বিপুক্ট্র ছেত্রনাহ। অ-হিত নাছার বিহারাদি তেন সং ষ্ক্রেতঃ সংগণে জাতঃ অন্যতন থা-जु॰ রম রক্তাদিক• লুপে। দ্যধিত্বা পুনঃ বিষয়ভায়। করেছে। জ্ব রোৎসৃষ্টম্য নেতি বা শদেনেভি বোধ্যতে। পুথমভোপি বিষয় জ্বরো ভবতি। যত উক্তণ। আরে: द्धाविवासा य खिन्छा मिकः। शानुः मृष्यित्व। कः विषगज्ञतः करत्राञी उर् পেক্ষামাহ। সন্তত্ত রসরক্তর: ৰ ৩৩: রক্তবাত্নঃ। দোৰ: ক্ৰো खबः भू मा (नात्नप्रमुप्त भिमि जा-शिकः॥ मितागक ख नीय २ दि षर्व मञ्ज । अनः। अर्गाः চাত্রক ধেরে মন্তক রোগন--केंद्र।। जाउँ हैं। बाउँ हैं। बाउँ हैं। पार । अ॥ वियमकुत्रमा मामाना व रूप मार । यः ग्रामियकार

কালাছীভোঁফাভ্যাণ তথৈৰ চন ৰে-গত কাপি বিশ্যো জুৱা স বিষয়ঃ মৃত:।। যত্নি।তাৎ কালাৎ স্যা-দিত্যস্যায়নর্থা: যথা বাতিকো জুরঃ गर्छारभाभि रेमिखिका मन्त्र हिमानि লৈমিকা ছাদশ দিনানি দোবা-ণাণ পুৰবল্যে বাতিক ক্ষতুৰ্দ্ধশা দি-नानि रेপखिका विभाजि मिनानि रिभूष्मिक फर्डार्ड भागिति नामि महास তথা বিষমজারো নিষ্ত কালাণ ব্যাপ্য ন স্যাদিত:র্থ:। শীতোফা-ভ্যাণ্ডণাভ্যা সন্ত বেগভ শ্যা-लि विवयः कराहिए नि (वनवान्। वसाहिमान भाष्ठ(वधः। 🕸। दिचन-জ্যুদ্য ভেদানাহ। সম্ভঃ সভ্জো श्रामु छ्डीयक ठल्थिको । उज्ज সম্ভস্য লক্ষণ মাহ। সভাহয়। मणाइया धानणाइ नथालि या। নন্তত্য: গো হবিসগী স্যাৎ সন্ততঃ স নিগদ্যতে ॥ কিকল্লো বাতিকা দি ভেদা । मञ्जु। देन त्र छ (र्यु म । ञ्र-विनवी व्यथित जागी ॥ 🕸 ॥ नवू मूङान्दिश्वः वियमप् नि उ वियम जक्षिण उन्ज न यहेक इंकि कथ्यय বিষয়েশু পঠাকে ৷ ঘটত এব ইতি স (मायः। यङ উक्तः इद्राद्यः। विमर्गः बामला क्या भिराम श्राक बाक्रभ

দুৰ্লভোপশন: কাল দীৰ্ঘ নপ্যনু-বর্ত্ততা। যত্ত থরনাদ:। জুরা: পঞ্ চ যে প্রোক্তা: পূর্ব সততকাদয:। চত্বার: সম্ভত হিত্বা জ্ঞেয়া স্তে বি বমজুরা ইতি :৷ তচিরেণ ত্যাগাভি পুথেব।। 🕸।। সতত লক্ষণ মাহ। অহোরাত্রে সততকো দ্বৌ কালা-**কাল• রাত্রাবেক কাল•।যতো দো** যাণা নহোরাত্রে পুত্রেক দ্বৌ দ্বৌ. পুকোপকালৌ। যতউক্ত॰ বাণুটেন মধ্য দিকা: ক্রমাদিতি। 🕸 । অ **न्ध्यः वक्षा गाङ् । ज्यान**्ध्यः युष्टाबाबाएकगण भूवर्डछ । **এहकाल॰ (हायारशक्क्या अक्काब** मिन दिनीय॰ नुधमकाल ज्ञानुव দোৰভিতেঃ ।ঞ্চা ত্ গীনক চতুৰ্থক (य) यंक्रा बार । ज्ीपक चुडीस-हि हजूर्थिति हजुर्थकः। ज्डीस **ংক্লি ইত্যাগনন দিন্• গৃড়ীক্লা, নত** উজ। দিন মেক মঠিক্রম্য যে। ভ त्र म ज्ञीनकः । भिनध्यः ज्ञि অম্য া: ন্যাৎ স হি চতর্গন্ধ ইতি ॥ अवार वृष्यमुषु ३। सर्व इति নি জ্বাগেল হথা সংখ্যা করে।ভি ছি। माउर्पान् मुखा ब्राच्या ह हर्षक पूर्व

পকান্ ॥ অহোরাত্রাদহোরাত্রাৎ স্থানাৎ স্থান• পুপদ্যতে ৷ দোষ আ নাশ্য প্রাপ্ত করোতি বিষমজ্র ।। অযমর্থঃ। আমাশ্যোরঃ কণ্ঠশি-র: সন্ধয: পঞ্চ কফ স্থানানি এমু তিষ্টন্ দোয়ে। যথা সংখ্যু সততা দীন্ করোভি। ভত্রামাশ্যে স্থিতে। দোষ: সতত করোতি দ্বৌ কালৌ অহোরাত্রে কালদ্বযে দোষ পুকো-পাৎ। হৃদযে স্থিতো দে।ব আমা-শ্য মাগত্য অন্যেদুয়ে করোতি। এককাল বৈক্দ্যা দেকমিকেবাছো-রাত্রে দোষ আমাশ্য মাণাতি। তত্ৰ দ্বৌদােৰ কোপকালৌ এক যিন कारन कार्य ७ हे उप्रविकास শ্য ইতি। কটে স্থিতো দোৰো १-(श्वाबाट इपग मागाछ। ज्ञीय িনে আমাদান নাগত্য মুপুকোপ कारन जुजीयक॰ जुब॰ करवाछि । এককাল ন ত ঘৌ কালৌ ৰভা-সাং। এবং শির:ছিতো দোখো शहाबादाद करे गांगांजि। उडः পুৰরছোলাত ভাল্য মানাভি চতুর্থ-प्रित याशास्य वागक। व भूरकाश कारण हार्थक र्वतः सरवर्ध । अक काल• व उ क्वी काली यज्ञानाहरू ॥ 🛪 ॥ बनु (माया)। शनन जामन

নিজস্থান গমন ক্ৰমাৎ কথা ভূতীয हर्ज्थि**रिवमस्या ज्ञांगमनः।** छेहाः তে। দোষো হি পুকোপ শমযে विगव उपा वाघवाट सञ्चान छ (वग দিন এব যাতি। যত আছে। দোষ: পুকোপকালে হি বেগবত্ত্বেন লাঘ-वाट् । (वगवामत्र अवायः सञ्चान মভিগছতি॥ সন্ধিযু স্থিতঃ পুলে-প॰ করোতি। সন্ধ্য শ্চামাশ্যেপি সন্তি তেষু ছিতঃ পুলেপক সর্বদা करत्राञ्च । 🕸 ॥ निवृद्धः भुन द्वावा-তি বিষ্মো নিয়তে দিনে। স্বভাব॰ কারণ তত্র মন্যন্তে মুনিপুঞ্কাঃ।। স্থাবস্য কারণত্বে কফ্ছান বি-ভাগ নিরগেক্ষা শহতুর্থকাদি বি-পর্যায় অপি জুরা: স্বস্যু কালে ভবন্তি। ক্ষণেতে বথা ভূমি॰ ধীদ্ধ কালে পুরোছতি। অধি-लाख उथा था जूलाय: आव शु पराजि।। मृन्य डामग्रह। य हाणि विषया एक् न त्रषाहिए पुष्कित । प्रानि क्लोद्धद कार्त्मंत्रच्छाः स यद्धाप भूगुरु ॥ यस्य ज् मयाङकास পতো ২ম নিভি লক্ষ্যত বাহুও ब्रह्म नीयदार लोजातियाशन **७१७॥** 🛊 । हालासाव्याव्याक्ती-यक्ना बन्न बार्। कक् शिखा-।

প্রিক্শাহী পৃষ্টাদ্বাত কফাত্মক:। বাত পিভাট্নিরোগাছী ত্রিবিধঃ স্যা-ভৃতীযক:।। ত্রিকগ্রাহী বেদনযা ত্রি-क॰ गृङ्गाि इंडार्थः॥ 🗱 ॥ नन् ककः পিত্তা প্ৰিকৃশাহী বেদন্যা ত্ৰিক ব্যা-भी बिकमा वाठ ज्ञान उर कथ् তৎগৃহীটো পিত্ত কফৌ অন্য স্থান-গত্বেন দুৰ্ৱলত্বেন দুৰ্বলৌ বেগ• স্বৰু-তে। উচ্যতে দোষাণা স্থান নিযমঃ ন তু হৃপিতানা। তথা চ সৃশুকঃ। জপিতানাং হি দোঘাণাং শরীরে **পরিধাবতি। যত্র সত্ন: স** বৈগুণ্যা-ঘ্যাধি স্তত্তোপজাযতে।। এবং অন্য ভানগত্বেন চতুথকোলি বাচ্য । वा ७ कका बाकः शृक्षाः वाष्या शृक्षः ব্যাপ্য ভবতি ইত্যৰ্থ:। যঞ্জোপ-কর্মণ্যবিকরণে চেতি সূত্রেণ পঞ্চমী ॥ 🗱 ॥ करकानुगम् वस्कानुगम् ठ চতর্থক্ষা, লক্ষণ মাছ ৷ চত্র্থকো দশ্যতি মভাবে ঘিবিশ্ জুরঃ। হত্তাভ্যাণ লৈমিক: পূর্বণ শিরনো इन्**ल अंख्यः**।। देश याकः (या पान লুণঃ তথা অনিলাদ তবং বাভোল-णः। मञ्चातीनाः जिस्सम्बद्धाः । **ेक्कि** 53(क्रम। श्रायमः सविमा-उन भक्षमु दिवसभूताः इंडि । नुपरन्या भूर्वास्क (नायकाः वि-

নেৰেলা অপি ন ভৰন্ধি ইভি কৈছে 📗 है:। भृर्बः भुषनः ज्ञान्तानाः वायन জয়ে ব্যাপ্য পশ্চাৎ সকল শরীরং बाल्लिडि। या मृत्य वाडकाडः भित्रमः भूरं व्यथम भित्रा व्याभा সকল শনীর ব্যাপ্নো ভীত্যর্থ:।। বিষমজ্ব এগান্য শত্র্থক বিপর্য্য यः। অভি মজলগতো দোষ শত্রথ-কবিপর্য্য: ॥ অন্য: সম্ভাদি প क्षकाम्यत क्षेत्र्यं हविभर्यायाः জুর:সোপি বিষন্জুর এব। স কিং शानुह इंडाप्तकाया मार् वारी जाित । #ा जग्र ठठर्थ ह विश र्य)यम्। नक्षण मारु । म मास्य जुत्र यञ्जू आनात ५ विमक् जि। ५-जुर्थ ह विशर्याच हेजाशन कृषः । সততাদি বিপর্যুয়োপি বোদ্ধব্যঃ ৷ যথা অহোৱাত্রে দ্বৌ কালৌ মঞ্চতি শেষ পর মহোরাত্র ভিচ্চতাতি সতত্বিপর্য্য:। অহোরাত্রে এক॰ কাল ন্ড়ভি শেষ সর্ব নছোরাক ভিউতি ইত্যান্যুদ্ধবিপর্যায় । स-रसः क्षः क्षिमः श्रुवयिक जामावरत्र চ দিনে নৃঞ্জি ইভি ভূ চীযক্ৰিপ-र्मायः। अट्ड दिसमञ्जा उन्नाम काः अस्तर ब्राबि धुदानस्यानि विप-व्यात्वास्त्रत्याः। यथा। स्वा वाज

करही यम्। भीन भिखमा कि का। **दाखो পाया जुद उग्र मिवा होन**ः क्ना जु ॥ श्रापा वाल्ला वाक्षा उडारीनाः भीडशृ**बाञ्च नारु श्**रुष् চ হেতু মাস্ব। ত্বক্স্থো শ্লেখ্য। নিজা भी ज गाए। जनगरजा जुब्र । उराः भूगाउर्याः शिख मस्माइ॰ क्রाडि उ। मीड॰ मीउ महिड॰ भुमान्तरहाः পুশান্ত বেগবো:। অম্ব: আভ্যন্তরে। করো ত্যাদৌ তথা পিত্ত ব্রুক্ত দা-হ মতীব সাত মিন্ পুশান্তে দ্বিতটো स्राज: मीज महाज: ॥ व्यव्यः इड भारतक्षिः।। भा ।। भी ।। कि काक्ष कुंद्रस्या खिस्ताय बद्ध साङ् । हास्त्र 🖰 मार भी जानी जुल्ली मन्नर्यक्षी व (ठो । मारु भूवं खामाः कडेः गृथः माबुङ्गा २भद्रः॥ म॰मगंको गा-লিপাতিকৌ। কষ্ট: কষ্টসাধ্যঃ॥#॥ विवनकुत्रदिष्णयानाञ् । विषयम द्रान म्हार सूच्य निख वाविहः (७) (७) पि. भी उला (तर् ठा. क्रियुक्क श्रुकावट ।। यन तरम विनाधी वाशायक व्राम मुख्ये (सार्व क्षिपी পিত্তে চ ব্যবস্থিতে দুষ্টে স্থিতে ভেন হেতুনা শীতলং কফেন উঞ্চ পিডে-ন অৰ্জ্বপুৰ্ণ চাৰ্জ্কনারীশ্বরাকারেণ ন-व्यान शकायन वा। कारम हुई वरा

ATTICATION BEREATTINGS र १७५ अपने देशा है। यह सार इतात आउर्जनस्यो। काल ्वया वस पुढेर लिए भारत । पुर ક્ષિ**કા ભી - ફ્વ' C**રક લઇ કસ્કાર્ણથ कृष्यं भारता १ छ । देवरङ्ग िश्वण शुरु वरुष शेष्क्रपार ्लु ५ ज इब गामिति घट्यन हरेतुन ८ १७ । सन्दाहर १,८५७०) ५ स ४१३ २७८ लक्ष १७८१ ८ वेटस्**व** डेशक् कि इस अभागा देखारी पुरस्कार का प्राप्ता पर । भगाना २००४(०) मेन्द्र समित्यका राष्ट्र ध्याप्यका ेबा ह गाउँका शुक्त सब्दायक वि । ষরঃ পুরেঃ লেখা। দেবেশ মিতি । । अ । स्व विषय्यु । १०१० सामाना ते विश्वास । जुडा १७ विस्ताः सार्ध ন্যুপাত সমত্যা: ৷ অলে শ্ৰম ल त्या (उस अमं) हिडिब्स विख्या विरायस्य व उंतरमृष्यु स् १९७० हो। वनः। श्चिःकारेक यत्र नारेपन्छ ।नगरम-विषयकुत्र । अस्ति विश्व १८८८ । भाषवर स्ट्रेस्माहिमी। महोरार याविता गुडा भाषा क्षेत्र त्वाप्ना त िनः शळाषाः विक्रमा र्षेत्रम ५७ 🕆 बन्दाको । विद्यार्थ ५७ गम् । १५ প্রে বিশ্বভেষ্ক ॥ ভড়্গ্রন্ত্র 🖟

ग्डमात व्यवस्था । १८०० मा भारताम् अदा वादान्य पुरुष् का विरुष्ट ६ वृत्वता १ तथ्य . स्र या । हरा । यस ५ ७ अहमा । देवी । भारताकः, त्रकृष्यिः वश्च भारताः ८ । अन्य वेता वर्षा वर्षा । । । । । बर्ग्यमः गुत्रभाष्ट्रीयमा छान कृत्या भ्द्रुविष जुद्ध क्। भीक गरू দ্যা সৰিবাদ্ যক্ত বেৰাশ্বেং বি-विक्रिके प्राथम । व्यान में स्व भाषा शुर्व हेट्ट ८०३ व्यक्तिसङ् महाराज्य । भवाग कामाक्रि भारतिम्म द्वारा । अवेदारम भूकरर विषयाण, प्रतास स्वर् ভাগায়ত যে নেঘাইন ছ্লিম পাৰ্চ্চ हेर छे । इसाहोता कि न सीहरू किन वर्ष वाचरे के कोशीमवा जार्थि ि होते के भरे कहा भुजः भिरत्र भूत নিৰ ক্ষাবে ৰিছতি বৃহত্র মৃত্ भीउभागतामग्राक्ष साह गत्-यः हुमाः यदिः । भगवदि । । । । । **जानार रिकारियु म**िकाल हर हा-शुरु करेतु भारताकश्ता । ३५८-भुनुषि दिशः जुद्धः । १८ १८ । १ र पुणी विष्योत्तव ५ ३ १६ इ.५३ : भी अभवता गृहे एक प्रकेष पृष्ठ उक्त । तिस्ति विषयु अस्त

জসুন মেৰিতঃ পুাত:। বিধ্যজ্ব विश्वहरू वाउवप्रधीन व्यवाधीन ॥ %॥ कानाबाकी जु मध्छ। विषम-ज्य नामिती। नधुनाद्याञ्चा वीदा श्याम् विषमञ्जान्॥ कालाकाकी मगरेवना इंडि (नाक । मा ह कि ক্ষিড়াই গুডত্ল্যা কর্মতা ভ্রমণী-থা। 🗱। পীতো মরীচ চূর্ণেন তলসী-প্রজারসঃ। দুেণপুরী ভবো বা গি निरुषि विषगपुतान् ॥ 🛊॥ अमृठागाः শত চূর্ণ বাদম। পরিশোধিত। পৃথক বেডেশ ভাগাঃ সুচ ওঁড নাঞ্চি क मिल्राः॥ यथा १ । ७क्षाः ए ७-লয়ে। হিত নিতাপক: । নাস্য ক্লি ख्रावर्गा दिभं कड़ा शिविक न है। य जुदा विषयारेनद (सञ्चानिवद क हर ৷৷ নচ নেত্ৰগভা রোগাঃ পর নেতদু भागनः ॥ (नदाकन्नः जिलायः भू (या भारम) वृद्धिमान्। जी (वहवंगः भाणु संघतामिङिक उदा ॥ छ। ভূগিবর । জ্বা। অথা**ননাহ। ত**ক गुण्या भाग माध्या मधि माध्य म ঘালিয়া লামানাক ভুঞানোম হয়ত বিবেল্যাথ্য ক্ষাত্রপ্রিবশক । भर अभ ७, धामार एउएमा इस भाग् राष्ट्र (र्वेट देश दि एस्सः **१**११)।: ६ 🖒 दिए युष्य । ४ इतापुषा श्रृत्

পকুটাঃ। স্কুক্টা বনস্কুটাঃ। বিজ্ঞ রাঃ বর্ত্তিকা আব বিশির চকোর म्याः ॥ अथ मञ्जामीनाः हि **শिष्ठा** हिकिथमा। वायछी कहुँकारहा সারিবাভিঃ শৃত জল । সন্তরাখ্য खुद्ध (मय॰ वाञारीना॰ विवृज्धस्य।। क् नष्ठा मूत्रान छ।।। क्षाः शास्त्राना क्रितः তিকা মারিবাভিঃ শৃত ভল । ফ ভতাবে, জুর দেখা বাজাধীলাক वृज्ञस्य ॥ व्या वृक्षाम् ही अब्र ७१००० বিটগা ভদবাতে দন্তীচ গুলোসক न छण्याय।कः। घटोष्टामुखा ह श्वधा देश । वृश्विक ए ब्ह्र ते' श्रीष्ठ' युद्धा मञ्जदः शहरा। **ञ्बन्धा नादिकाः अदिष्ठः विद्यः** । अप वाबारः । 🗱 । मुक्ता शाही व निवास भकास दिक्ता मृत्रः। इतः इहः शिरविधीय मान्त्रम् अंत्रमाख्या। भ कालः हेन्तुपतः। अक्षातम् वाष्ट्राक्षः कालाः कु वृत्रीयक ठल्था हो। विषया प्रि क इंति । विस्थियां क किंदिर विदेश ॥ उन्हों बर हस्त्र मन्ड एफ्टी थान নাগর। অসুসাত্থত পেষ শ ता मसुरमाकिक। श्री स्वाय क्कील भुःभाः ६का सा**रु ग**र (चु'छ। ६४)। भाग करे। क्येता (बादिरेस मध ভন্তাভিঃ॥ বছু। বারে রবে মূর্ণ ছুর•

१डि ত्**ठी**यकः।#। ছिता जामनकी माक मिदा वृष मरहोषरेथः॥ निजा মধ্ যুতঃ কৃথে শতত্র্থকহরঃ পরঃ। श्रिता मानिभगी (जारनकी ज्याबी । लिता इत्री जिल्ली। वृत्या वाला ॥ 🕬 ॥ षागिख श्रथमः व्यान ननाः निष्ट् छि চাতুর্থক নু গ্রীখ্য । শিক্ষীৰ শ্রস্য निषाधयमा कालून वा ७८ व् अ म॰ युष्डम ॥ ७९ मन १ । ७% जूब महत्व পকালক চিন্তমন ুধ্যতে ভূখ: ত (महेरे इक्तरें अंशि विवरेय नाम-বেৎ কৃতি।। 🕸 ।। সতত বিষদ্ধা-शि की भाग म्धाराधिक । जुतः ज्ञाङ्देनः भरेषः इतिहाः मसुभा-हाद्याक्षा भज्याति विश्वयान णाः विष ः भुदाशाः हिक्टिमा सङ् लाबीबाबिय कर्नगा। भीजानि-ভূতে পুলুৰে হয় ৷ট্টী ভুম্নী জিগা । দাহাতিভূতে ভূ বিধি বিষধ্য-मः इताणनः ॥ आहानतेन ईछ्टेद ্চভিঃকল্পনা কিভিঃ। তুলবত্যা ম-राणीज भी आपि कृतिला स्तर।। তৃণৰঙী ভগাই ইভি লোকে॥ গ।। ড ভৰ্ড্যা স্পীনাভ্যা প্ৰিৱেম क विकाशि। यव छ वंश्व शांवाकः एक भी के शुमानपुर्वि॥ काडा*व* মান নং লাভ ভন্য দীতে নিৰাবিতে

। প্রভ্লাদ চাস্য বিজ্ঞায় পৃথক্ তা॰ কারবেৎ দ্রিয়ণ।। ডতো দাছে তু স•-জাতে পরৈ রেরও সম্ভবৈ:। শীত-লৈ ধারিতৈ দেহে দাহ•তস্যাপনো-पराष्ट्र ॥ 🕸 ॥ जानकः मुक्किका हुर्नः তুল্য তত্ত্বোভয়ে রপি। নবমা সঞ্ कुथं न्या सर्पाय कन्यकान्दिः ॥ ত वु मः मुक्त मुश्रील वं रेग्र र्गफ्रश्री: शहर। भीक उहुर्नारहूर्न ख्या নাত্র শিভায়ত।। পুভাতে ভক্ষে। তেন যাভি শীভভুরক্ষণ। বাস্থি ভ্ৰিত ক্ষ্যাপি ক্ষ্যাপি ন ভবত্য-भि ।। একেন দিবনেনৈব শীতভ্ব-र्तः **भद्रः । मध्**रह्मस्य भथ्रः শিথরিণী ভক্তক চা ৷ মা শীক জার ভূইভির্যচূর্ণ। এলা জাভী-कन (द)। व जिक्ना ीत्र व रनः। লবিড়ঞ্চ দিভায়ত চূৰ্ণ শীতলু-রাপহণাঞ্চাকায়হামাল্লী ডিভা बरष्टा शृह (ठातकिः। सङ्क्रिया वहा करेष्ट्रः मी उरेहाः श्रंश (वागरेनः।। और अ स्तिविदेश निष्टि नंदन कात मन्त-रेज्या न है। विशाहिक रेजन मक्त द्राही इसामन ॥ इ.ग्राम एति उसी । नामणी प्राचा । (कमनावे हैं। इ লোক। কলে ততুরী। পূরা ও हासू । कार्यनः चितिया । एए ঘুটার পতিবে ধেয়াকো কুলিলে प्रवासीय स्वास्त्र । मळा हिच पूर्व विश्वमार । माए कि कु ताम (तरक् उपनि श्राप्त नि प्रविष्टि ॥ ८७म मण्डलि १९४०. **२**म् तुब्रे शिखाशसाम् । जि.स. र माजियस्थितः उत्तर पुरुप्त विकास ब्रास्ट्र ॥ ११ । इचका का इचल निहा थव। मतम हम्तम हम्तु विध्यत्रमः । বন গালেব জক্ত পরিলেইলেই প্রা प्राप्त नि विभिन्न प्रमुख ॥ विभिन्न कि भवर किन्द्र गर भः जा । लिहेन नारर किया बिछ। श्राह्म श्रामा वि कार डा॰ यो मनबार प्रामान मुर्जित नाग्र मंत्र सूचा नामा भिषा (वा भित्र गरिया विशेष भिष्य) इस्टर्नायक उन्न भर् हे अन सुबः मान् वयद्भा ॥ क्षेत्रकरेकनः १। ३ ॥ इ। इ। वाधव प्रष्ठ प्रमान नि का रहे। एक्का रहा बाका रेमक्रव शादिया शरुदारा स्टब्स दाशी ३८०६ া পে গ্রেক্টান্যাধি কেন রৌহিব জলৈ रित्रण शहर बद्धार खब्द दान *्*युत्र नृत्रध्य माशासि भी असिन लः ।। उपत्न सब (घडः । स्ट्रामा र्या अर्थितः आदिति देखि।

्राप्त के प्रमुख्य के जिल्ला के किया है। इसके के किया किया के किया के किया किया किया किया किया किया कि ५ वर ४ १ ५ ५ ५ ५ ३ । बङ्गासपू रु_{त्र} तर् । या १८४ आद्धेत्र**ः । राग्** का पर १५ । १५ । असे उन्हें क्रिया मार्क्ष । अध्यक्त की हो य प्राचीतिक । च मधा ही श्रेका पार्य रहा । विकास यास्तान १ ए ग्राह्म का लिला १ महीच्या १ स स्वर **দা**লভূৰত্ৰ পৰে ৮০, ১৮ সালে**: ९**९० हेड्य उसक्त १००६ । 可能に発して同様である。「2個 अप दर्शी धरहर १५० छ। इस শ্লে বিডেল বিকল্প ক্ৰিয়া সং । नरस्यतः वृद्देन गोत्रयः 📆 ियादा । १ अ.५ ए । यह इस इस শন্ত রো ্গি মুখ্যার মুখ্যার 🚶 ভিন্ন প্ৰতি ইট্ৰাঃ সৰ্ভ ট कु व कार्यक, दूष्ण व ती म्बलर ५००० भदीत् १,११६०० । পুহতাকিনি নিশান প্রেক্ত বিভাগ नगः पुत्राः ॥ सङ्ग्रद्धाः ५० । १ क्टरकनी जो भानी । स्यूनियाः नाः समुविचानाः भृतापि । सम्बर्धः म्युः सम्बन्धः हातुनः ॥ सार्यस्यात्री बूलः ॥ कः॥ (मानः मानुः दः (रवः)

বিষন

শীঘু মুচ্যতে বিষয়জ্ব। ।। সো-मः विशापि महिष्ठः। भानूहतः न म्तुर^{ि त}न त्रश्चिः। भूगङः भवि-ত্রঃ লে শিশু সহসু মূর্জান চরা हद्रशाल विज् । खबस्य महरम् জ্বান্ সর্বান্ ব্যপোহ ডি ॥ সহ जुन्छीत निजि नश्मुणीर्खन्। कि রেদাভিহিত নাম সহস্রেণ ভার-তোক্তেনেত্যর্থ:॥ 🗱॥ জুরস্যাপি (स्व ठाड़ाए भूझा कार्या। यउ আহ বিদেহঃ। তীর্থায়তন দেবা গ্র एक कृष्काभम में रैनः। मुक्करा न् জনৈ ক্যাপি সহ্যাশাম্যতি জুৱ: । তীর্থা ঋষিজুঠা জলা। আরত न (दिशिष्ठ भूक्षि । ज्या जिस्कि व 🖺 देल ना दि ॥ 🗱 ॥ निष्ठ প 🕮 वता (व)।व॰ कवानी व्यवज्ञयः। का-ন্ত্র। দিগৃজ্বি রানেষু ত্রিন ত্রে ক্রম-(म) १ मकाः ।। সর্বনেকীকৃত॰ हुनं भुज्रुष **जक्ष्यमतः।** এका हि-क प्रश्रिकक उथा जिल्विम कृत ।।। চাৰ্থিক মহাঘোর সম্ভত সত ङ हि वा ॥ शा<u>वृ</u>ष्ट्य जित्नाताः 'थे' जुब • इ छ ह गानव • 1: निम्ना हि ूर्ण । इंडि विषमज्ञृहाधिका**तः॥॥।** ३७ डावश्रुकामः॥

সমাত্গণ भी धর॰। প্রথন পুলতঃ । বিষমন্থনঃ পু॰ শিবঃ। ইতি ছা-ब्रावनी॥ विषयकः भू मर्भवादकः। वाहिया इंडि च्याडः। उर्भयंत्रायः। काक्-नी २। ইভি জটাধর: ॥ বিষনময়) ত্রি বিষ্নাদাগত । বিৰসৰপ্য•) ইভি সিদ্ধান্তকৌমুদী॥) जी शक्ष नाकू वी। वियमफंबी বিষমৰ্দনিকা 🕽 ইতি রাজনিঘণ্টঃ 🛚 ।। विषयविज्ञाणः भूः अभयानाः भः।

যথা ৷ হত্ত ভ্ৰাতন্ন এব বিভাগ মর্থদন্তে তত্র বিষম্বিভাগাতাব बाह पन्:। जुाठूना बविच जामा॰ यमुखान जातर नहा न उब ভাগ- বিষয়- পিতা দদ্যাৎ কথ-क्षन। ইভি भाष उद्धुः ॥

বিষমস্থ: ত্রি অসংশনস্থিত:। ইতি (कंटिर ॥ उन्नश्चन्द्रमञ्हः। यथा নারদ:। অপাও ব্যবহার চ দ্তো দানোম্থো বুতী বিষমস্থাত না-(मध्या न दे आमाञ्च्यम्भः॥ वि-যমস্থা: উপপ্লবদেশস্থা: 1 ইতি ৰ্যবহারতভুণ।৷

विषयणिष्ठः शुः (मायविष्यः।। म চ অনুচিতশাসন্বাপ:। सह-দৈৰন্য । যথা। অত্ৰ কামত এৰ .कान्मायन उछक् ह्राया विवय मिक्रे 'বেন ইছাবিকল্লাসম্ভবাৎ কামত
শান্দাৰণ অকামত স্তপ্তক্ ছু॰।
ইতি প্ৰাথশিতভতত্ত্ব'।।

विवसायूथः भू॰ कामात्रवः। ইতি इलायूथः॥

विवयाकः भू निवः। ইতি जि काञ्चलयः॥

विवभीय॰ जि विवभागागञ । ইতি निकासकोमुनी ॥

विषम्षिः भू कृशिविष्णयः। विष्कः

(हाडि इंडि कडिनस्ट इंडि ह

हिन्ही ভाषा। उद्भर्यश्रायः। किः

जमुश्रिः २ मूम्रिः २ द्रगम् छ हः ८

क्रुभाडा उम्र्रेष्ठः ८। यम्र छ नाः।

कर्षेद्रः। डिक्डद्रः। ही भनद्रः। ककः
वाक क्राम्य द्रक्रिश्चाहि हाइ

नाणिद्रः। क्रुद्धः। इंडि द्राक्षः।

বিষমৃত্য: পূ॰ জীবজীবপক্ষী।
চকোর ইতি খ্যাত:। ইতি কটা
ধর:।।

विषयः भु॰ हक्कृतािश्वािशः। म ज् क्रभ नद् गक्त तम स्मान्तभः। जर भर्यागः। (गाइतः २ इ। स्मृयार्थः ७॥ (मनः॥ आन्यः। इजामतः ॥ स्था नाष्याः क्रिकाभ (जर्जा दाय्ना॰ विषया रथा। उत्र क्रिकि ৰ্গন্ধ হেতু নানা ৰূপৰতী মতা। বিশ্বস্তুরস স্তর গদ্ধোপি দ্বিবিধা मडः ॥ न्यर्भ उम्रानि विष्क्राया **অনুকাশীত পাকল: । নিত্যা** নি ত্যা চ সা দ্বেধা নিত্যা স্যাদ্ नक्या ।। व्यविज्या जू जान्यो স্যাৎ সৈবাব্যব যোগিনী। সাচ ত্রিধা ভবেদেহ ইন্দুিয় বিষয় 🕉 था।। यानिज्ञानि ॲव्हिप्ट इन्तियः यान लक्षन । विषया ष्रानुकारिस वृक्षाखाञ्च **উमाक्** जः ।। क।। वनः गृ क्षा त्रमण्याकाल मध्त भीजको । (त्र एक पुरव्य मा मार्गिक मूना ञ्ड ॥ निज्जाि भुषमवट विष रम्ह भरगानिकः। इन्तियः त्रमः निकु र्हिगानि विवास मा अः॥ 🖘 ॥ न्त्रमं डेक एडजमस नार्मण मृह ভাষর•। নৈমিত্তিক দুবত্বস্ত নিত্য खारि जू मूर्बव ।। इन्तियः नयन'वः क्रि खर्गापि विवास मजः अ। जनाः কলানুকালীত স্পর্গস্ত প্রনে মতঃ ।। তিৰ্য্যগ্ৰমনবানে ৰজ্ঞে ^{ক্ৰানা} मि विक्कः। भूईविष्ठ अजापूर्वः (पर्वाणि जुणिम्पूर ॥ गुणि-দিন্ত নহাবাযু পর্য্যন্তা বিষয়ে ম छः। ইতি ভাষাপরিছেদः॥ # ॥ বিষয় ইতি।ভোগসাধন বিষয়

य ह कार्यं अपमृष्टाक्षीन छ छ पुन-ভোগ সাকাৎ পরস্পর্যা জনয-**ত্যেব नरि** वीक शुरगाबना ज्या वि না কস্যচিদুৎপত্তি রস্তি তেন দ্ব্য पूकामि वुक्ताखान मर्ब भिव विव-यो खरजीजार्थः। इंडि मिकायः मूळावनी ॥ # ॥ निजातिजः । ইতি ভরতধৃ গাজ্য:।। অব্যক্ত:।। শুकः। ইত্যপ্রেষ্পালः॥ জन-भरः। ইভি মেদিনী॥ काश्वापिः। इंडि नदत्र ज्ञावनी ।। नियामकः। यथा। विभाद्या हि विष्णवार्थः সিনোতের্বন্ধ উচ্যতে। বিশেষেণ সিনো जै जि विषयां । नियान-ক:।। ইতি ভউকাব্নিকা।। 🕸 ।। वादाशाभ्यः। यथा। जादाशा-न्। जू याजाको विषयी विषय ख्या । विवग्रसः क्ष्न्रिमान् मा न्या नाश्वायना निका ॥ यथा (गी-बीशैकः । इंडि काव्यभुकारण २ উল্লাস:॥

विषयाख्वानः क्ली जन्मु। इंजि ब्राह्मः निचन्देः॥

विवशयी न् इाजा ॥ देवविषक-जनः॥ इन्जियः॥ कामाप्तवः॥ वि यगाणक मूझ्यः। इकि मिनी॥

। नर्बान्य हि कार्याः व्यम्ष्टाधीनः विषयि ही इन्द्रियः। ইভিমেদিনী॥
यह कार्याः यमपृष्टाधीनः छल्पनः विषयी जि विषयानकः। ইভি
ভোগः नाकाः भवन्त्रया क्रिन्यः । स्मिनी॥

विषयी श्रु नृशिष्टः ॥ कामरहरः ॥
देविषकः ॥ ইতি নেদিনী ॥ ध्रुनिः ।
ইত্যজ্বপালः । আরোপ্যমাণः ।
यथा । दिव्युष्ठः कृष्ट्रन्युम्मिन् गा
म्याद्राश्यम् प्राप्यमानिका । विषयिगा
व्याद्राश्यम् व्याद्राशिविषयं मिन्
मा म्याद्राश्यम् व्याद्राशिविषयं मिन्

বিষক্ষপ। স্ত্রী অতিবিষা। ইতি রাজনির্ঘণ্ট: ॥

वियवः क्ली विषः। ইতি मन्-

विष्वा श्री इन्द्रुवाक्षी। इंडि ब्राइनिर्घण्टः॥

विषिविष्ठा खी विषय्भद्धः। ই ভি
विषविष्ठा भर ही कायाः ভत्र छः ॥
विषविष्ठाः भूः विषय्भद्धाव छ।।
विषविष्ठाः भूः विषय्भद्धाव छ।। विषविष्ठाः विश्व अधीर छ व। विषविष्ठाः कः भूभाका ना क्रिया क्रिया व्याप्त विषय क्रिया विषय क्रिया विषय क्रिया विषय क्रिया विष्ठा व विषय क्रिया विषय क्रिय

'বেন ইছাবিকল্লাসম্ভবাৎ কামত।
শান্দ্যায়ণ অকামত স্তপ্তক্ ছু॰।
ইতি পুাযশ্চিত্ততত্ত্বুণ।।

विषमायूथः भू॰ कामाप्तवः। ইতি स्लायूथः॥

विषमाकः भू निवः। ইতি ত্রি কাওশেষः॥

विवभीय॰ जि विवभागागञ्श हैजि निकास्टकोम्मी ॥

विषम्षिः भू कृभविष्णयः। विष्रए। उ इ क क जिल् इ क ह
हिन्दी काषा। उ भर्यागाः। किणम् शिः र मुम्हिः २ द्राम् श्रीः १ ह
छाभाउ । उ द्राम् श्रीः १ विक्रवः। द्राम् स्राः।
कर्षे द्राः। उ क व भर्या । क क्
वा व क श्रीमय द्राक्ष । क विक्रवः। विक्रवः। व द्रामः
ना निर्वः। व ह । द्राप्तः। क व द्रामः।
निर्वः।।

বিষমৃত্য: পূ॰ জীবঞ্জীবপক্ষী। চকোর ইতি খ্যাত:। ইতি কটা খর:।।

विषयः भुः ठक्कृतािशाक्यः। म ज क्षण नद् गक्ष तम म्लानंक्षभः। छ० भर्यश्रायः। (गाइतः २ इश्मृयार्थः ७॥ दिनाः॥ व्यान्यः। इज्यतः ॥ क्षा नश्रायमण क्षिज्यम् (छाका दाग्नाः विषया द्या। छक्ष क्षिजि

ৰ্ণন্ধ হেতু নানা ৰূপবভী মভা। বিশ্বস্তুরস স্তত্র গদ্ধোপি দ্বিবিধ্যে मडः ॥ न्यर्भ उम्राभि विष्क्रात्। খ্ৰুফাশীত পাকল:। নিত্যা নি ত্যা চ সা ছেখা নিভ্যা স্যাদণ্-नक्ता ॥ व्यनिका कू जाना म्या देनवाव्यव त्याशिनी । भाष्ट विशा **ভरतस्म इ निम्**य विषय उ था।। यानिकारि डंदरप्रश्र इन्दियः शां वक्षा । विषया बानुकारिस বুন্ধাণ্ডান্ত উদাহ্নত: । 🗱 ।। বণ: দ্ৰ-क्ला तमन्यामा जिल्ल मधुत्र मी उत्ती । (त्र एक पुरुष मा मार्गिक मूना **ञ्**उ॰ ॥ निख्रजामि **পূष**मद८ विष्ठ (पर भएगनिकः। हेन्तियः त्रमनः निकु र्हिमापि विवास। मजः॥ #॥ न्त्रम् देख (उज्जनस न्। मूल मूल ভাষর । নৈমিত্তিক দুবত্ত্ত নিত্য **ভাদি जु भूर्बवर ॥ इन्तियः नयनः** व ক্লি স্বর্ণাদি বিষ্যোমত: # জপা-कबानुकाणी ७ म्लालंस गदान मणः ॥ िवर्ग्रग्गमनवात्न चरळ्यः ग्रामीः मि विक्षः। भूईविधि अजापूर्णः (पक्रत्राणि ज्ञिन्द्रियः ॥ भूषाः पिस महातायू भर्यप्र**डा** विषया मे ত:। ইতি ভাষাপরিছেদ:॥ #॥ বিষ্য ইতি।ভোগসাধন বিষ্যঃ

विषय की इन्द्रिय । इंडिमिन्नी॥

। সর্বনের হি কার্য্য অদৃষ্ঠাধীন य ह कार्याः यहमृष्टीशीनः छल्नुन-(ভাগ সাকাৎ পর পর্যা জনয-ভেরে নহি বীজ প্রযোজনা ভ্যাণবি-না ক্স্যুচিদুৎপত্তি রস্তি তেন ছ্যু-नुकारि दुक्ता छान्छ। मर्द (भव विव-यो खर शेठार्थः। इंडि मिलाय-मूकावनी ॥ # ॥ विज्ञानविजः । ইতি ভরতধৃ গাজ্য:।। অব্যক্ত:।। শুক:। ইত্যপ্যস্পাল:॥ জন-शरः। ইভি মেদিনী॥ काश्वापिः। ইতি শদরত্বাবলী।। नियामकः। यथा। विभाषा हि विष्मवार्थः সিনোভের্বন্ধ উচ্যতে। বিশেষেণ সিনোতীতি বিষ্যোতো নিযান-ক:।। ইতি ভউকারিকা।। 🕸 ।। আরোপাশুয:। যথা। সারোপা-न्। जू राजाको विषयी विषय ख्या । विवग्रसः कृष्डनप्रसान् मा न्तरार नाव्यवना निका।। यथा (गो-वीशिकः। इंडि काव्यभुकारण २ উল্লাস:॥

विषयाञ्चान क्ली जन्मा । इंजि ब्राब निघ'ढेः ॥

विवशायी न् शु द्वाका ॥ देववयिक-बनः ॥ इन्त्रियः ॥ कामरमवः ॥ वि यगाणक भूक्षयः। इंडि (मिनि)।।

বিষ্ধী তি বিষ্ধাসক:। ইভি (मिनि ॥ विषयी पु॰ नृशिष्टः।। कामरमवः॥ रिवरविकः॥ इंजि मिनि ॥ धृनिः। ইত্যৱন্পালঃ। আরোপ্যমাণঃ। यथा । दिवगुष्ठः कृष्ठनाध्मिन् ना मार मायायमानिका। विषयिशा আরোপ্যমাণেন অন্তঃ কৃতে নিগী-র্ণে ধন্যমিন্ আরোপবিষয়ে সভি ना नहार नाश्वरमानिका। ইতি कावाशुकानः॥

ন্ত্রী অতিবিবা। ইতি বিষ্ক্পা द्राजनिर्घण्टः॥

বিষণ। ইতি শদ্-क्री বিযল• ठिनित्का ॥

বিষলতা স্ত্ৰী ইন্দুবাৰণী।ইঙ্তি রাজনির্ঘণ্ট:।।

विष्विष्ठा ন্ত্ৰী বিষয়মন্তঃ। ইভি विष्यविमानम् ही भाषाः ভत्रजः॥

विष्टेवहरः বিষয়্মজ্ঞবেতা। ওঝা ইতি খ্যাত:। যথা। বিষ-विम्रा॰ विक्ति अधीर वा विष्वेत-म् अभाक्षानाम् ज्ञामश्राना वृष्तिः। विषम्। विष्। किविट्नकः हेडि वा। हेडि छत्रडः ॥ उ९१७-र्य्यायः। जाकुलिकः २। ইত্যমরः॥ काक् लिकः ० नरतमुः ८ को निकः।
६ कथा भुत्रकः ७ हका हैः १। इंडि
कि श्वाक्ताः ॥ व्यावगुष्टी ৮ काक् लिः
० काक् लिः ० व्याह्य खिकः ००
व्यावगुष्टः ०२ गाक् छकः ००।
इंडि नद्दद्वावनी ॥

विषरेवित्रगी जी निर्दिग। इंडि त्राक्षनिर्धण्डः॥

विष्णाण्कः भूः भग्नकमः। यमः। स्नाः। स्कद्भः। विष्ठेश्चिष्। भीजः नष्म। ইতি दास्तवस्यः॥

বিষশ্ক: পু॰ ভূক্রোল:। ইতি ভূরিপুযোগ:॥

विवम्की न न् ज्कातानः। इंडि

বিষস্চক: পু• চকোরপকী । ইভিহেমচন্দু:।।

বিষস্ক্রা পু ভ্**স্রোল:। ই**তি ত্রিকাণ্ডশেষ:॥

বিষহন্ত্রী জ্ঞা অপরাজিতা।। বি রিবা। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।।

विषष्ठाः जि गत्र न ना भरको वशासः
। यथा। ॐ कुँ जः। मराजा १यः स्त्रः
छ कृष् मर्त्र वृष्टिक कः विषः। शिः
भूनी नवनी उक्ष मृक्र (वृष्ट्र) भारन
।। मत्री हः स्थि क्ष क्ष न स्मृ भारन
विषः स्त्र । जिक्र न। हेक्ष क्ष क्ष

हम्तन घृष्ठ मः यूष्ठः ॥ এख्य भाः नाह (लभाह वियनाःमा ख्याह्य । भारत्वज्ञ हाक्की । हिन्नजानः भनः मिना। এव (वार्गा विषः हिष्ठ देवन्छ्य ইरवाद्रभान् ॥ रेमक्ष्यः यूष्यः हूर्नः हिष्ठ मधुः कः यूष्ठः। वृष्ठिकम् विषः हिष्ठ माक्र मः यूष्ठः। वृष्ठिकम् विषः हिष्ठ माक्र ५५५ व्यथ्रायः ॥

विष्ट्रा) जी मनजारम्बी। ইভি विष्ट्री) नद्यञ्जावनी॥

विषश की (प्रविधानीना । निर्दिन या। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।।

বিষা জ্রী অভিবিষা। ইভাগের:॥ বুদ্ধি:। ইভাগেদিকোষ:॥

বিষাক্তরঃ পূ॰ শল্যান্ত• । ইতি ত্রিকাণ্ডশেবঃ।।

বিষাণ ক্লী জাঠোবধণ।। পাশৃশৃক।
।। হুতি দন্ত:। ইতি মেদিনী।। কোলদন্ত:। ইতি হেমচন্দু:।।

विवानिका जी स्वर्णकी। हैंडि त्रज्ञाला॥ माडला॥ कर्क हेण्की ॥ व्यावर्डकी। हैंडि त्राक्षिवर्णः॥ विवानी जी कीत्रकारकाली॥ व्यक्त मृकी। हैंडि स्वित्ति॥ वृष्टिकाली । हैंडि त्राक्षित्रंणः॥ डिंडिडी। हैंडि व्यक्तिनुका॥ বিষারা

विदानी प् इसी। मूझी। इन्डा-बयः ॥ श्रव बनायीयदः ॥ मूझा-हेकः। इन्डिदाबनिर्धणः॥

विषापः श्रुः व्यवमामः। यथा।
काष्णः भीर्थाः विषापादमापः
माप्ता विषाजा। ইতি হেমচন্দুः॥
विषापनी की श्रवाणीवजा। ইতি
वाজনিষ্টাः॥

वियाननः श्रु मर्गः। इंडि व्यक् भाषा॥

বিষান্তকঃ পু• শিব:। ইভিছেম-চন্দু:।। বিষনাশকে ত্রি।।

বিষাপহ: পু॰ মুদ্ধকর্ক:। ইতি রাজনির্ঘট:॥

विषाणहा जो हेन्तुवाङ्गी।। निहिंदा। हेिंड द्राजनिर्धण्यः।। नागममनी। हेिंड जावभुकाणः।। अर्कमूना। हेन्द्रमून हेिंड जावा। हेिंड णद्महिन्दुका ॥ मर्शकङ्गानिका। हेिंड द्रञ्जभाना।।

বিষাভাষা স্থ্রী নির্দ্ধি। ইতি রাজনির্ঘণ্ট:॥

বিষামুধঃ পু॰ সর্প:।ইতি শক্ষ-রত্নাবলী।। বিষযুক্তান্তে ল্লী।। বিষারঃ পু॰ সর্প:।ইতি শক্ষ-চন্দ্রিকা।। বিষারাতিঃ পু॰ কৃকধন্ত্রকঃ। বিষ্ব

इंडि दाकनिर्यकः॥

বিষারি: পূ॰ মহাচঞ্চ শাক:॥

যৃতকরঞ্জ:।ইতি রাজনির্ঘণ্ট:॥

বিষাস্য: পূ॰ সর্প:।ইতি শক্রত্নাবলী॥ বিষযুক্তমুখে জি॥

বিষাস্যা জী ভল্লাভক:।ইতি
শক্চন্দুকা॥

বিষু ব্য সাম্য । ইতি বিষ্কুৰ শৃদ্ধীকাষা ভরতঃ।। নানাৰূপ । । ইতি রামাশুন:।।

·বিবুণঃ পূণ বিষুক্। যথা। বিষু
নানাৰপণ গমন বিষুক্ ভদস্যান্তীতি বিগুছে অগিত্যুত্তর পদলোপ চ্চাক্তসন্ধে রিতি পামাদিস্ত্রেণ নঃ ণত্ত্বণ। ইত্যমরটীকাযাণরামাশুমঃ।।

বিযুপণ ল্লী বিযুবণ। ইত্যমরটীকাণ বাণ ভরতঃ।।

विषुवः क्री ममजाविन्तिवकानः ।

एट् भर्यायः । विषुवट् २ । इठाः

मजः ॥ विषुभः ७ । विष्ठक् छ

विष्ठक् ६ । इंडि मस्त्रक्षावनी ॥
विषुपः ७ । इंडि जामानुमः ॥
विष्ठुवः १ । इंडि मुक्टिः ॥ उङ्ख् भिष्ठ ज्वायाः मःकासी । यथा ।

मृग कक्षरे मःकासी एका भिष्कः

गायतः । दिम्ही ज्वा भिष्कः

গোল মধ্যে তথাপরা: ॥ ইভি **তিথ্যাদিভ**द्धुः॥ 🗱 ॥ তে <mark>ত্ ম</mark>हाः বিবুব ললবিষৰ নামভ্যাণ ক্ৰমেণ **थ्यारा । यथा । विवृवान्त्राः वट**ः गद्रः ग्रामिष्ठि भद्मविष्ठाः यउः । মহাবিষুব মাখ্যাত কৃতিভি रैक्ड हिङ्कि ।। उभा माङ्क লবিষুব ক্রমাদার্থিন চিহ্নিত। हैि नद्रद्वावनी। शा विष्वाद्र काला यथः। भृगमःका छिठः भूवं পশ্চান্তারা দিনান্তরে। এ নবষে চত্: পঞ্পলমান ক্রেনেণ ত! ষট্যপ্তি वर्भद्रातिक जिनः भागप्रयमः द्रादः । এবং চতু পঞ্চিন ম্যনারস্ত্রণ ক্রনাথ।। বুঙ্জেমেণ চ তদ্বৎ স্যা-मूमग्रान द्राव ध्रुव। कर्कि म कम ्र । उद्यहिन्छ। एकिगायनः।। य যনা শক্রমেণৈৰ বিষুবারস্ত্রণ তথা 1 রবিস[্]ক্রান্তিতো নেষ ভূলযো ब्रिडिङ: भून:। विवूवः नीन कन्। (क् (ज्वाकीन्द्र नकाच्रक। दिन-यानाय भीनार्खात्मयार्खः भानि कः भुकः ॥ ज्ञा वृदार्क भग्रं । श्रणीजिः भण जाहिनी । श्रिथनार्षः हर्जुक्तिः **नर्भवा**नाः वर्षाउ कः भार ॥ कर्क् है। कंड वहें जिम्मर त्रिः हार्ष्ट् व प्रभी उक्। क्नार्ष्ट्र ।

দ্বিনবতি: ক্রমাৎ ত্রুট্যতি বাসরে॥ कन्यार्षामुक्तनीयानः (वाष्यः भूत्रं ক্রনেণ হি। দিনে দিনে ভাগহারা-मानः (वाष्ठः दिवानित्याः॥ এक मान पथ यष्ट्रा जुङ्गाना मान नि र्गाः । कृष्विष्टि वर्मद्रारनदः छछः । স্যাৎ যোডশা শকে।। পুন স্তদ্ধ हैं जि । जिल्ला जिल्ला कि ।। ज्यान । हि । নেষ সংক্রমত: পূর্ব পশ্চান্তারা मिनास्टा । **भा**जिल्लाम प्रान्त्लात्म । न विष्वाद्रसुन ७१व८ ॥ द्रायाम् দিনে সৌরে চৈত্রে নথ তিথৌ শঙ্কে । विष्वादञ्जाः छब मनः मानः हि-সপাদ ত্রিপলাত্মিকা। বর্দ্ধতে নেষ বিশ্বাংশ পর্য্যন্ত স্ল মার্গতঃ ।। उथा कि। हा इभर्व। इ॰ भारत ত্রিপলাত্মিকা। তাদৃগাবাচপর্য্য ন্ত পলৈক পুমিত। মতা॥ ততঃ कक् है विश्वाः नगर्राप्तः नुजारः कः মাৎ। সপাদ পলমানেন বেলা-व्हे। विनिष्ठ ।। जाम्यामुखः পর্য্যন্ত পাদোন ত্রিপলাগ্রিকা। ভাদৃগাথিন শেষাম্ভ হরনেত্র পা वाञ्चिकां॥ दिवामान मेख बाई खाका द्वारवः नुमानकः । देवणाः

शादी हिरामान द्राधिमान जूना विमान जूना विमान जुना विष्य । यहेय द्विष्ट मद्रादिन छ छ । मान छ हिर्म । यह छ छ । का हमाहित मा के कि मुख्य हैं। है जिल्ला की विष्य । है जिल्ला है जिल्ला है जिल्ला । है जिल्ला है

বিষয়: পু॰ সপ্তবি॰শতিযোগান্ত-र्ग ड नुष्यर्या गः। मु छ कर्या १ ७ अऽ शक प्रखास्त्रक्षाः। यथा। जातानी পঞ্বিষ্ক স্তু সপ্ত শ্লেচ নাডিকা: । ग ७ व्याचा उत्याः यहे ह नव इवंग বজুযো: ॥ বৈধৃতি ব্যতিপাতৌ চ সমস্ভৌ পরিবর্জ্জন্থে। ইতি সং-क् गुमुकावनी ॥ 🗱 ॥ ७व जाउ-कन । विश्वसुर्यारम यकि कच-কালে কাৰ্য্যে মত্তা মনুজ স্ত मानी । मूक्ट कवडाजाक (भोय) मुजु॰ गृहमेऽ निर्माण विर्धी मनः র্থ:।। ইতি কোষ্টাপুদীপ:।। #।। विखातः ॥ शुज्यिकः॥ क्षणकाकः इंडि (मिनि ।। वृक्षः। इंड) खरः॥ অর্গলা। ইতি ভরত:।।

বিষ্ণ য়ী পু• অগলা। যথা। তদ্বিষ্ণ য়া ংগল । ন। ইত্য मत्त्राको क्लाहेबाद्रनकार्षः यर्गणः एउकार् छ दे थाउः ।
उट क्लाहे विद्याद्या क्रिक्को म्छ गुराहिषाप्त्रन् उद्यक्को म्क्षित्रवट बार्थक्वन (मंडट विद्याः)
ह जिन्न मिंड म्ल्लाहेः। विद्याः।
दक्षनिमिखर् छः। इडि छछः।
दक्षनिमिखर् छः। दिद्याः वाग्राह्यः
माहे मुद्याः। विद्याः प्राण्याः।
केलाहे मुद्याः। विद्याः गुडिवक्षाः। केलाहे मुद्याः विद्याः गुडिवक्षाः। केलाहे मुद्याः विद्याः हिंड क्षिनि
हर्णनाट विद्याः हिंड लाहेः। हेडि

विद्यनः भू गुाम् भूकतः। इंडि त्राजनिर्धणेः॥

বিষি
রঃ পু
পক্ষী।ইত্যম
রঃ।।

বিষ
রা তিত্তিরি ম
যুর জক্র টাদয:।

লাবাদ্যা বৈষিরে। বর্গ: পুত্র জাল

কলা মৃগা:। লঘব: শীত মধুরা:

সক্রাযা হিতা নৃগাং।। ইতি রাজবল্লভ:।। কা ।। অবা বিষিরাগাং
গণনা গুণাশ্চ। বর্ত্তকা লাব বিকির কপিপ্রলক তিত্তিরা:। জলিজ্

জক্রটাদ্যাশ্চ বিষিরা: সমুদাহ্যভা:।। বিকীর্য্য ভক্ষযন্তেতে যম্মাভ্রমান্ধি বিষিরা:। কপিপ্রল ইতি
পাত্তে: ক্রিতা গৌরতিত্তিরা:

।। সংলক্ষ গৰবৈত্যা ইতি লোকে
।। বিষিধ্যা মধুরা: শীতা: কবাবা:
ক্টুপাকিন:। বল্যা বৃষ্যা জ্রিদো
বন্না: পথ্যা স্তে লঘব: মৃতা: ।।
ইতি ভাবপুকাশ:।।

বিষ্ঠ: ত্রি পুবিষ্ঠ:। বিশ্বধাতো: ক্ত পুত্যবেন নিম্নম:॥ বিষ্ঠপ: ক্লী ভ্বন:। ইত্যমর:॥ পিইপ: পিইপ:। ইতি ভটীকাবা: কপদ্বন:॥

विश्वेष्ठः भू भुष्टिवसः॥ द्रागः विष्यः। इंडि स्विमनी ॥ अ ज् আনাহরোগ:। ওস্য वक्त भार ৷ আমণ শক্ৰা নিচিত্ত ক্ৰমেণ ভূ रया विवक्षः विख्यानिरन्। भुवर्खः भान नयशास (भन क्लाद्र भाना रु मुनार्द्रिश आमः जनक् माः হারসার·। শক্ৎ পুরীব· বা क মেণ নিচিত সঞ্জিত। ভূৰো বি खगानित्वन मृष्ठेचायूना विव**कः व**्राः मत्भाविष्ठः व। यथायः भूर्ववनः भूवर्डमानः अनः विकादः जानाः र याष्ट्रः॥ १॥ उजायन मानार भारः। अभिन् चवज्राभनमूख्य তু তৃষ্ণা পুতিশ্যায় শিরো বিদা शः। जामागाय मृत मधा ७कदः হ্ শুস্তু উদ্গার বিঘাতনঞ্চ।। বি- घाउन अपुरुखिः ॥ 🛊 ॥ भक्टः नक्ष्यज्ञ भाष्ट्र। उत्तुः करें। भृष्ठ भू-वीय मृत्व म्राथ म्हा मक्रा व মিশ্চ। খাসণ্চ পত্নাশ্ব**ে ভ**ব্ভি তথালসোকাৰি চ লক্ষণাৰি ॥ भकाषयाः **म**क्८मक्षयाः । य-লসোক্তানি আখ্যান বাভনিয়ে৷ थामीनि ॥ #॥ व्यानारहामावर्ज्या শ্চিকিৎসাধা ৰুল্যভাদুভব চি किट्नाव निर्णाउ । अत्यामार र्खाना॰ हिक्टिमा। अव्यावाङ नि রোধোত্থে হ্যুদাবর্ত্তে হিত মক্ত। त्त्रह्मान उथा (यदा विष्ठ र्यहान् লোমন•।। বিশ্বিবাত সমুখে তু বি-एष्ठमान **७८पोयदन। वर्ल्या**कावः গাহক ৰেদে। বস্তি হিতো মতঃ॥ वर्खिः कनवर्खिः ॥ मृबावरद्राध अनि: उ की व वाबि वहां शिख्टा मुझमी यद्रमः हालि क्यायः क्या अत्र हा। पूज्रमा कचेकात्री पूत्राव छ। ह ज्वा खनवार ।। अर्बाकवीक (जायन निः বেদা লবণীকৃত। সিতা মিচ্চুরসং क्रीत्र माक्कात्रम मधानि वा॥ नवः रेक्व भुक्ष हो ज मूजक् हु। भारी वि ধি । জ্য্তাভি**বাতকে** সেহ বেদ ठानि भुषाकाय ॥ अन्यानि পুरुक्षी अभी त्रगरतान् विषीन्।

त्वजीवावरवारवारच भूरकपूरेह पृर् শো র্জন।। সৃপ্যাৎ সুখেন তস্যাগ্ कथायह कथाः शियाः। ছिन्नां छ घा उद्ध जीका याग नम्याई प्रमीतः ॥ পুবর্ত্তবেৎ ক্ষত সক্ত । সুহ স্বেদৌ পুশীলবেৎ। তীক্ষ মরীচ রাজিকা हि। উन्नादम्यावरदास्य जु देन्नहिकः ध्न बाहरत्र ॥ इकिंनिगुरु जःजाः তে বুমন বহুন হিত । বিরেচন চাত্ৰ মত তৈলেনাভ্যঞ্জন তথা।। বন্তি শৃদ্ধিকরৈ: সিদ্ধণ চতুর্গুণ জলণ পয:। আবারিনাশাৎ ক্বথিত পী **७व**न्ड॰ लुकामनः॥ त्रमरायम्ः लिया नार्य्यः শুক্রোদাবর্ত্তিন নর । তস্যা-ভ্যবেশাহশ্চ মদিরা চরণাযুধ:।। भाविः भाषा विक्रण विख रेमणू ন মেব চ। ক্ষিবতে সমৃদ্তে স্থি মুঞ্ ওথা লঘ।। ৰুচ্য মল্প হিত कक्रा भुष्र (भवाः मूर्गिक्ष यट । ত্ব। ৰিঘাত স•ভূতে শীতঃ সর্বো-বিধি হিত: ৷৷ কশ্র শিশির স্ত্র शिरवर्खाय॰ भरेनः भरेनः। भूमधाः त्म श्रं भाखा विभागः अवस्मोर नः ॥ निमादगविषाভात्य भिरव ক্ষীর পিভাযত। সুবাহন সুশ য্যাত্ৰ হিতাঃ শুৈত্ৰ প্ৰিয়াঃ কথাঃ ॥ 🗫 ॥ वाजामिरवर्गविद्याज्ञनिजा- ॥

ना मुरावर्खानाः हिकिटना मिडिशाव ব্যকাদি ক্লিত বাত অনিভ্যেগ্ৰ-मावर्जन। ठिकिथना मारु। हिल् याकिक निक्रिथः निष्टि वं खिविने মি হাণ। ঘৃতাভ্যক্তাণ গদে ন্যাস্য मूमावङ्गविनामिनी ।। कलवर्जिः ॥ गमन शिश्रमी सर्छ वहा लोबान्छ नर्यभाः। ७७ कीव्र नमायुक्ता कत्रव-र्खि तिरहारिजा।। समनकनारिवर्जिः ॥ 🕸 ॥ খঙ্পল• ত্রিবৃতাক্ষ: কৃষ্ণা-कर्वः ष्टरग कूर्वः। भारताज्ञनमा म-ধুনা বিডালপদক নরো লিহ্যাৎ।। **अउम्गाउ भूबीरय (मय॰ विटे**छ य॰ দাবর্ভে।মধ্ব নয়পতি যোগ্য চূর্ণ नाजाहकः नाजा ॥ नाजाहहूर्नः ॥ 🕸 🗓 न(व)।य॰ भिश्रनीम्न॰ जिन्त्सी ह চিত্রক। তচুর্ণ গুড়সংমিশু ভক্ক-বেৎ প্রাভক্ষিত: ।। এতদ্ভডা-ष्ठेकः नामा वल वर्गाधिवर्धनः । छेरा-বৰ্ত্ত প্লীহ ভলা শেখে পাণ্ডান্যা-পছ॰॥ গুডাইক॰॥ 🛊॥ মূলক॰ শুদ্ধ भाष् कि वहां ज्ञानिक । क्ज-মাল ফল• চাপ্স্ পজ্বা তেন ঘৃত• नहर्।। उर भी उ मगरवर कि शु-मुनावर्ष भाषा छः। शक्षम्लक भव वृह्ट । मूक्ष्मृतकाम् । इंड॰ ॥ 🕏 ॥ व्यथ व्यानार्मा हिकिट्मा। वृद्या

कात्रण कार्यापानमावर्डहती कि ষাণ আনাহেপি চ'লব্বী'ত বিশে-ব শ্চাভিধীযতে॥ ত্রিবৃৎ কৃষণ হ রীতক্যো দ্বি চতু: পঞ্চভাগিকা:। **ख**: छन जूना। विका इत्रसानाइ मूल्पा ।। वर्डि जिक्टू रेमक्क मर्यम गृश्यम अरु महनकरेनः । मधुनि শুড়ে বা পাকৈ নিহিতা স্বাস্থ্য প রিমাণা:।। বর্ত্তির ए দৃষ্টফলা শ-নৈ: পুণিহিতা খদে ঘৃতাভ্যকে। व्यानारहामावरखों मनयि कठेवरः ख्या ख्या ॥ विकर्षकाम्यावर्खिः ॥ 🕸 ॥ ইতি ভাবপু काणः ॥ विश्वेष्ठी वि विश्वेष्ठतागवनकः। यथा। रेवहना खन्नत्वा ভक्त्रा विश्वेः **ञ्चि मृष्टे मारूजाः । ইতি রাজ**বল্ল-ভঃ॥ বিষ্টস্তবোগবিশিষ্টণ্ড।। विष्ठेत्रः भू॰ विष्ठेभी ॥ पर्ভमुटिः ॥ नीठार्गात्रन•। इंड्रम्बः ॥ व्यापि-ना समामनामिगुरः। ইতি ভরতः ॥ ।। विडेत्र लक्ष्ण भारु। विडेत्रस नार्ख विख्य वामावर्ख विष्कुताक्षा-মুখাগু। অসংখ্যাত দর্ভাঃ। তথাচ गृशामःगुरः। উদ্ধৃ (कामा ভবে-षुका वयुर्वमञ्ज विश्वेदः। मिक्का वर्डाका वृक्षा वामावर्डेस विदेशः इेडि ॥ इम्सागश्रदिणिडे॰ । एउं ∥

मःथानि विश्वि विश्वेद्वा खद्र (१ वृक्षा छ । এवका भक्षा मा क्ष छं वष्टुका छ । क्षिन ज्य वर्ण जमा था । इति यम जय वर्ण जमा था । इति यम जय वर्ण विश्वेद्वा । अवन विश्वेद्वा । विश्वेद्वा । अवन विश्वेद्वा । अवविद्वा । अवविद्वा । अवव्या । अव्या । अवव्या । अव्या । अव्य

বিষ্টরশ্বা: পু॰ বিষ্ণু:। ইত্যমর:॥ বিষ্টরা জ্রী গুণু। সিনা। ইতি রাজ নির্ঘণ্ট:॥

विश्वेक्श खी सर्गक्छकी। इंडि ब्राजनिर्घण्टः ॥ विश्वोक्श इंडि ह कृष्टिभाग्रेः॥

विश्वेतः भूः इत्मराविष्मयः। यथा विश्वेतः भङ्किद्दमरः। ইতি यदः भुकद्वरा पूर्णामामः॥

विश्विः जी (वजन विना श्री छो।

त्वाद्यश्नादिक्षणः। विश्वाद्य श्री छ।

थ्राजः। जर्मश्रीयः। जाकः २।

हेज्यवः॥ श्रीमञ्जिकः क्षिणा

विद्याजकाला विश्विति छिष्णेयाभी

॥(द्व (वजन महात्व कर्ण क्वर व कर्ण.)

काबिनि (इंड) (निश् कर्म कर्त्र বিষ্টি: স্ত্রিষা মভৃত্তি কর্মণীতি কৃদু: । इंडि ভद्रंडः ॥#॥ (वजनः ॥ कर्ष । इंडि (मिरिनी ॥ छम्। ॥ वर्षन॰ । ইতি বিশ্ব:।। প্রেষণ । ইতি হে-भवन्तः ॥ # ॥ मा ह जुना ववारम् s कारण कर्रगांखर्ग उ मक्षम कर्रगः। शक्षिकायाः उत्रा बहः म्नाः। यथा भारत वानव कोनव रेडिंडन গর্র বনিজা: সবিপ্রথ: সপ্ত। শঙ্গনি চত্ম্নাগা: কিন্তুন্ন্দ প্রাণি কর गानि ॥ भुक्रांनि डिथिएमयार्कांट পঞ্মে তত্ত্রীয়কে। আদ্যন্তার্জাৎ क्रामन मूर ब्रष्टावृत्तरा ववानयः ॥ **अकारमा मञ्जूर्याम भारार्क** मुद्धभक्राका षष्ट्रमी भीर्गमारम्। क न्वां कि विक्रि बी बिजा।। क्षः পক্ষে তৃতীয়ায়া দশম্যাক্ষ পরা-र्षा । मक्षम्याक हजुर्मम्याः श्-ৰাৰ্ছে বিপ্তি সম্ভবঃ॥ বিহায বিষ दो<u>म</u>ानि विद्धिः अर्बेज वर्ड्डाय< । विश्विष्णाय जिमा कि शुर कार्या क्यावरु ॥ क ॥ कर्यानुकाला । নাড্যস্ত পঞ্চবদন গলক স্তথিকা বক্ষো দলৈক সহিতা নিয়ত চত मुः। नाखिः किंदः यख्य मृह्वजा চ ভিসে। বিষ্টে প্র'ব॰ নিগদিভোক

विजान अवः ॥ मूर्थ कार्यप्रविख र्खरिक सद्रा॰ हाथ गलाक धनग्नानि बंकनाथ किंछिए वृक्षि विवयः। किवा ना जीएरा विजय मथ भूरह ह बगम्ः भदीदः ভদাराः পৃথগিতি कल भ्रम्नयः ॥ मन् वम् मूनि जिथि यूग मण भिव छ। अध्याजू **डि**थियू न्र्बार्युगः। 78। ৮। १। ७८। ८। ४०। ४४। ७। व्यायाजि वि-ष्टि (त्रया भ्रष्ठ मुख्या भूतस्रम् छमा '॥ भूबीएपाः भ्बीपानि निज्यशी ভবতি ইত্যৰ্থ: ॥ 🕸 ॥ একেন ছীনা দ্বিত্তণা তিথিস্ত সপ্তাবশিষ্টণ করণণ ववाहि। भृद्धं भद्ध (भाव मयः वि-শেষে৷ দ্বিসংগুণা চন্দু বিবর্জিভা চ ।। किछ्य मंख्ड कत्रन शुक्ति मा-रि खिर्थ द्रांति मत्न गरिन्य। छैनाः छ। (भाष भन्निस मार्भ भूदि हैं जुञ्जानभात्र ह नागः ॥ 🛊 ॥ इन्नु क्रमणक विवार्ग्यम ज् नियः नयमा বৰাদে:। কলি বৃষ কণি মাক্তা: भज्यः भजनशासः ॥ ववानः विभ কথন ।। 🛊 ।। পৌপ্তিক স্থির শুভা-নি ব্বাথ্যে বালবে দ্বিজহিতাদ্য-नि कर्य । कोणाव भूमर निज वि धान रेडिडिल मुखगडामुगकर्म।। গরে চ বীজাশুর কর্ষণানি বণিজ্যপি ত্রের্য বণিক্ জিয়া চ। ন সিদ্ধি
মাপ্নোতি কৃত্রঞ্চ বিষ্ট্যাণ বিষাতিযাতাদিয় তত্র সিদ্ধিঃ ॥ মপ্রৌবধানি শঙ্গনৌ চ সপৌপ্তিকানি গো
বিপুরাজ্য পিতৃকর্ম চত্ত্র্যাদে তু।
সৌভাগ্য দাকণ কৃতি পুর কর্মা
নাগে কিন্তুল্ন নান্নি শুভগৌপ্তিক
মঙ্গলানি ॥ ইতি জ্যোতিস্তত্ত্বং ॥
বিপ্তিঃ ত্রি কর্মকরঃ। ইতি মেদিনী ॥
বিপ্তলা ক্রী দ্রস্থানং । যথা। বি
ল শমি পরিভ্যঃ স্থলস্য । এভ্য
স্থলা সম্য বঃ স্যাৎ । বিপ্তলং
লপ্তলংশমিপ্তলং পরিপ্তলং । ইতি
সিদ্ধান্তকৌমুদী ॥

विश्व की विविद्युकाद्यामाद्य जिल्ले की कि विश्व में जिल्ले हैं के स्वा कर मन्य के सक्ट के स्व के स्

मवाविज नीश्रम् विग्रम माहात्रर त्मिहिष्ठेः मःविष्मित्रिज्ञः न नगः ज्ञान माहात्रर ॥ इंडि कोर्च्य छे-णित्रज्ञात्म १० व्यथागः॥ ॥ छ-पूर्मित्रवानः भूतीय भ्राजःक्जा मद्या पृष्ठिवाः॥

विकः भ् वाः। इति मद्माना ।। শুদ্ধ:।। বসুদেবতা। ইতি ধরণী ।। वर्षभाञ्जकर्नु मृतिविल्लासः। रथा । মনুতি বিষ্ঠু হারীত যাজ্ঞবল্পো-শনো ৎক্রিঃ। যমাপত্য সমু র্ত্তা: কাত্যায়ন বৃহস্পতী।। পরা-শর ব্যাস শত্ত্ব লিথিতা দক্ষ গো-उभो। गाउाउरभा विभिष्ठण धर्म **माञ्जभुर्याककाः॥ ই छि या** छ उन्हाः স হৈতা।। #।। বুন্ধণোক্পবিশে-वः। उम्र वृष्टभित्त र्यथा। विवि **डि** ব্যাপ্নোতি বিশ্ব• यः। বেব'তি নিঞ্জি আপ্যায়তে বিশ্ব মিডি বা। বিফাভি বিযুনক্তি ভক্তান্ মাথাপসারণেন সংসারাদিতি বা । বিশতি সর্ব ভ্তানি বিশন্তি সর্ব ভ্তানি অৰেতি বা।। যমাধিশ নিদ সর্ব ভদ্য শক্ত্যা নহাত্ম नः। उत्पारमरवाह्य उत्कृ विकृ थाराः भुरवणगर ॥ इंडि विष् পুরাণ । ইত্যমর টীক্যা ভরত:॥

তৎপर्यायः । नात्रागाः २ कृषः o रिक्छे: ८ विश्वेत्रम्याः ६ मानाः मत्रः ७ श्वी (कणा: 9 (कणाव: ৮ মাধবঃ ৯ ৰভু: ১০ দৈত্যারিঃ ১১ नुखदीकाकः ३२ (गाविन्तः ३० ग-ক্তধুৰ: ১৪ পীতাম্বর: ১৫ অচ্যুত: ১৬ माकी) १ विश्वक्रमनः ১৮ अ-नार्पनः १२ डेलन्तुः २० इन्तुवद्रज्ञः ২১ চক্রপাণি: ২২ চতুভূ জ: ২৩ প-ग्रनाजः २८ मधुत्रिनुः २० वामूप्तयः २७ जिविकमः २१ रेपवकीनन्दनः २৮ শৌরি: ২৯ শ্রীপতি: ৩০ পুৰুষোত্ত मः ७) वनमाली ७२ विलक्ष्मी ७० क मात्राजि: ७८ व्यासाक्षकः ७৫ वि यमुद्रः १५ किंचिबिट ११ विष्: १४ **জ্বিং সলা**শ্বন: ৩৯ । ইত্যমর:॥ গুরাণপুৰুষঃ ৪০ বৃক্ষিঃ ৪১ শত-वाता वर भनागुजः ८० এकण्यः ८८ জগন্নাথ: ৪৫ বিশ্বরূপ: ৪৬ সনাতন: ৪৭ মৃস্পুদ: ৪৮ রাহুভেদী ৪৯ বামন: ৫० मिरकीर्खनः ७३ श्रीमिरामः ७२ অজঃ ৫৩ বাসুঃ ৫৪। ইতি ভটাধরঃ ॥ श्री हितः १८१ क मातिः १५ नृहितः ^{६१ विचुः ६৮ मश्रु जिट ६३ मधु मृहनः} ৬০ কাম্ভ: ৬১ পুৰুব: ৬২ গ্ৰীগৰ্ড: ৬৩ একর: ৬৪ এমান্ ৬৫ এখর: ৬৬ লীনিকেতন: ১৭ প্রীকান্ত: ১৮ লীশ:

১৯ পুভু: ৭০ মুরলীধর: ৭১ জগদী-नः १२ गराथदः १७ नन्सः ज्राजः १८ নরসিংহ: ৭৫ ইরেশ: ৭৬ গোপাল: ११ नन्दनन्दनः १४ नद्रकिष्ट १३ সামগর্ভ: ৮০ অজিত: ৮১ জিতা-भिवः ४२ अउधामा ४० ममदिन्तुः b8 भूनर्बम्: be चारित्रवः by बी-वदारः ৮१ मर्मुवहनः ৮৮ विशाद ৮৯ উদ্ধৃ দেব: ৯০ হরি: ৯১ গৃধ্নুঃ ৯২ যাদব: ৯৩ অরিপ্টস্দন: ৯৪ প্ত-नातिः ৯৫ সদাযোগী ৯৬ প্রুর: ৯৭ চানুরস্দন: ৯৮ ছেমশল্ব: ৯৯ শ-**ভাবर्खो २०० काल्यनिद्रिश्रः २०**३ (ধনুকারি: ১০২ সোনসিদ্ধ: ১০৩ वित्रिष्टिः ১०८ थन्न शेषतः ১०৫ वङ् मूर्खा २०५ वक्षमानः २०१ मछाननतः ১০৮ ব্ৰান্তকঃ ১০১ মথুরেশ: ১১০ षात्राकणः ১১১ त्रिश्यतः ১১२ वृषा-किनः ३३०। इंडि मेप्द्रवृदिनी ॥ किष्ः ১४८ माणार्शः ১४৫ व्यक्तिणय-नः ১/७ इन्द्रान् हाः // नद्रायगः //৮ **ললশ**য: ১১৯ যজ্ঞপুক্ষ: ১২০ তাৰ্ক্ক-थुजः १२) य ए विन्तूः १२२ न (मानः १२० विजुः ১২৪ नार्जः ১২৫ जिनः ১২৬ **স** (भाषक: >२१ कड्ड: >२४ वमू: >२२ म-**ভাবর্ত্ত:১৩**৽ মুঞ্জকেশী ১৩১বজ্ঞ:১৩২: (वदा: २०० भूत्रम्य: २०८ बाबाज् ว.52 भाखवायनः ५०७ मूवर्गविष्णः २०१ **विवर्भः २०५ (मवकी मृन्: २०**२) (गारभमु: १८० (गायकं नध्द्र: १८) यमुनाथ: ७८२ गमाज्य ७८० भाक **ভূ**८ ১৪৪ চক্রভূৎ ১৪৫ গ্রীব**ং**সভূৎ मरवा वथा। मङ्क्षिन्क ठान्त्र भ्जना यभवाद्ध्वाः। कानातिम रुग्गीव-**भक्टा**तिष्ठे रिक्टे डाः ॥क•मः (किम मुद्रो जाल रेमन दिवित द्राह्यः। श्रितगुकलिनु वीगः कानीया नद কো বলি:॥ শিশুপাল ভাষ্য বধ্য रेवनरज्यम् वारुमः। मध्या २म्। भाक्षज्ञत्ता ९कः व्यवरामः १मिछ वन्त्कः ॥ नमा कोत्मामकी ठानः भार्त्रः हरू जूरम्यः। मनिः जामसः কো হত্তে ভূলমধ্যে ভূ কৌস্ত হয়।। ইভিছেম্বৰ্ণ : । # ॥ उम्रा म उना मानि भाष्याखर् थए७ ১১১ व्यव्धारय जर्मुनामानि ह भरा छात्र और ना-खिनर्दि पृष्टेव्यानि ॥ 🕸 ॥ व्यम्य म-क्या वर्गक यथा। **यत्र**मान्तर विजीयक উপাস্ত্য চাস্ত্য মেব চ। বাস্দেৰো वनः कारमा ऋनिक्ष्का वर्षाकमः॥ भुगव खर मिराउ।उर हैं (को छू রতি মজকাঃ। নারাযণ তথা বুদ্ধা विकु: निर्श्वा वदाहदाहे ॥ निजा क्ष रित्र पुंजि भीव म्यामन लाहिः ভাঃ। মেঘাগ্নি মধু পিক্লাভা বর্ণতো नव नायकाः ॥ 🕸 ॥ व्यम्ताकानि एउ-याः मखन्तां क रथा । क हे म भ शक्जानः म्राब्द्धः थः वक मुम्मनः थ : ह : क : च : गरारह्वी ठे : व : म : क्ष भारकः॥ यः हैः छः इः खरवही फ शः कः वः जक भूडिकः । वः वः मः वनमानामाहीवर् मः मः दे नः छ (व८। इ॰ उ॰ न॰ को खड़: (नु।क শ্চানভো হুছ মেৰ চ। ইত্যস্থানি क्थारंगाग॰ (मयरम्बम्) देव मण ॥॥॥ গৰডে: প্ৰুজসক্কাশো গদা চৈবাসি-**जाक् जि:।। পृष्टिः नित्रीय गृ**झा छ। त-च्चीः काक्ष्रत्रवि छ। भूर्गत्र त्यु विखः শহ্ন: কৌজুভ স্তৃকণদুর্যতঃ । চক্রণ म्र्यामश्माज शिवरमः जन गः मिनः। পक्षर्गा मजामाना श्राही भिष्मित्र छः ॥ विष्टुपूर्णाण हाजाः ণি गানি নোক্তানি বৰ্ণতঃ। ইতি গা काउ >> व्यव्यायः ॥ क्ष ॥ उत्र व नर्भावनारि र्यथा। त्राह्यास्य मण চান্যৰূপ তিস্বেধীমত: ৷চত্মু থঃ म खगवान् सगट मृहि नुवर्ति ॥ স্ইঞ্ পাতি সকল বিশ্বাঝা বিশ (डा मूर्यः। नकुः ७१ मूनाण्डि। विक् विष्यम्बः सर्गा अडकाण स्र

< । সর্বাত্ম। পরমেধর: 1 তমো-चन जमान्डि क्पूः मः इत्र ज গৎ ৷৷ একোপি সন্মহাদেব জিধা-< भी मभवञ्चिष्ठ:। मर्ग द्रकालय् **खे**ग र्निर्छापाणि नित्रक्षनः॥ এकः जन् जः षिषा हिव जिथा ह वरूषा भूनः । বিধা বিভন্ন্য চাত্মান বৈলোক্যে मः भुवर्खः उ॥ मृकाउ वीकाउ हिन मुम्ब है वित्मवं छः। यसार मृद्धाः न्ग्राडि गुगाउ ह भूनः भुकाः ॥ শুণাত্মকত্মাগ্রেলোকেঃ ভদ্মাদেকঃ স উচ্যতে। অণ্ডে হিরণ্যগর্ত্ত: স भारूक्ठः मनाउनः ॥ चारिषा-मारिएरवा गावजाउदापकः मृजः। रमरव्यू ह महारमर्या महारम्य इंडि म् अ: ॥ भाष्ठि यमार भूकाः मर्दाः পুজাপতি ব্লিভি স্তঃ। বৃহত্বাচ मृत्जा वृक्षा भव्रषाटभव्रतमथवः॥ विण्डाम्भारवणाड्यामी यद्रः भद्रि-ভাষিত:। খবি: সর্বত্রগত্বেন হরি: नर्वरुता यजः ॥ जन्दनामाद ठानू भूबंट चयु द्वि न मृ छः। নরাণা ম্থন থকাৎ তক্ষামারাখণঃ मृजः ॥ रुतः जःमात्ररुद्रशा विज्ञा विकृ कठारछ। छगवान् यर्वविद्धा नाप्यनात्म। भिक्ति मृजः ॥ मर्दछः नर्व विकानाहमः नर्वभाषा वजः।

भिवः **न्यादि**र्मात्व। रमादिजुः नर्दः गां वंदः ॥ जात्रगां न त्र्वमूःथीनाः ভারক: পরিগীযতে। বহুনাত্র কি-म्राक्तन मर्बः विक्मयः जगर ॥ इंडि कोर्पो ४ व्यथ्रायः ॥ 🛊 ॥ व्य-পিচ। মৎস্য উবাচ। মহাপুলষ कानाव् এउरामीखरमामयः। शु-সুপ্ত মিব চাতৰ্ক্য মপুজ্ঞাত মলক-**१ ।। ज**िरद्धिय मिरिद्धां छ । सगर् সাসু চরিফু চ। তভঃ ৰযন্ত রব্যক্তঃ भुख्यः भुगुक्यांगा ।। वेष्ठियस-छम्थिन शानुतानी खत्मा नुमः। या **৭তীন্দিৰ: পরে। ব্যক্তাদর্থ জ্যাবান্** जनाजनः ॥ नाजायम देखि श्राजः স এব ষ্ব মুদ্বভৌ। স্পরীরাদভি-थ्यायन् त्रिमृक्ष् विविषः कगरः ॥ व्यन **এर সमर्क्कारि जामू वीवम**राम्: बर। उरदवाकः ममजवरक्तम क्रा मरः मरूर ॥ मयुरमद्र मरूर्म्। স্ঠ্যাষ্ত সমপুভ । পুৰিশ্যান্ত র্ম-शास्त्रवाज्यमञ्जदः॥ भु-ভাবাদপি ভদ্যাপ্ত্যা বিষ্ণুত্ব মগমৎ **शूनः ॥ इं**जि मार्यम् २ व्यव्यायः ॥ 🗱 ॥ व्यञ्ज जिल्ला मूर्वया यथा । मृष्टि विकासकारणाट तुका विक् मि-বাজ্মিকা:। স স·জ্ঞা• যাতি ভগবা-न् अक अव बनार्चनः ॥ युकाष् मृद्धाः চৈব বিষ্ণুত্বে গাভি নি ভাশঃ। ক্রুত্বে চৈব'সংহৰ্ত্তা একোদেব ক্ৰিখা হিতঃ ॥ ग्वर मृद्धाः मह मर्गकर्ता मुक्र পাতা সচপাল্যতে চা বুক্ষাদ্যৰ-इ। जि त्रामयम् विं विकृ वीत्राक्षा दत्र-(मा व्यवगुर: ।। इंडि वङ्गित्रारण मर्गानुभामन नामाध्ययः ॥ 🛊 ॥ नात्रायगम् अविदिष्णाया यथा। या श्रमो नात्रायरा। (एव: भव्राष्ट्रभव्र-**उत्ता न्म। उत्रा हिन्छा त्रमूट्म**श मृष्टिः भुजि नात्राख्य ॥ मृष्ट्री हियः महामृद्धिः भावनीया मरेयत ह। कर्म का अस मूर्स्टन कबू 'रेनरवर नकारड ॥ उथार मूर्जि॰ मृबास्य देश यश পাল্য মিদ॰ জগৎ। এবং চিন্তযভ सम्। मद्गालियाविरा न्भ ॥ भाक् न्डिका उ॰ द्राबन् रेव म्र्डिमख्य भूद्रा বভৌ। পুরো ভূতে তত তথিন (र-(वा नात्रायनः ययः ॥ शुविष्णञ्चः मन-र्भाथ विकास ७ ७मा (एएउ: 1 **७७: अयात्र छगवान् वत्रमानः शृ**-ব্লাভন-॥ বাগাদীনা- তত স্তষ্ট: প্ৰা-माखमा भून दंद्रः। मर्दछः मर्दक्तं षु गर्वाणाकनमञ्जः ॥ विला-ক্যপুতিপালাচ ভব বিষ্ণু: সনাতনঃ । (हवानाः नर्बरा कार्यः) कर्ववः व अन उथा ॥ गर्डा उप छवजू उव

দেব ন সংশ্যথাএব মৃক্ত্বা ততো দেবঃ পুক্তিছে। বভ্ব হ।। विकृत्रभाश्ना পূর্বাণ বৃদ্ধি সমার স পুভু:। তথা সংচিষ্ক্য ভগবান্ যোগনিদ্যুণ মহা-उभाः ॥ उभाः मः शाभा जगवान् इन्तियार्था ख्वाः भुकाः। ब्राज्वा भ-রেণ ৰূপেণ ততঃ সৃষ্যাপ বৈ পুভূ:॥ তস্য সুগুস্য জঠরামহৎ পদ্ম বি-নি:সূত্ৰ ৷ সপ্তৰীপৰতী পৃষ্ট্ৰ স-সমুদা সকাননা।। ভদ্য মূলস্য বি-ন্তার' পাতালতল সংস্থিত। কর্ণি: कायाः छथा भिक खन्नाक्षा वुकारा ভবঃ ৷৷ এবং দৃষ্ট্রা পরং তস্য শরী-রস্য তু সম্ভব• । মুমুচে ভছরীরছো वागु वीगुनम नृहर ॥ व्यविष्ठा विखरस्थिन भड्डक्रिश शाहर । व्यक्तनार्धाय थन्न (उच उथा করে।। কালচক্রময় । ঘোর চক্র । দ্ব थात्रगात्रु । व्यवर्गताकवाडार्थः গদা• ধার্য কেশব ৷৷ মালেয• ভূত্ত-মাভা তে কঠে ভিঃত্ সর্বদা। 🕮 -वर्म को छाड़ी हिस्सी हम्मारिडी ছলেন হ।। মাৰুত তে গতি বীরঃ गरुयाः खर कीर्न्छः। दिवान्धः गामिनी (रवी वन्त्री एउस मरा प्रिः या।। द्वारमी ह जिबि एउन्र कान-क्षे व बार्छ। युजानाना जाद-

मस बारमाः ज्रान्त्रीयनः ॥ यर्ग यांनी न जवजू नूमान श्री वा वित्न-य उ: । এय विक् खार्यताला मूर्ख ায়ো দেব দানবা: 🛚 হন্তি পাতি 🌱 রীরাণি সৃজস্ত্যন্যানি চাত্মনঃ। যুগে यूर्ण मर्दर्गायः (विमास्त्र शूक्रावा स्वरः ।৷ ন স্থীনবুজ্ঞা বক্তব্যে মনুষ্যোষ কদাচৰ। ইভি বারাহে পরাপর; निर्द्रव नामायग्रायः ॥ 🛊 ॥ तुका विकृ শিবানা মেকত্ব॰ যথা। ততো বুন্ধা भंदीद्र ७८ जिथा ठाक गार्यद्र: । **भुशानहावनाहास्य जिल्ला जिल्ली**-ক্তেণ। ভদ্জুভাগ: সংজাত শত্ र्वकु फज्ज्जः। मुहिकाजु नगः कारः मृद्धः न हम्मूलश्दः ॥ देन ন্ততো বুক্ষকাথে সৃষ্টিশক্তি ন্যুষো-खयर । चय (मवाज्यर जुडेावुकी-ৰূপেণ লোকভূ**ে।। স্থিতিশ**ক্তিণ निका॰ भाषा॰ भुक्छ।।थ।।॰ न।रवाः बय् । माहरण रेवकाव कार्य उद्धान मिकि॰ निका॰ उथा ॥ श्रिठिकर्ख **७**विष्युः त्रक् भाक् भाक् भाक् । नर्वः শক্তি নিযোগেন সদা ভদুপতা মম া অন্তশক্তি তথা কাবে শস্তব্দেস नारवाबर्ट । अष्टकर्छ। खबह्युः न **এर পরমেশর:।। অভ জিবু: শরী**-রেষু ৰ্যমেৰ পুকাশতে। জ্ঞানকপণ ||

পর জ্যোভিরনাদি র্ভগবান্পুভূঃা সৃষ্টি স্থিত্যন্তকরণাদেক এব মহেশ্ব-র:। বুন্ধা বিষ্ণু: শিব শেতি সংজ্ঞা-मान नृषक् नृषक्।। या उष् বিধাতা চ তথাই মিপ न পৃথক্। এবং শরীরং ৰূপক জ্ঞান মুমাক मस्त्रार ॥ इंजि कानिकाभूत्राण ४२ व्यथायः ॥ 🗱 ॥ व्यन्ताहः। खगाजीजः न जगवान् वरानकः नुक्वः भवः। অনন্তভোগশাধী চষ্নাভিকনলাম: ভূৎ।। বিষ্ণুক্ত স চ গোবিনর ঈশ্ব-রক্ত সনাতনঃ ।৷ য স্ত বেদ মহাত্মা-ন সজীবন্মুক্ত উচ্যতে।। ইতি বাম-नभूत्रात ८२ व्यथ्रायः ॥ 🕸॥ (७२) शाबनुत्भाकनः यथा। भूवख उवाठ ৷ ভক্তিণ তস্যাথ সংচিম্ভ্য নাগস্যা-भाषरर्भनः । श्रीजित्रानख्यविकृः শহ্ব চক্র গদাধর:॥ সামিধ্য কল্পা-মাস ভিমিন্ সরসি কেশক। গফ্-**ড**ন্থো জগন্নাথো লোকাথার ত্তপো-थनः ॥ श्रीकृशुंखः गरतमुः ७ ७ ७० गुारः कनामगर। उद्धराप्रारम्-(भयाजा उद्गा भधुनूरनः।। इन-💌 मात्रयामाम गुष्ट् । हाळ १० मा ४ वः । (बाक्यबान नारममुः भारभञ्ज **नदर्गागङः ॥ स्वाह्य (हर्वनाशाय)** क् क् गंसर्वमखनः। गुष्ट् नगमः

বিষ্ণু

क्षादब॰ भागा दिव क्षाः॥ गः॥ (बानि विक्वा म्म्। डे। बाउ। पिवा वन्ः भूमान्। इंडि वामनन्द्रारा ५) व्यव्यायः ॥ क्षा व्यन् भव्य भूकारि र्यथा। जय राष्ट्र। महामञ्जान् वि-काः नर्वार्थमाधकान् ॥ यम् म॰-व्यवगार मस्त्रा खवाद्धाः भावमान्त्र-**जाः ॥ जातः नमः नमः न्**यार नहि দীর্ঘ সমর্বিভৌ। পবনো নায মজো-य॰ পোক্তো বস্বকরঃ পরঃ ॥ 🛊 ॥ षमः भ्हानुरगनः। नाउःक्डाः **कि ज्ञानाउ॰ कर्ण क्षा भ्राम**७-न भागडा रेक्सवाहमन सर्गार खन्यथा भोजभेद्रय । स्वन्यवारेम्। खिनिः भीदा बाजाः भुकानत्त्र करते।। बाज्या स्मोत्ही ह मध्यक्र बान्ताः मृब्रागूर्यः एकः। अकन इड भुकान। भारावनि छरेपकडः १। मः भारेक्रारकन मूर्जानः छछः म-क्षर्यगरिक्तिः। व्यान्। नानाक्ति वर्गाः क्ष्र नाज्यक्र ज्यो कमाराम्यम रिव अविमान्य देव क्षेत्रान्य ॥ এব মাচমন কৃত্বা সাক্ষায়ায়ায়ণো ख्दर। (क्षेत्रवादयञ्च (क्षेत्रव नाह्रा-यग भाषव (भाविनर विकृ भथुमूरन जिविकम वामन श्रीयत्र क्वीतिण পদ্মনাভ দামোদর সম্বর্ণ বাসু- रिव भुगृश्वानिकक भूक्रवाखकाका. क्य नृति राष्ट्राठ बनाईम উल्लाह হরি বিষ্ণবং॥ বাক্যন্ত পুণবাদি কে. भवाय नम हैज्याहि। उथाह। स **ठ**ज्थी नभारिक नामिक विना (१८ जूषी:।।।।। ७७: जामान्यार्ह्याः रि माञ्काङ् कर्प विवाय (कणवकी र्खापिनामः वर्षारः। च्या ॥-वाहि मामः। निवनि नुकाशकः य अवरय नमः। मृत्य गावजीहन्स्र नमः। इपि वर्षन श्री इत्राय (पवजाः रेय नमः ॥ 🕸 ॥ ७७: कत्रा 🛪 नामा। ত্রী অকুষাভ্যা নম ইভ্যাদ। খ্রী क्रयाय नम इंड्याहि । उथाह (गी-छमीरव। अविः गुकाशिक्ष्यां गा-वबी (वर्जा भूनः। अर्खनकी रुनिः र्भाकः श्रीवीद्यन यख्यकः॥ #॥ छा । वानः। छम्। भुमाजन শ उक्षि॰ उश्रह्मावमाउ॰ नार्यदः त्मि कविष मूख्या विश्वभावता ह गृहे° । নানারজ্বোল্লসিড় বিবিধাকর মা-भी उवज्ञः विक्ः वास्त पत्र कमन क्रियारकी • इक्शिविशा # ॥ विव ब्राज्य न्यारम् । रखा। वा क्लिवार कीरिका नमः जनारहे। दर्गान्का नार्ष हम्मान् भूत्रखाविख्यानि मर्भनाथ नर्वत्र नानुवादः। । । नादावनाव

कारिन्धा माना मूर्य । 🕸 मापवाव जुरेडे। नत्मा मक्स्ति । वे शावि न्हाय शुरिष्ठा नया वामयनरव । উ॰ विकार श्रेज। एक कार्न। फे॰ नथू मूम-नाय भारिष्ठा वामकार्ग । स॰ विविकः मार कियारेय एकनामानू है। सः वामनाय प्यारेय वामनामानूष्टे । २ श्वीबनाय (नशाय मक्नगर्छ । ३ क्रवीतिणाय हर्वारेय वामगर्छ । अन्यनाञ्चाय शुक्तारेय ५८% । थे मामानदाय जड्डारिय अश्रदा । **७**॰ वाजूरिवाय लेक्निऽ केष्ट्र 4स्तरण-(को। 'डे॰ मक्रवंगाय मद्रश्रेड) चः (बाम्खन एको। चः नुमूद्भाव नी-ৈত্য মন্তকে। অঃ অনিকল্পায় রভৈত্য मुर्थ। कः ठकिए। खरारेग। थः गरि-त पूर्वारेग । ग॰ नार्कित भुजारेग । ষ পদ্ধিন সভ্যাথৈ। ড শ দ্বনে চ-खारैय मक्क क ब्रम्स मका गुरक यू। छ॰ रिलान वारेना । इन्यूयिनन विलान मिति। कः ण्वित विवयारिय। याः शामित विव्वकारिया कः अस्त्रमान विषारिय वामकत्रम्ल मक्षानुत्वम् । ष्टे मूक्ताय विनम् दिया ठे नन्तकाय **जूनमरारेग । फ**ानिमरान म्रोक्त । ए॰ नवार परेकाः १ नवककित् मम्का म्मनाम्य जन्नाग्रक्षा ७ रत

(व मूरेन्त्र। थ॰ क्काय बुरेन्त्र। मः अ-**छ**ऽ।य ज्रेडऽ। य॰ नाष्ठाव गरेडऽ। न जोताय क्रमारेव वामणावम्ब जक्षानुतक्षु। शः भूताय त्रभारेय एकः পাৰ্শ্বে। ফ॰ জনাৰ্দনায উমাৰৈ বাম-भाष्य। वः जूरबाय क्लिरिना श्रष्ठ । छ॰ विभग्र्वयं द्विवादेव नाष्ट्रो। म॰ दिवश्वीय मूमारेय छम्दत्र । य॰ जुगा-चारन পুৰুষোত্তনাৰ বসুধরাথৈ ছদি । त्रः अनृगाजात विवास भन्नारि मकाः । वः भाः माधात ववाम्। काय शत्रावनारेय कल्पि। व॰ स्मर वाजात वनाय मृत्रादि वामा रन। **ण जर्**राजात वृष्याय मन्नारि श्रापि एकक्षता य मक्हाजान व्याय शुक्छारेय क्रमानि वामकात्र । সং শুক্রাত্মদে হংসায প্রভাবৈ হ্য माप्ति मक्कभारतः। इ॰ भागाजान व-द्राष्ट्राय विश्वारिय क्षापि वामशारि । न कीवाजान विभनाय जामावारिय क्षामु प्रदा । कः काथात्रात नृतिः হায বিদ্যুতাথৈ হৃদাদিমুখে। ইতি न्राज्यः ॥ 🛊 ॥ ७था । । भोजभीय । কেশবাদি রয় ব্যাসা ব্যাসমাত্রেণ দেছিনা•। অচ্যুতত্ত্ব• দদাত্যেব স-जुः मजुः व मःमयः॥ भाज्कार्गः नम्हार्य) (कणवाय हेजि यात्र । की:

र्डि ह नम्मा युक्त विज्ञापि न्यामः নাচরেৎ।। কেশবাৰ ভতঃ কীর্ত্তি कारिन्ना नाजायनाय ह। इन्हान । भन्त সংহিতা ৰচনাছাৰ ক্ৰমঃ। ন তুকে শব কীৰ্ত্তিভা নম ইতি। তথা ভুক্তি मुक्ति भिह्ञा व्यवः न्यातः कर्वव्यः শ্ৰীকাদিক:। যথা। শ্ৰি॰ অংকে-**म**वाय कीरेका नम इंडिंगिर । उथा ह (गोडमीरव। ७व॰ भुविन्यसम्मानः नची वीख भूत्रः मद्रः। मृष्डिः धृष्डिः महानची॰ शुन्गास्ड हतिजाः दुः (बर ॥ # ॥ ७७ छड्नाम भीठे-न्यात्र व्याधिन्यात्र विक्शक्षत्रापिः न्यानान् वर्गा८। उच्न्यानाद्वस পুস্পৌরবভিযা নোক্তা:।।ঞ।। ডভো म्यारायः। उपार काहि विवाकता-ভ যনিশ শত্রু গদা পক্ষ চক্র বিভুত মিন্দিরা বসুমতী সংশোভি পার্শ্বরণ।কোটীরাক্দ হার লওল ধর• পীতাম্বর• কৌস্কভোদীগু• বি-শ্বর শ্বক্সি লস্ৎ শ্রীবৎস চিত্র ख्रा ॥ ॥ ७व॰ धावा मानरेमः मः म्मूड। मह्याभन वर्गाटा उव रेवः ষ্ণব পাক্র গৌভমীবে। ভারুপাক্স বিপুর্মে বিফো রতিপুষ সভ। ত देवव मर्बभावानाः गृथाः महः जुकीः বিত ৷৷ মৃৎপাৰ্ক তথা পোৰু

ৰৰ্ণ বা ৰুগজ্ঞ তথা। **পঞ্চ**াক্ৰ रातः भूकः नानाखन निरयाकारार ॥ 🗱 🔐 रेनरवर्ष्य प्रशास ज् उत्वर । चर्ल বা ভামুপাত্রে বা রৌপ্যে বা পদ্ধৰে हत्तः। जागमकन्नक्तमः। रिवृत्रगुः ব্লাজত কাংশ্যু তামু মৃত্যুৰ মেৰ বা । शानामः क्षिष्ट्रातः शावः रेन्द्रासः कन्नत्वष्तुः ॥ भूत्रण्डत्रगठिमुकायाः। मृवर्ण क्रोकरछ देवेट्डा देखा है। **उडः जामान्य भी केल्बानखद्र॰** दिम् नापि मिकि महिज भीवे मनुष्ट भ् काः कृदा भून क्ष्रादा म्रावन कहिः छ मूर्वावावारनामि शक्षभूत्राक्षित मान नर्वाष्ठः विश्वाव व्यावद्रश भूकाः वर्गा । व्यापानि ठजुरमा १ वृ निक् **४ ७ क्षानाय क्ष्याय नमः हे**छ।-**दिना भूबायर ॥ १३॥ छड: दिभा**त्र यू न्दाहि उन्नः न नमः ता नमः ना॰ नमः द्राः नमः दः नमः गाः नमः य॰ नमः। छाउ। सालय् भूर्वीः दिविक् खेँवाज्राववाय नमः। ^{अद} नक्ष्यंगाय भूमू।नाय व्यविक्षाय । व्यक्तांकि (कानहरस्य छ नारिष्ठ) नमः अव॰ भिरेष अवसरेखा वरेखा। उउ: भवारग्यू भ्दांति ଓ ठकाय नमः **७व॰ भद्भाव भक्षारेय भद्माय (को**र्ड ভाष मूर्याय सम्भाव बनमानारिय।

उद्दरिदार् ७ गक्जाय नमः। एकि-११ ७ मह निष्रयन्त्रः। वेश्य ७ मद् निष्य नमः। निष्ठित्य उष्ट्रेष्ट्राय नमः। অগ্নিকোশে ওঁ বিহ্নাধ নম: ৷ নৈৰ্থতে उँ चार्यारेय नमः। वायुरकार उँ मूर्गीय नमः। देनात ७ (ननाति) নম:। এবং সর্বত্ত। তছ ছিরিন্দু। দীন্ बङ्गानी • म् भू कथिया धूभ नी स्नी मद्भा रेनरवम् १ मन् ११ था। यथा। रेनरवम् १ নাৰীয় দেবভাবৈ মূলেন পাদ্যাৰ্ঘাচ-यनीय रदा क्छि यखन रेनर्व-म्। नः ल्युक्त हक्त्र म्याजित्रकः যমিতি মন্ত্রেণ দোব সমৃহণ সংশো-ষ্য রমিতি দো**ষ সাদ্ভ**াবামকর: নৌধধারাভিপূর্ণ ব মিতি মস্ত্রেণ चम्डीक्डा म्वमञ्ज मध्या काल । ভভো ব মিভি ধেনু মুদুগামৃতী-কৃত্য গদ্ধপ্সাভ্যাণ সংপ্ৰা কৃতা-क्षितिः जन् रुद्रिः भार्थायः। अन् মুখতো মহঃ পুসবেদিতি বিভাব্য काहा हर मून मूहार्या देनदरहा कनर म्हार । खां मून मूहार्यं। अड-रेसरवरा अभूक (एवजारेय नमः। **उत्ता रेन(वर)** रखान्। मूक्ना प নিবেদ্যামি ভবতে জ্যাণেদ হবি र्रात्र इंडि रेनरवर्ग्ड जमर्न्ड जम्बन प्रविचारित अञ्चलन मम्राज्यान उत्रा

भनीजि जन पद्मा वामश्ख ग्रामः मुष्। भूममं प्रक्रिगश्खन भूगा-मि मूमुाः भुम्मर्यर । # । यथाः ওঁ প্ৰাণায় ৰাহেতি কনিষ্ঠানামিকে षक्रिन न्नर्भारार। ७ वनानाय चार्हि उद्धनी मध्यम जङ्गाउन স্পাৰ্শবেৎ ॥ ওঁ ব্যানায স্বাহেতি[।] मधामानाम व्यक्षिन न्थर्भारट ! **७** উদানায স্বাহেতি তর্জ্জনী মধ্য मानामा व्यक्ष्टिन न्यार्भाराट । उ नभागाय चार्ल्ड नर्वाकृषी द्रक्-ষ্ঠেন স্পর্দায়ে । ভতো অকুষ্ঠাভ্যা मनाशिकाशुः म्यूमन् (त्रो नमः भद्रा-य अञ्जाजात अनिक्षाय नितरहा क्ल्यामीज रेनर्वरामु पुर भूमर्गः ম্ল ম্ছাৰ্য্য অমুকদেবতা তপ্যা-भीं छ ठजुर्का मः उन्। व्यम्कारकः **जारेव अञ्चल मम्जानियानम्त्री डि बल हवा जा**हमनीयाहिक ह-म्यार्थाक्षा देवकाव जूरेनत्वम्य मारन সর্ববাষ মেব বিধি:। ততঃ সামা-न्। न्द्रानम्बर्ङ करम् विमर्द्धः नाम् कर्पः ममानारह्य ॥ व्यम्। भू ক্লচরণ বোড়েশলক জগঃ ৷ তথা-চ। विकाब नकः शुक्राशयन्यम् नगाहितः। उद्यमाः मः नद्रनिकः কুভ্ৰামধুরাপুতি:।। ইতি তক্ত

সার:।। মৃত্যক্ত বিষ্পুলা আহি क ख्याको पृष्ठेवता । सः ।। उन्तरं नमः कात्र उरक्नाहिक यथा । जुड 'উবাচ। মুক্তিহেতু মনাদ্য**ত** মজ ম क्ष्य भव्रवः। (या नामः अर्वाताकः **ল্য নমস্যো জাযতে নর:।।** বিষ্ণুমা-मना महिन् विद्धान मर्दशः नुष् াপুণমামি সদা ভক্ত্যা চেত্রসা জ্ म्यालयः ॥ (या २४ खिक्रेन्स्नियस्) পশ্জীশ: শু ভাশ্ভ । ত সর্বা किन विकु नग्त्र भन्नामंत्र ॥ সাধ্যেনাপি নমস্কারপুযুক্ত শ্চক্র-न्तानरय । नःनात्र ज्नवर्गाना मुख्ब-नकत्रा हि मः॥ कृःक मुद्रह्यन पद्राः म्ब्रहाककृष्य लाकाधिकादिभूक्रय भव्राय १८भूषाय । এ:काणि हाब्र स्था मात्र कृष्ठ भूषामः सर्द्रः स्थाक मिन (नाष्यिकुः नमर्थः ॥ भूगम् ष्ट्रविष्ट्रभी नमकारत्रग रवाईरवट । স যা॰ গতি মবাপ্নোতি ন তা॰ কতু मरिक दिनि।। पूर्ण मः माद्रकाष्ट्राद्राक् পার মভিধাবতা । এক: কৃষ্ণনন স্থারো অন্তি তীরস্য দেশক;॥ আ-चीत्ना वा भवात्ना वा जिक्षेन् वा यज छब वा। नत्मानात्रायभारविक्र मानुक-मद्राता ভবেৎ ॥ नाद्रायतिङ मद्दा क्षि वागिष वेस्वर्किनी। उवाशि

নরকে যোরে পতন্তীতি কিমজূত দ **ठजुर्म् थाय् यिह क्षि** हिराकु। ভবে-ষর: কোপি বিশৃষ্চেতা:। সংর্ধ গুণানা মৃষ্টুভক দেশ বৰেল বা দে चवब्रमः विक्षाः ॥ वशकानः। सुनुबः गर्ब खदरश मधुम्दन । मिक्सा. विवर्ज्य न (गाविक् एनक्यार ॥ व्यवस्थानि यमान्य कीर्खिए गई-भार्काः । भूगान् विम्हार् महा नि श्वरेख म् रेन द्वित ॥ नक्षेक्रेदि ত বেন হরি রিভ্যক্ষরদ্ব। বন্ধঃ পরিকর স্তেন মোক্ষায়,গমনংপুতি : ৷৷ মপ্রেপি নামঘ্তি রাদিপুংসঃ ক্ষৰণ করেত্যক্ষৰপাপরাশিণ পু-ভ্যক্ষত: বিং পুন রত্ত পুংসাং সংকী र्व्हिष्ठ नान्न बनार्षनम् ॥ नमः क्-काह्रजानस बामूरमरवज्रीविजः। বৈ ভাব ভাঝিত বিশুন তে যনপুরু स्युः॥ भनायानः दनः दश्च उत्सा ভাস্করোদযঃ। কারি: কলে স্থাই जा नाममःकीर्खनः श्रातः ॥ व नाकः भूक्षेणमनः भून द्वायां छ नक्ष्यः। इ ৰূপো বাসুদেবেতি মুক্তিবী**ল** মনুন্ত · य॰।। राह्र अ। पूत्र मधाम ज्या म् हिंड চেত্রা । পাথেশ পুরুরীকাক। नाममः कीर्द्धनाम् छ।। नम इत्छ। (या न्याड फ्क: मुक्यान्ड: । ज-

ল্যাক্ষাে ভবেলাক: খুপাক্দ্যা· शिल्मीनक।। जःजात जर्भरक्षेत्र। नि-श्चित्रहेक खंबज्ञः। क्षाठि रेक्यनः মুন্ত্রণ জপ্তা মুক্তো ভবেষর: 11 খ্যা-यन् कृष्ठ यक्षन् योक (ज्ञायाः वा नात रहेयन्। यहा श्रां छ उतारशाखि करनो ज को र्बंड (कणवः ॥ न्वः ७९ কণ্ঠ ভালুক মথ বাপ্যপৱিস্থিক।। द्रागाषुक्रा न मा बिच्छ। या न विक হরে শুণান্।। সককেতেণ কিং ভ্সঃ কাশ্যা বা শান্তিকেন বা। জিন্তাগ্রে ৰভতে যুস্য হয়ি রিভ্যক্ষরঘ্ণ।। বিজ্ঞাত দুষ্ঠ সহসু সমাবৃতোপি ख्यः श्वरुष्ठ भित्र मुक्ति मञी अभानः । ৰপ্নান্তরেপি কিল যোনিভয় ন भाषाज्ञात्रायम स्डिक्थाभद्रामा नुष्राः ॥ इक्तामि शाक्षः नाम्रायन-छक्ति नमकात्र नाम २०२ व्यव्यायः ॥ 🛊 ॥ সূত উবাচ। অসার ভূতে সং गात्र मात्रामकः विनिर्धिः । यः नात्रात्मव (लाक्न) नात्रमात्राय्न॰ र्वाः ॥ एर्। ८ शुक्व मूल्कन यः भू ञ्चाग्रम वर वा। यहिंउ न्याउता চিবতেন সর্ব্ব চরাঃরং ৷ মাতৃবৎপা রিরক্ষন্ত সৃষ্টি সংহার কারক। যো ৰ প্ৰয়তে বিফু ও বিদ্যাদ্ৰ ক্ষা छक्।। य**ाः भु**वृद्धि क्ञानाः (यन

पर्द भिर॰ **७७**॰। स्कर्मना ७२ छ। ही निश्वि॰ विनम् छि मानवाः ॥ नद्रांक भ-চ্যতে যস্ত যমেন পরিভাষিতঃ। কি॰ ख्या नाहिंछा (प्रव: (क्ष्मव: किनि-नामनः ॥ छेररकनाभ्य जारवन पुर्वहाः गामहितः भुजः। या नगाजि सकः वाक म प्याकि नहाहिं ।। न उर করোতি সা মাডা ন পিডা নাপি वाक्षवाः । यट कात्राजि श्रवीत्वणः जिन्द्र मुख्याहिंजः ॥ वर्गामुकाहाद्र-ষভা পুৰুষেণ পর: পুমান্। বিষ্ণুরা-রাধ্যতে পছা নান্যন্ততোষকারকঃ৷৷ म मारेन विविध्य में रेख नंशुरे म नामू-লেপনৈ: ৷ ভোষ মেতি মহাত্মাসৌ यथा ভক্তा जनार्षनः ॥ সম্পদৈশ্বর্য্য মাহান্তঃ জ্ঞান সম্ভতি কর্মাণা । বিমুক্তে শৈকতালভ্য মূল মারীখন ছরে:।। পুণামৈ স্তব্যতে বিফুরেড-रेव भन्नमः थनः। जन्यथा वा विष्यः বেণ ক ন্ত মহিতু মহতি ॥ ইভি गाक्रा भूकास्त्रज्ञिः २०० व्यथायः ।। 🛊 ।। স্ভ উবাচ। আলোক্য বহু শাক্রাণি বিচার্য্য চ পুন: পুন: । इम्राकः भूनिञ्चमः (ब्राया नाद्रायनः महा ॥ कि: उम्र हारेन: कि: जीर्यः কি তপোভি: কিমধুরৈ: যো নিত্য भागरा एक नाजायन नननाथीः ॥

यहिडीर्थ महमानि यहिडीर्थ मडानि চ। नात्रायम भुगायमा कलाः नार्शेष (बाउमीः ॥ भावनिः जान। त्मवानि ख्न:कर्गापिकानि देव । यानि (**उ**षा मान्याभाः कृषानुम्बन्धः भन्नः ॥ क्छ नामनुजाना वि यमा नू मः পুৰাষতে। পুাৰশিক ভ তলৈ।কং रुतिमामद्रमा भद्रः ॥ मूरुर्व मि (बा ब्रारबंबाबायन मञ्जूिकः । সোপি ভদ্নতি মাপ্নোতি কিং পুন खर भन्नावनः ॥ जागुर बन्न मृत्रुतक्ष्युः (यान उन्। ह (यानिनः। या काहि-ন্মনসো বৃক্তিঃ সা ভবত্যচুগ্ৰাশু वार ॥ উভिध्विभागविष्णः वृत्वन् वि विवृत्रः खथा। जूक्षन् स्राः कागुह शाविनरः भाषवः अस्त्रद्याः स्व स्वः क र्यगुडिवडः स्थाहितः बनार्यतः । **এবা শাক্তানু সারোক্তিঃ কিম**নৈর বঁছা क्वाविरेजः ॥ वृत्रन त्यव भरत्रा वर्ष्या ধ্যান মেৰ পর তপঃ। ধ্যান মেব প तः (भोठः उथार श्रानशात्रा छातर ॥ নান্তি ৰিকোঃ পরু (ধ্যুয়ণ তপো-नानमनाद शद्रः। उमाद भुवामः मञ्जाक वामुक्तिमा विश्वन ॥ क मृर्व छ अर भार्ष अन्या यम्याः इत्र । उन्नार्थिङ शास्त्रा मना-जि मधुमूरनः ॥ भुमारा ८ वर्षजाः

कर्ण भुष्ठारवं जाधात्रयु रू । यात्रभाः (एव उद्यास्था: मःभूर्गः न्याहिक भुजिः ॥ व्यात्मन नपृषे नासि । थन· भाभकर्यागः । व्यागावितः (रुज्नाः पार्कारगार भावकः॥ विनिञ्जनमाधिक मुक्ति भरेजव दन्न-নি। পাঙ্গোভি যোগী যোগাগ্নিদম कर्म्यारा रिवार ॥ यथान्न क्ष्र निशः कष्मः पर्वि गानिहाः। उश **ठिखिं इंडिंग विक्**र (वीशिना े नर्ह किन्दिन ॥ यशामिनाइन कनक म भारतायः भुकायाः । मः निष्ठे क जूष्ट्रायन सनुवर्गानाः ख्या सनः॥ गः কাস্নান সহসেষু পুষরস্থান কোটি: मु। यट भाभः विवयः याजि म्। व म/जि उषात्रो ॥ शुगगायाम मही पुष स्ट भाभः नम्प्रिं धुदः। मनमाः ब्बन छर भाभः हाद्र श्रानार गुन माजिता **अक्सिमश**रिकाष्ट मूर् र्खि थान विक्रिंख। स्मूर्डि मंबिड-भित युक्त भाकन्तिकः ज्**न**ा। कि পুভাবো দুষ্টোক্তিঃ পাষ্ডানা ড প্ৰেক্ষঃ। ৰ ক্ষেত্ৰন্মৰ ভস্য যস্য (छङ्गि क्या वः ॥ मा छिबि उपर्शः द्राज म (यागः म ह हम्बुभाः। वा उरहर विथा। उ॰ यद शुन्मर्या उ हिं ॥ मा स्वि उपर्हितः मानाक वर्ष

भ्वजा। यमुर्ज करा वालि वामु (मरवा नः विख्राच ॥ कनिः कृड-যুগ ভগঃ কলি অসঃ ক্তে যাগ। ছবি (य यम्) (या विस्मृत। यम्) (ठ अमि ना-ठ्। उ:,।। यन।रगुक्त खंषा प्रहे नहक डिश्रंडा**नि** वोः। (गःबिल्सं नियंड॰ हिंड क्डक्ड । मरेनव मः ॥ वामू (१(व मुक्त यम) क्रमाङ्गाईन विवृ । ७र्ज) इद्रार्थ। देशरवय (मरवन्युद्धाः रिक कन ।। अन्छ। का ह गाईह মতপু: চ মছৰপ:। ছিন্তি বৈঞ वी॰ भाषा॰ किनवार्निङ भावनः ॥ क्रमाः व्यवं छ क्ष्यम् प्रयाः म्र्थिष् मानवाः। मुम्क वर्षाणीः वस् रागः विक्त क्रविक्टि ॥ भुआय्बाकाः यण (ह्व जानाहियु ह कर्म्य । भा যশ্চিত্ত হি সর্বস্য দুফ্ চস্যেতি विभु, उ॰ ॥ का छ (खबा॰ क्य (खबा॰ षठ (उवाः भवा छवः। (यव। भिन्ही-वक्रमादा क्रयका जनार्यनः ॥ कीं विक निमानाक इत्यो मन्त्राख চেত্ৰসাণ। উজু মেব গভি॰ মনে। কিং भून र्ख्यानिमा॰ मृगा॰ ॥ वाजुरमव छ-कहाना नाजिमी जा न घर्मना । नत्र-ক্ষার শমনী সা কিমর্থণ ন সেব্যতে ॥ न ह पुर्वाममः जाला वज्रकालि স্চাপতে:। হন্ত সমর্থে। হি সংখ

इत्गाञ मधुम्राम । । यहजा विष्ठे (अम्ब्रह्म) (ब्रह्म) कर्णकर्त्र अः । ना-नवाजि यहा विश्वा जिल्लास्मिरेन्। ह ধারণাণ।। ধ্যেষঃ সদা সবিভূমপ্রস-यर्।वडी वादायनः अदिवासने मितिष्टेः। कियुवरान् कनक मुख्ये-बाम् कित्रीठी हात्री हित्रधायवनु-ধ্তিলয় চকঃ।। 🛊 ।। কি খত্র বহু-বোক্তেন যুখ্মাক মধুনা ছব্নি । মার্ল-, ভাহনিশ বিষ্ মশের দুরিতাপ-क् ॥ म क् श्वात्म जन्म शिव्य মিহ্ বিদ্যুক্ত। খলাকেম্বলি ভুঞ্জা-ন: পাপ নৈবাত্র লিপ্যতে ৷৷ যদা-विख नगामक बाउ विवय (गार्ट-রে। यদি নারায়ণে প্যেব কো न मूह्य वक्षनार ॥ भुकाखिक ভেদ বং সক্তামাত্র মণোচরণ ব वहना भाजान (वर्) उज्जान वृक्ष-ज'िक्ड ७ ॥ खबाँनया थात्रभया (या-**शिता यांडि (म लग । ज जांद्र** कर्याण (भारं याहि निशीं जला) षिषा:॥ ইতি পাক্তে ধ্যান স্তৃতিঃ २०३ व्यक्तायः ॥ 🕸 ॥ उम्र माहा-আ্যু বথা। সূত উবাচ। বিফুচিত্তো खरवर्फक ख बर्किक नरम् गरा। ভ্রেবৈষ্যতি মুক্ত্রৈ মাত্মান হরি-**७८ नद्रः ॥ ७ म् । १ वव भादिनहः**

ना कथा वब क्लबः। उट कर्स বত্তপথাৰ কিন্তবিও বহুভাবিতৈ: গ **লা বিহু। বা হবি : ভৌ**তি ভটিত্ত' वद्धर्शिङः। छात्व (कर्तनो प्रा-क्यो को उद्भूष्टकाने कार्यो ॥ भुगाम भीषमा (भन्न:कन विष् छ-**वर्हनः भागिकवाः भिरदोकनः। यनः** ক্ষা তদ্ভণ কর্ম চিন্তন বচন্ত গেন विनर् स्व इवः कनः ॥ स्वक् मन्त्र बार्खाणि द्राणिः भागमा कर्याः। रक्षाव रेवर। मानार। पूर्वति विव नन्। विश्विक्ष स्वाउ कर्स भूक्यः माध्माष् वा । मर्बः नाहाय-ণে ন্যস্য অর্থন্সি ন বিপ্যতে॥ ভ্-ণাদি চত্রাস্যান্ত ভূতগুমান চত্ विषः। हवाहबः अगर नर्बः नुमुखः भावगा ७व ॥ यश्वित्राख्यमा व या-তি নৱক ৰৰ্গোপি যচিন্তনে বিদ্নো খন নিবেশিতাত্মমনসো ব্যক্ষোপি (बारकान्नकः। मूकिः (५७ति नः हिरा बडियाः भूभाः महाख्य वायः किष्मिनः मूबिछः भुवाछि वि व्ययः खबाह्राउ कीर्जिख।। भह्छ। পুণ্য পণ্যেন যেন ক্রীভো হুখিলং थुवं । जम्र विकाः नुमारम इह किंट भुवृष्ठां ॥ अप्निकार्याः स नः त्रानः विका र्यानक भ्वनः।

गढ मुश्याग्रसः शातः चत्रं रव **च्विं (७ ॥ ब्राष्ट्रेन्ध्र नवा॰ बाबा** निउत्तो राष्ट्रका छ। धर्मक नर्न মৰ্ত্যাৰাণ সৰ্বস্য শঙ্কণ ক্ষি: ম ८र वमकि सम्मद्द्यानि वाजुलहर ज्ञ नाजनः।'न (उट्डा विष्राः जीर्य मिविकः मूनिमखम् ।। जनवंत्रप्रः भूः बाड सर्वे। ८ नाव्याव विव् रु । छ मज्दिमा शाविष्यः ब्रानः निष् भवन्तिष्ठः ॥ भूपुः वा छशवष्ठकः निवादः चन्छः उथा। विक्रवादिः नमः भवा न याजि मत्रकः मतः॥ च्यास्त्रा यथा खोडि धनवडः धनः ह्या। ७वा तृष्टिक कर्खात्र का न मूर्टि वज्जनार ॥ यथा काउवरना विक्र पंरवापू मनीक्षनः। उथाः विष: भ्राञा विकृ र्यानिना नर्व किन्विर ॥ भूभीक्षः भईडः यदमः भ्यस्य म्गाप्यः। ७६८ भागापि नर्दाणि (याणाक्रानद्वरः वद्वः ॥ যস্য যাবাংশ্চ বিশ্বাস স্তস্য সিন্ধি শ্চ তাৰতী। এতাৰানিতি ক্কন্য পুভাব: পরিমীযতে॥ বিবেশাদণি (गाविन्दः समस्यावाषायः मद्रम्। मिम्भारमा गउ खड़ः किः शुन छटः भवायनः ॥ जनः सरवा मृनि वेम्राः . এव तुका वृक्षणिः । इंछ्याच्या

कागर जानमानमाईनरेज इति ।। इंडि गाइएं विक्षाहाचाः २०१ . ज्यायः ॥ 🗢 ॥ जम् भारमञ् পাৰাদি কৃত্য। ছদি ৰূপণ মুখে নাম रेन(बर) गृरात राजः। शाराएककः निर्यानाः मस्टर्क यमात्रा १ हृ । ।। रैन(वर) यश् ज्जनी विभिन्नः विष्नः चडः श्रामकनः शित्रह । (या २ ना ভি নিভ্যু প্রভো মুরারেঃ প্রাপ্নো-তি সুপুেমযুতা স ভক্তি।। হত্যা इहि वम दियु नक् जून नी (खर्क ना-रहाहकः रेनरबहुः वक्ष्महुशान पूत्रिः ্ত ওর্হণা সহমণ ৷৷ ইতি পামো-खत्रथा७ >• व्यव्यायः।। 🛊।। खन्र नीः म्ना॰ वृष्टभखरग यथा। পृथिवृत्रवाह । জাতেষু শেষে। ভবসি তমাছেষো श्रिकोर्खिङः। वाजानादशिख यु क्ष्यं तृष्मनुष् वरूणानिष् ॥ यत्राम ह्यत्त इत्नाह्यां की खंगत १-ह्। इकान भिन्तुः कपूक बमः वक्ष (भव ह ॥ निगृश इद्गरम य-স্বান্তব্যাদ্ধরি রিহেচ্চ্যে । সমান যদি ভূতানি বপুষা যশসা প্রিৰা ।। हिद्रिण वनुषः (एव जमाहानि नना-**७नः । यन्यावृन्धाप्रया (एवा मृ**नय (फागुरजबमः॥ न रज १६० वृधिगेह-कि (उनानस स्मृह्याम्) न कीयान न

করনে কন্নকোটি শভৈ রলি ॥ ভ-या व सक्त दाह विक् विं जुनी की-रम। विष्ठेत्रक द्वा नर्दः कगर छा-वत्र बक्षाः।। कगिष्ठश्चनाद्विव विकु-(र्दछि भुकीर्खारम । विश्वेषा छिश्रम निज्य देवालाक्य महन्नाहन् ॥ अ-यक गक्षर्व नद्रः नमश्रु छ नमगः। व्याभ्य पास्य विषय देवलाक्रा॰ সচরাচরণ ৷৷ ভমাদিফু রিভি প্রোক্তঃ बर्गिय बर्ग्युवा। नाद्रा हेजुहहरड षानः सरिष्ठि उत्रश्चिः ॥ घ-यन उत्र ७९ পूर्व (उन नात्रावनः म् उः। यूरग यूरा भुग्डाः नाः विरका বিন্দসি ভত্ত্বত:॥ গোধিন্দেভি ভ-তো নামা পোচ্যমে শবিভি ভথা। হ্যীকাণীন্দ্রিযাণ্যাছ ন্তন্তু জ্ঞান বি-भात्रमाः ॥ मेभिरच् वर्खस्य (ख्याः क्वीरकण खर्लाग्राम। यमि प्रि ভূতানি বুদ্ধাণীনি যুগক্ষয়ে ৷৷ ত্বংবা वन्नि प्रवृत् वानूष्य उपूर्णन। महर्यविम ज्ञानि कान्न कान्न श्नः भूनः॥ ७७: महर्याः (भाक खब् জ্ঞানবিশারদৈ:। পুতৃ/হেন ন তিষ্ঠ-ष्ठि সদেবাসুর রাক্ষসা: ॥ পুতিদুর: मर्बद्यांगा॰ भूगून् (खन काठारण । निद्धारक्षा विष्ठां वयाम उ ज्रवि कणनः ॥ श्रीनिक्ष खडः (शुक्तः

म्बदाव बहेरिकिः। इकि मार-(मा २१२ 'ज्यागः ।। द ।। विकृ কোঁক গমৰ কারণ যথা। কর্ম रंजागी नकामः न्यामिद्यासा निः ৰুপদুব:। স বাতি দেহ ত্যক্ত। চ **श**ह॰ विस्था निदामय॰ ॥ शुनद्राग-ম্ব- বান্তি ভেষা• বিশ্বামিণা• স তি। বে সেবন্তে চ বিভুক্ক কৃষ্ণমা-ত্মান মেৰ চ।। গোলোক তে নরা याञ्चि दिवास्त्रण विद्यात्रिगः। य हः নারাবণ ভব্তা সেবন্তেচ চত্তু **अः।।रेवस्रकेः याखि एक गर्द्धा पिन्।** क्रण विषात्रिगः। जकात्रिता विक বাক্চ গড়া বৈজ্ঞ মেবচ।। ভারত भूनद्रावाडि (उदा॰ क्या विकारियू । कार्ल्न (इ ह निकामा जवस्त्र)व ক্ষেণ্ড। ভ কিঞ্চ নিৰ্মাণাণ বৃদ্ধি। তেভ্যো দাস্যতি নিশ্চিত। ইব্লি-फकाफ निदामाः स्थमं ब्रह्शि ৰিকাট।। তেলি যান্তি হরে লোক। कर्मार्छ क वनामरहा।। इंडि वृक्ष বৈবর্ত্তে পুকৃতিখণ্ডে ২৪ অখ্যায়:॥ विक्षाक ही जुवनावकवन रथा। छ्राया दावनी भूगा विकृ थाका मार्जाः। এकारम्हरू भृग्यः **नद्रः भार्याख्या न**पः । हेडि डिब्रामिङ्कुः ॥

विक्रां ने भू विक्रां र जुलि । उर् गर्यायः । विक्रां र जुलि । व वस्त्र भूषेः ८ कनवातः १ वृह्द-कन्मः ५ वीर्षणकः १ इति श्वाः ५ । स्त्र ५ वार्षणकः १ इति श्वाः ५ । स्त्र ५ वार्षणकः १ व । स्त्र प्राप्त । शिख वार्षणकः १ व । स्त्र प्राप्त । त्र विक्रां कि विक्रां कि विक्रां । विक्रां । विक्रां विक्रां । विक्रां विक्रां ।

िकृकाषा की व्यवताविजाहें डेंडमद्रः।। व्यवदाविज्ञा व्यवदाविज्ञा क्र्यकार्जिः। उप्यवदाविज्ञा व्यवदाविज्ञा । व्यवद्या । व्यवद्य । व्यवद्या । व्यवद्य । व्यव

विक्ष्षक्षः भुः वाष्ट्रभागवम् निः। वशा विक्ष्षक्ष स्र को खिन्र कान-क्या पुर्गित्याक्ष्यः। वाष्ट्रभाग-यो सम्दर्गाः भाक्ष्यः बाभनीः विक्षः विकाखस्ययः॥ विक्ष् कम्हः। ইতি द्राव्यविष्यः॥

विक्थन के जा हान का बाक । इंडि ब्राम्न विक्था ।

विक् गृष्ट की विक् मनिवन । छत्र

भूतः। ইতি ছেমচन्द्रः। विकृगृह-कत्र कल रथा। चा ४३ का नवायु-क्र यः वर्ष्यादिकवः गृरः । न उत्रे ফল সম্পত্তি ব্জু• শক্যেত কেন চিৎ ৷৷ ইতি হরি ভক্তিবিলাসে ১৯ विनामः॥ रेथस (प्वान्य विष्णाः णुक मास्मय° क् छ । कात्र (व स्मा यः वानि मृत् छम्। कनः मृत् ॥ ष्यक्रन्। स्वार्यन यञ्चा य**ञ्च** হাফল । পুথেপ্লাভি ভৎফল । বি क्षा र्यः काद्रंयि मन्द्रिः ॥ ज्ला-না শত মাগামি সমতীত তথা শত•। কার্যেন্ডগবদ্ধান ন্যত্যচ্য ভলে।কভা॰॥ সপ্তরম কৃত॰ পাপ॰ चन्नः वा यनि वा वल् । विका जानग বিন্যাস প্রারম্ভাদেব নশ্যতি 🔢 मश्राक्षाक्षाया विक्ष यं खन्। इन्या গৃহ•। পৃতিষ্ঠা• সমবাপ্নোতি স नद्रः माश्रःकोकिकी ।। भूणस्राहरू ভূভাগে পুশন্ত ভবন হয়ে। কা इराडा खिलान् लाकान् न नदः भू जिनम्राज्य ॥ इंडेकानाक विन्यासा যাবন্বর্যাণি ভিষ্ঠতি। তাবন্বর্য সহ-मुनि उदक्षं पिवि मर्ग्छउः॥ विकीर्या **द्रांश क्कना गनित्रः** भु गुकादिनः । नद्रम् । क्य गायाजि शाशः हम् **म**ञाष्ट्रवः॥ (य ध्रायः

डि मना व्खा कित्रयाभि शत ग्-रः। তেষা विनीय छ भाभः भूर्व-कच्चाणां छवं।। (य १न्यापि छ কৃষ্ণ স্য ক্রিয়মাণ হরে গৃহি। তে-शि भाभविनियुका देवकव । लाक माश्रयः ॥ कनिष्ठः मध्यमः (मुष्ठः कात्रविद्या इत्त्र शृं रू । यर्शक देव-ফব লোক নোকক লভতে ক্ৰ-मार ॥ **म**मञीजः ভবिষ্যঞ **स**ना-.না মযুত্ত নর:। বিফলোক নয-छ। भू कात्रविद्धा इरत ग्रंह । पू-ফ্লাপ্য ৰং ফল বিপা বাজিমে-यामिछि मं रिश्वः । भागाउँ छ८ जूर्थरेनव निर्देभा खरन श्राहः ॥ যে হতাভিমুখা: শ্রা গো বি-शार्थं द्रशाकित । म उर कल म-বাপ্রোতি কার্যাত্বা হরে গৃহি ॥ পারেষ্ট রচিত্ত॰ রম্যু॰ পঞ্চপ্রাসাদ সংযুক্ত । কার্যিত্বা হরে ধাম ধূত-भाभा वुष्किष्दि ॥ नक्तिगर्छ-সহসূেণ শভেমার্জেন বা হরে: 1 তুল্য ফল সমাখ্যাত তদীশ্বর দরি দুযো: ॥ পতিত পত্মানস্ক उषाक्ष्मिञ्जिः उषा । সমুজ্ज हरत थाम विखन कन माशु या ।। इंडि विक्स नूबार देवस्य कियासाः (ग यमानूमानन नामाधायः॥

विष्कृतकः न्नी श्रुष्ट्याभागतकः विष्णृतकः न्ना । यथा । विकृतकः कात विश्वानः । छवः कार्वाः निर्माण्या । छवः कार्वाः । ज्ञुष्ट्यां । ज्ञुष्यां । ज्ञुष्ट्यां । ज्ञुष्ट्यां । ज्ञुष्यां । ज्ञुष्या

विकृरेजन क्री अधिनीसमातक्छ **नक्टें जन दिल्लायः। यथा। मानीयः** विकुरे उनक बरे बंदि। विविधि उ।। ইতি বুন্ধবৈবৰ্ভে গণপত্তিথণ্ডে ১০ व्यस्तायः ॥ 🕸 ॥ व्यथ सन्नविकृरेज-**लः। भानभगी भृ**भिभगी वन। गात्रक्ठ ७ नाः। अत्र ७ त्र ५ त्-वानि वृश्लाः भूजिकना ह ॥ শভাৰরী সহচর॰ পচেদেতৈঃ প बाब्रिडः। रेउन गुरु भाषा पदा गव्यः वाजः ठञ्छंनः ॥ व्यम् टेड-नम् भक्नाम् वीर्यामकः भवः। বাতাৰ্জা নৱ নাগাশ্চ পীড়া দৃঢ় ত নুৰ্চঃ॥ হ্ৎ পাৰ্খ শ্লে বাভাসে গলগণ্ডে হর্দিতে ক্ষয়ে শর্করাশ্ম-্রি পাণ্ডুত্ব কামলার্ছাবভেদকে॥ कीरानिषुरा श्वाव्यव्यक्ति वदा वर्क-রিতে হিত । জীণা মশতরীণাঞ্চ গৰ্ভ্জন্তিকর• পর• ৷৷ এওদঙ্গৰ-

त॰ रेडन॰ विकास **প**রिकीर्ভिड•॥ **७** ७ एवः भावक्र ७ ७ वः। वृह्रजा ব্হতী কণ্টকাষ্যোঃ। প্তিকো নাটা कत्रक्षः । महत्रत्रा विष्टे । अब काषास्त्रकावाट क्रीतमा हर्जुली জল• কন্দিদ্দে।তি। স্বরসক্ষীর মা-क्रेनाः भारका गर्जितजः कृष्टि। জল চতুৰ্গণ তত্ৰ ৰীৰ্য্যাপ্ন্ৰাৰ্থ মা-রপেৎ।। ইতি পরিভাষা বলাৎ।। কুচিদিভি পাঠাৎ ক্বাথান্তর রহিতে (करणकी द्राप्ति महिल रेजना दिशा-কে জ্ঞাতব্য ন তু সর্বত্র ।৷ এলাচ-ন্দন অন্ধ্যাওক মুরা কল্লোল মাণ্গী मही। श्रीवामभूमगृष्ट्रिशर्गममञ्ट कोगीशुः जामीत्रकः॥ कस्त्रि नथ श् जि रेमन जनगुरस्मधी नवकारिकः । शक्त मुव्र भिष्टः श्रुरम्य मश्चितः 🗐 विकृरेजनारियु ॥ 🕬। अथ वृष्ट्यिः रि**डन**ा क्र**नव्य भन्धगन्ना की**वकर्य छः (को भरो। कारकाली क्री ब्रकारकाली कीवडी मधः डिका ॥ मध्विका (६व-माक भग्नकाष्ट्रक रेमस्वर । भा भी रिना चुठः स्रष्ठः त्रक्रहम्सन रेमनकः ॥ मिश्रिष्ठा म्मनाजिम्ह स्यउहम्पन बक्रूम । अभी बन्तू क (था हिण्ड भू ঘ্টিকঞ্চ নথী তথা।। এতেষাং গলি कि ভीरिंग रिडनम्यानि छथाएकः।

भाउति विद्युरे जनवतः (भूक्षः निम्ने । विद्युरे जनवतः (भूकः निर्वा । विद्युरे जनवतः (भूकः निर्वा । विद्युरे जनवतः (भूकः निर्वा । विद्युरे । केष्वं वार्ष्ठ स्था । विद्युरे । विद

विकृतिवजः) जि विकृषिष्ठाज्यन विकृतिवजः) जाकः । यथा। वाजाः भकानः मर्बः कथिजः मर्ब रिष्यः जः। गृश्कः मर्ब रिष्यः विकृतिवजः । वाजाः ।। जिल्लाख्याः ॥ जिल्लाख्यः विकृतिवजः । वि

विक्ष्रेनवज्रा जी अकामणीजिशिः
।। बामणीजिशिः। यथा। अकामणी
बामणी करणाका जीवज्ञणानिः
। जरगामणी व्यक्षणा जिल्ला जाविक्षणा विकासणी व्यक्षणा ज्ञानिक्षणा विकासणी व्यक्षणा विकासणी ज्ञानिक्षणा विकासणी ज्ञानिक्षणा विकासणी ज्ञानिक्षणा विकासणी ज्ञानिक्षणा विकासणी विकासणी ज्ञानिक्षणा विकासणी विकास

म्। पूछरया (प्यंक्डा इति:। इंडि डिथ्डाविडदुः॥

विक्ष्याः भू भाजविष्मयः। रथा । वुक्काङ्गिकात्थ ভविष्ठभूद्राणः। **ज्रष्टाम भूदागानि दायम् ठिद्र-**७ ७ थ। विक्वमाहि भाजानि निवधमाण ভाরত। कार्काक भ-ঞ্মো (বদো বন্নহাভারত মৃত। भोताण धर्मा ब्राह्ममु मानवाका নহীপতে॥ জযেতি নাম এতেয়া॰ **পु**रमञ्ज भनीविगः। स्वयं अरनन म॰. नात भिठि वर उत्रम्गुष्टः। ইতি ভিষ্যাদিভজু ৷৷ঞ্চা বিদ্যাবিশেষঃ । यथा। अवान ब्रध्ना (हम्मु द्वः विक्रु-धर्माथा विराया। नदीन मञ्न वि নির্জিত্য ভাঞ্চ বক্ষ্যে মহেশ্বর ॥ भारत्या जीनुत्ना करबी करत्र क्रम् ५-থোরসি। মৃথে শিরস্যানুপ্রাদো-क्षात्राप्ति विनिर्धित्य ॥ उन्ता নারাষণাথেতি বিপর্য্য মথাপি বা । क्रन्यामः खंडः वर्या ए दान्या-क्का विष्णा ॥ भूगवाषि वकात्राञ्च मक्नाक्ष्मभर्मम्। नात्र क्रम्य उ কার॰ নকার॰ মম মূর্ছনি।। মো-कात्रस अवा र्यास्। मिथा विवासि मूर्च ७: । १७ विकाद नम इंडि इस॰ मञ्जम्हारद्र ।। जाजानः नहमः भारराह्य यहें निकि व युं छ। मम व्रकाः उउः क्यंशाय र मार्ग् वि क লে বতু।। ত্রিবিক্রম তথাকাশে ছ त्म त्र**क्**जू वामनः। व्यवेवऽ।॰ नद्रः मि॰इस्र द्वारम। द्रक्षञ् भईरङ ॥ ज्यो दक् वादाहा इरमा ना द्वाराण १वज्। कर्मनकाह का ম্পিল্যদন্তো যোগাত্ত রক্ষত্ ॥ **ए**यगीता (एवजाया: समादा) म-कत्रधुबार । नात्रामान्। हिनार नाः वा८ कृःर्या रेव रेनशंखः नमा ॥ খন্তরি রগখ্যাচ্ নাগঃ কোখব-**मा८ किंग । वद्धां नाकावनः** कानाबतात्मा व्हानाह ब्रक्कजु ॥ वृषः भाषक मःवाजाद कन्ने व व्याट करनः ममः। भागात्रव्यः दित्व विष्युः भा अ नात्रायाना १वज् ॥ मध्रा हानबाद्ध ह जाय॰ ब्र क्क मायवः। ऋषीरकणः भुरतार्य २वराट भुज्य १वराक्कनार्यनः ॥ প্রিথরো ২ব্যাদর্জরাত্তে পদ্মনা-ভো নিশান্তকে। চক্ৰ কৌমোদকী वागाः इड मञ्च त्राक्त्रान् ॥ भश्रममण भज् छेतः भारका दि गः क्ड ख्या। वृद्धान्तिय मनः नागान् भा**ड भावर** ख्रगाः ॥ (भरिरः नर्दि यू मानमः नमा नर्दव नाह

ना । विभिक्त भिक्त ह जमा नद-नि रूष दक्त । बर्ड काद्यमान-एक य प भागा कि कक्त्या। म देशी मा बिभागा क द्वागामास्का भिव वुक्त ॥ देखि गाक्र ५०० व्यथायः॥

विक्षांखन हो मंहिजावित्मः वः। তত্ৰ পুশু কৰ্ত্তা জনমে্জযসূতঃ। वकाद्रः (भोनकारि श्ववयः । उत्र ১০০ বৃত্তান্তা ন্তদ্পুছে দুষ্ঠব্যা:॥ विक्शक्षत्र क्री विक्कवहविद्या । यथा । नुवक्तामाध्ना (प्रेटेषः कद॰ भक्षत्र॰ मुख्या नरमा नम् ख (गाविन्त ठक गृश् मूनमंन।। नाहा। तक्य मा वित्या दा मरः भावन गउ:। गरा को याहकी পৃষ্ পদ্মনাভাষিতদুরতে ॥ যা-म्या द्रक्ष मा विका पा मर **जद्रगः गडः। एक्या**राष (मोनन्द्र) नग एड भुकरवासम् ॥ भुजीह्याः त्रक मा॰ विका खबड नद्रगान **७॰। शाक्षवन्। ७०१ म**ञ्जूः भाक् का भीत भक्ष.।। ने भंग यक मा. विका चार्यगाः यङ्ग्कत्र । वर्ष म्यान उ॰ गृश थड़ा हम्मुनम उषा ॥ रेन्थ ड्या॰ माक ब्रक्स पिर्य म्-उं न्रकणितन्। रेवमयश्ची पुग्य

ए जीवरम कर्श्च्या ॥ वायवताः द्रक माः (एवं अथमीर्व नरमाञ्च (ङ । रेवनरङ्गः नगाक्य व्यष्ठद्रीत्क जनार्जन।। या॰ पु॰ ब्रक्काकिङ जना নম স্তে হস্তপরাজিত। বিশালা ক্ষাক্ত রক্ষমাণ বৃণ রসাত লে।। অকুপার নম স্তভ্যু॰ মহামীন न्यास (७। कत्र भी वाष्ध्र महर्ष् ख्याङ्गेल्झेमक्षत्रः ॥ क्षा **षः त्र**ः क भाः (एव नम एड शुक्रवाखम। এउद्गृक्त जगरु । रिक्षर शक्षर मरू ॥ भूता त्रकार्थ भीत्मन कान्त्रायना। विष्ठाखन । यना मा नानयामात्र पानदः महिवाजूदः ॥ ठामत्र त्रक्वोक्ष उथान्।न् जूतकरोकान्। इंडि वामरन ১१ व्यथ्रायः ॥

विक्षुलमः क्री व्याकाणः। इंडामदः
।। क्रीद्रामः । इंडि (मिम्नी ।।
लग्नः। इंडि (इमहन्तुः॥ विद्याः
इानः। यथा। व्यनुगा नृत्या लद्राः
न त्याहिं उद्दिक्याः लद्रमः लमः
।। धर्म धुनामा विद्याः लद्रमः लमः
।। धर्म धुनामा विद्याः लद्रमः लमः
विगालका उद्दिक्याः लद्रमः लमः।।
योजना उद्दिक्याः लद्रमः लमः।।
योजना उद्दिक्याः लद्रमः नमः।।

চরাচর॰ । ভাব্যঞ্চ বিশ্বং নৈত্রেষ তদ্বিক্যো: পরমং পদে ॥ দিবীব চক্ষুরাতত বৈতত তন্মহাত্মনাং । বিবেক জ্ঞান বৃদ্ধঞ্চ তদ্ধি বিফো: পরং পদে ॥ ইতি বিফুপুরাণে ২ অংশে ৮ অধ্যায়: ॥

विक्ष्मिरी खी गक्षा इंडामदः॥ व्यम्याः काद्रगः यथा। नाद्रम खेवाह । कलः भक्षमरुमुख्य ममञीख স্রেশরী। হু গভা সা মহাভাগ ज्या वराथराज् गर्शम ॥ नावायन উবাচ। গঙ্গ। সরস্বতী লক্ষ্মীপে-ত। স্তিসে। হরে: প্রিবা:। তুলসী नहिठा वुद्धन् हङ्गुः कीर्बिङाः শ্ৰুতৌ।। নারদ উবচ। বভুব সা म्बिर्मुष्ठ गक्र। नात्रायगितुया। च-হোকেন পুকারেণ তল্মে ব্যাখ্যা-ज् मर्शम।। नात्रायन छेवाह। भूता बज्द (गालारक गक्ता ना पुरक-পিণী। রাধা কৃষাঙ্গসণভূতা ভদ'-শ। তৎ স্বৰূপিণী ॥ দুবাধিষ্ঠাতৃ-(एवी ना कालना नुष्ठिम) जूदि । সা সকানা কৃষ্ণপাশ্বে সমুবাস স-नक्किता।। भुक् झवरना स्वाधव-नक्र वानमा। मूहिं जा अड्कालः न भूलकाह्मि विश्रहा ॥ এउमि-মন্তরে তত্র বিদ্যমানা চ রাধিকা।

शानी जिम्मराकारि वृजा कारि **हम्मुमञ्जू** ॥ कालन व्रकः পদ্মাস্যা রক্তপদ্মরলোচনা। সু চাক রাগ সংযুক্ত মোষ্ঠ কম্পণতী क्षा ॥ छाक्ष मृद्धे। ममुखस्त्री क्षः नामत न्वंकः। উत्थाय गक्रा नहना अंखाराक हकात्रं मा।। इनवा भ রিপ পুছ ভীতাতিবিনযেন চ। ब्रात्नन भद्रगाशवा श्रीकृष हद्रगा-ষুজে॥ তত্ৎপদাহিতো বিষ্ণু ভী-छारेन ठाजन परनो। नज्न हिन চিন্তা সা সর্বেশ্বরবরেণ চ।। উদ্ব नि शमन्याक बाधा गना मनर्भ ना। এ अभिष्य द्वारा क गरी न मुवाह मा।। (कवः भुगतम कन्त्रावी সমিতা ত্বমুধাৰু**জ•। পশ্য**ন্তী স মিত পার্মে সকামা বক্রলোচনা॥ ष्कालीमाः नित्रतीकः। नकामः न ব্যিতঃসদা। মৃথি জীবতি গোলোকে **ज्**डा मूर्व खि बीम्णी ॥ खरमरेववक मूर्ब् ख॰ वात्र॰ वात्र॰ करत्रात्रि ह । क्रमाः क्रामि (भुन। ह खीबार्जिः त्रियमानमा ॥ मःगृष्ट्यमाः निया भिष्ठाः शालाकाम्गइ नम्भदे। य-ন্য**থা ন হি তে ভ**দু• ভবিব্যতি বুলে: শ্বর।। ইত্যের মুক্তা সা রাখা রক্ত-**गङ्बलाइना। गङ्गाः वक्तुः नमाः**

রেভে নমুগস্যা লব্জিতা সতী া৷ পৰা রহস্য বিজ্ঞায় যোগেন সিং ব্ববোগিনী। তিরৌভ্য সভামধ্যাৎ चकव॰ भुविरवण जा। द्राधारगात्रन ৰিজ্ঞায় সৰ্বত্ৰাবিছি ভাঞ্চ তাণ। পা-ন কর্ সমারেভে গণ্ড্যাৎ সিদ্ধ (यागिनी ॥ भन्। त्रष्माः विद्धाय (यारान निष्कर्याणिनी । शिक्ष ह-त्रगास्त्राकः विदयम भद्रनः रहो ॥ (गालाक्रेक्ष रेक्ष्र वृक्तलाका-मिक उथा। मम्म ब्राथा मर्डव देव गक्रा परमा गा ॥ वुका विक् मिया नड श्रामल्युन्त् पिराकताः। भनता मूनयः नर्स्य (एवाः जिष्का खश्रवनः॥ लालाकक नमाकण्यः मुद्रक्छोर **छानुकाः । मर्ख भुराम् र्शाविमः সর্বেশ**° পুকৃতে: পর• ।। বিজ্ঞায ত-मिल्राक जान्वाह मूरत्रवतः। 🕮 ভগবানুবাচ। আগতা: সুমহাভা-गा गव्हानयन काञ्चनार । गव्हा महः त्रनाष्ट्राष्ट्र ७एवन मत्रन॰ गडा॥ वार्ष मा॰ भाजू मिहडी पृष्ट्री मा॰ मः মিখানত:। দাস্যামীমাণ বহিস্থা य्व॰ अक्छ निर्ज्या॰॥ शक्तिक्कमा वहः শুনা সমিতঃ কমলোন্ডবঃ। তুঙীৰ नवीवाध्याः छाः वाधाः विक्षः भ् किजा।। विक् मञ्जि म पूर्व ज

किन्याञ्चकस्तः। शाजा हर्जुनाः (व मानः मृदाह हजुदाननः॥ शक्षा जुमक ল-ভূতা পুভোশ্চ রাসমগুলে। যু-शाया प्रविक्ता जा मूखायाः महन स्वार्म क्षां भा ह व मं भा ह व्र कन्रामम्मी भिया। वस्त गुरुनः क्षा काताजू भूषन उर ॥ छिति। ব্যক্তি পত্তি ন্তস্যা বৈস্বঠেশ শত্ত্-**ज्बः। वृक्षं**शा वन्न• **भुद्धा बीह**का র চ সিমিতা।। বহি বভ্র সা ক্ঞ भाषाक्ष नथागुजः। छोबव मःवृजा শাস্তা ভক্টো ভেষাঞ্চ মধ্যতঃ ॥ উ वान ভোগাদৃত্থাৰ ভদৰিষ্ঠাভূদেব-ভা। ভব্তোষ বুন্ধণা কিঞ্চিৎ হ। निडक कम् खलो ॥ किकिन्स्यात्र **नित्रनि** हन्तु। एकं हन्तु (मथ्र:। शक्। रेय ब्राधिकामञ्चः श्रुप्तरहो कमला-फ्रवः ॥ गङ्गा जा स्वयं मः भू का देवः षर्थं भुषयो जडी। गालाक ह हिडा गङ्गारेवद्यार्थ निवानाकरक ॥ বুদ্দলোকে তথান্যত্র যত্ত তত্ত্ব পুরা ছিতা। ভৱৈৰ সা গতা শহা চা-জ্ঞবা পরমাক্সন: ॥ নির্গতা বিষ্ণু भाराद्वाद (जन विक्भरी भृता। ইভি জীবুদ্ধবৈধর্ত্তে পুক্তিখণ্ডে গ व्याभाष्यान 🕽 ज्ञायः॥ 🛊 ॥ ব্ৰ বৃশ্চিক সিংহ জন্ত স কান্তবঃ।

যথা। ভবিষ্য মাৎস্য হ্যোতিষেষু । धन् मिथुन कन्याम् मीत्न ह यछः भी उयः। व्यव्किक अरस्य मृ भिग्र বিষ্ণপদী মৃতা।। অপিচ। এবঞ্চ यउनीज्याि स्वयं वान भन्छमान व्यर्वाक् वाएण विष्क्वया नाष्ट्रः পশ্চাচ বেডিশ। কাল: প্ণ্যাক সংক্রান্তে বিদ্বন্তিঃ পরিকীর্ত্তিতঃ॥ ইতি শাতাতপীয় দিবা বিফুপদী বিষয় ৷ অভএব জাবালি বৃহদ্দি-(हो । भूगताया॰ विकृशक्ताक भुाक् পশ্চাদপি বোডশ। ভত্র স্থানাদি ফল । অয়নে কোটি গুণিত । লক বিফুপদীযু চ। ষডশীতি সহসুম্ভ य एमीं ग्राह्य ।। इंडि डिया-দিতৰ ।।

 বন্ধন' লাভ এব চৃ। ঐশর্য্য' রাজ-'পুজা চ অপমৃত্যু রিভি ক্রমাৎ ॥ ইভিজ্যোতিস্তত্ত্ব' ॥

दिकुङ्कः स्त्री खगदरामदा। यथा भिष्या मर्ब भवाभारक। यथा छ-জ্যা হুরি স্তয্যেত্তথা নান্যেন কেন हिट ॥ महा (नुवरमा मून भून यः भूगः मञ्चर**ः। बो**विउमः क्नः चार् पराठि खन्न श्रदः॥ छन केंड।वं रेव बाड्: (नवावा: निव्र कीर्खिः । ख्यार (भवा हुरेशः প্রোক্তা ভক্তি সাধন ভ্ৰসী॥ তে क्का (बाकनाथम्) नाम कर्यापि कीर्जन । मूक्छान्ति निःहर्वा (य ह क्षे उन्कराः ॥ कगकाजु र्पाट्नाम् हिन्। छ। हद्ग्यान्। । हेरु निड्यक्तियाः स्यूर्यः त्रिषा (य दिक्षवास (उ॥ जुनाम न्दंक का-न्त्रा (वा वरनरेबकरवा हि नः। छ फक्तनवाद्मणाः भूकायाकान् (भारतः॥ उ८कथा मुख्य श्रीजिः चत्रत्वाकृषिकिया। (यन मर्बाज्य ना विक्षो जङ्गा जाता निविण-**তঃ**।। বিপ্রেম্বীশ্বর দৃষ্টিশ্চ **নহা**ভা গবতো হি সঃ। বিফোশ্চ কারণ নিত্য ভদম দম্ভবৰ্জিত ৷৷ মধ্য ম

ভার্চনিঞ্ব যো বিষ্ণু চোপজীবভি । ভক্তিরপ্রবিধা ছেব। বিমান্ স্লেছে-পি বৰ্ত্তে।। স বিপে্ন্দ্ৰে। মূনি: 🚉-मान् न काजः न ह পण्डितः। छरेब रिय॰ ততো গুল্ছ॰ স চ প্রেয়া यथा হরি: ৷৷ মৃত: স'ভাবিতোদ্যাপি প্রিভো বা দ্বিরোভয:। পুনাতি **७गवर्फक उभामाल य**मृह्या ॥ পুণভাৰ পুণন্ধাৰ ভৰামীতি চ বো यहरा वाजवः नर्वज्राज्या मन्ता-**(मञ्**बूज श्दाः॥ मञ्जयानि मश्तुः **छ**्रः मर्दरदमास भावगाः। मर्दरद-मार्डावट्रकाठेश विकुष्टरका विनि-ষ্যতে॥ ঐকান্তিকাক্ত পুক্ৰা গছন্তি পরম• পদ•। একান্তেদাসমে। বিষ্ र्यमारियाः भन्नायगः ॥ उचारिका-ম্ভিন: প্রোক্তা স্বন্ধাগরত চেতস:। लियाना मिल गर्बवा॰ (स्वरहवन) मृत्यः ॥ जानरम्न मना यमः **ভক্তি রব্যভিচারিণী। या পুরি** व्रविष्वकाना॰ विष्यस्त्रनशाविनी । विकुः जन्मव्रजः ना म हम्यामानः সর্পত্ত ॥ অন্তর্গভোগি বেদানা স वं नाजार्थ(वर्डाना (वा म मार्वपति खक छ॰ विष्णाद शूकवाषम ॥ নাৰীত বেদশাক্তোপি ন ক্তাপুৰ স'ত্তরঃ। যো ভক্তি বহুতে বিশৌ

खन गर्बः क्**ड**॰ खरद्या रख्डानाः करू म्थानाः महिषाः भावगाः व পি। ৰ তা॰ বান্তি গতি॰ ভক্ত্যা যা॰ यां मृति जंडम ॥ यः कन्हिंदक वा लाक निष्णाहात्रान्।नामुनी। भूगां जिल्लान् (वाकान् जरुनाः मूत्रियाविजः ॥ य नृमःमा मूत्राः ত্মান: পাপাচাররতা তথা।ভেপি यांछि भद्र भानः नाद्रायं भद्रायः गाः ॥ मृता सनाम्यंत छक्ति यं रेनवाः वाञ्चितातिनी। छमा कियर चर्ग मृथः रेमव निर्दाग रेष्ट्यूकी ॥ जुा-ম্যভাণ ভৰ সংসারে নরাণাণ কর্মা দুর্গমে। হস্তাবলম্বনে। ছেকো ভক্তি जूरहै। जनार्धनः॥ न भ्राां ७ ख्यान् पिवतान् (प्रवाप्तवमा ठिकिनः। ज नात्रा विश्वता (छत्रः नर्ववर्य विरुष्ठ् ७: ॥ नान्न म कीर्खिए विकार्यम्। পুংসো ন আয়তে। শরীর• পুলকো खानि ७७११८ मनलानमः ॥ যমিন্ মৃতে বিজ্ঞাপুষ্ঠ মৃত্তি রপ্যচি ब्राप्डर्वर । विस्को निविष्टे मननाः कि॰ भून व् किन करा।। च भूक्य मिखिवीकार भाषक्छ॰ वष्ठि यमः কিল ভস্য কর্ণমূলে। পরিহর মধু-ज्रन भुभनान् भुष् ब्रह्म मन्।न्।। न देवकवानाः ॥ जानि हर जूप्ताः

চারো ভন্ধতে মামনন্যভাক্। সা-ध्रवि न मखनाः नमायानिराजा हि नः॥ किनु छवि धर्माञ्चा मधः हासि निवहिंछ । विश्नुनम् भुष्ठि-জানীহি বিষ্ণুভক্তো ন নশ্যভি॥ ধ-र्यार्थ कार्रेभः किन्तमा मुक्ति चमा করে ছিভা। সমস্ত হলভা॰ মূলে यम् ७किः ছिद्रा रुद्रो ॥ रेनवी-**एक्या ७**१मशी हात्र स्थाया मूत्र ७ प्रा া তমেব বে পুপদ্যম্ভে মাবা মেতা **७**त्रस्रि (७ ॥ कियमात्राश्त शू॰मा মিষ্যুত হরিমেধ্য:। ভত্তৈ বা-রাধ্যতে বিষ্ণু নান্যন্তন্তোষকারণ ।। न मारेन विविध में रेख ने शूरिझ ৰ্নানুলেপনৈ: । তোৰ মেতি মহা-ष्मारमे यथा ७कत बनार्यनः॥ मः-**সার বিষ**র্জস্য ছে ফলে ছ্মৃডো-পমে। কদাচিৎ কেশবে ভক্তি স্ত-ভক্তৈ ৰ্বা সমাগম: ॥ পৰেষু পুষ্ণেৰু कालवु (जार्य चक्डे मार्क) वू मोम-व नर्नु । खेंखाकनाखा नुकाव **नुवारा गूर्कि। क्यः न किराउ नुव**-দ্ম: ৷৷ আয়েটবন্ধি পিতরঃ পুনৃত্যন্তি পিতামহাঃ। বৈক্ষাে হমৎ সলে লাভ: স ন: সম্ভার্থিব্যতি ॥ অজ্ঞা-নিন: সূরবর সমধিকিপত্তিবে পা शिरनाशि मिनुशाल मुर्यायनाष्ठाः

া মুক্তিণ গভাঃ মরণমাত্র বিধ্ত িপাপাঃ কঃ সংশযঃ পরমভক্তিম-**छा॰ बनाना॰ ॥ नद्रग॰ ७॰ भूश**द्या (य ध्रानस्थानविविद्धिं जाः। छिनि मृज्। मजिक्रम। याखि जोहकक পদ•।। ভবোদ্ভব ক্লেশভাহত खथा পরিভুমদিশিয় বন্ধকৈ: প रैथः। नियम/जाः माधव सम मानाः ए य युरद्धिभको एए छक्ति वक्षः নে ৷৷ বিষ্ণু রেব পর বুন্ধ হুভেদ মিহ পঠ্যতে। বেদ সিদ্ধান্ত মা-(र्गवृ ७ न कानि (माश्रिजाः॥ বসতি কৃদি সনাতনে চ ভাষান্ खरिं भूमान् बगरा २मा (मोमा ৰূপ:। ক্ষিভি বসন মভিরম্যমা जाता ९४: कथगित हाक उरेग्व मानभरतः॥ इति भाक्रा २०) व्यव्यायः ॥

विक्रमाया जी पूर्ण। यथा। नात्रम उवाह। पूर्ण। नात्रायणीमाना वि-क्ष्माया मिना मजी। निज्ञा मजा। जगनजी मर्वाणी मर्वमक्षा।। ज-श्विता विक्रवी भोत्री भावं जी ह जनाजनी। नानानि क्षिथु (वाक्रानि जुजानि मुख्यानि ह।। जर्थः वाख म नागु (क महिनाः (मुक्त (वरणाळ- मर्व) मण्डः ॥ नाज्ञावन छेवाह । मृक्ष्मे नायाः भूता म्ह्ये विकृता भत्रभाज्यः ना। माहिङ भायय। विद्यः विकृताः वा ह की विंछ। ॥ इिङ वृद्यदिव्यर्थं भुक् जिथर्थ ८८ व्यवधायः ॥ व्यभिह । वृद्यावाह । विकृत्राया गृरङ एक महामायाः जनमयीः । नान्। मः भाविकृतः । उत्थाविक् ।। उत्थाविकृतः । उत्थाविकृतः । उत्थाविकृतः । उत्थाविकृतः । उत्थाविकृतः । उत्थाविकृतः । व्याप्तः ।। व्याप्तः । व्याप्तः ।। व्याप्तः ।।

विक्ष्यणाः शृ वृक्षयणःशृ ः ।

ज व किष्णिणा । यथा । नावम्

छेवा । प्राह्म व व व किष्मा न नावम्
व्याप्त्र केष्मा मूजा। भिष्ठवः माछव्याप्त्र किष्मा कि व क्ष्मा किष्मा किष

विक्षुत्रथः भुः गक्षः। इंडाप्रद्रः॥ विक्षाः मान्दिनण्ड॥

विकृता उः शृ॰ श्रीकृपा जः ।
यथा । रिरवना शृङ्धि वाद्या जः मृद्धि
जः स्। मूर्शिण्या विकृता शुक्कि विकृता ॥
उमामाना विकृता जा जारक
था कि गित्र वाद्या वाद्या निर्माण निर्माण विकृता ।।
महा का गित्र वाद्या वाद्या निर्माण निर्म निर्माण निर्माण

विकृतिको जी বর্ত্তিকাপকী। ইভি ত্রিকাওশেষ:॥

বিফুবল্লভা জী তুলসী। ইভি রাজনির্ঘটঃ॥ লক্ষীঃ। যথা। জৈ লোক্য পূজিতে মাতঃ কনলে বি-ফুবল্লভে। যথা তু মচলা ক্ষে ভথাভব ময়ি ছিরা॥ ইভি ভজ্ল সারঃ॥ অগ্নিশিখাবৃক্ষঃ। ইভি শন্দ্রিশ্বা।।

विश्वाह्नः भू शक्छः। ইতিছেন हन्दुः॥

विकृवार्थः प् गक्षः। ইঙি শক্ষয়বলী॥

विद्वादः स् धृर्थनणमः। इठा-भवः॥ धृर्थनमा सान हेकादा वि द्वादः। सुद्र णिव द्वादो हत्न च्या मार्टिशावादिक निभाउ: । विश्वा मुद्रवादा क्षेत्रः विद्याद्वाद्वादिना भाकिक बद्दाद विकादा दश्या मूर्कन विकास विकादा दश्या

विवाः जि विरवगर्या वधाः। इंजा-सरः॥

বিশ্বঃ ত্রি হি॰সু:। ইভূগোদি-কোবঃ॥

বিষুক্ ব্যু পরিত:। সর্বত:। · ইত্যমর:॥

বিষ্বক্ ক্লী বিষ্বৃব । ইতি শবর্জা-বলী ।। বিষ্যু অঞ্চতি ইত্যর্থে ত্রিলিক্ষণ।।

विश्वक्रमनः भू॰ विकुः। ইত্যমরः
।। विकानिर्यानाधाती । यथा ।
निर्यानाधाती विका छ विश्वक्रमन
मठलुं छः। मञ्ज ठक गराभागि
पीर्यमान् छं हो। यङ ठक गराभागि
प्राप्त मिल्लापा। यङ पिल्ला
प्राप्त ।। कीर्वित छम् मञ्जा
प्राप्त के जिल्लार । ইতি
कानिकानुताल ४२ व्यथायः ॥
व्यथामम्मनः। यथा। उत्रम्ह सक्
मावर्गः वृक्षमून् र्यन्ः म्यू छ। यङ्ग्ह
यङ्गामा ह विश्वक्रमाना मन् छथा।
।। ইতি मा । स्वार्त व्यथायः ॥

विश्वक्रमनित्या जी वाताही।

हामात्रमान् इंडि छाया। इंडऽमतः॥ नन्तीः। विश्वक्रमत्ना विकृ
सम्भाष्टिक्षा।

विद्यक्रमन। जी निष्यकः। ইত্য-

विञ्चनन क्री (जाबन । इंजि बही । बद्धः ॥ भद्दकद्वन । यथा । विञ्च निज्ञ वीना । इंजि मूक्ष्याववडा-कद्रन ।।

বিষ্দু, ড্^ট ত্রি সর্বতোগামী। বিষ্-গঞ্জ। ইত্যমর: ।।

বিশ্বাণ: পু॰ ভক্ষণ ৷ ইতি হেম-চন্দু: ৷৷

বিস॰ শ্লী মৃণাল। ইত্যমর:।। বিসক্তিকা জী বলাকা। ইত্য মর:।।

विजन्न की क्रमण । ই जिज्ञान निर्घण्टः ॥

विनक्षः भू निः रः। ই छ भदः हिन्द्रिका॥ हेन्द्र्वी वृक्षः। ই छित्राबः विर्विष्टः॥

বিসৰ লী পদ্ম। বিসং মৃণাল' ভৰ জাভত্বাৰ।।

বিসনাভি: পু॰ পদ্মনী ৷৷ পদ্ম-সম্হ: ৷ ইতি ত্রিকাগুলেব: ৷৷ বিসপুস্ন' লী পদ্ম- ৷ ইত্যমর: ৷৷

विमयापः भू॰ विभूवछः। ইড্য-भन्नः॥

বিসর: পু॰ সমূহ: ৷ ইত্যমর:॥ পুসর: ৷ ইতি মেদিনী ৷৷

विमर्गः भुः मानः॥ छ्यानः॥ मनः निर्गमः ॥ विज्ञक्तिनियः ॥ जूर्याजाः यन(छपः। ইভि मिरिनी।। भाकः । इंडि र्वायूषः ॥ विंम्हः । इंडि **मद**वज्ञावनी ॥ विष्मवत्र्रिः। यथा । পুৰুষানুগৃহীভানা মেভেষা বা সনানব: । বিসর্গো হ্য সমাহা: রো বীজাদ্বীজ চরাচর ।। ইতি প্রিভাগবত•।। 🛊 ।। বিসর্জনীয়স্য भर्यप्रयः। यः भर्गः। त्रभना वकुः विमर्गक दिविमाकः। नामार्धन्तु द्रस्माजा कना द्राणी जराणियः॥ ष्यन्हार्या जुद्रीश ह विश्वमा ज्वना भत्रा॥ इंडिवीबवर्गा खिदान ।। 🕬। व्यिति। वः कश्रेका महारमनः कः वा न्वांम्डा र दिः। रहा जमा गरा भक ब्रें ि विष्णामूबी मूथ ॥ वि विनरू व्रजना (जाया १ निक्रका हू: **थ** मृहकः । द्विबिद्धः **च** छन वर्दुः नर्गः मक्ति विभावतः॥ मुन्दती मु-বশান্ত। গণনাথো নহেশবঃ।ইতি वीवदर्गाङ्याना उत्र ।। 🗱 ॥ व्यन्तरः इ। विनर्गः नर्ग माथ्याः विन्धिः

यय मामनः। यनि क्षा भारणानि कालाख्वाणि त्रमाणि ।। ইडि दर्गा डियानः॥

বিসর্জন ল্লী দান। ইত্যমর: ॥ পরিত্যাগ: ॥ সংপ্রেষণ । ইতি মেদিনী॥

বিদর্গঃ পু॰ রোগবিশেষঃ। তৎ-भर्यायः । विनर्भिः २ निवामयः ৩.। ইতি রাজনির্ঘণ্ট:।। ভত্র বি-भुकृष्टे विषान जङ्गा विकक्ति कार ॥ व्यवनात्र कर्कानि (जवना-(प्रायरकाभड:। विमर्गः मध्या **छियः मर्बडः भित्रमर्भगाए ॥** वािममाहद्रकाक र्द्रिड भाक मिखाक <u>भ</u>ुञ्जीनाः गुरुगः॥ 🛊 ॥ मधवादः विद्रगाजिः। भृथक् उयः জিভি শৈকে৷ বিসর্গা ধ্বন্দুরা জ্বয়ঃ । বাভিক: পৈভিক্তৈষ কফৰ: সামিপাভিকঃ। চত্ত্বার এতে বীস ना वकः एउ बन्द्र हा खराः। वाराः যো বাত পিত্তাভ্যাণ গুড়াখ্যঃ कक वाज्ञः ॥ यञ्च कर्मभस्का (घा-तः म भिख क्कमस्रवः। # । वि· नर्भ (दाव द्व)। नि नःग्राह। ब क निर्माका जुड्या म पूर्वा (मा-वा द्वारा भवाः। विज्ञानाः जः म्८भः ।।

वया मनाः वांज भिज ककाः। (मायाः प्रका इंडार्थः । व्यनार्था (माया भवा ३७)व शूनक्कि (मा-या २गनिष्ट्र ॥ 🕸 ॥ वाजिकन्तर লক্ষণমাহ। তত্র বাতাৎ পরীস-র্পো বাতজ্বর সমব্যথঃ। শেকে স্কু-द्रग निर्खाप (उपायामार्खि इर्य-वान् ॥ भद्रीमर्ला विमर्नः । वाड-क्त्र मभवाधः भित्रा क्म् गावापत्र **म्वा**कि युकः। (छमः विमात्रागतिव व्यथा। जायामः जाक्षंतर्भव व्यथा ॥ 🗱 ॥ পৈৰিক মাহ । পিৰাদুৰ্ত্ত-গতি: পিভত্বর বিস্নো ২তিলোহি-**७:।** क्र उगिजः भी घुनुमद्गा भी लः ॥ 🛊 ॥ द्वित्रिक मारु। ककार कथुः যুতঃ স্নিধা: কফজ্র সমানকক্ ॥ 🕬। সামিপাতিক মাহ। সমিপাত স-মুত্মক সর্ব ৰূপ সমন্বিতঃ। 🕸। বাত रेनि डिक्म्या शिविमर्भाष्य म ह न ক্ষণ নাহ। বাত পিত্ত জ্ব ছ দি मृहां जी नात वृष् जुरेमः । अशि **जिमानियम्य जनकात्वाहरेक यूँ जः।।** করোতি সর্ব মঙ্গঞ্চ দীপ্তাঙ্গারাব-कीर्गवट । ये ये पर प्रमा विमर्भक अभ्यन्ति ভবেৎ স স:॥ माडाः স্বারাসিতো নীলো রক্তো বা স্প-**हीयाउ। अग्निस्य हैव खारिं: भी**यु-

गदार कडक मः॥ मर्यानुमात्री वी-जर्भः न्यापराज्याज्यम् खाउः। व्याप **जाक् श्**रद्र म जा निमाक यान भीतराय ॥ शिक्षाक मःगाउ। वङ्। মীদৃশী লভতে নর: । ক্রচিছর্মা রতিগুন্তো ভ্মিশব্যাসনাদিয়ু। চে डेमान खजः क्लिडा माना एक ममू फ्टवा॰ । मूः भुरवारक्षा रुम्नु छ निम्नुः (माधिवीत्रनं डेठारङ ॥ स्मिरिः डे-भहीय**७ इं**डान्यः । मर्मान्यात्री क् मयान्मती। रुत्र वीमर्भ इंडान्यः । हिथा। हिक्का। देवस्य उँ८ भः खुः (भुत्रत्यः । मत्नात्म्हममू क्रवाः निमा भद्रगक्षभाः। अभू छ भाः প্নোতি॥ 🛊 ॥ বাজনৈ বিক গুছি বিসর্গ মাহ। কফেন ক্ছে: প্রনো ভিত্বা ত বহুবা কফ।। ব্লক্ত বা বৃদ্ধ রক্তস্য ত্বক্ লির। স্নাযু **মাণ্স**গণ।। म्यियि ज् नीर्याय् वृद्धं झूल प्रता-ख्रानाः । गुष्टीनाः स्टब्स्ट भाषाः ব্ৰক্তানাণ তীবুকগ্লৱাণ॥ খাস কা-भाग्र देवत्रग्र (भाष हिक्का विश जुरेमः। साह रेववर्ग्य मृहाक जका-क मरीन यूं जः ॥ इंड्रयः गुष्टिवीमः পো বাত প্লেখ্য প্ৰকোপ ল:। কফেন यह्युम् द्वेन भवानाभि यह्यु मुद्रेः । তেনাৰ বাভল্লেন্মিক:। ত কফ্

वरुषा ভिदा ब्रकः वा म्ययिदा है ভার্য:। ত্বগাদিক মিভি ব্লক্তবি-শেষণ ॥ #॥ পিত্ত শ্লৈব্যিক কর্ম-মাখ্য বিসর্পমাহ। কফ পিত্ত জুরা खरस्रा निषु। **जन्मा नि**रताकका। च-क्वावनार विष्कृत नुवानात्राहक जुपाः॥ मूईानि श्वानि र्छापा रेष्ट्राः निभामिनुय भीववः। आसाभावः লন লেপ সোতসা চ বিসর্গতি॥ नु । (यगामामाय गृहस्मकरममा नहाः ভিৰুক্। পিডকৈ রবকীর্ণেভি পীভ লোহিত পাণ্ডুরৈ:॥ দ্রিথো সিতো (महकारा मिननः भाक्तान् छ-कः। गञ्जीद्रशाकः शुरक्राग्या द्विमः ব্লিষ্টো বিদীর্য্যতে ॥ পক্ষত্বক্ শীর্ণ भाष्मम् उन्निष्टे नायू निद्रारानः। भर गिक्षिक वीमर्नः कर्प्रमाथा मूणि **७•॥ স চ সর্গতি এছদেশ মিত্য** नुगः। निर्छोदः निरुकाण्डिः। व বকীর্ণ: ব্যাপ্ত:। অসিত: কৃষ্ণ:। (ग्ठकः कक्कृषः। शास्त्रामा १ ह्राया । न्भृक्षेः क्लिमाव्नीर्याउ न्मृष्टे: मन्नार्मा ख्वां विनीर्याष D। शक्ष वृक् कर्मभवना वृग्य मः । শীর্ণনাংস: গলিভমাংস:। অভ^{এব} व्यक्षित्रायु व्यक्तायनः ॥ 🕏 ॥ जातिः পাতিক মাহ। সদিপাত সমূপ্স

गर्वक्ष गमित्रः। 🗱 । ऋउ क्ष विमर्भगार । वाश्रहालाः क्रां क्षः गद्रकः शिखभीद्रयन्। वीत्र-र्भ भाक्ष अर्गाट स्वर्थमृति **क्रिजः** ॥ स्मार्टिः (काथ जुबक्जा माराम्यः न्यावानानितः। वाश् হেতোঃ শত্রপুহার ব্যালদন্ত নথা-দ্যগদ্ধক্তো:। শ্যাবশোণিত থ্ मुवर्गत्रकः ॥ 🗱 ॥ छेशपुवानाइ । **कुता जी मात्र वमणू** ख्न्या॰ महत्र क्र-गाः। अद्याहक विभाको ह विभ-र्भाग मूशमुवाः ॥ अ॥ माथ्यज्ञानि-ক মাহ। সিখ্যন্তি বাত কফ পিত্ত কৃতা বিসর্পা: সর্বাত্মক ক্ষতকৃতক্ষ ন সিদ্ধি মেতি। পিত্তাত্মকোঞ্জন-वश्रुम्ह खरवरत्राष्ठाः कृ ह्वाम्ह मर्मत्रू ভবন্তি চ সর্ব এব ।। পিতাত্ম काञ्जनवशुः शिखनः मन् कब्जन वर्षः। अर्द्यवाजान्या व्यामा 🟶 ॥ ष्यथ दिमर्शमा हिकिएमा। विद्रक বমনালেপ সেচনাসু বিমোক্ষণৈঃ। **উপাচরে**দ্মথাদোষ विসর্পাননবি-मारू जिः ॥ त्रात्रा नीता ८ भवः माक् हम्पनः मधुकः वना। घ्उः की-त्रयुष्ठा त्याला वाजवीमर्ग नामनः ।। हन्स्न भव ब्रकः शृष्टिः। करनक म्वादेक नमा छत्मुः जरेनदिनः

(मार्भम कर्न् रिम्छ। वज्रान्द्रिः পিত্ত ক্তে বিসপে লেপো বি-(थयः नघ्ठः नूमीजः ॥ 🕸 ॥ विकना भग्राकाभीत्र मगका कत्रवीत्रकः। নলমূল মনন্তাচ লেপঃ শ্লেষ্ম বিস-পহা॥ সমস্বালজ্জালু:। বাত পিত্ত পুশনন মগ্নি বীসর্পণে হিতে। বাত শ্লেম্মহর কর্মগুছি বীসপণে হিত । পিত্ত শ্লেষ্ম পুশমন হিত কর্দন न खाक ।। जिल्ला का किया कर्या द বিসর্গে ত্রিমলাপহা ।। 🗱 ।। শিরীষ यञ्ची नज हन्हरिन्या भाग्नी इद्रिपुष्वय ষষ্ঠ বালৈ:। লেপো দশাক্ষ: সঘ্তঃ পুযোজ্যো বিসর্গ জ্ঞ জুর শোখ-हात्री ॥ नजः जगतः। हन्सन भव রক্ত গুছি । দশাকোলেপ: ॥ 🕸 ॥ পরিবেকাঃ পুলেপাশ্চ শস্যম্ভে প-ঞ্বল্পলৈ:। পদ্মকোশীর মধুক॰ हम्हरिना विञर्भागा ज्विष वाजा কটুকা পটোল ফলত্রয়ণ চন্দ্রন নিম্ব-निषः । विजर्भ नाष्ट्र जुद्र माथ কণ্ড় বিয়োট তৃষ্ণা বমিছৎ কৰাৰ: ॥ अक्षानि यानि जभी वि वु ११ वृ বিবিধেষু চ। বিসপে তানি যো জ্যানি সেকালেপন ভোজনৈঃ ।। 🛊।। कब्रक्ष मश्रह्म नामनीक मुश्कं पू-थानन ज्यतारैकः। रेजने निर्मा

म् विरिव विशवः वितर्भ विरद्धारे विरुद्धिकाषः ॥ कद्रक्षापिरेडनः ॥ ॥ ॥ अधामय रद्धारे मम्बिरकाकः विविध्यामाग्राम् स्विष्यम्भान् । मर्वान् विकादान् भित्रस्मायः थी-मान् वृगः करमणामराद्वान्यश्वाकः ॥ ইতি विमर्लादिकादः। ॥ ইতি ভাবপুকामः॥

বিদর্শণ ল্লী পুদর: ৷ ইত্যমর: ৷৷ ভস্ত বুণ বিটপাদে বিদর্শণণ ইতি ভরত: ৷৷

विनर्भिः भुः विनर्भः। इंडि द्राबः विर्घणः॥

বিসল ক্লী পল্লব:।ইতি ত্রিকাণ্ড-শেষ:॥

विमातः भ् म८ माः। इंडामद्रः॥ विमातिनी जी नायमनी इंडि दाजनिर्यकः॥

विमात्रिजः वि भुमात्रिजः। वि পূর্ব ঞান্ত স্বাতো: क পুত্যবেদ নিষ্কম:॥

विमात्री वि भुमत्रश्मीनः। ७८ भर्यत्रायः। विमृद्दाः २ विमृत्रदाः ० भुमात्री ८। ইত্যমतः॥

विनिनी जी भिन्नी। इंडामद्रः॥ यथा। विखीर्त विकरे वर्षः विभा-मृतालः। इंडिद्राज्ञनिर्वण्डः॥ जः विभूलः भृथः। इंडि जर्दाधद्रः॥ विमूद्रिडः जी जनुजानः। इंडि विखीर्तनर्गः जी मानकः। इंडि

क्रिंश्त्रः ॥

विम्उ॰ जि विख्ड॰। ইंडाप्रद्रः। विम्द्रः जि भूमद्र०भीनः। ইडा-मद्रः॥ विमद्रगः। गिड्दिष्मदः। विम्द्रदा नमः। विम्द्रदी नभी। विम्द्रः ज्वाम्डामि। विमद्र-जि विम्द्रः म् गठो ऋद्रभम्भी। विज्ञान समा उन् मिडि छन्। देख जद्राः।

विम्मद्रः कि भुमद्रगणीणः। इंडऽ मदः॥

विস्ष्टेः जि निकिथः। ইতি काँ। यदः॥ विभाषित সৃष्टेणः॥

বিস্তঃ পু॰ ক্লী হেন্মেংকঃ। অশী-ভিরন্তিকা পরিনিত মুর্ণণ । ইত্য-নরঃ॥

विखबः भू भद्रमा विखादः। इजा मदः॥ वाक्षुभकः॥ विखादः॥ भूगयः। ইजि स्मिति॥ भीठः॥ मम्हः। ইजि भद्रद्वावनी॥

विखातः भू विदेशः॥ विखीर्गजा।
ज्रूपर्गावः। विशुक्ः २ व्यामः ३।
इंडामतः॥ उपः। इंजि मिनी॥
विखीर्गः जि विभूकः। विख्यः।
वशा। विखीर्ग विकृष्टे वर्षः विभाः
कः विभूकः भूष्। इंजि कृष्टाध्यः॥
विखीर्गर्गः क्री मानकः। इंजि

भद्रामुका !।

বিভৃতঃ ত্রি লক্কবিস্তার:। তৎ পর্য্যায:। বিস্তা২ ততা হাইত্য মর:।।

विम्मेष्ठः जि मूम्मेष्ठः। यथा। वि-म्मेष्ठे सक्षत्रः मान्नः म्मेष्ठाक्षत्रभरः छथा। कणस्त्र मभायुकः त्रम ভाव ममित्रः १। इंजि जिथानि छवः॥ विम्रः तः १ थ्रेर्छामयः। इंजा सतः॥ स्मा विवत्रगः मूर्छन।यकात्रः सक्ष विद्यात्रमः पृष्ठेवाः॥

বিশ্বারিভ: জি পুকাশিভ: ॥ চ-লি চ:।। বি পূর্ব ঞ্যস্ত শুর ফাডো: ক্ত পুত্যযেন নিছম: ।

विष्मार्धः म् विक्षस्मार्धेकः। वि स्माप्ता देखि जावा। खर्र्भाग्यः। भिर्वेकः २ भिर्वेका ० भिर्वेकः ८। देखेकः १। विर्वेकः ৫ विर्वेका ७ विर्वेकः १। देखि उप्तावा। स्मार्वेकः ৮ स्मार्धः ৯। देखि बाबनिर्विष्टः ॥

७गः विश्व्हेत्नमान शूर्विकाः म्॰-शुर्थि मारु । कर्ने जिल्लाक विहा-हि क क कारित्र ब्रजीनी बाजना जरेन-क । उथकुरिनायन वित्रर्भागन सः श्रां अवनाम्य अशा क्रमा-শ্রিত্য তে রক্ত মাংসাছীনি পুদৃষ্য छ। यात्रान् अर्बन्डि विरक्वाद्यान् अर्ब-ब्र र्वा स्वान् ॥ अञ्दारादि । अञ् হেত্ক শীভোঞাদীনা মভিযোগেন । পাত্তিভাছার বিহার বৈপরীভ্যে-न प्र माण्डि विस्मारीन सर्वे ত्रर्थः । जुद्रभुद्रः मद्रान् जुद्रभृद्रान् ॥ 🗱 ॥ কপমাহ। অগ্নিদথা নিভাঃ ক্ষেটাঃ সজ্বা রক্তপিভ্রা:। কু-চিৎ সৰ্বত্ৰ বাদেহে বিস্ফোটা ইতি তে मृजाः॥ ब्रक्तिङ्बाः এতেন সংর্ বিষ্ফোটেষ্ রক্তপিত্তযোঃ পুধান কা-व्रवदः। यथा म्रालयु वाउमा उथा বাতাৰুগতি ক্লপি বোদ্ধব্যা। তথা চ ভোজঃ। যদা রক্তঞ্চ লিত্তঞ্চ বাত্তে-नानुगउ॰ पठि । अग्निम्सनिङान् (क्राह्यान् इन्क्डः नर्वत्रह्णान्।। # !। বাভিকমাহ। শিরোকক শ্ল ভূবি-8 बुद्र ज्हे शर्व ज्यन । म क्यवर्ग-ভাণ চেভি ৰাভ বিংশ্বাট লব্দণ । শুল মত্ৰ ভোদৰূপ•॥ #॥ গৈভি-क मार। बुद्र पार क्या भाकः जात

क्काममन्जिः। भीठ वाहिउ বৰ্ণঞ্চ পিত্ত বিংকুটি লক্ষণ ॥ কজা-रिबर॰ (द्वार्ष्टेयु ॥ **क** ॥ বাত रेनिः ভিক্মাহ। বাত পিত্ত কৃতো বস্ত ভত্র সূত্র স্তাব্রবেদনাঃ। তৈমিভ্যুণ গৌ त्रवः कथ् डांवहाड वनामाना। 🛊 ॥ भिख रिन्न चाक भार । कथ् मीरहा জ্ব শুর্দি জাযতে কফ পৈতিকে। 🕸। সারিপাতিক মাহ । মধ্যে নিমে।-भञ खारः कठिनः चन्नभाकवान्। वाग मारु ज्वा (गारु हर्नि गूई) क्षा जुद्राः ॥ भुनारमा रामध् र्यव সো শ্সাধ্যক ত্রিলোবর: া মো-(२) विभन्नो उद्धान । मूई। সর্বথা ख्वानम्ग्रा । क ॥ बक् म गार । विषि उद्याण ब्राह्मन रेशिखरून ह **(ए**ज्ना। **७४)।** क्व नमा ब्रका ब्र-क्रुगुरा दिराहिनः ॥ न उ निक्ति সমাবান্তি শৃদ্ধৈ র্যোগশতৈ রপি। পৈত্তিকেন চ হেতৃনা পিন্তৰ্য হেতৃ না কট্টাদিনা রক্তস্য পিত্তস্য তৃল্য षा८ नह (उ नाष्त्राः॥ अ:उ हाई विधा वाञ्चा व्याद्धात्राणि ভবেদयः। ভমিষম্ভ ব্যথা ভীবাু জ্ববকুজাভি স্কাৰতে য় ভিমিন্ বহিগতে বাছ্যন্ত ब्यानम् विश्विष्टिः । एव वाजिक विष्यां किया कार्या विकान जा ॥ 🗱 ॥

উপদ্বানাছ। তৃট্ খাস মা সসঙ্কো থ দাহ হিক্কা মদ জ্বাঃ। বিসর্প মর্ম. भः द्राधा (उया मुका उलपुराः॥ भाः-ननः (काषः माःनन् । निठेउपः। मर्मः जःत्रार्था समग्रथा। (उदाः विस्ताः हेकाना । #। (किहिन् भूनाना । नकः गास्त्र॰ भठेसि । शिक्षा स्थारमा **२**कि ख्या साक्रमार्फा क्षित्रथा। विजर्भ कृत क्लामा विस्तारीना मून्दाः॥ **अ।। नाष्ठ्रवानिक नाष्ट्रा । अकरनार्या-**थि उ: नाष्ठः कृ हु नात्ष्रा दिरमाय-कः। সর্বনপারিতো ঘোরো হুসা-(व्या ज्यूर् भूवः।। 🗱।। व्यथ विष्याः हेन। विक्तिरना। विक्तारहे नहुन का ৰ্য্য ৰমন পথ্য ভোজন। যথাদে। य वनः वीकः। भुगुक्षाह विश्वहनः ।। 🗫 ।। बीर्गः भावि र्यका मृता मम्ता **क्टां की उथा।** এ जान प्रशासि विस्ता-र्छ हिजानि मूनरशा बुतन् ॥ # !! (ब नक्ष्म्त्व) बान्न। ह पाबु नीव मुत्रालका । ७ ज्ही शानाकः न्य भिवा॰ द्वार्थः निविद्यक्षः॥ विद्यारी-লাশ্যভ্যাশু সমীরণ নিমিত্তকান্ । क । माका कामर्ग अर्क् व भागे। लाबिष्ठे वागीकः ॥ कर्षेका नाज मृत्योर्गः रेगखिक मनिष्ठः ध्रुः। ज्विम्र भवता वामा जिकानमु मः

वरमोकः॥ किष्ठ्रमा भाषाचाडाः ककला मधुयुक् मृज। 🕸। कित्राज-ভিক্তকারিষ্ট যই্যাস্থাযুদ বাসকৈ: ॥ भरतेल भभरतेभीत्र जिक्ला (कांव्रवादिरेड:। कृथिरेड बारमान-क नर्व विरद्धां नामन ॥ 🛊 ॥ वि स्मिरिताधिनाभाग उल्लामून (११-विरिज्ञः। वीरिकः करिक वृक्तमे। त्य-প: কার্য্যে বিজ্ঞানতা ॥ # ॥ ছিন্ন। পটোল ভ্নিম্ব বাসকারিষ্ট পর্প रिं:। थिनिवासगुरैजः दात्था रुखि विष्मार्धेक क्षा ॥ # ॥ हन्तन ना গপুল্লঞ্ সারিবা তণ্ডুলীবকং। শি-त्रीय बद्धल॰ काञी (लेश: अराष्ट्रा-ह्नामनः॥ #॥ उट्ननः हन्दनः লোপু মুশীর• শারিবা দ্ব•। জলেন পিই বেপেন ফ্লেটদাছার্ভি নাশন ॥ श ।। भू अजीवमा मक्जान करन **शिश्वा भूरत्वभर्यः। कान्य रङ्गा**छे॰ वि-याद्वारे मान्त्रा इन्तर्भायम्बर्गः ॥ কক্ষাগুছি গলগুছি বর্গুছিঞ্চ না-भारवर । व्यन्ताह (ऋष्टिकः जामुः भूधः बौৰো বিনাশবেৎ।। ইতি বিস্মো हेकाबिकादः। इंडि ভारनुकाणः ।। अ।। यन्।इ। मत्रीहः विवृत्रः सर्वः रिव्रिडालः भनः निना। (हरहाक रिविष्तु (ब अर्ष्ठः नाः भी ह हन्त्वः ॥

विभान। कत्रवीत्रक व्यक्कीत्र स्-ক্ৎপদ'। এৰাঞ্চ কাৰ্ষিকো ভাগো विषम्यार्ख्यान ज्यारा भुइ के. টু মতৈলস্য গোমুত্তেইগুণে পচে**ং**। মৃৎপাৰেলোহপাত্ৰে বা দনৈ মৃ'-षश्ना भारत ॥ भागा विविधिका रेवद सक विरक्षां विकासि ह। अडी-**व्यन भूगण**ऽष्ठि (कामवावृक्ष काय-एक ।। भूत्र्वानाति विकासि देख-विनातन मुक्तर्य । हिरत्राध्यिक मिनि थिंब विवर्ग उरक्षनार ए (द<।। 🕸 ।। जिल्हा ज्निव निय विकवा भर्भ हिन्द्र मृत्र दल। পটোল মুস্তকান্ত্যাঞ্চ বাসকেন চ नाणराष्ट्र। विरद्गारेकानि वाङानि নাৰ কাৰ্য্যা বিচারণা॥ ইতি গাৰু-ए ১৯৮ व्यथायः ॥ 🛊 ॥ विरङ्गारे-कन्र म्रक्ष रथा। (मृतिः म्रावा-क्ना जामा विष्यातिः मूर अनुवृहः । ইতি ভাবপুকাশ:।।

विमयः भू जामग्रं। उदभर्यायः। ज्ञात्म २ ही ०। इंड्राभर्तः॥ ज्ञान्म ज्ञान्म पृष्टेवरः॥
ज्ञान्द्रा विमयञ्चायिकार्या गञ्चर्त रेपवकः। भीक्रवर्णा वञ्च (जाकाकिममान्यनः भर्तः॥ इंडि कार्वत्रम्याः भर्यायदः ज्ञान्द्रम् दि- स्वश्वाविकावाज्ञकदाट । इंडि छत्र डः ॥ छ॥ ज्ञा द्र क्षण्णा वर्षा । विविद्य प्रमार्थिय क्षाक्त ने ना-छिवर्डिय । विद्यात क्ष्य ज्ञा वर्षा वर्षा म विस्वय प्रमाह्म डः ॥ इंडि माह्म डुः-मर्श्या । मर्शः । इंडि क्षिति ॥ जल्म हः । इंडि भन्द त्र प्रावनी ॥ विस्वया च उः जि विस्वययुक्तः। आ-कर्षा विश्व हैः । उट मैर्यायः । वि-क्षा द्र । इंडि अतः ॥

वियालनः नृ व्यष्ट ।। शक्कर्य नगद्र'॥ कामरत्यः। ইভি मिनि-नी॥ वियायनण्डः॥

विश्वितः जि विश्वगदिनः। यथा।
सङ्भाग्निनान् पृष्ठे। त्रम् थाय न
रूथतः। त्रःभित्रम्म व व । कः एकः एक
भूतिम् स्र्यंद्रभा उठ उपक्र् कः
ठमः पृद्धा नर्वगत्यकाः। न्रिनिश्वाः
छा उपा नदः कि निषः हि उपिति
।। विश्विताः छान् गतान् पृद्धा रेणवादि र्यागिनायतः। भूगः भूक्ताः
रिश्वितानी गता एव नर्व अव मर्दः
थव । महाभाग्न जानाः हि व
प्वाविष्यः क्षः। हि वान्तः
७८ व्याविष्यः क्षः।।
विश्वितः जी विश्वाः। विश्व

भिषाङा डांद कि शुरुहाराव विश्ववा।।

विम्जः जि स्रवादिषयः। उरशर्यप्रायः। स्वर्णं उर्- १ इंडप्रस्यः॥
विस्विः जी विस्वतः। विश्वंक
स्थाः जि भुज्रायन निम्न मा॥
विस्वः ने स्वानगिक्त। इंडप्रस्यः॥
इरः विज्ञाध्यानिगक्तं स्वर्णकृताः म शक्तं इंडप्रस्य। इंडि स्वर्णः।

বিসুগন্ধা স্ত্রী হপুব।। ইভিরাস নির্ঘট:॥

বিস্ণক্ষিং প্ হরিভাল । ইতি হেম্চনাং।

विमृद्धः वि विभृद्धः। ইতি কেচিৎ।। विमृद्धः भ् विश्वः मः। भूगयः। ইত্যমরः॥ भूगयः প রিচযः শৃঙ্গা রপার্থনা বা। পরিচয় পুর্যবিষোঃ পুণয় পরিকীর্ত্তিঃ। ইত্যমরমা লা।। পুণয় কীডাপারতক্ষ্যং। ইতি রমানাথং॥ ইতি ভটীকাষাং ভরতঃ।। কেলিকলহঃ॥ বধঃ। ইতি হেমচন্দুঃ।।

विमुद्धी विश्वामी ॥ भूगवी । विमुद्ध अद्माप्त प्रश्वि विन् भू अ (वन

विमुना की सन्ना है जान है।। विमु जी हन्या। है जिन्न कि विशेषा

नवः ॥

বিহুসি বিসূতঃ ত্রি বিস্তৃতঃ। বি প্রক সুধাতো: জ পুত্যবেন নিয়ম:।। পক্ষী। ইত্যমর: ॥ বিছ্গঃ वानः ॥ न्यंः॥ हन्दः। इंडि नदः त्रज्ञावली ॥ गुरुः। इंडि धत्रनी ॥ পক্ষী। ইত্যমর:॥ विश्य: वागः ॥ व्यवः ॥ हन्युः ॥ जूर्वहः । इंडि नम्बद्भावनी ॥ विङ्क्षः 'भुः भक्ती। हेउप्रजः॥ বিহ্সমা জী ভারণপ্তি:। বাঁক **ইতি ভাষা। ইতি শ**দরত্বাবলী।। পূ॰ গৰুড:। ইতি विरुक्तानः श्नागुषः॥ विरुक्तिका जी ভाরगिष्टे:। वाक ইতি ভাষা। ইত্যমর:॥

विरू जी गर्छाभवाजिनी (गो:। इंडि मः किन्तुभारत्रागि दिखः॥ বিহত: ত্রি বিশেষেণ হত:। বিন क्षे: । वि भूबंक रून शालाः क পুত্যয়েন निच्चमः ॥

क्री विद्यः ॥ हिःना ॥ विष्ट्रननः ত্লপিঞ্জল:। ইভি মেদিনী।। विरुद्धः भू विरयागः। ইতি रुषा-यूषः ॥

विरुद्रा की विरुद्धाः। वि भूर्वक क् बाजा बनरे भुजारवन निश्रमः ॥ विश्विकः ज्ञी मध्यम्। माः। इकाः।

विश्वः बि व्याञ्चलः। ইত্যুদরः॥ পণ্ডिडः। ইতি নেদিনী।। বিকরঃ ॥ পঞ্জ भृ॰। ইতি भद्मत्रञ्जावनी ॥ বিহা ষৰ্গ:। ইতি সিদ্ধান্ত-**4**5

कोमूर्ण मूर्गाष्ट्रिः॥

विशालिङ की मानः। इंडामद्रशा विश्वारः की भू व्याकामः। इंड यदः ॥

विश्वाः नु॰ भक्ती। इंडामद्रः॥ विश्वायमः ही भूः चाकामः। इंड्र মরটীকাষা মথুরেশ:।।

পৃ॰ পক্ষী। ইত্যময়-বিহাযস: টীকাথা• ভরত:॥

विश्यमा वर व्याकाणः। ইভ্যু-मब्रिकायाः मथुर्विमः ॥ (इमः 5 mg 11

विशादः भू की उार्थ भाष्णाः गगन । ७९ भर्य । भद्रिक्सः २। इंड्राभद्रः ॥ जुनगः ॥ ऋक्षः॥ नीना ॥ जूगजानयः । इंडि মেদিনী ৷৷ বিন্দুরেখকপক্ষী ৷ ইভি **मद** जिल्ला ॥ देवस्य । इंडि **ज**क्यावा ॥

বিহারী বি পরিক্রমী। বিহার-कर्जा । विश्वत नदानस्य १ वेन् भुजुरयन निष्ठमः ॥

বিহিতঃ তি বিখেষ:। যথা। বি
হিতস্যাননুষ্ঠানাথ নিন্দিত্স্য চ
সেবনাথ । অনিগৃহাছেন্দুিষাণাণ
নৱ: পতন মৃছতি ॥ ইতি পুষ্ধ

ি হতিঃ স্ত্রী বিধান । যথা।
ক্ষিতি বিজিতি স্থিতি বিহিতি
বু জরতয় পরগতয়। উক ককপু
র্জন দুধুবু বুধি জরবঃ সমরি জলং
। ইতি দুখুণ

विश्वीनः जि विश्वारण श्वीनः। यथा

। योण नाम विश्वोद्या यः भूल्यप्रिवि लाई शे॰ । स्माहित्रास् हुर्
भाष्ट्राजि नत्रकक भूभमाज्ञ ॥

शैंजि जजमातः॥ जाङः। यथा।
विश्वीनकथेत मंदितः भूटेण तामाय
प्रिवन्। यन मजागण्डा मृःशी नित्रख काल्यकु जिः॥ शैंजि मार्कर्षयभूत्राण (म्योमाश्वारः॥

विष्ठः क्री जीगाःश्वाचाविकम्माः नद्धात्राञ्चणं जामकात्रविष्मयः। यथा । जीना विनारमा विद्वित्ति र्वित्वाः कः विनिक्षित्रः ॥ भाषायित्रः क्षेत्रविश्वाचा विष्ठः वथा॥ विज्ञ (क्ष्ण्य) मकात्राः जीगाः श्वाः ভাবিকা मण। ইভি (एसम्मुः॥ विक्रिः जी विष्णाद्या एत्राः॥

विष्णस्य वद्याद्य का । वि श्वं क्षात्यः कि शुं हिर्म निष्ण मा। विरुद्धेः शुं कि शुं हिर्म निष्ण मा। विरुद्धेः शुं कि शुं हिर्म । वि श्वं क्षित्रे शास्त्र । वि श्वं क्षित्रे शास्त्र । वि श्वं कि शास्त्र विद्या । विद्या ।

বিস্থল: ত্রি ভ্যাদিনাভিভ্ত:।

বাঙ্গারণাশক্ত:। তৎপর্য্যায়:।

বৈঙ্গাং ২ ৷ ইত্যমর:।। বিলীন ।

ইতি হেমচন্দু:।।

विकातः शृ विश्वारयन कातः। वि शूर्वक कान्यारणः क शुक्रायन निष्ठमः॥

বিক্ষাব: পু॰ শব:। ইত্যমর:॥ কাস:। ইতি স্থানি কলিকৌ। ইতি ভরত:॥

বিক্ষিপ্ত: ত্রি ত্যক্ত:। বি পূর্ব ক্ষিপধাতো: ক্ত পুত্যুযেন নিয়ম:॥ বিক্ষীর: পুণ অর্কবৃক্ষ:। ইতিরাজ-নির্ঘণ্ট:॥

বিক্ষেপ: পু॰ প্রেন•। ত্যাগ:।
বিক্ষেপণ। যথা। নৈর্থত্যা নিযু
বিক্ষেপ মতীত্য হাধিক ভূব॰।
ইত্যাদ্যাহ্নিকাচারতত্ত্ব॰।। অধিতীয় বস্ত্বব্দায়নেন চিত্তস্যান্যাব্দাধনণ। ইতি বেদাস্কসার:।।

विक्तिल्लाकिः खी नायाणिकः।
यथ। त्रब्बुक्कानः सार्वेत्रक्को य
णक्तान निर्मादिक मूक्कावयिक। এवः
व्यक्कान मिन सार्वेजाञ्चान उथा
विक्कित लक्का लाकाणामि नुन क मूक्कावयिक जाम्मः गामर्थाः।
वै व केन्वं । कान्ति गठि व्यक्ति।।।
वी व केन्वं । कान्ति गठि व्यक्तिः।।
वी व केन्वं । कान्ति गठि व्यक्तिः।।
वी व केन्वं । कान्ति गठि व्यक्तिः।।
वीः नुन गमनः। ইতে क्रिकः।
विः नुन गमनः। ইতে क्रिकः।
विः नुन गमनः। ইতে क्रिकः।

वीकः भू वायूः॥ भक्ती। इज्राः नाहित्कायः॥ सनः। इजि मःकिः धमाद्रानाहिवृद्धिः॥

বীকা**শ: পু॰ রহ:।। পুকাশ:।** ইত্যমর:।।

বীয়া জী শ্কশিষী।। গভিভেদ:।।
নর্ন । ইতি হেমচন্দু:।। অশ্ব
গভিভেদ:।। সন্ধি:। ইতি শববুবাবলী।।

वीिहः भु खी उत्रश्नः। इंडाप्तरः
॥ यन्न उत्रश्नः ॥ व्यवकाणः ॥ मूथः
। इंडि (मिनो ॥ व्यनः। इंडि
हिमहन्तुः ॥ कित्रगः। इंडि बहाथतः ॥
विक्री की वीिहः। इंडाप्तरहीकाशः

ভরত: ॥ वीठी उत्रक्रः श् न्यायित्भवः। স তু শোৰে শহস্য উৎপত্তি কা-রণक्षाः। यथा। वीठी उद्रक्ष न्।-যেন তদুৎপত্তিস্ত কীৰ্ত্তিতা। কদম্ব গেলেক ন্যায়াদুৎপত্তি: কৃস্যুচি-মতে॥ ইতি ভাষাপরিছেদ:॥ ননু मृत्रकाम। वाह्यम्या निष्या ্শুেতে কথ মুৎপত্তিরিত্যত আহ । वीठीि जार्ग मद्दम् विहर्मम দিগবছিন্নে। হন্যঃ শব্দ স্তেনৈব শ-দেন জন্যতেতেন চাপর স্বদ্যাপক এব জনেণ শোৰোৎপন্না গৃহত इंडि। कर इंडि बार् मदा-म्रगिरिक्क् रममदा उँ८ शर्राष्ट टि कात्य **म्लब**म् उट्शहास ইতি ভাব:। অমিন্কল্লে গৌরবা-দুজে কদ্যচিমতে ইতি। ইতি

निकाष्ठमूकावनी ॥
वीं ज॰ क्री काद्रगः॥ मूकः। इंडऽमद्रः॥ यद्ध्यः॥ उद्धाधानः। इंडि
मिदनी॥ मद्धा। इंडि द्राक्षनिर्यगानकः यट भूवम्हि वृष्क् द्रिशिक्षः
ज॰ मट मूक्रवि माः थऽ।। वऽक्रमऽ
क्टमुमऽ उत्मक वीक्र मवऽक मीमः
गनिङ ह द्राम्ह ॥ भर्तः रामाक्रः

ব্যক্ত মব্যক্ত বীজ পুাম: পুশা নো বিনা ব্যক্ত যুক্ত্যা। জ্ঞাতু• শক্যা भनत्वी जि नि जान यमा खमा दिया वीक कियाक ॥ इंडि ভाऋतागर्थ বির্চিতে সিদ্ধান্তশিরোমণৌ বী-লগণিতাধ্যায়ন্য পুথম দ্বিতীয প্লোকৌ।। 🖈 ।। মৃত্য:। যথা। অথ जुर्दनभन्नीमञ्जः। नम्नलीरमा ९प्र भाकाता वामानवार्ष्कन्युवान् । वी-ল ত্স্যা: স্মাখ্যাত সেবিরু সিদ্ধিকাঙ্কিভিঃ ॥ নজলীশো হ कातः। अभी दिकः। वामत्वव भी-कातः। व्यक्तिमाश्नुभातः। श्रीः॥ व्यवन्तीया वीबः । ड्री॰ नत्मा छग-বতি নাংহখনি অনপূৰ্ণে ৰাহা। 🛊 । व्यथ विभूषा वीकः। वि वी वी ही ही । 🛊 । चुन्निजा वीकः। 🦉 ट्रीँ हैं (बहरू क की रू क है। कि। व्यथ निज्ञा वीकः। वेँ ह्रीँ निज्ञ क्रिल सम्मुख बाहा। 🛊 । वजुः भुखादिगाः। थे ब्री निका द्विष मन्पूरव बार्ग। का जल मूर्गावीकः । ७ क् मूँ मूर्गारिय नमः। 🗱। म-हिवमर्पिनी वीबः। उ महिवमर्पिन बाहा। का बगमूर्गावीबः। उ मूर्ग मुर्ल द्रकृति बाहा। 🗱 । भूनिनी वीबः। ज्व ज्व म्विन मुरेगुर

एँ कर् सारा। का वानी भन्नी वीज॰ । वर वर वादाहिमि बाहा। 🛊। পারিজাতসরয়তী বীলং। ওঁ হীঁ ङ्कोँ खँ कीँ मद्रबरेखा नमः। 🚓 । गातम वीकः। गाँ। #। (एत्रव वीकः। ওঁ গুঁ নমঃ। 🕸। হরিদাগণেশ বীজ । भ्राँ। लच्ची वीकः। ञ्रीँ। #। महा-लको वीषः। ७ वे शु ही ही ही हो कगट भुम्रिं नमः। सः। मूर्यं वीकः। 喏 घृषि সूर्यं। व्यापिन्। 🕸 । 🕮 द्राप वीखः। द्राः द्राभाय नमः। कानकी-वल्लाव क्रॅ बाहा। #। विकृ वीबः । 🥳 नस्मा नात्रायशाय। 🛊 । 🕮 कृष वीकः। गाभीकन वक्नं छाय बाहा । 🗱 । वामूरस्वम् । 🥸 नस्मा छगरः वाज्रावया । 🗱 । वालागानानगु। उँ द्वी क्षाय। बच्ची वामू (म्वमा)। उँ शुँ शुँ शिँ है। विश्वी वानू परवार नमः। कः। दक्षिवायनम्। ७ नामा বিক্ষবে সুরপভবে মহাবলাব বাং। । सः। र्यगीवमः। ७ उन्निद्रः भूषः (वानीय नर्ववानीयात्रयत्र नर्ववर भगाहिन्ध्र मर्बः (वाष्य वाष्य । 🕬 न्निःहम्। উगुः वीद्रः महाविक्ः क्वछ॰ मर्बर्खाग्थ॰। नृतिः र॰ छोवः १॰ छरु मृज्र मृज्र नगामारः ।।स।। नत्रहति वीकः। याँ हो कि कि। है

कहै। अ। इति इत्रम्। उ ही दि শক্ষর নারাধগাধ নমঃ (হী॰ হী॰ ওঁ । 🛊 । वदाश्मर । उन्याप जनवाड বরাহৰপায ভূ ভূ ৰ: ম:প ভয়ে ভূপ जिद्धः (न (पहि ममाभय श्वारा। क्षा **मिवन्।। हो। क्र। मृज्**। ख्राक्षरम्। ख खू नः। #। पिक्न गम् विंवी कः। ७ न्या जगव्छ मकिनाम् उत्य मश्-विषाः भुषद् बारा। #। विश्वामितिः वीजः। त्रक्रभ त्र य छ छ । का। नीलक्छेत्ररा (भू। नी॰ केः । नमः **मिवार। 🕸 । ह% मु १ क्**ट्रे 1#।(क्वभानम्। ७ (क्री क्व-भानाय ननः। 🗱 । वहुक्टे **ड**ब्रक्मऽ। उँ ही विदेशाय जाशमुक्तत्रनाय अव ब्ब वर्षेकाय दी । क्ष । जिलुबायाः । रुमदेत । रुमकनदी । रुमदो : १०। मम्पर्भारेखद्रवताः । इमद्रः । रमकलत्री । रमद्रोँ। 🗱। की त्वान रेडब्रव्याः। महरेवः। महरूवदीः। महाद्री । 🗱 । 😇 यविषु श्मिनी रेखद वाः । इति । इमक्षत्री । इति 🏩। नक्नशिक्षरा रेख्यव्याः। गर् । সহकनदी । अरहो । #। रे6 छन्। े छत्रवाः । नेर्ह्णं । नकन्तुः । गरात्रोः। अ। कार्यायत्री रेजनवताः । गरेक्ष् । जकलङ्ग्री । निक्रिक्षिम्मम पुरव महत्रोः । # । यहेक्ट्रोटिन्न-व्याः। एत्रवाकमरिष्ट्रा एत्रवाकमरी । **उद्गवकमारशे । # । निख्रारिखद्ग-**व्याः। रमकनद्राउँ। रमकनद्रजीः रुनंबनद्राधीं। 🕸 । कपुरेखद्रव्याः । रुनथक्त्रँ। रुनकवादी । रुनिः । 🛊 । ভূবনেশ্বরীভৈরব্যা: । হসেঁ। रमक्लर्भीः। इस्मीः। # । मक्ल्य-र्याः। गरेरः। गरकवर्षीः। गरहोः । 🗱। जिलुबावानायाः। अ क्री शक्तीः । #। नवक्षावानायाः। अ ही सि । इरेमें । इनकलब्री । इरमोः । स्मदि स्मकनदी स्मदि : 1#1 व्यवनूर्गा देखद्रवताः। उ हो वी वी वी न्या जगर्ज नास्यित जन्म्र बाहा। 🛊। श्रीविम्यावाः। क्वन्त ट्री। इनकरण ट्री। नकण ट्री। #1 हिमगडायाः। 🕮 न्नी ह प् अ रजु रैवाजावनीय वृँ कृँ कि साहा। अ। मारामायाः। की॰ की॰ की॰ क्॰ कृ॰ হী হী দক্ষিণে কালিকে ক্ৰী কী की हैं हैं हैं ही बाहा। #1 एक् काणिकायाः। की॰ की॰ की॰ হু হু হুী হুী গুছে কালিকে ক্রী की की इं इं दीं ही बाहा । # । खपुकान्।। ही॰ ही॰ ही॰ क् क् हो। हो। जुकारेना हो। हो।

द्वी॰ इ॰ इ॰ ड्री॰ ड्री॰ बाहा। क । স্মানকাৰিকায়া:। ক্ৰীণ ক্ৰীণ ক্ৰীণ इ इ इ हो हो नामानकान की की की क् क् क् की की बाहा। स। नहाकान्।:। की॰ की॰ की॰ ह॰ ह॰ हो। हो। महाकाणि को। की। की। 🎅 হৃ হী হী साहा। 🗱। ভারাবাঃ । ही बी रू करें। का हरखागुन्त नातः। उँ द्रें। ङ् निवाय करें । 🛊 । माउक्ति।: । ७ व्री ही । इ॰ भा**उक्ति**। कर् बाहा। #। উहिश्वे ठाखानिनाः । উहिरेठाखानिनी সুষ্থীদেবী মহাপিলাচিৰী হাঁ ঠঁঃ र्छै: ठैं: 1 🗱। धूमाव छा: । धू ध् आहा । का जन्मानाः। (हो॰ कालि भहाकालि किलि किलि कहे बाहा। 🚓 । উद्दिश्चेगराणमा । 🥸 क्खिनिभावि नित्थ बाहा। 🕸। ধনদাযা:। ধ॰ হী॰ 🕮 । দেবি রভি-প্রিয়ে ৰাহা। 🕸। শ্মশানকালিকা-वाः। वे ब्रें दी ही का नित्क वे र्ज़्री की की । अधिन विश्वासार । अं क्री বগলামুখি সর্বদৃষ্টানাং বাচং মুখং उग्रय बिखाः कीनय कीनय वृद्धिः नामय द्वी॰ ଓ बाहा । 🛊 । दर्श-शिनाह्याः। उँ वर्गशिनाहि वहा छी-छानागढमद्भः द्रीः बाह्य । 🕸 ।

মঞ্ঘোষস্য। কো ত্রী প্রি। 🛊। তারিণ্যা:। की ही क्ष (पवि ही की॰ ঐ॰। 🕸 । जात्रञ्ज वीजः। ঐ• । 🖷। কাত্যায়ন্যা: । ঐ॰ ছ্রী• 🍕• क्टो॰ ठिखकारेय मनः । अ । मुर्गायाः १ पू॰ १ 🛊 १ विभावाक्ताः। ७ ही॰ विनानारेका नमः। 🗱। भौगाः । ज्री॰ भोद्रि कपुमिष्ड (याभिष्ठि ष्ट्र कर् बहा। 🛪। तुक्त 🔊 मञ्जः। হুঁ নমো কুক্ষ ব্লী রাজিতে রাজ প্জিতে জয়ে বিজয়ে গৌরি গান্ধারি ক্রিভুবনশঙ্করি সর্বলোকবশঙ্করি नर्वजी भूकवद नक्ति नृयुक्त पूर्वात तात क्वीँ बाशा #1 **इन्तु**न्छ। है॰ इन्तुाय नमः। 🗱। गक्उन्। किन अव्याहा। 🗢 । विषह्यानिवीतः। थः थः। 🗭 । वृश्विक्वियम्ब्रीः । ওঁ সরহ মুঃ। ওঁ হিলি হিমি চিলি इनु:। ७ हिनि हिनि हिनि मुः। तुमारा कुः। महिल्ला (मः (वक्ष) मु: । क । मृशिकविष्ठप्रवीषः । ७ (में से हे । जानमहिन्तु काया अ न॰ ना॰ ठे: । क । मूबिकनाण-भवाः। ७ मत्राग कः व्यमत्रागकः বিসরণে ফু:। এতদ্বস্ত জপন্থেত-जर्वन नाक्तनार ब्रिक नामा छ वि । 🔆 । लूजा विवस्त्र भवाः। 📽 हो। हो। ह् बक्ट ७ बाहा गक्फ रू किए। *। मर्बकी दिवस्त ৰীল। ওঁ নমে। ভগবতে বিঞ্বে সর সর হন হন হ॰ ফট্ স্বাহা। 🛊 । जुथ्नुजर जलः । ७ वज्रथ वज्रथ बाहि वाहि नासामत्र मुक मुक ৰাহা। ওঁ মুক্তাঃ পাশা বিপাশা-क मुकाः मूर्योग तन्ययः। मूकः नर्व ख्याम्नर्ड अञ्चि भाती ह भाती ह স্বাহা । এত্তথো রন্যতরেণাষ্ট্রবার^ত कल मिक्सिक्या (तर्ग भीषा मूर्थ शुनवा खवि । 🗱 । हनूमखः। 🤏 रन्माञ कनु। जाकाय छं कहे। 🛊 । वीव्रमाधनम् । इः भवननम्ताय षारा। छ। यथ षापूर्भिने। ७ নমো ভগবতি চামুণ্ডে রক্তবাস-সে অপুতিহওরণ পরাক্রমে **অ**-मूक वधाय विष्ठाल बाहा। जापूर त्रक्रभार्षमाव्छः ममू पुगामिनी नही-**एटि उवत ज्**लो वा मक्किगामूथ खेक् वाङ र्जालर । यावर गिः म्-याजि जावर नानाः मृग्रिक माजाः १ % । भ्यामानरेख्यकाः । भ्यामानः रेजब्रिव बद्रकृषिद्राष्ट्रि वना जन्मित निष्ति भारति सम भरनावयान् भूवय ए॰ कर्ष् वाशा का बाना মালিন্যা:। ওঁনমো ভগবভি জ্বাবা: মালিনি পৃধ্নণপরিবৃতে ভং কট্ बाहा। 🗭। महाकालाः। 🥸 (कु॰ ফুে কোে কোে পশ্ম গৃহাণ ত क्ट्रे बारा। १। अर्थ निगप्रवित्तनः (भाक्र १ म)। ७ नम अं ए निर्शास ভিশ্মভেজে৷ ৰশ্ময়• ধিবে্ভা বন্ধ-মেত ব্যেন দত্ত তস্যা স্থিতা नाज्य बादक व्यवादा शेरदा । 🗱 । व्यथ हिरिमञ्जः। 🥰 हिहि विवि वाखानि महावाखानि चम्-क (स वन्नमानय बाहा। 🛠 । অগ্ৰক্ষ্য । ও ভাষ্ট্ৰ যজামছে मृगक्षिः পুडिवर्জनः উद्यासक निः। वक्षनाट मृत्छा मूकीय माम्डाट । #। व्यथ मृठमः जीवनी मञ्जः। रशें ७ डूँ मः ७ जू जूरा यः **ब्राप्तरः यद्यामस्य मृगन्तिः मृ**श्चि-वर्षन उद्योकक भिव वक्षनाग्राख्या मूकीय माम् जाट हो। ७ मु नः '७' ज् ज्वः यः। ইত্যाদि उज्ज-ञातः॥ व्याकर्षभाषि वीज्ञानि वाङ्ग्र खराकाकानि॥ 🗯 🛊 ॥ 🗐 क्षम-সর্বাবভার বীজত্ব যথা। দানব উ-वाह। अधुना क्षक्त अ खु॰ शक्ति न्र्र **७**मः स्रगः। मर्स्या स्वजात्रागाः বীজন্ধণঃ সনাতনঃ।। ইভি বুদ্ধবৈ-वार्ख क्रिक्कइ, सथा ७ २२ व्यव्यावः॥ बीककः भू॰ माजूनुककः। ইতি
किरोधाः। वृक्ष्विष्णयः। विक्रयाः
मात्र ইতি হিन्दीकाषा। छटপর্য্যায়:। পীতসার: ২ পীতশালক: ৩ বৃক্ষপৃত্র: ৪ পিয়ক: ৫
সক্ত্রক: ৬ আসন: ৭। অস্য গুণাः
। ছঠ বীসর্প চিত্রমেছ গুদুক্রিমি
স্লেম্যাসু পিত্র নাশিক্ষা বৃচ্যত্বণ।
কেশ্যব্রণ । রসাধনত্বক । ইতি
ভাবপুক্ষো:। বীজে ল্লী।।

वीबकाणः) भू भग्नवीब्यथात्रकः वीबकायः) किका। क्षांकवः हेलि भग्नाउः । हेलि खत्रकः ॥ खर् भर्गायः । वत्रावेकः २ । हेल्यत्रः ॥ कर्निका ० । हेलि खव्राध्यः ॥ वा-विष्युः ८ ण्यावेकः ० । हेलि भग्नव्यावनी ॥

वीह्नक्ट जी वासीक्रमः। देखि वास्तिर्घण्डः॥

वीबगर्छः भू भाषायः। ইতি द्रावनिर्घण्डः॥

वीबक्षिः जी निश्ची। ইতি রাজ-নির্ঘটঃ॥

वीकथानाः ज्ञी थानाकः। ইতি ज्ञाकनिर्यकः॥

बीबन ब्री व्यवनः॥ वस्त्र॥ कारक बीदक्षीर्वह भूः। इंडि मात्रस्जः॥

भू॰ भाजूनुक्कः। ইতি विज्ञापकः। सूह ख्याखकः। हिड

वीस्रशृञ्ज क्षी मक्ष्यकः॥ महनः वृक्तः। ইতি মেদিনী॥

वीबन्दः भू॰ कमन्द्रः। हेजापद्रः ॥ हावात्मवृ इंजि वक्कावा। विः कोता देखि दिन्ही छात्रा । ७८-नर्यायः। वीकन्नः २ न्नवीकः ३ সূকেশরঃ ৪ বীজকঃ ৫ কেশরাম: ৬ भाजुन्कः १ मून्वकः ৮ कहकः २ बीबकनकः ३० बहुनः ३১ म्छ्यः ह्र : >२ न्त्रकः >० (त्राह्यक्षः >८ । व्यम्। क्ष्म खगाः। व्यम्भद्रः। कर्षे षुः। উष्-पुः। याम काम भवन जनवर् । कश्चेष्माथनकत्रप् । वर्षु षः। श्रुषः। मीननषः। किः कातिषुः । भारतषुः । व्याधान क्ना ऋर्षाण श्लीरहाबावर्ड नानि-ত্ব। বিৰক্ষে ক্রিয়াণ শ্লে ছর্দ্য। क मन्द्रक्षाः इंडि द्राविवर्षेः ।। 🛊 ।। अभिन्। वीसभूतकवा वार् व्राम्यः मीननः वयु । व्रक्रनिष रुत्र' कर्श किस्ता स्तर (भाषक'।। শ্বাস কাশাক্তি হর ছব্য ত্কা रतः म्डः। उत्सम् मश्करी। यथा। वीजगृद्धा रुगद्रः (गुर्का मध्रता मध्यक्षं हो। मध्यक्षं हिका वाबी রোচনী শীতলা अवः ।

तक्किल क्य यात्र काण हिका

जुमानशा। ইতি ভাবপুকাশः।।
वीक्षनुर्गः पू॰ ছোলকः। ইতি

तक्षमाना।। वीक्षनुराः। ইতি রাজ
নির্ঘটা।।

वीवाशिका जी व्यक्षकायः। इंडिजाकिमर्यकः॥

वीक्रक्तकः भू वीक्रभूदः। ইতি वांकिनिर्घण्टः॥

বীজনাতৃকা জী পদাবীজণা যথা। পদাক্ষণ পদাবীজঞ্ কৰ্ণিকাৰীজ মাত্কা। ইতি হারাবলী।।

বীজ্য: কি **স্বস্**তুর:। ইত্য

विजयहः शूर भानाप्रिः। यथा।

सद्योगर्गा अभुवीका मूनका स्थान

नार्यः। পर्वयान्य इक्षार्गा स्वन्य

काः महाकी मूथाः॥ भानप्रार्या

वीजयहाः मः मूईका स्थान्यः। मुप्तः

र्वनम्थिका यम् याप्रार म्लका
उरः ॥ ইতি হেমচন্দ্রः॥

ৰীজবেচন লী ভ্ৰমপাল:। ইতি বাজনিষ্ট:।।

বীল্লবগন লী ক্ষেত্রে বীলস্য ক্ষেপণ । তস্য দিন দীপিকা-যাং। পূর্বাঞ্ ধাস্য ফ্লি পিত্র্য

শিবান্যভেষ্ রিক্তাষ্টমী বিগভ চ-मु जिथि विशय । घाकानि शी भगूरत विषकार्किवास भाखन्तु (यांग कद्राप्य इल प्राइ: ॥ इ-ल भुवा इवसी कवशनमा विधिः म्-**७:।** हिंबायाक्ष मूर्ख क्लमु श्रित्र স্থমনুজোদযে।। হেমবারি বিলি-धन्र वीकांन्यामयजः मूहिः । इन्पुः **हिट्छ निशायाथ सगः गृष्टि ज्याः व-**(१८॥ क्षा हात्त्रान् (नार्नाइ॰ নৰ্ত্তকা হৃষ্টমানসং। পাত্ৰথ: কল-म गृश इस मा मूनी द्राय ।। पु॰ रिव वमुक्तरंत्र भी छ वङ् भू स्र कन भुरि । नम (ख रम भू छ॰ निष्ठ) क्षि॰ নেধা শুভে স্ক্মরোইন্ত সর্বশ-न्यानि काल (६व: नुवर्ष जू। कर्ष-कास्त खबसुगुरा शान्त्रन ह शतन ह ৰাহা ॥ উপ্তা বীজন্ত ভবৈৰ ভো-क्रवाः वास्रवेशः मरु । वीस्रवेशनः পাকাপত্য তীর্থেন। যথা হারীতঃ। কনিষ্ঠাৰ্যা: পশ্চাৎ প্ৰাত্তপত্য মা-বপন ৷ হোম ভর্গণে প্রাজ্ঞাপত্যেন वर्गानि । रहाम उर्नाप नाज ह्मा भनकारि छर्ना । भन्नाभनः। रिवणात्थ वनन॰ (मुठे॰ मध्यन॰ (द्रा॰ হিণী রবৌ। অতঃ পরমিমধ্ম ন জাতু শাবণে শৃত ।। জ্যোতিৰে। ्भ्र डापुभरा म्लः রোহিণ্য खत्रकः ল্পুনী। বিশাখা শতভিষা বাথ খা-मुजाया॰ द्वार्थां वद्गा ॥ महाश्चा व्रज्ञनी॰ नीली॰ शूध दिख र्विष्जुः (छ। वर्षे काटि भूम (छ (घ भाष-यन् रेनव पूर्व । जा बारास गृह भर्षा वा भारार जर्म भावनन् । পরাভব রিপু র্যাভি ক্লসাখন श्वक्षः ॥ निषा नीषीश्रवाभक िका श्वानत्राह्य । कावि-দারক সর্ব সর্ব নিম্বভি মক্ল ॥ निन्नः इति मा । काविनात्रका ब्रक्डकाक्षनः ॥ (एमाज्रुम। वृक्ष वीन ज्ञाला मत्वन द्वाभारत । বসুংঘতি সুশীতেতি পুণ্যাঘতি পরেতি চ॥ নম স্তে শুভগে মিত্যু॰ क्रा १४॰ वर्ष जा मिछि। ইতি **ভ্যোতিস্তত্ত্ব ॥**

बीबद्रञ्जः पृ॰ भाषकणायः। ইতি (एमहम्पुः॥

बीबत्कः भुः अनवः। ইভিद्रासः निर्धण्टः॥

वीकमक्षयः भू वीकमःग्रहः। छ हुडाणुडिमनामि र्यथा। इस्ता हि-बामिडि बाडी (त्रवड्याः जुवन घरव। हिरत चार्य श्वती ण्रक वीकः धार्यः स्ट्रवामस्त्र ॥ सारव

वा कालुवि वाशि नर्ववीकावि भः गुरू । त्नावरयखा भरवामु मान (बो हाननिवानस्यः ॥ उउन्ह न्दिकाः वश्वा (भाषरयह भूनः भूनः । सामराह मुगल्लन यथा क्रिक न म्यूरम् ॥ मीनानिम ह मंग्यू है वृद्धे। जानइउक वट । वर्जनी य॰ उथा वीक यर मार की है म मित्रिष्ठ ॥ 🕸 ॥ यान्याहि स्पृति विणाथ भूबी मार्चमु भिर्काउन रैडः मुडारह। धानति मः शाभन रमयू नाउ॰ मृश हित्र के भू शृंरहार-(ययु ॥ मोमप्रापिछ अधा कार्धा ত্র্যন্তরেষু চ কারযেৎ । মীনে লগ্নে শুভে চন্দে নির্ধন ক্র বির্দ্ধিত।। (क्छवा (का हरक बामा गर्गा व मिक नर्वमा। धनमाथ नर्वानाक हिजाय (एहि स्म भागः) भारा॥ मम हेरारेय हेरापियी नईलाक विवचनी कामज़िशिश भागा (महि बाहा। ब्लब्धिया हेश भव्य धाः न्यागात्त्र विनिक्तिश्र ॥ भूत्रामः मर्था थानामा थात्ररार । भवक थान। द्राण्यस्य म्विकामि निर्ख्य ॥ मिक्न पिड्राथ ग्रामन जामिन वामु मादीयु । व्यवनित मना कः

मानाः न वृश्य वृथवाम् इ स्र्याः । जित्र खर्त्र (त्रवज्राः धिनेश वा-क्ष्य ह । अरज्य वर्षम् विरद्ध्यः धान्य निष्ठ्यः ।। ज्या ज्या विष्याचा ध्रव (लोक भूनर्वम्नि भू-याम । ज्या व्याप्ति । ज्या । ज्या व्याप्ति । ज्या । ज्या व्याप्ति । ज्या । ज्य

बीबम् बी भृथी। ইভি हमः हेमुः॥

बीका या बीरकन। यथा। वीरकन मह कर्यकि बीकाकरद्वाकि। ইकि मिकाइरकोमुनी।।

बीबाक्छ॰ बि উপ্তক্ষ । ইত্য भन्नः ॥ इ वीडिन मरु क्ष क्ष क्ष क्ष ब्य श्वीडिन मरु क्ष क्ष क्षे वीडिक् श्वीय मस् वीडिडि डाइ। व्यापा-वृक्ष भन्ना ८ क्षे डिलक्षे । ইडि खन्न डा।

वीजामः ज्ञी वृक्षामः। ইভি ब्राजः निर्घण्डः॥

ৰীজী লু পিতা। ইতি ছেমচন্দু:
।। বীজবিশিষ্টে ত্ৰি।।

ৰীজোদক স্নী করকা। ইতি ক্রি কাওশেশ:।।

বীৰোভিচক্ৰ• শ্লী বীৰ্বপনন্ধন্য শুভাশুভজ্ঞানাৰ্থ সৰ্পাকায়চক ।

यथा । স্र্যাভাদুরগঃ স্থাপ্য জিনা-ড্যেকান্তরক্রমাথা মূখে ত্রীণি গলে बीणि जानि घारण ज्रात ॥ भूह চত ৰহি: পঞ্চ দিনভাচ ফল ব-(प्र । वर्रान (ठाठक विष्ठार शन-(क रुक्रात्रक खथा ॥ उत्तरत्र शान) वृिकः नार शूह धानाकर्या छ-বেৎ৷ ইতি রোগভয় রাজ্যে চক্রে वीत्बाधि मञ्जाद ॥ मूर्या । मूर्या ভুঙ্গ্যমান নক্ষত্রাৎ ি ত্রিনাড্যেকা-खत्र क्रमाहि यराश्विन्रा॰ त्रवि **खरा जा मात्रक्र भगरय**् । जिना-ডীযু অশ্বিনী ভব্নণী কৃত্তিকাৰু দত্ত্বা রোহিণী वश्चः कार्या मृगनिवन चामु। भूनर्वमू नाडीय् मदा भूरवता খ্যাঃ। চোচক শস্য শ্ৰাভা। के उपः। चाजिवृद्धि द्रनावृद्धिः मल-ভা ম্বিকাঃ খগাঃ। পুত্যাসলাক রাজানঃ ষড়েতে ইত্যঃ মৃতাঃ।। हे**जि ब्राजिस**न्।।

वीकाः वि यमाकमाहिर वनस्यः १ उर्प्यागः । वनमःस्यः २ । इजामतः ॥ वःष्णाः ० कोनक्यः ८ वनसः ६ । इजि षद्मत्रप्रायनी ॥ वनीनः ७ वनाः १ वनस्यः ৮ । इजि कहि। वृद्धः ॥ वीितः जी जाष्मवन्ती। इंडि वीिका किटिश मुमब्बोक्डजाप् वीि नः। भारत्ववीषा इंडि ভाषा। इंडि किटि ॥ वीना जी विपूर । इंडि सिविनी॥

चनामथ्या उवाहरः। उट्शर्यायः। বল্ল की ২ বিপঞ্চী ৩ । সাতু সপ্ত ভজীবুকা চেৎ পরিবাদিনী ৪। इंडापदः ॥ धुनिमाना ७ । इंडि कहाधतः॥ वद्यमा ७ विशक्षिका १। इंडि भद्रज्ञावनी ॥ धाववः **छी ৯ क**श्रेक्षिका >• । उरस्य रा यथा। भिवन्ध वीना वधी > नवंध-**छ्याः कष्ट्रशी** २ नात्रम्म्य सर्ची ० গণামা প্রভাবতী ৪ বিশ্বাবসো: वृश्जी ৫ ज्यूरताः कलावजी ७ हा-खानानाः कर्खानवीना हाखानि-का हु १। उन्नाम् हिनाः नामाहि यथा। उन्धाः कावः (कानश्कः। তস্যা निवस्तर উপনাছ:। ভস্যা म् ७: भुवानः। उम्याः भुाष्ठवक कार्ष्ठः कद्म जः भुमिषकण । जम्मा মূলে বংশশলাকা কলিকা ক্ণি কাপি চ। ভদ্যা বাদন কোণঃ। इंडि (इनहम्मारयः ॥ जाम्या विव व्रगः वान्यमान् मुष्ठेवाः ॥ वीगार ७:

भित्रकाष्ठः। उद्भवर्गायः। भुवानः २। इज्जिनद्रः॥

वीशान्वकः शूर **উপनारः। ३**७ राजावली ॥

वीगावामः जि वीगावामकः। छ८ शर्यायः। देविनकः २। इछात्रद्रः॥ बीगावामकः शुः वीगावामाकः।। इिज्ञानका ॥

वीगामाः म्॰ नात्रमः। ইভি करे। ध्रः॥

বীত॰ ক্লী অসারহন্ত্যখ॰। যুদ্ধা ক্ষম মিত্যর্থ:। ইত্যমর:॥ অঙ্কু শক্ষা ইতিমেদিনী॥

বীত স: পু॰ মৃগপক্ষিণা বন্ধনো পকরণ । ইত্যমর: ॥ মৃগপক্ষি ণা॰ বিস্থাসহেতো: পুাবরণ । ইতি মেদিনী॥

বীতঃ ত্রি শান্তঃ। ইতি হেমচলুঃ
।। গভঃ। বিপূর্ব ইন খাতোঃ ক্ত
পুত্রবেন নিয়মঃ।।

वी उपसः जि उ जिल्हा । उर् भर्य । या व व व व र । इ जि कि । ध्रः ॥

विजनः भुः क्कभार्यद्वयः। यथा।

हम्पारयः॥ जामा विव

क्कस्त कक्षत्रामधाः क्कभाष्ये ज्

बीजनः भुः क्कभाष्ये ज्

क्कस्त कक्षत्रामधाः क्कभाष्ये ज्

बीजना इिज हम्मः॥

भुः वीगाञ्चिजनावः वीजज्यः भुः विकृः। यथा।

বীথী অক্রঃ পেশলো দক্ষো দক্ষিণঃ ক্রমিণাম্বরঃ। বিদ্বত্তমো বীতভ-যঃ পুণ্যশ্রবণ কীর্ত্তনঃ ।। ইতি তস্যসহসুনামস্তোত্ৰ ।। ধীতরাগঃ পু॰ বুদ্ধঃ। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।। বিগতরাগে ত্রি। यथा। मूक्ट असन् विश्वमनाः मूरथ-ষু বিগত স্পৃহঃ। বীতরাগ ভয ক্রোধঃ স্থিতধী মুনি রুচ্যতে ॥ ইতি ভগবন্ধীত। ॥ বীতশোকঃ পু॰ অংশাক্রকঃ। ইতি শব্দযালা ৷৷ বিগতশোকে नि ॥ ৰীতিঃ স্ত্ৰী গতিঃ ॥ দীপ্তিঃ ॥ প্রজন ।। অশন ।। ধাবন ।। ইতি মেদিনী।। পুং ঘোটকঃ। ইতি रश्याज्यः ॥ বীতিহোত্রঃ পু॰ অগ্নিঃ। ইত্য-मद्रः ॥ मृर्याः । ইতি মেদিনী ॥ रीशिः द्वी वीशी। यथा। পঙ্জি वृष्यं ग्राटक्ष्यू वीथि वींथी ह বীথিকা। ইতি রত্নকোষঃ।। বীথিকা স্ত্রী বীথিঃ। ইতি শব্দ-त्रञ्जावनी ॥

रीथी खी পिक्किः।। ग्राकः।।

নাট্যৰূপকঃ।। বৃত্ব । ইতি বে-

षिनी ।। < ।। अथ वीथी । वीथा। মেকো ভবেদক্ষঃ কশ্চিদেকো ২ত্র কল্পতে। আকাশ ভাষিতৈ ৰুক্তৈ শ্চিত্ৰাণ প্ৰত্যুক্তি মাশ্ৰিতঃ ॥ मृচरयकुति म्झातः किक्षिन-न्यान् त्रमानि ॥ मूथ निर्वहरण मन्नी जर्थ প্রক্তবো ২থিলাঃ। কশ্চিদিত্যুত্তমো মধ্যমো ২ধমো বা। শৃঙ্গার বহুলত্বাক্তাস্যাঃ কৈ-िंगिकी वृद्धि वष्टलञ्च ॥ 🕸 ॥ ञ-স্যা স্ত্রযোদশা স্থানি নিদ্দি শন্তি মনীষিণঃ। উদ্যাত্যকাবলগিতে প্রপঞ্চ স্ত্রিগত ছল ৷৷ বাঙ্কেল্য-ধিবলে গণ্ড মবস্যন্দিত নালিকে । অসৎপ্রলাপ ব্যাহার মৃদ্বানি চ তানি তু॥ 🗱 ॥ তত্রোদ্বাত্য-কাবলগিতে প্রস্তাবনা প্রস্তাবে मामाङ्त्रण विकर्ण ॥ ₩ ॥ भि-থো বাক্য সমুদ্ভূত প্রপঞ্চো হা-স্যক্ষতঃ। যথা বিক্ৰমোৰ্শ্যাণ। ৰডভীস্থ বিদূষক চেট্যো রন্যো-ন্য বচন॰ ॥ श्रा ত্রিগ্ত॰ স্যাদনে-কার্থ যোজন প্রুতি সাম্যতঃ। যথা তত্রৈব রাজা। সর্বক্ষিতিভূ-তा॰ नाथ पृष्ठ। সর্বাপসুন্দরী। রামা রম্যে বনান্তে স্মিন্ মযা বিরহিতা স্বয়া ৷৷ নেপথ্যে ত-

ত্রৈব প্রতিশব্দঃ রাজা কথ দু-ৰ্ফেত্যাহ। অত্ৰ প্ৰশ্নবাক্য মে-বোত্তরবাক্যত্বেন যোজিত। ন-টাদি ত্রিত্য বিষয় মেবেদ মিতি কশ্চিৎ॥ 🛊 ॥ প্রিয়াভৈ রপ্রিয়ে ৰাক্যৈ ৰিলোভ্য চ্ছলনাৎ ছলং । यथा বেণ্যা ভীমার্জু নৌ। কর্ত্ত। দ্যুত চ্ছলানা জতুম্য শরণো-ন্দীপনঃ সো ২ভিমানী রাজা দুঃশাসনাদে গুরু রনুজ শতস্যা-হ্বরাজদ্য মিত্র°। ক্ষা কেশো-তরীয় ব্যপন্যন পঢ়ুঃ পাণ্ডবা यमा मामाः काट्ड मुर्या। धत्ना ২সে কথযতু ন রুষা দুর্ফু মভ্যা-গতে সং।। অন্যে দ্বাহু শ্ছল॰ किक्षिथ कार्या गुलिमा कमािष् । উদীৰ্য্যতে যদ্বচন বঞ্চন। হা-मा तावक्ष।। 🕸 ।। वात्क्रिल ई।-স্য সমন্ধে। দি ত্রি প্রত্যুক্তিতে। ভবেৎ।। দি ত্রীত্যুপলক্ষণ যথা। ভিক্ষো মাণ্স নিষেবন প্রস্করে কিন্তেৰ মদ্য° বিনা মদ্যঞ্চাপি ত-ব প্রিষ প্রেষ মহে বারাঙ্গণাড়িঃ সহ। বেশ্যাপ্যর্থ রুচিঃ স্বত স্তব थनः मृास्त्रम क्रीर्स्यान वा क्रीसंः দ্যুত পরিপ্রহোপি ভবতো নম্ভদ্য কান্যা গতিঃ।। কেচিৎ প্রক্রান্ত

বাক্যস্য সাকাষ্ক্রস্যৈব নির্বৃত্তি বা-ক্ষেলি রিত্যাহঃ। অন্যে চানেক-मा अनुरेमाक मूखद्र ॥ 🗱 ॥ ज-ন্যোন্য বাক্যাধিক্যোক্তিঃ স্পর্দ্ধ-ষাধিবল মতে। যথা মম প্রডা-বত্যাণ বজুনাভঃ। অস্য বক্ষঃ क (वटेनव निर्मश शमयानया। नी-লযোগ্যলযিয্যামি ভুবনম্বৰ মদ্য वः ॥ अमूर्यः। অরে রে অসুরা-পসদ অলমমুনা বহুপ্রলাপেন यम थलू। जाना क्षेत्रख जुजनख म-মৰ্গিতোৰু কোদণ্ড নিগলিত কা-ও সমূহ পাতৈঃ। আন্তা**॰ সম**ন্ত দিতিজ ক্ষতজোক্ষিতেয় কৌণী ক্ষণেন পিশিতাশন লোভনীয়া ।। 🟶 ।। গণ্ড॰ প্রস্তুত সম্বন্ধি ভিন।-র্থ॰ সম্বরু বচঃ। যথা বেণ্যাণ রাজ। । অধ্যাসিতু তব চিরাজ্জ ঘন স্থলস্য পর্য্যাপ্ত মেব করভে क्र मत्माक्र यूग्रा । जनस्र तः श्रवि-শ্য কঞ্চুকী দেব ভগ্ন ভগ্ন মিত্যা দি। অত্র রথকেতন ভঙ্গার্থ॰ বচন मूक्रजनार्थ मदस्य मदकः॥ #॥ गांशान॰ **यद्गताक्रमामा**शांव-मानिक ज्या श्रा इतिक त्राटम जीका जाम काम कथू उ অপ্রা এণ গভৰ ছহি- যো রা-

णा विन्यन श्रनायिमद्वालवः । অথ কিমাবাভ্যা• রাজোপজী-বিভ্যাণ ভবিতব্যণ। সীতা জাদ-সো তুহাাণ পিদা লবঃ। কিমাব-যো রযুপতিঃ পিতা। সীতা সাশ-कः मा खन्नशा मक्षरणः कथु जुद्यानः म जनारक अव भूर्वी अछि ॥ 🛊॥ প্রহেলিকৈব হাস্যেন যুক্তা ভব-णि नाणिका। मेम्रत्नकायूर्'खत्र° প্রহেলিকা। যথা রত্নাবল্যাণ। সু-সঙ্গতা সহি জন্মক দেতু মণ আ-অদা সো ইধজ্জেব চিউদি সাগ-तिका कम्मकर्तन जरु॰ जाजाना সুসংগ চিত্তফলঅসা। অত্র ব রাজ্ঞঃ ক্তে আগতেত্যর্থঃ সংব্-তঃ ৷৷ ৠ৷৷ অসৎপ্রলাপো যদ্বাক্য মসম্বদ্ধ তথে। তর । অগ্রতো-পি মূর্খস্য পুরে। যচ্চ হিত॰ বচঃ। তত্রাদ্যুত যথা মন প্রভাবত্যা । थमूग्युः महकात्रवत्नी मवलाका मानम॰ जारहा कथ मिटेहत। ज-লিকুল মঞ্চুল কেশী পরিমল বহু-লা রসাবহাতমী। কিশলযপেশ-লগাণিঃ কোকিল কলভাষিণী প্রিয়ত্তমা মে ॥ এব মসরক্ষোত্ত-রেপি। ভৃতীয় যথা বেণ্যা দু র্বোধন প্রতি গান্ধারী ব্যক্তা।

🗱। ব্যাহারো যৎ পরস্যার্থে হা-স্যলোভকর॰ বঁচঃ। যথা মাল-বিকাগিমিত্তে। লাস্য প্রযোগা-বসানে মালতী নিৰ্গন্ত মিচ্ছতি विमूचकः भामत्व जेनातमा भूधा গনিষ্যসি। ইত্যুপজ্জনেণ দাসঃ। বিদূষক প্রতি আর্য্য উচ্যতা য স্তথা ক্রমভেদে। লক্ষিতঃ । বি-দূষকঃ পউম॰ বন্ধণ পূআভোদি गारे गांव निह्नता मानजीत्मयं ইত্যাদিনা । নাযকস্য বিশুৰ্খ-নাধিকা দর্শন প্রযুক্তেন হাস লোভ কারিণা বচসা ব্যাহারঃ ॥ 🛊 ॥ मिया ७०। ७०। मिया यव मा म्मर हि छ । करमन যথা। প্রিযজীবিততা ক্রৌর্য্যণ নিস্নেহত্ব ক্তন্নতা। ভূষ স্তদ্দৰ্শ-নাদেব মনৈতে গুণতা॰ গভাঃ ।৷ তদ্যা স্তক্রপ দৌন্দর্যা ভূষিত ষৌবনশ্ৰিষা। সুখৈকাৰতন জা-क मुः थाटेयते यमाधूना ॥ এতাनि চাঙ্গানি নাটকাদিযু সপ্তব্ভ্যাপি वीशा गवना विरश्यानि निन्न-भेज्या नार्रेकामियू विनिविकी-माणि देरशामामाजानि। वीथी ह নানারসানাখার নালাবিশ্তরা विजयाकीकीयः। यथा नामविका।

ইতি সাহিত্যদর্পণঃ ॥ #। #॥ সূ-र्यागमनभयः। यथा। नागवीशु-खत्रावीशी अजवीशान्छ मिन्दिं। উত্তে আষাত মূলন্ত অজ্বীথ্যুদ-যা স্ত্ৰয়ঃ ৷৷ অভিজিৎ পূৰ্বতঃ স্বা-তী নাগবীপ্রাত্তরা স্ত্রয়ঃ। অশ্বিনী কৃত্তিকা যাম্যা নাগ্ৰীথ্যত্তরাঃ স্তাঃ ৷৷ রোহিণ্যাজা স্গশিরো নাগবীথি রিতি স্মৃত। । পুষ্যাঞ্চে-ষা পুনৰ্বসো বী থি রৈরাবতী স্থৃ-তা ॥ তিসুস্ত বীথয়ে। ছেতা উ-ত্তরো মার্গ উচ্যতে। পূর্বা উত্তর-ফল্গুণ্যো র্মধা শৈরোবতী ভ-বেৎ ৷৷ পূর্বোত্তরে প্রোষ্ঠপদে গোবীপী রেবতী স্মৃতা। শ্রবণা চ थनिष्ठी **ठ वाक्र**नक जतकाव॰ ॥ এতাশ্চ বীথষ স্তিস্যো মধ্যমে৷ মার্গ উচ্যতে । হস্তা চিত্রা তথা স্বাতী নাগবীথি রিতি স্মৃতা ।। বিশাখ মিত্র পৈত্রশ্চ নাগ বীথি রিহোচ্যতে। মূল পূর্বোত্তরাষা-ঢা বীথি বৈশ্বানরী তথা।। স্তা खिमुख वीथा छ। मार्गि देव मिक-ণে বুধৈঃ। ইতি মাৎস্যে ১০১ অধ্যাষঃ ॥ 🛊 ॥ অপিচ। উত্তর॰ ষদগন্ত্যস্য ভক্তবীথ্যাশ্চ দক্ষিণ । পিতৃযান॰ স বৈ পস্থা বৈশ্বান- ॥

রপথাদ্বহিঃ।। তত্রাসতে মহাত্মা-ন ঋষযে। যে ২গ্নিহোত্রিণঃ। ইতি বিষ্ণুপুরাণে ২ অংশে ৮ অখ্যায়ঃ ॥ 🛊 ॥ তত্র জ্যোতিশ্চক্রে বীথী-ক্ৰমো ৰাযুনোক্তঃ। সৰ্বগ্ৰহাণা॰ ত্রীণ্যেব স্থানানি দ্বিজ সত্তমাঃ। স্থান॰ জারদাব• মধ্য৽ তথৈরাব• ত মুক্তরণ।। বৈশ্বানর দক্ষিণতো निर्फिष्ठ भिरु छङ्गुठः । छांपव মধ্যমোত্তর দক্ষিণ নার্গত্রয় প্র ত্যেক বীথি ত্রযেণ ত্রিধা ভিদ্য-তে ৷ তথাছি ত্রিভি ব্রিভি রশ্বি नामि नक्टिं नागवीथी गर्ज-বীখি ঐরাবতী চেত্যুত্তর মার্গে বীথীত্রয়ণ । আর্মভী গোবীথী জারদাবী চেতি বৈষুবতে মধ্য-मार्त्र वीथी व्यः। अकवीथी मृ-গৰীথী বৈশ্বানরী চেতি দক্ষিণ মার্গে বীথীত্রয় । তদুক্ত তত্ত্রৈব । अभिनी कृं छिक। यागा नाग-বীথীতি শব্দিতা। রোহিণ্যার্ডা মৃগশিরে। গজবীথ্যভিধীযতে। পুষাক্ষেযে তথাদিতা চৈরাবতী স্থৃতা । এতা স্ত বী-থয স্তিসু উত্তরে৷ মার্গ উচ্যতে ॥ उथा एक ठालि कन्छत्नो गया চৈবাৰ্যভী মতা। হন্তা চিত্ৰা

তথা স্বাতী গোবীথীতি তু শ-**क्रिजा।। জ্যেষ্ঠা বিশাখানুরা**ধা वीथी जातमावी गठा। এठास्त वीथय खिट्या मधारमा मार्ग छ-**छाट्य ॥ मृलायाटा**खितायाण অজবীথীতি শব্দিতা ৷ শ্রবণঞ্চ ধনিষ্ঠা চ মাগী শতভিষ স্তথা ॥ বৈশ্বানুরী ভাত্রপদে রেবতী চৈব কীৰ্ত্তিতা। এতান্ত বীপয স্তিস্থো দক্ষিণো মার্গ উচ্যতে।। বাম্যা ভরণী। আদিত্যা অদি-তি দেবতাকা পুনৰ্বসূঃ। মাগী মৃগবীথী ৷ এবং স্থিতে অগস্ত্যা-मूख्य मजवीथा। ख **मकिन**॰ কিন্তু অগন্ত্য নিৰুচ বৰ্ত্তিনে৷ বৈশ্বানর পথাৰহি বৈশ্বানর-वीथी॰ विश्वाय म्यवीथीमाज॰ পিতৃ্যান মিত্যর্থঃ। ইতি তট্টী কাষা শ্রীধরস্বামী।।

বীথ্যঙ্গঃ ত্রি নাটকভেদঃ। ইতি হেমচম্রঃ।। অস্য বিবরণ বীথী শব্দে দ্রফব্যং ।।

নিপে একবা ।।

বীধু ক্লী নভঃ ।। বাষুঃ ।। অগিঃ

। ইতি সংক্ষিপ্তসারোণাদিবৃত্তিঃ

বীধু ত্রি বিমলঃ । ইত্যমরঃ ।।

বীনাহঃ পু কৃপস্যমুখবন্ধন ।

ইত্যমরঃ ।। অস্য কৃপস্য যমুখ

वक्षनः रयन मूथः यशार् छव वीनाइः नामी. अउँ इंडि था। छः । वित्मार्यं नश्रां कृषमूथं म-तन वीनाइः । नश्र द्वां विद्याः यु मनीयापिषाः द वी पीर्यः विनाइः । वीनाइः कृषमूथवन्न शु इंडि म्युः। इंडि ज्वाः ॥ वीशा जी विष्रुः। ইंडि भक्ष-त्रष्ट्रावनी ॥

বীকা স্ত্রী ক্রিযাগুণজব্যৈর্গপদ্যাপ্ত্রমিচ্ছা। যথা। মুক্তি র্নর্ত্তে হচ্যুতোপাস্তিণ ভৃতণ ভৃত
মভি প্রভৃঃ। ভক্তো বিভূমভি
প্রাক্তো গোবিন্দ মভিতিষ্ঠতি
। অচ্যুতোপাস্তিণ ঋতে মুক্তি
নিদ্যাদিত্যর্থাং। প্রভূ রীশ্বরং ভৃতণ ভৃতণ অভি সর্ব প্রাণিষ্ অস্তি
ইত্যর্থাঃ। বীশ্বোষাণ প্রযুক্তস্য
পদস্য দ্বি ভাবাঃ। ইতি মুশ্ধবোধ
টীকাষাণ দুর্গাদাসঃ।।

বীর ত ও ক শৌর্ষ্যে। ইতি
কবিকল্পদ্রন্যঃ। ও অবিবীরত।
শৌর্ষ্য মুদ্যমঃ। ইতি দুর্গাদাসঃ
বীর কী শৃঙ্গী।। নডঃ। ইতি
মেদিনী।। মরিচং।। পুষ্করমূলং
। কাঞ্জিকং।। উশীরং।। আনকং
। ইতি রাজনির্ষন্টঃ।। বীরশ-

.কে। মেদিন্যাণ প্রকার বকারা-দৌ দুফোঁপি বীরধাতো রস্ত্যস্থ-বকারদৌ দর্শনাদত্র লিখিতঃ।। বীরঃ পু॰ শৌর্যাবিশিষ্টঃ। তৎ পर्यायः। শृतः २ विकाखः ७। ইত্যমরঃ ॥ গণ্ডীরঃ ৪ তরস্বী ৫ । ইতি জটাধর: ॥ 🟶 ॥ জিন:॥ ं नहेः। ইতি হেমচক্রঃ।। বিষ্ণুঃ। যথা। বীরো ২নস্তো ধনঞ্জযঃ। ইতি বিকুসহশ্রনাম ৷৷ শৃঙ্কারা-দ্যক্টরসান্তর্গতরসবিশেষঃ ৷ তৎ পर्यायः । উৎসাহবর্দ্ধনঃ ২ । ইত্যমরঃ।। উত্তম প্রকৃতি বীর্ উৎসাহ স্থায়িভাবকঃ। মহেন্দ্র দৈৰতো হেমবৰ্ণো ২য° সমৃদা-**হৃতঃ॥ উৎসাহ° বৰ্দ্ধয**তি ইতি উৎসাহ वर्कनः नन्गानिषाननः । मान धर्म्मयूष्क्रयू कीवानत्थ-ক্ষোৎসাহকারী রসোবীরঃ।বী-ब्रवरस्य अव तीतः। तीत्रव्हव् শৌষ্যে যঞ স্ফীতত্ত্বৈব স্থা-**मार्ड** ইতি সর্বরস লক্ষণ ক-টান্দিত । ইতি ভরতঃ ।। #।। তান্ত্রিকভাববিশেষঃ। যথা । ত-ত্রৈব ত্রিবিধণ ভাবণ দিব্য বীর পশু क्रमः। पिरा वीदेवकः প্ৰোক্ত॰ সৰ্বসিদ্ধি প্ৰনাযক॰ ॥

ইতি ৰুজজামলে ১১ পটলঃ॥ অপিচ। ভাবস্ত ত্রিবিধঃ প্রে। ক্তো দিব্য বীর পশু ক্রমাৎ গু-রবশ্চ ত্রিধা চাত্র তথৈব মন্ত্র দে-বতা।। ইতি তত্ত্রৈব ৬ পটলঃ॥ অন্যচ্ । পশুভাব হি প্রথমে দ্বিতীযে বীরভাবক । তৃতীযে দিব্যভাবঞ্চ ইতি ভাবত্রয়ণ ক্র-मार ॥ जाती मगमत् अन শুভাব মথাপি বা । মধ্যাক্লে দ শদণ্ডেন বীরভাব মুদাহত ॥ সাযাহে দশদণ্ডে তু দিব্য ভাব শুভপ্রদ ।। ইতি চ তত্ত্বৈব ১১ পটলঃ ।। অন্যক্ষ । জন্মমাত্রণ পশুভাব॰ বর্ষষোডশকাবধি। ততশ্চ বীরভাবস্ত যাবৎ পঞ্চা-শতো ভবেৎ ৷৷ দ্বিতীয়াংশে বীরভাব স্থৃতীযে দিব্যভাবকঃ। এব॰ ভাব ত্রষেণেব ভাব মৈক্য ভবেৎ প্রিয়ে ॥ ইতি বামকে শ্বতন্ত্রে ৫১ পটলঃ।।

ীরঃ ত্রি বীরাচারবিশিষ্টঃ। যথা। সলাচার রতো বীরঃ স লসসী সদা ভবেৎ।। স্বিদাসে-বন॰ স্বর্যাৎ সোমপান॰ মহে-শ্বরি। সর্বথা স্ক্রন্তে দেবি বীর শ্বেজিত মানসঃ।। দিব্যস্ত দে-

বতাপ্রায় শ্চন্দনাগুরু লেপনেঃ । त्रकारमान गरिक्षक मूमिरका নাত্র সংশযঃ॥ ভক্ষাঙ্গ ধূসরো বীর উন্মন্তবদিচেষ্টিতঃ । সূরা-পাণরতো নিত্যণ বলি পূজ। প-রায়ণঃ ৷৷ নর শ্ছাগ্শ্চ মহিষো মেষঃ শূকর এব চা শশকঃ শল্ল-কী গোধা খড্গী সম্মী দশস্ম-তাঃ।। বানরশ্চ খরশ্চেব গজা-श्वामि विश्वभाः। ইত্যामिভि र्ब-ल मीटनः शृक्रस्य स्वर्धे प्रव তা ।। সিদ্ধ মন্ত্রী ভবেৎ বীরে। नवीता ममाशानजः। कत्नी जु ভারতে বর্ষে লোকা ভারত বা-সিনঃ ॥ গৃহে গৃহে সুরাপীত্বা বৰ্ণভূষ্টা ভবস্তি হি । ইত্যুৎপ-ত্তিতন্ত্রণ ৷৷ 🟶 ৷৷ কলৌ তদাচার नित्यद्या यथा। किंवा वीत मत्या **जातः कत्ना नान्डि कमा**ठन । কেবল॰ পশুভাবেন মন্ত্ৰ সিদ্ধি ৰ্ভবেষ্ণা ।। ইতি মহানিৰ্বাণ-**তন্ত্র॰ ।। 🟶 ।। তণ্ডুলীयঃ ।। বরাহ-**কন্দঃ ৷৷ লতাকরঞ্জঃ ৷৷ করবীরঃ ।। অজু নঃ। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।। यखाभिः । ইতি वीत्रशासक-টীকাষাণ ভরতঃ ॥ উত্তরঃ ॥ সুভটঃ। ইতি মেদিনী।। শ্রেষ্ঠঃ । বীরতরাসন ক্রী আসনবিশেষঃ

। ইতি হেম্চন্দ্রঃ।। বীরকঃ পু॰ করবীরঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ৷৷ বীরজযন্তিকা স্ত্রী রণে বীরাণাণ ন্ত্যণ। ইতি হেমচন্দ্রঃ।। বীরণ ক্লী উশীরতৃণ । তৎ পর্য্যাযঃ। বিরণ ২ কটাষন ৩ । ইতি শব্দরত্নাবলী ।। বীরতর॰ ৪। ইত্যমরঃ ॥ বীরভক্ত ৫। ইতি রুদ্রঃ।। অপিচ। স্যাদ্বীর- वीत्रञ्क वीत्रक्ष वह्रमृतकः । বীরণ পাচনং শীতং স্তম্ভনং ল-যু তিক্তকণ।। মধুরণ জুরনুদান্তি মেদজিৎ কফ পিত্তহ্ৎ। তৃষ্ণা-সু বিষ বীসৰ্প কৃচ্ছু দাহ ত্ৰণা-**थरः।।** वीद्रशमा जू मृनः मा। पू-শীর মভয় তথা। অম্ণালঞ্চ সেব্যঞ্সমগন্ধিক মিত্যপি॥ উশীরণ পাচনণ শীতণ স্তম্ভনণ লযু তিক্তক । মধুর জুরক্ছা-**खि यमनूष कक शिखनूष ॥ ज्**-ষাসু বিষ বীসর্প দাহ কৃচ্ছু ত্র-ণাপহণ। ইতি ভাবপ্রকাশঃ।। বীরতর॰ ক্লী বীরণ । ইত্যমরঃ বীরতরঃ পু॰ শরঃ। ইতি ভুরি-্রপ্রবোগঃ ॥

। यथा । गृषु कात्रल माखीर्न সংগ্রাম পতিতং হি ষৎ। জন্ত ব্যাপাদিত বাপি মৃত বা নর মাসন ।। গর্ভচ্যুত ছচ বাপি নারীণা থোনিজা ছচ। সর্ব সিদ্ধিপ্ৰদ দেবি সৰ্বতো ২তি সম্ভিদ ।। ছচ বা যৌবনস্থ।-नाः अर्यग्रिषीत्रञ्जामनः । ইতি মুখ্রমালাতক্রে ৩ পটলঃ ॥ व्यक्त्र नत्कः। **बी**त्रककः ইত্যমরঃ।। কোকিলাকবৃকঃ। ইতি রত্নমালা।। বিল্বান্তরবৃক্ষঃ ॥ ভল্লাতকঃ। ইতি রাজনির্ধন্টঃ সুরগর্ণ। ইতি बीतगर्व क्री क्राक्रिनिर्श्नाः।। বীরপত্নী স্ত্রী বীরভার্যা। ইত্য-युत्रः ॥ ন্ত্ৰী বিজয়। ইতি বীরপত্তা वाक्निर्यकः॥ क्री वीवानाः असना-भारतानः। यथा । वीत्रतानः বৎপান বতে ভাবিনি বা রণে । ইত্যমরঃ ॥ বীরপুশী জী সিন্দুরপুশী। ইতি রাজনির্ধন্টঃ ॥ বীরভদ্রঃ পু• অশ্বনেধাশঃ !! वीत्रत्थकः १। वीत्रकः। देखि त्य-

षिनी ॥ निवगनवित्नयः। ज त्मा १ शिख यंथा। **रे**ञ्चाकर्ग म-হাকালঃ সম্যক্ জ্ঞাত্বা সভীক্ষয় । সত্য यুনে সতী দেবী তৃণীচ-ক্রে স্বজীবিত ।। জোম স্থিতে মুনৌ তত্ৰ তমহাকাল সাধ্যাৎ । ৰুড শ্চাতীব রৌজো ভূৎ বহু কোপামি দীপিতঃ য় তত স্তৎ ক্রোধ জাৰত্নে রাবিরাসীমহা-দ্যুতিঃ ৷ প্রত্যক্ষঃ প্রতিমাকারঃ কাল মৃত্যুঃ প্ৰকম্পনঃ॥ উৰাচ চ প্রণম্যোশ ভূমুঞ্জীণ মহতীণদ-ধৎ৷ আজ্ঞা দৈহি পিতঃ কিন্তে করবৈ দাস্য মুত্তম•॥ বন্ধাও• মেক কবল করবাণি দ্বদাক্ত্যা ইতি প্ৰতিজ্ঞা॰ তস্যেশঃ শ্ৰুত্বা কৃতমমন্যত।কৃত কৃত্য মিবাত্য-স্ত ত মুদা প্রত্যুবাচ হ। মহা-বীরোসিরে ভড় মম সর্বগণেষি-হ ৷৷ বীরভজাখ্যয়া হি স্ব প্রথি-তি• পরমা• বজ। সরু মে সন্বর• कार्या॰ एक्षयुख्य क्षय॰ नय ॥ ইতি কাশীখণ্ডে ৮৯ অখ্যায়ঃ॥ বীরভদ্রক ক্লী বীরণ । ইতি क्रिविदः ॥ বীরভার্য। স্ত্রী বীরপদ্মী।ইত্য-मद्भः ॥

বীরদে

বীরমাতা স্ত্রী বীরজননী। তথ পর্যা<u>यः।</u> বীরসূঃ ২। ইত্যমরঃ বীররজঃ ক্লী সিন্দুরণ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥ বীরস্যধলিশ্চ॥ বীররেণুঃ পু॰ ভীমসেনঃ। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ॥ वोतवं श्री मा भरताहिंगे। ইতি ভাবপ্রকাশঃ॥ वीव्रवर्मा खी वीव्रक्रननी । ইতি জটাধরঃ ॥ वीतवाहः श्व॰ विक्टा **यथा**। बीतवार विमातनः। ইতি छुमा সহসুনামস্তোত্র ॥ বীরবিপ্লাবকঃ পু॰ শুজদ্রব্যেণ-रहामकर्छ।। यथा। वीत्रविक्षाव-কে৷ জুহ্বন্ ধনৈঃ শূজসমাহি-তৈঃ। ইতি হেমচক্রঃ।। বীরবৃক্ষঃ পু॰ ভল্লাতকঃ।ইত্য-মরঃ। অজ্জুনবৃক্ষঃ। ইতি হেম-চন্দ্রঃ॥ বিল্বান্তরঃ। ইতি রাজ-निर्यन्धः ॥ वृक्कवित्नयः ॥ तम्यान ইতি ভাষা। তৎপর্য্যায়ঃ। বীর-তরঃ ২ বৃহদ্বাতঃ ৩ অশারীহরঃ 8। ইতি রত্নমালা।। বীরসূঃ স্ত্রী বীরমাত। ইত্য-म्बन्धः ॥ বীরসেন° ক্লী আৰকবৃক্ষঃ।

ইতি রাজনির্ঘন্টঃ॥ বীরসেনঃ পু• নলরাজপিতা। ইতি নৈষ্ধ ।। वीतरमनजः श्रु ननताजा। ইতি নলোদযঃ।। বীরহা পু॰ নফাগ্নিবান্ধণঃ। ইত্যমরঃ ॥ ষস্যাগ্নিহোত্রিণঃ প্রমাদাদিনা কারণান্তরেণ বা অগ্নি নফৌ নিৰ্বাণঃ স্যাৎ স বীরহোচ্যতে। বীর্যতি শৌর্য্যণ কার্যতি ইতি বীর তঙ্ক ত্ শৌর্ষ্যে ইত্যস্মাৎ চুরাদি ঞিঃ প্রেরণে ঞাস্তাৎ পচাদানি বী রো যজাগিঃ তং হতবান্ ইতি ক্লিপি বীরহ। । ইতি ভরতঃ ॥ विकुः। यथा वीतरा गाधरवा यथः। ইতি বিकृपर्मुनोम ॥ वीतर्खति जि ॥ বীরা স্ত্রী মুরা।। ক্ষীরকাকো-नी ॥ जामनकी ॥ अनवानूका ॥ পতিপুত্রবতী ॥ রম্ভা ॥ বি-माती ॥ मुक्तिका ॥ यलशृः ॥ कौत्रविषात्री । ইতি মেषिनी ॥ পুস্তকান্তরে মুরাস্থানে সুরা বি-দারীস্থানে গম্ভারী ইতি পাঠঃ॥ কাকোলী।। মহাশতাবরী।। গৃহকন্য।। বান্ধী।। অতিবিষা।

বীরা

मित्रा ॥ ३७ ताजनिर्यन्छः॥ সিশ্পাবৃক্ষঃ। ইতি রত্নমালা॥ বীরামুঃ পু• অমুবেতসঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ বীবাৰুক স্লী আৰক। ইতি क्राक्रनिर्यकः ॥ বীরাশণ্সনণ ক্লী অতিভযপ্রদা-যুদ্ধভূমিঃ। ইত্যমরঃ॥ वीवामन क्री ভিত্ত্যাদ্যনাশ্রি-চ্ছেত্তা গা স্ত তিষ্ঠমূদ্দু ' রজঃ **लित्** । **७**मु विद्या ने सक् दा রাত্রো বীরাসন বসেৎ।। ইতি প্রাযশ্চিত্ততত্ত্বে মনুঃ।। অন্যচ । একপাদ মথৈকস্মিন্ বিন্যাসে-দুরু সংস্থিত। ইতরন্মিন্ তথা পশ্চাদীরাসন মিদ বিদুং । ইতি ষেরগুসংহিতা ॥ वीतिनी जी अमिक्ती। यथा। **উপযে**य वीत्रनमा जनमा॰ मक ঈঙ্গিতা । বীরিণী নাম তস্যাস্ত অসিক্বীত্যপি সত্তমাঃ। ইতি काृ निकार् द्रारा ৮ व्यक्षायः ॥

বীৰুৎ স্ত্ৰী বিস্তৃতালভা। তৎ-

পর্যায়ঃ। श्विमिनी २ উলপঃ ৩

। ইত্যমরঃ॥ বীরুধা ৪। ইতি

শব্দরত্বাবলী ৷৷ প্রতানা ৫ ককঃ

' ৬। ইতি জটাধরঃ ।। বীরুধা স্ত্রী বীরুৎ। ইতি শব্দ-রত্নাবলী ।।

বীরেশঃ পুণ শিবঃ। যথা। অথ ত্রযোদশে মাসি স্নান্ধা ত্রিপথ-গান্তসি ৷ প্রত্যুষ এব বীরেশণ যাবদাযাতি স দিজঃ ৷৷ ইতি বীরেশ্বরস্ভোত্রং ৷৷ •

वीद्धिश्वद्धः श्रृण स्थाप्तदः। स्था । जिलाखद्धाणि त्या काम्गाः जृति र्लिङ्गः विना कृष्टि । शद्धः विद्धाः माम्भः न लिङ्गञ्जाः भिन् किमः ॥ धर्मम कार्थमः भग्नाः काममः त्याकमः जथा । यथा वीद्धश्वदः । इजिकामीथद्ध > ज्यायः ॥

বীরোজ্ঝঃ পু॰ হোমাকর্ত্তা।

যথা । অভ্যুদিতাভিনিমুক্তো

বীরোজ্বো ন জুহোতি যঃ ।

ইতি হেমচক্রঃ ।।

বীরোপজীবিকঃ পু॰ অমিহো
ত্রমুপজীবিকা ষস্য। যথা। অ
মিহোত্র চ্ছলাদ্যাঞ্চাপরো বীরোপজীবিকঃ। ইতিহেমচন্দ্রঃ।
বীর্যাণ ক্লী চরমধাতুঃ। তৎপর্যায়ঃ। শুক্রণ ২ তেজঃ ও

রেতঃ ৪ বীজ ৫ ইন্দ্রিয়ণ ৬ ৮ रेषि मन्यायर्ग अमतः॥ वीर्याः শক্তিঃ ৷ সা চ পৃথিব্যাদীনা গ সারভাগঃ তদতিশ্যৰূপা। সা দিবিধা চিস্তাটিস্তা ক্রিয়া হে-তুষেন। তত্ত্র চিন্ত্যক্রিয়াহেতু র্যা জব্য রসাদীনা স্ব স্ব কর্মাণ স্বভাব স্বিদ্ধা শক্তিঃ। অচিস্ত্য-ক্রিয়াহেতৃশ্চ প্রভা পরপর্য্যায🍇 । खर्गाना तमानानन्स न कार्या করণ শক্তিঃ। উক্তঞ্চ। ভূত প্রভাবাতিশযো দ্রব্যে পাকে রসে স্থিতঃ। চিস্ত্যাচিস্ত্যক্রিযা হেতু বীর্যাণ ধন্বন্তরে র্মতণ ॥ ইতি চক্রদত্তোপরি শিবদাসী-यहीका ॥ # ॥ शतवीर्याम-त्रभाज्यमारमा यथा । भत्रवीर्याः যদুদর কামতো ২কামতোপি বা। অহল্যে যাতি দৈবেন তদু-পায়॰ নিশাময়।। অকামতো ন দুষ্টা সা প্রাযশ্চিত্তেন শুদ্ধ্যতি । কাম ভোগেন ত্যাজ্যা সা কর্মা ভোগেন শুদ্ধ্যতি ॥ পিতৃপাকে দৈবপাকে পূজাযাণ নাধিকারি-नी। विकि॰ वर्ष मह्मु। नि क्य॰ क्-দা স্বকর্মণঃ ॥ প্রয়াতি ভোগ (मर्॰ मा जमारिक भाभ कर्मा ।

। ইতি ব্ৰহ্মবৈৰ্ত্তে শ্ৰীকৃষণ্ডঙ্গস্প-খণ্ডে ৪৭ অধ্যায়ঃ ॥ 🗰 ॥ অতি-শযশক্তিভাগুৎসাহঃ। ইতি স্ব-र्गवर्ग अमतः ॥ कर्मम् मुकतः প্রতায়ঃ উৎসাহঃ। ইতি মধুঃ । কর্মসু দৃঢ যত্নকারকো ভাব উৎসাহঃ। ইতি রুমানাথঃ॥ কৰ্ম্মসু প্ৰত্যয় উৎসাহ ইতিন-যনানন্দঃ। অশক্যে বলোদ্যম উৎসাহ ইতি কেচিৎ।স উৎ-সাহে৷অতিশ্যশক্তিভাক্বীৰ্য্য• ৷ অতিশ্যিতো অধ্যবসাষো বী-র্যাণ সাধ্বীর্যা মিতার্থঃ। বীর্যা। ন্ত্ৰীচ বীৰ্ষ্য বীৰ্য্য ইতি কোষা-স্তর॰ ইতি ভরতঃ॥ 🗱॥ বল॰॥ প্রভাবঃ । ইতি নানার্থে অমরঃ ।।তেজঃ। ইতি মেদিনী।। চেতঃ ॥ मीखिः। ইতি শব্দরত্নাবলী॥ বীৰ্যাজঃ পুশু পুলুঃ 1 ইতি কেচিৎ वीर्यावान् वि भाष्मणः। इठि नकत्रप्रावनी ॥ वीर्यायुक्तम् ॥ वीर्यावृक्षिकतः क्री खळवृक्षि-कात्रकोषधानि । ७९ शर्यायः । व्याः २ वाकीकतः ७ वीकः কৃৎ ৪। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ वीया जी वीया। रेजमत्री-কাষা ভরতঃ ॥

আহ্রিষতে ২নো ধান্য তণুলা-দিঃ।। মার্গঃ। পস্থাঃ। ইত্যমর-🖶 ভরতৌ ॥ ভারঃ। ইতি শব্দ-त्रज्ञावनी ॥

বীরধিকঃ পু॰ স্ত্রী ভারবাহকঃ। ইতি কেচিৎ ॥

वीरातः पु॰ मरालयः। मञ् तूका यिनद्रः। ইতি শব্দমাল। ।। वि-হারঃ। ইত্যমরটীক। ।।

वीकः पु॰ खी पृक्तिः। विशृर्व ঈক্ষধাতে। রল্ প্রত্যযেন নি-न्ध्रिक्षः ॥

वीक्षन की वित्नरम नेकन। দর্শণ ৷ বিপূর্ব ঈক্ষ ধাতো রনট্ প্রত্যযেন নিষ্পন্নণ।।

ত্রি বিস্ম্যাপন্নঃ। বীকাপমঃ ইতি হেমচন্দ্রঃ॥

বীক্ষিতঃ ত্রি বিশেষেণ ঈক্ষিতঃ। मुकेः। यथा। भाभत्क आश्र नता জু পাপ সংযুত বীক্ষিতে। তথৈ-ব চাক্টম স্থানে রোগিণা॰ মরণ **मिटम् ॥ इंछि मी** शिका ॥

वीका॰ क्षी विश्वयः ॥ दृभा॰ । रेि स्मिनी ॥

বীক্ষ্যঃ পু॰ লাসকঃ॥ ঘোটকঃ। ইতি মেদিনী ।। দর্শনীষে ত্রি ।।

वीवधः पु॰ পर्यग्रहातः। পরিত ॥ वृग है. ত্যাগে। ইতি কবিকন্ধ-क्रमः ॥ ३ व ग्राट । ३७ मृत्री-मामः॥

> वूषे रेक किन्छा । रेडिकित-কল্পজনঃ।। পঞ্চমস্বরী। ই বুণ্ট্য-তে ক রুক্টযতি। ক্ষিতি হিণ্স।। ইতি দুর্গাদাসঃ॥

> বৃক চ বৃতৌ। ইতি কবিকন্ধ-দ্রুমঃ।। ক বার্যতি। ইতি দুর্গা-मा भः ॥

> ঙ গ সণ্ভক্তো। ইতি কবি-কল্পদ্রমঃ।। সংভক্তিঃ সেবন•। ঙ গ বৃণীতে । বৃণতে হি বিষ্যা कार्तिन अन्वकाः स्वयस्य म ম্পদঃ। ইতি দুর্গাদাসঃ॥

> ঞ বৃতৌ। ইতি কবিকন্ধ-দ্রুমঃ ॥ ঞ বরতি বরতে। ইতি मूर्गामः ॥

> व् न १ व व् व् व् । इं विक्रि কল্পজ্মঃ ৷৷ ন ঞ বৃণোতি বৃণুতে । গ ঞ বৃণাতি বৃণীতে বকারস্য দস্তাত্বাৎ সংবৃণোতি ইত্যাদৌ नानुकातमा मकातः । अक्रापा-क त्वृर्वजीजातो भनित्रगावि-ত্যুর্। নচ দন্ত্যস্য কথমোষ্ঠ্য-কাৰ্য্য মিতি বাচ্যণ ষতঃ স্বভাবা (माश्रेमा वकात्रमा उश्रेका^{र्ग)}

শ্বাভাবিক মেব কচিদ্দস্ত্য মধ্যে পাঠঃ নহেক বৰ্ণসোভৰ স্থান সম্ভবতি। ইতি দুর্গাদাসঃ ॥ वृष्ट्वः जि शुक्तिकातकः। यथा। मंगारवा वृण्हरना श्वकः । इंछि भक्छिका ॥ বৃংহিত॰ ক্লী হস্তিগৰ্জ্জন॰।তৎ **शर्यागः । क**रिशक्किंठ २ । ইত্যমরঃ 11 वृ क ७ जामाता। इंडि कवि-কল্পদ্রশঃ ॥ ও বর্কতে । বরী-द्कारक। ইতি দুগাদাসঃ॥ दृष्ट प्रे स्ट्ज्याभवहतिनम् ্তি লাভ বা হোঁৰে ইতি খ্যাতঃ চলকাৰ বিভিন্নীভাষা। তৎ ধ্যান্ধ্য কৈকেঃ ২ সহামৃগঃ 😗 ्रेड यज्ञः ॥ तद्यमाप्तनः ८ নিক্ষক্ ৫ গোবৎসাদী ৬ ছাগ-ভোজী ৭ ছাগলাম্বী ৮ জনা-শনঃ ৯। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥ কাকঃ। ইত্যুণাদিকোষঃ।। বক-वृक्यः। ইতি শব্দরত্বাবলী ॥ শৃ-गानः। ইতি श्रातन्ती॥ क-জ্রিयः ॥ অনেক**ধূপঃ॥** সরলজ-বঃ। ইতি ভরতধৃতরভদঃ॥ সন্ধুরঃ। ইতি वृक्षण्याः शुः (र्गठ्यः॥

व्कथूभः भूः नानामूगिक्तिखवा-क्जन्नाकामिष्णः। जदन्यी-यः। कृष्विमधू शकः २ । ইত্যমরः ॥ বক্ষুপঃ ৩। ইতি তটীকা ॥ गत्रवव्यव्याः । गित्रिशिम् इिज ভाষा। তৎপর্যায়ঃ। পাষ্সঃ ২ শ্রীবাসঃ ৩ শ্রীবেষ্টঃ ৪ সর্বাজ-वः ७। ইত্যমরः ॥ वृकशूर्वः पू॰ मृगानः॥ रेडि श्रावनी ॥ দ্কা স্ত্রী অম্বন্ধা। ইতি রত্ন-याना ॥ বৃকারাতিঃ পু॰ স্কুরঃ।ইতি শक्रमाना ॥ বৃকারিঃ পু॰ সন্ধুরঃ। ইতি রাজ-निर्घकः॥ বৃকাক্ষী ত্রী ত্রিবৃৎ। ইতি রত্ন-याना ॥ বৃকী ন্ত্ৰী পাঠা। ইতি রাজ-निर्धकः ॥ वृत्कामद्रः भू जीमत्मनः। ७९ शर्यायः । **जीयः २ म**ङ्रूष्टः ৩ কিমী রনিসৃদনঃ ৪ কীচক-निमृतनः ७ दकनिमृतनः ७ हि-**७ वित्रमृत्रः १। इकि एश्या**टलः

॥ वकरवंदी ৮ माक्रिक्टि २ ।

ইতি জটাধরং৷৷ অস্য ব্যুৎপত্তি

বৃত ক্তি। বরীবৃজ্যতে । ইতি দুর্গা-দাসঃ ।৷ বুজন°ক্ষী পাপণ ৷ ইত্যুণাদি-

वृक्षन की शाश । ইত্যুণ দি-কোষঃ ।। আকাশ । ইতি দি-দান্তকৌৰুদ্যানুণ দিবৃতিঃ ।। নিরাকরণ । ইতি সংক্ষিপ্তসা-রোণাদিবৃতিঃ ।।

বৃজনঃ পু• কেশঃ।। স্বটিলে ত্রি
। ইত্যুণাদিকোষঃ ।।•

বৃজিঃ স্ত্রী ব্রজভূমিঃ। ইতি কেচিৎ।।

বৃজিন॰ ক্লী পাপণ। ইত্যমরঃ॥ রক্তচর্মা।। ভুগ্নণ। ইতি হেম-চন্দ্রঃ॥

বৃজিনঃ পু॰ কেশঃ।। সটিলে ত্রি । ইতি মেদিনী ।।

বৃণ দ উ ঞ ভক্ষে। ইতি কবি-কল্পদ্ৰমঃ।। দ ঞ বৃণোতি বৰ্ণো-তি বৃণুতে বৃণুতে। উ বৰ্ণিছা বৃত্বা। ইতি দুৰ্গাদাসঃ।।

বৃত ক দীপ্তৌ। ইতি কবিকন্ধ-ক্রমঃ ।। ক বর্ত্তয়তি। ইতি দুর্গা-দাসঃ ।।

वृष्ठ ७ ७ व २ वर्त्तर । हैि क-विकन्न प्रमा । ७ वर्त्तर । ७ वर्त्ति । वृद्धा । वर्ष्ट्या । वि-वृष्ट्या । २ व्यवृष्ट । हैि

र्यथा । कथानू जीमरमरमन প-রিপৃক্টঃ প্রতাপবান্। দ্বা পৃষ্ঠ-ना अर्चना तर्नाना ना राज्यक्ष া৷ ভবিতা স,তদা ব্ৰহ্মন্ কৰ্ত্তা-ৈটেব বৃক্ষোদরঃ। প্রবর্ত্তকা ২স্য थर्ममा भाष्मून् महाराजः ॥ य-স্য তীক্ষে বৃকো নাম জঠরে হ-वावाहनः । यसा मखः म धर्मा-আ। তেন চাসৌ বৃকোদরঃ।। ইতি মাৎস্যে ৬৫ অধ্যাবঃ।। **कृतः जि हिमः। ইত্যম**রঃ॥ বৃচ ঈ ধ বৃতৌ। ইতি কবিকল্প-फ्रमः ॥ त्रे वृक्तः। ध वृवक्तिः । वत्रीवृह्यात्व । वर्ष्क्रनात्था १य मिত्यात्क। ইতि मूर्गामामः ॥ বৃজ ল ও ই ত্যাগে। ইতি কবি-क्ब्रक्यः ॥ मश्चमयत्री । व ७ व्राक्त विश्वारक। इंकि मूर्ग।-मामः ॥ বৃজ ও ল ঈ ত্যাগে। ইতি কবি-

वृक्ष ७ म अ जात्मा श्राठ काव-कन्नक्रमः ॥ मश्चमस्त्री । म ७ वृत्क । के वृक्षः। ইতি मूर्गामामः वृक्ष के कि जात्मा हिंठ कविकन्न-क्रमः ॥ के वृक्षः । कि वर्क्कर्याठ । वर्क्काठ । विवर्क्षयाठ । वर्क्काठ । विवर्क्षयाठ वृक्ष के वा वृत्को ॥ जात्म । ইতি

क्विक्वाक्रमः ।। में वृक्तः । श वृश-॥

मूर्गामागः ॥ বৃত য উ ও সম্ভক্তো ম বরণে। ইতি কবিকন্পদ্রসং।। ষ ও বৃত্য-তে। উ বর্ত্তিমা বৃত্ত্বা। সম্ভক্তিঃ रमवेन° । ইতি দুর্গ। দাসঃ ।। বৃতঃ জি কৃতবরণঃ ৷ তৎপর্য্যায়ঃ । বৃত্তঃ ২ বাবৃত্তঃ ৩। ইত্যমরঃ ॥ আবৃতশ্চ ॥ বৃতপত্রা স্ত্রী পুত্রদাতী। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ বৃতিঃ জ্রী বেষ্টন । তৎপর্য্যায়ঃ । বরঃ ২। ইত্যমরঃ ।। প্রার্থনা-বিশেষঃ। ইত্যান্যে। ইতি ভরতঃ ।। वतन । इंडि त्मिनी ॥ त्मा-পন । ইতি শব্দরত্নাবলী।। वृण्कितः भू॰ विकक्षण्यृकः। ইणि শব্দরত্নাবলী।। বৃতিকারকে ত্রি वृत्तः क्री हित्रजः॥ श्रमाः। है-**छामदः ।। यथा। शनाः ठजुम्मनी** তচ্চ বৃত্ত॰ জাতি রিতি দিধা। বৃত্ত মক্ষর সংখ্যাতং জাতি মা-ত্রাকৃতা ভবেৎ ।। সম মর্জসমণ বৃত্ত বিষমঞ্চেতি তল্রিধা। ইতি ছন্দোমঞ্জরী।। বৃত্তিঃ। ইতিমে-দিনী ॥ বেদবোধিতস্যাচারস্য পরিপালন । ইতি বৃত্তাধ্যামন-র্দ্ধি শব্দ টীকাষাণ ভরতঃ॥

বৃত্তঃ ত্রি অতীতঃ।। দৃঢঃ।। বছু-मः।। কৃতাবরণঃ। ইত্যমরটীকা ।। व्यवीजः ॥ मृजः । ইতি মেদি-नी ॥ 🛊 ॥ व्यथ वृखवस्त्रृनि । বৃত্তানি বাহু নার্ত্ত ক্ষন্ত ধশ্মিল ষোদকাঃ। রথাঙ্গ লাবক কল্পৎ সম্ভিসম্ভাওকাদ্যঃ ।। কর্ণপাশ ভূজাপাশাকৃষ্টচাপ ঘটানন । মুদ্রিকা পরিখা যোগপট হার मुगापमः ॥ 🛊 ॥ म॰পूर्वगर्खद्-ত্তানি ষ্থা। সংপূর্ণগর্ভবৃত্তানি मूथ পদ्मिन्दू पर्भनाः । ठळावश्-উ তিলক মৃদঙ্গপুট শাযকাঃ ॥ আবর্ত্তঃ কমঠো লূতাগৃহু ছত্র मशृशकः। जानवान मही जान চর্মক° সানকাদযঃ॥ ইতি क-विकन्नणणायाः २ क्षियखबदक প্রকীর্ণ নাম ও সসুম।। বৃত্তঃ পুণ কুর্মঃ। ইতি রাজ-निर्घणः ॥ वृद्धकर्ती जी यज्जूजा। रेजि রাজনির্ঘণ্টঃ ৷৷ वृङ्गिक्षः क्री भमावित्मिकः । তস্য লক্ষণ যথা। ভবত্যুৎক-লিকা প্রায়ণ সমাসাত্যণ দূতাক-

तः। वृदेकखरमण मृश्का व्खः

गिक्कि भूमः खुष्ठः ॥ छमा छेहा-

र्त्रण यथा। जय जय जनार्कन পুকৃতি জন মন স্তডাগ বিকৰর চরণ্শদ্ম পদ্মন্থন পদ্মা পদ্মি-নী বিনোদ রাজহম্স ভাসুর-ষশঃ পটল পরিপুরিত ভুবন স-र्द्र। रत कमलामनामि वृक्तात-क वृत्म वत्मनीय शामात्रवित्मवत्रु নির্ম্মুক্ত যোগীক্র হদব মন্দিরা বিভন্ন নিরঞ্জন জ্যোতিঃ স্বৰূপ बाथ नाथ जनमाथ गामनविध **ভবদুঃ** द्याञ्चलः तक तक । **ইতি চ্ছন্দোমঞ্জ**র্যাণ ৬ স্তবকংগ বৃত্তগুণ্ডঃ পুণ তৃণবিশেষঃ তৎ পৰ্য্যাৰঃ। বৃত্তঃ ২ দীৰ্ঘনালঃ ৩ ্জলাশ্ৰয় ৪। দিখায় একঃ श्रुवः षिठीरमा नगृः । जना ্গুণাঃ। মধুরত্ব॰। শীতত্ব•। কফ পিত্তাতিসার দাহ রক্তনাশিত্বণ া তেৰা॰ মধ্যে স্থালতরস্যাধিক প্তণুত্বঞ্চ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ।। ৰুততঃ ব্য বৃত্তেন। যথা। অ-তিগ্রহাব্যথন ক্ষেপেষকর্ত্তরি তৃতীবাবাঃ। অকর্ত্তরি তৃতীবা-স্তাৎ বা ভসিঃ স্যাৎ। অব্যথন অচলন । বৃত্তেন ন ব্যথতে বৃত্ত তো ন ব্যথতে। বৃত্তেন ন চল-जीजार्थः। (कर्णः । वृत्त्वन किथः । वृत्तवीकका खी नाष्त्रकनी ।

বৃত্ততঃ কিপ্তঃ। বৃত্তেন নিদিত ইত্যৰ্থঃ। হীষমান পাপযোগা-क्र। शैयमान भाशंयूका क्वर्डित তৃতীবাস্তাদা তসিঃ। বৃত্তেন হী-যতে বৃত্তেন পাপঃ বৃত্ততঃ। .ইতি সিদ্ধান্তকৌমুদী॥ বৃত্ততণ্ডুলঃ পু॰ যাবনালঃ।ইতি त्राजनिर्यण्डः ॥ বৃত্তনিপাবিকা স্ত্রী নখনিপাঝী । ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। বৃত্তপণী স্ত্রী মহাশণপুষ্পিক।। পাঠা। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥ वृख्यूष्टाः यू॰ मित्रीयः॥ कपनः ।। वानीतः ।। अक्ककः ॥ मूकातः। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥ वृखयन क्री मती है। इंडि রাজনির্ঘণ্টঃ।। গোলফলমাত্রঞ্চ वृक्कनः पू॰ माफिमः॥ वमतः। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ॥ বৃত্তফল। ত্রী বার্ত্তাকী॥শশা-खुनी। आमनकी। ইতি রাজ-निर्यकिः ॥ বৃত্তমন্লিক। স্ত্রী শ্বেতার্কঃ॥ মো-**मिनी । ই**তি রাজনির্ঘণ্টঃ ।। বৃত্তবীজঃ পু॰ ভিঞা। ইতি রাজ-निर्शनिः ॥

ইতি রাজনির্থনটঃ ।। বৃত্তবীজা স্ত্রী আঢকী । ইতি রাজনির্ধনটঃ ।।

বৃত্তক্ষঃ ত্রি বৃত্তে তিপ্ঠতি যঃ। যথা।
তুরীষো ব্রহ্মহত্যাযাঃ ক্ষত্রিয়স্য
বধে স্মৃতঃ। বৈশ্যে হস্টমাংশাে
বৃত্তস্থে শুত্রে জ্ঞেয় স্ত ষোডশঃ
।। ইতি মর্নুঃ।। বৃত্তং যথা। গুরুপূজা ঘৃণা শােচং সত্য মিল্রিয়
নিগ্রহঃ। প্রবর্ত্তনং হিতানাঞ্চ
তৎ সর্বং বৃত্ত মুচ্যতে।। ইতি
গোপাল পঞ্চানন কৃত স্মৃতিসংগ্রহঃ।।

বৃত্ত। স্ত্রী ঝিঞ্চরিষ্টাবৃক্ষঃ।। রে-ণুকা ।। প্রিযঙ্গুঃ।। মাণ্সরোহিণী । ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ।।

বৃত্তাধ্যমন দিঃ স্ত্রী বন্ধবর্চসং।
ইত্যমরঃ ।। বেদবোধিতস্যাচানরস্য পরিপালনং বৃত্তং। বতগ্রহণ পূর্বকং গুরুমুখেন বেদাভ্যাসো অধ্যমনং। তথো ঋ দি
স্তৎ পরিপালন কৃত তেজস উপচযো বন্ধবর্জসংস্যাৎ। বন্ধহণ
ব্রান্তঃ পুং সংবাদক্ষিতৎপর্যাম্যঃ। বার্ত্তা ২ প্রবৃত্তিঃ ও উদন্তঃ ৪। ইত্যমরঃ।। শ্রুতিঃ ৫ ।

বৃত্তি

के कि कि विश्वतः ।। जेम अकः अ। के कि ममत्रक्षावनी ।। श्राक्रिया ।। कार्ष्ट्रकारः ।। वार्त्वाश्राख्यकाः ।। श्राप्ट्रकारः । के कि स्मिनी ।। जेव-मतः ।। जावः ।। এका ख्रवाहकः । के विश्वः ।।

বৃত্তিঃ স্ত্রী জীবিকা। ইত্যমরঃ॥ বিবরণ ।। কৌশিক্যাদি ।। প্রাব-र्खन॰। ইতি মেদিনী।। বিধৃতিঃ। 'ইতি ধরণিঃ॥ #।।কৌশিক্যাদি বৃত্তষো যথা। শৃঙ্গারে কৌশিকী বীরে সাম্বত্যারভটী পুনঃ।রসে রৌজে চ বীভৎসে বৃত্তিঃ সর্বত্র ভারতী ৷৷ চতস্রে৷ বৃত্তযো ছে-তাঃ সৰ্বনাট্যস্য মাতৃকাঃ। ইতি माहिकामर्भाग ७ পরিচ্ছেদঃ ॥ 🗱 ॥ वृज्जिङ्त्रत्व त्नाया यथा । শ্রীনারাষণ উবাচ। স্বদত্তা প-त्रमखा॰ वा बन्नवृज्धि॰ श्दत्रज् यः । স কৃতম ইতি জ্ঞেয়ঃ ফল তৎ শৃণু ভূমিপ ৷৷ যাবস্তো রেণবঃ সিক্তা বিপ্রাণা নেত্র বিন্দুভিঃ। তাবদ্বৰ্য সহসুঞ্চ শৃতপোতে স তিষ্ঠতি।। তপ্তাকারক তদ্তক্য পানঞ্ব তপ্তমূত্রকণ। তপ্তাঙ্গারে চ শ্যন ভাডিতে৷ যমকিক্টরঃ ।। তদত্তে চ মহাপাপী বিষ্ঠাৰা।

जायत्व कृतिः। यस्वित्यं महमू।। भिरम्पातमा जातत्व।। ততো

शिविशीन क প্রজাशीन क मानेवः। प्रतिष्ठः क्পণো রোগী
भूषा निम्मा खुः छिः।।
ইতি বন্ধবৈদর্ভে প্রকৃতিখণ্ডে
৪৯ অধ্যায়ঃ।।

বৃত্তিস্থঃ পু॰ সরটঃ। ইতি রাজ-নির্ঘন্টঃ।। বৃত্তৌ তিষ্ঠতি ত্রি।। বৃত্তের্বারুঃ পু॰ ষড্ভুজা। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।।

বৃত্য ত্রি বরণীয় । বৃতধাতোঃ ক্যপা বৃঞ্জ ধাতোশ্চ ক্যপ্ তুক্ প্রত্যযাভ্যাঞ্চ নিষ্পন্ন । ইতি সিদ্ধান্তকৌমুদী ॥

বৃত্রঃ পুঁ অন্ধকারঃ ।। শত্রুং ।।
দানববিশেষঃ। সতু দ্বন্টপুত্র ইক্রেণ হতঃ। ইত্যমরঃ।। মেঘঃ ।।
পর্বতবিশেষঃ। ইতি মেদিনী ।।
ইক্রঃ। ইতি বিশ্বঃ।। শব্দঃ। ইতি
সিদ্ধান্তকৌ মুদ্যামুণাদিবৃত্তিঃ।।
বৃত্রদিট্ পুঁ ইক্রঃ। ইতি হেমচক্রঃ ।।

वृज्ञाजिः श्रृ॰ श्वीतः। সমঠ

हेजिशाजः। हेजिशका जिका।।

र्यः श्रृङ्गः श्रृश्चाः। स्वाधिक।।

र्यः श्रृङ्गः श्रृश्चाः। स्वाधिक।।

र्यः श्रृङ्गः श्रृश्चाः। स्वाधिक।।

र्यः श्रृङ्गः श्रृश्चाः। स्वाधिक।।

र्यातः श्रृश्चाः। स्वाधिक।।

বৃথা ব্য নিরর্থকঃ। তৎপর্যাকঃ
। মুধা ২ ব্যর্থকং ৩অবিধিঃ ৪।
ইত্যমরঃ ॥ যথা। অদপ্ত পানিংকা গ্রামো অদাসীকঞ্চ যদগৃহণ অনাজ্য ভোজনং যদ বৃথা তদিতি মে মতিঃ ॥ ইতি বহিংপুরাণে প্রেতোপাখ্যান নামাধ্যায়ঃ ॥ অপিচ। বৃথা বৃষ্টিঃ সমুদ্রস্য তৃপ্তস্য ভোজনং বৃথা।
বৃথা দানং সমৃদ্ধস্য নীচস্য সুকৃতং বৃথা ॥ ইতি গারুডে ১৯৫ অধ্যায়ঃ ॥

व्थाक्रम की नितर्थक्कननः।
यथा। वृथा क्रमानि চন্তার वृथा
मानानि साज्म। जानाङः मः
अवक्रामि यथायमनूश्र्वमः॥
अञ्चमा वृथाक्रम धर्मवाङ्गानताः ममा। शत्रभाकः ममामंखि
शत्रजाश त्रजाकः समामंखि
शत्रजाश त्रजाकः समामंखि
शत्रजाश त्रजाकः स्व। हेजामा
विद्वश्रुताम मानावङ्गानिर्वय नामाधायः॥ अशिष्ठ। देव न क्रजः
जावजः श्रुतानः नाताधिका
देवः श्रुक्षयः अधानः। मूर्थं हुङः
देव क्रित्रममतानाः ।। हेजिश्रुतानः
क्रित्रममतानाः ।। हेजिश्रुतानः

ষোডশবিধণ। যথা। দেব পিণ্ঠৃ বিহীন° যদীশ্বরেভ্যঃ সদোষতঃ । দত্বানুকীর্ত্তনাক্ষৈব বেদাগ্নি ত্র-তত্যাগিনে॥ অন্যাযোপার্জ্জি-ত দান ব্যর্থ বন্ধহণে তথা। গুরবে ২ন্তবক্তা য়ঃ স্তেনায় পতিতায় চা৷ কৃতদ্বায় চ যদকত সর্বদা ব্রহ্মবিদ্বিষে । পাচকাষচ সৰ্বস্য বৃষল্যাঃ পত্ৰে তথা ॥ পরিচারকায ভৃত্যায সর্বত্র পি-শুনায় চ ইত্যেতানি তু রাজে-ন্দ্র বৃথাদানানি ষোডশ। ইতি বহ্নিপুরাণে দান বস্থা নির্ণযনা-याशायः॥ जनाक । नार्यमा-ৰ্গেণ যদ্দত্ত' তৎ সপ্তবিধ মপি পুন নাপহর্তব্য । যৎপুন র-ন্যাযেন দত্ত তদদত্ত যোডশ প্রকার মপি প্রত্যাহর্ত্তব্যমেব। ইত্যর্থাদুক্ত॰ ভবতি। নারদেন চ। দত্ত॰ সপ্তবিধ॰ প্রোক্ত মদত্ত॰ ষোডশাত্মকণ। ইতি প্রতিপাদ্য দত্তাদত্তযোঃ স্বৰূপণ বিবৃত্ত। পণ্য মূল্যু ভৃতি স্তুষ্ট্যা ক্ষেহাৎ প্রত্যুপকারতঃ। স্ত্রীসূদ্মানুগ্রহা-र्थक पछ॰ मानविद्या मिमूः ॥ অদত্তম্ভ ভষ ক্রোধ শোক বেগ ৰুজাম্বিতঃ। তথোৎকোচ প

রীহাস ব্যত্যাস চ্ছলযোগতঃ॥ বাল মূঢাস্বতন্ত্ৰাৰ্ত্ত মতোম্বতা-পবজ্জিত । কর্ত্ত। মমেদ কর্ম্মে-তি প্ৰতিলাভেচ্ছ্যা চ ষৎ ॥ অ-পাত্তে পাত্ত মিত্যুক্তে কার্য্যে বা धर्मानः शिष्ठः। यालवः नामिनः জ্ঞানাদদত্ত মিতি তৎ স্মৃত ।। ইতি মিতাক্ষরা ॥ वृथाभाष्म क्री प्तविशवनुष्तिरहे-মা'স'। তদ্ভক্ষণে প্রেতম্ব' ভ-বতি। যথা। বৃথারেতা বৃথামাণ-সে। বৃথাবাদী বৃথামতিঃ। নি-ন্দকো দ্বিজদেবনা সপ্রতো জাযতে নরঃ।। ইতি বহিপুরাণে প্রেতোপাখ্যাননামাধ্যাযঃ।। বৃদ্ধ ক্লী শৈলজ নাম গন্ধ অব্যং । ইত্যমরঃ ॥ वृक्तः पु॰ वृक्तमात्रकः। ইতি রা-জनिर्घणैः॥ वृक्षः जि गठरगेवनः ॥ श्रवृक्षः ॥ পণ্ডিতঃ । ইতি মেদিনী ॥ আদ্যস্য পর্য্যাযঃ । প্রব্যাঃ ২ স্থবিরঃ ৩ জীনঃ ৪ জীর্ণঃ ৫ জর-न् ७। इज्जानतः ॥ याज्यामः १ জর্জরঃ ৮। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ পলিতঃ ১। ইতি জটাধরঃ ॥

बृक्षभन्ना जी नमीवित्नसः। वृष्टि

গঙ্গা ইতি খ্যাতা। **বথা।** অস্তি নাটক শৈলে জু সরোমানস স-মিভ । যত্র সার্দ্ধ শৈল পুত্রা। জলক্রীড়া॰ সদা হরঃ ॥ সরুতে নরশাদু ল স্বর্ণগঙ্কজ শোভিতে। তস্য পশ্চান্মধ্য পূৰ্ৰ ভাগেভ্যশ্চ সরিভ্রমণ। অবতীর্ণ প্রমাত্যেব দক্ষিণ সাগর প্রতিয় তস্য প न्চिमভाগে जू नही पिक्रतिका-হ্বযা। দিগ্গজাঃ ক্ষেত্র সংজা-তাঃ তেন দিক্করিকা স্মৃতা ॥ ম-ধ্যভাগাৎ সৃতা যা তু শঙ্করে-ণাবতারিতা। বৃদ্ধগঞ্জাহাযা সা **जू गद्भव कलागि मी ॥ या निः**-সৃতা পূর্বভাগাত্তসাদিগরিবরা নদী। স্বৰ্ণ গ্ৰীবেতি বিখ্যাতা সা গঙ্গা সদৃশী ফলে॥ ইতি কালি-কাপুরাথে কামৰূপ পীঠ নির্ণয नाम ४२ व्यशायः॥

বৃদ্ধকাকঃ পুণ কাকবিশেষঃ।
দাঁডকাক ইতি ভাষা। তৎপর্য্যায়ঃ। ডোণকাকঃ ২ দগ্ধকাকঃ ৩ কৃষ্ণকাকঃ ৪ পর্বতকাকঃ ৫ বনাশ্রযঃ ৬ কাকোলঃ
৭। ইতি হেনচন্দ্রঃ।

वृक्षकः क्षी वृक्षमाजायः। ७९-পर्यायः। सावितः २। ইতাमंतः ग। বাৰ্দ্ধক্য॰ ৩ বাৰ্দ্ধক॰ ৪। ইতি नकत्रञ्जावनी ॥ 🗱 ॥ वानगारम রবর্ধি মাহ সুশ্রুতঃ। বযস্তু ত্রিবি-ধং বাল্যং মধ্যমং বাৰ্দ্ধকং তথা। উনযোডশবর্যস্ত নরো নিগদ্যতে ৷৷ ত্রিবিধঃ সোপি দৃ-क्षानी मुकामानी ठथामजुक्। मुक्षानी वर्षशर्याङ॰ मुक्कामानी শরদৃষ ।। তদুত্তর স্যাদমাশী এবং বাল দ্রিধা মতঃ। মধ্যে যে: ডশ সপ্তত্যে। র্মধ্যমঃ কথিতে। वृदेधः ॥ ठेष्ट्रं। यथायः आह यूवा দাত্রি॰শতো মতঃ । চত্বারি॰শৎ मभ। याविष्ठिष्ठेषीयगामि পूतिष्ठः ।। ততঃ ক্রমেণ ক্ষীণঃ স্যাক্ষাবদ্ত-বতি সপ্ততিঃ। বীর্য্যা দীত্যাদি শব্দেন রসাদি সর্বধা ত্বিন্দ্রিয় ব-লোৎসাহা উচ্যন্তে। ক্ষীণঃ সর্ব-**शावि**ख्यिय तत्नाष्मारेश शैनः। ততম্ভ সপ্ততে ৰূৰ্দ্যুণ ক্ষীণধাতু র-जािकः ॥ कीयमार्विखय वनः ক্ষীণরেতা দিনে দিনে। বলী ^প-লিত থালিত্য যুক্তঃ কর্মসু চাক্ষ-यः ॥ काम श्वामामिजिः क्वित्यौ বৃদ্ধো ভবতি মানবঃ। বাল্যে বি-বৰ্দ্ধতে শ্লেমা পিত্ত॰ স্যান্মধ্যমে-धिक ।। वार्काका वर्का वार्

वृक्ता

ৰিচাৰ্য্যেতদুপক্ৰমে ৷ উপক্ৰ মেৎ চিকিৎসেৎ। জ্বাস্তরে তু । वाला वृक्ति कित दिया प्रशम्-किः एक विकासी। वृक्तिः कार्याः ব্ৰিয° চেতো জীবিত' দশতো হুসেৎ।। ইতি ভাবপ্রকাশঃ।। वृक्षमात्रकः भू॰ वीत्रञाछकवृक्तः । ইতি ভর্তঃ ।। বিদ্ধাতক্ ইতি বীজতাডক। ইতি চ বঙ্গভাষা। া বিধার। ইতি হিন্দীভাষা। তৎ পর্যায়ঃ ৷ ঋক্ষগন্ধা ২ ছগলান্ত্রী ৩ আবেগী ৪ জুসঃ ৫। ইত্যমরঃ ।। अयागक्षा ७ इगलाञ्ची १ इग-লা ৮ অস্ত্রী ২ জুঙ্গা ১০ ৷ ইতি তটীকা।। ছগলী ১১জুপকঃ ১২ শ্যামঃ ১৩। ইতি জটাধরঃ ॥ वृषागन्न। >८ ছगलाञ्चिक। ১৫। रेि नक्तज्ञावनी ॥ मीर्यवान्-কা ১৬ ছাগলান্ত্রিকা ১৭ বৃক্তঃ ১৮ কোঠরপুষ্পী ১৯ অজান্ত্রী २० वृक्षमाङ २५ । अञ्चास्टरत কোঠরপুষ্পী স্থানে বৃদ্ধকোটর-পুষ্পীতি পাঠঃ। অসা গুগাঃ। গৌলাস্বণ। পিচ্ছিলস্বণ। কফ বা-ত কাসাসদোষ নাশিস্থ ৷ বল্য-षक। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ॥ অন্য-कि। तमायदन। वृक्षमातः त्नाथ

বাতামবাতজিৎ ৷ ইতি রাজ-বলভঃ ৷৷

वृक्षमाक की वृक्षमात्रकवृष्णः।
यथा। वृक्षमाक षयः शोखाः शिक्रिलः करः वाजनू । वलाः कानायमायप्रः षिजीयः वक्षवीर्याः
मः॥ ইতি রাজনির্যক্তঃ॥

বৃদ্ধনাভিঃ ত্রি উন্নতনাভিঃ।
গোঁডনাভিযুক্তব্যক্তিঃ। তৎপর্য্যায়ঃ। তুণ্ডিলঃ ২ তুণ্ডিভঃ ৩
। ইত্যমরঃ।।

বৃদ্ধপ্রপিতামহঃ পুণ প্রপিতামহতাতঃ। ইতি শব্দরত্বাবলী।।
তত্র কন্যায়াঃ সমিওতা নাস্তি
। যথা। তেনাত্ম পঞ্চমে বৃদ্ধপ্রপিতামহে সাপিও্য নিবর্ততে
ইতি প্রতিপাদিত । অত্তরব প্রপিতামহ ভ্রাত্র। তৎ সম্ভতিভিঃ
সহ সাপিও্যাভাবাৎ কন্যা জননন মরণমো স্তেষা সপিওাশৌচ নাস্তি কিন্তু সমানোদক
নিমিত্ত মেরাশৌচ মিতি। ইতি
শুদ্ধিতত্ত্ব ।।

वृक्षवला जी महामनका। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।।

বৃদ্ধরাজঃ পু॰ অমবেতসঃ। যথা। অভ্যয়ো বৃদ্ধরাজশ্চ দাবেতো .তত্ত কীর্তিতো। ইতি কেচিৎ।।
বৃদ্ধবাহনঃ পুণ আমুবৃক্ষঃ। ষথা।
সৃপকোবৃদ্ধবাহন ইতিকেচিৎ।।
বৃদ্ধবিভীতকঃ পুণ আমুন্তকঃ।
ইতি.শন্দমালা।।
বৃদ্ধশ্রবাঃ পুণ ইন্দুঃ। ইত্যমরঃ।।
বৃদ্ধসণ্ডঃ পুণ বৃদ্ধানাণসমূহঃ।
তৎপর্যায়ঃ। বার্দ্ধকণ ২। ইত্যমরঃ।।

বৃদ্ধাসূত্রক॰ ক্লী ইন্দ্রত্বণ। বৃদ্ধিরস্তা ইতি ভাষা। যথা। বৃদ্ধসূত্রক যিত্যাহু রিম্রত্বলং মনীবিগঃ। গ্রীমহাসং বংশককং বাত
ত্লাং মরুদ্ধুজং।। ইতি হারাবলী।।

বৃদ্ধ। স্ত্রী গতযৌবনা। বুড়ী
ইতি ভাষা। তৎপর্য্যায়ঃ। পলিক্রী ২। ইত্যমরঃ। পলিতা ৩
। ইতি ভরতঃ।। স্থবিরা ৪ নিদ্ধলা ৫ জরতী ৬ গতার্ত্তবা ৭।
ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।। তদবস্থাকালো যথা। আযোডশান্ডবেদ্বালা তরুণী ত্রিশ্বতা মতা। পঞ্পঞ্চাশতঃ প্রেণিতা বৃদ্ধা ভবতি
তৎপরণ।। ইতি কালিদাসঃ।।
অপিচা বালেভি গীয়তে নারী
বার্দ্বর্যাণিষোডশ। ততন্ত তরু-

ণী জ্ঞেবা দাত্রিম্পদ্বৎসরাবধি ॥ তদুৰ্দ্ধ মধিৰাঢা স্যাৎ পঞ্চাশ-ছৎসরাবধি। বৃদ্ধা তৎ পরতো জ্ঞেয়া সুরতোৎসব বজ্জিতা।। ইতি ভাবপ্রকাশঃ ॥ 🟶॥ জ माः मुखारम प्लारमा यथा। বালা তু প্রাণদা প্রোক্তা যুবতী প্রাণহারিণী। প্রৌঢা করোতি वृक्षष॰ वृक्षा यत्र यामिटन् ॥ নিদাঘ শরদোর্বালা প্রৌঢা বর্ষা বসন্তবোঃ। হেমন্তে শিশিরে যোগ্যা ন বৃদ্ধা ক্বাপি শস্যতে॥ নাৰ্ত্তবে যোডশাদ্বৰ্যাৎ সপ্ত ত্যাঃ পরতো ন চ । আযুদ্ধামে। দরঃ স্ত্রীভিঃ সংযোগণ ক'রু[′]ম-ৰ্হতি।। পঞ্চপঞ্চাশতো নারী স প্তদপ্ততিঃ পুমান্। দ্বাবেতৌ ন প্রসূথেতে প্রসূথেতে বিপর্য্য-या ।। ३७ ताजवझङः॥ 🗱॥ শুষ্ক মাণস ক্রিয়ো বৃদ্ধা বালার্ক खक्र १ पि । প্রভাতে নৈগুন निजा महाः वागरतानि वहे।। · इंकि ठाणका॰ ॥ 🛊 ॥ अनुर्वः । इिंछ नयत्रप्रावनी ॥ महाधाव-ণিক। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। वृक्षाम् विः जी रखनामरगः चूनान्तिः। तूषायान्त रेषि

ভाষा। তৎপর্যাयः। অঙ্গুঠঃ ३ वृक्षा ७। इंछि भयत्रद्वावनी ॥ वृक्तिः স্ত্রী অফবর্গান্তর্গতঔষধ-বিশেষঃ। তৎপর্যায়ঃ। যোগ্যা ২ ঋদ্ধিঃ ৩ সিদ্ধিঃ ৪ লন্ধীঃ ৫। ইত্যমরঃ॥ পুরুদ। ৬ বৃদ্ধিদাত্রী १ मक्ला ৮ औः ५ मन्नर ১० আশীঃ ১১ জনেফা ১২ ভূতিঃ ১৩ সুৎ ১৪ সুখ ১৫ জীবভঁডা ३७। जमा खगाः। शक्ति वृक्तिन्छ মধুরা সুশ্নিশ্বা তিক্ত শীতলা। क्रिं त्यशक्ती क्षत्र अर्थ कि-মিহ্রা পরা।। প্রযোগেম্বনযো-রেক॰ যথালাভ॰ প্রযোজ্যেৎ । यब यक्तांजू मिकिः माक्ष्य মপ্যত্র যোজ্যেৎ।। ইতি রাজ-निर्घनिः ॥ 🗱। अक्ति वृत्का। ऋ९-পত্তি লক্ষণ নাম গুণাঃ ৷ ঋদি বৃদ্ধিশ্চ কন্দৌ দ্বৌ ভবতঃ কো-ষ্যামলে। শ্বেতলোমান্বিতঃ ক-ন্দো লতাজাতঃ সরস্কুকঃ ৷৷ স-এব ঋদ্ধি ৰ্ দ্ধিশ্চ ভেদ মপ্যো-তবে। ক্রবে। তুলগ্রন্থিসমা-अकि वीमावर्ड कना ह मा॥ वृ-किन्छ पकिनावर्छकना (आक्र) মহর্ষিভিঃ। ঋদ্ধি বৌগ্যা সিদ্ধি नत्का वृद्ध त्रशास्त्रमा रूप ॥

ঋদ্ধি বঁল্যা ত্ৰিদোষমী শুক্ৰলা ম-ধুরা গুরুঃ। প্রাণেশ্বর্যকরী মৃচ্ছা রক্তপিত বিনাশিনী।। বৃদ্ধি গর্ভ-প্রদা শীতা বৃংহণী মধুরা স্মৃতা। বৃঘ্যা পিত্তাসু শমনী ক্ষত কাস क्याथरा ॥ त्राख्वा मथाखेवर्शस्त्र যতো ২য মতিদুৰ্লভঃ। তন্মাদস্য প্রতিনিধিণ গৃহীযান্তদ্গুণ ভিষ-क्।। मूथाममृनः अञिनिधिः ॥ 🛊॥ এতস্য প্রতিনিধি মাহ। মেদা জীবক কাকোলী ঋদ্ধি দশ্বেপি-চাসতি ৷ বন্নী বিদার্য্যশ্বগন্ধা বা-तारीम्ह क्यां कित्य ॥ त्यमा মহামেদা স্থানে শতাবরীমূলণ জीवकर्वछक द्यादन विषात्रीभूनः कारकानी कीत्रकारकानी शरम श्वगक्तामृनः शक्त वृक्ति **श**रिन वाताशिकनः धटेन खबूनाः कि-পেও। ইতি ভাবপ্রকাশঃ॥ 🛊 ॥ नौिष्टिदिषिना॰ क्यापि विदेशी-ন্তৰ্গত বৰ্গবিশেষঃ। ইত্যমরঃ॥ নীতিবেদিনাং নীতিশান্ত্ৰজ্ঞানাং क्यापि खिवर्गः । जन्यस ধৰ্মকামাৰ্থ: পূৰ্বমুক্তঃ । অন্ত-वर्भमाभुक्यः क्यः । उत्मादाः **ग**हरका वृक्तिः। छमा नो शहरका-नाभाभक्यः सानः। अकेवदर्शा

यथा । कृषि र्विनक्शरथा पूर्वा **राजुः कक्ष**त्र वस्ताः। कन्या कत वलामानः रमनानाकः निर्वणनः ।। অফবর্গঃ স্মৃতো রাজ্ঞা মিছি **खत्रवः ॥ # ॥ वर्षानः। वर्षानः**। ষঃ। ক্ষাতিঃ ২ । ইত্যমরঃ ॥ বিষ্ণভাদিসপ্তবিশ্বভিষোগান্তর্গ-তৈকাদশবোগঃ । তত্ৰ জাত-क्नः यथा। अमिकिशाल यपि-বৃদ্ধিযোগো নরঃ সুভোগো বিন-যাৰিভণ্চ। ধন প্ৰযোগ গ্ৰহণেযু **म**िक्य विक्रमनः मा । क्य विक-ষাভ্যা ।। ইতি কোষীপ্রদীপঃ श 😻 ॥ कनाखत । जूम ₹ छि जाया।। चजुमयः ॥ मम्बिः। रेि सिंदिमी ॥ अत्र अद्योगः ॥ र्सः। इंकि द्रमण्यः ॥ नमृशः। रेि नका किका ॥ टेन टेन र थन**ा ই**তি द्राक्रनिर्यक्तेः ॥ # ॥ वृक्ति अर्ग निरमा यथा। अभी-তি ভাগো বৃদ্ধিঃ স্যামাসি মাসি সবন্ধকে। বৰ্ণক্ৰমাচ্ছত দি ত্ৰি **ह** ज्ञानक भनाथा ॥ नाजि याजि প্রতিমাস• বন্ধক• রিশ্বাসার্থ• ম-দাধীষতে আধি রিতি ফাবৎ। বন্ধকেন সহ বৰ্ত্ত ইতি সৰ-श्वतः প্রযোগ ভূমিন্ সবন্ধকে श्रापारंग अयुक्तमा जवामानी-তিতমো ভাগো বৃদ্ধি ধর্ম্যা ভ বভি। অন্যথা বন্ধক রহিতে প্র-रगरग वर्गना वाक्रगिमा छ-মেণ দ্বি ত্রি চতুঃ পঞ্চক শত ধর্ম্ম্যণ ভবতি । ব্রাহ্মণে ২৭মর্ণে ছিক॰ শত•। ক্ষত্রিয়ে ত্রিক৽। दित्मा हजूकः। भूटा शक्कः। মাসি মাসীত্যেব। ছৌ বা ত্রয়ো বা চত্বারোবা পঞ্চ বা স্বিত্তি চতুঃ পঞ্চাঃ দি ত্রি চতুঃ পঞ্চা অস্মিন্ শতে বৃদ্ধি দীয়ত ইতি দি ত্রি চতুঃ পঞ্চক॰ শত॰। তদস্মিন বৃ-দ্ধ্যা যত্ লাভ শুল্কোপদাদীয তে ইতি কন্। ইय॰ वृक्षि मीनि মাসি গৃহুত ইতি কালিকা। ইয মেব বৃদ্ধি দিবসগণনয় বিভজ্য প্রতিদিবসং গৃহুমাণা কাযিকা ভবতি। তথা চ নারদেন। কাখি-কা কালিকা চৈব কারিতা চতথা পরা। চক্রবৃদ্ধিশ্চ শান্ত্রেযু তস্য वृक्षि केणूर्विधा ॥ हेणूरकुं छ॰। কাষাবিরোধিনী শশ্বৎ পণ পা-मामि काषिक। । প্রতিমাস॰ সূব-ন্তী বা বৃদ্ধিঃ সা কালিকা মতা।। বৃদ্ধিঃ সাকারিতা নাম বর্ণিকে-न स्था कुछ। तृतक तिनि भून वृषि শ্চক্রবৃদ্ধি রুদাহতেতি। গ্রহীতৃ:। वित्नवर्णनः वृक्तः अकात्राखत মাহ। কান্তারগান্ত দশক সা-মুদ্রা বিশ্লক শত। কান্তার ম-রণ্য° তত্ত্র গচ্ছন্তীতি কান্তারগাঃ य वृक्षा धनः गृशेषा अधिक লাভার্থণ অভিগহনণ প্রাণধন বি-নাশ শক্ষাকৃষণ গ্ৰাহিশস্তি তে দ-শক্ত শভত নদুটো বেচ সমুদ্রগা-ত্তে বিংশক শভ নাসি নাসী-ত্যেব। এভদ্ক্ত॰ ভবতি কাস্তার-গেভ্যো দশকং শতং সামুদ্রেভ্য-শ্চ বিস্পাকণ শতণ উত্তমৰ্গ আদ-मा९। गृविनाभगाि भिक्ष দ্বাৎ ইতি ॥ 🟶 ॥ ইদানী কারি-তা॰ বৃদ্ধিমাহ। দদ্যু ৰ্বা স্বকৃতা॰ বৃদ্ধি॰ সৰ্বে সৰ্বাসু জাতিষু। সর্বে ব্ৰাহ্মণাদৰে | ২ধমৰ্ণা অবন্ধকে স-বন্ধকে বা স্বকৃতা স্বাভ্যুপগতা বৃদ্ধি॰ সৰ্বাসু জাতিষু দদ্যঃ। ক্ব-চিদকৃতাপি বৃদ্ধি ভ্ৰবতি যথাহ নারদঃ। ন বৃদ্ধিঃ প্রীতিদত্তানাও गामनाकातिका किछि । जना-কারিত মপু র্দ্ধু[,] বৎসরার্দ্ধান্বিব-ৰ্দত ইতি। বস্তু যাচিতক গৃহী-ষা দেশান্তরণ গত স্তণ প্রতি কা-णायत्नाकः। त्या यात्रिकतः॥

মাদায তমদত্বা দিশ-ব্ৰজ্ঞে। উ-ৰ্দ্ধুণ সংবৎসরাক্তম্য তদ্ধনণ বৃদ্ধি মাপুযাদিতি। যশ্চ যাচিতক মা-দায যাচিতোপ্যদত্বা দেশান্তর যাতি ত' প্রতি তেনৈবোক্ত'। কৃ-তোন্ধার মদত্বা যো যাচিতস্তু দি-শ॰ বজেৎ। উৰ্দু॰ মাসত্ৰয়াত্তস্য তদ্ধন প্ৰদি মাপু্যাদিতি। বঃ পুনঃ স্বদেশে স্থিত এব যাচিতে য়াচিতক ন দদাতি ত যাচন-কালাদারভ্য বৃদ্ধি দাপষেদ্রাজ। । যথাহ। স্বদেশেপি স্থিতো যস্ত ন দদ্যাদ্যাচিতঃ ক্বচিৎ্ৰা ত॰ ততো কারিতা॰ বৃদ্ধি মনিচ্ছস্তঞ্চ দা-প্রেদিতি। অনাকারিত বৃদ্ধে-त्रभवातमा नात्रतम्यनाञ्चः । भना মূল্য° ভৃতি ৰ্ন্যাসো দণ্ডো যশ্চ প্ৰ-কল্পিতঃ। বৃথাদানাক্ষিক পণা ব-ৰ্দ্ধন্তে নাবিবক্ষিতাঃ।। অবিবক্ষি-তা অনাকারিতা ইতি ৷৷ 🕸 ৷৷ অ-ধুনা অব্যবিশেষে বৃদ্ধি বিশেষমা– হ। সন্ততিস্ত পশুক্রীণাণ। পশূ-নাণ স্ত্রীণাণ সম্ভতি রেব বৃদ্ধিঃ ৷ পশূনা জীণা পোষণাসমর্থস্য তৎ পুষ্ঠি সন্ততি কামস্য প্রযোদ গঃ সম্ভবতি। গ্রহণঞ্চ ক্ষীরপরি हर्गार्थिनः । अथून। श्रयुक्तमाः

फ़्रामा बृक्षि धर्म मखरत्न हित-कालाविङ्गा, कमा जवामा कि-ষতী পরাবৃদ্ধি রিত্যপেক্ষিত আ-र। तमगार खनागता। बख्याना হিরণ্যানাত চতু স্ত্রি দিগুণা পর। ॥ রসস্য তৈল বৃতাদে বৃদ্ধি গ্রহণ মন্তরেণ চিরকালাবস্থিতস্য স্ব-कृठवा वृक्षा वर्कमानमाखिखवा বৃদ্ধিঃ পরা নাতঃ পর॰ বদ্ধতে । তথা বস্ত্ৰ ধান্য হিরণ্যানা যথা সংখ্যু চতুর্গুণাঃ ত্রিগুণা দিগুণা চ বৃদ্ধিঃ পরা। বশিষ্ঠেন তু রসস্য रेज अना मूकः। विकार हित्रनार विश्वन थाना थानारेनव तमा ব্যাখ্যাতাঃ পুষ্পামূল কলানি চ। তুল। মৃত ত্রিত্য মন্ট গুণ মিতি । মনুনা তুধান্যস্য পুষ্প মূল ফলা-मीनाक शक्षक्षक मुख्या शाना भरम वाद वास्थ नाविकामवि পঞ্চা মিতি। শদঃ ক্ষেত্রফল॰ भून मून कनामि। नता (मर्या-र्श हम्बीटक्नामि। वाट्या वनी বৰ্দ ভুৱগাদি। ধান্য শদ লব বা-ए विषया वृक्षिः शक्ष्यंशवः नाजि ক্রামতীতি। ভত্রাধনর্ণ ষোগ্যতা-वर्णन मुर्जिकामि कालवर्णन ह ব্যবস্থা এইব্যা। এতচ্চ সক্ৎ প্র-॥ रयारग् नक्मा इतर ह दिनि छत्। । পুরুষান্তর সং**ক্র**মণেন প্রযোগা-ন্তর করণে তম্মিমেব বা পুরুষে অনেকশঃ প্রযোগান্তর করণে সৃ-वर्गामिक दिश्वगामाञ्किमा भू-ৰ্ববৰ্দ্ধতে। সকৃৎ প্ৰযোগেপি প্ৰ-তিদিন প্রতিমাস প্রতিবৎসর वा वृष्णाञ्जल रसमर्ग प्रमा दिव ७ ग अवा । भृदी इ ७ वृ-का। मह दिव खना मिळिकमा वर्कि खत। यथार मनुः। स्मीन वृक्षि **দৈ গুণ্য॰ নাত্যেতি সকুদা**হ্নতা। সক্দাহিতেত্যপি পাঠোস্তি। উ পচষার্থণ প্রযুক্তণ দ্রব্যাণ স্পসীদণ তमा वृक्तिः अभीम वृक्ति देव र्थगुः নাত্যেতি নাতিক্রামতি । যদি সক্দাহিতা সকৃৎ প্রযুক্তা পুরু-বাস্তর সংক্রমণাদিনা প্রযোগা-স্তর করণে দৈগুণ্য মত্যেতি সক্-দাহুতেতি পাঠে শনৈঃ শনৈঃ প্র-তিদিন্দ প্রতিমাস প্রতিবৎসর বাধনণাদাহতা দ্বৈগুণ্য নাত্যে-তীতি ব্যাখ্যেয় । তথা গৌত-ৰেনাপ্যক্ত । চিব্লন্থানে দৈগুণ্ প্রযোগস্যেতি প্রযোগস্যেত্যেক বচন নির্দেশাৎ প্রযোগান্তর কর: ণে ৰৈপ্তণ্যাতি ক্ৰমো হতিপ্ৰেতঃ।

চিরস্থান ইতি নির্দেশাচ্ছনৈঃ শ-নৈ বৃদ্ধি গ্রহণে দ্বৈগুণাতি ক্র-মো দর্শিতঃ ৷ ইতি মিতাক্ষরা ৷৷ বৃদ্ধিকা জী ঋদিনামৌষধণ ৷ ইতিশব্দমালা ৷৷

वृक्षिकींविक। खी स्नामानकी-विकार ७९ मर्यापः १ व्यर्थ था।-गः २ क्योपः ७१ इन्याप्तः ११ क्वाप्तिका ८१ इन्याप्त द्वी ११

বৃদ্ধিদঃ পু॰ জীবকঃ ।। শৃকর-কন্দঃ । ইতি রাজনির্ঘন্টঃ ।। বৃ-দ্ধিদাতরি ত্রি ॥

क्री বৃদ্ধিশ্ৰাদ্ধ আভ্যুদ্যিক-वाकिः। नानीन्थवाकः। यथा। वृक्षिश्राक अवक्गामि शूर्ववछ-দিশেষক । জাত পুত্ৰ মুখ দ-र्भनामि वृक्षिञ्चाकः। शृद्धां छि-মুখেষু দক্ষিণোপবীতিষু মধু যব বদরযুক্তাঃ পিঙাঃ দেবতীর্থেন নমস্কারাস্তেন দক্ষিণোপচারেণ কৰ্তব্যু দক্ষিণজানুগৃহীয়া ওঁ जागामिनीयागूक वृक्को जागूक সগোত্রাণা সক্ষৎ পিতৃ পিতামহ প্রপিতামহ মাতামহ প্রমাতা-भर वृक्षथमाठामशानाः अमूक णर्षणः जगत्रीकानाः नामीम्-॥

খানা আদ্ধে কর্তব্যে ধর্মতা म॰छकाना॰ वित्यवा॰ प्राचाना॰ लाक निकारमेन युषामु नश क-ৰ্ত্তব্য মিভি দেব ভাৰ্মণামন্ত্ৰণ । ওঁ করিষাসীতি তেনোক্তে ইখ মেব মাভূ পিতামহী প্রপিডাম-হীনা দেব ৰাষ্ণামন্ত্ৰণ । তত ওঁ অদ্যামুক সগোত্রায়া মৎ প্র-পিতামহা অমুকা দেব্যা নান্দীমু-थाः आक्षः मिक्षात्मन यूत्राम् ग-যা কৰ্ত্তব্য মিতি প্ৰাপিতামহী ত্ৰা-ন্ধণামন্ত্রণ ৷ করিষ্যসীতি তেনো-ক্তেইখনেৰ মাতামহ্যাদি ব্ৰাহ্মণা মন্ত্ৰণ ৷ দেব পিতৃ সৰ্বদেব ভাৰ্মণ लाक कर्तनानुब्हाभन । जामतन ওঁবিশ্বেদেবাস আগত শৃণুতাম ইন হব এদ বহি নিবীদত। ও বিশ্বেদেষাঃ শৃণুতেম হৰ বে মে श्ख्रतीत्क य जेशनाविके त्य अभि জিহ্বা উত বা যজতা আ সদ্যা-न्मिन् वर्शिष बानयकः। अँ जाग-ছন্ত ইতি বিশ্বেদেবাবাহন° গ• স্বাদি দান অচ্ছিতাবধারণ বাচ-ন॰। ততঃ প্রপিতামহী প্রভৃতী না মনুজ্ঞাপন । আসন আবী इन श्वापिमान । अधिजार-ধারণ বাচন । ইখ পিতাম্ছা

মাতৃঃ। ততঃ প্রপিতামহাদীনা-यनुख्डाश्रन यात्रानं यात्राहन॰ ११-স্বাদি দান । এব বৃদ্ধপ্রপিতা-यरामीना॰ अन्ङाशनामिकत्राः । ওঁ বসুসত্য সজ্ঞকেভ্যে। বিশ্বে-ভ্যো দেবেড্য এতদন্ধ সযৃত স-शानीयः मराधनः मरानतः महि প্রতি সিদ্ধ বঙ্জিত নমঃ। ইতি **অন্নকন্ত্রন**াও অমুক গোত্রে মৎ পিতামহি অমুকা দেবি মান্দীমু-थि এতদম॰ সবদর॰ সদ্ধি নমঃ। এব॰ মাতামহ প্রমাতামহেভ্যঃ। ইতি গারুডে ২২৩ অধ্যাযঃ॥#॥ অন্যক্ত। ভৃতীয মাভ্যুদিষক वृ-দ্ধিপ্রাদ্ধণ তদুচ্যতে। উৎসবানন্দ मुखादत बटब्डाबारामि मन्द्रल ॥ মাতরঃ প্রথম• পূজ্যাঃ পিতর স্ত-দনস্তর ১ততো মাতামহা রাজন্ বিশ্বেদেবা স্তবৈব চ্যাপ্রদক্ষিণো-शठादम् प्रधाक्य क्टनाम्टेकः । প্রাক্তবো নিনবেৎ পিণ্ডাক্ পূর্ব-ষা চতুরো যুতান্।। সম্পন্ন মিত্য-ज्रामस्य मेमा। मधा हरा। इरिवाः । यूगा विकाजरः शृक्ताः रख कार्ज्यदामिन। ॥ जिनार्थ ह य-दिः कार्या नानीनकान्पृर्वकः।

পুসবান্।। এবং শুজোপি সামান্য'বৃদ্ধি প্রাদ্ধি স্থানা নান্য কারেণ মন্ত্রেণ সর্য্যাদামামবান্ বুধঃ।। দান প্রধানঃ শুজঃ স্যাদিত্যাহ ভগবান প্রভঃ। দানেন সর্বনামাপ্তির স্য সংজাবতে
মতঃ।। ইতি মাৎস্যে সাধারখাভ্যুদ্যকীর্ভনো নাম ১৭ অধ্যামঃ।। বিস্তারস্ত্র প্রাদ্ধিতার্
প্রাদ্ধি বিবেকে চ দ্রুক্রিঃ।
বৃদ্ধোক্ষঃ পুং বৃদ্ধবৃষঃ। তৎপর্য্যামঃ। জরদাবঃ ২। ইত্যমরঃ।।

বৃদ্ধ্যাজীবঃ ত্রি বৃদ্ধ্যপজীবী। তৎপর্য্যায়ঃ। বার্দ্ধ্যঃ ২ বার্দ্ধ্ ষিকঃ ৩ স্বীদঃ ৪ স্বীদিকঃ ৫। ইতি শব্দরত্বাবলী ।। সাধুং ৬। ইতি জটাধরঃ ।।

ষ্থ ক দীপ্তো। ইতি কবিকর ক্রমঃ ।। ক বর্দ্ধয়তি। ইতি দুর্গা-দাসঃ ॥

কৃষ উ ও ব ন ব কো। ইতি কবি কল্প দেখা। উ বা দ্বিত্বা বৃদ্ধা। ও বন্ধতে জনঃ। ব বর্ত্বাতি বি বৃৎসতি। ন অবৃধৎ। ইতি দুর্গাদাসঃ।।

यक्नानि मर्वाणि वाहरगे दिक- व्यमानः पूर मन्याः। देखि

বৃন্দ ব

निका खटकी मून्या मूना दिवृ जिः ॥ वृन्ता द्वः जि मदन । इंडि वृषमानुः पूर भूक्षयः ॥ भावः ॥ কৃতিঃ। ইত্যুণাদিকোষঃ।। वृधाः वि वर्कनीयः। वृधधारठाः ক্যপ্ প্রত্যযেন নিষ্পন্ন॰।। वृष्ठ॰ क्री कलপूष्मशकां मि र्यन-ধাৰ্য্যতে তৎ। বেঁটি। ইতি ভাষা । তৎপর্যায়ঃ। প্রদববন্ধন । ২। ি ইত্যমরঃ।। ঘটীধারা।। স্কাঞ । इंडि स्मिनिः॥ বৃস্তাকঃ পু॰ বার্ত্তাকী। ইতি শব্দর্জাবলী ॥ বৃস্তাকী স্ত্রী বার্ত্তাকী। ইতি রাজনির্বিটঃ ৷৷ বৃত্তিতা স্ত্রী কটুকা।**ইতিশন্ধ**-**छन्दिका**॥

वृक्त की ममृहः। ইত্যমরः॥ বৃদঃ পু॰ দশাৰ্দঃ৷শতকোটি-রিতি যাবৎ। ইতি জ্যোতিষণ।। अमा नामाछत्र° महार्बुषः ॥ বৃদ্ধা স্ত্রী তুলসী। ইতিশব্দ-तञ्जाबनी ॥ জनञ्जत्रशञ्जी । ज-স্যা বিবরণ তুলসীশব্দে দ্রফী-ব্য ।। কেদাররাজকন্যা ।। রা-ধাষোতশ্ৰামাস্তৰ্গতনামবিশে-ষঃ ৷ এতদ্বিরণ বৃন্দাবনশব্দে

नक्याना॥

বৃন্দারকঃ পু॰ দেবতা।ইত্যমরঃ ।। यूथभाजा । यथा । तृम्मात्रकः সুরে শ্রেপ্তে মনোজ্ঞে মূথপাত-রি। ইতি ভরতধৃতব্যাডিঃ ॥ वृन्नातकः जि मत्नाञ्जः॥ ८ अर्थः । ইতি মেদিনী।। তশ্মতে পব-भी यानिः ॥ वृन्नात्रको क्रि ·মৃথ্যৌ। ইত্যমরঃ ॥

বৃন্দাবন ক্লী স্বনামখ্যাততীর্থ । তন্ধামকারণ যথা। শ্রীনারায-ণ উবাচ। পুরা কেদারনৃপতিঃ সপ্তদ্বীপপতিঃ স্বয়ণ। আসীৎ সত্যযুগে ব্রন্থ সত্যধর্মরতঃ সদ। ।। স রেমে সহ নারীভিঃ পুত্র পৌত্রগণৈঃ সহ। পুত্রানিব প্ৰজাঃ সৰ্বাঃ পাল্যামাস ধা-র্মিকঃ ॥ কৃত্বা শতক্রতু॰ রাজ। লেভে দিন্দ্ৰদ্ব মীপ্সিত । কৃত্বা नानाविधः श्रृणुः कलकाङ्की न চ স্বৰ্য ৷৷ নিত্য • নৈমিত্তিক • স-ৰ্ব॰ শ্ৰীকৃষ্ণ প্ৰীতি পূৰ্বকণ। কে-দার তুল্যো রাজেন্দ্রো ন ভূতো ভবিতা পুনঃ ॥ পুত্রেষু রাজ্য• সংন্যস্য প্রিষা ত্রৈলোক্য মো-हिनी । टेकगीयद्याथरम्टमन

জগাম তপদে বনং ৷৷ হরে রৈ-কান্তিকো ভক্তে। ধ্যাযতে সম্ভ-ত হরি । শশ্বৎ সুদর্শন চক্র मिंख राष्ट्रमिर्द्धा मूटन ii bतः তথ্য নৃপশ্রেপ্তো গোলোকঞ জগাম সং। কেদার নাম তীর্থণ তত্তমামা চ বভূব হ ৷৷ তত্রাদ্যা-পি মৃতঃ প্রাণী সদ্যো মুক্তো ভ-বেৎ ধ্ৰুবে । কমলা শা তস্য ক-ন্যা নায়া বৃন্দা তপস্থিনী।। ন ব-ব্ৰে সা বর° কঞ্চিৎ যোগ শাস্ত্ৰ বিশারদা। দত্ত॰ দুর্বাসসা তস্যৈ হরে র্মন্ত্রণ সুদুর্লক্তা। সা বিরক্তা গৃহ॰ ত্যক্ত্বা জগাম তপসে বনং। ষ্টি॰ বৰ্ষ সহস্যাণি তপ স্তেপে সু-নিৰ্জনে ৷৷ আবিৰ্ৰভূব শ্ৰীকৃষ্ণ স্তৎপুরে। ভক্তবৎসলঃ। প্রসন্ধ-বদনঃ শ্রীমান্ বরং বৃষিত্যুবাচ সং ॥ দৃষ্টু। সা রাধিকাকান্ত শান্ত मुन्द्र विश्रहा गृष्ट्राः मन्त्राश সা সদ্যঃ কামবাণ প্রপীডিতা ।। সা চ শীমুণ বরণ বত্তে পতি স্তুণ মে ভবেতি চ। ওনিত্যুক্ত্বা চ রহসি চির্ণ রেমে তথা সহ ৷৷ সা জগাম চ গোলোকং ক্ষেন সহ কৌতু-কাৎ। রাধা সমা সা সৌভাগ্যাৎ গোপী শ্রেষ্ঠা বভূব সা ।৷ বৃন্দা

• যত্ৰ তপ্ন স্তেপে তত্ত্ব কুন্দাবন• স্মৃতণ বৃন্দা যত্র কৃতা ক্রীডা তেন বা মুনিপুঙ্গব ॥ 🏶 ॥ অথান্যঞে-তিহাসঞ্চ শৃণুষ বৎস পুণ্যদ । যেন বৃন্দাবন নাম নিবোধ কথ-ষামি তে ।। স্বশধজন্য কন্যে দ্বে ধর্মণাস্ত্র বিশারদে। তুলসী বে-দৰতো চ বিরক্তে ভবকর্মণি॥ তপস্তপ্তা বেদবতী প্রাপ নারাফ **৭° পর°। সীতা জনক কন্যা** সা সৰ্বত্ৰ পরিকীর্ত্তিত। 11 তুলসী চ তপ স্তপ্ত্বা বাঞ্চাণ কৃষা হরিণ গ তি । দৈবাদুর্বাসসঃ শাপাৎ প্রা-প্য সংখাসুর পতি ।। পশ্চাৎ **সংপ্রাপ কমলাকান্ত॰** কান্ত॰ ম-নোহর । তস্যাশ্চ তপসঃ স্থান উদিতঞ্চ তপোধন ৷৷ তেন বৃন্দ वन॰ नाम প্রবদন্তি মনীযিণঃ। 🛊 🛚 । অথ বা তে প্রবক্ষ্যামি পরণ হেম্ব ন্তর শৃগু। যেন বৃন্দাবন নাম পুণ্য ক্ষেত্রঞ্চ ভারতে।। রাধা বো-ডশ নামাঞ্চ বৃন্দা নাম শ্রুতৌ শ্রু-ত 'তেসাঃ ক্রীডাবন রম্য তে ন বৃদ্যাবন স্মৃত ।। গোলোকে প্রীতবে তস্যাঃ কৃষ্ণেন নির্শিত পুরা। ক্রীডার্থণ ভূবি তমায়া বন॰ বৃন্দাবন শৃত ।। ইতি ব্ৰন্ধবৈব-

র্ত্তে শ্রীকৃষজন্মখণ্ডে বৃন্দাবন প্রা खावः ১१ व्यशायः ॥ 🛊 ॥ व्य বৃজ্ঞাবন বর্ণনং। ঈশ্বর উবাচ। গুহাদ্গুহ তর হৃদ্য পরমানন্দ কারণ । অত্যজুত রহস্যানা র-হস্য পরম পর ॥ দুর্লভানাঞ্চ পরমণ দূর্লভণ মোহনণ পরণ। সর্ব শক্তি ময় দেবি সর্বস্থানেষু গো-পিতে ৷৷ সাত্বতা স্থান মূর্দ্ধন্য বিষ্ণে। রত্যন্তবল্লভ । নিত্য वृ-ন্দাবন॰ নাম ত্রন্নাণ্ডোপরি সং-স্থিত ।। পূর্ণব্রহ্ম সুথৈশ্বর্যা নিত্য गानन भवाय । देवन्छ। मि छम -শাংশং স্বয়ং বৃন্দাবনং ভুবি ৷৷ গো-লোকৈশ্বর্য্যঞ্চ যৎকিঞ্চিৎ গোন্ধ-লে তৎ প্রকীর্ত্তিত ৷ বৈঙ্গুচাদি বৈভব॰ যৎ দ্বারকাযাণ প্রকাশ-যেৎ ৷৷ যদুক্ষ পরমৈশ্বর্য্য নিত্য বৃন্দাবনাশ্রয় । তস্মাৎ ত্রৈলো-ক্যমধ্যে তুপৃথী ধন্যেতি বিশ্রুতা ৷৷ যৎ স্যান্মাথুরকণ ধাম বিষ্ণো-রেকান্ত বল্লভং। স্বস্থান মধিকং नागरधयः भाशूत्रमखनः ॥ निगृषः পরমণ স্থানণ পূর্য্যভ্যন্তর সংস্থি-ত । সহসু পত্রকমলাকার মা-খুর মঙল ।। বিষ্ণুচক্র পরিভাুম-কাম বৈষ্ণব মন্তুত। কর্ণিকা পত্র

বিস্তারণ রহস্য ক্রম মীরিতণ ৷৷ প্ল-ধান দারণ্য মাহাত্ম্য কথি-ত ক্রমাৎ। ভদ্র শ্রী লৌহ ভা-জীর মহা তাল খদীরকাঃ। বহুল॰ পমুদ কাম্য মধু বৃন্দাবন তথা ।। দ্বাদশৈতা বনে সঙ্খ্যাঃ কালি-न्ह्याः मश्च शन्हित्य। शृद्धं शक्ष्य-নং প্রোক্তং তত্ত্বান্তি গুহু মূত্তমং ৷৷ মহাবন পোসলাখ্য রম্য ম-,ধুবন॰ তথা। পূৰ্বে তু পঞ্চ ভদ্রা-**मा अनिमाः मश्र शक्तिम ॥** অন্যচ্চোপবন প্রোক্ত কৃষ্ক্রী-ড। রসস্থল । কদম খণ্ডিক নন্দ বন° নন্দীশ্বর° তথা ৷৷ নন্দনানন্দ-খণ্ডঞ্চ পালাশাশোক কেতকং ৷ সুগন্ধি মাদন কৈল মমৃত ভো-জন স্থল ৷৷ সু্থপ্রসাধন বৎস-रतन (नवनायन । नामिशून দধিগ্রামণ চক্রভানুপুরণ তথা।। मिक्क विश्वपरिक्षय वानकी ७१ ধূষরণ। কেমুক্রমণ ধরে। বীর মুৎ-मूकक्षाणि नन्तन्।। देश त्मव वतन সঙ্খ্যা স্ত্রি॰শচ্চোপবন॰ স্মৃত । পূর্বোক্তণ দাদশারণ্যণ প্রধানণ ব-ন মুত্তমণ।। তত্ত্বোত্তরে চতুর্থঞ্চ ব-नकः ममूनाञ्च । नानाविध तम-कीण माना नीनामस्न ॥

मन विष्येष विखात त्रमा क्रम মীরিত। সহসু পত্ত কমল গো-अज्ञाश्वा भरू अम् ।। कर्निका छः সহকাম গোৰিশ স্থানমূত্র । ভত্তোপরি স্বর্ণপীঠে মণিমণ্ডপ मिश्रिकः ।। তক্ত তক্ত क्रियोफिक् विभिन्न प्रमातिकः। यफ्नः प्र-**ক্লিণে প্রোক্ত॰ পর॰ গুফোত্ত**মো-ভ্ৰমা ভিন্দলে মহাপীঠ निगमागम मर्गम॰ । सागीरेख রপি দুস্থাপ সর্বাত্তা যক্ত গো-क्व॰ ॥ षिङीय॰ मन गार्भय॰ **ज्जर्माः विधा ज्था। नित्र**क्षक ষ্ঠী বীরস্টীরো তদ্দলে স্থিতে ।। পূৰ্বদল তৃতীয় যৎ প্ৰধান ञ्चान नूजरू ॥ भन्नामि नईठी-ৰ্থানাণ স্পৰ্শাচ্ছত গুণ ভবেৎ।। ठजूर्थनन देगभाना। जि**क**शीर्छ-প্সিত প্রদ°। কামষন্ত্রনা গোপী তত্র কৃষ্ণ পতি॰ লভেৎ।। বস্ত্রাল-का बन्द्रवा उपल्ला ममुमार छ । উত্তরে শঞ্চমণ প্রোক্তণ দলণ সর্ব मर्लाखम् ॥ द्यामगानिका मरेज-व मनक कर्निकाममः। वायवाञ्च मन सर्वः তত कानी हुमः सृज्ञः ।। मत्याख्याख्याख्याद्यान्य। নমুচ্যতে। দৰ্বোত্তৰ দলং শ্ৰেষ্ঠ

পৈন্চিমে সপ্তম দল।। যজ্ঞপত্নী গণানাঞ্চ তদীক্ষিত বরপ্রদণা অ-যাসুরস্য নির্বাণ চক্রে ত্রিদশ দ-শিত ৷৷ ব্ৰহ্মমোহন মত্ৰৈব দল ব্ৰহ্ম হাদাবহু । নৈখ ত্যাম্ব দল্ প্রোক্ত মৃক্টমণ ব্যোমঘাতনণ।। শঙ্খচূডবধ স্তত্ত্র নানাকেলি র-সঙ্ল । শ্রুত মফদল : প্রে ক্তি বৃ-ন্দারণ্যান্তরস্থিত ৷৷ শ্রীমদৃন্দাবন थना॰ यमूनावाः अमिकिनः। निव-লিঙ্গ মধিষ্ঠাতা দৃষ্টো গোপীশ্বরা-ভিধঃ ৷৷ তদ্বাহ্যে ষোডশদলং শ্রি-या পূर्न जतीतिकः। मर्वाम् निक् य (প্राक्तः প্রাদক্ষিণ্যাদ্যথা-ক্রমণ ।। মহৎ পদ নহন্ধাম প্র-ধান ধোডশ দল। প্রথমৈক-দলং শ্রেষ্ঠ মাহাত্ম্য কর্ণিকা সম_্ ৷৷ তিমিন্ মধুবন প্রোক্ত তত্র প্রাদু রভূৎ স্বয়ণ। চতুর্জো মহাবিষ্ণু: সর্বকারণ কারণ ॥ তত্রাধিঠিত তদ্দেব মুনিশ্রেপ্ত স-নাতন া দল দ্বিতীয় মাখ্যাত किश्निल। तमञ्रलः ॥ थिमतातः भा बदेखर प्रताक ममूमाझङ । **म**र्ब শ্ৰেষ্ঠ দল॰ প্ৰোক্ত• মাহাগ্যা° ক-र्विममन ॥ उक् भावकत्म इ-त्या निखानल त्रना आसः। कर्नि-

কাষা মহালীলা তল্লীলা রসগ-হ্বরে ।। যত্র কৃকো নিতা বৃন্দা-কাননস্য পতি ভবেৎ। ক্ৰো গোবিন্দতা প্ৰাপ্তঃ কিমন্যৈ ৰ্ছ ভাৰিতৈঃ ৷৷ দলং তৃতীয় মাখ্যা-ত সৰ্বশ্ৰেষ্ঠোত্তমোত্তমূণ চতুৰ দলমাখ্যাত মহাজুত রসস্থল।। হরি র্ম্যা পতিঃ সাক্ষানিত্য গেবৰ্দ্ধনঃ স্বয়ণ। কদম্বর্থন্তী ত-ত্রৈব পূর্ণানন্দ রসাশ্রযঃ ।। স্নিগ্ধণ शमा अय त्रा मनक मनूम। হুত । নন্দীশ্বর দল রম্য তত্র नन्मालयः याञः ॥ कर्निका मल মাহাত্ম্য পঞ্চম দল মূচ্যতে। অধিষ্ঠাতাত্র গোপালো ধেনুপা-ল স্ততঃ পরং।৷ দলং ষষ্ঠং যদাখ্যা-ত তত্ত্ব নন্দবন স্মৃত। সপ্তম वन्नात्रगु॰ मन॰ त्रगु॰ अकी र्ख-ত' ৷৷ দলাস্টম' তালবন' তত্ৰ ধে-न्वधः सृष्ठः। नवमः अभूमात्रगः দল॰ রম্য॰ প্রকীর্ত্তিত ।। কাম্যা-রণ্য॰ দল॰ হৃদ্য়৽ দশম॰ সর্ব কা-রণ । ত্রন্ধ প্রসাদন তত্ত্ব বিষ্ণু व्मः अमर्गिञः ॥ कृषः क्वीषा त्रम श्रानः श्रशानः मल मूठारछ। मल নেকাদশ প্রোক্ত ভক্তানুগ্রহ-করণণ।। নির্বাণ সেতুবন্ধস্য না-॥

না রসময স্থলং ৷ ভাঙীরং স্বাদৃশ मलः वनः त्रगाः मटना इतः ॥ कृषः ক্রীডা রস স্তত্ত শ্রীদামাদিভি রা-বৃতঃ। ত্রযোদশদল প্রেষ্ঠ তত্ত্র ভত্ত বন শৃত ৷৷ চতুর্দশদল প্ৰোক্তণ সৰ্ব সিদ্ধিপ্ৰদণ স্থল । 🗐-বন তত্ত্ৰ ক্ষচির সর্বৈশ্বর্যাস্য কা-त्र । क्ष नीना भग पन 🕮 কীর্ত্তি কান্তি বর্দ্ধনণ। পঞ্চদশ দুল শ্রেষ্ঠ তত্র লৌহবন স্মৃত ৷৷ কথিত ধোডশদল মাহাত্ম্য কর্ণিকা সমণ। মহাবনণ তত্র গী-ত তত্ত্বান্তি গুছ মৃত্তম ॥ বাল-ক্রীড়া রস স্তত্ত বৎসপালেঃ স্-মাবৃতঃ। পূতনাদি বধ স্তত্র ষম-লাজ্জুন ভঞ্জন ।। অধিষ্ঠাতা ত-ত্র বালগোপালঃ পঞ্মান্দিকঃ ৷ नामा पारमापतः (প্राक्तः (श्र-मानन्म तमार्गदः ॥ मन अमिष्त মাধ্যাত সৰ্ব শ্ৰেষ্ঠ দলোত্তম। कृष कीषा ह कि अही विश्वतमन মুচ্যতে ।। সিদ্ধ প্রধান॰ কিঞ্জন্ন॰ मलक সমুদাহত । 🗱। পাईजूर-বাচ ৷ বৃন্দাবনস্যাহাত্ম্য রহ-স্যা• পরমন্ত্ত•া তদহ• শ্রোত্মি-চ্ছামি কথ্যস্থ মহাপ্রভো ৷৷ ঈশ্ব-রউবাচ। কবিত তে প্রিমতমে

শ্বহাদ্প্রহ তমে!ত্তম॰ ॥ রহস্য।-ना॰ तरुगा॰ य९ मूर्झजानाक मूर्झ-**७॰।** देवलाका शांत्रिङ पारि দেবেশ্বর সুপূজিত ।। ব্রহ্মাদি বা-ি**শ্ব্ত**ণ স্থান• সুর সিদ্ধাদি সেবিতণ ৷ যোগীন্দ্রাদি সুনীন্দ্রাদি সদা ত-- জ্যান তৎপরণ।। অঞ্চরোভিশ্চ গন্ধৰে মৃত্য গীত নিরম্ভর । 🕮 मक्षावन त्रगा शृशीन त्रमा-শ্রেষ ।। ভূমি শ্চিন্তামণি স্তোয 'মমৃত' রস পূরিত'। বৃক্ষাঃ সুরক্র-মা স্তত্ত্ব সুরভি বৃন্দ সেবিতাঃ ॥ ন্ত্ৰী লক্ষীঃ পুৰুষো বিষ্ণু স্তদংশাণ শ সমুদ্ভবঃ ৷ তত্র কৈশোর বযসং িনিত্য মানন্দ বিগ্ৰহুং ॥ গতি নী-ট্যুণ কথা গানণ স্মিত বক্তুণ নির-खद्र । ७६ मरेजुः थ्यम शृर्व देविकटेव उष्टमा अय॰ ॥ भूर्वजन मूर्थ मभ॰ य्युद्रख्यू र्ख ईम्मय॰। প্রমত্ত কোটি ভৃঙ্গাদ্যৈ কূজৎ-কল মনোহর ॥ কপোত শুক সংগীত মুম্মতালি সহসূকং। ভু-জঙ্গশত্ৰু নৃত্যাদ্য° সকাস্তা মোদ विज्य ॥ नाना वर्टनक अमूरिय স্তিদৈৰ পরিপ্রিত। সুনিদ্ধ দৌ-রভাজীত মুশীকৃত জগলুয় ।। নন্দ্ৰীকৃত সংস্কৃতি বস্তথ্য

.. वेजः । शृट्वन्यू निजाञ्जापर স্থ্য मन्ना ७७ मिविङ ॥ चानुः ४ সুখ ষিচ্ছেদ জরা মরণ বজ্জিত ৷ অক্রোধ গতমাৎসর্য্য অভিন মনহংকৃত৽ ৷৷ পূর্ণানন্দামৃতরস৽ পূর্ণ প্রেম সুখাবহণ। গুণাতীত পর ধাম পূর্ণ প্রেম স্বৰূপক ॥ যত্র বৃক্ষাদি পুলকৈঃ প্রেমানন্দা-শ্রুবর্ষিত । কি॰ পুন শ্রেচতনাযু-रेक रिंकू ७रेकः किंगूठारः ॥ গোবিন্দান্ত্যি রজ স্পর্শানিত্য বৃ-न्मावन॰ जूवि। मङ्मुमल शप्रमा বৃন্দারণ্য বরাটক ।। যস্য স্পর্শ ন মাত্রেণ পৃথী ধন্যা জগল্রযে। শুক্রাদ্গুক্তমণ রম্যণ মেধ্যণ বৃদ্ধা-বন স্থিত ৷৷ অক্ষর নিত্যমানদ গোবিন্দ স্থান মব্যয়ণ। গোবিন্দ দেহতো ২ভিন্ন পূর্ণবন্ধ সুখাঞ্ৰ-য় ৷৷ মুক্তি স্তত্ৰ যতপাশাত্ৰমা-হাত্ম্যুণ কিমুচ্যতে। তক্ষাৎ সর্বা-ত্মনা দেবী হৃদিস্থ॰ সরু তদ্বন॰॥ বৃন্দাবন বিহারেষু কৃষণ কৈশো-त्र विश्रहः। जनगत्रात्राम् स्राप्त्रम् বাল্য পৌগশু যৌবন ॥ কালি-क्री मक्तरकामा कुर्णिकायाः श्र-सकिन है नाना मिनान गडीत जिलामि रेगारिक में वानका-

হত তন্মিশ্র মকরন্দ ধনালয় । পদ্মোৎপল্টिमाः अসুমৈ নানা वर्दिः ममुब्बुलः ॥ ठळवाकामि विरुटेश र्माञ्जू नाना कलयदेनः। শোভমান॰ জল॰ রম্য৽ তরঙ্গা-তিমনোহর ।। তস্যোভ্য তটী-রম্যা শুদ্ধকাঞ্চন নির্মিতা গঙ্গাকোটীগুণঃ প্রোক্তো যত্র ण्यार्ग वता हेकः ॥ कर्निकायाः কোটিগুণো যত্র ক্রীডা রতো र्तिः । कालिकी कर्निकाकृक মভিন্ন মেক বিগ্রহণ।। ইতি পা-দ্মে পাতালখণ্ডে ১ অধ্যায়ঃ।। वृन्गावतनश्रदः पु॰ श्रीकृषः। यथा । यस्र थिन्तु कृति व ऋ (४) यः वक्ता-দিভিঃ সুরৈঃ । গুণত্রয মতীত° ত॰ বন্দে বৃন্দাবনেশ্বর॰ ।। অপি-চ। পুরুষঃ প্রকৃতি শ্চাদ্যৌ রাধা वृन्मावत्मश्रद्धो । श्रकृष्ठि विंकृ-তিঃ সর্বণ বিনা বৃন্দাবনেশ্বরণ] ইতি পাদ্মে পাতালখণ্ডে ৯ অ-थायः ॥ 🗱॥ व्यनाकः। यन। नि-ত্যঃ স্বয়ণ কৃষ্ণঃ সচ্চিদানন্দ বি-গ্ৰহঃ। যগ্না গুণানাং শীলী তু ভগবচ্ছন্দ সংজ্ঞিতঃ ৷৷ নিত্যধা-মা গুণাতীতঃ সাকাদৃদাবনে-भद्रः। ज्ञानी अक्ट बीवायाः॥

বাসুদেবো ভ্বৎ প্রভুঃ ॥ গো-পীনা কাম পূর্ণায় নিত্যানা রমণায় চ। গোপালানা বি-নোদায় স্বয় নন্দসুতো ভবৎ ॥ ইতি পাদ্মোত্তরখণ্ডে ৬१ অধ্যায়ঃ॥

বৃন্দাবনেশ্বরী জ্রী রাধা। যথা।
রাঘবত্বে ২ভবৎসীতা রুকিন্নী
কৃষ্ণ জন্মনি। সাক্ষাল্লন্দীস্ত বিজ্ঞেষা প্রাকট্যেনের পার্বতি।।
বৃষভানুসূতা যাতু নিত্যানন্দ
স্বন্ধিনী। গান্ধর্বিকান্ত লীলাযাণ শ্রীঃ শ্যামা কৃষ্ণ বল্লভা।।
বৃন্দাবনেশ্বরী রাধা সাক্ষাৎ ক্ফাত্মকা পরা। ইতি পাল্মোত্তর
খণ্ডে ৬৭ অধ্যায়ঃ।।

বৃন্দিষ্ঠঃ ত্রি অযমনযোরেষাণবা অতিশ্বেন বৃন্দারকো দেবে। মুখ্যো বা। ইতি মুগ্ধবোধটী-কাষাণু দুর্গাদাসঃ॥

বৃন্দীষান্ ত্রি বৃন্দিষ্ঠঃ। অষমন-যো রেষা বা অতিশযেন বৃন্দা-রকঃ ইত্যথে ঈষসু প্রত্যবেন নিম্পান্ধঃ। ইতি ব্যাকরণ ।।

ৰ্শ ইর্ষ বৃত্যা । ইতি কবি-কল্পদ্মঃ । ইর্ অবৃশৎ অব-শী ৎ। অস্মাৎ পু্যাদিস্থানিত্য

कना। इंडि मूर्गामामः॥ वृगः पु॰ উन्पूकः। ইতি भक-ब्रञ्जावली ॥ वामकः। ইতামর-টীকাষা ভরতঃ।।

वृगा जी अवधीवित्नयः। हेवूा-नामिटकायः ॥

बृष्ठिकः पूर मृककी देश खरा-পোকা ইতি ভাষা। ইত্যনরঃ॥ **७९** भर्यायः । भूककी वेकः २। ইতি শব্দরত্নাবলী।। কীটবিশে-ষঃ । বিছা ইতি ভাষা। তৎ-পर्यायः । अनिः २ त्यानः ७ বৃশ্চনঃ ৪। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। क्रनः ७। ইতি শব্দরত্বাবলী।। প্দাসঃ ৬ অরুণঃ ৭ অলী ৮। ইতি জটাধরঃ ৷া#া৷ বৃশ্চিক বি-বস্য লক্ষণ মাহ। দহত্যমি রি-वाली চ जिनजीताक मागू ह 1 বৃশ্চিকস্য বিষ° যাতি পশ্চা-**मन्द्र**भाविष्ठेट ॥ व्यमाश वृ-न्ठिक परोमा लक्ष्य मार्। प-কৌ ২সাথ্যৈস্ত হৃদ্দুাণ রসনো-পহতো নরঃ ৷ মাণ্টলঃ প্রতম্ভি রত্যর্থণ বেদনার্ক্তো জহাত্যশূন্ ॥ जमादेश वृं किटक रखवा त्म-वान्व्रिः। शलामियूश्रहः श-॥

७ रेजात्ना । व वृभाजि वतः ∥ः मामि कार्या तरिता जवि । অত্যৰ্থ বেদানাৰ্ভ ইত্যম্বঃ॥ # ॥ অস্য চিকিৎসা। জীরকস্য কৃতঃ কল্কে। যৃত দৈন্ধব সংযুতঃ । मूर्थारका मधूनात्मशाकृष्ठिक-मा विव॰ श्दब्र ॥ शक्त माशुमि मृ-निত সূৰ্যাবৰ্ত্ত দলস্য তু। বৃশ্চি-কেন নরো বিদ্ধঃ ক্ষণান্তবৃতি নি-ৰিষঃ।। ইতি ভাবপ্ৰকাশঃ।। 🛊।। অথ ৰৃশ্চিক বিষহর মন্ত্রঃ। ও সর স্ফুঃ হ ওঁ हिनि भिनि চिनि छिनि স্ফুঃ বন্ধণে স্ফুঃ সর্বেভ্যো দেবে-ভ্যঃ স্ফুঃ। ইতি তন্ত্রসারঃ॥ #॥ মেষাদি দাদশরাশ্যন্তর্গতাইনরা-**শিঃ। অস্যাধিষ্ঠাত্রীদেবতা** বৃশ্চি কঃ। বিশাখা শেষপাদানুরাধা জ্যেণ্ঠা সমুদাষেনৈতজাশি র্ভব-তি। স চ শীর্ষোদযঃ। শ্বেতবর্ণঃ। कनताभिः । উত্তরাদিক্পতিः। কফ প্রকৃতিঃ। জলচরঃ। বহুপু-**ভাঃ। বহু স্ত্রীসঙ্গঃ। চিকুতনুঃ।** বি-व्यवन्तरा। जगा वित्यवमः छाः। त्नोभाः। अवन।। यूथाः। नमः। স্থিরঃ। পুদ্ধরঃ। সরীসৃপজাতিঃ। আসঃ।। তত্তাশিক্তাত ত্রতাদ্-শো ভবতি। মৌনী। মন্দগতিঃ। क्शामुः। अत्किः। नी हमक्ष्रा

ইতি বৃহজ্জাতকাদয়:।। *।। ত্রাজ্জাতফল । বৃশ্চিকে । দেশ দেশ দেশ জাতঃ শৌর্যানাতি দুর্ফরীঃ। ভবেদ্বিজ্ঞান সম্পন্নে। বিগ্রহী স্ভগঃ সুধীঃ।। ইতি কোঞ্চীপ্র-দীপঃ।। *।। ওমধীভেদঃ। ইতি মেদিনী।। হালিকঃ।। হালঃ। ইতি সংক্ষিপ্রসারোণাদিবৃত্তিঃ।। স্ননবৃক্ষঃ।। কর্কুটঃ।। গোমমান্কীটঃ। ইতি ভরতঃ।। অগ্রহান্ধনাসঃ। ইতি সারস্করী।। বৃশ্চকপ্রিয়া স্ত্রী পৃতিকা। ইতি শক্ষমালা।।

বৃশ্চিকণী স্ত্রী আখকণী । ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ।।

বৃশ্চিকা স্ত্রী ক্ষুদ্রক্পবিশেষঃ।
তৎপর্য্যায়ঃ। নথপণী ২ পিচ্ছিলাও অলিপত্রিকা ৪। অস্যা গুণাঃ। পিচ্ছিলত্বং। অমুত্বং। অন্তর্ব্ দ্যাদিদোয নাশিত্বঞ্চ। ইতি রাজনির্ঘণীঃ।

বৃশ্চিকালী স্ত্রী ক্ষুপবিশেষঃ।
বিছাটী ইতি ভাষা। তৎপর্যাযঃ। বৃশ্চিপত্রী ২ বিষশী ৩ নাগদন্তিকা ৪ সর্পদংস্টু। ৫ অমরা
৬ কালী ৭ উস্টুধুসরপুচ্ছিক। ৮
। ইতি রত্নমালা।। বিষ্ণী ১

নেত্ররোগহা ১০ উদ্ভিকা ১১
অলিপনী ১২ দক্ষিণাবর্ত্তনী ১৩
কালিকা ১৪ আগমাবর্তা ১৫
দেবলাঙ্গুলিকা ১৬ কর্মনা ১৯ স্বর্ণদা
২০ যুগ্যফলা ২১ ক্ষীরবিষাণিকা
২২ ভাসুরপুষ্পা ২৩ ৷ অস্যা
গুণাঃ ৷ কটুত্বণ ৷ তিক্তত্বণ ৷ হৃদ্বতুশুদ্ধিকারিত্বণ ৷ বল্যত্বঞ্চ ৷
ইতি রাজনির্ঘণটঃ ৷৷ অপিচ ৷ বৃশ্চিকালী বিষন্নী তু কাস মান্ধতনাশিনী ৷ ইতি রাজবল্লভঃ ৷৷
বৃশ্চিপত্রী স্ত্রী বৃশ্চিকালী ৷ ইতি
রত্ত্রমালা ৷৷

বৃশ্চীরঃ পুণ শ্বেতপুনর্ণবা। ইতি রত্নমালা।

ৰ্ষ উ সেচনো। প্ৰজনৈশ্যে। ইতি কবিকল্পজ্ঞমঃ।। উবৰ্ষিত্বা বৃষ্ট্বা। ইতি দুৰ্গাদাসঃ।।

বৃষ ক ও প্রজনৈশ্যে। ইতি কবিক্রজন্মঃ ।। ক ও বর্ষতে।
অস্য পঞ্চমস্বরানুবন্ধে। লেখক
শ্রমকৃতঃ সুধীভি হেঁযঃ।ঞ্যন্তেভাঃ সর্বত্ত নিজ্যেশ সাম্পুদাযিক্রাভ । নট প্রাচামন্রোধাৎ
গাঠা ইভি বাচ্যণ। ভাই ভানুক্

तारको। क ७ तन् तक्षता। वृठ क ७ मिरछो। मित क ७ পরि-कृष्णता। कमि वर्षा। वृष क ७ मक्ति वर्षा। जमक् वरध १ नाम-द्रा। ইত্যেষামধ্যানামপি পঞ্চম खतान्त्रकाशरङः। वञ्च छ ७-याः পঞ্চম खतान्त्रकः थाणीन शिव्छाशानर्थः। অতএव त्रमा-नार्थाणि এया जुमन्त्रकः शृवं शिव्छ। शाव्या १ मान्त्रकः शृवं शिव्छ। शाव्या १ था खद्रत्र पृता-मयः मृ नं एष्ट श्थकाव्य हिठ छ। भनार्थ हेठ्या १। श्रक्तना श-र्छ अइनः केमा रमश्राः। हैठि मृर्गामामः॥

বৃষণ ক্লী বৰ্ষণ ইতি শব্দমালা।।
বৃষঃ পুণ পুরুষগবং। এঁডা ইতি
ভাষা। তৎপর্যায়ঃ। উক্ষা ২
ভত্রঃ ও বলীবর্দিঃ ৪ শ্বষভঃ ৫
বৃষভঃ ৬ অনড়ান্ ৭ সৌরভেষঃ
৮ গৌঃ ন। ইত্যমরঃ।। শৃঙ্গী ১০
কঙ্গবান্ ১১। ইতি শব্দরত্মাবলী
।। শিখী ১২ গদ্ধনৈপুনঃ ১৩ পুজগবঃ ১৪। ইতি জটাধরঃ।।
মানুক্রবাচ। ভগবন্ শ্রোভু মিচ্ছামি বৃষভ্রমা চলক্ষণ ব্রোভ্

: মহৎ ।। মৎস্য উবাচ। ধেনুমা-দৌ পরীক্ষেত সুশীলাণ লক্ষণাদ্বি-তা॰। অব্যঙ্গা মপরিক্লিন্টা॰ জী-ববৎসা মরোগিণী ৷৷ স্নিগ্ধবর্ণা সিশ্বপুরাণ সিগ্ধশৃঙ্গাণ তথৈব চ। মনোহরাকৃতি সৌম্যাণ সূপ্রমা-ণা মনুদ্ধতা॰ ।। আবর্ত্তে দিক্ষিণা-বৰ্ত্তৈ মুক্তা দক্ষিণতশ্চ সা। বামা বৰ্ত্তৈ বামতশ্চ বিস্তীৰ্ণ জঘনা ত-থা।। মৃদু সংহত তামো্রস্তীণ রক্ত জিহ্বাণ সুপূজিতাণ। অশ্যাব দীর্ঘ স্ফুটিতা রক্তজিহ্বা তথা চ যা॥ অস্থাবাবিলনেত্রা চ সকৈ রবির-देन पृटिष्टः। देवपृष्यं अधूवदेर्गण জলবুদ্বুদ সমিতৈঃ ৷৷ রক্তমিগৈ শ্চ নয়নৈ স্তথা রক্তকনীনিকৈঃ। সপ্ত চতুৰ্দ্দশ দস্তা চ তথা চাশ্যা-মতালুকা ৷৷ ষডুমতা সুপাৰ্শেক পৃথু পঞ্চ সমাষতাঃ। অফীযত শিরো গ্রীবাধরাজন্ম সুলক্ষণা।। মনুরুবাচ। ষড়ুমতাঃ কে ভগব-ন্ কেচ পঞ্চ সমাষ্তাঃ ৷ আষতা-শ্চ তথৈবাফৌ ধেনুনা^ত কে শু-ভাবহাঃ ॥ মৎস্য উবাচ । উরঃ পৃষ্ঠ শিরঃ ক্লকিঃ শ্রোণী চ বসু-ধাধিপ। ষডুয়তানি ধেনুনা॰ পূ-ज्य कि विष्मनाः ॥ कर्न निज न

লাটঞ্পঞ্ভাক্ষরনন্দন। সমা-ষতানি শস্যান্তে পুচ্ছ সান্ন। চ সক্রিনী ৷৷ চত্বারশ্চ সমা রাজমে-ব সক্ষৌমনীষিভিঃ। শিরে। গ্রীবা-যতা স্বেতে ভূমিপাল স্মৃতা দশ u তস্যাঃ সুতং পরীক্ষেত বৃষভং লক্ষণাম্বিতং। উন্নত স্কন্ধ কঙ্গদ মৃ-जूलाकृत कश्रवः ॥ भश्रकिष्ठि ककः देवमृर्ग्यामित्नाहनः। अवा-न गर्ड मृक्षां अ मूनीर्घ भृथ्वान-ধিং৷৷ নবাফদশ সংখ্যৈ ৰ্বা তীক্ষা-ত্রৈ র্দশনৈঃ শুভৈঃ। মল্লিকাক্ষ-শ্চ মোক্তব্যো গৃহেপি ধনধান্য-দঃ ৷৷ বৰ্ণত স্তামু কপিলে৷ ব্ৰাহ্ম-ণস্য প্রশস্যতে। শ্বেতো রক্তশ্চ কৃষ্ণশ্চ গৌরঃ পাটল এব চ।। ভ-দ্রিন স্তামু পৃষ্ঠশ্চ সবলঃ পঞ্চকা-नकः। शृथुकर्णा महाऋकः अकु রোমা চ যো ভবেৎ ৷৷ রক্তাক্ষঃ কপিলো যশ্চ রক্ত শৃঙ্গতলো ভ-বেৎ। শ্বেতোদরঃ কৃষ্ণপৃষ্ঠো ত্রা-শণস্য প্রশাসতে ।। স্নিঞ্চ রক্তেন বর্ণেন ক্ষত্রিষস্য প্রশৃস্যতে। কা-क्ष्नारञ्न देवगामा कृरक्रनाभा-স্তাজন্মনঃ ॥ যস্য প্রাগাষতে শৃ-বে ভু মুথাভিমুথে সদা। সর্বেষা নেব বৰ্ণানা॰ স চ সৰ্বাৰ্থসাধকঃ ॥

।। মার্জারপাদঃ কপিলে। ধন্যঃ কঁপিল পিঙ্গলঃ ৷ শ্বেতো মাৰ্জ্জার-পাদস্ত ধন্যো মণিনিভেক্ষণঃ।৷ক-রটঃ পিঙ্গল শৈচব শ্বেতপাদ স্তথৈ-ব চ ৷ সৰ্ৰপাদ শিরো যশ্চ দ্বিপা-দ শ্বেত এব চ।। কপিঞ্চল নিভো ধন্য স্তথা তিত্তিরি সন্ধিভঃ। আ-কৰ্ণ মূলাৎ শ্বেতস্ত মুখণ যস্য প্ৰ-কাসতে॥ নন্দীমুখঃ স বিজেযো রক্ত বর্ণো বিশেষতঃ। শ্বেতঞ্চ জ-ঠর° যস্য ভবেৎ পৃষ্ঠঞ্চ গোপতেঃ ৷৷ ঋষভঃ স সমুদ্রাকঃ সতত স্ব-লবৰ্দ্ধনঃ। মলিকাপুষ্পচিত্ৰস্ত ধ-ন্যো ভবতি পুঙ্গবঃ ॥ কমলৈ র্ম-গুলৈ শ্চাপি চিত্রো ভবতি ভাগ্য-দঃ। অতসীপুষ্পবর্ণস্ত তথা ধন্য-তরঃ শৃতঃ ॥ৠ। এতে ধন্যা স্তথা ২ধন্যান্ কীর্ত্তবিষ্যামি তেখনষ । क्क তात्वार्छ मनना बक मृत्र শফাশ্চ যে ৷৷ অব্যক্তবৰ্ণা হুস্বাশ্চ ব্যাঘ্ৰ ভস্ম নিজাশ্চ বে। খ্ৰাজ্ফ গৃধু সবৰ্ণাশ্চ তথা মূষিক সন্ধি-ভাঃ ৷৷ স্ঠাঃ কাণা স্তথা খঞ্জাঃ কেকরাক্ষা স্তব্থৈব চ। বিষম শ্বে-ত পাদাশ্চ উদ্ভান্ত নযনা স্তথা।। নৈতে বৃষাঃ প্রমোক্তব্যা ন চ ধা-र्या उथा गृहरा माञ्चानाक

্ধার্য্যাণাং ভূযে। বক্ষ্যামি লক্ষণং 🖁 া। 📲 ।। সন্তিকাকার শৃসাশ্চ যে-त्वीय जपृभ अनीः। यहा श्रमाना-ুশ্চ তথা মন্ত্রমাতঙ্গ গামিনঃ।৷ ম-হোরস্কা মহোৎসাহা মহাবল প-রাক্রমাঃ। শিরঃ কণৌ ললাটঞ্ বালধি শ্চরণানি চ।। নেত্রে পার্শ্বে চ কৃষ্ণানি শস্যন্তে চক্রভাণসি চ ংশ্বেতান্যেতানি শস্যত্তে কৃষ্ণস্য তু বিশেষতঃ।। ভূমৌ কর্মতি লা-ः इता अलय कृत वालिशः । भूत-স্তাদুদ্যতে নীলবৃষভশ্চ প্রশস্য-তো৷ শুক্তিশ্বজ্ব পতাকাতা যেষাণ ় রাজী বিরাজতে। অনজাহশ্চ-ए धना। विख मिक्षि जयावशः ्रा श्रमकिन निवर्खस्य यय स्य বিনিবর্ভিতাঃ । সমুন্নত শিরে। ত্রীবা ধন্যা স্তে যূপবর্দ্ধনাঃ।। রক্ত ় শৃঙ্গাগ্রনয়নঃ শ্বেতবর্ণো ভবেদ্য-कि। मटेकः अवान मम्टेन नीसि ধন্যতর শুতঃ ৷৷ এতে ধার্য্যাঃ প্র-यद्वामं योक्किता यनि वा वृषाः। ं शांत्रिका यिं वा मुक्का धमः धाना विवर्कनाः ॥ ठत्रशानि मूर्यः शूक्रः েমস্য শ্ৰেতীনি গোপড়েং ৷ লা-ক্ষারস সর্বাশ্চ ভ্রমীল মিতি निर्मित्न ।। वृष अव ज स्थाक-॥

ব্যো ন স ধার্য্যো গৃহে ভবেৎ। তদর্থ মেবাচরক্তি লোকে গাখা পুরাতনী ॥ এফব্যা বহবঃ পুত্রা ষদ্যেকোপি গয়া বজেৎ ৷ গৌ-द्रीया श्राष्ट्रकार्याः नीलया कृ य मूद्रमुट्फ्ट ।। এব॰ वृष्य॰ नक्रव সংপ্রযুক্তণ গৃহোদ্ভবণ ক্রীত মধ্য-পি রাজন্। মুক্রা ন শোচে-মরণ মহাত্মা মোকে মতিঞাহ মতোভিধাস্যে ॥ ইতি মাৎস্যে বৃষভ লক্ষণ নাম ১৮১ অধ্যা-यः ॥ 🗱 ॥ जनभानार्थ मागठ वृषमा निवातरन कारम यथा। গবা॰ তৃষ্ণাভিভূতানা৽ পানার্থ মভিধাবতা । অস্তরাযো ভবে **দ্যস্ত স ভবেদ্বন্ধাতকঃ ৷৷ ই**তি কর্মলোচন ।। ্ ॥ অস্য দানবি ধি র্যথা। বশিষ্ঠ উবাচ। যথেশ্বরো দরিজে৷ বা করোতি বিধিন৷ নৃপ । দান॰ সর্ব গুণোপেত॰ তচ্চ্ণু যথা তথ॰।। ভারাদি ত্রিপলাস্তঞ্চ বৃষণ কৃষা বিধানতঃ ী যুতণ ধেষা **थ वा म**मग्राष्ट्र किरठा न्शमख्य ॥ যশ্বয়া ধেনবঃ প্রোক্তা বৃষা স্তা-**ৰস্ত এব হি । হ্রাবেতে নি**খে জ्याः मूर इताय ह छथा वृयाः॥ সর্বাভাবাততো রাজন্ তিলপা-

্ত্ৰাণি নিত্যশঃ। সৰ্ৰপাপ বিনা-:| শায দীয়স্তে নৃপ সত্তম।। গোম-যেন সমালিপ্য যব বস্ত্র সমাবৃতে । বৃষ হেনময তত্র রৌপ্য বা तञ्जभः युज्य ।। जमा नीनमरेयः भृ-देत्र भो किकां कि गृर्शात्रमाः । দাত্রি°শচ্ছ্ভ বজু†ণিবিক্রমৌষ্ঠে मूनामिको.॥ भातकछी विनिर्धिः ফ। কণৌ চৈবাস্মকৌ মতৌ। প-ঘরাগস্য বৈ পাদাঃ খুরা রৌপ্য-ময়। স্তথা ।। রাজতান্যস্য রোমা-ণি কৌমৰত্রেণ কম্বলং। পটেন **পু**ऋ मूक्तिरहे॰ मर्त्त्रया मन्ग्रय॰ वि-ধিঃ।। বৃষণৌ ক্ষাটকস্যাপি লি-**एक मिन्ड अकी उंडः। यथा (धन्** স্তথান জ্বান্ সূবর্ণস্য তু কার্যেৎ ৷৷ সৰ্বাসাণ ফল মাপ্নোতি ধেনূনাণ বৃষভপ্রদঃ। রাজ্ঞঃ সবিভবাদা-ন॰ ভক্ত্য। যঃ প্রতিপাদযেৎ ॥ বৃ-ষভস্যাপ্যশক্তো হি তদনস্ত ফ-ল॰ স্মৃত । নিঃস্বে। বাপ্যেব মেব॰ হি কৃত্বা ব্ৰত মতন্ত্ৰিতঃ ৷৷ তৎ-**यन॰ मग्राद्यां अन्नमानाम** मण्मरः। ইতি বক্লিপুরাণে বৃষ-मानाशायः ॥ 🟶 ॥ छमान यनः यथ। 1 कन्तामानः वृश्यादमर्गः তীৰ্থসেবা• শ্ৰুত• তথা ৷ যে স্বৰ্ধ-

স্তি গৃহস্থাস্ত ন তে তদিষযোপ-গাঃ।। ইতি তুক্তৈব কন্যাদান-नायायायः ॥ 🟶 ॥ व्यशिष्ठ । ब-क्तावह । वृष्यभारवी नमामाय यू-বানৌ লক্ষণান্বিতৌ। হেমণ্ছে শকে রৌপ্যে সবক্রৌ পূজ্যেমুনে ৷৷ শিবোমাণ পূজষিদ্বা তু তদ্দিনে যঃ প্রয়চ্ছতি। শিবজ্ঞায় বিপ্রা-ষ রোহিণ্যা॰ বা মৃগেণ বা ।। ন বিযোগো ভবেত্তস্য সুত পত্নী প-তেঃ কৃতঃ। বাতর হস বৈমানৈ ৰ্গচ্ছেচ্ছিবপুর° দ্বিজ ৷৷ তত্ৰ ভো-গাণ শ্চিরণভুক্ত্বা ইহআ গত্য জা-যতে। সমৃদ্ধৌ ধনধান্যাভ্যাণ পুত্ৰ ষিত্র সমাঙ্গলঃ ॥ যে। বা রত্ন স-गायुक्तः (भायुगः शृक्षरयगुरन। প্রয়চ্ছতি শিবোমা চ প্রীষেতাণ ভাবিতাত্মনঃ ৷৷ স সৰ্ব পাপ দুঃ-খা ভ্যা॰ বিমুক্তঃ ক্রীডতে সদা। **इंट्रेंट्रांक ज्यक्ता** (एंट्रांक्ट्रे পরমণ পদ।। ইতি দেবীপুরাণে शांत्रज्ञख्नामाधाग्यः ॥ ***** ॥ **শिব व्य कात्रगः यथा । श्री**कृरः উবাচ। অথ গৰান্বিতো ৰুদ্ৰো। হন্ত ত্রিপুর মুলুণ । মত্বা মনসি সংহৰ্ত্তা সৰ্বেষাণ জগতা মিতি ৷৷ কে ২ম পতন্বদৈত্য ইতি

मेषा यरयो त्रवं । विश्वाय भूलं म- ॥: म्हलः यमीयः कृत्रः शतः ।। চিরः বভূব সমর বর্ষ মেক দিবানি-শং। ন কোপি জেতুং কং শক্তো (को मत्यो मस्त्र मना ।। शृथिवा।-**ঞ্ রণ** কৃত্বা দৈত্যেক্রো মায্যা প্রিষে ৷ অত্যূর্দ্ধ সমুত্তস্থে প-**ক্ষাশৎ কোটি যোজন** ৷৷ উত্ত-কৌ শঙ্কর স্তূর্ণ হস্তুণ দৈত্যে জ-গৎপ্রভূঃ। জঘান মুফিনা রুদ্রো দানবেন্দ্র॰ প্রকোপতঃ ।। বজু-মৃষ্টি প্রহারেণ সদ্যে। মৃচ্ছ। মব।-প সঃ।ক্ষণেন চেতনা॰ প্রাপ্য কো-शानानव शूक्रवः ॥ भिवः नयान मूखाना পाठ्यामाम ভृতলে । তদাহ কলষা শীঘু বৃষৰপ বি-ধাৰ চ।। স্থান শক্ষর ধৃষা বি-यानाच्या मूक्रक्यभः। मटमो ठटेन्य य कवरु य भून मित्रमर्भनः ॥ মৰা দত্তেন শূলেন জ্বান ত্ৰিপু-র॰ হরঃ। মামেব দর্গহস্তার॰ তু-**ফাব ব্রীডিতঃ পুনঃ।। তত্যাজ শ**্ **স্বরো দর্গণ** বিমবীজণ ততো বিভূঃ । জ্ঞান। নন্দ স্বৰূপশ্চ নিৰ্লিপ্তঃ স-ৰ কৰ্মসু য় ততোহণ ব্যৰপেণ ব-হ।মি তেন তংপ্রিয়ং। মম প্রিয়ত भा नास्ति देव**लादक यू** निवाद- ॥

পরঃ ।। ইতি ত্রন্ধবৈবর্তে একৃষ্ণ জন্মখণ্ডে ৩৬ অধ্যায়ঃ ৷৷ 🛊 🛚 ॥ মেষাদি ছাদশ রাশ্যন্তর্গত দ্বিতী-ষরাশিঃ। তৎপর্য্যাষঃ। তাবুরিঃ ২। অস্য বিশেষসংজ্ঞা। সৌস্যঃ । जन्न। प्राप्तः। भगः। स्रितः। পুষ্কুরঃ ৷ অষ চতুষ্পাৎ ৷ নিশাসৃ-वार्गः। पिवा वनाः। दुक्षाशः। দক্ষিণদিক্পতিঃ। নিশাখ্যঃ.। পৃ-छोमयाथाः। जमाि श्रेवी (मर्-তা বৃষঃ। কৃত্তিকাপাদত্রয রো-श्नि ममृणाय मृगि तार्कात्करनज् দ্রাশি র্ভবতি। সচ শীতল স্বভাবঃ । সুন্দরভূমিস্বামী। বাতপ্রকৃতিঃ। শ্বেতবৰ্ণঃ । বৈশ্যজাতিঃ । মহা-শব্দকরঃ। মধ্যমন্ত্রীসঙ্গঃ। মধ্যম-সস্তানশ্চ ৷৷ এতদ্রাশিজাতএতা-দৃত্তবতি। দাতা। বাগ্দুঃস্বরঃ। निर्ज्यः। পরদারাভিলাষী। ইতি বৃহজ্জাতকাদযঃ।।#।। এতদ্রাশি-জাত ফল । স্থিরমতি সুমতি ক্ষনীষতা॰ সশলতা॰হি নৃণা মু পভোগতা । বৃষগতো হিমগু ভ্-শ মাদিশেৎ সুকৃতিনঃ কৃতিনশ্চ मूथानाशि॥ 🛊 ॥ ठन्नभंजाठकन॰ । বৃষলগে ভবেজ্জাতো গুরুভক্তঃ . थियबमः। छनी स्ठी धनी लूनः

· শূরঃ **সর্ব**জনপ্রিষঃ ।। ইতি কো:। ষ্ঠীপ্রদীপ।। 🟶 ।। চতুর্বিধ পুরুষ-মধ্যে পুরুষবিশেষঃ। তস্য লক্ষ-ণ যথা। বহুগুণ বহুবন্ধঃ শীঘু-কামো নতাঙ্গঃ। সকল রুচির দে-इः मञ्जवामी वृत्या २ यः ॥ ইতি রতিমঞ্জরী।। 🗱।। একাদশমম্বস্ত-রীযেন্দ্রঃ। য়থা। রুডপুত্রস্য তে পুত্রান্ বক্ষামোকাদশস্য তু। স-ৰ্বত্ৰগঃ সুশৰ্মা চ দেবানীকঃ পুৰু র্গুৰুঃ। ক্ষত্রবন্ধা দূঢাযুশ্চ আর্দ্র-কঃ পুত্রক স্তথা ৷ বিহঙ্গমাঃ কা-মগমা নির্মাণ রুচ্য স্তদা ৷৷ একৈ-ক ব্রি॰শক স্তেষাণ গণাশ্চেক্রশ্চ বৈ বৃষঃ। দশগ্রীবে। রিপু স্তস্য স্ত্ৰীৰূপী যাত্যিষ্যতি ॥ ইতি গা-क्टफ ৮१ अथायः॥ 🗱॥ धर्मः॥ শৃঙ্গী ।। উত্তরপদস্থ শ্চেৎ শ্রেষ্ঠঃ ।। সৃষিকঃ।। শুক্রলঃ।। বাস্তস্থান-ভেদঃ। ইতি মেদিনী ।। বাসকঃ া ইতি বিশ্বঃ ॥ ঐকৃষ্ণ ।ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।। শত্রঃ। ইতি জ-টাধরঃ ।। কামঃ ।। বলবান্ । ই-ত্যনেকার্থকোষঃ ।। ঋষভনামৌ-ষধ । ইতি রাজনির্ঘন্টঃ॥ व्यक्नी जी मुमर्गना। मूमर्गन-খলক ইতি ভাষা। ইতি রত্ন-

মালা ।। বৃষগন্ধা স্ত্রী বস্তান্ত্রী।ইতিরাজ-নির্ঘণটঃ ।।

ক্লী কৃষিকৰ্শোক্তবৃষা-कात्रहळा यथा। व्यहळा व्या-कातः महावयव मःयूठः । निथि-ত্বা বিন্যসেদ্ভানি বৃষনামর্ক পূ-र्वक ।। भूथािक कर्व भीटर्ययु मृ-কে ক্ষমে দিক দিক ৷ ত্রীণি . शृत्धे षर॰ भूत्कः श्रकी भारत जूमत्त्र जिकः॥ श्लक्षवार वी-**ज्लाश्चि श्रात्रसामि मिनक्नंक** । ষদক্ষেষু স্থিত তক্ষাদ্বক্ষ্যে সর্বণ শুভাশুভণা আস্যে হানিঃ সুখণ নেত্রে কর্ণে ভিক্ষাটন তথা । শীৰ্ষে ধৃতি স্তৰ্থা শৃকে সৌখ্য ऋत्म ह यक्रवा ॥ शृत्त्रे क्छे॰ শুভ॰ পুচ্ছে ভূমঃ পাদে সুখ॰ शिष । हस्तर्यागामिमः (श्रीकः वृषठक॰ कन॰ वृरेभः ॥ ইতি জ্যোতিস্তত্ত্ব ৷৷

व्यक्षः भू वाखरकायः । हेना भदः ॥ जमा नक्षण यथा । खून नित्यः मित्रिषः मार्ष्युः स्थाकत्-यभी जरव । विषय जीहक्ष्या रिव न्भः मार्ष्युः मर्भा थन्य व्यक्षा २ कायू निष्युं या भणि ভবেৎ। অপিচ। জলান্ত এক বৃষণো বৃষমাভ্যাণ চলঃ স্ত্রিযাণ। সমাভ্যাণ ক্ষিতিপঃ প্রোক্তঃ প্র-লম্বেন শতাব্দবান্।। ইতি গা-রুডে ৬৩। ৬৫ অধ্যাযৌ।।

বৃষণশ্বঃ • পু॰ ইন্দ্রস্যাঘোটকঃ। ত্রিকাণ্ডশেষঃ॥

वृष्णुम् क्ली हेन्स्रमाधनः । हेि किंगियतः॥

न्यम॰শकः पू॰ विफानः। इंज़-मतः॥

বৃষধজঃ পু॰ শিবঃ। ইত্যমরঃ।। হেরমঃ।। পুণ্যকর্মা। ইতি বিশ্বঃ বৃষধাজ্জী স্ত্রী নাগরমুস্তা। ইতি রাজনির্ঘক্তঃ।।

ব্বনাশনঃ পু॰ বিডঙ্গঃ।ইতি
শব্দমালা।।

বৃষপতিঃ পু॰ ষঙঃ । শিবঃ । ইতি কেচিৎ ।।

বৃষপত্রিকা স্ত্রী বস্তান্ত্রী। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।।

বৃষপণী জী আখুপণী । ইতি
রন্ধনালা ।। বৃক্ষবিশেষঃ । পুরাতী ইতি ভাষা । তৎপর্যাষঃ ।
দধ্যালী ২ চক্রাঙ্গী ও সুদর্শনা
৪। ইতি রাজনির্বন্টঃ ।।
বৃষপর্বা পুণ শিবঃ ।। দৈত্যভেদঃ

।। ভূঙ্গারুকুকঃ।। কশেরঃ।ইডি বিশ্বঃ।।

वृष्णः श्र् वृषः॥ त्याष्ठः॥ ति-দতী রীতিভেদঃ। ইতি মেদিনী ।। আদিজিনঃ। ইতি হেমচন্দ্রঃ ।। कर्वत्रक्षुः ॥ श्रयञ्जासीयशः। इंजुर्गिं क्लिंयः ॥ 🗱 ॥ त्रा-শব্দে আতিদেশিক্গোহত্যায়া অলিখনাৎপ্রসঙ্গাদত্র লিখ্যতে । गामानातः अन्वरंखः भिवरः या निवाद्गरय । यां जि ला বিপ্রযো র্মধ্যে গোহত্যাঞ্চ ল-ভেত্তু সং ৷৷ দঙ্গৈ গা স্তাডযমূ-ঢো যে। বিপ্রো বৃষবাহনঃ। দিনে দিনে গবা• হত্যা॰লভতে নাত্ৰ সংশ্यঃ।। দদাতি গোভা উচ্ছিষ্ট॰ ভোজ্ঞযেদৃহবাহক॰। ভোজ্যেছ্যবাহান্ত স গোহ-ত্যা॰ লভেদ্ধুব• ॥ বৃষলীপতি৽ ষাজ্যেদেখা ভুঙ্কেন্নণ তস্য যো নরঃ। গোহত্যা শতক সোগি লভতে নাত্ৰ সংশযঃ ॥ পাদ ममाछि वदशे या गाथ भारतन **ভा**ष्ण्यः । गृङ् वित्मम् द्ये । জ্ঞিঃ স্নাম্বা গোবধ মালভেৎ॥ যো ভুঞ্জে ২নিশ্ব পাদেন শেতে निशां ज्यि दाव ह। जूर्वा पर्य

বৃষ্ডা

দির্ভোজী স গোহত্যাণ বভেৎ ধুবে ।। অবীরামঞ্চ যো ভূডে यानिकीवी ह बाक्षनः। य जि-সন্ধ্যাবিহীনশ্চ স গোহত্যা লভেশ্বৰ ।। পিতৃ শ্চ পৰ্বকালে চ তিথিকালে চ দেবতাঃ। ন সেবতে ২তিথি° যে| হি স গো-হত্যা॰ লভেদ্ধৃব॰॥ স্ব ভর্ত্তরি চ কৃষ্ণে বা ভেদ বৃদ্ধিণ করে।তি যা। কটুক্ত্যা তাড়যেৎ কান্ত म शिह्जा॰ वर्ज्य धुव॰ ॥ গে: নাৰ্যা খনন কৃত্ব। দদাতি শস্য মেব চ। তড়াগে চ তদূর্দ্ধে বাস গোহত্যাণ লভেৎ ধুবং ৷৷ প্রাযশ্চিত্ত গোবধস্য যঃ করো-তি ব্যতিক্রমণ। অর্থ লোভাদ-থক্তানাৎ স গোহত্যাণ লভেৎ ধুব ।। রাজকে দৈবকে যত্না क्लास्त्रामी गा॰ न शानरयः। पूः-খ॰ দদাতি যে। মূঢো গোহত্যা॰ লভতে ধ্ৰুবং ৷৷ প্ৰাণিনং লঙ্খযে-प्त्या हि प्तवार्का यनन जन। নৈবেদ্যা পুষ্প মন্বঞ্চ স গোহ-ত্যা॰ লভেৎ ধুব॰॥ শশ্বনাস্তী-তি যো বাদী মিখ্যাবাদী প্ৰতা-तकः। प्रदासयी श्वक्रदायी म গোহত্যা লভেৎধ্ৰুবং ৷৷ দেবভা 🎚

প্রতিমাণ দৃষ্ট্ব। শুরুণ বা আক্ষণণ সতি। ন সন্তুমান্ধনেদেনা হিঁ স গোহত্যাণ লভেৎ ধুবণ ।। ন দ-দাত্যাশিষণ কোপাৎ প্রণতাম চ যো বিজঃ। বিদ্যার্থিনে চ বি-দ্যাঞ্চ স গোহত্যাণ লভেৎ ধুবণ ।। গোহত্যা বন্ধহত্যা চ কথিতা চাতিদেশিকী। যথা শ্রুতণ সূর্য্য বক্ত্রাৎ কিণ ভূষণ শ্রোত্ মিচ্ছ-সি।। ইতি বন্ধবৈধর্ত্ত প্রকৃতি-খণ্ডে ২৭ অধ্যামঃ।।

বৃষভগতিঃ পু॰ শিবঃ । ইতি হারাবলী।।

বৃষভধুজঃ পু• শিবঃ। ইতি কেচিৎ।।

ব্যভানুঃ পু॰ স্রভানপুত্রঃ ।
সচ রাধিকাপিতা। যথা। স্চত্রো ব্যভানশ্চ লকাভ জন্ম
গোসলো। পদ্মাবত্যাশ্চ-জঠরে
বস্ভানস্য রেভসা।। জাতিমরো হরে রংশঃ শুরুপকে যথা
শশী। বর্জান্দিনং তত্র জজ্পানিসঃ ।। কলাবতী
কান্যসজ্বে বভুবাযোনি স্তবা। জাতিম্বরা মহাসাধী স্দ্রদ্রী
কমলাক্রা।। কান্যসজ্বে
নৃপত্রেপ্তে। জনদ্রন উরুজ্বাঃ।

স তা॰ সংগ্ৰাপ ৰোগান্তে যজ্ঞ-শুও সমুখিতা ।। কৃষা ৰক্ষসি वारकस यकाकारिय मानी मूना াষালাবতী স্তমণ দশ্বা তাণ পু-त्थाय **अवस्थित ॥ मानन्य न**स्तः পথি তা॰ গচ্ছন্তীঞ্চ সুদান্বিতঃ। নন্দউবাচ। শৃপুব্লাজেন্দ্র বন্দ্যা-মি বিশেষ বচন ° শুভ°। সযন্ধ° ঙ্গৰু কন্যাশ বিশিষ্টেন চ সা-স্পুত গা সূরভানসূতঃ শ্রীমান বৃষভানো ব্ৰজাধিপঃ। নারাষ-ণাংশা গুণবান্ সুন্দরশ্চ সুপ-**' इंडिंग किन्ति किन्त** ं ভূত। प्रक्रञ्चनमूख्या । देव-লোক্য মোহিনী শাস্তাকৰ্লাণ শা কলাবভী ৷৷ সচ ধোগ্য স্তদ্দু-হিতু ভলৈবাগ্যা তে চ কন্যকা। ' ভনন্দন উবাচঃ সম্বন্ধে। হি বি-धिवत्ना च त्व जादशा बकाधिश া প্ৰজাপতি ধোগকতা জন্মদা-তাল্লেব চ ॥ বৃষ্ভানপ্রিষা ধা-ত্রা ক্রিপিতা চেৎ সূতা মন।পু-রা ভূতৈৰ কো বাহুণ কেনান্যে-ন নিবার্য্যতে॥ নৃপানুজ্ঞা নুপা-**দাস অজ**শ্রেটো অজ্ গতঃ। গত্বা স কথ্যবাসাস সুরভানস্য भंगित ॥ भूक्षानेक यद्भव न-॥

लग ह मगानतः । मस्यः (या-क्यामाम गर्ग षात्रा ह मखतः ॥ वृक्ष्णात्मा मृगायुक्तः श्राणा छा-श्रू क्वावकीः । द्वरम मृनिर्करम् त्वरम् वृत्रथ न निरामिनः ॥ छ-रयाः कन्मा ह काल्वन द्वाविका मा वज्रव ह। रमवा ८ श्रीमाम भा-रयानिमञ्जवा मा ह कृष्ण्याना-शिका मठी । हेछि बक्ष देवर्र्ष्ठ श्रीकृष्णक्रम्य १५ अध्यायः ॥ वृक्ष्णामा श्री श्रमतावठी । हेछि विकाश्रम्यः ॥

বৃষভাক্ষী স্ত্ৰী ইন্দ্ৰবাৰুণী। ইতি রাজনিৰ্ঘন্টঃ॥ বৃষচক্ষুষি ত্ৰি ॥ বৃষষঃ পুশ্ভাগ্ৰয়ঃ। ইতুঞ্চি-কোষঃ ॥

वृष्यः श्रू॰ भृक्षनः ॥ भृषः॥ ठळाथश्रुताकः॥ वाकी। ইতি विपिनी॥ व्यथार्मिकः। ইতি कठीयतः॥

বৃষলাত্মকঃ ত্রি অধার্মিকজাতঃ
। ইচ্চি কেচিৎ।। শুডোডবশ্চ।।
বৃষলী 'স্ত্রী পিতৃগৃহে অবিবাহিতারজন্মলা কন্যা। যথা। অত্রিকাশ্যপৌ। পিতৃপেহে চ বাকন্যা রক্তঃ পশ্যস্ত্রসংক্তা।

- বৃষান্ত

ভুণহত্যা পিতু স্তস্যাঃ সা কন্যা व्यमी यृषा ॥ हेजूबाह्छतुः ॥ স্বপতি॰ পরিত্যজ্য যা পরপতি-गामिनी। यथा। ऋ वृषः या भ-রিত্যজ্য পরবৃষে বৃষাষতে। বৃ-यनी मा हि विख्छिया न भृजी वृ-ষলী ভবেৎ ॥ ইতি কাশীখঙঃ ॥ भृजीह ॥

वृषनीপिं 'भू वृषनीविवार-কর্ত্তা। যথা। যস্তু তা॰ বরষেৎ कन्गा॰ बाक्रात्वा उद्यानमूर्वनः । অশ্রাচ্চেয় মপাডে যু ত বিদ্যা-দ্যলীপতি ৷৷ ইত্যুদাহতদ্ব দ যদি শূজা অজেৎ বিপ্রো বৃষ-লীপতি রেব সং। ইতি ব্রহ্মবৈ-বর্ত্তপুরাণ ॥

ব্যলোচনঃ পু॰ মূষিকঃ। ইতি

বৃষবাহনঃ পু॰ শিবঃ। ইতি কে-हिद् ॥

ব্ষশত্রুঃ পু॰ বিষ্ণুঃ। ইতি ত্রি-কাওশেষঃ ৷৷

ব্ৰস্কী পু ভূষরোকঃ। ইভি गंक्यां ॥

र्यगाखी जी कामूकी। इंडामदः ।। वृरयन जन् निष्ड्डी रगीः। रेजि वारिकतन ।। जभाग । तमान ।। वृशासकः 🎌 विसः। रेजि मधा-

সা ব্যস্তী মহোক্ষণ গৌ রিবা-গমৰ ৷ মন্মথাযুধ সম্পাত ব্যথ্য-गानमिकः भूनः ॥ इति छिः॥ वृषा जी मूक्किशनी । इंकामद्रः॥ কৃপিকচ্ছঃ। ইতি হেমচন্দ্রঃ॥ वृषां भू॰ देखः ॥ कर्यः ॥ त्यम-नाड्यानः ॥ मृःथः। ইতি यिक्नि नी ॥ वृषः ॥ (यार्षेकः । ইতি ट्याञ्चाः ॥

व्याकणायी जी नचीः॥ भीती । ইত্যমরঃ॥ স্বাহা। ইতি ভরতঃ ॥ শচী। ইতি স্বামী ॥ জীবন্তী ।। শতাবরী। ইতি মেদিনী।। वृषाक्तिः भू विकः॥ निवः॥ **जिश्वः। रेजि त्यमिनी।। रेखः।** ইতি বৃষাকপাষীশবদর্শনাৎ।। বৃষাকরঃ পু॰ "মাষ্ঃ। ইতি রাজ-निर्वकः ॥

ব্যাকঃ পু ্লিবঃ।। সাধঃ।। ভ-লাতকঃ।। বঙ্গা ইতি মেদিনী।। বৃষাৰজঃ 'পু' ভনর:। ইতি শ-सत्रश्लावनी ।।

বৃষাঞ্জনঃ 'পু' 'শিবঃ'। ইতি ত্রি-কাওশেষঃ ॥

বৃষাণকঃ পু । শিৰঃ। ইভি ত্রি-কাশুশেষঃ 🕦 🦠

রত্বাবলী।। শৃষায়ণঃ পু॰ চটকঃ। ইতি হার।-শুলী।। শিবক্তা।

বৃশীহার: পু বিভাল:। ইতি হারাবলী ।।

বৃষী পুণ সমুরঃ। ইতি শব্দমাল। বৃষী স্ত্রী প্রতিমাণ স্পাদিনযা-সমণ। ইতামরঃ।।

वृद्धारमर्गः पूरं आकारमे वर-শতরীচতুষ্ঠযসম্ভিতিশৃশচক্রা-কিন্ত বৃষত্যাগঃ। তদ্য বিশিখণ। া কালব্রিবেকেগ্যন্নিপুরান। এ-কাদশাহে প্রেত্সা ষ্ম্য চোৎ-সূজ্যতে বৃষঃ। প্রেতলোক প-রিভ্যজ্য স্বর্গলোক স সচ্ছতি।। नाग्यादम जियहरू वा वर्ष भागि छ वर्गता वृद्यारमर्गन्ह কৰ্ত্তব্যে যাবনুষ্যা প্ৰসাপিওত।।। সপিগুকিরণাছুর্কু কালো ২ন্যঃ শীব্রচোদিতঃ। যদ্য প্রেডযো-ৰি সামান্যতঃ শ্ৰুতেঃ পিতৃতি-মন্যাপি বৃষোৎসর্গঃ প্রতীয়তে ाकि। ज्या वृत्या र नर्भ वा था। गाना वार्डिकाः लीननागाः ব্ৰেৰত্যা ৰাশ্বযুজ্যা দশাহে গ-তে সম্প্রারে শ্তীতে বেতি। **थव गृठ किसि गागार अस्थ गरा।**

गनना मनाश्विमञ्जिदितायः । वकानमार देखि जाग्र आह है. িতিচাশৌচান্তাদ্দিতীযদিন পরু ा जात्मी हा खालिकी त्य शह म वा नगाविवक्गा काक्न भू-ক্ষৰ তদ্বৎ ফল বস্ত্ৰ সমন্বিত ॥ সংস্কা ৰিজ দাম্পত্য নানাভ রণ ভূষণৈঃ। বৃষোৎসর্গশ্চ ক-र्छत्या (मया ह किना छन।। **ইতিমৎস্যপুরাণেনৈকবাকা**ত্বাৎ ।। প্রেতব্বোৎসর্গে বৃদ্ধিপ্রাদ্ধ न कर्खदाः । नार्चाक् मद्यव्मत्रा-**म्कृषिः वृं**रवा **९ मर्र्ग विधीयर** । म পিণ্ডীকরণাদুর্দ্ধণ বৃদ্ধিশ্রাদ্ধণ বি-**धीयां ३ क्यामनामा वहना** । 🟶 । वृष लक्ष्ण मात्र काळाय-ैने इं। অব্যক্ষে জীবৰৎসাযাঃ গ-यिनगाः मूला वनी। अक्वर्ण षिन्दं वा या वा गामिक । সূতঃ।। মূখাদুচ্চতরে। যম্ভ সমে। वा नीह अव वा । मञ्जावतान मक्ष भारान् अमुक्त खाद्रश्यक्षः॥ অকিনাসুতঃ অফকাসু জাতঃ। कामर्थन् প্রভৃতিযু মৎস্যপুরাণ ा छन्नभानि जूषा श्रृष्ठ यमा य . जिनि क्षि शिष्ठ । जाकारम मर नंग ज मीन मिन निर्मित्न ।।

व्य अव न माञ्चला म नक्कार्या। शृंदर तमन् । जनर्थ (मया छत्राज लात्क गाथा भूत्राजनी।। असेवा वहवः भूखा यदग्रदकाशि भवा । ब-**जिल्हा भीतीबाश्वादरकार्याः** नीवया वृत मूर्ज्याक्षा वर-সতরী বিশেষষতি। অপ্রতা লো-হিতা পত্নী পার্মাভ্যাণ নীলপাঞ্জ-রে পৃষ্ঠতশ্চ ভবেৎকৃকা বৃষভস্য D भाक्तरव ।। श्रा देवश्वर्मा र्थ म्थ-পান্তৰিতান মুক্তি হ্ৰণীৰ্ষপঞ্চ-রাত্রণ নবেন চিক্র বজ্রেণ বিভা-শুচি ভূ দ্বা বান্ধান্ স্বস্তিব চিচ্চ । কীর্ত্তবেক্তারতক্ষৈব তথা স্যাদ-क्य श्विः।। ইতি দানধর্ম বৃ-যোৎসৰ্গ প্ৰকরণীয় ৰচনা এজ-ক্ষ হবিষ্ণুকামেন স্বস্থিবাচনা-নন্তর॰ ভারতনামোক্তারণ কা-यां । यमङ्गा अकृत्व भाभ वाक्र ख्रिब्बिटेंग कंत्रन्। महाजात्रकः मान थाय शृदीः जन्माः विमूक्ति । ইতাদিপুরাণোক প্রাত মহা-ভারতে চ্চারণকং কাচলেশীযা-স্ত বিরাটপর্ব গাঠনন্তি। ভবিষ্যে

कां गृष्ट ह श्रेम र्शातनमः शृक्तत-म्बटि । , बार् । रेफ्ट - गटक - ग-भ्हा १ विक् गः श्वरमञ्जूषाः ॥ इत्यागगनिकि । तम्यागाना-ষাং প্রশীষাটিং সংস্তা বীকিত খুলান। অগি পুনেক্তেশরেভ্যো निर्वदेशकार्याः ज्वनः ॥ त्यान्। -नाया मिकि अशानकतः। त्यञ देळानका । उष्मुक्दवा विधा-নেন প্ৰতি মৃতি বিদর্শনাৎ। था असक् क्षत्र क्राट्न क्राट्न निर्जदन बदन कि महम्मान खतः य-क्रमान अव अध्ययः जक वत्रभामि-ক স্বাহ্নতত্ত্ব ব্ৰহ্মবরণ প্রথ-मण्डः। - दक्तानिद्योदमः - ब्रह्म।-দমাতৃ ছোৱাৰুমা ইতাদি দর্শ-त्नन । शुक्का शहर । मृत्य **ह** राज्यात्वं मध्यात्वाराष्ट्रमञ्जाति । सनि शभाष्म् सनिनाः कर्ता छ।-नि न श्राप्ति ॥ अतः कर्यानयु-ক্তমনাৎ ক্রিতীক স্তন্ত্রধারকঃ। ত্তীৰ পৰুৱাৎ প্ৰাণ ততঃ কৰ্ম नगाव्यक । वस्तानखर् न्रग-िक्का अस्ति। स्था विधिना ठक-शासक स्का उक्र दाय क्या १। । व्रवाधनगर्भा विविद्धा की वर्षा । क्षा विकि क्रकाम महाकामा क व। गुष्ठमा ह। देखाशकमा। यस- दिशासो कार्या ॥ ॥ १ छछः वसमा

मिक्दिशाद्य विम्लाक ग्रेम्बि-(थर वृशास्त्रीणि भरवा श्ला है-विक विशेषक्रीत्व ।। ज्यानिक न्छामसभी न्मारकी छाटवन स्वीत-(यथ। अर्थम कनगङ्गि इंडि-द्भारक। तृरवन वा भिगदी पिर भू-পদ্মীভিঃ স্বাশবেৰ্ৎসিকা অগি । निर्द्धानग्राहरू उद्भावानगी टेर्बरिकर 11 मंडा निया नुवा त्माय भाषा भाषा भाषा नात्म । ততো বৃষ বৎসভঁৱীৰা মলকারা-पिक एक विन् विन निर्मिष यूर्ण छ्रायूर्ण हे रक्षा अने यूरा-ন ইতি মন্ত্ৰ-পঠিছা বিৎসভৱী চ-ত্ৰীৰ গহিত বৃষা ভট্তথকল কা-नी अरम्छ। मि सम्बाद्या धर्-ब्ब्लाकाकरका मुनासिक्ता वर-সভন্নী চতুক্তৰ দাহিত কৃষ বৈশা-"मा" हानिष्या थार्यस्य । कथा। महार्ष्ट श्रिमगानि मार्काट्य भारतिक गाँ । शर्मानिक अपू-শাৰ শতসু তে প্ৰিৰা ব্ৰিমাঃ। छजुनी हिनारं गर्याच मरनां च मृष्ठा क्या वर्ग। त्रवामा क निक्राक वन्रीविक्शसाविष्टः । ज्ञानाः ज्**रिकेनमें जुनी गर्कि जर्का**जुन माः ॥ मटमा जन्मग्रहेन्द्रम् निर्वृ

ভূতবিপোৰক। ছবি সুক্তে ২জ-वा लाका यम गर्ड मिल्रामहार। मारम सटना ख टमटका रथ टेने रखा ट्डीट्डा २ व मानुका करिकु बर-প্ৰদিশস বা গভিঃ সাম্ভ'বে ধুবা । यदकिकित मुक्छ केंग्री लाज ब्बाइंटि क्छ अत्वर् । ज्यामुक् छा मिदन निर्जुह स्रोर्ग ध्रीयक त । विविश्वित्वत त्यामानि मनीदन्त्र म-উবস্তি চ। তাৰ্বৰ সহসাণি বৰ্গে বালো হক্ত মে পিছুঃ ম ইতি মৎ-मा पूर्वाटनाच्छ १८३६। ७७ जा-চারাত্যপুত্গলিতোদকেন এক পুরাণোক্ত তপদ স্বাাৎ। ততঃ প্রকৃত দক্ষিণাং কৃষা কর্মকার্থি-क्रिंगा मिला ममार । हैि क्रवादमर्भ जकुः ॥ 🛊 ॥ जनिष्ठ । कार्डिकार कान्नरवर शृका वी-भे दिवर्गिकिक मा। तगारमगंब धकर्वरा मील वा युव मूर्म टिन्द्री मर्बरेख कहा उम आधू-कालीकिठात्रयम्। यन्क्रवाठ। अर्थ-स्मिन्न भूगा वृद्या भर्गामयो भारक । दब्रह्माकान्दित गामि का उना का दिक्या वा ॥ ला निवहिंद्यान्या करिया। नाया। देव कालाकाल स्थिता। निर्यामा नव-

नर्ष्यः वृजीयायाः सर्वानाः स व्ययस्थाज्यदी साम् विवाह वि ধিনা ভবেৎ। সতোরণ ভবে **कीर्ष्य উৎ मर्त्या भाजरन र निका** ॥ छ्यान्। स्थिति । ज्यात्वी व मः जवराजािन सा। वर्मा महीक मः भूभं क्ना मा वश्मका छ-विष् ॥ जनःकृषा यथारणाज मूष्मर्गः कान्नत्यमूत्न । विवाह মেক বৎসীক নীলেন ভবতে স-म।।। वृत्यन अश्वत्यसमा साममा क-लमायकः। कारयत्रन् वश्वः भूखा यरमारकाशि ग्याः बरज्यः ॥ य-**ब्बिश अश्वरम्य नीवः वा वृश-**মুৎসূজেৎ। রোহিতো যন্ত ব-র্পেন শঙ্খবর্ণ খুরো বৃষঃ।। লাজু-वानित्रमटेन्छ्य म देव नीववृत्रः শৃতঃ। অন্ধিষ্ । শৃক্ত পূৰ্ गाक्षाल क्छा मर्बछः ॥ छरश्रम বামত শ্চক্রণ ধাম্যে শূলং সমা-লিখেৎ। ধাতুনা হেন তারেণ क्षा अवारक्षां कि कवा वाकिंग-(शामिका । य**व्भित्या। वर्गा**क्ष वर्ग म माज्याबिहातमार ॥ यथा निर्दायका कर्छ। भूकिछ। गर्वकामना। अवश्यक करा सक्षा

अन्**उः गण्डं क्लः।। प्रक्राः** विश्विक सक्त एक त्याकानक ফল্যান্ত্র কতন জেন ব্রহ্মাৎ-गर्गामुकाष्ट्रमाथ ॥ देखि प्रस्तीश्र-त्राटन भूष्ण विधिना गामा गरा गर বৃত্তিঃ স্ত্রী নেয়াজ্ঞলবিন্দুপত্ন । তৎপৰ্যাষ্ট। बर्ग २३ ईखा-মরঃ।। কোক্তা ওপার। মৃত্য । वर्षण दा देखि भक्तकावनी ॥ তৎকারণ বধা। অমৃতাদি ত্র-रक एक **अविश्व नर्व (क्षा का**)। তদা বৃষ্টিঃ ক্রমাজ্জেখা মৃত্যক चनू वामदेतः ॥ इंकि खदतान्तः ॥ ॥। जिल्हा अवस् अवस्थि किषिक कि जिल है। मूर्गा वि-कायद्व दवाया दवाया । भागा-नि नाशिमधा (उटछा) श्रवासि क-नारमार एएछा। जीत्र जिलि नः। मूर्याअक्ष मीत्रक काटन जनार मन्डदः। नृर्दा त्रया-দৰঃ সৰ্বে বিশ্বাতা হে নিৰুপিতাঃ । रखाटक द्या जनशदता शक्र ह गागता सक्रथा भगा विल्या म्-পো মন্ত্ৰী বিধাৱা তে নিৰাশিভাঃ । क्लाएकामा भगामां ज्या-न माक निवाशिष्टः॥ बाटमा बटम **२८छा व छ० अर्ब- कटल कटल वृ**रग

বৃষ্টিঃ

सूरग । इंडी नमुखामानान करत १ सम्बन्धिका । प्रमान्यनाय-পূৰ্মদাদাতেন প্ৰেরিজে। যনঃ। शान सान श्रीवराक्ष कारकन ल स्ट्याहिकः ॥ विश्वदत्रक्र्या-নিজু জ কুৰ্ব: জুজ-প্ৰভিবদ্ধৰ।। कुछ अवा अविश्वक गर्र कृषक मसामः ॥ शावा निक्षिष्ठः कर्य ক্ষেত্ৰতাত নিবাৰ্যকে ৷ ইতি उषार्वनार्क क्षेत्रक्षमण्डम् ५,२) षशायः ॥ । । जानसर्किन् हकानि यथा। यहता खनविज्ञान শলেন হাবিভা মুহঃ। কেকা যন্তি क्षाज्यस्य गण्यः गृष्टि गृहकाः॥ নেবোৎসুকানা নবুর কাত-कामा स्तार्तः। भुवज् अकि-वसानाः वृक्ति मनिति गुक्तः ॥ ग्रयस्य ताबकात्सम् कृष्टः मार्श्व মালাদ ৷ বারানার শরৈ ভাগ क्षाः अंकि यरशाकाणः मृत्येकि क्षाकाश्वारम १६ व्ययमध्याका। कृष्णिका स्था। शिव्यकारा व-**छमाइब्राह्मक्छि निदायनः।** मृ-विकार विना देनव शानशना-निकार क्रिकार । स्वारत विस्त्रन-रेकर काष्ट्राहरू मामाटका देन-वाभगवन समाक विमा दशायन

ক্লাৰতে ৷৷ বৰ ৰাপ্যাৰিতা, মতৈৰ্গ্য बुद्धकादेश बंदशामिटेकः। वृक्ता-निसान्ग्द्रीत्या यळान् मणापि निकारम् ॥ निन्धानिञ्चित्रावदीम् मर्जा बढ़ेक र्यक्षिनः। ध्वाः वयः थरकाम कामान मळानि शृकि তাঃ ম স্থেম হি বর্ষান বয় মর্ত্যা-হি বয় হৰি ৰ্ধেশ মানবাঃ॥ যে **ংসাক ন প্রয়ক্তি নিত্য।** নৈ মিত্তিকীঃ ক্রিযাঃ। ক্রত্তাগণ দূ-রাত্মানঃ স্বয়ং যে ২শ্বস্থি লোলু-পাঃ 11 বিনাশাৰ বয় তেয়া তোৰ বুৰ্যামি মারুতৈঃ। ক্ষিতি-🕶 সংদূষকামঃ পাপান। মপকারি-नाः।। मूछेट्छायामि मारवन एउ ক্ষা ক্ষুত্ত কারিণা । উপসর্গাঃ क्षत्रक्रि मजनाय मुमाक्रनाः ॥ ৰেচাশান্ খ্ৰীণবিষ। তু ভূঞ্জে त्मि बाह्यना । छ्या॰ श्वाहर॰ লোকান্ বিতরামো মহাগ্রনা'।। ইতি সাক্তেরপুরানে পতিওতা सार क्यानामाशायः ॥ ।। जश বৃদ্ধিক অধায় ৷ গ্ৰামাৰু তি-लागम श्रहीक तक मूजाकतन। बयाः बनावतः स्वाः शाबार्शः कि छ छ अबः ।। तिकार्ककित्रदेव र्जु के "मुके मिमुकरेत निमि। অৰক মনভি্যাকি তত্ত্ব্য গ্ৰ नायूना ॥ वर्षाम् ठत्रिष्ठ घटेनः ब-হোরগা বিষতি কীট লুভাশ্চা তিবিষ জুফ মপেয়া খজল মগা-স্ত্যোদযাৎ পূৰ্ব।। কালেন পক निर्प्ताव मगरखानावियीकृष्ट । হংসোদক মিতি খ্যাতং শারদং বিমলং জলং ৷৷ ইতি রাজবল্লভঃ ।। 🛊 ।। অথ তস্য ভেদাঃ। পানী-যং মুনিভিঃ প্রোক্তণ দিব্যণ ভৌ-य यि विंथा। मिवा कर्विशं প্রোক্তণ ধারাজণ করকাভবণ ৷৷ তৌষারঞ্চ তথা হৈমণ তেষু ধারণ গুণাধিক ৷৷ 🛊 ৷৷ তত্ৰ ধারস্য ল-ক্ষণ গুণাশ্চ। ধারাভিঃ পতিত তোষ গৃহীত স্ফীতবাসসা। শিলাযাণ বসুধাষাণ বা ধৌতা-যাণ পতিতণ চ যৎ ৷৷ সৌবর্ণে রাজতে তামেু ক্যাটিকে কাচ-নির্মিতে। ভাজনে মৃন্মযে চাপি স্থাপ্রিত॰ ধার মূচ্যতে ॥ ধার-নীর ত্রিদোষন্ন মনিক্লো রসং লঘু। সৌমাণ রসায়নণ বল্যা ত-পণ शामि जीवन ।। भारत म ठिक् मुक्ट्। एखा लाइ अम क्रमान् । তৃষ্ণা॰ হরতি তৎ পথা॰ বিশে-

बाद প্রাবৃষি মৃত ॥ 🗯 ॥ जब वित्री जनगा (ज्या) धाता ज-লঞ্চ বিবিধণ গান্ধ সামুদ্র ডেদ-তঃ তেত্ৰ গাস সামুদ্ৰবৈ ৰ্ল-ক্ষণ গুণাশ্চ ি আকাশাৰী স यिक जनगणाय मिश्राजाः । মেষৈ রম্ভরিতা বৃষ্টীঃ পর্যন্তীতি বচঃ সভা ৷৷ গান্ধ মাশ্বযুক্তে यानि थात्या वर्षा वातिमः। म ৰ্ৰথা *তজ্জ্বল*° দেখ° তথৈব চরকে र्वेष्ठः ॥ ञालिष्ठः देशस्य लाख রাজতে মৃন্মবে ২পিবা। শাল্যম॰ যেন সংসিক্তং ভবেদক্লেদি বর্ণবৎ ৷ তৎ গাঙ্গু সৰ্ব দোষম্ব জ্বেষ্ मामूज मनाथा। তखु मकात ल-বণ শুক্র দৃষ্টি বলাপহ।।। বি-मुक पायन जीमा मई कर्मम् মহিত । সামুক্ত ছাশ্বিনে মাসি खटेन भावस्यामितम् ॥ यटा श्रासामा विश्वत्यं कृत्या । नक-नः जनः। निर्मनः निर्मियः यानु श्वकनः गोषितायनः ॥ 🛊 ॥ ্ অতএবাহ। কুৎকার বিষ বাতে-न नागानाः त्रामहातिनाः वधामु मविषः छायः मिवा म-প্যাশ্বিন বিনা ।। ইতি ভাব-প্রকাশঃ া

বৃষ্টিমী স্ত্রী ভূঙ্গর্ণবিকা। শুজ-রাটী এলাইচ ইতি ভাষা। ইতি শব্দচন্দ্ৰিক।।। বৃষ্টিনাশকে ত্ৰি वृक्तिकीवनः वि प्रवमाञ्करम-भः । **३**७ (१२ठकः ।। वृष्टि की वनः यगा मः ॥ বৃষ্ঠিভৃঃ পু॰ ভেকঃ। ইতি হারা-े वनी ॥ वृक्षिज्य वि॥ মেবঃ। ইত্যমরঃ॥ बाह्यः। ইতি শব্দরত্বাবলী ॥ কৃকঃ। ইতি ত্রিকাওশেষঃ॥ বৃকিঃ তি পাষ্ডঃ ৷ চণ্ডঃ ৷ ইতি শব্দরত্নাবলী।। বৃষ্ণিগৰ্ত্তঃ পুণ শ্রীকৃষ্ণ । ইতি श्रावनी॥ বৃষ্য ক্লী বাজীকর । ইতিরাজ-निर्घनिः ॥ বৃষ্যঃ পু॰ সাষঃ। ইতি হেনচন্দ্ৰঃ বৃষ্যঃ ত্রি শুক্রবৃদ্ধিকারকৌষ-ধাদিঃ। ইতি ভাবপ্রকাশঃ।। व्याकना जी विमाती। ইতি ब्राक्तिर्यकः॥ व्यागवा जी व्कलातकः। नमज्ञावनी ॥ ৰ্যাগন্ধিকা স্ত্ৰী অতিবলা। ইতি त्राकनिर्यकः ॥ वृषाविका जी विमात्री। देखि॥

त्राजनिर्वकः॥ वृया जी सिक्तिनात्नोवधः। ইछि 🕶 রত্নমালা ॥ শতাবরী ॥ আম-नकी। ইতি রাজনির্বন্টঃ।। वृश् है कि षिषि। है कि कितका क्रमः ॥ मश्रमयती । रे वृण्यल । कि वृं श्वां वृं श्वं । देखि मूर्गामागः ॥ हेत् अटन ॥ शको । हेि কবিকল্পজ্মঃ।। ইর্ অবৃহৎ। व्यवशेष । धनः भकः। अकि व्किः। ইতি मूर्गामामः॥ वृष्ट् इत्या भएको। मञ्जगवती । 🔻 वृःश्रः । ववृःश्रितः गज পত্ৰঃ। ইতি মাঘঃ।। আত্মনে-পদ॰ প্রমাদাদিতি বল্লভঃ ৷ ধন-শ্চেতি হস্তি কর্তৃকঃ। বৃংহিত করি গর্জিত মিত্যমরসিংহাৎ । वृ॰श्ठि॰ कत्रि शर्काशा॰ भक्रभाः ত্ৰেপি কথ্যতে। ইতি শব্দনহাৰ্ণ-বাৎ। কদাচিদন্যকত্ কোপি। তেন শ্রীহর্ষ চরিতে সিংহ বৃংহিত মিতি বানভট প্রযোগঃ। ইতি मुर्गामागः ॥ বৃদ্ধৌ। ইতি কবিকরক্রম ।। বর্হতি। বৃহি ধনকো। রিত্য-त्नरमध्यकेनित्व रमा भारते।

বৃদ্ধৌ ইরন্বন্ধ বর্জনার্থঃ । কিন্তু অনেনৈবেফসিদ্ধে তত্র ঋ-জি এছণ পরতান্বৃত্যর্থ মেব। অষণ থাতুঃ কৈশ্চিল্লমন্যতে। ইতি দুর্গাদাসঃ ।।

वृह न छ छेमारम। ইতি कविकन्नक्रमः॥ न वृह्छि। छ जवही ६। जवृक्ष६। ইতি मूर्गमामः॥

বৃহ ই ও বৃদ্ধো। ইতি করিকরক্রমঃ। ই বৃংহতে। ও বৃংহতে।
ইতি দুর্গাদাসঃ।।

বৃহচ্চঞ্ছ পু॰ মহাচঞ্শাকঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।।

वृहिष्ठिखः পू॰ कलभूतः। ইতি
শক্চিঞ্ক।।।

বৃহচ্চত্মঃ পু॰ চিঙ্গটনৎশাঃ। ইতি জটাধরঃ॥

বৃহজ্ঞীবন্তী ত্রী বৃহজ্জীবন্তিকাবৃক্ষঃ। তৎপর্য্যায়ঃ। পত্রভদ্রা
২ প্রিয়ন্ধরী ৩ মধুরা ৪ জীবপুর্টা ৫ বৃহজ্জীবা ৬ যশস্করী
৭। অস্যা গুণাঃ। বহুবীর্যাদাতৃত্বণ ভূতবিদ্রাবনত্বণ। বেগাদ্রসনিষামকত্বক। ইতি রাজনির্বাক্টঃ।।

वृश्ष्व जी एकावित्नवः। यथा

। বৃহত্তকা তু ভেরী স্ত্রী পুষান দুন্দুভি রানকঃ । জগড়ঃ প্রতি-পত্র্য মানকঃ পটহো দ্রিযাণ ।। ইতি জ্টাধবঃ ।।

ৰ্হতিকা স্ত্ৰী উত্তরীষবন্ত্রণ।ইত্য-মরঃ।। বৃহতী। ইতি রত্নমালা।। বৃহতী স্ত্ৰী কুজবাৰ্ত্তাকী। ব্যাক্ত ইতি ভাষা। তৎপৰ্য্যায়ঃ। মহ-তী ২ ক্রান্তা ৩ বার্ত্তাকী ৪ সিপ হিকা ৫ সলী ৬রাফ্টিকা ৭ সূল-ककी ৮ छकीकी २ मरहारिका ১০ বছপত্রী ১১ কণ্টতনুঃ ১২ ककोलुः ১७ किएकना ১८ एका-রডী ১৫ বনবৃস্তাকী ১৬। ইতি त्राजनिर्घण्डः ॥ मिन्ही ३१ श्रम-হা ১৮ রক্তপাকী ১৯ লতাবৃহ-তিকা ২০। ইতি রত্নমালা ॥ অস্যা গুণাঃ। কটুত্বণ। তিক্তত্বণ । উষ্ণত্ব•। বাত জুরারোচকাম কাশ শ্বাস হুজোগ নাশিত্বঞ্চ। रेि ताक्रिनिर्घन्धः ॥ जिन्छ । বৃহতী পাচনী সোকা আহিণী বাতনাশিনী। ইতি রাজবন্ধভঃ ॥ 🛊 ॥ মহতী। ইত্যমরঃ ॥ 🐯 তরীষবক্ত।। বারিধানী।। বাক্ ॥ क्फेकाद्री। इंडि यिपिनी ॥ **म्हरणा**र्छमः । अञ् नरीकत পাদঃ। যথা। উক্থা হত্যুক্থা

•তথা মধ্যা প্রতিষ্ঠান্যা সুপূর্বিকা । गामका किक् अनु यू भ ह वृश्की প•ক্তিরেব চ ॥ ইত্যাদি। তন্তে-দানাহ। নবাক্ষরা যথা। ভুজগ শিশুসুতা নৌমঃ। হুদতট নি-কটকোণী ভুজগ শিশুসূতা যা भी । मूत्रतिश्र प्राम् नारग ব্ৰজ্জন সুখদ। সাভূৎ ॥ যুতে-ত্যেব শন্তু প্রভৃতিযু পাঠঃ । ভূতেত্যের মাধুনিকাঃ পঠস্তি ৷ স্যান্থণি মধ্য চেন্ডমসাঃ। ক।-লিষ ভোগা ভোগ গত স্তন্মণি মধ্যক্ষীতরুচা। চিত্রপদা ভো-নন্দসূত শারু ননর্ত্ত মের মুখঃ ।। সজরৈ ভুজঙ্গ সঙ্গতা। তর-লা তরঙ্গ রিঙ্গিতৈ র্যমুনা ভূজ-ব্দ সঙ্গতা। কথ মেতু বঁৎসচার-क न्हलनः मदेत्व छा॰ इतिः।। ইতি চ্ছন্দোমঞ্জরী ॥ বৃহতীপতিঃ পুং বৃহস্পতিঃ। ইতি ट्याह्यः ॥ वृहद कि महद। रेजामतः॥ वृह्दकः जि वृह्द। वृह्दनकाद কণ প্রত্যযেন নিষ্পন্নঃ।। वृह्दकमाः श्रू गृक्षमः। ইতি त्रप्रयाला ।। **विकृतलः । रे**डि

রাজনির্ঘণ্টঃ ৷৷ বৃহৎকালশাকঃ পুং লোখজি-हाः। वृह्दकालकामुमिया देखि ভাষা। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ ॥ বৃহৎকাশঃ পু॰ খড্গটঃ। খাগ্ডা ইতি ভাষা। ইতি হারাবলী।। বৃহৎস্থাকিঃ ত্রি তুন্দিলঃ। ইত্য-यतः ॥ বৃহত্তালঃ পু॰ হিন্তালঃ। ইতি রাক্সনির্ঘণ্টঃ 11 বৃহত্তিজ্ঞা স্ত্রী পাঠা। ইতিরাজ-निर्धकः ॥ বৃহত্তৃণঃ পু॰ ব॰শঃ। ইতি শব্দ-চব্দ্ৰিকা ॥ वृश्कुक् पू॰ अश्नामनवृकः। ় ছাতিযান্ ইতি ভাষা । ইতি রত্নখালা।। वृष्ट्र विष्युः भूः वृष्टिकनः। देखि রাজনির্ঘণ্টঃ॥ বৃহৎপতা স্ত্রী ত্রিপর্মিকা।ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ বৃহৎপাট্লিঃ পু॰ ধুস্তুরঃ।ইতি ত্রিকাওশেষঃ ॥ वृह्थभामः भूः बहेवृकः। ইতি मक्षतिका ॥ বৃহৎপারেবত ক্লী মহাপারে-वल। देखि बाजनिर्विषः॥

वृश्य

বৃহৎপালী পু॰ কনজীরঃ। ইভি রাজনির্ঘণটঃ।।

वृश्यीलुः पू॰ मश्यीलुः। ইতি
রাজনির্ধন্টঃ।।

বৃহৎপুশী স্ত্রী ঘটারবা। ইতি জটাধরঃ ।।

वृश्यकनः श्रुः চচেछा। ইতি রাজনির্ঘূটঃ।।

বৃহৎফলা স্ত্রী কটুতুষী।। মহে-স্রুবারুণী। দে সম্বাজী।। মহাজ-মূঃ। ইতিরাজনির্ঘণ্টঃ।।

वृश्मकः पू॰ मञक्रकः। ইতি
শব্দচন্দ্রিকা।।

বৃহদম্লঃ পু॰ রুজাকরঃ। কাম্-রাঙ্গা ইতি ভাষা। ইতি শব্দ-চম্দ্রিকা।।

वृहराना श्री श्रृटेनना। हेि ताजिनिर्यकैः॥

বৃহদাৃহঃ পু॰ কাৰ্যদেশঃ। সতু বিদ্যাপৰ্বতস্য পশ্চাৎ মালব-দেশস্য নিকটে বৰ্ত্ততে । ইতি হেমচন্দ্রঃ।। ত্রিকাণ্ডশেষে বৃহ-দ্গুহ ইতি পাঠঃ।।

বৃহদ্যোল ক্লী শীর্ণবৃত্ত । তর-মৃজ ইতি ভাষা । ইতি শব্দ-চন্দ্রিকা।

व्हमनः पूर भिकातमाधः॥

বৃহম

रिखानः। देवि ताकिनर्गः। वृश्कनः की महानाकनः। ठंदः शर्यायः। श्निः २ । देवि बिका-७८भयः॥

वृश्ख्कातिका जी मूर्गा। हैिंज अक्साना।।

বৃহস্তানুঃ পু॰ অগ্নিঃ।। চিত্রক-বৃক্ষঃ। ইত্যমরঃ।।

বৃহত্তথঃ পুণ ইন্দ্রঃ।। বজ্ঞপাত্রণা
নম্ববিশেষঃ ।। সামবেদাংশঃ ।।
নদীবিশেষে স্ত্রী । ইতিকেচিখা।
বৃহদ্রাবী পুণ কুডোলুকঃ। ইতি
রাজনির্ঘণ্টঃ।।

বৃহদক্ষঃ পু॰ পড়িকালোধুঃ। ইতি রাজবল্লভঃ।।

বৃহদ্বাতঃ পু॰ অশ্বরীহরঃ। দে-ধান ইতি ভাষা। ইতি রক্সনালা বৃহদ্বারুণী স্ত্রী মহেন্দ্রবারুণী। ইতি রাজনির্ধন্টঃ।।

বৃহদ্বীজঃ পু॰ আসুতকঃ। ইতি শব্দচন্দ্ৰিক।।।

বৃহয়লঃ পু॰ মহাপোটগলঃ ।
ইতি মেদিনী ।। অজুনঃ । যথা
। পার্থঃ কিরীটী গাঙীবী গুডাকেশো বৃহয়লঃ । অজুনঃ ফাল্গুনো জিফু বিজযণ্ট খনঞ্জয়ঃ
।। সব্যসাচী সুভজেশঃ শকভে-

বৃহস্পা

मी किश्वकः। त्रार्खाम न्हािश বীভৎসু রিতি ত্রিকাওশেষঃ ৷৷ অপিচ। অজুনঃ ফাল্গুনঃ পা-र्थः नवामाठी धनक्षयः । ताथा-বেধী কিরীটোন্সী জিঝুঃ*শ্বেত-হযো নরঃ।। বৃহন্নলে। গুডাকে-শঃ সুভদ্রেশঃ কপিধজঃ। বী-ভৎসুঃ কর্ণজিন্তস্য গাঙীবং গা-ঙিবং ধনুঃ।। ইতি হেমচন্দ্রঃ।। वृश्यमा जी अर्जूनः। रेकितः **पिनी ॥ बाए ग्वर्य वनवामान छ**त মক্তাতবাদে বিরাটভবনে বি-রাট কন্যায়া নৃত্যগীতাদি শি-कार्थः खोक्नीय वित्यनार्जुता বৃহ্মলেতি নামা খ্যাতো ২ভূৎ । यथा। व्यर्जू न उवाह। गायानि नृजागाथ वाषयामि ज्ञाजानि নৃত্যে সশলো ২স্মি গীতে। স্ব-मुख्तारेय . श्रीमिश्व भा॰ यय॰ ভবামি দেব্যা নরদেব নর্ত্তকঃ।। रेम्ख क्र नग यन क्छिय প্ৰকীৰ্ত্তবিদ্বা ভূশ শোক বৰ্দ্ধ-नः । वृष्ट्रमणाः भाः नद्राप्त्य वि-দ্ধি সূত্ৰু সূতা বা পিতৃ মাতৃ वर्षिका॰ ॥ विज्ञान छेवान । म-मागि एक रेख दव॰ वृश्यत्व मू-তाक त्म नर्खस्यामा जामृभीः।

ইতি মহাজ্ঞারতে বিরাটপর্ব।। বৃহস্পতিঃ পু॰ অঙ্গিরসঃ পুতঃ। স চ দেবানা গুরুঃ ধর্মশাস্ত্র-প্রযোজকঃ নবগ্রহ মধ্যে পঞ্চম-এইশ্চ । তৎপর্য্যায়ঃ। সুরা-চার্য্যঃ ২ গীষ্পতিঃ ৩ ধিষণঃ ৪ শুরুঃ ৫ জীবঃ ৬ আঙ্গিরসঃ १ বাচস্পতিঃ ৮ চিত্রশিখণ্ডিজঃ ১ । ইত্যমরঃ ॥ উত্থ্যানুজঃ ১০ গোবিশঃ ১১ চারুঃ ১২ ছাদশ-রশ্যিঃ ১৩ গিরীশঃ ১৪ দিদিবঃ ১৫ পূৰ্বফল্গুনীভবঃ ১৬। ইতি জটাধরঃ ॥ সুরগুরুঃ ১৭ বাক-পতিঃ ১৮ বচসাংপতিঃ ১৯ ই-<u>त्यकाः २० (मत्वकाः २) वृश्</u> তাম্পতিঃ ২২ ইজ্যঃ ২৩ বাগী-मः २८ ठकाः २८ मीमिविः **२**७ षामगकतः २१ श्राक्कान्छनः ২৮ গীরথঃ ২৯। ইতি শব্দরত্না-वली ॥ म ह शीख्यर्वः । ज्ञेगान-কোণ পুৰুষ ব্ৰাহ্মণজাতি ঋথে-म जवछन् मधूत्रतम धन् मीन-রাশি পুষ্যনক্ষত্র বন্ত্র পুষ্পরাগ-মণি সিশ্বুদেশানা অধিপতিঃ ! ষভন্তশারীরঃ। পদাস্থঃ। চতু-र्जु जः। जन्म तत्र क्म उन् म खरी-রী। অস্যাধিদেবতা ত্রনা। প্র-

ত্যिধদেবত। ইखः। म जू मूर्याः। স্যঃ। অঙ্গিরো মুনিপুল্রঃ। প্রাতঃ কালে প্রবলঃ। শুভগ্রহঃ। দেব-शृश्यामी। वृष्तः। त्रक प्रवासी । বাত পিত্ত কফাত্মকঃ। বণিক্ কর্মকর্তা। অঙ্গিরো গোত্রঃ। ইতি গ্ৰহ্যাগতত্ত্বাদয়ঃ il 🟶 II ত-দার জাতফল । নৃপেন্দ্রমন্ত্রী নৃপ-नक्षकात्मा विमावित्नामी ठजू-রঃ প্রগল্ভঃ। আচার্যপুজ্যো মধুরস্বভাবে। বারে ভবেদেব-গুরো র্মনুষ্যঃ ॥ ইতি কোষ্ঠীপ্র-দীপঃ ।।।।। সচ শিবস্য গুরুপুত্রঃ যথা। মহেন্দ্ৰ উবাচ। কথ বা দেবকর্তুশ্চ সিদ্ধানা যোগিনা গুরোঃ। মৃত্যুঞ্বস্য শত্তোশ্চ গু-রূপুত্রো বৃহস্পতিঃ ।। ততো জ্ঞা-নী মহাদেবঃ কথ শৈষ্যো গুরোঃ পিতুঃ। ব্ৰন্ধোবাচ। কথেয় মতি-গুপ্তা চ পুরাণেষু পুরন্দর। ইমাণ পুরা প্রবৃত্তিঞ্চ কথযামি নিশাম-य ॥ मृতवरमा कर्मामाखार्या অঙ্গিরসঃ পুরা। ভত চকার ম-দাক্যাৎ কৃষ্ণস্য পরমাত্মনঃ।। ৰত° পু•সবন° নাম বৰ্ষ মেক° চকার স।। সনৎ স্মারো ভগ-বান্ কার্যামাস তা॰ এতং ৷৷ 🛚

ষেচ্ছাময়ঃ পর্ বন্ধ ভক্তানুত্র-হ্বিগ্ৰহঃ। তদাগত্য চ গোলো-কীৎ পরমাত্মা কৃপাময়ঃ ॥ স ব্রতানশনকীণা তামুবাচ কৃপা-নিধিঃ ৷ প্রণতা সাঞ্রমনত্রাঞ্চ বিনীতাঞ্চ তথা স্ততঃ ৷৷ এীকৃঞ उवाठ। गृशारनमः युद्धकैनः यय তেজঃ সমশ্বিত । ভুজ্ফ মন্বর-পুত্র স্তে ভবিষ্যতি মদণ্শতঃ ॥ পতি ৰ্গুৰুশ্চ দেবানা বৃহতাণ জ্ঞানিনা' বরঃ। পুত্র স্তে ভবিতা সাধি মন্বরেণ ভরিষ্যতি ।। মন্বরেণ ভবেদেব। হি সচ মদ্বরপুত্রকঃ। ভবিষ্যতি ৷৷ বরজে৷ বীর্য্যজ স্চৈ-ব ক্ষত্ৰজঃ পালক স্তথা। বিদ্যা মন্ত্ৰ সূতানাঞ্চ গৃহীতঃ সপ্তমঃ সু-তঃ।। ইত্যুজ্ব। রাধিকানাথঃ স্ব-র্লোকঞ্চ যযৌ পুরা। একৃষ্ণবর-পুত্রোযণ জ্ঞানী সুরগুরুঃ স্বয়ণ।। মৃত্যুঞ্জয়ণ মহাজ্ঞানণ শিবায় প্র-मरमो भूता । मिरा॰ वर्ष जिनकक्ष তপঃকর্ত্তে হিমালযে ॥ সুযোগ জ্ঞান মমল তেজঃ স্বাত্মা সম পর । স্ব শক্তি বিষ্ণু মাযাঞ্চ স্বাণ-मक वाइन॰ वृष॰ ॥ यमृतक य-क्वठ व्यञ्ज बामगाक्तर । कृ-

পামষঃ ম্বত স্তেন শ্রীকৃষণ্ট প-রাৎপরঃ ৷৷ শিবলোকে শিব্যুসা ह विक्यायां भिविधया। गैकि ৰারাষণদ্যেষ তেন নারাষণী স্তা।। তেজঃসু সর্ব দেবানা॰ সাবিভূতা সনাতনী । জযান रेमर्जिनिकत्र (मर्ट्स्ट्राः अमर्द्र) **अमः ॥ कन्नाट्ड मक्क्ना** इ मा मुन्धक्षिः मठी । शिवृयस्ख ভনু॰ ত্যক্ত্বা যোগেন সিদ্ধয়ে৷-গিনী ॥ বভূব শৈলকন্যা স। माश्री ह जर्ज्यनिक्या । कार्लन ক্ফ তপদা শঙ্কর প্রাপ শঙ্করী ।। बीक्रका हि शकः मरखाः १-রমান্ধা পরাৎপরঃ ৷ কৃষ্ণন্য বর-পুলোৰ ব্য মেব বৃহস্পতিঃ 11 অতো হেতোঃ পুরশুরুঃ র্জরু-পুলঃ শিবস্য চ। ইতি ভ্রন্ধবৈব-র্ত্তে প্রকৃতিখণ্ডে ৫৯ অধ্যাবঃ ॥ বৃহস্পতিচক্রণ ক্লী নৃণাণ শুভা-শুভজ্ঞানার্থণ বৃহস্পতি সঞ্চার-কলীন নক্জাদি সপ্তবিশাতি নক্তবুক্ত নরাকারচক্রণ। বথা । भीर्य हवाति त्राकाः कलि त-পি করে দক্ষিণে চাপি সৌখ্য চৈক কণ্ঠে বিভূতি নদন শর-নিত বন্দলি প্রীতিস্ত্ গাদ-

স্থাঃ ষট্ চ পীডা॰ পুন রপি জলিধি বাসহস্তে চ মৃত্যু॰ নেত্রে
ত্রীণি প্রদদ্যঃ সুখ মথ নিজভে
বাক্পতেঃ সংক্রমক্ষাৎ ।। ইড়ি
জ্যোতিস্তত্ত্বু॰ ।।

বৃক্ষ ও বৃজে। ইতি কবিকন্ধজনঃ

।। সপ্তমন্বরী। ও বৃক্ষতে বরং
কন্যা। ইতি দুর্গাদাসঃ।।

वृक्कः श्र् ञावत्रयानिवित्गयः। গাছ ইতি ভাষা। তৎপৰ্য্যায়ঃ। মহীক্লহঃ ২ শাখী ৩ বিটপী ৪ পাদপঃ ৫ তরুঃ ৬ অনোকহঃ ৭ अदिः ৮ मालः २ भनानी ७ फः ১১ ক্রমঃ ১২ অগমঃ ১৩। ইত্য-মরঃ ।। অগচ্ছঃ 🗴 বিফরঃ 🕸 महीकृष् ১७ अठिः ১१ ख्रितः ১৮ कात्रऋतः ১৯ नगः २० जगः २১ স্টার ২২। ইতি শব্দরত্নাবলী ॥ বিটপঃ ২৩ স্বজঃ ২৪ বন-স্পতিঃ ২৫ অদ্রিঃ ২৬ শিখরী ২৭ স্কঠঃ ২৮। ইতি জটাধরঃ 🕆 🛚 अक्षः ২৯ কিতিরুহঃ ৩০ অ-জ্বিসঃ ৩১ ভূরুহঃ ৩২ ভূজঃ ৩৩ মহীজঃ ৩৪ ধরণীরুহঃ ^{৩৫} ক্ষিতিজ্ঞঃ ৩৬ শালঃ ৩৭। ইতি त्राक्रिक्**ः॥ #**॥ ठगा वर् **जाि यथा। अद्रन्छामा** ज्ञ

বীজা মূলজা স্তৃৎপলাদয়ঃ প-र्वायानय रेकामाः ऋमकाः म-नकी मूथाः ॥ भानगमत्या ती-जरूराः मण्यूष्ट्का ख्नापयः । স্যু ৰ্বনস্পতিকাযস্য ষডেতে স্বু-न काठयः ॥ इंडि ट्रमञ्जः ॥ म॰ स्त्रमङ्गाणि विरद्धया वृक्ष भा পশু জন্তবঃ। ইত্যন্নিপুরাশ।#া **७** जथमवृका यथा । श्री ७ गवानु-বাচ। আশ্রমে নারিকেলশ্চ গু-হিণাঞ্চ ধনপ্রদঃ। শিবিরস্য যদী-শানে পূৰ্বে পুত্ৰপ্ৰদ স্তৰুঃ ॥ সৰ্ব-ত্র মঙ্গলার্হশ্চ তরুরাজো মনো-হরঃ। রসাল বৃক্ষঃ পূর্বস্মিষ্ণা॰ मम्भद्रभ ख्या ॥ ख्ड्रथमम् সৰ্বত্ৰ সূরকারো নিশাময। বিলু-**क्र अनम देक्टर अधीरता रमती** তথা।। প্রজাপ্রদশ্চ পূর্বিমন্ দ-कित्। थनम खथा। मन्म अमन्त সৰ্বত্ৰ যতে। হি বৰ্দ্ধতে গৃহী॥ জয়ু-বৃক্ষণ্ট দাডিয়ঃ কদল্যামাতক স্ত-थ। रक्ष्यमन्त्र शूईचिन् मक्टिन মিত্রদ স্তথা ৷৷ সর্বক্রাশুভাদ শৈচব ধন পুত্র শুভপ্রদঃ। হরপ্রদে। শু-वाकन्छ निकटन शन्तित्व छथा।। नेगाति मूथम रेम्हिक मर्बर्खिन नि-गामय । সর্বত্ত চম্পকঃ শুদ্ধো

ভুরি ভত্মপ্রদ ক্তবা। অলাবু কা-পি সমাতেখা মাবাৰু চসুকাসুকঃ । शकु दी कर्कण हानि निविदत भक्वथमा ॥ वास्त्रकः कात्रविष्-শ্চ বাৰ্তাঙ্গশ্চ শুভপ্ৰদা। লভা-ফলম্ব শুভদ সর্ব সর্বত্ত নিশ্চি-७॰॥ 📲।। निविक्षवृक्षः। यथा। थ-শন্ত॰ কথিত কারো নিষিদ্ধ निमागय। यनावृत्का निविक्रण भिविद्य नगदत शिष्ट्या बुद्धी निधि-**দ্ধঃ শি**বিরে নিত্যু° চৌরভয়° ত-ण्डः। नगरतय् श्रिमक्क मर्गना<u>य</u> পুণাদ স্থথা।। হেকারো ভিডিডী वृत्का यञ्जाखः शतिवर्व्हरयः । শরেণ ধনহানিঃ স্যাৎ প্রজাহা-नि र्जदक्षुदः ॥ निविद्धः १७नि-विकाम नगदा किश्निटमव छ। न নিষিদ্ধঃ প্রসিদ্ধন্চ নগরেষু তথা পুরে ॥ বাট্যা মতিনিষিদ্ধ চ প্রা-. छ छ॰ পরিবর্জমে । খর্জুর শ্চ **उरु टेन्टन लियिकः निरिद्ध उथा** ॥ न निविषाः अगिकान आत्मयु नगद्रम् छ। वृष्कण्ड ठनकामिना॰ शानाक मक्लक्षण ।। ब्राट्मयू न--মরে চাপি লিবিরে চ তথৈব চ। रेक्रका अकार गडेंड॰ छड-म खथा। जानाकक निदीयक

कमश्रक ७७ था १ । कड़ी एतिया। **एक्रा** एक्**र का**र्जिक **उथा।। इ**-ক্লীতকী চ'শুভদা আমেৰ নগরেবু ট। ন বাট্যা ভজদা নিতা ছথা চাসলকী ধুক।। ইতি बन्नदेवदर्ख खिक्कजन्मर्यस्य ५०२ ज्यागायः ॥ অগিচ। অপুত্রন্য চ পুত্রত্ব পা-मना देश वर्षा । याजनानि ह সাজেন্দ্র অশ্বথারোপণ সরু।। ম তে পুত্ৰ সহসাণা কাৰ্য্য মেকঃ করিষ্যতি। ধনী চাশখবৃক্ষেণ অ-त्नाकः त्नाकनानवः ॥ श्रेटका ষজ্ঞপদঃ প্রোক্তো মিৰশ্চাসূপ্র-দঃ শৃতঃ। জযুকী নাক্দা প্রোক্তা ভাৰ্যাদা দাডিনী তথা ৷৷ জুৰরো द्वागमागाय भनारमा बन्नम ख-থা। অক্পূসা ক্লোপকাশা নি-णः जूरमामियाकतः ॥ **धी**वृकः भुकदता एमवः भावेणायात्र भार्व-তী। শিশসপায়। মঞ্চরসঃ জন্দে গৰ্মা সত্তবাঃ।। বিভীতকে দাস वृक्षि वैत्रका मागाम खथा। अ-পত্যনাশক স্তালো বসলঃ কল-वर्षनः ॥ वर्ष्णाया नातिरकनी जाकः ज्ञानं मूर्यमः। त्रिधिन। **छथा** किनी किन्नी मर्बमार्गिनी

রা**ঃ প্রক্রো**পকাঃ। ইতি পাল্মে সৃষ্টিখণ্ডে বৃক্ষারোপণ নাম ২৬ অধ্যায়ঃ ॥ 🟶 ॥ অস্য রোপণ ফ-लः। यम উবাচ। वृंक खन्म नज বল্য জুক্সারা স্তৃণজাতযঃ। य-ভৈতে বৃক্ষ জাতীয়া স্তাসাণ রো- ' পে ফল॰ শৃণু ।। ষঃ পুমান্ রোপ-বেৰুকান্ ছাষা পুষ্প কলোপগা-ন্। সৰ্ব সম্বোপভোগায স যাতি পরমাণ গতিং।] ছায়। পুল্পোপ-গাণ স্ত্রিণশৎ ফল পুষ্প ক্রমাণ স্ত-থা। রোপষিত্বা দশাম্যুণ্স্ত নরো ন নরক॰ ব্রজেৎ।। দেব দানব গ-শ্বৰিঃ কিন্নরোরগ গুহুকাঃ। পশু পন্ধি মনুষ্যাশ্চ সংশ্রযন্তি মুদা क्रमान् ॥ शूरेन्श्रः मूत्रगणाः मर्व ফলৈশ্চ পিতরঃ সদা । ছাষ্যা মে मन्या छ পশু পকি मृगा छथा।। भूरणाभगक्षाः करनाभगक्षान् 'বঃ পাদপানোপ্রতে মনুষ্যঃ। স-मृक्षापारम वत्रत्य वा त्वारा वा वा मिश्रीन वृत्र म विश्रः॥ जन्मा সুবছবো বৃক্ষা রোপ্যাঃ শ্রেযো-ভি বাঞ্চতা। পুত্রবৎ পরিপা-ল্যাশ্চ তে পুত্রা ধর্মতঃ স্তাঃ।। কি ধৰ্ম বিনুধৈ মতৈগঃ কেবল ।। প্রতিষ্ঠাণ তে গনিষান্তি যে ন- । স্বার্থ হেতুভিঃ। তরুপুত্রা বর

বে তু পরার্থিকানুবৃত্তয়ঃ॥পল্ল পুষ্পা ফল ছাৰা মূল বন্ধল দাৰু-ভিঃ। পুরেষা মুপন্দর্বন্তি তারমন্তি পিতামহান্।। ছেতার মপি সং-প্রাপ্ত ছাষা পূলা ফলাদিভিঃ। পূজযন্ত্যেব তরবো মুনিবদ্দেষ ব র্জিতাঃ ৷৷ পিতর্ন্ন নোপহিৎসম্ভি দ্রুমা দ্রবিণলোভতঃ । তারবস্তি চ যে সম্যক্ সৰ্বস্যাতিখ্যদায-কাঃ।। তন্মাত্তে পুত্রবৎ স্থাপ্যা বিধিবদ্ধিজপুঙ্গব। দ্বিজেঃ পিতৃ মনুষ্যাণা মভোজ্যাঃ স্যু র্যদা স-पा । जनकृ वृक्ताशी यः **अ**-তিগ্রাহারুচি দ্বিজঃ। এতে স্বর্গা-ন্ধ হীৰন্তে যে চান্যে সত্য বাদিনঃ ॥ ইত্যাদ্যে বঙ্গিপুরাণে তড়াগ বৃক্ষ প্রশংসা নামাধ্যাবঃ ॥ 🕸 ॥ অপিচ। ভূমিদানেন যে লোকা গোদানেন চ কীৰ্ত্তিতাঃ ৷ তে লোকাঃ প্রাপ্যতে পুণ্ডিঃ পঞ্ পানা॰ প্ররোহণে ॥ অশ্বথ মেক॰ পিচুমর্দ্দ মেক ন্যাগ্রোধ মেক मग भूजाकाठीः। एव एव ज्या माफिय याजूनिद्यः शक्यासुदाशी নরক ন যাতি।। যথা সুপুলেঃ স नगूक्तरतिक यथाजिक्षकानिस्म-প্রযন্ত্রাৎ। তথাত্র বৃক্ষাঃ কল পু-॥

ষ্পা ভূতাঃ স্বং স্বামিনং নরকাদু-জরম্ভি।। গোকর্প উবাচ। ইন্ধ-নাৰ্থ ৰথা নীত সন্নিহোত্ৰণ ত-দুচ্যতে । ছাৰা বিশ্ৰাম পথিকৈঃ शक्तिकृत्यन है। शब्द मृत ष्यामीण्या ঔषशार्थन्न (महिना॰ ।। উপস্বস্থি বৃক্ষ্যা পঞ্যক্তঃ স উচাতে গৃহ কুত্যানি কঠানি कुजक गुर् छथ।।। मज निर्दर्ध-নং প্রোক্তঃ ভিক্সা পর্ত্তেঃ সমা-কৃতা। ফলন্তি বৎসরে মধ্যে দি-वातः भाकसामगः ॥ गायधमत्रः পিতু মাতু রুপ্রকার ফলেঃ কৃত । এব॰ পুত্র সমারোপ্যা এব॰ ত-खुविप्ताः किन्। । ইত্যानि वातार পুরালে গোকর মাহাত্ম নামা-शासः।। अध्यक्ताः वृक्तः स्था া অপ্নথে বটৰ্কশ্চ ন চ্ছেত্ৰাঃ करा हम । म ट्या दिन् र्क द दय तृका न एक् छवा। क्राहन। रेकि ह बाजारश्तारं वाक्यनी-कामूब॰ ननामायः ॥ म। व्-- (कि शाक) स्था । शुद्धक् त्ययू **मृगार्ख शामभा टे**क्व त्रामिणः । कर्त्य दा रमस्य वा मुद्रस्थ व। वर्मुनान्।। चात्रागा व। दिन।

বাত শাখা মুক্ষজ্য জনাঃ। कुन भूष्ण उका कारन मर्भय-कि विश्वमाः ।। পूर्वावशाः मर्भ-मिंख कना भूमा छथा छरतः। ক্ষীর স্বেহণ নদ রক্ত নধু তোবং সুবন্ধি চা। গুলান্তারোগাই সহ-मा खड़ा जाइडि वो भूनः। छे-ভিষ্ণত্তীৰ পতিতাঃ পতন্তি চ ত-খোৰতাঃ।। এবং বক্যামিতে বন্ধ-म् विशाक कवा त्वव ह। द्वापटन वाधि यञ्जि स्मान एम वि-<u>जुमः ॥ भाषाञ्चलज्ञानः त्रगार</u> সংআমে ধোষপাতন ৷ বালানা मन्न कर्गाषानाना कन भूनि-णा। त्रवाकुलिम[•] नक्र्रण क्व भूष्ण ममस्त्रत्। स्वरं गर्दछ (गा-कीति त्यदर पूर्णिक राकका।। বাহনাপচৰ খদ্য নক সংগ্ৰাম यामिरमधा यथामुख ज्वाधि र्जवाशाद्य न वर्षि ॥ अद्योगः (नार्न एकर वक्रम पूर्लिक नकन । ७८६वू मः अद्राह छ वीर्या नवक कीक्ट ॥ छेपारन পতিতানাক তব ভেদকর ত-त्वर श्रिकार्थ क स्मार गर्यटन एव-गडेन उपा रिल्का ॥ जुल १-यि ह व्राक्ष्य द्वाक्ष्य है व-

नक्यः। এতৎ পূজিত বৃক্ষেরু সর্ব॰ রাজে বিপদ্যতে ৷৷ পুলে কলে বা বিকৃতে রাজ্বে। মৃত্যু **७पा** मित्नि । जत्मायू देनव यु-ক্ষেবু ৰূকোৎপাতেষু মন্ত্ৰিতঃ।। षाच्चामसिद्या ७॰ वृक्ष॰ गन्नमारेला বিভূষযেও। বৃক্ষোপরি তথা ছ-ন্ত্ৰ স্ব্যাৎ পাপপ্ৰশান্তবে ॥ শিবমভ্যর্চ্চযেদেবং পশু ঞান্মৈ निर्दमरय । भृत्वजा देजि द-কোমা কৃত্বা রুজ জপেত্রথা।। মধাজ্য যুক্তেন ত্ পাযসেন সং-পূজ্য বিপ্রা॰ শ্চতুরশ্চ দদ্যাৎ। গীতেন নৃত্যেন তথাৰ্চ্চনেন দে-ব॰ হর• পাপবিনাশহেতোঃ।। ইতি মাৎস্যে ২ন্তুতশান্তি বৃ-ক্ষোৎপাতপ্রশন্দ নাম ২০৬ অধ্যাবঃ ।। #।। অথ বৃক্ষপ্রতিষ্ঠা াভীষ উবাচ। পাদপানা वि-शिः बन्धन् यथाविष्ठताष्ट्र । বিধিনা বেন কর্ত্তব্য পাদপো-म्यानन वृदेशः॥ य ह लाकाः সূতা স্তেষা তানি চৈব বদস্ব মে। পुनस्य खेवाह शिम्भानाः विधिः বক্ষ্যে তথৈবোদ্যান ভূমিষু ^{1 ত} **जाग विश्विद नर्वः** मगाश्चिः ज त्रसिक्त ॥ कृषा मध्येश मण्डातः

শ্বাস্থা প্রথত মানসঃ। পুক্তবেদ্রা- 🕽 শ্বণ তদ্বদেম বস্ত্রানুলেপনৈঃ।। সরৌ বধ্যুদকৈঃ সিক্তান্নানাপুষ্প বিভূষিতান্। বৃক্ষামালো রল॰-কৃত্য বাসোভি রভিবেষ্ট্রেৎ ॥ সূচ্যা চৈব তথা কাৰ্য্যু সৰ্বেষাণ কৰ্মবেধন । সণ্ডলঞ্চাপি দাতব্য তদ্বদ্ধেম শ্লাক্ষা ৷৷ ফলানি স-প্ত.চাফৌ বা কলধৌতানি কার-যেৎ। প্ৰত্যেক সৰ্ব বৃক্ষাণা বেদ্যাণ তানধিবাসযেৎ ৷৷ ধূপন্ত ষ্ঠিত । সর্বান্ ধান্যভূতঃ কৃষা गन्न गानान्दलभरेनः ॥ ज्यान् স সৰ্ববৃক্ষেযু স্থাপযিত্বা ব্ৰতী স্বয়ণ । পূজ্যিত্ব। দিনান্তে চ স্বর্যান্দ্রিজ নিমন্ত্রণ ৷৷ যথা চলোকপালা-না মিজ্রাদীনা বিধানতঃ। বন-স্পাতে রধিবাস মেবং কার্য্যণ দ্বি-জাতিভিঃ ৷৷ ততঃ শুক্লাম্বরধরঃ সৌবর্ণ কৃতদেশরা । স্বর্ণ শৃ-ঙ্গাং কাংশ্যাদোহাং গাং দায়া-ष्णुज्यानिनी ।। পर्याचनी व्यक्त मधा দूरमृत्कका। मूमब्रुथी॰। ত-তো ২ভিযেকমস্ত্রেণ বাদ্য মঙ্গল গীতকৈঃ ৷৷ খণ্ডজুঃ সামাথৰাণা ধারণৈ রভিত স্তথা। তৈশ্চ স্ব-।

ডৈঃ সংস্নপনং স্ব্যাদ্বান্ধণ পুষ্-वः ॥ শুক্লামরধর্ঃ শুদ্ধো যজনা-নঃ স্বয়ণ জপেও। গোভি বিভব-**ङ मर्बान्धिक छ मगारिकः ॥ (र्भमृदेजः मक्**टेंदेकः **त्रश्रृकीदे**यः পৃবিত্রকৈঃ। বাসোভিঃ শ্বনী-থৈশ্চ সহোপস্কর পাদুকৈঃ ॥ कीतां भिटेष बंजि॰ प्रपापवां विक्र-ন চতুষ্ট্য । হোমশ্চ সর্গিবা কা-(र्या) यदेवः कृषः जित्न ति ॥ श-লাস সমিধঃ সস্তা শ্চতুর্থেক্লি ত-থোৎসবঃ। দক্ষিণা চ পুন স্তদ্বৎ শ্রেষ্ঠা তত্রাপি শক্তিতঃ ।। যদ্ধ-**मिस्डेंडम॰ किक्षिखंखमा**गामम<-मतः। ञाठार्या विश्वनः मञ्जा श्र-ণিপত্ত্য ক্ষমাপয়েৎ ॥ অনেন বি-ধিনা যম্ভ সর্য্যাদৃক্ষোৎসবং মুদা ৷ সৰ্বান্ কামানবাপ্লোভি তত্ত-দানস্ত্য মশুতে।। ষশ্চৈক মপি तारजन्म वृक्षः मःशाशरम**ष्**षः। সোপি স্বর্গে বসেজাজন্ যাবদি-ব্দ শতত্রয় ।। ভূত ভব্যা শ্চ ম-নুজাণ স্তারষেট্রোম সংমিতান্। পর্মাণ সিদ্ধি মাপ্নোতি পুনরা-वृত्তि मूर्झाञाः ॥ य हेमः मृश्यामि-ত্যু॰ শ্রাব্যেদ্বাপি মানবঃ। সো-পি সংগূজাতে দেবৈ ব শলোকে মহীযতে।। ইতি পালে সৃষ্টিখণ্ডে | २७ वाशायः ॥ 🛊 ॥ वृक्तत्क्तित मार्या यथा। उत्याम व्हनस्य বৃষ্ণান্ সুপুষ্ণা ফলিতান্ কদা । यहीटक्ट अववृक्षिक धनवृक्षिक गाश्व**ः ॥ महि**त्धे (দবতানाঞ্চ শিলেক্টক চিতানপি। ছেদিতা **८ इन एयर लाकान् मत्रक वृध्धि कृ खरेयः ॥ नृशश्नांत जंदवक्रीयु॰** চিঞ্চাবৃক্টে নিপাতিতে। সনিয়ে।-গী ক্ষৰ যাতি সীমাৰ্কে নি-পাতিতে।। তত্মান চ্ছেদবেদৃক্ষণ দেবতাধিষ্ঠিত ক্ষচিৎ। বাপী কৃপ তডাগানা ভদনে রোধনে कृत्व ॥ कैनाना।क्रम्का॰ याखि ভাদুত্ত নরাণা সুদুরাজনা ছেদযেদাস্ত বৃক্ষান্ ছাষাসুশী-তলান্।। অসিপত্র বনে ছোরে পীড়াতে ব্যক্তিইরঃ। নগরে:। প্ৰনে ৰৃক্ষান্ প্ৰমাদান্ধি ছিন-कि यः ॥ म गर्हमत्रकः नाम क्कुडन द्वीषमर्गिन । विनामि शालन अर्याष्ट्र ७ ७ वस मना-थ। 11 श्रीवृक्षात्नोशस्य शक्ष य-দি স্বৰ্গান হীৰতে ৷ ইত্যাদ্যে ব-হিপুরাণে বারুণারামা প্রতিষ্ঠা-श्रायः ॥ श्रा वय वृक्तारत्रायन

নক্ষত্রাদি। শতভিষা মূল বি-**माथा भृगमितः** छेखत्रकल्खनी উত্তরাষাঢা উত্তরভাত্রপৎ রো-হিণী হস্তা পুষ্যঃ রেবতী চ ॥ 🐠। রাজমার্ভণ্ডে ৷ প্রাজেশ শ্রবণো-ত্তরাদিতি মুঘা মার্ত্তও তিষ্যাশ্বি-নী পৌকানুক্ষারীচয়ঃ শতভি-ষা স্বাতি বিশাখা তথা ৷ জীবা-র্কেন্যু সিতেন্দুনন্দন দিনে বারে স্থিরস্যোদ্যে শস্যানাণ বপনে ভবস্তি লবনে শস্তে তিথৌ রো-পণে ৷৷ ঋ ৷৷ হেমান্তসা বৃক্ষবীজ স্নাতে। মন্ত্রেণ রোপযেৎ। বসুধে-তি সুশীতেতি পুণ্যদেতি ধরেতি চ ॥ নম স্তে সুভগে নিত্য জ-মোয॰ বৰ্দ্ধতা নিতি ॥ 🗱 ॥ অথ বৃক্ষপ্রতিষ্ঠা নক্ষত্রাণি। পুষ্যঃ অ-শ্বিনী জ্যেষ্ঠা পূৰ্বফল্গুনী ধনি-ষ্ঠা মৃগশিরঃ স্বাতী আর্জা ম্যা রোহিণী মূল হস্তা রেবতী অনু-রাধা প্রবণা পুনর্বসুশ্চ। তথাহি । পুষ্যাশ্বি শক্ত ভগদৈবত বাসবে-ষু চন্দ্রানিলেশ মঘ রোহিণী মূল হস্তে। পৌকানুরাধ হরিভেষু পু নৰ্বসৌ চ কাৰ্য্যাভিষেক তৰু ভূ তপতি প্রতিষ্ঠা ॥ 🟶 ॥ অথ বি-হিত তিখ্যাদিঃ। ভবিষ্যে। প্রতি-

পদ্য দিশানী ত্রতীয়া পঞ্মী তথা। দশানী ত্রতাদশী চৈব পৌর্ণমাসী চ কীর্ত্তিতা ৷৷ সো-মো বৃহস্পতি শৈচব শুক্রন্ডেব তথা বুধঃ। এতে সৌম্যগ্রহাঃ প্রোক্তাঃ প্রতিষ্ঠা যাগ কর্মাণি।। ইতিজ্যোতিস্তত্ত্বং।।

वृक्षकः भू किजवृकः। इणि त्रुमाना।। वृक्षमाजकः।।

বৃক্ষচরঃ পু॰ বানরঃ। ইতি ধন-প্রধঃ।।

বৃক্ষছায় ক্লী বহুনা বৃক্ষাণা । ছায়। যথা। বৃক্ষন্য বৃক্ষয়ে। ৰ্বাছায়। বৃক্ষছায় বিভি। ষষ্ঠ্যা-ক্ছায়। বহুনাঞ্জেলিতি ক্লীবন্ধ। ইতি জ্ৰীনপু সকলিক্ষন গ্ৰহে-ভরতঃ।।

বৃক্ষধূপঃ পু॰ শ্রীবেষ্টঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।।

वृक्षनाथः पृ॰ वहेवृक्षः। ইতি
भक्षत्रज्ञावनी ॥

বৃক্ষপাকঃ পু॰ বটবৃক্ষঃ। ইতি শব্দচন্দ্ৰিকা।।

বৃক্ষভবন॰ ক্লী বৃক্ষকোটর॰। ইতি শব্দচন্দ্রিকা॥

বৃশভক। স্ত্রী বন্দাকঃ। ইতি।

বৃক্ষাম

ভাবপ্রকাশঃ !৷ বৃক্ষভিৎ > স্ত্রী বাসী ৷ ইতি হেশ-বৃক্ষভিদ্ > চম্রঃ ৷i

বৃক্ষভেদী পুণ বৃক্ষাদনঃ। নে-হানি ইতি ভাষা। ইত্যমরঃ॥ টক্ষঃ। ইতি হেমচক্রঃ।।

বৃক্ষমর্কটিকা স্ত্রী জম্ববিশেষঃ। কাঠ্বিডাল ইতি ভাবা। ইতি • কেচিৎ।।

বৃক্ষমৃদ্ভূঃ পু॰ জলবেতসঃ। ইতি শব্দচন্দ্ৰিক। ।।

বৃক্ষর হা স্ত্রী বন্দা। ইত্যমরঃ ।।
অমৃতপ্রবা।ইতিরাজনির্ঘন্টঃ ।।
বৃক্ষবাটিকা স্ত্রী অমাত্যগণিকাগেহোপবনং । ইত্যমরঃ ।।

বৃক্ষাদনঃ পু॰ বৃক্ষভেদী। নে-হানি ইতি ভাষা। ইত্যমরঃ।। অশ্বথবৃক্ষঃ।। মধুচ্চত্র॰।। স্কঠা-রঃ। ইতি মেদিনী।। পিষালঃ। ইতি ধর্মিঃ।।

বৃক্ষাদনী জ্রী বন্দা ।। বিদারী-কন্দঃ। ইতি মেদিনী ।।

বৃক্ষাদির হক॰ কৌ আলিঙ্গন । বৃক্ষাদির চক॰ ১. ইতি শব্দ মালা ।। বৃক্ষায় কৌ মহায় । তেম্বলী-তিখ্যাত । ইতি রাষমু সটঃ ।। ম-হাদা। ইতি ভরতাদ্য ।। অম্বল- **३७ जानू मीकि** जामयः ॥ ७९-পর্য্যায়ঃ। তিন্তিডীক ২ চুক্র . ৩। ইত্যমরঃ ।। অমুশাক॰ ৪ চুক্রামণ ৫ তিত্তিডীফলণ ৬ শা-কাম প অমপুর ৮ পূরাম ১ রক্তপুরক ১০ চূডায় ১১ বী-জামুণ ১২ ফলামুকণ ১৩ অমু-বৃক্ষ ১৪ অমুফল ১৫ রসাম ১৬ শ্রেষ্ঠায়• ১৭ অত্যয়৽ ১৮ प्रमुवीष १३० हुक्क न १० । অস্য গুণাঃ। কটুত্ব । কষাযত্ব 1 উक्षष्ठ । ककार्य स्ट्रका मनी-রোদর হাদাদাদি গুল্মাতিসার ত্রণদোষ নাশিত্বঞ্চ। ইতি রাজ-নির্যক্তঃ। অপিচ। বৃক্ষায় মাম মস্লোষণ বাতম্ব কফপিত্তল। পক্ষয় গুৰু সংগ্ৰাহি কটুক তু-বর॰ লঘু ৷৷ অস্লোক্ত রোচন॰ ৰক্ষণ দীপনণ কফ বাতকৃৎ। তৃফার্শো এহণী গুলা শূল স্ব-দ্রোগ জম্বজিৎ ॥ ইতি ভাব-প্রকাশঃ ॥

বৃক্ষায়ঃ পু॰ আমাতকঃ। ইতি শব্দচন্দ্রকা।

वृक्षार्श खी यशस्त्रमा। इंडि ज्ञाक्रिमर्थन्डः ॥

कि नात्रमुम्पती ।। हुका ।
विकार का माना ।।
विकार का माना ।
विकार का माना ।।
विकार का माना ।

বৃ গি ঞ বৃত্যা । ইতি কবিকন্ধ

দেশঃ ।। গি ঞ বৃণাতি বৃণীতে।

বৃৰ্ণঃ বৃৰ্ণিঃ। ইতি দুৰ্গাদাসঃ ।।

বে ঐ ঞ স্যুতৌ। ইতি কবিকন্ধ

দেশঃ ।। সূত্যতি স্তম্ভসন্তানং । ঐ
উষাৎ । ঞ বৃষ্ঠি বৃষ্ঠে তন্ত্ৰণ
তন্ত্ৰবায়ঃ। ইতি দুৰ্গাদাসঃ ।।

বেকটঃ পুং বৈকটিকঃ ।। মৎস্য-

ভেদঃ । ভেকটী ইতি ভাষা॥
যুবা। ইতি মেদিনী ॥ বিদূষকঃ
। ইতি শব্দরত্বাবলী ॥ তত্র প
বগী য বকারাদৌ লিখিতঃ ॥

বেগঃ পুণ প্রবাহঃ । তৎপর্যাবঃ

1 ওষঃ ৩ বেণী ৪ ধারা ৫ ৷ ইতি

হেমচন্দ্রঃ ৷৷ জবঃ ৷ তৎপর্যাবঃ

রুংহঃ ৩ তরঃ ৪ রষঃ ৫ স্যাদঃ ৬ ৷

ইত্যমরঃ ৷৷ মহাকালফলণ ইতি

মেদিনী ৷৷ রেতঃ ৷ ইতিহেমানাঃ

1৷ মূত্রবিঠা দিনির্গমপ্রবৃত্তিঃ

ইতি ভরতঃ।। সংস্কারবিশেষঃ।॥ यथा। न्यनापरगारकी त्वनाथां সংক্ষারো মরুতো গুণাঃ৷ অফৌ ম্পৰ্শাদযো ৰূপণ দ্ৰবো বেগশ্চ তেজिन ॥ म्थर्भामत्यात्की त्व-গশ্চ ডবত্বঞ্চ গুরুত্বক ৷ ৰূপ রস স্তথা ক্ষেহো বারিণ্যেতে চ-जूर्मम् ॥ ३७ जायानितः ।। 🟶 ।। বেগধারণ নিষেধে। যথা । বেগরোধ ন কর্ত্তব্য মন্যত্র ক্রোধবেগতঃ ! ইতি আহ্লিক-তত্ত্বপৃত বিক্রপর্ন্মাত্তরবচন ।। অপিচ। স্বভাৰতঃ প্ৰবৃত্তানা॰ यवामीना॰ জिজीवियुः। न বে-गान्नातरम्बीतः कामानीनाकः ধার্যেৎ।। ইতি রাজবল্লভঃ।। পু শ্লেষা। ইতি বেগনাশনঃ শব্দরত্বাবলী।। বেগসরঃ পু॰ বেগগামিছ্যঃ। তৎপর্য্যায়ঃ। বেসরঃ ২ অশ্ব-তরঃ ৩। ইতি হেমচন্দ্রঃ।। বেগিতঃ ত্রি বেগবিশিষ্টঃ৷ যথা । আযুর্বেদীয়ে। ন বেগিতো श्नामिक्तिः मा । ना जिषा मा-ধ্য মাময় । ইত্যাহ্নিকতত্ত্ব ॥

বেগিহরিণঃ পু॰ শ্রীকারীমৃগঃ।

ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥

ৰেগী ত্রি বেগবান্। তৎপর্যা-যঃ। জত্যাকারিকঃ ২ জাত্যিকঃ ৩ তরস্বী ৪ ম্বরিতঃ ৫ প্রজবী ৬ জবনঃ १ জবঃ ৮। ইত্যমরঃ ॥ শ্যেনপক্ষী। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ। (वठा जी मृनाः। विठि निर्धा अ পৃথক্ষে ইত্যস্থাৎ অন্ তত আপ্। যথা। বেচা মূল্যঞ্ব-তন । ইতি হল। যুধঃ।। বেজানী স্ত্রী সোমরাজী।ইতি 'শব্দচন্দ্ৰিকা।। বেড॰ ক্লী সাম্রুবিচ্ছিমচন্দন । ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। ন্ত্ৰী নেক।।ইতি হেম-চন্দ্ৰ ।। বেডীতি ক্ষচিৎ পাঠঃ ।। ৰেঢমিকা স্ত্ৰী রোটিকাবিশেষঃ । যথা। মাষ পিষ্টিক্ষা পূৰ্ণগ-র্ভা গোধুম চূর্ণতঃ। রচিতা রো-টিকা সৈব প্রোক্তা বেঢমিকা वृत्रिः ॥ ভবেদে। यिका वन्ता। বৃষ্যা ৰুচ্যানিলাপহা। উষ্ণা मं जभ गी श्वरी पृ रगी श्वला পরণ।। ভিন্ন মূত্র মলা স্তন্য মে-দঃ পিত্ত কফপ্রদা। গুদকীলা-র্দ্দিত শ্বাস যক্ৎ শূলানি নাশ-ষেৎ ॥ ইতি ভাবপ্রকাশঃ॥ বেণ ঋ এ निশायन।। वानिजा- দান গমন জ্ঞান চিন্তাসু।ইতি
কবিকল্পজনঃ ।। ঋ অবিবেণৎ ।

এফ বেণতি বেণতে ৷ নিশামন

চাক্ষুমজ্ঞান ৷ বাদিত্র মুরজাদি

দি তস্যাদান বাদিত্রাদাম ৷

বাদিত্র বাদিত্রবিষয় ক্রিয়া ইত্যেকে। হর্ণঃ ইত্যেকে।ইতিদুর্গাদাসঃ ।।

বেণঃ পু॰ বর্ণসঙ্করজাতিবিশেষঃ

। সতু অষ্ঠ্যা॰ বৈদেহকাজ্জা-ভঃ। ষথা। বৈদেহকেন স্বয়ষ্ঠ্য। ষুৎপক্ষে। বেণ উচ্যতে । ইতি मानत्व >॰ व्यशायः ॥ 🗱॥ ত्व-তাষুগীষ সূর্য্যবংশীষ চতুর্থনৃপঃ । স তু পৃথুরাজপিতা। যথা বি-ক্পুরাণে। সৎপুত্রেণ তু জা-তেন বেণোপি ত্রিদিব॰ যখে।। পুদামো নরকাজাতঃ স তেন সুমহাত্মনা ।। তেন সুপুত্রেণ মৃতবেণ দক্ষিণহস্ত মন্থন জাতে-ন পৃথুন।। ইতি শুদ্ধিতত্ত্ব ॥ বেণিঃ স্ত্রী প্রোষিতভত্ কাদি-ধার্য্যকেশরচনাবিশেষঃ। ইতি ভরতঃ ৷৷ বিরহিণীবদ্ধকচঃ ৷ ইতি জটাবরং ॥ তৎপর্য্যাযঃ। প্রবেণিঃ ২ । ইত্যমরঃ ॥ বেণী ৩ প্রবেণী ৪। ইতি ভরতঃ ॥ বেণি- 🏽 কা ৫। ইতি শব্দমালা ।। জল-সমূহঃ। ইতি জট়াধরঃ।। যথা প্রধাণে গঙ্গা যমুন। সরস্বতী মেলনং ত্রিবেণী ।।

বেণিক। ন্ত্ৰী কেশবন্ধনবিশেষঃ। ইতি শব্দমাল। ।।

বেণিবেধনী স্ত্রী জলোক। ইতি ত্রিকাগুণেষঃ।।

বেণিমাধবঃ পু॰ প্রযাগস্থপাষা-গম্যচতুর্জদেবতাবিশেষঃ । ইতি লোকপ্রসিদ্ধঃ ।।

বেণী স্ত্রী প্রারণী। চুলেরবিউণী ইতি ভাষা। ইতি ভরতঃ ।। তৎ-পর্য্যায়ে। বেণি শব্দে দ্রফব্যঃ।। দেবতাডবৃক্ষঃ। ইত্যমরঃ॥ মে-ষী।। প্রবাহঃ। ইতি হেমচন্দ্রঃ ।। নদীবিশেষঃ । ইতি মেদিনী ॥ তস্যা উৎপত্তি র্যথা। পৃথু-क्रवाह। कृष्ण (वर्णा खंगेला-স্মাচ্ছিব বিষ্ণুগণৈঃ পুরা । ব-ণিক্ শরীরাৎ কলহা নিরস্তা কথিতা ছ্যা ।। প্রভাবস্ত তথো ৰ্নদ্যোঃ কিম্বা ক্ষেত্ৰস্য তস্য বা । তন্মে কথ্য সৰ্বজ্ঞ বিস্মযো ২এ মহান্মন 11 নারদ উবাচ । কৃষ্ণা কৃষ্ণতনুঃ সাক্ষাদ্ধেশী সাক্ষাম-হেশ্বঃ। তৎ সঙ্গম প্রভাবন্ত

নালং বক্তুং চতুর্মখঃ।। তথাপি তৎ সমুৎপত্তি কীর্ত্তবিষ্যামি তে শৃণু । চাক্ষ্বদ্যান্তরে পূর্ব॰ মনো দেবিপিতামহঃ ।। সহ্ছ জি-শিখরে রম্যে যজনাযোদ্যতো **१७व९। म कृषा यक्त मछातान्** मर्बरमदगरेग वृंजः ॥ युक्ता इति হরাভ্যা॰ হি তদ্যিরেঃ শিখর॰ यत्यो । जृशीमत्या मूनिगना मू-ষ্ঠে বন্ধদৈৰতে।। তদ্য দীকা বিধানায সমাজ চক্রু রাদ্তাঃ । অথ জ্যেষ্ঠা॰ স্বরা॰ পত্নী মাহূ-ষাঞ্জু রীশ্বরাঃ।। সাশনৈ রাষ-যৌ তাবৎ ভৃগু বিঁফু মুবাচ হ। ভৃগু রুবাচ। বিফো স্বরা স্বযাহৃত। সাপ্যাযাতি ন হি ত্বর । মুহূর্ত্তা-তিক্রমে চৈব কার্য্যে। দীক্ষা বিধিঃ কথ॰।। বিফুরুবাচ। নাযাতি চেৎ স্বরা শীষু গাযত্র্যত্র বিধীযতা। এষাপি ন ভবেদস্য ভার্য্যা কিং পুণ্যকর্মণি।। নারদ উবাচ। এব নেব হি ৰুজোপি বিষ্ণুবাক্য মম-ন্যত। তচ্ছন্ত। স ভৃগু ৰাক্য॰ গাযত্রীণ ত্রন্ধণ স্তদা ।। নিবেশ্য দ-ক্ষিণে ভাগে দীক্ষাবিধি মথাক-রোৎ।। যাবদ্দীকাবিধিণ তস্য বি-ধে শক্তু মুনীশ্বরাং ॥ তাবদভ্যা-

যযৌ তত্র স্বরা যজ্ঞস্লে নৃপ । তত স্তাণ দীক্ষিতাণ দৃষ্ঠা গাৰত্ৰীণ ব্রহ্মণা সহ।। সপত্নী সা পরা ক্রো-ধাৎ স্বরা বচন মত্রবী**ৎ।** স্বরো-বাচ। অপূজ্যা যত্র পূজ্যন্তে পূ-क्रानाक पाठिक्यः। वीति ठव ভবিষ্যম্ভি দুর্ভিক্ষণ মরণণ ভষণ ৷৷ মদাসনে কনিষ্ঠেয়ণ ভবক্তিঃ স-ন্নিবেশিতা। তস্মাৎ সর্বে জডী-ভূতা নদীৰূপা হি নিশ্চিত ৷৷ ই-যঞ্চ দক্ষিণে ভাগে হ্যুপবিফী ম-দাসনে। তম্মাল্লোকে সদ। দৃশ্যা তনুৰূপাস্ত নিম্নগা।। নারদ উ-বাচ ৷ তত স্তৎ শাপ মাকৰ্ণ্য গা-ষত্রী কম্পিতাধরা। সমুখাযাশ-পদেবৈ বার্য্যমাণাপি তা॰ স্বরাণ ।। গাযত্র্যবাচ । তব ভর্ত্ত। ষ্থা ব্ৰহ্মা মমাপ্যেষ তথা খলু ৷ বৃথা শপসি যক্ষাঝাণ ভব ত্বমপি নিম্ন-গা।। নারদ উবাচ। ততো হাহ। কৃতাঃ সর্বে শিব বিষ্ণু মুখেশ্বরাঃ । প্রণম্য দণ্ডবৎ ভূমৌ স্বরাণ তত্ত विकिब्बभुः ॥ प्तवाछेतूः । प्तिव শপ্তা বয় পৰে ব্ৰহ্মাদ্যাপি ত্বযা ২ধনা। যদি সর্বে জডীভূতা ভ-वियात्मा २व निम्नगाः ॥ छत।- . লোক ত্রষণ চৈতৎ বিনশ্যতি চ

নিশ্চিত ৷ অবিবেক কৃত স্তম্মাৎ পাপো ২য° বিনিবর্ত্ততা ।। স্বরো वाह । नार्किटा हि गंगाशस्का ভবন্তি র্বৎ সুরোক্তমাঃ। তক্ষা-দ্বিদ্ব° সমুৎপন্ন মবোধ জনিত° খলু।। নাপি মন্বচন হেতদসত্য খলু জাষতে । তন্মাৎ স্বাণ্টেশ ৰ্জড়ীভূত। যূষ• ভবত নিম্নগাঃ ॥ আবামপি সপত্নেগ্র চ স্বাণ্শাভ্যা মপি নিয়গে। ভবিষ্যামে। ২ত্র ভো দেবাঃ পশ্চিমাভিমুখা বহৈ ।। নারদ উবাচ। ইতি তদ্বচন• শ্রুত্বা ব্রহ্ম বিষ্ণু মহেশ্বরাঃ। জড-ৰূপাভবন্ধদ্যঃ স্বাণ্শেনৈব তদা-নৃপ ৷৷ তস্মাদিক্টু রভূৎ কৃকা বে-ণী দেবো মহেশ্বরঃ। ত্রহ্মা কন্স-দ্মিনী চান্যা পৃথগেব বভূব তু॥ ইতি পান্মোত্তরধণ্ডে ১৫৬ অধ্যা-यः ॥ 🐲 ॥ व्यनाकः । मत्रवर्णी त-জোৰপা তমোৰপা কলিসজা। সত্ত্ৰপা চ গঙ্গাত্ৰ নযন্তি ব্ৰহ্ম নির্স্তণ ৷৷ ইয় বেণী হি নিংশ্রে-**নী বন্ধবৰ্ম প্ৰধাস্যতঃ। জন্তো** ৰিশুদ্ধ দেহস্য এদা এদ্ধাপ্তস্য চ ৷ কাশীতি কাচিদবলা ভুব-নেযু ৰচা লোলাৰ্ক্ক কেশব বি-লোল বিলোচনা চ। তদ্দো যুগ-

ঞ্চ বরণাসি রিয়ণ তদীয়া বেণীতি ফাত্র গদিতাক্ষ্য শর্মাভূমিঃ।।
ইতি কাশীখণ্ডে ৭ অধ্যায়ঃ।।
বেণীরঃ পুণ অরিফবৃক্ষঃ। ইতি
শব্দচন্দ্রকা।।

বেণীসংহারঃ পু॰ ভউনারাষণকৃতসপ্তাঙ্কযুক্তনাটকবিশেষঃ।
তত্ত্ব দুর্য্যোধন কর্তৃক জৌপদী
কেশাকর্ষণাবধি ভদ্বধানন্তরণ
তস্যা বেণীবন্ধনপর্যান্ত বিবরণ
মন্তি। তস্যায় মাদ্যক্ষোকঃ।
নিষিক্ষৈরপ্যেভি লু লিত মকরদ্যো মধুকরৈঃ করৈ রিন্দোরন্তশ্ভূরিত ইব সন্তিম্ন মুঙ্গলঃ। বিধত্তাণ সিদ্ধিণ নো নয়ন সুভ্গা
মস্য সদসঃ প্রকীর্ণঃ পুষ্পাণাণ
হরিচরণয়ে। রঞ্জলি রয়ণ।।

বেণুঃ পুণ বংশঃ। ইত্যমরঃ।।
বংশী। ইতি শব্দরত্বাবলী।। নৃপবিশেষঃ। ইতি মেদিনী।। বেণো রুৎপত্তি র্যথা। বেণু র্যঃ শূণ্
তং বিপ্র তবাপি বিদিতং তথা।
দিজ আসীচ্ছান্তমনাঃ কৃত শান্তপনাদিভিঃ।। নামা দেবত্রতো দান্তঃ কর্মকাগুবিশারদঃ।
অবৈশ্বব জনত্রাত মধ্যবত্তী ক্রিযাপরঃ।। একদাপি ন শুপ্রাব

ষজ্ঞেশো ২স্তীতি জুপতে। তস্য গেহ মধাজ্যাগাদ্বেদান্ত কৃত-নিশ্চযঃ।৷ মন্তক্তঃকোপি পূজাণ म जूननीमन वादिना। कृठवा स्ड গৃহে किक्षि॰ कल मूल॰ नारवन-य ।। न्नान वाति क्ल किश्वि **তत्य बी**छा ममी मुर्शेः। ञ-শ্ৰদ্ধান্বিত কৃষা সোপ্যগৃহ্লাৎ ছিজন্মনঃ ৷৷ তেন পাপেন সং-জাতণ বেণুত্ব মতিদারুণণ । তেন পুণ্যেন তস্যাৰ্থো মদীয প্ৰিয়তাণ গতঃ॥ অধুনা সো ২পি রাজেব কেতুমালে বিরাজতে। যুগান্তে তু বিষ্ণুপরো ভূত্বা ব্রহ্মণ্ণ মাপ্স্য-তি ৷৷ ইতি পাদ্মেপাতালখণ্ডে ৫ व्यथायः ॥

বেণুক॰ ক্লী তোত্রণ। ইতি হে-মচক্রঃ।

বেণুকর্ক্করঃ পু॰ করীরবৃক্ষঃ। ইতি ত্রিকাওশেষঃ।।

বেণুজঃ পু• বেণুষবঃ। ইতি রাজনির্ঘণীঃ।।

বেণুরাঃ পু॰ বেণুবাদকঃ। ইত্য-মরঃ।।

বেণুন ক্লী মরিচণ ইতি রত্ন-মালা।। বেণুজ মিতিচ পাঠঃ।। বেণুপত্রী স্ত্রী বংশপত্রীবৃক্ষঃ। তৎপর্যায়ঃ। হিঙ্গুপণী ২ নাডী ৩ হিঙ্গুশিরাটিকা ৪। ইতি রত্ন-মালা ॥

বেণ্যবঃ পু॰ ব॰শকল । বাশেরচালু ইতি ভাষা। তৎপর্যাহঃ
। বেণুজঃ ২ বেণুরীজণ ৩ ব॰শজঃ ৪ ব॰শত পুলঃ ৫ ব॰শধান্য॰
৬ ব॰শাহঃ ৭। অস্য গুণাহিথুণাবজমুত্রখা কফ মখণ। বাত
• পিত্ত করম্বণা সারক ম্বন্ধণ। ইতি
রাজনির্যন্তঃ । অপিচ । তন্ধবাস্তু সরা কক্ষাঃ ক্ষামাঃ কটুপাকিনঃ । বাত পিত্তকরা উক্ষা
বন্ধমুত্রাঃ ক্ফাপহাঃ ।। ইতি
ভাবপ্রকাশঃ ।।

বেণুবাদঃ পু• বৈণুকঃ। ইতি রত্নমালা।।

বেণুবীজ ক্লী বেণুষবঃ। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ॥

বেতঃ পু• বেত্রঃ। ইতি রাজ-নির্যকীঃ।।

বেত্ন ক্লী বর্শাদক্ষিণা। মাহিনা ইতি মজুরীতি চ ভাষা।
তৎপর্য্যায়ঃ। কর্মাণ্যা ২ বিধা ৩
ভূত্যা ৪ ভূতিঃ ৫ ভর্মা ৬ ভরণ্য ৭ ভরণ ৮ মূল্য ৫ নির্বেশঃ ১০

পণঃ ১১। ইত্যমরঃ ।। বিষ্টিঃ ১২ ়। ইতি জটাধরঃ।। জীবনোপা-यः। তৎপर्यायः। आक्रीतः २ জীবন• ৩ বাৰ্দ্তা ৪ জীবিকা ৫ বৃত্তিঃ ৬। ইতি হেমচন্দ্ৰঃ।। ৰ-প্য°। ইতি শব্দচন্দ্রিকা॥ বেতসঃ পু॰ লভাবিশেষঃ। বষসা ইতি ভাষা। ইতি ভরতঃ।। তৎ-পর্য্যায়ঃ। রথঃ ২ অভুপুষ্পঃ ৩ বিদুলঃ ৪ শীতঃ ৫ বানীরঃ ৬ वक्षुनः १। इंछामतः ॥ श्रियः ৮। ইতি রত্নমালা ॥ গন্ধপুষ্পঃ ৯ রথাভুঃ ১০ বেতসী ১১। ইতি भक्तक्रावली॥ निष्कः ३२ मी-র্যপত্রকঃ ১৩ কলমঃ ১৪ মঞ্জরী-নমুঃ ১৫ সুষেণঃ ১৬ গন্ধপুষ্প-कः ১१। जमाञ्चनाः। स्नाप्तक-টুষণ। শীতষণ। ভূত রক্তপি-ভোদ্ভবরোগ স্বষ্ঠদোষ নাশি-ত্বঞ্চ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ অ-পিচ ৷ বেতসো ননুকঃ প্রো-**ट्या** वागीद्या तक्षन खथा। अ-ভূপুষ্পশ্চ বিদুলো রথঃ শীতশ্চ কীর্ত্তিতঃ ॥ বেতসঃ শীতলে। मार त्याथाटम्। स्यानिक्र<u>थ</u>्यान् ৷ হস্তি বীসপ কৃচ্ছাসু পিতাখ-वि ककानिलान् ॥ ३७ जाव-॥

প্রকাশঃ ॥ বেতসামঃ পু॰ অম্ববেতসঃ। ইতি জটাধরঃ ॥ বেতসী স্ত্রী বেতসঃ। ইভি শব্দ-त्रज्ञावनी ॥ বেতস্বান্ ত্রি বেতসলতাব্ছল-**(দশः । . ইত্যমরভরতৌ ।।** বেতালঃ পু॰ দারপালকঃ। ইতি শব্দরত্বাবলী ॥ ভূতাধিষ্ঠিতশ-বঃ। ইত্যমরঃ।। মল্লভেদঃ। ইতি ভরতঃ।। শিবগণাধিপবিশেষঃ। ষথা। সগর উবাচ। কোসৌ ভৈরব নামাভূৎ কো বা বেডা-ল সংজ্ঞকঃ। কথং বা তৌ শ্রী-**द्भिन मानूरयन गनाधिर्यो ॥ ज**-ভূতা দিজ শার্দূল তমে বদ यशमूरन। श्री अर्व जेवा छ। मृगू রাজন্ প্রবক্যানি মহাকালস্য ভৃঙ্গিণঃ । ভৈরবস্যাপি চরিত। বেতালস্য মহাত্মনঃ ॥ সোসৌ ভূঙ্গী হরসুতে মহাকালোপি ভর্গজঃ। তাবেব গৌরী শাপেন সস্থূয নরযোনিজৌ ।। বেতাল ভৈরবৌ জাতৌ পৃথিব্যা॰ নৃপ-বেশানি। ইতি কালিকাপুরাণে ८७ व्यथायः ॥ 🛊॥ ज्यादिशः छाति यथा। श्रीतिवृत्वा । भ

रेगव मानूषी मूर्खि तियः वृषछ-কেতন। বিশামি তেত্র বচনা-**मृ**ष्शाम्य मूज्दयः ॥ श्रावित्व-শ ততো দেবী স্বয়ণ ভারাবতী छ्टनो । यहारमद्यां जिल्ला उना । কামার্থণ সমুপস্থিতঃ ৷৷ ততঃ সাপর্ণযাবিষ্টা দেবী তারাবতী সতী ৷ কামযান মহাদেব স্বয-মেবাভবমুদা।। তস্মিন্ কালে ২ভবদার্ত্তঃ কাপালী চাস্থিমা-ল্যধৃক্। কামাবসানে তদ্যাম্ব সদ্যোজাত সুতদ্বয় । অভব-মৃপশাৰ্দূল তথা শাখামৃগানন । অথ তারাবতী দেবী সূতৌ मृक्वा कि जिन्हित्जो ॥ जूरमी म-লিন বেশেন মন্যুনা সমুপাবি-শৎ। ভর্ত্ত রাগমন শশ্বৎ কা-ক্ষমন্তী ভৰ্গ ভাষিত া৷ অথ ক্ণামহাভাগঃ স রাজা চন্দ্র-শেখরঃ। প্রাসাদ পৃষ্ঠে আগ-চ্ছদুফুঁণ তারাবতীণ তদা ।। দ-দর্শ পতিতাণ ভূমৌ মুক্তকেশীণ নিরুৎসবাং। সুতৌ চ পতিতৌ ज्तो हक मृश्य ममक्षा ॥ वानबारमा। म ममृत्म शमरका-ভ॰ বৃষস্য চ। ততঃ স রাজা ন্য-গদৎ ত॰ মুনি॰ প্রহসমুদা ॥ 🎚

বেতালভটঃ পু॰ রাজবিক্রমাদিত্যস্য নবরত্বাস্তর্গভরত্ববিশেযঃ । যথা । ধন্বস্তরিঃ ক্ষপণকানরসিংহ শব্দু বেতালভট ঘটকপর কালিদাসাঃ । খ্যাতৌ বরাহ মিছিরৌ নৃপতেঃ সভাষাণ রত্বানি বৈ বররুচি নব বিক্রমস্য
।। ইতি নবরত্বশ্লোকঃ ।।

বেত্তা তি জ্ঞাতা। বেত্তীতি বিদথাতো স্থূপ্প্রত্যযেন নিষ্পন্ধঃ।।
বেত্রঃ পু॰ স্থনামখ্যাতবৃক্ষঃ।
তৎপর্য্যায়ঃ। বেতঃ ২ যোগিদঙ্খঃ ৩ সুদঙ্খঃ ৪ মৃদুপর্বকঃ ৫।
স তু পঞ্চবিধঃ। তেষাণ গুণাঃ।
শীতলত্বং। ক্ষাযত্বং। ভূত পিভ্রত্তরত্বশ্বং। ইতি রাজনির্যন্টঃ।।

তস্যাপ্ত বেতাগ ইতি খ্যাত । তদ্ধণাঃ। দীপনত্ব । ক্লচ্যত্ব । তিজ্জা । পিন্ত কক নাশিত্বক ॥ তৎকলগুণাঃ। বাত পিন্ত না-শিত্ব । অমৃত্ববিশেষঃ । তস্য প্রমাণ বেত্রাসুর্শন্বে দুক্টব্য ।। বেত্রকীয়ঃ ত্রি বেত্রসমূহযুক্ত-দেশাদিঃ । ইতি সিদ্ধান্তকৌ-সুদী ।।

त्विधतः प्रश्वात्रभावः। देखि स्वाप्तः॥ यस्मिशत्रक बि॥ व्यथात्रकः प्रश्वात्रभावः। देखि क्रिमतः॥

বেত্রবতী স্ত্রী নদীবিশেষঃ। ইত্যসরঃ ।। সা তু মালবদেশাৎ কালপীনাম নগরে ষমুনাবাং মিলিতা ।। বেত্রাসুরমাতা । যথা ।
বেত্রবত্যুদরে জাতো নামা বেভাসুরো ২তবৎ । ইতি বরাহপুরাণং ।।

বেত্রহা পু॰ ইক্র:। ইত্যনর:॥
বেত্রাবতী ন্ত্রী বেত্রবতীনদী।
যথা। তত্রান্যা দধতে জল• সুমধুর• কান্তিপ্রদ• পুর্কিদ•। বৃযা• দীপন পাচন• বলকর•বেত্রাবতী তাপিনী।। ইতি রাজ-

निर्मकः ॥

বেত্রাসন ক্লী বেত্রনির্মিতাসন । তৎপর্য্যাবঃ । আসন্দী ২। ইতি হেমচন্দ্রঃ ।।

বেজাসুরঃ পুশ স্বনামখ্যাতাসুরঃ । তস্যোৎপত্তি ৰ্যথা। মহাতপা উবাচ। আসীদ্রাজা পুরারাজ ন্ সিম্বুদীপঃ প্রতাপবান্। বা-রুণাণশো মহারাজাসৌ হরণে তপসি স্থিতঃ ॥ পুত্রো মে-শক্ত-নাশাষ ভবেদিতি মরাধিপঃ। এবং কৃতমতিঃ সো ২থ মহতা তপস। স্বকং ॥ কলেবরং স্থিরে। ভূত্বা শোষধামাস সুব্রতঃ। গ্র-জাপাল উবাচ। কথ তস্য জি **শ্রেষ্ঠ শক্তে**ণাপকৃত° ভবেৎ। ষেনাসৌ তদ্বিনাশায পুত্র মি চ্চ্ন্ ৰতে স্থিতঃ। মহাতপা উ বাচ। সো খন্য জন্মনি পুত্রো ২ভূৎ ছফু বলবতা বরঃ। অ বধ্যঃ সৰ্বশক্ত্ৰোদৈ রপাণ ফেনে न नानिष्ठः ॥ क्लाक्तिन नि হিত স্তন্মিল্লয নবাপুষা । পুন ৰ্জান্বযো জাতঃ সিন্ধুদীপেতি স'জ্ঞিতঃ ॥ স তেপে পরম' তী ब॰ भक रेवत मनुष्यतम् । ^छुः কালেন মহতা নদী বেত্রবতী

শুভা।। মানুষ ৰূপ মাস্থাৰ সা-লকারা মনোরম । আজগায যতো রাজা তেপে পর**মক**ণ ত-পঃ ॥ তা॰ দৃফু। ৰূপ সম্পন্না॰ म ताष्ट्रा क्रुक्तमानमः । উदाह কাসি সুশ্রোণি সত্য কথ্য ভা-মিনি।। নদ্যুবাচ। অহুণ জলপ-তেঃ পত্নী বরুণস্য মহাত্মনঃ। নামা বেত্ৰবতী পুণ্যা স্বা মিচ্ছ-স্তীহ আগতা ॥ সাভিলাষা পরস্ত্রীণ যো ভজমানাণ বিসর্জ-ষেৎ। স পাপপুরুষো জ্ঞেষো ব্ৰহ্মহত্যাঞ্চ বিন্দতি ।। এবং জ্ঞা-দ্বা নহারাজ ভজ্মানাণ ভজ্ম মা॰। এব মুক্ত স্তথা রাজা সা-ভিলাষোপভূক্তবান্।। তস্য স-দ্যো ২ভবৎ পুত্ৰো দ্বাদশাৰ্ক **সমপ্রভঃ। বেত্রবত্যুদরে জাতো** নামা বেত্রাসুরো ২ভবৎ ৷৷ বল-বানতিতেজস্বী প্রাগ্জোতিষঃ পতি ভবেৎ। স কালেন যুবা काट्या वनवान् मृहिवक्यः ॥ महारयारगन मण्यूरका जिगाय চ বসুন্ধরাণ। সপ্তদ্বীপবতীণ প-শ্চামেরপর্বত মারুহন্।। তত্তে-ন্দ্রণ প্রথমণ জিগ্যে পশ্চাদিমিণ ষৰ॰ ভতঃ। ইতি ব্রাহপুরাণে

দেব্যোৎপত্তি নামাধ্যাষঃ ॥ ..
বেত্রী পুণ দারপালকঃ। ইতি
হেমচন্দ্রঃ॥ বেত্রযুক্তে ত্রি ॥
বেথ ঋঙ যাচে। ইতি কবিকল্পদ্রমঃ॥ ও বেথতে। ইতি দুর্গাদাসঃ॥

द्यमः पुर विकुश्यक्षात्वा (वनविनव्यदन। (वनवन) (वन-वि९ कविः। इंछि विक्षू मश्मुनाम **-**স্তোত্ৰণ। বৃত্তণ। ইতিমেদিনী।। ক্বচিৎ পুস্তকে বিত্ত মিত্যপি পা-ঠঃ ।। ষজ্ঞাঙ্গ°। ইতি নানার্থর-त्रभाषा ।। भीनभंतीतावत्ष्रकार ভগবদ্বাক্য ৷ ইতি ন্যায়শাস্ত্র ৷ ৷৷ ধর্ম্মব্রহ্মপ্রতিপাদকমপৌরুবেষ-বাক্যণ। ইতি বেদান্তশাস্ত্রণ ॥ ব্ৰহ্মযুখনিৰ্গতধৰ্মজ্ঞাপকশাস্ত্ৰণ। ইতি পুরাণ ॥ তৎপর্য্যাযঃ। শ্রুতিঃ ২ আন্নাষঃ ৩। ইত্যমরঃ ।। ছন্দঃ ৪ ব্রহ্ম ৫ নিগমঃ ৬। ইতি শব্দরত্বাবলী ॥প্রবচন[,] ৭।ইতি क्रिवादः ॥ # ॥ विषया श्रीपृ-র্ভাবে। যথা । কদাচিৎ কথ मृक्गामीि भागरा बक्तरा মুখ চতুষ্টযেভ্য শ্চদ্বারো বে-দাঃ প্রাদ্রাসন্। যথা। একবি॰-শতিশাখাত্মক ঋক্ ১ শতশা-

প্ৰাত্মক যজুঃ ২ সহসুশাখাময। সাম ৩ নবশাধাময় অথর্ব ৪। ইতি পুরাণ ।। অপিচ। শ্রীমা-ক্তেষ উবাচ। তক্ষাদণ্ডাদ্বিনি-ভিন্নাদ্রক্ষণো হব্যক্তজন্মনঃ । ঋ-চো বভূবুঃ প্রথমণ প্রথমাদদনা-মুনে ।। জবাপুষ্পনিভাঃ সদ্য স্তেজোৰপা হস্প্তাঃ। পৃথ-ক্ পৃথিখিভিন্নাশ্চ রজে৷ৰূপা ম-হান্তনঃ ৷৷ যজু সি দক্ষিণাদ্বক্তা-मनिवन्नानि कानिष्ठि । यामृक বৰ্ণ তথা বৰ্ণান্যসংহতি চরাণি বৈ ।। পশ্চিমণ ষদ্বিভে। ৰ্ৰক্তুণত্ৰ-ক্ষণঃ পরমেষ্টিনঃ। আবিভূ তানি সামানি ততঃ সন্দ সিতান্যথ ॥ অথরাণ মশেষেণ ভৃঙ্গাঞ্চনচ্য-প্রভং ৷ যোরাঘোর স্বৰূপণ তদা-ভিচারিক শান্তিমৎ ৷৷ উত্তরাৎ প্রকটীভূত বদনাত্তত্র বেধসঃ। মুখ সন্তুতমঃ প্রায়ণ সৌম্যাসৌম্য স্বৰূপৰ ৭ ৷৷ ঋচে | রক্ষোগুণাঃ সন্তু-ষজুষাঞ্চ গুণো মূনে। তমো গুণা-নি সামানি তমঃ সত্ত্ব মথর্বসু॥ এ-তানি জুলনানানি তেজসাপ্র-তিমেন বৈ। পৃথক্ পৃথ্গবস্থান° ভাপ্তি পূৰ্ব নিবাভবৎ ৷৷ তত স্ত-मामा॰ यद्धक **७मिज्यक्**रिश-॥

সাতে। তস্যানুভাবাদুক্তেজ স্ত-মাণস্যাবৃত্য সংস্থিত ।। যথা যজ-ৰ্ম্ময়ণ তেজো যচ্চ সান্নাণ মহামু-নৈ ৷ একত্ব মুপযাতানি পরতেজ-সি সংশ্রষাৎ ।। শান্তিক পৌষ্টি-কৈঞ্বৈ তথা চৈবাভিচারিকণ । ৠ-গাদিষু লয়ণ ত্ৰহ্মণ স্ত্ৰিত্যণ ত্ৰিম্বথা-গৰৎ ৷৷ ততে৷ বিশ্বমিদ° সদ্য স্ত-মোনাশাৎ সুনির্মল । বভাব-তীব বিপ্রর্ষে তির শ্চোর্দ্ধ মধস্ত-থা।। তত স্তন্মওলীভূত॰ ছান্দস॰ তেজ উত্তমং৷ পরেণ তেজসা ব ন্ধন্ একত্ব মুপগম্য তৎ ॥ আদি-ত্য সংজ্ঞা মগ্মদাদাবেব যতে **২ভবৎ !বিশ্বস্যাস্য মহাভাগ** কা-রণ ঞ্চাব্যযাত্মক ।৷ প্রাত র্মধ্য-ন্দিনে চৈব তথা চৈবাপরাঙ্কিকে 1 ত্ৰষী তপতি সা কালে ঋঃজুঃ সাম সংজ্ঞিতা ॥ ঋচ স্তপন্তি পূ बीदः यथादः ह यकुः मि देव। সামানি চাপরাক্লে তু তপন্তি মু-নিসত্তম ৷৷ শান্তিক গাক্ষু পূৰ্বায়ে যজুংস্বন্চ পৌষ্টিকং। অপরায়ে স্থিত নিত্য সামস্বেবাভিচারি ক॰ ।। সৃষ্টো চ ঋত্মহো ব্ৰহ্ম छि-তৌ বিফু র্যজুর্মাযঃ। রুজঃ সাম্ম-যোত্তে চ তত্মাত্তস্যাশুচি ধনিঃ

॥ তদেব जगवान् जायान् त-দাত্মা বেদসপস্থতঃ। বেদবিদ্যা-ত্মক শৈচব পরঃপুরুষ উচ্যতে ॥ সর্গ স্থিত্যম্ভ হেতুঃ স রজঃ সন্ত্বা-দিকৈ প্ৰবৈঃ। আশ্ৰিত্য ব্ৰহ্ম বি-ষ্ণুাদি সংজ্ঞ। মভ্যেতি শাস্বতঃ ॥ व्यक्तिः न विनाः न जू विनमृर्जि রমুর্জি রাদ্যো ২খিল বিশ্বমূর্জিঃ। বিশ্বাশ্রয়ণ জ্যোতি রবেদ্যবর্ত্ম। ধর্মাবদাতঃ পরমঃ পরেভ্যঃ ॥ ইতি শ্রীমার্কণ্ডেযপুরাণে সূর্য্যমা-হায়ো সূর্য্যোৎপত্তি নামাধ্যাযঃ ।। 🕸 ।। অন্যক্ত। অক্টাবিংশে পু-নঃ প্রাপ্তে হৃদ্মিন্ বৈ দাপরে দ্বিজাঃ। পরাশরসুতো ব্যাসঃ কৃষ্ণ দ্বৈপাষনো ২ভবৎ ৷৷ স এব সর্ব বেদানা পুরাণানা প্রদ-শ্কঃ। পারাশর্যো নহাযোগী কৃষ্ণ দ্বৈপাযনে। হরিঃ ।। আরাধ্য দেব মীশান দৃষ্ঠা সাম্ব ত্রিলো-**চন** । ত< প্রসাদাদসৌ ব্যাসো বেদানা মভবৎ প্রভুঃ ৷৷ অথ শিষ্যান্ প্রজগ্রাহ চতুরো বেদ-পার শান্। জৈমিনিঞ্ নুমস্তঞ্ বৈশস্পায়ন মেব চা৷ পৈলং তে-যা চতুর্থঞ্চ পঞ্চম মা মহামুনিঃ । ঝথেদ প্রাবকণ গৈলণ প্রজ্ঞাহ 🖠

মহামুনিঃ ॥ ফজুর্বেদ প্রবক্তার্ বৈশস্পায়ন মের চ। জৈমিনি॰ সামবেদস্য প্রাবকণ সো হস্বপদ্য-ত।। তথৈবাথৰ বেদস্য সুমন্ত মৃষি সত্তম । ইতিহাস পুরাণানি প্রব-ক্তৃণ মা মধোজষৎ।। এক আসী-मयजूर्यम उक्ष्यूकी राक्षय । চাতুর্হোদ্র মভূদ্যস্মিণ স্তেন যজ্ঞ মথাকরোৎ।। অধ্বর্য্যব॰ যজুর্ভিঃ ম্যাদৃ ণ্ডি হোঁত্র দ্বিজোত্তমাঃ। ঔদ্যাত্রণ সামভি শ্চক্রে ব্রহ্মত্বঞ্চা-প্যথৰ্বভিঃ ৷৷ ততঃ স ঋচ উদ্ধৃত্য ঋথেদ॰ কৃতবান্ প্রভুঃ । যজু॰ বি চ ষজুৰ্বেদ॰ সামবেদঞ্চ সামভিঃ॥ একবিংশতি ভেদেন ঋধেদং কৃত-বান্ পুরা। শাখানাম্ব শতেনাথ -যজুর্বেদ মথাকরোৎ ৷৷ সামবেদ॰ সহসেণ শাখানাঞ্ বিভেদতঃ । অথৰ্বাণ মথো বেদ বিভেদ নব-কেন তু॥ ভেদে রফাদশৈ ব্যাসঃ পুরাণ কৃতবান্ প্রভুঃ। যো ২য মেক শতুম্পাদো বেদঃ পূৰ্বণ পু-রাতনাৎ ৷৷ ওঁকারো ব্রহ্মণো জা-তঃ স দোষবিষশোধনঃ। বেদ-বেদ্যে। হি ভগবান্ বাসুদেবঃ স-নাতনঃ।। স গীষতে বরো দেবো যো বেদৈন॰ স বেদবিৎ। এতৎ

পরতর॰ বন্ধজ্যোতি রানন্দ সুত্ত-'ম' ॥ বেদবাক্যোদিত তত্ত্ব বা-मुरम्वः भद्गः भमः । विमरविषा মিদ বেজি বেদ বেদ পরে। মূনিঃ ।। অবেদ পরম বেত্তি বেদনি % তমেৰাশ্ৰিত্য মুচ্যতে।। ইত্যেতদ-ব্দর° বেদ্য মোক্ষার° বেদ মব্যয°। অবেদঞ্চ বিজ্ঞানাতি পারাশর্ব্যো মহামুনিঃ।। ইতি কৌর্মে ৪৯ অ-शायः ॥ 🗰 ॥ त्यमाश्रयनशांखः यथा। बाम छेवाह। अव॰ मखानि-ভিযুক্তঃ শৌচাচার সমন্বিতঃ। আহুতো ২ধ্যয়ন প্রব্যাদীক্ষা-(वा श्रंद्रा सूथ ।। निज मूमाठ-পাৰি: স্যাৎ সাধাচারঃ সুসংযতঃ । স্বাস্যতা মিতি চোক্তঃ সন্নাসী-তাভিমুখ গুরোঃ ॥ প্রতিশ্রবণ সম্ভাবে শ্বানো ন স্মাচরেৎ। নাসীনো নচ ভুঞ্চানো ন ভিষ্ঠ-ম পরাজ্যখঃ ।। নীচ॰ শব্যাসন॰ **ठामा मर्बेण** छक्र मन्निरशे। ७-(द्रा ख ठक्कुर्विष्ट्य न यटथकोन-ता ज्व ॥ तामाद्वामग নাম পরোক্ষমপি কেবল । নীউচ বাস্যানুষৰী ত গতি ভাষিত চে-ষ্টিত ।। গুরো র্যত্ত পরীবাদে। নি-

ন্দা বাপি প্রবর্ততে। কণে তত্ত পিধাতব্যৌ গস্তব্যং বা ততো ২-नाजः ॥ मृत्रस्य नार्फरयत्मनः न कुरका नोखिरक जिप्ताः। नहिः বাস্যোত্তর ব্রুষাৎ স্থিতে নাসী-**७ मित्रो।। উদসত্ত अना**न् शू-ষ্পা॰ সমিধোস্যাছরেৎ সদা। মা-জ্জন লেপন নিত্য মঙ্গানা বৈ-मयोठ देश ।। नामा निर्माला भ যন॰ পাদুকোপানহাবপি। না-कारमामनकामा ছायामीन् व কদাচন ৷৷ সাধ্যেদ্দস্তকাণ্ঠাদীন্ লব্ধপালৈ নিবেদষেৎ। অনাগৃ-চ্ছ্মগন্তব্য॰ ভবেৎ প্রিযহিতের-ण्डा। न भार्ति। शावरयममा मिश्नि নে কদাচন। জৃম্ভিত হসিতকৈ ব কণ্ঠ প্রাবরণ তথা ৷৷ বর্জ্জণেৎ সমিধৌ নিত্য স্বক্ষোটন মেব-চ। ষথাকাল মধীষীত যাবম বি-মনা গুৰুং ৷৷ আসীতাধো গুরো-र्मर्ल्ड क्वरक वा मगाहिकः। या-मत्न मयत्न यात्न् देनत् जित्रेष কথকন।। ধাবস্ত মনুধাবেত গ-চ্ছস্ত মনুগচ্ছতি। গোমোফু যা न आजाम अखदायु करियू ह।। আসীত গুৰুণা সাৰ্দ্ধণ শিলাফল-क तोयू ह। जिल्लियः मा

সতত বশ্যাত্মাকোধনঃ শুচিঃ ॥ প্রবৃঞ্জীত সদা বাচণ মধরাণ হিত-कार्तिभी । गन्न भावा । तम क-ন্যাণ শুক্তণ প্রাণিবিহিণসন ।। অভ্যন্ধ কাঞ্জনোপানচ্চল্রধারণ মেব চ। কামণ লোভণ ভ্ৰযণ নি-দ্রা॰ গীত॰ বাদিত্র নৃত্যক॰ ॥ আ-তর্জন পরীবাদ স্ত্রীপ্রেক্ষালভ-ন স্তথা। পরোপঘাত পৈশুন্য॰ প্রযন্ত্রেন বিবর্জ্জবেৎ।। উদস্তত্ত সুমনসো গোশকৃমৃত্তিকা স্বশা-न्। वाश्रतस्यायमर्थानि रेजक-ঞাহার মাচরেৎ 11 কৃতঞ্চ লবণ সৰ্ৰণ বৰ্জ্যণ পয়্য বিতঞ্চ যৎ। অ-নৃত্যদশী সতত ভবেদশীতাদি-নিস্পৃহঃ৷৷ নাদিত্যং বৈ সমীক্ষেত नाष्ट्रतम् उधावनः ॥ এकाख म-শুচিন্ত্রীভিঃ শূদ্রাস্ত্যৈ রভিভা-ৰণ ৷৷ গুৰুচ্ছিষ্ট ভৈষজাৰ্হণ প্ৰ-ভূঞ্জীত ন কামতঃ। মলাপকর্ষণ শান নাচরেদ্ধি কথঞ্চন ।। ন জ-ৰ্য্যান্মানসং বিপ্ৰ গুৱো স্ত্যাগে ক-থঞ্চন। মোহাদ্বা যদিবা লোভা-ত্যক্তেন পতিতো ভবেৎ ৷৷ লৌ-কিক বৈদিকঞ্চাপি তথাখ্যাত্মিক মেব বা ৷ আদদীত যতো জ্ঞানণ তম ক্রছেৎ কলাচন ৷৷ গুরোর-

প্যবলিश্বস্য कार्य्याकार्य्य मञ्जा-নতঃ ৷ উৎপথপ্রতিপন্নস্য মনু-স্ত্যাগণ সমত্রবীৎ ।। গুরে। গুরোঃ সন্নিহিতে গুৰুবদৃত্তি মাচরেৎ । न हा विमृष्ठे छङ्गा सान् छकान-**ভিবাদযে** ।। विদ্যাগুরুদ্বেত-দেব নৃত্য বৃত্তি স্বযোনিষু। প্র-তিষেধান্নচাধর্মা দিজকোপদি-শৎস্বপি ৷৷ শ্রেষঃ স্বগুরুবদৃত্তি মিত্যমেব সমাচরেৎ। গুরুপুত্রে-यू मारतयू छरता टेन्टर खरकुयू ii বালঃ সমানজন্মা বা শিষ্যো বা ষজ্ঞকর্মণি। অধ্যাপযন্ গুরুস্-তো গুরুবন্মান মর্হতি ৷৷ উৎসা-দন॰ বা গাত্রাণা॰ স্নপনোচ্ছিফ্ট-ভোজনে। ন স্ব্যাদ্গুরুপুলুস্য পাদযোঃ শৌচ মেব চ ৷৷ গুরুবৎ প্রতিপূজ্যান্ত সবর্ণা গুরব তথা। অসবৰ্ণাস্ত সংপূজ্যাঃ প্ৰত্যুত্থানা-ভিবাদনৈঃ।৷ অভ্যঞ্জন॰ স্নাপনঞ্চ গাত্রোৎসাদন মেব চ । গুরুপত্ন্যা ন কার্য্যাণি কেশানাঞ্চ প্রসাধনণ ॥ গুরুপত্নীন্ত যুবতী॰ নাভিবাদ্যে-ত পाদरबाः। अबी उ वन्मनः जु-মাবেষো ২হ মিতি চা ব্রুবন্ ।। বি-প্রো ২ স্যপাদগ্রহণ মন্বহঞ্চাভিবা-मन[•]। श्वक्रंमादियु अदी ज मजा•

ধর্ম মনুম্মরন্ ॥ মাতৃস্বসা মাতৃ-লানী স্বশ্রু শ্চাথ পিতৃঃস্বসা। প্র-পুজ্যা গুরুপত্নী চ সমা স্তা গুরু-ভার্য্যয়। ।। ভ্রাতৃভার্য্যোপসংগ্রা-श। স্বর্গাহন্যহন্যপি । বিপ্রস্য তূপসংগ্ৰাহ্য জ্ঞাতি সম্বন্ধি যো-ষিতঃ ॥ পিতু ভগিন্যা মাতুশ্চ জ্যাষস্যাঞ্চ স্বসর্যাপ। মাতৃবদৃ-ত্তি মাতিপ্তেমাতা তাভ্যো গরীয-সী ৷৷ এব মাচারসম্পন্ন মাত্মবশ্য यमाखिकः । दिनयभग्राश्रद्यक्तर्याः পুরাণাসানি নিত্যশঃ ৷৷ তথা চি-রোষিতে শিষ্যে গুরু র্জ্ঞান মনি-দ্দিশন্। হরতে দুষ্ঠত তস্য শি-যানৈয়ৰ ততো গুৰুঃ।। আচাৰ্য্য পুত্ৰঃ শুশ্ৰুষু জ্ঞানদো ধাৰ্মিকঃ শুচিঃ। আপ্তঃ শক্তো হর্থদঃ সাধু রধ্যাপ্যা দশ ধর্মতঃ ॥ কৃতজ্ঞক তথাজোহী মেধাবী শুভকুমরঃ ৷ আপ্তঃ প্রিষোথ বিধিবৎ ষড-ধ্যাপ্যা দিজাত্যঃ ॥ এতেমু ব্ৰ**ন্ধ**-ণো দান মন্যত্র তু মথোদিতাৎ 1 # । दिनाधायनविधि र्यथा । আচম্য সংষতো নিত্য মধীয়ীত উদশ্বখঃ ৷৷ উপসংগৃছ তৎপাদৌ वीक्रमारना श्रद्धाः मूथः। व्यवीख ভো ইতি জ্যাদিরামো ২ন্তিতি

চারমেং ৷৷ প্রাক্ ভূতান্ পয্যু পা-সীনঃ পবিত্রৈ শৈচব পাবিতঃ। প্রাণাযামে স্ত্রিভিঃপূত স্তত ওঙ্কা-র মর্হতি ৷৷ ত্রাহ্মণঃ প্রাণবং স্বর্যা-मटल চ विधिविष्टिकाः। कर्याम-ধ্যাপন॰ নিত্য॰ স ব্রহ্মাদীনি পূ-ৰ্বতঃ ॥ সৰ্বেষা মেব ভূতানা॰ দে-ব শ্চক্ষুঃ সনাতনঃ। অধীতানধ্য-যমিত্য প্রাহ্মণ্যাদ্ধীয়তে ন্যথা।। অধীযীত ঋচো নিত্যু ক্ষীরাহত্যা সদেবতাঃ।। প্রীণাতি তর্পযস্ত্যে-ন॰ কামৈ স্ভৃপ্তাঃ সদেবতাঃ।। स জূ'স্যধীতে নিষত' দধ্য প্রীণা-তি দেবতাঃ। সামান্যধীতে প্রী-ণাতি পৃতাহুতিভি রম্বহু ।। অর্থ-ৰ্বাঙ্গিরসো নিত্য মধা প্রীণাতি দেবতাঃ । ধর্মার্থঞ্চ পুরাণানি মা॰সৈ স্তর্পষতে সুরান্।। অপা॰ সমীপে প্রয়তো নৈত্তিক বিধি মাশ্রিত: । গাষত্রী মপ্যধীষীত পত্মারণ্য॰ সমাহিতঃ।। সহসুপর-মা॰ দেবী॰ শতমধ্যা॰ দশাবরা॰। গায়ত্রীণ বৈ জপেমিত্যণ জপ ব-জ্ঞঃ প্ৰকীৰ্ভিতঃ ॥ গাযত্ৰী কৈব বেদাস্চ তুলযা তোলয়ং প্রত্তু । একত শচতুরো বেদান্ গাযতী-क ত्रिथकजः ॥ अकात मानिजः

কৃত্বা ব্যাহ্মতী স্তদনন্তরণ। ততো **২ধীষীত সাবিত্রী মেকাগ্রঃ শ্রন্ধ**-যান্বিতঃ ।। পুরাকন্দে সমুৎপন্না-ভূ ভূবঃ স্বঃ সনাতনাঃ। মহা-ব্যাহ্বতথঃ স্থিসুঃ সর্বাশুভনিব-ৰ্হণাঃ ॥ প্ৰধান• পুৰুষঃ কালো ত্রন্ধ বিষ্ণু মহেশ্বরাঃ । সত্ত্ব রজ স্তম স্তিসুঃ ক্রমাদ্যাহতযঃ স্মৃতাঃ ।। ওকার স্তৎ পর॰ বন্ধ সাবিত্রী স্যাত্তদকরে । এব মন্ত্রো মহাভা-গঃ সারাৎসার উদাহ্বতঃ ৷৷ যো **২ধীতে ২হন্যহন্যেতা**° সাবি-ত্রী॰ বেদমাতর॰। বিজ্ঞাযার্থ॰ ব্র-ষ্ণচারী স যাতি পরমাণ গতিণ। গাৰ্যত্ৰী বেদজননী গাৰ্যত্ৰী লো-কপাবনী। ন গাযত্র্যাঃ পর জ-প্য॰ এতদ্বিজ্ঞায মুচ্যতে ॥ শ্রাব-ণস্য চ মাহাস্য পৌর্ণমাস্যাণ দ্বি-জোত্তমাঃ। আষাঢ্যাণ প্রৌষ্ঠপ-मा। वा विप्ताशिकत्रत्व सृष्ठः ॥ উৎসৃজ্য গ্রাম নগর মাসান্ বি-প্রো ২ দ্বপঞ্মান্। অধীষীত শু-চৌ দেশে ত্রন্মচারী সমাহিতঃ। পুষ্যে তু ছন্দসা প্ৰয্যাত্বহি ৰুৎ-मर्ब्बराष्ट्रिकः। याच खक्रमा जू थाएक भूबाद्ध अथरम २ इनि ॥ रुणा नार्क् मर्था क्ला ए एक्ल

क्ष जू देव बिकः'। विमानानि भू-রাণানি কৃষ্ণপক্ষে তু মানবঃ ॥ ইমান্নিত্যমনধ্যাযানধীয়ানো বি-চক্ষণঃ। অধ্যাপনঞ্চ স্বাণো অ-ভ্যস্যন্ধপি যত্নতঃ॥ কর্ণশ্রবে ২নি-লে রাত্রৌ দিবা পাণ্শু সসূহনে। বিদ্যুৎ স্তনিত সৰ্বেষু মহোক্ষানা-ঞ্চ সংপ্লবে ।। আকালিক মনগ্যায মেতেঘাহ প্রজাপতিঃ। এতান-जुरिकान् विमानसमा आमूक्छा-शियू ॥ তদা विमाननशाय यम्-তৌ চাত্র দর্শনে। সজ্যোতিঃ স্যা-मनशायः भारत त्रात्वी यथा मिता ॥ নিত্যানধ্যায় এব স্যাৎ গ্রামে-ষু নগরেষু চ। ধর্মনৈপুণ্যকামা-না॰ পূতিগদ্ধেষু নিত্যশঃ ৷৷ অস্তঃ শবগতে গ্রামে বৃষলস্যৈব সন্ধি-ধৌ। অনধ্যাযো রুদ্যমানে সম-वार्य जनमा ह ॥ উদকে यशा রাত্রে চ বিশুত্রস্য বিসর্জ্জনে। উ-চ্ছিফঃ শ্রাদ্ধ ভুক্তৈব মনসাপি ন চিন্তবেৎ ।। প্রতিগৃহ্ দিজে। বি-দ্বানেকোদ্দিস্টস্য কেতন ৷ ত্য-হু ন কীর্ত্তযেদ্রুক্ষ রাজ্ঞো রাহ্যে-**म्ठ मृ** ज्वा ।। यावत्मका अमू खे-স্য স্নেহো লেপশ্চ তিগ্ঠতি। বি-প্রস্য বিদুষো দেহে তাব্দুক্ষ ন कोर्डरबद्धा गयानः त्थारमान শ্চ ভথা চৈৰাবশক্থিকঃ। না-ৰীৰীতামিৰ জগ্ধা সূতকালাদ্য মেব চ।। নিরাহারে বাণশব্দে স-স্ক্যবো রুভবো রপি। অমাবাস্যা চতুৰ্দশ্যোঃ পৌৰ্নমাস্ট্নীৰু চ য় উপা**কর্মণি চো**ৎসর্গে ত্রিরাত্ত॰ **ক্ষপণ স্মৃত্ত । অক্ট**কাসু স্বহোরা-ब मृष्छाम् ह दाविष्।। मार्गमी-ৰ্বে তথা পৌষে মাঘমাসে তইথব চ। তিসেু। ২উকাঃ সমাখ্যাতাঃ কৃষপক্ষেষু সূরিভিঃ।। শ্লেমাতক-স্য চ্ছাযায়া শাললে ম্ঘকস্য চ 1 कमाहिमिला बारशाय° काविमा-त्र क्लिश्रकाः ॥ नमानविक्ता जू দৃতে তথা সত্রক্ষচারিণি। আচা-র্ব্যে সাস্থিতে বাপি ত্রিরাত্ত॰ ক-পণ স্মৃত ৷৷ ছিদ্রাণ্যেতানি বি-প্রাণাণ ষেংনধ্যাষাঃ প্রকীর্ত্তিতাঃ ৷ হিণ্সন্তি রাক্ষ্সা স্তেযু তন্মাদে-তানি বৰ্জ্জবেৎ।। নিত্যকেনাস্ত্য-নধ্যাবঃ সন্ধ্যোপাসন এব চ। উ-পাকৰ্মণ কৰ্মান্তে হোম মন্ত্ৰে ত-दৈশব চা। একামৃত মধৈক বা य-कः नामाथ वा भूनः। व्यक्तिमा **স্বধীবীত সাৰুতে** চাতি বাৰতি॥ विनशायक नात्त्रयू निर्हिशन

পুরাণবোষ। न ধর্মশান্তে ঘন্যে পৰ্বস্বেতানি বৰ্জ্জধৈৎ ॥ 🛊 ॥ এষ ধর্মঃ সমাসেন কীর্ত্তিতো বন্ধচা রিণাণ। ত্রহ্মণাভিহিতঃ পূর্ব সৃষীণা ভাবিতাত্মনাণ্যা যোন্যত্র স্কৃতে ৰত্ন মনধীত্য শ্ৰুতি দ্বিজাঃ। স সংস্থান সংভাষ্যো বেদবাছে **ৰিজাতিভিঃ ।৷ ন বেদপাঠ মা**ত্ৰে-ণ সন্তুষ্টো বৈ ভবেৎ দ্বিজঃ গোঠ মাত্রাবসমস্ত পক্ষে গৌরিব সীদ-তি ৷৷ অধীত্য বিধিবছেদ বেদা র্থণ ন বিচারযেৎ। স সাম্বয়ংশুড **কল্পঃ পাত্ৰতা॰ ন প্ৰপদ্যতে**॥ গ-ঠিম্বাত্যস্তিক বাস কর্ত্ব নিছ্তি देव श्वदताः । युक्तः शतिष्ठदत्रदाननः न नद्गीत विरमाकन ।। भवा वन रवा विधिवब्कुश्याब्काञ्यानमः। অধীষীত সদা নিত্য ৰন্ধনিষ্ঠঃ সমাহিতঃ ॥ সাবিত্রী॰ শতরুদ্রীয॰ विमाखाः क वित्नविकः। अज সেৎ সতত মুক্তো ভন্মনান প রাষণঃ।। এতিৰিধান পরসং পুর বেদাগনে সম্যগিছেরিত
 বঃ । পুরা মহর্ষি প্রবরাতিপৃষ্টঃ স্বায-खूटवा यम्बार स्व ॥ अज्मी শ্বর সমীরিত নরো যো ২নুতি कि विशि विशासविश । या इका ग

মপহায় সো মৃতো যাতি তৎ পদ মনাময়ণ শিবণ ৷৷ ইতি কৌ-র্মে উপরিভাগে ১৩ অধ্যাযঃ ॥ 🟶 🛚 অথ ঋগ্বেদস্য সংহিত। । বিভেদ প্রথমণ বিপ্র পৈল ঋথেদ পাদপণ। ইন্দ্রপ্রমিতফে প্রাদাৎ বাক্ষলায় চ সংহিতে ৷৷ চতুৰ্দ্ধা স বিভেদাথ বাস্কলে৷ নিজ সংহি-তা ৷ বোধ্যাদিভ্যো দদৌ তাস্ত শিষ্যেভ্যঃ স মহামতিঃ ৷৷ বোধ্যা-মি মাতুরৌ তদ্বৎ জাতুকর্ণ পরা-শরৌ। প্রতিশাখাস্ত শাখাষা স্ত-স্যা স্তে জগৃহু মূনে॥ ইন্দ্রপ্রমি-তি রেকাম্ব সংহিতাং স্বসূতং ততঃ । মাণ্ডুকেষ মহাক্সান দৈত্রেষ।-ধ্যাপয়ত্তদা।। তদ্য শিষ্য প্রশি-ষ্যেভ্যঃ পুত্রশিষ্য ক্রমান্দ্রযৌ । বেদমিত্রস্ত শাকল্যঃ সংহিতাং তা মধীতবান্।। চকার সংহিতাঃ পঞ্চ শিষ্যেভ্যঃ প্রদদৌ চ তাঃ। তস্য শিষ্যাশ্চ যে পঞ্চ তেষা॰ না-गानि त्य भृगु।। मूकातना रगाथनु-শ্চৈব বাৎস্যঃ শালীষ এব চ। শৈশিরঃ পঞ্চম শ্চাসীন্মৈত্তেয সু-মহামতিঃ।। সংহিতাত্রিত্য ঞ্জে শাকপূর্ণি রথেতরঃ। নিরুক্ত মক-রোভদকতুর্থ মুনিসত্তম ৷৷ ক্রো-

ঞ্চো বৈতালিক স্তদ্বদলাকশ্চ ম: হামতিঃ। নিরুক্তকৃচ্চতুর্থো ২ভ-দ্বেদ বেদাঙ্গগারগঃ॥ ইত্যেতাঃ প্ৰতিশাখাভ্যো হুনুশাখা দ্বিজ্ঞো-ত্তম। বাক্ষলি শ্চাপরা স্তিসুঃ স॰-হিতাঃ কৃতবান্ দ্বিজঃ ।। শিষ্যঃ कालायनि गांगा खृठीयक ठथा জবঃ। ইত্যেতে বস্তৃচাঃ প্রোক্তাঃ সংহিত। ধ্যৈ প্রবর্ত্তিতাঃ ॥ ইতি ৰিফুপুরাণে ৩ অংশে বেদবিভ-कि नीम 8 अधायः ॥ #॥ यकु-र्दिनगा म॰श्ठि। यथा। यजूर्दिन তরোঃ শাখাঃ সপ্তবি৽শন্মহাম-তিঃ। বৈশম্পাযন নামাসে ব্যা-সশিষ্য শ্চকার বৈ । শিষ্যেভ্যঃ প্রদদৌ তাশ্চ জগৃহু স্তে ২প্যনু-ক্রমাৎ ৷৷ যাজ্ঞ্যবন্ধ্যস্ত তস্যা ভূ-ৰুন্ধরাত সুতে। দ্বিজ। শিষ্যঃ প রমধর্মজ্যে গুরুবৃত্তিপরঃ সদা ।৷ ঋষি র্যো ২দ্য মহামেরোঃ সমাজে নাগমিষ্যতি। তস্য বৈ সপ্তরাত্র-ম্ব বন্ধহত্যা ভবিষ্যতি । পূৰ্বমেব মুনিগণৈঃ সমযো ২য° কৃত দিজ য় বৈশম্পায়ন একস্ত ত ব্যতি ক্রান্তবাণ স্ততঃ। স্বস্ত্রীয়ণ বালকণ সোথ পদা স্পৃক্ত মহাতৰৎ ॥ স শিষ্যানাহ ভোঃ শিষ্যাঃ বন্ধহ-

জ্যোপহ• বত । চরধ মৎকৃতে। সর্বে ন বিচার্য্য মিদ॰ তথা ॥ অ-খাহ যাজ্ঞবন্ধ্য স্ত্ৰুণ কিমেভি ৰ্ভগ-বন্ দ্বিজৈঃ। ক্লেশিতৈ রন্ধতেজো-ভি শ্চরিয্যেহ মিদণ ব্রত্তণ ॥ ততঃ क्षा शकः थार योख्यका म-হামতি । মুচ্যতা যৎ ন্বযাধীত 'মত্তে। বিপ্রাবমন্যক । নিস্তেজ-সো বদস্বেতান্ য স্তৃ॰ ত্রাহ্মণ পু-ঙ্গবান্। তেন শিষ্যেণ নার্থোস্তি মগাজ্ঞা ভঙ্গকারিণা ৷৷ যাজ্ঞবঙ্ক্য স্ততঃ প্ৰাহ ভক্ত্যৈতত্ত্বে মধোদি-তং৷ নমাপ্যলং ম্বাধীতং যন্ম্যা তদিদ॰ দ্বিজ ৷৷ শ্রীপবাশর উবাচ ৷ ইত্যুক্ত্বা ৰুধিরাক্তানি স্বৰূপাণি यकृ॰िव मः। इर्क्तविषा मरमो ত-टियं यरयो ह स्थिष्ट्या मूनिः ॥ य-कु गाथ विम्छानि बाक्डवत्कान বৈ দিজ। যগৃহ স্তিতিরা ভূষা তৈত্তিরীযান্ত তে ততঃ।। বন্ধই-ত্যা ব্ৰত চীৰ্ণ গুৰুণা চোদিতৈ ম্ভ বৈঃ। চরকাধর্য্যব স্তে তু চ-রণাশুনি সত্তম ৷৷ ষাজ্ঞবক্ষ্যোপি সৈত্রেষ প্রাণাষাম পরাষণঃ । তু-কাৰ প্ৰৰতঃ সূৰ্য্যণ ৰজুণ্যাভিল-य॰ खड़ः ॥ श्रीयाद्धवद्धा উवाচ। ননঃ সবিত্তে দ্বারাষ মুক্তে রমিত- 🎚

তেজনে। ঋয়জুঃ সাম ভূতাযত্ত্ৰ-যীধামবতে নমঃ।। শ্রীপরাশরউ. বাচ। ইত্যেব মাদিভি স্তেন স্তৃষ্ মানঃ স্তবৈ রবিঃ। বাজিকপর্যরঃ প্রাহ ব্রিয়তা মভিবাঞ্ছিত ॥ যা-জ্ঞবন্ধ্য স্থতঃ প্রাহ্ প্রণিপত্য দি বাকরণ। যজূণষি তানি মে দেহি যানি সন্তি ন মে গুরৌ ॥ এপ तानत उवाठ। এवमूरका मरमो **उटेन्रा** य कृषि जगवान् त्रविः । অযাত্যাম স'জ্ঞানি যানি বেত্তি न তদ্গুরুঃ ॥ यकृः यि देश देशी-তানি তানি বিপ্রৈ র্দ্বিজোত্য। বাজিৰ স্তে সমাখ্যাতাঃ সূর্য্যো ২শঃ সো ২ভ্যবদ্যত ৷৷ শাখাভে দাস্ত তেষা॰ বৈ দশপঞ্চ বা-জিনা । কাণাদ্যাঃ সুমহাভাগ যাজ্ঞবন্ধ্য প্রবর্ত্তিতাঃ ॥ ইতি শ্রী বিষ্ণুপুরাণে ৩ অংশে বাজিনা गार्थानः ७ व्यथायः ॥ #॥ সামবেদস্য সংহিতা যথা ৷ সাম (वम् छद्राः भाश वामिषाः म জৈমিনিঃ। ক্রমেণ যেন মৈত্রেয বিভেদ শৃণু তন্মম ৷৷ সুমস্ত্ৰ স্তস্য পুক্রো ২ভূৎ সুদ্বানপ্যস্য বৈ সু তঃ। অধীতবস্তা বেকৈকাণ সংহি-তা॰ তৌ **ষ**হামুনী॥ সাহসু॰ স॰-

হিতাভেদ পুকর্মা তৎসুত স্ততঃ । চকার তঞ্চতচ্ছিষ্যৌ জগৃহাতে মহাব্রতৌ ॥ হিরণ্যনাভিঃ কৌ-শল্যঃ পৌষ্যঞ্জিশ্চ দিজোত্তমঃ ৷ উদীচ্যাঃ সামগাঃ শিষ্যা স্তস্য প-ষ্ণপতাঃ স্তাঃ ।। হির্ণানাভা-ত্তাবত্যঃ সংহিতা যৈ ৰ্দ্বিজোত্তম । গৃহীতা স্তেপি চোচ্যস্তে পণ্ডি-তৈঃ প্রাচ্য সামগাঃ ৷৷ লোকাক্ষিঃ ঙ্গুথমি শৈচব ঙ্গুখীদি লাঙ্গুলি স্তথা । পৌষ্যঞ্জিশিয্য। স্তন্তে দেঃ স॰-হিতা বহুলীকৃতাঃ ৷৷ হিরণানাভ শিব্যশ্চ চতুর্বি॰শতি সংহিতাঃ। প্রোবাচ কৃতিনামাসে শিয়েভ্যঃ সুমহামতিঃ॥ তৈ শ্চাপি সামবে-দো ২দো শাখাভি বহুলীকৃতঃ। 🟶 ।। অথৰ্ব বেদস্য সংহিতা যথা। অথৰ্বণা মথো বফ্যে সংহিতানাঁণ मगुष्ठयः। অथर्द्धतिमः म मूनिः मू-মন্ত রমিতদ্যুতিঃ ।। শিষ্য মধ্যা-প্যামাস ক্রম্ব সোপি তদ্বিধা । कृषा जू त्रममर्भाय उथा शर्या।-य मखवान्।। विषमर्भगा निया च्छ त्यारमा बन्नविन खथा १ त्नी-कायनिः शिश्रनाम ख्रेशान्तर्गं म्-নিসত্তমঃ ৷৷ পথ্যস্যাপি ত্রয়ঃ শি-ষাঃ কৃতা ধৈ ৰিজ সংহিতাঃ।

काजनिः अगूमामिन्छ ज्ञीयः শৌনকো দ্বিজ।।শৌনক স্তদ্দ্বিধা কৃষা দদাবেকাম্ব বভুবে। দিতী-ষা প্ৰাছতা প্ৰাদাৎ সৈদ্ধবাষন সংজ্ঞিনে।। সৈশ্ববা মুঞ্জকেশাশ্চ ভিন্নবেদা দ্বিধা পুনঃ। নক্ষত্রক-**ন্ধ্যোবেদানা° স°হিতান।** স্ত**থৈ**ব চ ৷৷ চতুর্থঃ স্যাদঙ্গিরসঃ শান্তিকল্প-শ্চ পঞ্চমঃ শ্রেষ্ঠা শ্চাথর্বণা মেতে সুংহিতানাং বিকল্পকাঃ। ইতি বি-ফুপুরাণে ৩ অংশে ৬ অধ্যাযঃ। অন্যৎ কূর্মপুরাণবৎ।। ৠ।। অপ-রঞ্চাবেদে। হরে র্বাক্ সাবিত্রীবে-দমাতা প্রতিষ্ঠিত। । ত্রিগুণঞ্চ ত্রি-বৃৎসত্ৰ॰ তেন বিপ্ৰাঃ প্ৰতিষ্ঠিতাঃ া দশযজ্ঞৈঃ সংস্কৃতা যে ত্ৰান্ধণা ব্ৰহ্মবাদিনঃ। তত্ৰ বেদাশ্চ লো-কানা অষাণা মিহ পোষকাঃ।। **যজ্ঞাধ্যযন দানাদি তপঃ স্বা**ধ্যায সংযমৈঃ ৷ প্রীণযন্তি হরিণ ভক্ত্যা বেদ তন্ত্ৰ বিধানতঃ॥ ইতি কল্কি-**भूतात्व २ अक्षायः ॥ ऋ॥ (वर्ता-**ক্তকর্মকর্ত্তব্য॰ যথা । শ্রুতি স্মৃ-তি সদা চার বৈহিত কর্ম কেবল । সেবিতব্য॰ চতুর্বর্টের্ণ র্ভজন্ডিঃ কে: শবং সদা। ৷ অন্যথা নির্যণ যাতি প্সার্গ গণ সেবনাও। অতো বেদ-

বিরুদ্ধার্থ• শাস্ত্রোক্ত৽ কর্ম্ম সংস্ত্য-জৈৎ ৷৷ ইতি পাল্মোত্তরখণ্ডে ১৭ व्यथायः ॥ 🕸 ॥ त्वनानातात्नी-কিকাচারে। বলবান্ যথা। পার্ব-ত্যুবাচ।কেবল বেদমাশ্রিত্য কঃ করোতি বিনির্ণয় । বলবান্লী-কিকো বেদালোকাচারঞ্চ ক স্ত্য-জেখা। ইতি ব্রহ্মবৈবর্ত্তে গণপতি-थ८७ १ अधारः ॥ 🗱 ॥ व्यथ त्यम-স্য স্থিতিকালঃ৷ কলে ৰ্দশস হস্যা-স্তে যথে। ত্যক্ত্ব। হরেঃ পদ॰ । বৈ-ক্ষবাশ্চ পুরাণানি শঙ্খানি শ্রা-দ্ধ তপণ ।। বেদোক্তানি চ কৰ্মা-ণি যযু স্তৈ সার্দ্ধ মেব চ। হরিপূজা হরে নাম তৎকীর্ত্তি গুণকীর্ত্তনণ ।। বেদাঙ্গানি চ শান্ত্রাণি যযু জৈঃ সার্দ্ধ মেব চ। সত্ত্বঞ্চ ধর্ম্মঃ সত্যশ্চ বেদাশ্চ গ্রামদেবতাঃ ॥ ইতি ব্র-**ন্ধা**বৈবৰ্ত্তে প্ৰকৃতিখণ্ডে ৬ অধ্যাষঃ 11#11 व्यायूर्वम्दनाष्ट्रशिख नक-(१ यथा। यहरकु जाः शक्षम था। भ-তেভ্যোবেদাজাতা ঋগ্ যজুঃ সা-य जिमाः। वायुर्दिन। २थर्दित-দ শ্চেতি কণাদঃ।। আস্তে বে-मः शक्रदमा देवना वात्था । विखा কশ্চিত্তস্য নাস্তে মহেশাৎ। ত-স্মান্ধাতাধ্যৈত তত্মাত্ত্রাষাট্ ত-

স্মাজ্জাদ্বা বক্তু মহামি শাস্ত্ৰণা ইতি গূঢ়বোধঃ॥ হিতাহিত সুখ দুঃখ নাযু স্তস্য হিতাহিত । নান-क्ष ठक यद्यां क यात्रू दर्ब म है-চ্যতে।। ইতি সুখবোধঃ।।#॥#॥ क्रजूदर्नमाना॰ विवत्नन॰ यथा। अ-থাত শ্চরণব্যুহণ ব্যাখ্যাস্যামঃ। তত্ৰ যদুক্ত চাতুৰ্ৰেদ্য । চত্বারো বেদা বিজ্ঞাতা ভবস্তি ৷ ঋথেদো যজুৰ্বেদঃ সামবেদে৷ ২থৰ্ববেদ-শ্চেতি। তত্র ঋণ্নেদস্যাকীে স্থা-নানি ভবস্তি। চৰ্চাশ্ৰাবকঃ ১ চর্চকঃ ২ শ্রবণীয়পারঃ ৩ ক্রম-পারঃ ৪ ক্রমরথঃ ৫ ক্রমজটঃ ৬ क्रमगढेः १ क्रमम् ७८ म । চতুষ্পারায়ণ মেতেষা । শাখাঃ পঞ্চবিধা ভবস্তি। আশ্বলাযনী ১ সাংখ্যায়নী ২ শাকলা ৩ বান্ধলা ৪ মাণ্ডুকেষা শ্চেতি ৫। তেয়া ম-ধ্যযন । অধ্যাষা শচতু वसिः। ম-खनानि ह मरेनव जू। अकर्ह अक-वर्गमाराहक के नंबक ख्या। धी বগৌ ছে ঋচে ক্তেযৌ ত্ৰীণি ঋচ শত স্ত ৷৷ চতু ঋচি সমাধ্যা-ত ষট্ সপ্তত্যুত্তর শত ৷ পঞ্চ দাদশ শতান্যকীবিংশোত্রাণি চ ৷৷ শতত্ত্ব বড়চিঞ্ সপ্তপঞ্

শদ্ভর । সপ্তর্ক মেকামত্তি শ-। দুত্তর॰ শতমেকক॰।। অষ্টর্চ্চাঃ প-ঞ্পঞ্চাশদর্গাঃ স্যু নাধিকোত্তরাঃ া বর্গাণাণ পরিসংখ্যাতং ছে সহ-সে বভুত্তরে॥ সহসু মেকণ সূক্তা-ना॰ निर्दिगङ्ग विकन्नाना॰। দশ সপ্তসু পঠ্যন্তে:সংখ্যাতং ৰৈ পদ-ক্রমণ ৷৷ একশত সহসূণ বা দিপ-ঞ্চাশৎ সহসূর্জিণ। এতানি চ চ-তুৰ্দশ বাশিষ্ঠানা । ইতরেষা পঞ্চাশীতি ক্রমকালে তু বেষ্টব্য॰ । চতুন্ত্রি॰শৎ সহসূগি দ্বিখণ্ডা-না সহসাগা দ্বাত্রি শৎ ষোড-শোত্তরাঃ। চত্বারি শৎ সহস্যাণি ছাত্রিংশত ক্ষাক্ষর সহস্থাণি।। ঋচা॰ দশসহসাণি ঋচা॰ পঞ্চশ-তানি চ। খচা মশীতিপাদ শৈচ-তৎ পারাষণ মুচ্যতে ৷৷ এক ঋ-টৈকবৰ্গশ্চ একশ্চ নবক স্তথা। ष्वो वरगों एवं भरहो एक रयो बीनि ত্রীণি:শত স্তথা।। সহসূ মেক॰ সূ-ক্তানাং পঞ্চানাং শতমান বিংশ-তিঃ। সপ্তকানা॰ দ্বেচ সপ্তোত্তরে শতে । চতু ঋচি ত্রীণি শতানি ষট্কানা ত্রীপ্যাষ্ঠি রফকানা ।। 🟶 ॥ ষজুর্বেদস্য ষডশীতি র্ভে-দা ভবস্তি। তত্ত্ৰ চরকাণাম্ দাদ-

শভেদা ভবস্তি ৷ চরকাঃ ১ আঃ-স্বরকাঃ ২ কঠাঃ ৩ প্রাচ্যকঠাঃ ৪ কপিষ্ঠলকঠাঃ ৫ ঔপমন্যাঃ ৬ णाखनकर्याः १ ठातायनीयाः ৮ वाजाय नी याः २ वार्खा खटन्याः ४० খেতাশ্বরাঃ ১১ শ্বেতা শ্বেততরা ₹তি বা পাঠঃ। মৈত্রাযণীয়া ১২ শ্চেতি । তত্ত্ব মৈত্রায়ণীয়ানাস্ সপ্ততেদা ভবস্তি। মানবাঃ ১ मून्यू जाः २ टिटक्याः ७ वाताशः ৪ হারিজবেষাঃ ৫ শ্যামাঃ ৬ শ্যা-মাৰনীয়া ৭ শ্চেতি। তেষা নধ্য-यन मरस्त्री। युक्तः महमुागशीना শাখাপারে। ভবতি। তান্যেব দ্বি-গুণান্যধীত্য পদপারো ভবতি ৷ তান্যেব ত্রিগুণান্যধীত্য ক্রমপা-রো ভবতি। ষডঙ্গান্যধীত্য ষডঙ্গ-বিন্তব্তি।শিক্ষা ১ কল্পো ২ ব্যা-করণ ৩ নিরুক্ত ৪ ছন্দো ৫ জ্যো-তিষ ৬ মিত্যঙ্গানি ৷ তত্ৰ প্ৰাচ্যো-দীচ্যা • নৈঋ ত্যা • নিঋ ত্যঃ। তত্ত্ৰ वाजगत्नयानाम् मञ्जूषण्या ভরস্তি ৷জাবালাঃ ১ ঔঘেষাঃ ২ कानु । ७ माशास्त्रिनाः ८ मानी-যাঃ৫ তাপাৰনীয়াঃ ৬ কাপালাঃ ৭ পৌণ্ডুবৎসাঃ ৮ আবটিকাঃ ১ পামাবটিকাঃ ১০ পরমাৰটিকাঃ পি পাঠঃ। পারশিরীষাঃ ১১ বৈ-(ध्याः)२ देवत्ययाः ७७ ७८४-ষাঃ ১৪ গালবাঃ ১৫ বৈজবাঃ ১৬ কাত্যাষনীয়া শ্চেতি ১৭। প্রতি-পদ মনুপদ ছন্দো ভাষা ধর্মো মীমাণ্সা ন্যায় স্তর্ক ইত্যুপাঙ্গানি । উপজ্যোতিষণ। সাঙ্গলক্ষণণ । প্রতিজ্ঞানবাক্য । পরিসংখ্যা । চরণব্যহু । প্রান্ধকরঃ । প্রবরা-ধ্যাবশ্চ। শাস্ত্রণ। ক্রতুঃ। সংখ্যা-নঃ। আগমঃ। যক্তে। পার্যান্। হোত্রক । পারষ্যানুহোত্রক ম-পি পাঠঃ। পশবঃ। উক্থানি। কূর্মালকণ মিত্যফাদশ পরিশি-কীনি। দ্বে সহস্তে শতে ন্যুনে ৰম্ৰে বাজসনেষকে। ইত্যুক্ত॰ পব্লিসংখ্যাত মেতৎ সকলং স-শুক্রিষ ।। গ্রন্থা শ্চ পরিস খ্যা-ত ব কাঞ্চ চতুর্গুণ । আদাবা-রভ্য বেদান্ত বন্ধব্যাহ্নতি পূর্ব-কণ্যাবেদ মধ্যায় এতেষা হো-সাস্তে তু সমারভেৎ। তত্র তৈত্তি-রীযকাণা ম্ দ্বিভেদা ভবস্তি। ঔ-ক্ষ্যাঃ ১ খনুধ্যোপি পাঠঃ । খা-প্রিকেষাশ্চেতি ২ তিত্র খাণ্ডিকে-যানাম্ পঞ্ভেদা ভবস্তি ৷ আপ-স্তমী > বৌধাষনী ২ সত্যাষাটী

৩ হিরণ্যকেশী ৪ ঔঘেষাশ্চেডি ৫ ঔধেষী চ পাঠঃ। তত্ত্ৰ কঠানা-স্তুপগান বিশেষাঃ। চতুশ্চদ্বারিণ-শত্যুপগ্ৰস্থান্। মন্ত্ৰ ব্ৰাহ্মণযো ৰ্ধ-দ ব্ৰিগুণ যত্ৰ পঠ্যতে। যজৰ্বে-দঃ স বিজ্ঞেষঃ শেষাঃ শাখান্তরাঃ म्युणिः ॥ **॥ मामर्यम्मा**थिन সহসূতেদ আসীৎ। অধিল স্বা নে কিল ইতি ভাষ্য সম্মতঃ i জ নধ্যাযেমধীযানাস্তে শতক্রতু ব জেূণাভিহতাঃ প্রণষ্টাঃ। তেষাণ व्यवकागामूतायगीया वामूताय-<u> গীষা বাৰ্ত্তান্তবেয়া প্ৰাঞ্চলা ঋধ-</u> ৰ্ভেদা প্ৰাচীনষোগ্যা জ্ঞানযো-গ্যা রাণাযনীযান্চেতি। তত্ত্র রা-শাষনীযানাম্ নবভেদা ভবস্তি। ज्ञानायनीयाः। नाष्ठ्रायनीयाः। শাবাষনীয়াঃ ইতি শাঠ্যমুগ্যাঃ ইতিচ পাঠঃ। সাত্বলাঃ। সাত্যসু-স্তবা ইতি বা পাঠঃ। মৌকালাঃ। ইতি তু ভাষ্যে নাস্তি। খলুলাঃ । महाथनुलाः। लाकलाः। (की-পুমাঃ। গৌতমাঃ। জৈমিনীয়া-শ্চেতি । তেষা মধ্যয়ন মক্ষী সাম সহস্যাণি সামানি চ চতুর্দ-শ অফৌশতানি। দশেতি দশ-मश्रम् वानिथनाः ममूनर्वधः

ক্যঃ ৷ ক্বচিৎপুস্তকে **নবজ়ি দ্বশ**- || তি বালখিলাঃ স সুপর্ণপ্রেক্যঃ ইতিচ পাঠঃ। এতৎ সামগণ স্মৃ-७॰॥ #॥ अथर्बदममा नवस्छ-দা। ভবস্তি। পৈশ্বলাঃ। দাস্তাঃ। প্রদান্তাঃ। স্নাতাঃ। স্নৌতা। ইতি চ পাঠঃ। সৌত্নাঃ। বন্ধদাবলাঃ। শৌনকী। দেবিদর্শতী। চরণবি-দ্যান্চেতি। দাতা প্রদাতা ঔতা বন্ধদীপশী বেদশী ইতি ভাষ্যে-নামান্তর । তেষা মধ্যয়ন পঞ্চ কল্পানি ভবস্তি। নক্ষত্ৰকল্পো বি-ধানকল্পো বিধিবিধানকল্পঃ সংহি-তা শান্তিকর্মশ্চেতি। সর্বেষা মে-ব বেদানা মুপবেদা ভবস্তি। খ-थिन गायुर्वनः। यजुर्वनगा धन्-র্বেদ উপবেদঃ। সামবেদস্য গান্ধ-र्वरतम जेशरतमः। अथर्वरतमभा भ-ত্রশাক্রাণি ভবস্তি ॥ 🟶 ॥ ঋথে-দস্যাত্ত্রেয়গোত্রণ ব্রহ্মদৈবত্যং গা-यवः इन्मः । सरयमा क्रकार्वः পদ্মপত্রাষতাক্ষঃ সুবিভক্তগ্রীবঃ সঞ্চিতকেশঃ শাক্রদেশ্বতবর্ণঃ দ্বি-त्रिज्ञनः युष्टः ॥ 🛊 ॥ येजूर्यंगना ভারদ্বাজগোত্রণ রুদ্রদৈবতণ ত্রৈ-कुँ ७ इनः । यजुर्दमः क्रमा দীৰ্ঘঃ কপালী তামুবৰ্গঃ কাঞ্চন-

नयनः जामिछायर्त्वा यर्तन भः क्षात्रज्ञियां 👛 ॥ भागत्वम-স্য কাস্যপগোত্র বিষ্ণুদৈবত্য জাগত ছক্ষঃ। সামবেদো নি-তাসুথী শুচিঃ শুচৌবাসী শুচি-বাসাঃ ইতিচ পাঠঃ ৷ কৌমী শমী ইত্যপি পাঠঃ। দান্তী চন্মী দণ্ডী কাঞ্চনন্যনঃ আদিত্যবর্ণো বর্ণে-ন ষডরত্নিমাত্রঃ ।। 🟶 ।। অথর্ববে-**ए**मा देवजानशाब॰ इस्स्रोपवणा॰ **जानुकुं ७**॰ इन्मः। जयर्नदिक छी-क्र महश्वः क्षः कामकशी कृषक-শ্বী হেবসাধ্যাঃ ক্ষুদ্রকর্মিদ্বেব-সাধ্যা ইতি বা পাঠঃ। সবিগ্রহাঃ সকলহাঃ মৃধ্বিগালবঃ সদানত্-কঃ পরস্ত্রিয়ান্যশ্চেতি নবরত্নি-মাত্রঃ। গ্রন্থান্তরে বিশ্বাদ্মা বিশ্ব-कर्मा बनाचाधायी। প্রাজ্ঞো ম-হানীলোৎপলবর্ণো বর্ণেন দশর-ত্নিমাত্র ইতি চ পাঠঃ॥ 🛊 ॥ অথ ধ্যান । ধ্যাষামি ছা॰ পদ্মপত্রায-তাক্ষণ সঞ্চিতকেশণ ব্ৰহ্মদৈৰত্য मानाः। श्रीयजाः श्राट्यम माटज्य গোত্রণ রুকাবর্ণণ শাক্রালোম প্রমা-গ॰ ॥ বন্দে রৌদ্র॰ ত্রৈফুভ॰ তামু-বর্ণ ভারদাজ রুক্মনেত্র কৃশা-न । यकुर्दमः मीर्घ मामिकावर्षः

কাপালীন পঞ্চারত্নিমাত্র ৷৷ 🛊 ॥ ষ ইদ॰ টেদবত ৰপণ গো ত্র প্রমাণ ছন্দো বর্ণ বর্ণযতি স বি-দ্যা॰ লভতে স বিদ্যা॰ লভতে । জন্ম জন্ম বেদপারো ভবতি অ-ব্রতো ব্রতী ভবতি অপ্রয়তঃ প্র-ষতো ভবতি অবন্ধচারী বন্ধ-চারী ভবতি জাতিশ্বরো জায-তে ॥ 🗱 ॥ य देम॰ চরণরুছে॰ श-ৰ্বসূ প্রাবষেদ্দ্দ্ধঃ। ধৌতপাশ্ম শুচি বিপ্ৰো ব্ৰহ্ম ভূষাৰ কল্পতে u र रेम॰ চরণব্যুर॰ आक्रकारल नहां भटिर । खक्क्यः मज्दर শ্রাদ্ধণ পিতৃণা মুপতিষ্ঠতি।। যো ২ধীতে চরণব্যুহ• স বিপ্রঃ প-**ি পাবনঃ । পাৰ্যত্যখিলান্** शृंबान् शूक्रवान् मश्च मश्च ह ॥ ষ ইমা বিপুলা দেবা অমৃতত্বঞ্চ গচ্ছতি। লোকাতীত মহাশা-স্ত অমৃতত্বঞ্চ গচ্ছতি ॥ গচ্ছ-ত্যোণ নম ইত্যাহ ভগবান্ ব্যা-সঃ পারাশরীযো ব্যাসঃ পারা-শরীৰঃ ৷ ইতি ব্যাসরচিত চর-**ब**वृार् नमाश्वः ॥

বেদগর্ত্তঃ পু: বন্ধা ।। বান্ধণঃ । ইতি হেমচন্দ্রঃ ।। বেদগুপ্তিঃ স্ত্রী বান্ধণাদিকত্-

কবেদরকা। ইতি কেচিৎ।। र्वान की। वन् वंदः। जद्मश्रा-ब्वमन। जी वटा मरश्मह २। इ-ত্যমরঃ।। জ্ঞান॰।। দুঃখ॰। ইতি त्मिनि ॥ विवादः । यथा । भा ণিগ্রহণ সংস্কারঃ স্বর্ণাসূপদি-শ্যতে । অসবণাস্বযুণ জ্ঞেষো বিধি রুদাহ কর্মাণ।। শরঃ ক্ষ-ত্রিয়য়া গ্রাহ্ণঃ প্রতোদো বৈশ্য-কন্যক। ৰসনস্য দশাগ্ৰাহ্য শৃ-क्रायादकृष्ठ (वष्रतन ॥ इंडि यो-নবে ৩ অধ্যায়ঃ ॥ 🟶 ॥ পা-ণীতি। সমানজাতীযাসূ গৃহ-মাণাসু হস্তগ্রহণ লক্ষণঃ সংকা-রো গৃহাদি শাস্ত্রেণ বিধীয়তে । विकाणीयाम् भून ऋश्मानाम् বিবাহ কর্মণি পাণিগ্রহণস্থানে অষ মনন্তর শ্লোকে ক্ফ্যুনাণো বিধি জেৰ্ফা। শর ইতি। ক-ত্রিষয়া, পাণিগ্রহণস্থানে ত্রান্ধণ विवादः बाञ्चनश्ख পরিগৃহীত काटेश्वरम्हा आर्यः। देवगा-যা-**ৰান্ধণ ক্ষ**ক্ৰিয় বিবাহে ৰান্ধ-৭ ক্ষত্রিয় বিশৃত প্রতোদৈকদে-শো আছঃ। শুদ্ৰমাপুন ৰিজা তি ত্ৰষ বিবাহে প্ৰাৰ্ত বসনদ मा आसा। देखि मन्व करें।

तिमनिषकः पू॰ नाजिकः। ইতি জটাধরং॥ নুদ্ধশ্চ॥

বেদপারগঃ পুণ বেদবেতা। ব্রক্ষজ্ঞানী। যথা। চক্রবাকাঃ শরদ্বীপে হংসাঃ সরসি মানসে।
তে ২ভিজাতাঃ সরুক্ষেত্রে ব্রাক্ষণা বেদপারগাঃ।। ইতি শ্রাদ্ধতত্ত্বে পিতৃগাথা।।

বেদমাতা স্ত্রী গাষত্রী। যথা।
বো হধীতে হহন্যহন্যেতা সাবিত্রীণ বেদমাতর বিজ্ঞাযার্থণ
বন্ধচারী স যাতি পরমাণ গতিণ
। গাষত্রীণ বেদজননীণ গাষত্রীণ
লোকপাবনীণ। ন গাষত্রাণ
পরণ জপ্যণ এত ছিজ্ঞায মূচ্যতে
।। ইতি কৌর্ম্মে উপরিভাগে ১৩
অধ্যায়ঃ ।। ৠ ।। দুর্গা। যথা।
বন্ধিষ্ঠা বেদমাতৃত্বাদ্যাযত্রী চনরণা প্রজা। বেদেষু চরতে যত্নাবেণ ব্রন্ধচারিণী।। ইতি দেবীপুরাণে ৪৫ অধ্যায়ঃ ।।

বেদবতী স্ত্রী সশধজরাজকন্যা।
সাজস্মান্তরে সীতা। ষথা। বহি
ক্রবাচ। ত্বং গচ্ছ তপসে দেবি
পুষ্করঞ্চ সুপূণ্যদং। কৃত্বা তপস্যাংতত্রৈব স্বর্গ লক্ষী ভবিষ্যতি
। সাচ তদ্বচনং শ্রুত্বা প্রতপ্য পু-

ষরে তপঃ। দিব্য তি লক্ষবর্ষণ্থ স্বর্গলন্ধী বভূব হ।। সা চ কালে-ন তপসা যজ্জপত্ত সমুদ্ধবা। কা-মিনী পাওবানাঞ্চ তৌপদী ক্র-পদাত্মজা।। কৃতে যুগে বেদবতী স্বশধ্যজ সূতা শুভা। ত্রেতাষাণ রামপত্নী সা সীতেতি জনকাত্ম-জা।। তচ্ছাযা দৌপদী দেবী দাপরে ক্ষপদাত্মজা। ত্রিহায-নীতি সা প্রোক্তা বিদ্যমান যুগ ত্রযে।। ইতি ব্রন্ধবৈর্তে প্রক্-তিখন্তে ১২ অধ্যায়ঃ।।

বেদবদন ক্লী ব্যাকরণ যেথা।

যো বেদ বেদবদন সদন হি
সম্যগ্রাক্ষ্যাঃ স বেদ মণি বেদ
কিমন্য শাস্ত্রণ যক্ষাদতঃ প্রথম মেতদধীত্য ধীমান শাস্ত্রাস্তরস্য ভবতি শ্রবণে হধিকারী।।
ইতি সিদ্ধান্তশিরোমণো গোলাধ্যায়ঃ।।

বেদবাসঃ পু॰ 'ব্রাহ্মণঃ। ইতি শব্দরত্মাবলী॥

दिमिविष् श्रृं विकृ: 1 यथा 1 दि-पा दिमिवादमा दिमादमा दि-मविष् कविः 1 इछि छम् मश्मु-नामत्स्राज्यः 11 दिमद्क जि ॥ दिमवामः श्रृं मूनिविद्यायः 1 তৎপর্যায়ঃ ৷ মাঠরঃ ২ ছৈপাবনঃ ৩ পারাশ্র্যঃ ৪ কানীনঃ ৫
বাদরায়ণঃ ৩ ব্যাসঃ ৭ ৷ ইতি
হেমচন্দ্রঃ ৷ কৃফদ্রৈপায়নঃ ৮ সভ্যভারতঃ ৯ পারাশ্রিঃ ১০ সাভ্যবতঃ ১১ ৷ ইতি ত্রিকাগুশেষঃ
৷৷ বাদরায়ণিঃ ১২ সভ্যবতীসূতঃ
১৩ সভ্যরতঃ ১৪ পারাশ্রঃ ১৫ ৷
ইতি শব্দরত্রাবলী ৷৷ অস্য বিবরণ ব্যাসশব্দে জফ্ব্য়ণ ৷৷

বেদাগ্রণী স্ত্রী সরস্বতী। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ ।৷

तिनाङः क्षी व्यन्जावस्वस्थ-कात्रनाञ्चः। जल्लाशा। निका १ कन्नः २ व्याकत्रनः ७ निक्रन्छः ॥ कन्नः २ व्याकत्रनः ७। समुकः। निका कत्ना व्याकत्रनः निक्रन्छः क्ष्यािच्याः सनः। जन्माविष्ठिनि विद्याद्याः सज्याः। जन्माविष्ठिनि विद्याद्याः सज्याः। जन्माविष्ठिनि विद्याद्याः सज्याः। तम् केष्याः स्व कत्रन श्रमञ्ज त्याधिका च कृ श्रम् विक्राः। याश्यकाषा सून-रम्भः कन्नः। याश्यकाषा सून-रम्भः कन्नः। याश्यकाषा स्वान-नः व्याकत्रनः। वर्गाभिना निक्रत्य-रमाङ्कः निक्रकः। श्रम्भाविष्यान्न শাস্ত্রণ জ্যোতিঃ ৷ শ্রুতি ছন্দরাণ প্রত্যায়ক শাস্ত্রণ ছন্দোবিচিতিঃ ৷ ইত্যমরভরতৌ ৷৷

বেদাদি । ক্লী প্রণবং। যথা।
বেদাদিবীজং গৈছে বুল দি ভূবনেশীফ শ্রীবীজং ওেযুতং ভূগুং। কার্ষিত্বা বদেমন্ত্রং শুক্রস্য চ ষড়ক্ষরং ।। ও হ্রী শ্রী শুক্রাষ।
ইতি রুদ্রজামলং ৷৷ বেদাদিরীজং হূঁ বীজং দ্রীবীজং তমিকেতনং ৷ শক্তি বীজং রমাবীজং
মাযাবীজং সুখাকরং।। ইতি রাজরাজেশ্বরীতক্রং ।।

বেদান্তঃ পৃণ্ উপনিষ্ । ইতি
হেমচন্দ্রঃ ।। সতু বেদব্যাস প্রনীত দর্শনশান্ত্রবিশেষঃ । অস্য
নামান্তরণ উত্তর নীমাণসা। তত্র
চন্থারো অধ্যাযাঃ । তেষু বন্ধ
নিরূপণণ । তদ্বিরণণ যথা । অব্যক্তাদণ্ড মভূদণ্ডাদ্বুন্ধা ততঃ
প্রজাসর্গঃ । মাষাম্যী প্রবৃত্তিঃ
সংক্ষত ইষণ পুনঃ পুনঃ ক্রমশঃ

থা মাষামযোপ্যচেতা গুণ করণ
গণঃ করোতি কর্মাণি । তদ্ধিপ্রাতি কিঞ্চিদিপি ।। যদদচেতন
মিপি সন্ধিকটন্তে ভ্রামকে ভ্রমতি

লোহণ ৷ তম্বৎকরণ সমূহ শেচ-छें ि विषिष्ठित्व स्मरह ॥ य-দ্বৎ সবিত্যু দিতে করোতি ক-ৰ্মণি জীবলোকো ২য় । ন চ তানি করোতি রবি ন কার্যতি **७६माञ्चािश ॥ यमस्या २२॰का-**র বিমৃচ্ছিত্স্য চৈতন্য বোধি-তদ্যেহ। পুরুষাভিমান সুখ দূঃ-খ ভাবনা ভবতি মূচস্য ।। কর্ত্ত। ভোক্তা দ্রফীন্মি কর্মাণা মুত্তমা-দীনা 1 ইতি তৎস্বভাব বিমলো-जियनारक मुर्बरभाशासा ॥ ना-नाविध वर्गानाः वर्गान् धट्छ यथीः मनफारिकः । उन्नमूशास्य र्छन ভাবিত্স্য ভাব বিভূ ৰ্যত্তে ৷৷ গ-ছতি গছতি সলিলে দিনকর বিশ্বণ স্থিতে স্থিতিণ যাতি ৷ অস্তঃ-করণে গচ্ছতি গচ্ছত্যাত্মাপি ভ-षिरि।। बाह्र ब्रम्टगानि यथा न-ণি বিশ্বস্থঃ প্রকাশতে জগতি। সৰ্বগত্যেপি তথাত্মা বুদ্ধিস্থো দৃ-শ্যতা মেতি ৷৷ আদর্শে মলরহি-তে যদক্ষপ॰ বিচিনুতে লোকঃ। আলোক্ষতি তথাত্মা বিশুদ্ধ বু-की समाज्ञान ॥ সর্বগত তৎ নিরূপম মধৈত তচ্চ চেত্রসা গ-ম । ব্যুদ্ধিগত অক্ষোপলভ্য-

তে শিষ্যবোষ্য তৃৎ ৷৷ বুদ্ধিমনো হংকারা স্তন্মাত্রেজিযগণাঃ সভূ-তগণাঃ। সংসার সর্গ পরিরক্ষণ ক্ষাঃ প্রাকৃতা হেষাঃ ৷ ধর্মাধ-स्मि नृथमुः थे क्झना अर्ग मतक वा-সশ্চ। উৎপত্তি নিধন বৰ্ণাশ্ৰমা ন সন্তীহ পরমার্থে।। মৃগত্কাযা মুদক শুক্তো রজত ভুজঙ্গমো রজ্বাণ। তৈমিরিক চন্দ্রযুগবৎভ্রা-স্ত নিখিল জগদ্রপ।। যদদিন-করএকো বিভাতি সলিলাশযেষু সর্বেষু। তদ্ধ সকলোপাধিষব-স্থিতো ভাতি পরমাত্মা।। খনিব ষটাদিম্বন্তৰ্বহিঃ স্থিত ব্ৰহ্ম সৰ্ব পিণ্ডেষ্। দেহোহ মিত্যনাত্মনি वृक्तिः मःभात्र वक्ताय ॥ मर्वविक-ष्मन হীনঃ শুদ্ধো ২বৃদ্ধো হজুরো ২মরঃ শাস্তঃ। অমলঃ সকৃদ্ধিভা-তশ্চেতন আত্মা খবদ্যাপী ॥ র-সফাণিত শর্করিকা গুডখণ্ডা বি-কৃতযো যথৈবেকোঃ। তদ্বদবস্থা ভেদাঃ পরমাদ্মন্যেব বহুৰূপাঃ ৷৷ বিজ্ঞানান্তর্যামি প্রাণ বিরাট্ দে-হজাতি পিণ্ডান্তাঃ। ব্যবহারস্থ-স্যাত্মন এতে ২বস্থাবিশেষাঃ স্যুঃ ।। রজ্বা॰ নাস্তি ভুজস্বঃ সর্গভ্য• ভবতি হেতুন। কেন। তদ্বদ্যৈত

বিকন্মভ্রান্তি রবিদ্যা ন সত্য মিদ•্র ॥ এতত্তদশ্ধকার॰ यमनाधना। ध-তা ভাজ্যা। ন বিদন্তি বাসুদেব॰ नर्वाशानः नता गृंगः॥ आनामा-নস্ত ভেদৈ রাত্মান সম্বিত্ত্য জা-লমিব ৷ সংহরতি বাসুদেবঃ স্ববি-ভূত্যা ক্রীডমান ইব।। ত্রিভি রে-ব বিশ্ব তৈজ্ঞস প্রাজ্ঞে স্তৈ রাদি मशा निधनारेथाः। জाগ্रब अक्ष मू-**च्टेश** ज्र्वज्ट महामिष्ठः जुर्याः ৷মোহ্যতীবাত্মান স্বমায্যা দ্বৈ-তৰ্পশা দেবঃ। উপলভতে স্বয-মেব॰ গুহাগত॰ পুরুষ মান্সন॰।। জুলনাদ্ধুমোদাতিভি বিবিধাকৃ-তি রশ্বরে যথা ভাতি। তদ্বদ্ধি-কোঃ সৃষ্টিঃ স্ব মাৰ্যাদ্বৈত বিস্ত-রো ভাতি।। শাস্ত ইব মনসি শা-ন্তে হাফে হাফ ইব মূঢ ইব মূঢে। ব্যবহারছো ন পুনঃ পরমার্থত ঈশ্বরো ভবতি ॥ জলধর ধনো-লাতিভি ৰ্মলিনীক্রিষতে যথা ন-গগমতল । তদ্ধুৎ প্রকৃতি বিকা-देत त्रभन्नामृष्ठेः भन्नः भूक्रयः ॥ এক श्रिमिश हे घट है श्रमानि यन।-বৃতে ঘটাঃ শেষাঃ। ন ভবস্তি ম-লোপেতা ষদক্ষীবোপি তদদিহ ।। म्हिक्किरययू नियणाः कर्या छ-।

ণাঃ সৰ্বতে স্বভোগার্থ । নাহ কর্ত্তা ন মমেতিজ্ঞানতঃ কর্ম্ম নৈ-ৰ বগ্নাতি।। অন্যশরীরেণ কৃত॰ कर्म ভবে यन प्रश्न डिप्श्रहा তদরশ্যু ভোক্তব্যু ভোগাদেব कर्या २मा निर्मिष्धः ॥ श्राक् জ্ঞানোৎপত্তি চিত যৎকৰ্ম জ্ঞা-ন শিখি শিখালীচে । বীজ মিব पर्न पक्ष॰ जग **मगर्थ॰** न उह्यर তি ৷৷ জ্ঞানোৎপত্তে ৰাৰ্দ্ধুণ ক্ৰিয়-মাণ কর্ম যত্তদপি। ন প্লিয়তি কৰ্ত্তার॰ পুষ্করপর্ণ য়থা ৰারি ॥ বান্দেহ মানসৈ রিহ কর্মাচযঃক্রি-যত ইতি বুধাঃ প্রাহ্ঃ। একোপি নাহ মেষাণ কৰ্ত্তা তৎকৰ্ম্মণা মশ্মি 11 কর্মফল বীজনাশাজ্জন্ম বিনা-শো ন চাত্র সন্দেহঃ। বুদ্ধৈব ম পগত তমাঃ সবিতেব বিভাতি ভা ৰূপঃ। যদ্বদিষীকা তুল প্ৰনো দ্ধৃত॰ দশদিশো যাতি। ত্রন্ধণি তত্ত্বজ্ঞানাত্তথৈব কৰ্মাণি তত্ত্ববি मः ॥ कीतामूक्ठ गाजाः किथः ষৰন পূৰ্বতিন্মিন্। প্ৰকৃতি 💖 ণেভ্য স্তদ্ধ**ৎ পৃথক্ কৃত শে**তনো भाषा ॥ **छन्यय याया ग**र्नः নিৰ্জূয যথা তমঃ সহসাণ্ডঃ। বা-মাভ্যান্তরচারী সৈদ্ধ্ব ঘনবৎ

ভবেৎ পুরুষঃ।। यद्याप्तरः। १ वर्ष বা মৃদেব তস্যা বিকার জাতানি। তদ্বৎ স্থাবর জঙ্গম মদৈত দৈত ব্দ্তাতি ৷৷ একসাৎ ক্ষেত্ৰজ্ঞাদ্ব-হবঃ ক্ষেত্ৰজাতযো জাতাঃ৷লৌ-হগতাদিব দহনাঃ সমন্ততো বি-স্ফুলিঞ্চকণাঃ ।। তে গুণসঙ্গম **मियाबका देव धानाकाठयः य-**ত্বৈঃ। জন্ম লম্ভতে তাবদ্যাবন্ন জ্ঞান বহ্নিনা দক্ষাঃ।। ত্রিগুণা চৈ-তন্যাত্মনি সৰ্বগতে ২বস্থিতা খি-नाशादत । अङ्गट्छ मृक्षि भविष्रा **गर्इত স্পৃশ্যতে তম্বা নাত্মা ।। রজ্বাণ** ভূজঙ্গহেতো প্রভব বিনাশো য-থা ন স্তঃ। জগদুৎপত্তি বিনাশৌ ন চ কারণ মস্তি তদ্বদিহ ৷৷ জন্ম বিনাশন গমনাগমন মলৈঃ সঙ্গ বর্জিতো নিত্যং । আকাশ ইব যটাদিষু সৰ্বাত্মা সৰ্বতোপেতঃ।। কর্ম শুভাশুভ জনিতঃ সুখ দুঃ-থৈ বন্ধো ভবত্যুপাধীনা। তৎ শংসর্গাদ্ব**দ্ধ স্তক্ষর সঙ্গাদতক্ষর**-বৎ ৷৷ দেহ গুণ করণ গোচর স-শাৎ পুরুষদ্য যাবদিহ ভাবাঃ। তাবন্মাযাপাশেঃ সংসারে রুদ্ধ ই-ব ভাতি॥ স্নাভূ পিতৃ বান্ধৰ ধন-ভোগ সংমৃতঃ। জন্ম জরা মরণম-॥

যে চক্ৰ ইব ভাৰ্মান্তে জম্বঃ৷লোক ব্যবহার কৃতা॰ য ইহাবিদ্যা মুপা-সতে মূঢাঃ। তে জনন মরণ ধর্মা-ণো ধান্ত মত্রেত্য থিদ্যন্তে।ছেহিম क्किन नृष्मा हैन जनगा शृत्मा य-থা বহ্নেঃ। তদ্বৎ স্বভাবভূতা মা-বৈষা কীৰ্ত্তিত। বিকোঃ ।। এব॰ দৈত বিকল্পাণ ভূম স্বৰূপাণ বি-মোহিনी॰ गाया॰। উৎসৃজ্য স-কলঃ নিক্ষল মদৈত ভাবদেদ্ৰ-का। यह ९ मनित्न मनिन की तत्र ক্ষীর সমীরণে বাষুঃ ৷ তছদুন্ধণি ৰিমলে ভাবনয়া তন্মযন্ত্ৰ মুপয়া-তি।। ইখ॰ দৈত সমূহে ভাবনযা ব্ৰশ্বভূষ মুপষাতি। কো মোহঃ কঃ শোকঃ সর্বং ব্রহ্মাবলোকযতঃ া বিগতোপাধি স্ফটিকঃ স্বপ্রভ-যা ভাতি নিৰ্ম্মলো যদ্বৎ ৷ চিদ্দী-পঃ স্বপ্ৰভয়া তথা বিভাতীহ নি-রুপাধিঃ ৷৷ শুণ করণগণ শরীর প্রাণৈ স্তন্মাত্রজাতি সুখ দুঃখেঃ। অপরাম্ফৌ ব্যাপী চিজ্রপোষণ সদা বিমলগা দ্রফা শ্রোতা ব্রাতা স্পর্শবিতা রস্বিতা গ্রহীতা চা দেহী দেহেন্দ্রিষ'ৰীবিবর্জিতঃ স্যা-ন্ন কর্ত্তাসৌ।।একো নৈকতাবস্থি-তো মহৈশ্বলৈ বোগতো ব্যাপ্তঃ চ

আকাশ বদখিল মিদং ন কশ্চিদ-প্যত্ৰ সন্দেহঃ ৷৷ আত্মৈবেদ পৰ্ব॰ নিষ্ণল **সকল**° যদৈব ভাবয়তি । মোহ গছনাদিমুক্ত স্তদৈর পর-**मिश्रती** जूठः ॥ यत्व श्रिका छ।-গন তকেষু প্রভূমন্তি রাগান্ধাঃ। অনুমোদাম স্তত্তত্ত্বা সর্বাত্ম-বাদি ধিষা ।। সৰ্বাকারো ভগবা-নুপাস্যতে ষেন যেন ভাবেন। ত॰ তে ভাব ভূত্বা চিস্তামণ্লিবৎ সম-ভ্যেতি ৷৷ নারাষণ মাত্মানণ জ্ঞা-দ্ব। সগ স্থিতি প্ৰলয় হেতু । সর্ব-জ্ঞঃ সৰ্বগতঃ সৰ্বঃ সৰ্বেশ্বরে৷ ভব-তি ॥ আত্মজ্ঞ স্তরতি শুচণ বস্মা-দ্বিদানবিভেতি স্বতশ্চিৎ। মৃ-ত্যে। রপি মরণ ভষণ ন ভবত্যন্য-म् ज्य॰ क्वं खगा ॥ क्यं वृक्ति वधा ষাতক বন্ধন নোকৈ বিবজ্জিত নিত্যু । পরমার্থতত্ত্ব মেতৃৎ যদ-তোন্যত্তদন্ত॰ সর্ব॰॥ এব॰ প্রকৃ-তি পুরুষ ব্জায নিরস্ত কলনা-জালঃ। আত্মারামঃ প্রশমণ সমা-**ख्ठिः क्विबी ज्विज्ञानन कानि** বেণু বাণা নশ্যন্তি যথা স্বপুষ্প মা-সাদ্য। তদ্বৎস্বভাবভূতাঃ স্বভাব-তা॰ প্রাপ্য নশ্যন্তি॥ ভিমে জ্ঞান প্রস্থৌ ছিমে সংশ্ব গণে শুভাশু-

ए कीटन। मरक्ष ठ जग्र नीट्ड भ রশানন্দ হরি ধাতি।। মোক্ষ্য্য নৈব কিঞ্চিদ্ধামান্তি ন চাপি গমন মন্যত্র। অজ্ঞানসম্প্রস্থে ভেঁদো य उ॰ विमू (मीकः।। वृदेशव ममल মিদঃ বিষ্ণো মাযাত্মক জগজ-প । বিগতদ্বন্দ্বোপাধিক ভোগা-সঙ্গো ভবেচ্ছান্তঃ ॥ বুধা বিভ ক্তাণ প্রকৃতিণ পুরুষঃ সৎসার ম ধ্যগো ভবতি। নিমুক্তঃ সৰ্বকৰ্ম-ভি রমুজপত্র॰ যথা সলিলৈঃ॥ व्यक्षन् रेषा छषा म॰वीट्या रान কেনচিচ্ছান্তঃ। যত্ৰ কচন চশা-যী বিমূচ্যতে সৰ্ব ভূতাত্মা॥ হয-মেধ শতসহসাূূূণ্যথ স্কৃতে ব্ৰূ ষাত লক্ষাণি। পরমার্থবিম পুণ্য ন্চ পাপৈঃ স্পূশ্যতে বিমলঃ।। মদ কোপ হর্ষ মৎসর বিষাদ ভ্য পরুষ বর্জ্য বাখুদ্ধিঃ । নিস্তোত্র ব্যট্কারো জড ব্দিচরেদগাধ মতিঃ।। উৎপত্তি নাশ বজ্জিত মেব॰ পরমার্থ মুপলভ্য । কৃত क्-ত্যঃ সফলজনুঃ সর্বগত স্তিষ্ঠতি যথেষ্ট॰ ।। ব্যাপিন মভিন্ন মিখ॰ সৰ্বাত্মান বিধৃত নানাত্ব। নিরু-পম পরমানশং যো-বেদ স তম-যো ভবতি॥ তীর্থেশ্বপচগৃহে বা

ন্ফক্তি রপি পরিত্যজন্ দেই । क्षान ममकान मुंकः दैकव-ল্যা॰ যাতি হতশোকঃ।। পুণ্যায তীর্থসেবা নির্যাষ শ্বপ্ত সদন নিধন গতিঃ। পুণ্যাপুণ্য কলন্ধ-স্পার্শাভাবে তু কিল্ডেন।। বৃক্ষা-গ্রাচ্চ্যুতপাদে৷ যদদনিচ্ছন্নরঃ-ক্ষিতৌ পততি। তদ্বদ্ গুণ পুরু-. ষজ্ঞে৷ খনিচ্ছন্নপি কেবলীভব-তি ।। পরমার্থ মার্গ সাধন মার-ভ্যাপ্রাপ্য যোগ মপি নাম। সু-রলোক ভোগ ভোগী মুদিমনা মোদতে সুভূশ ।। বিষযেষু সা-ৰ্ৰভৌনঃ সৰ্বজনৈঃ পূজ্যতে য-থা রাজা । ভুবনেষু সর্বদেবৈ ৰ্যোগভুষ্ট স্তথা পূজ্যঃ।। মহতা कालन गरान् मानुषाः शाला যোগ মভ্যস্য।প্রাপ্নোতি দিব্য-মমৃত যত্তৎ পরম পদ বি-त्काः ॥ तिमाखनाञ्च मथिन[°] বিলোক্য শেষো হখিলাধারঃ। আর্য্যা পঞ্চাশীত্যা ববন্ধ পর-মার্থসার মিদ ।৷ ইতি শ্রীশেষ-নাগ বিরচিত• পরমার্থমারণ 🔏 मक्खि ॥

विनाधिनः भूः विनानायिनिकिः। । यथा। ऋत्यनाधिनिक की वि যজুর্বেদাধিপঃ সিতঃ। সামবে-দাধিপো ভৌমঃ শশিজো ২থ-ৰ্ববেদরাট্।। ইতি জ্যোতিঃ সা-রসংগ্রহঃ।।

বেদান্তী পু॰ বেদান্তশান্তবে-ভা।তৎপর্য্যায়ঃ। ব্রহ্মবাদী ২। ইতি জটাধরঃ।।

বেদারঃ পু॰ কৃকলাশঃ। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।

বেদাভ্যাসঃ পু॰ বেদানুশীলন॰
। স চ পঞ্চবিধঃ । যথা দক্ষঃ ।
ছিতীষে চ তথা ভাগে বেদাভ্যাসো বিধীয়তে। বেদাভ্যাসোহি
বিপ্রাণাণ পরমণ তপ উচ্যতে ।।
ব্রহ্মযক্ত্রপরণ ক্রেষণ যড়ক সহিতশ্চ যা । বেদাস্থীকরণণ পূর্বণ
বিচারো হাত্যসনণ জপঃ। তদানক্ষেব শিষ্যেভ্যো বেদাভ্যাসো
হি পঞ্জা ।। শঙ্খ লিখিতো । ন
বেদ মনধীত্যান্যাণ বিদ্যা মধীস্থাতান্যক্র বেদাক্ষ স্মৃতিভ্যঃ ।
ইত্যাহ্নিকতত্ত্বণ ।।

रविष की खड़े। ইতি শব-চক্রিকা।।

বেদিঃ স্ত্রী পরিষ্ঠাভূমিঃ। ই-ত্যমরঃ।। পরিষ্কৃতা ষজ্ঞার্থণ প-শুবন্ধনাষ যজ্ঞপাত্রাসাদনায চাহিত সংস্কারা ভূমি রেঁদি রুচাতে গোচ ড্মক্লকাদ্যাকারাপিঙিকা। বেদ্যতি নিবাসমতি
অব্যজাত বেদিঃ। বিদ ও ক ঞ
চেতনাখ্যানে বাস্বাদে নামীতি ইং। বেদিঃ স্ত্রী বেদী চ।
ইতি ভরতঃ ৷৷ অঙ্গুলিমুদ্রা ৷
ইতি মেদিনী ৷৷

तिमः भू॰ পঞ্জিः। ইতি মে-मिनी।।

বেদিকা স্ত্রী মঙ্গলকর্মার্থণনি-শ্বিতবেদিঃ। তৎপর্য্যায়ঃ। বি-**७र्फिः २ । इंजामतः ॥ विज्की** ় বেদিঃ ৪ বেদী ৫। ইতি তটী-का ॥ ६६ जातामाननामि मधा-इ विकिशाः। एवागाताली কাষ্ঠাদি চতুষ্কিকায়। যিত্যন্যে। দারু পরিবৃতা চতুরসুন বিশ্রাম-ভূ বিতর্দি রিত্যপরে। সুত্ত সংল-ম পীঠিক বিতর্দি রিতি ক্টেচিৎ 1 ম**ৰ ল**ঢ়াকন মধ্যস্থ চতৃদ্ধিক্তি কেচিৎ। মঙ্গলস্থানার্থণ নির্দ্ধিত বেদিকেতি কেচিৎ ৷ অশুভ: বিতর্দ্দযতি বিতর্দিঃ ৷ তর্দাহিংসে नामीष्टि रेः। (वृष्टिका मार्ह-गां जी रेम्खवाद भक्त नेश् विञ्मी ह। विञ्मिः कार्श्व ला-

ই স্যাদিতি রুত্মে। ক্রিকেদি রুপীতি মধুং । বিদন্তি কিদ্যতে বা
অস্যা মিতি বেদিঃ পূর্ববিদঃ
স্বার্থে কং। অতএব বেদি বেদী
চ। ইতি ভরতং ।।-

বেদিজা ত্রী ডৌপদী। ইতি হেমচন্দ্রঃ।

বেদিতঃ ত্রি জ্ঞাপিতঃ। ঞাস্ত বিদধাতোঃ ক্ত প্রত্যবেন নি-শক্ষঃ।

বেদিতব্য • ত্রি বেদ্য । জ্ঞাত-ব্য • । যথা । আর্য্য ছন্দ শ্চ দৈব-ত্য • বিনিযোগ স্তথেব চ । বে-দিতব্য • প্রযক্তেন ত্রান্ধণেন বি-শেষতঃ ।। ইতি তিথ্যাদিতত্ত্ব ।। বেদিতা ত্রি জ্ঞাতা । তৎপর্যা-যঃ । বিদুরঃ ২ বিন্দুঃ ৩ । ইতি

বেদী পু• পণ্ডিতঃ। ইতি শব্দ-রত্মাবদী ॥ এক্ষ। ইতি কেচিৎ ॥ জ্ঞাতরি ক্রি॥

ट्या ।।

বেদী স্ত্রী বেদিঃ। ইত্যমরটীকা-যাণ ভরতঃ ।। সরস্বতী । ইতি শব্দমালা ।।

বেদীশঃ পু॰ ব্ৰহ্মা। ইতি ত্ৰিকাণ্ড-শেষঃ।।

र्वामाङः वि अधिकविषः।

যথা। বেদোক্ত মেব সর্বাণো নিঃসঙ্গো ২পিতু মীশ্বরে। নৈ-ফর্মাণ লভতে সিদ্ধিং রোচনা-র্থা ফল শ্রুতিঃ।। ইতি মলমাস-তত্ত্বং।।

বেদোদযঃ পু॰ সূর্য্যঃ। ইতি ত্রিকাওশেষঃ।

বেদোদিতঃ ত্রি বেদোক্তঃ। যথা । বেদোদিতানাণ নিত্যানাণ ক-র্মণাণ সমতিক্রমে। স্নাতক ব্র-তলোপে চ প্রাযশ্চিত্ত মভোজ-নণ।। ইতি মলমাসতত্ত্বং।।

বদ্য তি বেদিতব্য । যথা।
ধর্মঃ প্রোজ্ঝিত কৈতবোত্ত পরমো নির্মৎসরাণা সতা বেদ্য বাস্তব মত্র বস্তু শিবদ তাপত্রবোন্দলন । শ্রীমন্তাগবতে
মহামুনিকৃতে কিয়া পরে রীশ্বঃ সদ্যোহদাবরুধাতেত্র ক্তিভিঃ শুশ্রাধিভি স্তৎক্ষণাৎ।।
ইতি শ্রীভাপবতে ১ ক্সমে ১
অধাামঃ।।

বধঃ পুণ বেধনণ। বেঁধা ইতি
ভাষা। তৎপৰ্য্যায়ঃ। ব্যধঃ ২।
ইত্যমরঃ।। গভীরতা। গছরা
ইতি চাডা ইতি চভাষা। যথা।
গণ্যিত্বা বিস্তারণ বহুষু স্থানেষু

তদ্মৃতি ভাজ্যা। স্থানক মিত্যা। সম মিতি রৈবল্পৈর্য্যে চ বেধে চ া ক্ষেত্ৰ ফল॰ বেখ গুণ॰ খাতে ঘন रुख मंथा मार । रेखि नीनात-ত্যা খাতব্যবহারঃ ৷৷ 🕸 🛮 তাথ मश्रमनाक्रविषः। कृतिकाप्ति हन তুঃসপ্ত রেখা রাশৌ পরিভূমন্ । গ্রহদেক রেখান্থো বেধঃ সপ্ত-শলাকজঃ।। ইতি দীপিকা।।#।। অথ খজু রবেধঃ ৷ একা মূর্দ্ধ গতা ভ্রমোদশ তথা তির্য্যগ্রভাঃ স্থা-পষেত্র। রেখা শ্চক্র মিদ বুবৈ রভিহিত থার্জুরিক তত্র তু। ব্যাঘাতাদি তু মূর্দ্ধি ভম্ব কথিত তত্রৈক্য রেখাস্থযোঃ সূর্য্যাচন্দ্রম-সো মিথে৷ নিগদিতা দৃক্পাত এ-कार्भनः॥ ইতি রত্নমালা ॥ 🟶 ॥ অথ যুতবেধঃ। পাপাৎ সপ্তমগঃ শশী যদি ভবেৎ পাপেন বা সং-যুতো ষত্নাত্ত পরিবর্জ্যেৎ মুনি-गटा दिनाट्या इस कथाट ।। 🗱 🛚 । व्यथ याभिखरवधः। विति मन्त क्र-জাক্রান্ত॰ মৃগাক্বাৎ সপ্তম॰ তা-জে । বিৰাহ বাত্ৰা চূডাসু গৃহ-कर्मा প্রবেশনে।। ইতি রত্নমালা ।। ।। वाम मिन् । (वर्षे वामत्वर **भटक एकट्टी ।**

বেধক জী ধানাক। ইভিরাজ-निर्वनिः ॥

বেশকঃ পু: কপুরঃ ৷ ইতি ত্রি-কাওশেবঃ॥ অমুবেতসঃ। ইতি त्राक्षमिष्गिः॥ त्यथक्षति वि॥ विश्वाका जीः निन्युशामित्व-थत्माशकतमः। छामती देखि ভাষা, তিৎপর্য্যায়ঃ। আকো-हेनी २। रेजनदः ॥ वाटकारे-बी ७ एकाछेनी 8 व्यम निका e

। ইতি ভরতধৃতবাচম্পতিঃ 11 বেধনী স্ত্রী হস্তিকর্ণরেধনাস্ত্র•1 ইতি ত্রিকাওশেষঃ।। মেথিকা। ইতি ভাৰপ্ৰকাশঃ॥

বেধদুখ্যঃ পু॰ কচুরঃ। ইতি রা-क्निर्चनिः ॥

त्वधम्थाकः प्रः इतिजान्कः। काँ हार मिल्ला है कि शास्त्र । उद-প্रयासः। कर्वृत्रकः २ जाविष्ठकः ওকাৰকঃ ৪ কাল্যকঃ ৫। ইত্য-मनाज्यहरो ॥

বেধসুশার জ্রী। কন্তুরী। ইতি রা-क्रिकिके ॥

दिश्तर की बान्नजीयः। यमूके मृत्र । ইতি শব্দ হলিক।।। त्याः भूति बन्धाः। विकृदा रेजा-

বলী।। পঞ্জিতঃ। ইতি বিশ্বঃ॥ শ্বেতার্কবৃক্ষঃ। ইতি শব্দচন্দ্রি-का ॥ अमे उभू वह । यथा । देका-अ दुर्का के नाया दमा मधारमण मया-প্রবান্। সুদ্যুম্স্য প্রতিষ্ঠান ত-ষ্য পুত্ৰঃ পুৰুরবাঃ ॥ নরিব্যতঃ শুকাঃ পুত্ৰাঃ শাক্ত কত্ৰ মুদা-সত । নাভাগস্যায়রীয়ে ২ভূৎ সক্ত্রণ পার্থিবণ ততঃ৷৷ কোষ্ট বে বার্ষক ক্ষেত্রণ রণষ্ঠি বভূ-ব হ। শর্যাতে মিথুন জ্বাসীদন-স্তো নাম বিশ্রুতঃ।। সুকন্যা না-य কন্যা চ বা পত্নী যাদবস্য চ । অনন্তস্য চ পুরো ২ভূৎ বে ধো নাম মহাপ্রভুঃ ।। আনর্ত বিষদে তেন পুরী সশস্দী কৃ তা। ইতি বহিপুরাণে সাগরো-

ৰেখিতঃ পু॰ বিদ্ধঃ। ছিজিতঃ। रेणामतः ।१

नायाम नामाधायः॥

বেধিনী দ্রী রক্তপা। জোঁক ইতি ভাষা । ইতি শব্দরত্না-वनी ।। त्यिका। ইতি রাজ-मिर्वकि ॥

त्वशी बि त्वश्वर्का ॥ त्वश्विनि कः। विश्वारक विन् अकारवन त्वम भक्षामचार्य हम् अछारम-मद्रः ॥ मूर्याः । देखि नेसद्रकाः

न ह निष्णमः ॥ जम्भद्यज्ञाः भू॰ ॥ १ इजि त्राक्रिक्टिः ॥

বেধ্য ক্লী লক্ষ্য । ইতি জ্বটাধরু । বেধনীয়ে ত্রি । যথা ।
ধাইকর্ণোৎপত্তি মাশক্ষ্য ভানোঃ
ভক্ষ্য সন্মেশি চ। কর্নো বেধ্যে
ন দেশ্বং স্যাদন্যথা মরণং ভবেৎ ।। ইতি মলমাসভত্ত্বং ।।
রেনঃ পুং প্রজাপতিঃ ৷ ইত্যুগাদিকোমঃ ।।

বেমা স্ত্রী নদীবিশেষঃ। ইতি
সিদ্ধান্তকো মুদ্যা মুণা দিবৃত্তিঃ।।
রপ টু ঋঙ চলে ৷ ইতি কবিকল্পক্ষা ৷ চলঃ কম্পন ৷ টু
বেপথুঃ। ঋ অবিবেপৎ ৷ ১৪ বেপতে বাষুনা কৃকঃ। ইতি দুর্গাদাসঃ।

বেপঃ ক্লী অনবদ্য । যথা। স্যা-দলজ্যোতিষোঃ ক্লীবং বচে। বা-চ্যথ খাতৃষু। মেদো বেপো হন-বদ্যে হথ সভায়াঞ্চ সদো ন-না ।। ইত্যুণাদিকোষঃ।।

বেপথুঃ পু॰ কম্পন। ইত্যমরঃ।। বেপনং ক্লী: কম্পনং। ইতি শক্ষা রত্নাবলী।।

जनः श्रुः वाशमखः। यथा। याः वाः भाषः श्रुश्मः त्वमा त्वरमा मा

त्यमान प्रदेश । देखि नक्त्रमा-विकास

বেমা^ন পুণ ক্লী কা**পদঙ**া ইন্ত্য-মরভরতৌ গা

বের॰ ক্লী শরীরং।। ৰার্ডাঙ্গর।। সন্দুনং। ইতিনেদিনী।।

বেয়ক জী কপুর:। ইতিহার।-কনী।।

दिन स ठाटना इंडिकविक्न-फ्रमः ॥ सः खविद्यत्तः । इंडि पूर्गानामः ॥

त्व छ क् कामादर्भ हेिकवि-कन्न प्रमाश शिकामार्थः कारमाण-एमगः। व्यक्तिकार्थः। काम मिय-खसागाकः बाजावजी त्वरम् जि कथिजवानिकार्थः। हेि मूर्गा-मामशाः

বেলং ক্লী। উপবনং। নথা। অপোপাত্যাং বনং বেল নারামঃ
কৃত্তিমেবনে। ইতি হেনচন্দ্রঃ।।
বেলা ক্রী কালঃ। তৎপর্যামঃ।
কালঃ হালণঃ ও প্রক্রমঃ ৭ অসর্য় ও প্রস্তাবঃ ও প্রক্রমঃ ৭ অসর্যাধানি মথা । অন্ধিপদ্দ
পরিমাধানি মথা । অন্ধিপদ্দ
পরিকোপো নিমেশঃ পরিকীর্তিতঃ। স্থো নিমেশঃ পরিকীর্তি-

क्ष्री क् नदः मृठः ।। दिनदः • কণ ইত্যুক্তঃ কান্তা প্রোক্তা দশ क्शाः। मनकाश्रीः किना नाम ७९ मःशा माक नाषिका॥ ষটিকে ৰে মৃহূৰ্ভঃ স্যাবৈত্ত স্ত্ৰি -শত্যা দিবানিশ। চতুরিশাতি বেলান্ডি রহোরাত্ত প্রচক্ষতে। সূর্য্যোদযাদি বিজেষো মুস্ত্রা-मां क्रयः जला । शन्तिमानक রাত্রাদি হোরাণা বিদ্যতে জ্র-মঃ 11 জ্ঞেষণ পিত্র্য মহোরাজ্ঞ পক্ষে কৃষ্ণ সিতাসিতৌ। ত্রিশ **छ। ह मिटेन बाटना दिनान अ**ञ् ক্লচাড়ে।। ভবেদ্দিব্য মহোরাত্র° कुछ कुछ त पिन्दा। वर्ष वा-मन्छि बंटिंग र्यामा जारवान-শঃ।। ইতি বহি পুরাণে গণভেদ नानाशावः॥ । । यद्यापा । ह-**ভाষরः ॥ ममूजकृलः ॥ ममू**ज-क्नविकातः ॥ चक्निकेमद्रन्।। ক্লাগঃ ॥ ঈশরসা ভৌজন । रेखि सिमिनी॥ खतः श्रवती य वकाक्षाता विभिन्नः ॥ ब्रांभक्।-ल जागः॥ वाक्॥ वृश्की। रेकि विश्वः ॥ मुख्या मः । रेकि श्वासनी ११ विनाक्ष की जावनिश्वतानाः।

यथा। दिनाकृतः जामनिश्वः जा-मनिश्वी जमानिका। देखि बि-का धरनमः॥

বেলিভুক্প্রিয়ঃ পু॰ সৌরভযু-ক্রানুঃ। যথা। রসালে ছতিসো-রভে । মহাকালশ্চ কিম্পাক উর্বটো বেলিভুক্প্রিয়ঃ। ইতি শব্দরত্বাবলী।।

तिल स ठाटन । ইতি কবিকর
जनः ॥ स जितितल्ल । ठानः

नश्चन-। উদ্বেलकु जनिल कर्मः
सन्दर्भातः क्माः वार्याजाः । गछाविट्यादक । ইতি দুর্গাদাসः॥

तिल की पू॰ विक्रकः। ইতা
मतः ॥ गमनে पू॰। ইতি বেলशावर्ष দর্শনাৎ ॥

तिज्ञकः की मित्रिकः। ইতামরः॥ तिज्ञनः की जूटमे ज्ञाश्तमः नुर्धनः । ज्ञाश्रम्भवः॥ त्राणिकापि नि-मानार्थं कृत तर्ज्ञकाष्ट्रेरित्नयः । तिज्ञम् ইতি जाया। ইতি जाबुद्धकानः॥

त्कारी जी नानावृद्ध । देखि त्राक्षनिर्यण्यः ॥

বেলন্তরঃ পু• বীরতরুঃ। যথা। বেলন্তরো জগতি বীরতরঃ প্রসিদ্ধঃ শ্বেতাসিতারুণ বিলোহিত নীলপুষ্পঃ। স্যাজ্জাতি তুল্যঙ্গসুমঃ শমি শুষ্পত্রঃ স্যাৎ
কণ্টকী চ জলদেশজ এষ বৃক্ষঃ
।৷ অস্য গুণাঃ। বেল্লস্তরো রসে
গাকে তিক্ত স্কৃষ্ণা কফাসহঃ ।
মূত্রাষাতাশাজিৎ গ্রাহী বোনি
মূত্রানিলার্তি জিৎ।।ইতিভাবপ্রকাশঃ।।

বেলহলঃ পু॰ কেলিনাগরঃ ৷ ইতিজ্ঞাধরঃ ৷৷

বেলিঃ স্ত্রী লতা। ইতি শব্দরত্না বলী।

বেলিকাখ্যা স্ত্রী: বৃক্ষবিশেশঃ বিল সুঠা ইতি ভাষা ৷ যথা ৷
নরুক্ষালা বেলিকাখ্যা বিলপত্রী
জুরাপহা ৷ ইতি শব্দচন্দ্রিকা ৷৷
বেলিত ক্রী গ্রনণ ৷ ইতি নেদিনী ৷৷

বেলিজঃ ত্রি স্টিলঃ ৷৷ কম্পিজঃ
৷ ইত্যমরঃ ৷৷

বেবী রক্ষলু ও কান্তিগতি বাঃপ্রি ক্ষেপ প্রজন খাদনে ৷ ইছি
করিকল্পড়নঃ ৷৷ র বৈদ্যিকঃ ৷ ক্
অবেবযুঃ ৷ বহল বন্ধনীতি প্ররবৈদ্যপদে অনুস্ সিদে দ্বিতাশ্
উস্পুরুস্যাঠ্যা নিতি গুনঃ ৷ লু ও

त्वीरक। इकि मूर्गामामा।
तिनः पू॰ जनकात्रत्रक्रमामि कृठत्नाका। जर्मगायः। जाकवः
२ तम्था॰ ७ প্রতিকর্ম ৪ প্রদাसमः ६। ইতামরः॥ বেষः ७।
ইতি তটীকাষা॰ ভরতঃ॥ বেम्यागृह॰॥ গৃহমাত্র॰। ইতি বিশ্বধাদিনী॥ প্রবেশঃ। ইতি বিশ্বধাদ্বর্থদর্শনাৎ।।

বেশকঃ পু॰ গৃহ॰। ইতি শব্দ রত্বাবলী।। বেশকারকে তি ।। বেশদানঃ পু॰ সর্যশোভা। ইতি শব্দচন্দ্রকা।।

বেশধারী পু॰ ছলাতপস্থী।ইতি
শব্দরত্বাবলী। বেশধারকে ত্রি
কেশন্তঃ পু॰ কুজসরোবরঃ।
ইত্যমরঃ । অগ্নিঃ। ইত্যুণাদিকোষঃ।।

রেশরঃ পু অশতরঃ। ইতি ত্রি-কাওণেবঃ ম

বেশবারঃ পুশ বেশবারঃ। ইত্যমর্থীকানাং রাখমুকটঃ।।
বেশীজাতা জী পুশ্রদাতীলতা।
ইতিরাজনির্কটঃ।।

অবেরযুঃ। বছল বক্ষণীতি গরবৈশ্বপদে অনুস্ সিদে শ্বিভাগ্ বেশ্বক্ষিকঃ পু: চটকঃ। অস্য
উস্থাক্ষ্যাঠ্যা সিতি গুণঃ। লু ও

মাংসংগ্রেণী। সমিপাজনাশিক্ষা

অতিশুক্রকারিস্বঞ্চ। ইতি রাজ-। বন্ধভঃ ॥

বেশ্বকৃলঃ পুশ চচেপ্তা। ইতি রাজনির্ঘকীয়ে।

(त्यानकतः भू गन्नमृतिकः।
यथा। ठिकः मार्यामनकत निठका ठ वालमृतिका। गन्नमृ सी गन्नम्यी गितिका माष्ट्रमृ करी।।
इठि भक्तन्नावनी।।

বেশ্বভূঃ জ্রী গৃহকরণবোশ্য-ভূমিঃ।তৎপর্ক্যাবঃ।বাস্তঃ ২। ইত্যমরঃ।।

तिनाः की तिनामनकः। ইতি भिन्नी।।

বেশ্যা ত্রী টুণ্ডুকাবৃক্ষঃ। আকনাদি ইতি ভাষা। ইতি শব্দচন্দ্রকা য়া সনামধ্যাতনারী।
খান্কী ইতি ভাষা। তৎপর্যাখান্কী ইতি ভাষা। তৎপর্যাখান্কী ইতি ভাষা। তৎপর্যাখান্কী ইতি ভাষা। বেখাও।
ইতি ভটাকা।। কুজা ও শালভঞ্জিকা ও। ইতি জটাব্রঃ।।
ঝর্মরা । শূলা ৮ বারবিলাসিনী
১১।ইতি শব্দর্যাতি ভণ্ডহাসিনী

শব্দমালা ।। সাধারণক্রী ১৭ প-गामना १४ भगामना १२ जुकि-या २० वात्रवशुः २५। ইতি ছেন-চন্দ্রঃ ৷৷ ভোগ্যা ২২ সমরবীথিকা ২৩। ইতি রাজনির্যন্টঃ।। তস্যা लक्षव त्रामनकनामि यथा। পতि-ব্ৰতা চৈকপত্নী দিতীয়ে স্বলটা স্তা। তৃতীযে বৃষলী জেষা চ তুর্থে পু॰শ্চলী স্মৃতা।। বেশ্যা চ পঞ্নে ষষ্ঠে যুঙ্গী চ সপ্তমে ২ই-মে। তত উর্দ্ধে মহাবেশ্যা সা-স্পৃশ্যা সৰ্বজাতিষু ॥ 🟶 ॥ যো দিজঃ সলটাসচ্ছেৎ বৃষলী পুণ-म्हली मिशा यूकी॰ दिनगा॰ म-হাবেশ্যাণ অবটোদ প্রযাতি সং ম শতাবা প্ৰাক্তাগানী ধৃষ্টাগা-मी ह्यू गं । यज्धक भू कती-গাম্বী বেশ্যাগামী গুণাউক 11 যুর্সীগামী দশগুণ বশেতত ন मण्मयः । यहार्यना गामूकन ততঃ শৃতগুণ ভৰেৎ ॥ তদেব স-ৰগামী চেত্যেব মাহ পিতামহঃ 1 তত্ত্বৈৰ স্বাতনাণ ভুঙ্কে যমদূতেন তাভিতঃ।। তিত্তিরিঃ সলটাগামী श्काभागी ह वाचनः। दर्गाविषः पूर्णनीयांची द्वगानांची वृक ख्या। युक्रीशामी मृकद्रम् मथ-

জন্মসূ ভারতে। মহাবেশ্যা গাসু-कन्छ जायरा नान्यनि खद्भः ॥ ইতি ব্ৰন্ধবৈবৰ্ত্তে প্ৰকৃতিখণ্ডে ২৮ অধ্যাবঃ ৷াঞা৷ বেশ্যাগমন পাপত প্রকীর্ণকণ। তস্য প্রায়শ্চিত্তণ। তত্র সম্বর্ত্তঃ পশু বেশ্যাভিগমনে প্রাজাপত্যণ বিধীয়তে ৷ তেন বে-শ্যাগমনে প্রাজ্বাপত্য[়]। তদশ-क्कि (धन्द्रका। এতৎ সকৃদ্ধা-नत्न । अज्ञारम जू। हाट्यायतन টেকেন সৰ্বপাপ ক্ষযো ভবেদিতি আপস্তম্ব বচনাক্ষান্দ্রায়ণ । ইতি প্রাযশ্চিত্তবিবেকঃ মা 🟶 🕦 তদ-श्रामिकः निविद्धः। यथा। पू॰क-नामक सा जूरक शू॰ मनाकीर জীবনঃ। স্বলোম মান বর্ষঞ্চ লা-লাঙ্গণ্ডে বসেদ্ধুব ।। তাডিতো যমদূতেন তভোজী তত্র তিগ্রতি া তত স্ত্রিজন্মনি ভবেৎ কৃষ্ণবর্ণঃ পশুঃ শুচিঃ ৷৷ ত্রিজন্মনি ভবে-চ্ছাগ স্ততো ভবেৎ সুদুঃখিতঃ । তত শক্ত্র শুলরোগী ততঃ শু-कः क्राप्य ह ॥ इंडि बक्रारेन्टर्ड প্রকৃতিখণ্ডে ২৭ সংগ্রামঃ ॥ 🗰 ॥ অপিচ। পুংশ্চল্যমঞ্চ ব্যে ভুঙ্কে বেশ্যামঞ্চ পতিব্ৰতে। তদুজেতু দিজো যে হি কালসত্ৰ প্ৰধা-

তি সঃ ৷৷ শতৰৰ্ষণ কালসূত্ৰে স্থি-ষা শূদ্রো ভবেদৃদ্ধুবং। তত্র জ-মনি রোগী চ ততঃ শুন্ধো ভ-বেন্দ্রিজঃ ৷৷ ইতি তবৈর ২৮ व्यथायः ॥ ॥ याजाकारमञ् मा नर्गनः ७७ । यथा। सन् ৰ্ণিন প্ৰযুক্তা বৃষ তুর্গ রথা ক্লিশাবর্ভবঙ্কি দীবাজী পূর্ণ-अडा विक नृश गिका शूक्रामी-লাপতাকা। সদ্যোমাণসং ঘৃত বা দধি মধু রজত কাঞ্চন শু-ক্লধান্য দৃষ্ঠা শ্ৰুত্বা পঠিত্বা কল মিহ লভতে বানবো গন্তকামঃ ।। ইতি সমযপ্রদীপঃ ।। र्वनागित्रकः शुः विनागित्रमृहः। ् তৎপর্যাयः । বেশ্যাবারঃ ২ । ইতি শব্দসালা ।৷ विभागिकार्याः भूः शीर्वमर्मः। इंडि ट्यह्यः ॥ বেশ্যাজনসমাঞ্জন্ত পু্ বেশ্যা-नयः। ७९ श्रद्यायः। त्यनः २। ইত্যমরঃ।। বেশ্যাশ্রয় ৩ পুরু

৪। ইতি হেনচন্দ্র: ।। বেশ্য: ৫। ইতি জটাধর: ।। বেশ্বর: পু: জন্মতর: । বর্ণা। বেশ্বরো শশতর: পর: । ইতি ভূরিপ্রবেশস: ।। বিকাশ্বশেষে

বেশর ইতি পাঠঃ ৷৷ বেষঃ পু: নেপ্প্তা । বেশ্যাজনা-व्यवः। द्वरविके वारशाजि पानः द्वरः शहास्त्रिमम् यूक्शासः। বিশক্তি নৰ্মৰৰা স্যাত্ৰভ্যাধা-রে যঞি বেশ ভালব্যান্তণ্চ। ইতি জরকঃ ৷৷ বে দারিকাণা ৰিবাৰ্ক্বাৰো বিশতি বুনা মনঃ কাৰুকো বা খত্তেতি বেশঃ পৌ-विन अत्यदन वकः। त्मशस्या गृ-হ্ৰাজে চ ৰেশো বেশ্যাগৃহেপি চ। ইতি তালব্যান্তে র্ভসঃ।। ্যুহ্যাত্তে গণিকাষাঃ সম্মনি বে-শো ক্ৰেছু ভালব্যঃ। তালব্যো মুর্জণ্যে হলকরণে কথিত আচা-देश क्रिक्सभिविद्यकः। द्विविष्ठि ব্যাপু বস্তি জনমনাণ্সীতি মঞি বেষো মুর্দ্ধণ্যাক্তোপি ইক্যেকে। छबू न समा मूर्कगार खबू मईव কোৰাদাবনুপাত্তথাদিতি মুক্ত-টা ইতি চ ভরতঃ ৷৷ द्वन्धः शुः कामगर्भः। ইতি श-त्राक्नी॥ अद्वयन्था विष्मकर्कः। वन्ता क्षि छात्र। देखि तत्रमाना ॥

व्यवनातः भू क्लानामः हैण-

मत्रविकाषा वासतूनके ॥

বেষ্ট ও বেষ্টে। ইতি কবিকর-ক্রমঃ।। ও বেষ্টভে। ইতি দর্গা-দাসঃ।।

বেক্টঃ শু॰ বেক্টমণ। ইতি শক্ষ-মালা।। শ্রীবেক্টঃ। ইতি রাজ-নির্বন্টঃ।। নির্বাসঃ। আটা ইতি ভাষা। ইতি বৈদ্যকণ।।

(रखेर॰ की उकीमः। ইছি म-स्त्रज्ञावनी ॥ निर्यामः। ইছি मस्त्रामा ॥ निर्यामः। ইছি त्राकृतिर्यन्तेः॥

বেককঃ পু॰ প্রাচীরঃ। যথা প্রা-চীনা বেককে) বৃতিঃ। ইতি হেমচন্ত্রঃ।। সমাওঃ। যথা। স্পাওকঃ পুশাকলো ঘনবাস-শ্চ বেককঃ। ইতি হারাবলী।। শ্রীবেক্টঃ। ইতি রাজনির্বক্টঃ।। বেক্টনকারকে ত্রি।।

दिस्त्रेम क्री कर्मकृती। उसी सः । मूक्टेः । वृद्धिः। इछि ट्रमिनी । अशुन्नः। इछि मक-ठक्किनाः

दिक्रमकः मृ॰ तिविद्यावित्मयः। क्था। উद्धृत्रः भाषः त्रक्षः जु काखदेत दिक्टियम्बर्ति। काखक-काखिलाः नात्रीः वद्या दिख्य-कः प्रकाश है जित्रक्षती।। বেষ্টনবেষ্টকঃ পুণ রতিবন্ধবিশেযঃ ৷ ষথা ৷ উর্জুণ পাদদ্বয়ণ নায্যা ভুজাভ্যাণ বেষ্টবেদ্যদি ৷
করাভ্যাণ কণ্ঠমালিক্য বন্ধো বেফনবেষ্টকঃ ৷৷ ইতি রতিমঞ্জরী ৷৷
বেষ্টবংশঃ পুণ কণ্টকিনঃ ৷ বেডুবাশ ইতি ভাষা ৷ ইতি শব্দচক্রিকা ৷৷

বেফসারঃ পু• গ্রীবেফঃ। ইতি রাজনির্থকঃ।।

বেিত কী রু**র্দ্ণ।। লাশকঃ।**। করণান্তরণ। ইতি মেদিনী।।

বেফিতঃ ত্রি নদী প্রাচীরাদিনা বেফন কৃতঃ।বেডা ইতি ভাষা তৎপর্য্যায়ঃ।বল্যিতং ২ সং-বীতং ৩ রুদ্ধা ৪ আবৃতং ৫ ৷ ইত্যায়ঃ ৷৷

বেষ্ণঃ পু॰ পানীষ । ইত্যুণাদি-কোষঃ।।

বেস ঋ ইতো ৷ ইতি কবিকল্পদ্রুমঃ ৷৷ ঋ অবিবেসৎ ৷ বিবেসতুঃ ৷ ইতো গত্যা ৷ ইতি দুর্গাদাসঃ ৷৷

বেসন ক্লী দিদলচুর্ণ ৷ যথা ৷
দালষ শ্চণকানাম্ব নিস্তবা যন্ত্রপেষিতাঃ ৷ তচ্চুর্ণ বেসনংপ্রোভণ পাকশান্তবিশারদৈঃ ৷৷ ত-

ষটিকাগুণাঃ । বটিকা বেসন-স্যাপি ক্ষথিতাযাঁ নিমজ্জতি । রুচ্যা বিষ্টমুজননী বল্যা পুষ্ট-করী স্মৃতা ।। ইতি ভাবপ্রকাশঃ বেসরঃ পুশু অশ্বতরঃ। ইতি হে-মচন্দ্রঃ।।

বেসবারঃ পুণ ধন্যাকসর্যপাদিপিকঃ । বেসার ইতি বাটনা
ইতি চ খ্যাতঃ । তৎপর্যায়ঃ ।
উপক্ষরঃ ২ । ইত্যমরঃ ।। বেষবারঃ ৪ । ইতি ভরতঃ ।। বেশবারঃ ৪ । ইতি মুস্পটঃ ।। ব্যঞ্জনবিশেষঃ । যথা । নিরন্থি পিশিত॰ পিকি সিদ্ধা গুড ঘৃতান্বিতণ
। কৃষ্ণা মরিচ সংযুক্তণ বেসবার ।
ইতি স্মৃতণ ।। অস্য গুণাঃ । বেসবারো গুরুঃ স্মিন্ধো বলোপচ্য
বর্দ্ধনঃ । ইতি রাজবল্লভঃ ।।

বেহ ঋ ও যত্নে। ইতি কবিকল্প
ক্রমঃ।। ঋ অবিবেহৎ। ও বেহতে বিবেহে। ইতি দুর্গাদাসঃ।।
বেহৎ স্ত্রী গর্গ্তোপঘাতিনীগোঃ
। ইত্যমরঃ।। অনৃতৌ বৃষোপগমনাদিবশাৎ যস্যা গর্গ্তাতো
ভবতি সা। বিহস্তি গর্গ শশ্বৎ
বেহৎ। হনলৌ গতৌ বধে কিপ্
নিপাতঃ। ইতি ভরতঃ।।

বেহারঃ পু॰ স্বনামখ্যাতদেশঃ।

থা।বেহারে চৈব শ্রীহটে কোশলে শবকর্ণিকে। অফাদশভুজাকার্যামাহেন্দ্রে চ হিমালযে
।।ইতি মৎস্যসূক্তে ও পটলঃ।।
বেক্ল ঋ চালে।ইতি কবিকল্পদেমঃ।। ঋ অবিবেক্লৎ। ঋদনুবন্ধঃ বেদেষ্চারণ ভেদার্থঃ।
চালঃ সঞ্চলন॰ গতাবিত্যেকে।
ইতি দুর্গাদাসঃ।।

देव ७ त्यारम । ইতি কবিকঁপ্প
फ्रमः॥ वकात्रामिः। वायि । ७

वानः। ইতি দুর্গাদাসः॥

देव वा॰ পাদপুরণ । ষথা। তুহি

ह स्म ह देव পাদপুরণে। ইত্য
মরঃ॥ সম্বোধন ।। অনুনযঃ।

ইতি মেদিনী॥

বৈংশতিকঃ ত্রি বিংশত্যা ক্রীতঃ

1 বিংশতিক শব্দাদন্ প্রত্যাবেন
নিষ্পায়ঃ। ইতি সিদ্ধান্তকৌমুদী
বৈক্ষতঃ পুং বৃক্ষবিশেষঃ ।
বৈঁচ্ ইতি ভাষা। তৎপর্য্যাযঃ।
বৃতিক্ষয়ঃ ২ শ্রুবাবৃক্ষঃ ৩ গ্রন্থিলঃ ৪ স্বাদুকণ্টকঃ ৫ ব্যাস্থপাৎ
৬ কণ্টিকারী ৭ বিক্ষতঃ ৮ ।
ইতি শব্দর্শ্লাবলী ।।
বৈক্তিকঃ পুং মণিকারঃ। ইতি

द्यहर्मः ॥

दिक्षः पू॰ वा॰ मामूनिः। ইতি

मिक्षा छ दिक्षा विकास वि

বকান্সকঃ ত্রি বিকল্পেনভবঃ। বিকল্পশকাৎ ফিক প্রত্যযেন নিষ্পায়ঃ।।

বৈকল্য॰ 'ক্লী বিকলত্ব°। বিক-লস্যভাব ইত্যর্থে ফ্যু প্রত্যুয়েন নিষ্পন্ন°॥

বৈকক্ষণ ক্লী তির্য্যথকোলয়িমা-লাণ। ইতি হেমচন্দ্রঃ ।।

বৈকক্ষক ক্লী উরসি তির্য্যক্ উ-পবীতবৎ কণ্ঠাৎ ক্ষিপ্ত মাল্য । ইত্যমরঃ ।।

दिन्न केः भू॰ कृषः ॥ हेन्यः। हेनि
तमिनी ॥ निकार्ककः । हेनि
ताजनिर्वनिः ॥ जमा ना॰ পত্তि
र्वशा विन्नक्षेषा जनकः देनन्
केः वास्तामाक हेनि निवामिषा । किः वास्तामाक हेनि निवामिषा । विन्नक्षेषा मत्मी ज्ञाल देन देनिक्षेषा ज्ञालकः । विन्नक्षेषा मत्मी ज्ञालकः देनन्दिः निवामिष्या । विन्नक्षेषा मत्मी ज्ञालकः देनन्दि विक्शूत्रानः ॥ किषा ज्ञालकः निवामिष्या । किषा ज्ञालकः विन्नक्षेष्ठा निवामिष्या । किष्ठा ज्ञालका । विविधा ज्ञिष्ठा । विष्ठा । विविधा ज्ञिष्ठा । विष्ठा । विविधा ज्ञिष्ठा । विष्ठा । वि

কার সংঘেতি অস্ত্যর্থে ক্ষঃ। বিক্ সহসুনাম টীকা্যাত'শঙ্করাচার্য্য-স্ত্রাহ বিবিধা স্বণ্ঠা গতেঃ প্রতি-হতি স্তদ্যাঃ কর্ত্তা ইতি বৈষ্ঠঃ। জগদারম্ভে বিশিষ্টানি ভূতানি পরস্পর সংশ্লেষন্ তেষাণ গতিণ প্রত্যবধ্নাদিতি বা বৈঙ্গণ্ডঃ ৷ সাযা সংশ্লেষিতা ভূমি রক্তি ব্যোমা চ বাযুনা। বাযুশ্চ তেজসা সার্দ্ধণ বৈষ্ঠত্ব ততো মমেতি শান্তিপ-র্বণীতি। ইত্যমরটীকাষাণ ভরতঃ ।।।।। অপিচ। স্বর্গণ জডক্ষ বিশ্বৌ-ষ॰ বিশিশ্বঞ্চ করোতি যা। বিঙ্গ-ঠাণ প্রকৃতিণ বেদা শ্চন্বারশ্চ ব-मिं তा॰ ॥ श्वनाञ्चासन जगवान् তস্যা॰ জাতঃ স্বস্ফীযে। পরিপূর্ণ-তমণ তেন বৈঙ্গগুঞ্চ বিদু বু ধাঃ।। *।। অস্য নাম্বে। মাহাত্ম্যু॰। যথ। 1 ताम नातायणानख मूक्क मध-সূদন। কৃষ্ণ কেশব কণসারে হরে বৈঙ্গপ্ত বামন ৷৷ ইত্যেকাদশ না-गानि পঠেष। পাঠবেদ্যদ। জন্ম কোটি সহস্যাণাণ পাতকাদবমূচ্য-তে ৷৷ ইতি বুন্ধবৈবর্ত্তে 'শ্রীকৃষ্ণ-জন্মখণ্ডে ১১০ অধ্যায়ঃ ৷৷ সাঙ্কে-ত্য॰ পারিহাস্য৽ বা স্তোভ॰ হে-লন মেব বা। বৈঙ্গু নাম গ্রহণ

गत्मयाषरतः विृद्धः ॥ देखि 🗐-তগতে অজামিলোখ্যানাধ্যায়ঃ ।। 🟶 ।। विकृशायविंटमयः । তদ्বर्न-ন॰ ষথা। উপরিষ্টাৎ ক্ষিতে রক্ষৌ কোটমঃশত্য মীরিত । সত্যাদু-পরি বৈঙ্গতো যোজনানাণ প্রমা-ণতঃ ৷৷ ভূর্বোকাৎ পরি সংখ্যাতঃ কোটি রফাদশ প্রভো। যত্রাস্তে শ্ৰীপতিঃ সাক্ষাৎ সর্বেষা মভয-अमः ॥ देवक्रशेषुख्दत्र देगद्वा-লোকঃ ষোডশকোটযঃ। তির্য্য-গেব মহারাজ কৈলাসাখ্যস্ত প-ৰ্বতঃ ৷৷ পাৰ্বত্যা সহিতঃ শস্তু ৰ্য-ত্ৰান্তে স্বগণৈ ৰ্বৃতঃ। ইতি পাদ্মে স্বৰ্গখণ্ডে ৬ অধ্যায়ঃ ॥ৠ॥ অপিচ । অমৃত॰ শাশ্বত॰ নিত্য মনস্ত॰ প-রম॰ পদ॰। হিরময়ণ মোক্ষপ্রদণ ব্ৰহ্মানন্দ সুখাস্থ্য ।। এব মাদি গুণোপোত॰ তদ্বিকোঃ পরমণ পদৎ । যক্ষাত্বা ন নিবৰ্ত্তত্তে তদ্ধাম প-রন॰ হরেঃ॥ নহি বর্ণযিতু॰ শক্য॰ কল্পকোটি শতৈ রপি। অপিদ্রষ্টু মশক্য॰ তদুক্ষ ৰুজাদি দৈবতৈঃ॥ জ্ঞানেন শাস্ত্র মার্গেণ জক্ষ্যতে रचािशभूकरेवः । তৎস্থान मूर्श-ভোক্তব্য মব্যক্ত ব্ৰহ্ম সেবিনাং ॥ শ্রীশাঙ্গ্রি ভক্তিসেবৈকরসাভৌ-

গ বিবজ্জিতাঃ। মহাত্মানো মহা-ভাগা ভগবৎ পদসেবকাঃ।। ত-**দিক্ষোঃপরম• ধাম যান্তি ভ্রন্ধ সু-**. প্রপ্রদ । নানাজনপদাকীর্ণ বৈ-अर्थे° उद्धरतः भम॰ ।। श्र**ा**कारेत्र क বিমানৈশ্চ সৌধৈ রত্নমধৈ যুতি ৷ তন্মধ্যে নগরী দিব্যা সাষোধ্যে-তি প্রকীর্ত্তিতা ৷৷ চতুর্ঘার সমাযু-ক্তা হেষগোপুর সংযুতা। চণ্ডা-**मिमात्रभारेलञ्ज अनुमारेमाः मृत**-কিতা। চও প্রচণ্ডৌ প্রাংশারে ষাম্যে ভদ্র সুভদ্রকৌ। বারুণাণ জ্ব বিজ্বো সৌম্যে ধাতৃ বিধাত-∢तो ।। अगूमः अगूमाकम्ठ পুखती-কোথ বামনঃ। সঙ্গুকৰ্ণঃ সৰ্বনি-**जः मूम्थः मूक्षिकिं।। जिस**न् বন্ধ বিনিমুক্তাঃ প্রাপ্যস্তে সুসু-খ পদ ৷ য প্রাপ্য ন নিবর্তন্তে তস্মামোক উদাহতঃ ৷৷ ুমোকণ পর পদ পিঙ্গ মমৃত বিষ্ণুমন্দি-রে । অক্ষর পরম ধাম বৈদ্বপ্ত **শাশ্বত**ণ পরণ ৷৷ নিত্যঞ্চ পরম-ব্যোষ সর্বোৎকৃষ্ট সনাতন । পর্যাষ বাচকান্যস্য পরু ধায়ো ২চ্যুতস্য হি ॥ ইতি পান্মে উত্তর-थए७ २२ व्यशायः ॥ 🗱॥ व्यनाक 1 ज्रुःभूत्र निवातिनाः गर्वनक्ष

ভূষিতাঃ। তাভিঃ পরিবৃতো দেবঃ শুশুতে পর্মঃ পুমান্।। এব॰ বৈ-স্পঠনাথো ২সৌ নাথতে পরমে পদে। তদ্যুহ ভেদাল্লোকা শ্চ ব-ক্যামি গিরিজে শুভে ॥ প্রাচ্যা• বৈষ্ঠ লোকস্য বাসুদেবস্য ম-ন্দিরে ৷ আগেয্যা প্লক্ষীলোকস্ত ষাম্যা॰ সংকর্ষণালয়ঃ ॥ সারস্বত-ম্ব নৈশ্বিতা। প্রাদ্যুদ্ধঃ পশ্চিমে তথা। রতিলোকস্ত বাষব্যা উ **मीठा। गनिकंक्षजृः ॥ ঐশा**न्ताः শান্তিলোকঃ স্যাৎ প্রথমাবরণ স্মৃত । ১। কেশবকীর্ত্ত্যাদি লো-কা দ্বিতীয়াবরণ তথা ৷৷ ২ ৷৷ মৎস্য কূৰ্মাদি লোকস্ত তৃতীযা-বরণ পর । ৩। সত্যাযুতা নন্দ मूर्गा विषक्रमन शब्दाननाः॥ भ-ঙ্খ পন্ম নিধী লোকা শুতুর্থাব-রণ স্মৃত । ৪। ঋগ্যজুঃ সামাথ-ৰ্বাণোলোকাদিষু মহৎসু চ॥ সা-বিত্র্যা বিহুগেশস্য ধর্মস্য চ সুখ-স্য চ। পঞ্চমাবরণ প্রোক্ত মক্ষয गर्व वाज्य था ।। ।। माड्थ ठळ गम। পদ্ম খন্দ্ৰ শাৰ্ক হল তথা। মৌষ-লঞ্চ তথা লোকাঃ সৰ্বশস্ত্ৰাস্ত্ৰস্-যুতাঃ ৷৷ ষষ্ঠমাবরণ প্রোক্ত শ-স্ত্রাস্ত্রময মক্ষয়ণ। ৬। ঐন্দ্র পাবক

यागाक टेन्स ७ व कुन : ज्या ॥ বাষব্য সৌম্য মৈশান সপ্তমণ মুনিভিঃ স্মৃত । সাধ্যা মরুদ্ধাণা देन्ठव रष ठात्मा ठ मिरवीकमः ॥ নিত্যাঃ সর্বে পরে ধান্নি বিশ্বেদে-বা স্তব্যৈব চ। তে কৈ প্ৰাকৃত নাকেস্মিন্ধ নিত্যা স্ত্রিদিবেশ্বরাঃ ৷৷ তেনাহ°বচ্মি মাষে ন সঞ্চিস্ত্য ইতি বৈ স্মৃতিঃ। এবং পরং পদৈ নি তৈয় যু তৈক ভোগ পরাষ্টেণঃ ৷৷ দিব্যাভি র্যহিষীভিশ্চ রাজতে বিষ্ণু রীশ্বরি। ন তভাস্যতে সূ-র্য্যো ন শশাকে। ন পাবকঃ।। যদাত্ব৷ ন নিবর্ত্তন্তে যোগিনঃ শণসিতত্রতাঃ। দ্ববৈক্মন্ত্র নি-ষ্ঠা যে তে বৈ যান্তি তদব্যৰ ॥ न त्वम राष्ट्राक्षायरेन नं त्वरेम नं ব্ৰতৈঃ শুভৈঃ। ন তপোভি নি-রাহারে র্ন চ সাধন কর্মভিঃ ।। একেন দ্ব মন্ত্রেণ তথা ভক্ত্যা ত্বনন্য। তকাষ্য শাশ্বত দি-ব্য॰প্রপদ্যে বৈ সনাতন॰॥ ইতি পাদ্মোত্তরখণ্ডে ৩০ অখ্যায়ঃ।। বৈকৃত ক্লী বীভৎসরসঃ॥ তদা-লম্বনে না॰স শোগ্নিতাদৌ তি। ইত্যমরটীকাষাণ ভরতঃ।। তথা । বিকৃত বৈকৃতঞ্চ স্যাত্তচ্চ বৈ-

কৃত্য মুচ্যতে। ইতি ভরত দ্বিৰ-পকোষঃ।।

বৈক্ত্য ক্লী ৰীভৎসরসঃ ।৷
তদালয়নে ত্রি ৷ যথা ৷ ত্রিষু
বীভৎস বিক্ত বৈক্ত্য বিতত
স্তথা ৷ ইতি শব্দরত্বাবলী ৷৷

खशा इं कि मक्त जावनी ।।
देवका छ॰ क्री मिनिदि मक्ट । छ॰
भर्गाय छटने । देवका छटे छव दिका छ॰ नी ठवकु॰ अवकु क॰ ।
एगाना मः क्रू प्रशान की नंव-कु छ॰ एगान मः ॥ वकु। जाद ठ देवका छ॰ तम वी ग्रां मिटक मम॰ । क्रम अर्थ विषय १ भृष्टि म॰ मूत-मार ग ।। देवका छ॰ वकु माम्-भा॰ वकु वजम वी ग्रं व॰ । छथा-श्राका दि वकु मा छा छ॰ देवका छ मूल म॰ ॥ वकु। का त्र ठदेवन छम-श्राका छ॰ भटक विषय ।। य-विका छि॰ भटक व्यवका छ॰ वू-देश तिमः कि श्राकः ॥ इं छि ता छन-निर्म न्हें ॥

বৈথরী স্ত্রী বৃদ্ধ্যুখিতকণ্ঠগতনাদৰ্জপবর্ণঃ। কথা। মূলাধারাৎ
প্রথম মুদিতো যস্ত তারঃ পরাখ্যঃ পশ্চাৎ পশ্যস্ত্যুথ হৃদযগো
বৃদ্ধি যুঙ্ মধ্যমাখ্যঃ। বক্তে বৈখর্যাথ রুক্দিবো রুশ্য জডোঃ

সুসুমা বন্ধ ভাষাভরতি পবন প্রেরিতে। বর্ণসূ•হং ॥ ইতাল-कात्रकोञ्चङः ॥ जन्मार्थः। यञ्च তারো নাদঃ বর্ণবাপঃ স নাভি-প্রাপ্তক্ষেৎপর ইতি আখ্যা সং-জ্ঞা ৰস্য তথাভূতো ভবতি। অ-পানস্তর সএব হুদ্য চিত্ত গ-ত শেচৎ রোদন সমযে নাসিকা ভারা বথাকথঞ্চিৎ ভবতি। রুক্র-দিষো জ্ৰম্ভে। ৰ্নাসা মধ্যন্থিত সু-সুন্না ৰাড্যা ৰদ্ধঃ। তথাচ নাসা স্বার্টেরব বথাকথঞ্চিৎ নাদ স্বৰা-পাঃ প্রত্যক্ষ স্তবতীত্যর্থঃ। তশাৎ বৈশ্বরী দশাপন্নাৎ নাদাৎ পব-ন প্ৰেরিতো বর্ণসমূহঃ বহিঃ স-ৰ্বেষা• প্ৰত্যক্ষ বিষয়ে। ভবতী-ত্যর্থঃ ৷ পরা পশ্যন্তী দশাপন্নস্য তু যোগিনা মেৰ প্ৰত্যক্ষে ন তৃ সর্বেষা মিত্যপি বোধ্য । ইতি ভটীকা।।

বৈথানসঃ পু॰ বানপ্রস্থা। বানপ্রস্থো বৈথানসো ২গ্রহ্থ। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।।

देवल्यः की विश्वनं । विश्वनं मा जावः। यथा। वाजाशवर्ज्द युगाः विश्वनाद श्राक्रकमा ह। ভত্ত স্বামী ভবেদ্দণ্ড্যে হিংসাযাণ দ্বিশতং দমঃ ॥ ইতি মনুঃ ॥ বৈচক্ষণ্য ক্লী বিচক্ষণত্বং । বিচ-ক্ষণমা ভাৰ ইত্যৰ্থে ফ্য প্ৰত্য-যেন নিষ্পান্ধং ॥

বৈচিত্র্য জী বিচিত্রতা। বিচিত্র-স্যভাব ইচ্যার্থে ক্ষ্য প্রভাবেন নিষ্পন্ন ।।

देवजननः श्रृ अमयमामः। ७६ श-वंगवः। मृजिमामः २। इजामदः॥ देवजयकः श्रृ इस्प्रशामानः। इजामदः॥ इस्प्रश्चः। इजि मिनी॥ छदः। इजि हमहसः॥ देवजयक्षिकः वि श्राकाशादी। इजामदः॥

বৈজয়ভিক। স্ত্রী জয়ন্তীবৃক্ষঃ।। পতাকা। ইত্যমরঃ।। অগ্নিমন্থঃ । ইতি রাজনির্যক্টঃ।।

दिक्यकी खी भणका। हेणमतः ॥ क्यकीनृकः। हेि प्रमिनी ॥ व्यक्तिमङ्ग्कः । हेि
एम्प्रकः ॥ भक्ष्यन्त्रशे कान्भर्गक विका माला। यथा ।
क्रेभगीयमान केमायन् विक्रिकः
भ्रम्भार । मालाः विक्रिकः
स्क्रीः बाहतन् मक्ष्यम् दनः॥
हेि खीकागवर्क ३० खर्स ७३

देवभव

অধ্যায়ঃ।। বৈজ্যিঃ পু•' মহবা। সতুজিন-চক্রবর্ত্তিবিশেষঃ। ইতি হেম-চন্দ্রঃ॥

বৈজ্যিক তি বিজ্যসম্বন্ধ। ইতি সিদ্ধান্তকৌ মুখী ।।

देविकिक की निग्देवन । रहवूः । इवि मिनी । बाबा। इवि नक्याना ॥

বৈজিকঃ পু॰ সদ্যোৎকুরঃ। ইতি মেদিনী ॥ বীজসম্বন্ধিনি ত্রি ॥ বৈজ্ঞানিকঃ ত্রি নিপুণঃ। ইত্য-মরঃ॥

বৈডালতত নী দুফাচারবিশে-যঃ। যথা। যস্য ধর্মধজা নি-ত্যু শক্রধজ ইবোচ্ছিতঃ। প্র-চ্ছনানি চ পাপানি বৈডাল নাম তদ্ভুত।। ইতি দানসাগরে খ্যবচন•।।

বৈডালব্ৰতিঃ পু॰ অঙ্গনাদ্যভা-বাৎকৃতব্ৰদ্যৰ্ভাঃ। ইতি জটা-ধরঃ।।

देशनजिकिः श्रृ इस्रुव्यक्षी। ज्यभंदाः। इस्रुज्ञानमः २ म-वंज्ञित्ती ७। देखि जिकाक-रमसः॥ क्या मण्डाग्रदः यथा। भारकिता विक्यस्तान् देखान- ব্ৰতিকান্ শঠান্। হৈতুকান্ বকবৃত্তী শ্চ বাজাতে গাপি নাৰ্চযেৎ ।। ইতি বিষ্ণুপুরাণেও অংশে ১৮ অখ্যায়ঃ ।। ষস্য ধর্মধজো নিত্য সুরধজ ইবোছিতঃ
। প্রচ্ছমানি চ পাপানি বৈডালভ নাম তদুত ।। তদান্ বৈডালভতিকঃ । ইতি তট্টীকা ।।

বৈডালত্রতী পুণ ভণ্ডতাপদঃ ।
বিডালতপ্রী ইতি ভাষা। যথা
। ছদ্মনা চরিতণ তচ্চ ক্রতণ রক্ষসি
গছতি । অলিসী লিলবেশেন
যো লিল মুপঞ্জীবতি ॥ স লিক্রিনাণ হরেদেন ভির্যযোগেনী চ
জাযতে । বৈডালত্রতিনঃ পাপাঃ সর্বধর্ম বিনাশকাঃ ॥ সদ্যঃ
পতন্তি পাপেষু কর্মণ স্তস্য তৎ
ফলণ । পাষ্যতিনো বিকর্মহান্
বামান্যারাণ স্তব্যৈর চ ॥ পঞ্জাত্রান্পাশুপভান্ বাজাত্রেণাপি
নার্চষ্টেৎ । ইতি কৌর্মে উপরিভাগেও অধ্যায়ঃ ॥

देशः भुः त्वकृषिती। त्वनृभकाः मन्द्राज्यसम् छकात्रमा कार्याः म च मिलामः। ইতি निकासः कामूनीः।

दिनव की सन्वन । रेखायतः

॥ त्वभूमयिक्ति वि॥ दिववः पू॰ छेलनयत्न दिवृष्टः। তৎপর্যায়ঃ। রাস্তঃ ২। ইত্য-यतः ॥ বৈণবিকঃ ত্রি' বেণুবাদকঃ। তৎ-र्यायः। त्वृथ्याः २। ইত্যমরः॥ বৈণুকঃ ৩। ইতি শব্দরত্বাবলী॥ বৈশ্বী স্ত্ৰী বংশলোচন। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ । दैविकः जि वीषावाषकः। देखाः यदः ॥ दिवृकः क्री शब्जा তाদनम्यः। **७** जु रिस्ति । जन्म भंप कि स्थित । শদ্ধ• ৷ তৎপৰ্য্যাৰঃ ৷ তোল্ৰ॰ ২ । ইত্যমরঃ ॥ বেণুক ৩। ইতি ভরতঃ ৷৷ देवनुकः भुः दिनुवानकः। ইতি नमत्रवावनी ॥ देवपूकीयः जि বেণুসম্বন্ধীयः । ইতি সিদ্ধান্তকৌসুদী।। नीय शक्ष्मत्राकः। यथा। आपि-ব্লাক্ষঃ পূথু বৈবেদা মান্ধাতা যৌ-बनायकः। रेलिक्रिंगधनः॥ বৈত্ৰ সিকঃ ু জি মাণসবিজেত।। তৎপর্যায়ঃ। কৌটিকঃ ২ মাণ-निकः ७। रेजामतः॥ को हेकि-

কঃ ৪। ইতি শব্দরত্বাবলী ।। মৃ-গপক্ষ্যাদি বন্ধনোপায়ে। বীত-নঃ তেন চরতীতি বৈতংসিকঃ। ইতি ভরতঃ।।

বৈতনিকঃ ত্রি বেতনভুগ্ভৃত্যঃ৷ **७९** शर्मा यः । जृठकः २ जृठिः ভুক্ ৩ কর্মকরঃ ৪। ইত্যমরঃ ॥ বৈতরণিঃ 👌 স্ত্রী নরকসিষ্কুঃ। ই-বৈতরণী 🔰 ত্যমরঃ ৷৷ বিতরণেন দানেন তীর্য্যতে বৈতরণী ক্ষঃ यिखु। मीश् स्थे देव जर्निक । অটবি পটি ঘাটী বৈতরণার্চ্চ শুগী রিতি হুসান্তেয়ু রুজঃ। ত তোপি পাচ্ছোণাদীতি বা ঈপ্ বিরুদ্ধ তরণ বিতরণ তদস্যা মস্তীতি বৈতরণীত্যন্যে। বিত-রণৌ বিসূর্য্যে পাতালে ভবা বৈতরণীতান্যে । বিতরণি র্বি-নৌকা তর্ণ শূন্যেত্যর্থঃ স্বার্থে কে বৈতরণীত্যেকে। সিন্ধু র্নদী । नात्रका जन्जदः थ्यना नही বৈতরণী স্থৃতা। ইতি ত্রিকাখণ। ইতি ভরতঃ ॥ 🐠।। সা নদী দু-ৰ্গন্ধা তপ্তজ্ঞলা মহাবেগা অফি কেশ রক্ত পরিপূর্ণা বনছারে वर्खए । यथा। मनी देवछत्री माम पूर्णका क्रिवानहा। छेकः

তোয়া মহাবেগা ছব্ছি কেশ। 'তরবিণী ॥ ইতি'প্রায়শ্চিম্নবি-বেক ধৃত ষ্মদগ্নি রচন গা # 11 অস্যোৎপত্তি র্যথা । মার্কণ্ডেয উবাচ । ততে। ব্রহ্মাদযো দেবাঃ সর্বে তে শক্ষরান্তিক । গদা হর সংমনুহঃ সাংসাধ্যা ষোগমাষ্যা ॥ শনৈশ্চরোপি ভূতেশ মাসাদ্যা-ন্তর্হিত ন্তদা। বাষ্পবৃষ্টি॰ দুরা-थर्वे। यदक्र आह् भाषया ॥ यह। म নাশকদাস্পান্ সন্ধার্যিতু মর্ক-জঃ। তদা মহাগিরো ক্ষিপ্তা বা-স্পা স্তে জলধারকে ৷৷ লোকা-লোকস্য নিকটে জলধারাহ্হযো গিরিঃ। পুষরদ্বীপ পৃষ্ঠস্থ স্তোয-সাগর পশ্চিমে।। স তু সর্ব প্রমা-ণেন মেরুপর্বত সন্নিভঃ। তন্মিন্ विनाखवान् वाणान् न धर्कुः कम भेगिजुः ॥ विमीर्ग देखञ्च वाटणी-যৈ ভঁগমধ্যে। ২ভবদুত । তে-বাস্পাঃ পৰ্বত• ভিত্বা বিবিশ্ব স্তো-ষসাগর ।। সাগরোপি এহীতৃ তান্ন শশাক ধরানতি। ততন্ত সাগর মধ্যে ভিম্বা বাস্পাঃ স-মাগতাঃ ৷৷ তোষধেঃ প্রাগ্ভবা৽ বেলাণ স্পৰ্শমাত্ৰাৰিভেদ্ধ তা ৷ বিভিদ্য বেলাণ তে বাশাঃ পু-

ক্ষরদ্বীপ মধ্যগাঃ ।। নদী বৈত-রণী ভূষা পূর্বসাগরগা ভবন্ 1 জলধারস্য বেগেন সংসর্গাৎ সা-গরস্য চ ।। অবাপ্য সৌম্যতা॰ কিঞ্ছাম্পা স্তে নাভিদন কিভিণ। चनान्य वाजना श्री विनी ना जा-মচেচ্ছনিঃ॥ অবজগ্রাহ তেবাস্পণ সোপি কৃষ্ণো ২ভবদ্ধঠাৎ। শনৈ-শ্চরেণ তে ৰােচু নসমর্থেন লাে-**छटेकः ॥ क्लिटेश विमान्निकः मा**-**मै। জলমারো মহাগিরিঃ।বিভি**-দ্য পৰ্বত॰ শড়ো ৰ্বাস্পা তে সাগ-র যযুঃ ৷৷ বৈবস্বত পুরুষারে যো-জন হব বিস্তৃতা। অদ্যাপি তিষ্ঠ-ত্যপগা হরলোতক সম্ভবা ৷৷ ভি-ছা বেলাণ ততঃ পৃথীণ বিভিদ্যাশু **ज्यक्रिनी॰ ।** ठळ्नु देवंज्यनी नामा পূর্বসাগরগামিনী গা নানা যান বিমানেন নজৌণ্যা স্যঙ্গনেন চ ৷ তর্ভু॰ শক্যা সাতু নদী তপ্ততোযা বিভীৰণা ৷৷ দুঃখেন তা তু পৃথি-বী বিভৰ্জি মহতাধুনা। সদা চো-ৰ্দুগতৈ বাঁশে বিকিপত্তি নত-कत्रान् ॥ जन्मा उनित सा सा-**डि (मदा) जिंगे छ्वा बदा। येन**-ৰার সমাবৃত্য যোজনবৰ বিস্তৃ-তা ৷৷ নিয় বহতি সপূৰা জীয-

বন্তী জনত্রয় । ইতি কালিকাপু- | বৈতানিকঃ পু প্রোতহোমঃ। त्रात्न ३४ व्यथायः ॥ 🗰 ॥ शिजृ-कबा। यथा । व्ययङ्गानक रङ्गा-নঃ পিতরো ব্রহ্মণঃ স্মৃতাঃ। অগ্নি-স্বান্তা বৰ্হিষদে৷ দ্বিধা তেৰা ব্য-বহিতঃ।। তেতাঃ স্বধা স্বধা মজে रमना देवज्रनी ज्या । इंछि क्लिक्न ३२ व्यागिकः॥ 🛊 ॥ व्याग-मम्जूकारण देवज्रवीभवीमानः वर्षाः चानमम्जूमा (एषा त्रीः সৰ্থসা চ পূৰ্বত্। তদভাবে চ সৌ জ্বেকা নরকোদ্ধারণায় বৈ ।। তদা বদি ন শক্ষোতি দাতু বৈত-্রবীক গা॰। শক্তোন্যো ইরুক छंगा मचा ध्याया नमाम्या ह ११: शृद्रेराक्षमण् क्रांनिना । ख्राञ्चः मृ-क्मी क्रिंडि अवगारमकामभारर र्शि देवजबनीकानामात्रव । देवि 🖟 শুক্ষিতজ্ব 👊 🛊 ॥ বৈতরণী গো-क्षानिस्त्र थार्थना गत्ना वया। - विद्यादि महात्यादि छन्छ। देवछ-विश्वासाम् अर्जुः ममार्थासाः क्किन्द्रकानीक नाम् गा देखि कर स्ट्रीवहें।। चनाद क्यूक्न-CAMPAN II NO 1010 F टेस्डाक्र श्री नार्यक्रमा १ वि - STATE OF THE PARTY OF THE PAR

यथा। यत्रनीटलव् कर्छवाः मःरशं-গো ষশ্য নামিনা। দাহাদৃদ্ধ মশৌচ স্যাদ্যস্য বৈতানিকে ৰিধিঃ ॥ ইতি শুদ্ধিতত্ত্বু॰ ॥ বি-তানসম্বন্ধী যে তি। বিতানশ-কাৎ ব্যক্ত প্রত্যযেন নিষ্ণায়ঃ॥ বৈতালিকঃ পু॰ বে!্ধকরঃ। ইত্য-यतः ॥ एवं निमास्य दोषकातः (क । विविद्या भक्त गीर्छ वा-मामि कृष खान भक्तः जन ব্যবহান্তি বৈতালিকাঃ চন্দে-কাদিতি ফিকঃ। নিশান্ত নি-বেদয:ন্তা যে নৃপণ বোষযন্তি জাগরষম্ভি তে বোধকরাঃ সৃগ-ষ্ট ইতি টঃ। ইতি ভরতঃ॥ থৈ-क्टिंग्यः । यथा । देवणाणिकः পুমান্ খেডিভালে বোৰকরে बियु। रेडि मिनी।। एर्निट তু:পাঠান্তর যথা। বৈতালিকঃ **বড্জন্তালে মহলগাঠকে**পি চ 🍟 ॥ स्वानमबिद्याति 🍱 ॥ देशकार जि বেত্রসম্বন্ধি। বেত্র শ্ৰাৎকণ্প্ৰত্যথেন নিপামণ।। टेन्बर्टक्यः जि देवजगरशीयः। रिक मन्त्रांथ रक्ष श्रेणारान ्निमार्ग्ड[ा]

ইবদঃ ত্রি পণ্ডিতসম্বন্ধী। বিদ্ শব্দাৎ ক প্রত্যেবন নিশামঃ।। বৈদক্ষ ক্রী বিদক্ষত্ব । যথা। বৈদক্ষ মপি বৈদক্ষী। ইতি ভর-ভ ন্ধিকপ্রকামঃ।।

বৈদম্মী স্ত্রী ভঙ্গিং। যথা। ছল মেষ্ণ বৈদম্মী ভঙ্গি শ্রেচ-ভনিমীলিক।। ইতি ত্রিকাণ্ড-শেষঃ।।

বৈদশ্ব্য ক্লী বিদশ্বস্য ভাবঃ। বিদশ্বশব্দাৎ ষ্য প্রত্যযেন নি-পান্ন ।।

देवमर्जः क्री वाकावक्रपः। इिंठ भिन्नी ॥ विमर्जमप्रक्षिनि कि ॥ देवमर्जः भूः विमर्ज्यम्भीगताजः। म जूममप्रजीभिका जीमरमनः। क्रिकानीभिका जीमकम्हा। वाका-विक्रमा। इिंठ ध्रतिशा

देन श्री श्री कारा द्री शिष्ट कर । इंडि मिनी ।। यथा। द्री शिक्ष मान्न । अनुन्य केना द्री शिक्ष द्रा कार्य कार्य कार्य अनुकारी द्रा मिना कार्य कार्य

ব্যঞ্চকৈ বঁ ৰৈ রচনা ললিভান্থি-ক। । অবৃত্তি রন্মবৃত্তি 🐐 বৈদভী, রীতি রিব্যতে॥ यथा। অনঙ্গ ম-ৰল ভুব ইত্যাদি। ক্লটেন্ত্ৰাহ। অসমত্তৈক সমস্তা যুক্তা দশভি र्थ रेनम्ड रेयम्डी । वर्ग विकीय वर्णा यत्र आगाकता ह मृति-ধেষা ৷৷ অত্র দশগুণা স্বস্তাত্তা-काः अवाष्ट्राः । ७५ः श्रकान्-देक बेटेर्न बेन्न बाउनतः भूनशाक्षा मनाम दहना भी की यथा । हक-ভূজেতাদি। পুৰুষোত্তম জ্বাহ। বহুত্র সমাসমুক্তা সুমহাপ্রাণা-করা চ গৌডীযা। রীজি রন্-প্রাস মহিম পরতন্ত্রা স্তোভকাক্যা চ।। বৰ্টৰ্যঃ পেৰেঃ পুন ৰ্যব্যেঃ স-মন্ত পঞ্চৰপদো বন্ধঃ পাঞ্চালিকা मणा बद्या देवलजी दमोरकाः। यथा। यपूत्रया यथूरवाधिक सामवी मधूनमृक्ति मरमिक रमश्या । मधू-করালনমা মৃক্সমানধনি ভূতা নি-ভূতাৰার মুক্তগোলাকা ভোজস্থা-र। तरस्य अक्षणा स्माजः का-ন্তি সমন্তিতি । নাৰ্বা - সুৰুমারাখ शाकाकी करता विषु ।।।।। के पू तीषि देवनजी भाष्यात्मा। क्र-खत्रा विका । यथा । अतः सुमयिक

नुषा ७ श्रनः शिष्मीन। मूमयगिति। বনালী বাল মন্দার পুস্পা। বির-र तिश्र काक सम् वस् विजिमन স্পিত কপি কপোল ক্লোড তামু स्त्रमार्शन ॥ क्रिन्छमार । स्मूलन স্মাদ সুভগা যুক্তে ব'ৰ্টে ন্চা-ভিভূমিষ্ঠা। উচিত রিশেষণ পূরি-ত বস্তু ন্যাসা ভবেলাটী ॥ 🗯 ॥ অন্যেত্বাহুঃ। গৌডী ডবর বন্ধা मार रेक्स की विविष्ठ क्रिया है। शाकानी निज्ञात्वन नागि जुन् मुज्ञिः गर्देमः ॥ किछ् वक्तारमा **ठिल्लाक्नाथा यहमामयः। यक्का-**দীতাদি শব্দাঘাচ্য প্ৰবন্ধে বচ-नामीलापि नकाष्ठि वर्गा। छ्व वरक्ष्रीविकाम्बशा असाय स्टार्न বাস্ত ইত্যাদি। অত্র বাচ্যস্য ক্রো-ধাদ্যব্যঞ্জক্ত্বেপি ভীমদেন বক্তৃ-(ब्रुट्सिक्क) वहनामयः । बारहारी-विज्ञानस्थानास्य । नुक्याम्-सम्बद्धारणे।। 🗢 ।। थ्यास्त्रीकि-**जानका।। नाहकारमें जोरब**भा-जिनस क्षेत्रिक्षाइन न मीर्स ग्रमा-मामबः। এব साथाविकामाः भु-कार्त्वित न कण्त वर्गापयः। क्यो-না-ক্রেক্সি নাত্যন্ত প্রস্তাংধ্ব म्तारिं कार् । हेडि गारिछा-

मर्भर श्री जितित्व को माम अश्र-রিচ্ছেদঃ ম 🗰 চা অগস্তাগত্নী ৷ हेि भक्तब्रावंनी ॥ प्रमस्त्री। যথা। বৈদভী বিপুলানুৱাগ ক-লনা সৌজাগ্য মত্রাখিল কৌণী চক্ৰ শতক্ৰতো নিজগদে তদৃত্ব বৃত্তক্রমেঃ।কিশাস্মাক নরেন্দ্র-ভূ সুভগতা সম্ভূতবে লগক দে-বেন্দ্রাবরণপ্রসাদিত শচী বিশ্রা-ণিতাশীৰ্ষচঃ৷৷ ইতি উত্তরনৈষ্ধে ১৫ সর্গঃ। ऋक्तिनी। यथा। देवन র্ভ্যাঃ স তু সন্দেশং নিশম্য ষদুন-ৰূমঃ। প্ৰগৃহ্ছ পাৰিনা পাণি প্ৰ-হসন্ দ্বিজ মত্রবীৎ।। ইতিশ্রীভা-গবতে ১০ ক্ষন্ধে ৫৩ অধ্যায়ঃ॥ टेवमण की जिक्क्क्माम्ययोपि-পাত্র । যথা ৷ পাত্রস্ত দারবালা-तू मुग्रामानानि देवएन । ইতি क्रिवद्भः ॥

देवलवः शृ शिक्तकः। यथा।
शृरता रुत्ताः शिकाः नादिमरता विमरतालि ह। रेजि गर्नहिल्का ।। विमरता मानि छनिसिंछ शिकेरका रेक्सकः। जन्नगाः। देवलना श्वादना छन्ना विकेन्द्रि मृक्तमान्नकाः। रेजि नाजवाकाः।

दिविषिकः পুং বেদজ্জ্বান্ধণঃ ৷৷ বেংদাক্তে ত্রি। यथा। বৈদিকী তান্ত্ৰিকী সন্ধ্যা যথানুক্ৰম ষো-গতঃ ৷ ইতি তন্ত্রসারঃ ৷৷ বৈদিশ্য ত্রি বিদিশাষা অদূর-ভব নগর ৷ ইতি সিদ্ধান্ত-(को भूमी ।। देवमुषा॰ क्री विमूर्याञावः।विषम् শব্দাৎ ষ্য্য প্রত্যাযেন নিষ্পান্ন"।। दिवपूर्या॰ क्री मिनिदित्यसः। म जू क्रक्षशीठवर्गः। वश्मूनीया इंडि হিন্দী ভাষা। অস্য দেবতা কে-তুঃ । তৎপর্য্যায়ঃ । বালবায-জ॰ २। ইতি হেমচন্দ্রঃ।। কেতু-রত্ন• ৩ কৈতব• ৪ প্রাবৃষ্য• ৫ অভুরোহণ ৬ খরাব্দাঙ্কুরকণ ৭ বিদূররত্ন ৮ বিদূরজ ৯৷ অস্য গুণাঃ। অমুত্ব°। উষ্ণত্ব°। কফ वायूनाणिषः। खन्ना भून अगम-নত্বণ। ভূষিতঞ্চেৎ শুভাবহত্বঞ্চ । ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।। অপি চ। मूक। विज्ञम वर्कुछ देवपूर्या স্ফটিকাদিক । মণিরত্ন সর শীত ক্ষায় স্বাদু লেখন ॥ চাক্ষ্য পারণ তিচ্চ পাপালকী বিনাশন । ইতি রাজবন্ধভঃ।। 🗱 🛚 । छक्ष्यनक्षन यथा। धकः 📗

বেণুপলাশ কোমলব্লচা মাযূরক-গুদ্বিষা মার্জারেক্ষণ পিঙ্গলচ্ছবি-জুষা জ্ঞেষ তিথা চ্ছা যমা। যদা।-ত্রু গুরুতাণ দধাতি নিতরাণ স্নি-শ্বস্তু দোষোষিত বৈদূর্য্য বিশদ বদন্তি সুধিয়ঃ স্বচ্ছঞ্চ তচ্ছোভন ।। তস্য अलक्ष्य वर्गा विक्र्य मृष्टिवा'গर्ভ° वयु बक्कश्व मक्कउ°। স্ত্রাসং পরুষং ক্লম্ভ বৈদূর্য্য দূ-রতাণ নষেৎ ৷৷ তৎ পরীক্ষা যথা । घृके॰ यनाज्ञनात्रकः त्रकायाः নিক্ষাশ্বনি স্ফুট প্রদর্শবেদেত-দৈদ্যাণ জাতা মুচাতে।। ইতি तार्जानर्थकः ॥ 🟶 ॥ मृष्ठ উदाठ । বৈদ্ধ্য পুষ্পরাগাণাং কর্বেত ভীমকে বদে। পরীক্ষাণ বন্ধণা প্রোক্তাণ ব্যাসেন কথিতাণ দ্বিজ ৷ কল্পান্তকাল কুভিতাযুৱাশি निश्नां म कन्नामि छिक्रमा नामा । বৈদুর্য্য মুৎপন্ন মনেক বর্ণ শো-ভাভিরামণ দ্যুতি বর্ণ বীজণ ॥ অ-বিদূরে বৈদূর্য্যসা গিরে রুত্ত সরো-थमः। कामे ভृতिक नीमान मन्-जमाकता रज्य ॥ जमा ना-म সমুখবাদাকরঃ স্মহাগুণঃ। অভূদ্তরিতো লোকে লোকত্রয বিভূষণঃ ৷৷ তলৈয়ব দানবপতে

देवपृथा

'নিনদানুৰূপ প্ৰাবৃট্ প্ৰোদ বর-দর্শিত চারুকপাঃ। বৈদূর্য্য রত্ন মণ্যে। বিবিধাবভাসা স্তস্মাৎস্ফু-লিক নিবহা ইব সম্বভূবুঃ ৷৷ পদ্ম-ताग मूलामाय मनिवना हि त्य कि-তৌ।সর্বাণ্সান্ বর্ণশোভাভিবৈ-দূর্য্য মনুগছতি।। তেষা প্রহান निचिक्छेनील॰ यहा ভবেছ पूरल প্রকাশণ চোষাগ্র পক্ষ প্রতিমঞ্জি ষো যে ন তে প্রশস্তা মণিশাস্ত্র विक्तिः ॥ क्ष्मवान् देवमूर्या मनि त्यी-জ্বতি স্বামিন বরভাগ্যেঃ।দো-বৈষু ক্তো দোবৈ ক্তমান্দত্মাৎপ-রীক্ষেত্ত ৷৷ গিরিকাচ শিশুপা-লৌকাচ স্ফটিকাশ্চ ভূমি নির্ভি-নাঃ। বৈদূর্য্য মণে ব্লেতে বিজ্ঞাত-যঃ সন্নিভাঃ সম্ভি॥ লিখ্যাভাবাৎ কাচ॰ লমু ভাবাচৈছগুণালক বিদ্যাৎ ৷ গিরিকাচ মদীপ্তিত্বাৎ क्किक रर्शिब्जुनएवन ॥ यमिन्छ-नीलमा यहा खनमा मूदर्ग मन्या-किन्छमा भूनाः । ज्राप्त देवपूर्या মণেঃ প্ৰদিষ্ট॰ পলছযোমাণিত গৌরবস্য ৷৷ জাভাস্য সর্বেপি ম-ণেস্ত যাদৃক্ বিজাতবঃ সন্তি স-भानवर्गाः । छथाणि नानाकत्रण-न्त्यय जिम्बाकातः भन्नयः ध-

पिखेः ॥ সু**र्वा**शनकान्छ मन। वि-চার্য্যো হুষ প্রভেদো বিদুষা ন-রেণ। স্নেহ প্রভেদে। লঘুতা মৃদ্-ত্ব॰ বিজ্ঞাতি লিক্ব॰ খলু সাৰ্বজন্য৽ ।। সশলা সশলৈঃ প্রযুজ্যমানাঃ প্রতিবদ্ধাঃ প্রতিসৎক্রিয়া প্রয়ো-গৈঃ। গুণ দোষ সমুদ্ভবু: লভন্তে यनरवार्थाञ्चत मूला त्यव जिनाः॥ ক্রমশঃ সমতীত বর্ত্তমানাঃ প্রতি-वका मनिवन्नदक्त यञ्चाष्ट्र। यिन नाय जविष्ठ (मायशीना मनगः य-ড্গুণ মাপুবস্তি মূল্য ।। আক-রান্ সমতীতানা মুদধে স্তীর দ बि**र्थो। मृला মেতশ্বীনাম্ব**ন স-ৰ্বত্ৰ মহীতলে।। সুবৰ্ণো মনুনা य-দ্ৰ প্ৰোক্তঃ বোডশ মাৰকঃ। ত-স্য সপ্ততিমো ভাগঃ সণ্ঞাৰপণ করিষ্যতি ।। শাণ শচতুর্মাষ মানো यायकः शक्ककवः। शलमा मन-**নো ভাগো ধরণঃ পরিকীর্দ্তিতঃ**।। ইতি মামবিখিঃ প্রোক্তো রত্নানা ৰুল্য নিশ্চষে। ইতি গাৰুডে বৈ-म्यागतीका १७ व्यशायः ॥ 🗱 ॥ অন্যক্ত। সিতঞ্ ধূমুসকাশ মী-**म**eक्रकिञ् ७८वं । देवपूर्या নাম তত্তত্ত্ব রত্নবিন্ডি রুদাহতে ।। বন্দ কৰিব বিট্ পুত্ৰ জাতি তে- দাক্টতুৰ্বিধণ। সিতনীলো ভবেদি-। প্রঃ সিতারকস্ত বাহজঃ।। পীতা-नीन उर्देश मा ५ नीन अव रि मृषकः॥ 🛊 ॥ जय छनाः। মার্ক্জারনযনপ্রখ্যণ রস্মোনপ্রতি-ম' হি বা। কলিল' নিৰ্মাল ব্যহ্ব বৈদুর্য্য দেব ভূষণ ৷৷ সূতারণ ষন মত্যচ্ছণ কলিলণ ব্যঙ্গ মেব চ। বৈদূৰ্য্যাণা॰ সমাখ্যাতা এতে পঞ্চ মহাগুণাঃ ।। তদ্যথা। উদ্যিরমি-ব দীপ্তি যো ২সৌ সুতার ইতি গদ্যতে । প্রমাণতাল্প গুরু ষৎ यन मिठाजिशीयरा ॥ कृतसामि বিহীনণ তদতাচ্ছ মিতি কীৰ্ত্তিত। ব্রহ্ম শত্রু কলাকার শ্চঞ্চলো যত্র पृगार**ण।। कविवा नाम ए**जाब्रः সর্বসম্পত্তি কারকণ। বিশ্লিকীঙ্গন্ত বৈদুৰ্ব্যণ ব্যঙ্গ মিত্যভিধীৰতে।।#।। কৰ্করণ কৰ্কশ• ত্রাসঃ কলকো দে-হ ইত্যপি। এতে পঞ্চ মহাদোষা বৈদুৰ্য্যাণা মুদীরিতাঃ ॥ শর্করা-যুক্ত মিব যৎ প্রতিভাতি চ কর্করণ । স্পর্দেপি চ যত্তজ্জেব কর্কশণ বন্ধুনাশন ।। ভিন্ন ভ্রান্তিকর স্ত্রা-मः म अर्था। अवामः क्याः विक्र-জবৰ্ণে। যুস্যাকে কলকঃ কৰ কা-রকঃ ৷৷ মলদিশ্বাইবাভাতি দেহে৷

प्तर विनागनः। क्यि यि यि मृ वर्ण काग हीत्ना यहा वा यहवि-ध मिन्दाती जृशिक क्षा यक्ति। प्रधानि धृक्तायः क्षा कृ देवहूर्या तक्षः श्रिक्तिक क्षा क्षा क्षा क्षा का त्यध्य विभक्ष क्षा क्षा क्षा का त्यध्य विभक्ष क्षा क्षा का का देवहूर्या भरीका।। चना क्षा क्षा क्षा क्षा क्षा क्षा का गक्र क्षा विष्य क्षा क्षा का गक्र क्षा व्या क्षा क्षा का

दित्तरः शृः विक्। हेठामतः प्रैकाशः जत्रकः ॥ निमित्राकः शृक्षः। जत्मा । शृक्षः भतीतं म-ताकक जीत्रव एउ मूनसः जत-गाः ममणूः । जक व नमादता कर्षाः । जननाकनक मःखाः विक्रित देव्दाकः । मधनामिशि त्रज्वत्मामायमुः शृद्धाश्च्यः । हेठि विकृश्वादः । स्था-निमिकः कथनः नाम ६ जशा-सः ॥ जमा विद्यहं नाम कात्रशः निमिकः कक्ष्याः ॥

देवसङ्कः श्रू॰ विक्। ইতামরः ॥ শুদ্রাৎ देवसागूङः। ইতি यেमिनी ॥

रेबामिकः भू॰ विक्। रेकाः अत्रीका मात्रमुमती ॥ বৈদেহী স্ত্রী রোচনা । সীতা । । বণিক্স্ত্রী ।। পিপ্পলী । ইতি মেদিনী ।।

বৈদ্যঃ পু• পশুতঃ। যথা কা-ত্যাষনঃ। নাবিদ্যানাম্ব টবদ্যে-न एम विमाधन कि । म-भविष्णा**धिकानाञ्च एमय॰ देवए**ष्टा-ন তদ্ধন ।। বৈদ্যেন বিদুষা। हेि मायञ्कु ॥ वामकवृक्षः । ইতি শব্দচন্দ্ৰিকা।। আযুৰ্বেদ-বেতা। স চাষ্ঠজাতি শ্চি-কিৎসা বৃত্তিশ্চ। তৎপর্য্যায়ঃ। त्रागशत्री २ जगमकातः **जियक् 8 किकि** श्रमकः ७। ই-ত্যমরভরতৌ ॥ সুষ্টা ৬ বিধিঃ १ विदान् ৮ वायूर्विमी २। रेषि ब्राक्षनिर्वकः॥ म ठजूर्वि धः। *রোগছরः* ১ বিষহরः ২ শ-बारदः ७ क्रुणारदः ८। ইতি মহাভারতে রাজধর্মঃ ॥ অ-স্যোৎপত্তি র্যথা। বৈদ্যো ২শ্বি-নীঙ্গমারেণ জাতশ্চ বিপ্রযো-ষিতি। বৈদ্যবীর্ষ্যেণ শূডাষা॰ বভূবুৰ্বহৰো জনাঃ॥ তে চ গ্ৰা-म खनळाक मटकोविध शताय-ণাঃ। তেত্যশ্চ জাতাঃ শুদ্রাযাণ তে ব্যালগ্রাহিণো ভূবি ॥ শৌ- নক উবাচ 1 কথ বান্ধণ পত্না-ন্ধ সূর্যাপুলে। ২শ্বিনীসূতঃ। জ-হো কেন বিপাকেন বীৰ্য্যাধান চকার সং ।। সৌতিরুবাচ । গচ্ছ-স্তীণ তীর্থ যাত্রাযাণ ত্রাহ্মণীণ স্ব-क्रनमन । ममर्भ कामूकी॰ कास्डः পুষ্পোদ্যানে মনোহরে ৷৷ তমা নিবারিতো যত্নাৎ বলেন বল-বান্ সুরঃ । অতীব সুন্দরী দৃ-ফুা বীর্য্যাধান চকার সঃ ॥ ক্রত ভত্যাজ্ব গৰ্ত্ত• সা পুল্পোদ্যানে মনোরমে। সদ্যো বভূব পুত্রশ্চ তপ্তকাঞ্চন সন্ধিভঃ ৷৷ সপুত্ৰা স্বা-মিনো গেহু জগাম ব্রীডিতা ত দা। স্বামিন কথ্যামাস ৰশা-टेफ्नवाफि नकिए।। विद्या द्वादय-ণ তত্যাজ তঞ্চ পুত্রণ স্বকামিনীণ । সরিষভূব যোগেন সা চ গো-দাবরী স্মৃতা ।। পুল্রু চিকিৎসা শাস্ত্রঞ্চ পাঠষামাস যত্নতঃ। নানা শিল্পঞ্চ শস্ত্রঞ্চ স্বৰণ স র-বিনন্দনঃ॥ বিপ্রশ্চ জ্যোতির্গণ-नाथ (वमनाक निव्रञ्जवः । वि-দধর্ম্ম পরিত্যক্তো বভূব গণকে जूरि ॥ देखि बन्नरेवर्र्स्ट बन्न-थ८७ ३० व्यशायः ॥ 🗱 ॥ नत्रक-ভোগান্তে বৈদ্যজন্ম যথা। यः

করোত্যপহারঞ্চ দেব ব্রাহ্মণযো র্ধন । পাতরিত্ব। স্ব পুরুষান্ দ-म পूर्वान् ममाभन्नान्।। श्वयः যাতি চ ধূমান্ধ পূম ধান্ত সম-ষিত । ধূমক্লিফৌ ধূমভোগী ব-সেত্তত্ব চতুৰ্গণ ৷৷ ততে৷ মূৰিক জাতিশ্চ শতজন্মানি ভারতে । ততো নানা,বিধাঃ পক্ষিজাতষঃ ক্রমি জাতযঃ য় ততো নানা বিধা বৃক্ষ জাত্যশ্চ ততো নরঃ । ভা-র্য্যাহীনো বংশহীনঃ শবরো ব্যা-ধি সংযুতঃ।। ততো ভবেৎ স্বর্ণ-কারঃ স সুবর্ণবণিক্ ততঃ। ত-তো জবনসেবী চ ব্রাহ্মণো গণক স্ততঃ ৷৷ বিপ্ৰো দৈবজ্ঞোপজীবী रेक्गु की वी हिकि ६ मकः ॥ 🗱 ॥ অপিচ। লাক্ষা লোহাদি ব্যাপা-রী রসাদি বিক্রমী চ যঃ ৷ স যাতি নাগবেষ্টঞ্চ নাগৈ ৰ্ৰেষ্টিত এব চ ৷৷ বসেৎ সলোম মানাকণ তত্ত্বৈৰ নাগদ॰শিতঃ। ততো ভবেৎ স গ-ণকে। বৈদ্যাশ্চ সপ্তজন্মসূ ॥ গো-পশ্চ কর্মকারশ্চ রঙ্গকার স্ততঃ শুচিঃ ৷ ইতি ব্রন্ধবৈবর্ত্তে প্রকৃতি-খণ্ডে ২৮ অধ্যায়ঃ ॥ 🟶 ॥ রাজ-বৈদ্যস্য লক্ষণ যথা। পরং পারং গতো যঃ স্যাদফীঙ্গে তু চিকিৎ-

সিতে। অনাহার্য়ঃ স বৈদ্যঃ স্যা-ন্দৰ্মাত্মা চ সলোক্ষাতঃ ।। প্ৰাণা-वार्याः म विद्छत्य। वहनः उमा ভূভুজঃ ৷ রাজন্ রাজ্ঞা সদাকা-र्याः स्था कार्याः शृथग्रक्टनः ॥ ইতি মাৎস্যে ১৮৯- অধ্যায়ঃ 🔃 # 11 मामाना देवमा लक्षन यथा । চিকিৎসাশ ঙ্গরুতে যস্ত স চি-কিৎসক উচ্যতে। স চ যাদৃক্ म्गीष्ठीन खाषृत्माणि निगमार्ज ।। তত্ত্বাধিগত শাস্ত্রার্থে। দৃষ্টক-र्मा खरें कि कि । नयूरु छः छिः শুরঃ সচ্ছোগস্কর ভেষজঃ ৷৷ প্র-जुं ९ १ मान् वावमारी প্রিয়ন্ত্রদঃ ৷ সভ্যধর্মপরে৷ যশ্চ देवमा जेमृक् अभगाव ॥ मृर्छे-কর্মা দৃষ্টা পরেণ ক্রতা চিকিৎ-সা যেন সঃ। স্বয়ুক্তী স্বয়ুণ চি-किৎসা সশলः। लयूरुखः সি-किमक्र 🕊 ॥ निविक देवत्मा যথা। স্বচেলঃ কর্কশঃ স্তব্ধঃ গ্রা-মীণঃ স্বয়মাগতঃ। পঞ্চ বৈদ্যা ন পূজ্যন্তে ধন্বন্তরিসমা অপি ॥ কর্কশঃ অপ্রিযবাদী। স্তব্ধঃ সা-ভিমানঃ ৷ গ্রামীণঃ ব্যবহারাচ-जूतः ॥ 🟶 ॥ ज्यथ देवलामा कर्मा আহ। ব্যাধে স্তত্ত্ব পরিজ্ঞানণ বে-

मनायान्छ निश्रहः। এতদ্বৈদ্যস্য । বৈদ্যস্ব॰ ন বৈদ্যঃ প্রভু রাযুষঃ ॥ व्यमाग्यमर्थः । बाद्धः मगाक् श-রিচযঃ । ব্যথা শান্তিকরণ বৈ-দ্যস্য কর্ম। নতু বৈদ্যঃ আযুষঃ প্রভূরিত্যর্থঃ। অপরে ত্বেব॰ ব্যা-চক্ষতে। ব্যাধে স্তত্ত্ব পরিচযঃ। বেদনাযাঃ শান্তিকরণঞ্চ। এত-**८५व देवमाना देवमाञ्च न किञ्च** বৈদ্য আযুষঃ প্রভু ব্রিত্যর্থঃ ॥🐅॥ व्यथ देवमानयन मृठमा नक्कन । য শ্চিকিৎসক মানেতু যাতি मृञः म कथारा । म ह यामृक् সমূচিত স্তাদৃগত্র নিগদ্যতে 11 দূতাঃ সূজাতযো ২ব্যঙ্কাঃ পটবো निर्मानायताः। मूथिता १ य वृ ষাৰতাঃ শুভু পুষ্প ফলৈ যুঁতাঃ ॥ मजाठयः मूटास्थान्त ऋजीव দিশি সঙ্গতাঃ। ভিষক্ত সময়ে প্রাপ্তা রোগিণঃ সুখহেতবঃ ॥ সজাত্যঃ রোগিসমানজাত্যঃ 1 যস্যা• প্রাণম্রুদ্বাতি সা নাডী জীব সংশ্ৰিতা ৷৷ 🟶 ৷৷ অথ দূত-याजायाः শঙ্গন বিচারঃ । देव-দ্যাস্থানায দূতস্য গছতো রো-গিণঃ ক্লতে। ন শুভ সৌग্য শ-त्रन थपी अञ्च मृथावर् ॥ अपी-

প্ত মগিঃ।। দুতো রোগী চ রিক্ত হস্তো বৈদ্যু ন পশ্যেৎ। তথাচ রিক্ত হস্তো ন পশ্যেত্ত্ রাজা-ন॰ ভিষজ॰ গুরু•। 🛊 । অথ व्यायुर्विमा॰ প্রामुভাবः। তত্তাদৌ ব্ৰহ্ম প্ৰাদুৰ্ভাবঃ। বিধাতাথৰ্বস र्वय गायूर्दमः अकामयन्। अना-মা সংহিতা চক্তে লক্ষ্যোক্ম-যী মৃজু ।। ততঃ প্রজাপতি দক্ষ **एक॰ ग**रुक कर्म्यम् । विधि धी नी-त्रिः मात्र मायूर्वम मूलामिन য়। 🟶।। অথ দক্ষ প্রাদুর্ভাবঃ। অথ **एकः क्रियाएकः मर्खि**ज्या त्वर-মাযুষঃ। বেদযামাস বিদ্বাংসৌ সূर्याः भी भूत मल्यो ॥ 🛊 ॥ অথাশ্বিনী সুত প্রাদুর্ভাবঃ। দ ক্ষাদধীত্য দস্ত্রৌ বিতেনতুঃ সংহি-তা॰ স্বীযা॰। সকল চিকিৎসক লোক প্ৰতিপত্তি বিবৃদ্ধবে ধন্যাণ য়। স্বয়য়ুবঃ পিরশ্ছিমণ ভৈরবেণ রুষাথ তৎ। অশ্বিভ্যাণ সংহিত তস্মাত্তৌ জাতৌ যজ্ঞভাগিনৌ ॥ দেবাসুর রণে দেবা দৈতৈয় র্যে স-ক্ষতাঃ কুতাঃ। অক্ষতা স্তে কুতাঃ मरामा ममु । जा महु छ॰ सर्थ।। व-জি্ণো ২ভূদ্ধজন্তভঃ সদসাভ্যা চিকিৎসিতঃ। সোমান্নিপতিত শ্চ-

স্ত্র ভাতা। মেব সুখীক্তঃ।। বি-भीनी ममनाः भूत्या त्नर्खं नरक ভগস্য চ। শশিনো রাজযক্ষাভূ-দশ্বিভ্যাণ তে চিকিৎসিতাঃ ॥ ভা-ৰ্পৰ শচ্যবনঃ কামী বৃদ্ধঃ সন্ বিক্ল-তি॰ গতঃ। বীর্য্য বর্ণ স্বরোপেতঃ হ্ৰতো শ্বিভ্যাণ পুন যুবা ।। এতৈ-**"চান্যৈশ্চ বছ**ভিঃ কর্ম্মভি র্ভিষ্-জা বরৌ। বভূবতু ভূ শ পূজ্যা-विद्यामीना॰ फिट्नोकमा॰ ॥ #॥ অথেক্স প্রাদুর্ভাবঃ। সংদৃশ্য দসু-বে। রিশ্রঃ কর্মাণ্যেতানি যত্নবা-ন্। আযুর্বেদ নিরুদ্বেগ তৌ य-যাচে শচীপতিঃ।। নাসত্যৌ সত্য সন্ধেন শক্তেণ কিল যাচিতৌ। वायूर्वमः यथाधीजः ममजूः भठ মন্যবে ।। নাসত্যাভ্যা মধীত্যৈষ আষুর্বেদ শতক্রতুঃ। অধ্যাপ্য মাস বহুনাত্ত্রেয প্রমুখান্ মুনীন্ ।। #।। অথাত্তেষ প্রাদুভাবঃ। এ-কদা জগদালোক্য গদাসল নিত-স্ততঃ । চিন্তযামাস ভগবানাত্রে-যো সুনিপুঙ্গবঃ।। কি॰ করোমি क গচ্ছামি কথ লোকা নিরাম্যাঃ । ভবস্তি সাম্যানেতান্নশক্লোমি नित्रीकिञुः॥ मयान् त्रश् मञ्जर्थः সভাবে। দুরতিক্রমঃ। এতেষা॰।

मूः थटा मूः थ॰ समानि इमरय १-ধিক ।। আযুর্বেদ পঠিষ্যামি নৈ-রুজ্যায শরীরিণা । ইতি নিশ্চি-ত্য গতবানাত্রেষ স্ত্রিদশালয[়] ॥ তত্র মন্দির মিন্দ্রস্য গত্বা শক্ত॰ দদর্শ সঃ। সিংহাসন সমাসীন• স্তৃযমান পুর্বিভিঃ।। ভাসবন্ত • দিশো ভাসা ভাস্কর প্রতিমণ দ্বি-ষা। আযুর্বেদ মহাচার্য্যণ শিরো ষাৰ্য্যণ দিবৌকসাণ ॥ শক্ৰ স্তু ত॰ নিরীক্ষ্যেব ত্যক্ত সিংহাসদে। য-যৌ। তদতো পূজ্যামাস ভূশ॰ ভূরিতপঃরুশণ ।৷ স্বশলণ পরিপ-প্রচ্ছ তথাগমন কারণ। স মুনি-ৰ্ৰক্তু মারেভে নিজাগমন কারণ ॥ দেবরাজ ন রাজাসি দিব এব যতো ভবান্। বিধাত্রা বিহিতো যত্নাজ্রিলোকী লোকপালকঃ।। ব্যাধিভি ৰ্ব্যথিতা লোকাঃ শোকা-ঙ্গলিতচেতসঃ। ভূতলে সস্তি স-স্তাপ্ত তেষা হর্তু ক্রপা সর ॥ আযুর্বেদোপদেশ মে স্বরু কারু-শ্যতো নৃগা । ভথেত্যুক্ত্বা সহস্যু-एक। २४गाशवामाम छ॰ मू नि॰॥ भू-नीक रेक्फा मान मायूर्वम मधी-ত্য সঃ। অভিনন্দ্য তমাশীর্ভি ব্লা-जगाम भून मंशी ।। अथार जरा

মুনিশ্রেষ্ঠে। ভগরান্ করুণাপরঃ। স্থনামা সংহিতা চক্রে নরচক্রা-নুকস্পায়। । ততে। ২ মিবেশ তে-ডঞ্চ জাতৃকর্ণ পরাশরণ। ফীর-পাণিঞ্চ হারীত মাযুর্বেদ মপাঠ-ষৎ ।। তন্ত্ৰস্য কৰ্ত্ত। প্ৰথম মগ্নিবে-শো ২ভবৎ পুরা। হতো ভেডা-শ্য শক্ত্ৰেঃ স্বং স্বং তন্ত্ৰণ হতানি চ ॥ প্রাব্যামাসু রাত্তেষ মুনি বৃ-ন্দেন বন্দিত । শ্ৰুত্বা চ তানি ত-क्षानि शृष्के। श्चृमिकिनमनः॥ य-থাবৎ সূত্রিত তন্মাৎ প্রস্ফী मूनर्या २७वन् । मिवि मिवर्यर्या দেরাঃ শ্রুত্বা সাধিতি চাক্রবন্।। 🛊 ॥ অথ ভরদাজ প্রাদুর্ভাবঃ। একদা श्यिव शास्त्र रेपवामाग-ত্য সংগতাঃ। মুনধো বহুব স্তা॰শ্চ নামভিঃ কথ্যাস্যহ ৷৷ ভর্মা-জে। মুনিবরঃ প্রথমণ সমুপাগতঃ ৷ ততো ২ সিরা স্ততো গর্গো মরী-চি ভূ গু ভাগবৌ ॥ পুলস্ত্যো ২-গস্তি রসিতো বশিষ্ঠঃ সপরাশরঃ ৷ হারীতো গোতমঃ সাংখ্যা মৈ-<u>त्विय क्हार्यत्माणि ह ॥ यममञ्जिक</u> গাৰ্গ্যশূচ কাশ্যপঃ কশ্যপোপি চ । नाज्ञतना वायतमयण्ड मार्कत्ख्यः क्षिष्ठेलः ॥ भाषिताः मर की-

खिनाः भाष्ट्रासः मत्भीनकः। আশ্বলায়ন সাংহতেটা বিশ্বামি-ত্রঃ পরীক্ষিতঃ॥ দেবলো গালবো ধৌন্যঃ কাপ্য কাত্যায়নাষুভৌ ৷ কান্ধাযনো বৈজবাপঃ ঙ্গশিকো वानताय्विः ॥ श्तिणाकक ला-কাক্ষিঃ শরলোমা চ গোভিলঃ ৷৷ देवधानमा वालिखा उदेधवात्म মহর্ষঃ। ব্রহ্মজ্ঞানস্য নিধ্ধে। य-মস্য নিষ্মস্য চ ॥ তপস স্তেজ-ना मीश्वा वृषमाना देवावयः। मू-খোপবিষ্টা স্তে তত্ৰ সৰ্বে চকুঃ কথা মিমাণ 11 ধর্মার্থ কাম মো-কাণা॰ মূল মুক্ত কলেবর•। তত্ত मर्बार्थ मं भिटेका जंदनसमि नि-রামবং ৷৷ তপঃ স্বাধ্যায় ধর্মাণাং বন্দচর্য্য ব্রতাষুষা । হর্তারঃ প্র-সূতা রোগা ষত্র তত্র চ সর্বতঃ॥ রোগাঃ কার্শ্যকরা বলক্ষ্যকরা **(मर्ग) कियोर्त्र। मृगामी** सिय শক্তি সংক্ষযকরাঃ সর্বান্ধ পীডা-क्त्राः। धर्मार्थाथिन काम मुक्तियू মহাবিষ্ণ স্বৰূপা বলাৎ প্ৰাণানা-শু হরন্তি সন্তি যদি তে ক্ষেমণ্ প-তঃ প্ৰাণিনাণ ৷৷ তত্তেষাণ প্ৰশমায কশ্চনবিধি শ্চিস্ড্যো ভবন্ডি ৰুখৈ র্বোগৈ বিত্যভিধাষ সংসদি ভর-

দ্বাজ মুনি তে হক্তবন্। ত্ব থো-গ্যো ভগবান্ সহসুন্যন থাচ-স্ব লব্ধুণ ক্ৰমাৎ আযুৰ্বেদ মধীত্য यः गम् अरामुका ज्वारमा वयः ॥ ইশ্বণ স মুনিভি র্যোটগ্যঃ প্রার্থি-তো বিনযান্বিতৈঃ। ভরদ্বাজো मूनिरअर्छ। জगाग विषमानय॰ ৷৷ তত্ত্ৰেন্দ্ৰ ভ'বন গদ্বা সুর্মি গণ মধ্যগণ ৷ দৃষ্টবান্ বৃত্তহ্সারণ দীপ্যমান মিবানলং।। দৃট্ফুব স मूनि॰ थार जगवान् मघवा मुना। **ধর্মা**জ্ঞ স্বাগতং তে ২থ মুনিং তং সমপুজ্বৎ ৷৷ সোধিগম্য জ্বা-শীর্ভি রভিবন্দ্য সুরেশ্বরণ ৷ ঋষী-ণা॰ বচন॰ সম্যাগ আবিয়ত সত্তম॰ ।। व्याथरया हि नमू श्रेनाः नर्व প্রাণি ভযক্ষরাঃ। তেষাণ প্রশম-নোপায় যথাবদ্বজু মর্হসি।। ত-মুবাচ মুনিং সাঙ্গ মাযুর্বেদং শত-क्रजूः । জीत्वष्यं मर्मानि (मरी নীরুঙ্ নিশম্য ষণ ॥ সোনস্তগা-র॰ ত্রিক্ষন্ধ মাযুর্বেদ॰ মহামতিঃ। যথাবদচিরাৎ সর্বণ বুবুধে তন্ম-না মুনিঃ ৷৷ তেনাযুঃ সুচির লে-ভে ভরদ্বাজে। নিরাময় । অন্যা-নপি মুনী শচকে নীরুজঃ সুচি-রাযুষঃ ৷৷ তত্ত্ত্ত্র জনিতজ্ঞান চ- ||

ক্ষা ঋষযো ২খিলাঃ। গুণান্ जः ব্যাণি কৰ্মাণি দৃষ্ট্বা তদ্বিধি মা-শ্রিতাঃ ॥ আরোগ্যে লেভিরে দী-र्यगायुम्ह मूथ मण्युक । जायुर्व-(माङ विधिनात्माश्री मू न्या। यथा ॥ 🗱 ॥ जय ठत्रक आपूर्जादः । यहा মৎস্যাবতারেণ হরিণা বেদ উদ্ধৃতঃ। তদা শেষশ্চ তত্ৰৈৰ বে-দ॰ সাঙ্গ মবাগুবান্।। অথৰ্বান্ত-र्गछ॰ मगागायूर्दमः वक्तवान्। একদা স মহদৃত্ত জফুণ চর ইবা-गठः ॥ তত্র লোকান্ গদৈ অ-স্তান্ ব্যথমা পরিপীডিতান্। স্থ-लियु वरुयू वाकान् भि्रमाणां क मृखेवान्।। তান् मृख्री जि मयायक স্তেষা॰ দুঃখেন দুঃখিতঃ। অনস্ত শ্চিন্তযামাস রোগোপশম কার-१० ॥ मिक्किला म स्वरं ठळ मूरनः পুজো বভূব হ। যত শ্চর ইবা যা-তো ন জ্ঞাতঃ কেনচিদ্ধতঃ ॥ ত-স্মাচ্চরক নামাসৌ বিখ্যাতঃ ক্ষি-তিমণ্ডলে। স ভাতি চরকাচার্য্যো দেবাচার্য্যো যথা দিবি ॥ সহসু-বদনস্যা শে। যেন ধ্বংসা রুজাণ কৃতঃ । আত্রেষস্য মুনেঃ শিষ্যা অগ্নিবেশাদযো ২ভবন্।। মুনযো বহব ক্তৈশ্চ ক্তুত তন্ত্ৰণ স্বকণ স্বকণ

়া তেষা তন্ত্ৰাণি সংস্কৃত্য সমাহা-ত্য বিপশ্চিতা ৷৷ চরকেণাত্মনো নামা গ্রন্থোব চরকঃ রুতঃ। 🛊 ॥ অথ ধন্বন্তরি প্রাদুর্ভাবঃ । একদা দেবরাজস্য দৃষ্টি নিপতিতা ভুবি । তত্র তেন নরা দৃষ্টা ব্যাধিভি ভূ শপীডিতাঃ।। তান্ দৃষ্ট্রা হৃদ-য॰ তস্য দ্যুয়া পরিপীডিত । य-দার্জ হৃদযঃ শক্রো ধন্বস্তরি মুবা-চ হ ।। ধश्रस्टद्भ সুরশ্রেষ্ঠ ভগষন্ কিঞ্চিদুচ্যতে । যোগ্যো ভবতি ভূতানা মুপকারকরো ভব ৷৷ উ-পকারাষ লোকানা কেন কি ন ক্বত॰ পুরা। ত্রৈলোক্যাধিপতি র্বি-**क् त्रज्यश्मामि क्रियान्।। उन्मा-**खु॰ পৃথিবী॰ ষাহি কাশী মধ্যে नृ-পো ভব। প্রতীকারায রোগাণা भागूर्विषः প্রকাশষ ॥ ইত্যুক্তৃ। সুরশাদূ লঃ সর্বভূত হিতেক্ষয়। সমস্ত মাৰুষো বেদং ধন্বস্তরি মু-পাদিশৎ ॥ অধীত্য চাযুষো বেদ মিজ্রাদ্ধস্বস্তরিঃ পুরা । আগত্য পৃথিবী॰ কাশ্যা॰ জাতো বাহজ বেশ্বনি ।। নামা তু সো ২ভবৎ খ্যাতো দিবোদাস ইতি ক্ষিতৌ। বালএব বিরক্তো ভূচ্চচারচ মহ-ত্তপঃ।। যত্নেন মহতা বন্ধা ত॰

কাশ্যা মকরোমৃপণ। ততো ধর-স্তরি র্লোকেঃ কাশিরাজো ২ভি-ধীষতে।। হিতায দেহিনা॰ স্বীষ সংহিতা বিহিতামুনা। অষণ বি-দ্যার্থিনো লোকান্ সংহিতাণ তা-মপাঠিয়ৎ।। 🟶 ।। অথ সুশ্রুত প্রা-দুর্ভাবঃ।। অথ জ্ঞানদৃশা বিশ্বাদি-ত্র প্রভূতযো ২বদন্। অয়ণ ধন্নত্ত-রিঃ কাশ্যা॰ কাশিরাজোয মুচ্য-তে।। বিশ্বামিত্তে। মুনি স্তেষু পুত্র• সুশ্রুত মুক্তবান্। বৎস বারাণসীণ গচ্ছ তা॰ বিশ্বেশ্বরবল্পভা॰ ॥ তত্ত্র নায়া দিবোদাসঃ কাশিরাজো-স্তি বাহুজঃ। স হি ধন্বস্তরিঃ সা-कान मूर्जनिवना॰ तत्रः।। आयूर्ज-দ॰ ততো ২ধীত্য লোকোপরুতি হেতবে। সৰ্বপ্ৰাণি দয়া তীৰ্থ মূপ-কারো মহামখঃ।। পিতুর্বচন মা-কর্ণ্য সুশ্রুতঃ কাশিকাণ গতঃ।তে-ন সাৰ্দ্ধণ সমধ্যেতুণ মুনি সূন্ শত যযৌ।। অথ ধশ্বস্তরি॰ সর্ব বান-প্রস্থাশ্রমে স্থিত। ভগবস্ত সূর শ্ৰেষ্ঠ॰ মুনিভি ৰ্ছভিঃ স্তত ॥ কাশিরাজণ দিবোদাসণ তে ২প-শ্যন্ বিন্যাশ্বিতাঃ ।। স্বাগতঞ্ ইতি স্মাহ দিবোদাসো যশোধ-নঃ। জশল পরিপপ্রচ্ছ তথা গ-

মন কারণ ।। তত স্তে সূঞ্চত দ্বা-রা কথবামাসু রুত্তর । ভগবন্ মানবান্ দৃষ্ট্বা ব্যাধিভিঃ পরিপী-ডিতান্।। ক্রন্সতো সুিয়মাণা॰ শ্চ জাতাস্মাক হৃদি ব্যথা। আম্যা-নাণ শমোপায়ণ বিজ্ঞাতুণ বয় মা-গতাঃ।। আযুর্বেদ॰ ভবানস্মান-ধ্যাপ্যত যত্নতঃ। অঙ্গীক্ত্য বচ স্তেষাণ নৃপতি স্তানুপাদিশৎ।। ব্যাখ্যাত তেন তে যত্নাজ্জগৃহ भू नरय। भूम। । का शित्रां क क्या-শীভি রভিনন্দ্য মুদাম্বিতাঃ ৷৷ সু-শ্রুতাদ্যাঃ সুসিদ্ধার্থা জগ্ম র্গেহণ স্বকণ স্বকণ। প্রথমণ সুশ্রুত স্তেষু স্ব॰ তন্ত্ৰ॰ ক্তবান্ ক্ষুট॰ ।। সূঞ তস্য স্থাষোপি পৃথক্ তন্ত্ৰাণি তেনিরে। সুঞ্রতেন ক্রত॰ তন্ত্রণ সশ্রুত বহুতি র্যতঃ ॥ তক্ষাত্তৎ সুশ্রুত নামা বিখ্যাত ক্ষিতিম-ওলে। ইতি ভাবপ্রকাশঃ ॥ 🟶 ॥

অথ মতান্তরে
বৈদ্যোৎপত্তি কথনণ।
সত্য ত্রেতা দ্বাপরেষু যুগেষু ব্রাদ্বাণাঃ কিল। ব্রহ্ম ক্ষত্রিষ বিট্শুড কন্যকা উপযেমিরে ॥ তত্র বৈ-শ্য সুতাষাণ যে জ্ঞ্জিরে তন্যা অমী। সর্বে তে মুনষঃ খ্যাতা বে-

দ বেদাঙ্গ পারগাঃ॥ তেষা॰ স্কু-খ্যো ২মৃতাচাৰ্য্য স্তস্থাবয়া সলে-হি তৎ। অশ্বৰ্গ ইত্যসাবুক্ত স্ত-তো জাতিপ্রবর্ত্তনাৎ ৷৷ পরে সর্বে পি চাষষ্ঠা বৈশ্যা ব্ৰাহ্মণ সম্ভবাঃ । জননীতো জনু লন্ধা যজ্জাতা বেদ সংস্কৃতৈঃ ৷৷ অম্বর্গা স্তেন তে সর্বে দিজা বৈদ্যাঃ প্রকীর্ত্তিতাঃ ৷ অথ রুক্ প্রতিকারিত্বান্ডিযজ স্তে প্রকীর্ত্তিতাঃ ৷৷ সত্যে বৈদ্যাঃ পি-তু স্তল্যা স্ত্রেতাযাঞ্চ তথা স্মৃতাঃ । দ্বাপরে ক্ষত্রবৎ প্রোক্তাঃ কলৌ বৈশ্যোপমাঃস্মৃতাঃ।। অথায়ঠেষু সর্বেষু বিখ্যাত। অভবন্ধনী। সে-নো দাসশ্চ গুপ্তশ্চ দত্তো দেবঃ করো ধরঃ ৷৷ রাজঃ সোমশ্চ নন্দি-শ্চ ঙ্গণ্ড শচন্দ্রশচ রক্ষিতঃ।এষা॰ব॰ শাঃ সমুৎপন্না এতৎ পদ্ধতযো ম-তাঃ ৷৷ অন্য পদ্ধতযোপ্যেবং সস্তি বৈদ্যা ন তে শ্রুতাঃ। বহুব শ্রেক নামানো নানাগোত্র সমুদ্ভবাঃ॥ যথাকৌ বিশ্রুতাঃ সেনা ইত্যেব মপরে মতাঃ। যস্য যস্য মুনে র্যো-যঃ সন্তানঃ স স বিশ্রুতঃ ৷৷ তত্ত-क्लावामिना देवमाः देवशामास স্বকর্মণা। তথাহি। তিসুে। বর্ণা-নুপুৰ্বেণ দে তথৈকা যথাক্ৰমণ।। ত্ৰাহ্মণ ক্ষত্ৰিয় বিশাণ ভাষ্যাঃ স্বাঃ শুজজন্মনঃ। যদুচ্যতে দ্বিজাতী-না॰ শূজাদায়োপসংগ্রহঃ ॥ টন-তন্মম মত যম্মাত্তত্তাত্মা জাষ-তে স্বৰণ। পাণি ভর্ত্তুঃ সবর্ণাসূগৃ-क्रीयां किया नद्रः ॥ देवना প্রতোদ সাদদ্যাবেদনে ত্বগ্রজ-মনঃ। সবর্ণেভ্যঃ সবর্ণাসু জাষ-ন্তে চ সজাতষঃ ৷৷ অনিন্দ্যেষু বি-বাহেষু পুত্ৰাঃ সম্ভান বৰ্দ্ধনাঃ। বিপ্রামূর্দ্ধাভিষিক্তো হি ক্ষত্রিযা-ষাণ বিশঃ স্ত্রিষাণ।। জাতো ২ৰগ্ঠ-स्त्र मृष्णायाः नियामः शार्श्वराशि বা। বৈশ্যা শূজ্যোশ্চ রাজন্যা-श्रहिरग्री हो मूली श्रृटो॥ देव-শ্যাভু করণঃ শূজ্যাণ বিমাস্বেষ বিধিঃ স্মৃতঃ। এতে ষট্ স্লোক। बाब्हवक्रीयाः । भूटेजव ভार्या শুক্রস্য সাচ স্বাচ বিশঃ স্মৃতে। তে চ স্বা চৈব রাজস্ত ভাশ্চ স্বা চাগ্ৰহ্মনঃ ৷৷ পাণিগ্ৰহণ সংকা-রঃ সবর্ণাসূপদিশ্যতে। অসবর্ণা-वय॰ एक्टर्य। विधि क्रवार कर्मान u শরঃ ক্ষতিব্যা আহুঃ প্রতো-(म) देवनाक्नायाः। वजनजाः मनाः আছাঃ শূজবোৎক্রফ বেদনে।। ইতি পদ্যত্ত্ব । ব্ৰাহ্মণাৰৈশ্য-

कन्याया महर्छ। नाम जावरछ। रेि চ भए। र्षः भानवीयः। दिः শ্যাষা প্ৰাহ্মণাজ্জাতো ২ৰপ্ৰো-হি মুনি সত্তম। ত্রাহ্মণানা চি-किৎ সার্থণ নির্দিক্টো মুনিপুঙ্গবৈ রিতি পরাশরঃ।। বেদাজ্জাতো-हि रेवमाः गामश्रदेश बन्नभूखक ইতি শঙ্খঃ। ত্রদা মুর্দ্ধাভিষি-ক্তশ্চ বৈদ্যঃ ক্ষত্র বিশাবপি। অ মী পঞ্চ দিজা এষা যথা পূৰ্বঞ্চ গৌরব মিতি হারীতঃ।। মাতু যঁদা প্রজাযন্তে দিতীয় মৌঞ্জিবন্ধ-নাৎ ৷ ব্ৰাহ্মণ ক্ষত্ৰিষ বিশ স্তশ্মা-দেতে দ্বিজাঃ স্মৃতা ইতি ষাজ্ঞব-ষ্ক্য বচন॰ ১। মূৰ্দ্ধাভিষিক্তাম্বৰ্গবো রপি পিতৃ বজু । ছিজত্ব মিতি বৃ-काः। वायूर्वरमाश्रनयनारेवरमा षिक रेंछि ग्रृंछ रेंछि देवगारक <িমিবেশঃ ।। তপোযোগাৎ পুরা বৈদ্য স্তেজসা পিতৃবৎ স্মৃতাঃ। বিপ্ৰাৎ ক্ষত্ৰাদ্বতো ন্যুনাঃ জিয-ষা বৈশ্যবৎ ক্তাঃ।। শনেঃ শ-নৈঃ ক্রিয়া লোপাদথ তা বৈদ্য জাতযঃ। কলো শুত্র সমাপনা ব-था क्यां यथा विनः ॥ ইতি विष्ः ॥ যুগে জয়ন্যে হে জাতী ত্রান্সণঃ भूख अवरहिंछ यमः ॥ भनरेकण

ক্রিয়ালোপাদিমাঃ ক্রত্রিয়জাত্যঃ । বৃষলত্ব॰ গতা লোকে ব্রাহ্মণা-দর্শনেন চেতি মনুবচন গৃত্বা এব মম্বন্তাদীনামপি কলৌ শূজত্ব মি-তি স্ব স্ব গ্রন্থেষু বাচস্পতি মিশ্রা-দিভি স্তথা শুদ্ধিতত্ত্বেস্মার্ক্তভটা-চার্য্যেণাপ্যক্তে ।৷ অতএব সল-পঞ্জিকাষা মুক্তে। অতিদিষ্ট হ देवनामा मूजव॰ क्वियानिवनि-তি। তস্মাৎ কত্র বিশো স্তল্যো বৈদ্যঃ শুদ্রস্য পূজিত ইতি ৷৷ 🕸 ৷৷ যুগে যুগে কর্মানৈবোৎকর্যাপক-ৰ্যাবাহ মনুঃ। তপো রীতি প্রভা-বৈশ্চ তে গচ্ছস্তি যুগে যুগে। মনুষ্যেষিহ *জন্ম*ত ইতি ॥ অস্ব[.] ঠেম্যতাচার্যঃ খ্যাতো ২ভূদ্ধুব-नज्रा शिक्ष विष्णा स्याः कन्णः স্বর্বৈদ্যস্য তু মানসী॰।। উপযে-মে মহৌজা য শ্চিকিৎসকত্যা শ্রুতঃ ৷ অবৈথতস্য বরেণেব খ্যা-তা বৈদ্যা মহৌজসঃ ৷৷ সেনো দাসশ্চ গুপ্তশ্চ দত্তো দেবঃ ক-রো ধরঃ। রাজঃ সোমশ্চ ন-न्तिम्ह ऋख महस्त्रमह दक्षिण्डः ॥ সম্ভানা বহব শৈচষা বভূবুন্চ চি-কিৎসকাঃ। সলানুৰপত শৈচ-ষা॰ জাতাঃ পদ্ধতয়ে। ২প্যমূঃ ॥

তেষাণ প্রশংসা নিন্দা চ বভূব স্বে ন কৰ্মণা। উত্তমৌ সেন দাসৌ চ গুপ্ত দক্তে। তথৈব চ ॥ দেবঃ করশ্চ মধ্যস্থে রাজ সোমো স্ব-লাধমৌ। নন্দি প্রভূতবো নিন্দ্যা লুগুপদ্ধতযো ২পি চ ৷৷ কেচি-জ্জাত্যা পরিখ্যাতা স্তথা বৃত্ত্যনু-সারতঃ। সর্বাসা মেব জাতীনা॰ বৃত্তি রেব গরীযদী ॥ বৃত্তিঃ স্বর্গ্য। চ পখ্যা চ বৃত্ত্যা জাতিঃ প্রবর্ত্ততে । ইতি প্রাচীন স্বলপঞ্জিক। ধৃত ব্যাস বচনানি। ইতি বৈদ্যোৎ-পত্তি কথন ।। 🗱 ।। অথ বৈদ্যা-না॰ গোত্রাণি। অফাবি॰শদমী গোত্রাঃ সর্বেষাণ ভিষজা মপি। প্রত্যেকন্তে বিলিখান্তে সেন দা-সাদিতঃ ক্রমাৎ ।। ধন্বস্তরিশ্চ শক্ত্রিশ্চ তথা বৈশ্বানরাদ্যকো। মৌদাল্য কৌশিকৌ ক্লফাত্রেয আঙ্গিরসো ২পি চ ৷৷ অফৌ গো-ত্রাণি সেনানা দাসানা তদন-স্তরণ। মৌকাল্যো ২থ ভরদ্বাজঃ শালকায়ন এব চ ৷৷ শাণ্ডিল্য শ্চ বশিষ্ঠশ্চ বাত্স্যশ্চ ষডমী মতাঃ। গুপ্তানা ত্রীণি গোত্রাণি কাশ্য-পো গৌতম স্তথা ৷৷ সাবর্ণি রপি দত্তানা॰ চত্তারঃ পরিকীর্ভিতাঃ।

'কৌশিকঃ কাশ্যপ শৈচব শাণ্ডি-वा महाशि उंदशतः॥ स्मिकाना ইতি বিজ্ঞেষা শ্চত্বারো দেব সম্ভ-বাঃ। আত্রেষ ক্লোত্রেষৌ চ শা-প্রিল্য আলমালকঃ।। ধরস্য কা-শ্যপঃ প্রোক্তো ভরদ্বাজশ্চ সঙ্ও-জঃ। কাশ্যপো রক্ষিতস্যৈকে। গোত্রা এতে প্রকীর্ভিতাঃ।। দত্তা-না মাদ্য গোত্রাণাণ দেশতেদে স্তি সম্ভতিঃ। এব মাত্রেয় গোর্ট্রোপি দত্তো দেশান্তরে শ্রুতঃ ॥ দত্তাঃ ক্ষণত্তেষ গোত্রা দৃশ্যন্তে বহব স্তথা। তত্মাদভেদ্য গোত্রাণি স-প্ত ভ্রেষানি পণ্ডিতৈঃ॥ করাণা॰ কাশ্যপো গোত্রো বাৎস্য মৌ-দাল্যকাৰলি। দেশভেদে হি বি-দ্যন্তে তৎকরঃ সপ্ত গোত্রকঃ।। রাজঃ কাশ্যপ গোত্তোপ্যস্তি ত-দ্রাজ ব্রিগোত্রকঃ। শ্রাষত্তে চ জা-মদগ্য গোতা দেশান্তরে ধরাঃ।। বহবোপি ভর্দাজ গোত্রজাঃ স-স্তি রক্ষিতাঃ। ইন্দ্রাদিত্যে) পরে **यो ছৌ বৈদ্যৌ গোত্রা স্তযো রি-**মে ৷৷ ইন্দ্রস্য কাশ্যপো গোত্রএক এব প্রকীর্তিতঃ। আদিত্যানা মি-মৌ গোত্রা বাদিত্য কৌশিকৌ স্থতো ।। পঞ্চাশদেতে বিখ্যাত।

खन्त्रारिकार्ज। जिसक् अरम । येद দেশান্তরে গোত্র মন্যৎ কি মপি **চ क्षा क्षामीना** न ७६ প্ৰোক্ত মপ্ৰসিদ্ধ মতীব তৎ। 🛊 🛚 । অথ পঞ্জিকান্তরোক্ত রাচীয় বৈ-দাসলাফকীয গোত্র সংখ্যা শ্রে-ष्ठेषापि विशास्त्र । काञ्जीमाष्ट्रि সেনস্য গোত্রাণ্যক্ষৌ ভবস্তি है। শক্তি ধন্বস্তরী শ্রেষ্ঠৌ নধ্যৌ বৈ-খানরাদ্যকে।। মৌদ্যাল্য কৌ-শিকৌ রুষ্ণাত্রেয আঙ্গিরুসো ২-थमाः ॥ 🟶 ॥ अथ तानियास्त्र বৈদ্যানা॰ প্রবরানাহ। প্রবরাঃ পঞ্চানানাও ধন্বস্তরি কলোন্ত-বা । বিনির্দ্ধিষ্টা ষথা তে চ ধর-স্তর্য্য পরাশরে ।। নৈযক্তব শ্চা-স্বিরসো বার্হস্পত্য ইতি ক্রমাৎ। শক্তি গোত্তে ত্রয়ং শক্তি পরাশর বশিষ্ঠকাঃ।। প্রবরাঃ পঞ্চ দাসান। মৌর্ব চ্যবন ভার্গবাঃ। জামদগ্য শ্চাপুবানঃ প্রোক্তা মৌদাল্য গোত্তজাঃ।। গুপ্তানা ত্ব এবৈ-তে কাশ্যপোপ্যপ্রসারকঃ। নৈয-ফ্রবো ২মী প্রবরাঃ কাশ্যপাশ্বর সন্তুবা ।। দত্তে ত্র্য কৌশিকা भा॰ শাভिन्गामिতদেবলাঃ। इ-কাত্ৰেৰো বশিষ্ঠশ্চ আত্ৰেম শেষ্ট-

তি তে এয়ঃ।। দত্তানাণ প্রবরা এ-তে দতাত্রেষ সলোজুবা॰। আ-ত্রেষ গোত্রজাতানা॰ দেবানাঞ্চ ভথা ত্রয়ঃ ৷৷ আত্রেয় আঙ্গিরস-কো বাৰ্হস্পত্য ইতি ক্ৰমাৎ । করে ভরদাজগোত্তে ত্রষো ২মী প্রবরাঃ স্মৃত্যঃ ৷৷ ভরদ্বাজ্যে ভা-র্গবশ্চ চ্যবনশ্চ ক্রমাদ্মী। রা-জবাশে বাৎস্যগোত্তে কথিতাঃ প্রবরা স্ত্রয়ঃ ॥ বাৎস্যে ২সিত স্ত-থা মার্কণ্ডেয় এব॰ ক্রমাদিতি । অথ কৌশিক গোত্রস্য সোমস্য প্রবরা স্ত্রয়ঃ ॥ কৌশিকঃ কাশ্যপ-শৈচৰ ভাৰ্গৰ শেচত্যমী ক্ৰমাৎ । সেনাদীনা মনুক্তা ষে আদ্য গো-ত্রাদি সম্ভূবাণ।। প্রবরা স্তেপি বি-জ্ঞেয়া স্তত্তৎ স্বলভূবাণ মুখাৎ। नन्गामीना॰ दत्तत्त्वयु ठजूर्ना॰ श्र-বরাশ্চ খে ৷৷ বিজ্ঞেষা জ্ঞে চ নি-খিল। স্তেষাণ স্বলভুবাণ মুখাত্। ইতি বৈদ্যানা॰ প্রবরাঃ ॥ 🟶 ॥ व्यथ देवत्मायू त्राणियामि कथनः। সেৰো দাসক্ষ গুপ্তক্ষ দত্তো দে-বঃ কর স্তথা। রাজ সোমাবগী-তাকৌ রাটীযাঃ পরিকীর্ত্তিতাঃ ।। নন্দি শ্চক্রো ধরঃ স্বত্তে। রক্ষিত শেতি গঞ্চ বে। তে বরেন্দ্রেযু বি-

খ্যাতা দাস দত্ত করা অপি ॥ রাটীয়া ভিষজো যে যে প্রায় স্তে वक्रशा अशि। नन्गामरशा महा-রাফ্টেনিবসন্তি চ কেচন ৷৷ তথা **চ পঞ্জিকান্তরে । সেনো দাসশ্চ** গুপ্তশ্চ পঞ্চ দত্তাদয় স্তথা। অ-ফৌ রাঢাসু বিখ্যাতাঃ প্রায়ো ২মী বঙ্গগা অপি ৷৷ ইতি ৷৷ তথা ন্যত্র। নন্দি চন্দ্র ধর দত্ত রক্ষিত। স্তে স্বনামনি বরেন্দ্র বিশ্রুতাঃ। বীজি পূরুষ ইহৈব বক্ষ্যতে তৎ ঙ্গলং খলু বরেন্দ্রজং পুনঃ ।। ত-থাহি নারায়ণ দাসো ২ন্তরঙ্গ খানশ্চ। দাসো দত্তো ধর শৈচব निन प्रत्थी क्र उथा। हस्त्र क রক্ষিত শ্চেতি বরেন্দ্র স্থল মন্টকণ ।। ইতি। তথান্যত্র। অক্টো সে-নাদযো রাঢে বঙ্গেম্বপি বসস্ত্য-यी। नन्गामत्या महात्रार्ख् न्-প্রপদ্ধতয়ে ২পি চা৷ কেচিজ্জা-ত্যা পরিখ্যাতা দৃষ্টা দেশাস্তরে-ষপি। ইতি।। সম্বন্ধঃ স্তুযতে সর্বৈ द्रिकरम् निवामित्नाः। निन्ताः তে কিল সম্বন্ধো ভিমদেশনিবা-निताः॥ इंडि देवाम् द्राणिया-मि कथन॰ ।। 🟶 ।। अथ **मिना**मी-नाः शृक्शन गार्। श्रीकाक्षीणा

গোনগর করন্ধকোঠ এব চ ৷ মোরশাসন কান্তারৌ সনানু-স্থান মেব চ্।। মেঢ্যশাসন মপ্য-ন্যো যাস্ত্রাম স্তথৈব চ। অফা-**না॰ সেন মুখ্যানা॰ রাঢাযা॰ স্থ**া-্ন মফক ।। তথাহ দুৰ্জ্জ্যঃ। কা-্ব্বী গোরু করক্ষত মোর কান্তা मयानुकाः। (यट्या गालक ता-চাষা বৈদ্যানা স্থলমন্টক মিতি ।। ইতি বৈদ্যানা পূৰ্বস্থান কথন॰ ়।। 🟶।। অথ স্থানভেদেন সেনাদি ভেদ মাহ। উনবি শতিধা সেনা অফাবিশাতিধা পুর• । ভবস্তি ভে-দেনৈতেষাণ বক্ষ্যতে স্বল লক্ষণণ য় একো বিনাষকঃ সেনো ভেদে-ন নবধা ভবৎ। মালক্ষো ধলহ-্ ঞ্ডীয়ঃ খানাজঃ সেনহাটিকঃ।। नात्रश्र्षे। निर्त्रालीय खथा यत्र-- লকোঠজঃ। রাষিগ্রামী বেতজী-ে যো নব বৈনাষক। অমী ।। বিশে-यटा विनिर्फिको एकका महाना স্থােন্ডবাঃ। সামান্য স্থান ক-থনে সম্বন্ধ ভাষণে তথা ৷৷ সৰ্বেষা মেব বৈদ্যানা মিতরেষা মম্ব ক্র-**মঃ। ইতি বিনাষক সেন বংশ্য** निर्वयः ॥ अकः भून र्गयौरमता ज्यातिक क्रजूर्विधः। विषशाजा

ভবঃ শ্রেষ্ঠ স্তিকাযিপুরজ স্তথা৷৷ অন্যঃ কডিয সস্তূতো ধাডাগ্রা-মী ততঃ পরঃ । ইতি গ্যীদেন বংশ্য নির্ণয়ং ৷৷ একে রাঘ্ব সে-নো ২ভূৎ খণ্ডগ্রামেণ বিশ্রুতঃ। স খণ্ডঞ্জ ইতি খ্যাতো নাপরা ভ-স্য চ স্থলী।। ইতি রাঘবসেন ক-भा निर्वयः। त्राका विमलतमता ভূৎসেন ভূমি ক্লতাশ্রযঃ। স সেন ভূমৌ বিখ্যাতো নাপর তস্য চ স্থল ।। ইতি রাজ্ঞে। বিমলসেনগ্য বংশ্য নির্ণয়ঃ ।। পাত্র দামোদরঃ সেনঃ পাত্রঃ শিখর ভূপতেঃ। অ-সৌ শিখর ভূজাতো নাপরণ তস্য চ স্থল• ৷৷ ইতি পাত্র দামোদর বং-**मार्ग निर्नयः ॥ विनत्मत्नां मि य उन्न** কো ধলভূমি কৃতাশ্রয়ঃ। সএব ধলভূমিপ্তো নাপরা তস্য চ স্থলী ।। ইতি বিনসেন ব॰শ্য নির্ণয়ঃ।। সপ্তমো বুষিসেনো যো বঙ্গভূমৌ প্রতিষ্ঠিতঃ। হাণ্ডিযাগ্রাম সমূত স্তন্মা তস্য তৎ দল ॥ ইতি হাঙিষা বৃষি সেন বংশ্য নির্ণয়ঃ। ইতি ধন্বস্তরি গোত্রজাতানাণ স প্তবিধানা সেনানা ভেদেনা-को मन अकात निर्नयः ॥ श्रीवरम সেন প্রমুখাঃ বড়মী শক্তি গোত্র-

काः। प्छातन मश्रधी एकम। मधा क्य यमी भूनः ॥ अकः श्रीवरम । তেহউজ ইতি খ্যাতো নাপর॰ তস্য চ স্থল ।। ইতি শ্রীবৎস সেন বংশ্য নির্ণয়ঃ ৷৷ একঃ শিখাল সে-নো ২সৌ ভেদেন দ্বিবিধা ২ভ বৎ ৷ পোডাগাছা ভবঃ শ্রেষ্ঠঃ প-রঃ পোখরিয়া ভবঃ ।। ইতি শিষা-न मिन दश्या मिन्यः॥ একো यः পুৰুদেনে৷ ২ভূন্ডুঠিনাগডি মা-শ্রিতঃ। ভূঠিনাগডিজত্বেন খ্যা-তে। ২সে) নাপর স্থল ।। ইতি भूक्रामन वण्मा निर्वयः ॥ <u>उत्</u>य-সেনো ২পর স্ত্রেক শচন্দ্রদ্বীপ নি-বাসক্রৎ। শক্তিগোত্র, সমৃত্তুত্ रेनीनপুর गाञ्जिञ्ड ॥ रेञि চব্র সেন ব॰শ্য নির্ণয়ঃ।। একো মুঞ্জীর দেনে৷ ২শে স্বৰ্গীয় নৃপাঞ্ৰ-ষাৎ। স এব স্বৰ্ণগীঠীতি বিখ্যা-তে। সম্ভভূ ভবং ।। ইতি সুখীর रमन वन्भा निर्वयः ॥ त्रामरमनः পর স্তদ্যৈবাস্তভূতো বভূব যঃ। স মল্লভূমি বসতে বিদিতানেক-পৌরুষঃ ॥ ইতি রামদেন বং-শ্যনিৰ্নয়। ইতি শক্ত্ৰিগোত্ৰ জা-তানা প্রীবৎসসেন প্রমুখানা

यशा॰ मश्च श्रेकात निर्वयः ॥ का--দ্য সেনম্ভ ষড্বীজী ভেদেন বি-বিধে। ২ভবৎ। নপাড়া সম্ভব-স্তেকঃ শালপ্রাম ভবো ২পরঃা यानकतीय ववाना ज्वष जामाः প্রকীর্ত্তিতাঃ। আদার্যিগোত্র म-ভূতাঃ স্বতন্তাঃ সর্ব এব হি ॥ ইতি সকল সেনানাণ ভেদ নিৰ্ণ-যঃ ৷৷ ৠ ৷৷ অথ দাসানা ভেদ-মাই । পঞ্দশরিধা দাসা স্তে ২মী বি॰শতিধা পুনঃ। একঃ পুন-न्हायू नाटमा ज्यानन विविदश **২ভর**৭।। এক স্তৈহট সম্ভূতে। মালিকাহারজঃ পরঃ। ইতি চা-यूर्र १८ विविध निर्वसः ॥ शब्र-দাসঃ পুন স্তেকে। তেদেন পঞ্-ধা ভবৎ৷ বালিনাছী ভব শৈচকঃ পরো মণ্ডলজানিকঃ ৷৷ মৌডে-শ্বর ভবঃ পালিগ্রামজঃ পাজনৌ-রজঃ। ইতি পস্থবংশ্যে পঞ্চিধ নির্ণযঃ ।। একে। ২পরঃ কাযুদা-সো বঙ্গভূমৌ প্রতিষ্ঠিতঃ। কো-প্রামীণ ইতি খ্যাতো দাসো মৌ-**দাল্য গোত্ৰজঃ।। ইতি কাযু**-मान वन्भा निर्वयः ॥ **ट्यामी** मा-সোপি তৎপুত্রো খ্যাতৌ দীয-न क्करतो। अभी ब्रह्म दक्क

भी अंगिकाः गर्व এव दि ॥ रेिं। ভোষীদাসগ্য উৎ পুত্ৰষোশ্চ বং-ना निर्वशः ॥ अंदर्भ बतार नात्मा ২সৌ বৌহারিগ্রাম বাসক্রং। স বৌহারিজ দাসোপি মতো মৌ-माना गावकः ॥ **३**७ त् इ রীষ বরাহ দাস বংশ্য নির্ণৰঃ ৷৷ नृजिञ्चनाय मारमो (को वकरमरन প্ৰতিষ্ঠিতৌ। তৌ বঙ্গজা ৰিতিখ্যা-তৌ সলকার্য্য পরাষণৌ ॥ ইতি न्जिल्ह माजरया र्वन्ना निर्वयः ॥ বীর দাসোপি য স্তেকঃ স বঙ্গজ ইতি সৃতঃ। তত্ত্বৈ বঙ্গে সমন্ধ স্তৰ্গ্যাভূদরকন্যযোঃ ।। ইতি বীর माम वन्मा निर्वशः ॥ श्रा**७ः** शा-থরডা আমে রামদাসোপি তাদু-भः। भृगव सभा ठघाता बीकिन-স্থেপি বিশ্রকাঃ।। খ্যাতা ডভেড গাভেড ধাড বীডাল দাসকাঃ। মৌদ্যাল্য গোত্ৰ সম্ভূতাঃ স্বতন্ত্ৰাঃ সর্ব এব হি ॥ ইতিরাম দাসস্য তৎ পুত্ৰাণাঞ্চ ক'শ্য নিৰ্ণয়: ॥ ইভি মৌদ্দাল্য গোত্ৰজানা সকল দা-সানা পঞ্দশ প্রকারাণা ভে-वन विश्वाि श्रकात निर्वशः ॥ ॥ অভিনাণ ভেদ মাহ। গুপ্তাশ্চ বড্বিখা ভেদা ব্ৰুষোদশ

বিধাঃ পুনঃ। কাশ্যপাশ্বৰ সউ-তাঃ স্বতক্রাঃ সর্ব এব হি 🛚 একঃ পুনঃ কাষু গুপ্তো ভেদেনান্ঠ বি-বো হভৰৎ। বরাহনগরীয়ক শ্রেষ্ঠো হভূৎ সলকর্মণি।। প शिनानां जब काना उटिश्व क्रम-শীলবান্। বারাশত সমুস্তৃত स्-**ीय उपनस्तर ॥ नीम अंश**्रेख ংষে ভে নিরোন ত্রিপুরাশ্রিতা:। ভত্তথালী নিবাসহাঃ কাযু গু-ংপ্তোক্তবাশ্চ বে।। মাটিযারী ভ-বাঃ কেচিলোকগুপ্তস্য বংশজাঃ। পশ্চিমস্থান মাঞ্জিত্য কেচিৎ স স্তি নিজেচ্ছদা।। ইতি কাষু ওপ্ত-निर्णा श्केविध निर्गयः ॥ भन्नत्म-শ্বর গুপ্তো যঃ শ্রেষ্ঠ স্তদ্ধশ সত্ত-বঃ। যো ২ভূদ্রিপুর গুপ্তো ংসৌ रशैजाना विश्वि शिकिः॥ रेकि ধৌডালীৰ ত্ৰিপুরস্তপ্ত বংশ্য নি र्गरः॥ शतरमञ्जत शक्तानं रागरको দৌ প্রভিষ্ঠিতৌ। ভীঁ পুরী থাডি-আমত্থে মহৎ স্বন্ধাধিকারিণে।। ইতি মহাধিকারি স্বলাধিকারিণো ব'শ্য নিৰ্বাহঃ।। অভাল শুশ্বো ষঃ প্রোক্তঃ স তু শিক্ষান সম্ভবঃ। कामाभावय मञ्जः जनकारी भ-রাষণঃ ৷৷ ইত্যভাল শুপ্ত বংশ্য निर्नमः॥ वीत्रश्रश्र खन्यः त्थारका ভী পুর আম বাসক্তৎ। ভীঁ পুরী-ৰ ইতি খ্যাতঃ স চ কাশ্যপগোত্ৰ-कः ॥ रेजि वीत्रश्रु पण्णा मिर्गयः ৷ ইতি কাশ্যপ গোত্রজাতানা সকল ভপ্তানা ষভ্বিধানা ভে-रान जरवामण अकात मिर्गयः ॥ **#।। मटलो চ विविद्यो (उद्धर्य) द्रा-**মদত্তক্ত পাবিতা। পূর্বঃ শাণ্ডিল্য গোত্রীযো বটগ্রাম সমুদ্ভবঃ॥ অ-পরং পাবিতা দত্তঃ খাগডীয়ঃ ম धवरि । काजः को निकरगाता চ বতন্ত্ৰো দ্বো গুণাবিতো।। ইতি क्खव॰भा निर्वयः॥ 🟶 ॥ विकातक ন্য দেবস্য বংশ্যা আত্রেষ গোল্ত-জাঃ। সমানুস্থান সন্তুতাঃ কেন্তু-গ্রামে ২ধুনা তু ছে।। কেতু গ্রামীণ रित्व १८मी निकाक्रभ कटला फुरु । निरेक्षक श्लोक्ररेव खब जनका-র্য্য পরায়ণঃ।। ক্রকাত্রেয় ভবা যে চবে চ শাণ্ডিল্য গোত্রজাঃ। আ-লমাল ভবা বেচ তে নানা দেশ-वाजिनः ॥ देखि द्ववतः गा निर्वयः ।। 🛊 ।। একঃ কান্তার বাসী চ ক-द्धा ज्याम्मी ज्रयः। दणिष्ठं भः किरगाः एको यनसारम छ वि-ঞতে।। বস্ত ধর্ম করে। বীজী জ

- রম্বাজ পলোন্তবঃ। তবংশ্যাঃ শা-স্পূত সন্তি হিমোডা বাজিগা भूदत्र ।। **रे**ि क्ज़ब्न्मा निर्वयः ॥ ৷ মেঢাশাসন সম্ভূতো রাজ-ৰংশোন্তবা বুডৌ। শশিরাজ ম-সীরাজৌ ৰাৎস্যগোত্ত সমুস্তবৌ য় এলাচি <mark>ধাম নগরে শ</mark>শিরাজঃ ক্তাশ্রম্ম । মদীরাজঃ খেপডী-ষে। বঙ্গভূমৌ চ সংস্থিতঃ।। ইতি क्राञ्चव प्रभा विविध निर्भयः ॥ 🛊 ॥ মালগ্ৰাম সমুভতো ধৰ্ম সোমো মহামতিঃ। জাতঃ কৌশিক গো-ত্ৰে চ তদ্ব॰শ্যা বহুদেশগাঃ॥ ইতি त्नामव॰मा निर्वयः ॥ ইতি রাচা প্রসিদ্ধানা মন্টানা সেনাদীনা ख्टापन व॰भा निर्धयः ।। 🟶 ।। घन-अद्भारत एवं निष्म हत्स्यो ध्रत ऋरखी ह ব্লক্ষিতঃ। বারেক্রা অগি পঞ্চৈতে क्षित्रका खब एव भूनः ॥ देखि ब-बामन भृशावा॰ टेक्नग्रमा॰ यथा-ক্রম ভেদেন স্কনির্ণয়ঃ।।।।। অ-থ সেনাদীনা সামান্যতঃ সমন্ত্র ॥ औष्य नाय नगती ताटा बटक ह विक्षणा। मर्दिश (येव देवस्राना মাঞ্জেষা মত্র বিদ্যুতে ৷৷ মত্র সো-চীক্তা বৈদ্যৈ ব্য খণ্ডে ২ভুদ্ধি- बक् थियः । विरम्धिकः क्रमीनान् ना॰ मर्द्या स्वतं वामकः ॥ केलि सामान्यकः मकल देवमान् ना॰ वामकाम मूक्कः ॥ ॥ १। हेलि भोत्राममञ्जाका खत्रकरमन कुळ देवमान्यक्रकः ॥

देवनाः जि ्दिनगपत्रीयः। दिन শব্দাৎ কা প্রভাষেন নিশাসঃ।। क्री व्यायूर्वमः। हि-देवमाकः কিৎসাশান্ত•। যথা। যস্তা-করণে বরেণ্য ঘটনা স্ফীতাঃপ্র-বন্ধা দুশ প্রখ্যাতা নব বৈদ্যকে-পি ভিথিনিকারার্থ মেকে;ভূতঃ । সাহিত্যে ত্রষ এব ভাগবত ত-ড়োকৌ ত্ৰৰ স্থন্য ভুবান্তৰাণি শিরোষণে রিহ গুণাঃ কে কে-ন লোকোত্তবাং॥ ইতি মুগ্ধবো-ধৰ্যাকরণশেৰে বোপদেৰ প্র-जन्मा (क्रीकः ॥ 🛊 ॥ ७९ माज-इनामानि यथा। अग् यकुः मा-मायबाशान् मृकु। तमान् ध-জাপতিঃ ৷ বিচিন্তা ভেষা মৰ্থ-देशवानूर्वन ठकात्र मः ॥ कृषा जू शक्य दिन जाकवार नदनो বিভূগে স্বতন্ত্ৰ সংহিতাণ তন্মা-ভাষরক করার সংগ্রভাষরক विनिर्याणा जानूर्दमः व मन्दि-

ाः। अमरमी शाउँयामाग ८७ ह-कुः गः हिङ। खळः ॥ त्या मा मानि विषुषा उद्योगि छ हैं छ नि ह। वाशि अन्त वीकानि সাধি মত্তো নিশাম্য।। ধ্যন্তরি দিবোদাসঃ কাশীরাজ স্তথাধি-त्नो। नक्षाः मर्टमच्या २कि का यत्ना जनका वृष्टं ।। क्रीसाता काकनिः देशमः कराया र्गंखा अव ह। अञ्चल दिनान दिनकाः स्याज्य व्याधिनायकाः ॥ ॥॥ চিকিৎসাতত্ত্ববিজ্ঞান নাসতন্ত্ৰ यत्नाद्रयः। धत्रखदिम्ह ज्यवान्ह-কার প্রথমে সতি।। চিকিৎসা-मर्थान नाम पिरवोमात्र भठकीत्रयः ।। চিকিৎ সাকৌ यूनी • निवान को শীরাজ শুকার নঃ॥ চিকিৎসা সারতভ্রঞ ভূমদ চাশ্বিনীসূতৌ। **তत्रः दिमाकगर्वसः नम्ना**क ह कात्र मः ॥ हकात्र महरमयन्ह वर्गः विजिक्षित्रमंन । स्नानार्व मरी **छतः सम्बाज महकात्र मध्या हार्य-**ता जीवमानक इकांत्र जगवान् विः। চকার জনকে। वागी देव-দাসন্দেহভঞ্জন মাসর্সার চক্ত-मूखा काराम खन्नाहरू। दि-দাৰসার তন্ত্রক চকার জাজলি

मूनिः ॥ रेभरला निमानः कक्ध खख गर्बधतः शतः। देवधनिर्गय-তন্ত্রঞ্চ চকার সম্ভসম্ভবঃ ৷৷ চি-কিৎসা শাস্ত্ৰ বীজানি তদ্ধাণ্ডে-তানি ৰোডশ। ব্যাধি প্ৰণাশ-ৰীজানি বলাধান করাণি চ।। मथिषा ख्लान मशारेन दायुर्दम প্ৰোনিধিণ ়া তত স্তম্ত্ৰাণ্যজ্জহরু র্নবনীতানি কোবিদাঃ ।৷ এতা-নি ক্রমশো দৃষ্ণু দিক্যাং ভাস্কর সংহিতা । আযুর্বেদ সর্ববীজ সর্ব॰ জানামি সুন্দরি॥ ইতিভ্রন্ধ-বৈবৰ্ত্তে ত্ৰহ্মধণ্ডে ১৬ অধ্যাষঃ।। देवमानाथः श्र् एमनित्नयः । ষথা। করবীরে মহালন্ধী রুমা-দেবী বিনাষকে ৷ অক্লোগা বৈ-मानारक जू महाकारल मरहश्रती ।। ইতি মাৎস্যে গৌরী নামাই-পত ১৩ অধ্যায়ঃ ॥ অপিচ। বৈদ্যনাথ সমারভ্য ভূবনেশা-স্তগণ শিবে । তাবদঙ্গাভিধো-দেশো যাত্রাষাণ ন হি দুয়াতি।। ইতি শক্তিসঙ্গমতন্ত্ৰে ৭ পটলঃ ।। टेज्रविटिंगसः। यथा। शर्म-পীঠ• বৈদ্যনাথে বৈদ্যনাথস্ক ভৈরবঃ। দেবতা জবদুর্গাখ্যা निशाल जानूनी यय ॥ देखि ॥ তন্ত্রচুডামণো প্রীঠনির্গরঃ। অপিচ। ছরিজানগরে যত্র বৈদ্যনাথো মহেশ্বরঃ। তত্রাক্ষণো
বিলুবৃক্ষঃ স্বর্গবৃক্ষ উদাহ্বতঃ।।
ইতি বৃহন্ধর্মপুরাণে ১১ অধ্যামঃ
। অন্যচ্চ। ঝারখণ্ডে বৈদ্যন্ধথো বক্রেশ্বর স্তথেব চ। বীরভূমৌ সিদ্ধিনাথো রাচে চ তারক্ষেরঃ।। ইতি মহালিকেশ্বরতত্ত্বে পীঠাদি ক্রমেণ শিবশতনাম স্তোত্রং।।

বৈদ্যবন্ধুঃ পু॰ আরখধবৃক্ষঃ। ইতি শব্দচন্দ্রিক। ।। বৈদ্যস্য বন্ধুশ্চ।।

বৈদ্যমাতা জী বাসকঃ। ইত্য-মরং॥ ভিষগ্জননী চ॥

বৈদ্যসিংহী স্ত্রী বাসকবৃক্ষঃ। ইতি শব্দরত্বাবলী।।

বৈদ্যা স্ত্রী কাকোলী। ইতি শকচন্দ্রিকা।।

देवश जि विशिद्याधिकः। यथा।
जिम्होदर्शक जानीय कर्मनः
काल मिन कर्जानीनाः श्रद्यागानूदम्न देवश दश्जूज्ञानामजिम्हा जिम्हा विट्नमान्य ।
इन्हि श्रामन्दिक्जलुः ॥ # ॥
जय देवशहिंगा विठातः । मा

হিংস্যাৎ সৰ্বা ভূতানি ইত্যত্তা সৰ্বশব্দস্য ব্যাপক প্ৰত্যা এ-তিষিধি মনুদ্রজ্বী বাঘব্য প্রেতিমা-ब्लाटिक । इंडिंगि निर्देश विश्वना-প্রাপ্তে রগত্যা বৈধাভূরিক বি-ষ্যর । সর্বাঃ সর্বাণি ছুন্দিসি বা ই-- छात्मन ७६ भन् निक्षः। यन्त्रि নান। দৰ্শন টী চাহুন্ডি ৰাচস্পতি মিত্রৈ উত্তরে ম গা মভিহিত । ন চ মা হিস্যাৎ শৰ্বা ভূতানি इंछि मामाना भाखा वित्मव भा-স্ত্রেণ অগ্নীসোমীষ পশু মাল-ভেত ইভ্য:নন বা:খ্যত ইতি বা-চ্য বিরোধাভাবাৎ। বিরোধে হি বলীৰসা **দুৰ্বল**° বাধ্যতে। নচা-স্তি বিরোধঃ ভিন্ন বিষমত্বাৎ। ত-'शिहि। मा हि॰ मा मि जि निरम्हम হিৎসাৰা অনৰ্থ হেতুভাৰো জা-প্যতে ন পুন রক্তত্বধন্ব মপি। ন-চানর্থ হেতৃত্ব ক্রতৃপকারকর্বযোঃ किमिछि विद्याधः। हि॰मा हि পুরুষদ্য দোষ নাবক্যতি জুতা শ্চ উপকরিষ্যতীত্যন্তেন ৷ তদপি मार्थानरव । गीमा मक यटक कृ विद्राध अव। তथाहि। छक्रनत्य न খল সর্বভূক্ত হি•সাভাব বিষয়ক৽ कार्य निष्ठि निरम्भ विधार्यमा

वार्ष दिसी ज्ञीटमामीय भेषा-লম্ভন বিষয়ক কাৰ্য্য মিভি ভাব বিধার্থ উপপদাতে। ভটন: য তু वारक यथा ७था छ । न ह मूथा **गख्यारा भूक्यार्थ गख्रिःम**न-मार्थ मार्थन व मनर्थ मार्थन बटक পপদ্যতে বিরোধাৎ । বস্তুতস্ত অঙ্গেপি বিরোধে। ২স্ত্যেব স্বতঃ বিধে রেষ স্বভাবে। যঃ স্ববিষ্যস্য সাক্ষাৎ পরস্পর্যা বা পুরুষার্থ সাধনত্ব মৰগময়তি। অন্যথা জ-স্থানা প্রধানোপকারকত্ব মপি না দীক্রিয়তে এ অর্থ সাধনত্ব वन । प्रतिकाननुवक्षीक नाश्नवः जनर्थ माधनष्य त्मवनिक मा-খনত্ব নচান্যে রেক্ত সমাবে-শ ইতি। অত এবোক্ত তথাদ-**एड राधा २वधः इति। नास्य** শোনেনাভিচরন্ বজেত ইতীত্র শোনস্য শজুবধ ৰূপেষ্ট সাধন্ত্ব गवश्रु । অভিচারো মূলকর্ম চ ইতি মনুনা উপপাতক গণ মথ্যে शिष्ठीमिनिके जाधमक भवगण । তদ্তেৎ কথ মুপ্সদাতা মিতি চেক্সেব । আতভাষিন শ্ৰায়ন্ত रनारप्रवाविष्ठात्रयन् ई ए । ক্যতথা অভিতাধিকলৈ ইফীসাধ-

মম্ব° অনাততাযিস্থলে তূপপাত-करत्रन रलरम्निके माधनत्र भि-তারিরোধ ইতি। গুরুচরণা অ-প্যেব॰। ইতি তিথ্যাদিতত্ত্ব॰॥ दिशाबः पू॰ मन १ क्या तः। म ह বিধাতৃপুত্রঃ। ইত্যমরঃ।। বৈধাত্রী স্ত্রী ত্রান্ধী। ইতি রাজ-निर्युकिः ॥ देवश्रमात्री खी मान्द्रमगीयनग-রী। ইভি সিদ্ধান্তকৌসুদী।। रिवधृष्टिः • शू॰ विकसामिमश्रवि॰-শতি যোগান্তর্গত শেষষোগঃ। তব্য তাজাত্ব যথা। পরিযস্য ত্যজেদর্দ্ধণ সপ্ত শূলে চ নাডি-কাঃ। গণ্ড ব্যাযাতযোঃ ষট্চ নব হৰ্ষণ বজুবোঃ॥ বৈধৃতি ব্য-তিশাতৌ চ সমস্তৌ পরিবর্জ্জ: বেৎ। ইতি জ্যোতিস্তত্ত্বুণ ॥ 🛊 ॥ তত্ৰ জাতফলং যথা। মৈত্ৰী বি-, शीनः अधिनः थनम् मूर्श प-রিদ্রঃ পরবঞ্চকশ্চ। সকর্মকর্তা পরদারভর্তা ভবেমরে। বৈশৃ-তি লব্ধজন্ম।।। ইতি কোষ্ঠাপ্র-मीभः॥ 🖷 ॥ व्यम्ब्रद्यादम जमा वर्जाञ्च यवर्जाञ्चश यथा । यनि বৃষ্টি ব্যতীপাতৌ দিনং ৰাপ্য-एक छात्र । हनारा २ मृष

যোগেন ভাস্করেণ তমে। যথা
।। হন্ত্যমৃতাখ্যো যোগঃ সর্বাণ্যশুভানি হেল্যা নিষ্ত্তা ন ভবতি পুন রিহ শক্তো বৈধৃতি
বৃষ্টি ব্যতীপাতে।। ইতি জ্যোতিস্তত্ত্বা

বৈধেষঃ ত্রি মূর্খঃ। ইত্যমরঃ।। বিধিসম্বন্ধী বিধেষসম্বন্ধী চ।। বৈধ্যতঃ পু॰ ষমপ্রতীহারঃ। ইতি হেমচক্রঃ।।

বৈনতেষঃ পু॰ গরুডঃ। ইত্য-মরঃ।। অরুণঃ। ইতি মৎস্য-পুরাণং।।

বৈন্যকঃ পৃং শস্ত্রাভ্যাসরথঃ।
তৎপর্যায়ঃ। যোগ্যরথঃ২। ইতি
হেমচন্দ্রঃ। বিন্যসম্বন্ধিনি-ত্রি।।
বৈনাষিকঃ পৃং বৌদ্ধঃ। ইতি
ত্রিকাওশেষঃ। যথা। ভিষ্ককঃ
ক্ষপণো হহীকো বৌদ্ধো বৈনাযিকঃ স্মৃতঃ। ইতি ত্রিকাওশেষঃ
বৈনাশিকং ক্লী নাভীনক্ত্রবিশেষঃ। সূত্র জন্মকার্যি ত্রযোবিংশনক্ত্রণ। যথা। জন্মাদ্যং
কর্ম ততোপি দশমং সাংঘাতিকং যোজপভং। সমুদ্ধ মন্তাদশতঃ বিনাশ সংজ্ঞ ত্রেয়োকিশেং
আন্যান্ত্র পঞ্বিংশং মানস মে-

ব॰ নরঃ ষড়कः স্যাৎ ॥ তৎ कल स्था। ब्रेंश (महार्थ हानिः স্যাজ্জমর্ক উপভাপিতে। কর্ম-কে কৰ্মণা হানিঃ পীড়া মনসি মানসে ! মুর্ত্তি অবিণ বন্ধুনা शनिः गाःश्वाठित्क ७थ।। गः-তপ্তে সামুদ্দিকে মিত্র ভৃত্যার্থ मुक्त्यः ॥ देवनानित्क विनानः मा १ एक जैविन मन्भाना । ইতি জ্যোতিস্তত্ত্ব ।। নিধনতা-त्रा । यथा । देवनाशिकत्कं मुर्खेः গ্রহণ সুধাণ্ড ভাস্করবোঃ জনষতি রোগ বহুধা ক্লেশ বিত্তক্ষম্পাশু।। বৈনাশিকর্কে बस्मिविश्न नक्त्व । इंडि कि-চিৎ। বস্তুতন্ত বৈনাশিকপদ॰ নিধনতারাপর•। নিধনেপি চে-ভ্যেকবাক্যদ্বাৎ। ইতি তিখ্যা-**मिञ्डु** ।।

বৈনাশিকঃ পু॰ ক্ষণিকঃ। পর-তন্ত্রঃ। উর্ণনাভঃ। ইতি মেদিনী ।। বিনাশসম্বন্ধীষে ত্রি।।

देवनीठकः श्रृः क्वी श्रद्धण्यवादाह-नः। ইত্যমরः।। আক্রচং বাহুং यथ সাক্ষাৎ ন বহুতি পরম্পর-देवत বহুতি তদ্বৈনীতকং। यथा দোলাং বহুনু দোলাবাহুকঃ বি- নীষতে শেতি ক্তাৎ বিকার সংযেতি কে বিনীতকং তেটনৰ স্থাধে কে বৃদ্ধো বৈনীতকং ইতি
ভরতঃ য় বিনীতসম্বন্ধিনি ত্রি ॥
বন্যঃ পুং বেনপুজঃ য় সতু
প্থুরাজঃ য় মথা । বেনস্য মথিতে পাণো স বভ্ব সহাপুমান্ ।
বৈন্যো নাম মহীপালো ষঃ প্পুঃ পরিকীর্ভিতঃ য় যেন দুয়া
মহীপুর্বং প্রজানাং হিতকারপাৎ । ইতি বহিপুরাশে সর্গান্ধানন নামাধ্যয়ঃ ॥

বৈপরীত্য ক্লী বিপরীত্স্য ভা-বঃ । তৎপর্য্যামঃ । ব্যত্যাসঃ ২ বিপর্যাসঃ ৩ বিপর্য্যযঃ ৪ ব্য-ত্যয়ঃ ৫ । ইতি হেমচন্দ্রঃ ।।

दिशती जालका नृः खी भू व खन कृश वृह ६ कला निकान नृः । यथा । निकान दिशती जा निकान क्ष्म वृह ६ कला। देशती जा निकान नृ क्षां जिथा नि श्रित का का नृ क्ष निकान देश ती जा का कर्ष क क्षां क्षां भू ६ १ ति निया मिन देश ना निकान का तकः ॥ हे जि ता कि निकान का तकः ॥

বৈভবঃ পু• বিভবস্যভারঃ।বিভব শব্দাৎ ক প্রত্যবেন নিশারঃ।।

বৈভাজিত্র ক্লী বিভাজ্ঞবিতু-র্ধর্মণ। বিভাজ্বিতৃ শব্দাৎ অঞ্ প্রত্যায়েন নিষ্পন্ন । ইতি সিদ্ধা-खटको भूमी ॥ বৈভাজ ক্লী एमस्वामगान । ইতি ত্রিকাওশেষঃ ৷৷ दियाबः श्रुः दियाब्बरः। इिं क्रोधद्भः ॥ বৈমাত্র। স্ত্রী বিমাতৃকন্য।বৈমা-ब मकामाश् अञ्चारयन निष्णकाः পু॰ বিমাতৃপুত্রঃ। বৈশাত্রেষঃ তৎপর্য্যায়ঃ। বিমাতৃজঃ ২ বৈ-মাত্রঃ ৩। ইতি জটাধরঃ ॥ বৈমাত্রেষী জ্রী বিমাতৃকন্যা । বৈমাত্রেষ শব্দাদীপ্ প্রত্যক্ত্রেন निकाश ॥ ত্রি বিসুক্তিবিশিষ্টঃ।। তদ্ভাবে ক্লী। বিমুক্ত শব্দাৎ ফ প্রত্যযেন নিষ্পন্ধঃ ।৷ পু: বিনিম্বঃ। ইতি ट्याञ्चः ॥ বৈষাকরণঃ ত্রি ব্যাকরণবেক্তা।। ব্যাকরণাধ্যেতা।। ব্যাকরণ শ-मा९ क প্রত্যবেন যুে। যু নেতি ইমা ণিত্তেত্রি রিভি বৃদ্ধৌ চ মি-भाषः ॥ व्याकत्रगमस्त्री ।।।

বৈযাকরণভার্য্যঃ পু• বৈষাকর-

गी ভাষ্যा यमा। ইতি मुक्कारनाध-कांकत्रण ॥ বৈষায়ুঃ ত্রি ব্যায়ুচশ্মাচ্ছাদিত-न्त्रशामिः। ७९१मार्यः। १५११ २ । रेटामदः ॥ यथा। উट्टरा-**जिमू भी जूंका निजाशाजी निज्ञ**ङ-द्र॰ व देवशंष वर्षावमना द्रार्क মূজাননা সতী।। জ্যোতির্ম্ব॰ णिव॰ भारु॰ शत्र^क गिवकंत्र॰ श-तु॰। ইতি का**निकानु**तार ६६ অধ্যাসঃ ।। दिवानुशनाः भूः गाळकार्क-मूनिविटन्दः। यथा । टेवसाघु-পদ্যগোত্রায সাংকৃতি প্রবরায हा अभूखाय ममात्माउ९ मिन ল ভীমবর্মণে ৷৷ ইতি তিখ্যা-দিতত্ত্ব ৷৷ বৈষাসৰিঃ পুং ব্যাসস্যাপ্ত্যং ইতি মুগ্ধবোধব্যাকরণ ॥ বৈষাসিকী ত্রি ব্যাসেন ক্লত সং-হিতাদি। ইতি শ্রীভাগবত ।। বৈষ্টঃ ত্রি প্রাতর্ভবঃ। ব্যুফ भकाष्ण् अञारमनु निष्णेषः । रेि निका उद्योगुरी।। देवतः की विद्याभः। इन्यामतः॥ তস্য সমুখান পঞ্চ। জীক্ত॰ ५ वथा कृष मिख्यानदरी ।

বাস্তজ্য হম্মা কৌরব পাওবা-না । বাগ্জুতি যথা জোৰ জ-अमरबाः। अभिज्ञ 8 वक्षा नृषि-ेक मार्जीवरगाः। जनवार्यक्र स वर्षा गुजनी उन्नमखर्गाः। इछि मरा**जित्रक**ी। বৈরক্ত সী বিরক্তিতা। বিরক্তশ-ক্ষিতিবিদ্য ক্ষিতাবেদ্যবিশান रैपत्रिकः वि विद्योगीर्शिक्षे ट्यांटाः ॥ टेरक्रेनियें जिन के की के कार्निकात-गा প্রতাপকারঃ। তিৎপরীয়েঃ। বৈরভিদ্ধিঃ ২ প্রতীকারণ ৩। रेजापत्रः ॥ र्वेत्रश्रीविक्या जी তন্ণী ইতি হেৰচক্ৰা গ্ৰ टे रतस्तिः जी ৰৈব্নিশিৰ্যাতন । ইতানর: 11 देवतांशिकः जि दिवामार्कः। वि-রাগণনিত্য মহতি ইভারে ঠঞ विद्यारयन निष्णमः। ইতি निका-उद्याननी ॥ देवबाशी बि विषयकात्रीहरूः। देवत्रांग्युकः। यथाः। गर्मस्यक नमक्त जुडीक्क नमाउनः । मनद्भवादमा दिशागी हरूपंड

'शूख वर्ष हैं।। रेकि उपरिवर्ष

विषयिए २८ व्यक्तियः॥ जी देवज्ञागा • विषयं पूछ्यीः । বৰা। জ্ঞান বৈরাগ্যমে। উক্তি-প্রবেশাযোপর্যোগিতা ৷ ঈষৎ প্ৰথম মেবৈতি নাসত্ব মুচিত তर्याः ॥ यमूट्ड हिन्ड कार्रिनाः হেতৃ প্ৰাৰঃ সতা॰ মতে। সুঞ্ মার স্বভাবেষ ভক্তি স্তদ্ধেতৃ রীরিতা ম যথা একাদশক্ষদে। তত্মান্মভুক্তি বুক্তস্য যোগিনে **বৈ স্থাত্য**নঃ।ন জ্ঞান ন চ বৈরাগ্য প্রাযঃ প্রেয়ো ভবে-**पिष्ट ११ देखि । किन्न ख्वांन वि**त्र-**জ্যাদিসাব্য° ভক্তৈ**য়ব সিদ্ধ তি 🌡 শর্মা তত্ত্রৈদ। যৎকর্মান্ত র্যন্ত-পসা জ্ঞান বৈরাগ্যতশ্চ र९। र्विटिशन मोनयर्जन ध्यारमाजि **রিভর্টির রশি।। সর্ব** মন্তক্তি যো-গেন মন্তবৈদ্যা লভতে ২ঞ্চস 1 चर्गाभवंग सकाम कथिकानि বাঞ্তি ৷৷ ৰুচি সুম্বহত স্তত্ৰ জ मगा खलात रातः। विवासम् वितिर्देशीं जाने बार्या विनी-শ্বিতি IL অনাসভিস্য বিষয়ান্য-थार्र मृत्रमुक्का निर्वक्षः स्य नवटक बुक्क देवबांगा बूठांट ॥ **धानिकक्षानुका रित्र**मध्य

दৈরাগা॰ ক্স্তু ক্খাতে ॥ ইভি অভিননামৃতসিক্ষো পূৰ্বভাগে माधनलस्त्री॥

दिवाछिः पुः हेसंरगाशकी छैः । ইতি হেসচন্দ্রঃ ৷৷ রিরাটসম্বন্ধি-नि कि ॥

देवबाष्ट्रा जी জিনহোডশবি-म्हारमया खर्गा प्रवीतित्नवः। ইতি হেমচক্রঃ।।

বৈরাতকঃ ইতি রাজনির্বন্টঃ ॥

देवती पूर नजुः। देखानद्वः॥ दीव्रमश्किनि जि ॥

देवकथाः क्री विकथा। स्था। देव्कथः मद्भवं कन्यानिशास्त्रा त्मेखाः छथा लचन मिदिनः। এতান্ ব্যানহতি ককৰাদী শা-**द्य**ष् मृष्ठमा वक्षा न मृष्ठेः॥ रेकि यरानाहरक ए जंबः ॥

देवद्भावनः श्रः वृक्षः॥ वृक्षित्रा-कः ॥ अति मुखाः ॥ मृशाम्बाः॥ निक्शनः। ইতি শব্दद्वादनी।। रेवरत्राहननिरक्छनः क्री शाष्टानः । ইতি रनायुधः ॥

रेक्टब्राव्याः शुः वृष्टः।। विश्वा-कः॥ मूर्याभूवाः। देखि त्यपिनी।।

वखनः। मुमुक्कुिः शतिकारिता दिवदेतािः शृः वागरेषकाः। सथा १ देवदब्राहिः बंधिनन्त्रमः। इंडि गयत्र इंग्ली।

देवदबाक्षातः प् इक्शानकात्रमा প্রত্যপ্রকার:। যথা। প্রতিকার: প্রতীকারো বৈরনির্মাতন তথা िनियाजनः देखालकि देवद्रा-काद्या निश्मारक ॥ ইडि मक-त्रप्रावनी ॥

देवलक्षा की विवासम्बन्ध रित-্লক্ষসাভাৰ ইতাৰ্যে কা প্ৰত্য-GR. BYMELL

देवकः की नियमकः। हेलगतः गिका॥ विद्यमद्यस्त्रिवि सि देविष्य कि विवासन शानाक-जुनामिना समस्क्रिक यह। शना-রীতি ভাষা। তৎপর্যায়ঃ। কা-र्जावरः २ । रेकामत्रकृतको ॥ । रार्छाबरः ७। रेकि भक्तप्रा-THE STREET

देववर्षः हो विवर्षमा विवर्णमा-ভাব ইতাৰ্ষে ক্ষ প্ৰত্যবেন নি-- श्रापः श

दिव्यष्ठभ भूः समः। ইषामदः॥ क्रायतिर्भाषः । १७ क्रियतः ॥ । भनिः। अश्रदमा क्नाः। वर्छमा-माया अधिकवस्य वागता

• १वजातः। भूतमात्रः रेखः। जा- । गाउँ। ज्याता १वित्रम कारकी क्षिणाः वनद्वा क्रमा विस्थरम्य मक्रमानाः। जिन्दिनार्व्यकः। ३-कोम्। (प्रकृति। कमाशः अविः বশিষ্ঠ বিশীমিত্র: গোডাই জ-नमिश्र अप्रकामा अटिं गरावरः। रकामध्यम्भरम्भविक्रिकिकः धृकः तन्त्रके निविचा १ श्वधः ना-खागाः करिर ७८७ मन् गूला मन । रेडिजिङ्गागर्यम् ।। का व-णि**ठ**। अश्वत्रक्ष अवकानि वरेक বৰত বুচাতে প্ৰত্নি দৈন্ধ ইশিং केन्त कमारमा स्वीख्य स्वा ॥ **ज्यान स्मिर्गनी विकारितः** अंकागवाम्। व्यमितिन गटेखरण मालुका स्व मर्बकः ॥ माशा বিশাস ক্রমান্ত মহুতো বর্ণবো २थितो । जानिकाक जुन्ने छ ष९ मश्च (मनम्बाः मृठाः ॥ ३० कामः अमुधा कामा मन्द्राः गृखा खूवि। यश्य खात्र वृ गर्वव् गर्थ मक्ष वर्षियः ॥ इषा धर्म राव-शानः व्यवस्थि शत्रमः भवः । ইতি यारमा अवस्त्रान्कीर्छमा नाम २ प्रशास्त्रशा । जमका মা**ৰ্ক্তেম-উন্নত**া আদিত্যা ৰস-वा क्रजाः भाषा वित्य अक्रका-

্ষত্র দেবগণাঃ স্মৃত্য় ।। আদিত্য। বসবে৷ ক্লজা বিজ্ঞেষাঃ কশ্যপা- • ছাজাঃ। সাধ্যাশ্চ মরুতো বিশ্বে ধর্মপুত্রা গণা ব্রয়ং ॥ ভূগোস্ত ভূ-গবঃ পূত্রা ছঙ্গিরোঙ্গিরস সূতাঃ। এব সর্গস্ত মারীচো বিজ্ঞেষঃ সা-ম্পুতাধিপ্লঃ।। তেজন্বী নাম চে-**ट्या**शि महाचा यख्नजागजूक्। অতীতানাগতা ষে চ বৰ্ত্তন্তে যে ক সাম্পুক্ত।। সৰ্বে তে ত্রিদশে-खांख विटब्डरा खना नक्नाः। गरमाकाः जलिनः गर्व वर श्रुतम्प्राः ॥ ययवर्षा वृशाः मर्व শৃদ্ধিণা গজগামিনঃ। তে শত-ক্রতবঃ সর্বে ভূতাভিভব তেজসঃ ॥ पर्पाटमाः कान्नटेन द्वरेण न्नाधि-পত্য শুণাৰিতাঃ। ভূত ভব্য ভব-माथाः मृशू टेठल खंग विक ॥ ভূৰোকে হৰ স্তে৷ ভূমি রস্ত রীকণ ভূবা স্মৃতণ। সরাখাশ ত-या बन देखरनीका मिछि शमाए ।। अबि टेन्टर रामिक्ट कमाशन्ह महान्धिः। शोजमन् अत्वारका विश्वामिक्न कि लिकः ॥ छटे वर পুত্রো ভশ্ববান্চীকস্য মহাত্মনঃ । जनम्भिक गरेखरक मूनस्याव

श्येः अर्थाण दान है। निवा ন্ত্ৰণ্ড বিখ্যাতো নাভাগো দিক नदः मगुः भठिएक देवक् महन् ॥ 'মুচাতে পাতকৈঃ সর্বৈঃ পুৰাঞ गरमभूटा ३७ मार्क्ट सभूता-ণে বৈবস্বতমন্বভর্ত সমাঞ্চল ম বৈৰস্বতী স্ত্ৰী দক্ষিণদিশা। ইতি त्राजनिर्य•**े**ः ॥

देवगश्किः পু॰ কন্যাপ্রভাষোঃ শশুরঃ ! বেহাই ইতি বৃদ্ভাষা । ममधी दें जि हिसी जाना । वि-वार्मदक्षिनि जिक्षस्था। शक्रम मश्राप देवत (ययाः देवता क्रिकी ক্রিয়া। তেচ সাক্তানিনঃ সর্বে পতিতাঃ শূদ্ৰতা॰ গতাঃ ॥ ইত্যু-দাহতত্তু ।। অগিচ। কন্যাত্তাক **পিভূ** जुरादक्ष व देवता हिकः व नू । जशुक्रमा कना सा श्राका পুলবদ্ধরে ।। ইতি **सामञ्जू** (प्रवणः ॥ देवनन्यायनः शुः मूनिविद्यायः।

তথা छदा। ইकाम र्नजगरेकत ॥ विषा विषान समान ত্ত্ব। কৌপ্রাপান্। তেনি-निक नुगडकदेव जानानका द्य-जन है।। क्रबार श्रम् कि स्थिन । तह ।। क्रिकाः (क्रबाः क्रिकाः श-शा त्लाकविक्राञाः। महना देवव- अस्मानाः सहायनिही स्रोतिक्रा यण्टिमारक नव भूकाः शकीर्व-ण्या देववश्रक भिषः स्पृतिक्षि- | निकास्त्रक्ष्मका देवन-ত তে ম্যান্তর । অস্মিন এতে - স্থান্ত । বিভিন্ন প্রে - 8२ अन्यामधी गाउँ महासम्बद्धाः १ म्यार्क्यक्तिक्ष्म् विन-न्त्राप्तकात्र है। द्रीवाद्यार नेवार-े देक्त श्रीकरान्त्र समुद्रावकार ।। TO TELEVIEW THE THE देतना की प्राप्तिक स्वयंत्र विना-ं जिंदू सनामक् शकातेमा निन्न-कर ।। शक्काकारविभिन्ने हुन । वि-াগত পঞ্চ কৰা বিশুৰ পত্ৰ-अन्याम् । अन्याद्याना निर्मातः । ं रेजिजिका अध्योजनीति ः देनकाशः जीतन्यमुर्दिकाः गण्यान-्र द्वार के मुक्तान में की व ्ट्रिकाल क्षेत्रकालीकानि गथका । ज्ञानामस्य किंद्रने द्वारा दिनामः श्रुः सहाहामधः।। यान-नुसामान्द्रश्रिक्षयमामः। उ९-अर्गामः। साम्यः र साम्यः ७। क्षान्त्रका हालना अञ्चन नर्भः।

1 বিশাখা তারকা সুক্তা বৈশাখী शूर्विमा जरदका का देवनाची रख नारम म रेक्नाका अकीर्खिकः ॥ रेकि नकत्रकारी ॥ प्रज् टबरक রবিকং দৌক্ষাতত্ত্ব কাত কাণ। भूगान् विनीत्मा (प्रकारम्य क्राउन) वर्षमा कर्छ। मृद्धनमा छर्छ। । ७-नावित्रहरू सम्बद्धाः श्रीर देनताम्बाद्यभव ज्य क्या । इंडि त्रीक्षेत्रकारिशः। कार्य वास्त्रीतन्।-थ क्रमा का श्वाप्ताका प्रवा भक्त स्टामुखाङः जाम विधीः यटक । इतिया जना क्रिक् महाभा **उक् मानुसा । दिक्का गृहर है ग** वासकार्यम्यानाः जनः स्था ज् यदम्बा मिन्सम्बा नाम्राच द्राज-न् अया महत्र । ज् जाहरी ॥ शि ाक्स स्वर्धितमा जू सश्माने गारव मानि विद्यानका इन्होति निम्नुनाक हाट्यमान द्रामान्छः॥ पार्काः, कार्डिकानि मात्नः स्त्रोः त्रवादात्राः विकासनाम् श्रीनः । তত্ত্ৰ চাজেৰিগৈ ছিবিশণ তথা চ विकृत कर्म का त्योगमा मा धारेका वाम नाटक । सुना गराति विभाज्ञ बकताय विवा क्टा ॥ मार्ग नार्गात स्रागमस्त्र-।

.নী॰ প্রতিপদ । পৌর্ণমাসী॰ ভদি-• कि नविभागे। প্রতিপদ মারভা किन्निकिना नातायटनामाधा-यक मर्ग लोगमात्री एई मिन সক্ষান্ত মিভি। তত্ত্ব সৌরহত্তে तानाटकथः कार्याः । मध्यानि বিশিষ্টেকার্য্যে সজান্তিঃপরিকী-র্তিতা শোলোধ শেচতরত্মিন্ রবিরাশি স্থিতি স্তথা।। ইতি গারু-**जार ॥ क ॥ ७७ म्हांकरणाम्य कं।**-वा नेक्सन क्षाठ्या छेनज्या उ **७६ जिल्ल्याकार्या अमा देवना**रथ ৰাণি অৰুকলকে অমুক তিথা-বারভ্য মেষস্থ রকিং সাবৎ প্রত্য হং অমুক গোত্রং শ্রীঅমুক দেব-শর্মা শ্রীবিষ্ণু প্রীতিকাসঃ প্রাত-সাম সক্ করিয়ে। ইভি। গদা-বাৰ অৰ্ক প্ৰসূত গৰী লক্ষ দান ज्ञा कल जमकल श्रीशिकारम किन् दीिकारगा वा देखि नक्ना ৰশোক্ত বিবিদা স্বাহাৎ। প্ৰতি **मिस अबटब छू जान्नजा भिष्**र রকি কাম প্রত্যহ মিতি ন বজ-রাণক্ষিক বাসীভানভন্ন দেবরা লিক মান। ইত্যবিক বক্তবা।। **ठाट्य ७ यागानखत्र एक्र**णस्य প্রতিশাস ডিপাবারডা দর্গ পর্যা-

स मिशृह मीसः। अधिमिन महत्त्रः দারভা প্রতাহ নিত্রন্ত ন নক বাং। এবং ক্লব্ধ প্রতিপদারমে উ रतीयः। धना नामाञ्चद्रता कारा नीयः। निषद्भाकतः। कन्नक्तिः गार छितया भूतानः। नामद्वानः विन। ताजन् यशकिष्टि अञ्चलक नदः। कलका बाबकः जना स्टब्ह गार्ककर्या ७८व९ ॥ । महार्शन বে ৷ বো দদাতি হি নেমানো শক্ত ক্ৰৰুষটাৰিতান্। পিতৃনুদ্ধিশ বিপ্ৰেভ্যঃ সৰ্বগাপৈঃ প্ৰমুচ্যতে.৷৷ বিপ্ৰেভ্যঃ পাদুকাং ছব্ৰঃ পিছভো বিষুবে শুভ । পিতৃভাঃ পিতৃন্-किना । **अब दिक्**तह्मा । अयुटन কোটি গুণিত লক্ষণ বিক্রপদীযু চ। বড়শীতি সহসূত্র বড়শীভ্যা गुमाञ्च**ः ॥ ग**ञमिन्तूक्रास्य श्वा সহসুত্ত দিনকবে। বিষুৱে শত-मार्मु मा का मा देव चनलकः।। ইতি মৎস্যপুরাণোক্ত শতসহসূ গুণিত তৎ কর্মাফল জনকত্বেন বিবক্ষণীয়ন্ধান্মেশাদাবিত্যপি বি যুব সংক্রান্তি পুণ্যকাল পরং । অ-न्मथा कान्यस्य क्षानाभारखः। या वशद्राशि ७१।।। जञ्जनगण् ग का**लक जिल्ला मध्यम्बर्ग सं**रक्ष

দিনাবতশীতি মুখেতীতে মৃত্ত क्रसिब्दिष्टतः। कविवाकाबदमानुंगाः শতীকে কৈবিজনাবৰণাশক্ষিত তুপু-ণ্ডর কলেগার দিনকুরে ভরাক ণাতি বিহিতে বিশেক্তি দিখালীবাং ताबि व्यक्तिकागमामि रेमावः । साधितेष्करमञ्जू मध्डेम्हर्नाः अन् থসাক্ষামাত্য ভলে তদ্দিৰ্শীৰ त्मित्रा यस्त्र शृशाला मखस्यान्य । मशासीटक लिक्सिमीय फिर्ट्य ब्रेटल-पान्य । जिल्लामा स्टाप्त । जिल्लामा स भूगानी उद्यान जू जिल्लिक्सीय त्न-यगामदा श्रीमा नत्र क्रिमेरीयामा যামদ্বৰ বিভিন্নতিল ভেদ্বো पंकिनासत्म छिक्किक्सीय ट्रायसान-ছম্বা উদ্রোসণে পরদিবদীয়া-मा बागबम्हा ज्यकाधिक द्वामक রাত্তি সংক্রমণে শর্মিনগদ্য সাথ-षयं। इन्द्रागण्डाबरगण्ड् मिन मर्छ **प्रिमना** ना**कि मएए ब्रांट्ड** र्वास्टर-. जिं। अं। मध्ये छा १ जानगात-भाक । ज्यानिक जाकियत जू छ-प्ताप्त चारकाकि ब्रेस्ट्रेसीक निन-নেন শৰে নিধি জলেন চ মানং বি**ন্ধুগুজ্মণতমন্ত্রজ**পঃ। সংক্রান্ডি कानबाद खी हेलन भाष्म वर्जा। रेम्बरपार्यम् बामगणायाः पिनकः

যে তিথিক্ষে। জাকামাবৈষু আ-লোভ কাতিক শৈশাখ পৌৰ্ণমানী: -बुगाका। जन्मक सम्माना था-ज्ञान जाम्यकानानान यस मुन्ती-न्छा। भवाव व जव वर्षावङ्ग-कुन्छ अन् यहाविक अक्टूरका नक रेजिन्सिक्श जामगरण ज्ञान मन् विकार योगः वानश्-रखरण्युने जन्निव जिनकाना। माम अम् ७६ महिन्नामा वि ७म् जाता कुरक मानी नूक भएक र नूक-जिल्ली बराविमूप में के खान न्करमांद्रमा भिष्ट् प्रमूक रावन-र्मनः गर्व भाग विमुक्ति कामः ब ভান্ জলৰটায়িত শক্ন বিফ্ रमत्राकान् चमूक स्त्राजवामूक अयुनर्यस्य वाचनार श्रृष्ठा सर् मण्युम्बानीि वाक्ष रहेड जन मगार । आयन्य मन्निन्द छ छन मश जागात्मय जैरर्थम जिन्छा-মেন গৃহীয়া সম্ভীত্যুক্তা গাৰ্ত্তীণ কাৰম্ভতিক গঠেৎ। জল ঘটাৰি-**छाः भेडस्या विक्**रियकाकाः। रेजि यरमे । जरा मिना म-मार्भ गया अन् अत्मरका विक्टिक **एट क्रम यहारित नक्**मान क-ৰ্যাণঃ প্ৰাক্তিকাৰ্য স্বীক্ষণা কিঞ্চিৎ

काकनमूनाः जीकनासाहः एता-নীতি। জতা অচ্ছিদ্রার ধারণ। बाबन दिल्लेशामुगटनटम यथा म ম্বৰ সৈমত্তনামে ত্ৰান্ধণাবেতি বি-रमचग তত जानांगामियात जुज িমিতি ন দেব । ভূমো ত্যাগ জন **्डरक्शः।** এব बनाखाशि मण्णुन . म इंडि वास्का विस्मयः। मध्या ক্রাভাবে তৎ সত্ত্বৈপি তত্তৎকা-त्मा विकृथीि कितामा वै। विकत দশ্ব বাদাণাৰ পশ্চাৎ প্ৰতিগাদ द्वर । क्रांद्व पद्मा जू मानीनि (म-विम्या छू मिक्गा । उदमई वा भारत मनामनाथा निक्रल छ ति ।। इंडि मेर्नामूकार। म **দেহাত্র দেহারীতি** বারাহীয়ে भार्ठः ॥ **।। देवनात्य** या विष् शूर्न भएडाका दि विखयान। मम्पिंग्जूकां द्वारक्ट म याणि अत्रमा शिष्टि ।। अवीशि यथार । गाः अंश्रेका शृह्यबादकाम म त्नाम् कलार्थिना मट्डाका घ-ति। देशयः ॥ ।। कुछिः। त्यरी-रमी गंकरवा रमगी वातिशूर्ग **ह** गगदी। ज्लामि गंबी (योगान्म-श्का न्दरं दोका क्षा निर्दे । अम अम् अम्बद्धाः सट्डा उन

বিকু শিবাত্মকঃ। অস্য প্রদা-नाष्ट्र मकला यम मञ्जू मत्नात्रथाः ॥ रेजि यञ्जलिकायदनात्रथ कल-ত্ব জ্ঞেৰ ।। 🖝।। ক্লতাচিন্তামনৌ । মসূর নিষপত্রাজ্যা যো ২তি মেষগতে রবৌ। অপি রোমারিত স্তুস্য ভক্ষকঃ কি॰ করিষ্যক্তি 🕩 🖫 ত্তরার্কে তু। মেৰন্থে চ বিদৌ তত্ত নাস্ত্যকে বিষজ্ঞ ভয় াইতি স রৎসরপ্রদীপে পাঠঃ। ভতশ্চ মে-यस রবিস্থিতি কালে মসুরং নিম্ব-পত্ৰদ্বক ভক্ষকে ॥ 🛊 ॥ ভকি-ষ্যে। যা শুক্লা নরশাদু ল বৈশাখে ৰাসি বৈ তিথিঃ। তৃতীয়া সাক্ষা थाण गीर्वाटेन त्रिंग निकला ॥ त्या **२गा॰ मना**ङि कतकान् वा-রি বাজ সমবিতান্। স বাতি পু-करना नीत्र त्नाकान् देव रहममा-निनः ॥ दाक यम् । एयमानिः নঃ সূর্যাস্য। ততো জল মন সমূ ষিত দানে সূর্যজোকীগননং ক नः। मानान्श्रेमः शूर्वद्याक्षाक मन्द्रानः दिवनादय एकन्यस्य जू वृत्रीयायाः क्रकः मृगः। कार्लिक ওরাণকে চ তেভা চ নবসে ২২-ति।। जन् छाजनदार मानि बदरा मगाब बागत । मारव जू त्योर्क

, मानारक द्यां त॰ कलियूगा॰ न्यूड॰ ॥ বুগারন্তান্ত তিথবো: বুশাদ্যা জে-न विक्रां । उत्र दिनाशांत्यः পৌৰ্মাসাভা এব তমৈৰ বিশি-क्रकामिकामार । मुशा वाहिएक कार्किक नवटम श्रुनी छि जिल्ही গুরুপক ইতি ব্যর্থ স্যাম । জা আুলা প্রশানা মাহ বিষ্ণুপুরাব • েতা ৰুকাদ্যাঃ কমিতাঃ পুরালৈ রনন্তপুণা জিপৰ কতন্ত্ৰ: ৮উ-পপ্লবে চন্দ্ৰমসো রবে গ্রিছপ্যস্ক-काक्रायन दृद्ध है। शानीय वन श्चाब जिटेनक निमुः। प्रमाह शि-ভূজাঃ প্রণতো মনুষ্যঃ ৷ প্রাঞ্বণ হুত তেন সমাত্র সহসুং রহস্য-মেতথ পিত্ৰা বদন্তি ৷ উপায় ब्बाबहरव ॥ 🖝 ॥ स्तरीश्रहावना बुगामा वर्षक्षिक मक्षती नार्क তীত্রিবা। রবে রুক্ষ শীক্ষত্তে ন তক্র তিপি সুগ্মতা।। 🐠।। অক্স তৃতীয়া মধিকতা ক্রমপুরাণ। ত माग कार्या। महेव ब्हारमा यटेव र्तिकु नमक्टरवथ । चवान् नमा । দ্বিকাতিত্যঃ প্রয়ন্তঃ প্রাশক্ষেক बान् ॥ शृक्षदबद्धका अवा देव-बाजक हिमानमः। छगीत्रथक क् निक्रि मागवाना मुस्तिबर ॥ ।।।

ষ্কান্দে। বৈশাখস্য সিতে পকে ভূতীয়াক্ষ সভ্জিতা। তত্ত্ৰ মাণ द्मांशृत्यमगरेक त्वीशरम द्वित्याः जिंदनः ॥ ना॰ जगनाथ॰ ॥ 🛊 ॥ অন্যত্তাপি। তথাচ জগদাথ স্নান মধিক্লতা ভবিষ্যে। সমুৎসর ফল॰ শ্বাজন্ নবম্যা॰ কার্ত্তিকে তথা। स्वारमी हं, यूशारमी ह मामखब्क-क्र ७८वट ११ 🛊 ११ यश्रामयञ्ज छ-বিষ্য নাৎসাবোঃ । অশ্বৰ্ক শু-ক্লনবনী দাদশী কার্ত্তিকী তথা। তৃতীবা চৈত্ৰমাসদ্য তথা ভাত্ৰ-शिष्मा हु ॥ काञ्चनगाश्रावास्त्रा लीक्टेमाकाम्भी उथा। आयाए-माणि দশমী তথা মাঘদ্য সপ্ত-**भी ।। আবণস্যাক্ত্মী কৃষণ তথা-**ষাচন্য পূণিম। কার্ত্তিকী কাল্পনী टेठवी टेकाछी शक्मनी मिठाः ॥ **নবস্তরাদয স্তেতা দত্তস্যাক্ষ**যকা-द्विकाः। अभावामग्राकेमी राजि-ক্লিক্তাঃ শুক্লাঃ উপক্রমোপসণ্হা-রবোঃ শুক্লান্থ হীর্তনাৎ ॥ 🛊 ।। নারদীৰে। বৈশাখে শুক্লপদে তু बाषनी देवसवी छिथिः। छमा। শীতল তোষেন সাগ্যেৎ কে-শব॰ শুটিঃ।। ইৰ॰ শিপীতকদা-मनी। नाव रैकामद्राराका। उब

বিষ্ণু পূজনে উপবাসোত্তর বি-शनार ११ का । व्यथ स्वाम आक्र । তত্ত্ৰ বৈশাখ শুক্লপক্ষে স্বজ শ ুনি শুকেতর বারে নন্দা রিক্তা बर्रामनीयत जिल्लो जन्महत्वार्थ-সচন্দ্ৰ জন্মতিথি জন্মনকত্ত ত্তৰ शक्ष्मणात्रा जयञ्जत्रयू भूर्वकन्नु-नी পूर्वভाजभा भूर्वायाण गण ভরণালেবার্ডেভর নক্ষত্রেযু যব-শ্রাদ্ধ কর্ত্তব্য । তচ্ছেষ ভোজ-नत्र अञापृश् निविकायाः वियूव সংক্রতে অক্সতৃতীযাযাঞ্ বি-শেষতঃ কর্ত্তব্য । বৈশাখাকরণে কৈয়প্ত জ্বপক্ষে আয়াত গুরুপক্ষে চ হরিশষনেতরত্র কর্ত্তৰ্যণ। ইতি ক্বত্যতত্ত্ব ।। 🛊 ॥ 🛊 ॥ অথ বৈ-শাথ মাহাত্ম্য । যে কার্ত্তিক বত-পরা যে মাঘ পরিনিষ্ঠিতাঃ। যে বৈশাখ ব্ৰতাসক্তা স্তেষা তৃষ্টঃ সূদা হরিঃ ৷৷ সর্বেষা মেব মাসা-ना॰ देवनायः अवतः मृठः। भूता হরিষুথে রাজন্ শ্রুত মেতমসং-শ্বঃ ৷৷ তত্ৰ স্নান জ্বো হোমঃ खाक मानामि वर क्रुंट । उर সর্ব॰ ভূপতিশ্রেষ্ঠ সতা মক্ষ্য মু চ্যতে ৷ একতঃ সৰ্ভীৰানি সৰ্বে-कछाः जनकिनाः। जुन दिनाथ

ৰাসাদ্য কোট্য**ংশনাপি নে¦স**-ষাঃ।। মেরুজুল্যানি হেষানি স-ৰ্বদানানি চৈকতঃ । একতঃ সর্বণ .मा जूश गांधरवा गांधरिश्रयः ॥ অসংখ্যানি চ পাপানি বহুজ্ঞা-ব্র্কিতানি চ। নিমেয়ার্দ্ধেন রা-ब्लब्स विनय॰ यान्ति माधद्वा। दिनाश मागठ पृक्ता निज्ना मू भरता ज्राव । शूर्वा नियम মাচর্য্য অস্মভ্য মুদ্ধরিষ্যতি।। স্বাগত মাধব দৃষ্ট্। কম্পন্তে পাপসঞ্ধাঃ। অস্মাক নাশ কা-লোষ ভূপতে ধ্রুব মাগতঃ ॥ दिनाधः शत्रमः मामः माध्यत्माः **ि र थिय । निष**्यन म्यार्घ्य ন ভূষো জাষতে নরঃ ৷৷ মনসা मः प्यदत्रकाञ्च निषमः माधदराज्य-ব॰ । পূষতে পাতকৈঃ সৰ্কৈঃ শ-ক্রেণ সহ মোদতে।। বচসা যো বদেৰূপ বৈশাগ্ন মাধ্বপ্ৰিষ । . पार् ग्रेगां जिया गि ग गटक बुक-**ণঃ পুর॰।। যঃ সমাচরতে ভূপ** নি-यत्मन जू गांधवः। ज विद्या कण মাসাদ্য বিষ্ণুন। সহ মোদতে ॥ নিষ্মেন সমাচ্য্য একাছ সপি ভূপতে ৷ পিতর স্তারিতা ক্রেম যাস্যম্ভিপরমাণ গতিণ ৷৷ তন্মিন্ 🎚

শাদা বিশুদ্ধান্ত মাৎসৰ্য্য ৰ-ব্দিতঃ। ঈপ্সিতান্ লভতে কামা न् शिविदक्श प्रिरंका छत्व ।। व-ক্ষমে বা কুত্মে বা নিত্রমঃ স্ত্রী विषाज्यः। नियम्न नत्यमानः স মুক্তঃ সর্বপাতকাৎ ৷৷ পাতকা-ना त्मक त्मव श्रायिक्छ विषू र्बु-ধাঃ। সর্বপাপ সমুদ্ভূতৌ নাত্র কা-ৰ্য্যা বিচারণা ৷৷ বৈশাখ সায়িনো लाकाः बीविकु रमवत्ना धमूकाः । পাপু॰ ন তেষা মতিমন্নিহ লো-কে পরত চ।। সর্বস্থদান বিধিবৎ সর্বদ। পরিশোধন । চাজায়ণঞ বিধ্বিনা রুক্ত্ চৈবাতিরুক্ত্ক ।। পুণ্যক্ষেত্ৰাভিগমন সৰ্বপাপ প্ৰ-নাশুন । দেবতাভার্চন চৈব ত-থৈবাতিথি সেবন ।। কদাপি থৈ-নাচরিত বাজানঃ কাষ কর্মভিঃ। সংপ্ৰাপ্য তে তু সৰ্বস্ক মাধ্বে নি-য়মণ নরাঃ।। মুমাচরন্তি যে মাসণ गाधर कुछ्र क्याः। नमा श्रीिछ-मना एउवा॰ बीक्रका प्रविने मू-তঃ।। যা নারী বিধবা ভূষা মাধ-বে नियम हार्ति । जलायुक मह-সুম্ব নয়তে পরমণ পদ ।। পুত্রেণা-গ্রীৰ কিং কার্য্য ফেন নাচরিত • न्शा देवनाथः भूखगठकाक ना-

न्नी बना। इदिशिक्षा ।। (स। साम्राक फिर्यकाकंन् भाविना भागत-नण्। न जगा जिला मार्था थू-क्नमा सनमा ह ॥ दिक्तमा जू स्यामा भादः अन्तः यहीक्ति। न-दिक्क माथक बाम नियद्यन य-ৰাচর ৷৷ কিং করিফাতি সাংখ্য-न ररारगन नवनायक। युक्ति वि চ্দুপ্ৰি চেডাজন্ মাধ্ৰ মাধ্বে ২-र्कस् ॥ अज्य मुख्य द्राज्य म्-প্ৰতিগ্ৰহ সম্ভৱ ৷ ছৎ গাপ স क्रम् याखि माश्द्रव निष्ट्रम क्वटच्या ब्रुट सिन दिशु एककु प्रतिक्ति महािश्वा नियद्यन छहा विद्याः श्चिष माध्य माहत ॥ यति मा-माजिक मुः भ रख मिक्नि जूशिय । जुला निषय माञ्चाद माश्रद साथ-বং বৰু ৷ রাজ্য ভোগাংশ্চ বি-भूगान् भूख विज्ञानि गण्यकः। यमिक्ति जन। विद्यवाः विषयः या-ধব শাচর॥ ত্যকু নিছনি রাজে स कम मृज्य कदानिकः। ७४० यि छन। विद्याः थियः माध्य नाहद्र॥ देव नीहिंदिक मान नाक **बः भाभ वृद्ध्यः । नत्रकात्र निब-**. र्डस्ड मकाः काशामिना स्दाः 11 न देवनाश्रमक बाह्य किलक

বেশবপ্রিয়া অত্ততেন কিপে-लाइ ७ विकामिक्यामकः॥ व-·ভিশ্চ বিধৰা তৈৰ বিশেষেণ বন্দ শ্রমী। বৈশাখে নরক ফাতি হ রুষা নিয়ম নর: II তক্ষাজাজন প্রয়ত্ত্বেন পরু দ্ব মাধ্যক্ত । যস্যাচরণ মাজেণ হরিস্তকৌ ভ বিষ্যতি ৷৷ তাবন্দার্জন্তি পুণ্যানি স্বর্গে মর্ত্যে রসাত্তনে । যাবদায়। তি রাজেন্স মাধ্বেশ মাধ্বপ্রিয়ঃ ॥ जन्माब्द्ध यथकिकित्स्याममा-তি চ মাধ্বে। কালে বা বদিবা ২কালে কোটি কোটি গুণ ভ त्व ॥ यथामशीनाः त्राज्यर्य क्ट्यां देनट्यां शशहारकः। खटेषव भाष्ट्य यानि न कव शाश शून-যোঃ । নাচারি ধর্মাচরণেন সা-ধব নারাধিতো খৈঃ পুরুষপ্র-ধানঃ। যৈ ন শ্রুতা ভূগ কথা মুরারে ভেষা বৃথা জন্ম নরাধ-মানা ।। ন পীড়য়ক্তি এহ রা-ক্ষ্যা থকা যকাঃ পিশাচোরগ ভূ-छ मानुनाः। या नायस्य गानि नद्रक्रप्तर्या अन्तः यूत्रादत व छ-याहत्रिङ्गा इंडि भारकाखत्रथ-**८७**, देवमा अस्त्राक्षाक्षरम ३५४ व्यक्तामः ॥

दिनांशी खी दिनांशानामाशूर्निया। स्था। दिनांशा ठांतकायूङा दिनांशी शूर्निया छदि ।
इंडि नक्त जावनी ।। छत उर्नन
कन्। दिनांशी यूर्णक्या ययः।
रंगीतान् वा यिन वा क्रकान् छिनान् क्लोर्डिन मन्यूठान् । श्रीस्ठा॰ धर्मातार्डिज शिजून् रमवा॰ ठर्नाया । यावड्डीवक्रछ॰ शाश॰ छ० क्रनारम्य नमा छ।
छक्तायुङ्ग छिर्छे जु सर्गलारक्
न म॰ नयः।। इंडि डिशामिडख्॰
।। क्षा । त्रङ्गपूनन्व।। ইंडि ताङ्गनिर्वन्छः।।

বৈশিকঃ পু॰ ত্রিবিধনাষকান্তগতনাষকবিশেষঃ। যথা। শৃক্লারস্য উভষ সাধ্যত্বান্নাষকোপি নিৰূপ্যতে। স চ ত্রিবিধঃ।
পতি রুপপতি বৈশিকশ্চ। বহু
বেশ্যাভোগোপরসিকো বৈশিকঃ। যথা। কাঞ্চী কল ক্রণিত
কোমল নাভিকান্তি॰ পারাবতধনি বিচিত্রিত কণ্ঠপালি॰। উভুগন্ত লোচন চকোর মনক রক্ষ
মাসাম্মহে কমপি বারবিলাসবত্যাঃ। হা বৈশিক স্তৃত্তম
মধ্যমাধ্য ভেদান্রিবিধঃ। দিখি-

তা এম প্রকোথে অপি উপটার পরায়ণঃ উত্তমঃ। स्था। हक्कुः প্রান্ত মুদীক্য পদ্মলদৃশঃ শোণা-রবিন্দশ্রিষণ নোচ্চৈ র্জন্পতি ন স্মিত বিতনুতে গৃহাতি বীটী° ন বা । তল্পোপান্ত মুপেতা কিন্ত পুলক ভ্ৰাজৎ কপোল দ্যুতিঃ কা-স্তঃকেবল মানতেন শিরসা মুক্তা मुक अम्कि ॥ 🗱 ॥ थियागाः প্রকোপে যঃ প্রকোপ মনুরাগণ বা ন প্রকট্যতি চেক্ট্যা মনো-ভাবে গৃহাতি স মধ্যমঃ ৷ যথা ৷ আস্যা॰ যদ্যপি হাস্য বর্জিত মিদ॰ লাস্যেন হীন" বচে। নেত্রে শো-ণ সরোষ কান্তি রুচিরে কাপি ক **॰ शियट । मालायाः कत्रट्याम्।** মোন কবিকারম্ভঃ স্বচাম্ভোজযো ধূপঃ সম্ভল ধোরণীযু সূতনোঃ मायख्रा मृगारा ॥ 🟶 ॥ ७य রূপা লজ্জা শূন্যঃ কামক্রীডাযা মক্ত ক্ত্যাক্ত্য বিচারো ২৭মঃ १ यथा १ जेमयं छि कृपि देनव यमा লজ্জান চকরুণান চকোপি ভীতি লেশঃ। বঙ্গল মুস্গল কোষ কৌমলা॰ মা॰ পুন রপি তস্য ক-त्त्रगं जाजरवर्थाः ।। 🟶 II गानी ठ-তুরঃ শঠ এবান্ত ভবতি। মানী

ষথা। বাহ্নাকৃত পরাষণ তব ॥ वटा वट्डाशटगर मनः व्यन्ता বাচ মিমা মপাস্য বিময় ব্যা-জাদ্বহিঃ প্ৰস্থিতে। প্ৰাত ৰ্বক্ৰ বিলোকনে পরিহাতালাপে বি-বৃত্তাননে প্রাণেশে নিয়ত প-তস্তি ক্লপণা বাসব্সবো দৃষ্টযঃ ॥ ॥। বাক্ চেফা ব্যহ্য সমাগ-ম শ্চতুরঃ। বচন ব্যঙ্গ্য সমাগ-মে। যথা। তমো জটালে হরি-দেশুরালে কালে নিশাষা স্তর নিৰ্গতাষাঃ। তটে নদীনা॰ নি-কটে বনানা॰ ঘটেত শাতোদ-রি কঃ সহাযঃ॥ #॥ চেফা ব্য-ঙ্গ্য সমাগমো যথা। কান্তে ক-নক জন্বীর় করে কমপি সর্বতি ় অগার লিখিতে ভানৌ বিন্দু भिन्मुभूशी मत्मी ॥ इंजि द्रम-मक्षत्री ॥

বৈশিষ্ট ক্লী বিশিষ্টত্বণ । ততু সম্বন্ধপদার্থঃ । বিশিষ্ট্যী নি-ষামক ইতি যাবৎ । যথা । বি-শিষ্ট বৈশিষ্টেত্যাদ্যভ্যুপগম-বাদঃ । ইতি শিরোমণিঃ ।। দণ্ড সংযোগবান্ ইতি শাব্দবোধো ন বিশিষ্ট বৈশিষ্টাবগাহী । খুলে কপোত ন্যাযেনৈব তৎ

স্বীকারাৎ। ইতি ভাবঃ। ইতি कार्गमीमी मामानामना।। दिदणियकः पू॰ क्वाम्यूनिङ्कु দর্শনশাস্ত্রবেক্তা। তৎপর্যায়ঃ। **अनुकाः २ । ইতি হেমচন্দ্রः ॥** কণাদ্যুনিক্ত দর্শনশাস্ত্রবিশে यः। म जू वित्भयशमार्थ निकश-कथन्दः। जमा मठः नायमर्गन মৈততুল্য• । অত্র জগতঃ কার্ণণ পরমাণুপর্য্যন্ত নিরূপিত ॥ ইহ খলু নিখিল প্রেক্ষাবনিদ-ৰ্গপ্ৰতিকূল বেদনীয়ত্যা নিখি-লাত্ম সংবেদন সিদ্ধণ দুঃখণ জি-হাসত স্তদ্ধানোপায়ণ জিজ্ঞা-সুঃ পরমেশ্বর সাক্ষাৎকার মুগা-य गाकलयि। यम। हर्म्यवमाक।-শং বেষ্টযন্তীহ মানবাঃ ৷ তদা **नि**व यविद्धाय मूःथम्याद्या छ-বিষ্যতীত্যাদি বচন নিচ্য প্রা-মাণ্যাৎ। পরমেশ্বরস্য সাক্ষাৎ-কারশ্চ শ্রবণ মনন ভাবনাভি र्ভावनीयः। यहारः। व्यागत्म-নানুমানেন ধ্যানাভ্যাসবলেন চ। ত্রিধা প্রকল্পযন্ প্রজ্ঞাণ ল-ভতে যোগ মুক্তম মিতি ৷ তত্ৰ यनन यनुगानाधीनः। अनुगान-क वाशिकानाधीन । वाशि- ·জ্ঞানঞ্চ পদার্থ বিবেক সাপেক্ষ° । অতঃ পদার্থ ষট্ক ।। অথাতো ধর্মণ ব্যাখ্যাস্যামঃ। ইত্যাদি-কাষা॰ দশলক্ষণ্যা॰ কণভক্ষেণ ভগবতা ব্যবস্থাপি। তত্রাহ্লিক चराञ्चादक अथरम २४ग्रां मम-বেতাশেষ পদার্থ কথন মকারি । তত্রাপি প্রথমাহ্লিকে জাতি-মন্নিৰূপণ । দ্বিতীয়াহ্লিকে জা-তি বিশেষষো নিৰূপণ ৷ আ-ক্লিক দ্বধান্মকে দ্বিতীয়ে ভূত দিক্কাল লক্ষণ । তত্রাপি প্র-থমাক্লিকে ভূতবিশেষ লক্ষণ । षिञीय मिक्कान প্রতিপাদন । আহ্নিক দ্বাত্মকে তৃতীযে আ-ত্মান্তঃকরণ লক্ষণ । তত্রাপ্যা-ত্মলক্ষণ প্রথমে। দ্বিতীযে অ-স্তঃকরণ লক্ষণ । আহ্লিক দ্বয যুক্তে চতুর্থে শরীর তদুপযো-গি বিবেচন । তত্রাপি প্রথমে তদুপযোগি বিবেচন । দ্বিতী-ষে শরীর বিবেচন । আহ্নিক-দ্ববৃতি পঞ্চমে কর্ম্মপ্রতিপা-দন ৷ তত্রাপি প্রথমে শ্রীর সম্বন্ধি কর্ম চিন্তন । আহিক-चय मानिनि यर्ष (धोठ धर्मा নিৰূপণ ৷ তত্ৰাপি প্ৰথমে দান

প্রতিগ্রহ ধর্ম বিবেকঃ। দ্বিতীয়ে,
চাতুরাশ্রম্যেচিত ধর্ম নিরূপণ ৷ তথাবিধে সপ্তমে গুণ সমবাষ প্রতিপাদন ৷ তত্রাপি প্রথমে বুদ্ধি নিরপেক্ষ গুণপ্রতিপাদন ৷ দ্বিতীষে তৎসাপেক্ষ
গুণ প্রতিপাদন সমবাষ প্রতিপাদনক্ষ ৷ অফ্টমে নির্বিকল্পক
সবিকল্পক প্রত্যক্ষ প্রমাণ চিন্তন ৷ নবমে বুদ্ধি বিশেষ প্রতিপাদন ৷ দশমে অনুমান প্রতিপাদন ৷ তত্র উদ্দেশো লক্ষণ পরীক্ষা চেতি ত্রিবিধাস্য
শাস্ত্রস্য প্রবৃত্তিঃ ৷ ইতি বৈশে
যিকগ্রন্থবিবরণ ৷৷

বৈশ্যঃ পু॰ বন্ধজিরদেশজাত
তৃতীয়বর্ণঃ ৷ তৎপর্য্যায়ঃ ৷ উরব্যঃ ২ উরুজঃ ৩ অর্য্যঃ ৪ ভূমিস্পৃক্ ৫ বিট্ ৬ ৷ ইত্যমরঃ ৷৷
দ্বিজঃ ৭ ৷ ইতি জটাধরঃ ৷৷ ভূমিজীবী ৮ ৷ ইতি শব্দরত্বাবলী
৷৷ ব্যরহর্তা ৯ বার্ত্তিকঃ ১০ বণিকঃ ১১ পণিকঃ ১২ ৷ ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ৷৷ প্লক্ষদীপে অস্য সণভ্রু। উর্ব্বায়নঃ ৷ শাল্মলদীপে
বসুন্ধরঃ ৷ স্পদ্বীপে অভিযুক্তঃ
৷ ক্রৌঞ্জীপে জবিণঃ ৷ শাক্-

ছীপে দানবক্তঃ। পুক্তরদ্বীপে। সর্বে একবর্ণাঃ। ইতি ভাগবত-মত ।। অস্য শাস্ত্র নিক্পিত श्रम्। ख्रयः। ज्रश्रयन > यक्रन॰ ২ দান ৩। চতত্ত্রো জীবিকাঃ। ক্ষৰিঃ গোরকণ ২ ৰাণিজ্য ৩ क्षीर 81 ज्या अभा अवः । ज-ন্ধচর্ষ্য• ১ গার্হস্য• ২ বানপ্রস্থ্য• ७ ॥ ७मा लक्ष्मभि र्यश । वि-শত্যাশু গশুভাশ্চ ক্ষাদানক-চিঃ শুচিঃ। বেদাধ্যয়ন সম্পন্নঃ স বৈশ্য ইতি স•জ্ঞিতঃ॥ বৈশ্য-স্য চ প্রবক্ষ্যামি ষো ধর্ম্মো বে-দ সম্মতঃ। দান মধ্যয়ন° শৌ-D° यख्ड कि शन मक्षयः ॥ शोल-ক্ষেচ পশূন্ ৰৈশ্যঃ পিতৃবন্ধ-र्यः मर्क्कयन् । विकर्य एखदम-नार कर्म रूप म मम्हारत्य ॥ ্রক্ষা স হি তেষাণ বৈ মহৎসুথ মবাপুষাৎ। প্রজাপতি হি বৈ-भाग मृष्ट्री शतिमत्म अकाः ॥ ব্রাক্সণেভ্যাপ্ট রাজ্যে চ সর্বাঃ প-রিদদে প্রজাঃ। তস্য বৃত্তি॰ প্রব-क्तांनि यक ज्याशिकी दनः॥ यक्षा ज्वका शिर्तिकानुः गणाक সিপ্ন তবেছা লক্ষাস্থান **ভাগ॰ ভথা শৃद्धिकवमूद्धाः**।।

भगानाः गृर्वतीकानि ध्या मायद्भाती ज्ञिः। न ए देनगुमा
कामः माम त्राक्ष्यः शभूनिनि॥
देदल्ग त्रक्षि नाद्मान त्रक्षिकवाः कथकन। ইकि शाषा वर्शथए वर्शविजागः २७ ज्यशायः
॥ क्षः ॥ जनाकः। मान मध्यमः
यए वर्शविजागः २७ ज्यशायः
॥ क्षः ॥ जनाकः। मान मध्यमः
यए वर्शविजागः कृषि देवंगाः
मध्य ख्या किवियमा कृषि देवंगाः
मध्य ख्या किवयमा कृषि देवंगाः
मध्य ख्या किवियमा कृषि देवंगाः
। देवगानाः माक्रकः ज्ञानः वर्षः
क्षं मनुवर्वकाः॥ ইकि शाक्रएः
४० ज्यशायः॥

বৈশ্যা স্ত্রী বৈশ্যজাতিস্ত্রী।তৎ-পর্যায়ঃ। অর্য্যাণী ২ অর্ধ্যা ৩। ইতি জটাধরঃ।।

বৈপ্রবণঃ পু॰ ঙ্গবেরঃ। ইত্য-সরঃ।।

दिखेवनानमः भू॰ वर्षकृषः।
हेलि रूमहलः॥ क्टवतभूती ह।
देव खेवनानामः भू॰ वर्षकृषः।
हेलि क्रिंगधतः॥ क्टवतभृश्कः।
देव खेवटनाममः भू॰ बर्षकृषः।
हेलि त्रप्रमाना।।

 বৈশ্বদেব প্রবক্ষ্যামি হোম লক্ষণ मूखमः। পर्याकन मिशः পर्याका। क्रवाम मिश श्रीहरणामि मृतः य-মরাজ্যে গচ্ছতু রিপ্রবাহঃ। ইছৈ-বায মিতরো জাতবেদা দেবে-ভ্যো হন্ত বহতু প্রজানন্। ও পাবক বৈশ্বানর ইদ শাসন । অবনীগৰ্ভ সংস্কৃতঃ তেজোৰা-পো মহাত্রক্ষমুহূর্তা স্তিষু বৈ-শ্বানর প্রতিবোধ্যামি । বৈশ্বা-নরোত্র উভয় প্রাযাতু পরাব-তঃ। অগিঃ র্মঃ মুক্ষতী রুপ:পৃৃষ্ট मिवि शृरकोशि शृथिवगा॰ शृरकी বিশ্বা ওষধী রাবিবেশ ৷ বৈশ্বা-নরঃ সহসা পৃষ্টোগ্নিঃ স বোগ্নিঃ খ দিবা সৰ্বস্মাত্ত্ব নক্ত ওঁ প্ৰ-জাপত্তে স্বাহা। সোমায স্বাহা । বৃহস্পতযে স্বাহা। এগী সো-মাভ্যা॰ স্বাহা। ইন্দ্রাগ্নীভ্যা॰ স্বা-হ। দ্যাবা পৃথিবীভ্যা॰ স্বাহা। ধন্বস্তরুষে স্বাহা। ইন্দ্রায় স্বাহা। বিশ্বেভ্যো দেবেভ্যঃ স্বাহা। ভূঃ স্বাহা ভূবঃ স্বাহা স্বঃ স্বহা ভূ ভূ-বঃ স্বঃ স্বাহা। দেব ক্বতস্যৈনসো **ংব**যজনমসি স্বাহা। মনুষ্যক্কত-গ্যৈনসো হ্বযজনমসি স্বাহা । পিভৃক্তেস্যৈনসে৷ ২ব্যজন্মসি 🎚

স্বাহা আত্মকতল্যৈনসো ২বৰ-জনমসি স্বাহা। এনসঃ এনসো ২বৰজনমনি স্বাহা। ৰচ্চাহ মে-বিদ্বাণ শ্চকার যচ্চাবিদ্বাণ স্তুস্য সৰ্বস্যৈনসো হ্বযজনমসি স্থা-হ।। অগ্নযে স্বিফিক্তে স্বাহা। সূৰ্য্যায় স্বাহা। প্ৰজাগতয়ে স্বাহা । বনম্পতথৈ স্বাহা। অদ্ভাঃ স্বাহা । ওষধি বনষ্পতিভাঃ স্বাহ। । গৃ-হাষ স্বাহা। দেহ দেবতাভাঃ স্বাহা। বাস্তু দেবতাভ্যঃ স্বাহা। ইন্দ্রায় স্বাহা। ইন্দ্রপুরুষেভ্যঃ वारा । यमाय वारा। यमपूक-विखाः वारा। वक्तनाय वारा। বরুণপুরুষেভ্যঃ স্বাহা। সোমায স্বাহা। সোমপুরবেভ্যঃ স্বাহা। বন্ধণে স্বাহা। বন্ধপুরুষেভ্যঃ স্বাহা। বিশ্বেভ্যো দেবেভ্যঃ স্বা-হা। সর্বেভ্যো ভূতেভ্যঃ স্বাহা। দিবারাত্রিভ্যঃ স্বাহা। রক্ষোভ্যঃ স্বাহা। স্বধা পিতৃভ্যঃ স্বাহা। যে ভূতাঃ প্রচরম্ভি দিবা চরম্ভি দি-বাচরমিচ্ছন্তো ভুবনস্য মধ্যে তেভ্যো বলি॰ পুর্ক্তিকামো দদা-মি। ময়ি পুষ্টি পুষ্টিপতি দদা-তু। শ্ব চাণ্ডাল পতিত বাযসেভ্যঃ া ইতি গায়নতে বৈশ্বদেব বিধিঃ

२३२ ज्यायिशा का जग थे-रयादगा यथा श्रिश्वाजिम्थः एहि क्रभवीणी क्रमहरूः क्रमामत्ना-পবিষ্টঃ কর্ত্তা মৃতাক্তণ দুগাক্তণ তৈলাক্ত॰ জনাক্ত॰ অন্ন॰ আ-মান° বা কলা জল বা জুহ্যাৎ १ यथा करन ७ जूः यशा ७ जुदः बाहा । ७ वः बाहा । ७ खृ जूदः यः यार।। ७ तमवहरु रेगानत्मा श्वयजनमि श्वारा । ওঁ পিতৃকতস্যৈনসো ২বষজন-यित कारा। ওঁ মনুষ্যক্তন্যো-মসো খবৰজনমসি স্বাহা। ওঁ অক্সান্ত স্থৈতিয়ানসে হ্বযজনমসি স্বাহা। ওঁ যদিবা চ নক্তঞ্চৈন শ্চক্রম প্রস্যাব্যজনমসি স্বাহা। ওঁ ষৎ স্বপস্তন্দ জাগ্ৰত নৈদন শ্চক্তম তস্যাব্যজনমসি স্বাহা। ७ यदिद्या॰म महाविद्या॰म टेम्हन শ্চক্তৰ তদ্যাব্যজনমসি স্বাহা। ওঁ এনসং এনসে । ২ব্যজনমিস স্বাহা। ওঁ অগ্নযে বিধীকতে স্বাহা। ইত্যনেন জুহুষাৎ। ইতি বৈশ্বদেকর্ম। ইত্যাক্লিকপ্রযোগ-.তকু•াা

বৈশানরঃ পু । । চিত্রক-व्का ३ छा भद्रशा छमा भका द्राग टेवक् छ॰ सी देश मखना। ইতি

বথা। তৃথাপি দুমি বো ৰূপে ৰে ৰে প্ৰত্যেকশো ধুন। ভূত-কাৰ্য্যেষভূতেন দেবলোকে ভূ সূর্ত্তিনা।। তিষ্ঠধ্ব মপি কালান্তে লস্ব দ্বাবিশতু দ্রুত । শরীরাণি পুন মৈৰ্ব কৰ্তব্যোহ মিতি ক চিৎ ক দূৰ্ত্তানাঞ্চ তথা তুভা प्रिमा नामानि ता श्रुना। अप्रि বৈশ্বানরো নাম প্রাণাপানৌ তথাশ্বিনো ॥ ভবিষ্যতি তথা গৌরী হিমশৈলসূতা তথা।পৃ-থিব্যাধিগশস্তেষ গজবজ্জে৷ ভ বিষ্যতি॥ শরীর ধাত্তব স্ত্রেতে নানা ভূতানি এব তু। অহক।র স্তথা স্কন্দঃ কার্ত্তিকেয়ো ভবি-ব্যতি ।। ইতি বারাহে আদিত্রে-তাযা॰ মহাতপোপাখ্যান না-याशायः॥

বৈশ্বী স্ত্রী উত্তরাষাঢানক্ষত্র°1 ইতি হেমচন্দ্রঃ ।।

देवसगु॰ क्ली विसमद्य विसम-শকাৎ ভাবে ক্য প্রত্যযেন নিষ্পান্ত 11

देवर्याकः जि वियममसी। বিষয় শকাৎ ফিক প্রত্যবেন নিস্পন্নঃ 11

ट्यह्यः ॥

নৈষ্ট্ৰণ ক্লী পিষ্ঠপণ। ইত্যুণা-দিকোষঃ ॥ দোটা ॥ বাষুঃ ॥ বিষ্ণুঃ। ইতি সংক্ষিপ্তসারোণা-দিব্তিঃ॥

বৈষ্ণব॰ ক্লী হোমভন্ম।ইতিশব্দ-त्रज्ञावंनी ॥ विक्माक्तिनि जि ॥ दिवक्षवः शू॰ विकृशामकः। विकृ-ভক্তঃ। তৎপর্যায়ঃ। কার্ষ্ণঃ ২ হারঃ ৩। তস্য লক্ষণ মাহাত্ম্যা-দি যথা। ফল সন্ধান রহিতা বিষ্ণু ভক্তাশ্চ বৈক্ষবাঃ। মৎ প্রীতি ভক্তি কামা স্তে সৰ্বদা সৰ্বকৰ্ম-म् ॥ श्वक्रवञ्जाविक्ष्यत्वां चमा কর্ণে প্রবিশ্যতি । জীবমুক্তণ देवकवर्रः विमाः गर्स वमस्रि চ ॥ পুরুষাণা শত পূর্ব গৈতৃ-কঞ্চ শত॰ পর॰। মাতামহস্য চ শত॰ মাতর॰ মাতৃমাতর॰॥ ভ-গিনী॰ ভ্ৰাতরক্ষৈব ভাগিনেযঞ্চ মাতৃল । শ্বশ্রু শ্বশুরবৈশ্ব গুরু পদ্মীং শুরোঃ সুতং ॥ শুরুঞ্ জ্ঞা-ন দাতার° মিত্রঞ্চ সহচারিণ°। ভূত্যণ শিষ্যণ তথা চেটীণ প্রজাঃ কাশ্রম সন্মিধী।। উদ্ধরেদাত্মনা সাদ্ধি মন্ত্ৰগ্ৰহণ মাত্ৰতঃ। মন্ত্ৰগ্ৰ-হণ মাজেণ জীবন্মুক্তো ভবেমরঃ ৷৷ তস্য সম্পর্ণ নাত্রেণপূত তী-র্থঞ্চ ভারত । তল্মেব পাদরজ-সা সদ্যঃ পূতা বসুন্ধরা ৷৷ পাদো-দক প্লুত স্থান তীর্থ মেক ভবে-দ্ধুব॰। ইভি ত্রদাবৈবর্ত্তে প্রাকৃতি-থণ্ডে ৮ অধ্যাবঃ।। 🛊 ॥ অপিচ। শ্ৰীশিৰ উবাচ। শিবমস্ত চ সাধূ-না॰ বৈক্ষবানা সতা মিহ। অ-বৈষ্ণবানা মসতা সশিবঞ্চ পদে পদে ৷৷ দদাতি বৈষ্ণবেভ্যশ্চ বো मृः थ **मृ**ष्ट्रिं जनः। शक्रिकमा ह मञ्चल विष खमा भटम भटम ॥ **ज**रिक्काना॰ शनय॰ न हि **खक्क** সদ। यल । श्रीकृषः यञ्ज प्यत्र १ यत्न। देनर्यमा कार्रान ।। जिमास्ज श्रमय असि निष्मारङ गर्व मण्म-याः । विकृषद्वाशामनया कीव-তে কৰ্ম বৈ নৃণা ।। বে ত্ৰান্ধণা বৈক্ষবাশ্চ স্বতন্ত্রাঃ পরমণ পদং । याखात्नाभामका भगत्नाः मा-र्फक्ष श्रक्त वंति ॥ वर्गनाः बा-क्षनाः (अर्छाः माथरवा देवस्व यि । विकृषञ्च विशेत्ना वि-জেভ্যঃ শ্বপচো বরং ।। পরিপঞ্চা শ্চাবিপক্বা বৈক্ষবাঃ সাধবশ্চ তে । সম্ভভ• পাতিতা॰ শৈচৰ বিষ্ণু-ठळा जूमर्भमा ।। यथा वरहो छ-

্ৰুত্ণ ভন্মীভূত ভবিষ্তি। তথা পাপ - বৈশ্বেষু তেজস্বিষু হতাশনাৎ ॥ শুরুবজ্ঞাদিফুম-ছো যদ্য কর্নে প্রবিশ্যতি। ত॰ বৈক্ষব মহাপুত প্রবদন্তি মনী-ষিণঃ।। প্রশ-সিত- পিতৃণাঞ্চ শ-ত॰ মাতামহস্য চ। স্ব সোদরা•-**भ्य जननी मूक्ततास्त्राव देवस्थवाः** য়া গ্রাষাণ পিওদানেন পিওদাঃ পিওভোজিন । সমুদ্ধরম্ভি পুণ-সাঞ্চ বৈক্ষক্তি শতং শতং ॥ মন্ত্ৰ এহণ নাত্তেণ জীবন্মকো ভবে-প্ররঃ। যম স্তন্মান্মহাভীতো বৈন-তেষাদ্বপোরগঃ।। निन्शूनरस्त्राव তীর্থানি গঙ্গাদীনি চ ভারতে। ক্ল ক্ষমজ্বোপাসকাল্চ স্পৰ্শ মাত্ৰে-ণ বাক্পতে।। পাগানি পাগিনা॰ ভীর্থে যাবন্তি প্রভবন্তি চ। ন-শ্যন্তি তানি সৰ্বাণি বৈষ্ণব স্পৰ্শ মাত্রতঃ ॥ ক্লফ্মস্ত্রোপাসকানা॰ ज्ञक्त्रा शामश्राद्याः। जत्मा मु-ক্তা পাতকেভ্যো হৃষ্টা পূতা বসু-ऋता ॥ वायुक्त वक्ररण वक्रिः भृ-ৰ্য়ঃ সৰ্ব॰ পুনাতি চ। এতে পূতা देवस्वानाः न्यानीमार्वा नीनया ।। जरु उका ह त्यरह जाकी ধৰ্মণত কৰ্মণা । এতে স্কৌশ্চ 🏻

বাঞ্জি বৈশ্বানা সমাগম ।। ফল॰ কৰ্মানুসারেণ সর্বেষা॰ ভা-त्राक ভবেৎ। न ভবেত্তবৈক্ষবে **চ मिक्कशात्मा यथाकूतः ॥ इ**खि তেষা• কৰ্ম পূৰ্ব• ভক্তানা • ভক্ত-বৎসলঃ। ক্লপষা স্বপদ তেভ্যো ममाराज्य क्षुशानिधिः ॥ **ই**তি क ন্ধবৈবৰ্জ্বে প্ৰক্ষতিখণ্ডে ৫৭ অধ্যা-यः ॥ 🛊 ॥ অন্যচ্চ । 🕮 ভগবানু-বাচ ৷ অহ• প্রাণা বৈক্ষবানা• মম প্রাণাশ্চ বৈক্ষবাঃ ৷৷ তানেব ছেন্টি যো মূঢো মমাসুনা স-হি॰সকঃ। পুত্রান পৌত্রান্ কল-ত্রা॰শ্চ রাজলম্বীণ বিধাষ চ। ধ্যাষন্তে সম্ভত যে মাণ কো মে তেভ্যঃ পরঃ প্রিয়ঃ ৷৷ পরা ভক্তা नू (य প্রাণা ন চ लची न भइतः । ন ভারতী ন চ বকা ন দুর্গা ন গণেশ্বরঃ।। ন জাব্দণা ন বেদাশ্চ न द्राप्यननी मूद्राः। न गानी ন চ গোপালা ন রাধা প্রাণতঃ প্ৰিষা ॥ ইত্যেব॰ কথিত॰ সৰ্ব॰ সত্যং সার্ঞ বাস্তবং। ন প্রশং-সা পর॰ তেষা॰ তে চ প্রাণাধি-কাঃ প্ৰিয়াঃ ॥ মা॰ দ্বিস্তি চ যে মূঢা জ্ঞানহীনাশ্চ বঞ্জাঃ ৷ স্বান্ধানকানন্তি তে যান্তি

নিরষ চির ।৷ যে দিয়স্তি চ মন্ত-জান্ প্রাণানা মধিক প্রিয়ান। তেষাণ শাস্তাহণ তূর্ণঞ্চ পরত্র নি-त्रय° চির°॥ প্রভবোহক সর্বেষ। মীশ্বরঃ পরিপালকঃ ৷ তথাপি ন স্বতম্রোহ• ভক্তাধীনো 'দিবানি-শ॰।। रगारलारक वाथ देवऋरछे बि-ভুজঞ্চতুভুজ । ৰূপমাত্ৰ মিদ॰ সর্ব প্রাণা মে ভক্তসমিধো ॥ यख्क छक्र त्व १ जक्र नीय १ ठ-শ্বম। অভক্যু॰ দ্রব্য মন্যেন দত্ত-ঞ্চেদস্তোপমণ ৷৷ ইতি ত্রহ্মবৈব-হৈৰ্ভ শ্ৰীক্লকজন্মখণ্ডে ২৫ অধ্যায়ঃ 11 #11 ज्यिति । मर्वान् कामान् পরিত্যজ্য ইফভক্তিঞ্চ সাধ্যেৎ া স এব বৈক্ষবাচারঃ কাম সক্ষ-সবজ্জিতঃ ।। ইত্যাচারভেদতন্ত্রণ ॥ ॥ ज्यात्रकः। त्रज्यनायाः मः-ভোগে কর্মকেত্রে চ ভারতে। স্ব-যোক্তঞ্চ ভবেৎ পাপণ নাত্ৰ স্বৰ্গো চ সুন্দরি॥ কর্মক্ষেত্রে চ তৎ কর্ম ষদ্বেদোক্ত• শুভাশুভ॰। ন ভবে-দ্বৈষ্ণবানাঞ্জলতা জনতেজসা ।। यथा अमीलवद्शो ह खकानि ह তৃণানি চ। ভবস্তি ভঙ্গীভূতানি তথা পাপানি বৈক্ষবে ॥ वङ्कि **मूर्या बाक्त (अजीयान् देव-**

कवेः मना ॥ त्रिक्टिंश विक्षृत्रहर्ज-, ণ স্বতন্ত্রে। মন্ত্রসঞ্জরঃ । ন বিচা রো ন ভোগশ্চ বৈষ্ণবানা স্ব কৰ্মণা ।। লিখিত সামি কৌথু-ন্যা পদ্ধ প্রশ্ন বৃহক্ষতি । অ-স্মাঞ্চ সৰ্বে জানস্তি চক্ৰবংশ্যাণ क देवख्वान ॥ एतव मनाः न সেবস্তে চন্দ্রবংশ্যা হরিং বিনা ৷ ইতি ত্রন্ধবৈবর্তে শ্রীফ্রফজন্মখণ্ডে ৬ অধ্যাব: ॥ 🛊 ॥ অপিচ। সূত উবাচ। অথ বেণ ইয়াজাথ সো ংশ্বনেধেন ভূপতিঃ ॥ ব্রাহ্মণে-एका मरमी माने नानाक्षण मरन-কধা। জগাম বৈক্ষব লোক স-কাষো জগতীপতিঃ।। বিষ্ণুনা সহ ধর্মাত্মা নিত্য মেব প্রবর্ত্ততে ৷ এতত্তে সৰ্ব মাখ্যাত চরিত ত-मा जुनराज्य ।। यरहरना देवस्व एवरी नर्वधर्म विष्कृष्टः। शृथून। পুত্রতীর্থেন পবিত্রো ২গাৎ পর• পদ ৷৷ সৎপুত্রণ পর্মণ তীর্থণ প্ৰাপ্য মুচ্যম্ভি পূৰ্বজাঃ। ণিতাপি ঋণ মুক্তঃ স্যাৎ জাতে পুত্রে মহা-श्रामि ॥ देवकरका यमि भूगः मा। স তারৰতি পূৰ্বজান্। পিতৃনবস্ত-मा य॰ ना खात्रयखा जिलावनीः ।। इंडि भारम जूनियर ५२० जशा-

यः ॥ 🗱 ॥ अथं दिवस्ववर्धम् ७९०। কৰ্ত্তৰ্য পঞ্চবিধপূজে । যথা । প্ৰীপাৰ্বত্যুবাচ। বৈক্ষবানাঞ্চ य-ন্ধৰ্মণ কৰ্মাপি তস্য তদ্বদ । যৎ ফ্রন্থা মানবাঃ সর্বে ভবাত্তোধৌ তরন্তি বৈ ॥ ঈশ্বর উবাচ। অথ ৰাদশ শুদ্ধিঞ্চ বৈক্ষবানা মিছো-চ্যতে। গৃহোপসর্পণঞ্চৈব তথা-নুগমন হরেঃ।। ভক্ত্যা প্রদক্ষিণ-বৈশ্ব পাদযোঃ শোধন পুনঃ ১। ২।পূজার্থণ পত্র পুষ্পাণাণ ভক্তৈ্য-বোত্তোলন হরেঃ। করযোঃ সর্ব শ্ভদ্ধীনা মিষণ শুদ্ধি বিলিখ্যতে ৩। ৪॥ তন্ধাম কীৰ্ত্তন ধ্ৰুব গু-থানা কৈব কীর্ত্তন । ভক্ত্যা এ ক্লফদেবস্য বচসঃ শুদ্ধি রিষ্যতে ৫ ৷৷ তৎ কথা শ্রবণ ক্ষৈব ত-স্যোৎসব নিরীক্ষণণ ৷ শ্রোত্তযো নেত্রযো শৈচব শুদ্ধি সম্যাগিছো-ठाटा ७११। ४। २॥ भारतात्रक নিশ্মাল্য মালান। মপি ধারণ । উচ্যতে শিরসঃ শুদ্ধিঃ প্রণতস্য र्दाः भूनः ३०॥ व्याघान गन्न পুষ্পাদে নির্মাল্যস্য তপোধনে। বিশুদ্ধিঃ স্যাদনস্তস্য ব্রাণস্যাপি বিধীয়তে ১১। ১২।। তত্র পুষ্পা-দিক যচ্চ ক্লক্ষপাদ যুগাপিত ।

তদের পাবন লোকে তদ্ধি সর্বণ वित्नाधरय ।। 🗱 ।। भूजा ह १११-ধা প্রোক্তা তাসাণ ভেদান্ শৃণুদ্ব মে। অভিগমন মুপাদান যোগঃ স্বাধ্যায় এব চ 🛭 ইফাঃ পঞ্চ প্র-কারাচ্চাঃ ক্রমেণ কথযামি তে। তত্রাভিগমন নাম দেবতা স্থান भार्जन ॥ উপলেপন निर्माना দুরীকরণ মেব চ ১ ৷ উপাদান नाम गन्न भूल्यानि हयन॰ यथा २ ॥ ইফা নাম হি চেক্টাদেঃ পূজন ঞ্চ যথার্থতঃ ৩। স্বাধ্যাযো মন্ত্র-রাজস্য অর্থ সন্ধানতো জপঃ॥ সূক্ত স্তোত্রাদি পাঠশ্চ হরেঃ ন^ কীৰ্ত্তন তথা। তন্ধান শাস্ত্ৰাভ্যা-সশ্চ স্বাধ্যায়ঃ পরিকীর্ত্তিতঃ ৪ ॥ যোগো নাম সুদেবস্য চাত্মনে বৈব ভাবনা ৫। ইতি পঞ্জ কারাচ্চাঃ কথিতা স্তব সুব্রতে ॥ ইতি গাম্মে পাতালখণ্ডে ১০ অ-शायः ॥ 🛊 ॥ अथ देवस्वानाः খাদ্যাথাদ্য । সায প্রাত র্দ্বি-জাতীনা প্রুত্তুক্ত মশন ত থা। বিকুভক্তাবশিষ্টেন দিন পাপাৎ প্রমূচ্যতে ৷৷ অন্ন॰ বন্ধা त्रा विकुः शान्यकाम काकतन् । এবং জ্ঞাত্বা তু যো ভুঙ্কে সৌ

१मारिय र्न निशारक ॥ ज्ञान्य | বর্তুলাকার মসূরঞ্ব সবন্ধল। ্তাল শুক্লান্ত বাৰ্ত্তাক্ষণ ন খাদে-হৈ কবে। জনঃ।। বটাশ্বখার্ক প-ত্রেষু সম্ভী তিন্দুক পত্রযোঃ। কোবিদার কদমে চ न খাদেছৈ-স্ণবো নরঃ ।। প্রাবণে বর্জযেচ্ছ-कु॰ मिथ जांजभाम ठाराज । मु-গ্ধন্ত আশ্বিনে মাসি কার্ত্তিকে চা-নিষণ ত্যক্তেৎ।। দূগ্ধ মন্নঞ্চ জন্বী-র॰ যদিকে। রনিবেদিত । বীজ-পূরঞ্চ শাকঞ্চ প্রত্যক্ষলবণ স্তথা য়া যদি দৈবাক্ত ভুজান্তে তদা ত-মামক॰ স্মরেৎ। কলায॰ কঙ্গ ধা-ন্যানি শাক্ঞ হিলমোচিকা ।। ষষ্টিকা কালশাকঞ্চ মুস্তক জ্ৰ-মুক তথা। লবণে সৈদ্ধব প্রো-। ক্ত॰ বচাচ দধি সগিষী।। পযো-২নুজৃতসারঞ্চ পনসামু হরীতকী । शिक्षनी। जीतकरेक्षत नागतकक **তিন্তিডी ।। कमनी नवनी था**बी कलानाश्चष रमक्षवः। অতৈল-পৰু ভুঞ্জীত হবিষ্যেষ্ প্ৰচক্ষতে া৷ ইতি পাদ্মে পাতালখণ্ডে ১১ विशासा । अथ देवस्वन-্ ক্ষণবিশেষাদিঃ। মাহাত্ম্য মথ ভ-জোনা যথ কাৰ্য্য যচ্চ লক্ষণ

। क्रतीय॰ रुद्धः विश्व मावधान-, মনাঃ শৃণুঃ ৷৷ ছব্লি ব্লেব সদা সে-ব্যো নান্যো ষদ্য মহাত্মনঃ । লোকস্য জগদারাধ্যো হরিভক্তঃ ষ উচ্যতে।। অনন্য নির্মাল্য ভূ-জো ভক্তা ত্তে খনন্য মানসাঃ। গোবিন্দোপাসকা যে তু নিত্য দেবান্তর বিনা।। অনন্য ধিষণো **২নন্যস্থদখো ২নন্যসেবকঃ।** কে-বল হরিসেব্যঙ্গ স ভক্তঃ পরি-কীৰ্ত্তিতঃ ।। সত্ত্বু সত্ত্বাঞ্ডয়ণ সত্ত্বু-গুণ সেবেত কেশব । যো ২নন্য-বেন মনসা সাত্ত্তঃ সমুদাহতঃ ।। সৰ্দেবান্ পরিত্যজ্ঞা নিত্য• ভগবদাশ্রয়ঃ। রত স্তদীয় সেবা-ষা॰ স ভাগবত উচ্যতে ॥ বিহাম কাম্য কর্মাদীন্ ভজেদেকাকি-ন॰ হরি॰। সত্য॰ সত্ত্বগুণোপেতো ভক্ত্যা ত• সাত্ত্বত• বিদুঃ ৷৷ মুঙ্গন্দ-পাদ সেবাযা॰ তন্মাম শ্রবণেপি চ । কীর্ত্তনে চ রতো ভক্তো নায়ঃ স্যাৎ স্মরণে হরেঃ ৷৷ বন্দনার্চন-যো ভক্তি রনিশ দাস্য সখ্যযোঃ । রতি রাত্মার্পণে যস্য দূঢানন্তস্য সাতৃতঃ ॥ স্মর্তব্যঃ কীর্ত্তনীয়শ্চ শ্রোতব্যঃ পূজ্য এব চ। যস্যৈকে। विक् तातात्था देवक्वः ममूमासः

, छः ॥ यथानद्वाणि मञ्जूषः मग-। চিত্রে জিতেক্সিয়ঃ। হরিপাদা-শ্রেষো লোকে বিপ্রাঃ সাধু রনি-ऋकः ॥ बिटेर्वद्रः मण्यः भारसा मखारकात विकंजः। नित्रशिका মুনি বী তরাগঃ সাধু রিহোচ্যতে ।। লোভ মোহ মদ ক্রোধ কামা-দি রহিতঃ সুখী। কৃষণাজ্রি শরণঃ माधुः महिकुः मयतर्भनः॥ यद्वि-ষ্ণুপাসনা নিত্য বিষ্ণু: র্যস্যেশ্ব-(त। पूत्न। शृंद्का। यटेगाक विक्ः मापित्छ। त्वादक म देव करः ॥ হুরেঃ সর্বাবতারাণা মৎস্যাদীনা ৰুপাসকাঃ । তন্মদ্ৰেক্টা অনন্যা-শ্চেবৈক্ষবা স্তে ন সম্পন্ধঃ ৷৷ মু-**पिटको द्रघूनाथञ्च नृति॰एश वाय-त्ना इतिः । এতন্মন্তো বরাহা**দি वीमूरमवः म देवस्थवः ॥ विरस्थ द्र-গাসকো দাস তথ্যন্ত্ৰেষ্ট ত্তদাশ-ৰঃ ৷ ত্ৰমাহু বৈঞ্চব লোকে বিষ্ণু-সেবাগরায়ণ ৷৷ সাধী যথা পতি নারী নান্য জানাতি ত বিনা। कगनीमः ज्यानःना यनि विकृ न देवकदः ॥ नगिरख। मूनिः श्र-তো গোবিন্দ চরণাশ্রয়ঃ ৷ সর্ব-**ज्**ठमयः कारका वित्वकी माधु-রুত্তমঃ ৷৷ ফুকার্শিত প্রাণ শরীর

বুদ্ধিঃ শান্তেন্দ্রিব ক্রী সুত সম্প मानिः। वामक्ठितः व्यवनामि ভক্তিমন্যেহ সাধুঃ সতত হয়ে र्यः ॥ क्रकाञ्चरः क्रक्रक्षानुत-ক্তঃ ক্লফেন্টমন্ত্ৰ স্মৃতি পূজনীয়া क्रकानिन शान यना खुनत्ना रा दि न नाधू मू निवर्ण कार्यः ৷৷ যস্যেষ্ট শ্ৰীভাগবত শাস্ত্ৰ শ্ৰী ভগবান্ হরিঃ। ভগবত্যা সম লক্ষ্যা ভক্তা ভাগবতক সং॥ যে ক্লফ প্রবণাদ্যহা যে তদুচ্ছিই-ভোজিনঃ ৷ যে ক্লেখাপাসকা লোকা দাসা স্তেপরিকীর্দ্তিতাঃ।। ইতি পাম্মে উত্তরখণ্ডে ১১ অধ্যা-য়ঃ ॥ 🐞 ॥ অপিচ। ব্ৰহ্মোবাচ। অহে।ধ্যানৈরপিধ্যাতু দেবৈ স্তু न हि भकारछ। म इ॰ देवरूव पि হেষু তিপ্তসীত্যজুত মহৎ।। কণ মাত্ৰ মপি স্থামি স্তুক্টে ছবি ন কি ভবেৎ। সত্ত্ব 'বৈক্ষব সঙ্গেন ভূম সীত্যন্তুত মহৎ ॥ কে বৈশ্ব কৈটভারে কিং বা তেবাঞ্চ লক্ষ-**৭°। কথ° ভ্ৰেয়া**ন্চ তে সৰ্বে তগে কথষ কেশব।। ভগবানুবাচ। বৈ-কবানা লক্ষণানি কর্মকোটি শ তৈ রপি।। সমাধ্জু॰ ন শক্ষোমি मण्डला मृन् मख्य। मण्यादा

देवकवाधीता. (पर्वा देवकव शा-লিতাঃ।। অহঞ্চ বৈষ্ণবাধীন স্ত-गाए (अर्थान्त रेवस्वाः। कन-भाज मिं बन्नन् विश्व देवस्व জন॰।। তিষ্ঠামি নাহ মন্যত্র বৈ-ফবো মম বান্ধবঃ। কাম ক্রোধ বিহীনা যে হিণ্সা দম্ভ বিবৰ্জ্জি-তাঃ।। লোভ মোহ বিহীনাশ্চ তে জ্বেষা বৈক্ষবা জনাঃ ৷৷ অমৎ-সরা দযাযুক্তাঃ সর্বভূত হিতৈ-ষিণঃ ॥ সত্যোক্তি ভাষিণ শৈচব জ্ঞেষা স্তে বৈক্ষবা জনাঃ। পিতৃ ভক্তা মাতৃ ভক্তা জ্ঞাতি পোষণ তৎপরাঃ।। ধর্মোপদেশিনো যে চ জ্বেষা স্তে বৈক্ষবা জনাঃ ৷ স-মান° যে চ পশ্যন্তি দ্বাঞ্চ মাঞ্চ মহেশ্বরণ।। সর্বস্তি পূজা মতিথে र्द्धिया रख देवकवा क्रांगः। रवम-বিদ্যানুরক্তা যে দিজভক্তিরতাঃ সদা।। নপুণসকাঃ পরস্ত্রীষু জ্ঞেষা স্তে বৈক্ষবা জনাঃ। একাদশীত্র-ত॰ যে চ ভক্তিভাবেন সৰ্বতে ॥ গাযন্তি মন নামানি জ্বেয়া ভেঁ বৈক্ষবা জনাঃ। দেবাযতনক-र्जात खनमीमानाधातिनः ॥ क्र-**জাক্ষারিগো যে চ জ্বেয়া স্তে** বৈষ্ণবা জনাঃ। মৎপাদসলিলৈ

র্যেষা॰ সিক্তানি মস্তকানি বৈ ॥। মম নৈবেদ্য মশ্বন্তি জেয়া স্তে বৈষ্ণবা জনাঃ। শুখ্য চক্র গদ। পদ্মৈ রক্ষিতানি মমাযুধিঃ ৷৷ ত্রন্ধ-ন্ যেষা॰ শরীরাণি জ্ঞেষা স্তে বৈ-कवा जनाः। कर्नरम रेम्हव भी-র্ষেযু তুলসীপত্র সুত্তমণ।। সতত॰ দৃশ্যতে যেষাণ জেষা স্তে বৈক্ষবা জনাঃ। তৃণানি তুলদীমূলাদে। চিন্বস্তিনরোত্তমাঃ ৷৷ সিঞ্চিত্তল-সী° যে চ বিজ্ঞেষা স্তে চ বৈঞ্চবাঃ । তুলসীমূলমৃদ্ভিশ্চ তিলকানি নযন্তি যে।। তুলসীকাণ্ঠ পঞ্চৈশ্চ বিজ্ঞেয়। বৈক্ষবা জনাঃ। গঙ্গা-স্নান্পরা যে চ গঙ্গানামপরায-ণাঃ।। গঙ্গামাহাত্ম্যবক্তারো বি-জ্ঞেষা স্তে চ বৈক্ষবাঃ । ধাত্রীফ-ল॰ সুজো যেযা॰ গলেষু কমলা-সন ।। যজন্তি যে চ তৎ পত্ৰৈ ৰিজ্ঞেয়া স্তে চ বৈষ্ণবাঃ। শাল-গ্রামশিলা যেষা॰ গৃহে বসতি স ৰ্বদা ৷৷ শাস্ত্ৰণ ভাগবতক্ষৈব জ্বে-ষা স্তে বৈষ্ণবা জনাঃ। সন্মার্জয-खि रय निजां॰ यम खानानि नर्बना ।। দীপণ যচ্ছন্তি তত্রৈব জ্ঞেষা স্তে বৈষ্ণবা জনাঃ। শীর্মণ মমন্দিরণ যে চ সৰ্বতে নূতন পুনঃ ।৷ তত্ৰা-

· **যনক শোভাক্ষ ভে**ৰেখ **স্তে বৈ**ক-वा कनाः। ऋखेर य प्रवाहित ভীক্ষভ্য শুক্তরানন ৷ বিদ্যাদান-ৰু বিপ্ৰেভ্যো জেখা ভে বৈক্ষবা জনাঃ। কুৰুট্প্ৰপীডিতেভাক त्य यष्ट्रशाम समू ह ॥ अयू र्य রোগিশুক্ষবাণ জ্বেয়া স্তে বৈক্ষ-বা জনাঃ। আরামকারিণো যে চ शिश्रवाद्याशित्वा २णि ह।। ला-निवा॰ त्य ह अर्बेखि एक या एख বৈক্ৰা জনাঃ। অত্যন্ত ভক্তা যে বন্দান্ পিতৃযক্ত প্ৰদৰ্ভত ॥ अर्वेष्ठि मीनश्वक्षयाः एडया एउ বৈক্ষৰা জনাঃ। তভাগ আমক-র্তারঃ কন্যাদান প্রদাশ্চ ষে॥ সেবস্তে স্ব গুরৌ ষে চ জ্রেষা एउ देक्का कनाः। रमराख জ্যেষ্ঠা ভগিনী জ্যেষ্ঠ ভ্রাতর মেব চ ॥ পরনিন্দা॰ ন ন্ধ্রস্তি **ভেষা** স্তে বৈক্ষবা জনাঃ। দেব-স্ব॰ ত্রান্ধণদ্রব্য৽ পরস্বঞ্চ চতুর্ম্মুখ ৷৷ পশ্যস্তি বিষবদেয় চ জ্রেয়া স্তে বৈৰুবা জনাঃ। পাষ্ডসঙ্গরহি-তাঃ শিবভক্তিপরাষণাঃ।। চতু-र्फनीवण्त्रण ख्हिमा ख दिक्का জনাঃ। বহুনাত্র কিমুক্তেন ভাষি-তেন পুনঃ পুনঃ। মদর্চাণ যে চ

वर्षि एक शास्त्र रिक्या जनाः र दिक्दिकू खना निर्म (मायतन শোন বিদ্যতো৷ তথা চতুমুখ ছ-क देवकदेवा छव जान्यू छन। जमा-ক্লীধ্য মাৰ্গ নিত্যু ক্ৰিমাযোগৈঃ প্ৰজাষতে॥ সৰ্ব মেব সুভদ্র তে ভবিষ্যতি ন সংশবঃ । ভূষঃ পূর্ব-স্থিত মিৰ সৃজ্যতা**ণ সকল**ণ জগৎা৷ ইত্যুক্ত্বান্তর্দধে দেব স্তব্রৈব জ পদীশ্বঃ। ততন্তু পূর্ববন্ধুন্ধা স্-खेवान् मकलः जगर। कियायाः গৈ হ'রি ষফু জগাম পরম পদ । যে পঠস্তি মমাধ্যায়ণ ভক্ত্যা না-রাযণাগ্রতঃ ৷৷ সর্বপাপবিনিশ্মুক্তা **অন্তে যান্তি হরে: পদ॰ । ই**তি পাল্মে ক্রিয়াযোগসারে ২ অধ্যা-यः ॥ 🟶 ॥ कालिक उवाह। का-ভিঙ্মারেণ কথিতো রহস্যঃ পর-মো মন। ষমকিকরযোর্থো ংভূৎ সংবাদ স্ত' ত্রবীমি তে।। স্বপুরুষ মভিবীক্ষ্য পাশহস্তু বদতি যুমঃ কিল তস্য কর্ণমূলে। প্রবিহর ^{ম-} धूमूमन अल् नान अलू तर मना-নৃণা॰ ন বৈক্ষবানা॰।। ইতি 🕮 বিষ্পুরাণে তৃতীযেংশে ষমগীতৃ ৭ অধ্যায়ঃ।। 🛊 ।। অপিচ। কর্ম-क्यांनि क्षांनि घडः माधू ईतिः

স্বয়ণ। মন্যে ন ভৌতিকো দেহে। বৈষ্ণবস্য জগদ্রবে ৷৷ ইতি ক-কিপুরাণে ৩ অধ্যায়ঃ।। देवकवी खी विकृশकिः। यथा। এষা ত্রিশক্তি রুদ্দিক্টা নষ সি-দ্ধান্ত গামিনী। এষা শ্বৈতা প-রা সৃষ্টিঃ সাদ্বিকী এন্দ সংস্থিতা ।। এবৈব রক্তা রজসি বৈক্ষবী পরিকীর্ত্তিতা। এবৈব রুষণা ত-সসি রৌজী দেবী প্রকীর্ত্তিতা।। অফাদশ তথা কোট্যো বৈক্ষ-वा। जिन्ह जिल्ला का विस्का রাজদী শক্তিঃ পালিনী চৈব বৈক্ষবী ॥ ইতি ৰাবাহে ত্রিশ-किमाश्रामा नामाधायः ॥ ज-পিচ ৷ শখ চক্র গদাধারী বিষ্ণু মাতা তথারিহা। বিকুৰপাথবা प्तवी देवकवी एवन भीयुर्छ ॥ ইতি দেবীপুরাণে ৪৫ অধ্যায়ঃ ।। অপরঞ্চ। বিফুভক্তা বিফুক-পা বিষ্ণোঃ শক্তি স্বৰূপিণী। मृत्रको চ विक्नुना मुक्का देवकवी তেন কীৰ্ত্তিত।। ইতি ব্ৰশ্ববৈব-র্ত্তে প্রকৃতিখন্তে ৫৪ অধ্যাষঃ ১১ मूर्गा। ইতি শব্দরত্বাবলী।। গ-का। यथा श्रमभूतानः । विद्याः शामश्रमुञानि देवकवी विक्शू- **॥**

জিতা। পাহি ন স্তেন্স স্তশাণ দাজন্ম মরণাস্তিকাৎ ।। ইত্যা-দি আহিকাচারতত্ত্ব স্নানার্থ গঙ্গানহন মন্তঃ ।। অন্যচ্চ। বি-ফুপাদ প্রসূতাসি বৈক্ষবী নাম ধারিণী। সর্বত্ত রক্ষ মাণ নিত্যণ গঙ্গা ত্রিপথ গামিনী ।। ইতি গঙ্গাকবচণ ।। অপরাজিতা । ইতি শব্দচন্দ্রিকা ।। শতাবরী। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ ।। তুলসী। ইতি শব্দমালা।।

বৈসারিণঃ পু• মৎস্যঃ। ইত্য-

বৈসূচন জী নাট্যেপুরুষস্য-স্ত্রীবেশধারণ । ইতি কেচিৎ ॥ বৈহার্য্যঃ ত্রি পরিহাসেন লাল-नीयः। भाग मयसापिः। दे-ত্যজ্জনমিশ্রঃ। যথা। যথা বা-लियू नातीयू देवहार्यायू जरेश-ব চ। সঙ্গরেষু নিপাতেষু তথা-পদ্বাসনেষু চয় অনৃত নাক্ত পূৰ্ব॰ মে তেন সত্যেন খ এজ। ইতি মহাভারতে উদ্যোগপর্ব॥ বৈহাসিকঃ বিহাস করো-পু৽ তি য়ং। ভণ্ড ইতি খ্যাতঃ। তৎ-পর্য্যায়ঃ। বাসন্তিকঃ ২ কেলি-কিলঃ ৩ বিদৃষকঃ ৪ প্রহাসী ৫

প্রীভিদঃ ৬। ইতি হেমচক্রঃ ।। वाणे जी मंत्री। यथ।। পाणे (बार्च। ह क्रिके ह मानी ह क्रिके হারিকা। ইতি হেমচন্দ্রঃ।। বোডঃ পু॰ গুৱাকঃ। ইতি শব্দ-রত্নাবলী।। জটাধরে ভূরিপ্র-যোগে চ ঝোড ইতি পাঠঃ।। বোড্রঃ পু॰ গোনসসর্পঃ। বোড। ইতি ভাষা। যথা। গোনাসো মণ্ডলী বোড়ুঃ। ইতি ভরতধৃত বিক্রমাদিত্যঃ ৷৷ মৎস্যবিশেষঃ । ইতি यिषिनी ॥ বোড়্রী 'স্ত্রী পণচতুর্থা শঃ। বুডি ইতি ভাষা। ইতি মেদিনী।। বো ঢবাঃ তি বহনীयः। বাহুঃ ৷ বহুধাতো স্তব্য প্রত্যযেন নি-পানঃ। ইতিমুগ্ধবোধব্যাকরণণা বোঢ়া পু॰ ভারিকঃ।। মূঢ়ঃ।। পরিনেতা। ইতি শব্দরত্নাবলী ।। সূতঃ। ইতি মেদিনী ।। অন-ডুান্।। ঋষভঃ। ইতি রাজ-निर्घकैः ॥

বোঢ়ঃ পু॰ মুনিবিশেষঃ। যথা।
সনকশ্চ সনন্দশ্চ তৃতীযশ্চ সনাতনঃ। কপিল শ্চাসুরি শেচব
বোঢ়ঃ পঞ্চশিখ স্তথা।। সর্বেতে তৃপ্তি মাযান্ত সদ্দত্তেনাযুনা

সদাণ ইত্যাহ্নিকাচারতন্ত্ৰ ।।
বোল্টঃ পু॰ বৃস্ত । বোঁটা ইতি
ভাষা । ইতি শব্দরত্মাবলী ।।
কিন্তু লিপিকরপ্রমাদপাঠোষ ।
বথা মূলগ্রন্থে। তথা বোঁট ইতি
খ্যাতে বৃস্ত প্রসববন্ধন ।।
বোদঃ ত্রি আর্ড ৷ ইতি ত্রিকা
গুশেষঃ ।।

বোদালঃ পু॰ মৎস্যবিশেষঃ।
বোষালি ইতি ভাষা। তৎপর্যায়ঃ। সহসুদ•র্ফ্রী ২ পাঠীনঃ ৩ বদালকঃ ৪। ইতি শদরত্নাবলী।।

বোরকঃ পু॰ লেখকঃ। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।

বোরটঃ পু॰ সন্দপুষ্পণ।ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।

বোরপতী স্ত্রী মন্দুরা। মাদুর ইতিভাষা।ইতি শব্দমালা।। বোরবঃ পু॰ ধান্যবিশেষঃ। বোরোইতিভাষা। অস্য গুণাঃ । বোরবস্তু বুধৈঃ প্রোক্ত স্ত্রি দোষস্য প্রকোপণঃ। মধুর শ্চামা পাকশ্চ ত্রীহিঃ পিত্তকরো গুরুঃ।। ইতি রাজবঞ্জভঃ।।

त्वाक्रथानः श्रुः शाहलवर्गायः। इति एक्ष्रह्यः॥ বোলা ক্লী স্থনামখ্যাত বণিক্

অব্যাণ তৎপর্যামঃ। রক্তাপহণ

ই মুক্ত ও সুরসং ৪ পিওকং ৫

বিষণ ৬ নির্দ্ধোহণ ৭ বর্বরণ ৮
পিওং ৯ সৌরভং ১০ রক্তগন্ধকণ
১১ রসগন্ধণ ১২ মহাগন্ধণ ১৩

বিশ্বণ ১৪ শুভগন্ধকণ ১৫ বিশ্বণ
গন্ধণ ১৬ গন্ধরসণ ১৭ ত্রণারিঃ
১৮। অস্য গুণাঃ। বোলাঞ্চ কটু
তিক্তোক্ষণ ক্যামণ রক্তদোধনুৎ। কফ পিত্তাম্যান্ হন্তি প্রাজনির্ঘণ্টঃ।।

বোলঃ পু॰ রসগন্ধঃ। ইত্যমরঃ॥ বোলকঃ পু॰ লেখকঃ। ইতি শব্দরত্বাবলী॥

বোলাহঃ পু॰ অশ্ববিশেষঃ।
যথা। বোলাহ স্তৃষ মেব স্যাৎ
পাণ্ডুকেশর বালধিঃ। ইতি হেমচন্দ্রঃ।।

বোহিখ° ক্লী যানপাত্ৰ°। বা-হাজ ইতি ভাষা। ইতি হেম-চন্দ্ৰঃ।।

বৌদ্ধণ ক্লী বুদ্ধকতনিরীশ্বর-শাস্ত্রণ। তথ সর্বৈঃ শাস্ত্রকারেঃ ধান্তিত অতএবাগ্রাহ্ণণ। জিন-ধর্মঃ। যথা। ততো বৃহস্পতিঃ

শক্র মকরোত্বলদিপিত । এহ-শান্তি বিধানেন পৌটিকেন চ कर्या ।। भदार साह्यामान রজি পুত্রান্ বৃহস্পতিঃ। জিন-धर्मा॰ मनाञ्चाय तक्तवाञ्च॰ म त्व-**म**विष् ॥ रामखरी शति कुरी। শ্চকার ধিষণাধিপঃ। বেদবা-**হ্মান্ পরিজ্ঞান হেতুবাদ সমন্বি**-তান্যা জ্যান শক্তো বজেুণ সৰ্ব ধর্মবহিষ্ঠান্। ইতি মাৎস্যে সোমবংশানুকীর্ত্তনং নাম ২৪ व्यशायः ॥ तूक्तमप्रक्रिनि वि ॥ विषष् वा॰ प्रवश्विमानमञ्जः। তৎপৰ্যাৰঃ। স্বাহা ২ শ্ৰৌষট্ ৩ বষট্ ৪ স্বধা ৫। ইত্যমরঃ ॥ এতে পঞ্চ শব্দা দেবহবিদ্দানে বহ্নিমুখাহুতে বর্ত্ততে। দেবাষ श्विषा मानः (मवश्विमानः। তত্র দেবা ইন্দ্রাদয়ঃ অত্র পি-তরো দেবতা ইতি স্মৃতে স্তেপি দেবাঃ হবিদান ইত্যনেন এতে মন্ত্রা ইতি সূচিত । অমন্ত্রত্বে স্বাহাযেব হবিভূ জ মিতি রঘুঃ। স্বাহাব্যয়• মন্ত্ৰভেদে ব্ৰিষাণ স্বা-হাগ্নিষোষিতীতি কোষান্তর । স্বাহা দন্ত্যাদি। শ্রৌষট্ তাল-वाानि मूर्कना मधाः। वोषष् वषष দ্বা মূর্দ্ধন্য মধ্য । বধা দন্ত্যা-দ্বি: ইন্দ্রাম স্কাহা ইত্যাদি প্র-যোগঃ। ইতি ভরতঃ ।।

ব্যাশকর পুশ নগর্বতঃ । ইতি ত্রি-কাণ্ডশেষঃ ।।

ৰ্যুণ্টকঃ পুণ প্ৰুৰ্ক্তঃ । ইভি ছেম-চন্দ্ৰঃ ॥ প্ৰ

ব্যুপ্তিত প্রতারিতঃ । ইতি জ্বিশুপ্তশেষঃ ।।

ক্যক্তঃ ত্রি প্রাক্তঃ। ইত্যমরং ॥
ক্যুটঃ। ইতি মেদিনী ॥ বিষ্ণুঃ।
যথা। ব্যক্তো বাষু রথোক্ষজঃ।
ইতি কস্য সহসুনামক্তোত্তং ॥

ব্যক্তদৃষ্টাৰ্যঃ পুণ দান্দী।তৎ-পৰ্বদাৰঃ। প্ৰত্যক্ষী ২। ইতি ক্ৰিকাণ্ডশেষঃ।

ৰাজকাণঃ পুং ৰিক্ষু । যথা ।
অদৃশ্যো ব্যক্তকাপক সহসুজিদনস্তজিৎ। ইতি তস্য সহসুনামস্তোত্ত ॥ স্পাক্তকাপুক্তে ত্রি॥
ব্যক্তিঃ স্ত্রী পৃথগান্মিক।। ইত্যমরঃ॥ জনঃ। ইতি হেৰচন্দ্রঃ॥
স্পাকতা চু ॥

ব্যঞ্জঃ ত্রি ব্যাসক্তঃ। আসলঃ।
ইত্যাসরঃ ঃ। বিষ্ণুঃ। যথা। প্রগ্রহো নিজহোল ব্যান্তের। নৈকশ্কো গদাগ্রজঃ। ইতি তস্য সহ-

সুনামস্ভোত্ত ॥

বাঙ্গঃ 'পু' ডেকঃ ॥ হীনাঙ্গঃ। ইতি মেদিনী ৷ মুখরোগবিশে-'सः। তস্য লক্ষণ যথা। ক্রোধা-বাস প্রস্থপিতো বাষুঃ পিত্তেন সংযুত্ঃ। মুখিয়াগম্য সহসা মণ্ড-ল॰ বিসৃজত্যতঃ ।। মীরুজণ ত-নুক শ্যাব মুখে ব্যঙ্গ ভ্যা-দিশেৎ। ইতি মাধ্বকরঃ॥ 🗱। **তস্য টিকিৎসা। বটাকু**রা মসৃ-রাশ্চ প্রলেপাত্যক নাশনঃ। ব্যবে ৰঞ্জিগ্ৰা লেপঃ প্ৰশন্তো ষধুষুক্তবা।। অথবা লেপন• শ-ন্ত॰ শশস্য রুধিরেণ চ। জাতী কলস্য লেপস্ত হরেদ্ব্যবন্ধ নী-লিকা॰।। বটস্য পাঞ্জুপত্রাণি মা-वाजी द्रक्कान्यनः। अर्थः कानीः ষক লোধু এভি ক্লেপ প্রযো-জ্বেৎ য়া ইতি ভাবপ্রকাশঃ। ব্যঙ্গঃ ত্রি ব্যঞ্জনষা বোখ্যোহর্থঃ । যথা। বাচ্চ্যোর্থোভিধ্যা বো-ধ্যো লক্ষ্যো লক্ষণয়া মতঃ। ব্য-(का) वाक्षनया जाः मू खिमुः শব্দস্য শক্তবঃ।। ইতি সাহিত্য-मर्भाव २ शतितक्तः ॥ क्रा मि बार्ष्डिया मद्दत्व। देखि

क्विक्रफ्रमः ॥ व्याक्र क्लः।

শ বিচতি সত খলঃ। ছলয়তি ইতার্থঃ। অবিচীৎ বিব্যাচ। ইতি দুর্গাদাসঃ।।

वाजः भू॰ वाजनः। विभूई जज থাতো রল্ প্রত্যবেন নিষ্ণন্ধঃ।। बाजन की जानव्खक। भाषा ইতি ভাষা। ইত্যমর:।। অস্য সামান্যগুণঃ। মূর্চ্ছা দাহ তৃষ্ণা ষূর্ম শ্রম নাশিষণ।। তালব্যজন ঙ্বঃ। ত্রিদোষ শমনত্বং। লঘুত্বঞ্ ॥ व॰ नवाजन खनः। बक्षः। উক্ষত্বণ। বাষু পিত্ত কারিত্বঞ্।। বেত্র বস্ত্র মধূরপুচ্ছ ব্যজন গুণঃ । विकायनाणिषः ॥ वालवाजन ্ গুণঃ। তেজস্করত্বণ। সক্ষিকাদি নিবারকত্বঞ্চ। ইতিরাজবল্পভঃ॥ ব্যঞ্জকঃ পুশ্ অভিনয়ঃ। ইত্য-মরঃ ৷৷ দ্বে হৃদাত ক্রোথাদি ভা-বাভিব্যঞ্জকে। ব্যনক্রীতি ব্য-ঞ্জকঃ। অনু ধ ঞি গতি মুক্ষণে **পকঃ। আদিক সাত্রিক বাচিক।**-হাৰ্য্য ভেদাদ্যঞ্জক শ্চতুৰিধঃ। অভিমুখ নীয়তে অর্ণো ২নেম ইতি অভিনম: ৷ নীঞ প্রাপণে **जन्। इ**ङामिङिः भञ्जवाणिमि সূচন মভিনযঃ। ষটাদ্যাকার সূচক করাদি সংস্থান মভিনশং ইত্যন্যেপি। ইতি ভরতঃ ।। ব্য-ঞ্চনবা প্রতিপাদকঃ । ইতি সা-হিত্যদর্শণঃ ।।

वाक्षन॰ क्री मृशभाकानि। ইভি त्राक्रनिर्यक्तः ॥ जर्भागाः । তেমন ২ নিষ্ঠান ৩। ইত্য-মরঃ ।। অস্য গুণাং। ব্যঞ্জন॰ শাক নৎস্যাখ্য হৃদ্য বৃষ্যঞ্ ব্যঞ্জন• মৎস্য মাৎসধোঃ ৷৷ ত-मा जमा ज्याटकजन्छन एत-বৈ বিভাবষেৎ ॥ ইতি রাজ-বল্লভঃ ৷৷ ব্যঞ্জনবিশেষগুণাঃ ত-ख भ भ जरुवाः ॥ 🛊 ॥ **किङ्गः ।। भाव्यः ।। व्यवयवः ।। पिन** । रें ि यिपनी ॥ जी पू-সযো রশুদ্ধদেশঃ। স তু উপস্থঃ ॥ अर्फगाजकः। मञ् ककात्रापि ক্ষকারান্তবর্ণঃ। ইতি ধরণিঃ।। वाक्षना जी भक्तावृद्धिवित्नवः । তস্যা লক্ষণ হথা। বিরতা স্বভিধাদ্যাসু যবার্থো বোধ্যতে পরঃ ৷ সা বৃত্তি ব্যঞ্জনা নাম শ-समार्थापिकमा ह ॥ गय वृक्षि কর্মণা বিরম্য ব্যাপারাভাব ইতি নবেনাভিধা লক্ষণা তাৎ-পৰ্যাখ্যাসু তিস্যু বৃতিষু সং স্ব

মথ বোষযিত্বা উপকীণাসু যথা-`ন্যো হর্ষো বোধ্যতে সা শব্দস্যা- 🛚 র্থস্য প্রকৃতি প্রত্যযাদেশ্চ বৃত্তি ৰ্ব্যঞ্জন ধনন গমন প্ৰত্যায়নাদি ব্যপদেশ বিষষা ব্যঞ্জনা নাম ৷ তত্ৰ অভিধা লক্ষণা মূলা শব্দস্য ব্যঞ্জনা दिशा ॥ 🟶 ॥ অভিধামূ-লা মাহ। অনেকার্থস্য শব্দস্য সংযোগালৈ নিষ্ম্রিতে। একতা-র্থে ২ন্যধী হেতু ব্যঞ্জনা সাভি-ধাশ্রষা।। আদি শব্দাদ্বিপ্রযো-গাদ্যঃ। উক্তংহি। সংযোগো বি-প্রযোগশ্চ সাহচর্য্য বিবোধিতা 1 অর্থঃ প্রকরণ লিঙ্গুণ শব্দস্যা-नामा मिषिः॥ मापर्या स्मेिति-তী দেশঃ কালো ব্যক্তিঃ স্বরাদ-यः। শব्দार्थम्यानयत्क्र्राप वित्नव স্মৃতি হেতবঃ।। ইতি। সশখ চ-ক্রোহরি রিত্যত্র শঙ্খ চক্র সংযো-গেন হরি শব্দে বিষ্ণু মেবাভি-ধত্তে। অশখ্রচক্রে। হরি রিতি তদ্বিষোগেন তমেব। ভীমাৰ্জুনা-বিতি অর্জুনঃ পার্থঃ। কর্ণার্জুনা বিতি কর্ণঃ সূতপুক্রঃ। স্থাণু বন্দে ভবচ্ছিদে ইতি স্থাণুঃ শিবঃ। সর্ব॰ জানাতি দেব ইতি দেবো ভবান্ । ঙ্গপিতো মকরধজঃ ইতি মকর- 🏻

ধজঃ কামঃ। দেবঃ পুরারি রিতি পুরারিঃ শিবঃ। মধুনামতঃ পিক ইতি মধু বঁসন্তঃ। পাতুবো দিষ-তা মুখ মিতি মুখ সাণমুখ্য । ভা-তি গগনে চন্দ্রঃ ইতি চন্দ্রঃ শশী। নিশি চিত্রভানু রিতি চিত্রভানু বহ্নিঃ ৷ ভাতি রথাঙ্গ মিতি নপু• সক ব্যক্ত্যা রথাঙ্গ : চক্র । স্বরস্ত বেদএব বিশেষ প্রতীতি রুম কা-ব্য ইতি তৃস্য বিষয়ে নোদাক্ত । ইদঞ্চ কে হপ্যসহমানা আহঃ স্বরোপি কাক্বাদি ৰূপঃ কাব্যে বিশেষ প্রতীতি ক্লদেব । উদা-ত্তাদি ৰূপোপি মুনেঃ পাঠোক্ত **पिना मृजा**तापि तमितित्वस अ-তীতি ক্লদেবেতি ৷ এতদ্বিষযে উ-দাহরণ মুচিত মেব ইতি তন্ন ত-থা হি স্বরাঃ কাক্বাদয উদাত্তাদ-যো বা ব্যঙ্গ্যৰূপ মেব বিশেষণ প্রত্যায়যন্তি ন খলু প্রক্তাক্ত यत्नकार्थ भक्तेमाकार्थ नियञ्जन ৰূপণ বিশেষণ। কিঞ্চ যদি যত্ৰ ক্ৰ-চিদনেকার্থ শব্দানা প্রকরণাদি নিয়মাভাবাদনিযন্ত্রিতয়ে রপ্য-র্থযো রনুক্রপ স্বর বশেনৈকত্র নি-ষমন° বাচ্য॰ তদা তথাবিধ স্থলে শ্লেষানঙ্গীকার প্রসঙ্গঃ ন চ তথা

অভ্ৰেম্বাহঃ শ্লেম নিৰূপণ প্ৰাস্থাবে क वा मार्श खरता न गगरं इंडि ह तम रेकालमूर्गकीयानाः माना। ना वाथात्नयुक्षेक नित्कत्थ-পাজাদিশকাদেতাব্যাত্র স্থনী-তাদৌ হস্তাদি চেকাদিভিঃ স্ত-नामीनाः कमन कात्रकामानः রত্বং ৷ এব মেকস্মিন্নর্থে ২ভিধ্যা निम्बिट्ड यो भक्तमान्। थं वृक्ति হেতুঃ শক্তিঃ সা অভিধামূলা-ব্যঞ্জনা। যথা মম তাত পাদানা॰ षशाপাত্র চতুর্দশভাষা বিলাসি-नी जूजक महाक्वीश्वत की ठळा শেশর সান্ধি বিগ্রন্থিকাণাণ। দুগাঃ লজ্মিত বিগ্ৰহে মনসিজ সংমী-লয'ন্তেজুসাপ্রোদ্যজাজকলো-গৃহীত গরিমা বিশ্বখৃতো ভোগি-ভিঃ। নকত্রেশ ক্তেক্ষণো গিরি শুরৌ গাটা॰ রুচি॰ ধার্যন্ গামা-ক্রম্য বিভূতি ভূষিত তন্ত্রাজত্যু-गावलज्ञः॥ ज्ञा अक्तरनगाजि थया उत्रादमञ्जासमा उपानाभी महादावी उद्वा जानूदाव नृश-তিৰূপে হৰ্পে নিয়ন্ত্ৰিতে ব্যঞ্জন-বৈৰ গৌৱীবলভকপো হৰে। ৰো-धारा वर मनार ॥ ।। नकना-यूना याह। नकत्वाभागारक यमा

क्रक जब् श्रायाजनः । यगाज • ত্যায়াতে সা সাময়ঞ্জনা লক্ষণা-শ্রেষা ৷ গ্রন্থাণ ছোর ইত্যাদৌ जनगानार्थ (वाधनानिक्शाया॰ वित्रजामा जुणेमार्स द्वाधनाक लक्षभागाः विद्रज्ञासाः यया मीज्य शावनकामाणिश्यामि र्दाशार्ज मा वक्षामूला राक्षना ॥ # ॥ वदः भाकीः वाक्षना मुकु। जा-থী • ব্যঞ্চনা মাহ। বক্তৃ বোধব্য बाक्गाना मना मिश्रि बाह्यरमाध । প্রস্তাব কাল দেশানা॰ কাকে। (म्हको पिकमा ह ॥ देव शिका प्र-ন্য মর্থ হা বোধ্যেৎ সার্থ সম্ভ-বা। ব্যঞ্জনা ইতি সম্বধ্যতে। তত্ৰ বক্তৃবাক্য প্ৰস্তাৰ দেশ কাল বৈ-**लिस्क्रिं रक्षा यय । काट्ना यधु** ঙ্গপিত এষ চ পুষ্পাধন্বা ধীরা বহ-স্তি রতিখেদহরাঃ স্মীরাঃ। কে-नी वनीय मिश वशुन कक्ष मक्ष् দুরে পতিঃ কথম কি- করণীয ম-দ্য ।। অত্র এত দেশ প্রতি শী-মুং প্রাছম কামুক স্তৃযা প্রেষ্যতা মিতি স্থীণ প্ৰতি ক্ষাচিৎ দ্যো-**छाटछ।। #।। द्वाक्षदा देविनाटका** यथा। निः त्मयुत्रु ज्ञान्यनः खन-**७६॰ निर्मृ**कितारगा २१८वा नित्व

দূর মনগ্রনে পুলকিতা তথী ত-. दिषः जनुः। प्रिशावामिनि मृजिः। বান্ধব জনস্যাজ্ঞাত পীডাগমে ব্ৰাপী স্নাভু মিতে৷ গতাসি ন পून उमाधममाञ्चिक ॥ जव তদন্তিক মেৰ গতাসীতি বিপ-রীত লক্ষণয় লক্ষ্যু তস্য চ রম্ব মিতি ব্যঙ্গ্য প্রতিপাদ্য দূতী বৈ-শিষ্ট্যাৰোধ্যতে ॥ 🟶 ॥ অন্য স-্দ্রিধি বৈশিষ্ট্যে যথা। উত্ত নি-চ্চল ণিগ্ধন্দাভিসিনী পত্তম্ভি'রে-হই বলাআ। ণিশ্মল মরগত্ম ভা-তাণ পরিট্ঠিতা সংখ সুত্তির ॥ অত্ৰ বলাকাষ। নিষ্পান্দত্বেন বি-শ্বস্তত্বণ তেনাস্য দেশস্য বিজনত্ব মতঃ সঙ্কেতস্থান মেতদিতি ক্ষা-পি সমিহিত প্রচ্ছন্ন কামুক প্র-ত্যুচ্যতে। অত্রৈব স্থান নির্জনস্ব ৰূপ ব্যঙ্গ্যাৰ্থ বৈশিষ্ট্য প্ৰযোজ-न ।। जिन्न के धनि थीं देतः कान রিভাভিধীয়তে। ইত্যক্ত প্রকা-রামাঃ কাকো র্ভেদা আকারাদি-**ভा। खार्चाः ॥ क्ष ॥ वर्ष-**শিষ্ট্যে যথা। গুরুপরতন্ত্রত্যা ব-ত দূরভূর॰ দেশ মুদ্যতো গল্প। অলিঙ্গল ক্লোকিল ললিতে নে-या जिथ भूते जिया भारत है स्त्री n

অত্ৰ নেষ্যতীতাপি তৰি এষ্য-**छात. रेडि काक्ष वाकाट्ड । १** চেক্টাবৈশিক্টো যথা ী সঙ্কেত-कोल मने में विषेष खेंग्यी विषक्षिया । হসমেত্রাপিতাকৃত লীলাপদ। निभीविष्णा अर्वे मस्ता भरक काल इंछि পग्न मिभीलनामि कि खेषा क्याहि॰ (माजारें । 'এव॰ बङ्घानीना॰ वाख ममखानां देव **ि**एका वाष्ट्रयाः ॥ के ॥ के वि ধ্যাদি য মর্থানাণ প্রত্যেকণ ত্রি-বিধ। মতা । অর্থানার বাচ্য লক্ষ্য ব্যৰ্ক্যত্বেন ত্ৰিৰূপত্যা সৰ্বা অ-প্যনন্তরেকা ব্যঞ্জন। স্ত্রিবিধাঃ। তত্র বাচ্যার্থস্য ব্যঞ্জনা যথা। কা-ल। यथु तिंछापि ॥ लक्गार्थमा ষথা। নিঃশেষচ্যুত্তকন মিত্যা-मि॥ राक्रार्थमा यथा। উञ्जिल-क्रम रेजामि ॥ 🛊॥ श्रक्ति थ-ত্যযাদি ব্যঞ্জনম্ভ প্রশাক্ষযিব্যতে । भक्तवादिशा चानकार्थः भत्य ২পার্থান্তরাশ্রকা গ্রিকনা ব্যঞ্জ-কত্বে ভাদন্যস্য সহকারিত।।। य-कर मेटका वाक्षेक्टंच र शास्त्र म পেক্ষাতে। অর্থেপিনিশব্দ তদে-কস্য ব্যঞ্জিত্বেইন্যুস্য সহকারি-শ্ব নরশ্য মঙ্গীকন্দ্রণীয় ।। অভি-

ন্যতীপা

থাদি ত্যোপাধি রৈশিষ্ট্যাত্রি রিখো মৃতঃ ৷ শবেশাপা বাচক खब्बकरका राधक खर्थ। ॥ ज-जिट्धाकाधित्का वाठकः। नक-द्रशाशिका नक्कः । वाक्ष-ब्याशाधिक। राक्षकः ॥ किश्र তাৎপর্যাখ্যা বৃত্তিমাহঃ পদা থাম্ম বোধনে। তাৎপর্যার্থ্য তদর্থঞ্চ বাক্যু তদোধকং পরে ্য অভিধাষা একৈক পদার্থ রো-ধন বিরমাৎ বাক্যার্থৰূপস্য পদান্বযাস্য বোধিকা তাৎপর্য্যা নাম বৃত্তি স্তদর্থশ্চ তাৎপর্যা-র্থ স্তদ্বোধকঞ্চ বাক্য মিত্যভি-হিতাব্যবাদিনাং মতং ৷ ইতি সাহিত্যদৰ্পণে বাক্যস্বৰূপনিৰ-शर्गा नाम विजीयः शतिरक्रमः॥ ব্যডয়কঃ পু॰ এরঙঃ। ইতামরঃ॥ ব্যতিকরঃ পু॰ ব্যসন ।। ব্যক্তি-সঙ্গঃ। ইতি মেদিনী ়া

बा जिल्ला भारतीय वा कर्मा विश्व में विश्व यथा। मईब आजूत्था माठा ध-হীতা চ উদ্ধাৰ্থঃ। ত্ৰয় এব বিধি मीत्न विवादक ह वािकमा ॥ रेजुाबारुज्दुः॥

ব্যতিরিক্তঃ ত্রি ব্যতিরেক্বিশিক্টঃ

তোঃ ক্র প্রত্যযেন নিষ্পন্নঃ।। ব্যতিরেকঃ পু: বিন। অভাবঃ । यथा। यषाजित्त्रक ख्वान॰ यं-দুৎপত্তি প্রতিবন্ধক তৎ তমি-শ্চয সাধ্য । ইতি পরামর্শগ্রন্থঃ ॥ अनुकातिरिणयः। यथा। वा-তিরেকো বিশেষশ্চেদুপার্মানো-পমেষধোঃ। শৈলা ইবেমিতাঃ সম্ভ কিন্তু প্রকৃতি কোমলাঃ ॥ ইতি চক্রালোকঃ।।

ব্যতিসঙ্গঃ পু॰ পরম্পরমেলন॰। বি অতি সং পূৰ্ব গমধাতো ৰ্ড প্রত্যযেন নিষ্পন্ধঃ।।

ব্যতিহারঃ পু• বিনিম্যঃ। যথা । शक्तिमानः विनियदय। देनदययः পরিবর্ত্তন । ব্যতিহারঃ পরাব-र्छ। देवत्मर्या विमर्या २ शि ह।। ইতি হেমচন্ত্ৰঃ ॥

্ব্যতীতঃ ত্রি অতীতঃ। গতঃ। যথা। অধ্যাত্তে ব্যতীতে তু गःकाञ्चि र्यमर छद्दे । शृदर्व बठामिक अर्युः शत्त्रमुः श्रान मानरगः।। ইতি তিথিতত্ত্ব ভীমপরাক্রমীয় ।।

ব্র্যতীপাতঃ পু॰ মহোৎপাতঃ॥ অপ্যানঃ। ইতি মেদিনী ॥ বি-। ভিনঃ। বি অতি পূর্ব বিচধা-। ক্ষম্ভাদি সপ্তবিংশতি যোগান্ত- ৰ্গত সপ্তদুশব্ৰেগ্ৰেই ৷ তত্ৰ, সৰ্ব-कर्म वर्जन यथा। निद्धः मः प्रितः **স**• বিষ্টি• ব্যতীপাতঞ্চ বৈধৃতি• । কেন্দ্ৰ স্বাপি শুকৈ হী 'ন॰ পা-প্লাহ মপি বুর্ক্তমেৎ।। পরিষ্স্য ত্যজেদর্দ্ধ শুভকর্ম ততঃ পর । গণ্ড ব্যাঘাত্ৰোঃ ৰট্চ নব হৰ্ষণ বজুষোঃ।। বৈষ্তি ব্যতীপাতে চ সমস্ত্র পরিবর্জবেৎ। 🛊। অ-স্যপ্রতিপ্রস্ব মাহ ভীমপরাক্র-त्य । न विषय् । नवा शरका न ব্যতীপাত বৈধৃতী। চন্দ্র তারা বলে প্রাপ্তে দোরা গছন্তাসণ সুখাঃ ।। নবম্যঙ্গারকো বিষ্টিঃ শনৈশ্চর দিন তথা। ব্যতীপা-তো ন দুব্যেচ্চ ষদ্যাৰ্কো দক্ষি-পে স্থিতঃ।। যদি বিষ্টি ব্যক্তীপা-তৌ দিন**ং ধাগ্যন্তভ**ুভবেৎ। হন্যতে ২মৃতযোগেন ভাস্করেণ তমো যথা।। ইতি জ্যোত্নিস্তত্ত্ব॰ ।। ৩এ জাত ফল । কঠোর-বাক্যঃ পিশুন স্বভাৰো গদাতু-রো মাতৃহিতো মনুষ্যঃ । পরস্য কাৰ্য্যে ক্বন্ত পৃক্ষপাতো ৰস্য প্ল--সুতৌ ব্যক্তিপাত ৰোগঃ ম ইছি কোষ্ঠীপ্রদীপঃ ॥ 🐠 ॥ পারিভা-ভাষিকযোগবিশেষঃ। यथा वृश्- ॥

गत्नक्र अवशिक्ष इतिश्रामा नि गत्नक् म्ख्य अवशिक्ष इति गात्नक् ब्रिशीणां में के के एक ।। ज्वा गमामान समा प्राप्त का ।। वक्षे एक । मध्याक्षिम् व्यक्तिशां एक वा र ति क्षा मूर्या वा । मृत्या का का जू का इता । मृत्या का का वा वी हा द्वः ।। हे कि का या निक्का की का विका क्रांश या । क्षा का का नि। मध्यम् थि। हे जा नि। हे कि वा क्रांक्ष १।

ব্যত্যয়ং পু• ব্যতিক্রমং। তৎ-পর্যায়ঃ। ব্যত্যাসঃ ২ বিপর্যা-সঃ এরিপর্য্যয়ঃ ৪। ইত্যমরঃ॥ ব্যক্ত্যাসঃ পু• বিপর্যয়ঃ। ইত্য-মরঃ।।

वाथ व म ७ मूं १ थे। जिला।

जिरा देशिक विकास कर । पूरथ- मूर्श्वान् ज्वर । जानः कर्णनः
। व वाशा म वाथवि । ७ वाथएक लाकः मूर्श्वान् मन् ज्वरि ।

कर्णा विक्ति विजित्र विकार्थः। कि

किन्तु मूर्थ ज्य ज्वन्या विकि

शिका जिरा ज्वनः ज्यक्तनः

मिला हः। मूर्थ ज्य ज्वर ज्वर हेलि

लिक मूह्य अत्या महनच मूर-॥ পাদন মিতি সোবিসভূতঃ। रें कि मूर्गामार्गाः ।। ব্যখকঃ ত্রি ব্যথাকারী। যথা। ञ्जूरेशामे बाथकंख गामर्मेन्श्र-गक्रसमः। ইতি हिमहत्तः॥ ব্যথা জ্রী দুঃখণ। ইত্যমরঃ।। ব্যথিতঃ ত্রি পীডিতঃ। দুঃখিতঃ । যথা। ততঃ প্রব্যথিতো বাণো দুহিতুঃ শ্রুত দূষণঃ। স্বরিতঃ ক-ন্যকাগার প্রাপ্তো ২ জাকীৎ যদূদ্বহ ।। ইতি প্রীভাগবতে वानगूटक ७२ व्यथायः ॥ ব্যধ ঔ য তাডে। ইতি কবিকল-জনং।। য বিধ্যতি শত্ত্ব শূরঃ। ঔ অব্যাৎসীৎা কশ্চিত্ৰ দি-ভূ তস্যানিকারীভূত । যকারসা वार्ध वंकारता वर्गाः जमाल जू দন্ত্য ইতি মন্বানঃ সমি বিবাৎ-मठीजार। इठि मुगामामः॥ ব্যধঃ পুঁ বৈষঃ। ইত্যমরঃ ॥ वाधाः भू किन् खनः यथा । ব্যধ্যন্ত প্রতিকাষঃ স্যাজীবা-জ্যা ভারব গুলা ইতি ত্রিকী-**अत्मरः ॥** वाधः भू क्रायः। ७६ गरी।यः। मुद्रधः २ विश्रथः ७ कमश्र । 8 की-

शबहार । इंडामद्रहा ,ব্যপাক ক্ষয়ে। ইতি কবিকল্পড়ামঃ । অক্তন্তাদ্যযুক্তঃ। ক ব্যাপ্য-তি। ইতি দুর্গাদাসঃ ।। ব্যপদেশঃ পু॰ কপটঃ হিতি ह्मान्यः।। नाम। इंडि बिका-े ख्टन्यः ॥ वाकाविट्नंबः। यथा। ব্যাজেনাত্মাভিলাসোজি ব্যপ-(मन हेडीयांटा । हेड्राब्ब्वनी-लम्बिः ॥ ব্যপাক্কতিঃ স্ত্রী অপহ্নরঃ। অস্বী-কারঃ। বি অপ আও পূর্ব রুধা-তোঃ ক্তি প্রত্যযেন নিষ্পন্ন।।। ব্যভিচারঃ পু॰ কদাচারঃ।ভু-ফীচারঃ। যথা। ব্যভিচারাজু ভর্কুঃ ক্রী লোকে প্রাপ্নোতি নি-ন্দ্যতা । শৃগালযোনি প্রাপ্নো-তি পাপরোগৈশ্চ পীড়াতে ৷৷ े हेिंगानरवं 🕻 अशायः ॥ 🟶 ॥ দোষ্বিশেষঃ। তদ্য লক্ষ্ণ । সাধ্যতাবচ্ছেদকাবচ্ছিন্ন প্রতি-বৈাগিতাকাভাববৰ্ত্তিস্থ হৈ 'ব্যভিচারঃ ৷ ইতি ব্যধিকরণ ধ-শাৰ্ষিকাজাৰ চিন্তামণিঃ ৷৷ স পত্রিবিধঃ। সাধারণঃ ১ অসাধা-व्रवश्च अमूलमण्डाती ७। उज विश्वकृतिष्य माधात्रभष्य। भर्व

गर्भकत्रात्र्खच नम्। भाष्र्यकः। ্ব্যাপ্তি গ্রহানুকুলৈকধর্ম্যাপস-হাক্লাভাবে|প্রক্রসন্ধেত্বভিমকে| **২**ৰুপস**ং**মৰ্কাঃ ৷ ইতি সৰ্যভি-ক্ষার চিন্তামূলিঃ গ ব্যভিচারি ক্লী চতুন্ত্রিশৎপ্রকার **শৃসারভাববিদ্যেবঃ। তদাকা।** निर्दाहः ३ श्लांबिः २ मका 🕫 श्रामुका ८ वामः ८ व्यापः ७ ज्यान-मा १ देवना ৮ ठिखा > **रबाह**ः ৩ স্থৃতিঃ ১১ শৃ্তিঃ ১২ **জীজা** ১৩ চপ্ৰকাষ্ট্ৰপ্ৰকৃষ্ঠ ৯৫ আ-त्वकः ३७ कड्डा २१ . गर्वः ३৮ বিষাদঃ ১৯ ঔৎশুক্রা ২০ নি-্রা ২৯ জ্পন্মরঃ ২২ লুপ্তঃ ২৩ निह्नांसः २४ अभवः २४ व्यवहिः শ্বঃ ২৬ উত্ৰতা ২৭ মৃতিঃ ২৮ উপল্ডঃ ২৯ ব্যাধিং ৩০ ট্রিয়া **ए३ ७**১ सर्वे ७६ क्वांग**३ ७**७ বিতৃক্ঃ ৩৪। ইতি হেমচক্রা ব্যক্তিচারিগ্রী স্ত্রী পরপুরুষগামি-নী। ৰয়া। হৃতাধিকারা শ্লেল-নাংগ্রিওমারোপসেবিনী । প্র-·রিভূতা সংগ্ৰায়াণ ৰাষ্ট্ৰেয়া-क्षिमातिनी ।। त्यायः त्लोक् म-দৌ জাসাং গৰ্মান্ড ভেড়াংগি-तः। शावकः सर्वक्रक्तिः (वशा)

বৈ বোরিতে৷ হতঃ বিহুছি তু গ্রীসায়ান্যরিষয় গ্রান্যভিচারা-দৃতৌ শুদ্ধি গৰ্জে জাগো বিধী-ষতে। গর্ত্ত জর্ত্বধে ভাসাণ তথা মহতি পাতকে ৷৷ ইতি গাৰুডে २० ज्यानिक ।। क्षेत्रा क्ष्माः शति-ত্যাপাদি स्था। হারীতঃ। গর্ভি-ণী মধোবর্গগা **শিষ্যসূত**গামিনী শাপ ব্যসনাস্ক্রাণ ধনধান্য ক্ষয कती वर्कत्व । यमः । यक्तंन-গা হি বা-নারী তস্যা স্থ্যাগো বি-शीयटा न टिव श्रीवशःकार्या ন চৈবাঙ্গবিধোজনং ৷ বৃহস্পতিঃ । হীনবর্ণোপভুক্তা য়া ত্যাজ্যা ব-খ্যাপি বা জবেৎ 1 বিশেষ্যতি নিতাকরাকা স্ভৃতিঃ বাদাণ ক্ল-जिब विभाशकार्याम्भूद्रात मन-ভাঃ। অপ্রজা দ্বা বিশুকান্তি প্রা-**যদিচান্তন নেচারাঃ ॥ ঐত**ৎ ব-নাৎকান্ত বিনৰ ন'ইভূচৰাহতত্ত্বণ ll # lt তস্যায় পুৰাকৰ্মাণি নিক-वानिः वन्यनिष्कातिष्ण वर्षा । र्तियणीय श्वासंबद्धाणाया-ति। तास्यानवाम भूगामि गूरुः তান্যপারুম্বতি বিক্ষলামাস তীমাণ হি পুণ্যকারি তথা শুড়ভ ।। युरुषानुस्था अनुसा अर्जुः

ग्रामीक

শব্দদিত প্রত্যবেদ ব্যবহাতোঃ

श्रामग्रेखी बट्टिंग । श्रद्भाव ॥ प्रमाद उद्शिष्ठः क्ट्यः मण्यः नर्छि ।। छर्जुः भवन शान-যক্তী নান্যগামিনী। ইতি দায **.जद्•ा।** अ अस्ति । त ব্যভিচারী ত্রি ব্যভিচারবিশিষ্টঃ । বি অভি পূৰ্ব চরধাতো পিন্ প্রত্যবেন নিস্পন্নঃ 🔢 🦈 🦈 ব্যয় ত্ক গতৌ । ত্যালে । ইতি কবিকৰক্ৰমঃ। ব্যয়ষ্তি। ইতি मृशीमाशः ॥ ৰ্য্য ঞ পতৌ। ইভিকবিকল্প-অন্যঃ॥ এ ব্যষ্তি ব্যব্তে। ইতি पूर्वाषामः ॥ **बार्यः क**ं नृषि । ইতি: करिक्न-জ্ঞা। অভস্পিযুক্তঃ। ক ব্যা-यवि । नूषि ध्यत्रात् । देखि मू-श्रीक्षांत्रः ॥ का प्रकार । वर्ष राय॰ की लगा**र का करारा** যথা লিম খন ভূতি বনু পুত্ৰ भक्त कलकका। मत्न शर्म का-र्याम राज्यो जानम ब्रामक ॥ रेषि जाणिखंदा।। ব্যয়ঃ পু• অ**র্থয়নাশর্মনঃ। বিত্ত**-সমুৎসর্গর। ধরচ ইতি:পারস্য-ভাষা। ইতি শব্দরত্নারলী।।

ব্যয়িতঃ ুত্তি ুক্তব্যখঃ ুখ্যুষ-

कथाजारमन हानिभामः॥ वारी कि वारमुक्त । यथा। ज-বিণ পরিমিত মধিকব্যয়িনণ জন মাঙ্গলীঙ্গরুতে। কীণাঞ্চ-मित शीनञ्चन जवनायाः ज-नीनायाः ॥ रेजुः छिः ॥ ব্যর্থ তি নির্থক তেৎপর্য্যা-ষঃ মোষ ২ বিফল ৩ 1 ইতি किंगिधतः ॥ ব্যন্ত্রীক॰ ক্লী পীডার্থঃ। ইত্য-মরঃ।। গভিবিপর্য্য ।। কাম-জাপরাধঃ। ইতি তটীকাষাণ **खत्रजः ॥ यथा । क्रुं टेन**व वि-জানাতি গরেণাপত্নত কচিৎ ৷ জন্মতি ।। ব্যলীকেষু নিবৃত্তে। ষঃ পর্ব্যেতি ক্তনিশ্চষঃ। নি-ভাঞ ধৃতিমান্ কিঞ্চিৎ পরে।-क्लिन न रु किल्ले ।। अजूका-লৈভিগচ্ছেত অপত্যাৰ্থণ বকাণ ত্রিয় । সদৃশান্ত নরা ভজে মন कर्म भन्नामनाः॥ इछि वातारश বোনিগর্তুমোকণ নামাধ্যযঃ।। **जिथा । जिक् गिंग । देवन-**कार। ইতি क्लिमी॥ जनताथः

। ইতি ट्रिंगच्यः ॥ श्रेजात्रग ।

देकि रुका गूध भ क्व क्रिका गाः ব্যলীকঃ পুণ ক্ষেত্রঃ হৈছি মে-मिनी ॥ ७९११ कार । विकार रे. মুট্প্রভঃ ও কাসকেলিঃ ৪ বিদৃ-यकः ६ शीर्रंकिनः ७ शीर्रंपर्णः १ अक्लिक ৮ ছिन्तः २ विषे ३० । ইতি ত্রিকাপ্রধ্যেষঃ।। यानकान ही दिसागः। श्रीनक्षा - অক্স্যান্তরকরণ । বাকিকাটা ইতি ভাষা। য**ণা অবে বা্লে দীলাৰতি মতিমতি ক্ৰহি পৰি**-তান্, বিপক্ষাক্তিশপ্রিনব্তি শতাকীদশ-দশ। শভোগেতা-নেতানযুক্ত বিযুক্তা শচাপি বদ स्मिनि ग्रांक र्क् ग्रांक ग्रांकन মার্কেসি দুশকা ৷৷ ইতি জীকা-ৰভী াা 😁 वात्किना वि क्रुनादकनानः।

. বিযোগিতঃ । হীনিতঃ ।। ব্যবক-नटन क्री। यथा। अर्थ मह्मिङ ব্যবক্ষীতিষোঃ করণ সূত্র? সৃত্যা-र्कः । कार्याः क्यामू एकमरकाथ वाक (बारमा यथाञ्चानक मन्छ-র বান ইতি লীলাবতী 🏗 😁 ব্যৰচ্ছিম কি ভিন্ন । শ্ৰণা। ভিত্ৰক ব্যবছিদ। বিশেষিতঃ। ইতি তিকাওলেশ্বঃ ।

वायद्रक्रमः अः वाधमूकिः। ইতি स्रमाज्याः ॥ शृथकेष्य ॥ ব্যৰ্থা জী ক্যবধান। ইত্যমরঃ।। वाज्यक्षानिः ^तज्ञीिष्याच्चापंनः (७९-পর্য্যায়ঃ। তিরোধান• ২ অন্ত-किः ७ जार्यात्रनः । इंगनः ७ ব্যবধা ৬ অন্তৰ্জা ৭ পিথান ৮ স্থান ৯। ইভি হেমচন্দ্রঃ॥ ব্যবধিঃ ১০ অপিধান ১১১ ইতি শব্দরত্মাবলী।।

ব্যবধাৰকঃ ত্ৰি ব্যবধানকৰ্ত্ত। । ৰ্থা। স্বৰ্গকানো ৰজেত সপ্ত-দিশাররা অক্সিকামাঃ সত্র মুপা-সীরন্নিতি বেদে কামিনাণ কর্তৃ-দ্বাবগাতে উদমুপপ্ত্যা ঋদি খ্যাপারান্তর্ভাবৈ। ল ব্যবধাযকঃ ा इंडि थायन्हिख दिदकः॥ ব্যবধিঃ পু• ব্যবধান•। ইতি শব্দ-ব্ৰস্থাবলী ।

ব্যবসাম ু শু েউপজীবিকা। পৌলা ইভি পারস্যম্ভাষা। যথা १ क्रम्बालि माम नीक्रिका राव-সাৰ মিত ভাটা। ক্রেল পুন স্ত-रहत नामस्विद्ध मन्नि विठ॰ ॥ इंडि स्टिन्स्ट्रेन २ शति-(क्रमंद्रभ अमिहन जो हाट्या वि-অপঃ ব্রীদাত্র্জি ভাসাণ চত্

र्थना । यष्थरना वावमायक का-ম শ্চাফ গুণঃ স্ফুতঃ।। ইতি চা-ণক্য ।। অৰুষ্ঠান । ইতি ব্যব-मायि भकार्थ मर्गनाथ ११ नि-*****हरः । स्था । त्रावनायाच्यिकः वृश्वि दादकश अक्रममन 1 वह-শাৰ্থা হনভাশ্চ বুদ্ধবো হব্য-বসাষিনা ।। ইতি ভগবদ্মীতা-ষা॰ ২ অধ্যায়ঃ ।। ব্যবসায়াজ্ম-কেতি। ইহ ঈশ্বরারাধন লক্ষ-ণে কর্মযোগে ব্যবসাযাত্মিকা পরমেশ্বর ভক্ত্যৈব ধ্রুবণ ত্ররি-ষ্যামীতি নিশ্চ্যাগ্মিকা একৈব এক নিষ্ঠেব বৃদ্ধি ভবিতি। অ-ব্যবসাযিনা মীশ্বরারাধন বহি-মু খানা কামিনা কামনান-স্ত্যাদনস্তা স্তত্তাপি কর্মকল গু-ণফলত্বাদি প্রকার ভেদাদ্বস্পা-খাশ্চ বুদ্ধযো ভবন্তি। ইতি ত-फीका या॰ यागी ॥ विकुः। यथा । ব্যবসায়ে। ব্যবস্থানঃ সন্থানঃ श्वानामा अवः। ইতি তস্য সহ-मुनाम्ट्राज्याः

ব্যবসাধী ত্রি ব্যবসামবিশিষ্টঃ
। বাণিজ্যকারকঃ। যথা। কো
২তিভারঃ সমর্থানাং কিং দূরং
ব্যবসাধিনাং। কো বিদেশঃ স

বিদ্যানা কঃ পরঃ প্রিমবাদি-নাণা ইতি চাণক্যণা অনুষ্ঠাতা । সথা। অক্তেভ্যো গ্রন্থিনঃ প্রে-ষ্ঠা অস্থিত্যে ধারিনো বরাঃ। ধারিভ্যো জ্ঞানিনঃ শ্রেষ্ঠা জ্ঞা-নিভ্যো ব্যবসায়িনঃ 👪 ইতি मानत्त ३२ ज्यशायः ॥ जल्छ-ভ্যাইতি উভবোঃ প্রশাসে সতি অন্যতরস্যাতিশ্যবিক্ষ-যা শ্রেষ্ঠতেতী ফিনে বিধানা-.দীষদধ্যষন। সজ্ঞাঃ তেভ্যা স-ম গ্রাহ্মাধ্যেতারঃ শ্রেষ্ঠাঃ। তে-শ্রেষ্ঠাঃ। তেন গ্রন্থিনঃ পঠিতবি-স্মৃতগ্রন্থা বে।দ্বব্যাঃ। ধারিভ্যো रशीज अस्थि खाः श्रक्तिः তেভ্যো ২নুগ্রাতারঃ। ইতি ত-ডীকাষাং সমুকভটঃ ম

ব্যবসিতঃ ত্রি প্রতারিতঃ। ইতি ভূরিপ্রযোগঃ। অনুষ্ঠিতঃ।। নি-শ্চিতঃ। ইতি ব্যবসাধি ব্যবসা-য শব্দার্থ দর্শনাৎ।।

ব্যবস্থা স্ত্রী শাস্ত্রনিকপিতবিধিঃ
। যথা। দীর্মকাল ব্রক্চর্য্যা
ধারণঞ্চ কমগুলোঃ। দেবরেণ
সুতোৎপত্তি দিব্রকন্যা প্রদীযতে। ইত্যাদীন্যভিধান এতা-

নি লোক গুপ্তার্থণ কলে রাদৌ
মহান্থাভিঃ । নিবর্তিতানি কর্মাণি ব্যবস্থা, পূর্বকণ কুইবঃ ।।
ইত্যুদ্ধাহতত্ত্ব হেমাজি পরাশরভাষ্যযো রাদিপুরাণণ ।।

वावश्वाः पूर् विष्टः। यथा। वावगाया वावश्वाः महानः हानमा अवः हिल लगा मह-मुनाम उडाखाः ॥ वावश्विः जी। यथा। जालूर्वणं वावहानः विष्या (प्राण्यः न विष्युद्धः हिः अकः भवः ॥ हेल्यां व्यावश्वां स्व

ব্যবস্থিতঃ ত্রি বিষিপ্রক্ষিতঃ।
ব্যবস্থাপিতঃ। যথা। অব ব্যবৃহ্বিতান্ দৃক্টা থার্ত্রবাক্টান্ কপিধজঃ। প্রবৃত্তে শক্ত সম্পাতে
বনু ক্লাম্য পাওবং।। ইতি শ্রীভগবলগীতায়া > অধ্যায়ঃ।।
ব্যবহর্তা পু॰ ব্যবহারকর্তা।
প্রাডিরাক ইতি যাবং। যথা।

खेलप्रक्रिशानानख्यः मङ्गाना मर्षि श्रेट्यान्यः कमा क्रिया मामिष्ठि भद्रामणं कक्ष्यमा श्र-क्याकविष्ठमा योगीश्वद्रम् या-दशक्षिप्रक्रमान्धिशाना । या-

वर्षु मयक्षाणावाक न वावरा-রপাদত্ব নিভি হিত । ইভি নি-তাকরাঘা ব্যবহারনাতৃকা ॥ कायग्रामाथिवित्मयक ॥ ব্যবহারঃ পু•াবিবাদঃ৷ ইত্য-अतः १। वृष्टलकः ॥ न्यायः ॥ भनः ॥ दिण्या देखि मिनी भक्तप्रवावत्वा ॥ का। व्यथ वा-বহার দর্শন । তত্র যাক্তবস্কাঃ। স্থৃত্যাচার ব্যপেত্মে মার্গোণ-ষর্ষিতঃ পরেঃ। আবেদযতি চে-ভাজি ব্যব**হার**পদ হি তৎ ॥ শৃতি সদাচার বহিতৃতেন বর্গ-না **পরে রর্ঘতঃ শরীরতো** বাগী-ডিভ শ্চেম্রাজনি নিবেদযেত্ত-षावराक्ष पर्यनिर्मानः १ किनिराव मिकि देविकाः। आद्यमयि ट्रिकिंग्डिसन व्ययः विवादमाथा-পন রাজ্ঞান কর্তব্য মিতি শূল-शानि वहानदशभाषाभाः। ती खीि बातशात्रश्रामनंक भर्रः। তথা চ বৃহস্পতিঃ। রাজা কা-र्गावि मन्भरमाद आष्ट्रिवारक। रथका विकाशका आ जियाक न क्लगार मध्य। विवास शृष्ट्ि প্রস্থা প্রতিপন্ন তথেব চা প্রিয পূৰ্বণ প্ৰাথদতি প্ৰাড়িবাক স্তডঃ

मुङ्धा काळायनः । तारहाता-শ্রিত প্রশা পুচ্চতি প্রাডিতি স্থি-তিঃ। বিবেচযুক্তি য় স্তান্মন্ প্রা-ড়িবাক, স্তব্ধ সূত্রঃ ৷৷ অধিন॰ প্রতিভাষাতে কীদুশীপ্রতাথিন প্রতি চতবাপি কীদৃশ মৃত্র ই-তিপৃক্ততীতিপ্ৰাট্ শ্ৰুষাচ যুক্তা-যুক্তত্বন জয় পরাজ্য বারি-বিনক্তি ইতি বিবাকঃ প্রাট্ডাস विवाकत्कि श्रीष्ट्रवाकः ॥ 🛊 ॥ কাত্যায়নঃ। সপ্রাড্বিবাকঃ সামা-ত্যঃ সত্রাহ্মণ পুরোহিতঃ। স্বয়ণ সারাজা চিনুমাত্তেষাংজয় পরা-ज्यो।। यहा कार्यादशाकाः न পশ্যেৎ কার্যনির্বণ। তদা মি-যুঞ্জ্যাদিদাংসং ব্রাহ্মণং বেদপা-त्रगः ॥ यपि विद्या न विदान् मा क्वियं ठक योक्रस् । বৈশ্যমা ধর্মশাস্ত্রজ্ঞ শুডা যত্নে-न वर्ष्क्रत्य ।। म विनीयत्वभः। মনুঃ। জাতিমাত্তোপজীৰী বা कामः माषु मानुक्ताः । सम् थः বক্তা নৃপতে নঁতু শূজঃ কদাচন ॥ নাধ্যাপ্যতি নাধীতে স জা-ন্ধণক্রবঃ স্তঃ।। ব্যাসঃ। ছিজ।-न् विश्व यः शरमा क्रायानि ব্ৰলৈঃ সহ।তস্য প্ৰকুভাতে রা-

ব্যবহা জाः तनः कायन्त्र ननाञ्चि॥ यः .मृट्फा देविषिकः धर्माः न्यार्जः वा ভাষতে यनि। जमा नथः त मर्द्रम् मुक्की टेइंब एडस्टबर् । मूश्नीत्नाथि विकः भूतका न मृ-জে। বিজিতেজিয়ং ।। দুষ্ঠাণ গাণ কঃ পরিত্যজ্যার্চবেৎ শীলবতীণ খরী ।। এ। ব্যবহারমাহ কাত্যা-यनः। वि नानादर्श २व जल्महरू হরণ হার উচ্যতে। নানাসন্দে-হ হরণাদ্যবহার ইতি হিতি%।। नान। विवास विश्वयः मः भूटय। हि-যতে খনেন ইতি ব্যবহারঃ। ভা-ষোত্তরক্রিষা নির্ণাষ্ক্রত্ব ব্যবহা-রম্বং। তথা চ বৃহস্পতিঃ। অজ্ঞা-ন তিমিরোপেতান্ সন্দেহ পট-वार्षिणान्। निताययान् यः अक्र-তে শাস্ত্ৰাঞ্জন শলাক্ষা ৷৷ ইহ কীর্তি॰ রাজপূজাণ লভতে সূদা-ভিঞ্চ সঃ। তত্মাৎ সংশব মূঢানাং কর্ত্তব্যশ্চ বিনির্ণয়ঃ ৷৷ অতএব না-রদঃা অনিষুক্তো নিযুক্তো বা শাস্ত্রভেল বন্ধু মহতি। দৈবী গবা-চংস বদতি কংশান্ত মুপজীবতি ॥ देनवी॰ स्मवानुभठा॰ ॥ 🟶 ॥ ४-র্মাশান্ত্রযোক্ত বিরোধে লোক ব্য-वहात् अवामत्रनीयः। ইত্যাহ न

এব। ধর্মশাস্ত্র বিরোধে তু যুক্তি-যুক্তে। বিধিঃ স্মৃত্তঃ। ব্যবহারো-পি বলবান্ ধর্ম স্তেনারহীয়তে ' 11 व्यवशिषटं व्यवगगाट हि ११-তাবিত্যসাদ্ধাকোঃ। অত্থব বৃ-হস্পতিঃ। কেবলং শাস্ত্র মাঞ্লিত্য न कर्खद्या दिनिश्यः। युक्तिशीन বিচারে তু ধর্ম হানিঃ প্রজাযতে॥ ষুক্তি নামুঃ। স চ লোক ব্যুর-হার ইতি ব্যবহারমাতৃকা গ্রাড্ড **७.५**व काणायनः । अन भीन ববে। বৃত্ত বিভব্তি র্থিষ্টিত । विविद्धः मार्थः क्रिशद्यः क्रम वृदेक तथिष्ठिङ । সদ ইতি শেষঃ । কাত্যাৰনঃ। স্ভোনারশা, র-জব্য ধর্মার্থ সহিত্ত বটঃ ব্ ণোতি যদি নো রাজা স্যাত্ मञा समान्यः॥ मञाः मञायाः माधः ॥ 🐞 ॥ ज्याविशानाहं या-জ্ঞবন্ধ্যঃ । শ্রুতাধ্যয়নসম্পন্ধাঃ क्कीनाः मञ्जातिमः। द्रांकः। मञ्जूमाः कार्याः भटको मिटक ह (स नर्नाः ॥ व्यकाश्वरनन्भनः थर्मणाञ्चकाः। जनीनाः मक्दापि দোষশূন্য মাতা পিতৃব শ পর্মশূ-রাকাঃ। এবস্থতাঃ সভাসদঃ স-ভাষা যথা সীদন্তি উপবিশন্তি

ज्या पान यान महकारें बाळा कर्ववाः॥ भा ज्याविशावशासन जुरतः तजात्र साह सन्ः। यत्रिन् प्रत्य निजीमित्र विश्वा द्वातिम-স্তবঃ। রাজ্যঃ প্রতিক্রতে। বিদান ব্ৰাপণ স্তাং সভাং বিদুঃ ।। বিদ্বৎ সংহতাবপি সভাপ্র্যায় পরিষ-क्र्य गांच गवर । देव दिएए। देश-তুক স্তক্ত্র নিরুক্তো ধর্মাপাঠকঃ। ब्य निवासीयः शूर्व शतिय ना क्लभावद्भाः ॥ देखविमाः जिदनम পারগঃ। देशजूकः मास् क्रियार-श्राती। भारत्यतामद्रिनिंग्दः। मज সদসি মুজে চা অত্ৰ ভা দীপ্তিঃ। প্রকাশো জ্ঞান মিতি যাবৎ তথা मह माका ९ शतकात्रमा वा वर्छ-তে ইতি সভা ।। কাত্যাযনঃ। দিবসুসাফিন ভাগ- মুক্ত্বা ভাগ-क्षयः ज्रुष्य । म कारला वार्वशती-ণা॰ শাস্ত্রদুষ্টঃ পরঃ স্তঃ।। অ-केमगामाणि शहरः। ভाগव-य॰ প্রহর্তম পর্যান্তঃ। মনুঃ। ४-न्यामन स्थित्रीय महीलाकः मगी-হিতঃ ৷ প্রণমা দোকপালেভাঃ कार्यामर्गन मातए १॥ मनु ना-त्रम (दोशायन सदीकाः॥ भारम २ श्रमाना कर्वाद्वः शाहः नाकिन

मृष्ड्छि। शामः मञाममः मदान् পাদো রাজান মৃচ্ছিত। রাজা ভ বতানেনাম্ভ সূচাক্তেচ সভাসদঃ। এনো গচ্ছতি কর্ত্তার নিন্দার্ছে। ষত্র নিশ্যতে।। কর্ত্তার বাদিন। त्रोजनमः वित्रविकनतः। अत्ननाः নিস্পাপঃ।াঞ্চা অর্থিত্ব মাহতু র্ব্যা-স নারদৌ। যস্য চাভাষিকা পী-ডা কার্য্যণ বাপ্যধিক ভবেৎ। ত-স্যার্থিভাবো দাতব্যো ন ষঃ পূর্ব॰ निर्वारय ।। चरें व शृर्वे श्राप्त ভবেত্তস্য ইতি কাত্যাৰ্যনীৰে তৃ-তীযপাদঃ। न यः পূর্ব निद्रम्दय-দিতি তস্যোত্তরঃ পক্ষ ইভি শেবঃ ৷ স যঃ পূৰ্ব মিতি পাঠে যঃ প্ৰথমণ निद्यप्रिक न शूर्ववामीकार्यः । বৃহস্পতিঃ। অহণগুৰিকবা বা-তাবর্থি প্রত্যর্থিনৌ ষদা। বাদে। বৰ্ণানুপূৰ্বেণ গ্ৰাহ্যঃ পীড়া মবেক্য व।।। यज बाद्यव वमुं अत्छ। মদাক্য শৃণু ইতি তত্ৰ ভ্ৰান্মণা-**मि क्राट्य वा शिक्त्री जाम गर्ने का** वादमा आरूः ॥ 🐞 ॥ श्रयः विवा-দাশক্তৌ প্রতিনিধি মাহ নারদঃ । অথিনা সন্মিযুক্তো বা প্রত্যর্থি প্রহিতো ২ शि या। या यम्ग्रादर्थ विवमटक करमा अंग भन्नाकरमे ॥

वावश **ज्या वीहि श्रेलियाहिताः । वृह-ण्णा**ि त्रिण । अधिक् वारम नियु-क्रम्ण मत्मे मन्म्यातिकीर्खिएको । यख्ड सामााभूगाद भूगाः श्रीनि॰ वादम १थ वा क्य ।। काळायनः । मनुगमात्रां एउटच शतमाता-जिमबंदन । जञका जक्दन देहर कनगर्दे पृष्ट ।। शाक्र का कृष्टे-করণে নৃপজোহে তথৈব চ। श्र-তিবাদী ন দাতব্যঃ কৰ্ত্ত৷ তু বিৰ-प्तर **यग• ॥ ७ ॥ जनकी** প্রভৃতী-ना॰ প্রতিনিধি মাহ ব্যাসঃ। क्ल-ন্ত্ৰী বালকোমত জডাৰ্ভানাঞ্চ বান্ধবাঃ । পূর্বপক্ষোত্তরে জাযু নিযুক্তো ভৃতক স্তথা।। 🟶 ॥ ভ্রা-ত্রাদীরতস্য পক্ষস্থিতস্য দণ্ডনীয-ष गाह नात्रमः। या न ज्ञाना शिषा वाशि न भूत्वा न निर्धा-জিতঃ। পরার্থবাদী দখ্যঃ স্যাৎ वावशादायु विकवन् ॥ विकवन् विक्रफा कं क्या 🏶 ॥ नात्रमः । নির্বেফুকামে। রোগার্তে। বিযক্ ৰ্ব্যসনে স্থিতঃ। অভিযুক্ত স্তথা-ন্যেন রাজকর্মোদ্যত স্তথা ৷৷ গবা॰ প্রচারে গোপালাঃ শস্য-वर्षा क्रमीवलाः भिन्निम महाभि ভৎকালে আযুধীযালচ বিগ্ৰহে।।

ज्थाश्वावशातकः मृत्जो मातना-মুখো এতী। বিবশন্ত के की ल-'शा भटेहजामा स्टरम् १३ । । भी-ৰেষ্টুকানো বিৰাহপ্ৰবৃত্তঃ ব অ-ब्यान वामाल्यांच । जञ्जालकः ৰহারঃ ফোডশবর্ষাবরব্যক্তঃ 1 **७**९कारमः विषासित्रमाश्चिषे-र्वाखकात्मः। क्रकं वियमशान छिनश्चयानम्बान्तः छेख्यशीनिया मारमधा नार्यात्रीका धेरारे প্রাপ্তাম বাদিনা নিমেদিতা-নিভি শেষঃ ম 🛊 🛚 বভিষ্কী অভিবোধ মনিস্তীৰ্য নৈন শ্বী-তাভিযোজনেৎ : অভিযুক্ত্য স্ব-মৃত্র ৰদত্বা ভাষা কাদিৰ মেউ वाजित्वाभागुश्यमं दक्य तिवीषा-खरावः म त्याजस्य । मू गणम् त ক্ষ ব্যবহারাসম্বাহ। নারছোপি । পূৰ্বাদ পরিভাজা যোহনা মা-लबंदछ भूनः । वाष मध्यानमान् **ट्या**र्या शैनवामी न देव नक्षी। হীনবাদীত্যনেন দপ্তত্তেজান-তু প্রকৃত্যর্থ দ্বীনতা সন্মধা ছ-मागरहः ॥ ।। भाइरहा थिछि-প্রাসব সাহ সএব গ'লব্যাভাপ্র-ত্যভিষোগঞ্চ কলছে: সাহমেবুট १। वाक्शानस्य लखनि अशस्त्र

म् हो स्था भूत मेर्गेशालेगालू-कें नाम हैं रेडानेश्वाशिक वार्य छाठा जित्यांक क्यार । ज-बाठ गृह लेखि । जाक खेल सा-কোশ স্থাতিক প্রতিতাত্বন। হয়তভাষিনটেক্র নাসরাধী ভ र्वम्यः ॥ प्राटिन वाक्याक्रमा म-छेनाइकिरमाः अङ्ग्लीजिस्याता अर्थका जित्यार गिन न तमायः। वेजु शृबेभाषेगद्गरामसङ नियल महार्वे मार्गिक कि विकास लानान्य कारी भूदं कु विनया शक्ताः कि देशि मात्रम विचन ए९ नृबंदिनकिया नजना विक वाक्या-मृत्याम भागकर्गा शि यत्रमं ७वि-धामक शिक्षाः युगश्य में श्वर्यत्ति অধিক মুটাভাৰ মাহ সত্ৰব ৷ পা-क्रा वार्मि देवेव यूगर्गर जिल्ली क्खरमाः। विहंगवर क्षेत्र मार्जाज विमन्धामार मन खरगाँ।। विन-- (या मेखा अवस मट्डा २४ मनल-রাবে বৃদ্ধি ক্লডঃ পীডিডছাদিডি ভাষাকাং প্রভাভিষ্যেশঃ কার্য্য একা প্রভাব কানসোভরবেন কু গপদনেক ব্যবহারীপত্তি দৈয়ে-जाकावार ॥ के भा जडालाउः কভিষ্য ক্ষাই ক্ষাত্য ছিলঃ। তথি

क्ट थिए नीखि वामस्याधास वानित्माः । अ तनिर्द्धा निन्त्राप्त-एक प्रकार स्कार जन्म वा প্রতিভব্নতি তৎকার্য্যে ত্রুছব-ভি ইতি প্রতিভূ লয়কঃ। রাদ-যোগ্যঃ বিৰাদ কুলস্য সাধিতৰ-नामिक्रानग्राः मधनानग्रः ठ নঃ। বাঙ্গিনোঃ ভাষাৰাদিনঃ উ-তরবাদিনক া তথাচ মাজ্ঞৰ-ক্যঃা উভযোগ প্রতিভূ আহঃ ममर्थः कार्यानिर्भर्य । श्रीकिन्त-স্তৃতাবে চ রাজ্ঞা সংজ্ঞানী ত-(याः ॥ ताळा गः कशनः प्रथकृ-· न्याधिकत्र १० निर्वसम् कार्ट्य ४-্নাদি দানে রাজদক্তাদিয়াৎ ক্রা-যা শব্দমা পূর্ব নিপাকঃ। ভূতাঃ **जिक्**दका ताकनिशुक्कशा करा প্রত্যথী যদি কন্দিৎ কালং প্রা-র্থয়তে স লভতে স্বর্থী তু কাল व्यार्थयम् अर्थिष स्मन ताक्राभ-দিতি তেন কালে। ন প্রাপনীয়ঃ । उनार । প্রত্যথী बज्र जानः वाहः मक्षर् ध्वत क । व्यथिक था थ यस का जा अक्ट न शायत हो-यद्ञ ॥ कहिंद शकाशी-काक म-লভত্তে। বাজ্ঞরক্ষ্য েশাইন বেড-य भाक्ष्या लाजिमानामात्व जि-

या । विवामत्यक ममाध्य कारका रनाट्यक्या मृद्धा मार्म যা নারণ। গৌরত্র দোহা। অভি-শাংগা মহাপাতকাদিনা। অত্যবে ৰব্যন্তৰ। প্ৰিশা পৰান্তিৰাংচা-রিত্র বিবাদ বিষয় প্রাপ্তায়াণ দা-गा। यक विदारम व। अबू नमा अव উত্তর: দাপবেদিতি শূলপাণিঃ বিলেষয়ক্তিকাত্যায়নঃ। ক্যাৎ কার্য্য সমারত শির্ট্যাতেন বিনি-শ্চিতঃ ৷ তত্মান লভতে কাল খ-ভিযুক্তন্ত কালভাক্া আগবাস মাহ রুহস্পতিঃ। অভিযোক্তাপ্র-পদ্মৰ বক্তু ৰোৎসহতে যদি। कता कालः अमाठवाः कार्या म-कानूबागणः।।।।। चव। गि वित्य-यगिं व्यामः । त्राक टेमव क्रटी माय खित्रम् कारण यमा अरवध । ञ्रवधारकाश्रामार्काम च उरव म शक्ता क्षिकः। म क्रू मध्य वस्त्रा ংভিত্তজ্ঞানাজনৈব হতে দো-सः जाकिञ्चिः अक्रिशामत्वर्ी। देखरमान वर्षमान स्व मट्या मार्गा-हर छन्। अवश्र विक्रमण्डरण ক্লাজটদবিক দোষ্ট্য প্রমিত্তী ন তহুতিক্রামকো ২পরাখ্যতি জৈ-काफ छम् विकरमा मत्या क्यी छ

ব্যবহা

ভবতীত্যর্থঃ ৷ ছ্যুকাঠিন্যাদিযু⁴
কো জিয়ঃ ৷ তথা চ হারীতঃ ৷
ছয় মাষা ব্যাজ যুক্তা নিরুতিঃ ৷
কৌটিল্য কাঠিন্য শাঠ্য বৈরুষ্য সন্তাব যুক্তং কৈন্যা মিতি ৷ যুক্তং যোগঃ ৷৷ # ৷৷

অথ ব্যবহারপাদ নির্নাই।
তত্ত্ব বৃহস্পতিঃ। পূর্বপক্ষঃ স্মৃতঃ
পাদো বিপাদশ্চোত্তরঃ স্মৃতঃ।
ক্রিয়াপাদ স্তথা চানা শুকুর্থা
নির্নাই স্মৃতঃ। মিথ্যোক্তৌ চ চতুপাৎ স্যাৎ প্রত্যবহ্বদনে তথা। প্রাঙ্ন্যায়ে চ স বিজেবো
বিপাৎ সংপ্রতিপত্তিরু।। বদ্যাপি
সংপ্রতিপত্তাবিপি নির্ণুয়ো হস্তি
তথাপ্যত্তরবাদিনেব ভাষার্থস্যাক্রিক্তব্বন ক্রিয়া সাধ্যো ন ভবতিইতি বিপাদতোক্রা।। \$11
তথা ভাষাপাদঃ।

ठव जाया सक्त मार्ट्य काजा-यम व्राप्त । প্রতিজ্ঞা দোষ নিমুক্ত সাধ্য সংকারণারিত । নিশ্চিত লোক সিদ্ধা শক্ষ পক্ষবিদো বিদুঃ ।। सन्नाक्षकः श ज्ञाद्य। নিংসন্দিশ্বে। নিরালকঃ । বিরোধি কার্ণে মুক্তে। বিরোধ

क्षिण्डः श्राद्धापिना । प्र-शक्त मुख्यः अधितानी ठाउन्हरा वाक्का गांशां जिया-विका बाक् । जना स्मादेश शब-শণার বিক্ষার্থ পদাদিভি স্থাক্ত गांधाः साम्बाद्यासम्बद्धः शकः वि-मूः। ज्ञाशा अञ्चि (कार्यन माधारमासः गार । चल्यदाङः । बहनमा अञ्चिष्ण अन्यमा ह পূক্তা ৷ অনুকরেণ বক্তব্যে ব্যব-श्रद्भयू वामिष्टिः ॥ वक्टदा शक अिटिख शूट्याटक । नात्रापना পি । সারস্ত ক্রবহারাণা প্রতি-क्का मुम्माराजा । उद्गादनो शैय-তে रामी जन छ। युख्दा जत्व ॥ ॐढद्बा विक्योः। समाभागाव সাধাণ জাপাণ তদিশিকধন্মী প ক ইতি ভোগ তথাপ্যক্ষাক্ প্র-णायानीपि अर्थाविद्यम् विभिक्षेमा अवस्थित श्रिद्रिश १ श्रम्बी प्र ति-व माध्यमा नामानकत्। तरङ माष्ट्रिकातः अज्ञातः सार्वः ह्यातः ह्याविः ধঃ পদ ইতি নিত্যক্ষামান্ত তা-रा बाहका शक् हेि सार्थ छत ग्यहाकः। ज्ञानाकं मुख्य जारा

गामि भूनाः। छत् मुर्छ ह रात-शांत र शबार में अवक्षानि। यो-नि शमा खुमानीनाः कडी छानि ন পশ্যতি॥ ইতি গৃহসংগ্ৰহ ব-हमामुमानीरनट्या खाषा त्माथ-यर । जल्हाधन मार तुरुणिंडः । नानाधिकः श्रवंशकः छात्रहासी वित्नाथरम् । न प्रमापुङ्ज या-वर्थ প্রতাধী সভা সন্ধিধী।। 🐞 ॥ তলিখন প্রকার মাহ কাসঃ। शाश्रु (नर्थन कनरक जुरमें वा ध्ययन नित्थव। मूर्गाधिक स्र मः-त्भाश शन्हां शत्व नित्नारम् ॥ कलकः कश्चिमिश्चिकः। का-ত্যাখনঃ ৷ পুৰপক্ষণ সভাবোক্তণ প্ৰাদ্যিৰাকো ২থ লেখ্যেৎ ৷ পা-जुरन्रथन कनर्क ७७३ शत्व १-जित्य थरवर ॥ त्नावर्षर भृत्रभ-কর যাবমোতর দশন । উত্ত-द्रिशादक्षमा निवृद्धः त्भार्थनः जित्या अमानुकः निर्थाना-मर्थि थ्रां बेट्ना बेट्टा हो तर-চ্ছালবেভন্ত ধার্দ্দিকঃ পৃথিবীপ তিঃ । স্বভাবোক সক্রতিম । ।। अञ्चल योख्यतकाः। इन नित्रमा जूटकन वावशात्रामरमम्-॥

थः। इक म्यान्थनाय- शेक्ट भः। नार्वाः। ভূতः ভ্রেথিসম্ব-स॰ श्रमाणिहिङ पूरा । किश्व রাজ্ঞ বিশেষেণ সংশ্র মজিবুক-ण।। मन्याहिक देविहिका श्री-का माश्रमाधु व।। मर्दबर्श विता-प्तत्र शक्रित नात्रमान्छ ॥ श-७ जी जुगुशामात्न गारमाभा-र्थाम शियुट्छ । मृद्बंबर्थ बिवादम-यू श्रमामाजिशात्नि नार्मीमिज অত্রোদাহরণ পশুস্তীত্যাদি। वर्षं विवास धर्गा मन्। क्र वि-वादम्यू अयामाजिशात्न अक्रजा-र्थानभाषाकीयञ् इति गगात् । মথাই মনেন শিরসি পাদেন তা-**ডिजः ইত্যভিशाय क्वितृतः राख-**ন তাডিত ইতি বদুন ন কেবলং দখ্যঃ গরাজীয়তে চ। তত্ত্বত দ मक मृ• भारतमान मञ्ज भागरवन গৃহীততাবন্ধনক্ষাদিতি ভাষাশ-बीब अञ्चल मा कुछ तम् जा साना-, जरतन यथा (वृश्यः तुक्कवाः (मर्थाः ब। मुश्रागमिल ब्राप्ति अञ्चितानि-ण हर्ननाथ अञ्चलाशाभटन १-পি তথোক। বিকুধর্মোভরে। न कृष्ठिः शाक्रदेव बादेका यः नि-

কা মন্ৰপতঃ [দেশভাষাদ্যপা-रियम्ह (वा बर्स्ट्र म श्रुक्त म्यूज़ ॥ व्याखाँखत्रशामः। ভত্ৰ কালমাহ কাত্যাধৰী সদ্যঃ ফুতেষু কার্টেয়্য সদ্যূত্র বিরাদ-राष्ट्र । कानाजीरञ्जू वा कानः দদ্যাৎ প্রত্যথিনে প্রভূঃ ।। বাদি-त्नाक्रमा नाशमा अजीने प्रचंत्र-তে ইতি প্রতাধী । নারদই। গ-इनपाधिवानाना मनामर्था है न्यू-তে द्रिश । अंगामिय श्रेत्रधंकानः কাম তত্ত্ববুভুৎসমা গাঁ বৃহস্প-जिः। यमा (व्यविधः शकः किन णः शृह्यामिन।। ममार **७**९% भवनः প্রতিবাদী তদোভন ॥ मश्य म्लय्कन। अनाथा जना-वापिएकन छन्न अनुकृष्टि। अन्। वामी किया (वरी नागश्रामी मि-্ব্ৰুত্তরঃ। আহৃতপ্রগলাধী চ হী-নঃ গঞ্ বিধঃ স্মৃতঃ।। প্রপদাঘী विशस्कृत भागस्य मधील र्नि-देनः । कियायियी जू मारमन मा-কিভিন্নস্ত তৎক্ষণাৎ ৷৷ ইতি নার-त्माद्कः। किया किया मिका। मा-কিভিন্ন: সাকিভিঃ পরাজিতঃ। বাদিনোক্ত্রা সাধ্যস্য শ্রেতীত चम्ठीि अखिवामी अखीराएँ

नि स्वीर्गाटल अक्रुंशाजित्यात्मा १-तिन इंडि উखंद्र । योख्वेत्काः। শ্ৰেতাৰ্থনোত্তর লেখা পূৰাবে-मक निर्देश दिनश निष्यिकान मा भूगिनकके ।। के।। उँखत्य-कर्णः उट्डिमाः नाइमः। भ-कर्मी दाशिक नीते मर्गिक म नाइनः। अवगिरागिया मिरणव मुखंद्रः छिटिना विमुद्धा मिथा স'প্রতিপত্তিত্ব প্রতীবক্ষণন স্ত পা। প্রঙন্যায়া শ্চেতিরাঃ প্রো-का कषातः भाउद्यमिनिः ॥ चित्रिका शिक्तिंगा यहिन ষ্ট্যাদপত্নব । নিষ্যা ততু বিজা-নীয়াদ্ভর বাবহারতঃ। পদ্স্য ভাষাৰী ব্যাপক আছাদক অভিযোগ প্ৰতিকৃল মিতি বাবৎ i অত্তাৰ পূৰ্বপক্ষাৰ্থ সম্বন্ধ প্ৰ-जिलाक निर्वारियमिक्। न ট বিপ্রতিপত্ত্যা ন্যাধার্থ মাগত-ना बात्रवनी छाछिष्किना बात्रवा মীতি সংগ্রতিপত্তেই কথস্তরত্ব অভিযোগাপ্রতিক বিদাদিতি বা-**छा । छाषायामितना नृश्द्यना**शहू ज्या या क्लाहिक या जियांनाटन-वाक हार्य इंडि खार्चा विभव পর্বাক্ত বিশ্রতিশর্মস্যাপুতর

বানিনো ভাষার্থণ সম্মন্ত্রগন্য তনিবেরার্থ সম্প্রত্তরাসম্বাৎ विष्- ग्रांचा का ग्रांचा वहन भ-ত্যস্তামর্শ্মকারক্>পরোক্তি পরা-फद्य ह मुख्य वा बिना ह देवत নিতাগদি প্রতিসন্দর্ধতঃ সংপ্রতি-পতে ৰুতরত্ব সম্বত্যের। এবং এতেন্ডা এবানিস্তারাৎ সাখ্যত্বে-নোপদিউস্য পক্ষস্য সিদ্ধত্বেনো-পন্যাসেন সাধ্যত্ব নিবারণাৎ সিদ্ধসাধনেনাপি বাদিনঃ প্রত্য-বস্থানাক্ষোত্তরত্ব সম্প্রতিপত্তেঃ সিদ্ধ মিতি ৷ সার প্রক্রতোপবো-গি। অনাজকা পূর্বাগর বিরোধ-भूताः। अवाषात्रात्रात्राः स्थारा-রাদিক বিনৈব প্রতীত প্রভি-যোগনা অভিৰুদ্ধাতে ইডাভি-যোগঃ সহেতুক সাধ্য তসাপ-হুর মিতার্থঃ।। 🗯।। উত্তরাজীয गांद् क्लाजायतः। श्रह्मार्जन মন্ধঃ অত্যন্ত মতিভুরি চ। পর্টেক-करमणबग्रदेशावः ७ छ । देनदर्व।-ত্তর: ভবেৎ য় অস্ত ব্যস্ত পদ-राति। मिगुहार्यः हार्याक्तार। यो।-था वसा समाजक दिसाखन निमा-् एक बुद्देश्वरा **अस्ट**्रकाख अनवा।-পি অনুমিতার্থ পদরাপ্ত মিতি

रावरात्रज्ञित्य क्रिक्टान्य क्रिक्टाः ।। भा भित्याख्य त्रिक्ममार्जुः भून र्वाम नात्राम । मिटेशाँजमा-ভিজানামি সম তত্র ন সমিধিঃ ৷ অজাত শ্চামি তৎকালে ইতি बिथा। ठेजूबिथ ।। भिटेश्रजनिजि শব্দতো নাভিজানাদীত্যাদিক ৰথতে। ২গহুৰ:। তথাচ কাত্যা-ষনঃ। শ্ৰেছা ভাষাৰ্থ মনাস্ত যদি ত প্রতিষেতি। অর্থতঃ শক্তে। वाणि विथा। जिल्ला वृद्धव मृद्धव ।।। দ্বং মহুং ধার্বসীতি প্রতিজ্ঞায়াণ म গৃহীত মিতি শব্দতঃ। কাল-বিশেষ গভাষা ত্স্যা সত্যাণ कता नार काठ रेठि वर्षठः । দেশ কালবিশেষ গর্ভাষাণ তদা-তত্র নাহ মাস॰ ইত্যপার্থতঃ। দে-गामियञाः ज्ञानायाः वान का-নামীভ্যর্থত এব যোগ্যাস্মরণে-नार्थक सम्बद्ध अधिशामना च्या ठतम्यायः अश्नावकम्मन मृ-থেন গ্রহণীভাব প্রতিপাদক সা-পুরুষ শাত্র শাত্র আদ্যুণ মিংগ্রাভর্মাত্র-॥ শা বৃহস্পতিঃ । শেশাভিষোগণ প্রত্যথী যদি ত॰ প্রতিগান্তে। সা ত সংগ্রতিগ-ভিঃ সাক্ষান্তবিদ্ধি কদাহত।।।

पश्चिमा जिहिरको रश २ थं। अर्था जा मिलना कि काम मुख्य का तर्था-खायी यमि। ए ख्या । अनेमा কাল্প কৰাৰ প্ৰত্যক্ষৰণ হি करेगा व्याजाद्विशाचनदेवाशिश्यून দেখিকতে কৰি া সোভিবেহৰা জিতঃ পূৰ্ব প্ৰাঙ্কাৰন্ত স উঠী-**छ ॥ अजिनुसारछ इछा छिर**वा-भः । **अन्तिमन**्ड २ नीक्ट्रमान्ड । क शासार्थन उथा धनाम नहाः দেশালীকত্য। কারণ তৎপ্রতি-কুলকণ কারণ জয়াৎ তদা তদুভর প্রত্যক্ষকন । বাদ্যক্ত ন্য প্রতিকূলদ্বেন প্রভাবক্ষ**ন**ন विठार्थः। প্রতিশক্ষাবস্কৃত্যনাৎ প্রত্যবস্কলন মিতি জীমৃত্যা-र्नः ॥ ।। उप कार्याखन बिविशः । वस्तरः जुनावसः नूर्यः नकः। তतः चलन्यू सङ्ग्रेशका পতঃ শত গৃহীত নিছি পত্য নিত্ত পরিশোধিত বিভিন্ন পর্যাত্ত উত্তরকাদিন এব ক্রিয়া নির্কেশ্র ो ज्या हे साब्राहर जो धर्मा भूते-शक्ता विवादर्थनगरुद्धः। वि राज गानिन एवं अवसार है-जियामिनः ।। आश्वाः न्यनेप्रः शृर्वशक्या। छछक समित्यांशा-गानार्यामाभाषामा अभावन कि । अविभावि योकिकी । अधिक वृक्ता

उत्र गं माज्यार निर्देशास्त्रामग्र **उम्ह । एकि बार्यामानवगा**जा-डांखार डाटराक्षक भेटाइन्नश्र ने पूर्वन्तरा ।। । व व जुनावन-के तिर्गाखन वर्षा । मनिर्वेद छ-निः जना गरुपा कि जिल्ला म निरंपमः ज्यार जमागज्यानि প্রতিবাদিনা ভংগান্তর মিতি তত্ত্র পূर्ववामिनः वाक्युभम्यामः। ज-ममानद्दी अधिवामिनः। छथा ह ্বাজ্বকাল সাক্ষিত্তৰতঃ সং-गु गाकिन गूर्वरापिये शुर्वन কে হারীভূতে ভবভূত্তর বাদি-भर शिक्ष शिमूर्वनकात्रद्वाखत्र^० य-পাণ দৰ্শক প্ৰয় ক্ৰমণাত্তাদিতি वाग्राटक्स्परसम् ज्ञाननवर्य ज्ञा-শানসাদিতি প্রত্যুত্তর ততু ধন া ৰাজ আয়ুক্ত া পাণাতো হজৰ-्राचा स्वानिक्तमाः प्रज्ञानिकी । रोंच पांचारकीय दीवना किंग रमञ्जूकरा नद्यन कुळाजानाय ভূমেৰিপতি বাৰিকী ৷ ইতি ভূ त्रि वाक विश्वक उद्देशकार्यना **েপদিত্যামিভিজিমলৈকভ**টাঃ। ननारका स्वाहरकी द्वाहि जूर म

मानामा धनमा जनवासिकी।। ইতি শুৰাগানিধৃত গাঠোপি ত वार्थ अभावः। उठकाव क्या-गठएव शृर्ववासिनः खमारवाश-नगमः। जशाद्भाकः। अत्राविः हिएक (रहेक) श्रीकियानि किया ভবেৎ। দুৰ্বলে বাদিনঃ প্ৰোক্তা ক্রিয়া তুল্যে शि বাদিনঃ ॥ স্বাচা-রেগ ব্যবহারেণ। অবসমে। ভঙ্গী । লেখযতে ভাষা মিতি শেষঃ। স वानी अभिन्नदर्भ मया शूर्वः शद्रा-জিতঃ বাচ্যঃ প্রাধ্ন্যায়ে হি ধা-–ব্যমাণ্ড নামান্যভাব জাগকঃ ॥ 🗱 ॥ अव्यक्षः मक्दत्र विद्यात्र-गारजु काम राबीको। मित्या-ভর কারণঞ্জাত নেকত চে দুভে। সত্যঞ্পি সৃহানেন ভজ वाशःकि मूलदः।। निशा कादन যে। বাপি আছে কারণ মৃতরং। य अञ्चार्ध विषयः यत् वा माह ক্রিয়া ফলং।। উত্তর তত্ত্ব বিক্রে य मनः कीर्व स्टब्स हुनाशा गुजान ভিষেধ্যে শতাহৰ: মিখ্যা পঞ্চা-गटमत श्रृहीण जान्ह श्रृतिभूका रेणि निथा। क्राजिशास्त्र ज्ञाना

र्वाचीनद्वमः स्वतः। स्वाधः বিধেনাভর তত্ত ঋণস্য চিরাজী-क्नाः कर्के शिविभाग्राष्ट्राक्षाः । अवश नवङ्क्षित्सादश भिटेशाङ्क यकि পুরাণা এব ময়। গৃহীতা ভক্রাপি ত্রিংশৃৎ পরিশুদ্ধা স্ত্রিংশদ্ধার্মার্ম ইজি বিশা-কারণ সত্যৈঃ সঞ্চী-র্ণোরোক্তর ২পিপূর্ব৭ কার্ণো-ভরনেব আহু নিখ্যা কারণবো ৰাগীতি বাগি শব্দ জ্ঞাণ তথা দ শিতভাৎ সত্যোত্তরসা কর্ম জী-क्रव्यक्त निश्रान्ड्यापिकि जान वः। शाखनगटमन मह मर्दिश्य সম্বানুগণ ভি বিতি তমে জে যদি, শতং মিথা। পঞ্চবিংশতি **পু**-রাণা গৃহীতা তেত্ত পরিশুদা স্ত-थाः मिथारमञ्जाः अनुदार्थः विवय-मा विकास छेशक मनी यहा ज्ञा १ नुद्राधमा। जहिं ज्ञा १ भागा समार्थमः विচाइ देखि। जूनार्थ विसम्दर्भाष्ट्र युक् कियात्राः नावना-তদে শটনাৰ প্ৰদাণ আছে তথা ্বাদি শ্ভগ্ৰহণে পত্ৰ মন্তি শতপে-क्षार्ष काबर्गाद्धवः वास्त्रः स्थाः। जानित स्था विर्धाण्य धवाण्ये मि तिहात्रीयः शतिमाधननाः।। তত भवनाम अर्गणवः वास्

লিখিতস্য সাক্ষিত্ত্যা বলবৰেন 🍴 ' সম্যত্ত নির্ণয় কারিয়াই পশ্চাহ পরিশোষন সাঁকিণঃ প্রতিব্যার। সন্ধরে তর মন্ত্রাসন্ধীর্ণ মদুষ্ঠ অ-তো ভিন্ন মন্ট্রথা সঞ্চীর্ণ দুষ্ট মি-कार्थः । व्यंवि ठावत्क्रम द्वितम নিখ্যোত্তর সম্ভর্জ মে-कवित्रक्टप्रन । मक्टब के विमेष् छ-त्रचार कालायनः। शरीकबर्तन শে ৰৎ সত্য মেকদেশে চ কিন্তিণ ि विथा टिस्टिक्टेंस्ट्रेंट्य गार्थिन-**इत्रिल्मिखंद्रिः। अक्टिन्टिंग रे**छांज ঐকস্মিমেব দেশৈ ন ভিমদেশে বৈধা শত ধার্যান্যের প্রিলেশ-ষিত ন গৃহীত্যা ইতি 🏗 🛍 जिये कियोशिष्ट । উভরভিধানান্ডরে যার্ভবন্ধাঃ ा छछ। रेबी किंबरवर नेमाः প্ৰতিজ্ঞতাৰ্থ সীৰ্কশ অধী বা-ंगि शिवामी हे क्लेक्सिक्टि। एटन प्रिकारत चित्रमे भार की-े नेही औष्नारिय के ब्रिटिशिएको ह প্রতাৰী পাধ্যেৎ জিৰা । বি-त्याख्त श्रवामी अञ्चल न সা ভবেৎ ৷ বিধ্যোত্তরে ন'গৃছী-छ भाष्ठा भिक्ट भे भूदेशनी छ।-यावाती भागमाष्ट्रिक भनिकित्ने

मिंखतेवाणी एकं छमा मानुसाः कियोगा विमयनामिष्ठि नगरिया-সুল অত্রাপি সাক্ষ্যাদ্যভাবে উ ভির্বাদিন এব দিব্য । ন ক্ষি-मंजित्याकौत्र मित्यां यू विनित्याः क्रायं । अंजियुक्तियं माजवाः **पिरार्थ पिरार्विगाउँमः । ३**७ कार्जायंदनीरकः । चंक भूवार्षः मीर्थित्न मित्रानित्रक्ष প্রতাথিন স্তৎ প্রাপ্তে পরাদ্ধা जियान मिटके मजाबट्डा निय-नीय इंडिं निर्मायीतियमार्थः न ह विभिन्न विदेश किया श्री का बादा ত্তর নামহী দৈধীপর বিভাতা रेमधर्के निरंशाखरत्र निर्मुकारण ইতি তত্তাপি অৰ্থিন এব দিবা विकि विकि ध्यमिष भागा रि "भूम द्रविशेष देनेतीनु वकः। मध-थे दिवसमा महिल्मा लगातवाद शू-- दिनिक निर्मित मृत्यक विषयन को के जिस्टिम कि मिया विषय नि विगंजनीनिक्शाक रख विवास वि-यदि अलाशी मिनिहान खब ज স্যোতিরামইউয়া অধিন এব দূ-खेळियाँ उपने स्टिंगंव मिया ने जू अछाबिनः विविकातं निक-"বাভাবাৰ অ্থিন উৎস্থাৎ নচ ন ক্লিচৰভিয়োকাৰ নিত্যাদিনা বিরোধ স্তন্মোতরাই প্রতিবেয়ণি বিষয়ত্বাৎ এত্ত্বিষয় এব ধনস্থা-मित्न। पिता मिछि क्लाकथनापः ॥ 🛊 ॥ निश्चिमाञ्चाद्यनात्रि नि-रा गार गाळव्दाः। अगानः नि-থিত ভুক্তিঃ সাক্ষিণদেচতি কীর্ত্তি তং। এষা মুন্যতুমাভাবে দ্বিয়া-ন্যতম মৃচ্যতে ।। 🛊 ।। অথ मित्रा॰ । पिराानगर मध्य। जुनानग्रद्धा বিষণ কোষো দিব্যাত্রী হ বিঞ্চল-त्याः महाভियादगहबूका किए श्री-ক্ষাত্রে ২ভিয়েক্তরি।কালা বা-भाजतः अस्यानियता तर्जाप्रक्टि तः। विनाशि गीर्यकः अर्थाः न्-পজেতে ২৭ পাতলে কর্মত বোগেৰু মহাপাতকাৰি ওকত-রাভিযোগেয়ু া শীর্ষকক্ষ্ণশীর্ষ কু প্রধান: ব্যবহারস্য চতুর্থণা-दल। ज्य शताक्रय मझनः ८६२ प-থ্ৰে। লক্ষাতে। তাত্ৰ তিপ্ততি বৰ্ণতে **ज्यान्य । ज्या** जिन् যোজুৰ শিরোবর্ভিমোজে রাজ-रगाजाला दिवाक द्वार अधीय ए । थाजुकी करा। पार्शिताः निरा मान कदन्ति । रेजद्रा २ जियुकः । এতৎ ग्रर्वः प्रिवाण्टखः विव्रणः।

প্রতিজ্ঞাতার্থ সাধকমিতি সাধুকণ माकापिकः। छेतार वृश्यािः! षिशुकादा किया (शुका मानूयी देविकी छथा। माकि व्यथान्--মান্ধ মানুষী ত্রিবিধা স্মৃতা॥ ধ-होगा धर्माका छ। ह देगविकी नव-থা সূতা। তত্তানুমানম্ভ ভুক্ত্যাদি ॥ 📲 ॥ 😊 व माका मार मन् । म-्यक प्रभंगा अनुकार व्यवनारे क्रव সিধ্যতি। এতৎ প্রমাণ মারোপ-लक्ष । चनु जारी ह यः क्रिक्ट ক্লুক্সাৎ সাক্ষ্য বিব্যাদিনা ইতি তদ্বচনান্তরাৎ। অতএবান্তত্য-পি কাকিণ মাহ মনুঃ। যতানিক-কো বীক্ষ্যেত শৃণুয়াদাপি কিঞ্ন া পৃষ্ট ক্ষত্ৰাপ্তি তদ্বাবাৎ কথা मृक्तेः यथा अक्टा। चितकक खुन-্ত্র সাক্ষিত্বেনানিযুক্তঃ। পরস্পার-सानि व्यवनगार विकृ:। छे फिर्क ु जाकिनिम्ट प्रभाखन्न शट २ थि রা তদ্ভিহিত শ্রোভারঃ প্রমাণ নাত্র সংশ্বঃ। অসৈয়েতর সংজ্ঞা गार नाइए। नाकिना गर्श वद সাক্ষ্য **রগক:** পরিভাষতা^ণ। শ্র-কুৰাৎ আর্বাদাপি স সাক্যুত্ত-ब्राञ्चकः। चुशक महिस माका॰ পরিচারতা সাক্ষিণা যঃ স্বয়

শূণোতি অর্থিনা শ্রাব্যতে বা স ध्यनगर वानग्रेज्यतमाकीलाभः ৷ এব যো ২ খি*ৰা* গুটভবা প্ৰভ্য-পিরচন লাবিতঃ স গুচসাকী-ত্যাহ সূত্ৰকা অধিনা স্বার্থ সিদ্ধা-र्थ अछार्थि क्रमा कूरि । यः औ-ব্যতে অবা পূচোগ্রচসাদী স উ-চাতে II ভেনাবাতর বাদ্যভিহি-তার্থ বিষয়ক দৃষ্ট কারণজ বি-জ্ঞাগন সাক্য মিভি বিভিণ্ ঠিত্র माद्रमः। তেशायि म वाणश्रीना-दिम्दर्भ न जी न मूर्क्क् । में बा-মবো নচারাতি আঁফু তে কার্যা न्नाया ॥ कार्याः महानिष्णनीया **उदिक्रक्टरन (अन्यन्त्रक्ति) जन्न** शर्षिक्टबन बाजाबाक्रिमांबाभिज-**जवाविक मिक्रीवटक छवा १० ६**-পি সাকিৰোডকিতৃ শহন্তীতি টেড-याः माका विश्वविक वकामान व-न्यस्य मिन्द्रकाम् विषये गाउँ वकारता जाकाः माकित्वा त्यापाः ভৌতত্মাৰ্ভ ক্ৰিয়ারতার খেৰা-'জাতি বৰাৰেৰ্ণ সৰ্বে সৰ্বেৰু বা স্মৃ णाः। ज्ञास्त्रका निक्का द्यमान তে ব্যবহাঃ বিজ্ঞোধনানা ছব खीरामा मार्थि (सा संस्थानी वं वाद वादवानियान महत्वा महानान-खगा एकाजितः भारती । जीवा॥

जिस्स २ अञ्चल स्वयन्त्रभान-भारतभ जानाताः, जानवाःनवि-योगीनां कवियास्यः। अञ्चाद छ छङ्ख्ल दिना गर्न भूत्र । बा-वैका हैजागाशकाब मारू मध्य । उजरान्यणः मास्री जल्लाक श्मि श्माविष् । **छेख्यान् ग्र**णक थ-र्यविष्य निवृष्टः व्यक्षः । जनार বিষ্ণঃ ৷ অভিনত গুণ্মশান স্ ज्यानुम् ए एका भेशि देखि। पार्धिय (स्वाबिय-मरशाकः निर्य-वयकि वृद्याचिः। सत्र मश्च शक वा गू कात अस बन वो। छेट। ष्ट्र व्याजिदनी आरही दिनकः श्-रक्र क्षांक्र ॥ अक्रा निन्छ क्ष्मिन विश्व देश ने क्षा क्षा क्षा क्याम् त्रह्मारम् । त्री सार छ मार नात्रमः। प्रकानन्तरण यः माम्दरा विकासमहरू । छन '(छाटक) देशि नास्त्रिक अकेवाः সাহ কু সংগদি ৷ উভয়ান্যত जार श्रामकारिना सर्वकर थ े निव्हें (१६ छन्। या बिस्सू मा गणि वर्कन महिद्दा शहर कराए ित्यह देवतानि महत्र अस्ति छ यः। कि अप इक्स्पारियाउ

भिक्तिका अकाराज्य माकी नार्वेद्ध एका रिश न जियह । जीवृत्व प्रशिववाक् त्मादेशका-हमा अपि देश वृष्टाः।। अस्का अन्-- ৰাজসাৰী স্যাদিতি সমুক্তট্টধূ-ज्लार्रहा एका लूका खुनाकी ना।-मिछि कीम्। कार्यक्रार्थ सान मुखाः। जूनात्मवद्यात्रामानिः নো ভবিতু মন্ত্ৰীতি একপদবাৰ্থ-ভাগজেঃ । ভতুবা তৎপাঠুং তু-থাপ্যেক ইত্যনুৱাগাৎ ত্রিষ্ यमूर्यनामुक्तरमध्मान्मज् म-- एवं वर्षाविख बेखेट जोकिक वी-शा॰ इंडार्थरला न द्योशः। ज-তএক কিম্বৰণ প্ৰজীনত উত্ত-राम्मङ धर्क खंद मान्छ तास्ता-म अर्बिनिडि द्यांक कार्रेष-दखनाविजिः । जना हे। त्रकः। তেনাঃ সাহিদিকা বুর্তাকিত-वात्विंशकान्छ त्व। अनाि स-তে দুকী ভৈবু দত্য ন বিদ_{ং ।।} किछ्ने मृग्छक्त्रीर ॥ छ।। जल् कार जिल्ला है सीटने। इंद्या क मही जी वाण एतिहासयः। (छगान छिनेव की व ना शर्म जाबि (ना बंखाः ॥ इतिदत्ता श्वादनिक्यन আনার আদিশকাৎ কিতবাদয়ঃ

। जिल्लान्य जाजादा' एहि जिल्ल षाषि अनुक देन्हरमा आकृश छ-था ह कामः। एछिक्किर्म धर्म-ख्डा ह्या रमावाभान्**ष्ट्र**ार् । अमान (मद्रुप रिश जर्मर महि-म्बृ वित्ययणः।। चनुष्ट्वंदोक् र्नि। छद्य गडा द्वरनि । छत्र व व उद्यो भ्रत्माका।का। मार्ममार नातमः। मनुमाः मात्रमः एउमः भ-রদারাভিমর্বদশা পারুষ্য মন্ত-देशव जारमण्यक्षा सृष्टि का-णायनः। ज्यानुसन्धानगरमः माका तिका श्री मान्यवि च-र्थिन। अस्थिः मानी छत्तदंगदंग শি কাচিতো। সংস্কৃত-বেন বঁৎ भवान । अदस्टिनकः विकायस्यः । अक्वर धनावः म विशेषाः भारत-কীৰ্মিতঃ ৷৷ সংকৃতি গঠিত পণ্য मखनामि। विष्ट्रा टेखन मार्ग বাপ্ত পাক্ষ্মত সক্তিব্বু সা-কিলো ন পরীকা ইতি ভেঁব পর-क्षंत्रगङ्गनाकि कार्योगाः निङ्करव-देनव कियमानवाद देनवादमय भ-ৰু স্কুলিবো ভৰম্ভীতি ন গরী-কা ইত্যুক্ত তেয়া বাক্যন্ত নি-वात्रिकानांकि मिक्शल्पटेनरंशाश-জিত্তানুপগত্তিভাগ মালোচনীৰ-৷

্ৰত্বাকাশতাকৈতি ব্যবহারমা । ।। নেজিমন্তাদিক । স্কুৰ সাজী-क्ता । जाक्यतः का जायनः । श-প্রাদিষু পরীবন্দত সাক্ষিণঃ স্থিরক-শুসু : সাহসাজ্যারিকে সৈবংগরী-का क्विहिंधकुला। रेजि।का। · (अविषात्रीताः सनाकामार ता-রক্ট কৌৰিয়া ভাগনার্ছা যে ्र अविकाल नजार। बहनाएं बना-. किन् नाज ररजू क्रमारूकः।। मा-নর্বাক্রে শ্রেভিন্নাহ,প্রেলঃ া একা;শাখাশনকরাংবা যক্তি র-रक त्रीकृता। स्ट्रेक्स नित्रका - विका त्याबिस्य। नाम वर्षाविष्।। नक्त्राः क्रम्भवात्र महिलाः वि-·ত্তি বিক্তি সভাপে স্কীমা। বৰ্টমা-দিকি ধ্যোতিময় দিকলাতিমা-ना । न क कवा (नम् (रक्ष्यू किछार्भः ा-कथा छ जीम देनकिक क्यांकरण ন্মানতনা পরবীৰ কার্বেট বিস্মর-क्षा कर्मा क्षेत्रका व्यक्तार्थ निर्वाहभ छक्। भवरमनः नामक्री जकादता रिश जन् म शृष्ट्छी-कि च शामा क्वशामध्या एक म . ८७ माणिनः कृत्वाः किषुरूषाः ययक्ताकित्। जवरखान्। ऐरको ज् ब्याबिस्मे नाज मिलि मृत्यः वाकि गठा देवाजितिहारक। इिं । व्कन्गानाकिकः वृक्षवात्मव ग्रा/मम् मात्रद्वां कि विदिश्वां। ।।।

्गा माना जिम्हान विकास . राम्ना विकार, र न् काना विकेश भ-फाना गुरुष्य मध्या अ खर्दकाना तर्मा वा भौतिमा। जा-বে ইপি চা জিবাপদভবে কা-याः दोरलन् ऋविद्धन्ति। भिरम ৰ বন্ধুমা বালি দাশ্ম ভৃতকেন वा। प्रव बाजने मुनिद्दी जाका॰ श्टक्ष्म्ड विकार ।। उपश्रामा शानुशान् वा शाद्भ देव छिहः खित्। बारी बामान शृह्ह ্সত্যু ক্রহীভিনিথিব । গে বীশ क काकरेन निष्ण भूष गर्दि छ পাতকৈঃ গা বীজ কাঞ্চনাপ-্ছাৱেখ্ছ/শ তক্তবান্তাভিগ-हत माणि देवणी अंधर मा-कान्य अशास्त्र क्वान् गर्देश পাত্ট সংঘ্যত ইত্যুক্তা শূত্র-क्र भाषा खनात्रा एक मृंजा ला-ক। ট জী বাল কাতিনঃ। বি-ब्रहेर क्षेत्रमाहकार्क मार्थन-न्या।। इंडि वर्क मृयनः। কলক। অন্তৰ্ধ সহস্ত স विक जुलाया खुळ । व्यापास्य गर-

याञ्चरकाः। त प्रतानि दि मः मा मगृः क्रानुस्थि नदाधमः। मे क्रे-माकिशाः शारेश खदगा मर्छन देवद् हि ॥ क्छायनः । ज्वीिव नब्रद्धः दर्शः द्रारम्यः कृषे माक्तिनः। ৰাজ্বকাঃ। স্ত্যা॰ প্ৰতিজ্ঞাণ য-द्याहिश मालिश म अभी छरवर । जनाश्वादानिता यमा क्षव खमा পরাজ্যঃ ॥ বর্ণানা হি বধো य-ত্র ক্র সাক্ষ্যন্ত বদেও। তৎ পাব্নায় নিৰ্বাপ্য শ্চৰুঃ সারস্ব-**्वा बिट्रेक्श ॥ भीठमः । नानृ** वहदन (पाद्या जीवनदश्खपयीन॰ न जू शाशीयत्मा कीवनः हैकि। देवद्य वर्नुना॰ वहनः जत्मम् श्वनि-ना॰ ठथा। श्वनिद्वदेश, जू राह्रन॰ গ্রাছণ যে গুণুরুল্লরাঃ।। ছেবা মি-ত্তি শেষঃ। যত্ত্ব, সাক্ষিণা॰ দিখি-्रानाक निर्मिकाताक वानिनाः। তে্যা নেকে। ইন্যথাবাদী জেলা-ৎ সর্বে হুপাসাক্ষিণঃ।। ইতিকা-ত্যায়ন-রচন: । তল্পাণা ভূল্য-क्शानाः नाकिताः मर्था अवसा शानाशावादार अभवना छ जूनामा স্থপ্তিপক্ষত্যা ভূতীৰুনা কি-ঞ্ছিৎ রাদিছে তত্ত ভেদাৎ পর-ण्यात्र , विक्रकार्थ । जिलादन , ज्ञानार

माक्तिंजा न निर्वध रेजि भन्ने । বৃহস্পতিস্ত সাকিটেইটা কাৰ্ম-নি-क्षेत्रा खंदनगारं छनि दिवर्ष कि-যাবতা মিত্যনেন'৷ তথা সাকি-ला वर्षि ममूक्तिका मान्य (का-त्यम् तमायत्यः। जात्रकः भूतयन् বাদী তৎসম দণ্ড মহতি ইতি। তৎস্ম বিবাদসমশা সভাসদা-াদি বিদিত সাকি দূষণ মেব আছি न जूं बारे देशिक माफि जिंद अधिकी-माणा का वनवद्यां भाजितिकार নারদঃ ('সভাসদাণ প্রক্রিকণ ম-লোক সিদ্ধ মধাপি বা । সাকিপা॰ 'দূৰণ' প্ৰাহ্ম বদাধ্য দোষ বৰ্জ-नार्षा चरेनाम्ह नाकि जिः जारश मूत्रात शूर्व गाकिना । अंगवहा ृ ভবেদোৰ ভেষা মপ্যমাসভবাৎ । जनाशं नाथमानई विक्रवा-ান্দোষ বর্জনাথ। অনবস্থা বির-হাত্তশাৰ প্রসিদ্ধ দূরণ মেব তা-ं स्था क्षा प्रवनार काळावनः ্ৰাকে ইজ্জনা দসত্যাৎ দ্ৰী পাপাত্যাসাক্ত ক্টর্ভে। বিজ্ঞ-वाष्ट्रवास्त्रवः एक्षराष्ट्र देवत्रनिर्य।-े जनामित्रका। यह माकी देनव नि-শিক্ষে নাভূতো নৈব দর্শিতঃ। क्रमामिरथाि छथाः वा मधाः

त्ना २ शि नद्राध्यः ॥ 🕸 ॥ यद्-ভারে যেন ক্রিয়া-প্রদৃশ্যতে ত-बार। मिथा। किया शृर्ववात का-রণে প্রতিবাদিনঃ। প্রাঙন্যাযে বিধিসিদ্ধৌ তু জ্বগণত্রণ বিনির্দ্দি-**ભ્યા मिर**था जटत मि भू र्वाप পূৰ্ৰবাদিনি ক্ৰিয়া প্ৰফব্যা ইতি শ्विषः ॥ ♦ ॥ छनानी॰ मिश्विमारः বৃহস্পতি:। পূর্বোত্তরে ২ভিলি-थिए अकारङ कार्यानिर्भय । षर्या ऋखश्ररयाः मिक्कः माप्तयः-পি**ওযো** রিব।। উত্তাপ কারণ মা-হ সএব। সাকি সভ্যবিকন্নস্ত ভ-বেদ্মত্রোভষো রপি ৷ দোলাষ-মানৌ যৌ সন্ধি স্ব্যাতা তৌ विष्ठकर्यो ॥ काञायनः । क्रिया न रिविकी (थाका विषामातिष् माकिषु। लाट्या ह मि वाटमयू न দিব্য ন চ সাকিশঃ ৷৷ সমত্ব সা-किना यव मिट्या खब वित्नाश्रय-८। এতৎ मः भयानू एक्टम (वाद्याः। ষাজ্ঞবন্ধ্যঃ। নিহুতে লিখিতানে-ক মেকদেশে বিভাবিতঃ। দাপ্যঃ সৰ্বামৃপেণাৰ্পাম আছ স্তুনিবেদি-তঃ।। যে। লিখিতানেক॰ সুবর্ণা-দিক॰ অপলগতি স একজব্যে সা-ক্যাদিভি ৰিভাবিতঃ সন্ সৰ্বান্

मना९ । यामाकाम किञावानन वानिटना श्वनाम स्वगमाः हेम्स-পর নয়া লেখ্যিতু বিশ্মৃত মিতি ব্ৰাতে স তল্মৈ ভাষাকালে অনু-পनास्र॰ न प्रणात्मक्क न त्क्र्य-न॰ वार्চिनकः किट्युक्टमम वि-ভাবনাদ্বিজানত এবাস্য তদগ-लारम मुःगीलञ्चावभात्रभाममताः-শেহপি তথাত্বনেব সম্ভাব্যতে স ত্যবিভাবকস্যাপি প্রক্রান্ত বিষ্-বে यथा वञ्ज वामावधात्रभामवि-ভাবিতাংশে ২পি সত্যবাদিত্ব স-ন্তাবন মিত্যেবং ৰূপ তর্ক পরম্প---রা সম্ভাবনা প্রত্যবানুগৃহীতা-श्वादम्ब योगीश्वत वहनाथ गर्ब॰ माभनीय विकि निर्वयः । এवक **७र्कवाकाानुजाद्वश** निर्गत्य क्रिय-মাণে বস্তুনো হন্যথাত্বে হপি ব্য-বহার দর্শিনা । দাষঃ। তথা চ (श्री**डरमनाशि** न्यायाधिगरम ज-কো হভ্যুপাৰ: তেনাপি সংগৃছ यथाकानः अमरयिष्ठिगुञ्जा उन्मी-ডাজাচার্যাবনিশ্যাবিত্যুপদ সংস্-ত । এবঞ্চাস্য ন্যাষ্স্য বাদিৰ্য সাধারণম্বাদুভ্য বিষয়ত্বণ বচনা-না॰। অভএক কাত্যায়নঃ। যদ্যে-কদেশ প্রাপ্তাপি ক্রিয়া বিদ্যেত

गानुषी। मा वाका न जू भूगील रिप्तिकी वर्षण नृगा । वंप्रजा বিবদতা মিত্যবিশেষেণ দশ্যতি । পূर्नािं रिनिविकी मम्बा विषयि-কাপি ন আহা তেনৈকদেশ প্র-**जिला** मिन्या मानुया क्रिया म-মস্ত সাধ্য সিদ্ধি রিতি। ন চ য-দ্যেষা প্ৰবিধ্য এক মপি ময়া গৃহী-ত॰ বিভাবযদি তদা সৰ্বমেব দা-তব্য° ইতি প্রতিজ্ঞাবিষয়কত্ব নে-কদেশবিভাবিতত্ব[°] বচনস্যেতি জোগ্নোক্ষতানুসারি মৈথিলম-ত পুক্ত মিতি বাচ্য প্রতিজ্ঞা বি-ষ্যত্বে অনৈকার্থাভিযুক্তেন স-ৰাৰ্থ ব্যপলাপিনা বিভাবিতৈক-দেশেন দেষ যদভিষুজ্যতে ই-ত্যনর্থকণ প্রেটিবাদেনাভিযুজ্য মানাদধিকস্যাপি প্রতিজ্ঞাতস্য দানাবশ্যকত্বাৎ ন আহ্ স্তুনি-বেদিত ইত্যপি ব্যর্থ অনিবে-দিতস্যাপি প্রাগজ্ঞাতত্ত্বনাপ্রতি-জ্ঞাতস্য সৰ্বথৈব দেয়ত্বাৎ। ন চ বিভাবিতৈকদেশ বচন ব্যাপ্য-ভূতৈকদেশ বিষয়ণ তশ্মিণস্ত প্র-তিপাদিতে ব্যাপকৈকদেশ প্রতী-তি রনুমানাৎ সম্ভবতীতি বাচ্য বিভাবিতৈকদেশাদূমিতব্যাপক-

স্যাপি ন্যায়তো হ আছত্ত্বে সিদ্ধে নগ্রাহ্ম স্কুনিবেদিত ইত্যভিধানা-नूननरखः। এवक माध्यावीर्या নিগদিতে সাক্ষিভিঃ সকল ভ वि । जीमद मार्म किर्म যৎসাধ্য• পরিকল্পিত• ॥ ইতি কা-ত্যায়নবচন । তদ্বিষ প্রদর্শক। ঋণনিক্ষেপাদ্যপত্নবে ২পি যো-জ্য মিতি। যতু অনেকার্থাভিষো-रा जू याव न माधरयक्षनी। गाकिन स्रायमियामी नजरव माधिक धन ॥ कम्नामानिख्छ পুত্রাদি বিষয়ক । তথাহি নানা বিধ পিত্রণাদ্যভিযুক্তেনাজান-তা নাহু জানামীতি উত্তরবা-দিনী সাক্ষ্যাদিভি র্যাবন্ধন প্র-তিপাদযতি তাবদেব পুত্রেণ দা-তব্য এবমেব বিশ্বৰূপ জীমূত-বাহন প্রভূতবঃ। কাত্যাযনঃ। অনুমানাদ্বঃ সাক্ষী সাক্ষিভ্যো লিখিত গুরু। অনিরুদ্ধা ত্রিপুরু-ষী ভুক্তি স্তেভ্যো গরীয়সী॥ৠ॥ অনুমান প্রত্যাসকলিত তদাহ মনুঃ। বাহৈছ বিভাববেলিকৈ ৰ্ভা-ব মন্তর্গত নৃণা। স্বরবর্ণেঙ্গিত।-কারে শ্রুফ্যা চেক্টিতেন চ।। স্ব-রো গদাদাদিঃ বর্ণো ২স্বাভাবি-

কঃ। ইন্দিত স্বেদ বেপথু রোমা 'ঞ্চাদি। আকারো বিক্রভঃ। চন্দুষা কাতরেণ। চেষ্টিতেন স্থানত্যাগা-मिन। । এयाक्षानाथा निरक्ष मूर्निक-প্যত্বাদেভ্যঃ সাক্ষী বলবান্ ইত্য-ৰ্থঃ॥ 🛊 ॥ মুখনিৰূপ্যত্ত্বে তুষাজ্ঞ-বক্ক্যঃা দেশাদেশান্তর যাতি मृक्नी शतिरलि ह । लला है॰ खि-দ্যতে চাস্য মুখ বৈবর্ণ্য মেতি চ ম পরিশুষ্য**ংস্থলদ্বাক্যো বিরূদ্ধ**ণ বহু ভাষতে। বাক্ চক্কুঃ পূজ্যতি নো তথে ঠে নিভূ জত্যপি।। স্ব-ভাবাদ্বিক্ততি॰ গচ্ছেমনো বাক্কা-ষ কর্ম্মভিঃ। অভিযোগে চ সা-ক্যে চ স দুষ্টঃ পরিকীর্ত্তিতঃ ॥ ন পরোক্তা॰ বাচ॰ প্রতিবচনেন পূজ্যতি তথে। ঠ চক্ষুশ্চ: পরকীয বীক্ষণেন নিভু জিভি সটিলীক-রোতি যদা মনো বাক্কাষ কর্ম্মভিঃ স্বভাবাৎ পূৰ্বোক্তা॰ যথাষো-ग्रा॰ विक्रिंजि॰ गट्छिखमा म मुके ইত্যর্থঃ। অতএব শ্রীরামাযণে। আকার শ্ছাদ্যমানো ২পি ন শক্যো १८मी निगृहिजू । वना-দ্ধি বিবৃণোত্যেব ভার মন্তর্গতণ नृशा चाकांत्रा (महश्रमः मूथा-প্রসাদ বৈবর্ণ্যবাশঃ ৷ নারদঃ ৷

স্দীর্ঘেণাপি কালেন লিখিত। निक्षि माश्रूयां । मंकानमाश्र ता लाश मकानः खखू लाश-বেৎ ৷৷ সুদীর্ঘেণেতি সংক্ষারো-**रकाशकलिथनमञ्जामुयः** किर्त्रण-পি সাক্ষ্যুণ দাতুণ শক্ষোতীত্যর্থঃ u 🛊 u निभिद्ध• यर्राखन ल-খবেৎ তদক্ত পরহস্তেনেত্যাহ **रामः। जनिभिट्या स**नी गः স্যাৎ লেখ্যেৎ স্বনতন্ত্র সং। স ক্ষী বা সাক্ষিণান্যেন সর্বসাক্ষি-সমীপগঃ ।। वृरुष्णि । गृषिकः হাতিত ষচ্চ সীমাষাশ্চ সমস্ত তঃ। অক্ততো ২পি ভবেৎ সাক্ষী আম স্তত্ত ন সংশ্বঃ।। 🗱।। অङ्ग-তা অপি সাক্ষিণো ভবস্তীত্যাহতু र्मन् काणायतो। जता श्रन त-निर्फिकाः माकिनः ममूनाक्ठाः। গ্রামশ্চ প্রাড়িবাক্শ্চ রাজা চ ব্যবহারিণা॰।। কার্য্যেম্বভ্যন্তরো-यः माप्तर्थिन। প্রহিতশ্চ यः। श्री जाकिनः ॥ ज्यूिः। मखीन ত্তে ২থ ভৃত্যানা প্রামিনা নি-र्गटम गिं । विक्रयामानमध्य ক্ৰীত্বা ধন খনিচ্ছতি ৷৷ দ্যুতে স-मास्टर देव विवादन नमूशिक्त।

সাক্ষিণঃ সাধন প্রোক্ত ন দিব্য न ह लिथाकः॥ প্রক্রান্তে সাহসে বাপি পারুষ্যে দণ্ডবাচিকে।বলো-खटवयू कार्यायु माकित्ना निवा-মেব চ ।। বৃহস্পতিঃ । লেখ্য : ব। সাক্ষিণো বাপি বিবাদে যুস্য দূষি-তাঃ। তস্য কাৰ্য্য॰ ন সিধ্যেত যা-বত্তন্ন বিশোধষেৎ ৷৷ তল্লেখ্য সা-ক্ষিৰূপ প্ৰমাণ ॥ ঋ॥ লেখ্য শো-ধন মাহ কাত্যাবনঃ। স্বহস্ত লে-খ্য সন্দেহে জীবতো বা মৃতস্য চ । তৎ अरुख क्रुटिंग् त्रांश शिख 'স্তল্লেখ্য নিৰ্বায়ঃ ৷৷ তথা সমবেতৈ-শ্চ ষদ্ধ্য বক্তব্য তত্ত্তথৈব চ। বিভিন্নেনৈব কার্য্যে তু তদক্তব্য পৃথক্ পৃথক্। নাপৃষ্টে রনিষুক্তৈ ৰ্বা সমণ সত্যা প্ৰযত্নতঃ । বক্তব্যা সাক্ষিভিঃ সাক্ষ্যণ বিবাদ স্থান मागरेजः ॥ अनुषित्रान চित्जन मुखे॰ मगाथिमा जू य । প্রত্যক তৎ স্মৃত কার্য্য সাক্ষ্য সাক্ষী তু তদ্বদেৎ।। নারদঃ। যঃ পরার্থে ২পহরতি স্বাণ বাচণ পুরুষাধমঃ। আত্মার্থে কিং ন স্বর্যাৎ স পা-পী নরক নির্ভযঃ।। অর্থা বৈ বাচি নিষতা বাঙ্গুলা বাগ্বিনিঃস্তাঃ । যন্ত তা॰ তৈনবেছাচ• স সর্ব-॥

ख्यक्तनतः ॥ दोधायनः । श्र**क** পশ্বনৃতে হস্তি দশ্ হস্তি গবানৃ-তে। শতমশ্বানৃতে হস্তি সহসু॰ পুরুষানৃতে ৷৷ হস্তি জাতানজা-তা॰ চ হিরণার্থে ২নৃত বদন্। সৰ্ব॰ ভূম্যনৃতে হস্তি সাক্ষ্যে সা-ক্ষী মৃষা বদন্।। বৃহস্পতিঃ। মৃম্য শেষণ প্রতিজ্ঞাতণ সাক্ষিভিঃ প্র-**তিপাদিত** । म ज्यो मापनाथा जूमाधार्थं न ममानुषा ।। या-জ্ঞবন্ধ্যঃ। উক্তে ২পি সাক্ষিতিঃ मारका यमारना अनवजनाः । द्वि-গুণা বান্যথা জযুঃ কূটাঃ স্যুঃ পূ-र्वमाकिनः ॥ जनाया भूर्वविभन्नी-তার্থ প্রকারেণ। কূটা অনাদেয বচনাঃ। তথা। यः সাক্ষ্য প্রা-বিতো ২ন্যেভ্যো নিহ্নতে তমসা-বৃতঃ। স দাপ্যো ২ফ গুণ দণ্ড॰ बाक्रनक विवामस्य ॥ ज्ञारनाः ভাঃ সাক্ষ্য প্রাব্যেতি বাদিনা প্রযুক্তো ষঃ প্রাবিতঃ কারিতম্ব-যাৎ পদসিদ্ধিঃ এবস্তূতো ২পি সভাষা নিগদকালে সাক্ষ্য নি-হ্ৰতে য স্তস্যাক্টগুণো দণ্ডঃ ।।।।। অথ লিখিত। তত্ৰ বৃহস্পতিঃ। বাণ্মাবিকে ২-পি সমযে ভ্ৰান্তিঃ সংজাযতে যতঃ

। গাতাক্ষরাণি সৃষ্টানি পত্রাবাদা-नाळः भूता।। नातमः। लाशाः जू দিবিখণ প্রোক্তণ স্বহস্তান্যক্তণ তথা। অসাঞ্চিক॰ সাক্ষিমচ্চ সি-क्ति प्रिंगश्रिक खरवाः ॥ मृठाख मोक्टिणा खर्ब धनिकर्णिक लिथ-কাঃ। তদপ্যপার্থ করণ মৃতে ত্বা-ধেঃ স্থিরাশ্রধাৎ।। দর্শিত প্রতি-কালফ পাঠিত° স্মারিতঞ্চ ষৎ। লেখ্য সিধ্যতি সৰ্বত্ৰ মৃতেম্বলি চ সাক্ষিষু ৷৷ লেখ্যে দেশান্তরস্থে চ मरक पूर्विथिए करा । मछ छ९ কালহরণ মসতো জফু দর্শন ।। **ছিম** ভিম ক্তোশৃষ্ট নফ দুর্লি-**থিতেষু চ । কর্ত্তব্য মন্যলিখিত**° ছেষ লেখ্যবিধিঃ স্মৃতঃ ॥ লে-খ্য ফচান্যনামাঙ্ক হেম্বন্তর-ক্লতম্ভবেৎ। বিপ্রতিপত্তৌ পরী-ক্ষ্য° তৎ সম্বন্ধাগমহেতুভিঃ ॥ স্বলেখ্য মসাক্ষিক মপি প্রমাণ चनाबात। लिथा माकिमिनिज यथानप्रधानात्रयः । तम्बन्धिर ৰ্যমিন্ দেশে যাদৃশ লেখ্যস্থিতিঃ প্রবর্ত্ততে তত্ত্র তাদৃশ্যাঃ । তথােঃ **यर्छानार्छक्र्जल्यारगः** । मृ-তা ইতি সাক্ষ্যাদৌ মৃতে পুত্রাদি-मण्ड॰ जिथाशन्य न निधार्छ।

যদ্যাধিভোগো ২স্তি তদা তদপি প্রমাণ মিতার্থঃ॥ ঋ॥ ব্যক্ত মাহ কাত্যায়নঃ। যত্র পঞ্চরমাপন্নো লেখকঃ সহ সাক্ষিভিঃ। ঋণিকো ধনিকশৈচৰ নৈন॰ পত্ৰ৽ প্ৰমাপ-বেৎ !৷ দৰ্শিত মিতি তথাবিধ यि शूर्व यृशिकामि मिम्रिशी अव-মন্যেন বা দশিত শারিতয়া ত দপি সিধ্যতীত্যর্থঃ। সতো দে-শান্তরস্থপভ্রস্ট তৎকালহরণ পত্রানয়নকাল প্রতীক্ষণ । খ-সতো দগ্ধাদেঃ তদৰলোককো-পন্যাসঃ ৷ লেখ্য মিতি ষৎ পশ্রু কেনাপি হেতুনা অন্যনামটি ক্লিত তত্ত্ৰ বিপ্ৰতিপত্তী যন্নানা পশ্র তেন সহাস্য বিশ্বাসহেতু-ভূত সম্বন্ধাবগমৰূপকারণৈ র্নি-র্ণেতব্য মিতি । বৃহস্পতিঃ । সুম্-**ফ শিশু ভীতার্ত্তিঃ** স্ত্রী মন্ত ব্য সনাতুরৈঃ। নিশাপৎসু বলাৎ-কারেঃ রুত্ত॰ লেখ্য॰ ন সিধ্যতি॥ ব্যাসঃ। দাসাস্বতন্ত্র বালৈশ্চ ন্ত্রী-ক্তক্টৈৰ যদ্ভবেৎ। প্ৰমাণ নৈব তল্লেখ্য মিতি শাস্ত্রবিদো বিদুং ৷৷ মিতাক্ষরাষা॰ স্মৃতিঃ। পূগশ্রেণী গণাদীনা যা স্থিতিঃ পরিকীর্তি ত।। তসাস্ত সাধন লেখা[।] ন

দিব্যং ন চ সাক্ষিণঃ।। পূগস্ত । সমূহো বণিগাদীনা পুগঃ সপ-রিকীর্ত্তিতঃ। ইতি কাত্যায়ন ব-চনোক্তঃ। আদি শব্দাৎ বিজা-তীয় লাভঃ। তেন গ্রাম নগরা-দিঃ। শ্রেণী তু সজাতীয় সমূহঃ তাষূলিক জবিন্দকর্মকারকাদিঃ। গণএকক্রিয়াপোদ্যতঃ ৷ লেখ্যস্য চাপ্ৰামাণ্য শক্ষায়া লেখ্য গ্ৰাহি-ণা॰ প্রাপ্তক্ত শোধন প্রকারেণ তন্নিরসনীয়ণ তৎ পুত্রেণ তু লে-খ্যাধীনো ভোগ এব উপন্যা-(मा। न ज् लिश मूकतनीय॰। **जनार काळायनः। बार्हा जू** कि यूट्डा श्री लिश फायान् বিশোধষেৎ। তৎসুতো ভুক্তি দোষাণ স্ত লেখ্য দোষাণ স্ত না-প্রযাৎ ।। বৃহস্পতিঃ । উদ্ধরে-ল্লেখ্য মাহর্ত। তৎসুতো ভূক্তি মেব হি। অভিযুক্তঃ প্রমীত-শ্চেৎ তৎসুতো ২পি তদুদ্ধরেৎ য় অভিযুক্ত ইতি লেখ্যস্য সাধু-ম্ব জ্ঞাপনার্থণ অভিযুক্তে লেখ্য এহীতরি তদবিজ্ঞাপ্যৈব মৃতে তৎ পুত্ৰেগ সাধুস্ব° সাধ্য মিত্যৰ্থঃ । তৎ সাধনঞ্ স্বহস্ত লিখনাদি-নেতিপ্রাগুক্ত ॥ 🕸 ॥

অথ ভুক্তিঃ।

তত্র যাক্তবক্ষাঃ। পশ্যতো ২জ্ব-: তো হানি ভূ মে বি শতি বাৰ্ষিকী । পরেণ ভুজ্যনানায়। ধনস্য দশ-বাৰ্ষিকী॥ বিবাদ মঙ্গৰ্বতঃ সমক্ষ ভূস্বামিনঃ পরেণাসপিঙাদিনা ভূজ্যমানাষা ভূমে বিংশতিবর্ষ-নিবৃত্তা স্বত্বহানিঃ। অত্র লোক-ব্যবহার কর্মস্বাদ্বর্ষগণনা সাব-নেন। তথা চ বিফুধর্মোতর । সত্রাণ্যপাস্যান্যথ সাবনেন লৌ-ক্যঞ্চ যৎ স্যাৎ ব্যবহারকর্ম ৷ তত্ত্বৈব । সাবনে চ তথা মাসি ত্রি॰শৎ সূর্য্যোদযাঃ স্মৃতা ইতি। বিশেষযতি ব্যাসঃ। বর্যাণি বি-শতি র্যা ভূ ভূক্তি তুপরৈ রিহ ৷ সতি রাজ্ঞি সমর্থস্য তস্য সেহ ন সিধ্যতি ।। সমর্থস্য বালত্বাদি দো-ষরহিতস্য। ধনস্য দশবর্ষনিবৃত্ত। স্বস্থানিঃ। তথা চ মনু নারদৌ। যৎকিঞ্চিদ্দশ্বর্যাণি সন্নিধৌ প্রে-ক্ষতে ধনী। ভুজ্যমান॰ পরে স্তৃ-खी॰न न जल्लकु गर्राज्या यदकिकि-ৎ ধনজাত**° সমক্ষ মেব প্রীত্যাদি** ব্যতিরেকেণ পরে দশবর্ষাণি ভু-জ্যমান স্বামী তৃষ্ণী প্রেক্তে মা ভুজ্যতা মিতি ন প্রতিসিধ্য-

তি নাসৌ তল্লকু যোগ্যো ভব- 🖔 তি তত্ৰ তস্য স্বাম্য নশ্যতীত্যৰ্থঃ । গোতনঃ। অজডাপৌগও ধন॰ .দশবর্যভূক্ত॰ পরেঃ সন্নিধৌ ভো-ক্রুঃ ইতি। জড়ো বিকলেন্দ্রিয়ঃ পৌগণ্ডঃ পূতো ২নুৎপরশাশ্র ৰ্গঙঃ কপোলো যদ্য দঃ। তদাহ নারদঃ ৷ বাল আবোডশাদ্বর্যাৎ পৌগণ্ড স্চাপি শব্দাতে। অত্রা-পৌগঙঃ প্রকীর্ত্তিত ইতি সন্ত্রক-ভটেন লিখিত । তৎপাঠে ২পি অপৌগণ্ডস্ত পৌগণ্ডঃ ইতি দ্বিৰা-পকোষাদবিরুদ্ধঃ। তস্মাদ্যাজ্ঞ-वक्यां नि वहना षि॰ শতिवर्ष नि শ-বর্ষাদিকালৈ ভোগ এব স্বত্বং জ-নয়তি। যথা কালপ্রাপ্তিবলেন বীজ সন্ধর° জনযতি তরব*চ জ-সুম মিতি স্বামিনা চাপরিত্যক্তে হিপা শাস্ত্ৰোক্ত কালীন ভোগাৎ স্থান্য মন্যদ্য ভবতি । যথা জ-যেন রাজ্ঞঃ পররাম্টু ধনে ইতি। এব মেব শ্রীকর বালক জোগ্নো-ক ভবদেবভট শূলপাণি সন্ত্র্যুক-ভট চণ্ডেশ্বর মন্ত্রি নব্যবর্দ্ধসানে।-পাধ্যায় প্রভৃত্যঃ ব্যবহারো ২পি ভাদৃগেব ৷ এতদিরুদ্ধ বচনান্য-नाथा कार्यायानि ॥ 🕸 ॥ उत्वा-

পেক্ষা সম্বহানি ভুক্তা চ হয় मार मात्रमः । जुकामानान् भरत-त्रथीन् यञ्चात्माशानूरभक्त । সমক তিঠতো ২প্যস্য তান্ ভূ ক্তিঃ **সরুতে বশে।।** ব্যক্তমাহ বৃ হস্পতিঃ ৷ স্থাবরণ সিদ্ধিনাগোতি ভুক্ত্যা হানি মুপেক্ষষা। উপে ক্ষমা ক্ষমমা তৎ কারণঞ্চ স্থামিনঃ मूनीलव भरहष्ठ्व मयानुवामि। এবঞ্চ বিংশতিবৰ্যাৎ পূৰ্বং স্বক্ তিসাধ্য কর্ষণ পালনালৈয় রুৎগ্ৰ ম দ্রব্য এব স্বত্বং । এবং দশবর্যাৎ পূৰ্ব॰ স্বক্তৃতি সাধ্য দোহন পার-नारेमा ऋष्शः मृक्षामारवव यदः তত্তৎকাল পরতস্তু ভূমৌ গবাদি ধনে ২পি স্বত্ব নিতি। পূর্ব॰ তত্ত্ব-মাশক ভোগে তুঁ চৌর্য্যদোষো-ভবভ্যেব। ভোগে তু স্বন্ধহানি भाशामीना॰ व्यावर्खयां ॥ * ॥ পশ্যতে ২ক্রবত ইত্যভিধাষ যা-ক্তবন্ধ্যঃ। আধি সীমোপনিকেপ জড বাল ধনৈ ৰিনা ৷ তথোপনি-ধিরাজ স্ত্রীশোত্রিযাণাণ ধনে রিই ॥ আধি ৰ্বন্ধকদ্ৰব্য°। উপনিক্ষে পস্ত বাসনস্থ মনাখ্যায় মমুজ যিষিধীয়তে ইতি নারদোক্তঃ। বাসন॰ নিক্ষেপাধারভূত সম্পু-

টাদিকং। সমুদ্রুগঞ্জাদিযুতং। জ ডো বুদ্ধিবিকলঃ। বালো ২প্রা-প্তবোডশবর্ষঃ। উপনিধিঃ প্রীত্যা ভোগার্থ মর্গিতঃ। ততশ্চ আ-थापि र्ज्जि । पिथटेन के विना ২ন্যানি ধনানি উক্তভোগকালে স্বামিনো নশ্যন্তি এতানি তু স্বা-মিনো ন নশ্যন্তি ন বা ভোক্তৃ ৰ্ভ-ব্স্তি। মিতাক্ষরাযাণ স্মৃতিঃ। দার-মার্গ ক্রিয়াভোগ জলবাহাদিষু ক্রিয়া। ভূক্তি রেব তু গুরী স্যান্ন দিব্য° ন চ সাক্ষিণঃ ॥ যাজ্ঞবক্ষ্যঃ । আগমো হুধিকো ভোগাদ্বিনা পূর্বক্রমাগতাৎ। নাগমঃ কারণ তত্ৰ ভুক্তিঃ স্তোকাপি যত্ৰ ন ॥ আগমস্ত ক্তো যেন সে৷ ২ভি-যুক্ত স্ত নৃদ্ধরেৎ। ন তৎসৃত স্তৎ-সুতো বা ভূক্তি স্তত্র গরীয়সী॥ যোভিযুক্তঃ পরেতঃ স্যাত্তস্য রি-ক্থী তমুদ্ধরেৎ। ন তত্র কারণণ ভুক্তি রাগমেন বিনা ক্বতা।। ভূ-ম্যাদাবাগমঃ পূর্বপুরুষ ক্রমানা-গত ভোগাদ্বলবান্ অতঃ ক্ৰমা-গত ভোগ আগমাদ্লবান্। ত-থাচ বৃহস্পতিঃ। অনুমানাৎ গু-রুঃ সাক্ষী সাক্ষিত্যো লিখিত° শুরু। অব্যাহতা ত্রিপুরুষী ভুক্তি

স্তেভ্যো গরীয়সী॥#॥ ত্রিপুরুষ ভোগমাহ ব্যাসঃ। প্রপিতামহেন যজুক্তণ তৎপুত্রেণ বিনা চ তণ। তে বিনা যদ্য পিত্রা চ তদ্য ভোগ স্ত্রিপূরুষঃ ॥ পিতা পিতা-মহে৷ যস্য জীবেচ্চ প্রপিতামহঃ । ত্ৰযাণাণ জীবিতাণ ভোগে। বি-জ্ঞেষ স্ত্রেক পূরুষঃ॥ আগমোপি বলবান্ন ভবতি যত্ৰ স্তোকাপি জু-ক্তি নাস্তি। তথা চ নারদঃ।বিদ্য-যানে হপি লিখিতে জীবৎস্বপি চ সাক্ষিষু । বিশেষতঃ স্থাবরাণাং যন্ন ভুক্ত॰ ন তৎ স্থির॰॥ ইতি দী-পকলিকা। ষত্ৰ বাদিনৌ স্বস্বাগম বল প্ৰবৃত্তো আগমযোশ্চ পূৰ্ৰা-পর ভাবো নাস্তি তত্র যস্য ভু-ক্তি স্তদ্যাগমো বলীযান্ নম্বন্য-স্যেত্যর্থঃ ইতি মিতাক্ষরা। অ-ৰ্থান্দত্ৰাগম পৌৰ্বাপৰ্য্য নিশ্চয স্তত্ৰ সৰ্বেম্বেৰ বিবাদেষু বলবত্যু-ত্তরা ক্রিয়া। আধৌ প্রতিগ্রহে ক্রীতে পূর্ব। তু বলব্তরা ॥ ইতি যাজ্ঞবক্ষ্য বচনামির্ণযঃ। আগম স্ত্রিতি আ সম্যক্ গম্যতে প্রাপ্য-তে স্বীক্রিয়তে যেন স আগমঃ ক্রযাদি রিভি ব্যবহারণাতৃকা। আগমঃ সাক্ষি পত্রাদিক মিতি

দীপকলিকা। আগমো ধনোপা-क्कं ताथायः कं यामि दिनि रेम-থিলাঃ। তত্রান্যেনাভিযুক্ত স্তৎ কূটতা মৃদ্ধরেৎ তৎপুত্র পৌত্রৌ নাগম মুদ্ধরেতা॰ কিন্তু ভুক্তিরে-ব ৷ তত্ৰ প্ৰমাণ বিশেষযতি বৃহ-ম্পতিঃ। আহর্ত্তা শোধষেৎ জু-ক্তি মাগমঞ্চাপি সণ্সদি। তৎস্-তো ভুক্তি মেবৈকা পৌল্রাদিষু न किश्वन ॥ देमः मृलभानिधृष्ठः তৎ পুত্রাদি ন কিঞ্চনেতি মৈ-থিলধৃত । আহর্ত। অর্জনকর্ত। অত্র পুশ্রস্য ভূক্তিশোধন মাত্রণ ।।।।। ভুক্তি শোধন মাহ তু र्वाप কাত্যাযনৌ। সাগমো দীর্ঘকাল-শ্চ নিচ্ছিদ্রো ২ন্যরবোজ্ঝিতঃ । প্রতার্থি সনিধানক ভোগঃ প-ক্ষাঙ্গ ইষ্যতে ॥ ইষ্যতে প্রমাণত্বে-न। সাগमः क्यानियुक्तः। এব চ ভূনিবিষয়ক বিংশতিবর্ষ ধনবিষ-যক দশবর্ষান্যুন কালভোগপরঃ াযে। ২ভিযুক্ত ইত্যাদি ষো ভো-গে ক্রিমমাণে পরেণাভিযুক্তঃ স-ন্পরেতো মৃতঃ স্যায়াগম মৃদ্ধৃ-তবান্ তদা তৎ পুলাদি রাগম নুদ্ধরে । তথা চ নারদঃ। অথা-কঢ বিবাদন্য প্রেতস্যাব্যবহা-

রিণঃ। পুত্রেণ সোর্থঃ সংশোধ্যো न जू ভোগে। निवर्त्वरय ॥ वि-বাদে সতি শেষঃ। ভোগঃ কেব-লভোগঃ। তথা চ সএব। আদৌ তু কারণ দান মধ্যে ভুক্তিস্ত সাগনা ইতি এষ সবিবাদ ভোগঃ ষফ্যব্দেতরপরঃ। তথাবিধ ভো-গস্পাগ্ন বিনাপি প্রামাণ্যাৎ। তথা ব্যাসঃ। বর্ষাণি বিশ্পতি• ভুজ্বা স্বানিনা ব্যাহতা সতী। ভূক্তিঃ সা পৌরুষী ভূমে দ্বিগুণা जू िष्टिलो क्यी ॥ जिल्लोक्यी जु ত্রিগুণা ন তত্রান্বেষ্য আগনঃ। এতদ্বচন মসনক্ষ ভোগ বিষয়ক মিতি সমক্ষ বিংশতিবর্ষাভোগ-विषयक वहत्मनाविद्यां धः । अ তাদৃক্স্ত্যুক্ত কালএব। কাত্যা-যনঃ। স্মার্ত্তকালে ক্রিয়া ভূনেঃ সাগম। ভুক্তি রিষ্যতে । অস্মা-র্ত্তে দ্বাগমাভাবাৎ ক্রমাত্রিপুরু-ষাগতা ॥ ষষ্টিববৈর্কপুরুষভু-ক্তৌ ত্রিপুরুষভুক্তি ব্যপদেশস্য ফলমাহ ন তত্ত্ৰেত্যাদি। অতএব नात्रमः । जनगारयन जू यस्कः পিত্ৰ। পূৰ্বতনৈ স্ত্ৰিভিঃ। ন তৎ শক্য মপাকর্ত্ত্ ক্রমান্ত্রিপুরুষা-গত° 11 অন্যাযেনেত্যত্রানাগম

মিতি শূলপাণিধৃত পাঠঃ। তুর-প্यर्थः। পিত্র। সঁহ পিতর মাদায ত্রিভি রিত্যর্থঃ। যতু অনাগমস্ক যো ভুঙ্জে বহূন্যব শতানি চ। চৌরদণ্ডেন ত॰ পাপ॰ দণ্ডযেৎ পৃথিৰীপতিঃ।। ইতি তদ্য বচন॰ দণ্ড বিধাযক ন ত্যুখ্যার্থপর ধর্মশাস্ত্র বিরোধাৎ। তদাহ সএব ॥ যাক্র বিপ্রতিপত্তিঃ স্যাৎ ধর্ম-শাস্ত্রার্থশাস্ত্রযোঃ। অর্থশাস্ত্রা-র্থ মৃৎসৃজ্য ধর্মশাস্ত্রার্থ মাচরেৎ । এবনেব শূলপাণাপাধ্যাষাঃ। বস্তুতস্তু অনাগম মিতি দণ্ড বি-ধাযক বচন জ্রীধন নৃপধন পর• । স্ত্রীধনঞ্চ নৃপেক্রাণাণ ন কদাচন জীর্য্যতি। অনাগমণ ভুজ্যমান ম-পি বর্ষশতৈ রপি॥ ইভি স্বত্ব নি-ষেধক বচনান্তরৈকবাক্যত্বাৎ । ষত্র বিপ্রতিপত্তিঃ স্যাদিতি বচন-मारिभाजमुमारुद्रवः । यदेवकमा জযে १वधार्यामार्ग मिळनिक द्र-পরস্য জ্বে ২বধার্য্যমাণে ধর্ম-লব্ধি স্তত্র। হিরণ্য ভূমিলাভে ভ্যো মিত্ৰলিক্ক ৰ্বরা যতঃ। অতো যতেত তৎপ্রাপ্তাবিতি বেদবি-দা॰ মত॰। ইতি ষাজ্ঞবন্ধ্যোক্তার্থ-শাস্তার্থ মুৎসৃজ্য ক্রোধ লোভ

বিবজ্জিত ইতি ধর্মশাস্ত্রার্থ মব- ।

লয় ব্যবহার পদ্যেও । অতএব

সভ্যেনাবশ্যবক্তব্য ধর্মার্থ সহিত বচঃ । ইতি কাত্যাযনোক্রেণ ভবদেবভটাস্ত ব্যাসবচন প্রকপ্রতিবাদিনে । ২সমিধানে পুরুবৈক্তমভোগাভিপ্রায়ণ । ত্রৈপুরুষ ভোগস্য তত্রেব প্রমাণত্বাদিত্যাহঃ ।। #।।

অথ ভুক্তিস্বদাপবাদঃ ।
বৃহস্পতিঃ। ভুক্তি স্তৈপুরুষী সিদ্যোদপরেষাণন সংশযঃ । অনিবৃত্তে সপিওত্বে সঙ্গল্যানাণ ন
সিদ্ধ্যতি । অস্বামিনা চ যজুক্তণ
গৃহ ক্ষেত্রাপণাদিকণ । সুহৃদ্ধদু
সঙ্গল্যস্য ন তন্ডোগেন হীযতে।।
বিবাহ্য শ্রোত্রিয়ে ভুক্তণ রাজ্ঞান
মাত্যৈ স্তথ্বে চ । সুদীর্ঘেণাগি
কালেন তেষাণ তত্তু ন সিদ্ধ্যতি।।
আপণো বিক্রয়ন্তানণ বিবাহণা
জামাতা ।। #।।

অথ যুক্তিঃ।
নারদঃ। উক্ষাহস্তো ২গ্নিদো জ্ঞেযঃ শস্ত্রপাণিশ্চ যাতকঃ। কেশাকেশি গৃহীভশ্চ যুগপৎ পারদারিকঃ।। সন্দালপাণি রিজ্ঞেয়ঃ
সেতুভেতা সমীপগঃ। তথা

সঠারহন্তশ্চ বনচ্ছেত্তা প্রকীর্ত্তি: তঃ।। প্ৰত্যক্ষ চিহ্নৈ ৰ্বিজ্ঞেযো দ-ও পারুষ্যক্ষরঃ। অসাফি প্র-**ত্যিয়া হেতে পারুষ্যে তু পরীক্ষণ**° া প্রত্যক্ষিটিহ্নঃ রুধিরাক্তথ্সা-দিভিঃ। পাৰুষ্যে বাক্পাৰুষ্যে। শখ্বঃ। লোগুহস্তশ্চ চৌরঃ ইতি । নারদঃ। অভীক্ষণ দেশ্যমানো ২পি প্রতিহন্যাম তদ্বচঃ। ব্রি চ-তুঃ পঞ্চজো বা পরতো ২র্থণ ভমাবছেৎ ৷৷ ষদা ধনিকেনাধন-ৰ্ণিক স্ত্ৰি চতুঃ পঞ্চক্ৰন্ধে বা স্বং মে ঋণ ধার্যসীতি পুনঃ পুন র্দেশ্য-সানে। ২পি ন ভদ্বাক্য প্রতিহন্তি তদে।তরকাল মনেনাভ্যুপগতে। श्य नर्थ इंडावधार्या उमर्थ गृनि-काय माशरयिम छार्थः॥ 🗱॥ অথ শৃগ্ৰঃ ৷

নারদঃ। যুক্তিষপ্যবসমাসু শপথে রেন মর্দ্ধথেৎ। অর্থ কাল বলা-পেক্ষ মন্ত্রায়ু সূক্তাদিভিঃ। এনং বিচার্য্যমাণ নর্থং অর্দ্ধথেৎ পীড-যেরির্ণমে, দিত্যর্থঃ। অর্থন্য বিবা-দাস্পদস্য বলং বহু মভাবঃ কাল-সাচ বলং পুণ্যাপুণ্যম্বং তদপেক্ষং যথান্যাদিত্যর্থঃ। ভূ দুর্বাকরম্ব-দ্যা পুল্রাদিশিরঃস্পর্শস্য চাজে

मर्गनीयदार । जब मरेयटर क्र ত ন বেতি প্রতিজ্ঞা সুচ্চার্য্যাগ্রে জলে বা হস্ত প্রক্রিপেৎ। এত নিখ্যাত্ত্বে মম সুক্তত নগ্যেদিতি বা জ্বাৎ। নত্বগ্নি পরীক্ষাণ জল পরীকাণ বা স্বর্যাৎ ইত্যভিপ্রা-ষবর্ণন॰ যুক্ত॰ তদ্য। মহাভিষোগ বিষয়কদ্বেন শপথ সমভিব্যাহ্ রানর্ছাৎ। সুক্তাদিভি রিত্যা-দিনা দূৰ্বা সত্যাদ্যুপগ্ৰহঃ। তথা চ বিষ্ণুঃ। সর্বেঘেবার্থজাতেষ मृनाः सर्वः अक्षरयः । उद ক্ষলোনে শূদ্র দুর্বাকর শার্গ-**ত্রিক্লঞ্লোনে জলকর**° চতুঃক্ল ফলোনে স্বৰ্ণকরু পঞ্চক্রকলো-নে সীতোদ্ধৃত মহীকর সুবর্ণা-ৰ্জোনে কোশো দেযঃ শূ দ্ৰস্য য-থা সমষে বিহিতা জিয়া তথা षि छटन २८र्थ ताजनामा जि छटन **২র্থে বৈশ্যস্য চতুর্গুণে ২র্থে** বা ষ্ণাদ্যোতি। ক্রফলঃ কাঞ্চনরতি: কা তমূল্যাদূ:ন ক্রফলোনে।এব মন্যত্র। মন্ঃ। সভ্যেন শাপ্যে-দ্বিপ্রণ ক্ষত্রিয়ণ বাহনাযুদ্ধিঃ। গো বীজ কাঞ্চনৈ ৰৈশ্য শুড় স বৈস্ত পাতকৈঃ॥ পুত্ৰ দারস্য বা-

'वावश

প্যেব॰ শিরা॰িস স্পর্শয়েৎ পৃথক্ 1 ব্রাক্ষণেন মযৈতৎ ক্বত° ন ক্বত° বেতি প্রতিজ্ঞা মৃচ্চার্য্য মত্য মি-তি বক্তব্য । তথৈব ক্ষত্রিষেণ वाङ्गायूथ॰ म्लुखेवा॰। তरेथव देव-শ্যেন গো বীজ কাঞ্চনানামন্য-তম॰ স্পুট্টব্য॰। শূচ্চেণ তু পূৰ্বো-ক্ত॰ সৰ্বমেব স্পুষ্টব্য॰ তেষা॰ বৃ-থাক্তস্পৰ্শানাণ পাতৃকহেতুত্বাৎ পাতকশব্দেন নির্দেশঃ। হলাযু-(धारभाव॰ ॥ 🗱 ॥ टेमविक्य। वि-ষষ মাহ নারদঃ। অরণ্যে নির্জনে 'রাত্রাবন্তর্বেশ্বনি সাহসে। ন্যা-সাপহরণে চৈব দিব্যা সম্ভবতি ক্রিয়া ।৷ বৃহস্পতিঃ। দেব ব্রাহ্মণ পাদা শ্চ পুল্ল দার শিরাণসি চ। এতে তু শপথাঃ প্রোক্তা মনুনা স্বন্নকারণে ৷৷ সাহসেম্বভিশাপে ह ित्रानि जू विः भाषन । जा শগথ দিব্যযোঃ পৃথক্ত্বপ্ৰতীতেঃ । শপথে ন দিব্যধর্মাঃ কিন্তু বৈধে কর্মণি তত্র শৌচার্থণ স্বানাচম-নাদিমাত্র° কার্য্য°। দিব্যানি তু দিব্যভত্ত্বে কথিতানি নাত্ৰ লিখি-তানি। অত্রাভিযুক্তেন শপথঃ ক র্ত্তব্য ইত্যুৎসর্গঃ ॥ 🟶 ॥ উভযে-চ্ছ্যাভিয়েক্তাপীত্যাহ নারদঃ।

অভিষোক্তা শিরোবত্তী সর্বত্তৈ-व अकीर्खिङः । .इष्ट्यानाज्तः পর্য্যাদিতরে। বর্ত্তযেচ্ছিরঃ ।। ই-তরঃ শপথ কর্ত্তিমঃ। তথা কা-ত্যায়নঃ। আচতুর্দশকাদক্লো-ষস্য নো রাজ দৈবিকং। ব্যসনং জাযতে যোর স জ্রেষঃ শপথে শুচিঃ৷৷ ব্যসন মাপৎ৷ যোর মতি-পীডাকরণ। তথা চ কোষাধিকা-রে যস্য পশ্যেদিত্যনূবৃত্তে বিষ্ণুঃ । রোগো ২গ্নি র্জ্ঞাতিমরণ রাজা-তঙ্ক মথাপি বা। তমশুদ্ধণ বিজা-নীয়াৎ তথা শুদ্ধ বিপর্যয়াৎ॥ কাজ্যাযনঃ। তদ্যৈক্স্য ন সর্ব-म্য জনদ্য যদি সম্ভবেৎ। রো-গো ২গি র্জ্ঞাতিমরণ মৃণণ দদ্যাৎ দমঞ্চ সঃ।। জ্বরাতিসার বিস্ফোট গূঢ়াস্থি পরিপীডন । নেত্ররুগ্নল-রোগশ্চ তথোন্সাদঃ প্রজাযতে॥ শিরোরুগ্তদভঙ্গশ্চ দৈবিকা ব্যা-ধযো নৃণাণ। তদ্যৈকস্যেতি ন তু **(मन्या) वक यत्र वा मिः ॥ ॥ यनुः।** ন বৃথা শপথ ঙ্গর্যাৎ স্বল্প্যের্থে নরো বুধঃ ৷ বৃথা হি শপাণ সর্বন্ প্ৰেত্য চেহ্ চ নশ্যতি॥ কামিনী-ষু বিবাহেষু গবা॰ ভক্ষ্যে তথেন্ধ-নে। ব্ৰাহ্মণাভ্যুপপত্তো চ শপ**থে**

নাস্তি পাতকং ।। কামিনীম্বিতি রহিদি কামিনী সন্তোষার্থং কৃথা শপথে এবং বিবাহ দিদ্ধার্থং গোপ্রাসার্থং আবশ্যক হোমেন্ধনার্থা আমানক্ষার্থ মঙ্গীরুত ধনাদৌ। যমঃ। বৃথা তু শপথং রুত্বা কীট্যা বধসংযুতং। অনৃতেন চ
যুজ্যেত বধেন চ তথা নরঃ।। তস্মান্ধ শপথং সর্যান্ধরো মিথা। বধেন্সিতং। কীট্ন্যোতি প্রাণিমাত্রোপলক্ষণং তদ্বধ পাপেন বৃথা
শপথকর্ত্তা যুজ্যত ইত্যর্থঃ।। ধ্বঃ।।
অথ নির্ণয়ঃ।

তত্ত্ব নারদঃ। ষস্যোচুঃ সাফিণঃ
সত্যাণ প্রতিজ্ঞাণ স জমী ভবেৎ
। অন্যথা বাদিনো মস্য ধ্রুব স্তস্যা পরাজ্যঃ ॥ স্বমত্যুপপমো
২পি স্বচর্য্যাবসিতো ২পি সন্।
ক্রিযাবসমোপ্যহেত পরণ সত্যাবধারণণ ॥ সভ্যৈর রব্ধৃতঃপশ্চাৎ
স শাস্যঃ শাস্ত্রমার্গতঃ । যস্য বাদিনঃ প্রতিবাদিনো বা সাঞ্চিণ
ইত্যুপক্ষলণণ । সাফি লিখিত জু
ক্রি শপথানাণ মধ্যে ২ন্যতম প্রমাণণ যস্য প্রতিজ্ঞাযাঃ সত্যন্ত্রপ্রতিপাদকণ সএব জ্বী অন্যথা
পরাজিত ইতি প্রত্যেতব্যণ। স্বয়-

মভ্যুপপন্ধঃ আত্মনৈবাঙ্গীক্ত স্ব পরাজ্বঃ স্বচর্য্যাবসিতঃ কম্প-ম্বেদ বৈবর্ণ্যাদিনা পরাজিতত্ত্বে-नावशृष्टः। कियावमझः माक्गानि-ন। প্রাপ্তপরাজয়ঃ। পরমনন্তরু সভ্যাবগ্লারণ মহেত সভাসদাণ মিলিতানাময়ণ পরাজিত ইতি নিৰ্ণয মৰ্হেত। আকাজ্ফেত স শাস্ত্রবিধিনা শাস্যঃ ॥ 🟶 ॥ নির্ণ-ষস্য ফলমাহ বৃহস্পতিঃ। প্রতি-क्खानिताषामी প্राष्ट्रियाकामि পূজনাৎ। জযপত্রস্য চাদানাৎ क्यी लाक निगमाटा ॥ 🕸 ॥ জ্বপত্রস্য লিখন প্রকার মাহ में में प्रकृति वार्यशासिय पूर्व-পক्षांख्रां िक । कियां वधांत-ণোপেত জ্যপত্রে ২খিল লি-খেৎ ৷৷ পূৰ্বেণোক্ত ক্ৰিষাযুক্ত निर्वशिष्ठः यन। नृशः। श्रममा-জ্জযিনে পত্ৰণ জ্বপত্ৰণ তদুচ্য-তে।। কাত্যাযনঃ। অর্থি প্রত্য-র্থি বাক্যানি প্রতিসাক্ষিবচ স্তর্থা । নিৰ্বশ্চ তথা তদ্য যথাচাব-ধৃত প্রয়ণ।। এতদ্যথাক্ষর লেখ্য । যথা পূৰ্ব নিবেশ্যেৎ। সভাস-দশ্চ ষে তত্ৰ ধৰ্মশাস্ত্ৰবিদ স্তথা ৷৷ ততশ্চ ভাষোত্তরে ক্রিয়া চ গত্র

भाकग्रामिक निर्वा जय शत्राज যাবধারণ নির্ণযকালাবস্থিত ম-ধ্যস্থা শ্চেত্যাদিক সর্ব লেখনীয় নিকপণস্য সম্যকত্ব প্রদর্শনার্থ । তথাহি ভাষোত্তর লিখন॰ হেত্ব-ন্তরেণ পুন ন্যায় প্রত্যবস্থান নি-ষেধার্থ নহি ন গৃহীত গিতি নি-থ্যোত্তরেণ পরাজিতস্য পুনঃ প-রিশোধিত॰ মযেতি প্রত্যবস্থান॰ সম্ভবতি। প্রমাণ লিখনম্ব পুনঃ व्यमाना छटत्रन न गाय निटयक्षार्थ । তদাহ কাত্যাযনঃ। ক্রিয়াণ বল-বতীণ ত্যক্ত্বা দুৰ্ৰলাণ যো ২বলশ্ব-তে। স জযে ২বধৃতে সভ্যৈঃ পু-न खा॰ नाश्च्या बिया। निनी-তে ব্যবহারে তু প্রমাণ মফল ভ-বেৎ। লিখিত সাক্ষিণো বাগি পূ-ৰ্ষ মাবেদিত° ন চেৎ ৷৷ যথা পক্বেষু ধান্যেষু নিষ্ফলাঃ প্রাবৃষো গুণাঃ ৷ নিণী তব্যব্যবহারাণা প্রমাণ মফল তথা।। 🗱।। নির্ণযোত্ত রক্ত-্ত্য মাহ মন্ঃ। অর্থে ২পব্যয়মান-ন্তু কারণেন বিভাবিত । দাপযে-দ্ধনিকস্যার্থত দওলেশঞ্চ শক্তি-তঃ ৷৷ অপব্যয়মান° অপলপন্ত° कातर्गन माकगिन श्रमार्गन । যাজ্বক্ষাঃ। জ্ঞাত্বাপরাধ দেশ-

क्ष काल॰ वन मेथालि वा। वयः কর্ম্ম চ বিত্তঞ্চ দণ্ড দণ্ডেষ্ দাপ-যেৎ॥ মনুঃ। তীরিত চানুশিক্টঞ্চ যত্র ক্বচন সম্ভবেৎ। ক্রতণ তদ্ধর্ম-তো বিদ্যাৎ ন তৎ ভূষো নিব-র্ত্তবেৎ।। অনুশিষ্ঠ॰ সাক্ষ্যাদি নি-ণী ত অতএব তীরিত প্রাড়িবা-কাদিভিঃ সমাপিত । তদ্বিবাদপ-ए॰ পून र्न निवर्छ एपि छार्थः। यज তীরিতানুশিফীযো রপ্যধর্মাক্ততত্ত্বণ মন্বা পরাজ্যী পুন দিগুণ দণ্ড-মঙ্গীক্ষত্য প্রত্যবতিষ্ঠতে। তত্ত্র পু-ন র্ন্যাযদর্শন মাহ নারদঃ। তী-রিভ° চানুশিষ্টঞ্চ যো মন্যেত বি-ধর্মতঃ। দ্বিগুণ দণ্ড মাদায তৎ কার্য্য॰ পুন রুদ্ধরে ।। ৠ।। অসদি-চারে তু বিচারাস্তর মাহ সএব। অসাক্ষিকন্ত যদৃষ্ট বিমার্গেণ চ তীরিতং। অসন্মত মতৈ দৃ ফি॰ পুন দৰ্শন মহতি ৷৷ অসাক্ষিক মিত্য-প্রমাণকোপলক্ষণ । যাজ্ঞবন্ধ্যঃ । দুদ্ ফীণ্স্ত পুন দ্ ফু। ব্যবহারা-মৃপেণ তু। সভ্যাঃ সজ্যিনে। দ-ত্যা বিবাদান্দিগুণ দমণ।। সাফি मज्यावमञ्चानां पृष्टा मर्गन शू-নঃ। সুচর্য্যাবসিতানান্ত নাস্তিপৌ-নর্ভবে বিধিঃ ৷৷ সাক্ষিবচনেন

সভ্যাবধারণেন চ প্রাপ্তাবসাদা-नाः भून नी यम में ना यवा भारतन বিরুদ্ধ ভাষাদিনা প্রাপ্তাবসাদা-सी ह ना छि भून नी यः। वृह्य्य-তিরপি।পলায়নানুত্রস্থাদন্যপ-ক্ষাশ্ৰযেণ চ। হীনস্য গৃহতে বা-দে। ন স্ববাক্যজিত্স্য চ ।। মনুঃ । वनामख॰ वनाषु छ॰ वनाषा नि-থিতঞ্চ যৎ। সর্বান্ বলফ্রতানর্থা-নক্তান্ মনু রববীৎ ।। ষাজ্ঞব-ক্ষাঃ। বলোপাধি বিনিবৃত্তান্ ব্যবহারান্নিবর্ত্তবেৎ। স্ত্রী নক্ত ম-ন্তরাগার বহির্গামক্তাণ স্তথা।। মতোশভার্ভ ব্যসনি বাল ভীতা-ি যোজিতঃ। অসম্বন্ধকৃত শৈচৰ ব্যবহারো ন সিদ্ধ্যতি ॥ উপাধি-শ্চল নিতি শূলপাণিঃ। উপাধি ভয় দি রিতি বিজ্ঞানেশ্বরঃ। তম্ব-তে ভাঁভাদি যোজিত ইত্যক্ত ব-চনেন পৌনরক্তে । বহিগ্রা মঃ ব-हिर्फिनाः। यत्छ। यक्तामिना। छ-শতে। বাতাদিন। ৷ ব্যসনী দ্যতা-দ্যাসক্তঃ। অসহস্কো বাদিনিযু-ক্তব্যতিরিক্ত উদাসীনঃ। আদি পদাদস্বতন্ত্র দাস পুত্রাদে এ হণ্ । তথা চ নারদঃ। স্বতন্ত্রো ২পি হি যৎ কাৰ্য্য সৰ্ব্যাচ্চাপ্ৰক্লতি

গতঃ। তদপ্যক্বত মেবাস্থু রস্বাত-স্ত্ৰস্য হেতুতঃ ।। কাম ক্ৰোধাভি ভূতা বা ভষ ব্যসন পীডিভাঃ। রাগ দ্বেষ পরীতাশ্চ জ্রেষা স্কৃপ্র-ক্তি গতাঃ ৷৷ তথা দাসক্ত কা-র্য্য মক্তত পরিচক্ষতে । অন্যত্ত স্বানি সন্দেশান্ন দাসঃ প্রভু রাজ নঃ ৷৷ পুত্ৰেণ চ ক্বতং কাৰ্য্যং যৎ স্যাদচ্ছন্দতঃ পিতুঃ । তদপ্যক্ত-নেবাহু দাস পুত্রে চ তৌ সমৌ॥ এতচ্চ স্নটু যভরণাতিরিক্ত বিষয়ং । স্কটু শ্বার্থে ২ভ্যধীনে। ২পি ব্যব: হার॰ যমাচরেৎ। স্বদেশে বা বি-দেশে বা ত॰ জ্যাযান্ন বিচাল্যেৎ **॥ ইতি মনুবচনাৎ স্টুয় মবশ্য**জ-রণীয়ণ। অভ্যধীনঃ পরভন্তঃ পুত্র-मामामिशवावश्वात मृगामिक°का।-যান্ স্বতন্ত্ৰঃ ন বিচাল্যেৎ অনুম-ন্যেত। তথা চ নারদঃ। স্বাতন্ত্র্য-স্তু স্থাত জ্যেষ্ঠে জ্যৈষ্ঠ গুণ বয়ঃ ক্তেণ। অস্বভন্তাঃ প্ৰজাঃ স্ৰাঃ স্ব-তন্ত্রঃ পৃথিবীপতিঃ ৷৷ অস্বতন্ত্রঃ স্মৃতঃ শিষ্য আচাৰ্য্যস্য স্বতন্ত্ৰ। অস্বতন্ত্ৰাঃ স্ত্ৰিষঃ সৰ্বাঃ পুত্ৰা দা-সাঃ পরিগ্রহাঃ ॥ বতন্ত্র ভূত্র 🦞 গৃহী যস্য তৎ স্যাৎ ক্রমাগত । গর্ভ স্থৈঃ সূদ্শো জেয়ঃ অফীনা-

ছৎসরাৎ শিশুঃ ৷৷ রাল আ্যো-ডশাদ্বৰ্যাৎ পৌগণ্ডোপি নিগদ্য-তে । পরতো ব্যবহারত্তঃ স্বতন্ত্রঃ পিতরাবৃতে॥ জীবতো ন স্বতন্ত্রঃ স্যাজ্জরযাপি সমন্বিতঃ। তথে। রপি পিতা শ্রেষান্ বীজ প্রাধা-ন্য দর্শনাৎ ॥ অভাবে বীজিনো-মাতা তদভাবে চ পূর্বজঃ। পরি-গ্ৰহা অনুজীবি প্ৰভৃতষঃ। তথা চ বৃহস্পতিঃ। পিতৃব্য ভ্রাতৃপুত্র স্ত্রী দাস শিষ্যানুজীবিভিঃ। यक्तृशै-**७**॰ कर्तृशार्थ ककाृशी नाजू गर्र-তি।। কাত্যায়নঃ। স্বটুয়ার্থ মশ-ক্তেন গৃহীত ব্যাধিতেন বা । উপপ্লব নিমিত্তঞ্চ বিদ্যাদাপৎ ক্ল-ভম্ব তৎ ৷৷ কন্যা বৈবাহিকঞ্চৈব প্রেতকার্য্যে চ যৎ ফ্রতং ৷ এতৎ সর্বণ প্রদাতব্যণ স্বাটুম্বেন ক্রতণ প্রভোঃ।। প্রভো রিতি কর্ত্তরি ষ-ষ্ঠী তেন প্রভুগা দাতব্য মিতি র-ত্নাকরঃ। বৃহস্পতিঃ। যঃ স্বানি-न। नियुक्ता रेशि धनाय राय পালনে। ঙ্গদীদ ক্রষি বাণিজ্যে निमृकीर्थञ्च न यृठः ॥ প্রমাণ তৎ ক্বত সৰ্বণ লাভালাভ ব্য-रयामग्र॰। ऋटमटम वा विटमटम वा স্বামী তম বিসম্বদেৎ 11 ইতি 🕮 📗

রঘুনন্দনভটাচার্য্যবিরচিত ব্যু-বহারতত্ত্ব॰ সনাপ্ত॰ ॥ 🕸 ॥ ব্যবহারজ্ঞঃ পু॰ প্রাপ্তব্যবহারঃ। স তু যোডশবর্ষানন্তর ভবতি। যথা বাল আষোডশাদ্বৰ্যাৎপৌ গঙ্গোপি নিগদ্যতে। পরতো ব্যবহারজ্ঞঃ স্বতন্ত্রঃ পিতরাবৃতে ॥ ইতি ব্যবহারতত্ত্বধৃত নারদ-বচন॰ ॥ ব্যবহারজ্ঞাতরি ত্রি ॥ वार्वशतमान की नायमान। বিচারকরণ । ইতি মিতাক্ষরা ।। ব্যবহারপদ ক্লী বাদিনারাজ্ঞি-নিবেদন । যথা যাজ্ঞবন্ধ্যঃ। স্ফুত্যাচার ব্যপেতেন মার্গেণা-ধর্ষিতঃ পরেঃ। আবেদযতি চে-জাজ্ঞি ব্যবহারপদ° হি তৎ ॥ ম্মৃতি সদাচার বহিভূতেন ব-র্ঘন। পরে রর্থতঃ শরীরতো বা গীডিত শ্চেদ্রাজনি নিবেদযেৎ তদ্ব্যবহার দর্শন স্থানণ। চেদি-ত্যত্র যদিতি মৈথিলাঃ। আবে-দয়তি চেদিত্যনেন স্বয়ণ বিবা-দোখান রাজ্ঞান কর্ত্তব্য মিতি শূলপাণি মহামহোপাধ্যাযাঃ॥ রাজ্ঞীতি ব্যবহার প্রদর্শক পরণ তথাচ বৃহস্পতিঃ। রাজা কার্য্যা-ণি সংগশ্যেৎ প্রাড়িবাকো ২থ

বা দ্বিজঃ । কাত্যায়নঃ । স. প্রাড়িবাকঃ সামাত্যঃ স বান্ধণ পুরোহিতঃ। স্বয়ণ স রাজা চি-'নুযাৎ তেষা জয় পরাজযৌ ম যদা কার্য্যবশাদ্রাজা ন প-শ্যেৎ কাৰ্য্যনিৰ্ণয় । তদা নি-**যুঞ্জ্যাৎ বিদ্বাণ্সণ** ব্রাহ্মণণ বেদ-পারগণ।। যদি বিপ্রো ন বিদ্বান্ **স্যাৎ** ক্ষত্রিয° তত্র যোজ্যেৎ । বৈশ্যস্বা ধর্মশাস্ত্রজ্ঞঃ শৃত্র খ-ত্নেন বৰ্জষেৎ ।। স বিনীতবে-শঃ। মনুঃ। জাতি মাত্রোপজী-বী বা কাম স্যাদ্রান্ধণক্রবঃ। ধর্মপ্রবক্তা নৃপতে ন তু শূড়ঃ कनाठन ॥ गामः। विकान् वि-হাষ যঃ পশ্যেৎ কাৰ্য্যাণি বৃষ-লৈঃ সহ। তস্য প্রক্ষুভ্যতে রা-জ্যে বল কোষশ্চ নশ্যতি ৷৷ मुःभौत्नाभि विकः भृत्का। न শৃজে। বিজিতেন্দ্রিষঃ । দুষ্টাণ গাঁ॰ কঃ পরিত্যজ্যার্চ্চবেচ্ছীল-বতী॰ খরী॰ ৷৷ ইতি ব্যবহার-তত্ত্ব গা

ব্যবহারপাদঃ পুণ ব্যবহারা শুঃ। ষথা। অথ ব্যবহারপাদনি গুঃ। তত্র বৃহস্পতিঃ। পূর্বপক্ষঃ স্মৃতঃ পাদে। দ্বিগাদ শ্চোত্তরঃ স্মৃতঃ। ক্রিষাপাদ স্তথা চাল্য শ্চতুর্থা নির্ণয় স্মৃতঃ ।। ইতি ব্যাবহার-তত্ত্বং ।। অপিচ । পরস্পরং মনু-ষ্যাণাং স্বার্থ বিপ্রতিপত্তিষু । বা-ক্যাম্যাযাদ্যবস্থানং ব্যবহার উ-দাস্তঃ।। ভাষোত্তরক্রিয়া সাধ্য সিদ্ধিভিঃ ক্রমবৃত্তিভিঃ । আদ্ধি-প্র চতুরংশস্ত চতুষ্পাদভিধীন-তে ।। ইতি মিতাক্ষরা ।।

ব্যবহারমাতৃকা স্ত্রী ব্যবহারো-প্ৰোগিক্ৰিয়া। তদ্মথা। ব্যব-হারদর্শন > ব্যবহার লক্ষণ ২ সভাসদঃ ৩ প্রাড়্বিকাদিঃ ৪ ব্যবহারবিষয়ঃ ৫ রাজ্ঞঃ কার্য্যা-নুৎপাদকত্ব ৬ কার্য্যার্থনি-প্রশঃ ৭ আহ্বানানাহ্বানে ৮ আসেধঃ ৯ প্রত্যর্থিন্যাগতে লেখ্যাদিকর্ত্তব্যতা ১০ পঞ্চবি-ধোহীনঃ ১১ কীদৃশংলেখ্য ১২ পক্ষাভাষাঃ ১৩ অনাদেষাঃ ১৪ আদেযঃ ১৫ নিযুক্তজ্বপরাজ-ষে বাদিজমপরাজযৌ ১৬ শো-**ৰিতলেখ্যনিবেশন° ১৭** উত্তরা-বধিশোধন° ১৮ শোধিতে পজা-बारा উত্তরকর্ত্তব্য° ১৯ উত্তর-লক্ষণ ২০ সত্যোত্তরলফ্ষণ ২১ মিথ্যোত্তরলক্ষণ ২২ প্রভ্যবক্ষ

ন্দনোত্তরং ২৩ প্রাঙ্ন্যাযোত্ত-রং ২৪ উত্তরাজাসঃ ২৫ সঙ্করা-নৃত্তরং ২৬ প্রত্যথিক্রিয়ানির্দে-শঃ ২৭ উত্তরেপত্রেভিনিবেশি-তেসাধননির্দ্দেশঃ ২৮ তৎসি-ক্লৌসিদ্ধিঃ ২৯ চতুষ্পাদ্ব্যবহা-রঃ ৩০ । ইতি মিতাক্ষরাযাণ ব্য-বহারমাতৃকা ।।

ব্যবহারনার্গঃ পু॰ ব্যবহারবিষ-যঃ । ব্যবহারপদ**ে । ইতি মিতা-**ক্ষানা

ব্যবহারবিধিঃ পু॰ ব্যবহারস্য-'বিধান° । ধর্ম্মশাস্ত্র° । ইতি মি-তাক্ষরা ।।

ব্যবহারবিষয়ঃ পুণ ব্যবহারপদণ
। তত্ত্ব অফাদেশবিধণ। যথা।
খাণাদানণ ১ নিক্ষেপঃ ২ অস্বামিবিক্রমঃ ৩ স্বস্থুযসমুখানণ ৪
দত্তস্যানপকর্ম ৫ বেতনাদানণ
৬ স্মিদোব্যতিক্রমঃ ৭ ক্রমবিক্রমানুশমঃ ৮ স্বামিপালযোর্বিবাদঃ ৯ সীমাবিবাদধর্মঃ ১৬
বাক্পারুষ্যণ ১১ দঙ্গারুষ্যণ
১২ স্তেমণ ১৫ দ্রীপুণধর্মঃ ১৬
বিভাগঃ ১৭ দ্যুতণ ১৮। ইতি
মানবে ৮ অধ্যামঃ।

ব্যবহারস্থান ক্লী ব্যবহারপদেশ ব্যবহারবিষ্যঃ। ইতি মিতাফরা ব্যবহারিকঃ ত্রি ব্যবহারযোগ্যঃ । যথা। ইয় বৃদ্ধিঃ জ্ঞানেন্দ্রি-বৈঃ সহিতা সতী বিজ্ঞানন্য-কোষো ভবতি। অয় কতৃত্ব ভোক্তৃত্বাভিনানিত্বেন ইহলো-ক পরলোকগামী ব্যবহারিক জীব উচ্যতে। ইতি বেদান্ত-সারঃ।।

ব্যবহারিকা স্ত্রী লোকযাত্রা।। সম্মার্ক্রনী॥ ইঙ্গুদবৃক্ষঃ। ইতি মেদিনী॥

ব্যবহারী ত্রি ব্যবহারবিশিষ্টঃ। ব্যবহার শব্দাদস্ত্যর্থে ইন্ প্র-ত্যবেন নিষ্পান্ধঃ।।

ব্যবহার্যঃ ত্রি ব্যবহরণীয়ঃ।
ব্যবহর্ত্ব্যঃ। বি অব পূর্ব হৃ ধাতো র্যাণ প্রত্যাবেন নিষ্পন্ধঃ।
ব্যবহৃতঃ ত্রি ব্যবধানবিশিফঃ।
যথা। কর্তৃ কর্মা ব্যবহৃতা ম সাকাদ্ধার্যেৎ ক্রিযাণ। উপঙ্গর্বৎ
ক্রিযাসিদ্ধৌ শাস্ত্রে ২ধিকরণ
মতণ।। ইতি মুগ্ধবোধটীকাষাণ
রামতর্কবাগীশঃ।।

ব্যবায° ক্লী তেজঃ । ইতি মেদিনী।।

वावायः पूर देनथ्नर। रेजायतः ॥ अरङ्गान । देवि सिनिती ॥ श्विकः। ইতি धत्री।। बावायी पु खी कामूकः। यथा। ্ঞান্ধে নিযুক্তো ভূজ্ব। বা ভে:-জियन। नियुक्ता ह । ताताची রেতসো গর্জে সজ্জবত্যাত্মনঃ পিতৃন্।। ইতি শাদ্ধতত্ত্ব ।। रामन की विश्वा जुल्मा। কামজকোপজদোষঃ। ইত্য-মরঃ ।। বিগৎ বিগত্তিঃ । ভূপো। श्रीयः १७नः। मृगया मृग्छ ত্ৰী মন্যপান স্বৰূপে চতুৰ্বৰ্গে প্রসক্তিঃ কামজো দোষঃ। ই-চ্ছাপ্রভবদ্ধ । বাক্পারুষ্য॰ দণ্ডপারুষ্য অর্থপারুষ্য ক্ষেতি ত্তিবৰ্গঃ কোণজো দোষঃ। কো-প প্রভবদ্ধ ে । এষু বাসন া বা-স্যাতি শ্রেয়োমার্গাৎ ব্যসনংক-র্ত্তরি জনট্। ভ্রুৎশ তু ভাবে। ইতি ভরতঃ ॥ অশুভ॰ ॥ দৈবা-নিষ্টফল॰॥পাপ॰॥ निষ্কলো-माभः । ३७ त्निनौ ॥ 🟶 ॥ বাজ্ঞা॰ ব্যসনানি যথ।। মৃগ্য।-ক্ষাঃ স্ত্রিযাপন বাক্পারুষ্যার্থ-দূষণে। দশুপরুষা गিভোতদ্ধে-য়ু॰ ব্যসন সপ্তকং 🏿 ইতি হেন্-

ठिखः ॥ शा वानगामरक मा-(या यथा । धरेकक विवराम ক্তাঃ সর্বে মৃত্যুবশং গতাঃ। যঃ পুনঃ সংহতান্ সেবেৎ বিফ यान् विषयी नदः ॥ म शटज्यहः रिनश्र्याणिक्तगून हेव क्रमः। ক্রিয়ঃ পান দিবাস্থর তথা বা-দিত্র নর্ভন ।। দূতভাটন মৃগা-গেষ কামজানি তথা পরে। मटेख वीठा नेयंग्रामृगा (काव **গৈশুন্য মাহন**ু ॥ অর্থদ্যুণ লোধোর্থে অফকোপণ বিনাশ-ক্রৎ । দেব। বিদ্যাধর। যক্ষীঃ কিলরোরগ মানুযাঃ ॥ পশ্বঃ পिकिनः गर्त्व विषया निधनः धः তাঃ। এবং বিবেক নাদক্তং वृक्षा (यातः नताकिण ॥ वर्मका। क मनाञ्चाय विषयिः मनिद्य-শ্যতাণ। ইতি দেবীপুরাণে ৮ ञ्यायः ॥ वामनार्जः जि देनवीमान्षीणी-ডার্ত্তঃ। তৎপর্য্যায়ঃ। উপরক্তঃ ২। ইত্যমর ভরতৌ ॥ ব্যসনী ত্রি ব্যসনবিশিষ্টঃ ৷ তৎ পর্য্যায়ঃ। পঞ্চত্রঃ ২ বিপ্লুতঃ ৩। ইতি হেমচন্দ্ৰঃ।

। वाउः वि वाष्ट्रा । वाखः।

ইতি মেদিনী॥ প্রত্যেক°। পৃ-থক্ পৃথক্ । यथां विश्वामिजः । রুচ্ছ্ চাক্রাযণাদীনি শুদ্ধাভ্যুদ-য কারণ । প্রকাশে চ রহস্যে চ সংশ্যে ২নুক্তকে ২ক্ষুটে ॥ প্রাজাপত্যঃ শান্তপনঃ শিশু-রুছ্বঃ পরাককঃ । অতিরুচ্ছঃ পর্ণক্রছঃ পান্যঃ কছাতিক-क्रकः ॥ गरामा छणनः खटेका তগুরুছ্স্ত পাবনঃ। জলোপ-বাসকৃচ্ছ ন্ত ত্ৰন্মকৃচ্ছন্ত শোধ-কঃ ৷৷ এতে ব্যস্তাঃ সমস্তা বা প্রত্যেক মেকশোপি বা। পা-তকাদিয়ু সর্বেযু পাতকেষু প্রয-ब्रुवः ॥ कार्या। महाक्रायरेन र्यु-काः क्वा व। विश्वक्रत्य । ইতি প্রাযশ্চিত্ততত্ত্ব॰ ॥ 🗱 ॥ বি-পরীতঃ। যথা। প্রতিপদাপ্যমা-বাস্যা ভিথ্যো যুঁ গ্মণ মহাফলণ ৷ এতদ্যস্ত মহাযোর হন্তি পুণ্য পুরাক্তত ৷৷ এতদাস্ত যুগাবি-পরীত॰ । ইতি তিথ্যাদিতত্ত্ব॰ ॥ **वाखनमः क्री भगमाना** जित्यारग পদান্তরেণোতর । যথা। সূবর্ণ শৃতাভিযোগে অনেনাহস্তাডি-ত ইতি। ইতি মিতাক্ষরা।। वास्त्रातः क्षी रस्थिमम्थारगागः।

. ইতি ত্রিকাণ্ডশ্রেষঃ।। ব্যাকরণ ক্লী বেদাঙ্গবিশেয়ঃ গ ইভি শব্দরত্বাবলী।। তত্র সাধ্য সাধন কতৃ কর্মা ক্রিয়া সমাসাদি নিৰূপণ । তন্য ব্যুৎপত্তি যথা । ব্যাক্রিয়ন্তে ব্যুৎপাদ্যন্তে সা-ধুশব্দ। অস্মিন্ অনেনেতি ব।। र्रेडि मूर्गामामः ॥ 🗱 ॥ ज्य ব্যাকরণ বক্ষ্যে কাত্যায়ন সমা-নতঃ। সিদ্ধশব্দ বিবেকায বাল-ব্যুৎপত্তি হেতবে।। সুপ্ তিওস্ত[°] পদ॰ খ্যাত॰ সুপঃ সপ্ত বিভক্তয়ঃ । স্যৌজসঃ প্রথমা প্রোক্তা সা প্রাতিপদিকাল্পকে।। সংখাধনে চ লিঙ্গাদাবুক্তে কর্মাণ কর্ত্তরি। অর্থবৎপ্রাতিপদিকণধাতু প্রত্য-য বজ্জিত ।। অমৌট্ সসে। দ্বি-তীয়া স্যাৎ তৎকৰ্ম ক্ৰিয়তে চ যৎ। দ্বিতীয়া কর্ম্মণি প্রোক্তা উ-ক্তানুক্তবিভেদতঃ॥ টা ভ্যা॰ ভি-স্ তৃতীয়া স্যাৎ করণে কর্তরী-রিতা। যেন ক্রিয়তে তৎ করণ তৎ কর্ত্তা যঃ করে†তি সঃ ৷৷ ঙে-ভ্যা॰ ভাস্ **চতুথী 'স্যাৎ সম্পূ**দা-নে চ কারকে। যশ্মৈদিৎসা ধা-রষতে রোচতে সম্পুদানক ।।। পঞ্মী স্যাৎ ওসি ত্যাণ ভ্যো

হুপাদানে চ কারকে। যতে। ২-'কৈতি সমাদত্তে অপাদান ভয় ' ষতঃ ৷৷ ওলোসামশ্য ষষ্ঠী স্যাৎ श्वामि मयन्न मूथारक । एकाम् मू পশ্চ সপ্তমী স্যাৎ সা চাধিকরৰে ভবেৎ।। আধার শ্চাধিকরণা॰ রক্ষার্থানা॰ প্রযোগতঃ। ঈপ্সি-ত॰ চানীপ্সিত॰ যত্তদপাদানক॰ न्मृष्ठः ॥ शक्ष्मी शर्याशास्त्राश ইতরর্ত্তেন্য দিখুখে। এন রো-গে দ্বিতীয়া স্যাৎ কর্ম প্রবচ-নীয়কৈঃ।। লক্ষণ বীপ্সেখণ্ভূতে ২তি তাগে চপরি প্রতী। অ-স্তরেষু সহার্থে চহীনে ২নূপশ্চ কথ্যতে ॥ দ্বিতীয়া চ চতুথী স্যা-চ্চেম্টাযাণ গতি কর্মণি ৷ অপ্রানে हि विज्की एवं यना कर्म्मणनाम-तः ॥ नगः विष्ठ वधः वारानः বষট্ যোগ ঈরিতা। চতুথী চৈব তাদর্থে তুমর্থ ভাব বাচিনঃ ॥ তৃতীয়া সহযোগে স্যাৎ স্বৎসি-তেকে বিশেষণে। কালে ভাবে সপ্তমী স্যাদেতৈ ৰ্বোগে চ ষ-ষ্ঠাপি ৷৷ স্বানীশ্বরাধিপতিভিঃ সা-कि मायाम मृठदेवः । निर्मातः ণে দ্বে বিভক্তী ষষ্ঠী হেতু প্ৰযো-গকে ।। সৃত্যর্থ কর্মাণি তথা ক-

রোতেঃ প্রতিষত্মকে। হি॰সার্থা-নাণ প্রযোগে চ ক্তৃতি কর্মাণি ক-র্ত্তরি।। ন কর্তৃ কর্মণোঃ ষষ্ঠী নি-ষ্ঠাদৌ প্রতিপাদিতা। দ্বিবিধ॰প্রা-তিপদিক° প্রাতিপদিক মজ্ঝ-ल॰ ॥ **क्ष्मा जू**वामिजा खिरुषा नः স্যাল্লকারা দশ বৈ স্মৃতাঃ। তিপ্ত-সন্তি প্রথমো মধ্যঃ সিপ্ থস্থে-ত্তম পূরুষঃ ৷৷ মিরস্মদঃ পরস্মৈ তু পদানাঞ্চাত্মনে পদং ৷ তামাতা-মন্তা॰ প্ৰথমো মধ্য স্থাসাথাণধ্ৰ गু-ত্তমঃ ।। আদেশা ই বহি দহয়। অনিজাদপি ধাতুতঃ। নাগ্নি এং যুজ্যমানেপি প্রথমঃ পুরুষো ত বেৎ ॥ মধ্যমে। যুস্মদি প্রোক্ত উত্তনঃ পুরুষো ২স্মৃদি । ভূবাদ্যা ধাতবঃ প্রোক্তাঃ সনাদ্যন্তাস্ত ধাতবঃ ৷৷ লডী রিতো বর্ত্তমানে স্মেনাতীতে চ ধাতৃতঃ । ভূতা নদ্যতনে লট্চ লোডাশিষি চ ধাতুতঃ ।। বিধ্যাদাবেবানুমতৌ-লিঙ্বিধি শ্মন্ত্রণে ভবেৎ। নিমন্ত্র-ণাধীষ্ট সংগ্ৰন্ম প্ৰাৰ্থনেষু তথা-শিষি।। লিডতীতে পরোক্ষে गा ब्रु न् ६ न् ६ न् ६ च् ७ विषा छ । मा -দদ্যতনে লুট্চ ভবিষ্যতি চ ধা-তুতঃ ৷৷ ধাতো ল্লিন্ধ্যিভিপত্তৌ

निष्रर्थ लाएं अकीर्निजः ॥ क्र-ত স্ত্রিম্বপি বর্ত্তব্তে ভাবে কর্ম্মণি কর্ত্তরি । শতৃ শান তব্যঙ্গ্ य ६ नीय ६ का जृठा मयः ॥ इंजि গারুডে স্মারব্যাকরণে ২০৯ व्यथायः ॥ #॥ भ्रमात उतार। সিদ্ধোদাহরণ বক্ষ্যে সংহিতাদি পরস্থারণ। বিপ্রান্ধণ সাগতান্ধী-দং সূত্তমং স্যাৎ পিতৃষভঃ॥ হো-ज्कारता विकारत्य नामनीया মনীষ্যা। গঙ্গোদক তবক্ষার ঋ-ণাৰ্ণ প্ৰাৰ্ণ মিত্যপি ৷৷ শীতাৰ্ক্তশ্চ ·ভবন্ধারঃ **দৈত্রী সৌকার ইত্য**-পি। মধ্বাসনঞ্চ পিত্রস্থে নম্বয়ণ না शारयोक्षरय**९ ॥ नायरका लव**न॰ নাব স্তএতে তেন ঈশ্বরাঃ। দে-বীগৃহ মথো ২মুত্র যযুরেহি পটূ ইমৌ ৷৷ অমী অশ্বাঃ ষডশ্বেতি তনুরাখু স্তৃণানি চ। তচ্চরেত্তল্লু-নাতীতি তজ্জল তচ্ছ্যুশানক ।। সুগন্ধত্র পচনত্র ভবা শ্ছাদয়তীতি मिक् । ভবা॰श्रेक्तूतक रे**म्ह**व ভ-বাণ্স্তরতি সংসৃতি ।৷ ভবালিখ-তি তাঞ্ছেতে ভবাঞ্ছরো ২ন্যদী-দৃশং। ভবাণ্ডীনং স্বন্তরসি স্ব-करतांनि मनार्फन ॥ कन्टरत्र कश्चेकारत्रन कः अर्याप्ट कः थ-

লে স্থিতঃ। কঃ শেতে চৈব কঃ ষণ্ডঃ কোর্থঃ কো যাতি গৌরব•॥•' ক ইহার্থ স্তএবাহু দেবা আহু-শ্চ ভো ব্ৰজ। প্ৰসূ বিঞ্ ব্ৰজজ়ি চ গীষ্পতি শৈচব ধুষ্পতিঃ।। তস্মা-নৈষ ব্ৰজেৎ স স্যান্ন কৰ্মত্যনুগ-চ্ছতি। স্টাচ্ছাযা তথাচ্ছাযা সাধ-বো খন্যে তথেদৃশাঃ।। 🗱।। সমা-সাঃ ষট্ পুরাণে যে সদ্দিজঃ কর্ম-ধার্যঃ। দিগু স্ত্রিবেদী গ্রামশ্বা অয়ণ তৎপুরুষঃ স্মৃতঃ ৷৷ তৎক্ত-ঞ্ তদর্থশ্চ বৃকভীতিশ্চ যদ্ধন । জ্ঞান দক্ষিণ তত্ত্বজ্ঞো বহুত্ৰীহি র-থাব্যয়ী ॥ ভাবে। ২ধিন্ত্র মথো-ক্তিত্ব দদ্যে দেবর্ষি মানবাঃ । 🛊। তদ্ধিতাঃ পাণ্ডবঃ শৈবে। ব্ৰাশ্বঞ্চ ব্ৰহ্মতাদ্যঃ ।। # ।। দেবা-গ্নি সখি পত্য জেক্টু স্বয ভূ-বঃ পিতা। না প্রশাস্তা চ রা গৌ গ্লৌৰতাজন্তাশ্চ পুণ্সাপি॥#॥ হলন্তা শ্চাশ্বযুক্ ক্ষাভুগ্মৰুৎ ক্ৰ-ব্যান্মৃগাবিধঃ। আত্মা রাজা যুবা পন্থাঃ পূষ ত্রন্ধহণো শন্দী ॥ বি-ড্বেধা উশনানড্বামধুলিট্ কাষ্ঠ-তট্ তথা। 🕸। বন ব।র্য্যস্থি বস্তূনি জগৎ সামাহনী তথা।। কর্মা সর্গি ব্পু স্তেজ অজ্বলন্তা ন-

পু॰সকে। 🖶 ।. काया कता ननीं 🎚 লক্ষীঃ শ্রী ভূমি বঁধু রপি ii ভূঃ পুনভূ স্তথা ধেনুঃ স্বসা মাতা চ निः खियः। वाक् धक् धी ক্ষুৎ ক্ষুষঃ পামা যুবতিঃ কলভ खेश।। एती श्रृं जिः आवृष टैन्हव সুমন উक्षिरो खिया । # 1 **७** व জব্য ক্রিষা যোগা**শ্রিলিঙ্গা**ণ্শ্চ বদামি তে।। শুক্লঃ কীলালপা শৈচৰ শুচিশ্চ আমণীঃ সুধীঃ। পটুঃ কমলভূঃ কর্ত্তা সুমতো ব-हवः मूर्याः ॥ मर्ला नाव ख्या अ॰ त्मा मशुङक मनीर्घ शा ६ । ४-नाथी ह मूह्य भारते वागक স্থাদিক স্তথা।। সুবর্ণ বহুপাচ্ছে-ষ। চৈষা স্বন জুহা তথা। 🕸। সর্ব বিশ্বোভষে চোভৌ অন্যান্তরে-তরাণি চা। ডতর ডতমে নেমঃ সমোথ সিম ইত্যয়ণ। পূৰ্ৰাপরা-বরা শৈচব দক্ষিণ শেচাতরাধ্যরী <u>৷ অপর ক্ষান্তরো ২প্যেতদ্যত্তৎ</u> কিমদসে। দ্ব্যণ। মুম্মদক্ষৎ প্রথম শ্চরমাল্পে তথার্দ্ধকে ৷৷ একঃ ক-তিপদে। ছৌচ ত্ৰযঃ সৰ্বাদয खथा। 🟶। जूनि निमि পनि कन्मि ধার্য্যশ্চ ব্যয়তিঃ স্বদিঃ ॥ গীর্দ্ধ বিন্যা জুহোতিশ্চ জহাতিশ্চ দ- 🎼

ধাত্যপি । দীপ্যতি স্তৃষতি বংহি পুত্রশিষ্ট শিচনোত্যপি ॥ জুটি শ্চাসুষতি স্বপি রুধি গুরী স্বতী তনিঃ। সমিঃ করোতিঃ ক্রীণাতি र्वृ (वाठि पूर्व ठर्फिछ।। कनी-ড ক্লপ রা জীবা ধাতবশ্চ যুনা তথা। 🟶। ভবৎ ভবান্ ভবন্তী চ জ্ঞেয° কর্ত্তব্য মেব চ ॥ কার্য্য• ক্তশ্চ ক্ত্যা চপ্রত্যযাঃ স্য স্তথা পরে। সূর্য্যাহরৌ সুরাঃ সন্তি দে ব বিপ্র বনান্যজ ।। নরেণ কা ৰ্য্যণ বেদৈশ্চ ক্ৰিয়তে দেহি ভো জন॰ । দ্বিজায় 🛡 বরিষ্ঠাভ্যা॰ মা তেভ্যো ২স্ত সমাগতঃ।। তীর্থাত্ত-থাশ্রমাভ্যাঞ্চ সত্যেভ্যঃ শ্বশুর-मा ह। गन्नर्व याः क्रानाम छ। ন॰ সিদ্ধ মহান্ধযোগা জ্ঞানতত্ত্বে-ষু চেত্যেব মন্যে নেয়া বথামতি । मर्द्ध जिन्ने अर्थ मर्द्र मर्द्र मर्द्र मा সৰ্বতো গতঃ।। সৰ্বেষ। ক্ষৈব স-र्वित्रामयः विश्वामय खया। शृर्वः পূৰান্চ পূৰ্বস্মাৎ পূৰ্বস্মিন্ পূৰ্ব ইতাল ।। সূত উবাচ। সুপ্তি **ওস্ত॰ সিদ্ধৰূপ**ণ নান মাত্ৰেণ দ শিত । কাত্যায়নঃ সমারাজ্ জ্ঞাত্বা বিস্তর মত্রবীৎ ॥ ইতি गाक्राफ अगातवगाकत्व

व्यशायः ॥ 🟶 ॥ এতদ্ধিमः व्य-গিপুরাণে কার্ত্তিকেষোক্ত ব্যা-করণ মস্তি। এবং মহেশক্ত गाट्रमवाक्रित्र शाविनिम्नि-হ্ৰত পাণিনীযব্যাকরণ সৰ্ববৰ্ম-হত কলাপব্যাকরণ ক্রমদীশ্ব রক্ত সংক্ষিপ্তসারব্যাক্রণ প-ঘ্মনাভদত্তকৃত সুপদ্মব্যাকরণণ বোপদেবক্ত মুগ্ধ:বাধব্যাকর-**৭° গোস্বামিক্ত হরিনামামৃত**-ব্যাকরণ ভটোজীদীক্ষিতত্ত্বত मिक्षाख्यकोमूमीवराकत्रनः अन्-. ভৃতস্বৰূপাচাৰ্য্যাদিক্ত সারস্ব-ভাদিব্যাকরণানি চ সস্তি।। ব্যাঙ্গলঃ ত্রি শোকাদিভিরিতি-কর্ত্তব্যতাশুন্যঃ। তৎপর্যায়ঃ। विश्खः २ । श्रेटामदः॥ ব্যাসলাত্মা ত্রি শোকাভিহত-চিত্তঃ। যথা। ভো বৃক্ষাঃ পর্বত-স্থা বহুজসুমযুতা বাযুনা যুৰ্না-না রামোহ॰ ব্যাক্লাত্মা দশ-র্থতন্যঃ পৃচ্ছতে শোকদক্ষঃ। বিম্বোষ্ঠী চারুনেত্রা গজপতিগ-মনা দীৰ্ঘকেশী সুমধ্যা হা শী-তা কেন নীতা মম হাদ্যগতা কেন বা স্বত্ত দৃষ্টা ৷৷ ইতি মহা-নাটক ।।

ব্যাকৃতিঃ ত্ৰী ভূষিঃ। ইতি হ-नायू ४३॥ ব্যাকোশঃ ত্রি বিকশিতঃ। ইত্য-মরটীকাষা॰ রামাঞ্রমঃ।। ত্রি প্রফুলঃ। ইত্য ব্যাকোষঃ मतः ॥ ব্যাখ্যা জ্রী বিবরণ । ইতি হলা-यू थः ॥ ব্যাখ্যাগন্যং ক্লী উত্তরাভাস-ভেলঃ। ব্যাখ্যষা বিবরণেন গ-ম্যতে জ্ঞাষতে যৎ। যথা। অস্ত ব্যস্ত পদব্যাপি নিগৃঢার্থ তথা-ञ्च । व्याथाग्या मनात्रः त्ना-ত্তর॰ শস্যতে বুধিঃ ॥ ইতি ব্যব-হারতত্ত্ব ॥

ব্যাখ্যাতঃ ত্রি বিবৃতঃ। কথিতঃ। বি আঙ্ পূৰ্ষক খ্যা ধাতোঃ ক্তঃ প্রত্যবেন নিষ্পন্ধঃ ॥

ব্যাঘাতঃ পু॰ বিষ্কম্বাদিসগুবিণ-শতিযোগান্তর্গত ত্রযোদশযো-গঃ ৷ যথা ৷ পরিযস্য ত্যজেদর্দ্ধণ শুভকর্ম ততঃ পর । ত্যজাদৌ পঞ্চ বিষ্ণয়ে সপ্তশূলে চ নাডি-काः ॥ शख व्याचा जत्माः यहे ह नव इर्यन विजुत्याः। देवशृष्टि वा-তিপাতৌ চ সমস্তৌ পরিবর্জ-ষেৎ।। ইতি জ্যোতিস্তব্ৰণ।।।

ব্যায়ুন

তত্র জাতফল । ব্যাঘাতক্রি। চ সতাং নিতান্তং ব্যাঘাতজন্ম মনুজঃ কঠোরঃ। অসত্যভাষী क्रथा विशेषा मत्मकरण मी-্র্যতন্ঃ রুশাঙ্কঃ ॥ ইতি কোষ্ঠী-थिषी 🗱 ॥ व्यक्षत्रायः ॥ প্রহারঃ। ইতি মেদিনী।। অল-কারবিশেষঃ। তস্য লক্ষণ যথা া ষদ্যথা সাধিত কেনাপ্যপ-द्भिन छमनाथा। छटेथेव यविशी-বেত স ব্যাঘাত ইতি স্মৃতঃ ৷৷যে-নোপাষেন যদেকেন উপকল্পি-ত তস্যান্যেন জিগীষুত্যা ত-मूर्शायक स्मत् यमनाथा कत्रव॰ म স্বসাধিতবস্তব্যাহতি হেতৃত্বাৎ वगवाजः ॥ উদাহরণ । দৃশा-**एकः यनिकः की**वयं छ पृरेण-व याः । विक्राकिमा क्षिनी স্তা স্তবে বামলোচনাঃ।। ইতি कावाञ्यकारम ३० উल्लामः॥

বাষ্ট্র পূ
ভবিশেষঃ। বাষ
ইতি ভাষা। তৎপর্যাষঃ। শাদ্বিঃ ২ দ্বীপী ২। ইত্যমরঃ।।
প্দাঙ্গঃ ৩ বনশ্বঃ ৪ চিত্রকঃ ৫
প্রেরীকঃ ৬। ইতি জটাধরঃ।।
হিংসুপশুঃ ৭ ব্যাডঃ ৮ হিংসুকঃ
১ হিংসারুঃ ১২ শ্বাপদঃ ১৩।

ইতি শব্দরত্বাবলী ।। পঞ্চনখঃ ১৪ ব্যালঃ ১৫ গুহাশ্যঃ ১৬ তীক্ষদ শ্ট্রঃ ১৭ ভীক্নঃ ১৮ নখা-यु ४३ ३२। जमा मा भागा भागा র্দ্দূল সিংহ সরভর্ক তরক্ষু মুখ্যা ষেন্যে প্রসঞ্ বিনিহস্ত্যভিবর্ত্ত-যন্তে। তে কীর্ত্তিতাঃ প্রসহনাঃ পলनः उमीय मर्भः श्रास्य कर्र-রাময জাড্যহারি॥ ইতি রাজ-নির্ঘন্টঃ ॥ স তু কশ্যপভার্য্যা प्रश्तु। मञ्जानः । यथा। प्रश्तु। ত্বজনয়ৎ পুত্রান্ ব্যাঘু সিংহাণ শ্চ ভাবিনী। দ্বীপিনশ্চ সূতা खना वानाना नामियथियाः ॥ ইত্যাদ্যে বক্লিপুরাণে কাশ্য-शीष व॰ननामाध्यायः ॥ 🗱 ॥ नतामूखितकः ट्यिष्ठार्थ वाहकः ॥ রুক্তৈরঙঃ ॥ করঞ্জঃ। ইতি त्यिमिनी ॥

वाश्रमनः भू॰ এরওবৃক্ষঃ। ইতি
শব্দশালা ॥ রাজনির্ঘণ্টে রকৈরও পর্যাযে ব্যায়ুতল ইতি
পাঠঃ॥

ব্যাঘুনখ ক্রী নখীনামগন্ধজব্য । তৎপর্য্যায় । ব্যাডাযুধ ২ করজ ৩ চক্রকারক ৪। ইভ্য-মরঃ।। নখাক ৫ নখী ৬ নখ্য १ वार्षित्यो प्राप्त के स्वतंत्र । वार्षित्र वार्षित्र । निश्च के वार्षित्र । निश्च के वार्षित विद्यान । वार्षित विद्यान । वार्षित । वा

ব্যাঘুনথঃ পু॰ স্কৃহীবৃক্ষঃ। ব্যাল-নখঃ। ইতি রাজনির্ধন্টঃ ।। ব্যা-ঘুস্য নখশ্চ ।।

वायुनथकः क्षी नथकछः। ইতি
गक्ताना ॥

ব্যাঘুনাযকঃ পু॰ শৃগালঃ। ইতি রাজনির্ঘনিঃ॥

ব্যাঘ্পার্থ পু॰ বিকন্ধতবৃক্ষঃ।
ইত্যমরঃ।। মুনিবিশেষঃ। ইতি
পুরাণং।। ব্যাঘুত্ল্যচরণে ত্রি।
ইতি মুগ্ধবোধব্যাকরণং।।

ব্যায়ুপাদঃ পু॰ বিকন্ধতবৃক্ষঃ।। বিকণ্টকবৃক্ষঃ । ইতি রাজ-নির্ঘণটঃ।।

ব্যায়ুপুচ্ছঃ পু॰ এর ওবৃক্ষঃ । ইত্যমরঃ ॥ ব্যায়ুস্য লাঙ্গুলঞ্চ ॥ ব্যায়ুটিঃ পু॰ ভরদ্বাজপক্ষী। ইত্যমরঃ ॥

ব্যাঘ্রাদনী স্ত্রী ত্রিবৃতা। ইত্য-মরঃ ।।

ব্যায়ুান্যঃ পু॰ বিডালঃ। ইতি
শব্দচন্দ্রিকা॥ ব্যায়ুমুখে ক্লী॥
ব্যায়ী জ্রী কণ্টকারী। ইত্যমরঃ॥ ব্যায়ুপত্নী চ॥

পু॰ কপটঃ। স তু অয-থার্থব্যবহারঃ ৷ বঞ্চনমাত্রফলং । ইতি সৰ্বানন্দো মধুশ্চ ॥ অ-পদেশঃ। স কারণান্তর প্রবৃত্তেঃ কারণান্তরোদ্ভাবন । ঝাজো <u>श्व अवशाक्तामनः। यथा धानं</u> ব্যাজ মুপেত্য চিন্তযদি কামিতি । ব্যাজো ২যমভিপ্রাযগোপন-ফলঃ। পূর্বোক্তস্ত পরাপকারফ-नः। ইত্যৰথাৰ্থ ব্যাজ্যো ভেদঃ ৷ অন্য মুদ্দিশ্য অন্যপ্রতিপাদন মিহ ব্যাজ ইত্যর্থঃ। যদাহ অ-नामू फिना जनार्थ मनुष्ठीन य-भरमभः। यथा। जनकीषा मू-দ্দিশ্য জারাবলোকনার্থ যা-তীতি। ইভ্যমরভরতো ॥

ব্যাজনিন্দা স্ত্রী কপটঙ্গৎসা।।
অলম্বারবিশেষঃ। যথা। নিন্দাযা নিন্দ্যা ব্যক্তি ব্যাজনিন্দেতি গীযতে। ইতি চন্দ্রালোকঃ।।
ব্যাজস্তুতিঃ স্ত্রী কপটপ্রশংসা।।
অলম্বারভেদঃ। যথা। উক্তি
ব্যাজস্তুতি নিন্দা স্তুতিভ্যাং স্তুতি নিন্দযোঃ। ইতি চন্দ্রালোকঃ
ব্যাজ্যেকিঃ স্ত্রী ছলবাক্যং।।
অলম্বারবিশেষঃ। যথা। ব্যাজোক্তি রন্যহেতূক্ত্যাযদাকার-

শকরত্বাবলী ।। বঞ্চ । ইতি রাথমুপ্টঃ ।।

ব্যাডাযুখ ক্লী ব্যাঘূনখাখ্যগন্ধ-ডব্য । ইত্যমরঃ ।।

ব্যাডিঃ পু॰ কোষকারমুনিবি-শেষঃ ৷ তৎপর্য্যাষঃ ৷ বিদ্ধাবাদী
২ নন্দিনীতনযঃ ৩ ৷ ইতি হেমচক্রঃ ৷৷ বিদ্ধাস্থঃ ৪ নন্দিনীসূতঃ
৫ ৷ ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ ৷৷

ব্যাত্যকী স্ত্রী রসিকানা মন্যোন্য জলকীডনং। ইতি সংক্ষিগুসারোণাদিবৃত্তিঃ। তৎপর্যান্
যঃ জলকীডাশন্দে দ্রস্টবাঃ ।।
হ্যাদিশঃ পুং বিকুঃ। যথা । অনত্রপো হনস্ত্রী জিতমন্যু
ভ্যাপহঃ । চত্রস্যো গভীরাত্মা বিদিশো ব্যাদিশো দিশঃ ।।
ইতি মহাভারতে তন্য সহস্বনাম স্তোত্তে গা

ব্যাধঃ পু॰ মৃগহি॰সকজাতিঃ।
শিকারী ইতি ভাষা। স তু সর্ববিপায়া॰ ক্ষত্রিষাজ্জাতঃ। যথা
। নাপিতাকোপকন্যাযাণ সর্বকী তদ্য যোঘিতি। ক্ষত্রাদ্বভূব

वाशिक वर्णवान् मृगिरिक्निकः॥
हेि उद्यादिवदर्ख उद्याप्तथः । क्ष्मिकः । मृगवशासः ॥ ठ० अर्थापः । मृगवशासः ॥ क्ष्मिकः । मृगवशासः ॥ मृगावि० ६ एकाहिं ७ । हेि कि कि शिवः ॥ मृगकीवनः १ वल्लाक्ष्मः ৮ ।
हेि क्मान्यावनी ॥ मूर्यः ॥
हेि रामन्नावनी ॥

ব্যাধভীতঃ পু॰ মৃগঃ।ইতিশন্ধ-চন্দ্ৰিকা।।

ব্যাধামঃ পু• বজু•। ইতি হেম-চক্রঃ।।

व्याधिः शृ अर्थः ॥ त्वाभः । ইতা
सदः ॥ कार्वाथामञ्जाशकान्तः

राजा। ইতি दममञ्जं भी ॥ क्षः॥ इर्छमा निमानः यथा। व्याद्याकन

गनद्भाना क्षीका विषय किकि
रेजः। विद्याथ बक्क की दर्व वियामारेमाक्त मृश्विकः ॥ शृःद्याधमाद्र वनकुः भ स्भाथ किन्नाक्षवख्रान् । मर्वाकान्नाक्ष निद्यांभः
द्रामदर्यः मृश्वकाः॥ अर्थः विया मनाक अर्था। यथि विन्या मन्
र्मवः ॥ देनि भानाक ११२ जन्
था। द्रिन भानाक अर्था। प्रकेशिक मन्
वा। द्रिन भानाक अर्था। व्यक्तिमा किकिनमा

৷ বাতোত্তরেষু স্পি ৰ্বমন॰ ককো-ত্তরেষু স্বর্ডেষু। গিতোত্তরেষু মো-ক্ষে। রক্তস্য বিরেচন॰ শ্রেষ্ঠ॰॥ পথ্যা করঞ্জ সিদ্ধার্থ নিশাবন্তুজ দৈন্ধবৈঃ। বিডঙ্গ সহিতৈঃ পিষ্টে র্লেপো মূত্রেণ স্বন্ঠন্ৎ ॥ •অবল্প-জঃ বাঙ্গচাতি লোকে। পথ্যাদি-ভির্লেপঃ ॥ 🏶 ॥ সোমরাজী ভব-চূর্ণ শৃঙ্গবের সমন্বিতং। উদ্বর্তন নিন॰ হন্তি স্বঠরোগ॰ ক্রতাস্পদ॰ ।। সোমরাজী বাজচীতি লোকে। **माग्रता**क्राहर्खन॰॥ 🕸 ॥ तमाय-ন॰ প্রবক্ষামি ব্রহ্মণা যদদাস্ত্ত । মার্কণ্ডের প্রভৃতিভি র্বৎ প্রযু-ক্ত॰ মহর্ষিতিঃ।। পুষ্পকালে তু शुष्त्राणि कनकारन कनामि ह। সংগৃছ পিচুমর্দস্য ত্বগ্ মূলানি দ-नाम ह ॥ वित्र॰भामि मगारुख ভাগিকানি প্রকল্পবেৎ ৷ ত্রিকলা जू यन जाकी यन छु। ककता १ यः ।। विष्क्रमात वातारी लाशपूर्वाः ্ৰ্যুতাঃ সমাঃ। নিশাদ্যাবয়ুজক ব্যাধিখাতাঃ সশর্করাঃ ॥ স্বষ্ঠ নিক্রযবাঃ পাঠ। চূর্ণ মেষাম্ব সং-যুত্ত। খদিরাসন নিম্বানাণ ঘনণ কাথেন ভাব্যেৎ।। সপ্তধা পঞ্চ নিষয় মার্ক্ব স্বর্সেন চ। স্লিঞ্চঃ

শুদ্ধতনু ধী মান্ যোজ্যেত্ছ-ভে দিনে ॥ মধ্না তিক্ত ছবিষী খদিরাসন বারিনা। লেহ্ন মুক্তা-স্ভদা বাপি কোল বৃদ্ধ্যা পলং ভ-বেৎ ৷৷ জীৰ্ণে তব্মিন্ সমশ্লীয়াৎ নিগ্ধণ লঘু হিতণ চ যৎ। বিচর্চি-কোদুম্বর পুঙরীক কপাল দদ্র কিটিভালসাদি । শতারু বি-ক্ষোট বিসর্পমালাঃ কফ প্রকো-প॰ ত্রিবিধ॰ কিলাস॰ ৷৷ ভগন্দর শ্লীপদ বাতরক্ত জডান্ধ নাডীব্রণ শীর্ষােগান্। সর্বান্ প্রনেহা-ন্ প্রদরাংশ্চ সর্বান্ দংফ্রাবিষণ मृलिविषः निरुखि ॥ ऋूत्लामतः সিংহরুশোদরঃ স্যাৎ সুশ্লিষ্ট निक्त र्यथुत्नाशयांशाव । नामि রোগাদিপি যে দশস্তি সর্পাদযো-যান্তি বিনাশ মাশু॥ জীবেচ্চিরণ ব্যাধিজরা বিমুক্তঃ শুভে রতি শ্চ-<u>ज्यमगानका खिः। व्ययमर्थः। निय-</u> স্য ফলপুষ্পা ত্বক্ পত্র মূলানি স্ ৰ্বাণি সমুদিতানি দ্বিগুণানি চূৰ্ণি-তানি ভৃষরাজস্য রসেন সপ্তবা-রান্ ভাব্যেৎ। ত্রিকলানীনি পা-ঠান্তানি সমুদিতান্যেক ভাগানি চুণিতানি খদিরাসন নিমানাণ নিবিড ক্বাথেন ভাব্যেৎ। তভঃ

সৰ্ব মেকীক্ষত্য মধাদিনাবলি-श्रा । अक्षितिश्वकावत्त्र ३ ॥ 🕸 ॥ শশিলেখা পঞ্চলত তাবলিরি-জস্য গুগ্ধলো দশ চ। তাপ্যস্য 'পলত্রিতয়' দ্বে লোহাচ্ছাবণিকা-ষাঃ ৷৷ ত্রিফলা করঞ্জ পল্লব খদির গুড়্চী ত্রিবৃদন্ত্যঃ। মুস্তা বিডঙ্গ द़जनी ऋषेज चक् निष्ठ विद्व म-**স্পাকাঃ।। এতৈ রচিতা॰ বটিকা॰** মধু যৃত মিশ্রাণ গিলেৎ প্রাতঃ। (गामृत्वन ह अर्थ न्मखामृक् বাত মচিরেণ।। শ্বিত্রাণি পাণ্ডু-রোগণ বিষমানুদর প্রমেহ গু-ন্মা॰শ্চ। নাশ্যতি বলী পলিত॰ যোগঃ স্বাৰ্ভুবো নাম। ॥ শশি-লেখা সোমরাজী। গিরিজস্য শি-লাজতুনঃ। তাপ্যস্য স্বৰ্ণমান্দিক-স্য। প্রাবণিকা মুঞ্জীতি লোকে। श्वाययुर्वा ७श्चनूः ॥ 🗱 ॥ চিত্রক॰ ত্রিফলা ব্যোষ মজাজী কারবী বচা। দৈশ্ধবাতিবিষে ঙ্গণ্ঠণ চব্ৰৈয়-*वा यांच*म्कङ ॥ विष्टमानाङ-মোদা চ মুস্তা চামরদারু চ। যাবস্ত্যেতানি সৰ্বাণি তাবন্মাত্ৰস্ত श्वभुनुः ॥ मःक्छा मर्शिय। मार्कः গুটিকা॰ কার্যেন্ডিয়ক্। প্রাত ट्डां जनकारन **ह** थारम प्रियम॰

यथा।। इन्छा छोमन जर्छ। नि ह्यी-ন্ দুফত্রণানি চ। গ্রহণ্যর্শো বি-কারা শ্চ মুখাময গলগ্রহান্।। গৃধুসী মস্থিভগ্নঞ্চ গুলাঞ্চাপি নি-যচ্ছতি। ব্যাধি॰ কোষ্ঠগতাংক্ষা लि **फ**रयिषकु तिवामूतान्॥ अक-বি•শতিকো গুগ্গুলুঃ ॥ 🟶 ॥ বাত রক্তাধিকারোক্তঃ পুরঃ কৈশোর কাভিধঃ। স্বপ্তানাণ বাত রক্তা-না॰ নাশ্যেৎ পরমৌষধণ ৷ কৈ-শোরকো গুয়ুলুঃ ॥#॥ ভন্নাতক প্রস্থাপ ছিম্বা জোণ জলে কি পেৎ। প্রস্থদ্ধ গুড়ুচ্যাশ্চ কুরণ তত্রাস্তদি ক্ষিপেৎ ॥ চতুর্থা শা-বশেষম্ভ কষায় মবতার্যেৎ ৷ বস্ত্র পূতে ক্ষাযে চ বক্ষ্যমাণানি নি-ক্ষিপেৎ।। সরাবমাত্রণ গোসর্পি র্গোদুগ্ধস্যাতক• তথা। সিতা প্রস্থমিতা॰ দদ্যাৎ প্রস্তার্দ্ধ মা-ক্ষিক॰ ক্ষিপেৎ ৷৷ সৰ্বাণ্যেকত্ৰ ভা-ণ্ডে তু পচেৎ মৃদ্বগ্নিনা শনৈঃ। সৰ্বজব্যে ঘনীভূতে পাবকাদ্ৰ-তারযেৎ ৷৷ তত্র ক্ষেপ্যাণি চূর্ণানি জনে। বিল্প মিতামৃত। । বাঙ্গটী চাথ দক্তমঃ পিচুমর্দে। হরীতকী ।। ধাত্রী রাত্রিশ্চ মঞ্জিষ্ঠা মরিচ गागतः क्या । यवानी टेमक्षवः

মুস্ত° দ্বগেলা নাগকেশর° 11 প-পটঃ পত্রক॰ বাল মুশীর• চন্দ্রন॰ তথা। গোক্ষুরস্য চ বীজানি ক-র্চ্চূরো রক্তচন্দন ।। পৃথক্ পল।-र्क्तगानाना॰ हुन त्यवा यिश् कि-পেৎ ৷ পলমাত্র মিদ প্রাতঃ সম-भौयाञ्करनन हि ॥ नामरयमव-**ट्राट्य २४° ऋश्वीत निश्चिताना**-পি । বাতরক্তানি সর্বাণি সর্বা-ণ্যশাণসি সেবিতঃ ৷৷ ব্যাযাম মাতপণ বহ্লি মন্লুণ মাণসণ দধি স্ত্রি-য° ৷ তৈলাভ্যঙ্গ° তথাগ্বান° ন-রো ভলাতকে ত্যজেৎ ৷৷ অমৃত ভল্লাতকাবলেহঃ ৷৷ 🕸 ৷৷ নিম্ব॰ গোপারুণা কট্বী ত্রাযন্তী ত্রিফলা ঘন । পর্প টাবল্পজানস্তা বচা খদির চন্দন ।৷ পাঠা শুণ্ঠী শটী ভাগী বাস। ভূনিম্ব বৎসক ।। भागात्मक्यां क्रिशे पृत्री विष्टक्षः যবানলং ৷৷ হস্তিপর্নো ২মৃতা জে-का পটোল রজনীঘয় । কণার-থ্ধ সপ্তাহ্ব ক্লফবেত্রোচ্চটাফল° ।। मञ्जिष्ठी वाञ्रवी ताञ्र। नज्ज-मानः भूगर्गत। मछी विक्रयमात्र-শ্চ ভৃঙ্গরাজ জরণ্টকণ।। অক্ষোঠ-কঞ্চ শাখোট দিপলা শ পৃথক্ পৃথক। গৃহীয়। তানি সর্বাণি জ-

লদ্যোগে গচেচ্ছ্টনঃ ॥ অফ্ট্য়াণ-•শাবশেষত্ত ক্ষায় মবতার্যেৎ. । বিধায বাসদা পূত স্থাপযেন্ডা-জনে দৃঢ়ে ৷৷ ভল্লাতক সহসাণি किथु। बीगमत २ अमि । भए দফাবশেষম্ভ কষায় মবতার্যেৎ ।। তচ্চ বস্ত্ৰেণ সংশোধ্য দ্বৌ কষা-ষৌ বিমিশ্রযেৎ। গুডস্য চ তুলা **मञ्च% त्वङ्य भाश्र भाश्रयः ॥** ভল্লাতক সহস্থাণি তচ্চ বীজানি নিঃকিপেৎ । ত্রিকটুঃ ত্রিকলা মুস্ত বিডঙ্গ চক্রক তথা ৷৷ চন্দ-न॰ रेमऋव॰ ऋष्ठे॰ मीপ्राक्ष्म शन॰ পল°। সৌগন্ধ্যর্থ॰ ক্ষিপেত্তত্র চা-তুর্জাত• পল॰ পৃথক্।। মহাভল্গা-তকো হেম্ম মহাদেবেন ভাষিতঃ । প্রাণিনা॰ হিতকানায জযেচ্ছী-যু॰ প্রযোজিতঃ ।। শ্বিত্র মৌডুম্ব-त॰ मफ मृक्षिञ्च॰ मकाकन॰ । পুওরীকঞ্চ দর্মাখ্য বিস্ফোট র-ক্তমণ্ডল ৷৷ কণ্ডু প্ৰপালক প্ৰপ্ত পামানঞ্ বিপাদিকা । বাতর-ক্তণ ষডর্শাণিস পাঞ্রোগণ বণ ক্রমীন্।। রক্তপিত মুদাবর্ত্ত কা-স শ্বাসণ ভগন্দরণ। সদাভ্যাসেন পলিত মামবাত সুদুস্তর ॥ নি-র্যন্ত্রণস্ত কথিতে৷ বিহারাহার নৈ-

থুনৈঃ। জ্রুতে পরমাণ কান্তিণ थिनीख॰ कर्रतानन॰ ।। **अनु**शान• প্রযোক্তব্যণ ছিন্নাতোয়ণ প্রযো ়ংথবা। ভোজনে তু সদা ত্যাজ্য মুক্ত মন্ত্ৰণ বিশেষতঃ ৷৷ গোপা ধ্যে-তদাউ ইতি লোকে॥ যত আহ নিঘণ্টঃ। সারিবা সারদা স্ফোটা গোপকন্যা প্রতানিকেতি। তদ্ব।-চকো গোপীশকশ্চ যত আহ। গোপী শ্যামা সারিবা স্যাদন-ভোৎপলসারিব। ইত্যমরঃ ॥ গোপাঙ্গনা গোপবল্লী লতাহ্বা কাষ্ঠসারিবেতি মদনপালঃ অরুণা অতীস্। অবল্লুজঃ সো-মরাজী। অনন্তা দুরালভা। চ-ন্দন শ্বেত । ভার্য্যা অলাভে কণ্টকারীমূল। শ্যামা রুকাসা-উ। হস্তিকর্ণঃ হথিকণ। দ্রেকা वका देवि। मश्राद्धः ছ्वितन्। ক্লেক্তেঃ জলবেতসঃ। উচ্চটা-ফল॰ আরক্ত গুঞ্জাফল॰। স্বর-ট কঃ কটসরৈয়। দীপ্যকঃ যবা-নী। নহাভল্লাতকঃ।।ৠা মঞ্জিষ্ঠা ত্রিফলা ভিক্তা বচা দারু নিশা-মৃতা। নিম্ন শৈচ্যাণ রুভঃ কাথঃ সর্বন্দণ্ডানি নাশ্বেৎ।। লঘুনঞ্জি-छारिकाथः।। 🧱 ।। मञ्जिष्ठे। वाक्रिती

ठक्क मर्व शिव्यम्क । इती वि হরিজা চ ধাত্রী রাসা শতাবরী॥ वन। नागवना यकीमधक॰ कृत-কোপি চ। পটোলদ্য লভোশীর গু ভূচী রক্তচন্দন ।। মঞ্জিষ্ঠাদি त्र काथः अष्ठानाः नामनः भतः । বাতরক্তস্য সংহর্তা কণ্ডু মণ্ডল थ अनः ॥ यश्यमञ्जूष्ठी निकाशः ॥ 🗱 ॥ মঞ্জিষ্ঠা স্কটজামৃতা য়ন-বচা শুগী হরিদ্রাদ্বয়ণ ক্রুদ্রারিষ্ট পটোল সন্ত কটুকা ভাগী বিজ সাগিকে। মূর্বা দারু কলিঙ্গ ভূঙ্গ মগধা ত্রাযন্তি পাঠা বরী গায়ত্রী ত্রিফল। কিরাতক মহানিয়াস-नात्रथभ ।। भगमादञ्चक हन्तनः বরুণক দন্তী কশা ষোচক বাসা পর্গ ট সারিবা 'প্রতিবিষান ভা **विশाला जलः ।** त्रक्षिश्चेषि त्रयः ক্ষায় বিধিনা নিত্যু পুমান্ যঃ পিবেৎ ত্তুপোষা হুচিরেণ যান্তি विवयः अर्थानि ठाखीम्य ॥ ना শ॰ গচ্ছতি বাতরক্ত মখিল॰ নশ্য-ন্তি রক্তাময়া বীসর্প স্তুচি শূন্যতা নয়নজা রোগাঃ প্রশাসান্তি চ। অরিसेः नियः। কলিসः ইস্রেযবং । ভৃঙ্গণ ভৃঙ্গরা। বরী শতাবরী। গাযত্রী খদিরঃ। অসনঃ বিজয-

मातः। भागामा श्रियकुः। हन्मन মত্র রক্তণ গ্রাহ্ণ । সারিবা সাউ । অনন্তা দুরালভা। বিশালা ইন্দ্র-বাৰুণী ইতি। জলং নেত্ৰবালা। বৃহমঞ্জিষ্ঠাদিকাথঃ ।। ৠ ।। মরিচ॰ ত্রিবৃতা যুস্তা হরিতাল মনঃশি-न। राज्यमाङ श्रीटिक एवं गांभी স্ঠ সচন্দর ।। বিশালা কর্বী-त्रशः कीत्रमर्कममूख्यः। (गामयमा রুসণ স্বর্যাৎ প্রত্যেকণ কর্ষ সন্মি-ত ৷৷ বিষ্ণ্যাৰ্দ্ধপল দেষ তৈল প্রস্থমিত কটু। পচেচ্চতুর্গুণে . নীরে গোসূত্রে দিগুণে তথা ॥ মরিচাদ্য মিদ তৈল মভ্যঙ্গাৎ স্থানান । এত্যাভাস্তঃ শ্বিত্রণ বিবর্ণণ তৎক্ষণান্তবেৎ ॥ তৈল মেতজ্জয়েৎ কণ্ডূ॰ পামাণ-সিশ্বণ বিচর্চিকাণ। পুণ্ডরীকণত-থা দক্ৰণ শূন্যতাণ নিত্যসেবিনাণ া। লঘুমরিচাদ্য তৈল ।। 🟶 ।। ম-রিচ॰ ত্রিবৃতা দন্তী ক্ষীর মার্ক্ন॰ শ-ক্রজসঃ।দেবদারু হরিজে দে মাণ-সী স্বষ্ঠ সচন্দন ।। বিশালা কর-वीत्र हिंदिणाल यमः भिला। চিত্রক॰ लाञ्चली मूख। বিডঙ্গ॰ ठक्कमक्किः ॥ भित्रीयः ऋष्टेष्ठा নিষঃ সপ্তপর্ণে ২মৃতা সুহী। স-

ম্পাকো নক্তমালম্চ খদিরো বা-ঙ্গদী বচা ।। জ্যোতিমতী চ প: লিকা বিষণ দ্বিপলিকণ ভবেৎ ৷ আঢক কটুতৈলন্য গোমূত্রঞ্ চতুর্গুণ ৷৷ মৃৎপাত্তে লোহগাত্তে চ শনৈ মৃ দিগিন। পচেৎ। মরি-চাদ্য মিদ তৈল মহমুনিভি রী-রিতে।। ভিষগেতেন তৈলেন মু-ক্ষেৎ কৌষ্ঠিকান্ ব্ৰণান্। পা-মা বিচর্চিকা দক্ত কণ্ডূ বিস্ফো-টকানি চ ॥ বলষঃ পলিভ॰ ক্ষা-ষা নীলং ব্যঙ্গং তথৈৰ চ। অভ্য-জেন প্রণশ্যন্তি সৌঙ্গমার্য্যঞ্চ জা-যতে ।। প্ৰথমে বষসি স্ত্ৰীণা॰ যা-সা॰ নস্য॰ প্রদীয়তে। তাসা মপি জরা প্রাপ্য ন স্যাতাণ স্থালিতৌ স্তনৌ ॥ বলীবর্দ স্তরঙ্গে। বা গজে। বা বাযুপীডিতঃ । ত্রিভি রভ্যঞ্জনৈ রম্য° ভবেশ্ব†রুত বি-ক্রমঃ ।। জ্যোতিশ্বতী মালক-ঙ্গুণীতি লোকে। মহামরিচাদি তৈল॰।। 🟶 ।। তালকস্য তু পত্ৰা-वि यमा मिछ शृथक् शृथक्। ञ-ভুকস্যৈব তদ্যাহ্য হরিতাল চিকিৎসকৈঃ ॥ পুনর্বাষাঃ স্বর-म ठालक ठिवमंत्य । पिन-মেক তত স্তামিন্ ঘনত্ব গমিতে

সতি ।। স্বীতি চক্রিকাং তান্ত শোষ্যেৎ সন্যাগাতপে। পুনর্বা **गमञाक्रकारे**तः शानीः गनात्रि । প্রবেচ্চ ততঃ কার॰ জচবেৎ পীডনেন হি । ক্ষারস্যোপরি ण॰ ममा९ **जान**कमा जू ठकि-কা•।। তত আচ্ছাদন দ্বা যুদ্রা क्वा वित्मयस्य । ञ्रानी॰ চूला निशायात्रि ययन्तः ज्ञानटयस्तियक् ।৷ নিরন্তর মহোরাত

পঞ্ক তেন সিদ্ধ্যতি । স্বাঙ্গ শীত সমু-ত্তার্য্য গৃহ্লীযাড্রস মৃত্রমণ।। তা-লকেশ্বর নামায মুক্তো গুঞ্জা মিতো রসঃ। গুড়্চ্যাদি ক্যাযেণ शक्तार्तिजान् विनामस्य ॥ ज-ফাদশাপি সন্থানি বাতরক্ত॰ ত-থোদ্ধত । ফিরঙ্গদেশজ রোগ দুস্তর চ ব্যপোহতি।। এতদ্ভেষজ रमवी जू नवनारम्भ विवर्क्करंग । তথা কটুরসং বহ্নি মাতপং দূরত স্ত্যজেৎ ৷৷ লবণ যঃ পরিত্যক্তৃণ ন শক্ষোতি কথঞ্চন স তু সৈন্ধব মনীবাৎ মধুরোপরসো হি সং।। তালকেশ্বরো রসং ॥ 🕸 ॥ তাল তাপ্য শিলা সূত্ টক্ষণ সিধু সণ-যুত । গন্ধাকে দিগুণো সূত ।জ্জ-ষীরান্ডিঃ প্রমর্দবেৎ।। ষডহুণ পু-

টিত॰ ষোঢা ভূধরে সকল॰ স্থিল । ষট্পদ॰ দ্বিপল॰ তামু॰ লোহ ভ या ठजूळाल ।। जशीतान्ति मिन যৃষ্ট ত্রি শাদ শে বিষ কিপে । অস্য মাসদ্বয় খাদেমাহিষীয়ত म॰यूত॰ ।। मश्राटेका बीऋ ही वी-জৈঃ কর্ষণ লিহ্নাত্ততঃ পরাণ। তালকেশ্বর নামায়ণ সর্বন্দপ্ত হ-রো রসঃ।। অর্কো মারিত তামুণ। দ্বিতীয তালকেশ্বরো রসঃ ॥ 🕸 ॥ রসো বলি স্তামু ময়ঃ পুরো ২গিঃ শিলাজতু স্যাদিষ তিন্দুক 🕫 । বরা চ তুল্যু গগন করঞ্জ বীজ: পৃথগুাগ চতুষ্টযঞ্চ ৷৷ সংমদ্য সৰ্বং মধুনা ঘৃতেন ঘৃত্য্য পাত্রে নিহি-ত প্রযন্ত্রাৎ। কর্ষণ ভক্তেৎ প্রত্যু-र यमा পथा॰ भारतामन॰ मुक्त ग-शुज्यक ।। विनीर्ग कर्गाकृति ना-সিকোপি ভবেদনেন স্মর তুল্য মূর্ত্তিঃ। দারা পরিত্যাগ ইং প্র-দিষ্টে। তিলৌদন॰ তত্ৰ নিবদ্ধমূ-লে।। তামুমযশ্চ মারিতং। পুরো গুগ্লুলুঃ । অগ্নি শ্চিত্রকণ । বিষ্তি-मुकः ऋिना। यता जिकना। त সাদি ত্ৰিকলান্ত॰ সৰ্ব॰ তুল্য॰। গ্ৰ-গন মভুক। করঞ্জবীজক পৃথক্ চতুর্গুণ রসাৎ। তত্ত্র সঙ্গে বদ্ধ

মূলে সতি তিলে।দন.মেব প্রথ্য ः। ইতি গলৎপ্রষ্ঠাধিকারঃ। ইতি ভা-বপ্রকাশঃ।। क्षाक्षा। অথ সর্বসা-থিহর কবচ°। হরি রুবাচ। সর্ব-**व्याधिरुतः वत्का देवक्षवः कवहः** শিব°। যেন রক্ষা ক্রতা-শস্ত্যোঃ ধেত° রক্ষযতঃ পুরা।। প্রণম্য দে-ব মীশান মজ° নিত্য মনাময°। एतंव॰ मर्खिश्वतः विक्रू॰ मर्बवगिशिन মব্যয়ণ ৷৷ বঞ্জাম্যহণ প্রতিসরণ নম-স্কৃত্য জনার্দ্দন । অমোঘাপ্রতি-यः मर्बः मर्बमूकेनितात्रनः ॥ विक् র্মামগ্রতঃ পাতু ক্লফো রক্ষতু পৃ-ষ্ঠতঃ। হরি র্মে রক্ষতু শিরে। হৃদ-यथ जनार्जनः ॥ यत्ना यय रुषी-কেশে। জিহ্বা॰ রক্ষত্ কেশবঃ। পাতৃ নেত্রে বাসুদেবঃ শ্রোত্রে স-স্বৰ্যণো ২বতু।। প্ৰদ্যন্নঃ পাতু মে ঘুাণ মনিরুদ্ধশ্চ চর্ম্মকং ৷ বনমা-লী গলস্যান্ত॰ শ্রীবৎসো রক্ষতা মুরঃ॥ পার্শ্ব॰ রক্ষতু মে চক্র॰ বা-ম॰ দৈত্যনিবারণঃ। দক্ষিণম্ভ গদ। দেবী সর্বাসূর নিবারিণী।। উদর॰ মুখল॰ পাতৃ পৃষ্ঠ মে পাতু লাঙ্গ-ল । উৰা রক্ষতু মে শার্ক জ জ্ব রফতু নন্দকঃ ৷৷ পাফী রক্ষতু শ-খ্রন্চ পদ্ম॰ মে চরণাবুভৌ **। সর্ব** 🏽

কার্যার্থ সিদ্ধ্যর্থ পাতু মাণ গরু-. ডঃ সদা ॥ বরাহে। রক্ষতু জলে বিষমেষু চ বামনঃ। অটব্যা॰ নর-সি[•]হ*চ সৰ্বতঃ পাতু কেশবঃ il হিরণ্যগর্ভো ভগবান্ হিরণ্য নম প্রযাহতু। সাংখ্যাচার্য্যস্ত কপি-লো ধাতুসাম্য করোভু মে।। শ্বে-তদীপ নিবাসী চ শ্বেতদ্বীপণ ন-ষত্বজঃ । সর্বান্ শত্রুন্ সূদ্যতু यशुंदेकरेखमूमनः ॥ विक्रूः मन। বিকিরতু কিল্লিষণ মম বিগ্রহাৎ । হংসো মৎস্য স্তথা কূর্দ্মঃ পাত-মা॰ সৰ্বতো দিশ• ।। ত্ৰি বিক্ৰমস্ত মে দেবঃ সৰ্বান্ পাপান্ নিক্নন্ত-जू। नजनाजायां (मत्वे) वृक्षिः পালযতা মম ৷৷ শেষো মে নি-র্মাল জ্ঞান করোম্বজ্ঞাননাশ-ন । বলরামো নাশ্যতু কল্ময ষৎ ক্তত মযা।। পদ্যাণ দদাতু পরনো মুখ মৃদ্ধা মম প্রভুঃ ৷ দতাত্তেয়ঃ কলযতু সপুত্ৰ পশু বান্ধবে ৷৷ সর্বানরীশাশ্যতু রামঃ পরশুনা মম। রক্ষোমস্ত দাশর-থিঃ পাতৃ নিত্য মহাভুজুঃ ॥ শত্তুন্ মে সমরে হন্যাক্তামো যা-দবনন্দনঃ। প্রলম্ব কেশি চাণুর পূতনা কংসনাশনঃ ॥ রুফস্য

্বোবালভাবং স মে কামান্ প্র-ষচ্চতু। অন্ধকার তমোঘোর भूक्ष कृष भित्रवः॥ भगामि ভয়সন্তপ্তঃ পাশহস্ত মিবান্তকে ৷ ততো ২হ° পুশুরীকাক্ষ মচ্যুত্ত **শরণ গতঃ।। ধন্যে। ২হ**ণনির্ভযো নিত্য যস্য মে ভগবান্ হরিঃ। শ্রেষা নারাষণ দেবে সর্বোপদ্র-वनागन ॥ देवकव कवि वक्ता বিচরামি মহীতলে। অপ্রধৃষ্টে।-শ্বি ভূতানা॰ সর্বদেবনধো ছহং॥ স্মরণাদেবদেবস্য বিষ্ণো রমিত-তেজসঃ। সিদ্ধি র্ভবতু মে নিত্য यथा यञ्ज मूमाञ्च ॥ या मा॰ ११-শ্যতি চক্ষ্ত্যা বাংশ্চ পশ্যামি **ठक्**या। मर्दियाः शाश्र म्कीनाः विष् वंशां कि क्ष्यः ॥ वामूर्णव-শ্য **যজ্জ• ত**শ্য চক্ৰস্য যে স্ব-ব্লাঃ ৷ তে ছিন্দম্ভ চ পাপণ মে নম **रि॰मञ्ज** रि॰मकान् ॥ द्वा**करम**यू পিশাচেষু কান্তারেষট্ৰীষু চ। বিবাদে রাজমার্গেষু দ্যুতেষু কল-হেষু চ ৷৷ নদী সম্ভব্নণে ঘাতে সং-প্রাপ্তে প্রাণসম্পরে। অগ্নি চৌর নিপীতে চ সর্বগ্রহ নিবারণে ॥ विमृा नर्भ विस्वारिष्ट तारा २थ विष्र শঙ্কটে। জপ্য নেভজ্জ-

পেমিত্যা শরীরে ভ্যমাগতে। অয়ণ ভগবতো মন্ত্রো মন্ত্রাণাণ প্র त्रा भशन्। विथ्याञ कवाः গুহু॰ সর্বপাপপ্রণাশন॰ ॥ স্বমা-যা ক্টতি নিৰ্মাণ কলান্তগৃহনো महें । जनामा छ জগদীজ প্রদাভ নমোস্ত তে ৷৷ ওঁ কা-वाय याशा । ७ कालभूक्षयाय याहा। ७ क्रकाय याहा। ७ ক্ষপুরুষায় স্বাহা। ওঁ চণ্ডায স্বাহা। ওঁ চণ্ডপুরুষায় স্বাহা। ওঁ প্রচণ্ডায় স্বাহা। ওঁ প্রচণ্ড शुक्रवाय वाहा। उँ मर्वाय वाहा। ওঁ সৰ্বপুৰুষায় স্বাহা। ওঁ ননো ভূবনেশাষ ত্রিলোকধাত্রে ইরি-টি মিরিটি স্বাহা। 'ওঁ নমো অম্বে চাভবে ধে যে সত্বা যা পাত্রচরা বৈষা দৈত্য দানব যক্ষ রাক্ষ্য ভূত পিশাচ সমাভাপস্মারকো-চ্ছাদন জ্বরাণা নৈকাহিক দিতীয ভূতীয় চাতুর্থক মৌস্থূৰ্ত্তিক দিন-জ্ব রাত্রিত্বর সন্ধ্যাজ্ব সর্বজ্বা-मीना॰ नृञा की है कर्छ भूजना ভুজঙ্গ স্থাবর জঙ্গম বিষাদীনা-মিদ॰ শরীর মনাপপথ্য ভবতু তুষ্ক স্কুট প্রকটোৎকট বিকট म॰ कुँ शृर्व 🗷 तक १ ७ दिर है रेट्रे

দিনকর সহসূকাল নমাগ্রতো 🏽 জয় পশ্চিমতে। রক্ষ । ওঁ নিবি নিবিপ্রদীপ্ত জ্বন জ্বালাকার। মহাকপিল উত্তরতো রক্ষ। ওঁ মিলি মিলি বিলি বিলি গারুডি গৌরি গান্ধারি বিষমোহ বিষ বিষমাণ্সণ মোহ্যতু স্বাহা । দ-ক্ষিণতো রক্ষ মাণ অমুকস্য সর্ব-ভূত ভযোপদ্রবৈজ্যো রক্ষ রক্ষ জিষ জ্ব্য বিজ্বতে ন হীষতে বিপ্রশ্রনোহ॰ ক্লতবাদ্যতে। ভয ৰুদয ভযবোভযো ২ভয়ণ দিশ-তু নমাস্তাৎ সাদন মচ্যুতঃ। তদুদর মখিল বিশস্ত লোকা যুগপরিবর্ত সহসু॰ ক্ষযাস্তমন-মিব প্রবিশন্তি কম্মখনে। ।। বা-मुरानदः मकर्यनः धानु । भागि-ङ्क्ककः। मर्बक्तात्रमञ्जल विकृ র্নারাযণো হরিঃ॥ ইত্যাদিমহা-পুরাণে গারুডে সর্ব্যাধিহর বিষ্ণুকবচণ ২০০ অধ্যায়ঃ ॥ ব্যাধিষাতঃ পু॰ আরম্বধবৃক্ষঃ। ইত্যমরঃ ৷৷ ব্যাধিতঃ ত্রি ব্যাধিযুক্তঃ। তৎ-পৰ্য্যায়ঃ। আম্যাবী ২ বিক্লতঃ ৩ অপটুঃ ৪ আতুরঃ ৫ অভ্য-মিতঃ ৬ অভ্যান্তঃ ৭৷ ইত্যমরঃ 🏻

'।। রোগী ৮। ইতি জটাধরঃ।। . व्याधिरुखा[ँ] भुः वातारीकन्मः। रेठि ताजनिर्यकैः॥ व्याधिया-তকে ত্রি ॥ ত্রি কম্পিতঃ। ইতি ব্যাধুতঃ) न्याशृष्टः भक्तत्रवावनी ॥ ব্যানঃ পু॰ শরীরস্থপঞ্চবাযুস্তর্গত-मर्बनतीत्रगवायुः । ইত্যমतः ॥ ইনে প্রাণাদযঃ গঞ্চ বাযবঃ শ-রীরে তিপ্ঠস্তি তে চ নিযত স্থান-স্থাঃ। যদাহুঃ। হৃদি প্রাণে। গুদে **২পানঃ সমানো নাভি স**ংস্থিতঃ । উদানঃ কণ্ঠদেশে চ ব্যানঃ ষর্বশরীরগঃ।। ইতি। এব॰ ত-দ্যাপারাশ্চ যথা। অন্ন প্রবেশ-ন মূত্রাদ্যুৎসর্গো ২য় বিপাচ-न॰ ভाষণাদি নিমেষাদি তদ্যা-পারাঃক্রমাদমী॥ইতি ভরতঃ॥ শ্রীধরস্বাসিমতে তৎকর্ম। ব্যা-यनः। आत्रक्षम প্রসারণাদি॥ অন্যচ্চ। ব্যানে। ব্যানশ্যত্য-ষ্ণ সৰ্ব্যাধি প্ৰকোপনঃ। মহা-রজত সুপ্রখ্যো হানোপাদান-कात्रनः॥ न ठाकि कर्नरग र्यास কট্যা বৈ গুল্ফবে। রপি। ঘু।-ণে গলে স্ফিগুদেশে তিপ্ঠত্যত্র নিরন্তরণ।। স্কন্দযত্যধরণ বক্তু•

গাত্র নেত্র প্রকোপনঃ ॥ ইতি,। শারদাতিলকটীকা ॥

ব্যাপকঃ ত্রি বিশেষেণাপ্নোতি

যঃ ।। তদ্বমিষ্ঠাত্যন্তাভাবাপ্রতিযোগী । যথা । সাধ্যম্য ব্যাপকো যস্ত হেতো রব্যাপক স্থথা
। স উপাধি ভঁবেত্তম্য নিষ্কর্ষো
হয়ণ প্রদর্শ্যতে ।। ইতি ভাষাপরিচ্ছেদঃ ।। আচ্ছাদকঃ । যথা
। পক্ষম্য ব্যাপকণ সার মসন্দিগ্ধা
মনাঙ্গলণ । অব্যাখ্যাগম্য মিত্যেব মুত্তরণ তদ্বিদো বিদুঃ ।।
পক্ষম্য ভাষার্থম্য ব্যাপকণ আচ্ছাদকণ ভাভিযোগাপ্রতিকূল
মিতি যাবৎ । ইতি ব্যবহারতত্ত্বণ ।।

ব্যাপদ্ স্ত্রী. মৃত্যুঃ । আপৎ । বিপূর্ব আঙপূর্ব পদধাতোঃ ক্নিপ্ প্রত্যযেন নিষ্পন্না ।।

ব্যাপন ক্লী আচ্ছাদন।। ব্যাপ্রিঃ।। কথা। অত্র লঙ্খন মসণক্রমণঞ্চ রবে স্তদা ভবতি যদা
তন্মাস তৎপূর্বমাসাস্ত্যক্ষণযো
রেকরাশ্যবস্থিতস্য তন্মাসানস্তর মেব রাশ্যস্তরসংযোগঃ নস্বেকরাশিস্থিতস্য মাসব্যাপনমাত্রণ। ইতি মলমাসতত্ত্বণ।।
ব্যাপন্নঃ ত্রি মৃতঃ। ইতি হেম্চক্রঃ।।

ব্যাপাদঃ পু॰ জোহচিন্তন•। ইত্যমরঃ॥

ব্যাপাদন ক্লী নারণ । ইতি
হেমচন্দ্রং ।। পরানিইচিন্তন ।
ইত্যমরটীকাষা রামাশ্রমঃ ।।
ব্যাপাদিতঃ ত্রি ডোহচিন্তিতঃ ।।
মারিতঃ । যথা । একা চেদ্বহুতিঃ
কাপি দৈবাদ্যাপাদিতা ভবেৎ
। পাদ পাদক্ষ হত্যায়া শ্রের্
স্থেক্ পৃথক্ ॥ ইতি প্রাযশ্রেতত্ত্বধৃতসম্বর্তবচন ।।
ব্যাপিকা স্ত্রী ব্যাপিনী । যথা ।
ভ্যম্মপত্নী মিথ্যা সাম্বর্ধুর্ত্তেশ্চ

পূজিতা। যথা বিনা জগমুজ

মুচ্ছনা বিধিনির্মিত ।। সত্যে চাদর্শনা যা চত্রেতাযা স্থান পিণী। অর্দ্ধাব্যবন্ধপা চ দ্বাপ-রে সংবৃতা ভিষা।। কলৌ মহা-প্রমন্তা চ সর্বত্র ব্যাপিকা ভবেৎ । কপটেন সম ভারা ভুমত্যেব গৃহে গৃহে।। ইতি ব্রহ্মবৈবর্তে প্রকৃতিখণ্ডে ১ অধ্যায়ঃ।।

ব্যাপারঃ পু॰ কর্ম। যথা। স্যাৎ প্রাণবিষোগফলকো ব্যাপারো হনন॰ স্মৃত॰ । রাগাদ্দ্েষাৎ প্রমাদাদ্বা স্বতঃ পরত এব বা।। •ইতি প্রাথশ্চিত্ততত্ত্বধৃত অগ্নি-পুরাণব্চন॰।।

ব্যাপারী ত্রি ব্যাপারবিশিষ্টঃ। ব্যবসাযী। যথা। লাক্ষালোহা-দি ব্যাপারী রসাদি বিক্রমী চ যঃ। স যাতি নাগবেষ্টঞ্চ নাবৈগ বেষ্টিত এব চ।। ইতি ব্রহ্মবৈ-বর্ত্তপুরাণং।।

ব্যাপী ত্রি বিষ্ণুঃ। যথা। স্বপনঃ
স্ববশো ব্যাপী নৈকাত্মা নৈককর্মক্রং। ইতি তস্য সহসুনামস্তোত্রণ ।। ব্যাপকঃ ।। আছ্মাদকঃ। যথা। ত্রিসন্ধ্য ব্যাপিনী
ষাতু সৈব পূজ্যা সদা তিথিঃ।
ন তত্র যুগ্মাদরণ মন্যত্র হরি-

বাসরাৎ ।। ইতি তিথ্যাদিতত্ত্ব-ধৃত পরাশর বচন্ ।।

ব্যাপৃতঃ পু॰ কর্মসচিবঃ। যথা।
নিযোগী কর্মসচিব আযুক্তো
ব্যাপৃতশ্চ সঃ। ইতি হেমচক্রঃ
। ব্যাপারযুক্তে ত্রি। বি আঙ্
পূর্ব পৃ ধাতোঃ ক্ত প্রত্যযেন
নিষ্পায়ঃ।।

ব্যাপ্ত ত্রি সম্পূর্ণ ৷ তৎপর্যায়ঃ 1.পূর্ণ ২ আটিত ও ছন্ন ৪ পূরিত ৫ ভরিত ৬ নিচিত ৭ ৷ ইতি হেমচন্দ্রঃ।। খ্যাতণ।। সমা-ক্রান্তণ। ইতি মেদিনী ॥ স্থাপি-ত । যথা। প্রাপ্ত প্রণিহিতে সমে ইত্যত্র ব্যাপ্ত মপি পাঠঃ। ইত্যমরটীকাষা রাযমুস্টঃ।। ন্ত্ৰী ব্যাপন ।। রম্ভঃ। ইতি মেদিনী।। রম্ভস্থানে লম্ভ-নমিতি হেমচন্দ্রে পাঠঃ॥ শি-বস্যাঝৈশ্ব্যান্তর্গ তৈশ্বব্যবি-শেষঃ ৷ যথা ৷ অনিমা লঘিমা ব্যাপ্তিঃ প্রাকাম্যণ মহিমেশিতা । বশি কামাবশাষিত্বে ঐশ্বর্য্য মফ্রধা স্মৃত ।। ইতি শব্দমালা ॥ 🗱 ॥ ন্যায়মতে সাধ্যবদন্যা-বৃত্তিত্ব । যথা । অগ্যভাবস্থা-নে ধূমস্যাবর্ত্তমানত্ব । ইয়

অশ্বয় ব্যাপ্তিঃ। অস্যা ভ্রান । প্রতি ব্যভিচারজ্ঞানাভাবঃ স হচারজ্ঞানঞ্চ কারণ ৷ এব সা-, **খ্যাভাবব্যাপকী**ভূতাভাব প্র-তিযোগিত্ব । ইয় ব্যক্তিরেক-ব্যাপ্তিঃ। অস্যা জ্ঞান প্রতি সাধ্যাভাব এবং হেম্বভাবস্য স-হচারজ্ঞান॰ ব্যভিচারজ্ঞানা-ভাবশ্চ কারণ । তত্র প্রমাণ । ব্যাপ্তিঃ সাধ্যবদন্যস্মিলসম্বন্ধ উদাহ্নতঃ। অথবা হেতুমমিঠ वित्रश्राञ्जितिया ।। मार्था-ন হেতো রৈকাধিকরণ্য ব্যা-প্তি রুচ্যতে। ব্যক্তিচারস্যাগ্র-হোপি সহচারগ্রহ স্তথা 11 হে-তু ৰ্ব্যাপ্তিগ্ৰহে তৰ্কঃ ক্ষচিৎ শঙ্কা-নিবর্তকঃ। দৈবিধ্যন্ত ভবেদ্যা-প্রে রম্বয ব্যতিরেকতঃ 11 অম্বয-ব্যাপ্তি রুক্তৈব ব্যতিরেকাদথো-চ্যতে ৷ সাধ্যাভাবব্যাপকত্ব হেম্বভাবস্য যদ্ভবেৎ 11 ইতি ভাষাপরিচ্ছেদঃ ৷৷

व्याभाः क्री माधनः। यथा। व्याभाः निकथः माथमः। ইতি किं विश्व । इंडामतः ॥

मझीर्वदर्श जिकाखरमयः ॥ अ-जि वाशिविभिकः। ব্যাপ্যঃ

वाभनीयः। यथा। श्रञ्जानः ए স্বলিশ কলনামিশ্চিত পণ্ডি-তাগ্রৈয় শ্চিত্তে খন্মাকণ তদপি त्रमण्ड याश् वाशील वानी। অপ্রামাণ্য কথয়তি সদা নন্দ-मृत्न। বিষোগে। ব্যাপ্যজ্ঞানা-দুজদলভূৰা ব্যাপক স্যাপি সি-দ্ধৌ।। ইভি পদাস্কদূতঃ ॥

ব্যামঃ পু॰ ভির্যাক্ পাম্বে ততযোঃ সহস্তযো বাহ্যো রন্তরণ। বেঁযু ইতি ভাষা। ব্যামীয়তে খনেন ব্যামঃ ক্লকোঃ কভাব ইতজে মাজে। ডঃ। ইত্যমরভরতৌ ।। ব্যান ব্যামাম ন্যগ্রোধা স্তির্যাক্ বাহু প্রসারিতো। ইতি হেন-हर्मः ॥

ব্যামন ফ্লী ব্যামঃ। ইতি ত্রি-কাণ্ডশেষঃ ৷৷

वाग्यं वि वाश्वा । देवर्गः ॥ मृष्ण । । অভিশयः। ইতি गिमिनी वायामः श्रु लोक्तयः। लामः॥ विषयः ॥ मूर्गमकातः। ইতি मि-**षिनी ॥ त्रांभः। इंछि ए**स्प्रह्यः ।। সল্লক্রীডা । স্বস্তীতি পারস্য-ভাষা। অন্য গুণাদি যথা। ব্যায়ামো হি সদা পথ্যো বলি-না॰ স্নিগ্ধভোজিনা॰। স চ শী-

তে বসন্তে চ তেষা পথ্যতমঃ न्युठः ॥ मर्दिषृठ्यु मर्दिः र्क् भृ-রৈ রাত্মহিতার্থিভিঃ। শক্ত্যর্দ্ধেন তু কর্ত্তব্যো ব্যাযামো হস্ত্যতো-वाथाः ॥ ऋको ननाटि जीवा-ষা॰ যদা যশ্মঃ প্রবর্ত্ততে। শক্ত্য-ৰ্দ্ধণ তণ বিজীনীযাদায়তোচ্ছাস মেব চ।। लाघव॰ कर्म्ममामर्था॰ হৈছয্যে° ক্লেশ সহিষ্কৃত।।দোষক্ষ-या श्रिवृद्धिक वग्रयामापूत्र-জাষতে ৷৷ ব্যাযান° সৰ্বতো নি-ত্যু॰ বিৰুদ্ধ মপি তোজন॰। বি- দধ্য মবিদগ্ধ॰ বা নির্দ্দোষণ পরি-পচ্যতে !! ন চ ব্যাযান সদৃশ ন-ন্যৎ স্থৌল্যাপকর্ষণ । ন চ ব্যা-যামিনণ মর্ত্যণ মর্দ্দযন্ত্যরয়ো ব-লাৎ।। ন টেন॰ সহসাক্রম্য জ-রা সমধিগচ্ছতি। ব্যাযাম ক্ঃ-গাত্রস্য পদ্তা। মুদ্বর্ত্তিস্য চ ।। ব্যাধয়ো নোপসপস্থি বৈনতেয মিবোরগাঃ। রক্তপিত্তী ক্ষ্মী-শোষী কাসী শ্বাসী ক্ষতাতরঃ॥ ভুক্তবান্ স্ত্রীষু চ ক্ষীণো ব্যাষা-ম॰ পরিবর্জযেৎ। বাতপিত্তাম-ষী বালে। বৃদ্ধো ২জীণী চ সং-ত্যজেৎ ৷৷ অতিব্যাযামতঃ কা-সোরক্তপিত্ত প্রজাযতে। শ্রমঃ । ব্যালগ্রাহী পু ভিক্ষার্থ সর্প-

्क्रमः कम खुका खत म्हर्णि म्ह জাযতে ॥ ইতি রাজবল্লভঃ॥ ব্যাযোগঃ পু॰ দশ্বিধৰূপকাস্ত-ৰ্গতৰূপকবিশেষঃ। যথা। স্যা-মাটক প্রকরণ ভণঃ প্রহসন ডিমঃ। ব্যাষোগঃ সমবাকারো विशास्त्रशमृगा देवि ॥ चिन নেযপ্রকারাঃ স্যু ভাষাঃ ষট্ সং-ক্তাদিকাঃ।। ইতি হেমচন্দ্রঃ।। वानः पु॰ मर्गः॥ स्रापमः। ह-ত্যমরঃ ।। দুঊগজঃ । ইতি মে-দিনী।। চিত্রকঃ।। ব্যায়ুঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ৷৷ রাজা ৷ ইত্যমর-তিকাষা স্থুরেশঃ॥ ব্যালঃ ত্রি শঠঃ। ইত্যমরঃ॥ धूर्वः। **रें छि फ**िश्वतः ॥ वाानकः पुः मुखेगकः । उद-পर्यायः। शस्त्रीतर्ति। २ व्यक्ष्म-मूर्कतः ७ ठानकः ८। ইতি जि-কাওশেষঃ।। ব্যালখন্দঃ পু॰ ব্যালনখঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ ব্যালগন্ধ। স্ত্রী নাঙ্গলী। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ ব্যালগ্রাহঃ পু॰ ব্যালগ্রাহী। ইত্যমরটীকাষাণ ভরতঃ॥

शती। मर्गर्थनकः। माभू िया रेठि वानिया रेठि ह जाया। ठ०ः পर्यायः। जिह्जू िकः २। है-ठामतः॥ जाक् निः ७ जाक्र निः ८ आर्ड्जू िकः ५ वान्यारः ७ भाक्षिकः १ विष्टे पाः ৮। रेठि भक्त जावनी॥

वागाजिका खी महाममका। इंडि ताजनिर्यकः॥

ব্যালদ শুঃ পু॰ গোক্ষুরঃ। ইতি রাজনির্বক্টঃ।।

वाननथः पू॰ गन्न जवादित्मवः। वचनश हेि हिमीजाया। उ० पर्यायः। कृष्णः २ ठळनायकः ७ ठळी ८ ठळनथः ५ ळामुकनः ७ वाचुनथः १ बीभिनथः ५ थपुतः २ वानभानिकः ५० वा-नायुक्षः ५० रानभानिकः ५० वा-नथनः ५०। यमा छनाः। ठि-कषः। উकष्ण। क्यायपः। कक वाठ कर्ष क्षृ जन नामिषः। व-र्गपः। भोगन्नाश्रमष्ट । हेि ताकनिर्यन्धः।।

ব্যালপত্রা স্ত্রী এর্বারুঃ। ইতি রাজনির্যক্টঃ।

वाानवनः पूर् वााननथः। ইতি রাজনির্ঘন্তঃ।।

ধারী। সর্পথেলকঃ। সাপুডিয়া ব্যালমৃগঃ পু॰ চিত্রব্যায়ুঃ। চি-ইতি বাদিয়া ইতি চ ভাষা। তৎ তাবাঘ ইতি ভাষা। ইতি মহা-পর্য্যায়ঃ। অহিতুণ্ডিকঃ ২। ই- ভারতে রাজধর্মঃ।

> वालियः पू॰ तरेक्डत्र । हेि रेवमाकः॥

> ব্যালাযুধ ক্লী নখীনামগন্ধ-ডব্য ইত্যমরটীকাষা মথু-রেশঃ।।

वानायुक्षः श्रुः वाननकः। ইতি वाजनिर्विष्टः।।

ব্যাবক্রোশী স্ত্রী পরস্পরাক্রো-শনণ। ইতি স্ত্রীলিঙ্গসংগ্রহ টী-কাষাণভরতঃ ।।

ব্যাবভাসী স্ত্রী ব্যাবক্রোশী। ইত্যমরটীকাষাণ রাষমুঙ্গটঃ।। ব্যাবর্ত্তঃ পুণ নাভিকন্টকঃ। ইতি শব্দরত্নাবলী।। তত্র আবর্ত্তকো-পি পাঠঃ।।

ব্যাবহারী ন্ত্রী পরস্পরহরণ ।
ইত্যমরটীকাষা ভরতঃ।।
ব্যাবহাসী ন্ত্রী পরস্পরহসন ।
ইত্যমরটীকাষা ভরতঃ।।
ব্যাবৃত্তঃ ত্রি বৃতঃ। যথা। বৃত্তে

ব্যাবৃত্তঃ ত্রি বৃতঃ। যথা। বৃতে তু বৃত্ত ব্যাবৃত্তৌ। ইতি হেম-চন্দ্রঃ।। আবৃতশ্চ।

ব্যাবৃত্তিঃ স্ত্রী খণ্ডন । যথা। অভীতঃ পস্থান তব চ মহিনা বাজ্বনসযো রতদ্যাবৃত্ত্যা য° চকিত মভিধত্তে শ্রুতি রপি ১ স
কস্য স্তোতব্যঃ কতিবিধগুণঃ
কস্য বিষয়ঃ পদে স্বর্গাচীনে পততি ন মনঃ কস্য ন বচঃ ।। ইতি
মহিমস্তোত্র ।। অবৃত্তিঃ । যথা
। সর্ব সপক্ষব্যাবৃত্তি রেব দোষো
ন বিপক্ষব্যাবৃত্তি রপি তস্যাননুগুণদ্বাৎ । ইতি চিস্তামণো অসাধারণমূল ।।

ব্যাদঃ পুর্ণবিস্তারঃ। ইত্যমরঃ॥ মানভেদঃ। ইতি শব্দরত্নাবলী ॥ পঠिক बाक्षनः। यथा। देनय-তকালিক কল্পতরৌ ভবিষ্যপু-রাণ ৷ বিস্পষ্ট মদ্রুত শান্ত স্পষ্টাক্ষরপদ॰ তথা। কলম্বর সমাযুক্তণ রস ভাব সনন্বিত 11 वृश्यमानः मन्थं देव अञ्चार्थः রুৎস্বশে। নৃপ। ব্রাহ্মণাদিষু স-र्विषु श्रन्थं क्षार्शराम्थ ॥ य-.এবং বাচষেদুন্ধন্ স বিপ্রো ব্যা-স উচ্যতে । ই তি তিথ্যাদিতত্ত্ব॰ ॥ (भानमा मधादत्रथा। यथा। ব্যাসে ভ নন্দাগ্নি হতে বিভক্তে খ বাণ সূটর্যাঃ পরিধিস্ত সৃক্ষঃ। দাবি॰শতিমে বিহুতেথ শৈলেঃ স্থুলোথ বা স্যাদ্যবহারযোগ্যঃ ॥

। উদাহরণ । विक्रम गान॰ কিল যত্ৰ সপ্ত তত্ৰ প্ৰমাণ প: রিধেঃ প্রচক্ষ। দাবি॰শতি র্যন্থ পরিষি প্রমাণ তদ্যাস সংখ্যা চ সথে বিচিন্তা ॥ ইতি লীল।-वर्जी ॥ 🟶 ॥ मूर्निविद्यसः । जंगा পর্য্যায়া বেদব্যাস শব্দে ডফ্ট-ব্যাঃ । স চ সত্যবত্যা॰ কন্যা-কালে পরাশরাজ্জাতঃ। শ্রীরুষ্ণ मा शक्करला ख्वः। यथा। वर्गमः পুরাণসূত্রঞ্চ পপ্রচ্ছ বাচ্মিক ধ-দা মৌনী ভূতঃ স সম্মার দ্বামেব জগদম্বিকাণ।। তদা চকার সিদ্ধা ন্ত ত্বৰরেণ মুনীশ্বরঃ। সংপ্রাপ, নিৰ্ম্মল জ্ঞান ভুমান্ধ ধণ্স দীপ-কং ॥ পুরাণসূত্র প্রান্থা স ব্যাসঃ পঞ্চকলোদ্ভবঃ। ত্বা॰ সিষেবে প্র-**प**रिशो **ठ শতবর্ষঞ্চ পুষ্করে ॥ তদা** ত্বতো বর•প্রাপ্য স কবীন্দ্রো বভূ-ব হ। তদা বেদ বিভাগঞ্চ পুরাণঞ্চ চকার হ।। ইতি ত্রন্ধবৈবর্ত্তে প্রক্ল-তিখণ্ডে ৪ অধ্যায়ঃ ॥ 🕸 ॥ তস্য জন্মান্তর॰ যথা। অথ ভূযো জ-গৎসুষ্টা ভোঃ শব্দেনানুবাদযন্ । সরস্বতী মুক্চচার তত্র সারস্বতে। হভব**ং ৷৷ অপান্তরত**মা নাম সুতো বাক্সম্ভবং প্রভুং । ভূত

ভব্য ভবিষ্যজ্ঞঃ সত্যবাদী দৃঢ-় বতঃ ।। ত মুবাচ নতং মূদ্ধা দেব।-न। मानि त्रवाधः। त्रनाधारन अ-তিঃ কার্য্যা যথা মতিমতাম্বর ॥ তন্মাৎ স্বরু ষ্থাজ্ঞপ্ত মনৈতদ্ব-চন মুনে । তেন ভিন্ন। স্তদা বে-দা মনোঃ স্বাযভূবো ২স্তরে ॥ ত-ত স্ততোষ ভগবান্ হরি স্তেনাস্য কর্মণা। তপদা চ সুতপ্তেন যমে-ন নিষমেন চ।। মন্বস্তরেষু পুত্র স্ব মেৰ মেব॰ প্ৰবৰ্ত্তকঃ। ভবিষ্যস্য-চলো বন্ধরপ্রাশ্চ নিত্যশঃ ।৷ ইতি মহাভারতে মোক্ষধর্মঃ ॥ #॥ ञनाका । मुङ वकनवष्ट्रङ রদৃশ্যন্তী পরাসর । কালী পরা-সরাৎ যজ্ঞে ক্লেইছপাষন মুনি ॥ दिशायनाम्बनाः देव स्टिका যজ্ঞে গুণাখিতঃ। ইতি বঙ্কিপুরা-ণে প্রজাপতিসর্গো নামাধ্যায়ঃ ॥ 🗱 ॥ युगटाज्या व्यामटाज्या ষ্থা। যশ্মিমমন্তরে ব্যাসা যে যে তা॰ স্তানিবোধ মে। যথা চ ভে-হঃ শাখানা ব্যাসেন ক্রিয়তে মু-নে ৷৷ অফ্টাবিশ্শতিক্লম্বে৷ বৈ বে-দো ব্যস্তো মহর্ষিভিঃ। বৈবস্বতে-ন্তরে ছম্মিন্ দ্বাপরেষু পুনঃ পু-নঃ ৷৷ বেদব্যাসা ব্যতীতা যে অ- ফীবি॰শতি সত্তমাঃ। চতূর্ধামেঃ ক্ততো বেদো দাপুরেষু পুনঃ পুনঃ ৷৷ দ্বাপরে প্রথমে ব্যস্তাঃ স্বয়-বেদাঃ স্বযন্তুবা। দ্বিতীযে দ্বাপরে চৈক বেদব্যাসঃ প্রজ্ঞাপতিঃ **।**। তৃতীযে চোশনা ব্যাস শ্চতুর্থে তৃ বৃহস্পতিঃ। সবিতা পঞ্চমে ব্যা-সো মৃত্যুঃ ষষ্ঠে স্মৃতঃ প্রভুঃ ॥ সপ্তমে চ ভথৈবেক্সো বশিষ্ঠ শ্চা-ফ্রনে স্মৃতঃ। সারস্বতশ্চ নবনে ত্রিধামা দশমে স্মৃতঃ।। একাদ-শে বৈ ত্রিবৃষো ভারদাজ স্ততঃ পর° । ত্রযোদশে চান্তরীক্ষোধ্ব-স্মী চাপি চতুর্দশে ॥ ত্রযারুণঃ পঞ্চলে যোডশে তু ধনঞ্জয়। ক্ৰজ্ঞয়ঃ সপ্তদশে ঋণজ্যোক্টা দশে স্মৃতঃ ॥ ততো ব্যাসো ভ রদ্বাজো ভরদ্বাজাত্তু গৌতমঃ। গোত্যাদুত্তমে। ব্যাসো হর্যাত্মা যো হভিধীয়তে।। অথ হয্যাত্ম-নো বেণঃ স্মৃতো বাজশ্রবাস্ত মঃ । সোমো मूथायन खन्माक्विन् রিতি স্তঃ ৷৷ ঋকে৷ ২ভূতার্গব स्त्राचाचीकि र्या श्रेडिशेष्ट । তন্মাদৃশ্বৎপিত। শক্তি ব্যাস खन्मापर॰ मूटन ॥ काजूकर्टनी ३-ভবন্মত্ৰঃ ক্লফাৰেপায়ন স্কুতঃ ৷

অফাবি॰শতি রিত্যেতে বেদব্যা-।। ব্যাসকঃ পু॰ বিশেষেণ আসকঃ। সাঃ পুরাতনাঃ ।। একে। বেদ শ্চতুর্ধা তু তৈঃ ক্রতো দাপরা-দিষু। ভবিষ্যে দাপরে চাপি দ্রৌণি ব্যাসে। ভবিষ্যতি ॥ ব্য-তীতে মম পুত্রেস্মিন্ ক্লফদ্বৈপা-যনে মুনো। ইতি বিষ্ণুপুরাণে ৩ অংশে ৩ অধ্যায়ঃ ৷৷ৠ৷ কূর্ম্ম-পুরাণে দ্বিযান্ বিশেষঃ। ছাদ-শৈ দাপরে শততেজাঃ। ত্রযো-मत्म धर्मः । ठजूर्मत्म जतकः । পঞ্চদশে ত্র্যায়ণঃ। অফাদশে ঋতঞ্জযঃ। একবিণশে বাজশ্র-বাঃ। দাবিংশে শুমাপণঃ। ত্র-ষোবি॰শে তৃণবিন্দুঃ। চতুর্বি॰শে वाचौिकः। शक्षविः भ तिकः। অন্যৎ বিষ্ণুপুরাণবৎ ॥

ব্যাসক্তঃ ত্রি বিশেষেণাসক্তঃ। मःनाः। यथा। व्यादकारमणी-বরাভা কনক পরিলসৎ পীত-বাসাঃ সুহাসা বহৈ ৰুচ্চন্দ্ৰকা-তৈ ৰ্লিয়ত চিঙ্গরা চাৰু কর্ণা-বত সা। অংসব্যাসক্ত বংশধ্নি সুখিত জগদলবীভি লসভী মূ-র্ত্তি র্গোপস্য বিষ্ণো রবতু জগ-তি নঃ সুগ্ধরা হারি হারা।। ইতি ছন্দোমঞ্জরী ॥

'বি আঙ পূৰ্ব সন্জ ধাতো ৰ্বঞ্ প্রত্যযেন নিপ্সশ্বঃ ৷৷

ব্যাসমাতা স্ত্রী বেদব্যাসজননী । ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ ॥ তৎ-প্ৰয়ায়ঃ। সত্যবতী ১ বাসবী ২ গন্ধকালিকা ৩ যোজনগন্ধা ৪ मारमयी (गीन कायन की वमृः ৬। ইতি হেমচন্দ্রঃ।। গ্রন্থান্তরে শালক্ষাযনজা ইতি চ পাঠঃ॥ कानी १ अरमामती ৮ विष्ठिव-বীৰ্য্যসূঃ ৯ চিত্ৰাঙ্গদসূঃ ১০ যো-জনগন্ধিক। ১১। ইতি ত্রিকাণ্ড-শেষঃ।৷ গন্ধকালী ১২ সত্যা ১৩ मामनिकनी 38 । ইতি भक-त्रवावनी ॥

ব্যাসিদ্ধঃ ত্রি নিষিদ্ধঃ। ইতি মিতাক্ষরা ॥

ব্যাহতঃ ত্রি বিশেষেণাহতঃ।। ব্যর্থঃ। যথা। সুপ্ত ব্যাসক্ত ম-नमा (के क्रियार्थरयाः मिकर्य-নিমিত্তত্বাৎ তৈ শ্চাপদেশা জ্ঞানবিশেষাণাণ ব্যাহতত্বাদ-হেতুঃ। ইতি গোতমসূত্রে প্র-ত্যক্ষপরীক্ষা প্রকরণ ।৷ অপি চ । অব্যাহতাজ্ঞঃ সর্বাসু যঃ সদা দেবষোনিষু । নিৰ্জ্জিতাখিল-

দৈত্যারিঃ স যদাহ শৃণুষ তৎ।। ইতি দেবীমাহাত্ম্য ।। ব্যাহারঃ পু॰ বাক্য•। ইত্যমরঃ॥ ব্যাহ্বতিঃ স্ত্রী ব্যাহারঃ।। মন্ত্র-বিশেষঃ। যথা। ওঙ্কার মাদিতঃ ক্লবা ব্যাহ্নতি স্তদনস্তরণ। ততে। ২ধীষীত সাবিত্রী মেকাগ্রশ্রদ্ধ-বান্বিতঃ ।। পুরা কল্পে সমুৎপন্ন। ভূ ভূবঃ স্বঃ সনাতনাঃ। মহা-ব্যাহ্যতম স্তিসুঃ সর্বাশুভ নিব-र्नाः ॥ প্রধানপুরুষः কালো **্রত্বন** বিষ্ণু মহেশ্বরাঃ। সত্ত্ব॰ রজ खम खिमुः क्रमाक्राश्रुव्यः मृ-তাঃ ৷৷ ওকার স্তৎপর প্রকা সাবিত্রী স্যাত্তদক্ষরণ। এষ মস্ত্রো মহাভাগ সারাৎসার উদাহতঃ ।। ইতি কৌর্মে উপরি ভাগে ১৩ व्यक्षायः ॥ ব্যুতঃ ত্রি স্যূত । ইতি ভরত-षिकाश का यः ॥

ব্যুতিঃ ন্ত্ৰী উতিঃ। তম্বসম্ভতিঃ। ইতি ভব্নতদ্বিৰূপকোষঃ।।

वा ९ क्या विश्वास । ব্যতিক্রমঃ। তৎপর্য্যাষঃ। উৎ-ক্রমঃ ২ অক্রমঃ ৩ ৷ ইতি হেম-**उसः** ॥

ব্যুখান ক্লী স্বাতন্ত্ৰ্যক্ত্য ॥

বিরোধাচরণ । ইতি মেদিনী।। প্রতিরোধন ।। সুমাধিপারণ । ইতি হেমচন্দ্রঃ।। নৃত্যভেদঃ। ইতি শব্দরত্নাবলী।। বিশেষে-(गायानकः ॥

ব্যুৎপত্তিঃ স্ত্রী বিশেষেণাৎ-পত্তিঃ'॥ সংস্কারঃ । ইতি ব্যুৎ-<u> शक्ष मर्थ मर्गना १ । यथा । म-</u> রৎকালবোধনীয়ত্বেন শার্দা পদব্যুৎপত্তে স্তৎপ**দ॰ তাল**ব্যা-দি সারু দদাতীতি ব্যুৎপত্তিস্ক कान्ननिकी। ইতিতিখ্যাদিতত্ত্বং। শক্তিজ্ঞান । যথা। ব্যবহারাদি বাধক বিনা বিবরণাদপি ব্যুৎ-পত্তেঃ ৷ বাধক বিনা **স্বসা**ধ্যস্য বাধক° যদিশেষণ• তদভাববত্ব বিশেষণ সহকারেণ ব্যুৎপত্তেঃ ব্যুৎপত্তি সম্ভবাৎ শক্তিগ্রহস-ম্ববাদিতি যাবৎ। ইতি আখ্যা-তবাদস্য মাথুরীটীকা ॥

ব্যুৎপন্নঃ ত্রি সংস্কৃতঃ। ইতি হেমচন্দ্রশব্দরত্নাবল্যো॥ ব্যুৎ-পত্তিযুক্তঃ। যথা। ব্যাকরণবাুৎ-পরশব্জানাধীন শাস্ত্রান্তর-**छान॰ छमधीन। ह दिमिक**क्विया তৎकल अर्गामि । इंछि मूर्क वाधिकायाः मूर्गामामः॥

ব্যুৎপাদকঃ ত্রি ব্যুৎপত্তিজনকঃ
। যথা। শব্দব্যুৎপাদকশাস্ত্রারডেড শব্দৈ রেব মঙ্গলং কর্ত্তব্যং
। ইতি মুগ্ধবোধটীকাষাং দুর্গাদাসঃ।

ব্যুষ্ট প্লী ফল । । দিন । । প্র-ভাত । । পর্যাষিত । ইতি হেম-চন্দ ঃ । ।

वृष्ठः वि উषिতः॥ पक्षः। ইতি
पितिनी ॥

ব্যক্তিঃ ন্ত্রী ফল'॥সমৃদ্ধিঃ। ইতি মেদিনী ॥ স্তুতিঃ। ইতি হেম-চন্দ্রঃ॥

বূঢ়ি ত্রি বিন্যস্তঃ। সংহতঃ। ইত্যমরঃ।। প্রথ্লঃ। ইতি মে-দিনী।।

ব্যুতকন্ধটঃ ত্রি সমন্ধঃ। ইত্য-মরঃ॥

ব্যুটিঃ স্ত্রী বিন্যাসঃ॥সংহতিঃ॥ প্রথ্লতা। ইতি ব্যুচশব্দার্থ দ-শ্নাৎ॥

ব্যতং ত্রি উতং। তম্বসস্ততং। বি পূর্ব বেঞ ধাতোঃ ক্ত প্রত্য-যেন নিষ্পান্নং।

ব্যুতিঃ স্ত্রী বস্ত্রাদিবপনক্রিযা। ভৎপর্য্যায়ঃ। বাণিঃ ২। ইত্য-মরঃ।। ব্যুতিঃ ৩। ইতিতটীকা॥

∥ বৃুহঃ পু॰ 'সমূহঃ ।। নির্মাণ•।। তর্কঃ। ইতি মেদিনী।। দেহঃ।। সৈন্যঃ । ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ ॥ युक्षार्थरमनात्रहना। তৎপर्या।-যঃ। বলবিন্যাসঃ২। ইত্যমরঃ।। युक्तार्थ॰ देमनामा एक्नवित्नदय বিভজ্য দুর্লজ্যাত্ব নিনিত্ত স্থা-পন॰ ব্যুহঃ। উহ বিতর্কে বিপূ-र्वा । युष्क मञ्जानरया ভেদা বিশেষা ব্যুহস্যেত্যর্থাৎ আদিনা ভোগ মণ্ডল সংহতা-না॰ গ্ৰহঃ । যথাহ কামন্দকিঃ। তির্যাঞ্তিশ্চ দণ্ডঃ স্যান্ডোগো ২ন্বাবৃত্তি রেব চ। মণ্ডল° সর্বতো-বৃত্তিঃ পৃথয়ৃত্তি রসংহতঃ ইতি । এযাণ চতুর্ণাঞ্চ বহবো ভেদাঃ ক্রৌঞ্চ চক্রাদয়ে। গ্রন্থগৌরব-ভযামোক্তাঃ। ইতি ভরতঃ ॥ অপি চ। সমগ্রস্য তু সৈন্যস্য বিন্যাসঃ স্থান ভেদতঃ। স ব্যূহ ইতি বিখ্যাতো যুদ্ধেষু পৃথিবী-ভূজা॰ ॥ ব্যূহভেদাস্ত চন্বারো দভো ভোগো ২স্ত্রমণ্ডল°। অ-সংহতশ্চ নিণী তা নীতিসারা-দি সম্মতাঃ ।। অন্যেপি প্রকৃতি वृाशः क्विश ठका मयः क्वि । তির্যাগ্রুতিস্ত দঙঃ স্যান্ডোগো

২ম্বাবৃত্তি রেব চ ii মণ্ডল° সর্ব- 🛭 তোবৃতিঃ পৃথগৃত্তি রসংহতঃ'৷ দৈন্যানা নীতিসারাদে ব্যহ-ভেদাঃ সমীরিতাঃ।। ক্রেঞ্চ-'ক্রাদি ভেদানা' লক্ষণ' ভারতা-দিষু। ইতি শব্দরত্নাবলী।। ব্যুহন ক্লী সৈন্যসংস্থান । বি পূৰ্ব উহধাতে৷ রনট্ প্রত্যধেন নিষ্পন্ন ৷৷

ব্যুহপার্কিঃ পু॰ ব্যুহপশ্চাদ্ভাগঃ । তৎপর্য্যায়ঃ । প্রত্যাসারঃ ২ । ইত্যমরঃ ॥ প্রত্যাসরঃ ৩। ইতি তড়ীক। ॥ ব্যুহস্য পশ্চাদ্বাহা-ন্তর । ইতি কেচিৎ। ইতি ভ-রতঃ ।। ব্যহ্মধ্যে । ইতি শব্দ-त्रञ्जावनी ॥

ব্যে এ ঐ বৃতী। ইতি কবিৰুদ্ধ ক্রমঃ ।। ঞ ব্যয়তি ব্যয়তে। र्थ वीया । इंडि म्र्गामामः॥ ব্যাকারঃ পু॰ লৌহকারঃ । ইত্যমরঃ ॥

ব্যোম ক্লী আকাশঃ।ইত্যমরঃ ।। জল॰।। ভাস্করস্যার্চ্চনাশ্রযঃ 1 ইতি মেদিনী।। অভুকণ ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥

ব্যোমকেশঃ পু॰ শিবঃ ৷ ইত্যমরঃ ব্যোসকেশী পু॰ সহাদেবঃ।। ব্যোষণ ক্লী ত্রিকটু। ইত্যমরঃ॥

গঙ্গাধারণকালে ব্যোমব্যাপিনঃ কেশা অস্য সন্তীতি ব্যেমকেশ শকাদিন্ প্রত্যেন নিষ্পারঃ॥ ব্যোমচারিপুর ক্লী শৌভপুর । ইতি ভূরিপ্রযোগঃ॥

ব্যোমচারী পু॰ দেবতা।। পক্ষী । ইতি মেদিনী ।। চিরজীবী॥ দ্বিজাতঃ। ইতি বিশ্বঃ।।

ব্যোমধূমঃ পু॰ মেযঃ। ইতি ত্রিকাপ্তশেষঃ।।

ব্যোমনাদিকা স্ত্রী ভারতীপক্ষী । ইতি ত্রিকাণ্ডশেযঃ।।

ব্যোমনঞ্জর ক্লী পতাকা। ইতি ত্রিকাওশেষঃ।।

ব্যোমমণ্ডল ক্লী পতাকা।ইতি শব্দরত্বাবলী।। আকাশঞ্চ।।

ব্যোমমুক্ষারঃ পুং নির্ঘাতঃ।ইতি হারাবলী ॥

ব্যোম্যান ক্লী বিমান । ইত্য-यतः ॥

ব্যোনস্থলী স্ত্রী ভূমিঃ। ইতি जृतिপ্रযোগঃ॥ **নভঙ্**লक्ष ॥

ব্যোমাভঃ পু॰ বুদ্ধঃ। ইতি ত্রি-কাওশেষঃ 11

त्यारमामक॰ क्ली मित्यामक॰ 1 ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥

বজ গতী। ইতি কবিকল্পদ্রমঃ

11 বজতি। ইতি দুর্গাদ্যাং ।।

বজজ ক্সংস্কৃতী ।। গতৌ । ইতি
কবিকল্পদ্রমঃ ।। ক ব্রাজ্যতি ।

বিরেফৌ তৌ । তৌ এতৌ বিরেফৌ রেফরহিতৌ চ স্যাতাং ।

ইতি দুর্গাদাসঃ ।।

ব্রজঃ পু॰ সমূহঃ। ইত্যমরঃ॥ গোষ্ঠ ।। পস্থাঃ। ইতি মেদিনী ।। অগ্রবণ মথুরয়ে। শ্চতুষ্পার্শ্ব-বর্ত্তিদেশঃ। অস্য বিবরণ যথা । মাৎস্যে। ব্ৰজমণ্ডল ভূগোলং শেষ নাগফণ বরণ। সমুদাখ্য মহাশ্রেণ্ঠি সর্বেষাণ মধ্য সংস্থি-ত ।। তদ্যোপরি স্থিত লোক गर्वञ्चानः भश्वाकनः । क्रकनी-লা বিহারার্থ মৃক্তস্থান বিরা-জিত° ৷৷ চতু রফক ক্রোশেন প-রিপূর্ণ বিরাজিত । অস্য প্রদ-किनी ऋर्वन् धन धाना मूर्यः ल-ভেৎ ॥ দানার্চ্চ। বাসতে। লো-का विकृत्नाक मवाश्र्या । আবাসাগ্রিষতে চেহ পুনর্জন্ম ন বিদ্যতে ॥ পুণ্য॰ লক্ষগুণ লদ্ধ্য ক্লতে ংস্মিন্ ব্ৰজনণ্ডলে। ক্লফে-ন নিৰ্দ্মিতা স্তীৰ্থাঃ সাৰ্দ্ধছয় স-र्मुकाः ॥ #॥ ट्वाटनो वटना-

পবন প্রতিবনাধিবনান্যফচম্বা-রি॰শৎ তানি চতুরফ ক্রোশ প্র-রিমাণ স্থিতানি চতুর্তাগশো ই-ভ্যন্তর স্থিতানি ক্রমশ আহ। পাদ্মে। বনানি দ্বাদশান্যাহু র্যমু-नाखित पिक्ति। **महावनः महा**-শ্রেষ্ঠ > দ্বাধ্য কাম্যবন শুভ ২ · ॥ কোকিলাখ্য॰ তৃতীযঞ্চ ৩ তূর্য্য॰ তালবন তথা ৪। পঞ্ম স্মৃদ্ধ-খ্যঞ্চ ৫ ষষ্ঠ ভাঞ্জীর সংজ্ঞক ও ১৷৷ নামা ছত্রবনং শ্রেষ্ঠং সপ্তমং পরি-কীর্ত্তিত १। অস্টমণখদিরণ প্রো-ক্ত ৮ নবম লোহজ বন ১।। নায়া ভদ্ৰবন শ্ৰেষ্ঠ দশম বহু-পুণ্যদ ১০। একাদশ সমাখ্যাত বহুলাবনসংজ্ঞকং ১১৷৷ নাম্না বিল্ব-বন॰ শ্রেষ্ঠ॰ দ্বাদশণ কামনাপ্রদণ ১২। ইতি দ্বাদশসংজ্ঞানি বনানি শুভদানি চ।। ইতি দ্বাদশ বনানি ।। 🕸 ।। অথ দাদশোপবনান্যাহ বারাহে। আদৌ ত্রন্ধবন নাম ১ षिতীয় স্বপ্রাবন ২। তৃতীয় বিহ্বলং নাম ৩ কদস্বাখ্যং চতুর্থ-ক ৪ ৷৷ নামা স্বর্বন শ্রেষ্ঠ পঞ্চ-মণ্পরিকীর্ত্তিত ৫। সুরভীবন না-गान॰ यर्छ माङ्गानवर्कन॰ ७॥ ८७-ষ্ঠ প্রেমবন নাম সপ্তম শুভদ

নৃগাং १। মযুরবন নামান মফ-মণপরিকীর্তিত ৮ 11 মালেঞ্চি তবনং শ্রেষ্ঠ নবম মানবর্দ্ধ-न॰ २। लियमायिदन॰ ८अर्छ॰ দশ্ৰ পাপনাশ্ৰ ১ ৷৷ একা-দশ: সমাখ্যাত নারদাখ্য শু-ভোদিত >> ৷ দ্বাদশ পর্মা-नन्म दन॰ नर्बार्थमायक॰ ১২ ॥ ইতি দাদশম জ্ঞানি বনান্যপ-বনানি চ। ইতি দ্বাদশোপবনা-নি ৷৷ 🕸 ৷৷ অথ দ্বাদশ প্রতিবন্দ-নি । ভবিষ্যে । আদৌ রঙ্কবন॰ শ্রেষ্ঠ॰ পুরসংজ্ঞাবিরাজিত৽ ১। বার্তাবন দ্বিতীয়ঞ্চ ২ করহাখ্য তৃতীযক ৩ ৷৷ চতুর্থ কাম্যনা-ষান॰ বন॰ কামপ্রদ॰ নৃণা॰ 8। বনমঞ্জন নামান পঞ্চম ক্রীশু-ভপ্রদ॰ ৫॥ নায়া কর্ণবন॰ শ্রেষ্ঠ॰ यर्छ॰ अक्षवद्रश्रमः ७ । क्रकाकि পলক নাম বন সপ্ত সমীব্লিত ৭ ৷৷ নন্দ প্রেক্ষণ ফ্লফাখ্য বন ननन मर्छम । यन मिल्लवन॰ নাম নৰম ক্ষপৃজিত ৯ ॥ শিক্ষাবন শুভ প্রোক্ত দশম नमञ्चिष्ठ॰ ১० । हन्त्रावनीयन॰ শ্রেষ্ঠ যেকাদশ সুদাহ্বত ১১ ॥ নায়। লোহবন শ্ৰেষ্ঠ দাদশ

শুভদ॰ নৃণা॰ ১২। ইতি প্রতি-वनानगृष्ट मीटर्श वाटम क मिन्दन ৷৷ ইতি দাদশস°জ্ঞান্তে দেবাবাস ফলপ্রদাঃ। ইতি দ্বাদশ প্রতি-वनानि ॥ 🗱 ॥ जय घामणाधिव-नानि। विक्यूत्र्वात्। मथुता अथ-ম॰ নাম. ১ রাধাঙ্গগু দ্বিতীষক ২। নন্দগ্রামণ তৃতীয়ঞ্চ ৩ গঢ-স্থান চতুর্থক ৪ ৷৷ পঞ্চম ললি-তাগ্রামণ ৫ বৃষভানু পুরঞ্ ষট্ ৬। সপ্তম গোসল স্থান ৭ মই মণ বলদেবকণ ৮ ৷৷ গোবৰ্দ্ধনবনণ শ্রেষ্ঠ॰ নবম॰ কামনাপ্রদ॰ ৯। বন জাববট নাম দশম পরি-' कीर्छिङ ३०॥ मूथा वृन्मादन শ্ৰেষ্ঠ মেকাদশ• প্ৰকীৰ্ত্তিত ১১। সক্ষেত্ৰটক স্থান .বন দাদশ কীৰ্ত্তিত ১২ ॥ ইতি দাদশদ-ज्डानि वनान्य धिवनानि ह। वनी-নামধিপাঃ প্রোক্তা ব্রজমণ্ডল ম-**धार्गाः ॥ এषा टेनव वित्नादक**न বনযাত্র। চ নিষ্ফলা। এষাঞ্চ দর্শ-নেনৈব বনযাত্রা শুভপ্রদা ৷৷ আ-দৌ লীলা॰ যদা পশ্যেদ্বনবাত্রা॰ তত শ্চরেৎ। সর্বান্ কামানবা-शािं विक्तृताक मवाश्रवा^९।। সৰ্বত্ৰ বিজ্মীভূযাদ্বন্যাত্ৰা প্ৰভা-

ৰতঃ। ইতি ব্ৰজভক্তিবিলাসে ১ অধ্যাষঃ।।

বজ° ক্লী বজন°। গমন°। বজ গতৌ ইত্যস্মাৎ ঘ প্রত্যযেন নি-ষ্পান্ধ°। ইতি সিদ্ধান্তকৌমুদী।। বজকঃ পু° তপখী। ইতি শব্দ-রত্নাবলী।।

ব্রজকিশোরঃ পু॰ প্রীক্ষাঃ। স তু দাদশাধিবনান্তৰ্গত ললিতা-গ্রামাধিবনাধিপো দেবঃ ৷৷ অথ ললিতাগ্রামাধিপ ব্রজকিশোর मञ्जः। यथा देखधरताश्रनियमि। ওঁ শ্রৈঁ ললিতাগ্রামাধিবনা-ধিপত্তে বুজকিশোরায় নদঃ । ইত্যেকবি॰শাক্ষরো ব্রজকি-শোর মন্ত্রঃ ৷ অনেন মন্ত্রেণ প্রা-ণাযামঃ। অস্য মন্ত্রস্য বিভা-ওকঋষি ব্ৰজকিশোরো দেবতা গাৰত্ৰীচ্ছনঃ মম সকল পাপ-क्य बाता युगल क्रक नर्मनाटर्थ বিনিযোগঃ। শিরসি বিভাওক ঋষযে নমঃ মুখে ব্রজকিশোরা-य नमः ऋषि शायलीष्ट्रक्रम् न-মঃ ।। অথ ধ্যান । ললিতা সংযুত ক্ৰফ সৰৈস্ত স্থিভি र्युजः। धारियखितिनि कृशरः म-হারাস ক্রতোৎসবং॥ ইতি ধ্যা- 🎚 দ্বা যথা শক্তি জপণ রুদ্বা গুছা-তীত্যাদিনা জপণ সমর্গথেৎ। ইতি ললিতাগ্রামাধিপ ব্রজকি-শোরমন্তঃ। ইতি ব্রজভক্তিবি-লাসে ১ অধ্যায়ঃ।

ব্রজনাথঃ পুণ শ্রীক্ষকঃ। ইতি পুরাণণ।

ব্ৰজভূঃ পু॰ কেলিকদয়ঃ। ইতি শব্দচন্দ্ৰিকা।। বুজভূমৌ স্ত্ৰী।। ব্ৰজজাতে ত্ৰি।।

ব্ৰজনগুল ক্লী ব্ৰজভূমিঃ। যথা নাৎস্যে। ব্ৰজনগুল ভূগোল শেষনাগফণ বরং। সমুদাখ্য নহাশ্ৰেষ্ঠ সৰ্বেষা মধ্যসংস্থি-তং ।। ইতি ব্ৰজভক্তিবিলাসে ১ অধ্যায়ঃ।।

ব্রজমোহনঃ পু॰ শ্রীক্লফঃ। ইতি পুরাণণ।।

বজবরঃ পু॰ শ্রীক্ষণঃ। সতুদ্বাদশাধিবনান্তর্গত জাববটাধিবনাধিপো দেবঃ। অথ জাববটাধিবনাধিপ বজবরমন্ত্রঃ। শৌনকীযে। বটাদ্বহিঃ সমন্তাত্তু সঘনণ বন মান্তিতং। তমেবাধিবনংখ্যাতং বটসেবা পরাষণং।।
তন্মিমধ্যে বটং শ্রেষ্ঠং ক্লফ্রন্ত্রীডা বরপ্রদং। বটাদ্বহির্বনং জ্ঞা-

ত॰ মধ্যে চৈব বট॰ স্মৃত• ৷৷ বট•় বৃক্ষণ স্থিত তত্ত্ৰ বটস জ্ঞ বিধী-যতে। বটজাবানুসারেণ বটলি-क्रानि पर्णराष्ट्र।। विष्ठानिकः ७ँ ठेः कँ। विशेषिवनाथिश-তবে वुं জবরায নমঃ। ইত্যে-কোন বিংশাক্ষরো জাববটাধি-বনাধিপ বুজবরমন্ত্রঃ ৷ অনেন মন্ত্রেণ প্রাণাধামঃ। অস্য মন্ত্র-मा वालीक श्रवि क्राववरोधिव-নাধিপো ব্রজবরো দেবতা প-ক্তিচ্ছনঃ মম সকল সৌভাগ্য मम्भर कन श्रांश्वार्थ जर्भ विनिद्यांगः । न्यां मः शृबंव ।। অথ গ্রানে। নানা শৃঙ্কার ভূষা-ঢ্যু॰ রাধারুক্ত মনোহর°। ধ্যা-বেন্দুগল মূর্তিঞ্চ বনষাত্র। বর-প্রদেণ।। ইতি ধ্যাত্বা যথাশক্তি জপ° রূস্বা গুহাতীত্যাদিনা জ-প॰ সমর্পয়ে২। ইতি জাববটা-ধিবনাধিপ বজবরমন্ত্রঃ । ইতি ব্ৰজভক্তিবিলাসে ১ অধ্যায়ঃ।। শ্রীকৃষ্ণঃ। ইতি 20 ব্রজবল্লভঃ ইতি পুরাণ ॥

ত্রজাঙ্গন। স্ত্রী গোপী। যথা। বিলাসবংশস্থ বিলং সুখানিলৈঃ প্রপূর্ব্য যঃ পঞ্চমরাগমুদ্গিরন্। বুজাঙ্গনান মপিগানশালিনা জহার মান° স হরিঃ পুনাতুবঃ । ইতি ছন্দোমঞ্জরী ॥ বজ্যা স্ত্রী পর্যাটন°॥ জিগীষোঃ

ব্রজ্য। স্ত্রী পর্যাটনং ।। জিগীষোঃ প্রযাণং ।। গমনং । ইত্যমরঃ ॥ বর্গঃ । ইতি মেদিনী ॥ রঙ্গঃ । ইতি ধরণিঃ ।।

ব্রণ শব্দে। ইতি কবিকল্পজ্মঃ।।
ব্রণতি। ইতি দুর্গাদাসঃ।।
ব্রণ ত্ক অঙ্গচূর্ণে। ইতি কবিকল্পজ্মঃ।। অঙ্গ চূর্ণঃ অঙ্গভেদঃ
। ব্রণ্যতি গাত্রণ বাণেন ভটঃ।
ইতি দুর্গাদাসঃ।।

ব্রণঃ পু॰ ক্লী ক্ষতে । তৎপর্যাযঃ। ঈর্মাণ ২ অরুঃ ৩। ইত্যমরঃ
। ঈর্মাণ ৪। ইতি তটোকা।। অথ
- ব্রণাধিকারঃ। ব্রণো দিধা পরিজ্বেযো দোষজাগন্তভেদতঃ।
দোষজো দুষ্টদোধেঃ স্যাদন্যঃ
শন্তাদিসন্তবঃ।। ৠ।। তত্র বাতিক্সা লক্ষণ মাহ। ভরাং কঠিন সংস্পর্শো মন্দ্রাবো মহারুজঃ। তুদ্যতে স্ফুটিত শ্যাবো
ব্রণো মারুতসন্তবঃ।। স্তর্মঃ অচলঃ।। ৠ।। পৈত্রিক মাহ।
তৃষ্ণা মোহ জ্বর ক্লেদ দাহ দুঃথাবদারণৈঃ। ব্রণ পিত্রহতং

বিদ্যাৎ সূত্রে গ স্ধৈশ্চ পূতিকৈঃ ।।ক্লেদ আর্জতা। দুঃখঁণ ব্যথাৰূপেণ । অবদারণ ত্রণে বিদারণবৎপী-ण।। कः।। देशभिक मार्। तरुनि-চ্ছো গুৰুঃ শ্লিগ্ধ স্তিমিতো মন্দবে-मनः। পাञ्चर्ता श्वमः द्विम निष्ठ-রপাকী কফত্রণঃ ৷৷ বহুপিচ্ছঃ বহু-পিচ্ছিলঃ। অল্পদংক্রদ ঈষদার্ডঃ ॥ 🗱 ॥ রৌধির ছন্দুজ সালিপা-তিকমাহ। রক্তো রক্তসুতী রক্তা-দ্দি ত্রিজঃ স্যাতদশ্বয়ং। তদশ্বয়ঃ षिजिए। यिनिष्रमयनः ॥ 🗱 ॥ শ্ভদ্দত্রণলিঙ্গ মাহ। জিহ্বাতলা-ভো ২তিনৃদুঃ স্বস্থঃ স্নিস্কো ২লবে-मनः। मूवावरङ्गा नित्रम् वः श्वनः ব্ৰণ ইতি শৃতঃ ॥ জিহ্বাতলাভঃ তলশব্দোত্র স্বব্ধার্যঃ। তেন জিহ্বাবডক্তঃ। সুব্যবস্থঃ উচ্ছন-**छ। त्र**हिण्डः ॥ 🛊 ॥ मूर्फेडान लिञ्च-यार। পৃতি পৃষাদি দুঊ। সৃক্ সু।-ব্যুৎসঙ্গী চিরস্থিতিঃ। দুষ্টত্রণো-তিগন্ধাদিঃ শুদ্ধলিক বিপর্য্যয়ঃ ॥ উৎসঙ্গী কোটরবান্। অতিগ-স্বাদিঃ আদিশব্দেন স্থাব বেদনা विवर्गजामयः म॰गृष्ट्छ ॥ 🟶 ॥ সংরোহ ত্রণস্য লিহ্নমাহ। কপো-তবৰ্ণ প্ৰতিমা যস্যাণ তালোদৰ-

র্জিতাঃ। স্থিরাশ্চ পিডকাবস্তো রোহস্তীতি তনাদিশেৎ ॥ কপো-' তবর্ণ প্রতিমাঃ পাণ্ডুধূসরাঃ। স্থি-রাঃ বিদীর্ণতারহিতাঃ ৷ পিডকা-বক্তঃ সংরোহণার্থা যে মাংসাস্কু-রা স্থদ্দুক্তাঃ ॥ ৠ । সৰুত লিঞ্চ-মাহ। ৰাচবৰ্মান মগ্ৰন্থি মশূল মরুজ বণ । স্বক্ স্বর্ণ সম্ত-লং সম্যগুঢ়ং বিনির্দিশেৎ ৷৷ ক্র-ঢবৰ্মান পশ্ৰত সূাৰমাৰ্গ। সম-তল অনিমণা 🗱 ॥ সুখসাধ্যত্বা-দিক মাহ। স্বঙ্ডমা॰সজঃ সুখে দে-শে ভরুণস্যানুপদ্রবঃ। ধীমতো-**২তিনবঃ কালে সুখে সাধ্যঃ সুখ-**ব্রণঃ ॥ সুখে দেশে মর্মরহিতে। অনুপদ্ৰবঃ জ্বর তৃফা শ্বাস কাসা-রোচকাদি রহিভঃ। ধীমতঃ পথ্য-সেবিনঃ। সুখে কালে হেমস্তে শিশিরে চ। গুণৈ রন্যতরৈ রেভি হী নঃ ক্লছে। ত্ৰণঃ স্মৃতঃ। সর্বৈ विशेदना विद्ध्य सुमारधा नि-রূপক্রমঃ।।এভি স্তুত্মাণসজন্বাদি-ভিঃ। নিৰূপম ক্ৰমঃ অনুপক্ৰীতঃ চিরমুপেক্ষিত ইতি যাবৎ । বসা-মেদোপ মজ্জান মস্তলুঙ্গঞ্ যঃ সুবেৎ। আগম্ভজো ত্রণঃ সিদ্ধেম সিদ্ধেদোষসম্ভবঃ ৷৷ মম্ভলুঙ্গণ

মম্ভকাভ্যন্তর সেহঃ। স্বচ্চিনাণ ভিষজুফীনাং শোষিণাং মধুমে-হিনাণ। বণাই ক্লেছ্ৰ সিধ্যন্তি .বেষা॰ চাপি ব্রণে ব্রণঃ।। 🟶 ।। অ-রিষ্ট মাহ। দহন্তে চান্ত রত্যর্থ॰ বঁহিঃ শীতাশ্চ যে ব্রণাঃ ১ দছ-স্তে বহি রত্যর্থ• ভবস্ত্যতশ্চ শী-তলাঃ।৷ প্রাণমা•স ক্ষয় শ্বাস কা-সারোচক পীডিতাঃ। প্রবৃদ্ধ পূ-य ऋषितः जना य ठानि मर्मम् ॥ ক্রিয়াভিঃ সম্যগারকা ন সিধ্যস্তি চ যে ব্ৰণাঃ। চিকিৎসেম্বৈৰ তান্ বৈদ্যঃ সংরক্ষাত্মনো যশঃ ॥ यम् । श्वांका मूगनाः शम ठक्त **ठम्भक**ः। मगन्ना मिवागन्नाम्ह মুমূষু পা॰ এপাঃ স্মৃতাঃ ।। মর্মসু शायू नाजि क्रमगिषयू। সুমनाः জাতিঃ। দিব্যগন্ধাঃ পারিজাতা-**मि**गक्ताः ॥ 🗱 ॥ जयाञ्चनमा नि-मान गार्। नानाधातायूरेयः भ-দ্রৈ নানা স্থান নিপাতিতৈঃ। ভ-বস্তি নানাক্তযো ত্রণাণ স্তাণ স্তানিবোধ মে॥ নানা ধারা মু-খানি যেষা তৈঃ শক্তৈঃ অৰ্দ্ধচন্দ্ৰ খন্ন ভল্ল স্তু শূল শরাদিভিঃ। নানাক্তৰঃ ষডাক্তৰঃ৷ তা আ-রুতীরাহ।ছিন্ন ভিন্ন তথা বিদ্ধ । ক্ষত॰ পিচ্চিত মেব চ। ঘৃষ্ট মাহঃ স্ত্রথা ষষ্ঠ তৈষা বক্ষ্যামি লকণ ॥ 🗱 ॥ তত্র ছিমন্য লক্ষণ মাহ। তিৰ্য্যক্ ছিন্ন ঋজু ৰ্বাপি বে৷ বুণ স্ত্রায়তো ভবেৎ। গাব্রস্য পাত-ন॰ তদ্ধি ছিম মিত্যভিধীযতে॥ যো ব্ৰঃ তিৰ্য্যক্ছিন্নঃ খন্নাদি ক্ত তিৰ্য্যক্ছেদক্ষতঃ । ঋজু वी-পি অথ বা খদ্দাদি ক্লতো রক্তো-बनः। आयठः मीर्यः। आयठ हेि তিৰ্য্যক্ছিন্নস্য ঋজোশ্চ বিশেষ-ণ । গাত্রস্য পাতন গাত্রস্যৈক-দেশস্য ছেদেন পৃথক্ করণ বাং ছিন্ন নিত্যভিধীযতে ॥ 🕸 ॥ ভিন্ন মাহ। শক্তি সভেষু খল্লাগ্ৰ বিষা-গৈ রাশযো হতঃ । যৎ কিঞ্চিৎ **প্রসবেত্তদ্ধি ভিন্ন মিত্যভি**ধীয[়] তে ॥ আশ্যঃ কোষ্ঠঃ ॥ 🗱 ॥ কোষ্ঠভেদস্য লক্ষণ মাহ। স্থানা-ন্য মগ্নিপক্ষানা মূত্রস্য রুধিরস্য **छ । ऋ**ष्णुकः कृःकृत्र= ठ कार्श ইত্যভিধীযতে ॥ তন্মিন্ ভিয়ে রক্তপূর্ণে জ্বো দাহশ্চ জাযতে। মূত্রমার্গ গুদাদৈয়ব রক্তণ ঘুণিচ্চ গচ্ছতি।। মূচ্ছা শ্বাস স্ত্যায়ান মভক্ত ছন্দ এব চ। বিশূত্ৰ বাত সঙ্গশ্চ স্বেদস্যাবোক্ষি রক্ততা ॥

লোহগন্ধিত্ব মাদ্যদ্য গাত্র দৌ-র্গন্ধা মেব চ। হুদি শূল পার্ম ্যোশ্চ বিশেষশ্চাভিধীয়তে ॥ তস্মিন্ কোন্ঠে। ভিন্নে শক্ত্যাদি-ভিঃ। রক্তপূর্ণে কোন্ঠে তত্মাদঙ্গা-দ্বিষাৎ সুতেন রক্তেন পুর্ণে বা জ্রাদযো জাযন্তে।। ৠ।। আমা-শ্বে পক্ষাশ্যে চ রক্তপূর্ণে লক্ষণ ভেদ মাহ। আমাশ্যত্তে রুধিরে রুধির° ছর্দ্দযত্যপি । আখ্বান মতিমাত্রঞ্ব শূলঞ্চ ভূশ দারুণ ।। প্রকাশযগতে রক্তে রুজা গৌরব মেব চ। অধঃকাষে বিশেষেণ শীততা চ ভবেদিহ ৷৷ রুজা শূলণ । (भी त्रवः शका भरय। अधः कार्य नात्ज त्रदशारमद्भ विस्भरयगरगोत-ব মিতান্বয়ঃ। শীততা চ ভবেদি-হ ইহ নাভে রধোদেশে শীততা চ স্যাৎ। সাচ ব্যাধি স্বভাবাৎ ॥ 🕸 ॥ विकासार । मृत्रामानाना-ভিহত পদ গত্বাশ্য বিনা 1 উত্তম্ভিতণনিৰ্গতণ বা তদ্বিদ্ধ মিতি নিৰ্দ্দিশেৎ ৷৷ আশয়ণ বিনা কো-ষ্ঠি বিনা ৷ উত্তম্ভিত অনিৰ্গতশ-ল্যং ৷ নিৰ্গতং বা নিৰ্গতশল্যং বা li 🗱 li সশ্লাস্য ত্রণস্য লক্ষণ মা-হ। শ্যাব॰ সশোথ॰ পিডকাযুত-

ঞ্ মুহু নুহিঃ শোণিত বাহনঞ্চ। মৃদূদাত বুদ্ধ তুল্য মাণস ত্রণ मनना॰ मक्कि ११ मूह मूहः **শোণিতবাহন॰ यहा यहा भनाः** চলতি তদা তদা রুধিরণ বহতি। উলাত॰ উথিতমুখ॰ ৷৷ 🗱 ৷৷ কো-ষ্ঠস্থিতস্য শল্যস্য লক্ষণ মাই। স্বচো**ংতীত্য শিরাদীনি ভি**ত্বাঙ্গ*°* পরিহৃত্য বা।কোণ্ঠে প্রতিষ্ঠিত॰ শল্য॰ সর্য্যাদুক্তানুপদ্রবান্।। प्र-চঃ সপ্তাপি অতিক্রম্য উক্তানুপ-<u>জবান্ ভাটোপানাহৌ বুণমুখে-</u> নাত্র পুরীষ দর্শনঞ্চা৷ ৠ ৷৷ অসা-ধাস্য কোষ্ঠস্য রক্তন্য পুরীযস্য লক্ষণ মাহ। কোষ্ঠান্তর্লোহিত পাণ্ডু শীত পাদ করানন । শী-তোচ্ছাসণ রক্তনেত্র মানদ্ধঞ্চ বি-বৰ্জযেৎ ॥ আনদ্ধ° আনাহবত্ত° ॥ 🗱 ॥ ক্ষত মাহ। নাতিচ্ছিন্ন॰ নাতিভিন্ন মুভযো লক্ষণান্বিত । বিষমণ ব্রণ মঙ্গে যত্তৎ ক্ষতণ পরি-কীর্ত্তিত ।। নাতিচ্ছিন্ন নাতিদীর্য যাত । নাতিভিন্ন নাতিগম্ভীর-যাত । উভযো শ্ছিন্নভিন্নযোঃ। বিষম ব্রণ মঙ্গে যঙ্গ যদুণ মঙ্গ-বৈষম্যকর॰।। ৠ।। গিচ্চিত মাহ । প্রহার পীডনাভ্যান্ত যদঙ্গ পূ-

থুতা॰ গত॰। সাস্থি তৎ পিচ্চিত॰ বিদ্যাজক্ত মজ্জ পরিপ্লুতং ॥ প্র-হারে। মুক্নারাদিনা। পীডন॰ ক-পাটাদিনা। পৃথুতা চিপিটতা 11 # 11 घृष्ठे बार । घर्षनामित्र घा-তাদ্বা ষদঙ্গ বিগতত্বচ । উত্ম সাবান্বিত ততু ঘৃষ্ট মিত্যভি-ধীয়তে ৷৷ ষর্ষণাৎ কর্কশেক্তিকা পাষাণভিন্নাদিভিঃ 11 🏶 11 মাণস শিরা সাযু সন্ধ্যন্থি মর্মসু ক্ষতেষু সামান্য লক্ষণ মাহ। ভুমঃ প্রলা-পঃ পতন• প্রমোহে৷ বিচেফ্টন৽ গ্লানি রথোকতা চ। সুস্তাঙ্গতা মূৰ্চ্ছন মূৰ্দ্ধবাত স্তীব্ৰা ৰুজো বাত-ক্তাশ্চ তা স্তাঃ।। মাণসোদকা-ভ° ৰুধিরঞ্চ গচ্ছেৎ সর্বেন্দ্রিয়া-র্থোপরন স্তবৈব। দশার্দ্ধনংখ্যে-ত্বথ বিক্ষতেষু সামান্যতে। মর্মসু লিঙ্গ মুক্তণ।। পতনণ ভূমৌ। বি-চেফ্টন॰ বিরুদ্ধণ চেফ্টন॰ হস্তপা-मामि প্রক্ষেপণাদিক । মূর্চ্ছন ইন্দ্রিয়মোহঃ। প্রমোহে। মনো-মাত্রমোহঃ। তীবা রুজো বা-তক্তাশ্চ তা স্তাঃ দণ্ডাগতানকা-मयः। ऋधित्रक्ष गट्हि प्रार्थे छग श्रमामा बुर्ग्सिकाः मुद्रिष् । मर्दिष्टियार्थाशत्रमः ইट्यियानाः

কার্য্যনাশঃ ।। য়৽ ।। অথ মর্ম্ম শিরা यायु मकायाः विकानाः श्थन লক্ষণ মাহ। সুরেন্দ্রগোপ প্রতি-মণ প্রভূতণ রক্তণ সুবেত্তৎক্ষযজ-শ্চ বাযুঃ। করোতি রোগান্ বি-বিধানু যথোক্তান্ শিরাসু বিদ্ধা-স্বথ ব। ক্ষতাসু ।। সুরেন্দ্র গাপো বাৰ্ষিকোখিত কীটবিশেষঃ ৷ বী-রবহুটী ইতি লোকে সিদ্ধং। প্র-ভূত° বহু। রোগান্ শিরোভিতা-পান্ধতাক্ষযকাদীন্। বিদ্ধাসু শ-রাদিনা। ফতাসু খল্লাদিনা॥ কৌব্যুণ শরীরাব্যবাব্সাদঃ ক্রি-**যাশ্চ শক্তি স্ত**মূলা রুজাশ্চ ৷ চি-রাদুণো রোহতি ষ্দ্য চাপি ত স্বায়বিদ্ধণ পুৰুষণ বদন্তি ॥ কৌ-ব্জ্যণ বিদ্ধস্যাঙ্গস্য বক্রতা।ভুমুলা মহতী।।শোথ।তিবৃদ্ধি স্তমুল।রু-জশ্চ বলক্ষয়ঃ সৰ্বত এব শোখঃ ৷ কতেষু সন্ধিষ্চলাবলেষু সাাৎ সন্ধিকৰ্ম্মোপর্যশ্চ লিঙ্গ ৷৷ সর্ব-ত এব শোথঃ সৰ্বসন্ধীন্ ব্যাপ্য শোথঃ। উপরমঃ নাশঃ।। যোরা ৰুজে। যস্য নিশাদিনেষু সৰ্বাস্ব-বস্থাসু ন চৈতি শান্তি । ভিষ্ধি-পশ্চিদ্বিদিতার্থসূত্র স্ত মস্থিবিদ্ধ পুরুষ প্রবক্তি॥ সর্বাস্ববস্থাসু শ-

यनामना দিকাসু। বিদিতার্থসূত্রঃ জ্ঞানশল্যতন্ত্ৰণাা *া৷ অথ মৃশ্ম . শিরাদি বিদ্ধ লিঙ্গানি পৃথগভি-ধায মর্মা শিরাদীনাং বিদ্ধানাং পৃথক্লিসান্যতিদেশেনাহ। যথা স্বমেতানি বিভাবযেচ্চ লিঙ্গানি মৰ্শ্মস্বপি তাডিতেষু। যথা স্ব॰ শি-রাদীনাণ বিদ্ধানাণ এতানি লিঙ্গা-নি পৃথগুক্তানি লিঙ্গানি চকারাৎ ভূম প্রলাপাদীনি চ মর্মস্বপি শি-রাদিষু তাডিতেষু বিদ্ধেষু। বিভা-वरय कानीय । 🗱 ॥ मई उ-পান। মুগজবানাহ। বিদর্পঃ পক্ষ-যাতশ্চ শিরাস্তস্তো ২পতানকঃ। মোহোমাদৌ ত্রণে পীড়া ত্বর স্তৃ-ফা হনু প্রহঃ ।। কাস শ্ছর্দি রতী-সারো হিক্কা স্বাসঃ সবেপথুঃ। ষোডশোপদ্ৰবাঃ প্ৰোক্তা ব্ৰণা-ना॰ बनिछिटेकः ॥ 🗱 ॥ अथाधि-দক্ষস্য নিদান মাহ। তত্ৰাগ্নি ৰ্ছি-বিধে৷ জ্ঞেয়ঃ স্নেহ ৰূকঃ সমাশ্ৰি-তঃ। মেহ স্তত্ৰ তু তৈলাদি ৰাক্ষণ লৌহাদি কথ্যতে ॥ 🕸 ॥ অগ্নি-দগ্ধ চতুর্বিধ মাহ। অগ্নিদগ্ধ চ-जूकी मारि क्षूकि पूर्वक त्यव ह। সম্যাপ্রশ্বর তথাতীব্রদগ্ধ পরিকী-র্ত্তিত । া 🗱 🛭 তেষা 🖁 লক্ষ্ণ মাহ। 📗

য্দিবৰ্ণ মতিপ্লুষ্টণ তৎপ্লুষ্ট মজি-'ধীষতে ৷ তীব্ৰদাহে। ব্যথাবস্তো যত্র স্ফোটা ভবস্তি হি ॥ চিরেণ তেপ্ৰশাম্যন্তি তদুৰ্দগ্ধ মুদাহৃত ৷ তামুবর্ণ মগম্ভীর দাহ-পীড়া সম-রি তণ ৷৷ সুসংস্থিতঞ্চ কথিত সম্যা-দদগ্ধণ ভিষথরৈঃ। স্বর্জ্মাণসণ যত্র দ-গ্ধ॰ স্যাদ্বিশ্লেষো বপুষ স্তথা।। শি-রা সাযুষ্টি সন্ধীনা ত বদন্ত্যতি-দগ্ধক॰। অত্যর্থ॰ বেদনা দাছো জ্বর স্তৃমূচ্ছ যা সহ।। স্যা দ্রুণস্ত চি-রান্দ্রোহে ৰাঢো যাতি বিবর্ণতাণ ।। 🟶 ।। 🕸 ।। অথ ত্রণস্য চিকিৎসা ৷ আদৌ শোথহরো লেপ স্ততস্ত পরিষেচন । বিম্লাপন মৃদুজ্মো-ক্ষ স্ততঃ স্যাদুপনাহন ।। পা-চন॰ ভেদন৽ পশ্চাৎ পীডন• শোধন তথা। রোপণ বর্ণক-রণ ব্রণসৈতে ক্রমাঃ স্মৃতাঃ ৷৷ ক্রমা শ্চিকিৎসাঃ । সুশ্রুতেষু ব্ৰণস্য ষ্টিৰূপ ক্ৰমা লিখিতাঃ সন্তি তে সর্বে ২ত্র বিস্তরভযাম লিখিতাঃ ॥ 🟶 ॥ তত্রাদৌ শোথ হর লেপমাহ। যথা প্রজ্বলিতে বেশ্মন্যম্ভসা পরিষেচন । ক্ষিপ্রণ প্রশম্বত্যগ্নি মেব মালেপন রু-জ ।। বীজপুর জটা হিংস্রা দেব-

দারু মহৌষধ্ । রামাগিমভো লেপোষণ বাত শোথ বিনাশনঃ ।।**क्षा प्रधुक• ठन्मन• मृर्व। नल पृत**-ন্ত পদাক। উশীরণ বালকণ পদা লেপোষণ পিত্ত শোথহা ৷৷ ন্য-গ্রোধোদুষরাশ্বর প্রক্ষ কেতস ব-क्रटेनः। ममर्शि टेक्कः প্রদেহः म्যा-চ্ছোথে পিত্ত সমুদ্ভবে।।#॥ আ-গম্ভজে রক্তজে চ লেপ এযোভি-পূজিতः। অজগন্ধাজশৃন্ধী চ মঞ্জিষ্ঠা সরল স্তথা।। একৈকিকা-শ্বগন্ধা চ লেপোষণ শ্লেম্ম শোথ-হা। অজশৃদ্ধী মেঢাশৃদ্ধী। একৈ-কিকা শ্যাম নিসোতঃ। রুক্ষাপুরা-ণপিণ্যাকণ শিশু ত্বক্ শিকতা শি-वा। मृजिभिकेः मूरथारकाय॰ अटन-পঃ স্লেম শোথহা।।ৠ।। ন রাত্রে লেপন॰ দদ্যাদ্দত্ত॰ চপতিত॰ তথা ৷ ন চপর্যুষিত শুষ্যমাণ তত্ত্বৈব ধার্যেৎ ৷৷ দত্ত দত্ত মেব পুন র্ন দদ্যাৎ। পতিত॰ দীষমান॰ यদ-**হ্পাৎ পতিত । পর্যাষিত তেপেন**-जवाककीक्रञ° यद পর্যাধিত° 11 তমসা পিহিতো সুমা রোমকূপ মুখে স্থিতঃ। বিনা লেপেন নির্যা-তি রাত্রো নালেপযেদতঃ।। রা-ত্রাবপি প্রলেপস্ত বিধাতব্যে। বি-

চক্ষণৈঃ। অপাকি শোথে গম্ভীরে রক্তপিত সমুদ্ভবে ॥ 🛊 ॥ অথ পরিষেচন মাহ ৷ বথাস্বৃভিঃ ষিচ্য- . মানঃ শান্তি মগ্নি হি গচ্ছতি। দোষাগ্নিরেব॰ সহসা পরিষেকেণ শাম্যতি ।। তদ্যথা । বাতমৌষধ-निःकारेथ रेखरेन माण्मतरेम पृ তৈঃ। উফেঃ.সংসেচযেৎ শোগং বাতিক॰ কাঞ্জিকেন তু ॥ পিত্ত রক্তাভিঘাতো**খ॰ শোখ॰ সি**ঞ্জে শীতলৈঃ। ফীরাজ্য নধু খণ্ডেক্ট্ রসৈঃ পিতৃহরৈঃ শুউতঃ ৷৷ কফ-**भिष्य निक्रार्**य ज़नीरेडः गति-ষেচযেৎ। তৈল কারাসু সূত্রৈশ্চ শোথ প্লেম সমুদ্ভব াা া অথ **বিষ্লাপন মাহ। রুজ্**তঃ কঠিনন্যা-म্য কার্য্য বিম্লাপন শনেঃ। অথ শোথস্য বিফ্লাপনস্য বিধি মাহ। সুশ্রুতঃ। অভ্যক্তা ষেদ-যিন্বাতু বেণুনাড্যা শনৈঃ শনৈঃ । বিমর্দ্ধযেন্ডিষত্মন্দণ তলেন।ঙ্গুৡ-কেন বা ৷৷ বেণুনাড্যা স্বেদ্যিত্বা উक्टबन॰ कृषा ॥ # ॥ त्रक्टमा-ক্ষণমাহ ৷বেদনোপশনাৰ্থায়তথা পাকসমায চ। অচিরোৎণতিতে শোথে শোণিত সাবণঞ্রে ৷৷ চরেৎ স্বর্যাৎ। একতস্তু ক্রিয়াঃ

দৰ্ব। রক্তমোক্ষণ মেরুতঃ। রক্ত॰ হি বেদনামূল তচেমাস্তি ন চা-ं शि क़क् ॥ विवर्ध किठित ना। रव ব্রণে চাত্যন্তবেদনে। স্বিশেষে বিশেষেণ জলৌকে।ভিঃ পদৈর-পি ৷৷ শোণিত শ্রাবণঞ্চরেদিত্যনে-नो त्रयः ॥ ॥ जाट्यां शनाहरत्रम মাহ।তদ্য বিধি তেৰিজ সাধন প্ৰ-করণে কথিতএবাস্তি।রুজাবতা॰ দারুণানা॰ কঠিনানা॰ তথৈব চ। শোখানা প্রেদন কার্য্য যে চা-लाव॰ विচারণা< ।। **শো**থানা॰ मामानानां वर्गाः वर्गायाः তেয়া মপি স্বেদন কাৰ্য্য ৷ শো-থয়ে রুপনাহন্ত দদ্যাদাম বিদ-প্ধযোঃ। প্রশাম্যত্যবিদগ্ধস্ত বি-দশ্ধঃ পাক মেতি চ।। অবিদগ্ধঃ वाम। विषक्षः शास्त्रामुयः। म যথা। দশমূলী বলা রাস্না বাজি-शक्ता अभातिनी। यन कनक वा-তারি সিন্দুবার পুনর্গবাঃ॥ শো-ভাঞ্জনঃ কণা চাপি সৈন্ধবং বি-শ্বভেষজ । শণ কার্পাসযো বী-জ মতসী চ স্বলখিকা ॥ তিলা যবাশ্চ সিদ্ধার্থঃ সঠেরো মূলক মিসিঃ ! যথাপ্রাপ্তৈ রমীভিস্ত **ড**ব্যৈ রয়েন স°যুতৈঃ ॥ কন্দীরূ- ∥

टेंडः मृत्यादेकन्छ स्विमस्यिषियिन চ্ছনৈঃ ৷ অনেন প্রশমণ যাতি वां जिल्लारथा न जन्मयः ॥ 🗱 ॥ দশমূল্যাদি ৰূপ মাহ। পুনর্বা দারু শুগী শিগুঃ সিদ্ধার্থ এব চ.। অমুপিন্টঃ সুখোফোষ প্রলেপঃ **मर्वरणाथश्या भू**नर्वािकः ॥ 🕸 ॥ অথ পাচন মাহ। ন প্রশাম্যতি যঃ শোখঃ প্রলেপাদি বিধানতঃ। দ্রব্যাণি পাচনীযানি দদ্যাত্ততো-পনাহনে ॥ 🕸 ॥ পাচনদ্রব্যা-ণ্যাহ। শণ মূলক শিগুণা॰ ফলা-নি তিল সর্যপাঃ। অতসী সক্তবঃ কিণু মুক্ষজব্যঞ্চ পাচন ৷৷ শণ ফলাদীনা মতস্যস্তাঃ সক্তবঃ ফ-र्खवाः । किनुः मूत्रावीषः । यव গোধুম धानगामि প্রকারঃ অন্য-ক্ষোক্তব্যু বণ্স্য পাচন ভ-वि ।। 🕸 ।। ज्यथ ट ज्यन मार । অন্তঃ পূযেষু বজ্ঞেষু তথৈবোৎ-সঙ্গবৎস্বপি। গতিবৎস্বথরোগেষু ভেদন সংপ্রযুজ্যতে ৷৷ উৎসঙ্গ-ৰৎসু কোঠরবৎসু । গতিবৎসু নাডীত্রণেষু। ভেদন শস্ত্র মৌব-ধ্বৰ্ম চাাঞ্চা তত্ৰ শস্ত্ৰেণ ভেদন মাহ। রোগে ব্যধনসাধ্যে তু ব-থাদেশ॰ প্রমাণতঃ।শস্ত্রণ বিধায

দোষস্তু স্থাব্যেৎ কথিত বংশা ॥ 🐲 ॥ किष्ठुख नित्कणाशवान মাহ।বাল বৃদ্ধাসহ ক্ষীণা ভীন্ধ-'পা' যোষিতা মপি। ব্রণেষু মর্মা-🟶 ।। তত্র ভেদ মাহ। চিরবিত্তো ২মিকো দন্তী চিত্রকো হয়মারকঃ । কপোত কঙ্ক গৃধাণা॰ মল॰ লে-পেন দারণ ॥ চিরবিল্বঃ করঞ্জঃ । অগ্নিকঃ ভল্লাতকঃ ।। ভল্লাওঁকা-সহত্বে তু রক্তচন্দন মিষ্যতে। হ-यमात्रकः कत्रवीतः। मात्रवः एज-দন । ক্ষার দ্রব্য তথা ক্ষারো দা-त्रगः शतिकीर्खिङः । कात्र<u>ख</u>त्रु॰ অপামার্গ, দি। ক্ষারঃ স্বর্জিক। यवकात्रानिः ॥ रुखिनट्छ। জल् পিটে। বিন্দুমাত্রঃ প্রলেপতঃ । অত্যন্ত কঠিনে শোপে কথিতো Сछमनः পরः।। ৠ।। অথ পীডन बाह । পূर গর্ভাননুদ্ধারান্ ত্রা-ন্ মৰ্ম্মগতানপি। যথোক্তঃ পী-ডন ডব্যৈঃ সমস্তাৎ পরিপীড-ষে<।। ₩।। शीउन जन्मानगर। জব্যাণা পিচ্ছিলানাম্ব স্বন্ধানানি প্রপীড়যেৎ। যব গোধূন নাষা-णा हुनीनि ह मगामङः ॥ श्वरा-মাণ মূপেক্ষেত প্রলেপণ পীড়নণ

প্রতি। ন চাপি মুখমালিস্পেত্ত-থা দোষঃ প্রনিচ্যতে ॥ পীডন॰ প্রতি গীডনদ্রব্যলেপ॰ প্রতি i পীডন ডব্যলেপে শুষ্যস্ত মুপ ধারযেদিত্যর্থঃ। তথা ব্রুণস্য মু-থেলেপ বিনা প্রসিচ্যতে সূব-তি।। 🕸।। অথ শোধন মাহ। 🗗 ণন্য স্ববিশুদ্ধন্য ক্বাথঃ শুদ্ধিক-রঃ পরঃ। পটোল নিয়পত্রস্য স-**ৰ্বথৈব প্ৰযু**জ্যতে ॥ বাভিকে দ-শমূলানা কীরিণা পৈত্তিকে ত্রণে। আর্থধাদেঃ কফজে व्-ষাযঃ শোধনে হিতঃ।। অশ্বংখা-**ডুম্বর প্রক্ষ বট বেভসজ**ণ সৃত**া**। ত্রণ শোথোপদ শানা নাশন ক্ষালনাৎ স্মৃত গৈ তৈল সৈম্বৰ যক্ট্যাহ্ব নিম্নপত্র নিশাযুগৈঃ ! ত্রিবৃদ্ধনযুক্তঃ কার্য্যঃ প্রলেগো ত্রণশোধনঃ ।। একৈক সারিব। মূল দৰ্ব বুণ্বিশোধন শা নিম্ব পত্ৰ তিলা দন্তী ত্ৰিবৃৎ সৈদ্ধব याकिकः ॥ मूकेत्व अनमत्न লেপঃ শোধন কেশরী। শোধন-কেশরী শোধনশ্রেষ্ঠঃ ৷ লেপামি-यमटेनः करेक र्खन्याधन (त्रार्शनः । ভক্ষণাচ্ছদি মন্দাগ্নি পিত্ত শ্লেখ ফ্নীন্ হরে**ৎ ৷৷** ত্রণান্ বিশোষ-

যেৎ বৰ্ত্ত্যা সূক্ষা স্যাৎ সন্ধি ম-ৰ্মজান্। অভয ত্ৰিবৃতা দন্তী लाञ्जी यशु टेमऋदिः ॥ निय्रश-ত্ৰ ঘৃত ক্ষৌত্ৰ দাৰী নধুক সংযুতা ৷ বস্তি স্তিলানা কক্ষোবা শো-রোপণ মাহ। অপেত পূতিমাণ-সানা॰ না॰সন্থান মরোহতা॰। কল্কস্ত রোপণে দেয স্তিলজে মধুসংযুতঃ ।। অশ্বগন্ধা রুহা লো-धुः क हेक ज॰ मधुय खिक। । मम-ঙ্গা ধাতকীপূষ্পণ পরমণ ত্রণরোপ-ণ ।। মধুযুক্তা শরপুত্ব। সর্বত্রণ রোপনী কথিতা। সুখবীপত্র ধ-ভূর বলা মোচা হৃঠেরকা॥পৃথ-গেতে প্রলেপেন গম্ভীর ত্রণরো-পণাঃ। সুখবীপত্র কলৌঞ্জীপত্র । অস্যা এতদেব নাম পুস্তকে ধৃ-**७ । ज**रर्ठत्रक बत्रवती ।। कन्र-ভোড়ুমরাশ্বথ জমু কটকল লো-ধুজৈঃ। স্বক্চুবৈ ক্ৰিতা লে-পাৎ প্ররোহস্তি মহাত্রণাঃ॥ প্রি-যঙ্গু ধাতকী পুষ্প যফীমধু জতূনি চ। সৃক্ষচূণী ক্তানি সূয রোপ-भानावधृननाव ॥ यवतृर्वः मम-**श्रुक॰ महेजन॰ मह मर्शिया। म-**দ্যাদালেপন কোষণ দাহ শু-

লোপশান্তযে।।'করঞ্গরিফ নি-र्खं लिला इनाषु क क्रमीन्। লসুনস্যাথ বা লেপো হিঙ্গু নি-যক্তোথ বা ৷৷ নিশ্বপত্ৰ বচা হিঞ্চু সর্পি র্ল্লবণ সর্ষ পৈঃ। ধূপন॰ স্যা-দুণে রক্ষঃ ক্রমি কণ্ডু রুজাপহ• ।৷ যে ক্লেদ পাক সুতি গন্ধ বহন্তা ত্ৰ-ণা শ্চিরোখাঃ সমতাশ্চ শোথাঃ । প্রবান্তি তে গুয়ুলু মিঞিতেন পীতেন শাস্তিঃ ত্রিফলা সৃতেন।। পটোল নিয়াসনসার ধাত্রী পথ্যা-क निय्र मक मूर्य जू। शिरव फত॰ গুয়লুনা বিসর্প বিস্ফোট **मुक्टेंबन मास्त्रि मिक्ट्न् ॥ 🕸 ॥ यथ** সবর্ণতা কর্ণণা মনঃশিলা সম-ঞ্জিষ্ঠা সলাক্ষা রজনীদ্বয়ং ৷ প্র-লেপঃ সঘৃত ক্ষৌদ্র স্তৃচঃ সাবর্ণ্য-क्र॰ ऋष्ठः ॥ 🟶 ॥ खथ खिन्ता ভোজন । জীর্ণ শাল্যোদন প্ল-গ্ধ মন্ধ মুক্ত ডবোতর । ভুঞ্চানো जाकरेल मा॰रेमः भीषु॰ उन म-পোহতি ৷৷ তণ্ডুলীযক জীবন্তী বাস্তৃক সুনিষয়কৈঃ। বাল মূল-क वार्त्वाक शरहारेनः कातरवन्न टेकः ॥ मनाजिटेमः मामलटेकः घृठज्रेकः मरमन्नरिः। चरेना द्रिव॰ श्रुटेन बीलि मूक्तामीना॰ द्र- সেন চ ৷৷ এভিঃসহ জীর্ণশাল্যো-দন ভুঞ্জানঃ শীষু বন মপোহ-তীত্যদ্বয়ং॥ অমু॰ দধি চ শাকঞ্চ সাণ্স মানূপ মোদক । ক্ষীর গুৰূণি চান্যানি ত্ৰণিতঃ পরিবর্জ-स्थि ।। जर्भ श्वर्भू त्रायामा । চ রাশশ্চ জাগরাৎ। তৌ চ রু-ক্চ দিবা স্বাপাৎ তাশ্চ মৃত্যুশ্চ रेमथुना ।। 🗱 ।। जथान्य व চিকিৎসা। ক্রুদ্ধে সদ্যো ত্রণ व्यग्रामृक्ष्याधनाः त्याधनः । कि-ষা শীতা প্রয়োক্তব্যা রক্তপি-**रिकाम नाशिनी ।। लञ्चनक दन** জ্ঞাত্বা ভোজন চাসু মোক্ষণ । **ঘৃষ্টে বিদলিতে চৈব সুতর**া মি-ষ্যতে বিধিঃ॥ ছিন্নে ভিন্নে তথা বিদ্ধে ক্ষতে বাস্গতিসুবেৎ। রক্তক্ষযাত্তত্র রুজঃ করোতি পব-নো ভূশং ৷৷ স্নেহপান পরীষেক লেপা স্তত্তোপনাহন স্বর্গিত স্নেহ্ বস্তিঞ্চ মারুত্রমৌষরৈ র্ভি-ষক্।। শ্বদ্ধাদি চ্ছিন্নগাত্রস্য তৎ-কাল পৃতিতো বলঃ। গাঙ্গেরুকী मृलद्ररिमः महाः महाः भाषः भाष्टरा नः ॥ शास्त्रक्की नागवना श्वतः সকরী ইতি লোকে॥ কষায ম-ধুরাঃ শীতাঃ ক্রিষাঃ সর্বাঃ প্রযো-

জবেৎ। সদ্যো ত্রণানা সগ্রা-श्र अन्हार शृंदि क माहत्वर ॥ व्यागागगटञ् ऋधितत विषधा-ছমন॰ নরঃ। তব্মিন্ পক্ষাশয়স্থে जू गृङ्गीयाथ म विदत्रहनः। क्रा-থো বংশত্বগেরগু স্বদ স্ট্রাক্ষভি-দা ক্বতঃ । হিঙ্গু সৈন্ধব সংযুক্তঃ काष्ठेष्ट्र मुक्टरमम्क्॥ यव का-ল সলখানা নিমেহেন রসেন চ । ভূঞ্জীতান্ন॰ যবাগু॰ বা পিৰেৎ সৈশ্বব সংযুত ।। জাতী নিশ্ব প-টোল পত্র কটুকা দাবী নিশা শারিবা মঞ্জিষ্ঠাভয ভিক্ত তুখ यशुरेक मंकास्र वीरेकः गरेगः। সর্পিঃ সিদ্ধ মনেন সূক্ষ বদনা মর্মাশ্রেতাঃ স্থাবিশেঃ গম্ভীরাঃ সরুজো ত্রণাঃ সগতিকাঃ শুদ্ধ-স্তি রোহন্তি চ ॥ বৃদ্ধ বৈদ্যোপ-**(म्टम्न शांत्रश्रार्याश्रम्भाउः ।** জাতীযৃতেন সংসিদ্ধে ক্ষেপ্তব্যং **मिक्थक॰** वृदेशः ॥ जानामिय्-ত ।। 🟶 ।। জাতী নিম্ব পটোলা-না॰ নক্তমালস্য পল্লবাঃ । সিক্-থ॰ সমধুক॰ লণ্ঠ॰ ছে নিশে কটু রোহিণী।। মঞ্জিষ্ঠা পত্মকং পথ্যা लाधु प्रक् नीलगू ९ शलः। मार्ति-বা তুখক চাপি নক্তমাল ফলং

७था।। मातिय। स्टाटन मनिष्ट है छि চ পাঠঃ। এতানি সমভাগানি কন্ধীরত্য প্রযন্তঃ। তিলতৈল **अट्टिश् मगाक् दिनाः शाक विघ-**ক্ষণঃ ৷৷ বিষত্রণে সমৎপলে স্ফো-**ऐ**टक कक द्यागिनि। मुक्क दीमर्श রোগেষু কীটদটেষু সর্বথা ॥ স-*माः শ*ङ्थशात्त्रयूं मक्ष विस्निय् टेठव हि। नथ एउ क्लट्ड (फट्ड **पृष्ठिया** भाशकर्यद्य ॥ ७ करनन হ্তিত তৈল নিদ শোধন রোপ-প্রসিদ্ধণ ভিষগাদৃতণ ৷৷ জাত্যাদি তৈলে ।। 🕸 ।। চিত্রক রসোন রা-मं अभावपुर्था लाक्निक मिन्नृदेतः । সবিবৈ স্তথা সঙ্গটেঞ্চঃ কটুতৈল সাধসংযুক্ত ॥ বিপরীত মলতে ल॰ দুফঁত্রণ॰ তথা নাজী॰। বহু-ভেষজৈ রসাধ্যা মপথ্যভোজ্ঞ-শ্চ নিণুদিতি ।। বিপরীতমল্লতৈ ल॰ ॥ 🗱 ॥ अगृञा शटोलमूल ত্রিফলা ত্রিকটু ক্রনিমানা । সম-ভাগানা চু ি সর্বসমো গুণ্ডলো-র্ভাগঃ ॥ প্রতিবাসর মেকৈকাণ খাদেনিহাক্ষ পরিমাণাণ। জেতু॰ ব্ৰণবাতাসূগ্ গুলোদরশোথ বা-তরোগা॰=চ ॥ অমৃতাদি अशुनुः

•। ে এথানিদক্ষন্য চিকিৎনা.• । প্র্ভিন্যায়ি প্রপতন কার্য্য নুষ্ণ তথোষধণ। সন্যক্ স্বিন্ধে শরীরে তু স্বিন্ন° ভবতি শোভিত° ৷৷ প্র-ক্লত্যা সলিলং শীতং ক্ষন্সযন্ত্ৰাতি-শোণিত । তস্মাৎ সুখয়তি প্লুষ্টণ न जू भी छ॰ कमा हन।। ऋन्म येखि শোষযন্তি। শীতা মুকাঞ্চ দুর্দক্ষে ক্রিয়া॰ সর্ব্যাত্তভঃ পুনঃ। ঘৃতা-লেপ প্রসেকাস্ত শীতানেবাস্য কারবেৎ।। সম্যন্দক্ষে তুগাকী-রী প্রক্ষ চন্দন গৈরিকৈঃ। সামৃ-তৈঃ সর্পিষা যুক্তৈ রালেপণ কার-यिक्षियक् ॥ वाग्रान्त्रीमरेक র্যাণ্টসঃ পিষ্টে রেনণ প্রলেপয়েৎ । অতিদধ্যে বীশীর্ণানি মাণসানু-দ্বৃত্য শীতলাও।। ক্রিয়াও সর্য্যাৎ ততঃ পশ্চাচ্ছালিতখুল কণ্ডনৈঃ । তিন্দুক্যাশ্চ কসাথৈ হা ঘৃতমি-শ্রেঃ প্রলেপযেৎ।। বদরীত্বক্ ক-ষাবৈ ৰ্বা ঘৃতমিশ্ৰেঃ প্ৰলেপন°। ययान् मक्षा मनीक्चा रेजलन यू-ত্যা ত্যা ৷৷ অ্যঃ সর্বাহ্মিদঞ্চেষ্ লেপনাদুণরোগণঃ । ত্রনং গূচ विष्ठितः वा ছामरमम्य वामरेनः ।। মধূচ্ছিক্ট॰ সমধুক॰ লেগ॰ সর্জ-রদ॰ তথা। মঞ্জিগ্ঠা চন্দন॰ মূর্বাণ

় পিষ্ট্রা সর্পিষি পাচষেৎ ॥ সর্বেষা । মগ্লিদঞ্চান। মৈতজ্যোপণ যুত্তমণ। সিক্থকাদিঘৃত ।। 🕸 ।। সিদ্ধ ॰ ক-ষায় কন্ধাভ্যাণ পটোল্যা কটুতৈ-व्यकः । बनम्क ब्रुकः। मुख्य माह বিস্ফোট নাশন ।। পটোলীতৈ-লং৷৷ বাতোক্ত মঞ্চত দুৰ্ফণ সং-শোষ্য গ্রথিত ব্রণ । স্ব্যাৎ সদাহ° কণ্ঠাচ্য° ত্রণ গ্রন্থিস্ত স मुङः ॥ कम्भिनाकः विषक्रांनि ষচ॰ দাব্য। স্তথৈব চ । পিফু। তৈল° পচেতন্ত ব্রণগ্রন্থিহর° প-রে ৷৷ ইতি ত্রণাগন্তরণাগিদগ্ধ ব্রণাধিকারঃ ৷৷ 🕸 ৷৷ ভগাধিকা-রস্ত ভগশব্দে ডফব্যঃ ৷৷ না-**डीवर्शनमान॰ नाडीवर्गटक** ज-खेवा ।। 🐲 ।। जय नाजी बनग চিকিৎসা। সুহ্र पृक्ष गावी ভि ৰ্বৰ্ত্তি॰ ৰূহা প্ৰপূর্বে২। এয় সর্ব শরীরফা॰ নাডी॰ হন্যাৎ প্রযো-গরাট্ ৷৷ আরখধ নিশা কালা চূর্ণাঢ্যা ক্ষেত্র সংযুতা । সূত্রব-र्खि दंश याका। साधनी गठि-गामिनी ।। काना मिक्का ।। জ।-ত্যর্ক সম্পাক করঞ্জ দন্তী সিদ্ধুখ সৌবর্চল যাবশুকৈঃ। বর্তিঃ ক্ত। হ্ভাচিরেণ নাডী॰ স্বুক্∥

ক্ষীর পিষ্টা সহ চিত্রকেণ ৷৷ না-ড্যাঃ শক্ত্রেণ বদনণ বৃহৎ রুত্বা প্রবেশযেৎ। স্বশলো বস্তিবিধি-না তৈল॰ জাত্যাদি সাধিতে।। এব মন্যক্ষ যত্তৈল গৃতম। স্বরুদ তথ। । যত্তৈল॰ যদ্যন॰ পক্ষ॰ স্বর-সং বা তথৈৰ চ। ইতি বা পাঠঃ। নাজা অভ্যন্তরে বৈদ্যো লফ হস্তঃ প্রবেশযেৎ।। কপূরিক র-সৈ ত্তৈলং সিদ্ধার্থক ভবং ভিয়-क्। পচে । निमृत कत्कन नाजी मृरुवगाथर° ॥ छशुन् विकना ব্যোবেঃ সমা॰শৈ রাজ্য যোজি ত°। অক্ষ প্রমাণা॰ গুটিকা॰ খা-**(ए**ष्ट्री) ठायुगा नद्गा। गाडी पृष्टे ত্রণ॰ শূল মুদাবর্ত্ত ভগন্দরণ। গু-ল্মঞ্ঞদজান হন্যাৎ পক্ষিরাট্ भवनानित्।। नक्षारका **ख**शुनुः॥ ইতি নাডীত্রণাধিকারঃ ॥ 🕸 ॥ ভগন্রস্য নিদান চিকিৎসা চ ভগন্দরশব্দে ডফ্টব্যা ॥ উপদ॰-भागा निमानामू शमण्यमाय ज खेता॰ ॥ 🗱 ॥ जरशाशमः नमा চিকিৎসা । উপদংশেষু সর্বেষু विश्व श्रिशमा (मिर्निः । यिष् गर्ध শিরা॰ বিধ্যেৎ পাত্যেদা জলৌ-কসঃ।। সদ্যো নিহ্ন ত দোষস্য

য়াক্ শোখাবুপশাম্যতঃ ৷.পাকো নিবার্যো যত্ত্বন শিশ্বক্ষয়করঃ म य९ ॥ विध्याता हार्जून अयु লোধু পথ্যা হরিদ্রা রচিতঃ প্র-লেপঃ ৷ ব্যথাণ তথা শোখ মপা-করোতি সর্বোপদংশেষু তভো হিতোৰণ ৷৷ উপদংশেষু পক্ষেষ ব্ৰণ প্ৰকালন 'হিত । ত্ৰিকলা-ষাঃ ক্ষাধেণ ভূজরাজ রদেন বা ।। नीत्ना ९ शनः मूजगूनः शनः সৌগন্ধিক॰ তথা। এষ চূর্ণণ ধূল-নাৰ্থণ প্ৰলেপ শ্চাত্ৰ শস্যতে।। विकृष पन हृदर्गन बक्रमा पाछिम ষ্টঃ। গুঠনা ভদ্ধণে সর্ব্যালেপং शृभक्तक व। ॥ मदर् कि। रि ত্রিদলা ভন্মখী মধুন খুতা । প্র-**त्रिट्यायाय विश्व अप्रा** প্ররোহ্যেৎ ৷৷ পটোল নিষ ত্রি-ফলা বিরাত হ্যুথ° পিবেদ্বা খ-<u> जिल्लामना छा॰ । मध्युन॰ वा</u> ত্ৰিফলাযুত বা সৰ্বোপদংশোপ-হরঃ প্রযোগঃ।। ভুনিম্ব নিম্ব ত্রি-কল। পটোল করঞ্জ ধাত্রী খদি রাসনানা । ক্যায়ককৈঃ শৃত মাশু চাজ্যু সর্বোপদংশোপছ-तः श्रामिकः ॥ ज्ञिश्वामिष्ठः ॥ নাডীব্রণে ব্রণে। উপদংশে প্র-যোজ্যানি সেকাভ্যঞ্জন ভোজ নে ৷৷ কার সূত্রেণ সংছিদ্য লি-ক্ষবর্ত্তি মশেষতঃ। দহেচ্চ তা-ন্তত স্তাভ্যাণ চিকিৎসাণ ব্রণব-চ্চরেৎ ॥ ইত্যুপদ°শাধিকারঃ ॥ ॥ भूकरमायाधिकातः भूक-দোষশব্দে দ্রষ্ট্যব্যঃ ৷ ইতি ভা-বপ্রকাশঃ 11 🕸 11 অথ ব্রণনা-শকতৈল । উড়ুম্বর বট প্রক্ষণ कमग्रक भनाग लाधु जिन्तृक॰ ॥ भश्रुक मामु मर्ज्ञश्च वातः श्रेषा-কেশর । শিরীষবীজ কতক মেতৎ ক্লাথেন সাধিত ৷৷ তৈ-ল' হন্তি ত্রণালেপান্চিরকলৈ-ভবানপি ৷৷ ইতি গারুডে ১৯৮ व्यथायः ॥

ব্রণক্রৎ পুণ ভল্লাতকঃ। ইতি রত্ননালা।। ক্ষতকারকে ত্রি।। ব্রণকেতুমী স্ত্রী দুখ্মফেণীক্ষুপঃ। ইতিরাজনির্ঘণ্টঃ।।

ফলা পটোল করঞ্জ ধাত্রী খদি বাদিট্ পুণ বান্ধান্যফিকা। ইতি বাদনানাণ । ক্যায়ককৈঃ শৃত শক্চন্দ্রিকা। বাদ্ধান্ত তি ।। বাদ্ধান্ত তি ।। বাদ্ধান্ত বি । বাদ্ধান্ত

ठांखका ॥

জণদ্ধ পুং. কলিক নীবৃক্ষঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ !! ব্রণারিঃ পু॰ বোলং ॥ অগস্ত্য-বৃষ্ণঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। ব্রত॰ পুংক্লী ভক্ষণ । ইত্যুণা-দিকোষঃ 11 পুণ্যজনকোপবা-मानि। তৎপর্য্যায়ঃ। নিয়মঃ ২ পুণ্যক । ইত্যমরঃ ।। নি-ষামঃ ৪ সংযমঃ ৫ । ইতি শ-ব্দরত্বাবলী।। অথ ব্রতবিধিঃ। তদারম্ভ প্রতিষ্ঠযো বর্জ্যকাল-মাহ জ্যোতিষে। গুরো ভূ গো-রস্তবাল্যে বার্দ্ধকে সিণ্হগে গু-त्रो इंछि। वृक्षा वात्ना फिन-ত্রয় নিত্যস্ত ৷ মঠ প্রতিষ্ঠাতত্ত্বা-मावन्त्रदक्षयः ॥ कः ॥ वृक्षाखेनी-ব্রতে বিশেষো রাজমার্ত্তণে-ক্তো যথা। দিজেন্দ্রসূত সংযু-ক্তা পূর্ণা যাচ সিতাফনী। ত-স্যাণ নিয়নকর্তারে। ন স্যুঃ খ-**ওিত সম্পদঃ।। পতক্ষে মকরে** যাতে দেবে জাগ্রতি মাধবে। वृक्षास्त्रीं अन्तीं ठ वर्जियश जू रेठजकी॰ ॥ अमुर्थ চ जन-হাথে সন্ধ্যাকালে মধৌ তথা। বৃৰফৌণ ন স্বরীত ক্রতা হস্তি 🛚

পুরারতে ।**়**ঃ ৷৷ অথ বতানুধা-নণ। তত্র দেবলঃ। অভুক্তৃ। প্রা-তরাহার° স্বাস্থা চৈব সমাহিতঃ। मृय्गामि দেবতাভাশ্চ নিবেদা ব্ৰত নাচরেৎ ॥ ব্রন্ধচর্য্য তথা শৌচণ সত্য মানিষ বৰ্জন। ব্ৰ-তেখেতানি চন্তারি বরিষ্ঠানীতি নিশ্চযঃ ৷৷ অত্র প্রাত রিত্যস্যা-ভ্জ্তোত্র নাম্বযঃ। কিন্তু ত্রত নিত্যনেনাস্বযো ২ভ্যাৰ্হভদ্বাৎ । প্রাতঃ সম্বন্ধবেদ্বিদ্বানুপবাস ব-তাদিকণা নাপরাক্সে ন মধ্যাক্সে পিত্ৰকালে। হি তৌ স্মৃতৌ ॥ ইতি বরাহপুরাণৈকবাক্যম্বাচ্চ। তত শ্চাভুক্তা প্রাভরাহার মিতি মু নিভি দ্বিরশনণ প্রোক্তণ বিপ্রাণাণ মত্যবাসিনা॰ নিত্য॰ । অহনি চ তথা তমস্বিন্যা॰ সাৰ্দ্ধপ্ৰহর যামা-ন্তঃ॥ ইতি ছন্দোগপরিশিষ্টাদে-কাহার পূর্বদিনে ক্রত্বা পরদিনে স্বাদ্বাচন্য সূর্য্যাদি দেবেভ্যো নি-বেদ্য ৷ ওঁ সূর্য্যঃ সোনো যম ই-ত্যাদি মন্ত্রেণ সামিধ্যণ প্রার্থ্য ব্রত মাচরেৎ। ততঃ সঙ্কর্যেৎ। य-षा गूर्यानि प्रत्वाखा निविना পূজনীৰ জব্যাদি দন্ধা ব্ৰত নাচ-রেৎ ব্রন্ত সর্য্যাৎ। তহিধানঞ্চ

শান্তিপৰ্বনি। গৃহীদ্বৌজ্মূরণ পা-@° वातिशृर्व मूमं श्रूथः। छेशवामञ्च • गृङ्गीया या वार्या व था तर्य था तर्य था तर्य ॥ 🗱 ॥ কর্মাদৌ সূর্য্যপূজা মাহ ব্ৰহ্মপুরাণণ। যাবন্ন দীয়তে চার্য্যণ ভাক্ষরায় মহাত্মনে ৷ তাবন্ধ পূ-জ্যেদ্বিষ্ণু॰ শঙ্কর॰ বা মহেশ্বরী॰ 11 নবগ্রহ পূজা মাহ মৎস্যপুরাণ ৷ নবগ্রহ্মখণ ক্রত্বা ততঃ কর্ম্ম সমা-রভেৎ। অন্যথা ফলদ পু॰সা॰ ন কাম্যু জায়তে ক্বচিৎ ৷৷ আ-দিত্যাদি পূজা মাহ পন্মপুরাণ । আদিত্যু গ্ৰাণনাথঞ্চ দেবী ক্লুদ্ৰ যথাক্রম"। নারায়ণ বিশুদ্ধাখ্য অত্তে চ ञ्रनमित्राः ॥ यकु मि-वर्णाती यहां त्याश्र गतनमञ् ন পূজ্ঞবেৎ। তদা পূজাফল॰ হ-ন্তি বিমরাজে। গণাধিপঃ ॥ ইত্য-নেন গণেশপূজনস্যাদিত্ব মুক্তণ তৎ সূর্য্যপূজেতরপর । সলদে-বতেত্যত্র স্বলাদ্যুপলক্ষণ ৷ বত যক্ত বিবাহেষু শ্রান্ধে হোমে ২র্চনে জপে। আরব্ধে সূতক ন मापनातस्क जू मृठकः ॥ ठव বিশেষযতি মৎস্যপুরাণ । গর্ভি-ণী সৃতিকা নক্ত॰ ঙ্গমারী চ রজ-স্বলা। যদাশুদ্ধা তদান্যেন কা-॥

রুষেৎ ক্রিয়তে সদা ॥ উপবাসা-'শক্তো তুনক্তণভোজন[,] স্বী **ত**' । উপৰাসেম্বশক্তানা নক্ত ভো-জন মিষ্যতে। ইতি বচনাস্তরাৎ অশুকা চেৎ পূজা॰ কার্যেৎ। कायिक एका श्रवामा मिक भाग । १७-দ্বাৰ অশুদ্ধবাৰা স্বয়ণ ক্ৰিয়তে। অত্যন্তাসামর্থ্যে পুত্রাদি প্রতি-নিধি দারা উপবাসঃ কার্য্যঃ। ত-দভাবে হনুকল্পঃ। গরুডপুরাণ । ভার্য্যা ভতু বৃত্ত পর্য্যাৎ জাযা-যাস্ত পতি স্তথা। অসামর্থ্যাৎ দ্বযো স্তাভ্যাণ ব্ৰতভঙ্গো ন জা-যতে ।। পুত্র বা বিনযোগেত ভগিনী ভাতর তথা। এষা ম ভাব এবান্য ব্রাহ্মণ বিনিযো-জ্যেৎ ॥ 🕸 ॥ আরন্ধ ত্রতস্যা-সমাপ্তৌ মরণেপি তৎফল প্রা-প্তি মাহাঙ্গিরাঃ। যো যদর্থ॰ চরেদ্ধর্মণ ন সমাপ্য মৃতে৷ ভ-বেৎ। স তৎ পুণ্যফল প্রেত্য প্রাপুযামনু রব্রবীৎ । প্রেত্য পরলোকে। শাষপুরাণ । লো-ভামোহাৎ প্রমাদাদা ব্রভক্ষা যদা ভবে**ৎ।** উপবাসত্রয° স্ব-ৰ্য্যাৎ স্ব্যাদা কেশমুগুন ॥ त्यादश खुयः। अयादमा श्नवधा-

নতা। বাশকঃ সমুক্তযে তেন মু-ওনঞ্চ কার্য্য মুওনাকরণে দ্বি-গুণ প্রাযশ্চিত্ত । উপবাস ত্রযা-শক্তো চতুৰ্বিত্শ তিপণা দেষাঃ । 'शृष्यभूतांव'। वशन' टेनव नाती-ना॰ नान् बङ्या जनामिक॰ । न গোঠে শ্যন তাসা ন চ দধ্যা-দাবাজিন ।। স্বান্ কেশান্ স-मुक्ठा ছেদযেদঙ্গুলিম্ব॰। এব নেব তু নারীণা মুণ্ড মুণ্ডন মা-দিশেৎ ৷৷ ইতি গোৰ্ধ প্ৰকরণে বিবেচিত । প্রাযশ্চিত্ত মিদ হ্ন-ত্ব। পুন রেব ব্রতী ভবেৎ । গূর্ৰ° গৃহীয়া সঙ্কর প্রসাদামাচরেন্য-দি। জীবন্ ভবতি চণ্ডালো মৃতঃ শ্বা চাভিজাযতে ॥ ইতি প্রায-শ্চিত্তবিবেক ধৃত বচন ।। দে-বলঃ। সৰ্বভূতভ্য° ব্যাধিঃ প্ৰ-মাদো গুৰুশাসন । অব্ৰত্মানি কথ্যন্তে সক্দেতানি শাস্ত্রতঃ ॥ ভর্তু রনুজ্ঞযা স্ত্রীণাণ বতকরণে न দোষः। कामः छर्तृ त्रनुऋय। ব্রতোপবাস নিয়মেজ্যাদীনা ম-ভ্যাসঃ স্ত্রীধর্ম ইতি সম্বৎসর প্র-मीপध्ज मध्य वहनां ॥ 🕸 ॥ অত্র কথা প্রবণ মাহ দেবীপুরা-প• ৷ তদ্যান**৽ তজ্জপঃ স্নান**৽ তৎ -

কথা শ্রবণাদিক । উপবাস ক্ল-তো হেতে গুণাঃ প্রোক্তা মনীষ্বি-ভিঃ ৷৷ ৠ ৷৷ অথ ব্ৰতপ্ৰতিষ্ঠা বি--ধিঃ। শ্রীভগষানুবাচ। গোপথা-রাম সেতুনা॰ মঠ সংক্রম বেশ-না । নিষম এত ক্লছ্ গণা প্রতি-ষ্ঠা॰ শৃণু সত্তম।। ত্রান্ধ্যেণ বিধিনা বহিং সমাধায় বিচক্ষণঃ। শিলা পূর্ণঘট কাংস্য সন্তবে স্থাপয়ে चूधः ॥ खकान् मई॰ ममामाना अ शरमायव्ययः हकः। कीरत् क পিলাযাস্ত তদ্বিক্ষা রিতি সাধ কঃ ৷৷ প্ৰণবেণাভিঘাৰ্য্যাথ দৰ্ব্যা সংঘট্তযেত্ততঃ । সাধ্যিত্বাবতা-ৰ্য্যাথ তদ্বিষ্ণো রিতি হোমযেৎ।। ব্যাহ্নত্যা চৈব গা্যত্র্যা তদিপ্রা-সেতি হোমযেৎ। বিশ্বত শ্চক্ষু রি-ত্যুক্ত্বা বেদাদ্যৈ হোনযেত্তথা।। ত্তম্ভূরগ্রে স্বাহা। ওদ্ সূর্যায স্বাহা। ওম্ প্রজাপত্যে স্বাহা। **७म् ज**ङतीकार स्राहा । ७म् प्रिक्त स्थार । **७**म् बन्द । ওম্ পৃথিব্যৈ স্বাহা। ওম্ মহা-রাজায় স্বাহা। ওম্ সোমং রাজা-ন মিতি জুহুয়াৎ। ওম্ লোকপা-লেভ্যঃ স্বাহা। স্ব স্ব মন্ত্রৈ জুছ-যাদ্যুহেভ্যশ্চ। এবং হত্বা চরো

· र्ভागः नमा । नमिनाः विनः। ততঃ পলাশ সমিধা হুনেদফো-ত্তর॰ শত॰ ॥ আজ্যন্ত জুহুয়াৎ পশ্চাদেভি মঁ ত্রৈ দিজোত্তমঃ। ততঃ পুরুষসূক্তিশ্চ মন্ত্রৈ রাজ্য-ম্ব হোমযেৎ।। ইরাবতীতি জু-ह्या ६ जिलान् यृज्यति श्रुजान् । হত্বা চ ব্ৰহ্ম বৃদ্ধীশ দেবানা মনু-যাযিন ।। গ্ৰহাণা মাহতী হ'ব। लारकमाना गएश भूनः। भई-তানা নদীনাঞ্চ সমুদ্রাণা ত-থৈব চা। হয়। ব্যাহৃতিভি র্দদ্যাৎ .শ্রুচা পূর্ণাহুতিত্রয় । বৌষ্ডন্তে-ন মন্ত্রেণ বৈক্ষবেন মুরোত্তম ৷৷ পঞ্চাব্যঞ্ সংপ্রাশ্য দদ্যাদাচা-ৰ্য্য দক্ষিণাং। তিলপাত্ৰং হেমযু-ক্ত॰ সবস্ত্র॰ গা মলস্কৃতা॰।। প্রী-যতা ভগবান্ বিফ্ রিত্যুৎস্-জেদ্বত নরঃ। 🗱। আরাম ফার-रयम्बञ्ज नन्मरन म वितः यरमः। মঠপ্রদানাৎ স্বর্লোক প্রাপ্নোতি পুরুষঃ সদা।। সেতু প্রদানা দিব্দ্র-স্য লোক মাপ্নোতি মানবঃ।প্র-পাদানাদারূণক্ষ লোক মাপো-ত্যসংশয়ং।। সংক্রমাণাম্ভ যঃ ক-র্জা দুর্গতি॰ তরতে নরঃ। স্বর্গলো-কে চ নিবদেৎ ইফকাসেতুক্ত

থা।৷ গোমার্গস্তথা কর্ত্তা গো-• লোকে ক্রীডতে চিরণ। নিষম बः তক্ষদাতি বিষ্ণুলোকণ নরোত্তমঃ ॥ ক্লচ্ছক্ৰৎ স্বৰ্গ মাপ্নোতি সৰ্বপাৃ-প বিবৰ্জ্জিতঃ ৷ অনেন বিধিনা মর্ত্ত্যঃ সংপূর্ণ ফল মাপুযাৎ II 🗱 ॥ ইয় প্ৰতিষ্ঠা সামান্যা সৰ্বসা-ধারণানয়। কর্ত্তব্যা দেশিকেল্ডৈ-স্ত প্রতিষ্ঠা যত্র বিদ্যতে ॥ ইতি সংক্ষেপতঃ প্রোক্তঃ সমুদায বিধি স্তব। সর্বেষা মেব বর্ণানা সর্বকা-य क्लथिषः ॥ मर्त्वयृत्क्रयू कर्छ-ব্যা প্রতিষ্ঠা বিধিনা বুধৈঃ৷ ফলা-र्थि उर्श्वेष्ठिष्ठे॰ रागाशिक्षन गू-চ্যতে।। ইতি হ্যশীর্ষে সমুদায প্রতিষ্ঠা পটলঃ ॥ 🟶 ॥ ব্রাক্ষ্যেণ বৈদিকেন স্বগৃহ্যোক্তবিধিনেতি যাবৎ। শিলেতি উদূখলোপল-ক্ষণ । কা॰স্য অগ্নিপ্রণ্যনার্থ । কা°স্যেন অগ্নিপ্রণয়ন মাহ গৃহ্ণা-সংগ্ৰহে। শুভ॰ পাত্ৰন্ত কা॰সা॰ স্যাত্তেনাগ্নি° প্রণযেদুধঃ॥ তস্যা-ভাবে সরাবেণ নবেনাভিমুখঞ্চ ত । সর্বতঃ পাণি পাদান্তঃ সর্ব-তোক্ষি শিরো মুখঃ। বিশ্বৰূপো মহানগিঃ প্ৰণীতঃ সৰ্বকৰ্মসু॥ এবঞ্চাগ্নিপ্রণয়নানন্তর সর্বত ই-

ত্যস্য পাঠো যুক্তঃ। প্রণীত ইতি . मङ्गलिङ्गार । जन्यशा ऋभनानं-ন্তর এত দিধান ব্যর্থ সাৎ।।*।। অত্র চ পাকাঙ্গত্বাৎ সাহস না-মান মগ্নি মাহ গৃহাসংগ্ৰহং। প্ৰা-ষশ্চিত্তে বিধু শৈচব পাক্যজ্ঞে তু সাহসঃ। পূৰ্ণাহত্যাণ মৃডো নাম भाष्ठित्क दत्रम खथा।। आह्य **টেচব হোতব্য° য**ত্ৰ যো বিহিতে। ২নলঃ। প্রাযশ্চিত্তে হোম কর্ম বৈগুণ্য সমাধানার্থণ প্রাযশ্চি-ত্তাত্মক মহাব্যাহৃতি হোমাদৌ। তথা চ ছন্দোগপ রিশিষ্ট । যত্র ক্যাহৃতিভি হোঁমঃ প্রাযশ্চিত্তাত্ম-কোভবেৎ ৷ চত্যু স্তত্র বিজ্ঞেষাঃ ক্রীপাণিগ্রহণে যথা।। অণি বা-জ্ঞাভ মিত্যেষা প্রাজাপত্যাপি-বাহুতিঃ। হোতব্যা ত্রি বিকল্পোয° প্রাযশ্চিত্রবিধিঃ স্মৃতঃ ৷৷ অত্র ত্রি র্বিকল্প ইত্যভিধানাৎ সামগা-না॰ ভবদেব ভটোক্ত শাট্যায়ন-হোমে। নিষ্পুমোণিকঃ। অতা-নুকাগে ইহাগচ্ছাগচ্ছ ইত্যুক্তা-র্য্য যবাভাবে ত্রীহ্ণাদিভি রপি হোনঃ। হবিষ্যেষু যবা মুখ্যা স্ত-দূৰু বীহয়ঃ স্মৃতাঃ। মাষ কোদ্ৰব গৌরাদীন্ সর্বাভাবে বিবর্জযেৎ

।। যথোক্ত বস্তুসম্পত্তী গ্রাহ্ন• **उ**न्तूकति य**ः।** यदाना भिव ला-धृमा बीरीना मिव मालयः ॥ रेि . ছন্দোগগরিশিষ্টাৎ ।। তত্র গো-ভিলেন অথ হবি নিৰ্বপতি ত্ৰী-হীন্ যবান্ বা কাণ্স্যে চরুস্থা-ল্যাণ বা অমুক্মৈ স্বা জুষ্টণ নিৰ্ব-পামীতি দেবতারানোদেশঃ। সহক্ষজুষা দ্বি স্তকী মিত্যদেন নিৰ্বাপ ক্ৰমাভিধানাৎ সামগে-ন তন্মাত্র॰ কর্ত্তব্য॰। অত্র চ বি-ফবে স্বা জুফ নিৰ্বপামীত্যনে-ন যজুষা চরু॰ ইত্যভিধানাৎ• হ বনীয় নিৰ্বাপণাদি চৰু নিষ্প-ত্তিঃ কর্ত্তব্যা। তত্র ছন্দোগপরি-শিষ্ট । দেবতাস খ্যায়াগৃহ নি-ৰ্বাপাণ্চ পৃথক্ পৃথক্। তুফীণ দ্বি রেব গৃহীযান্দোম শ্চাপি পৃ-থক্ পৃথক্॥ অত্র দেবতা সংখ্য-য। পৃথক্ পৃথক্ নির্বাপঃ। অনু-নিৰ্বাপ স্তম্ভ্ৰেণৈব। হোমোপি প্-থক্ পৃথগেবেতি । আলস্যাদি পুরুষদোষেণ গৃহীত তণ্ডুলেনা-পি মন্ত্রেণ নির্বাপাদিক সমাচর-खि यां क्रिकाः ॥ घाटा नृत्त o-থাচ্ছিমে সামাজ্যে নান্ত্ৰিকৈ তথা । युद्धः मञ्जाः अर्याक्रवाः मुखा

ষজ্ঞার্থ সাধকাঃ।। ইত্যুক্তিঃ। মান্ত্রিকে মল্ল সাধ্যে অবঘাতাদৌ ন্যুনে তৎকালে মন্ত্রপাঠাভাবে মন্ত্ৰাঃ প্ৰযোক্তব্যাঃ। কণিলাযা অভাবে অন্যধেনো রপি ঘৃতেন সপ্রণব তদ্বিষ্ণো রিত্যনেনাভি-যার্য্য দর্ব্যা দক্ষিণাবর্ত্তেন সং-মিশ্রবেৎ। দবী চ প্রাদেশ প্রমা-ণা দ্বাঙ্গুল বিস্তার। আহা। ইশ্ব-জাতীয় মিশ্বার্দ্ধ প্রমাণ মেক্ষণ ভবেৎ। বৃত্ত॰ বার্কঞ্চ পৃথুগ্র মব मानकियाक्य ।। **अटे**रन मरी य স্তিত্র বিশেষ স্তমহ॰ ক্রবে। দবী দ্যঙ্গুল পৃথুগ্রা তুরীযোনঞ্চ নেক্ষ-ণ ।। ইতি ছন্দোগপরিশিফাৎ। ইয়ান্ধি প্রমাণ প্রাদেশমাত্রণ। প্রাদেশদ্বয় মিখ্মস্য প্রমাণ পরি-কীর্ত্তিত । ইতি ছন্দোগপরিশি-ষ্টোক্তেঃ। অথেত্যনেন স্বগৃহ্খো-ক্ত শেষকর্ম্ম সমাপনানন্তর প্র-ক্লতহোমঃ। অত্র বহুদেবতাক চ-क़रशमानू शया छ रहा मः । हरती তু বহুদৈবত্যে হোমঃ স্যাদুপ-যাতবৎ। ইতি ছন্দোগপরিশিষ্ট ধৃত বচনাৎ।। 🕸।। উপঘাত ল-ক্ষণ মাহ গৃহাস গ্ৰহঃ ৷ পাণিনা মেক্ষণেনাথ সুবেণৈব তু্ৰদ্ধবিঃ

৷ হ্যতে চান্পন্তীর্য উপঘাতঃ **স** উচ্যতে ॥ যদ্যপ্রয়াত॰ জহুষা-চ্চরাবাজ্য॰ সমাবপেৎ। মেক্ষ-ণেন তু হোতব্য নাজ্যভাগে ম **यिकिह** ॥ जन्পञ्जीर्या इंछा-নেন সুচি যচ্চতুরাবর্ত্ত॰ পঞ্চাব-র্ত্তণ বা ঘৃতোপস্তরণাদিকণ তদত্র নাস্তি তেন মেক্ষণাদিনা সক্তৎ গৃহীত্বা হোতব্য॰ ॥ 🕸 ॥ প্রক্ত-হোমাৎ প্রাক্ বহ্লি পূজন মাহ মার্কণ্ডেযপুরাণ । পূজ্যেচ্চ ত-তো বঙ্গিং দদ্যাচ্চাপ্যাহুতীঃ ক্র-মাৎ। তত ইতি বক্লে নামকরণ ধ্যানানন্তর । হোমানুষ্ঠানে স্মৃ-তিঃ। মন্ত্রেণোক্ষার পূর্বেন স্বাহা-ন্তেন বিচক্ষণঃ। স্বাহাবসানে জरूयाक्यायन् देव मञ्जटमव**ाः ॥** তত স্তদ্বিষ্ণো রিতি মন্ত্রেণ চরুণা হোমযেও। এবং ব্যাহ্নত্যাপ্রত্যে-ক॰ ভ রিত্যাদিনা। গাযত্র্যা সা-বিত্র্যা । তদিপ্রাদেতি তদিপ্রা-সো বিপণ্যবো জাগৃবা°স ইত্যা-দিন। 1 বিশ্বত ইতি বিশ্বত শ্চক্ষু-ৰুত বিশ্বতো মুখ ইত্যাদিনা। বে-मार्टमाः अधिमीत्न रेजामिन।। ইষেত্বোর্জ্যেরা ইত্যাদিনা। অগ্ন আয়াহি ইত্যাদিনা । শঙ্গোদে-

বী রিত্যাদিনা চতুর্ভিঃ। ভূরণ্নষে ় 'ইত্যাদ্যফিভিঃ। ততঃ সোমণ রা-জান মিত্যাদিন। । ততো লোক-পালেভ্য ইত্যাদিনা স্বস্বনন্ত্রৈ স্ত-खद्धारमाञ्च ममामिक्शालगरेखः। ভত্র সামগানা স্টেন্দ্রস্য ত্রাতার মি-ত্যাদিন। । অগ্নেশ্চ অগ্নি॰ দূত॰ বৃ সুপর্ণ মিত্যাদিন। । নিশ্বতে র্বে-খাহি নিঋ তীনা ইত্যাদিন।। বরুণস্য ঘৃতবতী ভুবনানা মিত্যা-দিনা ৷ বাষোঃ বাত আবাতু ভে-ষজ° ইত্যাদিনা। সোমস্য সো-সংরাজান মিত্যাদিন। । ঈশান-স্য অভিয়। শূরণো নুম ইত্যা-দিন।। ত্রন্দাে ত্রন্যজ্ঞান প্র-थम भिञापिन।। अनस्रमा वर्षः ণী ধৃত মিত্যাদিনা। তথা চ গো-ভিলীয কর্মপ্রদীপে ৷ ত্রাতার মিন্দ্র মবিতার মিন্দ্রস্য পরিকী-ৰ্ত্তিতঃ। অগ্নি॰ দূত॰ বৃণীমহে বক্লে ৰ্যন্ত্ৰো যমস্য বৈ ।। নাকে সুপৰ্ণ মূপয়ৎ বেশাহি নিশিতে স্তথা। যুত্রতীতি বরুণন্য বাত আবৃত্ ভেষক্রণ। বাষে। র্যন্তঃ সনুদ্দিউঃ সোন রাজান মিত্যুচা ৷৷ সোম-স্য মন্ত্ৰঃ কথিত স্তু*ভিম্বেতীশ* উ-

চ্যতে ।। ঈশে ঈশানস্য। ব্ৰহ্ময জজ্ঞান প্রথম বন্ধণঃ পরিকী ৰ্ত্তিতঃ । চৰ্ষণী ধৃত মিতি চ দৰ্প স্য সমুদাহৃতঃ।। গ্রহেভ্যঃ নব-প্রহেভ্যঃ । স্বস্বসক্রৈঃ সর্ববেদ गायात्रदेशः । সূर्यामग्राह्मटक्टन-ত্যাদিনা। সোমস্যাপ্যাযেত্যা-দিন। । সঙ্গলস্যাগি সূর্দ্ধা ইত্যা-দিন। 1 ৰুধস্যাগ্নে বিবস্বদিত্যাদি-ন। 1 বৃহস্পতে বৃহস্পতেঃ গরি-দীযেত্যাদিনা। শুক্রস্য শুক্রস্তে ২ন্যাদমজন্ত ইত্যাদিন। শনৈ-শ্চরস্য শক্ষোদেবী রিত্যাদিন। । রাহোঃ ক্যানশ্চিত্রেত্যাদিনা। কেতোঃ কেতু॰ ক্লণুন্নিত্যাদিনা। তথা চ মৎস্যপুরাণণ। আরুক্তে-নেতি সূৰ্য্যায় হোনঃ কাৰ্য্যো বি-জানতা। আপ্যায়স্বেতি সোনা-য মন্ত্রেণ জুছ্যাৎ পুনঃ 11 অগ্নি মূৰ্দ্ধা দিবো মন্ত্ৰ নিতি ভৌনায কীৰ্ত্তবেৎ। অগ্নে বিবস্তুষ্স ইতি গোমসুভাষ চ ৷৷ বৃহস্পতে পরি-দীষা রথেনেতি গুরে। র্যতঃ। শু-ক্রন্তেখন্যদিতিচ শুক্রস্যাপি নি-গদ্যতে ॥ শনৈশ্চরাযেতি পুনঃ শলোদেবীতি হোম্যেৎ। ক্যান-শ্চিত্র স্থাভূব দূতী রাহে৷ রুদাস্থ

তঃ ৷৷ কেতু কুণুমিতি ক্রয্যাৎ কেতৃনা মুপশান্তযে । এব° চরু-হোমণ সমাপ্য চরুশেষেণ প্রা-**ठ्यामिनिश्वाः शायमविनः मन्या** 1 তদ্যথা। এয়পায়সব্লিঃ ওম্ প্রাট্যে দিশে নমঃ ইত্যাদিন। 1 দক্ষিণাবৈ দিশে স্বাহা ইতি শ্রু-তি দর্শনাওঁ ৷ হরিহরপদ্ধতি ফ্র-ত্যপ্ৰদীপাভ্যা॰ স্বাহান্তেন ব-লিদান মৃক্তং। বস্তুতস্ত বলি প্রকরণ এব প্রাচ্যূদ্ধাবাচীভ্যে। ২হরহ র্নিত্য° প্রযোগ ইতি গো-'ভিলমূত্রে জীলিঙ্গ নির্দ্দেশাৎ দিশা॰ দেবতাত্ব॰ বলৌ প্রতীয়তে ৷৷ অত্ৰ স্ববাচীতি পাঠাৎ শ্ৰুত্যক্ত **८**हामीट्य मिक्किशाट्य हेजानामृज ওম্ অবাচ্যৈ দিশে নম ইতি বলৌ প্রযুজ্যতে।এভি র্ম ক্রৈ স্তবিকোঃ পরমণ পদণ ইত্যাদি যাবন্মক্তৈঃ। আজ্যান্ত্রিতি তু শব্দেন সমিদ্ধো-নে তেষাণ ব্যাবর্ত্তনাৎ মন্ত্রাকা-জ্জায়া॰ প্রাথমিকত্ত্বেন তদ্বিক্ষাে রিত্যস্য পরিগ্রহঃ। তত স্তদ্বিষ্ণো রিতি মন্ত্রেণ স্বাহান্তেন ঘৃতাক্ত পলাশ সমিদ্ভি রফৌত্তরশতং জু-श्या ।। शृदीक मरिक शृदीक দেবতাভ্যঃ সুবেণাজ্যাহতী জুহ-

যাৎ। পুরুষসূক্ত স্তত্তদ্বেদেকিঃ। তত্র সামগানা। । । । । ইদ॰ বিঞ্ রিতি। প্রেক্তকস্য বিষ্ণো রিডি। প্রাকাব্য সুষলেব ক্রবাণ ইতি ৷ সহসূশীর্ষেতি। ত্রিপাদৃদ্ধ ইতি। পুরুষ এবেদমিতি। এতাবানস্য ' ইতি। ততে। বিরাডিতি। ক্যান ইত্যাদি পুৰুষসূক্তণ। তথা চ সা-गिरियनी **শ্রুতিঃ। ইদ**ণ বিষ্ণুঃ প্রে-ক্ষকস্য বিক্ষোঃ প্রাকাব্য মুয়লেব-ব্রুবানঃ ইতি বারাহ মস্ত্যু পুরুষ ব্ৰতে চৈষা বৈষ্ণবীনাম সহিতে-না॰ প্রযুঞ্জন্ বিষ্ণুঃ প্রীণাতি ইতি প্রাকাব্য মুষলেব ব্রুবাণ ইতি বারাহ মস্ত্য মিত্যনেন একো ম-ন্ত্রঃ প্রকাশিতঃ। পুরুষ ইত্যনেন পুরুষপদযুক্ত পঞ্চমন্ত্রাঃ । বতে ইত্যনেন ক্যানশ্চিত্র ইত্যেকে৷ নন্ত্রঃ। সামগো জুহুবাৎ। যজু-র্বেদী তু তত্র প্রসিদ্ধাভিঃ সহসু-শীৰ্ষেত্যাদি ঋণ্ডিঃ ষোডশাহুতী জুঁহুযাৎ। ইরাবতীতি তিলান্ যৃতাক্তান্ সক্ষজুহ্যাৎ । এবং वकान्यायिछाः स्रोहा विकृन्या-ষিভ্যঃ স্বাহা ঈশানানুযাযিভ্যঃ স্বাহ্যাএব॰ পূৰ্বোক্ত নবগ্ৰহ্মক্ত্ৰৈঃ পূৰ্বেটক্ত দিকপালনব্ৰৈশ্চ জুহু-

যাৎ ৷৷ এবং পৰতেভ্যঃ স্বাহ৷ मिनीजाः सादा नामजाः सादा সমুদ্রেভ্যঃ স্বাহা ভূঃ স্বাহা ভূবঃ স্বাহা ইতি জুহ্যাৎ। ততঃ পরি-ভায়া সিদ্ধং স্বশাখোক্ত মহাব্যা-• হৃতি হোমণ প্রাযশ্চিত হোমঞ্চ ক্লত্বা সূচা ভদ্বিক্ষো রিতি মন্ত্রেণ বৌষডস্তেন পূৰ্ণাহুতি ত্ৰয মুখায जुरुयामि वित्नत्यानामाना নাত্ৰ স্বশাখোক্ত পূৰ্ণহোমঃ ॥ ত-তঃ পঞ্চাব্যু চরুশেষ প্রাশ্য ঘ্রা-ত্বা বা হেমযুক্তণ সবস্ত্রণ তিলপা-ত্রণ অলঙ্কৃতাণ গাঞ্চ দক্ষিণা মাচা-ৰ্য্যায় দদ্যাৎ॥ আচাৰ্য্যপদঞ্চ। উ-**मार्ड्डा विमार्थान् युक्त विमार्गः** স্মৃতী রপি। শ্রুতি স্মৃতি সমাপন্ন माठार्याः তः विमृ व् थाः ॥ ইতি ছत्मागপরিশিষ্টাৎ।। কর্মোপ-**एक्ट्रे** ताठार्यादश्वन ञाठार्याश्रम॰ স্বয়ং হেতৃপক্ষে ব্রহ্মপরং অন্য হোতৃ পক্ষে বন্ধহোতৃ দ্বয় পরে । স্বয়ণ ব্রহ্মহোতৃ কর্ম্ম করণপক্ষে পুস্তকধারক পর ।। ত্রন্ধণে দ-কিণা দেয়া ষত্র যা পরিকীর্ত্তিতা । क्षारिष्ठ श्नूष्ठामानायाः পূर्न-ক্ষৌত্র মন্যশেচদ্দক্ষিণাধ্বহরে∤ ভ-

त्वः । स्वयदकृष्णुच्यः अर्यापना-रैया - প্রতিপাদযেৎ' ।। ইতি इ-**ন্দোগপরিশিটে**ফকবাক্যত্বাৎ এবং ব্রহ্মবিধিনা অগ্নিস্থাপনাদি श्रीयका॰ जगवान् विकृ तिकाञ्च কর্মসংস্কৃতগোপথাদি দান নিয-ম ব্ৰত ক্লচ্ছাদি করণান্যতরৰূপা সমুদায প্রতিষ্ঠা কর্ত্তব্যা। সমুদা-যন্য প্রক্তগোপথাদেঃ প্রতিষ্ঠা সমুদাষ প্রতিষ্ঠা ৷৷ তথাচ কপিল পঞ্চরাত্রণ। প্রতিষ্ঠা শব্দ সংসি-দ্ধিঃ প্ৰতিপূৰ্বচ্চ তিষ্ঠতেঃ । ব-হ্বর্থত্বামিপাতানা প্রসংকারাদৌ প্রতঃ স্থিতিঃ ।। তথাচ গোপথা-দে রুক্ত কর্মা সংস্কৃতস্য ফলজন-কত্বণ। অপ্রতিষ্ঠন্ত নিক্ষল মিত্যু-ক্তেঃ। এতদ্ৰুত কৰ্ম্মণা প্ৰীযতা ভগবান্ বিষ্ণু রিতি সমাপুযাৎ ।। 🟶 ।। অথ ব্রতপ্রতিষ্ঠা প্রযোগঃ । তত্র ক্বত নিত্যক্রিয়ঃ কথান্ত॰ ব্ৰত• সমাপ্য তত্ত্ৰদেবতা প্ৰীতি-কামো যথাশক্তি দানাদি দদ্যাৎ । ব্ৰতে দেবগৃহোৎসৰ্গে কূপাদী-না॰ প্রতিষ্ঠনে। দদ্যাৎ ষোডশ-দানানি দ্বিত্দানানি চৈব বা।। ইতি দানসাগর্ধৃত বচনাৎ ॥ अग् उ९ मिन्जूकार्या अम अ-

দ্যেত্যাদি অমুকগোত্রো ২মুক-দেবশৰ্মা তত্ত্বত ফল প্ৰাপ্তিকা-মঃ ক্তৈতৎ অমুক্ত্রতপ্রতিষ্ঠা-মহ॰ করিষ্যে। স্ত্রী চেদ্রুতকারিণী তদা অমুকগোত্রামুকী দেবীত্যা-मृाश् रेजि मकत्र अर्या। ज-তো ঘট সংস্থাপ্য পঞ্দেবান্ সংপূজ্য গৌর্য্যাদি ষোডশমাতৃ-কাঃ সংপূজ্যাঃ পুরুষশ্চেত্তদা না-ন্দী শ্রাদ্ধণ সর্য্যাৎ। তত উত্তরা-ভিমুখ বান্ধণ মুপবেশ্য তৎস-মীপে আসন মানীয প্রাগ্ন্যুখো ·ষজ্যানঃ ওম্^{*}সাধু ভ্বানাস্তা• ইতি ক্নতাঞ্জলি বঁদেও। ওম্ সাধ-হমাদে ইতি প্রতিবচন । ওম্ অর্চ্চযিষ্যামে। ভবস্ত ইতি পুন-রুক্তে ওম্ অর্চযেতি প্রতিবচন[°] । ততো বস্ত্রালঙ্কার গন্ধপুষ্পাদি-ভি রভ্যচ্চা দক্ষিণ জানু ধৃদ্বা ওম্ অদ্যেত্যাদি অমুকগোত্র মমুক-দেবশর্মাণ মর্চ্চিত ক্রতৈতদমুক ব্ৰতপ্ৰতিষ্ঠা কৰ্ম্মণি হোমাদি কৰ্ম্ম-করণায ভবস্ত মহং বৃণে ৷ ওম্ বৃ-তোস্মীতি প্ৰতিবচনণ। ওম্ ষথা-বিহিত বৃত কর্ম সক্ষ। ওম্ যথা-ত্তোন[,] করবাণি ইতি প্রতিবচন[,] । ততে। বেদী॰ পঞ্চগব্যেনাভ্যুক্ষ্য

পূৰ্বে পঞ্ঘটান্ য়ট মেক বা স স্থাপ্য প্ৰথম লিখিত ক্ৰমেণ ভূত-শুদ্ধ্যাদি গণেশাদি পূজাণ বিধায তত্তদেবতা॰ ক্রমেণ পূজ্যেৎ.। ততো হোতা স্বগৃহ্খোক্ত বিধিনা-গ্নি• সংস্থাপ্য বন্ধ স্থাপনানন্তর• চরু শ্রপণ স্বর্যাৎ। অন্যৎ সর্বণ প্রতিষ্ঠাপ দ্বতৌ জ্ঞেয়ণ ॥ৠ॥ অথ ত্ৰতপ্ৰযোগঃ। স্বস্তিবাচন ক্ৰত্বা সূর্য্যঃ সোম ইতি পঠিত্বা সকল ষ্ঠ্যাৎ। অদ্যেত্যাদি অমুক কা-সে। ২মুকত্রত মহ॰ করিষ্যে। ব্রতাবৃত্তে আবৃত্তি সংখ্যা মুল্লি-থেৎ অদ্যারভ্যেতি চ। উদগ্নুখো ভূমা এতৎ স্ব্যাৎ ৷ ওম্ যূসঃ ক্ষিত্যৈ নম ইতি স্থণ্ডিলং মার্জ-(यथ । ७म् म इंठाजूक्तस्थ । বামহস্তেন স্থঞ্জিণ গৃহীত্বা স্বশে-ন প্ৰণব পূৰ্ৰক চতুৰ্খ্যন্ত ত্ৰত দে-বতানাম লিখেৎ। হস্তপ্রমাণ স্থিল চতুরসু সিততগুলেনা-পূর্য্য মধ্যে বিতস্ত্যুদ্ধ্য কর্ণিক হ-রিজাচুর্ণেন তদ্বহি বিতন্তি প্র-মাণান্যন্যোন্যসক্তানি অফদ-লানি সিত তণ্ডুল চূর্ণেন পত্রমূলে কেশরাণি সস্ম চূর্ণেন পত্রসন্ধী विद्यामिशव हूर्वन शीर्रशावानि

দগ্ধ পুলাকজেন রূত্বা ঘটণ সংস্থা-श्रा मामानार्थाः कृषा जमूमरकना-' ত্মান প্জোপকরণক্ষাভ্যুক্য গ-ণেশাদীন্ নবগ্রহাণ্টেশ্চব পূজ-ষেৎ। ততো ব্রতদেবতাঃ পূজ-रिष् । ইতি বততত্ত্ব॰ ॥ 🗱 ॥ অথ **उठ लक्ष्णः। मीर्घकानानू**शान-নীয় সঙ্কল্পো ব্রত মিতি নারায-পোপাধ্যাযানা॰ স্বরসঃ। স্বক-র্ত্তব্য বিষয়ে নিষতঃ সঙ্কল্পে ব্রত মিতি শ্রীদত্ত হরিনাথ বর্দ্ধমান প্র-ভূতষঃ ৷৷ সঙ্কল্পশ্চ ভাবে মধৈতৎ কর্ত্তব্য মেব নিষেধে ন কর্ত্তব্য মি-তি জ্ঞানবিশেষঃ। অতএব সঙ্ক-ষ্কঃ কর্মমানস মিত্যাভিধানিকাঃ । বস্তুতস্ত পূর্বোক্ত বরাহপুরাণ বচনেনৈকাদশ্যুপবাসন্য ব্রত-ত্বাভিধানাৎ এক্ভক্তেন নক্তে-ন তথৈবাযাচিতেন চ। উপবা-সেন চৈকেন পাদক্বচ্ছ উদাহ্ব-ডঃ ॥ ইত্যাদি বাজ্ঞবন্ধ্যাদ্যুক্তে-ষু একভক্ত নক্তাযাচিত ভোজ-নোপবাসাদিষু পাদক্ষজ্যদিষা-ভিধানাচ্চ ন সকল্পে৷ ব্ৰত্ ৷ কি-ম্ভ সঙ্গন্ন বিষয় তত্ত্ৰৎ কৰ্মৈব ব্ৰত মিতি। অতএব ব্রতানা সকল मख्या भार मनुः। मक्त्रमृलः

কানো বৈ যজাঃ সম্প্রসম্ভবাঃ 🕆 ত্ৰতা নিয়ম ধৰ্মাশ্চ সৰ্বে সক্ষ-জাঃ স্মৃতাঃ ৷৷ অনেন কর্ম্মণা ইদ-মিষ্ট॰ ফল॰ সাধ্যতে ইত্যেব॰ বি-ব্যা বুদ্ধিঃ সঙ্কল্প স্তদনন্তর মিষ্ট-সাধনতধা অবগতে তক্ষিন্ ইক্সা জাষতে তত স্তদৰ্থ প্ৰয়ত্ন সৰী-ত ইত্যেব॰ যুক্তাঃ সঙ্কল্পসন্তবাঃ । ব্ৰতা নিষমৰূপা ধৰ্ম। শচতুৰ্থা-ধ্যাষে বক্ষ্যমাণাঃ। সর্বে ইত্যনে-ন অন্যেপি শাস্ত্রার্থাঃ সঙ্করাদেব জাষন্তে ইতি সমূকভটঃ॥ 🕸॥ সঙ্গন্ধ মাহ বরাইপুরাণণ। প্রাতঃ সঙ্গন্থেদিদানুপবাস ব্রতাদিক । নাপরাহে ন মধ্যাহে পিত্র্যকা-লৌ হি তৌ স্মৃতৌ ৷৷ সঙ্কল্পে ব্ৰত-স্যারম্ভ ইত্যুক্তণ রাঘবপ্তো বি-যাঃ। ব্রত যজ্ঞ বিবাহেষু আছে হোমে ২ চ্চনে জপে। আরন্ধে সূ-তক॰ ন স্যাদনারন্ধে তু সূতক°।। আরুষ্টো বরণ যতে সকলো এত জাপযোঃ। নান্দীগ্রাদ্ধণ বিবা-शामि आफ्न भाकभतिष्क्रिया।। নিমন্ত্রণম্ভ বা শ্রোদ্ধে আরম্ভঃ স্যা-দিতি শ্রুতিঃ। পাক পরিদ্ধিষেতি সাগ্নে দশ শ্ৰাদ্ধ বিষয় । তত্ৰিব তস্যাস্থ্যক্ষরণ বিধানেন তদ্মি-

পাকস্যাসাধারণত্বাৎ।। ৠ।। সকল বিধানম্ব সম্বৎসরপ্রদীপে । প্রা-তঃ সন্ধ্যাণ ততঃ রুত্বা সকল্প বুধ আচরেৎ। শান্তিপর্বণি। গৃহীত্বৌ-ভূষর॰ পাত্র॰ বারিপূর্ণ মুদজুখঃ। छे शवामस गृङ्गीया स्पंचा मक्स्ने दय-দুধঃ ॥ দেবতা স্তদ্য তুব্যস্তি কা-মিক তস্য সিদ্ধ্যতি। অন্যথা তু वृथा मर्ल्याः क्रिनगुष्ठि सन्नवृष्णयः য়। যদ্বেতি পক্ষান্তরণ। তেন তামু-পাত্রাভাবে সঙ্গল্পমাত্রণ করণীয়া ।। ৠ।। গৃহীত বতাকরণে দোষ , মাহ ছাগলেযঃ। পূর্বণ ত্রতণ গৃহী-ত্বা যো নাচরেৎ কামমোহিতঃ। জীবন্ ভবতি চাণ্ডালো মৃতঃ শ্বা-টেচব জায়তে ॥ দ্বাদশীত্রত মাদা-য ব্রতভঙ্গ॰ করোতি যঃ। দ্বাদশা-কণ বতং চীৰ্ণ নিক্ষলং তস্য জা-যতে। ইতি নারদীয বচনাৎ দ্বা-मन्गा॰ वित्नर्यात्रि ॥ ॥ श्राय-শ্চিত্ত মাহ পদ্মপুরাণণ লোভাৎ মোহাৎপ্রমাদাদা ব্রভজ্পে। যদা ভবেৎ ৷ উপবাসত্রবং স্বর্যাৎ স্ব্যাদ্বা কেশমুগুনণ।। প্রাযশ্চি-ত মিদু কৃষা পুন রেব ব্রতী ভ বেৎ। বাশকঃ সমুক্তষে তেন মৃত্তনঞ্চ কর্ত্তব্য মিতি প্রায়শ্চিত্ত-

বিবেকঃ। প্রমাদাদস্য সক্রৎ ক্ল-তত্বেপ্পতিপ্ৰসূতে দেবলঃ। সর্ব-ভূত ভষ ব্যাধিঃ প্রমাদে। গুরু-শাসনণ। অত্ৰতন্মানি কথ্যন্তে স হ্লদেতানি শাস্ত্ৰতঃ ॥ ইত্যেকা-मनीठद्यः ॥ 🗱 ॥ भूगाजनकं ब-তানি যুথা। বৈশাখস্য শুক্লাতৃ-তীযায়াণ অক্ষযতৃতীয়াবতণ তস্য শুক্লা দাদশী পিপীতকী ২ उफ्रजूर्मभी नृजि॰ इठजूर्मभी ७ তস্য ক্লফাইনী ত্রিলোচনাইনী 8 তमा इस्फार्ज्यमंगी मारिजी C জ্যৈষ্ঠ শুক্লতৃতীয়া রম্ভাতৃতীয়া ৬ তস্য শুক্লা চতুথী উমাচতুথী 1 তস্য শুক্লা ষষ্ঠী অরণ্যষষ্ঠী ৮ ত-क्रवृक्षमी ठम्भकठवृक्षमी २ वा-याणी श्रदेककामनी नयदेनकाम-শী ১০ প্রাবণী রুফার্ফনী শ্রীরুক্ত-জন্মার্ফমী ১১ ভাত্রগুক্রা চতুথী শিবাচতৃথী ১২ তম্য শুক্লা ষষ্ঠী চপেটাষষ্ঠী ১৩ তদ্য শুক্লা সপ্ত-মী ললিতাসপ্তমী তত্ৰ সকুটী-ত্ৰত° ১৪ তস্য শুক্লাফমী দূৰ্বাফ-মী ১৫ রাধান্টমী চ ১৬ তস্য শুক্রা নবমী তালনবমী ১৭ তস্যশুক্তৈ-কাদশ্যাণ পার্শ্বপরিবর্ত্তনত্রত ১৮ তস্য শুক্লাদাশী শ্রবণদাদশী১৯

তস্য শুক্লা চতুর্দ্দশী অনস্তচতুর্দ্দ-শী ২০ তদ্য ক্লকা চতুথী গণেশ-**ठ**जूथी २३ जाश्विन छङ्गास्त्री य-शक्मी २२ कार्डिक एक्नानवभी দুর্গানবমী ২৩ তস্য শুক্লৈকাদশী उंथाटेनकामगी २८ उम्र छङ्गा ठजूर्भमी भाषानठजूर्भमी .२৫ ज-श्वानीटेंबकामभागि शक्ष विश्वा-ত্মক বকপঞ্চক ২৬ বৃশ্চিকস-ক্ৰাস্ত্যা• সৰ্বজ্বাত্ৰত ২৭ কাৰ্ত্ত্-কেষত্ৰতঞ্চ ২৮ অগ্ৰহাষণস্য শু-ক্লা ষষ্ঠী গুহুষষ্ঠী ২৯ তস্য শুক্লা সপ্তমী মিত্রসপ্তমী ৩০ তস্য শুক্লা षामनी अथञ्जाबामनी ७३ माघ শুক্লা চতুথী বরদাচতুথী ৩২ তস্য শুক্লাপঞ্চম্যাণ শ্রীপঞ্চমীত্র-छ यपुर्व निष्णामा ७७ छमा শুক্লা ষষ্ঠী শীতলাষষ্ঠী ৩৪ তস্য শুক্লা সপ্তমী আরোগ্য সপ্তমী ৩৫ তস্য শুক্লৈকাদশী ভীমে-কাদশী ৩৬ তদ্যাদশী বরাহদ্বা-দশী ৩৭ তস্য ক্ষণ চতুৰ্দশী শি-বরাত্রিঃ ৩৮ কাল্পনশুক্লাদাদশী গোবিন্দদ্বাদশী ৩৯ চৈত্রক্ককা-यष्ठी ऋन्मयष्ठी ४॰ टेंच्ब एक्स रहेगी অশোকাফমী ৪১ তস্য শুক্লা নব-মী শ্রীরামনব্দী ৪২ তদ্য শুক্লা

जरयाननी यननजरयाननी ४७। ইতি স্মৃতিঃ।। #।। অধাচিতত্রত• ন ক্তব্ৰত• উমামাহেশ্বরব্রত• শঙ্ক-রনারাযণত্রত দেবীপুরাণে ক্র-কাষ্ট্ৰনীত্ৰতনামাধ্যায়ে সমাৰ্জ-নমাহাত্ম্যাধ্যাযে চ ত্রস্কব্য ।। 🛊 ।। তিথ্যাদিবত গাৰুডে ১১৬ অ-ধ্যাবে অগস্ত্যার্যব্রত গারুডে ১১৯ অধ্যাবৈ চাতুর্মাস্যব্রতানি গাৰুডে ১২১ অধ্যাষে ভীম্মপঞ্চ-কাদিব্ৰত গাৰুডে ১২৩ অধ্যা-যে চ জফব্য॰ ॥ 🟶 ॥ কার্ভিক-স্বানব্ৰত কাৰ্ত্তিকব্ৰত কাৰ্ত্তিক-প্রদীপদানব্রতঞ্চ পাদ্যোত্তরখণ্ডে ১৪॰ অধ্যাযে দ্রফব্য॰ ॥ 🛊 ॥ প্র-তিপৎকল্পে ব্ৰহ্মব্ৰত• । দিতীযা-কল্পে পুষ্পদ্বিতীযাত্রত ফলদি-তীষাত্রতঞ্চ। তৃতীযাকলে গৌ-রীব্রত । চতৃথী কল্পে গণেশচতু থী । পঞ্মীকল্পে ভাত্রশুক্লাপ-ঞমী নাগপঞ্চমী। ষষ্ঠীকল্পে ভা-জশুক্লাষষ্ঠী গুহুষষ্ঠী। সপ্তমীক-त्त्र माच छक्षमश्वमी त्रथमश्वमी। **শুক্লপক্ষে রবিবারে সপ্তম্যা°** রো হিণীনক্ষত্রযোগে বিজযাসগুনী । রবিবারে সংক্রাস্তৌ আদিত্য-क्षरवं उ॰ । श्वक्रभकीयमञ्जयाः

পঞ্চারকনক্ষত্রযোগে জ্যাসপ্ত-गी। भाष धक्रमश्रभी कंषश्री। ভাদ্রশুক্লসপ্তমী অপরাজিতাস-ওমী। শুক্লপক্ষে সপ্তম্যাণ রবি-সংক্রমণে মহাজ্যাসপ্তমী। মা-র্গনীর্যস্য শুক্লা সপ্তমী নন্দাসপ্ত-মী। শুক্লাসপ্তন্যাও হস্তানক্ষত্র-যোগে ভদ্রাসংগ্রিবত । ফাগ্ল-নগ্য শুক্লাসপ্তমী কাগ্দাসপ্তমী। পাপনাশিনীমপ্তনীব্ৰত । ভানু-পদত্ৰত । সৰ্ব্যাপ্তিসপ্তমীত্ৰত । মার্ত্তদপ্তমীবৃত্ত । ভাত্রশুক্ল •সপ্রমী নতসগুসী। শ্রাবণশুক্ল-নপ্রনী অভ্যঙ্গনপ্রনী। মার্গশী-র্যা্য সিত্রসপ্রয়াণ হস্তানক্ষত্র-যোগে ত্রিত্যপ্রদাব্রত । ইতি ভবিষ্যপুরাণণা 🌣 🛚 উত্তরায়ণে শুক্লপক্ষে বুধবারে অফমী বুধা-रुगी। अभावामगाञ्च । देवशा-খীপূর্ণিমা নিষ্ঠপূর্ণিমা । মেষ-म॰कारछो मध्म॰कान्डिः। জन-गःकान्डिः। ফলসংক্রান্তিঃ। অম-সংক্রান্তিঃ । দধিসংক্রান্ডিত্রতঞ্চ ।। 🟶 ।। ভাগ ত্রতবিধিঃ। ভত্র ব্রতধর্মাঃ। ভত্র বিফু হারীতৌ। **किना**ख नथ ख़ानामीन् थवा-প্য স্নান মাচরেও। ভস্ম গোম্য

মৃদ্বারি পঞ্চাব্যাদিকলিত ॥ ম-লাপকর্যন কার্য্য বাহ্বাশৌচা: ত্মসিন্ধযে। দন্তধাবন পূর্বেণ প-ঞ্চাব্যেন সংযুত্ত।। ব্ৰত্ত নিশাসু-থে গ্রাহ্ণ বহি স্তারক দর্শনে। তেন প্রাযশ্চিত্ত ব্রতারত্তে পূর্ব-দিনে পঞ্চাব্যং প্রাশ্য দন্তধাবনং হত্তা সায° সময়ে ত্রত সঙ্কল্পঃ ক-ৰ্ত্তব্যঃ। বশিষ্টঃ। শাশ্রু কেশ ন-খান্ বাপ্ষেদ্ফিলোন িখাব-র্জ'। কেশধারণেচ্ছাযাণ দি ৪৭ ব্ৰত মাহ হারীতঃ। রাজা বা রাজপুত্রো বা ত্রাফণো বা বহু-শ্ৰুতঃ। কেশানা বপন ক্লয়া প্রাযশ্চিত্ত সমাচরেৎ ॥ কেশা-নাণ ধারণার্থস্ত দিগুণ ত্রত মাচ-রেং। দিগুণে তু ব্রতে চীর্ণে দ-ক্ষিণা দ্বিগুণা তবেৎ ৷৷ 🏶 ৷৷ স্ত্রি-যাঃ কেশবপন॰ ন কাৰ্য্য মিত্যাহ (वीश्यनः। इटाइ जिमवन मुन-কোপস্পান মধঃশ্যন নেক্বা-সভা কেশ শাশ্রু নখ রোম বাপন° এতদেব স্ত্রিষাঃ কেশ বপন বজ্জ' । পঞ্চাব্য ঘৃত প্রাশনযো র্বিক-ন্ধঃ। তথা শঙ্ক লিখিতৌ। বাপ্য কেশ নখান্ পূৰ্ব॰ ঘৃত॰ প্ৰাশ্য ব-হি নিশি। প্রত্যেক শনিয়ক কলে

মালনো ত্ৰত মাদিশেৎ।। প্ৰায-শ্চিত্ত মুপাসীনো বাগ্বত স্ত্রিসব ন স্পূশেৎ ৷ একবাসার্ড্রাসা বা लघानी एखिलनगः॥ त्रानी वी-त्रामनी योगी योक्षी मधकमध-'वृं । ভৈক্ষচর্য্যাগ্নিকার্য্যঞ্চ সমা-ৈও জু হুষাদ্দৃত ।। প্রত্যেক দিয-ত কাল মিতি ত্রত সংখ্যা সঙ্কর-वाका উল্লেখনীয়া ইত্যর্থঃ। বী-রাসনী ভিত্তাদ্যনাশ্রিতঃ। দুও কমণ্ডলু॰ আর্ষস্থাৎ মতুপোলো-পেন তেনৈতাৰ কু ইতাৰ্থঃ। স-স্মাতিও র্যান্দ্রের ক্রেক্তির না মিত্যা-দি দর্বৈত্রঃ ১ মন্ট্রালার ব্যব্যব্যতি ভি হোমঃ কর্ত্তন্যঃ স্বয় নশ্বত । অহিং-ন! মত্য মত্রোধ মার্জবঞ্চ সমাচ--রেং। ত্রি রহ্ন স্ত্রি নিশাযাঞ্চ সবা--সা জল মারিশেৎ।ত্রি রক্স ব্রিনি-শাষাঞ্ছ ইতি ষ্ট শ্বান বিষয় নিদ॰ 1 निनीनिक। गंशा हाट्यायनामि छ-প্রক্লচ্ছ বর্জ নলাতিশ্যার্থ বছ-ষ ত্রিসবন বিধানাৎ। তথা স্ত্রী-শুদ্র পতিতা॰শৈচব নাভিভাষেত কহিচিৎ। সানাসনাভ্যা॰ বিহরে-দশক্তো ২ধঃশ্যী ভবেৎ !৷ ব্ৰহ্ম-চারী বতী চ স্যাদ্গুরুদেব দিজা-র্চ্চকঃ। নাবিত্রীঞ্চ জ্বেপমিত্য° প-

বিত্রাণি চ শক্তিতঃ ॥ সর্বেষু চ ব্রতেদেব॰ প্রাযশ্চিত্তার্থ মাদৃতঃ। ব্ৰহ্মচারী **দৈখুনবর্জ**ণ বতী ছত্তো-পানহ মাল্যাঞ্জন গন্ধাদি বৰ্জ্ব। শূদ্রেণ সাবিত্তীজপস্থানে নারা-ষণাদি মন্ত্ৰ জপঃ কাৰ্য্যঃ। অন্য-দারা বা কার্যিতব্যঃ ৷ এব মন্য-ত্রাপি। যথা বরাহপুরাণণ। অম-স্ত্রস্ত্রস্তিস্য বিপ্রো মন্ত্রেণ গৃহ্ন-তে। জাবালঃ। আরয়ে সর্ব ক্ল-চ্ছাণা সমাপ্তে। চ বিশেষতঃ। আজ্যেনৈৰ হি শালাগ্নৌ জুহ্যা-দ্বাহ্নতীঃ পৃথক্।। আদ্ধং স্ব্যা দ্বুতান্তে চ গো হিরণ্যাদি দক্ষিণাণ 1 গৃহে গৃহী বসন্ সর্বন্ একলো-কে নহীযতে।। স্ত্রীণাণ হোমো ন কর্ত্তব্যঃ পঞ্চাব্য স্তবৈথব চ। শূ-দ্রাণা পাপিনাঞৈব স্থাদ ন চ कांद्ररवं ।। मयामञ्ज न कर्डवा खिवदेनं * ठ कमा ठन। वाकारनदेनव বক্তব্য উৎপদ্মে প্রাণসস্থায় 11 শ্রাদ্ধ নিতি শুদ্ধার্থণ প্রাদ্ধণ দর্শি-ত । স্ত্রীভি হোনো ন কর্ত্রবাঃ পঞ্চাব্য পানঞ্চ ক্লত্যানাণ কর্ত্তরি বেতি ষষ্ঠী। প্রারন্ধত্রতপীড়যা প্রাণসংশ্বে। অন্যে বর্ণা ন প্রফী-ব্যা ত্রাহ্মণ এব প্রফীব্যঃ। ব্রত

মৌন॰ পূৰ্বোক্তণ। তত্ৰ বিশেষ মাহ আপস্তয়ঃ। তত্ত্ৰ মৌন মুক্ত॰,ত্তৈ-विमान्देक म् निज्ञि तदेना ताथ মিভি ৰ্ছ্মুতৈ দ্ভৈ দ্ভান্স-ভাষেত ন মন্ত্ৰ লোপো ভৰতীতি বিজ্ঞাযতে। মন্ত্রলোপো বতলো-ণঃ। বালবৃদ্ধাদিভি রঙ্গহীন মপি खठ॰ कार्या भिजाह **लघुविकः।** অনুংস্কৃতো নিৰুৎসাহে৷ রোগী নবতিজীবকঃ। যথাশক্তি প্রস্থ ৰীতি ৰত° হেেষু ন লুপ্যতে ॥ অ-শক্তাবন্যদারাপি কার্য্য নিতি উক্তঞ্ বন্ধপুরাণে। রোগী বৃদ্ধ-স্তু পোগ ৬ঃ দুৰ্খ ন্তান্যৈ ৰ্ৰত দ म। চতুर्याप्यम्बा**मृक्षुः अरुमः** যাবদে। হি ।। শিশো ব্ৰত প্ৰদ্ बी तिन् छक मशक्ति वाक्तवाः গুৰ্বিণী বালবৎসা চ রোগী জব্য-পরাযণঃ ৷৷ এতে নক্তেমু ভুঞ্জন্তি বালা মধ্যাহ্ল এব চা ব্ৰতস্থ প্ৰা-পরকার্থণ কদাচিদুদকণ পিবেৎ ।। ফলমূলে তথা ক্ষীর॰ যজ্ঞশিষ্ট॰ তথা হবিঃ। ব্রতমধ্যে তু রোগা-র্ত্তো বৈদ্যথোক্ত মথৌষধণ।। ক-রোতি চ গুরে। র্বাক্য° ব্রতস্থ স্তৎ-ক্ষণাদ্পি ৷ ব্রাক্ষণস্যাভিলসিত

সাধ্যেদবিচারয়ন্ ।। এতান্য-ষ্টো ব্ৰত্যানা মূব্ৰত্মানি স্ক্র চিৎ। ব্রতেমেতেষু দেবা॰ স্তান্ ব্ৰতম্বস্ত প্ৰপূজ্যেৎ।। পোগঞ্চো বালঃ। ডব্যপরাষণঃ স্টুমী জ ঘ্যার্জন পালন পরঃসন্মিত্যর্থঃ॥ বৌধাযনঃ। অক্টো তান্যব্ৰতমা-নি আপো মূল ফল প্যঃ। হবি ব্ৰাহ্মণ কাম্যা চ গুরো ৰ্বচন মৌ-ষ্ধ° ।। হারীত যমৌ । বলয শ্চো পহারশ্চ হ্বীণ্ষি চর্ব স্তথা ৷ নিৰ্বিশক্ষেন ভোক্তব্য° ব্ৰত মস্য न नुशारा ॥ विन दिन्धारान्यापि-দেবতাভ্যো দত্তঃ । উপহারো देनद्वार । हकः शार्वनशानी-পাকাদি। অত্র চৈষাণ দত্তাব-ৰিষ্ট॰ ভক্ষণীয় মিতি। দেবলঃ। উপবাসো বিনশ্যেত দিবাস্বপ্না-ক্ষ নৈথুনৈঃ। অত্যযে জলপানে-ন নোপবাসঃ প্রণশ্যতি ॥ বৃদ্ধ-শাতাতপঃ। গন্ধালম্বার বস্ত্রাণি পুষ্প মাল্যানুলেপন[।] উপবাসে-न मुषाछि मख्यावन मक्षन ॥ অলম্বার বস্ত্র সিন্দুরাদি উপবা-সেন হেতুন। ইত্যর্থঃ। তথা। স্ত্ৰীণাত সম্পেক্ষণাৎ স্পৰ্শাৎ তা ভিঃ সংকথনাদপি। ব্রতচর্ঘ্য বি-

शामाञ न नात्रमञ्जभानिश ॥ म॰-্থেক্ষণাৎ সংকথনাৎ ইতি অত্ৰ সরাগত্ব॰ সংশব্দস্যার্থঃ। ইতি প্রাযশ্চিত্তবিবেকঃ ॥ 🗱 ॥ প্রায-শ্চিত্তাত্মক ব্রতানি যথা। বিশ্বা-गिंवः। कृष्ण ठाव्यायनामीनि ख-দ্যাভ্যাদ্য করেণ । প্রকাশে চ ব-হস্যে চ সংশবে ২নুক্তকে ২স্ফুটে ৷৷ প্রাজাপত্যঃ সান্তপনঃ শিশুরু-চ্ছঃ পরাককঃ। অতিক্রচ্ছঃ পর্ন-क्रष्ट्रः भिगः क्रष्ट्रा विक्रष्ट् कः॥ মহাসাস্তপনঃশুদ্ধৈয় তপ্তরুচ্ছস্ত পাবনঃ। জলোগবাসকুছ্স্ত ত্র-ক্ষকৃষ্ঠস্ত শোধকঃ।। এতে ব্যস্তাঃ সমস্তা বা প্রত্যেক মেকশোপি-বা। পাতকাদিযু দৰ্বেষ পাপকে-ষু প্রযন্নতঃ ॥ কার্য্যা শ্চাব্রাষ্টণ-ৰ্কুক্তাঃ কেবলা বা বিশুদ্ধযে। শি-শুচান্দ্রায়ণ প্রোক্তণ যতিচান্দ্রা-ষণ তথা ।। ষবমধ্য তথা প্রো-ক্ত॰ তথা পিপীলিকাক্কতি। উ-গবাস স্ত্রিরাত্রন্ত মাসঃ পক্ষ স্তদ-र्क्तक॰ ।। यछङ् बीम भाङ्मि कार्या॰ শুদ্দিফলার্থিনা। উপগাতক যু-काना मनामि: छेषु टेठव हि ॥ প্রকাশে চ রহস্যে চ অভিসন্ধ্যা-দ্যপেক্ষা। জাতি শক্তি গুণান্। দ্ফু। সরুদ্ধিরুত তথা ॥ অনুবন্ধাদিক দৃফু। দর্শ কার্য্য মথাক্রমণ। ইতি প্রাথশি ভতত্ত্ব

। ক্লা দাদশবার্ষিকাদিরত প্রাথশি ভতিবিবেকাদৌ দ্রুফী ।।
বততিঃ স্ত্রী বিস্তারঃ ॥ লতা।
ইত্যমরঃ ॥
বততী স্ত্রী বিস্তারঃ ॥ লতা।

ইতি ক্রম্কি দিরুকি বিস্তারঃ ॥

ইতি ভরতদ্বিকাপকোষঃ।। ব্রতভিক্ষা ত্রী উপনম্বনকালীন-ভিক্ষা। তদ্যা বিধি ৰ্বথা। অথ ভৈক্ষ্যঞ্জরতি। অথশব্দ স্তফী মাদিত্যোপস্থান মগ্নিপ্রদক্ষিণঞ্চ শংসতি। প্রতিগৃ:হৃপ্সিতং দণ্ড মুপস্থাপয ভাষ্করে । প্রদক্ষিণ পরীত্যাগ্নি চরেক্ডেক্সা যথা-বিধি ৷৷ ইতি মনুবচনাৎ ৷ ভি ক্ষাসনূহ• ভৈক্ষ্য॰ ভচ্চরতি আ বহুতি ইত্যর্থঃ। মাতর নেবাগ্রে ষে চান্যে সূহদে। থাবত্যো ব। সন্নিহিতাঃ সূয়ঃ। যাচতে ইত্য-धारायाः। मूक्टम निश्व क्रमस्य স্বস্থাদ্যে। তথা চ মন্ঃ। মাতর° বা স্বদার বা মাতুর্বা ভগিনী নিজাণ।ভিক্ষোতভিক্ষাণপ্রথমাণ যা চৈন• নাবমানযেৎ॥ সরি-হিতা স্তদ্দেশস্থাঃ ন তু প্ৰতিগৃহ

গন্ধ। ভবতি ভিক্ষাণ দেহীতি ভাক্ষণ ভিক্ষা প্রযোগঃ। তথা চ মনুঃ। ভবৎপূর্বণ চরেৎ ভৈক্ষা মূপনীত দিজোভনঃ। ভবমধ্য-ম্ব রাজন্যো বৈশ্যস্ত ভবদূত্রণ । আদি মধ্যাবসানেষু ভবচ্ছ-দোপলক্ষিতা। ত্রান্ধান ক্ষত্রিষ নিশাণ ভৈক্ষাচর্য্যা-মথাক্রমণ।। ইতি যাজবক্ষান্চনাচ্চ। ইতি সাজান্তব্বং।।

ত্তসংগ্ৰহঃ পুং দীক্ষা।ইতি ংহেমচন্দ্ৰঃ।

ব্রতানেশঃ পুণ উগন্যনণ।যথ।। আদন্ত জননাৎ সদ্য আচূড়া-দেকরাত্রকণ। ত্রিরাত্র মাব্রতা-দেশাৎ দশরাত্র মতঃ পরণ।। ইতিশুদ্ধিতত্ত্বণ।।

ব্রহা পুণ যজনানঃ। ইত্যমরঃ॥ ব্রতবিশিষ্টে ত্রি। যথা তিথ্যস্তে চোৎসবাস্তে বা ব্রতী দ্ববী হি পারণণ। ইতি তিথ্যাদিতত্ত্বং॥

ব্রুক্ত উপ ছেদে। ইতি কবি কল্পদ্রনাঃ ।। দন্ত্যোপধঃ চযো-গাৎ তালব্যঃ । তেন ক্লিপি শ-চ্ছাজেতি ষ্টি নিমিত্তাভাবে নৈমিত্তিকস্যাগ্যভাব ইতি ন্যা-যাৎ তালব্যস্য দন্তাম্বে সংযো- গাদেঃ দদ্য লোপে সুবৃট্ ইতি।
তথাচ। নকারজাবনুয়ার পঞ্চনৌ ঝলি ধাতুষু। সকারজঃ শকারঃ স্যাৎ যাটবর্গ স্তবর্গ ক্রঃ
।। ইতি বোপদেবঃ।। অস্যার্থঃ।
ধাতুষু মধ্যে ঝলি ঝসে পরে অনুয়ার পঞ্চনা নকারজৌ জ্রেযৌ তালব্য শকারশ্চ দন্ত্যসকারজাতঃ মূর্দ্ধন্যমকারাৎ পর ম্বর্গেপি তবর্গজাতো জ্রেষ্
ইতি। ঞি প্রা স্থানে ইত্যাদীনাগ্রু থকারাদি প্রক্রতিত্ত্বে তন্থে।
ইত্যাদি বোধ্যং। উ অব্রশ্চীৎ
অব্রাহ্ণীৎ। শ বৃশ্চতি। ইতি
দুর্গাদাসঃ।।

বশ্চন ক্লী ছেদন । বশ্চধাতো রনট্প্রত্যযেন নিপান্ন ।।

ব্রশ্চনঃ পু॰ স্বর্ণাদিছেদিকা।
ছেনী ইতি ভাষা। তৎপর্য্যায়ঃ
পেত্রপরশুঃ ২। ইত্যনরঃ ।। পত্রপশুঃ ৩। ইতি শব্দরত্নাবলী
।। স্বর্ণলোহাদিভেদকঃ ৪। ইতি
জটাধরঃ ।।

ব্রাজিঃ স্ত্রী বাষুঃ য ব্রজধাতো রৌণাদিক ইঞ্প্রত্যবেন নি-প্রাণা

या वालवामा तलाक मण्या- वावः भू ममूरः। देवामतः॥

ব্যাধাদি। ইতিব্রাত্যশব্দ ঢ়ীকা-যা॰ ভরতঃ ।।

ব্রাতীনঃ পুঁ° সংঘজিবী। ইতি হেমচন্দ্রঃ।

ব্রাত্যঃ পু॰ দশসস্কাররহিতঃ। ষোডশবর্ষাদৃর্দ্ধ্য অক্কতত্রতব-स्ता जुरुगायजीका वा। इंडि ভরতঃ॥ তৎপর্য্যায়ঃ। সংস্কার-হীনঃ ২। ইত্যমরঃ ॥ সাবিত্রীপ-তিতঃ ৩ বাঙ্গুষ্টঃ ৪ পুৰুষোক্তি কঃ ৫। ইতি জটাধরঃ ৷৷ তস্য প্রাযশ্চিত্তাদি যথা ৷ অথ ক্রাত্য বিধি॰ দেবি প্রাযশ্চিত্তন্ত যদ্ভ-বেৎ। তৎ শৃণুষ মহেশানি স-र्ववर्ण विस्थयण्य ।। मभवर्यानि পঞ্চৈব ব্ৰাহ্মণ স্চোপনীযতে ৷ একবিশ্শতি বর্ষাণি যাবদ্বর্ষ মু-পাবশেৎ ৷৷ অত উৰ্দ্দৃ॰ পতমেব সর্ব ধর্মা বহিদ্ধৃতঃ। গাযত্রীপ-তিতা বাত্যা বাত্যস্তোনেন সংস্কৃতঃ ৷৷ অশক্তে চৈব যক্তস্য চরেদৌদ্ধানিক ব্রতে। ছৌ মাসৌ যাবকাহারো মাসমেক॰ পयः शित्वः ॥ मश्च। চ शकः य-কম্ব সপ্তরাত্র॰ ঘৃতেন ভূ। অযা-চিতেন যড়াত্রণ ত্রিরাত্রণ বর্ত্তযে-জ্জালৈঃ ৷৷ অহো রাত্রণ ন ভূঞ্জী-

ত ততঃ সংস্কার মহতি। পতিতা . यमा गांयजी में नवर्षानि शक्ष है।। প্রাযশ্চিত্ত° ভবেত্তস্য প্রোবাচ ভগবান্ শিবঃ। সশিখ॰ বপন॰ ক্ষা ব্ৰত• স্ব্যাৎ সমাহিতঃ॥ হবিষ্যু ভোজষেদন্ন বাদ্যণান সপ্ত পঞ্চ বা। একবি॰শতি রাত্র-ন্তু পিবেৎ প্রাসৃতি যারক ॥ ততো যাবক শুদ্ধন্য তম্যোপ-নযন॰ স্মৃত । ব্রত্ত্যাচরণাশ-क्ली क्रयंग्राकास्त्रायनव्ययः ॥ मा-বিত্ৰী গতিতা যেয়াণ দেশকালা-मि विश्ववाद । ठाट्यायन हांत्र-দ্যস্ত ভ্রতান্তে ধেনু মূৎসৃজেৎ ॥ कीत यानि निर्वेगांग ५-मामा वयमानिनी १ इंडि মৎস্যাস্ত্তে প্রায়শ্চিত্ত প্রকর-ণে ৩৮ পটলঃ ॥

ব্রাত্যস্তোমঃ পু॰ যক্তবিশেষঃ। যথা। সাবিত্রী পতিতা ব্রাত্যা ব্রাত্যস্তোসাদৃতে ক্রতোঃ।ইতি গারুডে ৯৪ অধ্যাযঃ॥

ব্রী গ গি বৃত্যা । ইতি কবি-কল্পদ্রমঃ ।। রেফোপধঃ । গি বিণাতি ব্রীণঃ ব্রীণিঃ । গ যো ব্রীণাতি জয শ্রিষণ রণমুখে । ব্রীতঃব্রীতিঃ। ইতি দুর্গাদাসঃ।। ব্রী ও ষ ও গতে। । বৃত্যা । ইতি কবিকল্পক্রমন্য । রেফোপ্ল-ধঃ। ষ ও ব্রীষতে। ও ব্রীণঃ। ইতি দুর্গাদাসঃ।।

ব্রীড য ঞি ক্ষিপি ।। লজ্জে। ইতি কবিকল্পক্রমঃ ।। রেফযুক্তঃ । য ব্রীড্যতি বাণং চাপঃ । ব্রীড্য-তি বধূঃ। ঞি ব্রীড়িতো ২স্তি। ইতি দুর্গাদাসঃ ।।

ব্রীডঃ পু॰ লজ্জা। ইত্যমরঃ।। ব্রীডন॰ ক্লী লজ্জা। যথা। অথ মন্দাক মন্দাস্য লজ্জা লজ্জা চ • হ্রী স্ত্রপা। ব্রীডো ব্রীডা ব্রীড-নঞ্চ লজ্জাপর্য্যায় ইরিতঃ। ইতি শব্দরত্নাবলী।।

ব্রীজা স্ত্রী ল্জ্জা। ইত্যমরঃ।। ব্রীস কি বধে। ইতি কবিকল্প-দ্রুমঃ।। কি ব্রীস্থতি ব্রীস্তি। ইতি দুর্গাদাসঃ।।

ব্রীহিঃ পুণ ধান্যনাত্রণ। আশুধান্যণ। ইত্যমরঃ।। অস্য সামান্য নাম গণনা গুণাশ্চ যথা। ।
ধান্যণ ভোগ্যঞ্চ ভোগার্হ মন্নাদ্যণ জীবসাধনণ। তচ্চ ভাবত্রিধা জ্রেষণ শূক শিখী তৃণাহ্বযণ।।
বীহ্যাদিকণ যদি হ শূক সমন্বিতণ
স্যাৎ যথ শূকধান্য ময় মৃদ্যা

মঙ্গুকাদি। শিশ্বী নিগৃত মিতি তৎ প্রবদন্তি শিশ্বী ধান্য তৃণো-দ্ভব তথা তৃণধান্য মন্যৎ।। তত্ৰ ত্রিদোষ শমন॰ লঘু শৃকধান্যৎ তেজো বলাতিশয বীৰ্য্যবিবৃদ্ধি-দাযি। শিশ্বীভব॰ গুৰু হিমঞ্চ বি-বন্ধদায়ি বাতালকন্তু শিশির° তৃ-नधाना राष्ट्रशा (मत्म (मत्म मृ-কধান্যেষু স্খ্যা জ্ঞাতু॰ শক্যা নৈব তৈ দেঁবতৈ বা। অস্মাদে-ষা॰ যেষু ভোগোপভেগা স্তা-ন্যস্মাভি ৰ্ব্যাক্তিয়ন্তে কিয়ন্ত ॥ শালযঃ কলমা ৰুচ্যা ব্ৰীহিঞে-ষ্ঠা নৃপপ্রিযাঃ। ধান্যোত্তমাশ্চ বিজ্যোঃ কৈদারাঃ সুস্মারকাঃ ॥ রাজান্ন ষষ্টিক সিতেতর রক্ত মুগু স্থূলাণু গন্ধ তিরিযাদিক শা-লি সংজ্ঞাঃ। ত্রীহি স্তথেতি দশ-ধা ভুবি শাষনাঃ স্যু ত্তেষা ক্র-মেণ গুণ নাম গণ ববীমি ॥ বী-হি গৌরো মধুর শিশিরঃ পিত্ত-হারী ক্ষায়ঃ শ্লিঞ্চো বৃষ্যঃ ক্রমি কফহর স্তাপ রক্তাপহশ্চ। পুষ্টি॰ দত্তে শ্রম শমনক্ষদীর্য্যবৃদ্ধিণ বি-ষত্তে ৰুচ্যোত্যন্ত[°] জনযতি মুদ° বাতক্লমেচকোন্যঃ ॥ ইতি রাজ-নির্ঘণ্টঃ।। ৠ।। অপি চ। বার্ষিক।ঃ

কাণ্ডিতাঃ শুক্লা ত্রীহ্য শির গা-কিনঃ। ক্রক্ষত্রীহিঃ পাটলশ্চ দর্ভ है। एक रेटाशि। भानग्रश कुठ् .শৃথ ইত্যাদা।জীহ্যঃ স্তাঃ।রুকঃ-दीशिः म विष्क्रात्या यथक्रकः वृष তণুলাঃ ৷৷ পাটলঃ পাটলাপুক্ষ বৰ্ণকে। ত্ৰীহি ৰুচ্যতে ॥ হৰ্ণ্টী-ভাক্তিত্রীহী সক্টাভ্র উচাতে । मालगुराः क्षक्र्यः क्षक्ष्रः উচ্যতে ॥ ত্রাফাবর্ণমুখ মন্য জেয়ে। সতুনুখস্ত সং। ত্রীহ্বঃ ক্ঞিতাঃ পাকে মধুরা বীর্য্যতে। হেমাঃ ৷৷ অল্পাভিষ্যন্দিনো বন্ধ- ধ वर्ष्ठकाः विकिटेकः नमाः। क्रकः-ব্রীহি র্বর স্তেষাণ তস্মাদন্মগুণাঃ পরে॥ ইতি ভাবপ্রকাশঃ ॥ 🕸 ॥ তস্য হক্তিবত্বং যথা ৷ যক্তার্থং তম্ব ভূতানাং ভক্ষ্য নিত্যেব বৈ প্রতিঃ। দিব্যে। ভৌম স্তথা পৈ-ত্রো মানুয়ে। ত্রাহ্ম এব চার এতে পঞ্ মহাযদ্র। বন্ধণা নির্মিতাঃ পুরা ৷ বাশ্বণানাং হিতাথায় ই-তরেয়া চ তন্মুখা ়া ইতরেষা তু বর্ণানাং ব্রান্ধটোঃ কারিতাঃ শুভাঃ 1 এবং রূম। নরে। ভুকু। ২স্মাদ্ধরিত্রি বিশুদ্ধ্যতি ॥ অন্য-থা ত্রীহযোগ্যেতে একৈকে দুগ-

शिक्षः। मुख्या माञ् ভाक्नां• बङ्गा॰मं॰ कू उर स्रुख॰ ॥ इेडि বারাহে আদিক্ত বৃত্তান্তাগ্যায়ঃ ।। 🚓 ।। তেন পিতৃতৃপ্তি র্যা। मनुः । ভिदेश बौहि यदेव मीदेव রভি মূল কলেন বা দত্তেন মা-দ° ঐাষন্তে বিধিবৎ গিতরো ল্গা॰ ।। ত্রীহিঃ **পারৎপরধানা**॰। যাত্রবক্ষাঃ। হবিষ্যাল্মেন বৈ মা-সংগায়সেন চ বৎসরং। মাৎ-স্য হারিণকৌরভূ শান্সনি চ্ছাগ পাৰ্ষ ভৈঃ ॥ ঐণ ক্লোৱৰ ব্যৱস্থ गारेग गा॰रेम यंशाक्रमः। गाम বৃদ্ধ্যাভিতৃপ্যন্তি দত্তেনেহ পি তানহাঃ ৷৷ হবিষ্যালেন শালি ত্রীস্থ্যেন। ইতি। অমাবাস্যান্তি-দ্ৰে। ২ফক। নাবী প্ৰৌৰ্গপদূৰ্ত্ব क्रक्षज्ञरयामशी जीहि यदशादकी চ। এতা স্ত শ্রাদ্ধকালান্ বৈ নিত্যানাহ প্রজাপতিঃ। শ্রাদ্ নেতেম্পর্বাণো নরক প্রতিপ-দ্যতে ॥ ইতি বিক্ষ্বচন॰ নবালা-গমশ্রাদ্ধনৈয়ের ত্রীহি যবোভ্য প্রাপ্তি বিষয়কত্ত্বন বিধায়কণ टेशमानि थाना व्यालामाय! मानि ধান্যস্য তু প্রাপ্তিঃ। শর্দ্দ স্তযোঃ কেচিৎ নবযজ্ঞ প্রচক্ষ-

তে ৷ ধান্যপাকবশাদন্যে শ্যা-যাকে। বনিনঃ স্মৃতঃ।। ইতি ছ-নোগপরিশিফে বীহুপ্রাপ্ত্যা ম-'বশস্যেফী শালি বিধানাৎ য-জ্ঞতুল্য ন্যায়াৎ শ্রাঙ্গেপি তথা কল্পনাৎ। ইতি চ শ্রাদ্ধতত্ত্বণ ॥ *॥ नवाम आक्रकातना यथा। বিক্ষঃ৷ অনাবস্যা স্তিস্ৰো ২উকা ভিন্যে ২ন্বৰ্ষকা সাঘী পৌঠপ-**मृ**।र्कृ॰ इत्यः जरगामनी जीश्यित्रा-কৌ চা এভাণ্স্ত শ্রাদ্ধকালান্ বৈ নিত্যানাহ প্রজাপতিঃ। শ্রা-দ্ধ মেতেদ্বন্ধবাণো নরকণ প্রতি-পদ্যতে ৷৷ ব্ৰীহিপাকে চ কৰ্ত্তব্য যবপাকে চ পার্থিব। ন তাবা-দ্যৌ নহারাজ বিনা শ্রাদ্ধণ কথ-ঞ্ন। ইতি মলমাসতত্ত্ব'॥ 🗱 ॥ তেন যাগকরণ যথা। ব্রীহিভি ৰ্যজেত যবৈৰ্যজেত ইতি শ্ৰুষতে । তত্ৰ ব্ৰীহি প্ৰযোগে প্ৰতীত যব প্রামাণ্য পরিত্যাগঃ ৷ অপ্রতীত যবাপ্রামাণ্য কল্পন । ইত্যেকাদ-শীতত্ত্ব ৷৷ * ৷৷ বীহুপ্রাপ্তৌ শা-লিধান্যেন কর্ম্ম করণ যথা। य-থোক্ত বস্তুসম্পত্তী গ্রাহণ তদ-নুকারি যথ। যবানা মিব গো-थूगा बीहीना मित मानसः ॥

বীহ্ন ইতি তিথ্যাদিত বুণ।। বীহিকঃ ত্রি ধান্যবিশিষ্টঃ। ত্রী-হি শব্দাৎ ঠন্ প্রত্যযেন নি-প্রনাঃ। ইতি সিদ্ধান্তকৌ মুদী।। ব্রীহিকাঞ্চনঃ পুং মশূরঃ। ইতি ত্রিকাগুনেষঃ।। ব্রীহিপনি ত্রী শালপনী । ইতি রাজনির্ঘনিঃ।।

বীহিভেদঃ পু॰ ধান্যবিশেষঃ।
চিনা ইতি খ্যাতঃ। তৎপর্য্যায়ঃ
া-অনুঃ২। ইত্যমরঃ।।

ব্রীহিময়ঃ পু ব্রীহিনির্দ্যিতপু-রোডাশঃ। ব্রীহেঃপুরোডাশে ইত্যনেন ব্রীহি শব্দাম্মষট্ প্র-ত্যযেন নিষ্পন্নঃ। ইতি সিদ্ধান্ত-কৌমুদী।

বীহিরাজিকঃ পু॰ কঙ্গুধান্য ।।
চীনকধান্য । ইতি মেদিনী ।।
বীহিশ্রেষ্ঠঃ পু॰ শালিধান্য ।
ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ।।

বীহী তি বীহিষুক্তকেত্রাদি। বীহাদিভ্যশ্চ ইত্যনেন বীহি শকাদিন প্রত্যযেন নিপায়ঃ। ইতি সিদ্ধান্তকৌশুদী।।

বীহুগার নী ধান্যগৃহ । তৎ-পর্যায়ঃ । সসূলঃ ২ । ইতি ত্রিকাওশেষঃ ।।

ক্রাস ব্রুড শি সংবৃত্তি সংহত্যোঃ।। ব্রৈহঃ ত্রি ব্রীহ্নির্মিতঃ। ব্রীহ্ সজ্জে। ইডি কবিকল্পক্রমঃ।। শকাদন, প্রত্যাযেন নিষ্পানঃ। রেকযুক্তঃ। শি ব্রুডতি অক্র- ইতি সিদ্ধান্তকৌ মুদী।। তীৎ ব্রোড় । মজেন মজন । বৈহেমঃ ত্রি আশুধান্যোপ ইতি দুর্গানামঃ ।।

ক্রেদ কি বধে । ইতি কবিকল্প ক্রী গ গি গতি বৃত্যোঃ । ইতি জনঃ ।। রেকযুক্তো দীঘী । কি কবিকল্প ক্রমণঃ ।। অন্তম্ম তৃতী ব্যোপধঃ । গি ব্রিনাতি ৷ ব্লীনঃ দাসঃ ।।

দাসঃ ।।